प्रकाशक की ओर से

मानव जाति पर अल्लाह तआला का यह सबसे बड़ा उपकार है कि उसने उनको अपने पवित्र शब्द क़ुरआन मजीद द्वारा सम्बोधित किया और इतना बड़ा पुरस्कार उन्हें प्रदान किया जिस पर वे जितना भी गर्व करें कम है। परन्तु ईश्वर के इस वाणी और संदेश को वही समझ सकता है जो अपने प्रभु के इस महान संदेश की मूल आत्मा को जानता हो, इस की मिठास को महसूस करता और इसके अर्थ एवं उद्देश्य को समझकर अपना कर्तव्य, व्यवहार और जीवन को सुधार सके।

अपने ईश्वर की सच्ची और पवित्र वाणी को समझने के लिये क़ुरआन को समझने का गुण होना अत्यन्त आवश्यक है। अत: बहुत समय से यह जरूरत महसूस हो रही थी कि क़ुरआन मजीद की एक ऐसी प्रतिष्ठित व्याख्या (तफ़सीर), टीका और अनुवाद तैयार किया जाये जो नि:संदेह सदाचारी पूर्वजों के क़ुरआन को समझने के आधार पर आधारित हो। जिसमें आयात की व्याख्या (तफ़सीर) हदीस पाक और सहावा رضي الله عنهم के विचारों के अनुरूप हो जिसे पढ़कर पाठक अस्पष्टीकरण (तावीलात) के फंदों से निकल जाये।

उपर्युक्त उद्देश्य के लिये दारूस्सलाम ने उर्दू भाषा में **"अहसनुल बयान"** के नाम से एक व्याख्या प्रस्तुत किया जो अत्यन्त लोकप्रिय सिद्ध हुआ और अब तक उसके अनेक एडीशन प्रकाशित हो चुके हैं। ولله الحمد والفضل على ذلك

हिन्दी भाषा में किताब व सुन्नत पर आधारित और सदाचारी पूर्वजों के विचार पर निर्भर क़ुरआन मजीद का कोई अनुवाद और टीका उपलब्ध नहीं। अत: पाठकों के अनुरोध पर उपर्युक्त तफ़सीर **"अहसनुल बयान"** का हिन्दी रूपान्तर प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें हमारे सहयोगी मौलाना मोहम्मद ताहिर सलफ़ी, डा॰ सैय्यद ज़ाहिद अली, मौलाना अज़ीज़ुल हक़ उमरी और मौलाना अबुल्लैस सलफ़ी हैं। टाईप सेटिंग का कार्य सैयद अली हैदर ने पूरे लगन एवं परिश्रम से किया है। इन सबके अंथक प्रयास एवं परिश्रम द्वारा हमने इसे आप तक पहुँचाया है। हम इनके अतिरिक्त उन सभी भाईयों के भी आभारी हैं जिन्होंने इस शुभ कार्य में हमारा सहयोग किया। अल्लाह से हमारी प्रार्थना है कि वह हमारे इस प्रयास और कार्य को स्वीकृति प्रदान करे और इससे लोग जहाँ ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठा सकें वहीं उसे हम सबके कर्मपत्र में लिखे। आमीन

अब्दुल मालिक मुजाहिद
प्रमुख प्रबन्धक

The Ummah Technology Mission

अहसनुल बयान की प्रमुख विशेषताएँ

यह क़ुरआन करीम की टीका या संक्षिप्त व्याख्या "**अहसनुल बयान**" इस समय जो आपके हाथों में है। इसमें यद्यपि जगह के अभाव के कारण अधिक विस्तार से काम नहीं लिया गया है, फिर भी यह चेष्टा की गयी है कि जन साधारण को क़ुरआन समझने के लिये और इसके कठिन स्थान (अवस्था) के लिये जितनी व्याख्या की आवश्यकता है, उसे संक्षिप्त मगर पूर्ण भावार्थ के साथ अवश्य प्रस्तुत किया जाये। इसमें हमें कहाँ तक सफलता मिली है, पाठक और बुद्धिजीवी वर्ग पढ़कर ही इसका पता कर सकते हैं। इसकी अन्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं : -

o इस्राईली, मनगढ़त और अप्रमाणित रिवायतों को व्यक्त करने से परहेज़ किया गया है। और सिर्फ प्रमाणित रिवायतों का ही प्रयोजन किया गया है।

o आयतों के अवतरण के कारण और उनकी श्रेष्ठता के लिए अत्यधिक रिवायतें उदघृत हैं। परन्तु उसमें पूर्ण प्रमाणित और सहीह रिवायतें बहुत कम हैं। अभाव के कारण प्रसिद्ध और अप्रमाणित रिवायतों का खंडन सम्भव नहीं, अत: यह प्रयास किया गया है कि केवल शुद्ध और पूर्ण प्रमाणित रवायतों का ही वर्णन किया जाये। इसका अर्थ यह है कि जो रिवायतें इसमें वर्णित नहीं हुई हैं वह चाहे कितनी भी प्रसिद्ध क्यों न हों, अपूर्ण प्रमाणित हैं।

o शास्त्रीय समस्याओं और तत्सम्बन्धी तर्क-वितर्क करके इसे कठिन नहीं बनाया गया है, क्योंकि उसका स्थान विस्तृत व्याख्या (तफ़सीर) है। केवल क़ुरआन करीम के सीधे सादे भावार्थों को बोधगम्य और स्पष्ट किया गया है।

o कुछ स्थानों के अतिरिक्त पूरी व्याख्या में हदीसों के सम्पूर्ण साक्ष्यों (मुकम्मल हवालों) का प्रयोजन किया गया है। ताकि विस्तृत ज्ञान चाहने वाले विद्या प्रेमियों को उसे ढूंढ़ने में सुविधा हो।

o तफ़सीर इब्ने कसीर, तफ़सीर फ़तहुल क़दीर, तफ़सीर इब्ने जरीर तबरी, ऐसरूत्तफ़ासीर आदि जैसी सलफ़ी तफ़ासीर इसके मूल स्रोत हैं। अधिकतर उन्हीं को सामने रखा गया है। अन्य अरबी और उर्दू व्याख्याओं से बहुत कम प्रयोजन किये गये हैं।

o स्पष्टीकरण और व्याख्याओं में पूवर्जों (नबी के सहचरों और उनके बाद की पीढ़ी के सदाचारी लोग) के आशय और उनके पथ (सिद्धान्त) को आधार बनाया गया है। इस दृष्टिकोण से यह सलफ़ी व्याख्याओं का संक्षेप, समाविष्ट पूर्वजनों के दृष्टिकोण और पथ का दर्पण तथा उपर्युक्त स्पष्ट और प्रमाणित हदीसों का सुन्दर नमूना है।

o क़ुरआन करीम ने विगत की जातियों और समुदायों का वर्णन किया है परन्तु ऐतिहासिक भाव में नहीं, बल्कि उपदेश के दृष्टि कोण से। अत: क़ुरआन करीम के इस उद्देश्य (भाव) को सामने रख कर विगत जातियों और सम्प्रदायों (समुदायों) के जन साधारण के इस आचरण और कर्मों के कारण, जो उनकी विनाश का कारण बने, मुसलमान जन साधारण के आचरण और शिष्टाचार की तुलना की गई है

The Ummah Technology Mission

ताकि इस उम्मत (सम्प्रदाय) के प्रत्येक वर्ग (विद्वान, बुद्धिजीवी और जन साधारण) के लोग इस पतन से निकलने का प्रयत्न करें, जिसमें वह विगत सम्प्रदायों और जातियों के आचरण अपनाने की वजह से फंसे हुए हैं।

अल्लाह तआला को किसी विशेष मानव जाति के सम्प्रदाय से प्रेम या घृणा नहीं है, उसको विशेष जाति या व्यक्ति से प्रेम (आशवित) और घृणा सिर्फ उनके कर्मों और आचरण के आधार पर होती है। अगर कोई जाति विशेष या व्यक्ति विशेष अच्छे कर्म करता है, ईमान (विश्वास) और उसके प्रावधानों को ठीक ढंग से पूरा करता है, तो वह उसका प्रिय होता है। और उसका सहायक होता है। और इसके प्रतिकूल विश्वास (ईमान) और उसके अनुरूप कर्मों से अनभिज्ञ जाति या व्यक्ति है जो अल्लाह को अप्रिय है, लोक-परलोक का तिरस्कार और अनादर उसका भाग्य है।

यह तो सम्भव ही नहीं है कि विगत मानव जातियाँ और सम्प्रदाय अपने स्वाभिमान और सत्य से विमुखता द्वारा अल्लाह और उसके रसूल को झुठलायें जिसके परिणाम स्वरूप विनष्ट हों (जैसाकि क़ुरआन ने उनके सम्पर्क में वर्णन किया है) और मुस्लिम सम्प्रदाय वही झुठलाने और विमुखता का ढंग अपनाये, तो उसे उन्नति, प्रगति और सौभाग्य प्राप्त हो। यह तो अल्लाह की सुन्नत के विपरीत है।

इन बिगड़े हुए प्रत्येक वर्ग के लिए यह संक्षिप्त व्याख्या एक दर्पण है जिसमें वह अपने आचरण और कर्मों के पतन को और अपने गुण को स्पष्टरूप से अगर देखना चाहें तो देख सकते हैं। जब तक यह सम्प्रदाय (समुदाय) क़ुरआन पर सच्चे मन से विश्वास न करे। और उसके प्रकाश में अपनी धारणाओं (अकीदा) और कर्मों के आधार को सशक्त न करेगी लोक परलोक में सफलता प्राप्त नहीं कर पायगी। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस कथन का भी यही भावार्थ है, जिसमें आपने कहा है।

إن الله يرفع بهذالكتاب أقواماً ويضع به آخرين (صحيح مسلم)

"अल्लाह तआला इस किताब के द्वारा बहुत से लोगों को उन्नति प्रदान करता है, और इसी के कारण दूसरों को पतन की ओर ढकेल देता है।"

क़ुरआन के अनुरूप कर्मों का बदला (प्रतिफल) उन्नति (प्रगति) और उससे विमुखता और आलस्य का परिणाम तिरस्कार और पतन है।

अल्लाह करे कि इस पुस्तक (व्याख्या) का जो मुख्य उद्देश्य है वह प्राप्त हो, और इसके द्वारा धारणओं, मतों (अक़ायद) और कर्मों में ऐसा सुधार हो जिसके कारण यह समुदाय (उम्मत) अल्लाह की विशेष दया और कृपा का पात्र हो सके।

अन्त में परमप्रिय मित्र श्रीमान अब्दुल मालिक मुजाहिद को धन्यवाद देना जरूरी है जिनके विशेष सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हुआ।

व्याख्या कारक

The Ummah Technology Mission

अपनी बात

सब प्रशंसायें एवं शुक्र व उपकार उस अल्लाह महान के लिए है जिसने हम सबको अपनी तमाम सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ बनाया तथा हमारे मार्गदर्शन के लिए केवल अम्बिया केराम को ही नहीं भेजा बल्कि आकाश से पवित्र धर्मग्रन्थ भी अवतरित किये ताकि मानव जाति उसके आधार पर अपने जीवन का संविधान व्यवस्थापित कर सके। ईश्वरीय वाणी के अवतरित होने का यह क्रम क़ुरआन मजीद के उतरने के पश्चात समाप्त हो गया, इस प्रकार यह अध्यादेश जिसके श्लोक सुदृढ़ और सविस्तार हैं प्रलय (क़यामत) तक के लिए समस्त मानव और जिन्नात का अन्तिम संविधान क़रार पाया।

इस पवित्र ग्रन्थ के साथ जो मानव जीवन के प्रत्येक पहलू के लिए समानान्तर मार्गदर्शक एवं पथ पदर्शक है, विद्वानों एवं जन साधारण की रूचि उसके अवतरित होने के समय से ही रही है और जितनी विद्यायें, शास्त्र, विज्ञान एवं रिसर्च इस किताब से संकलित किये गये हैं अथवा किये जा रहे हें वह किसी अन्य पुस्तक से नहीं किये गये। चूँकि यह अध्यादेश अल्लाह तआला की ओर लोगों को आमन्त्रित करने और मानव समाज के सुधार की आधारशिला है, इसलिए विश्व की अन्य एवं अधिक भाषाओं में उसके अनुवाद किये गये। बल्कि एक-एक भाषा में कई-कई सौ अनुवाद एवं व्याख्यायें मौजूद हैं। मुस्लिम समुदाय के विद्वानों ने पुण्य एवं सत्कार स्वरूप इसकी सेवा करके बाद में आने वालों के लिए एक महान कार्य एवं पूँजी उपलब्ध कर दिया है।

हिन्दी भाषा चूँकि इस्लामी संस्कृति और इस्लामी विद्याओं से काफ़ी दूर रही इसलिए उसमें इस्लाम से सम्बन्धित विद्यायें बहुत कम लिखी गयीं, इसके विपरीत उर्दू भाषा इस्लामी विद्याओं और विज्ञान से मालामाल है।

वर्तमान काल के कुछ वर्षों में इस्लामी दावत (शुभ आमन्त्रण) का कार्य विश्व की अनेक भाषाओं में पर्याप्त सीमाओं तक फैल गया है, मानव जाति का एक महान समूह केवल हिन्दी भाषा प्रयोग करता है, बहुत से मुस्लिम युवा और विद्यार्थी हिन्दी भाषा लिखने पढ़ने पर विवश हो गये हैं और कुछ क्षेत्रों में केवल हिन्दी बोली और पढ़ी जाती है। इसी प्रकार इस्लाम धर्म स्वीकार करने वाले बहुत सारे साथी हिन्दी के अतिरिक्त दूसरी भाषा नहीं जानते, इसलिए अत्यन्त आवश्यकता महसूस की जा रही थी कि क़ुरआन करीम का एक ऐसा अनुवाद संक्षिप्त टीका के साथ हिन्दी भाषा में प्रस्तुत किया जाये, जिसकी व्याख्या और अनुवाद सहीह अहादीस और सदाचारी पूर्वजों के क़ुरआन को समझने के सिद्धान्त पर आधारित हो। इस आवश्यकता के लिए "दारूस्सलाम-रियाद" ने एक व्याख्या "अहसनुल बयान" के नाम से प्रस्तुत किया जो अत्यन्त लोकप्रिय सिद्ध हुा। यह उर्दू भाषा में एक संक्षिप्त और विस्तृत व्याख्या है जिसकी विस्तृता एवं शुद्धता को देखते हुए क़ुरआन मजीद की विश्व विख्यात संस्था "किंग फ़हद फ़ाउन्डेशन मदीना मुनव्वरा" ने भी उसे प्रकाशित किया। पाठकों एवं विद्वानों के अनुरोध पर इस तफ़सीर का हिन्दी रूपान्तर हम आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहे हैं।

The Ummah Technology Mission

यद्यपि इस हिन्दी अनूदित क़ुरआन मजीद की आधार शिला उर्दू है। परन्तु आयात का अनुवाद अरबी से हिन्दी में प्रत्यक्ष रूप से किया गया है। भाषा के प्रयोग में सामान्य रूप से जन साधारण की शैली और वार्तालाप को ध्यान में रखा गया है ताकि अनुवाद एवं टीका को समझने में कठिनाई न हो। टीका में मौजूद आयात के हवालों और सहीह, शुद्ध अहादीस पाक के वर्णन का ही परियोजन किया गया है। आयात के अर्थ के विषय में श्रेष्ठतम अर्थ को बयान किया गया है।

पवित्र क़ुरआन की इस विशुद्ध सेवा को पाठकों तक पहुँचाने में जिन सज्जनों ने हमारे साथ सहयोग किया है हम उनके अत्यन्त आभारी और धन्य हैं। विशेष रूप से आदरणीय मौलाना अब्दुल मालिक मुजाहिद साहब, प्रमुख प्रबन्धक मक्तबा दारूस्सलाम-रियाद के, जिन्होंने पूरे चार वर्ष तक इस परियोजना के सम्पूर्ण व्यय का भार बर्दाश्त किया और किताब व सुन्नत की सेवा तथा सदाचारी पूर्वजों के विचार धारा से अपने अथाह प्रेम के कारण इस अध्यादेश को आप तक पहुँचाया। हम आभारी हैं डा॰ सैय्यद ज़ाहिल अली और मौलाना अज़ीज़ुल हक़ उमरी के जिन्होंने पूरी मेहनत और लगन से अनुवाद एवं जाँच का कार्य पूरा किया। मौलाना अबुल्लैस सलफ़ी के भी हम धन्यवादी हैं जिन्होंने इस शुभ कार्य के कुछ भागों की जाँच पड़ताल और शोधन किया। इसी प्रकार हम सैयद अली हैदर तथा मोहम्मद नदीम का भी शुकिया अदा करते हैं जिन्होंने पूर्ण लगन एवं परिश्रम द्वारा टाइप सेटिंग और पेस्टिंग का कार्य पूरा किया। इसके अतिरिक्त हम उन सभी भाईयों के आभारी हैं जिन्होंने इस परियोजना में, जो विशेष रूप से शुभ आमन्त्रण एवं सुधार के उद्देश्य से तैयार की गयी है, हमारे साथ सहयोग किया। अल्लाह तआला हम सबकी इस विशुद्ध एवं विनम्र सेवा को स्वीकृति प्रदान करे, इसे हमारे अच्छे कर्मपत्र में लिखे और इससे जन साधारण को फ़ायदा पहुँचाये। आमीन

हमारे इस प्रयास में जो कुछ गुण हैं वह अल्लाह की कृपा और उसकी अपरमपार दया से है तथा जो कमी है वह हमारी स्वयं की कमी का परिणाम है।

यह स्पष्ट है कि ईश्वरीय वाणी (क़ुरआन मजीद) के अतिरिक्त संसार का कोई भी संकलन, पुस्तक, शास्त्र एवं लेख मानव भूल-चूक से ख़ाली नहीं, हमने पूर्ण प्रयास किया है कि क़ुरआन मजीद के अर्थ को हिन्दी भाषा में विदित करने में कोई त्रुटि अथवा कमी न हो, परन्तु मानव भूल-चूक के आधार पर यदि उसमें कोई दोष या ग़लती रह गई हो तो विद्धानों और पाठक महोदय से निवेदन है कि उससे सूचित करेंगे।

पृष्ठ की अधिकता को देखते हुए इस पूर्ण व्याख्या को हम दो भागों में विभाजित कर रहे हैं। हर भाग पन्द्रह पारों पर आधारित है।

अल्लाह तआला हम सबको अपने पाक एवं पवित्र अध्यादेश की सेवा करने का सौभाग्य दे, हमारी त्रुटियों को क्षमा करे तथा हमें इख़्लास (विशुद्धता) के साथ इस्लाम के शुभ आमान्त्रण को जन साधारण तक पहुँचाने का शौभाग्य प्रदान करे। आमीन

मोहम्मद ताहिर सलफ़ी

रियाद, १७-३-१४२० हिजरी

The Ummah Technology Mission

सूरतुल फ़ातिहा-१

سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ

सूरः *फ़ातिहा*[1] मक्का में अवतरित हुई[2] इस में सात आयतें हैं।[3]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

(१) अल्लाह दयावान करूणामयी के नाम से प्रारम्भ करता हूँ।[4]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ②

(२) सब प्रशंसा[5] अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये है[6]

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ③

(३) बड़ा दयावान अति करूणामयी है[7]

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ④

(४) बदले के दिन (क़यामत) का स्वामी है[8]

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ⑤

(५) हम तेरी ही इबादत (उपासना) करते तथा तुझही से सहायता मांगते हैं[9]

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ⑥

(६) हमें सीधा (सत्य) मार्ग दिखा[10]

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ⑦

(७) उन लोगों का मार्ग जिन पर तूने उपकार किया[11] उनका नहीं जिन पर प्रकोप हुआ तथा न गुमराहों का।[12]

---

(1) सूरः *फ़ातिहा* पवित्र क़ुरआन की प्रथम सूरः है। जिसका हदीसों में बड़ा महत्व है। *फ़ातिहा* का अर्थ आरम्भ है इसलिए इसे الفاتحة *अलफ़ातिहा* अर्थात *फ़ातिहतुल* किताब कहा जाता है इसके अन्य भी अनेक नाम हदीसों से प्रमाणित हैं - जैसे *उम्मुल क़ुरआन, अस्सबउल मसानी, अल क़ुरआनुल अजीम,* अर्रूकिय: الرقية (मंत्र) जैसे एक सहाबी ने एक बिच्छू के डसे हुए को इससे मंत्र किया तो वह स्वस्थ हो गया। नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया तुझे कैसे ज्ञान हुआ कि यह मंत्र है! तथा अन्य नाम हैं। इसका एक महत्वपूर्ण नाम الصلاة *(अस्सलात)* भी है, जैसा कि एक हदीस क़ुदसी में है, अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

The Ummah Technology Mission

«قَسَمْتُ الصَّلَاةَ بَيْنِي وَبَيْنَ عَبْدِي».

मैंने सलात (नमाज़) को अपने तथा अपने बंदे के बीच विभाजित कर दिया है।

(अलहदीस, सहीह मुस्लिम, किताबुस सलात)

अभिप्राय सूरः *फ़ातिहा* है। जिसका आधा भाग अल्लाह की स्तुति - प्रशंसा तथा उसकी दयालुता, पालन-पोषण एवं न्याय तथा राज्य के वर्णन में है। तथा आधे भाग में प्रार्थना, विनय है जो बन्दा अल्लाह से करता है। इस हदीस में सूरः *फ़ातिहा* को "नमाज़" से व्यंजित किया है। जिससे विदित होता है कि नमाज़ में इसका पढ़ना अनिवार्य है। जैसा कि नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के कथनो में इसे भलि-भाँति स्पष्ट कर दिया गया है। फ़रमाया :

«لَا صَلَاةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ».

उस व्यक्ति की नमाज़ नहीं जिसने सूरः फ़ातिहा नहीं पढ़ी।

(सहीह बुखारी-सहीह मुस्लिम)

इस हदीस में مَن (जो व्यक्ति) शब्द साधारण है जो प्रत्येक नमाज़ी को समिलित है। अकेला हो अथवा इमाम के पीछे *मुक्तदी* (अनुयायी) *सिर्री* (धीमें स्वर से) नमाज़ हो अथवा *जहरी* (उच्च स्वर की) नमाज़। अनिवार्य (फर्ज़) नमाज़ हो अथवा नफ्ल (स्वच्छो से) प्रत्येक नमाज़ी के लिये सूरः *फ़ातिहा* पढ़ना अनिवार्य है। इसकी साधारणता का समर्थन उस हदीस से होता है जिसमें आता है कि एक बार फ़ज्र की नमाज़ में कुछ सहाबा भी रसूलल्लाह *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के साथ कुरआन पढ़ते रहे जिसके कारण आप का पढ़ना बोझल हो गया। नमाज़ समाप्त होने पर आपने प्रश्न किया कि तुम भी साथ में पढ़ते रहे हो ? उन्होंने स्वीकार किया, तो आपने फ़रमाया :

«لَا تَفْعَلُوا إِلَّا بِأُمِّ الْقُرْآنِ؛ فَإِنَّهُ لَا صَلٰوةَ لِمَنْ لَّمْ يَقْرَأْ بِهَا».

तुम ऐसा न करो (अर्थात साथ-साथ मत पढ़ा करो) हाँ सूरः *फ़ातिहा* अवश्य पढ़ा करो, क्योंकि उसके पढ़े बिना नमाज़ नहीं होती (अबूदाऊद, नसाई, तिर्मिज़ी)

इस प्रकार अबू हुरैरा ने कहा कि नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया :

«مَنْ صَلَّى صَلٰوةً لَمْ يَقْرَأْ فِيهَا بِأُمِّ الْقُرْآنِ، فَهِيَ خِدَاجٌ - ثَلَاثًا - غَيْرُ تَمَامٍ».

जिसने बिना सूरः फ़ातिहा के नमाज़ पढ़ी वह अधूरी है तीन बार आप ने फ़रमाया।

The Ummah Technology Mission

अबु हुरैरा से कहा गया :

(إِنَّا نَكُوْنُ وَرَآءَ الإِمَامِ).

इमाम के पीछे भी हम नमाज़ पढ़ते हैं,

उस समय हम क्या करें ? अबुहुरैरा ने कहा :

(اِقْرَأْ بِهَا فِيْ نَفْسِكَ).

इमाम के पीछे तुम सूर: फ़ातिहा अपने मन में पढ़ो। (सहीह मुस्लिम)

उपरोक्त दोनों हदीसों से स्पष्ट हुआ कि क़ुरआन मजीद में जो आता है।

﴿وَإِذَا قُرِئَ ٱلْقُرْءَانُ فَٱسْتَمِعُوا۟ لَهُۥ وَأَنصِتُوا۟﴾

जब क़ुरआन पढ़ा जाये तो सुनो तथा चुप रहो,

(अल आराफ़, २०४)

तथा हदीस «وَإِذَا قَرَأَ فَأَنصِتُوا». (यदि सहीह हो) जब इमाम पढ़े तो चुप रहो, का अभिप्राय यह है कि जहरी नमाज़ों में *मुक्तदी* सूर: *फ़ातिहा* के सिवा शेष *किराअत* चुप होकर सुने, इमाम के साथ न पढ़े। अथवा इमाम सूर: *फ़ातिहा* की आयतें रूक-रूक कर पढ़े ताकि *मुक्तदी* भी सहीह हदीसों के अनुसार सूर: *फ़ातिहा* पढ़ ले, अथवा इमाम सूर: *फ़ातिहा* के बाद इतना रूके कि *मुक्तदी* भी सूर: *फ़ातिहा* पढ़ ले। इस प्रकार आयत तथा हदीसों में الحمد لله कोई प्रतिकूलता नहीं रहती, दोनों का पालन हो जाता है, जब की सूर: *फ़ातिहा* से रोकने से यह बात सिद्ध होती है कि क़ुरआन तथा सहीह हदीसों में प्रतिकूलता है । तथा दोनों में से एक ही का पालन हो सकता है एक समय में दोनों का पालन संभव नहीं इस विषय में विवरण के लिये देखिए, *तहकीकुल कलाम*, संकलन मौलाना अब्दुर्रहमान मुबारक पूरी, *तौज़ीहुल कलाम* मौलाना इरशादुल हक़ असरी आदि। तथा देखिये सूर: *आराफ़* आयत न॰ २०४ का भाष्य।

(2) यह सूर: मक्की है। मक्की या मदनी का अभिप्राय है जो सूरतें हिज्रत (१३ *नबूवत*) से पहले अवतरित हुई वह मक्की हैं चाहे उनका अवतरण मक्का में हुआ अथवा उनके आसपास । मदनी वह सूरतें हैं जो हिज्रत के बाद अवतरित हुई चाहे मदीना अथवा उसके सीमावर्ती क्षेत्रों में अवतरित हुई अथवा उनसे दूर। यहाँ तक कि मक्का तथा उसके आसपास ही क्यों न अवतरित हुई हो।

(3) بسم الله के विषय में मतभेद है कि यह प्रत्येक सूर: की आयत है अथवा प्रत्येक सूर: की आयत का अंश अथवा सूर: *फ़ातिहा* की एक आयत है अथवा किसी भी सूर: की स्थाई आयत नहीं है। इसे मात्र प्रत्येक सूर: को अलग करने के लिये सूरतों के आरम्भ में

The Ummah Technology Mission

लिखा जाता है। मक्का तथा कूफ़ा के क़ारियों ने इसे सूर: *फ़ातिहा* सहित प्रत्येक सूर: की आयत माना है। जबकि मदीना, बसरा तथा शाम के क़ारियों ने इसे किसी भी आयत की सूरत नहीं माना है, सिवाय सूर: नमल आयत ३० के, कि इसमें सर्वसम्मति से بسم الله उसका अंश है। इसी प्रकार *जहरी* नमाज़ों में इसके उच्च स्वर में पढ़नें में भी मतभेद है कुछ उच्च स्वर में पढ़नें को मानते हैं तथा कुछ धीमें स्वर में (फ़तहुल कदीर) अधिकतर विद्वानों ने धीमी आवाज़ से पढ़नें को प्रधानता दी है फिर भी उच्च स्वर से पढ़ना भी उचित (जायज़) है।

(4) بسم الله के आरम्भ में اقرأ अथवा ابدأ अथवा اتلو लुप्त है अर्थात अल्लाह के नाम से पढ़ता अथवा आरम्भ करता अथवा पाठ करता हूँ, प्रत्येक महत्वपूर्ण काम के करते समय بسم الله पढ़नें पर बल दिया गया है। इसलिये आदेश दिया गया कि खाने - वद्य, *वज़ू* तथा संभोग से पहले *बिस्मिल्लाह* पढ़ो फिर भी पवित्र क़ुरआन पढ़नें के समय أعوذ بالله من الشيطان الرجيم भी पढ़ना अनिवार्य है।

﴿ فَإِذَا قَرَأْتَ ٱلْقُرْءَانَ فَٱسْتَعِذْ بِٱللَّهِ مِنَ ٱلشَّيْطَٰنِ ٱلرَّجِيمِ ﴾

जब पवित्र क़ुरआन पढ़नें लगो तो धिक्कारे शैतान से अल्लाह की शरण माँगो।

(*अन्नहल*, ९६)

(5) الحمد में ال (*अल*) सर्व अथवा विशेष के अर्थ में है, अर्थात सभी प्रशंसाऐं अल्लाह के लिये हैं अथवा उसके लिये विशेष हैं, क्योंकि प्रशंसा का वास्तव में पात्र तथा योग्य मात्र अल्लाह तआला ही है। किसी में कोई अच्छाई एवं अर्हता है तो वह भी अल्लाह की पैदा की हुई है। अत: स्तुति तथा प्रशंसा का पात्र भी वही है। अल्लाह (الله) यह अल्लाह की वाचक संज्ञा है इस का प्रयोग किसी अन्य के लिये वैध नहीं। الحمد لله (*अलहम्दु लिल्लाहे*) यह कृतज्ञता व्यक्त करनें का शब्द है जिसकी बड़ी प्रधानता हदीसों में आई है, एक हदीस में لا إله إلا الله (*ला ईलाहा इल्लल्लाह*) को सर्वोतम स्मरण तथा الحمد لله (*अलहमदुलिल्लाह*) को सर्वोतम प्रार्थना कहा गया है (त्रिमिज़ी, नसाई आदि) सही मुस्लिम तथा नसाई की हदीस में है। الحمد لله تملأ الميزان - الحمد मीज़ान (तुला) को भर देता है इसीलिए एक हदीस में आता है अल्लाह इसको पसद करता है कि प्रत्येक खाने तथा पीने पर बंदा अल्लाह की हम्द (कृतज्ञता व्यक्त) करे।

(6) رب (*रब्ब,*) अल्लाह के शुभ नामों में से एक नाम है। जिसका अर्थ है प्रत्येक वस्तु को पैदा करके उसकी आवश्यकताओं को सुलभ कराने वाला तथा उसे पूर्ति तक पहुँचाने वाला। इसका प्रयोग बिना संबंध के किसी के लिये वैध (जायज़) नहीं। عالمين *आलमीन* عالم *आलम* (लोक) का बहुबचन है वैसे तो पूरी सृष्टि के संयोग को *आलम* कहा जाता है, इसलिए इसका बहुबचन नहीं लाया जाता, किन्तु उसके पूर्ण पालनहार होनें को प्रकाशित

The Ummah Technology Mission

करने के लिये *आलम* का भी वहुवचन लाया गया है। जिससे अभिप्रेत सृष्टि की अलग-अलग जातियाँ हैं जैसे जिन्न का *आलम*, मानव जाति का *आलम*, फ़रिश्तों का *आलम*, जीव-जन्तु का *आलम*, पक्षियों का आलम आदि। इन सब की आवश्यकताऐं एक-दूसरे से भिन्न हैं किन्तु رب العالمين (समस्त जगत का प्रभु) सबकी आवश्यकताऐं उनकी स्थिति, स्थान, उनकी प्रकृति तथा शरीर के अनुसार उपलब्ध कराता है।

(7) رحمن *(रहमान)* फ़ालान के वजन पर तथा رحيم *(रहीम)* फईल के वजन पर है दोनों अत्युक्ति के रूप हैं। जिनमें अधिकता तथा नित्यता का अर्थ पाया जाता है, अर्थात अल्लाह तआला अति दयानिधि है। उसका यह गुण उसके अन्य शुभगुणों की भाँति नित्य है कुछ विद्वान कहतें हैं कि *रहमान* में *रहीम* की अपेक्षा अधिक अत्युक्ति है इसीलिए رحمن الدنيا والآخرة कहा जाता है। दुनियाँ में उसकी दया सर्वसाधारण के लिये है। जिससे विना विशेषता के काफ़िर तथा मुसलमान सब लाभान्वित हो रहे हैं। तथा परलोक में वह केवल *रहीम* होगा अर्थात उसकी दया मात्र ईमानवालों के लिये विशेष होगी।

(8) दुनिया में भी यद्यपि कर्म दण्ड का क्रम एक सीमा तक प्रचलित रहता है फिर भी इसका पूर्ण अविर्भाव परलोक में होगा तथा अल्लाह तआला प्रत्येक को उसके अच्छे तथा बुरे कर्म का पूरा बदला अथवा दण्ड देगा इसी प्रकार संसार में कई लोगों के पास साधनों के आधीन अधिकार होते हैं परन्तु परलोक में सभी अधिकार का स्वामी मात्र तथा मात्र परमेश्वर (अल्लाह तआला) ही होगा। अल्लाह उस दिन फ़रमायेगा :

لمن الملك اليوم (आज किस का राज्य है?) फिर वही उत्तर देगा। لله الواحد القهار (केवल एक प्रभुत्वशाली अल्लाह के लिये)

﴿ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا ۖ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ ﴾

उस दिन कोई व्यक्ति किसी के लिये अधिकार नहीं रखेगा सारा मामला अल्लाह के हाथों में होगा। (*अल इंफतार*)

(9) इबादत का अर्थ है किसी की प्रसन्नता के लिये अति विनम्रता विवशता तथा विनय का प्रदर्शन, तथा इब्ने कसीर के कथानुसार धर्म में पूर्ण प्रेम, विनम्रता तथा भय के संग्रह का नाम है अर्थात जिसके साथ प्रेम भी हो तथा उसकी शक्ति के आगे लाचारी तथा विवशता का प्रदर्शन भी हो, तथा साधनों अथवा अप्रत्यक्ष साधन के उसकी पकड़ का भय भी हो। सीधा वाक्य نعبدك و نستعينك है (हम तेरी इबादत करते हैं तथा तुझसे सहायता माँगते हैं) परन्तु अल्लाह ने यहाँ दूसरे कारक को क्रिया से पहले करके ﴿ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ﴾ फ़रमाया। उद्देश्य विशेषता पैदा करना है, अर्थात हम तेरी ही इबादत करते तथा तुझही से सहायता चाहते है। न अराधना अल्लाह के सिवा किसी और

The Ummah Technology Mission

की वैध है न सहायता ही किसी से माँगनी जायेज़ (मान्य) है। इन शब्दोसे *शिर्क* का द्वार बन्द कर दिया गया है, परन्तु जिन के दिल में *शिर्क* का रोग घुस गया है वह बिना साधन तथा साधना हानि सहायता चाहने के अंतर की अंदेखी करके जनता को भ्रम में डाल देते हैं तथा कहते हैं देखो हम रोगी होते हैं तो डाक्टर से सहायता लेते हैं, पत्नी से सहायता चाहते हैं, ड्राईवर (चालक) तथा अन्य लोगों से सहायता लेते हैं। इस प्रकार वह यह विश्वास दिलाते हैं कि अल्ल्लाह के सिवा दूसरों से सहायता माँगना वैध है हालांकि साधना हानि एक-दूसरे से सहायता चाहना और करना *शिर्क* नहीं है। यह तो अल्लाह की बनाई व्यस्था है। जिसमें सारे काम प्रत्यक्ष साधनों के अनुकूल ही होते हैं। यहाँ तक की अम्बिया भी इंसानों की सहायता प्राप्त करते हैं, ईशदूत ईसा *(अलैहिस्सलाम)* ने फ़रमाया :

﴿مَنۡ أَنصَارِيٓ إِلَى ٱللَّهِۖ﴾

"अल्लाह के धर्म के लिये कौन मेरा सहायक है" (*अस् सफ्फ*)

तथा अल्लाह ने ईमान वालों से फ़रमाया :

﴿وَتَعَاوَنُواْ عَلَى ٱلۡبِرِّ وَٱلتَّقۡوَىٰۖ﴾

"पुण्य तथा सयंम के कामों पर एक-दूसरे की सहायता करो" (*अल-मायेदा*, २)

प्रत्यक्ष है कि यह परस्पर सहायता न निषेध है, न *शिर्क* बल्कि अभीष्ट एवं प्रशंसीय है। इसका परिभाषित शिर्क से क्या सम्बन्ध ? *शिर्क* तो यह है कि ऐसे व्यक्ति से सहायता माँगी जाये जो ज़ाहिरी साधनों को देखते हुए सहायता नहीं कर सकता जैसे किसी मरे को सहायता के लिये पुकारना उसे दु:ख हारी तथा कार्यक्षम समझना, उसे हानि कर तथा लाभदायक मानना, दूर तथा समीपस्थ प्रत्येक की गुहार सुनने की क्षमता से युक्त स्वीकार करना। इस का नाम है बिना (उपरी) साधनों द्वारा सहायता चाहना, तथा जैसे दैवी गुणों से युक्त मानना, इसी का नाम *शिर्क* है जो अवलिया (धर्मात्माओं) के प्रेम के नाम पर मुसलमान देशों में व्याप्त है। أعاذنا الله منه

The Ummah Technology Mission

तौहीद के तीन भेद

इस अवसर पर उचित लगता है कि तौहीद के तीन भेदों का भी संक्षेप में वर्णन कर दिया जाये। यह भेद हैं (१) *तौहीद रूबूबियत* (२) *तौहीद उलूहियत* (३) *तौहीद अस्मा व सिफात*

१- ***"तौहीद रूबूबियत"*** का अभिप्राय है कि इस विश्व का विधाता, स्वामी, अन्नदाता तथा व्यवस्थापक केवल अल्लाह है। इस *तौहीद* (एकेश्वरवाद) को नास्तिक, अनीश्वर वादियों के सिवा सभी मानते हैं। यहाँ तक कि मिश्रण वादी (मुशरिकीन) भी इसे स्वीकार करते हैं तथा कह रहे हैं, जैसे कि पवित्र क़ुरआन ने बहुदेव वादियों के स्वीकार को ब्यान किया है जैसे फ़रमाया :

﴿ قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ أَمَّن يَمْلِكُ ٱلسَّمْعَ وَٱلْأَبْصَٰرَ وَمَن يُخْرِجُ ٱلْحَىَّ مِنَ ٱلْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ ٱلْمَيِّتَ مِنَ ٱلْحَىِّ وَمَن يُدَبِّرُ ٱلْأَمْرَ ۚ فَسَيَقُولُونَ ٱللَّهُ ۚ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴾

हे (पैग़म्बर) इन से प्रश्न करें कि तुमको आकाश तथा धरती में जीविका कौन प्रदान करता है अथवा (तुम्हारे) कानों तथा आखों का कौन मालिक है तथा निर्जीव से जीव को एवं जीव से निर्जीव को कौन पैदा करता है तथा संसारिक कार्यों की व्यवस्था कौन करता है ? तुरंत कह देंगे कि अल्लाह। (अर्थात इन सब का कर्ता अल्लाह है) (सूरः *यूनुस*, ३१)

अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ ٱللَّهُ ﴾

यदि आप उनसे प्रश्न करेंगे कि आकाश तथा धरती का रचयिता कौन है ?तो अवश्य कहेंगे कि अल्लाह (*अज़् ज़ुमरः*, ३८)

एक और स्थान पर फ़रमाया :

﴿ قُل لِّمَنِ ٱلْأَرْضُ وَمَن فِيهَآ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴾

यदि आप उनसे प्रश्न करें कि धरती तथा धरती में जो कुछ है, यह सब किसका माल है ?

﴿ قُلْ مَن رَّبُّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ ٱلسَّبْعِ وَرَبُّ ٱلْعَرْشِ ٱلْعَظِيمِ ﴾

सातों आकाश तथा महासिंहासन (अर्श) का स्वामी कौन है ?

The Ummah Technology Mission

﴿ قُلْ مَنْ بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴾

प्रत्येक वस्तु का राज्य किसके हाथ में है तथा वह सबको शरण देता है, उसके मुकाबिल कोई शरण देनें वाला नहीं।

﴿ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ فَأَنَّىٰ تُسْحَرُونَ ﴾

उन सबके उत्तर में यही कहेंगे कि अल्लाह अर्थात यह सभी कार्य अल्लाह के हैं (*अल-मूमिनून*, ८४-८९) आदि आयतें।

२- ***"तौहीद उलूहियत"*** का अभिप्राय है कि इबादत की सभी प्रकार के योग्य, मात्र अल्लाह तआला है, तथा इबादत प्रत्येक वह कार्य है जो किसी विशेष व्यक्ति को प्रसन्न करने अथवा उसकी अप्रसन्नता के भय से किया जाये। इसमें नमाज़, रोज़ा (व्रत) हज, ज़कात केवल यही उपासना नहीं अपितु किसी व्यक्ति विशेष से प्रार्थना विनय करना उसके नाम के प्रसाद तथा चढ़ावे चढ़ाना उसके आगे हाँथ बाँधकर खड़ा होना उसकी परिक्रमा करना, उससे आशा, भय रखना आदि भी उपासना है। *तौहीद उलूहियत* यह है कि वह सभी कार्य अल्लाह ही के लिये किये जायें। (परन्तु ऊपरी साधनों के अनुसार जिवित लोगों से लाभ अथवा भय *तौहीद* के विपरीत नहीं है !) क़ब्र की पूजा में तत्पर साधारण तथा विशेष लोग इस *तौहीद उलूहियत* में शिर्क करते हैं तथा उपरोक्त इबादतों की बहुत सी प्रकार वे क़ब्रों में गड़े लोगों तथा मृत धर्मात्माओं के लिये भी करते हैं।

३- ***"तौहीद अस्मा व सिफात"*** का अभिप्राय है कि अल्लाह के जो जो संज्ञा विशेष्य क़ुरआन तथा हदीस में वर्णित हुए हैं उन्हें बिना कष्ट कल्पना तथा हेरफेर के स्वीकार करें, तथा वह गुण उस रूप में किसी में न मानें, जैसे उसका गुण परोक्ष का ज्ञान है अथवा वह दूर एवं समीप से प्रत्येक की गुहार सुनता है। विश्व में प्रत्येक रूप से अधिकार करता है, यह अथवा इस प्रकार की अन्य दैवी गुणों में से किसी भी गुण में अल्लाह के सिवा किसी नबी, वली अथवा किसी भी व्यक्ति को सम्मिलित न करना, यदि ऐसा किया जाये तो यह *शिर्क* होगा।

खेद की बात है कि क़ब्रों के पुजारियों में यह *शिर्क* साधारण है उन्होंने अल्लाह के उपरोक्त गुणों में भी बहुत से बंदों को भी सम्मिलित कर रखा है।

(10) هداية *(हिदायत)* के कई अर्थ हैं। मार्ग दिखाना, मार्ग पर चला देना, लक्ष्य तक पहुँचा देना, इसे अरबी में *इरशाद, तौफीक़, इलहाम* तथा *दलालत* से व्यांजित किया जाता है, अर्थात हमें संमार्ग दर्शा दे। इस पर चलनें की *तौफीक़* दे इस पर अडिग कर दे ताकि हमें तेरी प्रसन्नता प्राप्त हो जाये। यह सीधा मार्ग केवल बुद्धि से प्राप्त नहीं हो सकता। यह सीधा मार्ग वही *"इस्लाम"* है जिसे नबी *सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम* नें दुनियाँ के सामनें प्रस्तुत किया, तथा अब जो क़ुरआन तथा सहीह हदीस में सुरक्षित है।

The Ummah Technology Mission

(11) यह صراط مستقيم (सीधा मार्ग) की व्याख्या है कि सीधा मार्ग वह है जिस पर वह लोग चले जिन पर तेरी अनुकम्पा हुई। यह منعم عليه गरोह है अम्बिया, शहीदों, सिद्दीकों, तथा (महानुभावों) का जैसा कि सूर: निसाअ में है।

﴿وَمَن يُطِعِ ٱللَّهَ وَٱلرَّسُولَ فَأُوْلَٰٓئِكَ مَعَ ٱلَّذِينَ أَنۡعَمَ ٱللَّهُ عَلَيۡهِم مِّنَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ وَٱلصِّدِّيقِينَ وَٱلشُّهَدَآءِ وَٱلصَّٰلِحِينَۚ وَحَسُنَ أُوْلَٰٓئِكَ رَفِيقٗا﴾

तथा जो अल्लाह तथा उसके रसूल की आज्ञा का पालन करते हैं वे (क़यामत के दिन) उन लोगों के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने उपकार किया, अर्थात अम्बिया, सिद्दीकों, शहीदों तथा सदाचारियों के साथ तथा इनकी संगत अति उत्तम है। (*अन्निसाअ*, ६९)

इस आयत में स्पष्ट कर दिया गया कि पुरस्कृत लोगों का यह मार्ग अल्लाह तथा रसूल की आज्ञा पालन का मार्ग है, न कि कोई और मार्ग।

(12) कुछ हदीसों से प्रमाणित है कि مغضوب عليهم (जिन पर अल्लाह का प्रकोप उतरा) से अभिप्राय यहूदी हैं, तथा ضالين (पथभ्रष्ट) से तात्पर्य नसारा (ईसाई) हैं। इब्ने अबू हातिम कहते हैं कि भाष्यकारों में इस में कोई मतभेद नहीं لا أعلم خلافا بين المفسرين فى تفسير المغضوب عليهم باليهود والضالين بالنصارى (फ़तहुल क़दीर) अत: सीधे मार्ग पर अग्रसर रहने वालों के लिए आवश्यक है कि वे यहूदियों तथा ईसाइयों की पथभ्रष्टता से बचकर रहें। यहूद की बड़ी पथभ्रष्टता यह थी कि वे जानबूझ कर सीधे मार्ग पर नहीं चलते थे अल्लाह की आयतों में हेर-फेर तथा छल करने से नहीं बचते थे। आदरणीय उज़ैर को अल्लाह का पुत्र कहा अपने धर्मचारियों तथा विद्वानों को हलाल तथा हराम करने का अधिकारी समझते थे। ईसाइयों का बड़ा दोष यह था कि ईशदूत ईसा ने विषय में अति किया तथा उन्हें अल्लाह का पुत्र, तीन में तीसरा बना दिया। खेद का विषय है कि मुसलमानों में भी यह पथभ्रष्टता व्याप्त है इसी कारण वह संसार में अपमानित तथा निरादर के पात्र हैं। अल्लाह तआला उन्हें पथभ्रष्टता के गढ़्हे से निकाले ताकि निरादर तथा पतन के बढ़ते साये से वह सुरक्षित रह सकें।

सूर: *फ़ातिहा* के अन्त में *आमीन* آمين कहनें पर नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* नें बड़ा बल दिया है तथा उसकी प्रतिष्ठा का वर्णन किया है। अत: इमाम तथा मुक्तदी दोनों को آمين *(आमीन)* कहना चाहिए। नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जहरी* (उच्च स्वर की) नमाज़ों में उच्च स्वर से آمين *(आमीन)* कहा करते थे तथा सहाबा भी यहाँ तक कि मस्जिद गूंज जाती थी। (इब्ने माजा, इब्ने कसीर) इसीलिये उच्च स्वर से آمين *(आमीन)* कहना सुन्नत तथा सहाबा का कर्म रहा है। آمين *(आमीन)* के विभिन्न अर्थ वर्णन किये गये हैं। كذلك فليكن (ऐसा ही हो) لاتخيب رجاءنا हमें विफल न करना हे اللهم استجب لنا अल्लाह हमारी प्रार्थना स्वीकार कर ले।

The Ummah Technology Mission

सूरतुल बक़र:-२

سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ

(सूर: *बक़र:*[1] मदीने में अवतरित हुई इसमें दो सौ छयासी आयतें और चालीस रुकुऊ हैं)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ, जो अत्यंत कृपालु एवं दयालु है।

الٓمّٓ ①

(१) *अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰*[2]।

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ②

(२) इस किताब (के अल्लाह की किताब होने) में कोई सन्देह नही,[3] पवित्र व्यक्तियो को मार्ग दर्शन करने वाली हैं।[4]

---

[1]इस सूर: में आगे चलकर गाय की घटना का वर्णन हुआ है, इसलिए इसे *बकर:*गाय की घटना वाली सूर: (अरबी में "*बक़र:*" गाय को कहते हैं) कहा जाता है। हदीस में इसका विशेष महत्व है यह भी वर्णित किया गया है कि जिस घर में यह पढ़ी जाये उसमें शैतान प्रवेश नहीं करता है। फ़रमाया:

«لَا تَجْعَلُوْا بُيُوتَكُمْ قُبُوْراً؛ فَإِنَّ الْبَيْتَ الَّذِيْ تُقْرَأُ فِيْهِ سُورَةُ الْبَقَرَةِ لَا يَدْخُلُهُ الشَّيْطَانُ».

अवतरण के आधार पर यह मदीने के प्राथमिक समय की सूरतों (सूर: का वहुवचन) में से है, परन्तु इसकी कुछ आयतें *हज्जतुल-विदाअ* (रसूल अल्लाह *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* द्वारा किया गया हज्ज जो आपने अपने जीवन के अन्तिम वर्ष में किया) के समय अवतरित हुई। इस्लाम धर्म के कुछ ज्ञानियों के निकट इसमें एक हजार संदेश, एक हजार नियम और एक हजार मनहियात (निषेधाज्ञ) हैं। (इब्ने कसीर द्वारा सहीह मुस्लिम आदि से उदघृत) (इब्ने कसीर)

[2]इन्हे अरबी में *हरफ़े-मुक्ता* (अलग-अलग अक्षर) कहा जाता है। अर्थात अलग-अलग पढ़े जाने वाले अक्षर। इनके अर्थ के विषय में कोई प्रमाणित कथन नहीं है। परन्तु नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने यह अवश्य फ़रमाया कि मैं नहीं कहता कि الٓمّٓ एक अक्षर है, बल्कि **'अलिफ़'** एक अक्षर **'लाम'** एक अक्षर और **'मीम'** एक अक्षर है और हर अक्षर पर एक नेकी और प्रत्येक नेकी (पुण्य) का फल दस गुना है। (त्रिमज़ी व अल-हाकिम, फ़तहुल क़दीर)

[3.4] देखिये पृष्ठ संख्या 18

The Ummah Technology Mission

الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيمُونَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنفِقُونَ ۝٣

(३) जो लोग *ग़ैब* (परलोक) पर ईमान लाते हैं।[1] और नमाज़ को स्थापित करते है[2] एवं हमारे द्वारा प्रदान किये हुए (माल) में से खर्च करते हैं।[3]

पृष्ठ सख्या 17 का शेष

[3] इसका उद्गम स्थल अल्लाह के द्वारा होने में किसी प्रकार का सन्देह नहीं है। जैसा कि अन्य स्थान पर क़ुरआन में है ﴿تَنزِيلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِن رَّبِّ الْعٰلَمِينَ﴾ (अलिफ लाम मीम सजदः) कुछ आलिमों (इस्लाम धर्म के ज्ञानी गुरुओं) ने कहा है कि यह सन्देश नकारात्मक है (इसमें सन्देह न करो) इसके अतिरिक्त जो घटनाएं वर्णित की गयी हैं, उनकी सत्यापन में, जो नियम व सिद्धान्त वर्णन किए गए हैं, उनसे मानवता की सफलता व मोक्ष सम्बन्धित होने में और जिन सिद्धान्त (*तौहीद*, व *रिसालत* और परलोक के विषय में) का वर्णन किया गया है, उनके सत्य होने में कोई सन्देह नहीं -

[4] वैसे तो यह पवित्र ईश पुस्तक अखिल मानव जाति के लिए शुभ सन्देश एवं मार्ग दर्शन करने के लिए ही अवतरित हुई है। परन्तु इस पवित्र स्रोत से वही लोग लाभान्वित होते हैं जो इस अमृत के खोजी और अल्लाह के डर से परिपूर्ण होंगे जिसके हृदय में मरणोपरान्त अल्लाह के समक्ष उपस्थित होकर अपने कर्मों के उत्तरदायित्व का विश्वास, और इसकी केवल चिन्ता ही नहीं, उसके अन्दर सत्यमार्ग की खोज एवं पथभ्रष्टता से बचने का प्रयास नहीं होगा, तो उसे सन्मार्ग कहाँ से और क्यों कर प्राप्त होसकेगा।

[1] *ग़ैब* का अर्थ वे चीज़ें हैं जिनका हल मस्तिष्क एवं बुद्धी द्वारा नहीं। जैसे अल्लाह तआला का होना, *वहय* (प्रकाशनायें) *इलाही*, स्वर्ग, नरक, *मलायेका* (*फरिश्ते*,ईशदूत), कब्र की यातना *हश्र* का होना आदि। इससे उदित हुआ कि अल्लाह और रसूल की बतायी हुई सूचनाओं पर बुद्धी, आभास के अतिरिक्त पर विश्वास करना ईमान का भाग है और इनका इंकार *कुफ़्र* व गुमराही है।

[2] नमाज़ स्थापित करने का भावार्थ है कि नियमित रुप से *सुन्नत-ए-नबवी* के अनुसार नमाज़ पढ़ना, वरन् नमाज़ तो मुनाफ़िक (जो ऊपर से मुसलमान अन्दर से कुछ और) भी पढ़ते थे।

[3] انفاق का शब्द प्रमुख रूप से दान के लिए प्रयोग होता है जो *वाजिब* (आवश्यक) और *नफ़िल* (ऐच्छिक) दोनों प्रकार के दान के लिए होता है। ईमानवाले लोग अपनी शक्ति के अनुसार दोनों प्रकार के दान देने में देर नहीं करते, बल्कि माता-पिता और सन्तान एवं परिवार पर उचित रुप से व्यय करना भी इसमें सम्मिलित है, और यह पुण्य और फल प्राप्ति का कारण बनता है।

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝٤

(४) और जो लोग ईमान लाते हैं उस पर जो आपकी ओर उतारा गया और जो आपसे पहले उतारा गया ।[1] और वह आख़िरत पर भी विश्वास रखते हैं ।

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٥

(५) यही लोग अपने प्रभु की ओर से सत्य मार्ग पर हैं और यही लोग सफलता एवं मोक्ष प्राप्त करने वाले हैं ।[2]

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٦

(६) काफ़िरों को आपका डराना या न डराना समान है, यह लोग ईमान न लायेंगे ।[3]

---

[1]पिछली किताबों पर ईमान लाने का अर्थ यह है कि जो किताबें *नबियों* पर अवतरित हुईं, वे सभी सच्ची हैं, यद्यपि अब उनके अनुसार कर्म नहीं किया जा सकता, अब कर्म केवल क़ुरआन और नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की व्याख्या, एवं हदीस के अनुसार ही किया जाएगा । इससे यह भी विदित हुआ कि *वहय* एवं *रिसालत* की श्रृंखला मोहम्मद *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* पर समाप्त हो गयी, वरन् इस पर भी ईमान लाने का वर्णन अल्लाह तआला अवश्य करता ।

[2]यह उन ईमानवालों के फल प्राप्त होने का वर्णन है, जो ईमान लाने के उपरान्त *तक़वा* (दिल से अल्लाह का डर), कर्म एवं शुद्ध विश्वास का प्रायोजन करते हैं । मात्र जीभ से ईमान की घोषणा को उपयुक्त नहीं मानते । सफलता का तात्पर्य *आख़िरत* में अल्लाह को ख़ुश करना और उसकी दया एवं मोक्ष (*मग़फिरत*) की प्राप्ति है । इसके साथ धरती पर भी प्रसन्नता एवं मान-सम्मान एवं सफलता प्राप्त हो जाए, तो *सुब्हान अल्लाह,* वरन् सच्ची सफलता तो आख़िरत की सफलता है ।

इसके बाद अल्लाह दूसरे गुट का वर्णन कर रहा है, जो मात्र काफ़िर ही नहीं, अपितु उसका *कुफ़्र* एवं अहंकार इस सीमा तक पहुँचा हुआ है, जिसके बाद उससे परोपकार एवं इस्लाम को स्वीकार करने की कामना ही नहीं ।

[3]नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की तीव्र इच्छा थी कि सभी लोग मुस्लमान हो जायें, और उसी के अनुसार आप प्रयत्न करते, परन्तु अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि ईमान उनके भाग्य में ही नही है । यह वह कुछ प्रमुख लोग हैं, जिनके दिलों पर ठप्पा लग चुका था । (जैसे अबु जहल और अबु लहब आदि) वरन् आपके आमंत्रण एवं निर्देश से

The Ummah Technology Mission

خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ؕ وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۖ وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۞

(७) अल्लाह तआला ने उनके हृदय एवं कानों पर ठप्पा लगा दिया है और उनकी आँखों पर पर्दा है, और उनके लिए बड़ा प्रकोप है।[1]

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

(८) और लोगों में से कुछ कहते हैं, हम अल्लाह (परमेश्वर) पर एवं अन्तिम दिन पर

अनगिनत लोग मुस्लमान हुए, यहाँ तक की पूरा अरब क्षेत्र इस्लाम की छत्र-छाया में आ गया।

[1]यह उनके ईमान न लाने का कारण बताया गया है कि चूँकि कुफ़्र एवं पाप के लगातार करने के कारण उनके दिलों से सत्य को स्वीकार करनें की शक्ति समाप्त हो चुकी है। उनके कान सत्य सुनने को तैयार नहीं और उनकी आँखें सृष्टि में फैली हुई प्रभु की निशानियों को देखने योग्य नहीं हैं, तो वह ईमान किस प्रकार ला सकते हैं? ईमान तो उनके भाग में आता है, जो अल्लाह तआला द्वारा प्रदान की गयी शक्तियों का उचित प्रयोग करते हैं, एवं उनके द्वारा सफलता प्राप्त करते हैं। इसके विपरीत लोग, तो उस हदीस का उदाहरण बनते हैं, जिसमें वर्णित किया गया है कि, "मोमिन जब पाप कर बैठता है, तो उसके हृदय पटल पर छोटा सा काला बिन्दु पड़ जाता है। यदि वह पाप से क्षमा माँगकर पाप नहीं करता है, तो उसका हृदय पहले की भाँति श्वेत एव उज्जवल हो जाता है, और यदि वह पाप पर पाप किये जाता है तो वह काला बिन्दु फैलकर सारे हृदय पटल पर छा जाता है।" नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया "यही वह मुर्चा है जिसे अल्लाह तआला ने वर्णित किया है।

﴿ كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴾ [المطففين: ١٤]

"अर्थात उनके कर्मों के कारण उनके दिलों पर मुर्चा चढ़ गया है।"

(अल-मुतफ़्फ़ेफ़ीन-१४) (तबरी व फ़तहुल क़दीर)

इस स्थिति को क़ुरआन ने ختم (ठप्पा लग जाने) से तुलना की है, जो उनके लगातार कुकर्मों के करने का तर्क पूर्ण परिणाम है।

The Ummah Technology Mission

وَمَا هُم بِمُؤْمِنِينَ ﴿٨﴾

ईमान लाये हैं, परन्तु वास्तव में वे ईमान वाले नहीं हैं।[1]

يُخَٰدِعُونَ ٱللَّهَ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ۚ وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّآ أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٩﴾

(९) वह अल्लाह को और ईमान लाने वालों को धोखा दे रहे हैं, परन्तु वास्तव में वह स्वयं अपने आपको धोखा दे रहे हैं, और उनको ज्ञान नहीं है।

فِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ ۖ فَزَادَهُمُ ٱللَّهُ مَرَضًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌۢ بِمَا كَانُواْ يَكْذِبُونَ ﴿١٠﴾

(१०) उनके दिलों में रोग है, अल्लाह ने उनके रोग को और बढ़ा दिया[2] और उनके झूठ बोलने के कारण उनके लिए दुखदायी यातनाएं हैं।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُواْ فِى ٱلْأَرْضِ ۙ قَالُوٓاْ إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ﴿١١﴾

(११) और जब उनसे कहा जाता है कि धरती पर बिगाड़ मत उत्पन्न करो, तो उत्तर देते हैं कि हम तो मात्र सुधारक हैं।

أَلَآ إِنَّهُمْ هُمُ ٱلْمُفْسِدُونَ وَلَٰكِن لَّا يَشْعُرُونَ ﴿١٢﴾

(१२) सावधान ! वास्तव में यही लोग बिगाड़ उत्पन्न करने वाले हैं,[3] परन्तु ज्ञान नहीं रखते।

---

[1]यहाँ से तीसरे गुट मुनाफिकों का वर्णन आरंभ होता है, जिनके दिल ईमान से शून्य थे परन्तु ईमानवालों को धोखा देने के लिए मुख से ईमान का प्रदर्शन करते थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि वह न तो अल्लाह को धोखा देने में सफल हो सकते हैं (क्योंकि वह सब कुछ जानता है) और न मुसलमानों को सदैव धोखा दे सकते हैं, क्योंकि अल्लाह तआला *वहय* (प्रकाशना) के द्वारा उनके छल-कपट की सूचना मुसलमानों को देता था। इस प्रकार उनके छल-कपट की पूर्ण हानि उन्हीं को उठानी पड़ी, इस तरह उन्होंने अपना परलोक तो बरबाद किया और धरती पर भी अपमानित हुए।

[2]रोग से तात्पर्य वही *कुफ़्र* एवं बिगाड़ का रोग है, जिसके सुधार का प्रयत्न न किया जाए तो बढता ही जाता है। इसी प्रकार झूठ बोलना *मुनाफ़िकों* की निशानी में से है, जिससे बचाव आवश्यक है।

[3]बिगाड़, सुधार का विलोम है। *कुफ़्र* और पाप से धरती पर बिगाड़ फैलता है और अल्लाह की आज्ञा के पालन से शांति प्राप्त होती है। हर युग के *मुनाफ़िकों* का यही कार्य

The Ummah Technology Mission

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ السُّفَهَاءُ ۗ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَٰكِن لَّا يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾

(१३) और जब उनसे कहा जाता है कि अन्य लोगों (अर्थात सहाबा) की तरह तुम भी ईमान लाओ, तो उत्तर देते हैं कि क्या हम ऐसा ईमान लायें जैसा मूर्ख लाये हैं।[1] सावधान ! वास्तव में यही मूर्ख हैं, परन्तु यह नहीं जानते।[2]

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا ۖ وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شَيَاطِينِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِئُونَ ﴿١٤﴾

(१४) और जब ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम भी ईमानवाले हैं, और जब एकान्त में अपने बड़ों (शैतान कृत्य लोग) के पास जाते हैं।[3] तो कहते हैं कि हम तो

रहा है कि, पाप का प्रचार वे करते हैं और प्रभु की शक्ति की सीमा को समाप्त करते हैं और समझते अथवा दावा यह करते हैं कि वह सुधार एवं उन्नति के लिए प्रयत्न कर रहे हैं।

[1]इन *मुनाफ़िकों* ने उन सहाबा (رضی اللہ عنہم) को मूर्ख कहा, जो अल्लाह की राह में तन-मन-धन किसी प्रकार के बलिदान से पीछे नहीं हटे और आजकल के मुनाफ़िक यह सिद्ध करते हैं कि نعوذ باللہ सहाबा किराम (رضی اللہ عنہم) ईमान की दौलत से शून्य थे। अल्लाह तआला ने प्राचीन एवं आधुनिक दोंनो प्रकार के *मुनाफ़िको* का खण्डन किया है। फ़रमाया : किसी महान लक्ष्य के लिए सांसारिक लाभ का बलिदान देना मूर्खता नहीं, पूर्ण बुद्धिमत्ता तथा फलदायक है। सहाबा (رضی اللہ عنہم) ने इसी बुद्धिमत्ता का परिचय दिया इसलिए वे मात्र पक्के *मोमिन* ही नहीं अपितु ईमान के लिए एक माप एवं कसौटी है, अब ईमान उन्हीं का उचित होगा, जो सहाबा किराम (رضی اللہ عنہم) की तरह ईमान लायेंगे।

﴿فَإِنْ آمَنُوا بِمِثْلِ مَا آمَنتُم بِهِ فَقَدِ اهْتَدَوا﴾ (अल-बक़र:-१३७)

[2]स्पष्ट बात है कि अस्थाई लाभ के लिए स्थाई लाभ को ठुकराना और *आख़िरत* के स्थाई जीवन के आपेक्ष सांसारिक क्षणिक जीवन को महत्व देना और अल्लाह के अतिरिक्त मनुष्य से भय खाना अतिमूर्खता है, जिसको इन *मुनाफ़िको* ने किया। इस प्रकार वे एक पूर्ण सत्य से अज्ञान रहे।

[3]शैतानों से तात्पर्य कुरैश और यहूदी नेतागण हैं, जिनके निर्देश पर वे इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध चाल चलते थे। अथवा *मुनाफ़िकों* के अपने नेता।

The Ummah Technology Mission

तुम्हारे साथ हैं, हम तो केवल उनसे परिहास करते हैं।

اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٥﴾

(१५) अल्लाह तआला भी उनसे परिहास करता है।[1] और उनको धूर्तता एवं बहकावे में और बढ़ा देता है।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٦﴾

(१६) यह वे लोग हैं जिन्होंने पथ भ्रष्टता को मार्ग दर्शन के बदले में क्रय कर लिया है। परन्तु इनका व्यापार[2] न लाभकारी हुआ, न वह समार्ग प्राप्त कर सके।

---

[1] "अल्लाह तआला भी उनसे परिहास करता है।" इसका एक अर्थ तो यह है कि जिस प्रकार वे मुसलमानों के साथ परिहास और अनादर का मामला करते हैं, अल्लाह तआला भी उनसे ऐसा ही मामला करते हुए उन्हें अपमानित करता है। इसको परिहास से सबोधित करना भाषा का नियम है, वरन् यह वास्तव में परिहास नहीं है, उनके परिहासिक कर्मों का दण्ड है। जैसे

﴿وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا﴾ [الشورى: ٤٠]

"बुराई का बदला उसी के समान बुराई है।"

(अश-शूरा)

इसमें बुराई के बदले को बुराई कहा गया है। यद्यपि वह बुराई नहीं है। एक उचित कर्म है। इसी प्रकार ﴿وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ﴾ ﴿يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ﴾ आदि आयतों में है। दूसरा अर्थ है कि प्रलय के दिन अल्लाह तआला भी उनसे परिहास करेगा। जैसा कि सूर: हदीद की आयत ﴿يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ﴾ में वर्णन है।

[2] इस आयत में व्यापार का तात्पर्य सत्य मार्ग को छोड़कर पथ भ्रष्टता में पड़ जाना है जो स्पष्ट हानि का सौदा है। *मुनाफ़िको* ने *निफ़ाक़* का रूप धारण कर यही घाटे वाला व्यापार किया-परन्तु यह घाटा प्रलय का घाटा है। यह निश्चित नहीं कि दुनियाँ में उन्हें इस घाटे का ज्ञान हो जाये अपितु दुनियाँ में तो उन्हें इस निफ़ाक़ द्वारा जो लाभ प्राप्त होता था उस पर वे बड़े प्रसन्न होते थे तथा इसी कारण वे स्वय को बुद्धिमान और मुसलमानों को मूर्ख समझते थे।

The Ummah Technology Mission

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا ۖ فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمَاتٍ لَّا يُبْصِرُونَ ﴿١٧﴾

(१७) इन लोगों का उदाहरण उस व्यक्ति जैसा है जिसने आग जलाई परन्तु जब आग ने उसके आस-पास को प्रकाशमान कर दिया, तो अल्लाह ने उनका प्रकाश छीन लिया और उन्हें अन्धकार में छोड़ दिया, जो नहीं देखते।[1]

صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿١٨﴾

(१८) ये बधिर-मूक एवं अन्धे हैं, अब ये लौटने वाले नहीं हैं।

أَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمَاتٌ وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ ۚ يَجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِم مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ۚ وَاللَّهُ مُحِيطٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾

(१९) अथवा आकाश की वर्षा की तरह, जिसमें अंधकार, गरज और बिजली हो। बिजली की गरज के कारण मौत से डरकर वे कानों में उंगलियाँ डाल लेते हैं, और अल्लाह तआला काफ़िरों को घेरने वाला है।

يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ أَبْصَارَهُمْ ۖ كُلَّمَا أَضَاءَ لَهُم مَّشَوْا فِيهِ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ۚ

(२०) लगता है कि बिजली उनकी आँखें झपट लेगी, जब उनके लिए प्रकाश करती है तो चलते हैं तथा जब अंधेरा करती है तो खड़े हो जाते हैं[2] और यदि अल्लाह चाहे तो

---

[1] माननीय अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ और अन्य सहाबा ने इसका अर्थ यह बताया है कि *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* जब मदीना आए, तो कुछ लोग मुसलमान हो गए लेकिन फिर शीघ्र ही *मुनाफ़िक़* हो गए। उनका उदाहरण उस व्यक्ति की तरह है जो अंधकार में था, उसने प्रकाश के लिए आग जलाई जिससे वातावरण प्रकाशमान हो गया और लाभकारी एवं हानिकारक वस्तुएं उसको स्पष्ट हो गयीं, सहसा वह प्रकाश समाप्त हो गया और वह पूर्व की अंधकारमय स्थिति में घिर गया। यही हाल मुनाफ़िकों का था। वे पहले शिर्क के अंधकार में थे, मुसलमान हुए, तो प्रकाश में आ गये। वैध-अवैध और लाभ-हानि को पहचान गए, फिर पुन: वह कुफ़्र और बिगाड़ की ओर पलट गये तो सारा प्रकाश समाप्त हो गया। (फ़तहुल क़दीर)

[2] यह मुनाफ़िकों के एक दूसरे गुट का वर्णन है। जिस पर सत्य कभी स्पष्ट हो जाता है और कभी वे असमंजस्य एवं सन्देह में पड़ जाते हैं। उनके दिल सन्देह और असमंजस्य में उस वर्षा के समान है, जो अंधकार (सन्देह, कुफ़्र, बिगाड़) में उतरती है, गरज-चमक

The Ummah Technology Mission

إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾

उनके कानों एवं आँखों को छीन ले,[1] वस्तुत: अल्लाह सर्व शक्तिमान है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٢١﴾

(२१) हे मानव ! अपने उस पालनहार की उपासना करो जिसने तुमको तथा तुमसे पूर्व लोगों को पैदा किया ताकि तुम सदाचारी हो जाओ।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۖ فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٢﴾

(२२) जिसने तुम्हारे लिए धरती को बिछावन तथा आकाश को छत बनाया, और आकाश से वर्षा की तथा उससे फल पैदा करके तुम्हें जीविका प्रदान की, अत: यह जानते हुए किसी को अल्लाह का समवर्ती न बनाओ।[2]

से उनके दिल काँपने लगते हैं, यहाँ तक की डर से अपनी उंगलियाँ अपने कानों में डाल लेते हैं। परन्तु यह प्रयास उन्हें अल्लाह की पकड़ से बचा नहीं सकेंगे, क्योंकि वे अल्लाह के घेरे से नहीं निकल सकते। कभी सत्य की किरणों को देखकर सत्य की ओर झुक जाते हैं, लेकिन जब इस्लाम तथा मुसलमानों पर कठिनाई का समय आता है तो स्तब्ध खड़े हो जाते हैं। (इब्ने कसीर) *मुनाफ़िक़ों* का यह गुट अन्तिम समय तक असमंजस्य और टालमटोल का शिकार होकर सत्य (*इस्लाम*) से हट जाता है।

[1]इसमें इस बात की सतर्कता की ओर संकेत है कि यदि अल्लाह तआला चाहे तो अपनी प्रदान की हुई शक्ति को छीन ले। इसलिए मनुष्यों को अल्लाह तआला आज्ञापालन से अलग एवं उसके प्रकोप एवं न्याय से कभी भी निडर नहीं होना चाहिए।

[2]सत्यमार्ग एवं पथभ्रष्टता के अनुसार मनुष्य के तीन गुटों के वर्णन के पश्चात अल्लाह तआला का एक होने और उसकी उपासना *(इबादत)* का निमन्त्रण सभी लोगों को दिया जा रहा है। फ़रमाया, जब तुम्हारा और तुम्हारी सृष्टि का सृष्टा अल्लाह है। तुम्हारी सभी आवश्यकताओं को पूरा करने वाला वही है, तो फिर तुम उसे छोड़कर दूसरों की *इबादत* क्यों करते हो ? दूसरों को उसके समवर्ती क्यों ठहराते हो ? यदि तुम अल्लाह की यातना से बचना चाहते हो तो उसका एक ही मार्ग है, कि अल्लाह को एक मानो और मात्र उसकी ही *इबादत* करो। किसी दूसरे को उसका समवर्ती करने का कर्म न करो।

The Ummah Technology Mission

وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّن مِّثْلِهِ ۖ وَادْعُوا شُهَدَاءَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٣﴾

(२३) और यदि तुम्हें उसमें संदेह हो जिसे हमने अपने भक्त पर अवतरित किया है, तथा तुम सत्यवादि होतोइसी जैसी एक सूर: बना लाओ। तुम्हें छूट है कि अल्लाह के सिवाय अपने सहयोगियों को भी बुला लो।[1]

فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا وَلَن تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۖ أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ﴿٢٤﴾

(२४) फिर यदि तुमने नहीं किया और तुम कदापि नहीं कर सकते,[2] तो (उसे सत्य स्वीकार कर) उस अग्नि से डरो, जिसका इंधन मनुष्य और पत्थर हैं।[3] जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है।[4]

---

[1] *तौहीद* (अल्लाह को एक मानना) के उपरान्त अब *रिसालत* (ईशदूत) के विषय में बताया जा रहा है, हमने अपने बन्दे पर जो किताब उतारी उसका अल्लाह की ओर से अवतरित होने में तुम्हें यदि सन्देह है तो तुम अपने सभी सहायता करने वालों को मिलाकर इस जैसी एक सूर: ही बनाकर दिखाओ और यदि तुम ऐसा नही कर सकते तो तुम्हें समझ लेना चाहिए कि वास्तव में यह कथन किसी मनुष्य की उत्पत्ति नहीं है बल्कि अल्लाह का ही कथन है। और हम पर और मोहम्मद *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की रिसालत पर ईमान लाकर नरक की अग्नि से बचने का प्रयत्न करो। नरक की अग्नि जो काफ़िरों के लिए ही तैयार की गई है।

[2] यह *क़ुरआन करीम* की सत्यता का एक स्पष्ट प्रमाण हे कि अरब व अन्य क्षेत्र के सभी काफ़िरों को ललकारा गया, परन्तु वह आज तक इसका उत्तर नही दे सके और अवश्य प्रलय आने तक ऐसा नहीं कर सकेंगे।

[3] इब्ने अब्बास (رضی اللہ عنہما) के अनुसार पत्थर का तात्पर्य गन्धक के पत्थर हैं, और कुछ ज्ञानियों के अनुसार पत्थर के वे देवता (मूर्तियाँ) भी नरक के ईंधन होंगे, जिनकी ससार में लोग पूजा करते रहे होंगे। (पवित्र) क़ुरआन में भी है।

﴿ إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ﴾ [الأنبياء: ٩٨]

"तुम और जिनकी तुम पूजा करते हो, नरक के ईंधन होंगे।"

(अल-अम्बिया-९८)

[4] इससे एक बात तो यह मालूम हुई कि नरक वास्तव में काफ़िरों एवं *मुशरिकों* के लिए बनायी गयी है और दूसरी बात यह मालूम हुई कि स्वर्ग एवं नरक का अस्तित्व है, जो

The Ummah Technology Mission

وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ

(२५) और ईमानवालों और सत्य कर्म करने वालों को,[1] उन स्वर्गों की शुभ सूचना दो जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जब उन्हें उनसे फल खाने के लिए दिए जाएंगे तो कहेंगे कि इससे पूर्व हमें खाने को यही दिया गया, वह समारुपी फल होंगे।[2] तथा उनके

इस समय भी प्रमाणित है। यही *सलफ़-ए-उम्मत* (इस्लाम के मार्ग पर पूर्ण रुप से चलने वाले) का भी विश्वास है। यह उपमा मात्र नही है, जैसा कि आधुनिक युग के कुछ अवज्ञाकरी एवं तर्कशास्त्री हदीस बताते हैं।

[1] पवित्र क़ुरआन में हर स्थान पर ईमान के साथ सत्यकर्म का वर्णन करके इस बात को स्पष्ट कर दिया गया है कि ईमान और सत्कर्म का चोली-दामन का साथ है। सत्कर्म के बिना ईमान का कोई लाभ नही और ईमान के बिना सत्कर्म का अल्लाह के पास कोई मूल्य नही। और सत्कर्म क्या है ? जो *सुन्नत* के अनुसार हो और शुद्ध रुप से अल्लाह की प्रसन्नता के लिए किया जाए। *सुन्नत* के विपरीत कर्म भी अस्वीकार है और दिखावे और आडम्बर के लिए किये गये कार्य भी व्यर्थ एवं निष्फल है।

[2] "متشابها" का अर्थ या तो स्वर्ग के सभी फलों का रुप एक जैसा होना है अथवा दुनिया के फलों के रुप का होना है। परन्तु यह समानता केवल रुप एवं नाम की सीमा तक ही होगी, वरन् स्वर्ग के फलों के स्वाद से सांसारिक फलों का कोई सम्बन्ध ही नही है। स्वर्ग के सुखों के विषय में हदीस में है

«مَا لَا عَيْنٌ رَأَتْ، وَلَا أُذُنٌ سَمِعَتْ، وَلَا خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ».

"न किसी आँख ने उन्हें देखा, न किसी कान ने उनके विषय में सुना, देखना और सुनना तो दूर की बात किसी मनुष्य के दिल में इसका विचार भी नही आया होगा।"

(सहीह बुखारी, तफ़सीर सूर: अस सजद:)

The Ummah Technology Mission

مُّطَهَّرَةٌ ۖ وَهُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٢٥﴾

लिए उसमें पवित्र पत्नियाँ होंगी[1] और वे उसमें सदैव रहेंगे।[2]

إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَسْتَحْىِۦٓ أَن يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوضَةً فَمَا فَوْقَهَا ۚ فَأَمَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ ٱلْحَقُّ مِن رَّبِّهِمْ ۖ وَأَمَّا ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ فَيَقُولُونَ مَاذَآ أَرَادَ ٱللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهِۦ كَثِيرًا وَيَهْدِى بِهِۦ كَثِيرًا ۚ وَمَا يُضِلُّ بِهِۦٓ إِلَّا ٱلْفَٰسِقِينَ ﴿٢٦﴾

(२६) वास्तव में अल्लाह तआला किसी उपमा का वर्णन करने से लज्जित नहीं होता, चाहे वह मच्छर की हो या उससे भी तुच्छ चीज की।[3] ईमानवाले उसे अपने प्रभु की ओर से सत्य समझते हैं और काफ़िर कहते हैं कि ऐसी उपमा देने से अल्लाह का अभिप्राय क्या है? इसी के साथ अधिकतर को पथभ्रष्ट करता है और प्राय: लोगों को सत्य मार्ग पर

---

[1] अर्थात मासिक धर्म व मल-मूत्र और अन्य प्रकार की अपवित्रता से शुद्ध होंगी।

[2] خلود का अर्थ सदैव है। स्वर्गवासी सदैव ही स्वर्ग में रहेंगे और प्रसन्न रहेंगे। और नरकवासी सदैव नरक में ही रहेंगे और यातना सहन करते रहेंगे। स्वर्ग और नरक में जाने के उपरान्त एक फ़रिश्ता पुकार करेगा,

«يا أَهْلَ النَّارِ لا موت، ويا أَهْلَ الجَنَّةِ لا مَوتَ، خُلُودٌ»

"ऐ, नरकवासियों! अब मृत्यु नही है और ऐ स्वर्गवासियों अब मृत्यु नही है। जो लोग जिस स्थिति में हैं उसी स्थिति में सदैव रहेंगे।" (बुख़ारी,अर-रक़ाक़) (मुस्लिम किताब अल-जन्ना)

[3] जब अल्लाह तआला ने तर्कपूर्ण प्रमाणों से *क़ुरआन* को चमत्कार सिद्ध कर दिया तो काफ़िरों ने एक दूसरे प्रकार से प्रतिवाद कर दिया। वह यह कि यदि यह कथन प्रभु का होता तो इतनी महान शक्ति के अवतरित कथन में तुच्छ चीज़ों का उदाहरण अथवा उपमायें न होतीं। अल्लाह तआला ने इसके उत्तर में फ़रमाया कि बात की पुष्टि और किसी तर्क को सिद्ध करने के लिए उपमाओं का वर्णन करने में कोई अनुपयोगिता नहीं, इसमें कोई लज्जा और पर्दे की भी आवश्यकता नहीं فوقها जो मच्छर के ऊपर हो अर्थात उसके पंख अथवा बाज़ू, तात्पर्य मच्छर से भी तुच्छ चीज़। अथवा فوق का अर्थ 'उससे बढ़कर' भी हो सकता है। इस स्थिति में अर्थ "मच्छर अथवा उससे बढ़कर किसी वस्तु" होगा। शब्द فوقها में दोनों अर्थों को स्थान प्राप्त है।

The Ummah Technology Mission

लाता है ।[1] और पथभ्रष्ट वह केवल अवज्ञाकारियों (*फ़ासिक़ो*) को ही करता है ।

الَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِن بَعْدِ مِيثَاقِهِ ۠ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٢٧﴾

(२७) जो लोग अल्लाह तआला के साथ की गयी सुदृढ़ प्रतिज्ञा[2] को तोड़ देते हैं । और अल्लाह तआला ने जिन चीज़ों को जोड़ने का आदेश दिया है, उसे काटते हैं । और धरती

---

[1]अल्लाह के वर्णन द्वारा उदाहरणों से ईमानवालों के ईमान में बढ़ोतरी होती है और काफ़िरों के कुफ़्र में बढ़ोतरी होती है । और यह सब अल्लाह के आज्ञा और निर्देश एवं नियमों के अन्दर ही होता । जिसे क़ुरआन ने

﴿ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ ﴾

"जिस ओर कोई फिरता है, हम उसी ओर उसको फेर देते हैं ।"

(*अन-निसा*-११५)

और हदीस में . «كُلٌّ مُيَسَّرٌ لِمَا خُلِقَ لَهُ» (सहीह बुखारी व्याख्या सूर: *अल-लैल*) से तुलना की गयी है । फ़िस्क़ (अवज्ञाकारिता) अल्लाह के अनुकरण से निष्कासित होने को कहते हैं । जो अस्थाई एक सामायिक स्थितियों के कारण एवं ईमान वाले से भी हो सकता है । परन्तु इस आयत में अवज्ञाकरिता का तात्पर्य अनुकरण से पूर्णरुपण निष्कासित अर्थात कुफ़्र लिया गया है । जैसा कि अगली आयत में स्पष्ट रुप से है कि इसमें ईमान वालों के सापेक्ष काफ़िरों वाली विशेषताओं का वर्णन है ।

[2]टीकाकरों ने عهد के विभिन्न भावार्थ वर्णित किये हैं । उदाहरणत: १- अल्लाह का वह निर्देश जो उसने अपने नियमों को पूरा करने और उनको नकारने से *अंबिया अलैहिस्सलाम* के द्वारा मनुष्यों तक पहुँचाए । २- वह प्रतिज्ञा जो पूर्व अवतरित किताबों पर विश्वास रखने वालों से "*तौरात*" में ली गई कि संसार के लिए अन्तिम नबी के आ जाने के उपरान्त तुम्हारे लिए उनका समर्थन करना और उनकी *नबूवत* पर ईमान लाना आवश्यक है । ३- वह "अलस्त" की प्रतिज्ञा जो आदम के शरीर से निकालने के बाद आदम के परिवार वालों से ली गयी, जिसका वर्णन क़ुरआन मजीद में किया गया ।

﴿ وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِن بَنِي آدَمَ مِن ظُهُورِهِمْ ﴾ (अल-आराफ़-१७२)

प्रतिज्ञा तोड़ने का अर्थ प्रतिज्ञा की अवहेलना करना है (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

पर आतंक फैलाते हैं। यही लोग हानि उठाने वाले हैं।[1]

كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنْتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ۖ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٨﴾

(२८) तुम अल्लाह को कैसे नहीं मानते, तुम निर्जीव थे तो उसने तुम्हें जीवन दिया, पुन: तुम्हें मृत्यु देगा, फिर पुर्नजीवित करेगा,[2] फिर तुमको उसी के पास जाना है।

هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٩﴾

(२९) उसी ने तुम्हारे लिए, जो कुछ धरती में है सब पैदा किया,[3] फिर आकाश का इरादा किया[4] तथा उसने सात समतल आकाश बना दिये,[5] और वह सर्वज्ञ है।

---

[1]स्पष्ट बात है कि हानि अल्लाह के आदेशों का पालन न करने वालों ही को होगी, अल्लाह का अथवा उसके ईशदूतों एवं उसकी ओर आमन्त्रित करने वालों का कुछ न विगड़ेगा।

[2]आयत में दो मृत्यु और दो जीवन का वर्णन है। पहली मृत्यु का अर्थ अनस्तित्व (अर्थात न होना) है और पहला जीवन माता के गर्भ से जन्म लेने के पश्चात से मृत्यु तक है। फिर मृत्यु आ जाएगी और फिर *आख़िरत* का जीवन दूसरा जीवन होगा। जिसको प्रलय पर विश्वास न रखने वाले अस्वीकार करते हैं। इसी अनुसार कब्र का जीवन (लगभग) सांसारिक जीवन में ही सम्मिलित होगा (फ़तहुल क़दीर) कुछ *आलिमों* (इस्लाम धर्म का ज्ञान रखने वाले विद्वान) के निकट *वर्जख* का जीवन, *आख़िरत* के जीवन से पूर्वकाल का है और उसका आरम्भिक परिणाम भी, इसलिए इसका सम्बन्ध *आख़िरत* के जीवन से है।

[3]इससे यह सिद्ध किया गया है कि धरती की सभी वस्तुओं के लिये वास्तविक "*हिल्लत*" (*हलाल* अथवा प्रयोग करने योग्य) है, अतिरिक्त इसके कि उसका *हराम* (प्रयोग न करना) होना *किताब* व *सुन्नत* से सिद्ध हो। (फ़तहुल क़दीर)

[4]इस्लाम धर्म के कुछ अनुयायियों ने इसका अनुवाद

﴿ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ﴾

"फिर आकाश की ओर चढ़ गया।" किया है। (सहीह बुख़ारी)

अल्लाह तआला का आकाशों के ऊपर *अर्श* पर चढ़ना और मुख्य-मुख्य अवसरों पर दुनियां के समीप आकाश पर उतरना अल्लाह की विशेषताओं में से है। जिस पर इसी

The Ummah Technology Mission

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَٰٓئِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً ۖ قَالُوا أَتَجْعَلُ فِيهَا

(३०) और जब तुम्हारे प्रभु ने फरिश्तों से कहा[1] कि, मैं धरती में एक ख़लीफा[2] (ऐसा

प्रकार ईमान रखना आवश्यक है, जिस प्रकार से *क़ुरआन* और *हदीस* में वर्णन किया गया है।

[5]इससे तो एक यह विदित हुआ कि "आकाश" का वास्तविक अस्तित्व है। मात्र ऊँचाई अथवा दूरी का नाम नही है। दूसरी बात यह मालूम हुई कि इनके सात तल हैं। और हदीस के अनुसार दोआकाश तलो की दूरी ५०० वर्ष है। और धरती के विषय में क़ुरआन करीम में है।

«وَمِنَ الأرض مِثْلَهُنَّ»

(और धरती भी आकाश के समान है)

(अत-तलाक-१२)

इससे धरती की संख्या भी सात ही मालूम होती है। इसकी अन्य प्रमाणिकता हदीस से हो जाती है।

«مَنْ أَخَذَ شِبراً مِنَ الأرضِ ظُلْمًا فَإِنهُ يُطَوَّقَه يومَ القِيَامةِ مِنْ سَبعِ أرضِينَ»

(जिसने अत्याचार से किसी की एक बालिश्त (अंगूठे के सिरे से तर्जनी के अन्तिम सिरे तक की नाप) धरती ले लेती तो अल्लाह तआला उसे सातों धरती का तौक पहनाएगा)।

(सहीह बुख़ारी)

इस आयत से यह भी मालूम होता है कि आकाश से पहले धरती की सृष्टि हुई है , परन्तु सूर: नाज़िआत में आकाश के वर्णन के पश्चात फ़रमाया गया है,

﴿وَٱلْأَرْضَ بَعْدَ ذَٰلِكَ دَحَىٰهَآ﴾

(धरती को उसके पश्चात बिछाया)

इससे यह भावार्थ निकाला गया है कि पहले सृष्टि धरती की हुई है और दहू (साफ और ठीक करके बिछाना) सृष्टि से भिन्न वस्तु है जो आकाश की सृष्टि के बाद अस्तित्व में आया। (फ़तहुल क़दीर)

[1]*मलायेका* (*फ़रिश्ते*) अल्लाह की प्रकाश से पैदा की गई सृष्टि है जिनका निवास आकाश पर है, जो अपने प्रभु के आदेश का पालन करते हैं एव उसकी प्रशसा और

The Ummah Technology Mission

مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۖ قَالَ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾

गरोह जो एक-दूसरे के पश्चात आयेगा)[1] बनाने जा रहा हूँ, तो उन्होंने कहा क्या तू उसमें ऐसे लोगों को पैदा करेगा जो उसमें आतंक एवं रक्तपात करे, और हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरा महिमागान करते एवं तेरी पवित्रता का वर्णन करते हैं। उसने कहा- जो मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते।[2]

وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ ۙ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِيْ بِاَسْمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾

(३१) और अल्लाह तआला ने आदम को सभी नाम सिखा कर उन चीज़ों को फ़रिश्तों के सामने पेश कर दिया और फ़रमाया कि यदि तुम सच्चे हो तो इन चीज़ों के नाम बताओ।

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٣٢﴾

(३२) उन सभी ने कहा, हे अल्लाह! तू महिमावान है, हमें तो बस उतना ही ज्ञान है,

---

पवित्रता के गुणगान में व्यस्त रहते है और उसके किसी आदेश की अवहेलना नही करते।

[1] *खलीफ़ा* का अर्थ ऐसा प्राणी है जो एक दूसरे के पश्चात आयेगा। (इब्ने कसीर)

[2] *फ़रिश्तो* का यह कहना किसी ईष्या अथवा परिवाद के रुप में नहीं था, बल्कि उसकी वास्तविकता एवं कारण जानने के लिए था कि ऐ प्रभु उस (प्राणि) सृष्टि को पैदा करने का कारण क्या है ? जबकि उनमें से कुछ ऐसे लोग भी होंगे जो आतंक फैलायेंगे, रक्तपात करेंगे। यदि इसका कारण *इबादत* करना है तो इस कार्य के लिए हम लोग तो हैं, हमसे वे भय भी नहीं हैं, जो नयी सृष्टि से सम्भावित है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मैं उन कारणों को जानता हूँ, जिनके कारण इन वर्णित बुराईयों के होते हुए भी मैं उसे पैदा कर रहा हूँ, जो तुम नहीं जानते। क्योंकि उनमें *अंबिया*, शहीद और सत्कर्मी और पवित्र लोग एवं *औलिया* भी होंगे। (इब्ने कसीर)

आदम के परिवार के विषय में *फ़रिश्तो* को कैसे ज्ञान हुआ कि वे आतंक फैलायेंगे। इसको उन्होंने मनुष्य से पहले की सृष्टि के कर्मों के आधार पर समझ लिया होगा अथवा किसी अन्य प्रकार से जान लिया होगा। कुछ ने कहा है कि अल्लाह ने स्वयं बता दिया था कि वह ऐसे-ऐसे कर्म करेंगे। इस प्रकार वह कथन में कमी मानते हैं कि

إِنِّي جَاعِلٌ فِي الأَرضِ خَلِيفَةً يَفْعَلُ كَذَا وَكَذَا. (फ़तहुल-क़दीर)

The Ummah Technology Mission

जितना तूने हमें सिखाया है, पूर्ण ज्ञान एवं तत्वदर्शी तू ही है।

قَالَ يَٰٓـَٔادَمُ أَنۢبِئْهُم بِأَسْمَآئِهِمْ ۖ فَلَمَّآ أَنۢبَأَهُم بِأَسْمَآئِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ إِنِّىٓ أَعْلَمُ غَيْبَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٣٣﴾

(३३) अल्लाह तआला ने आदम (अलैहिस्सलाम) से फ़रमाया, "तुम इनके नाम बता दो।"[1] जब उन्होंने बता दिये, तो फ़रमाया क्या मैंने तुम्हें पूर्व नहीं कहा था कि मैं आकाशों एवं धरती का परोक्षज्ञ हूँ तथा जो तुम करते एवं छुपाते हो जानता हूँ।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ ٱسْجُدُوا۟ لِـَٔادَمَ فَسَجَدُوٓا۟ إِلَّآ إِبْلِيسَ ۖ أَبَىٰ وَٱسْتَكْبَرَ

(३४) और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदः करो,[2] तो इबलीस के

---

[1] اسماء (नाम) से तात्पर्य مسميات (व्यक्ति और वस्तुओं के नाम एवं उनकी विशेषताएं और लाभ का ज्ञान है) है, जो अल्लाह तआला ने माननीय आदम के मन में अथवा बुद्धि में अपनी अन्तर्यामी शक्ति से डाल दिया था। फिर जब उनसे कहा गया कि आदम इनके नाम (एवं लाभ) बतलाओ, तो उन्होंने तुरन्त सब कुछ बता दिया, जो *फ़रिश्ते* नहीं बता सके। इस प्रकार अल्लाह तआला ने आदम को पैदा करने का कारण स्पष्ट कर दिया। दूसरा, दुनियाँ को चलाने के लिए ज्ञान की आवश्यकता एवं विशेषता का वर्णन कर दिया। जब यह कारण और ज्ञान की आवश्यकता *फ़रिश्तो* को स्पष्ट हुई, तो उन्होंने अपनी अज्ञानता को स्वीकार कर लिया। *फ़रिश्तो* के यह स्वीकार कर लेने से यह भी स्पष्ट हुआ कि अन्तर्यामी केवल अल्लाह ही है। अल्लाह के पुण्यात्मा भक्तों को भी उतना ही ज्ञान होता है जितना अल्लाह तआला उनको प्रदान करता है।

[2] ज्ञान की सर्वपरिता के उपरान्त माननीय आदम का दूसरा सम्मान हुआ। *सजदा:* का अर्थ है विनय एवं नम्रता के और उसकी अंतिम सीमा है "धरती पर माथा टेकना"। अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी के समक्ष *सजदा:* करने का आदेश इस्लामी क़ानून नहीं देता है। नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का मशहूर फ़रमान है कि

«لَو كُنتُ آمِرًا أَحَدًا أَنْ يَسْجُدَ لِأَحدٍ لأَمَرْتُ المَرأَةَ أَنْ تَسْجُدَ لِزَوجِها»

यदि किसी अन्य कि लिए सजदा: किया जा सकता तो मैं पत्नी को आदेश देता कि वह अपने पति के समक्ष *सजदा:* करे।

लेकिन अल्लाह के आदेश पर *फ़रिश्तो* ने माननीय आदम के समक्ष *सजदा:* किया। यह *सजदा:* सम्मान के लिए था न कि *इबादत* के रुप में। अब किसी को सम्मान स्वरुप भी *सजदा:* नहीं कर सकते।

The Ummah Technology Mission

وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٤﴾

अतिरिक्त सभी ने सजद: किया। उसने नकारा और घमंड किया[1] और वह था ही काफिरों में।[2]

وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ۪ وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) और हमने कह दिया, हे आदम ! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो,[3] और जहाँ से चाहो जी भर कर खाओ-पियो, परन्तु इस वृक्ष[4] के निकट न जाना, अन्यथा अत्याचारी हो जाओगे।

فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۪ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا

(३६) परन्तु शैतान ने उन्हें भटका कर वहाँ से निष्कासित करा ही दिया,[5] और हमने कह

---

[1] *इब्लीस* ने *सजदा:* से इन्कार किया और अपमानित हुआ। *क़ुरआन* के अनुसार *इब्लीस* जिन्नातों में से था, परन्तु अल्लाह तआला ने उसे सम्मानस्वरुप *फ़रिश्तो* में सम्मिलित कर लिया था, इसलिए अल्लाह के आदेशानुसार उसको भी *सजदा:* करना आवश्यक था, परन्तु उसने *हसद* एव घमड के कारण *सजदा:* करने से इंकार कर दिया। अर्थात *हसद* एव घमड वह पाप है जिनको मानवता की दुनियाँ में सबसे पहले किया गया और इसका करने वाला *इब्लीस* था।

[2] अर्थात अल्लाह तआला के पूर्व ज्ञान में था।

[3] यह माननीय आदम का तीसरा सम्मान था, कि स्वर्ग को उनके निवास स्थान के रुप में प्रदान किया गया।

[4] यह वृक्ष किस चीज का था ? इसके विषय में क़ुरआन और हदीस में स्पष्ट रुप से कुछ नहीं मिलता। इसको गेहूँ का पौधा मशहूर कर दिया गया है, जो अवास्तविक है। हमें उसके नाम को मालूम करने की अवश्यकता नही है और न उसका कोई लाभ है।

[5] शैतान, स्वर्ग में प्रवेश करके उन्हें बहकाने एवं भटकाने लगा अथवा भ्रम पैदा करने लगा। इस विषय में कोई विस्तृत जानकारी नहीं है। फिर भी यह स्पष्ट है कि जिस प्रकार से *सजदा:* के आदेश के समय उसने अल्लाह के आदेश के समक्ष तर्क से काम लेकर (कि मैं आदम से उच्च हूँ) *सजदा:* से इंकार किया, उसी प्रकार इस समय भी अल्लाह तआला के आदेश لا تقربا के विपरीत तर्क प्रस्तुत करके माननीय आदम *अलैहिस्सलाम* को फुसलाने में सफल हो गया। जिसका सविस्तार वर्णन *सूर: आराफ़* में

The Ummah Technology Mission

بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٣٦﴾

दिया कि "उतरो, तुम एक दूसरे के शत्रु हो।[1] और एक निश्चित समय तक तुम्हें धरती पर ठहरना एवं लाभ उठाना है।"

فَتَلَقَّىٰ آدَمُ مِن رَّبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٣٧﴾

(३७) आदम (*अलैहिस्सलाम*) ने अपने पालनहार से कुछ बातें सीख ली[2] (और अल्लाह से क्षमायाचना की) उसने उनकी याचना स्वीकार कर ली, नि:सन्देह वही क्षमा करने वाला दयावान है।

قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا ۖ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّي هُدًى فَمَن تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٨﴾

(३८) हमने कहा तुम सभी यहाँ से उतरो, फिर यदि तुम्हारे पास मेरी ओर से सत्यपथ आये तो जो मेरे संमार्ग का अनुसरण करेगा उन पर कोई भय नहीं होगा न वे उदासीन होंगे।

आयेगा। इस प्रकार अल्लाह के आदेश के समक्ष तक-वितर्क प्रस्तुत करने वाला भी सबसे प्रथम शैतान ही है। فنعوذ بالله منه

[1]इसका तात्पर्य आदम और शैतान अथवा आदम के पुत्र आपस में एक-दूसरे के शत्रु हैं।

[2]माननीय आदम *अलैहिस्सलाम* ग्लानि एवं दुखों से प्रेरित होकर, धरती पर आए, तो क्षमा-याचना में लीन हो गये। उस समय भी अल्लाह तआला ने मार्गदर्शन एवं दयालुता की, और क्षमा के वे शब्द सिखा दिये जो सूर: *आराफ़* में वर्णित हैं ﴿رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنفُسَنَا وَإِن لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا﴾ कुछ लोग यहाँ एक बनावटी हदीस का सहारा लेते हुए कहते हैं कि माननीय आदम *अलैहिस्सलाम* ने *अर्श-ए-इलाही* पर (لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللهِ) लिखा हुआ देखा और मोहम्मद *रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* के माध्यम से दुआ माँगी, तो अल्लाह तआला ने उन्हें क्षमा कर दिया। यह हदीस अप्रमाणित है और क़ुरआन के भी विपरीत है। इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला के बताए हुए तरीके के भी विपरीत है। सभी *नबियो* ने सदैव सीधे अल्लाह से दुआएं की हैं, किसी *नबी, वली*, पुण्यात्मा, महात्मा के माध्यम को नहीं पकड़ा, इसलिए *नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के साथ-साथ सभी नबियों की दुआ माँगने की विधि यही रही है कि बिना किसी माध्यम के अल्लाह के दरबार में दुआ की जाए।

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٩﴾

(३९) और जो कुफ़्र एवं झूठ के द्वारा हमारी आयतों को झुठलायें, वे नरक में रहनेवाले हैं, और सदैव उसी में रहेंगे।[1]

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِيْٓ

(४०) हे इस्राईल के पुत्रों![2] मेरी उस कृपा को याद करो जो मैंने तुम पर की, तथा

---

[1] प्रार्थना स्वीकार करने के उपरान्त अल्लाह तआला ने उन्हें पुन: स्वर्ग में प्रवेश कराने के वजाए धरती पर ही रहकर स्वर्ग प्राप्त करने का उपदेश दिया और माननीय आदम *अलैहिस्सलाम* को इंगित करके समस्त आदम की संतान को स्वर्ग में प्रवेश प्राप्त करने का मार्ग बताया जा रहा है कि *नवियों* के द्वारा मेरे निर्देश (जीवन व्यतीत करने का आदेश एवं नियम) तुम तक पहुँचेंगे, जो उसको स्वीकार करेगा वह स्वर्ग का अधिकारी होगा, अन्यथा वह अल्लाह की यातना का अधिकारी होगा। **"उन पर भय नहीं होगा"** का सम्बन्ध परलोक से है। أي فيما يستقبلونه من أمور الدنيا तथा **"दुख नहीं होगा"** का सम्बन्ध धरती से है। على ما فاتهم من أمور الدنيا (जो मर गया, धरती के कर्म अपने पीछे धरती पर छोड़ आए) जिस प्रकार दूसरे स्थान पर है।

﴿فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى﴾

"जिसने मेरे आदेशों का पालन किया, फिर वह न (धरती पर) भटकेगा और न *आख़िरत* मे" (ता॰हा॰-१२४) (इब्ने कसीर)

इस प्रकार ﴿لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ﴾ का स्थान प्रत्येक *मोमिन* को प्राप्त है। यह कोई इस प्रकार का स्थान नहीं जो मात्र कुछ *औलिया* ही को प्राप्त हो। और इस स्थान का भावार्थ कुछ का कुछ वर्णित किया जाता है। हालांकि समस्त *मोमिन* और अल्लाह से डरने वाले भी *औलिया* हैं। "*औलिया*" कोई पृथक सृष्टि नहीं है।

[2] إسرائيل (*इस्राईल* का अर्थ *अब्दुल्लाह* से लिया जाता है) जो आदरणीय याक़ूब *अलैहिस्सलाम* की उपाधि था। यहूदियों को इस्राईल के पुत्र कहा जाता है अर्थात याक़ूब *अलैहिस्सलाम* के पुत्र। क्योंकि याक़ूब *अलैहिस्सलाम* के बारह पुत्र थे। जिनसे यहूदियों के बारह क़बीले बने और उनमें बहुत से नबी और रसूल हुए। यहूदियों को अरब में उनके प्राचीन इतिहास, ज्ञान एवं धर्म से सम्बन्ध होने के कारण एक विशेष स्थान प्राप्त था। इसलिए उनके पिछले सम्मान एवं आदर जो अल्लाह ने प्रदान किये थे, याद कराकर कहा जा रहा है कि तुम मेरी प्रतिज्ञा पूरी करो जो तुमसे अन्तिम नबी की *नबूवत* के लिए और

The Ummah Technology Mission

أَوْفُ بِعَهْدِكُمْ وَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ﴿٤٠﴾

मुझसे किया वचन पूरा करो, मैं तुम से किया वचन पूरा करुँगा, तथा मात्र मुझसे ही डरो।

وَآمِنُوا بِمَا أَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُونُوا أَوَّلَ كَافِرٍ بِهِ ۖ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا وَإِيَّايَ فَاتَّقُونِ ﴿٤١﴾

(४१) तथा उस (शास्त्र) के प्रति विश्वास करो जिसे मैंने उस को प्रमाणित करने के लिए उतारा जो (तौरात) तुम्हारे साथ है और तुम इसके[1] प्रथम निर्वती न बनो, और मेरी आयतों को थोड़े मूल्य पर न बेचो,[2] और मात्र मुझ से डरो।

उन पर ईमान लाने के लिए ली गई थी। यदि तुम अपनी प्रतिज्ञा पूरी करोगे तो मैं भी अपनी प्रतिज्ञा पूरी करुँगा, कि तुम पर से वह भार उतार दिये जायंगे जो तुम्हारी अपनी त्रुटियों और आलस्य के कारण दण्ड के रुप में तुम पर लादे गए थे। और तुम्हें पुनः सम्मान प्रदान किया जाएगा। मुझसे डरो अन्यथा यह अपमानित भार सदैव के लिए तुम पर लाद दिये जाएंगे, जिनसे तुम्हारे पूर्वज भी पीड़ित रहे।

[1] ـــ का तात्पर्य *क़ुरआन* अथवा अन्तिम *ईशदूत मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* से है। दोनों ही कथन सत्य है क्योंकि दोनों का सम्बन्ध जल और थल की भाँति है, जिसने *क़ुरआन* नहीं माना उसने *मोहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* को नकार दिया। (इब्ने कसीर) **"पहले काफ़िर न बनो"**।

इसका अर्थ यह है कि प्रथम तो तुम्हें जो ज्ञान है दूसरे उससे अनजान हैं, इसलिए तुम्हारा उत्तरदायित्व सबसे अधिक है। द्वितीय मदीने में यहूदियों को सबसे पहले ईमान का निमन्त्रण दिया गया था, वरन् *हिजरत* से पहले बहुत से लोग इस्लाम धर्म स्वीकर कर चुके थे। इसलिए उन्हें सावधान किया जा रहा है कि यहूदियों में तुम पहले काफ़िर न बनो। यदि तुम ऐसा करोगे तो समस्त यहूदियों के कुफ़्र एवं न मानने का पाप तुम पर पड़ेगा।

[2] **"थोड़े मूल्य पर मत बेचो"**। इसका तात्पर्य यह कदापि नही कि अधिक क़ीमत मिल जाये तो अल्लाह के आदेश का सौदा कर लो, बल्कि इसका तात्पर्य यह है कि अल्लाह के आदेश की तुलना में सांसारिक लाभ को महत्व न दो। अल्लाह के आदेश तो इतने बहुमूल्य हैं कि समस्त सांसारिक वैभव और वस्तुएं उनकी तुलना में तुच्छ हैं। आयत में यद्यपि *इस्राईल* के पुत्रों की ओर इंगित किया गया है परन्तु यह आदेश प्रलय तक समस्त मानवगण के लिए है। जो कोई भी सत्य को छोड असत्य का पक्ष करे अथवा अज्ञानता

The Ummah Technology Mission

وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤٢﴾

(४२) और सत्य का असत्य के साथ मिश्रण मत करो । और न सत्य को छुपाओ, तुम्हें तो स्वयं इसका ज्ञान है ।

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ ﴿٤٣﴾

(४३) और नमाज़ स्थापित करो, एवं ज़कात दो, और रुकुउ करने (झुकने) वालों के साथ रुकुउ करो (झुक जाओ) ।

أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ وَأَنْتُمْ تَتْلُونَ الْكِتَابَ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٤٤﴾

(४४) क्या लोगों को सत्कर्म का उपदेश देते हो ? और स्वयं अपने आपको भूल जाते हो, यद्यपि तुम किताब पढ़ते हो । क्या इतनी भी तुममें बुद्धि नहीं ?

وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ ۚ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ ﴿٤٥﴾

(४५) और धैर्य एवं नमाज़ के द्वारा सहायता प्राप्त करो ।[1] और यह बड़ी चीज़ है, परन्तु अल्लाह से डरने वालों के लिए नहीं है ।[2]

को प्रदर्शित कर सत्य से मात्र सांसारिक फल प्राप्ति के लिए मुँह मोड़ेगा । वह इस आदेश में सम्मिलित है । (फ़तहुल क़दीर)

[1] धैर्य और नमाज़ प्रत्येक अल्लाह वालों के दो बड़े हथियार हैं । नमाज़ के द्वारा एक *मोमिन* को अल्लाह से सम्बन्ध सरलता पूर्वक होता है, जिससे उसे अल्लाह तआला की सहमति एवं सहायता प्राप्त होती है । धैर्य के द्वारा उसके चरित्र में दृढ़ता और धर्म में परिपक्वता पैदा होती है । हदीस में आता है

«إِذَا حَزَبَهُ أَمْرٌ فَزِعَ إِلَى الصَّلٰوةِ».

"*नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* को जब भी कोई समस्या उत्पन्न होती तो आप तुरन्त नमाज़ का प्रयोजन करते ।" (फ़तहुल क़दीर से उदघृत अहमद व अबू दाऊद में संकलित)

[2] नमाज़ में निरन्तरता सामान्य लोगों को कठिन प्रतीत होती है । परन्तु सन्तुलित एवं स्थिर (*ख़ुशऊ* और *ख़ज़ुऊ*) रहने वालों के लिए यह सरल, बल्कि शान्ति एवं सुख का कारण है । यह कौन लोग हैं? वह जो *क़ियामत* पर पूरा विश्वास रखते हैं । अर्थात *क़ियामत* पर विश्वास सत्कर्म को सरल कर देता है । और *आख़िरत* से निश्चिन्तता व्यक्ति को अकर्मी, बल्कि कुकर्मी बना देती है ।

The Ummah Technology Mission

الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَاَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿٤٦﴾

(४६) जो जानते हैं कि अपने प्रभु से मिलना है और उसकी ओर पलट कर जाने वाले हैं।

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) हे (याकूब) इस्राईल की सन्तानों ! मेरी उस कृपा को याद करो, जो मैंने तुम पर उपकार किया और मैंने तुम्हें समस्त संसार पर श्रेष्ठता दी।[1]

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ

(४८) तथा उस दिन से डरो, जिस दिन कोई किसी के काम नहीं आएगा, न उसकी कोई सिफारिश स्वीकार की जाएगी, न उससे कोई

---

[1] यहाँ से *इस्राईल* की संतान को पुन: वे कृपा याद दिलायी जा रही है, जो उन पर की गयी और उनको *क़ियामत* के दिन से डराया जा रहा है, जिस दिन किसी के कोई काम नहीं आएगा, न सिफ़ारिश स्वीकार की जाएगी, न बदला देकर छुटकारा मिलेगा, न कोई सहायक होगा। एक उस कृपा का वर्णन किया जा रहा है कि समस्त संसार में श्रेष्ठता इस्राईल की संतान को प्राप्त थी, जो उन्होंने अल्लाह के आदेश का उल्लंघन करके खो दी और मुसलमानों को خير أمة की उपाधि से विभूषित किया गया। इसमें इस बात पर चेतावनी है कि अल्लाह की कृपा किसी विशेष जाति के प्रति सम्बन्धित नहीं है, बल्कि यह ईमान और कर्म के आधार पर प्राप्त होती है। यदि ईमान और कर्म अच्छे न हों तो छीन लिया जाता है। जिस प्रकार मुसलमान भी आज-कल अपने कुकर्मों और *शिर्क* एवं *विदअत* के कारण خير أمة से شر أمة बनी हुई हैं।

यहूदियों को यह भ्रम था कि वे अल्लाह के प्रिय हैं, इसलिए *आख़िरत* की पूछ से सुरक्षित रहेंगे। अल्लाह तआला ने फ़रमा दिया कि वहाँ अल्लाह के आदेशों को न मानने वालों को कोई सहायता नहीं दे सकेगा। इसी भ्रम में मुसलमान भी पड़े हैं। और *शिफ़ाअत* के प्रश्न को (जो *अहले सुन्नत* के यहाँ सत्य है) अपने कुकर्मों को छुपाने की आड़ बना रहे हैं। *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* अवश्य *शिफ़ाअत* करेंगे, अल्लाह तआला उनकी *शिफ़ाअत* भी स्वीकार करेंगे (सहीह हदीसों से प्रमाणित है) परन्तु यह भी हदीस में आता है कि *विदअत* के कर्म करने वाले इस को प्राप्त न कर सकेंगे। परन्तु बहुत से पापियों को नरक में दण्ड देने के उपरान्त आपकी *शिफ़ाअत* से नरक से निकाला जाएगा। क्या नरक की यह कुछ दिनों का दण्ड सहनीय है ? कि हम *शिफ़ाअत* पर विश्वास करके कुकर्म करते रहें।

The Ummah Technology Mission

وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٨﴾

बदला अथवा निस्तार स्वीकार किया जाएगा और न उन्हें सहायता दी जाएगी।

وَاِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ۭ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿٤٩﴾

(४९) और जब हमनें तुम्हें *फ़िरऔन* के आदमियों[1] से छुटकारा दिलाया, जो तुम्हें बुरी यातनाएं देते रहे, तुम्हारे पुत्रों की हत्या करते रहे, और तुम्हारी पुत्रियां जीवित छोड़ते रहे, इससे छुटकारा दिलाने में तुम्हारे स्वामी का अत्यधिक उपकार था।

وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٠﴾

(५०) और जब हमने तुम्हारे लिए सागर को फाड़ दिया[2] और उससे तुम्हें पार कर दिया और *फ़िरऔन* के साथियों को तुम्हारी आँखों के सामने डुबो दिया।

وَاِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰٓى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ

(५१) और हमने (आदरणीय) *मूसा (अलैहिस्सलाम)* को चालीस रातों का वचन

---

[1] *आले फ़िरऔन* से तात्पर्य केवल *फ़िरऔन* और उसके परिवार ही से नहीं, बल्कि *फ़िरऔन* के समस्त साथी हैं। जैसा कि आगे है।

﴿وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ﴾

"हमने फिरऔन के परिवार को डुबो दिया" यह डूबने वाले *फ़िरऔन* के परिवार वाले नहीं थे, उसकी सेना एवं अन्य कर्मचारी थे। अर्थात क़ुरआन में आल, अनुयायी (भक्त) के अर्थों में प्रयोग हुआ है। इसकी विस्तृत जानकारी *सूरः अल-अहज़ाब* में है।

[2] सागर का फाड़ना और उसमें मार्ग बना देना। यह एक चमत्कार था, जिसका विस्तृत वर्णन सूरः "*शोआरा*" में किया गया है। यह समुद्र का ज्वार-भाटा नहीं था, जैसा कि सर सैय्यद अहमद खाँ और अन्य, चमत्कार का इंकार करने वालों का विचार है।

The Ummah Technology Mission

وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٥١﴾

दिया, फिर तुमने बछड़े कोपूज्य बना लिया।[1] और अत्याचारी बन गए।

ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٢﴾

(५२) परन्तु हमने इसके उपरान्त भी तुम्हें क्षमा कर दिया, ताकि तुम कृतज्ञ रहो।

وَاِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿٥٣﴾

(५३) और हमने मूसा (*अलैहिस्सलाम*) को धर्मशास्त्र (तौरात) और चमत्कार प्रदान किये।[2]

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ

(५४) और जब मूसा (*अलैहिस्सलाम*) ने अपनी जाति वालों से कहा कि "हे मेरी जाति वालों ! तुमने बछड़े को देवता बनाकर स्वयं अपने ऊपर अत्याचार किया है। अब तुम अपने पैदा करने वाले की ओर ध्यान केन्द्रित करो, अपने आपको को (अपराधी को) अपने हाथों हत्या करो। तुम्हारे लिए भलाई

---

[1] यह गौ पूजा की घटना उस समय हुई जब *फ़िरऔन* और उसके साथियों से छुटकारा मिलने के पश्चात *इस्राईल* की सन्तान द्वीप समान स्थान सीना पहुंचे वहां अल्लाह तआ़ला ने आदरणीय मूसा *अलैहिस्सलाम* को तौरात देने के लिए चालीस रातों के लिए तूर पर्वत पर बुलाया। आदरणीय *मूसा* के जाने के बाद *इस्राईल* की सन्तान ने सामरी के पीछे होकर बछड़े की पूजा प्रारम्भ कर दी। मनुष्य कितना भौतिकीय है कि अल्लाह तआ़ला की शक्ति का महान चिन्ह देखने के पश्चात और नबियों (आदरणीय *हारुन* और *मूसा*) की उपस्थिति के बाद भी बछड़े को अपना देवता समझ लिया। आज का मुसलमान भी *शिर्क* से लिप्त विश्वास और कर्मो में लीन होते हुए भी वह समझता है कि मुसलमान किस प्रकार *मुशरिक* होसकता है ? इन मुसलमानों ने *शिर्क* को पत्थर की मूर्तियों के पुजारियों के लिए ही विशेष कर दिया है कि केवल वही *मुशरिक* हैं, जबकि यह नाम के मुसलमान भी क़ब्रों और गुम्बदों के साथ वही कुछ कर रहे हैं, जो पत्थर के पुजारी अपनी मूर्तियों के साथ करते हैं।

[2] यह भी भूमध्य सागर पार करने के उपरान्त कि घटना है। (इब्ने कसीर) संभव है कि किताब अर्थात *तौरात* को ही कसौटी से सम्बोधित किया गया हो क्योंकि हर आसमानी (दैवी) पुस्तक सत्य और असत्य को विवेक करती होती है अथवा चमत्कार को कसौटी कहा गया है क्योंकि दैव चमत्कार भी सत्य व असत्य की पहचान में विशेष योगदान देते हैं।

The Ummah Technology Mission

عِنْدَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۚ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٥٤﴾

अल्लाह तआला के निकट इसी में है।" तो उसने तुम्हारी *तौबा* (क्षमा-याचना) स्वीकार की। नि:सन्देह वही *तौबा* स्वीकार करने वाला और दयालु है।[1]

وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ نَرَى اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْكُمُ الصَّاعِقَةُ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ ﴿٥٥﴾

(५५) और (तुम उसे भी याद करो) तुमने मूसा (*अलैहिस्सलाम*) से कहा था कि - जब तक हम अपने प्रभु को सामने न देख लेंगे कदापि ईमान न लाएंगे (जिस अवज्ञा के दण्ड स्वरुप) तुम पर तुम्हारे देखते हुए तड़ित गिर पड़ी।[2]

ثُمَّ بَعَثْنَاكُم مِّن بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٦﴾

(५६) परन्तु फिर हमने तुम्हें मृत्यु के बाद जीवन इसलिए दिया ताकि तुम कृतज्ञता व्यक्त करो।

---

[1]जब आदरणीय *मूसा* ने *शिर्क* से सावधान किया तो फिर उन्हें क्षमा का आभास हुआ। क्षमा की विधि हत्या बताया गया।

﴿فَاقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ﴾ (अपने को आपस में क़त्ल करो) की दो व्याख्या हैं। एक यह कि सभी को दो भागों में विभाजित किया गया और उन्होंने एक-दूसरे को क़त्ल किया। दूसरी यह कि *शिर्क* करने वालो को खड़ा कर दिया गया और जो उससे सुरक्षित रहे उन्हें क़त्ल करने का आदेश दिया गया। अत: उन्होंने क़त्ल किया। वधितो की संख्या सत्तर हजार बतायी गयी है। (इब्ने कसीर व फ़तहुल क़दीर)

[2]आदरणीय *मूसा अलैहिस्सलाम* सत्तर आदमियों को तूर पर्वत पर *तौरात* लेने के लिए साथ लेकर गये, जब आदरणीय *मूसा अलैहिस्सलाम* वापस आने लगे तो उन्होंने कहा कि जब तक हम अपनी आँखों से अल्लाह तआला को न देख लेंगे तब तक तेरी बातों का विश्वास करने को तैयार नहीं हैं। जिसके कारण उन पर तड़ित गिरी और वे सभी मर गए। आदरणीय *मूसा अलैहिस्सलाम* बहुत परेशान हो गए और उनके पुर्नजीविन के लिए अल्लाह से प्रार्थना की। इस कारण अल्लाह ने उन्हें पुर्नजीवित किया। देखते हुए तड़ित गिरने का अर्थ यह है कि प्रथम जिस पर तड़ित गिरी दूसरे व्यक्ति उसको देख रहे थे, यहाँ तक कि सभी मर गए।

The Ummah Technology Mission

وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ ۖ كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ ۖ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٥٧﴾

(५७) और हमने तुम्हारे ऊपर बादलों की छाया की और तुम पर *मन्न* व *सलवा* उतारा[1] (और कह दिया) हमारी प्रदान की हुई पवित्र वस्तुएँ खाओ। और उन्होंने हम पर अत्याचार नहीं किया अपितु स्वयं अपने आप पर अत्याचार करते थे।

وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ

(५८) और हमने तुमसे कहा कि इस बस्ती में जाओ।[2] और जो कुछ जहाँ कहीं से भी चाहो जी भर कर खाओ-पियो और द्वार में से

---

[1]अधिकतर व्याख्याकारों के निकट यह इजिप्ट और सीरिया के मध्य तीह के मैदान की घटना का वर्णन है। जब वे अल्लाह के आदेश की अवज्ञा करके अमालक: की बस्ती में प्रवेश करने से रुक गए, तो दण्ड स्वरुप इस्राईल की संतान चालीस वर्षों तक तीह के मैदान में भटकती रही। कुछ के निकट यह निश्चित करना उचित नहीं है। सागर पार करने के पश्चात सीना नामक मरुस्थल में उतरने पर जब सबसे प्रथम खाने-पीने की समस्या उत्पन्न हुई तो उस समय यह प्रबन्ध किया गया।

(मन्न) कुछ के निकट तुरंजबीन है, या ओस, जो वृक्ष अथवा पत्थर पर गिरती तो मधु के समान मीठी हो जाती और सूख कर गोंद के समान हो जाती। कुछ के निकट मधु के समान मीठा जल है। हदीस है कि

«الكمأةُ نَوعٌ مِنَ المَنِّ»

"कुम्भी मन्न की वह प्रकार है जो आदरणीय मूसा *अलैहिस्सलाम* पर उतारी गई।" (बुख़ारी-मुस्लिम)

इसका अर्थ यह है कि जिस प्रकार से इस्राईल की संतान को वह भोजन बिना किसी कष्ट के उपलब्ध कराया गया था, उसी प्रकार कुम्भी भी बिना बोये पैदा हो जाती है। (व्याख्या अहसनुल तफासीर) *सलवा* बटेर अथवा एक प्रकार का पक्षी था जो चिड़िया की भाँति होता खा लेते थे। (फ़तहुल क़दीर)

[2]उस बस्ती से तात्पर्य अधिकतर व्याख्याकरों के निकट *बैतुल मुक़द्दस* है।

The Ummah Technology Mission

تَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٨﴾

सिर झुकाए हुए प्रवेश करो।[1] और मुख से कहो कि "हम क्षमा चाहते हैं।"[2] हम तुम्हारी ग़लतियों को क्षमा कर देंगे और अहसान प्रकट करने वालों को और अधिक प्रदान करेंगे।

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٥٩﴾

(५९) फिर उन अत्याचारियों ने यह बात जो उनसे कही गई, बदल डाली।[3] हमने भी उन अत्याचारियों पर उनकी अवज्ञा के कारण आकाश से प्रकोप उतारा।[4]

---

[1] *सजद:* से तात्पर्य कुछ लोगों ने झुकते हुए प्रवेश होने से लिया है और कुछ ने कृतज्ञता का *सजद:* ही माना है। तात्पर्य यह है कि अल्लाह के समक्ष कृतज्ञता व्यक्त करते हुए, तुच्छता प्रकट करते हुए और कृतज्ञता को स्वीकार करते हुए प्रवेश करो।

[2] حطة का अर्थ है "हमारे पापों को क्षमा कर दे।"

[3] इसको स्पष्ट रुप से एक हदीस से समझाया गया है, जो सहीह बुख़ारी एवं मुस्लिम आदि में है। *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया :

«قِيلَ لِبَنِي إسرائيل ادخُلوا البابَ سُجَّدا وقولوا حِطَّةٌ - فَدخَلوا يَزْحَفُونَ عَلىٰ أسْتاهِهِم فَبَدَّلُوا وَقَالُوا حَبَّةٌ فِي شَعرة»

"उनको आदेश हुआ कि सजद: करते हुए प्रवेश करो, परन्तु वे कमरों को धरती पर घिसटते हुए प्रवेश हुए और حطة के स्थान पर حبة فى شعرة (अर्थात गेहूँ बाली में) कहते रहे।

इस कारण उनकी इस अवज्ञाकारिता का जो उनके अन्दर उत्पन्न हो गयी थी और अल्लाह के आदेशों को बदल कर मज़ाक करनें का जिस प्रकार से उन्होने कुकर्म किया, अनुमान लगाया जा सकता है। सत्यता यह है कि जब कोई समुदाय चरित्र और कर्म से पतन की ओर जाने लगे तो उसका व्यवहार फिर अल्लाह के आदेशों के प्रति इसी प्रकार होता है।

[4] ये आकाश से प्रकोप क्या था? कुछ के निकट अल्लाह का क्रोध, अधिक धुन्ध, प्लेग था। इस अन्तिम अर्थ का पक्ष हदीस से प्राप्त होता है। *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फरमाया :

The Ummah Technology Mission

وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٦٠﴾

(६०) और जब मूसा (*अलैहिस्सलाम*) ने अपनी जाति के लिए पानी माँगा तो हमने कहा कि अपनी लाठी पत्थर पर मारो, जिससे बारह जल स्रोत फूट पड़े।[1] प्रत्येक गिरोह ने अपना स्रोत पहचान लिया (और हमने कह दिया कि) अल्लाह तआ़ला का प्रदान किया हुआ अन्न खाओ-पियो और धरती पर आतक फैलाते न फिरो।

وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ؕ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِىْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِىْ هُوَ خَيْرٌ ؕ اِهْبِطُوْا

(६१) और जब तुमने कहा कि "हे मूसा (अलैहिस्सलाम) !" हमसे एक ही प्रकार का भोजन करने पर संतोष नहीं हो सकेगा। इसलिए अपने प्रभु से प्रार्थना कीजिए कि वह हमें धरती पर पैदा साग, ककड़ी, गेहूँ, मसूर, और प्याज़ दे। आपने कहा कि उत्तम चीज़

«الطاعونُ رجزٌ أو عذابٌ أُرْسِلَ عَلَى بَنِي إسرائيل أَو عَلىٰ مَنْ كَانَ قَبلكمْ. فإذا سمعتم به بأرضٍ فَلَا تَقدَمُوا عَلَيه وإذَا وَقَعَ بأرضٍ وَأَنتم بها فَلا تخرجُوا فرارًا منه»

"यह प्लेग उसी प्रकोप और यातना का भाग है जो तुमसे पहले के लोगों पर उतारी गयी। यदि तुम्हारी उपस्थिति में किसी स्थान पर प्लेग फैल जाए, तो तुम उस स्थान से न भागो और यदि तुम्हें किसी स्थान के विषय में मालूम हो जाए कि वहाँ प्लेग फैला है तो वहाँ मत जाओ।" (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलाम, अध्याय अत्ताऊन व अत्तीर: व अल-किहाना- हदीस संख्या २२१८)

[1]यह घटना कुछ के निकट तीह की और कुछ के निकट सीना नामक मरुभूमि की है। वहाँ पानी की आवश्यकता हुई तो अल्लाह तआला ने आदरणीय मूसा *अलैहिस्सलाम* से कहा अपनी लाठी पत्थर पर मार। फलस्वरुप पत्थर से बारह जल स्रोत फूट गये। गिरोह भी बारह थे। प्रत्येक गिरोह अपने-अपने जल स्रोत से लाभान्वित हुआ। यह भी एक चमत्कार था, जो अल्लाह तआला ने आदरणीय मूसा *अलैहिस्सलाम* के द्वारा दिखाया।

The Ummah Technology Mission

مِصْرًا فَإِنَّ لَكُمْ مَّا سَأَلْتُمْ ۗ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ ۖ وَبَآءُو بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ ۗ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوا وَّكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٦١﴾

के बदले तुच्छ चीज़ क्यों माँगते हो ? अच्छा शहर में जाओ और वहाँ पर तुम्हें तुम्हारी पसद की यह सभी चीज़ें मिलेंगी।[1] उन पर अपमान एवं दरिद्रता डाल दी गई तथा वे अल्लाह का प्रकोप लेकर लौटे।[2] यह इसलिए कि वे अल्लाह की *आयतो* को नहीं मानते थे। और नबियो की अकारण हत्या करते थे।[3] यह उनकी सीमा उलंघन का परिणाम है।[4]

---

[1]यह घटना भी उसी तीह के मैदान की है। *मिस्र* से तात्पर्य इजिप्ट, देश नहीं अपितु कोई शहर है। तात्पर्य यह है कि यहाँ से किसी भी शहर में चले जाओ और वहाँ कृषि करो। अपनी पसन्द की तरकारियाँ एवं दालें उगाओ और खाओ। उनकी यह माँग चूँकि उपकार का अनादर था इसलिए वक्रोक्ति के रुप में कहा गया कि "तुम्हारे लिए वहाँ तुम्हार मन पसन्द चीज़ें हैं।"

[2]कहाँ वे उपकार और कृपा, जिसका विस्तार पूर्वक वर्णन हो चुका है और कहाँ वह अपमान और दरिद्रता जो बाद में उन पर थोप दी गयी और वह अल्लाह के प्रकोप के कारण बने। प्रकोप भी कृपा की भाँति अल्लाह की विशेषता है, जिसकी व्याख्या यातना के विचार एवं स्वयं यातना से नहीं करनी चाहिए। अल्लाह तआला उन पर क्रोधित हुआ। كما هو شانه

[3]यह अपमान व अल्लाह के प्रकोप के कारण का वर्णन है। अर्थात अल्लाह तआला की आयतों का इंकार और अल्लाह की ओर आमन्त्रित करने वाले *नबियों* एवं आमन्त्रण देने वालों की हत्या और उनको अपमानित करना अल्लाह के प्रकोप के कारण है। प्राचीन काल में यहूदी यह कुकर्म करके अपमानित एवं दण्डित हुए, तो आज इस कुकर्म के करने वाले किस प्रकार सम्मानित हो सकते हैं। أين ما كانوا و حيث ما كانوا "वह कोई भी हों और कहीं भी हों।"

[4]यह अपमान एवं दरिद्रता का दूसरा कारण है। عصوا "अवज्ञा की" का अर्थ है कि जिन कर्मों से उन्हें रोका गया था, उनको किया और يعتدون का अर्थ है कि सीमित कर्मों में सीमा उल्लंधन करते थे। अनुकरण एवं अनुपालन यह है कि منهيات से दूर रहें और مأمورات को इस प्रकार से करें जिस प्रकार से करने का आदेश हो। अपनी ओर से कमी अथवा अधिकता यह अवज्ञा اعتداء है, जो अल्लाह को अप्रिय है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصَارَىٰ وَالصَّابِئِينَ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

(६२) अवश्य जो मुसलमान हो, यहूदी हो,[1] नसारा[2] (इसाई) हो अथवा साबी हो,[3] जो कोई भी अल्लाह तआला एवं *क़यामत* के दिन पर ईमान लाएगा और सत्कर्म करेगा उसका प्रतिदान उसके प्रभु के पास है, और उनको न कोई भय है और न कोई क्षोभ होगा।[4]

---

[1] यहूदी هوادة "अर्थात प्रेम" से अथवा هَوْد "अर्थात पश्चाताप" से बना है। अर्थात इनका यह नाम वास्तव में प्रायश्चित करने अथवा परस्पर प्रेम करने के कारण पड़ा। परन्तु मूसा *अलैहिस्सलाम* के अनुयायियों को यहूदी कहा जाने लगा।

[2] نصارى ـ نصران का बहुवचन है, जिस प्रकार से سكارى ـ سكران का बहुवचन है इसका उद्गम نصرت से है। आपस में एक-दूसरे की सहायता करने के कारण उनका यह नाम पड़ा। उनके अनुसार भी कहा जाता है। जैसा कि उन्होंने ईसा *अलैहिस्सलाम* से कहा था- ﴿نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ﴾ ईसा *अलैहिस्सलाम* के अनुयायियों को 'नसारा' कहा जाता है। जिनको इसाई भी कहते हैं।

[3] صابئين ـ صابئ का बहुवचन है। यह वे लोग हैं जो अवश्य ही प्रारम्भिक काल में किसी सत्य धर्म के अनुयायी रहे होंगे (इसलिए क़ुरआन में यहूदी, इसाई धर्म के साथ वर्णन किया गया है) परन्तु बाद में उनके अन्दर फरिश्तों की पूजा का प्रचलन हो गया अथवा यह किसी भी धर्म के अनुयायी न रहे। इसी कारण अधर्मियों को साबी कहा जाने लगा।

[4] कुछ आधुनिक व्याख्याकरों ने इस आयत का भावार्थ गलत समझा है और उससे उन्होंन "एकधर्मवाद" के विचार को संकुचित करने का अर्थ निकाला है। अर्थात *रिसालत-ए-मोहम्मदिया* पर ईमान लाना आवश्यक नहीं मानते, अत: जो भी जिस धर्म पर विश्वास करता है और सत्कर्म करता है उसको मोक्ष प्राप्त हो जाएग। यह तर्क अति भ्रमित है। आयत की उचित व्याख्या यह है कि जब अल्लाह तआला ने इस *आयत* की पूर्व की आयतों में यहूदियों के कुकर्मो और सीमा उल्लघंन और उसके आधार पर प्रकोप का अधिकारी होने का वर्णन किया, तो यह भ्रम उत्पन्न हो सकता था कि यहूदियों में जो लोग सही, अल्लाह की किताब के अनुयायी थे और अपने *पैग़म्बर* के निर्देश के अनुसार जीवन व्यतीत करने वाले थे, उनके साथ अल्लाह तआला ने क्या किया ? अथवा क्या निर्णय लेगा ? अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट कर दिया कि केवल यहूदी ही नहीं, इसाई और साबी भी अपने-अपने समय में जिन्होंने भी अल्लाह पर, *आख़िरत* के दिन पर ईमान रखा और सत्कर्म करते रहे, उन सभी को मोक्ष प्राप्त होगी और अब इसी प्रकार मोहम्मद (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) की *रिसालत* पर ईमान लाने वाले मुसलमान भी

The Ummah Technology Mission

यदि उचित रुप से अल्लाह पर और *आख़िरत* के दिन पर ईमान लायें और सत्कर्म करें तो यह भी अवश्य परलोक के असीम सुखों के अधिकारी होंगे। मोक्ष के विषय में किसी के साथ पक्षपात नहीं किया जाएगा। वहाँ उचित निर्णय होगा। चाहे मुसलमान हों अथवा अन्तिम *रसूल* से पहले के यहूदी, इसाई और साबी आदि हों। इसका समर्थन कुछ मुरसल हदीसों से भी होताहै। उदाहरणत: मुजाहिद आदरणीय सलमान फारसी (رضی الله عنه) से उदघृत करते हैं, जिस में वह कहते हैं कि "मैंने *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* से उन धार्मिक व्यक्तियों के विषय में पूछा, जो मेरे साथी थे, इबादत करने वाले और नमाज़ी थे (अर्थात *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की *रिसालत* के पूर्व अपने धर्म पर दृढ़ थे)" तो उस अवसर पर यह *आयत* उतरी ﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَٱلَّذِينَ هَادُوا۟﴾ (इब्ने कसीर)। क़ुरआन करीम के दूसरे स्थानों से भी और समर्थन प्राप्त होता है। उदाहरणत:

﴿إِنَّ ٱلدِّينَ عِندَ ٱللَّهِ ٱلْإِسْلَٰمُ﴾

"अल्लाह के निकट धर्म केवल इस्लाम ही है"

(आले इमरान)

﴿وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ ٱلْإِسْلَٰمِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ﴾

"जो इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म का अनुयायी होगा, यह कदापि स्वीकृत नहीं होगा।" (आले इमरान-८५)

और हदीसों में भी *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने स्पष्ट कर दिया कि अब मेरी *रिसालत* पर ईमान लाये बिना किसी भी व्यक्ति को मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए फरमाया :

«وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ! لَا يَسْمَعُ بِي رَجُلٌ مِّنْ هٰذِهِ الْأُمَّةِ يَهُوْدِيٌّ وَّلَا نَصْرَانِيٌّ ثُمَّ لَا يُؤْمِنُ بِي إِلَّا دَخَلَ النَّارَ».

"सौगन्ध है उस शक्ति की जिसके हाथ में मेरा प्राण है, मेरी इस उम्मत (अनुयायी) में जो व्यक्ति मेरे विषय में सुन ले, वह यहूदी हो अथवा इसाई, फिर वह मुझ पर ईमान न लाये तो वह नरक में जायेगा"। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, अध्याय वजूबुलईमान बिरिसाल: नबीय्यीना मोहम्मद (صلى الله عليه وسلم))

इसका अर्थ यह है कि एकधर्मवाद का सिद्धान्त और उसकी पथभ्रष्टता का कारण जहाँ अन्य कुरआन की *आयतो* को छोड़ देने का नतीजा है वहीं अहादीस के बिना *क़ुरआन* को समझने का गलत तरीका भी है। इसलिए यह कहना पूर्णतय: सत्य है कि हदीस के बिना कुरआन को नहीं समझा जा सकता।

The Ummah Technology Mission

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾

(६३) और जब हमने तुमसे वचन लिया और तुम्हारे ऊपर तूर पर्वत ला खड़ा कर दिया।[1] और कहा-जो हमने तुम्हें दिया है, उसे दृढ़ता से पकड़े रहो। और जो कुछ उसमें है उसे याद करो, ताकि तुम बच सको।

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ فَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَكُنْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٤﴾

(६४) परन्तु तुम उसके पश्चात भी फिर गए। फिर यदि अल्लाह तआला की कृपा और दया तुम पर न होती, तो तुम हानि उठाने वाले होते।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِيْنَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِى السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿٦٥﴾ ۚ

(६५) और अवश्य ही तुम्हें उन लोगों के विषय में ज्ञान भी है, जो तुममें से शनिवार[2] के विषय में सीमा उल्लंघन कर गए और और हमने (भी) कह दिया कि तुम अपमानित बन्दर बन जाओ।

فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٦﴾

(६६) इसे हमने अगले-पिछलों के लिए सावधान रहने का कारण बना दिया, और डरने वालों के लिए शिक्षा है।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖٓ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَةً ؕ قَالُوْٓا

(६७) और मूसा (*अलैहिस्सलाम*) ने जब अपनी जाति से कहा कि - अल्लाह तआला

---

[1] जब *तौरात* के आदेशों के लिए यहूदीयों ने दुष्टतापूर्वक कहा कि - हमसे तो इन आदेशों का पालन नहीं हो सकेगा तो अल्लाह तआला ने तूर पर्वत को छत की भाँति उनके ऊपर उठा दिया, जिससे डर कर उन्होंने पालन करने का वचन दिया।

[2] السبت (शनिवार) के दिन यहूदीयों को मछली का शिकार, अपितु कोई भी कार्य करने से रोका गया था, लेकिन उन्होंने एक बहाना निकालकर अल्लाह के आदेश की सीमा उल्लंघन की। शनिवार के दिन (परीक्षा के लिए) मछलियां अधिक आतीं, उन्होंने गडढे खोद लिए ताकि मछलियां उसमें फंसी रहें और फिर रविवार के दिन उनको पकड़ लेते।

The Ummah Technology Mission

أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ۖ قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٦٧﴾

तुम्हें एक गाय[1] *ज़िब्ह* करने का आदेश देता है, तो उन्होंने कहा कि "हमसे क्यों उपहास करते हो ?" आपने उत्तर दिया कि "मैं ऐसी मूर्खता से अल्लाह तआला की शरण लेता हूँ।"

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ ۖ عَوَانٌ بَيْنَ ذَٰلِكَ ۖ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ﴿٦٨﴾

(६८) उन्हों ने कहा-हे मूसा अलैहिस्सलाम ! अल्लाह .से प्रार्थना कीजिए की हमें उसके विषय में बता दे। आपने फ़रमाया, सुनो! वह गाय न तो बूढ़ी हो और न बछिया, बल्कि मध्यम आयु की हो। अब तुम्हें जो आदेश दिया गया है उसका पालन करो।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا لَوْنُهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَاءُ فَاقِعٌ لَوْنُهَا تَسُرُّ النَّاظِرِينَ ﴿٦٩﴾

(६९) वे फिर कहने लगे कि अल्लाह से निवेदन कीजिए की वह हमें बता दे कि उसका रंग कैसा हो ? फ़रमाया वह कहता है कि गाय सुनहरे तीखे रंग की हो, और देखने वालों को प्रसन्न कर देती हो।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَابَهَ عَلَيْنَا ۖ وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ﴿٧٠﴾

(७०) वे कहने लगे कि अपने प्रभु से निवेदन कीजिए कि वह हमें खोलकर बता दे कि वह कैसी हो ? इस प्रकार की बहुत-सी गायें हैं पता नहीं चलता, अगर अल्लाह ने चाहा तो हमें मार्ग दर्शन प्राप्त हो जाएगा ।

قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا ذَلُولٌ

(७१) उसने कहा कि अल्लाह का आदेश है कि वह गाय कृषि योग्य भूमि में हल जोतने

---

[1] *इस्राईल* की सन्तान में बिना किसी सन्तान के एक आदमी था। उसका एक ही उत्तराधिकारी उसका भतीजा था। एक रात उस भतीजे ने अपने चाचा की हत्या करके लाश किसी दूसरे आदमी के द्वार पर डाल दी, असली हत्यारे की खोज में वे एक-दूसरे को कहने लगे। अन्ततः बात मूसा *अलैहिस्सलाम* तक पहुँची, तो उन्हें एक गाय वध करने का आदेश हुआ। गाय के माँस का एक टुकड़ा लाश पर मारा गया, जिससे वह जीवित हो गया और हत्यारे को पहचान कराते ही मर गया। (फतहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِى الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا ۗ قَالُوا الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ۗ فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧١﴾

वाली तथा खेतों को पानी पिलाने वाली नहीं, वह स्वस्थ तथा बेदाग है। उन्होंने कहा अब आप ने स्पष्ट कर दिया, फिर भी वह आदेशों का पालन करने वाले नहीं थे, परन्तु उसे माना तथा गाय की बलि दी।[1]

وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا ۗ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿٧٢﴾

(७२) तथा जब तुमने एक जीव की हत्या कर दी,[2] फिर परस्पर आरोप लगाने लगे, तथा अल्लाह को तुम्हारी छुपाई बात प्रकट करनी थी।

فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ۗ كَذٰلِكَ يُحْىِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى ۙ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ

(७३) हमने कहा कि उस गाय का एक टुकड़ा मृतक के शरीर पर मारो (वह जीवित हो जाएगा) उसी प्रकार अल्लाह तआला

---

[1]उनसे कहा गया था कि एक गाय की वध करो। वह कोई भी गाय का वध कर देते तो अल्लाह के आदेश का पालन हो जाता, परन्तु उन्होंने अल्लाह के आदेश का पालन करने के बजाए उसमें सूक्षमता खोजने लगे तथा विभिन्न प्रकार के प्रशन करने लगे, जिस पर अल्लाह तआला भी उन पर कठोरता करता चला गया। इसलिए धर्म में गहराई और कठोरता का मार्ग अपनाना मना है।

[2]यह हत्या की वही घटना है जिसके कारण इस्राईल की सन्तान को गाय की बलि चढ़ाने का आदेश दिया गया था तथा इस प्रकार अल्लाह तआला ने उस हत्या के षडयन्त्र को प्रदर्शित कर दिया। हालांकि वह हत्या रात के अंधकार में लोगों से छिपकर की गयी थी। इसका अर्थ यह हुआ कि तुम पुण्य तथा कुकर्म चाहे जितना छिपकर करो, अल्लाह के ज्ञान में है तथा अल्लाह तआला उसे लोगों पर प्रदर्शित करने का सामर्थ्य रखता है। इसीलिए एकान्त हो अथवा प्रदर्शन, हर समय और प्रत्येक स्थान पर अच्छे ही कर्म किया करो, ताकि वह किसी समय लोगों पर प्रकट हो जाये तो अपमान न हो, अर्थात उसके आदर तथा सम्मान में बढ़ोत्तरी हो तथा कुकर्म चाहे कितने ही छुपकर किये जायें, उसके प्रकट होने की सम्भावना है, जिससे मनुष्य का अपमान तथा अनादर होता है।

The Ummah Technology Mission

لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٧٣﴾

मृतक को जीवित करके तुम्हारी बुद्धिमानी के लिए निशानियाँ दिखाता है।[1]

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً ۚ وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ

(७४) फिर उसके पश्चात तुम्हारे दिल पत्थर जैसे बल्कि उससे भी अधिक कठोर हो गए,[2] कुछ पत्थरों से तो नहरें बह निकलती हैं तथा कुछ फट जाते हैं एवं उनसे पानी

---

[1]मृतक के पुन: जीवित होने के आधार पर अल्लाह तआला *क़ियामत* के दिन सभी मनुष्यो को पुर्नजीवित करने के सामर्थ्य [illegible] कर रहा है। *क़ियामत* वाले दिन मृतकों का पुन: जीवित होना, *क़ियामत* को अस्वीकार करने वालों को सदैव आश्चर्य का कारण रहा है। इसलिए अल्लाह तआला ने *क़ुराने करीम* में विभन्न स्थानों तथा प्रकार एवं दृष्टिकोण के आधार पर वर्णन किया है। सूर: अल-बकर: में ही अल्लाह तआला ने इसके पाँच उदाहरण दिये हैं। एक उदाहरण ﴿ثُمَّ بَعَثْنَٰكُم مِّنۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ﴾ (सूर: अल-बकर :-५६) मे गुज़र चुकी है। दूसरा उदाहरण यही घटना है। तीसरा उदाहरण भाग-२ की आयत संख्या २४३ ﴿مُوتُوا۟ ثُمَّ أَحْيَٰهُمْ﴾ चौथा उदाहरण आयत संख्या २५९ ﴿فَأَمَاتَهُ ٱللَّهُ مِا۟ئَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُۥ﴾ तथा पाँचवा उदाहरण इसके पश्चात वाली *आयत* में आदरणीय *इब्राहीम* की चार पक्षियों का है।

[2]अर्थात पूर्व के चमत्कार तथा वर्तमान की घटना कि मृतक जीवित हो गया, को देखकर भी तुम्हारे दिलों के अन्दर अल्लाह की ओर लौटनें की भावना तथा *तोबा* एवं दोषमुक्ति से क्षमा कि भावना जागृति नहीं हुई। बल्कि इसके विपरीत तुम्हारे दिल पत्थर के समान कठोर, बल्कि उससे भी अधिक कठोर हो गये। दिलों का कठोर हो जाना व्यक्ति तथा समाज के लिए सर्वनाश, तथा इस बात का लक्षण होता है कि दिलों पर प्रभाव डालने का गुण समाप्त हो गया तथा सत्य को स्वीकार करने की शक्ति समाप्त हो गयी है। इसके पश्चात उसके सुधार की संभावना कम हो जाती है तथा पूर्ण सर्वनाश की संभावना अधिक हो जाती है। इसीलिए ईमान वालो को विशेष रुप से चेतावनी दी गयी है।

﴿وَلَا يَكُونُوا۟ كَٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ مِن قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ ٱلْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ﴾ [الحديد:١٦]

ईमानवाले उन लोगों की भाँति न हो जायें जिनको उन से पूर्व किताब प्रदान की गयी, परन्तु समय व्यतीत होने पर उनके हृदय कठोर हो गये।

(सूर: अल-हदीद-१६)

The Ummah Technology Mission

فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٧٤﴾

निकलता है,[1] तथा कुछ अल्लाह तआला के भय से गिर पड़ते हैं, तथा तुम अल्लाह तआला को अपने कर्मों से अनजान न जानो।

أَفَتَطْمَعُونَ أَن يُؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ يُحَرِّفُونَهُ مِن بَعْدِ مَا عَقَلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾

(७५) (हे मुसलमानों !) क्या तुम चाहते हो कि वह (यहूदी) तुम्हारा विश्वास कर लें - जबकि उनमें ऐसे भी हैं जो अल्लाह का कथन सुनते हैं फिर उसे समझने के बाद उसे फेर-बदल कर देते हैं, और ऐसा वे जानकर करते हैं।[2]

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا ۖ وَإِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ

(७६) तथा जब ईमान वालों से मिलते हैं तो अपनी ईमानदारी प्रदर्शित करते हैं,[3] तथा जब

---

[1]पत्थरों की कठोरता के उपरान्त, उनसे जो-जो लाभ प्राप्त होते हैं जो-जो अवस्था उन पर व्यतीत होती है, उसका वर्णन है। इससे ज्ञात होता है कि पत्थर के अन्दर एक प्रकार का गुण तथा भावना उपस्थिति है, जिस प्रकार कि अल्लाह तआला का आदेश है।

﴿ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمَاوَاتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَن فِيهِنَّ ۚ وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَٰكِن لَّا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ ﴾

(सूर: बनी इस्राईल, ४४)

[2]ईमानवालों को सम्बोधित करके यहूदियों के विषय में कहा जा रहा है कि क्या तुम्हें उनके ईमान लाने की आशा है। जबकि वास्तव में उनके पूर्वजों में एक गुट ऐसा था जो अल्लाह के कथन में जानबूझकर परिवर्तन (अर्थों में तथा शब्दों में) करता था। यह नकारात्मक प्रश्न है अर्थात ऐसे लोगों के ईमान लाने की तनिक भी संभावना नहीं। इसका अर्थ यह हुआ कि जो लोग सांसारिक लाभ तथा गुटीय द्वेष के कारण अल्लाह के कथन में परिवर्तन कर डालते हैं, वे लोग भटकाव के मार्ग के दलदल में इस प्रकार फँस जाते हैं कि उससे निकल नहीं पाते। मुसलमानों में बहुत से ज्ञानी आलिम भी दुर्भाग्य से क़ुरआन तथा हदीस में परिवर्तन कर डालते हैं। अल्लाह तआला सबको इस अपराध से सुरक्षित रखे।

[3]यह कुछ यहूदियों के पाखण्डी व्यवहार पर से पटल उठाया जा रहा है कि वे मुसलमानों में तो अपने ईमान का प्रदर्शन करते हैं, परन्तु जब आपस में मिलते हैं तो एक-दूसरे पर इस बात का दोषारोपण करते हैं कि तुम मुसलमानों को अपनी किताब की ऐसी बातें क्यों बताते हो जिससे *रसूले अरबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* की

The Ummah Technology Mission

قَالُوْٓا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٦﴾

आपस में मिलते हैं तो कहते हैं कि मुसलमानों तक क्यों वह बातें पहुँचाते हो जो अल्लाह ने तुम्हें सिखायी हैं, क्या जानते नहीं कि ये तो अल्लाह के समक्ष तुम पर उनका प्रमाण हो जाएगा।

اَوَلَا يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٧﴾

(७७) क्या ये नहीं जानते कि अल्लाह तआला उनकी गुप्त एवं व्यक्त सभी बातें जानता है।[1]

وَمِنْهُمْ اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ اِلَّآ اَمَانِيَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿٧٨﴾

(७८) तथा उनमें से कुछ अनपढ़ ऐसे भी हैं जो आशाओं के सिवाय शास्त्र नहीं जानते तथा मात्र आकलन करते हैं।[2]

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَيْدِيْهِمْ ۗ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ

(७९) उन लोगों के लिए सर्वनाश है, जो स्वयं अपने हाथों लिखी पुस्तक को अल्लाह का शास्त्र कहते हैं, तथा इस प्रकार दुनियाँ (धन) कमाते हैं, अपने हाथों लिखने के

सत्यता की पुष्टि होती है। इस प्रकार तुम स्वयं ही उनके हाथ में इस बात का प्रमाण दे रहे हो, जो वे तुम्हारे विरुद्ध अल्लाह के दरबार में प्रस्तुत करेंगे।

[1]अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम बताओ अथवा न बताओ, अल्लाह को तो हर बात का ज्ञान है तथा वह इन बातों को तुम्हारे बताए बिना भी मुसलमानों पर प्रकट कर सकता है।

[2]यह तो उनके पढ़े लिखे लोगों की बातें थीं। रहे उनके अनपढ़ लोग, वे किताब (*तौरात*) से तो अनजान हैं, परन्तु वे आशाएं अवश्य रखते हैं, तथा अनुमान पर उनका गुज़ारा है, जिसमें उन्हें उनके *आलिमो* (पादरियों) ने लिप्त कर दिया है। उदाहरण स्वरुप हम तो अल्लाह के चहीते हैं। हम नरक में गए भी तो कुछ समय के लिए, हमें हमारे पूर्वज दोषमुक्ति प्रदान करवा देंगे आदि-आदि। जैसे आजकल के अनपढ़ मुसलमानों को भी कुछ *आलिमो* तथा *मशायेख* (महात्माओं) ने ऐसे ही आकर्षित जाल में फंसा रखा है।

The Ummah Technology Mission

وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُونَ ﴿٧٩﴾

कारण उनका नाश है तथा अपनी इस कमाई के कारण उनका विनाश है।[1]

وَقَالُوا لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَةً ۚ قُلْ أَاتَّخَذْتُمْ عِندَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَن يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَهُ ۖ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٠﴾

(८०) तथा ये लोग कहते हैं कि हम तो कुछ ही दिन नरक में रहेंगे, (उनसे) कहो कि क्या तुमने अल्लाह तआला से कोई वचन लिया है[2]? यदि है तो नि:संदेह अल्लाह तआला अपना वचन भंग नहीं करेगा, अथवा तुम अल्लाह के ऊपर वह बातें लगाते हो जिन्हें तुम नहीं जानते।[3]

---

[1]ये यहूदियों के *आलिमों* का दुस्साहस तथा अल्लाह के भय से वंचित होने का स्पष्टीकरण है कि अपने हाथों से नियम बनाते हैं तथा बलपूर्वक यह सिद्ध करते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है। हदीस के आधार पर ويل नरक में एक घाटी का भी नाम है जिसकी गहराई इतनी है कि एक काफ़िर को उसमें गिरने में चालीस वर्ष लगेंगे। (अहमद,त्रिमज़ी, इब्ने हिब्बान तथा अल-हाकिम सह संदर्भ फ़तहुल क़दीर)। कुछ *आलिमो* ने इस आयत से क़ुरआन मजीद की बिक्री को उचित नहीं बताया है। परन्तु यह अर्थ सहीह नहीं है। *आयत* का उद्देश्य केवल उन्हीं लोगों को बताना है, जो दुनियाँ कमाने के लिए अल्लाह के कलाम में परिवर्तन करते तथा लोगों को धर्म के नाम पर धोखा देते हैं।

[2]यहूदी कहते थे कि दुनियाँ का अस्तित्व केवल सात हज़ार वर्ष के लिए है तथा हम हज़ार वर्ष के बदले एक दिन नरक में रहेंगे, इस प्रकार मात्र सात दिन नरक में रहेंगे। कुछ कहते थे कि हमने चालीस दिन बछड़े की *इबादत* की थी, चालीस दिन नरक में रहेंगे। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि क्या तुमने अल्लाह से सन्धि की है ? यह भी प्रश्न अस्वीकृत ही है। अर्थात यह ग़लत कहते हैं। अल्लाह तआला के साथ इस प्रकार का कोई प्रतिबन्ध नहीं है।

[3]अर्थात तुम्हारा यह दावा कि यदि हम नरक में गये भी तो मात्र कुछ दिनों के लिए जाएंगे, तुम्हारे अपनी ओर से है, तथा इस प्रकार तुम अल्लाह के ऊपर ऐसी बातें लगाते हो, जिनका तुम्हें स्वयं ज्ञान नहीं है। आगे अल्लाह तआला अपना वह नियम वर्णन कर रहा है जिसके आधार पर *क़ियामत* के दिन वह पुनीतों वाले तथा बुरों को उनके पुण्य तथा कुकर्मों का दण्ड देगा।

The Ummah Technology Mission

بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓـَٔتُهٗ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨١﴾

(८१) नि:संदेह जिसने भी पाप किया तथा उसके पाप ने उसे घेर लिया। वह सदैव नरक में रहेगा।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨٢﴾ ع

(८२) तथा जो लोग ईमान लाए एवं सदाचार किये वे स्वर्गवासी हैं, जो सदैव स्वर्ग में रहेंगे।[1]

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۭ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٨٣﴾

(८३) तथा जब हमने इस्राईल के पुत्रों से वचन लिया कि – तुम अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की इबादत न करना तथा माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करना, तथा उसी प्रकार निकट सम्बन्धियों एवं अनाथों एवं निर्धनों के साथ, तथा लोगों को अच्छी बातें बताना, नमाज़ स्थापित करना तथा ज़कात देते रहना, परन्तु थोड़े से लोगों के अतिरिक्त तुम सभी मुकर गये तथा मुँह मोड़ लिये।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ

(८४) तथा जब हमने तुमसे वचन लिया कि आपस में खून न बहाना (हत्या न करना)

---

[1] यह यहूदियों के दावे का खण्डन करते हुए स्वर्ग तथा नरक के नियम का वर्णन हो रहा है। जिसके कर्मों के खाता में बुराईयाँ ही बुराईयाँ होंगी अर्थात *कुफ़्र* तथा *शिर्क* (कि उनके करने के कारण यदि कुछ अच्छे कर्म भी किये होंगे तो उनका भी महत्व न होगा) तो वे सदैव नरक में रहेंगे तथा जो ईमान तथा पुण्य के कार्यों से सुशोभित होगें वह स्वर्ग में निवास करेंगे तथा जो ईमान वाले पाप करेंगे उनका मामला अल्लाह के समक्ष होगा, वह चाहेगा तो अपनी कृपा तथा दया से उनके पापों को क्षमा कर देगा अथवा दण्डस्वरुप कुछ समय के लिए नरक में रखने के पश्चात अथवा *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की सिफ़ारिश के कारण उनको स्वर्ग में प्रवेश कर देगा, जैसाकि इन बातों की पुष्टि सहीह हदीसों से होती है तथा अहले *सुन्नत* का विश्वास है।

The Ummah Technology Virsion

مِّن دِيَارِكُمْ ثُمَّ أَقْرَرْتُمْ وَأَنتُمْ تَشْهَدُونَ ﴿٨٤﴾

तथा अपनों को देश से न निकालना, तुमने स्वीकार किया तथा तुम उसके गवाह बने।[1]

ثُمَّ أَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ تَقْتُلُونَ أَنفُسَكُمْ وَتُخْرِجُونَ فَرِيقًا مِّنكُم مِّن دِيَارِهِمْ تَظَاهَرُونَ عَلَيْهِم بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَإِن يَأْتُوكُمْ أُسَارَىٰ تُفَادُوهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ إِخْرَاجُهُمْ ۚ أَفَتُؤْمِنُونَ بِبَعْضِ الْكِتَابِ وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا جَزَاءُ مَن يَفْعَلُ ذَٰلِكَ

(८५) फिर भी तुमने अपनों की हत्याएं की तथा अपने एक गुट को देश से निकाला तथा पाप एवं कठोरता करने के कार्यों में उनके विरुद्ध अन्य का पक्ष लिया। हाँ जब वे बन्दी बनकर तुम्हारे पास आए तो तुमने उनके बदले में धन दिया (जिसे फ़िदया कहते हैं), परन्तु उनका निकालना जो तुम पर *हराम* था (उसकी कुछ चिन्ता न की)। क्या तुम शास्त्र की कुछ बातें मानते हो तथा कुछ को

[1]इन *आयतो* में फिर उस वचन का वर्णन किया जा रहा है, जो *इस्राईल* के पुत्रों से लिया गया परन्तु इससे भी उन्होंने मुँह फेरा। इस वचन में प्रथम तो एक अल्लाह की *इबादत* के लिए बल दिया गया है जो प्रत्येक नबी की आधार शिला तथा प्रारम्भिक आमंत्रण रहा है। (जैसाकि *सूर:- अल-अम्बिया आयत* सख्या २५ तथा अन्य *आयतो* से स्पष्ट है) इसके पश्चात माता-पिता से सदव्यवहार का आदेश है। अल्लाह की *इबादत* के पश्चात माता-पिता की आज्ञापालन तथा उनके साथ सदव्यवहार से स्पष्ट कर दिया गया कि जिस प्रकार अल्लाह की *इबादत* आवश्यक है, उसी प्रकार इसके पश्चात माता-पिता की आज्ञापालन तथा सेवा भी अति आवश्यक है तथा इसमें आलस्य करने का कोई स्थान नहीं है। क़ुरान में विभिन्न स्थानों पर अल्लाह तआला ने अपनी *इबादत* के पश्चात द्वितीय स्थान पर माता-पिता की आज्ञापालन का वर्णन करके उनके महत्व को स्पष्ट कर दिया है, उसके पश्चात निकट सम्बन्धियो अनाथ तथा निर्धनों के साथ सदव्यवहार पर बल दिया गया तथा कोमल वचन का आदेश है। इस्लाम में भी इन बातों पर बड़ा बल दिया गया है जैसाकि *रसूल अल्लाह सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम* की हदीस से स्पष्ट है। इस वचन में *नमाज़* स्थापित करना तथा *ज़कात* देने का भी आदेश है। जिससे ज्ञात होता है कि दोनों *इबादतें* पूर्व के धर्मों के नियमों में सम्मिलित रही हैं, जिनसे इनकी विशेषता परिलक्षित होती है। इस्लाम में भी यह दोनो इबादतें अति महत्वपूर्ण हैं, यहाँ तक कि उनमें से किसी एक का अस्वीकार करना अथवा उससे मुँह चुराना कुफ़्र के समतुल्य समझा गया है, जैसाकि आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक़ (رضی الله عنه) के *खिलाफ़त* काल में *ज़कात* अदा न करने वालों के विरुद धर्मयुद्ध से स्पष्ट है।

The Ummah Technology Mission

مِنكُمْ إِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يُرَدُّونَ إِلَىٰ أَشَدِّ الْعَذَابِ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٨٥﴾

नकारते हो ?[1] तुममें से जो भी ऐसा करे उसका दण्ड इसके अतिरिक्त क्या हो कि संसार में अपमान एवं क़ियामत के दिन कठोर यातनाओं की मार। तथा अल्लाह तुम्हारे कर्मों से अनजान नहीं है।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٨٦﴾

(८६) ये वे लोग हैं जिन्होंने सांसारिक जीवन को परलोक के बदले ख़रीद लिया है, उनकी न यातनाएं कम होंगी न उनकी सहायता की जाएगी।[2]

---

[1] *नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के समय में *अन्सार* (जो इस्लाम से पूर्व मूर्तिपूजक थे) के दो क़बीले थे- *औस* तथा *खज़रज*। उनका आपस में समय-समय पर युद्ध होता रहता था। इसी प्रकार मदीने में यहूदियों के तीन कबीले थे- बनू कैनुकाअ, बनू नज़ीर तथा बनू कुरैज़: ये भी आपस में लड़ा करते थे। बनू कुरैज़ा औस के मित्र थे तथा बनू कैनुकाअ, बनू नज़ीर *खज़रज* के मित्र थे। युद्ध में ये अपने-अपने मित्र की सहायता करते तथा अपने ही सधर्मी यहूदियों की हत्या करते, उनके घरों को लूटते, तथा उन्हें देश से निकाल देते थे। जबकि *तौरात* के अनुसार ऐसा करना उनके लिए हराम था। परन्तु फिर उन्हीं यहूदियों को जब वे पराजित हो जाने के कारण बन्दी बन जाते तो *फ़िदया* (बदले में अर्थ दण्ड अदा करना) देकर छुड़ा लेते तथा कहते कि *तैरात* में हमें यह आदेश दिया गया है। इन *आयतो* में यहूदियों के इसी कर्म का वर्णन है कि उन्होंने धार्मिक नियमों को मोम की नाक के समान बना लिया हैं। किसी आदेश का पालन करते हैं तथा किसी समय धार्मिक नियमों के आदेशो को कोई महत्व नहीं देते। हत्या, देश निकाला तथा एक-दूसरे के विरूद्ध सहायता करना,उनके धार्मिक नियमों में भी *हराम* था, इन आदेशों की उन्होंने अवहेलना की तथा *फ़िदया* देकर छुड़ा लेने का जो आदेश था, उसका पालन किया। यद्यपि प्रथम तीन नियमों का वे पालन करते, तो *फ़िदया* देकर छुड़ाने का अवसर ही न आता।

[2] यह धार्मिक नियमों में से किसी के पालन करने तथा किसी के पालन न करने के कारण मिलने वाले दण्ड का वर्णन हो रहा है। इसका दण्ड संसार में मान-मर्यादा के स्थान पर (जो पूर्ण धार्मिक नियमों पर पालन करने के कारण प्राप्त होता है) अपमान तथा अनादर से परिवर्तित हो जाता है तथा *आख़िरत* में स्थाई सुख के बजाय कठोर यातना है। इससे ज्ञात हुआ कि अल्लाह के यहाँ वह आज्ञापालन स्वीकार है जो पूर्णरूप से हो। कुछ बात का मान लेना अथवा उनका पालन करना अल्लाह तआला के यहाँ उसकी

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
وَقَفَّيْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ۖ
وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ
وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ
اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا
لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ

(८७) हमने मूसा (*अलैहिस्सलाम*) को धर्मशास्त्र प्रदान की तथा उनके पश्चात लगातार रसूल भी भेजे[1] तथा हमने ईसा (*अलैहिस्सलाम*) बिन मरियम को स्पष्ट निशानियाँ प्रदान कीं तथा पवित्र आत्मा (आदरणीय जिब्रील) से उनका समर्थन कराया, परन्तु जब कभी भी तुम्हारे पास

कोई महत्व नहीं। यह आयत हम मुसलमानों को भी विचार के लिए आमन्त्रित कर रही है कि कहीं मुसलमानों के अपमान तथा अनादर का कारण भी मुसलमानों का वही व्यवहार तो नहीं जो प्रस्तुत *आयत* में यहूदियों का वर्णन किया गया है ?

[1] ﴿وَقَفَّيْنَا مِنۢ بَعْدِهِۦ بِٱلرُّسُلِ﴾ का अर्थ है कि मूसा *अलैहिस्सलाम* के पश्चात निरन्तर ईशदूत आते रहे यहाँ तक कि *इस्राईल* के वंश में *नबीयों* की यह श्रृंखला आदरणीय ईसा *अलैहिस्सलाम* पर समाप्त हो गयी بَيِّنات से चमत्कार का तात्पर्य है, जो आदरणीय ईसा *अलैहिस्सलाम* को प्रदान किये गये, जैसे मृतक को जीवित करना, कुष्ठ रोगी तथा अंधे को स्वस्थ करना आदि, जिनका वर्णन सूरः *आले इमरान*-४९ में है। *'रुहुल कुदुस'* अर्थात पवित्र आत्मा से तात्पर्य आदरणीय *जिब्रील* हैं। इनको *'रुहुल कुदस'* इसलिए कहा गया है कि उनकी सृष्टि अल्लाह द्वारा *'कुन'* (كن) शब्द कहने से हुई थी, जैसाकि स्वंय आदरणीय ईसा को *'रुह'* कहा गया है, तथा القدس (*अल-कुदस*) से अल्लाह तआला से तात्पर्य है तथा उसके साथ *'रुह'* शब्द की अधिकता आदर सूचक है। इब्ने जरीर ने इसी को उचित माना है क्योंकि सूरः *अल-मायदः* की *आयत* संख्या १० में *'रुहुल कुदस'* तथा *'इंजील'* दोनों अलग-अलग वर्णित हैं। (इसलिए *'रुहुल कुदस'* से *'इंजील'* का तात्पर्य सहीह नहीं हो सकता) एक अन्य *आयत* में आदरणीय जिब्रील को *"रुहुल अमीन"* कहा गया है तथा *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने आदरणीय हस्सान (رضی الله عنه) के सम्बन्ध में फरमाया :

«اللَّهُمَّ أَيِّدْهُ بِرُوْحِ القُدُسِ» .

(ऐ अल्लाह रुहुल कुदस से इसका समर्थ करा।

एक अन्य हदीस में है।

و جبريل معك

(जिब्रील तुम्हारे साथ हैं)

इससे ज्ञात हुआ कि 'रुहुल कुदस' से तात्पर्य आदरणीय जिब्रील ही हैं। (फतहुल वयान,इब्ने कसीर, सन्दर्भ अशरफुल हवाशी से)

The Ummah Technology Mission

فَفَرِيقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَ ﴿٨٧﴾

रसूल वह चीज़ लाए, जो तुम्हारे विचारों के विरुद्ध थीं, तुमने तुरंत अभिमान किया, फिर कुछ को तुमने झुठला दिया तथा कुछ की हत्या कर दी।[1]

وَقَالُوا قُلُوبُنَا غُلْفٌ ۚ بَل لَّعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا مَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾

(८८) तथा उन्होंने कहा कि हमारे दिल ढंके हुए हैं,[2] (नहीं, नहीं) बल्कि उनके अधर्म के कारण उन्हें अल्लाह ने धित्कार दिया है, उनका ईमान किंचिर मात्र है।[3]

وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتَابٌ مِّنْ عِندِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ وَكَانُوا مِن قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فَلَمَّا جَاءَهُم مَّا عَرَفُوا كَفَرُوا بِهِ ۚ

(८९) तथा जब उनके पास उनका ग्रन्थ (तौरात) को प्रमाणित करने के लिए एक शास्त्र (पवित्र क़ुरआन) आ गया, यद्यपि इससे पूर्व ये स्वयं इसके साथ काफ़िरोपर विजय चाहते थे।[4] तो आ जाने के उपरान्त तथा

---

[1]जैसे परम आदरणीय *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* तथा आदरणीय ईसा को झुठलाया एंव आदरणीय *ज़कारिया* की हत्या की।

[2]अर्थात हम पर ऐ *मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* तेरी बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, जिस प्रकार अन्य स्थान पर है।

﴿ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمَاوَاتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَن فِيهِنَّ ۚ وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَٰكِن لَّا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ ﴾

"हमारे दिल इस आमन्त्रण से पट में है जिसकी ओर तू हमें बुलाता है"

(फुस्सिलत -५)

[3]दिलों पर सत्य बातों का प्रभाव न पड़ना, कोई गर्व की बात नहीं। अपितु यह निन्दनीय होने के लक्षण हैं। अत: उनका ईमान भी तनिक है (जो अल्लाह के यहाँ अस्वीकार्य है) अथवा उनमें ईमान लाने वाले भी थोड़े ही लोग होंगे।

[4] يستفتحون का एक अर्थ यह है, प्रभावशाली तथा विजय की प्रार्थन करते थे अर्थात जब ये यहूदी मूर्तिपूजकों से पराजित हो जाते तो अल्लाह से प्रार्थाना करते ऐ अल्लाह अन्तिम नबी शीघ्र भेज कि उसके साथ सम्मिलित होकर हम इन मूर्तिपूजकों पर विजय प्राप्त करें। अर्थात استفتاح का अर्थ استنصار है। दूसरा अर्थ सूचना देने के हैं। أى يخبرونهم بانه سيبعث

The Ummah Technology Mission

فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾

पहचान लेने के उपरान्त उन्हें नकार दिया, अल्लाह (तआला) की धिक्कार हो काफिरों पर।

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖۤ اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٩٠﴾

(९०) बहुत बुरी है वह चीज़ जिसके बदले उन्होंने अपने को बेच डाला, वह उनका कुफ्र करना है अल्लाह तआला की ओर से अवतरित शास्त्र को। मात्र इस बात[1] से जल कर कि अल्लाह ने अपनी कृपा अपने जिस भक्त पर चाहा उतारा, इस कारण वे क्रोध पर क्रोध के भागी हो गए[2] और उन काफ़िरों के लिये अपमान जनक यातनायें हैं।

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۚ

(९१) तथा जब उनसे कहा गया कि उस पर ईमान लाओ जिसे अल्लाह ने उतारा है, तो उन्होंने कह दिया कि जो हम पर (तौरात)

अर्थात यहूदी काफ़िरों को सूचना देते थे कि शीघ्र नबी आयेंगे। (फ़तहुल क़दीर) परन्तु आने के पश्चात ज्ञान रखने के उपरान्त भी *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की *नबूवत* पर मात्र द्वेष की भावना के कारण ईमान नहीं लाये, जैसा कि अगली *आयत* में है।

[1]अर्थात इस बात के ज्ञान के पश्चात भी कि परम आदरणीय *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* वही अन्तिम *पैग़म्बर* हैं जिनकी विशेषताएं *तौरात* तथा *इंजील* में वर्णित हैं तथा जिनके कारण ही अहले किताब उनकी एक मुक्ति दाता के रुप में प्रतीक्षा भी कर रहे थे। परन्तु उन पर मात्र ईर्ष्या तथा द्वेष के कारण ईमान नहीं लाए कि यह नबी हमारे वश में से क्यों न हुए, जैसा कि हमारा अनुमान था। अर्थात उनका इकार तर्कपूर्ण नहीं, वंशीय द्वेष, ईर्ष्या तथा कपट पर आधारित है।

[2]क्रोध पर क्रोध का अर्थ होता है, अत्यधिक क्रोध। क्योंकि बार-बार वे क्रोध का कार्य करते रहे, जैसा कि विस्तृत वर्णन गुज़र चुका है तथा अब मात्र द्वेष के कारण क़ुरआन तथा परम आदरणीय *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का इंकार किया।

The Ummah Technology Mission

وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ۗ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنبِيَاءَ اللَّهِ مِن قَبْلُ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٩١﴾

अवतरित हुई उस पर हमारा ईमान है,[1] और वह उसके सिवाय (पवित्र क़ुरआन) का इन्कार करते हैं, जब कि वह सत्य है,उनके धर्मग्रन्थ की पुष्टि कर रहा है। (हे ! नराशंस:) उनसे कहो कि यदि तुम अपने ग्रन्थ पर विश्वास रखते हो तो इससे पहले अल्लाह के दूतों की हत्याएँ क्यों की।[2]

وَلَقَدْ جَاءَكُم مُّوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِن بَعْدِهِ وَأَنتُمْ ظَالِمُونَ ﴿٩٢﴾

(९२) तथा तुम्हारे पास मूसा (अलैहिस्सलाम) यही निशानियाँ लेकर आए, परन्तु फिर भी तुमने बछड़े की पूजा की,[3] तुम हो ही अत्याचारी।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ ۖ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُم بِقُوَّةٍ وَاسْمَعُوا ۖ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا ۗ وَأُشْرِبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ

(९३) तथा जब हमने तुमसे वचन लिया और तुम पर तूर पर्वत खड़ा कर दिया (और कह दिया) कि हमारी प्रदान की हुई चीज़ों को सुदृढ़ता से पकड़ो, तथा सुनो, तो उन्होंने कहा हमने सुना तथा अवज्ञा की,[4] तथा

---

[1]अर्थात तौरात पर हम ईमान रखते हैं अत: उसके पश्चात हमें क़ुरआन पर ईमान लानें की आवश्यकता नहीं है।

[2]अर्थात *तौरात* पर ईमान का दावा भी सही नहीं है। यदि *तौरात* पर तुम्हारा ईमान होता तो *नबियों* की तुम हत्या न करते, इससे ज्ञात हुआ कि अब भी तुम्हारा इंकार मात्र द्वेष तथा ईर्ष्या पर आधारित है।

[3]यह उनके ईर्ष्या तथा द्वेष का एक अन्य प्रमाण है कि आदरणीय मूसा *अलैहिस्सलाम* स्पष्ट निशानियाँ तथा अकाटय प्रमाण लेकर आये कि वह अल्लाह के रसूल हैं तथा इबादत के योग्य केवल अल्लाह तआला ही है, परन्तु तुमने इसके उपरान्त आदरणीय मूसा *अलैहिस्सलाम* को भी दुखी किया तथा एक अल्लाह को छोड़कर बछड़े को पूज्य बना लिया।

[4]ये न मानने तथा अस्वीकार करने की अन्तिम सीमा है कि मुख से तो स्वीकारा कि सुन लिया अर्थात पालन करेंगे तथा दिल में यह विचार कि हमें कौन-सा ऐसा कर्म करना है ?

The Ummah Technology Mission

بِكُفْرِهِمْ ۚ قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُمْ بِهِ إِيمَانُكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٩٣﴾

उनके दिलों में बछड़े का प्रेम (जैसा कि) पिला दिया गया,[1] उनकी अवज्ञता के कारण |[2] (उनसे) कह दीजिए की तुम्हारा ईमान तुम्हें बुरे आदेश दे रहा है, यदि तुम ईमान वाले हो |

قُلْ إِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ خَالِصَةً مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٩٤﴾

(९४) (आप) कह दीजिए कि यदि अल्लाह के पास आख़िरत का घर तुम्हारे ही लिए है अन्य किसी के लिए नहीं, तो आओ अपनी सत्यता की पुष्टि के लिए मृत्यु माँगो |

وَلَنْ يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٩٥﴾

(९५) परन्तु अपने कर्मों को देखते हुए वे कभी भी मृत्यु नहीं माँगेंगे |[3] और अल्लाह (तआला) अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है |

---

[1]एक तो प्रेम स्वयं ही ऐसा भाव है कि मनुष्य को अंधा तथा बधिर बना देता है | दूसरे, इसको أُشْرِبُوا (पिला दी गई) से तुलना की गई है क्योंकि पानी मनुष्य के नस-नस तथा शरीर के तन्तुओं में दौड़ता है जबकि भोज्य पदार्थ इस प्रकार नहीं होता | (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात अवज्ञा तथा बछड़े का प्रेम तथा पूजा का कारण वह कुफ़्र था, जो उनके दिलों में घर कर चुका था |

[3]आदरणीय इब्ने अब्बास (رضی اللہ عنہما) ने इसकी व्याख्या *मुबाहला* का आमन्त्रण से की है अर्थात यहूदियों से कहा गया कि यदि तुम *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की नबूवत को अस्वीकार तथा अल्लाह के प्रिय होने के दावे में सच्चे हो तो *मुबाहला* कर लो अर्थात अल्लाह के दरबार में मुसलमान तथा यहूदी दोंनो मिलकर यह प्रार्थना करें कि -हे अल्लाह ! दोंनो में से जो झूठा है उसे मृत्यु प्रदान कर दे, यही *मुबाहला* उन्हें *सूरः जुमा* में भी दिया गया है | *नजरान* क्षेत्र के ईसाईयों को भी यही आमन्त्रण दिया गया था, जैसा कि *सूरः आले इमरान* में है | चूंकि यहूदी भी इसाईयों की तरह झूठे थे इसलिए इसाईयों की तरह ही यहूदीयों के विषय में भी अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यह कदापि मृत्यु की कामना (अर्थात *मुबाहला*) नहीं करेंगे | हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने इसी व्याख्या को प्राथमिकता दी है | (तफसीर इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَىٰ حَيَوٰةٍ ۛ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ ۖ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهِۦ مِنَ الْعَذَابِ أَن يُعَمَّرَ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌۢ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾

(९६) बल्कि सबसे अधिक दुनियाँ के जीवन को प्रेम करने वाला (ऐ नबी !) आप उन्हीं को पाएंगे, ये जीवन की लालच में मुश्रिकों (मूर्तिपूजकों) से भी अधिक हैं।[1] उनमें से प्रत्येक व्यक्ति एक-एक हज़ार वर्ष की आयु चाहता है, यद्यपि ये आयु दिया जाना भी उन्हें यातनाओं से नहीं बचा सकता, अल्लाह (तआला) उनके कर्मों को भली भाँति देख रहा है।

قُلْ مَن كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيلَ فَإِنَّهُۥ نَزَّلَهُۥ عَلَىٰ قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٩٧﴾

(९७) (ऐ नबी !) आप कह दीजिए कि जो जिब्रील के शत्रु हों, जिसने आप के दिल पर अल्लाह का संदेश उतारा है, जो संदेश उनके पास की किताब की पुष्टि करने वाला तथा ईमानवालों को मार्ग दर्शन तथा शुभ सूचना देने वाला है। (तो अल्लाह भी उनका शत्रु है)[2]

---

[1] मृत्यु की कामना तो दूर, यह तो सांसारिक जीवन के, सभी लोगों यहाँ तक कि मूर्तिपूजकों से भी अधिक प्रेमी है, परन्तु यह दीर्घ आयु भी उन्हें अल्लाह की यातना से नहीं बचा सकेगी। इन *आयतो* से ज्ञात हुआ कि यहूदी अपने उन दावों में आधार से ही झूठे थे कि वह अल्लाह के प्रिय तथा निकटवर्ती हैं अथवा स्वर्ग के मात्र वही अधिकारी हैं तथा अन्य नरकवासी, क्योंकि वास्तव में यदि ऐसा होता अथवा कम से कम उन्हें अपने दावों की सत्यता पर पूर्ण विश्वास होता तो अवश्य वह *मुबाहला* करने को तैयार हो जाते, ताकि उनकी सत्यता स्पष्ट तथा मुसलमानों की असत्यता प्रदर्शित हो जाती। मुबाहले से पूर्व यहूदियों का मुँह फेरना तथा अस्वीकार करना इस बात को व्यक्त करता है कि यद्यपि वह मुख से अपने विषय में प्रसन्नता सूचक बातें कर लिया करते थे, परन्तु उनके दिल वास्तविकता से परिचित थे तथा जानते थे कि अल्लाह के दरबार में जाने के पश्चात उनका परिणाम वही होगा, जो अल्लाह ने अपने अवज्ञाकारियों के लिए निर्धारित कर रखा है।

[2] *हदीसों* में है कि यहूदियों के कुछ आलिम *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के पास आए तथा कहा कि यदि आप *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने उनका ठीक उत्तर दे दिया तो हम ईमान ले आयेंगे क्योंकि नबी के अतिरिक्त उनका उत्तर कोई नहीं दे सकता। जब आप

The Ummah Technology Mission

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَرُسُلِهِۦ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَىٰلَ فَإِنَّ ٱللَّهَ عَدُوٌّ لِّلْكَٰفِرِينَ ﴿٩٨﴾

(९८) जो व्यक्ति अल्लाह का तथा उसके फ़रिश्तो तथा उसके रसूलों तथा जिब्रील एवं मीकाईल का शत्रु हो ऐसे काफिरों (अधर्मियों) का शत्रु स्वयं अल्लाह है।[1]

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके प्रश्नों का उत्तर ठीक-ठीक दे दिया तो उन्होंने कहा कि आप *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* पर प्रकाशना (वहयी) कौन लाता है? आप *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया "जिब्रील" यहूदी कहने लगे: जिब्रील तो हमारा शत्रु है, वही तो युद्ध, हत्या तथा यातना लेकर उतरता रहा है। तथा इस बहाने से आप (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) को मानने से इंकार कर दिया। (इब्ने कसीर तथा फ़तहुल क़दीर)

[1]यहूदी कहते थे कि *मीकाईल* हमारा मित्र है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया यह सभी मेरे परम भक्त हैं जो उनका अथवा उनमें से किसी एक का भी शत्रु है, वह अल्लाह का शत्रु है। हदीस में आता है।

«مَنْ عَادَىٰ لِيْ وَلِيًّا فَقَدْ بَارَزَنِي بِالْحَرْبِ».

जिसने मेरे किसी मित्र से शत्रुता रखी, उसने मेरे साथ युद्ध की घोषणा कर दी।
(सहीह बुखारी किताबुल रिकाक़ बाबुल तवादु)

अर्थात अल्लाह के किसी वली से शत्रुता सारे *औलिया अल्लाह* से, बल्कि अल्लाह तआला से भी शत्रुता है। इससे स्पष्ट हुआ कि *औलिया अल्लाह* से प्रेम तथा उनका सम्मान करना अति आवश्यक है तथा उनसे ईर्ष्या तथा द्वेष घोर अपराध है कि अल्लाह तआला उसके विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर रहा है। *औलिया अल्लाह* कौन हैं? इसके लिए देखिए *सूरः यूनुस आयत* संख्या ६२ तथा ६३ परन्तु प्रेम तथा सम्मान का यह कदापि अर्थ नहीं है कि उनके मरने के पश्चात उनकी क़ब्रों पर गुम्बद बनायें जाएं, उनकी क़ब्रों पर सालाना (वार्षिक) उर्स के नाम पर मेलों का आयोजन किया जाये - उनके नाम पर नज़र नियाज़ (भेंट) तथा क़ब्रों को गुस्ल (स्नान) तथा उन पर चादरें चढ़ाई जाएं तथा उन्हें कष्ट निवारक, चिन्ताहरण, लाभ-हानि पहुंचाने वाला समझा जाए। उनकी क़ब्रों पर हाथ बांधकर खड़े होना तथा उनकी चौखट पर माथा टेका जाए आदि, जैसा कि दुर्भाग्य से *'औलिया अल्लाह* के प्रेम' के नाम पर लात व मनात का व्यापार उन्नति कर रहा है। हालांकि यह 'प्रेम नहीं है उनकी इबादत है।' जो *शिर्क* तथा क्रूर अत्याचार है। अल्लाह तआला इस क़ब्र की *इबादत* के षड़यंत्र से सबको सुरक्षित रखे।

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿٩٩﴾

(९९) तथा नि:सन्देह हमने आप की ओर स्पष्ट निशानियाँ भेजी हैं, जिनको कुकर्मियों के अतिरिक्त अन्य कोई इन्कार नहीं करता।

اَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٠﴾

(१००) ये लोग जब कभी भी वचन देते हैं तो उनका एक न एक गुट उसे तोड़ देता है। अपितु उनमें से अधिकतर ईमान से वंचित हैं।

وَلَمَّا جَاۗءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۤ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَاۗءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾

(१०१) तथा जब कभी इनके पास अल्लाह का कोई *रसूल* उनकी किताब की पुष्टि करने आया, तो इन *अहले किताब* के एक गुट ने अल्लाह की किताब को इस प्रकार पीछे डाल दिया जैसे जानते नहीं थे।[1]

وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰي مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ۤ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَي الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ

(१०२) तथा उसके पीछे लग गये जिसे शैतान, (आदरणीय) *सुलेमान* के राज्य में पढ़ते थे। सुलेमान ने तो कुफ़्र न किया था बल्कि यह कुफ़्र शैतानों का था, वे लोगों को जादू सिखाते थे।[2] और बाबुल में हारुत तथा

---

[1]अल्लाह तआला नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* को सम्बोधित करते हुए फ़रमा रहा है कि हमने आप (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) को बहुत सी स्पष्ट निशानियाँ प्रदान की हैं, जिनको देखकर यहूदियों को भी ईमान ले आना चाहिए था। इसके अतिरिक्त स्वंय उनकी किताब *तौरात* में भी आप (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) की विशेषताओं का वर्णन तथा आप (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) पर ईमान लाने का वचन विद्यमान है, परन्तु उन्होंने पहले भी किस वचन की कब चिन्ता की है, जो इस वचन की करेंगे ? वचन तोड़ना उनके एक गुट का सदैव का आचरण रहा है। यहाँ तक कि अल्लाह की किताब को भी इस प्रकार पीछे डाल दिया, जैसे वे उसे जानते ही नहीं।

[2]अर्थात इन यहूदियों ने अल्लाह की किताब तथा वचन की कोई चिन्ता नहीं की, परन्तु शैतानों के अनुयाई बनकर न केवल जादू-टोने का कार्य करते रहे, बल्कि यह दावा भी किया कि आदरणीय सुलैमान *अलैहिस्सलाम* भी (نعوذ بالله) अल्लाह के पैग़म्बर नहीं थे, बल्कि एक जादूगर थे तथा जादू की शक्ति से ही राज्य करते रहे। अल्लाह तआला ने

The Ummah Teshnology Mission

وَمَارُوتَ ۚ وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّىٰ يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ

मारुत दो फरिश्तों पर जो उतारा गया था।[1] वह दोनों भी किसी व्यक्ति को उस समय

फ़रमाया : आदरणीय सुलैमान *अलैहिस्सलाम* जादू का कार्य नहीं किया करते थे क्योंकि जादू का कार्य तो कुफ़्र है, इस कुफ़्र का कार्य आदरणीय सुलैमान *अलैहिस्सलाम* क्यों कर सकते थे ? कहते हैं कि आदरणीय सुलैमान *अलैहिस्सलाम* के समय में जादूगरी का कार्य अत्यधिक सामान्य रुप से व्याप्त था, आदरणीय सुलैमान *अलैहिस्सलाम* ने इसको समाप्त करने के लिए जादू की किताबें लेकर अपनी कुर्सी अथवा तख़्त के नीचे गाड़ दिया था। आदरणीय सुलैमान अलैहिस्सलाम के मृत्यु के पश्चात उन शैतानों (राक्षसों) तथा जादूगरों ने इन किताबों को निकालकर न केवल लोगों को दिखाया बल्कि लोगों को यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि आदरणीय सुलैमान *अलैहिस्सलाम* की शक्ति तथा राज्य की गुप्त बात यही जादू का कार्य था तथा इसी आधार पर उन अत्याचारियों ने आदरणीय सुलैमान अलैहिस्सलाम को भी काफ़िर सिद्ध कर दिया, जिसका खण्डन अल्लाह तआला ने किया। (इब्ने कसीर आदि) والله أعلم

[1]कुछ व्याख्याकारों ने وما أنـــزل में ما नकारात्मक माना है तथा हारुत एवं मारुत पर किसी चीज़ के उतरने को नकारा है। (इब्ने कसीर) इसी प्रकार हारुत एवं मारुत के विषय में व्याख्या में इस्राईली कथाओं की भरमार है। परन्तु कोई सहीह प्रमाणित कथन उस विषय में नहीं। अल्लाह तआला ने बिना किसी विस्तारपूर्वक जानकारी के अत्यधिक संक्षिप्तरुप से इस घटना का वर्णन किया है। हमें केवल उस पर तथा उसी सीमा तक ईमान रखना चाहिए। (तफ्सीर इब्ने कसीर) क़ुरआन के शब्दों से यह अवश्य ज्ञात होता है कि अल्लाह तआला ने बाबुल में हारुत एवं मारुत फ़रिश्तों पर जादू का ज्ञान उतारा था तथा इसका उद्देश्य (والله أعلم بالصواب) यह ज्ञात होता है, ताकि वह लोगों को बतायें कि *नबियों* के हाथों पर प्रदर्शित होने वाले चमत्कार, जादू से भिन्न चीज़ हैं तथा जादू यह चीज़ है जिसका ज्ञान अल्लाह तआला की ओर से हमें प्रदान किया गया है (उस काल में जादू समान्य रुप से होने के कारण लोग नबियों को भी نعوذ بالله जादूगर तथा कलाकार समझने लगे थे) उसी संभावना से लोगों को बचाने के लिए परीक्षा स्वरुप फ़रिश्तों को उतारा गया।

दूसरा उद्देश्य *इस्राईल* की सन्तान की चारित्रिक गिरावट की ओर संकेत करना प्रतीत होता है कि *इस्राईल* की संतान किस प्रकार जादू सीखने के लिए इन फ़रिश्तों के पीछे पड़े तथा यह बताने के उपरान्त कि जादू कुफ़्र है तथा हम परीक्षा के लिए आये हैं, वह जादू की शिक्षा प्राप्त करने के लिए टूटे पड़ रहे थे, जिससे उनका उद्देश्य हँसते-बसते घरों को उजाड़ना तथा पति-पत्नी के मध्य द्वेष की दीवारें खड़ी करनी थी। अर्थात यह उनकी गिरावट, बिगाड़ तथा उपद्रव के लिए एक विशेष श्रृंखला थी और इस प्रकार के

The Ummah Technology Mission

فَلَا تَكْفُرْ فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ وَمَا هُم بِضَارِّينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنفَعُهُمْ وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهِ أَنفُسَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٢﴾

तक न सिखाते[1] थे जब तक वे यह न कह दें कि हम तो एक परीक्षा हैं,[2] तू कुफ़्र न कर, फिर लोग उनसे वह सीखते जिससे पति-पत्नी में भेद डाल दें। वास्तव में वे बिना अल्लाह की इच्छा के किसी को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते।[3] ये लोग वह सीखते हैं जो इन्हें न हानि पहुँचाए तथा न लाभ पहुँचा सके, तथा वह निश्चित रुप से जानते हैं कि इसके लेने वाले का आख़िरत में कोई भाग नहीं है। तथा वह बहुत ही बुरी चीज़ है जिसके बदले वे अपने आप को विक्रय कर रहे हैं, यदि ये जानते होते।

وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَمَثُوبَةٌ مِّنْ عِندِ اللَّهِ خَيْرٌ

(१०३) और यदि ये लोग ईमान लाते तथा अल्लाह से भय रखते तो अल्लाह (तआला)

अंधविश्वास तथा चरित्र की गिरावट किसी समुदाय के अत्यधिक बिगाड़ के लक्षण हैं। أعاذنا الله منه

[1]यह ऐसे ही है जैसे असत्य का खण्डन करने के लिए असत्य धर्म का ज्ञान किसी गुरू से प्राप्त किया जाये। गुरू शिष्य को इस विश्वास के साथ असत्य धर्म का ज्ञान सिखाये की वह उसका खण्डन करेगा। परन्तु ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात वह स्वंय अधर्मी हो जाये अथवा उसका दुरुपयोग करे तो गुरु उसमें दोषी नहीं होगा।

[2] أي إنما نحن ابتلاءٌ واختبار من الله لعباده हम अल्लाह की ओर से भक्तो के लिए परीक्षा हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[3]यह जादू भी उस समय तक किसी को हानि नहीं पहुँचा सकता, जब तक अल्लाह का आदेश तथा इच्छा न हो। इसलिए उसके सीखने का क्या लाभ है? यही कारण है कि इस्लाम ने जादू सीखने तथा करने को कुफ़्र कहा है। हर प्रकार की भलाई की कामना तथा हानि से सुरक्षा के किए केवल अल्लाह तआला से ही प्रार्थना की जाय क्योंकि वही प्रत्येक चीज़ का करने वाला है तथा सृष्टि का प्रत्येक कार्य उसी की इच्छानुसार होता है।

The Ummah Technology Mission

لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠٣﴾

की ओर से अच्छा प्रतिकार प्राप्त होता, यदि ये जानते होते।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٠٤﴾

(१०४) ऐ ईमानवालो! तुम (*नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* को) راعنا (हमारा ध्यान दीजिए अथवा हमारा विचार कीजिए) न कहा करो, अपितु انظرنا (हमारी ओर देखिये) कहो।[1] तथा सुनते रहा करो एवं काफ़िरों के लिए दुखदायी यातना है।

مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿١٠٥﴾

(१०५) न तो अहले किताब के काफ़िर तथा न मूर्तिपूजक चाहते हैं कि तुम पर तुम्हारे पालक की ओर से भलाई उतरे (उनके इस ईर्ष्या से क्या हुआ ?) अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपनी कृपा विशेष रुप से प्रदान कर दे। और अल्लाह अत्यधिक कृपा वाला है।

---

[1] راعنا का अर्थ है, हमारा विचार कीजिये। बात समझ में न आए तो सुनने वाला इस शब्द का प्रयोग करके वक्ता को अपनी ओर आकर्षित करता था, परन्तु यहूदी अपने द्वेष तथा ईर्ष्या के कारण इस शब्द को थोड़ा-सा बिगाड़ कर प्रयोग करते थे, जिससे उसका अर्थ बदल जाता था। तथा उनके द्वेष भाव को संतोष होता था, उदाहरणार्थ वे कहते थे, راعينا जिसका अर्थ 'हमारे चरवाहे। अथवा راعِناً का अर्थ है 'मूर्ख' आदि, जैसे वह السلام عليكم के बजाए السام عليكم कहा करते थे जिसका अर्थ है, 'तुम पर मौत आये।' अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुम انظرنا कहा करो। इससे एक तो यह बात ज्ञात हुई कि ऐसे शब्द जिनमें अनादर तथा अपमान की किचिंत मात्र भी आभास हो तो सम्मान तथा आदर स्वरुप उनको प्रयोग करना उचित नहीं। दूसरी यह बात सिद्ध हुई कि काफ़िरों के साथ कर्म तथा कथनों में समता करने से बचा जाये, ताकि मुसलमान

«مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ»

(जो किसी समुदाय की समानता करेगा, वह उन्हीं में सम्मिलित होगा) (अबु दाऊद किताबुलिबास)

की चेतावनी में सम्मिलित न हों।

The Ummah Technology Mission

مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا ؕ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٠٦﴾

(१०६) जिस आयत को हम निरस्त कर दें अथवा भुला दें उससे अच्छी अथवा उस जैसी अन्य लाते हैं,[1] क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह हर चीज का सामर्थ्य रखता है।

---

[1] نسخ के शाब्दिक अर्थ तो "नक़्ल" करने के हैं, लेकिन धार्मिक परिभाषा में एक आदेश को निरस्त करके दूसरा आदेश उतारने के हैं। यह परिवर्तन अल्लाह तआला की ओर से हुआ है जैसे आदम *अलैहिस्सलाम* के समय में सगे बहन-भाई में विवाह मान्य था, बाद में इसे अवैध कर दिया गया आदि, इसी प्रकार क़ुरआन में भी अल्लाह तआला ने कुछ आदेश निरस्त करके उनके स्थान पर नये नियम उतारे हैं। नस्ख (निरस्त) तीन प्रकार का होता है। पहला प्रकार यह है कि एक आदेश को बदलकर दूसरा आदेश उतारा गया। दूसरा है نسخ مع التلاوة अर्थात पहले आदेशों के शब्द क़ुरआन मजीद में विद्यमान हैं, उनको पढ़ा जाता है, परन्तु दूसरा आदेश जो बाद में उतारा गया, वह भी क़ुरआन मजीद में विद्यमान हैं अर्थात निरस्त तथा उसको निरस्त करने वाली दोनों आयतें विद्यमान हैं। निरस्त का एक तीसरा प्रकार यह है कि इनको पढ़ना निरस्त कर दिया गया। अर्थात क़ुरआन में *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने उसे सम्मिलित नहीं किया, परन्तु उनका आदेश शेष रखा गया है। जैसे

«الشَّيْخُ والشَّيْخَةُ إِذَا زَنَيَا فَارْجُمُوهُمَا الْبَتَّةَ».

"विवाहित पुरुष तथा स्त्री यदि व्यभिचार करें, तो निस्सन्देह उन्हें पत्थरों से मारकर मृत्यु दण्ड दिया जाय।" (मुअत्ता ईमाम मलिक)

इस *आयत* में निरस्त करने की प्रथम दो प्रकार का वर्णन है। ﴿مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ﴾ में दूसरा प्रकार तथा ﴿اَوْ نُنْسِهَا﴾ में पहला प्रकार। نُنسِها "हम भुलवा देते हैं।" का अर्थ है कि उसका आदेश तथा पढ़ना दोनो उठा लेते हैं। अर्थात हमने उसे भुला दिया तथा नया आदेश उतार दिया। अथवा नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के हृदय पटल से ही हमने उसे मिटा दिया तथा वह पूर्ण रुप से भुला दिया गया।

यहूदी *तौरात* को अपरिवर्तनीय कहते थे तथा क़ुरआन पर भी उन्होंने कुछ आदेशों के निरस्त होने के कारण आलोचना की थी। अल्लाह तआला ने उनका खण्डन किया है तथा कहा है कि धरती तथा आकाश का राज्य केवल उसी के हाथ में है, वह जो उचित समझे करे, जिस समय जो आदेश अपने ज्ञान तथा विवेक के आधार पर ही पारित करे तथा जिसे चाहे निरस्त करे। यह उसके सामर्थ्य का एक प्रदर्शन है। कुछ प्राचीन परम्पराओं के भटके हुए (जैसे अबू मुस्लिम असफाहानी मुतज़ली) तथा आजकल के भी

The Ummah Technology Mission

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا لَكُمْ
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ
وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٠٧﴾

(१०७) क्या तुझे ज्ञात नहीं कि धरती तथा आकाशों का राज्य अल्लाह ही के लिए है। तथा अल्लाह के अतिरिक्त तुम्हारा कोई संरक्षक तथा सहायक नहीं।

اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ
كَمَا سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ
يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ
سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٠٨﴾

(१०८) क्या तुम अपने रसूल से वैसे प्रश्न करना . चाहते हो जैसे इससे पूर्व मूसा (*अलैहिस्सलाम*) से पूछा गया।[1] (सुनो!) जो ईमान को कुफ़्र से बदलता है वह सीधे मार्ग से भटक जाता है।

وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ
مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚ حَسَدًا
مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا
تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا
حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٠٩﴾

(१०९) इन अहले किताब के अधिकतर लोग सत्य स्पष्ट हो जाने के उपरान्त मात्र ईर्ष्या तथा द्वेष के कारण तुम्हें भी ईमान से हटा देना चाहते हैं तुम भी क्षमा करो तथा छोड़ दो यहाँ तक कि अल्लाह अपना फैसला लागू कर दे। अवश्य अल्लाह (तआला) प्रत्येक कार्य करने का सामर्थ्य रखता है।

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ
وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ
تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ

(११०) तुम नमाज़ की स्थापना करो तथा ज़कात (धर्मदान) देते रहो तथा जो भलाई तुम अपने लिये आगे भेजोगे सब कुछ

कुछ नवीनीकरण करने वालो ने यहूदियों की तरह क़ुरआन में आदेशों के परिवर्तन को नहीं मानते। परन्तु ठीक बात वही है जो उपरोक्त पंक्तियो में वर्णन की गयी हैं, सदाचार पूर्वजों का विश्वास भी आदेशों के परिवर्तित किये जाने के पक्ष में ही रहा हैं।

[1]मुसलमानों (सहाबा) को चेतावनी दी जा रही है कि तुम यहूदियों की तरह अपने ईश-दूत से अपनी मनमानी अनावश्यक प्रश्न मत किया करो। इसमें अधर्म की संभावना है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٠﴾

अल्लाह के पास पा लोगे नि:सन्देह अल्लाह (तआला) तुम्हारे कर्मों को देख रहा है।[1]

وَقَالُوا لَن يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَن كَانَ هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ ۗ تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ ۗ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١١١﴾

(१११) तथा ये कहते हैं कि स्वर्ग में यहूदी तथा इसाई के अतिरिक्त कोई न जायेगा। ये केवल उनकी आशायें हैं। उनसे कहो कि यदि तुम सच्चे हो तो कोई प्रमाण तो प्रस्तुत करो।[2]

بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِندَ رَبِّهِ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١١٢﴾

(११२) सुनो ! जिस ने स्वयं कोअल्लाह के लिये समर्पित कर दिया[3] तथा सदाचारी है उसी के लिये उस के पोषक के यहाँ प्रतिफल है। तथा न उन पर कोई भय होगा न कोई क्षोम।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصَارَىٰ عَلَىٰ شَيْءٍ وَقَالَتِ النَّصَارَىٰ لَيْسَتِ

(११३) यहूदी कहते हैं इसाई सत्य मार्ग पर नहीं,[4] तथा इसाई कहते हैं कि यहूदी सत्य

---

[1] यहूदियों को इस्लाम धर्म तथा नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* से जो ईर्ष्या तथा द्वेष था, उसके कारण वह मुसलमानों को इस्लाम धर्म से मुँह मोड़ने का भरपूर प्रयत्न करते रहते थे। मुसलमानों को कहा जा रहा है कि तुम धैर्य तथा क्षमा से काम लेते रहो, इन आदेश तथा इस्लाम धर्म द्वारा अनिवार्य किये गये कर्मों को करते रहो, जिनका तुम्हें आदेश दिया गया है।

[2] यहाँ अहले किताब के उस गर्व तथा मायाजाल में फंसे रहने को पुन: वर्णित किया जा रहा है, जिसमें वे लिप्त थे अल्लाह तआला ने फ़रमाया, मात्र उनकी आशायें है, जिनके लिए उनके पास कोई प्रमाण नहीं है।

[3] ﴿أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ﴾ का अर्थ है, मात्र अल्लाह की प्रसन्नता के लिए काम करे तथा ﴿وَهُوَ مُحْسِنٌ﴾ का अर्थ है अन्तिम *ईशदूत* की *सुन्नत* के अनुसार। कर्मों के स्वीकार होने के यह दो आधारभूत है तथा अन्तिम मोक्ष इन्हीं नियमों के अनुसार किये गये सत्कर्म पर आधारित हैं न कि मात्र आशाओं पर।

[4] यहूदी *तौरात* पढ़ते हैं जिसमें आदरणीय मूसा *अलैहिस्सलाम* के मुख से आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम की पुष्टि विद्यमान है परन्तु इसके उपरान्त यहूदी आदरणीय ईसा का अनुकरण नहीं करते थे। इसाईयों के पास *इंजील* है, जिसमें आदरणीय मूसा तथा *तौरात* के अल्लाह की ओर से होनें की पुष्टि है। इसके उपरान्त वे यहूदियों को झुठलाते हैं,

The Ummah Technology Mission

الْيَهُودُ عَلَىٰ شَيْءٍ وَّهُمْ يَتْلُونَ
الْكِتٰبَ ۗ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ
لَا يَعْلَمُوْنَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ
يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١١٣﴾
وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ
اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ
خَرَابِهَا ۗ اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ
اَنْ يَّدْخُلُوْهَآ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ۗ

मार्ग पर नहीं। यद्यपि ये तौरात पढ़ते हैं, इसी प्रकार इन ही जैसी बात अशिक्षित भी कहते हैं।[1] क़ियामत के दिन अल्लाह इनके इस मतभेद का निर्णय कर देगा।

(११४) तथा उससे बड़ा अत्याचारी कौन है ? जो अल्लाह (तआला) की मस्जिदों में अल्लाह का वर्णन करने से रोके,[2] तथा उनको नष्ट करने का प्रयत्न करे,[3] ऐसे लोगों को भयभीत होते हुए उसमें प्रवेश करना

यहाँ अहले किताब के दोनो गुटों के कुफ़्र, तथा ईर्ष्या एवं अपने-अपने विषय मे शुभ आशाओं में लिप्त होने को प्रदर्शित किया जा रहा है।

[1]अहले किताब की अपेक्षा अरब के मूर्तिपूजक अशिक्षित थे। इसलिए उन्हें अज्ञानी कहा गया परन्तु वे भी मूर्तिपूजक होने के उपरान्त यहूदी तथा ईसाईयों कि तरह इस असत्य आशाओं में लिप्त थे कि वही सत्यता पर हैं। इसीलिए वे नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* को अधर्मी कहते थे।

[2]जिन लोगों ने मस्जिदों में अल्लाह का वर्णन करने से रोका ये कौन हैं ? इनके विषय में व्याख्याकारों के दो मत हैं। एक मत यह है कि इससे तात्पर्य इसाई हैं। जिन्होने रोम के राजा से मिलकर *बैतुल मुक़द्दस* में यहूदियों को *नमाज़* पढ़ने से रोका तथा उसके विनाश में भाग लिया। इब्ने जरीर तब्री ने इसी मत को आरण किया है। परन्तु हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने इससे असहमत हो कर इसका लक्ष्य मक्का के मूर्तिपूजकों को बताया है, जिन्होंने एक तो नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* तथा आप के सहाबा को मक्का से निकलने पर बाध्य किया तथा मुसलमानों को अल्लाह के घर में *इबादत* करने से रोका। फिर *हुदैविया* की सन्धि के समय इसी व्यवहार की पुनरावृति की तथा कहा कि हम अपने पूर्वजों के हत्यारों को मक्का में प्रवेश न करने देंगे, यद्यपि अल्लाह के घर में किसी को *इबादत* से रोकने की आज्ञा तथा रीति नहीं थी।

[3]आतंक तथा विनाश केवल यही नहीं है कि उसे ढा दिया जाये तथा इमारत को हानि पँहुचाया जाये, अपितु उनमें अल्लाह की *इबादत* एंव वर्णन करने से रोकना, धार्मिक नियमों की स्थापना तथा *शिर्क* के प्रदर्शन से पवित्र करने से मना करना भी आतंक तथा अल्लाह के घरों को बरबाद करना है।

The Ummah Technology Mission

لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١١٤﴾

चाहिए,[1] उनके लिए संसार में भी अपमान है तथा परलोक में भी बड़ी-बड़ी यातनाएं हैं।

وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾

(११५) तथा पूर्व एवं पश्चिम का मालिक अल्लाह ही है। तुम जिधर भी मुख करो उधर ही अल्लाह का मुख है,[2] अल्लाह (तआला) परम शक्तिशाली सर्वज्ञ है।

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿١١٦﴾

(११६) तथा ये कहते हैं कि अल्लाह (तआला) की संतान है (नहीं बल्कि) वह पवित्र है। धरती एवं आकाशों की सारी सृष्टि पर

---

[1]ये शब्द सूचना के हैं परन्तु तात्पर्य इससे यह इच्छा है कि जब अल्लाह तआला तुम्हें प्रभावशाली तथा विजयी बनाये, तो तुम इन मूर्तिपूजकों को इसमें सन्धि तथा सुरक्षा कर के बिना रहने की आज्ञा न देना। अतः जब ८ हिजरी में मक्का विजयी हुआ तो नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने घोषणा की कि अगले वर्ष *काअ़बा* में किसी मूर्तिपूजक को *हज* करने तथा नंगी परिक्रमा करने की आज्ञा नहीं होगी तथा जिससे जो सन्धि है, सन्धि की अवधि तक उसे यहाँ रहने की आज्ञा है। कुछ ने कहा है कि इसमें शुभ सूचना तथा भविष्यवाणी है कि निकट भविष्य में मुसलमानों को विजय प्राप्त होगी तथा ये मूर्तिपूजक ख़ाने काअ़बा में भयभीत होकर प्रवेश करेंगे कि हमने जो मुसलमानों पर पूर्व में अत्याचार किये हैं, उनके बदले में हमें दण्ड अवश्य मिलेगा अथवा हत्या न कर दी जाय। अतः शीघ्र ही यह शुभ सूचना पूरी हो गई।

[2]*हिजरत* के पश्चात जब मुसलमान *'बैतुल मुक़द्दस'* की ओर मुख करके *नमाज़* पढ़ा करते थे, तो मुसलमानों को इसका दुख था, इस अवसर पर यह *आयत* उतरी। कुछ कहते हैं कि यह *आयत* उस समय उतरी जब *'बैतुल मुक़द्दस'* से फिर खाने *काअ़बा* की ओर मुख करने का आदेश हुआ तो यहूदियों ने नानाप्रकार की बातें गढ़ीं, कुछ के निकट इसके उतरने का कारण यात्रा में सवारी पर ऐच्छिक (*नफ़िल*) *नमाज़ों* को पढ़ने की आज्ञा प्रदान हुई कि सवारी का मुख किधर भी हो, *नमाज़* पढ़ सकते हो। कभी कुछ कारण एकत्रित हो जाते हैं तथा उन सभी के आदेश के लिए एक ही *आयत* उतरती है। ऐसी *आयतों* के लिए विभिन्न कथन एकत्रित होते हैं, किसी कथन में एक उतरने का कारण का वर्णन होता है तथा किसी में अन्य। ये *आयत* भी इसी प्रकार की है। (अहसनुल तफ़ासीर)

The Quran Technology Mission

उसका अधिपत्य है तथा प्रत्येक उसका आज्ञाकारी है।

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَاِذَا قَضٰۤى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۱۱۷﴾

(११७) वह आकाशों एवं धरती का स्रष्टा है, तथा वह जिस कार्य का निर्णय करता है कह देता है कि हो जा, वह हो जाता है।[1]

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَاۤ اٰيَةٌ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿۱۱۸﴾

(११८) तथा इसी प्रकार अज्ञानी लोगों ने भी कहा कि स्वयं अल्लाह (तआला) हमसे बातें क्यों नही करता अथवा हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती, इसी प्रकार ऐसी ही बात[2] उनके पूर्वजों ने भी की थी, उनके तथा इनके दिल एक जैसे हो गये,[3] हमने तो

---

[1]अर्थात वह अल्लाह तो वह है कि आकाश तथा धरती की प्रत्येक वस्तु का मालिक है। प्रत्येक वस्तु उसकी आज्ञाकारी है। बल्कि आकाश तथा धरती का बिना किसी नमूने के बनाने वाला भी वही है। उसके अतिरिक्त वह जो काम चाहे उसके लिए उसे केवल शब्द 'हो जा' कहना काफ़ी है। ऐसी शक्ति को भला सन्तान की क्या आवश्यकता हो सकती है।

[2]इससे तात्पर्य अरब के मूर्तिपूजक हैं, जिन्होंने यहूदियों की भाँति माँग की कि अल्लाह तआला हमसे सीधे बात क्यों नहीं करता अथवा कोई बड़ी निशानी क्यों नहीं दिखाता ? जिसे देखकर हम मुसलमान हो जाएं। जिस प्रकार *सूरः बनी इस्राईल आयत* संख्या ९० से ९३ तक तथा अन्य स्थानों पर भी वर्णन किया गया है।

[3]अर्थात अरब के मूर्तिपूजकों के दिल कृतघ्नता, ईर्ष्या, द्वेष, विरोध तथा हठ में अपने पूर्व के लोगों के दिलों समान हो गये। जैसे *सूरः तूर* में फ़रमाया :

﴿ كَذَٰلِكَ مَآ أَتَى ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا قَالُوا۟ سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ * أَتَوَاصَوْا۟ بِهِۦ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴾

"इनसे पूर्व जो भी रसूल आया उसको लोगों ने जादूगर तथा दीवाना ही कहा। क्या ये उस बात की एक-दूसरे को वसीयत कर जाते थे ? नहीं यह सब लोग उद्दण्ड हैं।"

The Ummah Technology Mission

विश्वास करने वालों के लिए निशानियों का वर्णन कर दिया।

إِنَّآ أَرۡسَلۡنَٰكَ بِٱلۡحَقِّ بَشِيرٗا وَنَذِيرٗاۖ وَلَا تُسۡـَٔلُ عَنۡ أَصۡحَٰبِ ٱلۡجَحِيمِ ١١٩

(११९) हमने आपको सत्य के साथ शुभ सूचना देने वाला तथा सावधान कराने वाला बनाकर भेजा है तथा नरकवासियों के विषय में आप से नही पूछा जायेगा।

وَلَن تَرۡضَىٰ عَنكَ ٱلۡيَهُودُ وَلَا ٱلنَّصَٰرَىٰ حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمۡۗ قُلۡ إِنَّ هُدَى ٱللَّهِ هُوَ ٱلۡهُدَىٰۗ وَلَئِنِ ٱتَّبَعۡتَ أَهۡوَآءَهُم بَعۡدَ ٱلَّذِي جَآءَكَ مِنَ ٱلۡعِلۡمِ مَا لَكَ مِنَ ٱللَّهِ مِن وَلِيّٖ وَلَا نَصِيرٖ ١٢٠

(१२०) तथा आपसे यहूदी एवं इसाई कदापि प्रसन्न न होंगे। जब तक कि आप उनके धर्म का अनुकरण न कर लें,[1] (आप) कह दीजिए कि अल्लाह का मार्गदर्शन ही मार्गदर्शन होता है,[2] तथा यदि आपने अपने पास ज्ञान आ जाने के उपरान्त फिर भी उनकी इच्छाओं का अनुकरण किया, तो अल्लाह के पास न तो आपका कोई संरक्षक होगा न कोई सहायक।[3]

अर्थात लगभग उन सब में समान रुप से उद्दण्डता थी, इसलिए सत्य की ओर आमन्त्रित करने वालों के समक्ष नई-नई माँगें रखते हैं अथवा उन्हें दीवाना बताते हैं।

[1]अर्थात यहूदी अथवा इसाई धर्म स्वीकार कर ले।

[2]जो अब इस्लाम धर्म के रुप में है जिसका आमन्त्रण नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* दे रहे हैं, न कि परिवर्तित रुप में यहूदी तथा इसाई धर्म।

[3]यह इस बात पर चेतावनी है कि ज्ञान आ जाने के पश्चात भी यदि मात्र उन स्वंय गलत लोगों को प्रसन्न करने के लिए उनका अनुकरण किया, तो तेरी कोई सहायता करने वाला न होगा। यह वास्तव में मुसलमानों को शिक्षा दी जा रही है कि आधुनिकीकरण करने वाले तथा ग़लत लोगों को प्रसन्न करने के लिए वह भी ऐसा काम न करें, न धर्म में वाकपटुता तथा त्रुटिपूर्ण तर्क का कार्य करें।

The Ummah Technology Mission

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۲۱﴾

(१२१) जिन्हें हमने किताब दी,[1] तथा वे उसे पढ़ने के हक़ के साथ पढ़ते हैं,[2] वे इस किताब पर भी ईमान रखते हैं तथा जो इसके प्रति विश्वास नहीं रखते वह स्वयं अपना घाटा करते हैं।[3]

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۲۲﴾

(१२२) ऐ याक़ूब के पुत्रों! मैंने तुम पर जो अनुकम्पायें की उन्हें याद करो तथा यह कि मैंने तुम्हें सारे समुदायों में श्रेष्ठता प्रदान कर रखी थी।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ

(१२३) तथा उस दिन से डरो जिस दिन कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को कोई लाभ न पहुँचा सकेगा, न किसी व्यक्ति से कोई अर्थदण्ड

---

[1] अहले किताब के दुष्ट लोगों के दुष्चरित्र एवं व्यवहार का आवश्यक वर्णन करने के पश्चात उनमें जो कुछ लोग पुण्य कार्य करने वाले तथा सदाचारी थे, इस आयत में उनके गुणों तथा उनको ईमानवाले होने की सूचना दी जा रही है। इनमें अब्दुल्लाह विन सलाम तथा उन जैसे अन्य व्यक्ति हैं जिनको यहूदियों में से इस्लाम धर्म स्वीकार करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

[2] "वह इस प्रकार पढ़ते हैं, जिस प्रकार पढ़ने का अधिकार है।" के कई अर्थ वर्णित किये गये हैं। जैसे। १- "ध्यानपूर्वक पढ़ते है।" स्वर्ग का वर्णन आता है तो स्वर्ग की कामना करते है तथा नरक का वर्णन आता है तो उससे सुरक्षित रहने की प्रार्थना करते हैं। (२) इसके हलाल को हलाल, हराम को हराम समझते तथा अल्लाह के कथन को परिवर्तित नहीं करते। जैसे अन्य यहूदी करते थे। (३) उसमें जो कुछ लिखा है लोगों को बताते है, उसकी कोई बात नहीं छिपाते। (४) इसकी स्पष्ट आदेशित बातों के अनुसार कर्म करते है, अस्पष्ट बातों पर ईमान रखते हैं तथा जो बाते समझ में नहीं आतीं उन्हें आलिमों से हल करवाते हैं। (५) इसकी एक - एक बात का पालन करते हैं। (फ़तहुल क़दीर) वास्तविकता यह है कि पढ़ने के अधिकार क्षेत्र में इन सारे ही भावार्थों का समावेश है तथा मार्गदर्शन ऐसे ही लोगों के भाग में आता है जो वर्णित बातों का प्रयोजन करते हैं।

[3] अहले किताब में से जो नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* पर ईमान नहीं लायेगा, वह नरक में जायेगा। जैसा कि बुख़ारी तथा मुस्लिम में है। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿١٢٣﴾

स्वीकार किया जायेगा, न उसे कोई सिफ़ारिश लाभ पहुँचा सकेगी, न उसकी सहायता की जाएगी।

وَإِذِ ابْتَلٰٓى إِبْرٰهِمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَأَتَمَّهُنَّ ۖ قَالَ إِنِّى جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامًا ۖ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِى ۖ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٢٤﴾

(१२४) तथा जब इब्राहीम (*अलैहिस्सलाम*) की उनके प्रभु ने कई-कई बातों से परीक्षा ली,[1] तथा उन्होंने सभी को पूरा कर दिखाया तो (अल्लाह ने) फ़रमाया कि मैं तुम्हें लोगों का नायक बना दूँगा। पूछा - तथा मेरी संतान को,[2] उत्तर दिया कि मेरा वायदा अत्याचारियों से नहीं।

---

[1]शब्द से तात्पर्य धार्मिक आदेश, हज के नियम, पुत्र की बलि, हिजरत, नमरुद की अग्नि, आदि वह सभी परीक्षायें हैं जिनसे आदरणीय इब्राहिम *अलैहिस्सलाम* गुज़ारे गये, तथा वह हर परीक्षा में सफल रहे जिसके परिणाम स्वरुप मनुष्यों के मुखिया पद से सम्मानित किये गये। अत: मुसलमान ही नहीं यहूदी, इसाई यहाँ तक कि अरब के मूर्तिपूजकों, सब ही में उनके व्यक्तित्व का सम्मान है तथा उनको अगुवा माना एवं समझा जाता है।

[2]अल्लाह तआला ने आदरणीय इब्राहिम *अलैहिस्सलाम* की उस इच्छा को पूर्ण किया, जिसका वर्णन क़ुरआन मजीद में ही है।

﴿وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ﴾ [العنكبوت: ٢٧]

"हमने नबूवत तथा किताब उसकी सन्तान को प्रदान की।"

(*सूर: अल-अनकबुत-२७*)

अत: प्रत्येक नबी जिसे अल्लाह ने भेजा तथा प्रत्येक किताब जो आदरणीय इब्राहिम *अलैहिस्सलाम* के पश्चात उतरी, इब्राहिम की सन्तान में ही यह श्रृंखला रही। (इब्ने कसीर) उसके साथ ही यह भी फ़रमाया कि "**मेरा वायदा अत्याचारियों से नही**" इस बात का स्पष्टीकरण कर दिया कि इब्राहिम को उतना उच्च सम्मान तथा अल्लाह के द्वारा समर्पित पद के उपरान्त इब्राहिम की सन्तान में जो उद्दण्ड तथा अत्याचारी एंव मूर्तिपूजक होंगे, उनकी सिफ़ारिश तथा सहायता करने वाला कोई न होगा। अल्लाह तआला ने यहाँ पैगम्बर की सन्तान की महिमा महान कहने वालों की जड़ काट दी है। यदि ईमान तथा सत्कर्म नहीं तो महात्मा की सन्तान होना तथा महान व्यक्ति की

The Ummah Technology Mission

وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا ۖ وَاتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى ۖ وَعَهِدْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ أَن طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْعَاكِفِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿١٢٥﴾

(१२५) हमने *बैतुल्लाह* (काअबा) को मनुष्यों के लिए पुण्य तथा शान्ति का स्थान बनाया,[1] तुम *"मुक़ामे इब्राहीम"* (इब्राहीम का स्थान-मस्जिद हराम में एक निर्धारित स्थान का नाम है जो काअबा के द्वार के सामने थोड़ी बायें हटकर है) को "मुसल्ला" (नमाज़ पढ़ने का स्थान) निर्धारित कर लो [2], तथा हमने इब्राहीम और इस्माईल (*अलैहिमुस्सलाम*) से वचन लिया कि मेरे घर को परिक्रमा और एतिकाफ़

सन्तान होनें का अल्लाह के दरबार में क्या महत्व होगा ? नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का कहना है |

«مَنْ بَطَّأَ بِهِ عَمَلُهُ لَمْ يُسْرِعْ بِهِ نَسَبُهُ».

जिसको उसका कर्म पीछे छोड़ गया, उसको उसका वंश आगे न बढ़ा सकेगा | (सहीह मुस्लिम)

[1]आदरणीय इब्राहिम *अलैहिस्सलाम* के सम्बन्ध से जो इसके प्रथम निर्माता हैं, *बैतुल्लाह* की दो विशेषतायें अल्लाह तआला ने यहाँ वर्णन की | प्रथम ﴿مَثَابَةً لِّلنَّاسِ﴾ (लोगों के लिए पुण्य का स्थान) दूसरा अर्थ है बार-बार लौटकर आने का स्थान | जो एक बार *बैतुल्लाह* के दर्शन का सौभाग्य पा गया, वह दुबारा बारम्बार आने के लिए व्याकुल रहता है | यह ऐसी कामना है जिसकी तृप्ति नहीं होती अपितु दिन-प्रतिदिन व्याकुलता में वृद्धि ही होती है | दूसरी विशेषता 'शान्तिस्थली' अर्थात यहाँ किसी शत्रु का भी भय नहीं रहता | अत: अज्ञान काल में भी लोग किसी शत्रु से *"हरम"* की सीमा में प्राणघातक बदला नहीं लेते थे | इस्लाम ने इसके इस सम्मान को शेष रखा तथा इसको विस्तृत करके इसके पालन पर बल दिया |

[2]**'इब्राहिम का स्थान'** से तात्पर्य वह पत्थर है, जिस पर खड़े होकर आदरणीय इब्राहिम *अलैहिस्सलाम काअबा* का निर्माण करते थे | इस पत्थर पर आदरणीय इब्राहिम *अलैहिस्सलाम* के पद चिन्ह हैं | अब इस पत्थर को एक शीशे में सुरक्षित कर दिया गया है | जिसे प्रत्येक हाजी तथा उमरा करने वाला व्यक्ति *बैतुल्लाह* के दर्शन के समय देख सकता है | इस स्थान पर परिक्रमा पूर्ण करने के पश्चात दो *रकाअत नमाज* पढ़ना *सुन्नत* है |

The Ummah Technology Mission

करने वालों तथा रुकुउ करने एवं सजद: करने वालों के लिए पवित्र एवं शुध्द रखो।

وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهِمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٢٦﴾

(१२६) तथा जब इब्राहीम ने कहा, हे प्रभु ! तू इस स्थान को शान्तिमय नगर बना तथा यहाँ के निवासियों को जो अल्लाह तथा क़ियामत के दिन पर ईमान रखने वाले हों, फलों की वृद्धि प्रदान कर।[1] अल्लाह (तआला) ने कहा कि मैं काफ़िरों को भी थोड़ा लाभ दूँगा, फिर उन्हें आग की यातना की ओर विवश कर दूँगा। यह पहुँचने का बुरा स्थान है।

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرٰهِمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٢٧﴾

(१२७) इब्राहीम (*अलैहिस्सलाम*) तथा इस्माईल (*अलैहिस्सलाम*) काअ़बा की बुनियाद (तथा दीवारें) उठाते जाते थे तथा कहते जाते थे कि ऐ हमारे पालनहार ! तू हमसे स्वीकार कर तू ही सुनने वाला तथा जानने वाला है।

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَاۤ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۠ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٨﴾

(१२८) हे हमारे पोषक ! हमें अपना आज्ञाकारी बना तथा हमारी संतान में से एक समूह को अपना आज्ञाकारी बना तथा हमें अपनी इबादतें सिखा एवं हमारी याचना स्वीकार कर। तू क्षमावान, दयानिधि है।

---

[1] अल्लाह तआला ने आदरणीय इब्राहिम की ये प्रार्थनायें स्वीकार कीं, यह नगर शान्ति कि नगरी भी है, तथा अकृष्ट भूमि होने के उपरान्त भी संसार के सभी फल तथा हर प्रकार के अनाज की अधिकता को देख कर मनुष्य आश्चर्यचकित हो जाता है।

The Ummah Technology Mission

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٢٩﴾

(१२९) हे हमारे पोषक ! उन में, उन्हीं में से एक रसूल (ईशदूत) भेज,[1] जो उनके पास तेरी आयतें पढ़ें तथा उन्हें धर्मशास्त्र एवं विज्ञान सिखाऐं[2] तथा उन्हें शद्ध करें ।[3] नि:सन्देह तू प्रभावशाली एवं विवेकी है ।

وَمَن يَرْغَبُ عَن مِّلَّةِ إِبْرَاهِيمَ إِلَّا مَن سَفِهَ نَفْسَهُ ۚ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا ۖ وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١٣٠﴾

(१३०) इब्राहीम के धर्म से वही विमुख होगा जो स्वयं मूर्ख हो, हमने तो उसे संसार में भी अपना लिया तथा परलोक में भी वह सत्कर्मियों में से है ।[4]

---

[1]यह आदरणीय इब्राहीम तथा इस्माईल की अन्तिम प्रार्थना है । यह भी अल्लाह तआला ने स्वीकार किया तथा आदरणीय इस्माईल *अलैहिस्सलाम* की संतान में से परम आदरणीय *मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* को *रसूल* बनाया । इसीलिए नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया :

«أَنَا دَعوةُ أَبي إبْراهَيم ، وَبَشَارةُ عِيسىٰ ورُؤْيَا أُمي التي رَأَت»

"मैं अपने पिता आदरणीय इब्राहीम *अलैहिस्सलाम* की प्रार्थना, आदरणीय ईसा की शुभ सूचना तथा अपनी माता का स्वप्न हूँ ।" (मुसनद अहमद ससंदर्भ इब्ने कसीर)

अरब के समाज में परम पितामह को भी पिता से ही सम्मान स्वरुप सम्बोधित करते हैं ।

[2]किताब से तात्पर्य क़ुरआन करीम तथा विज्ञान से तात्पर्य हदीस है । *आयतो* को पढ़ने के पश्चात किताब तथा *सुन्नत* की शिक्षा के वर्णन से ज्ञात होता है कि क़ुरआन मजीद का मात्र पढ़ना भी प्रिय तथा नेकी एवं पुण्य का कारण है । यदि उनका भावार्थ भी समझ में आता जाए तो *सुब्हानल्लाह*, सोने पर सोहागा है । परन्तु यदि क़ुरआन का अनुवाद तथा भावार्थ समझ में नहीं आता तब भी उसके पढ़नें में अलस्य उचित नहीं है क़ुरआन का पढ़ना स्वयं एक अलग पुण्य का कार्य है ।

[3]क़ुरआन के पढ़ने एवं किताब की शिक्षा एवं बुद्धिमत्ता पूर्ण शिक्षा के पश्चात आप *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के दूत कर्म का यह चौथा उद्देश्य है कि उन्हें बहुदेववाद तथा अंधविश्वास की गन्दगी से तथा चरित्र एवं व्यवहार के दुर्गुणों से पवित्र करें ।

[4]अरबी भाषा में رغب का सम्बन्ध عن से हो तो, उसका अर्थ अनिच्छा होता है । यहाँ अल्लाह तआला, आदरणीय इब्राहीम *अलैहिस्सलाम* के उन मान-सम्मान का वर्णन कर रहा है जो अल्लाह तआला ने उन्हें संसार तथा परलोक में प्रदान किए हैं तथा यह भी

The Ummah Technology Mission

إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلِمْ ۙ قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعَٰلَمِينَ ﴿١٣١﴾

(१३१) जब (भी) उनके पोषक ने कहा कि आत्मसर्मपण कर दो तो कहा कि मैंने विश्व के स्वामी के लिए आत्मसर्मपण कर दिया।[1]

وَوَصَّىٰ بِهَا إِبْرَٰهِـۧمُ بَنِيهِ وَيَعْقُوبُ ۖ يَٰبَنِىَّ إِنَّ ٱللَّهَ ٱصْطَفَىٰ لَكُمُ ٱلدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿١٣٢﴾

(१३२) इसी की वसीयत इब्राहीम तथा याकुब ने अपनी संतान को की, कि हमारे बच्चों ! अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए इस धर्म को निर्धारित कर दिया है, सावधान ! तुम मुसलमान ही मरना।[2]

أَمْ كُنتُمْ شُهَدَآءَ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ ٱلْمَوْتُ ۙ إِذْ قَالَ لِبَنِيهِ

(१३३) क्या तुम (आदरणीय) याकूब की मृत्यु के समय उपस्थित थे ?[3] जब उन्होंने अपनी

स्पष्ट कर दिया कि इब्राहीम के समुदाय से मुख मोड़ना तथा अनिच्छा व्यक्त करना मूर्खों का कार्य है, किसी बुद्धिमान से यह कल्पना भी नहीं की जा सकती।

[1]यह सम्मान तथा महत्व इसलिए प्राप्त हुआ कि उन्होंने आज्ञापालन तथा अनुकरण का अद्वितीय नमूना पेश किया।

[2]आदरणीय इब्राहीम *अलैहिस्सलाम* तथा आदरणीय याक़ूब *अलैहिस्सलाम* ने الدين (सत्य धर्म) की वसीयत अपनी संतान को किया जो यहूदी धर्म नही इस्लाम धर्म ही है। जैसा कि यहाँ भी इसका स्पष्टीकरण विद्यमान है तथा क़ुरआन करीम में विभिन्न स्थानों पर भी इसका विस्तृत वर्णन है।

[3]यहूदियों को चेतावनी तथा सावधान किया जा रहा है कि तुम जो यह दावा करते हो कि इब्राहीम तथा याकूब ने अपनी संतान को यहूदी धर्म पर दृढ़ रहने की वसीयत की थी, तो क्या तुम *वसीयत* के समय उपस्थित थे ? यदि वे कहें कि वे उपस्थित थे, तो वे झूठे तथा पाखण्डी हुए तथा यदि कहें कि उपस्थित नहीं थे तो उनका वर्णित दावा असत्य सिद्ध हुआ क्योंकि उन्होंने जो वसीयत की थी वह इस्लाम की थी न कि यहूदी धर्म की, न इसाई धर्म की, न मूर्तिपूजा की। सभी *नबियो* का धर्म इस्लाम धर्म था। यद्यपि नियमों तथा विषयों में थोड़ा अन्तर रहा है। इसको नबी *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने इन शब्दों में वर्णन किया है।

«الأَنْبِيَاءُ أَوْلَادُ عَلَّاتٍ، أُمَّهَاتُهُمْ شَتَّى، وَدِينُهُمْ وَاحِدٌ».

"नबियों का गिरोह" 'अल्लात' संतान की भाँति हैं, इनकी माताएं भिन्न (तथा पिता एक) हैं तथा उनका धर्म एक ही हैं। (सहीह बुख़ारी किताबुल अम्बिया)

The Ummah Technology Mission

مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ بَعْدِیْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَآىِٕكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِیْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۳﴾

संतान से कहा कि तुम मेरी मृत्यु के पश्चात किस की इबादत करोगे, तो सभी ने उत्तर दिया था कि आपके प्रभु की तथा आपके पूर्वज इब्राहीम तथा इस्माईल एवं इसहाक के ईष्टदेव की, जो एक ही है। तथा हम उसी के आज्ञापालक रहेंगे।

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۴﴾

(१३४) यह समुदाय तो गुज़र चुका, जो उन्होंने किया वो उनके लिए है तथा जो तुम करोगे वह तुम्हारे लिए है। उनके कर्मों के विषय में तुमसे नहीं पूछा जाएगा।[1]

وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰی تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِیْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۱۳۵﴾

(१३५) ये कहते हैं कि यहूदी तथा इसाई बन जाओ तो मार्गदर्शन पाओगे, तुम कहो कि सही मार्ग पर तो इब्राहीम (*अलैहिस्सलाम*) के अनुयायी हैं, तथा इब्राहीम (*अलैहिस्सलाम*) मात्र अल्लाह के आज्ञाकारी थे वे मूर्तिपूजक नहीं थे।[2]

---

[1]यह भी यहूदियों को कहा जा रहा है कि तुम्हारे पूर्वजों में जो नबी तथा सत्कर्मी हो चुके हैं। उनसे सम्बन्ध का कोई लाभ नहीं। उन्होंने जो कुछ भी किया उसका बदला उन्हीं को मिलेगा, तुम्हें नहीं, तुम्हें तो वही कुछ मिलेगा, जैसा तुम कर्म करोगे। इससे ज्ञात हुआ कि पूर्वजों के पुण्यात्मक कार्यों पर भरोसा तथा आश्रित होना ग़लत है। वास्तविक चीज ईमान तथा पुण्य कार्य ही हैं। यह पूर्व के पुण्यकर्ताओं का भी धर्म था तथा *क़ियामत* तक आने वाले लोगों के मोक्ष का एक मात्र साधन है।

[2]यहूदी, मुसलमानों को यहूदी धर्म की तथा इसाई, इसाई धर्म की आमन्त्रण देते तथा कहते कि मार्गदर्शन का प्रकाश इसी में है। अल्लाह तआला ने कहा कि उनसे कहो कि प्रकाश इब्राहीम के धर्म के अनुकरण में है, जो *हनीफ* था (अर्थात एक मात्र अल्लाह ही का अनुयायी तथा उसकी *इबादत* करने वाला) वह मूर्तिपूजक नहीं था, जबकि यहूदी धर्म तथा इसाई धर्म दोनों में मूर्तिपूजा का समावेश है। अब दुर्भाग्य से मुसलमानों में भी मूर्तिपूजन के प्रदर्शन सामान्य रुप से हो रहे हैं, इस्लाम की शिक्षा بحمد الله क़ुरआन तथा हदीस में सुरक्षित हैं, जिनमें एकेश्वरवाद की आधारशिला एवं शिक्षा किसी प्रकार से धूमिल

The Ummah Technology Mission

قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۖ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٦﴾

(१३६) (ऐ मुसलमानों !) तुम सब कहो हम अल्लाह पर ईमान लाये तथा उस पर भी जो हमारी ओर उतारी गई तथा जो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक तथा याकूब एवं उनकी संतान पर उतारी गई तथा जो कुछ अल्लाह की ओर से मूसा, ईसा तथा अन्य नबियों को दिये गए। हम उनमें से किसी के मध्य अन्तर नहीं करते, हम अल्लाह के आज्ञाकारी हैं।[1]

فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا هُمْ فِيْ شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣٧﴾

(१३७) यदि वह तुम जैसा ईमान लाए तो मार्गदर्शन पाएंगे, तथा यदि मुँह मोड़े तो विरोध में हैं, अल्लाह (तआला) उनसे निकट भविष्य में तुम्हारी सहायता करेगा।[2] वह उचित रुप से सुनने तथा जानने वाला है।

न होकर अतिस्पष्ट रुप में है, जिस से यहूदी, इसाई तथा मूर्तिपूजक धर्मों (दो देवताओं में आस्था रखने वाले) से इस्लाम की भिन्नता स्पष्ट है, परन्तु मुसलमानों की एक बहुत बड़ी संख्या के कर्म तथा विश्वास में जो मूर्तिपूजन प्रक्रिया की कल्पनाओं ने प्रवेश कर लिया है, उसने इस्लाम की छवि को संसार की दृष्टि से धूमिल तथा ओझल कर दिया है। क्योंकि अन्य धर्म के अनुयायियों की पहुँच सीधे क़ुरआन तथा हदीस तक तो नहीं हो सकती। वह मुसलमानों के कर्मों को देखकर ही अनुमान करेंगे कि इस्लाम में तथा अन्य मूर्तिपूजा से प्रदूषित धर्म के मध्य कोई अन्तर ही नही प्रकट हो रहा है। अगली *आयात* में ईमान का सिद्धान्त बताया जा रहा है।

[1]अर्थात ईमान यह है कि सभी *नबियों* को अल्लाह तआला की ओर से जो कुछ मिला अथवा उन पर उतरा, सभी पर ईमान लाया जाए, किसी भी किताब अथवा *रसूल* को अस्वीकार न किया जाए। किसी एक किताब अथवा नबी को मानना, किसी को न मानना, यह *नबियों* में अन्तर व्यक्त करता है जिसे इस्लाम ने उचित नही कहा है। परन्तु अब कर्म केवल क़ुरआन करीम के नियमों तथा आदेशानुसार होंगे, पूर्व किताबों में लिखी हुई के अनुसार नहीं, क्योंकि प्रथम तो वे अपने मूलरुप में नहीं है, परिवर्तित हैं, दूसरे क़ुरआन ने उन सभी के आदेशों को निरस्त कर दिया है।

[2]सहाबा किराम (رضی اللہ عنہم) भी इसी वर्णित नियमानुसार ईमान लाये थे, इसीलिए सहाबा का उदाहरण देते हुए कहा जारहा है कि, यदि वे इसी प्रकार ईमान लायें, जिस

The Ummah Technology Mission

صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۚ وَّنَحْنُ لَهٗ عٰبِدُوْنَ ﴿١٣٨﴾

(१३८) अल्लाह का रंग अपनाओ तथा अल्लाह (तआला) से अच्छा रंग किसका होगा ?[1] हम तो उसी की इबादत करने वाले हैं।

قُلْ اَتُحَآجُّوْٓنَنَا فِى اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَ رَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ﴿١٣٩﴾

(१३९) (आप) कह दीजिए क्या तुम हमसे अल्लाह के विषय में झगड़ते हो, जो हमारा तथा तुम्हारा प्रभु है, हमारे लिए हमारे कर्म हैं, तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म, हम तो उसी के लिए शुद्धरुप से हैं।[2]

प्रकार ऐ सहाबा (رضی اللہ عنہم) तुम ईमान लाए हो तो अवश्य उन्हें मार्गदर्शन प्राप्त हो जाएगा। यदि वे द्वेष तथा मतभेद के कारण मुँह मोड़ लेंगे तो घबराने की आवश्यकता नहीं है, उनके षडयन्त्र आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे क्योंकि अल्लाह तआला आपका संरक्षण करने वाला है। अत: कुछ वर्षों पश्चात ही यह वायदा पूरा हुआ तथा बनू क़ेनुक़ाअ एवं बनू नदीर कोदेश निष्कासन कर दिया गया तथा बनू कुरैज़ा मार डाले गये। इतिहासिक कथन में है कि आदरणीय उस्मान (رضی اللہ عنہ) की *शहादत* के समय क़ुरआन उनकी गोद में था तथा इस *आयत* के वाक्य فسيكفيكهم اللہ पर उनके शरीर के रक्त के छींटे गिरे बल्कि रक्त की धार भी। यह क़ुरआन आज भी तुर्की के पुरातत्व विभाग में सुरक्षित रखा हुआ है।

[1]इसाईयों ने एक पीले रंग का पानी निर्धारित कर रखा है, जो प्रत्येक इसाई बालक को तथा प्रत्येक उस व्यक्ति को भी दिया जाता है जिसका उद्देश्य इसाई धर्म स्वीकार करना होता है। इस रीति का नाम उनके यहाँ "बैप्टिज़्म" है। यह उनके यहाँ अति आवश्यक है इसके विना वे किसी के पवित्र होने की कल्पना नहीं करते। अल्लाह तआला ने उनका खण्डन किया है तथा कहा है कि वास्तविक रंग तो अल्लाह का रंग है। उससे श्रेष्ठ कोई रंग नहीं। अल्लाह के रंग का तात्पर्य वह प्राकृतिक धर्म है, अर्थात इस्लाम धर्म है, जिसकी ओर प्रत्येक नबी ने अपने-अपने काल में अपने-अपने समुदाय कोआमंत्रण दिया। अर्थात 'एकेश्वरवाद' का आमंत्रण।

[2]क्या तुम हमसे इसलिए झगड़ते हो कि हम एक अल्लाह की *इबादत* करते हैं, उसी के लिए शुद्धरूप से पक्षधर की भावना रखते हैं तथा उसके द्वारा वैधता का पालन तथा निषेध से बचाव करते हैं, यद्यपि वह हमारा ही प्रभु नहीं तुम्हारा भी है तथा तुम्हें भी उसके साथ ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा हम करते हैं। यदि तुम ऐसा नहीं करते तो तुम्हारा कर्म तुम्हारे साथ, हमारा कर्म हमारे साथ। हम तो उसी के लिए शुद्ध रुप से कार्य करते हैं।

The Ummah Technology Mission

أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَٰهِـۧمَ وَإِسْمَٰعِيلَ وَإِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ وَٱلْأَسْبَاطَ كَانُوا۟ هُودًا أَوْ نَصَٰرَىٰ ۗ قُلْ ءَأَنتُمْ أَعْلَمُ أَمِ ٱللَّهُ ۗ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن كَتَمَ شَهَٰدَةً عِندَهُۥ مِنَ ٱللَّهِ ۗ وَمَا ٱللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤٠﴾

(१४०) क्या तुम कहते हो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक़ तथा याक़ूब एवं उनकी संतान यहूदी अथवा इसाई थी ? कह दो क्या तुम अधिक जानते हो अथवा अल्लाह (तआला) ?[1] अल्लाह के पास प्रमाण छुपाने वालों से अधिक अत्याचारी अन्य कौन है ? तथा अल्लाह (तआला) तुम्हारे कर्मों से अचेत नहीं।[2]

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۖ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُم مَّا كَسَبْتُمْ ۖ وَلَا تُسْـَٔلُونَ عَمَّا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿١٤١﴾

(१४१) यह समुदाय है जो गुज़र चुका, जो उन्होंने किया उनके लिए है तथा जो तुमने किया तुम्हारे लिये, तुमसे उनके कर्मों के विषय में प्रश्न नहीं किया जाएगा।[3]

---

[1] तुम कहते हो ये *नबियों* का गिरोह तथा उसकी संतानें यहूदी अथवा इसाई थीं, जबकि अल्लाह तआला उसका खण्डन कर रहा है। अब तुम्हीं बताओ कि अधिक ज्ञान अल्लाह को है या तुम्हें ?

[2] तुम्हें ज्ञात है कि ये नबी, यहूदी अथवा इसाई नहीं थे, इसी प्रकार तुम्हारी किताबों में परम आदरणीय *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की निशानियाँ हैं, परन्तु उन प्रमाणों को लोगों से छिपाकर एक बड़ा अत्याचार कर रहे हो, जो अल्लाह तआला से छिपा नहीं है।

[3] इस *आयत* में पुन: लाभ तथा कर्म की विशेषता का वर्णन करके पर्वजों तथा महात्माओं से सम्बन्ध अथवा उन पर भरोसे को निरर्थक बताया गया है। क्योंकि

«مَنْ بَطَّأَ بِهِ عَمَلُهُ لَمْ يُسْرِعْ بِهِ نَسَبُهُ».

"जिसको उसका कर्म पीछे छोड़ गया, उसका वंश उसे आगे नही बढ़ाएगा।"

(सहीह मुस्लिम)

अर्थ है कि पूर्वजों के पुण्य से तुम्हें कोई लाभ तथा उनके पापों पर तुम से कोई पूछताछ न होगी, अपितु उनके कर्मों के विषय में तुम से अथवा तुम्हारे कर्मों के विषय में उनसे नहीं पूछा जाएगा।

﴿وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ﴾ [فاطر: ١٨]

"कोई किसी का बोझ नहीं उठाएगा" (सूर: फातिर-१८)

﴿وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنسَٰنِ إِلَّا مَا سَعَىٰ﴾ [النجم: ٣٩]

मनुष्य के लिए वही कुछ है जिसके लिए उसने प्रयत्न किया। (सूर: अल-नजम -३९)

The Ummah Technology Mission

سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِيْ كَانُوْا عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٤٢﴾

(१४२) निकट ही मूर्ख लोग कहेंगे कि जिस क़िबला (जिस दिशा की ओर मुख करके नमाज़ पढ़ी जाती है) पर यह थे उससे इन्हें किस विषय ने फेर दिया ? (आप) कह दीजिए कि पूर्व तथा पश्चिम का मालिक अल्लाह (तआला) है वह जिसे चाहे सीधा मार्ग दर्शाता है ।[1]

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ

(१४३) तथा हमने इसी प्रकार तुम्हें माध्यम (संतुलित) समुदाय बनाया है ।[2] ताकि तुम

---

[1]जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का से हिजरत करके मदीना पधारे तो १६-१७ महीने तक बैतुल मक़दिस की ओर मुख करके नमाज़ पढ़ते रहे । जबकि हार्दिक इच्छा थी कि ख़ानये काआबा की ओर मुख करके नमाज़ पढ़ी जाये । जो आदरणीय इब्राहीम का क़िबला था । इसके लिए आप प्रार्थना भी करते तथा बार-बार आप आकाश की ओर दृष्टि करते । अन्त में अल्लाह तआला ने क़िबले के परिवर्तन का आदेश दे ही दिया जिस पर यहूदी तथा भ्रष्टाचारियों ने शोर मचाया । यद्यपि नमाज़ अल्लाह की इबादत है तथा इबादत में उपासक (इबादत करने वाला) को जिस प्रकार का आदेश होता है, उस प्रकार करने के लिए वह बाध्य होता है इसलिए जिस ओर अल्लाह ने मुख फेर दिया उस ओर फिर जाना अनिवार्य था । इसके अतिरिक्त जिस अल्लाह की इबादत करनी है पूर्व, पश्चिम दिशायें उसी की हैं, इसलिए दिशाओं का कोई महत्व नहीं, प्रत्येक दिशा में अल्लाह की इबादत हो सकती है, यदि उस दिशा को अपनाने का अल्लाह ने आदेश दिया हो । क़िबला परिवर्तन का यह आदेश "असर" की नमाज़ के समय आया तथा असर की नमाज़ ख़ानये काअ़बा की ओर मुख करके पढ़ी गयी ।

[2] وسط का शब्दार्थ है, 'मध्य', परन्तु यह महानता तथा श्रेष्ठता के लिए भी प्रयुक्त होता है, यहां इसी अर्थ में प्रयोग हुआ है अर्थात जिस प्रकार तुम्हें सर्वश्रेष्ठ क़िबला प्रदान किया गया है, उसी प्रकार तुम्हें सर्वश्रेष्ठ समुदाय भी बनाया गया है । उद्देश्य यह है कि तुम लोगों पर गवाही दो । जैसा कि अन्य स्थान पर है[الحج: ٧٨] ﴿لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ﴾ (सूर: अल-हज्ज,७८) रसूल तुम पर और तुम लोगों पर गवाह हो । इसका स्पष्टीकरण कुछ हदीसों मे इस प्रकार आया है कि जब अल्लाह तआला पैग़म्बरों (ईशदूतों) से क़ियामत के दिन पूछेगा कि तुमने मेरा संदेश लोगों तक पहुँचाया था वह सकारात्मक उत्तर देगें अल्लाह तआला पूछेगा कि तुम्हारा कोई गवाह है ? वह कहेंगे मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा उनके अनुयायी । अत: यह अनुयायी गवाही देंगे इसलिए

The Ummah Technology Mission

وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِيْ كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ؕ وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۳﴾

लोगों पर साक्षी हो जाओ तथा रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम पर साक्षी हो जाएं जिस क़िबले पर तुम पूर्व से थे, उसे हमने केवल इसलिए निर्धारित किया था कि हम जान लें कि रसूल के सच्चे अनुयायी कौन-कौन हैं तथा कौन है जो अपनी एड़ियों के बल पलट जाता है,[1] यद्यपि यह कार्य कठिन है, परन्तु जिन्हें अल्लाह ने मार्ग दर्शन प्रदान किया है (उन पर कोई कठिनाई नहीं) अल्लाह (तआला) तुम्हारा ईमान नष्ट नही करेगा,[2] अल्लाह (तआला) लोगों के साथ प्रेम तथा कृपा करने वाला है।

इसका अनुवाद न्यायकर्त्ता भी किया गया है। (इब्ने कसीर) एक अर्थ وسط के मध्यम के भी किये गये हैं, अर्थात मध्यम समुदाय-अर्थात अधिकता अथवा कमी करने से शुद्ध। यह इस्लाम की शिक्षाओं के आधार पर है कि इसमें मध्यमता है, न अधिकता न कमी।

[1]यह क़िबला परिवर्तन का एक कारण बताया गया है। ईमानवाले, सच्चे लोग तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों के इशारे की प्रतीक्षा में रहा करते थे, इसलिए उनके लिए इधर से उधर फिर जाना कोई कठिन कार्य न था बल्कि एक स्थान पर तो नमाज़ की स्थिति में जबकि वे रूकूअ में थे यह आदेश पहुँचा तो उन्होंने रूकूअ में ही अपना मुख खानये काअ़बा की ओर कर लिया। यह मस्जिदे क़िबलतैन (अर्थात वह मस्जिद जिसमें एक नमाज़ दो क़िबलों की ओर मुख करके पढ़ी गयी हो) कहलाती है। ऐसी ही घटना मस्जिदे क़ुबा में भी हुई। لنعلم (कि हम जान लें) अल्लाह को तो पूर्व ही ज्ञान था, इसका अर्थ है कि हम विश्वासी लोगों में से सन्देह करने वालों को अलग कर दें ताकि लोगों के समक्ष दोनों प्रकार के लोग स्पष्ट हो जायें। (फ़तहुल क़दीर)

[2]कुछ सहावा की बुद्धि में यह शंका उत्पन्न हुई कि जिन सहावियों की बैतुल मक़दिस की ओर मुख करके नमाज पढ़ने के समय में मृत्यु हो गयी अथवा हम जितने समय तक उस ओर मुख करके नमाज पढ़ते रहे हैं, ये व्यर्थ हो गईं, अथवा शायद उनका पुण्य नहीं प्राप्त होगा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया ये नमाज़ें नष्ट नहीं होंगी, तुम्हें पूरा पुण्य प्राप्त होगा। यहाँ नमाज को ईमान से वर्णन करके यह भी स्पष्ट कर दिया गया कि नमाज़ के

The Ummah Technology Mission

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۪ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۭ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۭ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۭ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝

(१४४) हम आपके मुख को आकाश की ओर,बार-बार उठते हुए देख रहे हैं। अब हम आपको उस क़िबले की ओर फेर देंगे, जिससे आप प्रसन्न हो जाएं। आप अपना मुख मस्जिद हराम (कआ़बा) की ओर फेर लें तथा आप जहाँ कहीं भी हों आप अपना मुख उसी ओर फेरा करें। अहले किताब को इस बात के अल्लाह की ओर से सत्य होने का वास्तविक ज्ञान है।[1] तथा अल्लाह तआला उन कर्मों से अचेत नहीं, जो ये करते हैं।

وَلَىِٕنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۭ وَلَىِٕنِ

(१४५) तथा आप यदि अहले किताब को सभी प्रमाण प्रस्तुत कर दें परन्तु वे आपके क़िबले का अनुकरण नहीं करेंगे[2] तथा न आप उनके क़िबले को मानने वाले,[3] न ये आपस में एक दूसरे के क़िबले को मानने

विना ईमान का कोई महत्व नहीं है। ईमान का तभी महत्व है जब नमाज़ तथा अन्य अल्लाह के आदेशों का पालन होगा।

[1]अहले किताब की विभिन्न धार्मिक पुस्तकों में ख़ानये काअ़बा के अन्तिम नबी का क़िबला होने के स्पष्ट संकेत विद्यमान हैं। इसलिए इसका सत्य होना उन्हें निश्चित रूप से ज्ञात था। परन्तु उनका वंशीय घमण्ड तथा ईर्ष्या, सत्य कोस्वीकारने में बाधित बन गया।

[2]क्योंकि यहूदियों के विरोध का आधार ईर्ष्या तथा द्वेष है, इसलिए उन पर प्रमाण का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। अर्थात किसी बात से प्रभावित होने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य का हृदय स्वच्छ हो।

[3]क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह की वह्यी (प्रकाशनाओं) के पालन करने वाले हैं, जब तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह की ओर से ऐसा आदेश न मिले आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके किबले को क्यों अपना सकते हैं।

The Ummah Technology Mission

اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ إِنَّكَ إِذًا لَمِنَ الظّٰلِمِينَ ﴿١٤٥﴾

वाले हैं।[1] यदि आप इसके उपरान्त कि आपके पास ज्ञान आ चुका फिर भी उनकी इच्छाओं की तृप्ति के लए अनुकरण करने लगें तो नि:सन्देह आप भी अत्याचारी हो जाएंगे।[2]

اَلَّذِينَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُونَهٗ كَمَا يَعْرِفُونَ اَبْنَآءَهُمْ ۭ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤٦﴾

(१४६) जिन्हें हमने किताब प्रदान की है वे तो इसे ऐसा पहचानते हैं, जैसे कोई अपने पुत्रों को पहचानता है, उनका एक गुट सत्य को पहचान कर फिर छुपाता है।[3]

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١٤٧﴾

(१४७) आपके प्रभु की ओर से साक्षात सत्य है, सावधान ! आप सन्देह करने वालों में से न हों।[4]

وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۭ

(१४८) तथा प्रत्येक व्यक्ति एक न एक ओर आकृष्ट हो रहा है।[5] तुम पुण्य की ओर

---

[1]यहूदियों का क़िबला शिला वैतुल मक़दिस तथा इसाईयों का वैतुल मक़दिस का पूर्वी भाग है। जब अहले किताब के यह दो गुट भी एक क़िबले पर सहमत नहीं तो मुसलमानों से क्यों आशा करते हैं कि वह इस विषय में उनका पक्ष करेंगे।

[2]यह चेतावनी पहले गुज़र चुकी है, उद्देश्य समुदाय को सर्तक करना है कि क़ुरआन तथा हदीस के ज्ञान के उपरान्त अहले विदअत (आधुनीकीकरण करने वाले) के पीछे लगना, अत्याचार तथा भटकाव है।

[3]यहाँ अहले किताब के एक गुट को सत्य के छुपाने का अपराधी बताया गया है, क्योंकि उनमें एक गुट अब्दुल्लाह बिन सलाम जैसे लोगों का भी था जिन्होंने अपने सत्य एवं शुद्ध हृदय के कारण इस्लाम धर्म धारण किया।

[4]पैग़म्बर पर अल्लाह की ओर से जो भी आदेश उतरता है, नि:संदेह सत्य है, उसमें शंका व सन्देह का कोई लेश मात्र भी स्थान नहीं।

[5]अर्थात प्रत्येक धर्मवालों ने अपना प्रिय क़िबला बना रखा है, जिसकी ओर वह मुख करता है। एक अन्य भावार्थ यह है कि प्रत्येक धर्म के लोगों ने अपना एक संविधान तथा विधि बना रखी है, जैसे क़ुरआन मजीद के अन्य स्थान पर है।

The Ummah Technology Mission

أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمُ اللَّهُ جَمِيعًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٤٨﴾

दौड़ो । जहाँ कहीं भी तुम रहोगे, अल्लाह तुम्हें ले आयेगा । अल्लाह (तआला) को हर वस्तु का सामर्थ्य है ।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ وَإِنَّهُ لَلْحَقُّ مِن رَّبِّكَ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤٩﴾

(१४९) तथा आप जहाँ से निकलें अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर कर लिया करें, यही सत्य है आप के प्रभु की ओर से । जो कुछ तुम कर रहे हो उससे अल्लाह (तआला) अनजान नहीं ।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ وَحَيْثُ مَا كُنتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ

(१५०) तथा जिस स्थान से आप निकलें अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेर लें[1] तथा जहाँ कहीं तुम रहो अपना मुख उसी

﴿ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِن لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ ﴾

(सूर: *अल-मायदः*-४८) अर्थात अल्लाह तआला ने मार्ग दर्शन तथा मार्गभ्रंश दोनों के स्पष्टीकरण के पश्चात, मनुष्य को उन दोनों में से किसी को अपनाने की जो स्वतंत्रता प्रदान की है, उसके कारण विभिन्न विधियाँ तथा नियम लोगों ने बना लिये हैं, जो एक दूसरे से भिन्न हैं । अल्लाह तआला चाहता तो सभी को एक ही मार्ग पर सहमत कर देता परन्तु यह अधिकारों से वंचित किये बिना संभव न था तथा अधिकार देने का तात्पर्य उनकी परीक्षा लेना है । इसलिए हे मुसलमानों ! तुम भलाईयों की ओर आगे रहो अर्थात पुण्य तथा भलाई के मार्ग पर अग्रसर रहो तथा यह अल्लाह की वह्यी तथा रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मार्ग का अनुकरण करो, यही सत्य मार्ग है जिससे अन्य धर्मावलम्बी वंचित हैं ।

[1]क़िबले की ओर मुख फेर लेने के आदेश को तीन बार दोहराया गया है । या तो इस पर बल देने तथा महत्व दिखाने के लिए अथवा यह चूँकि आदेश निरस्तीकरण का प्रथम अनुभव था, इसलिए मानसिक संशय को दूर करने के लिए आवश्यक था कि इसे बार-बार दोहरा कर मस्तिष्क में बसा दिया जाए । अथवा विभिन्न कारणों से ऐसा किया गया । एक कारण नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ईच्छा तथा प्रसन्नता थी, वहाँ इसे वर्णित किया । दूसरा कारण प्रत्येक समुदाय के व्यक्ति तथा आमन्त्रित करने वाले के लिए एक स्थाई केन्द्र की स्थापना है, वहाँ इसे दुहराया, तीसरा कारण विरोधियों के आरोपों का खण्डन करने के लिए वर्णन किया गया है । (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِيْ وَلِاُتِمَّ نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٠﴾

ओर कर लिया करो, ताकि लोगों को कोई आपत्ति तुम पर शेष न रह जाए।[1] उनके सिवाय जिन्होंने उनमें से अत्याचार किये हैं।[2] तुम उनसे मत डरो।[3] मुझसे ही डरो। ताकि मैं अपनी अनुकम्पा तुम पर पूरी कर दूँ तथा इसलिए भी कि तुम मार्ग दर्शन प्राप्त कर सको।

كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ

(१५१) जिस प्रकार[4] हमने तुममें तुम्हीं में से रसूल (ईशदूत-मोहम्मद स०अ०व०) को भेजा, जो हमारी आयतें (पवित्र क़ुरआन के सूत्र) तुम्हारे समक्ष पाठ करता है तथा तुम्हें शुद्ध

---

[1]अर्थात अहले किताब यह न कह सकें कि हमारी किताबों में तो उनका क़िबला ख़ानये काअ़वा है तथा नमाज़ यह बैतुल मक़दिस की ओर मुख करके पढ़ते हैं।

[2]यहाँ ظلموا से तात्पर्य द्वेष तथा ईर्ष्या रखने वाले लोग हैं। अर्थात अहले किताब में से जो द्वेष रखने वाले हैं वह यह जानने के उपरान्त कि अन्तिम पैग़म्बर का क़िबला ख़ानये काअ़वा ही होगा, ईर्ष्या तथा द्वेष के कारण कहेंगे कि बैतुल मक़दिस के बजाए ख़ानये काअ़वा को अपना क़िबला बनाकर यह पैग़म्बर अन्ततः अपने पूर्वजों के धर्म ही की ओर आकर्षित हो गया है तथा कुछ के निकट इससे तात्पर्य मक्का के मूर्तिपूजक हैं।

[3]अत्याचारियों से न डरो, अर्थात मूर्तिपूजकों की बातों की चिन्ता न करो। उन्होंने कहा था कि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हमारा क़िबला अपना लिया है, निकट भविष्य में हमारा धर्म भी अपना लेंगे। "मुझसे ही डरते रहो।" जो आदेश देता रहूँ उस पर निर्भीक होकर बिना किसी प्रकार की चिन्ता किये कर्म करते रहो। क़िबले के परिवर्तन को मार्गदर्शन प्राप्त करने से तुलना की गई है। कहा गया है कि अल्लाह के आदेश के अनुसार कर्म करने से नि:सन्देह मनुष्य समृद्धि तथा पुरस्कार का अधिकारी भी बनता है तथा उसे मार्गदर्शन प्राप्त होने का सौभाग्य भी प्राप्त होता है।

[4] كما (जिस प्रकार) का सम्बन्ध पूर्व कथन से है अर्थात यह सभी सुख-समृद्धि तथा मार्ग दर्शन का सौभाग्य तुम्हें इस प्रकार प्राप्त हुआ जिस प्रकार इससे पूर्व तुम्हारे अन्दर तुम्हीं में से एक रसूल भेजा जो तुम्हारा शुद्धिकरण करता है, किताब तथा बुद्धिमत्ता की शिक्षा देता तथा जिनका तुम्हें ज्ञान नहीं वह सिखाता है।

The Ummah Technology Mission

وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٥١﴾

करता है एवं तुम्हें पुस्तक तथा बुद्धि एवं उन बातों का जिनसे तुम अज्ञान थे ज्ञान दे रहा है।

فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ﴿١٥٢﴾

(१५२) इसलिए तुम मुझे स्मरण करो मैं भी तुम्हें याद करुँगा तथा मेरे कृतज्ञ रहो एवं कृतघ्नता से बचो।[1]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٥٣﴾

(१५३) हे ईमान वालो ! धैर्य तथा नमाज के द्वारा सहायता चाहो, अल्लाह (तआला) धैर्य रखने वालों का साथ देता है।[2]

---

[1]अतएव तुम इन सुख-समृद्धियों के फलस्वरुप मेरा वर्णन तथा कृतज्ञता व्यक्त करते रहो। सुख-समृद्धियों पर कृतघ्नता न करो। वर्णन का अर्थ है हर क्षण अल्लाह को याद करना, अर्थात उसकी तस्वीह (पवित्रता), तहलील (एकता) तथा तकबीर (महिमा) के शब्दों का उच्चारण करना तथा कृतज्ञता का अर्थ है अल्लाह की प्रदान की हुई शक्ति तथा स्फूर्ति को उसकी आज्ञा पालन में ख़र्च करना है। अल्लाह की प्रदान की हुई शक्ति को अल्लाह के आदेशों की अवहेलना में ख़र्च करना यह अल्लाह की कृतघ्नता है। कृतज्ञता व्यक्त करने पर अन्य उपकारों की शुभ सूचना तथा कृतघ्नता पर कठोर यातना की चेतावनी है। ﴿لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ﴾ (सूरः इब्राहीम -७)

[2]मनुष्य की दो ही परिस्थितियाँ होती हैं। सुख-सुविधा (समृद्धि) अथवा दुख एवं विपदा। सुख में अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करने पर बल तथा दुख में धैर्य तथा अल्लाह से सहायता प्राप्त करने पर बल है। हदीस में है "ईमान वालों की समस्या विचित्र है, उसे प्रसन्नता प्राप्त होती है तो अल्लाह को कृतज्ञता व्यक्त करता है तथा दुख पहुँचता है तो धैर्य करता है। दोनों ही परिस्थितियाँ उसके लिए पुण्यकारी हैं।" (सहीह मुस्लिम किताबुल ज़ोहद व अर-रकाएक बाब-अल-मोमिन अमरुहु कुल्लुहु ख़ैर, हदीस संख्या-२९९९) धैर्य दो प्रकार का होता है। एक निषेध तथा पाप का परित्याग तथा उससे सुरक्षित रहने के कारण जिन से स्वाद का बलिदान तथा अस्थाई लाभों की हानि होती है, उन पर धैर्य। दूसरा अल्लाह के आदेशों के पालन करने पर जो कठिनाई आए उन्हें धैर्य के साथ सहन करना। कुछ लोगों ने इसकी तुलना इस प्रकार की है। अल्लाह की प्रिय बातों का पालन करना, चाहे इन्द्रीय अथवा शारीरिक रुप से कितनी ही कष्टदायक क्यों न हो तथा अल्लाह को अप्रिय लगने वाली बातों से बचना चाहिए। इच्छाएं तथा स्वाद उसको चाहे कितना ही खींचे। (इब्ने क़सीर)

The Ummah Technology Mission

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿۱۵۴﴾

(१५४) तथा अल्लाह (तआला) के मार्ग में शहीद होने वालों को मृतक न कहो,[1] वे जीवित हैं, परन्तु तुम नहीं समझते।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۵۵﴾

(१५५) तथा हम किसी न किसी प्रकार तुम्हारी परीक्षा अवश्य लेंगे, शत्रु के भय से, भूख-प्यास से धन तथा प्राण एवं फलों की कमी से तथा उन धैर्य रखने वालों को शुभ सूचना दे दीजिए।

الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿۱۵۶﴾ ؕ

(१५६) उन्हें जब कभी भी कोई कठिनाई आती है, तो कह किया करते हैं कि हम तो स्वयं अल्लाह (तआला) की धरोहर हैं तथा हम उसी की ओर लौटने वाले हैं।

اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۟ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۷﴾

(१५७) उन पर उनके पोषक की दया एवं कृपा है तथा यही लोग मार्ग प्रदर्शित हैं (सत्य मार्ग पर हैं)[2]

اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ اَوِ اعْتَمَرَ

(१५८) अवश्य सफ़ा (पर्वत) एवं मरवह (पर्वत) अल्लाह (तआला) की निशानियों में से

---

[1] शहीदों को मरा हुआ न कहना उनके मान-सम्मान के लिए है। यह जीवन बरज़ख़ (आलोक-परलोक के मध्यम का जीवन है) जिसे हमारी बुद्धि समझने में असमर्थ है। यह जीवन सम्मान के अनुसार नबियों, ईमानवालों यहाँ तक कि काफ़िरों को भी प्राप्त है। शहीद की आत्मा तथा कुछ कथनों के अनुसार ईमान वालों की आत्मायें भी एक पक्षी के वक्ष में स्वर्ग में जहाँ चाहती है फिरती है। (इब्ने कसीर तथा सूरः *आले-इमरान*-१६९ देखें)

[2] इन आयतों में धैर्य रखने वालो के लिए शुभ सूचनाएं हैं। हदीस में विपदा के समय ﴿إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ﴾ के साथ «اللَّهُمَّ أْجُرْنِي فِي مُصِيبَتِي وَأَخْلِفْ لِي خَيْرًا مِنْهَا» पढ़ने की भी विशेषता पर बल दिया गया है। (सहीह मुस्लिम किताबुल जनायज़ बाब मा युकाल इन्दल मुसीबः हदीस संख्या ९१८)

The Ummah Technology Mission

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۙ فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٥٨﴾

हैं,[1] इसलिए अल्लाह के घर का हज तथा उमरा करने वाले पर इनकी परिक्रमा कर लेने में भी कोई पाप नहीं।[2] अपनी प्रसन्नता से पुण्य करने वालों का अल्लाह सम्मान करता है तथा उन्हें भलीभाँति जानने वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ ۙ أُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ

(१५९) जो लोग हमारी उतारी हुई निशानियों एवं निर्देशों को छुपाते हैं इसके उपरान्त कि हम उसे अपनी किताब (पवित्र क़ुरआन) में लोगों के लिए वर्णन कर चुके हैं उन लोगों

---

[1] شعائر बहुवचन شعيرة का है, जिसका अर्थ चिन्ह के है, यहाँ हज के नियम (जैसे अरफ़ात में रुकना, सअई करना, सफ़ा-मरवह पर्वतों के मध्य निर्धारित मार्ग की परिक्रमा करना, कंकरियाँ मारना, बलि देना से तात्पर्य है जो अल्लाह तआला ने निर्धारित किये हैं।

[2] सफ़ा तथा मरवह के मध्य सअई करना, हज का एक स्तम्भ है। परन्तु क़ुरआन के शब्दों में (कोई पाप नहीं) से कुछ सहाबा को शंका हुई कि शायद यह आवश्यक नही है। आदरणीया आयशा (रज़ी अल्लाह अन्हा) के ज्ञान में जब यह बात आयी तो उन्होंने कहा कि यदि इसका अर्थ यह होता तो अल्लाह तआला इस प्रकार फ़रमाता (فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ لَا يَطَّوَّفَ بِهِمَا) यदि उनकी परिक्रमा न करें तो कोई पाप नहीं। फिर उसके उतरने की विशेषता का वर्णन किया कि मदीना निवासी अंसार, इस्लाम धर्म धारण करने से पूर्व झूठी मूर्ति मनात के नाम का उच्चारण करते, जिसकी पूजा वे मुशल्ल पर्वत पर करते थे। तथा फिर मक्का पहुँचकर ऐसे लोग सफ़ा मरवह के मध्य सअई (परिक्रमा) करना पाप समझते थे। मुसलमान होने के पश्चात उन्होंने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसके विषय में पूछा तो यह आयत उतरी, जिसमें कहा गया है कि सफ़ा-मरवह के मध्य सअई (परिक्रमा) करना कोई पाप नहीं। (सहीह बुख़ारी किताबुल हज व वजूब अलस्सफ़ा वल मरवह) कुछ लोगों ने इसकी पृष्ठ भूमि यह बतायी है कि अज्ञान काल में कुछ लोगों ने सफ़ा पर्वत पर एक मूर्ति (इसाफ़) तथा मरवह पर्वत पर नायला नाम की मूर्ति रखी हुई थी जिनका वे सअई के मध्य चुम्बन करते थे अथवा स्पर्श करते थे। जब लोग मुसलमान हुए तो उन्होंने समझा कि शायद सफ़ा-मरवह के मध्य सअई पाप हों क्योंकि इस्लाम के पूर्व दो मूर्तियों ही के कारण सफ़ा-मरवह के मध्य सअई करते थे। अल्लाह तआला ने इस आयत में उनकी इस चिन्ता तथा शंका को दूर कर दिया। अब यह सअई आवश्यक है। सफ़ा से प्रारम्भ होकर मरवह पर समाप्त होती है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

The Ummah Technology Mission

اللّٰعِنُوْنَ ﴿١٥٩﴾

पर अल्लाह की तथा सभी धिक्कारने वालों की धिक्कार है।[1]

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَبَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٠﴾

(१६०) परन्तु वह लोग जो तौबा (क्षमा-याचना) कर लें तथा सुधार कर लें एवं वर्णन करें तो मैं उनकी तौबा स्वीकार कर लेता हूँ, तथा मैं क्षमा-याचना स्वीकार करने वाला तथा कृपा करने वाला हूँ।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٦١﴾

(१६१) निःसन्देह जो काफ़िर कुफ़्र की स्थिति में मर जाएं उन पर अल्लाह की तथा फ़रिश्तों की एवं सभी लोगों की धिक्कार है।[2]

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿١٦٢﴾

(१६२) जिसमें वे सदैव रहेंगे न उनसे यातना हल्की की जाएगी तथा न उन्हें ढील दी जायेगी।

---

[1] अल्लाह तआला ने जो बातें अपनी किताब में उतारी हैं उन्हें छिपाना इतना बड़ा अपराध है कि अल्लाह के धिक्कारने के अतिरिक्त अन्य धिक्कारने वालों द्वारा भी धिक्कारा जाता है। हदीस में है «مَنْ سُئِلَ عَنْ عِلْمٍ فَكَتَمَه، أُلْجِمَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ بِلِجَامٍ مِّنْ نَّارٍ» (अबू दाऊद किताबुल इल्म बाब कराहिय: मनइल इल्मे, त्रिमिज़ी-हदीस संख्या ६५१, तथा कहते हैं हदीस हसन है) जिससे कोई ऐसी बात पूछी गयी जिसका ज्ञान उसको था तथा उसने उसको छिपाया तो क़ियामत के दिन आग की लगाम उसके मुख में दी जायेगी।

[2] इससे विदित हुआ कि जिस के विषय में सुनिश्चित ज्ञान हो कि उसका निधन कुफ़्र पर हुआ है उस पर धिक्कार की जा सकती है, परन्तु उसके अतिरिक्त किसी घोर पापी मुसलमान पर धिक्कार उचित नहीं है क्योंकि संभव है कि उसने निधन से पूर्व क्षमा याचना कर ली हो अथवा अल्लाह ने उसके अन्य पुण्य कर्मों के कारण उसके पाप क्षमा कर दिये हों जिसका ज्ञान हमें नहीं हो सकता। हाँ जिन कुकर्मों पर धिक्कार का शब्द आया है, उन कुकर्मियों के विषय में यह कहा जा सकता है कि धिक्कार योग्य कर्म कर रहे हैं यदि उन्होंने इसकी क्षमा-याचना न की तो अल्लाह के सदन में तिरष्कृत हो सकते हैं।

The Ummah Technology Mission

وَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَٰنُ الرَّحِيمُ ﴿١٦٣﴾

(१६३) तथा तुम सबका ईष्टदेव एक अल्लाह ही है उसके अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं,[1] वह अति कृपालु तथा अति दयालु है।

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِن مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا

(१६४) आकाश तथा धरती की रचना, रात दिन का फेर बदल, नावों का लोगों को लाभ देनेवाली वस्तुओं को लेकर समुद्र में चलना, आकाश से वर्षा उतार कर मृत धरती को जीवित कर देना,[2] इसमें प्रत्येक प्रकार के जीव को फैला देना, वायु की दिशा परिवर्तन

---

[1] इस आयत में पुन: एकेश्वरवाद का आमन्त्रण दिया गया है। यह एकेश्वरवाद का आमन्त्रण मक्का के मूर्तिपूजकों की समझ में न आने वाला था। उन्होंने कहा ﴿أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ﴾ [ص:٥] (सूर:स्वाद) क्या उसने इतने देवताओं के स्थान पर एक ईष्टदेव बना दिया, यह तो आश्चर्यजनक बात है। इसलिए अगली आयत में उसके एक होने के प्रमाण तथा तर्क वर्णन किये जा रहें हैं।

[2] यह आयत इस आधार पर अति परिपूर्ण है कि सृष्टि की रचना तथा उसके नियन्त्रण एवं संचालन के सम्बन्ध में सात विशेष बातों का एकत्रित वर्णन है जो किसी अन्य आयत में नहीं। १- आकाश तथा धरती की उत्पत्ति, जिसके विस्तार तथा प्रसार के वर्णन की कोई आवश्यकता नहीं। २- रात तथा दिन, एक के बाद दूसरे का आना, दिन को प्रकाश तथा रात को अंधकार करना ताकि जीवन यापन के लिए व्यापार भी हो सके तथा विश्राम भी। फिर रात का लम्बा तथा दिन का छोटा होना फिर उसके विपरीत दिन का लम्बा तथा रात का छोटा होना। ३- समुद्र में नाव तथा जहाज का चलना, जिसके कारण व्यापारिक यात्रा भी होती है तथा अधिक मात्रा में खाद्य सामग्री भी एक स्थान से दूसरे स्थान को स्थानान्तरित होती है। ४- वर्षा जो धरती की उपज तथा सिंचाई के लिए अति आवश्यक है। ५- हर प्रकार के जीव-जन्तुओं का जन्म जो यातायात, कृषि तथा युद्ध में प्रयोग होते हैं तथा मनुष्य के भोजन के लिए एक बड़ा भाग इनसे पूरा होता है। ६- हर प्रकार की वायु, ठंड़ी भी गर्म भी प्रयोग योग्य भी तथा निष्प्रयोग भी, पूर्वी-पश्चिमी भी तथा उत्तर-दक्षिणी भी। मनुष्य के जीवन तथा उनकी आवश्यकतानुसार। ७- मेघ जिन्हें अल्लाह तआला जहाँ चाहता है बरसाता है। ये सभी बातें क्या अल्लाह तआला के एक होने का प्रमाण नहीं हैं? अवश्य प्रमाण हैं। क्या उसके इस नियन्त्रण तथा संचालन में उसका कोई साझीदार है? नहीं, कदापि नहीं। तो फिर इसको छोड़कर अन्य को ईष्टदेव तथा कष्ट निवारक समझना कहाँ कि बुद्धिमानी है।

mo Ummah Technology Mission

مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۖ وَّتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿١٦٤﴾

करना, तथा बादल जो आकाश तथा धरती के मध्य वशवति हैं, इसमें बुद्धिमानों के लिए अल्लाह के सामर्थ्य के चिन्ह हैं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ﴿١٦٥﴾

(१६५) तथा कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह के साझीदार अन्यों को ठहरा कर उनसे ऐसा प्रेम रखते हैं जैसा प्रेम अल्लाह से होना चाहिए[1] तथा ईमानवाले अल्लाह से प्रेम में दृढ़ होते हैं,[2] काश कि मूर्तिपूजक जानते जबकि अल्लाह की यातनाओं को देखकर (जान लेंगे) कि सभी सामर्थ्य अल्लाह ही को

---

[1]उपरोक्त प्रत्यक्ष प्रमाणों तथा अकाटय तर्कों के उपरान्त ऐसे लोग हैं जो अल्लाह के साथ अन्य दूसरों को उसका साझीदार बना लेते हैं। तथा उनसे उसी प्रकार प्रेम करते हैं, जिस प्रकार अल्लाह से करना चाहिए। मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय ही ऐसा नहीं था शिर्क के यह प्रदर्शक आज भी हैं, बल्कि इस्लाम के नाम लेवाओं के दिलों में भी यह रोग घर कर गया है। उन्होंने भी अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को तथा महात्माओं, पीरों, फ़कीरों तथा सज्जादा नशीनों को अपना संकटमोचन, कष्टनिवारक तथा चिन्ताहरण बना रखा है। बल्कि उनको उनसे प्रेम अल्लाह से भी अधिक है। एकेश्वरवाद का भाषण उन्हें भी इसी प्रकार कष्टदायक प्रतीत होता है। जिसका दृश्य अल्लाह तआला ने इस आयत में खीचा है।

﴿وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۖ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِن دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ﴾

तथा जब अकेले अल्लाह का वर्णन किया जाता है तो जो लोग आख़िरत पर विश्वास नहीं रखते, उनके हृदय बंध जाते हैं तथा जब उसके अतिरिक्त अन्य का वर्णन होता है तो प्रसन्न हो जाते हैं। (सूरः अल-ज़ुमर ४५)

[2]परन्तु ईमानवालों को मूर्तिपूजकों के विपरीत अल्लाह तआला से ही अधिक प्रेम होता है। क्योंकि जब मूर्तिपूजक समुद्र के तूफ़ान में फंस जाते हैं तो अपने देवी देवता भूल जाते हैं। वहाँ केवल अल्लाह तआला को पुकारते हैं ﴿فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ﴾ (सूरः अनकबूत-६५) ﴿وَإِذَا غَشِيَهُم مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ﴾ (सूरः लुक़मान-३२) ﴿وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ﴾ (सूरः यूनुस-२२)

The Ummah Technology Mission

है तथा अल्लाह (तआला) कठोर यातना देने वाला है। (तो कदापि मूर्तिपूजा न करते)

إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتُّبِعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾

(१६६) जिस समय मुखिया लोग अपने अनुयायियों से अलग हो जायेंगे तथा यातना को अपनी आँखों से देख लेंगे तथा सभी सम्बन्ध विच्छेदित हो जायेंगे।

وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا مِنَّا ۗ كَذَٰلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَا هُم بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾

(१६७) तथा अनुयायी कहने लगेंगे, काश हम दुनियाँ की ओर पुन: जायें तो हम भी उनसे इसी प्रकार अलग हो जाएं, जैसे ये हमसे हैं। इसी प्रकार अल्लाह तआला उन्हें उनके कर्म दिखाएगा उनको पछतावे के लिए, ये कदापि नरक से न निकल पाएंगे।[1]

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿١٦٨﴾

(१६८) लोगों! धरती में जितनी भी वैध तथा पवित्र वस्तुएं हैं, उन्हें खाओ-पियो। तथा शैतान के मार्ग पर न चलो,[2] वह तुम्हारा प्रत्यक्ष शत्रु है।

---

[1] मिश्रणवादी परलोक में धर्मगुरु तथा धर्माचारियों की विवशता तथा विश्वासघात पर पश्चाताप करेंगे, परन्तु इस पश्चाताप का कोई लाभ न होगा। काश संसार में ही मिश्रणवाद से क्षमायाचना कर लें।

[2] अर्थात शैतान के अनुगामी बनकर अल्लाह की अवर्जित की हुई चीजों को हराम न कहो जिस प्रकार से मूर्तिपूजकों ने किया कि अपनी मूर्तियों के नाम से समर्पित पशुओं को अपने लिए हराम कर लेते थे। जिसका विस्तृत वर्णन सूरः *अल-अन्आम* में आयेगा। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआला फ़रमाता है, मैंने अपने भक्तों को एकेश्वर का मानने वाला बना कर पैदा किया, परन्तु शैतानों ने उनको उनके धर्म से भटका दिया तथा जो वस्तुएं मैंने उनके लिए हलाल की थीं वे उसने उन पर हराम कर दीं। (सहीह मुस्लिम किताबुल जन्नः व सिफ़ते नईमिहा व अहलेहा, बाबुस सेफ़ातिल्लती योरफ़ो बिहा फ़िददुन्या अहलुल: जन्नः व अहलुन्नार संख्या-२८६५)।

The Ummah Technology Mission

إِنَّمَا يَأْمُرُكُم بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَن تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٦٩﴾

(१६९) वह तुम्हें केवल बुराई तथा अश्लीलता का तथा अल्लाह (तआला) पर उन बातों के कहने का आदेश देता है जिनका तुम्हें ज्ञान नहीं।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿١٧٠﴾

(१७०) तथा उनसे जब कभी कहा जाता है कि अल्लाह (तआला) की उतारी हुई किताब (धर्मशास्त्र) का पालन करो तो उत्तर देते हैं कि हम तो उस मार्ग का पालन करेंगे जिस पर हमने अपने पूर्वजों को पाया, यद्यपि उनके पूर्वज मूर्ख तथा भटके हुए हों।[1]

وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثَلِ الَّذِي يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَاءً وَنِدَاءً ۚ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٧١﴾

(१७१) और काफ़िर उन पशुओं के समान हैं जो अपने चरवाहे की केवल पुकार और स्वर ही को सुनते हैं (समझते नहीं) वह बहरे गूँगे और अंधे हैं, उन्हें बुद्धि नहीं है।[2]

---

[1] आज भी अहले बिदअत को समझाया जाए कि इन नई वार्ता का धर्म में कोई मूल नहीं तो वह यही उत्तर देंगे कि ये रीति-रिवाज़ हमारे पूर्वजों से चला आ रहा है। यद्यपि पूर्वज भी धर्म के ज्ञान से अनभिज्ञ तथा मार्गदर्शन से वंचित हो सकते हैं। इसलिए धार्मिक नियमों के प्रमाण के समक्ष पूर्वजों के आज्ञा पालन, इमामों का अनुकरण (बिना प्रमाण के उनकी बात माने जाना) पूर्णतया भटकाव है, अल्लाह तआला मुसलमानों को भटकाव के दलदल से निकाले।

[2] इन काफ़िरों का उदाहरण, जिन्होंने अपने पूर्वजों के अनुसरण में अपनी बुध्दि और ज्ञान को छोड़ दिया है, उन पशुओं के समान है, जिनको चरवाह बुलाता और पुकारता है, तो वह जानवर आवाज़ तो सुनते हैं, परन्तु यह नहीं समझते कि उन्हें क्यों बुलाया एवं पुकारा जा रहा है ? इसी प्रकार यह अनुयायी भी बहरे है कि सत्य की आवाज़ नहीं सुनते, गूँगे है कि सत्य बात मुँह से नहीं निकालते, अंधे है कि सत्य देख नहीं सकते और बुध्दिहीन हैं कि सत्य के आमंत्रण और एकेश्वरवाद और सुन्नत के आमंत्रण के समझने योग्य नहीं हैं। यहाँ दुआ से निकट की आवाज़ और निदाअ से दूर की आवाज़ का अर्थ है।

The Ummah Technology Mission

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١٧٢﴾

(१७२) ऐ ईमानवालो ! जो (पवित्र) वस्तुएं हमने तुम्हें प्रदान की हैं, उन्हें खाओ-पियो और अल्लाह (तआला) के कृतज्ञ रहो, यदि तुम मात्र उसी की अराधना करते हो ।[1]

اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ

(१७३) तुम पर मृत एवं रक्त (बहा हुआ), सूअर का माँस और वह प्रत्येक पदार्थ जिस पर अल्लाह के नाम के अतिरिक्त दूसरों के नाम पुकारे जायें निषेध हैं ।[2] परन्तु जो

---

[1]इसमें ईमानवालों को उन सभी पदार्थों के खाने का आदेश है, जिन्हें अल्लाह ने हलाल की हैं और उस पर अल्लाह का कृतज्ञ होने की बात कही गयी है। उससे तो एक बात यह ज्ञात हुई कि अल्लाह की वैध की हुई वस्तु ही शुध्द एवं पवित्र हैं। निषेध की हुई वस्तु पवित्र नहीं चाहे वे इन्द्रियों को कितनी ही पसंद क्यों न हो (जैसे पाश्चात्य देशों को सूअर का माँस अत्यधिक रुचिकर है। दूसरी यह कि मूर्तियों के नामों समर्पित पशुओं एवं चीज़ों को मूर्तिपूजक अपने ऊपर वर्जित कर लेते थे (जिसका विवरण *सूरः अनआम* में है) मूर्तिपूजकों का यह कर्म ग़लत है और इस प्रकार एक उचित वस्तु वर्जित नहीं होती, तुम उनकी तरह वर्जित मत करो (निषेध केवल वही है, जिसका विवरण अगली आयत में है) तीसरी यह कि अगर तुम केवल एक अल्लाह की आराधना करने वाले हो, तो कृतज्ञता की ओर ध्यान दो।

[2]इस आयत में चार निषेद्धि पदार्थों का वर्णन है, परन्तु इसे संक्षिप्त वाक्य (إِنَّمَا) के साथ वर्णित किया गया है, जिससे मस्तिष्क में भ्रम पैदा होता है कि शायद वर्जित केवल चार यही चीज़ें हैं, जबकि इनके अतिरिक्त भी वर्जित कई पदार्थ हैं। इसलिए प्रथम तो यह समझ लेना चाहिए कि यह संक्षेप एक विशेष विषय में आया है अर्थात मूर्तिपूजकों के इस कर्म के सम्बन्ध में कि वह वैध पशुओं को भी अवैध कर लेते थे। अल्लाह (तआला) ने फ़रमाया वह अवैध नहीं, निषेध तो केवल यह हैं। इसलिए इस संक्षिप्त को बढ़ाया गया है अर्थात इसके अतिरिक्त भी अन्य वर्जित हैं जो यहाँ वर्णित नहीं। दूसरी हदीस में दो नियम हैं जो पशुओं के हलाल एवं हराम के लिए वर्णित कर दिये गये हैं। वह आयत की सहीह तफ़सीर (भाष्य) के रूप में सामने रहने चाहिए हिंसक पशुओं में ذوناب (वह नर भक्षी पशु जो कुचलियों से शिकार करें) और पक्षियों में ذو مخلب (जो पंजों से शिकार करें) वर्जित हैं। तीसरे जिन पशुओं का वर्णन हदीस से सिद्ध है, उदाहरणत: गधा, कुत्ता आदि वह भी निषेध हैं, जिससे इस बात का संकेत मिलता है कि हदीस भी क़ुरआन करीम की तरह धर्म का स्रोत है और धर्म के लिए प्रमाण है और धर्म दोनों के मानने से

The Ummah Technology Mission

ही पूर्ण होता है, न कि हदीस को छोड़कर मात्र क़ुरआन से। मृत से तात्पर्य हर प्रकार के वह उचित पशु-पक्षी हैं, जो धर्म विधि के बिना वध किये गये हों अपनी मौत अथवा किसी दुर्घटना से (जिनकी विस्तृत जानकारी अल-मायद: में है) मर गया हो। अथवा धार्मिक नियमों के विरूद्ध उसका वध किया गया हो, उदाहरणत: गला घोंट दिया जाये अथवा पत्थर या लकड़ी से मारा जाये अथवा जिस प्रकार से आजकल मशीन से वध किया जाता है, जिसमें झटके से मारा जाता है, परन्तु हदीस में दो प्रकार के मृत जानवर उचित किये गये हैं, एक मछली, दूसरी टिड्डी, वह इस नियम मृत से अलग हैं। रक्त से तात्पर्य वध के समय बहने वाला ख़ून है। मांस के साथ जो ख़ून लगा रह जाता है वह वैध है। यहाँ भी दो ख़ून हदीस के अनुसार वैध हैं। कलेजी और तिल्ली। सूअर का मांस, यह निर्लज्जता में बदतरीन जानवर है, अल्लाह ने इसे अवैध किया है। وما أهل वह जानवर अथवा कोई और वस्तु जिसे अल्लाह के अतिरिक्त दूसरे के नाम पर पुकारा जाये। इसका तात्पर्य वह जानवर है जिनका वध अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य के नाम पर किया जाये। जैसे अरब के मूर्तिपूजक लात तथा उज्ज़ा आदि के नाम पर चढ़ाते थे, अथवा आग के नाम पर, जैसे अग्निपूजक करते हैं। और उसी में वह जानवर भी आ गये, जो अज्ञान मुसलमान मरे हुए धर्मात्माओं के सम्मान, प्रेम उनकी प्रशंसा पात्र तथा निकटता प्राप्त करने के लिए अथवा उनसे डरते और आशा रखते हुए, क़ब्रों एवं आस्तानों पर चढ़ाते हैं, अथवा मुजाविरों को बुर्ज़गों के नाम पर दे आते हैं (जैसे बहुत से बुज़र्ग की क़ब्रों पर बोर्ड लगे हुए हैं, उदाहरणत: "दाता" साहब की नियाज़ के लिए बक़रे यहाँ जमा किये जायें) इन जानवरों को चाहे काटते समय अल्लाह ही का नाम लिया जाये, यह निषेध ही होगे। क्योंकि इसका धेय अल्लाह को राज़ी करना नहीं, क़ब्र वाले को राज़ी करने के लिए, और अल्लाह के अतिरिक्त दूसरे का सम्मान करना अथवा अल्लाह के अतिरिक्त अन्य का भय है, जो शिर्क है। इसी प्रकार से जानवरों के अतिरिक्त जो भी वस्तु नज़र-नियाज़ और चढ़ावे की अल्लाह के अतिरिक्त अन्य के नाम पर होगी. वर्जित होगी, जैसे क़ब्रों पर ले जाकर अथवा वहाँ से ख़रीद कर, क़ब्रों के आसपास भिक्षुकों एवं निर्धनों पर देगों और लंगरों की अथवा मिठाई और पैसों आदि का वितरण और वहाँ के कोषों में नज़र-नियाज के पैसे डालना, अथवा उर्स के अवसर पर वहाँ दूध पहुँचाना यह सभी कार्य वर्जित तथा अनुचित हैं, क्योंकि यह सब अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की नज़र-नियाज की परिस्थितियाँ हैं। और नज़र भी नमाज़ रोज़ा आदि इबादत (अर्चना) की तरह, एक इबादत है और इबादत (वंदना) की हर प्रकार एक अल्लाह से सम्बन्धित है। इसीलिए हदीस में हैं ملعون من ذبح لغير الله (सहीह अल जामेअ अस्सग़ीर व ज्यादतु:, अलबानी भाग२, पृष्ठ १०२४) जिसने अल्लाह के अतिरिक्त के नाम पर जानवर काटा, वह मलऊन (तिरस्कृत) है।

तफ़सीर अज़ीज़ी में निशापुरी की तफ़सीर से उदघृत है।

The Ummah Technology Mission

وَّلَا عَادٍ فَلَآ إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٧٣﴾

विवश हो जायें और वह सीमा उल्लंघन करने वाला और अत्याचारी न हो, उसको उनको खाने में कोई पाप नहीं। अल्लाह (तआला) क्षमाशील कृपाशील है।

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ وَيَشْتَرُونَ بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۙ أُولَٰئِكَ مَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ إِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٤﴾

(१७४) नि:सन्देह जो लोग अल्लाह तआला की उतारी हुई किताब छिपाते हैं, और उसे थोड़े-थोड़े मूल्य पर बेचते हैं। विश्वास करो वे अपने पेट में आग भर रहे हैं, क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उनसे बात भी नहीं करेगा, न उन्हें पवित्र करेगा, उनके लिए कठोर यातनायें हैं।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿١٧٥﴾

(१७५) यही वह लोग है जिन्होंने कुमार्ग को संमार्ग के बदले और यातना को क्षमा के बदले क्रय कर लिया है। यह लोग आग की यातना कितना सहन करने वाले हैं।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ نَزَّلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ ۗ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِي الْكِتَابِ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ﴿١٧٦﴾

(१७६) इन यातनाओं का कारण यही है कि अल्लाह तआला ने सच्ची किताब उतारी, और इस किताब में भेद रखने वाले अवश्य दूर के विभेद में हैं।

أجمع العلماء لو أن مسلما ذبح ذبيحة يريد بذبحها التقرب إلى غير الله صار مرتدا و ذبيحته ذبيحة مرتد

(तफ़सीर अज़ीज़ी पृष्ठ ६११, अशरफ़ुल हवाशी से उद्घत) आलिमों की इस बात पर सहमत है कि यदि मुसलमान ने कोई जानवर अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की निकटता प्राप्त करने के उद्देश्य से काटा तो वह मुर्तद हो जायेगा और उसका वध एक मुर्तद का वध होगा।

The Ummah Technology Mission

وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾

रखे, यही सत्यवादी लोग हैं और यही परहेज़गार (बुराई से बचने वाले) हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلٰى ؕ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى بِالْاُنْثٰى ؕ فَمَنْ عُفِيَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌ ۢ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ

(१७८) हे, ईमान वालों ! तुम पर हत्या किये गये व्यक्ति का बदला लेना फ़र्ज़ (अनिवार्य) किया गया है, आज़ाद, आज़ाद के बदले, ग़ुलाम, ग़ुलाम के बदले, नारी, नारी के बदले,[1] हाँ यदि जिस किसी को उसके भाई की ओर से क्षमा प्रदान कर दी जाये, उसे भलाई का सम्मान करना चाहिए और

---

[1]अंधकार काल में कोई नियम अथवा विधि तो थी नहीं, इसलिए शक्तिशाली समुदाय के लोग, शक्तिहीन समुदाय पर जिस प्रकार का अत्याचार करना चाहते, करते थे। अत्याचार करने की एक विधि यह थी कि किसी शक्तिशाली समुदाय के पुरुष की हत्या हो जाती, तो वह केवल हत्यारे को वध करने के वजाय हत्यारे के पूरे समुदाय के कई लोगों की हत्या करते, बल्कि कभी कभी पूरे समुदाय को नष्ट करने का प्रयत्न करते और स्त्री के वदले पुरुष की और बन्धुआ के बदले स्वतन्त्र पुरुष की हत्या करते। अल्लाह तआला ने इस अन्तर एवं विशेषता को समाप्त करते हुए फ़रमाया कि जिसकी हत्या होगी वदले में उसके ही समान वध किया जायेगा। हत्यारा स्वतन्त्र है तो बदले में वही स्वतन्त्र पुरुष, बंधुआ है तो बदले में वही बंधुआ तथा स्त्री है तो बदले में उसी स्त्री का वध किया जायेगा, न कि बंधुआ के स्थान पर स्वतन्त्र, स्त्री के स्थान पर पुरुष अथवा पुरुष के स्थान पर कई पुरुषों का वध किय जाये। इसका अर्थ कदापि यह नहीं है कि यदि पुरुष ने किसी स्त्री की हत्या की है, तो बदले में कोई स्त्री की हत्या कर दी जाये अथवा स्त्री पुरुष की हत्या कर दे, तो किसी पुरुष की हत्या कर दी जाय (जैसा कि स्पष्ट शब्दों से भावार्थ निकलता है), वल्कि ये शब्द अवतरण की विशेषता है, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि जिस हत्यारे ने हत्या की है, उसी का वध किया जायेगा, चाहे वह पुरुष हो अथवा स्त्री,शक्तिशाली हो अथवा निर्वल «اَلْمُسْلِمُوْنَ تَتَكَافَأُ دِمَاؤُهُمْ»(अल-हदीस अबू दाऊद किताबुल जिहाद) "सभी मुसलमानों के रक्त (पुरुष हों अथवा स्त्री) समान है।" अर्थात आयत का भावार्थ वही है, जो क़ुरआन करीम की दूसरी आयत النفس بالنفس (*अल-मायेदा-४५*) का है। हनफ़ी आलिमों ने इससे तर्क निकालते हुए कहा है कि मुसलमान को काफ़िर के वदले वध किया जायेगा, परन्तु अधिकतर आलिमों का इससे मतभेद है, क्योंकि हदीस में स्पष्ट है «لَا يُقْتَلُ مُسْلِمٌ بِكَافِرٍ» (सहीह बुख़ारी, संख्या ६९१५, तथा अस्सुनन) "मुसलमान काफ़िर के बदले वध नहीं किया जायेगा।" (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

مِّن رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ۗ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٨﴾

आसानी के साथ देयत (धन जो हत्या के बदले लिया जाये अर्थदण्ड) अदा करना चाहिए।[1] तुम्हारे प्रभु की ओर से यह छूट और कृपा है।[2] उसके बाद भी जो उल्लघंन करे, उसे अति यातना का सामना करना पड़ेगा।[3]

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَاةٌ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٧٩﴾

(१७९) बुद्धिमानो। क़िसास (प्रतिहत्या, हत्यादण्ड) में तुम्हारे लिए जीवन है इस कारण तुम (हत्या करने से) रुकोगे।[4]

---

[1]क्षमा की दो स्थितियाँ हैं, एक तोबिना कोई धन बदले में लिए अर्थात देयत लिए बिना ही मात्र अल्लाह की प्रशंसापात्र बनने के लिए क्षमा करना, दूसरी स्थिति वध के बजाये देयत स्वीकार कर लेना। यदि यह दूसरी परिस्थिति अपनायी जाये, तोकहा जा रहा है कि देयत लेने वाला भलाई का पालन करे ﴿وَأَدَاءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ﴾ में हत्यारे से कहा जा रहा है कि बिना किसी कष्ट दिये अच्छे प्रकार से देयत को अदा करे। हत्या हुये व्यक्ति के निकट सम्बन्धियों ने उस पर कृपा की है उसके बदले में कृतज्ञता ही के साथ दे ﴿هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ﴾ (अर्रहमान)

[2]यह छूट और दया (अर्थात बदला, क्षमा अथवा देयत तीनों स्थितियाँ) अल्लाह तआला की ओर से तुम पर हुई हैं, वरन् इससे पूर्व तौरात वालों के लिए बदला अथवा क्षमा था, परन्तु देयत नहीं थी तथा इंजील वालों (इसाईयों) में केवल क्षमा ही थी, बदला था न देयत। (इब्ने कसीर)

[3]दैयत, (धन जो मृतक के उत्तराधिकारी हत्यारे से हत्या के बदले में मृत्यु दण्ड क्षमा करने के लिए माँगे) स्वीकारने अथवा ले लेने के पश्चात भी उसकी हत्या कर दे, तो यह अत्याचार की अधिकता है, जिसका दण्ड उसको संसार और परलोक दोनो में भुगतना पड़ेगा।

[4]जब हत्यारे को यह भय होगा कि हत्या के बदले में उसे भी मार डाला जायेगा, तो वह किसी की भी हत्या करने का साहस नही करेगा। और जिस समाज में हत्या के बदले में यह नियम लागू हो जाता है, वहाँ यह भय समाज को हत्या और रक्तपान से सुरक्षित रखता है, जिससे समाज में अत्यन्त सुख-शान्ति रहती है। इसका अवलोकन सऊदी अरब के समाज में किया जा सकता है, जहाँ इस्लामी नियमों के पालन के ही कारण ईश्वर की कृपा से सुख शान्ति का वातावरण है।

The Ummah Technology Mission

كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا ۖ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ﴿١٨٠﴾

(१८०) तुम पर अनिवार्य कर दिया गया है कि जब तुम में से कोई मरने लगे और धन छोड़ जाता हो, तो अपने माता-पिता और सम्बन्धियो के लिए अच्छाई के साथ उत्तरदान कर जाये।[1] सदाचारियों पर यह अनिवार्य स्पष्ट है।

فَمَنْ بَدَّلَهُ بَعْدَمَا سَمِعَهُ فَإِنَّمَا إِثْمُهُ عَلَى الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٨١﴾

(१८१) अब जो व्यक्ति उसे सुनने के बाद बदल दे, तो उसका पाप बदलने वाले पर ही होगा। नि:सन्देह अल्लाह तआला सुनने वाला एवं जानने वाला है।

فَمَنْ خَافَ مِنْ مُوصٍ جَنَفًا أَوْ إِثْمًا فَأَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٨٢﴾

(१८२) हाँ जो उत्तरदान कर्ता के पक्षपात तथा पाप से डरे[2] और यदि वह उनमें परस्पर सुधार करा दे, तो उस पर पाप नहीं, अल्लाह (तआला) क्षमा करने वाला दयालु है।

---

[1] वसीयत करने का यह आदेश उत्तराधिकारी की आयत उतरने से पहले दिया गया था। अब यह निलंबित है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है।

«إِنَّ اللهَ قَدْ أَعْطَىٰ كُلَّ ذِي حَقٍّ حَقَّهُ فَلَا وَصِيَّةَ لِوَارِثٍ» (उदधृत अस्सुनन-इब्ने कसीर से लिखित) अल्लाह तआला ने प्रत्येक अधिकारी को उसका अधिकार दे दिया है (अर्थात उत्तराधिकारी के भाग निर्धारित कर दिये हैं) अब किसी उत्तराधिकारी को वसीयत करना उचित नहीं। हाँ अब ऐसे सम्बन्धियों के लिए वसीयत की जा सकती है, जो उत्तराधिकारी न हो अथवा भलाई के मार्ग में ख़र्च करने के लिए भी की जा सकती है, और उसका अधिक से अधिक भाग एक तिहाई माल है, उससे अधिक वसीयत नही की जा सकती। (सहीह बुख़ारी, किताबुल फ़राइद)

[2] جنفا (आकृष्ट होना) का अर्थ है कि ग़लती अथवा भूल से किसी एक सम्बन्धी की ओर अधिक आकृष्ट होकर दूसरों का अधिकार मारना, और إثما से तात्पर्य है कि जान-बूझ कर ऐसा करे (ऐसरूत्तफ़ासीर) अथवा إثما का तात्पर्य पाप की वसीयत है, जिसका बदलना और वैसा न करना आवश्यक है। इसका अर्थ है वसीयत में न्याय का होना आवश्यक है, वरन् जो संसार से जाते-जाते अत्याचारी बने, उसके परलोक में बच सकने की कम आशा है।

The Ummah Technology Mission

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۙ﴿۱۸۳﴾

(१८३) ऐ ईमानवालो तुम पर रोज़े (व्रत जो रमज़ान के महीने में रखे जाते है) अनिवार्य किये गये, जिस प्रकार से तुम से पहले लोगों पर अनिवार्य किये गये थे, ताकि तुम तक़्वा (अल्लाह से भय रखो) का मार्ग अपनाओ ।[1]

اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ؕ وَاَنْ تَصُوْمُوْا

(१८४) गणना में कुछ ही दिन हैं, परन्तु यदि तुम में से जो व्यक्ति बीमार हो अथवा यात्रा में हो, तो वह अन्य दिनों में गणना पूरी कर ले ।[2] और जो इसकी सामर्थ्य रखता हो फ़िदया (प्रतिशोध) में एक निर्धन को भोजन दे,[3] फिर जो व्यक्ति सत्कर्म में बढ़ जाये वह

---

[1] صيام-صوم (रोज़ा, व्रत) उद्गम है, जिसका इस्लामी धार्मिक नियमों के अनुसार अर्थ है प्रात: सूर्य निकलने से पहले रात्रि के अंधकार के बाद जो सफेद प्रकाश वातावरण में होता है, के समय से लेकर सूर्यास्त तक खाने-पीने पत्नी से सम्भोग करने से, अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए रुके रहना, यह इबादत इन्द्रियों की पवित्रता एवं शुद्धता के लिए अति विशेष है, इसलिए इसे तुमसे पहले के समुदायों पर भी अनिवार्य किया गया था । इसका सबसे बड़ा तात्पर्य अल्लाह तआला का दिल में भय उत्पन्न करना है । और दिल से अल्लाह तआला का भय मनुष्य के चरित्र और कर्मों को सुधारने में मूल भूमिका प्रदान करता है ।

[2] यह रोगी और यात्री को छूट दी गयी है कि वह रोग अथवा यात्रा के कारण रमज़ान के महीने के जितने रोज़े न रख सका हो, वह बाद में रखकर गणना पूरी कर दे ।

[3] يطيقونه का एक अनुवाद يتحشمونه अति कठिनता से रोज़ा रख सके। किया गया है (यह आदरणीय इब्ने अब्बास से उदघृत है, ईमाम बुख़ारी ने भी इसे पंसद किया है) अर्थात जो अति बुढ़ापे एवं ऐसे रोग के कारण से, जिसका उपचार से स्वास्थ की आशा न हो, रोज़ा रखने में कठिनाई अनुभव करे, वह एक निर्धन को भोजन फ़िदया (प्रतिशोध) रूप में दे, परन्तु अधिकतर टीकाकार ने इसका अनुवाद शक्ति रखते हैं । ही किया है, जिसका अर्थ है इस्लाम के प्रारम्भिक काल में रोज़े की आदत न होने के कारण शक्ति रखने वालों को भी छूट दे दी गयी थी कि यदि वह रोज़ा न रखे, तो बदले में एक निर्धन को भोजन कराये परन्तु बाद में ﴿فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ﴾ के द्वारा इसे निरस्त करके प्रत्येक शक्ति रखने वाले के लिए रोज़ा अनिवार्य कर दिया गया, परन्तु अतिवृद्ध एवं सदैव रोगी के लिए अब

The Ummah Technology Mission

خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٤﴾

उसी के लिए श्रेष्ठ है।[1] परन्तु तुम्हारे पक्ष में उचित कर्म रोज़े (व्रत) रखना ही है यदि तुम अवगत हो।

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ

(१८५) रमज़ान का महीना वह है, जिस में क़ुरआन उतारा गया।[2] जो लोगों का

भी यही आदेश है कि वह फ़िदया दे दें और حاملة (गर्भवती) और مرضعة (दूध पिलाने वाली) स्त्रियाँ यदि कठिनाई का आभास करें, तो वह भी रोगी के आदेश में होंगी अर्थात वह रोज़ा न रखें और बाद में छूटे रोज़े रखें। (तोहफ़तुल अहवज़ी शरह त्रिमज़ी)

[1]जो खुशी से एक निर्धन के अतिरिक्त दो अथवा तीन को भोजन कराये, तो उसके लिए अधिक श्रेयस्कर है।

[2]रमज़ान में क़ुरआन उतरने का अर्थ यह नहीं कि पूरा क़ुरआन किसी एक रमज़ान में उतरा, वरन् यह है कि रमज़ान की शबे क़द्र (आदर वाली रात्रि) में लौह महफ़ूज़ (अल्लाह की वह किताब जिसमें आदि से अन्त तक सभी कुछ लिखा है) से दुनिया के आकाश में उतार दिया गया और वहाँ बैतुल इज़्ज़त (आदर वाला घर) में रख दिया गया। वहाँ से परिस्थितियों के अनुसार लगभग २३ वर्ष तक उतरता रहा। (इब्ने कसीर) इसलिए यह कहना कि क़ुरआन रमज़ान में अथवा लैलतुल क़द्र अथवा लैलतुल मुबारक में उतरा यह सब सत्य है, क्योंकि लौह महफ़ूज से तो रमज़ान में ही उतरा है और लैलतुल क़द्र एवं लैलतुल मुबारक यह एक ही रात है अर्थात शुभरात्रि जो रमज़ान में ही आती है। कुछ के निकट इसका तात्पर्य यह है कि कुरआन का उतरना रमज़ान के महीने में प्रारम्भ हुआ, और पहली (ईशवाणी) जो हिरा की गुफ़ा (जो मक्के के नूर पर्वत पर है) में रमज़ान के महीने में आयी। इस आधार पर क़ुरआन मजीद और रमज़ानुल मुवारक का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसी कारण नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस पवित्र महीने में आदरणीय जिब्रील से क़ुरआन सुनते और सुनाया करते थे और जिस वर्ष आपका देहान्त हुआ उस वर्ष आपने रमज़ान में जिब्रील से दो बार सुना और सुनाया। रमज़ान की तीन रातों (२३, २५ और २७) में आपने अपने मित्रों की जमाअत के साथ क़ियामुल्लैल (रात की नमाज के लिए खड़ा होना) भी करवाया, जिसको अब तरावीह कहा जाता है। (सहीह त्रिमज़ी एवं सहीह इब्ने माजा, अलबानी) यह तरावीह आठ रकआत और वितर के साथ ग्यारह रकआत थीं जिसका विवरण जाबिर "रज़ी अल्लाह अन्ह" की हदीस में है और इमाम मिरवज़ी ने इसको क़ियामुल्लैल में ब्यान किया है। और आदरणीय आयशा "रज़ी अल्लाह अन्हा" का कथन (सहीह बुखारी) में उपस्थिति है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का २० रकआत तरावीह पढ़ना किसी भी सहीह हदीस से सिद्ध नहीं है।

The Ummah Technology Mission

مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ۗ يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۚ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٨٥﴾

मार्गदर्शक है, और जो मार्गदर्शन एवं सत्यासत्य के मध्य निर्णायक है, तुममें जो भी इस महीने को पाये, उसे रोज़ा रखना चाहिए, हाँ जो रोगी हो अथवा यात्रा में हो, तो उसे दूसरे दिन में यह गणना पूरी करनी चाहिए। अल्लाह (तआला) की इच्छा तुम्हारे साथ सरलता की है, कठोरता की नहीं, वह चाहता है कि तुम गणना पूरी कर लो, और अल्लाह (तआला) के प्रदान किये गये मार्गदर्शन के अनुसार उसकी महिमा का वर्णन करो एवं उसके कृतज्ञ रहो।

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ ۖ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ﴿١٨٦﴾

(१८६) और जब मेरे बन्दे (भक्त) मेरे विषय में आप से प्रश्न करें तो कह दें कि मैं बहुत ही निकट हूँ, हर प्रार्थी की पुकार को जब कभी भी वह मुझे पुकारे मैं स्वीकार करता हूँ।[1] इसलिए लोगों को भी चाहिए कि वह मेरी बात मानें और मुझ में आस्था रखें यही उनकी भलाई का कारण है।

[1]रमज़ान मुबारक के नियम एवं आदेश के मध्य दुआ के नियम का वर्णन करके यह स्पष्ट कर दिया गया कि रमज़ान में प्रार्थना (दुआ) का भी बड़ा महत्व है, जिसका अत्यधिक प्रयोजन करना चाहिए, विशेष रुप से इफ़्तार (जब रोज़े के खोलने का समय निकट हो) के समय प्रार्थना के स्वीकार होने का विशेष समय बताया गया है। (मुसनद अहमद, त्रिमिज़ी, नसाई, इब्ने माजा, इब्ने कसीर से लिया गया) फिर भी प्रार्थना के स्वीकार होने के लिए यह भी आवश्यक है कि उन नियमों और आदर को विचार में रखा जाये जो क़ुरआन और हदीस में वर्णित हैं जिसमें से दो को यहाँ वर्णन कर दिया गया है। एक अल्लाह पर किस प्रकार से दृढ़ विश्वास और दूसरा उसके आदेश का पालन एवं अनुसरण। इसी प्रकार से हदीस में हराम भोजन से बचने एवं एकाग्र मन व चित के होने पर बल दिया गया है।

The Ummah Technology Mission

أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ
إِلَىٰ نِسَائِكُمْ ۚ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ
وَأَنتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۗ عَلِمَ اللَّهُ
أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَخْتَانُونَ أَنفُسَكُمْ
فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنكُمْ ۖ فَالْآنَ
بَاشِرُوهُنَّ وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ ۚ
وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ
الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ
الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۖ ثُمَّ أَتِمُّوا
الصِّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ
وَأَنتُمْ عَاكِفُونَ فِي الْمَسَاجِدِ ۗ
تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرَبُوهَا ۗ

(१८७) रोज़े की रातों में अपनी पत्नियों से मिलने की तुम्हें अनुमति है, वह तुम्हारा वस्त्र हैं और तुम उनके वस्त्र हो। तुम्हारे अपभोग का अल्लाह को ज्ञान है, उसने तुम्हारे पश्चाताप को स्वीकार कर तुम्हें क्षमा कर दिया, अब तुम्हें उनसे सम्भोग की और अल्लाह (तआला) की लिखी हुई चीज़ को ढूंढ़ने की आज्ञा है, तुम खाते-पीते रहो, यहाँ तक की प्रात:काल की सफेदी का धागा अंधकार के काले धागे से स्पष्ट हो जाये।[1] फिर रात तक रोज़े को पूरा करो।[2] और स्त्रियों से उस समय सम्भोग न करो जब कि तुम मस्जिदों में ऐतेकाफ़ (एक निश्चित समय के लिए अल्लाह की इबादत के उद्देश्य से

---

[1]इस्लाम के प्रारम्भिक काल में एक आदेश यह था कि रोज़ा खोल लेने के पश्चात ईशा (रात्रि) की नमाज़ अथवा सोने तक खाने-पीने और पत्नी से सम्भोग करने की आज्ञा थी, सोने के पश्चात इनमें से कोई कार्य नहीं किया जा सकता था। स्पष्ट है यह निषेधाज्ञा कठिन थी और इसके अनुसार कार्य करना कठिन था। अल्लाह तआला ने इस आयत में यह दोनों निषेधाज्ञा निरस्त कर दी और इफ़्तार (रोज़ा खोलने के समय) से लेकर प्रात:काल कालिमा छटने तक खाने-पीने तथा पत्नी के साथ सम्भोग करने की आज्ञा प्रदान कर दी। الرفث का अर्थ है पत्नी के साथ सम्भोग करना। الخيط الأبيض से प्रात: कालीन प्रकाश और الخيط الأسود काली धारी से तात्पर्य रात है। (इब्ने कसीर)

प्रश्न: इससे यह भी विदित हुआ कि सम्भोग करने के पश्चात स्थिति में रोज़ा रखा जा सकता है, क्योंकि फ़ज्र (प्रात:काल) तक अल्लाह ने उपरोक्त कार्य की आज्ञा प्रदान की है और सहीह बुखारी और मुस्लिम के वर्णन से भी इसका समर्थन होता है। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात रात्रि होते ही (सूर्यास्त के तुरन्त पश्चात) रोज़ा खोल लो। देर न करो, जैसा कि हदीस में भी रोज़ा शीघ्र खोलने-इफ़्तार करने पर बल दिया गया है और विशेषता बताई गयी है। दूसरा यह कि विसाल न करो, विसाल का अर्थ है कि एक रोज़ा खोले, बिना दूसरा रोज़ा रख लेना। इससे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अति कठोरता के साथ मना किया है। (विवरण के लिए देखें हदीस की किताबें)

The Ummah Technology Mission

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿١٨٧﴾

अपने आपको मस्जिद तक ही सीमित कर लेना) में हो।[1] यह अल्लाह (तआला) की सीमाएं हैं। तुम इनके निकट भी न जाओ। इसी प्रकार अल्लाह तआला अपनी निशानियां लोगों पर वर्णित करता है, ताकि वे बचें।

وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٨﴾

(१८८) और एक-दूसरे का माल अनाधिकारिक रुप से ना खाया करो, न अधिकारी व्यक्तियों को रिश्वत पहुंचाकर किसी का कुछ माल अत्याचार से हड़प कर लिया करो। यद्यपि कि तुम जानते हो।[2]

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ۭ قُلْ هِىَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ۭ

(१८९) लोग आपसे नये चन्द्रमा के विषय में प्रश्न करते हैं, आप कह दीजिए कि यह

---

[1] ऐतेकाफ़ (रमज़ान के महीनों में मस्जिद में इबादत के उद्देश्य से अलग थलग रहना) के समय पत्नी से सम्भोग, चुम्बन एवं इसी प्रकार के अन्य कर्मों की आज्ञा नहीं है। परन्तु मिलने के समय बातचीत की जा सकती है। ﴿عٰكِفُوْنَ فِى الْمَسٰجِدِ﴾ से यह भावार्थ लिया गया है कि ऐतेकाफ़ के लिए मस्जिद आवश्यक है। चाहे स्त्री हो या पुरुष। पवित्र पत्नियों (नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियां) ने भी मस्जिद में ऐतेकाफ़ किया है, इसलिए स्त्रियों का अपने घरों में ऐतेकाफ़ में बैठना ठीक नहीं। परन्तु मस्जिद में उनके लिए हर चीज का पुरुषों से अलग प्रबन्ध करना आवश्यक है, ताकि पुरुष के साथ किसी प्रकार का मिलन न हो, जब तक मस्जिद में उचित एवं सुरक्षित तथा पुरुषों से बिलकुल अलग प्रबन्ध न हो, स्त्रियों को मस्जिद में ऐतेकाफ़ में बैठने की आज्ञा नही देनी चाहिए और स्त्रियों को भी इसके लिए हठ नहीं करना चाहिए। यह एक नफ़ली (स्वेच्छात्मक) इबादत ही है, जब तक पूरी सुरक्षा न हो तब तक स्वेच्छात्मक इबादत से अलग रहना श्रेष्ठ है। फ़िकह (इस्लामी धर्मशास्त्र) का नियम है (درء المفاسد أولى من جلب المصالح) भलाईयों की प्राप्ति की अपेक्षा बुराईयों को दूर करना उत्तम है।

[2] यह ऐसे व्यक्ति के विषय में है जिसके पास किसी का स्वत्व हो तथा स्वामी के पास कोई प्रमाण न हो। जिसका लाभ उठाकर वह व्यक्ति न्यायालय अथवा अधिकृत अधिकारी से अपने पक्ष में निर्णय करा ले इस प्रकार दूसरे का स्वत्व अपहरण कर ले। यह अत्याचार है और हराम है। अदालत का निर्णय अत्याचार और हराम को उचित नहीं कर सकता। यह अत्याचारी अल्लाह तआला के समक्ष अपराधी होगा। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَىٰ ۚ وَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٨٩﴾

लोगों (की इबादत) के समय एवं हज के मौसम के लिए है (एहराम की स्थिति में) और घरों के पीछे से तुम्हारा आना कोई सत्कर्म नहीं, बल्कि सत्कर्मी वह है जो अल्लाह (तआला) से डरता हो। घरों में उनके द्वार से आया करो।[1] तथा अल्लाह से डरते रहा करो, ताकि तुम सफल हो जाओ।

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿١٩٠﴾

(१९०) लड़ो अल्लाह के मार्ग में उनसे जो तुम से लड़ते हैं और अत्याचार न करो।[2] अल्लाह (तआला) अत्याचारी को पंसद नहीं करता है।

وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُمْ مِنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ ۚ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

(१९१) और उन्हें मारो जहाँ भी पाओ एवं उन्हें निकालो जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला है और (सुनो) फ़ित्ना (लड़ाई-झगड़ा, फ़साद) हत्या से अधिक बुरा है।[3] और मस्जिद-ए-हराम के

---

[1] अन्सार अज्ञान काल में जब हज्ज अथवा उमर: का एहराम (हज और उमर: के लिए एक विशेष स्थिति जिसमें पुरूष एक लुंगी और एक ओढ़ने कि चादर जो धार्मिक नियमानुसार लपेटी जाये, बाँधता है) बांध लेते, और फिर उसके पश्चात किसी चीज की आवश्यकता पड़ती, तो अपने घरों में मुख्य द्वार से न प्रवेश करते, बल्कि पीछे की दीवार लाँघ कर प्रवेश करते, इसको वह पुण्य समझते। अल्लाह तआला ने कहा कि यह पुण्य नहीं है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[2] इस आयत में प्रथम बार उन लोगों से लड़ने की आज्ञा दी गयी है, जो सदैव मुसलमानों की हत्या करने के विचार में रहते थे। फिर भी ज़्यादती से रोका गया है, जिसका अर्थ यह है कि कुचलो नहीं स्त्रियों, बच्चों, बूढ़ों को जिनका युद्ध में योगदान न हो हत्या मत करो, वृक्ष आदि को जला देना, पशुओं को अकारण मार डालना भी ज्यादती है, इनसे बचा जाये। (इब्ने कसीर)

[3] इस्लाम धर्म के प्रारम्भिक काल में मक्का शहर में चूँकि मुसलमान निर्बल और बिखरे हुए थे इसलिए काफ़िरों से लड़ना मना था, जब मुसलमान मक्का शहर से स्थानान्तरण करके मदीने आये (जिसे इस्लाम धर्म की परिभाषा में हिजरत कहते हैं) तो मुसलमान की सारी शक्ति एकत्रित हो गयी, फिर उनको धर्म युद्ध (जिहाद) करने की आज्ञा प्रदान की गयी। प्रारम्भ में आप केवल उन्हीं से लड़ते, जो मुसलमानों से लड़ते, परन्तु इसके

The Ummah Technology Mission

حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ۭ كَذٰلِكَ جَزَاۗءُ الْكٰفِرِيْنَ ۝۱۹۱

पास उनसे लड़ाई न करो, जब तक कि वे स्वयं तुमसे न लड़े। यदि वे तुमसे लड़ें, तो तुम भी उन्हें मारो।[1] काफ़िरों का बदला यही है।

فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۱۹۲

(१९२) यदि वे मान जायें, तो अल्लाह (तआला) अति क्षमाशील एवं दयालु है।

وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ۭ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَي الظّٰلِمِيْنَ ۝۱۹۳

(१९३) और उनसे लड़ो, जब तक कि उपद्रव न मिट जाये और अल्लाह (तआला) का धर्म विधान रह जाये, यदि वह रुक जायें (तो तुम भी रुक जाओ) अत्याचार तो केवल अत्याचारियों पर है।

اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ۭ فَمَنِ اعْتَدٰى

(१९४) प्रतिष्ठित मास के बदले प्रतिष्ठित मास हैं और प्रतिष्ठायें आदान-प्रदान की हैं[2] जो

पश्चात इसको और विस्तृत किया गया, और मुसलमानों ने आवश्यकता अनुसार काफ़िरों के क्षेत्र में भी जाकर युद्ध किया। कुरआन करीम ने اعتداء (ज़्यादती से) से मना किया है, इसलिये नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी सेना को विशेष रुप से निर्देश देते कि अपभाग तथा विश्वासघात न करना किसी लाश को कुचलना नहीं, बच्चों, स्त्रियों, गिरजाघरों में पूजा में लीन व्यक्तियों, उस धर्म के संतों की हत्या न करना। इसी प्रकार वृक्षों को जलाने से और पशुओं को अनावश्यक रुप से मारने से मना किया। (इब्ने कसीर-उदघृत सहीह मुस्लिम आदि) फ़ितना से तात्पर्य कुफ़्र और शिर्क अनिश्वरवाद एवं मिश्रणवाद है, जो हत्या से बड़ा पाप है, अतएव इसको समाप्त करने के लिए जिहाद करने में पीछे नहीं हटना चाहिए।

[1] हरम की सीमा में लड़ना मना है, परन्तु यदि काफ़िर इसका आदर न करें, और तुमसे लड़े, तो तुम्हें भी उनसे लड़ने की आज्ञा है।

[2] ६ हिजरी में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने चौदह सौ साथियों के साथ उमर: के लिए निकले थे, परन्तु मक्का के काफ़िरों ने उन्हें मक्का नहीं जाने दिया और अन्त में यह सन्धि हुई कि अगले वर्ष मुसलमान तीन दिन के लिए उमर: के विचार से मक्का आ सकेंगे। यह ज़ीकादा का महीना था, जो आदरणीय महीनों में से एक है। जब दूसरे वर्ष सन्धि के अनुसार मुसलमान उमर: के विचार से निकलने लगे तो अल्लाह तआला

The Ummah Technology Mission

عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۹۴﴾

तुम पर अत्याचार करे तुम भी उस पर उसी प्रकार का अत्याचार करो, जो तुम पर किया है और अल्लाह तआला से डरते रहा करो और जान रखो कि अल्लाह (तआला) संयमियों के साथ है।

وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛۚ وَاَحْسِنُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۹۵﴾

(१९५) और अल्लाह (तआला) के मार्ग में ख़र्च करो और अपने हाथों कष्ट में न पड़ो।[1] उपकार करो अल्लाह परोपकारियों से प्रेम करता है।

وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى

(१९६) और हज एवं उमरे को अल्लाह तआला के लिए पूरा करो।[2] और यदि तुम रोक दिये जाओ, तो जो भी बलि उपलब्ध हो उसे कर डालो।[3] और अपने सिर न मुँडवाओ जब

ने यह आयत उतारी। इसका अर्थ यह है कि इस बार भी यदि मक्का के मिश्रणवादी इस महीने के आदर और सम्मान को किनारे रख (पिछले वर्ष की भाँति) और तुम्हें मक्का में प्रवेश करने से रोकें, तो तुम भी उसके आदर और सम्मान की चिन्ता न करना, उनसे पूरी तरह से सामना करना। आदर और सम्मान रखने में बदला है, अर्थात वह आदर व सम्मान का ख़्याल रखें तो तुम भी आदर और सम्मान करो। यदि वह ऐसा न करें तो तुम भी इसकी चिन्ता छोड़ कर काफ़िरों को कठोर एवं असहनीय पाठ पढ़ाओ। (इब्ने कसीर)

[1]इससे कुछ लोगों ने धन व्यय का त्याग, कुछ ने धर्म युद्ध त्याग, तथा कुछ ने पाप पर पाप किये जाना भावार्थ लिया है। और यह सारी परिस्थितियाँ नाश की हैं, जिहाद छोड़ दोगे अथवा जिहाद के लिए माल दान न करोगे, तो शत्रु शक्तिशाली होगा, और तुम कमज़ोर होगे, परिणाम तुम्हारा विनाश।

[2]अर्थात हज्ज अथवा उमरे का "एहराम" बाँध लो, तो उसको पूरा करना आवश्यक है, चाहे स्वेच्छात्मक हज्ज व उमर: ही हो। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[3]यदि मार्ग में शत्रु अथवा भयंकर रोग के कारण रुकावट आ जाये, तो एक जानवर (हदी)। बकरी, गाय अथवा ऊँट जो भी उपलब्ध हो, वहीं बलि देकर सिर मुँडा लो और एहराम खोल दो, जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा ने हुदैबिया के स्थान पर कुर्बानियों की बलि दी थी, हुदैबिया का स्थान "हरम" की सीमा से बाहर है।

The Ummah Technology Mission

يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهُ ۚ فَمَنْ كَانَ
مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى مِنْ
رَأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِنْ صِيَامٍ أَوْ
صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ ۚ فَإِذَا أَمِنْتُمْ ۖ
فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَمَا
اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَمْ
يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ
وَسَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ ۗ تِلْكَ عَشَرَةٌ
كَامِلَةٌ ۗ ذَٰلِكَ لِمَنْ لَمْ يَكُنْ أَهْلُهُ
حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ

तक कि बलि, बलि स्थल तक न पहुँच जाये [1] तुममें से जो रोगी हो अथवा उसके सिर में कोई पीड़ा हो जिसके कारण वह सिर मुँडवा ले तो उस पर फ़िदया है कि चाहे तो वह व्रत (रोज़ा) रख ले, अथवा चाहे तो दान दे, अथवा बलि करे[2] परन्तु जैसे ही शान्ति की स्थिति हो जाये, तो जो उमरे से लेकर हज तक तमत्तुअ (लाभान्वित) करे, बस उसे जो भी बलि उपलब्ध हो उसे कर डाले। जिसमें सामर्थ्य न हो वह तीन रोज़े (व्रत) तो हज के दिनों में रख ले और सात वापसी में यह पूरे दस हो गये।[3] यह आदेश उनके लिए है जो

(फ़तहुल क़दीर) और अगले वर्ष उसकी क़ज़ा (बदला) दो जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ६ हिजरी वाले उमरे की क़ज़ा (बदला) ७ हिजरी में दी।

[1]इसका प्रभाव وَأَتِمُّوا الْحَجَّ पर है और इसका सम्बन्ध शान्ति की स्थिति से है अर्थात शान्ति की स्थिति में उस समय तक सिर न मुंडवाओ (एहराम खोल कर हलाल न हो) जब तक हज्ज अथवा उमरे के सभी कार्य पूरे न कर लो।

[2]अर्थात उसको कोई ऐसा रोग हो जाये कि उसको सिर मुंडवाना पड़ जाये, तो उसका फ़िदया (प्रतिशोध) आवश्यक है। हदीस के अनुसार ऐसे व्यक्ति को चाहिए कि वह ६ भूखे लोगों को भोजन कराये अथवा एक बकरी की बलि दे अथवा तीन रोज़े (व्रत) रखे। रोज़ों के अतिरिक्त शेष दो प्रतिशोध के स्थान के विषय में मतभेद है। कुछ कहते है कि भोजन अथवा बलि मक्का में ही दें, कुछ कहते हैं कि रोज़े की भाँति इसके लिए भी स्थान निर्धारित नहीं है। शौकानी ने इसी मत का समर्थन किया है। (फ़तहुल क़दीर)

[3]हज्ज तीन प्रकार से किया जा सकता है, जिनके तीन नाम हैं, (१) इफ़राद - केवल हज्ज के विचार से एहराम बाँधना, (२) क़िरान - हज्ज और उमर: दोनो का विचार एक साथ करके एहराम बाँधना। इन दोनो परिस्थितयों में हज्ज के सभी कर्म पूरा किये बिना एहराम खोलना जायज़ (उचित) नहीं है। (३) हज्ज-ए-तमत्तुअ - इसमें भी हज्ज और उमर: दोनो का विचार होता है, परन्तु पहले केवल उमर: का विचार करके एहराम बाँधा जाता है, और फिर उमर: करके एहराम खोल दिया जाता है और फिर ८ ज़िलहिज्जा को ही हज्ज के लिए मक्का ही से दोबारा एहराम बाँधा जाता है, तमत्तुअ का अर्थ है, लाभ

The Ummah Technology Mission

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٩٦﴾

मस्जिद-ए-हराम (मक्का) के रहने वाले न हों।[1] (लोगों)! अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि अल्लाह (तआला) कठोर यातनायें देने वाला है।

اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ

(१९७) हज के महीने निर्धारित हैं।[2] इसलिए जो इनमें हज निर्धारित करे वह अपनी पत्नी

उठाना। अर्थात एहराम उतारकर उमर: और हज्ज के मध्य लाभ उठा लिया जाता है। हज्ज-क़िरान और हज्ज-तमत्तुअ दोनो में ही एक हदी (एक जानवर की बलि) देनी है। इस आयत में इसी हज्ज तमत्तुअ के आदेशों का वर्णन है। तमत्तुअ करने वाला शक्ति अनुसार १० ज़िलहिज्जा को एक जानवर की बलि दे, यदि बलि देनें की शक्ति न हो, तो तीन रोज़े हज्ज के दिनों में और सात घर जाकर पूरा करे। हज्ज के दिन, जिनमें रोज़े रखने है ९ ज़िलहिज्जा (अरफ़ात का दिन) से पहले अर्थवा तशरीक के दिन है। (फ़तहुल क़दीर)

[1]अर्थात तमत्तुअ और उसके कारण हदी अथवा रोज़े केवल उन लोगों के लिए है जो मक्कावासी न हों, तात्पर्य हरम की सीमा में अथवा इतनी दूरी पर हो जिस पर क़स्र (नमाज़ में छूट) का नियम न लगता हो। (इब्ने कसीर कथानुसार इब्ने जरीर)

[2]और यह हैं शव्वाल, ज़ीक़ाद, और ज़िलहज्ज के दस दिन। तात्पर्य यह है कि उमर: तो वर्ष के दिनों में भी हो सकता है, परन्तु हज्ज तो कुछ निर्धारित दिनों में ही होता है, इसलिए उसका एहराम हज्ज के महीनों के अतिरिक्त बाँधना उचित नहीं। (इब्ने कसीर)

प्रश्न: हज्ज-क़िरान और इफ़राद का एहराम मक्कावासी मक्के से ही बाँधेगें, परन्तु तमत्तुअ के लिए उमर: का एहराम बाँधने के लिए हरम की सीमा के बाहर (जिसे हिल्ल कहते है), उनको जाना आवश्यक है। (फ़तहुल क़दीर, किताबुल हज्ज व बाबुल उमर: तथा मुअता इमाम मलिक) इसी प्रकार मक्का के शहर से बाहर से आये हुए लोग (जिन्हें आफ़ाकी कहते है) हज्ज तमत्तुअ में ८ ज़िलहिज्जा को मक्का ही से एहराम बाँधेगे। परन्तु कुछ विद्वानों का कथन है कि मक्कावासियों को भी हरम की सीमा से बाहर जाने की आवश्यकता नहीं है, इसलिए वह हर प्रकार के हज्ज के लिए एहराम अपने स्थान से बाँध सकते हैं।

सूचना : हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम ने लिखा है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथनी व करनी से केवल दो प्रकार के उमरों की पुष्टि होती है। एक वह जो हज्ज तमत्तुअ के साथ किया जाये और दूसरा उमर: मात्र जो हज्ज के दिनों के अतिरिक्त केवल उमरे कि

The Ummah Technology Mission

وَلَا فُسُوْقَ ۙ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۗ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ۗ وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۡ وَاتَّقُوْنِ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۷﴾

से सहवास करने, पाप करने, और लड़ाई-झगड़ा करने से बचता रहे।[1] तुम जो पुण्य का कार्य करोगे, उसे अल्लाह (तआला) जानने वाला है, और अपने साथ यात्रा व्यय ले लिया करो, सर्वश्रेष्ठ मार्ग व्यय तो अल्लाह का भय है[2] और ऐ बुद्धिमानो मुझसे ड़रते रहा करो।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ۗ فَاِذَآ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۠ وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿۱۹۸﴾

(१९८) तुम पर अपने प्रभु की कृपा ढूंढ़ने में कोई पाप नहीं।[3] जब तुम अरफ़ात से लौटो तो मशअरे हराम (मुज़्दलिफ़ा) के निकट अल्लाह की महिमागान करो और उसकी महिमा का वर्णन उस प्रकार करो, जैसे कि उसने तुम्हें निर्देश दिये हैं, हालाकि तुम उससे पहले गुमराहों में थे।[4]

विचार से ही यात्रा की जाये शेष हरम से जाकर किसी निकटवर्ती हिल्ल (हरम सीमा से बाहर) से उमरे के लिए एहराम बांधना बिना पुष्टि के है। (ज़ादुल मआद, भाग-२,नया प्रकाशन)

[1]सहीह बुख़ारी और मुस्लिम में हदीस है।

«مَنْ حَجَّ هٰذَا الْبَيْتَ، فَلَمْ يَرْفُثْ، وَلَمْ يَفْسُقْ، خَرَجَ مِنْ ذُنُوبِهِ كَيَوْمِ وَلَدَتْهُ أُمُّهُ». (बुख़ारी, किताबुल मोहसर)

"जिसने हज्ज किया और बुरी, लड़ाई-झगड़े की बातों से बचा, वह पाप से इस प्रकार पवित्र हो गया, जैसे उस दिन पवित्र था जिस दिन उसकी माँ ने जन्म दिया था।"

[2]तक़वा (अल्लाह तआला का भय) से तात्पर्य यहाँ भीख माँगने से बचना है। कुछ लोग बिना कोई मार्ग व्यय लिए ही हज्ज के लिए निकल पड़ते हैं और कहते है कि हमारा तो अल्लाह पर पूर्ण भरोसा है, अल्लाह ने भरोसे के इस भावार्थ को त्रुटिपूर्ण बताया है, और मार्ग व्यय साथ लेने पर बल दिया है।

[3]कृपा का अर्थ व्यापार एवं व्यवसाय है अर्थात हज्ज की यात्रा करते समय व्यापार करने में कोई प्रतिबंध नहीं।

[4] ९ जिलहिज्जा को सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक अरफ़ात के मैदान में रुकना हज्ज का सर्वश्रेष्ठ स्तम्भ है, जिसके विषय में हदीस में कहा गया है «الحَجُّ عَرَفَةُ» (अरफ़ात में रुकना ही हज्ज है) यहाँ मग़रिब (सायंकालीन) की नमाज़ नहीं पढ़नी है, बल्कि मुज़्दलिफ़ा के

The Ummah Technology Mission

ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٩٩﴾

(१९९) फिर तुम उस स्थान से लौटो जिस स्थान से सभी लोग लौटते हैं।[1] और अल्लाह (तआला) से क्षमा-याचना करते रहो, नि:सन्देह अल्लाह (तआला) क्षमाशील अति कृपालु है।

فَإِذَا قَضَيْتُم مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا ۗ فَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ﴿٢٠٠﴾

(२००) फिर जब तुम हज के प्रत्येक कार्य पूरे कर लो, तो अल्लाह (तआला) को याद करो, जिस प्रकार से तुम अपने पूर्वजों को याद करते थे, बल्कि उससे अधिक।[2] कुछ लोग वह भी हैं, जो कहते है, "हमारे प्रभु! हमें इस संसार में प्रदान कर दे, ऐसे लोगों का परलोक में कोई भाग नहीं है।"

स्थान पर पहुचकर मग़रिब (सायंकालीन) की नमाज तीन रकात और ईशा (रात्रिकालीन) की नमाज दो रकाअत एक अज़ान और दो इक़ामत के साथ पढ़नी है, मुज़्दलिफ़ा को "मश्अरुल हराम" कहा गया है, क्योंकि यह हरम की सीमा के भीतर है। यहाँ अल्लाह की याद के लिए बल दिया गया है। यहाँ रात्रि व्यतीत करनी है, फ़ज्र की नमाज ग़लस (अँधेरे) में अर्थात प्रथम समय में पढ़कर सूर्योदय तक अल्लाह की याद में लीन रहा जाये और सूर्योदय के उपरान्त "मिना" के स्थान के लिए प्रस्थान किया जाये।

[1]उपरोक्त वर्णित विधिपूर्वक श्रेणी के अनुसार "अरफ़ात" जाना और वहाँ विराम करके वापस आना आवश्यक बताया गया है, परन्तु अरफ़ात हरम से बाहर होने के कारण मक्का के कुरैश अरफ़ात तक नहीं जाते थे, बल्कि मुज़्दलिफ़ा से ही लौट आते थे, अतएव आदेश दिया जा रहा है कि जहाँ से सब लोग लौट कर आते हैं, वहीं से लौटकर आओ अर्थात अरफ़ात से।

[2]अरब के लोग हज्ज के पश्चात मिना के स्थान पर मेला लगाते और अपने-अपने पूर्वजों का गुणगान करते। मुसलमानों से कहा जा रहा है कि जब १० ज़िलहिज्जा को कंकरियाँ मारकर, बलि देकर, सिर मुँडवाकर, काअबा की परिक्रमा करके और सफ़ा और मरवा के मध्य सअई करके छुटकारा पाओ, तो उसके पश्चात तीन दिन मिना में रुकना है, और वहाँ अल्लाह की बहुत याद करो, जैसे कि अज्ञानता के समय तुम अपने पूर्वजों की चर्चा करते थे।

The Ummah Technology Mission

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠١﴾

(२०१) और कुछ लोग वह भी हैं, जो कहते हैं, "ऐ हमारे पालनहार ! हमें इस संसार में भलाई प्रदान कर।[1] और परलोक में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से बचा दे।"

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ۭ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٢٠٢﴾

(२०२) ये वे लोग हैं जिनके लिए उनके कर्मों का भाग है और अल्लाह (तआला) शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ۭ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٠٣﴾

(२०३) और अल्लाह (तआला) की याद उन गणना के कुछ दिनों (तशरीक़ के दिन) में करो।[2] दो दिन की जल्दी करने वाले पर कोई पाप नहीं, और जो पीछे रह जाये उस पर भी कोई पाप नहीं[3] यह परहेज़गार (महान व्यक्ति) के लिए है, एवं अल्लाह (तआला) से

---

[1]अर्थात पुण्य के कार्य करने का अवसर प्राप्त होना, अर्थात ईमानवाले संसार में रहकर सांसारिक वैभव की कामना नहीं करते, बल्कि पुण्य करने के अवसर प्राप्त करने की कामना करते हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अत्यधिक इस दुआ को पढ़ा करते थे। काअबा की परिक्रमा करते समय लोग प्रत्येक चक्कर में भिन्न- भिन्न दुआऐ पढ़ते हैं, जो बनावटी है। परिक्रमा करते समय यही दुआ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً यमानी कोने से हजरे अस्वद (काले पत्थर) के मध्य पढ़ना सुन्नत के अनुसार कर्म है।

[2]तात्पर्य तशरीक़ के दिन हैं, अर्थात ११,१२ तथा १३ ज़िलहिज्जा। इन दिनों में अल्लाह तआला के वर्णन से तात्पर्य यह है कि उच्च स्वर के साथ सुन्नत के अनुसार निर्धारित तकबीर कहे। केवल अनिवार्य (फ़र्ज़) नमाज़ों के बाद ही नहीं (जैसा कि एक अस्पष्ट हदीस के आधार पर प्रसिद्ध है), बल्कि हर समय यह तकबीर पढ़ी जाये (अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला ईलाहा इल्लल्लाह, वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर वलिल्लाहिलहम्द) जमरात को कंकरियाँ मारते समय ही कंकरी के साथ तकबीर पढ़नी सुन्नत के अनुरुप है। (नैलुल अवतार भाग ५ पृ० ८६)

[3]जमरात को कंकरियाँ मारना, तीन दिन श्रेष्ठ हैं, परन्तु यदि कोई दो दिन के बाद मिना से वापस आ जाये तो उसकी भी आज्ञा है।

The Ummah Technology Mission

डरते रहो, और जान रखो, कि तुम सब उसी की ओर एकत्रित किये जाओगे।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾

(२०४) और कुछ लोगों की सांसारिक बातें आपको प्रसन्न कर देती हैं और वह अपने दिल की बातोपर अल्लाह को साक्षी करता है, हालांकि वास्तव में वह अति झगड़ालू है।[1]

وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿٢٠٥﴾

(२०५) और जब वह लौट कर जाता है, तो धरती में उपद्रव फैलाने और खेती एवं मानव संतति के विनाश के प्रयत्न में लगा रहता है और अल्लाह (तआला) उपद्रव को पसंद नहीं करता है।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٢٠٦﴾

(२०६) और जब उससे कहा जाता है कि अल्लाह से डर, तो घमण्ड उसे पाप पर पारित कर देता है। ऐसे के लिए केवल नरक ही है, और नि:सन्देह वह बहुत बुरा स्थान है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ

(२०७) और कुछ लोग वह भी हैं जो कि अल्लाह (तआला) की प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए अपनी जान तक बेच डालते हैं।[2] और

---

[1] कुछ अस्पष्ट कथा के अनुसार यह आयत एक मुनाफ़िक (अवसरवादी) अखनस पुत्र शुरैक सकफ़ी के लिए उतरी, परन्तु सहीह बात यह है कि इसका तात्पर्य सभी मुनाफ़िकों एवं घमण्डियों से है, जिनमें यह घृणित बुराईयाँ पाई जाये, जो क़ुरआन में उनके विषय में वर्णित किया गया है।

[2] यह आयत, कहते हैं कि आदरणीय सुहैब रुमी के लिए उतरी है, जब वह हिजरत करने लगे, तो काफ़िरों ने कहा कि यह माल तो यहाँ का कमाया हुआ है, इसे हम साथ नहीं ले जाने देंगे, आदरणीय सुहैब रुमी ने यह सारा माल उनके हवाले कर दिया और धर्म साथ लेकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हो गये। आपने सुनकर कहा "सुहैब ने लाभदायक व्यापार किया है" दो बार कहा। (फ़तहुल क़दीर) परन्तु यह आयत भी सामान्य रुप से प्रसिद्ध है और उन सभी ईमानवालों और अल्लाह तआला से डरने

The Ummah Technology Mission

رَءُوفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠٧﴾

अल्लाह (तआला) अपने बन्दों (भक्तों) पर बड़ा स्नेह करने वाला है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱدْخُلُواْ فِى ٱلسِّلْمِ كَآفَّةً وَلَا تَتَّبِعُواْ خُطُوَٰتِ ٱلشَّيْطَٰنِ ۚ إِنَّهُۥ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٢٠٨﴾

(२०८) ऐ ईमानवालो, इस्लाम में पूर्ण रुप से प्रवेश करो और शैतान के पद चिन्हों का अनुकरण न करो।[1] वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

فَإِن زَلَلْتُم مِّنۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْكُمُ ٱلْبَيِّنَٰتُ فَٱعْلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ

(२०९) यदि तुम निशानियों के आ जाने के उपरान्त भी विचलित हो जाओ, तो जान लो

वालों एवं दुनिया की अपेक्षा धर्म और परलोक को श्रेष्ठता देने वालों को भी सम्मिलित करती है। क्योंकि इस प्रकार की सभी आयतों के विषय में, जो किसी व्यक्ति विशेष के लिए उतरी, यही नियम है. (العبرة بعموم اللفظ لا بخصوص السبب) अर्थात शब्द का सामान्य अर्थ लिया जायेगा विशेष कारण नहीं जिस प्रकार से अखननस विन शुरैक (जिसका वर्णन पिछली आयत में हो चुका है)। कुकर्मों का एक उदाहरण है, जो हर उस व्यक्ति के लिए उसके अनुरुप होगा जिसका कर्म उसके अनुरुप होगा। और सुहैब रज़ी अल्लाह अन्हु सत्कर्म और पूर्ण ईमान का एक उदाहरण हैं, यह हर उस व्यक्ति के लिए है, जो उनके अनुरुप सत्कर्मों से अलंकृत होगा।

[1]ईमानवालों को कहा जा रहा है कि पूर्णरुप से इस्लाम में प्रवेश कर लो। इस प्रकार न करो कि जो बातें तुम्हारे अपने लाभ तथा आकांक्षानुसार हैं, तो उन्हें अपना लो, शेष को छोड़ दो। इसी प्रकार जो बातें तुम छोड़ आये हो उसे इस्लाम धर्म में मिश्रित करने का प्रयत्न न करो, बल्कि केवल इस्लाम धर्म के नियमों को पूर्णरुप से अपनाओ। इससे धर्म में नयी प्रथाओं के सम्मिलित करने से नकारा गया है, और आधुनिक धर्मनिरपेक्ष विचार जो इस्लाम धर्म को पूर्ण रुप से अपनाने के लिए तैयार नही है उनका भी खण्डन किया गया है। वल्कि जो धर्म को मस्जिदों की इबादतों तक सीमित करना चाहता और राजनीति और राजकीय विधायिकाओं से अलग रखना चाहता है। इसी प्रकार जनता को भी समझाया जा रहा है जो प्रथा और रीति-रिवाज और क्षेत्रीय संस्कृत लोक कथाओं को पसन्द करते हैं और उन्हें छोड़ने के लिए प्रयत्न भी नहीं करते, जैसे मृत्यु और विवाह के समय अनावश्यक धन ख़र्च करना, जैसाकि अन्य धर्म की रीति और प्रथा से होता है। और कहा जा रहा है कि शैतान के पदचिन्हों पर न चलो। जो तुम्हें इस्लाम धर्म के विपरीत उपरोक्त वर्णित बातों के लिए बड़े सुन्दर तर्क प्रस्तुत करता है, बुराईयों पर मन लुभावन चादरें चढ़ाकर और नई रीतियों को भी पुण्य सिद्ध करता है, ताकि उसके मन भावन जाल में फंसे रहें।

The Ummah Technology Mission

عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٠٩﴾

कि अल्लाह (तआला) सर्वशक्तिशाली और विधाता है।

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا أَن يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلَائِكَةُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٢١٠﴾

(२१०) क्या लोगों को इस बात की प्रतिक्षा है कि अल्लाह (तआला) स्वयं बादलों के झुरमुट में आ जाये, एवं फ़रिश्ते भी, और काम का अन्त कर दिया जाये,[1] अल्लाह ही की ओर सभी कार्य लौटाये जाते हैं।

سَلْ بَنِي إِسْرَائِيلَ كَمْ آتَيْنَاهُم مِّنْ آيَةٍ بَيِّنَةٍ ۗ وَمَن يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ مِن بَعْدِ مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢١١﴾

(२११) इस्राईल की सन्तान से पूछो कि हमने उन्हें कितनी स्पष्ट निशानियाँ प्रदान कीं।[2] और जो अल्लाह (तआला) के पुरस्कार को अपने पास पहुंच जाने के उपरान्त बदल डाले [3](वह जान ले) कि अल्लाह (तआला) भी कठोर यातनाओं का देने वाला है।

زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُونَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا

(२१२) काफ़िरो के लिए सांसारिक जीवन सुशोभित कर दिया गया है, और वह ईमानवालों

---

[1]यह या तो प्रलय (क़ियामत) का दृश्य है (जैसाकि कुछ टीकारों के वर्णित हैं। (इब्ने कसीर) अर्थात क्या यह क़ियामत आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं ? या फिर उसका यह अर्थ है कि अल्लाह तआला फ़रिश्तों के जलूस में और बादलों की छाया में उनके सामने आये और निर्णय कर दे, तब वह ईमान लायेंगे, परन्तु ऐसा इस्लाम स्वीकार करने योग्य ही नहीं, इसलिए इस्लाम धर्म स्वीकार करने में देर न करो और शीघ्र इस्लाम धर्म स्वीकार करके अपना परलोक सुधार लो।

[2]उदाहरणत: मूसा की छड़ी, जिसके द्वारा हमने जादूगरों के जादू को तोड़ा, समुद्र में मार्ग बनाया, पत्थर से बारह स्रोत निकाले, बादलों की छाया, मन्न व सलवा का उतरना आदि जो अल्लाह तआला की शक्ति और हमारे पैगम्बरों की सच्चाई के प्रमाण थे, परन्तु उसके पश्चात भी उन्होंने अल्लाह तआला के आदेशों की अवेहलना की।

[3]अनुकम्पा में परिवर्तन करने से तात्पर्य यही है कि विश्वास के बदले अविश्वास किया तथा विमुखता का मार्ग अपनाया।

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاۗءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

से हँसी मज़ाक करते हैं।[1] यद्यपि जिन्होंने धर्म परायणता के गुण किये प्रलय (क़ियामत) के दिन उनसे उच्चतम होंगे। अल्लाह (तआला) जिसे चाहता है अंगणित प्रदान करता है।[2]

كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۟ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۠ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۭ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ

(२१३) वास्तव में लोग एक ही मत थे।[3] फिर अल्लाह (तआला) ने नबियों को शुभ सन्देश देने और सचेत करने को भेजा और उनके साथ सत्यशास्त्र उतारी, ताकि लोगों के प्रत्येक मतभेद का निर्णय हो जाये। और केवल उन्हीं लोगों ने जो उसे दिये गये थे अपने पास तर्क आ चुकने के उपरान्त आपसी द्वेष एवं घमण्ड के कारण से उसमें

---

[1]चूंकि मुसलमानों का बहुमत निर्धनों पर आधारित था, जो सांसारिक वैभव और आराम से मुक्त थे, इसलिए काफ़िर अर्थात मक्का के क़ुरैश उनका उपहास उड़ाते थे, जैसाकि धनवानों का हर समय यही कर्म रहा है।

[2]अधर्मी जिन निर्धन एवं सीधे सादे मुसलमानों का उपहास तथा परिहास करते थे, उसका वर्णन करके कहा जा रहा है कि क़ियामत के दिन यह निर्धन लोग अपने अल्लाह तआला की आज्ञा पालन के कारण उच्च पदों पर आसीन होंगे "अत्याधिक वृत्ति" का सम्बन्ध आख़िरत के अतिरिक्त दुनिया से भी हो सकता है, कि कुछ ही वर्षों पश्चात इन निर्धनों के लिए विजय का द्वार खोल दिया गया, जिसके कारण वृत्ति की अधिकता हो गयी।

[3]अर्थात एकेश्वरवाद, यह आदरणीय आदम से आदरणीय नूह, अर्थात दस शताब्दियों तक लोग मात्र एकेश्वरवादी थे, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहचर व्याख्याकारों ने आयत में فاختلفوا को लिप्त माना है, अर्थात इसके बाद शैतान के शंका पैदा करने से उनके मध्य मतभेद पैदा हो गया और मूर्तियो एवं प्राकृतिक दृश्यों की पूजा की साधारण चलन हो गयी فَبَعَثَ इसका आधार فاختلفوا (जो लिप्त है) पर है। परन्तु अल्लाह तआला ने नबियों को किताबों के साथ भेजा ताकि वे इसके आधार पर लोगों के मध्य मतभेद का निर्णय और सत्य एवं एकेश्वरवाद को स्थापित तथा स्पष्ट करे। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۲۱۳﴾

विभेद किया।[1] इसलिए अल्लाह (तआला) ने ईमानवालों के इस मतभेद में भी सत्य की ओर अपनी अनुमति द्वारा मार्गदर्शन किया।[2] और अल्लाह जिसको चाहे सीधे मार्ग की ओर अग्रसर करता है।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ

(२१४) क्या तुम यह विचार कर बैठे हो कि स्वर्ग में चले जाओगे ? यद्यपि अब तक तुम पर वह स्थिति नहीं आयी, जो तुमसे अगलों पर आयी[3] उन्हें निर्धनता एवं रोग पहुँचा, और

---

[1]मतभेद सदैव सतमार्ग से विचलित होने के कारण ही होता है, इस विचलन का आधार अहंकार, घमण्ड, पक्षपात एवं वैमनस्य ही बनता है। मुस्लिम समुदाय में जब तक यह विचलन नहीं आया, यह समुदाय अपने शुद्ध रुप में स्थित एवं मतभेद से सुरक्षित रही, परन्तु अनुकरणवाद तथा तर्क-वितर्क ने सत्य मार्ग को छोड़ने का जो मार्ग खोला, उससे मतभेद की परिधि फैलती एवं बढ़ती गयी, यहां तक कि समुदाय की एकता एक असम्भव चीज़ बनकर रह गयी है।

[2]अतएव उदाहरणत: किताब वालों ने जुमे में मतभेद किया यहूदियों ने शनिवार को और ईसाईयों ने रविवार को अपना पवित्र दिन माना तो अल्लाह तआला ने मुसलमानों को "जुमे" का दिन प्रयोग करने का सौभाग्य प्रदान किया, उन्होंने आदरणीय ईसा के विषय में मतभेद किया और यहूदियों ने उनको झुठलाया और उनकी माता आदरणीया मरियम पर आरोप लगाया, इसके विपरीत ईसाईयों ने उन्हें अल्लाह का बेटा और पूज्य बना दिया। अल्लाह ने मुसलमानों को उनके विषय में सत्य पक्ष अपनाने की शक्ति प्रदान की, कि वह अल्लाह के पैग़म्बर (दूत) और उसके आज्ञाकारी भक्त थे। आदरणीय इब्राहीम के विषय में भी उन्होंने मतभेद किया, एक ने यहूदी और दूसरे ने ईसाई कहा, मुसलमानों को अल्लाह तआला ने सच बात बतायी कि वह अल्लाह के आज्ञाकारी और एकाग्र थे और इस प्रकार कई प्रश्न पर अल्लाह तआला ने अपनी कृपा अर्थात अपनी दया से मुसलमानों को सीधी राह दिखायी।

[3]मदीना की ओर हिजरत (मक्का से मदीना इस्लाम धर्म स्वीकार करने के कारण जो हिजरत हुई है) के पश्चात जब मुसलमानों को यहूदियों, अवसरवादियों तथा अरब के मूर्तिपूजकों के द्वारा विभिन्न प्रकार के कष्ट एवं कठिनाईयां पहुचने के बाद कुछ मुसलमानों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शिकायत की जिस पर मुसलमानों को अल्लाह तआला ने यह आयत उतारकर सांत्वना दी और स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

The Ummah Technology Mission

الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ ﴿۲۱۴﴾

वह यहाँ तक झिझोड़े गये कि रसूल और उनके साथ के ईमान वाले लोग कहने लगे कि अल्लाह की सहायता कब आयेगी ? सुन रखो कि अल्लाह की सहायता निकट ही है।[1]

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿۲۱۵﴾

(२१५) आपसे पूछते हैं कि वह क्या ख़र्च करें, आप कह दिजिए कि जो धन तुम ख़र्च करो वह माता-पिता के लिए, तथा सम्बन्धियों, एवं अनाथों और निर्धनों, तथा यात्रियों के लिए है।[2] और तुम जो कुछ भलाई करोगे अल्लाह (तआला) को उसका ज्ञान है।

तुमसे पहले लोगों को उनके सिर से लेकर पैर तक आरे से चीरा गया और लोहे की कंघी के द्वारा उनका मांस खुर्चा गया, लेकिन यह अत्याचार और यातनायें भी उनको अपने धर्म से नही फिरा सकीं। फिर फ़रमाया "अल्लाह की क़सम ! अल्लाह तआला इस मामले को पूर्ण (अर्थात इस्लाम को विजयी) करेगा। यहाँ तक कि एक सवार सन्आ से (यमन की राजधानी है) हज़रमूत तक अकेला यात्रा करेगा और उसे अल्लाह के अतिरिक्त किसी का भय न होगा।"(अल हदीस सहीह बुख़ारी ६९४३, किताब अल-इकराह) तात्पर्य नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुसलमानों के अन्दर साहस और स्थाइत्व तथा शौर्य पैदा करना था।

[1]इसलिए कि «كُلُّ مَا هُوَ آتٍ فَهُوَ قَرِيبٌ» (हर आने वाली वस्तु निकट है) और ईमानवालों के लिए अल्लाह की स्थाई आवश्यक है, इसलिए वह निकट ही है।

[2]कुछ सहावा के प्रश्न करने पर धन व्यय करने के लिए उसके प्राथमिक पात्रों का वर्णन किया जा रहा है। अर्थात यह सबसे अधिक तुम्हारे धनरुपी सहायता के अधिकारी हैं। इससे ज्ञात हुआ कि माल का यह आदेश स्वेच्छात्मक दान से सम्बन्धित है, ज़कात से सम्बन्धित नहीं। क्योंकि माता-पिता पर ज़कात का धन ख़र्च करना उचित नहीं। आदरणीय मैमून विन मेहरान ने इस आयत की तिलावत (क़ुरआन पढ़ना) करके फ़रमाया माल ख़र्च करने के इन स्थानों पर न तबला-सारंगी का वर्णन है और न सुन्दर चित्रों और दीवारों पर लटकाये जाने वाले मनमोहक पर्दों का वर्णन है। भावार्थ यह है कि इन चीजों पर माल ख़र्च करना अल्लाह को पसन्द नहीं है और व्यर्थ है। अफ़सोस है कि आज यह व्यर्थ के ख़र्च और अल्लाह को न पसन्द आने वाले ख़र्च हमारे जीवन के इस प्रकार एक आवश्यक अंग बन गये हैं, कि इसके करने में हमें तनिक भी बुरा नहीं लगता।

The Ummah Technology Mission

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢١٦﴾

(२१६) तुम पर धर्म युद्ध (जिहाद) अनिवार्य किया गया, यद्यपि कि वह तुम्हारे लिए कठिन प्रतीत होता हो, हो सकता है कि तुम किसी चीज़ को बुरी जानो, और वास्तव में वही तुम्हारे लिए भली हो और यह भी हो सकता है कि तुम जिस चीज़ को अच्छी समझो, और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। वास्तविक ज्ञान अल्लाह ही को है, तुम मात्र अनजान हो।[1]

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ۗ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ۗ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۗ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ

(२१७) लोग आप से हुरमत वाले (आदरणीय) महीनों में युद्ध के विषय में प्रश्न करते हैं, आप कह दीजिए उनमें युद्ध करना महा पाप है। परन्तु अल्लाह के मार्ग से रोकना, उनके साथ कुफ़्र करना और मस्जिद-ए-हराम से रोकना, एवं वहाँ के निवासियों को वहाँ से निकालना अल्लाह के निकट उससे भी बड़ा पाप है और फ़ित्ना (उपद्रव) हत्या से भी बड़ा पाप है।[2] यह लोग तुमसे लड़ाई-झगड़ा करते

---

[1]धर्म युद्ध (जिहाद) के आदेश कोएक उदाहरण बनाकर ईमानवालों को समझाया जा रहा है कि अल्लाह तआला के प्रत्येक आदेशानुसार कर्म करो, चाहे तुम्हें कठिन लगे और अच्छा न लगे इसलिए कि उसके परिणाम और फल को तुम नहीं जानते, केवल अल्लाह तआला ही जानता है। हो सकता है इसमें तुम्हारे लिए अच्छाई हो। जैसे धर्मयुद्ध (जिहाद) के बदले में तुम्हें विजय या सम्मान और माल आदि सब मिल सकता है। इसी प्रकार जिसे तुम पसन्द करो धर्मयुद्ध के बदले घर बैठे रहना, उसका परिणाम तुम्हारे लिए भयानक हो सकता है, अर्थात शत्रु की तुम पर विजय प्राप्त हो जाये और तुम्हें अपमान एवं अनादर का सामना करना पड़े।

[2]रजब, ज़ुलक़ादा, ज़िलहिज्जा, और मोहर्रम, यह चार महीने अज्ञान काल में भी आदरणीय महीने माने जाते थे, जिनमे हत्या और युद्ध करना अच्छा नहीं समझा जाता था। इस्लाम ने भी इनके आदर को उसी प्रकार रखा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में मुसलमान सैनिक दस्ते के हाथों रजब के महीने में एक काफ़िर की हत्या हो गयी और कुछ

The Ummah Technology Mission

دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ؕ وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢١٧﴾

ही रहेगें, यहाँ तक की यदि उनसे हो सके तो तुम्हें तुम्हारे धर्म से फेर दें।[1] और तुममें से जो लोग अपने धर्म से पलट जायें और उसी अधर्म की स्थिति में मरें, उनके कर्मलोक एवं परलोक के कर्म सभी नष्ट हो गये। यह लोग नरकवासी होंगे और नित्य नरक में ही रहेंगे।[2]

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ

(२१८) हाँ जिन्होंने विश्वास किया तथा प्रवास किये एवं अल्लाह के मार्ग में जिहाद किया (धर्म की रक्षा के लिए अल्लाह के मार्ग में लड़े)

काफ़िर वन्दी बना लिए गये। मुसलमानों को यह नहीं मालूम था कि रजब का महीना प्रारम्भ हो गया है। काफ़िरों ने मुसलमानो को दोष दिया कि देखो यह आदरणीय महीनों का भी आदर नहीं करते, जिस पर यह आयत उतरी कि नि:सन्देह सम्मानित महीनों में हत्या करना महापाप है, परन्तु आदर की दुहाई देने वालों को अपने कर्म नहीं दिखाई देते ? यह स्वंय उससे भी बड़ा अपराध करते हैं कि अल्लाह के मार्ग से तथा मस्जिद-ए-हराम (खाना-ए-काअबा) से लोगों को रोकते हैं और वहाँ से मुसलमानों को निकलने पर उन्होंने बाध्य किया। इसके अतिरिक्त अधर्म और शिर्क स्वयं हत्या से भी बड़ा पाप है। इसलिए मुसलमानो से ग़लती से आदर वाले महीनों में एक-आध हत्या हो भी गयी, तो क्या हुआ ? उस पर कोलाहल के बजाय अपने कुकर्मों को भी देख लेना चाहिए।

[1]जब यह अपनी चालों और षड़यंत्रों और तुम्हें मुर्तद्द (इस्लाम धर्म से फिरने वाला) बनाने के प्रयत्न से रुकने वाले नहीं, तो फिर तुम उनसे सामना करने में आदरणीय महीने के कारण क्यों रुके रहो ?

[2]जो इस्लाम धर्म से पलट जाये अर्थात मुर्तद्द हो जाये (यदि वह क्षमा न माँगे) तो उसका सांसारिक दण्ड हत्या है हदीस में है «مَنْ بَدَّلَ دِيْنَهُ فَاقْتُلُوْهُ». (सहीह बुख़ारी हदीस ३०१७, किताबुल जिहाद) इस आयत में उसके परलोक के दण्डों का वर्णन है। जिससे ज्ञात हुआ कि ईमान की स्थिति में किये पुण्य के कर्म भी अविश्वास और इस्लाम से पलटने पर नष्ट हो जायेंगे और जिस प्रकार से ईमान स्वीकार कर लेने में पिछले पाप समाप्त हो जाते हैं, उसी प्रकार अधर्म और इस्लाम से पलटने की स्थिति में सारे पुण्य निष्फल हो जाते हैं। फिर भी क़ुरआन के शब्दों से यह स्पष्ट होता है कि कर्मों को नष्ट उसी समय किया जायेगा जब मृत्यु कुफ़्र की स्थिति में हो, यदि मृत्यु से पहले क्षमा माँग ली तो ऐसा न होगा, अर्थात मुर्तद्द की क्षमा स्वीकार्य है।

The Ummah Technology Mission

أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢١٨﴾

वही अल्लाह की दया की आशा रखते हैं। और अल्लाह (तआला) अति क्षमाशील एवं अति कृपालु है।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۖ قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۖ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ مِن نَّفْعِهِمَا ۗ وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَ ۖ قُلِ الْعَفْوَ ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١٩﴾

(२१९) लोग आपसे मदिरा और जुआ के विषय में प्रश्न करते हैं, आप कह दीजिए इन दोनों में महापाप है।[1] और लोगों को इससे सांसारिक लाभ भी होता है, परन्तु उनका पाप उनके लाभ से कहीं अधिक है।[2] आप से यह भी पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें, आप कह दीजिए आवश्यकता से अधिक को।[3] अल्लाह (तआला)

---

[1] महापाप तो धर्मानुसार है।

[2] लाभ का सम्बन्ध दुनिया से है। जैसे शराब पीने से सामायिक रुप से स्फूर्ति और कुछ बुद्धियों में तीव्रता आ जाती है, काम वेग बढ़ जाता है। जिसके लिए इसका प्रयोग सामान्य रुप से होता है। इसी प्रकार इसका क्रय-विक्रय भी लाभप्रद व्यापार है। जुए से भी कुछ आदमी एक-आध बार जीत जाता है और कुछ माल उसके हाथ लग जाता है, लेकिन यह लाभ उन हानियों के आपेक्ष कोई गणना नहीं रखते, जो व्यक्ति की बुद्धि और उसके धर्म को इनसे पहुचते हैं। इसीलिए फ़रमाया, "उनका पाप उनके लाभ से बहुत बड़ा है।" इस प्रकार इस आयत में शराब और जुए को निषेध नहीं किया गया, फिर भी इसके लिए पृष्ठभूमि तैयार की गयी है। इस आयत से यह भी ज्ञात हुआ कि हर चीज़ में चाहे कितनी बुराई क्यों न हो कुछ न कुछ लाभ अवश्य होगा। जैसे रेडियो टी० वी० और अन्य इसी प्रकार के आधुनिक अविष्कारों के कुछ लाभ बताकर लोग अपने आप को धोखा दे रहे हैं। देखना यह है कि लाभ-हानि का अनुपात क्या है ? विशेष रुप से धर्म, ईमान, स्वभाव एवं चरित्र के लिए यदि धार्मिक हानियाँ अधिक हैं, तो थोड़े से सांसारिक लाभ के लिए उसे उचित सिद्ध नही किया जा सकता।

[3] इस अर्थ के अनुसार यह नैतिक मार्ग दर्शन है अथवा यह आदेश इस्लाम के प्रारम्भिक समय में दिया गया है, जिस पर ज़कात के अनिवार्य होने के पश्चात कर्म करना आवश्यक नहीं रहा, लेकिन श्रेष्ठ अवश्य है अथवा इसके अर्थ हैं ما سهل وتيسّر و لم يشق على القلب (फ़तहुल क़दीर) "जो सरलता एवं आसानी से हो जाये और दिल पर बोझ न लगे।" इस्लाम धर्म ने नि:सन्देह धन दान करने पर बल दिया है परन्तु इसमें यह ध्यान रहे कि अपने संरक्षण में रहने वाले लोगों की आवश्यकता एवं संरक्षण में किसी प्रकार की कमी न आये तथा

The Ummah Technology Mission

इसी तरह अपने आदेश स्पष्ट रुप से तुम्हारे लिए वर्णित कर रहा है । कि तुम सोच समझ सको ।

فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَىٰ ۖ قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۖ وَإِن تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَعْنَتَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٢٠﴾

(२२०) साँसारिक और धार्मिक कर्मों को, और आप से अनाथों के विषय में भी प्रश्न करते हैं[1] आप कह दीजिए कि उनकी भलाई करना ही अच्छा है, तुम यदि अपने माल उनके माल में मिला भी लो तो वह तुम्हारे भाई हैं, कुविचार और सुविचार प्रत्येक को अल्लाह पूर्ण रुप से जानता है, और यदि अल्लाह चाहता तो तुम्हे कठिनाई में डाल देता ।[2] नि:सन्देह अल्लाह (तआ़ला) सर्वशक्तिशाली एवं विधाता है ।

وَلَا تَنكِحُوا الْمُشْرِكَاتِ حَتَّىٰ يُؤْمِنَّ ۚ وَلَأَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ ۗ

(२२१) और मुशरिक (बहुदेववादी) स्त्रियों से उस समय तक विवाह न करो जब तक कि वह ईमान न ले आयें ।[3] ईमानवाली लौंडी

उनको प्राथमिकता देने का आदेश आया है । दूसरे इस प्रकार खर्च करने से रोका गया है कि कल तुम्हारे परिवार वालों को दूसरों के आगे हाथ फैलाना पड़े ।

[1]जब अनाथों के माल अत्याचार करके खाने वालों के लिए कठोर दण्ड का आदेश आया, तो सहाबा डर गये और अनाथों की हर चीज़ अलग कर दी, यहाँ तक की खाना-पीना अलग कर दिया, यदि उनके खाने-पीने की चीज बच जाती, तोउसको उपयोग में न लाते, जिससे वह चीज ख़राब हो जाती, इस भय से कि कहीं इस दण्ड के अधिकारी न बना दिये जायें, इस पर यह आयत उतरी । (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात त्रुटि दूर करने तथा अच्छाई के लिए भी, उनके माल को अपने माल में मिलाने की आज्ञा नहीं प्रदान करता ।

[3]मुशरिक स्त्रियों से तात्पर्य मूर्तिपूजक अथवा बहुदेववादी स्त्रियाँ हैं, क्योंकि किताब वालों (यहूदी और ईसाई) स्त्रियों से विवाह करने की आज्ञा क़ुरआन ने प्रदान की है, परन्तु किसी मुसलमान स्त्री का विवाह अहले किताब पुरुषों से नहीं हो सकता । फिर भी आदरणीय उमर रज़ी अल्लाह अन्हु ने कारण वश यहूदी ईसाई स्त्रियों से विवाह करना अच्छा नही समझा

The Ummah Technology Mission

وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ؕ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚۖ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۲۱﴾

(दासी) भी मुशरिक (बहुदेववादी) स्वतंत्र स्त्री से श्रेष्ठ है, यद्यपि की तुम्हें मुशरिक (बहुदेववादी) ही अच्छी लगती हो और न मुशरिक (बहुदेववादी) पुरुषों को अपनी स्त्रियों से विवाह करने दो, जब तक की वह ईमान न ले आयें। ईमानदार गुलाम (मुसलमान दास) स्वतन्त्र मुशरिक (बहुदेववादी) से श्रेष्ठकर है, यद्यपि की तुम्हें मुशरिक (बहुदेववादी) अच्छा लगे । ये लोग नरक की ओर बुलाते हैं और अल्लाह स्वर्ग की ओर और मोक्ष की ओर अपने आदेश से बुलाता है, वह अपनी निशानियाँ लोगों के लिए वर्णित कर रहा है, ताकि वह शिक्षा प्राप्त करें।

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ؕ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ

(२२२) और आपसे मासिक धर्म के विषय में प्रश्न करते हैं, कह दीजिए वह गंदगी है, मासिक धर्म के समय स्त्रियों से अलग रहो[1]

है। (इब्ने कसीर) इस आयत में ईमानवालों को ईमानदार स्त्री-पुरुष में विवाह करने पर वल दिया गया है। और धर्म को किनारे रख केवल सुन्दरता के कारण विवाह करने को परलोक के विनाशता का कारण बताया है। जिस प्रकार हदीस में भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "स्त्री से चार कारणों से विवाह किया जाता है। माल, जाति, सुन्दरता अथवा धर्म के कारण से, तुम धार्मिक स्त्री का चयन करो।" (सहीह बुखारी, किताबुन निकाह, वाबुलकफ़ाअ फ़िद-दीन तथा मुस्लिम किताबुल रिदाआ) इसी प्रकार सुशील स्त्री को दुनिया की सर्वश्रेष्ठ दौलत कहा है। «خَيْرُ مَتَاعِ الدُّنْيَا الْمَرْأَةُ الصَّالِحَةُ» (सहीह मुस्लिम, किताबुल रिदाआ।

[1]अपने यौवन पर पहुँचने पर प्रत्येक स्त्री को जो मासिक धर्म का रक्त आता है, उसे हैज कहते हैं और कई बार अप्राकृतिक रुप से रोग के कारण जो रक्त आता है, उसे इस्तेहाजा कहते हैं, जिसका आदेश व नियम हैज से भिन्न है। हैज के दिनो में स्त्री को नमाज माफ़ है, और रोजा रखने से रोका गया है, परन्तु उनके बदले दूसरे दिनो में रखना अनिवार्य है। पुरुष के लिए केवल सम्भोग प्रक्रिया से रोका गया है, परन्तु चुम्बन अथवा साथ लेटने को उचित कहा गया है। इसी प्रकार स्त्री इन दिनों में घर का कार्य एवं खाना पका

The Ummah Technology Mission

فِي الْمَحِيضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَطْهُرْنَ ۖ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ﴿٢٢٢﴾

और जब तक वह पवित्र न हो जायें उनके निकट न जाओ, हाँ जब वह पवित्र हो जायें,[1] तो उनके पास जाओ जहाँ से अल्लाह ने तुम्हें आज्ञा प्रदान की है [2] अल्लाह क्षमा माँगने वाले को पवित्र रहने वाले को पसंद करता है।

نِسَاؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۖ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّىٰ شِئْتُمْ ۖ وَقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُمْ ۚ

(२२३) तुम्हारी पत्नियाँ तुम्हारी खेतियाँ है, अपनी खेतियों में जिस प्रकार चाहो आओ।[3]

सकती है, परन्तु यहूदियों में इस स्थिति में स्त्री को बिलकुल अपवित्र समझा जाता था। उसके साथ मिलना तथा खाना पकाना भी ठीक नहीं समझते थे। सहाबा ने इसके विषय में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा तो आयत उतरी, जिसमें मात्र यौनि प्रक्रिया से रोका गया है, अलग रहने तथा निकट न जाने का अर्थ मात्र यौनि प्रक्रिया से मना किया गया है। (इब्ने कसीर आदि)

[1]जब वह पवित्र हो जायें। इसके दो अर्थ बताये गये हैं, एक तो यह है कि जब रक्त रुक जाये, तो बिना स्नान किये भी वे पवित्र हैं। पुरुष के लिए उनसे यौनि सम्बन्ध करना उचित है। इब्ने हज़्म तथा कुछ इमाम इसके पक्ष में है। अल्लामा अलबानी ने भी इसकी पुष्टि की है। (आदाबु ज़्ज़ेफ़ाफ़ पृ० ४७) दूसरे अर्थ हैं, रक्त बंद होने के पश्चात स्नान करके पवित्र हो जायें, इस दूसरे अर्थ के अनुसार रक्त बंद होने के पश्चात स्त्री स्नान करके पवित्र न हो जाये, तब तक उससे सम्भोग हराम है। ईमाम शौकानी ने इसे श्रेष्ठ बताया है। (फ़तहुल क़दीर) हमारे निकट दोनों ही नियामानुसार कर्म किये जा सकते हैं परन्तु दूसरा श्रेष्ठ है।

[2]जहाँ से आज्ञा प्रदान की है। अर्थात यौनियों से क्योंकि हैज़ के समय इन्ही के प्रयोग से रोका गया था, और अब पवित्र होने के पश्चात जो आज्ञा प्रदान की जा रही है, तो इसका अर्थ है उसी (यौनि) की आज्ञा है, न कि किसी अन्य भाग अथवा अंग से। इससे यह भावार्थ निकाला गया कि स्त्री के मलद्वार का प्रयोग हराम है, जैसाकि हदीसों में इसकी विस्तृत जानकारी दी गयी है।

[3]यहूदियों का विचार था कि यदि स्त्री को पेट के बल लिटाकर उनके पीछे से सम्भोग किया जाये, तो बच्चा भिंगा जन्म लेगा। इसके खण्डन में कहा जा रहा है कि सम्भोग आगे से करो (चित लेटाकर) अथवा पीछे से (पेट के बल लिटाकर) अथवा करवट से, जिस प्रकार चाहो उचित है, परन्तु यह आवश्यक है कि प्रत्येक स्थिति में स्त्री की यौनि का ही प्रयोग हो। कुछ लोग इससे यह अर्थ लेते हैं (जिस प्रकार चाहो) में मलद्वार भी आ जाता है, इसलिए मलद्वार का प्रयोग भी उचित है, परन्तु यह बिलकुल ग़लत है। जब

Ihe Ummah Technology Mission

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۲۳﴾

और अपने लिए (पुण्य) आगे भेजो, और अल्लाह (तआला) से डरते रहो, और जान रखो, कि तुम उससे मिलने वाले हो, और ईमानवालों को शुभ सन्देश सुना दीजिए।

وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۲۴﴾

(२२४) और अल्लाह (तआला) को अपनी शपथों का (इस प्रकार) चिन्ह न बनाओ कि भलाई और परहेज़गारी और लोगों के मध्य त्रुटियों को दूर करने को छोड़ बैठो।[1] और अल्लाह (तआला) सुनने वाला जानने वाला है।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۲۲۵﴾

(२२५) अल्लाह तआला तुम्हें तुम्हारी उन शपथों पर न पकड़ेगा, जो दृढ़ न हों।[2] हाँ तुम्हारी पकड़ उस चीज़ पर है, जो तुम्हारे दिलों का कर्म है, अल्लाह (तआला) क्षमा करने वाला साहिष्णु है।

لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَآءُوْ

(२२६) जो लोग अपनी पत्नियों से (न मिलने की) शपथ खायें उनके लिए चार महीने की

क़ुरआन में स्त्री को खेती कहा है, तो इसका स्पष्ट यह अर्थ है कि केवल खेती के प्रयोग के लिए कहा जा रहा है कि "अपनी खेतियों में जिस प्रकार चाहो आओ।" और यह खेती (बच्चा पैदा होने का मार्ग) केवल स्त्री की यौनि है न कि उसका मलद्वार। अन्ततः यह एक अप्राकृतिक यौनि सम्बन्ध है, ऐसे व्यक्ति को जो अपनी पत्नी के साथ गुदा मैथुन करे। उसको (मलऊन) बुरा कहा जाने वाला व्यक्ति कहा गया है। (इब्ने कसीर व फ़तहुल क़दीर)।

[1]अर्थात क्रोध में ऐसी शपथ मत उठाओ कि मैं अमुक व्यक्ति के ऊपर उपकार नहीं करूंगा, अमुक व्यक्ति से नहीं बोलूंगा, अमुक व्यक्ति के मध्य सन्धि नहीं कराऊंगा। इस प्रकार की शपथों के विषय में हदीस शरीफ़ में आया है कि यदि इस प्रकार की शपथ खा भी लो, तो उसे तोड़ दो, और शपथ का कफ़्फ़ार: (शपथ खाने के बाद यदि तोड़ दी जाये, तो उसका दण्ड) अदा करो। (शपथ के कफ़्फ़ारे के लिए देखिए सूर: अल-मायदा:, आयत ८९)

[2]अर्थात जो बिना सोचे समझे और आदत के तौर पर हो, परन्तु जान बूझकर शपथ खाना महापाप है।

The Ummah Technology Mission

فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٢٦﴾

अवधि है।[1] फिर यदि वह लौट आयें, तो अल्लाह (तआला) क्षमावान कृपालु है।

وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٢٧﴾

(२२७) और यदि तलाक़ का प्रयत्न कर ले तो अल्लाह (तआला) अति सुनने वाला जानने वाला है।[2]

وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ ۚ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ

(२२८) तलाक़ प्राप्त स्त्रियाँ अपने आपको तीन मासिक धर्म तक रोके रखें।[3] उनके लिये उचित नहीं कि अल्लाह ने उनके गर्भाषय में

---

[1] إيلاء का अर्थ शपथ खाने के हैं यदि कोई पति शपथ खा ले कि मैं अपनी पत्नी के साथ एक माह अथवा दो माह (उदाहरणत:) सम्बन्ध नहीं रखूंगा। फिर शपथ की अवधि पूरी करके कोई सम्बन्ध स्थापित करता है, तो कोई दण्ड नहीं है, और यदि शपथ की अवधि पूरी होने के पूर्व सम्बन्ध स्थापित कर ले तो शपथ तोड़ने का दण्ड अदा करना होगा। और यदि चार माह की अवधि से अधिक अथवा बिना अवधि के शपथ खायी गयी है, तो उनके लिए इस आयत में अवधि निर्धारित कर दी गयी है, कि वह चार माह पश्चात यदि चाहे तो सम्बन्ध स्थापित कर ले अथवा उन्हें तलाक़ दे दे (उसे चार माह से अधिक लटकाये रहने की आज्ञा नहीं है) पहली स्थिती में उसे शपथ तोड़ने का दण्ड भुगतना पड़ेगा और यदि दोनों में से कोई स्थिति नहीं अपनायेगा, तो न्यायालय उसको दोनों में से किसी एक को अपनाने पर प्रतिबन्ध करेगा कि वह उससे सम्बन्ध स्थापित कर ले अथवा तलाक़ दे दे ताकि उस स्त्री पर अत्याचार न हो। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[2] इन शब्दों से प्रतीत होता है कि चार माह व्यतीत होते ही स्वयं तलाक नहीं हो जाती है। (जैसा कि कुछ विद्वानों के नियम में है), बल्कि पति के तलाक़ देने पर तलाक़ होगी, जिस पर उसे न्यायालय भी बाध्य करेगा। जैसाकि प्राय: विद्वानो का मत है। (इब्ने कसीर)

[3] इससे तात्पर्य वह तलाक़ प्राप्त स्त्री है जो गर्भवती भी न हो (क्योंकि गर्भवती स्त्री के लिए प्रसव की अवधि निर्धारित है) जिसे समागम से पहले ही तलाक हो गयी हो वह भी न हो (क्योंकि उसकी कोई इद्दत ही नहीं है) बूढ़ी भी न हो जिसको मासिक धर्म आना बंद हो गया हो (क्योंकि उनकी इद्दत तीन माह है) अर्थात इस आयत में उपरोक्त वर्णित स्त्रियों के अतिरिक्त समागम प्राप्त स्त्रियों की इद्दत वर्णित की जा रही है। और वह तीन मासिक धर्म के हैं। इसका अर्थ यह है कि तीन मासिक धर्म व्यतीत हो जाने के उपरान्त उन्हें अपना विवाह दूसरी जगह करने का अधिकार है। (इब्ने कसीर व फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

أَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ أَرْحَامِهِنَّ إِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَبُعُوْلَتُهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ إِنْ أَرَادُوْٓا إِصْلَاحًا ۚ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۠ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٨﴾

जो पैदा किया हो उसे छिपायें।[1] यदि उन्हें अल्लाह (तआला) पर और प्रलय के दिन पर ईमान हो। उनके पति को इस अवधि में उन्हें लौटा लेने का पूर्ण अधिकार हैं, यदि उनका विचार सुधार का हो।[2] स्त्रियों के भी वैसे ही अधिकार हैं, जैसे उन पर पुरुषों के हैं अच्छाई के साथ।[3] हाँ, पुरुषों की स्त्रियों पर श्रेष्ठता है, और अल्लाह (तआला) सर्वोच्च, एवं विधाता है।

اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪ فَإِمْسَاكٌ

(२२९) ये तलाक़ दो बार हैं[4] फिर या तो

---

[1]इससे मासिक धर्म एवं गर्भ दोनों तात्पर्य हैं। मासिक धर्म न छिपायें, जैसे कि कहे कि मुझे तलाक के बाद एक अथवा दो बार मासिक हुआ है, जबकि उसे तीन मासिक धर्म हो चुके हों, (उसका उद्देश्य पहले पति से सम्बन्ध स्थापित करना हो, यदि वह सम्बन्ध स्थापित करना चाहता हो) अथवा सम्बन्ध स्थापित न करना चाहती हो, तो कह दे कि मुझे तीन मासिक धर्म हो चुके हैं, जबकि वास्तव में ऐसा न हुआ हो, ताकि पति का सम्बन्ध स्थापित करने का अधिकार सिद्ध न हो सके। इसी प्रकार गर्भ को न छिपायें क्योंकि इस प्रकार दूसरे स्थान पर विवाह करने की दशा में उसके वंश में मिश्रण होगा। वीर्य वह पहले पति का होगा और सम्बन्धित दूसरे पति से हो जायेगा। यह अति महापाप है।

[2]सम्बन्ध स्थापित करने से पति का उद्देश्य यदि परेशान करना न हो, तो पति को इद्दत के अन्दर सम्बन्ध स्थापित करने का पूरा अधिकार है। स्त्री के संरक्षक को इसमें रुकावट डालने की कोई अनुमति नहीं है।

[3]अर्थात दोनों के अधिकार एक-दूसरे से मिलते जुलते हैं, जिनको पूरा करने के दोनों धार्मिक नियमों से प्रतिबन्धित है। परन्तु पुरुष को स्त्री पर श्रेष्ठता प्राकृतिक शक्ति में, जिहाद (धर्मयुद्ध) की आज्ञा में, जायदाद के बँटवारे में स्त्री से दुगना पुरुष को, जाति एवं अधिकार में, तलाक-एवं सम्बन्ध स्थापित करने के अधिकार (आदि) में प्राप्त हैं।

[4]अर्थात वह तलाक़ जिसमें पति को प्रत्यागमन का अधिकार है, वह दो बार है। पहली बार तलाक़ के बाद भी और दूसरी बार तलाक़ के बाद भी पति अपनी पत्नी से सम्बन्ध पुनः स्थापित कर सकता है। तीसरी बार तलाक़ देने के बाद यह सम्बन्ध स्थापित करने

The Ummah Technology Mission

بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـًٔا اِلَّآ اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ

अच्छाई से रोकना।[1] अथवा उचित रुप से छोड़ देना है।[2] और तुम्हें उचित नहीं कि तुमने उन्हें जो दिया है, उसमें से कुछ भी लो, हाँ, यह और बात है कि दोनों को अल्लाह की सीमायें स्थापित न रखने का भय हो, इसलिए यदि तुम्हें भय हो कि यह दोनों अल्लाह की सीमायें स्थापित न रख सकेंगे, तो स्त्री स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए कुछ दे डाले, इसमें दोनो पर कोई पाप नहीं[3] यह अल्लाह

का अधिकार नहीं। अनाज्ञा काल में यह तलाक़ और सम्बन्ध स्थापित करने का अधिकार असीमित था, जिससे स्त्रियों पर अत्याचार होते थे, पति बार-बार तलाक़ देकर सम्बन्ध स्थापित करता था, इस प्रकार न वह रखता था और न स्वतन्त्र करता था। अल्लाह तआला ने इस अत्याचार का द्वार बन्द कर दिया। पहली और दूसरी बार सोचने विचारने का समय दिया जाता है। यदि पहली बार में सदैव के लिए अलग कर दिया जाता, तो समाज में इससे उत्पन्न होने वाली समस्याओं का अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला ने طلقتان (दो तलाक़) नहीं कहा, बल्कि फ़रमाया। ﴿اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ﴾ (तलाक़ दो बार), इससे यह अर्थ निकला कि एक समय में दो अथवा तीन तलाकें देना और उन्हे उसी समय लागू कर देना अल्लाह तआला के आदेश के विपरीत है। अल्लाह तआला का विवेक इस प्रकार का न्याय करता है कि एक बार के तलाक के बाद (चाहे एक हो या कई एक) और इस प्रकार दूसरी बार तलाक के बाद (चाहे एक हो अथवा कई एक) पुरुष को सोचने-समझने और शीघ्रता अथवा क्रोध में किये गये कार्य को ठीक करने का समय दिया जाये। यह तर्क एक बैठक में तीन तलाकों को एक तलाक़ मानना ही उचित सिद्ध करता है, न कि तीनों को एक ही समय में लागू करके सोचने और अपनी ग़लतियों को सुधारने की छूट से वंचित कर देने की दशा में।

[1]अर्थात सम्बन्ध स्थापति करके उसे अच्छी प्रकार से बसाना।

[2]अर्थात तीसरी बार तलाक़ देकर।

[3]इसमें "खुलअ" का वर्णन है, जिसके अनुसार पत्नी अपने पति से सम्बन्ध विच्छेद करना चाहे तो उस स्थिति में पति को अधिकार है कि वह अपना महर वापस ले ले। पति यदि सम्बन्ध विच्छेद न स्वीकार करे, तो न्यायालय पति को तलाक़ देने का आदेश करेगी, यदि वह उसे न माने तो न्यायालय विवाह समाप्त करेगी। अर्थात यह खुलअ, तलाक़ द्वारा भी हो सकता है और विच्छेद द्वारा भी दोनो स्थितियों में इद्दत एक मासिक धर्म है। (अबूदाऊद

The Ummah Technology Mission

هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٢٩﴾

की सीमायें हैं, सावधान। इनसे आगे न बढ़ना और जो लोग अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन कर जायें, वह अत्याचारी हैं।

فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ ۗ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يَتَرَاجَعَا إِنْ ظَنَّا أَنْ يُقِيمَا حُدُودَ اللّٰهِ ۗ وَتِلْكَ حُدُودُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٠﴾

(२३०) फिर यदि उसको (तीसरी बार) तलाक़ दे दे, तो अब वह उसके लिए वैध नहीं जब तक कि वह स्त्री उसके अतिरिक्त दूसरे से विवाह न करे, फिर यदि वह तलाक दे दे, तो उन दोनों को मेलजोल कर लेने में कोई पाप नहीं।[1] जबकि वे जान लें कि अल्लाह की सीमाओं को स्थापित रख सकेंगे, यह अल्लाह (तआला) की सीमायें है, जिन्हें वह जानने वाले के लिए वर्णित कर रहा है।

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ أَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۪ وَّلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ

(२३१) और जब तुम स्त्रियों को तलाक़ दो और वह अपनी इद्दत (तीमासिक धर्म की अवधि को कहते हैं) समाप्त करने के निकट हों, तो अब उन्हें अच्छी प्रकार से बसाओ अथवा

त्रिमिजी, नसाई व अल-हाकिम, फ़तहुल क़दीर) पत्नी को यह अधिकार देने के साथ-साथ उसे इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि पत्नी बिना किसी विशेष कारण के पति से सम्बन्ध विच्छेद अर्थात तलाक़ की माँग न करे। यदि ऐसा करेगी, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसी स्त्रियों के विषय में कठोर दण्ड की सूचना दी है कि वह स्वर्ग की सुगन्ध तक न पा सकेगी। (इब्ने कसीर आदि)

[1] इस तलाक़ से तात्पर्य तीसरी तलाक़ है और इसके बाद पति को न तो सम्बन्ध स्थापित करने का अधिकार है और न विवाह करने का। अब यह स्त्री किसी दूसरे व्यक्ति से विवाह करे और वह अपनी इच्छा से तलाक़ दे अथवा उसकी मृत्यु हो जाये, तो उसके बाद वह अपने पहले पति से विवाह कर सकती है। परन्तु हमारे देश में जो इस प्रकार का "हलाला" करने और कराने की कुप्रथा है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसे "हलाला" करने और कराने वाले पर धिक्कार की है। हलाला के कारण किया गया विवाह, विवाह नहीं होता, यह व्यभिचार है। इस विवाह से स्त्री अपने पति के लिए वैध नहीं होगी।

The Ummah Technology Mission

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ۠ وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٣١﴾

भलाई के साथ अलग कर दो।[1] और उन्हें यातना पहुँचाने के उद्देश्य से अत्याचार व निर्दयता करने के लिए न रोको। जो व्यक्ति ऐसा करे, उसने अपनी आत्मा पर अत्याचार किया। तुम अल्लाह के आदेशों का उपहास न बनाओ।[2] और अल्लाह का उपकार जो तुम पर है याद करो और जो कुछ किताब व विद्या उसने उतारी है, जिससे तुम्हें शिक्षा दे रहा है, उसे भी। और अल्लाह (तआला) से डरते रहा करो और याद रखो कि अल्लाह (तआला) प्रत्येक वस्तु को जानता है।

وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ

(२३२) और जब तुम अपनी स्त्रियों को तलाक़ दो और वह अपनी इद्दत पूरी कर लें, तो उन्हें उनके पतियों से विवाह करने से न रोको, जबकि वह आपस में नियमानुसार सहमत हो।[3] यह शिक्षा उन्हें दी जाती है, जिन्हें तुममें

﴿ اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ﴾ में बताया गया था कि दो तलाक़ तक सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है। इस आयत में बताया जा रहा है कि सम्बन्ध स्थापित इद्दत के भीतर हो सकता है, इद्दत की अवधि समाप्त होने के बाद नही। इसलिए यह पुनरावृति नहीं है, जिस प्रकार से स्पष्ट प्रतीत होती है।

[2]कुछ लोग मज़ाक़ में तलाक़ दे देते अथवा विवाह कर लेते अथवा स्वतन्त्र कर देते। फिर कहते कि मैंने तो मज़ाक़ किया था। अल्लाह तआला ने इसे अपनी आयत में उपहास कहा है जिसका उद्देश्य इस प्रकार के कर्मों से रोकना है। इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उपहास से भी यदि उपरोक्त वर्णित कार्य करेगा तो वह वास्तविक माना जायेगा। और मज़ाक़ का तलाक़, विवाह एंव स्वतन्त्रता लागू हो जायेगी। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[3]इसमें तलाक़ प्राप्त स्त्री के विषय में एक तीसरा आदेश दिया जा रहा है। वह यह कि यदि इद्दत समाप्त होने के पश्चात (पहली अथवा दूसरी तलाक़ के बाद) यदि भूतपूर्व पति-पत्नी अपनी सहमती से पुन: निकाह करें, तो तुम उनको न रोको। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

The Ummah Technology Mission

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٢﴾

से अल्लाह (तआला) पर और प्रलय के दिन पर विश्वास एवं ईमान हो, इसमें तुम्हारी अच्छी स्वच्छता एवं पवित्रता है। और अल्लाह (तआला) जानता है, तुम नहीं जानते।

وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ ؕ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ

(२३३) माताऐं अपनी सन्तानों को पूरे दो वर्ष दूध पिलायें, जिनका विचार दूध पिलाने की पूरी अवधि का हो।[1] और जिनकी सन्तान हैं उनका कर्तव्य है उनको रोटी कपड़ा दे, जो नियमानुसार हो।[2] प्रत्येक व्यक्ति को इतनी

के समय में एक ऐसी घटना घटी और स्त्री के भाई ने मना कर दिया, तो यह आयत उतरी (सहीह बुख़ारी) एक तो इससे यह ज्ञात हुआ कि स्त्री अपना विवाह स्वयं नहीं कर सकती, बल्कि उसके संरक्षक की आज्ञा तथा सहमति विवाह के लिए आवश्यक है तभी तो अल्लाह तआला ने संरक्षकों को अपने संरक्षण के अधिकार के अनुचित प्रयोग से रोका है। इसकी और पुष्टि हदीस नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से होती है لا نكاح إلاّ بوَلِيٍّ (संरक्षक की आज्ञा के बिना विवाह नही) (अन-निसाई) दूसरी बात यह ज्ञात हुई कि स्त्री के संरक्षकों को भी स्त्री पर अत्याचार करने का अधिकार नहीं है। बल्कि उनके लिए आवश्यक है कि वह स्त्री की सहमत की भी अवश्य आदर करें।

[1]इस आयत में दूध पिलाने की समस्या के समाधान का वर्णन है। इसमें सर्वप्रथम बात कही गयी है। वह यह है कि जो पूर्ण अवधि तक दूध पिलाना चाहे, तो यह अवधि दो वर्ष की है। इन शब्दों से इससे कम अवधि तक दूध पिलाने का प्रविधान निकलता है। दूसरी बात यह कि दूध पिलाने की अधिक से अधिक अवधि दो वर्ष है। जैसाकि त्रिमज़ी में उम्मे सलमा के द्वारा वर्णित कथन है«لاَ يُحَرِّمُ مِنَ الرَّضَاعِ إِلاَّ مَا فَتَقَ الأَمْعَاءَ فِي الثَّدْيِ وَكَانَ قَبْلَ الفِطَامِ»(त्रिमज़ी, किताबुल रिदाआ) वही रिदाआ (दूध पिलाना) पवित्रता (हुरमत) सिद्ध करता है, जो छाती से निकलकर आँतो को फाड़े यह दूध छुड़ाने (की अवधि) से पहले हो। अत: यदि कोई बच्चा किसी औरत का इस प्रकार से दूध पीयेगा, जिससे दूध पिलाना सिद्ध होता है, तो उनके मध्य दूध का सम्बन्ध स्थापित हो जायेगा, जिसके बाद दूध पिये हुए भाई बहनों में विवाह उसी प्रकार नहीं हो सकता, जिस प्रकार से सगे भाई-बहनो में वर्जित है। «يَحْرُمُ مِنَ الرَّضَاعِ مَا يَحْرُمُ مِنَ النَّسَبِ». (सहीह बुख़ारी, किताबुश शहदात) दूध पीने से भी वह सम्बन्ध निषेध हो जायेगे, जो वंश से अवैध होते है।

[2] مولود لـه से तात्पर्य पिता है। तलाक़ होने के पश्चात नवजात शिशु और उसकी माँ के भरण-पोषण की समस्या हमारे समाज में जटिल होती जा रही है, इसका कारण धार्मिक

The Ummah Technology Mission

لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَارَّ وَالِدَةٌ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُودٌ لَّهُ بِوَلَدِهِ ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذَٰلِكَ ۗ فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَن تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ۗ وَإِنْ أَرَدتُّمْ أَن تَسْتَرْضِعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُم مَّا آتَيْتُم بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٣٣﴾

ही कठिनाई दी जाती है, जितनी उसकी शक्ति हो। माता को उसकी सन्तान के कारण, अथवा पिता को उसकी सन्तान के कारण उसे कोई हानि नहीं पहुँचाई जाये।[1] उत्तराधिकारी पर भी उसी जैसा कर्तव्य है।[2] फिर यदि दोनों (अर्थात माता-पिता) अपनी सहमति एवं आपसी विचार से दूध छुड़ाना चाहें, तोदोनों पर कोई पाप नहीं, और यदि तुम अपनी सन्तानों को दूध पिलाना चाहते हो, तो भी तुम पर कोई पाप नहीं, जबकि तुम उनके सांसारिक नियम के अनुसार उनको दे दो।[3] अल्लाह तआला से डरते रहो और जानते रहो कि अल्लाह (तआला) तुम्हारे कर्मों को देख रहा है।

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ

(२३४) तुम में से जो लोग मर जायें, और पत्नियाँ छोड़ जायें, वह स्त्रियाँ अपने आपको

नियमों का अवहेलना है। यदि अल्लाह के आदेशनुसार पति अपनी यथासंभव तलाक़ दी हुई स्त्री के रोटी-कपड़े का उत्तरदायी हो, जिस प्रकार से इस आयत में कहा जा रहा है, तो अति सरलता से समस्या का समाधान हो जाता है।

[1]माता को कष्ट पहुँचाने का तात्पर्य यह है कि जैसे माता अपने बच्चे को अपने पास रखना चाहे, परन्तु ममता को ठुकराकर उसका बच्चा उससे बलपूर्वक छीन लिया जाये। अथवा यह कि बिना ख़र्च की जिम्मेदारी लिए उसको दूध पिलाने पर मजबूर किया जाये। पिता को कष्ट पहुँचाने से तात्पर्य यह है कि माता दूध पिलाने से इंकार कर दे अथवा उसकी शक्ति से अधिक उससे धन की माँग करे।

[2]पिता की मृत्यु के पश्चात ऐसी स्थिति में यह कर्तव्य उत्तराधिकारियों का है कि वह बच्चे की माता के अधिकार उचित रुप से अदा करें, ताकि न तो स्त्री को कष्ट हो ओर न बच्चे के पालन-पोषण पर प्रभाव पड़े।

[3]यह माता के अतिरिक्त अन्य किसी स्त्री से दूध पिलाने की आज्ञा है। परन्तु उसका देय नियमानुसार कर दिया जाये।

The Ummah Technology Mission

بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝

चार महीने और दस (दिन) इद्दत में रखें।[1] फिर जब अवधि समाप्त कर लें, तो जो अच्छाई के साथ अपने लिए करे उसमें तुम पर कोई पाप नहीं[2] और अल्लाह (तआला) तुम्हारे प्रत्येक कर्मों को जानने वाला है।

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاۗءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ۭ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۬ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى

(२३५) और तुम पर इसमें कोई पाप नहीं कि तुम संकेत रुप अथवा अस्पष्ट रुप से इन स्त्रियों से विवाह के सम्बन्ध में कहो अथवा अपने दिल में विचार छिपाओ, अल्लाह (तआला) को ज्ञान है कि तुम अवश्य उनको याद करोगे, परन्तु तुम उनसे छिपाकर वायदा न कर लो।[3] हाँ, यह बात और है कि

---

[1] मृत्यु की यह इद्दत प्रत्येक पत्नी के लिए है पति ने उससे समागम किया हो अथवा न किया हो। गर्भहीन पत्नी के लिए यह नियम नहीं क्योंकि उसकी इद्दत प्रसव हो जाना है। ﴿وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ﴾ (*अल-तलाक़*) गर्भवती स्त्रियों की अवधि प्रसव है। इस मृत्यु की इद्दत में स्त्री को बनाव सिंगार (यहाँ तक कि सुर्मा लगाने की भी) और पति के घर से किसी अन्य स्थान पर जाने की आज्ञा नहीं है। परन्तु प्रत्यागम्य तलाक़ प्राप्त पत्नी के लिए बनाव सिंगार करने पर प्रतिबन्ध नहीं है। परन्तु विच्छेदनीय तलाक़ प्राप्ति के लिए मतभेद है, कुछ उचित और कुछ अनुचित के पक्ष में है। (इब्ने कसीर)

[2] अर्थात इद्दत के पश्चात बनाव सिंगार करे और अपने संरक्षकों की सहमति एवं परामर्श से किसी अन्य से विवाह का प्रबन्ध करे, तोइसमें कोई आपत्ति की बात नहीं है। इसलिए तुम पर भी (हे स्त्रियों के संरक्षको) कोई पाप नहीं। इससे ज्ञात हुआ कि विधवा के दूसरे विवाह को न बुरा समझना चाहिए, और न उसमें कोई रुकावट डालनी चाहिए। जैसा कि हिन्दू धर्म के प्रभाव से हमारे समाज में यह चीज़ पाई जाती है।

[3] यह विधवा अथवा वह स्त्री जिसको तीन बार तलाक़ मिल चुकी हो अर्थात विच्छेदनीय तलाक़ उसके विषय में कहा जा रहा है कि इद्दत की अवधि में तुम उनकी मंगनी के संकेत दे सकते हो (जैसे मेरा विचार विवाह करने का है, अथवा मैं सुशील स्त्री की खोज में हूँ, आदि) परन्तु उनसे गुप्त रुप से न वचन लो और न इद्दत की अवधि समाप्त हुए विना मंगनी का संदेश दो। परन्तु वह स्त्री जिसके पति ने एक अथवा दो तलाक़ दी हो, तो उससे किसी भी प्रकार से इद्दत की अवधि के अन्दर विवाह का संदेश देना उचित नहीं

The Ummah Technology Mission

يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْۤ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۲۳۵﴾

तुम अच्छी बात बोला करो[1]। और जब तक इद्दत की अवधि पूरी नहीं हो विवाह का बन्धन दृढ़ न करो। जान लो, कि अल्लाह (तआला) को तुम्हारे दिलों की बातों का भी ज्ञान है, तुम उससे डरते रहा करो और यह भी जान रखो, कि अल्लाह (तआला) क्षमाशील और कृपा निधान है।

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۖۚ وَّمَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًۢا بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۲۳۶﴾

(२३६) यदि तुम स्त्रियों को बिना हाथ लगाये और बिना महर निर्धारित किये तलाक़ दे दो, तो भी तुम पर कोई पाप नहीं, हाँ उन्हें कुछ न कुछ लाभ दो। धनवान अपने अनुसार और निर्धन अपनी शक्ति के के हिसाब से नियम के अनुसार अच्छा लाभ दें। भलाई करने वालों के लिए यह अनिवार्य है।[2]

है, क्योंकि जब तक इद्दत नहीं समाप्त हो जाती, उस पर उसके पति का अधिकार है। हो सकता है कि (उसका प्रत्यागमन कर ले) पति उससे सम्बन्ध स्थापित कर ले।

समस्या : कई बार ऐसा भी होता है कि अशिक्षित लोग इद्दत की अवधि में ही विवाह कर लेते है। उनके विषय में यह है कि यदि उनके मध्य सम्भोग नहीं हुआ है, तो उन्हें तुरन्त अलग करा दे, यदि सम्भोग हो भी गया हो, तब भी अलग करना आवश्यक है, इसके बाद पुन: उनके मध्य (इद्दत समाप्त होने के पश्चात) विवाह हो सकता है अथवा नहीं ? इसमें मतभेद है। कुछ आलिमों का मत है कि अब उनके मध्य कभी विवाह नहीं हो सकता, यह एक-दूसरे के लिए सदैव के लिए हराम हैं, परन्तु अधिकतर आलिम उनके मध्य विवाह होने के पक्ष में है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[1]इससे भी वही नम्रतापूर्वक इंगित है जिसका आदेश पहले दिया जा चुका है। जैसे: मैं तुम्हारी चाह रखता हूँ अथवा संरक्षक से कहे कि यदि इसके विवाह का निर्णय करने से पूर्व मुझे अवश्य बताना आदि। (इब्ने कसीर)

[2]यह उस स्त्री के विषय में आदेश है कि विवाह के समय महर (स्त्री धन) निर्धारित नहीं की गयी थी और पति सम्भोग करने के पूर्व तलाक़ भी दे दे, तो उसे कुछ न कुछ लाभ देकर विदा करो। यह लाभ (तलाक़ का लाभ) पुरूष की शक्ति के अनुसार होना चाहिए

The Ummah Technology Mission

وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۭ وَاَنْ تَعْفُوْٓا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۭ وَلَا تَنْسَوُا

(२३७) और यदि तुम स्त्रियों को इससे पहले तलाक़ दे दो कि तुमने उन्हें हाथ लगाया हो और तुमने उनका महर भी निर्धारित किया हो, तो निर्धारित महर का आधा (महर) दे दो, यह बात और है कि वह स्वयं माफ कर दें,[1] अथवा वह व्यक्ति माफ कर दे जिसके हाथ में निकाह की गाँठ है।[2] तुम्हारा माफ

अर्थात धनवान अपने अनुसार और निर्धन अपनी शक्ति भर दे। फिर भी अच्छे व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है। इस लाभ (मुतआ) का निर्धारण भी किया गया है, किसी ने कहा दास, किसी ने कहा ५०० (पाँच सौ) दिरहम, किसी ने कहा एक अथवा कुछ सूट आदि। परन्तु यह निर्धारण धार्मिक नियमों के ओर से नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी शक्ति के अनुसार देने का अधिकार एवं आदेश है। इसमें भी मतभेद है कि यह तलाक़ का लाभ हर तलाक पाने वाली स्त्री के लिए है अथवा विशेष रुप से उसी स्त्री को मिलेगा, जिसके विषय में इस आयत में आदेश का वर्णन है। क़ुरआन करीम की कुछ अन्य आयतों से यह प्रतीत होता है कि यह हर प्रकार की तलाक़ पाने वाली स्त्री के लिए है। इस मुतआ के आदेश में जो बुद्धमता और लाभ है, उनको स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं है। कटुता, तनाव, और मतभेद के कारण जो तलाक़ होती है, उपकार करना, स्त्री का दिल रखना, खुले दिल का प्रदर्शन करना, भविष्य की सम्भावित कटुताओं को दूर करने का अति सुन्दर तरीका है। परन्तु हमारे समाज में इस उपकार एवं वर्ताव के बदले, तलाक़ दी हुई स्त्री को इस प्रकार विदा किया जाता है कि दोनों परिवारों के सम्बन्ध सदा के लिए समाप्त हो जाते हैं।

[1]यह दूसरी स्थिति है कि सम्भोग से पूर्व ही तलाक़ दे दी जाये और महर निर्धारित थी। इसलिए पति के लिए आवश्यक है कि आधा महर अदा करे। सिवाय इसके कि स्त्री अपना यह अधिकार क्षमा कर दे इस स्थिति में पति को कुछ भी नहीं देना पड़ेगा।

[2]इससे तात्पर्य पति है क्योंकि विवाह की गाँठ (इसका तोड़ना अथवा स्थापित रखना) उसके हाथ में है। यह आधा महर क्षमा कर दे अर्थात अदा की हुई महर में से आधा महर वापस लेने के बजाय अपना यह अधिकार (आधा महर) क्षमा कर दे और पूरा महर स्त्री को दे दे। इससे कृपा और उपकार को आपस में न भूलने पर भी बल दिया गया है तथा महर में भी इसी कृपा और उपकार के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी गयी है।

टिप्पणी : कुछ ने بيده عقدة النكاح से स्त्री का संरक्षक अर्थ लिया है अर्थात स्त्री क्षमा कर दे अथवा उसका संरक्षक क्षमा कर दे। परन्तु यह ठीक नहीं है। एक तो स्त्री के संरक्षक

The Ummah Technology Mission

الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٣٧﴾

कर देना संयम से अतिनिकट है तथा परस्पर परोपकार को न भूलो। नि:सन्देह अल्लाह (तआला) तुम्हारे कर्मों को देख रहा है।

حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ ﴿٢٣٨﴾

(२३८) नमाज़ों की सुरक्षा करो विशेषकर मध्यवाली नमाज़ की।[1] और अल्लाह (तआला) के लिए नम्रता पूर्वक खड़े रहा करो।

فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكْبَانًا ۖ فَإِذَا أَمِنتُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَمَا

(२३९) यदि तुम्हें भय हो तो पैदल ही अथवा सवार ही सहीह, और यदि शान्ति हो जाये तो अल्लाह (तआला) की महिमा का वर्णन करो

के हाथ में विवाह की गाँठ नहीं दूसरे महर का अधिकार स्त्री को है, और उसका माल है। उसको क्षमा करने का अधिकार उसके संरक्षक को नहीं है। इसलिए वही व्याख्या उचित है, जो पहले की जा चुकी है। (फ़तहुल क़दीर)

विशेष स्पष्टीकरण : तलाक़ प्राप्त स्त्रियाँ चार प्रकार की होती हैं।

(१) जिनका महर भी निर्धारित है, पति ने सम्भोग भी किया है, उनको पूरा महर दिया जायेगा, जैसाकि आयत संख्या २२९ में इसका विस्तृत विवरण है।

(२) जिनका महर भी निर्धारित नहीं और पति के द्वारा सम्भोग भी नहीं किया गया, उनको केवल तलाक़ का लाभ दिया जायेगा।

(३) जिनका महर निर्धारित है, परन्तु सम्भोग नहीं किया गया, उनको आधा महर देना अनिवार्य है (इन दोनों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत आयत में है)

(४) सम्भोग तो किया गया, परन्तु महर निर्धारित नहीं है, उनके लिए समान महर है। समान महर का अर्थ है उस स्त्री के समुदाय में जो सामान्य प्रचलन हो अथवा उस जैसी स्त्री के लिए सामान्य रुप से जो महर निर्धारित किया जाता है (नैलुल अवतार व औनुल माबूद)

[1]मध्य वाली नमाज़ से तात्पर्य अस्र (अपरान्ह की) नमाज़ है, जिसको इस हदीस रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आधार पर निर्धारित कर दिया गया है, जो ख़न्दक युद्ध वाले दिन अस्र की नमाज़ को صلوة وسطى कहा है। (सहीह बुख़ारी किताबुल जिहाद संख्या ४५२२, मुस्लिम ४३७)

The Ummah Technology Mission

عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٩﴾

जिस प्रकार कि उसने तुम्हें उस बात की शिक्षा दी है, जिसे तुम नहीं जानते थे।[1]

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ أَزْوَاجًا ۖ وَّصِيَّةً لِّأَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ إِخْرَاجٍ ۚ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا فَعَلْنَ فِيْ أَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٤٠﴾

(२४०) और जो तुम में से मर जायें और पत्नियाँ छोड़ जाये, वह वसीयत कर जायें कि उनकी पत्नियाँ वर्ष भर लाभ उठायें।[2] उन्हें कोई न निकाले, और यदि वे स्वयं निकल जायें तो तुम पर इसमें कोई पाप नहीं जो वह अपने लिए अच्छाई से करें अल्लाह (तआला) प्रभावी और विज्ञानी है।

وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوْفِ ۖ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٤١﴾

(२४१) तलाक़ दी हुई (विवाह विच्छेदित) स्त्रियों को भली प्रकार लाभ पहुँचाना सदाचारियों पर अनिवार्य है।[3]

---

[1]अर्थात शत्रु से भय के कारण जिस प्रकार भी संभव हो, पैदल चलते हुए, सवारी पर बैठे हुए नमाज पढ़ लो, परन्तु जब भय की स्थिति समाप्त हो जाये तो उसी प्रकार नमाज पढ़ो, जिस प्रकार सिखलाया गया है।

[2]यह आयत यद्यपि क्रमानुसार पश्चात की है परन्तु निरस्त है इसकी निरस्तकारी आयत प्रथम आ चुकी है जिसमें मृत्यु की इद्दत (गर्णा अवधि) चार महीना दस दिन बताई गई है, इस के सिवाय उत्तराधिकार की आयत (निर्देश) ने पत्नी का भाग निर्धारित कर दिया है अत: अब पति को पत्नी के लिए वसीयत (उत्तरदान) करने की कोई आवश्यकता नहीं रही न आवास तथा न पालन पोषण की।

[3]यह साधारण आदेश है जिसमें प्रत्येक तलाक़ प्राप्त नारी सम्मिलित है। अलगाव के समय जिस प्रकार के शुभ व्यवहार एवं सन्तावना पर बल दिया गया है, उसके अंगणित समाजिक लाभ हैं। काश मुसलमान इस अति महत्वपूर्ण शिक्षा का पालन करते, जिसे उन्होंने बिल्कुल भुला दिया है। आधुनिक (धर्मगुरुओं) ने مَتاع और مَتعوهُنّ से यह अर्थ निकाला है कि तलाक़ दी हुई स्त्री को जायदाद में से भाग दो अथवा आजीवन उसका पालन पोषण करो। यह दोनो बातें निर्धार हैं, भला जिस स्त्री को पुरुष ने अपने जीवन से पसंद न होने के कारण निकाल दिया, वह उसे आजीवन पोषण को किस प्रकार अदा करने को तैयार होगा।

The Ummah Technology Mission

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٤٢﴾

(२४२) इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों (आदेशों) का वर्णन करता है ताकि तुम समझो।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ص فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ق ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ط اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٢٤٣﴾

(२४३) क्या तुमने उन्हें नहीं देखा जो हज़ारों की संख्या में मरणमय के कारण अपने घरों से निकल पड़े अल्लाह ने उनसे कहा कि मर जाओ फिर उन्हें जीवित कर दिया।[1] नि:सन्देह अल्लाह लोगों पर अतिकृपालु है किन्तु प्राय: लोग कृतज्ञता नहीं करते।

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٤﴾

(२४४) तथा अल्लाह के मार्ग में लड़ो तथा यह जान लो कि अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है।

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا

(२४५) कौन अल्लाह को अच्छा उधार देगा[2] जिसे वह फिर उसे कई गुना अधिक प्रदान

---

[1]यह घटना किसी विगत समुदाय की है, जिसका विवरण किसी हदीस में नहीं मिलता भाष्यकारों के अनुसार इसे इस्राईल की पुत्रों के समय की घटना और पैग़म्बर का नाम, जिसकी प्रार्थना से अल्लाह तआला ने उन्हें पुर्नजीवित किया 'हिज़क़ील' वतलाया गया है। यह जिहाद में हत्या के भय से अथवा प्लेग की महामारी के भय से अपने घरों से निकल भागे थे, ताकि मरने से बच जायें। अल्लाह तआला ने उन्हें मार कर यह सिद्ध कर दिया कि तुम अल्लाह की पकड़ से बच नहीं सकते, दूसरे यह कि मनुष्यों की अन्तिम शरणागार अल्लाह तआला की ओर है, तीसरे यह कि अल्लाह तआला पुर्नजीवित करने का सामर्थ्य रखता है और वह इसी प्रकार एक बार पुन: सभी मनुष्यों को जीवित करेगा, जिस प्रकार अल्लाह तआला ने मारकर उनको पुन: जीवित किया। अगली आयत में मुसलमानों को धर्मयुद्ध का आदेश दिया जा रहा है, इससे पहले इस आयत में इस घटना का वर्णन करने की यह बुद्धिमत्ता है कि धर्मयुद्ध से मत भागो क्योंकि मृत्यु और जीवन अल्लाह के अधिकार में है और उसका समय भी निर्धारित है, जिसे धर्मयुद्ध से मुँह मोड़ कर भी तुम टाल नहीं सकते।

[2]अच्छे उधार से तात्पर्य अल्लाह के मार्ग में तथा धर्मयुद्ध में धन दान करना है अर्थात प्राण की भाँति धन देने में भी संकोच न करो। धन में बढ़ोत्तरी एवं कमी भी अल्लाह के

The Ummah Technology Mission

كَثِيْرَةً ۗ وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ ۠ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٤٥﴾

करेगा तथा अल्लाह ही कमी एवं अधिकता करता है तथा तुम उसी की ओर पुन: जाओगे।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى ۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ

(२४६) क्या आपने इस्राईल के वंश की "मूसा" के पश्चात के समुदायों को नहीं देखा[1] जब उन्होंने अपने नबी (ईशदूत) से कहा कि हमारा एक राजा बना दीजिये[2] ताकि

अधिकार में है। और वह दोनों तरह से तुम्हारी परीक्षा लेता है। कभी धन में बढ़ोत्तरी करके और कभी धन में कमी करके। फिर अल्लाह के मार्ग में खर्च करने से कमी भी नहीं होती है, अल्लाह तआला इसमें कई-कई गुना बढ़ोत्तरी करता है। कभी प्रत्यक्ष रुप से कभी आंत्रिक एवं अध्यात्मिक रुप से, तथा परलोक में तो निश्चय उसमें अधिकता आश्चर्य चकित होगी।

[1] ٥٤ किसी समुदाय के उन सम्मानित व्यक्ति, सरदार और सरपंच लोगों को कहा जाता है, जो विशेष सलाहकार एवं दृत होते हैं, जिनके देखने से आँखें और दिल प्रभावित होते हैं (٥٤ का शाब्दिक अर्थ भरने के हैं) (ऐसरूत्तफासीर) जिस पैगम्बर का वर्णन यहाँ है, उसे शमुऐल बताया जाता है। इब्ने कसीर आदि व्याख्याकारों ने जिस घटना का वर्णन किया है उसका सारांश यह है कि इस्राईल की सन्तान आदरणीय मूसा के पश्चात कुछ समय तक तो ठीक रही फिर वे भटक गयीं, धर्म में नई-नई बातों को प्रविष्ट करने लगी, यहाँ तक कि मूर्तिपूजा प्रारम्भ कर दी। नबियों ने उनको रोका, परन्तु यह पाप और मूर्तिपूजा से नही रुके। इसके परिणाम स्वरुप उनके शत्रु को उनके ऊपर आसीन कर दिया, जिन्होंने उनके क्षेत्र भी छीन लिए और उनकी बड़ी संख्या को बन्दी भी बना लिया, इनमें नबियों की श्रृंखला भी टूट गयी, अन्तत: कुछ लोगों की प्रार्थना से शमुऐल पैदा हुए, जिन्होंने धर्म का आमन्त्रण एवं प्रचार का कार्य प्रारम्भ किया। उन्होंने पैग़म्बर से माँग की कि हमारे लिए एक राजा पदासीन करा दे, जिसके नेतृत्व में हम अपने शत्रुओं से लड़ें। पैग़म्बर ने उनके भूत के कर्मों के आधार पर कहा कि तुम माँग तो कर रहे हो, परन्तु मेरा अनुमान है कि तुम अपनी बात पर अटल नहीं रहोगे, अत: ऐसा ही हुआ जैसाकि क़ुरआन में वर्णन है।

[2] ईशदूत की उपस्थिति में राजा पदासीन करने की माँग राज के उचित होने का प्रमाण है। क्योंकि यदि राज शासन उचित न होता तो अल्लाह तआला इस माँग को रद्द कर देता। अपितु उनके लिए तालूत को राजा पदासीन किया जैसाकि अगली आयत में है।

The Ummah Technology Mission

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ
اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا
تُقَاتِلُوْا ؕ قَالُوْا وَمَا لَنَآ اَلَّا
نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا
مِنْ دِيَارِنَا وَاَبْنَآئِنَا ؕ فَلَمَّا
كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا
اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ
بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٤٦﴾

हम अल्लाह के मार्ग में लड़ें उन्होंने कहा कि हो सकता है कि धर्मयुद्ध (जिहाद) अनिवार्य हो जाने के पश्चात, तुम धर्मयुद्ध (जिहाद) न करो | उन्होंने कहा कि भला हम अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध (जिहाद) क्यों न करेंगे ? हम तो अपने घरों से उजाड़े गये हैं और सन्तानों से दूर कर दिये गये हैं | फिर जब उन पर धर्मयुद्ध अनिवार्य हुआ, तो सिवाय थोड़े से व्यक्तियों के सब फिर गये और अल्लाह (तआला) अत्याचारियों को अच्छी तरह से जानता है |

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ
لَكُمْ طَالُوْتَ مَلِكًا ؕ قَالُوْٓا اَنّٰى يَكُوْنُ
لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ اَحَقُّ
بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ
الْمَالِ ؕ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىهُ
عَلَيْكُمْ وَزَادَهٗ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ
وَالْجِسْمِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤْتِيْ مُلْكَهٗ مَنْ
يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٧﴾

(२४७) और उनसे उनके नबी ने कहा कि अल्लाह (तआला) ने तालूत (यह एक नाम है) को तुम्हारा सम्राट बना दिया है, तो कहने लगे भला उसका हम पर राज्य कैसे हो सकता है, उससे बहुत अधिक राज्य के अधिकारी हम हैं, उसको तो धन की अधिकता भी नहीं प्रदान की गयी है | उस (नबी) ने कहा सुनो | अल्लाह (तआला) ने उसको तुम पर प्रधानता दी है | और उसे ज्ञान एवं शारीरिक बल भी अत्यधिक प्रदान किया है |[1]

[1]आदरणीय तालूत उस वंश से नहीं थे, जिससे इस्राईल की सन्तानों के बादशाहों की श्रृंखला चली आ रही थी | यह निर्धन और एक सामान्य सेनानी थे, जिस पर उन्होने आपत्ति उठायी थी | पैग़म्बर ने कहा कि यह मेरा चुनाव नहीं है | अल्लाह तआला ने उन्हें नियुक्त किया है | फिर भी नेतृत्व के लिए धन से अधिक बुद्धिमता, ज्ञान एवं शारीरिक शक्ति की आवश्यकता है | और तालूत इसमें तुम सभी से श्रेष्ठ हैं, इसलिए अल्लाह ने उन्हें इस पद के लिए चुन लिया है | वह अत्यधिक कृपालु है, जिसको चाहता है अपनी कृपा प्रदान करता है | عَلِيم है अर्थात वह जानता है कि राजाधिकार का अधिकारी कौन है और कौन नहीं है | प्रतीत होता है कि जब उन्हें ज्ञात हुआ कि यह

The Ummah Technology Mission

वास्तविक बात यह है कि अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपना राज्य दे, अल्लाह (तआला) विशाल धन-धान्य से परिपूर्ण एवं ज्ञान वाला है।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ

(२४८) तथा उनके नबी ने फिर उनसे कहा, उसकी राज्य की स्पष्ट निशानी यह है कि तुम्हारे पास वह सन्दूक आ जायेगा[1] जिसमें

नियुक्ति अल्लाह तआला की ओर से है, तो इसके लिए उन्होंने कोई अन्य चिन्ह की माँग की कि उनके दिलों को संतोष हो जाये। इसी कारण अगली आयत में एक और अन्य लक्षण का वर्णन है।

[1]सन्दूक अर्थात तावूत, जो तोव से है, जिसके अर्थ पलटने के हैं, क्योंकि इस्राईल की सन्तान प्रसाद के लिए इसकी ओर पलटते थे। (फ़तहुल क़दीर) इस तावूत में आदरणीय मूसा व हारुन अलैहिस्सलाम की पवित्र वस्तुऐं थीं, यह तावूत भी उनके शत्रु उनसे छीन कर ले गये थे। यह तावूत अल्लाह तआला ने निशानी के रुप में फ़रिश्तों के द्वारा आदरणीय तालूत के घर के द्वार पर रखवा दिया। इसे देखकर इस्राईल की सन्तानें प्रसन्न भी हुईं और इसे अल्लाह तआला की ओर से निशानी मानकर आदरणीय तालूत को अपना राजा मान लिया और अल्लाह तआला ने भी इसे उनके लिए एक चमत्कार (आयत) एवं विजय तथा संतोष का कारण बना दिया سَكِينَةٌ का अर्थ ही अल्लाह तआला की ओर से विशेष सहायता का उतरना जिसे वह अपने विशेष भक्तों पर उतारता है जिसके कारण भयंकर रण में जब बड़े-बड़े योद्धाओं के दिल काँप जाते हैं तो ईमानवालों के दिल शत्रु के भय एवं धाक से शून्य और विजय तथा सफलता की आशा से परिपूर्ण होते हैं। इससे ज्ञात हुआ कि नबियों और महात्माओं की अवशेष अल्लाह की आज्ञा से अवश्य विशेषता और उपयोगिता रखती हैं, परन्तु यह आवश्यक है कि वह सही रुप से उनकी (तवर्रूकात) हो। जिस प्रकार इस तावूत में वास्तव में आदरणीय मूसा एवं हारुन की पवित्र वस्तुएं थी। परन्तु जिस प्रकार आजकल विभिन्न स्थानों पर पवित्र अवशेष कहकर कई वस्तुएं हैं, जिनका कोई इतिहासिक प्रमाण पूर्ण रुप से सिद्ध नहीं होता। इसी प्रकार स्वंय बनायी गयी वस्तुओं से भी कुछ प्राप्त नहीं हो सकता। जिस प्रकार से कुछ लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जूते के समान बनाकर अपने पास रखने को अथवा घरों में लटकाने को अथवा विशेष रुप से बनाकर कष्ट निवारण तथा मनोकामना पूरी करने वाला समझते हैं। इसी प्रकार क़ब्रों पर महात्माओं के नामों के चढ़ावे को पवित्र वस्तु और वहाँ के सामान्य भोज को पवित्र वस्तु समझते हैं। जबकि यह अल्लाह के अतिरिक्त अन्य पर चढ़ावा हैं, जो शिर्क की परिधि में आता है। इसको खाना

The Ummah Technology Mission

مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَاٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٢٤٨

तुम्हारे प्रभु की ओर से दिल की स्थिरता की सामग्री है और मूसा की सन्तान, एवं हारुन की सन्तान का शेष छोड़ा हुआ सामान है, फ़रिश्ते उसे उठाकर लायेंगे। नि:सन्देह यह तो तुम्हारे लिए स्पष्ट निशानी है, यदि तुम ईमानदार हो।

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِيْكُمْ بِنَهَرٍ ۚ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّيْٓ اِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً ۢ بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ فَلَمَّا جَاوَزَهٗ هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوْتَ

(२४९) फिर जब तालूत सेना लेकर निकले तो कहा सुनो एक नदी[1] द्वारा अल्लाह को तुम्हारी परीक्षा लेनी है तो जो उससे जल पियेगा वह मेरा नहीं तथा जो उसमें से न चखे वह मेरा है यह और बात है कि अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले तो कुछ के सिवाय शेष सभी ने जल पी लिया,[2] (आदरणीय) तालूत जब नदी से पार हो गये तथा जो उनके साथ ईमानदार थे तो उन्होंने कहा कि

विशेषरुप से हराम है, क़ब्रों को स्नान कराया जाता है और उसका पानी पवित्र समझा जाता है, हालांकि क़ब्रों को स्नान कराना खाना-ए-काअबा के स्नान की नक़ल है, जो किसी प्रकार से उचित नहीं है, और यह अशुद्ध पानी पवित्र कैसे हो सकता है, यह सभी बातें अनुचित हैं, इनका धार्मिक नियमों में कोई प्रविधान नहीं है।

[1]यह नदी जार्डन और फ़िलस्तीन के मध्य है। (इब्ने कसीर)

[2]नायक के आदेशों का पालन आवश्यक है, और जब शत्रु के साथ युद्ध हो, तो उसकी यह विशेषता दो गुनी होती है, बल्कि सौ गुनी हो जाती है। दूसरे युद्ध के समय सेना को आवश्यक है कि अपनी भूख प्यास तथा अन्य कठिनाइयों पर धैर्य रखे। इसलिए इन दोनों बातों की शिक्षा एवं परीक्षा के लिए तालूत ने कहा कि तुम्हारी पहली परीक्षा नदी में होगी, जिसने पानी पी लिया उसका मेरे साथ कोई सम्बन्ध नहीं होगा, परन्तु इस चेतावनी के बाद भी अधिकतर लोगों ने पानी पी लिया। इनकी संख्या के विषय में व्याख्याकारों में मतभेद है। इस प्रकार न पीने वालों की संख्या ३१३ बतायी गई है, जो रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा (साथियों) की संख्या बद्र नामक स्थान पर हुए युद्ध के समय थी। والله أعلم

The Ummah Technology Mission

وَجُنُوْدِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ
اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ
قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةًۢ
بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝٢٤٩

आज तो हममें बल नहीं की जालूत तथा उसकी सेनाओं से लड़ें,[1] किन्तु जिन्हे अल्लाह से मिलने पर विश्वास था उन्होंने कहा, कि बहुत से अल्प समूह अल्लाह की आज्ञा से भारी समूहों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं तथा अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।

وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ
قَالُوْا رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا
وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى
الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝٢٥٠

(२५०) और जब उनका जालूत तथा उसकी सेनाओं से मुक़ाबला हुआ, तो उन्होंने प्रार्थना की, हे हमारे पालनहार ! हमें धैर्य प्रदान कर एवं अडिग बना दे तथा काफ़िर वर्ग पर हमारी सहायता कर।[2]

فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۙ وَقَتَلَ
دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ

(२५१) अत: उन्हें अल्लाह की आज्ञा से पराजित कर दिया तथा दाऊद ने जालूत का

---

[1]इन ईमान वालों ने भी जब प्रारम्भ में शत्रु की बहुत बड़ी संख्या देखी, तो अपनी कम संख्या को देखते हुए इस बात को स्पष्ट किया। जिस पर उनके ज्ञानियों और उनसे अधिक ईमान रखने वालों ने कहा कि सफलता, संख्या में अधिकता तथा हथियार के आधार पर नहीं मिलती, बल्कि अल्लाह तआला की इच्छा पर आधारित है और अल्लाह तआला का समर्थन प्राप्त करने के लिए धैर्य का होना आवश्यक है।

[2]जालूत उस शत्रु समुदाय का सेना नायक था, जिससे तालूत और साथियों का मुक़ाबला था, यह अमालक़ा की जाति थी, जो अपने समय में योद्धा एवं वीर लोग समझे जाते थे। उनकी इसी प्रसिद्धता के कारण ठीक युद्ध के समय में ईमानवालों ने अल्लाह के दरबार में धैर्य एवं दृढ़ता के लिए और कुफ़्र के सामने ईमानवालों को विजय एवं सफलता की प्रार्थना की। अर्थात भौतिक कारणों के साथ-साथ ईमानवालों के लिए आवश्यक है कि वह अल्लाह की ओर से सफलता तथा विजय के लिए विशेष रुप से प्रार्थना करें, जिस प्रकार बद्र के युद्ध के समय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह के दरबार में बड़ी आग्रहता एवं विनम्रता से विजय एवं सफलता के लिए प्रार्थना की थी, जिसे अल्लाह तआला ने स्वीकार किया जिसके कारण मुसलमानों की छोटी सी संख्या ने काफ़िरों की बहुत बड़ी संख्या पर विजय प्राप्त किया।

The Ummah Technology Mission

वध कर दिया[1] तथा अल्लाह ने उसे राज्य एवं विधान[2] तथा जितना चाहा ज्ञान भी प्रदान किया । तथा यदि अल्लाह कुछ लोगों को दूसरे गरोह से हटाता न रहता तो धरती में विकार फैल जाता, किन्तु अल्लाह संसार के लोगों पर बड़ा दया निधि है ।[3]

الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۵۱﴾

(२५२) यह अल्लाह की आयतें (सूत्र) हैं जिन्हें हम आप पर सत्य के साथ पढ़ते हैं और निश्चय ही आप रसूलों (ईशदूतों) में से हैं ।[4]

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۲۵۲﴾

---

[1]आदरणीय दाऊद जो अभी न पैग़म्बर थे और न बादशाह, इस तालूत की सेना में एक साधारण फ़ौजी थे । उनके हाथों जालूत मारा गया और इस थोड़े से ईमानवालों को बड़ी क़ुरवीर एवं योद्धा जाति पर विजय दिलवाई ।

[2]इसके बाद अल्लाह तआला ने आदरणीय दाऊद को बादशाहत और नबूवत दोनों प्रदान किया ।

[3]इसमें अल्लाह के एक नियम की चर्चा है कि वह मानवगण ही के एक समुदाय द्वारा दूसरे समुदाय के अत्याचार तथा प्रभुत्व को समाप्त करता रहता है यदि वह ऐसा न करता और किसी एक ही समुदाय को सदा बल एवं अधिकार का सौभाग्य दिये रहता तो यह धरती अत्याचार तथा विकार से भर जाती अत: अल्लाह का यह नियम संसार वासियों के लिए अल्लाह की दया का विशेष सूचक है, इसकी चर्चा *सूर:हज* की आयत न० ३० तथा ४० में भी की है ।

[4]यह विगत घटनायें जिनका ज्ञान आप पर अवतरित धर्मशास्त्र (पवित्र क़ुरआन) द्वारा संसार को हो रहा है, हे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) निश्चय आपकी नबूअत और सत्यता का प्रमाण हैं, इनका अध्ययन न किसी पुस्तक में किया है न किसी से सुना है, जिससे स्पष्ट है कि यह परोक्ष की सूचनायें हैं जो प्रकाशना (ईशवाणी) द्वारा अल्लाह आप पर उतार रहा है, पवित्र ईशवाणी क़ुरआन के कई स्थानों पर समुदायों की घटनाओं के वर्णन को आप की सत्यता के प्रमाण स्वरुप प्रस्तुत किया गया है ।

The Ummah Technology Mission

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ
عَلَىٰ بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ
كَلَّمَ اللَّهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ۭ
وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ
وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۭ
وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ
مِنْۢ بَعْدِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ
مَا جَاۗءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ
اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ
مَّنْ كَفَرَ ۭ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا

(२५३) यह रसूल हैं, जिनमें से हमने कुछ को कुछ पर श्रेष्ठता दी है।[1] उनमें से कुछ हैं जिनसे अल्लाह (तआला) ने बात की है और कुछ की श्रेणी उच्च की है। और हमने ईसा पुत्र मरियम को चमत्कार प्रदान किये और पवित्र आत्मा से उनका समर्थन कराया।[2] यदि अल्लाह (तआला) चाहता तो उनके बाद वाले अपने पास निशानियाँ आ जाने के पश्चात आपस में कदापि लड़ाई-भिड़ाई न करते, परन्तु उन लोगों ने मतभेद किया, उनमें से कुछ ने विश्वास किया और कुछ विश्वासहीन हुए, और यदि अल्लाह (तआला) चाहता तो

---

[1] क़ुरआन ने एक दूसरे स्थान पर भी इसे वर्णित किया है।

﴿ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰي بَعْضٍ ﴾ (बनी इस्राईल-५५)

इसलिये इस वास्तविकता में तो कोई शंका नहीं। परन्तु *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया है।

«لا تخيروني من بين الأنبياء»

"तुम मुझे नबियों पर श्रेष्ठता मत दो।" (सहीह बुख़ारी एवं मुस्लिम)

तो इससे एक की दूसरे पर श्रेष्ठता का इंकार आवश्यक नहीं, बल्कि इस उम्मत को नबियों के प्रति आदर-सम्मान की शिक्षा दी गई है। और यह कि तुम्हें चूँकि उन विशेषताओं का, जिनके आधार पर श्रेष्ठता दी गयी है, उनका पूरा ज्ञान नहीं है, इसलिए तुम मेरी भी विशेषताओं की तुलनात्मक व्याख्या न करो, जिससे उन नबियों के सम्मान में कमी हो। वरन् कुछ नबियों की कुछ पर श्रेष्ठता और सभी पैग़म्बरों पर *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की श्रेष्ठता और महानता अहले सुन्नत का विश्वास है, जिनकी सुन्नत की किताबों से पुष्टि होती है। (विस्तृत जानकारी के लिए फ़तहुल क़दीर लिल शौकानी देखिये)

[2] तात्पर्य वह चमत्कार हैं, जो आदरणीय ईसा को प्रदान किये गये थे। जैसे मरे हुए को जिलाना आदि जिसका विवरण *सूरः आले इमरान* में आयेगा। पवित्र आत्मा से तात्पर्य जिब्रील है, जैसाकि पहले भी गुज़र चुका है।

The Ummah Technology Mission

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿٢٥٣﴾

यह आपस में न लड़ते।[1] परन्तु अल्लाह (तआला) जो चाहता है, करता है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ۭ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٥٤﴾

(२५४) हे ईमानवालो ! जो हमने तुम्हें दे रखा है, उसमें से ख़र्च करते रहो। इससे पहले कि वह दिन आये जिस दिन न व्यापार है, न मित्रता और न शिफ़ाअत,[2] और विश्वासहीन ही अत्याचारी हैं।

---

[1]इस विषय को अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में कई स्थान पर वर्णित किया है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि अल्लाह तआला के द्वारा उतारे हुए धर्म में अल्लाह की पसन्द मतभेद है। यह अल्लाह को कदापि प्रिय नहीं है। उसकी पसन्द (प्रसन्नता) तो यह है कि सभी मनुष्य उसके द्वारा उतारे गये नियमों का पालन करके नरक की अग्नि से अपने आपको बचायें। इसीलिये उसने किताबें उतारीं और नबियों की श्रृंखला स्थापित की। यहाँ तक कि *नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* पर रिसालत समाप्त कर दी)। फिर भी अपने धर्मराजों, ज्ञानियों तथा धर्म के प्रचारकों के द्वारा सत्य की ओर निमन्त्रण के लिये एवं पुण्य के आदेश एवं पाप के कार्यों से रोकने के लिये एक श्रृंखला अब भी जारी है। इसकी अति आवश्यकता को वर्णित किया गया। किसलिए ? इसलिये कि लोग अल्लाह के प्रिय मार्ग को अपनायें, किन्तु उसने संमार्ग और कुमार्ग बताकर मनुष्य को किसी एक मार्ग पर चलने के लिये बाध्य नहीं किया है, वरन् परीक्षा के लिये उसे अधिकार एवं विचारों की स्वतन्त्रता दी है, इसलिये कोई इस अधिकार का सही प्रयोग करके मुसलमान बन जाता है और कोई इस अधिकार एवं आधीनता का दुरूपयोग करके विश्वासहीन बन जाता है, यह उसकी इच्छा एवं चाहत है, जो उसकी प्रसन्नता से विभिन्न विषय है।

[2]यहूदी और इसाई कृतघ्न और मिश्रणवादी अपने-अपने प्रमुखों ऋषियों, पुण्यात्माओं, नबियों, महात्माओं, गुरूओं के बारे में यही विश्वास रखते हैं कि अल्लाह तआला पर उनका इतना प्रभाव है कि वह अपने अनुयायियों के लिये जो बात चाहें अल्लाह तआला से मनवा सकते हैं और मनवा लेते हैं। इसी को वह शिफ़ाअत (अभिस्ताव) कहते हैं। अर्थात उनका लगभग वही विश्वास है, जो आजकल के अशिक्षितों का है कि हमारे महात्मा अल्लाह तआला के सामने अड़कर बैठ जायेंगे और क्षमा कराके उठेंगे। इस आयत में बताया गया है कि इस प्रकार के अभिस्ताव का अल्लाह के यहाँ कोई अस्तित्व नहीं है। फिर इसके बाद आयतुल कुर्सी और दूसरी अन्य आयतों एवं हदीसों में बताया गया कि अल्लाह तआला के यहाँ एक दूसरी प्रकार का (क्षमादान) सिफ़ारिश होगी, परन्तु यह सिफ़ारिश वही लोग करा सकेंगे, जिन्हें अल्लाह तआला अनुमति देगा और केवल उस भक्त के

The Ummah Technology Mission

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا یَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ﴿۲۵۵﴾

(२५५) अल्लाह (तआला) ही सत्य पूज्य है, जिसके सिवाये कोई अराध्य नहीं, जो जीवित है, एवं सबका सहायक आधार है, जिसे न ऊँघ आये न निद्रा उसके आधीन धरती और आकाश की सभी चीज़ें हैं, कौन है, जो उसकी आज्ञा के बिना उसके सामने शिफ़ाअत कर सके, वह जानता है, जो उनके सामने हैं, जो उनके पीछे हैं। और वह उसके ज्ञान में से किसी चीज़ का घेरा नहीं कर सकते, परन्तु वह जितना चाहे।[1] उसकी कुर्सी की परिधि ने धरती और आकाश को घेर रखा है। वह

लिए कर सकेंगे, जिसके लिये अल्लाह तआला आज्ञा प्रदान करेगा और अल्लाह तआला केवल मात्र एकेश्वरवादियों के लिए ही आज्ञा देगा। यह सिफ़ारिश फ़रिश्ते भी करेंगे नबी और रसूल भी, शहीद और पुण्य आत्मा भी, परन्तु अल्लाह पर उन सभी में से किसी का भी, प्रभाव न होगा। इसके विपरीत वह स्वयं अल्लाह तआला के भय से इतने भयभीत होंगे कि उनके चेहरे के रंग उड़े होंगे।

﴿وَلَا یَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰی وَهُمْ مِّنْ خَشْیَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ﴾

"वे उसी के लिये सिफ़ारिश करेंगे जिससे वह प्रसन्न हो, और वह उसके भय से भयभीत रहेंगे।" (सूरह अल-अम्बिया:२८)

[1]यह आयतुल कुर्सी है। सहीह हदीसों में इसका बहुत महत्व वर्णन किया गया है। जैसे यह क़ुरआन की सबसे उच्च आयत है। इसको रात्रि को पढ़ने से शैतान से सुरक्षा रहती है। इसको प्रत्येक नमाज़ के पश्चात पढ़ना चाहिए। (इब्ने कसीर)

कुर्सी से कुछ ने पैर रखने का स्थान, कुछ ने सामर्थ्य, कुछ ने राज्य, और कुछ ने अर्श अर्थ लिया है। परन्तु अल्लाह तआला की महानता एवं विशेषताओं के विषय में मोहद्दिसों (हदीस के ज्ञानी) और पूर्वजों का यही मत है कि अल्लाह तआला की जो विशेषतायें, जिस प्रकार से क़ुरआन और हदीस में वर्णित हैं, उनको बिना किसी तर्क-वितर्क के, उन पर ईमान रखा जाये, इसलिए यही ईमान रखना चाहिए कि वास्तव में कुर्सी है, जो अर्श से भिन्न है। यह किस प्रकार की है, इस पर वह किस प्रकार बैठता है? इसका वर्णन हम नहीं कर सकते क्योंकि इसकी भौतिकता एवं वास्तविकता के विषय में हमें ज्ञान नहीं है।

The Ummah Technology Mission

अल्लाह (तआला) उनकी सुरक्षा से न थकता है और न ऊबता है। वह तो बहुत महान और बहुत बड़ा है।

لَآ إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ ۖ قَد تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَن يَكْفُرْ

(२५६) धर्म के विषय में कोई दबाव नहीं, सत्य-असत्य से अलग हो गया,[1] इसलिये जो

---

[1]इस आयत के उतरने के कारणों को बताया गया कि अंसार के कुछ युवक यहूदी और इसाई हो गये थे, जब यह अंसार मुसलमान हुए, तो उन्होंने अपने युवकों पर (जो उनकी संतानें थीं) जो इसाई अथवा यहूदी हो चुके थे, बल दिया कि वह मुसलमान हो जायें। जिस पर यह आयत उतरी। कुछ व्याख्याकारों ने इसे अहले किताब के लिये विशेष माना है, अर्थात यदि मुसलमानों के राज्य में अहले किताब रहते हैं, यदि वह जिजया (शरणागत कर) देते हैं, तो उन्हें इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिये बाध्य नहीं किया जा सकता। परन्तु यह आयत आदेश के अनुसार सामान्य है, अर्थात किसी को भी इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिये बाध्य नहीं किया जा सकता। क्योंकि अल्लाह तआला ने संमार्ग और कुमार्ग दोनों को स्पष्ट कर दिया है। परन्तु कुफ़्र और शिर्क के प्रभाव को कम करने के लिये युद्ध तथा बाध्य करना भिन्न बात है। उद्देश्य यह है कि समाज से उस शक्ति को क्षीण और प्रभाव को समाप्त करना है जो अल्लाह के धर्मानुसार कर्म और उसके प्रचार में रूकावट बनती है। ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार चाहे तो कुफ़्र के मार्ग पर चले अथवा इस्लाम धर्म स्वीकार कर ले। चूँकि रूकावट बनने वाली शक्तियाँ समय-समय पर उभरती रहेंगी इसलिये धर्मयुद्ध का आदेश और उसकी आवश्यकता प्रलय तक पड़ती रहेगी। जैसाकि हदीस में है «الجِهَادُ مَاضٍ إِلَىٰ يَومِ القِيٰمَةِ» (धर्मयुद्ध क़ियामत तक जारी रहेगा) स्वयं *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने काफ़िरों और मूर्तिपूजकों से धर्मयुद्ध किया है और फ़रमाया :

«أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَشْهَدُوا».

"मुझे आदेश दिया गया है कि मैं लोगों के साथ उस समय तक धर्मयद्ध करूँ, जब तक वह لا إلـه الا الله और محمد رسول الله को स्वीकार न कर लें।" अल-हदीस (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब फ़इन ताबू अव अक़ामुस्सलात)

इसी प्रकार इस्लाम से फिर जाने के दण्ड (हत्या) से भी इस आयत का टकराव नहीं है (जैसाकि कुछ लोग सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं) क्योंकि इस्लाम धर्म से लौटनें पर जो मृत्युदण्ड दिया गया है वह बाध्य करना नहीं है। बल्कि इस्लामी राज्य के विचारों की स्थिति की सुरक्षा है, एक इस्लामी राज्य में काफ़िर को अपने कुफ़्र पर रहने का अधिकार तो अवश्य है, परन्तु यदि वह एक बार इस्लाम धर्म स्वीकार कर ले तो उसे विद्रोह एवं

The Ummah Technology Mission

بِالطَّاغُوْتِ وَ يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۵۶﴾

व्यक्ति अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त अन्य देवों को नकार कर अल्लाह (तआला) पर ईमान लाये, उसने मज़बूत कड़े को थाम लिया, जो कभी भी न टूटेगा और अल्लाह (तआला) सुननेवाला, जाननेवाला है।

اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَوْلِيٰٓـئُهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۵۷﴾

(२५७) ईमानवालों का संरक्षक अल्लाह तआला स्वयं है, वह उन्हें अंधेरे से प्रकाश की ओर निकाल ले जाता है, और काफ़िरों के मित्र शैतान हैं, वह उन्हें प्रकाश से अंधकार की ओर ले जाते हैं। यह लोग नरक के वासी हैं, जो सदैव नित्य उसी में पड़े रहेंगे।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِيْ رَبِّهٖۤ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّيَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۙ قَالَ اَنَا اُحْيٖ وَ اُمِيْتُ ؕ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِيْ بِالشَّمْسِ

(२५८) क्या तूने उसे नहीं देखा, जिसने राज्य पाकर इब्राहीम (*अलैहिस्सलाम*) से उसके पालनहार के विषय में विवाद किया जब इब्राहीम ने कहा कि मेरा पोषक तो वह है जो जीवित करता एवं मारता है, वह कहने लगा, मैं भी जिलाता और मारता हूँ, इब्राहीम

विमुखता तथा अवहेलना की आज्ञा नहीं दी जा सकती, अतएव खूब सोच-विचार करके इस्लाम धर्म स्वीकार करे, क्योंकि यदि इसकी आज्ञा दे दी जाती, तो मूल विचारों का यह महल गिर जाता और दुरविचारों की बाढ़ आ जाती जो इस्लामी समाज में शान्ति को तथा राज्य के स्थाईत्व को ख़तरे में डाल सकती थी तथा जिस प्रकार मानवधिकार के नाम पर हत्या, चोरी, बलात्कार तथा डाका डालने की आज्ञा प्रदान नही की जा सकती। उसी प्रकार विचारों की स्वतन्त्रता के नाम पर इस्लामी राज्य में वैचारिक बग़ावत की आज्ञा नहीं दी जा सकती। यह बाध्यता अथवा दबाव नहीं है। बल्कि फिर जाने वाले (मूर्तिद) की हत्या उसी प्रकार न्याय संगत है, जिस प्रकार हत्या तथा चारित्रिक अपराध के करने वालों को कठोर दण्ड देना भी न्याय है। एक का उद्देश्य राज्य की वैचारिक सुरक्षा और दूसरे का उद्देश्य देश की अशान्ति से सुरक्षा है और दोनों उद्देश्य एक राज्य के लिये अति आवश्यक हैं। आज इस्लामी देश इन दोनों उद्देश्यों से विचलित होकर, जिन समस्याओं, अशान्ति और कठिनाईयों में घिरे हुए हैं, उनको बताने की आवश्यकता नहीं।

The Ummah Technology Mission

مِنَ الْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِي كَفَرَ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٢٥٨﴾

(अलैहिस्सलाम) ने कहा अल्लाह (तआला) सूर्य को पूर्व की ओर से ले आता है, तू उसे पश्चिम से ले आ। अब वह काफ़िर आश्चर्य चकित हो गया और अल्लाह (तआला) अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَىٰ قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّىٰ يُحْيِي هَٰذِهِ اللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۖ فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ ۖ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ۖ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۖ قَالَ بَل لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانظُرْ إِلَىٰ طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۖ وَانظُرْ إِلَىٰ حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ آيَةً لِّلنَّاسِ

(२५९) अथवा उस व्यक्ति के समान जिसका गमन उस बस्ती पर हुआ, जो छत के बल औंधी पड़ी हुई थी, कहने लगा उसकी मृत्यु के बाद अल्लाह (तआला) उसे किस प्रकार जीवित करेगा।[1] तो अल्लाह (तआला) ने उसे सौ वर्ष के लिये मार दिया, फिर उसे (जीवित) उठाया, पूछा, "कितनी अवधि तुझ पर व्यतीत हुई ?" उत्तर दिया कि, "एक दिन अथवा दिन का कुछ भाग।"[2] कहा कि "तू बल्कि सौ वर्ष तक रहा, फिर अब तू अपने भोजन पदार्थ को

---

[1] أَوْ كَالَّذِي का सम्बन्ध प्रथम घटना से है और अर्थ है कि आपने (पहली घटना की तरह) उस व्यक्ति की कथा पर विचार नहीं किया, जो एक बस्ती से गुज़रा। यह व्यक्ति कौन था ? इसके विषय में विभिन्न मत व्यक्त किये गये हैं। अधिक प्रसिद्ध नाम आदरणीय उज़ैर का है। जिसके कुछ सहाबा और ताबईन पक्षधर हैं। واللہ أعلم इससे पहले की घटना (आदरणीय इब्राहीम व नमरूद) में प्रतिबन्ध अल्लाह तआला का प्रमाण था और इस दूसरी घटना ने उस व्यक्ति को और उसके गधे को सौ वर्ष बाद पुर्नजीवित कर दिया यहाँ तक कि उसकी खाने-पीने की वस्तुओं को भी नष्ट नहीं होने दिया। वही अल्लाह तआला क़ियामत के दिन सभी मनुष्यों को पुर्नजीवित करेगा। जब वह सौ वर्ष पश्चात जीवित कर सकता है, तो फिर हज़ारों वर्ष पश्चात उसके लिये क्या कठिनाई है ? हमारा पूर्ण विश्वास है कि उसे कोई कठिनाई नहीं।

[2] कहा जाता है कि जब वह व्यक्ति मरा था तो थोड़ा दिन चढ़ा था, और जब वह जीवित हुआ तो भी सन्ध्या नहीं हुई थी। तो उसने अनुमान लगाया था कि यदि मैं कल आया था, तो एक दिन बीता अन्यथा दिन का कुछ भाग व्यतीत हुआ है। जबकि वास्तविकता यह है कि इसकी इस घटना की अवधि सौ वर्ष की थी।

The Ummah Technology Mission

وَانْظُرْ إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٥٩﴾

देख कि कदापि नष्ट नहीं हुआ, और अपने गधे को भी देख, हम तुझे लोगों के लिये लक्षण बनाते हैं। तू देख कि हम अस्थियों को किस प्रकार खड़ी करते हैं, फिर उन पर माँस चढ़ाते हैं।" जब यह सब स्पष्ट हो चुका, तो कहने लगा, "मैं जानता हूँ कि अल्लाह (तआला) सर्वशक्तिमान है।"[1]

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَىٰ ۖ قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِنْ ۖ

(२६०) और जब इब्राहीम (*अलैहिस्सलाम*) ने कहा, "हे मेरे प्रभु! मुझे दिखा कि तू मृतक को किस प्रकार जीवित करेगा?"[2] अल्लाह (तआला)

---

[1]अर्थात विश्वास तो मुझे पहले भी था, परन्तु अब आँखों से देखकर विश्वास एवं ज्ञान में और दृढ़ता आ गयी है।

[2]यह जीवन-मृत्यु की दूसरी घटना है, जो एक परम आदरणीय पैग़म्बर माननीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इच्छा और उनके दिल की सन्तुष्टि के लिये दिखायी गयी। चार पक्षी कौन-कौन थें? व्याख्याकारों ने विभिन्न नाम बताये हैं, परन्तु नामों के निर्धारण से कोई लाभ नहीं इसलिये अल्लाह ने भी उनके नामों का वर्णन नहीं किया। बस यह चार विभिन्न पक्षी थे فصرهن का एक अर्थ املهن किया गया है, अर्थात उनको "*हिलाले*" (परिचित करा लें) ताकि जीवित होने के बाद उनको सरलता से पहचान सकें कि यह वही पक्षी हैं और किसी प्रकार की शंका शेष न रह जाये। इस अर्थ के आधार पर यह मानना पड़ेगा कि ثم قطعهن (फिर उनके टुकड़े-टुकड़े कर लो) छिपा हुआ है दूसरा अर्थ قطعهن (टुकड़े-टुकड़े कर ले) किया गया है। इस स्थिति में विना छिपा हुआ मान कर अर्थ स्पष्ट हो जाता है। अर्थ यह है कि टुकड़े-टुकड़े करके विभिन्न पहाड़ों पर इनके भाग मिलाकर रख दे, फिर तुम आवाज दोगे तो वह जीवित होकर तुम्हारे पास आ जायेंगे। अत: ऐसा ही हुआ। कुछ आधुनिक एवं प्राचीन व्याख्याकार जो सहाबा और ताबईन की व्याख्या तथा महात्माओं (सलफ़) के विचार और नियमों को विशेषता नहीं देते فصرهن का अनुवाद "परिचित करा ले" का किया है। और उनके टुकड़े-टुकड़े करने और पहाड़ों पर उनके भाग विखेरने को और फिर अल्लाह की शक्ति से उनको जुड़ने को वह स्वीकार नहीं करते। परन्तु यह व्याख्या सही नहीं है। इससे घटना का सारा सम्मान समाप्त हो जाता है। और मरे को जीवित करने का प्रश्न ज्यों का त्यों बना रहता है। यद्यपि इस घटना के वर्णन का उद्देश्य अल्लाह तआला की महान शक्ति जीवन-मरण पर उसका पूर्णरूप से

The Ummah Technology Mission

قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِيْ ؕ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَاْتِيْنَكَ سَعْيًا ؕ وَاعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦٠﴾

ने कहा "क्या तुम्हें ईमान नहीं ?" उत्तर दिया, "ईमान तो है, परन्तु मेरे दिल को संतोष हो जायेगा।" कहा, "चार पक्षी लो, उनके टुकड़े कर डालो, फिर हर पर्वत पर उनका एक-एक भाग रख दो, फिर उन्हें पुकारो तुम्हारे पास दौड़ते हुए आ जायेंगे।" और जान रखो, कि अल्लाह (तआला) सर्वशक्तिशाली एवं सर्वज्ञानी है।

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦١﴾

(२६१) जो लोग अल्लाह (तआला) के मार्ग में अपना माल ख़र्च करते हैं, उनकी समानता उस दाने जैसी है, जिसमें से सात बालियां निकलें और हर बाली में सौ दाने हों, और अल्लाह (तआला) जिसे चाहे कई गुना दे।[1]

प्रभाव का प्रमाण है एक हदीस में है कि *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने आदरणीय इब्राहीम की इस घटना का वर्णन करके फ़रमाया :

«نَحْنُ أَحَقُّ بِالشَّكِّ مِنْ إِبْرَاهِيمَ»

"हम इब्राहीम से अधिक शंका के अधिकारी हैं।" (सहीह बुख़ारी किताबुत तफ़सीर)

इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि इब्राहीम ने शंका की अतः हमें उनसे और अधिक शंका का अधिकार पहुँचता है। बल्कि अर्थ यह है कि आदरणीय इब्राहीम से शंका का निस्तारण है अर्थात इब्राहीम ने जीवन-मृत्यु की समस्या पर शंका नहीं की, यदि उन्होंने शंका का प्रदर्शन किया होता, तोहम अवश्य शंका करनें में उनसे अधिक अधिकारी होते। (और जानकारी के लिये देखिये फ़तहुल क़दीर, अल-शौकानी)

[1]यह अल्लाह के मार्ग में दान देने की श्रेष्ठता है। इससे तात्पर्य यदि धर्मयुद्ध है, तो इसके अर्थ यह होंगे कि धर्मयुद्ध में व्यय किये गये धन का पुण्य यह होगा। और यदि इससे तात्पर्य सभी पुण्य के लिये व्यय किया गया धन है, तो यह श्रेष्ठता व्यय तथा दान जो स्वेच्छा से अल्लाह के मार्ग में किया गया होगा और अन्य पुण्य «الحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا». (एक पुण्य का बदला दस गुना है) की परिधि में आयेगी। (फ़तहुल क़दीर) अर्थात अल्लाह के मार्ग में व्यय किये गये धन की महत्ता एवं विशेषता का कारण स्पष्ट है कि जब तक सामान और

The Ummah Technology Mission

और अल्लाह (तआला) महान व्यापक एवं ज्ञाता है।

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٦٢﴾

(२६२) जो लोग अपना धन अल्लाह (तआला) के मार्ग में ख़र्च करते हैं, फिर उसके पश्चात उपकार नहीं जताते और न कष्ट देते हों।[1] उनका फल उनके प्रभु के पास है, उन पर न तो कोई भय है न वह उदास होंगे।

قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ۗ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ ﴿٢٦٣﴾

(२६३) कोमल वचन कहना और क्षमा करना उस दान से उत्तम है, जिसके पश्चात दुख दिया जाये।[2] और अल्लाह (तआला) निस्पृह एवं सहनशील है।

हथियार का युद्ध के लिये प्रबन्ध न होगा, सेना का कार्य भी शून्य होगा। सामान और हथियार बिना धन के एकत्रित नहीं किये जा सकते।

[1]अल्लाह के मार्ग मे धन व्यय करने की श्रेष्ठता का जो वर्णन गुज़र चुका है, केवल उस व्यक्ति को प्राप्त हो सकेगा, जो माल व्यय करने के पश्चात उपकार न जताये, और मुख से ऐसे शब्द न कहे जिससे किसी निर्धन के सम्मान को ठेस पहुँचे और उसको कष्ट का आभास हो। यह इतना बड़ा अपराध है कि *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया :

"क़ियामत के दिन अल्लाह तआला तीन प्रकार के व्यक्तियों से बात नहीं करेगा उनमें एक उपकार जताने वाला है।" (मुस्लिम, किताबुल ईमान)

[2]भिक्षुक से कोमल वचन में बोलना तथा प्रार्थना रूपी वाक्य (अल्लाह तुम को भी और मुझे भी अन्य कृपा और दया प्रदान करे आदि) से उत्तर देना उचित कथन है। مغفرة का अर्थ है कि भिखारी और उसकी आवश्यकता को लोगों के समक्ष प्रदर्शित करने से रूकना तथा उसको छुपाना है। और यदि भिखारी के मुख से कोई अनुचित शब्द निकल भी जाये, तब भी उसके अनसुनी करना भी इसमें सम्मिलित है। अर्थात भिखारी को दान देने के बजाय उससे कोमल वचन बोलना, उसकी बात का अनसुनी करना तथा उसको छिपाना अच्छा है, जिसके बाद उसे लोगों के सामने अपमान का सामना न करना पड़े तथा उसके दिल को कष्ट न हो। इसलिये हदीस में कहा गया है «اَلْكَلِمَةُ الطَّيِّبَةُ صَدَقَةٌ» (कोमल वचन भी दान है) और अपने भाई से नम्रता से मिलना उचित अर्थात भलाई है। «وَإِنَّ مِنَ الْمَعْرُوفِ أَنْ تَلْقَىٰ أَخَاكَ بِوَجْهٍ طَلِقٍ» (सहीह मुस्लिम उदधृत फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ۭ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰي شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٢٦٤

(२६४) हे ईमानवालो ! अपने दान को उपकार जताकर और दुख पहुँचाकर व्यर्थ न करो, जिस प्रकार से वह व्यक्ति जो अपना धन दिखावे के लिये ख़र्च करे और न अल्लाह (तआला) पर ईमान रखे और न प्रलय पर, उसकी उपमा उस चिकने पत्थर की है, जिस पर थोड़ी सी मिट्टी हो, फिर उसपर ज़ोरदार वर्षा हो और वह उसे बिल्कुल स्वच्छ और कठोर छोड़ दे।[1] इन पाखण्डियों को अपनी कमाई से कोई चीज़ हाथ नहीं लगती और अल्लाह (तआला) काफ़िरों के समुदाय को मार्गदर्शन नहीं देता।

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَاۗءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۢ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا

(२६५) उन लोगों की उपमा जो अपना माल अल्लाह (तआला) की प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए खुशी दिल से और विश्वास के साथ ख़र्च करते हैं, उस बाग़ जैसी है जो ऊँची धरती पर हो।[2] और ज़ोरदार वर्षा से अपना फल

---

[1] इस आयत में यह कहा गया है कि, दान व पुण्य करके, उपकार करके, जताना और कष्टदायक बातें करना ईमानवालों को शोभा नहीं देते, बल्कि उन लोगों की आदत है, जो मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) हैं वह देखावे के लिये ख़र्च करते हैं। दूसरे ऐसे व्यय करने की तुलना ऐसी है कि जैसे पत्थर की चट्टान पर मिट्टी जम जाये और कोई उसमें बीज बो दे और उसके पश्चात वर्षा का एक झोंका आये, तो सब कुछ बह जाये और वह पत्थर मिट्टी से बिल्कुल साफ़ हो जाये। अर्थात जिस प्रकार वह वर्षा उस पत्थर के लिये लाभप्रद नहीं हुई उसी प्रकार दिखावे का दान भी उसको कोई लाभ नहीं पहुँचा सकेगा।

[2] यह उन ईमानवालों की शोभा है, जो अल्लाह तआला को प्रसन्न करने के लिये व्यय करते हैं। इनका ख़र्च उस बाग़ के समान है, जोअत्यधिक ऊँचाई पर हो, कि यदि अधिक वर्षा हो, तो अपने फल दुगने कर सके और यदि वर्षा न हो, तो फुहार तथा ओस ही उसके लिये पर्याप्त है। इस प्रकार के दान भी, चाहे कितने कम क्यों न हों, परन्तु अल्लाह के यहाँ कई-कई गुना उनका बदला तथा पुण्य होगा। جنة उस धरती को कहते हैं, जिस पर इतनी अधिकता में वृक्ष हों कि वह धरती को ढाक लें अथवा बाग़ जिनके चारों ओर इतनी घनी झाड़ हो कि बाग़ दृष्टि से ओझल हो जाये। यह जिन्न शब्द से

The Ummah Technology Mission

ضِعْفَيْنِ ۚ فَإِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٦٥﴾

दुगना लादे और यदि उस पर वर्षा न भी हो, तो फुहार ही काफ़ी है, और अल्लाह (तआला) तुम्हारे कर्मों को देख रहा है।

أَيَوَدُّ أَحَدُكُمْ أَنْ تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُ فِيهَا مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَاءُ فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ

(२६६) क्या तुममें से कोई भी यह चाहता है कि उसके खजूरों और अंगूरों के बाग़ हों, जिसमें नहरें बह रही हों और हर प्रकार के फल व्याप्त हों, उस व्यक्ति की वृद्धावस्था आ गयी हो, उसके नन्हें-नन्हें बच्चे भी हों और अचानक बाग़ को बगुला लग जाये जिसमें अग्नि भी हो। जिससे बाग़ जल जाये।[1] इसी प्रकार अल्लाह (तआला) तुम्हारे लिए निशानियाँ

लिया गया है। जिन्न उस सृष्टि को कहते हैं, जो आँखों को नहीं दिखाई देती। गर्भ में बच्चे को जनीन कहा जाता है क्योंकि वह भी दिखाई नहीं देता। उन्माद को जुनून कहा गया है क्योंकि इसमें भी बुद्धि पर पर्दा पड़ जाता है और जन्नत (स्वर्ग) को जन्नत कहते हैं कि यह दृष्टिगोचर नहीं है। ربوة ऊँची धरती को कहते हैं। وابل तेज़ वर्षा को कहते हैं।

[1]इसी आडम्बर की हानि को स्पष्ट करने और उससे बचने के लिये और उदाहरण दिया जा रहा है कि एक व्यक्ति का बाग़ हो, जिसमें हर प्रकार के फल हों (अर्थात उससे अधिक लाभ की आशा हो) वह व्यक्ति बूढ़ा हो जाये और उसके छोटे-छोटे बच्चे हों (अर्थात वह अपनी वृद्धावस्था के कारण मेहनत न कर सके और उसकी संतान भी उसके बुढ़ापे की सहारा तो क्या, स्वयं अपना बोझ न उठाने के योग्य हो) इस स्थिति में तेज गति की आँधी आये और उसका बाग़ जल जाये। अब तो न वह स्वयं पुन: बाग़ लगाने की स्थिति में रहा और न उसकी संतान। यही स्थिति आडम्बर के लिये ख़र्च करने वालों का क़ियामत वाले दिन होगी। पाखण्ड एवं आडम्बर के कारण उनके सारे कर्म व्यर्थ चले जायेंगे। जबकि वहाँ पुण्य की अति आवश्यकता होगी। और पुन: सत्कर्म करने का समय नहीं मिलेगा अल्लाह तआला फ़रमाता है कि क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारा यही हाल हो ? आदरणीय इब्ने अब्बास ने इस उदाहरण का लक्ष्य उन लोगों को भी बताया है, जो जीवन भर पुण्य का कार्य करते रहे, परन्तु वृद्धावस्था में शैतान के जाल में फँसकर अल्लाह के अवज्ञाकारी बन जाते हैं, जिससे जीवन भरके पुण्य बर्बाद हो जाते हैं। (सहीह बुख़ारी उदधृत फ़तहुल क़दीर तथा इब्ने कसीर)

The Imran Technology Mission

का वर्णन करता है, ताकि तुम विचार कर सको।

لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٦٦﴾

(२६७) हे ईमानवालो ! अपनी पवित्र आय में से और धरती में से तुम्हारे लिये हमारी निकाली हुई चीज़ों में से ख़र्च करो।[1] उनमें से बुरी चीज़ो कोख़र्च करने का विचार न करना, जिसे तुम स्वयं लेने वाले नहीं हो, हाँ, यदि आँखें बन्द कर लो तो।[2] और जान लो अल्लाह (तआला) निस्पृह और प्रशंसित है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ أَنفِقُوا۟ مِن طَيِّبَٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّآ أَخْرَجْنَا لَكُم مِّنَ ٱلْأَرْضِ ۖ وَلَا تَيَمَّمُوا۟ ٱلْخَبِيثَ مِنْهُ تُنفِقُونَ وَلَسْتُم بِـَٔاخِذِيهِ إِلَّآ أَن تُغْمِضُوا۟ فِيهِ ۚ وَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ غَنِىٌّ حَمِيدٌ ﴿٢٦٧﴾

(२६८) शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है, और अशिष्टता का आदेश देता है।[3] और

ٱلشَّيْطَٰنُ يَعِدُكُمُ ٱلْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُم بِٱلْفَحْشَآءِ ۖ وَٱللَّهُ يَعِدُكُم

---

[1]दान को स्वीकार करने के लिए आवश्यक है कि उपकार और आडम्बर से शुद्ध हो (जैसाकि पिछली आयतों में बताया जा चुका है) उसी प्रकार यह भी आवश्यक है कि वह उचित एवं शुद्ध कमाई से हो। चाहे वह कारोबार (व्यापार अथवा उद्योग) के द्वारा हो अथवा कृषि और बाग़ों की पैदावार से। और यह फ़रमाया कि "अपवित्र चीज़ों को दान करने की चेष्टा न करो।" तो अपवित्र चीज़ों से तात्पर्य उन चीज़ों से है जो अवैध कमाई से हों। अल्लाह तआला उसे स्वीकार नहीं करता। हदीस में है «إِنَّ اللهَ طَيِّبٌ لَا يَقْبَلُ إِلَّا طَيِّبًا» (अल्लाह तआला पवित्र है और वह पवित्र चीज़ों को स्वीकार करता है)। दूसरे अपवित्र के अर्थ बेकार और प्रयोग में न आने वाली चीज़ों के है। बेकार चीज़ें भी अल्लाह के मार्ग में न ख़र्च करो। जैसाकि आयत ﴿لَن تَنَالُوا۟ ٱلْبِرَّ حَتَّىٰ تُنفِقُوا۟ مِمَّا تُحِبُّونَ﴾ का भी लाभ है। इसके उतरने के कारण में बताया गया है कि मदीना के कुछ अंसार ख़राब, न प्रयोग में न आने वाली खजूरों को दान स्वरूप मस्जिद में दे जाते, जिस पर यह आयत उतरी। (फ़तहुल क़दीर उदधृत त्रिमिजी व इब्ने माजा आदि)

[2]अर्थात जिस प्रकार से तुम स्वयं बेकार चीज़े लेना अच्छा नहीं समझते, उसी प्रकार अल्लाह के मार्ग में अच्छी चीज़ ही ख़र्च करो।

[3]अर्थात यदि पुण्य के कार्य में धन व्यय करना हो, तो शैतान यह भय उत्पन्न कराता है कि इससे तुम निर्धन एवं भिखारी हो जाओगे। परन्तु बुरे कार्यों में व्यर्थ करने में ऐसे विचारों को निकट नहीं आने देता बल्कि उन बुरे कार्यों को इस प्रकार बना-सँवार के प्रस्तुत करता है कि उनके लिए छिपी हुई इच्छायें इस प्रकार जाग जाती हैं कि उन पर मनुष्य बड़े से बड़ा धन व्यय कर डालता है। इसलिए देखा गया है कि मस्जिद, मदरसे और

The Ummah Technology Mission

مَّغْفِرَةٌ مِّنْهُ وَ فَضْلًا ؕ وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۶۸﴾

अल्लाह (तआला) तुमको अपनी क्षमा और कृपा का वचन देता है। अल्लाह (तआला) अति दयालु एवं सर्वज्ञ है।

يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۲۶۹﴾

(२६९) वह जिसे चाहे ज्ञान, बुद्धि देता है। और जिसे बुद्धिमता दे दिया गया। उसे बहुत सारी भलाई दी गयी।[1] और शिक्षा केवल बुद्धिमान ही प्राप्त करते हैं।

وَمَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۲۷۰﴾

(२७०) तुम चाहे जितना ख़र्च करो (अर्थात दान करो) और जो कुछ मनौती मानो,[2] उसे अल्लाह (तआला) जानता है और अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं।

किसी अन्य पुण्य के कार्य के लिये यदि कोई अनुदान के लिये पहुँच जाये तो, धनवान लोग सौ, दो सौ के लिये कई बार अपने लेखा-जोखा की देख पड़ताल करते हैं, और माँगने वाले लम्बे समय तक प्रतीक्षा करके कभी-कभी कई-कई बार दौड़ते हैं। परन्तु यही व्यक्ति सिनेमा, टेलीविजन, शराब, कुकर्मों, मुक़दमें आदि पर तो अपना धन बिना सोचे समझे ख़र्च करता है और इससे किसी प्रकार का संकोच व हिचकिचाहट का प्रदर्शन नहीं होता।

[1]बुद्धिमत्ता कुछ के निकट समझ-बूझ व ज्ञान, कुछ के निकट अच्छी सलाह, क़ुरआन द्वारा रोकी गई बातों का ज्ञान व समझ, निर्णायक शक्ति और कुछ के निकट केवल किताब व सुन्नत का ज्ञान व समझ है अथवा यह सभी मत उसकी परिधि में सम्मिलित हो सकते हैं। सहीहैन कि.एक हदीस में है कि दो व्यक्तियों पर प्रतिस्पर्धा उचित है, एक वह जिसको अल्लाह ने धन दिया और वह उसे अल्लाह के मार्ग में व्यय करता है। दूसरा वह जिसे अल्लाह ने बुद्धिमत्ता प्रदान की, जिससे वह निर्णय करता है और लोगों को उसकी शिक्षा देता है। (सहीह बुख़ारी किताबुल इल्म)

[2]मनौती का अर्थ है कि मेरा अमुक कार्य हो गया अथवा अमुक दु:ख निवारण हो जायेगा, तो मैं अल्लाह के मार्ग में इतना दान करूँगा। इस मनौती को पूरा करना आवश्यक है। यदि किसी अवैज्ञा अथवा अनुचित कार्य की मनौती मानी है, तो उसे पूरी करना आवश्यक नहीं है। मनौती भी नमाज़ और रोज़े की तरह वंदना है। इसलिये अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की मनौती मानना उसकी पूजा है, जो शिर्क है, जैसाकि आजकल प्रसिद्ध मज़ारों पर मनौती और चढ़ाव का यह कार्य सामान्य है। अल्लाह तआला इस शिर्क से बचाये।

The Ummah Technology Mission

إِن تُبْدُوا الصَّدَقَٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۖ وَإِن تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَيُكَفِّرُ عَنكُم مِّن سَيِّئَاتِكُمْ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٧١﴾

(२७१) यदि तुम दान-पुण्य को प्रकट करो, तो वह भी अच्छा है, और यदि तुम उसे छिपा कर निर्धनों को दे दो, यह तुम्हारे लिये श्रेष्ठकर है।[1] अल्लाह (तआला) तुम्हारे पापों को समाप्त कर देगा और अल्लाह (तआला) तुम्हारे सभी कर्मों से सूचित है।

لَّيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يَشَاءُ ۗ وَمَا تُنفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَلِأَنفُسِكُمْ ۚ وَمَا تُنفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ ۚ وَمَا تُنفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ﴿٢٧٢﴾

(२७२) उन्हें सत्यमार्ग पर ला खड़ा करना तुम्हारे अधिकार में नहीं, बल्कि मार्गदर्शन अल्लाह (तआला) देता है, जिसे चाहता है, और तुम जो भली वस्तु अल्लाह के मार्ग में दोगे उसका लाभ स्वयं पाओगे। तुम्हें मात्र अल्लाह (तआला) की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये ख़र्च करना चाहिये। तुम जो कुछ माल ख़र्च करोगे उसका पूरा-पूरा बदला तुम्हें दिया जायेगा।[2] और तुम्हारा अधिकार न मारा जायेगा।

---

[1]इससे ज्ञात हुआ कि सामान्य स्थिति से छिपाकर दान करना श्रेष्ठ है, सिवाय इसके कि किसी विशेष परिस्थिति में बताकर दान करने से अन्य व्यक्तियों को शिक्षा देना है। यदि आडम्बर की सम्भावना न हो, तो इस कार्य में प्राथमिकता दिखाने वाले जो श्रेष्ठता प्राप्त कर सकते हैं। वह हदीसों से स्पष्ट है। इस प्रकार के विशिष्ट परिस्थितियों के अतिरिक्त गुप्तदान ही श्रेष्ठ है। *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया : कि जिन व्यक्तियों को क़ियामत के दिन अर्श-ए-इलाही की छाया का सौभाग्य प्राप्त होगा, उनमें एक व्यक्ति वह भी होगा जिसने इस प्रकार से गुप्तदान किया होगा कि उसके बायें हाथ को ख़बर न होगी कि उसके दाहिने हाथ ने क्या ख़र्च किया है। दान में गुप्त रखने की श्रेष्ठता को कुछ आलिमों ने स्वेच्छात्मक दान तक सीमित रखा है, परन्तु ज़कात (निर्धारित दान) को स्पष्ट करने को श्रेष्ठ समझा है। परन्तु क़ुरआन की मान्यता अनिवार्य तथा स्वेच्छात्मक दोनों दान को सम्मिलित है। (इब्ने कसीर) और हदीस का भावार्थ भी इसका पक्षधर है।

[2]व्याख्या के वृतान्त में इसके उतरने का कारण यह वर्णित किया गया है कि मुसलमान अपने मूर्तिपूजक सम्बन्धियों की सहायता करना उचित नहीं समझते थे और वह चाहते

The Ummah Technology Mission

لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِي الْاَرْضِ ۫ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ۗ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢٧٣﴾

(२७३) दान के पात्र केवल वह निर्धन हैं, जो अल्लाह के मार्ग में रोक दिये गये, जो देश में चल-फिर नहीं सकते।[1] मूर्ख लोग उनके प्रश्न न करने के कारण उन्हें धनवान समझते हैं, आप उनके मुख को देखकर, ज्ञान से उन्हें पहचान लेंगे, वह लोगों से चिमटकर भीख नहीं माँगते।[2] तुम जो कुछ धन ख़र्च करो अल्लाह (तआला) उसका जाननेवाला है।

थे कि वह भी मुसलमान हो जायें। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मार्गदर्शन देना यह केवल अल्लाह के अधिकार में है। दूसरी बात यह फ़रमायी कि तुम अल्लाह की प्रसन्नता के लिये जो कुछ भी ख़र्च करोगे उसका पूरा बदला तुम्हें मिलेगा। इससे यह ज्ञात हुआ कि जो सम्बन्धी मुसलमान नहीं हैं उनके साथ भी नम्रता का बर्ताव करना पुण्य का कार्य है। परन्तु ज़कात केवल मुसलमान का अधिकार है, इसे किसी भी अन्य व्यक्ति को नहीं दिया जा सकता, जो मुसलमान न हो।

[1]इससे तात्पर्य वह मुहाजिर हैं, जो मक्का से मदीना आये और अल्लाह के मार्ग में आने के कारण उनकी प्रत्येक चीज़ छूट गयी। इस परिधि में धर्म की शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी और आलिम (धार्मिक शिक्षक) भी आते हैं।

[2]अर्थात जो ईमानवाले हैं, उनकी विशेषता यह है कि वह निर्धनता एवं गरीबी की परिस्थिति में किसी के समक्ष हाथ फैलाकर भिक्षा माँगने से कतराते हैं। तथा किसी से चिमट कर कदापि प्रश्न नहीं करते। (चूँकि इसकी पहली विशेषता प्रश्न करने से कतराना है। (फ़तहुल क़दीर) और कुछ ने कहा कि वह भिक्षा के समय रोना-धोना नही करते और जिन वस्तुओं की उन्हें आवश्यकता नहीं होती उसकी माँग नहीं करते। इसलिये कि إلحاف का अर्थ यह है कि आवश्यकता न होने पर भी (व्यवसाय के रूप में) लोगों से माँगे, इस भावार्थ की पुष्टि हदीसों से होती है। जिनमें कहा गया है कि "गरीब वह नहीं है, जो एक-एक, दो-दो खजूर अथवा एक-एक, दो-दो निवाले के लिए दर-दर जाकर प्रश्न करता है। गरीब तो वह है, जो प्रश्न करने से बचता है।" फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आयत ﴿لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا﴾ का उदाहरण दिया (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर व अल-ज़कात) इसलिये व्यवसायिक भिक्षुकों के अतिरिक्त धर्म की शिक्षा प्राप्त करने के लिये हिजरत करने वाले, विद्यार्थियों, आलिमों तथा सफेद पोश लोगों की खोज करके जिन्हें आवश्यकता तो है, पर किसी के सामने हाथ नहीं फैलाते, सहायता करनी चाहिये। इसके अतिरिक्त हदीस में आया है कि जिसके पास इतना माल हो जो उसके

The Ummah Technology Mission

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّ عَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٤﴾

(२७४) जो लोग अपने माल को रात-दिन छुपा कर अथवा खुल्लम-खुल्ला ख़र्च करते हैं, उनके लिये उनके प्रभु के पास फल है, न उन्हें कोई भय है और न कोई शोक।

اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ

(२७५) ब्याज खाने वाले[1] लोग न खड़े होंगे, परन्तु उसी प्रकार, जिस प्रकार वह खड़ा होता

जीवन यापन के लिये काफ़ी हो, परन्तु इसके उपरान्त वह लोगों के सामने हाथ फैलाता है, तो क़ियामत के दिन उसका चेहरा खून से लथपथ होगा। (विवरण अहलुस-सुनन, अल-अरवा, त्रिमिजी, किताबुल ज़कात)

[1] ربوا का शब्दकोष में अर्थ अधिकता तथा बढ़ोत्तरी है। और धार्मिक नियमों में इसे ब्याज कहते हैं। इसके दो भाग इस प्रकार हैं। एक रिबाफ़ज़्ल और दूसरा रिबानसिय:।
प्रथम जो छ: वस्तुओं में कमी अथवा अधिकता अथवा नगद ऋण के कारण से होता है। जिसका विवरण हदीस में है। जैसे गेंहूँ का बदला गेहूँ से करना है, इसके लिये कहा गया है कि बराबर-बराबर हो। दूसरे हाथों-हाथ हो। इसमें कमी अथवा अधिकता होगी, तो भी और हाथों-हाथ होने के अतिरिक्त एक नगद और दूसरा उधार अथवा दोनों ही उधार हों, तब भी ब्याज है। रिबा *"नसिया"* का अर्थ है किसी को जैसे ६ महीने के लिये सौ रूपये इस शर्त पर देना कि वापसी १२५ रूपया होगी। २५ रूपये ६ महीने की छूट के लिये लिए जायें। अली رضي الله عنه से सम्बन्धित वाक्य में इसे इस प्रकार वर्णित किया गया है। «كُلُّ قَرْضٍ جَرَّ مَنْفَعَةً فَهُوَ رِبًا» (ऋण पर लिया गया लाभ ब्याज है) यह ऋण अपनी आवश्यकता के लिये लिया गया हो अथवा व्यवसाय के लिये दोनों प्रकार के ऋण पर लाभ (ब्याज) हराम है। अशिक्षित काल में भी इस प्रकार के दोनों ऋणों का प्रचलन था। धर्मिक नियम ने दोनों में किसी प्रकार का भेद किये बिना दोनों प्रकार से प्राप्त ब्याज को कठोरता के साथ हराम कहा है। इसलिये कुछ लोगों का यह कहना कि व्यवसाय के लिये लिया गया ऋण (जो सामान्यत: बैंकों से लिया जाता है) इस पर लिया गया अधिक धन ब्याज नहीं है। इसलिये कि ऋण लेने वाला इससे लाभ उठाता है। उसका कुछ भाग वह बैंक को अथवा ऋण देने वाले को लौटा देता है तो इसमें क्या अनुचित है? इसमें कठिनाई उन नये विचारकों को नज़र नहीं आती जो ब्याज को उचित सिद्ध करना चाहते हैं, वरना धर्मिक नियम में तो इसमें बड़ी कठिनाई है। जैसे ऋण लेकर व्यवसाय करने वाले को उस व्यवसाय से लाभ होना आवश्यक नहीं है। कई बार व्यवसाय में लगाया गया सारा धन डूब जाता है। जबकि इसके विपरीत ऋण देने वाला (चाहे बैंक हो अथवा कोई साहूकार) उसका लाभ निर्धारित है, जिसकी अदायगी प्रत्येक स्थिति में अनिवार्य है। यह अत्याचार का स्पष्ट प्रमाण है, तो फिर इस्लामी धार्मिक नियम किस प्रकार उसे उचित कह सकते

The Ummah Technology Mission

يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧٥﴾

है, जिसे शैतान लग कर पागल बना देता है।[1] यह इसलिये कि यह कहा करते थे कि व्यापार भी तो ब्याज ही के समान है।[2] जबकि अल्लाह (तआला) ने व्यापार को हलाल किया और ब्याज को हराम। और जो व्यक्ति अपने पास आयी हुई अल्लाह (तआला) की शिक्षा सुन कर रूक गया उसके लिये वह है जो व्यतीत हो गया।[3] और उसका मामला अल्लाह (तआला) के पास है।[4] और जो फिर (हराम की ओर) पलटा वह नरकवासी है, वे सदैव उसी में रहेंगे।

हैं। वल्कि धर्मिक नियम तो ईमानवालों को समाज के वह व्यक्ति जिनको सहायता की आवश्यकता है, बिना किसी प्रकार के सांसारिक लाभ की कामना किये, इस प्रकार के लोगों की सहायता करने पर बल देता है। जिससे समाज में भाईचारा, प्रेम, सहायता, आदर एवं सम्मान की भावना उत्पन्न हो। इसके विपरीत ब्याज के इस नियम से कठोरता और स्वार्थ को बढ़ावा मिलता है। एक धनवान को अपने धन से लाभ की इच्छा होती है, चाहे समाज के वह लोग, रोग, भूख, निर्धनता से पीड़ित ही क्यों न हों अथवा वेरोज़गार होने के कारण अपने जीवन से मोह न हो। धर्मिक नियम इस कठोरता तथा अत्याचार को किस प्रकार पसन्द कर सकता है? इसकी बहुत सी अन्य हानियाँ हैं, विस्तार की यहाँ आवश्यकता नहीं है। अत: ब्याज कदापि हराम है, चाहे ब्याज व्यक्तिगत (अपनी आवश्यकता के लिये गये ऋण पर ब्याज) हो अथवा संस्थागत ब्याज (व्यावसायिक कार्य के लिए लिये गये ऋण पर ब्याज) हो।

[1]व्याज लेने वाले की यह स्थिति क़ब्र से उठते समय अथवा प्रलय के मैदान में होगी।

[2]हालाँकि व्यापार में तो धन-सामग्री का परस्पर लेन देन होता रहता है। दूसरे इसमें लाभ-हानि की सम्भावना रहती है, जबकि ब्याज में यह दोनों बातें नहीं होती हैं। अत: अल्लाह ने बेचने को वैध और ब्याज को अवैध कहा है। फिर यह दोनों एक कैसे हो सकते हैं?

[3]ईमान लाने तथा क्षमा माँग लेने के पश्चात पिछले ब्याज लेने पर पकड़ नहीं होगी।

[4] कि वह क्षमा माँगने के पश्चात अडिग रहता है अथवा फिर से कुकर्म और कुविचार के कारण उसको उसकी स्थिति पर छोड़ देते हैं। इसलिये पुन: ब्याज लेने वाले को कठोर दण्ड की धमकी है।

The Ummah Technology Mission

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٧٦﴾

(२७६) अल्लाह (तआला) ब्याज को मिटाता है और दान को बढ़ाता है।[1] और अल्लाह (तआला) किसी कृतघ्न एवं पापी को मित्र नहीं बनाता।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٧﴾

(२७७) जो लोग ईमान के साथ (सुन्नत के अनुसार) काम करते, नमाज़ों को स्थापित करते हैं और ज़कात अदा करते हैं, उनका फल उनके पालनहार के पास है। उन पर न तो कोई भय है और न कोई दुख।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰٓوا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧٨﴾

(२७८) हे ईमानवालो ! अल्लाह (तआला) से डरो और जो ब्याज शेष रह गया है, वह छोड़ दो यदि तुम सचमुच ईमानवाले हो।

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٩﴾

(२७९) यदि ऐसा नहीं करते तो अल्लाह (तआला) और उसके रसूल से लड़ने के लिये तैयार हो जाओ।[2] और यदि क्षमा माँग लो तो तुम्हारा मूलधन तुम्हारा ही है न तुम अत्याचार करो और न तुम पर अत्याचार किया जाये।[3]

---

[1] यह ब्याज के वास्तविक एवं आत्मिक हानि के पश्चात दान के लाभों का विवरण है। ब्याज से देखने में तो बढ़ोत्तरी होती है, परन्तु उसके अध्यात्मिक अर्थ के अनुसार परिणाम स्वरूप ब्याज का धन उसकी बरबादी एवं ख़राबी का कारण बनता है। इस बात का समर्थन अब पाश्चात्य देश के अर्थशास्त्री भी करने लगे हैं।

[2] यह ऐसी कड़ी चेतावनी है जो किसी अन्य अपराध के करने पर नहीं आई है। इसलिये आदरणीय अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने कहा कि जो व्यक्ति इस्लामी राज्य में ब्याज त्यागने के लिये तैयार न हो तो समय के राज्य प्रमुख का दायित्व है कि उससे क्षमा-याचना कराये (क्योंकि वह अल्लाह तथा रसूल से युद्ध की घोषणा कर रहा है) तथा न रूकने की दशा में उसकी गर्दन मार दे। (इब्ने कसीर)

[3] तुम यदि मूलधन से अधिक धन वसूल करोगे, तो यह तुम्हारा अत्याचार होगा और यदि तुम्हें मूलधन न दिया जाये, तो यह तुम पर अत्याचार होगा।

The Ummah Technology Mission

وَاِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨٠﴾

(२८०) और यदि कोई निर्धन हो, तो उसे सुविधा तक समय देना चाहिये, तथा दान कर दो तो तुम्हारे लिये अति श्रेष्ठ है।[1] यदि तुम में ज्ञान हो।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٨١﴾

(२८१) और उस दिन से डरो, जिसमें तुम सब (अल्लाह तआला) की ओर लौटाये जाओगे और प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा। और उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।[2]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰۤى اَجَلٍ

(२८२) हे ईमानवालो ! जब तुम आपस में निर्धारित अवधि के लिए एक-दूसरे से उधार का लेन-देन करो तोलिख लिया करो।[3] और

---

[1]अज्ञान काल में ऋण को अदा न करने के कारण ब्याज पर ब्याज से मूलधन में इतनी वृद्धि हो जाती थी, कि एक छोटा सा मूलधन एक पर्वत बन जाता था, जिनका अदा करना असम्भव हो जाता। अल्लाह तआला ने आदेश दिया कि यदि कोई निर्धन है तो (ब्याज लेना ही नहीं चाहिये, तथा मूलधन लेने में भी) सरलता से उसे अदा करने का समय देना चाहिये। और यदि ऋण क्षमा कर दो तोयह और भी श्रेष्ठ है। हदीस में भी इसकी श्रेष्ठता का वर्णन किया गया है। कितना अन्तर है दोनों नियमों में ? एक पूर्णरूप से कठोरता, अत्याचार और स्वार्थी नियम और दूसरा प्रेम, सहानुभूति और एक-दूसरे की सहायता का नियम। मुसलमान यदि स्वयं इस कृपालु और कल्याणकारी अल्लाह के नियमों पर न चले, तोइसमें इस्लाम का क्या दोष ? और अल्लाह पर क्या आक्षेप ? काश, मुसलमान अपने धर्म के महत्व और सार्थकता को समझ सके और उस पर अपनी जीवन-धारा का प्रवाहित कर सकें।

[2]कुछ कथनानुसार यह *नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* पर अवतरित अन्तिम आयत (श्लोक) है जिसके पश्चात ही आप का निधन हो गया।

[3]जब ब्याज के नियमों का कठोरता से निषेध किया गया और दान देने पर बल दिया गया, तो फिर ऐसे समाज में ऋण की आवश्यकता विशेष रूप से हुई। क्योंकि ब्याज तो वैसे ही वर्जित है, और प्रत्येक व्यक्ति इतना दान नहीं कर सकता। तथा हर व्यक्ति अपने सम्मान के कारण दान लेना पसन्द नहीं करता तो ऐसे में केवल ऋण लेना पड़ता है। इसीलिये हदीस में ऋण देने पर बड़े पुण्य वर्णित किये गये हैं। इसके देने में आनाकानी और आलस्य के कारण झगड़ा भी हो सकता है। इसलिये इस आयत में जिसे आयत दैन कहा जाता है और जो क़ुरआन

The Ummah Technology Mission

مُسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ؕ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ
كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ ۪ وَلَا يَاْبَ
كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ
فَلْيَكْتُبْ ۚ وَلْيُمْلِلِ الَّذِيْ عَلَيْهِ
الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ
مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ فَاِنْ كَانَ الَّذِيْ عَلَيْهِ
الْحَقُّ سَفِيْهًا اَوْ ضَعِيْفًا
اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ
فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ؕ
وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ
رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ
فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ
مِنَ الشُّهَدَآءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا

लेखक को चाहिये कि आपस का विषय न्याय के साथ लिखे, लेखक को चाहिये कि लिखने से इंकार न करे, जैसे अल्लाह (तआला) ने उसे सिखाया है, उसी प्रकार उसे भी लिख देना चाहिये और जिसके ऊपर अधिकार हो वह लिखवाये।[1] और अपने अल्लाह (तआला) से डरे जो उसका प्रभु है और अधिकार में से कुछ घटाये नहीं, यदि जिस व्यक्ति पर अधिकार हो और वह अशिक्षित हो अथवा दुर्बल हो अथवा लिखवाने की शक्ति न रखता हो, तो उसका संरक्षक न्याय के साथ लिखवा दे और अपने में से दो पुरूषों को साक्षी रख लो, यदि दो पुरूष न हों, तो एक पुरूष और दो स्त्रियाँ जिन्हें तुम साक्षी के रूप में पसन्द कर लो।[2]

की सबसे लम्बी आयत है। अल्लाह तआला ने ऋण के लिये आवश्यक निर्देश दिये हैं। ताकि अनिवार्य आवश्यकता झगड़े का कारण न बने। इसके लिये एक आदेश यह दिया कि अवधि निर्धारित कर लो। दूसरा यह कि इसे लिख लो तीसरा यह कि इस पर दो मुसलमान पुरूष अथवा एक पुरूष और दो स्त्रियों को साक्षी बना लो।

[1]इससे तात्पर्य ऋणी है अर्थात वह अल्लाह से डरता हुआ धन को लिखवाये, इसमें कमी न करे। आगे चलकर कहा जा रहा है कि यदि यह ऋणी मन्दबुद्धि अथवा कमज़ोर बच्चा अथवा पागल है, तो उसके संरक्षक को चाहिये कि न्याय के साथ लिखवा ले ताकि ऋणी (ऋण देने वाला) को हानि न हो।

[2]अर्थात जिनकी धार्मिकता तथा न्याय प्रियता पर तुम्हें विश्वास हो। इसके अतिरिक्त क़ुरआन करीम के इन सूत्रों से ज्ञात हुआ कि दो स्त्रियों का साक्ष्य एक पुरूष के समान है। तथा बिन पुरूष के स्त्रियों का साक्ष्य उचित नहीं है, उन समस्याओं के अतिरिक्त जिसमें स्त्री के अतिरिक्त किसी को ज्ञान नहीं हो सकता, इस मत में मतभेद है कि वादी (मुद्दई) की एक प्रतिज्ञा के साथ दो स्त्रियों के साक्ष्य पर निर्णय करना उचित है, अथवा नहीं ? जिस प्रकार एक पुरूष के साक्ष्य के पश्चात निर्णय करना उचित है, जबकि दूसरे साक्ष्य के स्थान पर वादी शपथ लेकर कहे। परन्तु हनफ़ी धर्माचार्यों के निकट यह उचित नहीं। जबकि हदीस के जानने वाले इसके पक्ष में हैं, क्योंकि हदीस से एक साक्ष्य और शपथ के

The Ummah Technology Mission

فَتُذَكِّرَ إِحْدٰىهُمَا الْأُخْرٰى ۭ
وَلَا يَأْبَ الشُّهَدَآءُ إِذَا مَا دُعُوْا ۭ
وَلَا تَسْـَٔمُوْٓا أَنْ تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا أَوْ كَبِيْرًا
إِلٰٓى أَجَلِهٖ ۭ ذٰلِكُمْ أَقْسَطُ
عِنْدَ اللّٰهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ
وَأَدْنٰٓى أَلَّا تَرْتَابُوْٓا إِلَّآ أَنْ
تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً
تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ
عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوْهَا ۭ وَأَشْهِدُوْٓا
إِذَا تَبَايَعْتُمْ ۠ وَلَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ
وَّلَا شَهِيْدٌ ۭ وَإِنْ تَفْعَلُوْا فَإِنَّهٗ

ताकि एक की भूल-चूक को दूसरी याद दिला दे।[1] और साक्षियों को चाहिये कि वे जब बुलाये जायें, तो इंकार न करें, और ऋण को जिसकी अवधि निर्धारित है, चाहे छोटा हो या बड़ा हो लिखने में आलस्य न करो। अल्लाह तआला के निकट यह बात बहुत न्यायोचित है। और साक्ष्य को ठीक रखने वाली और शंका से भी अधिक बचाने वाली है।[2] और यह बात अलग है कि वह मामला नगद व्यापार के रूप में हो जो आपस में लेन-देन कर रहे हो, तो तुम पर उसके न लिखने में कोई पाप नहीं। क्रय-विक्रय के समय भी साक्षी निर्धारित कर लिया करो।[3] और (याद रखो) न तो लिखने

साथ निर्णय करने की पुष्टि होती है, और जब दो स्त्रियाँ एक पुरूष के साक्ष्य के बराबर हैं तो दो स्त्रियों और शपथ के साथ निर्णय करना उचित होगा। (फ़तहुल क़दीर)

[1]यह एक पुरूष के सापेक्ष दो स्त्रियों को निर्धारित करने की विशेषता एवं बुद्धिमत्ता है। अर्थात स्त्री बुद्धि और याद रखने में पुरूष से कमज़ोर है। (जैसाकि सहीह मुस्लिम की एक हदीस में स्त्री को मन्दबुद्धि कहा गया है) यह स्त्री के अधिकारों का हनन तथा अपमान का सूचक नहीं है, (जैसाकि कुछ लोग कहते हैं) बल्कि उनके प्राकृतिक क्षीणता का वर्णन है, जो अल्लाह तआला का ज्ञान एवं इच्छा पर आधारित है। अहंकार के कारण कोई इसको स्वीकार न करे, तो और बात है, परन्तु वास्तविकता एवं घटनाओं के आधार पर इसका खण्डन नहीं किया जा सकता।

[2] लिखने का लाभ है कि इससे न्याय की माँग पूरी होगा। साक्ष्य भी सही होगा (कि साक्षी के उपस्थिति न होने अथवा मृत्यु के उपरान्त उनका लिखा हुआ लेख साक्ष्य बन जायेगा) और किसी प्रकार की शंका से दोनों पक्ष सुरक्षित रहेंगे, क्योंकि शंका होने की स्थिति में लेख देख लेने पर शंका दूर कर ली जायेगी।

[3]यह वह क्रय-विक्रय है जिसमें ऋण हो अथवा सौदा तय हो जाने के पश्चात भी विचलन की संभावना हो, वरन् इससे पूर्व नगद सौदे को लिखने से अलग किया जा चुका है। कुछ ने इस विक्रय से मकान व दूकान, बाग़ अथवा पशु का विक्रय अर्थ लिया है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

The Ummah Technology Mission

فُسُوقٌۢ بِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٨٢﴾

वाले को हानि पहुँचाई जाये और न साक्षियों को,[1] और यदि तुम ऐसा करो, तो यह तुम्हारी खुली अवज्ञा है। अल्लाह (तआला) से डरो।[2] अल्लाह (तआला) तुम्हें शिक्षा दे रहा है, और अल्लाह (तआला) सर्वज्ञ है।

وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ فَاِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِى اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ

(२८३) और यदि तुम यात्रा में हो और लिखने वाला न पाओ, तो गिरवी अपने पास रख लिया करो।[3] और यदि आपस में एक-दूसरे पर विश्वास हो, तो जिसे धरोहर दी गयी है वह उसे अदा कर दे, और अल्लाह (तआला) से डरता रहे, जो उसका स्वामी है।[4] और साक्ष्य को न छुपाओ और जो उसे छिपा ले वह

---

[1]इनको हानि पहँचाने से तात्पर्य यह है कि बहुत दूर से उन्हें बुलाया जाये, जिससे उनकी व्यस्तता में अड़चन तथा व्यापार में हानि हो अथवा उनको झूठी बात लिखने अथवा उसका साक्षी बनने के लिए बाध्य किया जाये।

[2]अर्थात जिन बातों पर बल दिया गया है उन्हें करो तथा जिनसे रोका गया है रूक जाओ।

[3]यदि यात्रा में ऋण लेने की आवश्यकता पड़ जाये और वहाँ लेखक अथवा काग़ज, कलम न मिले ऐसी स्थिति में उसका समरूप कार्य करने को बताया जा रहा है। कि ऋणी व्यक्ति कोई वस्तु ऋण देने वाले के पास गिरवी रख दे। इससे गिरवी रखने का औचित्य सिद्ध होता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी कवच एक यहूदी के पास गिरवी रखी थी। (सहीहैन) परन्तु यदि गिरवी रखी हुई वस्तु से किसी प्रकार का लाभ होता है, तो उससे लाभान्वित उसका मालिक (ऋणी) होगा, न कि ऋण देने वाला। परन्तु यदि ऋण देने वाले का उस पर कुछ व्यय होता है, तो वह ऋणी से प्राप्त कर सकता है। शेष लाभ मालिक को देना आवश्यक होगा।

[4]यदि एक-दूसरे पर भरोसा हो, तो बिना गिरवी रखे भी ऋण का सौदा कर सकते हो। अमानत से तात्पर्य यहाँ ऋण है। अल्लाह से डरते हुए उसे उचित रूप से अदा कर दो।

The Ummah Technology Mission

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨٣﴾

मन का पापी है।[1] और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह (तआला) उसे भली भाँति जानता है।

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى

(२८४) आकाशों और धरती की प्रत्येक वस्तु अल्लाह (तआला) के अधिकार में है। तुम्हारे दिलों में जो कुछ है, उसे चाहे प्रकट करो अथवा छुपाओ, अल्लाह (तआला) उसका हिसाब लेगा।[2] फिर जिसे चाहे क्षमा कर दे

---

[1]साक्ष्य को छिपाना महापाप है। इसलिये इसकी अति भर्त्सना यहाँ क़ुरआन में तथा हदीस में की गयी है। इसलिये सही साक्ष्य की बड़ी श्रेष्ठता भी है। सहीह मुस्लिम की हदीस है। *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया :

«أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِخَيْرِ الشُّهَدَاءِ ؟ الَّذِيْ يَأْتِي بِشَهَادَتِهِ قَبْلَ أَنْ يُسْأَلَهَا».

वह सबसे श्रेष्ठ साक्षी है, जो बिना साक्ष्य की माँग के, स्वयं साक्ष्य के लिये उपस्थिति हो जाये। (सहीह मुस्लिम, उदघृत इब्ने कसीर)

एक दूसरे कथन में बुरे साक्षी की ओर इंगित किया गया है।

«أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِشَرِّ الشُّهَدَاءِ ؟ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ قَبْلَ أَنْ يُسْتَشْهَدُوا».

"क्या मैं तुम्हें वह साक्षी न बतला दूँ, जो बहुत बुरा साक्षी हो ? यह वह लोग हैं जो साक्ष्य की माँग किये बिना उससे पूर्व ही साक्ष्य देते हैं।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल रिक़ाक़ तथा मुस्लिम, किताबु फ़ज़ाएल अल-सहाबा)

अर्थात झूठी साक्ष्य देकर महापाप करने के भागी बनते हैं। शेष आयत में दिल का विशेष रूप से वर्णन किया गया है, इसलिए कि गोपनीयता दिल का ही कर्म है। इसके अतिरिक्त दिल सम्पूर्ण शरीर का प्रमुख एवं विशेष भाग है। और ऐसा विशेष माँस का टुकड़ा है, यदि यह ठीक रहे, तो सम्पूर्ण शरीर ठीक रहता है और यदि इसमें कोई ख़राबी उत्पन्न हो जाये, तोसम्पूर्ण शरीर में ख़राबी उत्पन्न हो जाती है। (हदीस के भाँति)

[2]हदीस में है कि जब यह आयत उतरी तो सहाबा किराम (*रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के सहचर) चिन्तित हुए। वे *रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की सेवा में उपस्थिति हुए और कहा, हे *रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*। नमाज़, रोज़ा, ज़कात तथा धर्मयुद्ध आदि जिनका भी आदेश दिया गया है, हम उसे करते हैं। क्योंकि यह हमारी शक्ति से अधिक नहीं, परन्तु मनोगत विचार एवं शंकाओं पर हमारी कोई पकड़ नहीं है। और यह मनुष्य की शक्ति के बाहर है। परन्तु अल्लाह तआला ने

The Ummah Technology Mission

और जिसे चाहे दण्ड दे। और अल्लाह (तआला) सर्वशक्तिमान है।

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٨٤﴾

(२८५) रसूल उस चीज़ पर ईमान लाये जो उसकी ओर अल्लाह (तआला) की ओर से उतारी गयी और मुसलमान भी ईमान लाये। यह सब अल्लाह (तआला) और उसके फ़रिश्ते पर, और उसकी किताबों पर, और उसके

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۫ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ

उस पर भी पकड़ करने की घोषणा की है। *नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया : "अभी तो तुम سمعنا و أطعنا (हमने सुना और हमने पालन किया) ही कहो।" अत: सहाबा के इस सुनने तथा पालन करने की भावना को देखकर अल्लाह तआला ने यह आयत ﴿لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا﴾ (अल्लाह तआला किसी भी जीव पर उसके सामर्थ्य से अधिक भार नहीं रखता) से निरस्त कर दिया। (इब्ने कसीर व फ़तहुल क़दीर) सहीहैन तथा सुनन की यह हदीस भी इसकी पुष्टि करती है।

«إِنَّ اللهَ تَجَاوَزَ عَنْ أُمَّتِي مَا حَدَّثَتْ بِهِ أَنْفُسَهَا، مَا لَمْ تَتَكَلَّمْ أَوْ تَعْمَلْ بِهِ»

(अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत (अनुयायी लोगों को कहते हैं) के मनोगत विचारों को क्षमा कर दिया है। परन्तु उन बातों पर पकड़ होगी, जिनको मुख से व्यक्त कर दिया हो अथवा उनके अनुसार कर्म किया जाये)

इससे ज्ञात हुआ कि दिल में उत्पन्न होने वाले कुविचारों पर तब तक पकड़ न होगी, जब तक वह संकल्प अथवा कर्म न बन जायें। इसके विपरीत इमाम इब्ने जरीर तबरी का विचार है कि आयत निरस्त नहीं है, क्योंकि पकड़ करने पर दण्ड देना आवश्यक नहीं है अर्थात ऐसा नहीं है कि अल्लाह तआला जिस बात पर पकड़ करे, तो उस पर दण्ड भी अवश्य दे। बल्कि अल्लाह तआला पकड़ तो हर एक बात की करेगा, परन्तु बहुत से लोग ऐसे होंगे कि उनकी पकड़ करने के पश्चात उन्हें क्षमा कर देगा, बल्कि कुछ के साथ ऐसा भी करेगा कि उसके एक-एक पाप याद करा के उनको उसे स्वीकार करायेगा और फिर कहेगा कि संसार में मैंने उन पर पर्दा डाल रखा था, जा आज मैने उन्हें क्षमा किया। (यह हदीस सहीह बुख़ारी व मुस्लिम आदि में है, उदधृत इब्ने कसीर) और कुछ विद्वानों ने कहा कि यह परिभाषिक अर्थ में निरस्त नहीं है, बल्कि कई बार इसे प्रकाशित करने के अर्थ में प्रयोग किया जाता है। अतएव सहाबा किराम के दिल में जो शंका इस आयत के कारण उत्पन्न हुई उसे आयत ﴿لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ﴾ और हदीस إن الله تجاوز आदि से दूर कर दिया। इस प्रकार आयत के निरस्त मानने की आवश्यकता शेष नहीं रही।

The Ummah Technology Mission

مِّن رُّسُلِهٖ ۫ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٥﴾

रसूलो पर ईमान लाये, उसके रसूलों में से किसी के मध्य हम मतभेद नहीं करते।[1] उन्होंने कहा कि हमने सुना और अनुकरण किया, हम तुझसे क्षमा चाहते हैं। हे, हमारे प्रभु ! और हमें तेरी ही ओर लौटना है।

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَاۤ اِنْ نَّسِيْنَاۤ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَاۤ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟

(२८६) अल्लाह किसी भी आत्मा पर उसके सामर्थ्य से अधिक बोझ नहीं डालता जो पुण्य वह करे वह उसके लिए है और जो बुराई वह करे वह उसी पर है। हे हमारे प्रभु ! यदि हम भूल गये हों अथवा ग़लती की हो, तो हमें न पकड़ना। हे हमारे प्रभु ! हम पर वह बोझ न डाल, जो हमसे पहले लोगों पर डाला था। हे हमारे प्रभु ! हम पर वह बोझ न डाल, जो हमारे सामर्थ्य में न हो और हमें क्षमा कर दे,

---

[1]इस आयत में ईमान से सम्बन्धित विषयों का वर्णन है, जिन पर ईमानवालों को आस्था रखने का आदेश दिया गया है। और इससे पूर्व आयत لا يكلف الله में अल्लाह तआला की कृपा, दया, स्नेह और प्रेम का वर्णन है कि अल्लाह तआला ने मनुष्यों को कोई ऐसा कर्म करने पर बल नहीं दिया जो उसकी शक्ति से अधिक हो। इन दोनों आयतों की हदीसों में बड़ी प्रशंसा की गयी है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

"जो व्यक्ति *सूर: अल-बकर:* की अन्तिम दो आयतें रात्रि में पढ़ लेता है, तो यह काफ़ी हो जाती है।" (सहीह बुख़ारी, इब्ने कसीर)

अर्थात इस कर्म के कारण उसकी अल्लाह तआला सुरक्षा करता है। दूसरी हदीस में है *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* को मेराज की रात जो तीन चीज़े मिली। उनमें से एक *सूर: अल-बकर:* की अन्तिम दो आयतें भी हैं। (सहीह मुस्लिम, बाब फ़ी ज़िक्रे सिदर: तुल मुनतहा) कई कथनों में ऐसा भी कहा गया है कि इस सूर: की अन्तिम आयतें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक कोष से प्रदान की गईं जो अर्श इलाही के नीचे है। और यह आयतें किसी नबी को आप के अतिरिक्त नहीं प्रदान की गयीं। (अहमद, निसाई, तबरानी, बैहक़ी, हाकिम दारमी, आदि दुर्रेमंसूर) आदरणीय मआज़ रज़ी अल्लाह तआला अन्हु इस सूर: के अन्त में आमीन कहा करते थे। (इब्ने कसीर)

Fre Ummah Technology Mission

وَارْحَمْنَا ۖ أَنتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٨٦﴾

और हमें मोक्ष प्रदान कर, और हम पर दया कर, तू ही हमारा मालिक है, हमें काफ़िर समुदाय पर विजय प्रदान कर।

सूरतु आले इमरान-३

سُورَةُ آلِ عِمْرَانَ

सूरः आले इमरान मदीना में उतरी[1] इसमें दो सौ आयतें हैं और बीस रूकुऊ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है।

الٓمٓ ﴿١﴾

(१) अलिफ॰लाम॰मीम

اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ﴿٢﴾

(२) अल्लाह (तआला) वह है, जिसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, जो जीवित है और सभी का रक्षक है।[2]

---

[1] यह सूरः मदनी है। इसकी सभी आयतें विभिन्न समय पर मदीने में ही उतरीं और इसका प्रारम्भिक भाग अर्थात ८३ आयतों तक इसाईयों के नजरान के प्रतिनिधि मंडल (यह नगर अब सऊदी अरब में स्थिति है) के विषय में उतरा हुआ है, जो ९ हिजरी में *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की सेवा में उपस्थिति हुआ था। इसाईयों ने आकर *नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* से अपने इसाई विश्वास और इस्लाम के विषय में वाद-प्रतिवाद किया, जिसका खण्डन करते हुए उन्हें मुबाहिला (एक विधि है, जिसके अनुसार सौगन्ध खाकर अपनी बात कही जाती है) का आमन्त्रण भी दिया गया, जिसका विस्तार पूर्वक विवरण आगे आयेगा। उसी पृष्ठभूमि में क़ुरआन करीम की इन आयतों का अध्ययन किया जायेगा।

[2] حي और قيوم अल्लाह तआला की अति विशेष गुण हैं, हई का अर्थ है कि वह आदि से है और अन्त तक रहेगा, उसे मरण तथा विनाश नहीं। क़य्यूम का अर्थ वह सारी सृष्टि का आधार, रक्षक एवं संरक्षक है, सारी सृष्टि को उसकी आवश्यकता है उसे किसी की आवश्यकता नहीं। इसाई आदरणीय ईसा को अल्लाह अथवा अल्लाह का पुत्र अथवा तीन में से एक मानते थे। अर्थात उनको कहा जा रहा है कि जब आदरणीय ईसा भी अल्लाह की सृष्टि हैं, उन्होंने माँ के गर्भ से जन्म लिया, और उनका जन्म भी सृष्टि की उत्पत्ति के बहुत बाद का है, तो फिर वह अल्लाह अथवा अल्लाह के पुत्र किस प्रकार हो सकते हैं। यदि तुम्हारा विश्वास

The Ummah Technology Mission

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۝٣

(३) जिसने सत्य के साथ इस किताब (पवित्र क़ुरआन) को उतारा,[1] जो अपने से पूर्व के (धर्मशास्त्रों) को प्रमाणित करती है, और उसी ने इससे पूर्व (धर्मग्रन्थ) तौरात और इंजील को लोगों के मार्ग दर्शन के लिये उतारा।[2]

مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝٤

(४) और क़ुरआन भी उसी ने उतारा।[3] जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों से कुफ़्र करते हैं, उनके लिये कठोर यातनायें हैं। और अल्लाह (तआला) प्रभावशाली है, प्रत्यप्कारी है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ۝٥

(५) नि:संदेह अल्लाह (तआला) से धरती और आकाश की कोई वस्तु छिपी नहीं है।

सही होता, तो उन्हें सृष्टि के बजाये अल्लाह की विशेषताओं से युक्त एवं आदि से होना चाहिए था। इसके अतिरिक्त उनकी मृत्यु भी नहीं होनी चाहिये थी, परन्तु एक दिन आयेगा कि उन्हें भी मौत का मज़ा चखना पड़ेगा। और इसाईयों के कथानुसार वह मृत्यु को प्राप्त कर चुके। हदीसों में आता है कि तीन आयतों में अल्लाह के श्रेष्ठ नाम हैं, जिसके द्वारा प्रार्थना की जाये तो रद्द नहीं होती। एक यही आले इमरान की आयत, दूसरी आयतुल कुर्सी में ﴿ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ﴾ तीसरी सूरः *ताहा* में ﴿ وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ﴾ (इब्ने कसीर तफ़सीर आयतुल कुर्सी)

[1]अर्थात इसके अल्लाह की ओर से अवतरित होने में कोई संशय नहीं।

[2]इससे पहले अन्य नबियों पर जो किताबें उतरीं, यह किताब इसकी पुष्टि करती है। अर्थात जो बातें उनमें लिखी थीं, उनकी यर्थाथता और उनमें वर्णित भविषय वाणी को स्वीकार करती है। जिसका स्पष्ट अर्थ है कि यह क़ुरआन करीम भी उसी की ओर से उतरा है, जिसने इससे पूर्व अनेक धर्मशास्त्र उतारे हैं। यदि यह किसी अन्य की ओर से अथवा मानवीय प्रयासों का प्रतिफल होता, तो इनमें परस्पर अनुकूलता के बजाये प्रतिकूलता होती।

[3]अर्थात अपने-अपने समय में तौरात और इंजील भी अवश्य लोगों के मार्गदर्शन का स्रोत थीं, इसलिये कि उनके उतारने का उद्देश्य ही यही था। फिर भी उसके पश्चात ﴿ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ﴾ पुन: कह कर स्पष्ट कर दिया कि, तौरात और इंजील का युग समाप्त हो गया। अब क़ुरआन उतर चुका, वह फ़ुरक़ान है और अब केवल वही सत्य-असत्य की पहचान है, इसको सत्य माने बिना अल्लाह के निकट कोई आज्ञाकारी एवं निष्ठावादी नहीं।

The Ummah Technology Mission

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦﴾

(६) वही माता के गर्भ में तुम्हारा रूप जिस प्रकार चाहता है, बनाता है[1] उसके अतिरिक्त कोई भी वास्तविक रूप से पूजने योग्य नहीं है, वह शक्तिशाली और ज्ञाता है।

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ ۖ

(७) वही अल्लाह (तआला) है जिसने तुझ पर किताब उतारी, जिसमें स्पष्ट ठोस आयतें हैं, जो मूल किताब हैं और कुछ समान आयतें हैं,[2] यदि जिनके दिलों में खराबी है, तो वह

---

[1]सुरूप अथवा कुरूप नर अथवा नारी, सौभाग्य अथवा दुर्भाग्य, अपूर्ण अथवा पूर्ण। ज़ब माता के गर्भ में यह सारी अवस्थायें देने वाला मात्र अल्लाह तआला ही है, तोआदरणीय ईसा पूज्य किस प्रकार हो सकते हैं ? जबकि वह स्वयं भी सृष्टि की इन अवस्थाओं से गुज़र कर दुनियाँ में आये हैं, जिसका उद्गम अल्लाह ने माँ के गर्भ में स्थापित किया है।

[2] 'मुहकमात' से तात्पर्य वह आयतें हैं जिनमें आदेश, निषेध, समस्यायें एवं कथायें हैं, जिनका भावार्थ स्पष्ट एवं अटल है, उनके समझने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं आती। इसके विपरीत "*आयात मुताशाबिहात*" है। जैसे अल्लाह का अस्तित्व न्याय, तथा भाग्य की समस्यायें, स्वर्ग, नरक तथा मलायका (सुरों) स्वर्गदूतों आदि अर्थात परबोध का तथ्य हैं जिन की यर्थाथता एवं वास्तविकता को समझने में मानव असक्त है अथवा उनमें दुविधा अथवा द्वैत का अवकाश हो। अथवा कम से कम ऐसा अस्पष्टता हो जिससे मनुष्यों को भ्रमित किया जा सके। इसी कारण आगे कहा जा रहा है कि जिनके दिलों में ख़राबी होती है वह "*आयात मुताशाबिहात*" के पीछे पड़ जाते हैं और उनके द्वारा अशान्ति फैलाते हैं। जैसे इसाई हैं। क़ुरआन ने आदरणीय ईसा को अल्लाह का भक्त तथा नबी कहा है। यह एक स्पष्ट एवं दृढ़ (मोहकम) आयत है। लेकिन इसे छोड़कर क़ुरआन करीम में आदरणीय ईसा को "*रूहुल्लाह*" और "*कलिमतुल्लाह*" जो कहा गया है, उससे अपने भ्रामक विश्वास पर ग़लत अर्थ निकालते हैं। यही स्थिति अहले बिदअत की है। क़ुरआन करीम के स्पष्ट विश्वास के विपरीत बिदअत करने वालों ने जो भ्रमिक विश्वास गढ लिये हैं। यह उन्ही 'मुताशाबिहात' को आधार बनाते हैं। तथा प्राय: अपने तर्कों के द्वारा 'मुहकमात' को 'मुताशाबिहात' बना देते हैं أعاذنا الله منه इनके विपरीत दृढ़ विश्वासी मुसलमान 'मुहकमात' आयतों के अनुसार कर्म करते हैं और 'मुताशाबिहात' के अर्थ को भी (यदि इसमें अस्पष्टता हो) 'मुहकमात' की रोशनी में समझने का प्रयत्न करते हैं क्योंकि क़ुरआन ने इन्हीं को "*मूल किताब*" माना है। जिससे वह अशान्ति से भी सुरक्षित रहते हैं। और विश्वास से भटकने से भी सुरक्षित रहते हैं।

The Ummah Technology Mission

فَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَآءَ تَاْوِيْلِهٖ ۚ وَمَا يَعْلَمُ تَاْوِيْلَهٗٓ اِلَّا اللّٰهُ ۘ وَالرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝٧

समान आयतों के पीछे लग जाते हैं। अशान्ति उत्पन्न करने के लिये एवं उनकी कष्ट कल्पना के लिये, परन्तु उनके वास्तविक उद्देश्य को अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त कोई नहीं जानता।[1] और पूर्ण एवं दृढ़ ज्ञान वाले यही कहते हैं कि हम तो उन पर ईमान ला चुके यह सब हमारे प्रभु की ओर से है, शिक्षा तो मात्र बुद्धिमान ही प्राप्त करते हैं।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝٨

(८) हे हमारे प्रभु ! हमें मार्गदर्शन के उपरान्त हमारे दिल टेढ़े न कर दे और हमें अपने पास से कृपा प्रदान कर, नि:संदेह तू ही परम दाता है।

رَبَّنَآ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝٩

(९) हे हमारे प्रभु ! तू नि:संदेह लोगों को एक दिन एकत्रित करने वाला है, जिसके आने में कोई शंका नहीं। नि:संदेह अल्लाह (तआला) वचन के विपरीत नहीं करता।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـــًٔا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ۝١٠

(१०) काफ़िरों को उनके धन तथा उनकी संतान अल्लाह (तआला) की यातनाओं से छुड़ाने में कुछ काम न आ सकेगी, यह तो नरक का ईंधन ही हैं।

---

[1] तावील का एक अर्थ है किसी वस्तु के तत्व का ज्ञान। इस अर्थानुसार إلا الله पर रूकना आवश्यक है, क्योंकि प्रत्येक विषय की यर्थाथता की वास्तविक ज्ञान मात्र अल्लाह ही को है, दूसरा अर्थ किसी विषय की व्याख्या, भाष्य, वर्णन तथा स्पष्टीकरण है, इस अर्थानुसार والراسخون पर रुका जा सकता है, क्योंकि ज्ञानी लोग भी सहीह व्याख्या एवं भाष्य का ज्ञान रखते हैं। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

كَدَأْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ⑪

(११) जैसाकि फ़िरऔन की संतान का हाल हुआ, और उनका जो उनसे पूर्व थे, उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया, फिर अल्लाह (तआला) ने उन्हें उनके पापों पर पकड़ लिया और अल्लाह (तआला) कठोर यातनाओं वाला है।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ⑫

(१२) काफ़िरों से कह दीजिये कि तुम लोग निकट भविष्य में पराजित किये जाओगे।[1] और नरक की ओर एकत्रित किये जाओगे और वह बुरा बिछौना है।

قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ؕ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْىَ الْعَيْنِ ؕ

(१३) नि:संदेह तुम्हारे लिये शिक्षाप्रद निशानी थी, उन दो गुटों में जो गुथ गये थे, एक गुट अल्लाह के मार्ग में लड़ रहा था, और दूसरा गुट काफ़िरों का था, वह उन्हें आँखों की दृष्टि से अपने से दुगना देखते थे।[2] और

---

[1]यहाँ काफ़िरों (कृतघ्ना) से तात्पर्य यहूदी हैं, और यह भविष्यवाणी शीघ्र ही पूरी हो गयी। अतएव बनू क़ैनुक़ाअ और बनू नदीर को देश से निकाल दिया गया, बनू क़ुरैजा की हत्या की गयी। फिर ख़ैबर विजयी हुआ और सभी यहूदियों पर जिज़या (सुरक्षा कर) लागू कर दिया गया। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात प्रत्येक पक्ष दूसरे पक्ष को अपने से दुगुना देखता था। काफ़िर की संख्या एक हज़ार के निकट थी, उन्हें मुसलमान दो हज़ार के लगभग दिखाई दे रहे थे। उद्देश्य उनके दिलों में मुसलमानों की धाक बिठाना था। और मुसलमानों की संख्या तीन सौ से कुछ ऊपर अर्थात (३१३) थी, उन्हें काफ़िर ६०० और ७०० के मध्य दिखाई पड़ते थे। वास्तविकता यह थी कि वास्तविक संख्या हज़ार के निकट (तीन गुनी) थी। इसका उद्देश्य मुसलमानों के साहस एवं शौर्य को बढ़ाना था। अपने से तीन गुना देखकर सम्भव था कि मुसलमान भयभीत हो जाते, इसके बजाय अपने से दुगना दिखने के कारण उनका साहस कम नहीं हुआ। परन्तु यह दुगुना दिखने की स्थिति प्रारम्भ में थी, फिर जब दोनों गुट आमने-सामने खड़े हो गये तो अल्लाह तआला ने इसके विपरीत दोनों को एक दूसरे की दृष्टि कम करके दिखाया ताकि कोई भी पक्ष लड़ाई से पीछे न हटे, बल्कि प्रत्येक आगे बढ़ने का प्रयत्न करे। (इब्ने कसीर) यह विवरण सूरः *अल-अंफ़ाल* की आयत संख्या ४४ में वर्णित की गयी है। यह बद्र के युद्ध की घटना है, जो हिजरत के पश्चात

The Ummah Technology Mission

وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿١٣﴾

अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपनी सहायता से सुदृढ़ कर देता है। नि:संदेह इसमें आँखों वालों के लिये बड़ी शिक्षा है।

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ

(१४) प्रिय वस्तुओं का प्रेम लोगों के लिये सौन्दर्यपूर्ण कर दिया गया है, जैसे स्त्रियाँ और पुत्र, और सोना, चाँदी के एकत्रित किये हुए ख़जाने और निशानदार घोड़े और चौपाये और खेती।[1] यह साँसारिक जीवन का सामान

दूसरे वर्ष मुसलमानों और काफ़िरों के मध्य हुआ। यह कई प्रकार से अत्यन्त महत्वपूर्ण युद्ध था। प्रथम तो यह कि यह प्रथम युद्ध था। द्वितीय यह युद्ध योजनाओं के बिना हुआ। मुसलमान अबू सुफ़ियान के काफ़िले के लिये निकले थे, जो सीरिया से व्यापारिक सामग्री लेकर मक्का आ रहा था, परन्तु सूचना मिल जाने के कारण वह अपने क़ाफ़िले को तो बचाकर ले गये, परन्तु मक्का के काफ़िर अपनी शक्ति और संख्या के घमंड में मुसलमानों पर चढ़ दौड़े और बद्र नामक स्थान पर यह युद्ध हुआ। तृतीय इसमें मुसलमानों को अल्लाह तआला की विशेष सहायता प्राप्त हुई। चतुर्थ इसमें काफ़िरों को अपमान जनक पराजय हुई, जिससे काफ़िरों के साहस क्षीण पड़ गये।

[1] شهوات से यहाँ तात्पर्य مشتبهات है अर्थात वह चीज़ें जो मनुष्य को प्राकृतिक रूप से प्रिय हैं। इसलिये इनसे अभिलाषा और उनसे प्रेम अनुचित नहीं है। परन्तु यह प्रेम इस्लामी धार्मिक नियमों के परिधि में तथा संतुलित हो। उनका सौन्दर्य भी अल्लाह तआला की ओर से परीक्षा है।

﴿ إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ ﴾

"हमने धरती पर जो कुछ बनाया है इसे धरती की सुन्दरता के लिये बनाया है, ताकि लोगों की हम परीक्षा लें।" (*अल-कहफ़-७*)

सर्वप्रथम स्त्री का वर्णन है क्योंकि प्रत्येक वयस्क पुरूष की सबसे बड़ी आवश्यकता भी है और सबसे अधिक प्रिय भी। स्वयं *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का कथन है «حُبِّبَ إِلَيَّ النِّسَاءُ والطِّيبُ» (मुसनद अहमद) "स्त्री और सुगन्ध मुझे प्रिय है।" इसी प्रकार *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने सुशील स्त्री को "दुनियाँ की सर्वश्रेष्ठ चीज़" कहा है «خَيْرُ مَتَاعِ الدُّنْيَا المَرْأَةُ الصَّالِحَةُ» इसलिये इससे धार्मिक नियमों के अन्तर्गत प्रेम करने को, जो धार्मिक नियमों के बाहर न हों, तो यह श्रेष्ठ जीवनसाथी भी है और आख़िरत का सामान

The Ummah Technology Mission

الدُّنْيَا ۚ وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الْمَآبِ ﴿١٤﴾

है, और लौटने का अच्छा ठिकाना तो अल्लाह (तआला) ही के पास है।

قُلْ أَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذَٰلِكُمْ ۚ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ

(१५) आप कह दीजिये कि क्या मैं तुम्हें इससे उत्तम वस्तु बताऊँ ? अल्लाह संयमी लोगों के लिये, उनके प्रभु के पास स्वर्ग हैं, जिनके नीचें

भी। वरन् यही स्त्री, पुरूष के लिये सबसे बड़ी आशान्ति है। *रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का कथन है।

«مَا تَرَكْتُ بَعْدِي فِتْنَةً أَضَرَّ عَلَى الرِّجَالِ مِنَ النِّسَاءِ».

"मेरे पश्चात जो अशान्ति उत्पन्न होगी, उनमें पुरूषों के लिये सबसे बड़ी अशान्ति स्त्री है।" (सहीह बुख़ारी)

इसी प्रकार पुत्रों का प्रेम है। यदि इससे तात्पर्य मुसलमानों की शक्ति बढ़ाना और अस्तित्व तथा वंश को बढ़ाना है, तो प्रशंसनीय है, वरन् अप्रशंसनीय। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है।

«تَزَوَّجُوا الْوَدُودَ الْوَلُودَ؛ فَإِنِّي مُكَاثِرٌ بِكُمُ الْأُمَمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ».

(अत्यधिक प्रेम करने वाली और अधिक बच्चों को जन्म देने वाली स्त्री से विवाह करो, इसलिये कि मैं क़ियामत के दिन दूसरी उम्मतों (समुदायों) के सापेक्ष अपनी उम्मत की संख्या पर गर्व करूँगा)

इस आयत से ब्रह्मचारी रहने का खंडन और परिवार नियोजन का अनुचित होना सिद्ध होता है क्योंकि بنين बहुवचन है। धन से भी आर्थिक व्यवस्था स्थापित करना, दया करना, दान व पुण्य और पुण्य के कार्यों में व्यय करना और किसी के सामने हाथ फैलाने से बचना है ताकि अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करें, तो इसका भी प्रेम परम आवश्यक है, तथापि अप्रशंसनीय। घोड़ों से तात्पर्य धर्मयुद्ध की तैयारी, अन्य पशुओं से कृषि कार्य तथा यातायात का कार्य लेना और धरती से उसकी उपज प्राप्त करना हो, तो यह सब प्रिय हैं, और यदि उद्देश्य केवल दुनियाँ कमाना और उस पर गर्व तथा घमंड व्यक्त करना और अल्लाह की याद से मुँह मोड़ कर ऐश्वर्य जीवन व्यतीत करना है, तो यह सबसे लाभकारी चीज़ें उसके लिये हानिकारक सिद्ध होंगी। "*क़नातीर*" *क़िनतार* (ख़ज़ाना) का बहुवचन है। तात्पर्य है ख़ज़ाने अर्थात सोने, चाँदी, धन-धान्य की अधिकता एवं परिपूर्णता। المسومة वह घोड़े जो चारागाह में चरने के लिए छोड़े गये हों अथवा धर्मयुद्ध के लिये तैयार किये गये हों अथवा चिन्हित जिन पर विभेद के लिये कोई चिन्ह अथवा अंक लगा दिया गया हो। (फ़तहुल क़दीर व इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝١٥

नहरें बह रही हैं, जिनमें वे सदैव निवास करेंगे।[1] और पवित्र पत्नियाँ[2] और अल्लाह (तआला) की प्रसन्नता है। और सभी भक्त अल्लाह (तआला) की दृष्टि में हैं।

اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اِنَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝١٦

(१६) जो कहते हैं कि हे प्रभु। हम ईमान ला चुके, इसलिये हमारे पाप क्षमा कर दे और हमें अग्नि की यातना से बचा।

اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ۝١٧

(१७) जो धैर्य रखने वाले, और सत्यवादी और आज्ञाकारी, तथा अल्लाह के मार्ग में धन व्यय करने वाले हैं और पिछली रात को मोक्ष प्राप्त करने की कामना के लिये प्रार्थना करने वाले हैं।

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًۢا بِالْقِسْطِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ

(१८) अल्लाह उसके फ़रिश्तों तथा ज्ञानियों ने न्याय पर स्थिर रहकर गवाही दी है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई आराध्य नहीं[3]

---

[1]इस आयत में ईमानवालों को बताया जा रहा है, कि दुनियाँ की उपरोक्त वर्णित चीजों में ही न खो जाना, बल्कि उनसे श्रेष्ठ तो वह जीवन तथा उसकी कृपा है, जो प्रभु के पास है, जिसके अधिकारी अल्लाह के भय से भयभीत होने वाले हैं। इसलिये अल्लाह से डरो। यदि यह तुम्हारे अन्दर उत्पन्न हो गया, तो नि:संदेह दुनियाँ और परलोक की सारी भलाईयाँ अपने दामन में बटोर लोगे।

[2]पवित्र का अर्थ है कि वह साँसारिक अपवित्रता अर्थात मैल-कुचैल, मासिक धर्म, और अन्य दूषण से पवित्र होंगी और सुशील एवं सुचरित्र होंगी। इसलिये अगली दो आयतों में अल्लाह के भय से भयभीत होने वालों की विशेषताओं का वर्णन है।

[3]शहादत का अर्थ वर्णन करना तथा सूचित करना है। अर्थात अल्लाह तआला ने जो कुछ उत्पन्न तथा वर्णित किया, उसके द्वारा उसने अपने एक होने की ओर हमारा मार्गदर्शन किया। (फ़तहुल क़दीर) फ़रिश्ते तथा ज्ञानी भी उसके एक होने की गवाही देते हैं। इसमें ज्ञानियों की विशेषता तथा श्रेष्ठता है कि अल्लाह तआला ने अपने फ़रिश्तों के नाम के साथ उनका वर्णन किया है, परन्तु इससे तात्पर्य मात्र वही ज्ञानी हैं जो क़ुरआन तथा हदीस का ज्ञान रखते हैं। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

वही सर्व शक्तिमान निर्णय करता, उसके अतिरिक्त कोई आराधना के योग्य नहीं। الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٨﴾

(१९) निश्चय अल्लाह के पास धर्म इस्लाम ही है[1] (अल्लाह के प्रति पूर्ण आत्म समर्पण) إِنَّ الدِّينَ عِندَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا

---

[1]इस्लाम वही धर्म है जिसका प्रचार एवं शिक्षा प्रत्येक ईशदूत अपने युग में देते रहे तथा अब यह उस का पूर्ण स्वरूप है जिसे अन्तिम ईशदूत *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* संसार के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। जिसमें एकेश्वरवाद, दूतत्व तथा परलोक के प्रति इस प्रकार विश्वास रखना है जैसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया है, अब मात्र यह विश्वास रख लेना कि अल्लाह (परमेश्वर) एक है अथवा कुछ सत्कर्म कर लेना इस्लाम नहीं न इससे परलोक में मोक्ष प्राप्त होगा। विश्वास तथा धर्म यह है कि अल्लाह को एक माना जाये मात्र उसी एक पूज्य की उपासना की जाये मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समेत सभी ईशदूतों के प्रति विश्वास रखा जाये तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दूतत्व का समापन माना जाये तथा आस्था के साथ वह विश्वास एवं कर्म ग्रहण किये जायें जो क़ुरआन तथा ईशदूत के कथन (हदीस) में वर्णित हैं अब इस धर्म इस्लाम के सिवाय कोई अन्य धर्म अल्लाह के यहाँ स्वीकृत न होगा।

﴿وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ ٱلْإِسْلَٰمِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِى ٱلْءَاخِرَةِ مِنَ ٱلْخَٰسِرِينَ﴾ [آل عمران: ٨٥]

"और जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त किसी धर्म की खोज करे उसका धर्म मान्य नहीं होगा और परलोक में वह क्षतिग्रस्तों में होगा"।

﴿قُلْ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنِّى رَسُولُ ٱللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا﴾

"कह दीजिये कि हे लोगो ! मैं तुम सबकी ओर अल्लाह का दूत हूँ"। (*सूरः आराफ़*-१५८)

﴿تَبَارَكَ ٱلَّذِى نَزَّلَ ٱلْفُرْقَانَ عَلَىٰ عَبْدِهِۦ لِيَكُونَ لِلْعَٰلَمِينَ نَذِيرًا﴾

"शुभ है वह जिसने अपने भक्त पर फुरक़ान (विवेकारी शास्त्र) उतारा ताकि वह जगतों को सावधान करे"। (*अल-फ़ुरक़ान*-१)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : उस अल्लाह की सौगन्ध जिसके हाथ में मेरा प्राण है जो यहूदी अथवा इसाई मुझ पर विश्वास किये बिना मर जाये वह नरकीय है। (सहीह मुस्लिम) यह भी कहा कि मैं लाल-काले (सभी मानव) के लिये भेजा गया हूँ इसी कारण आपने अपने युग के सभी राजाओं को पत्र लिखकर उनको इस्लाम धर्म स्वीकार करने का आमन्त्रण दिया। (सहीहैन, माध्यम इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

مِنۢ بَعۡدِ مَا جَآءَهُمُ الۡعِلۡمُ بَغۡيًۢا بَيۡنَهُمۡ ؕ وَمَنۡ يَّكۡفُرۡ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيۡعُ الۡحِسَابِ ﴿۲۰﴾

तथा जो धर्मशास्त्र दिये गये उन्होंने ज्ञान आने के पश्चात परस्पर द्वेष के कारण मतभेद किये।[1] तथा जो अल्लाह की आयतों (पवित्र क़ुरआन) को न माने[2] तो अल्लाह शीघ्र हिसाब लेगा।

فَاِنۡ حَآجُّوۡكَ فَقُلۡ اَسۡلَمۡتُ وَجۡهِىَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ؕ وَقُلۡ لِّلَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ وَالۡاُمِّيّٖنَ ءَاَسۡلَمۡتُمۡ ؕ فَاِنۡ اَسۡلَمُوۡا فَقَدِ اهۡتَدَوۡا ۚ وَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَاِنَّمَا عَلَيۡكَ الۡبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيۡرٌۢ بِالۡعِبَادِ ﴿۲۰﴾

(२०) यदि वह आप से विवाद करें तो आप कह दें कि मैंने तथा मेरे अनुयाईयों ने स्वयं को अल्लाह के प्रति समर्पित कर दिया तथा आप शास्त्रधारियों एवं अशिक्षित लोगों[3] को कहें कि क्या तुम इस्लाम लाये। यदि वह इस्लाम को स्वीकार कर लें तो सीधा रास्ता पा गये और यदि मुँह फेरें तो आप को मात्र पहुँचाना है और अल्लाह भक्तों को देख रहा है।

---

[1]उनके इस आपसी मतभेद से तात्पर्य वह मतभेद है, जो एक ही धर्म के मानने वालों ने आपस में उत्पन्न कर रखा था। जैसे : यहूदियों के आपसी मतभेद तथा गुटबन्दी, इसी प्रकार इसाईयों के आपसी मतभेद तथा गुटबन्दी। फिर उन मतभेदों का अर्थ भी है जो किताब वालों में आपस में थे। जिसके आधार पर यहूदी, इसाईयों को और इसाई यहूदियों को कहा करते थे कि "तुम किसी धर्म पर नहीं हो।" नबूअत मोहम्मदी तथा नबूअत ईसा भी इसी के अन्तर्गत आता है। परन्तु यह सभी मतभेद तर्कहीन थे, मात्र द्वेष, ईर्ष्या तथा घृणा के कारण थे अर्थात वह लोग सत्यता जानते हुए भी मात्र अपने विचारों तथा सांसारिक लाभ के कारण गलत बात पर अड़े रहे, और इसको धर्म बताते थे। ताकि उनकी नाक भी ऊँची रहे और उनका जनता का साथ भी बना रहे। अफ़सोस आज मुसलमानों के आलिमों की एक बड़ी संख्या ठीक उन्हीं गलत उद्देश्यों के लिये उसी ग़लत मार्ग पर चल रही है।

[2] यहाँ आयतों से तात्पर्य, वह प्रतीक हैं जो इस्लाम के ईश्वरीय धर्म को सिद्ध करती हैं।

[3]अशिक्षित लोगों से तात्पर्य अरब के मूर्तिपूजक हैं, जो किताब वालों की तुलना में सामान्यतः अशिक्षित थे।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢١﴾

(२१) नि:संदेह जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों से इंकार करते हैं, और ईशदूतों (अम्बिया) को अवैध हत करते हैं, तथा जो लोग न्याय की बात करें, उन्हें भी हत करते हैं।[1] तो (हे नबी) आप उन्हें घोर यातनाओं से सूचित कर दीजिये।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٢٢﴾

(२२) उन्हीं के (पुण्य) कर्म लोक तथा परलोक में व्यर्थ हो गये तथा इनका कोई सहायक नहीं।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ وَهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) क्या आपने उन्हें नहीं देखा, जिन्हें किताब का एक भाग दिया गया है, वह अपने आपस के निर्णय के लिये अल्लाह (तआला) की किताब की ओर बुलाये जाते हैं, फिर भी उनका एक गिरोह मुँह फेर कर लौट जाता है।[2]

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ ۖ وَغَرَّهُمْ

(२४) इसका कारण उनका यह कहना है कि उन्हें गिनती के कुछ दिन ही आग स्पर्श करेगी, यह उनकी मन गढ़न्त बातों ने उन्हें

---

[1] अर्थात उनकी दुष्टता एवं विद्रोह इतना बढ़ चुका था कि वे केवल नबियों की ही अनुचित रूप से हत्या नहीं किया करते बल्कि उन तक की भी हत्या कर देते, जो न्याय की बात कहते। अर्थात वह ईमानवाले, नि:स्वार्थी, सत्य का आमन्त्रण देने वालों की जो सत्कर्म करने को कहते और कुकर्म से रोकते थे, हत्या कर देते। नबियों के साथ उनका वर्णन करके अल्लाह तआला ने उनकी श्रेष्ठता तथा विशेषता भी स्पष्ट कर दी।

[2] इन किताब वालों से तात्पर्य वह मदीने के रहने वाले यहूदी हैं, जिनका बहुमत इस्लाम धर्म स्वीकार करने योग्य ही नहीं थे, और इस्लाम, मुसलमानों और *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के विरोध में कुचक्रों को उत्पन्न करने में व्यस्त रहे, यहाँ तक कि उनके दो गिरोहों को देश निकाला तथा एक गिरोह की हत्या कर दी गयी।

The Ummah Technology Mission

فِيْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾

उनके धर्म के विषय में उन्हें धोखे में डाल रखा है।[1]

فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۖ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾

(२५) फिर क्या दशा होगी जब उन्हें हम उस दिन एकत्रित करेंगे, जिसके आने में कोई शंका नहीं, और प्रत्येक व्यक्ति को अपने किये का पूर्ण प्रतिकार दिया जायेगा। और उन पर अत्याचार न किया जायेगा।[2]

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۖ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ؕ إِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٦﴾

(२६) आप कह दीजिए, ऐ अल्लाह ! हे सम्पूर्ण जगत के स्वामी ! तू जिसे चाहे राज्य दे और जिससे चाहे राज्य छीन ले और तू जिसे चाहे सम्मान दे और जिसे चाहे अपमानित कर दे तेरे ही हाथों में सारी भलाईयाँ हैं।[3] निःसंदेह तू प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

---

[1] अल्लाह की किताब (धर्मशास्त्र) को न मानने एवं उससे विमुखता के कारण उनका यह मिथ्यापूर्ण विचार था कि वह नरक में जायेंगे ही नहीं तथा यदि गये भी तो कुछ दिनों के लिये जायेंगे। और इन्हीं काल्पनिक बातों ने उन्हें धोखे एवं भ्रान्ति में डाल रखा है।

[2] प्रलय के दिन उनके यह दावे तथा भ्रम कुछ काम नहीं आयेंगे एवं अल्लाह स्पष्ट रूप से न्याय करेगा तथा प्रत्येक प्राणी को पूरा-पूरा प्रतिफल प्रदान करेगा, किसी पर अत्याचार नहीं होगा।

[3] इस आयत में अल्लाह के अपार सामर्थ्य तथा शक्ति का वर्णन है राजा को रंक तथा रंक को राजा बना देने का अधिकार उसी को है الخير بيدك के स्थान पर بيدك الخير (सूचना की प्रथमिकता के साथ) से तात्पर्य विशेषता दिखाना है, अर्थात भलाईयाँ मात्र तेरे ही हाथ में हैं, तेरे सिवाय कोई भलाई नहीं दे सकता। शर (बुराई) का (उत्पत्ति कर्ता) भी यद्यपि अल्लाह ही है परन्तु यहाँ मात्र ख़ैर (भलाई) का वर्णन किया गया। शर (बुराई) का नहीं इसलिये कि भलाई मात्र अल्लाह की कृपा है इसके विपरीत बुराई इन्सान के अपने कर्म का प्रतिफल है जो उसे मिलता है अथवा इसलिये कि बुराई भी उसके भाग्य लेख का एक अंश है जिसमें भलाई इस प्रकार है कि अल्लाह के सभी कार्य भले हैं। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

تُولِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ تُولِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۚ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۚ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾

(२७) तू ही रात को दिन में प्रवेशित करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है।[1] तू ही निर्जीव से जीव पैदा करता है,[2] तू ही है कि जिसे चाहता है अंगणित जीविका प्रदान करता है।

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ

(२८) मोमिनों को चाहिए कि ईमानवालों को छोड़कर काफ़िरों को अपना मित्र न बनायें।[3]

---

[1]रात को दिन में और दिन को रात में प्रवेश देने का अर्थ मौसम का बदलना है। एक मौसम में रात लम्बी होती है, तो दिन छोटा है और दूसरे मौसम में इसके विपरीत दिन लम्बा होता है और रात छोटी हो जाती है। अर्थात कभी रात का भाग दिन में और दिन का भाग रात में प्रविष्ट कर देता है। जिससे रात और दिन छोटे बड़े हो जाते हैं।

[2]जैसे वीर्य (निर्जीव) पहले जीवित व्यक्ति से निकलता है और फिर उस निर्जीव (वीर्य) से मनुष्य। इसी प्रकार निर्जीव अण्डे से जीवित मुर्गी और फिर जीवित मुर्गी से निर्जीव अण्डा अथवा काफ़िर से मोमिन और मोमिन से काफ़िर पैदा करता है। कुछ कथनों में है कि आदरणीय मुआज़ रज़ी अल्लाह अन्हु ने *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* से अपने ऊपर ऋण की शिकायत की तो आप *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फरमाया : कि तुम आयत قل اللهم إلخ पढ़कर यह दुआ करो।

«رَحْمٰنَ الدُّنْيا وَرَحِيمَهُمَا! تُعْطِي مَنْ تَشَاءُ مِنْهُمَا وتَمْنَعُ مَنْ تَشَاءُ، ارْحَمْنِي رَحْمَةً تُغْنِينِي بِهَا عَنْ رَحْمَةِ مَنْ سِوَاكَ، اللَّهُمَّ أَغْنِنِي مِنَ الْفَقْرِ، وَاقْضِ عَنِّي الدَّيْنَ».

एक दूसरे कथन में है कि "यह ऐसी दुआ है कि तुम पर ओहद (पर्वत जो मदीने के उत्तर दिशा में पर्वतीय श्रंखला है) जितना भी ऋण हो तो अल्लाह तआला उसको अदा करने का प्रवन्ध तुम्हारे लिये कर देगा।" (मजमउज्जवायेद १०/१८६)

[3]औलिया, वली का बहुवचन है। वली ऐसे मित्र को कहते हैं जिससे हार्दिक प्रेम तथा विशेष सम्बन्ध हो। जैसे अल्लाह तआला ने अपने आपको ईमानवालों का वली कहा है।

﴿اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا﴾

"अल्लाह ईमानवालों का वली है।" (*अल-बकर:*-२५७)

अर्थात ईमानवालों को एक-दूसरे से प्रेम तथा विशेष सम्बन्ध है और वे आपस में एक-दूसरे के वली (मित्र) हैं। अल्लाह तआला ने यहाँ पर ईमानवालों को इस बात से कठोरता से मना किया है कि वह काफ़िरों को अपना मित्र न बनायें। क्योंकि काफ़िर अल्लाह तआला के भी शत्रु हैं और ईमानवालों के भी शत्रु हैं। तो उनको मित्र बनाने का प्रश्न भी किस प्रकार से उठ सकता है ? इसीलिए अल्लाह तआला ने इस विषय को क़ुरआन करीम में कई स्थान पर स्पष्टरूप से वर्णित किया है। ताकि ईमानवाले काफ़िर से मित्रता और विशेष सम्बन्ध स्थापित न करें। परन्तु आवश्यकतानुसार उनसे सन्धि हो सकती है और व्यापारिक लेन-देन भी। इसी प्रकार जो काफ़िर मुसलमानों के शत्रु न हों, उनसे अच्छा

The Ummah Technology Mission

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِيْ شَيْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةً ؕ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨﴾

और जो ऐसा करेगा वह अल्लाह (तआला) की किसी पक्ष में नहीं, परन्तु यह कि उनके (आतंक से) किसी प्रकार की रक्षा का लक्ष्य हो।[1] और अल्लाह (तआला) स्वयं तुम्हें अपने आप से डरा रहा है और अल्लाह (तआला) ही की ओर लौटकर जाना है।

قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ يَعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٩﴾

(२९) कह दीजिए कि चाहे तुम अपने हृदय की बातें छिपाओ अथवा स्पष्ट करो, अल्लाह (तआला) सबको जानता है, आकाशों और धरती में जो कुछ है सब उसे मालूम है, अल्लाह (तआला) प्रत्येक वस्तु पर प्रभुत्वशाली है।

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۚ وَّمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْٓءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ اَمَدًا بَعِيْدًا ؕ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ بِالْعِبَادِ ﴿٣٠﴾

(३०) जिस दिन प्रत्येक प्राणी (व्यक्ति) अपने किये सुकर्म तथा कुकर्म को उपस्थिति पायेगा, कामना करेगा कि काश ! उसके और पाप के बीच बहुत दूरी होती। अल्लाह (तआला) अपने आप से डरा रहा है और अल्लाह (तआला) अपने भक्तों पर अत्याधिक कृपालु है।

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ

(३१) कह दीजिए ! यदि तुम अल्लाह (तआला) से प्रेम करते हो, तो मेरा अनुसरण करो।[2]

व्यवहार व शिष्टाचार उचित भी है। (जिसका सविस्तार वर्णन *सूरः मुमतहिनः* में है) क्योंकि यह सभी बातें मित्रता तथा प्रेम से भिन्न हैं।

[1]यह आज्ञा उन मुसलमानों के लिए है, जो किसी काफ़िर राज्य में रहते हों और उनसे मित्रता व्यक्त किये विना उनके आतंक से बचना असम्भव न हो, तो वह उनसे मौखिक मित्रता कर सकते हैं।

[2]यहूदियों और इसाईयों दोनों का यह दावा था कि हम अल्लाह तआला से और अल्लाह तआला हमसे प्रेम करता है। विशेष रूप से इसाईयों ने आदरणीय ईसा और मरियम *अलैहिमास्सलाम* के आदर तथा प्रेम में इतना अतिश्योक्ति कर दिया कि उन्हें पूज्य देव के

The Ummah Technology Mission

يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣١﴾

स्वयं अल्लाह (तआला) तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा।[1] और अल्लाह (तआला) अत्यधिक क्षमाशील कृपालु है।

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾

(३२) कह दीजिये कि अल्लाह (तआला) और रसूल की आज्ञा का पालन करो, यदि वह मुँह फेर लें, तो नि:संदेह अल्लाह (तआला) काफ़िरों को मित्र नहीं रखता।[2]

स्थान पर पदासीन कर दिया इसके विषय में भी उनका विचार था कि इसके द्वारा हम अल्लाह की निकटता तथा प्रसन्नता के अधिकारी बनना चाहते हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया : कि उनके दावों तथा स्वयं गढ़ी गयी विधियों से अल्लाह की प्रसन्नता तथा प्रेम नहीं प्राप्त किया जा सकता। उसका मात्र एक मार्ग यह है कि मेरे अन्तिम पैग़म्बर पर ईमान लाओ और उसका अनुसरण करो। इस आयत ने उन सभी प्रेम के दावेदारों के लिए एक कसौटी और माप उपलब्ध करा दिया है कि अल्लाह के प्रेम का अर्थ यदि *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के अनुसरण द्वारा यह फल प्राप्त करना चाहा है, तो फिर सफल है और अपने दावे का सच्चा है वरन् वह झूठा भी है और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल भी। *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का कथन है।

«مَنْ عَمِلَ عَمَلًا لَيْسَ عَلَيْهِ أَمْرُنَا فَهُوَ رَدٌّ»

"जिसने ऐसा काम किया जिससे हमारा सम्बन्ध नहीं है अर्थात हमारे मार्ग से भिन्न है, तो वह बेकार है।" (मुत्तफ़क अलैह)

[1]अर्थात *रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का अनुकरण करने के कारण केवल तुम्हारे पाप को ही नहीं क्षमा किया जायेगा बल्कि तुम अपने प्रेमी के प्रेमी बन जाओगे। तो यह कितना श्रेष्ठ स्थान है कि अल्लाह के समक्ष एक मनुष्य अल्लाह के प्रेमी का स्थान प्राप्त कर ले।

[2]इस आयत में अल्लाह के आज्ञा पालन के साथ-साथ *रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का अनुकरण करने की फिर से पुनर्रावृत्ति करके यह स्पष्ट किया गया है कि अब बिना *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का अनुकरण किये मोक्ष नहीं प्राप्त हो सकता। और इसका नकारना कुफ़्र है। और ऐसे काफ़िरों को अल्लाह तआला पसन्द नहीं करता। चाहे वह अल्लाह के प्रेम और निकटता के कितने ही दावेदार हों। इस आयत में हदीस के न मानने वालों और *रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का

The Ummah Technology Mission

إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٣﴾

(३३) नि:संदेह अल्लाह (तआला) ने सभी लोगों में से आदम को और नूह को और इब्राहीम के परिवार और इमरान के परिवार को चुन लिया।[1]

ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِن بَعْضٍ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٤﴾

(३४) कि ये सभी आपस में एक-दूसरे के वंश से हैं।[2] और अल्लाह (तआला) सुनता और जानता है।

अनुकरण न करने वालों की कटु आलोचना की गयी है क्योंकि दोनों ही ने अपने-अपने रूप से ऐसा कर्म करते हैं, जिसे यहाँ कुफ़्र के समान बताया गया है।

[1]नबियों के परिवार में दो इमरान हुए हैं। एक आदरणीय मूसा और हारून के पिता और दूसरे आदरणीय मरियम के पिता। इस आयत में अधिकतर व्याख्याकारों के अनुसार दूसरे इमरान से तात्पर्य है, और इस परिवार को यह सर्वश्रेष्ठ सम्मानित स्थान आदरणीय मरियम और उनके पुत्र आदरणीय ईसा के कारण प्राप्त हुआ। और आदरणीय मरियम की माता का नाम व्याख्याकारों ने "*हन्ना पुत्री फाक़ूज*" लिखा है। (तफ़सीर कुर्तबी तथा इब्ने कसीर) इस आयत में अल्लाह तआला ने इमरान के परिवार के अतिरिक्त अन्य दो परिवारों का वर्णन किया है। जिनको अल्लाह तआला ने उनके समय में अन्य परिवारों से श्रेष्ठता प्रदान की है। इनमें से सर्वप्रथम आदरणीय आदम हैं, जिन्हें अल्लाह ने अपने हाथों से बनाया और उनमें अपनी ओर से आत्मा फूँकी, उनके समक्ष फ़रिश्तों से दण्डवत (सजदा) कराया, सभी चीज़ों का ज्ञान उन्हें प्रदान किया और उनका निवास स्वर्ग में बनाया, जहाँ से उन्हें धरती पर भेजा गया, जिसमें उसकी बहुत-सी बुद्धिमतायें थीं। द्वितीय आदरणीय नूह *अलैहिस्सलाम* हैं, उन्हें उस समय रसूल बनाकर भेजा गया, जब लोग अल्लाह को छोड़कर मूर्तिपूजक बन गये थे, उन्हें दीर्घ आयु प्रदान की गयी, उन्होंने अपने समाज के लोगों को साढ़े नौ सौ वर्ष चेतावनी दी, परन्तु कुछ लोगों को छोड़कर आप पर कोई ईमान नहीं लाया। अन्ततः आपकी प्रार्थना के कारण ईमानवालों को छोड़कर शेष सभी को डुबो दिया गया। इब्राहीम की सन्तान को यह श्रेष्टता प्रदान की गयी कि उनमें ही सभी नबियों की श्रृंखला स्थापित किया और अधिकतर पैग़म्बर आपके वंश से थे। अन्त में सर्वश्रेष्ठ और आदरणीय *मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* भी आदरणीय इब्राहीम के पुत्र इस्माईल की वंश श्रृंखला में हुए।

[2] अथवा दूसरे अर्थ हैं धर्म में एक-दूसरे के सहायक।

The Ummah Technology Mission

إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۖ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٥﴾

(३५) जब इमरान की पत्नी ने कहा कि हे मेरे पालनहार ! मेरे गर्भ में जो कुछ भी है उसे तेरे नाम से स्वतन्त्र करने[1] की मनौती मान ली, तो तू इसे स्वीकार कर, नि:संदेह तू अच्छी प्रकार से सुनने वाला तथा जानने वाला है।

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنْثَىٰ ۖ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿٣٦﴾

(३६) जब शिशु को जन्म दिया, तो कहने लगी प्रभु ! मुझे तो पुत्री हुई है, अल्लाह (तआला) अच्छी प्रकार से जानता है कि क्या जन्म दिया है, और पुत्र, पुत्री के समान नहीं।[2] मैंने उसका नाम मरियम रखा है।[3] मैं उसे और उसकी सन्तान को धिक्कारे शैतान से तेरी शरण में देती हूँ।[4]

---

[1] محررا (तेरे नाम स्वतन्त्र) का अर्थ तेरी धर्मस्थली की सेवा के लिये अर्पित करती हूँ।

[2] इस वाक्य में निराशा का स्पष्टीकरण है और याचना भी। निराशा इस प्रकार कि मेरी आशा के विपरीत पुत्री हुई है। और याचना इस प्रकार कि मनौती के अनुसार मैं तेरी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये एक सेवक अर्पण करना चाहती थी, जिस कार्य के लिए एक पुरूष ही उचित था, परन्तु अब जो कुछ है, तू उसे जानता ही है, उसे स्वीकार कर ले। (फ़तहुल क़दीर)

[3] हाफ़िज इब्ने कसीर ने इससे और *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की हदीसों से यह भावार्थ निकालते हुए लिखा है कि सन्तान का नाम जन्म के प्रथम दिन ही रखना चाहिये और सातवें दिन नाम रखने वाली हदीस जीर्ण सिद्ध किया है। परन्तु हाफ़िज इब्ने क़य्यिम ने सभी हदीसों पर विवाद करते हुए अन्त में लिखा है कि पहले दिन, तीसरे दिन और सातवें दिन नाम रखा जा सकता है। इसमें गुंजाईश है। (तोहफ़तुल मोदूद)

[4] अल्लाह तआला ने यह प्रार्थना स्वीकार की जैसाकि सहीह हदीसों में है कि जब बच्चा जन्म लेता है, तो शैतान उसे छूता है, जिससे वह चीख़ता है। परन्तु अल्लाह तआला ने आदरणीय मरियम तथा उनके पुत्र ईसा को इससे सुरक्षित रखा है।

«مَا مِنْ مَوْلُودٍ يُولَدُ إِلَّا مَسَّهُ الشَّيْطَانُ حِينَ يُولَدُ، فَيَسْتَهِلُّ صَارِخاً مِنْ مَسِّهِ إِيَّاهُ، إِلَّا مَرْيَمَ وَابْنَهَا» .

(सहीह बुख़ारी, किताबुल तफ़सीर, मुस्लिम किताबुल फ़ज़ायल)

The Ummah Technology Mission

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ؕ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ؕ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۳۷﴾

(३७) उसे उसके प्रभु ने अच्छी प्रकार से स्वीकार किया और उसका सर्वश्रेष्ठ पालन-पोषण कराया। उसका संरक्षक ज़करिया को नियुक्त किया[1] जब कभी ज़करिया उनके कमरे में जाते तो उनके पास जीविका रखी हुई पाते थे।[2] वह पूछते थे कि हे मरियम! तुम्हारे पास यह रोज़ी (जीविका) कहाँ से आयी? वह उत्तर देती कि यह अल्लाह (तआला) के पास से है नि:संदेह अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अनगिनत जीविका प्रदान करे।

---

[1] आदरणीय ज़करिया मरियम के मौसा भी थे, इसलिए भी। इसके अतिरिक्त अपने समय में पैग़म्बर होने के कारण सर्वश्रेष्ठ संरक्षक बन सकते थे, जो कि आदरणीय मरियम की आर्थिक आवश्यकताओं, तथा शैक्षिक एवं नैतिक प्रशिक्षण का उचित प्रबन्ध कर सकते थे।

[2] मेहराब से तात्पर्य वह कमरा है जिसमें आदरणीय मरियम रहा करती थीं। रिज़क़ से तात्पर्य फल आदि हैं। यह फल बिना मौसम के हुआ करते थे अर्थात गर्मी के फल सर्दियों में और सर्दियों के फल गर्मियों में उनके कमरे में होते थे। दूसरी आवश्यक बात इन चीज़ को भौतिक रूप से आदरणीय ज़करिया के अतिरिक्त कोई इस प्रकार के फल उनके कमरे में नही ला सकता था, और वह इन फलों को लायें नहीं होते, इस कारण चकित होकर यह पूछते कि यह कहाँ से आये? आदरणीय मरियम ने उन्हें उत्तर दिया अल्लाह की ओर से अर्थात यह आदरणीय मरियम का चमत्कार था। मोजज़: और करामत अप्राकृतिक अथवा असम्भव कार्य के होने को कहते हैं। अर्थात जो प्रत्यक्ष एवं सामान्य संसाधन के विपरीत हों। यह चमत्कार किसी नबी के हाथ पर प्रकाशित हो तो मोजज़: महात्मा (वली) के हाथ से हो, तो करामत कहा जाता है। यह दोनों सत्य हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं है। परन्तु यह दोनों अल्लाह के आदेश और उसके चाहने से होते हैं। नवी अथवा महात्मा (वली)के अधिकार में नहीं कि वह स्वयं अपनी इच्छा से कोई मोजज़ा अथवा करामत कर दिखावें। इसलिये कि मोजज़ा अथवा करामत इस बात को सिद्ध करते हैं कि यह आदरणीय व्यक्ति अल्लाह तआला के समक्ष एक विशेष स्थान रखते हैं। परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता कि इन महानुभावों को यह अधिकार है कि अपनी इच्छानुसार संसार में जो चाहें करें। जैसाकि अहले बिदअत महात्माओं (औलिया) के करामतों से जनता को यही धोखा दे कर उन्हें शिर्क पर विश्वास करने को बाध्य कर रहे हैं, इसका अन्य विस्तार पूर्वक विवरण अन्य स्थानों पर मोजेज़ात के विषय में आयेगा।

The Ummah Technology Mission

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿٣٨﴾

(३८) उसी स्थान पर ज़करिया (अलैहिस्सलाम) ने अपने पालनहार से प्रार्थना की, कहा कि ऐ मेरे पालनहार ! मुझे अपने पास से पवित्र सन्तान प्रदान कर, नि:संदेह तू प्रार्थना सुनने वाला है।

فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٣٩﴾

(३९) फिर फ़रिश्तों ने पुकारा जब कि वह कमरे में खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे कि अल्लाह (तआला) तुझे यहिया की अवश्य सम्भावी शुभ सूचना देता है।[1] जो अल्लाह (तआला) के कलमे की पुष्टि करने वाला,[2] मुखिया परहेज़गार और पूर्ण संयम और नबी होगा सत्कर्मियों में से।

قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ۭ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿٤٠﴾

(४०) कहने लगे हे मेरे प्रभु ! मेरे यहाँ पुत्र कैसे होगा मैं अत्यन्त बूढ़ा हो गया हूँ और मेरी पत्नी बाँझ है, कहा, इसी प्रकार अल्लाह (तआला) जो चाहे करता है।

---

[1] विना मौसम के फल देखकर आदरणीय ज़करिया के दिल में (अपने बुढ़ापे तथा अपनी पत्नी के बाँझ होने पर भी) यह आशा पैदा हुई कि काश अल्लाह तआला उन्हें भी इसी प्रकार सन्तान प्रदान कर दे। इसी कारण उनके हाथ प्रार्थना के लिये उठ गये, जिसे अल्लाह तआला ने स्वीकार भी कर लिया और प्रदान भी किया।

[2] अल्लाह के कलमें की पुष्टि से तात्पर्य आदरणीय ईसा का अनुमोदन करेगा। अर्थात आदरणीय यहिया आदरणीय ईसा से बड़े हुए। दोनों आपस में मौसेरे भाई थे। दोनों ने एक-दूसरे का अनुमोदन किया। سيدا का अर्थ है सरदार, حصورا का अर्थ है पाप से विशुद्ध अर्थात पाप के निकट न गये हों, इसका तात्पर्य यह कि उनको पाप से रोक दिया गया हो। अर्थात हसूर, महसूर के अर्थ में लिया गया है। कुछ ने इसका अर्थ नपुंसक किया है। परन्तु यह ठीक नहीं है। क्योंकि यह एक त्रुटि है, जबकि यहाँ उनकी विशेषता, सम्मान के रूप में प्रयोग हुआ है।

The Ummah Technology Mission

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ۭ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ۝۴۱

(४१) कहने लगे प्रभु ! मेरे लिए इसका कोई चिन्ह बना दे, कहा, चिन्ह यह है कि तीन दिन तक तू लोगों से बात न कर सकेगा, केवल इशारे से समझायेगा, तू अपने प्रभु का जप अधिक कर और प्रातः, संध्या उसी की महिमा का वर्णन कर ।[1]

وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰۗىِٕكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰىكِ عَلٰي نِسَاۗءِ الْعٰلَمِيْنَ ۝۴۲

(४२) और जब फ़रिश्तों ने कहा, हे मरियम! अल्लाह (तआला) ने तुझे निर्वाचित कर लिया और तुझे पवित्र कर दिया, और सारे संसार की स्त्रियों में तेरा चुनाव कर लिया ।[2]

يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِيْ

(४३) हे मरियम ! तू अपने पोषक के आदेशों का पालन और दण्डवत (सजदा) कर और

---

[1]बुढ़ापे में चमत्कारिक रूप से पुत्र के जन्म लेने की शुभ सूचना सुनकर उनकी उत्सुकता में वृद्धि के कारण लक्षण मालूम करना चाहा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तीन दिन के लिए तेरी आवाज़ बन्द हो जायेगी, जो मेरी ओर से लक्षण होगा। परन्तु तू इस मौन की स्थिति में अधिकता से सुबह-शाम अल्लाह की महिमागान कर, ताकि वह वरदान जो तुझे अपने प्रभु से मिलने वाला है, उसकी कृतज्ञता व्यक्त कर सके। इसका अर्थ यह हुआ कि अल्लाह तआला तुम्हारी आवश्यकतानुसार चीज़ें प्रदान करे, तो उसकी कृतज्ञता व्यक्त करते रहो।

[2]आदरणीय मरियम का यह सम्मान और मान उनकी अपनी विशेषता और उनके युग के एतवार से है। क्योंकि सहीह हदीसों में आदरणीय मरियम के साथ आदरणीय ख़दीजा को भी خيرنسائها (सभी स्त्रियों में श्रेष्ठ) कहा गया है। और कुछ हदीसों में चार स्त्रियों को पूर्ण कहा गया है। आदरणीय मरियम, आदरणीय आसिया (फ़िरऔन की पत्नी), आदरणीय ख़दीजा तथा आदरणीय आयशा, एवं आदरणीय आयशा के विषय में कहा गया है कि उनकी श्रेष्ठता स्त्रियों में वैसे ही है, जैसे सरीद (हलुवा अथवा खीर) को सभी खानों में श्रेष्ठता है। (इब्ने कसीर) और त्रिमजी में आदरणीय फ़ातिमा पुत्री *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* को भी श्रेष्ठ स्त्रियों में सम्मिलित लिया गया है। (इब्ने कसीर) इसका यह भी अर्थ हो सकता है कि उपरोक्त वर्णित स्त्रियों को अन्य स्त्रियों में श्रेष्ठता तथा महानता प्रदान की गयी है कि वे अपने-अपने युग में श्रेष्ठता रखती हैं।

The Ummah Technology Mission

وَارْكَعِي مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾

झुकने वालों (रूकुऊ करने वालों) के साथ झुका कर (रूकुऊ कर)।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۭ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۠ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٤﴾

(४४) यह परोक्ष की सूचनाओं में से है, जिसे हम आपको उपदेश कर रहे हैं तब आप उस समय उनके पास न थे जब वह अपने क़लम डाल रहे थे कि उनमें से मरियम की परवरिश कौन करेगा? और न आप उनके झगड़ों के समय उनके पास थे।[1]

اِذْ قَالَتِ الْمَلٰۗىِٕكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ

(४५) जब फ़रिश्तों ने कहा, हे मरियम! तुझे अल्लाह (तआला) अपने एक शब्द[2] की शुभ सूचना देता है कि जिसका नाम मसीह[3]

---

[1]आजकल अहले बिदअत ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मान-मर्यादा में अतिश्योक्ति करते हुए, उन्हें अल्लाह तआला के समान परोक्ष का ज्ञानी और सर्वव्यापी मानने का विश्वास गढ़ लिया है। इस आयत में इन दोनों बातों का स्पष्ट खण्डन हो रहा है। यदि आप *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* को परोक्ष का ज्ञान होता, तो अल्लाह तआला यह न फ़रमाता कि हम परोक्ष की सूचनायें आपको दे रहे हैं क्योंकि जिसको पहले ही से यह ज्ञान हो, उससे ऐसे नहीं कहा जाता, और इसी प्रकार सर्वव्यापी होता है, उससे यह नहीं कहा जाता कि आप उस समय वहाँ नहीं थे। लोग नाम लाटरी की भाँति निकाल रहे थे। लाटरी से नाम निकालने की आवश्यकता इसलिये और भी हुई कि आदरणीय मरियम के संरक्षक वनने के कुछ अन्य लोग भी इच्छुक थे। ﴿ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ﴾ से *नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की रिसालत तथा आप की सत्यता का प्रमाणित करना भी है। क्योंकि ईशवाणी (वहयी) केवल पैगम्बर पर आती है किसी अन्य व्यक्ति पर नहीं आती है।

[2]आदरणीय ईसा को कलमा अर्थात अल्लाह का कलमा इस लिये कहा गया है कि उनका जन्म एक चमत्कारिक रूप से सामान्य मानव जन्म विधि के प्रतिकूल बिना पिता के अल्लाह की विशेष सामर्थ्य और उसके कथन كُنْ (हो जा) की उत्पत्ति है।

[3]मसीह, "*मसह*" धातु से बना है और مَسَحَ الأرض का अर्थ धरती पर अधिक भ्रमण कर्ता है अथवा इसका अर्थ हाथ फेरने वाला है, क्योंकि आप हाथ फेर कर रोगियों को अल्लाह की आज्ञा से स्वस्थ कर देते थे। तथा प्रलय के निकट प्रकट होने वाले दज्जाल को मसीह इसलिये कहा जाता है उसकी एक आँख कानी होगी अथवा वह भी जगत में अधिक

The Ummah Technology Mission

وَجِيْهًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٥﴾

पुत्र मरियम है। जो दुनियाँ और परलोक में सम्मानित है। और वह मेरे निकटवर्तियों में से है।

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٤٦﴾

(४६) वह लोगों से पालने में बात करेगा और अधेड़ आयु में भी।[1] और वह सदाचारियों में से होगा।

قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ ۭ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاۗءُ ۭ اِذَا قَضٰٓى

(४७) कहने लगी, "प्रभु ! मुझे पुत्र कैसे होगा ? यद्यपि मुझे किसी पुरूष ने स्पर्श भी नहीं किया है।" फ़रिश्ते ने कहा, "इसी प्रकार अल्लाह

भ्रमण करेगा तथा मक्का-मदीना एवं बैतुल मोक़द्दस के अतिरिक्त दुनियाँ के प्रत्येक स्थान पर जायेगा। इसलिये उसे मसीह दज्जाल कहा जाता है। (फ़तहुल क़दीर) सामान्य व्याख्याकारों ने सामान्यत: यही बात लिखी है। कुछ अन्य शोधकर्त्ताओं के अनुसार मसीह यहूदी तथा इसाईयों के विचार से पैग़म्बर को कहते हैं अर्थात उनकी यह परिभाषा प्रथम युग के पैग़म्बरों के लिए प्रयोग हुई है। दज्जाल को मसीह इस लिये कहा गया है क्योंकि यहूदियों को जिस अन्तिम क्रान्तिकारी मसीह की शुभ सूचना दी गई है। और जिसकी प्रतीक्षा अनुचित रूप से अब भी कर रहे हैं, वह दज्जाल इसी मसीह के नाम पर आयेगा अर्थात अपने आपको वही मसीह सिद्ध करेगा। परन्तु वह अपने इस दावे के अतिरिक्त अन्य दावों में धोखा-धड़ी का इतना बड़ा नमूना होगा कि आदि से अन्त तक उसकी कोई तुलना नहीं मिलेगी। इसलिये दज्जाल कहलायेगा। ईसा अजमी भाषा का शब्द है। कुछ के निकट यह अरबी और عساس और يعوس का विकृत रूप है। जिसका अर्थ राजनीतिक नेतृत्व के हैं। (कुर्तबी तथा फ़तहुल क़दीर)

[1]आदरणीय ईसा के (पालने) माँ की गोद में बातचीत करने का वर्णन स्वयं क़ुरआन करीम की सूर: मरियम में है। इसके अतिरिक्त सहीह हदीस में दो अन्य बच्चों के माँ की गोद में बात करने का वर्णन है। एक साहबे जुरैज और एक इस्राईली स्त्री का बच्चा। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया, बाबु मरियम)

अधेड़ आयु में बात करने का अभिप्राय कुछ ने यह लिया है कि जब बड़े होकर प्रकाशना एवं दूतत्व से सुशोभित किये जायेंगे, तथा कुछ ने कहा है कि आप प्रलय के निकट जब आकाश से उतरेंगे जैसाकि अहले सुन्नत का विश्वास है जो सही निरन्तर हदीसों से तर्क संगत है तो उस समय जो इस्लाम का प्रचार करेंगे वह बातें अभिप्राय हैं। (तफ़सीर इब्ने कसीर तथा क़ुर्तबी)

The Ummah Technology Mission

أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٤٧﴾

(तआला) जो चाहे उत्पन्न करता है। जब कभी वह किसी कार्य को करना चाहता है। तो केवल कह देता है "हो जा," तो वह हो जाता है।"[1]

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَاةَ وَالْإِنجِيلَ ﴿٤٨﴾

(४८) और अल्लाह (तआला) उसे लिखना[2], और बुद्धिमत्ता तथा तौरात एवं इंजील सिखायेगा।

وَرَسُولًا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنِّي قَدْ جِئْتُكُم بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ أَنِّي أَخْلُقُ لَكُم مِّنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَأَنفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَأُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ وَأُحْيِي الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَأُنَبِّئُكُم بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدَّخِرُونَ فِي بُيُوتِكُمْ ۚ

(४९) और वह इस्राईल की सन्तान का रसूल होगा, कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे प्रभु की निशानी लाया हूँ, मैं तुम्हारे लिए पक्षी के रूप के ही प्रकार का मिट्टी का पक्षी बनाता हूँ[3]। फिर उसमें फूँक मारता हूँ, तो वह अल्लाह (तआला) के आदेश से पक्षी बन जाता है और मैं अल्लाह (तआला) के आदेश से जन्म से अंधे को और कोढ़ी को स्वस्थ कर देता हूँ और मृतक को जीवित कर देता हूँ[4] और जो कुछ तुम खाओ और जो कुछ भी

---

[1]तुम्हारा आश्चर्य चकित होना उचित है, परन्तु अल्लाह तआला के सामर्थ्य के लिये यह कोई कठिन कार्य नहीं है। वह तो जब चाहे स्वाभाविक एवं प्रत्यक्ष साधना समाप्त करके, केवल كُن (कुन) आदेश से क्षणभर में जो चाहे कर डाले।

[2]किताव (लेख) से तात्पर्य किताबत (लिखना) है, जैसाकि अनुवाद में लिया गया है अथवा इंजील एवं तौरात के अतिरिक्त कोई और किताब है, जिसका ज्ञान अल्लाह तआला ने उन्हें दिया।

[3] أخلق لكم أي أصور و أقدر لكم (क़ुर्तबी) यहाँ उत्पत्ति का अर्थ पैदा करना नहीं इस पर तो सामर्थ्य मात्र अल्लाह को है क्योंकि वही रचयिता है। यहाँ इसका अर्थ ऊपरी रूप रेखा बनाने के हैं।

[4] पुनः अल्लाह के आदेश से कहने से यही अर्थ है कि कोई व्यक्ति यह समझ बैठे कि मैं सृष्टा की विशेषताओं एवं गुणों को प्राप्त कर चुका हूँ। कदापि ऐसा नहीं, मैं तो उसका भक्त और रसूल हूँ। यह जो कुछ मेरे हाथ से हो रहा है, चमत्कार (मोजेजा) है, जो मात्र

The Ummah Technology Mission

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٤٩﴾

तुम अपनें घरों में एकत्रित करो, मैं तुम्हें बता देता हूँ। इसमें तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है। यदि तुम ईमानवाले हो।

وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَاةِ وَلِأُحِلَّ لَكُم بَعْضَ الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُم بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿٥٠﴾

(५०) और मैं तौरात की पुष्टि करने वाला हूँ, जो मेरे समक्ष है और मैं इसलिये आया हूँ कि तुम पर कुछ उन चीज़ों को हलाल करूँ, जो तुम पर हराम कर दी गयी हैं।[1] और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे प्रभु की निशानी लाया हूँ, इसलिये तुम अल्लाह (तआला) से डरो और मेरा ही अनुकरण करो।

अल्लाह के आदेश से हो रहा है। इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने प्रत्येक नबी को उसके समय और परिस्थितियों के अनुसार मोजज़े प्रदान किये, ताकि उसकी सत्यता और श्रेष्ठता स्पष्ट हो सके। आदरणीय मूसा के समय में जादू का बहुत ज़ोर था, उन्हें ऐसा मोजेज़ा प्रदान किया गया जिसके समक्ष बड़े-बड़े जादूगर अपना कार्यक्रम दिखानें में असफल रहे, जिससे उनके ऊपर आदरणीय मूसा की सत्यता स्पष्ट हो गयी, और वह ईमान ले आये। आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम के समय में औषधि और चिकित्सा का अधिक प्रचार हो रहा था, अतएव उन्हें मृतक को जीवित जन्मजात अंधे और कोढ़ी को स्वस्थ कर देने का मोजेज़ा प्रदान किया गया, जो कोई भी बड़े से बड़ा चिकित्सक अपनी कला के द्वारा करने की शक्ति नहीं रखता था। हमारे पैग़म्बर *नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के समय में कविता एवं साहित्य तथा भाषा और भाषण का ज़ोर था, अतएव उन्हें क़ुरआन जैसा भाषा-भाष्य और सर्वश्रेष्ठ साहित्य प्रदान किया गया। जिसकी तुलना दुनियाँ भर के साहित्यकार एवं कवि आज तक प्रस्तुत नहीं कर सकें और चुनौती देने पर भी नहीं प्रस्तुत कर सके और क़यामत (प्रलय) तक प्रस्तुत न कर सकेंगे। (इब्ने कसीर)

[1]इससे तात्पर्य या तो वह चीज़ें हैं, जो अल्लाह तआला ने दण्ड स्वरूप उनपर निषेध (हराम) कर दी थी अथवा फिर वह चीज़ें जो उनके धर्मज्ञानियों (आलिमों) ने स्वयं अपने ऊपर निषेध कर ली थी अल्लाह का आदेश नहीं था। (क़ुर्तुबी) अथवा ऐसी चीज़ भी हो सकती है, जो उनके धर्म ज्ञानियों ने अपने सोच-विचार से वर्जित कर रखी थीं। और सोंच-विचार में उनसे त्रुटि हुई और आदरणीय ईसा ने इन त्रुटियों को दूर करके उन्हें हलाल कर दिया। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۗ هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٥١﴾

(५१) विश्वास करो ! मेरा और तुम्हारा स्वामी अल्लाह ही है, तुम सब उसी की अराधना करो। यही सीधी राह है।[1]

فَلَمَّا أَحَسَّ عِيسَىٰ مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنصَارِي إِلَى اللَّهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ ۖ آمَنَّا بِاللَّهِ ۖ وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٥٢﴾

(५२) परन्तु जब (आदरणीय) ईसा (अलैहिस्सलाम) ने उनका इंकार का आभास कर लिया।[2] तो कहने लगे अल्लाह (तआला) के मार्ग में मेंरी सहायता करने वाला कौन-कौन है।[3] हवारियों ने उत्तर दिया कि हम अल्लाह (तआला) के मार्ग में सहायक हैं।[4]

---

[1]अर्थात अल्लाह की अराधना (इबादत) करने में और उसके समक्ष तुक्षता एवं विनती करने में मैं और तुम दोनों बराबर हैं। इसलिए सीधा मार्ग यह है कि एक अल्लाह की इवादत (अर्चना) की जाये और उसके प्रभुत्व में किसी को भी सम्मिलित न किया जाये।

[2]अर्थात ऐसी चालें और योजनायें एवं संशकित कार्य जो कुफ्र अर्थात आदरणीय मसीह की रिसालत के इंकार का द्योतक थीं।

[3]वहुत से नवियों ने अपनी कौम के लोगों से तंग आकर वाह्य साधन स्वरूप अपनी कौम के शिष्ट व्यक्तियों से सहायता माँगी है। जैसाकि स्वयं *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने प्रारम्भिक काल में, जब कुरैश आप के आमन्त्रण कार्य में रूकावट डाल रहे थे, तो आप हज के समय में लोगों को अपना साथी तथा सहायक बनाने का प्रयत्न करते थे, ताकि *आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* प्रभु का आदेश लोगों तक पहुँचा सकें, जिस पर अंसार ने आगे बढ़कर साथ दिया और आप *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की उन्होंने हिजरत से पूर्व तथा हिजरत के पश्चात सहायता की। इसी प्रकार यहाँ पर आदरणीय ईसा ने सहायता माँगी। यह उस प्रकार की सहायता नहीं थी जो मनुष्य के शक्ति के परे हो, क्योंकि यह शिर्क है। और प्रत्येक नबी शिर्क उन्मूलन (उखाड़ फेंकने) के लिए ही आते रहे हैं, फिर वह स्वयं किस प्रकार शिर्क कर सकते थे ? परन्तु समाधि पूजकों के अन्तकरण की अन्धता पर मातम करने की आवश्यकता है कि वह मृत लोगों से सहायता माँगने का औचित्य दिखाने के लिए आदरणीय ईसा के कथन ﴿مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ﴾ से तर्क निकालते हैं ? अल्लाह तआला उन्हें मार्ग दर्शन दे।

[4]हवारियों, हवारी का बहुवचन है जिसका अर्थ أنصار (अन्सार) सहायक। जिस प्रकार *नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* का कथन है।

The Ummah Technology Mission

हम अल्लाह (तआला) पर ईमान लाये और आप गवाह रहिये कि हम मुसलमान हैं।

رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٣﴾

(५३) हे हमारे पालनहार ! हम तेरी उतारी हुई वह्यी (ईशवाणी) पर ईमान लाये और हमने तेरे रसूल का अनुकरण किया। बस अब तू हमें गवाहों में लिख ले।

وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٥٤﴾

(५४) और काफ़िरों ने चाल चली और अल्लाह (तआला) ने भी योजना बनायी और अल्लाह (तआला) सभी योजना कारों से श्रेष्ठ है।[1]

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَىَّ وَمُطَهِّرُكَ

(५५) जब अल्लाह (तआला) ने फ़रमाया, हे ईसा ! मैं तुझे पूर्णरूप से लेने वाला हूँ।[2]

«إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيًّا وَحَوَارِيَّ الزُّبَيْرُ». "प्रत्येक नबी का कोई विशेष सहायक होता है और मेरा सहायक ज़ुबैर है।" (सहीह बुख़ारी)

[1] आदरणीय ईसा के समय में सीरिया का क्षेत्र रूमियों के आधीन था, यहाँ उनके द्वारा जो अधिकारी पदासीन था, वह काफ़िर था। यहूदियों ने आदरणीय ईसा के विरूद्ध उस अधिकारी के कान भरे कि यह संकर نعوذ بالله और विद्रोही हैं आदि आदि। अधिकारी ने उनकी माँग के अनुसार उन्हें फाँसी पर चढ़ाने का निर्णय कर लिया। परन्तु अल्लाह ने आदरणीय ईसा को सुरक्षित आसमान पर उठा लिया और उनके समरूप एक आदमी को उन्होंने फाँसी दे दी और समझते रहे कि हमने ईसा को फाँसी दी है।

مكر (मक्र) अरबी भाषा में सूक्ष्म तथा गुप्त उपाय को कहते हैं। तथा इसी अर्थ में यहाँ अल्लाह को خير الماكرين कहा गया है, मानो यह उपाय, बुरी भी हो सकता अच्छा भी। यदि बुरे प्रयोजन के लिये हो तो बुरा अच्छे प्रयोजन के लिये हो तो अच्छा है।

[2] المتوفى यह توفى से बना जिसका धातु وفى इसका मूल अर्थ सम्पूर्णरूप से लेना है। इंसान की मौत पर 'वफ़ात' शब्द इसलिये बोला जाता है, कि उसके शरीरिक अधिकार पूर्णत: छीन लिये जाते हैं। अत: इस शब्दार्थ के विभिन्न रूपों में से मौत मात्र एक रूप है। निंद्रा में भी साम्यिक रूप से मानवी अधिकार निलम्बित कर दिये जाते हैं, इस कारण निंद्रा के लिये भी पवित्र क़ुरआन ने 'वफ़ात' के शब्द का प्रयोग किया है। जिससे विदित हुआ कि कि इसका मूल अर्थ पूर्णरूप से लेना ही हैं। إني متوفيك में यहाँ

The Ummah Technology Mission

مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝٥٥

तथा तुझे अपनी ओर उठाने वाला हूँ और तुझे काफ़िरों से पवित्र करने वाला हूँ।[1] और तुम्हारे अनुयायियों को काफ़िरों से क़यामत के दिन तक ऊपर रखने वाला हूँ।[2] फिर तुम सब का लौटना मेरी ही ओर है, मैं ही तुम्हारे मध्य सभी मतभेदों का निर्णय करूँगा।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝٥٦

(५६) फिर काफ़िरों को तो मैं इस लोक तथा परलोक में कड़ी यातनायें दूँगा। और उनका कोई सहायक न होगा।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥٧

(५७) परन्तु ईमानवालों और सत्कर्म करने वालों को अल्लाह (तआला) उनका पूरा-पूरा प्रत्युपकार देगा और अल्लाह तआला अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ۝٥٨

(५८) यह जिसे हम तेरे समक्ष पढ़ रहे हैं, आयतें हैं और दृढ़ उपदेश है।

अपने मूल अर्थ में प्रयोग हुआ है। अर्थात हे ईसा मैं तुझे यहूदियों, इसाईयों से बचाकर पूर्णत: अपनी ओर आकाश पर उठा लूँगा। तथा ऐसा ही हुआ। कुछ ने अवस्तिविक अर्थ मृत्यु लिया है जो साधारणत: प्रयोग में आता है किन्तु इस वाक्य में رافعك का पहले तथा متوفيك का अर्थ बाद में लिया हे अर्थात प्रथम तुझे आकाश पर उठा लूँगा तथा पुन: संसार में उतरने पर मौत दूँगा अर्थात यहूदियों के हाथों तुम्हारी हत्या नहीं होगी तुम्हें स्वभाविक मौत ही आयेगी।

[1]इससे तात्पर्य वे आक्षेप से शुद्धता अथवा पवित्रता है, जिनसे आपको यहूदी कलंकित करते थे। *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के द्वारा आपकी सफ़ाई दुनियाँ के समक्ष प्रस्तुत कर दी गयी।

[2]इससे तात्पर्य या तो इसाईयों की सांसारिक विजय यहूदियों पर है जो प्रलय तक रहेगी, यद्यपि कि वह अपने ग़लत विश्वास के कारण अन्तिम मोक्ष प्राप्त करने में असफल ही रहेंगे अथवा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायियों की विजय है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِندَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ ۖ خَلَقَهُ مِن تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٥٩﴾

(५९) अल्लाह (तआला) के निकट ईसा की दशा यथावत आदम के समान है, जिसे मिट्टी से पैदा करके कह दिया कि हो जा बस वह हो गया।

الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُن مِّنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿٦٠﴾

(६०) तेरे प्रभु की ओर से सत्य यही है, सावधान ! शंका करने वालों में से न होना।

فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِن بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنفُسَنَا وَأَنفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَل لَّعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ ﴿٦١﴾

(६१) इसलिए जो भी आपके पास इस ज्ञान के आ जाने के पश्चात भी आप से इसमें झगड़े, तो आप कह दीजिए कि आओ हम तुम अपने-अपने पुत्रों को और हम-तुम अपनी स्त्रियों को और हम तथा तुम अपने आप को बुला लें फिर हम विलीन होकर प्रार्थना करें। और झूठों पर अल्लाह की फिटकार (धिक्कार) भेजें।[1]

---

[1]यह मोबाहला की आयत कहलाती है, मोबाहला का अर्थ है दो पक्ष का एक-दूसरे पर धिक्कार अर्थात शाप देना, तात्पर्य यह है कि जब दो पक्षों में किसी विषय में विवाद तथा विभेद हो जाये एवं तर्क-वितर्क से उसका अन्त होता न दिखाई दे, तो दोनों अल्लाह से यह प्रार्थना करें कि हममें जो मिथ्यावादी हो उस पर धिक्कार कर। इसकी संक्षिप्त भूमिका यह है कि इसाईयों का एक प्रतिनिधि मंडल *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की सेवा में उपस्थिति हुआ तथा आदरणीय ईसा के संदर्भ में वह जो अत्युक्ति मिश्रित आस्थायें रखते थे उस पर वाद-विवाद करने लगे। अन्ततः यह आयत उतरी तथा आप ने उन्हें मुबाहला पर आमंत्रण दिया। आदरणीय अली व फ़ातिमा तथा हसन एवं हुसैन को भी साथ लिया तथा इसाईयों से कहा कि तुम भी अपने परिवार को बुला लो फिर हम मिलकर झूठे पर धिक्कार की प्रार्थना करें, इसाई परस्पर परामर्श के पश्चात इसके लिए तैयार न हुए तथा यह प्रस्ताव रखा कि आप जो चाहे हम देने को तैयार हैं। आपने उन पर सुरक्षा कर (जिज़या) निर्धारित कर दिया जिसे लेने के लिये आप अबू उबैदा बिन जर्राह को जिन्हें आपने *"अमीने उम्मत"* की उपाधि से अलंकृत किया था उनके साथ भेजा (तफ़सीर इब्ने कसीर तथा फ़तहुल क़दीर आदि से संक्षिप्त) आगामी आयत में अहले किताब (यहूदियों तथा इसाईयों) को एकेश्वरवाद की ओर बुलाये जा रहे हैं।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٢﴾

(६२) नि:संदेह केवल यही सत्य वर्णन है और अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त कोई अन्य पूजने योग्य नहीं, और नि:संदेह अल्लाह शक्तिशाली बुद्धिमान है।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٦٣﴾

(६३) फिर भी यदि वे स्वीकार न करें, तो अल्लाह (तआला) भी भली भाँति विद्रोहियों को जानने वाला है।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٦٤﴾

(६४) आप कह दीजिए कि हे अहले किताब ! ऐसी न्यायपूर्ण बात की ओर आओ जो हम में तुम में समान है कि हम अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त किसी की वंदना (इबादत) न करें और न उसके साथ किसी को सम्मिलित करें।[1] न अल्लाह (तआला) को छोड़कर आपस में एक-दूसरे को स्वामी ही बना लें।[2] यदि वह मुँह मोड़ लें, तो कह दो कि साक्षी रहना कि हम तो मुसलमान हैं।[3]

---

[1]किसी मूर्ति को न किसी क्रास को, न अग्नि को और न किसी अन्य वस्तु को, बल्कि केवल एक अल्लाह की वंदना (इबादत) करें, जैसाकि सभी नबियों ने आमंत्रण दिया।

[2]यह एक तो उस बात की ओर संकेत है कि तुमने आदरणीय मसीह और आदरणीय उज़ैर के अराध्य होने (प्रभु होना) का जो विश्वास गढ़ रखा है यह ग़लत है, वह प्रभु नहीं हैं वे मनुष्य ही हैं दूसरा इस ओर संकेत है कि तुमने अपने विद्वानों धर्मात्मा को उचित-अनुचित करने का अधिकार दे रखा है, यह भी उनको प्रभु बनाना है। जैसाकि आयत اتخذوا أحبارهم इस पर साक्षी है, यह भी उचित नहीं है, हलाल व हराम करने का अधिकार भी केवल अल्लाह ही को है। (इब्ने कसीर व फ़तहुल क़दीर)

[3]सहीह बुख़ारी में है कि क़ुरआन करीम के इस आदेशानुसार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिरक़ल राजाधिराज रोम को पत्र भेजा उसमें इस आयत के हवाले से इस्लाम धर्म स्वीकार करने का आमंत्रण दिया और उसे कहा कि तू मुसलमान हो जायेगा, तो दुगुना पुण्य मिलेगा, वरन तेरी सम्पूर्ण प्रजा का भी पाप तेरे सिर पर होगा।

The Ummah Technology Mission

يَاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمَآ اُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ وَالْاِنْجِيْلُ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٥﴾

(६५) ऐ अहले किताब ! तुम इब्राहीम के विषय में क्यों झगड़ते हो ? जबकि तौरात और इंजील तो उनके पश्चात उतारी गयी, क्या तुम फिर भी नहीं समझते ?[1]

هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ حَاجَجْتُمْ فِيْمَا لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ

(६६) सुनो, तुम लोग उसमें झगड़ चुके, जिसका तुम्हें ज्ञान था, अब इसमें क्यों झगड़ते हो, जिसका तुम्हें ज्ञान ही नहीं है।[2]

«فَأَسْلِمْ تَسْلَمْ، أَسْلِمْ يُؤْتِكَ اللهُ أَجْرَكَ مَرَّتَيْنِ، فَإِنْ تَوَلَّيْتَ، فَإِنَّ عَلَيْكَ إِثْمَ الأَرِيسِيِّينَ».

"इस्लाम स्वीकार कर ले, सुरक्षित रहेगा। इस्लाम ले आ, अल्लाह तआला दुगुना पुण्य देगा, परन्तु यदि तूने इस्लाम धर्म स्वीकार करने से इंकार किया, तो प्रजा का पाप भी तुझ पर होगा। क्योंकि प्रजा के इस्लाम धर्म न स्वीकार करने का कारण भी तू ही बनेगा।" (बुखारी, किताब बदउल वह्यी)

इस आयत में तीन बातों का वर्णन है अर्थात १- मात्र अल्लाह की इबादत करना २- उसके साथ किसी का भी मिश्रण न करना ३- और किसी को भी धार्मिक नियमावली बनाने का अल्लाह का अधिकार अथवा स्थान न देना वह समानता के शब्द हैं जिस पर अहले किताब को एकता का आमंत्रण दिया गया है। अतएव इस उम्मत के बिखराव को एकत्रित करने का भी इन तीन बिन्दुओं और इस समानता की बात को सर्वप्रथम आधारशिला बनानी चाहिए।

[1]आदरणीय इब्राहीम के विषय में झगड़े का अर्थ है कि यहूदी और इसाई दोनों यह दावा करते थे कि आदरणीय इब्राहीम उनके धर्म के मानने वाले थे, यद्यपि तौरात जिस पर यहूदी विश्वास करते हैं और इंजील जिसे इसाई पवित्र पुस्तक मानते हैं, दोनों आदरणीय इब्राहीम के सैकड़ों वर्ष बाद उतरी, फिर आदरणीय इब्राहीम यहूदी अथवा इसाई किस प्रकार हो सकते थे ? कहते हैं कि आदरणीय इब्राहीम और आदरणीय मूसा के मध्य एक हजार वर्ष की अवधि का अन्तर है और आदरणीय मूसा तथा आदरणीय ईसा के मध्य दो हजार वर्ष का अन्तर था। (कुर्तबी)

[2]तुम्हारे ज्ञान व धर्म की तो यह दशा है कि जिन बातों का तुम्हें ज्ञान है अर्थात अपने धर्म तथा अपनी किताब का इसके विषय में तुम्हारे झगड़े (जिसका वर्णन पिछली आयत में आ चुका है) सत्यता पर नहीं हैं तथा अज्ञानता के द्योतक भी। तो फिर तुम उस बात पर क्यों झगड़ते हो जिसका तुम्हें तनिक भी ज्ञान नहीं है ? अर्थात आदरणीय इब्राहीम

The Ummah Technology Mission

وَ اَنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۶۶﴾

और अल्लाह (तआला) जानता है, तुम नहीं जानते।

مَا كَانَ اِبۡرٰهِيۡمُ يَهُوۡدِيًّا وَّلَا نَصۡرَانِيًّا وَّلٰكِنۡ كَانَ حَنِيۡفًا مُّسۡلِمًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ﴿۶۷﴾

(६७) इब्राहीम न तो यहूदी थे न इसाई, बल्कि वह शुद्ध रूप से मात्र मुसलमान थे।[1] वह मूर्तिपूजक (मिश्रणवादी) भी न थे।

اِنَّ اَوۡلَى النَّاسِ بِاِبۡرٰهِيۡمَ لَلَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡهُ وَهٰذَا النَّبِىُّ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا ؕ وَاللّٰهُ وَلِىُّ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۶۸﴾

(६८) सब लोगों से अधिक इब्राहीम के निकटतम वह लोग हैं, जिन्होंने उनका कहना माना और यह नबी, और जो लोग ईमान लाये।[2] ईमान वालों का संरक्षक तथा सहायक अल्लाह है।

की श्रेष्ठता एवं विशेषता तथा उनके मिल्लत हनीफ़ा (सीधे राह पर चलने वाली क़ौम), जिसका आधार एकेश्वरवाद तथा मात्र एक अल्लाह की इबादत पर है।

[1] حنيفا مسلما (शुद्ध रूप मात्र मुसलमान) अर्थात मिश्रण से नफ़रत करने वाला और मात्र एक अल्लाह की उपासना करने वाला।

[2] तात्पर्य नवी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सच्चे मुसलमान हैं क्योंकि इस्लाम धर्म के नियम मिल्लत हनीफ़ा से सबसे निकटतम है, इसीलिये क़ुरआन करीम में *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* को मिल्लते इब्राहीम के पालन करने का आदेश दिया गया है। ﴿أَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَٰهِيمَ حَنِيفًا﴾ (*अन-नम्ल*-१२३) इसके अतिरिक्त हदीस में है। *रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया :

«إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ وُلَاةً مِنَ النَّبِيِّينَ، وَإِنَّ وَلِيِّ مِنْهُمْ أَبِي وَخَلِيلُ رَبِّي عَزَّ وَجَلَّ».

"(प्रत्येक नवी के नबियों में से कुछ मित्र होते हैं, मेरे मित्र उनमें से मेरे पिता और मेरे प्रभु के मित्र (इब्राहीम) हैं फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यही आयत पढ़ी"। (तिर्मिज़ी) उदधृत इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

وَدَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْ ۭ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝٦٩

(६९) अहले किताब का एक गुट चाहता है कि तुम्हें भटका दे, वास्तव में वे स्वयं अपने आपको भटका रहे हैं और समझते नहीं।[1]

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ۝٧٠

(७०) ऐ अहले किताब ! तुम स्वयं साक्षी होने के उपरान्त भी अल्लाह की आयतों को क्यों नहीं मानते।[2]

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٧١

(७१) ऐ अहले किताब ! जानने के उपरान्त भी सच और झूठ को क्यों मिला रहे हो ? और सच्चाई को क्यों छिपा रहे हो ?[3]

---

[1]यह यहूदियों के द्वेष और ईर्ष्या का स्पष्टीकरण है, जो वह ईमानवालों से रखते थे और इसी द्वेष के कारण मुसलमानों को भटकाने का प्रयत्न करते थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि इस प्रकार वह स्वयं ही अनजाने में अपने आपको भटका रहे हैं।

[2]साक्षी हीन का अर्थ है कि तुम्हें *नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की सत्यता एवं वास्तविकता का ज्ञान है।

[3]इसमें यहूदियों के दो बड़े अपराधों की ओर संकेत करके उनको छोड़ देने को कहा जा रहा है। प्रथम अपराध यह कि सच और झूठ को मिलाना, जिससे लोग सच और झूठ के बीच अंतर न जान सकें अर्थात सत्य को छिपाना। अर्थात *नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के जो गुण और विशेषताएं तौरात में लिखे हुए थे, उन्हें लोगों से छिपाना, ताकि आप *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की सच्चाई कम से कम इस रूप में स्पष्ट न हो सके। और यह दोनों अपराध जान बूझकर करते थे जिससे उनको समझ पाना असम्भव हो गया था। उनके अपराधों की ओर *सूरः अल-बक़रः* में भी संकेत किया गया।

﴿ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴾ [البقرة: ٤٢]

"सच को झूठ के साथ मत मिलाओ और सच मत छिपाओ और तुम जानते हो।"

अहले किताब के शब्द को कुछ व्याख्याकारों ने सामान्य रखा है, जिसमें यहूदी और इसाई दोनों सम्मिलित हैं। अर्थात दोनों को इन अपराधों से रूक जाने के लिए सावधान किया गया है। और कुछ के निकट इससे तात्पर्य केवल वह यहूदी क़बीले जो मदीने में निवास करते थे, बनू क़ुरैज़ा, बनू नदीर, तथा बनू क़ैनुक़ाअ। अधिक उचित बात यही लगती है

The Ummah Technology Mission

وَقَالَت طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٧٢﴾

(७२) और अहले किताब के एक गुट ने कहा कि जो कुछ भी ईमानवालों पर उतारा गया है । उस पर दिन चढ़े तो ईमान लाओ और और संध्या के समय इंकार कर दो ताकि यह लोग भी पलट जायें ।[1]

وَلَا تُؤْمِنُوْٓا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ۭ قُلْ اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ ۙ اَنْ يُّؤْتٰٓى اَحَدٌ مِّثْلَ مَآ اُوْتِيْتُمْ اَوْ يُحَاۗجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۭ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾

(७३) और सिवाय तुम्हारे धर्म पर चलने वालों के और किसी पर विश्वास न करो ।[2] आप कह दीजिए ! नि:संदेह मार्गदर्शन तो अल्लाह ही का मार्ग दर्शन है ।[3] (और यह भी कहते हैं कि इस बात पर भी विश्वास न करो) कि कोई उस जैसा दिया जाये जैसा तुम दिये गये हो ।[4] अथवा यह कि यह तुम से

क्योंकि मुसलमानों का सीधा सम्बन्ध उन्हीं से था और यही *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के विरोध में बढ़-चढ़कर भाग लेते थे ।

[1]यह यहूदियों की एक और चाल का वर्णन है । जिससे वह मुसलमानों को भटकाना चाहते थे कि उन्होंने आपस में यह विचार किया कि प्रात: मुसलमान हो जायें और संध्या के समय इंकार कर दें ताकि मुसलमानों को भी अपने इस्लाम के विषय में शंका उत्पन्न हो कि यह लोग इस्लाम स्वीकार करने के उपरान्त अपने धर्म में पुन: लौट गये हैं, तो सम्भव है कि इस्लाम में ऐसे अवगुण और त्रुटियाँ हों, जो उनके ज्ञान में आयीं हों ।

[2]यह आपस में निर्णय लिया कि दिखावे के लिए मुसलमान हो जाओ, परन्तु अपने धर्म (यहूदी) के अतिरिक्त किसी बात पर विश्वास न करना ।

[3]यह स्वयं एक वाक्य है जिसका न तो प्रारम्भ से और न बाद के वाक्यों से कोई सम्बन्ध है । केवल उनकी चालों की असली बात इससे स्पष्ट करना था, कि उनकी चालों से कुछ न होगा क्योंकि मार्गदर्शन देना तो अल्लाह के हाथ में है । वह जिसको मार्गदर्शन प्रदान कर दे अथवा देना चाहे, तो तुम्हारी चालें उसमें रूकावट नहीं बन सकतीं ।

[4]यह भी यहूदियों का कथन है इसका पक्ष ولا تؤمنوا पर है । अर्थात यह भी स्वीकार मत करो जिस प्रकार तुम्हारे यहाँ नबूअत आदि रही है, यह किसी और को भी मिल सकती है और इस प्रकार यहूदियत के अतिरिक्त कोई अन्य धर्म भी सत्य हो सकता है ।

The Ummah Technology Mission

तुम्हारे प्रभु के पास झगड़ा करेंगे, आप कह दीजिए कि कृपा तो अल्लाह (तआला) के हाथ में है। वह जिसे चाहे उसे प्रदान करे, अल्लाह (तआला) महान और सर्वज्ञ है।

يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِۦ مَن يَشَآءُ ۗ وَٱللَّهُ ذُو ٱلْفَضْلِ ٱلْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾

(७४) वह अपनी कृपा से जिसे चाहे विशेष कर ले, और अल्लाह (तआला) परम कृपालु है।[1]

وَمِنْ أَهْلِ ٱلْكِتَٰبِ مَنْ إِن تَأْمَنْهُ بِقِنطَارٍ يُؤَدِّهِۦٓ إِلَيْكَ ۖ وَمِنْهُم مَّنْ إِن تَأْمَنْهُ بِدِينَارٍ لَّا يُؤَدِّهِۦٓ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ۗ

(७५) और कुछ अहले किताब ऐसे भी हैं कि तू कोष का न्यासधारी उन्हें बना दे, तो भी तुझे वापस कर दें, और उनमें कुछ ऐसे भी हैं कि यदि तू उन्हें एक दीनार भी अमानत

---

[1]इस आयत के दो अर्थ वर्णित किये जाते हैं। एक यह कि यहूदियों के बड़े-बड़े आलिम (विद्वान) अपने शिष्यों से कहते कि दिन चढ़ते ईमान लाओ और दिन उतरते काफ़िर हो जाओ, ताकि इस समय जो मुसलमान भी हैं, वह भ्रम में पड़ जायें और मुर्तदद हो जायें। अपने-अपने शिष्यों को यह भी शिक्षा देते कि केवल दिखावे के लिए मुसलमान होना। सचमुच मुसलमान न हो जाना, बल्कि यहूदी ही रहना। और यह न समझ बैठना कि जैसा धर्म जैसी ईशवाणी (वह्यी), धार्मिक नियम और जैसा ज्ञान और कृपा तुम्हें दिया गया है, वैसी किसी और को भी दी जा सकती है। अथवा तुम्हारे अतिरिक्त कोई अन्य भी सत्यता पर है, जो तुम्हारे विरूद्ध अल्लाह के समक्ष तर्क प्रस्तुत कर सकता है। और तुम्हें ग़लत ठहरा सकता है। इस अर्थ के आधार पर अल्लाह तआला की विशेषताओं के वर्णन वाले वाक्य को छोड़कर अन्य पूरा का पूरा वाक्य यहूदियों का कथन है। दूसरा अर्थ है कि ऐ यहूदियो ! तुम सच्चाई को दबाने की यह जो चालें तथा योजनायें इसलिए बना रहे हो कि तुम्हें दु:ख तथा ईर्ष्या है कि जैसा ज्ञान, कृपा, ईशवाणी (वह्यी) धार्मिक नियम तथा धर्म तुम्हें दिया गया था। अब वैसा ही ज्ञान, कृपा और धर्म किसी अन्य को क्यों प्रदान किया गया ? दूसरे तुम्हें यह शंका तथा भय है कि यदि सत्य का यह आमंत्रण बढ़ गया और उन्होंने अपनी जड़ें सुदृढ़ कर लीं, तो न केवल दुनियाँ में जो मान-सम्मान तुमको प्राप्त है, वह चला जायेगा। बल्कि तुमने जो सच्चाई छिपा रखी है, उसका पर्दा फ़ाश हो जायेगा। और इस आधार पर यह लोग अल्लाह के निकट भी तुम्हारे विरूद्ध तर्क स्थापित कर देंगे परन्तु तुम्हें ज्ञात होना चाहिए कि धार्मिक नियम अल्लाह की कृपा है। और यह किसी का उत्तराधिकार नहीं। बल्कि वह अपनी कृपा जिसे चाहता है प्रदान करता है। और उसे मालूम है कि यह कृपा किसको प्रदान करनी है।

The Ummah Technology Mission

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾

के रूप में दे तो तुझे अदा न करें। हाँ यह और बात है कि तू उनके सिर पर ही खड़ा रहे, यह इसलिए कि उन्होंने कह रखा है कि हम पर इन अशिक्षितों के अधिकार का कोई पाप नहीं, यह लोग जानने के उपरान्त भी अल्लाह पर झूठ बोलते हैं।[1]

بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٧٦﴾

(७६) क्यों नहीं (पकड़ होगी) परन्तु जो व्यक्ति अपना वचन पूरा करे और अल्लाह तआला से डरे, तो अल्लाह तआला भी ऐसे डरने वालों को अपना मित्र रखता है।[2]

اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ وَلَا

(७७) नि:संदेह जो अल्लाह (तआला) के वचन और अपनी शपथों को थोड़े से मूल्य पर बेच डालते हैं, उनके लिए आख़िरत में

---

[1] اُمّيين (अशिक्षित अनपढ़) से तात्पर्य अरब के मूर्तिपूजक हैं। यहूदियों के अपभोगी लोग यह दावा करते थे कि चूंकि यह मूर्तिपूजक हैं इसलिए इनका माल हड़प कर जाना उचित है। इसमें कोई पाप नहीं है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यह लोग अल्लाह पर झूठ बोलते हैं। अल्लाह तआला किस प्रकार से दूसरों का माल हड़प कर जाने की आज्ञा प्रदान कर सकता है ? और कुछ व्याख्याओं में वर्णन है कि *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने भी यह सुन कर कहा "अल्लाह के शत्रुओं ने झूठ कहा, अज्ञानता काल की सभी चीज़ें मैं अपने पैरों तले कुचलता हूँ, सिवाय अमानत के कि वह प्रत्येक परिस्थिति में लौटानी है, चाहे वह किसी सत्कर्मी की हो अथवा कुकर्मी की हो।" (इब्ने कसीर तथा फ़तहुल क़दीर) अफ़सोस है कि यहूदियों की तरह आज कुछ मुसलमान भी मूर्तिपूजकों का माल हड़पने की बात कहते हैं कि युद्धस्थली का ब्याज उचित है, और लड़ाकू के माल का कोई आदर नहीं।

[2] "वचन पूरा करे।" का अर्थ है वह वचन पूरा करे, जो अहले किताब से अथवा प्रत्येक नबी के वास्ते से उनकी उम्मतों से *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* पर ईमान लाने के विषय में लिया गया है। "और अल्लाह से डरे" अल्लाह तआला द्वारा रोके गये कर्मों से रूके और उन बातों के अनुसार कर्म करें जो *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* वर्णित करें। ऐसे लोग नि:संदेह अल्लाह की पकड़ से बचे रहेंगे, बल्कि अल्लाह के प्यारे होंगे।

The Ummah Technology Mission

يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۪ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٧﴾

कोई भाग नहीं है। अल्लाह (तआला) न तो उनसे बातचीत करेगा, और न क़ियामत के दिन उनकी ओर देखेगा, न उन्हें पवित्र करेगा, और उनके लिए दुखद यातनायें हैं।[1]

وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٨﴾

(७८) अवश्य उनमें ऐसा गिरोह भी है जो किताब पढ़ते हुए अपनी जीभ मरोड़ लेता है, ताकि तुम उसे किताब ही का लेख समझो, हालाँकि वास्तव में वह किताब में से नहीं और यह कहते भी है कि वह अल्लाह (तआला) की ओर से हैं, हालाँकि वास्तव में वह अल्लाह तआला की ओर से नहीं वह तो जान बूझ कर अल्लाह (तआला) पर झूठ बोलते हैं।[2]

---

[1]उपरोक्त वर्णित लोगों के विपरीत दूसरे लोगों का वर्णन किया गया और यह दो प्रकार के लोग हैं जिनमें से एक तो वह लोग हैं जो अल्लाह तआला से किये गये वचन तथा शपथ को पीछे छोड़कर थोड़े से आर्थिक लाभ के लिए *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* पर ईमान नहीं लाते। दूसरे वह लोग हैं जो झूठी शपथ ग्राहण करके अपना माल बेचते अथवा दूसरे का माल हड़प कर जाते हैं। जैसाकि हदीस में आप ने फ़रमाया :

"जो व्यक्ति किसी का माल हड़पने के लिये झूठी कसमें खाये, वह अल्लाह से इस दशा में मिलेगा कि अल्लाह उस पर बहुत क्रोधित होगा।" (सहीह बुख़ारी व मुस्लिम आदि) और यह भी फ़रमाया : "तीन आदमियों से अल्लाह तआला न बात करेगा, न उनकी ओर देखेगा और न पवित्र करेगा और उनके लिये दुखद यातना होगी, उनमें से एक वह व्यक्ति है, जो झूठी शपथ के द्वारा अपना माल बेचता है।" (सहीह मुस्लिम) बहुत-सी हदीसों में इन बातों का वर्णन है। (इब्ने कसीर व फ़तहुल क़दीर)

[2]यह उन यहूदियों का वर्णन है जिन्होंने अल्लाह की किताब (तौरात) में न केवल परिवर्तन किया वरन दो अपराध और किये, एक तो जीभ को मरोड़कर किताब के शब्दों को पढ़ते, जिससे जनता को कथानक के विपरीत प्रभाव देने में वह सफल हो जाते। दूसरे अपनी मन-गढ़न्त बातों को अल्लाह की बातें कहते। दुर्भाग्य से मुसलमानों के धार्मिक अगुआओं में भी, *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* की भविष्यवाणी «لَتَتْبَعُنَّ سُنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ». (तुम अपने से पहली उम्मतों के पग-पग अनुसरण करोगे) के अनुसार ऐसे बहुत से लोग हैं जो भौतिक स्वार्थ अथवा गिरोही संकीर्णता अथवा वैचारिक अवरोध के कारण से क़ुरआन करीम के

The Ummah Technology Mission

مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَ الْحُكْمَ وَ النُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ﴿۷۹﴾

(७९) किसी ऐसे पुरूष को अल्लाह (तआला) किताब विज्ञान और नबूअत प्रदान करे, यह उचित नहीं कि फिर भी लोगों से कहे कि अल्लाह (तआला) को छोड़कर मेरे भक्त बन जाओ बल्कि वह तोकहेगा कि तुम सब लोग प्रभु के हो जाओ।[1] तुम्हें किताब सिखाने और तुमको पढ़ाने के कारण।[2]

وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا ؕ اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ

(८०) और वह तुम्हें यह आज्ञा नहीं देगा कि फ़रिश्तों (स्वर्गदूतों) तथा नबियों (ईशदूतों) को अराध्य बना लो। क्या आज्ञाकारी होने

साथ भी यही व्यवहार करते हैं। पढ़ते क़ुरआन की आयत हैं और विषय स्वयं गढ़ते हैं। जनता समझती है कि मोलवी साहब ने समस्या का हल क़ुरआन से निकाला है। वास्तव में इस हल का क़ुरआन से कोई सम्बन्ध नहीं होता अथवा आयत के अर्थों में बदलाव अथवा बनावट से काम लिया जाता है ताकि सिद्ध किया जा सके कि यह अल्लाह की ओर से है।

[1]यह इसाईयों के विषय में कहा जा रहा है कि उन्होंने आदरणीय ईसा को पूज्य बना दिया है यद्यपि वह एक मनुष्य थे जिन्हें किताब, प्रबोध और नुबूअत से सुशोभित किया गया था। और ऐसा कोई व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता कि अल्लाह को छोड़कर मेरे पुजारी और भक्त वन जाओ, वल्कि वह यह कहता है कि प्रभु वाले बन जाओ। ربانی अल्लाह से सम्वन्धित है नून और अलिफ़ की अधिकता अतिश्योक्ति के लिए है।

[2]अर्थात अल्लाह की किताब की शिक्षा-दीक्षा के परिणाम स्वरूप प्रभु की पहचान और प्रभु से विशेष सम्वन्ध स्थापित होना चाहिए। इसी प्रकार अल्लाह की किताब का ज्ञान रखने वाले को यह आवश्यक है कि लोगों को भी क़ुरआन की शिक्षा दे। इस आयत से यह स्पष्ट है कि जब अल्लाह के पैग़म्बरों को यह अधिकार नहीं है कि वह लोगों को अपनी वंदना (इबादत) करने का आदेश दें, तो यह अधिकार किसी अन्य को किस प्रकार प्राप्त हो सकता है ?

The Ummah Technology Mission

بَعْدَ اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨٠﴾

के बाद तुम्हें अवज्ञाकारी बन जाने का आदेश देगा ।[1]

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ؕ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِىْ ؕ قَالُوْٓا اَقْرَرْنَا ؕ

(८१) और जब अल्लाह (तआला) ने नबियों से वचन लिया कि जो कुछ मैं तुम्हें किताब तथा विज्ञान प्रदान करूँ, फिर तुम्हारे पास वह रसूल आये जो तुम्हारे पास की वस्तु को सच बताये तो तुम्हारे लिए उस पर ईमान लाना तथा उसकी सहायता करना आवश्यक है ।[2] फ़रमाया कि तुम क्या इसको स्वीकार

---

[1]अर्थात नबियों, फ़रिश्तों (अथवा किसी अन्य को) प्रभु की विशेषताओं से युक्त समझना अधर्म है। तुम्हारे मुसलमान हो जाने के पश्चात एक नबी भला इस प्रकार का काम कैसे कर सकता है ? क्योंकि उनका कार्य तो ईमान का आमंत्रण देना है जो एक अल्लाह जिसका कोई साझी नहीं की वंदना (इबादत) ही का नाम है। कुछ व्याख्याकारों ने इस आयत के उतरने का कारण बताया है कि कुछ मुसलमानों ने *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* से यह आज्ञा प्राप्त करनी चाही की सम्मान स्वरूप वह उनको दण्डवत (सजदा) करें। जिस पर यह आयत उतरी। (फ़तहुल क़दीर) और कुछ ने इसके उतरने का कारण यह बताया है कि यहूदियों और इसाईयों ने मिलकर *नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* से कहा क्या आप यह चाहते हैं कि हम आपकी उस प्रकार अराधना करें जिस प्रकार इसाई आदरणीय ईसा की करते हैं ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "अल्लाह हमारी रक्षा करे इस बात से कि हम अल्लाह को छोड़कर किसी अन्य की वंदना करें अथवा किसी को इसका आदेश दें। अल्लाह ने न मुझे इसलिए भेजा है और न इसका आदेश ही दिया है।" इस पर यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर उदघृत सीरत इब्ने हिशाम)

[2]अर्थात प्रत्येक नबी से यह वचन लिया गया कि यदि उसके समय में कोई अन्य नबी आया, तो उस पर ईमान लाना तथा उसकी सहायता करना आवश्यक है। जब नबी की उपस्थिति में आने वाले नये नबी पर स्वयं उस नबी को ईमान लाना आवश्यक है, तो उसके अनुयायियों को तो इस नये नबी पर इस आदेशानुसार ईमान लाना अति आवश्यक है, कुछ व्याख्याकारों ने ﴿رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ﴾ से الرسول का भावार्थ लिया है अर्थात आदरणीय मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में सभी नबियों से वचन लिया गया कि यदि उनके समय में वह आ जायें, तो अपना दूतत्व (नबूअत) समाप्त करके उन पर ईमान लाना होगा । परन्तु वास्तविकता यह है कि पहले अर्थ में यह भावार्थ स्वयं आ जाता है। इसलिये क़ुरआन के शब्दों के अनुसार पहला अर्थ ही अधिक उचित है और इस भावार्थ से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि नबूअत मोहम्मदी

The Ummah Technology Mission

قَالَ فَاشْهَدُوْا وَاَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨١﴾

करते हो और उस पर मेरा संकल्प ले रहे हो सब ने कहा हमें स्वीकार है, फ़रमाया तो गवाह रहो और मैं स्वयं भी तुम्हारे साथ साक्षी हूँ।

فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٨٢﴾

(८२) अब इसके बाद भी जो पलट जायें, वह अवश्य अवज्ञाकारी हैं।[1]

اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَلَهٗٓ

(८३) क्या वह अल्लाह (तआला) के धर्म के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म की खोज में हैं ?

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के जवलंत सूर्य के उपरान्त किसी भी नबी का दिया नहीं जल सकता। जैसाकि हदीस में आता है कि एक बार आदरणीय उमर तौरात का एक पन्ना पढ़ रहे थे, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह देखकर बहुत क्रोधित हुए और फ़रमाया :

"والذي نفسي بيده لو أصبح فيكم موسى عليه السلام ثم اتبعتموه و تركتموني لضللتم"

"क़सम है उस शक्ति की जिसके हाथ में मोहम्मद का प्राण है कि यदि मूसा *अलैहिस्सलाम* भी जीवित होकर आ जायें और तुम मुझे छोड़कर उनके अनुयायी बन जाओ तो अवश्य भटक जाओगे।" (मुसनद अहमद उदघृत इब्ने कसीर)

कुछ भी हो अब प्रलय (क़ियामत) तक अनुसरणीय केवल *मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* हैं और मोक्ष उन्हीं के अनुसरण में निर्धारित है। न किसी इमाम का अनुयायी अथवा किसी महात्मा के वचन में। जब अब किसी पैग़म्बर का सिक्का नहीं चल सकता तो किसी अन्य का अनुकरण किस प्रकार हो सकता है ?

[1]यह अहले किताब (यहूदी और ईसाई) तथा अन्य धर्मावलम्बियों को चेतावनी है कि *मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* के आ जाने के बाद भी उन पर ईमान लाने के वजाये अपने-अपने धर्म का पालन करना इस वचन के विरूद्ध है। जो अल्लाह तआला ने प्रत्येक नबी के द्वारा प्रत्येक उम्मत (समुदायों) से लिया है और इस वचन को तोड़ देना अधर्म है। फ़िसक यहाँ कुफ़्र के अर्थ में है क्योंकि नबूअते मोहम्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से इंकार केवल फ़िसक नही कुफ़्र है।

The Ummah Technology Mission

أَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّإِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

जब कि सभी आसमानों वाले और धरती वाले अल्लाह (तआला) के अवज्ञाकारी हैं। स्वेच्छा से हों तो और दबाव से हों तो[1] सभी को उसकी ओर लौटाया जायेगा।

قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ عَلٰى إِبْرٰهِيْمَ وَإِسْمٰعِيْلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۖ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ ۖ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٤﴾

(८४) आप कह दीजिए कि हम अल्लाह (तआला) पर और जो कुछ हम पर उतारा गया है और जो इब्राहीम (*अलैहिस्सलाम*) और इस्माईल (*अलैहिस्सलाम*) और याक़ूब (*अलैहिस्सलाम*) और उनकी संतान पर उतारा गया, और जो कुछ मूसा (*अलैहिस्सलाम*) और ईसा (*अलैहिस्सलाम*) और दूसरे नबियों को अल्लाह (तआला) की ओर से प्रदान किये गये उन सब पर ईमान लाये।[2] हम उनमें से किसी के मध्य अन्तर नहीं करते और हम अल्लाह (तआला) के आज्ञाकारी हैं।

---

[1]जब आकाश और धरती की कोई वस्तु अल्लाह तआला के सामर्थ्य तथा शक्ति से बाहर नहीं है, चाहे प्रसन्नता से अथवा अप्रसन्नता से, तो तुम उसके समक्ष सिर झुकाने (अर्थात इस्लाम स्वीकारने से) कहाँ भाग रहे हो ? अगली आयत में ईमान लाने की विधि बताकर फिर कहा जा रहा है कि प्रत्येक नबी को प्रत्येक आसमान से उतरी किताब पर बिना किसी विभेद के ईमान लाना आवश्यक है। पुन: कहा जा रहा है कि इस्लाम धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्म स्वीकृत नहीं होगा। किसी अन्य धर्म के अनुयायियों के भाग्य में केवल हानि के और कुछ न होगा।

[2]अर्थात सभी नबियों पर ईमान लाना कि वह अपने-अपने समय में अल्लाह की ओर से भेजे गये थे। तथा उन पर जो किताबें और सूचनात्मक पृष्ठ जो धार्मिक नियमों के लिए उतारे गये, उनके विषय में यह विश्वास रखना कि वह आसमानी किताबें थीं, जो वास्तव में अल्लाह की ओर से उतारी हुई थीं आवश्यक है परन्तु अब पालन केवल क़ुरआन के आदेशानुसार होगा। क्योंकि क़ुरआन ने पिछली किताबों को निरस्त कर दिया है।

The Ummah Technology Mission

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾

(८५) और जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म की खोज करे उसका धर्म मान्य नहीं होगा और वह परलोक (आख़िरत) में क्षति ग्रस्ताओं में होगा।

كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٦﴾

(८६) अल्लाह (तआला) किस प्रकार से उन लोगों को मार्गदर्शन देगा, जो अपने ईमान लाने, रसूल की सत्यता जानने की गवाही देने और अपने पास स्पष्ट तर्क आ जाने के बाद भी अधर्मी हो जायें। अल्लाह (तआला) ऐसे अत्याचारियों को सीधी राह नहीं दिखाता।

اُولٰۗىِٕكَ جَزَاۗؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٧﴾

(८७) उनका दण्ड यह है कि उन पर अल्लाह की धिक्कार है एवं फ़रिश्तों (स्वर्गदूतों) की तथा सब लोगों की।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٨﴾

(८८) वह उसमें नित्य रहेंगे न उनसे यातना हलकी की जायेगी तथा न अवकाश दिया जायेगा।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۡ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٨٩﴾

(८९) परन्तु जो लोग इसके पश्चात क्षमा याचना एवं सुधार कर लें तो, निश्चय अल्लाह क्षमावान दयावान है।[1]

---

[1]अन्सार में से एक मुसलमान धर्मभ्रष्ट हो गया और मूर्तिपूजकों से जा मिला, परन्तु शीघ्र ही उसे पश्चाताप हुआ और उसने लोगों के द्वारा रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक सूचना भिजवायी कि هَل لِي من توبة (क्या मेरी क्षमा स्वीकार हो सकती है) उस पर यह आयत उतरी। इससे ज्ञात हुआ कि मुर्तदद का दण्ड यद्यपि कठोर है, क्योंकि उसने सत्य को पहचान लेने के पश्चात ईर्ष्या, द्वेष एवं द्रोह से सत्यता से मुँह फेरा और इंकार किया। परन्तु यदि कोई स्वच्छ दिल से क्षमा माँगे और अपना सुधार कर ले, तो अल्लाह तआला क्षमा करने वाला और कृपालु है, उसकी पश्चाताप मान्य है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوا كُفْرًا لَّن تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الضَّالُّونَ ﴿٩٠﴾

(९०) नि:संदेह जो लोग अपने ईमान (विश्वास) के पश्चात कुफ़्र (अविश्वास) करें फिर अविश्वास में बढ़ जायें[1] उनकी क्षमा-याचना कदापि स्वीकार न की जायेगी [2] तथा यही कुमार्ग हैं।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَن يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِم مِّلْءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوِ افْتَدَىٰ بِهِ ۗ

(९१) नि:संदेह जो लोग क़ाफ़िर हों और मरते समय तक विश्वास रहित रहे उनमें से यदि कोई धरती भर सोना (स्वर्ण) दे यद्यपि प्रतिशोध में हो तो भी कदापि स्वीकार्य न होगा

---

[1]इस आयत में उनके दण्ड का वर्णन हो रहा है, जो मुर्तदद होने के बाद, क्षमा न माँगे तथा इंकार की स्थिति में मर जाये।

[2]इससे वह क्षमा का तात्पर्य है, जो मृत्यु के समय माँगी जाये। वरन् क्षमा का द्वार प्रत्येक व्यक्ति के लिए हर समय खुला हुआ है। इससे पहली आयत में क्षमा की स्वीकृति का वर्णन है। इसके अतिरिक्त क़ुरआन में अल्लाह तआला ने बार-बार क्षमा के महत्व तथा स्वीकार किये जाने का वर्णन किया है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

و هو الذي يقبل التوبة عن عباده

"वह (अल्लाह) ही है जो अपने भक्तों की क्षमा स्वीकार करता है।"

(अश-शूरा-२५)

ألم يعلموأ ان الله هو يقبل التوبة عن عباده

"क्या उन्होंने नहीं जाना कि अल्लाह ही अपने भक्तों की क्षमा स्वीकार करता है।"

(अत्तौबा-१०४)

The Ummah Technology Mission

इन्हीं के लिए दुखद यातना है और उनका कोई सहायक नहीं।[1]

أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٩١﴾

---

[1]हदीस में आता है कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन एक नरकवासी से कहेगा कि यदि तेरे पास दुनियाँ भर का सामान हो तो क्या तू इस आग की यातना के बदले देना पसन्द करेगा ? वह कहेगा 'हाँ' अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि दुनियाँ में मैंने तो इससे सरल बात की माँग की थी कि मेरे साथ किसी को सम्मिलित न करना, परन्तु तू सम्मिलित करने से नहीं रूका। (मुसनद अहमद, अल-बुख़ारी और मुस्लिम व इब्ने कसीर) इससे ज्ञात हुआ कि काफ़िर के लिए नरक की स्थायी यातना है। दुनियाँ में यदि उसने कोई पुण्य का कार्य किया तो अविश्वास के कारण वह भी व्यर्थ हो गया। जैसाकि हदीस में है कि अब्दुल्लाह बिन जदआन के विषय में पूछा गया कि वह अतिथियों का स्वागत करता, गरीबों की सहायता करता था और बन्धुआ लोगों को आज़ाद करता था, क्या उसके यह कर्म उनके लिए हितकारी होंगे ? नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया 'नहीं' क्योंकि उसने एक दिन भी अपने प्रभु से अपने पापों के लिए क्षमा नहीं माँगी (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान) इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति वहाँ धरती भर सोना किसी बन्दी को मुक्त कराने के लिए मूल्य स्वरूप (फ़िदया कहते हैं) दे और चाहे कि वह नरक की यातना से बच जाये, तो यह सम्भव नहीं होगा प्रथम तो वहाँ किसी के पास होगा क्या ? और यदि मान भी लिया जाये कि उसके पास दुनियाँ भर के कोषों का धन उपलब्ध हो और वह उन्हें देकर यातना से छूट जाये, तो यह भी नहीं होगा। क्योंकि उससे वह प्रतिशोध अथवा फ़िदया स्वीकार ही न किया जायेगा। जिस प्रकार से दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنفَعُهَا شَفَاعَةٌ ﴾

उससे कोई बदला स्वीकार नहीं किया जायेगा और न कोई सिफ़ारिश उसे लाभ पहुँचायेगी। (*अल-बक़रः*-१२३)

﴿ لَّا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خِلَالٌ ﴾

"वहाँ न क्रय-विक्रय होगा न कोई मित्रता।" (*सूरः इब्राहीम*-३१)

The Ummah Technology Mission

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿۹۲﴾

(९२) जब तक तुम अपनी प्रिय धन से अल्लाह (तआला) के मार्ग में न व्यय करोगे, कदापि भलाई न पाओगे।[1] और जो कुछ तुम व्यय करो उसे अल्लाह (तआला) भली-भाँति जानता है।[2]

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِيْلُ عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ

(९३) तौरात उतरने से पूर्व ही (आदरणीय) याक़ूब (अलैहिस्सलाम) ने जिस चीज़ को अपने ऊपर हराम कर लिया था उसके अतिरिक्त सभी खाने इस्राईल की सन्तान के

---

[1] بِرّ (बिर्र) का अर्थ है पुण्य व भलाई। परन्तु यहाँ पर अर्थ है सत्कार्य अथवा स्वर्ग (फ़तहुल क़दीर)। हदीस के अनुसार जब यह आयत उतरी, उस समय मदीना में आदरणीय अबू तलहा अंसारी एक धनवान व्यक्ति थे, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए और कहा कि ऐ रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! बेरोहा बाग़ (एक बाग का नाम है) मुझे अत्यधिक प्रिय है, मैं उसे अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए दान करता हूँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "वह तो अत्याधिक लाभदायक माल है, मेरा विचार यह है कि तुम उसे अपने सम्बन्धियों में बाँट दो।" अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के परामर्श से उन्होंने अपने सम्बन्धियों और चचेरे भाईयों में बाँट दिया। (मुसनद अहमद) इस प्रकार अन्य कई सहाबा ने अपनी रूचिकर चीज़े अल्लाह के मार्ग में बाँटीं। مِمَّا تحبون में (مِن) कुछ के अर्थ में प्रयोग हुआ है। अर्थात सभी प्रियवर धन को बाँटने का आदेश नहीं हुआ है। बल्कि प्रियवर चीज़ों में कुछ। इसलिए प्रयत्न यही करना चाहिए कि अच्छी वस्तु दान किया जाये। यह श्रेष्ठता एवं पूर्ण पद प्राप्त करने की विधि है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि कुछ कम अच्छी, अथवा अपनी आवश्यकता से अधिक अथवा प्रयोग की हुई पुरानी चीज़ का दान नहीं किया जा सकता अथवा उसका बदला नहीं मिलेगा। इस प्रकार की चीज़ों का दान करना भी उचित है तथा अल्लाह तआला के यहाँ बदला भी मिलेगा। परन्तु विशेषता तथा श्रेष्ठता प्रिय चीज़ के दान करने में है।

[2] तुम जो कुछ भी व्यय करोगे अच्छी अथवा बुरी चीज़ अल्लाह उसे जानता है। उसके अनुसार बदला प्रदान करेगा।

The Ummah Technology Mission

إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٩٣﴾

लिए हलाल थे। आप कह दीजिए कि यदि तुम सच्चे हो तो तौरात ले आओ और पढ़ सुनाओ।[1]

فَمَنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٩٤﴾

(९४) उसके बाद भी जोलोग अल्लाह (तआला) पर झूठा लांछन लगायें वही अत्याचारी हैं।

قُلْ صَدَقَ اللَّهُ ۗ فَاتَّبِعُوا مِلَّةَ إِبْرَٰهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٥﴾

(९५) कह दीजिए कि अल्लाह (तआला) सच्चा है। तुम सभी इब्राहीम हनीफ़ की मिल्लत का अनुकरण करो, जो मूर्तिपूजक न थे।

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكًا وَهُدًى لِّلْعَٰلَمِينَ ﴿٩٦﴾

(९६) नि:संदेह (अल्लाह तआला) का पहला घर जो मानव के लिये बनाया गया वही है, जो मक्का (नगरी) में है।[2] जो पूरे विश्व के लिये शुभ एवं मार्ग दर्शक है।

---

[1]यह और इस आयत के बाद की दो आयतें यहूदियों के इस विरोध पर उतरीं कि उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि आप इब्राहीम के धर्म के अनुयायी होने का दावा करते हैं और ऊँट का माँस भी खाते हैं, जबकि ऊँट का माँस और दूध दोनों इब्राहीम के धर्म में हराम था। अल्लाह तआला ने फ़रमाया यहूदियों का दावा ग़लत है। आदरणीय इब्राहीम के धर्म में यह चीजें हराम नहीं थीं परन्तु कुछ चीज़ें इस्राईल (आदरणीय याक़ूब) ने अपने ऊपर हराम कर ली थीं। और वह यही ऊँट का माँस तथा दूध था (इसका कारण एक मन्नत अथवा रोग था) और आदरणीय याक़ूब का यह कर्म भी तौरात उतरने के बहुत पहले का है। इसलिए कि तौरात तो आदरणीय इब्राहीम तथा आदरणीय याक़ूब के बहुत बाद उतरी है, फिर तुम किस प्रकार उपरोक्त सवाल कर सकते हो? इसके अतिरिक्त तौरात में तुम पर (यहूदियों पर) तुम्हारे अत्याचारों के कारण कूछ खाद्य हराम किया गया था (*सूरः अल- अनाम*-१४६ तथा *अल-निसाँ*-१६०) यदि तुम्हें विश्वास नहीं है, तो तौरात लाओ और उसे पढ़कर सुनाओ। जिससे स्पष्ट हो जायेगा कि आदरणीय इब्राहीम के समय में यह खाद्य निषेध नहीं थे और तुम पर भी कुछ चीजें हराम की गयी थीं, वह तुम्हारे अत्याचारों अथवा कुकर्मों के कारण हुई थीं अर्थात उनको हराम करने का कारण भी तुम्हारे कुकर्मो का दण्ड था। (ऐसरुत्तफ़ासीर)

[2]यह यहूदियों के दूसरे विरोध का उत्तर है, वह कहते थे कि बैतुल मकदिस सबसे पहला इबादत का घर धरती पर बना। मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा उनके साथियों ने अपना क़िबला क्यों बदल डाला? इसके उत्तर में कहा गया कि तुम्हारा यह दावा भी ग़लत

The Ummah Technology Mission

فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۚ۬ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٧﴾

(९७) जिसमें स्पष्ट निशानियाँ हैं, "मुक़ामे इब्राहीम" (एक पत्थर है जिस पर ख़ाना काअबा के निर्माण के समय आदरणीय इब्राहीम खड़े होते थे और वह पत्थर आवश्यकतानुसार ऊपर उठता और नीचे आता) है, इसमें जो आ जाये निर्भय हो जाता है।[1] अल्लाह (तआला) ने उन लोगों पर जो उसकी ओर मार्ग पा सकते हों, उस घर का हज्ज अनिवार्य कर दिया है।[2] और जो कोई कुफ़्र करे, तो अल्लाह (तआला) पूरे विश्व से निस्पृह है।[3]

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٨﴾

(९८) आप कह दीजिए कि ऐ अहले किताब ! तुम अल्लाह की आयतों का इंकार क्यों करते हो ? और जो कुछ करते हो, अल्लाह (तआला) उस पर गवाह है।

है। पहला घर जो सर्वप्रथम अल्लाह की इबादत के लिए धरती पर निर्मित किया गया है, वह मक्का में है।

[1]इसमें हत्या, रक्तपात, शिकार यहाँ तक कि पेड़ों को काटना भी निषेध कर दिया गया है। (सहीहैन)

[2]"मार्ग पा सकते हों।" का अर्थ यह है कि मार्ग व्यय का प्रबन्ध हो, अर्थात इतना धन हो कि मार्ग व्यय सुविधापूर्वक पूरा हो जाये। इसके अतिरिक्त प्रबन्ध से अर्थ यह भी है कि मार्ग में शाँति हो। और जान व माल सुरक्षित हो। इसी प्रकार यह भी आवश्यक है कि स्वास्थ यात्रा योग्य हो। इसके अतिरिक्त स्त्री के लिए उसका महरम आवश्यक है। (फ़तहुल क़दीर) यह आयत हर उस व्यक्ति के लिए जो इस प्रकार का प्रबन्ध करे उसके लिए हज अनिवार्य होने का तर्क है। और हदीसों से इस विषय का स्पष्टीकरण होता है कि जीवन में एक बार हज अनिवार्य है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[3]हज का प्रबन्ध होने के बाद भी हज न करना क़ुरआन ने इसे अधर्म से सम्बोधित किया है। जिससे हज के अनिवार्य होने को और भी बल मिलता है, हदीसों में भी ऐसे व्यक्ति को कठोर चेतावनी दी गयी हैं। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٩﴾

(९९) उन अहले किताब से कह दीजिए कि तुम अल्लाह (तआला) के मार्ग (धर्म) से जो ईमान लाये हैं उन्हें क्यों रोकते हो और उसमें दोष ढूँढ़ते हो, जबकि तुम स्वयं गवाह हो ?[1] और अल्लाह (तआला) तुम्हारे कर्मों से अनजान नहीं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٠﴾

(१००) ऐ ईमानवालो ! यदि तुम अहले किताब की किसी गिरोह की बातें मानोगे, तो वह तुम्हारे ईमान लाने के पश्चात तुम्हें कुफ़्र की ओर फेर देंगे।[2]

---

[1]अर्थात तुम जानते हो कि यह इस्लाम धर्म सत्य है। इसके प्रचारक अल्लाह के सच्चे संदेशवाहक हैं, क्योंकि यह बातें उन किताबों में लिखी हैं, जो तुम्हारे नबियों पर उतारी गयीं, और जिन्हें तुम पढ़ते हो।

[2]यहूदियों की चालबाज़ी और धोखेबाज़ी और उनकी ओर से मुसलमानों को भटकाने की योजनाओं को बताने के बाद, मुसलमानों को चेतावनी दी जा रही है कि तुम भी उनके हथकंडों से सावधान रहो और क़ुरआन की तिलावत करने और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उपस्थित होने के बाद भी तुम लोग यहूदियों के जाल में न फँस जाओ। इसकी पृष्ठभूमि तफ़सीर के कथन पर इस प्रकार से वर्णन हुआ है कि अन्सार के दोनों क़बीले औस तथा ख़ज़रज एक संघ में बैठे आपस में बात कर रहे थे कि शास बिन क़ैस यहूदी वहाँ से गुज़रा और उनको प्रेमपूर्वक बात करते देखकर जल गया कि यह पहले एक-दूसरे के कट्टर शत्रु थे और इस्लाम धर्म स्वीकार करने के बाद एक-दूसरे के साथ सौहार्द पूर्ण वातावरण में रह रहे हैं। उसने एक यहूदी नवयुवक को यह काम दिया कि वह औस और ख़ज़रज को उनके बुआॅस युद्ध की याद दिलाये, जो उनके मध्य हिजरत से कुछ दिन पूर्व हुआ था और उन्होंने जो एक-दूसरे के विरुद्ध गीत और कवितायें बनायीं थी, वह उनको सुनाये। अत: उसने ऐसा ही किया जिस से दोनों क़बीलों के मध्य पुराना वैमनस्य फिर से जागृत हो गया और वे एक-दूसरे को बुरा-भला कहने लगे, और यहाँ तक कि एक-दूसरे के विरुद्ध हथियार उठाने के लिए तैयार हो गये, निकट था कि वह एक-दूसरे की हत्या करना प्रारम्भ कर देते कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आ गये और उन्हें समझाया और वह रुक गये, इस पर यह आयतें भी और आगामी आयतें भी उतरीं। (तफ़सीर इब्ने कसीर, व फ़तहुल क़दीर आदि)

The Ummah Technology Mission

وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَ اَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٠١﴾

(१०१) और (अर्थात यह स्पष्ट है) तुम किस प्रकार कुफ़्र कर सकते हो ? जबकि तुम पर अल्लाह (तआला) की आयतें पढ़ी जाती हैं और तुममें रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उपस्थित हैं। जो अल्लाह (तआला) के धर्म को मजबूती से पकड़ ले।[1] नि:संदेह उसे सीधा मार्ग दिखा दिया गया है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٢﴾

(१०२) ऐ ईमानवालों ! अल्लाह से उतना डरो जितना उससे डरना चाहिए।[2] और (देखो) मरते दम तक मुसलमान ही रहना।

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۠ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ

(१०३) और अल्लाह (तआला) की रस्सी को सब मिलकर बलपूर्वक थाम लो।[3] और गुटबन्दी न करो।[4] और अल्लाह (तआला) की

---

[1]एतिसाम बिल्लाह (اعتصام بالله) का अर्थ है अल्लाह के धर्म को मज़बूती से पकड़ लेना, और इसका पालन करने में आलस्य न करना।

[2]इसका अर्थ यह कि इस्लाम धर्म के आदेश एवं अनिवार्य कर्म पूर्णरूप से किये जायें और मना किये गये काम के निकट भी न जायें। कुछ लोग कहते हैं कि इस आयत के उतरने से सहावा व्याकुल हुए, तो अल्लाह तआला ने आयत ﴿فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ﴾ (अल्लाह से यथा सम्भव डरो) उतारी। परन्तु इसे निरस्त करने के बजाय स्पष्टकारी कहा जाये तो अधिक उचित होगा, क्योंकि निरस्त वहीं मानना चाहिए जहाँ दोनो आयतों की समानता अथवा अनुकूलता असम्भव हो। और यहाँ समानता सम्भव है। अर्थ यह होगा कि اتقو الله حق تقاته ما استطعتم (अल्लाह से इस प्रकार डरो, जिस प्रकार अपनी शक्ति के अनुसार डर सकते हो) (फ़तहुल क़दीर)

[3]अल्लाह के भय के बाद (सब मिलकर अल्लाह कि रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो) की शिक्षा देकर यह स्पष्ट किया जा रहा है कि मोक्ष भी इन्हीं दो नियमों में है और एकता भी इन्हीं नियमों पर आधारित हो सकती है तथा शेष रह सकती है।

[4] ولا تفرقوا (और गुटबन्दी न करो) के द्वारा गुटों में बँटने से रोक लगा दी गयी है। इसका अर्थ यह है कि उन दो नियमों से जिनका वर्णन हो चुका है मुँह फेर लेने के कारण आपस में फूट पड़ सकती है और तुम अलग-अलग गुटों में बँट जाओगे। अत: गुटबन्दी

The Ummah Technology Mission

قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖٓ اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝۱۰۳

उस समय की कृपा को याद करो जब तुम लोग आपस में एक-दूसरे के शत्रु थे। उसने तुम्हारे हृदय में प्रेम डाल दिया और तुम उसकी कृपा से भाई-भाई हो गये। और तुम आग के गड्ढे के किनारे तक पहुँच चुके थे, तो उसने तुम्हें बचा लिया। अल्लाह (तआला) इसी प्रकार अपनी निशानियों का वर्णन करता है, ताकि तुम मार्ग पा सको।

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝۱۰۴

(१०४) और तुममें से एक गिरोह ऐसा होना चाहिए, जो भलाई की ओर बुलाये और सत्कर्मों का आदेश दे और कुकर्मों से रोके और यही लोग सफल होने वाले हैं।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝۱۰۵ۙ

(१०५) और तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने अपने पास स्पष्ट तर्क आ जाने के उपरान्त भी फूट और भेद डाला।[1] इन्हीं के लिए कठोर यातना है।

का इतिहास देख लीजिए यही कारण स्पष्ट होकर सामने आयेंगे। क़ुरआन और हदीस को समझने और उसके भाष्य तथा व्याख्या में कुछ मतभेद, यह गुटबन्दी का कारण नहीं है, यह मतभेद तो सहाबा तथा ताबईन के समय में भी था, परन्तु मुसलमान गुटों में नहीं बँटे थे। क्योंकि आपसी मतभेद के बाद भी सभी के पालन का केन्द्र और विश्वास का बिन्दु एक ही था और वह है क़ुरआन और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलोहि वसल्लम की हदीस, परन्तु जब व्यक्तित्व के नाम पर विचारों का प्रदर्शन होने लगा, तो पालन और विश्वास के यह केन्द्र तथा बिन्दु बदल गये। अपने-अपने व्यक्तियों और उनके कथन तथा विचार प्रथम स्थान पर तथा अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन तथा आदेश द्वितीय स्थान पर कर दिये गये। और यहीं से उम्मते मुसलिमा में गुटबन्दी आरम्भ हुई। जो दिन प्रतिदिन बढ़ती ही गयी और अति सुदृढ़ हो गयी।

[1] ज्वलंत तर्क आ जाने के बाद भेद डाला। इससे ज्ञात हुआ कि यहूदी और ईसाईयों के मध्य भेद का यह कारण न था कि उन्हें सत्य का पता न था। और उसके तर्क से अनजान थे। बल्कि वास्तव में उन्होंने सब कुछ जानते बूझते हुए अपने सांसारिक लाभ और स्वार्थ के

The Ummah Technology Mission

يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۫ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿١٠٦﴾

(१०६) जिस दिन कुछ मुख उज्जवल होंगे और कुछ काले।[1] काले मुख वालों (से कहा जायेगा) कि तुमने ईमान लाने के बाद अविश्वास क्यों किया ? अपने इंकार की यातना चखो।

وَ اَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٧﴾

(१०७) और उज्जवल मुख वाले अल्लाह (तआला) की रहमत में होंगे और उसमें सदैव रहेंगे।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٨﴾

(१०८) (हे नबी) ! हम इन सत्य आयतों का पाठ (तिलावत) आप पर कर रहे हैं और अल्लाह (तआला) का विचार लोगों पर अत्याचार करने का नहीं है।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿١٠٩﴾

(१०९) और अल्लाह (तआला) के लिए है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है और अल्लाह (तआला) की ओर सभी कर्मों को लौटना है।

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ

(११०) तुम सर्वश्रेष्ठ उम्मत (समुदाय) हो जो लोगों के लिए पैदा की गयी है कि तुम सत्कर्मों का आदेश देते हो और कुकर्मों से रोकते हो, और अल्लाह (तआला) पर ईमान

लिये मतभेद तथा भेद का मार्ग पकड़ा था और उस पर डटे हुए थे। क़ुरआन करीम ने विभिन्न शैली और पद्धता से बार-बार इस वास्तविकता की ओर संकेत किया है। और इससे दूर रहने पर बल दिया है। परन्तु खेद है कि इस उम्मत के भेदुत्पादकों ने भी ठीक वही रीति पकड़ रखा है कि सत्य और उसके स्पष्ट तर्क उन्हें ठीक प्रकार से ज्ञात हैं, परन्तु वह अपने भेद-भाव पर जमे हुए हैं और अपनी पूरी मांसिक अर्हता पूर्व के समुदायों की भांति कल्पना एवं हेर-फेर के घृणित कार्य में व्यर्थ कर रहे हैं।

[1]आदरणीय इब्ने अब्बास (رضی اللہ عنہما) ने इससे अहले सुन्नत वल जमाअत और अहले बिदअत तात्पर्य लिया है। (इब्ने कसीर तथा फ़तहुल क़दीर) इससे ज्ञात हुआ कि इस्लाम वही है जिस पर अहले सुन्नत वल जमाअत कार्यरत हैं। और अहले बिदअत एवं विरोधुत्पादक लोग इस्लाम के उस वरदान से वंचित हैं, जो मोक्ष का कारण है।

The Ummah Technology Mission

خَيْرًا لَّهُمْ ۚ مِّنْهُمُ الْمُؤْمِنُونَ وَأَكْثَرُهُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿١١٠﴾

रखते हो।[1] यदि अहले किताब ईमान लाते तो उनके लिए उत्तम होता। उनमें ईमानवाले भी हैं।[2] परन्तु अधिकतर लोग फ़ासिक़ हैं।

لَن يَضُرُّوكُمْ إِلَّا أَذًى ۖ وَإِن يُقَاتِلُوكُمْ يُوَلُّوكُمُ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنصَرُونَ ﴿١١١﴾

(१११) यह लोग तुम्हें सताने के अतिरिक्त और अधिक कुछ हानि नहीं पहुँचा सकते। और यदि तुमसे लड़ाई हो तो पीठ फेर लेंगे। फिर वे सहायता नहीं दिये जायेंगे।[3]

---

[1]इस आयत मे मुस्लिम उम्मत को सर्वश्रेष्ठ समुदय कहा गया है। और उसका कारण भी बताया गया है कि जो अच्छे कर्मों का आदेश करते हैं और बुरे कर्मो से रोकते हैं और अल्लाह पर ईमान रखते हैं अर्थात यह समुदाय यदि इन श्रेष्ठ विशेषताओं से विभूषित रहेगा, तो सर्वश्रेष्ठ समुदाय है अन्यथा इस अलंकरण से वंचित कर दिया जा सकता है। उसके उपरान्त अहले किताब की आलोचना से भी इस बिन्दु का स्पष्टीकरण ज्ञात होता है कि जो भी सत्कर्म का आदेश और कुकर्म का अवरोध नहीं करेगा, वह भी अहले किताव के समान होगा। उनकी विशेषता का वर्णन किया गया है।

﴿كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَن مُّنكَرٍ فَعَلُوهُ﴾

"वह एक-दूसरे को बुराई से नहीं रोकते थे।"(*अल-मायदा-७९*)

और यहाँ इसी आयत में उनमें से अधिकतर को धर्महीन कहा गया है। सत्कर्मो का आदेश देना यह सामान्य लोगों के लिए अनिवार्य है अथवा विद्वानों का दायित्व है। अधिकतर विद्वानों (आलिमों) का विचार है कि यह विशिष्ठ व्यक्तियों के लिए अनिवार्य है अर्थात विद्वानों का कर्त्तव्य है कि इस दायित्व को पूरा करते रहें। क्योंकि सत्कर्म और कुकर्म धार्मिक नियम के अन्तर्गत अच्छाई-बुराई का ज्ञान उन्हीं को है। उनके द्वारा प्रचार-प्रसार एवं आमन्त्रण के कर्त्तव्य के अदा करने के कारण उम्मत के अन्य सभी व्यक्तियों की ओर से यह कर्त्तव्य समाप्त हो जायेगा। जैसे जिहाद (धर्मयुद्ध) भी सामान्य परिस्थितियों में साधारण कर्त्तव्य है अर्थात एक गिरोह की ओर सें अदायगी से शेष सभी का कर्त्तव्य समाप्त हो जायेगा।

[2]जैसे अब्दुल्लाह विन सलाम आदि जो मुसलमान हो गये थे। परन्तु उनकी संख्या कम थी अत: مِنهم में مِن कुछ के अर्थ के लिए प्रयोग हुआ है।

[3] أذى (सताने) से तात्पर्य मौखिक रूप से कलंकित करना तथा मिथ्यावाद एवं आरोप है जिससे दिल को सामयिक दु:ख अवश्य होता है, परन्तु यह रणक्षेत्र में तुम्हें पराजित नहीं

The Ummah Technology Mission

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ أَيْنَ مَا ثُقِفُوٓا إِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللَّهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُو بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ الْأَنۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۚ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوا وَّكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿١١٢﴾

(११२) यह प्रत्येक स्थान पर अपमानित हैं, यह और बात है कि अल्लाह (तआला) की अथवा लोगों की शरण में हों।[1] यह अल्लाह के क्रोध के अधिकारी हो गये। और उन पर निर्धनता थोप दी गयी। यह इसलिए कि यह लोग अल्लाह (तआला) की आयतों को नहीं मानते थे और अकारण नबियों की हत्या करते थे। यह बदला इनकी अवज्ञता और सीमा लांघने का है।[2]

कर सकते। अतएव ऐसा ही हुआ। मदीने से भी यहूदियों को निकलना पड़ा और फिर ख़ैबर भी विजयी हुआ। और वह वहाँ से भी निकाले गये। इसी प्रकार सीरिया के क्षेत्र में ईसाईयों को भी मुसलमानों से पराजित होना पड़ा। यहाँ तक कि ईसाईयों ने क्रुसुएड (ईसाई-मुस्लिम युद्ध) के द्वारा बदला लेने का प्रयत्न किया और बैतुल मक़दिस पर अधिकार कर लिया। परन्तु उसे सुल्तान सलाहुउद्दीन अय्यूबी ने ९० वर्ष बाद स्वतन्त्र कर लिया। परन्तु अब मुसलमानों के ईमान की कमज़ोरी के कारण यहूदी और ईसाईयों की सहभागी योजनाओं के कारण बैतुल मक़दिस फिर मुसलमानों के हाथ से निकल गया। परन्तु एक समय ऐसा आयेगा कि यह परिस्थिति बदल जायेगी। विशेष रूप से आदरणीय ईसा के आने के बाद ईसाई धर्म की समाप्ति तथा मुसलमानों की विजय श्री आवश्यक है। जैसाकि सहीह हदीस में है। (इब्ने कसीर)

[1]यहूदियों का जो अपमान अथवा गत्यवरोध अल्लाह के क्रोध के कारण उन पर है, उससे कुछ समय के लिए बचाओ के दो रास्ते बताये गये हैं। एक तो वह अल्लाह की शरण में आ जायें अर्थात इस्लाम धर्म स्वीकार कर लें। अथवा किसी इस्लामी राज्य में शरणार्थी कर दे कर शरणार्थी के रूप में निवास करें। दूसरे यह कि लोगों की शरण प्राप्त हो जाये इसके दो भावार्थ वर्णित किये गये हैं। एक यह कि इस्लामी राज्य के अतिरिक्त एक सामान्य मुसलमान उनको शरण दे दे, जैसे कि प्रत्येक मुसलमान को यह अधिकार प्राप्त है और इस्लामी राज्य के राज्याधिकारियों को यह चेतावनी दी गयी है कि वह किसी छोटे से छोटे मुसलमान व्यक्ति द्वारा दी गयी शरण को रद्द न करें। दूसरा यह कि किसी बडी गैर मुस्लिम शक्ति की सहायता उनको प्राप्त हो जाये। क्योंकि الناس सामान्य है, इसमें मुसलमान और ग़ैर मुस्लिम दोनों सम्मिलित हैं।

[2]यह उनके कुकर्म हैं जिनके कारण उन पर यह अपमान थोपा गया है।

The Ummah Technology Mission

لَيْسُوْا سَوَآءً ؕ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿١١٣﴾

(११३) यह सारे के सारे एक जैसे नहीं, बल्कि इन अहले किताब में एक स्थिर गिरोह (सत्य पर) भी है। जो रात्रि में अल्लाह की आयत पढ़ते एवं सजद: करते हैं।

يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٤﴾

(११४) यह अल्लाह तथा प्रलय के प्रति विश्वास रखते हैं। भलाईयों का आदेश करते और बुराईयों से रोकते हैं। और भलाई के कार्यों में शीघ्रता करते हैं। यह सदाचारियों में से हैं।

وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿١١٥﴾

(११५) और यह जो कुछ भी भलाई करें उसका अनादर न किया जायेगा और अल्लाह (तआला) परहेज़गारों को अच्छी तरह जानता है।[1]

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِىَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١١٦﴾

(११६) नि:संदेह विश्वासहीनों को उनके धन और उनकी सन्तान अल्लाह के यहाँ कुछ काम न आयेंगी, यह तो नरकीय हैं जिसमें वे सदा वास करेंगे।

---

[1]यह सारे अहले किताब नहीं हैं जिनका अपमान पिछली आयत में किया गया। बल्कि उनमें कुछ अच्छे लोग भी हैं। जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम, असद बिन उबैद, सालबा बिन साय: और उसैद बिन साय: आदि जिन्हें अल्लाह तआला ने इस्लाम स्वीकार करने का सुअवसर प्रदान किया और उनमें ईमान और अल्लाह के डर की विशेषतायें भी पायी जाती हैं। वह अल्लाह से प्रसन्न हुए और अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ। قَائِمَةٌ का अर्थ है धार्मिक नियम का पालन तथा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुकरण करने वाले। يَسْجُدُون का अर्थ है रातों को खड़े होते हैं अर्थात तहज्जुद की नमाज़ पढ़ते हैं और नमाज़ों में तिलावत (पाठ) करते हैं। इस स्थान पर أمر بالمعروف का अर्थ कुछ ने यह किये हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का आदेश देते हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विरोध करने से रोकते हैं। इसी गिरोह का वर्णन आगे भी किया गया है।

﴿وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خَاشِعِينَ لِلَّهِ﴾ (आले-इमरान-१९९)

The Ummah Technology Mission

مَثَلُ مَا يُنْفِقُونَ فِي هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوٓا أَنْفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٧﴾

(११७) वह जो भी इस संसारिक जीवन में ख़र्च करते हैं उस वायु के समान है जिसमें पाला हो जो किसी अत्याचारी क़ौम के खेत को लगकर उसका नाश कर दे।[1] अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया परन्तु वह स्वत: अत्याचार कर रहे थे।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تَتَّخِذُوا بِطَانَةً مِّن دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا ۚ وَدُّوا مَا عَنِتُّمْ ۚ

(११८) ऐ ईमानवालो ! तुम अपना हार्दिक मित्र ईमानवालों के अतिरिक्त किसी अन्य को न बनाओ।[2] (तुम नहीं देखते दूसरे लोग तो)

---

[1]क़ियामत के दिन काफ़िरों के धन काम आयेंगे न सन्तान, यहाँ तक कि भलाई के कामों में व्यय किया हुआ धन भी व्यर्थ हो जायेगा। और उनकी तुलना उस पाले की जैसी है जो हरी-भरी खेती को जलाकर नष्ट कर देता है। अत्याचारी इन खेतियों को देखकर प्रसन्न हो रहे होते हैं और लाभ की आशा करते हैं कि सहसा उनकी आशायें मिट्टी में मिल जाती हैं। इससे ज्ञात हुआ कि जब तक ईमान नहीं होगा तब तक हितकर्मों में धन व्यय करने वालों की दुनियाँ में चाहे जितनी प्रसिद्धि क्यों न हो। परलोक में उन्हें उसका बदला कुछ न प्राप्त होगा। वहाँ तो उनके लिए नित्य नरक वास की यातना ही है।

[2]यह विषय पहले भी व्यतीत हो चुका है, यहाँ उसकी विशेषता के कारण पुर्नावृत्ति हो रही है। بطانة अरबी शब्दकोष के अनुसार हार्दिक मित्र अर्थात भेदी को कहा जाता है। काफ़िर और मूर्तिपूजक मुसलमानों के लिए जो भावना और प्रयत्न रखते हैं, उनमें से जिनको स्पष्ट रूप से कहते हैं और जो अपने दिलों में छिपाकर रखते हैं। अल्लाह तआला ने उन सभी की ओर संकेत दे दिया है। यह और इस प्रकार की अन्य आयतों के आधार पर आलिमों और विचारकों ने लिखा है कि एक इस्लामी राज्य में ग़ैर मुस्लिम को महत्तवपूर्ण पदों पर रखना उचित नहीं है। कहा जाता कि आदरणीय अबू मूसा अशअरी रज़ी अल्लाह अन्हु ने एक ज़िम्मी (ग़ैर मुस्लिम) को लिपिक (क्लर्क) रख लिया, आदरणीय उमर (रज़ी अल्लाह अन्हु) को जब यह मालूम हुआ, तो आपने उन्हें बहुत डाँटा और कहा कि "तुम उन्हे निकट न करो, जबकि अल्लाह ने उन्हें दूर किया है, उनको सम्मानित न करो, जबकि अल्लाह ने उनको अपमानित किया है और उन्हें विश्वस्त तथा मर्मज्ञ मत बनाओ, जबकि अल्लाह ने उन्हें अविश्वस्त कहा है।" आदरणीय उमर (रज़ी अल्लाह अन्हु) ने इसी आयत से यह भावार्थ निकालते हुए कहा था। इमाम कुर्तबी कहते हैं, "इस समय अहले किताब को सचिव और न्यासिक बनाने के कारण ही परिस्थितियाँ बदल गयी हैं, इसी कारण मूर्ख लोग प्रमुख तथा मन्त्री बन गये हैं।" (तफ़सीर कुर्तबी) दुर्भाग्य से आज

The Ummah Technology Mission

قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۖ وَمَا تُخْفِيْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ ۭ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝۱۱۸

तुम्हारी तबाही में कोई कसर उठा नहीं रखते, वह तो चाहते यह हैं कि तुम दुख में पड़ो।[1] उनकी शत्रुता तो स्वयं उनके मुख से भी स्पष्ट हो चुकी है और वह जो उनके सीनों में छिपा है। वह बहुत अधिक है। हमने तुम्हारे लिए आयतों का वर्णन कर दिया तुम बुद्धिमान हो (तो विचार करो)

هٰٓاَنْتُمْ اُولَاۗءِ تُحِبُّوْنَهُمْ وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚۖ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ۭ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝۱۱۹

(११९) हाँ, तुम तो उनसे प्रेम करते हो।[2] और वह तुमसे प्रेम नही करते, तुम पूरी किताब को मानते हो और (वह नहीं मानते फिर प्रेम कैसा ?) यह तुम्हारे समक्ष तो अपने ईमान को स्वीकार करते हैं, परन्तु एकान्त में क्रोध में ऊँगलियाँ चबाते हैं।[3] कह दो अपने क्रोध में ही मर जाओगे। अल्लाह तआला सीनों की छुपी बातों को अच्छी तरह जानता है।

के इस्लामी राज्य में क़ुरआन करीम के इस अत्यधिक महत्तवपूर्ण आदेश को प्रमुखता नहीं दी जा रही है और इसके विपरीत ग़ैर मुस्लिम बड़े-बड़े और महत्वपूर्ण पदों पर आसीन हैं। जिनकी हानियाँ प्रत्यक्ष हैं। यदि इस्लामी राज्य अपनी आन्तरिक और निर्देश दोनों नीतियों में इस आदेश का पालन करें तो अवश्य बहुत सी अशान्ति तथा हानियों से सुरक्षित रह सकते हैं।

[1] لا يألون का अर्थ है आलस्य तथा कमी नहीं करेंगे। خبالا के अर्थ हैं उपद्रव और विनाश। مَا عَنِتُّم का अर्थ है जिससे तुम कठिनाई में पड़ो। عنت का अर्थ कठिनाई है।

[2] तुम इन मुनाफ़िक़ों की नमाज़ और दिखावे के ईमान के कारण उनके विषय में धोखे में पड़ जाते हो और उनसे प्रेम करते हो।

[3] عَضَّ يعضّ का अर्थ दाँत से काटने के हैं। यह उनके क्रोध की अधिकता व तीव्रता का वर्णन है, जैसाकि अगली आयत ﴿إِن تَمْسَسْكُمْ﴾ में भी उनकी इसी दशा को स्पष्ट किया जा रहा है।

The Ummah Technology Mission

إِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَإِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا بِهَا وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿١٢٠﴾

(१२०) तुम्हें यदि भलाई मिले तो उन्हें बुरा लगता है। (हाँ), यदि बुराई पहुँचे तो प्रसन्न होते हैं।[1] यदि तुम धैर्य रखो और परहेज़गारी करो, तो उनकी चाल तुम्हे हानि नहीं पहुँचायेगी।[2] अल्लाह (तआला) ने उनके कर्मों को घेर रखा है।

وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۗ

(१२१) (ऐ नबी ! उस समय को भी याद करो) जब प्रातः ही आप अपने घर से निकल कर मुसलमानों को रणक्षेत्र में लड़ाई के मोर्चे पर

---

[1]इस आयत में मुनाफ़िक़ों की उस घोर शत्रुता का वर्णन है, जो उन्हें मुसलमानों से थी और वह यह कि जब मुसलमानों को सुख-शान्ति प्राप्त होती, अल्लाह तआला की ओर से सहायता और विजय प्राप्त होती और मुसलमानों की संख्या बढ़ती, तो मुनाफ़िक़ों को बुरा लगता। और यदि मुसलमानों को कंगाल और निर्धन देखते अथवा अल्लाह तआला की इच्छा तथा किसी कारणवश शत्रु कुछ समय के लिए मुसलमानों पर प्रभावी हो जाते (जैसाकि ओहद के युद्ध में हुआ) तो अति प्रसन्न होते। इस बात को बताने का उद्देश्य तथा तात्पर्य यह है कि जिन लोगों का यह हाल है क्या मुसलमानों को उचित है कि उनसे प्रेम करें, और उन्हें अपना सलाहकार तथा मित्र बनायें ? इसीलिए अल्लाह तआला ने यहूदियों और ईसाईयों से भी मित्रता रखने से मना किया है। (जैसाकि क़ुरआन करीम में दूसरे स्थान पर है) इसीलिए कि वह भी मुसलमानों से घृणा तथा शत्रुता रखते, उनकी सफलता से अप्रसन्न और उनकी असफलता से प्रसन्न होते हैं।

[2]यह उनके छल तथा कपट से बचने का उपचार है। अर्थात द्वयवादियों तथा इस्लाम और मुसलमानों के शत्रुओं की चालों से बचने के लिए धैर्य तथा संयम अत्यधिक आवश्यक है। इस धैर्य और संयम की कमी ने ग़ैर मुस्लिमों की चालों को सफल बना रखा है। लोग समझते हैं कि काफ़िरों की यह सफलता भौतिक संसाधनों की अधिकता तथा विज्ञान तथा प्रौद्योगिक में उनकी उन्नति का परिणाम है। हालाँकि वास्तविकता यह है कि मुसलमानों के पतन का मूल कारण यही है कि वह अपने धर्म पर स्थिरता (जो धैर्य चाहता है) से वंचित तथा संयम से दूर हो गये हैं। जो मुसलमानों की सफलता का आधार तथा अल्लाह का पक्ष प्राप्त करने का मार्ग है।

The Ummah Technology Mission

ठीक प्रकार से[1] बिठा रहे थे, अल्लाह तआला सुनने जानने वाला है। وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢١﴾

(१२२) जब तुम्हारे दो गिरोह ने साहस खो दिया।[2] اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ

---

[1]अधिकतर व्याख्याकारों के निकट यह ओहद के युद्ध की घटना है, जो शव्वाल (रमज़ान के बाद का महीना जिसे ईद का महीना भी कहते हैं परन्तु वास्तविक अरबी नाम यह है) ३ हिजरी में हुई। संक्षिप्त रूप से घटना इस प्रकार है कि जब बद्र के युद्ध में २ हिजरी में मूर्तिपूजकों को अपमानजनक पराजय का सामना करना पड़ा क्योंकि उनके ७० वीर योद्धा मारे गये और ७० बन्दी बना लिये गये, तो उन मूर्तिपूजकों के लिये अपमान तथा डूब मरने का स्थान था। अतएव उन्होंने मुसलमानों के विरूद्ध बदला लेने के लिए एक बहुत बड़े युद्ध की ठानी, जिसकी तैयारी में मूर्तिपूजकों की स्त्रियों ने भी भाग लिया। इधर जब मुसलमानों को यह सूचना मिली कि ओहद पहाड़ के निकट तीन हज़ार मूर्तिपूजक मुसलमानों से युद्ध करने लिए पड़ाव डाले हुए हैं, तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से विचार-विमर्श किया कि मदीना शहर के अन्दर लड़ा जाये अथवा बाहर निकलकर मुक़ाबला करें। कुछ सहाबा ने मदीना के अन्दर रहकर ही मुक़ाबिला करने का परामर्श दिया और मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबैय ने भी इस विचार से सहमत किया, लेकिन इसके विपरीत कुछ साहसी सहाबा ने जिन्हें बद्र के युद्ध में भाग लेने का अवसर नहीं मिला था, उन्होंने मदीने के बाहर मुक़ाबिला करने की राय दी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने कमरे में गये और हथियार तथा कवच पहनकर बाहर आये, दूसरी राय वालों को क्षोभ हुआ कि शायद हम लोगों ने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इच्छा के विरूद्ध बाहर निकलने पर मजबूर करके ठीक नहीं किया। अत: उन्होंने कहा हे रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ! यदि आप अन्दर रहकर मुक़ाबिला करना उचित समझें, तो अन्दर ही रहें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि युद्ध की पोशाक पहन लेने के पश्चात किसी नबी को उचित नहीं कि अल्लाह के निर्णय के बिना वापस हो अथवा पोशाक उतारे। अत: एक हज़ार मुसलमान युद्ध के लिए निकल पड़े, परन्तु जब यह सेना की टुकड़ी शोत नामक स्थान पर पहुँची उस समय अब्दुल्लाह बिन उबैय अपने तीन सौ साथियों के साथ यह कहकर वापस हो गया कि उसकी राय नहीं मानी गयी तो अनर्थ जान देने से क्या लाभ ? उसके इस निर्णय से सामयिक रूप से कुछ मुसलमान भी प्रभावित हो गये और उन्होंने भी कमज़ोरी का प्रदर्शन किया। (इब्ने कसीर)

[2]यह औस और खजरज के दो क़बीले (बनू हारिसा तथा बनू सलमा) थे।

The Ummah Technology Mission

اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٢﴾

उनका संरक्षक अल्लाह है।[1] और उसी अल्लाह पर मुसलमानों को विश्वास करना चाहिए।

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾

(१२३) और अल्लाह ने बद्र के युद्ध में तुम्हारी उस समय सहायता की जबकि तुम गिरी हुई स्थिति में थे,[2] अतः अल्लाह से डरोताकि कृतज्ञ बनो।

اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿١٢٤﴾

(१२४) जब आप मुसलमानों को सांत्वना दे रहे थे, क्या तुम्हें यह काफ़ी नहीं होगा कि अल्लाह तीन हज़ार फ़रिश्ते उतार कर तुम्हारी सहायता करे।

بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿١٢٥﴾

(१२५) क्यों नहीं ? यदि तुम धैर्य और परहेज़गारी करो और यह लोग इसी दम तुम्हारे पास आ जायें तो तुम्हारा प्रभु तुम्हारी सहायता पाँच हज़ार फ़रिश्तों से करेगा।[3] जो

---

[1]इससे ज्ञात हुआ के अल्लाह ने उनकी सहायता की और उनकी दुर्बलता को दूर करके उनको साहस दिया।

[2]संख्या और सामान की कमी के आधार पर, क्योंकि बद्र के युद्ध में मुसलमानों की संख्या ३१३ थी और वह भी बिना सामान के, केवल दो घोड़े और सत्तर ऊँट थे, शेष सभी पैदल थे। (इब्ने कसीर)

[3]मुसलमान बद्र की ओर क़ुरैश के क़ाफ़िले पर जो लगभग निहत्था था छापा मारने निकले थे। परन्तु बद्र तक पहुँचते-पहुँचते यह ज्ञात हुआ कि मक्का के मूर्तिपूजकों की एक बड़ी सेना अपने क्रोध और दुस्साहस के साथ चली आ रही है। यह सुनकर मुसलमानों में घबराहट और युद्ध करने के साहस का मिला जुला प्रभाव हुआ और उन्होंने प्रभु से प्रार्थना की। इस पर अल्लाह तआला ने पहले एक हज़ार फिर तीन हज़ार फ़रिश्ते उतारने की शुभ सूचना दी और इसके अतिरिक्त यह वचन भी दिया कि यदि तुम धैर्य और परहेज़गारी पर दृढ़ रहे और मूर्तिपूजक उसी क्रोध की स्थिति में आ धमके तो यह संख्या पाँच हज़ार कर दी जायेगी। कहा जाता है कि मूर्तिपूजकों का वह साहस व क्रोध दृढ़ न रह सका। (बद्र पहुँचने से पूर्व ही उनमें फूट पड़ गयी और एक गिरोह मार्ग

The Ummah Technology Mission

निशानदार होंगे।[1]

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١٢٦﴾

(१२६) तथा हमने इसे तुम्हारे लिये मात्र शुभ सूचना एवं तुम्हारे दिलों के संतोष के लिए बनाया अन्यथा सहायता तो सर्वशक्तिमान ज्ञानी अल्लाह की ओर से ही होती है।

لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآئِبِيْنَ ﴿١٢٧﴾

(१२७) (इस अल्लाह की सहायता का उद्देश्य यह था कि अल्लाह) मूर्तिपूजकों के एक गिरोह को काट दे अथवा अपमानित कर दे। और वह असफल होकर लौटें।[2]

ही से मक्का लौट गया, और शेष जो बद्र तक आये उनमें से अधिकतर सरदारों की राय थी कि युद्ध न किया जाये)। इसलिए शुभ सूचना के अनुसार तीन हज़ार फ़रिश्ते उतारे गये। और पाँच हज़ार की संख्या पूरी करने की आवश्यकता न रही। और कहा जाता है कि बल्कि यह संख्या पूरी की गयी।

[1] अर्थात पहचान के लिए विशेष चिन्ह होंगे।

[2] यह अजेय एवं प्रभावशाली अल्लाह की सहायता का परिणाम बताया जा रहा है। सूरः *अल-अंफ़ाल* में फ़रिश्तों की संख्या एक हज़ार बतायी गयी है।

﴿إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُم بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ﴾

"जब तुम अपने प्रभु से गुहार कर रहे थे, अल्लाह तआला ने तुम्हारी विनती सुनते हुए कहा कि एक हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी सहायता करूँगा।" (*अल-अंफ़ाल*-९)

इससे ज्ञात हुआ कि वास्तव में फ़रिश्ते एक हज़ार ही उतरे। और मुसलमानों से तीन हज़ार और पाँच हज़ार का प्रतिबन्धित वायदा किया गया। फिर परिस्थितियों के कारण मुसलमानों को सांत्वना की दृष्टी से भी उनकी आवश्यकता नहीं समझी गयी इसलिए कुछ व्याख्याकारों के निकट यह तीन हज़ार और पाँच हज़ार फ़रिश्ते नहीं उतरे उद्देश्य तो साहस को बढ़ाना था, वरन वास्तविक सहायक तो अल्लाह तआला ही था और वह अपनी सहायता के लिए फ़रिश्तों अथवा किसी का आधीन नहीं है। अतः उसने मुसलमानों की सहायता की और बद्र के युद्ध में मुसलमानों को ऐतिहासिक विजय प्राप्त हुई। कुफ़्र की शक्ति क्षीण हुई और काफ़िरों का गौरव मिट्टी में मिल गया। (ऐसरुत्तफ़ासीर)

The Ummah Technology Mission

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٢٨﴾

(१२८) (हे पैग़म्बर) आप के वश में कुछ नहीं[1] अल्लाह (तआला) चाहे तो उनकी क्षमा स्वीकार कर ले।[2] अथवा यातना दे, क्योंकि वे अत्याचारी हैं।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٢٩﴾

(१२९) आसमानों और धरती में जो कुछ है सब अल्लाह ही का है। वह जिसे चाहे क्षमा करे और जिसे चाहे यातना दे। और अल्लाह (तआला) क्षमी कृपालु है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَا أَضْعَافًا مُضَاعَفَةً ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٣٠﴾

(१३०) ऐ ईमानवालो ! दुगुना तिगुना कर ब्याज न खाओ।[3] और अल्लाह (तआला) से डरो ताकि तुम्हें मोक्ष मिले।

---

[1]अर्थात उन काफ़िरों को मार्गदर्शन देना अथवा उनके विषय में किसी प्रकार का निर्णय करना अल्लाह के वश में है। हदीस में आता है कि ओहद के युद्ध में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दाँत भी शहीद हुए और चेहरा भी ज़ख़्मी हुआ तो आप ने कहा कि, "वह क़ौम किस प्रकार सफल होगी जिसने अपने नबी को घायल कर दिया।" अर्थात आपने उनके मार्गदर्शन से निराशा व्यक्त की। इस पर यह आयत उतरी। इस प्रकार कुछ कथनों में आता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ काफ़िरों के लिए क़ुनूते नाज़िल: का प्रबन्ध किया जिसमें उनके लिये अभिशाप दिया। जिस पर यह आयत अल्लाह तआला ने उतारी। अत: आपने अभिशाप बन्द कर दिया। (इब्ने कसीर व फ़तहुल क़दीर)

इस आयत से उन लोगों को शिक्षा लेनी चाहिए जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सर्वाधिकारी मानते हैं कि उनको इतना भी अधिकार नहीं था कि किसी को सत्य मार्ग पर लगा दें। यद्यपि कि आप मार्ग की ओर बुलाने के लिये भेजे गये थे।

[2]यह जाति जिनके लिए अभिशाप करते रहे अल्लाह ने उन्हें मुसलमान कर दिया। जिससे विदित हुआ कि सभी एकाधिपति और परोक्षज्ञ अल्लाह है।

[3]चूँकि ओहद के युद्ध में असफलता रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों का पालन न करने और सांसारिक धन से लोभ कें कारण हुई थी। इसलिए अब दुनिया के लोभ की सबसे अधिक भयानक और स्थाई रूप ब्याज से मना किया जा रहा है। और आज्ञा पालन पर बल दिया जा रहा है। और बढ़ा-चढ़ा कर ब्याज न खाओ का यह कदापि अर्थ नहीं है कि यदि साधारण ब्याज है तो उचित है। बल्कि ब्याज थोड़ा हो अथवा अधिक

The Ummah Technology Mission

وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿١٣١﴾

(१३१) और उस आग से डरो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गयी है।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾

(१३२) और अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों का पालन करो। ताकि तुम पर कृपा की जाये।

وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٣﴾

(१३३) और अपने प्रभु की क्षमा की ओर और उस स्वर्ग की ओर दौड़ो[1] जिसकी चौड़ाई आसमानों और धरती के बराबर है, जो परहेज़गारों के लिए तैयार की गयी है।

الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ

(१३४) जो लोग सुविधा में और कठिनाई में (भी अल्लाह के मार्ग में) व्यय करते हैं।[2] क्रोध को पी जाते हैं, और लोगों को क्षमा

अकेला हो अथवा मिश्रित कदापि अनुचित है जैसा कि पहले गुज़र चुका है। यह वर्जित की सीमा के लिए अनुबन्धन नहीं बल्कि परिस्थिति के कारण है जो उस समय प्रचलित थी उसका वर्णन और स्पष्टीकरण है। अज्ञान काल में ब्याज का यह रिवाज सामान्य था कि जब भुगतान का समय आ जाता और भुगतान सम्भव न होता तो समय बढ़ाने के लिए ब्याज की दर में वृद्धि होती चली जाती, जिससे छोटा सा मूलधन बढ़-चढ़ कर कहीं से कहीं पहुँच जाता और एक सामान्य आदमी के लिए चुकता करना असम्भव हो जाता। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अल्लाह से डरो और उस आग से डरो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गयी है। जिससे यह चेतावनी भी है कि यदि ब्याज लेने से न रुके तो यह कर्म तुम्हें कुफ़्र तक पहुँचा सकता है क्योंकि ऐसा करना अल्लाह तथा उसके रसूल से संघर्ष की घोषणा है।

[1]धन-दौलत और दुनिया के पीछे लगकर आख़िरत (परलोक) नष्ट करने के बजाय अल्लाह और रसूल के आदेशों का पालन करो और अल्लाह की क्षमा और उसके स्वर्ग का मार्ग अपनाओ जो आज्ञापालकों के लिए बनायी गयी है। इसलिए आगे आज्ञापालकों की कुछ विशेषतायें बतायी गयीं हैं।

[2]अर्थात मात्र सुख में ही नहीं, अपितु दुःख के समय में भी व्यय करते हैं। तात्पर्य यह है कि हर दशा और परिस्थिति में अल्लाह के मार्ग में व्यय करते हैं।

The Ummah Technology Mission

يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣٤﴾

करने वाले हैं।[1] अल्लाह उन सत्कर्मियों को मित्र रखता है।

وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ وَمَنْ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٣٥﴾

(१३५) जब उनसे कोई असभ्य कार्य हो जाये अथवा कोई पाप कर बैठें, तो शीघ्र ही अल्लाह की उपासना और अपने पापों के लिए क्षमा-याचना करते हैं।[2] और वास्तव में अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त पापों को कौन क्षमा कर सकता है, तथा वे जानते हुये अपने कृत्य पर दुराग्रह नहीं करते।

أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُمْ مَغْفِرَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَجَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ﴿١٣٦﴾

(१३६) इन्हीं का प्रत्युपकार उन के पालनहार की ओर से क्षमा एवं बाग़ है जिनके नीचे नहरें प्रवाहित रहती हैं जिसमें वह सदा निवास करेंगे तथा सदाचारियों का यह कितना उत्तम प्रतिफल हैं।

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿١٣٧﴾

(१३७) तुमसे पहले से नियम चला आ रहा है, तुम धरती में यात्रा करो तथा देखो कि जो अल्लाह की आयतों को नहीं माने उनका अन्त कैसा हुआ।[3]

---

[1]अर्थात जब उन्हें क्रोध आता है, तो उसे पी जाते हैं अर्थात क्रोधानुसार काम नहीं करते और उन्हें क्षमा कर देते हैं, जो उनके साथ बुराई करते हैं।

[2]अर्थात उनके मनुष्य होने के कारण जब उनसे कोई पाप अथवा ग़लती हो जाती है, तो तुरन्त क्षमा-याचना करने लगते हैं।

[3]ओहद के युद्ध में मुसलमानों की सेना की संख्या ७ सौ थी, जिनमें पचास धनुषधरों का एक दल था, आप ने अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की अगुवाई में उसे एक पर्वत पर नियुक्त कर दिया तथा सावधान कर दिया कि चाहे हमारी विजय हो अथवा पराजय तुम यहाँ से न हिलना तथा तुम्हारा काम यह है कि जो घोड़ा सवार तुम्हारी ओर आये उसे वाण से पीछे ढ़केल देना किन्तु जब मुसलमान विजयी हो गये तथा धन सामान एकत्र करने लगे तो इस दल

The Ummah Technology Mission

هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٨﴾

(१३८) यह मानव जाति के लिये एक वर्णन तथा संयमीजनों के लिये मार्ग दर्शन एवं शिक्षा है।

وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾

(१३९) तुम साहस न खोओ, न चिन्ता करो, यदि तुम ईमानदार हो तो तुम्हीं विजयी होगे।[1]

إِن يَمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهُ ۚ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذَ مِنكُمْ شُهَدَاءَ ۗ

(१४०) (इस युद्ध में) यदि तुम आहत हुये हो तो वह भी (बद्र के युद्ध में) इसी प्रकार आहत हुये हैं तथा इन दिनों को हम लोगों के बीच अदलते-बदलते रहते हैं,[2] ताकि अल्लाह ईमान वालों को (अलग करके) देख ले, तथा तुममें

में विभेद हो गया कुछ लोग कहने लगे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश का प्रयोजन यह था कि लड़ाई होती रहे तो यहाँ अडिग रहना किन्तु जब लड़ाई समाप्त हो गई तथा मिश्रणवादी भाग रहे हैं तो यहाँ रहना अनिवार्य नही है और उन्होंने भी वहाँ से हटकर धन सामग्री एकत्रित करना आरम्भ कर दिया तथा वहाँ रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञा पालन में केवल दस लोग शेष रह गये। जिसका लाभ काफ़िरों ने उठाया और उनके घुड़सवारों नें पलट कर यहीं से मुसलमानों के पीछे से प्रहार कर दिया। जिससे विखराव हो गया तथा इस अकस्मात कड़े प्रहार से मुसलमान अति व्याकुल हो गये। परिणाम स्वरूप यह हुआ कि सत्तर मुसलमान मारे गये, तथा बहुत से आहत हो गये। जिससे मुसलमानों को स्वभाविक रूप से बड़ा दु:ख हुआ। इन आयात में अल्लाह (परमेश्वर) मुसलमानों को सांत्वना दे रहा है कि तुम्हारे साथ जो कुछ हुआ कोई नई बात नहीं, पहले के रसूल (ईशदूत) के निवर्तियों का भी ऐसा ही हाल हुआ है।

[1]विगत युद्ध में तुम्हें जो हानि हुई है न उसके कारण आलस्य करो न उस पर क्षोभ करो क्योंकि यदि तुममें विश्वास की भावना जागृत रही तो विजयी एवं सफल तुम्हीं होगे इसमें अल्लाह ने मुसलमानों के बल का मूल भेद तथा उनकी सफलता का आधार बता दिया है और वास्तविकता यह है कि इसके बाद मुसलमान प्रत्येक रण क्षेत्र में सफल रहे।

[2]एक और प्रकार से मुसलमानों को तसल्ली दी जा रही है कि यदि ओहद में तुम्हारे कुछ लोग घायल हुये हैं तो क्या हुआ? तुम्हारे विरोधी भी तो बद्र के रण में तथा ओहद के आरम्भ में इसी प्रकार आहत हो चुके हैं तथा यह अल्लाह की रीति है कि वह विजय पराजय के दिनों को बदलता रहता है। कभी विजित को पराजित कभी पराजित को विजित कर देता है।

The Ummah Technology Mission

وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٠﴾

से कुछ को शहीद बना दे, तथा अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

وَلِيُمَحِّصَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَمْحَقَ الْكَافِرِينَ ﴿١٤١﴾

(१४१) और ताकि अल्लाह मोमिनों को अलग कर ले तथा अविश्वासियों का सत्यानाश कर दे।[1]

أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنكُمْ

(१४२) क्या तुमने सोचा है कि स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे[2] हालाँकि अभी अल्लाह ने यह नहीं

---

[1]ओहद में मुसलमानों को जो सामयिक पराजय हुई वह उनके अपने आलस्य के कारण हुई इसमें भी भविष्य के लिये कई अच्छाईयाँ हैं जिनका वर्णन आगे अल्लाह तआला कर रहा है। एक यह कि अल्लाह ईमानवालों को जान ले (क्योंकि धैर्य तथा स्थिरता ईमान का अभियावन है) युद्ध की कठिनाईयों एवं आपदाओं में जिसने धैर्य एवं स्थिरता दिखाई वह सब मोमिन (विश्वासयुक्त) हैं। दूसरी यह कि कुछ लोगों को शहादत पद पर पदासीन कर दे, तीसरी यह कि ईमानवालों को पापों से स्वच्छ कर दे। تَمْحِيص (तम्हीस) का एक अर्थ निर्वाचित कर लेना लिया गया है तथा एक अर्थ पवित्र करना एवं एक अर्थ मुक्त करना है। अन्तिम दोनों का अभिप्राय पापों से शुद्धि एवं मुक्ति है (फ़तहुल क़दीर) अनुवादक ने प्रथम अर्थ लिया है चौथी यह कि काफ़िरों (अधर्मियों) को मिटा दे, क्योंकि इसी प्रकार सामयिक विजय से उनकी दुष्टता एवं अहंकार बढ़ेगा जो उनके विनाश का हेतु बनेगा।

[2]अर्थात विना लड़े तथा विना कड़ी परीक्षा के तुम स्वर्ग में चले जाओगे ? नहीं स्वर्ग उनको मिलेगी जो परीक्षा में पूरे उतरेंगे जैसा कि अन्य स्थान पर कहा है।

﴿ أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُم مَّثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلِكُم ۖ مَّسَّتْهُمُ الْبَأْسَاءُ وَالضَّرَّاءُ وَزُلْزِلُوا ﴾

"क्या तुम ने सोचा है कि तुम स्वर्ग में चले जाओगे और अभी तुम पर वह दशा नहीं आई जो पूर्व के लोगों पर आई उन्हें दरिद्रता एवं दुःख पहुँचे तथा वे ख़ूब झिंझोड़े गये"। (सूरः बक़रः-२१४)

यह भी कहा।

﴿ أَحَسِبَ النَّاسُ أَن يُتْرَكُوا أَن يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ ﴾

"क्या लोग इस भ्रम में हैं कि मात्र यह कहने पर त्याग दिये जायेंगे कि हम ईमान लाये तथा उनकी परीक्षा नहीं ली जायेगी। (अल-अन्कबूत-२)

The Ummah Technology Mission

وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٢﴾

देखा है कि कौन तुममें धर्मयुद्ध (जिहाद) करते हैं और कौन धैर्य रखते हैं।[1]

وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۖ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿١٤٣﴾

(१४३) तुम इससे पूर्व मौत की कामना करते थे[2] अब तो तुमने उसे आँखों से देख लिया।[3]

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۭ اَفَاۗىِٕنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ۭ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰي عَقِبَيْهِ فَلَنْ

(१४४) तथा मुहम्मद तो मात्र एक ईशदूत हैं,[4] इससे पूर्व बहुत से ईशदूत गुज़रे हैं तो यदि वह मर जायें अथवा मार दिये जायें तो क्या तुम (इस्लाम) से एड़ीयों के बल फिर जाओगे और जो कोई अपनी एड़ी के बल

---

[1]यह विषय सूर: बक़र: में आ चुका है किन्तु प्रसंग से लगाव के कारण यहाँ फिर बताया जा रहा है कि स्वर्ग में प्रवेश यूँ ही नहीं मिल जायेगा इसके लिए तुम्हें परीक्षा अग्नि से पार कराई तथा रण क्षेत्र में परीक्षा ली जायेगी कि वहाँ तुम शत्रुओं के समूह में घिर कर साहस एवं सहन तथा स्थिरता दिखाते हो अथवा नहीं ?

[2]यह संकेत उन सहाबा (सहचरों) की ओर है जो बद्र के रण में भाग न ले सके इस कारण वह वंचना का एक संवेदन रखते थे तथा चाहते थे कि लड़ाई हो तो वह भी काफ़िरों से लड़कर धर्मयुद्ध की प्रधानता प्राप्त करें। इन्हीं सहचरों ने ओहद के युद्ध में धर्मयुद्ध की उत्तेजना में मदीने से बाहर निकलकर लड़ने का परामर्श दिया था, किन्तु जब मुसलमानों की विजय काफ़िरों के सहसा प्रहार से पराजय में बदल गई तो यह उत्तेजित मुजाहिदीन व्याकुल हो गये तथा भागने लगे जैसाकि इसका विवरण आगे आ रहा है तथा बहुत थोड़े ही लोग अडिग रह गये, (फ़तहुल क़दीर) इसी कारण हदीस में आता है कि "शत्रु से मुठभेड़" की कामना न करो तथा अल्लाह से शान्ति की प्रार्थना करो फिर भी यदि स्वयं परिस्थिति ऐसी बन जाये कि तुम्हें शत्रु से लड़ना पड़े तो फिर अडिग रहो तथा यह बात जान लो कि स्वर्ग तलवारों की छाया तले है। (सहीहैन, उदधृत इब्ने कसीर)

[3] رأيتموه तथा تنظرون प्रयायवाची हैं जो बल देने के लिए दो शब्द लाये गये हैं अर्थात तलवारों की चमक तीरों की वर्षा तथा वीरों की पंक्तियों में तुमने मौत को भली-भाँति देख लिया (इब्ने कसीर व फ़तहुल कदीर)

[4]मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मात्र रसूल (ईशदूत) ही हैं अर्थात उनकी विशेषता भी दूतत्व है यह नहीं कि वह मानवीय विशेषताओं से उच्च एवं ईश्वरीय गुणों से युक्त हैं कि उन्हें मृत्यु से पाला न पड़े।

The Ummah Technology Mission

يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾

फिर जाये वह अल्लाह को कोई क्षति नहीं पहुंचा सकेगा,[1] तथा अल्लाह कृतज्ञों को शीघ्र प्रतिकार देगा।[2]

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ؕ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ؕ وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٥﴾

(१४५) और बिना अल्लाह तआला के आदेश के कोई जीव नहीं मर सकता। निर्धारित समय लिखा हुआ है। दुनिया से प्रेम करने वालों को हम कुछ दुनिया प्रदान कर देते हैं और आख़िरत का पुण्य चाहने वालों को हम वह भी प्रदान करेंगे।[3] और कृतज्ञता व्यक्त करने वालों को हम शीघ्र ही अच्छा बदला देंगे।

---

[1]ओहद की पराजय का एक कारण यह भी था कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संदर्भ में काफ़िरों ने यह गप उड़ा दिया था कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हत कर दिये गये, मुसलमानों में जब यह खबर फैली तो इससे कुछ मुसलमान साहस हीन हो गये तथा लड़ाई से पीछे हट गये उस पर यह आयत उतरी कि नबी का हत हो जाना अथवा उस पर मौत आ जाना कोई नई बात तो नहीं है अतीत में भी अम्बिया हत एवं मौत से आलिंगित हुये हैं। यदि मान भी लें कि आप इससे दो चार हो जायें तो क्या तुम उस धर्म ही से फिर जाओगे याद रखो कि जो फिर जायेगा वह स्वयं अपनी हानि करेगा अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के निधन की घटना के समय जब आदरणीय उमर (रज़ी अल्लाह अन्हु) अति भावुक हो कर नबी के निधन को नकार रहे थे तो आदरणीय अबू बक्र (रज़ी अल्लाह अन्हु) अति सावधानी से काम लेते हुये रसूल (ईश्दूत) के धर्म मंच की एक ओर खड़े हो गये तथा यही आयत पढ़ी, जिससे आदरणीय उमर भी प्रभावित हुये एवं उन्हें लगा कि यह आयत तत्काल उतरी हैं।

[2]अर्थात युद्ध में डटे रहने वालों को जिन्होंने धैर्य और बहादुरी का प्रदर्शन कर अल्लाह का शुक्र अदा किया।

[3]यह क्षीणता और कायरता का प्रदर्शन करने वालों के साहस को बढ़ाने के लिए कहा जा रहा है कि मृत्यु तो अपने समय पर आकर रहेगी। फिर भागने तथा कायरता दिखाने से क्या लाभ है? इसी प्रकार केवल दुनिया माँगने से कुछ दुनिया तो मिल जाती है, परन्तु आख़िरत में कुछ न मिलेगा। परन्तु इसके विपरीत आख़िरत के माँगने वालों को आख़िरत की सभी चीज़े प्राप्त होंगी ही, दुनिया भी अल्लाह तआला उन्हें प्रदान करता है। आगे कुछ

The Ummah Technology Mission

وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ۝۱۴۶

(१४६) और बहुत से नबियों के साथ बहुत से अल्लाह वाले धर्म युद्ध कर चुके हैं, उन्हें भी अल्लाह के मार्ग में दुख पहुंचे, परन्तु न तो उन्होंने साहस खोया न आलसी रहे और न प्रभावित हुए और अल्लाह धैर्य रखने वालों को ही चाहता है।[1]

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَي الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝۱۴۷

(१४७) और वह यही कहते रहे कि हे प्रभु हमारे पापों कोक्षमा कर दे और हमसे हमारे कामों में अकारण ज्यादती हुई हो, उसे माफ़ कर और हमें दृढ़ता प्रदान कर और हमें काफ़िरों की क़ौम पर सहायता प्रदान कर।

فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝۱۴۸

(१४८) अल्लाह तआला ने उन्हें दुनिया का पुण्य प्रदान किया और आख़िरत के पुण्य की विशेषता भी प्रदान की और अल्लाह तआला सत्कर्मियों को मित्र रखता है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰٓي اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۝۱۴۹

(१४९) हे ईमानवालो! यदि तुम काफ़िरों की बातें मानोगे तो वह तुम्हें तुम्हारी एड़ी के बल पलटा देंगे (अर्थात तुम्हें मुर्तद्द(धर्मभ्रष्ट) बना देंगे) फिर तुम हानि में हो जाओगे।

بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ۝۱۵۰

(१५०) बल्कि अल्लाह (तआला) तुम्हारा मालिक है और वही श्रेष्ठ सहायक है।[2]

और साहस बढ़ाने और सांत्वना के लिए पिछले नबियों और उनके अनुयायियों के धैर्य और दृढ़ता का उदाहरण दिया जा रहा है।

[1]अर्थात उनको जो युद्ध की तीव्रता में साहस नहीं खोते और दुर्बलता एवं क्षीणता का प्रदर्शन नहीं करते।

[2]यह विषय पहले भी गुजर चुका है। यहाँ फिर पुनरावृत्ति हो रही है क्योंकि ओहद में पराजय से लाभ उठाकर कुछ काफ़िर अथवा मुनाफ़िक़ मुसलमानों को यह परामर्श दे

The Ummah Technology Mission

سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَآ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ۝١٥١

(१५१) हम निकट भविष्य में काफ़िरों के दिलों में भय डाल देंगे, इस कारण से कि वे अल्लाह के साथ उन चीज़ों को साझी करते हैं, जिसका कोई तर्क अल्लाह ने नहीं उतारा।[1] उनका ठिकाना नरक है, और उन अत्याचारियों का बुरा स्थान है।

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗٓ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰٓى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ

(१५२) और अल्लाह (तआला) ने अपना वायदा सच्चा कर दिखाया जबकि तुम उसके आदेश से उन्हें काट रहे थे।[2] यहाँ तक कि जब तुम

रहे थे कि तुम अपने पूर्वजों के धर्म पर लौट आओ। ऐसे में मुसलमानों को कहा जा रहा है कि काफ़िरों के परामर्श का पालन करना भी तुम्हारी बरबादी और हानि का कारण है। सफलता अल्लाह के आदेशों के पालन में ही है। और उससे श्रेष्ठ कोई सहायक नहीं है।

[1]मुसलमानों की पराजय देखते हुए कुछ काफ़िरों के दिलों में यह विचार आया कि यह मुसलमानों के धर्म भ्रष्ट करने का अच्छा अवसर है। इस अवसर पर अल्लाह तआला ने उनके दिलों में मुसलमानों का भय डाल दिया, फिर उन्हें अपने इस विचार को क्रियान्वित करने का साहस न रहा। (फ़तहुल क़दीर) सहीहैन की हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे पाँच चीज़ें ऐसी प्रदान की गयी हैं, जो मुझसे पूर्व किसी नबी को नहीं प्रदान की गयी उनमें एक यह है कि نُصِرتُ بالرعب مسيرة شهر "शत्रु के दिल में एक माह की दूरी तक मेरा भय डालकर, मेरी सहायता की गयी है।"

इस हदीस से ज्ञात हुआ कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का भय स्थाई रूप से शत्रुओं के दिलों में डाल दिया गया। इस आयत से ज्ञात होता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ आप की उम्मत अर्थात मुसलमानों का भी भय मूर्तिपूजकों के दिलों में डाल दिया गया है, इसका कारण उनका शिर्क है। अर्थात मूर्तिपूजकों का दिल दूसरों के भय से काँपता रहता है शायद यही कारण है कि मुसलमानों की एक बड़ी संख्या मूर्तिपूजकों की तरह के विश्वास और कर्म के कारण ही शत्रु उनसे भयभीत होने के बजाय वह शत्रुओं से भयभीत हैं।

[2]इस वायदे से कुछ व्याख्याकारों ने तीन हज़ार और पाँच हज़ार फ़रिश्तों का उतरना भावार्थ लिया है। लेकिन यह विचार उचित नहीं है, बल्कि सहीह यह है कि फ़रिश्तों का उतरना केवल बद्र के युद्ध के साथ विशेषरूप से सम्बन्धित था। शेष रहा वह वायदा जो इस आयत में वर्णित किया गया है, उससे तात्पर्य विजय का वह सामान्य वायदा है जो

The Ummah Technology Mission

وَعَصَيْتُمْ مِّنۢ بَعْدِ مَآ أَرَىٰكُم مَّا تُحِبُّونَ ۚ مِنكُم مَّن يُرِيدُ الدُّنْيَا وَمِنكُم مَّن يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۖ وَلَقَدْ عَفَا عَنكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٥٢﴾

अपना साहस खो रहे थे और काम में झगड़ने लगे | और अवज्ञा की[1] उसके बाद कि उसने तुम्हारी प्रिय चीज़ें तुम्हें दिखा दीं |[2] तुममें से कुछ दुनिया चाहते थे |[3] और कुछ का आख़िरत का विचार था |[4] तो फिर उसने तुम्हें उनसे फेर दिया ताकि तुम्हारी परीक्षा ले |[5] और अवश्य उसने तुम्हारे विचलन को क्षमा कर दिया और ईमानवालों पर अल्लाह (तआला) अति कृपालु है |[6]

मुसलमानों के लिए और उसके रसूल की ओर से बहुत पहले किया जा चुका था | यहाँ तक कि कुछ आयतें मक्का में उतर चुकी थीं और उसके अनुसार प्रारम्भ में मुसलमान प्रभावशाली तथा विजयी रहे | जिसकी ओर ﴿إِذْ تَحُسُّونَهُم بِإِذْنِهِ﴾ से संकेत किया गया है |

[1]इस तनाव तथा अवज्ञाकारिता से तात्पर्य ५० धनुर्धारियों का वह मतभेद है, जो विजय तथा प्रभाव देखकर उनके अन्दर उत्पन्न हुआ और जिसके कारण काफ़िरों को पुन: पलट कर हमला करने का समय मिल गया |

[2]इससे तात्पर्य वह विजय है जो प्रारम्भ में मुसलमानों को प्राप्त हुई |

[3]अर्थात युद्ध का परिहार, जिसके लिए उन्होंने पहाड़ी छोड़ दी, जिसके न छोड़ने की उन्हें विशेषरूप से कहा गया था |

[4]यह वह लोग हैं, जिन्होंने मोर्चा छोड़ने से मना किया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशानुसार उसी स्थान पर दृढ़ता से डटे रहने का प्रयत्न किया |

[5]अर्थात विजय देने के बाद फिर तुम्हें पराजय देकर उन काफ़िरों से फेर दिया ताकि तुम्हारी परीक्षा ली जा सके |

[6]इसमें सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की उस विशेषता तथा श्रेष्ठता का वर्णन है, जो उनकी कमियों के बाद भी अल्लाह ने उन पर फ़रमाया अर्थात उनकी ग़लतियों का स्पष्टीकरण करके कि भविष्य में ऐसा न करें, अल्लाह ने उनके लिए क्षमा घोषित कर दिया ताकि कोई दुर्भाषी उन पर लांछन न लगा सके | जब अल्लाह तआला ने ही क़ुरआन करीम में उनके लिए सामान्य क्षमा घोषित कर दिया, तो अब किसी को कलंकित अथवा लांछन लगाने का कोई अवसर कहाँ रह गया ? सहीह बुख़ारी में एक

The Ummah Technology Mission

إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلْوُۥنَ عَلَىٰٓ أَحَدٍ وَٱلرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِىٓ أُخْرَىٰكُمْ فَأَثَٰبَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوا۟ عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَآ أَصَابَكُمْ ۗ وَٱللَّهُ خَبِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٥٣﴾

(१५३) जबकि तुम चढ़े चले जा रहे थे[1] कसी की ओर ध्यान तक नहीं करते थे और अल्लाह के रसूल तुमको पीछे से पुकार रहे थे।[2] बस तुम्हें दुख पर दुख पहुँचा[3] ताकि तुम अपनी खोयी (विजय) पर शोक न करो और न उस (आघात) पर जो तुम्हें पहुँचा[4] और अल्लाह

घटना का वर्णन है कि एक हज के अवसर पर एक व्यक्ति ने आदरणीय उस्मान (रज़ी अल्लाह अन्हु) पर कुछ आक्षेप लगाये कि वह बद्र के युद्ध में तथा बैएत-रिज़वाँ में सम्मिलित नहीं हुए। और ओहद के युद्ध के दिन भाग लिये थे। आदरणीय इब्ने उमर (रज़ी अल्लाह अन्हुमा) ने कहा कि बद्र के युद्ध में उनकी पत्नी (रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पुत्री) बीमार थीं, बैएत-रिज़वाँ के अवसर पर आप रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दूत बन कर मक्का गये थे (उन्हीं की मृत्यु की सम्भावित सूचना पाकर ही तो मुसलमानों ने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ पर बैअत की थी, जिसका नाम बैएत-रिज़वाँ है) और ओहद वाले दिन की भगदड़ को अल्लाह ने क्षमा कर दिया है (संक्षिप्त रूप से सहीह बुख़ारी, ग़ज़व: ओहद)

[1]काफ़िरों के असम्भावित सहसा हमले के कारण मुसलमानों में जो भगदड़ मच गयी और मुसलमानों का बहुमत जो भाग खड़ा हुआ यह उसक चित्रण किया जा रहा है تُصعدون शब्द إصْعاد से उत्पन्न है, जिसका अर्थ अपनी गति भाग जाने अथवा घाटी की ओर चढ़ जाने अथवा भागने के हैं। (तबरी)

[2]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने कुछ साथियों के साथ पीछे रह गये और मुसलमानों को पुकारते रहे ! إِلَيَّ عباد الله ! إِلَيَّ عباد الله "अल्लाह के भक्तों ! मेरी ओर लौट कर आओ, अल्लाह के भक्तों ! मेरी ओर पलट कर आओ।" लेकिन भगदड़ की इस अवस्था में यह पुकार कौन सुनता है ?

[3] فَأَثَابَكُمْ तुम्हारे आलस्य के बदले में तुम्हें दुख पर दुख दिये। इब्ने जरीर और इब्ने कसीर द्वारा प्रयुक्त कथनानुसार पहले दुख से तात्पर्य युद्ध में एकत्रित धन और काफ़िरों पर प्राप्त विजय से वंचित होना और दूसरे दुख से तात्पर्य है मुसलमानों की शहादत, उनका घायल होना, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों की अवहेलना तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शहादत का समाचार मिलने पर दुख।

[4]अर्थात यह दुख पर दुख इसलिए दिया ताकि तुम्हारे अन्दर दु:ख सहन करने की शक्ति और दृढ़ निश्चय तथा साहस पैदा हो। जब यह शक्ति और साहस पैदा हो जाता है, तो

The Ummah Technology Mission

(तआला) तुम्हारे सारे कर्मो को जानता है।

ثُمَّ أَنزَلَ عَلَيْكُم مِّن بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُّعَاسًا يَغْشَىٰ طَائِفَةً مِّنكُمْ وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۖ يَقُولُونَ هَل لَّنَا مِنَ الْأَمْرِ مِن شَيْءٍ ۗ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلَّهِ ۗ يُخْفُونَ فِي أَنفُسِهِم مَّا لَا يُبْدُونَ لَكَ ۖ

(१५४) फिर उस दुख के बाद तुम्हें शान्ति उतारी और तुममें से एक गिरोह को शान्ति की निद्रा आने लगी।[1] और हाँ, कुछ वह लोग भी थे जिन्हें अपनी जानों की पड़ी थी।[2] वह अल्लाह तआला के प्रति अनुचित मुर्खता जैसा कुविचार करने लगे।[3] और कहते थे कि हमें भी कुछ अधिकार है[4] आप कह दीजिए काम तो कुल का कुल अल्लाह के वश में है।[5] यह

फिर मनुष्य को खोई वस्तु पर दुख नहीं होता, कठिनाई पर किसी प्रकार की आधीरता नहीं होती है।

[1]वर्णित व्यग्रता के पश्चात अल्लाह तआला ने फिर मुसलमानों पर अपनी कृपा की और रणक्षेत्र के शेष बचे डटे रहे मुसलमान पर ऊँघ आच्छादित कर दी। यह ऊँघ अल्लाह तआला की ओर से शान्ति और विजय का लक्षण थी। आदरणीय अबू तलहा (रज़ी अल्लाह अन्ह) फ़रमाते हैं कि मैं भी उन लोगों में था जिन पर ओहद के दिन ऊँघ छाई जा रही थी, यहाँ तक कि मेरे हाथ से मेरी तलवार कई बार गिर गयी। मैं उसे पकड़ता, वह फिर गिर जाती, फिर पकड़ता, फिर गिर जाती। (सहीह बुख़ारी)

[2]इससे तात्पर्य अवसरवादी हैं। स्पष्ट है कि ऐसी परिस्थिति में उनको, तो अपनी जानों की ही पड़ी थी।

[3]वह यह थीं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन असत्य है, यह जिस धर्म का निमन्त्रण दे रहे हैं, उसका भविष्य ठीक नहीं है, उन्हें अल्लाह की सहायता प्राप्त नहीं है, आदि।

[4]अर्थात क्या अब हमारे लिए अल्लाह तआला की ओर से किसी प्रकार विजय की सम्भावना है? अथवा यह कि क्या हमारी भी कोई बात चल सकती है? और मानी जा सकती है?

[5]तुम्हारे अथवा शत्रु के वश में नहीं है, सहायता भी उसकी ओर से आयेगी और सफ़लता भी उसके आदेश से होगी, आदेश और निषेधाज्ञा भी उसी का होगा।

The Ummah Technology Mission

يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ؕ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۵۴﴾

लोग अपने दिलों के भेद आपको नहीं बताते |[1] कहते हैं कि यदि हमें कुछ भी अधिकार होता तो यहाँ हत न किये जाते |[2] आप कह दीजिए कि यदि तुम अपने घरों में होते तो भी जिनके भाग्य में हत होना था वह हत्या के स्थान की ओर चल खड़े होते |[3] अल्लाह (तआला) को तुम्हारे अन्त:करण की परीक्षा करनी थी और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उससे पवित्र करना था |[4] और अल्लाह (तआला) अन्तर्यामी है (दिलों के भेद भली-भाँति जानता है) |[5]

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ

(१५५) तुममें से जिन लोगों ने उस दिन पीठ दिखाई जिस दिन दोनों गिरोहों में मुठभेड़ हुई थी | यह लोग अपने कुछ कर्मों के कारण शैतान

---

[1]अपने दिलों में द्वयवाद छिपाये हुए हैं | स्पष्ट यह करते हैं कि वह सत्य पथ की इच्छा करते हैं |

[2]यह वह आपस में कहते हैं, अथवा दिल में कहते हैं |

[3]अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "इस प्रकार की बातों का क्या लाभ ? मृत्यु हर दशा में आनी है | जहाँ अल्लाह की ओर से लिख दी गयी है | यदि तुम घरों में बैठे हुए होते और तुम्हारी मृत्यु किसी हत्या के स्थान पर लिखी होती, तो तुम्हें तुम्हारी मृत्यु वहाँ खींच ले जाती |"

[4]यह जो कुछ भी हुआ उसका एक उद्देश्य यह भी था कि तुम्हारे सीनों में जो कुछ है अर्थात ईमान, उसकी परीक्षा ले (ताकि अवसरवादी अलग हो जायें) और फिर तुम्हारे दिलों को शैतानी शंका से पवित्र कर दे |

[5]अर्थात उसको तो ज्ञान है कि नि:स्वार्थी मुसलमान कौन है ? और अवसरवाद का पर्दा किसने डाल रखा है ? धर्मयुद्ध के अनेक विशेषताओ में से एक विशेषता यह है कि इससे मुनाफ़िक़ और मुसलमान खुलकर सामने आ जाते हैं, जिन्हें आम जनता भी फिर देख और पहचान लेती है |

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۵۵﴾

के बहकावे में आ गये,[1] परन्तु विश्वास करो कि अल्लाह ने उन्हें क्षमा कर दिया।[2] अल्लाह तआला क्षमा करने वाला धैर्य वाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِى الْاَرْضِ اَوْ كَانُوْا غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَمَا قُتِلُوْا ۚ لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً

(१५६) हे मुसलमानों ! तुम उनके भाँति न बनो जो कृतघ्न हो गये तथा उनके भाईयों ने जब धरती में यात्रा की अथवा धर्मयुद्ध के लिये निकले तो कहा कि यदि वह हमारे पास रहते तो उन्हें मौत न आती न उनकी हत्या होती.[3] (उनके इस विचार का कारण यह है कि) अल्लाह इसे उनके दिलों के शोक का कारण बना दे[4] तथा

---

[1]अर्थात ओहद में मुसलमानों से जो चूक और कमी हुई। उसका कारण उनकी पिछली कुछ निर्बलतायें थीं जिसके कारण उस दिन शैतान उन्हें फिसलाने में सफल हो गया। जिस प्रकार कुछ सलफ़ (पूर्वजनों) का कथन है कि पुण्य का फल यह भी है कि उसके पश्चात और पुण्य करने का बल मिलता है और बुराई का कुफल यह है कि इसके बाद और बुराई करने के द्वार खुल जाते हैं अर्थात पुंण्य से पुण्य का और पाप से पाप का मार्ग खुलता और सरल होता है।

[2]अल्लाह तआला सहाबा की चूकों के परिणाम और कारणों के पश्चात अपनी ओर से क्षमा की घोषणा कर रहा है। जिससे एक तो उनका अल्लाह तआला के सदन में प्रिय होना स्पष्ट होता है, और दूसरे यह सामान्य मुसलमानों को चेतावनी है कि जब उनको सत्य विश्वासी अल्लाह तआला ने कह दिया है, तो अब किसी को यह अधिकार नहीं कि उनको अपमानित करे अथवा उनकी आलोचना करे।

[3]ईमानवालों को अधर्मियों एवं अवसरवादियों जैसे के विश्वास से रोका जा रहा है। क्योंकि यह विश्वास कायरता का आधार है। इसके विपरीत जब विश्वास हो कि जीवन मरण अल्लाह तआला के हाथ में है, फिर यह कि मरण का समय निर्धारित है, तो इससे मनुष्य के अन्दर संकल्प तथा साहस एवं अल्लाह के मार्ग में लड़ने की भावना पैदा होती है।

[4]उपरोक्त कुविश्वास हार्दिक पश्चाताप का ही हेतु बनता है कि यदि वह यात्रा पर अथवा रणभूमि में न जाते, और घर पर रहते तो मौत से बच जाते। जब कि मृत्यु तो सुदृढ़ दुर्गों में भी आती है।

The Ummah Technology Mission

فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١٥٦﴾

जीवन और मौत अल्लाह ही देता है तथा अल्लाह तुम्हारे कर्मों को देख रहा है।

وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿١٥٧﴾

(१५७) यदि तुम अल्लाह के मार्ग में शहीद (बलिदान) हो जाओ अथवा मर जाओ तो अल्लाह की क्षमा उस (धन) से उत्तम है जो वे एकत्रित कर रहे हैं।[1]

وَلَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِاَلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾

(१५८) तुम मरो अथवा मारे जाओतुम्हें अल्लाह के पास ही एकत्रित होना है।

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ

(१५९) अल्लाह तआला की कृपा के कारण आप उनके लिये कोमल बन गये हैं और यदि आप कटु वचन तथा कठोर हृदय होते, तो यह सब आपके पास से भाग खड़े होते, इसलिए आप उन्हें क्षमा करें।[2] और उनके लिए क्षमा-याचना

﴿ اَيْنَمَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ﴾

"तुम जहाँ कही भी रहो मृत्यु तुम्हें पा लेगी, यदि तुम सुदृढ़ किलों में हो (अल-निसाँ-७८)

इसलिए पश्चाताप से मुसलमान ही बच सकते हैं। जिनका विश्वास सही है।

[1]मृत्यु तो निश्चय आनी है, परन्तु यदि मृत्यु ऐसी आये जिसके बाद मनुष्य अल्लाह की क्षमा और कृपा का पात्र हो जाये, तो यह दुनिया की धन-सम्पत्ति से उत्तम है, जिसको एकत्रित करने में मनुष्य जीवन खपा देता है। इसलिए अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध करने से पीछे नहीं हटना चाहिए इससे लगाव तथा प्रेम होना चाहिए क्योंकि इससे अल्लाह की क्षमा और कृपा निश्चित हो जाती है। परन्तु इसके साथ शर्त है कि मन की स्वच्छता के साथ हो।

[2]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो सर्वोच्च व्यवहार से युक्त थे। अल्लाह तआला अपने इस पैगम्बर पर एक परोपकार का वर्णन कर रहा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अन्दर जो कोमलता है यह अल्लाह तआला की विशेष कृपा का परिणाम है। यदि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अन्दर यह न होती इसके विपरीत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुर्व्यवहारी और कठोर हृदय के होते, तो लोग आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निकट होने के के बजाय दूर भागते। इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्षमा से ही काम लें।

The Ummah Technology Mission

فِي الْأَمْرِ ۚ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ﴿١٥٩﴾

करें और काम का परामर्श उनसे किया करें।[1] फिर जब आप का दृढ़ निश्चय हो जाये तो अल्लाह (तआला) पर भरोसा करें।[2] और अल्लाह (तआला) भरोसा करने वालों को मित्र रखता है।

إِن يَنصُرْكُمُ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۖ وَإِن يَخْذُلْكُمْ فَمَن ذَا الَّذِي يَنصُرُكُم مِّن بَعْدِهِ ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٦٠﴾

(१६०) यदि अल्लाह तआला तुम्हारी सहायता करे, तो तुम पर कोई प्रभावी नहीं हो सकता, और यदि वह तुम्हें छोड़ दे, तो कौन है जो तुम्हारी सहायता करे? और ईमान वालों को अल्लाह तआला पर ही भरोसा करना चाहिए।

---

[1]अर्थात मुसलमानों की सांत्वना के लिए परामर्श कर लिया करें। इस आयत से परामर्श का महत्व, विशेषता तथा लाभ और उसकी आवश्यकता एवं औचित्य सिद्ध होता है। परामर्श लेने का यह आदेश कुछ विद्वानों के निकट अनिवार्य है और कुछ के विचार में समुचित। (इब्ने कसीर) इमाम शौकानी लिखते हैं कि, "राज्याधिकारियों को आलिमों से ऐसी समस्याओं में परामर्श करना चाहिए, जिनका उन्हें ज्ञान नहीं है अथवा उनके विषय में उन्हें शंका है। सेना के उच्च अधिकारियों से सेना की समस्या में, समाज के प्रमुखों से जनता की समस्याओं के विषय में तथा अधिनस्थ अधिकारियों से उनके क्षेत्र की आवश्यकता तथा प्रमुखता के विषय में परामर्श करें।" इब्ने अतिया कहते हैं, "ऐसे शासकों को पद से हटाने में कोई मतभेद नही है, जो ज्ञानियों और धार्मिक व्यक्ति से परामर्श नहीं करते।" यह परामर्श केवल उन समस्या तक सीमित है, जिनके विषय में धार्मिक नियम मौन है अथवा जिनका सम्बन्ध व्यवस्था के विषय से है। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात परामर्श के बाद जिस पर आप का विचार पक्का हो जाये, फिर अल्लाह पर भरोसा करके कर डालें। इससे तो एक बात यह ज्ञात हुई कि परामर्श के बाद अन्तिम निर्णय शासक ही का होगा, न कि परामर्शदाता अथवा उनके बहुमत का जैसाकि लोकतन्त्र में है। दूसरी यह कि सारा भरोसा अल्लाह पर ही होगा। न कि परामर्श देने वालों की बुद्धि अथवा समझ पर। अगली आयत में भी अल्लाह पर भरोसा करने पर और बल दिया जा रहा है।

The Ummah Technology Mission

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ ؕ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۶۱﴾

(१६१) और यह असम्भव है कि नबी के द्वारा विश्वास़घात हो जाये।[1] प्रत्येक विश्वासघाती क़ियामत के दिन विश्वासघात को लेकर उपस्थित होगा, फिर प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों का पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा, और उन पर अत्याचार न किया जायेगा।

اَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۶۲﴾

(१६२) क्या वह व्यक्ति जिसने अल्लाह की प्रसन्नता का अनुसरण किया उसके समान है जो अल्लाह के क्रोध के साथ लौटा? तथा उसका स्थान नरक है और वह बहुत बुरा स्थान है।

هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶۳﴾

(१६३) अल्लाह तआला के पास उनके अलग-अलग पद हैं और उनके सभी कर्मों को अल्लाह भली-भाँति देख रहा है।

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ

(१६४) नि:संदेह मुसलमानों पर अल्लाह का उपकार है कि उसने उन्हीं में से एक रसूल

[1]ओहद के युद्ध में जो लोग मोर्चा छोड़ कर परिहार एकत्र करने दौड़ पड़े थे, उनका विचार था कि यदि हम न पहुँचे, तो सारा परिहार दूसरे ले जायेंगे, इस पर चेतावनी दी जा रही है कि तुमने ऐसा क्यों सोचा कि तुम्हारा भाग तुम्हें नहीं मिलेगा? क्या तुम्हें ओहद के सेनापति मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ईमानदारी पर सन्तोष नहीं? याद रखो कि एक ईशदूत के द्वारा विश्वासघात नहीं किया जा सकता क्योंकि विश्वासघात नबूवत के विपरीत है यदि नबी विश्वासघाती है, तो उसकी नबूवत पर विश्वास क्यों किया जाये? विश्वासघात महापाप है, हदीस में इसकी कटु आलोचना की गयी है।

The Ummah Technology Mission

يَتْلُوا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ

उनमें भेजा |[1] जो उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है और उन्हें शुद्ध करता है और उन्हें किताब तथा सूझ-बूझ सिखाता है |[2] और

---

[1]नबी के मानव तथा मानव जाति में से होने का वर्णन अल्लाह एक उपकार स्वरूप कर रहा है और वास्तव में यह परोपकार है कि इस प्रकार एक तो वह अपने वर्ग की भाषा और शैली में ही अल्लाह का संदेश पहुँचायेगा | जिसे समझने में किसी व्यक्ति को कोई कठिनाई न होगी | दूसरे लोग समान जाति के होने के कारण उससे निकट होंगे | तीसरे मनुष्य के लिए मनुष्य अर्थात आदमी का अनुसरण करना तो सम्भव है, परन्तु फ़रिश्ते का अनुसरण उसके वश में नहीं है और न फ़रिश्ता मनुष्य की चेतना तथा ज्ञान की गहराईयों और सूक्ष्मता का प्रबोध कर सकता है | इसलिए यदि पैग़म्बर फ़रिश्तों में से होते तो वह इन सभी गुणों से वंचित होते जो धर्म प्रचार के लिए अति आवश्यक है | इसलिए जितने भी नबी आये हैं सभी मानव थे क़ुरआन ने उनकी मानवता को अति स्पष्ट करके वर्णन किया है | जैसे फ़रमाया :

﴿ وَمَآ أَرۡسَلۡنَا مِن قَبۡلِكَ إِلَّا رِجَالٗا نُّوحِيٓ إِلَيۡهِمۡ ﴾

"हमने आप से पहले जितने भी रसूल भेजें वह पुरुष थे, जिन पर हम आदेश करते थे |" (*यूसुफ़-१०९*)

﴿ وَمَآ أَرۡسَلۡنَا قَبۡلَكَ مِنَ ٱلۡمُرۡسَلِينَ إِلَّآ إِنَّهُمۡ لَيَأۡكُلُونَ ٱلطَّعَامَ وَيَمۡشُونَ فِي ٱلۡأَسۡوَاقِ ﴾

"हमने आप से पहले जितने भी रसूल भेजे सभी भोजन करते और बाज़ारों में चलते थे |" (सूर: *अल-फ़ुरक़ान*, २०)

और स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुखार बिन्दु से कहलवाया गया |

﴿ قُلۡ إِنَّمَآ أَنَا۠ بَشَرٞ مِّثۡلُكُمۡ يُوحَىٰٓ إِلَيَّ ﴾

"आप कह दीजिए कि मैं भी तुम्हारी तरह मनुष्य हूँ, परन्तु मुझ पर वह्यी उतरती है |" (*हा॰मीम॰ अल्-सजदः-६*)

आज बहुत से मन के अंधे लोग इस बात को नहीं समझते और कुमार्ग पर हैं |

[2]इस आयत में दूतत्व के तीन मुख्य उद्देश्य का वर्णन है | (१) आयतों की तिलावत (२) शुद्धिकरण (३) किताब और सूझ-बूझ की शिक्षा | किताब की शिक्षा में तिलावत स्वयं आ जाती है | तिलावत के साथ ही शिक्षा सम्भव है | तिलावत के बिना शिक्षा का अस्तित्व नहीं | इसके अतिरिक्त तिलावत को एक उद्देश्य के रूप में वर्णन किया गया है | इससे

The Ummah Technology Mission

كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٦٤﴾

अवश्य[1] यह सब उससे पूर्व स्पष्ट रूप से भटके हुए थे।

اَوَلَمَّآ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا ؕ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٦٥﴾

(१६५) (क्या बात है) कि जब तुम पर एक आपत्ति आई जिसके दुगना तुमने उन्हें पहुँचाई है,[2] तो तुमने कहा कि यह कहाँ से आयी। (हे ईशदूत) आप कह दें कि यह तुमने स्वयं अपने ऊपर डाली है,[3] निश्चय प्रत्येक विषय पर अल्लाह का सामर्थ्य है।

وَمَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٦٦﴾

(१६६) तथा दोनों गिरोहों की मुठभेंड़ के दिन तुम्हें जो कुछ पहुँचा तो यह अल्लाह की आज्ञा से पहुंचा और ताकि अल्लाह मुसलमानों को प्रत्यक्ष रूप से जान ले।

इस बिन्दु का स्पष्टीकरण होता है कि तिलावत स्वयं भी पवित्र एवं पुण्य का कार्य है। चाहे पढ़ने वाला उसका अर्थ समझे अथवा न समझे। क़ुरआन का अर्थ तथा उद्देश्य समझने का प्रयत्न करना प्रत्येक मुसलमान के लिए आवश्यक है, परन्तु जब तक यह उद्देश्य प्राप्त न हो अथवा इतनी समझ व योग्यता न प्राप्त हो क़ुरआन की तिलावत में अलस्य अथवा रूके रहना उचित नहीं। शुद्धि का अर्थ है विश्वास कर्म और चरित्र का सुधार। जिस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें मूर्तिपूजा से हटाकर एकेश्वरवाद की ओर लगाया। इसी प्रकार अति असभ्य और कुकर्मी समाज को सभ्य और चरित्र के मार्ग पर चलाया। विज्ञान (समझ-बूझ) व्याख्याकारों के निकट हदीस है।

[1]यहाँ بِ का अर्थ आवश्य, नि:सन्देह तथा नि:शंका है।

[2]अर्थात ओहद में तुम्हारे सत्तर आदमी शहीद (बलिदान) हुए, तो बद्र में तुमने सत्तर आदमियों को मारा था और सत्तर बन्दी बनाये थे।

[3]अर्थात तुम्हारी उस ग़लती के कारण जो रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बलपूर्वक आदेश के उपरान्त तुमने जो पहाड़ी मोर्चा छोड़ कर की। जिसका विवरण पहले आ चुका है कि तुम्हारी उस ग़लती के कारण काफ़िरों को फिर से आक्रमण करने का अवसर मिल गया।

The Ummah Technology Mission

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۚ وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوِ ادْفَعُوْا ؕ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّا اتَّبَعْنٰكُمْ ؕ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿۱۶۷﴾

(१६७) तथा द्वयवादियों को जान ले[1] जिनसे कहा गया कि आओ अल्लाह के मार्ग में लड़ो अथवा हमले से बचाव करो तो उन्होंने कहा कि यदि हम जानते की लड़ाई होगी तो अवश्य तुम्हारा साथ देते.[2] वह उस दिन ईमान की अपेक्षा कुफ्र (अविश्वास) से निकटतम थे,[3] अपने मुख से वह बात कर रहे थे जो उनके दिलों में न थी[4] तथा अल्लाह उसे अवगत है जिसे वे छुपाते हैं।

اَلَّذِيْنَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ؕ

(१६८) जिन्होंने अपने भाईयों के लिये कहा और स्वयं भी बैठे रहे कि यदि वह हमारी बात

---

[1]अर्थात ओहद में जो कुछ हानि तुमको पहुँची वह अल्लाह के आदेश से पहुँची (ताकि फिर तुम रसूल के आदेशों का पालन करो) इसके अतिरिक्त उद्देश्य यह था कि ईमानवालों और मुनाफ़िक़ों को अलग कर ईमानवालों को श्रेष्ठता प्रदान करें।

[2]युद्ध जानने का अर्थ है कि यदि वास्तव में आप लोग युद्ध के लिए चल रहे होते तो हम भी साथ देते परन्तु आप लोग युद्ध के बजाय अपने आप को काल के मुख में झोंक रहे हैं, ऐसे ग़लत कार्य में हम आपका साथ क्यो दें ? यह बात अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके साथियों ने इसलिए कही थी कि उनकी बात नहीं मानी गयी थी। और उस समय कहा जव वह शौत नामक स्थान पर पहुँचकर लौट रहे थे। अब्दुल्लाह बिन हराम अन्सारी उन्हें समझा बुझाकर युद्ध में सम्मिलित करने का प्रयास कर रहे थे। (इसका कुछ वर्णन गुजर चुका है)

[3]अपने इस विभेद तथा इन बातों के कारण जो उन्होंने कीं।

[4]अर्थात मुख से वह कहा, जो वर्णन हुआ, परन्तु दिल में यह था कि हमारे अलग होने के कारण मुसलमान निर्बल हो जायेंगे। दूसरे काफ़िरों को लाभ पहुँचेगा। उद्देश्य इस्लाम, मुसलमान और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हानि पहुँचाना था।

The Ummah Technology Mission

قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٦٨﴾

मानते तो हत न किये जाते। कह दो कि यदि तुम सच्चे हो तो अपनी मौत को टाल दो।[1]

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿١٦٩﴾

(१६९) और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये उन्हें मृत न समझो बल्कि वे जीवित हैं, अपने पोषक के पास जीविका दिये जा रहे हैं।[2]

فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١٧٠﴾

(१७०) अल्लाह तआला ने अपनी कृपा जो उनको दे रखी है, उससे वह अति प्रसन्न हैं और प्रसन्नता मना रहे हैं उन लोगों के विषय में जो अब तक उनसे नहीं मिले, उनके पीछे हैं।[3] इस बात पर कि उनको न कोई भय है और न कोई क्षोभ।

---

[1]यह मुनाफ़िक़ों के उस कथन का खण्डन है कि "यदि वह हमारी बात मान लेते तो मारे न जाते।" अल्लाह तआला ने फ़रमाया यदि तुम सच्चे हो तो तुम अपने ऊपर से मृत्यु को टाल दो। तात्पर्य यह है कि भाग्य से किसी को विलग नही किया गया, मृत्यु भी जहाँ और जिस प्रकार भाग्य में है। उसी स्थान पर और उसी प्रकार आकर रहेगी। इसलिए धर्मयुद्ध तथा अल्लाह के मार्ग में लड़ने से रुकने अथवा भागने से, कोई मृत्यु के पंजे से नहीं बच सकता।

[2]शहीदों का यह जीवन वास्तविक है अथवा काल्पनिक ? नि:सन्देह वास्तविक है, परन्तु इसका ज्ञान दुनिया वालों को नहीं है। जैसाकि क़ुरआन ने स्पष्ट कर दिया है। कृपया देखें सूर: *अल-बक़र:*-१५४। फिर इस जीवन का अर्थ क्या है ? कुछ कहते हैं कि क़ब्रों में उनकी आत्मायें लौटा दी जाती हैं और वह अल्लाह की प्रदान की गयी सामग्रियों को प्रयोग करके आनन्दित होते हैं। कुछ कहते हैं कि स्वर्ग के फलों की सुगन्ध उन्हें आती रहती है, जिससे उनकी पवित्र आत्मा प्रफुल्लित रहती है। परन्तु हदीस से एक तीसरी परिस्थिति सामने आती है, इसलिए वही सही है वह यह कि उनकी आत्मायें हरे पंक्षियों के शरीर में अथवा सीने में प्रवेश कर दी जाती हैं और वह स्वर्ग में खाती पीती फिरती हैं और अपना प्रदत्त सामग्रियों से लाभान्वित होती रहती हैं। (फ़तहुल क़दीर निर्देशित सहीह मुस्लिम किताबुल ईमार:)

[3]अर्थात वह मुसलमान जो उनके पीछे दुनिया में जीवित हैं अथवा धर्मयुद्ध में व्यस्त हैं, इनके लिए यह कामना करते हैं कि काश उन्हें भी शहादत मिलती और उन्हें हमारी तरह यहाँ

The Ummah Technology Mission

يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٧١﴾

(१७१) वह अल्लाह की कृपा और दया से प्रसन्न होते हैं और उससे भी कि अल्लाह तआला ईमानवालों के प्रतिफल को नष्ट नहीं करता।[1]

आनन्दित जीवन प्राप्त होता। ओहद के शहीदों ने अल्लाह के दरबार में प्रार्थना की कि क्या हमारे वह मुसलमान भाई जो हमारे पीछे दुनिया में जीवित हैं उन्हें हमारे हालात और आनन्दपूर्ण जीवन की सूचना देने वाला कोई है? ताकि वह युद्ध और धर्मयुद्ध से पीछे न हटें। अल्लाह ने यह आयत फ़रमाया, "मैं तुम्हारी बात उन तक पहुँचा देता हूँ।" इस कारण अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी। (मुसनद अहमद ३६५-३६६, सुनन अबू दाऊद किताबुल जिहाद) इसके अतिरिक्त कई हदीसों से शहादत की श्रेष्ठता सिद्ध होती है। जैसाकि एक हदीस में है।

«مَا مِنْ نَفْسٍ تَمُوتُ، لَهَا عِنْدَ اللهِ خَيْرٌ، يَسُرُّهَا أَنْ تَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا إِلَّا الشَّهِيدُ، فَإِنَّهُ يَسُرُّهُ أَنْ يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا فَيُقْتَلَ مَرَّةً أُخْرَى لِمَا يَرَى مِنْ فَضْلِ الشَّهَادَةِ».

"कोई मरने वाली आत्मा जिसे अल्लाह के यहाँ उच्च स्थान प्राप्त है, दुनिया में लौटने की चेष्टा नहीं करती परन्तु शहीद दुनिया में पुनः आने की चेष्टा करता है, ताकि वह पुनः अल्लाह के मार्ग में शहीद हो, यह कामना वह इसलिए करता है कि शहादत की श्रेष्ठता को वह देख लेता है।" (मुसनद अहमद ३/१२६, सहीह मुस्लिम किताबुल इमार:, बाँब फ़जलुशशहाद:)

आदरणीय जाबिर (रज़ी अल्लाह अन्हु) कहते हैं कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु असैहि वसल्लम ने मुझसे कहा कि तुझे ज्ञात है कि अल्लाह तआला ने तेरे पिता को जीवित किया और कहा कि मुझसे अपनी किसी कामना का प्रदर्शन कर (ताकि मैं उसे पूरा करूँ) तेरे पिता ने उत्तर दिया कि मेरी तो यह कामना है कि मुझे पुनः दुनिया में भेज दिया जाये ताकि पुनः तेरी राह में मारा जाऊँ, अल्लाह तआला ने फ़रमाया यह तो असम्भव है क्योंकि मेरा निर्णय है कि मेरे पास आने के बाद कोई दुनिया में वापस नहीं जा सकता। (मुसनद अहमद ३/३६१)

[1]यह आनन्दमयी बात पहली आनन्दायक बात की पुनरावृत्ति है और इस बात का वर्णन है कि उनकी प्रसन्नता केवल भय और दुख से वंचित होने के कारण नहीं है। बल्कि अल्लाह की कृपा और उसकी अनमोल दया तथा कृपा के कारण है। और कुछ व्याख्याकारों के अनुसार पहली प्रसन्नता का सम्बन्ध संसार में रह जाने वाले भाईयों के कारण है, और यह दूसरी प्रसन्नता उस उपहार व कृपा की है, जो अल्लाह तआला की ओर से स्वयं उन पर हुई। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَ اتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۷۲﴾

(१७२) जिन लोगों ने घायल होने के बाद (भी) अल्लाह एवं रसूल का आदेश मान लिया उनमें से जो सत्कार किये तथा परहेज़गार रहे उनके लिए बड़ा प्रतिफल है।[1]

اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖ وَّ قَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَ نِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴿۱۷۳﴾

(१७३) जिनसे लोगों ने कहा कि लोग तुम्हारे लिये एकत्रित हो चुके हैं, अतः उनसे डरो, तो उनका ईमान बढ़ गया और कहा कि अल्लाह हमारे लिये बस है तथा वह उत्तम संरक्षक है।[2]

---

[1]जब मूर्तिपूजक ओहद के युद्ध से लौटे तो उन्हें मार्ग में याद आया कि उन्होंने एक अच्छा अवसर खो दिया। मुसलमान पराजय के कारण साहस खो बैठे थे और भयभीत थे। हमें इससे लाभ उठाकर मदीना पर भरपूर हमला कर देना चाहिए था, ताकि इस्लाम का यह पौधा अपनी धरती (मदीना) से ही नष्ट हो जाता। इधर मदीना पहुँच कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को विचार आया कि कहीं मूर्तिपूजक फिर पलट कर न आयें। इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा को लड़ने के लिए तैयार किया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कहने पर सहाबा दुखी होने के पश्चात भी तैयार हो गये। मुसलमानों का यह क़ाफ़िला जब मदीने से ८ मील दूर स्थित "हमरॉउल असद" नामक स्थान पर पहुँचा तो मूर्तिपूजकों को भय प्रतीत हुआ, अतएव उन्होने अपना विचार बदल दिया। और वह मदीना पर आक्रमण करने के बजाय मक्का वापस चले गये। उसके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के साथी मदीना वापस आ गये। इस आयत में मुसलमानों के इसी अल्लाह और रसूल की आज्ञापालन की भावना की प्रशंसा की गयी है। कुछ ने इस आयत के उतरने का कारण अबू सुफ़ियान (जो अभी ईमान नही लाये थे) की उस धमकी को बतलाया है, "कि अगले वर्ष छूटे बद्र में हमारा तुम्हारा मुक़ाबिला होगा।" इस पर मुसलमानों ने भी अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञापालन करते हुए इस साहस का प्रदर्शन किया था कि धर्मयुद्ध में भरपूर भाग लेने का दृढ़ विचार कर लिया है। (उदघृत फ़तहुल क़दीर व इब्ने कसीर) परन्तु यह अन्तिम कथन पूर्व के विषय से मेल नही खाता।

[2]"हमराउल असद" और कहा जाता है कि छोटे बद्र के स्थान पर अबू सुफ़ियान ने कुछ लोगों की सेवा धन देकर प्राप्त की और उनके द्वारा मुसलमानों में यह अफ़वाह फैला दी कि मक्का के मूर्तिपूजक युद्ध के लिए भरपूर तैयारी कर रह हैं। ताकि यह सुनकर मुसलमानों की हिम्मत टूट जाये। कुछ कथनों में यह है कि यह काम शैतान ने अपने शिष्यों से लिया। परन्तु मुसलमान यह अफ़वाह सुनकर और भी सुदृढ़ इरादे और साहस से तैयार

The Ummah Technology Mission

فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ﴿١٧٤﴾

(१७४) (प्रणाम यह हुआ कि) वह अल्लाह की कृपा के साथ वापस हुए [1] उन्हें कोई दुख नहीं पहुंचा। उन्होंने अल्लाह की अनुग्रह का मार्ग अपनाया। तथा अल्लाह विशाल अनुकम्पा वाला है।

اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۠ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٥﴾

(१७५) यह शैतान (राक्षस) ही है जो अपने मित्रों से डराता है[2] अत:उनसे न डरो मुझसे ही डरो यदि तुम ईमान वाले हो।[3]

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا

(१७६) जो शीघ्रता से कुफ्र में जा रहे हैं, उनसे आप उदासीन न हों वह अल्लाह तआला का

हो गये। जिसको यहाँ ईमान की अधिकता से तुलना की गयी है क्योंकि ईमान जितना दृढ़ होगा धर्मयुद्ध का साहस तथा संकल्प भी उतना ही अधिक होगा। यह आयत इस बात की साक्षी है कि ईमान कोई अटल विषय नहीं है। बल्कि इसमें कमी और अधिकता होती रहती है जैसाकि मोहद्दिसीन का विचार है। यह भी ज्ञात हुआ कि दुख में ईमान वाले अल्लाह पर विश्वास और भरोसा करते हैं इसीलिए हदीस में ﴿حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ﴾ पढ़ने पर बल दिया गया है। इसी प्रकार सहीह बुख़ारी आदि में है आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जब आग में डाला गया तो आपकी ज़बान पर यही शब्द थे। (फ़तहुल क़दीर)

[1]कृपा से तात्पर्य सुरक्षा है और दया से तात्पर्य लाभ है। जो छोटे बद्र में व्यापार द्वारा प्राप्त हुआ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने छोटे बद्र में एक गुजरने वाले क़ाफ़िले से व्यापार की सामग्री क्रय करके बेच दी, जिससे लाभ प्राप्त हुआ और लाभ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों में विभाजित कर दिया। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात वह तुम्हें शंका तथा भ्रम में डालता है कि वह बहुत वीर और बलवान हैं।

[3]अर्थात यदि वह तुम्हें इस प्रकार के भ्रम में डाले तो तुम केवल मुझ पर ही भरोसा करो और मेरी ओर ही पलटो ! मै तुम्हारे लिए काफी हो जाऊँगा और तुम्हारा रक्षक रहूँगा। जैसाकि दूसरे स्थान पर बताया गया है।

﴿اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ﴾

"क्या अल्लाह तआला अपने भक्तों के लिए काफ़ी नहीं ?"(अल-ज़ुमर-३६)

थोड़ा और देखिए। ﴿كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ﴾ आदि आयत हैं।

The Ummah Technology Mission

اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٦﴾

कुछ न बिगाड़ सकेंगे। अल्लाह परलोक में उन्हें कोई भाग नहीं देना चाहता।[1] और उनके लिए घोर यातना है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٧﴾

(१७७) कुफ्र को ईमान के बदले क्रय करने वाले लोग कदापि-कदापि अल्लाह (तआला) को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते और उन्हीं के लिए दु:खदायी यातना है।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ خَيْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ اِنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٧٨﴾

(१७८) काफ़िर लोग यह न सोचें कि हमारा उन्हें अवसर देना उनके लिये अच्छा है। हम यह अवसर इसलिये दे रहे है कि वह और अधिक पाप कर लें, तथा उन्हीं के लिये अपमानित यातना है।[2]

---

[1]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आन्तरिक इच्छा थी कि सभी लोग मुसलमान हो जायें, इसी कारण उनके इंकार और झुठलाने से आपको दुख होता था। अल्लाह तआला ने इस आयत में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी है कि आप दुखी न हों यह अल्लाह का कुछ न बिगाड़ सकेंगे, अपनी ही आख़िरत नाश कर रहे हैं।

[2]इस आयत में अल्लाह तआला के समय देने के नियम का वर्णन है। अर्थात अल्लाह तआला अपनी नियम तथा इच्छा से काफ़िरों को समय प्रदान करता है। सामायिक रूप से उन्हें सांसारिक ऐश्वर्य, सुख-समृद्धि, विजय तथा धन और सन्तान प्रदान करता है। लोग समझते हैं कि उन पर अल्लाह की कृपा हो रही है। परन्तु यदि अल्लाह की प्रदान की हुई सुख-समृद्धि से लाभान्वित होने वाले पुण्य और अल्लाह के आदेशों का पालन करने का मार्ग नहीं अपनाते तो यह साँसारिक सुख अल्लाह तआला की कृपा नहीं, अल्लाह कि ओर से समय प्रदान करना है। जिससे उनके अधर्म और अवज्ञा में बढ़ोत्तरी ही होती है। अन्तत: वह नरक की स्थाई यातना के अधिकारी हो जाते हैं। इस विषय में अल्लाह तआला ने कई स्थान पर वर्णन किया है। जैसे-

﴿ أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُم بِهِۦ مِن مَّالٍ وَبَنِينَ ۝ نُسَارِعُ لَهُمْ فِي ٱلْخَيْرَٰتِ ۚ بَل لَّا يَشْعُرُونَ ﴾

The Ummah Technology Mission

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۪

(१७९) जिस हाल पर तुम हो उसी पर अल्लाह ईमानवालों को छोड़ नहीं देगा जब तक कि पवित्र और अपवित्र को अलग-अलग न कर दे।[1] और न अल्लाह ऐसा है कि तुम्हें परोक्ष से सूचित कर दे,[2] परन्तु अल्लाह अपने रसूलों में से जिसको चाहे चुन लेता है।[3] इसलिए तुम

"क्या वह यह समझते हैं कि हम जो उनके धन और सन्तान में वृद्धि करते हैं, यह हम उनके लिए भलाईयों में शीघ्रता कर रहे हैं नहीं, बल्कि यह वह समझते ही नहीं।" (*अल- मोमिनून-* ५५-५६)

[1]इसलिए अल्लाह तआला परीक्षा कुंड से गुजारता है, ताकि उसके मित्र स्पष्ट हो जायें और शत्रु अपमानित हो जायें। ईमानवाला, धैर्यवान, मुनाफिक़ से पृथक हो जाये, जिस प्रकार ओहद में अल्लाह तआला ने ईमानवालों की परीक्षा ली जिससे उनके ईमान धैर्य तथा दृढ़ता और आज्ञापालन करने के साहस का प्रदर्शन हुआ और मुनाफ़िक़ों के चेहरे पर जो निफ़ाक़ (फूट) का पर्दा था वह गिर गया।

[2]अर्थात यदि अल्लाह तआला इस प्रकार के दुखों से परीक्षा लेकर लोगों के हालात और उनके बाहरी और भीतरी विचार को स्पष्ट नहीं करे तो तुम्हारे पास कोई अन्तर्यामी तो है नहीं, जिससे तुमको यह चीज़े स्पष्ट हो सके और तुम जान सको कि कौन मुनाफ़िक़ है और कौन शुद्ध ईमानवाला।

[3]परन्तु कुछ परिस्थितियों में अल्लाह तआला अपने रसूलों में से जिसे चाहता परोक्ष का ज्ञान दे देता है। जिससे कई बार उन पर अवसरवादियों और उनकी दशा तथा उनकी चालों का भेद खुल जाता है। परन्तु सामान्य रूप से नबी भी (यदि अल्लाह तआला न चाहे) मुनाफ़िक़ों के आन्तरिक निफ़ाक़ (द्वयवाद) और उनकी धोखेबाज़ी से अनजान ही रहता है (जिस प्रकार *सूरः तौबः* की आयत संख्या १०१ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि गँवारों और मदीने वालों में जो द्वयवादी हैं हे पैग़म्बर! आप उनको नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं।) इसका दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि परोक्ष का ज्ञान हम केवल अपने रसूलों को ही प्रदान करते हैं क्योंकि यह उनके पद की आवश्यकता है। इसी अल्लाह की प्रकाशना तथा परोक्ष के द्वारा ही वह लोगों को अल्लाह ताअला की ओर बुलाते हैं और अपने को अल्लाह का रसूल सिद्ध करते हैं। इस विषय को दूसरे स्थान पर इस प्रकार वर्णित किया गया है

﴿ عَٰلِمُ ٱلْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِۦٓ أَحَدًا ۞ إِلَّا مَنِ ٱرْتَضَىٰ مِن رَّسُولٍ ﴾

The Ummah Technology Mission

فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ ۚ وَ اِنْ تُؤْمِنُوْا وَ تَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٩﴾

अल्लाह (तआला) पर और उसके रसूलों पर ईमान रखो, यदि तुम ईमान लाओ और अल्लाह से परहेज़गारी करो, तो तुम्हारे लिए बहुत बड़ा बदला है।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَ لِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٨٠﴾

(१८०) तथा जिनको अल्लाह ने अपनी कृपा से (धन) दिया है और वह उसमें कंजूसी (कृपण) करते हैं तो इसे अच्छा न समझें बल्कि वह उनके लिए अति बुरा है। उन्होंने जिस (धन) में कंजूसी की है प्रलय के दिन उनका (गले का) तौक़ होगी, [1] तथा आसमानों एवं धरती का उत्तराधिकार मात्र अल्लाह के लिये है, तथा वह तुम्हारी कृतियों से सूचित है।

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّ نَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ

(१८१) अवश्य अल्लाह ने उन लोगों की बात सुन ली है जिन्होंने कहा कि अल्लाह निर्धन

"परोक्ष का ज्ञान (अल्लाह तआला को है) और अपने परोक्ष से प्रिय रसूलों को ही अवगत कराता है।" (सूरः अल-जिन्न-२६-२८)

स्पष्ट बात है यह परोक्ष की बातें वही हैं, जिनका सम्बन्ध दूतत्व के पद तथा कर्तव्य को पूरा करने से होता है। न कि ما كان وما يكون (जो कुछ हो चुका और आगे क़ियामत तक जो होने वाला है) का ज्ञान। जैसाकि कुछ ग़लत लोग इस प्रकार के परोक्ष का ज्ञान नबियों के लिए और कुछ लोग अपने "पुण्यात्मा इमामों" के लिए कहते हैं।

[1] इसमें उस कंजूस का वर्णन किया गया है, जो अल्लाह के प्रदान किये हुए धन को अल्लाह के मार्ग में व्यय नहीं करता यहाँ तक कि उनमें से अनिवार्य ज़कात भी नहीं निकालता। सहीह बुख़ारी की हदीस में आता है कि क़ियामत के दिन उसके धन को एक विषाक्त सर्प बनाकर जंजीर की तरह गले में डाल दिया जायेगा, वह सर्प उसकी बाँछें पकड़ेगा और कहेगा कि मैं तेरा धन हूँ। तेरा कोष हूँ।

«مَنْ آتَاهُ اللهُ مَالًا فَلَمْ يُؤَدِّ زَكٰوتَهُ، مُثِّلَ لَه شُجَاعًا أَقْرَعَ، لَه زَبِيبَتَانِ، يُطَوَّقُهُ يَومَ الْقِيَامَةِ»

(सहीह बुख़ारी किताब अल तफ़सीर)

The Ummah Technology Mission

سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿١٨١﴾

है तथा हम धनी हैं।[1] हम उनकी यह बात लिख लेंगे तथा इनके द्वारा ईशदूतों की अवैध हत्या को भी,[2] तथा हम कहेंगे कि जलने की यातना चखो।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٨٢﴾

(१८२) यह तुम्हारे करतूत हैं तथा निश्चय अल्लाह अपने भक्तों पर तनिक अत्याचार नहीं करता।

اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ۭ قُلْ قَدْ جَاۗءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٨٣﴾

(१८३) इन्होंने कहा कि हम से अल्लाह ने वचन लिया है कि हम किसी ईशदूत को न मानें जब तक कि वह हमारे समक्ष ऐसी बलि न लाये जिसे आग खा जाये, आप कहिये कि तुम्हारे पास मुझसे पूर्व ईशदूत तर्कें एवं उसके सहित वह भी लाये जो तुमने कहा तो तुमने उन्हें क्यों हत किया[3] यदि तुम सत्यवादी हो।

---

[1]जब अल्लाह तआला ने ईमानवालों को अल्लाह तआला के मार्ग में व्यय करने का प्रलोभन दिया और फ़रमाया :

﴿مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا﴾

"कौन है जो अल्लाह को अच्छा ऋण दे।" (अल-बक़र:-२४५)

तो यहूदियों ने कहा ऐ ! मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम !) तेरा प्रभु निर्धन हो गया है कि अपने भक्तों से ऋण माँग रहा है। जिस पर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात वर्णित कथन जिसमें अल्लाह तआला को अपमान जनक शब्द कहे गये हैं। और इसी प्रकार उनके (पूर्वजों का) नबियों की अकारण हत्या करना, उनके ये सभी अपराध अल्लाह के सदन में लिखे हुए हैं। जिनके कारण वह नरक की अग्नि में डाले जायेंगे।

[3]इसमें भी यहूदियों की एक और बात को झुठलाया जा रहा है। वह कहते थे कि अल्लाह तआला ने हमसे वचन लिया है कि तुम केवल उस रसूल पर विश्वास करना जिसकी प्रार्थना से आकाश से आग उतरे और बलि तथा दान को जला डाले। उनका तात्पर्य यह

The Ummah Technology Mission

فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ جَاءُو بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿١٨٤﴾

(१८४) फिर भी यदि यह लोग आप को झुठलायें, तो आप से पूर्व बहुत से रसूल झुठलाये गये, जो अपने साथ स्पष्ट प्रमाण, पत्रक तथा प्रकाशमान पुस्तकें लेकर आये।[1]

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ فَمَن زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۗ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ﴿١٨٥﴾

(१८५) प्रत्येक जीव कोमृत्यु का स्वाद चखना ही है और क़ियामत के दिन तुम अपने प्रतिकार पूरे-पूरे दिये जाओगे, परन्तु जो व्यक्ति आग से हटा दिया जाये और स्वर्ग में प्रवेश करा दिया जाये, नि:सन्देह वह सफल हो गया। और दुनिया का जीवन केवल धोखे का सामान है।[2]

था कि ऐ मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आप के द्वारा इस प्रकार का चमत्कार प्रकट नहीं हुआ है। इसलिए अल्लाह के आदेशानुसार आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की रिसालत पर हमें ईमानलाना आवश्यक नहीं है यद्यपि पूर्व के नबियों में से कुछ नबियों की प्रार्थना पर आकाश से आग आती और ईमानवालों के दान और बलि को खा जाती जो एक ओर इस बात का प्रमाण होता कि अल्लाह के मार्ग में प्रस्तुत किया हुआ दान अथवा बलि अल्लाह तआला के दरबार में स्वीकार हो गयी। दूसरी ओर यह सिद्ध करती कि यह नबी सत्य हैं। परन्तु इन यहूदियों ने उन नबियों और रसूलों को भी झुठलाया इसलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यदि तुम अपने दावे में सच्चे हो, तो फिर तुमने ऐसे पैग़म्बर को क्यों झुठलाया और उनकी हत्या की, जो तुम्हारे द्वारा माँगी गयी निशानियाँ लेकर आये थे।

[1]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी जा रही है कि आप यहूदियों के तर्क-वितर्क से उदास न हों। इस प्रकार का व्यवहार केवल अपके साथ नहीं किया जा रहा है, बल्कि आप से पूर्व आने वाले पैग़म्बरों के साथ भी यही किया जा चुका है।

[2]इस आयत में एक अटल तथ्य का वर्णन है कि मौत से कोई भाग नहीं सकता। दूसरा यह कि दुनिया में जिसने भी अच्छा या बुरा जो कुछ किया है, उसको उसका पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा। तीसरा, सफलता की सीमा बतायी गयी है, कि सफल वास्तव में वह है जिसने दुनिया में रहकर अपने प्रभु को प्रसन्न कर लिया जिसके परिणामस्वरूप वह नरक से मुक्त कर दिया गया और स्वर्ग में प्रवेशित कर दिया गया। चौथा यह कि दुनिया का जीवन धोखे की सामग्री है, जो उससे अपना दामन बचाकर निकल गया, वह सौभाग्यशाली है और जो उसमें फंस गया, असफल और हतभागा है।

The Ummah Technology Mission

لَتُبْلَوُنَّ فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۫ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا ۭ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝۱۸۶

(१८६) अवश्य तुम्हारे धन और आत्माओं में तुम्हारी परीक्षा ली जायेगी।[1] और अवश्य तुम्हें उन लोगों की जो तुम से पूर्व किताब दिये गये और मूर्तिपूजकों की बहुत सी दुख देने वाली बातें सुननी पड़ेगीं और यदि तुम धैर्य रखो और आज्ञा का पालन करो, तो अवश्य यह बहुत बड़े साहस का कार्य है।[2]

---

[1]ईमानवालों के ईमान अनुसार परीक्षा लेने का वर्णन है। जैसाकि सूरः *अल-बक़रः* की आयत संख्या १५५ में गुज़र चुका है। इस आयत की व्याख्या में एक घटना का वर्णन आता है कि मुनाफ़िक़ों के मुखिया अब्दुल्लाह बिन उबैय्य ने अभी इस्लाम स्वीकार करने की घोषणा नहीं की थी और बद्र का युद्ध भी नहीं हुआ था कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आदरणीय साद बिन उबादः की बीमारी के समय मिलने के लिए बनी हारिस बिन ख़ज़रज में पधारे। मार्ग में एक स्थान पर यहूदी, मूर्तिपूजक और अब्दुल्लाह बिन उबैय्य आदि बैठे हुए थे। आपकी सवारी से जो धूल उड़ी थी, उसने उससे भी अप्रसन्नता का प्रदर्शन किया। और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ठहर कर उनको इस्लाम धर्म स्वीकार करने का आमन्त्रण भी दिया। जिस पर अब्दुल्लाह बिन उबैय्य ने अपशब्द भी कहे। वहाँ कुछ मुसलमान भी थे। उन्होंने इसके विपरीत आपकी प्रशंसा की, निकट था कि उनके मध्य झगड़ा हो जाये। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन सबको शान्त कराया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आदरणीय साद के पास पहुँचे तो यह घटना सुनायी, जिस पर उन्होंने यह कहा कि अब्दुल्लाह बिन उबैय्य यह बातें इसलिए करता है कि आपके मदीना आने के पूर्व, यहाँ के निवासियों को उसका राजतिलक करना था, आप के आने के कारण उसकी सरदारी का यह सुन्दर स्वप्न अधूरा रह गया, जिसका उसे अति दुख है और उसकी यह बातें उसकी इसी कटुता तथा शत्रुता का प्रदर्शन हैं इसलिए उसे क्षमा करने से ही काम लें। (सहीह बुख़ारी किताबुल तफ़सीर संक्षिप्त)

[2]अहले किताब से तात्पर्य यहूदी तथा ईसाई हैं। यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध अपशब्द तथा दुष्प्रचार करते थे। यही दशा अरब के मूर्तिपूजकों की थी। इनके अतिरिक्त मदीने में आने के पश्चात मुनाफ़िक़ विशेषरूप से उनका मुखिया अब्दुल्लाह बिन उबैय्य भी आप की मान-मर्यादा पर प्रहार करता था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदीना आने से पूर्व मदीनावासी उसे अपना सरदार बनाने वाले थे, और उसके राजतिलक की तैयारी पूर्ण हो चुकी थी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने से उसका यह स्वप्न टूट गया, जिसका उसे अत्यधिक दुख था अतएव प्रतिशोध की भावना के कारण वह आप के विरुद्ध अपमान और निन्दा करने का कोई अवसर हाथ से

The Ummah Technology Mission

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُونَهُ فَنَبَذُوهُ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُونَ ﴿١٨٧﴾

(१८७) और जब अल्लाह (तआला) ने अहले किताब से वचन लिया कि तुम उसे सभी लोगों से अवश्य वर्णन करोगे और उसे छिपाओगे नहीं, तो फिर भी उन लोगों ने उस वचन को पीठ पीछे डाल दिया और उसे बहुत कम मूल्य पर बेच डाला। उनका यह व्यापार बहुत बुरा है।[1]

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا أَتَوْا وَّيُحِبُّونَ أَن يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٨٨﴾

(१८८) वह लोग जो अपने करतूतों पर प्रसन्न हैं और चाहते हैं कि जो उन्होंने नहीं किया उस पर भी उनकी प्रशंसा की जाये। आप उन्हें यातना से मुक्त न समझिये। उनके लिए तो कष्टदायी यातनायें हैं।[2]

नहीं जाने देता था (जैसाकि बुख़ारी के संदर्भ से इसकी आवश्यक विवरण पिछले स्तम्भ में गुजर चुका है)। इस स्थिति में मुसलमानों को क्षमा करने तथा धैर्य रखने की शिक्षा दी जा रही है। जिससे ज्ञात हुआ कि इस्लाम का आमन्त्रण देने वालों को दुखों और कठिनाई का होना इस सत्यमार्ग के अटल परिस्थिति में से है और इसका इलाज धैर्य अल्लाह के लिए, दृढ़ता के लिए अल्लाह की सहायता की कामना और अल्लाह की ओर सम्बोधित होने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। (इब्ने कसीर)

[1]इसमें अहले किताब को रोका तथा निन्दा की जा रही है कि उनसे अल्लाह तआला ने जो वचन लिया था कि अल्लाह की किताब (तौरात और इंजील) में जो बातें लिखी हैं और अन्तिम नबी के जिन गुणों का वर्णन है, उन्हें लोगों के समक्ष वर्णन करें और छिपायेंगे नहीं परन्तु उन्होंने थोड़े से सांसारिक लाभ के लिये अल्लाह तआला को दिये गये वचन भंग कर दिया अर्थात यह ज्ञानियों को चेतावनी दी जा रही है कि उनके पास जो लाभदायक ज्ञान हैं, जिससे लोगों के विश्वास तथा कर्मों का सुधार हो सकता है, वह लोगों तक अवश्य पहुँचाना चाहिए। सांसारिक लोभ और लाभ के लिये उनको छिपाना बहुत बड़ा अपराध है। प्रलय के दिन ऐसे लोगों को आग की लगाम पहनायी जायेगी। (जैसाकि हदीस में है)

[2]इसमें ऐसे लोगों को कठोर चेतावनी दी जा रही है जो अपने सामायिक पराक्रमों पर ही प्रसन्न नहीं होते, बल्कि यह भी चाहते हैं कि उनके खाते में वह कारनामे भी लिखे अथवा प्रकाशित किये जायें जो उन्होंने नहीं किये हैं। यह रोग आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग के कुछ लोगों में था जिसके कारण यह आयत उतरी। उसी जैसा रोग वर्तमान

The Ummah Technology Mission

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۱۸۹﴾

(१८९) और आकाशों और धरती का मालिक अल्लाह (तआला) ही है और अल्लाह (तआला) हर चीज़ पर प्रभुत्व रखता है।

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّیْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۰﴾

(१९०) नि:संदेह आकाशों और धरती के बनाने में और रात-दिन के हेर-फेर में अवश्य बुद्धिमानों के लिए निशानियाँ हैं।[1]

الَّذِیْنَ یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِیٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَیَتَفَكَّرُوْنَ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۹۱﴾

(१९१) जो अल्लाह (तआला) की याद खड़े और बैठे तथा अपनी करवटों पर लेटे हुए करते हैं और आकाशों तथा धरती की सृष्टि पर विचार करते हैं (और कहते हैं) कि हे हमारे प्रभु! तूने यह सब बिना लाभ के नहीं बनाया।

युग के खुशामद पसन्द लोगों तथा प्रचार एवं हथकंडों द्वारा बने नेताओं में भी सामान्य है। व्यान के आगामी क्रम से यह भी विदित होता है कि यहूदी अल्लाह की किताब के बदलने तथा घटाने-बढ़ाने के अपराधी थे। परन्तु वह अपने इन करतूतों से प्रसन्न होते थे। यही दशा आजकल के झूठे गिरोहों का भी है। वह भी लोगों को कुपथ करके तथा भटका कर अल्लाह की आयतों के अर्थ में परिवर्तन करके एवं धोखा देकर प्रसन्न होते हैं और दावा यह करते हैं कि वही सत्य पर हैं और यह कि उनकी धूर्तता एवं छलावे पर उनकी वाह वाह की जाये।

[1]अर्थात जो लोग धरती और आकाश की रचना, विश्व के अन्य भेदों एवं रहस्य पर विचार करते हैं उन्हें जगत के रचयिता एवं वास्तविक शासक का ज्ञान हो जाता है। और वह समझ जाते है कि इतने विशाल जगत की व्यवस्था में तनिक भी बाधा उत्पन्न नहीं होती, निश्चय उसके पीछे कोई एक चालक तथा व्यवस्थापक है और वह अल्लाह है। आगे इन्हीं बुद्धिमानों का वर्णन है कि वे उठते-बैठते और करवट लेटे अल्लाह को याद करते हैं। हदीस में आता है कि ﴿إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ﴾ से लेकर सूरह के अन्त तक यह आयतें नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को जब तहज्जुद की नमाज के लिए उठते, तो पढ़ते और उसके बाद वज़ू करते। (सहीह बुखारी, किताबुत तफ़सीर सहीह मुस्लिम किताबुस्सलात ३/१८२)

The Ummah Technology Mission

तू पवित्र है, बस तू हमें आग की यातना से बचा ले।[1]

(१९२) ऐ हमारे पालनहार ! तू जिसे नरक में डाले नि:सन्देह तूने उसे अपमानित किया और अत्याचारियों का सहायक कोई नहीं है।

رَبَّنَآ إِنَّكَ مَن تُدۡخِلِ ٱلنَّارَ فَقَدۡ أَخۡزَيۡتَهُۥۖ وَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنۡ أَنصَارٖ ١٩٢

(१९३) हे हमारे प्रभु ! हमने सुना कि उद्घोषक ईमान की ओर पुकार रहा है कि लोगो ! अपने प्रभु पर ईमान लाओ, और हम ईमान लाये। हे हमारे प्रभु ! अब तो हमारे पाप क्षमा कर दे और हमारी बुराईयाँ हम से दूर कर दे और हमारी मृत्यु सदाचारियों के साथ कर।

رَبَّنَآ إِنَّنَا سَمِعۡنَا مُنَادِيٗا يُنَادِي لِلۡإِيمَٰنِ أَنۡ ءَامِنُواْ بِرَبِّكُمۡ فَـَٔامَنَّاۚ رَبَّنَا فَٱغۡفِرۡ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرۡ عَنَّا سَيِّـَٔاتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ ٱلۡأَبۡرَارِ ١٩٣

---

[1]इन दस आतयों में से पहली आयत में अल्लाह तआला ने अपने बल एवं सामर्थ्य के कुछ लक्षणों की चर्चा की है और फ़रमाया कि यह निशानियाँ अवश्य हैं, परन्तु किनके लिए ? बुद्धिमान और ज्ञानियों के लिए अर्थात इसका तात्पर्य यह हुआ कि रचना के चमत्कार तथा उसके सामर्थ्य को देखकर भी जिसे ईश्वर (अल्लाह) का ज्ञान न हो वह ज्ञानहीन है परन्तु यह खेद का विषय है कि इस्लामी दुनिया में उसी को ज्ञानी माना जाता है, जो अल्लाह तआला के विषय में शंका का शिकार हो فإنا لله و إنا إليه راجعون दूसरी आयत में ज्ञानियों को अल्लाह की याद से अभिरूचि तथा आकाश एवं पृथ्वी की रचना में सोच-विचार का वर्णन है, जैसाकि हदीस में भी आया है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया खड़े होकर नमाज़ पढ़ो यदि खड़े नही हो सकते, तो बैठकर पढ़ो, यदि बैठकर नहीं पढ़ सकते, तो लेट कर नमाज़ पढ़ो। (सहीह बुख़ारी किताबुस्सलात) ऐसे लोग जो अल्लाह की हर समय याद करते और रखते हैं और आकाश और धरती की रचना पर ध्यान-विचार करते हैं, जिनसे रचयिता की महिमा, शक्ति, उसका ज्ञान तथा उसकी कृपा एवं प्रभुत्व की सही दिशा उन्हें प्राप्त होती है। तो वह पुकार उठते हैं कि सृष्टि के प्रभु ने यह सृष्टि यूँ ही अकारण नहीं बनायी है, बल्कि इसका उद्देश्य भक्तों की परीक्षा लेना है। जो सफल हो गया उसके लिए अनन्तकाल तक के लिए स्वर्ग की सुख-सुविधा है और जो असफल हो गया उसे अग्नि की यातना है। इसलिए वह आग की यातना से बचने की प्रार्थना भी करते हैं। इसके बाद वाली तीन आयतों में भी क्षमा-याचना तथा प्रलय के दिन के अपमान से बचने की प्रार्थनायें हैं।

The Ummah Technology Mission

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿۱۹۴﴾

(१९४) हे हमारे प्रभु ! हमें वह प्रदान कर जिसका वायदा तूने हमसे अपने रसूलों के मुख से किया है और हमें क़ियामत के दिन अपमानित न कर, नि:सन्देह तू वायदा के विपरीत नहीं करता।

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّيْ لَاۤ اُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿۱۹۵﴾

(१९५) अत:उनके पालनहार ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की।[1] कि तुममें से किसी कार्यकर्त्ता के कर्मों को चाहे वह पुरुष हो अथवा स्त्री में कदापि विफल नहीं करता।[2] तुम आपस में एक-दूसरे से हो।[3] इसलिए वह लोग जिन्होंने हिजरत (धर्म के कारण स्थानान्तरण) किया और अपने घरों से निकाल दिये गये और जिन्हें मेरे मार्ग में कष्ट दिया गया और जिन्होंने धर्मयुद्ध किया और शहीद किये गये अवश्य मैं उनकी बुराईयाँ उनसे दूर कर दूँगा और अवश्य उनको उस स्वर्ग में ले जाऊँगा, जिनके नीचे

---

[1] فاستجاب यहाँ أجاب अर्थात स्वीकार किया के अर्थ में प्रयोग हुआ है।

[2]पुरुष हो अथवा स्त्री का वर्णन इसलिये कर दिया गया है कि इस्लाम ने कुछ कर्मों में पुरुष-स्त्री के मध्य उनके एक-दूसरे से प्राकृतिक भिन्नता और गुणों के आधार पर जो अन्तर किया है। जैसे संरक्षण तथा अधिपत्य में, जीविका उर्पाजन में धर्मयुद्ध में भाग लेने में और उत्तराधिकार में आधा भाग मिलने में। इससे यह अर्थ न निकाल लिया जाये कि पुण्य कर्मों के प्रत्युपकार में भी शायद पुरुष स्त्री में कुछ अन्तर किया जायेगा। नहीं, ऐसा नहीं होगा। प्रत्येक का समान बदला मिलेगा, वही पुण्य यदि एक स्त्री करेगी तो उसको भी वही बदला मिलेगा।

[3]यह वाक्य अलग है और इसका अभिप्राय उपरोक्त बिन्दु का वर्णन है अर्थात बदला एवं आज्ञापालन में तुम नर-नारी एक ही हो अर्थात एक समान हो, कुछ हदीसो में है कि आदरणीया उम्मे सलमा ने एक बार कहा कि हे अल्लाह के रसूल अल्लाह ने हिजरत (धर्म के लिये प्रवास) के विषय में नारियों का नाम नहीं लिया, उस पर यह आयत उतरी (तफ़सीर तबरी, इब्ने कसीर, तथा फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

नहरें बह रही हैं, यह है पुण्य अल्लाह (तआला) की ओर से और अल्लाह (तआला) ही के पास श्रेष्ठ प्रत्युपकार है।

لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِي الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾

(१९६) नगरों में काफ़िरों की यातायात तुझे धोखे में न डाल दे।[1]

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۖ ثُمَّ مَأْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾

(१९७) यह तो बहुत ही थोड़ा लाभ है।[2] उसके पश्चात उनका ठिकाना तो नरक है और वह बुरा स्थान है।

---

[1]यद्यपि सम्बोधित नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किया गया है, परन्तु सम्बोधित पूरी उम्मत है। शहरों में यातायात से तात्पर्य व्यापार के लिए एक शहर से दूसरे शहर अथवा एक देश से दूसरे देश जाना है। यह व्यापारिक यात्रा सांसारिक साधनों की अधिकता तथा व्यापारिक क्षेत्र के विस्तार का प्रमाण है अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यह सब अस्थाई तथा कुछ दिनों का लाभ है। इससे ईमानवालों को धोखे में नहीं पड़ना चाहिए। वास्तविक परिणाम को दृष्टि में रखना चाहिए, जो ईमान के न होने के कारण नरक की स्थाई यातना है। जिसमें यह सांसारिक धन-साधन से परिपूर्ण काफ़िर पड़े होंगे। इस विषय को अन्य कई स्थानों पर भी वर्णन किया गया है। जैसे-

﴿ مَا يُجَٰدِلُ فِىٓ ءَايَٰتِ ٱللَّهِ إِلَّا ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ فَلَا يَغُرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِى ٱلْبِلَٰدِ ﴾

"अल्लाह की आयतों में वही झगड़ते हैं जो काफ़िर हैं, परन्तु उनका शहरों में चलना-फिरना आपको धोखे में न डाल दे।" (*अल-मोमिन-४*)

﴿ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى ٱللَّهِ ٱلْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ۝ مَتَٰعٌ فِى ٱلدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ﴾

"निःसंदेह जो लोग अल्लाह पर मिथ्यारोपण करते हैं वे सफल नहीं होंगे। यह संसार में थोड़ा सा सुख है फिर हमारे पास उनको आना है।" (*यूनुस-६९,७०*)

﴿ نُمَتِّعُهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴾ (*सूरः लुकमान-२४*)

"हम उन्हें अल्प लाभ यहाँ पहुँचायेंगे फिर कठोर यातना की ओर विवश कर देंगे।"

[2]यह दुनिया के साधन ऐश्वर्य तथा सुविधायें प्रत्यक्ष रूप से चाहे जितने अधिक क्यों न हों, वास्वत में थोड़ी सी सामग्री है क्योंकि अन्त में उनको नाश होना है और उनके विनाश से पूर्व वह लोग स्वयं भी नाश हो जायेंगे, जो उनको प्राप्त करने के कारण अल्लाह तआला

The Ummah Technology Mission

لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِّنْ عِندِ اللَّهِ ۗ وَمَا عِندَ اللَّهِ خَيْرٌ لِّلْأَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾

(१९८) परन्तु जो लोग अपने प्रभु से डरते रहे उनके लिए स्वर्ग हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, उनमें वे सदैव रहेंगे। यह अल्लाह की ओर से अतिथि हैं। और पुण्य कार्य करने वालों के लिए अल्लाह (तआला) के पास जो कुछ भी है वह सर्वश्रेष्ठ एवं उत्तम है।[1]

وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِمْ خَاشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٩٩﴾

(१९९) और अवश्य अहले किताब में से भी कुछ लोग ऐसे हैं, जो अल्लाह (तआला) पर ईमान लाते हैं और तुम्हारी ओर जो उतारा गया है और जो उनकी ओर उतारा गया उस पर भी। अल्लाह तआला से डर करते हैं, और अल्लाह (तआला) की आयतों को छोटे-छोटे मूल्यों पर नहीं बेचते।[2] उनका बदला उनके

को भी भूल जाते हैं और हर प्रकार के सामाजिक बन्धनों और अल्लाह की सीमओं का उल्लंघन करते हैं।

[1]उनके विपरीत जो परहेज़गारी तथा अल्लाह के भय से जीवन व्यतीत करके अल्लाह के सदन में उपस्थित होंगे यद्यपि उनके पास अल्लाह को भूल जाने वालों की तरह धन की अधिकता तथा जीवन सामग्री उस प्रकार उपलब्ध न होंगी, परन्तु वह अल्लाह के अतिथि होंगे जो सम्पूर्ण सृष्टि का स्रष्टा तथा स्वामी है। और वहाँ उन को जो बदला मिलेगा, वह उससे अत्यधिक होगा जो संसार में काफ़िरों को सामायिक रूप से प्राप्त हुआ था।

[2]इस आयत में अहले किताब के उस गिरोह का वर्णन है, जिन्हें रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके ईमान और ईमान के गुणों का वर्णन करके अल्लाह तआला ने अन्य अहले किताब से उन्हें श्रेष्ठ कर दिया। जिनकी योजना ही इस्लाम, तथा इस्लाम के पैग़म्बर तथा मुसलमानों का विरोध करना था। अल्लाह की आयतों को बदलना तथा छिपाना तथा संसार के आंशिक लाभ के कारण ज्ञान को छुपाना था। अल्लाह तआला ने फ़रमाया यह ईमानवाले अहले किताब ऐसे नहीं हैं, बल्कि यह अल्लाह तआला से डरने वाले हैं। और अल्लाह की आयतों को थोड़े-थोड़े मूल्य पर बेचने वाले नहीं हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि जो विद्वान और ज्ञानी सांसारिक आकांक्षा के कारण अल्लाह की आयतों को बदलते हैं अथवा उनके भावार्थ का वर्णन करने में झूठ बोलते हैं अथवा छिपाते हैं, वह ईमान और अल्लाह के भय से वंचित हैं।

The Ummah Technology Mission

प्रभु के पास है। नि:सन्देह अल्लाह (तआला) शीघ्र ही हिसाब लेने वाला है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱصۡبِرُواْ وَصَابِرُواْ وَرَابِطُواْ وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُونَ ٢٠٠

(२००) ऐ ईमानवालो ! तुम धैर्य रखो।[1] और एक-दूसरे को थामे रखो और धर्मयुद्ध के लिए तैयार रहो ताकि तुम लक्ष्य को पहुँचो।

सूरतुन निसा-४

سُورَةُ ٱلنِّسَآءِ

सूरः *निसा* मदीना में उतरी और इसमें एक सौ छिहत्तर आयतें तथा चौबीस रूकूउ हैं।

हाफ़िज इब्ने कसीर ने लिखा है कि इस आयत में जिन ईमानवालों का वर्णन है उनकी संख्या यहूदियों में दस तक नहीं पहुँचती है परन्तु इसाई बड़ी संख्या में मुसलमान हुए और उन्होंने सत्य धर्म को अपनाया। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[1]धैर्य रखो अर्थात आज्ञाकारियों का पथ अपनाओ और मोह तथा स्वाद को छोड़ने में अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण रखो और इस पर दृढ़ता से स्थाई रखो। مصابرة (صابروا) युद्ध की तीव्रता में शत्रु के सामने डटे रहना, यह धैर्य की अत्याधिक कठिन सीमा है। इसीलिए इसे अलग से वर्णित किया गया है। رابطوا युद्ध के मैदान अथवा युद्ध के मोर्चे पर हर समय चौकन्ना और धर्मयुद्ध के लिए तैयार रहना मुराबत: है। यह भी बड़े साहस और निष्ठा का कार्य है। इसीलिए हदीस में इसकी यह विशेषता वर्णित की गयी है।

«رِبَاطُ يَوْمٍ فِي سَبِيلِ اللهِ خَيرٌ مِّنَ الدُّنْيَا وَمَا عَلَيْهَا».

(सहीह बुख़ारी बाब फ़जले रबाते यौमिन फ़ी सबीलिल्लाह)

"अल्लाह के मार्ग (धर्मयुद्ध) में एक दिन पड़ाव डालना (मोर्चा बन्द होना) दुनिया और उसके सुख से श्रेष्ठ है।"

इसके अतिरिक्त हदीस में है। मकारिह (अर्थात अप्रियता की स्थिति) में पूर्ण वज़ू करने, मस्जिद में अधिक दूर से चलकर जाने और नमाज़ के पश्चात दूसरी नमाज़ की प्रतीक्षा को भी رباط (रबात) कहा गया है। (सहीह मुस्लिम किताबुल तहार:)

सूरतुन-निसा

निसाँ का अर्थ "स्त्रियाँ" है। इस सूर: में स्त्रियों की बहुत सी समस्याओं का वर्णन है इसलिए सूर: *निसाँ* कहा जाता है।

The Ummah Technology Mission

अल्लाह तआला के नाम से प्रारम्भ करता हूँ, जो अति कृपालु तथा अति दयालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

(१) हे लोगों ! अपने उस पालनहार से डरो जिसने तुमको एक जीव से तथा उसी से उसकी पत्नी को रचा [1] और दोनों से बहुत से नर-नारी फैला दिये और उस अल्लाह से डरो जिस नाम पर परस्पर माँगते हो तथा सम्बन्ध विच्छेद[2] से, वस्तुत: अल्लाह तुम पर संरक्षक है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ①

(२) तथा अनाथों को उनका धन दे दो एवं पवित्र के बदले अपवित्र न लो तथा अपने धन में

وَاٰتُوا الْيَتٰمٰٓى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۠ وَلَا تَاْكُلُوْٓا

---

[1] "एक जीव" से तात्पर्य मनुष्य जाति के परम पिता आदरणीय आदम अलैहिस्सलाम हैं। और ﴿وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا﴾ में منها से वही जीव। अर्थात आदम और उनसे उनकी पत्नी आदरणीया हौवा को पैदा किया। आदरणीया हौवा आदरणीया आदम से किस प्रकार पैदा हुई इसमें मतभेद है। आदरणीय इब्ने अब्बास के कथनानुसार आदरणीया हौवा पुरुष (अर्थात आदम) से पैदा हुई अर्थात उनकी बायीं पसली से। एक हदीस में भी कहा गया है।

«إِنَّ الْمَرْأَةَ خُلِقَتْ مِنْ ضِلَعٍ وَإِنَّ أَعْوَجَ شَيْءٍ فِي الضِّلَعِ أَعْلَاهُ»

"स्त्री पसली से पैदा की गयी है और पसली में सबसे टेढ़ी ऊपरी है। यदि तू उसे सीधा करना चाहे, तो तोड़ बैठेगा और यदि तू उससे लाभ उठाना चाहे, टेढ़ेपन से ही लाभ उठा सकता है।"

(सहीह बुख़ारी, किताब बदऊल ख़ल्क़, सहीह मुस्लिम, किताबुल रिदाअ)

कुछ आलिमों ने इस हदीस से अर्थ निकालते हुए आदरणीय इब्ने अब्बास से सम्बन्धित विचार का समर्थन किया है। क़ुरआन करीम के शब्द خلق منها से इसी विचार का समर्थन होता है। आदरणीया हौवा का जन्म इसी एक जीव से हुआ जिसे आदम कहा जाता है।

[2] والأرحام का अर्थ है सम्बन्धों को तोड़ने से बचो। رحم-أرحام का बहुवचन है। तात्पर्य सम्बन्ध है, जो मातृ गर्भाशय के आधार पर बनते हैं इससे विवाह योग्य तथा विवाह के अयोग्य (निकट सम्बन्धी) दोनों सम्बन्ध तात्पर्य है। सम्बन्धों का तोड़ना महापाप है। हदीस में निकट सम्बन्धियों को हर अवस्था में सम्बन्ध स्थापित करने तथा उनके अधिकारों को अदा करने पर विशेष बल दिया गया है। जिसे संबन्ध जोड़ना कहा जाता है।

The Ummah Technology Mission

مिलाकर उनका धन न खाओ, वस्तुत: यह घोर पाप है।[1]

اَمْوَالَهُمْ اِلٰٓى اَمْوَالِكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ۝٢

(३) यदि तुम्हें भय हो कि अनाथ लड़कियों से विवाह करके तुम न्याय न कर सकोगे तो और स्त्रियों में जो तुम्हें अच्छी लगें, तुम उनसे विवाह कर लो, दो-दो, तीन-तीन, चार-चार परन्तु यदि समानता न रखने का भय है, तो एक ही काफ़ी है अथवा तुम्हारे स्वामित्व की दासियाँ[2] यह अधिक निकट है कि (ऐसा करने

وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِى الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَلَّا تَعُوْلُوْا ۝٣

---

[1]ये अनाथ जब युवा तथा वयस्क हो जायें, तो उनका धन उन्हें वापस कर दो। अपवित्र से घटिया तथा पवित्र से अच्छी चीज़ो का अर्थ है। अर्थात ऐसा न करो कि उनके माल से अच्छी चीज़े ले लो। और मात्र गणना पूरा करने कि लिए घटिया चीज़े इनके बदले रख दो। इन घटिया चीज़ों को अपवित्र और अच्छी चीज़ों को पवित्र कह कर इस ओर संकेत किया गया है कि इस प्रकार बदला गया माल वास्तव में पवित्र और उचित है, परन्तु मात्र तुम्हारी बेईमानी के कारण अपवित्र हो गया और अब पवित्र नहीं रहा तुम्हारे लिये अपवित्र और वर्जित हो गया। इस प्रकार बेईमानी से उनके माल में अपना माल मिलाकर खाना भी मना है, परन्तु यदि उद्देश्य भलाई है तो उनके माल को अपने माल में मिलाना उचित है।

[2]इसकी व्याख्या के लिए आदरणीय आयशा (रज़ी अल्लाह अन्हा) का कथन है कि धनवान एवं सुन्दर अनाथ बालिका यदि किसी संरक्षक के संरक्षण में होती और वह उसके धन तथा सुन्दरता के कारण उससे विवाह कर लेता परन्तु उसकी दूसरी पत्नियों की अपेक्षा उसको पूर्ण महर का अधिकार नहीं देता। अल्लाह तआला ने इस अत्याचार से रोका है कि यदि तुम अनाथ बालिकायों के साथ न्याय न कर सको तो तुम उनसे विवाह ही न करो तुम्हारे लिए अन्य स्त्रियों से विवाह करने का मार्ग खुला है। (सहीह बुख़ारी किताबुत तफ़सीर) बल्कि एक के अतिरिक्त दो से, तीन से, यहाँ तक कि चार स्त्रियों तक से तुम विवाह कर सकते हो, परन्तु इस अनुबन्ध के साथ कि उनके मध्य न्याय कर सकोगे। अथवा एक ही से विवाह करो अथवा उसके अतिरिक्त दासी पर ही निर्वाह करो। इस आयत से ज्ञात हुआ कि एक पुरुष (यदि उसे आवश्यकता है) तो एक ही समय में चार स्त्रियों से विवाह कर सकता है परन्तु इससे अधिक नहीं, जैसाकि सहीह हदीस में इसको और अधिक विस्तार तथा स्पष्ट कर दिया गया है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो चार से अधिक विवाह किये, वह

The Ummah Technology Mission

से अन्याय तथा) एक ओर झुक जाने से बचो।[1]

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ؕ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَیْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِیْٓـًٔا مَّرِیْٓـًٔا ۝۴

(४) और स्त्रियों को उनके महर (जो राशि विवाह के लिए मान्य हो) इच्छानुसार दे दो। और यदि वह स्वयं अपनी इच्छा से कुछ महर छोड़ दें, तो उसे अपनी इच्छानुसार खाओ पिओ।

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِیْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِیٰمًا وَّارْزُقُوْهُمْ فِیْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝۵

(५) बुद्धिहीनों को अपना धन जिसे अल्लाह ने तुम्हारा सहारा बनाया है न दो और उनमें से उन्हें खिलाओ और पहनाओ तथा उनसे कोमल बचन बोलो।

وَابْتَلُوا الْیَتٰمٰی حَتّٰۤی اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَاِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْۤا اِلَیْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَاْكُلُوْهَاۤ اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ یَّكْبَرُوْا ؕ وَمَنْ كَانَ غَنِیًّا فَلْیَسْتَعْفِفْ ۚ

(६) और अनाथों को उनके वयस्क हो जाने तक सुधारते और परीक्षण करते रहो, फिर यदि तुम उनमें सुधार देखो तो उन्हें उनके माल सौंप दो, और उनके बड़े हो जाने के भय से उनके माल को शीघ्र-अतिशीघ्र व्यर्थ न खाओ,

---

आप की विशेषताओं में से है, जिस पर किसी उम्मती को अनुकरण करना उचित नहीं (इब्ने कसीर)

[1]अर्थात एक ही स्त्री से विवाह करने में भलाई है क्योंकि एक से अधिक पत्नियाँ रखने की अवस्था में सभी के साथ न्याय करना कठिन है। जिसकी ओर हार्दिक प्रेम अधिक होगा उसी की ओर जीवन-सामग्री उपलब्ध करने में अधिक ध्यान होगा, इस प्रकार पत्नियों के मध्य न्याय करने में असक्षम होगा और अल्लाह के यहाँ अपराधी होगा। क़ुरआन ने इस वास्तविकता को दूसरे स्थान पर अति स्पष्ट रूप से इस प्रकार वर्णन किया है।

﴿ وَلَن تَسْتَطِيعُوٓاْ أَن تَعْدِلُواْ بَيْنَ ٱلنِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ ۖ فَلَا تَمِيلُواْ كُلَّ ٱلْمَيْلِ فَتَذَرُوهَا كَٱلْمُعَلَّقَةِ ﴾

"और तुम कदापि इस बात की शक्ति न रखोगे कि पत्नियों के मध्य न्याय रख सको, यद्यपि तुम इच्छा रखो (तो यह अवश्य करो) कि एक ओर न झुक जाओ और अन्य पत्नियों को अधर पर लटका दो।" (सूरः *निसा*-१२९)

इससे ज्ञात हुआ कि एक से अधिक विवाह और पत्नियों के साथ न्याय न करना ग़लत है और अत्यन्त भयानक भी।

The Ummah Technology Mission

وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ۝٦

धनवानों को चाहिए कि उनके माल से बचते रहें, यदि निर्धन हों तोनियमानुसार खा लो, फिर जब उन्हें उनके माल सौंपो तोसाक्षी बना लो, तथा लेखा-जोखा के लिये अल्लाह काफ़ी है ।[1]

لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۪ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ؕ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ۝٧

(७) माता-पिता तथा समीपवर्ती संबन्धियों की सम्पत्ति में पुरुषों का भाग है और स्त्रियों का भी (जो धन-सम्पत्ति माता-पिता और समीपवर्ती सम्बन्धी छोड़ कर मरें) चाहे वह धन कम हो अथवा अधिक (उसमें) भाग निर्धारित किया हुआ है ।[2]

---

[1]अनाथों के माल के विषय में आवश्यक निर्देश देने के पश्चात यह फ़रमाने से तात्पर्य यह है कि जब अनाथ का माल तुम्हारे पास रहा, तुमने उसकी किस प्रकार रक्षा की और जब उनका माल उनको सौंप दिया, तो उसमें किसी प्रकार कमी अथवा अधिकता अथवा किसी प्रकार का परिवर्तन तो नहीं किया। सामान्य लोगों को तुम्हारी ईमानदारी अथवा बेईमानी का शायद पता न चले परन्तु अल्लाह तआला से कोई बात छुपी नहीं हुई है। वह नि:संदेह जब तुम उसके दरबार में जाओगे तो तुमसे हिसाब ले लेगा। इसीलिए हदीस में आता है कि यह बहुत ज़िम्मेदारी का कार्य है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू ज़र से फ़रमाया, अबू ज़र ! मै तुम्हें क्षीण देखता हूँ, और तुम्हारे लिए वह चीज़ पसन्द करता हूँ जो अपने लिए पसन्द करता हूँ। तुम दो आदमियों पर भी अमीर (नायक) न बनना और किसी अनाथ के माल का संरक्षक न बनना। (सहीह मुस्लिम, किताबुल इमार:)

[2]इस्लाम से पूर्व यह भी अत्याचार था कि स्त्रियों और छोटे बच्चों को उत्तराधिकार के रूप में कुछ भी भाग नहीं दिया जाता था, केवल बड़े पुत्र जो लड़ने योग्य होते थे,-वही सारी सम्पत्ति के उत्तराधिकारी माने जाते थे। इस आयत में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि पुरुषों की तरह स्त्रियाँ, और बच्चे-बच्चियाँ भी अपने माता-पिता और सम्बन्धियों के उत्तराधिकारी होंगी। उन्हें वंचित नहीं किया जायेगा। परन्तु यह अलग बात है कि लड़की का भाग लड़के के भाग का आधा है (जैसा कि तीन आयतों के बाद वर्णन है) यह स्त्रियों पर अत्याचार नहीं है, न उसका अपमान है, बल्कि इस्लाम का यह उत्तराधिकार का नियम न्यायपूर्ण तथा तर्क संगत है क्योंकि इस्लाम ने स्त्री को जीविका उपार्जन के कर्त्तव्य से अलग रखा है। और पुरुषों को उसका संरक्षक बनाया है। इसके अतिरिक्त स्त्री के पास महर (स्त्री धन) के रूप में धन आता है, जिसको एक पुरुष ही अदा करता है। इस प्रकार पुरुष पर स्त्री के अपेक्षा कई आर्थिक प्रभार आते हैं, इसलिए यदि स्त्री का भाग आधा के

The Ummah Technology Mission

وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُوا الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينُ فَارْزُقُوهُم مِّنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ﴿٨﴾

(८) और जब बँटवारे के समय सम्बन्धी तथा अनाथ एवं निर्धन आ जायें, तो तुम उसमें से थोड़ा बहुत उन्हें भी दे दो और उनसे कोमलता से बोलो।[1]

وَلْيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكُوا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعَافًا خَافُوا عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ﴿٩﴾

(९) और चाहिए कि वह इस बात से डरें कि यदि वह अपने पीछे (नन्हें-नन्हें) नवजात शिशु छोड़ जाते, जिनके नष्ट हो जाने का भय रहता है (तो उनका प्रेम क्या होता), तो बस अल्लाह तआला से डर कर सन्तुलित बात कहा करें।[2]

बजाय पुरुष के बराबर होता, तो यह पुरुष पर अत्याचार होता। परन्तु अल्लाह तआला ने किसी पर अत्याचार नहीं किया है। क्योंकि वह न्याय करने वाला है और बुद्धिमत्तापूर्ण भी है।

[1]इसे कुछ विद्वानों ने उत्तराधिकार की आयत से निरस्त कहा है, परन्तु उचित बात यह है कि यह निरस्त आदेश नहीं है। बल्कि एक विशेष नैतिक निर्देश है कि सहायता योग्य सम्बन्धी जिनका उत्तराधिकार में कोई भाग न हो, उन्हें भी बँटवारे के समय कुछ दे दो। इसके अतिरिक्त उनसे प्रेम पूर्वक कोमल बात कहो। धन को आते देख कर कारून और फ़िरऔन न बनो।

[2]कुछ व्याख्याकारों के निकट इसका संकेत उन लोगों की ओर किया जा रहा है, जिनके लिए वसीयत की गयी है। उनको शिक्षा दी जा रही है कि उनके संरक्षण के अधीन जो अनाथ हैं, उनके साथ ऐसा व्यवहार करें जैसा वह अपने मरने के बाद अपने बच्चों के साथ पसन्द करते हैं कुछ के निकट इससे साधारण लोगों को सम्बोधित करके कहा गया है कि वह अनाथों और अन्य छोटे बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार करें। यह न देखें कि वह उनकी संरक्षण में हैं अथवा नहीं। कुछ के निकट उनको सम्बोधित किया गया है, जो मृत्यु के निकट व्यक्ति के पास बैठे हों उनका कर्त्तव्य है कि वह मरने वाले को समझायें ताकि वह अल्लाह के अधिकार और आदमियों के अधिकार में आलस्य न करे और वसीयत में वह इन दोनों बातों को ध्यान में रखे। यदि वह अधिक धनवान हो, तो एक तिहाई की वसीयत ऐसे लोगों के लिए करे, जो उसके निकट सम्बन्धियों में निर्धन और सहायता के पात्र हों अथवा किसी धार्मिक कार्य अथवा संस्था पर व्यय करने की वसीयत करे, ताकि यह माल उसके परलोक का अच्छा साथी बन सके। और यदि वह धनवान न हो तो उसे एक तिहाई माल में वसीयत करने से रोका जाये ताकि उसके घर वाले उसके बाद निर्धनता के कगार पर न पहुँच जायें। इसी प्रकार कोई अपने उत्तराधिकारियों में से किसी को वंचित करना

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ﴿١٠﴾

(१०) जो लोग अनर्थ अत्याचार से अनाथों का माल खा जाते हैं, वह अपने पेट में आग ही भर रहे है और वह नरक में जायेंगे।

يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ ۖ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنْثَيَيْنِ ۚ فَإِنْ كُنَّ نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۖ وَإِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۚ وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ

(११) अल्लाह तआला तुम्हें तुम्हारी सन्तान के विषय में आदेश देता है कि एक पुत्र का भाग दो पुत्रियों के समान है।[1] यदि केवल पुत्रियाँ हों और दो से अधिक हों, तो उन्हें उत्तराधिकार के माल में से दो तिहाई मिलेगा।[2] और यदि एक ही लड़की हो तो उसके लिए आधा है और मृतक के माता-पिता में से प्रत्येक के लिए

चाहे तो उसे रोका जाये और यह ध्यान रखा जाये कि यदि उनके बाद उनके बच्चे भूख व निर्धनता को पहुँचें तो उससे उस पर क्या गुज़रेगी। इस व्याख्या की परिधि में सभी वह सम्बोधित लोग आ गये जिनका वर्णन ऊपर हो चुका है। (तफ़सीर क़ुर्तुबी तथा फ़तहुल क़दीर)

[1]इसके गुण तथा तर्क संगत होने का वर्णन हम पहले कर आये हैं उत्तराधिकारी बालक, बालिका दोनों हों तो फिर विधिवत विभाजन होंगा। बालक, बालिका छोटे हों अथवा बड़े सब उत्तराधिकारी होंगे। यहाँ तक कि भ्रुण भी उत्तराधिकारी होगा। हाँ काफ़िर संतान उत्तराधिकारी नहीं होगी।

[2]अर्थात पुत्र न हो तो धन का दो तिहाई (२/३) दो से अधिक पुत्रियों को दिये जायेंगे और यदि दो ही पुत्रियाँ हों तो भी उन्हें दो तिहाई (२/३) भाग दिया जायेगा जैसाकि हदीस में आता है कि साद बिन रबीअ "ओहद" मे शहीद हो गये। उनकी दो पुत्रियाँ थीं, किन्तु साद के पूरे धन पर उनके एक भाई ने अधिकार कर लिया, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके चचा से दो तिहाई (२/३) उनको दिलाया (त्रिमिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा, किताबुल फ़राईद) इसके सिवाये *सूरः निसा* के अन्त में बताया गया है कि यदि मृत की उत्तराधिकारी दो बहनें हों तो दो तिहाई (२/३) धन की उत्तराधिकरी होंगी तो फिर दो पुत्रियाँ दो तिहाई (२\३) धन की अधिक उत्तराधिकारी होंगी। जिस प्रकार दो बहनों से अधिक होने की दशा में उन्हें दो से अधिक पुत्रियों के नियमाधीन रख गया है, (फ़तहुल क़दीर) सारांश यह हुआ कि दो या दो से अधिक पुत्रियाँ हों तो तरका (छोड़े धन) में दो तिहाई पुत्रियों का भाग होगा, शेष धन असबा (वह उत्तराधिकारी जिसका भाग निर्धारित नहीं है) में विभाजित होगा।

The Ummah Technology Mission

إِنْ كَانَ لَهُ وَلَدٌ ۚ فَإِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُ
وَلَدٌ وَّ وَرِثَهُ أَبَوٰهُ فَلِأُمِّهِ
الثُّلُثُ ۚ فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ
السُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْ
بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۗ ءَابَآؤُكُمْ وَأَبْنَآؤُكُمْ
لَا تَدْرُوْنَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ
نَفْعًا ۚ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ
كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝

उसके छोड़े हुये माल का छठाँ भाग है, यदि उस (मृतक) की सन्तान हो।[1] यदि सन्तान न हो, और माता-पिता उत्तराधिकारी हों, तो फिर उसकी माँ के लिए तीसरा भाग है।[2] हाँ, यदि मृतक के कई भाई हों, तो फिर उसकी माँ का छठाँ भाग है।[3] यह भाग उस वसीयत (की पूर्णता) के बाद है जो मरने वाला कर गया हो अथवा ऋण अदा करने के बाद। तुम्हारे पिता हों अथवा तुम्हारे पुत्र तुम्हें नहीं मालूम

---

[1]माता-पिता के भाग की तीन दशाऐं वर्णित की गई हैं, प्रथम यह कि मृत की संतान हों तो माँ-बाप प्रत्येक को मात्र छठवाँ (१/६) भाग मिलेगा, शेष दो तिहाई धन संतान पर वितरित होगा, हाँ यदि मृत की संतान में एक पुत्री हो तो उसमें से मात्र आधा धन (अर्थात छः भागों में से तीन भाग) पुत्री के होंगे और छठाँ भाग (१/६) माँ को तथा १/६ पिता को देने पश्चात (१/६) शेष रह जायेगा और यह शेष (१/६) असबा होकर बाप के भाग में जायेगा अर्थात उसे दो (१/६) मिलेगा एक पिता के रूप में दूसरा अस्बा के रूप में।

[2]यह दूसरी दशा है कि मृत के संतान नहीं है (स्मरणीय है कि पौत्र-पौत्री संतान में सर्वसम्मति से सम्मिलित हैं) इस दशा में माँ के लिये तीसरा भाग (१/३) तथा शेष दो भाग (२/३) पिता को अस्वा स्वरूप मिलेगे, तथा यदि माता-पिता के साथ मृत की पत्नी अथवा मृत स्त्री का पति भी जीवित हो तो उत्तम कथनानुसार पति अथवा पत्नी का भाग (जिसका विवरण आगे आ रहा है) निकाल कर शेष धन में से माँ के लिये एक तिहाई (१/३) एवं शेष (२/३) पिता का होगा।

[3]तीसरी अवस्था यह है कि मृत के भाई-बहिन जीवित हों तो वे भाई-बहिन सगे (ऐनी) अर्थात एक ही माता-पिता की संतान हों अथवा अल्लाती अर्थात पिता एक मातायें विभिन्न हों अथवा पिता विभिन्न माता एक हो अर्थात अख्याफ़ी भाई-बहिन हों। यद्यपि ये भाई-बहिन मृत के पिता के रहते उत्तराधिकार के भागी नहीं होंगे किन्तु माँ के लिये "हजब" भाग कम करने का कारण बन जायेंगे अर्थात यदि एक से अधिक होंगे तो माँ के तिहाई भाग (१/३) को छठवें भाग (१/६) में परिवर्तित कर देंगे, शेष पूरा धन (५/६) पिता के भाग में चला जायेगा परन्तु कोई अन्य उत्तराधिकारी न हो तब, हाफ़िज़ इब्ने कसीर लिखते हैं कि प्रायः धर्म विशेषज्ञों के समीप दो भाई का वही नियम है जो दो से अधिक का वर्णित हुआ है इसका अभिप्राय यह हुआ कि यदि एक भाई-बहिन हो तो माँ का तिहाई भाग रह जायेगा, वह (१/६) में परिवर्तित नहीं होगा। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

कि उनमें से कौन तुम्हें लाभ पहुँचाने में अधिक निकट है ।[1] यह भाग अल्लाह (तआला) की ओर से निर्धारित किये हुए हैं। नि:सन्देह अल्लाह तआला ज्ञाता बुद्धिमान है।

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَإِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِينَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۚ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۗ وَإِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّورَثُ كَلٰلَةً أَوِ امْرَأَةٌ وَّلَهُ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَإِنْ كَانُوْا أَكْثَرَ مِنْ

(१२) और तुम्हारी पत्नियाँ जो कुछ छोड़ कर मरें और उनकी सन्तान न हो तो आधा तुम्हारा है और यदि उनकी सन्तान हो,तो उनके छोड़े हुए माल में से तुम्हारे लिए चौथाई है ।[2] इस वसीयत को अदा करने के बाद जो वह कर गयी हों अथवा ऋण को अदा करने के बाद और जो (छोड़ा) तुम छोड़ जाओ उसमें से उनके लिए चौथाई है, यदि तुम्हारी सन्तान न हो, और यदि तुम्हारी सन्तान हो, तो फिर उन्हें तुम्हारे छोड़े हुए धन में से आठवाँ भाग मिलेगा ।[3] उस वसीयत के पश्चात जो तुम कर गये हो और ऋण को अदा करने के बाद । और जिनका उत्तराधिकार लिया जाता है, पुरुष अथवा स्त्री कलाल: हो (अर्थात

---

[1]अत: तुम अपने प्रबोधानुसार उत्तराधिकार का विभाजन न करो वरन अल्लाह के आदेशानुसार जिसका जितना भाग निर्धारित है वह उन्हें दो।

[2]संतान के न होने की दशा में पुत्र की संतान अर्थात पौत्र भी संतान के समतुल्य हैं इस पर मुसलमान समुदाय की सहमति है, (फ़तहुल क़दीर तथा इब्ने कसीर) इसी प्रकार मृत पति की संतान चाहे वह उसकी उत्तराधिकारी वर्तमान पत्नी से हो अथवा किसी अन्य पत्नी से, इसी प्रकार मृत पत्नी की संतान चाहे उसके वर्तमान पति से हो अथवा पूर्व के किसी पति से।

[3]पत्नी यदि एक हो अथवा अनेक हों चौथा या आठवाँ भाग मिलेगा यही भाग उनमें विभाजित होगा प्रत्येक को चौथाई (१/४) अथवा आठवाँ (१/८) भाग नहीं मिलेगा यह सर्वसम्मति नियम है।

The Ummah Technology Mission

ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَآءُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۲﴾

उसका पिता अथवा पुत्र न हो) [1] तथा उसका एक भाई अथवा एक बहन हो।[2] तो उनमें से प्रत्येक का छठाँ भाग है तथा उससे अधिक हो तो एक तिहाई में सभी सम्मिलित हैं।[3]

---

[1]कलाल: से तात्पर्य वह मृत है जिसका पिता न हो न पुत्र-पुत्री। यह इक्लील से बना है जिसका अर्थ ऐसी वस्तु है जो सिर को उसके किनारों से घेर ले, कलाल: को भी कलाल: इसीलिए कहते हैं कि जिसके मूल तथा शाखा में कोई उत्तराधिकारी न हो तथा किनारे एवं आस-पास के उत्तराधिकरी बनें (फ़तहुल क़दीर तथा इब्ने कसीर) यह भी कहा जाता है कि कलाल: का मूल धातु कलल है जिसका अर्थ थक जाना है, मानो उस मृत तक जाते-जाते वंश का क्रम थक गया, तथा अग्रसर न हो सका।

[2]इससे तात्पर्य माँ जाये भाई-बहिन हैं अर्थात जिनकी माँ एक हो पिता अलग-अलग। क्योंकि सगे भाई-बहिन अथवा अल्लाती (विभिन्न माँ तथा एक पिता से) भाई-बहन का भाग उत्तराधिकार में इस प्रकार नहीं है तथा इस का वर्णन इसी सूर: में अन्त में आ रहा है, और यह प्रविधान भी सर्वसम्मति से है (फ़तहुल क़दीर) वास्तव में वंश के लिये "للذكر مثل حظ الانثيين" का नियम चलता है यही कारण है कि पुत्र-पुत्रियों के लिये यहाँ तथा बहन-भाईयों के लिए इस सूर: की अन्तिम आयत प्रत्येक दो में यही नियम है, परन्तु माँ की संतान में चूंकि वंशज भाग नहीं होता इसलिये वहाँ प्रत्येक भाई-बहन को समान भाग दिया जाता है। जो भी स्थिति हो एक भाई को अथवा एक बहन को प्रत्येक को छठवाँ (१/६) भाग मिलेगा।

[3]एक से अधिक होने पर यह सब एक तिहाई (१/३) भाग में साझी होंगे पुरुष-स्त्री में कोई अन्तर नहीं किया जायेगा बिना अन्तर सभी को समान भाग मिलेगा पुरुष हों अथवा स्त्री।

विचारणीय- माँजाये अर्थात अख्याफ़ी भाई कुछ आदेशों में अन्य उत्तराधिकारियों से विभिन्न हैं (१) यह मात्र अपनी माँ के कारण उत्तराधिकारी होते हैं (२) इनके नर-नारी का भाग समान होता है, (३) यह उस समय उत्तराधिकारी होंगे जब मृत कलाल: हो, अत: पिता, दादा, पुत्र तथा पौत्र आदि की उपस्थिति में उत्तराधिकारी नहीं होंगे (४) उनके नर-नारी कितने ही अधिक हों उनका भाग एक तिहाई (१/३) से अधिक नहीं होगा तथा जैसाकि पहले कहा गया है उनको अपने मृत अख्याफ़ी भाई से जो भाग मिलगा उसमें नर-नारी का भाग बराबर होगा यह नहीं कि नर को नारी के दुगुना दिया जाये, आदर्णीय उमर ने अपने शासनकाल में यही निर्णय किया था और इमाम ज़ुहरी कहते हैं कि आदरणीय उमर ने यह निर्णय यथावत उसी समय किया होगा जब उनके पास नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कोई हदीस (कथन) होगी।

The Ummah Technology Mission

उस वसीयत के पश्चात जो कि गयी हो और ऋण के अदा होने के बाद[1] जबकि दूसरों को हानि न पहुँचाई गयी हो।[2] यह निर्धारित किया हुआ अल्लाह (तआला) की ओर से है और अल्लाह (तआला) प्रत्येक बात का जानने वाला और सहनशील है।

(१३) यह सीमायें अल्लाह तआला की निर्धारित सीमायें हैं और जो अल्लाह (तआला) तथा उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की आज्ञा का पालन करेगा, उसे अल्लाह (तआला) स्वर्ग में ले जायेगा जिनके नीचे नहरें बह रही

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝١٣

---

[1]उत्तराधिकार आदेशों के वर्णन के साथ यह तीसरी बार कहा जा रहा है कि उत्तराधिकार का विभाजन वसीयत (उत्तरदान) पूरा करने तथा ऋण चुकाने के बाद किया जाये, जिससे विदित होता है कि इन दोनों को पूरा करना कितना आवश्यक है, फिर इस पर भी सहमति है कि सर्वप्रथम ऋण चुकता किया जायेगा तथा वसीयत उसके बाद पूरी की जायेगी किन्तु अल्लाह तआला ने तीनों स्थानों पर उत्तरदान की चर्चा ऋण से पहले की है जब कि क्रमानुसार ऋण की चर्चा प्रथम होनी चहिये। इसमें गुण यह है कि ऋण को तो लोग महत्व देते हैं न दें तो भी और जोड़ देते हैं और बलपूर्वक वसूल कर लेते हैं लेकिन उत्तरदान को आवश्यक नहीं समझा जाता और अधिकांश लोग इस विषय में आलस्य से काम लेते हैं अत: उत्तरदान की चर्चा प्रथम करके उसके महत्व का वर्णन कर दिया गया। (रूहुल मआनी)

विचारणीय- यदि पत्नी का स्त्री धन (महर) न दिया गया हो तो वह भी ऋण होगा और उसका भी भुगतान उत्तराधिकार के वितरण से पहले अनिवार्य है और स्त्री का धार्मिक विधि का भाग उसके अतिरिक्त होगा।

[2]इस प्रकार कि वसीयत द्वारा किसी उत्तराधिकारी को वंचित कर दिया जाये अथवा किसी का भाग घटा दिया जाये या यूँ हीं उत्तराधिकारियों को हानि पहुँचाने कि लिये कह दे कि अमुक व्यक्ति से मैंने इतना ऋण लिया है जब कि कुछ भी न लिया हो। मानो हानि पहुँचाने का संबन्ध उत्तराधिकार तथा ऋण दोनों से है तथा दोनों के द्वारा हानि पहुँचाना निषेध एवं महापाप है और ऐसी वसीयत भी अनृत होगी।

The Ummah Technology Mission

हैं, जिनमें वह सदैव निवास करेंगे और यह बहुत बड़ी सफलता है।

وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٤﴾

(१४) और जो व्यक्ति अल्लाह (तआला) की और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की अवज्ञा करे और उसकी निर्धारित सीमाओं को लाँघ जाये उसे वह नरक में डाल देगा, जिसमें वह सदैव रहेगा। ऐसों के लिए ही अपमानित यातना है।

وَالّٰتِيْ يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِي الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا ﴿١٥﴾

(१५) तुम्हारी स्त्रियों में से जो व्यभिचार कार्य करें उन पर अपने में से चार साक्षी उपलब्ध करो, यदि वह गवाही दें तो उन स्त्रियों को घर में बन्दी बना दो, यहाँ तक कि मृत्यु उनकी आयु को पूर्ण कर दे।[1] अथवा अल्लाह तआला उनके लिए कोई अन्य मार्ग निकाले।[2]

---

[1]यह व्यभिचारी नारियों का वह दंड है जो इस्लाम के प्रारम्भिक युग में जब व्यभिचार का दंड निर्धारित नहीं हुआ था सामायिक रूप से निर्धारित की गई थी यहाँ यह भी स्मरणीय है कि अरबी भाषा में एक से दस की गिनती में यह प्रमाणित नियम है कि गिनती पुलिंग होगी तो गणित स्त्रीलिंग था गिनती स्त्रीलिंग हो तो गणित पुलिंग, यहाँ أربعة चार की गिनती स्त्रीलिंग है इसलिये इसका गणित जो यहाँ विचर्चित नहीं तथा लिप्त है निश्चय पुलिंग होगा और वह (पुरुष है) जिससे स्पष्ट रूप से यह विदित होता है कि व्यभिचार के प्रमाण के लिए चार पुरुष गवाहों का होना आवश्यक है। मानो जैसे व्यभिचार का दंड कड़ा निर्धारित किया गया है इसके प्रमाण के लिये भी कड़ा प्रतिबंध लगाया गया है अर्थात चार मुसलमान पुरुष गवाही के बिना जिन्होंने आंखों से देखा है धार्मिक दंड को प्रमाणित करना असंभव है।

[2]इससे व्यभिचार की वह यातना अभिप्राय है जो बाद में निर्धारित की गई अर्थात विवाहित व्यभिचारी पुरुष-स्त्री के लिये रजम अर्थात पत्थरों से मार डालना तथा अविवाहित व्यभिचारी पुरुष-स्त्री के लिये सौ-सौ कोड़े का दंड जिसकी व्याख्या सूरः नूर तथा सहीह हदीसों में वर्णित है।

The Ummah Technology Mission

وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿١٦﴾

(१६) और तुममें से जो दो व्यक्ति ऐसा काम कर लें।[1] उन्हें कष्ट दो।[2] यदि वह क्षमा माँग लें तथा सुधार कर लें, तो उनसे मुहँ फेर लो। नि:सन्देह अल्लाह तआला क्षमा स्वीकार करने वाला तथा दया करने वाला है।

اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧﴾

(१७) अल्लाह तआला केवल उन्हीं लोगों की क्षमा स्वीकार करता है जो अंजान होने के कारण बुराई करें और शीघ्र ही उससे रुक जायें और क्षमा मागें तोअल्लाह (तआला) भी उनकी क्षमा स्वीकार करता है। अल्लाह (तआला) बड़ा ज्ञानी बुद्धिमान है।

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ اِنِّيْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ۗ اُولٰٓئِكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٨﴾

(१८) और उनकी क्षमा स्वीकार नहीं, जो बुराईयाँ करते चले जायें यहाँ तक कि उनमें से किसी की मृत्यु निकट आ जाये, तो कह दें कि मैंने अब क्षमा माँगी।[3] उनकी क्षमा भी स्वीकार नहीं होती जो कुफ्र की स्थिति में मर जायें। यही लोग हैं जिनके लिए हमने कठोर यातना तैयार कर रखी है।

---

[1]कुछ ने इससे वाल मैथुन अर्थ लिया है अर्थात दो पुरुषों का परस्पर संभोग तथा कुछ ने इससे कुँआरी स्त्री-पुरुष अर्थ लिया है और इससे पूर्व की आयत को विवाहित के साथ विशेष किया है तथा कुछ ने इस वचन से तात्पर्य पुरुष-स्त्री लिया है वह कुंआरे हों अथवा विवाहित इब्ने जरीर ने दूसरे अर्थ को प्रधानता दी है। तथा प्रथम आयत में वर्णित दंड को सूर: नूर में वर्णित दंड से निरस्त माना है, (तफ़सीर तबरी)

[2]अर्थात मुख से डाँटना, फटकारना और धिक्कारना अथवा हाथ से कुछ मार पीट देना और अब यह निरस्त है।

[3]इससे स्पष्ट है कि मौत के समय की क्षमा-याचना अस्वीकृत है, जैसा कि हदीस में भी आता है जिसका विवरण *आले इमरान* की आयत ९ में व्यतीत हो चुका।

The Ummah Technology Mission

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرْهًا ۖ وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَا آتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّا أَنْ يَأْتِينَ بِفَاحِشَةٍ مُبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَىٰ أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ﴿١٩﴾

(१९) ऐ ईमानवालो ! तुम्हारे लिये निषेध है कि बलपूर्वक स्त्रियों को उत्तराधिकार के रूप में ले बैठो।[1] उन्हें इसलिए न रोक रखो कि जो तुम ने उन्हें दे रखा है उसमें से कुछ ले लो।[2] हाँ, यह और बात है कि वह कोई खुली बुराई तथा व्यभिचार का व्यवहार करें।[3] उनके साथ अच्छा व्यवहार करो, यद्यपि कि तुम उन्हें पसन्द न करो, परन्तु अति सम्भव है कि तुम एक चीज़ को बुरा जानो, और अल्लाह (तआला) उसमें बहुत सी भलाई कर दे।[4]

---

[1]इस्लाम से पूर्व नारी पर यह अत्याचार भी होता था कि किसी के निधन के उपरान्त उसके घर के लोग उसके धन के समान उसकी पत्नी के भी बलपूर्वक उत्तराधिकारी बन जाते थे तथा स्वयं अपनी इच्छा से उसकी प्रसन्नता के बिना उससे विवाह कर लेते, अथवा अपने भाई, भतीजे से उसका विवाह कर देते यहाँ तक की सौतेला पुत्र अपने मृत पिता की पत्नी से विवाह कर लेता अथवा यदि चाहते तो उसे किसी से विवाह करने की अनुमति न देते और वह पूरी आयू यूँ ही निर्वाह करने के लिये बाध्य होती। इस्लाम ने अत्याचार के इन सभी रूपों को वर्जित कर दिया।

[2]नारी पर एक अत्याचार यह भी किया जाता था कि यदि पति-पत्नी में रूचि नहीं रखता था और उससे मुक्ति चाहता था तो स्वयं विवाह-विच्छेद नहीं करता था (जिस प्रकार इस्लाम ने तलाक़ (विवाह-विच्छेद) की अनुमति दी है) अपितु उसे अति आतंकित करता ताकि वह बाध्य होकर महर (स्त्री धन) अथवा जो भी उसे पति ने दिया है स्वयं वापस करके उससे मुक्ति प्राप्त करने को प्राथमिकता दे।

[3]खुली बुराई से तात्पर्य व्यभिचार अथवा अपवाद एवं अवज्ञा है, इन दोनों ही दशा में पति को यह अनुमति दी गई है कि उसके साथ ऐसा व्यवहार करे कि वह उसका दिया हुआ धन अथवा स्त्री धन (महर) वापस करके खुलाअ कराने पर बाध्य हो जाये (जैसाकि खुलाअ में पति को महर वापस लेने का अधिकार दिया गया है। (देखिये सूरः *बक़रः*-२२९)

[4]यह पत्नी के साथ सद्व्यवहार का वह आदेश है जिस पर क़ुरआन ने बहुत बल दिया है। तथा हदीस में भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसको अति महत्व दिया है, एक हदीस में आयत के उसी भावार्थ को इस प्रकार वर्णित किया गया है।

The Ummah Technology Mission

وَإِنْ أَرَدْتُمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ وَآتَيْتُمْ إِحْدَاهُنَّ قِنطَارًا فَلَا تَأْخُذُوا مِنْهُ شَيْئًا ۚ أَتَأْخُذُونَهُ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿٢٠﴾

(२०) और यदि तुम एक पत्नी के स्थान पर दूसरी पत्नी करना ही चाहो और उनमें से किसी को तुमने धन का कोष दे रखा हो, तो भी उसमें से कुछ न लो।[1] क्या तुम उसे बदनाम करके खुले पाप से ले लोगे।

وَكَيْفَ تَأْخُذُونَهُ وَقَدْ أَفْضَىٰ بَعْضُكُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ وَأَخَذْنَ

(२१) और तुम उसे कैसे ले लोगे ? यद्यपि तुम एक-दूसरे से मिल चुके हो।[2] और उन स्त्रियों

«لَا يَفْرَكْ مُؤْمِنٌ مُؤْمِنَةً إِنْ سَخِطَ مِنْهَا خُلُقًا، رَضِيَ مِنْهَا آخَرَ».

"मोमिन पति मोमिन पत्नी से बैर न रखे यदि उसका एक व्यहार अप्रिय है तो उसका अन्य व्यवहार प्रिय भी होगा।"(सहीह मुस्लिम किताबुल रिदाअ:)

अभिप्राय यह है कि निर्लज्जा तथा अवज्ञा के अतिरिक्त यदि पत्नी में कुछ और कमी हो जिसके कारण पति उसे अप्रिय मानता हो तो उसे तुरंत तलाक़ न दे बल्कि धैर्य तथा सहन से काम ले। संभव है कि अल्लाह उसमें उसके लिये बड़ी भलाई पैदा कर दे अर्थात अच्छी संतान प्रदान कर दे अथवा उसके कारण व्यवसाय में विभूति पैदा कर दे इत्यादि। खेद का विषय है कि मुसलमान क़ुरआन व हदीस के इन निर्देशों के विपरीत तनिक बातों पर अपनी पत्नियों को तलाक़ दे डालते हैं तथा इस प्रकार इस्लाम के प्रदत्त तलाक़ अधिकार का निर्दयता से प्रयोग करते हैं। जबकि यह अधिकार अति आवश्यक दशा में प्रयोग के लिये दिया गया था न कि घर उजाड़ने, पत्नियों पर अत्याचार करने एवं बच्चों का जीवन नाश करने के लिये। इसके अतिरिक्त यह इस्लाम के अपमान का भी हेतु बनते हैं कि इस्लाम ने पुरूषों को तलाक़ का अधिकार देकर नारियों पर अत्याचार करने का अधिकार दे दिया इस प्रकार इस्लाम की एक बड़ी खूबी को बुराई सिद्ध किया जाता है।

[1]स्वयं तलाक़ देने की स्थिति में महर वापस लेने को कठोरता से रोक दिया गया है, قنطار धन के कोष तथा अत्यधिक धन को कहते हैं। अर्थात कितना भी महर दे दिया हो, वापस नहीं ले सकते। यदि ऐस करोगे तो यह अत्याचार स्पष्ट पाप होगा।

[2]एक-दूसरे से मिल चुके हो का अर्थ सहवाद है। जिसे अल्लाह तआला ने सांकेतिक रूप से वर्णन किया है।

The Ummah Technology Mission

مِنكُم مِّيثَاقًا غَلِيظًا ﴿٢١﴾

ने तुम से घनिष्ठ वचन ले रखा है।[1]

وَلَا تَنكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُم مِّنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۚ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَمَقْتًا ۖ وَسَاءَ سَبِيلًا ﴿٢٢﴾

(२२) और उन स्त्रियों से विवाह न करो, जिनसे तुम्हारे पिताओं ने विवाह किया हो।[2] परन्तु जो हो चुका, यह निर्लज्जा का कार्य और द्वेष के कारण हैं और बड़ा बुरा मार्ग है।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ وَعَمَّاتُكُمْ وَخَالَاتُكُمْ

(२३) तुम पर हराम की गयीं[3] तुम्हारी माताऐं तथा तुम्हारी पुत्रियाँ तथा तुम्हारी बहनें तथा

---

[1]सुदृढ़ वचन से उस वचन का तात्पर्य है जो विवाह के समय पुरुष से लिया जाता है कि तुम इसे अच्छे प्रकार से रखना अथवा नम्रता के साथ छोड़ देना।

[2]अज्ञान युग में सौतेला पुत्र अपने पिता की पत्नी से विवाह कर लेता था उससे रोका जा रहा है कि यह बड़ी निर्लज्जा का काम है। ﴿وَلَا تَنكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُم﴾ साधारण आदेश है जो ऐसी स्त्री से विवाह को भी वर्जित घोषित कर रहा है जिससे उसके पिता ने विवाह किया किन्तु समागम से पहले तलाक़ दे दिया, यह बात आदरणीय इब्ने अब्बास से उदघृत है, तथा धर्म विशेषज्ञ इसी को मानते हैं। (तफ़सीर तबरी)

[3]जिन स्त्रियों से विवाह निषेध है उनका विवरण दिया जा रहा है। इनमें सात निषेधित स्त्रियाँ वंशज हैं, सात दुग्ध कर्म से तथा चार ससुराली, इनके सिवा हदीस से प्रमाणित है कि भतीजी तथा फूफी एवं भगिनी तथा ख़ाला को एक साथ विवाह करके रखना वर्जित है। सात वंशज निषेधित स्त्रियाँ हैं मातायें, पुत्रियाँ, बहनें, फूफियाँ, ख़ालायें, भतीजी एवं भगिनी, दुग्ध कर्म से निषेधित सात दुग्ध कर्म से माँ, उसकी पुत्रियां, बहनें, फूफियाँ, ख़ालायें। दुग्ध कर्म से भतीजियाँ, भगिनियां, हैं। ससुराली निषेधित स्त्रियां सास, संभोगित पत्नी की पहले पति से पुत्रियाँ, पुत्रवधु तथा दो सगी बहनों को एक साथ विवाह करके रखना, इनके सिवा पिता की विवाहिता जिसकी चर्चा इससे पहले की आयत में हो चुकी है तथा हदीस के अनुसार स्त्री जब तक विवाह में है उसकी फूफी तथा ख़ाला एवं उसकी भतीजी एवं भांजी से भी विवाह वर्जित है, वंशज निषेधित स्त्रीयों की सूची में माँ की माँ (नानियां) उनकी दादियां, तथा पिता की माताऐं नीचे तक सम्मिलित हैं, व्यभिचार से जन्मी पुत्री, पुत्री है या नहीं इसमें मतभेद है तीनों इमाम धर्म विशेषज्ञ उसे पुत्री मानते हैं तथा उससे विवाह निषेध समझते हैं। इमाम शाफ़ई कहते हैं कि वह धर्म विधानानुसार पुत्री नहीं अत: वह जिस प्रकार ﴿يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ﴾ (अल्लाह तुम्हें संतान में त्यक्त धन विभाजित करने का आदेश करता है) के अन्तर्गत नहीं तथा सर्वसम्मति से उत्तराधिकारी नहीं इसी प्रकार इस आयत के भी अन्तर्गत नहीं। واللہ اعلم "बहनें" सगी हों अथवा माँ से अथवा पिता से, "फूफियां" में पिता की और सभी मूल पुरुष (अर्थात नाना, दादा) की

The Ummah Technology Mission

तीनों प्रकार की बहनें आती हैं "ख़ालायें" इसके अन्तर्गत माँ की तथा सभी मूल स्त्री (अर्थात दादी, नानी) की तीनों प्रकार की बहनें आती हैं, "भतीजियों" में तीनों प्रकार के भाइयों की संतान सीधे हों अथवा माध्यम से ऐसे ही "भगनियों" में तीनों प्रकार की बहनों की संतान स्वयं उनकी हों अथवा उनकी संतान की संतान सम्मिलित हैं।

दूसरी प्रकार दुग्ध कर्म से निषेधित स्त्रियाँ-दूध पिलाने वाली माता, जिसका दूध स्तनपान की अवधि में पिया हो (अर्थात दो वर्ष के भीतर) दुग्ध से बहन जिसे तुम्हारी सगी माता अथवा दूध पिलाने वाली माता ने दूध पिलाया, तुम्हारे साथ पिलाया अथवा तुमसे पहले या बाद तुम्हारे अन्य भाई-बहन के साथ पिलाया अथवा जिस स्त्री की सगी माँ अथवा दूध वाली माँ ने तुम्हें दुग्धपान कराया, चाहे विभिन्न समय में पिलाया हो, दुग्ध से भी वह सभी वर्जित हो जायेंगे जोवंश से वर्जित होते हैं, इसका विवरण यह है कि दूध पिलाने वाली माता की स्वयं अपनी संतान, तथा जिनको स्तनपान कराया है स्तनपान करने वाले शिशु के भाई-बहन, दूध पिलाने वाली माता का पति, उसका पिता तथा उस पुरुष की बहनें उसकी फूफियाँ, उस स्त्री की बहनें, ख़ालायें और उस स्त्री के ज्येष्ठ देवर उसके चचा, ताया बन जायेंगे। और इस स्तनपायी शिशु के सगे भाई-बहन आदि इस घराने पर स्तनपान के कारण वर्जित न होंगे।

तीसरी प्रकार, स्वसुराली निषेधित स्त्रियाँ- पत्नी की माता अर्थात सास (पत्नी की नानी, दादी भी इसमें सम्मिलित हैं) यदि किसी ने स्त्री से विवाह करके बिना समागम कि विवाह विच्छेद कर लिया तब भी उसकी माँ (सास) से विवाह वर्जित होगा। किन्तु किसी स्त्री से विवाह कर के बिना संभोग "तलाक़" दे दी हो तोउसकी पुत्री से उसका विवाह वैध होगा। (फ़तहुल क़दीर)

रबीव: पत्नी की पहले पति से पुत्री इसका निषेध प्रतिबन्धित है अर्थात उसकी माता से संभोग कर लिया होगा तो, "रबीबा" से विवाह वर्जित अन्यथा अवर्जित होगा, فى حجوركم (वह रबीव: जिनका पालन, पोषण तुम्हारी गोद में हुआ) यह बंधन साधारण अवस्था के कारण है प्रतिवन्ध के रूप में नहीं यदि वह पुत्री किसी अन्य स्थान में पाली जायेगी, अथवा निवास करेगी तब भी विवाह वर्जित होगा, पत्नी को हलील: कहा जाता है क्योंकि अरबी में उसका अर्थ उतरने का स्थान है और पत्नी पति के साथ निवास तथा प्रस्थान करती है, पुत्रों में पौत्र और नवासे भी आते हैं अर्थात उनकी पत्नियों से भी विवाह वर्जित होगा, इसी प्रकार दुग्ध पिलाई संतान के जोड़े भी निषेध होंगे من أصلابكم (तुम्हारे सगे पुत्रों की पत्नियाँ) के वन्धन से यह प्रकाशित हो गया कि लेपालक की पत्नियों से विवाह निषेध नहीं, दो बहनें सगी हों अथवा दुग्ध की उनसे एक समय में विवाह निषेध है। किन्तु एक के निधन अथवा तलाक़ की दशा में इद्दत पूरी होने के पश्चात दूसरी से विवाह उचित है। इसी प्रकार चार पत्नियों में से एक को तलाक़ देने के बाद पाँचवीं से विवाह की अनुमति नहीं जब तक तलाक़ प्राप्त स्त्री इद्दत न पूरी कर ले।

The Ummah Technology Mission

وَبَنٰتُ الْاَخِ وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَ
اُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْٓ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ
مِّنَ الرَّضَاعَةِ وَاُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ
وَرَبَآئِبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ حُجُوْرِكُمْ
مِّنْ نِّسَآئِكُمُ الّٰتِيْ دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ز
فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ز وَحَلَآئِلُ اَبْنَآئِكُمُ
الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ لا وَاَنْ تَجْمَعُوْا
بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ط
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٢٣﴾

तुम्हारी फूफियाँ तथा तुम्हारी मौसियाँ एवं भाई की पुत्रियाँ एवं बहन की पुत्रियाँ और तुम्हारी वह माताऐं जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया हो । तथा तुम्हारी दूध में भागीदार बहनें एवं तुम्हारी सास तथा तुम्हारी वह पालन-पोषण की गयीं लड़कियाँ जो तुम्हारी गोद में हैं, तुम्हारी उन स्त्रियों से जिनसे तुम सहवास कर चुके हो । हाँ, यदि तुम ने उनसे सम्भोग न किया हो, तो तुम पर कोई पाप नहीं और तुम्हारे अपने सगे पुत्रों की पत्नियाँ और तुम्हारा दो सगी बहनों को एक साथ विवाह करना । हाँ, जो हो चुका सो हो चुका, नि:सन्देह अल्लाह तआला क्षमा करने वाला दयालु है ।

विचारणीय : व्यभिचार से निषेध सिद्ध होगा अथवा नहीं इसमें विद्वानों का मतभेद है । अधिकतर का विचार है कि, यदि किसी ने किसी स्त्री के साथ व्यभिचार किया तो इसके कारण वह स्त्री उस पर वर्जित न होगी । इसी प्रकार यदि अपनी पत्नी की माता (सास) से अथवा उसकी पुत्री से (जो दूसरे पति से हो) व्यभिचार कर लेगा तो उसकी पत्नी उस पर वर्जित नहीं होगी (तर्कों के लिये फ़तहुल क़दीर भाग, १ देखिये) अहनाफ़ तथा अन्य विद्वानों के विचार में व्यभिचार से भी निषेध सिद्ध हो जायेगा । प्रथम मत को कुछ हदीसों से सहयोग मिलता है ।

The Ummah Technology Mission

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ؕ

(२४) और (तुम्हारे लिए) विवाहित नारियाँ (निषेध की गई हैं) परन्तु जो (दासी) तुम्हारे स्वामित्व में हों,[1] यह आदेश तुम पर अल्लाह ने अनिवार्य कर दिये हैं तथा इनके सिवाय अन्य स्त्रियाँ तुम्हारे लिए उचित की गईं कि अपने धन (महर) से उन से विवाह करो,

---

[1]क़ुरआन करीम में إحصان चार अर्थों में प्रयोग हुआ है (१) विवाह (२) स्वतंत्रता (३) पवित्रता (४) तथा इस्लाम, इस आधार पर محصنات के चार अर्थ हैं (१) विवाहित स्त्रियाँ (२) स्वतंत्र स्त्रियाँ (३) चरित्रवान स्त्रियाँ (४) तथा मुसलमान स्त्रियाँ। यहाँ पहला अर्थ तात्पर्य है। इसके उतरने की विशेषता यह है कि जब कुछ युद्धों में काफ़िरों की स्त्रियाँ भी मुसलमानों की बंदी हुईं तो मुसलमान उनसे सहवास करने में अच्छा नहीं आभास कर रहे थे, क्योंकि वह विवाहित थीं। सहाबा ने नबी सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम से पूछा, जिस पर यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर) जिससे यह ज्ञात हुआ कि युद्ध में प्राप्त होने वाली काफ़िर स्त्रियाँ जब मुसलमानों की दासियाँ बन जायें, तो विवाहित होने के उपरान्त भी उनसे सहवास करना उचित है। परन्तु गर्भाशय की स्वच्छता आवश्यक है अर्थात एक मासिक धर्म के पश्चात अथवा यदि गर्भवती है तो प्रसव के पश्चात सम्भोग करें।

<u>दासता की समस्या</u> : क़ुरआन के उतरने के समय दास-दासी का प्रचलन सामान्य था जिसे क़ुरआन ने बंद नहीं किया, परन्तु उनके लिए वह कार्य प्रणाली निर्धारित की जिससे दास तथा दासियों को अधिक से अधिक सुविधा प्राप्त हो सके ताकि दासता की अवहेलना हो। इसके दो माध्यम थे। एक तो कुछ परिवार के पुरुष-स्त्री सदियों से बेच दिये जाते थे, यही खरीदे हुए पुरुष-स्त्री दास तथा दासियाँ कहलाते थे। मालिक को उनसे हर प्रकार का लाभ उठाने का अधिकार था। दूसरा माध्यम युद्ध में बन्दियों वाला था। काफ़िरों की बंदी स्त्रियों को मुसलमानों में बाँट दिया जाता था, वह उनकी दासी बन कर उनके पास रहती थीं। उस काल में बंदियों के लिए कोई अन्तर्राष्ट्रीय नियम नहीं था, इसलिए यह उस समय का श्रेष्ठ हल था। क्योंकि यदि उन्हें समाज में यूँ ही स्वतंत्र छोड़ दिया जाता, तो समाज में उनके द्वारा कई बुराईयाँ उत्पन्न होतीं (विस्तार के लिए देखें किताबुल रिक़्क़ फ़िल इस्लाम "इस्लाम में दासता की वास्तविकता" लेखक मौलाना सईद अकबराबादी) वस्तुतः मुसलमान विवाहित स्त्रियाँ तो वैसे ही अवैध हैं, फिर भी काफ़िर स्त्रियाँ भी निषेध हैं जब तक कि उनके स्वामित्व में न आयें। इस स्थिति में गर्भाशय स्वच्छता के उपरान्त ही वह उनके लिए वैध हैं।

The Ummah Technology Mission

فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٢٤﴾

व्यभिचार के लिए नहीं, पवित्रा के लिए[1] अत: जिन से तुम लाभ उठाओ उन्हें उनका महर दो, [2] तथा तुम निर्धारित महर के बाद परस्पर सहमती से जो चाहो तय कर लो तुम पर कोई दोष नहीं,[3] वस्तुत: अल्लाह ज्ञाता बुद्धिमान है।

وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ

(२५) तथा तुम में से जो स्वतंत्र मुसलमान नारी से विवाह की योग्यता न रखता हो वह उस मुसलमान दासी से (विवाह करे) जो तुम्हारे स्वामित्व में हो। अल्लाह तुम्हारे कर्मों

---

[1]अर्थात वर्णित क़ुरआन और हदीस के द्वारा वर्जित स्त्रियों के अतिरिक्त शेष सभी से विवाह करना उचित है। परन्तु उसमें चार विशेषतायें हों। प्रथम यह कि मंगनी करो اَنْ تَبْتَغُوْا अर्थात दोंनो पक्षों द्वारा ग्रहण तथा स्वीकार हो। द्वितीय यह कि माल अथात महर अदा करना स्वीकार हो, तृतीय यह कि उन को विवाह बंधन (स्थाई अधिपत्य) में बांधना. उद्देश्य हो, केवल सम्भोग का विचार न हो (जैसे व्यभिचार अथवा उस मुतआ में होता है, जो शियों में प्रचलित है अर्थात लिंगीय इच्छाओं की सन्तुष्टि के लिए कुछ दिन अथवा कुछ घंटे के लिए विवाह) तथा चतुर्थ यह कि गुप्त प्रेम न हो बल्कि साक्षियों की उपस्थिति में विवाह हो। यह चार शर्तें इस आयत से उपलब्ध होती हैं। इससे जहाँ मुतआ का खण्डन होता है, वहीं प्रचलित हलाला का प्रचलन भी अनुचित सिद्ध होता है क्योंकि इसका उद्देश्य भी स्त्री को स्थाई विवाह के बंधन में बांधना नहीं होता है यह केवल एक रात के लिए निर्धारित तथा प्रचलित है।

[2]यह इस वात पर बल है कि जिन स्त्रियों से तुम विवाह धार्मिक रूप से करके लाभान्वित तथा सुख प्राप्त करो, उन्हें उनका निर्धारित महर अवश्य अदा कर दो।

[3]इसमें आपस की सहमती से महर में कमी-बेशी का अधिकार दिया गया है।

नोट: استمتاع के शब्द से शिया लोग "मुतआविवाह" का भाव लेते हैं, जबकि इसका तात्पर्य विवाह के पश्चात सहवास तथा सम्भोग का लाभ है, जैसाकि हमने लिखा है। अवश्य मुतआ इस्लाम के आरम्भिक काल में प्रचलित रहा है और उसका औचित्य इस आयत के आधार पर नहीं था, बल्कि इस्लाम के पहले से चला आ रहा था, फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में इसको क़ियामत तक के लिए अवैध कर दिया। जैसा कि सहीह हदीस में इसका विस्तृत विवरण विद्यमान है।

The Ummah Technology Mission

الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ؕ
بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ
بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ
اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ
غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ
اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَاۤ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ
بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى
الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ
خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ؕ وَاَنْ تَصْبِرُوْا
خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٢٥

से पूर्णत: अवगत है, तुम परस्पर एक ही हो, अत: तुम उनके संरक्षकों की अनुमती से उन से विवाह करो [1] तथा रीति अनुसार उनका महर दे दो, वह पवित्र हों व्यभिचारिणी न हों, न गुप्त प्रेमी रखने वालियाँ, तो जब यह विवाह में हो जायें फिर कुकर्म करें तो उन पर स्वतंत्र नारियों के आधा दण्ड है[2] यह विवाह का आदेश उसके लिये है जिसे व्यभिचार का भय हो तथा सहन करना तुम्हारे लिये उत्तम है और अल्लाह क्षमाशील कृपानिधि है।[3]

يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ
سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ
عَلَيْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٢٦

(२६) अल्लाह (तआला) तुम्हारे लिये स्पष्ट करना एवं तुम्हें तुम से पूर्व के (सदाचारियों का) मार्ग दर्शाना तथा तुम्हारी क्षमा-याचना स्वीकार करना चहता है और अल्लाह ज्ञाता बुद्धिमान है।

وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۖ
وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ

(२७) और अल्लाह तआला चाहता है कि तुम्हारी क्षमा स्वीकार करे और जो लोग

---

[1]इससे ज्ञात हुआ कि दासी का मालिक ही दासी का संरक्षक है, दासी का विवाह किसी से उसकी आज्ञा के बिना नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार दास भी मालिक की आज्ञा के बिना किसी से विवाह नहीं कर सकता।

[2]अर्थात दासियों को सौ के बजाय (आधे अर्थात) पचास कोड़े का दंड दिया जायेगा। अर्थात उनके लिए पत्थर मारकर मार ड़ालने का दंड नहीं हो सकता, क्योंकि वह आधा नहीं होसकता, तथा अविवाहित दासी को निन्दनीय दंड होगा। (विस्तृत जानकारी के लिए तफ़सीर इब्ने कसीर देखें)

[3]अर्थात दासी के साथ विवाह वही लोग कर सकते हैं, जो अपनी जवानी के आवेग पर नियंत्रण रखने की शक्ति न रखते हों, और कुकर्म में पड़ने का भय हो, यदि ऐसा भय न हो तो उस समय तक धैर्य रखना श्रेष्ठ है जब तक किसी स्वतन्त्र पारिवारिक स्त्री से विवाह करने योग्य न हों।

The Ummah Technology Mission

कामवासना के अधीन हैं वह चाहते हैं कि तुम उस से बहुत दूर हट जाओ।[1]

أَنْ تَمِيلُوا مَيْلًا عَظِيمًا ﴿٢٧﴾

(२८) अल्लाह तुम्हारा बोझ हलका करना चाहता है तथा मनुष्य निर्बल पैदा किया गया है।[2]

يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْإِنْسَانُ ضَعِيفًا ﴿٢٨﴾

(२९) हे मुसलमानो, अपना माल परस्पर अनीति से न खाओ,[3] परन्तु यह कि तुम्हारी आपस की सहमती से व्यापार हो।[4] और अपने

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِنْكُمْ ۚ

---

[1] عَيلوا أن अर्थात सत्य से असत्य की ओर झुक जाना।

[2] इस क्षीणता के कारण उसके पाप में पड़ने की अधिक सम्भावना है। इसलिए अल्लाह तआला ने उसे यथा-संभव सुविधा प्रदान की है। उन्हीं में से दासी से विवाह करने की आज्ञा भी है। कुछ ने इस क्षीणता का सम्बन्ध स्त्रियों से बताया है अर्थात स्त्री के विषय में क्षीण है, इसी कारण स्त्री भी अपनी मन्द बुद्धि के उपरान्त भी पुरुषों को अपने जाल में फंसा लेती है।

[3] بالباطل में धोखा छल-कपट तथा मिलावट के अतिरिक्त वह सभी व्यापार भी सम्मिलित हैं, जिनको करने से धार्मिक नियमों ने निषेध किया है जैसे जुआ, ब्याज आदि। इसी प्रकार निषेध तथा हराम चीजों का व्यापार करना भी सम्मिलित है। जैसे- फ़ोटोग्राफी, रेडियो, टी० वी०, वी० सी० आर०, विडिओ तथा असभ्य कैसेट आदि। इनका बनाना, मरम्मत करना तथा वेचना सब अनुचित है।

[4] इसके लिए यह शर्त है कि लेन-देन वैध पदार्थों का हो। निषेध का व्यापार परस्पर सहमति से भी अनुचित ही रहेगा। इसके अतिरिक्त सहमती में खियार-ए-मजलिस की भी समस्या आती है अर्थात जब तक एक-दूसरे से विदा न हो, सौदा निरस्त करने का अधिकार रहेगा। जैसा कि हदीस में है :

«البَيِّعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا».

"दोनों आपस में सौदा करने वाले को, जब तक जुदा न हों अधिकार है।"
(सहीह बुखारी व मुस्लिम किताबुल बोयुअ)

The Ummah Technology Mission

وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ۝٢٩

आप की हत्या न करो,।[1] अवश्य अल्लाह तआंला तुम पर कृपालु है।

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَي اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝٣٠

(३०) और जो व्यक्ति यह (अवज्ञा) सीमा लांघ कर तथा अत्याचार से करेगा[2] तो निकट भविष्य में हम उसे अग्नि में डालेगें, और यह अल्लाह के लिए सरलतम है।

اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَاۗىِٕرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ

(३१) यदि तुम इन महापापों से बचते रहोगे जिनसे तुम को मना किया जाता है[3] तो हम

---

[1]इसका तात्पर्य आत्महत्या भी हो सकता है जो महापाप है और पाप करना भी जो विनाश का कारण है, और किसी मुसलमान की हत्या करना भी, क्योंकि सभी मुसलमान एक शरीर की भाँति हैं, इसलिए उसकी हत्या करना भी ऐसा ही है जैसे अपने आपकी स्वयं हत्या कर ली हो।

[2]अर्थात निषेधाज्ञा का उल्लंघन जान-बूझकर, अत्याचार और अवज्ञाकारिता से ही करेगा।

[3]महापाप की परिभाषा में मतभेद है, कुछ के निकट वह पाप है, जिन पर दंड निर्धारित है, कुछ के निकट वह पाप जिन पर क़ुरआन और हदीस में तीव्र चेतावनी अथवा शाप दिया गया हो, कुछ के निकट प्रत्येक वह कार्य जिससे अल्लाह ने अथवा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निषेध (हराम) होने के कारण रोका है और वास्तविकता यह है कि इनमें से कोई एक बात भी किसी पाप में पायी जाये तो वह महापाप है। हदीसों में विभिन्न महापापों का वर्णन है, जिन्हें कुछ आलिमों ने एक किताब में संकलित किया है। जैसे अल-कबाएर लिज़्हबी, अल-ज़वाजिर अन इक़तिराफ़ अल कबाएर लिल हैत्मी आदि। यहाँ इस नियम का वर्णन है कि जो मुसलमान महापाप (शिर्क़, माता-पिता के अधिकार की अवहेलना, झूठ आदि) से रूका रहेगा, तो हम उस के तुच्छ पाप क्षमा कर देंगे। सूरः नज्म में इस विषय का वर्णन है, परन्तु वहाँ महापाप के साथ असभ्य (अनैतिक कार्य) से रुकने को भी तुच्छ पापों की क्षमा के लिए आवश्यक कहा गया है। परन्तु इसके अतिरिक्त तुच्छ पापों की पुनरावृति उनको महापाप बना देती है। इसी प्रकार महापाप से रुकने के साथ-साथ इस्लाम धर्म के नियम तथा अनिवार्य कार्यों को निश्चित रूप से करना और सत्कर्म करना भी अति आवश्यक है। सहाबा कराम (رضي الله عنهم) ने इस्लाम धर्म के इस रूप को समझ लिया था, इसलिए उन्होंने केवल क्षमा के वचन पर ही भरोसा नही किया, बल्कि अल्लाह तआला की कृपा प्राप्ति के लिए वर्णित सभी बातों का प्रयोजन किया। जबकि हमारा

The Ummah Technology Mission

कामवासना के अधीन हैं वह चाहते हैं कि तुम उस से बहुत दूर हट जाओ।[1]

اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ﴿٢٧﴾

(२८) अल्लाह तुम्हारा बोझ हलका करना चाहता है तथा मनुष्य निर्बल पैदा किया गया है।[2]

يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ﴿٢٨﴾

(२९) हे मुसलमानो, अपना माल परस्पर अनीति से न खाओ,[3] परन्तु यह कि तुम्हारी आपस की सहमती से व्यापार हो।[4] और अपने

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۣ

---

[1] أن تميلوا अर्थात सत्य से असत्य की ओर झुक जाना।

[2] इस क्षीणता के कारण उसके पाप में पड़ने की अधिक सम्भावना है। इसलिए अल्लाह तआला ने उसे यथा-संभव सुविधा प्रदान की है। उन्हीं में से दासी से विवाह करने की आज्ञा भी है। कुछ ने इस क्षीणता का सम्बन्ध स्त्रियों से बताया है अर्थात स्त्री के विषय में क्षीण है, इसी कारण स्त्री भी अपनी मन्द बुद्धि के उपरान्त भी पुरुषों को अपने जाल में फंसा लेती है।

[3] بالباطل में धोखा छल-कपट तथा मिलावट के अतिरिक्त वह सभी व्यापार भी सम्मिलित हैं, जिनको करने से धार्मिक नियमों ने निषेध किया है जैसे जुआ, ब्याज आदि। इसी प्रकार निषेध तथा हराम चीजों का व्यापार करना भी सम्मिलित है। जैसे- फ़ोटोग्राफी, रेडियो, टी० वी०, वी० सी० आर०, विडिओ तथा असभ्य कैसेट आदि। इनका बनाना, मरम्मत करना तथा बेचना सब अनुचित है।

[4] इसके लिए यह शर्त है कि लेन-देन वैध पदार्थों का हो। निषेध का व्यापार परस्पर सहमति से भी अनुचित ही रहेगा। इसके अतिरिक्त सहमती में खियार-ए-मजलिस की भी समस्या आती है अर्थात जब तक एक-दूसरे से विदा न हो, सौदा निरस्त करने का अधिकार रहेगा। जैसा कि हदीस में है :

«البَيِّعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا».

"दोनों आपस में सौदा करने वाले को, जब तक जुदा न हों अधिकार है।"
(सहीह बुखारी व मुस्लिम किताबुल बोयुअ)

The Ummah Technology Mission

وَالْاَقْرَبُوْنَ ؕ وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ شَهِيْدًا ﴿۳۳﴾

प्रत्येक व्यक्ति के निर्धारित कर रखे हैं।[1] और जिनसे तुम ने अपने हाथों सन्धि की है उन्हें उनका भाग दो,[2] वास्तव में अल्लाह तआला प्रत्येक चीज़ को देख रहा है।

---

[1] موالی बहुवचन है مولی का। और مولی के कई अर्थ हैं मित्र, मुक्त किया गया दास, चचेरा भाई, पड़ोसी। परन्तु यहाँ पर इससे तात्पर्य उत्तराधिकारी हैं। अर्थ यह है कि प्रत्येक पुरुष-स्त्री जो कुछ छोड़ कर मर जायेंगे उसके उत्तराधिकारी माता-पिता तथा अन्य निकटवर्ती सम्बन्धी होंगे।

[2] इस आयत के प्रचलित अथवा निरस्त होने में व्याख्याकारों का मत भेद है। इब्ने जरीर तबरी आदि इसे निरस्त नहीं (आदेशित) मानते हैं तथा ایمانکم (सन्धि) से तात्पर्य वह प्रतिज्ञा तथा सन्धि मानते हैं जो एक-दूसरे की सहायता के लिए इस्लाम से पूर्व दो व्यक्तियों अथवा दो क़बीले के मध्य हुयी और इस्लाम के पश्चात भी चली आ रही थी। نصیبهم (भाग) से तात्पर्य उसी प्रतिज्ञा तथा संधि के पालन के अनुसार सहायता तथा सहयोग का भाग है। तथा इब्ने कसीर एवं अन्य व्याख्याकारों के निकट यह आयत निरस्त है। क्योंकि ایمانکم उनके निकट वह संधि है जो हिजरत के पश्चात एक अंसारी तथा मुहाजिर के मध्य भाई चारे के रूप में हुई थी। इसमें एक मुहाजिर, अन्सारी के माल का उसके सम्बन्धियों की जगह उत्तराधिकारी होता था। परन्तु चूँकि यह एक अस्थाई व्यवस्था थी, इसलिए फिर

﴿وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ﴾

"सम्बंधी अल्लाह के आदेशानुसार एक-दूसरे के अधिक अधिकारी हैं।" (अल-अन्फाल-७५)

को उतारकर इसको निरस्त कर दिया। अब فآتوهم نصیبهم का तात्पर्य मित्रता प्रेम तथा एक-दूसरे की सहायता है। और वसीयत के अनुसार कुछ दे देना भी सम्मिलित है। संधि के अनुसार, प्रतिज्ञा के अनुसार अथवा भाईचारे के अनुसार अब उत्तराधिकार का विचार नहीं होता है। ज्ञानियों के एक गिरोह ने इससे ऐसे दो व्यक्ति को लिया, जिसमें कम से कम एक व्यक्ति निरुत्तराधिकारी हो और एक-दूसरे से यह तय करता है कि मैं तुम्हारा उत्तराधिकारी हूँ। यदि कोई बड़ा अपराध करूँ तो मेरी सहायता करना और यदि मैं मर जाऊँ तो मेरी देयत (ख़ून के बदले धन) ले लेना। इस निरुत्तराधिकारी के मरने के बाद उसके मालका वह उपरोक्त व्यक्ति उत्तराधिकारी होगा बशर्ते कि वास्तव में उस का कोई उत्तराधिकारी न हो। कुछ दूसरे ज्ञानी इस आयत का एक अन्य अर्थ वर्णित करते हैं। वह कहते हैं والذین عقدت ایمانکم से तात्पर्य पति-पत्नी हैं। इसका

The Ummah Technology Mission

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ؕ وَالّٰتِيْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ﴿٣٤﴾

(३४) पुरुष स्त्रियों पर अधिपति हैं इस कारण कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर श्रेष्ठता दिया है तथा इस कारण कि पुरूषों ने अपने धन ख़र्च किये हैं,[1] अत: सुशील आज्ञाकारी स्त्रियाँ पति की अनुपस्थिति में अल्लाह की रक्षा द्वारा (मर्यादा एवं धन) की रक्षक नारियाँ हैं और जिन स्त्रियों से तुम्हें दुराचार का भय हो उन्हें सचेत करो, तथा उनका विस्तर अलग कर दो (फिर भी न मानें) तो मारो और यदि तुम्हारा कहना मान लें तो उन पर मार्ग की खोज न करो।[2] निश्चय अल्लाह परम महान है।

सम्बन्ध الأقربون से है। अर्थ यह है कि "माता-पिता ने, निकटवर्ती सम्बंधी ने और जिनकी तुम्हारी संधि आपस में हो चुकी है (अर्थात पति अथवा पत्नी) उन्होंने जो कुछ छोड़ा उसके उत्तराधिकारी अर्थात भागीदार हमने निर्धारित कर दिये हैं। अतएव उन उत्तराधिकारियों को उनका अधिकार दे दो।" अर्थात पिछली आयतों में उत्तराधिकारियों के भाग का जो विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया उसको संक्षेप में यहाँ अदा करने पर बल दिया गया है।

[1]इसमें पुरुष के अधिपत्य तथा श्रेष्ठता के दो कारण बताये गये हैं। एक दैवी है जो उस की शारीरिक शक्ति तथा तीव्र बुद्धि है, जिस में पुरुष स्त्री से निश्चितरूप से श्रेष्ठ है। दूसरा कारण अर्जित है, जिसको प्राप्त करने का अधिकार इस्लाम धर्म ने पुरुष को दिया है और स्त्री कोउसकी प्राकृतिक कमजोरी तथा विशेष शिक्षा के कारण जो इस्लाम ने स्त्री को चारित्रिक सामर्थ्य और उसकी पवित्रता की रक्षा के लिए आवश्यक बतलायी है, स्त्री को आर्थिक उलझनों से दूर रखा है। स्त्री के नेतृत्व के विरुद्ध क़ुरआन करीम का यह अत्यन्त स्पष्ट दृढ़ तर्क है जिसकी अत्यन्त दृढ़ता बुखारी की उस हदीस से होती है कि "वह समुदाय कभी सफल नहीं हो सकता जिसका नेतृत्व एक महिला कर रही हो।" (सहीह बुखारी किताबुल मग़ाज़ी, बाब किताबुन्नबी इला किसरा व क़ैसर, किताबुल फ़ेतन, बाब १८)

[2]अवज्ञाकारिता की स्थिति में सर्वप्रथम स्त्री को समझाना-बुझाना है, फिर अस्थाई रूप से अलग हो जाना है, जो एक बुद्धिमान स्त्री के लिए बहुत बड़ी चेतावनी है। जब इससे

The Ummah Technology Mission

وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ﴿٣٥﴾

(३५) यदि तुमको (पति-पत्नी के) मध्य अनबन होने का भय हो तो एक पंच पति के परीवार से और एक पत्नी के परिवार से नियुक्त करो,[1] यदि ये दोनों परस्पर संधि कराना चाहें तो अल्लाह उन दोनों को मिला देगा, निश्चय अल्लाह ज्ञाता सूचित है।

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِى الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ

(३६) तथा अल्लाह की आराधना करो, उसके साथ किसी को मिश्रण न करो, तथा माता-पिता एवं संबन्धियों, अनाथों, निर्धनों तथा करीब के पड़ोसी एवं दूर के पड़ोसी[2] तथा

भी न माने तो थोड़ी मार मारने की आज्ञा है, परन्तु यह मार पशुतावाली या अत्याचारी न हो जैसाकि अशिक्षित लोगों की आदत है। अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस अत्याचार की आज्ञा किसी पुरुष को नहीं दी है। यदि वह सुधार करले तो मार्ग न खोजो अर्थात मारपीट न करो, तंग न करो, तलाक़ न दो अर्थात तलाक़ अन्तिम सीमा है जब अन्य कोई मार्ग न रह जाये। परन्तु पुरुष इस अधिकार को भी अधिक अनुचित रूप से प्रयोग करते हैं और छोटी-छोटी बात पर तुरन्त तलाक़ दे डालते हैं और अपना जीवन नष्ट करते हैं और साथ ही साथ यदि बच्चे हों तो उनका जीवन भी नष्ट करते हैं।

[1]घर के अन्दर उपरोक्त तीनों प्रयत्न विफल हो जाये तो चौथा उपाय दो मध्यस्थ हैं। यदि सद्भावक होंगे तो निश्चय उनकी सुधारने की कोशिश सफल होगी फिर विफलता की दशा में मध्यस्थों को पति-पत्नी में विलगाव अर्थात तलाक़ (विवाह विच्छेद) का अधिकार है अथवा नहीं ? इस में विद्वानों में मतभेद है। कुछ इसे अस्थाई न्यायधीश के निर्णय अथवा पति-पत्नी के विलगाव का अधिकार देने से प्रबंधित करते है, परन्तु साधारण ज्ञानी लोग इसके बिना उस अधिकार को मानते हैं। (विस्तृत जानकारी के लिये तफ़सीर तब्री, फ़तहुल क़दीर, तफ़सीर इब्ने कसीर देखिये)

[2] الجار الجنب सम्बन्धी पड़ोसी की तुलना में प्रयोग हुआ है, जिसका अर्थ है ऐसा पड़ोसी जो सम्बन्धी न हो अर्थात यह कि पड़ोसी से पड़ोसी के रूप में प्रेम व्यवहार किया जाय वह सम्बन्धी हो अथवा सम्बन्धी न हो। जिस प्रकार से हदीस में भी इस बात पर बड़ा बल देकर वर्णन किया गया है।

The Ummah Technology Mission

وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ۙ﴿۳۶﴾

साथ के यात्री[1] के साथ उपकार करो तथा यात्री और जो तुम्हारे अधीन हैं[2] (उनके साथ), नि:संदेह अल्लाह अहंकारी, अभिमानी से प्रेम नहीं करता।[3]

اَلَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۚ﴿۳۷﴾

(३७) जो लोग (स्वंय) कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी करने को कहते हैं और अल्लाह तआला ने जो अपनी कृपा से उन्हें प्रदान कर रखी है, उसे छिपाते हैं। हम ने उन कृतघ्नों के लिए अपमानकारी यातना तैयार कर रखी है।

وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّكُنِ

(३८) और जो लोग अपना माल लोगों को दिखाने के लिए व्यय करते हैं और अल्लाह (तआला) पर तथा क़ियामत के दिन पर

---

[1]इससे तात्पर्य यह है यात्रा के साथी, साझीदार, पत्नी तथा वह व्यक्ति जो लाभ की आशा में किसी की निकटता तथा साथ करे। बल्कि इसकी परिभाषा में वह लोग भी आ सकते हैं, जिन्हें शिक्षा प्राप्त करने के लिए अथवा प्रशिक्षण प्राप्त करने लिए अथवा किसी व्यापारिक उद्देश्य से आपके निकट बैठने का अवसर प्राप्त हो। (फ़तहुल क़दीर)

[2]इसमें घर, दूकान, उद्योग, मिलों के कर्मचारी भी आ जाते हैं। दासों के साथ सदव्यवहार पर हदीसों में बड़ा बल दिया गया है।

[3]घमण्ड, गर्व तथा अभिमान अल्लाह तआला को कदापि प्रिय नहीं है। बल्कि एक हदीस में यहाँ तक आता है "वह व्यक्ति स्वर्ग में नहीं जायेगा जिसके दिल में राई के एक दाने के समान भी घमण्ड होगा।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब तहरीमिल किब्रे व बयानिहि हदीस संख्या ९१) यहाँ पर घमंड की विशेष रुप से आलोचना करने से यह उद्देश्य है कि अल्लाह तआला की आराधना और जिन-जिन व्यक्तियों से सदव्यवहार करने पर बल दिया गया है, इसके अनुसार कर्म वही कर सकता है, जिसके दिल में घमंड न हो, घमंड से शून्य हो। अभिमानी और अहंकारी व्यक्ति सही अर्थों में न तो इबादत उचित रुप से कर सकता और न अपनों और परायों से सद्व्यवहार ही कर सकता है।

The Ummah Technology Mission

ईमान नहीं रखते, और जिसका संगी-साथी शैतान हो।[1] वह बहुत बुरा साथी है।

الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿٣٨﴾

(३९) और भला उन की क्या हानि थी यदि यह अल्लाह (तआला) पर और प्रलय (क़ियामत) के दिन पर ईमान लाते और अल्लाह (तआला) ने जो उन्हें प्रदान कर रखा है, उसमें से ख़र्च करते, अल्लाह (तआला) उन्हें अच्छी प्रकार से जानने वाला है।

وَمَا ذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿٣٩﴾

(४०) नि:संदेह, अल्लाह (तआला) एक कण के बराबर अत्याचार नहीं करता और यदि पुण्य हो तो उसे दुगुना कर देता है एवं विशेष रूप से अपने पास से बहुत बड़ा प्रत्युपकार प्रदान करता है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٤٠﴾

(४१) तो क्या हाल होगा जिस समय प्रत्येक समुदाय (उम्मत) में से एक गवाह हम लायेंगे और आप को उन लोगों पर गवाह बनाकर लायेंगे।[2]

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۭ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا ﴿٤١﴾

---

[1]कंजूसी (अर्थात अल्लाह के मार्ग में व्यय न करना) अथवा व्यय तो करना परन्तु प्रदर्शन और दिखावे के लिए करना। यह दोनों बातें अल्लाह को अति अप्रिय हैं। और उनकी निंन्दा के लिए यह बात ही काफ़ी है कि यहाँ क़ुरआन करीम में इन दोनों बातों को काफ़िरों का आचरण बताया गया है जो अल्लाह और अन्त दिवस के प्रति विश्वास नहीं रखते और शैतान उनका साथी है।

[2]प्रत्येक समुदाय (उम्मत) का पैग़म्बर (सन्देष्टा) अल्लाह के सदन में गवाही देगा "हे अल्लाह ! हमने तो तेरा संदेश अपनी कौम तक पहुँचा दिया था। अब उन्होंने नहीं माना तो इसमें हमारा क्या अपराध है ?" फिर उन पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गवाही देंगे "हे अल्लाह ! यह सत्य कहते हैं।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह गवाही उस क़ुरआन के कारण देंगे जो आप पर उतरा और जिसमें पूर्व के नबियों और उनकी कौम की घटनायें आवश्यकतानुसार वर्णित हैं। यह एक कठिन

The Ummah Technology Mission

يَوْمَئِذٍ يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصَوُا الرَّسُولَ لَوْ تُسَوَّىٰ بِهِمُ الْأَرْضُ ۚ وَلَا يَكْتُمُونَ اللَّهَ حَدِيثًا ﴿٤٢﴾

(४२) जिस दिन काफ़िर और रसूल के अवज्ञा-कारी यह कामना करेंगे कि काश उन्हें धरती के साथ समतल कर दिया जाता और अल्लाह (तआला) से कोई बात न छिपा सकेंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا

(४३) हे ईमानवालो ! यदि तुम नशे में धुत हो तो नमाज़ के निकट न जाओ[1] जब तक

अवस्था होगी, इसका विचार ही शरीर में कँपकँपी उत्पन्न कर देता है। हदीस में आता है कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद से क़ुरआन सुनने की इच्छा व्यक्त की वह सुनाते हुए जब इस आयत पर पहुँचे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "बस अब काफ़ी है।" आदरणीय इब्ने मसऊद फ़रमाते हैं "मैंने देखा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों से अश्रु प्रवाहित थे।" (सहीह बुख़ारी फ़ज़ाएले क़ुरआन) कुछ लोग कहते हैं कि गवाही तभी दी जा सकती है जब सभी कुछ गवाह अपनी आँखों से देखे। इसलिए वह शहीद का अर्थ "सर्वव्यापी" सिद्ध करते हैं और इस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रत्येक स्थान पर विद्यमान सिद्ध करते हैं, परन्तु नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रत्येक स्थान पर उपस्थित समझना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह के गुणों में सम्मिलित करना है, जो शिर्क है। क्योंकि प्रत्येक स्थान पर अल्लाह तआला ही का अपने ज्ञान के द्वारा उपस्थित होने का गुण है। "शहीद" के शब्द से यह भाव निकालना अपने अन्दर कोई शक्ति नहीं रखता, इसलिए कि गवाही निश्चित ज्ञान के आधार पर भी होती है और क़ुरआन करीम में वर्णित सत्य घटनाओं से अधिक निश्चित ज्ञान किसका हो सकता है ? इसी निश्चित ज्ञान के आधार पर स्वयं मुसलमानों को भी "شهداء على الناس" (सृष्टि के लोगों पर गवाह) कहा है। यदि गवाही के लिए उपस्थिति आवश्यक है, तो प्रत्येक मुसलमान व्यक्ति को सर्वव्यापी मानना पड़ेगा। अन्ततः नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में यह विश्वास मिश्रणवाद एवं निराधार है।

[1]यह आदेश उस समय दिया गया था, जब तक मदिरा निषेध नहीं की गयी थी। अतः एक भोज में मदिरापान के पश्चात जब नमाज़ के लिए खड़े हुए, तो नशे में क़ुरआन के शब्द भी इमाम साहब ग़लत पढ़ गये। (विस्तार के लिए देखिए त्रिमज़ी, तफ़सीर सूरः अल निसा) जिस पर यह आयत उतरी कि नशे की अवस्था में नमाज़ न पढ़ा करो। अर्थात उस समय तक नमाज़ के समय मदिरापान निषेध किया गया था पूर्ण निषेधाज्ञा और वर्जित होने का आदेश बाद में उतरा।

The Ummah Technology Mission

الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى
تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا
عَابِرِيْ سَبِيْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ؕ
وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ
اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ
اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا
مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا
فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ ؕ

कि अपनी बात समझने न लगो, और जनाबत (अशुद्धि) की अवस्था में जब तक स्नान न कर लो[1] हाँ, यदि राह चलते गुजर जाने वाले हो तो और बात है।[2] और यदि तुम रोगी हो, अथवा यात्रा में हो अथवा तुम में से कोई शौच से आया हो अथवा तुमने स्त्रियों के साथ संभोग किया हो और तुम्हें पानी न मिले, तो पवित्र मिट्टी का संकल्प करो और अपने मुँह और अपने हाथ मल लो।[3] नि:संदेह अल्लाह

---

[1]अर्थात अपवित्रता की अवस्था में भी नमाज़ न पढ़ो क्योंकि नमाज़ के लिए पवित्रता आवश्यक है।

[2]इसका अर्थ यह नहीं है कि यात्रा की अवस्था में यदि पानी न मिले तो अपवित्रता की अवस्था में ही नमाज़ पढ़ लो (जैसा कि कुछ ने कहा है) बल्कि अधिक आलिमों का मत है कि अपवित्रता की अवस्था में तुम मस्जिद में न बैठो, परन्तु यदि मस्जिद के अन्दर से जाना पड़ जाये तो जा सकते हो। कुछ सहाबा के घर ऐसे थे कि उनको हर परिस्थिति में मस्जिद-ए-नबवी के अन्दर से गुज़र कर जाना पड़ता था यह छूट उन्हीं के कारण प्रदान की गयी। (इब्ने कसीर) वरन् यात्री का आदेश आगे आ रहा है।

[3]रोगी से तात्पर्य वह रोगी है जिसे पानी के प्रयोग से हानि अथवा रोग के बढ़ जाने का भय हो (२) सामान्य यात्री, लम्बी यात्रा हो अथवा लघु, यदि पानी उपलब्ध न हो तो तयम्मुम करने की आज्ञा है। पानी न मिलने की स्थिति में यह आज्ञा निवासी को भी है, परन्तु रोगी तथा यात्री को चूँकि इस प्रकार की आवश्यकता सामान्यतय: आती थी इसलिए विशेषरुप से उनके लिए आज्ञा का वर्णन कर दिया गया है (३) शौच से आने वाला (४) तथा पत्नी के साथ सम्भोग करने वाला, उनको भी पानी न मिलने की स्थिति में तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ने की आज्ञा है।

तयम्मुम की विधि : यह है कि एक ही बार हाथ पवित्र ज़मीन पर मारकर कलाई तक दोनों हाथ एक-दूसरे पर फेर लें (कोहनियों तक आवश्यक नहीं) और मुँह पर भी फेर लें «ضَرْبَةٌ لِلْوَجْهِ وَالْكَفَّيْنِ» قال فى التيمم (मुसनद अहमद, भाग ४ पृष्ठ २६३) अम्मार (رضي الله عنه) ने कहा, "नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तयम्मुम के विषय में फ़रमाया कि यह दोनों हथेलियों तथा चेहरे के लिए एक ही बार है«صَعِيدًا طَيِّبًا» से तात्पर्य पवित्र मिट्टी है। ज़मीन से निकलने वाली प्रत्येक चीज़ नहीं जैसा कि कुछ का विचार है। हदीस में विशेषरूप से स्पष्ट कर दिया गया है«جُعِلَتْ تُرْبَتُهَا لَنَا طَهُورًا إِذَا لَمْ نَجِدِ الْمَاءَ»

The Ummah Technology Mission

إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا ﴿٤٣﴾

(तआला) अति क्षमा (माफ़) करने वाला बख़्शने वाला है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يَشْتَرُونَ الضَّلَالَةَ وَيُرِيدُونَ أَن تَضِلُّوا السَّبِيلَ ﴿٤٤﴾

(४४) क्या तुम ने उन्हें नही देखा जिन्हें किताव का कुछ भाग दिया गया ? वह पथ-भ्रष्टता खरीदते हैं और चाहते हैं कि तुम भी विपथ हो जाओ।

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَلِيًّا وَكَفَىٰ بِاللَّهِ نَصِيرًا ﴿٤٥﴾

(४५) और अल्लाह (तआला) तुम्हारे शत्रुओं को भली प्रकार से जानने वाला है और अल्लाह (तआला) का मित्र होना ही पर्याप्त है तथा अल्लाह (तआला) का सहायक होना बस है।

مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَن مَّوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَرَاعِنَا لَيًّا بِأَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّينِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ

(४६) कुछ यहूदी कथनों को उनके उचित स्थान से फेर बदल कर देते हैं और कहते हैं कि हमने सुना और अवज्ञा की और सुन उस के बिना कि तो सुना जाये[1] और हमारी अधीनता स्वीकार करो (परन्तु इसके कहने में) अपनी जीभ मरोड़ लेते हैं और धर्म को कलंकित करते हैं, और यदि यह लोग कहते कि हमने सुना और हमने मान लिया और आप सुनिये और हमें देखिये तो यह उनके

"जब हमें पानी न मिले तो ज़मीन की मिट्टी हमारे लिए पवित्र बना दी गयी है।" (सहीह मुस्लिम किताबुल मसाजिद)"

[1]यहूदियों के दुराचरणों तथा कुकर्मों में से यह भी एक था कि "हमने सुना के साथ ही कह देते परन्तु हम पालन नहीं करेंगें" "अर्थात अनुसरण नहीं करेंगे।" यह दिल में कहते अथवा अपने साथियों से कहते अथवा निर्भयता का प्रदर्शन करके मुँह पर कहते। इसी प्रकार غير مسمع (तेरी बात न सुनी जाये) यह शाप के रूप में कहते अर्थात तेरी बात स्वीकार न हो। راعنا के विषय में सूरः बक़रः आयत १०४ की व्याख्या में वर्णन हो चुका है।

The Ummah Technology Mission

وَاَقْوَمَ ۙ وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٤٦﴾

लिए अति श्रेष्ठ था और अत्यधिक उचित था, परन्तु अल्लाह (तआला) ने उनके कुफ़्र के कारण से उन्हें धिक्कारा है, तो यह बहुत कम ईमान लाते हैं ।[1]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰۤى اَدْبَارِهَاۤ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّاۤ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٤٧﴾

(४७) हे अहले किताब ! जो कुछ हमने उतारा है, जो उसका प्रमाणकारी है जो तुम्हारे पास है, इस पर उससे पहले ईमान लाओ कि हम चेहरे बिगाड़ दें और उन्हें घुमा कर पीठ की ओर कर दें[2] अथवा उन पर धिक्कार भेजें जैसाकि हमने शनिवार वाले दिन के लोगों पर धिक्कार की है ।[3] और अल्लाह (तआला) का निर्णय अवश्य पूरा किया हुआ है ।[4]

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ

(४८) अवश्य अल्लाह (तआला) अपने साथ मिश्रण किये जाने को क्षमा नहीं करता और इसके अतिरिक्त जिसे चाहे क्षमा कर दे ।[5]

---

[1]अर्थात ईमान लाने वाले बहुत थोड़े हैं, जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है कि यहूदियों में से ईमान लाने वालों की संख्या दस तक भी नहीं पहुँची अथवा यह अर्थ है कि बहुत कम बातों पर ईमान लाते हैं, जब कि लाभकारी ईमान यह है कि सब बातों पर ईमान लाया जाये ।

[2]अर्थात यदि अल्लाह तआला चाहे तो तुम्हें तम्हारे कुकर्मों के बदले में यह दंड दे सकता है ।

[3]यह घटना सूरः अल-आराफ़ में आयेगी, कुछ संकेत पहले भी गुजर चुके हैं । अर्थात तुम भी उन्हीं के समान तिरस्कृत हो सकते हो ।

[4]अर्थात जब वह किसी बात का आदेश कर दे तो न कोई उसका विरोध कर सकता है और न उसे रोक सकता है ।

[5]अर्थात ऐसे पाप जिनसे ईमान वाले क्षमा मागें बिना मर जायें, अल्लाह तआला यदि किसी को चाहे तो बिना दंड दिये क्षमा कर देगा, बहुत से लोगों को दंड देने के बाद और बहुत से लोगों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिफ़ाअत (सिफ़ारिश) पर

The Ummah Technology Mission

وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى اِثْمًا عَظِيْمًا ﴿٤٨﴾

और जो अल्लाह (तआला) के साथ मिश्रण करे उसने अल्लाह पर भारी आरोप घड़ा।[1]

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٤٩﴾

(४९) क्या आपने उन्हें नहीं देखा जो अपनी पवित्रता (और प्रशंसा) स्वयं करते हैं ? बल्कि अल्लाह (तआला) जिसे चाहे पवित्र करता है, तथा वे एक धागे बराबर भी अत्याचार न किये जायेंगे।[2]

اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَكَفٰى بِهٖٓ اِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٠﴾

(५०) देखो यह लोग अल्लाह (तआला) पर किस प्रकार मिथ्यारोपण करते हैं[3] तथा यह घोर पाप के लिये बहुत है।[4]

क्षमा कर देगा, परन्तु शिर्क किसी भी परिस्थिति में क्षमा नहीं होगा क्योंकि मुशरिक पर अल्लाह तआला ने स्वर्ग (हराम) निषेध कर दिया है।

[1]दूसरे स्थान पर फ़रमाया ﴿إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾ (लुकमान) "शिर्क बहुत बड़ा अत्याचार है।" हदीस में इसे महापाप कहा गया है "أكبر الكبائر الشرك بالله"।

[2]यहूदी अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनते थे। जैसे "हम अल्लाह के बेटे तथा उसके चहीते हैं" आदि। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "पवित्रता का अधिकार भी अल्लाह को है और उसका ज्ञान भी उसी को है।" "फ़तील" खजूर की गुठली के कटाव पर जो धागा अथवा सूत के समान निकलता हुआ दिखायी देता है, उसको कहा जाता है। अर्थात इतना-सा भी अत्याचार नहीं किया जायेगा।

[3]अर्थात उपरोक्त पवित्रता का दावा करके।

[4]अर्थात उनका यह व्यवहार (अपनी पवित्रता का दावा) उनके झूठ और बनावट के लिए पर्याप्त है। क़ुरआन करीम की इस आयत और उसके उतरने की विशेषताओं के कथनों से यह ज्ञात होता है कि एक-दूसरे की प्रशंसा तथा गुणगान विशेष कर दिलों की पवित्रता का दावा करना ठीक एवं उचित नहीं। इस बात को क़ुरआन करीम में दूसरे स्थान पर इस प्रकार फ़रमाया गया है :

﴿فَلَا تُزَكُّوٓا أَنفُسَكُمْ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَىٰ﴾

"स्वयं अपनी पवित्रता और प्रशंसा न करो, अल्लाह तआला ही जानता है कि तुम में संयमी कौन है।" (*अल-नज्म-३२*)

The Ummah Technology Mission

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰٓؤُلَآءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ﴿٥١﴾

(५१) क्या आपने उन्हें नहीं देखा जिन्हें किताब का कुछ भाग मिला है, जो मूर्तियों पर तथा झूठे देवों पर विश्वास रखते हैं, और काफ़िरों के पक्ष में कहते हैं कि यह लोग ईमानवालों से अधिक सत्यमार्ग पर हैं ?[1]

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۭ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ﴿٥٢﴾

(५२) यही वह लोग हैं जिनको अल्लाह (तआला) ने धिक्कारा है और जिसे अल्लाह (तआला) धिक्कार दे तो तू किसी को उसका सहायता करने वाला नहीं पायेगा।

हदीस में है आदरणीय मिकदाद (رضي الله عنه) कहते हैं "नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें आदेश दिया कि प्रशंसा करने वालों के मुख पर मिट्टी डाल दें।" «أَنْ نَحْثُوَ فِي وُجُوهِ الْمَدَّاحِينَ التُّرَابَ» (सहीह मुस्लिम किताबुज़ ज़ुहद)

एक अन्य हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आदमी को दूसरे आदमी की प्रशंसा करते सुना तो फ़रमाया :

«وَيْحَكَ قَطَعْتَ عُنُقَ صَاحِبِكَ». "अफ़सोस है तुझ पर कि तूने अपने साथी की गर्दन काट दी।"

फिर फ़रमाया कि यदि तुम में से किसी को किसी की विवश होकर प्रशंसा करनी है, तो इस प्रकार कहा करे «أَحْسِبُهُ كَذَا» "मैं उसे इस प्रकार समझता हूँ, अल्लाह पर किसी की स्वच्छता न वर्णित करे।" (सहीह बुख़ारी किताबुश शहादात वल अदब, मुस्लिम किताबुज़ ज़ुहद)

[1]इस आयत में यहूदियों के एक और कर्म पर आश्चर्य व्यक्त किया गया है कि अहले किताब होने के उपरान्त यह "जिब्त" (मूर्ति, ज्योतिषी अथवा जादूगर) तथा ताग़ूत (झूठे देवों) पर ईमान रखते हैं और मक्का के काफ़िरों को मुसलमानों से अधिक सत्य मार्ग पर समझते हैं। जिब्त के यह सभी वर्णित अर्थ किय गये हैं। एक हदीस मे आता है।

«إِنَّ الْعِيَافَةَ وَالطَّرْقَ وَالطِّيَرَةَ مِنَ الْجِبْتِ».

"पक्षी उड़ा कर, रेखा खींचकर भाग्य जानना एवं अपशगुन लेना जिब्त से हैं।" (सुनन अबी दाऊद किताबुत तिब)

अर्थात यह शैतानी काम हैं। यहूदियों में यह बातें सामान्य रूप में पायी जाती थीं। ताग़ूत का एक अर्थ शैतान भी किया गया है। वास्तव में झूठे देवों की पूजा शैतान ही का अनुसरण है, इसलिए शैतान भी अवश्य ताग़ूत में सम्मिलित है।

The Ummah Technology Mission

أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَإِذًا لَّا يُؤْتُونَ النَّاسَ نَقِيرًا ﴿٥٣﴾

(५३) क्या उनका कोई भाग राज्य में है ? यदि ऐसा हो तो फिर यह किसी को एक खजूर की गुठली की फाँक के समान भी कुछ न देंगे।[1]

أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَىٰ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۖ فَقَدْ آتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيمَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَاهُم مُّلْكًا عَظِيمًا ﴿٥٤﴾

(५४) अथवा यह लोगों से ईर्ष्या रखते हैं, उस पर जो अल्लाह (तआला) ने अपनी कृपा से उन्हें प्रदान किया है।[2] तो हमने तो इब्राहीम की संतान को किताब तथा विवेक भी प्रदान किया है और बड़ा राज्य भी प्रदान किया है।

فَمِنْهُم مَّنْ آمَنَ بِهِ وَمِنْهُم مَّن صَدَّ عَنْهُ ۚ وَكَفَىٰ بِجَهَنَّمَ سَعِيرًا ﴿٥٥﴾

(५५) फिर उनमें से कुछ ने तो उस किताब को माना और कुछ उससे रुक गये।[3] और नरक का जलाना पर्याप्त है।

---

[1] यह नकारात्मक प्रश्न है अर्थात राज्य में इनका कोई भाग नहीं है। यदि इसमें थोड़ा सा भी भाग होता तो यह यहूदी लोग इतने कंजूस हैं कि लोगों को विशेष रूप से परम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इतना भी न देते, जिससे खजूर की गुठली की फाँक वाला भाग भर जाये। نَقِيرٌ नक़ीर उस विन्दु को कहते हैं जो खजूर की गुठली के ऊपर होता है। (इब्ने कसीर)

[2] أَمْ (अम्), بَلْ (बल्) के अर्थों में भी हो सकता है अर्थात बल्कि यह इस बात पर जलते हैं कि अल्लाह तआला ने इस्राईल की सन्तान को छोड़ कर दूसरों में नबी (अर्थात अन्तिम नबी) क्यों बनाया ? नबूवत अल्लाह की सबसे बड़ी कृपा है।

[3] अर्थात इस्राईल की संतान को जो आदरणीय इब्राहीम के परिवार एवं वंश में से हैं, हमने नबूवत भी दी और बड़ा राज्य तथा राज्याधिकार भी। फिर भी यह सभी यहूदी उन पर ईमान नहीं लाये कुछ ईमान लाये और कुछ रुक गये। तात्पर्य यह है कि हे मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, यदि यह आप पर ईमान नहीं ला रहे हैं तो यह कोई अनोखी बात नहीं है, इनका तो इतिहास ही नबियों को झुठलाने से भरा पड़ा है। यहाँ तक कि यह तो अपने वंश के नबियों पर भी ईमान नही लाये। कुछ ने آمن به में (ही) सर्वनाम से तात्पर्य नबी सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम को बताया है। अर्थात उन यहूदियों में कुछ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाये और कुछ ने नकारा। इन इंकार करने वालों का अन्त नरक है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُمْ بَدَّلْنَاهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿٥٦﴾

(५६) जिन लोगों ने हमारी आयतों का इंकार किया उन्हें हम अवश्य अग्नि में ड़ाल देंगे।[1] जब उन की खालें (चर्म) पक जायेंगी, हम उनके अतिरिक्त और खालें बदल देंगे, ताकि वह यातना का स्वाद चखते रहें।[2] अवश्य अल्लाह तआला प्रभुत्वशाली बुद्धिमान है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن

(५७) और जो लोग ईमान लाये और सभ्य कर्म किये।[3] हम निकट भविष्य में उन्हें उन

---

[1]अर्थात नरक में अहले किताब के नकारने वाले ही नहीं जायंगे, बल्कि अन्य काफ़िरों का ठिकाना भी नरक ही है।

[2]यहं नरक की यातना की कठोरता, निरन्तरता तथा नित्यता का वर्णन है। सहाबा केराम (رضي الله عنهم) द्वारा कथित कुछ वक्यों में बताया गया है कि खालों का यह बदलना दिन में बिसियों बल्कि सैकड़ों बार होगा और मुसनद अहमद के अनुसार "नरकवासी नरक में इतने फूल जायेंगे कि उनके कानों की लौ से पीछे गर्दन तक की दूरी सात सौ वर्ष की यात्रा के समान होगी, उनकी खाल की मोटाई सत्तर बालिश्त और जबड़े ओहद पर्वत जितने होंगे।"

[3]काफ़िरों की अपेक्षा ईमानवालों के लिए जो चिरस्थाई सुख-सुविधा प्राप्त होंगी, उनका वर्णन है, परंतु वह ईमानवाले जो सत्कर्मों से परिपूर्ण होंगे جعلنا الله منهم। अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में ईमान के साथ सत्कर्म की महत्ता को स्पष्ट कर दिया है कि उनका आपस में तल-जल का सम्बन्ध है। ईमान सत्कर्म के बिना उसी प्रकार है जैसे बिना सुगंध के फूल और बिना फल के वृक्ष। सहाबा केराम (رضي الله عنهم) तथा सत्यकाल के अन्य मुसलमानों ने इस बिन्दु को जान लिया था। अत: उनके जीवन ईमान के फल, सत्कर्म से प्रफुल्लित थे। उस काल में अकर्म अथवा कुकर्म के साथ ईमान की कल्पना ही नहीं थी। इसके विपरीत आजकल ईमान खाली ज़बानी जमा ख़र्च का नाम रह गया है। ईमान के दावेदारों के दामन सत्कर्म से शून्य हैं। هدانا الله تعالى इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति ऐसे कर्म करता है जो सत्कर्म की सीमा में आते हैं। जैसे ईमानदारी, सच्चाई, परोपकार, नि:स्वार्थ सेवा, सहानुभूति आदि अन्य सभ्यतापूर्ण विशेषतायें। परन्तु यह ईमान के गुण से वंचित हैं, तो उसके यह कर्म दुनिया में प्रसिद्ध तथा सम्मान का कारण तो बन सकते हैं, परन्तु अल्लाह के दरबार में उनका कोई स्थान नहीं है। इसलिए कि उनका स्रोत ईमान नहीं है जो अच्छे कर्म को अल्लाह

The Ummah Technology Mission

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا اَبَدًا ؕ لَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۫ وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ۝

स्वर्गों मे ले जायेंगे, जिनके नीचे नहरें प्रवाहित हैं, जिनमें वे सदैव रहेंगे। उनके लिए वहाँ पवित्र पत्नियाँ होंगी और हम उन्हें घनी छाँव (पूर्ण सुविधाजनक स्थान) में ले जायेंगे।[1]

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا

(५८) अल्लाह (तआला) तुम्हें आदेश देता है कि अमानत (धरोहर) उन के मालिकों को पहुँचा दो।[2] और जब लोगों के मध्य निर्णय

तआला की ओर सम्बन्धित करता है। बल्कि केवल मात्र सांसारिक लाभ तथा समाजिक सभ्यता के बंधन के आधार पर है।

[1]घनी, गहरी, ठंढ तथा पवित्र छाया। जिसका अनुवाद "पूर्ण सुविधा" किया गया है। एक हदीस में हैं "स्वर्ग में एक वृक्ष है जिसकी छाया इतनी है कि एक सवार सौ वर्ष में भी उसे तय नहीं कर सकेगा। इस वृक्ष का नाम अलखुल्द है।" (मुसनद अहमद, भाग २ पृष्ठ ४५५, व असलुहु फी अल-बुखारी किताव (बदउल ख़ल्क़) अध्याय (बाब) संख्या ८, माजाअ फी सिफ़तिल जन्नः व अन्नहा मख़लूक़ः)।

[2]अधिकतर व्याख्याकारों का यह मत है कि यह आयत आदरणीय उस्मान बिन तल्हा के सम्मान में उतरी है, जो अपने पूर्वजों से पारम्परिक रूप से ख़ाना-ए-काआबा के संतरी तथा उसके कुंजी धारक चले आ रहे थे। मक्का विजय के समय जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ाना-ए-कआबा में परिक्रमा के लिए पधारे, तो परिक्रमा आदि के पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय उस्मान बिन तल्हा को, जो हुदैबिया की संधि के समय मुसलमान हो चुके थे, बुलाया और उन्हें ख़ाना-ए-क़आबा की चाभियाँ प्रदान करते हुए फ़रमाया, "यह तुम्हारी चाभियाँ हैं, और आज का दिन प्रतिज्ञा पालन तथा पुण्य का दिन है।" (इब्ने कसीर) यह आयत एक विशेष कारण से उतरी परन्तु इसका भावार्थ सार्वजनिक तथा अधिकारियों दोनों के लिए है। दोनों के लिए आदेश है कि धरोहर उन्हें लौटा दो, जो धरोहर के अधिकारी हैं। इसमें एक प्रकार की वह धरोहर है, जो किसी के पास रखवायी जाती है। उसमें अपभोग न किया जाये, बल्कि यह उसी प्रकार से धरोहर रखने वाले को लौटा दिया जाये। दूसरे यह कि पद और सम्मान योग्य व्यक्तियों को ही प्रदान किये जायें केवल राजनीतिक आधार पर, वंश अथवा राष्ट्रीयता के आधार अथवा निकटवर्ती अथवा सम्बन्ध के आधार अथवा पद सुरक्षित के आधार पर पद तथा सम्मान देना इस आयत के विपरीत है।

The Ummah Technology Mission

بِالْعَدْلِ ۚ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُم بِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿٥٨﴾

करो तो न्याय के साथ निर्णय करो।[1] नि:संदेह वह अच्छी बात है जिसकी शिक्षा अल्लाह (तआला) तुम्हें दे रहा है।[2] नि:संदेह अल्लाह (तआला) सुनता देखता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنكُمْ ۖ فَإِن تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ

(५९) हे ईमान वालो ! अल्लाह की आज्ञा का पालन करो तथा ईशदूत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की और अपने में से अधिकारियों की आज्ञा का पालन करो।[3] फिर यदि किसी

---

[1]इसमें अधिकारियों को विशेषरूप से न्याय करने का आदेश दिया गया है। एक हदीस में है अधिकारी जब तक अत्याचार न करे, अल्लाह तआला उसके साथ होता है, जब वह अत्याचार करना प्रारम्भ कर देता है, अल्लाह उसको उसकी इन्द्रियों को सौंप देता है। (सुनन इब्ने माजा, किताबुल अहकाम)

[2]अर्थात धरोहर उसके योग्य लोगों को सौंपना तथा न्याय करना।

[3]"अपने में से अधिकारी से तात्पर्य" कुछ के निकट राज्य अधिकारी और कुछ के निकट धर्माधिकारी तथा ज्ञानी हैं। भावार्थ के आधार पर दोनों ही हो सकते हैं। तात्पर्य यह है कि वास्तविक आज्ञापालन तो अल्लाह तआला ही का है। क्योंकि

﴿أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ﴾

"सावधान ! सृष्टि भी उसी की है, आदेश भी उसी का है।" (*अल-आराफ़*-५४)

परन्तु रसूल केवल अल्लाह की इच्छाओं के प्रतिनिधि हैं और उसके दूत हैं, इसलिए अल्लाह तआला ने अपने साथ रसूल के आदेश का भी स्थाई रूप से पालन आवश्यक बताया है। और फ़रमाया कि वास्तव में रसूल के आदेशों का पालन अल्लाह की आज्ञा का पालन है।

﴿مَّن يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ﴾

"जिसने रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की आज्ञा का पालन किया उसने अल्लाह का आज्ञापालन किया।" (अन-निसा-८०)

जिससे यह बात स्पष्ट हुई कि हदीस भी उसी प्रकार धर्म का श्रोत है, जिस प्रकार कुरआन करीम है, फिर राजाधिकारियों की आज्ञा पालन भी आवश्यक है। क्योंकि वह या तो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों को लागू

The Ummah Technology Mission

فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّ اَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿۵۹﴾

बात में मतभेद करो तो उसे लौटाओ अल्लाह (तआला) तथा रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर, यदि तुम्हें अल्लाह तथा क़ियामत के दिन पर ईमान है। यह सर्वश्रेष्ठ है और परिणाम अनुसार बहुत अच्छा है।[1]

करते हैं अथवा उम्मत (क़ौम अथवा समुदाय) की सामाजिक समस्याओं का समाधान तथा रक्षा करते हैं। इससे ज्ञात होता है कि राजाधिकारियों के आदेशों का पालन यद्यपि आवश्यक है, परन्तु वह पूर्ण रूप से लागू नहीं होता बल्कि प्रतिबन्धित है अल्लाह और रसूल के आज्ञापालन के साथ। इसलिए अल्लाह की आज्ञा पालन के पश्चात ही रसूल की आज्ञा पालन को तो कहा गया है। क्योंकि यह दोनों आज्ञापालन स्थाई और आवश्यक हैं। "परन्तु राजाधिकारी की आज्ञापालन करो" नहीं कहा गया है, क्योंकि राजाधिकारियों का आज्ञापालन स्थाई नहीं है। और हदीस में भी कहा गया है, «لَا طَاعَةَ لِمَخْلُوقٍ فِي مَعْصِيَةِ الخَالِقِ»(इसे अलबानी ने हदीस सहीह कहा है मिश्कात संख्या ३६९६- मुस्लिम हदीस संख्या १८४०)

और«إِنَّمَا الطَّاعَةُ فِي المَعْرُوفِ»सहीह बुखारी किताबुल अहकाम बाब-४)

«السَّمْعُ وَالطَّاعَةُ لِلإِمَامِ مَا لَمْ تَكُنْ مَعْصِيَةً» "पाप में पालन नहीं,पालन केवल पुण्यों में है।"

यही बात आलिमों तथा धर्मशास्त्रियों के विषय में भी है (यदि अधिकारियों में इन्हें भी मान लिया जाये) अर्थात उनकी आज्ञा का पालन इसलिए करना होगा क्योंकि वह अल्लाह और उसके रसूल के आदेश तथा कथनों को जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हैं तथा उसके धर्म की ओर संदेश तथा मार्ग दर्शन का कार्य करते हैं। इससे ज्ञात हुआ कि आलिम तथा धर्माधिकारी भी धार्मिक विषयों में अधिकारियों के समान आवश्य जनता के लिए आज्ञापालन के अधिकारी हैं। परन्तु उनकी आज्ञा का पालन भी उस समय तक किया जायेगा, जब तक वह जनता को केवल अल्लाह और उसके रसूल की बात बतायें, परन्तु यदि वह इससे मुख मोड़ लें तो जनता के लिए उनका आज्ञापालन करना भी आवश्यक नहीं है। बल्कि उनके मुख मोड़ने की स्थिति में जान-बूझकर उनका आज्ञापालन बड़ा पाप है।

[1]अल्लाह की ओर लौटाने से तात्पर्य क़ुरआन करीम तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तात्पर्य अब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस है। यह आपसी मतभेद समाप्त करने के लिए एक सर्वश्रेष्ठ नियम बताया गया है। इस नियम से भी स्पष्ट होता है कि तीसरे व्यक्ति का आज्ञापालन आवश्यक नहीं है। जिस प्रकार से

The Ummah Technology Mission

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَنْ يَتَحَاكَمُوا إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ يَكْفُرُوا بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿٦٠﴾

(६०) क्या आपने उन्हें नही देखा जिसका विचार है कि जो कुछ आप पर तथा जो कुछ आप से पूर्व उतारा गया है, उस पर उनका ईमान है, परन्तु वह अपने निर्णय अल्लाह के अतिरिक्त अन्य के पास ले जाना चाहते हैं यद्यपि उन्हें आदेश दिया गया है कि वह उनका (शैतान का) इंकार करें ? शैतान तो यह चाहता है कि उन्हें भटका कर दूर डाल दे।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَى مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتَ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنْكَ صُدُودًا ﴿٦١﴾

(६१) और उन से जब कभी कहा जाये कि अल्लाह (तआला) ने जो (पवित्र शास्त्र) उतारा है उसकी ओर तथा रसूल की ओर आओ तो आप देखेंगे कि यह मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) आपसे मुँह फेर कर रुक जाते हैं।[1]

अनुकरणवाद अथवा एक विशेष व्यक्ति का आज्ञापालन करने पर विश्वास करने वाले एक तीसरे व्यक्ति की आज्ञापालन को उचित ठहराते हैं और इसी तीसरी आज्ञापालन-कारिता ने, जो क़ुरआन की इस आयत का स्पष्ट विरोध है मुसलमानों को एक उम्मत के विपरीत अनेक बना रखा है तथा उनकी एकता को असंभव बना दिया है।

[1]यह आयत ऐसे लोगों के बारे में उतरी है, जो अपना निर्णय कराने के लिए मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के न्यायालय में ले जाने के बजाय यहूदियों के मुखिया अथवा क़ुरैश के मुखिया के पास ले जाना चाहते थे परन्तु यह आदेश जन-सामान्य के लिए है और इसमें सभी वह लोग सम्मिलित हैं जो क़ुरआन और सुन्नत के विपरीत अपने निर्णय के लिए इन दोनों को छोड़ कर अन्य की ओर जाते हैं। वरन् मुसलमान का हाल तो यह होता है कि,

﴿ إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَنْ يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ﴾

"जब उन्हें अल्लाह और रसूल की ओर बुलाया जाता है ताकि उनके मध्य निर्णय कर दें, तो वह कहते हैं हमने सुना और हमने पालन किया।" (अल-नूर ५१)

ऐसे ही लोगों के लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया,

"وَ أُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ" "यही लोग सफल हैं।"

The Ummah Technology Mission

فَكَيْفَ إِذَآ أَصَٰبَتْهُم مُّصِيبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَآءُوكَ يَحْلِفُونَ بِٱللَّهِ إِنْ أَرَدْنَآ إِلَّآ إِحْسَٰنًا وَتَوْفِيقًا ﴿٦٢﴾

(६२) फिर क्या कारण है कि जब उन पर उनके कर्मों के कारण कोई आपत्ति आ पड़ती है, तो फिर यह आपके पास आकर अल्लाह (तआला) की शपथ लेते हैं कि हमारा विचार तो केवल भलाई तथा मधुर सम्बन्ध ही का था।[1]

أُو۟لَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ يَعْلَمُ ٱللَّهُ مَا فِى قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُل لَّهُمْ فِىٓ أَنفُسِهِمْ قَوْلًۢا بَلِيغًا ﴿٦٣﴾

(६३) यह वह लोग हैं जिनके दिलों का भेद अल्लाह (तआला) को भली-भाँति स्पष्ट है, आप उनसे अनसुनी कीजिये, तथा उन्हें शिक्षा देते रहिए एवं उन्हें वह बात कहिए जो उनके दिलों में घर करने वाली हो।[2]

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ ٱللَّهِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذ ظَّلَمُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ جَآءُوكَ فَٱسْتَغْفَرُوا۟ ٱللَّهَ وَٱسْتَغْفَرَ لَهُمُ

(६४) और हमने प्रत्येक रसूल को केवल इसीलिए भेजा कि अल्लाह (तआला) के आदेश से उसकी आज्ञा का पालन किया जाये और यदि यह लोग जब उन्होंने अपने प्राणों पर अत्याचार किया तेरे पास आ जाते, और अल्लाह (तआला) से क्षमा-याचना करते और

---

[1]अर्थात जब अपने इस करतूत के कारण अल्लाह की यातना के शिकार बन कर विपदा में फंसते हैं, तो फिर आकर यह कहते हैं कि किसी अन्य स्थान पर जाने का उद्देश्य यह नहीं था कि हम वहाँ से निर्णय करायें अथवा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अधिक न्याय मिलेगा, बल्कि हमारा उद्देश्य तो संधि तथा मिलाप कराना था।

[2]अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यद्यपि हम उनके दिलों के सभी भेदों से अवगत हैं (जिनका फल हम उन्हें देंगे) परन्तु हे पैगम्बर ! आप उनके प्रत्यक्ष को सामने रखते हुए क्षमा ही कीजिए और शिक्षा-दीक्षा तथा ऐसी बातें कहिए जो उनके दिलों में घर कर ले, और इससे उनके अन्दर के सुधार का प्रयत्न निरन्तर करते रहें। इससे ज्ञात हुआ कि शत्रु के षडयन्त्रों को क्षमा तथा अनसुनी करके शिक्षा-दीक्षा तथा हृदय स्पर्शी भाषण के द्वारा ही निष्काम बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

The Ummah Technology Mission

الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿٦٤﴾

रसूल भी उनके लिए क्षमा-याचना करते,[1] तो नि:संदेह यह लोग अल्लाह तआला को क्षमा करने वाला कृपालु पाते।

فَلَا وَ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَ يُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٦٥﴾

(६५) तो सौगन्ध है तेरे प्रभु की! यह (तब तक) ईमानवाले नहीं हो सकते जब तक कि सभी आपस के मतभेद में आपको न्यायिक न स्वीकार कर लें, फिर जो निर्णय आप कर दें उनसे अपने दिलों में तनिक भी कलुपता तथा अप्रसन्नता न पायें और आज्ञाकारी के भाँति स्वीकार कर लें।[2]

---

[1]मोक्ष के लिए अल्लाह तआला के सदन में क्षमा-याचना करना आवश्यक एवं पर्याप्त है। परन्तु यहाँ पर कहा गया है कि हे पैग़म्बर! वह तेरे पास आते और अल्लाह से क्षमा-याचना करते और तू भी उनके के लिए क्षमा-याचना करता। यह इसलिए कि उन्होंने अपने मतभेदों के निर्णय के लिए दूसरों के पास जाकर आपकी अवहेलना की थी। इसलिए उसके निवारण के लिए आपके पास आने के लिए विशेष बल दिया गया।

[2]इस आयत के उतरने के विषय में एक यहूदी और मुसलमान की घटना का सामान्यत: वर्णन होता है, जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदन में निर्णय के उपरान्त आदरणीय उमर (رضي الله عنه) से निर्णय करवाने गया, जिस पर आदरणीय उमर (رضي الله عنه) ने उस मुसलमान का सिर धड़ से अलग कर दिया। परन्तु यह वाक्य प्रमाणयुक्त नहीं है जैसा कि हाफ़िज इब्ने कसीर ने भी स्पष्ट किया है। सही घटना यह है जो इस आयत के उतरने का कारण है कि आदरणीय ज़ुबैर (رضي الله عنه) जो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफी के पुत्र थे, और एक आदमी के खेत की सिंचाई करने के लिए नाली के पानी पर झगड़ा था। यह विवाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचा, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने विवाद के घटना स्थल का निरीक्षण किया, न्याय के अनुसार निर्णय आदरणीय ज़ुबैर (رضي الله عنه) के पक्ष में हुआ, जिस पर दूसरे आदमी ने यह कहा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह निर्णय इसलिए किया है कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फूफी के पुत्र हैं। इस पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: *अल-निसा*) आयत का अर्थ यह हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की किसी बात अथवा निर्णय का विरोध तो अलग दिल में संकीर्णता भी ईमान के विपरीत है। यह आयत भी हदीस के इंकार करने वालों के लिए है ही, अन्य लोगों के लिये भी विचारणीय है, जो इमाम के कथन के

The Ummah Technology Mission

وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اَوِ اخْرُجُوْا مِنْ دِيَارِكُمْ مَّا فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ ۭ وَلَوْ اَنَّهُمْ فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ بِهٖ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَشَدَّ تَثْبِيْتًا ۝۶۶

(६६) और यदि हम उन पर यह अनिवार्य कर देते कि अपने आप की हत्या कर लो अथवा अपने घरों से निकल जाओ, तो उसे उनमें से वहुत ही कम लोग पालन करते। और यदि यह वही करें जिसकी उन्हें शिक्षा दी जाती है, तो अवश्य ही उनके लिए श्रेष्ठकर हो और अत्यधिक सुदृढ़ हो।[1]

وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّآ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝۶۷

(६७) और तव तो हम उन्हें अपने पास से वहुत पुण्य प्रदान करें।

وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۝۶۸

(६८) और नि:संदेह उन्हें सत्य मार्गदर्शन प्रदान कर दें।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰۗىِٕكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاۗءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰۗىِٕكَ رَفِيْقًا ۝۶۹

(६९) और जो भी अल्लाह (तआला) तथा रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की आज्ञा का पालन करे, वह उन लोगों के साथ होगा, जिन पर अल्लाह (तआला) ने अपनी कृपा की है, जैसे नवियों और सत्यवादियों तथा शहीदों एवं

सापेक्ष सहीह हदीस को मानने से संकुचित ही नहीं होते, अपितु वह स्पष्ट शब्दों में उसे मानने से इंकार करते हैं अथवा उसके कहने वालों की मान्य श्रृंखला को अथवा अन्य कुछ कारणों को वता कर अनुचित रुप से उसे असत्य कथन सिद्ध करते हैं।

[1]आयत में उन्हीं अवज्ञाकारी लोगों के दुर्व्यवहार की ओर संकेत करके कहा जा रहा है कि यदि उन्हें आदेश दिया जाता कि एक-दूसरे की हत्या करो अथवा अपने घरों से निकल जाओ तो जव यह सरल से सरल वातों का पालन नहीं कर सके, तो इस के अनुसार कैसे कर्म कर सकते थे? यह अल्लाह तआला ने अपने ज्ञान से उनके विषय में वताया है जो नि:संदेह घटनाओं के अनुसार है। तात्पर्य यह है कि कठोर आदेशों का पालन तो निश्चय कठिन है, परन्तु अल्लाह तआला अति दयालु तथा अति कृपालु है, उसके आदेश भी सरल हैं। इसलिए यदि यह इन आदेशों पर चलें जिनकी उन्हें शिक्षा दी जा रही है, तो यह उनके लिए श्रेष्ठता तथा स्थिरता का हेतु हो, क्योंकि ईमान आज्ञापालन से वढ़ता है और पाप से घटता है। पुण्य से पुण्य का मार्ग खुलता है और पाप से पाप जन्म लेता है।

The Ummah Technology Mission

पुण्य सदाचारियों के (साथ), यह अच्छे साथी हैं।[1]

ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ۝٧٠

(७०) यह अल्लाह (तआला) की ओर से कृपा है और अल्लाह (तआला) ही पर्याप्त जानकार है।

---

[1]अल्लाह और रसूल के आज्ञापालन का प्रतिकार बताया जा रहा है। इसलिए हदीस में आता है, «اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ اَحَبَّ» (सहीह बुखारी किताबुल आदाब, बाब संख्या ९७ अलामतु हुब्बिल्लाह अज़्ज व जल्ल, मुस्लिम किताबुल बिर्र वल सिल:वल आदाब, बाब अल-मरउ मन अहब्ब, हदीस संख्या १६४०) "आदमी उसी के साथ होगा, जिनसे उसको प्रेम होगा।" आदरणीय अनस (رضي الله عنه) फ़रमाते है "सहाबा को इतनी प्रसन्नता रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस कथन को सुनकर हुई, कि इतनी प्रसन्नता कभी नहीं हुई।" क्योंकि वह स्वर्ग में भी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का साथ चाहते थे। इसके उतरने की विशेषता का कथन इस प्रकार है कि कुछ सहाबा ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में कहा कि अल्लाह तआला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को स्वर्ग में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्रदान करेगा और हमें उससे नीचा स्थान ही मिलेगा और इस प्रकार हम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ तथा निकटता एवं दर्शन से वंचित रहेंगे, जो हमें दुनिया में प्राप्त है। अत: अल्लाह तआला ने यह आयत उतार कर उनके दिल को सन्तोष प्रदान किया। (इब्ने कसीर) कुछ सहाबा ने विशेष रूप से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से स्वर्ग में साथ होने की प्रार्थना की «اَسْاَلُكَ مُرَافَقَتَكَ فِي الْجَنَّةِ» जिस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें अधिकता से ऐच्छिक (नफ़िल) नमाज़ पढ़ने पर बल दिया «فَاَعِنِّي عَلٰى نَفْسِكَ بِكَثْرَةِ السُّجُوْدِ» (सहीह मुस्लिम, किताबुल सलात, बाब फ़ज़लिस्सुजूद वल हस्से अलैहि, हदीस संख्या ४८८) "बस, तुम सजदों की अधिकता से मेरी सहायता करो।" इसके अतिरिक्त एक अन्य हदीस है।

«اَلتَّاجِرُ الصَّدُوْقُ الْاَمِيْنُ مَعَ النَّبِيِّيْنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ»

"उचित सत्यवादी ईमानदार व्यापारी नबियों सत्यवादियों तथा शहीदों के साथ होगें।" (त्रिमिज किताबुल बुयुअ)

सिद्दीक़ियत पूर्ण विश्वास तथा सम्पूर्ण आज्ञापालन का नाम है, नबूवत के पश्चात इस का स्थान है। मुसलमानों में उस स्थान के लिए आदरणीय अबूबक्र सिद्दीक सर्वश्रेष्ठ हैं और इसीलिए सर्वसम्मति से नबियों के अतिरिक्त उनका नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात सर्वश्रेष्ठ स्थान है। सत्यकर्मी वह है जो अल्लाह के अधिकार और व्यक्तियों के अधिकार पूर्ण रूप से अदा करे और उन में आलस्य न करे।

Tirel Umrah Technology Mission

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا ﴿٧١﴾

(७१) हे मुसलमानो ! अपनी रक्षा सामग्री ले लो,[1] फिर गिरोह-गिरोह बनकर प्रस्थान करो अथवा सब के सब एक साथ प्रस्थान करो।

وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا ﴿٧٢﴾

(७२) और नि:संदेह तुम में कुछ ऐसे भी हैं जो संकोच करते हैं।[2] फिर यदि तुम्हें कोई हानि होती है तो कहते हैं कि अल्लाह (तआला) ने मुझ पर बड़ी कृपा की कि मैं उनके साथ उपस्थित नहीं था।

وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧٣﴾

(७३) और यदि तुम को अल्लाह (तआला) की कोई कृपा प्राप्त हो जाये[3] तो जैसे कि तुम में और उन में संबन्ध था ही नहीं[4] कहते हैं कि काश ! मैं भी उनके साथ होता तो बड़ी सफलता को पहुँच जाता।[5]

فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ؕ

(७४) परन्तु जो लोग दुनिया का जीवन परलोक (आख़िरत) के बदले बेच चुके हैं,[6] उन्हें अल्लाह

---

[1]अपना बचाव करो, अस्त्र-शस्त्र तथा युद्ध की सामग्री और अन्य साधन से।

[2]यह अवसरवादियों का वर्णन है। संकोच का अर्थ धर्मयुद्ध में जाने से कतराते और पीछे रह जाते हैं।

[3]अर्थात युद्ध में विजय, प्रभावशाली तथा प्राप्त सामान।

[4]अर्थात मानो वे तुम्हारे धर्म के लोगों में से है ही नहीं, अपितु अन्य हैं।

[5]अर्थात युद्ध से प्राप्त सामग्री में भागीदार होता जो स्वार्थ साधकों का सर्वश्रेष्ठ उद्देश्य है।

[6]شرى يشري के अर्थ बेचने के भी आते हैं और ख़रीदने के भी। मूल में पहले अनुवाद को लिया गया है। इस आधार पर فليقاتل का कर्त्ता الذين يشرون الحيٰوة होगा, परन्तु इसका अर्थ ख़रीदने के लिये जायें तो इस अवस्था में الذين कर्म कारक बनेगा और فليقاتل का कर्त्ता المؤمن الثافر (धर्मयुद्ध में प्रस्थान करने वाले मुसलमान) लुप्त होगा। अर्थ यह होगा कि "मुसलमान उन लोगों से लड़ें जिन्होंने परलोक (आख़िरत) बेच कर

The Ummah Technology Mission

وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٧٤﴾

(तआला) के मार्ग में धर्मयुद्ध करना चाहिए और जो अल्लाह (तआला) के मार्ग में धर्म युद्ध करते हुए शहीद हो जाये अथवा विजयी हो जाये तो, नि:संदेह हम उसे सर्वश्रेष्ठ प्रतिफल प्रदान करेंगे।

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۚ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾

(७५) भला क्या कारण है कि तुम अल्लाह के मार्ग में और उन शक्तिहीन पुरुषों, स्त्रियों तथा नन्हे-नन्हे बच्चों के छुटकारे के लिए धर्मयुद्ध न करो ? जो इस प्रकार से प्रार्थना कर रहे हैं कि हे हमारे प्रभु ! इन अत्याचारियों की बस्ती से हमें निकाल दे और हमारे लिए स्वयं अपने पास से पक्षधर निर्धारित कर और हमारे लिए विशेष रूप से अपने पास से सहायक बना।[1]

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ

(७६) जो लोग ईमान लाये हैं, वह तो अल्लाह (तआला) के मार्ग में धर्मयुद्ध करते हैं और जिन

दुनिया ख़रीद ली।" अर्थात जिन्होंने दुनिया के थोड़े से धन के लोभ में अपने धर्म को बेच डाला। तात्पर्य अवसरवदी तथा काफ़िर होंगे। (इब्ने कसीर ने इसी भावार्थ का वर्णन किया है)

[1]अत्याचारियों की बस्ती से (आयत के उतरने के आधार पर) तात्पर्य मक्का है। हिजरत के बाद वहाँ शेष रह जाने वाले मुसलमान विशेषरूप से वृद्ध पुरूष, स्त्री, और बच्चे काफ़िरों के अत्याचार से तंग आकर अल्लाह के दरबार में सहायता की दुआ करते थे। अल्लाह तआला ने मुसलमानों को चेतावनी दी कि तुम مستضعفين (उपरोक्त वर्णित कमजोर व्यक्तियों) को काफ़िरों से मुक्त कराने के लिए धर्मयुद्ध क्यों नहीं करते ? इस आयत से भाव निकालकर विद्वानों ने कहा है कि जिस क्षेत्र में भी मुसलमान काफ़िरों के अत्याचारों के शिकार हो रहे हों तो दूसरे मुसलमानों को अनिवार्य है कि काफ़िरों के अत्याचार से मुक्त कराने के लिए धर्मयुद्ध करें। यह धर्मयुद्ध का दूसरा रूप है पहला रूप अल्लाह के आदेश अर्थात उसके धर्म के प्रचार-प्रसार तथा अल्लाह तआला के आदेशों के प्रभाव के लिए लड़ना, जिसका वर्णन इससे पहली आयत तथा आगामी आयत में है।

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا اَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ۝٧٦

लोगों ने कुफ्र किया है वह तो राक्षस के मार्ग में लड़ते हैं[1] बस, तुम शैतान के मित्रों से युद्ध करो, विश्वास करो कि शैतान की चाल (बिल्कुल क्षीण तथा) अत्यधिक शक्तिहीन है।[2]

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى

(७७) क्या तुम ने उन्हें नहीं देखा जिन्हें आदेश दिया गया कि अपने हाथों को रोके रखो और नमाज़ें पढ़ते रहो और ज़कात अदा करते रहो। फिर जब उन्हें धर्म युद्ध का आदेश दिया गया, तो उसी समय उनका एक गिरोह लोगों से इस प्रकार भयभीत था, जैसे अल्लाह (तआला) का भय हो, बल्कि इससे भी अधिक। और कहने लगे, हे हमारे प्रभु! तूने हम पर धर्मयुद्ध क्यों अनिवार्य किया?[3] क्यों हमें थोड़ा जीवन

---

[1]मुसलमान और काफ़िर दोनों को युद्ध की आवश्यकता होती है। परन्तु दोनों के युद्ध के उद्देश्य में बड़ा अन्तर है। मुसलमान अल्लाह के लिए लड़ता है, मात्र दुनिया अथवा राज्य विस्तार के लिए नहीं। जब कि काफ़िर का उद्देश्य यही दुनिया और उसके लाभ होते हैं।

[2]मुसलमानों को प्रलोभन दिया गया है कि शैतानी उद्देश्यों के लिए बहाने तथा चाल क्षीण होते हैं, प्रत्यक्ष साधनों के पराचुर्य एवं अधिक संख्या से न डरो तुम्हारा विश्वास बल तथा तुम्हारे धर्म युद्ध के संकल्प के आगे शैतान के शिष्य नही ठहर सकते।

[3]मक्के में मुसलमान चूँकि संख्या तथा संसाधन की कमी के कारण लड़ने योग्य नहीं थे। इसलिए उनकी इच्छा के विपरीत उन्हें युद्ध से रोके रखा गया। और दो बातों पर बल दिया जाता रहा, एक यह कि काफ़िरों के अत्याचार को धैर्य तथा साहस से सहन करें और क्षमा तथा सहिष्णुता से ही काम लें। दूसरे यह कि नमाज़, ज़कात तथा अन्य अर्चना तथा शिक्षाओं के अनुरूप कार्य करें ताकि अल्लाह तआला से सम्बन्ध दृढ़ आधारों पर स्थित हो। परन्तु हिजरत के बाद मदीने में जब मुसलमानों की शक्ति एकत्रित हो गयी तो फिर उन्हें लड़ने की अनुमति दी गयी। और जब अनुमति दे दी गयी, तो कुछ लोगों ने निर्बलता तथा साहस विहीनता का प्रदर्शन किया। इस आयत में मक्के के समय में उनकी आकांक्षाओं को याद दिलाकर कहा जा रहा है कि अब यह

The Ummah Technology Mission

اَجَلٍ قَرِيْبٍ ؕ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۣ وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝

और न व्यतीत करने दिया ?[1] आप कह दीजिए कि दुनिया का लाभ तो बहुत कम है और परहेज़गारों के लिए आख़िरत (परलोक) श्रेष्ठ है, और तुम एक धागे के समान भी अत्याचार न किये जाओगे।

اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ؕ وَاِنْ

(७८) तुम जहाँ कहीं भी होगे मृत्यु तुम्हें आ पकड़ेगी, चाहे तुम सुदृढ़ दुर्गों में हो।[2] और

मुसलमान धर्म युद्ध का आदेश सुन कर भयभीत क्यों हो रहे हैं ? जबकि यह धर्मयुद्ध तो स्वयं उनकी कामना के अनुरूप है।

क़ुरआन की आयत बदलना : आयत का पहला भाग जिसमें लड़ाई से हाथ रोके रखने का आदेश है इससे कुछ लोगों ने यह भाव निकाला है कि नमाज़ में रूकुअ में जाते और रूकुअ से उठते समय हाथों को कानों तक नहीं उठाना चाहिए (जिसे रफ़उल यदैन कहते हैं) क्योंकि अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में नमाज़ की अवस्था में हाथों को रोके रखने का आदेश दिया है यह एक अनुचित और बेकार तर्क है। इसके लिए उन साहब ने आयत के शब्दों को भी बदला है और अर्थ भी। अर्थात शाब्दिक एवं भावार्थ दोनों में परिवर्तन कर डाला है।

[1]इसका दूसरा अनुवाद यह भी किया गया है कि इस धर्मयुद्ध के आदेश को कुछ समय के लिए स्थगित क्यों न कर दिया ? अर्थात اَجَلٍ قَرِيْبٍ से तात्पर्य मृत्यु अथवा धर्मयुद्ध का समय है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[2]ऐसे कमज़ोर मुसलमानों को समझाने के लिए कहा जा रहा है कि यह दुनिया क्षणभंगुर है तथा इसका लाभ अस्थाई है, जिसके लिए तुम समय माँग रहे हो। जिसकी अपेक्षा परलोक (आख़िरत) सर्वश्रेष्ठ है, जिसको तुम अल्लाह तआला के आज्ञाकारी हो कर प्राप्त कर सकोगे। दूसरे यह कि तुम धर्मयुद्ध करो अथवा न करो मृत्यु तो अपने समय पर आकर ही रहेगी, चाहे तुम सुदृढ़ दुर्गों में ही जाकर क्यों न छुप जाओ। फिर धर्म युद्ध से जान बचाने का क्या लाभ ? "सुदृढ़ दुर्गों" से तात्पर्य सुदृढ़ तथा उच्च दीवारों से घिरे दुर्ग हैं।

टिप्पणी : कुछ मुसलमानों को प्राकृतिक रूप से यह भय था। इसी प्रकार विलम्ब करने की कामना भी आपत्ति अथवा इंकार के लिए न था, बल्कि प्राकृतिक भय का एक तार्किक परिणाम था। इसलिए अल्लाह तआला ने उसे क्षमा कर दिया और अत्यधिक सुदृढ़ तर्क से उन्हें सहारा तथा साहस दिया।

The Ummah Technology Mission

تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ۭ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ فَمَالِ هٰٓؤُلَاۗءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا ۝۷۸

यदि इन्हें कोई भलाई मिलती है तो कहते हैं कि यह अल्लाह (तआला) की ओर से है और यदि कोई बुराई पहुँचती है, तो कह उठते हैं कि यह तेरी ओर से है।[1] उन्हें कह दो, यह सब कुछ अल्लाह (तआला) की ओर से हैं। उन्हें क्या हो गया है कि कोई बात समझने के निकट भी नहीं ?[2]

مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ۠ وَمَآ اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ

(७९) तुझे जो भलाई मिलती है वह अल्लाह (तआला) की ओर से है।[3] और जो बुराई

---

[1]यहाँ से पुनः अवसरवादियों की बातों का वर्णन हो रहा है। विगत समुदाय के अवसरवादियों की भाँति इन्होंने भी कहा कि भलाई (सम्पन्नता, अन्न की उपज, धन तथा सन्तान की अधिकता आदि) अल्लाह की ओर से है और बुराई (सूखा, धन-धान्य में कमी आदि) हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तेरी ओर से अर्थात तेरा धर्म स्वीकार करने के कारण यह विपदा आयी है। जिस प्रकार से (आदरणीय) मूसा अलैहिस्सलाम और फ़िरऔन के अनुयायियों के विषय में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है, "जब उनको कोई भलाई पहुँचती है तो कहते हैं, यह हमारे लिए है (हम इसके पात्र हैं) और जब उनको बुराई पहुँचती है, तो (आदरणीय) मूसा और उनके अनुयायियों से अपशगुन लेते हैं।" (अर्थात अल्लाह की शरण, अशुभ का कारण उन्हीं को बताते हैं) (*अल-आराफ़-१३१*)

[2]अर्थात शुभ-अशुभ दोनों अल्लाह कीं ओर से है। परन्तु यह ज्ञान की कमी तथा मुर्खता के कारण इस बात को नहीं समझ पाते।

[3]अर्थात मात्र उसकी कृपा एवं दया से है। अर्थात किसी पुण्य अथवा आज्ञा पालन का प्रतिफल नहीं है। क्योंकि पुण्य का सामर्थ्य भी अल्लाह तआला ही देता है। इसके अतिरिक्त उसकी कृपा इतनी असीम है कि एक मनुष्य की वंदना तथा आज्ञा पालन उसकी अपेक्षा कोई मूल्य नहीं रखता है। इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "स्वर्ग में जो भी जायेगा, मात्र अल्लाह की कृपा से जायेगा (अपने कर्मों के कारण नहीं)।" सहचरों ने कहा, "हे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप भी अल्लाह की कृपा के बिना स्वर्ग में नहीं जायेंगें ?" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हाँ, जब तक अल्लाह तआला मुझे भी अपनी कृपा की छाया में नही ढाँक लेगा स्वर्ग में नहीं जाऊँगा। (सहीह बुखारी किताबुल रिक़ाक़ अध्याय संख्या १८)

The Ummah Technology Mission

نَّفْسِكَ ۚ وَ اَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٧٩﴾

पहुँचती है वह तेरे अपने स्वयं की ओर से है।[1] हमने तुझे मानव जाति के लिए सन्देश-वाहक बनाकर भेजा है तथा अल्लाह (तआला) पर्याप्त साक्षी है।

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ﴿٨٠﴾

(८०) इस रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का जो अनुसरण करे उसी ने अल्लाह (तआला) की आज्ञाकारिता की और जो मुँह फेर ले तो हमने आपको कोई उन पर रक्षक बना कर नहीं भेजा।

وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۫ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِىْ تَقُوْلُ ؕ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٨١﴾

(८१) और यह कहते तो हैं कि अनुकरण है, फिर जब आपके पास से उठ कर बाहर निकलते हैं, तो उनमें का एक गुट जो बात आपने अथवा उसने कही है उसके विपरीत रातों को विचार-विमर्श करता है।[2] उनकी रातों की बातचीत अल्लाह (तआला) लिख रहा है। आप उनसे मुँह फेर लें और अल्लाह

---

[1]यह बुराई भी यद्यपि अल्लाह की इच्छा से ही आती है। जैसा कि 'प्रत्येक विषय अल्लाह की ओर से है' से स्पष्ट होता है, परन्तु यह बुराई किसी पाप के परिणाम स्वरूप होती है। इसलिए फ़रमाया कि यह तुम्हारी अपनी स्वयं की करनी है अर्थात तुम्हारी ग़लतियों, आलस्य तथा पाप का परिणाम है। जिस प्रकार फ़रमाया :

﴿ وَمَاۤ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ﴾

"तुम्हें जो कठनाई पहुँचती है, वह तुम्हारे अपने कर्मों का फल है और बहुत से पाप तो क्षमा ही कर देता है।"(अश्शूरा-३०)

[2]यह अवसरवादी आप के पास जो बातें व्यक्त करते हैं, रातों को इसके विपरीत बातें करते हैं और षड़यन्त्र रचा करते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे बचें और अल्लाह पर भरोसा करें। इनके षड़यन्त्र आप को हानि नहीं पहुँचा सकते क्योंकि आपका संरक्षक तथा कामों को बनाने वाला अल्लाह है।

The Ummah Technology Mission

तआला पर भरोसा रखें, अल्लाह तआला पर्याप्त व्यवस्थापक है।

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ ۚ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِندِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا ﴿٨٢﴾

(८२) क्या यह लोग क़ुरआन पर विचार नहीं करते ? यदि यह अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त किसी अन्य की ओर से होता तो अवश्य इस में बहुत कुछ विभिन्नता पाते।[1]

وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِّنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ ۖ وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَىٰ أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ يَسْتَنبِطُونَهُ مِنْهُمْ ۗ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ

(८३) और जहाँ उनको कोई सूचना शांति अथवा भय की मिली कि उन्होंने उसका प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया, यद्यपि ये लोग उसे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के तथा अपने में से ऐसी बातों के स्रोत तक पहुचने वालों के हवाले कर देते, तो इस की वास्तविकता वह लोग ज्ञात कर लेते जो

---

[1] क़ुरआन करीम से मार्गदर्शन ग्रहण करने के लिए उसमें विचार करने पर बल दिया जा रहा है और उसकी सत्यता जाँचने के लिए एक स्तर भी बताया जा रहा है कि यदि यह किसी पुरुष द्वारा लिखित होता (जैसा कि काफ़िरों का विचार है) तो इसके विषय तथा वर्णित घटनाओं में टकराव तथा मतभेद होता। क्योंकि यह एक छोटी पुस्तक नहीं है। एक स्थूल तथा विस्तृत किताब है, जिसका प्रत्येक भाग चमत्कार तथा साहित्य में अनुपम है। जबकि मानव द्वारा रचित स्थूल पुस्तक में भाषा का स्तर और उसकी कोमलता तथा सरलता स्थिर नहीं रहती। दूसरे इसमें पूर्व के समुदायों की घटनाओं का वर्णन है, जिसे केवल अल्लाह परोक्षज्ञ के अतिरिक्त अन्य कोई भी वर्णन नहीं कर सकता। तीसरे इनके बयान तथा कथाओं में न आपसी विभेद है और न उनका छोटे से छोटा अंश भी क़ुरआन की किसी वास्तविकता से टकराता है। यदि एक मनुष्य विगत की घटनाओं का वर्णन करे तो उसकी श्रृंखला की कड़ियाँ टूट जाती हैं और उनके विवरण में विपरीतता उत्पन्न हो ही जाती है। क़ुरआन करीम के इन सभी मानवी दोषों से स्वच्छ होने का स्पष्ट अर्थ यह है कि यह वास्तव में अल्लाह का कथन है, जो उसके फ़रिश्तों द्वारा अपने अन्तिम संदेशवाहक परम आदरणीय मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारा।

The Ummah Technology Mission

وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٣﴾

अनुसंधान की बुद्धि रखते हैं।[1] और यदि अल्लाह (तआला) की कृपा और उसकी दया तुम पर न होती, तो कुछ व्यक्तियों के अतिरिक्त तुम सभी शैतान के अनुयायी बन जाते।

فَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّاَشَدُّ تَنْكِيْلًا ﴿٨٤﴾

(८४) तू अल्लाह तआला के मार्ग में धर्मयुद्ध करता रह, तुझे केवल तेरे प्रति ही आदेश दिया जाता है। हाँ, ईमानवालों को आकर्षित करता रह, अति सम्भव है कि अल्लाह (तआला) काफ़िरों के आक्रमण को रोक दे। और अल्लाह (तआला) अत्यधिक शक्तिशाली है एवं दंड देने में भी अति कठोर है।

مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً

(८५) जो व्यक्ति किसी पुण्य तथा भले कार्य करने की सिफ़ारिश करे, उसे भी उसका कुछ भाग मिलेगा और जो बुराई तथा कुकर्म करने

---

[1] यह कुछ निर्बल तथा व्यग्र मुसलमानों का आचरण, उनके सुधार के लिए वर्णित किया जा रहा है। शान्ति की सूचना से तात्पर्य मुसलमानों की सफलता एवं शत्रु का विनाश तथा पराजय की सूचना है। जिसे सुन कर शान्ति की लहर दौड़ जाती है और जिसके कारण कई बार आवश्यकता से अधिक भरोसा उत्पन्न हो जाता है जो हानि का कारण बन सकता है। और भय की सूचना से तात्पर्य मुसलमानों की पराजय और उनकी हत्या तथा हानि की सूचना है (जिससे मुसलमानों में निराशा फैलने तथा साहस हीनता की संभावना है) इसलिए उनसे कहा जा रहा है कि इस प्रकार की सूचना चाहे शान्ति की हो अथवा भय की उन्हें सुन कर जनसामान्य में फैलाने के बजाय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचा दो, अथवा ज्ञानियों और जो शोधकर्ता हों उन्हें पहुँचा दो, ताकि वह विचार करें कि यह सूचना सही है अथवा ग़लत यदि सही है तो उस समय उससे मुसलमानों का अवगत होना लाभकारी है अथवा अनभिज्ञ रहना लाभकारी है ? यह नियम वैसे तो सामान्य अवस्था के लिए भी बड़ा महत्व तथा अधिक लाभकारी है। परन्तु युद्ध काल में तो इसकी विशेषता और आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है।

The Ummah Technology Mission

سَيِّئَةٌ يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيْتًا ﴿٨٥﴾

की सिफ़ारिश करे, उसके लिए भी उसमें से एक भाग है और अल्लाह (तआला) हर वस्तु पर सामर्थ्य रखने वाला है।

وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَاۤ اَوْ رُدُّوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيْبًا ﴿٨٦﴾

(८६) और जब तुम्हें सलाम (अभिवादन) किया जाये तो उससे अच्छा उत्तर दो अथवा उन्हीं शब्दों को पलट दो। [1] नि:संदेह, अल्लाह (तआला) हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है।

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ﴿٨٧﴾

(८७) अल्लाह वह है, जिसके अतिरिक्त कोई (सच्चा) पूज्य नहीं, वह तुम सब को अवश्य क़ियामत के दिन एकत्रित करेगा जिसके (आने) में कोई शंका नहीं, अल्लाह (तआला) से अधिक सत्य किस की बात होगी।

---

[1] تحية वास्तव में حيية है। ي के ي में संधि के पश्चात تحية हो गया। इसका अर्थ दीर्घ आयु का आशिर्वाद है, यहाँ यह सलाम करने के अर्थ में है। (फ़तहुल क़दीर) अधिक अच्छा उत्तर देने की व्याख्या हदीस में इस प्रकार आयी है कि "अस्सलामु अलैकुम" के उत्तर में "व रहमतुल्लाह" की अधिकता और "अस्लामु अलैकुम व रहमतुल्लाह" के उत्तर में "व बर्कातुहू" की अधिकता कर दी जाये। परन्तु यदि कोई "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह व बर्कातुहू" कहे तो फिर अधिक किये बिना उन्हीं शब्दों में उत्तर दिया जाये। (इब्ने कसीर) और हदीस में है कि केवल "अस्सलामु अलैकुम" कहने से दस पुण्य, उसके साथ "व रहमतुल्लाह" कहने से बीस पुण्य और "व बर्कातुह" कहने से तीस पुण्य मिलते हैं। (मुसनद अहमद भाग ४, पृष्ठ ४३९ तथा ४४०) ध्यान रहे कि यह आदेश मुसलमानों के लिए है, अर्थात एक मुसलमान जब दूसरे मुसलमान को सलाम करे। शरणार्थी अर्थात यहूदी तथा ईसाईयों को सलाम करना हो तो एक तो उनको सलाम करने में पहल न की जाये। दूसरे बढ़ोत्तरी न की जाये बल्कि केवल व अलैकुम के साथ उत्तर दिया जाये। (सहीह बुख़ारी, किताबुल इस्तिज़ान, मुस्लिम, किताबुस्सलाम)

The Ummah Technology Mission

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ؕ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ۝

(८८) तुम्हें क्या हो गया है कि अवसरवादियों के विषय में दो गुट हो रहे हो ?[1] उन्हें तो उनके कर्मों के कारण अल्लाह (महान) ने औंधा कर दिया है।[2] अब क्या तुम यह चाहते हो कि उसे मार्ग दिखाओ, जिसे अल्लाह ने विपथ कर दिया है, तो जिसे अल्लाह विपथ कर दे कदापि तुम उसके लिए कोई मार्ग न पाओगे।[3]

وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ اَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ص

(८९) वह इच्छा करते हैं कि जैसे काफ़िर वे हैं तुम भी उनकी भाँति ईमान का इंकार करने लगो तथा तुम सभी समान बन जाओ, अतः उनमें से किसी को वास्तविक मित्र न बनाओ[4] जब तक वह अल्लाह के मार्ग में हिजरत (प्रवास) न करें, फिर यदि (इससे) मुँह फेरें तो

---

[1]यह प्रश्न इंकार के लिए है अर्थात तुम्हारे मध्य इन अवसरवादियों के विषय में मतभेद नहीं होना चाहिए था। इन अवसरवादियों से तात्पर्य वह लोग हैं जो ओहद के युद्ध के समय मदीना शहर के बाहर कुछ दूर जाने के बाद वापस आ गये थे कि हमारी बात नहीं मानी गयी। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः अन-निसा, सहीह मुस्लिम किताबुल मुनाफ़िक़ीन) जैसाकि विस्तार से पूर्व में गुजर चुका है इन अवसरवादियों के लिए मुसलमानों में दो गुट बन गये थे। एक गुट का कहना था कि इन अवसरवादियों से हमें अभी निपटना चहिए, दूसरा गुट इसे अवसर तथा परिस्थिति के विपरीत समझता था।

[2] كسبوا (कर्म) से तात्पर्य रसूल का विरोध तथा धर्मयुद्ध से मुँह फेरना है। اركسهم औंधा कर दिया अर्थात जिस अविश्वास और विपदा से निकले थे, उसी में ले जाकर फँसा दिया अथवा इसके कारण नष्ट कर दिया।

[3]जिसको अल्लाह भटका दे अर्थात निरन्तर अधर्म तथा कटुता के कारण उनके दिलों पर मुहर लगा दे उन्हें कोई मार्ग पर नहीं ले जा सकता।

[4]हिजरत (इस्लाम के लिए देश त्याग) इस बात का प्रमाण है कि अब यह शुद्ध मुसलमान बन गये हैं। इस अवस्था में मित्रता तथा प्रेम उचित होगा।

The Ummah Technology Mission

وَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٨٩﴾

उन्हें पकड़ो[1] तथा हत करो जहाँ पाओ। सावधान ! उनमें से किसी को मित्र एवं सहायक न समझ बैठो।

اِلَّا الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ يُقَاتِلُوْا قَوْمَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ فَاِنِ اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ ۙ فَمَا

(९०) परन्तु जो उस समुदाय से संबन्ध रखते हों जिनके तथा तुम्हारे बीच संधि हो चुकी हो अथवा जो तुम्हारे पास आयें तो उनके दिल संकुचित हो रहे हों कि तुमसे लड़ें,[2] तथा अपने समुदाय से लड़ें, और यदि अल्लाह चाहता तो उंन्हें तुम पर शक्ति प्रदान कर देता तथा वह अवश्य तुम से लड़ते[3] तो यदि वह तुमसे अलग रहें और लड़ाई न करें और तुम्हारी ओर शांति का संदेश प्रस्तुत[4]

---

[1]अर्थात जब तुम्हें उन पर वश तथा अधिकार प्राप्त हो जाये।

[2]अर्थात जिनसे लड़ने का आदेश दिया जा रहा है। इससे दो प्रकार के लोग अलग हैं। एक वह लोग, जो ऐसे समुदाय से सम्बन्ध रखते हैं अर्थात ऐसे समुदाय के लोग हैं अथवा उसकी शरण में हैं, जिस समुदाय से तुम्हारी संधि है। दूसरे वह जो तुम्हारे पास इस अवस्था में आते हैं कि अपने समुदाय से मिलकर तुमसे अथवा तुमसे मिलकर अपने समुदाय से युद्ध करने से कतराते हैं। अर्थात तुम्हरे पक्ष में लड़ना पसन्द करते हैं और न तुम्हारे विपक्ष में।

[3]अर्थात यह अल्लाह का उपकार है कि उन्हें लड़ाई से अलग कर दिया वरन् यदि अल्लाह तआला उनके दिल में भी अपने समुदाय के पक्ष में लड़ने का विचार डाल देता, तो अवश्य वह भी तुम से लड़ते इसलिए यदि वास्तव में यह युद्ध से अलग रहें, तो तुम भी इनके विरोध में कोई प्रगति न करो।

[4]अलग रहें, न लड़ें, तुम्हारी ओर सन्धि का हाथ बढ़ायें, सभी का भावार्थ एक ही है। स्पष्टीकरण तथा विवरण के लिए यह तीन शब्द प्रयोग किये गये हैं ताकि मुसलमान उनके विषय में सावधान रहें। क्योंकि जो युद्ध तथा घटना से पूर्व ही अलग हो गये हैं और उनका यह अलग होना मुसलमानों के पक्ष में लाभकारी भी है। इसीलिए अल्लाह तआला ने इसे उपकार के रूप में वर्णन किया है तो उनके विषय में छेड़छाड़ की उपाय अथवा असावधानी कार्य उनके अन्दर भी विरोध तथा लड़ाई की भावना जागृत

The Ummah Technology Mission

جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ﴿٩٠﴾

करें, तो (फिर) अल्लाह ने तुम्हारे लिये उन पर कोई मार्ग युद्ध का नहीं बनाया है।

سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّاْمَنُوْكُمْ وَ يَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ؕ كُلَّمَا رُدُّوْۤا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا فِيْهَا ۚ فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْۤا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَيَكُفُّوْۤا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ ؕ

(९१) तुम कुछ दुसरों को पाओगे जो तुम से तथा अपने वर्ग से सुरक्षित [1] रहना चाहते हैं, तथा जब कभी वह उपद्रव[2] की ओर फेरे जाते हैं तो उसमें औंधे मुहँ पड़ जाते हैं, यदि वह तुम से विलग न रहें तथा तुम से संधि न करें और अपने हाथ न रोकें[3] तो उन्हें पकड़ो

कर सकता है जो मुसलमानों के लिए हानिकारक है। इसलिए जब तक वह वर्णित अवस्था में स्थिर रहें उनसे न लड़ो। जिसका उदाहरण उस गुट से है जिसका सम्बन्ध वनी हाशिम से था, यह बद्र के युद्ध के दिन मक्का के मूर्तिपूजकों के साथ युद्धस्थल में तो आये परन्तु यह उनके साथ सम्मिलित होकर मुसलमानों से युद्ध नहीं करना चाहते थे। जैसे आदरणीय अब्बास (رضي الله عنه) रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा) आदि, जो अभी तक मुसलमान नहीं हुए थे। इसीलिए दिखाने के लिए काफ़िरों के कैम्प में थे। इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय अब्बास (رضي الله عنه) को हत्या करने से रोक दिया था और उन्हें केवल बंदी बनाने पर ही बस किया। سِلْمٌ यहाँ مُسَالَمَة अर्थात संधि के अर्थों में है।

[1]यह एक तीसरे गुट का वर्णन है, जो अवसरवादी था। यह मुसलमानों के पास आते तो इस्लाम का प्रदर्शन करते, ताकि मुसलमानों से सुरक्षित रहें। अपनी जाति के लोगों के पास जाते तो शिर्क तथा मूर्तिपूजा करते, ताकि वह उन्हें अपने ही धर्म का अनुयायी समझें और इस प्रकार दोनों से लाभ प्राप्त कर सकें।

[2]उपद्रव से तात्पर्य मिश्रणवाद भी हो सकता है। اُرْكِسُوا فِيهَا उसी शिर्क में लौटा दिये जाते। अथवा उपद्रव से तात्पर्य लड़ाई है कि जब उन्हें मुसलमानों के साथ लड़ने के लिए बुलाया अर्थात लौटाया जाता है, तो वह उस पर तैयार हो जाते हैं।

[3]يُلقوا और يكفوا का संबन्ध يعتزلوكم से है अर्थात सभी नकारात्मक अर्थ में हैं, सभी में لا (नकार) लगेगा।

The Ummah Technology Mission

وَاُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿٩١﴾

और जहाँ पाओ हत करो, यही वह हैं जिन पर हमने तुम को खुला तर्क दिया है।[1]

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا خَطَـًٔا ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ۭ فَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ

(९२) किसी मुसलमान के लिये उचित नहीं कि किसी मुसलमान की हत्या कर दे परन्तु चूक[2] से हो जाये (तो और बात है) तथा जो व्यक्ति किसी मुसलमान की हत्या चूक से कर दे [3] तो उस पर एक मुसलमान दास (अथवा दासी) मुक्त करना और हत के संबन्धियों को खून का मूल्य देना है।[4] परन्तु यह और

---

[1]इस बात पर कि वास्तव में उनके दिलों में द्वयवाद तथा उनके मनों में तुम्हारे प्रति ईर्ष्या तथा कटुता है। तभी तो वह तनिक प्रयास से पुनः उपद्रव (मिश्रणवाद अथवा तुम्हारे विरुद्ध लड़ने को तैयार होने) में लिप्त हो गये।

[2]यह नकार निषेध के अर्थों में है जो निषेध अभियाचक है अर्थात एक मुसलमान के लिये दूसरे मुसलमान की हत्या करना निषेध तथा अवैध है। जैसे

﴿وَمَا كَانَ لَكُمْ أَن تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ﴾

"तुम्हारे योग्य नहीं है कि तुम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम) को कष्ट पहुँचाओ।" (*अल-अहजाब*-५३) अर्थात हराम है।

[3]ग़लती के कारण तथा परिस्थितियाँ कई एक हो सकती हैं। उद्देश्य है कि विचार तथा इरादा हत्या करने का न हो। परन्तु किसी कारणवश हत्या हो जाये।

[4]यह ग़लती से हत्या के अपराध के दंड का वर्णन हो रहा है, जो दो रूप में है। एक प्रायश्चित एवं क्षमा-याचना के रूप में है। अर्थात एक मुसलमान दास को स्वतन्त्र करना तथा दूसरी मानव अधिकार के रूप में है। और वह है देयत (रक्त का मूल्य) मृतक के रक्त के बदले मृतक के उत्तराधिकारियों को जो कुछ भी दिया जाये, वह देयत है। और देयत की मात्रा हदीसों के आधार पर सौ ऊँट अथवा उसके समतुल्य नगद स्वर्ण, चाँदी अथवा मुद्रा के रूप में होगी।

टिप्पणी : ध्यान रहे कि जान बूझ कर हत्या में ख़ून का बदला ख़ून है (जिसे क़सास कहते हैं) अथवा दंड रूप में देयत है। और दंड स्वरूप देयत की सीमा सौ ऊँट है। जो आयु तथा स्वास्थ्य के अनुसार तीन प्रकार के होने चाहिए। जबकि भूल-चूक में हत्या होने से केवल देयत है, प्रतिहत्या नहीं है। इस देयत में मात्रा सौ ऊँट हैं परन्तु स्तर

The Ummah Technology Mission

فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ؕ وَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖ وَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ۙ تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ

बात है कि वह क्षमा कर दें,[1] और यदि वह हत तुम्हारे शत्रु वर्ग से हो और मुसलमान हो तो एक मुसलमान दास मुक्त करना आवश्यक है,[2] और यदि हत उस समुदाय से है जिसके तथा तुम्हारे (मुसलमानों के) बीच संधि है तो रक्त का मूल्य उसके संबन्धियों को अदा करना है और एक मुसलमान दास मुक्त करना भी है,[3] और जिसे उपलब्ध न हो उसको दो

इतना कड़ा नहीं है। इसके अतिरिक्त इसका मूल्य सुनन अबू दाऊद की हदीस में आठ सौ दीनार अथवा आठ हज़ार दिरहम और तिर्मिज़ी के कथनानुसार बारह हज़ार दिरहम बताया गया है। इसी प्रकार आदरणीय उमर (رضي الله عنه) ने अपने शासन काल में देयत के मूल्य में कमी तथा अधिकता तथा विभिन्न व्यवसाय वालों के अनुकूल उनके विभिन्न मूल्य रखे थे। (इरवाउल ग़लील भाग: ८) (सौ ऊँट के) आधार पर उसका मूल्य हर काल में उसके मूल्य के अनूसार निर्धारित किया जायेगा। (विस्तार से जानकारी के लिए धार्मिक नियमों, हदीस तथा विद्वानों की पुस्तकें देखें।

[1]क्षमा कर देने को दान के रूप में वर्णन करने का उद्देश्य क्षमा करने का प्रलोभन देना है।

[2]अर्थात इस अवस्था में देयत नहीं होगी। इस का कारण कुछ ने इस प्रकार वर्णन किया है कि क्योंकि उसके सम्बन्धी शत्रुता के आधार पर लड़ने वाले काफ़िर हैं, इस लिए वह मुसलमान के देयत लेने के अधिकारी नही हैं। कुछ ने यह कारण वर्णित किये हैं कि इस मुसलमान ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेने के पश्चात हिजरत नहीं की जबकि उस समय हिजरत पर बड़ा बल दिया गया था। इस आलस्य के कारण उसके ख़ून की निषेधता कम है। (फ़तहुल क़दीर)

[3]यह एक तीसरी अवस्था है। इसमें भी वह दंड तथा देयत है जो पहली अवस्था में है। कुछ ने कहा यदि हत संरक्षण में है, तो उसकी देयत मुसलमान की देयत की आधी होगी क्योंकि हदीस में काफ़िर की देयत मुसलमान की देयत से आधी वर्णित की गयी है (इरवाउल ग़लील भाग ४, पृष्ठ ३०) लेकिन अधिक उचित बात यही प्रतीत होती है कि इस तीसरी अवस्था में भी हत मुसलमान ही का आदेश वर्णित किया जा रहा है।

The Ummah Technology Mission

وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٩٢﴾

महीने लगातार रोजा (व्रत) रखना [1] है अल्लाह से क्षमा करवाने के लिए, तथा अल्लाह ज्ञानी व विवेकवाला है।

وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿٩٣﴾

(९३) और जो कोई किसी मुसलमान की जान-बूझ कर हत्या कर डाले उसका दंड नरक है, जिसमें वह सदैव रहेगा, उस पर अल्लाह (तआला) का क्रोध है।[2] उसे अल्लाह (तआला) ने धिक्कारा है, और उसके लिए बहुत बड़ी यातना तैयार कर रखी है।[3]

---

[1]अर्थात यदि दास स्वतन्त्र करने की शक्ति न हो तो, पहली अवस्था तथा इस अन्तिम अवस्था में देयत के साथ निरन्तर (बिना अन्तर) के दो माह व्रत (रोजे) हैं यदि मध्य में अन्तर हो गया, तो पुन: नये सिरे से व्रत रखने आवश्यक होंगे। परन्तु धार्मिक कारणों से अन्तर हो जाने पर नये सिरे से व्रत रखने की आवश्यकता नहीं है। जैसे मासिक धर्म, प्रसव रक्त अथवा कठिन रोग के कारण व्रत रखने में बाधक हो, यात्रा को धार्मिक कारण मानने में मत भेद है। (इब्ने कसीर)

[2]यह जान बूझकर की गयी हत्या का दंड है। हत्या तीन प्रकार की होती है : (१) अनजाने में हत्या (जिसका वर्णन इस आयत के पूर्व आयत में है) (२) शंका निश्चय पूर्वक हत्या के समान (जो हदीस से सिद्ध है) (३) जान बूझकर हत्या, जिसका अर्थ है किसी की निश्चय पूर्वक हत्या की गयी हो, और इसके लिए उस साधन तंत्र का प्रयोग करना जिससे साधारणत: हत्या की जाती है, जैसे तलवार, भाला आदि। इस आयत में मुसलमान की हत्या पर अति कठोर चेतावनी दी गयी है जैसे : इसका दंड नरक है, जिसमें सदैव रहना होगा, इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला का क्रोध और उसकी धिक्कार और बहुत बड़ी यातना भी होगी। इतने कठोर दंड एक ही समय में किसी अन्य पाप में वर्णित नहीं किये गये हैं। जिससे यह स्पष्ट होता है कि एक मुसलमान की हत्या अल्लाह तआला के यहाँ कितना घोर अपराध है। हदीस में भी इसकी कटु आलोचना तथा इस पर कठोर चेतावनी का वर्णन है।

[3]मुसलमान के हत्यारे की क्षमा स्वीकार है अथवा नहीं ? कुछ विद्वान इस अपराध के कठोर दंड की चेतावनी के आधार पर क्षमा स्वीकार न होने के पक्ष में हैं। परन्तु कुरआन तथा हदीस के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि स्वच्छ मन से माँगी गयी क्षमा से प्रत्येक पाप क्षमा हो सकता है। ﴿إِلَّا مَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا﴾ (अल-फुरक़ान-७०) तथा

The Ummah Technology Mission

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا ضَرَبْتُمْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ فَتَبَيَّنُوا۟ وَلَا تَقُولُوا۟ لِمَنْ أَلْقَىٰٓ إِلَيْكُمُ ٱلسَّلَٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُونَ عَرَضَ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۖ فَعِندَ ٱللَّهِ مَغَانِمُ كَثِيرَةٌ ۚ كَذَٰلِكَ كُنتُم مِّن قَبْلُ فَمَنَّ ٱللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوٓا۟ ۚ

(९४) हे ईमानवालो ! जब तुम अल्लाह की राह में जा रहे हो तो जाँच-पड़ताल कर लो और जो तुम से सलाम अलैक कहे तुम उसे यह न कहो कि तू ईमानवाला नहीं।[1] तुम सांसारिक जीवन सामग्री की खोज में हो तो अल्लाह (तआला) के पास बहुत सी सुख सामग्रियाँ हैं।[2] पहले तुम भी ऐसे ही थे, फिर अल्लाह (तआला) ने तुम पर उपकार

अन्य क्षमा की आयतें सामान्य हैं। प्रत्येक पाप चाहे छोटा हो या बड़ा अथवा बहुत बड़ा, स्वच्छ हृदय से माँगी गयी क्षमा द्वारा उसकी क्षमा सम्भव है। यहाँ इसका दंड नरक जो कहा गया है, इसका अर्थ यह है कि यदि उसने क्षमा न माँगी तो उसका दंड नरक है, जो अल्लाह तआला उसके इस अपराध पर दे सकता है। इसी प्रकार क्षमा न माँगने पर नरक में सदैव रहने का अर्थ भी लम्बे समय के लिए है क्योंकि नरक में सदैव रहने का दंड केवल काफ़िरों और मूर्तिपूजकों के लिए ही है। इसके अतिरिक्त हत्या का सम्बन्ध यद्यपि भक्तों के अधिकार से है, जो क्षमा से समाप्त नहीं होते, परन्तु अल्लाह तआला अपनी कृपा से उसकी पूर्ति करके समाप्त कर सकता है। इस प्रकार हत को भी बदला मिल जायेगा और हत्यारे की भी क्षमा स्वीकार हो जायेगी। (फ़तहुल क़दीर तथा इब्ने कसीर)

[1]हदीसों में आता है कि कुछ सहाबा एक स्थान से गुजरे जहाँ एक गड़ेरिया बकरियाँ चरा रहा था, मुसलमानों को देखकर गड़ेरिये ने सलाम किया, कुछ सहाबा ने समझा कि शायद वह अपनी प्राण रक्षा के लिए मुसलमान बता रहा है, अत: उन्होंने बिना छान बीन किये उसकी हत्या कर दी और बकरियाँ युद्ध में प्राप्त सामग्री के रूप में लेकर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए, जिस पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी, त्रिमिज़ी तफ़सीर सूर: अन-निसा) कुछ कथनों में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भी कहा कि मक्के में तुम भी इस गड़ेरिया की भाँति ईमान छिपाने पर विवश थे। (सहीह बुख़ारी, किताबुल देयात) (तात्पर्य यह था कि उसकी हत्या का कोई औचित्य नहीं था)

[2]अर्थात तुम्हें कुछ बकरियाँ उस हत से प्राप्त हो गईं, यह कुछ भी नहीं है। अल्लाह तआला के पास इससे कहीं अधिक श्रेष्ठ पुरस्कार हैं, जो अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञापालन करके तुम्हें दुनिया में भी प्राप्त हो सकता है, और आख़िरत (परलोक) में उनका मिलना निश्चत ही है।

The Ummah Technology Mission

किया, अतएव तुम अवश्य खोज (छानबीन) कर लिया करो, नि:संदेह अल्लाह (तआला) तुम्हारे कर्मों को भली-भाँति जानता है।

إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿٩٤﴾

(९५) जो मुसलमान अकारण बैठ रहें तथा जो अल्लाह के मार्ग में अपने तन-धन के साथ धर्मयुद्ध करते हों बराबर न होंगे[1] अल्लाह ने उन्हें जो अपने धनों तथा प्राणों के साथ धर्मयुद्ध करते हैं उन पर जो बैठे रहते हैं दर्जों में अधिक प्रधानता दी है तथा वैसे तो प्रत्येक को शुभवचन[2] दिया है, किन्तु अल्लाह ने जो धर्मयुद्ध करने वाले हैं उनको बैठे रहने वालों पर महा प्रतिकार की प्रधानता दी है।

لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۚ فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِينَ دَرَجَةً ۚ وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٩٥﴾

---

[1]जब यह आयत उतरी कि अल्लाह की राह में धर्मयुद्ध करने वाले तथा घरों में बैठे रहने वाले समान नहीं तो आदरणीय अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम (अंधे सहाबी) आदि ने निवेदन किया कि हम तो अपंग हैं, जिस के कारण हम धर्मयुद्ध में भाग नहीं ले सकते। तात्पर्य यह था कि घर में बैठे रहने के कारण धर्मयुद्ध में भाग लेने वालों के समान हम बदला तथा पुण्य नहीं प्राप्त कर सकेंगे, जबकि हम किसी आनन्द अथवा जान बचाने के भय से घरों में नहीं बैठे हुए हैं, बल्कि हमारा धार्मिक नियमों के आधार पर रुकना उचित है। इस पर अल्लाह तआला ने "अकारण" का अपवाद उतारा अर्थात अकारण बैठने वाले धर्म योद्धाओं के समान नहीं। जिसका अर्थ हुआ कि धार्मिक नियमों के आधार पर घर पर बैठने वालों को इस आधार पर धर्म योद्धाओं के समान बदला मिलेगा। जैसा कि हदीस में आता है कि मदीने में बैठे हुए अपंग तथा अपाहिज धर्म योद्धाओं के साथ बदले में समान हैं क्योंकि उनको कारणों से रुकना पड़ा है। (सहीह बुखारी, किताबुल जिहाद)

[2]अर्थात तन, मन और धन से धर्मयुद्ध करने वालों को जो स्थान प्राप्त होगा, धर्मयुद्ध में भाग न लेने वाले यद्यपि इससे वंचित रहेंगे, फिर भी अल्लाह तआला ने दोनों को भलाई का वचन दिया है। इससे आलिमों ने यह अर्थ निकाला है कि सामान्य परिस्थितियों में धर्मयुद्ध अनिवार्य नहीं, आवश्यकता अनुसार अनिवार्य है अर्थात यदि आवश्यकतानुसार लोग धर्मयुद्ध में भाग ले लें तो उस क्षेत्र के दूसरे लोगों की ओर से अनिवार्यता की पूर्ति समझी जायेगी।

The Ummah Technology Mission

دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٩٦﴾

(९६) अपनी ओर से दर्जे की भी तथा क्षमा की भी एवं दया की भी और अल्लाह क्षमाशील कृपालु है।

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِى الْاَرْضِ ؕ قَالُوْٓا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿٩٧﴾

(९७) जो लोग अपने आप पर अत्याचार करने वाले हैं, जब फ़रिश्ते उनके प्राण निकालते हैं तो कहते हैं कि तुम किस दशा में थे ?[1] वह कहते हैं कि हम धरती में निर्बल थे,[2] तो प्रश्न करते हैं कि क्या अल्लाह की भूमि विस्तृत न थी कि तुम उसमें प्रवास कर जाते ? इन्हीं लोगों का स्थान नरक है तथा वह बुरा स्थान है।

---

[1]यह आयत उन लोगों के विषय में उतरी है जो मक्का और उसके निकटवर्ती क्षेत्र में रहते थे और मुसलमान हो चुके थे, परन्तु उन्होंने अपने पूर्वजों के देश तथा परिवार को छोड़ कर हिजरत करने को महत्व नहीं दिया। जबकि मुसलमानों की शक्ति को एक स्थान पर एकत्रित करने के लिए हिजरत का अति बलपूर्वक आदेश दिया जा चुका था। इसलिए जिन्होंने इस हिजरत के आदेश का पालन नहीं किया, उनको यहाँ अत्याचारी बताया गया है और उनका स्थान नरक बताया गया है। जिससे यह ज्ञात हुआ कि परिस्थिति तथा समय के आधार पर इस्लाम के कुछ आदेश कुफ़्र अथवा इस्लाम के पर्यायवाची बन जाते हैं। जैसे इस अवसर पर हिजरत इस्लाम तथा इसकी अवहेलना कुफ़्र के पर्यायवाची हो गयी। इससे यह विदित हुआ कि काफ़िरों के देश से हिजरत करना अनिवार्य है, जहाँ इस्लाम की शिक्षा के अनुसार कार्यरत होना कठिन हो और वहाँ रहना काफ़िरों के साहस को बढ़ाने का कारण बने।

[2]यहाँ "स्थान" से तात्पर्य आयत के उतरने की विशेषता के आधार पर मक्का और उसका समीपवर्ती क्षेत्र है और अल्लाह की धरती से तात्पर्य मदीना है। परन्तु आदेश के आधार पर सामान्य धरती है अर्थात पहला स्थान काफ़िरों का क्षेत्र होगा, जहाँ इस्लाम की शिक्षाओं के अनुसार कार्य करना कठिन हो जाये। और अल्लाह की धरती से तात्पर्य वह प्रत्येक क्षेत्र होगा जहाँ मनुष्य अल्लाह के धर्म के पालन के उद्देश्य से हिजरत करके जाते हैं।

The Ummah Technology Mission

إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ﴿٩٨﴾

(९८) परन्तु जो पुरुष तथा स्त्रियाँ एवं बालक विवश हैं जो कोई उपाय नहीं कर सकते और न मार्ग जानते हैं।[1]

فَأُولَٰئِكَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَعْفُوَ عَنْهُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَفُوًّا غَفُورًا ﴿٩٩﴾

(९९) अति सम्भव है कि अल्लाह (तआला) उन्हें क्षमा कर दे, और अल्लाह सहिष्णु क्षमाशील है।

وَمَنْ يُهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرَاغَمًا كَثِيرًا وَسَعَةً ۚ وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿١٠٠﴾

(१००) और जो कोई अल्लाह की राह में प्रवास करेगा, वह धरती पर बहुत से निवास स्थान भी पायेगा तथा सम्पन्नता भी।[2] और जो कोई अपने घर से अल्लाह (तआला) तथा उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर निकल पड़ा फिर उसे मृत्यु ने पकड़ लिया हो तो भी अवश्य उसका फल अल्लाह (तआला) के ऊपर होगा।[3] तथा अल्लाह (तआला) क्षमा करने वाला कृपालु है।

---

[1]यह उन पुरुषों-स्त्रियों तथा बालकों को इस आदेश से अलग किया है, जो संसाधन से वंचित तथा जो मार्ग से भी अनजान थे। बालक यद्यपि धार्मिक नियमों का पालन करने के लिए बाध्य नहीं हैं, परन्तु यहाँ उनका वर्णन करके हिजरत की विशेषता को और स्पष्ट किया गया है कि बालक भी हिजरत करें अथवा फिर यहाँ पर व्यस्क आयु के निकट पहुँचने वाले बालक होगें।

[2]इसमें हिजरत का प्रलोभन तथा मूर्तिपूजकों से विलग रहने पर बल दिया जा रहा है। मुराग़मन مراغمًا का अर्थ स्थान, निवास स्थान अथवा शरण स्थल है। और सअतन् سعةً का अर्थ जीविका स्थान तथा देशों का विस्तार तथा धन-धान्य की अधिकता है।

[3]इसमें नियत (ध्यान) के आधार पर प्रतिकार तथा पुण्य मिलने का विश्वास दिलाया गया है चाहे मृत्यु के कारण वह उस कार्य को पूर्ण न कर सका हो। जैसाकि हदीस में पूर्व के समुदाय में एक व्यक्ति के द्वारा की गयी सौ हत्याओं का वर्णन है, जो क्षमा के लिए सत्कर्मियों की वस्ती की ओर जा रहा था कि मार्ग ही में उसकी मृत्यु हो गयी। अल्लाह तआला ने सत्कर्मियों की वस्ती दूसरी वस्ती की अपेक्षा निकटतम कर दिया। जिसके कारण उसे दया के फ़रिश्ते उसे अपने साथ ले गये (सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया अध्याय संख्या ५४ व मुस्लिम, किताबुत तौबा बाब क़ूबूलित्तौ-बतिल क़ातिल व इन

TheUmmahTechnology Mission

وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ إِنْ خِفْتُمْ أَنْ يَفْتِنَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ الْكَافِرِينَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا مُبِينًا ﴿١٠١﴾

(१०१) और जब धरती में यात्रा करो तो तुम पर नमाज़ क़स्र करने (चार रकअत की नमाज़ दो रकअत पढ़ने में कोई दोष नहीं), यदि तुम्हें यह भय हो कि काफ़िर (विश्वासहीन) तुम्हें कष्ट देंगे,[1] नि:संदेह विश्वासहीन तुम्हारे खुले शत्रु हैं।

कथुर क़त्लुहू) इसी प्रकार जो व्यक्ति हिजरत के विचार से घर से निकले, परन्तु मार्ग में ही उसकी मृत्यु हो जाये तो अल्लाह तआला की ओर से हिजरत का पुण्य अवश्य मिलेगा यद्यपि वह हिजरत के उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर सका। जैसाकि हदीस में भी हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ» «وَإِنَّمَا لِكُلِّ امْرِئٍ مَا نَوَى» (कर्म विचारों पर निर्भर हैं) "मनुष्य के लिए वही है, जिसका उसने विचार किया।" जिसने अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए हिजरत किया, तो उसकी हिजरत उन ही के लिए है, और जिसने दुनिया प्राप्त करने अथवा किसी स्त्री से विवाह करने के उद्देश्य से हिजरत की तो उसकी हिजरत उसी के लिए है, जिस उद्देश्य से उसने हिजरत की (सहीह बुख़ारी बाब वदइल वह्य, मुस्लिम किताबुल इमार:)

यह आदेश सामान्य है, जो धर्म के प्रत्येक कार्य में सम्मिलित है अर्थात उसको करते समय अल्लाह की प्रसन्नता ध्यान में रहेगी तो वह श्रेष्ठ स्वीकार्य है अन्यथा रद्द होगा।

[1]इसमें यात्रा की स्थिति में नमाज क़स्र करना (चार रकआत वाली नमाज को दो रकअत ही पढ़ने) की अनुमति प्रदान की जा रही है। "यदि तुम्हें भय हो" सामयिक परिस्थितियों के आधार पर है। क्योंकि उस समय समस्त अरब युद्ध क्षेत्र बना हुआ था। किसी ओर की यात्रा ख़तरे से ख़ाली नहीं थी। अर्थात यह प्रतिबन्ध नहीं है कि यदि मार्ग में भय हो तो क़स्र की आज्ञा है। क्योंकि क़ुरआन करीम के अन्य स्थानों पर इसी प्रकार के प्रतिबन्धों का वर्णन है जो सामयिक रूप से ऐसा सम्भव हो सकता है। जैसे "तुम अपनी दासियों को व्याभिचार के लिए बाध्य न करो, यदि वह इससे बचना चाहें" चूंकि वह बचना चाहती थीं इसलिए अल्लाह तआला ने वर्णन किया अन्यथा इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं कि यदि वह तैयार हों, तो तुम्हारे लिए उचित है कि तुम उनसे कुकर्म करवा लिया करो। इसी प्रकार पूर्व में सूर: आले इमरान की आयत संख्या १३० तथा इसके पश्चात इसी सूर: अन-निसा की आयत संख्या २३ तथा सूर: अन-नूर की आयत संख्या ३३ आदि आयतों में आया है। कुछ सहाबा के विचार में आया कि अब तो शान्ति

The Ummah Technology Mission

وَإِذَا كُنْتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَلْيَأْخُذُوْٓا أَسْلِحَتَهُمْ ۖ فَإِذَا سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا مِنْ وَّرَآئِكُمْ ۪ وَلْتَأْتِ طَآئِفَةٌ أُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوْا فَلْيُصَلُّوْا مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوْا حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ ۗ وَدَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيْلُوْنَ عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً ۗ وَلَا جُنَاحَ

(१०२) और जब आप उनमें हों और उनके लिए नमाज़ की स्थापना करें तो चाहिए कि उनका एक गुट आप के साथ हथियार लिए खड़ा हो, फिर जब यह सजदा कर चुकें तो यह हट कर तुम्हारे पीछे आ जायें और दूसरा गुट जिसने नमाज़ नहीं पढ़ी है, वह आ जाये और तेरे साथ नमाज़ अदा करे और अपना बचाव तथा अपने हथियार लिए रहे, काफ़िर चाहते हैं कि तुम किसी प्रकार अपने हथियार तथा अपनी सामग्रियों से असावधान हो जाओ, तो वह तुम पर सहसा आक्रमण कर दें।[1] और हाँ, अपने हथियार उतार रखने में

है अब यात्रा में क़स्र नमाज़ नहीं पढ़नी चहिए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "यह अल्लाह की ओर से तुम लोगों के लिए दान है, उसके दान को स्वीकार करो।" (मुसनद अहमद, भाग १ पृष्ठ २५-३६, सहीह मुस्लिम किताबुल मुसाफ़िरीन तथा अन्य हदीस की पुस्तकों में)।

टिप्पणी : यात्रा की दूरी तथा कस्र के दिनों के निर्धारण में मतभेद है। इमाम शौकानी ने तीन फ़रसख़ अर्थात ९ कोस वाले कथन को प्राथमिकता दी है। (नैलुल औतार, भाग ३, पृष्ठ २२०)। इसी प्रकार अन्य विशेषज्ञों का विचार है कि यह आवश्यक है कि किसी स्थान पर यात्रा के समय तीन या चार दिन से अधिक निवास करने का विचार न करे अथवा यदि इससे अधिक दिन निवास करने का विचार हो तो क़स्र नमाज़ न पढ़नी चाहिए। (विस्तार पूर्वक जानकारी के लिए देखें मिर्आतुल मफ़ातीह)

[1]इस आयत में सलातुल ख़ौफ़ (भय के समय की नमाज़) की आज्ञा, अपितु आदेश दिया जा रहा है। सलातुल खौफ़ का अर्थ है भय की नमाज़। यह उस समय का धार्मिक नियम है, जब मुसलमान तथा काफ़िरों की सेनायें आमने-सामने युद्ध के लिए तैयार खड़ी हों तथा एक क्षण की भी उपेक्षा मुसलमानों के लिए अत्यधिक हानिकारक सिद्ध हो सकती है। ऐसे समय में यदि नमाज़ का समय आ जाये तो सलातुल खौफ़ का आदेश है। जिसके विभिन्न रूपों का वर्णन हदीस में है जैसे : सेना दो भागों में विभाजित हो गयी, एक भाग शत्रु का सामना करने के लिए खड़ा रहा, ताकि काफ़िरों को आक्रमण करने का साहस न हो, और दूसरे भाग ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी, जब यह भाग नमाज़ पढ़ चुका तो पहले के स्थान पर

The Ummah Technology Mission

عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ أَذًى مِّنْ
مَّطَرٍ أَوْ كُنتُم مَّرْضَىٰ أَن تَضَعُوٓا
أَسْلِحَتَكُمْ ۖ وَخُذُوا حِذْرَكُمْ ۗ
إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا
مُّهِينًا ﴿١٠٢﴾

उस समय तुम पर कोई दोष नहीं, जबकि तुम कष्ट में हो अथवा वर्षा के कारण अथवा रोग होने के कारण एवं अपनी बचाव सामग्री साथ में लिये रखो। निःसंदेह अल्लाह तआला ने नकारने वालों के लिए अपमान का दण्ड तैयार कर रखा है।

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَوٰةَ فَاذْكُرُوا اللَّهَ
قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ ۚ
فَإِذَا اطْمَأْنَنتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَوٰةَ ۚ

(१०३) फिर जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो उठते तथा बैठते एवं लेटते अल्लाह (तआला) का वर्णन करते रहो,[1] और शांति प्राप्त हो तो नमाज़ स्थापित करो, अवश्य[2] नमाज़

मोर्चा लेने के लिए आ खड़ा हुआ। कुछ कथनों में आता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोनों भागों को एक-एक रकअत नमाज़ पढ़ायी, इस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो रकआतें और शेष सैनिकों की एक-एक रकअत हुई। कुछ में आता है कि दो-दो रकआतें पढ़ायीं, इस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चार रकआत तथा शेष सैनिकों की दो-दो रकआतें हुईं और कुछ में आता है कि आप एक रकअत के पश्चात तहीयात की तरह बैठ रहे, सैनिकों ने खड़े होकर एक रकअत और पढ़ कर दो रकआतें पूरी कीं और शत्रु के समक्ष जाकर डट गये, दूसरे भाग ने आकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें भी एक रकअत नमाज़ पढ़ायी और तहीयात में बैठ गये और उस समय तक बैठे रहे जब तक सैनिकों ने दूसरी रकअत पूरी न कर ली। फिर उनके साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सलाम फेर दिया। इस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भी दो रकआत तथा सेना के दोनों भागों की भी दो रकआतें हुईं। (देखिये हदीस की किताबें)

[1]तात्पर्य यही भय की नमाज़ है, इसमें चूँकि सुविधा दी गयी है। इसलिए इसको पूर्ति के लिए कहा जा रहा है कि खड़े, बैठे, लेटे अल्लाह का वर्णन करते रहो।

[2]इसका तात्पर्य यह है कि जब युद्ध के बादल छँट जायें तो फिर नमाज़ को उसके उसी विधि के अनुसार पढ़ना है, जो सामान्य अवस्था में पढ़ी जाती है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الصَّلَوٰةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَٰبًا مَّوْقُوتًا ﴿١٠٣﴾

मुसलमानों पर निश्चित तथा निर्धारित समय पर अनिवार्य की गयी है।[1]

وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ۖ إِن تَكُونُوا تَأْلَمُونَ فَإِنَّهُمْ يَأْلَمُونَ كَمَا تَأْلَمُونَ ۖ وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٠٤﴾

(१०४) और उन लोगों का पीछा करने से आलस्य न करो,[2] यदि तुम्हें कष्ट होता है, तो उन्हें भी कष्ट होता है, और तुम अल्लाह (तआला) से वह आशायें रखते हो जो उन्हें नहीं,[3] और अल्लाह (तआला) ज्ञाता-विज्ञाता है।

إِنَّا أَنزَلْنَآ إِلَيْكَ الْكِتَٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَآ أَرَىٰكَ اللَّهُ ۚ وَلَا تَكُن لِّلْخَآئِنِينَ خَصِيمًا ﴿١٠٥﴾

(१०५) निःसंदेह, हमने तुम्हारी ओर सत्य शास्त्र उतारा है, ताकि तुम लोगों के बीच उसके अनुसार न्याय करो जिससे अल्लाह (तआला) ने तुम्हें अवगत कराया।[4] और विश्वासघात

---

[1]इसमें नमाज़ को निर्धारित समय से पढ़ने पर बल दिया जा रहा है, जिससे ज्ञात होता है कि धार्मिक कारणों के बिना दो नमाज़ों को एकत्रित करना सही नहीं है, क्योंकि इस प्रकार कम से कम एक नमाज़ अपने निर्धारित समय पर नहीं पढ़ी जायेगी, जो इस आयत के विपरीत है।

[2]अर्थात अपने शत्रु का पीछा करने में कमज़ोरी मत दिखाओ, अपितु उनके विरोध में कठोर प्रयत्न करो और घात लगाकर बैठो।

[3]अर्थात घाव तो तुम्हें भी और उन्हें भी दोनों को लगे हैं परन्तु इन घावों के प्रतिफल में तुम्हें तो अल्लाह से आशायें हैं, परन्तु वह उसकी आशा नहीं रखते। इसलिए आख़िरत (परलोक) के प्रतिकार को प्राप्त करने के लिए जो प्रयास तुम कर सकते हो, वह काफ़िर नहीं कर सकते।

[4]इन आयतों (१०४ से ११३ तक) के उतरने की विशेषता में बतलाया गया है कि अन्सार के क़बीले बनी ज़ुफ़र में एक व्यक्ति तोअमः अथवा बशीर बिन उबैरिक ने एक अंसारी का कवच चुरा लिया, जब इसकी चर्चा हुई और उसको अपनी चोरी खुलने का भय हुआ तो उसने वह कवच एक यहूदी के घर में फेंक दी और बनी ज़ुफ़र के कुछ व्यक्तियों को लेकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और

The Ummah Technology Mission

करने वालों के पक्षधर न बनो।[1]

(१०६) और अल्लाह (तआला) से क्षमा माँगो,[2] नि:संदेह अल्लाह तआला क्षमाशील कृपानिधि है।

وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝١٠٦

उन सभी ने कहा कि कवच का चोर अमुक यहूदी है। यहूदी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और उसने कहा कि बनी उबैरिक ने कवच चोरी करके मेरे घर में फेंक दिया है। बनी जुफर तथा बनी उबैरिक (तुअम: अथवा बशीर आदि) चतुर थे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह विश्वास दिलाते रहे कि चोर यहूदी ही है। और वह तोअम: पर अभियोग लगाने में झूठा है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उनकी चिकनी बातों से प्रभावित हो गये और निकट था कि अन्सारी को चोरी के अभियोग से निर्दोष और यहूदी को चोरी का अपराधी घोषित कर देते कि अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी। जिससे एक बात यह ज्ञात हुई कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक मनुष्य होने के कारण भ्रम में पड़ सकते हैं। दूसरी बात यह ज्ञात हुई कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम परोक्षज्ञ नहीं थे अन्यथा आप तुरंत वास्तविकता जान लेते। तीसरी बात यह ज्ञात हुई कि अल्लाह तआला अपने पैग़म्बर की रक्षा करता है, और यदि कभी भी सत्य के छिपे रह जाने तथा उससे भटकने की स्थिति आ जाये, तो तुरन्त अल्लाह तआला उसे सावधान कर देता और उसकी सुधार कर देता है। जैसाकि नबियों के चरित्र की विशेषता है। यह निर्दोषता का वह सर्वोच्च स्थान है, जो नबियों के अतिरिक्त किसी को प्राप्त नहीं है।

[1]इसका अर्थ भी वही बनी उबैरिक हैं। जिन्होंने चोरी स्वयं की, परन्तु अपनी वाक्पटुता के कारण यहूदी को चोर सिद्ध करने पर अड़े हुए थे। अगली आयत में भी उनके तथा उनके पक्षधरों के कुचक्र को और स्पष्ट करके नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सावधान किया जा रहा है।

[2]अर्थात बिना तहक़ीक़ के आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो विश्वासघातियों का समर्थन किया है उस पर अल्लाह तआला से क्षमा माँगें। इससे ज्ञात हुआ कि दोनों पक्षों के विषय में जब तक पूर्ण विश्वास न हो कि सत्य पर कौन है, उसका पक्षपात तथा समर्थन उचित नहीं। इसके अतिरिक्त यदि कोई व्यक्ति अपने वाक्पटुता से तथा धोखा देकर न्यायालय अथवा सामयिक न्यायाधीश से अपने पक्ष में निर्णय करा ले, यद्यपि वह सत्य पर नहीं था तो ऐसे निर्णय का अल्लाह के समक्ष कोई महत्व नहीं है। इस बात को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस प्रकार वर्णित किया है "सावधान"! मैं एक मनुष्य ही हूँ और जिस प्रकार सुनता हूँ, उसी के प्रकाश में निर्णय करता हूँ। सम्भव है कि एक व्यक्ति अपने तर्क-वितर्क प्रस्तुत करने में निपुण तथा चालाक हो

The Ummah Technology Mission

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ۚ﴿۱۰۷﴾

(१०७) और उनकी ओर से झगड़ा न करो जो स्वयं अपना ही विश्वासघात करते हैं। नि:संदेह धोखेबाज पापी अल्लाह (तआला) को अच्छा नहीं लगता।

يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ﴿۱۰۸﴾

(१०८) वह लोगों से तो छुप जाते हैं, परन्तु अल्लाह से नहीं छुप सकते, वह उनके साथ है जब कि वे रात्रि में अप्रिय कथन की योजना बनाते हैं तथा अल्लाह उनकी कृतियों को घेरे हुये है।

هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿۱۰۹﴾

(१०९) हाँ, यह तुम लोग हो जो उनके पक्ष में दुनिया में लड़े, किन्तु प्रलय के दिन उन की ओर से अल्लाह से कौन बहस करेगा तथा कौन उनका वकील बनकर खड़ा होगा।[1]

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۱۰﴾

(११०) तथा जो भी कोई बुराई करे अथवा स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करे फिर अल्लाह से क्षमा माँगे तो अल्लाह को क्षमाशील दयानिधि पायेगा।

وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰى نَفْسِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۱۱﴾

(१११) और जो पाप करता है उसका बोझ उसी पर है,[2] तथा अल्लाह सर्वज्ञ विज्ञाता है।

और मैं उसके वार्तालाप से प्रभावित होकर उसके पक्ष में निर्णय कर दूँ, यद्यपि वह सत्य पर नहीं हो और इस प्रकार किसी दूसरे मुसलमान का अधिकार उसे दे दूँ, तो उसे याद रखना चाहिए कि यह आग का टुकड़ा है। यह उसकी इच्छा है कि उसे ले अथवा त्याग दे। (सहीह बुखारी, किताबुश शाहाद: वल हेयल वल अहकाम, सहीह मुस्लिम किताबुल अक्ज़ी य:)

[1]अर्थात जब इस पाप के कारण उसकी पकड़ होगी, तो कौन अल्लाह की पकड़ से उसे बचा सकेगा?

[2]इस विषय की दूसरी आयत में अल्लाह तआला फ़रमाता है :

The Ummah Technology Mission

وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓئَةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓـًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿١١٢﴾

(११२) तथा जो कोई दोष अथवा पाप करता है फिर किसी निर्दोष पर थोप देता है, उस ने खुला आरोप तथा घोर पाप किया।[1]

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ؕ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿١١٣﴾

(११३) और यदि आप पर अल्लाह की दया एवं कृपा न होती तो उनके एक गुट ने आपको विपथ करने का षड़यन्त्र रच लिया था[2] किन्तु वह स्वयं को विपथ करते हैं तथा वह आपको कोई हानि नहीं पहुंचा सकते और अल्लाह ने आप पर किताब तथा ज्ञान उतारा है और आप जिसको नहीं जानते थे उसका ज्ञान[3] दिया है तथा आप पर अल्लाह की भारी अनुकम्पा है।

﴿وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ أُخْرَىٰ﴾

"कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा।" (सूरः *बनी इस्राईल*-१५)

अर्थात कोई किसी का उत्तरदायी नहीं होगा, प्रत्येक व्यक्ति को वही कुछ मिलेगा, जो कमा कर साथ ले गया होगा।

[1]जिस प्रसार बनू उबैरिक ने किया कि चोरी तो स्वयं की और आरोप किसी अन्य पर लगा दिया। यह डांट फटकार सामान्य है, जिसमें बनू उबैरिक भी सम्मिलित है और उनको भी जो इस प्रकार के दुराचरणों में लीन होंगे।

[2]यह अल्लाह तआला की उस विशेष रक्षा का वर्णन है जिसका प्रबन्ध नबियों के लिए किया जाता है जो नबियों पर अल्लाह की विशेष कृपा तथा विशेष दया का दर्पण है। طائفة (तायेफः) (गुट) से तात्पर्य वह लोग हैं जो बनू उबैरिक के समर्थन में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उनकी सफाई प्रस्तुत कर रहे थे, जिससे यह अनुमान हो चला था कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस व्यक्ति को चोरी के अपराध से मुक्त कर देंगे, जो वास्तव में चोर था।

[3]यह दूसरी अनुकम्पा तथा अनुग्रह का वर्णन है, जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर धर्मशास्त्र (पवित्र क़ुरआन) तथा हदीस (सुन्नत) उतारकर आवश्यक बातों का ज्ञान देकर बताया गया। जिस प्रकार दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

The Ummah Technology Mission

لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّن نَّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١١٤﴾

(११४) उनकी अधिकांश कानाफूसी में कोई भलाई नहीं, [1] परन्तु जिसने उपकार अथवा भलाई अथवा लोगों के बीच सुधार के लिये आदेश दिया[2] तथा जो यह कार्य अल्लाह की प्रसन्नता की खोज हेतु करेगा[3] हम उसे वास्तव में बहुत बड़ा प्रतिकार (बदला) देंगे।[4]

﴿وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا ۚ مَا كُنتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ وَلَا الْإِيمَانُ﴾

"इसी प्रकार भेजा हमने तेरी ओर (क़ुरआन लेकर) एक फ़रिश्ते को अपने आदेश से, तू नहीं जानता था कि किताब क्या है और ईमान क्या है ?" (सूरः अल-शूराः-५२)

﴿وَمَا كُنتَ تَرْجُو أَن يُلْقَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ﴾

"और तूझे यह आशा नहीं थी कि तुझ पर किताब उतारी जायेगी, परन्तु तेरे प्रभु की कृपा से (यह किताब उतारी गयी)" (सूरः अल-क़सस-८६)

इन सभी आयतों (पवित्र क़ुरआन के सूत्रों) से यह ज्ञात हुआ कि अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कृपा तथा उपकार किया तथा किताब एवं विवेक दिया, इनके अतिरिक्त अन्य बहुत सी बातों का ज्ञान आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रदान किया गया, जिनसे आप सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम अनभिज्ञ थे। यह भी एक प्रकार से आपके परोक्षज्ञ (अन्तर्यामी) होने का इंकार है, क्योंकि यदि आपको परोक्ष का ज्ञान होता, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किसी अन्य से विद्या ग्रहण की क्या आवश्यकता थी। और जिसे दूसरों से ज्ञान प्राप्त हो, वहयी (ईशवाणी) के द्वारा अथवा अन्य किसी साधन द्वारा, तो वह परोक्ष का ज्ञानी नहीं हो सकता।

[1] نجوى (नजवा) (गुप्त मंत्रणा) से तात्पर्य वह बातें हैं जो अवसरवादी आपस में मुसलमानों के विरूद्ध अथवा एक-दूसरे के विरूद्ध करते थे।

[2]अर्थात दान-पुण्य, भलाई (जो हर प्रकार के पुण्य को सम्मिलित है) तथा लोगों के बीच सुधार करने के विषय में परामर्श, पुण्य पर आधारित हैं। जैसाकि इन कार्यों की विशेषता तथा महत्व पर हदीस में भी बल दिया गया है।

[3]क्योंकि यदि निःस्वार्थता (अर्थात अल्लाह की प्रसन्नता का उद्देश्य) नहीं होगा, तो बड़े से बड़ा कर्म भी व्यर्थ जायेगा, बल्कि आपत्ति बन जायेगा। परमेश्वर हमें पाखण्ड तथा दिखावे के काम से बचाये।

[4]हदीसों में वर्णित कर्मों का बड़ा महत्व है। अल्लाह के मार्ग में उचित की कमाई से एक खजूर दान करने का पुण्य ओहद पर्वत की मात्रा में होगा। (सहीह मुस्लिम

The Ummah Technology Mission

وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿۱۱۵﴾

(११५) और जो सत्य मार्ग के स्पष्ट होने के पश्चात रसूल (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का विरोध करेगा तथा मुसलमानों के मार्ग के सिवाय खोज करेगा, हम उसे उसी ओर जिस ओर वह फिरता हो फेर देंगे, फिर हम उसे नरक में झोंक[1] देंगे तथा वह अति बुरा स्थान है।

किताबुल ज़कात) सत्य बात के प्रचार करने का भी बहुत बड़ा महत्व है। इसी प्रकार सम्बन्धियों, मित्रों तथा अपसी कटुता के कारण अलग हुए लोगों में सन्धि करा देना बहुत बड़ा कर्म है। एक हदीस में इसे ऐच्छिक व्रत (रोजों), ऐच्छिक नमाज़ों तथा ऐच्छिक दान से भी श्रेष्ठ बताया गया है। फ़रमाया:

«أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِأَفْضَلَ مِنْ دَرَجَةِ الصِّيَامِ وَالصَّلَاةِ وَالصَّدَقَةِ؟» قَالُوا بَلَى: قال: «إِصْلَاحُ ذَاتِ الْبَيْنِ، قَالَ: وفَسَادُ ذَاتِ الْبَيْنِ هِيَ الْحَالِقَةُ».

"क्या मैं तुमको नमाज़, रोज़ा और दान से श्रेष्ठ कार्य न बता दूँ। उन्होंने कहा, अवश्य। आपने कहा आपसी कटुता के कारण अलग हुए लोगों में सन्धि करा देना।" (अबू दाऊद, किताबुल अदब, त्रिमिज़ी किताबुल बिर्र तथा मुसनद अहमद ६/४४४ से ४४५ तक)

यहाँ तक कि संधि कराने वाले को झूठ बोलने तक की आज्ञा प्रदान की गयी है। ताकि उसे एक-दूसरे को निकट लाने के लिए किसी कारणवश इसकी आवश्यकता पड़े, तो वह इसे भी प्रयोग करे।

«لَيْسَ الكَذَّابُ الَّذِي يُصْلِحُ بَيْنَ النَّاسِ، فَيَنْمِي خَيْرًا أو يَقُولُ خَيرًا».

"वह मिथ्यावादी नहीं जो एक कराने के लिये अच्छी बात फैलाता अथवा अच्छी बात करता है।" (अल-बुखारी किताबुल सुलह, मुस्लिम तथा अल-त्रिमिज़ी किताबुल बिर्र, अबूदाऊद किताबुल अदब)

[1]मार्गदर्शन के प्रकाशित हो जाने के पश्चात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विरोध तथा मुसलमानों का मार्ग छोड़ कर किसी अन्य के मार्ग का अनुसरण इस्लाम में से निकलना है। जिस पर यहाँ नरक की धमकी दी गयी है। मुसलमानों से तात्पर्य नबी के सहचर (رضي الله عنهم) हैं, जो इस्लाम धर्म के प्रथम अनुयायी और उसकी शिक्षाओं के पूर्णरूपण आदर्श थे। और इन आयतों के उतरने के समय कोई अन्य मुसलमानों का गुट नहीं था कि उनका आशय हो। इसीलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

The Ummah Technology Mission

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِۦ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَآءُ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَٰلًۢا بَعِيدًا ﴿١١٦﴾

(११६) अल्लाह अपने साथ मिश्रण किये जाने को कदापि क्षमा नहीं करेगा और इसके सिवाय (पापों) को जिसके लिये चाहे क्षमा कर देगा तथा जिसने अल्लाह के साथ मिश्रण (शिर्क) किया वह बहुत दूर बहक गया।

إِن يَدْعُونَ مِن دُونِهِۦٓ إِلَّآ إِنَٰثًا ۖ وَإِن يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَٰنًا مَّرِيدًا ﴿١١٧﴾

(११७) यह तो अल्लाह (तआला) को छोड़कर केवल देवियों को पुकारते हैं।[1] और वास्तव में यह दुष्ट शैतान को पुकारते हैं।[2]

अलैहि वसल्लम का विरोध तथा नि:स्वार्थी मुसलमानों के मार्ग के अन्य का अनुगमन दोनों वास्तव में एक ही वस्तु के नाम हैं। इसलिए सहाबा कराम (رضي الله عنهم) के मार्ग तथा विधि का विरोध ही अविश्वास तथा विपथ है। कुछ विद्वानों ने ईमानवालों के रास्ते से तात्पर्य सम्पूर्ण उम्मत लिया है अर्थात सम्पूर्ण उम्मत से विरोध भी अधर्म है। सम्पूर्ण उम्मत से तात्पर्य है कि किसी समस्या पर उम्मत के सभी विद्वानों तथा ज्ञानियों की सहमति। अथवा किसी समस्या पर सहाबा कराम (رضي الله عنهم) की सहमति यह दोनों परस्थितियाँ उम्मत की सहमती के रूप हैं तथा दोनों से इंकार अथवा उनमें से किसी एक का इंकार अधर्म है। फिर भी सहाबा कराम (رضي الله عنهم) की सहमति बहुत सी समस्यायों पर मिलती है, अर्थात सहमति की यह स्थिति तो मिलती है। परन्तु सहाबा की सर्वसम्मति के पश्चात किसी समस्या पर सम्पूर्ण उम्मत के एकमत तथा सहमती के दावे बहुत सी समस्याओं में किये गये हैं, परन्तु वास्तव में सर्वसम्मत समस्यायें बहुत ही कम हैं, जिनमें वास्तव में उम्मत्र के सभी आलिमों तथा ज्ञानियों की सहमति हो। फिर भी इस प्रकार की जो समस्यायें भी हैं, उनका इंकार भी सहाबा की सहमति की इंकार की तरह कुफ्र है। इसलिए कि सहीह हदीसों में है, "अल्लाह तआला मेरी उम्मत को भटकावे पर एकमत नहीं करेगा और सहमत पर अल्लाह का हाथ है।" (सहीह त्रिमिज़ी, लिल अलबानी भाग २, संख्या १७५९)

[1] إناث (इनास) (स्त्रियों) से तात्पर्य या तो मूर्तियाँ हैं, जिनके नाम स्त्रीलिंग में थे। जैसे لات(लात), عزى (उज़्ज़ा), منات (मनात) तथा نائلة (नायेल:) आदि। अथवा तात्पर्य फ़रिश्ते हैं, क्योंकि अरब के मूर्तिपूजक फ़रिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ समझते थे और उनकी पूजा करते थे।

[2] मूर्ति, फ़रिश्तों तथा अन्य लोगों की पूजा वास्तव में शैतान की पूजा है क्योंकि शैतान ही मनुष्य को अल्लाह के द्वार से बहका कर अन्य के दरबार में तथा चौखट पर झुकाता है, जैसा कि अगली आयत में है।

The Ummah Technology Mission

لَّعَنَهُ اللَّهُ ۘ وَقَالَ لَأَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ﴿١١٨﴾

(११८) जिसे अल्लाह (तआला) ने धिक्कारा है । और उसने कहा है कि तेरे भक्तों में से मैं निर्धारित भाग ले कर रहूँगा ।[1]

وَلَأُضِلَّنَّهُمْ وَلَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ آذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللَّهِ ۚ وَمَن يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِّن دُونِ اللَّهِ فَقَدْ

(११९) और उन्हें राह से भटकाता रहूँगा और झूठी आशायें दिलाता रहुँगा[2] और उन्हें शिक्षा दूँगा कि पशुओं के कान चीरें[3] और उनसे कहूँगा कि अल्लाह का बनाया रूप बिगाड़ दें ।[4] सुनो, जो अल्लाह को छोड़ कर शैतान

---

[1]"निर्धारित भाग" से तात्पर्य भोग-प्रसाद (नज़र-नियाज़) भी हो सकता है, जो मूर्तिपूजक, क़ब्रों (समाधियों) में दफ़न (गड़े) व्यक्ति के नाम पर निकालते हैं तथा नरकवासियों का वह भाग भी हो सकता है, जिन्हें शैतान भटका कर अपने साथ नरक में ले जायेगा ।

[2]यह वह झूठी आशायें हैं, जो शैतान के प्रलोभन तथा हस्तक्षेप से उत्पन्न होती हैं और मनुष्यों के भटकावे का कारण बनती हैं ।

[3]यह بَحِيرَة (बहीर:) तथा سَائِبَة (सायब:) पशुओं के चिन्ह तथा रूप हैं । मिश्रणवादी उनको मूर्तियों के नाम से दान कर देते थे, तो पहचान के लिए कान आदि चीर दिया करते थे ।

[4]अल्लाह की सृष्टि में परिवर्त्तन के कई रूप वर्णन किये गये हैं । एक तो यही, जिसका वर्णन यहाँ हुआ अर्थात कान आदि काटना, चीरना, छेदना, इनके अतिरिक्त अन्य प्रकार के रूप हैं । जैसे अल्लाह तआला ने चाँद, सूरज, पत्थर तथा अग्नि आदि पदार्थ विभिन्न उद्देश्य से बनाये हैं, परन्तु मूर्तिपूजकों ने उनके उत्पत्ति के उद्देश्य को बदलकर उनको पूज्य बना लिया । अथवा बदलाव का अर्थ प्रकृति को बदल देना है, अथवा वर्जित तथा अवर्जित में बदलाव आदि हैं । इसी प्रकार बदलाव में पुरूषों की नसबन्दी करना, और उसी प्रकार स्त्रियों के आप्रेशन करके उन्हें जन्म देने से रोकना, सौन्दर्यता के नाम पर भौहों के बाल उखड़वाकर अपनी शक्ल बदलना और गोदने गुदवाना आदि भी सम्मिलित हैं । यह सब शैतानी कार्य हैं इनसे बचाव आवश्यक है । परन्तु पशुओं को बधिया करना कि अधिक लाभ मिले अथवा उनका माँस अधिक अच्छा हो सके अथवा इसी प्रकार का कोई उचित प्रयोजन हो तो ठीक है । इसका समर्थन इससे भी होता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बधिया पशु बलि (क़ुर्बानी) में बलि दिये

The Ummah Technology Mission

को अपना मित्र बनायेगा वह खुले घाटे में होगा।

خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِينًا ﴿١١٩﴾

(१२०) वह उनसे (मौखिक) वायदे करता रहेगा और हरे बाग दिखाता रहेगा (परन्तु याद रखो) शैतान के जो वायदे उनसे हैं वह पूर्ण रूप से धोखा हैं।

يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۚ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴿١٢٠﴾

(१२१) यह वह लोग हैं जिन का स्थान नरक है, जहाँ से उन्हें छुटकारा नहीं मिलेगा।

أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا مَحِيصًا ﴿١٢١﴾

(१२२) और जो ईमान लायें तथा भले कार्य करें, हम उन्हें उन स्वर्गों में ले जायेंगे,जिनके नीचे नदियाँ बह रही हैं, जहाँ वह सदैव रहेंगे। यह है अल्लाह का वचन जो वस्तुतः सत्य है और अल्लाह से अधिक सत्य अपनी बात में कौन हो सकता है ?[1]

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۚ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا ﴿١٢٢﴾

(१२३) तुम्हारी आकाँक्षाओं तथा अहले किताब की आकांक्षाओं से कुछ नहीं होना है, जो

لَّيْسَ بِأَمَانِيِّكُمْ وَلَا أَمَانِيِّ أَهْلِ الْكِتَابِ ۗ مَن يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ

हैं। यदि पशुओं का बधिया करना उचित न होता तो आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम उनकी वलि न देते।

[1]शैतानी वायदे तो खुला धोखा हैं, लेकिन इसके सापेक्ष अल्लाह तआला ने जो वचन ईमानवालों को दिये हैं सच्चे तथा यथार्थ हैं। और अल्लाह तआला से अधिक सच्चा कौन हो सकता है ? परन्तु मनुष्य की बात ही विचित्र है, यह सत्यवादियों की बात कम मानता है और झूठों के पीछे अधिक चलता है। अतः आप देख लीजिए शैतानी प्रचलन अधिक हैं और अल्लाह के आदेशों के अनुगामी प्रत्येक काल तथा स्थान पर कम ही रहे हैं।

"و قليل من عبادى الشكور"

"तथा मेरे कृतज्ञ भक्त अति अल्प हैं।" (सूरः सबा-१३)

The Ummah Technology Mission

بِهٖ ۙ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٢٣﴾

बुरा करेगा उसका दंड पायेगा और अल्लाह के सिवाय अपना कोई संरक्षक एवं सहायक नहीं पायेगा।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿١٢٤﴾

(१२४) और जो ईमानवाला हो पुरुष हो अथवा स्त्री और वह सत्कर्म करे, निःसंदेह इस प्रकार के लोग स्वर्ग में जायेंगे और खजूर की गुठली की फाँक के समान भी उसका अधिकार नहीं मारा जायेगा।[1]

وَمَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿١٢٥﴾

(१२५) और उस से उत्तम धर्म वाला कौन हो सकता है जो अल्लाह के प्रति पूर्ण आत्म-समर्पण कर दे और वह सदाचारी भी हो, और इब्राहीम के धर्म का अनुसरण किया हो जो एकाग्रचित्त थे तथा इब्राहीम को अल्लाह ने अपना मित्र बना लिया है।[2]

---

[1]जैसाकि पहले गुज़र चुका है कि अहले किताब अपने विषय में बड़ी शुभ आशाओं में मग्न थे। यहाँ अल्लाह तआला ने उनकी शुभ आशाओं पर से पर्दा उठाते हुए पुनः फ़रमाया कि आख़िरत की सफलतायें मात्र आशाओं तथा आकांक्षाओं से प्राप्त नही होंगी। इसके लिए ईमान तथा सत्कर्म का कोष होना आवश्यक है। यदि इसके विपरीत कर्मों की सूची में बुराईयाँ होंगी तो उसका दंड भुगतना ही पड़ेगा। वहाँ कोई मित्र तथा सहायक नही होगा, जो बुराई के दण्ड से बचा सके। आयत में अहले किताब के साथ-साथ ईमानवालों को भी अल्लाह तआला ने सम्बोधित किया है, ताकि वह भी यहूदियों तथा ईसाईयों की भाँति शुभ आशाओं, भ्रम तथा कर्मविहीन आशाओं तथा आकाक्षांओं से अपना दामन बचा सकें। परन्तु अफ़सोस, मुसलमान इन चेतावनियों के पश्चात भी उन्हीं कुविचारों में विलीन हो गये जिनमें पूर्व के समुदाय डूब गये थे। और आज अकर्म तथा कुकर्म मुसलमान का भी प्रतीक बना हुआ है और इसके उपरान्त वह "उम्मते मरहूमा" कहलाने का पुनराग्रह कर रहा है। هدانا الله تعالى

[2]यहाँ सफलता का एक स्तर तथा उसके एक आदर्श का वर्णन किया जा रहा है। पैमाना यह है कि स्वयं को अल्लाह को अर्पण कर दे, परोपकारी बन जाये और इब्राहीम के धर्म का अनुसरण करे। और आदर्श आदरणीय इब्राहीम हैं, जिनको अल्लाह

The Ummah Technology Mission

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿١٢٦﴾

(१२६) और जो कुछ भी आकाशों तथा पृथ्वी में है अल्लाह का है तथा अल्लाह प्रत्येक वस्तु को घेरने वाला है।

وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ

(१२७) वे नारियों के विषय में आप से प्रश्न करते हैं,[1] आप कह दें कि स्वयं अल्लाह तुम्हें उन के विषय में आदेश देता है और जो कुछ किताब (क़ुरआन) में तुम्हारे समक्ष पढ़ा जाता है, उन अनाथ नारियों (लड़कियों) के संदर्भ में जिनको तुम उनका अनिवार्य अधिकार नहीं देते[2] तथा उनसे विवाह करना चाहते हो[3]

तआला ने अपना ख़लील बनाया। ख़लील का अर्थ यह है कि जिसके दिल में अल्लाह तआला का प्रेम इस प्रकार बस जाये कि किसी अन्य के लिए उसमें स्थान न रहे। ख़लील (कर्म का रूप है) तथा अर्थ के आधार पर कर्ता है। जैसे अलीम का अर्थ ज्ञानी और कुछ कहते हैं कि कर्म ही के अर्थ में है। जैसे हबीब का अर्थ है महबूब। और आदरणीय इब्राहीम नि:सन्देह अल्लाह के प्रिय भी थे और प्रेमी भी (अलैहिस्सलात वस्सलाम)। (फ़तहुल क़दीर) और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है, "अल्लाह ने मुझे भी ख़लील बनाया है, जिस प्रकार उसने आदरणीय इब्राहीम को ख़लील बनाया।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद)

[1]स्त्रियों के विषय में जो प्रश्न होते रहते थे यहाँ से उनके उत्तर दिये जा रहे हैं।

[2] وما يتلى عليكم इसका प्रभाव يفتيكم الله पर है अर्थात अल्लाह तआला उनके विषय में स्पष्टीकरण कर रहा है और अल्लाह की किताब की वह आयात उसको स्पष्ट करती हैं जो इससे पूर्व अनाथ बालिकाओं के विषय में उतर चुकी हैं। तात्पर्य सूर: अन-निसा की आयत संख्या ३ है, जिसमें उन लोगों को इस अन्याय से रोका गया है कि वह अनाथ बालिकाओं से उनकी सुन्दरता के कारण विवाह तो कर लेते थे, परन्तु महर देने में आनाकानी करते थे।

[3]इसके दो अनुवाद किये गये हैं। एक तो यही है जो अनुवादक ने किया है, इसमें في (फ़ी) अरबी का शब्द है, (मूल कथन में) इस शब्द को लोप मान कर अनुवाद किया है। इसका दूसरा अनुवाद عن शब्द को लोप मान कर किया गया है अर्थात "तुम्हें उनसे विवाह करने की कोई इच्छा न हो।" अत: यह दूसरी अवस्था का वर्णन है कि अनाथ

The Ummah Technology Mission

تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ﴿١٢٧﴾

तथा निर्बल बालकों के बिषय में[1] और यह कि तुम. अनाथों के विषय में न्याय करो।[2] तथा तुम जो भी सत्य कार्य करोगे अल्लाह उसे भली-भाँति जानने वाला है।

وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَاۤ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ؕ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ؕ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ

(१२८) और यदि किसी पत्नी को अपने पति के वियोग अथवा विमुखता का भय हो तो दोनों पर परस्पर संधि कर लेने में कोई दोष नहीं।[3] तथा संधि उत्तम है, और लालसा हर

बालिका कई बार कुरूप होती है तो उसके संरक्षक अथवा उसके साथ के उत्तराधिकारी में सम्मिलित अन्य सगे सम्बन्धी स्वयं भी उसके साथ विवाह करना पसन्द नहीं करते और किसी अन्य स्थान पर भी उसका विवाह न करते ··· ताकि कोई अन्य उसकी जायदाद में भागीदार न बने। अल्लाह तआला ने पहली अवस्था की भाँति अत्याचार की इस दूसरी विधि को भी मना किया है

[1]इसका संकेत अनाथ स्त्रियों की ओर है। अर्थात (وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي يَتَامَى النِّسَآءِ وفِي الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ) अनाथ बालिकाओं के विषय में तुम पर जो पढ़ा जाता है। (सूरः *अन-निसा* आयत संख्या ३) (और निर्बल बालकों के विषय में जो पढ़ा जाता है) इससे तात्पर्य क़ुरआन का आदेश ﴿يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ﴾ है जिसमें पुत्रों के साथ पुत्रियों को भी उत्तराधिकार में भागीदार बनाया गया है। जब कि अज्ञान काल में केवल बड़े पुत्रों को ही उत्तराधिकारी समझा जाता था, छोटे निर्बल बालक तथा स्त्रियाँ उत्तराधिकार से वंचित थीं। इस्लामी धार्मिक नियमों ने सभी को उत्तराधिकारी बनाया।

[2]इसका संकेत भी अनाथ स्त्रियों की ओर है। अर्थात अल्लाह की किताब (क़ुरआन करीम) का यह आदेश भी तुम पर पढ़ा जाता है कि अनाथों के साथ न्याय करो, अनाथ बालिका चाहे सुन्दर हो तब भी अथवा कुरूप हो तब भी। दोनों अवस्थाओं में न्याय करो। (जैसाकि सविस्तार गुज़र चुका है)

[3]पति यदि किसी कारणवश अपनी पत्नी को पसन्द न करे और उससे दूरी तथा विमुखता और इंकार नित्य का कर्म बना ले अथवा एक से अधिक पत्नियाँ होने की अवस्था में किसी कम सुन्दर पत्नी से दूर रहे तो पत्नी अपना कुछ अधिकार त्याग कर (महर से अथवा भरण पोषण अथवा संभोग क्रम से) पति से संन्धि कर ले, तो इस सन्धि से पति-पत्नी पर कोई पाप न होगा, क्योंकि सन्धि प्रत्येक स्थिति में श्रेष्ठ है। मोमिनों की माँ आदरणीया

The Ummah Technology Mission

الشُّحَّ ۚ وَإِنْ تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿١٢٩﴾

मन में स्थित कर दी गई है, और यदि तुम उपकार करो[1] तथा संयम करो, तो अल्लाह तुम्हारे कृतियों से सूचित है।

وَلَنْ تَسْتَطِيعُوا أَنْ تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ۚ وَإِنْ تُصْلِحُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ

(१२९) तथा तुम पत्नियों के बीच कदापि न्याय न कर सकोगे यद्यपि इसकी आकांक्षा रखो, अतः तुम (एक की ओर) पूर्णतः न झुक जाओ कि दूसरी को अधर में लटकती हुई छोड़ दो,[2] और यदि तुम सुधार कर लो और (अन्याय

सौदः (رضي الله عنها) ने भी अपनी वृद्धावस्था में अपना क्रम आदरणीया आयशा को दे दिया था, जिसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वीकार किया था। (सहीह बुख़ारी व मुस्लिम किताबुन निकाह)

[1] شُحّ कंजूसी तथा लालच को कहते हैं। यहाँ तात्पर्य अपना-अपना स्वार्थ है, जो प्रत्येक व्यक्ति को प्रिय है अर्थात प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वार्थ में कंजूसी तथा लालच से काम लेता है।

[2] यह एक दूसरी परिस्थिति है कि यदि एक व्यक्ति की एक से अधिक पत्नियाँ हों, तो वह हार्दिक सम्बन्ध तथा प्रेम सभी के साथ एक प्रकार से नहीं रख सकता क्योंकि प्रेम हृदय से उत्पन्न होता है जिस पर कोई भी प्रतिबन्ध नहीं लगा सकता। स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी सभी पत्नियों में सबसे अधिक प्रेम आदरणीया आयशा (رضي الله عنها) से था। इच्छा के उपरान्त न्याय न करने का तात्पर्य यही हार्दिक भावना तथा प्रेम में सामंजस्य न होना है। यदि यह हार्दिक प्रेम सामान्य (वाह्य) अधिकार की समता में रुकावट न बने, तो अल्लाह के यहाँ पकड़ नहीं होगी। जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अत्यधिक सुन्दर नमूना प्रस्तुत किया है। परन्तु अधिकतर लोग इस हार्दिक प्रेम के कारण दूसरी पत्नियों के अधिकार को अदा नहीं करते और उन्हें अधर में लटका देते हैं, न उन्हें तलाक़ देते हैं और न पत्नी के अधिकार देते हैं। यह अत्यधिक अत्याचार है, जिससे यहाँ रोका गया है। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी फ़रमाया है, जिस व्यक्ति की दो पत्नियाँ हों और वह एक की ओर आकर्षित हो (अर्थात दूसरी को अनदेखी करे) तो क़ियामत के दिन इस प्रकार आयेगा कि इसके शरीर का एक भाग (अर्थात आधा) नहीं होगा। (त्रिमिज़ी किताबुन निकाह)

The Ummah Technology Mission

से) बचो तो नि:संदेह अल्लाह क्षमाशील कृपालु है।

كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١٣٠﴾

(१३०) और यदि दोनों जुदा हो जायें तो अल्लाह अपनी कृपा से दोनों को अनीह (परिपूर्ण) कर देगा,[1] और अल्लाह उदार सर्वज्ञानी है।

وَإِن يَتَفَرَّقَا يُغْنِ اللَّهُ كُلًّا مِّن سَعَتِهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ وَاسِعًا حَكِيمًا ﴿١٣٠﴾

(१३१) और आकाशों एवं पृथ्वी का सब कुछ अल्लाह ही का है तथा हमने तुम से पूर्व के लोग जो किताब (धर्मशास्त्र) दिये गये थे, उनको और तुम को यही आदेश दिया है कि अल्लाह से डरो और यदि तुम न मानो तो वस्तुत: जो आकाशों में तथा पृथ्वी में है सब अल्लाह ही का है तथा अल्लाह निस्पृह प्रशंसित है।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنِ اتَّقُوا اللَّهَ ۚ وَإِن تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَنِيًّا حَمِيدًا ﴿١٣١﴾

(१३२) और जो भी आकाशों में एवं पृथ्वी में है सभी अल्लाह का है तथा अल्लाह काम बनाने वाला बस है।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿١٣٢﴾

---

[1] यह तीसरी अवस्था है कि प्रयत्न के उपरान्त यदि निर्वाह की कोई स्थिति न बन पाये, तो फिर तलाक़ के द्वारा विच्छेद का अधिकार है। सम्भव है कि तलाक़ के पश्चात पुरुष को इच्छित गुणों वाली पत्नी तथा स्त्री को उसकी आवश्यकतानुसार गुणों वाला पुरुष मिल जाये। इस्लाम में तलाक़ को अत्यधिक अप्रिय किया गया है। एक हदीस में है।

«أَبْغَضُ الْحَلَالِ إِلَى اللهِ الطَّلَاقُ» (तलाक़ वैध तो है परन्तु यह ऐसा वैध है जो अल्लाह को अति अप्रिय है) (अबू दाऊद, मिशकात)

इसके उपरान्त अल्लाह ने इसकी आज्ञा दी है। इसलिए कि कई बार परिस्थितियाँ ऐसे मोड़ पर ले जाती हैं कि इसके अतिरिक्त कोई चारा नहीं होता और दोनों पक्ष के लिए अच्छाई इसी में होती है कि वह एक-दूसरे से विच्छेद कर लें। फिर भी वर्णित हदीस से यह स्पष्ट होता है कि यह अधिकार उसी समय प्रयोग करना चाहिए जब निर्वाह का कोई उपाय किसी भी प्रकार से न बन सके।

The Ummah Technology Mission

إِنْ يَّشَأْ يُذْهِبْكُمْ أَيُّهَا النَّاسُ وَيَأْتِ بِآخَرِيْنَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ﴿١٣٣﴾

(१३३) हे लोगो ! यदि वह चाहे तो तुम सब को ले जाये और दूसरों को ले आये, और अल्लाह इस पर पूर्ण सामर्थ्य रखने वाला है।[1]

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ﴿١٣٤﴾

(१३४) जो व्यक्ति सांसारिक प्रतिकार चाहता हो, तो (याद रखो कि) अल्लाह के पास लोक-परलोक (दोनों का) प्रतिकार उपलब्ध है[2] तथा अल्लाह सुनता देखता है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَاۗءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا

(१३५) हे ईमानवालो ! न्याय पर दृढ़ रहने वाले तथा अल्लाह के लिये सत्य साक्षी देने वाले बन जाओ, यद्यपि वह स्वयं तुम्हारे अपने तथा माता-पिता एवं संबन्धियों के[3] विरुद्ध हो, यदि वह व्यक्ति धनी हो तो अथवा निर्धन हो तो

(उपरोक्त हदीस को अल्लामः अलबानी ने छीन बताया है देखिये, इरवाउल ग़लील न॰ २०४०)

[1]यह अल्लाह तआला का पूर्ण प्रभावी सामर्थ्य का प्रदर्शन है, जबकि एक अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَإِن تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوا أَمْثَالَكُم ﴾

"यदि तुम मुँह फेरोगे तो वह तुम्हारे स्थान पर अन्यों को ले आयेगा और वह तुम्हारी तरह के नहीं होगें।" (सूरः मोहम्मद-३८)

[2]जैसे कोई व्यक्ति धर्मयुद्ध केवल युद्ध में प्राप्त माल के लिए ही करे तो कितनी नासमझी की बात है, जब कि अल्लाह तआला दुनिया और परलोक दोनों का पुण्य प्रदान करने में सक्षम है तो फिर उससे एक ही चीज़ क्यों माँगी जाये ? मनुष्य दोनों को प्राप्त करने वाला क्यों न बने?

[3]इसमें अल्लाह तआला ने ईमानवालों को न्याय स्थापित करने तथा यथार्थ गवाही देने पर बल दिया है। चाहे उसके कारण उनको स्वयं अथवा माता-पिता तथा सम्बन्धियों को हानि ही क्यों न उठानी पड़े, इसलिए कि सत्य सर्वोच्च है तथा प्रभावशाली है।

The Ummah Technology Mission

فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ وَاِنْ تَلْوٗٓا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١٣٥﴾

उन दोनों से अल्लाह का सम्बन्ध अधिक है [1] अत: न्याय करने में मनमानी न करो[2] और यदि त्रुटिपूर्ण बयान दोगे अथवा न मानोगे [3] तो अल्लाह तुम्हारी कृतियों से सूचित है।

---

[1]अर्थात किसी धनवान के धन के कारण छूट दी जाये, और न किसी निर्धन की निर्धनता का भय तुम्हें सच बात कहने से रोके, बल्कि अल्लाह इन दोनों से तुम्हारे अधिक निकट तथा श्रेष्ठ है।

[2]अर्थात मनोकांक्षा धर्मांधता अथवा शत्रुता तुम्हें न्याय करने से न रोक दे। जैसे अन्य स्थान पर फ़रमाया

﴿وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا﴾

"तुम्हें किसी क़ौम की शत्रुता इस बात पर तैयार न कर दे कि तुम न्याय न करो।" (सूर: अल-मायद:-८)

[3] تلووا शब्द لَيٌّ से है, जो बदलने तथा जान-बूझ कर झूठ बोलने को कहा जाता है। अर्थ गवाही में परिवर्तन है। और إعراض (इंकार) से तात्पर्य गवाही छुपाना और न देना है। इन दोनों बातों से भी रोका गया है। इस आयत में न्याय पर बल और उसके लिए जिन बातों की आवश्यकता है, उनका प्रबन्ध करने का आदेश दिया गया है। जैसे (१) प्रत्येक अवस्था में न्याय करो, इससे किसी प्रकार से बचने की चेष्टा न करो, किसी अपमान अथवा हानि के कारण इसमें रूकावट न आये, बल्कि इसको स्थापित करने के लिए एक-दूसरे के सहायक तथा दाहिना हाथ बनो। (२) केवल अल्लाह की प्रसन्नता ही तुम्हारा लक्ष्य होना चाहिए क्योंकि इस अवस्था में तुम परिवर्तन, कमी अथवा दबाव से बचोगे और तुम्हारा निर्णय न्याय के तराजू पर पूरा उतरेगा। (३) न्याय का प्रभाव यदि तुम्हारे माता-पिता अथवा अन्य किस सम्बन्धी पर भी पड़े, तब भी तुम चिन्ता न करो। और अपनी तथा उनकी छूट के सापेक्ष न्याय को प्रमुखता दो। (४) किसी धनवान के धन के कारण पक्षपात न करो और किसी निर्धन की निर्धनता से तरस न खाओ। क्योंकि वही जानता है कि इन दोनों की भलाई किस में है? (५) न्याय में मनोकांक्षा, क़ौमी पक्ष तथा शत्रुता आड़े नहीं आनी चाहिए, बल्कि इन सब को किनारे रखकर निष्पक्ष रूप से न्याय करो।

न्याय का यह प्रबन्ध जिस समाज में होगा, वहाँ शान्ति होगी और अल्लाह की ओर से धन-धान्य और कृपा प्रदान होगी। सहाबा कराम (رضي الله عنهم) ने इस बिन्दु को भली प्रकार समझ लिया था। अत:आदरणीय अब्दुल्लाह बिन रवाह: (رضي الله عنه)के विषय में

The Ummah Technology Mission

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰۗىِٕكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ١٣٦

(१३६) हे ईमानवालो ! अल्लाह तथा उस के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तथा उस किताब (पवित्र क़ुरआन) के प्रति जिसे अपने दूत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर उतारी है तथा उन धर्म शास्त्रों के प्रति विश्वास करो जो इससे पूर्व उतारे गये, [1] और जो अल्लाह और उसके फ़रिश्तों तथा उसके धर्म-शास्त्रों एवं उसके रसूलों तथा प्रलय दिवस को नहीं माने वह बहुत दूर बहक गया।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ١٣٧

(१३७) नि:संदेह जो विश्वास किये फिर नकार दिये, फिर विश्वास किये फिर इंकार किये तथा इंकार में बढ़ गये, अल्लाह वास्तव में उन्हें क्षमा नहीं करेगा और न सीधा रस्ता दिखायेगा।[2]

आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें ख़ैबर के यहूदियों के पास भेजा कि वह वहाँ जाकर फलों तथा फसलों का अनुमान लगा कर आयें। यहूदियों ने उन्हें रिश्वत प्रस्तुत करनी चाही ताकि वह कुछ कोमलता से काम लें। उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह की सौगन्ध, मैं उसकी ओर से दूत बन कर आया हूँ, जो दुनिया में मुझे सबसे अधिक प्रिय है, और तुम मेरे निकट सबसे अधिक अप्रिय हो, परन्तु मेरे प्रिय का प्रेम तथा तुम्हारी शत्रुता मुझे इस बात पर नहीं उकसा सकती कि मैं तुम्हारे मामले में न्याय न करूँ। यह सुन कर उन्होंने कहा इसी न्याय के कारण आकाश और धरती का प्रबन्ध स्थापित है (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[1]ईमानवालों के लिये ईमान लाने पर बल, प्राप्त किये हुए को प्राप्त करने की बात नहीं है, बल्कि ईमान की पूर्ति तथा उस पर स्थिर रहने का आदेश है। जैसे اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ का अर्थ है।

[2]कुछ व्याख्याकारों ने इसका तात्पर्य यहूदियों से लिया है। यहूदी आदरणीय मूसा पर ईमान लाये और आदरणीय उज़ैर का इंकार किया, फिर आदरणीय उज़ैर पर ईमान लाये, तो आदरणीय ईसा का इंकार किया। फिर इंकार में बढ़ते चले गये। यहाँ तक कि परम

The Ummah Technology Mission

بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ﴿۱۳۸﴾

(१३८) अवसरवादियों को सूचित कर दो कि उन के लिये दु:खद यातना आवश्यक है।

الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ﴿۱۳۹﴾

(१३९) जो मुसलमानों को छोड़ कर काफ़िरों को मित्र बनाते हैं,[1] क्या वह उन के पास मान-मर्यादा की खोज करते हैं? (तो स्मरणीय रहे कि) सभी मान-सम्मान अल्लाह के अधिकार में है।[2]

आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत का भी इंकार किया। और कुछ ने इसका तात्पर्य अवसरवादियों से लिया है, क्योंकि उनका उद्देश्य मुसलमानों को हानि पहुंचाना था, इसलिए बार-बार अपने को मुसलमान होने का ढोंग रचाते थे। अन्ततः इंकार तथा बुराई में इतने पड़ गये कि उनके मार्गदर्शन की आशा ही समाप्त हो गई।

[1]जिस प्रकार सूरः अल-बक़रः के प्रारम्भ में गुज़र चुका है कि अवसरवादी काफ़िरों के पास जाकर यही कहते कि हम तो वास्तव में तुम्हारे ही साथ हैं, और मुसलमानों से तो हम यूँ ही उपहास करते हैं।

[2]अर्थात सम्मान काफ़िरों के साथ मित्रता तथा प्रेम से नहीं मिलेगा, क्योंकि यह तो अल्लाह तआला के अधिकार में है। और वह सम्मान अपने भक्तों को ही प्रदान करता है। अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ مَن كَانَ يُرِيدُ ٱلْعِزَّةَ فَلِلَّهِ ٱلْعِزَّةُ جَمِيعًا ﴾

"जो सम्मान की कामना करता है,(तो उसे समझ लेना चहिए) कि सम्मान सब का सब अल्लाह ही के लिए है।"(सूरः अल-फ़ातिर-१०)

और फ़रमाया:

﴿ وَلِلَّهِ ٱلْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِۦ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَٰكِنَّ ٱلْمُنَٰفِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴾

"सम्मान अल्लाह के लिए है, उसके रसूल के लिए है और ईमानवालों के लिए है, परन्तु अवसरवादी नहीं जानते।" (सूरः अल-मुनाफ़िक़ून -८)

The Ummah Technology Mission

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ اَنْ
اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا
وَ يُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ
حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖٓ
اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ
الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ
جَمِيْعَا ۙ﴿۱۴۰﴾

(१४०) और अल्लाह (तआला) ने तुम पर अपनी किताब (पवित्र क़ुरआन) में यह आदेश उतारा है कि जब तुम अल्लाह की आयतों के साथ इंकार एवं उपहास होते सुनो तो उनके साथ उस सभा में न बैठो, जब तक कि दूसरी बात में न लग जायें, क्योंकि इस समय तुम उन्हीं के समान होगे,[1] निश्चय अल्लाह द्वयवादियों एवं काफ़िरों (विश्वासहीनों) को नरक में एकत्र करने वाला है।

الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ۚ فَاِنْ كَانَ
لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْٓا اَلَمْ نَكُنْ
مَّعَكُمْ ۖ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ ۙ
قَالُوْٓا اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ
مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ

(१४१) जो तुम्हारे विषय में प्रतिक्षा करते हैं, पुन: यदि तुम्हारी विजय अल्लाह की ओर हो तो ये कहते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे तथा यदि काफ़िरों (विश्वासहीनों) को तनिक-सी सफलता मिले तो कहते हैं कि क्या हमने तुम्हें घेर नहीं लिया और मुसलमानों

अर्थात वह द्वयवाद के द्वारा तथा काफ़िरों से मित्रता के द्वारा सम्मान प्राप्त करना चाहते हैं। वास्तव में यह चरित्र अपमान तथा अनादर का है, सम्मान का नहीं।

[1]अर्थात मना करने के उपरान्त यदि तुम ऐसी सभाओं में जहाँ अल्लाह की आयतों का उपहास उड़ाया जा रहा हो बैठोगे और उसे रोकोगे नहीं, तो फिर तुम भी उनके समान पाप के भागीदार बनोगे। जैसाकि एक हदीस में आता है, "जो व्यक्ति अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, वह उस भोज में सम्मिलित न हो जिसमें मदिरा का दौर चले।" (मुसनद अहमद, भाग १, पृष्ठ २०, भाग ३ पृष्ठ ३३९) इससे विदित हुआ कि ऐसी सभाओं तथा समारोह में सम्मिलित होना, जिसमें अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों का मौखिक अथवा कर्मों द्वारा उपहास उड़ाया जा रहा हो, जैसे आज कल के सुसभ्य तथा पाश्चात्य देशों से प्रभावित धनवान की सभा में साधारणत: ऐसा होता है अथवा विवाह एवं जन्म दिवस आदि समारोह में किया जाता है। अत: इस प्रकार की सभी वर्णित सभाओं में सम्मिलित होना महापाप है। ﴿اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ﴾ की चेतावनी ईमानवाले के अन्दर कंपन उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त है, यदि दिल के अन्दर ईमान हो।

The Ummah Technology Mission

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ﴿۱۴۱﴾

से नहीं बचाया था ? तो प्रलय के दिन [1] अल्लाह ही तुम्हारे बीच निर्णय करेगा [2] तथा अल्लाह कदापि काफ़िरो को मुसलमानों पर कोई मार्ग (प्रभाव) नहीं देगा ।[3]

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْۤا اِلَى الصَّلٰوةِ

(१४२) नि:संदेह अवसरवादी अल्लाह (तआला) से छल कर रहे हैं, और वह उन्हें उस छल

---

[1]अर्थात हम तुम पर प्रभावशाली होने लगे थे, परन्तु तुम्हें अपना साथी समझकर छोड़ दिया और मुसलमानों का साथ छोड़ कर हमने तुम्हें मुसलमानों के चंगुल से बचाया। अर्थात यह कि तुम्हें प्रभाव हमारी दोहरी नीति के कारण प्राप्त हुआ। जो हमने मुसलमानों में प्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित होकर अपना रखी, परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से उन्हें हानि पहुँचाने में हमने कोई आलस्य तथा कमी नहीं की यहाँ तक कि तुम उन पर प्रभावशाली हो गये।

[2]अर्थात दुनिया में तो तुमने छल-कपट से सामयिक रूप से कुछ सफलता प्राप्त कर ली, परन्तु क़ियामत के दिन अल्लाह तआला का निर्णय उन आन्तरिक विचारों तथा स्थिति के प्रकाश में होगा जिन्हें तुम दिल में छिपाये थे, इसलिए अल्लाह तआला तो दिल के भेदों को भली-भाँति जानता है । फिर उस पर जो दंड वह देगा, तो ज्ञात होगा कि दुनिया में अवसरवादी नीति अपनाने के कारण अत्यधिक हानि का व्यापार किया था, जिस पर नरक की स्थाई यातना भुगतनी पड़ेगी। أعاذنا الله منه

[3]अर्थात प्रभुत्व न देगा। इसके विभिन्न भावार्थ वर्णित किये गये हैं। (१) मुसलमानों का प्रभाव प्रलय के दिन होगा (२) तर्क-वितर्क के आधार पर काफ़िर मुसलमानों पर प्रभावशाली नहीं हो सकते । (३) काफ़िरों का प्रभाव इस प्रकार का नहीं होगा कि मुसलमानों के धन-धान्य का बिल्कुल अन्त हो जाये तथा वह दुनिया के नक्शे से ही लुप्त हो जायें । एक हदीस से भी इस भावार्थ की पुष्टि होती है। (४) जब तक मुसलमान अल्लाह की अप्रसन्नता तथा उसके निषेध किये हुये कर्मों से रोकते रहेंगे काफ़िर उन पर प्रभावशाली न हो सकेंगे। इमाम इब्नुल अरबी फ़रमाते हैं कि "यह सर्वश्रेष्ठ अर्थ है।" क्योंकि अल्लाह तआला का कथन है।

﴿ وَمَآ أَصَٰبَكُم مِّن مُّصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ ﴾

"और जो कठिनाई तुम पर आती है, वह तुम्हारे कर्मों के कारण से।" (सूरः अल-शूरा-३०) (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

قَامُوْٓا كُسَالٰى يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۴۲﴾

का बदला देने वाला है।[1] और जब नमाज़ को खड़े होते हैं, तो बड़े आलस्य की स्थिति में खड़े होते हैं[2] केवल लोगों को दिखाते हैं।[3] और अल्लाह की याद बस नाम मात्र करते हैं।[4]

مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ لَآ اِلٰٓى هٰٓؤُلَآءِ وَلَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ ؕ

(१४३) वह मध्य में ही असमंजस्य में हैं, न पूर्णरूप से उनकी ओर न उचित रूप से इन

---

[1]इसका संक्षिप्त विवरण सूर: अल-बक़र: के आरम्भ में हो चुका है।

[2]नमाज़ इस्लाम का विशेष स्तम्भ है और सर्वश्रेष्ठ कर्तव्य है तथा इसमें भी वह आलस्य तथा सुस्ती का प्रदर्शन करते थे, क्योंकि उनका हृदय ईमान एवं अल्लाह के भय तथा शुद्धता से वंचित था। यही कारण था कि ईशा (रात्रि) तथा फ़ज्र (प्रात:काल) की नमाज़ें विशेष रूप से उन पर भारी थीं। जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है।

«أَثْقَلُ الصَّلٰوةِ عَلَى الْمُنَافِقِينَ صَلٰوةُ الْعِشَآءِ وَصَلٰوةُ الْفَجْرِ...».

"द्वयवादियों के ऊपर ईशा तथा फज्र की नमाज़ सबसे भारी है।" (सहीह बुख़ारी मवाक़ीतुस्सलात, सहीह मुस्लिम किताबुल मसाजिद)

[3]यह नमाज़ भी वह मक्कारी तथा दिखावे के लिए पढ़ते थे ताकि मुसलमानों को धोखा दे सकें।

[4]अल्लाह की याद नाम मात्र करते हैं अथवा नमाज़ संक्षिप्त पढ़ते हैं لا يصلون إلا صلاة قليلة जब नमाज़ शुद्धता एवं अल्लाह के डर, तथा एकाग्रता से शून्य हो तो संतोष से नमाज़ पढ़ने में कठिनाई होती है। जैसाकि وإنها لكبيرة إلا على الخشعين (सूर:अल-बक़र:-४५) से स्पष्ट है। हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "यह अवसरवादी की नमाज़ है, यह अवसरवादी की नमाज़ है, यह अवसरवादी की नमाज़ है कि बैठा हुआ सूर्य की प्रतिक्षा करता रहता है, यहाँ तक कि जब सूर्य शैतान की दो सींघों के बीच (अर्थात सूर्यास्त के निकट) हो जाता है, तो उठता है और चार चोंचें मार लेता है।" (सहीह मुस्लिम किताबुल मसाजिद, मुअत्ता किताबुल क़ुरआन)

The Ummah Technology Mission

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿١٤٣﴾

की ओर[1] और जिसे अल्लाह (तआला) भटका दे, तो तू उसके लिए कोई मार्ग नहीं पायेगा।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٤٤﴾

(१४४) हे ईमानवालो ! ईमानवालों को छोड़-कर काफ़िरों को मित्र न बनाओ, क्या तुम यह चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह (तआला) का खुला तर्क स्थापित कर लो।[2]

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِى الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ﴿١٤٥﴾

(१४५) अवसरवादी तो अवश्य नरक की सब से निचली श्रेणी में जायेंगे।[3] असम्भव है कि तू उनका कोई सहायता करने वाला पा ले।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ وَسَوْفَ

(१४६) हाँ, यदि क्षमा माँग लें और सुधार कर लें और अल्लाह (तआला) पर पूर्ण विश्वास करें और शुद्धरूप से अल्लाह ही के लिए धार्मिक कार्य करें, तो यह लोग ईमानवालों के साथ

---

[1]काफ़िरों के पास जाते हैं तो उनके साथ और जब मुसलमानों के पास आते हैं तो उनके साथ मित्रता तथा सम्बन्ध का प्रदर्शन करते हैं। प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से वह न मुसलमानों के साथ हैं और न काफ़िरों के साथ और कुछ अवसरवादी अविश्वास तथा ईमान के मध्य असमंजस्य में पड़े रहते थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है, "अवसरवादी की तुलना उस बकरी के समान है जो जोड़ा खाने के लिए दो रेवड़ों के बीच असमंजस्य में पड़ी रहती है (बकरे की खोज में) कभी एक रेवड़ की ओर जाती है, कभी दूसरे की ओर।" (सहीह मुस्लिम किताबुल मुनाफ़िक़ीन)

[2]अर्थात अल्लाह तआला ने तुम्हें काफ़िरों की मित्रता से मना किया है। अब यदि तुम मित्रता करोगे तो इसका अर्थ यह होगा कि तुम अल्लाह को यह दलील उपलब्ध करा रहे हो कि वह तुम्हें भी दण्ड दे सके। (अर्थात अल्लाह के आदेशों की अवज्ञा तथा विरोध के कारण)

[3]नरक की सबसे निम्न श्रेणी هاوية (हावियः) कहलाती है। أعاذنا الله منها अवसरवादियों की वर्णित कर्मों तथा अवगुणों से हम सभी मुसलमानों की अल्लाह तआला रक्षा करे।

The Ummah Technology Mission

يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٤٦﴾

हैं।[1] अल्लाह (तआला) ईमानवालों को बहुत बड़ा बदला देगा।

مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ﴿١٤٧﴾

(१४७) अल्लाह (तआला) तुम्हें दंड देकर क्या करेगा यदि तुम कृतज्ञ रहो तथा ईमान के साथ रहो ?[2] और अल्लाह (तआला) अति सम्मान करने वाला पूर्ण ज्ञाता है।[3]

---

[1]अर्थात अवसरवादियों में से जो इन चार बातों का स्वच्छ मन से प्रयोजन करेगा, वह नरक में जाने के बजाय स्वर्ग में ईमानवालों के साथ होगा।

[2]कृतज्ञता का अर्थ है कि अल्लाह के आदेशानुसार बुराईयों से बचना तथा सत्कर्म का प्रयोजन करना। यह अल्लाह की कृपा की कर्मों द्वारा कृतज्ञता व्यक्त करना है। और ईमान से तात्पर्य अल्लाह के एक होने तथा उसके प्रभुत्व पर तथा संसार के लिए अन्तिम नबी परम आदरणीय मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान है।

[3]अर्थात जो उसका कृतज्ञ होगा वह सम्मान करेगा, जो दिल से ईमान लायेगा, वह इसको जान लेगा और उसके अनुसार सर्वश्रेष्ठ बदला प्रदान करेगा।

The Ummah Technology Mission

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿١٤٨﴾

(१४८) अल्लाह उच्च स्वर के साथ अपवाद से प्रेम नहीं करता, परन्तु नृशंसित को इसकी अनुमति है[1] तथा अल्लाह सुनता जानता है।

اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ﴿١٤٩﴾

(१४९) यदि तुम कोई पुण्य कार्य स्पष्ट करके करो अथवा छिपाकर अथवा किसी बुराई को क्षमा करते हो,[2] नि:संदेह अल्लाह (तआला) क्षमाशील सर्वशक्तिमान है।

---

[1]इस्लाम धर्म ने इस पर वल दिया है कि यदि किसी में बुराई देखो, तो उसकी चर्चा न करो बल्कि एकान्त में उसको समझा दो, यदि कोई धार्मिक हित हो। इसी प्रकार स्पष्ट रूप से सभी को दिखाकर बुराई करना अति अप्रिय है। एक तो बुराई का करना वैसे ही मना है चाहे वह पर्दे के भीतर क्यों न हो। दूसरे यह कि खुले रूप से की जाये यह एक और अधिक अपराध है। और इसके कारण इस बुराई का अपराध दुगुना, बल्कि दस गुना भी हो सकता है। क़ुरआन के उपरोक्त शब्द दोनों प्रकार की बुराई के प्रदर्शन से मना को सम्मिलित हैं। और उसी में यह भी सम्मिलित है कि किसी की की हुई अथवा न की हुई बुराई पर बुरा-भला कहा जाये। परन्तु इससे अलग यह है कि किसी अत्याचारी के अत्याचार को लोगों के समक्ष तुम प्रदर्शित कर सकते हो। उससे एक यह लाभ है कि संभवत: वह अत्याचार से रुक जाये अथवा उसकी क्षतिपूर्ति का प्रयास करे। दूसरा लाभ यह है कि लोग उससे बच कर रहें। हदीस में आता है कि एक व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और कहा कि मेरा पड़ोसी मुझे कष्ट देता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "तुम अपना सामान निकाल कर मार्ग में रख दो।" उसने ऐसा ही किया। फिर जो भी गुज़रता पूछता और वह अपने पड़ोसी के अत्याचार की चर्चा करता, यह सुनकर हर राही उसके पड़ोसी को धिक्कारता और बुरा-भला कहता। पड़ोसी ने यह देख कर क्षमा माँग लिया और भविष्य में ऐसा न करने का निश्चय कर लिया और उससे अपना सामान अन्दर रख लेने की प्रार्थना की। (सुनन अब दाऊद किताबुल अदब)

[2]कोई व्यक्ति किसी के साथ अत्याचार अथवा त्रिस्कार करे तो उसको उसी सीमा तक प्रतिकार की आज्ञा इस्लाम धर्म ने दी है जिस सीमा तक उस पर अत्याचार हुआ है।

«الْمُسْتَبَّانِ مَا قَالاَ، فَعَلَى البَادِئِ، مَا لَمْ يَعْتَدِ الْمَظْلُومُ»

"गाली-गलोज आपस में करने वाले दो व्यक्ति जो कुछ कहें उसका पाप पहले करने वाले पर है (यदि) जिस पर अत्याचार किया गया (अर्थात जिसे पहले गाली

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَن يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَن يَتَّخِذُوا بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ﴿١٥٠﴾

(१५०) जो लोग अल्लाह तथा उसके रसूलों (दूतों) के प्रति अविश्वास रखते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह तथा उसके रसूलों (दूतों) के मध्य अलगाव करें तथा कहते हैं कि हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते तथा इसके बीच रास्ता बनाना चाहते हैं।

أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ حَقًّا ۚ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿١٥١﴾

(१५१) विश्वास करो, कि यह सभी लोग असली काफ़िर हैं।[1] और काफ़िरों के लिये हम ने अत्यधिक कठोर यातनायें तैयार कर रखी हैं।

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ أُولَٰئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيهِمْ أُجُورَهُمْ ۗ وَكَانَ

(१५२) तथा जो अल्लाह और उसके रसूलों के प्रति विश्वास किये तथा उनमें से किसी के मध्य विभेद नहीं किये उन्हीं को अल्लाह उनका पूरा

दी गयी और उसने उत्तर में गाली दी) अधिकता न करे।" (सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्र वस्सिला वल अदब, हदीस संख्या ४५८७)

परन्तु बदला लेने की आज्ञा के साथ-साथ क्षमा करने को श्रेष्ठ कहा गया है क्योंकि अल्लाह तआला पूर्ण बदला लेने में सक्षम होने के उपरान्त क्षमा और माफी से काम लेता है। इसलिए फ़रमाया :

﴿وَجَزَٰٓؤُاْ سَيِّئَةٖ سَيِّئَةٞ مِّثۡلُهَاۖ فَمَنۡ عَفَا وَأَصۡلَحَ فَأَجۡرُهُۥ عَلَى ٱللَّهِۚ﴾

"त्रिस्कार का बदला (प्रतिकार) उसके समतुल्य त्रिस्कार है परन्तु जो क्षमा कर दे और सुधार करं ले, तो उसका प्रत्युपकार अल्लाह के ऊपर है।" (सूरः अल-शूरः-४०)

और हदीस में भी है, क्षमा कर देने से अल्लाह तआला सम्मान ही बढ़ाता है। (सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्र वससिला वल अदब,)

[1]अहले किताब के विषय में पूर्व वर्णित हो चुका है कि वह कुछ नबियों को मानते और कुछ को नहीं मानते। जैसे यहूदी आदरणीय ईसा तथा परम आदरणीय मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नहीं मानते तथा ईसाई परम आदरणीय मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अस्वीकार करते जैसे अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि नबियों के मध्य अन्तर करने वाले पक्के अधर्मी हैं

File Ummah Technology Mission

اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٥٢﴾

प्रतिफल देगा[1] और अल्लाह क्षमाशील कृपानिधि है।

يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٥٣﴾

(१५३) आप से अहले किताब यह प्रश्न करते हैं कि आप उन पर आसमान से कोई किताब उतारें[2] तो उन्होंने मूसा से इस से बड़ी माँग की थी और कहा कि हमें प्रत्यक्ष रूप से अल्लाह को दिखाओ फिर उन्हें बिजली ने घेर लिया उनके अत्याचार के कारण फिर उन्होंने स्पष्ट तर्कों के आ जाने के पश्चात बछड़े को (पूज्य) बना लिया और हमने उन्हें क्षमा कर दिया तथा मूसा (नबी) को खुला तर्क दिया।

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِى السَّبْتِ

(१५४) और उनसे वचन लेने के लिए तूर (पर्वत) हम उनके ऊपर ले आये और उन्हें आदेश दिया कि सजद: करते हुए द्वार में प्रवेश करो और यह भी आदेश किया कि शनिवार

---

[1]यह ईमानवालों के गुण बताये कि वह सभी नबियों पर ईमान रखते हैं। जिस प्रकार से मुसलमान। इस आयत से भी "सर्वधर्म संभाव" का खण्डन होता है, उस विचार वालों के निकट मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाना आवश्यक नहीं और वे उन ग़ैर मुसलमानों को भी मोक्ष प्राप्त करने वाला समझते हैं, जो अपनी कल्पना के अनुसार अल्लाह पर ईमान रखते हैं। परन्तु क़ुरआन की इस आयत ने स्पष्ट कर दिया कि अल्लाह पर ईमान के साथ-साथ मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाना भी आवश्यक है। यदि इस अन्तिम रिसालत पर ईमान न होगा, तो इस इंकार के साथ अल्लाह पर ईमान अमान्य तथा अस्वीकार्य है (देखिए सूर: *अल-बक़र:*- आयत ६२ की टिप्पणी)

[2]अर्थात जिस प्रकार आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम तूर पर्वत पर गये और तख़्तियों पर लिखी हुई तौरात लेकर आये, उसी प्रकार आप आकाश पर जाकर लिखा हुआ क़ुरआन मजीद लेकर आइये। यह माँग मात्र उपद्रव, इंकार करने तथा ईर्ष्या के आधार पर थी।

The Ummah Technology Mission

وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۶۱﴾

के दिन उल्लंघन न करना और हमने उनसें कठोर से कठोरतम वचन तथा स्वीकृत ली।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۵۵﴾

(१५५) ऐसा उनके वचन भंग करने तथा अल्लाह की आयतों के इंकार एवं अकारण रसूलों (ईशदूतों) की हत्या करने[1] तथा उनके इस कथन के कारण हुआ कि हमारे दिल ढँके हुये हैं (नहीं) अल्लाह ने उनके कुफ़्र के कारण उनके दिलों पर मुहर लगा दी है, इसलिये यह थोड़े ही ईमान रखते हैं।

وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا ﴿۱۵۶﴾

(१५६) और उनके कुफ़्र के कारण तथा मरियम पर घोर आरोप लगाने के कारण।[2]

وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا

(१५७) और उनके यह कहने के कारण कि हमने मसीह, मरियम के पुत्र ईसा, अल्लाह के रसूल (दूत) की हत्या कर दी, हालाँकि न तो उन्हें वध किया न उन्हें फांसी दी[3] परन्तु उनके लिये सरूप बना दिया गया।[4] विश्वास

---

[1]लिप्त सूत्र इस प्रकार होगा ﴿فَبِمَا نَقْضِهِم مِّيثَاقَهُمْ لَعَنَّاهُمْ﴾ अर्थात हमने उनकी प्रतिज्ञा भंजन तथा अल्लाह तआला की आयतों के प्रति अविश्वास और नबियों की हत्या आदि के कारण से उन पर धिक्कार अथवा दंडित किया।

[2]इससे तात्पर्य युसूफ़ बढ़ई के साथ आदरणीय मरियम के कुकर्म का आरोप है। आज कल भी कुछ शोधकर्ता इस घोर पाप आरोप को एक "प्रमाणित तथ्य" सिद्ध करने पर तुले हुए हैं और कहते हैं कि यूसुफ़ बढ़ई (अल्लाह की शरण) आदरणीय ईसा के पिता थे। और इस प्रकार (आदरणीय) ईसा के बिना पिता के चमत्कारी जन्म का इंकार करते हैं।

[3]इससे स्पष्ट हुआ कि यहूदी आदरणीय ईसा की हत्या अथवा फाँसी देने में सफल नहीं हुए। जैसेकि *सूरः आले इमरान* की आयत संख्या ५५ की टिप्पणी में संक्षिप्त वर्णन आ चुका है।

[4]इसका अर्थ यह है कि जब आदरणीय ईसा को यहूदियों की योजना का पता चला तो उन्होंने अपने अनुयायियों को, जिनकी संख्या १२ अथवा १७ थी एकत्रित किया। और फ़रमाया कि तुममें से कौन मेरे स्थान पर बलि देने को तैयार है ? ताकि अल्लाह तआला

The Ummah Technology Mission

فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ﴿۱۵۷﴾

करो कि ईसा के विषय में मतभेद करने वाले उनके विषय में शंका में हैं। उन्हें इसका कोई विश्वास नहीं सिवाय अनुमानित बातों पर कार्य करने के।[1] इतना निश्चित है कि उन्होंने उनकी हत्या नहीं की।

بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۱۵۸﴾

(१५८) बल्कि अल्लाह (तआला) ने उन्हें अपनी ओर उठा लिया।[2] और अल्लाह बलपूर्वक

उसकी रूप-रेखा मेरी जैसी बना दे। एक नवयुवक इसके लिए तैयार हो गया। अत: आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम को वहाँ से आकाश पर उठा लिया गया, उसके पश्चात यहूदी आये और उन्होंने उस नवयुवक को फाँसी पर चढ़ा दिया, जिसे ईसा के समरूप बना दिया गया था। यहूदी यही समझते रहे कि हमने आदरणीय ईसा को फाँसी पर चढ़ा दिया। वास्तविकता यह है कि आदरणीय ईसा वहाँ उपस्थित ही नहीं थे, वह जीवित अपने शरीर के साथ आकाश पर उठाये जा चुके थे। (इब्ने कसीर तथा फ़तहुल क़दीर)

[1]आदरणीय ईसा के समरूप को फाँसी देने के पश्चात एक गुट यह कहता रहा कि आदरणीय ईसा की हत्या कर दी गयी, दूसरा गुट वह जिसे यह अनुमान हो गया था कि फाँसी पर चढ़ाया गया व्यक्ति आदरणीय ईसा नहीं हैं, कोई अन्य है, वह आदरणीय ईसा को फाँसी पर चढ़ाने और हत्या करने से इंकार करता रहा। कुछ कहते हैं कि उन्होंने आदरणीय ईसा को आकाश पर जाते भी देखा था। कुछ कहते हैं कि इस मतभेद का तात्पर्य वह मतभेद है जो स्वयं ईसाइयों के मध्य उत्पन्न हुआ। ईसाइयों के नस्तूरी गुट ने कहा कि ईसा अलैहिस्सलाम की शारीरिक रूप से फाँसी दे दी गयी परन्तु आत्मिक रूप से नहीं। मलकानिया गुट ने कहा कि यह हत्या अथवा फाँसी शारीरिक तथा आत्मिक दोनों के रूप से पूर्ण हो गयी। (फ़तहुल क़दीर) अत: वह मतभेद, असमंजस्य तथा शंका के शिकार रहे।

[2]यह तथ्य है कि अल्लाह तआला ने अपनी अनन्त सामर्थ्य से अदरणीय ईसा को जीवित आकाश पर उठा लिया और निरन्तर सहीह हदीस से भी इस बात की तर्क संगत पुष्टि होती है। यह हदीसें, हदीस की सभी पुस्तकों के अतिरिक्त सहीह बुख़ारी तथा सहीह मुस्लिम में लिखी हुई हैं। इन हदीसों से आकाश पर उठा लिए जाने के अतिरिक्त क़ियामत से पूर्व उनके धरती पर उतरने तथा अन्य बातों का वर्णन है। इमाम इब्ने कसीर इन बातों का वर्णन करके अन्त में लिखते हैं यद्यपि यह हदीसें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निरन्तर हैं। इनके कथाकार आदरणीय अबू हुरैरा, आदरणीय अब्दुल्लाह बिन मसऊद, उस्मान बिन अबुल ऑस, अबू ओमामः, नवास बिन

The Ummah Technology Mission

पूर्ण ज्ञानी है।[1]

وَإِنْ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ﴿١٥٩﴾

(१५९) अहले किताब में से कोई ऐसा न शेष बचेगा जो (आदरणीय) ईसा (अलैहिस्सलाम) की मृत्यु से पूर्व उन पर ईमान न लाये।[2] और प्रलय

समआन, अब्दुल्लाह बिन अमर बिन अल-ऑस, मुज्जमआ बिन जरिया:, अवी सरिया: तथा हुज़ैफ़ा बिन उसीद (रज़ी अल्लाह अनहुम) हैं इन हदीसों में आपके उतरने के गुण तथा स्थान का वर्णन है। आप सीरिया देश की वर्तमान राजधानी दमिश्क में पूर्व मिनार: के पास उस समय उतरेंगे, जब फ़ज्र की नमाज़ की इक़ामत हो रही होगी। आप सूअर की हत्या करेंगे, क्रॉस तोड़ेंगे, दज्जाल का वध भी अपने हाथों करेंगे तथा याजूज व माजूज प्रकट होकर उपद्रव भी आप के युग में करेंगे तथा अन्तत: उनका विनाश भी आप ही के शाप से होगा।

[1]वह शक्तिशाली तथा प्रभुत्व वाला है और उसके विचार तथा इच्छा को कोई टाल नहीं सकता, और जो उसकी शरण में आ जाये, उसे कोई हानि नहीं पहुँचा सकता। और वह ज्ञानी भी है, वह जो भी निर्णय करता है, वह निति व सिद्धान्त पर आधारित होते हैं।

[2] قبل موته में هـ सर्वनाम कुछ व्याख्याकारों के निकट अहले किताब (ईसाईयों) की तरफ फिरता है। और अर्थ यह कि प्रत्येक ईसाई मृत्यु के समय आदरणीय ईसा पर ईमान तो लाता है। यद्यपि मृत्यु के पहले ईमान का समय लाभकारी नहीं। परन्तु पूर्वजों (सहावा) या अधिकतर व्याख्याकारों के निकट आदरणीय ईसा की तरफ फिरता है और अर्थ यह है कि जब उनका पुन: संसार में आना होगा और वह दज्जाल का वध करके इस्लाम धर्म का प्रभाव क्षेत्र बढ़ायेंगे, तो उस समय जितने भी यहूदी और ईसाई होंगे उनका भी वध करेंगे। और इस धरती पर मुसलमानों के अतिरिक्त कोई शेष न बचेगा। इस प्रकार दुनिया में जितने भी अहले किताब आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने वाले हैं, वह आदरणीय ईसा की मृत्यु के पूर्व ही उन पर ईमान लाकर गुजर चुकेंगे। चाहे उनका ईमान किसी भी ढंग का हो। हदीस सहीह से भी यही सिद्ध है। अत: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "सौगन्ध है उस शक्ति की जिसके हाथ में मेरा प्राण है, अवश्य एक समय आयेगा कि तुममें इब्ने मरियम अधिपत्य तथा न्यायिक बन कर उतरेंगे वह क्रॉस को तोड़ेंगे, सूअर का वध करेंगे, रक्षा कर समाप्त कर देंगे, और माल की इतनी अधिकता हो जायेगी कि कोई उसका लेने वाला न होगा (अर्थात दान लेने वाला कोई न होगा) यहाँ तक कि एक सजद: दुनिया तथा उसके ऐश्वर्य से श्रेष्ठ होगा। फिर आदरणीय अबुहुरैरा (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं यदि तुम चाहो तो क़ुरआन करीम की यह आयत पढ़ लो। ﴿وَإِن مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ﴾ (सहीह बुख़ारी

The Ummah Technology Mission

के दिन वह उन पर साक्षी होंगे ।[1]

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ﴿١٦٠﴾

(१६०) यहूदियों के अत्याचार के कारण हम ने उन पर वैध पदार्थ निषेध कर दिये तथा उनके अल्लाह के मार्ग से अधिक (लोगों) को रोकने के कारण ।[2]

وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٦١﴾

(१६१) और उनके ब्याज लेने के कारण जिससे उन्हें रोक दिया गया था । तथा लोगों का धन अहित से लेने हेतु, और हमने उनमें से काफ़िरों के लिये दु:खद यातना तैयार की है ।

لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ

(१६२) परन्तु उनमें जो दक्ष तथा प्रयज्ञ हैं।[3] और ईमानवाले हैं, जो उस पर ईमान लाते हैं, जो आपकी ओर उतारा गया, और जो आप से

किताबुल अम्बिया) । यह हदीस इतनी अधिकता से आयी है कि इसे निरन्तर की श्रेणी प्राप्त है और इन्हीं निरन्तर हदीसों के आधार पर अहले सुन्नत के सभी सम्प्रदाय का सर्वमान्य विश्वास है कि आदरणीय ईसा आकाश पर जीवित हैं और प्रलय के निकट वह दुनिया में आयेंगे और दज्जाल तथा अन्य सभी धर्मों को समाप्त करेंगे और इस्लाम धर्म को प्रभावशाली बनायेंगे । याजूज व माजूज का निकलना भी आदरणीय ईसा की उपस्थिति में ही होगा और आदरणीय ईसा की प्रार्थना के प्रभाव से ही इस अशान्ति की भी समाप्ति होगी । जैसाकि हदीस से स्पष्ट है ।

[1]यह गवाही अपनी पहले के जीवन तक की अवस्था के विषय में होगी, जैसाकि सूरः *अल-मायदः* के अन्त में स्पष्टतम रूप से है ।

﴿ وَكُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ ﴾

"मैं जब तक उनमें उपस्थिति रहा, उनके विषय में जानता रहा ।"

[2]अर्थात उनके अपराधों तथा कुकर्मों के कारण दंड स्वरूप बहुत-सी अवर्जित वस्तु उन पर वर्जित कर दी थीं । (जिनकी प्रधानता सूरः *अल-अनआम*-१४६ में है)

[3]इनसे तात्पर्य आदरणीय अब्दुल्लाह बिन सलाम आदि हैं, जो यहूदियों में से मुसलमान हुए थे ।

The Ummah Technology Mission

وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۶۲﴾

पूर्व उतारा गया और नमाज़ को स्थापित करने वाले हैं।[1] और ज़कात को अदा करने वाले हैं।[2] और अल्लाह पर तथा क़ियामत के दिन पर ईमान रखने वाले हैं।[3] यह वह हैं जिन्हें हम बहुत बड़ा प्रतिकार प्रदान करेंगे।

اِنَّاۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ كَمَاۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۚ وَاَوْحَيْنَاۤ اِلٰۤى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَعِيْسٰى وَاَيُّوْبَ وَيُوْنُسَ وَهٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿۱۶۳﴾

(१६३) नि:सन्देह हमने आपकी ओर उसी प्रकार प्रकाशनायें (वह्यी) की हैं, जैसे कि नूह (अलैहिस्सलाम) और उनके पश्चात के नबियों की ओर हमने प्रकाशना (वह्यी) की, तथा इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ तथा याक़ूब एवं उनकी सन्तानों पर तथा ईसा और अय्यूब तथा यूनुस एवं हारून तथा सुलैमान की ओर।[4] और हमने दाऊद (अलैहिस्सलाम) को ज़बूर प्रदान की।

---

[1]इनसे तात्पर्य भी वही ईमानवाले हैं जो अहले किताब से मुसलमान हुए अथवा फिर मुहाजिरीन (मक्का शहर छोड़कर आये हुए मुसलमान) तथा अंसार (मदीने के निवासी मुसलमान) से तात्पर्य हैं। अर्थात इस्लामी नियम के दृढ़ ज्ञान रखने वाले और उत्तम ईमान से अलंकृत होने वाले लोग उन कुकर्मों के करने से बचते हैं, जिन्हें अल्लाह तआला अप्रिय समझता है।

[2]इसका प्रयोजन धन का दान अथवा प्राण का दान अर्थात अपने आचरण एवं स्वभाव को पवित्र तथा स्वच्छ करना है अथवा दोनों अभिप्रेत हैं।

[3]अर्थात इस पर विश्वास रखते हैं कि अल्लाह के सिवाय कोई पूज्य नहीं तथा मौत के पश्चात पुनर्जीवित होने एवं कर्मानुसार प्रतिफल मिलने पर विश्वास रखते हैं।

[4]आदरणीय इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) से उदघृत है कि कुछ लोगों ने कहा कि आदरणीय मूसा के पश्चात अल्लाह तआला ने किसी पर कुछ नहीं उतारा और इस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत को अस्वीकार किया, जिस पर यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर) जिसमें उपरोक्त कथन का खंडन करते हुए मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की रिसालत को प्रमाणित किया गया है।

The Ummah Technology Mission

وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ؕ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا ۚ﴿۱۶۴﴾

(१६४) और आप से पूर्व के बहुत से रसूलों की घटनायें हमने आप से वर्णन की हैं।[1] और बहुत से रसूलों की नहीं भी कीं हैं[2] और मूसा से अल्लाह ने सीधे बात की।[3]

رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌ ۢ

(१६५) (हमने इन्हें) शुभसूचक एवं सचेतकर्ता रसूल बनाया।[4] ताकि लोगों को कोई बहाना तथा अभियोग रसूलों को भेजने के पश्चात

---

[1]जिन रसूलों के नाम तथा उनकी घटनायें क़ुरआन में वर्णन की गयी हैं, उनकी संख्या २५ है। (१) आदम (२) इदरीस (३) नूह (४) हूद (५) स्वालेह (६) इब्राहीम (७) लूत (८) इस्माईल (९) इसहाक़ (१०) याक़ूब (११) यूसुफ़ (१२) अय्यूब (१३) शुऐब (१४) मूसा (१५) हारून (१६) यूनुस (१७) दाऊद (१८) सुलैमान (१९) इलियास (२०) अल-यसअ (२१) ज़करिया (२२) यहिया (२३) ईसा (२४) ज़ुलकिफ़्ल अधिकतर व्याख्याकारों के निकट (२५) आदरणीय मोहम्मद सलवातुल्लाह व सलामुहू अलैहि व अलैहिम अजमईन।

[2]जिन नबियों और रसूलों के नाम तथा घटनायें क़ुरआन में वर्णन नहीं हैं, उनकी संख्या कितनी है ? अल्लाह तआला ही भली प्रकार से जानता है। एक हदीस में जो बहुत प्रसिद्ध है एक लाख चौबीस हज़ार तथा एक हदीस में आठ हज़ार बतायी गयी है। लेकिन यह कथन अत्यधिक कमज़ोर हैं क़ुरआन और हदीस से सिर्फ़ यही ज्ञात होता है कि विभिन्न समय तथा अवस्थाओं में शुभ सूचना देने वाले तथा सतर्क करने वाले (नबी) आते रहे हैं। अन्ततः यह नबूवत का क्रम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर समाप्त हो गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले कितने नबी आये उनकी उचित संख्या का ज्ञान सिर्फ़ अल्लाह को है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात जितने भी लोग नबूअत का दावा करें वह दज्जाल तथा झूठे हैं और उन पर ईमान लाने वाले इस्लाम से बाहर हैं। और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत से अलग एक प्रतिकूल समुदाय हैं। जैसे-बहाई, बाबिया तथा मिर्ज़ाई समुदाय।

[3]यह मूसा अलैहिस्सलाम का विशेष गुण है, जिसमें वह दूसरे नबियों से श्रेष्ठ हैं। सहीह इब्ने हिब्बान में एक कथन के आधार पर इमाम इब्ने कसीर ने इस वार्तालाप की विशेषता में आदरणीय आदम तथा आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्मिलित माना है। तफ़सीर इब्ने कसीर व्याख्या आयत ﴿ تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ﴾

[4]ईमानवालों को स्वर्ग के सुख की शुभ सूचना देना तथा काफ़िरों को नरक की कठोर यातना से डराना।

The Ummah Technology Mission

بَعْدَ الرُّسُلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٦٥﴾

अल्लाह (तआला) पर न रह जाये।[1] और अल्लाह (तआला) बड़ा बलपूर्वक तथा बड़ा पूर्णज्ञानी है।

لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿١٦٦﴾ ؕ

(१६६) जो कुछ आपकी ओर उतारा है, उस विषय में अल्लाह तआला स्वयं साक्षी है कि उसे अपने ज्ञान से उतारा है, और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं और अल्लाह (तआला) का साक्ष्या बस है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًا بَعِيْدًا ﴿١٦٧﴾

(१६७) नि:संदेह जिन्होंने कुफ़्र किया तथा अल्लाह के मार्ग (धर्म) से रोका वह बहुत दूर भटक गये।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا ﴿١٦٨﴾ ۙ

(१६८) वस्तुत: जिन्होंने कुफ़्र किया तथा अत्याचार कर लिये अल्लाह उन्हें क्षमा नहीं करेगा न उन्हें किसी मार्ग का दर्शन करायेगा।[2]

اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٦٩﴾

(१६९)परन्तु नरक का मार्ग, जिस में वह सदा निवास करेंगे तथा यह अल्लाह पर सरल है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ

(१७०) हे मानवगण, तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से सत्य लेकर रसूल

---

[1] अर्थात नबूवत अथवा सावधान करने तथा शुभ सूचना देने का यह क्रम हमने इस लिए स्थापित किया कि किसी के पास यह तर्क शेष न रहे कि हमें तो तेरा संदेश पहुँचा ही नहीं। जिस प्रकार अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَلَوْ أَنَّآ أَهْلَكْنَٰهُم بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِۦ لَقَالُوا۟ رَبَّنَا لَوْلَآ أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ ءَايَٰتِكَ مِن قَبْلِ أَن نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ ﴾

"यदि हम उनको पैग़म्बर के (भेजने से) पूर्व ही मार देते तो वह कहते कि ऐ हमारे प्रभु ! तूने हमारी ओर कोई रसूल क्यों नहीं भेजा कि हम अपमानित तथा लज्जित होने से पूर्व ही तेरी आयतों का अनुकरण कर लेते।" (सूरः ताहा-१३४)

[2] क्योंकि निरन्तर अधर्म तथा अत्याचार करके उन्होंने अपने दिलों को काला कर लिया है, जिससे अब उनके मार्गदर्शन तथा मोक्ष की कोई आशा की किरण नहीं दिखायी देती।

The Ummah Technology Mission

الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۷۰﴾

(मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आ गये उनके प्रति विश्वास करो तुम्हारे लिये उत्तम है और यदि तुमने नकार दिया तो आकाशों एवं पृथ्वी में जो भी है अल्लाह का है।[1] तथा अल्लाह ज्ञानी पूर्ण परिचित है।

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ

(१७१) हे अहले किताब अपने धर्म में अतिश्योक्ति न करो[2] तथा अल्लाह के ऊपर

---

[1]अर्थात तुम्हारे अविश्वास से अल्लाह का क्या बिगड़ेगा जैसे आदरणीय मूसा ने अपनी जाति से कहा था।

﴿ إِن تَكْفُرُوٓاْ أَنتُمْ وَمَن فِي ٱلْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ ٱللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ﴾

"यदि तुम तथा जगतवासी सभी कृतघ्नता करें (तो वे अल्लाह का क्या बिगाड़ लेगें) अल्लाह निस्पृह प्रशस्त है।" (सूरः *इब्राहीम-८*)

तथा हदीस क़ुदसी में है। अल्लाह कहता है कि मेरे भक्तों! यदि तुम्हारे प्रथम एवं अन्तिम तथा सभी मानव एवं दानव उस एक पुरुष के हृदय के समान हो जायें जो तुममें सबसे संयमी है तो इससे मेरे राज्य में अधिकता न होगी। तथा यदि तुम्हारे पूर्व एवं अन्तिम मानव तथा दानव उस एक पुरुष के हृदय के समान हो जायें जो तुम में सर्वाधिक अवज्ञ है तो इससे मेरे राज्य में कोई कमी नहीं होगी। हे मेरे भक्तों! तुम सभी एक भूमि में एकत्र हो जाओ तथा मुझसे प्रश्न करो तथा मैं प्रत्येक पुरुष को उसके प्रश्नानुसार दूँ तो उससे मेरे कोष में इतनी ही क़मी होगी जितनी सूई को समुद्र में डुबा कर निकालने से समुद्र जल में होती है (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र)

[2] غلوّ का अर्थ अतिश्योक्ति (किसी चीज़ को बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन करना) है। जैसे ईसाईयों ने आदरणीय ईसा तथा उनकी माता के विषय में किया कि उनको रिसालत तथा बन्दगी के स्थान से उठा कर पूज्य के पद पर आसीन कर दिया। और उनकी अल्लाह की तरह पूजा करने लगे। इसी प्रकार आदरणीय ईसा के अनुयायियों को भी अतिश्योक्ति का प्रदर्शन करके उन्हें निर्दोष (प्राकृतिक निष्पाप) बनाकर उन्हें निषेध अथवा वैध बनाने का अधिकार दे दिया। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ ٱتَّخَذُوٓاْ أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَٰنَهُمْ أَرْبَابًا مِّن دُونِ ٱللَّهِ ﴾

"उन्होंने अपने ज्ञानियों तथा महात्माओं को अल्लाह के अतिरिक्त अराध्य बना लिया।" (सूरः *अल-तौबा-३१*)

The Ummah Technology Mission

सत्य ही बोलो, वस्तुतः मरियम के पुत्र ईसा मसीह मात्र अल्लाह के दूत एवं शब्द हैं[1] जिसे मरियम की तरफ डाल दिया तथा उसकी ओर

إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِّنْهُ ز فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۖ

यह अराध्य बनाना हदीस के अनुसार उनके मान्य किये हुये को उचित तथा वर्जित किये हुये को निषेध समझना था। जबकि वास्तव में यह अधिकार मात्र अल्लाह को है परन्तु अहले किताब ने यह अधिकार अपने ज्ञानियों आदि को दे दिया। अल्लाह तआला ने इस आयतों में अहले किताब को धर्म में इसी अतिश्योक्ति से मना किया है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी ईसाईयों के इस अतिश्योक्ति को देखते हुये अपने विषय में अपने अनुयायियों को सचेत किया।

«لاَ تُطْرُونِي كَمَا أَطْرَتِ النَّصَارَىٰ عِيسَى ابنَ مَرْيَمَ ؛ فَإِنَّمَا أَنَا عَبْدُهُ، فَقُولُوا: عَبْدُاللهِ وَرَسُولُه».

"तुम मुझे उस प्रकार सीमा से अधिक न बढ़ाना जिस प्रकार ईसाईयों ने ईसा पुत्र मरियम को बढ़ाया है, मैं तो केवल अल्लाह का भक्त हूँ, बस तुम मुझे उसका भक्त और रसूल ही कहना।" (सहीह बुख़ारी किताबुल अम्बिया, मुसनद अहमद, भाग १ पृष्ठ २३, तथा देखिये मुसनद अहमद भाग १ पृष्ठ १५३)

परन्तु अफ़सोस है कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत भी इसके उपरान्त इस अतिश्योक्ति से सुरक्षित न रह सकी जिसमें ईसाई लीन हुए और मुसलमान भी अपने पैग़म्बर अपितु पुनीत भक्तों तक को ईश्वरीय गुणों से युक्त कर दिया, जो वास्तव में ईसाईयों का आचरण था। इसी प्रकार विद्वानों और धर्मशास्त्रियों (इस्लामी शोध कर्ताओं) को भी धर्म का भाष्यकार मानने के अतिरिक्त उनको धार्मिक नियमों को बनाने का अधिकार दे दिया है। (فَإِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ). सत्य कहा था नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने।

«لَتَتْبَعُنَّ سُنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ حَذْوَا النَّعْلِ بِالنَّعْلِ».

"जिस प्रकार से एक जूता दूसरे जूते के बराबर होता है, बिल्कुल उसी प्रकार तुम विगत उम्मतों का अनुगमन करोगे।"

[1] अल्लाह के शब्द का अर्थ यह है कि शब्द كُن (हो जा) से पिता के बिना उनकी उत्पत्ति हुई। और यह शब्द आदरणीय जिब्रील के द्वारा आदरणीय मरियम तक पहुँचाया गया। अल्लाह की आत्मा का अर्थ वह फूंक है, जो आदरणीय जिब्रील ने अल्लाह के आदेश से आदरणीय मरियम के गरेबान में फूंका, जिसे अल्लाह तआला ने पिता के वीर्य के स्थान पर बना दिया। इस प्रकार ईसा अल्लाह के शब्द भी हैं जो फ़रिश्ते ने आदरणीय मरियम की ओर डाला और उसकी वह आत्मा हैं जिसे लेकर जिब्रील मरियम की ओर भेजे गये। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

The Usmani Technology Mission

وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗۤ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۱۷۱﴾

से आत्मा हैं अत: अल्लाह तथा उसके रसूलों के प्रति विश्वास करो तथा न कहो कि अल्लाह तीन हैं,[1] रुक जाओ यह तुम्हारे लिये भला है। वस्तुत: तुम्हारा पूज्य मात्र एक अल्लाह है। वह पवित्र है कि उसकी कोई संतान हो उसी के अधिपत्य में है जो आकाशों एवं पृथ्वी में है तथा अल्लाह काम बनाने के लिये पर्याप्त है।

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿۱۷۲﴾

(१७२) मसीह अल्लाह के दास होने से कदापि घृणा नहीं करते और न निकटवर्ती फ़रिश्ते।[2] और जो अल्लाह की इबादत से घृणा तथा अभिमान करेगा। वह उन सभी को अपनी ओर एकत्रित करेगा।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ

(१७३) परन्तु जो ईमान लाये एवं सत्कर्म किये उन्हें उनका पूरा प्रतिफल देगा तथा अपनी अनुकम्पा से और भी अधिक देगा[3]

---

[1]ईसाईयों के कई गुट हैं। कुछ आदरणीय ईसा को अल्लाह, कुछ अल्लाह के साझी और कुछ अल्लाह का पुत्र मानते हैं। फिर जो अल्लाह मानते हैं वह त्रिमूर्ति (तीन भगवान) के तथा आदरणीय ईसा को तीन में से एक होने पर विश्वास करते हैं। अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि तीन भगवान कहने से रुक जाओ, अल्लाह तआला मात्र एक है।

[2]आदरणीय ईसा की भाँति कुछ लोगों ने फ़रिश्तों को भी अल्लाह का साझी बना रखा था। अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि यह सबके सब अल्लाह के भक्त हैं, और इससे उन्हें कदापि कोई इंकार नहीं है। तुम उनको अल्लाह अथवा उसकी अराध्यता में किस आधार पर मिश्रित करते हो।

[3]कुछ ने इस 'अधिक' से तात्पर्य यह लिया है कि अल्लाह तआला ईमानवालों को शफ़ाअत (अभिस्ताव) की अनुमति प्रदान करेगा, इस शफ़ाअत (अनुशंसा) की अनुमति पाकर जिनके लिए अल्लाह चाहेगा शफ़ाअत करेंगे।

The Umman Technology Mission

فَضْلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا وَاسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧٣﴾

किन्तु जो घृणा किये तथा घमन्ड किये[1] उन्हें दु:खद यातना देगा [2] तथा वे अल्लाह के सिवाय अपने लिए कोई संरक्षक और सहायक नहीं पायेंगे।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا ﴿١٧٤﴾

(१७४) हे मानव गण ! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से तर्क आ चुका है[3] तथा हमने तुम्हारी ओर ज्वलंत प्रकाश (पवित्र क़ुरआन) उतार दिया है।[4]

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ وَّيَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿١٧٥﴾

(१७५) फिर जो लोग अल्लाह के प्रति विश्वास कर लिये और उसे दृढ़ता से पकड़ लिये उन्हें अपनी कृपा एवं अनुकम्पा में प्रवेशित करेगा तथा उन्हें अपने ओर का सत्यमार्ग दर्शायेगा।

يَسْتَفْتُوْنَكَ ۭ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِي الْكَلٰلَةِ ۭ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ لَيْسَ

(१७६) वे आप से प्रश्न करते हैं। आप कह दें तुम्हें अल्लाह कलाल: के विषय में निर्देश

---

[1]अर्थात अल्लाह की आराधना व आज्ञा पालन से रुके रहे और इससे इंकार तथा अहंकार करते रहे।

[2] इस प्रकार अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ﴾

"नि:सन्देह जो लोग मेरी वन्दना से इंकार तथा घमंड करते हैं, अवश्य अपमानित तथा लज्जित होकर नरक में प्रवेश करेंगे।" (सूरः *अल-मोमिन*-६०)

[3]बुरहान, का अर्थ है ऐसा अकाट्य तर्क, जिसके पश्चात किसी को बहाने का कोई अवसर न रहे, ऐसी युक्ति जिससे हर प्रकार की शंकायें समाप्त हो जायें, इसीलिए इसे आगे प्रकाश ज्योति कहा गया है।

[4]इससे तात्पर्य पवित्र क़ुरआन है जो अविश्वास तथा मिश्रण के अंधकार में प्रकाश है। अपमान की पगडंडियों पर सीधा मार्ग तथा अल्लाह तआला की सशक्त रस्सी है अत: इसके अनुसार विश्वास वाले अल्लाह की दया एवं कृपा के पात्र होंगे।

The Ummah Technology Mission

لَهٗ وَلَدٌ وَّلَهٗۤ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ
مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَاۤ اِنْ لَّمْ يَكُنْ
لَّهَا وَلَدٌ ؕ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ
فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ؕ وَاِنْ
كَانُوْۤا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً
فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ

करता है[1] कि यदि किसी पुरुष की मौत हो जाये तथा उसके उत्तराधिकारी में कोई संतान न हो और उसकी एक बहन हो तो उसके लिये छोड़े हुए (धन) का आधा है तथा वह उस (बहन) का उत्तराधिकारी है यदि उसके कोई संतान न हो,[2] यदि दो बहनें हों तो दोनों के लिये दो तिहाई है उसमें से जिसे

---

[1]कलाल: के विषय में पहले वर्णन हो चुका है कि उस मृत को कहते हैं, जिनका न पिता हो और न पुत्र । यहाँ पुन: उसके उत्तराधिकार की चर्चा हो रही है। कुछ लोगों ने कलाल: उस व्यक्ति को कहा है, जिसका केवल पुत्र न हो अर्थात पिता जीवित हो, परन्तु यह सही नहीं है। कलाल: की प्रथम परिभाषा ही ठीक है क्योंकि पिता की उपस्थिति में बहन उत्तराधिकारी नहीं होती है। पिता उसके विषय में बाधक बन जाता है। परन्तु यहाँ अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि यदि उसकी एक बहन हो तो वह उसके आधे धन की उत्तराधिकारी होगी, इससे यह संकेत मिलता है कि कलाल: वह व्यक्ति है, जिसकी मृत्यु के समय पुत्र के साथ-साथ पिता भी न हो। इस प्रकार पिता की अनुपस्थिति सांकेतिक से सिद्ध है।

टिप्पणी : पुत्र से तात्पर्य पुत्र तथा पौत्र दोनों हैं। इसी प्रकार बहन से तात्पर्य सगी बहन तथा सौतेली बहन (पिता की ओर से) है। (ऐसरुत्तफ़ासीर) हदीसों से सिद्ध होता है कि बहन के साथ-साथ पुत्री की उपस्थिति में बहन को आधा और पुत्री को आधा तथा पौत्री के उपस्थिति में पुत्री को आधा पौत्री को छठाँ भाग तथा बहन को शेष अर्थात एक तिहाई दिया गया। (फ़तहुल क़दीर तथा इब्ने कसीर) इससे ज्ञात हुआ कि मृतक की संतान हो तो बहन को एक भागीदार के रूप में कुछ नहीं मिलेगा। यदि वह संतान पुत्र हो तो किसी प्रकार से कुछ नहीं मिलेगा। और यदि पुत्री हुई तो बहन अस्बा बनकर साझीदार हो जायेगी। और शेष ले लेगी । यह शेष एक पुत्री की उपस्थिति में आधा तथा एक से अधिक की उपस्थिति में एक तिहाई होगा। (अस्बा वह होता है जिसका भाग निर्धारित न हो किन्तु जिनका भाग निर्धारित है उनसे जो शेष बच जाये, उसे पा जाये तथा उनके न होने पर पूरे धन का अधिकारी बन जाये)

[2]इसी प्रकार पिता भी न हो। इसलिए कि पिता भाई की अपेक्षा निकट है। पिता की उपस्थिति में भाई उत्तराधिकारी नहीं होता। यदि उस कलाल: स्त्री के पति अथवा कोई माता से जन्म लिया भाई होगा, तो उनका भाग निकालने के पश्चात, शेष माल का उत्तराधिकारी भाई होगा। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۷۶﴾

वह छोड़ गया[1] और यदि भाई बहन दोनों हों पुरूष भी और स्त्रियाँ भी, तो पुरुष के लिये दो स्त्रियों के बराबर (भाग) है[2] अल्लाह तुम्हारे लिये वर्णन कर रहा है ताकि तुम भटक न जाओ तथा अल्लाह सर्वज्ञ है।

सूरतुल मायेदः-५

سُوْرَةُ الْمَآئِدَةِ

सूरतुल मायदः मदीने में उतरी, इसमें एक सौ बीस आयतें और सोलह रूकूउ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अति कृपालु तथा अति दयालु है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ؕ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّی

(१) हे ईमानवालो ! बंधनों (वचनों) को पूरा करो,[3] तुम्हारे लिये चौपाये पशु वैध कर दिये गये हैं[4] उनके सिवाये जो पढ़कर तुमको

---

[1] यही आदेश दो से अधिक बहनों की अवस्था में होगा। अर्थात यह अर्थ हुआ कि यदि कलालः व्यक्ति की दो अथवा दो से अधिक बहनें होंगी तो उन्हें कुल माल का दो तिहाई मिलेगा।

[2] अर्थात कलालः के उत्तराधिकारी मिले जुले हों स्त्री-पुरुष दोनों हों तो फिर एक पुरुष दो स्त्रियों के समान के नियम से त्यक्त धन का वितरण होगा।

[3] عقود बहुवचन है عقد का, जिसका अर्थ है गाँठ लगाना। इसका प्रयोग किसी वस्तु में गाँठ लगाने के लिये भी होता हो और पक्का दृढ़ वचन करने पर भी। यहाँ इससे तात्पर्य वह अल्लाह के आदेश हैं अल्लाह तआला ने जिनके पालन का भार मानव पर रखा है तथा वह वचन तथा सम्बन्ध भी हैं, जो मनुष्य आपस में करते हैं। दोनों को पूरा करना आवश्यक है।

[4] بَهِيمة चौपाये पशु को कहा जाता है। इसका मूल धातु إبهام - بَهْم है। कुछ का कहना है कि इनकी बातचीत तथा बुद्धि एवं समझ में चूँकि संदिग्धता है, इसलिए इनको بَهِيمة कहा जाता है। أنعام ऊँट, गाय, बकरी तथा भेड़ को कहा जाता है। क्योंकि इनकी चाल में कोमलता होती है। यह पालतू चौपाये पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग मिलाकर आठ प्रकार के हैं। जिनकी विस्तृत जानकारी सूरः *अल-अनआम* की आयत संख्या १२४ में आयेगी। इसके अतिरिक्त जो पशु जंगली कहलाते हैं। जैसे : हिरन नील गाय आदि, जिनका सामान्यतः

The Ummah Technology Mission

الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ①

सुनाये जाते हैं[1] परन्तु एहराम की स्थिति में शिकार न करो, नि:संदेह अल्लाह अपनी इच्छा से आदेश देता है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْىَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَآ آٰمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ

(२) हे ईमानवालो ! अल्लाह के धर्म अनुष्ठानों का निरादर न करो,[2] न आदरणीय महीने का,[3] न बलि के लिये हरम तक ले जाये जा रहे तथा पट्टा पहनाये पशु का,[4] न आदरणीय

शिकार किया जाता है। यह भी उचित हैं। जैसा कि सूरः अल-बक़रः की आयत संख्या १७३ में विस्तार पूर्वक वर्णन हो चुका है। नुकीले दाँत वाले वह पशु जो अपने शिकार को पकड़ कर चीरता हो। जैसे : शेर, चीता, कुत्ता, बिल्ली, भेड़िया आदि नुकीले दाँत वाले पशु हैं। वह पक्षी जो अपना शिकार पंजे से झपट कर पकड़ता है। जैसे : शिकरा, बाज, शाहीन, गिद्ध आदि।

[1]इसका विस्तार पूर्वक वर्णन आयत संख्या ३ में आ रहा है।

[2] شعـــائر बहुवचन है شعيرة का इससे तात्पर्य अल्लाह के द्वारा निषेधित आदर स्वरूप है (जिनका आदर तथा सम्मान अल्लाह ने निर्धारित किया है) । कुछ ने इसे सामान्य रूप रखा है, और कुछ के निकट यहाँ हज तथा उमरः की धार्मिक रीति से तात्पर्य है। अर्थात इनका अनादर तथा अपमान न करो इसी प्रकार हज तथा उमरः के पूर्ण करने में किसी के मध्य रुकावट भी न बनो क्योंकि यह भी अनादर है।

[3]शहरुल हराम से तात्पर्य आदरणीय चार महीने (रजब, ज़ुलक़ादा, ज़ुलहिज्जा, तथा मोहर्रम) हैं इन का आदर स्थापित रखो और उनमें हत्या न करो। कुछ ने इससे केवल एक महीना अर्थात ज़ुलहिज्जा का महीना (हज का महीना) लिया है। कुछ ने इस आदेश को ﴿فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ﴾ से निरस्त माना है । परन्तु इसकी आवश्यकता नहीं दोनों ही आदेश की अपनी-अपनी परिधि है जिनसे इंकार नहीं।

[4]हदी ऐसे पशु को कहा जाता है, जो हाजी हरम में बलि देने के लिए साथ ले जाते थे। قلائـــد बहुवचन है قلادة का जो, गले के पट्टे को कहा जाता है, यहाँ हज के समय पर बलि दिये जाने वाले उन पशुओं से तात्पर्य लिया गया है। जिनके गलों में चिन्ह तथा पहचान के लिए पट्टे डाल दिये जाते हैं। परन्तु قلائد से उद्देश्य वही पशु हुए, जिन्हें हरम ले जाया जाता है । यहाँ हदी का विशेष रूप से वर्णन करके स्पष्ट कर दिया गया है। अर्थात इन पशुओं को किसी से छीना न जाये तथा उनके हरम तक पहुँचने में कोई रुकावट न डाली जाये।

The Ummah Technology Mission

فَضْلًا مِّن رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ۚ وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ أَن صَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ أَن تَعْتَدُوا ۘ وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۖ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢﴾

घर (काअ़बा) को जा रहे लोगों का, जो अल्लाह की दया एवं अनुग्रह की खोज कर रहे हैं,[1] तथा जब एहराम खोलो तो फिर शिकार कर सकते हो[2] तथा जिन्होंने तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका उनकी शत्रुता तुम्हें सीमा लाँघ जाने पर तैयार न करे,[3] तथा स्वभाव एवं संयम पर परस्पर सहायता करो, पाप तथा अत्याचार में सहायता न करो[4] और अल्लाह से डरते रहो, निश्चय अल्लाह कठिन यातना देने वाला है।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ

(३) तुम पर निषेध कर दिया गया है मुरदार, तथा रक्त, एवं सूअर का मांस तथा जिस पर

---

[1]अर्थात हज व उमरः के विचार से अथवा व्यापार के उद्देश्य से हरम जाने वाले लोगों को न रोको तथा न उन्हें कष्ट दो। कुछ व्याख्याकारों के निकट यह आदेश उस समय के हैं जब मुसलमान तथा मूर्तिपूजक एक साथ हज तथा उमरः करते थे। परन्तु जब यह आयत उतरी,

﴿ إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هَٰذَا ﴾

"मूर्तिपूजक तो अपवित्र हैं, बस इस वर्ष के पश्चात ख़ाना काअ़बा के निकट न जाने पायें।" (सूरः अल-तौबा-२८)

तो मूर्तिपूजकों के विषय में यह आदेश निरस्त हो गया है और यह आदेश मुसलमानों के विषय में है। (फ़तहुल क़दीर)

[2]यहाँ आदेश कारण बताने अर्थात औचित्य बताने के लिये है। अर्थात जब एहराम खोल दो, तो शिकार करना तुम्हारे लिए उचित है।

[3]अर्थात यदि मक्का के मूर्तिपूजकों ने सन् ६ हिजरी में मस्जिदे-हराम में प्रवेश करने से रोक दिया था, परन्तु तुम उनके इस रोकने के कारण उनके साथ अत्याचार तथा दुर्व्यवहार का मार्ग न अपनाना। शत्रु के साथ भी ज्ञान तथा क्षमा का पाठ दिया जा रहा है।

[4]यह एक अति विशेष नियम का वर्णन है, जो मुसलमान का पग-पग पर मार्गदर्शन कर सकता है। काश, मुसलमान इस नियम को अपना सकें।

The Ummah Technology Mission

بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ ۫ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ۭ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ۭ اَلْيَوْمَ يَىِٕسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ

अल्लाह के अतिरिक्त अन्य का नाम पुकारा गया हो[1] तथा गला घुट कर मरा, [2] तथा चोट से मरा,[3] एवं गिरकर मरा[4] तथा अन्य पशु के सींघ मारने से मरा[5] और जिसका कुछ अंश हिंसक जन्तु ने खा लिया हो[6] परन्तु जिसे तुमने वध कर दिया,[7] तथा जो थानों पर वध किया

---

[1]यहाँ से उन हराम (प्रतिवन्धित) वस्तुओं का वर्णन प्रारम्भ होता है, जिनका संकेत सूरः के आरम्भ में दिया गया है। आयत का इतना भाग सूरः अल-बकरः में गुज़र चुका है। (देखिए आयत संख्या १७३)

[2]गला कोई व्यक्ति घोट दे अथवा किसी चीज से फंस कर स्वयं गला घुंट जाये। दोनों अवस्था में मृत जानवर हराम है

[3]किसी ने पत्थर, लाठी अथवा कोई अन्य चीज मारी जिससे वह बिना वध (इस्लामी विधि के अनुसार गले पर छुरी चलाना) किये ही मर गया। अज्ञान काल में ऐसे जानवरों को खा लिया जाता था। इस्लामी धर्म नियम ने मना कर दिया।

बन्दूक का शिकार : बन्दूक से शिकार किए हुए जानवरों के विषय में आलिमों (इस्लामी धर्मगुरुओं) के मध्य मतभेद है। इमाम शौकानी ने एक हदीस से भावार्थ निकालते हुए, वन्दूक के शिकार को उचित माना है। (फ़तहुल क़दीर) अर्थात यदि बिस्मिल्लाह पढ़ कर गोली चलायी गयी और शिकार वध करने से पूर्व ही मर गया तो उसका खाना इस कथन के आधार पर उचित है।

[4]चाहे वह स्वयं गिरा हो अथवा किसी ने पहाड़ आदि से धक्का देकर गिराया हो।

[5] نطيحة शब्द منطوحة के अर्थ में है। अर्थात किसी ने उसे टक्कर मार दी तथा बिना वध किये वह मर गया।

[6]अर्थात शेर, चीता, तथा भेड़िया आदि जैसे हिंसक जन्तु ने उसे खाया हो तथा वह मर गया हो। अज्ञान काल में मर जाने के उपरान्त ऐसे जानवरों को खा लिया जाता था।

[7]साधारण व्याख्याकारों के निकट यह छूट सभी वर्णित जानवरों के लिए है अर्थात गला घोंटने से चोट द्वारा घायल, ऊँचे स्थान से गिरने से अथवा टक्कर द्वारा अथवा किसी हिंसक जन्तु द्वारा घायल जानवर। यदि तुम इस अवस्था में पाओ कि उनमें जीवन की किरण पायी जाती हो और फिर तुम उसे इस्लामी नियम के अनुसार वध कर लो, तो फिर तुम्हारे लिए खाना उचित होगा।

The Ummah Technology Mission

فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ؕ اَلْيَوْمَ
اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ
عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ
الْاِسْلَامَ دِيْنًا ؕ فَمَنِ اضْطُرَّ
فِيْ مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ ۙ
فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٣

जाये[1] तथा पाँसे (लाटरी) द्वारा बाँटना[2] यह सभी महापाप है। आज काफ़िर (मूर्तिपूजक) तुम्हारे धर्म की ओर से निराश हो गये। अतः उनसे न डरो मात्र मुझसे डरो। आज मैंने तुम्हारे लिये धर्म को परिपूर्ण कर दिया तथा तुम पर अपनी अनुकम्पा पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम धर्म को पसन्द कर लिया।

जीवन के लक्षण ये हैं कि वध करते समय जानवर फड़के और टाँगें मारे। यदि छुरी फेरते समय यह लक्षण प्रदर्शित न हों तो समझ लो यह मृत है।

ज़िब्ह की धार्मिक विधि यह है कि बिस्मिल्लाह पढ़ कर तेज धार वस्तु से उसका गला इस प्रकार काटा जाये कि रगें कट जायें। वध के अतिरिक्त नहर भी मान्य है। जिसकी विधि यह है कि खड़े जानवर के गले पर छुरी मारी जाये (ऊँट का नहर किया जाता है) जिससे गले और रक्त की विशेष नसें कट जाती हैं और सारा रक्त बह जाता है।

[1]मूर्तिपूजक अपनी मूर्तियों के निकट पत्थर अथवा कोई वस्तु गाड़ करके विशेष स्थान बनाते थे। जिसे थान अथवा आसताना कहते थे। उसी पर मूर्तियों के नाम पर चढ़ाये गये जानवरों की बलि देते थे अर्थात यह ﴿وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ﴾ ही का एक रूप था। इससे ज्ञात हुआ कि आसतानों, मक़बरों तथा दरगाहों पर जहाँ लोग अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिये जाते हैं, और वहाँ पर गड़े व्यक्ति की प्रसन्नता के लिए जानवरों (मुर्ग़ा, बकरा आदि) की बलि देते हैं अथवा पके हुए खाने बाँटते हैं, उनका खाना वर्जित है यह وما ذُبِحَ على النصب में आता है।

[2] ﴿وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا﴾ के दो अर्थ किये गये हैं, एक तीरों के द्वारा बाँटना, दूसरे तीरों के द्वारा भाग्य मालूम करना। पहले अर्थ के विषय में कहा जाता है कि जूए आदि में बधित किये हुए जानवरों के बँटवारे के लिए यह तीर होते थे, जिसमें किसी को कुछ मिल जाता, कोई वंचित रह जाता। दूसरे अर्थ के अनुसार कहा गया है कि ازلام से तात्पर्य तीर हैं, जिनके द्वारा किसी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व भाग्य विचारते थे। उन्होंने तीन प्रकार के तीर बना रखे थे। एक (कर), दूसरे में (न कर) तथा तीसरे में कुछ नहीं होता था। (कर) वाला तीर निकल आता तो काम करते। (न कर) वाला तीर निकल आता तो न करते और तीसरा तीर निकल आता तो फिर दोबारा विचारते। यह भी एक ज्योतिष तथा अल्लाह के अतिरिक्त अन्य से माँगने के मार्ग का ही एक रूप है, इसलिए इसे भी वर्जित कर दिया गया। استقسام का अर्थ ही भाग्य का पता लगाना है। अर्थात तीरों के द्वारा भाग्य के विषय में जानने का प्रयत्न करते थे।

The Ummah Technology Mission

परन्तु जो भूख में आतुर हो जाये और कोई पाप न करना चाहता हो तो निश्चय अल्लाह क्षमानिधि कृपानिधि है।[1]

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ ؕ قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ۫ فَكُلُوْا مِمَّآ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝٤

(४) वह आप (नराशंस) से प्रश्न करते हैं कि उनके लिये क्या (खाना) वैध है आप कह दें कि तुम्हारे लिये पवित्र वस्तुऐं उचित हैं[2] तथा वह शिकारी जानवर जो तुमने सधा रखे हों जिनको कुछ बातें सिखाते हो जो अल्लाह ने तुम्हें सिखलाई[3] तो यदि तुम्हारे लिये वह (शिकार) को दबोच रखें और उसे छोड़ते समय अल्लाह का नाम उस पर लो तो उसे (शिकार को) खाओ[4] तथा अल्लाह से डरो, निःसन्देह अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

---

[1]यह भूख की व्याकुलता की परिस्थति में वर्जित खाने की अनुमति है, परन्तु इसके द्वारा अल्लाह की अवज्ञा तथा सीमा उल्लंघन का विचार न हो, केवल प्राण रक्षा ही अभिप्रेत हो।

[2]इससे वे सभी चीजों का तात्पर्य है जो उचित हैं। प्रत्येक उचित पवित्र है और वर्जित अपवित्र है

[3] جـارح का बहुवचन جوارح है, जो दूसरों के लिए शिकार करने के लिए हैं जिसका तात्पर्य शिकारी कुत्ता, बाज, चीता, शिकंरा तथा अन्य शिकारी पक्षी तथा हिंसक पशु हैं। مكلبين का अर्थ है शिकार पर छोड़ने से पूर्व उनको शिकार के लिए सिखाया गया हो, सिखाने का अर्थ है कि जब उसे शिकार पर छोड़ा जाये, तो दौड़ता हुआ जाये, जब रोक दिया जाये तो रुक जाये, बुलाया जाये तो वापस आ जाये।

[4]ऐसे सिखाये हुए जानवरों का शिकार किया हुआ जानवर दो प्रतिबन्धों के साथ वैध है एक यह कि उसे शिकार पर छोड़ते समय बिस्मिल्लाह पढ़ ली गयी हो। दूसरा यह कि शिकारी जानवर शिकार करके अपने मालिक के लिए रख छोड़े और उसकी प्रतीक्षा करे, स्वयं न खाये। यद्यपि उसने उसे मार भी डाला हो, तब भी वह मृतक शिकार किया हुआ जानवर उचित होगा, जबकि उसके शिकार के लिए सिखाये तथा छोड़े हुए जानवर के अतिरिक्त किसी अन्य जानवर का सम्मिलित न हो। (सहीह बुखारी, कितुज्जबाएहे वस्सैदे-मुस्लिम किताबुस्सैदे)

The Ummah Technology Mission

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ؕ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ۖ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۫ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ اَخْدَانٍ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۫ وَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝٥ ع

(५) आज सभी पवित्र वस्तुऐं तुम्हारे लिए विधि अनुकूल कर दी गयीं तथा अहले किताब का खाद्य तुम्हारे लिये वैधानिक है[1] तथा तुम्हारा खाद्य उनके लिये विधि अनुकूल (जायज़) है तथा सत्यव्रता मुसलमान नारियां और जो तुमसे पूर्व किताब (धर्मशास्त्र) दिये गये उनमें से सत्यव्रता नारियां[2] जब तुम उन्हें उनका विवाह मूल्य (महर) दे दो विवाह करके व्यभिचार के लिये नहीं और न गुप्त प्रेमिक बनाने के लिये, तथा जो ईमान को नकार दे उसका कर्म व्यर्थ हो गया तथा वह परलोक में घाटे में रहेगा।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ

(६) हे ईमान वालों ! जब तुम नमाज़ के लिये उठो तो अपने मुँह, तथा कोहनियों सहित

---

[1]अहले किताब का वही वध किया पशु उचित होगा, जिसमें रक्त बह गया होगा। अर्थात उनका मशीन द्वारा वध उचित नहीं है क्योंकि इस में रक्त का बहना जो आवश्यक है पाया नहीं जाता।

[2]अहले किताब की स्त्रियों के साथ विवाह की अनुमति के साथ एक तो सुचरित्रता सतीत्व आवश्यक है, जो आजकल अधिकतर अहले किताब स्त्रियों में नहीं मिलता है। दूसरे उसके पश्चात यह कहा गया है कि जो ईमान के साथ कुफ़्र करे, उसके कर्म नष्ट हो गये। इस से यह चेतावनी देना है कि यदि ऐसी स्त्री से विवाह करने से ईमान के नष्ट होने का भय है, तो यह बहुत हानिकर व्यापार है। और आजकल अहले किताब की स्त्रियों से विवाह करने में ईमान को जो ख़तरा है, उसके वर्णन की आवश्यकता नहीं। अर्थात इस का उद्देश्य यह है कि ईमान का बचाना अनिवार्य है। एक अनुमति पूर्ण कार्य के लिए अनिवार्य को ख़तरे में नहीं डाला जा सकता। इसलिए इसका औचित्य उस समय तक अनुचित रहेगा, जब तक ये दोनों उपरोक्त कमियां उनसे दूर न होंगीं। इसके अतिरिक्त आजकल के अहले किताब अपने धर्म से बिल्कुल अज्ञान अपितु विमुख एवं विद्रोही हैं। इन परिस्थितियों में क्या वास्तव में उनकी गणना अहले किताब में हो भी सकती है ? والله أعلم

The Ummah Technology Mission

وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا
بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ۚ
وَإِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوا ۚ وَإِنْ
كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ
أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ أَوْ لَامَسْتُمُ

अपने हाथों को धो लिया करो[1] और अपने सिर का मसह (दोनो हाथ तर करके सिर पर फेरना) कर लो[2] तथा अपने पाँव टखनों समेत धुल लो,[3] और यदि तुम अपवित्र हो तो स्नान कर लो[4] और यदि तुम रोगी अथवा यात्रा पर

---

[1]"मुँह धोओ।" अर्थात एक-एक, दो-दो अथवा तीन-तीन बार दोनो हाथ कलाईयों तक धोने, कुल्ली करने, नाक में पानी डालकर छिनकने के पश्चात। जैसाकि हदीस से सिद्ध है। मुँह धोने के पश्चात हाथों को कोहनियों तक धोया जाये।

[2]मसह (अर्थात दोनों हाथ भींगा कर सर पर फेरना) पूरे सिर का किया जाये, जैसाकि हदीस से सिद्ध है "अपने हाथ आगे से पीछे (पश्चात मस्तक) तक ले जाये और फिर वापस वहाँ से आगे लाये जहाँ से प्रारम्भ किया था।" इसी के साथ कानों का मसह करले यदि सिर पर पगड़ी अथवा मुरेठा हो तो हदीस के अनुसार मोज़ों की भाँति उस पर भी मसह उचित है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल तहारः) इस प्रकार एक बार मसह कर लेना पर्याप्त है।

[3] أرجلكم का लगाव وجوهكم से है अर्थात अपने पैर टखनों तक धुलो, तथा यदि मोजे अथवा इस प्रकार के अन्य वस्त्र पैरों पर चढ़े हों तो (जबकि वज़ू की अवस्था में पहना हो) सहीह हदीस के अनुसार पैर धोने के बजाय मोज़ों आदि पर मसह भी उचित है।

टिप्पणी : १. यदि पहले से वज़ू रहे तो नया वज़ू करना आवश्यक नहीं है परन्तु प्रत्येक नमाज़ के लिए नया वज़ू करना अच्छा है। २. वज़ू से पहले नीयत अनिवार्य है। ३. वज़ू से पहले बिसमिल्लाह पढ़ना आवश्यक है ४. दाढ़ी घनी हो, तो उसका खिलाल (बालों में अंगूली फेरना कंघी की भाँति) किया जाये। ५. अंगों को क्रमानुसार धोया जाये ६.उनके मध्य देरी न की जाये। अर्थात एक अंग को धोने के पश्चात दूसरे अंग को धोने में देरी न की जाये। बल्कि सभी अंगों को कमानुसार एक के बाद दूसरे को धोया जाये ७. वज़ू करने वाले अंग के भागों में से कोई भी भाग सूखा रह जाये, तो वज़ू न होगा। ८. कोई भी अंग तीन बार से अधिक न धोया जाये। ऐसा करना सुन्नत के विपरीत है। (तफ़सीर इब्ने कसीर, फ़तहुल क़दीर तथा ऐस रुत्तफ़ासीर)

[4]अपवित्रता से तात्पर्य वह अपवित्रता है जो स्वप्न दोष अथवा पत्नी से सम्भोग के कारण होती है। और इसी आदेशाधीन में मासिक धर्म तथा प्रसव रक्त भी है। मासिक धर्म तथा प्रसव रक्त रुक जाये तो पवित्रता के लिए स्नान करना अनिवार्य है। परन्तु पानी न मलने की स्थिति में तयम्मुम की अनुमति है। (फ़तहुल क़दीर तथा ऐसरुत्तफ़ासीर)

The Ummah Technology Mission

النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٦

हो अथवा तुम में से कोई वर्चस्थान से आये अथवा तुम पत्नी से मिले हो और जल न मिले तो पवित्र मिट्टी से तयम्मुम कर लो उसे अपने चेहरों तथा हाथों पर मलो[1] अल्लाह तुम पर तंगी नहीं चाहता[2] परन्तु तुम्हें पवित्र बनाना चाहता है और ताकि तुम पर अपनी पूरी कृपा करे[3] और ताकि तुम कृतज्ञ रहो।

وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖٓ ۙ اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٧

(७) तथा अपने ऊपर अल्लाह की कृपा तथा उस प्रतिज्ञा को स्मरण करो जिसकी तुमसे पुष्टी कराई जब तुमने कहा कि हमने सुना और मान लिया तथा अल्लाह (तआला) से डरते रहो। नि:संदेह अल्लाह (तआला) दिलों की बातों का जानकार (अन्तर्यामी) है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۫

(८) हे ईमानवालो ! अल्लाह के लिये सत्य पर दृढ़, न्याय पर साक्षी हो[4] जाओ तथा किसी क़ौम

---

[1]इसकी संक्षिप्त व्याख्या तथा तयम्मुम की विधि सूर: अल-निसा की आयत मंख्या ४३ में आ चुकी है सहीह बुख़ारी में इसके उतरने के विषय में आता है कि एक यात्रा में बैयदा नामक स्थान पर आदरणीय आयशा का हार खो गया। जिसके कारण रुकना पड़ा अथवा रुके रहना पड़ा। भोर की नमाज के लिए लोगों के पास पानी नहीं था और खोजने पर पानी न मिला इस समय यह आयत उतरी, जिसमें तयम्मुम की आज्ञा दी गयी। आदरणीय उसैद विन हुदैर ने आयत सुनकर कहा हे आले अबूबक्र ! तुम्हारे कारण अल्लाह ने लोगों के लिए सुविधायें उतारीं और यह तुम्हारे कारण कोई प्रथम सुविधा नहीं है। (तुम लोगों के लिए पूर्ण विभुति हो) (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: *अल-मायद:*)

[2] इसीलिए तयम्मुम की अनुमति प्रदान कर दी है।

[3]इसीलिए हदीस में वज़ू करने के पश्चात दुआ करने पर बल दिया गया है। दुआओं (प्रार्थनाओं) की किताब से यह दुआ याद कर ली जाये।

[4]पहले वाक्य की व्याख्या सूर: अल-निसा आयत संख्या १३५ तथा दूसरे वाक्य की सूर: *अल-मायद:* के प्रारम्भ में आ चुकी है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकट

The Ummah Technology Mission

وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝٨

की शत्रुता तुम्हें न्याय न करने पर तत्पर (तैयार) न करे, न्याय करो वह संयम से निकटतम है तथा अल्लाह से डरो वस्तुतः अल्लाह तुम्हारी कर्मों से सूचित है।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝٩

(९) जिन्होंने विश्वास किया तथा सदाचार किये अल्लाह ने उनको क्षमा एवं भारी प्रतिफल का वचन दिया है।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝١٠

(१०) और जिन्होंने विश्वास नहीं किया तथा हमारे आदेशों को झुठलाया वही नरक के पात्र हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ

(११) ऐ ईमानवालों ! अल्लाह (तआला) ने जो उपकार तुम पर किये हैं, उसे याद करो जब कि एक जाति ने तुम पर अत्याचार करना चाहा, तो अल्लाह (तआला) ने उनके हाथों को तुम तक पहुँचने से रोक दिया।[1] और

न्यायिक गवाही का कितना महत्व है इसका आभास उस घटना से होता है जो हदीस में आती है, कि आदरणीय नौमान बिन बशीर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो गया) कहते हैं कि मेरे पिता ने मुझे कुछ अनुदान दिया तो मेरी माता ने कहा कि इस उपहार पर जब तक आप अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गवाही नहीं बनायेगें, मैं संतुष्ट नही हूँगी। अतः मेरे पिता नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, क्या तुमने अपनी सभी सन्तान को इसी प्रकार अनुदान दिया है ? तो उन्होंने नकारात्मक उत्तर दिया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह से डरो ! और सन्तान के मध्य न्याय करो। और फ़रमाया, मैं अत्याचार पर गवाह नहीं बनूंगा। (सहीह बुख़ारी तथा मस्लिम, किताबुल हिबा)

[1]इसके अवतरण की विशेषता के हेतु व्याख्याकारों ने विभिन्न घटनाओं का वर्णन किया है। जैसे उस गंवार की घटना, कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक यात्रा से लौटते समय एक वृक्ष के नीचे विश्राम करने लगे। तलवार वृक्ष पर लटक रही थी। उस गंवार ने वह तलवार पकड़ कर आप पर तान ली और कहने लगा, हे "मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आप को मुझसे कौन बचायेगा ?" आप सल्लल्लाहु अलैहि

The Ummah Technology Mission

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾

अल्लाह (तआला) से डरते रहो तथा ईमानवालों को अल्लाह तआला पर ही भरोसा करना चाहिए।

وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۚ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَىْ عَشَرَ نَقِيْبًا ؕ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مَعَكُمْ ؕ لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ

(१२) और अल्लाह तआला ने इस्राईल के पुत्रों से वचन लिया।[1] और उन्हीं में से बारह सरदार हम ने नियुक्त किये।[2] और अल्लाह (तआला) ने फ़रमा दिया, मैं निःसन्देह तुम्हारे

वसल्लम ने विना झिझक उत्तर दिया, अल्लाह (अर्थात अल्लाह बचायेगा) यह कहना था कि तलवार उसके हाथ से गिर गयी। कुछ कहते हैं कि काअब बिन अशरफ़ और उसके साथियों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के सहचरों के विरुद्ध, जब कि आप वहाँ पर विराजमान थे, धोखा तथा छल से हानि पहुँचाने का षडयन्त्र रचा था, जिससे अल्लाह तआला ने आप को बचाया। कुछ कहते हैं कि एक मुसलमान के हाथ से दो आमिरी व्यक्ति की हत्या भ्रान्ति के कारण हो गयी थी। उनकी देयत की आपूर्ति में यहूदियों के क़बीले बनू नदीर से सन्धि अनुसार जो सहयोग लेना था, उसकी आपूर्ति के लिए नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं अपने साथियों सहित वहाँ पधारे और एक दीवार से टेक लगाकर बैठ गये। उन्होंने यह षडयन्त्र रचा कि ऊपर से चक्की का पत्थर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर गिरा दिया जाये, जिसे अल्लाह तआला ने वह्यी (प्रकाशना) द्वारा आप को अवगत करा दिया। संभवतः इन सारी घटनाओं के पश्चात यह आयत उतरी हो। क्योंकि एक आयत के उतरने के कई कारण तथा परिस्थितियाँ हो सकती हैं। (तफ़सीर इब्ने कसीर, ऐसारूत्तफ़ासीर, फ़तहुल क़दीर)

[1]जब अल्लाह तआला ने ईमानवालों को वह वचन पूरा करने के लिए कहा, जो उसने उनसे परम आदरणीय मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा लिया, और उन्हें सत्य की स्थापना तथा न्यायिक गवाही का आदेश दिया और उन्हें उन पुरस्कार को याद दिलाया जो उन पर प्रत्यक्ष और एवं गुप्त रूप से हुए तथा विशेष रूप से यह बात की उन्हें सत्य तथा सही मार्ग पर चलने का अवसर प्रदान किया, तो अब इस स्थान पर उस वचन का वर्णन किया जा रहा है, जो इस्राईल की सन्तान से लिया गया और जिसमें वे असफल रहे। यह मानो उनके माध्यम से मुसलमानों को चेतावनी दी जा रही है कि तुम भी कहीं इस्राईल की सन्तान की भाँति वचन भंग प्रारम्भ न कर देना।

[2]यह उस समय की घटना है, जब आदरणीय मूसा जबाबरः से युद्ध के लिए तैयार हुए, तो उन्होंने अपने समुदाय के बारह जातियों के बारह संरक्षक नियुक्त कर दिये ताकि वे उन्हें युद्ध के लिए तैयार भी करें, तथा अगुवाई भी करें एवं अन्य विषयों की व्यवस्था भी करें।

The Ummah Technology Mission

الزَّكٰوةَ وَ اٰمَنْتُمْ بِرُسُلِيْ
وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا
حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ
وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ
ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ
سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٢﴾

साथ हूँ, यदि तुम नमाज़ स्थापित रखोगे, और ज़कात देते रहोगे और मेरे रसूलों को मानते रहोगे और उनकी सहायता करते रहोगे और अल्लाह (तआला) को श्रेष्ठ ऋण देते रहोगे, तो नि:सन्देह मैं तुम्हारी बुराईयाँ तुमसे दूर रखूँगा और तुम्हें उन स्वर्गों में ले जाऊँगा जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। अब इस वचन के पश्चात भी तुममें से जो इंकार करे, वह नि:सन्देह सीधे मार्ग से भटक गया।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ
وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ
يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ
وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ

(१३) फिर उनके वचन भंग करने के कारण हमने उन्हें धिक्कारा और उनके दिल कठोर कर दिये कि वह शब्दों को उनके उस स्थान से परिवर्तित कर देते हैं।[1] और जो कुछ शिक्षा उनको दी गयी उसका बहुत बड़ा भाग भुला

[1]अर्थात इतने प्रबन्ध तथा वचन के उपरान्त भी इस्राईल की सन्तान ने वचन भंग किया, जिसके कारण वे अल्लाह के धिक्कार के पात्र हुए। इस धिक्कार का सांसारिक परिणाम यह हुआ कि उनके हृदय कठोर कर दिये गये, जिससे उनके दिल प्रभावित होने से वंचित हो गये तथा नबियों के भाषण तथा शिक्षायें उनके लिए बेकार हो गये। दूसरे यह कि वे अल्लाह के धर्मशास्त्रों में परिवर्तन करने लगे। यह परिवर्तन शाब्दिक तथा भाष्य दोनों रूप में होते थे। जो इस बात का प्रमाण था कि उनकी बुद्धि में कमी आ गयी है। और उनकी अवज्ञा में भी अत्याधिक बढ़ोत्तरी हो गयी कि अल्लाह की आयतों में हस्तक्षेप करने में भी उन्हें संकोच न हुआ। दुर्भाग्य से इस हार्दिक कठोरता तथा अल्लाह के कथन में परिवर्तन करने से उम्मते मुस्लिमा भी सुरक्षित न रही। मुसलमान कहलाने वाले सामान्य जन ही नहीं विशिष्ठ व्यक्ति भी ऐसे स्थान पर पहुँच चुके हैं कि शिक्षा तथा अल्लाह के आदेशों को याद दिलाने का तनिक प्रभाव उनके दिलों पर नहीं पड़ता, सब कुछ उनके लिए बेकार है। तथा जिन आलस्य तथा कमियों के वह शिकार हैं, उनको स्वीकार भी नहीं करते हैं। इसी प्रकार अपनी मार्मिक धार्मिक नियमों में नई बातों का गढ़ लेना तथा अपने वैचारिक कथन के पक्ष के लिए उन्हें अल्लाह के कथन में परिवर्तन करने में भी कोई रोक नहीं है। वह आवश्यकतानुसार निर्भीकता से यह कार्य भी कर जाते हैं।

The Ummah Technology Mission

وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ إِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ط إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣﴾

बैठे ।[1] उनके एक न एक विश्वासघात की सूचना तुझे मिलती रहेगी ।[2] परन्तु थोड़े से (लोग) ऐसे नहीं भी हैं ।[3] फिर भी उन्हे क्षमा करता जा और क्षमा करता जा ।[4] नि:सन्देह अल्लाह तआला उपकार करने वालों को मित्र रखता है ।

وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا إِنَّا نَصٰرٰٓى أَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا

(१४) और जो अपने आपको ईसाई कहते हैं ।[5] हमने उनसे (भी) वचन लिया था, उन्होंने भी

---

[1]यह तीसरा परिणाम है और इसका अर्थ है कि अल्लाह के आदेश के अनुसार कार्य करने से उन्हें कोई रूचि तथा इच्छा नहीं रही, अपितु अकर्मण्य तथा कुकर्म उनकी विशेषता बन गयी थी एवं वह नीचता के उस स्थान पर पहुंच गये कि न तो उनके हृदय ही सही रहे और न प्रकृति ही ।

[2]अर्थात विद्रोह, विश्वासघात तथा पाखण्ड उनके चरित्र बन गये जिसके नमूने हर समय आपके समक्ष आते रहेंगे ।

[3]यह थोड़े से लोग वही हैं, जो यहूदियों में से मुसलमान हो गये थे और उनकी संख्या दस से भी कम थी ।

[4]क्षमा करना तथा अनदेखी करने का आदेश उस समय दिया गया था, जब लड़ने की आज्ञा नहीं थी । बाद में उसके स्थान पर आदेश दिया गया ।

﴿ قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ ﴾

"उन लोगों से युद्ध करो जो अल्लाह पर तथा आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते ।" (*अल-तौबा* -२९)

कुछ के निकट क्षमा तथा त्याग का आदेश निरस्त नहीं हुआ है । यह स्वयं एक विशेष आदेश है, स्थिति तथा समय के अनुसार उसे भी अपनाया जा सकता है तथा उससे कई वार वह परिणाम प्राप्त हो जाते हैं, जिसके लिए युद्ध का आदेश है ।

[5] نصارى शब्द का उद्गम نُصْرَة से हुआ है, जिसका अर्थ है "सहायता करना ।" यह आदरणीय ईसा के प्रश्न ﴿مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ﴾ अल्लाह के धर्म में मेरा कौन सहायक है ? पर उनके कुछ नि:स्वार्थी अनुयायियों ने उत्तर दिया था ﴿نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ﴾ हम अल्लाह के लिये सहायता करने वाले हैं । इसी से यह लिया गया है । यह भी यहूदियों की भाँति अहले

The UmmahTechnology Mission

ذُكِّرُوا بِهٖ ۚ فَاَغۡرَيۡنَا بَيۡنَهُمُ الۡعَدَاوَةَ وَالۡبَغۡضَآءَ اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ ؕ وَسَوۡفَ يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوۡا يَصۡنَعُوۡنَ ﴿۱۴﴾

उसका बड़ा भाग भुला दिया, जो उन्हें शिक्षा दी गयी थी, तोहमने भी उनके मध्य शत्रुता और कटुता डाल दिया, जो क़ियामत तक रहेगी।[1] और जो कुछ यह करते हैं शीघ्र ही अल्लाह तआला उन्हें सब बता देगा।

يٰۤاَهۡلَ الۡكِتٰبِ قَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُوۡلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمۡ كَثِيۡرًا مِّمَّا كُنۡتُمۡ تُخۡفُوۡنَ مِنَ الۡكِتٰبِ وَيَعۡفُوۡا عَنۡ كَثِيۡرٍ ؕ قَدۡ جَآءَكُمۡ مِّنَ اللّٰهِ نُوۡرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيۡنٌ ۙ﴿۱۵﴾

(१५) हे अहले किताब ! तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आ गये जो बहुत सी वह बातें बता रहे हैं जो किताब (तौरात तथा इंजील) की बातें तुम छुपा रहे थे[2] तथा बहुत-सी बातों को छोड़ रहे हैं, तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से ज्योति तथा खुली किताब (पवित्र क़ुरआन) आ चुकी है।[3]

किताब हैं। इनसे भी अल्लाह ने वचन लिया परन्तु उन्होंने भी इस पर ध्यान नहीं दिया, इसके परिणाम स्वरूप उनके हृदय भी प्रभावित होने से शून्य और उनके कर्म खोखले हो गये।

[1]यह अल्लाह को दिये गये वचन के विपरीत कर्म करने का प्रतिकार दण्ड है, जो अल्लाह तआला की ओर से उन पर क़ियामत तक के लिए थोप दी गयी है। अत: ईसाईयों के कई गुट हैं जो एक-दूसरे से अत्यधिक घृणा तथा द्वेष रखते हैं, एक-दूसरे को अधर्मी कहते हैं तथा एक-दूसरे के पूजा स्थल पर उपासना नहीं करते। लगता है कि मुसलमानों पर भी यह दण्ड थोप दिया गया है। यह समुदाय भी कई गुटों में बंट गया है, जिनके मध्य अत्यधिक मतभेद हैं एवं घृणा तथा द्वेष की दीवार खड़ी है।

[2]अर्थात उन्होंने तौरात तथा इंजील में जो परिवर्तन किये तथा उलट फेर किये उन्हें उजागर किया तथा जिनको छिपाते थे, उन्हे व्यक्त किया, जैसे पत्थर से मारने का दंड। जैसा कि हदीस में इसकी विस्तृत जानकारी मिलती है।

[3]'प्रकाश तथा ज्वलंत किताब' दोनों से तात्पर्य एक ही 'क़ुरआन करीम' है। इनके मध्य अरबी शब्दकोष वॉव (و) अक्षरों की द्वन्दता के कारण है किन्तु दोनों से अभिप्रेत एक अर्थात पवित्र क़ुरआन ही है जिसका स्पष्ट प्रमाण क़ुरआन करीम की अगली आयत है जिसमें कहा जा रहा है يهدي به الله "कि इसके द्वारा अल्लाह तआला मार्ग दर्शन देता है। यदि प्रकाश तथा किताब दो होते तो शब्द इस प्रकार होते يهدي بهما الله अल्लाह तआला

The Ummah Technology Mission

يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ
رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ
وَ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى
النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٦﴾

(१६) जिसके द्वारा अल्लाह उन्हें शान्ति का पथ दिखाता है जो उसकी प्रसन्नता का अनुकरण करें तथा उन्हें अंधकार से अपनी कृपा से प्रकाश की ओर निकाल लाता है तथा उन्हें सीधा मार्ग दर्शाता हैं।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ
اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ
قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا
اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ
مَرْيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ
جَمِيْعًا ؕ وَ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ يَخْلُقُ

(१७) नि:संदेह वह लोग काफ़िर (विश्वासहीन) हो गये जिन्होंने कहा कि मरियम का पुत्र मसीह अल्लाह है। कह दो कि यदि मरियम के पुत्र मसीह और उसकी माता एवं विश्व के सभी लोगों का वह विनाश करना चाहे तो कौन है जिसका अल्लाह के सामने तनिक भी अधिकार है ? तथा आकाशों एवं धरती और जो दोनों के मध्य है अल्लाह ही का राज्य है।

इन दोनों के द्वारा मार्ग दर्शन देता है।" परन्तु ऐसा नहीं है। इसलिए क़ुरआन करीम के इन शब्दों से यह स्पष्ट हो गया कि प्रकाश तथा ज्वलंत किताब दोनों का अर्थ एक ही अर्थात क़ुरआन करीम है। यह नहीं कि प्रकाश से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा ज्वलंत किताब से पवित्र क़ुरआन का अभिप्रेत है। जैसाकि इस्लाम धर्म में नई बातें गढ़ने वालों ने गढ़ लिया है और यह सिद्ध करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रकाश हैं। तथा यह विश्वास गढ़ लिया कि "अल्लाह के प्रकाश के प्रकाश हैं।" इस प्रकार गढ़े गये विश्वास के लिए इसके पक्ष में एक हदीस भी वर्णन करते हैं कि अल्लाह ने सर्वप्रथम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रकाश पैदा किया और फिर उस प्रकाश से सारी दुनिया बनायी। यद्यपि कि यह हदीस किसी भी प्रमाणित हदीस की संकलित पुस्तक में नहीं है। इसके अतिरिक्त उस सहीह हदीस के विपरीत है जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह ने सर्वप्रथम क़लम पैदा किया। «إِنَّ أَوَّلَ مَا خَلَقَ اللهُ الْقَلَمُ» यह कथन त्रिमिज़ी तथा अबू दाऊद में है। हदीस के प्रकांड विद्वान मोहद्दिस अलबानी लिखते हैं कि यह हदीस सही है जो स्पष्ट रूप से गढ़ी हदीस أوّل ما خلق الله نوري (कि सर्वप्रथम अल्लाह मेरे प्रकाश की रचना की) को निर्मूल सिद्ध कर रही है। (तअ लीक़ातुल मिश्कात भाग १, पृष्ठ ३४)

The Ummah Technology Mission

مَا يَشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٨﴾

वह जो (भी) चाहे पैदा करता है और अल्लाह सर्वशक्तिमान है।[1]

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلِلّٰهِ

(१८) और यहूदी तथा ईसाई कहते हैं कि हम अल्लाह के पुत्र तथा मित्र हैं।[2] आप कह दीजिए कि फिर अल्लाह (तआला) तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें दण्ड क्यों देता है ?[3] नहीं बल्कि तुम उसके सृष्टि में एक मनुष्य हो। वह

---

[1]इस आयत में अल्लाह तआला ने अपने सम्पूर्ण प्रभुत्व तथा सम्पूर्ण स्वामित्व का वर्णन किया है। उद्देश्य ईसाईयों के आदरणीय ईसा को पूज्य का स्थान देने के विश्वास का खण्डन करना है। आदरणीय ईसा के साक्षात भगवान होने को मानने वाले पहले तो कुछ ही लोग थे अर्थात एक ही गुट याक़ूबिया गुट था। अब यह विश्वास लगभग सभी ईसाई गुटों में आदरणीय ईसा को भगवान मानने का किसी न किसी रूप में व्याप्त है। इसलिए ईसाईयों में अब त्रिमूर्ति के विश्वास की आधारशिला है। अतः क़ुरआन ने इस स्थान पर स्पष्ट कर दिया कि किसी पैग़म्बर, रसूल तथा नबी को भगवान का रूप दे देना स्पष्टरूप से कुफ़्र है। इस कुफ़्र को ईसाईयों ने किया कि आदरणीय ईसा को भगवान का पद दे दिया, यदि कोई गुट अथवा समुदाय किसी अन्य पैग़म्बर को मानवता तथा रिसालत के स्थान से उठाकर भगवान के पद पर आसीन करेगा, तो वह भी इसी कुफ़्र को करेगा।

[2]यहूदियों ने आदरणीय उज़ैर को तथा ईसाईयों ने आदरणीय ईसा को अल्लाह का पुत्र कहा तथा स्वयं को भी अल्लाह का पुत्र और उसका प्रिय समझने लगे। कुछ कहते हैं कि यहाँ पर हालत लुप्त है अर्थात أتباع أبناء الله "हम अल्लाह के पुत्रों (उज़ैर तथा मसीह) के अनुयायी हैं।" दोनों भावों में से कोई सा भी भाव लिया जाये, उससे उनके घमंड तथा अल्लाह तआला के विषय में अनुचित विश्वास का प्रदर्शन होता है। जिसका अल्लाह तआला के समक्ष कोई स्थान नहीं है।

[3]इसमें उनके उपरोक्त घमंड को निराधार सिद्ध किया है कि यदि तुम वास्तव में अल्लाह के प्रिय तथा लाडले होते अथवा प्रिय होने का यह अर्थ है कि तुम जो चाहो करो, अल्लाह तआला तुम्हारी पकड़ न करेगा तो फिर अल्लाह तआला तुम्हारे पापों पर दंड क्यों देता है ? इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि अल्लाह के दरबार में निर्णय दावों के आधार पर नहीं होता है तथा न क़ियामत के दिन होगा, वरन वह तो ईमान, संयम तथा कर्मों को देखता है एवं दुनिया में भी उसी के प्रकाश में निर्णय करता है तथा क़ियामत के दिन भी इसी नियमानुसार निर्णय करेगा।

The Ummah Technology Mission

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝۱۸

जिसे चाहता है क्षमा करता है तथा जिसे चाहता है यातना देता है।[1] तथा अल्लाह (तआला) का स्वामित्व आकाशों तथा धरती पर तथा उनके मध्य जो कुछ है प्रत्येक वस्तु पर है। एवं उसी की ओर पलट कर आना है।

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَاۗءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰي فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَاۗءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّلَا نَذِيْرٍ ۡ فَقَدْ جَاۗءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝۱۹ۧ

(१९) हे अहले किताब ! रसूलों के आगमन में एक विलम्ब के पश्चात हमारा रसूल (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आ चुका है जो तुम्हारे लिये (धर्म विधानों) का वर्णन कर रहा है ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई शुभसूचक तथा सतर्क करने वाला नहीं आया, तो तुम्हारे पास एक शुभसूचक एवं सतर्क करने वाला (अन्तिम ईशदूत) आ गया है,[2] निश्चय अल्लाह सर्वशक्तिमान है।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَاۗءَ وَجَعَلَكُمْ

(२०) और याद करो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने वर्ग से कहा हे मेरे वर्ग के लोगो ! अल्लाह (तआला) के उस उपकार को याद करो कि उसने तुममें से ईशदूत (पैग़म्बर) बनाये

[1]इस प्रकार यह यातना तथा क्षमा का निर्णय अल्लाह तआला के उसी नियम के आधार पर होगा, जिसको उसने स्पष्ट कर दिया है कि ईमानवालों को क्षमा तथा काफ़िरों को यातना, सभी लोगों का निर्णय इसी आधार पर होगा। हे अहले किताब ! तुम भी उसकी रचना की उत्पत्ति अर्थात मनुष्य हो। तुम्हारे लिए निर्णय अन्य व्यक्तियों से भिन्न क्यों होगा ?

[2]आदरणीय ईसा तथा परम आदरणीय मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मध्य का काल में जो लगभग ५७० वर्ष का अन्तर है। यह अन्तर एक अवकाश कहलाता है। अहले किताव से कहा जा रहा है कि इस अवकाश के पश्चात हमने अपने अन्तिम रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को भेज दिया है। अब तुम यह भी न कह सकोगे कि हमारे पास कोई शुभसूचना देने वाला तथा सतर्क करने वाला ईशदूत (पैग़म्बर) ही नहीं आया।

The Ummah Technology Mission

مُّلُوكًا وَّاٰتٰىكُمْ مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٠﴾

तथा तुम्हें राज्य प्रदान किया।[1] तथा तुम्हें वह प्रदान किया जो अखिल जगत में किसी को प्रदान नहीं किया।[2]

---

[1]अधिकतर नबी इस्राईल की सन्तानों में हुये हैं जिनका क्रम आदरणीय ईसा पर समाप्त कर दिया गया तथा अन्तिम पैग़म्बर (ईशदूत) इस्माईल की सन्तान से हुए -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। इसी प्रकार कई बादशाह भी इस्राईल की सन्तान में हुए और और कुछ नबियों को भी अल्लाह तआला ने राज्य प्रदान किया, जैसे आदरणीय सुलेमान अलैहिस्सलाम। इसका यह अर्थ निकला कि नबूवत की भाँति राज्य भी अल्लाह तआला का पुरस्कार है। उसे किसी भी साधारणतः बुरा समझना बहुत बड़ी त्रुटि है यदि राज्य बुरा होता तो अल्लाह तआला किसी नबी को प्रदान न करता और न इसे अनुकम्पा के रूप में पवित्र क़ुरआन में उसकी चर्चा करता, जैसा कि आजकल पश्चिमी लोकतंत्र का उन्माद जन मानस पर आच्छादित है तथा पश्चिम चालबाज़ों ने यह मंत्र इस प्रकार फूँका है कि केवल पश्चिम राजनीति से प्रभावित राजनीतिज्ञ ही नहीं, अपितु पगड़ी और टोपी वाले भी इससे न बच सके। अन्ततः राज्य तथा वंशगत राज्य यदि शासक और राजा न्यायकारी एवं संयमी है तो लोकतंत्र से हज़ार गुना उत्तम है।

[2]यह संकेत पुरस्कारों और चमत्कारों की ओर है जो अल्लाह ने इस्राईल के पुत्रों को प्रदान किये। जैसे मन तथा सलवा का उतरना, बादलों की छाया, फ़िरऔन से मुक्ति के लिए नदी में मार्ग बनाना आदि। इस प्रकार इस समुदाय को अपने समय में श्रेष्ठ तथा उच्च स्थान प्राप्त था। परन्तु अन्तिम ईशदूत (पैग़म्बर) परम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत तथा उनके आगमन के पश्चात यह श्रेष्ठ स्थान मुसलमानों को प्राप्त हो गया।

﴿ كُنتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ ﴾

"तुम श्रेष्ठ समुदाय हो जिसे मानव जाति के लिये बनाया गया है।" (सूरः *आले इमरान*-११०)

परन्तु यह भी प्रतिबन्धित है, उस उद्देश्य की पूर्ति के साथ जिसका वर्णन इसी मंत्र में किया गया है।

﴿ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ﴾

"तुम लोगों को सत्कर्म का आदेश देते हो तथा कुकर्मों से रोकते हो। एवं अल्लाह तआला पर ईमान रखते हो।"

The Ummah Technology Mission

يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِيْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٢١﴾

(२१) मेरे वर्ग वालो ! उस पवित्र धरती में प्रवेश करो |[1] जो अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे नाम लिख दी है |[2] और अपनी पीठ न दिखाओ |[3] कि हानि में पड़ जाओगे |

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖ وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ﴿٢٢﴾

(२२) उन्होंने उत्तर दिया हे मूसा ! वहाँ तो शक्तिशाली लड़ाकू लोग हैं तथा जब तक वह वहाँ से निकल न जायें, हम तो कदापि नहीं जायेंगे | यदि वे वहाँ से निकल जायें तो हम (प्रसन्नता पूर्वक) वहाँ चले जायेंगे |[4]

قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ

(२३) परन्तु जो अल्लाह से डर रहे थे उनमें से दो पुरुषों ने कहा जिन पर अल्लाह ने कृपा

---

[1]इस्राईल की सन्तान के परम पूर्वज आदरणीय याक़ूब अलैहिस्सलाम का निवास स्थान बैतुल मक़दिस था | परन्तु आदरणीय यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के मिश्र में राज्य के समय ये लोग मिश्र में जाकर बस गये | फिर तब से उस समय तक ये लोग वहीं रहे, जब तक आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम रातों-रात उन्हें फ़िरऔन के अत्याचार से बचाकर (फ़िरऔन से छिप कर) मिश्र से निकाल नहीं ले गये | उस समय बैतुल मक़दिस पर अमालक़ा का राज था, जो एक वीर जाति थी | जब आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम ने फिर बैतुल मक़दिस जाकर आबाद होने का निश्चय किया, तो इसके लिए वहाँ पर राज करने वालों अर्थात अमालक़ा जाति के लोगों से युद्ध अवश्य करना था, अत: आदरणीय मूसा ने अपने समुदाय के लोगों को पवित्र भूमि में प्रवेश करने का आदेश दिया और अल्लाह तआला की ओर से विजय की शुभ सूचना भी सुनाई | परन्तु इसके उपरान्त भी इस्राईल की सन्तान अमालिक़ा के साथ युद्ध करने को तैयार न हुई | (इब्ने कसीर)

[2]इससे तात्पर्य विजय है, जिसका वचन अल्लाह तआला ने धर्मयुद्ध के रूप में उनसे कर रखा था |

[3]अर्थात धर्मयुद्ध से मुँह न मोड़ो |

[4]इस्राईल की सन्तान अमालक़ा की वीरता से भयभीत हो गयी तथा प्रथम चरण में साहस खो दिया तथा धर्मयुद्ध से रुक गये, अल्लाह के रसूल आदरणीय मूसा के आदेश की कोई चिन्ता की न अल्लाह तआला के विजय प्रदान करने के वचन पर विश्वास किया | तथा वहाँ जाने से स्पष्ट रूप से इंकार कर दिया |

The Ummah Technology Mission

فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ غَٰلِبُونَ ۚ وَعَلَى ٱللَّهِ فَتَوَكَّلُوٓا۟ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٣﴾

की, कि तुम उन पर द्वार से प्रवेश कर जाओ जब प्रवेश कर जाओगे तो तुम्ही विजयी रहोगे तथा यदि ईमान रखते हो तो अल्लाह ही पर भरोसा रखो।[1]

قَالُوا۟ يَٰمُوسَىٰٓ إِنَّا لَن نَّدْخُلَهَآ أَبَدًا مَّا دَامُوا۟ فِيهَا فَٱذْهَبْ أَنتَ وَرَبُّكَ فَقَٰتِلَآ إِنَّا هَٰهُنَا قَٰعِدُونَ ﴿٢٤﴾

(२४) उन्होंने कहा कि हे मूसा! हम कदापि वहाँ न जायेंगे जब तक वह उसमें रहेंगे, अतः तुम तथा तुम्हारा पोषक जाकर दोनों लड़ो हम यहीं बैठे हैं।[2]

قَالَ رَبِّ إِنِّى لَآ أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِى وَأَخِى فَٱفْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ ٱلْقَوْمِ ٱلْفَٰسِقِينَ ﴿٢٥﴾

(२५) उस (मूसा) ने कहा मेरे पोषक! मैं मात्र स्वयं पर तथा अपने भाई (हारून) पर अधिकार रखता हूँ अतः हमारे तथा अवज्ञाकारियों के बीच अलगाव कर दे।[3]

قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۛ يَتِيهُونَ فِى

(२६) उस (अल्लाह) ने कहा यह चालीस वर्ष तक उन पर निषेधित है वह धरती में भ्रमण

---

[1]मूसा की जाति में केवल यही दो व्यक्ति निकले जिन्हें अल्लाह तआला की ओर से सहायता पर विश्वास था, उन्होंने जाति को समझाया कि तुम साहस तो करो, तो फिर देखो कि अल्लाह तआला किस प्रकार विजय प्रदान करता है।

[2]परन्तु इसके उपरान्त भी इस्राईल की सन्तान ने कायरता, दुराचार तथा दुष्टता का प्रदर्शन करते हुए कहा कि तू और तेरा पोषक जाकर लड़ें। इसके विपरीत बद्र के युद्ध के समय रसूल अल्लाह अलैहि वसल्लम ने सहाबा (رضي الله عنهم) से विचार-विमर्श किया तो उन्होंने अपनी अल्प संख्या तथा कम साधन के उपरान्त भी अपने उत्साह का प्रदर्शन किया और यह भी कहा, "हे रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम आप से वैसे नहीं कहेंगे जैसे मूसा के समुदाय ने मूसा को उत्तर दिया।" (सहीह बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी वल तफ़सीर)

[3]इसमें अवज्ञाकारी समुदाय के समक्ष अपनी विवशता का प्रदर्शन भी है तथा उनसे विलग होने की घोषणा भी।

The Ummah Technology Mission

करते रहेंगे[1] अतः आप (मूसा) अवज्ञाकारियों पर खेद न करें।[2]

الْأَرْضِ ۖ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٦﴾

(२७) और आदम के दो पुत्रों कि सत्य कथा उन्हें पढ़कर सुना दो[3] जबकि दोनों ने एक-एक उपहार भेंट दिया तो एक से स्वीकार की गई तथा दूसरे से अस्वीकार कर दी गयी[4] तो

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَيْ آدَمَ بِالْحَقِّ ۘ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْآخَرِ

---

[1]यह तीह का मैदान कहलाता है। जिसमें चालीस वर्ष यह लोग अपनी अवज्ञा तथा धर्मयुद्ध से इंकार के कारण फिरते रहे, फिर भी इस मैदान में अल्लाह ने उन्हें खाने के लिये मन्न (एक प्रकार की मीठी गोंद) तथा सल्वा (एक प्रकार के पक्षी) उतारे, जिससे उकताकर उन्होंने अपने ईशदूत से कहा कि नित्य एक प्रकार के खाने से हमारा मन भर गया अतः अपने पोषक (अल्लाह) से प्रार्थना करो कि वह अनेक प्रकार वनस्पतियाँ तथा दालें हमारे लिये उपजाये। यहीं उन पर मेघों ने छाया की, पत्थर पर आदरणीय मूसा के लाठी मारने से वारह जातियों के लिये वारह स्रोत प्रवाहित हुये, ऐसे ही अन्य अनुकम्पायें भी होती रहीं। चालीस वर्ष वाद फिर ऐसी स्थिति उत्पन्न की गई कि यह वैतुल मक़दिस में प्रवेश किये।

[2]ईशदूत (पैग़म्वर) जव धर्म प्रचार-प्रसार के उपरान्त भी देखता है कि उसका समुदाय सीधे मार्ग को अपनाने के लिए तैयार नहीं है, जिसमें उसे दोनों लोक की भलाईयाँ हैं तो स्वभाविक रूप से उसे अत्यधिक दुख तथा चिन्ता होती है। यही नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भी दशा होती थी, जिसका वर्णन क़ुरआन मजीद में विभिन्न स्थानों पर है। परन्तु इस आयत में आदरणीय मूसा को सम्बोधित किया जा रहा है। कि जव तुमने अपना सतर्क करने तथा आमन्त्रण देने का कर्तव्य पूर्ण कर दिया तथा अल्लाह का संदेश लोगों तक पहुँचा दिया। और अपने समुदाय को एक विशाल सफलता के प्रारम्भिक बिन्दु पर ला खड़ा कर दिया, परन्तु वे अपने दुस्साहस तथा दुर्बोध के कारण तेरी वात मानने को तैयार नहीं हैं, तो तू अपने कर्तव्य को पूरा कर चुका तथा अब तुझे उनके विषय में दुखी एवं चिन्तित होने की कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसे अवसर पर दुखी होना एक स्वभाविक वात है। परन्तु इस सन्तावना का यह तात्पर्य है कि आमन्त्रण देने तथा सतर्क करने के उपरान्त अव तुम अल्लाह के पास भार मुक्त हो गये।

[3]आदम के इन दो पुत्रों का नाम हाबील तथा क़ाबील था।

[4]यह चढ़ावा अथवा वलि किसलिए प्रस्तुत की गयी ? इसके विषय में कोई उचित कथन प्राप्त नहीं है। परन्तु यह अवश्य प्रसिद्ध है कि प्रारम्भ में आदरणीय आदम तथा हव्वा के मिलाप से एक समय में एक पुत्र तथा एक पुत्री का जन्म होता था। दूसरे गर्भ से पुनः इसी प्रकार एक पुत्र तथा एक पुत्री जन्म लेते। एक गर्भ के बहन भाई का विवाह दूसरे

The Ummah Technology Mission

قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ ؕ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۲۷﴾

उसने कहा कि मैं तुझे अवश्य मार डालूंगा तो उसने कहा कि अल्लाह परहेज़गारों के ही स्वीकार करता है।

لَئِنْۢ بَسَطْتَّ اِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِيْ مَآ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِيَ اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۸﴾

(२८) यदि तू मुझे हत करने के लिये हाथ बढ़ायेगा तो मैं तेरी हत्या करने हेतु हाथ नहीं बढ़ा सकता मैं अल्लाह अखिल जगत के पालन हार से डरता हूँ।

اِنِّيْٓ اُرِيْدُ اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِيْ وَاِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۚ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۹﴾

(२९) मैं चाहता हूँ कि तू मेरा पाप तथा अपना पाप समेट ले[1] और नरकवासियों में हो जाये, तथा यही अत्याचारियों का कुफल है।

فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۳۰﴾

(३०) बस उसकी इच्छाओं ने उसे भाई की हत्या करने के लिए तैयार कर दिया और

गर्भ के भाई बहन से होता। हबील के साथ पैदा होने वाली बहन कुरूप थी तथा क़ाबील के साथ पैदा होने वाली बहन सुन्दर थी। उस समय के नियमानुसार हाबील का विवाह क़ाबील की बहन से तथा क़ाबील का विवाह हाबील की बहन से होना था, परन्तु क़ाबील चाहता था कि वह अपना विवाह हाबील की बहन के बजाय अपनी ही बहन से कर ले, जो सुन्दर थी। आदरणीय आदम ने उसे समझाया परन्तु वह न माना, अन्त में आदरणीय आदम ने अल्लाह के लिए बलि चढ़ाने का आदेश दिया और कहा कि जिसकी बलि स्वीकार हो जायेगी क़ाबील की बहन का विवाह उसी के साथ कर दिया जायेगा। हाबील की बलि स्वीकार हुई आकाश से अग्नि आयी और उसे खाई जो उसके स्वीकार होने का प्रमाण था। कुछ व्याख्याकारों का कथन है कि वैसे ही दोनों भाईयों ने अपनी-अपनी ओर से अल्लाह तआला के लिये बलि चढ़ाई थी, हाबील ने एक अच्छे बक़रे की बलि चढ़ाई तथा क़ाबील ने एक सिट्टे की। हाबील की बलि स्वीकार होने के कारण क़ाबील ईर्ष्या का शिकार हो गया।

[1]मेरे पाप का अर्थ, हत्या का वह पाप जो मुझे उस समय होता, जब मैं तेरी हत्या करता। जैसाकि हदीस में आता है कि हत एवं हत्यारा दोनों नरक में जायेंगें। सहाबा ने पूछा कि हत्यारे का नरक में जाना समझ में आता है, परन्तु जिसकी हत्या की गयी हो वह नरक में क्यों जायेगा ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उत्तर दिया कि इसलिए कि वह भी हत्यारे की हत्या कर देना चाहता था। (सहीह बुख़ारी तथा मुस्लिम, किताबुल फ़ितन)

The Ummah Technology Mission

उसने उसकी हत्या कर दी, जिससे वह हानि प्राप्त करने वालों में हो गया।[1]

فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَّبْحَثُ فِي الْاَرْضِ لِيُرِيَهٗ كَيْفَ يُوَارِيْ سَوْءَةَ اَخِيْهِ ؕ قَالَ يٰوَيْلَتٰٓى اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَاُوَارِيَ سَوْءَةَ اَخِيْ ۚ فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِيْنَ ۛ﴿۳۱﴾

(३१) फिर अल्लाह (तआला) ने एक कौए को भेजा जो धरती खोद रहा था। कि उसे दिखाये कि वह अपने भाई की लाश (शव) को किस प्रकार छिपा दे। वह कहने लगा हाय अफ़सोस! क्या मैं ऐसा करने के योग्य भी न रहा कि अपने भाई की लाश को इस कौए की भाँति गाड़ सकता? फिर तो वह बड़ा दुखी एवं लज्जित हो गया।

مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۚۛ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًۢا

(३२) इसी कारण हमने इस्राईल की संतान पर लिख दिया कि जो व्यक्ति किसी को बिना

---

[1] इसलिए हदीस में आता है।

« لاَ تُقْتَلُ نَفْسٌ ظُلْمًا إِلاَّ كَانَ عَلَى ابْنِ آدَمَ الأَوَّلِ كِفْلٌ مِنْ دَمِهَا؛ لأَنَّهُ كَانَ أَوَّلَ مَنْ سَنَّ الْقَتْلَ ».

"जो भी हत्या अत्याचार स्वरूप होती है (हत्या के साथ) उसके अनर्थ ख़ून का बोझ आदम के उस पहले पुत्र पर भी होता है क्योंकि यह प्रथम व्यक्ति है जिसने हत्या का कार्य किया।" (सहीह बुख़ारी किताबुल अंबिया तथा मुस्लिम किताबुल क़िसामः)

इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि "देखने से यह प्रतीत होता है कि क़ाबील को हाबील की अनर्थ हत्या करने का दंड दुनिया में प्राथमिक रूप से दे दिया गया था। हदीस में भी आता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

« مَا مِنْ ذَنْبٍ أَجْدَرُ أَنْ يُعَجِّلَ اللهُ عُقُوبَتَهُ فِي الدُّنْيَا مَعَ مَا يَدَّخِرُ لِصَاحِبِهِ فِي الآخِرَةِ؛ مِنَ الْبَغْيِ وقَطِيعَةِ الرَّحِمِ »

"अत्याचार एवं क्रूरता तथा संबन्ध भंग करना दो इस योग्य पाप है कि अल्लाह तुरंत इनका दंड संसार में दे दे, फिर भी परलोक का दंड इसके अतिरिक्त उसके लिये संचित होगा जो वहाँ भुगतना पड़ेगा।" (अबू दाऊद किताबुल अदब, इब्ने माजा किताबुल ज़ुहद तथा मुसनद अहमद ५/३६-३८)

और क़ाबील में यह दोनों पाप एकत्रित हो गये थे। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِي الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَاۤ اَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ۫ ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ﴿۳۲﴾

इसके कि वह किसी का हत्यारा हो अथवा धरती पर उपद्रव उत्पन्न करने वाला हो, हत्या कर डाले तो ऐसा है कि उसने सभी लोगों की हत्या कर दी। तथा जो व्यक्ति एक की जान बचाये, उसने मानो सभी को जीवत कर दिया।[1] और उनके पास हमारे रसूल बहुत-सी स्पष्ट निशानियाँ लेकर आये, परन्तु फिर भी उन में से अधिकतर लोग धरती पर अत्याचार (तथा कठोरता एवं क्रूरता) करने वाले ही रहे।[2]

اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْۤا اَوْ يُصَلَّبُوْۤا اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ

(३३) उनका दण्ड जो अल्लाह (तआला) से और उसके रसूल से लड़ें तथा धरती पर उपद्रव करें यही है कि वे मार दिये जायें अथवा फाँसी पर चढ़ा दिये जायें अथवा उलटी ओर से उनके हाथ पैर काट दिये जायें, अथवा उन्हें

---

[1]इस अवैध हत्या के बाद अल्लाह तआला ने मानव गण के मूल्य को व्यक्त करने के लिये इस्राईल की सन्तान को यह आदेश उतारा। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि अल्लाह तआला के यहाँ मानवगण का कितना महत्व है तथा कितना आदर है तथा यह नियम केवल इस्राईल की सन्तान के लिये ही नहीं था इस्लाम धर्म की शिक्षाओं के अनुसार भी यह नियम चिरस्थाई है। सुलेमान बिन अली रिबअी कहते हैं कि मैने आदरणीय हसन बसरी से पूछा, "यह नियम हम लोगों के लिये भी है, जिस प्रकार इस्राईल की सन्तान के लिए थी।" उन्होंने उत्तर दिया "हाँ, सौगन्ध है उस शक्ति की जिसके अतिरिक्त कोई पूजने योग्य नहीं। इस्राईल की सन्तान के ख़ून हमारे ख़ूनों से अधिक आदरणीय नहीं थे।"

[2]इसमें यहूदियों की निन्दा की गयी है कि उनके पास सभी नबी स्पष्ट लक्षण तथा शुभ सूचना लेकर आये, परन्तु उनका आचरण सदैव अवज्ञाकारिता तथा सीमा उल्लंघन करने वाला ही रहा। इसमें ऐसा प्रतीत होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सन्तावना दी जा रही है कि यह आप की हत्या करने तथा हानि पहुँचाने का जो षडयन्त्र करते रहे हैं, यह इनकी कोई नई बात नहीं है। इनका सम्पूर्ण इतिहास इनके छल तथा कपट से परिपूर्ण है आप हर स्थिति में अल्लाह पर भरोसा करें वह उनसे अच्छी उपाय जानता है, वह सभी षडयन्त्रों से बचाने में निपुण है।

The Ummah Technology Mission

لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٣٣﴾

देश से निकाल दिया जाये।[1] यह तो हुई उनका सांसारिक अपमान तथा अनादर तथा आख़िरत में उनके लिए भारी यातना है।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن قَبْلِ أَن تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ ۖ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ

(३४) परन्तु जो अपने ऊपर तुम्हारे नियन्त्रण से पूर्व क्षमा माँग लें।[2] निःसंदेह अल्लाह तआला

---

[1]इसके उतरने की विशेषता के विषय में आता है कि उकल तथा ओरैना जाति के कुछ लोग मुसलमान होकर मदीना पधारे, उन्हें मदीने की जलवायु का उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा तो नबी . करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें मदीने से बाहर, जहाँ दान के ऊँट थे, भेज दिया कि उनका दूध-मूत्र, पियो, अल्लाह स्वस्थ करेगा। अतः कुछ दिनों बाद वे स्वस्थ हो गये, परन्तु उसके पश्चात उन्होंने ऊँटों के रखवाले चरवाहों की हत्या कर दी तथा ऊँट हँका कर ले गये। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस विषय में सूचना प्राप्त हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके पीछे आदमी दौड़ाये, जो उन्हें ऊँटों सहित पकड़ लाये। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके हाथ-पैर उल्टी ओर से काट डाले, उनकी आँखों में गर्म सलाखें डलवायी (क्योंकि उन्होंने भी चरवाहे के साथ ऐसा ही किया था) फिर उन्हें धूप में डाल दिया गया, यहाँ तक कि वे वहीं मर गये। सहीह बुख़ारी में यह शब्द भी आते हैं कि उन्होंने चोरी भी की तथा हत्या भी की, ईमान लाने के पश्चात कुफ़्र भी किया, तथा अल्लाह तथा रसूल से युद्ध भी। (सहीह बुख़ारी किताबुल दयात वल तिब्ब वल तफ़सीर, सहीह मुस्लिम किताबुल क़सामः)। यह आयत मुहारबा कहलाती है। यह सामान्य आदेश है अर्थात मुसलमान तथा काफ़िर दोनों के लिये हैं। मुहारबा का अर्थ है कि किसी संगठित तथा शस्त्रों से सुसज्जित जत्थे का इस्लामी राज्य के भीतर अथवा उसके निकट जंगल आदि में राह चलते क़ाफिलों अथवा व्यक्ति अथवा समूह पर हमला करना, हत्या तथा उपद्रव करना, चोरी-छिपे अपहरण करना, बलात्कार करना आदि। इसके जो चार दंड बताये गये हैं, इमाम (समय के शासक) को अधिकार है कि उसमें से जो दंड देना उचित समझे दे। कुछ लोग कहते है कि यदि मुहारिबों ने हत्या, चोरी तथा आतंक फैलाया हो तो उनको मृत्यु दंड (हत्या अथवा फाँसी) दिया जायेगा तथा जिसने केवल हत्या की तथा माल नहीं लिया, उसकी भी हत्या की जायेगी, तथा जिसने हत्या भी की और माल भी छीना उसका एक दाहिना हाथ तथा बायाँ पैर अथवा बायाँ हाथ तथा दाहिना पैर काट दिया जायेगा। तथा जिसने न हत्या की एवं न माल छीना उसने केवल आतंक फैलाया, उसे देश से निकाल दिया जायेगा। इमाम शौकानी का कथन है कि पहली बात उचित है कि दंड देने में इमाम को अधिकार है। (फ़तहुल क़दीर)

[2]यदि गिरफ़्तार होने से पूर्व वह क्षमा माँग कर इस्लामी राज्य की शरण में आने की घोषणा कर दे तो फिर उनको क्षमा कर दिया जायेगा, वर्णित दंड नहीं दिये जायेंगे।

The Ummah Technology Mission

غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٤﴾

अत्यधिक क्षमाशील तथा अत्याधिक कृपालु एवं दयालु है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) हे मुसलमानों ! अल्लाह तआला से डरते रहो तथा उसकी ओर निकटता प्राप्त करने का प्रयत्न करो [1] तथा उसके मार्ग में धर्म युद्ध करो ताकि तुम्हारी भलाई हो ।

परन्तु फिर इस विषय में मतभेद है कि दंड की क्षमा के साथ उन्होंने हत्या करके अथवा माल लूट कर अथवा बलात्कार करके मनुष्यों को जो कष्ट दिये हैं यह अपराध भी क्षमा किये जायेंगे अथवा उनका बदला लिया जायेगा। कुछ आलिमों के निकट यह क्षमा नहीं किये जायेंगे अपितु इनका बदला लिया जायेगा। इमाम शौकानी तथा इमाम इब्ने कसीर का झुकाव इस ओर है कि उनको क्षमा किया जायेगा। और इसको प्रत्यक्ष आयत का उद्देश्य बताया है । परन्तु गिरफ़्तारी के पश्चात क्षमा माँगने से अपराध क्षमा न होंगे, वह दंड के अधिकारी होंगे। (फ़तहुल क़दीर तथा इब्ने कसीर)

[1]वसीला (وسيلة) का अर्थ ऐसा विषय है जो किसी उद्देश्य की प्राप्ति तथा उसके सामिप्य का साधन बने। "अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करने का कारण प्रयत्न करो" का अर्थ होगा कि ऐसे कर्म करो जिससे तुम्हें अल्लाह की प्रसन्नता तथा उसकी निकटता प्राप्त हो। इमाम शौकानी का कथन है "वसीला अर्थात सामिप्य संयम आदि वह सत्कर्म हैं जिनके माध्यम से भक्त अल्लाह की निकटता प्राप्त करते हैं।" इसी प्रकार प्रतिबंधित तथा निषेध वस्तुओं तथा कर्मों से बचने से भी अल्लाह की निकटता प्राप्त होती है, इसलिए प्रतिबंधित तथा निषेध वस्तुओं तथा कर्मों को छोड़ना भी अल्लाह की निकटता प्राप्त करने का माध्यम है। परन्तु मूर्खो ने इस वास्तविक माध्यम को छोड़ कर क़ब्र में गड़े लोगों को अपना माध्यम बना लिया है। जिसका धार्मिक नियमों में कोई स्थान नहीं है। अपितु हदीस में उस मोक़ामे महमूद (उच्च स्थान) को भी वसीला कहा गया है जो स्वर्ग में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रदान किया जायेगा। इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो भी अज़ान के पश्चात मेरे लिये इस माध्यम की प्रार्थना करेगा, वह मेरी शिफ़ाअत का पात्र होगा। (सहीह बुख़ारी किताबुल अज़ान, सहीह मुस्लिम किताबुल सलात) दुआए वसीला :

« اللَّهُمَّ! رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ، والصَّلٰوةِ القَائِمَةِ؛ آتِ مُحَمَّدًا الْوَسِيلَةَ وَالْفَضِيلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُودًا الَّذِي وَعَدْتَهُ »

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٣٦﴾

(३६) विश्वास करो, कि काफ़िरों के लिए यदि वह सब कुछ हो जो सारी धरती में है, तथा उसके समान और अधिक भी हो और वह उन सबको क़ियामत के दिन की यातना के बदले प्रतिशोध में देना चाहें तो भी असम्भव है कि उनसे स्वीकार कर लिया जाये, उनके लिए तो दुखदायी यातना है।[1]

يُرِيدُونَ أَن يَخْرُجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُم بِخَارِجِينَ مِنْهَا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٧﴾

(३७) वे चाहेंगे की नरक से निकल जायें। परन्तु वे कदापि उसमें से न निकल सकेंगे उनके लिए तो स्थाई यातनायें हैं।[2]

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا جَزَاءً بِمَا كَسَبَا نَكَالًا

(३८) चोर तथा चोरनी का हाथ काट दो[3] यह उनके करतूत का बदला तथा अल्लाह की

---

[1]हदीस मे आता है कि एक नरकवासी को नरक से निकाल कर अल्लाह तआला के समक्ष लाया जायेगा। अल्लाह तआला उससे पूछेगा कि "तूने अपना विश्राम स्थान कैसा पाया ?" वह कहेगा, "बहुत बुरा विश्राम स्थल।" अल्लाह तआला फ़रमायेगा, "क्या तू धरती भर के स्वर्ण इससे छुटकारा प्राप्त करने के लिए बदला स्वरूप देना पसन्द करेगा ?" वह सकारात्मक उत्तर देगा। अल्लाह तआला फ़रमायेगा, मैंने तो दुनिया में इससे भी बहुत कम की माँग तुझसे की थी, तूने उसका कोई ध्यान नहीं दिया और उसे पुनः नरक में डाल दिया जायेगा। (सहीह मुस्लिम सिफ़तुल क़ियामः, सहीह बुख़ारी अल-रिक़ाक़ वल अंबिया)

[2]यह आयत काफ़िरों (विश्वासहीन) के लिए है क्योंकि ईमानवालों को दण्ड के उपरान्त नरक से निकाल लिया जायेगा जैसाकि हदीस से इसकी पुष्टि होती है।

[3]कुछ विचारकों के अनुसार चोरी का यह आदेश सामान्य है। चोरी थोड़ी सी वस्तु की हो या बहुत-सी वस्तु की। इसी प्रकार वह सुरक्षित स्थान पर रखी हो अथवा असुरक्षित स्थान पर रखी हो प्रत्येक अवस्था में चोरी का दण्ड दिया जायेगा। जब कि दूसरे विचारकों के निकट इसके लिए सुरक्षित तथा निर्धारित आवश्यक है। फिर मात्रा के निर्धारण में मतभेद हैं। हदीस के ज्ञाताओं के निकट कम से कम मात्रा चौथाई दीनार अथवा तीन दिरहम के अथवा उसके समुल्य की कोई चीज़ हो, इससे कम की चोरी पर हाथ नहीं काटा जायेगा। इसी प्रकार हाथ कलाईयों से काटे जायेंगे, कोहनी अथवा कधों से नहीं। जैसाकि कुछ का विचार है। (विस्तृत जानकारी के लिए हदीस, फ़िक्ह तथा तफ़सीर की पुस्तकों का अध्ययन किया जाये)

The Ummah Technology Mission

مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٣٨﴾

ओर से दण्ड है, तथा अल्लाह तआला शक्तिशाली तथा पूर्ण वैज्ञानिक है।

فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٩﴾

(३९) जो अपने पाप के पश्चात क्षमा माँग ले तथा सुधार कर ले, तो अल्लाह (तआला) दया के रूप में उसकी ओर आकर्षित होता है।[1] निःसन्देह अल्लाह तआला क्षमाशील कृपानिधि है।

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٠﴾

(४०) क्या तुझे ज्ञात नही कि अल्लाह (तआला) के लिए आकाशों तथा धरती का राज्य है? जिसे चाहे दण्ड दे, जिसे चाहे क्षमा कर दे। अल्लाह तआला प्रत्येक वस्तु पर प्रभुत्व रखने वाला है।

يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوْبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛ سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ؕ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ

(४१) हे रसूल! आप उनके लिये दुखी न हों जो अविश्वास में दौड़ लगा रहे हैं जिन्होंने अपने मुखों से कहा कि हमने विश्वास किया तथा उनके दिलों ने विश्वास नहीं किया[2] तथा जो यहूदी हो गये, उनमें कुछ झूठ सुनने के अभ्यासी तथा अन्य लोगों के गुप्तचर हैं, जो आप के पास नहीं आये। वह शब्दों को उनके स्थानों से फेर देते हैं, कहते हैं कि यदि तुम

---

[1]इस क्षमा से तात्पर्य अल्लाह के यहाँ क्षमा की स्वीकृति है, यह नहीं कि क्षमा माँग लेने से चोरी अथवा किसी दंडनीय अपराध का दंड क्षमा हो जायेगा। दंड संहितायें पश्चाताप से क्षमा नहीं की जायेंगी।

[2]नवी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कृतघ्नों तथा मिश्रणवादियों के ईमान न लाने के कारण तथा सीधे मार्ग न अपनाने के कारण जो दुख तथा खेद होता था, उस पर अल्लाह तआला अपने पैग़म्बर को अधिक दुखी न होने का निर्देश दे रहा है ताकि इस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह संतोष रहे कि ऐसे लोगों के विषय में अल्लाह तआला मुझसे न पूछेगा।

The Ummah Technology Mission

مِنۢ بَعۡدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوۡلُوۡنَ
إِنۡ أُوتِيتُمۡ هَٰذَا فَخُذُوهُ
وَإِنۡ لَّمۡ تُؤۡتَوۡهُ فَٱحۡذَرُواْ

यह दिये जाओ तो मान लो तथा यह (आदेश) न दिये जाओ तो अलग रहो।[1] और जिसे

---

[1]आयत संख्या ४१ से ४४ तक के उतरने के विषय में दो घटनाओं का वर्णन होता है। प्रथम दो विवाहित यहूदी बलात्कारों (पुरूष-स्त्री) का। उन्होंने तो अपनी किताब तौरात में परिवर्तन कर डाला था, इसके अतिरिक्त उसके कुछ आदेशों का पालन भी नहीं करते थे। इसी प्रकार पत्थरों से मारकर विवाहित बलात्कारियों को मार डालने के दण्ड का आदेश उनकी किताव में था तथा अब भी है। परन्तु वे इस दण्ड से बचना भी चाहते थे इसलिए आपस में निर्णय किया कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास चलते हैं, यदि वह हमारे बनाये हुए दण्ड कोड़ों की मार अथवा मुँह काला करने के निर्णय को मान लेते हैं, तो मान जायेंगे तथा यदि पत्थरों से मार कर मार डालने का निर्णय करेंगे तो नहीं मानेंगे। अतः आदरणीय अब्दुल्लाह बिन उमर फ़रमाते हैं कि यहूदी मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि तौरात में पत्थरों से मारकर मार डालने के विषय में क्या है? उन्होंने कहा तौरात में बलात्कार का दण्ड कोड़े मारना तथा अपमानित करना है अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा कि तुम झूठ बोलते हो, तौरात में पत्थरों से मारकर मार डालने का आदेश विद्यमान है, जाओ तौरात लाओ, तौरात लाकर वह पढ़ने लगे तो पत्थर से मारकर मार डालने वाली आयत (मंत्र) पर हाथ रख कर आगे-पीछे की आयतें पढ़ दीं। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा कि हाथ हटाओ, जब हाथ हटाया गया तो वहाँ पत्थरों से मारने की आयत विद्यमान थी। अन्ततः उन्हें स्वीकर करना पड़ा कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सच कहते हैं। तौरात में पत्थरों से मारने का दण्ड विद्यमान है। अतः दोनों बलात्कारियों को पत्थरों से मारकर मार डाला गया। (देखें सहीहैन तथा अन्य हदीस की पुस्तकें) एक अन्य घटना का वर्णन इस प्रकार आता है कि यहूदियों का एक क़बीला अपने को दूसरे क़बीले से अधिक श्रेष्ठ तथा सम्मानित समझता था और इसके अनुसार अपने हत का आर्थिक दण्ड हत्यारे से लेने का मूल्य सौ (वस्क) तथा दूसरे क़बीले का पचास वस्क निर्धारित कर रखा था। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीने पधारे तो यहूदियों के दूसरे क़बीले को कुछ साहस हुआ, जिनके हत के रक्त का मूल्य हत्यारे से आधी लिया जाता था तथा उसने रक्त का मूल्य सौ वस्क देने से मना कर दिया। निकट था कि उनके मध्य लड़ाई छिड़ जाती, परन्तु उनके समझदार लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निर्णय कराने को तैयार हो गये। इस समय यह आयत उतरी। जिसमें एक आयत में रक्त के मूल्य में समानता का आदेश दिया गया। (यह कथन मुसनद अहमद में है, जिसके प्रमाण को शेख़ अहमद शाक़िर ने सही कहा है। मुसनद अहमद भाग १, पृष्ठ हदीस संख्या २२१२) इमाम इब्ने कसीर का कथन है, सम्भव है कि दोनों घटनायें एक ही समय में घटित हों तथा उन सबके लिए ये आयतें उतरी हों। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ؕ لَهُمْ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ ۚ وَّلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٤١﴾

अल्लाह भटकाना चाहे उसके लिये अल्लाह पर आप का तनिक अधिकार नहीं है। इन्हीं के दिलों को अल्लाह पवित्र नहीं करना चाहता इन्हीं के लिये संसार में अपमान तथा आख़िरत (परलोक) में भारी दंड है।

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ؕ فَاِنْ جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٤٢﴾

(४२) यह कान लगा-लगा कर झूठ सुनने वाले[1] तथा जी भर-भर कर हराम खाने वाले हैं। यदि यह तुम्हारे पास आयें तो तुम्हें अधिकार है चाहो तो उनके बीच निर्णय कर दो, चाहो तो न करो, यदि तुम उनसे मुहँ मोड़ भी लोगे, तो भी ये तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचा सकते और यदि तुम निर्णय करो तो उनमें न्याय के साथ निर्णय करो, निःसन्देह न्याय करने वालों के साथ अल्लाह तआला प्रेम रखता है।

وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَآ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٣﴾

(४३) तथा (आश्चर्य की बात है कि) वह कैसे अपने पास तौरात होते हुए, जिसमें अल्लाह के आदेश हैं तुमको निर्णायक बनाते हैं। फिर उसके पश्चात पलट जाते हैं। वास्तव में ये ईमान तथा विश्वास वाले नहीं हैं।

اِنَّآ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ

(४४) हमने तौरात उतारी है जिसमें मार्गदर्शन तथा प्रकाश ज्योति है। यहूदियों में इसी तौरात

---

[1] سمّاعون (सम्माऊना) का अर्थ है "अत्यधिक सुनने वाला" इसके दो भावार्थ हो सकते हैं। भेद जानने के लिए बहुत अधिक सुनना अथवा दूसरों की बातें जानने के लिए सुनना। कुछ व्याख्याकारों ने पहला अर्थ लिया है और कुछ ने दूसरा।

The Ummah Technology Mission

الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۴۴﴾

द्वारा अल्लाह के मानने वाले,[1] अंबिया (अलैहिमुस्सलाम) तथा अल्लाह वाले और ज्ञानी निर्णय किया करते थे क्योंकि उन्हें अल्लाह की इस किताब की सुरक्षा का आदेश दिया गया था।[2] तथा वे इस पर स्वीकार करने वाले गवाह थे।[3] अब तुम्हें चाहिए कि लोगों से न डरो। बल्कि मुझसे डरो, मेरी आयतों को थोड़े-थोड़े मूल्य पर न बेचो।[4] और जो

---

[1] أَسْلَمُوا (असलमू) यह नबियों की विशेषता का वर्णन है कि वे सभी नबी इस्लाम धर्म के अनुयायी थे, जिसकी ओर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आमन्त्रण दे रहे हैं। अर्थात सभी नबियों का धर्म एक ही रहा है। इस्लाम जिसकी आधारशिला है कि एक अल्लाह की इबादत (उपासना) तथा उसकी इबादत में किसी को सम्मिलित न किया जाये। प्रत्येक नबी ने सर्वप्रथम एकेश्वर तथा उसके साथ किसी को भी सम्मिलित न करने का आमन्त्रण दिया।

﴿وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ﴾

"हमने आप से पूर्व जितने भी रसूल भेजे सभी को यही प्रकाशना (वह्यी) की कि मेरे अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है, बस तुम सब मेरी इबादत (वंदना) करो।" (सूरः अल-अंबिया-२५)

इसको क़ुरआन में الدين (अद्-दीन) भी कहा गया है। जैसाकि सूरः शूरा की आयत संख्या १३ में भी इसी विषय का वर्णन किया गया है।

﴿شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا﴾

"हमने आपके लिए वही धर्म निर्धारित किया है जो आप से पूर्व अन्य नबियों के लिए किया था।"

[2] अतः उन्होंने तौरात में कोई परिवर्तन नहीं किया, जिस प्रकार बाद में लोगों ने किया।

[3] कि यह किताब किसी कमी अथवा अधिकता से सुरक्षित है और अल्लाह की ओर से उतारी गयी है।

[4] अर्थात लोगों से डर कर तौरात के वास्तविक आदेश पर पर्दा न डालो, न दुनिया के थोड़े से लाभ के लिए उनमें परिवर्तन करो।

The Ummah Technology Mission

अल्लाह की उतारी हुई प्रकाशनाओं (वह्यी) के आधार पर निर्णय न करें वे पूर्ण तथा परिपक्व काफ़िर हैं।[1]

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنفَ بِالْأَنفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَن تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهُ ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٤٥﴾

(४५) और हमने (तौरात) में यहूदियों के अधिकार में यह बात निर्धारित कर दी है कि जान के बदले जान और आँख के बदले आँख तथा नाक के बदले नाक एवं कान के बदले कान व दाँत के बदले दाँत तथा विशेष घावों का भी बदला है।[2] फिर जो व्यक्ति उसको क्षमा कर दे तो वह उसके लिए प्रायश्चित है तथा जो लोग अल्लाह के आदेशों के अनुसार निर्णय न करें, वही लोग अत्याचारी हैं।[3]

---

[1]फिर किस प्रकार तुम ईमान के बदले कुफ़्र (अविश्वास) के लिए तैयार हो गये ?

[2]जब तौरात में प्राण के बदले प्राण तथा घावों में बदले का आदेश दिया गया था तो यहूदियों के एक क़बीले (बनू नदीर) को दूसरे क़बीले (बनू कुरैज़ा) से इसके अतिरिक्त व्यवस्था करना तथा अपने हत द्वारा मृतक का बदला अन्य क़बीलों से दुगना लेने का क्या औचित्य है ? जैसाकि इसकी विस्तृत जानकारी पिछले पृष्ठों में आ चुकी है।

[3]यह इस बात की ओर संकेत है कि जिस क़बीले ने उपरोक्त निर्णय किया था। यह अल्लाह के द्वारा उतारे गये आदेश के विपरीत था तथा इस प्रकार उन्होंने अत्याचार किया। अर्थात मनुषय इस बात के लिए प्रतिबंधित है कि वह अल्लाह के आदेशों को अपनाये तथा उसी के आधार पर निर्णय करे तथा जीवन की सभी समस्याओं में उसी के प्रकाश में समाधान निकाले। यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो अल्लाह तआला के समक्ष अत्याचारी तथा दुराचारी एवं काफ़िर माना जायेगा। ऐसे लोगों के लिए अल्लाह तआला ने तीनों शब्दों का प्रयोग करके अपने क्रोध का प्रदर्शन किया है। इसके उपरान्त भी मनुष्य अपने बनाये हुए नियमों तथा अपनी इच्छाओं को श्रेष्ठता दे तो इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा ?

टिप्पणी : धर्मशास्त्रियों ने लिखा है कि पिछले धर्मों के जिन नियमों का आदेश अल्लाह तआला ने निरन्तर रखा है, हमारे लिए भी उसके अनुसार कर्म करना आवश्यक है और इस आयत में वर्णित आदेश निरस्त नहीं हुए है। इसलिए यह भी इस्लाम धर्म के नियमों

The Ummah Technology Mission

وَقَفَّيْنَا عَلَىٰٓ اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ۖ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝٤٦

(४६) और हमने उनके पीछे ईसा पुत्र मरियम को भेजा, जो अपने से पूर्व की किताब अर्थात तौरात की पुष्टि करने वाले थे।[1] तथा हमने उन्हें इंजील प्रदान की जिसमें प्रकाश तथा मार्गदर्शन था तथा वह अपने से पूर्व की किताब तौरात की पुष्टि करती थी तथा वह स्पष्ट मार्ग दर्शन तथा शिक्षा थी अल्लाह तआला से डरने वालों के लिए।[2]

के आदेश हैं। जैसाकि हदीस से इसकी पुष्टि होती है। इसी प्रकार हदीस में النفس با لنفس (जान के वदले जान) के सामान्य आदेश से दो अवस्थायें अलग हैं कि कोई मुसलमान अगर किसी काफ़िर की हत्या कर दे तो वदले में उस मुसलमान को उसी प्रकार ग़ुलाम (दास) के वदले स्वतन्त्र को हत नहीं किया जायेगा। (विस्तार के लिए देखें फ़तहुल बारी व नैलुल अवतार आदि)

[1]अर्थात विगत नबियों के तत्पश्चात ही आदरणीय ईसा को भेजा जो अपने पूर्व उतारी गयी किताब तौरात की पुष्टि करने वाले थे, उसको झुठलाने वाले नहीं, जो इस बात का प्रमाण है कि आदरणीय ईसा भी अल्लाह के सत्य रसूल हैं और उसी अल्लाह के भेजे हुए हैं जिसने आदरणीय मूसा पर तौरात उतारी थी, इसके उपरान्त भी यहूदियों ने आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम को झुठलाया, तथा उनके आदेशों का विरोध और अनादर एवं अपमान किया।

[2]अर्थात जिस प्रकार तौरात अपने समय में लोगों के मार्गदर्शन का साधन थी। इसी प्रकार इंजील के उतरने के उपरान्त यही स्थान इंजील को प्राप्त हो गयी तथा फिर क़ुरआन करीम के उतरने के बाद तौरात, तथा इंजील एवं अन्य आसमानी पुस्तकों के आदेशों के अनुसार कर्म करना निरस्त कर दिया गया तथा मार्गदर्शन एवं मोक्ष का मात्र एक साधन पवित्र क़ुरआन रह गया और इसी पर अल्लाह तआला ने आसमानी किताबों की श्रृंखला समाप्त कर दी। अतएव यह इस बात की घोषणा है कि क़ियामत तक जन्म लेने वाले सभी मनुष्यों की भलाई तथा सफलता इसी क़ुरआन से सम्बन्धित है, जो इससे सम्बन्धित हो गया, सम्मानित हो गया, जो अलग हो गया असफलता तथा अपमान उसका भाग्य वन गया है। इससे ज्ञात हुआ कि सर्व धर्म संभाव: का विचार एकदम अनुचित है सत्य हर समय में एक ही रहा है, अनेक नहीं। सत्य के अतिरिक्त प्रत्येक असत्य है। तौरात अपने समय की सत्य थी, उसके पश्चात इंजील अपने समय की सत्य थी, इंजील के उतरने के पश्चात तौरात के अनुसार कार्य उचित नहीं था, तथा जब क़ुरआन उतरा, तो इंजील निरस्त

The Ummah Technology Mission

وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝٤٧

(४७) तथा इंजील वालों को भी चाहिए कि अल्लाह तआला ने जो कुछ इंजील में उतारा है, उसी के अनुसार आदेश करें।[1] तथा जो अल्लाह तआला के उतारे हुए से ही आदेश न करें वे कुकर्मी दुराचारी हैं।

وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ؕ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ

(४८) तथा हमने आप की ओर सत्य से परिपूर्ण यह किताब उतारी है, जो अपने से पूर्व की सभी किताबों की पुष्टि करती है तथा उनकी रक्षक है।[2] इसलिए आप उनके बीच अल्लाह की उतारी हुई किताब के अनुसार निर्णय कीजिए[3] इस सत्य से हटकर उनकी

हो गयी, इंजील के अनुसार कार्य उचित नहीं रहा तथा केवल क़ुरआन ही मात्र एक कार्यक्रम तथा मोक्ष के लिए कर्म काण्ड रह गया है। इस पर आस्था बिना अर्थात मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत (दूतत्व) को स्वीकार किये बीना मोक्ष सम्भव नहीं और जानकारी के लिए देखें सूरः *अल-बक़रः* की आयत संख्या ६२ की व्याख्या।

[1]इंजील के अनुपालकों को यह आदेश उस समय तक था, जब तक आदरणीय ईसा की नबूवत का काल था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगमन के पश्चात आदरणीय ईसा की नबूवत का काल भी समाप्त हो गया। तथा इंजील के आदेशों का पालन भी समाप्त हो गया। अब ईमानवाला वही समझा जायेगा जो मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (दूतत्व) पर ईमान लायेगा और क़ुरआन करीम के आदेशों का पालन करेगा।

[2]प्रत्येक आसमानी किताब अपने से पूर्व की आसमानी किताबों की पुष्टि करने वाली ही रही है, जिस प्रकार क़ुरआन भूतपूर्व आसमानी किताबों की पुष्टि करने वाला है। पुष्टि का अर्थ यह है कि ये सभी किताबें वास्तव में अल्लाह की उतारी हुई किताबें हैं। परन्तु क़ुरआन प्रमाण शास्त्र होने के साथ-साथ مُهَيْمِن (रक्षक, विश्वास साक्षी तथा निर्णायक) भी है। अर्थात पूर्व की किताबों में चूँकि परिवर्तन भी हुआ है इसलिए क़ुरआन का निर्णय मान्य होगा, जिसको यह उचित कहेगा वह उचित शेष अनुचित तथा असत्य है।

[3]इससे पूर्व आयत संख्या ४६ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह अधिकार दिया गया था कि आप उनके विवाद में निर्णय करें अथवा न करें आपकी इच्छा है। परन्तु अब उसके स्थान पर यह आदेश दिया जा रहा है कि उनके आपसी विवादों का भी निर्णय क़ुरआन के आदेश के अनुसार ही करें।

The Ummah Technology Mission

شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۙ﴿۴۸﴾

इच्छाओं के अनुसार न जाईये।[1] तुम में से प्रत्येक के लिए हम ने एक विधान तथा मार्ग निर्धारित कर दिया है।[2] यदि अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही समुदाय बना देता, परन्तु वह चाहता है कि जो तुम्हें दिया है, उसमें तुम्हारी परीक्षा ले।[3] तुम पुण्य की ओर शीघ्रता करो, तुम सबको अल्लाह ही की ओर पलट कर जाना है, फिर वह तुम्हें हर वह चीज बता देगा जिसमें तुम मतभेद रखते हो।

وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ

(४९) तथा आप उनके विवाद में अल्लाह की उतारी हुई प्रकाशनाओं (वह्यी) के अनुसार

---

[1]यह वास्तव में अनुयायियों को शिक्षा जा दी रही है कि अल्लाह की उतारी हुई किताब से हटकर लोगों की ईच्छाओं के तथा विचारों तथा उनके स्वयं अपने वनाये हुए नियम के अनुसार निर्णय करना भटकावा है, जिसकी आज्ञा पैग़म्वर (ईशदूत) को नहीं तो भला किसी अन्य को यह अधिकार किस प्रकार प्राप्त हो सकता है।

[2]इससे तात्पर्य पूर्व के धर्मिक नियम हैं, जिनमें कुछ आदेश एक-दूसरे से भिन्न थे। एक धर्म के नियम में कोई चीज अवैध तथा दूसरे धर्म के नियम में वही वैध थी कुछ में किसी समस्या में कड़ाई थी तो दूसरे में सुविधा थी। परन्तु धर्म सभी एक अर्थात एकेश्वरवाद पर आधारित था। इस प्रकार सभी का आमन्त्रण एक था। इस विषय को एक हदीस में इस प्रकार से वर्णन किया गया।

« نَحْنُ مَعَاشِرَ الأَنْبِيَاءِ إِخْوَةٌ لِعَلَّاتٍ ، دِيْنُنا وَاحِدٌ ».

"हम नवियों का गुट अल्लाती भाई है हमारा धर्म एक है।" (सहीह वुख़ारी)

"अल्लाती भाई" वह होते हैं जिनकी मातायें भिन्न हों, परन्तु पिता एक हो। अतः इसका अर्थ यह हुआ कि इनका धर्म एक ही था, परन्तु धार्मिक नियम भिन्न थे। लेकिन इस्लामी नियम के उपरान्त अव सभी नियम निरस्त हो गये तथा अव धर्म भी एक है और नियम भी एक है।

[3]अर्थात क़ुरआन के उतरने के उपरान्त अव मोक्ष तो इसी से सम्बन्धित है। परन्तु हमें मोक्ष के मार्ग को अपनाने के लिए अल्लाह तआला ने कोई दबाव नहीं रखा है, वरन् वह चाहता तो वह ऐसा कर सकता था, परन्तु इस प्रकार तुम्हारी परीक्षा सम्भव न थी, जवकि वह तुम्हारी परीक्षा लेना चाहता है।

The Ummah Technology Mission

وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ۝٤٩

निर्णय दीजिए। उनकी इच्छाओं का पालन न कीजिए तथा उनसे सावधान रहिये कि कहीं ये आपको अल्लाह के उतारे हुए किसी आदेश से विचलित न कर दें, यदि यह मुहँ मोड़ लें तो विश्वास करो कि अल्लाह का यही विचार है कि उन्हें उनके कुछ पापों का दण्ड दे ही दे तथा अधिकतर लोग अवज्ञाकारी होते हैं।

اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ؕ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝٥٠

(५०) क्या यह लोग पुनः अवज्ञानात्मक निर्णय चाहते हैं ?[1] और विश्वास रखने वालों के लिए अल्लाह (तआला) से श्रेष्ठ निर्णायक तथा आदेश करने वाला कौन हो सकता है।[2]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰۤى اَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ

(५१) हे ईमान वालो ! तुम यहूदियों तथा ईसाईयों को मित्र न बनाओ।[3] यह तो आपस

---

[1]अब क़ुरआन तथा इस्लाम के अतिरिक्त सभी अज्ञान है तथा यह अब भी प्रकाश तथा मार्गदर्शन (इस्लाम) को छोड़ कर अज्ञानता ही की खोज में तथा उसके इच्छुक हैं ? यह प्रश्न इंकार एवं प्रतिकार के लिए है तथा ف लिप्त शब्द की ओर फिरता है तथा अर्थ है।

" يعرضون عن حكمك بما أنزل الله عليك و يتولون عنه، يبتغون حكم الجاهلية "

"तेरे इस निर्णय से जो अल्लाह ने तुझ पर उतारा है, यह इंकार करते हैं तथा पीठ फेरते हैं तथा अज्ञानता के मार्ग की खोज में हैं।" (फ़तहुल क़दीर)

[2]हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

« أَبْغَضُ النَّاسِ إِلَى اللهِ عَزَّ وَجَلَّ ثَلَاثَةٌ: مُبْتَغٍ فِي الإِسْلَامِ سُنَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ، وَطَالِبُ دَمِ امْرِئٍ بِغَيْرِ حَقٍّ لِيُرِيقَ دَمَهُ ».

"अल्लाह तआला को सबसे अधिक अप्रिय व्यक्ति वह है जो इस्लाम में अज्ञानता की रीति की खोज करे और जो अनर्थ किसी का ख़ून बहाने का प्रयत्न करे।" (सहीह बुख़ारी किताबुल दियात)

[3]इसमें यहूदियों तथा इसाईयों से मित्रता तथा प्रेम सम्बन्ध स्थापित करने से मना किया गया है जो इस्लाम धर्म तथा मुसलमानों के शत्रु हैं और इस पर इतनी बड़ी चेतावनी दी गयी है कि जो उनसे मित्रता रखेगा, वह उन्हीं में से समझा जायेगा। (और देखिए सूरः *आले इमरान* आयत संख्या २८ तथा आयत संख्या ११८ की व्याख्या)

The Ummah Technology Mission

أَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِّنكُمْ فَإِنَّهُۥ مِنْهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٥١﴾

में ही एक-दूसरे के मित्र हैं।[1] तुममें से जो कोई भी इनसे मित्रता करे तो वह उनमें से है, अत्याचारियों को अल्लाह तआला कदापि मार्गदर्शन नहीं देता।[2]

فَتَرَى ٱلَّذِينَ فِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ يُسَٰرِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَىٰٓ أَن تُصِيبَنَا دَآئِرَةٌ ۚ فَعَسَى ٱللَّهُ أَن يَأْتِىَ بِٱلْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ عِندِهِۦ فَيُصْبِحُوا۟ عَلَىٰ مَآ أَسَرُّوا۟

(५२) आप देखेंगे कि जिनके दिलों में रोग है।[3] वह दौड़-दौड़ कर उनमें घुस रहे हैं तथा कहते हैं कि हमें भय है कि ऐसा न हो कि कोई घटना हम पर घटित हो जाये।[4] अधिक सम्भव है कि अल्लाह (तआला) विजय प्रदान कर दे[5] अथवा अपने पास से कोई अन्य निर्णय

---

[1]क़ुरआन के इस वर्णित सत्य का प्रत्यक्ष दर्शन प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है कि यहूदियों तथा इसाईयों में आपस में निष्ठा के आधार पर अत्यधिक मतभेद तथा आपसी ईर्ष्या तथा द्वेष है। परन्तु इसके उपरान्त भी इस्लाम तथा मुसलमानों के विरुद्ध ये आपस में एक-दूसरे के सहायक, मित्र तथा रक्षक हैं।

[2]इन आयतों के उतरने की विशेषता में वर्णन किया जाता है कि आदरणीय ओबादः बिन साबित अन्सारी तथा अवसरवादियों के प्रमुख अब्दुल्लाह बिन उबैय दोनों ही अज्ञानकाल में यहूदियों के मित्र चले आ रहे थे। जब बद्र के युद्ध में मुसलमानों की विजय हुई तो अब्दुल्लाह बिन उबैय ने इस्लाम धर्म का प्रदर्शन किया। इधर बनु केनुकाअ के यहूदियों ने थोड़े दिनों ही पश्चात् उपद्रव उत्पन्न किया और वे धर लिए गये जिस पर आदरणीय ओबादः ने अपने यहूदी मित्रों से सम्बन्ध तोड़ने की घोषणा कर दी, परन्तु इसके विपरीत अब्दुल्लाह बिन उबैय ने यहूदियों को हर प्रकार से बचाने का प्रयास किया। जिस पर यह आयत उतरी।

[3]इससे तात्पर्य द्वयवाद (निफ़ाक़) है। अर्थात अवसरवादी यहूदियों से प्रेम तथा मित्रता में शीघ्रता करते हैं।

[4]अर्थात मुसलमानों की पराजय हो जाने के कारण हमें भी हानि उठानी पड़े। यहूदियों से मित्रता होगी तो हमें ऐसे अवसर पर काम आयेगी।

[5] अर्थात मुसलमानों को।

The Ummah Technology Mission

فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ ۝٥٢

लाये।[1] फिर तो यह अपने हृदय मे छिपाई हुई बात पर अत्यधिक लज्जित होंगे।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ اِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ۭ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ۝٥٣

(५३) तथा ईमानवाले कहेंगे कि क्या यही वे लोग हैं जो बड़े विश्वास से अल्लाह की सौगन्ध खा-खा कर कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं। उन के कर्म नष्ट हो गये तथा ये असफल हो गये।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗٓ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَي الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَي الْكٰفِرِيْنَ ۡ يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَاۗىِٕمٍ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ

(५४) हे ईमानवालो ! तुममें से जो अपने धर्म से पलट जाये।[2] तो अल्लाह (तआला) बहुत शीघ्र ऐसे समुदाय के लोगों को लायेगा जो अल्लाह के प्रिय होंगे तथा वे भी अल्लाह से प्रेम करते होंगे[3] वह कोमल हृदय होंगें मुसलमानों पर, कठोर तथा निर्दय होंगें काफ़िरों पर, अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध करेंगे किसी अपमानित करने वाले व्यक्ति के

---

[1]यहूदियों तथा ईसाईयों पर सुरक्षा कर (जिज़या) लगा दे अथवा इसकी ओर संकेत है कि वनू कुरैज़ा तथा उनके सन्तानों को बन्दी बनाने तथा बनू नदीर को देश निकाला देने आदि की ओर जो निकट भविष्य में घटित हुआ।

[2]अल्लाह तआला की ओर से भविष्य वाणी है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के देहान्त के पश्चात घटित हुई। इस उपद्रव को कुचलने का श्रेय आदरणीय अबू बक्र (رضي الله عنه) तथा उनके साथियों को प्राप्त हुआ।

[3]मुर्तिद (धर्म के किसी नियम पर विश्वास न रखने वाले) के प्रतिकूल जिस समुदाय को अल्लाह तआला खड़ा करेगा, उनके चार गुणों को स्पष्ट करके वर्णन किया जा रहा है। १.अल्लाह से प्रेम करना तथा उसका प्रिय होना, २ईमानवालों के लिए कोमल तथा काफ़िरों के लिए कठोर होना, ३. अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध करना, ४अल्लाह के विषय में किसी के अपमानित करने की चिन्ता न करना। सहाबा कराम (رضي الله عنهم) इन गुणों तथा विशेषताओं से सुशोभित थे। अत: अल्लाह तआला ने उन्हें दुनिया तथा आख़िरत के सभी सुखों से पुरस्कृत किया तथा दुनिया में ही अपनी प्रसन्नता का प्रमाण-पत्र उन्हें प्रदान कर दिया।

The Ummah Technology Mission

يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٤﴾

अपमान करने की चिन्ता न करेंगें।[1] ये है अल्लाह (तआला) की कृपा जिसे चाहे प्रदान करे। अल्लाह तआला सर्वशक्तिमान है तथा अत्यधिक ज्ञानवाला है।

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ﴿٥٥﴾

(५५) (मुसलमानों)! तुम्हारा मित्र स्वयं अल्लाह तथा उसका रसूल है, एवं ईमानवाले हैं,[2] जो नमाजों को स्थापित करते हैं तथा ज़कात अदा करतें हैं तथा वे रूकूउ (दण्डवत) (श्रद्धायुक्त तथा ध्यानमग्न होकर) करने वाले हैं।

وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٥٦﴾

(५६) तथा जो व्यक्ति अल्लाह (तआला) से तथा उसके रसूल एवं मुसलमानों से मित्रता करे उसे विश्वास करना चाहिए कि अल्लाह (तआला) के भक्त ही प्रभावशाली होंगे।[3]

---

[1]यह ईमानवालों का चौथा गुण है। अर्थात अल्लाह तआला के आदेशों के पालन में किसी व्यक्ति द्वारा अपमानित करने की चिन्ता न करना। यह भी बड़ा विशेष गुण है। समाज में जिन बुराईयों का प्रचलन जनसमूह में सामान्य हो जाये उनके विरुद्ध पुण्य पर स्थिरता एवं अल्लाह तआला के आदेशों का पालन इस गुण के बिना सम्भव नहीं है। वरन् कितने लोग हैं जो बुराई, अल्लाह की अवज्ञाकारिता, तथा समाज में उत्पन्न बुराई से अपने आप को बचाना चाहते हैं, परन्तु बुरा-भला कहने वालों के भय से उनका मुक़ाबिला करने का साहस नहीं कर पाते। परिणाम स्वरूप उन बुराईयों के दलदल से निकल नहीं पाते तथा सत्य तथा असत्य से बचने के शक्ति से वंचित ही रहते हैं। इसीलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जिनको यह गुण प्राप्त हो जाये उन पर अल्लाह तआला की विशेष कृपा है।

[2]जब यहूदियों तथा ईसाईयों की मित्रता से मना किया गया, तो अब इसका उत्तर दिया जा रहा है कि फिर वह मित्रता किससे करें? कहा कि ईमानवालों का सर्वप्रथम मित्र अल्लाह तआला स्वयं है तथा उसके रसूल हैं तथा फिर उसके अनुयायी ईमानवाले हैं आगे उनके कुछ एक गुण बताये गये हैं।

[3]यह अल्लाह तआला की पार्टी का लक्षण है तथा उसके विजय की सूचना दी जा रही है। अल्लाह तआला के भक्तों का गुट वही है जो मात्र अल्लाह, उसके रसूल तथा ईमानवालों से सम्बन्ध रखे तथा काफिरों, मूर्तिपूजकों, यहूदियों तथा ईसाईयों से मित्रता एवं पक्षपात का सम्बन्ध न रखे चाहे वे उनके सगे सम्बन्धी क्यों न हों। जैसाकि सूरः मुजादिलः के अन्त में

The Ummah Technology Mission

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟
لَا تَتَّخِذُوا۟ ٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُوا۟
دِينَكُمْ هُزُوًا وَلَعِبًا مِّنَ ٱلَّذِينَ
أُوتُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ مِن قَبْلِكُمْ
وَٱلْكُفَّارَ أَوْلِيَآءَ ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ
إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾
وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى ٱلصَّلَوٰةِ ٱتَّخَذُوهَا
هُزُوًا وَلَعِبًا ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ
لَّا يَعْقِلُونَ ﴿٥٨﴾

(५७) मुसलमानों ! उन लोगों को मित्र न बनाओ जो तुम्हारे धर्म को हँसी-खेल बनाये हुए हैं, (चाहे) वे उनमें से हों जो तुमसे पूर्व किताब दिये गये अथवा काफ़िर हों।[1] यदि तुम ईमानवाले हो तो अल्लाह से डरते रहो।

(५८) तथा जब तुम नमाज़ के लिए पुकारते हो, तो वह उसे हँसी-खेल ठहरा लेते हैं।[2] यह इसलिए कि यह बुद्धि नही रखते हैं।

फ़रमाया गया है, "तुम अल्लाह तथा अन्त दिवस पर ईमान रखने वालों को ऐसा न पाओगे कि वे ऐसे लोगों से प्रेम रखें जो अल्लाह तथा उसके रसूल के शत्रु हों, चाहे वे उनके पिता हों, तथा उनके पुत्र हों, और उनके भाई हों, अथवा उनके परिवार तथा जाति के लोग हों।" फिर शुभ सूचना दी गयी, कि "ये वे लोग हैं जिनके दिलों में ईमान है तथा जिन्हें अल्लाह की सहायता प्राप्त है, उन्हें ही अल्लाह तआला स्वर्ग में प्रवेश करायेगा ..... तथा, यही अल्लाह के भक्तों का गुट है, सफलता जिनका सौभाग्य है।" (सूरः मुजादिलः अन्तिम आयत)

[1]अहले किताब से यहूदी तथा ईसाई एवं काफ़िरों से मूर्तिपूजकों का अर्थ है। यहाँ फिर यही बल दिया गया है कि धर्म को खेल तथा उपहास बनाने वाले चूँकि अल्लाह तथा उसके रसूल के शत्रु हैं, इसलिए उनके साथ ईमानवालों की मित्रता नहीं होनी चाहिए।

[2]हदीस में आता है कि जब शैतान अज़ान की आवाज़ सुनता है तो पादता (अपना वायु त्यागता) हुआ भागता है, जब अज़ान समाप्त हो जाती है तो फिर लौट आता है, तकबीर (नमाज़ खड़े होते समय की इक़ामत) के समय पुनः पीठ फेर कर चल देता है, जब तकबीर समाप्त हो जाती है, तो फिर आकर नमाज़ियों के दिलों में शंकायें उत्पन्न करता है। अल-हदीस-(सहीह बुख़ारी किताबुल अज़ान, सहीह मुस्लिम किताबुस्सलात) शैतान की ही तरह शैतान के अनुयायियों को भी अज़ान का स्वर अच्छा नहीं लगता, इसलिए ये इसका उपहास उड़ाते हैं। इस आयत से यह भी ज्ञात हुआ कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस भी क़ुरआन की भाँति धर्म का स्रोत है तथा उसी प्रकार प्रमाण है क्योंकि क़ुरआन ने नमाज़ के लिए "निदा" (आमन्त्रण, घोषणा आदि) का वर्णन तो किया है, परन्तु यह "निदा" (घोषणा) किस प्रकार की जाये ? इसके शब्द क्या होंगे ? यह क़ुरआन करीम में नहीं हैं। यह चीज़ें हदीस से प्रमाणित हैं, जो इसका प्रमाण तथा धर्म के स्रोत होने का प्रमाण हैं।

The Ummah Technology Mission

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ۝٥٩

(५९) आप कह दीजिए, हे यहूदियों तथा इसाईयो ! तुम हमसे केवल इसलिए शत्रुता रखते हो कि हम अल्लाह (तआला) पर और जो कुछ हमारी ओर उतारा गया है तथा जो कुछ इससे पूर्व उतारा गया है उस पर ईमान लाये हैं, और इसलिए भी कि तुममें अधिकतर दुराचारी हैं।

قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۭ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ۭ اُولٰۗىِٕكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَاۗءِ السَّبِيْلِ ۝٦٠

(६०) कह दीजिए कि क्या मैं तुम्हें बताऊँ? कि इससे भी अधिक बुरे बदले का पाने वाला अल्लाह तआला के निकट कौन है ? वह जिस पर अल्लाह तआला ने धिक्कार की हो तथा उस पर वह क्रोधित हुआ हो एवं उनमें से कुछ को बन्दर तथा सूअर बना दिया तथा जिन्होंने झूठे देवताओं की पूजा की यही लोग बुरे श्रेणी वाले हैं तथा यही सत्यमार्ग से बहुत अधिक भटके हुए हैं।[1]

हुज्जिते हदीस (हदीस के प्रमाण होने का अर्थ) यह है कि जिस प्रकार क़ुरआन के मंत्रों से प्रमाणित आदेशों तथा कर्तव्यों का पालन अनिवार्य है तथा उन का इंकार नास्तिकता है इसी प्रकार ईशदूत (रसूल) के कथनों से प्रमाणित आदेशों तथा कर्तव्यों का पालन भी आवश्यक है, फिर भी रसूल की हदीस का निरन्तर सिद्ध होना आवश्यक है, सही हदीस अनेक कथाकारों द्वारा हो अथवा एक से, वह कथित हो कर्मिक हो अथवा प्रमाणित सभी कर्म योग्य हैं। हदीस सहीह को एक की सूचना होने के कारण अथवा कथाकार के निर्वोध होने का दावा करके अथवा बुद्धि में न आने का बहाना करके अथवा इसी प्रकार के अन्य कारणों से अस्वीकार करना सही नहीं है यह सब हदीसों के इंकार के विभिन्न रूप हैं जो अनेक सम्प्रदायों ने इसे नकारने तथा अस्वीकार करने के लिये अपना रखे हैं।

[1]अर्थात तुम तो (हे अहले किताब !) (शास्त्रधारियों) हमसे अकारण खिन्न हो जबकि इसके सिवाय हमारा कोई दोष नहीं कि हम अल्लाह तथा पवित्र क़ुरआन पर विश्वास रखते है तथा इसके पूर्व जो धर्मशास्त्र उतारे गये। क्या वह भी कोई दोष अथवा कलंक है अर्थात यह कलंक तथा निन्दा का विषय नहीं जैसाकि तुमने समझ लिया है हम तुम्हें बताते हैं कि बुराई के योग्य तथा कुपथ जो घृणा तथा निन्दा के पात्र हैं, कौन हैं ? वह लोग हैं जिन पर

The Ummah Technology Mission

وَإِذَا جَآءُوكُمْ قَالُوٓا۟ ءَامَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوا۟ بِٱلْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا۟ بِهِۦ ۗ وَٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا۟ يَكْتُمُونَ ﴿٦١﴾

(६१) तथा जब वे आप के पास आते हैं कि हम ईमान लाये, यद्यपि वह कुफ़्र लिये हुए आये थे तथा उसी कुफ़्र के साथ गये भी एवं यह जो कुछ छिपा रहे हैं, उसे अल्लाह तआला भली-भाँति जानता है।[1]

وَتَرَىٰ كَثِيرًا مِّنْهُمْ يُسَـٰرِعُونَ فِى ٱلْإِثْمِ وَٱلْعُدْوَٰنِ وَأَكْلِهِمُ ٱلسُّحْتَ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿٦٢﴾

(६२) तथा आप देखेंगे कि इन में से अधिकतर पाप के कार्यों की ओर, अत्याचार तथा क्रूरता की ओर एवं हराम माल खाने की ओर लपक रहे हैं, जो कुछ यह कर रहे हैं, वह अत्यधिक बुरे कर्म हैं।

لَوْلَا يَنْهَىٰهُمُ ٱلرَّبَّـٰنِيُّونَ وَٱلْأَحْبَارُ عَن قَوْلِهِمُ ٱلْإِثْمَ وَأَكْلِهِمُ ٱلسُّحْتَ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا۟ يَصْنَعُونَ ﴿٦٣﴾

(६३) उन्हें उनके पुजारी तथा ज्ञानी उनको झूठ बोलने तथा अवैध खाने से क्यों नही रोकते ? नि:सन्देह ये बुरे कर्म हैं, जो यह कर रहे हैं।[2]

अल्लाह की धिक्कार तथा रोष हुआ और कुछ को अल्लाह ने बन्दर और सुअर बना दिया तथा जिन्होंने राक्षस की पूजा की, तथा इस दर्पण में तुम भी अपना मुख तथा कर्म देख लो कि यह किनका इतिहास है तथा कौन लोग हैं, क्या यह तुम ही तो नहीं हो।

[1]यह द्वयवादियों (मुनाफ़िक़ों) का वर्णन है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में अविश्वास के साथ आते हैं तथा उसी के साथ वापस चले जाते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संगत तथा शिक्षा-दीक्षा का कोई प्रभाव उन पर कदाचित नहीं होता क्योंकि दिल में तो ईष्या छिपा होता है। तथा रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमे की सेवा में उपस्थिति का उद्देश्य मार्गदर्शन प्राप्त करना नहीं, बल्कि धोखा, छल, कपट करना होता है। तो फिर इस उपस्थिति का लाभ क्या हो सकता है ?

[2]यह ज्ञानियों धर्मगुरुओं एवं साधु, संतों की निन्दा है कि साधारण लोगों में से अधिकांश तुम्हारे समक्ष अवज्ञा एवं कुकर्म करते हैं परन्तु तुम उन्हें रोकते नहीं ऐसी दशा में तुम्हारा मौन घोर अपराध है, इससे विदित होता है कि सत्कर्मों के प्रचार तथा दुष्कर्मों से रोकने का कितना महत्व है और इसे त्याग देने पर कितनी कड़ी धमकी है, जैसाकि अहादीस (रसूल के कथनों) में इस विषय को सविस्तार एवं स्पष्टरूप से वर्णित किया गया है।

The Ummah Technology Mission

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ؕ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَآءُ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ؕ

(६४) तथा यहूदियों ने कहा कि अल्लाह (तआला) का हाथ बंधा हुआ है।[1] उन्हीं के हाथ बंधे हुए हैं तथा उनके इस कथन के कारण उन पर धिक्कार की गयी। अपितु अल्लाह तआला के दोनों हाथ खुले हुए हैं। जिस प्रकार चाहता है

---

[1]यह वही बात है जो सूरः *आले इमरान* की आयत संख्या १८१ में की गयी है कि जब अल्लाह तआला ने अपने मार्ग में व्यय करने की प्रेरणा दी तथा उसे अल्लाह को अच्छा ऋण देने के समान कहा गया तो इन यहूदियों ने कहा कि "अल्लाह तआला तो भिखारी है।" लोगों से ऋण माँग रहा है तथा वह उस उत्तम भाष्य शैली को न समझ सके जो उसके अन्दर निहित था। अर्थात सभी कुछ अल्लाह का दिया हुआ है। तथा अल्लाह के दिये हुए माल में से कुछ उसके मार्ग में व्यय कर देना, कोई ऋण नहीं है, परन्तु यह उसकी अति कृपा है कि वह उस पर भी अत्यधिक प्रतिफल प्रदान कर रहा है। यहाँ तक कि एक-एक दाने को सात-सात सौ दाने तक बढ़ा देता है। तथा उसको अच्छा ऋण इसलिए कहा गया है कि जितना तुम व्यय करोगे, अल्लाह तआला उससे कई गुना तुम्हें वापस लौटायेगा। مغلولة का अर्थ بخيلة किया गया है, जिसका अर्थ है कृपण। अर्थात यहूदियों का तात्पर्य यह नहीं था कि वास्तव में अल्लाह के हाथ बंधे हैं, अपितु उनका अर्थ यह था कि उसने अपने हाथ व्यय करने से रोके हुए हैं। (इब्ने कसीर) अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हाथ तो उन्हीं के बंधे हुए हैं। अर्थात कंजूसी तो उन्हीं का आचरण है। अल्लाह तआला के तो दोनों हाथ खुले हुए हैं, वह जिस प्रकार चाहता है व्यय करता है। वह अत्यधिक कृपालु तथा अत्यधिक प्रदान करने वाला है, सभी कोष उसी के पास हैं। इसके अतिरिक्त अपनी सृष्टि की सभी इच्छाओं तथा आवश्यकताओं का प्रबन्ध कर रखा है। हमें रात अथवा दिन में, यात्रा अथवा निवास में तथा अन्य अवस्थाओं में जिन-जिन चीजों की आवश्यकता होती है अथवा हो सकती है, सब वही उपलब्ध कराता है।

﴿وَءَاتَىٰكُم مِّن كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ ۚ وَإِن تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا ۗ إِنَّ الْإِنسَٰنَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ﴾

"तुमने जो कुछ उससे माँगा, वह उसने तुम्हें दिया, अल्लाह तआला की अनुग्रह इतनी है कि तुम गिन नहीं सकते मनुष्य ही मूर्ख है तथा अत्यधिक कृतघ्न है।" (सूरः *इब्राहीम*-३४)

हदीस में भी है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह का दाहिना हाथ भरा हुआ है, रात-दिन व्यय करता है परन्तु कोई कमी नहीं आती, ज़रा देखो जब से आकाश तथा धरती उसने बनाये हैं वह व्यय कर रहा है परन्तु उसके हाथ के कोष में कमी नहीं आयी ..... (अल-बुख़ारी किताबुल तौहीद, बॉब व काना अर्शुहु अलल मॉऐ मुस्लिम किताबुज्जकात बॉबुल हस्से अलन्नफक़:)

The Ummah Technology Mission

وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ كُلَّمَاۤ اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۶۴﴾

व्यय करता है तथा जो कुछ तेरी ओर तेरे प्रभु की ओर से उतारा जाता है वह उनमें से अधिकतर को अवहेलना तथा कुफ्र में बढ़ा देता है, तथा हमने उनमें आपस में ही क़ियामत तक के लिए द्वेष तथा ईर्ष्या डाल दिया है, वह जब कभी भी युद्ध की आग को भड़काना चाहते हैं अल्लाह तआला उसको बुझा देता है।[1] यह देश भर में आतंक तथा उपद्रव मचाते फिरते हैं।[2] तथा अल्लाह तआला उपद्रवियों से प्रेम नहीं करता।

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿۶۵﴾

(६५) तथा यदि यह अहले किताब ईमान लाते तथा अल्लाह से डरते।[3] तो हम उनकी सभी बुराईयाँ मिटा देते तथा उन्हें अवश्य सुखद स्वर्ग में ले जाते।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ

(६६) यदि वह तौरात तथा इंजील तथा उन धर्मशास्त्रों की स्थापना करते जो उनकी ओर उनके पालनहार की ओर से उतारी गई है[4]

---

[1]अर्थात यह जब भी आपके विरुद्ध कोई षडयन्त्र करते हैं अथवा लड़ाई के कारण उत्पन्न करते हैं, तो अल्लाह तआला उनको निष्काम कर देता तथा उनके षडयन्त्र को उन्हीं पर पलटा देता है। उन्हीं का जूता उन्हीं का सिर वाली बात पैदा कर देता।

[2]उनका दूसरा आचरण यह है कि धरती पर उपद्रव फैलाने का भरसक प्रयत्न करते हैं। वास्तविकता यह है कि अल्लाह तआला उपद्रवियों को प्रिय नहीं रखता।

[3]अर्थात वह ईमान जिसकी माँग अल्लाह तआला करता है उनमें सबसे विशेष मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाना है, जैसाकि उनके ऊपर उतारी गयी किताबों में भी उनको इसका आदेश दिया गया है। तथा अल्लाह से डरो और अल्लाह के क्रोध से बचो, जिनमे में सबसे विशेष शिर्क है जिसमें वे लीन हैं तथा वह इंकार है जो अन्तिम रसूल के साथ वह कर रहे हैं।

[4]तौरात तथा इंजील के पालन करने का अर्थ उनके उन आदेशों का पालन है जो उनमें उन्हें दिये गये हैं तथा उन्हीं में एक आदेश अन्तिम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान

The Ummah Technology Mission

تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٦﴾

तो अपने ऊपर तथा पैरों के नीचे से खाते।[1] उनमें एक गिरोह संतुलित है तथा अधिकांश दुराचार कर रहे हैं।[2]

يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٧﴾

(६७) हे रसूल! (सन्देशवाहक) आपकी ओर आपके पोषक के पास से जो (सन्देश) उतारा गया है उसे पहुँचा दें, यदि आप ने यह नहीं किया तो अपने पालनहार का सन्देश नहीं पहुँचाया[3] और अल्लाह लोगों से आप की

लाना भी था। مَا أُنْزِلَ का अर्थ सभी आसमानी किताबें हैं, जिनमें क़ुरआन करीम भी सम्मिलित है। तात्पर्य यह है कि यह इस्लाम धर्म स्वीकार कर लें।

[1]ऊपर-नीचे का अर्थ प्राचुर्ता के रूप में लिया गया है अथवा ऊपर से का अर्थ अवश्यकतानुसार आकाश से तथा नीचे से का अर्थ धरती से है जिसका परिणाम खाद्य पदार्थ की अधिकता है। जिस प्रकार से एक अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ ءَامَنُوا۟ وَاتَّقَوْا۟ لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ﴾

"यदि बस्ती वाले ईमान लाये होते और उन्होंने अल्लाह का भय रखा होता तो हम उन पर आकाश तथा धरती की विभूतियों के (द्वार) खोल देते।" (सूरः अल-आराफ़-९६)

[2]परन्तु उनके बहुमत ने ईमान का यह मार्ग नही अपनाया तथा वह अपने कुफ़्र पर अड़े रहे एवं मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (दूत्तव) के इंकार पर दृढ़ रहे। इसी मार्ग तथा इंकार को यहाँ दुराचार कहा गया है। मध्यम नीति को अपनाने वाले एक गुट से तात्पर्य यहाँ अब्दुल्लाह विन सलाम जैसे आठ अथवा नौ अन्य व्यक्ति हैं जो मदीने के यहूदियों में से मुसलमान हुए।

[3]इस आदेश का यह लाभ है कि जो भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारा गया है उसे विना किसी भय तथा विलम्ब के आप लोगों तक इसे पहुँचा दें। अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसा ही किया। आदरणीया आयशा (رضي الله عنها) फ़रमाती हैं कि "जो व्यक्ति यह शंका करे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ छिपा लिया, उसने अवश्य झूठ कहा।" सहीह बुख़ारी ४८५५) तथा आदरणीय अली (رضي الله عنه) से भी पूछा गया कि तुम्हारे पास क़ुरआन के अतिरिक्त प्रकाशना (वह्यी) के द्वारा उतारी गयी कोई बात है? तो उन्होंने सौगन्ध खाकर नकारात्मक उत्तर दिया तथा कहा . (إِلاَّ فَهْمًا يُعْطِيْهِ اللهُ رَجُلًا) (अपितु क़ुरआन की समझ है जिसे चाहे अल्लाह तआला प्रदान कर दे) (सहीह बुख़ारी ६९०३) हज्जतुल विदाआ के अवसर पर आप

The Ummah Technology Mission

रक्षा करेगा ।[1] नि:संदेह अल्लाह विश्वासहीनों को मार्गदर्शन नहीं देता ।

قُلْ يَاأَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَيْءٍ حَتّٰى تُقِيمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ ۗ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۚ

(६८) आप कह दें कि हे अहले किताब ! तुम्हारा कोई आधार नहीं जब तक कि तौरात तथा इंजील एवं जो भी (धर्मशास्त्र) तुम्हारे पालक की ओर से तुम्हारे पास उतारा गया है उसकी स्थापना (पालन) न करो तथा जो आपकी ओर (पवित्र क़ुरआन) आप के पोषक की

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक लाख अथवा एक लाख चालीस हजार के जन समूह के समक्ष पूछा, "तुम मेंरे विषय में क्या कहोगे ?" उन्होंने उत्तर दिया ।

(نَشْهَدُ أَنَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ، وَأَدَّيْتَ، وَنَصَحْتَ).

"हम गवाही देंगे कि आपने अल्लाह तआला का संदेश पहुँचा दिया तथा दायित्व अदा कर दिया एवं भलाई कर दी ।"

"आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आकाश की ओर उंगली उठाकर संकेत करते हुए फ़रमाया (तीन बार) اللهم هل بلّغت अथवा اللهم فاشهد (तीन बार) (सहीह मुस्लिम किताबुल हज बाब हज्जतुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अर्थात हे अल्लाह ! मैंने तेरा संदेश पहुँचा दिया तू गवाह रह, तू गवाह रह, तू गवाह रह ।"

[1]यह रक्षा अल्लाह तआला ने चमत्कारिक रूप से भी की, तथा सांसारिक साधनों से भी । सांसारिक साधनों में इस आयत के उतरने से बहुत पूर्व अल्लाह तआला ने सर्वप्रथम आप के चाचा अबू तालिब के दिल में आपका स्वभाविक प्रेम डाल दिया तथा वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रक्षा करते रहे । उनका कुफ़्र पर बना रहना भी इन कारणों का एक भाग प्रतीत होता है । क्योंकि यदि वह मुसलमान हो जाते तो शायद क़ुरैश के सरदारों के दिलों में उनका वह भय न रहता, जो उनके धर्म के अनुयायी होने के कारण उनके अन्तिम समय तक बना रहा । फिर उनके देहान्त के उपरान्त कुछ अन्य क़ुरैशी सरदारों द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रक्षा की, उसके पश्चात मदीने के अंसारों द्वारा आप की रक्षा की । फिर जब यह आयत उतरी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुरक्षा के प्रत्यक्ष प्रबन्धों को हटा दिया । उसके पश्चात अनेक बड़े ख़तरे पेश आये, परन्तु अल्लाह तआला ने रक्षा की । अत: वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा अल्लाह तआला ने समय-समय पर यहूदियों के छल-षडयन्त्र से सूचित करके एक भयानक ख़तरे की घटना से बचा लिया तथा घमासान युद्ध के समय काफ़िरों के ख़तरनाक आक्रमणों से भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सुरक्षित रखा ।

The Ummah Technology Mission

रक्षा करेगा ।[1] निःसंदेह अल्लाह विश्वासहीनों को मार्गदर्शन नहीं देता ।

قُلْ يَاأَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَيْءٍ حَتّٰى تُقِيمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ ۗ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۚ

(६८) आप कह दें कि हे अहले किताब ! तुम्हारा कोई आधार नहीं जब तक कि तौरात तथा इंजील एवं जो भी (धर्मशास्त्र) तुम्हारे पालक की ओर से तुम्हारे पास उतारा गया है उसकी स्थापना (पालन) न करो तथा जो आपकी ओर (पवित्र क़ुरआन) आप के पोषक की

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक लाख अथवा एक लाख चालीस हज़ार के जन समूह के समक्ष पूछा, "तुम मेंरे विषय में क्या कहोगे ?" उन्होंने उत्तर दिया ।

(نَشْهَدُ أَنَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ، وَأَدَّيْتَ، وَنَصَحْتَ).

"हम गवाही देंगे कि आपने अल्लाह तआला का संदेश पहुँचा दिया तथा दायित्व अदा कर दिया एवं भलाई कर दी ।"

"आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आकाश की ओर उंगली उठाकर संकेत करते हुए फ़रमाया (तीन बार) اللهم هل بلغت अथवा اللهم فاشهد (तीन बार) (सहीह मुस्लिम किताबुल हज बाब हज्जतुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अर्थात हे अल्लाह ! मैंने तेरा संदेश पहुँचा दिया तू गवाह रह, तू गवाह रह, तू गवाह रह ।"

[1]यह रक्षा अल्लाह तआला ने चमत्कारिक रूप से भी की, तथा सांसारिक साधनों से भी । सांसारिक साधनों में इस आयत के उतरने से बहुत पूर्व अल्लाह तआला ने सर्वप्रथम आप के चाचा अबू तालिब के दिल में आपका स्वभाविक प्रेम डाल दिया तथा वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रक्षा करते रहे । उनका कुफ़्र पर बना रहना भी इन कारणों का एक भाग प्रतीत होता है । क्योंकि यदि वह मुसलमान हो जाते तो शायद क़ुरैश के सरदारों के दिलों में उनका वह भय न रहता, जो उनके धर्म के अनुयायी होने के कारण उनके अन्तिम समय तक बना रहा । फिर उनके देहान्त के उपरान्त कुछ अन्य क़ुरैशी सरदारों द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रक्षा की, उसके पश्चात मदीने के अंसारों द्वारा आप की रक्षा की । फिर जब यह आयत उतरी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुरक्षा के प्रत्यक्ष प्रबन्धों को हटा दिया । उसके पश्चात अनेक बड़े ख़तरे पेश आये, परन्तु अल्लाह तआला ने रक्षा की । अतः वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा अल्लाह तआला ने समय-समय पर यहूदियों के छल-षडयन्त्र से सूचित करके एक भयानक ख़तरे की घटना से बचा लिया तथा घमासान युद्ध के समय काफ़िरों के ख़तरनाक आक्रमणों से भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सुरक्षित रखा ।

The Ummah Technology Mission

فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾

ओर से उतारा गया है वह इनमें से अधिकतर की हठ तथा कुफ़्र को बढ़ायेगा [1] अतः आप अविश्वासियों पर खेद न करें।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٩﴾

(६९) मुसलमानों, यहूदियों, तारों के पुजारियों एवं ईसाईयों में से जो भी अल्लाह तथा अन्त दिवस (प्रलय) के प्रति विश्वास करेगा तथा सदाचार करेगा उन्हीं पर कोई भय नहीं न वह शोक करेंगे।[2]

لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا كَذَّبُوْا

(७०) हमने इस्राईल के पुत्रों (यहूदियों) से वचन लिया तथा उनके पास रसूलों को भेजा। जब कोई रसूल उनके पास ऐसा आदेश लाया जो उनका मन स्वीकार न करता था तो

---

[1]यह मार्गदर्शन तथा भटकाव उस नियमानुसार है जो अल्लाह तआला की विधि है। अर्थात जिस प्रकार कुछ कर्मों तथा चीजों के कारण से ईमान, सत्कर्म तथा लाभकारी ज्ञान में बढ़ोत्तरी होती है। उसी प्रकार इंकार तथा अवज्ञा के कारण कुफ़्र में भी बढ़ोत्तरी होती है। इस विषय की चर्चा अल्लाह तआला ने क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर की है। जैसे :

﴿ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا هُدًى وَشِفَآءٌ ۖ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِىٓ ءَاذَانِهِمْ وَقْرٌ وَهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ۚ أُولَٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِن مَّكَانٍۭ بَعِيدٍ ﴾

"कह दीजिए ! यह क़ुरआन ईमान वालों के लिए मार्गदर्शन तथा रोग निवारक है तथा जोलोग ईमान नहीं लाते उनके कान बहरे हैं और यह उनके पक्ष में अंधापन है। वहरेपन के कारण उनको जैसे दूर स्थान से आवाज़ दी जाती हो।" (सूरः *हा मीम अल-सजदः*-४४)

﴿ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْءَانِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۙ وَلَا يَزِيدُ الظَّٰلِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ﴾

"और हम क़ुरआन के द्वारा वह चीज उतारते हैं जो ईमानवालों के लिए स्वास्थ्य तथा कृपा है तथा अत्याचारी के लिए तो इससे हानि ही होती है।" (सूरः *बनी इस्राईल*-८२)

[2]यह वही विषय है जो सूरः *अल-बक़रः* की आयत संख्या ६२ में वर्णित हो चुका है, उसे देख लिया जाये।

The Ummah Technology Mission

وَفَرِيقًا يَقْتُلُونَ ﴿٧٠﴾

उन्होंने एक गुट को झुठलाया तथा एक गुट की हत्या करते रहे।

وَحَسِبُوْٓا اَلَّا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ۭ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٧١﴾

(७१) तथा समझ बैठे कि कोई दण्ड न मिलेगा, इसलिये अंधे-बहरे हो गये। फिर अल्लाह (तआला) ने उनको क्षमा कर दिया उसके उपरान्त भी उनमें से अधिकतर लोग अंधे-बहरे हो गये।[1] और अल्लाह (तआला) उनके कर्मों को भली-भाँति देखने वाला है।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۭ وَقَالَ الْمَسِيْحُ يٰبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۭ اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ

(७२) वह लोग काफ़िर हो गये जिन्होंने कहा कि मरियम का पुत्र मसीह ही अल्लाह है[2] जबकि मसीह ने (स्वयं) कहा कि हे इस्राईल के पुत्रो ! मेरे पोषक तथा अपने पोषक अल्लाह की पूजा करो[3] क्योंकि जो अल्लाह के साथ

---

[1]अर्थात समझते थे कि कोई दण्ड नहीं मिलेगा। परन्तु अल्लाह द्वारा वर्णित नियमों के आधार पर दण्ड निर्धारित हुआ कि यह सत्य को देखने से नेत्रहीन हो गये तथा सत्य को सुनने से वधिर हो गये तथा क्षमा माँग लेने के उपरान्त भी यही कर्म उन्होंने दोहराया है, तो इस का वही दण्ड भी पुनः दिया गया।

[2]यही विषय आयत संख्या १७ में आ चुका है यहाँ अहले किताब के कुपथा की चर्चा पुनः की जा रही है। इसमें उनके उस गुट की धर्म भ्रष्टता का वर्णन है जो आदरणीय मसीह के स्वयं अल्लाह होने पर विश्वास करता है।

[3]अर्थात आदरणीय ईसा अर्थात मसीह पुत्र मरियम ने माँ की गोद में (अल्लाह के आदेश से जबकि बच्चे उस अवस्था में बोलने की शक्ति नही रखते) सर्वप्रथम अपने मुख से अपने को भक्त ही कहा तथा कहा।

﴿ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ ءَاتَىٰنِيَ ٱلْكِتَٰبَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ﴾

"मैं अल्लाह का भक्त हूँ तथा उसका रसूल हूँ, मुझे उसने किताब भी प्रदान की है।"
(सूरः मरियम-३०)

आदरणीय मसीह नें यह नहीं कहा कि मैं अल्लाह अथवा अल्लाह का पुत्र हूँ केवल यह कहा कि मैं, अल्लाह का दास हूँ। तथा व्यस्क अवस्था में भी उन्होंने यही आमन्त्रण दिया।

﴿ إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَٱعْبُدُوهُ هَٰذَا صِرَٰطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴾

The Ummah Technology Mission

اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾

मिश्रण (शिर्क) करेगा अल्लाह ने उस पर स्वर्ग निषेध कर दी है तथा उसका ठिकाना नरक है एवं अत्याचारियों (मिश्रणवादियों) का कोई सहायक न होगा।[1]

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ ثَلَاثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۚ وَإِنْ

(७३) वह लोग भी पूर्ण रूप से काफ़िर हो गये जिन्होंने कहा कि अल्लाह तीन का तीसरा है।[2] वास्तव में अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त कोई

"नि:संदेह मेरा और तुम्हारा प्रभु अल्लाह है, उसी की उपासना करो, यही सीधा मार्ग है।" (*सूरः आले इमरान-५१*)

यह वही शब्द हैं जो माँ की गोद में कहे थे (देखिये *सूरः मरियम-३६*) तथा जब क़ियामत के निकट वह आकाश से उतरेंगे, जिसकी सूचना सहीह हदीस में दी गयी है तथा जिस पर अहले सुन्नत का विश्वास है, तब भी वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं के अनुसार लोगों को अल्लाह की तौहीद (ऐकश्वरवाद) तथा उसकी भक्ति की ओर बुलायेंगें, न कि अपनी उपासना की ओर।

[1]आदरणीय मसीह ने अपनी भक्ति तथा रिसालत का प्रदर्शन उस समय भी किया था जब वह माँ की गोद में स्तनपान की आयु में थे। पुनः व्यस्क अवस्था में भी यही घोषणा की तथा साथ ही साथ शिर्क की पहचान तथा बचावो की विधि एवं बुराईयाँ भी वर्णित कर दीं कि मूर्तिपूजक पर स्वर्ग निषेध है तथा उसका कोई सहायक भी न होगा, जो उसे नरक से निकाल लाये, जैसाकि मिश्रणवादियों का भ्रम है।

[2]यह ईसाईयों के दूसरे गुट का वर्णन है, जो तीन के योग को ईश्वर मानता है तथा उसे त्रिमूर्ति कहता है। यद्यपि इसकी व्याख्या तथा वर्णन में उनके मध्य स्वयं मतभेद हैं। परन्तु उचित बात यह है कि उन्होंने आदरणीय ईसा तथा उनकी माता आदरणीया मरियम को भी पूज्य बना लिया है। जैसा कि क़ुरआन ने उसका विस्तार पूर्वक वर्णन किया है अल्लाह तआला प्रलय के दिन आदरणीय ईसा से प्रश्न करेगा।

﴿ءَأَنتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَٰهَيْنِ مِن دُونِ اللَّهِ﴾

"क्या तूने लोगों से कहा था कि मुझे तथा मेरी माता को अल्लाह के अतिरिक्त (पूज्य) बना लेना ?" (*सूरः अल-मायदः-११६*)

इससे ज्ञात हुआ कि ईसा तथा मरियम, इन दोनों को ईसाईयों ने पूज्य बनाया, तथा अल्लाह तीसरा पूज्य हुआ, जो त्रिमूर्ति में तीसरा (तीन में का तीसरा) कहलाया। पहले विश्वास की तरह अल्लाह तआला ने इसे भी अधर्म कहा है।

The Ummah Technology Mission

لَمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾

पूज्य नहीं तथा यदि यह लोग अपने कथन से न रुके तो उनमें से जो कुफ़्र में रहेंगे उन्हें कठोर यातनायें अवश्य पहुंचेंगी।

اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٤﴾

(७४) यह लोग अल्लाह (तआला) की ओर क्यों नहीं झुकते तथा क्यों नहीं क्षमा-याचना करते ? अल्लाह (तआला) अत्यधिक क्षमाशील तथा अत्यधिक कृपालु है।

مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٧٥﴾

(७५) मरियम के पुत्र मसीह मात्र पैग़म्बर होने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। उससे पूर्व भी बहुत से पैग़म्बर हो चुके हैं। उसकी माता एक पवित्र एवं सत्यवती स्त्री थीं।[1] दोनो (माता-पुत्र) भोजन किया करते थे।[2] आप देखिये हम किस प्रकार तर्क उनके समक्ष प्रस्तुत करते हैं, फिर विचार कीजिए कि वे किस प्रकार पलटाये जाते हैं।

---

[1] صِدِّيقَة का अर्थ है विश्वासी तथा पवित्र अर्थात उन्होंने भी आदरणीय ईसा के दूतत्व को माना तथा उस पर विश्वास किया। इसका अर्थ यह हुआ कि वह ईशदूत नहीं थीं जैसा कि कुछ लोगों को भ्रम हुआ है। तथा उन्होंने आदरणीया मरियम सहित आदरणीया सारह (इसहाक़ की माँ) तथा आदरणीया मूसा की माँ को ईशदूता बना दिया है। जिसका तर्क यह देते हैं कि प्रथम वर्णित दो स्त्रियों से स्वर्ग दूत ने बात की तथा आदरणीय मूसा की माता को स्वयं अल्लाह तआला ने वह्यी किया। यह बात करनी तथा उपदेश देना दूतत्व का तर्क है। परन्तु अधिकतर विद्वानों के विचार से यह प्रमाण ऐसा नहीं जो क़ुरआन के स्पष्ट कथन की तुलना कर सके जो क़ुरआन ने स्पष्ट रूप से वर्णन किया है कि हमने जितने रसूल भी भेजे वह पुरुष थे। (सूरः यूसुफ़-१०९)

[2] इसमें आदरणीय मसीह तथा आदरणीया मरियम दोनों के पूज्य न होने तथा मनुष्य होने को प्रमाणित किया है। क्योंकि भोजन करना, यह मनुष्य की आवश्यकता तथा इच्छाओं के अनुरूप है। जो ईश हो, वह तो इन गुणों से तो रहित है, बल्कि हर प्रकार से रहित होता है। अर्थात दोनों साधारण मनुष्य थे तथा उनमें सभी मानवीय विशेषतायें पाई जाती थीं।

The Ummah Technology Mission

قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٧٦

(७६) आप कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह के अतिरिक्त उनको पूजते हो जो न तो तुम्हारी हानि के मालिक हैं तथा न किसी प्रकार के लाभ के, अल्लाह (तआला) ही भली-भाँति जानने वाला तथा पूर्णरूप से जानने वाला है।[1]

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوْۤا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ۝٧٧

(७७) कह दीजिए, हे अहले किताब ! अपने धर्म में अनर्थ अतिश्योक्ति न करो।[2] तथा उन लोगों की इन्द्रीय इच्छाओं का अनुकरण न करो, जो पहले से भटक चुके है[3] तथा बहुतों को भटका चुके हैं। तथा सीधे मार्ग से हट गये हैं।

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ

(७८) इस्राईल की सन्तान के काफ़िरों को (आदरणीय) दाऊद तथा (आदरणीय) ईसा पुत्र मरियम के मुख से धिक्कारा गया।[4] इस

---

[1]यह मूर्तिपूजकों की कुबुद्धि का स्पष्टीकरण किया जा रहा है कि उन्होंने ऐसों को पूज्य बना रखा है जो किसी को न लाभ पहुँचा सकते हैं तथा न हानि, वरन् लाभ-हानि तो दूर की बात, वह तो किसी बात को सुनने तथा किसी की दशा को जानने की ही शक्ति नहीं रखते हैं। यह शक्ति केवल अल्लाह ही की है। इसलिए कामद तथा संकट हरि मात्र वही है।

[2]अर्थात सत्य का अनुसरण करने में सीमा उल्लंघन न करो तथा जिनके आदर करने का आदेश दिया गया है, उसमें अतिश्योक्ति करके नबूवत के पद से उठा कर पूज्य के स्थान पर आसीन न कर दो, जैसे कि आदरणीय मसीह के पक्ष में तुमने किया। अतिश्योक्ति प्रत्येक समय में शिर्क तथा भटकाव का साधन रही है। मुसलमान भी इस अतिश्योकित से सुरक्षित नहीं रह सके। उन्होंने कुछ धर्मविदों के विषय में अतिश्योक्ति किया तथा उनके विचार, कथन यहाँ तक कि उनसे सम्बन्धित धार्मिक निर्णय तथा विचारों को भी रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस की अपेक्षा प्राथमिकता दी।

[3]अर्थात अपने से पूर्व के लोगों के पीछे न लगो, जो एक नबी को पूज्य बनाकर स्वयं कुपथ हुए हैं तथा दूसरों को भी कुपथ बनाया है।

[4]अर्थात ज़बूर में जो आदरणीय दाऊद पर तथा इंजील में जो आदरणीय ईसा पर उतरी तथा अब यही धिक्कार क़ुरआन करीम के द्वारा उन पर की जा रही है, जो परम आदरणीय मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतरा है। धिक्कार का अर्थ है अल्लाह की कृपा तथा अनुग्रह से दूरी।

The Ummah Technology Mission

ذٰلِكَ بِمَا عَصَوا وَّ كَانُوا يَعْتَدُوْنَ ﴿٧٩﴾

कारण कि वे अनुज्ञा करते थे तथा सीमा का उल्लंघन करते थे।[1]

كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٩﴾

(७९) वे आपस में एक-दूसरे को बुरे कामों से जो वह करते थे रोकते न थे।[2] जो कुछ यह करते थे अवश्य वह बहुत बुरा था।

تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿٨٠﴾

(८०) उनमें के अधिकतर लोगों को आप देखेंगें कि वे काफ़िरों से मित्रता करते हैं। जो कुछ उन्होंने अपने आगे भेज रखा है वह बहुत बुरा है, (यह) कि अल्लाह (तआला) उनसे अप्रसन्न हुआ तथा वे सदैव यातना में रहेंगे।[3]

---

[1]यह धिक्कार के कारण हैं १. अवज्ञाकारिता, अर्थात कर्तव्य का त्याग तथा निषेध कर्मों का करना। उन्होंने अल्लाह की अवज्ञा की। २. अतिक्रम, अर्थात धर्म में अतिशय नवीन रीतियाँ बनाकर उन्होंने उल्लंघन किया।

[2]इस पर अधिक यह कि वह एक-दूसरे को बुराई से नहीं रोकते थे, जो स्वयं एक बहुत बड़ा अपराध है। कुछ व्याख्याकारों ने इसी निषेध त्याग को अवज्ञता तथा अतिक्रम माना है, जो धिक्कार का कारण बना। अन्ततः दोनों अवस्थाओं में बुराई को देखते हुए बुराई से न रोकना, बहुत बड़ा अपराध तथा धिक्कार एवं अल्लाह के क्रोध का कारण है। हदीस में भी इस अपराध पर अत्यधिक घोर चेतावनियाँ आई हैं। एक हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "सर्वप्रथम कमी जो इस्राईल की सन्तान में आयी वह यह थी कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को बुराई करते हुए देखता तो कहता कि अल्लाह से डरो तथा यह बुराई छोड़ दो, यह तेरे लिए उचित नहीं। परन्तु दूसरे दिन फिर उसके साथ उसे खान-पान तथा उठने-बैठने में कोई संकोच अथवा लज्जा का आभास न होता (अर्थात उसके साथ एक प्राण दो शरीर तथा मित्र बन जाता) जबकि ईमान की अभियाचना यह थी कि उससे घृणा तथा सम्बन्ध विच्छेद करता जिसके कारण अल्लाह ने उनके मध्य आपस में कटुता डाल दी तथा वह अल्लाह के धिक्कार के पात्र हुए।" पुनः फ़रमाया कि, "अल्लाह की सौगन्ध तुम अवश्य लोगों को पुण्य करने का आदेश दिया करो तथा बुराई से रोका करो, अत्याचारी का हाथ पकड़ लिया करो (वरन् तुम्हारी भी यही दशा होगी)" "अल-हदीस" (अबू दाऊद किताबुल मलाहिम संख्या ४३३६) एक दूसरे कथन में इस कर्तव्य के त्याग पर यह चेतावनी दी गयी है कि तुम अल्लाह की यातनाओं के योग्य बन जाओगे, तुम अल्लाह से प्रार्थना भी करोगे तो स्वीकार न होगी। (मुसनद अहमद भाग ५ पृ० ३८८)

[3]यह काफ़िरों से मित्रता का परिणाम है कि अल्लाह तआला उन पर क्रोधित हुआ तथा इसी क्रोध के कारण स्थाई रूप से नरक की यातना है।

The Ummah Technology Mission

وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨١﴾

(८१) यदि उन्हें अल्लाह (तआला) पर, नबी पर, तथा जो उतारा गया है उस पर ईमान होता तो यह काफ़िरों से मित्रता न करते, परन्तु उनमें से अधिकतर लोग दुराचारी (ग़लतकार) हैं।[1]

لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٨٢﴾

(८२) नि:सन्देह आप ईमानवालों का कटु शत्रु यहूदियों तथा मूर्तिपूजकों को पायेंगे।[2] तथा ईमानवालों के सबसे अधिक निकटता की मित्रता आप अवश्य उनमें पायेंगें जो अपने आप का को ईसाई कहते हैं, यह इसलिए कि उनमें विद्वान तथा बैरागी हैं तथा इस कारण कि वे घमण्ड नहीं करते।[3]

---

[1]इसका अर्थ यह है कि जिस व्यक्ति के अन्दर सत्य रूप में विश्वास होगा वह धर्मभ्रष्टों से कभी मित्रता नहीं करेगा।

[2]इसलिए कि यहूदियों में शत्रुता तथा इंकार, सत्य से विमुखता तथा अहंकार, तथा ज्ञानियों एवं ईमानवालों की आलोचना की भावना बहुत पायी जाती है। यही कारण है कि नवियों की हत्या तथा उनको झुठलाना उनका आचरण रहा है। यहाँ तक कि उन्होंने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हत्या के कई बार षड्यन्त्र रचे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू भी किया हर प्रकार से हानि पहुँचाने की घृणित योजना बनाई तथा इस सम्बन्ध में मूर्तिपूजकों की भी यही दशा रही है।

[3] رُهبان से तात्पर्य पुनीत उपासक एवं बैरागी तथा قسّسين से तात्पर्य ज्ञानी तथा वक्ता है अर्थात इन ईसाईयों में ज्ञान एवं नम्रता है इसलिये उनमें यहूदियों की भांति इंकार तथा अहंकार नहीं। इसके अतिरिक्त ईसाई धर्म में क्षमा की शिक्षा की प्रधानता है। यहाँ तक की उनके ग्रन्थों में लिखा है कि कोई तुम्हारे दायें गाल पर मारे तो बायाँ गाल उसके सामने कर दो इन कारणों से यह यहूदियों की अपेक्षा मुसलमानों से निकट हैं। ईसाईयों के यह आचरण यहूदियों के सापेक्ष हैं फिर भी जहाँ तक इस्लाम से शत्रुता का सम्बन्ध है कुछ अन्तर के साथ ईसाईयों में भी विद्यमान है। जैसाकि ईसाईयों तथा मुसलमानों के बीच सदियों से जारी युद्ध से स्पष्ट है तथा जो वर्तमान में भी जारी है और अब तो इस्लाम के विरोध में दोनों मिलकर कार्यरत हैं इसलिये इस्लाम ने दोनों की मित्रता से मना किया है।

The Ummah Technology Mission

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ أَعْيُنَهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ ۖ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿٨٣﴾

(८३) तथा जब वह रसूल की ओर उतारे हुए (संदेश) सुनते हैं, तो आप उनकी आखों से बहते अश्रु की धारा को देखते हैं, इस कारण से कि उन्होंने सत्य को पहचान लिया। वह कहते हैं हे हमारे प्रभु ! हम मुसलमान हो गये। बस तू हमें भी साक्षियों में लिख ले।

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَن يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ﴿٨٤﴾

(८४) तथा हमें क्या है कि अल्लाह तथा उस सत्य के प्रति विश्वास न करें जो हमारे पास आया है तथा यह आशा न करें कि हमारा पोषक हमें सदाचारियों में सम्मिलित कर देगा।[1]

---

[1]इथोपिया (हब्शा) में जहाँ मुसलमान अपने मक्की युग में दो बार हिजरत (प्रस्थान) करके गये। असहमा: नजाशी का राज्य था, यह ईसाई देश था। यह आयत इथोपिया के निवासी ईसाईयों के बारे में उतरी है परन्तु कथनों के आधार पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय अम्र बिन उमैया जमरी को अपना पत्र देकर नजाशी के पास भेजा था, जो उन्होंने जाकर उसे सुनाया। नजाशी ने वह पत्र सुन कर इथोपिया में रह रहे प्रवासी मुसलमानों तथा आदरणीय जाफ़र पुत्र अबू तालिब को अपने पास बुलाया तथा अपने विद्वानों, पुजारियों, पादरियों आदि को भी एकत्रित कर लिया, फिर आदरणीय जाफ़र को क़ुरआन करीम पढ़ने का आदेश दिया। आदरणीय जाफ़र ने सूर: मरियम पढ़ी, जिसमें आदरणीय ईसा के चमत्कारिक जन्म तथा उनके भक्तत्व तथा रिसालत (दूतत्व) का वर्णन है, जिसे सुनकर वे बड़े प्रभावित हुए तथा आखों से अश्रु प्रवाहित हो गये एवं ईमान ले आये। कुछ लोग कहते हैं कि नजाशी ने अपने कुछ धर्मज्ञों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेजा था। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ुरआन सुनाया तो उनकी आँखों से अश्रु की धारा प्रवाहित हो गयी तथा ईमान ले आये। (फ़तहुल क़दीर) इन आयतों में क़ुरआन करीम सुनकर उन पर जो प्रभाव हुआ, उसका चित्रण किया गया है। तथा उनके विश्वास करने का वर्णन है पवित्र क़ुरआन में अन्य स्थानों पर भी ईसाईयों के इस प्रकार ईमान लाने के वर्णन हैं। जैसे

﴿وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِمْ خَاشِعِينَ لِلَّهِ﴾ [آل عمران: ١٩٩]

The Ummah Technology Mission

فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۸۵﴾

(८५) तोअल्लाह ने उनकी इस प्रार्थना के कारण ऐसे उद्यान दिये जिनके नीचे नहरें प्रवाहित हैं, जिसमें सदा निवास करेगें तथा यही सदाचारियों का प्रत्युपकार है।

وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِیْمِ ﴿۸۶﴾

(८६) तथा जो अविश्वासी हो गये एवं हमारी आयतों को झुठला दिये वही नरकवासी हैं।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَیِّبٰتِ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ

(८७) हे ईमानवालो ! उन पवित्र वस्तुओं को अवैध न बनाओ जिन्हें अल्लाह ने तुम्हारे लिये वैध बना दिया[1] तथा अतिक्रमण न करो,

---

"नि:सन्देह अहले किताब में कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो अल्लाह तथा उस किताब पर जो तुम पर उतारी गयी है तथा उस पर जो उन पर उतारी गयी थी ईमान रखते हैं तथा अल्लाह के समक्ष विनती करते हैं।" (सूरः *आले-इमरान*-१९९)

तथा हदीस में आता है कि जब नजाशी के निधन का समाचार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिला, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से कहा कि "(इथोपिया) हब्शा में तुम्हारे भाई का देहान्त हो गया है, उसकी नमाज़ पढ़ो।" अत: एक रेगिस्तान में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी नमाज़ जनाज़: (गायबाना) अदा फ़रमायी। (सहीह बुख़ारी मनाकिबुल अन्सार व किताबुल जनाएज़, सहीह मुस्लिम किताबुल जनाएज़)। एक अन्य हदीस में ऐसे अहले किताब के विषय में जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत (दूतत्व) पर ईमान लाये, बताया गया है कि उन्हें दुगना प्रतिफल मिलेगा। (सहीह बुख़ारी किताबुल इल्म वल निकाह)

[1]हदीस में आता है कि एक व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ तथा कहने लगा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ! जब मैं मांस खाता हूँ तो सम्भोग की इच्छा प्रबल हो जाती है, इसलिए मैंने अपने ऊपर मांस हराम (निषेध) कर लिया है, जिस पर यह आयत उतरी। सहीह त्रिमिज़ी, अलबानी, भाग ३ पृष्ठ ४६) इसी प्रकार उतरने के कारण के अतिरिक्त अन्य कथनों से सिद्ध है कि कुछ सहचर संयम तथा आराधना के लिए कुछ वैध वस्तुओं से (जैसे स्त्रियों से विवाह करने, रात के समय सोने तथा दिन के समय खाने-पीने से) रुकना चाहते थे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसकी सूचना मिली तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसा करने से रोका तथा मना किया। आदरणीय उस्मान बिन मज़ऊन भी अपनी पत्नी से अलग रहने लगे थे,

The Ummah Technology Mission

الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٨٧﴾

नि:सन्देह अल्लाह अतिकारियों से प्रेम नहीं करता।

وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾

(८८) तथा अल्लाह (तआला) ने जो चीज़ें तुम्हें दी हैं उनमें से वैधानिक रूचिकर वस्तुऐं खाओ तथा अल्लाह तआला से डरो, जिस पर तुम ईमान रखते हो।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ

(८९) अल्लाह तआला तुम्हारी सौगन्धों में बेकार सौगन्धों पर तुमको नहीं पकड़ता। परन्तु पकड़ उसकी करता है तुम जिन सौगन्धों को दृढ़ कर दो।[1] उसका प्रायश्चित दस गरीबों को

उनकी पत्नी की शिकायत (उलाहना) पर उन्हें भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोका। (हदीस की किताबें)

अत: इस आयत तथा हदीस से ज्ञात हुआ कि अल्लाह की उचित की हुई वस्तु को निषेध कर लेना अथवा उससे वैसे ही बचना उचित नहीं है, चाहे उसका सम्बन्ध खान, पान से हो अथवा वस्त्र से हो अथवा प्रिय अथवा उचित इच्छाओं से हो।

समस्या- इस प्रकार यदि कोई व्यक्ति किसी चीज़ को अपने ऊपर निषेध कर लेगा तो वह निषेधित नहीं होगी, सिवाये पत्नी के। परन्तु इस अवस्था में कुछ विद्वानों का कथन है कि अपनी सौगन्ध का प्रायश्चित करना होगा तथा कुछ के निकट प्रायश्चित आवश्यक नहीं। इमाम शौकानी कहते हैं कि सहीह हदीस से इसी बात की पुष्टि होती है, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस अवस्था में किसी को सौगन्ध का दण्ड अदा करने का आदेश नहीं दिया है। इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि इस आयत के पश्चात अल्लाह तआला ने सौगन्ध के प्रायश्चित का वर्णन किया है जिससे ज्ञात होता है कि किसी अवर्जित पदार्थ का वर्जित कर लेना यह सौगन्ध के समान है जो प्रायश्चित देने का कारण है। परन्तु यह तर्क सहीह हदीस की उपस्थिति में नगण्य है। वही उचित है जो इमाम शौकानी का कथन है।

[1]शपथ को अरबी भाषा में हलफ़ अथवा यमीन कहते हैं जिनका बहुवचन अहलाफ़ तथा ऐमान है। शपथ के तीन भेद होते हैं : (१) लग़्व (२) ग़मूस (३) मोअक़्क़द। (१) लग़्व वह सौगन्ध है जो मनुष्य बात-बात पर स्वाभाविक रूप से बिना किसी प्रयत्न तथा ध्येय के खाता रहता है। इसमें कोई पकड़ न होगी। (२) ग़मूस वह झूठी सौगन्ध है जो मनुष्य धोखा देने या छल के लिए खाता है। यह महापाप है, अपितु अति महापाप है परन्तु इस का कोई प्रायश्चित नहीं है। (३) मोअक़्क़द वह सौगन्ध है जो मनुष्य अपनी

The Imaan Technology Mission

عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ
مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ
اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ؕ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ
فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ
اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ؕ وَاحْفَظُوْٓا
اَيْمَانَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ
اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٨٩﴾

खाना देना है मध्यम श्रेणी का, जो अपने घरवालों को खिलाते हो।[1] अथवा उनको वस्त्र देना।[2] अथवा एक दास अथवा दासी स्वतन्त्र करना है।[3] तथा जिससे यह न हो सके वह तीन दिन रोज़े रखे।[4] यह तुम्हारी सौगन्धों का प्रायश्चित है जबकि तुम सौगन्ध खा लो तथा अपनी सौगन्धों को ध्यान में रखो। इस प्रकार अल्लाह तआला तुम्हारे लिए अपने आदेशों का वर्णन करता है, ताकि तुम कृतज्ञता व्यक्त करो।

बात में बल तथा परिपक्वता के लिए जानबूझ कर खाये। इस प्रकार की सौगन्ध को यदि तोड़ेगा तो उसका वह प्रायश्चित अदा करेगा, जिसका आगे आयत में वर्णन है।

[1]इस खाने की मात्रा के लिए कोई एक सही कथन नहीं है। इसलिए मतभेद है। परन्तु इमाम शाफ़ई ने उस हदीस से तर्क देते हुए, जिसमें रमजान में रोज़े की स्थिति में पत्नी से सम्भोग करने का जो प्रायश्चित है, लगभग आधा किलो प्रति निर्धन का खाना निर्धारित किया है। क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसललम ने उस व्यक्ति को पत्नी के साथ रोजे की अवस्था में सम्भोग करने के प्रायश्चित स्वरूप १५ साआ खजूरें दिलवायीं थीं। जिन्हें साठ निर्धनों में बाँटा गया था। एक साआ में चार मुद्द तथा एक मुद्द (लगभग छः सौ ग्राम होता है) इस आधार पर बिना शोरबे के सालन के दस ग़रीबों को देने के लिए दस मुद्द (अर्थात छः किलो) भोजन प्रायश्चित होगा। (इब्ने कसीर)

[2]वस्त्र के विषय में भी मतभेद है। प्रत्यक्ष रूप से तात्पर्य वस्त्र का जोड़ा है जिसमें मनुष्य नमाज़ पढ़ सके। कुछ विद्वान ने भोजन तथा वस्त्र दोनों के लिए प्रथा तथा प्रचलन को विश्वस्त माना है।

[3]कुछ विद्वानों ने चूक से हत्या के प्रायश्चित पर अनुमान करके दास तथा दासियों के लिए ईमान का प्रतिबन्ध लगाया है। इमाम शौकानी कहते हैं, आयत सामान्य है जिसके अन्तर्गत मोमिन एवं काफ़िर दोनों आते हैं।

[4]अर्थात जिस व्यक्ति को ऊपर के तीनों विषयों में से किसी की शक्ति न हो वह तीन दिन रोज़ा रखे। कुछ धर्मज्ञ निरन्तर रोज़े (व्रत) रखने के पक्ष में हैं तथा कुछ के विचार से दोनों प्रकार उचित हैं।

The Ummah Technology Mission

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٩٠﴾

(९०) हे ईमानवालो ! मदिरा एवं जुआ तथा मूर्तियों के स्थान एवं पाँसे गन्दे शैतानी काम हैं, अतः तुम इससे अलग रहो ताकि सफल हो जाओ ।[1]

اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾

(९१) शैतान चाहता ही है कि मदिरा तथा जुआ द्वारा तुम्हारे बीच शत्रुता एवं द्वेष डाल दे तथा तुम्हें अल्लाह की याद तथा नमाज़ से रोक दे तो तुम रुकते हो या नहीं ।[2]

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٩٢﴾

(९२) अल्लाह की आज्ञा का पालन करो तथा रसूल का अनुसरण करो और सतर्क रहो तथा यदि तुमने मुहँ फेरा तोजान लो कि हमारे रसूल पर खुला संदेश पहुँचा देना है ।

---

[1]यह मंदिरा के सम्बन्ध में तीसरा आदेश है । प्रथम दो आदेशों में उसे स्पष्टरूप से निषेधित नहीं किया गया है । परन्तु यहाँ उसके साथ जुआ, पूजा स्थलों अथवा थानों तथा शगून के तीरों को दूषित एवं राक्षसी कार्य घोषित करके स्पष्ट शब्दों में इन सभी से सुरक्षित रहने का आदेश दे दिया गया है । इसके सिवाये इस आयत में मदिरा एवं जुआ के संदर्भ में कुछ अधिक क्षति का वर्णन करके प्रश्न किया गया है कि अभी भी रूकेंगे या नहीं मुसलमान इससे अल्लाह का उद्देश्य समझ गये तथा उसे नित्य के लिये अवैध मान लिया एवं कहा कि انتهينا ربنا हमारे पालनहार हम मान गये, (मुसनदे अहमद भाग २ पृष्ठ ३५१) परन्तु आधुनिक बुद्धिमान कहते हैं कि अल्लाह ने मदिरा को वर्जित कहाँ कहा है ? इस बुद्धि पर रोना चाहिए । अर्थात मदिरा को दूषित तथा राक्षसी कार्य बताकर उससे रुकने का आदेश देना तथा उसे सफलता का हेतु बताना बुद्धिमानों के विचार में निषेध के लिये प्रयाप्त नहीं । इसका अभिप्राय यह हुआ कि अल्लाह के समीप दूषित कार्य भी उचित है, राक्षसी कार्य भी उचित है । जिसके त्याग का आदेश दे वह भी उचित है तथा जिसके संदर्भ में कहे कि उसका करना असफलता तथा उसका त्याग सफलता का हेतु है वह भी उचित إنا لله و إنا إليه راجعون ऐसे बोध से हजार बार शरण, तथा थू है ऐसे बोध पर ।

[2]यह जुआ तथा मदिरा की अन्य सामाजिक एवं धर्मिक हानियाँ हैं जिनके वर्णन की आवश्यकता नहीं, इसी कारण मदिरा को सभी कुकर्मों की जननी कहा जाता है तथा जुआ भी ऐसी ही बुरी लत है । यह मनुष्य को किसी काम का नहीं रखता तथा अधिकतर धनवानों एवं वंशगत जागीरदारों को भीखारी तथा दरिद्र बना देता है । हमें अल्लाह दोनों से सुरक्षित रखे ।

The Ummah Technology Mission

لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٣﴾

(९३) ऐसे लोगों पर जो ईमान रखते हों तथा पुण्य का कार्य करते हों, उस चीज़ में कोई पाप नहीं जिसको वह खाते-पीते हों, जबकि वह लोग अल्लाह से डरते हों तथा ईमान रखते हों तथा पुण्य का कार्य करते हों, फिर परहेज़गारी करते हों तथा अत्यधिक पुण्य का कार्य करते हों, अल्लाह ऐसे पुण्यकर्ताओं से प्रेम करता है।[1]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٤﴾

(९४) हे ईमानवालो ! अल्लाह (तआला) कुछ शिकार के द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेता है।[2] जिन तक तुम्हारे हाथ तथा तुम्हारे भाले पहुँच सकेंगे।[3] ताकि अल्लाह (तआला) मालूम कर ले कि कौन व्यक्ति उससे बिना देखे डरता है, जो व्यक्ति सीमा से बढ़ जायेगा उसे कठोर यातना है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ

(९५) हे ईमानवालो ! जब तुम (हज अथवा उमरः का) एहराम बाँधे रहो तो शिकार न

---

[1]मदिरा के निषेध के पश्चात नबी के सहचरों के मन में यह बात आई कि हमारे कई साथी लड़ाईयों में मारे गये अथवा स्वभाविक मौत मरे जब कि वह मदिरा पान कर रहे थे। तो इस आयत में इस संशय का निवारण कर दिया गया, कि इनका अन्त विश्वास एवं संयम पर ही हुआ क्योंकि उस समय मदिरा पान वर्जित नहीं हुआ था।

[2]शिकार अरबों के जीवन यापन का एक विशेष साधन था, इसलिए एहराम की अवस्था में इसे निषेध करके उनकी परीक्षा ली गयी। विशेष रूप से हुदैबिया में निवास के समय में शिकार अधिक रूप से सहाबा के निकट आते, किन्तु उन्हीं दिनों में यह चार आयतें उतरीं, जिसमें उससे सम्बन्धित आदेश दिये गये।

[3]निकट के शिकार तथा छोटे जीव-जन्तु सामान्य रूप से हाथ ही से पकड़ लिए जाते हैं तथा दूर के अथवा बड़े पशुओं के लिए तीर तथा भाले प्रयोग किये जाते हैं। इसलिए केवल इन दोनों का यहाँ वर्णन किया गया है। परन्तु तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार से तथा जिस चीज़ से भी शिकार किया जाये, एहराम की अवस्था में निषेध है।

The Ummah Technology Mission

مُتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ
النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًۢا
بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ
مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا

करो[1] और तुममें से जो भी जान बूझ-कर उसे मारे[2] तो उसे क्षतिपूर्ति करना है उसी के समान[3] पालतू पशु से जिसका निर्णय तुम में से दो न्यायकारी करेंगे[4] जो बलि के लिये काअबा

---

[1]इमाम शाफ़ई ने इससे यह भाव लिये हैं कि इनसे केवल उन जानवरों की हत्या ली गई है, जिनका माँस खाया जाता है। धरती के अन्य पशुओं का शिकार वह उचित मानते हैं। परन्तु अधिक विद्वानों का विचार यह है कि इसमें खाने योग्य अथवा अयोग्य में कोई भेद नहीं है । इसमें दोनों प्रकार के जानवर सम्मिलित हैं। परन्तु उन हानिकारक जीवों की हत्या करना उचित है जिनका वर्णन हदीस में आया है तथा वे पाँच हैं कौआ, चील, बिच्छू, चूहा तथा पागल कुत्ता । (सहीह मुस्लिम किताबुल हज, बाब मायनदुबो लिल मुहरिम व गैरेही कतलुहु मिन-द्दवाब्बे फ़िल हिल्ले वल हरमे, तथा मुअता इमाम मालिक) आदरणीय नाफेअ से साँप के विषय में पूछा गया तो उन्होंने उत्तर दिया कि उसको मारने में कोई मतभेद नहीं है। इब्ने कसीर तथा इमाम अहमद एवं इमाम मालिक तथा अन्य आलिमों ने भेड़िये, हिंसक जन्तु, चीते, सिंह को बावले कुत्ते के समान एहराम की अवस्था में इनको मारने की आज्ञा दी है। (इब्ने कसीर)

[2]"जान-बूझ कर" के शब्द से कुछ विद्वानों ने यह तर्क निकाला है कि बिना प्रयत्न के यदि भूल से अंजाने में हत्या हो जाये तो उसमें प्रतिशोध नहीं है। परन्तु अधिकतर विद्वानों के निकट इच्छित अथवा अनेच्छित दोनों अवस्थाओं में पशु हत्या करने पर फ़िदिया (प्रतिशोध) देना होगा। जान बूझ कर की बात परिस्थितियों के अनुसार है प्रतिबन्ध के रूप में नहीं है।

[3]समान पशु से तात्पर्य प्रकृति अर्थात शरीर तथा श्रेणी में समान होना है मूल्य में समान होना नहीं है जैसाकि हनफ़ी समुदाय में है। जैसाकि यदि हिरण की हत्या हुई तो उसके समान बकरी है। गाय के सामन नील गाय है आदि। परन्तु जिस जन्तु का समतुल्य नहीं मिल सकता हो, वहाँ उस मूल्य के रूप में प्रतिशोध लेकर मक्का पहुँचा दिया जायेगा। (इब्ने कसीर)

[4]कि हत (हत्या किये गये) जानवर के समान अमूक जानवर है तथा यदि उसके समान नहीं है अथवा उसके समान उपलब्ध नहीं है तो उसका उतना मूल्य है। उस मूल्य से अनाज ख़रीद कर मक्का के भिखारियों में बाँट दिया जायेगा। प्रति भिखारी एक मुद्द अर्थात छः सौ ग्राम के हिसाब से से वितरण किया जायेगा । हनफ़ी समुदाय में दो मुद्द प्रति भिखारी है अर्थात एक किलो दो सौ ग्राम है।

The Ummah Technology Mission

لِّيَذُوقَ وَبَالَ أَمْرِهِۦ ۗ عَفَا ٱللَّهُ عَمَّا سَلَفَ ۚ وَمَنْ عَادَ فَيَنتَقِمُ ٱللَّهُ مِنْهُ ۗ وَٱللَّهُ عَزِيزٌ ذُو ٱنتِقَامٍ ﴿٩٥﴾

पहुँचाया जायेगा[1] अथवा प्रायश्चित स्वरूप कंगालों को भोजन देना है या उसके बराबर रोज़े (व्रत) रखना है[2] ताकि अपने किये का दण्ड चखो। जो पहले हो चुका अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया तथा जो इस (निषेधाज्ञा) के पश्चात् ऐसा फिर करेगा अल्लाह उससे बदला लेगा। अल्लाह शक्तिशाली बदला लेने वाला है।

أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ ٱلْبَحْرِ وَطَعَامُهُۥ مَتَٰعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۖ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ ٱلْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۗ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ٱلَّذِىٓ

(९६) तुम्हारे लिए समुद्र का शिकार पकड़ना तथा खाना वैध किया गया है।[3] तुम्हारे प्रयोग के लिए तथा यात्रियों के लिए, एवं धरती का शिकार अवैध किया गया जब तक तुम एहराम

---

[1] यह प्रतिशोध जानवर अथवा उसका मूल्य काअबा पहुँचाया जायेगा तथा काअबा से तात्पर्य हरम है। (फ़तहुल क़दीर) अर्थात उनका वितरण हरम मक्का में रहने वाले निर्धन में होगा।

[2] او (अथवा) अधिकार देने के लिए आया है अर्थात निर्धनों को भोजन कराना अथवा उसके बराबर रोज़े रखना दोनों में से कोई एक कार्य करना उचित है। हत जानवर के अनुसार भोजन कराने में जिस प्रकार से कमी अथवा अधिकता होगी उसी प्रकार रोज़ों में भी कमी अथवा अधिकता होगी। जैसे एहराम पहने हुए व्यक्ति ने हिरन मारा तो उसके समान बकरी है, यह फ़िदिया हरम मक्का में बलि दिया जायेगा। यदि यह न मिले तो आदरणीय इब्ने अब्बास (रज़ी अल्लाह अन्हुमा) के अनुसार छः निर्धनों को भोजन अथवा तीन रोज़े रखने होंगे। यदि उसने बारहसिंगा, साँभर अथवा इस जैसा कोई पशु मारा होगा तो उसकी समतुल्य गाय है, यदि यह उपलब्ध न हो अथवा इसका मूल्य अदा करने की शक्ति न हो तो बीस निर्धनों को खाना खिलाना होगा अथवा बीस दिन रोज़े रखने होंगे अथवा शुतुरमुर्ग जैसा पशु मारा जाये तो उसका समतुल्य ऊँट है तो उसके उपलब्ध न होने में तीस निर्धनों को भोजन कराना अथवा तीस दिन के रोज़े रखना होंगे। (इब्ने कसीर)

[3] صيد (सैद) से तात्पर्य जीवित पशु तथा طعامه (तआमुहु) से तात्पर्य मृत (मछली आदि) है जिसे समुद्र अथवा नदी बाहर फेंक दे अथवा पानी पर उतर जाये। जिस प्रकार से हदीस में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि समुद्र का मृत जन्तु वैध है। (विस्तृत जानकारी के लिए देखें तफ़सीर इब्ने कसीर, तथा नैलुल औतार आदि)

The Ummah Technology Mission

إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٩٦﴾

की हालत में हो। तथा अल्लाह (तआला) से डरो जिसके पास एकत्रित किये जाओगे।

جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَامًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ ۚ ذَٰلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٩٧﴾

(९७) अल्लाह ने काअबा को जो सम्मानित गृह है, लोगों के लिये स्थिरता का कारण बनाया तथा सम्मानित महीने को तथा हरम में बलि दिये जाने वाले पशुओं को भी तथा उन पशुओं को भी जिनके गले में पट्टे हों।[1] यह इसलिए ताकि तुम इस बात पर विश्वास कर लो कि निःसन्देह अल्लाह (तआला) आकाशों तथा धरती के अन्दर की चीज़ों का ज्ञान रखता है एवं निःसन्देह अल्लाह सभी विषय को भली-भाँति जानता है।

اعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩٨﴾

(९८) तुम विश्वास करो कि अल्लाह तआला दण्ड भी कठोर देने वाला है तथा अल्लाह (तआला) अति क्षमाशील एवं अति कृपालु भी है।

مَّا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٩٩﴾

(९९) रसूल का दायित्व तो मात्र पहुँचाना है। तथा अल्लाह (तआला) सभी कुछ जानता है जो कुछ तुम व्यक्त करते हो तथा जो कुछ छिपा रखते हो।

---

[1] काअबा को बैतुल हराम इसलिए कहा जाता है कि उसकी सीमा के अन्दर शिकार करना, वृक्ष काटना आदि निषेध है। इसी प्रकार यदि इसमें पिता के हत्यारे से भी सामना हो जाये, तो उसे छेड़ा नहीं जाता था। इसे قياما للناس (लोगों के खड़े होने तथा निर्वाह का कारण) कहा गया है। जिसका अर्थ है कि इसके द्वारा मक्का के निवासियों के प्रबन्ध भी ठीक हैं तथा उनके निर्वाह की आवश्यकताओं की उपलब्धि का साधन भी है। इसी प्रकार हराम महीने (रजब, जुलकाअदः, जुलहिज्जा तथा मोहर्रम) तथा हरम में जाने वाले पशु (हदी तथा कलायेद) भी लोगों के निर्वाह के साधन हैं क्योंकि इन सभी से मक्का निवासियों को वर्णित लाभ प्राप्त होते थे।

The Ummah Technology Mission

قُلْ لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيثِ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٠٠﴾

(१००) आप कह दीजिए कि अपवित्र तथा पवित्र समान नहीं यद्यपि आपको अपवित्र की अधिकता भली लगती हो।[1] अल्लाह (तआला) से डरते रहो हे बुद्धिमानो, ताकि तुम सफल हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَإِنْ تَسْأَلُوا عَنْهَا حِينَ يُنَزَّلُ الْقُرْآنُ تُبْدَ لَكُمْ ۖ عَفَا اللَّهُ عَنْهَا ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٠١﴾

(१०१) हे ईमानवालो ! ऐसे विषय में प्रश्न न करो जिसे व्यक्त कर दिया जाये तो तुम्हें बुरा लग जाये और यदि क़ुरआन उतारे जाने के समय प्रश्न करोगे तो तुम्हारे ऊपर व्यक्त कर दिया जायेगा,[2] जो हो चुका अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया तथा अल्लाह क्षमाशील सहनशील है।

قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا بِهَا كَافِرِينَ ﴿١٠٢﴾

(१०२) तुमसे पूर्व कुछ लोगों ने यही प्रश्न किया फिर उन्हें निभा न सके।[3]

---

[1]अपवित्र से तात्पर्य अवैध अथवा अधर्मी अथवा पापी अथवा विकृत तथा पवित्र से तात्पर्य वैध विश्वासी अथवा आज्ञाकारी अथवा अच्छी वस्तु अथवा यह सभी हो सकती हैं। अभिप्राय यह है कि जिस वस्तु में अपवित्रता होगी, वह अविश्वास हो, अवज्ञा हो, दुष्कर्म हो अथवा चीज़ें अथवा कथन हों, अधिक संख्या के उपरान्त उन वस्तुओं का सामना नहीं कर सकतीं, जिनमें पवित्रता होगी। यह दोनों किसी भी अवस्था में समान नहीं हो सकते। इसलिए कि अपवित्रता के कारण उस वस्तु का लाभ तथा शुभ समाप्त हो जाता है जबकि जिस वस्तु में पवित्रता होगी, उससे उसके लाभ तथा शुभ में और बढ़ोत्तरी होगी।

[2]यह निषेधाज्ञा क़ुरआन के उतरने के समय थी, स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी सहावा को अधिक प्रश्न करने से रोकते थे। एक हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मुसलमानों में सबसे बड़ा अपराधी वह है जिसके प्रश्न करने के कारण कोई चीज अवैध हो गयी, जबकि उससे पूर्व वह वैध थी।" (सहीह बुख़ारी, संख्या ७२८९, सहीह मुस्लिम अल फ़जायेल बाब तौक़ीरुह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम व तरको इक्सारे सुवालिहि)

[3]कहीं उस आलस्य के शिकार तुम न हो जाओ, जिस प्रकार एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने तुम पर हज अनिवार्य किया है।" एक व्यक्ति ने प्रश्न किया, "क्या प्रत्येक वर्ष ?" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मौन रहे। उसने अपने प्रश्न की तीन बार पुनरावृत्ति की। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

The Ummah Technology Mission

مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنۢ بَحِيرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ

(१०३) अल्लाह ने आज्ञा नहीं दी है बहीरः की न साइबः की न वसीलः की न हाम की[1] किन्तु

फ़रमाया, "यदि मैं हाँ कर देता तो तुम्हारे लिए प्रत्येक वर्ष हज करना अनिवार्य हो जाता, तो प्रत्येक वर्ष हज करना तुम्हारे लिए सम्भव नहीं होता।" (सहीह मुस्लिम किताबुल हज हदीस संख्या ४१२, मुसनद अहमद, सुनने अबू दाऊद, नसाई तथा इब्ने माजा) इसीलिए कुछ व्याख्याकारों ने عفا الله عنها का एक अर्थ यह भी वर्णित किया है कि जिस वस्तु का वर्णन अल्लाह तआला ने अपनी किताब में नहीं किया है, तो यह जान लो वह उन चीज़ों में है जिनको अल्लाह तआला ने क्षमा कर दिया है। इसलिए तुम भी उनके विषय में मौन हो जाओ, जिस प्रकार वह मौन है। (इब्ने कसीर) एक हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसका भाव इन शब्दों में समझाया है।

« ذَرُونِي مَا تَرَكْتُمْ؛ فَإِنَّمَا أَهْلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ كَثْرَةُ سُؤَالِهِمْ، وَاخْتِلَافُهُمْ عَلَىٰ أَنْبِيَاءِهِمْ ».

"तुम्हें जिन विषयों के बारे में नहीं बताया गया है, तुम मुझसे उनके विषय में प्रश्न न करो, इसलिए कि तुमसे पूर्व के समुदायों के पतन का कारण उनके प्रश्नों की अधिकता तथा नबियों से मतभेद था।" (सहीह मुस्लिम किताबुल हज्ज)

[1]यह उन पशुओं के प्रकार हैं जो अरबवासी अपनी मूर्तियों के नाम पर मुक्त करते थे। इनकी विभिन्न व्याख्यायें की गयी हैं। आदरणीय सईद बिन मुसय्यिब के कथनानुसार सहीह बुख़ारी में इसकी व्याख्या निम्न रूप से संकलित की गयी है। बहीरः- वह पशु जिसका दूध दोहना छोड़ दिया जाता था तथा कहा जाता था कि यह मूर्तियों के लिए है। अतः कोई भी व्यक्ति उसके थनों को हाथ नहीं लगाता। साएबः वह पशु जिन्हें वे मूर्तियों के नाम छोड़ देते उन पर न सवारी करते न माल लादते। जैसे छुट्टे साँड जिन्हें हिन्दू धर्म में नन्दी कहते हैं उसी प्रकार छोड़ते थे। वसीला- वह ऊँटनी जिससे सर्वप्रथम मादा पैदा होती तथा पुनः दूसरी बार भी मादा होती (अर्थात एक मादा के पश्चात दूसरी मादा हुई तथा किसी नर के पैदा न होने के कारण मध्य में भेद न हुआ तो ऐसी उँटनियों को भी मूर्तियों के नाम स्वतन्त्र छोड़ दिया करते थे तथा हाम- वह नर ऊँट है जिसके द्वारा उसकी नस्ल से कई ऊँट पैदा हो चुके होते हैं, तो उनको भी मूर्तियों के नाम पर छोड़ देते, उससे भी सवारी तथा भार वाहन का काम नहीं लेते तथा हामी पशु कहते। इस कथन में इस हदीस का भी वर्णन है कि सर्वप्रथम मूर्तियों के नाम पर पशु मुक्ति का काम अमर विन आमिर खुज़ाई ने किया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि, "मैंने उसे नरक में अंतड़ियाँ खींचते हुए देखा।" (सहीह बुखारी, तफ़सीर सूरः अल-मायदः) आयत में कहा गया है कि अल्लाह तआला ने इन पशुओं को इस प्रकार से मुक्त करने की अनुमति नहीं दी है, क्योंकि उसने प्रत्येक दान-दक्षिणा तथा मनौती अपने लिए विशेष किया है। मूर्तियों के लिए चढ़ावा अथवा मनौती यह मूर्तिपूजकों की अपनी उपज

The Ummah Technology Mission

وَلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٣﴾

काफ़िर (विश्वास रहित) अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाते हैं तथा उनमें अधिकतर बुद्धि नहीं रखते।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿١٠٤﴾

(१०४) तथा जब उनसे कहा गया कि उस (पवित्र क़ुरआन) तथा रसूल (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर आओ तोउन्होंने कहा कि जिस (रीति) पर हमने अपने पूर्वजों को पाया है वह हमें बस है यद्यपि उनके पूर्वज कुछ न जान रहे हों तथा सही मार्ग पर न हों।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ

(१०५) हे ईमानवालो ! अपनी चिन्ता करो, जब तुम सत्य मार्ग पर चल रहे हो, तो जो व्यक्ति भटक जाये उससे तुम्हारी कोई हानि नहीं।[1] अल्लाह ही के पास तुम सभी को

है तथा मूर्तियों तथा देवताओं के नाम से पशु मुक्ति, प्रसाद चढ़ावा आज भी मूर्तिपूजकों में व्याप्त है तथा कुछ नाम के मुसलमानों में भी यह प्रचलित है। أعاذنا الله منه

[1]कुछ लोगों के मस्तिष्क में प्रत्यक्ष शब्दों से यह शंका उत्पन्न हुई कि अपना सुधार कर लिया जाये तो बस है। सत्कर्मों का आदेश देना तथा कुकर्मों से रोकना आवश्यक नहीं है। परन्तु यह अर्थ सहीह नहीं है। सत्कर्म का आदेश देने का कर्त्तव्य भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यदि एक मुसलमान यह कर्त्तव्य ही छोड़ देगा, तो इसे त्याग करने वाला सत्यमार्ग पर कव रह जायेगा ? जबकि क़ुरआन ने إذا اهتديتم (जब तुम स्वयं मार्गदर्शन पर चल रहे हो) के प्रतिवन्ध से प्रतिवन्धित कर दिया है। इसलिये जब आदरणीय अबूबक्र सिद्दीक (रजी अल्लाह अन्हु) के ज्ञान में यह बात आयी तो उन्होंने कहा, लोगों ! तुम आयत को ग़लत स्थान पर प्रयोग कर रहे हो, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहते सुना है कि "जब लोग बुराई होते हुए देख लें तथा उसके बदलने का प्रयत्न न करें तो निकट है कि अल्लाह तआला अपनी यातनाओं की पकड़ में ले ले।" (मुसनद अहमद भाग १, पृ० ५, त्रिमिज़ी संख्या २१७८ अबू दाऊद संख्या ४३३८) इसलिए आयत का सही अर्थ यह है कि तुम्हारे समझाने के उपरान्त यदि लोग पुण्य का मार्ग न अपनायें अथवा बुराई से न रुकें, तो तुम्हारे लिए यह हानिकारक नहीं है, जबकि तुम स्वयं पुण्य पर दृढ़ स्थिर तथा बुराई से दूर रहो। परन्तु एक अवस्था में अच्छाई का आदेश देने तथा बुराई से रोकने को त्याग देना उचित है जब कोई व्यक्ति अपने अन्दर वह शक्ति न पाये तथा उससे

The Ummah Technology Mission

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾

जाना है। फिर वह तुम सब को बतला देगा जो कुछ तुम करते थे ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ ؕ تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِىْ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۙ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللّٰهِ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾

(१०६) हे ईमानवालो ! जब तुम में किसी के निधन का समय हो तो वसीयत (रिक्थदान) के समय तुममें से दो विश्वस्त व्यक्ति को गवाह होना चाहिये [1] अथवा तुम्हारे सिवाये दो अन्य को यदि तुम धरती में यात्रा कर रहे हो तथा तुम पर मौत की विपदा आ जाये,[2] (शंका की दशा में) तुम दोनों (गवाहों) को (अपरान्ह) की नमाज़ के पश्चात रोकोगे फिर दोनो अल्लाह की शपथ लेंगे कि हम इस (गवाही) के बदले कोई मूल्य नहीं लेना चाहते[3] यद्यपि वह निकटवर्ती हो तथा हम अल्लाह की गवाही

उसके जीवन को ख़तरा हो। इस अवस्था में (जब तुम्हारी शक्ति यह आज्ञा न दे तो दिल में उसे बुरा जानो तथा यह कमज़ोर ईमान होने का प्रमाण है) के आधार पर इसका स्थान है। आयत भी इस अवस्था के लिए सर्मथन देती है।

« فَإِنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَبِقَلْبِهِ وَذٰلِكَ أَضْعَفُ الإِيمَانِ ».

[1]"तुममें से हों" का अभिप्राय कुछ ने यह लिया है कि मुसलमानों में से हों तथा कुछ ने कहा है कि موصي (उत्तरदान कर्त्ता) की जाति के हों। इसी प्रकार ﴿ءَاخَرَانِ مِنْ غَيْرِكُمْ﴾ में दोनों भाव होंगें अर्थात من غيركم से तात्पर्य जो मुसलमान न हों (अहले किताब) होंगें अथवा उत्तरदान कर्ता की जाति के अतिरिक्त अन्य जाति से।

[2]अर्थात यात्रा में ऐसा रोग हो जाये जिससे बचने की संभावना न हो तो वह यात्रा में दो न्यायकारी गवाह बनाकर जो वसीयत (प्ररिक्थ) करना चाहे कर दे।

[3]यदि मरने वाले के उत्तराधिकारी को यह संदेह हो जाये कि गवाहों ने विश्वासघात अथवा परिवर्तन किया है, तो वह नमाज़ के पश्चात अर्थात लोगों की उपस्थिति में उन से सौगन्ध लें तथा वह सौगन्ध खाकर कहें कि हम अपनी सौगन्ध के बदले दुनिया का कोई लाभ नहीं प्राप्त कर रहे हैं अर्थात झूठी सौगन्ध नहीं खा रहे हैं।

The Ummah Technology Mission

नहीं छुपा सकते यदि ऐसा करेंगे तो हम दोषी हैं।

فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰٓ أَنَّهُمَا ٱسْتَحَقَّآ إِثْمًا فَـَٔاخَرَانِ يَقُومَانِ مَقَامَهُمَا مِنَ ٱلَّذِينَ ٱسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ ٱلْأَوْلَيَٰنِ فَيُقْسِمَانِ بِٱللَّهِ لَشَهَٰدَتُنَآ أَحَقُّ مِن شَهَٰدَتِهِمَا وَمَا ٱعْتَدَيْنَآ إِنَّآ إِذًا لَّمِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿١٠٧﴾

(१०७) फिर यदि पता लग जाये कि वह दोनों (साक्षी) किसी पाप के पात्र हुये हैं [1] तो जिनके ऊपर पाप के पात्र हुए हैं उनमें से दो निकटतम सम्बंधी दोनों (साक्षियों) की जगह खड़े होगें[2] तथा अल्लाह की शपथ ग्रहण करेंगें कि हमारी गवाहियाँ इन दोनों की गवाहियों से अधिक सत्य है तथा हमने अनृत नहीं किया है, हम इस दशा में अत्याचारी होंगे।

ذَٰلِكَ أَدْنَىٰٓ أَن يَأْتُوا۟ بِٱلشَّهَٰدَةِ عَلَىٰ وَجْهِهَآ أَوْ يَخَافُوٓا۟ أَن تُرَدَّ أَيْمَٰنٌۢ بَعْدَ أَيْمَٰنِهِمْ ۗ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَٱسْمَعُوا۟ ۗ

(१०८) यह निकटतम माध्यम है कि वे लोग सत्य गवाही दें अथवा उन्हें यह भय हो कि शपथों के पश्चात् पुनः शपथ उल्टी पड़ जायेगी [3]

---

[1] अर्थात झूठी सौगन्ध खायीं है।

[2] أَوْلَيَان यह أَوْلَى का द्विवचन है इस से तात्पर्य मृतक अर्थात रिक्थ दानकर्ता के समीप के दो सम्बंधी हैं। ﴿مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ﴾ का अभिप्राय जिन पर पाप किया गया अर्थात मिथ्या शपथ ग्रहण करने का पाप करके जिनके मिलने वाले धन को हड़प लिया गया। الأَوْلَيَان या तो هُمَا लुप्त विषय का विधेय है अथवा ﴿يَقُومَانِ﴾ अथवा آخَران के सर्वनाम के बदले में है अर्थात दो निकटवर्ती संबन्धी उनकी मिथ्या शपथों के प्रतिरोध में अपनी शपथ देंगे।

[3] यह उस लाभ का वर्णन है जो उस आदेश में लुप्त है, जिसका वर्णन यहाँ किया गया है। वह यह कि इस विधि को अपनाने के कारण जिनके समक्ष वसीयत (उत्तरदान) की गयी थी सही गवाही देंगे क्योंकि उनको यह भय होगा कि यदि हमने इसमें किसी प्रकार का विश्वासघात अथवा परिवर्तन किया तो यह घटना स्वयं हमारे ऊपर आयेगी।

इस आयत के उतरने की घटना के विषय में बुदैल बिन अबू मरियम की घटना का वर्णन होता है कि वह सीरिया व्यापार के लिए गये थे, वहाँ बीमार तथा मरने के निकट हो गये, उनके पास सामान तथा चाँदी का एक प्याला था, जो उन्होंने दो ईसाईयों को सौंप कर अपने सम्बन्धियों तक पहुँचाने की वसीयत करके मर गये। यह दोनों वसीयत सुनने वाले जिनको सामान तथा प्याला सौंपा गया था, वापस आये तो प्याला बेचकर पैसे

The Ummah Technology Mission

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٨﴾

तथा अल्लाह से डरो और सुन लो कि अल्लाह अवज्ञाकारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ ؕ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١٠٩﴾

(१०९) जिस (प्रलय) दिन अल्लाह (तआला) पैग़म्बरों (उपदेशकों) को एकत्रित करेगा, फिर पूछेगा कि तुमको क्या उत्तर मिला था ? वह उत्तर देंगें हमको कुछ नहीं मालूम,[1] मात्र तू ही परोक्षों का जानकार है।

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى

(११०) जब अल्लाह कहेगा कि हे मरियम के पुत्र ईसा ! अपने तथा अपनी माँ के ऊपर मेरी

आपस में बाँट लिये तथा शेष सामान उत्तराधिकारियों को पहुँचा दिया। सामान में एक पत्र भी था जिसमें सामान की सूची थी, जिसके अनुसार एक चाँदी का प्याला नहीं था। उनसे जब कहा गया तो उन्होंने झूठी सौगन्ध खा ली, परन्तु बाद में पता चला कि उन्होंने अमुक सुनार के हाथ प्याला बेचा है। अतः उन्होंने उस ग़ैर मुस्लिमों के समक्ष सौगन्ध खाकर उनसे प्याले का मूल्य प्राप्त कर लिया। यह वर्णन प्रमाणतः क्षीण है। (त्रिमज़ी संख्या ३०५९ शोध अहमद शाकिर, मिस्र) परन्तु एक-दूसरे प्रमाण से आदरणीय इब्ने अब्बास से भी संक्षेप में यह कथित है जिसे हदीस के विशेषज्ञ अलवानी ने सही कहा है। (सहीह त्रिमज़ी भाग ३, संख्या २४४९)

[1]नबियों के साथ उनके वर्ग ने जो कुछ किया होगा, वह अवश्य उन्हें याद होगा। परन्तु वह अपने ज्ञान का इंकार या तो प्रलय की प्रचंडता तथा अल्लाह तआला के भय तथा महानता के कारण कर देंगें अथवा इसका सम्बन्ध उनके मृत्यु के उपरान्त की अवस्था से होगा। इसके अतिरिक्त गुप्त बातों का ज्ञान केवल अल्लाह को ही है। इसलिए वह कहेंगें कि परोक्षज्ञ तू ही है। इससे ज्ञात हुआ कि नबी तथा रसूल को परोक्ष का ज्ञान नहीं होता, परोक्ष का ज्ञान मात्र अल्लाह ही को है। नबियों को जितना कुछ भी ज्ञान होता है, प्रथम तो उसका सम्बन्ध उन नियमों से होता है जो रिसालत के दायित्व की पूर्ति के लिए आवश्यक होते हैं। द्वितीय उनसे भी उनको वह्यी के द्वारा ही सूचित किया जाता है। यद्यपि अन्तर्यामी वही होता है जिसको प्रत्येक वस्तु का ज्ञान स्वयं हो, न कि किसी के बतलाने पर किसी चीज़ का ज्ञान प्राप्त हो जाये, उसे अन्तर्यामी नहीं कहा जाता, न वह अन्तर्यामी होता ही है। فافهم و تدبر ولا تكن من الغافلين (इस पर विचार करो निर्बोध न बनो)

The Ummah Technology Mission

وَالِدَتِكَ مِرَاذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ
الْقُدُسِ قف تُكَلِّمُ النَّاسَ فِى الْمَهْدِ
وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ
وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ
تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِىْ
فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِىْ
وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ
بِاِذْنِىْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِىْ ۚ
وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ
اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ
مُّبِيْنٌ ﴿١١٠﴾

कृपा को याद करो जब मैंने पवित्रात्मा[1] (जिब्रील) द्वारा तुम्हारी सहायता की। तुम पालने में तथा अधेड़ आयु में लोगों से बात करते रहे तथा जब हमने किताब एवं विज्ञान तथा तौरात एवं इंजील का ज्ञान दिया।[2] तथा जब तुम मेरी आज्ञा से पक्षी की प्रतिमा मिट्टी से बनाते थे और उसमें फूँकते थे तो मेरी आज्ञा से पक्षी बन जाता था तथा तुम मेरी आज्ञा से जन्मजात अन्धे एवं कोढ़ी को स्वस्थ कर रहे थे तथा मेरी आज्ञा से मृतकों को निकालते थे[3] तथा जब मैंने इस्राईल के पुत्रों को तुमसे रोका जब तुम उनके पास चमत्कार लाये[4] तो उनमें से काफ़िरों (विश्वासहीनों) ने कहा कि यह मात्र खुला जादू है।[5]

---

[1]इससे तात्पर्य आदरणीय जिब्रील हैं, जैसाकि सूरः *अल-बक़रः* की आयत संख्या ८७ में गुज़रा।

[2]इसका स्पष्टीकरण सूरः *आले इमरान* की आयत संख्या ४८ में गुज़र चुका है।

[3]इन चमत्कारों का वर्णन भी उपरोक्त सूरः की आयत संख्या ४९ में गुज़र चुका है।

[4]यह संकेत है उस षडयन्त्र की ओर जो यहूदियों ने आदरणीय ईसा की हत्या करने तथा फांसी पर चढ़ाने के लिए बनाया था। जिससे सुरक्षित करके अल्लाह तआला ने उनको आकाश पर उठा लिया। देखिये व्याख्या सूरः *आले इमरान* आयत संख्या ५४।

[5]प्रत्येक नबी के विरोधी अल्लाह तआला की आयात तथा चमत्कार को देख कर उसे जादू ही बताते रहे हैं। यद्यपि जादू तो एक माया तन्त्र है, जिसका नबियों से क्या सम्बन्ध हो सकता है? बल्कि नबियों के हाथ से प्रकट चमत्कार सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला की शक्ति तथा सामर्थ्य का द्योतक होते थे क्योंकि वह अल्लाह ही के आदेश से उसकी इच्छा तथा शक्ति से होते थे। किसी नबी की शक्ति में यह न था कि अल्लाह तआला की इच्छा तथा शक्ति के बिना कोई चमत्कार प्रदर्शित कर सकें। इसीलिए देख लीजिए आदरणीय ईसा के प्रत्येक चमत्कार के साथ अल्लाह तआला ने चार बार कहा कि, "प्रत्येक चमत्कार मेरे आदेश से हुआ है।" यही कारण है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मक्का के

The Ummah Technology Mission

وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي وَبِرَسُولِي ۖ قَالُوا آمَنَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّنَا مُسْلِمُونَ ﴿١١١﴾

(१११) और जबकि मैंने भक्तों को प्रेरणा दी।[1] कि तुम मुझ पर तथा मेरे रसूलों पर ईमान लाओ। उन्होंने कहा, हम ईमान लाये तथा आप गवाह रहिए कि हम पूर्णरूप से आज्ञाकारी हैं।

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنَزِّلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ ۖ قَالَ

(११२) याद करो जब अनुयायियों ने कहा कि हे ईसा मरियम के पुत्र! क्या तुम्हारा स्वामी हम पर आकाश से एक थाल उतार सकता है?[2]

मूर्तिपूजकों ने विभिन्न चमत्कार दिखाने की माँग की जिन का विवरण *सूरः बनी-इस्राईल* की आयत संख्या ९१ से ९३ तक में वर्णित हो चुका है, तो उसके उत्तर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

﴿سُبْحَانَ رَبِّي هَلْ كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا رَسُولًا﴾

"मेरा प्रभु पवित्र है (अर्थात वह तो इस क्षीणता से विहीन है कि वह यह चमत्कार न दिखा सके, वह तो दिखा सकता है, परन्तु उसकी इच्छा उसके अनुरूप है अथवा कब अनुरूप होगी? इसका ज्ञान उसी को है उसी के अनुसार निर्णय करता है) परन्तु मैं तो केवल मानव पुरुष तथा रसूल (संदेष्टा) हूँ।"

अर्थात मेरे अन्दर यह चमत्कार दिखाने कि अपनी शक्ति नहीं है। अतः नबियों के चमत्कार का जादू से कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि ऐसा होता तो जादूगर उसका तोड़ कर लेते। परन्तु आदरणीय मूसा की घटना से सिद्ध होता है कि दुनिया भर के एकत्रित बड़े-बड़े जादूगर मूसा के चमत्कार का काट नहीं कर सके तथा जब उन्हें जादू तथा चमत्कार का अन्तर स्पष्टरूप से ज्ञात हो गया तो वह मुसलमान हो गये।

[1]"हवारी" से तात्पर्य आदरणीय ईसा के वह अनुयायी हैं, जो उनके प्रति विश्वास किये तथा उनके सहचर एवं सहायक बने। उनकी संख्या बारह बतायी जाती है, यहाँ "वह्यी" से तात्पर्य वह प्रकाशना नहीं जो स्वर्गदूत द्वारा ईशदूतों पर उतरती थी अपितु "मन में डालने" के अर्थ में है जो अल्लाह की ओर से कुछ लोगों के मन में उत्पन्न कर दी जाती है। जैसे आदरणीय मूसा की माँ तथा आदरणीय मरियम में इसी प्रकार की मनोभावना उत्पन्न की गई। इससे विदित हुआ कि जिन लोगों ने "वह्यी" के शब्द से मूसा की माँ तथा मरियम को ईशदूत माना है वह सही नहीं। इसलिए कि इसका अर्थ मन में भावना उत्पन्न करना है। इसी प्रकार यहाँ हवारियों के ईशदूत होने का अर्थ नहीं।

[2]मायदः ऐसे बर्तन (तबक, सीनी, प्लेट अथवा ट्रे) को कहते हैं जिसमें खाना हो। इसलिए खाने के स्थान को भी अनुवाद किया जाता है क्योंकि उस पर भी खाना रखा जाता है।

The Ummah Technology Mission

اتَّقُوا اللَّهَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾

उसने (ईसा ने) कहा यदि तुम विश्वास रखते हो तो अल्लाह से डरो।[1]

قَالُوا نُرِيدُ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿١١٣﴾

(११३) उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि उसमें से खायें तथा हमारे दिलों को संतोष हो जाये तथा हमें विश्वास हो कि आप ने हमसे सत्य कहा और हम उस पर गवाह हो जायें।

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِنْكَ وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ

(११४) मरियम के पुत्र ईसा ने कहा, हे अल्लाह! हम पर आकाश से एक थाल उतार दे जो हममें से प्रथम एवं अन्त के लिये प्रसन्नोत्सव हो जाये[2] तथा तेरी ओर से एक चिन्ह हो तथा हमें

सूरः का नाम भी इसी कारण से है कि इसमें इसका वर्णन है। हवारियों ने अपने हृदय के सन्तोष के लिए यह माँग की थी, जिस प्रकार से आदरणीय इब्राहीम ने मृतकों को जिलाये जाने के के प्रदर्शन की माँग की थी।

[1]अर्थात यह प्रश्न न करो क्योंकि सम्भव है यही तुम्हारी परीक्षा का कारण बन जाये क्योंकि इच्छित चमत्कार के प्रदर्शन के पश्चात उससे इंकार उस समुदाय की ईमान की कमज़ोरी को प्रदर्शित कर देगा, जो यातना का कारण बन सकता है। इसलिए ईसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें इस माँग से रोका तथा अल्लाह से डराया।

[2]इस्लामी धर्म विधान में ईद का प्रयोजन यह नहीं कि वह राष्ट्रीय उत्सव का एक दिन है जिसमें नैतिक बंधनों तथा धर्म विधानों को तोड़ते हुये अनुचित प्रसन्नता एवं हर्षोल्लास का प्रदर्शन किया जाये, दीप जलाये जायें, रंगरलियाँ मनाई जायें, जैसाकि वर्तमान युग में इसका यही अर्थ समझा जाता है तथा तदानुसार उत्सव मनाया जाता है। अपितु आकाशीय धर्मविधान में यह एक धार्मिक उत्सव होता है जिसका महत्वपूर्ण उद्देश्य यह होता हैं कि पूरा समुदाय एक साथ मिलकर अल्लाह की कृतज्ञता व्यकत करे तथा उसकी महिमा एवं प्रशंसा का वर्णन करे। यहाँ भी आदरणीय ईसा ने इस दिन को उत्सव (ईद) बनाने की जो इच्छा की इससे उनका प्रयोजन यही है कि हम तेरी महिमा, प्रशंसा एवं बड़ाई का गुणगान करें। कुछ धर्म में मनमानी विचारों को धर्म सिद्ध करने वाले ईदे मायदा को ईदे मिलाद के औचित्य का तर्क बनाते हैं। यद्यपि यह घटना हमारे धार्मिक नियम से पूर्व की है। यदि इसे इस्लाम में स्थाई रखना होता तो इसको स्पष्ट किया जाता। दूसरे यह कि पैग़म्बर के मुख से ईद बनाने की इच्छा का प्रदर्शन हुआ था तथा पैग़म्बर भी अल्लाह के आदेश से धार्मिक नियमों का वर्णन करने का अधिकारी होता है। तीसरे ईद का भावार्थ

The Ummah Technology Mission

خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١٤﴾

जीविका प्रदान कर तू उत्तम जीविका देने वाला है।

قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١١٥﴾

(११५) अल्लाह (तआला) ने कहा कि मैं वह भोजन तुम लोगों के लिए उतारने वाला हूँ, फिर तुममें से जो व्यक्ति उसके बाद कुफ्र करेगा तो मैं उसको ऐसा दंड दूंगा कि वह दंड मैं सम्पूर्ण संसार में किसी को न दूंगा।[1]

وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ

(११६) तथा वह समय भी स्मरणीय है जबकि अल्लाह (तआला) कहेगा कि हे ईसा पुत्र मरियम, क्या तुमने उन लोगों से कह दिया था कि मुझको और मेरी माता को अल्लाह के

तथा अर्थ भी वह होता जो उपरोक्त वर्णित पंक्तियों में वर्णित किया गया है। जबकि ईद मीलाद में इन सब बातों का कहीं भी समावेश नहीं है। इस्लाम में केवल दो ही ईदें हैं जिन्हें इस्लाम ने निर्धारित की हैं ईदुल फ़ितर तथा ईदे अज़हा, इनके अतिरिक्त कोई तीसरी ईद नहीं।

[1]यह मायद: भोजन के थाल) आकाश से उतरा अथवा नहीं इस संदर्भ में कोई निरन्तर स्पष्ट हदीस नहीं मिलती है। अधिकतर विद्वान (इमाम शौकानी तथ इमाम इब्ने जरीर तबरी सहित) इसके उतरने के पक्ष में हैं तथा उनका तर्क क़ुरआन के शब्द ﴿إِنِّي مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ﴾ से है कि अल्लाह का वचन है जो नि:संदेह सत्य है। परन्तु इसे अल्लाह तआला की ओर से पूर्ण विश्वास के साथ वचन कहना इसलिए उचित नहीं लगता कि अगले शब्द فمن يكفر इस वचन के प्रतिबन्धित होने को प्रदर्शित करते हैं। इसलिए अन्य विद्वान कहते हैं कि जब अल्लाह तआला के वचन के साथ यह प्रतिबन्ध सुना तो उन्होंने उत्तर दिया कि तो फिर हमें इस प्रकार आवश्यकता नहीं है। जिसके पश्चात वह नहीं उतरा। इमाम इब्ने कसीर ने इन तर्क के प्रमाण को जो इमाम मुजाहिद तथा हसन वसरी से संबन्धित है सही माना है। इसके अतिरिक्त यह कहा है कि इन तर्कों की पुष्टि इस बात से भी होती है कि मायद: के उतरने की कोई प्रसिद्धि ईसाईयों में है न उनकी पुस्तकों में लिखित है। क्योंकि यदि यह उतरा हुआ होता तो उसे उनके यहाँ अवश्य प्रसिद्ध किया जाता तथा किताबों में भी तो अधिक से अधिक अथवा कम से कम कुछ तो लिखित होना चाहिए था। والله أعلم بالصواب

The Ummah Technology Mission

مَا لَيْسَ لِيْ ۗ بِحَقٍّ ۭ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ۭ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١١٦﴾

अतिरिक्त माबूद (पूज्य- देव) बना लेना ?[1] ईसा निवेदन करेंगे कि मैं तो तुझे सर्वगुणों से युक्त (पवित्र) समझता हूँ, मुझको किस प्रकार से शोभा देती कि मैं ऐसी बात कहता जिसके कहने का मुझे कोई अधिकार नहीं, यदि मैंने कहा होगा तो तुझको उसका ज्ञान होगा। तू तो मेरे हृदय की बात जानता है। मैं तेरे स्वयं में जो कुछ है उसको नहीं जानता।[2] मात्र तू ही परोक्षों का जानकार है।

مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ

(११७) मैंने उनसे मात्र वही कहा जिसकी तूने मुझे आज्ञा दी कि अपने पालक तथा मेरे पालक अल्लाह की आराधना करो[3] तथा जब तक मैं उनमें रहा उन पर साक्षी रहा तथा जब तूने

---

[1]यह प्रश्न क़ियामत के दिन होगा। उद्देश्य इससे अल्लाह को छोड़कर किसी अन्य को ईष्टदेव बनाने वालों को सतर्क करना है कि जिनको तुम ईष्टदेव तथा कष्ट निवारक समझते थे वह तो स्वयं अल्लाह के सदन में उत्तरदायी हैं।

दूसरी बात यह ज्ञात हुई कि ईसाईयों ने आदरणीय मसीह के साथ आदरणीया मरियम को ईष्टदेव (पूज्य) बनाया है।

तीसरी बात यह ज्ञात हुई कि अल्लाह के अतिरिक्त ईष्टदेव वही नहीं जिन्हें मूर्तिपूजकों ने पत्थर अथवा लकड़ियों का कोई रूप बनाकर उनकी पूजा की, जिस प्रकार आजकल क़ब्र पूजक विद्वान अपनी जनता को यह बताकर धोखा दे रहे हैं। अपितु अल्लाह के वे भक्त भी अल्लाह के अतिरिक्त ईष्टदेव की परिधि में आते हैं जिनकी लोगों ने किसी भी रूप से इबादत की। जैसे आदरणीय ईसा तथा मरियम की ईसाईयों ने की।

[2]आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम कितने स्पष्ट शब्दों में अपने अन्तर्यामी होने का इंकार कर रहे हैं।

[3]आदरणीय ईसा ने एकेश्वरवाद तथा परमेश्वर की पूजा का आमन्त्रण दुग्धपान की आयु में दिया। जैसा *सूरः मरियम* में है तथा व्यस्क अवस्था में भी।

The Ummah Technology Mission

الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١١٧﴾

मुझे उठा लिया तो तू ही उनका संरक्षक था[1] तथा तू प्रत्येक विषयों पर साक्षी है।

إِن تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۖ وَإِن تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١١٨﴾

(११८) तू यदि इनको दण्ड दे तो यह तेरे भक्त हैं तथा यदि तू इन्हें क्षमा कर दे तो तू प्रभावी विज्ञाता है।[2]

---

[1] توفيتنى का अर्थ है कि जब तूने मुझे दुनिया से उठा लिया जैसाकि इसका विस्तृत वर्णन *सूरः आले इमरान* की आयत संख्या ५५ में गुज़र चुका है। इससे यह भी ज्ञात हुआ कि पैग़म्बरों (संदेष्टाओं) को मात्र उतना ही ज्ञान होता है जितना अल्लाह की ओर से उन्हें प्रदान किया जाता है अथवा जिसका दर्शन वह अपने जीवनकाल में अपनी आँखों से करते हैं। इनके अतिरिक्त उन्हें किसी प्रकार का ज्ञान नहीं होता। जबकि अन्तर्यामी वह होता है जिसे बिना किसी के बताये हुए स्वयं प्रत्येक चीज़ का ज्ञान हो जाये तथा उसका ज्ञान आदि से अन्त तक को घेरे हो। यह ज्ञान की विशेषता अल्लाह के अतिरिक्त किसी को नहीं। इसलिए अन्तर्यामी केवल अल्लाह ही है। उसके अतिरिक्त कोई अन्तर्यामी नहीं। हदीस में आता है कि प्रलय स्थान में जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर आप के कुछ अनुयायी आने लगेंगे तो फ़रिश्ते पकड़ कर उनको दूसरी ओर ले जायेंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमायेंगे कि उनको आने दो, यह हमारे अनुयायी हैं। फ़रिश्ते आप को बतलायेंगे।

« إِنَّكَ لَا تَدْرِي مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ ».

"(ऐ मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम !) आप नहीं जानते कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात उन्होंने धर्म में क्या-क्या आधुनिकीकरण उत्पन्न किया"।

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह सुनेंगे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि मैं भी उस समय यही कहूँगा जो अल्लाह के भक्त (आदरणीय ईसा) ने कहा

﴿ وَكُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ﴾

(सहीह बुख़ारी तफ़सीर *सूरः अल-मायदः* व किताबुल अम्बिया, सहीह मुस्लिम बाब फनाईद्दुनिया व बयानुल हश्र यौमल कियामः)।

[2] अर्थ यह है कि हे अल्लाह इनका निर्णय अब तेरे ऊपर है। यह इसलिए कि तू فعال لما يريد है (जो चाहे कर सकता है) तथा तुझ से कोई पूछने वाला भी नहीं है।

﴿ لَا يُسْئَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْئَلُونَ ﴾

The Ummah Technology Mission

قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ؕ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١١٩﴾

(११९) अल्लाह (तआला) कहेगा कि यह वह दिन है कि सत्यवादियों का सत्य उनके लिए लाभप्रद होगा ।[1] उनको बाग़ मिलेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिसमें वह चिरस्थाई रूप से रहेंगे। अल्लाह तआला उनसे प्रसन्न तथा ये अल्लाह से प्रसन्न हैं। यह बहुत भारी सफलता है।

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ؕ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٢٠﴾

(१२०) अल्लाह ही का राज्य है आकाशों का तथा धरती का तथा उनका जो उनमें उपस्थित हैं तथा वह प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्य रखता है।

سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ

सूरतुल अनआम-६

सूरः अनआम मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें एक सौ पैंसठ आयतें एवं बीस रुकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अति कृपालु तथा अति दयालु है।

"अल्लाह जो भी करता है उसकी पकड़ न होगी, लोग की उनके कर्मों पर पकड़ होगी।" (सूरः *अल-अम्बिया*-२३)

अर्थात आयत में अल्लाह के समक्ष भक्तों की शक्तिहीनता तथा असहाय होने का प्रदर्शन है, तथा अल्लाह की महिमा, विशेषता तथा गुणों का वर्णन है। तथा इन दोनों के माध्यम से क्षमा की प्रार्थना भी की जा रही है। अल्लाह ही महिमा योग्य है। कैसी विचित्र तथा प्रभावी आयत है। इसीलिए हदीस में आता है कि एक रात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर स्वीच्छा नमाज़ में इस आयत को पढ़ते समय ऐसी अवस्था हुई कि बार-बार प्रत्येक रक्अत में यही आयत पढ़ते रहे यहाँ तक कि प्रातः हो गयी। (मुसनद अहमद भाग-५, पृ॰१४९)

[1]आदरणीय इब्ने अब्बास ने इसके अर्थ यह बताये हैं। ينفع الموحدين توحيدهم "वह दिन ऐसा होगा कि केवल एकेश्वरवाद तथा एकेश्वरवादी को लाभ पहुँचेगा। अर्थात मूर्तिपूजकों की क्षमा तथा मोक्ष का प्रश्न ही नहीं होता।"

The Ummah Technology Mission

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ؕ ثُمَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ یَعْدِلُوْنَ ①

(१) सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिस ने आकाशों एवं पृथ्वी की रचना की एवं अंधेरों तथा प्रकाश को बनाया[1] फिर भी जो विश्वास नहीं रखते (अन्य को) अपने प्रभु के समान मानते हैं।[2]

هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِیْنٍ ثُمَّ قَضٰۤى اَجَلًا ؕ وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ②

(२) उसी ने तुम्हें मिट्टी से बनाया।[3] फिर एक समय निर्धारित किया।[4] तथा एक निर्धारित समय उसके पास है।[5] फिर भी तुम संदेह करते हो।[6]

---

[1]ज़ुल्मात से रात का अंधकार तथा नूर से दिन का प्रकाश अथवा कुफ़्र (अविश्वास) का अंधकार तथा ईमान का प्रकाश तात्पर्य है। प्रकाश (नूर) के सापेक्ष अंधकार (ज़ुल्मात) को अरबी शब्द में बहुवचन प्रयोग किया गया है, इसलिए कि ज़ुल्मात के कई कारण हैं तथा वे कई प्रकार की होती हैं। तथा नूर (प्रकाश) का वर्णन एक सामान्य रूप में है, जो अपने सभी भागों के साथ सम्मिलित है। (फ़तहुल क़दीर) यह भी हो सकता है कि चूँकि मार्गदर्शन तथा ईमान का मार्ग एक ही है, चार पाँच अथवा कई नहीं हैं, इसलिए प्रकाश को एक वचन प्रयोग किया गया है।

[2]अर्थात उसके साथ दूसरों को सम्मिलित करते हैं।

[3]अर्थात तुम्हारे पिता आदम, जो तुम्हारी मूल वास्तविकता हैं, तथा जिनसे तुम सभी निकले हो। इसका एक अन्य अर्थ यह भी हो सकता है कि तुम जो भोजन व खाद्य पदार्थ खाते हो, सभी धरती से उगते हैं तथा उन्हीं खाद्य पदार्थों से वीर्य बनता है, जो माता के गर्भ में जाकर मनुष्य का रूप धारता है। इस प्रकार से तुन्हारा जन्म मिट्टी से है।

[4]अर्थात मृत्यु का समय।

[5]अर्थात अन्त दिवस के समय को मात्र अल्लाह जानता है। अर्थात पहला "अजल" शब्द प्रयोग किया गया है उसका अर्थ जन्म से मृत्यु तक का समय (आयु) है। दूसरे "अजलुममुस्सम्मा:" शब्द का अर्थ मृत्यु के बाद से क़ियामत (प्रलय) तक संसार की आयु है, जिसके पश्चात् वह पतन तथा विनाश से मिलकर समाप्त हो जायेगा तथा एक अन्य दुनिया अर्थात आख़िरत के जीवन का प्रारम्भ होगा।

[6]अर्थात क़ियामत (प्रलय) के आने के विषय में जिस प्रकार से काफ़िर (अधर्मी) तथा मूर्तिपूजक कहा करते थे कि जब हम मरकर मिट्टी में मिल जायेंगे तो उसके पश्चात

The Ummah Technology Mission

وَهُوَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَفِي الْاَرْضِ ؕ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ۝٣

(३) तथा वही अल्लाह है आकाशों में एवं पृथ्वी में, वह तुम्हारे भेद एवं व्यक्त को जानता है तथा तुम्हारी कृतियों से अवगत है।[1]

وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ۝٤

(४) तथा उनके पास कोई निशानी उनके प्रभु की निशानियों में से नहीं आती अपितु वह उससे मुहँ फेरते हैं।

فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٥

(५) उन्होंने उस सच्ची किताब को भी झूठा बताया जबकि वह उनके पास पहुँची, तो शीघ्र ही उन्हें सूचना मिल जायेगी उस चीज़ की जिसका यह लोग उपहास करते थे।[2]

اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ

(६) क्या उन्होंने देखा नहीं कि हम उनसे पूर्व कितने गुटों को नष्ट कर चुके हैं जिनको हमने दुनिया में इतनी शक्ति प्रदान की थी

पुनः हमें किस प्रकार जीवित किया जायेगा ? अल्लाह तआला ने फ़रमाया जिसने तुम्हें पहली बार जन्म दिया, वही तुम्हें पुनः जीवित करेगा। (सूरः *यासीन*)

[1]अहले सुन्नत अर्थात विगत धर्मात्माओं का विश्वास है कि अल्लाह तआला स्वयं तो अर्श पर है जैसा कि वह महिमा योग्य है, परन्तु अपने ज्ञान के आधार पर प्रत्येक स्थान पर है अर्थात उसके ज्ञान तथा सूचना की परिधि से कोई भी चीज़ बाहर नहीं। परन्तु कुछ गुटों के लोग यह कहते हैं कि अल्लाह तआला अर्श पर नहीं अपितु हर स्थान पर है तथा वह इस आयत से अपने विश्वास की पुष्टि करते हैं। परन्तु यह विश्वास ठीक नहीं है, यह तर्क भी ठीक नहीं है। आयत का अर्थ यह है कि वह शक्ति जिसको आकाशों तथा धरती पर अल्लाह कहकर पुकारते हैं तथा आकाशों तथा धरती पर जिसका राज्य है तथा आकाशों एवं धरती पर जिसको ईष्टदेव समझा जाता है। वह अल्लाह तुम्हारे छिपे तथा स्पष्ट तथा जो कुछ कर्म तुम लोग करते हो, सबको जानता है। (फ़तहुल क़दीर) इसके अन्य तर्क भी प्रस्तुत किये गये हैं जिन्हें ज्ञानी लोगों की व्याख्या में देखा जा सकता है जैसे तफ़सीर तबरी तथा इब्ने कसीर आदि।

[2]अर्थात इस मुहँ मोड़ने तथा झुठलाने का पाप उन्हें मिलेगा, उस समय उन्हें आभास होगा कि काश हम उस सच्ची किताब को न झुठलाते तथा उपहास न करते।

The Ummah Technology Mission

عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝٦

जैसी तुम्हें भी नहीं प्रदान किया तथा हमने उन पर मूसलाधार वर्षा की तथा हमने उनके नीचे से नदियाँ बहायीं, फिर हमने उनको उनके पाप के कारण नष्ट कर दिया।[1] तथा उनके पश्चात अन्य समुदाय पैदा किये।[2]

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِيْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧

(७) तथा यदि हम कागज़ पर लिखा हुआ कोई पत्र भी आप पर उतारते फिर यह लोग अपने हाथों से छू भी लेते तब भी यह काफ़िर लोग यही कहते कि यह कुछ भी नहीं मगर स्पष्ट जादू है।[3]

---

[1]अर्थात जब पाप के कारण तुमसे पूर्व के समुदायों को हम नष्ट कर चुके हैं, जबकि वे शक्ति में तुमसे कहीं अधिक थे तथा साधन तथा धन के बाहुल्य में भी तुम से अधिक थे तो तुम्हें नष्ट करना हमारे लिये क्या कठिन है? इससे ज्ञात हुआ कि किसी समाज की भौतिक उन्नति तथा ख़ुशहाली से यह नहीं समझ लेना चाहिए कि वह सफल तथा विजयी है। यह अवसर तथा समय देने की वह अवस्थायें हैं जो परीक्षा लेने के लिए विभिन्न समुदायों को दी जाती हैं। परन्तु जब उनका समय पूरा हो जाता है, तो यह सारी उन्नति तथा ख़ुशहाली उन्हें अल्लाह के प्रकोप से बचाने में सफल नहीं होतीं।

[2]ताकि उनकी भी पिछली समुदायों की तरह परीक्षा लें।

[3]यह उनकी हठधर्मी, कपट, द्वेष, तथा ईर्ष्या का प्रदर्शन है कि यह स्पष्ट कागज़ अल्लाह का लिखा हुआ पत्र यदि वह उसे छू भी लेंगे तो भी मानने के लिए तैयार नहीं होंगे तथा वह इसे जादूगर का खेल बतायेंगे।

﴿ وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ۝ لَقَالُوا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ ﴾

"यदि हम उन पर आकाश का कोई द्वार खोल दें और यह उसमें चढ़ने भी लग जायें, तब भी कहेंगे कि हमारी आँखें मतवाली हो गयी हैं, अपितु हम पर जादू कर दिया गया है।" (सूरः अल-हिजर-१४ तथा १५)

﴿ وَإِن يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَّرْكُومٌ ﴾

The Ummah Technology Mission

وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ؕ وَلَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ۝٨

(८) तथा उन्होंने कहा कि आप पर कोई फ़रिश्ता (सुर) क्यों नहीं उतारा गया और यदि हम फ़रिश्ता उतार देते तो विषय का निर्णय कर दिया जाता फिर उन्हें अवसर नहीं दिया जाता।[1]

"तथा यदि वह आकाश से गिरता हुआ टुकड़ा भी देख लें तो कहेंगे कि तह पर तह बादल हैं।" (सूरः अल-तूर-४४)

अर्थात अल्लाह के प्रकोप की कोई न कोई कल्पना बना लेंगे कि जिसमें अल्लाह का अधिकार उन्हें स्वीकार न करना पड़े वास्तव में पूरे ब्रहमाण्ड में जो कुछ भी होता है, उसमें अल्लाह की इच्छा का समावेश होता है।

[1]अल्लाह ने मानव जाति को मार्गदर्शन कराने के लिए, जितने भी अम्बिया और रसूल (संदेशवाहक) भेजे सभी मानव पुरुष ही थे तथा प्रत्येक समुदाय में उन्हीं में से एक को प्रकाशना तथा देववाणी से विभूषित किया। यह इसलिये कि उसके बिना संदेष्टा मार्ग दर्शाने का काम पूरा नहीं कर सकता था, उदाहरणार्थ यदि फ़रिश्ते (स्वर्गदूत) को रसूल (संदेष्टा) बनाकर भेजता तो मानवी भाषा में वार्तालाप करने में असमर्थ होते। दूसरे वह मानवीय भावनाओं से शून्य होने के कारण विभिन्न मानवीय परिस्थितियों एवं भावना के प्रबोध में असमर्थ होते। ऐसी दशा में मार्गदर्शन का कर्तव्य किस प्रकार पूरा कर सकते थे? इसीलिए अल्लाह का मानव जाति पर एक बड़ा उपकार है कि उसने मानव ही को ईशदूत तथा संदेशवाहक बनाया। जैसाकि परमेश्वर (अल्लाह) पवित्र क़ुरआन में इसकी चर्चा एक उपकार के रूप में कर रहा है।

﴿لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْ أَنفُسِهِمْ﴾

"अल्लाह तआला ने ईमानवालों पर उपकार किया कि उन्हीं की जाति में से एक व्यक्ति को रसूल बनाकर भेजा।" (सूरः आले इमरान-१६४)

लेकिन पैग़म्बरों का मनुष्य होना काफ़िरों के लिए आश्चर्यजनक है। वह समझते रहे कि रसूल मनुष्यों में से नहीं फ़रिश्तों में से होना चाहिए था। अर्थात उनके निकट मनुष्य के योग्य रिसालत की पदवी नहीं थी जैसाकि आधुनिक बिदअती लोग समझते हैं। تشابهت قلوبهم काफ़िर तथा मूर्तिपूजक रसूलों के मनुष्य होने का इंकार नहीं करते थे क्योंकि वह उनके पूरे परिवार से परिचित थे परन्तु रिसालत का इंकार कर देते रहे। जबकि आजकल के बिदअती लोग रिसालत का इंकार नही करते हैं परन्तु रिसालत के योग्य मनुष्यत्व को न समझने के कारण रसूलों के मनुष्य होने का इंकार करते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यदि हम मनुष्य के स्थान पर फ़रिश्ता भी रसूल बनाकर भेज देते अथवा इस रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पुष्टि के लिए हम कोई फ़रिश्ता भी भेज देते (जैसाकि

The Ummah Technology Mission

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ ۝٩

(९) तथा यदि हम रसूल को फ़रिश्ता बनाते तो उसे पुरुष बनाते तथा उन पर वही संदेह उत्पन्न करते जो सन्देह कर रहे हैं।[1]

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١٠

(१०)आप से पूर्व बहुत से रसूलों (ईशदूतों) का उपहास किया गया तो जो उपहास कर रहे थे उनके उपहास का दुष्परिणाम उन पर पलट पड़ा।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝١١

(११) (आप) कह दीजिए कि तनिक धरती पर घूम फिर कर देख लो कि झुठलाने वालों का क्या परिणाम हुआ ?

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

(१२) (आप) कह दीजिए कि जो कुछ आकाशों तथा धरती में है इन सब पर किसका स्वामित्व है ? (आप) कह दीजिए सब पर अल्लाह का स्वामित्व है, अल्लाह ने कृपा करना अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है।[2] तुमको

यहाँ इसी बात का वर्णन किया गया है) तथा फिर वह ईमान नहीं लाते तो बिना समय दिये ही उनका नाश कर दिया जाता।

[1]अर्थात यदि हम फ़रिश्ते ही को रसूल बनाकर भेजने का निर्णय करते तो स्पष्ट बात है कि वह फ़रिश्ते के रूप में आ नहीं सकता था, क्योंकि इस प्रकार से मनुष्य उससे भयभीत हो जाते तथा निकटता तथा घनिष्टता पैदा करने के बजाय दूर भागते। इसलिए आवश्यक था कि उसे मनुष्य के रूप में भेजा जाता। परन्तु तुम्हारे यह नेता फिर यही संदेह करते कि मनुष्य ही है, जो इस समय भी रसूल को मनुष्य के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं, तो फ़रिश्ते के भेजने का क्या लाभ ?

[2]जिस प्रकार हदीस में नबी सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जब अल्लाह तआला ने सृष्टि को पैदा किया तो अर्श पर यह लिख दिया «إِنَّ رَحْمَتِي تَغْلِبُ غَضَبِي» सहीह बुख़ारी किताबुत तौहीद व बदउल ख़लक, मुस्लिम किताबुल तौबा) नि:संदेह मेरी दया मेरे क्रोध पर प्रभावी है। परन्तु यह दया प्रलय के दिन केवल ईमानवालों के लिए होगी, काफ़िरों पर प्रभु अत्यधिक क्रोधित होगा। इसका अर्थ यह है कि दुनिया में उसकी कृपा तथा दया सामान्यरूप से सभी के लिए है चाहे वे ईमानवाला तथा काफ़िर, सत्कर्मी तथा कुकर्मी,

The Ummah Technology Mission

فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٢﴾

अल्लाह (तआला) क़ियामत के दिन एकत्रित करेगा, इसमें कोई सन्देह नहीं, जिन लोगों ने स्वयं को नष्ट कर लिया है, वही ईमान नहीं लायेंगे।

وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَ النَّهَارِ ط وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣﴾

(१३) तथा जो कुछ दिन रात में निवास करते हैं वह सभी कुछ अल्लाह के ही हैं तथा वह बहुत सुनने वाला एवं बड़ा जानने वाला है।

قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ط قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٤﴾

(१४)आप कहिये कि क्या मैं उस अल्लाह से अन्य को मित्र (स्वामी, ईष्टदेव) बना लूँ[1] जो आकाशों एवं पृथ्वी का रचयिता है तथा वह खिलाता है खिलाया नहीं जाता, आप कहिये कि मुझे आदेश किया गया है कि मैं उनमें सर्वप्रथम रहूँ जिसने (अल्लाह के प्रति) आत्म-समर्पण किया तथा मिश्रणवादियों में कदापि न रहूँ।

आज्ञाकारी तथा अवज्ञाकारी हों सभी उससे लाभान्वित हो रहे हैं। अल्लाह तआला किसी भी व्यक्ति के जीवन यापन की सामग्री को प्राप्त करने के साधन को उसकी अवहेलना एवं अवज्ञाकारिता के कारण बन्द नहीं करता, परन्तु उसकी दया का समानरूप केवल दुनिया तक ही सीमित है। आख़िरत (परलोक) में जो कि प्रतिफल का स्थान है, वहाँ अल्लाह के न्याय की विशेषता का पूर्ण प्रदर्शन होगा, जिसके परिणाम स्वरूप ईमान वाले उसकी कृपा तथा दया की छत्रछाया में स्थान पायेंगे तथा काफ़िर तथा उपद्रवी नरक की स्थाई यातना के भोगी होंगे। इसीलिए कुरआन में फ़रमाया गया।

﴿ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ﴾

"तथा हमारी कृपा प्रत्येक वस्तु पर विस्तृत है और हम शीघ्र उसे उनके लिये लिख देंगे जो अल्लाह से डरते हैं तथा ज़कात (धर्मदान) देते हैं तथा जो हमारी निशानियों (लक्षणों) के प्रति विश्वास रखते हैं।" (सूरः *अल-आराफ़*-१५६)

[1]वली से तात्पर्य यहाँ ईष्टदेव एवं स्वामी है, जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है अपितु मित्र कहना तो उचित है।

The Ummah Technology Mission

قُلْ إِنِّيٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥﴾

(१५) (आप) कह दीजिए कि मैं यदि अपने प्रभु का कहना न मानूँ तो मैं एक बड़े दिन की यातना से डराता हूँ।[1]

مَّن يُصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ ۚ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ﴿١٦﴾

(१६) जिससे उस दिन यातना समाप्त कर दी जायेगी, उस पर अल्लाह ने अति कृपा की तथा यह स्पष्ट सफलता है।[2]

وَإِن يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِن يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٧﴾

(१७) तथा यदि अल्लाह (तआला) तुझको कोई कष्ट दे तो उसको दूर करने वाला अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं है तथा यदि तुझको अल्लाह तआला लाभ प्रदान करे तो वह प्रत्येक चीज़ पर प्रभुत्व रखने वाला है।[3]

---

[1] अर्थात यदि मैंने भी अपने पालनहार की अवज्ञा करते हुए उस के सिवाय अन्य को ईष्टदेव बना लिया तो अल्लाह की यातना (प्रकोप) से नहीं बच सकूँगा।

[2] जिस प्रकार से अन्य स्थान पर कहा गया है।

﴿ فَمَن زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ﴾

"जो अग्नि (नरक) से दूर करके स्वर्ग में प्रवेश पा गया, वह सफल हो गया।" *(सूरः आले-इमरान-१८५)*

इसलिए कि सफलता हानि से बच जाने तथा लाभ प्राप्त करने का नाम है। तथा स्वर्ग से बढ़कर लाभ क्या होगा ?

[3] अर्थात लाभ हानि का अधिकारी तथा समस्त विश्व की प्रत्येक वस्तु का स्वामी अल्लाह ही है। तथा बिना उसके आदेश एवं निर्णय के कोई खण्डन करने वाला नहीं है। एक हदीस में इस विषय को इस प्रकार वर्णन किया गया है।

« اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا الجَدِّ مِنْكَ الجَدُّ ».

"हे अल्लाह जो तू प्रदान करे उसे कोई रोक नहीं सकता, तथा जो तू रोक ले, उसे कोई दे नहीं सकता, तथा किसी की प्रतिष्ठा तेरी तुलना में उसे लाभ नहीं पहुँचा सकती।" (सहीह बुख़ारी किताबुल एअतेसाम वल कद्र वद्दावात, मुस्लिम किताबुल सलात वल मसाजिद)

The Ummah Technology Mission

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١٨﴾

(१८) वही अपने भक्तों पर प्रभावशाली है तथा वही विज्ञाता सूचित है।[1]

قُلْ اَىُّ شَىْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ شَهِيْدٌۢ بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ ۫ وَاُوْحِىَ اِلَىَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ؕ اَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰى ؕ قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِىْ بَرِىْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿١٩﴾

(१९) आप कहिये कि किस की गवाही महान है, कहिये कि हमारे तथा तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह (साक्षी) है।[2] तथा यह क़ुरआन मेरी ओर प्रकाशना किया गया है तकि उसके द्वारा तुम्हें तथा जिस तक पहुँचे उन सभों को सचेत करूँ,[3] क्या तुम गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ अन्य पूज्य हैं? आप कह दें कि मैं इस की गवाही नहीं देता, आप कहिये कि वह एक ही अराध्य है तथा मैं तुम्हारे मिश्रण से निर्दोष हूँ।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠﴾

(२०) जिन्हें हमने किताब (तौरात तथा इंजील) दी है वह आप (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को उसी प्रकार पहचानते हैं जैसे

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रत्येक नमाज के पश्चात इस प्रार्थना का जप करते थे।

[1]अर्थात सभी माथे उसके आगे झुके हुए हैं, बड़े-बड़े शक्तिशाली व्यक्ति उसके समक्ष असहाय हैं, वह प्रत्येक चीज़ पर प्रभावशाली है तथा सम्पूर्ण सृष्टि उसकी आज्ञाकारी है, वह अपने प्रत्येक कार्य में सक्षम है तथा प्रत्येक वस्तु की उसे सूचना है, उसे यह भी ज्ञात है कि उसके कृपा के योग्य कौन है तथा कौन नहीं है।

[2]अर्थात अल्लाह तआला ही अपने एक तथा पालनहार होने का स्वयं ही साक्षी है। उससे बढ़ कर कोई भी गवाह नहीं।

[3]रबिअ विन अनस कहते हैं कि अब जिसके पास भी यह क़ुरआन पहुँच जाये, यदि वह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सच्चा अनुयायी है, तो उसका यह कर्तव्य है कि वह भी लोगों को अल्लाह की ओर उसी प्रकार आमन्त्रित करे जिस प्रकार रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों को आमन्त्रित किया था तथा उसी प्रकार सतर्क करे जिस प्रकार से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सतर्क किया था। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

अपने पुत्रों को, जो अपना आपा खो दिये हैं वही विश्वास नहीं करेंगे।[1]

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۗ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٢١﴾

(२१) तथा उस से बढ़कर अत्याचारी कौन है जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाये एवं उसकी निशानियों (चिन्हों) को मिथ्या माने[2] वस्तुत: अत्याचारी सफल नहीं होते।[3]

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا أَيْنَ شُرَكَاؤُكُمُ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा जिस दिन हम सब को एकत्र करेंगे, फिर जिन्होंने मिश्रण किया उन से कहेंगे वे कहाँ हैं जिनको तुम (अल्लाह का) साझी समझ रहे थे वह दिन स्मरणीय है।

---

[1] يعرفونه में सर्वनाम (उसको) है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर फिरता है, अर्थात अहले किताब (यहूदी एवं ईसाई) आपको अपने पुत्रों की भाँति पहचानते हैं, क्योंकि आप की विशेषताओं का वर्णन उनके धर्मशास्त्रों में विद्यमान है तथा इसके कारण अन्तिम ईशदूत की प्रतीक्षा कर रहे थे अब उनमें से जो आपके प्रति विश्वास न करें वह भारी क्षति में हैं, क्योंकि यह जानते हुये इंकार कर रहे हैं।

[2]अर्थात जिस प्रकार से अल्लाह पर मिथ्याभियोगी सबसे बड़ा अत्याचारी है इसी प्रकार वह भी है जो अल्लाह की आयतों तथा सत्य ईशदूत को न मानता हो। मिथ्या दूतत्व के दावे पर इतनी कड़ी चेतावनी के उपरान्त भी अनेकों ने अनेक युग में नबी होने का मिथ्या दावा किया तथा ऐसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस भविष्यवाणी की पूर्ति हो गयी कि ३० बड़े मिथ्यावादी होंगे, प्रत्येक ईशदूत होने का दावा करेंगें, विगत शताब्दी में भी "कादियान" के एक वंचक ने नबी होने का दावा किया तथा आज उसके अनुयायी उसे इसलिए सत्यदूत तथा प्रतिज्ञात मसीह मानते हैं की उसे एक अति अल्प संख्या नबी मानती है जबकि किसी धूर्त को नबी मान लेना उसकी सच्चाई का प्रमाण नहीं बन सकता। सत्य तो क़ुरआन तथा हदीस से तर्क संगत होना चाहिए।

[3]जब दोनों ही अत्याचारी हैं, तो न मिथ्यावादी ही सफल होगा और न निवर्ती। इसलिए आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने परिणाम पर भली-भाँति विचार कर ले।

The Ummah Technology Mission

ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ إِلَّآ أَنْ قَالُوا وَاللَّهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ ﴿٢٣﴾

(२३) फिर उनके मिश्रण का सिवाये इसके कोई बहाना न होगा कि कहें कि अल्लाह की शपथ हम मिश्रणवादी नहीं थे।[1]

انْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوا عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٤﴾

(२४) देखो कि वह कैसे अपने ऊपर झूठ बोल गये तथा उनका आरोप उनसे खो गया।[2]

وَمِنْهُم مَّن يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ

(२५) उनमें से कुछ आप की ओर कान धरते हैं।[3] तथा हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल

---

[1]फ़ित्न: का एक अर्थ मिश्रण तथा एक अर्थ क्षमा-याचना के किये गये हैं। अर्थात अन्त में यह तर्क तथा क्षमा-याचना को प्रस्तुत करके छुटकारा पाने का प्रयत्न करेंगे कि हम तो मूर्तिपूजक नहीं थे। तथा इमाम इब्ने जरीर ने इसका अर्थ वर्णित किया है।

ثم لم يكن قيلهم عند فتنتنا إياهم اعتذارا مما سلف منهم من الشرك بالله

"जब हम उन्हें प्रश्नों की भट्ठी में झोंक देंगे, तो दुनिया में उन्होंने जो मूर्तिपूजन किया, उसकी क्षमा के लिए यह कहे बिना उनके लिए कोई अन्य मार्ग न रह जायेगा कि हम तो मूर्तिपूजक ही न थे।"

यहाँ यह शंका न हो कि वहाँ तो मनुष्य के हाथ-पैर गवाही देंगे तथा मुख पर मोहर लगा दी जायेगी, फिर यह इंकार किस प्रकार करेंगे? इसका उत्तर आदरणीय इब्ने अब्बास ने दिया है कि जब मूर्तिपूजक देखेंगे कि मुसलमान स्वर्ग में जा रहे हैं, तो वह आपस में विचार-विमर्श करके मूर्तिपूजन से ही इंकार कर देंगे। तब अल्लाह तआला उनके मुख पर मोहर लगा देगा। तथा उनके हाथ-पैर उन्होंने जो किया होगा उसकी गवाही देंगे, फिर वह अल्लाह तआला से कोई बात छुपाने की शक्ति न रख सकेंगे। (इब्ने कसीर)

[2]परन्तु वहाँ उन्हें इस स्पष्ट असत्य का कोई लाभ न होगा जिस प्रकार दुनिया में मनुष्य कभी-कभार ऐसा आभास करता है। इसी प्रकार उनके झूठे इष्टदेव भी, जिनकी वे अल्लाह के अतिरिक्त पूजा एवं उपासना करते थे तथा अपना कष्टनिवारक, सहायक, कृपा निधान तथा पक्षक समझते थे लुप्त हो जायेंगे तथा वहाँ उनपर अल्लाह के साथ अन्य को सम्मिलित करना स्पष्ट हो जायेगा, परन्तु वहाँ उनकी पूर्ति का कोई साधन न होगा।

[3]अर्थात यह मूर्तिपूजक आप के पास क़ुरआन तो आकर सुनते हैं, परन्तु चूँकि उद्देश्य मार्गदर्शन प्राप्त करना नहीं है, इसलिए इससे कोई लाभ नहीं प्राप्त करते।

The Ummah Technology Mission

وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝۲۵

रखे हैं कि उसे समझें तथा उनके कान बहरे हैं।[1] और यदि वह सभी लक्षणों को देख लें तब भी उन पर विश्वास नहीं करेंगे यहाँ तक कि जब आप के पास आते हैं झगड़ा करते हैं, काफ़िर (विश्वासहीन) कहते हैं कि यह मात्र पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।[2]

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْــَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝۲۶

(२६) और यह लोग इससे दूसरों को भी रोकते हैं तथा स्वयं भी दूर-दूर रहते हैं।[3] तथा ये लोग अपने आप को नष्ट कर रहे हैं एवं कुछ नहीं जानते।[4]

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَي النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝۲۷

(२७) तथा यदि आप उस समय देखें जब ये लोग नरक के निकट खड़े किये जायेंगे तो कहेंगे[5] हाय! क्या ही अच्छी बात हो कि हम फिर वापस भेज दिये जायें (तथा यदि ऐसा हो

---

[1]इसके अतिरिक्त उनके अविश्वास प्रतिकार स्वरूप हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिये हैं तथा उनको कान से बधिर कर दिया है जिसके कारण उनके दिलों को सत्य समझने तथा कान सत्य सुनने योग्य नहीं रहे।

[2]अब वह इतने भटक चुके हैं कि इस अज्ञान के अंधकार में यदि वे चमत्कार का प्रकाश भी देख लें तो भी यह संशय तथा संदेह में पड़े रहेंगे और ईमान नहीं लायेंगे, ये ईमान से वंचित ही रहेंगे तथा उनकी ईर्ष्या तथा द्वेष इतना बढ़ गया है कि क़ुरआन करीम को पूर्वजों की अप्रमाणित कहानियाँ कहते हैं।

[3]अर्थात जन-सामान्य को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तथा क़ुरआन करीम से रोकते हैं ताकि वे ईमान न लायें तथा स्वयं भी दूर-दूर रहते हैं।

[4]परन्तु लोगों को रोकना तथा स्वयं भी दूर रहना हमारा अथवा हमारे पैग़म्बर का क्या बिगाड़ लेगा? इस प्रकार का कार्य करके अज्ञानता में अपने नाश का साधन स्वयं तैयार कर रहे हैं।

[5]यहाँ पर यदि का उत्तर लुप्त है जो इस प्रकार होगा, "तो आप को भयानक दृश्य दिखायी देगा।"

The Ummah Technology Mission

जाये) तो हम अपने प्रभु की निशानियों को न झुठलायें तथा हम ईमानवालों में से हो जायें।[1]

بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ۭ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝۲۸

(२८) अपितु जिस वस्तु को इसके पूर्व छुपाया करते थे, वह उनके समक्ष आ गयी है।[2] तथा यदि यह लोग पुन: वापस भेज दिये जायें तब भी यह वही करेंगे जिससे इनको रोका गया था तथा नि:सन्देह वे लोग झूठे हैं।[3]

---

[1]परन्तु वहाँ से पुन: दुनिया में आना सम्भव नहीं है कि वे अपनी इस इच्छा की पूर्ति कर सकें। काफ़िरों की इन इच्छाओं का वर्णन क़ुरआन करीम में विभिन्न स्थानों पर हुआ है जैसे :

﴿رَبَّنَآ أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَٰلِمُونَ ۞ قَالَ اخْسَـُٔوا۟ فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ﴾

"हे हमारे प्रभु ! हमें इस नरक से निकाल ले यदि हम पुन: अवज्ञाकारी हों तो अवश्य अत्याचारी हैं। अल्लाह तआला फ़रमायेगा इसी में दुष्टों पड़े रहो, मुझसे बात न करो।" (सूरः *अल-मोमिनून*- १०७-१०८)

﴿رَبَّنَآ أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَٱرْجِعْنَا نَعْمَلْ صَٰلِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ﴾

"हे हमारे प्रभु ! हमने देख लिया तथा सुन लिया, अब हमें पुन: दुनिया में भेज दे ताकि हम पुण्य का कार्य करें, अब हमें विश्वास हो गया।" (सूरः *अलिफ़ लाम मीम अल-सजदः*-१२)

[2]بَلْ शब्द अरबी भाषा में पहली बात को त्यागने के लिए आता है। इसके कई भावार्थ किये गये हैं १. उनके लिए वह अविश्वास, प्रतिरोध तथा झूठ व्यक्त हो जायेगा जो उससे पूर्व वे संसार अथवा परलोक में छुपाते थे। अर्थात जिसका इंकार करते थे, जैसे वहाँ भी प्रारम्भ में कहेंगे कि हम तो मूर्तिपूजक ही नहीं थे। २. अर्थात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा पवित्र क़ुरआन का ज्ञान जो उनके दिलों में था परन्तु अपने अनुयायियों से छिपाते थे, वहाँ प्रकाशित होंगे। ३. अथवा जो अवसरवादी थे वहाँ उनका अवसरवाद प्रकाश में आ जायेगा जिसे वे दुनिया में ईमानवालों से छिपाते थे। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[3]अर्थात पुन: संसार में आने की इच्छा, ईमान लाने के लिए नहीं केवल यातना से बचने के लिए है, जो उनको क़ियामत (प्रलय) के दिन सामने आयेगा तथा जिसका वे निरीक्षण कर लेंगे। यदि यह संसार में पुन: भेज भी दिये जायें तब भी यह वही कुछ करेंगे जो पूर्व में करते रहे थे।

The Ummah Technology Mission

وَقَالُوْٓا اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٢٩﴾

(२९) तथा यह कहते हैं कि केवल यही सांसारिक जीवन हमारा जीवन है तथा हम पुन: जीवित नहीं किये जायेंगे।[1]

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۭ قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ۭ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۭ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा यदि आप उस समय देखें जब ये अपने प्रभु के समक्ष खड़े किये जायेंगे। अल्लाह (तआला) फ़रमायेगा कि क्या यह सत्य नहीं है ? वे कहेंगे नि:सन्देह प्रभु की सौगन्ध सत्य है। अल्लाह (तआला) फ़रमायेगा तो अपने कुफ़्र (अविश्वास) की यातना सहन करो।[2]

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَاۗءِ اللّٰهِ ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰي مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰي ظُهُوْرِهِمْ ۭ اَلَا سَاۗءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٣١﴾

(३१) नि:सन्देह हानि में पड़े वह लोग जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया। यहाँ तक कि जब वह निर्धारित समय उन पर सहसा आ पड़ेगा, कहेंगे कि हाय अफ़सोस हमारे आलस्य पर जो इसके विषय में हुई। तथा उनकी अवस्था यह होगी कि अपना बोझ अपनी कमर पर लादे हुए होंगे। सावधान वह बुरा बोझ लादेंगे।[3]

---

[1]ये मरणोपरान्त पुनर्जीवन से इंकार धर्महीन लोग ही करते हैं तथा इस वास्तविकता से इंकार ही अधर्म तथा अवज्ञा का कारण है। वरन यदि वास्तव में मनुष्य के दिल में परलोक के प्रति सत्य विश्वास हो जाये, तो अधर्म तथा अवज्ञा के मार्ग से तुरन्त क्षमा-याचना कर लेगा।

[2]अर्थात आँखों से दर्शन कर लेने के पश्चात तो वे स्वीकार कर लेंगे कि आख़िरत का जीवन वास्तव में सत्य है। परन्तु वहाँ इस स्वीकार का लाभ न होगा तथा अल्लाह तआला उनसे फ़रमायेगा कि अब तो अपने अविश्वास के प्रतिकार में यातना का स्वाद चखो।

[3]अर्थात जो अल्लाह से मिलने का इंकार करते हैं वह जिस क्षति एवं असफलता में होंगे तथा अपने आलस्य पर जिस प्रकार लज्जित होंगे तथा पापों का भार लादे होंगे आयत में उसी का चित्रण किया गया है। فرطنا فيها में सर्वनाम الساعة (प्रलय) की ओर फिर रहा है, अर्थात प्रलय की तैयारी तथा उसकी स्वीकृति के विषय में जो त्रुटि हमसे हुई अथवा الصفقة (सौदा) की ओर फिर रहा है, यह शब्द यद्यपि वाक्य में नहीं किन्तु पूर्व के वर्णन से

The Ummah Technology Mission

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा सांसारिक जीवन तो कुछ भी नहीं सिवाये खेल-तमाशा के तथा अंतिम घर (परलोक) अल्लाह से डरने वालों के लिए अच्छा है। क्या तुम सोच-विचार नहीं करते हो ?

قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِىْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٣٣﴾

(३३) हम भली-भाँति जानते हैं कि उनके कथन आप को दुखी करते हैं, तो यह लोग आप को झूठा नहीं कहते, परन्तु यह अत्याचारी अल्लाह तआला की आयतों का इंकार करते हैं।[1]

यह भावार्थ सांकेतिक होता है अथवा इस सौदे (क्रय-विक्रय) से तात्पर्य विश्वास के बदले अविश्वास करना है, अर्थात व्यापार करके हमने बड़ी तुच्छता की अथवा सर्वनाम حياة (जीवन) की ओर फिर रहा है, अर्थात हमने अपने जीवन में पाप तथा अधर्म एवं मिश्रण करके जो आलस्य किये (फ़तहुल क़दीर)

[1]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को काफ़िरों के झुठलाने पर जो कष्ट एवं दुख पहुँचता था, उसके निराकरण तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सान्त्वना के लिए फ़रमाया जा रहा है कि यह आप को नहीं झुठला रहे हैं (आप को तो सत्यवादी तथा ईमानदार मानते हैं) अपितु यह अल्लाह की आयतों को झुठलाया जा रहा है। तथा यह एक अत्याचार है जो वह कर रहे हैं। त्रिमज़ी आदि में एक कथन है कि अबू जहल ने एक बार रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि ऐ मोहम्मद ! (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हम तुमको नहीं अपितु जो कुछ लेकर आये हो उसको झुठलाते हैं। इस पर यह आयत उतरी। त्रिमज़ी का यह कथन प्रमाण के अनुसार क्षीण है परन्तु अन्य सहीह कथन से इस घटना की पुष्टि होती है कि मक्का के काफ़िर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सत्यवादिता, ईमानदारी तथा स्पष्ट न्यायवादी होने को मानते थे, परन्तु इसके बावजूद वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाने से भागते थे। आज भी जो लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुचरित्रता, न्यायकारी, ईमानदारी तथा सत्यवादिता का ख़ूब झूम-झूम कर वर्णन करते हैं तथा इस विषय पर धारा प्रवाह भाषण देते हैं। परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुकरण करने में कठिनाई अनुभव करते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन की तुलना में चिन्तन तथा विचार तथा अपने नेताओं के कथनों को महत्व देते हैं। उन्हें विचार करना चाहिए कि यह किसका आचरण है जिसे उन्होंने अपनाया है ?

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ فَصَبَرُوا عَلَىٰ مَا كُذِّبُوا وَأُوذُوا حَتَّىٰ أَتَاهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ وَلَقَدْ جَاءَكَ مِن نَّبَإِي الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा आप से पूर्व रसूलों को झूठा कहा जा चुका है और उन्होंने उस पर धैर्य धारण किया तथा वे कष्ट दिये गये यहाँ तक कि उनके पास हमारी सहायता आ गई,[1] अल्लाह की बातें कोई बदलने वाला नहीं।[2] तथा आप के पास पैग़म्बरों (उपदेशकों) की घटनायें आ चुकी हैं।[3]

وَإِن كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَن تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي

(३५) और यदि उनका मुहँ फेरना आप पर भारी हो रहा है तो यदि आप से हो सके तो धरती

---

[1]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पुनः सान्त्वना दी जा रही है कि यह प्रथम घटना नहीं है कि काफ़िर अल्लाह के पैग़म्बरों का इंकार कर रहे हैं, अपितु इससे पूर्व बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं जिनको झुठलाया जाता रहा। उसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उनका अनुकरण करते हुए उसी प्रकार धैर्य तथा साहस से काम लें जिस प्रकार से उन्होंने झुठलाने तथा कष्ट पहुँचाने पर धैर्य से काम लिया यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए भी हमारी सहायता पहुँच जाये, जिस प्रकार हमने पूर्व के रसूलों की सहायता की, तथा हम अपना वचन भंग नहीं करते। हमने वचन दिया है।

﴿إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا﴾

"निःसन्देह हम अपने पैग़म्बर तथा ईमानवालों की सहायता करेंगे।" (सूरः अल-मोमिन-५१)

﴿كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي﴾

"अल्लाह ने यह निर्णय कर दिया है कि मैं और मेरे रसूल प्रभावशाली रहेंगे।" (सूरः अल-मुजादिलः-२)

इत्यादि आयतों से (जैसे सूरः अल-साफ़्फ़ात-१७१ तथा १७२)

[2]अपितु उसका वचन पूर्ण होकर ही रहेगा कि आप काफ़िरों पर प्रभावशाली तथा विजयी रहेंगे। अतएव ऐसे ही हुआ।

[3]जिससे स्पष्ट हुआ कि प्रारम्भ में यद्यपि उनके समुदायों ने उन्हें झुठलाया, उन्हें कष्ट दिये तथा उनके जीवन का ख़तरा बन गये, परन्तु अन्ततः अल्लाह की कृपा से सफलता प्राप्त हुई तथा स्थाई मुक्ति उनका भाग्य बन गयी।

The Ummah Technology Mission

الْاَرْضِ اَوْ سُلَّمًا فِی السَّمَآءِ فَتَاْتِیَهُمْ بِاٰیَةٍ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَی الْهُدٰی فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِیْنَ ﴿۳۵﴾

में कोई सुरंग अथवा आकाश में कोई सीढ़ी खोज लें और उनके पास कोई चमत्कार ला दें तथा यदि अल्लाह चाहता तोउन्हें सत्य मार्ग पर एकत्रित कर देता।[1] अतः मुर्खों में न बनिये।[2]

اِنَّمَا یَسْتَجِیْبُ الَّذِیْنَ یَسْمَعُوْنَ ؕ وَالْمَوْتٰی یَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَیْهِ یُرْجَعُوْنَ ﴿۳۶﴾

(३६) वही लोग स्वीकार करते हैं, जो सुनते है।[3] तथा मरे हुए लोगों को अल्लाह (तआला) जीवित करके उठायेगा, फिर सब अल्लाह ही की ओर लाये जायेंगे।

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَیْهِ اٰیَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰۤی اَنْ یُّنَزِّلَ

(३७) तथा उन्होंने कहा कि उन पर उनके पालनहार की ओर से कोई चमत्कार क्यों नहीं

---

[1] नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को विरोधियों तथा काफ़िरों के झुठलाने से जो कष्ट तथा दुख पहुँचता था उसके आधार पर अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि ये तो अल्लाह तआला की इच्छा तथा भाग्य से होना ही था तथा अल्लाह के आदेश के बिना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें इस्लाम धर्म स्वीकार करने लिए तैयार नहीं कर सकते, चाहे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम धरती में सुरंग खोदकर तथा आकाश पर सीढ़ी लगाकर कोई निशानी लाकर उन्हें दिखा भी दें। प्रथम तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए ऐसा करना असम्भव है। तथा यदि ऐसा मान भी लिया जाये कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसा कर भी लें तो भी ये लोग ईमान न लायेंगे। क्योंकि उनका ईमान लाना अल्लाह तआला की इच्छा तथा आदेश के अधीन है जो पूर्ण रूप से मनुष्य की बौद्धिक सीमा से बाहर की बात है। अपितु उसका एक स्पष्ट प्रमाण यह है कि अल्लाह तआला उन्हें अधिकार तथा विचार की स्वतंत्रा देकर परीक्षा ले रहा है। वरन् अल्लाह तआला के लिए यह कठिन नहीं था कि सभी लोगों को सत्य कर्म में लगा दे। उसके लिए शब्द كن (कुन) से ही एक क्षण से भी कम में यह कार्य हो सकता है।

[2] अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके अविश्वास से दुखी एवं चिन्तित न हों क्योंकि इसका सम्बन्ध अल्लाह तआला की इच्छा से है, इसलिए इसे अल्लाह के लिए ही छोड़ें, वही इसके कारण तथा समस्या को भली-भाँति समझता है।

[3] अर्थात उन काफ़िरों की अवस्था मृतकों के समान है जिस प्रकार से वह बोलने तथा सुनने की शक्ति से वंचित हैं, यह भी चूँकि अपनी बुद्धि तथा विचार से सत्य के समझने का काम नहीं लेते, इसलिए यह भी मृतक समान हैं।

The Ummah Technology Mission

اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١١٢﴾

उतारा गया ? आप कह दें कि अल्लाह कोई चमत्कार उतारने का पूर्ण सामर्थ्य रखता है।[1] किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।[2]

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ﴿١١٣﴾

(३८) तथा जितने प्रकार के जीवधारी धरती पर चलने वाले हैं तथा जितने प्रकार के पंख से उड़ने वाले पक्षी हैं, उनमें से कोई भी प्रकार ऐसा नहीं जो कि तुम्हारी तरह के गुट न हों।[3] हमने पुस्तिका में लिखने से कोई वस्तु न छोड़ी।[4]

---

[1]अर्थात ऐसा चमत्कार जो उनको ईमान लाने पर बाध्य कर दे, जैसे कि उनकी आँखों के समक्ष फ़रिश्ता (स्वर्गदूत) उतरे, अथवा पर्वत को उठा कर उनके ऊपर कर दिया जाये, जिस प्रकार इस्राईल की सन्तान के साथ हुआ। कहा, अल्लाह तआला नि:सन्देह ऐसा कर सकता है परन्तु उसने ऐसा इसलिए नही किया कि फिर तो मनुष्यों की परीक्षा की समस्या ही समाप्त हो जायेगी। इसके अतिरिक्त उनकी माँग पर यदि कोई चमत्कार दिखा भी दिया जाता, फिर भी ये लोग ईमान न लाते, तो तुरन्त उन्हें इस संसार में कठोर दण्ड दे दिया जाता। इस प्रकार अल्लाह के इस निर्णय से उनका ही सांसारिक लाभ है।

[2]जो अल्लाह के आदेश तथा निर्णय का भेद नहीं समझ सकते।

[3]अर्थात उन्हें भी अल्लाह तआला ने उसी प्रकार जन्म दिया जिस प्रकार तुम्हें जन्म दिया, इसी प्रकार उन्हें भी जीविका उपलब्ध कराता है जिस प्रकार तुम्हें उपलब्ध कराता है तथा तुम्हारी ही तरह वह भी उसकी शक्ति तथा ज्ञान की परिधि में हैं।

[4]पुस्तिका से तात्पर्य लौह महफ़ूज़ है। (सुरक्षित पुस्तक है जिसमें सभी लोगों का भाग्य उन के कर्मानुसार अल्लाह के पूर्व ज्ञान के आधार पर सुरक्षित करके लिख दिया है) अर्थात वहाँ प्रत्येक चीज़ लिखी हुई है अथवा क़ुरआन है जिसमें संक्षिप्त तथा विस्तार पूर्वक धर्म के प्रत्येक नियम पर प्रकाश डाला गया है। जैसाकि अन्य स्थान पर फ़रमाया गया है।

﴿ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ﴾

"हमने आप पर ऐसी किताब उतारी है जिसमें प्रत्येक चीज़ का वर्णन है।" (सूर: अल-नहल-८९)

यहाँ पर विषय के आधार पर पहला अर्थ निकटतम है।

The Ummah Technology Mission

फिर सब अपने प्रभु के पास एकत्रित किये जायेंगे.।[1]

(३९) जिन लोगों ने हमारी आयतों को नहीं माना वह बहरे गुँगे अन्धकारों में हैं। अल्लाह जिसे चाहता है विपथ कर देता है तथा जिसे चाहता है सीधे मार्ग पर लगा देता है।[2]

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِى الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ؕ وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٩﴾

---

[1]अर्थात सभी वर्णित गुट एकत्रित कर दिये जायेंगे। इससे विद्वानों के एक गुट ने यह अर्थ निकाला है कि जिस प्रकार मनुष्यों को मृत्यु के उपरान्त जीवित करके एकत्रित करके उनके कर्मों का हिसाब होगा उसी प्रकार अन्य जीवों तथा अन्य सृष्टि को भी जीवित करके हिसाब होगा। जिस प्रकार से एक हदीस में भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "यदि किसी सींग वाली बकरी ने बिना सींग वाली बकरी पर कोई अत्याचार किया होगा तो क़ियामत वाले दिन सींग वाली बकरी से बदला लिया जायेगा।" (सहीह मुस्लिम संख्या १९९७) कुछ विद्वानों ने हश्र से तात्पर्य केवल मृत्यु लिया है अर्थात सभी को मृत्यु आयेगी। कुछ विद्वानों ने कहा है कि यहाँ हश्र से तात्पर्य अविश्वासियों का एकत्रित होना है। तथा मध्य में जो बाते आयीं हैं वे केवल एक मध्यावर्ती वाक्य है। तथा हदीस में जो बकरी से बदला लेने का वर्णन है यह उदाहरणार्थ प्रयोग हुआ है जिसका उद्देश्य क़ियामत के हिसाब-किताब की प्रबलता एवं विशेषता को स्पष्ट करना है। अथवा यह कि जीवधारियों में से केवल अत्याचारियों तथा जिन पर अत्याचार हुआ है दोनों को जीवित करके अत्याचारी से जिन पर अत्याचार हुआ है को बदला दिला कर पुनः मार दिया जायेगा। (फ़तहुल क़दीर आदि)

[2]अल्लाह की आयतों को झुठलाने वाले चूँकि अपने कानों से सत्य बात नहीं सुनते तथा अपने मुख से सत्य नहीं बोलते, इसलिए वह ऐसे हैं जैसे मूक तथा बधिर होते हैं। इसके अतिरिक्त यह कुफ़्र अपमान के अंधकार में घिरे हुए होते हैं इसलिए उन्हें कोई ऐसी वस्तु दिखायी नहीं देती जिससे वे अपना सुधार कर सकें। अर्थात जैसे उनकी चिन्तन शक्ति छीन ली गयी हो जिसके कारण वह परिस्थितियों से लाभ नहीं उठा सकते। फिर कहा, "सभी अधिकार अल्लाह के हाथ में है जिसे वह चाहे भटका दे जिसे चाहे सीधे मार्ग पर लगा दे।" परन्तु उसका यह निर्णय निराधार नहीं है, अपितु न्याय तथा निर्णय के नियम के आधार पर होता है। भटकाता उसे ही है जो स्वयं भटकना चाहता है तथा उससे निकलने का न तो प्रयत्न करना चाहता है न प्रिय समझता है। (इसके अतिरिक्त देखिये सूरः *अल-बक़रः* आयत संख्या २६ की व्याख्या)

The Ummah Technology Mission

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٠﴾

(४०) आप कह दीजिए कि अपना हाल तो बताओ कि यदि तुम पर अल्लाह की कोई यातना आ पड़े अथवा तुम पर क़ियामत ही आ पहुँचे तो क्या अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को पुकारोगे ? यदि तुम सच्चे हो।

بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَآءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ﴿٤١﴾

(४१) अपितु विशेषरूप से उसी को पुकारोगे, फिर जिसके लिए तुम पुकारोगे यदि वह चाहे तो उसको हटा भी दे तथा जिनकोतुम साझीदार ठहराते हो उन सभी को भूल जाओगे।[1]

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٤٢﴾

(४२) तथा हमने अन्य समुदायों की ओर भी जो कि आप से पूर्व गुज़र चुके हैं पैग़म्बर भेजे थे, उनको भी हमने निर्धनता तथा रोग से पकड़ा ताकि वे शिथिल पड़ जायें।

فَلَوْلَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾

(४३) इस प्रकार जो उन्हें हमारा दण्ड मिला था, वे शिथिल क्यों न पड़े ? परन्तु उनके हृदय कठोर हो गये तथा शैतान ने उनके कर्मों को उनके विचारों में अलंकृत कर दिया।[2]

---

[1] اَرَءَيْتَكُمْ में काफ़, मीम, सम्बोधन के लिए है और इसका अर्थ यह है कि मुझे बताओ अथवा सूचित करो इस विषय कि चर्चा पवित्र क़ुरआन में कई स्थानों में की गई है, (देखिये सूरः बक़रः आयत १६५ का भाष्य) इसका भावार्थ यह हुआ कि एकेश्वरवाद मानव प्रकृति की ध्वनि है तथा वह समाज अथवा पूर्वजों की प्रथा के अनुसरण के कारण अनेकेश्वरवादी आस्था एवं कर्म में लिप्त हो जाता है। किन्तु जब किसी संकट में पड़ जाता है तो फिर यह सब भूल जाता है तथा सहसा उसी एक को पुकारता है जिसे पुकारना चाहिए। काश ! लोग इसी प्रकृति पर स्थिर रहें, क्योंकि मोक्ष इसी प्राकृतिक ध्वनि को अपनाने में है।

[2] जब समुदाय नैतिक तथा कर्मिक पतन के कारण अपने मनों को मलिन कर लेते हैं तो उस समय अल्लाह का प्रकोप भी उन्हें घोर अचेतना से सचेत करने में असफल हो जाता है तथा उनके हाथ क्षमा-याचना के लिए अल्लाह की ओर नहीं उठते तथा दिल अल्लाह

The Ummah Technology Mission

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ؕ حَتّٰٓى اِذَا فَرِحُوْا بِمَآ اُوْتُوْٓا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ﴿٤٤﴾

(४४) तथा जब वह उस प्रसंग को भूल गये जिसकी शिक्षा दी गई तो हमने उन पर प्रत्येक वस्तु के द्वार खोल दिये यहाँ तक कि वह जब अपनी प्राप्त वस्तुओं पर इतरा गये तो उन्हें हमने अकस्मात धर लिया और वह निराश हो कर रह गये।

فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ؕ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٥﴾

(४५) फिर अत्याचारी लोगों की जड़ कट गयी तथा अल्लाह (तआला) की प्रशंसा है जो विश्व का पोषक है।[1]

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ؕ اُنْظُرْ

(४६) (आप) कहिए कि यह बताओ यदि अल्लाह (तआला) तुम्हारे सुनने तथा देखने की शक्ति पूर्णरूप से ले ले तथा तुम्हारे दिलों पर मोहर लगा दे तोअल्लाह (तआला) के अतिरिक्त कोई

के लिये नहीं झुकते, न उनका ध्यान सुधार की ओर फिरता है, अपितु अपने दुष्कर्मों के परिकल्पना के सुन्दर पर्दे में अवृत्त करके अपने मन को संतोष दे लेते हैं, जिसे शैतान (राक्षस) ने उनके लिये अलंकृत बना दिया है।

[1]इसमें उस समुदाय का वर्णन है जो अल्लाह को भूल गये। कभी सामयिक रूप से ऐसे समुदायों पर सुख-सुविधा के सभी साधनों के द्वार खोल देते हैं। यहाँ तक कि वह उसमें अति मग्न हो जाते हैं तथा अपने भौतिक सुख तथा उन्नति पर इतराने लगते हैं तब हम अपने हिसाब के लिए पकड़ लेते हैं तथा उनका उन्मूलन कर देते हैं। हदीस में आता है नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायां कि जब तुम देखो कि अल्लाह तआला अवज्ञा उपरान्त किसी को उसकी इच्छानुसार दुनिया प्रदान कर रहा है तो यह ढील देना है। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यही आयत पढ़ी। (मुसनद अहमद भाग ४, पृष्ठ १४५) क़ुरआन करीम की इस आयत तथा हदीस नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह ज्ञात हुआ कि सांसारिक सम्पन्नता तथा उन्नति इस बात का प्रमाण नहीं कि जिस व्यक्ति अथवा समुदाय को यह प्राप्त है वह अल्लाह तआला का प्रिय है तथा अल्लाह तआला उससे प्रसन्न है। जैसाकि कुछ लोग ऐसा समझते हैं अपितु कुछ तो उन्हें ﴿أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ﴾ का त्रताथ मानते तथा उन्हें पूनीत भक्त मानते हैं। ऐसा समझना तथा कहना ग़लत है। कुपथ समुदाय को सांसारिक खुशहाली, उन्नति तथा सुख परीक्षा एवं अवसर देने के लिए है न कि यह उनके अविश्वास का प्रतिफल है।

The Ummah Technology Mission

كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾

पूज्य है कि यह तुम को पुनः दे दे ? आप देखिए कि हम किस प्रकार से तर्क को विभिन्न कोण से प्रस्तुत कर रहे हैं। फिर भी वह कतरा रहे हैं।[1]

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) (आप) कहिए कि यह बताओ यदि तुम पर अल्लाह का प्रकोप अकस्मात अथवा सावधानी में आ पड़े तो क्या सिवाये अत्याचारियों के अन्य कोई मारा जायेगा।[2]

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ

(४८) तथा हम पैग़म्बर को इसलिए भेजा करते हैं कि वे शुभ सूचना दें तथा डरायें।[3] फिर जो

---

[1]आँख कान तथा दिल मानव शरीर के प्रमुख अंग हैं, अल्लाह (परमेश्वर) कह रहा है कि यदि वह चाहे तो इन अंगों में जो विशेषतायें (योग्यतायें) रखी हैं उन्हें हर ले अर्थात सुनने देखने का सामर्थ्य। जिस प्रकार धर्मभ्रष्टों के अंग इन विशेषताओं से वंचित होते हैं अथवा वह चाहे तो इन अंगों ही को निरस्त कर दे वह दोनों बातों का सामर्थ्य रखता है, उस की पकड़ से कोई बच नहीं सकता है, परन्तु यह कि वह स्वयं किसी को बचाना चाहे। आयतों के विभिन्न रूप से प्रस्तुत करने का अभिप्राय यह है कि कभी डराने तथा शुभसूचना देने के द्वारा, कभी प्रलोभन तथा चेतावनी देने के द्वारा तथा कभी अन्य साधनों से।

[2]अकस्मात से तात्पर्य रात्रि तथा सावधानी से तात्पर्य दिन है जिसे *सूरः यूनुस* में ﴿بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا﴾ (सूरः यूनुस-५०) से वर्णित किया गया है अर्थात दिन में प्रकोप आ जाये या रात्रि को। بغتة फिर वह प्रकोप है जो बिना भूमिका एवं लक्षण के आ पड़े तथा جهرة वह प्रकोप है जो भूमिका एवं लक्षणों के उपरान्त आ पड़े। ये प्रकोप जो समुदायों के विनाश के लिए आता है। उन पर आता है जो अत्याचारी होते हैं अर्थात अविश्वास तथा अवज्ञा में अल्लाह के नियमों का अपार उल्लंघन करते हैं।

[3]वे आज्ञापालकों को उन पुरस्कारों तथा बड़ी प्रतिकार की शुभ सूचना देते हैं जो अल्लाह तआला ने स्वर्ग के रूप में उनके लिए तैयार कर रखी है, तथा अवज्ञाकारियों को उन यातनाओं से डराते हैं जो अल्लाह तआला ने उनके लिए नरक के रूप में तैयार कर रखी है।

The Ummah Technology Mission

وَ اَصۡلَحَ فَلَا خَوۡفٌ عَلَيۡهِمۡ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُوۡنَ ﴿۴۸﴾

ईमान ले आये तथा अपना सुधार कर ले उनको न कोई भय होगा ओर न वे दुखी होगें ।[1]

وَالَّذِيۡنَ كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الۡعَذَابُ بِمَا كَانُوۡا يَفۡسُقُوۡنَ ﴿۴۹﴾

(४९) तथा जो लोग हमारी आयतों को झुठलायें उनको प्रकोप पहुँचेगा क्योंकि वे अवज्ञाकारी हैं ।[2]

قُلۡ لَّاۤ اَقُوۡلُ لَكُمۡ عِنۡدِىۡ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعۡلَمُ الۡغَيۡبَ وَلَاۤ اَقُوۡلُ لَكُمۡ اِنِّىۡ مَلَكٌ ۚ اِنۡ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوۡحٰۤى اِلَىَّ ؕ قُلۡ هَلۡ يَسۡتَوِى الۡاَعۡمٰى وَالۡبَصِيۡرُ ؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوۡنَ ﴿۵۰﴾

(५०) (आप) कह दीजिए कि न तो मैं तुम से यह कहता हूँ कि मेरे पास अल्लाह का कोष है तथा न मैं परोक्ष जानता हूँ तथा न मैं यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ । मैं तो केवल जो कुछ मेरे पास देववाणी आती है उसका अनुसरण करता हूँ ।[3] (आप) कहिए कि अंधा

---

[1]भविष्य अर्थात परलोक की आगामी परिस्थितियों का उन्हें भय नहीं तथा अपने पीछे दुनिया में जो कुछ वे छोड़ आये हैं अथवा संसार का जो सुख नहीं पा सके उस पर दुखी नहीं होंगे क्योंकि दोनों लोक में उनका संरक्षक तथा मित्र वह पालनहार है जो दोनो लोक का पोषक है ।

[2]अर्थात उन्हें यह यातना इसलिए होगी कि उन्होंने विश्वास नहीं किया न अल्लाह के बताये हुए मार्ग पर चले । अल्लाह की आज्ञा का पालन नहीं किया तथा उसके आदेशों का निरादर किया तथा अवैध एवं निषेध कार्य किये तथा उसका सम्मान कम करने का प्रयत्न किया ।

[3]"मेरे पास अल्लाह के कोष भी नही हैं" इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक प्रकार की शक्ति तथा सामर्थ्य मेरे पास नहीं है कि मै तुम्हें अल्लाह के आदेश तथा इच्छा के बिना कोई चमत्कार दिखा दूँ जैसाकि तुम चाहते हो, जिसे देखकर तुम्हें मेरी सत्यता पर विश्वास आ जाये । मेरे पास अप्रत्यक्ष का ज्ञान भी नहीं है जिससे मैं भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं से तुम्हें सतर्क कर सकूँ । मैं फ़रिश्ता (सुर) होने का दावा भी नहीं कर सकता कि तुम मुझे ऐसे कार्य करने के लिए बाध्य करो जो मनुष्य की शक्ति और सामर्थ्य से बाहर की बात हो । मैं तो केवल उस प्रकाशना (वह्यी) का पालनकर्ता हूँ जो मुझ पर उतारी गयी तथा इसमें हदीस भी है, जैसाकि आप ने फ़रमाया "मुझे क़ुरआन के साथ उसके सामान भी प्रदान किया गया ।" यह समान हदीस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है ।

The Ummah Technology Mission

तथा आँख वाला किस प्रकार समान हो सकते हैं ?[1] तो क्या तुम विचार नहीं करते।

وَأَنذِرْ بِهِ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَن يُحْشَرُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُم مِّن دُونِهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٥١﴾

(५१) तथा ऐसे लोगों को डराइए जो इस बात का भय रखते हैं कि अपने प्रभु के समक्ष इस अवस्था में एकत्रित किये जायेंगे कि जितने अल्लाह के अतिरिक्त हैं न उनकी सहायता करेंगे तथा न कोई सिफ़ारिश करने वाला होगा, इस आशा के साथ कि वे डर जायेंगे।[2]

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُم بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ ۖ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِم مِّن شَيْءٍ وَمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِم مِّن شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونَ مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٢﴾

(५२) तथा आप उन्हें न निकालिए जो प्रातः, संध्या अल्लाह की वंदना करते हैं, विशेष रूप से उसकी प्रसन्नता की चिन्ता करते हैं। उनका हिसाब तनिक भी आप से संबन्धित नहीं तथा आपका हिसाब तनिक भी उनसे संबन्धित नहीं कि आप उनको निकाल दें।

---

[1]यह प्रश्न इंकार के लिए है अर्थात अन्धा तथा द्रष्टा, कुमार्ग तथा पथगामी, विश्वासधारी तथा अनिष्ठ समान नहीं हो सकते।

[2]अर्थात डराने का लाभ ऐसे ही लोगों को हो सकता है, अन्यथा जोपुनर्जीवन तथा प्रलय एवं एकत्रित किये जाने पर विश्वास नहीं रखते, वह अपने अविश्वास तथा अवज्ञा पर अडिग रहते हैं। इसके अतिरिक्त उन अहले किताब तथा काफ़िरों एवं मूर्तिपूजकों का खंडन भी है जो अपने पूर्वजों तथा अपनी मूर्तियों को अपना सिफ़ारिशी समझते हैं। "अर्थात वे कष्ट निवारक, सिफ़ारशी नहीं होंगे" का अर्थ उनके लिए है जो नरक की यातना के पात्र हो चुके हों। वरन् ईमानवालों के लिए तो अल्लाह के सत्कर्मी भक्त, अल्लाह के आदेश से सिफ़ारिश करेंगे अर्थात सिफ़ारिश अनिष्ठों तथा मूर्तिपूजकों के लिए नहीं होगी तथा यह सिफ़ारिश उन ईमान वालों के लिए होगी जिनसे कोई पाप हो गया, परन्तु वे अल्लाह के एक होने पर पूर्ण विश्वास करते होंगे। इस प्रकार दोनों आयतों में कोई मतभेद भी नहीं रहता है।

The Ummah Technology Mission

अपितु आप अनर्थ कार्य करने वालों में से हो जायेंगे।[1]

وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ۭ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ۝۵۳

(५३) इसी प्रकार हमने उन्हें परस्पर परीक्षा में डाल दिया ताकि यह कहें कि क्या अल्लाह ने हमारे बीच से उन पर उपकार किया है[2] क्या यह बात नहीं है कि अल्लाह कृतज्ञता व्यक्त करने वालों को खूब जानता है।[3]

---

[1]अर्थात ये असहाय, निर्धन मुसलमान जो बड़े नि:स्वार्थ भाव से रात-दिन अपने प्रभु को पुकारते हैं अर्थात उसकी इबादत (आराधना) करते हैं। आप मूर्तिपूजकों के इन बातों तथा माँगों पर कि हे मुहम्मद ! (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हारे निकट तो निर्धन तथा भिखारियों की ही भीड़ लगी रहती है, यदि तुम उनको हटाओ तो हम भी तुम्हारे पास बैठें, इन निर्धनों को अपने से दूर न करना, विशेष रूप से जब कि आप के हिसाब का उनसे सम्बंध नहीं तथा उनका आप से सम्बन्धित नहीं। (यदि आप ऐसा करेंगे तो अत्याचार होगा जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मे मान-सम्मान के अनुरूप नहीं है। उद्देश्य समुदाय को समझाना था कि असहाय लोगों को तुच्छ समझना उनका साथ करने से बचना तथा उनसे सम्बन्ध न रखना, यह अज्ञानियों का कार्य है, ईमानवालों का नहीं। ईमानवाले तो इमानवालों से प्रेम करते हैं चाहे वे निर्धन अथवा भिखारी ही क्यों न हों।

[2]प्रारम्भ में अधिकतर निर्धन अथवा दास लोग ही मुसलमान हुए थे, इसलिए यही बात धनवान काफ़िरों की परीक्षा का कारण बन गयी तथा वे इन निर्धनों का उपहास करते थे तथा जिन पर उनका नियन्त्रण था उन्हें वे कष्ट भी देते थे तथा कहते थे कि क्या यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने उपकार किया है ? उनका तात्पर्य यह होता था कि ईमान तथा इस्लाम यदि वास्तव में अल्लाह का उपकार होता तो यह सर्वप्रथम हम पर होता जिस प्रकार अन्य स्थानों पर कहा है।

﴿ لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ ﴾

"यदि यह अच्छी चीज़ होती तो इसे स्वीकार करने में हमसे आगे न होते।" (सूर: अल-अह्क़ाफ़-११)

अर्थात हीनों के सापेक्ष हम पहले मुसलमान होते।

[3]अर्थात अल्लाह तआला उपरी चमक-दमक, भेष-भूषा तथा वैभव को नहीं देखता। वह तो दिल की अवस्था को देखता तथा उसी से जानता है कि कृतज्ञ तथा सच्चे भक्त कौन हैं ?

The Ummah Technology Mission

وَإِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ ۙ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥٤﴾

(५४) तथा आप के पास जब वह लोग आयें जो हमारी आयतों के प्रति विश्वास रखते हैं तो कह दीजिए, "तुम सुरक्षित रहो।"[1] तुम्हारे पालनहार ने अपने ऊपर कृपा अनिवार्य कर लिया है।[2] कि तुम में से जिसने मूर्खता से दुराचार कर लिया फिर तत्पश्चात क्षमा-याचना एवं सुधार कर लिया तो अल्लाह क्षमाशील कृपालु है।[3]

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٥٥﴾

(५५) इसी प्रकार हम अपनी आयतों का विस्तृत वर्णन करते हैं ताकि अपराधियों का मार्ग स्पष्ट हो जाये।

अत: उसने जिसके अन्दर कृतज्ञता देखी उसको ईमान के गुण से सुसज्जित कर दिया, जिस प्रकार से हदीस में आता है, "अल्लाह तआला तुम्हारे रूप तथा धन नहीं देखता, वह तो तुम्हारे कर्म देखता है।" (सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्र बाब तहरीम जुल्मिल मुस्लिमे व खजलेहि व एहतकारेहि व दमेहि व इर्देहि)

« إِنَّ اللهَ لَا يَنْظُرُ إِلٰى صُوَرِكُمْ وَلَا إِلٰى أَلْوَانِكُمْ، ولٰكِنْ يَّنْظُرُ إِلٰى قُلُوبِكُمْ وَأَعْمَالِكُمْ ».

"अल्लाह तआला तुम्हारी शक्लें तथा रंगों को नहीं देखता है अपितु तुम्हारे दिलों तथा कर्मों को देखता है।" (सहीह मुस्लिम व मुसनद अहमद २ २८५ तथा ५३९, इब्ने माअज किताबुल जुहद, बॉबुल क़नाआ :)

[1]अर्थात उनको सलाम करके अथवा उनके सलाम का उत्तर देकर उनको सम्मानित करें।

[2]तथा उन्हें शुभसूचना दे दीजिए कि अल्लाह ने अपनी दया एवं अनुग्रह से अपने कृतज्ञ भक्तों पर उपकार करने का निर्णय कर लिया है।जिस तरह हदीस में आता है कि जब अल्लाह तआला सृष्टि की रचना कर चुका तो उसने अर्श पर लिख दिया। « إِنَّ رَحْمَتِي تَغْلِبُ غَضَبِي ». "मेरी कृपा मेरे क्रोध पर प्रभावशाली है।" (सहीह मुस्लिम तथा बुखारी)

[3]इस में भी ईमानवालों के लिए शुभ सूचना है क्योंकि उन का ही यह गुण है कि यदि अज्ञानवश अथवा मानव अभियाचना से कोई पाप कर बैठें तो फिर तुरंत क्षमा माँगते हैं तथा अपना सुधार कर लेते हैं। पाप की पुनरावृत्ति नहीं करते।

The Ummah Technology Mission

قُلْ اِنِّیْ نُهِیْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّاۤ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِیْنَ ﴿۵۶﴾

(५६) (आप) कह दीजिए कि मुझे रोका गया है कि उनकी पूजा करूँ जिनको अल्लाह के सिवाये तुम पुकारते हो, आप कहिए कि मैं तुम्हारी मनमानी का अनुसरण न करूँगा क्योंकि ऐसी दशा में मैं कुपथ हो जाऊँगा एवं संमार्ग पर नहीं रह जाऊँगा।[1]

قُلْ اِنِّیْ عَلٰی بَیِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّیْ وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ؕ مَا عِنْدِیْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ یَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَیْرُ الْفٰصِلِیْنَ ﴿۵۷﴾

(५७) (आप) कह दीजिए कि मेरे पास एक प्रमाण है मेरे प्रभु की ओर से [2] तथा तुम उसको झुठलाते हो, जिस वस्तु की तुम शीघ्रता कर रहे हो वह मेरे पास नहीं। आदेश किसी का नहीं सिवाये अल्लाह के।[3] अल्लाह तआला वास्तविक बातों को बता देता है।[4] तथा वही सर्वश्रेष्ठ निर्णायक है।

---

[1]अर्थात यदि मैं भी तुम्हारी तरह अल्लाह की इबादत (आराधना) के बजाय, तुम्हारी इच्छाओं के अनुसार अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की इबादत करना प्रारम्भ कर दूँ तो अवश्य मैं भटक जाऊँगा अर्थ यह है कि अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की पूजा तथा उपासना करना सबसे बड़ा भटकाव है, परन्तु दुर्भाग्य से यह भटकाव उतना ही सामान्य है, यहाँ तक कि मुसलमानों का एक गुट इसमें लिप्त है। هداهم الله تعالى

[2]तात्पर्य वह धार्मिक नियम हैं जो प्रकाशनाओं (ईशवाणी) द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारे गये, जिसमें एकेश्वरवाद को प्राथमिकता प्राप्त है।

[3]सम्पूर्ण सृष्टि पर अल्लाह ही का आदेश चलता है तथा सभी समस्याओं का समाधान उसी के हाथों में है। इसलिए तुम जो चाहते हो कि अल्लाह का प्रकोप शीघ्र ही आ जाये ताकि तुम्हें मेरी सत्यता अथवा झूठ का पता चल जाये, तो यह भी अल्लाह के वश में है, वह यदि चाहे तो तुम्हारी इच्छानुसार शीघ्र ही प्रकोप भेज कर तुम्हें सतर्क कर दे अथवा नष्ट कर दे तथा चाहे तो उस समय तक तुम्हें अवसर दे जब तक वह चाहे।

[4] يقـــص "क़सस" धातु से बना है जिसका अर्थ है वर्णन करना अथवा قص أثره किसी के पीछे लगना तथा अनुसरण करना से लिया गया है जिसका अर्थ यह है कि सत्य उस के निर्णय ही में निहित है।

The Quran Technology Mission

قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِیْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِیَ الْاَمْرُ بَیْنِیْ وَبَیْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِیْنَ ۝۵۸

(५८) आप कह दीजिए कि यदि मेरे पास वह जिसकी तुम तुरंत माँग कर रहे हो, होती तो मेरे और तुम्हारे मध्य (विवाद का) निर्णय हो गया होता।[1] तथा अल्लाह पापियों को भली-भाँति जानता है।

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَیْبِ لَا یَعْلَمُهَاۤ اِلَّا هُوَ ؕ وَیَعْلَمُ مَا فِی الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا یَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِیْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا یَابِسٍ

(५९) तथा उसी (अल्लाह) के पास परोक्ष की कुंजियाँ हैं जिनको मात्र वही जानता है तथा जो थल एवं जल में हैं उन सभी को जानता है तथा जो पत्ता गिरता है उसे भी जानता है तथा धरती के अंधकारों में कोई भी अन्न नहीं

---

[1]अर्थात यदि अल्लाह तआला मेरे माँग करने पर तुरन्त प्रकोप भेज देता अथवा अल्लाह तआला मेरे वश में यह चीज़ दे देता तो फिर तुम्हारी इच्छा के अनुसार प्रकोप भेजकर निर्णय कर दिया जाता। परन्तु यह कार्य पूर्ण रूप से अल्लाह की इच्छा पर आधारित है, इसलिए यह अधिकार मुझे नहीं दिया है तथा न यह सम्भव है कि मेरी प्रार्थना पर तुरन्त प्रकोप डाल दे।

आवश्यक स्पष्टीकरण : हदीस में वर्णित है कि एक अवसर पर अल्लाह के आदेश पर पर्वतों का फ़रिश्ता नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ तथा उसने कहा कि "यदि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे आदेश दें तो मैं पूरी अबादी को दोनों पर्वतों के बीच कुचल दूँ।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "नहीं, अपितु मुझे आशा है कि अल्लाह तआला उनके वंश में अल्लाह की इबादत करने वाले पैदा करे, जो उसके साथ किसी को भी सम्मिलित न करेंगे।" (सहीह बुख़ारी किताबु वदइल ख़लक़े, बाब इज़ा क़ाल अहदोकुम अमीन वल मलायेक: फ़िस्समा ऐ ; सहीह मुस्लिम किताबुल जिहाद, बाब मालकेयन्नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मिन अजल मुशरिकीन) यह हदीस प्रस्तुत आयत की व्याख्या के विरुद्ध नहीं है, जैसाकि प्रकट हो रहा है। इसलिए कि आयत में प्रकोप की माँग पर प्रकोप देने का प्रदर्शन हो रहा है। इस हदीस में मूर्तिपूजकों की माँग के बिना, केवल उनके कष्ट देने के कारण उन पर प्रकोप भेजने का विचार प्रदर्शित किया जा रहा है जिसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वीकार नहीं किया।

The Ummah Technology Mission

إِلَّا فِي كِتَٰبٍ مُّبِينٍ ﴿٥٩﴾

पड़ता और न कोई तर तथा शुष्क वस्तु गिरती है परन्तु ये सब खुली किताब में है।[1]

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّىٰكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٦٠﴾

(६०) वही (अल्लाह) है जो रात्रि में तुम्हारी आत्मा को एक गुणा नियंत्रित करता है[2] तथा दिन में जो जो भी करते हो जानता है[3] फिर तुम्हें उसमें एक निर्धारित अवधि पूरी करने के लिये जागृत करता है।[4] फिर तुम्हें उसी की ओर लौट जाना है।[5] फिर जो तुम करते रहे उसे तुमको बता देगा।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ

(६१) वही अपने भक्तों पर प्रभावशाली है तथा तुम पर संरक्षक (फ़रिश्ते) भेजता है यहाँ तक कि जब तुम में किसी की मृत्यु (का समय) आ

---

[1]"किताब मोबीन" से तात्पर्य "सुरक्षित पुस्तक" है। इस आयत से भी ज्ञात हुआ कि परोक्ष का ज्ञान मात्र अल्लाह को ही है। सभी अप्रत्यक्ष का कोष उसी के पास है। इसलिए कृतघ्नों, मूर्तिपुजकों तथा विरोधियों पर कब प्रकोप डाला जाये इसका भी ज्ञान अल्लाह ही को है, तथा वही अपनी इच्छानुसार इसका निर्णय करने वाला है। हदीस में आता है कि भेद (परोक्ष) की बातें पांच हैं १. क़ियामत का ज्ञान, २. वर्षा का आना, ३. माता के गर्भ में पलने वाला बच्चा, ४. कल भविष्य में होने वाली घटना तथा ५. मृत्यु किस स्थान पर आयेगी। इन पाँचों बातों का ज्ञान केवल अल्लाह ही को है। (सहीह/बुख़ारी तफ़सीर सूरः *अल-अनाम*)

[2]यहाँ निद्रा को मृत्यु कहा गया है, इसलिए इसे "छोटी मृत्यु" तथा मृत्यु को "बड़ी मृत्यु" कहा गया है। मृत्यु के स्पष्टीकरण के लिए देखें *सूरः आले इमरान* आयत संख्या ५५ की व्याख्या)

[3]अर्थात दिन के समय आत्मा वापस लौटा कर जीवित कर देता है।

[4]अर्थात यह रात्रि-दिवस का क्रम तथा लंघु मृत्यु के पश्चात जीवित हो जाने का क्रम महा मृत्यु तक निरन्तर रहेगा।

[5]अर्थात फिर क़ियामत वाले दिन जीवित होकर सभी को अल्लाह के दरबार के समक्ष उपस्थित होना है।

The Ummah Technology Mission

لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿٦١﴾

जाये तो हमारे यमदूत उस के प्राण निकाल लेते हैं और वे तनिक आलस्य नहीं करते।[1]

ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۫ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ﴿٦٢﴾

(६२) फिर वे अपने सत्य स्वामी (अल्लाह) के पास लाये जायेंगे।[2] सावधान, उसी का आदेश चलेगा तथा वह अति शीघ्र हिसाब लेगा।

قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ لَئِنْ اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٣﴾

(६३) आप कहिये कि थल तथा जल के अंधकारों से जब उसे नम्रता और चुपके से पुकारते हो कि यदि हमें इससे मुक्त कर दे तो तेरे अवश्य कृतज्ञ हो जायेंगे तो तुम्हें कौन बचाता है ?

قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾

(६४) आप स्वयं कहिये कि इससे तथा प्रत्येक विपदा से तुम्हें अल्लाह ही बचाता है, फिर भी तुम ही मिश्रण (शिर्क) करते हो।

---

[1] अर्थात अपने इस कर्तव्य के पालन तथा आत्मा की सुरक्षा में, अपितु यह फ़रिश्ता, मरने वाला यदि पुण्य करने वाला है तो उसकी आत्मा को श्रेष्ठ स्थान पर तथा यदि कुकर्मी है तो यातना के स्थान में भेज देता है।

[2] आयत (मंत्र) में رُدُّوْا (लौटाये जायेंगे) को कुछ ने यमदूतों से सम्बन्धित माना है अर्थात वह प्राण निकाल कर अल्लाह की ओर वापस जाते हैं। कुछ व्याख्याकारों ने साधारण लोगों की ओर सर्वनाम को फेर कर यह अर्थ लिया है कि जब लोग एकत्रित होकर अल्लाह के सदन में न्याय के लिये लाये जायेंगे फिर वह सब का निर्णय करेगा। आयत से विदित होता है कि यमदूत कई हैं क्योंकि उनके लिये वहुवचन का प्रयोग किया गया है। कुछ व्याख्याकारों ने कहा है कि यमदूत तो वास्तव में एक है किन्तु उनके सहायक वहुत से हैं। इसलिए बहुवचन का प्रयोग किया गया है तथा जिस आयत में यमदूत एक कहा गया है वह इसलिये कि प्राण लेकर वही आकाशों में जाता है (तफ़सीर रूहुल मआनी) इमाम शौकानी एवं साधारणत: विद्वानों का कथन है कि यमदूत एक ही है तथा वहुवचन का प्रयोग उसके सहायकों के सहित किया गया है। कुछ कथनों में यमदूत का नाम इज़्राईल बताया गया है। (तफ़सीर इब्ने कसीर *अलिफ़ लाम मीम सजदः*)

The Ummah Technology Mission

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰٓ اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾

(६५) आप कहिये कि वही तुम पर तुम्हारे ऊपर से कोई प्रकोप भेजने[1] अथवा तुम्हारे पैरों के नीचे[2] से भेजने अथवा तुम्हें अनेक गिरोह बनाकर परस्पर लड़ाई का स्वाद चखाने का सामर्थ्य रखता है।[3] आप देखिये कि हम विभिन्न प्रकार से कैसे बातों (आयतों) का वर्णन कर रहे हैं ताकि वह समझ जायें।

وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٦٦﴾

(६६) तथा आप के समुदाय ने उसे[4] झुठला दिया जब कि वह सत्य है। आप कह दीजिए कि

---

[1]आकाश से जैसे वर्षा की अधिकता अथवा वायु तथा पत्थर के द्वारा प्रकोप अथवा अधिकारियों की ओर से अत्याचार एवं क्रूरता।

[2]जैसे धंसाया जाना, तूफ़ान बाढ़, जिसमें सब कुछ डूब जाता है अथवा तात्पर्य है कि अधीनस्थ कर्मचारी, दासों तथा नौकरों की ओर से प्रकोप कि वे विश्वासघाती तथा अपभोगी हो जायें।

[3]तुम्हारी समस्यायों को मिला-जुला अथवा संदेहास्पद बना दे जिसके कारण तुम गुटों में बँट जाओ तथा तुम्हारा एक गुट दूसरे गुट की हत्या करे। इस प्रकार प्रत्येक गुट को लड़ाई का स्वाद चखाये। (ऐसरुत्तफ़ासीर) हदीस में आता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैने अल्लाह तआला से तीन प्रार्थनायें कीं १. मेरे अनुयायियों को डुबोकर न मारा जाये, २. सामान्य रूप से सूखा डाल कर उनको नष्ट न किया जाये ३. आपस में उन की लड़ाई न हो। अल्लाह ने प्रथम दो प्रार्थनाओं को स्वीकार किया परन्तु अन्तिम से मुझे रोक दिया। (सहीह मुस्लिम संख्या २२१६) अर्थात अल्लाह तआला को यह ज्ञान था कि मुसलमानों में मतभेद होगा तथा कई गुटों में बँट जायेंगे तथा उसका कारण अल्लाह की अवज्ञा तथा क़ुरआन व हदीस का इंकार होगा जिसके परिणाम स्वरूप प्रकोप से मुसलमान भी सुरक्षित न रह सकेंगे। अर्थात इसका सम्बन्ध अल्लाह के उस आदेश से है जो समुदाय के चरित्र तथा कर्म के विषय में सदैव रहा है जिसमें परिवर्तन सम्भव नहीं। ﴿فَلَن تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۖ وَلَن تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَحْوِيلًا﴾ (सूरः फ़ातिर-४३)

[4]بِهٖ (अरबी शब्द) का संकेत क़ुरआन है अथवा प्रकोप। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

मैं तुम पर अधिकारी नहीं हूँ।[1]

لِكُلِّ نَبَإٍ مُّسْتَقَرٌّ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾

(६७) प्रत्येक भविष्यवाणी का एक निश्चित समय है तथा तुम शीघ्र ही जान लोगे।

وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ؕ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٨﴾

(६८) तथा जब आप उन लोगों को देखें जो हमारी आयतों में कुरेद कर रहे हैं, तोउन लोगों से अलग हो जायें, यहाँ तक कि वह अन्य कार्य में लग जायें तथा यदि आप को शैतान भुला भी दे, तो याद आने के पश्चात फिर ऐसे अत्याचारी लोगों के साथ मत बैठें।[2]

وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٦٩﴾

(६९) तथा जो लोग परहेज़गारी रखते हैं उन पर उनके पकड़ का कोई प्रभाव नहीं होगा।[3]

---

[1] अर्थात मुझे इस कार्य के पूर्ण करने के लिए निर्धारित नहीं किया गया है कि मैं तुम्हें सीधे रास्ते पर लगाकर ही छोड़ूँ, अपितु मेरा कार्य केवल धर्म की ओर आमन्त्रित करना तथा सतर्क करना है [الكهف: ٢٩] ﴿فَمَن شَآءَ فَلْيُؤْمِن وَمَن شَآءَ فَلْيَكْفُرْ﴾ अर्थात जो चाहे विश्वास करे जो चाहे अविश्वास करे। (सूर: अल-कहफ़)

[2] इस आयत में यद्यपि संबोधित नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किया गया है किन्तु इससे सम्बोधित प्रत्येक मुसलमान है। यह अल्लाह का बलपूर्वक आदेश है जिसे पवित्र क़ुरआन में कई स्थानों में वर्णित किया गया है। सूर: निसा आयत नं॰ १४० में भी इस विषय की चर्चा आ चुकी है। इससे प्रत्येक ऐसी सभा तात्पर्य है जिसमें अल्लाह एवं रसूल के आदेशों का उपहास किया जाता हो अथवा व्यवहारिक रूप से उनकी अवहेलना की जाती॰ हो अथवा धर्मभ्रष्ट अपनी कष्ट कल्पनाओं के द्वारा आयात (पवित्र क़ुरआन के मंत्रों) के अर्थों को छिन्न-भिन्न कर रहे हों। ऐसी सभाओं में आलोचना एवं सत्य की सहायता के लिये जाना उचित है अन्यथा घोर पाप एवं अल्लाह के क्रोध का कारण है।

[3] مِنْ حِسَابِهِم का सम्बन्ध उनसे है जो अल्लाह की आयतों का उपहास करते हैं, जो लोग ऐसी सभा से बचेंगे, वह अल्लाह की आयतों के उपहास के दंड से सुरक्षित रहेंगे।

The Ummah Technology Mission

तथा परन्तु उनके अधिकार में शिक्षा देना है, शायद वे भी परहेज़गारी रखने लगें।[1]

وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّ لَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَ ذَكِّرْ بِهٖۤ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۚ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝

(७०) तथा ऐसे लोगों से कदापि सम्बन्ध न रखें जिन्होंने अपने धर्म को खेल बना रखा है तथा सांसारिक जीवन ने उन्हें धोखे में डाल रखा है तथा इस क़ुरआन के द्वारा शिक्षा भी देते रहें ताकि कोई व्यक्ति अपने कर्म के कारण इस प्रकार न फंस जाये।[2] कि कोई अल्लाह के अतिरिक्त उसका न सहायता करने वाला हो तथा न सिफ़ारिश करने वाला तथा यह अवस्था हो कि यदि दुनिया भर के बदले दे डाले तब भी उसे न लिया जाये।[3] ऐसे ही हैं कि अपने कर्मों के कारण फंस गये, उनके

---

[1]अर्थात बचाव तथा विलगाव के साथ ही यदि शिक्षा-दीक्षा एवं पुण्य का आदेश देने तथा कुकर्म से रोकने का कर्तव्य यथा सम्भव पूरा करते रहें तो सम्भव है कि वह इस दुष्कर्म से रुक जायें।

[2] بَسَلٌ (बसल) का वास्तविक अर्थ "मना करना" है, परन्तु यहाँ पर इसके अनेक अर्थ किये गये हैं १. تُسَلَّمُ "सौंप दिये जायें।" २. تُفْضَحُ (तुफ़दह) "अपमानित कर दिया जाये।" ३. تُؤاخَذُ "पकड़ लिया जाये।" तथा ४. تُجازَى (तुजाजा) "बदला दिय जाये।" इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि सभी के अर्थ लगभग एक ही हैं सारांश यह है कि उन्हें इस क़ुरआन के द्वारा शिक्षा दें। ऐसा न हो कि अपने आप को जो उसने कमाया, उसके बदले विनाश में डाल दिया जाये अथवा अपमान उनका भाग्य बन जाये अथवा हिसाब में उनकी पकड़ हो जाये। इन सभी भावों को लेकर अनुवाद "फंस न जाये किया गया है।"

[3]संसार में कोई व्यक्ति समान्यतया किसी मित्र की सहायता अथवा किसी सिफ़ारिश अथवा धन देने के कारण छूट जाता है। परन्तु आख़िरत में यह तीनों साधन काम नहीं आयेंगे। वहाँ काफ़िरों की सहायता करने वाला कोई नहीं होगा जो अल्लाह की पकड़ से बचा ले तथा न कोई सिफ़ारिश करने वाला होगा जो अल्लाह की यातना से उन्हें छुड़ा दे तथा न किसी के पास बदला देने के लिए कुछ होगा, यदि मान भी लिया जाये कि हो भी तो वह स्वीकार न किया जायेगा कि वह देकर छूट जायें।

The Ummah Technology Mission

लिए अत्यधिक गर्म पानी पीने के लिए होगा अपने कुफ़्र के कारण।

قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِى اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِى الْاَرْضِ حَيْرَانَ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۭ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ۭ وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

(७१) आप कहिए कि क्या हम अल्लाह के सिवाये उसे पुकारें जो हमारा भला-बुरा न कर सकता हो तथा अल्लाह का मार्गदर्शन मिलने के पश्चात उसके समान एड़ियों के बल फेर दिये जायें जिसे शैतान ने बहका दिया हो और वह धरती में चकित फिर रहा हो, उसके साथी उसे सही मार्ग की ओर पुकार रहे हों कि हमारे पास आओ।[1] आप कहिये कि अल्लाह का मार्गदर्शन ही वास्तव में मार्गदर्शन है[2] तथा हमें आदेश किया गया है कि विश्व के विधाता के प्रति आत्मसमर्पण कर दें।

---

[1]यह उन लोगों का उदाहरण है जो विश्वास के बाद अविश्वास तथा एकेश्वरवाद के बाद अनेकेश्वरवाद की ओर फिर जायें। उनका उदाहरण ऐसा ही है कि वह अपने साथियों से बिछड़कर जंगलों में चकित हो कर परेशानी की अवस्था में भटकता फिर रहा हो, साथी उस को बुला रहे हों परन्तु चकित होने के कारण कुछ न दिखायी पड़ रहा हो अथवा जिन्नातों के पंजे में फंसने के कारण सही मार्ग पर आना असम्भव हो।

[2]अर्थात जो विश्वास और अद्वैत का मार्ग अपनाने के पश्चात भटक गया हो, वह भटके हुए राही की भाँति सही मार्ग पर नहीं आ सकता। परन्तु यदि अल्लाह ने उस को राह पर आना भाग्य में लिख दिया हो तो अवश्य अल्लाह के आदेश के कारण मार्गदर्शन पा जायेगा। क्योंकि सच्चे मार्ग पर चलाना उसी का काम है। जैसाकि अन्य स्थान पर फ़रमाया गया है।

﴿إِن تَحْرِصْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَن يُضِلُّ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ﴾

"यदि आप उनके मार्गदर्शन की इच्छा रखते हों तो अल्लाह जिसे विपथ कर दे उसे मार्गदर्शन नहीं देता तथा उसका कोई सहाय नहीं।" (सूरः अन्नहल-३७)

परन्तु यह मार्ग दर्शन तथा भटकाव उसी नियम के आधार पर होता है, जो अल्लाह तआला ने उसके लिए बनाया है। यह नहीं कि यूँ ही जिसे चाहे भटका दे तथा जिसको चाहे मार्ग दर्शन दे।

The Ummah Technology Mission

وَ اَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ؕ وَهُوَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۷۲﴾

(७२) तथा नमाज़ की स्थापना करो एवं उस (अल्लाह) से डरो |[1] वह वही है जिस की ओर तुम एकत्रित किये जाओगे |

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۘ قَوْلُهُ الْحَقُّ ؕ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ ؕ

(७३) उसी ने आकाशों एवं पृथ्वी को यथार्थ के साथ पैदा किया |[2] तथा जिस दिन[3] कहेगा "हो जा" तो हो जायेगा | उसका कथन सत्य है तथा जिस दिन नरसिन्घा फूँका जायेगा |[4] राज्य

---

[1]इस का अर्थ यह है कि हमें यह आदेश दिया गया है कि सर्वजगत के पालनहार के अधीन हो जायें तथा उससे डरें, अल्लाह के प्रति विश्वास एवं उसकी अधीनता स्वीकारने के पश्चात सर्व-प्रथम आदेश नमाज़ की स्थापना का है जिस से नमाज़ का महत्व स्पष्ट है तत्पश्चात संयम बरतने का आदेश है, क्योंकि संयम और नम्रता के बिना नमाज़ का पालन असम्भव है | ﴿وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ﴾ (सूरः अल-बक़रः-४५)

[2]सत्यता के साथ अथवा लाभकारी उत्पन्न किया अर्थात उनको अकारण एवं व्यर्थ (आमोद-प्रमोद के लिए) नहीं पैदा किया, अपितु एक विशेष उद्देश्य से सृष्टि को पैदा किया तथा वह यह है कि अल्लाह को याद रखो, तथा कृतज्ञता व्यक्त करते रहो जिसने यह सब कुछ रचा है |

[3] يَـــوْمَ लुप्त क्रिया واذكرُ अथवा واتقوا से सम्बन्धित है | अर्थात उस दिन को याद करो अथवा उस दिन से डरो कि उसके शब्द (कुन) "हो जा" से जो चाहेगा हो जायेगा | यह संकेत है उस बात की ओर कि हिसाब-किताब की कठिन समस्या भी बड़ी सरलता से समाधान कर लिया जायेगा | परन्तु किन लोगों के लिए ऐसा होगा ? यह मात्र ईमानदारों के लिए ऐसा होगा | अन्य लोगों के लिए तो यह दिन हज़ार वर्ष अथवा पचास हज़ार वर्ष की तरह भारी लगेगा |

[4] صُـوْرٌ से तात्पर्य नरसिंगा अथवा बिगुल है जिसके विषय में हदीस में आता है कि इस्राफ़ील (एक फ़रिश्ता का नाम) उसे मुख में लिये माथा झुकाये खड़े अल्लाह की आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे है कि आदेश मिलते ही उसमें फूंक दें | (इब्ने कसीर) हदीस की पुस्तक त्रिमिज़ी तथा अबू दाऊद में है कि सूर एक नरसिंगा है (क्रम संख्या, ४७४२, ४०३०, ३२४४) कुछ विद्वानों का विचार है कि तीन बार फूंका जायेगा | एक जिस से सभी प्राणी अचेत हो जायेंगे दूसरा जिससे सब का विनाश हो जायेगा तीसरी बार फूंकने पर सभी प्राणी पुनः जीवित हो जायेंगे कुछ विद्वान अंत की दो ही फूंक मानते हैं |

The Ummah Technology Mission

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿٧٣﴾

मात्र उसी का होगा, वह ज्ञाता है अदृश्य एवं दृश्य का तथा वह सर्वज्ञाता सर्व-सूचित है।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّيْٓ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٤﴾

(७४) तथा स्मरण करो जब इब्राहीम ने अपने पिता आज़र[1] से कहा क्या आप मूर्तियों को पूज्य बना रहे हैं? मैं आप को तथा आप के वर्ग को खुले कुपथ में देख रहा हूँ।

وَكَذٰلِكَ نُرِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ﴿٧٥﴾

(७५) तथा इसी प्रकार हमने इब्राहीम को आकाशों एवं धरती का राज्य (सृष्टि) दिखायी ताकि वह पूर्ण विश्वास करने वालों में हो जायें।[2]

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَآ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿٧٦﴾

(७६) फिर जब उन पर रात्रि आच्छादित हो गयी तो एक तारा देखा, कहा कि यह मेरा प्रभू है फिर जब वह डूब गया तो कहा कि मैं डूबने वाले से प्रेम नही करता।[3]

---

[1] इतिहासकार आदरणीय इब्राहीम के पिता के दो नाम बताते हैं। यह नाम आज़र तथा तारूख हैं। सम्भव है कि दूसरा नाम उपाधि हो। कुछ कहते हैं कि आज़र आप के चचा का नाम था, परन्तु यह सही नहीं है, इसलिए कि क़ुरआन ने आज़र की चर्चा आदरणीय इब्राहीम के पिता के रूप में की है। अतएव सही यही है।

[2] مَلَكُوتٌ यह रूप अतिशयवादी है जैसे رَغَبَةٌ से رَغَبُوت तथा رَهَبَةٌ से رَهَبُوت। अत: इससे तात्पर्य सृष्टि है। जैसाकि अनुवाद में इसी विषय को अपनाया गया है। अथवा ربوبيت तथा الوهيت है अर्थात हमने उसको वह दिखलायी तथा उसको जानने का सौभाग्य प्रदान किया। अथवा यह अर्थ है कि आकाश लोक से लेकर पाताल तक का हमने इब्राहीम को दर्शन कराया। (फ़तहुल क़दीर)

[3] अर्थात डूबने वाले ईष्टदेवों से प्रेम नहीं रखता, इसलिए कि डूबना स्थिति के परिवर्तन को प्रदर्शित करता है, जो अनित्य है तथा अनादि होने का प्रमाण नहीं है और जो स्वयं अनित्य हो वह पूज्य नहीं हो सकता।

The Ummah Technology Mission

فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ﴿٧٧﴾

(७७) फिर जब चन्द्रमा को चमकते देखा तो कहा यह मेरा प्रभु है, फिर जब वह अस्त हो गया, तो कहा कि यदि मेरे स्वामी ने मुझे मार्ग नहीं दर्शाया तो मैं विपथों में हो जाऊँगा।

فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٨﴾

(७८) फिर सूर्य को चमकता हुआ देखा तो कहा कि यह मेरा प्रभु है।[1] यह तो सबसे बड़ा है, फिर जब वह अस्त हो गया तो कहा कि नि:संदेह मैं तुम्हारे मिश्रणवाद से निर्दोष हूँ।[2]

اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٧٩﴾

(७९) मैंने अपना मुख उसकी ओर फेर दिया।[3] जिसने आकाशों एवं धरती को पैदा किया एकाग्रचित होकर तथा मैं मिश्रणवादियों (अनेकेश्वरवादियों) में से नहीं हूँ।

---

[1]सूर्य अरबी भाषा में स्त्रीलिंग है परन्तु सांकेतिक संज्ञा पुल्लिंग है। तात्पर्य उदय है अर्थात उदित सूर्य मेरा पोषक है, क्योंकि यह सबसे बड़ा है, जिस प्रकार से सूर्य के उपासकों को भ्रम है तथा वे उसकी उपासना करते हैं। आकाश में सात बड़े ग्रह है। सूर्य इन सभी में बड़ा तथा ज्योतिर्मय है तथा मनुष्य के जीवन के लिए इसकी विशेषता तथा उपयोगिता के विषय में बताने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसलिए प्रकृति के उपासकों में सूर्य की उपासना सामान्य रूप से रही है। आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बड़ी ही सुन्दर विधि से चन्द्रमा तथा सूर्य के उपासकों पर उनके देवताओं की विवशता को स्पष्ट किया है कि वे पूजने योग्य क्यों नहीं हैं ?

[2]अर्थात वह सभी वस्तुऐं जिन को अल्लाह का साझी बनाते अथवा जिन की पूजा करते हो, उस से मैं दुखी हूँ। इसलिए कि इन में परिवर्तनशीलता है, कभी उदय होते हैं कभी अस्त होते हैं जो इस बात का प्रमाण है कि इनकी रचना हुई है तथा उनका रचयिता कोई और है जिसके आदेशाधीन ये हैं, जब यह स्वयं किसी के आदेशाधीन हैं।

[3]मुख का वर्णन इसलिए किया गया है कि मेरी आराधना तथा तौहीद (एकेश्वरवाद) का लक्ष्य अल्लाह तआला है, जो आकाश तथा धरती का स्रष्टा है।

The Ummah Technology Mission

وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ؕ قَالَ اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ
فِي اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ؕ وَلَآ اَخَافُ
مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّيْ
شَيْـًٔا ؕ وَسِعَ رَبِّيْ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ
اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٠﴾

(८०) तथा उनसे उनकी जाति वालों ने विवाद करना प्रारम्भ कर दिया।[1] (आदरणीय इब्राहीम) ने कहा कि क्या तुम अल्लाह के विषय में मुझसे विवाद करते हो यद्यपि उसने मुझे विधि बता दी है तथा मैं उन चीज़ों से जिनको तुम अल्लाह के साथ सम्मिलित करते हो, नहीं डरता परन्तु यह कि मेरा प्रभु ही कारण वश चाहे। मेरा प्रभु प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान की परिधि में घेरे हुए है। क्या तुम फिर भी विचार नहीं करते ?

وَكَيْفَ اَخَافُ مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا
تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ
مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ؕ
فَاَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ
اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨١﴾

(८१) तथा मैं उस चीज़ से कैसे भय करूँ जिसे तुमने (अल्लाह का) साझीदार बना लिया जबकि तुम उसे अल्लाह का साझी बनाने से नहीं डरते जिसका तुम्हारे पास अल्लाह ने कोई तर्क नहीं उतारा है। फिर इन दोनों पक्षों में कौन शान्ति के अधिक योग्य है।[2] यदि तुम ज्ञान रखते हो।

---

[1]जब जाति वालों ने तौहीद (एकेश्वरवाद) का यह भाषण सुना जिसमें उनके (स्वयं कृत) देवताओं का खण्डन भी किया गया था, तो उन्होंने भी अपने तर्क प्रस्तुत करने प्रारम्भ कर दिये। जिनसे ज्ञात हुआ कि मूर्तिपूजकों ने भी अपने विश्वास के लिए कुछ तर्क बना रखे थे। जिसका दर्शन आज भी किया जा सकता है। जितने भी शिर्क से लिप्त विश्वास करने वाले लोग हैं, सभी ने अपने-अपने अनुयायियों को सन्तुष्ट करने के लिए ऐसे मोहरे खोज रखे हैं जिन्हें वे तर्क समझते हैं अथवा जिनसे कम से कम उनके अनुयायियों को अपने जाल में फंसाये रख सकते हैं।

[2]एकेश्वरवादियों एवं मिश्रणवादियों में, एकेश्वरवादियों के पास तो एकेश्वरवाद के स्पष्ट प्रमाण हैं जब कि द्वैतवादी के पास अल्लाह की ओर से अवतरित कोई तर्क नहीं, मात्र निर्मूल भ्रम है अथवा व्यर्थ कल्पनायें। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि शान्ति एवं मुक्ति के योग्य कौन होगा ?

The Ummah Technology Mission

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٨٢﴾

(८२) जो लोग ईमान लाये तथा अपने ईमान को किसी मिश्रणवाद से लिप्त नहीं किया उन्हीं के लिए शान्ति है तथा वही सीधे मार्ग पर हैं।[1]

وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٨٣﴾

(८३) तथा यह हमारा तर्क है जिसे हमने इब्राहीम को उनके समुदाय की तुलना में दिया।[2] हम जिसका पद चाहें बढ़ाते हैं। निश्चय तुम्हारा स्वामी विज्ञानी सर्वज्ञ है।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ

(८४) तथा हमने उन्हें (पुत्र) इसहाक़ एवं (पौत्र) याक़ूब प्रदान किया।[3] तथा प्रत्येक को सीधा

---

[1]आयत में यहाँ ज़ुल्म से अभिप्राय मिश्रण है। जब यह आयत उतरी तो अल्लाह के रसूल के सहचरों ने इसका साधारण अर्थ (आलस्य, त्रुटि, पाप, क्रूरता आदि) समझा तथा व्याकुल हो गये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में आ कर कहने लगे कि हम में कौन है जिसने अत्याचार न किया हो? आप ने कहा कि इसका अर्थ वह अत्याचार नहीं जो तुम ने समझा है अपितु इससे तात्पर्य शिर्क (मिश्रण) है जैसे आदरणीय लुकमान ने अपने पुत्र से कहा था।

﴿إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾

"निःसन्देह बहुदेववाद सबसे बड़ा अत्याचार है"। (सूरः *लुकमान*-१३) (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः *अल अनाम*)

[2]अर्थात अल्लाह तआला के एक होने का प्रमाण तथा तर्क जिस का कोई उत्तर इब्राहीम की जाति वाले न दे सके। तथा वह कुछ के निकट यह कथन था।

﴿وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُم بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ﴾

अल्लाह तआला ने आदरणीय इब्राहीम के इस कथन की पुष्टि की तथा कहा।

﴿الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُم بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ﴾

[3]अर्थात वृद्धा अवस्था में जब वह सन्तान के जन्म से निराश हो गये थे, जैसाकि सूरः अल-हूद आयत संख्या ७२ में है, फिर पुत्र के साथ ऐसे पौत्र की शुभ सूचना दी जो याक़ूब होगा, जिसके अर्थ में यह भावार्थ निहित है कि उसके पश्चात उनकी सन्तान का वंश चलेगा, इसलिए कि यह अक़ब (पीछे) शब्द से उत्पन्न है।

The Ummah Technology Mission

وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۙ﴿۸۴﴾

रास्ता दिखाया। तथा इससे पूर्व नूह को मार्ग दिखाया तथा उनकी संतान[1] में दाऊद एवं सुलैमान तथा अय्यूब एवं यूसुफ़ तथा मूसा एवं हारून को, तथा इसी प्रकार हम उपकर्मियों को प्रत्युपकार प्रदान करते हैं।

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۙ﴿۸۵﴾

(८५) तथा ज़करिया एवं यहया तथा ईसा[2] एवं इलियास को, प्रत्येक सदाचारियों में थे।

وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا ؕ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۸۶﴾

(८६) तथा इस्माईल और यसअ तथा यूनुस और लूत को, प्रत्येक को हम ने विश्ववासियों पर प्रधानता दी।

---

[1] ذريـــة अरबी भाषा के इस शब्द में सर्वनाम के समावेश को नूह की ओर संकेत कुछ विद्वानों ने स्वीकार किया है क्योंकि वही निकटवर्ती हैं। अर्थात आदरणीय नूह की सन्तान में से दाऊद तथा सुलैमान को तथा कुछ ने आदरणीय इब्राहीम को, क्योंकि सारा वर्णन उन्हीं के विषय में हो रहा है। परन्तु इस परिस्थिति में यह कठिनाई आती है कि फिर लूत का वर्णन इस सूची में नहीं आना चाहिए था क्योंकि वह इब्राहीम की सन्तान में नहीं हैं। वह उनके भाई हारान पुत्र आज़र के पुत्र अर्थात इब्राहीम के भतीजे थे। तथा इब्राहीम लूत के पिता नहीं, अपितु चाचा हैं। परन्तु सम्मान स्वरूप उन्हें इब्राहीम की संतान में सम्मिलित कर लिया गया है। इसका एक अन्य उदाहरण क़ुरआन करीम में है। जहाँ आदरणीय इस्माईल को याक़ूब की संतान के पूर्वज में सम्मिलित किया गया है, जबकि वह उनके चाचा थे। देखिये (*सूरः अल-बक़रः*-१३३)

[2] ईसा अलैहिस्सलाम का वर्णन आदरणीय नूह अथवा इब्राहीम की संतान में इसलिए किया गया है (यद्यपि उनके पिता नहीं थे) कि पुत्री की संतान भी पुरुष की संतान में सम्मिलित होती है। जिस प्रकार से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय हसन (रज़ी अल्लाहु अन्हु) (अपनी पुत्री आदरणीया फ़ातिमा (रज़ी अल्लाह अन्हा) के पुत्र को अपना पुत्र बताया «إِنَّ ابْنِي هٰذَا سَيِّدٌ ولَعَلَّ اللهَ أَنْ يُصْلِحَ به بَيْنَ فِئَتَيْنِ عَظِيمَتَيْنِ، مِنَ المُسْلِمِينَ». (सहीह बुखारी किताबुस सुलह बाब क़ौलु अन्नबी लिलहसन बिन अली इब्नी हाज़ा सैय्यद) विस्तार पूर्वक जानकारी के लिए देखें तफ़सीर इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٨٧﴾

(८७) तथा उनके पिताओं तथा संतानों एवं भाईयों[1] में से, तथा हमने उनका निर्वाचन किया और उन्हें सीधा रास्ता दिखाया।

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِىْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٨﴾

(८८) यही अल्लाह का मार्ग है अपने भक्तों में से जिसे वह चाहता है, उसे मार्ग दर्शाता है तथा यदि वे लोग भी शिर्क (मिश्रण) करते तो उनके कर्म व्यर्थ हो जाते।[2]

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا

(८९) इन्हीं को हमने किताब (धर्मशास्त्र) तथा धर्म-विधान एवं दूतत्व प्रदान किया और यदि

---

[1]पूर्वज से मूल तथा सन्तान से शाखायें तात्पर्य है अर्थात उनके मूल तथा शाखा एवं भाईयों में से भी बहुतों को हमने उच्च पद तथा मार्गदर्शन प्रदान किया। اجتباء का अर्थ है निर्वाचित करना तथा अपने विशेष भक्तों में गणना कर लेना तथा उन में एकत्रित कर लेना। यह अर्थ جبيت الماء في الحوض (मैंने जलाशय से जल एकत्रित कर लिया) से लिया गया है, अत: اجتباء से तात्पर्य अपने विशेष भक्तों में सम्मिलित करना होगा। اصطفاء (इस्तेफ़ा), تخليص (तख़लीस), اختيار (इख़्तेयार) इसी अर्थ में प्रयोग किये जाते हैं जिन के कारक का रूप मुस्तफ़ा, मुजतबा, मख़लिस तथा मुख़्तार हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अट्ठारह नबियों के नामों का वर्णन कर के अल्लाह तआला कह रहा है, यदि वे लोग भी बहुदेववाद में फँस जाते तो उनके सारे कर्म नष्ट हो जाते। जिस प्रकार से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दूसरे स्थान पर सम्बोधित करते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया।

﴿لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ﴾

"हे पैग़म्बर यदि तूने भी अल्लाह तआला के साथ किसी अन्य को मिश्रण किया, तो तेरे सारे कर्म नष्ट कर दिये जायेंगे।" (सूरः *अल-ज़ुमर-६५*)

यद्यपि पैग़म्बरों से शिर्क होना सम्भव नहीं। उद्देश्य अनुयायियों को शिर्क की भयानकता तथा विनाश से सतर्क करना है।

The Ummah Technology Mission

هَٰؤُلَآءِ فَقَدۡ وَكَّلۡنَا بِهَا قَوۡمًا لَّيۡسُواْ بِهَا بِكَٰفِرِينَ ٨٩

यह लोग इसे न मानें[1] तो हमने ऐसे लोगों को तैयार कर रखा है जो इसका इंकार नहीं करेंगे।[2]

أُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ هَدَى ٱللَّهُۖ فَبِهُدَىٰهُمُ ٱقۡتَدِهۡۗ قُل لَّآ أَسۡـَٔلُكُمۡ عَلَيۡهِ أَجۡرًاۖ إِنۡ هُوَ إِلَّا ذِكۡرَىٰ لِلۡعَٰلَمِينَ ٩٠

(९०) यही लोग है जिनको अल्लाह ने सत्य मार्ग दिखाया, अत: आप उनके मार्ग का अनुसरण करें,[3] आप कहिये कि मैं इस पर किसी प्रतिकार की माँग नहीं करता।[4] यह विश्ववासियों के लिये मात्र स्मृति है।[5]

وَمَا قَدَرُواْ ٱللَّهَ حَقَّ قَدۡرِهِۦٓ إِذۡ قَالُواْ مَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ عَلَىٰ بَشَرٖ مِّن شَيۡءٖۗ قُلۡ مَنۡ أَنزَلَ ٱلۡكِتَٰبَ ٱلَّذِي جَآءَ بِهِۦ

(९१) तथा उन्हें जिस प्रकार अल्लाह का सम्मान करना चाहिए था सम्मान नहीं किया, जब उन्होंने यह कहा कि अल्लाह ने किसी मनुष्य पर कुछ नहीं उतारा।[6] आप कहिये कि मूसा जो शास्त्र

---

[1]इससे तात्पर्य रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरोधी, मूर्तिपूजक तथा अधर्मी हैं।

[2]इससे तात्पर्य मक्का से जाकर मदीने बसने वाले तथा मदीने के वासी मुसलमान तथा प्रलय पर्यन्त आने वाले ईमानवाले हैं।

[3]इससे तात्पर्य उपरोक्त ईशदूत हैं। उनके अनुसरण का आदेश एकेश्वरवाद (तौहीद) के सम्बन्ध में तथा उन आदेशों एवं नियम में है जो निरस्त नहीं हुए। (फ़तहुल क़दीर) क्योंकि सभी धर्मों मे मूल विधान एक ही रहे हैं, यद्यपि कर्म तथा विधि में कुछ विभिन्नता रही। जैसाकि आयत ﴿شَرَعَ لَكُم مِّنَ ٱلدِّينِ مَا وَصَّىٰ بِهِۦ نُوحٗا﴾ (सूरः अल-शूरा-१३) से स्पष्ट है।

[4]अर्थात सतर्क करने तथा धर्म की ओर आमन्त्रित करने का, क्योंकि मुझे इसका वह बदला ही पर्याप्त है जो परलोक में अल्लाह तआला की ओर से मिलेगा।

[5]बुद्धि वाले इससे शिक्षा ग्रहण करें। यह क़ुरआन उनको अविश्वास तथा मिश्रण के अन्धकार से निकाल कर मार्गदर्शन का प्रकाश प्रदान करेगा तथा कुपथ की टेढ़ी राहों से बचाकर ईमान के सीधे मार्ग पर चलायेगा यदि कोई इससे शिक्षा प्राप्त करना चाहे, वरन "अंधे को अंधेरे में क्या दिखायी देगी" वाली बात होगी।

[6]قدرٌ (क़दर) का अर्थ अनुमान लगाने के हैं तथा यह किसी वस्तु के यर्थाथ एवं ज्ञान प्राप्त करने के अर्थ में प्रयोग होता है। अर्थात यह मक्का के मूर्तिपूजक रसूल को भेजने तथा किताब के उतरने का इंकार करते हैं जिसका स्पष्ट अर्थ यह है कि उन्हें अल्लाह का सही ज्ञान नहीं अन्यथा तथ्य को अस्वीकार न करते। इसके अतिरिक्त आत्म ज्ञान न होने

The Ummah Technology Mission

مُوْسٰى نُوْرًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ

तुम्हारे पास लाये जो ज्योति तथा मार्गदर्शन है उसे किसने उतारा जिसे तुम विभिन्न पृष्ठों में रखते हो,[1] जिसमें से कुछ व्यक्त करते

के कारण दूतत्व तथा रिसालत से भी अनभिज्ञ रहे। तथा यह समझते रहे कि किसी मानव पुरुष पर अल्लाह की किताब किस प्रकार उतर सकती है ? जिस प्रकार अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया है।

﴿ أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ أَنذِرِ النَّاسَ ﴾

"क्या यह बात लोंगों के लिए आश्चर्यजनक है कि हमने उन्हीं में से एक आदमी पर वह्यी (आदेश) उतार कर उसे लोगों को डराने के लिए नियुक्त कर दिया है ?" (सूरः -यूनुस-२)

अन्य स्थान पर फ़रमाया।

﴿ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَن يُؤْمِنُوٓا إِذْ جَآءَهُمُ الْهُدَىٰٓ إِلَّآ أَن قَالُوٓا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَّسُولًا ﴾

"मार्गदर्शन आ जाने के पश्चात लोग उसे स्वीकार करने से इस लिए रुक गये कि उन्होंने कहा कि क्या अल्लाह ने एक मनुष्य को रसूल बना कर भेजा है ?" (सूरः *बनी इस्राईल*-९४)

इसका कुछ विस्तार इससे पूर्व की आयत संख्या ८ की व्याख्या में गुज़र चुका है। व्याख्याधीन आयत में भी उन्होंने अपने इसी विचार के आधार पर इन बातों को नकारा है कि अल्लाह तआला ने किसी मनुष्य पर कोई किताब उतारी है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया यदि ऐसी बात है तो पूछो कि मूसा पर तौरात किसने उतारी थी ? (जिसको ये मानते हैं)

[1]आयत की उपरोक्त व्याख्यानुसार अब यहूदियों को सम्बोधित करके कहा जा रहा है कि तुम इस किताब को विभिन्न पृष्ठों में रखते हो, जिनमें से जिनको चाहते हो प्रकाशित करते हो जिनको चाहते हो छिपा लेते हो। जैसे पत्थरों से मार कर दण्डित करने का नियम अथवा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुणों की बात है। हाफ़िज इब्ने कसीर तथा इमाम इब्ने जरीर तबरी आदि ने يجعلونه و يبدونها वाक्य को प्राथमिकता दी है तथा तर्क यह दिया है कि यह मक्की आयत है, इसमें यहूदियों को सम्बोधित किस प्रकार किया जा सकता है ? तथा अन्य कुछ व्याख्याकारों ने सम्पूर्ण आयत को यहूदियों से सम्बन्धित माना है। इस में प्रारम्भ से ही दूतत्व तथा ऋषित्व का जो इंकार है, उसे यहूदियों की हठधर्मी, ईर्ष्या तथा द्वेष पर आधारित कथन सिद्ध किया है अर्थात इस आयत की व्याख्या में व्याख्याकारों के तीन मत हैं। एक गुट पूरी आयत यहूदियों से, दूसरे लोग पूरी आयत

The Ummah Technology Mission

وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩١﴾

तथा अधिकतर छुपाते हो तथा तुम्हें वह ज्ञान दिया गया जिसे तुम तथा तुम्हारे पूर्वज नहीं जानते थे।[1] आप कहिए कि, अल्लाह,[2] फिर उन्हें उनके कुरेद में खेलते छोड़ दीजिए।

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿٩٢﴾

(९२) यह भी एक शुभशास्त्र है, जिसे हमने उतारा है, अपने से पूर्व के (धर्मशास्त्रों) की प्रमाणकारी है। ताकि आप मूल नगरी (मक्का) तथा उसके आस-पास (के नगरों अर्थात सम्पूर्ण मानव जगत) को सचेत करें, तथा जो परलोक के प्रति विश्वास रखते हैं वही लोग इसे मानेंगे तथा वही अपनी नमाज़ों कि रक्षा करेंगे।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ

(९३) उससे अधिक अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाये अथवा कहे कि मेरी ओर देववाणी आई है जबकि उसकी ओर कुछ नहीं आयी। तथा जिसने कहा कि जिस प्रकार अल्लाह ने उतारा मैं भी उतारूँगा, यदि आप अत्याचारियों को मौत की घोर यातना में देखेंगे।[3] जब यमदूत अपने

का मक्का के मूर्तिपूजकों से तथा तीसरे गुट आयत के प्रारम्भिक भाग को मूर्तिपूजको से सम्बन्धित तथा تجعلونه से यहूदियों से सम्बन्धित सिद्ध करते हैं। والله أعلم

[1]यहुदियों के विषय में मानने की स्थिति में इसकी व्याख्या होगी कि तुम्हें तौरात द्वारा बताया गया तथा अन्य परिस्थिति में क़ुरआन द्वारा।

[2]यह من أنزل किसने उतारा का उत्तर है।

[3]अत्याचारों से तात्पर्य सभी प्रकार के अत्याचारी हैं। तथा इसके अन्तर्गत अल्लाह की किताब के निवर्ती तथा दूतत्व के झूठे दावेदार सभी आते हैं। غمرات से मृत्यु के संकट तात्पर्य है। "फ़रिश्ते (यमदूत) हाथ बढ़ा रहे होंगे।" अर्थात प्राण निकालने के लिए। اليـــوم (आज) से तात्पर्य प्राण निकालने का दिन है तथा यही यातना के प्रारम्भ होने का समय भी है, जिसका प्रारम्भ क़ब्र (समाधि) से है। इससे सिद्ध होता है कि क़ब्र में यातना

The Ummah Technology Mission

عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٩٣﴾

हाथ लपकाये होते हैं कि अपने प्राण निकालो, आज तुम्हें अल्लाह पर अनुचित आरोप लगाने तथा अभिमान पूर्वक उसकी आयतों का इंकार करने के कारण अपमानकारी प्रतिकार दिया जायेगा।[1]

وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ۭ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٩٤﴾

(९४) तथा तुम हमारे पास अकेले-अकेले आ गये।[2] जैसे तुम्हें प्रथम बार पैदा किया तथा तुम्हें जो दिया उसे अपने पीछे छोड़ आये तथा तुम्हारे सिफ़ारिशी हमें नहीं दिख रहे हैं, जिन को तुम अपने कार्यों में हमारा साझी समझ रहे थे। नि:संदेह तुम्हारे संबन्ध कट गये तथा तुम्हारा विचार तुमसे खो गया।

सत्य है। वरन् हाथ फैलाने तथा जान निकालने का आदेश देने के साथ इस बात को कहने की आवश्यकता नहीं थी कि आज तुझे अपमानित होने की यातना दी जायेगी। ध्यान रहे क़ब्र से तात्पर्य बर्ज़ख़ का जीवन है सांसारिक एवं परलोक के मध्य का जीवन जो मृत्यु से प्रलय होने तक का है। यह बर्ज़ख़ी जीवन कहलाता है। चाहे उसे नरभक्षी ने खा लिया हो अथवा उसका शव समुद्र की लहरों में समा गया हो अथवा उसे जला कर राख कर दिया हो अथवा क़ब्र में दफ़ना (गाड़) दिया हो यह बर्ज़ख़ का जीवन है जिसमें यातना देने में अल्लाह तआला सामर्थ्य रखता है।

[1]अल्लाह पर झूठ बोलने में धर्मशास्त्रों तथा ईशदूतों के भेजे जाने का इंकार भी आता है। तथा दूतत्व का झूठा दावा भी। इसी प्रकार दूतत्व एवं ऋषित्व का इंकार तथा झूठलाना भी है। इन दोनों के कारण से उन्हें अपमान जनक दंड दिया जायेगा।

[2] فرادى अरबी भाषा में فرد का बहुवचन है, जिस प्रकार سكارى बहुवचन है سكران का, तथा كسالى बहुवचन है كسلان का। इसका अर्थ यह है कि तुम अलग-अलग एक-एक कर के मेरे पास आओगे। तुम्हारे पास न धन होगा न संतान तथा न वह देवता, जिनको तुम ने अल्लाह का साझीदार तथा अपना सहायक समझा था। अर्थात इन में से कोई भी वस्तु तुम को वहाँ लाभ पहुचाने में असमर्थ है। अगले वाक्य में इन्हीं विषयों की अत्यधिक विवरण है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿٩٥﴾

(९५) अल्लाह ही बीजों एवं गुठलियों को फाड़कर अंखुआ निकालता है।[1] वह सजीव को निर्जीव से[2] एवं निर्जीव को सजीव से निकलता है,[3] वही अल्लाह है, फिर तुम कहाँ फिरे जा रहे हो ?

فَالِقُ الْإِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذَٰلِكَ

(९६) वह पौ फाड़ने वाला है[4] तथा उसने रात्रि को विश्राम के लिये[5] एवं सूर्य तथा चन्द्रमा को

---

[1]यहाँ से अल्लाह तआला की अतुलनीय शक्ति तथा सामर्थ्य का वर्णन प्रारम्भ हो रहा है। फ़रमाया, अल्लाह तआला दाने तथा गुठली को, जिसे किसान धरती के अन्दर दबा देता है, उसे फाड़कर अनेक रंग-रूप के वृक्ष उगाता है। धरती एक होती है, पानी भी जिससे खेतों की सिचाई होती है, एक ही प्रकार का होता है। परन्तु जिस-जिस चीज के वे दाने तथा गुठलियाँ होते हैं। उनके अनुसार अल्लाह तआला उनसे विभिन्न प्रकार के अनाज तथा फलों के वृक्ष उगाता है। क्या अल्लाह के अतिरिक्त अन्य कोई है, जो इस कार्य को करता है अथवा कर सकता है ?

[2]अर्थात दाने अथवा गुठलियों से वृक्ष उगाता है, जिस में जीवन होता है तथा वह बढ़ाता, फुलाता तथा फल अथवा अनाज देता है। अथवा सुगन्धित रंग-बिरंगे फूल, जिनको देख कर सूँघ कर मनुष्य प्रफुल्लता तथा आनन्द का आभास करता है। अथवा वीर्य तथा अन्डे से मनुष्य तथा पक्षियाँ पैदा करता है।

[3]अर्थात पक्षियों के अण्डे जो मृतप्राय हैं। जीवित तथा मृत की तुलना ईमानवालों तथा काफ़िरों से भी की गयी है अर्थात ईमानवालों के घर काफ़िरों तथा काफ़िरों के घर में ईमान वाले पैदा करता है।

[4]अन्धकार तथा प्रकाश का उत्पन्न करने वाला भी वही है। वह रात के अंधेरे से उषा काल का प्रकाश पैदा करता है जिससे प्रत्येक वस्तु प्रकाशमान हो जाती है।

[5]अर्थात रात को अंधकार में बदल देता है, ताकि लोग प्रकाश की सभी व्यस्तता को समाप्त करके विश्राम कर सकें।

The Ummah Technology Mission

تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٩٦﴾

हिसाब लगाने के लिये बनाया।[1] यह निर्धारण है परम प्रभावी ज्ञाता (अल्लाह) का।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٩٧﴾

(९७) तथा उसी ने तुम्हारे लिये तारे बनाये ताकि थल जल के अंधेरों में उनके द्वारा रास्ते का पता लगाओ,[2] हमने उन लोगों के लिए निशानियों का विवरण कर दिया है जो ज्ञान रखते हैं।

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَمُسْتَوْدَعٌ ۗ قَدْ فَصَّلْنَا

(९८) तथा उसी ने तुम्हें एक प्राण से उत्पन्न किया फिर तुम्हारा एक स्थाई तथा एक समर्पण

---

[1]अर्थात दोनों के लिए एक माप का निर्धारण है, जिसमें वे किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं कर सकते। दोनो के अपने-अपने पथ हैं जिस पर वे सर्दी-गर्मी सभी परिस्थितियों में अग्रसर हैं, जिसके आधार पर सर्दी में दिन छोटे तथा रात्रि बड़ी तथा गर्मी में इसके विपरीत दिन लम्बे तथा रात्रि छोटी हो जाती हैं। जिसका विस्तृत वर्णन सूरः *यूनुस*-५, सूरः *यासीन*-४० तथा सूरः *आराफ़* -५४ में भी है। इसका यह अर्थ भी लिया गया है कि सूर्य एव चन्द्रमा से दिन-रात तथा महीने और वर्ष का हिसाब लगाया जाता है। उपरोक्त अनुवाद इसी अर्थ को लेकर किया गया है।

[2]यहाँ सितारों का एक लाभ तथा लक्ष्य बताया गया है तथा इस के अन्य और भी दो लक्ष्य हैं जो अन्य स्थान पर वर्णन किये गये हैं। आकाशों की शोभा तथा शैतानों के दण्ड। अर्थात यदि शैतान आकाश पर जाने का प्रयत्न करते हैं तो यह उन पर अंगारे बन कर गिरते हैं। कुछ सलफ़ का कथन है। "इन तीन बातों के अतिरिक्त इन सितारों के विषय में यदि कोई व्यक्ति विश्वास रखता हो तो वह त्रुटि पर है तथा अल्लाह पर झूठ बाँधता है।"

इससे ज्ञात होता है कि हमारे देश में जो ज्योतिष विज्ञान की चर्चा है, जिसमें सितारों के द्वारा भविष्य की घटनाओं तथा मनुष्य के जीवन अथवा जगत में उनके प्रभाव का दावा किया जा रहा है, वह निराधार है तथा धार्मिक नियमों के विरुद्ध भी। अतः एक हदीस में इसे जादू का ही एक प्रभाग बताया गया है।

« مَنِ اقْتَبَسَ عِلْمًا مِنَ النُّجُومِ اقْتَبَسَ شُعْبَةً مِنَ السِّحْرِ زَادَ مَا زَادَ ».

"जो व्यक्ति ज्योतिष विज्ञान प्राप्त करता है। वह एक प्रकार का जादू सीखता है।"
(हस्सनहु अलबानी सहीह अबू दाऊद संख्या ३९०५)

The Ummah Technology Mission

الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾

स्थान है।[1] हमने उनके लिये निशानियों (लक्षणों) का वर्णन कर दिया है जो समझते हैं।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ

(९९) तथा वही है जिसने आकाश से वर्षा की फिर हमने उससे प्रत्येक प्रकार के पौधे उगाये[2] फिर उससे हरियाली निकाली[3] जिससे हम गुथे हुये अन्न[4] तथा खजूर के गाभ से लटकते हुये गुच्छे[5] एवं अंगूरों तथा जैतून और अनार के बाग़[6] (उद्यान) निकलते हैं जो समरूप एवं प्रारुप होते हैं।[7] उनके फलों को देखो जब फलें

---

[1]अधिकतर व्याख्याकारों के विचार से مُستقر (मुस्तकर) से गर्भाशय तथा مُستودع से पिता की पीठ तात्पर्य है। (फ़तहुल क़दीर तथा इब्ने कसीर)

[2]यहाँ से उसकी आश्चर्यजनक कारीगरी का वर्णन हो रहा है अर्थात वर्षा का पानी, जिससे वह हर प्रकार की वनस्पति उगाता है।

[3]इससे तात्पर्य हरी शाखायें तथा अंकूर हैं जो धरती में दबे हुए दाने से अल्लाह तआला धरती के ऊपर उगाता है, फिर वह वृक्ष का आकार तथा प्रकार ग्रहण करता है।

[4]उन हरी शाखाओं से ऊपर तले चढ़े हुए दाने तथा बालियाँ निकलते हैं। जैसे जौ, जवार, बाजरा, मकई, गेहूँ तथा चावल आदि।

[5] قِنْوٌ का बहुवचन قِنْوَانٌ है। तात्पर्य गुच्छे हैं। طلع खजूर का प्रारम्भिक रूप है, यही बढ़कर गुच्छा बनता है तथा फिर वह परिपक्व होकर खजूर तैयार होता है। دانية से तात्पर्य वह गुच्छे हैं जो निकट हों। तथा कुछ गुच्छे दूर भी होते हैं जिन तक हाथ नहीं पहुँचता है। अनुग्रह के रूप में निकटता का वर्णन कर दिया गया है कि कृतज्ञता व्यक्त करो इसके लिए तथा जिसका अर्थ है منها دانية و منها بعيدة "उनमें से कुछ निकट तथा कुछ दूर हैं।" بعيدة लोप है। (फ़तहुल क़दीर)

[6]बाग़, जैतून तथा अनार इन सभी का सम्बन्ध वनस्पति से है अर्थात فأخرجنا به جنّات अर्थात वर्षा के जल से हम ने अंगूर के बाग़ तथा जैतून एवं अनार पैदा किये।

[7]अर्थात कुछ गुणों में एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं तथा कुछ में नहीं मिलते-जुलते। अथवा उनके पत्ते एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं, फल नहीं मिलते अथवा रंग रूप में मिलते-जुलते हैं परन्तु स्वाद में नहीं मिलते-जुलते।

The Ummah Technology Mission

إِذَآ أَثْمَرَ وَيَنْعِهِۦٓ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكُمْ لَءَايَٰتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٩٩﴾

तथा उनका पकना, नि:संदेह इसमें उन लोगों के लिये चिन्ह (निशानियाँ) हैं[1] जो विश्वास रखते हैं।

وَجَعَلُوا۟ لِلَّهِ شُرَكَآءَ ٱلْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا۟ لَهُۥ بَنِينَ وَبَنَٰتٍۭ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ سُبْحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٠٠﴾

(१००) तथा लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का साझी बना दिया है, जबकि उसी ने उनको पैदा किया है, तथा उस (अल्लाह) के लिये पुत्र तथा पुत्रियाँ गढ़ लीं बिना किसी ज्ञान के, वह (अल्लाह) इनके वर्णित गुणों से पवित्र एवं (श्रेष्ठ) है।

بَدِيعُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُۥ وَلَدٌ وَلَمْ تَكُن لَّهُۥ صَٰحِبَةٌ ۖ وَخَلَقَ كُلَّ شَىْءٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٠١﴾

(१०१) यह आकाशों एवं धरती का अनुपम उत्पत्तिकर्त्ता है, उसके संतान कहाँ हो सकती है ? जबकि उसकी कोई पत्नी नहीं है वह प्रत्येक वस्तु का रचयिता[2] तथा सर्वज्ञ है।

ذَٰلِكُمُ ٱللَّهُ رَبُّكُمْ ۖ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ خَٰلِقُ كُلِّ شَىْءٍ فَٱعْبُدُوهُ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ وَكِيلٌ ﴿١٠٢﴾

(१०२) वही अल्लाह तुम्हारा पोषक है, उसके सिवाये कोई पूज्य नहीं, प्रत्येक वस्तु का रचयिता है, अत: उसी को पूजो, तथा वह प्रत्येक वस्तु का व्यवस्थापक है।

---

[1]वर्णन की हुई सभी चीज़ों में अखिल जगत के स्रष्टा की असीम शक्ति तथा उसकी बुद्धिमत्ता एवं कृपा के प्रमाण हैं।

[2]अर्थात जैसे अल्लाह सभी उपरोक्त वस्तुयें उत्पन्न करने में अकेला है कोई उसका साझी नहीं उसी प्रकार वह इस योग्य है कि उस की अकेले वंदना की जाये किसी और को उसकी वंदना में मिश्रित न किया जाये। परन्तु लोगों ने एक अकेले को त्याग कर देवों को उसका साझी बना रखा है जब कि वह स्वयं अल्लाह की रचना हैं। मिश्रणवादी वन्दना तो मूर्तियों अथवा समाधियों में गड़े शव की करते हैं। किन्तु कहा गया है कि उन्होंने देवों को अल्लाह का साझी बना रखा है। वास्तव में देवों से तात्पर्य राक्षस हैं तथा उन्हीं के कहने पर मिश्रण किया जाता है अत: मानो कि उन्हीं की वंदना की जाती है। इस विषय को पवित्र क़ुरआन में अनेक स्थानों पर वर्णित किया गया है। (उदाहरणार्थ *सूरः निसा* -११७, *सूरः मरियम*-४४, *सूरः यासीन*-६०, *सूरः सबा*-४१)

The Ummah Technology Mission

لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ﴿١٠٣﴾

(१०३) आँखें उसे देख नहीं सकतीं[1] और वह सभी निगाहों को देखता है तथा वह सूक्ष्मदर्शी सर्वसूचित है।

قَدْ جَاءَكُمْ بَصَائِرُ مِن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَنْ أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ۚ وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِحَفِيظٍ ﴿١٠٤﴾

(१०४) तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे पास तर्क आ गये हैं तो जो देखेगा वह अपने भले के लिये (देखेगा) तथा जो अंधा बन जायेगा वह अपना बुरा करेगा[2] तथा मैं तुम्हारा रक्षक

---

[1] بصر का बहुवचन أبصار (दृष्टियाँ) है अर्थात मानव दृष्टि अल्लाह की यथार्थता का अवलोकन नहीं कर सकता। यदि इससे तात्पर्य नेत्र दृष्टि है तो इसका सम्बन्ध संसार से होगा अर्थात भौतिक दृष्टि से कोई अल्लाह को नहीं देख सकता। परन्तु सहीह तथा निरन्तर हदीस के कथन से ज्ञात होता है कि परलोक में ईमान वाले अल्लाह तआला को देखेंगे तथा स्वर्ग में भी उसके दर्शन से सम्मानित होंगे। इसलिए मुतजिला का इस आयत से यह भाव लेना कि अल्लाह तआला को कोई भी नहीं देख सकता, दुनिया में न आख़िरत में उचित नहीं, क्योंकि इस नकार का सम्बन्ध मात्र दुनिया से है। इसीलिए आदरणीय आयशा (रज़ी अल्लाहु अन्हा) भी इस आयत से यह भाव निकाल कर कहा करती थीं, जिस व्यक्ति ने भी यह दावा किया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (मेराज की रात्रि) अल्लाह तआला के दर्शन किये, उसने झूठ बोला है। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः *अल-अनाम*) क्योंकि इस आयत के आधार पर पैग़म्बर सहित कोई भी अल्लाह को देखने का सामर्थ्य नहीं रखता। परन्तु परलौकिक जीवन में यह दर्शन सम्भव होगा। जैसाकि अन्य स्थान पर क़ुरआन ने इसके पक्ष में फ़रमाया है।

﴿ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ * إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴾

"कई मुख उस दिन तरुण होंगें, अपने प्रभु की ओर देख रहे होंगे।" (सूरः *अल-क़ियामः*-२२,२३)

[2] بصيرة का बहुवचन بصائر है। जो वास्तव में दिल के प्रकाश का नाम है। यहाँ पर तात्पर्य वे तर्क तथा युक्तियाँ हैं जो क़ुरआन ने अनेक स्थान पर दुहराई हैं तथा जिनको नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी हदीसों में वर्णन की हैं। जो इन तर्कों को देख कर मार्गदर्शन पा लेते हैं, उसमें उन्हीं का लाभ है, नहीं अपनाता तो उसी की हानि है। जैसे फ़रमाया।

﴿ مَّنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ﴾

The Quran Translation Mission

रक्षक नहीं हूँ।[1]

وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَ لِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿١٠٥﴾

(१०५) इसी प्रकार हम आयतों (पवित्र क़ुरआन की ऋचाओं) को फेर-फेर कर वर्णित कर रहें हैं ताकि वे कहें कि आपने पढ़ा है[2] और ताकि उन लोगों के लिये जो जानते हैं हम उसे भली-भाँति प्रकाशित कर दें।

اِتَّبِعْ مَاۤ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٦﴾

(१०६) आप अपने पालनहार के आदेश (प्रकाशना) का अनुसरण करें कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं तथा मिश्रण-वादियों से विमुख हो जायें।

इसका भी भावार्थ वही है जो प्रस्तुत आयत का है।

[1]अपितु केवल संदेशवाहक, निवेदक, तथा शुभसूचक हूँ। मार्ग दिखलाना मेरा कार्य है पर मार्ग पर चला देना यह अल्लाह के वश में है।

[2]अर्थात हम तौहीद (एकेश्वरवाद) की युक्तियों को इस प्रकार स्पष्ट करके तथा विभिन्न रूप से वर्णन करते हैं कि मूर्तिपूजक यह कहने लगते हैं कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहीं से पढ़ कर तथा सीख कर आये हैं। जिस प्रकार से अन्य स्थान पर फ़रमाया।

﴿ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اِفْكُ ِۨافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚ فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ۛ وَقَالُوْۤا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا ﴾

"काफ़िरों ने कहा, यह क़ुरआन तोउसका अपना गढ़ा हुआ है, जिस पर दूसरों ने भी इसकी सहायता की है। यह लोग ऐसा दावा करके अत्याचार तथा झूठ पर उतर आये हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने कहा कि यह पूर्व के लोगों की कहानियाँ है जिसको उसने लिख रखा है।" (सूरः अल-फ़ुरक़ान-४,५)

यद्यपि बात यह नहीं, जिस प्रकार यह समझते अथवा दावा करते हैं, अपितु उद्देश्य इस विस्तार से समझदार लोगों के लिए स्पष्ट तथा व्याख्या करना है ताकि उन पर सत्यता पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाये।

The Ummah Technology Mission

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ؕ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٧﴾

(१०७) तथा यदि अल्लाह चाहता तोयह शिर्क (अल्लाह के साझीदार) न करते।[1] तथा हम ने आपको इन लोगों का संरक्षक नहीं बनाया, तथा न आप उन पर अधिकार रखने वाले हैं।[2]

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٨﴾

(१०८) तथा जो अल्लाह से अन्य को पुकारते हैं उनकी निन्दा न करो अन्यथा असीम होकर अनजाने वे अल्लाह की निन्दा करेंगे,[3] इसी प्रकार हमने प्रत्येक समुदाय के लिये उनके कर्म को सुशोभित बना दिया है, फिर उन्हें अपने पालनहार की ओर ही लौटना है। अतः वह उन्हें उस से सूचित करेगा जो वे करते रहे।

---

[1]इस बिन्दु का स्पष्टीकरण पहले किया जा चुका है कि अल्लाह की इच्छा अन्य चीज़ है तथा उसकी प्रसन्नता तो इसी में है कि उसके साथ किसी को सम्मिलित न किया जाये। फिर भी मनुष्य को इस पर बाध्य नहीं किया है क्योंकि बाध्यता से मनुष्य की परीक्षा न हो पाती, वरन् अल्लाह तआला के पास तो ऐसी शक्ति है कि वह चाहे तो कोई व्यक्ति शिर्क करने के सामर्थ्य ही नहीं रख सके। (पुनः देखिये *सूरः अल-बक़रः*-२५३ तथा *सूरः अल-अनाम* ३५ की व्याख्या)

[2]यह विषय भी क़ुरआन मजीद में विभिन्न स्थानों पर वर्णन किया गया है। उद्देश्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की धार्मिक नियन्त्रण तथा सतर्क करने वाली पदवी का स्पष्टीकरण है जो रिसालत की माँग है तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम केवल इसी सीमा तक प्रभारी थे। इससे अधिक आप के पास यदि अधिकार होते तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने प्रिय चाचा अबू तालिब को अवश्य मुसलमान कर लेते, जिन के इस्लाम धर्म को स्वीकार करने की आप तीव्र इच्छा रखते थे।

[3]यह निषेध की विधि के इस नियम पर आधारित है कि यदि किसी उचित कार्य से उससे बड़ी ख़राबी उत्पन्न होती हो, तो वहाँ पर उचित को न करना ठीक तथा श्रेष्ठ है। इस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी फ़रमाया है कि तुम किसी के माता-पिता को गाली मत दो कि इस प्रकार तुम स्वयं अपने माता-पिता के गाली का कारण बन जाओगे। (सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान बाब बयानुल कबायर व अकबरिहा) इमाम शौकानी लिखते हैं कि निषेध विधि का यह मूलाधार है। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِن جَاءَتْهُمْ آيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِندَ اللَّهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٩﴾

(१०९) तथा उन्होंने बलपूर्वक अल्लाह की शपथ ली[1] कि उनके पास कोई निशानी आई[2] तो अवश्य मान लेंगे, आप कहिये कि आयतें अल्लाह के पास हैं[3] तथा आपको क्या पता कि वह (निशानियाँ) आ जायें तब भी वह नहीं मानेंगे।

وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١١٠﴾

(११०) तथा हम उनके दिलों एवं आँखों को फेर देंगे जिस प्रकार उन्होंने प्रथम इसके प्रति विश्वास नहीं किया, [4] तथा उनको उनकी दुष्टता (के अंधकार) में चकित रहने देंगे।

---

[1] جهد أيمانهم أي حلفوا أيمانا مؤكدة बड़ा बल देकर सौगन्ध खायी।

[2] अर्थात कोई बड़ा चमत्कार, जो उनकी इच्छानुसार हो, जैसे मूसा की छड़ी, मृतक को जीवन तथा समूद की ऊँटनी जैसा।

[3] अर्थात उनकी चमत्कार सम्बन्धी माँगे मात्र शत्रुता एवं ईर्ष्या के कारण हैं, मार्गदर्शन प्राप्त करने की इच्छा से नहीं है। फिर भी इन लक्षणों को प्रकाशित करना अल्लाह तआला के वश में है, वह चाहे तो उनकी माँग पूरी कर दे। कुछ कथनों से ज्ञात होता है कि मक्का के मूर्तिपूजकों ने माँग की थी कि सफ़ा पर्वत (जो मक्का में हरम के निकट है) स्वर्ण का बना दिया जाये, तो वह ईमान ले आयेंगे। जिस पर जिब्रील ने आकर कहा कि यदि उसके पश्चात भी वह ईमान न लाये, तो उनका विनाश कर दिया जायेगा, जिसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पसन्द नहीं किया। (इब्ने कसीर)

[4] इसका अर्थ यह है कि जब पहली बार ईमान नहीं लाये, तो उसका प्रभाव यह हुआ कि उनके आगे भी ईमान लाने की सम्भावना समाप्त हो गई। दिलों तथा नेत्रों को फेर देने का भावार्थ यही है। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ﴿١١١﴾

(१११) तथा यदि हम उनके पास फ़रिश्ते उतार[1] दें तथा इनसे मृत बात[2] करें एवं उनके सम्मुख प्रत्येक वस्तु एकत्रित कर दें[3] तो (भी) अल्लाह के चाहे बिना यह लोग विश्वास नहीं करेंगे, परन्तु इन में से अधिकतर लोग मूर्खता कर रहे हैं।[4]

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ

(११२) तथा इसी प्रकार हम ने प्रत्येक नबी (उपदेशक) के लिये जिन्नों तथा इन्सानों के शैतानों (राक्षसों) को शत्रु बनाया[5] जो परस्पर

---

[1]जैसा कि हमारे संदेशवाहक से वह निरन्तर इस की माँग करते हैं।

[2]और वह अन्तिम ईशदूत मुहम्मद (صلى الله عليه وسلم) के दूतत्व (रिसालत) को मान लेते।

[3]इस का दूसरा भावार्थ यह लिया गया है कि जो चिन्ह वह माँगते हैं वह उनके समक्ष पेश कर देते, तथा एक भावार्थ यह लिया गया है कि प्रत्येक वस्तु एकत्र होकर सामूहिक रूप से यह गवाही दे कि संदेशवाहकों की यह श्रृंखला सत्य है तो इन सभी लक्षणों तथा माँगों की पूर्ति कर देने पर भी विश्वास नहीं करेंगे, परन्तु जिसे अल्लाह चाहे। इसी अर्थ में यह आयत (मंत्र) भी है।

﴿ إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ * وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴾

"जिन पर तेरे पालनहार का वचन सिद्ध हो गया। वह दुखद दण्ड का दर्शन किये बिना विश्वास नहीं करेंगे यद्यपि उनके पास हर प्रकार के संकेत आ जाये।" (सूरः *यूनुस* -९६,९७)

[4]तथा यह मूर्खता की बातें ही उनके एवं सत्य के प्रति विश्वास के बीच आवरण बनी हुई है। यदि अज्ञान का पर्दा उठ जाये तो संभवतः सत्य का प्रबोध कर लें तथा फिर अल्लाह की इच्छा से सत्य को स्वीकार कर लें।

[5]यह वही बात है जो विभिन्न प्रकार से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सांत्वना के लिए कही गयी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूर्व जितने भी नबी आये, उन को भी झूठलाया गया, उन्हें यातनायें दी गई इत्यादि। उद्देश्य यह है कि जिस प्रकार से उन्होंने धैर्य तथा साहस से कार्य किया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी इन सत्य के शत्रुओं के समक्ष धैर्य तथा दृढ़ता का प्रदर्शन करें। इससे ज्ञात हुआ कि शैतान के अनुयायी मनुष्यों के अतिरिक्त जिन्नों में से भी हैं तथा ये वे हैं जो दोनों गुटों के दुष्ट, विद्रोही अत्याचारी, दुराचारी एवं अभिमानी हैं।

The Ummah Technology Mission

بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا ۚ وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١١٢﴾

धोखा देने के लिये रमणीक बात की प्रेरणा देते रहे[1] तथा यदि तेरा पोषक चाहता तो ऐसा न करते |[2] अत: आप उन्हें तथा उनके षड़यन्त्र को त्याग दें (उनकी चिन्ता न करें) |

وَلِتَصْغَىٰ إِلَيْهِ أَفْئِدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُم مُّقْتَرِفُونَ ﴿١١٣﴾

(११३) ताकि उनके दिल उसकी ओर प्रवृत्त हो जायें जो परलोक के प्रति विश्वास नहीं रखते तथा उससे प्रसन्न हो जायें और वही पाप कर लें जो वह लोग कर रहे थे |[3]

أَفَغَيْرَ اللَّهِ أَبْتَغِي حَكَمًا وَهُوَ الَّذِي أَنزَلَ إِلَيْكُمُ الْكِتَابَ مُفَصَّلًا ۚ وَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنَزَّلٌ مِّن رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿١١٤﴾

(११४) तो क्या मैं अल्लाह के सिवाय किसी अन्य शासक की खोज करूँ जब कि उसी ने तुम्हारी ओर एक सविस्तार शास्त्र (क़ुरआन) उतारा है | तथा हम ने जिनको धर्मशास्त्र दिया है वे जानते हैं कि वास्तव में वह तुम्हारे पालनहार की ओर से ससत्य अवतरित है | अत: आप शंसयी न बनें |[4]

---

[1]अर्थात मनुष्यों तथा जिन्नों को भटकाने के लिए एक-दूसरे को चालबाज़ी तथा छल की शिक्षा देते हैं | ताकि वे लोगों को धोखे तथा प्रलोभन में डाल सकें | यह बात सामान्य रूप से देखने में आयी है कि लोग शैतानी कार्यों में एक-दूसरे का बढ़-चढ़ कर साथ देते हैं | जिसके कारण बुराई का अतिशीघ्र प्रचार-प्रसार हो जाता है |

[2]अर्थात अल्लाह तआला इन शैतानी चालों को विफल बनाने का सामर्थ्य रखता है, परन्तु वह दबाव से यह कार्य नहीं करता क्योंकि ऐसा करना उसके व्यवस्था तथा नियम के विरुद्ध है, जो उसने अपनी इच्छानुसार अपना रखी है, जिसका भेद वह भली-भाँति जानता है|

[3]अर्थात शैतान के बुरे विचार के शिकार वही लोग होते हैं, तथा वही उसको प्रिय समझते हैं तथा उसके अनुसार कर्म करते है जो परलोक के प्रति विश्वास (आस्था) नहीं रखते, तथा यह सत्य है कि जिस प्रकार से लोगों के दिलों में आख़िरत का विश्वास क्षीण होता जा रहा है, उसी के अनुरूप लोग शैतानी जाल में फंस रहे हैं |

[4]आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करके वास्तव में मुसलमानों को शिक्षा दी जा रही है |

The Ummah Technology Mission

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّ عَدْلًا ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۱۵﴾

(११५) तथा तुम्हारे पोषक के कथन सत्य एवं न्याय में पूर्ण[1] हो गये, उसके कथनों को कोई बदल नहीं सकता तथा वह भली-भाँति सुनने वाला जानने वाला है।

وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِى الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿۱۱۶﴾

(११६) यदि आप भूवासियों में अधिकतर का अनुसरण करेंगे तो वह आप को अल्लाह के मार्ग से बहका देंगे, वे मात्र निराधार कल्पना का अनुसरण करते तथा अनुमान लगाते हैं।[2]

---

[1]सूचनाओं तथा घटनाओं के आधार पर सत्य है तथा आदेश एवं समस्याओं के निराकरण के आधार पर न्यायिक है अर्थात इसका प्रत्येक आदेश तथा निषेध न्याय के नियमों पर आधारित है। यद्यपि मनुष्य अपनी अज्ञानता अथवा शैतान के बहकाने के कारण इस तथ्य का बोध न कर सके।

[2]क़ुरआन में वर्णित इस सत्यता का अवलोकन प्रत्येक काल में किया जा सकता है। अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴾

"आप की इच्छा के उपरान्त अधिकतर लोग ईमान लाने वाले नहीं।" (सूरः यूसुफ़-१०३)

इससे ज्ञात हुआ कि सत्य तथा सत्यता के मार्ग पर चलने वाले सदैव थोड़े ही होते हैं। जिससे यह बात भी सिद्ध होती है कि सत्य तथा असत्य का आधार तर्क तथा प्रमाण है, लोगों की अधिक अथवा अल्प संख्या नहीं। ऐसा नहीं कि जिस बात को बहुसंख्यक ने माना हो वह सत्य हो तथा अल्पसंख्यक असत्य पर हों। अपितु क़ुरआन द्वारा वर्णित इस सत्यता के आधार पर यह सम्भव है कि सत्यगामी अल्पसंख्यक होते हों तथा असत्यवादी बहुसंख्यक। जिसकी पुष्टि हदीस से होती है जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मेरे अनुयायी ७३ गुटों में बंट जायेंगे, जिनमें से केवल एक ही गुट स्वर्ग में जायेगा, शेष सभी नरक में जायेंगे। तथा इस स्वर्गगामी गुट की निशानियाँ बतायीं कि जो « مَا أَنَا عَلَيْهِ وَأَصْحَابِي ». "मेरे तथा मेरे सहचरों के मार्ग पर चलने वाला होगा।" (अबू दाऊद, किताबुल सून्नः बाब शरह अल सुन्नः संख्या ४५९६, त्रिमज़ी किताबुल ईमान वाव माजाअ फ़ी इफ़तराके हाज़ेहिल उम्मः

The Ummah Technology Mission

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَنْ يَضِلُّ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١١٧﴾

(११७) नि:संदेह आप का प्रभु उनको भली-भाँति जानता है, जो उसके मार्ग से भटक जाता है। तथा वह उस को भी भली-भाँति जानता है, जो उस के मार्ग पर चलते हैं।

فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِآيَاتِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾

(११८) तो(जिस जानवर) पर अल्लाह का नाम लिया जाये उसमें से खाओ यदि तुम उसके आदेशों पर ईमान रखते हो।[1]

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا لَيُضِلُّونَ بِأَهْوَائِهِمْ

(११९) तथा तुम्हारे लिये कौन सी बात इस का कारण हो सकती है कि तुम ऐसे जानवरों में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो ? यद्यपि अल्लाह (तआला) ने उन सभी जानवरों का विवरण बता दिया है जिनको

---

[1]अर्थात जिस पशु को शिकार करते समय, अथवा बलि अथवा वध करते समय अल्लाह का नाम लिया जाये, उसे खा लो। यदि वे उन जानवरों में से हों जिन को खाने की अनुमति है। इसका अर्थ यह हुआ कि जिस जानवर पर जानबूझ कर अल्लाह का नाम न लिया जाये, वे वैध तथा पवित्र नहीं हैं। परन्तु इससे ऐसी अवस्था अलग है कि जिसमें यह शंका हो कि काटने वाले ने काटते समय अल्लाह का नाम लिया अथवा नहीं ? इसमें आदेश यह है कि अल्लाह का नाम लेकर खा लो। हदीस में आता है आदरणीया आयशा (رضي الله عنها) ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि कुछ लोग हमारे पास माँस लेकर आते हैं (इससे तात्पर्य वे अशिक्षित अरब थे जो नये-नये मुसलमान हुए थे तथा इस्लामी शिक्षाओं तथा नियमों से परिचित नहीं हो पाये थे) हम नहीं जानते कि उन्होंने अल्लाह का नाम लिया है अथवा नहीं ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : «سَمُّوا عَلَيْهِ أَنْتُمْ وَكُلُوا» (सहीह बुख़ारी बाब जबीहतुल आराब संख्या ५५०७) तुम अल्लाह का नाम लेकर खा लो। अर्थात शंका की अवस्था में यह छूट है। इसका यह अर्थ नहीं कि हर प्रकार के जानवरों का मांस बिस्मिल्लाह पढ़ लेने से उचित हो जायेगा। इससे अधिक से अधिक यह सिद्ध होता है कि मुसलमानों की मंडियों तथा दूकानों पर मिलने वाला मांस उचित है। यदि किसी को सन्देह अथवा शंका हो तो वह खाते समय बिस्मिल्लाह पढ़ ले।

The Ummah Technology Mission

بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ﴿١١٩﴾

तुम पर निषेध किया गया है।[1] परन्तु वह भी जब तुम को अत्यधिक आवश्यकता पड़ जाये (तो उचित है) तथा यह निश्चित बात है कि बहुत से मनुष्य अपने त्रुटिपूर्ण विचारों पर बिना किसी प्रमाण के भटकाते हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं कि अल्लाह (तआला) अतिकारियों को भली-भाँति जानता है।

وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ﴿١٢٠﴾

(१२०) तुम खुले एवं गुप्त पापों को त्याग दो, निश्चय जो पाप कमाते हैं वे अपने पाप करने का बदला निकट में ही दिये जायेंगे।

وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ ۗ وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ

(१२१) तथा उसे न खाओ जिस पशु पर (वध के समय) अल्लाह का नाम न लिया गया हो तथा यह (कर्म) अवज्ञा का है।[2] तथा शैतान अपने मित्रों को प्रेरणा देते हैं ताकि वह तुम से

---

[1]जिसका विवरण इस सूरः के आगे आ रहा है। इसके अतिरिक्त अन्य सूरतों तथा हदीसों में अवैध जानवरों का विवरण दिया गया है। इनके अतिरिक्त शेष वैध है तथा निषेधित के मांस भी जीवंन रक्षा तक ही प्रयोग करने की अनुमति है।

[2]अर्थात जानबूझ कर अल्लाह का नाम जिस जानवर पर न लिया गया हो उसका खाना अवज्ञा तथा अनुचित है। आदरणीय इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) ने इसके यही अर्थ वर्णित किये हैं, वह कहते हैं कि "जो भूल जाये उसे अवज्ञाकारी नहीं कहते हैं।" तथा इमाम बुख़ारी का भी वही विचार है तथा यही हनफ़ी समुदाय का भी विचार है। परन्तु इमाम शाफ़ई का विचार यह है कि मुसलमान के द्वारा वध किया गया जानवर दोनों अवस्था में वैध है चाहे वह अल्लाह का नाम ले अथवा जानबूझ कर छोड़ दे तथा वह إنه لفسق को अल्लाह के अतिरिक्त अन्य के नाम पर चढ़ाये गये बलि के जानवर के मांस के लिए मानते हैं।

The Ummah Technology Mission

لِيُجَادِلُوكُمْ ۚ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ﴿١٢١﴾

विवाद करें[1] तथा यदि तुमने उनका अनुसरण किया तोतुम नि:सन्देह मिश्रणवादी हो जाओगे।

أَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِنْهَا ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٢﴾

(१२२) तथा ऐसा व्यक्ति जो पहले मृत रहा फिर हमने उसे जीवित कर दिया और उसके लिये प्रकाश बना दिया जिस से लोगों में चलता है क्या उसके समान हो सकता है जो अंधेरों में हो जिनसे निकल न सकता हो ?[2] ऐसे ही काफ़िरों (अधर्मियों) के लिये जो वे कर्म करते हैं सुशोभित बना दिये गये हैं।

---

[1]शैतान ने अपने साथियों के द्वारा इस बात का प्रचार किया कि यह मुसलमान अल्लाह के मारे हुए जानवर (अर्थात मृत) को तो अनुचित तथा अपने हाथों से काटे गये को उचित कहते हैं तथा दावा करते हैं कि हम अल्लाह के मानने वाले हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि शैताान तथा उसके मित्रों के प्रचार के पीछे मत लगो, जो जानवर मर गये अर्थात बिना अल्लाह का नाम लेकर काटे मर गये (समुद्री मृत जानवर के अतिरिक्त कि वह मृत भी हलाल है), चूँकि उस पर अल्लाह का नाम नहीं लिया गया, इसलिए उसका खाना वैध नहीं।

[2]इस आयत में अल्लाह तआला ने काफ़िर को मृतक (मरा हुआ) तथा ईमानवालों को जीवित कहा है। इसलिए कि काफ़िर कुफ़्र के अपमान के अंधकार में भटकता फिरता है तथा उस से निकल ही नहीं पाता जिसका परिणाम मृत्यु तथा विनाश है तथा ईमानवाले का दिल अल्लाह पर ईमान से जीवित रहता है, जिससे उसके जीवन के मार्ग प्रकाशमान हो जाते हैं। तथा वह ईमान तथा शुभ सूचना के मार्ग पर अग्रसर रहता है जिसका परिणाम सफलता व सम्मान है। यह वही विषय है जो निम्नलिखित आयतों में वर्णन किया गया है।

﴿ اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَوْلِيَاؤُهُمُ الطَّاغُوتُ يُخْرِجُونَهُمْ مِنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ ۗ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴾ [البقرة: ٢٥٧]

﴿ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۚ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ﴾ [هود: ٢٤]

﴿ وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ○ وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ ○ وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُورُ ○ وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَمَا أَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَنْ فِي الْقُبُورِ ﴾ [فاطر: ١٩-٢٢]

The Ummah Technology Mission

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ؕ وَمَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾

(१२३) तथा इसी प्रकार हम ने प्रत्येक बस्ती के महापापियों को षड़यन्त्र रचने के लिये बनाया ताकि उसमें षड़यन्त्र रचे[1] तथा वह अपने विरुद्ध ही षड़यन्त्र रचते हैं तथा इस का संवेदन नहीं कर पाते।[2]

وَاِذَا جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ رُسُلُ اللّٰهِ ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ شَدِيْدٌ ۢ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ﴿۱۲۴﴾

(१२४) तथा जब उनके पास कोई आयत आई तो उन्होंने कहा कि हम कदापि विश्वास नहीं करेंगे जब तक हमें भी उसी के समान न दी जाये जो ईशदूतों को दी गई।[3] अल्लाह भली-भाँति जानता है कि वह अपना दूतत्व कहाँ रखे,[4] शीघ्र ही जो पाप किये हैं उन्हें अल्लाह के पास से अपमानित होना है तथा जो षड़यन्त्र करते रहे उस का प्रतिकार घोर यातना है।

---

[1] أكابر (मुखिया) أكبر का बहुवचन है, इसका तात्पर्य अनिष्ठों एवं दुराचारियों के प्रमुख हैं, क्योंकि ईशदूतों तथा सत्य के प्रचारकों के विरोध में वही आगे होते हैं, तथा साधारण लोग उनके अनुगामी होते हैं। इसलिये उनकी चर्चा विशेष रूप से की गई है, इसके अतिरिक्त सामान्यतः ऐसे लोग धन एवं वंश में भी बड़े होते है एवं प्रतापी होते हैं इस लिये सत्य के विरोध में भी अग्रगामी होते हैं। (इसी विषय की चर्चा सूरः *सबा* की आयत ३१ से ३३ तक तथा सूरः *जुखरुफ़* आयत २३ एवं सूरः *नूह* की आयत २२, इत्यदि में भी की गई है)

[2]अर्थात उनके अपने कुकर्मों का पाप तथा उसी प्रकार उनके पीछे लगने वालों का पाप, उन्हीं पर पड़ेगा (इसके अतिरिक्त देखिये सूरः *अनकबूत*-१३ तथा सूरः *नहल*-२५)

[3]अर्थात उनके पास भी फ़रिश्ते वह्यी (प्रकाशनायें) ले कर आयें तथा उनके सिरों पर भी नबूवत तथा रिसालत का मुकुट रखा जाये।

[4]अर्थात यह निर्णय करना कि किस को नबी बनाया जाये ? यह तो अल्लाह का कार्य है क्योंकि वही प्रत्येक बात के महत्व तथा विशेषता को जानता है तथा उसे ही ज्ञात है कि कौन इस पद का अधिकारी है ? मक्का का कोई चौधरी तथा धनवान अथवा आदरणीय अब्दुल्लाह तथा आदरणीया आमिना का अनाथ पुत्र ?

The Ummah Technology Mission

فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَآءِ ؕ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٥﴾

(१२५) जिन को अल्लाह सत्य मार्ग दिखाना चाहता है उस के वक्ष को इस्लाम (धर्म) के लिये खोल देता है तथा जिसे विपथ करना चाहता है उस के वक्ष को संकीर्ण तथा संकुचित कर देता है जैसे कि वह आकाश में चढ़ रहा हो ।[1] इसी प्रकार अल्लाह उनको घृणित बना देता है जो विश्वास नहीं रखते ।[2]

وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾

(१२६) यह तुम्हारे पालनहार का सीधा मार्ग है, हमने आयतों का विस्तृत वर्णन उस वर्ग के लिये कर दिया है जो शिक्षा प्राप्त करते हैं ।

لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٧﴾

(१२७) इन्हीं के लिये उनके पोषक के यहाँ शान्तिगृह है तथा वही उन के सदाचारों के कारण उन का मित्र है ।[3]

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ

(१२८) तथा जिस दिन अल्लाह इन सभी को एकत्र करेगा (तथा कहेगा) हे जिन्नों के समूह ! तुम ने इन्सानों में से बहुत अपना लिया[4] तथा

---

[1]अर्थात जिस प्रकार शक्ति लगाकर आकाश पर चढ़ना असम्भव है, उसी प्रकार से जिस व्यक्ति के सीने को अल्लाह तआला संकीर्ण कर दे उसमें तौहीद (एकेश्वरवाद) तथा ईमान का प्रवेश सम्भव नहीं है उसके अतिरिक्त कि अल्लाह ही उसका सीना इसके लिए खोल दे ।

[2]अथवा शैतान को उनके ऊपर प्रभावशाली कर देता है ।

[3]अर्थात जिस प्रकार दुनिया में निष्ठावान लोग अविश्वास एवं गुमराही के टेढ़े मार्गों से बच कर निष्ठा तथा सीधे मार्ग पर अग्रसर रहते हैं, अब आख़िरत में भी उनके लिए सुरक्षा तथा शान्ति का घर है तथा अल्लाह तआला भी उनके पुण्य के कारण मित्र तथा सहायता करने वाला है ।

[4]अर्थात मनुष्यों की एक बहुत बड़ी संख्या को तुम ने भटका कर अपना अनुयायी बना लिया । जिस प्रकार अल्लाह तआला ने सूरः यासीन में फ़रमाया, उसका अनुवाद यह है ।

The Ummah Technology Mission

أَوْلِيَآؤُهُم مِّنَ الْإِنسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَبَلَغْنَآ أَجَلَنَا الَّذِيٓ أَجَّلْتَ لَنَا ۚ قَالَ النَّارُ مَثْوَىٰكُمْ خَٰلِدِينَ فِيهَآ إِلَّا مَا شَآءَ اللَّهُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٢٨﴾

मानव में से उन के मित्र कहेंगे, हे हमारे पोषक हमें परस्पर लाभ पहुँचा |[1] तथा हम तेरे निर्धारित समय को जो तूने हमारे लिये निर्धारित किया[2] जा पहुँचे | (अल्लाह) कहेगा कि तुम्हारा स्थान नरक है जिसमें तुम सदा वास करोगे, परन्तु जो अल्लाह चाहे,[3] नि:संदेह तुम्हारा स्वामी विज्ञानी ज्ञाता है |

"हे आदम की संतान ! क्या मैंने तुम्हें सतर्क नहीं कर दिया था कि तुम शैतान की पूजा न करो, वह तुम्हारा प्रत्यक्ष शत्रु है ? तथा यह कि तुम मेरी इबादत करना, यही सीधा मार्ग है | एवं इस शैतान ने तुम्हारी बहुत बड़ी संख्या को भटका दिया है | क्या फिर भी तुम नहीं समझते ?" (*सूर: यासीन* : ६०-६२)

[1]जिन्नों ने तथा मनुष्यों ने एक-दूसरे से क्या लाभ प्राप्त किया ? इसके दो भावार्थों का वर्णन है | जिन्नों का मनुष्यों से लाभान्वित होना उन्हें अनुयायी बना कर उनसे मजा प्राप्त करना है तथा मनुष्यों का जिन्नों से लाभान्वित होने का अर्थ है कि शैतानों ने पाप को उनके लिए सुन्दर बना दिया जिसे उन्होंने स्वीकार किया तथा पाप के स्वाद में फंसे रहे | दूसरा भावार्थ यह है कि मनुष्य उन दैवी सूचनाओं की पुष्टि करते रहे, जो शैतान तथा जिन्नात की ओर से भविष्यवाणी के रूप में फैलायी जाती थीं | अर्थात यह जिन्नातों ने मनुष्यों को मूर्ख बनाकर लाभ प्राप्त किया तथा मनुष्यों का लाभ प्राप्त करना यह है कि मनुष्य जिन्नातों के द्वारा बतायी गयी झूठी तथा निराधार बातों से आनन्द लेते रहे तथा भविष्यवाणी करने वाले लोग उनसे सांसारिक लाभ प्राप्त करते रहे |

[2]अर्थात क़ियामत घटित हो गयी, जिसे हम दुनिया में नहीं मानते थे | उसके उत्तर में अल्लाह तआला कहेगा कि अब नरक ही तुम्हारा स्थाई निवास स्थान है |

[3]तथा अल्लाह का निर्णय काफ़िरों के लिए नरक की स्थाई यातना ही है जिसको उसने निरन्तर क़ुरआन करीम में स्पष्ट रूप से वर्णित किया है | छूट से किसी प्रकार का ग़लत अनुमान नहीं लगा लेना चाहिए क्योंकि यह छूट अल्लाह तआला ने स्वयं अपनी इच्छा के आधार पर वर्णन किया है, इसे किसी अन्य चीज़ के साथ सम्मिलित नहीं किया जा सकता | इसलिए कि यदि वह काफ़िरों को नरक से निकालना चाहे तो निकाल सकता है, इससे वह विवश भी नहीं है तथा न कोई अन्य बाधक है | (ऐसरूत्तफ़ासीर)

The Ummah Technology Mission

وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًۢا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٢٩﴾

(१२९) इसी प्रकार हम दुष्कर्मियों को उनके कुकर्मों के कारण परस्पर मित्र बना देते हैं।[1]

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿١٣٠﴾

(१३०) हे जिन्नों तथा इन्सानों के समूह! क्या तुम्हारे पास तुम में से ईशदूत नहीं आये,[2] जो तुम्हारे समक्ष हमारी आयतें पढ़ते रहे हों तथा तुम्हें इस (प्रलय) के दिन का सामना करने से सावधान करते रहे हों। वे कहेंगे कि हम अपने विरुद्ध साक्षी हैं, तथा साँसारिक जीवन ने उन्हें धोखा दिया एवं अपने विरुद्ध साक्षी होंगे कि वह विश्वासहीन थे।[3]

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ﴿١٣١﴾

(१३१) (ईशदूत भेजे गये) क्योंकि तुम्हारा पालनहार किसी गाँव वालों को किसी अत्याचार के कारण विनाश नहीं करता जब कि उस के निवासी अचेत हों।

---

[1]अर्थात नरक में, जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है। दूसरा भावार्थ यह है कि जिस प्रकार से हम ने मनुष्यों तथा जिन्नों को एक-दूसरे का मित्र तथा सहायक बनाया (जैसाकि पूर्व की आयत में गुज़र चुका है) उसी प्रकार हम अत्याचारियों के साथ व्यवहार करते हैं। एक अत्याचारी को दूसरे अत्याचारी पर प्रभावशाली बना देते हैं, इस प्रकार एक अत्याचारी दूसरे अत्याचारी का विनाश कर देता हैं। तथा एक अत्याचारी का बदला दूसरे अत्याचारी के द्वारा ले लेते हैं।

[2]रिसालत तथा नबूवत के विषय में जिन्नात मनुष्यों के अधीन हैं, वरन् जिन्नातों में नबी नहीं आये हैं। परन्तु रसूलों के संदेशवाहक तथा शुभ सन्देश पहुँचाने वाले जिन्नातों में होते रहे हैं, जो अपने समुदाय के जिन्नों को अल्लाह की ओर आमन्त्रित करते रहे हैं।

[3]प्रलय क्षेत्र में मिश्रणवादी (मुशरिक) अनेक पैंतरे बदलेंगे, कभी अपने मिश्रणवादी होने का इंकार करेंगे (अल अनाम,२३) और कभी स्वीकार किये बिना चारा नहीं होगा, जैसे यहाँ उनकी स्वीकृति का वर्णन किया गया है।

The Ummah Technology Mission

وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٢﴾

(१३२) प्रत्येक के लिये उस के कर्मानुसार विभिन्न श्रेणियाँ हैं तथा तुम्हारा स्वामी उन कर्मों से निश्चेत नहीं जो वह कर रहे हैं।

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿١٣٣﴾

(१३३) तथा तुम्हारा पोषक निस्पृह दयानिधि है,[1] यदि चाहे तो तुम्हारा नाश कर दे तथा तुम्हारे पश्चात् जिसे चाहे तुम्हारे स्थान पर रख दे जैसे तुम्हें एक अन्य वर्ग के वंश में पैदा किया है।[2]

اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿١٣٤﴾

(१३४) जिस वस्तु के लिए तुम को वचन दिया जाता है, वह नि:सन्देह आने वाली वस्तु है, तथा तुम बाध्य नहीं कर सकते।[3]

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ

(१३५) (आप) कहिये कि हे मेरे वर्ग! तुम अपने स्थान पर अपना कर्म करते रहो, मैं भी (अपने स्थान पर) कार्यरत हूँ।[4] तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान

---

[1]वह अपनी सृष्टि से निस्पृह है। उनका इच्छुक नहीं है तथा न उनकी अर्चना की उसको आवश्यकता है। उनकी निष्ठा न उसके लिए लाभकारी है न उनका अविश्वास उसके लिए हानिकारक है परन्तु अपनी इस निस्पृहता के गुण के साथ-साथ वह अपनी सृष्टि के लिए कृपालु है। उसकी निस्पृहता, अपनी सृष्टि पर कृपा करने में बाधक नहीं है।

[2]यह उसके अत्यधिक सामर्थ्य तथा असीम बल का प्रदर्शन है। जिस प्रकार से उसने पूर्व के समुदायों को मिटा कर दूसरे समुदायों को खड़ा किया, वह अब भी इस बात का सामर्थ्य रखता है कि तुम को नाश कर दे एवं तुम्हारे स्थान पर ऐसे समुदाय को पैदा कर दे जो तुम जैसा न हो। (अधिक जानकारी के लिए देखें सूरः *निसा*-१३३, सूरः *इब्राहीम*-२०, सूरः *फ़ातिर*-१५ से १७, तथा सूरः *मोहम्मद*-३८)

[3]इससे तात्पर्य क़ियामत (प्रलय) है। "तथा तुम बाध्य नहीं कर सकते" का अर्थ है कि वह तुम्हें पुनः जीवित करने का सामर्थ्य रखता है, चाहे तुम मिट्टी के कण-कण में मिल जाओ।

[4]यह अविश्वास तथा अवज्ञा पर स्थिर रहने की आज्ञा नहीं है, अपितु कठोर चेतावनी है। जैसाकि अगले शब्दों से स्पष्ट है। जिस प्रकार से दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

The Ummah Technology Mission

لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۗ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُونَ ﴿١٣٥﴾

हो जायेगा कि किस का अन्त इस जगत के बाद (उत्तम) होता है। नि:सन्देह दुराचारी कदापि सफल नहीं होंगे।[1]

وَجَعَلُوا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَأَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْأَنْعَامِ نَصِيبًا فَقَالُوا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَائِنَا ۖ فَمَا كَانَ لِشُرَكَائِهِمْ فَلَا يَصِلُ إِلَى اللّٰهِ ۖ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ

(१३६) तथा अल्लाह ने जो कृषि एवं पशु उत्पन्न किये उन्होंने उन में से कुछ भाग अल्लाह का बना दिया तथा अपने विचारानुसार कहा कि यह अल्लाह का है और यह हमारे देवताओं का,[2] फिर जो हमारे देवताओं का (भाग) है वह अल्लाह तक नहीं पहुँचता[3] तथा जो अल्लाह

﴿ وَقُلْ لِّلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنَّا عَامِلُونَ ﴿١٢١﴾ وَانتَظِرُوا إِنَّا مُنتَظِرُونَ ﴿١٢٢﴾ ﴾

"जो ईमान नहीं लाते उनसे कह दीजिए कि तुम अपने स्थान पर कर्म किये जाओ, हम भी कर्म कर रहे हैं तथा प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।" (सूर: हूद-१२१,१२२)

[1]जैसाकि थोड़े समय पश्चात् अल्लाह तआला ने अपना वचन सत्य कर दिखाया। ८ हिजरी में मक्का विजय हो गया तथा उसकी विजय के पश्चात् अरब के गुट बहुत बड़ी संख्या में दिन प्रति दिन मुसलमान होना प्रारम्भ हो गये तथा पूरा अरब महाद्वीप मुसलमानों के अधीन आ गया। तथा यह सीमा फिर फैलती तथा बढ़ती ही गयी।

[2]इस आयत में मूर्तिपूजकों के उस विश्वास तथा कर्म का उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है, जो उन्होंने स्वयं गढ़ लिये थे। वह कृषि की पैदावार तथा पशुओं में से कुछ भाग अल्लाह के लिए तथा कुछ भाग स्वयंकृत तथा कथित देवताओं के नाम पर निकाल देते थे। अल्लाह के भाग को अतिथियों, भिक्षुकों एवं सम्बन्धियों पर व्यय करते। फिर यदि मूर्तियों के भाग में अनुमानित पैदावार न होती तो अल्लाह के भाग को निकाल कर उसमें सम्मिलित कर लेते तथा यदि उनके विपरीत घटित होता तो मूर्तियों के भाग से न निकालते तथा कहते कि अल्लाह तो निस्पृह है।

[3]अर्थात अल्लाह के भाग में कमी होने की परिस्थिति में मूर्तियों के भाग से निकाल कर दान तथा पुण्य का कार्य न करते।

The Ummah Technology Mission

إِلَىٰ شُرَكَآئِهِمْ ۖ سَآءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿١٣٦﴾

का है वह उनके देवताओं तक पहुँचता है।[1] वे बुरा निर्णय दे रहे हैं।

وَكَذَٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ قَتْلَ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوهُمْ وَلِيَلْبِسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ ۖ وَلَوْ شَآءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ ۖ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٧﴾

(१३७) इसी प्रकार बहुत से मिश्रणवादियों (मूर्तिपूजकों) के लिये उनके देवताओं ने उनका विनाश करने एवं उन पर उनके धर्म को संदिग्ध[2] बनाने के लिये उन की संतान की हत्या को सुसज्जित बना दिया है।[3] तथा यदि अल्लाह चाहता तो वह यह नहीं करते।[4] अतः आप इन को तथा इन के मन गढंत को त्याग दीजिये।

وَقَالُوا هَٰذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرْثٌ حِجْرٌ لَّا يَطْعَمُهَآ إِلَّا مَن نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا

(१३८) तथा उन्होंने कहा कि यह पशु एवं कृषि निषेध है। इसे वही खायेगा अपने विचार से हम जिसे चाहेंगे[5] तथा कुछ पशु की पीठ

---

[1]यदि मूर्तियों के निर्धारित भाग में कमी होती तो वह अल्लाह के निर्धारित भाग में से लेकर मूर्तियों की आवश्यकताओं पर व्यय कर लेते। अर्थात अल्लाह के सापेक्ष मूर्तियों का भय उनके दिलों में अधिक था जिस का दर्शन आज के मूर्तिपूजकों के व्यवहार से भी किया जा सकता है।

[2]अर्थात उनके धर्म में शिर्क को सम्मिलित कर दें।

[3]यह संकेत उनकी बच्चियों (बालिकाओं) को जीवित गाड़ देने अथवा मूर्तियों को बलि स्वरूप भेंट चढ़ाने की ओर है।

[4]अर्थात अल्लाह तआला अपने अधिकार शक्ति एवं सामर्थ्य के आधार पर उनके विचार तथा अधिकारों की स्वतन्त्रता को समाप्त कर देता, तो फिर निःसंदेह यह वह कार्य नहीं करते जो वर्णित हुए। परन्तु ऐसा करना चूंकि दबाव होता, जिसमें मनुष्य की परीक्षा नहीं हो सकती थी, जबकि अल्लाह तआला मनुष्य को विचार तथा अधिकार की स्वतन्त्रता प्रदान करके परीक्षा लेना चाहता है, इसलिए अल्लाह ने दबाव नहीं डाला।

[5]इस में उन के मूर्खता काल के विधान तथा अनृत के तीन अन्य रूपों का वर्णन किया गया है (अर्थात निषेध) यद्यपि धातु है किन्तु कर्म अर्थात निषेधित के अर्थ में है, यह प्रथम रूप है कि पशु अथवा किसी खेत की पैदावार का प्रयोग निषेधित बना लेते थे तथा कहते

The Ummah Technology Mission

وَ اَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۳۸﴾

(अर्थात सवारी) वर्जित है[1] तथा कुछ पशु पर (वध करते समय) अल्लाह का नाम नहीं लेते अल्लाह पर झूठ बाँधने के लिये,[2] अल्लाह उन्हें उनके आरोप का प्रतिकार शीघ्र देगा।

وَ قَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَ مُحَرَّمٌ عَلٰۤى اَزْوَاجِنَا ۚ وَ اِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۳۹﴾

(१३९) तथा उन्होंने कहा कि इन पशुओं के गर्भ में जो है वह विशेष रूप से हमारे पुरुषों के लिये है तथा हमारी पत्नियों पर निषेध है तथा यदि मृत हो तो सभी उसमें भागीदार हैं[3] वह (अल्लाह) उन के इस कथन का बदला शीघ्र देगा,[4] यथावत वह निपुण ज्ञाता है।

थे कि इसे वही खायेगा जिसे हम अनुमति देंगे। यह अनुमति मूर्तियों के सेवकों तथा पुरोहितों के लिये ही होती थी।

[1]यह दूसरा रूप है कि वह विभिन्न पशुओं को मूर्तियों के नाम पर मुक्त कर देते जिन से भारवाहन अथवा सवारी का काम नहीं लेते जैसे कि "बहीर: "तथा "साइबा "आदि का सविस्तार विवरण पहले आ चुका है।

[2]यह तीसरा रूप है कि वह वध करते समय मात्र मूर्तियों का नाम लेते, अल्लाह का नाम नहीं लेते, कुछ ने इस का भावार्थ यह लिया है कि इन पशुओं पर सवार होकर वह "हज" के लिये नहीं जाते थे, जो भी हो यह सब उनकी स्वयं कृत बातें थीं जिन्हें वह अल्लाह का आदेश सिद्ध करना चाहते थे।

[3]यह एक अन्य रूप है कि जो पशु वह अपनी मूर्तियों के नाम दान कर देते थे, इन में से कुछ के विषय में कहते थे कि इनका दूध तथा उनके गर्भ से जो जन्म जात जीवित बच्चा हमारे पुरुषों के लिए उचित है, स्त्रियों के लिए वर्जित है। हाँ यदि बच्चा मरा हुआ पैदा होता है, तो उसके खाने में स्त्री-पुरुष समान हैं।

[4]अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यह मिथ्यालाप करते हैं तथा अल्लाह पर झूठ मढ़ते हैं, उन पर शीघ्र अल्लाह तआला उन्हें दण्ड देगा। वह अपने निर्णय में पूर्ण सक्षम है। तथा अपने भक्तों के विषय में भली-भाँति ज्ञान रखने वाला है तथा अपने ज्ञान तथा सामर्थ्य के अनुसार वह बदला तथा दण्ड का प्रबन्ध करेगा।

The Ummah Technology Mission

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّ حَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ؕ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿۱۴۰﴾

(१४०) वे हानि में पड़ गये जिन्होंने बिना ज्ञान के मूर्खता के कारण अपनी संतान को हत किया तथा अल्लाह ने जो जीविका प्रदान की उसे वर्जित कर लिया अल्लाह पर झूठ बांधने के कारण, वे विपथ हो गये तथा सत्य मार्ग पर नहीं रह गये।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ۖ وَلَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۱۴۱﴾

(१४१) वही है जिसने लताओं तथा बिन लताओं के बाग़ात पैदा किये [1] तथा खजूर एवं खेतियाँ जिन के स्वाद विभिन्न प्रकार के हैं। तथा ज़ैतून तथा अनार समरूप तथा असम।[2] जब फल लायें तो तुम इनको खाओ तथा उसकी कटिया के दिन उसका देय अदा करो[3] तथा अपव्यय न करो।[4] नि:सन्देह अल्लाह

---

[1] معروشات (मअरूशात) का धातु (अर्श) है, जिसका अर्थ उच्च करना तथा ऊपर उठाने के हैं तात्पर्य कुछ वृक्षों की लतायें हैं जो ऊपर (छप्पर छतों आदि) पर चढ़ाई जाती हैं। जैसे अंगूर तथा कुछ तरकारियों की लतायें हैं। परन्तु कुछ लतायें जो ऊपर नहीं चढ़ाई जाती हैं, अपितु धरती पर ही फलती-फूलती हैं। जैसे खरबूज़े तथा तरबूज़े आदि कि लतायें हैं। अथवा वह तने वाला वृक्ष है जो लता के रूप में नहीं होता। यह सभी लतायें, वृक्ष, तथा खजूर के वृक्ष एवं कृषि, जिनके स्वाद एक-दूसरे से भिन्न होते हैं तथा ज़ैतून एवं अनार, सभी का पैदा करने वाला अल्लाह है।

[2]इसके लिए देखिए आयत संख्या ९९ की व्याख्या।

[3]अर्थात जब खेत से अनाज काट कर साफ कर लो, तथा वृक्ष से फल तोड़ लो, तो उसका देय अदा करो। इस से तात्पर्य कुछ विद्वानों के निकट स्वेच्छा दान है कुछ के निकट अनिवार्य दान अर्थात दसवाँ भाग (तराई की भूमी की उपज हो) अथवा बीसवाँ भाग (यदि धरती कुऐं, ट्यूब वेल अथवा नहर के पानी से सींची जाती हो)

[4]अर्थात दान-पुण्य भी शक्ति से अधिक न करो, ऐसा न हो कि कल तुम्हें आवश्यकता न पड़ जाये, कुछ कहते हैं कि इसका सम्बन्ध अधिकारियों से है अर्थात दान तथा अनिवार्य धर्मदान की वसूली में सीमा का उल्लंघन न करो तथा इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि आयत के शब्दों से स्पष्ट है तथा अधिक उचित यही है कि खाने में अधिक व्यय न करो

The Ummah Technology Mission

अपव्यय कारियों से प्रेम नहीं करता।[1]

وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ؕ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۴۲﴾

(१४२) तथा पशुओं में कुछ बोझ लादने योग्य तथा कुछ धरती से लगे हुये बनाया।[2] खाओ, जो तुम्हें अल्लाह ने दिया है[3] तथा शैतान के पद् चिन्हों का अनुसरण न करो।[4] वस्तुत: वह तुम्हारा शत्रु है।

ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ

(१४३) वह आठ प्रकार के जोड़े (बनाये)[5] भेंड़

क्योंकि अधिक खाना शरीर तथा बुद्धि दोनो के लिए हानिकारक है। व्यय के ये सभी भाव अपने-अपने स्थान पर उचित हैं, इसलिए ये सारे भावार्थ का तात्पर्य हो सकता है।

[1]इसलिए अपव्यय किसी भी चीज में प्रिय नहीं है, दान-पुण्य के कार्य में अथवा अन्य किसी कार्य में। प्रत्येक कार्य में मध्यम तथा सीमा के भीतर शक्ति अनुसार उचित तथा प्रिय है और इसी पर बल दिया गया है।

[2] حُمولَةً भारवाहक से तात्पर्य ऊँट, बैल, गधा तथा खच्चर आदि हैं। فرشا से तात्पर्य धरती से लगे पशु जैसे भेड़ बकरी, दुन्बा आदि है जिनके तुम दूध पीते हो अथवा मांस खाते हो।

[3]अर्थात फलों, अनाजों तथा पशुओं से, इन सभी को अल्लाह ने पैदा किया है और उनको तुम्हारे लिए भोजन बनाया है।

[4]जिस प्रकार से मूर्तिपूजक, इसके अनुगामी बन गये तथा अवर्जित पशु को भी अपने ऊपर वर्जित कर लिया अर्थात अल्लाह की उचित की हुई चीज को अनुचित तथा अनुचित को उचित करने में शैतान का अनुसरण कर रहे हैं।

[5]अर्थात 'उसी अल्लाह ने आठ जोड़े पैदा किये'। इस आयत में 'अज़वाज' शब्द का प्रयोग हुआ है जो 'ज़ौज' का बहुवचन है। एक ही जाति के नर तथा मादा को 'ज़ौज' कहते हैं तथा उन दोनों में से प्रत्येक को भी 'ज़ौज' कह लिया जाता है क्योंकि प्रत्येक एक-दूसरे का 'ज़ौज' होता है। क़ुरआन में इस स्थान पर भी 'अज़वाज' प्रत्येक के लिए ही प्रयोग हुआ है अर्थात आठ पशु अल्लाह ने पैदा किये जो आपस में एक-दूसरे के जोड़े हैं। यह नहीं कि आठ जोड़े पैदा किये, इस प्रकार से उनकी संख्या १६ हो जायेगी जो आयत के अगले भाग के अनुसार ठीक नहीं है।

The Ummah Technology Mission

وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ
آٓ الذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا
اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ۗ
نَبِّئُوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٤٣﴾

में दो बकरी में दो,[1] कहिये कि अल्लाह ने दोनों के नर को वर्जित किया है अथवा दोंनो की मादा को ? अथवा उसको जो दोंनो मादा के गर्भाशय में सम्मिलित है ?[2] मुझे ज्ञान के साथ बताओ यदि सत्यवादी हो ।[3]

وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ
الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ آٓ الذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ
اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ
اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ۗ اَمْ كُنْتُمْ
شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ
فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ اِنَّ

(१४४) तथा ऊँट में दो तथा गाय में दो, आप कहिए कि क्या अल्लाह ने दोनों मादा को अथवा दोनों नरों को ? अथवा उस को जिस पर दोनों मादा के गर्भाशय सम्मिलित हो । क्या तुम उस समय उपस्थित थे जब अल्लाह ने इस का आदेश किया ?[4] फिर उस से अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाये [5] ताकि बिना किसी

---

[1]यह आठ का पूरक है तथा तात्पर्य दो प्रकार से नर तथा मादा है अर्थात भेड़ से नर और मादा तथा बकरी से नर-मादा पैदा किये । (भेड़ में दुम्बा भी सम्मिलित है)

[2]मूर्तिपूजक स्वयं ही कुछ पशुओं को अपने ऊपर हराम कर लेते थे, उसके आधार पर अल्लाह तआला पूछ रहा है कि अल्लाह तआला ने उनके नरों को हराम किया अथवा मादाओं को अथवा उस बच्चे को जो दोनों मादाओं के गर्भ में हैं ? अर्थ यह है कि अल्लाह ने तो किसी को हराम नहीं किया है ।

[3]तुम्हारे पास हराम करने का कोई विश्वस्त प्रमाण है तो प्रस्तुत करो कि 'बहिरः', 'सायबा', 'वसीलः', तथा 'हाम' आदि इस प्रमाण के अनुसार हराम हैं ।

[4]अर्थात तुम जो कुछ पशुओं को हराम कह देते हो, क्या जब अल्लाह ने हराम का आदेश दिया था तो तुम उसके पास उपस्थित थे ? अर्थात अल्लाह ने इनको हराम करने का आदेश नहीं दिया । यह सब तुम्हारा झूठ है तथा अल्लाह पर मिथ्यारोपण करते हो ।

[5]अर्थात यही सबसे बड़ा अत्याचार है । हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने अम्र बिन लुही को नरक में आंत खींचते हुए देखा । उसने सर्वप्रथम मूर्तियों के नाम पर वसीला तथा 'हाम' आदि पशु छोड़ने की श्रृंखला आरम्भ की । (सहीह बुखारी तफ़सीर सूरः मायदः, मुस्लिम किताबुल जन्नः) इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं यह अम्र बिन लुही, ख़ुज़ाआ क़बीले के सरदारों में से था, जोजुरहम क़बीले के पश्चात ख़ाना-ए-कआबा

The Ummah Technology Mission

اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٤﴾

ज्ञान लोगों को कुपथ बना दे। निस्सन्देह अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्गदर्शन नहीं देता।

قُل لَّا أَجِدُ فِي مَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَىٰ طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَن يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا مَّسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خِنزِيرٍ فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٤٥﴾

(१४५) आप कहिये कि मुझे जो आदेश किया गया है उस में किसी भक्षी के लिये कोई खाद्य वर्जित नहीं पाता, परन्तु यह कि वह मृत हो अथवा बहता रक्त अथवा सूअर का मांस, इसलिये कि वह घृणित अपवित्र है अथवा जो अधर्मी हो जिस पर अल्लाह से अन्य का नाम पुकारा गया हो,[1] फिर जो कोई

का सरक्षक बना था। उंसने सर्वप्रथम इब्राहीम के धर्म में परिवर्तन किया तथा हिजाज में मूर्तियाँ स्थापित करके लोगों को मूर्तिपूजा करने का आमन्त्रण दिया तथा मूर्ति के रीति-रीवाज को प्रचलित किया (इब्ने कसीर) अर्थात आयत का उद्देश्य यह है कि अल्लाह तआला ने वर्णित उपरोक्त आठ प्रकार के पशु पैदा करके भक्तों पर उपकार किया है, उन में से कुछ को स्वयं निषेध कर लेना, अल्लाह के उपकार को अस्वीकार करना तथा शिर्क का कार्य है तथा इसका कर्ता मिश्रणवादी कहलायेगा।

[1]इस आयत में जिन चार वर्जित का वर्णन है उसका वर्णन सूर: बक़र: की आयत-१७३ की व्याख्या में विस्तारपूर्वक हो चुका है। यहाँ पर यह बिन्दु स्पष्ट करने योग्य है कि यहाँ पर इन चार अवैध को सीमा के रूप में वर्णित किया गया अर्थात इनके अतिरिक्त सभी उचित हैं। जब कि वास्तविकता यह है कि धार्मिक नियमों में इन चार के अतिरिक्त भी कई वर्जित हैं। फिर यहाँ सीमित क्यों किया गया ? बात वास्तव में यह है कि इससे पूर्व मूर्तिपूजकों के मूर्खता काल की रीतियों तथा उनके खण्डन का वर्णन हो रहा था। उन्हीं में कुछ पशुओं का वर्णन आया है, जो उन्होंने स्वयं अपने ऊपर वर्जित कर रखे थे। इस विषय में यह कहा जा रहा है कि मुझ पर जो प्रकाशनायें (वह्यी) के द्वारा विदित हो रहा है, उसमें यह वर्जित तो उचित हैं अर्थात वह वर्जित नहीं हैं, क्योंकि अल्लाह ने जिन वर्जित का वर्णन किया है, उसमें ये सम्मिलित नहीं हैं। यदि वे निषेध होते तो अल्लाह तआला उनका वर्णन अवश्य करता। इमाम शौकानी ने इसको इस प्रकार स्पष्ट किया है कि यदि यह आयत मक्की (मक्के शहर में उतरी) न होती, तो अवश्य निषेध की यह सीमा स्वीकार की जा सकती थी, परन्तु चूँकि इसके पश्चात् स्वयं क़ुरआन ने *सूर: अल-मायद:* में कुछ अन्य अवैध का वर्णन किया है तो अब वह भी इनमें सम्मिलित होंगे। इसके अतिरिक्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पशु-पक्षियों के हराम-हलाल का ज्ञान करने के दो

The Ummah Technology Mission

विवश हो, जब कि द्रोही तथा अतिक्रमणकारी न हो तो अल्लाह क्षमावान कृपा निधि है।

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۚ ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿١٤٦﴾

(१४६) तथा हम ने यहूदियों पर नाख़ून वाले जानवर वर्जित कर दिये[1] तथा गाय एवं बकरी की वसा उन पर वर्जित कर दी, परन्तु जो दोनों की पीठ एवं आँतों में हो अथवा जो किसी अस्थि से लिपटी हो,[2] हमने यह उन के (धर्म) द्रोह का प्रतिकार दिया,[3] तथा हम सत्यवादी हैं।[4]

فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ

(१४७) यदि वह आप को झुठलायें तो कहिये कि तुम्हारे स्वामी (अल्लाह) की कृपा अति

नियम बतायें हैं व जिनका स्पष्टीकरण भी उपरोक्त वर्णित आयात की व्याख्या में उपस्थित है। أو فسقا का संबन्ध لحم خنزير से है इसलिए अर्थ है أي ذبح على الأصنام "वह पशु जो मूर्तियों के नाम पर अथवा उनके थानों पर उनकी निकटता प्राप्त करने के लिए बलि चढ़ायें जायें।" अर्थात ऐसे पशुओं को यद्यपि बलि चढ़ाते समय अल्लाह ही का नाम क्यों न लिया गया हो, तब भी वर्जित हैं, क्योंकि उनसे अल्लाह की निकटता नहीं, अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की निकटता प्राप्त करने का उद्देश्य है। फिस्क़ (भ्रष्टता) अल्लाह की आज्ञा पालन से निकलने का नाम है। प्रभु ने आदेश दिया है कि उस के नाम पर जानवर बलिदान किया जाये तथा उसी की निकटता, प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये किया जाये, यदि ऐसा नहीं किया जायेगा, तो अवज्ञा तथा मिश्रणवाद है।

[1]नखधारी से तात्पर्य बिना खुर फटे पशु तथा वह पक्षी हैं जिन की उँगलियाँ अलग-अलग न हों जैसे ऊँट, शुर्तुमुर्ग, बत्तख क़ाज़ आदि। कुछ ने इस का अर्थ खुर वाले पशु एवं शिकारी पक्षी लिया है जो पंजे से शिकार करते हैं। (कुर्तबी)

[2]अर्थात जो वसा गाय अथवा बकरी की पीठ में हो अथवा दुम्बे की चक्की अथवा अंतड़ियों (अथवा ओझड़ी) या अस्थियों के साथ मिली हुई हो वसा की वह मात्रा उचित थी।

[3]यह चीज़ें हम ने दण्ड के रूप में उन पर वर्जित की थीं अर्थात यहूदियों का यह दावा कि यह आदरणीय याक़ूब ने अपने ऊपर निषेध कर ली थीं, तथा हम तो उनके अनुकरण में वर्जित समझते हैं, सही नहीं है।

[4]इसका अर्थ यह है कि यहूदी वस्तुत: अपने दावे में झूठे हैं।

The Ummah Technology Mission

عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٤٧﴾

विस्तृत है।[1] तथा उस का कोप पापियों से फेरा नही जाता।[2]

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا ۗ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ۖ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ﴿١٤٨﴾

(१४८) मिश्रणवादी कहेंगे कि यदि अल्लाह चाहता तो हम तथा हमारे पूर्वज मिश्रण नहीं करते, न किसी वस्तु को वर्जित बनाते।[3] इसी प्रकार इनसे पूर्व के लोग झुठलाये यहाँ तक की हमारा कोप चख लिये,[4] कहिये कि क्या तुम्हारे पास कोई ज्ञान है तोउसे हमारे लिये निकालो (व्यक्त करो)।[5] तुम कल्पना का अनुसरण करते हो तथा मात्र अनुमान लगाते हो।

قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٤٩﴾

(१४९) आप कहिये कि फिर अल्लाह ही का तर्क प्रभावशाली है, अतः अगर वह चाहे तो तुम सभी को मार्गदर्शन दे सकता है।

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَاءَكُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هَٰذَا ۚ فَإِنْ شَهِدُوا

(१५०) आप कहिये कि अपने उन साक्षियों को लाओ जो यह गवाही दें कि अल्लाह ने इसे

---

[1]इसलिए झुठलाने पर भी यातना देने में शीघ्रता नहीं करता।

[2]अर्थात समय देने का अर्थ यह नहीं कि अल्लाह की यातना से सदैव सुरक्षित हैं, वह जब भी यातना देने का निर्णय ले लेगा, तो उसे कोई टाल नहीं सकेगा।

[3]यह वही भ्रम है जो अल्लाह की इच्छा एवं प्रसन्नता को एकार्थ समझ लेने के कारण होता है। यद्यपि यह एक-दूसरे से भिन्न है जिसको पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है।

[4]अल्लाह तआला ने इस भ्रम का निराकरण इस प्रकार किया है कि यह शिर्क अल्लाह की प्रसन्नता का द्योतक था, तो फिर उन पर प्रकोप क्यों आया ? अल्लाह का प्रकोप इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह की इच्छा अन्य बात है तथा अल्लाह की प्रसन्नता अन्य बात।

[5]अर्थात अपने दावे के लिए कोई प्रमाण है तो प्रस्तुत करो। परन्तु उन के पास प्रमाण कहाँ ? वहाँ तो केवल कल्पना तथा भ्रम है।

The Ummah Technology Mission

فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١٥٠﴾

निषेध किया है,[1] फिर यदि वह गवाही दें तो आप उनके साथ गवाही न दें [2] तथा उनकी मनमानी विचारों का अनुसरण न करें जिन्होंने हमारी आयतों को मिथ्या कहा तथा जो परलोक के प्रति विश्वास नहीं करते तथा (अन्य को) अपने पोषक के समान मानते हैं।[3]

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ ۖ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوا

(१५१) आप कहिये कि आओ मैं पढ़कर सुनाऊँ कि तुम को अल्लाह ने किससे मना किया है।[4] वह ये कि उसके साथ किसी वस्तु का मिश्रण न करो।[5] तथा माता-पिता के साथ उपकार

---

[1]अर्थात वह पशु जिनको मूर्तिपूजकों ने वर्जित बना दिया था।

[2]क्योंकि उनके पास केवल झूठ तथा मिथ्यारोपण के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

[3]अर्थात उसके समान मान कर शिर्क (मिश्रण) करते हैं।

[4]अर्थात निषेध वह नहीं है जिन को तुम ने बिना धार्मिक प्रमाण के, मात्र अपने मिथ्या संदेह तथा शंका युक्त विचारों के आधार पर अवैध बना दिया है। अपितु अवैध तो वह वस्तु है जिस को तुम्हारे प्रभु ने वर्जित किया है, क्योंकि तुम्हारा जन्मदाता तो तुम्हारा पालनहार है तथा हर वस्तु का उसी को ही ज्ञान है। इसलिए उसी को यह अधिकार प्राप्त है कि वह जिस चीज़ को चाहे हलाल (उचित) तथा जिस वस्तु को चाहे हराम (अनुचित) करे। अत: मैं तुम्हें उन बातों की विस्तृत जानकारी देता हूँ, जिनकी चेतावनी तुम्हारे प्रभु ने दी है।

[5] لا تشركوا से पूर्व أوصاكم इसमें निहित है। अर्थात अल्लाह तआला ने तुम्हें इस बात का आदेश दिया है कि उसके साथ किसी वस्तु को तुम साझीदार मत बनाओ। शिर्क महापाप है, जिस के लिए क्षमा नहीं है, मुशरिक (मिश्रणवादी) पर स्वर्ग निषेध तथा नरक निश्चित है। क़ुरआन मजीद में सारी चीज़ों की विभिन्न रूप से पुनरावृति हुई है। तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी हदीस में इसका सविस्तार वर्णन किया है, इसके उपरान्त वास्तविकता यह है कि लोग शैतान के बहकाने में आकर शिर्क का सामान्य रूप से कार्य करते हैं।

The Ummah Technology Mission

أَوْلَادَكُمْ مِّنْ إِمْلَاقٍ ۖ نَّحْنُ
نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ ۚ وَلَا تَقْرَبُوا
الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ
وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ
إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُم
بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١٥١﴾

करो |[1] तथा अपनी संतान को दरिद्रता के कारण हत न करो, हम तुम को तथा उनको जीविका प्रदान करते हैं |[2] तथा व्यक्त एवं गुप्त अश्लीलता के निकट न जाओ तथा उस प्राण को जिससे अल्लाह ने मना किया है हत न करो परन्तु वैधानिक करण से |[3] तुम को उसने इसी का निर्देश दिया है ताकि तुम समझो |

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي
هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۚ

(१५२) तथा अनाथ के माल के निकट न जाओ किन्तु अति उचित ढंग से यहाँ तक कि वह तरुण अवस्था को पहुंचे,[4] तथा न्याय के साथ

---

[1]अल्लाह तआला के एक होने तथा उसके आदेशों के पालन करने के उपरान्त यहाँ भी (तथा क़ुरआन में अन्य स्थान पर भी) माता-पिता के साथ दया-भाव का व्यवहार करने का आदेश दिया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्रभु के आदेशों के पालन के उपरान्त माता-पिता के आदेशों के पालन की बड़ी विशेषता है | यदि किसी ने इस उप-पालक (माता-पिता के आदेशों का पालन तथा उनसे दया भाव का व्यवहार करने) की आवश्यकताओं को पूरा नहीं किया तो वह महापोषक के आदेशों का पालन भी नहीं कर सकता अर्थात उसमें भी असफल रहेगा |

[2]अज्ञानकाल का यह अत्यधिक कुरूप कार्य आज भी परिवार नियोजन के रूप में विद्यमान है तथा पूरे संसार में इस के प्रचार-प्रसार का कार्य हो रहा है | अल्लाह तआला इससे सुरक्षित रखे |

[3]अर्थात बदले के रूप में न केवल उचित है, अपितु यदि मृतक के सम्बन्धी क्षमा न करें तो यह हत्या अति आवश्यक हो जाती है |

﴿ وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَاةٌ ﴾

"प्रति हिंसा में तुम्हारा जीवन है |" (सूरः अल-बक़रः-१७९)

[4]जिस अनाथ का संरक्षण तुम्हारे अधिकार में आये, उसके लिए अच्छा सोचना तुम्हारा अनिवार्य कर्तव्य है | इसकी भलाई के लिए आवश्यक है कि यदि उसके पास माल है अर्थात उत्तराधिकार में से उसका भाग मिला है चाहे नगद हो अथवा ज़मीन-जायदाद के रूप में, यदि उस समय वह उसको सुरक्षित रखने में सक्षम न हों तो उसके माल की उस समय तक नि:स्वार्थ भाव से रक्षा की जाये जब तक कि वह वयस्क अवस्था को न पहुँच

The Ummah Technology Mission

وَ اَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۱۵۲﴾

माप एवं तौल पूरा करो,[1] हम किसी पर उस की शक्ति से अधिक भार नहीं रखते,[2] तथा जब बोलो तो न्याय करो यद्यपि वह निकट संबंधी हो तथा अल्लाह से किया वचन पूरा करो, उसने तुम लोगों को इसी का आदेश दिया है ताकि तुम स्मरण करो।

وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ

(१५३) तथा यही मेरा सीधा मार्ग,[3] है अतः उसी का आचरण करो।[4] तथा अन्य पथों पर

जाये। यह न हो कि उसके वयस्क होने से पूर्व उसके माल, जमीन तथा जायदाद को ठिकाने लगा दिया जाये।

[1]माप-तौल में कमी करना, लेते समय तो पूरा माप-तौल से लेना, परन्तु देते समय ऐसा न करना, अपितु डंडी मारकर दूसरों को कम देना, यह अत्यधिक नीच तथा सभ्यता से गिरी हुई बात है। आदरणीय शुऐब के समुदाय में यही रोग था, जो उनके विनाश का कारण बना।

[2]यहाँ इस बात के वर्णन का यह उद्देश्य है कि जिन बातों से हम तुम्हें सावधान कर रहे हैं, यह नहीं कि इन को कार्यान्वित न किया जा सके अथवा कठिन हो। यदि ऐसा होता तो हम इसका आदेश ही न करते। इसलिए हम किसी को उसकी शक्ति से अधिक करने का आदेश ही नहीं देते। इसलिए यदि आख़िरत में मोक्ष तथा संसार में सम्मान चाहते हो तो, अल्लाह के इन आदेशों के अनुसार कर्म करो तथा उन से आनाकानी न करो।

[3]'यह' से तात्पर्य क़ुरआन मजीद है अथवा इस्लाम धर्म अथवा वे आदेश जो विशेषता से इस आयत में वर्णन किये गये हैं। तथा वह है एकेश्वरवाद, मरणोपरान्त के परिणाम तथा रिसालत। तथा यही इस्लाम धर्म के तीन मूलाधार हैं, जिसकी धुरी पर पूरे धार्मिक नियम घूमते हैं। इसलिए इसका जो भी अर्थ लिया जाये, एक ही भाव है।

[4]"सीधे मार्ग" को एकवचन के रूप में वर्णन किया गया है, क्योंकि अल्लाह का अथवा क़ुरआन का, तथा रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग एक ही है। एक से अधिक नहीं। इसलिए अनुकरण मात्र उसी एक मार्ग का करना है। किसी अन्य का नहीं। यही इस्लामी समुदाय की एकता तथा अखण्डता की आधारशिला है जिस से हटकर यह समुदाय विभिन्न गुटों में बँट गया है। यद्यपि इसको चेतावनी दी गयी थी कि "दूसरे मार्ग पर मत चलो कि वह मार्ग तुम्हें अल्लाह के मार्ग से भटका देंगे।" अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

The Ummah Technology Mission

فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٥٣﴾

न चलो अन्यथा तुम्हें उस के मार्ग से विचलित कर देंगे, उसने तुम को इसी का आदेश दिया है ताकि तुम सुरक्षित रहो।

ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُم بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٤﴾

(१५४) फिर हम ने (ईशदूत) मूसा को उस पर कृपा पूरी करने के लिये जिस ने सदाचार किया तथा प्रत्येक विषय के विवरण एवं मार्गदर्शन तथा दया के लिये धर्मशास्त्र (तौरात) प्रदान किया[1] ताकि वे अपने पोषक से मिलने पर विश्वास करें।

وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٥٥﴾

(१५५) तथा यह (पवित्र क़ुरआन) एक शुभ शास्त्र[2] है जिसे हम ने उतारा, अतः तुम इस

﴿أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ﴾

"धर्म को स्थापित करो तथा इसमें फूट न डालो।" (सूरः अश-शूरा-१३)

अर्थात फूट तथा भेद की कदापि आज्ञा नहीं है। इसी बात को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अत्यन्त स्पष्ट रूप से हदीस में वर्णन किया कि अपने हाथ से एक सरल रेखा खींची तथा फ़रमाया कि "यह अल्लाह का सीधा मार्ग है।" तथा कुछ अन्य रेखायें उसके दाहिने तथा बायें खींची तथा फ़रमाया "ये मार्ग हैं जिन पर शैतान बैठा हुआ है तथा वह उनकी ओर लोगों को बुलाता है।" फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यही आयत पढ़ी जो व्याख्या के लिए प्रस्तुत है (मुसनद अहमद भाग १, पृष्ठ ४६५, ४३५, अहमद शाकिर ने इसे सहीह कहा है। देखिये मुसनद अहमद बतालीक अहमद शाकिर संख्या ४१४२) अपितु इब्ने माजा के कथन में इससे अधिक स्पष्टीकरण होता है कि आप ने दाहिने-बायें दो-दो रेखायें खींची अर्थात कुल चार रेखायें खींची। तथा उन्हें शैतान का मार्ग बताया।

[1]यह पवित्र क़ुरआन की अपनी शैली है कि जिसे अनेक स्थानों पर दोहराया गया है, कि जहाँ पवित्र क़ुरआन की चर्चा होती है वहाँ (तौरात) की तथा जहाँ तौरात की चर्चा हो वहाँ पवित्र क़ुरआन की भी चर्चा कर दी जाती है। इसके अनेक उदाहरण, हाफ़िज इब्ने कसीर ने प्रस्तुत किये हैं, यहाँ इसी शैली के अनुसार तौरात तथा उसके इस गुण का वर्णन है कि वह भी अपने युग में एक परिपूर्ण धर्मग्रन्थ थी, जिसमें उनके धर्म की सभी आवश्यक बातें सविस्तार वर्णित थीं, तथा मार्गदर्शन एवं दया का स्रोत थी।

[2]इससे तात्पर्य पवित्र क़ुरआन है जिस में लोक-परलोक के शुभ तथा लाभ सीमित हैं।

The Ummah Technology Mission

का अनुसरण करो ताकि तुम पर दाया की जाये।

أَنْ تَقُولُوٓا۟ إِنَّمَآ أُنزِلَ ٱلْكِتَٰبُ عَلَىٰ طَآئِفَتَيْنِ مِن قَبْلِنَا

(१५६) ताकि यह न कहो[1] कि हम से पूर्व दो समुदायों पर धर्मशास्त्र (तौरात तथा इंजील) उतारी गई तथा हम उनके अध्ययन से अंजान रहे।[2]

وَإِن كُنَّا عَن دِرَاسَتِهِمْ لَغَٰفِلِينَ ﴿١٥٦﴾

أَوْ تَقُولُوا۟ لَوْ أَنَّآ أُنزِلَ عَلَيْنَا ٱلْكِتَٰبُ لَكُنَّآ أَهْدَىٰ مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن كَذَّبَ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۗ سَنَجْزِى ٱلَّذِينَ يَصْدِفُونَ عَنْ ءَايَٰتِنَا سُوٓءَ ٱلْعَذَابِ بِمَا كَانُوا۟ يَصْدِفُونَ ﴿١٥٧﴾

(१५७) अथवा तुम यह न कहो कि यदि हम पर धर्मशास्त्र अवतरित होता तो हम उन से अधिक सत्य मार्ग पर होते तो तुम्हारे पास तुम्हारे पोषक की ओर से स्पष्ट तर्क एवं मार्गदर्शन तथा दया आ चुकी है,[3] फिर उससे अधिक पापी कौन है जिसने अल्लाह की आयतों को मिथ्या कहा तथा उन से फिर गया,[4] हम घोर यातना अपनी आयतों से फिरने के कारण उन्हें देंगे जो फेर रहे हैं।

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّآ أَن تَأْتِيَهُمُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ أَوْ يَأْتِىَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِىَ

(१५८) वह फ़रिश्तों (सुरों) के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं अथवा अपने स्वामी (अल्लाह) के आने की अथवा आप के पालनहार की कुछ

---

[1]अर्थात यह क़ुरआन इसलिए उतारा ताकि तुम यह न कहो। दो सम्प्रदायों से तात्पर्य यहूदी तथा इसाई हैं।

[2]इसलिए कि वह हमारी भाषा में न थी। अतएव इस बहाने को समाप्त करने के लिए क़ुरआन अरबी भाषा में उतार दिया।

[3]अर्थात यह बहाना भी तुम नहीं बना सकते।

[4]अर्थात मार्गदर्शक तथा कृपा फल धर्मशास्त्र के उतरने के पश्चात अब जो व्यक्ति मार्ग दर्शन (इस्लाम) का मार्ग अपना कर अल्लाह की कृपा का पात्र नहीं बनता अपितु झुठलाने तथा विमुखता को अपनाता है, तो उससे बड़ा अत्याचारी कौन है ? (सदफ़) का अर्थ विमुख होना तथा "दूसरों को रोकना" भी किया गया है।

The Ummah Technology Mission

بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِيْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ؕ قُلِ انْتَظِرُوْٓا

निशानी (लक्षण) आने की ?[1] जिस दिन तुम्हारे पोषक की ओर से चिन्ह आ जायेंगे किसी प्राणी को उसका विश्वास काम न देगा जिस ने उससे पूर्व विश्वास न किया हो[2] अथवा अपने विश्वास में कोई शुभ कर्म न किया हो,[3]

---

[1]क़ुरआन मजीद को उतारकर तथा परम आदरणीय मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (दूतत्व) के द्वारा तर्क प्रमाणित कर दिया है। परन्तु अब भी यह कुमार्ग से नहीं रुकते तो क्या ये इस बात की प्रतीक्षा में हैं कि उनके पास फ़रिश्ते (यमदूत) आयें अर्थात उनके प्राण निकालने के लिए तो उस समय विश्वास करेंगे ? अथवा आप का प्रभु उनके पास आये अर्थात प्रलय हो जाये तथा ये अल्लाह के समक्ष प्रस्तुत किये जायें। उस समय ईमान लायेंगे। अथवा आपके प्रभु की बड़ी निशानी आये। जैसे प्रलय के निकट सूर्य का पूर्व के बजाय पश्चिम से उदय होना। तो इस प्रकार की बड़ी निशानी देख कर विश्वास करेंगे ? अगले वाक्य में इसको स्पष्ट किया जा रहा है कि यदि वे इस प्रकार की प्रतीक्षा में हैं, तो बहुत बड़ी मूर्खता का प्रदर्शन कर रहे हैं। क्योंकि बड़े लक्षण के प्रकट होने के पश्चात अनिष्ठ की निष्ठा तथा कुकर्मी एवं अत्याचारी की क्षमा-याचना स्वीकार नहीं होगी। सहीह हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "प्रलय नहीं होगी, जब तक कि सूर्य (पूर्व के विपरीत) पश्चिम से उदय न हो, बस जब ऐसा होगा तथा लोग उसे पश्चिम से उदय होते देखेंगे, तो सब ईमान ले आयेंगे।" फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत पढ़ी।

﴿لَا يَنفَعُ نَفْسًا إِيمَٰنُهَا لَمْ تَكُنْ ءَامَنَتْ مِن قَبْلُ﴾

"उस समय ईमान लाना किसी को लाभकारी नहीं होगा, जो इससे पूर्व ईमान न लाया होगा।" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर अल-अनाम)

[2]अर्थात काफ़िरों का ईमान न लाभकारी होगा न स्वीकार होगा।

[3]इसका अर्थ है कि यदि कोई पापी ईमान वाला अपने पापों की क्षमा-याचना करेगा तो उसकी याचना स्वीकार न होगी तथा उसके पश्चात् पुण्य कार्य अस्वीकार होगा जैसाकि हदीस से भी इसकी पुष्टि होती है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّا مُنتَظِرُونَ ﴿١٥٨﴾

आप कहिये कि तुम प्रतीक्षा करो हम (भी) प्रतीक्षा कर रहे हैं।[1]

إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ ۚ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿١٥٩﴾

(१५९) नि:सन्देह जिन्होंने अपना धर्म विभाजित कर दिया तथा अनेक धार्मिक सम्प्रदाय बन गये[2] आप का उन से कोई सम्बंध नहीं, उनका निर्णय अल्लाह के पास है फिर उन्हें उससे सूचित करेगा जो वह करते रहे हैं।

مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا ۖ وَمَن جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦٠﴾

(१६०) जो व्यक्ति पुण्य कार्य करेगा उसे उसके दस गुना मिलेंगे।[3] तथा जो कुकर्म करेगा उसे उसके समान दण्ड मिलगा।[4] तथा उन लोगों पर अत्याचार न होगा।

---

[1]यह ईमान न लाने वालों तथा याचना न करने वालों के लिए चेतावनी है तथा सावधान किया जा रहा है। क़ुरआन करीम में यही विषय *सूरः मोहम्मद*-१८ तथा सूरः *मोमिन*-८४ तथा ८५ में वर्णन किया गया है।

[2]इससे कुछ लोग यहूदी तथा ईसाई तात्पर्य लेते हैं, जो विभिन्न गुटों में बँटे हुए थे। कुछ मूर्तिपूजकों को लेते हैं जिनमें कुछ फ़रिश्तों की, कुछ सितारों की, कुछ विभिन्न मूर्तियों की पूजा करते थे। परन्तु यह विषय सामान्य है जिनमें काफ़िर तथा मूर्तिपूजकों सहित वे सभी लोग भी सम्मिलित हैं जो अल्लाह के धर्म तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मार्ग को छोड़ कर दूसरे धर्म अपना कर अन्य मार्ग अपनाकर भेद तथा फूट का मार्ग अपनाते हैं। شيعا का अर्थ है गुट तथा गिरोह तथा यह बात सभी उन समुदायों पर सत्य होती है जो धर्म के विषय में एक मत थे, परन्तु बाद में उनके विभिन्न लोगों ने अपने किसी बड़े के विचार को अन्तिम शब्द सिद्ध करके अपना मार्ग अलग कर लिया, चाहे वह मार्ग सत्य तथा पुण्य से विहीन ही हो। (फ़तहुल क़दीर)

[3]यह अल्लाह तआला की कृपा तथा उपकार का वर्णन है जो वह ईमानवालों (आस्तिकों) के साथ करेगा कि एक पुण्य का बदला दस पुण्य के समान प्रदान करेगा। यह कम से कम परिणाम है, वरन् क़ुरआन तथा हदीस दोनों से सिद्ध है कि कुछ पुण्यों का बदला कई सौ गुना, अपितु हज़ारों तथा लाखों गुना तक मिलेगा।

[4]अर्थात जिन पापों का दण्ड निर्धारित नहीं है, तथा उसके करने के पश्चात् उससे क्षमा भी नहीं माँगी अथवा उसके पुण्य उसके पापों से अधिक न हों, अथवा अल्लाह तआला ने

The Ummah Technology Mission

قُلْ إِنَّنِي هَدَانِي رَبِّي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۚ دِينًا قِيَمًا مِّلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٦١﴾

(१६१) (आप) कह दीजिए कि मुझे मेरे प्रभु ने एक सीधा मार्ग बता दिया है कि जो शाश्वत धर्म है इब्राहीम का (जो अल्लाह के अन्य से वियोगी थे) तथा वह मिश्रणवादियों में न थे।

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٢﴾

(१६२) (आप) कह दीजिए कि नि:सन्देह मेरी नमाज़, तथा मेरी समस्त आराधनायें तथा समस्त जीवन तथा मृत्यु सर्वलोक के पोषक अल्लाह के लिए हैं।

لَا شَرِيكَ لَهُ ۚ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٦٣﴾

(१६३) उसका कोई साक्षी नहीं मुझे इसी का आदेश दिया गया है तथा मैं प्रथम हूँ जिन्होंने उस के प्रति आत्म समर्पण किये।[1]

अपनी विशेष कृपा से उसे क्षमा नहीं किया हो (क्योंकि इन सभी अवस्थाओं में सांकेतिक दण्ड की परिधि में नहीं आयेगा) तो फिर अल्लाह तआला ऐसी बुराई का दण्ड देगा, तथा उसके समान ही देगा।

[1]इस अद्वैत का आमन्त्रण सभी ईशदूतों ने दिया। जैसे यहाँ अन्तिम ईशदूत (नराशंस) के मुखारविन्द से कहलवाया गया कि मुझे इसी का आदेश दिया गया है और मैं सर्वप्रथम इसे मानता हूँ। अन्य स्थान पर अल्लाह ने फ़रमाया कि हमने आप से पूर्व जितने भी अम्विया (ईशदूत) भेजे उन्हें यही आदेश दिया कि मेरे सिवाय कोई पूज्य नहीं। अत: मेरी ही आराधना करो। (*अल-अम्बिया*-२५) इसी प्रकार ईशदूत नूह ने भी यही घोषणा की।

﴿وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ﴾

"मुझे यह आदेश दिया गया है कि अल्लाह के प्रति आत्मसमर्पण कारियों में प्रथम बनूँ।" (*सूरः यूनुस*-७२)

आदरणीय इब्राहीम के विषय में आता है कि जब अल्लाह ने उनसे कहा कि स्वयं को मेरे प्रति समर्पित कर दो तोउन्होंने कहा कि मैंने विश्व विधाता के प्रति आत्म समर्पण कर दिया। (*सूरः बकरः*-१३१) आदरणीय इब्राहीम तथा याक़ूब ने अपने पुत्रों को यही अन्तिम आदेश दिया कि तुम्हारा अन्त इस्लाम धर्म पर होना चाहिए। आदरणीय यूसुफ़ ने प्रार्थना की।

﴿تَوَفَّنِي مُسْلِمًا﴾

"मुझे इस्लाम की स्थिति में संसार से उठाना।" (*सूरः यूसुफ़*-१०१)

Pre Ummah Technology Mission

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ؕ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٦٤﴾

(१६४) आप कहिये कि क्या मैं अल्लाह के सिवाये किसी अन्य स्वामी की खोज करूँ जब कि वही सब का स्वामी है [1] तथा कोई प्राणी जो भी कमायेगा उसी पर होगा कोई किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा,[2] फिर तुम्हें तुम्हारे पोषक की ओर पुन: जाना है वह तुम्हारे विभेदों के विषय में तुम्हें बतायेगा।[3]

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ

(१६५) तथा उसी ने तुम को धरती में उत्तराधिकारी[4] बनाया तथा एक के पदों को

आदरणीय मूसा ने अपने समुदाय से कहा।

﴿فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ﴾

"यदि तुम मुसलमान हो तो उसी अल्लाह पर भरोसा करो।" (सूर: यूनुस-८४)

आदरणीय ईसा ने अपने साथियों से सूर: अल-मायद:-१११ में कहा ﴿وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ﴾ इसी प्रकार अन्य नबियों ने भी तथा उनके सद्भावक अनुयायियों ने भी उसी इस्लाम का अनुकरण किया जिसमें एक अल्लाह की उपासना को मूलाधार स्थिति प्राप्त है यद्यपि कि वह धार्मिक नियम एक-दूसरे से भिन्न थे।

[1]यहाँ पोषक से तात्पर्य पूज्य बनाना है जिसका मूर्तिपूजक इंकार करते रहे हैं, तथा जो उसके पोषक होने की माँग है। परन्तु मूर्तिपूजक उसके पोषक होने को तो मानते थे तथा उसमें किसी को भी साझीदार नहीं ठहराते थे, परन्तु पूजित होने में साझीदार ठहराते थे।

[2]अर्थात अल्लाह तआला न्याय का पूर्ण प्रबन्ध करेगा तथा जिसने अच्छा अथवा बुरा जैसा कर्म किया होगा उसकी उसी के अनुसार सम्मान तथा दण्ड देगा तथा एक का बोझ दूसरे पर नहीं डालेगा।

[3]अत: यदि तुम इस अद्वैत को नहीं मानते जो सभी ईशदूतों कि एक मात्र शिक्षा रही है तो फिर तुम अपना काम करो हम अपना कर रहे हैं। प्रलय के पश्चात अल्लाह के सदन में हमारे तुम्हारे बीच निर्णय होगा।

[4]अर्थात अधिकारी बनाकर अधिकारों से अलंकृत किया अथवा एक के पश्चात दूसरे को उसका उत्तराधिकारी बनाया।

The Ummah Technology Mission

لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَآ اٰتٰىكُمْ ۭ اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۚ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٧﴾

दूसरे पर बढ़ाया ताकि जो कुछ तुम्हें प्रदान किया उसमें तुम्हारी परीक्षा ले[1] नि:संदेह तुम्हारा स्वामी शीघ्र यातना देने वाला है तथा वस्तुत: वह क्षमाशील दयानिधि है।

सूरतुल आराफ़-७

سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ

सूर: अल-आराफ़ मक्का में उतरी तथा इसकी दो सौ छ: आयतें हैं तथा चौबीस रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ जो अत्यधिक कृपालु तथा अति दयालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(१) अलिफ़॰ लाँम॰ मीम॰ स्वाद।

الٓمّٓصٓ ﴿١﴾

(२) एक धर्मशास्त्र आप की ओर उतारा गया ताकि इस के द्वारा सावधान करने से आप के दिल में संकीर्णता उत्पन्न न हो[2] तथा ईमान वालों के लिये शिक्षा है।

كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾

(३) जो (धर्म विधान) आप के पोषक की ओर से उतारा गया[3] उसका अनुसरण करो तथा

اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ

---

[1]अर्थात दरिद्रता, धन, ज्ञान, अज्ञानता तथा स्वास्थ एवं रोग जिसको जो कुछ प्रदान किया है उसी में उसका उत्तराधिकारी बनाया।

[2]अर्थात इसके प्रचार से आप का मन संकुचित न हो कि कहीं नास्तिक मुझ पर मिथ्यारोपण न करें तथा मुझे कष्ट न पहुँचायें। इसलिए कि अल्लाह आपका रक्षक तथा सहायक है। अथवा حرج (हर्जुन) शंका के अर्थ में है अर्थात इसके अल्लाह की ओर से उतरने में आप के मन में दुविधा नहीं होनी चाहिए। यह अन्योक्ति है तथा वास्तव में आप के अनुयायियों को संबोधित किया गया है कि संदेह न करें।

[3]जो अल्लाह की ओर से उतारा गया है अर्थात पवित्र क़ुरआन एवं जो अन्तिम ईशदूत का कथन है अर्थात (हदीस) क्योंकि आप ने कहा कि मैं पवित्र ईशवाणी क़ुरआन एवं उसके समान दिया गया हूँ, इन दोनों का अनुसरण अनिवार्य है। इनके सिवाय किसी अन्य का अनुसरण अनिवार्य नहीं अपितु उन का इंकार अनिवार्य है जैसाकि आगामी वाक्य में कहा

The Ummah Technology Mission

وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝٣

उसके सिवाये अन्य सहायकों का अनुसरण न करो तुम लोग बहुत कम शिक्षा ग्रहण करते हो।

وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْهُمْ قَآئِلُوْنَ ۝٤

(४) तथा बहुत-सी बस्तियों को हमने नष्ट कर दिया तथा उन पर हमारा प्रकोप रात्रि समय पहुँचा अथवा ऐसी अवस्था में कि वे मध्यान्ह के समय विश्राम कर रहे थे।[1]

فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝٥

(५) तो जब उनके पास हमारा प्रकोप आया तो उनकी पुकार मात्र यही रही कि उन्होंने कहा कि हम ही अत्याचारी (पापी) रहे हैं।[2]

فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٦

(६) फिर हम उन से अवश्य पूछ करेंगे जिन के पास उपदेश भेजा गया तथा उपदेशकों से अवश्य पूछ करेंगे।[3]

है कि अल्लाह को छोड़ अन्य किसी का अनुसरण न करो जिस प्रकार मूर्खता काल में प्रमुखों एवं ज्योतिषियों की बात को महत्व दिया जाता था यहाँ तक कि वैध-अवैध के विषय में उन्हीं की बात मानी जाती थी।

[1] قيلولة शब्द "मध्यान्ह के समय भोजन करके विश्राम करने को कहते हैं।" अर्थ यह है कि हमारा प्रकोप सहसा ऐसे समय में आया जब वे निश्चिन्त रूप से अपने बिस्तरों पर विश्राम कर रहे थे।

[2]परन्तु प्रकोप आ जाने पर ऐसे स्वीकार का कोई लाभ नहीं। जैसे कि पूर्व स्पष्ट किया जा चुका है।

﴿ فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ إِيمَٰنُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا ﴾

"जब उन्होंने हमारा प्रकोप देख लिया तो उस समय उनका ईमान लाना उनके लिए लाभकारी नहीं हुआ।" (सूरः *अल-मोमिन-८५*)

[3]समुदायों से यह पूछा जायेगा कि क्या तुम्हारे पास पैग़म्बर (संदेशवाहक) आये थे? उन्होंने हमारा संदेश पहुँचाया था? वहाँ वे उत्तर देंगे, "हाँ, हे अल्लाह! तेरे पैग़म्बर तो अवश्य हमारे पास आये थे परन्तु हमारा ही दुर्भाग्य था कि हमने उनकी चिन्ता नहीं की।" तथा

The Ummah Technology Mission

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِم بِعِلْمٍ وَمَا كُنَّا غَآئِبِينَ ۝٧

(७) फिर हम उनके समक्ष ज्ञान के साथ वर्णन कर देंगे[1] एवं हम अनभिज्ञ नहीं थे।

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ ۚ فَمَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝٨

(८) तथा उस दिन सत्य तुलना होगी फिर जिस का पलड़ा भारी होगा वही सफल होंगे।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُم بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَظْلِمُونَ ۝٩

(९) तथा जिस का पलड़ा हल्का होगा, तो ये वे लोग होंगे जिन्होंने अपनी हानि कर ली इस कारण कि हमारी निशानियों का हनन करते रहे थे।[2]

पैग़म्बरों से पूछा जायेगा कि तुमने हमारे संदेश अपने समुदाय को पहुँचा दिये तथा उन्होंने उसकी तुलना में क्या कर्म किये? पैग़म्बर इस प्रश्न का उत्तर देंगे जिसका विस्तृत वर्णन पवित्र क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर विद्यमान है।

[1]हम सभी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष का ज्ञान रखते हैं। अत: हम दोनों (वर्गों एवं संदेशवाहकों) के सामने सभी बातें रख देंगे, तथा उन्होंने जो कुछ किया होगा उनके आगे प्रस्तुत कर देंगे।

[2]इन आयतों में कर्मों के तौलने का वर्णन किया गया है, जो प्रलय के दिन होगा, जिसे पवित्र क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर तथा हदीसों में वर्णन किया गया है। जिसका अर्थ यह है कि तुला में कर्म तौले जायेंगे, जिसके पुण्य का पलड़ा भारी होगा वह सफल तथा जिसकी बुराईयों का पलड़ा भारी होगा वह असफल होगा। ये कर्म किस प्रकार तौले जायेंगे जब कि वास्तव में इनका भौतिक स्वरूप नहीं है? इसमें एक विचार यह है कि प्रलय के दिन अल्लाह तआला स्वयं कर्म-कर्ताओं को भौतिक स्वरूप में बदल देगा तथा उनकी तौल होगी। दूसरा विचार यह है कि कर्मपत्र तौला जायेगा जिन पर यह कर्म लिखे होंगे। तीसरा विचार यह है कि इन कर्मों के कर्ता को तौला जायेगा। तीनों विचारों वालों के पास अपने विचार के पक्ष में सहीह हदीस तथा कथन उपलब्ध हैं, इसलिए इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि तीनों विचार ही उचित हैं, सम्भव है कि कभी कर्म, कभी कर्मपत्र तथा कभी स्वयं कर्म के कर्ता को तौला जायेगा (तर्क के लिए देखें तफ़सीर इब्ने कसीर) तुला तथा कर्मों के तौल का विषय क़ुरआन तथा हदीस से तर्क संगत है। इसका इंकार अथवा कष्ट कल्पना भटकाव है, तथा वर्तमान युग में हम ने देख लिया कि अब तो बिना भार की वस्तुएं जिन्हें हम समझते थे तथा ऐसा विचार था कि इन का भार नहीं निकाला जा सकता उनका भी भार ज्ञात करने की विधि तथा साधन उपलब्ध हैं, तो अल्लाह तआला के लिए कर्मों को तौलना कदापि असम्भव नहीं है क्योंकि उसे हर प्रकार का सामर्थ्य है।

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿١٠﴾

(१०) तथा हमने तुम को पृथ्वी में अधिकार सहित स्थान दिया तथा उस में तुम्हारे लिये जीवन सामग्री बनाई, तुम अति अल्प कृतज्ञ हो।

وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿١١﴾

(११) तथा हमने तुमको पैदा किया फिर तुम्हारा रूप बनाया [1] फिर सुरों (फ़रिश्तों) से कहा कि आदम को सजदा करो तोसभी ने सजदा किया सिवाय इब्लीस के कि वह सजदा करने वालों में सम्मिलित नहीं हुआ।

قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ؕ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾

(१२) (अल्लाह ने) कहा कि जब मैंने तुझे सजदा करने का आदेश दिया तो किस कारण ने तुझे सजदा करने से रोक दिया,[2] उसने कहा मैं इससे उत्तम हूँ तूने मुझे अग्नि से उत्पन्न किया तथा इसे मिट्टी से पैदा किया है।[3]

---

[1] خلقناكم का अर्थ है तुम सभी को पैदा किया। इसमें तुम सब सर्वनाम यद्यपि बहुवचन है किन्तु इस से तात्पर्य आदरणीय आदम हैं।

[2] أ لا تسجد में لا अधिक है अर्थात أن تسجد (तुझे सिजदा करने से किस ने रोका ?) अथवा यहाँ वाक्य का लोप है अर्थात "तुझे किस विषय ने वाध्य किया कि सिजदा न करे।" (इब्ने कसीर तथा फ़तहुल क़दीर)। शैतान फ़रिश्तों में से नहीं था, अपितु क़ुरआन के स्वयं स्पष्टीकरण के अनुसार वह जिन्नात था। (*सूरः अल-कहफ़-५०*) परन्तु आकाश पर फ़रिश्तों के साथ रहने के कारण वह सिजदा के आदेश का पालन करने के लिए बाध्य था, जो अल्लाह ने फ़रिश्तों को दिया था। इसी कारण उस से पूछा भी गया तथा उस पर प्रकोप भी हुआ। यदि वह आदेश में सम्मिलित ही न होता, तो उससे पूछ न होती तथा वह धिक्कारा न जाता।

[3] शैतान की यह क्षमा-याचना उसके पाप से भी गम्भीर पाप बन गई। एक तो उसका यह सोचना कि श्रेष्ठ को अपने से नीचे के आदर तथा सम्मान का आदेश नहीं दिया जा सकता, ग़लत है। इसलिए कि मूल विषय अल्लाह का आदेश है, उसके आदेश के आगे श्रेष्ठ अथवा निम्न की बात करना अल्लाह के आदेश की अवहेलना है। दूसरे उसने अपने श्रेष्ठ होने का तर्क यह दिया कि मैं अग्नि से हूँ तथा यह मिट्टी से है। परन्तु उसने उस श्रेष्ठता को अनदेखी कर दिया जो आदरणीय आदम को प्राप्त हुई अर्थात अल्लाह तआला ने स्वयं अपने हाथ से बनाया तथा अपनी ओर से आत्मा फूँकी। इस श्रेष्ठता के समान दुनिया का

The Ummah Technology Mission

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَنْ تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصَّاغِرِينَ ﴿١٣﴾

(१३) (अल्लाह तआला ने) आदेश दिया कि तू आकाश[1] से उतर तुझे कोई अधिकार नहीं कि आकाश में निवास करके घमंड करे। इसलिए निकल, नि:सन्देह तू अपमानितों में से है।[2]

قَالَ أَنْظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٤﴾

(१४) उस (शैतान) ने कहा कि मुझे (प्रलय तक) अवसर प्रदान कर दें जब लोग पुनर्जीवित किये जायेंगे।

قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿١٥﴾

(१५) (अल्लाह) ने कहा कि तुझे अवसर प्रदान कर दिया गया।[3]

कोई सम्मान हो सकता है ? तृतीय, उसने स्वयं आदेश के आगे अनुमान से काम लिया ? जो किसी भी अल्लाह के भक्त का आचरण नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त उसका अनुमान भी भ्रष्ट अनुमान था। अग्नि, मिट्टी से किस प्रकार श्रेष्ठ हो सकती है ? अग्नि में उत्तेजना, तथा भड़कने एवं जलने के सिवाय है क्या ? जबकि मिट्टी में शान्ति तथा स्थिरता है। इसमें फलने-फूलने अधिकता तथा सुधार की विशेषता है। ये गुण अग्नि से प्रत्येक प्रकार से श्रेष्ठ तथा अधिक लाभकारी है। इस आयत से यह ज्ञात हुआ कि शैतान की उत्पत्ति अग्नि से हुई। जैसाकि हदीस में भी आता है "फ़रिश्ते प्रकाश से, इब्लीस अग्नि की लौ से तथा आदम मिट्टी से पैदा किये गये हैं।" (सहीह मुस्लिम किताबुल ज़ुहद, वाव अहादीसे मुतफ़र्रिक़:)

[1]अधिकांश व्याख्याकारों ने "इससे" का अर्थ यह किया है कि उससे अर्थात स्वर्ग से निकल जाओ और कुछ ने "इस" से का अर्थ यह लिया है कि आकाश लोक से नीचे उतरो। आदरणीय अनुवादक ने यही दूसरा अर्थ लेकर उसका अनुवाद "आकाश से उतरो" किया है।

[2]अल्लाह के आदेश के समक्ष घमण्ड करने वाला आदर तथा सम्मान का नहीं अपितु अनादर तथा अपमान का अधिकारी होता है।

[3]अल्लाह ने उसकी आग्रह पर यह अवसर दे दिया जो उसके ज्ञान तथा इच्छानुसार था, फिर भी इससे बात समझ में आती है कि उसने ऐसा इसलिए किया कि अपने भक्तों की परीक्षा ले सके कि कौन उसका भक्त बनता है और कौन शैतान का पुजारी।

The Ummah Technology Mission

قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١٦﴾

(१६) उस (शैतान) ने कहा तेरे मुझ को धिक्कारने के कारण[1] मैं उन के लिये तेरे सत्यमार्ग पर बैठूँगा।

ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿١٧﴾

(१७) फिर उनके सामने तथा पीछे से एवं दायें तथा बायें से आक्रमण करूँगा।[2] तथा आप इनमें अधिकतर को कृतज्ञ नहीं पायेंगे।[3]

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٨﴾

(१८) (अल्लाह) ने कहा, तू इससे (यहाँ से) अपमानित बहिष्कृत होकर निकल जा, जो उनमें से तेरा अनुसरण करेगा मैं तुम सभी से नरक कोअवश्य भर दूँगा।

وَيٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا

(१९) तथा (हम ने कहा कि) हे आदम! तुम तथा तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में निवास करो, फिर

---

[1]कुमार्ग तो वह अल्लाह की सृष्टि उत्पत्ति की इच्छा के अनुसार हुआ, परन्तु उसने भी मूर्तिपूजकों की भाँति लांक्षन बना लिया, जिस प्रकार वह कहते थे कि यदि अल्लाह चाहता तो हम शिर्क न करते।

[2]अर्थ यह है कि प्रत्येक पुण्य तथा पाप के मार्ग पर मैं बैठूँगा। पुण्य से उन्हें रोकूँगा तथा पाप को उनके समक्ष सुन्दर तथा आकर्षित बना कर प्रस्तुत करूँगा तथा उनको अपनाने के लिए शिक्षा दूँगा।

[3]शाकेरीन का दूसरा अनुवाद एक अल्लाह के मानने वाले भी किया गया है। अर्थात अधिकतर लोगों को मैं शिर्क में लिप्त कर दूँगा। शैतान ने अपना यह विचार वास्तव में सत्य कर दिखाया।

﴿ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴾

"शैतान ने अपना विचार सत्य कर दिखाया, मोमिनों के एक गुट को छोड़ कर सभी लोग उस के पीछे लग गये।" (सूरः सबा-२०)

इसीलिए हदीस में शैतान से बचने के लिए तथा क़ुरआन में उसके छल, कपट तथा जाल से बचने के लिए बड़ी चेतावनी दी गयी है।

Fine Ummah Technology Mission

هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾

जिस स्थान से इच्छा हो खाओ एवं इस वृक्ष के निकट न जाओ अन्यथा अत्याचारी हो जाओगे।[1]

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ﴿٢٠﴾

(२०) फिर शैतान ने दोनों में शंका[2] उत्पन्न की ताकि दोनों के लिये उन के गुप्तांगों[3] को प्रकट कर दे तथा कहा कि तुम दोनों के पोषक ने तुम्हें इस वृक्ष से इसीलिए रोका है कि तुम दोनों फ़रिश्ता हो जाओगे अथवा अमर हो जाओगे।

وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢١﴾

(२१) उसने उन दोनों के समक्ष शपथ ली कि वह उनका शुभ चिन्तक है।[4]

---

[1]अर्थात मात्र इस वृक्ष के सिवाये जहाँ से तथा जितना चाहो खाओ। इस वृक्ष का फल खाने पर प्रतिबन्ध मात्र परीक्षा के रूप में था।

[2]वसवसा का अर्थ है धीमा स्वर तथा वह बुरी बात जो शैतान मन में उत्पन्न करता है।

[3]अर्थात इस बहकाने से शैतान का लक्ष्य आदम तथा हव्वा को स्वर्ग के वस्त्र से वंचित करके उन्हें लज्जित करना था जो उन्हें स्वर्ग में पहनने को मिले थे। سوأت बहुवचन है जिस का अर्थ बुरा लगना है तथा उस का अर्थ गुप्तांग इसलिये लिया जाता है कि इसके खुल जाने को बुरा माना जाता है।

[4]स्वर्ग में जो सुख सुविधायें आदरणीय आदम तथा हव्वा को उपलब्ध थीं उसके द्वारा शैतान ने दोनों को प्रलोभन दिया तथा यह झूठ बोला कि अल्लाह तुम्हें सदा स्वर्ग में रखना नहीं चाहता है, इसीलिए इस वृक्ष का फल खाने से मना किया है क्योंकि इसका प्रभाव ही यही है कि जो उसे खा लेता है, वह फ़रिश्ता बन जाता है अथवा उसे स्थाई जीवन प्राप्त हो जाता है। फिर सौगन्ध खाकर अपने को शुभचिन्तक सिद्ध किया, जिससे आदरणीय आदम तथा हव्वा प्रभावित हो गये, इस लिए कि अल्लाह वाले अल्लाह के नाम पर धोखा खा जाते हैं।

The Ummah Technology Mission

فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؕ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٢﴾

(२२) इस प्रकार धोखे से दोनों को नीचे लाया,[1] जैसे ही दोनों ने वृक्ष का स्वाद लिया दोनों के लिये उन के गुप्तांग प्रकट हो गये तथा वे अपने ऊपर स्वर्ग के पत्ते चिपकाने लगे [2] तथा उन के स्वामी ने दोनों को पुकारा कि क्या मैंने तुम दोनों को इस वृक्ष से नहीं रोका ? तथा तुम से नहीं कहा कि शैतान तुम्हारा खुला शत्रु है ।[3]

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ۖ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

(२३) दोनों ने कहा, हमारे पोषक ! हम ने अपने ऊपर अत्याचार कर लिया तथा यदि तूने हमें क्षमा नहीं किया तथा हम पर दया न की तो हम क्षतिग्रस्तों में से हो जायेंगे ।[4]

---

[1] تدلية و إدلاء अरबी शब्द का अर्थ है किसी वस्तु को ऊपर से नीचे ले जाना । अत: शैतान उनको उच्च पद से उतार कर निषेधित वृक्ष का फल खाने तक ले गया ।

[2] यह उस अवज्ञा का प्रभाव हुआ जो आदम तथा हव्वा से अनजान तथा बिना सोच-विचार के हुई । फिर दोनों लज्जित होकर स्वर्ग के पत्ते जोड़-जोड़ कर अपने गुप्तांगों को ढांकने लगे । वहब बिन मुनब्बा कहते हैं कि उससे पूर्व उनको अल्लाह तआला की ओर से एक ऐसा प्रकाशमान वस्त्र मिला था जो यद्यपि अदृश्य था फिर भी एक-दूसरे के गुप्तांगों के लिये आवरण (पर्दे) का काम देता था । (इब्ने कसीर)

[3] अर्थात इस चेतावनी के पश्चात् भी तुम शैतान के वसवसों (शंका) के शिकार हो गये । इससे ज्ञात हुआ कि शैतान के जाल भी बड़े आकर्षित होते हैं, तथा उनसे बचने के लिए बड़े प्रयत्न तथा हर समय सावधान रहने की आवश्यकता है ।

[4] क्षमा-याचना के यह वही वाक्य हैं जो आदरणीय आदम ने अल्लाह तआला से सीखे, जैसाकि सूर: अल-बक़र: आयत संख्या ३७ में स्पष्टरूप से आया है (देखिए वर्णित आयत की व्याख्या) । ऐसा प्रतीत होता है कि शैतान ने अल्लाह तआला के आदेशों की अवहेलना ही नहीं की, अपितु वह अड़ भी गया तथा अपने काल्पनिक तथा अनुमानित तर्कों के द्वारा उसको उचित भी ठहराता रहा । परिणाम स्वरूप तिरस्कृत किया गया तथा सदा के लिए धिक्कारा गया तथा आदरणीय आदम अपनी भूल को स्वीकार कर क्षमा-याचना करने लगे, तो अल्लाह की कृपा तथा क्षमा के अधिकारी हो गये । इस प्रकार दोनों प्रकार के

The Ummah Technology Mission

قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٢٤﴾

(२४) अल्लाह (तआला) ने कहा, तुम नीचे उतरो, तुम परस्पर शत्रु हो तथा तुम्हें एक समय तक धरती में निवास करना एवं लाभान्वित होना है।

قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَ فِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٥﴾

(२५) कहा कि तुम उसी में जीवन यापन करोगे तथा उसी में मरोगे और उसी से निकाले जाओगे।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَ رِيْشًا ؕ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ۙ ذٰلِكَ خَيْرٌ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٢٦﴾

(२६) हे आदम के पुत्रो ! हम ने तुम्हें ऐसा वस्त्र प्रदान किया जो तुम्हारे गुप्तांग को ढांके तथा शोभा दे[1] एवं संयम (परहेजगारी) का वस्त्र[2] ही उत्तम है[3] यह अल्लाह के लक्षण हैं ताकि वह स्मरण करें।

मार्गों का स्पष्टीकरण हो गया। अर्थात शैतान के मार्ग का भी तथा अल्लाह वालों के मार्ग का भी। पाप करके घमण्ड करना उनकी पुनरावृत्ति करके उसको उचित सिद्ध करने के लिए तर्कों का ढेर लगाना शैतानी मार्ग है। तथा पाप के पश्चात् लज्जित होकर अल्लाह के दरबार में झुक जाना तथा क्षमा-याचना करना अल्लाह के भक्तों का मार्ग है। اللهم اجعلنا منهم

[1] سوآت शरीर के वह अंग हैं जिनको ढाँकना आवश्यक है, जैसे गुप्तांग तथा ريشا वह वस्त्र है जो शोभा एवं सुन्दरता के लिये पहना जाये मानो प्रथम आवश्यक वस्त्र है एवं दूसरा पूर्ति एवं अधिकता के लिये होता है, अल्लाह ने इन दोनों प्रकार के लिये संसाधन उत्पन्न कर दिये।

[2] इससे तात्पर्य कुछ लोगों के विचार से वह वस्त्र है जो संयमी प्रलय के दिन ग्रहण करेंगे, तथा कुछ के निकट निष्ठा एवं कुछ के विचार से सत्कर्म तथा अल्लाह का भय है, सब का भावार्थ लगभग एक ही है कि ऐसा वस्त्र जिसे धारण करके मनुष्य अहंकार के बजाय अल्लाह से डरे तथा विश्वास एवं सत्कर्म की माँगों को पूरा करे।

[3] इससे यह भाव निकलता है कि यद्यिप शोभा तथा सौंदर्य के लिय वस्त्र पहनना उचित है फिर भी वस्त्र में ऐसी सादगी अतिप्रिय है जो पवित्रता तथा संयम का द्योतक हो। इसके सिवाये नया वस्त्र धारण करते समय, यह प्रार्थना की जाये।

The Ummah Technology Mission

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ؕ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَ قَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾

(२७) हे आदम के पुत्रो ! तुम्हें शैतान बहका न दे जैसे तुम्हारे माता-पिता को स्वर्ग से निकलवा दिया, वह उन का वस्त्र उतरवा दिया ताकि उन्हें उन के गुप्तांग दिखाये, नि:सन्देह वह तथा उस की जन जाति तुम्हें ऐसी जगह से देखती है कि तुम उन्हें देख नहीं सकते,[1] हमने शैतानों को उन लोगों का मित्र बना दिया जो ईमान (विश्वास)[2] नहीं रखते।

وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَ اللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ؕ

(२८) तथा वे जब कोई दुराचार करते हैं तो कहते हैं कि हमने अपने पूर्वजों को इसी पर पाया तथा अल्लाह ने हमें इसका आदेश दिया है। आप कह दीजिये कि अल्लाह दुराचार का

«اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي كَسَانِي مَا أُوَارِي بِهِ عَوْرَتِي، وَأَتَجَمَّلُ بِهِ فِي حَيَاتِي».

"सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिसने मुझे ऐसा वस्त्र पहनाया जिससे मैं अपना गुप्तांग छुपाऊँ और अपने जीवन में उस से शोभा प्राप्त करूँ।"

(त्रिमज़ी, प्रार्थना अध्याय-इब्ने माज, वस्त्र अध्याय, मनुष्य नया वस्त्र धारण करते समय क्या प्रार्थना करे)

[1]इसमें ईमानवालों को शैतान तथा उसकी जाति अर्थात उसके शिष्यों से सावधान किया गया है कि कहीं तुम्हारी असावधानी तथा आलस्य से लाभ उठा कर तुम्हें भी उसी प्रकार परीक्षा तथा कुमार्ग में न डाल दे, जिस प्रकार तुम्हारे माता-पिता (आदम तथा हव्वा) को उसने स्वर्ग से निकलवाया तथा स्वर्ग के वस्त्र उतरवा दिये। विशेषरूप से जब वह दृष्टि गोचर नहीं होते तो उनसे बचने की व्यवस्था तथा चिन्ता अधिक होनी चाहिए।

[2]अर्थात जिनमें ईमान नहीं है वही उसके मित्र हैं तथा विशेषरूप से उसके शिकार होते हैं। फिर भी वह ईमानवालों पर भी डोरे डालता रहता है। कुछ और नहीं तो गुप्त शिर्क (दिखावे के पुण्य) तथा प्रत्यक्ष शिर्क (मिश्रणवाद) में लीन कर देता है तथा इस प्रकार वह उनको ईमान के पूँजी से वंचित कर देता है।

The Ummah Technology Mission

आदेश नहीं करता। क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात करते हो जिसे तुम नहीं जानते।[1]

أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾

(२९) आप (नराशंस) कहिये कि मेरे पोषक ने मुझे न्याय का आदेश दिया है।[2] तथा प्रत्येक सजदा के समय अपने चेहरे को सीधी दिशा में कर लो[3] तथा उस (अल्लाह) के लिये धर्म को स्वच्छ करके उसे पुकारो। उसने जैसे

قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ ۖ وَأَقِيمُوا وُجُوهَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ ﴿٢٩﴾

---

[1]इस्लाम से पूर्व मूर्तिपूजक बैतुल्लाह (काअबा) की परिक्रमा नंगे होकर करते थे तथा कहते थे कि हम उस अवस्था के अनुसार परिक्रमा करते हैं जो उस समय थी जब हमारी माताओं ने हमें जन्मा था। कुछ कहते हैं कि वे कहते थे कि हम जो वस्त्र पहनते हैं उसमें अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करते रहते हैं, इसलिए इस वस्त्र में परिक्रमा करना उचित नहीं। अत: वह वस्त्र उतारकर परिक्रमा करते तथा स्त्रियाँ भी नंगी परिक्रमा करती थीं, केवल अपने गुप्तांग पर कोई कपड़ा अथवा चमड़ा रख लिया करती थीं। अपने इस अपमानित कर्म के लिए दो तर्क और दिये। एक तो यह कि हमने अपने पूर्वजों को इस प्रकार ही करते पाया। दूसरे यह कि अल्लाह ने हमको इसका आदेश दिया है। अल्लाह ने इसका खण्डन किया कि यह किस प्रकार हो सकता है कि अल्लाह तआला अभद्र असभ्य कार्यों का आदेश दे ? अर्थात तुम अल्लाह के ऊपर उस बात को लगाते हो जिसका उसने आदेश नहीं दिया। इस आयत में उन अनुकरणवादियों को सचेत तथा सतर्क किया गया है जो अपने पूर्वजों, महात्माओं तथा महान व्यक्तियों का पालन करते हैं, जब उन्हें भी सत्य बात बतायी जाती है, तो वह भी उसके समक्ष यही तर्क प्रस्तुत करते हैं कि हमारे बड़े भी यही करते आये हैं अथवा हमारे इमाम तथा पीर का यही आदेश है। यह वह व्यवहार है कि यहूदी अपनी यहूदियत पर, इसाई अपने ईसाईयत पर तथा परिवर्तनकारी अपने परिवर्तित रस्मों पर दृढ़ हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[2]न्याय का भावार्थ कुछ ने لا إله إلا الله अर्थात एकेश्वरवाद (तौहीद) लिया है।

[3]इमाम शौकानी ने इसका अर्थ यह वर्णित किया है कि "अपनी नमाज़ों में अपना मुख क़िबले की ओर कर लो, चाहे तुम किसी भी मस्जिद में हो।" तथा इमाम इब्ने कसीर ने इससे दृढ़ता अर्थात अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुकरण का भाव लिया है तथा अगले वाक्य से अल्लाह के लिये सुद्ध होना लिया है। तथा कहा है कि प्रत्येक कर्म की स्वीकृति के लिए आवश्यक है कि वह धार्मिक नियमों के अनुसार हो तथा अन्य मात्र अल्लाह की प्रसन्नता के लिए हो। अन्त में इन बातों पर बल दिया गया है।

The Ummah Technology Mission

तुम को प्रारम्भ में पैदा किया उसी प्रकार पुन: जन्म लोगे।

فَرِيْقًا هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ؕ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۳۰﴾

(३०) तथा उस (अल्लाह) ने कुछ को मार्गदर्शन किया और कुछ कुपथ के पात्र बन गये, उन्होंने अल्लाह के सिवाय शैतानों (असुरों) को अपना मित्र बना लिया तथा सोचते हैं कि वह पथगामी हैं।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۳۱﴾

(३१) हे आदम के पुत्रो ! मस्जिद में जाने के प्रत्येक समय अपना वस्त्र अपना लो[1] तथा खाओ-पिओ और अपव्यय न करो। नि:सन्देह जो अपव्यय करते हैं अल्लाह उनसे प्रेम नहीं करता।[2]

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ؕ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۳۲﴾

(३२) (हे ईशदूत !) आप कहिये कि उस शोभा को किस ने वर्जित किया है जिसे अल्लाह ने अपने भक्तों के लिये उत्पन्न किया है तथा पवित्र जीविका को, आप कहिये कि वह भौतिक जीवन में उन लोगों के लिये है जिन्होंने विश्वास किया (तथा) विशेष रूप से

---

[1]आयत में शोभा से तात्पर्य वस्त्र है। इसका सम्बन्ध भी मूर्तिपूजकों के नंगे परिक्रमा से है, अत: उन्हें कहा गया कि वस्त्र धारण करके अल्लाह की इबादत करो।

[2]अपव्यय (सीमा से पार होना) किसी भी विषय में यहाँ तक कि खाद्य तथा पेय में भी प्रिय नहीं माना गया है। एक हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "जो चाहो खाओ, जो चाहो पहनो। परन्तु दो बातों से बचो अपव्यय तथा अहंकार से।" सहीह बुख़ारी किताबुल लिबास बाब क़ौल अल्लाह तआला क़ुल मन हर्रम ज़ीनतल्लाह ……) कुछ सलफ़ का कथन है। كلوا و اشربوا ولا تسرفوا इस आधी आयत में सारी चिकित्सा पद्धति एकत्रित कर दी गयी। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

अन्त दिवस में उन्हीं के लिये हैं।[1] हम आयतों का इसी प्रकार विस्तृत वर्णन कर रहे हैं उनके लिये जो ज्ञान रखते हैं।

(३३) आप कहिये कि मेरे पोषक ने सभी व्यक्त एवं गुप्त अशिष्ट विषय[2] को वर्जित किया है तथा पाप एवं अनुचित अतिक्रमण को[3] तथा

قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ

---

[1]मुर्तिपूजकों ने जिस प्रकार परिक्रमा के समय वस्त्र धारण करना अप्रिय माना था इसी प्रकार कुछ उचित पदार्थों को भी अल्लाह के सामिप्य के लिये वर्जित कर लिया था जैसे कि कुछ सूफ़िया (साधु) भी ऐसा ही करते हैं तथा बहुत-सी वैध वस्तुयें अपनी मूर्तियों के नाम दान कर देने हेतु अवैध मान लेते थे। अल्लाह ने कहा कि जिन पदार्थों को उसने लोगों की शोभा के लिए (उदाहरणार्थ वस्त्रादि एवं) स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ बनाये हैं उन्हें कौन निषेधित कर सकता है। इस का अभिप्राय यह है कि अल्लाह की उचित बनाई हुई वस्तुयें किसी के वर्जित करने से वर्जित नहीं हो जाती हैं, वह उचित ही रहेंगी, यह उचित एवं पवित्र वस्तुयें अल्लाह ने वास्तव में अपने भक्तों के लिये बनाई हैं। नास्तिक मूर्तिपूजक भी इन से लाभान्वित होते हैं अपितु कभी संसारिक सुख-सुविधा में वह मुसलमानों से अधिक सफल दिखाई देते हैं। किन्तु यह सामयिक तथा अस्थिर सुख है, जिस के भेद को अल्लाह ही जानता है परन्तु परलोक में यह अनुकम्पायें मुसलमानों के लिए ही होंगी क्योंकि कृतघ्नों के लिये जिस प्रकार स्वर्ग निषेधित होगा उसी प्रकार यह खाद्य तथा पेय भी निषेधित होंगे।

[2]प्रत्यक्ष कुकर्म से तात्पर्य कुछ के यहाँ वेश्या के कोठे पर जाकर व्यभिचार करना तथा गुप्त कुकर्म से तात्पर्य किसी प्रेमिका से विशेष सम्बन्ध स्थापित करना है। कुछ के निकट प्रत्यक्ष कुकर्म से तात्पर्य निकट निषेधित स्त्रियों से विवाह करना (जो वर्जित है) लिया गया है। परन्तु उचित बात तो यह है कि यह किसी एक विशेष परिस्थिति से सम्बन्धित नहीं है, अपितु सामान्य है। जैसे फिल्में, ड्रामे, नाटक टी॰ वी, वी॰सी॰आर, अभद्र-असभ्य समाचार एवं पत्र-पत्रिकायें, नृत्य, मदीरा पान, नृत्यांगनाओं की पुरुषों के समक्ष नृत्य तथा पुरुष-स्त्री मिश्रण, मेंहदी तथा विवाह के रीति रीवाज में सामान्यतया जो प्रदर्शन होता है आदि यह सभी कुकर्म हैं। أعاذنا الله منها

[3]पाप, अल्लाह की अवज्ञा का नाम है। तथा एक हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "पाप वह है जो तेरे सीने में खटके, तथा लोगों को इसकी सूचना हो जाने पर तू बुरा समझे।"(सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्र) तथा कुछ लोग कहते हैं कि पाप वह है जिस का प्रभाव, करने वाले तक सीमित हो तथा بغي (बग़्य) वह है कि इसके प्रभाव

The Ummah Technology Mission

تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾

अल्लाह के साथ उसे मिश्रित करने को जिसका उसने कोई तर्क नहीं उतारा तथा अल्लाह पर अज्ञात बातें बोलने को।

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा प्रत्येक समुदाय का एक निर्धारित समय है[1] फिर जब उनका निश्चित समय आ जाये तो न एक पल की देर होगी न सवेर।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) हे आदम के पुत्रो ! यदि तुम्हारे पास तुम में से मेरे रसूल (दूत) आयें जो तुम्हारे समक्ष मेरी आयतों का वर्णन करें तो जो संयम बरतेगा तथा सुधार कर लेगा उन्हीं पर न कोई भय होगा और न दु:खी होंगे।[2]

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा जिन्होंने हमारे आदेशों को नकारा। एवं उनसे अहंकार किया वही नरकीय हैं वही उसमें सदा रहेंगे।[3]

दूसरों तक भी पहुँचें। यहाँ बग़ी के साथ अनावश्यक का अर्थ, अनावश्यक अत्याचार तथा कठोरता जैसे लोगों के अधिकारों का हनन करना, किसी का माल छीन लेना, अनावश्यक मारना-पीटना तथा बुरा-भला एवं कटुवचन कह कर अपमानित करना आदि है।

[1]निर्धारित समय से तात्पर्य वह अवसर है जो अल्लाह (परमेश्वर) प्रत्येक के परीक्षा के लिये देता है कि वह इस अवसर का लाभ उठाकर अल्लाह को प्रसन्न करने का प्रयास करता है अथवा उसके विद्रोह एवं दुष्टता में और अधिकता होती है। यह अवसर कभी आजीवन होता है अर्थात संसारिक जीवन में वह नहीं पकड़ता अपितु परलोक ही में दण्ड देगा, इन का निर्धारित समय प्रलय दिवस ही है तथा जिन को संसार में दण्डित कर देता है उन का निर्धारित समय वह है जब उन्हें पकड़ लेता है।

[2]यह उन लोगों के सुपरिणाम का वर्णन है, जो संयम तथा सत्कर्म से सुशोभित होंगे। क़ुरआन ने ईमान के साथ अधिकतर स्थान पर पुण्य के कार्यों का वर्णन अवश्य किया है, जिससे ज्ञात होता है कि अल्लाह के समक्ष वही ईमान मान्य है जिसके साथ पुण्य के कार्य भी होंगे।

[3]इसमें ईमानवालों के विपरीत उन लोगों के कुपरिणामों का वर्णन किया गया है, जो अल्लाह के आदेशों को झुठलाते हैं तथा उनके समक्ष घमण्ड करते हैं। ईमानवालों तथा

The Ummah Technology Mission

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿۳۷﴾

(३७) उस से अधिक अत्याचारी कौन है जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा अथवा उस की आयतों (आदेशों) को झुठला दिया, इन को किताब से निर्धारित भाग पहुँचेगा [1] यहाँ तक कि जब उनके पास हमारे फ़रिश्ते (यमदूत) उन के प्राण निकालने आयेंगे तो कहेंगे कि वह कहाँ हैं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवाये पुकारते रहे, वे कहेंगे हम से खो गये तथा अपने काफ़िर (अधर्मी) होने को स्वयं स्वीकार कर लेंगे।

قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ فِي النَّارِ ؕ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ

(३८) वह (अल्लाह) कहेगा कि जिन्नों तथा इन्सानों के उन गिरोहों के साथ जो तुम से पूर्व गुजर गये[2] नरक में प्रवेश कर जाओ, जब कोई गिरोह प्रवेश करेगा तो दूसरे को धिक्कार

काफ़िरों दोनों के परिणाम का वर्णन करने का उद्देश्य यह है कि लोग उस व्यवहार को अपनायें जिसका परिणाम अच्छा है तथा उस व्यवहार से बचें जिसका परिणाम बुरा है।

[1]इसके विभिन्न भावार्थ वर्णन किये गये हैं। एव अर्थ कर्म, जीविका तथा आयु के किया गया है। अर्थात उनके भाग्य में जो कर्म तथा जीविका है, उसे पूरा कर लेने तथा जितनी आयु है, उसे व्यतीत कर लेने के पश्चात् अन्ततः मृत्यु को गले लगाना होगा। उसके समान यह आयत है।

﴿إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ * مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ﴾

"जो लोग अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं, वह सफल नहीं होंगे, संसार का क्षणिक लाभ उठाकर, अन्ततः हमारे पास उन्हें लौटकर आना है।" (सूरः यूनुस -६९, ७०)

[2]उमम, उम्मत का बहुवचन है। तात्पर्य वह वर्ग तथा समुदाय है, जो अविश्वास एवं विरोध तथा बहुदेववाद तथा अनिष्ठा में एक समान होंगें। في का अर्थ सहित भी हो सकता है अर्थात तुम से पूर्व मनुष्यों तथा जिन्नों में जो गिरोह तुम जैसे यहाँ आ चुके हैं, उनके साथ नरक में प्रवेश करो अथवा उन में सम्मिलित हो जाओ।

The Ummah Technology Mission

أُخْتَهَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا
قَالَتْ أُخْرَاهُمْ لِأُولَاهُمْ رَبَّنَا
هَٰؤُلَاءِ أَضَلُّونَا فَآتِهِمْ عَذَابًا
ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۖ قَالَ لِكُلٍّ
ضِعْفٌ وَلَٰكِن لَّا تَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾

करेगा[1] यहाँ तक कि जब उस (नरक) में सभी एकत्र हो जायेंगे[2] तो उन के अनुगामी अपने अग्रगामियों के विषय में कहेंगे[3] कि हे हमारे पालनहार, इन्हों ने ही हम को विपथ बनाया तू इन्हें नरक का दुगना दंड दे।[4] (अल्लाह) कहेगा कि प्रत्येक के लिये दुगना है[5] परन्तु तुम नहीं जानते।

وَقَالَتْ أُولَاهُمْ لِأُخْرَاهُمْ فَمَا
كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍ

(३९) तथा आगामी अपने अनुगामियों से कहेंगे कि हम पर तुम्हारी कोई प्रधानता नहीं, अत:

﴿لَعَنَتْ أُخْتَهَا﴾ का अर्थ है अपने समान दूसरे गुट को धिक्कारेगी। "उख्त" अरबी भाषा में बहन को कहते हैं। एक गिरोह (समुदाय) को दूसरे गिरोह (समुदाय) की बहन धर्म के आधार पर अथवा भटकाव के कारण कहा गया है। अर्थात दोनों ही एक असत्य धर्म के अनुयायी थे अथवा भटके थे अथवा नरक के साथी होने के कारण उनको एक-दूसरे की बहन कहा गया है।

[2] ادّاركوا का अर्थ है تَدارَكُوا जब एक-दूसरे से मिलेंगे तथा एकत्रित होंगे।

[3] أخرى (पिछले) से तात्पर्य बाद में प्रवेश करने वाले तथा أولى से तात्पर्य उनसे पूर्व प्रवेश होने वाले हैं। अथवा पिछलों से अनुकरण तथा पूर्व से नेतृत्व करने वाले मुखिया का तात्पर्य है। उनका अपराध अत्यधिक है क्योंकि वे स्वयं सत्यमार्ग से दूर रहे तथा दूसरों को भी प्रयत्न करके दूर रखा, इसलिए वह अपने अनुसरण करने वाले से पहले नरक में जायेंगे।

[4] जिस प्रकार से एक-दूसरे स्थान पर फ़रमाया गया है। नरकवासी कहेंगे।

﴿رَبَّنَآ إِنَّآ أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا فَأَضَلُّونَا ٱلسَّبِيلَا۠ ۞ رَبَّنَآ ءَاتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ ٱلْعَذَابِ وَٱلْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا﴾

"हे हमारे प्रभु! हम तो अपने प्रमुखों तथा पूर्वजों के अनुगामी हैं, अत: उन्होंने हमें सीधे मार्ग से भटका दिया, हे मेरे प्रभु! इनको दुगुना प्रकोप (यातना) दे तथा उन पर बड़ी धिक्कार कर।" (सूर: अल-अहजाब-६७,६८)

[5] अर्थात अब एक-दूसरे को धिक्कारने तथा कोसने से कोई लाभ नहीं, तुम सभी अपने-अपने स्थान पर अपराधी थे, तुम सभी दुगुने दण्ड के अधिकारी हो। नेताओं तथा अनुगामियों का यह संवाद सूर: सबा-३१ तथा ३२ में भी वर्णन किया गया है।

The Ummah Technology Mission

فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٣٩﴾

तुम भी अपने कर्मों के कारण यातना का स्वाद लो।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤٠﴾

(४०) नि:सन्देह जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तथा उन से अहंकार किया उनके लिये आकाश के द्वार नहीं खोले जायेंगे[1] तथा वे स्वर्ग में प्रवेश नहीं पायेंगे जब तक ऊँट सूई के नाके में प्रवेश न कर जाये[2] तथा हम पापियों को इसी प्रकार प्रतिकार देते हैं।

لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾

(४१) उनके लिए नरक की अग्नि का बिस्तर होगा तथा उनके ऊपर उसी का ओढ़ना होगा,[3] तथा हम अत्याचारियों को ऐसा ही दण्ड देते हैं।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ ۙ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٤٢﴾

(४२) तथा जो विश्वास एवं सदाचार किये हम किसी प्राण को उसकी शक्ति अनुसार ही उत्तरदायी बनाते हैं,[4] यही स्वर्गीय हैं यही उसमें सदा वास करेंगे।

---

[1] इसका भावार्थ कुछ ने कर्म, कुछ ने प्राण तथा कुछ ने विनय लिया है अर्थात उन के कर्मों अथवा प्राणों अथवा विनय के लिये आकाश के द्वार नहीं खोले जायेंगे अर्थात कर्म तथा विनय स्वीकार नहीं की जाती तथा प्राण धरती की ओर लौटा दिये जाते हैं जैसा कि मुसनद अहमद भाग-२, पृ० ३६४, ३६५) की एक हदीस से भी विदित होता है। प्रकांड विद्वान इमाम शौकानी कहते हैं तीनों भावार्थ लिये जा सकते हैं।

[2] यह असम्भव बात है। जिस प्रकार ऊँट का सुई के छिद्र से पार होना असम्भव है उसी प्रकार काफ़िरों का स्वर्ग में प्रवेश असम्भव है।

[3] غـواش शब्द غاشية का बहुवचन है, जिसका अर्थ है "ढक लेने वाली" अर्थात आग ही उनका ओढ़ना होगा अर्थात ऊपर से भी आग ढाँक लेगी।

[4] यह प्रासंगिक वाक्य है जिसका उद्देश्य यह बताना है कि ईमान तथा सत्कर्म, ये ऐसी चीजें नहीं है जो मनुष्य की शक्ति से अधिक हों तथा मनुष्य इनको करने की शक्ति न रखता

The Ummah Technology Mission

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَٰذَا ۖ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ ۚ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ

(४३) तथा हम उनके दिलों के कपट का निवारण कर देंगे[1] उन के नीचे नदियाँ प्रवाहित होंगी। और वह कहेंगे, अल्लाह के लिये सभी प्रशंसा है जिसने हमें इस के मार्ग पर लगाया यदि वह मार्गदर्शन न कराता तो हम स्वयं मार्ग पर नहीं लगते।[2] सचमुच हमारे

हो। अपितु प्रत्येक मनुष्य सरलता से इनको अपना सकता है तथा उनकी आवश्यकताओं अथवा माँगों को पूरा कर सकता है।

[1] غـل उस ईर्ष्या को कहते हैं जो हृदय में दबी हो। अल्लाह तआला स्वर्ग वालों पर यह कृपा भी करेगा कि उनके हृदय एक-दूसरे के लिए दर्पण की भाँति साफ कर देगा, किसी के विषय में किसी को कोई द्वेष अथवा घृणा नहीं रह जायेगी। कुछ ने इसका अर्थ यह निकाला है कि स्वर्ग वालों के मध्य जो पद तथा सम्मान का अन्तर होगा, उस पर एक-दूसरे से ईर्ष्या नहीं करेंगे। पहले भावार्थ की एक हदीस से पुष्टि होती है कि स्वर्ग वालों को स्वर्ग तथा नरक के मध्य पुल पर रोक लिया जायेगा तथा उनके मध्य आपस में जो कटुता होगी, एक-दूसरे को उनका बदला दे दिया जायेगा। यहाँ तक कि वे जब पूर्णरूप से शुद्ध एवं पवित्र हो जायेंगे तो उनको स्वर्ग में प्रवेश करने की आज्ञा प्रदान कर दी जायेगी (सहीह बुख़ारी किताबुल मज़ालिम) जैसे सहाबा की आपसी कटुता है जो राजनैतिक प्रतिद्वन्दता के कारण उत्पन्न हुई। आदरणीय अली (رضي الله عنه) का कथन है, "मुझे आशा है कि मैं, उस्मान तथा तल्हा एवं ज़ुबैर उन लोगों में से होंगे जिन के विषय में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है। ﴿ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ ﴾" (इब्ने कसीर)

[2] अर्थात यह मार्गदर्शन जिससे हमें ईमान तथा सत्कर्म का जीवन प्राप्त हुआ तथा उन्हें अल्लाह के दरबार में स्वीकार करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। यह अल्लाह तआला की विशेष कृपा है तथा उसका उपकार है। यदि यह कृपा तथा उपकार अल्लाह का न होता तो हम इस स्थान तक नहीं पहुँच सकते थे। इसी भावार्थ की यह हदीस भी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "यह बात भली-भाँति जान लो कि तुम में से किसी का कर्म स्वर्ग में नहीं ले जायेगा, जब तक कि अल्लाह तआला की कृपा भी न होगी।" सहाबा (उनसे परमेश्वर प्रसन्न हो गया) ने पूछा, "हे ईशदूत (आप पर अल्लाह की कृपा तथा शान्ति हो) आप भी ?" आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "हाँ, मैं भी उस समय तक स्वर्ग में नहीं जाऊगा जब तक अल्लाह की कृपा मुझे अपने दामन में न ले लेगी।" (सहीह बुख़ारी किताबुल रिक़ाक़ बाबुल क़स्द वल मदावम: अलल अमल, सहीह मुस्लिम किताबु सिफ़ तुल क़ियाम: बाब लन् यद्ख़ुल अहदुल जन्न: बे अमलेही)

The Ummah Technology Mission

رَبِّنَا بِالْحَقِّ ط وَنُودُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾

प्रभु के उपदेशक सत्य के साथ आये। तथा उन से घोषणा स्वरूप कहा जायेगा कि अपने कर्म के बदले तुम इस स्वर्ग के उत्तराधिकारी बना दिये गये।[1]

وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ط قَالُوْا نَعَمْ ج فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾

(४४) तथा स्वर्गवासी नरकवसियों को पुकारेंगे कि हम ने अपने परमेश्वर के वचन को जो हमें दिया सत्य पाया तो क्या तुम से तुम्हारे परमेश्वर ने जो वायदा किया सत्य पाया।[2] वे कहेंगे हाँ, फिर एक उदघोषक उनके बीच पुकारेगा कि अल्लाह का धिक्कार अत्याचारियों पर है।

الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ج وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٥﴾

(४५) जो अपने परमेश्वर के मार्ग से रोकना और उसे टेढ़ा करना चाहते हैं तथा वे परलोक का भी इन्कार करते हैं।

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ج وَعَلَى الْاَعْرَافِ

(४६) तथा उन दोनों के बीच एक पर्दा होगा[3]

---

[1]यह व्याख्या पिछली बात तथा वर्णित हदीस के विपरीत नहीं है। इसलिए कि पुण्य का सौभाग्य भी स्वयं अल्लाह का उपकार तथा कृपा है।

[2]यही बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बद्र के अवसर पर जब काफ़िर मारे गये तथा उन के शव एक कुऐं में फेंक दिये गये उन्हें सम्बोधित करते हुए कही, जिस पर आदरणीय उमर (رضي الله عنه) ने कहा, "आप ऐसे लोगों को सम्बोधित कर रहे हैं जो मर चुके हैं।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "अल्लाह की सौगन्ध, मैं उन्हे जो कुछ कह रहा हूँ, वह तुम से अधिक सुन रहे हैं, परन्तु अब वे उत्तर देने की शक्ति नहीं रखते।" (सहीह मुस्लिम किताबुल जन्न:, बाब अरदे मक्अदिल मय्यित मिनल जन्नते अविन्नारे तथा बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब क़त्ले अबी जहल)

[3]"इन दोनों के मध्य" से तात्पर्य स्वर्ग नरक के मध्य अथवा ईमानवालों तथा काफिरों के मध्य है। हिजाबुन (حجاب) (आड़ अथवा पट) से दीवार तात्पर्य है जिस का वर्णन सूर: हदीद में है।

﴿فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ﴾

The Ummah Technology Mission

رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّا بِسِيْمٰهُمْ ۚ وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۫ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ﴿٤٦﴾

एवं "आराफ़" पर कुछ पुरुष होंगे[1] जो प्रत्येक को उनके लक्षणों से पहचान लेंगे,[2] तथा स्वर्ग-वासियों को पुकारेंगे कि तुम पर शान्ति हो, वह उस (स्वर्ग) में प्रवेश नहीं पाये होंगे तथा उसकी आशा रखते होंगे।[3]

وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा जब उनकी आँखें नरकवासियों पर पड़ेंगी तो कहेंगे कि हमारे परमेश्वर हमें अत्याचारियों के साथ न करना।

وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ قَالُوْا مَآ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा आराफ़ वाले कुछ लोगों को जिन्हें उनके लक्षणों से पहचानते होंगे पुकारेंगे कि तुम्हारी भीड़ एवं तुम्हारा अहंकार तुम्हारे काम नहीं आया।[4]

"तो उनके मध्य एक दीवार खड़ी कर दी जायेगी, जिसमें एक द्वार होगा।" (सूरः *अल-हदीद*-१३) यही "आराफ़" की दीवार है।

[1]यह कौन होंगे? उनके निर्धारण के लिए व्याख्याकारों में अत्यन्त मतभेद है। अधिकतर व्याख्याकारों का विचार है कि यह वे लोग होंगे जिनके पुण्य तथा पाप समान होंगे। उनके पुण्य नरक में जाने से तथा पाप स्वर्ग में जाने से रोकेंगे तथा इस प्रकार अल्लाह की ओर से अन्तिम निर्णय होने तक वह अधर में लटके होंगे।

[2] سيماء (सीमाअ) का अर्थ चिन्ह हैं। स्वर्ग वालों के मुख प्रकाश की ज्योति से उज्जवल होंगे तथा किसी पर थकावट के चिन्ह नहीं होंगे एवं नरक वालों के मुख काले तथा आँखें नीली होंगी। इस प्रकार वह दोनों प्रकार के लोगों को मुख चिन्हों से पहचान लेंगे।

[3]यहाँ يطمعون (यतमअुन) का अर्थ कुछ ने (यअलमून) किये हैं अर्थात उनको ज्ञान होगा कि वह निकट ही स्वर्ग में प्रवेशित कर दिये जायेंगे।

[4]ये नरक वाले लोग होंगे जिनको आराफ़ वाले उनके चिन्हों से पहचान लेंगे तथा वे अपने गुट तथा श्रेष्ठता पर जो घमण्ड करते थे, उसके उद्धरण देकर उन्हें याद दिलायेंगे कि ये वस्तुयें तुम्हारे काम न आयीं।

The Ummah Technology Mission

أَهَٰٓؤُلَآءِ ٱلَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ ٱللَّهُ بِرَحْمَةٍ ۖ ٱدْخُلُوا ٱلْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ أَنتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿٤٩﴾

(४९) क्या यहीं हैं जिनके विषय में तुम बल-पूर्वक शपथ ले रहे थे कि इन (स्वर्गवासियों) पर अल्लाह की कृपा [1] नहीं होगी (उन से कहा जायेगा) कि स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ तुम पर कोई भय नहीं और न तुम क्षुब्ध होगे।

وَنَادَىٰٓ أَصْحَٰبُ ٱلنَّارِ أَصْحَٰبَ ٱلْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ ٱلْمَآءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ ٱللَّهُ ۚ قَالُوٓا۟ إِنَّ ٱللَّهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿٥٠﴾

(५०) तथा नरक के साथी स्वर्ग के साथियों को पुकारेंगे कि हम पर कुछ पानी डाल दो अथवा अल्लाह ने तुम्हें जो जीविका प्रदान की है उसमें से कुछ, वे कहेंगे अल्लाह ने दोनों को विश्वासहीनों के लिये निषेध कर दिया है।[2]

ٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُوا۟ دِينَهُمْ لَهْوًا وَلَعِبًا وَغَرَّتْهُمُ ٱلْحَيَوٰةُ ٱلدُّنْيَا ۚ فَٱلْيَوْمَ نَنسَىٰهُمْ كَمَا نَسُوا۟ لِقَآءَ

(५१) जिन्होंने अपने धर्म को मनोरंजन एवं खेल बना लिया तथा भौतिक जीवन ने जिन को फुसला दिया, अतः आज हम उन्हें भूल जायेंगे।[3]

---

[1] इससे तात्पर्य ईमान वाले हैं जो संसार में निर्धन, कंगाल, असहाय तथा कमजोर प्रकार के लोग थे जिनका उपहास वर्णित घमण्डी लोग उड़ाया करते थे तथा कहा करते थे कि यदि ये अल्लाह के प्रिय होते तो इनका दुनिया में यही हाल होता? उसके उपरान्त और दुस्साहस करके दावा करते कि क़ियामत वाले दिन अल्लाह की कृपा हम पर होगी (जिस प्रकार से दुनिया में हो रही है) न कि इन पर। कुछ व्याख्याकार इस कथन को आराफ़ वालों के मुख से माना है। तथा कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि जब आराफ़ वाले नरक वालों को यह कहेंगे, "तुम्हारा गुट तथा तुम्हारा अपने को श्रेष्ठ समझना तुम्हारे कुछ काम नहीं आया।" तो उस समय अल्लाह की ओर से स्वर्ग वालों की ओर संकेत करते हुए कहा जायेगा, "यह वही लोग हैं जिनके विषय में तुम सौगन्ध खा-खाकर कहते थे कि उन पर अल्लाह की कृपा नहीं होगी (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[2] जिस प्रकार पूर्व में गुज़र चुका है कि खाने-पीने की सुख-सुविधायें क़ियामत के दिन केवल ईमानवालों के लिए होंगी। ﴿خَالِصَةً يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ﴾ (आयत संख्या-३२) यहाँ इसका अधिक स्पष्टीकरण स्वर्ग वालों के मुख से करा दिया गया है।

[3] हदीस में आता है, क़ियामत के दिन अल्लाह तआला अपने इस प्रकार के भक्त से कहेगा, "क्या मैं ने तुझे पत्नी तथा संतान प्रदान नहीं की थी? तुझे मान-सम्मान से विभूषित नहीं किया था? क्या ऊँट-घोड़े तेरी सेवा के लिए नहीं कर दिये थे? तथा क्या

The Ummah Technology Mission

يَوْمِهِمْ هٰذَا وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿٥١﴾

जैसे वह इस दिन को भूल गये तथा हमारी आयतों को नकारते रहे।

وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾

(५२) तथा हमने उन के पास एक शास्त्र ज्ञान पर आधारित सविस्तार विवरण के साथ भेज दिया है[1] जो मार्गदर्शन एवं दया है उन के लिये जो विश्वास रखते हैं।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ

(५३) क्या वह इसके अन्तिम परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे हैं ?[2] जिस दिन इस का अन्तिम परिणाम आ जायेगा, तो जिन लोगों ने इस

तू नेतृत्व करते समय लोगों से कर नहीं लेता था ? वह कहेगा, क्यों नहीं ? ऐ अल्लाह यह सभी बातें सत्य हैं। अल्लाह तआला उससे पूछेगा, क्या तू मुझसे मिलने पर विश्वास रखता था ? वह कहेगा नहीं। अल्लाह तआला फ़रमायेगा, जिस प्रकार तू मुझे भूला रहा, तुझे आज मैं भूल जाता हूँ" (सहीह मुस्लिम किताबुल ज़ुहद)। क़ुरआन करीम की इस आयत से यह भी ज्ञात होता है कि धर्म को खेलकूद बनाने वाले वही लोग होते हैं जो दुनिया के छल में लीन हो जाते हैं। ऐसे लोगों के हृदय से आख़िरत की चिन्ता तथा अल्लाह का भय निकल जाता है। इसलिए वह धर्म में भी अपनी ओर से जो कुछ चाहते हैं बढ़ा लेते हैं तथा धर्म के जिस भाग को चाहते हैं कर्म शून्य कर देते हैं अथवा उन्हें खेल-कूद का रूप दे देते हैं।

[1]यह अल्लाह तआला नरक वालों के विषय में ही कह रहा है कि हम नें पूर्ण ज्ञान के आधार पर ऐसी किताब भेज दी थी, जिसमें प्रत्येक बात स्पष्ट करके वर्णन कर दिया गया था। उन लोगों ने इससे लाभ नहीं उठाया, तो उनका दुर्भाग्य, वरन् जो लोग इस पर ईमान ले आये, वह मार्गदर्शन तथा अल्लाह की कृपा से लाभान्वित हुए। अर्थात हमने तो

﴿ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ﴾

"जब तक हम रसूल भेज कर सभी तर्क पूर्ण नहीं कर देते, हम यातना नहीं देते" (सूरः *बनी इस्राईल*-१५) के अनुसार प्रबन्ध कर दिया था।

[2]तावील का अर्थ है किसी वस्तु की वास्तविकता तथा परिणाम। अर्थात अल्लाह की किताब के द्वारा वायदा तथा चेतावनी तथा स्वर्ग-नरक आदि का वर्णन कर दिया था परन्तु ये उस दुनिया का परिणाम अपनी आँखों से देखने की प्रतीक्षा में थे, तो अब वह परिणाम उनके समक्ष आ गया।

The Ummah Technology Mission

رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِىْ كُنَّا نَعْمَلُ ۭ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝

से पूर्व उसे भुला दिया वह कहेंगे कि हमारे परमेश्वर के उपदेशक सत्य ले कर आये, तो क्या कोई हमारा सिफ़ारिशी है जो हमारे लिये सिफ़ारिश कर दे, अथवा हम पुन: (संसार में) भेज दिये जाते तो उसके सिवाये कर्म करते जो करते रहे, उन्होंने स्वयं को क्षति में डाल दिया तथा जो बातें मढ़ते रहे उनसे खो गईं।[1]

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۣ يُغْشِى

(५४) वस्तुत: तुम्हारा पोषक अल्लाह ही है जिस ने आकाशों एवं धरती को छ: दिन में रचा,[2] तथा फिर अर्श (सिंहासन) पर स्थिर हो

---

[1]अर्थात यह जिस परिणाम की प्रतीक्षा में थे, उनके समक्ष आ जाने के पश्चात् सत्यता को स्वीकार करने अथवा पुन: दुनिया में भेजने की इच्छा तथा अन्य किसी सिफ़ारिश करने वाले की खोज, यह सब बेकार होगी। वे ईष्टदेव भी उनसे लुप्त हो जायेंगे, जिन की वह अल्लाह को छोड़ कर इबादत करते थे, वह न उनकी सहायता कर सकेंगे, न सिफ़ारिश तथा न नरक की यातना से ही छुड़ा सकेंगे।

[2]ये छ: दिन रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुद्धवार, वृहस्पतिवार तथा शुक्रवार हैं। शुक्रवार के दिन ही आदरणीय आदम को पैदा किया गया। शनिवार के दिन कहते हैं कुछ भी पैदा नहीं किया गया, इसीलिए इसे अरबी भाषा में योमुस सब्त कहा जाता है। क्योंकि सब्त का शाब्दार्थ 'काटना' है अर्थात उस दिन सृष्टि का कार्य सामाप्त कर दिया गया। फिर उस दिन से क्या तात्पर्य है ? हमारी दुनिया के दिन, जो सूर्योदय से प्रारम्भ होकर सूर्यास्त पर समाप्त हो जाता है। अथवा यह दिन हज़ार वर्षों के समान है ? जिस प्रकार अल्लाह के यहाँ दिन की गणना है, अथवा जिस प्रकार से क़ियामत के दिन के विषय में आता है। स्वभाविक रूप से दूसरी बात अधिक उचित प्रतीत होती है। क्योंकि उस समय तक तो सूर्य तथा चन्द्रमा का यह नियम ही नहीं था, आकाश तथा धरती की सृष्टि के पश्चात ही यह नियम प्रारम्भ हुआ। दूसरे यह कि यह परलोक की बात है, जिसका संसार अर्थात इस लोक से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसलिए इस दिन की वास्तविकता तो अल्लाह ही जानता है। हम दृढ़ता से कोई बात नहीं कह सकते। क्योंकि इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला को तो अरबी भाषा के शब्द 'कुन' (كن) कह देना ही पर्याप्त है तथा वह हो जाता है, इसके अतिरिक्त उसने प्रत्येक वस्तु को विभिन्न प्रकार से उत्पन्न किया है, इसकी भी वास्तविकता अल्लाह तआला ही जानता है, फिर भी कुछ आलिमों ने उसकी एक बुद्धिमत्ता लोगों को सुविधा, सम्मान, तथा क्रमिक रूप से कार्य करने कि शिक्षा देना बताया है। والله أعلم

The Ummah Technology Mission

الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۵۴﴾

गया,[1] वह रात्रि को दिन से ऐसे छुपा देता है, कि वह उसे तीव्र गति से आ लेती है [2] तथा सूर्य एवं चन्द्रमा तथा सितारे को रचा कि वे उस के आदेशाधीन हैं, सुन लो उसी की रचना तथा उसी का आदेश है, सर्वलोक का पोषक अति शुभ है।

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۵۵﴾

(५५) अपने परमेश्वर को नम्रतापूर्वक एवं चुपके से भी पुकारो, वह अतिक्रमणकारियों से प्रेम नहीं करता है।

وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ

(५६) तथा धरती में सुधार के पश्चात बिगाड़ न उत्पन्न करो एवं भय तथा आशा के साथ

---

[1] استواء (इस्तेवा) के अर्थ हैं 'उच्च' तथा' स्थिर' होना तथा सलफ़ ने बिना किसी भौतिक संरचना तथा बिना किसी तुलना के यही अर्थ लिए हैं। अर्थात अल्लाह तआला अर्श पर उच्च तथा स्थिर है। परन्तु किस प्रकार, किस स्थिति में, इसे हम वर्णन नहीं कर सकते न किसी प्रकार की तुलना अथवा उपमा ही प्रस्तुत कर सकते हैं नईम बिन हम्माद का कथन है, "जिस ने भी अल्लाह की तुलना अथवा उपमा किसी सृष्टि के साथ दिया उसने भी कुफ़्र किया तथा जिसने अल्लाह की, अपने विषय में वर्णित बात का इंकार किया उस ने भी कुफ़्र किया।" तथा अल्लाह के विषय में उसकी अथवा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा वर्णन की गई बात को वर्णन करना उपमा नहीं है। इसलिए जो बातें अल्लाह तआला के विषय में धार्मिक नियमों में वर्णन मिलते हैं तथा उनकी पुष्टि होती है उन पर बिना किसी तर्क तथा बिना स्थिति जाने तथा बिना उपमा के ईमान रखना आवश्यक है। (इब्ने कसीर)

[2] حثيثا (हषीषण) का अर्थ है अत्यधिक तीव्र गति से। तथा अर्थ है कि एक के पश्चात् दूसरा तुरंत आ जाता है। अर्थात दिन का प्रकाश आता है तो रात्रि का अंधेरा शीघ्र ही समाप्त हो जाता है तथा रात्रि आती है तो दिन का प्रकाश समाप्त हो जाता है तथा दूर तथा निकट अंधेरा छा जाता है।

The Ummah Technology Mission

قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾

उसकी आराधना करो, निश्चय अल्लाह की दया सदाचारियों से निकट है।[1]

وَهُوَ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٧﴾

(५७) और वही अल्लाह है जो अपनी दया से पूर्व शुभ सूचना[2] के लिये हवायें भेजता है यहाँ तक कि जब वह भारी मेघों को लाद कर लाती हैं[3] तो हम उसे किसी सूखी धरती की ओर हाँक देते हैं फिर उससे जल वर्षा करते हैं फिर उससे प्रत्येक प्रकार के फल निकालते हैं।[4] हम इसी प्रकार मृतकों को निकालेंगे ताकि तुम विचार करो।[5]

---

[1]इन आयतों में चार बातों की शिक्षा दी गयी है : १. अल्लाह (परमेश्वर) से रोकर एवं धीमे स्वर में विनय की जाये। जिस प्रकार हदीस में आता है, "ऐ लोगो ! अपने जान के ऊपर दया करो (अर्थात धीमे स्वर से विनय करो) जिसको पुकार रहे हो, वह न बधिर है तथा न अनुपस्थित, वह तुम्हारी प्रार्थनायें सुनने वाला है तथा तुम्हारे निकट है।"(सहीह बुखारी प्रार्थना पुस्तक अध्याय घाटी पर चढ़ने के समय प्रार्थना, मुस्लिम स्वर्ग पुस्तक, धीमे स्वर से जाप करने की प्रधानता का अध्याय) २. प्रार्थना में अधिकता न की जाये अर्थात अपने पद तथा शक्ति से अधिक प्रार्थना न की जाये ३. सुधार के पश्चात उपद्रव न फैलाया जाये अर्थात अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करके उपद्रव फैलाने में भाग न लिया जाये। ४. उसके प्रकोप का भय भी दिल में हो तथा उसकी कृपा की आशा भी। इस प्रकार से प्रार्थना करने वाले अच्छे व्यक्ति हैं कि अवश्य अल्लाह की कृपा उनके निकट है।

[2]इस में अल्लाह (परमेश्वर) अपने पूज्य एवं पोषक होने का अन्य तर्क दे रहा है, फिर इस से पुनर्जीवित करने का प्रमाण दे रहा है। यहाँ दया से तात्पर्य वर्षा है अर्थात वर्षा से पहले वह शीतल वायु चलाता है जो वर्षा की शुभ सूचक होती है।

[3]भारी बादल से तात्पर्य जल से परिपूर्ण मेघ है।

[4]प्रत्येक प्रकार के फल, जो रंगों, तथा स्वादों एवं सुगंध में तथा रूप-रेखा में विभिन्न होते हैं।

[5]जिस प्रकार से हम वर्षा करके प्रायः मृत धरती में जीवन उत्पन्न कर देते हैं तथा वह विभिन्न प्रकार के अनाज तथा फल पैदा करती है। उसी प्रकार क़ियामत के दिन सभी

The Ummah Technology Mission

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِیْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ؕ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ۝۵۸

(५८) तथा स्वच्छ धरती प्रचूरता से अपने पौधे उपजाती है एवं ख़राब (भूमि) अति अल्प उपज लाती है,[1] इसी प्रकार हम लक्षणों को विभिन्न प्रकार से वर्णन करते हैं, ताकि तुम कृतज्ञता व्यक्त करो।

لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنِّیْۤ

(५९) हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को उन के वर्ग के पास भेजा तो उन्होंने कहा हे मेरे वर्ग, अल्लाह की इबादत करो उस के सिवाय

मनुष्यों को जो मिट्टी में मिलकर मिट्टी हो चुके होंगे, हम पुनर्जीवित करेंगे तथा फिर उनका निर्णय करेंगे।

[1]इसके अतिरिक्त यह उदाहरण भी हो सकता है। البلد الطيب से तात्पर्य शीघ्र समझने वाले البلد الخبيث से कुबुद्धि-भाषण तथा शिक्षा स्वीकार करने वाला दिल तथा उसके विपरीत दिल, ईमानवालों का दिल तथा अवसरवादियों का दिल अथवा पवित्र मनुष्य तथा अपवित्र मनुष्य। ईमानवाले, पवित्र मनुष्य तथा भाषण एवं शिक्षा ग्रहण करने वाला दिल वर्षा को स्वीकार करने वाली धरती के समान है, जो अल्लाह के मन्त्रों को सुन कर ईमान लाते हैं तथा पुण्य कार्य करने में और दृढ़ हो जाते हैं तथा दूसरा दिल इसके विपरीत जो ऊसर भूमि के समान है जो वर्षा का पानी स्वीकार नहीं करती अथवा स्वीकार करती है तो थोड़ा-सा जिससे उपज भी कम होती है। इसको हदीस में इस प्रकार वर्णन किया गया है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वर्णन किया है, "मुझे अल्लाह तआला ने जो ज्ञान तथा निर्देश न देकर भेजा है, उसका उदाहरण इस मूसलाधार वर्षा के समान है जो धरती पर बरसी। उसके जो भाग उपजाऊ थे, उन्होंने पानी को अपने अन्दर सोख कर घास-फूस ख़ूब उगाया (अर्थात भरपूर उपज दी), उसके कुछ भाग कठोर थे जिन्होंने पानी रोक तो लिया (अन्दर सोखा नहीं) उससे अन्य लोगों ने लाभ उठाया, स्वयं भी पिया तथा खेतों की सिंचाई भी की तथा खेती की। तथा धरती का कुछ भाग बिल्कुल चटियल था, जिसने न पानी रोका तथा न कुछ उगाया। तो यह उस व्यक्ति का उदाहरण है जिस ने अल्लाह के धर्म में कुछ ज्ञान प्राप्त किया तथा अल्लाह ने मुझे जिस चीज़ के साथ भेजा उससे उसने लाभ उठाया, तथा स्वयं भी ज्ञान प्राप्त किया तथा दूसरों को भी सिखाया तथा उदाहरण उस व्यक्ति का भी है जिसने कुछ भी नही सीखा तथा न वह मार्गदर्शन ही स्वीकार किया जिसके साथ मुझे भेजा गया।" (सहीह बुख़ारी किताबुल इल्म बाब फ़ज़ले मन अलेम व अल्लम)

The Ummah Technology Mission

اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٥٩﴾

कोई तुम्हारा उपास्य नहीं, नि:संदेह मैं तुम पर घोर दिन की यातना से डरता हूँ।

قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦٠﴾

(६०) उनके वर्ग के प्रमुखों ने कहा कि हम आप को खुली कुपथा में देख रहे हैं।[1]

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦١﴾

(६१) उन्होंने कहा हे मेरे वर्ग के लोगो ! मैं विपथ नहीं परन्तु विश्व के पोषक का प्रतिनिधि हूँ।

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنْصَحُ لَكُمْ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾

(६२) तुम्हें तुम्हारे स्वामी का सन्देश पहुँचाता हूँ तथा तुम्हारी भलाई कर रहा हूँ तथा अल्लाह की ओर से वह ज्ञान रखता हूँ जो ज्ञान तुम नहीं रखते।

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٦٣﴾

(६३) क्या तुम्हें आश्चर्य है कि तुम्हारे पोषक की ओर से तुम्हारे वर्ग के एक पुरुष पर कोई आदेश की बात आई है ताकि तुम्हें सचेत करे, तथा तुम संयम बरतो[2] तथा ताकि तुम पर दया की जाये।

---

[1]शिर्क (अर्थात मिश्रणवाद) मानव मति को ऐसे विकार ग्रस्त कर देता है कि वह संमार्ग को कुमार्ग तथा कुमार्ग को संमार्ग समझने लगता है। ईशदूत नूह के वर्ग में भी यह भ्रम उत्पन्न हुआ। ईशदूत नूह जो उन्हें एकेश्वरवाद की ओर बुला रहे थे (परमेश्वर की श्रण) वह उन्हें विपथ दिख रहे थे।

[2]ईशदूत नूह (जल पलावन मनु) तथा आदम (आदिमनु) के बीच दस पीढ़ियों का अन्तर है। आदरणीय नूह से कुछ पहले तक सभी लोग इस्लाम धर्म के अनुयायी चले आ रहे थे फिर सर्वप्रथम एकेश्वरवाद से विमुखता ऐसे आई कि इस वर्ग के पुनीत लोगों का निधन हो गया तो उन के श्रद्धालुओं ने उन पर पूजास्थल बनाये तथा वहाँ उन के चित्र भी लटका दिये जिसका उद्देश्य यह था कि इस प्रकार उनके स्मरण से वह भी अल्लाह की उपासना करेंगे। कुछ समय व्यतीत होने पर उन्होंने इन चित्रों की मूर्तियाँ बनाईं फिर कुछ समय के पश्चात् यह मुर्तियाँ पूज्य के रूप में आ गईं तथा उन की पूजा होने लगी। नूह के वर्ग के यह पाँच पुनीत वद्द, स्वाअ, यगूस, यऊक तथा नस्र देवता बन गये। ऐसी दशा में

The Ummah Technology Mission

فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَ الَّذِيْنَ مَعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ﴿٦٤﴾

(६४) तो उन्होंने उन को झुठला दिया फिर हमने नूह तथा उनके अनुयायियों को नौका में बचा लिया तथा जो हमारी आयतें (निशानियाँ) नहीं माने उन्हें डूबो दिया। वस्तुत: वह एक अंधा वर्ग था।[1]

وَ اِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٦٥﴾

(६५) तथा आद के पास उनके भाई (ईशदूत) हूद को भेजा[2] उन्होंने कहा, हे मेरे वर्ग ! अल्लाह की आराधना करो, उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूज्य नहीं क्या तुम डरते नहीं ?

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦٦﴾

(६६) उन के समुदाय के विश्वासहीन प्रमुखों ने कहा, हमें तुम मूर्ख लग रहे हो,[3] वस्तुत: हम तुम को झूठों मे से समझते हैं।

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٧﴾

(६७) उन्होंने कहा, हे मेरे वर्ग के लोगो ! मुझ में मूर्खता नहीं परन्तु मैं विश्व के पोषक का संदेशवाहक हूँ।

अल्लाह ने आदरणीय नूह को उन का संदेशवाहक बनाकर भेजा जिन्होंने साढ़े नौ सौ वर्ष उन्हें आमन्त्रण दिया। किन्तु कुछ लोगों के सिवाय किसी पर आप की शिक्षा का प्रभाव नहीं पड़ा। अन्तत: निष्ठों के सिवाये सब जल प्रलय में डुबा दिये गये। इस आयत में बताया जा रहा है कि नूह के वर्ग ने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया कि इन्हीं में का एक व्यक्ति ईशदूत बन कर आया जो उन्हें अल्लाह के प्रकोप से डरा रहा है। अर्थात उनके विचार से मानव ईशदूत बनाने योग्य नहीं है।

[1]अर्थात सत्य से, सत्य को न देखते थे न अपनाने के लिए तैयार थे।

[2]यह आद वर्ग प्रथम आद थे जिनका निवास यमन की रेतीली पहाड़ियों पर था तथा अपने बल एवं शक्ति में अनुपम थे। इनकी ओर उन्हीं की जाति के एक व्यक्ति आदरणीय "हूद" ईशदूत बन कर आये।

[3]उन के विचार में उनके पूवर्जों के पूज्य को त्याग कर अद्वैत तथा एक की पूजा की बात मूर्खता थी।

The Ummah Technology Mission

أُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَأَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ أَمِيْنٌ ﴿٦٨﴾

(६८) मैं तुम्हें अपने परमेश्वर का संदेश पहुँचाता हूँ एवं तुम्हारा ईमानदार शुभचिन्तक हूँ ।

أَوَعَجِبْتُمْ أَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ط وَاذْكُرُوْٓا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ج فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾

(६९) क्या तम्हें आश्चर्य है कि तुम्हारे पोषक की ओर से कोई उपदेश की बात तुम्हीं में से एक पुरुष के पास आई है ताकि वह तुम्हें सचेत करे, तुम याद करो जब कि (अल्लाह) ने तुम्हें नूह के वर्ग के पश्चात उन के स्थान पर कर दिया तथा तुम्हारी आकृति को अधिक विस्तार दिया,[1] अत: तुम अल्लाह की अनुकम्पाओं को याद करो ताकि सफल हो जाओ ।

قَالُوْٓا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ج فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧٠﴾

(७०) उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिये आये हो कि हम मात्र एक अल्लाह की पूजा करें तथा अपने पूर्वजों के पूज्यों को त्याग दें ।[2] अत: तुम जिस की धमकी हमें देते हो लाओ यदि तुम सत्यवादी हो ।

---

[1]एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने इसके विषय में वर्णन किया है ।

﴿ الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ﴾

"इस जैसी शक्तिवाला समुदाय कहीं पैदा नहीं किया गया ।" (सूर: अल-फ़ज्र-८)

अपनी इस शक्ति के घमण्ड में आकर यह कहा कि ﴿ مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ﴾ "हमसे अधिक शक्तिशाली कौन है ?" अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "जिसने उन्हें पैदा किया है वह उनसे अधिक शक्तिशाली है ।" (सूर: हा॰ मीम॰ सजदः-१५)

[2]पूर्वजों का अनुकरण प्रत्येक समय में भटकावे का कारण रहा है । आद के समुदाय वालों ने भी यही तर्क प्रस्तुत किया तथा मूर्तिपूजा छोड़कर एकेश्वरवाद (तौहीद) का मार्ग अपनाने के लिए तैयार नहीं हुए । दुर्भाग्य से मुसलमानों में भी अपने पूर्वजों के अनुकरण का रोग सामान्य रूप से है ।

The Ummah Technology Mission

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ؕ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْۤ اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ فَانْتَظِرُوْۤا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿۷۱﴾

(७१) उन्होंने कहा कि तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर प्रकोप एवं क्रोध आ ही गया,[1] क्या तुम मुझ से कुछ ऐसे नामों के विषय में विवाद करते हो[2] जो तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिये हैं, जिनका कोई तर्क अल्लाह ने नहीं उतारा है। तुम प्रतीक्षा करो हम (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿۷۲﴾ ع

(७२) तो हम ने उसे तथा उसके अनुयायियों को अपनी दया से बचा लिया तथा उन लोगों की जड़ काट दी जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया एवं वे ईमान वाले नहीं थे।[3]

وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ

(७३) तथा समूद के पास उनके भाई सालेह को (भेजा)। उन्होंने कहा, हे मेरे वर्ग के लोगों! अल्लाह की इबादत करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे पोषक की ओर से प्रमाण आ गया। यह

---

[1] رجس का अर्थ अपवित्रता है, परन्तु यहाँ (रिज्स) رجز से बदला हुआ है जिस का अर्थ प्रकोप है, फिर यहाँ रिज्स खिन्नता तथा क्रोध के अर्थ में है। (इब्ने कसीर)

[2]इससे तात्पर्य वह नाम हैं जो उन्होंने अपने पूज्यों के रखे हुये थे जैसे सदा, समूद, हबा आदि जैसे नूह के वर्ग के पाँच देवताओं के नाम की चर्चा अल्लाह ने पवित्र क़ुरआन में की है। जैसे अरब के मूर्तिपूजकों के मूर्तियों के नाम लात, उज्जा, मनात तथा हुबल आदि थे, जैसे आधुनिक मिश्रणवादी आस्था एवं कर्मों में लीन लोगों के नाम रखे हुये हैं, उदाहरणार्थ "दाता गंज बख़्श", "खाजा ग़रीब नवाज़", "बाबा फरीद शकर गंज", "मुश्किल कुशा" आदि जिन के पूज्य अथवा मुश्किल कुशा (संकट मोचन) होने का कोई प्रमाण उनके पास नहीं।

[3]इस समुदाय पर हवाओं का प्रकोप आया जो निरंतर सात दिन आठ रातें चलता रहा तथा आद के लोगों के शव जिन्हें अपनी शक्ति पर बड़ा गर्व था खजूर के खोखले वृक्ष की भाँति धरती पर पड़े दिखाई दे रहे थे।

The Ummah Technology Mission

لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾

अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिये प्रमाण है। उसे अल्लाह की धरती में खाने को छोड़ दो उसे बुराई से हाथ न लगाना कि तुम्हें दु:खद यातना पकड़ ले।

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٧٤﴾

(७४) तथा तुम उन परिस्थितियों को याद करो जब अल्लाह ने तुमको आद (वर्ग) के पश्चात उत्तराधिकारी बनाया एवं धरती में तुम्हें निवास स्थान दिया, तुम उसकी समतल भूमि में भवनों को निर्माण करते हो।[1] तथा पर्वतों को काट कर घर बनाते हो।[2] तो अल्लाह की अनुकम्पाओं का स्मरण करो तथा धरती में उपद्रव करते न फिरो।[3]

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٧٥﴾

(७५) उनकी क़ौम के अहंकारी प्रमुखों ने कहा अपने निर्बलों से जो ईमान लाये थे कि क्या तुम्हें विश्वास है कि सालेह अपने परमेश्वर के भेजे हुये हैं, उन्होंने कहा कि हम उस के प्रति विश्वास रखते हैं जिस के साथ उन्हें भेजा गया है।[4]

---

[1]इसका अर्थ है कोमल धरती से मिट्टी लेकर ईंटें तैयार करते हो तथा उन ईंटों से महल तैयार करते हो। जैसे आज भी भट्टों पर इसी प्रकार मिट्टी से ईंटें तैयार की जाती हैं।

[2]यह उनकी शारीरिक शक्ति तथा शिल्पकारी का वर्णन है।

[3]अर्थात इन उपकार पर अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करो तथा उसकी आज्ञा पालन का मार्ग अपनाओ न कि उपकार की अवज्ञा का तथा बुरे कर्मों को करके उपद्रव फैलाओ।

[4]अर्थात जो एकेश्वर का आमन्त्रण वह लेकर आये हैं, वह चूँकि प्राकृतिक अभियाचना है, हम तो उस पर ईमान ले आये हैं। शेष रही यह बात कि सालेह वास्तव में अल्लाह के रसूल हैं ? जो उनका प्रश्न था, उससे उन ईमानवालों ने इंकार नहीं किया क्योंकि वे

The Ummah Technology Mission

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِيْٓ اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٧٦﴾

(७६) अहंकारी प्रमुखों ने कहा कि तुम जिसके प्रति विश्वास करते हो हम विश्वास नहीं रखते।[1]

فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَ عَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ وَ قَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٧٧﴾

(७७) अत: उन्होंने ऊँटनी का वध कर दिया एवं अपने परमेश्वर के आदेश की अवहेलना की तथा कहा कि हे सालेह, यदि तुम ईशदूत हो तो अपनी धमकी पूरी करो।

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٧٨﴾

(७८) फिर उन्हें भूकम्प ने धर लिया[2] तथा वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَ قَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَ نَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٧٩﴾

(७९) वह (सालेह) उन से मुँह फेर कर चल दिये, तथा कहा[3] कि हे मेरे वर्ग के लोगो! मैंने तुमको अपने परमेश्वर का आदेश पहुँचा दिया तथा तुम्हारा शुभचिंतक रहा किन्तु तुम शुभचिंतकों से प्रेम नहीं करते।

उनके अल्लाह की ओर से रसूल होने पर विवाद करना उचित नहीं समझते थे। उनके निकट उनकी रिसालत साक्षात् वास्तविक एवं सत्य थी, जैसाकि वास्तव में थी।

[1]इस उचित उत्तर के पश्चात वे घमण्ड के कारण इंकार पर अड़े रहे।

[2]यहाँ رجفة (भूकम्प) का वर्णन है। अन्य स्थान पर صيحة (गर्जन) का। इससे ज्ञात होता है कि यह दोनों प्रकार का प्रकोप उन पर आया। ऊपर से गर्जन तथा नीचे से भूकम्प। इन दोनों प्रकोपों ने उन्हें नष्ट-विनष्ट कर दिया।

[3]यह नष्ट होने के पूर्व का सम्बोधन है अथवा नष्ट होने के पश्चात्, इसी प्रकार का सम्बोधन है जिस प्रकार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बद्र का युद्ध समाप्त होने के पश्चात बद्र के स्थान पर मूर्तिपूजकों की लाशों को सम्बोधित करते हुए कहा था।

The Ummah Technology Mission

وَ لُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۸۰﴾

(८०) तथा हम ने लूत को भेजा[1] जब कि उन्होंने अपने समुदाय से कहा कि तुम ऐसा कुकर्म करते हो, जिसे तुम से पूर्व किसी ने अखिल जगत में नहीं किया ।

اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً

(८१) तुम परुषों के साथ सम्भोग करते हो[2]

---

[1]आदरणीय लूत आदरणीय इब्राहीम के भतीजे थे तथा आदरणीय इब्राहीम पर ईमान लाने वालों में से थे। फिर स्वयं उनको अल्लाह ने एक क्षेत्र का नबी बना कर भेजा। यह क्षेत्र जार्डन तथा बैतुल मक़दिस के मध्य का क्षेत्र है, जिसे सदूम कहा जाता है, यह धरती हरियाली तथा उपजाऊ थी तथा यहाँ हर प्रकार के फल तथा अनाज की उपज होती थी। क़ुरआन ने इस स्थान का مؤتفكة अथवा مؤتفكات के शब्दों में वर्णन किया है। आदरणीय लूत ने सर्वप्रथम सम्भवत: अल्लाह के एक होने का आमन्त्रण दिया जो प्रत्येक नबी के आमन्त्रण की आधारशिला थी तथा सर्वप्रथम वह इसी का आमन्त्रण अपने समुदाय को देते थे । जैसाकि पिछले नबियों की घटनाओं में जिनका वर्णन अभी गुज़रा है, देखा जा सकता है । दूसरी अन्य बड़ी बुराई थी पुरुषों के साथ कुकर्म, जो लूत के समुदाय में था, उसकी बुराई तथा कुकर्म का वर्णन किया। इससे यह ज्ञात होता है कि यह एक ऐसा पाप है जिसको सर्वप्रथम इसी लूत के समुदाय ने किया, इस पाप का नाम अरबी में लवातत् पड़ गया। इसलिए उचित समझा गया कि इस समुदाय को मूल अपराध के दुष्परिणामों से सूचित किया जाये। इसके अतिरिक्त आदरणीय इब्राहीम के द्वारा एकेश्वरवाद का आमन्त्रण यहाँ पहुँच चुका होगा। बाल मैथुन के दण्ड में इमामों के मध्य मतभेद है। कुछ इमामों के निकट वही दण्ड है जो व्यभिचार का दण्ड है। अर्थात अपराधी यदि विवाहित है तो पत्थरों से मार कर मार डाला जाये, यदि अविवाहित है तो सौ कोड़े। कुछ के निकट इसका दण्ड पत्थर से मार डालना है, चाहे अपराधी कैसा भी हो। कुछ के निकट करने करवाने वाले दोनों का वध कर दिया जाये। परन्तु इमाम अबु हनीफ़ा केवल निन्दा करने के दण्ड के पक्ष में हैं, कोड़ों अथवा किसी अन्य प्रकार के दण्ड के नहीं। (तोहफ़तुल अहवज़ी भाग-५ पृष्ठ १७)

[2]अर्थात पुरुषों के पास तुम इस असभ्य कार्य के लिए मात्र सम्भोग के उद्देश्य से आते हो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा अन्य कोई उद्देश्य नहीं होता जो बुद्धि के योग्य हो। इस आधार पर वे पशुओं के समान थे जो मात्र सम्भोग के लिए एक-दूसरे पर चढ़ते हैं।

The Ummah Technology Mission

مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿٨١﴾

स्त्रियों को छोड़ कर।[1] बल्कि तुम तो सीमा से गुज़र गये हो।[2]

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٨٢﴾

(८२) तथा उनके समुदाय से कोई उत्तर न बन पड़ा सिवाय इसके कि आपस में कहने लगे कि इन लोगों को अपनी बस्ती से निकाल दो। यह लोग बड़े पवित्र महात्मा बनते हैं।[3]

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٨٣﴾

(८३) तो हम ने उसको (लूत) तथा उन के सम्बन्धियों को बचा लिया सिवाय उनकी पत्नी के कि वह उन्हीं लोगों में रही जो (प्रकोप में) रह गये थे।[4]

---

[1]जो सहवास तथा स्वाद का उचित स्थान है। यह उनकी प्रकृति के भ्रष्ट हो जाने की ओर संकेत है, अर्थात अल्लाह तआला ने पुरुष की कामवासना की तृप्ति के लिए स्त्री के गुप्तांग को स्थान तथा उचित बताया है परन्तु अत्याचारियों ने इसको छोड़ कर पुरुषों की गुदा को उसके लिए प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया।

[2]परन्तु अब इस अप्राकृतिक कर्म तथा अल्लाह की निर्धारित सीमा के उल्लंघन को आधुनिक लोगों न अपना लिया है तो यह मानव जाति का मौलिक अधिकार घोषित कर दिया गया है जिससे रोकने का किसी को कोई अधिकार नहीं। अब गुदा मैथुन को वैधानिक सुरक्षा प्राप्त है तथा यह कोई अपराध नहीं रह गया है। (अल्लाह हमें इस पाप से सुरक्षित रखे)

[3]यह तो आदरणीय लूत को बस्ती से निकालने का कारण है। शेष उनकी पवित्रता का प्रदर्शन या तो वास्तविक रूप से है तथा उनका उद्देश्य यह रहा हो कि यह लोग इस बुराई से बचना चाहते हैं, इसलिए अच्छा है कि यह हमारे साथ इस बस्ती में ही न रहें। अथवा यह उपहास तथा मजाक़ के रूप में उन्होंने कहा हो।

[4] إنها كانت من الباقين في عذاب الله अर्थात वह उन लोगों मे शेष रह गयी जिन पर अल्लाह का प्रकोप आया क्योंकि वह भी मुसलमान नहीं थी। उसका समर्थन भी अपराधियों के साथ था। कुछ ने इसका अनुवाद "मरने वालों में से" किया है परन्तु यह पूरक अर्थ हैं, वास्तविक अर्थ वही हैं।

The Ummah Technology Mission

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٨٤﴾

(८४) तथा हम ने उन के ऊपर एक नयी प्रकार की वर्षा की, [1] तो देखो तो सही कि उन अपराधियों का क्या परिणाम हुआ ?[2]

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ

(८५) तथा हम ने मदयन की ओर उनके भाई शुऐब को भेजा | [3] उन्होंने कहा कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! तुम अल्लाह की इबादत करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य देव नहीं | तुम्हारे प्रभु की ओर से तुम्हारी ओर स्पष्ट निशानी आ चुकी है, बस तुम माप-तौल

---

[1]यह विशेष प्रकार की वर्षा क्या थी ? पत्थरों की वर्षा, जिस प्रकार से अन्य स्थान पर फ़रमाया है |

﴿وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ مَّنضُودٍ﴾

"हमने उन पर तह पर तह पत्थरों की वर्षा बरसायी |" (सूरः हूद-८२)

इससे पूर्व फ़रमाया جعلنا عاليها سافلها "हमने उस बस्ती को (उलट कर) नीचे कर दिया |"

[2]अर्थात हे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) देखिए तो सही, जो खुल कर अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करते हैं तथा पैग़म्बरों को झुठलाते हैं, उनका परिणाम क्या हुआ ?

[3]मदयन आदरणीय इब्राहीम के पुत्र अथवा पौत्र का नाम था, फिर उन्हीं के वंश से सम्बन्धित क़बीले का नाम भी मदयन तथा जिस बस्ती में वे निवास करते थे उसका नाम भी मदयन पड़ा गया | इस प्रकार इस को क़बीले तथा बस्ती दोनों के लिए बोला जाता है | यह बस्ती हिजाज़ क्षेत्र के मार्ग में मआन के निकट है | इन्हीं को क़ुरआन में अन्य स्थान पर أصحاب الأيكة (वन के निवासी) भी कहा गया है | उनकी ओर आदरणीय शुऐब नबी बनाकर भेजे गये | देखिये (सूरः *अल-शुअराअ*-१७६)

टिप्पणी : प्रत्येक नबी को उनके समुदाय का भाई कहा गया है | जिसका अर्थ उसी समुदाय तथा जाति का एक व्यक्ति है, जिसको कुछ स्थान पर رسولا منهم अथवा من أنفسهم भी कहा गया है | तथा अर्थ उन सब का यही है कि रसूल तथा नबी मनुष्यों में से ही एक मनुष्य होता है जिसे अल्लाह तआला लोगों के मार्गदर्शन के लिए चुन लेता है तथा प्रकाशना (वह्यी) के द्वारा उस पर अपनी किताब तथा आदेश उतारता है |

The Ummah Technology Mission

أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٨٥﴾

पूरा-पूरा किया करो तथा लोगों को उनकी वस्तुऐं कम कर के न दो।[1] तथा सम्पूर्ण धरती पर इसके पश्चात् कि सुधार कर दिया गया उपद्रव मत फैलाओ। यह तुम्हारे लिए लाभकारी है यदि तुम ईमान ले आओ।

وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِهِ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ كُنتُمْ قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمْ ۖ وَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨٦﴾

(८६) तथा तुम प्रत्येक मार्ग पर उन्हें धमकी देने एवं अल्लाह के मार्ग से रोकने के लिये जो अल्लाह के प्रति विश्वास कर लिये न बैठा करो तथा उसमें त्रुटि की खोज करते हुए।[2] तथा स्मरण करो जब तुम थोड़े थे तो अल्लाह ने तुम्हें अधिक कर दिया फिर देखो कि उपद्रवियों का अन्त कैसा रहा।

---

[1]तौहीद (अद्वैत) के प्रचार के पश्चात् उस वर्ग में नाप-तौल की कमी एक बड़ा दोष था जिस से रोका गया तथा पूरा-पूरा नाप तौल कर देने की शिक्षा दी गई, यह दोष भी अति भयावह है जिस से उस समुदाय के नैतिक पतन का पता लगता है जिस में यह दोष पाया जाता है। यह अति घोर अपभोग है कि पैसे तो पूरे लिये जायें तथा चीज़ कम दी जाये। अत: *सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन* में ऐसे ही लोगों के लिए विनाश की सूचना दी गई है।

[2]अल्लाह के मार्ग से रोकने के लिये उसमें त्रुटि की खोज करना प्रत्येक युग के दुराचारियों का प्रिय व्यवहार रहा है जिस का उदाहरण वर्तमान में धर्म के आधुनिकीकरण कारियों तथा पश्चिमी सभ्यता के प्रेमियों में देखा जाता है। (अल्लाह हम को उन से सुरक्षित रखे) इस के सिवाय अल्लाह के मार्ग से रोकने के और भी कई अर्थ किये गये हैं, उदाहरणार्थ लोगों को दुख देने के लिये मार्गों पर बैठना जैसा कि दुराचारियों का आचरण है, अथवा आदरणीय शुऐब की तरफ जाने के मार्गों से रोकना ताकि जो लोग उधर जायें उन्हें रोका तथा भ्रम में डाला जाये, जैसे मक्का नगर के कुरैश करते थे अथवा धर्म के मार्गों पर बैठना तथा धर्मावलम्बियों को उस से रोकना अथवा लूटमार के लिये नाकों पर बैठना ताकि राहियों को लूट लें, अथवा कुछ के समीप कर तथा चुंगी लेने के लिये मार्गों पर बैठना है। इमाम शौकानी ने कहा कि यह सभी अर्थ इस के अन्तर्गत आ सकते हैं क्योंकि यह संभव है कि वह सभी उपरोक्त दुराचार करते रहे हों (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

وَإِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنكُمْ ءَامَنُوا۟ بِٱلَّذِىٓ أُرْسِلْتُ بِهِۦ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا۟ فَٱصْبِرُوا۟ حَتَّىٰ يَحْكُمَ ٱللَّهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ ٱلْحَٰكِمِينَ ﴿٨٧﴾

(८७) तथा यदि तुम में से कुछ लोगों ने उस आदेश के प्रति विश्वास किया जिसके साथ मैं भेजा गया हूँ तथा कुछ ने विश्वास नहीं किया है तो थोड़ा धैर्य रखो यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच निर्णय कर दे तथा वह सर्वोत्तम न्यायकारी है।[1]

[1]यह अधर्म को सहन करने का आदेश नहीं वरन् उनके लिये धमकी तथा चेतावनी है क्योंकि अल्लाह का निर्णय सदाचारियों को दुराचारियों पर विजय तथा प्रभुत्व देने का ही होता है। यह ऐसे ही है जैसाकि दूसरे स्थान पर उसका कथन है कि

(فتربصوا إنا معكم متربصون)

"तुम प्रतिक्षा करो हम भी तुम्हारे साथ प्रतिक्षा कर रहे हैं।" (सूरः तौबाः-५२)

The Ummah Technology Mission

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ يَا شُعَيْبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِن قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كَارِهِينَ ﴿٨٨﴾

(८८) उनके वर्ग के घमण्डी प्रमुखों ने कहा हे शुऐब ! हम तुम्हें एवं जो तुम्हारे साथ ईमान लाये हैं उनको अवश्य अपने नगरों से निकाल देंगे वरन् तुम फिर हमारे धर्म में आ जाओ[1] उन्होंने कहा कि जबकि हम उससे घिन करते हों।[2]

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُم بَعْدَ إِذْ نَجَّانَا اللَّهُ مِنْهَا ۚ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَن نَّعُودَ فِيهَا إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا ۚ وَسِعَ

(८९) हम तो अल्लाह पर मिथ्या का आरोपण करेंगे यदि हम तुम्हारे धर्म में फिर से आ गये जबकि अल्लाह ने हमें उससे मुक्त कर दिया है[3] तथा हमारे लिये उसमें फिर से आ जाना संभव नहीं परन्तु यह कि अल्लाह चाहे जो

---

[1]इन सरदारों के घमण्ड तथा अभिमान का अनुमान कीजिए कि उन्होंने ईमान तथा एकेश्वरवाद (तौहीद) के आमन्त्रण का केवल खण्डन ही नहीं किया अपितु उससे भी वढ़ कर अल्लाह के पैग़म्बर तथा ईमान लाने वालों को चेतावनी भी दी कि या तो तुम अपने पूर्वजों के धर्म पर वापस आ जाओ वरन् हम तुम्हें यहाँ से निकाल देंगे। ईमानवालों को अपने पूर्व के धर्म पर लाने की बात कुछ सीमा तक समझ में आती है, क्योंकि उन्होंने कुफ़्र को छोड़ कर ईमान का मार्ग अपनाया था, परन्तु आदरणीय शुऐब को भी पूर्वजों के समुदाय की ओर लौटने का आमन्त्रण इसलिए था कि वह उन्हें भी नबूवत व चेतावनी तथा आमन्त्रण से पूर्व अपने धर्म का अनुयायी समझते थे। यद्यपि वास्तव में यह सत्य नहीं है। अथवा अधिकतर के कारण उन की गणना भी उन्हीं में कर लिया जो पहले अपने पूर्वजों के धर्म पर थे।

[2]यह लुप्त प्रश्न का उत्तर है। जिसमें अरबी वर्णमाला का हम्ज़ा इंकार करने के लिये है तथा वाव दशा के वर्णन के लिए है। अर्थात क्या तुम हमें अपने धर्म में पुनः लाओगे अथवा हमें अपनी नगरी से निकाल दोगे जब कि हम इस धर्म में पुनर्गमन तथा इस नगरी से निकलने में रुचि न रखते हों। अभिप्राय यह है कि तुम्हारे लिये ऐसा करना उचित नहीं कि तुम हमें दोनों में से किसी एक को स्वीकार करने पर बाध्य करो।

[3]अर्थात यदि हम पूवर्जों के धर्म की ओर लौट आयें जिससे अल्लाह तआला ने हमें मुक्त कर दिया है, तो इसका अर्थ यह होगा कि हमने ईमान तथा एकेश्वरवाद (तौहीद) का आमन्त्रण दे कर अल्लाह पर झूठ बाँधा था। अर्थ यह हुआ कि यह सम्भव नहीं है कि हमारी ओर से ऐसा हो।

The Ummah Technology Mission

رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۢ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۢ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ﴿٨٩﴾

हमारा पोषक है।[1] हमारे परमेश्वर ने प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान की परिधि में ले रखा है, हमने अपने अल्लाह पर ही भरोसा कर लिया।[2] हे हमारे परमेश्वर ! हमारे एवं हमारे लोगों के बीच निर्णय कर दे सत्य के साथ तथा तू सर्वोत्तम निर्णायक है।[3]

وَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٩٠﴾

(९०) तथा उनके वर्ग के काफ़िर प्रमुखों ने कहा कि यदि तुम ने शुऐब का अनुसरण किया तो उस समय तुम नि:सन्देह क्षतिग्रस्त हो जाओगे।[4]

---

[1]अपना संकल्प व्यक्त करने के पश्चात इस बिषय को अल्लाह की इच्छा के सुपुर्द कर दिया। अर्थात हम अपनी इच्छा से अब कुफ़्र की ओर नहीं लौट सकते। हाँ, यदि अल्लाह चाहे तो अन्य बात है। कुछ लोग कहते हैं कि यह ﴿حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ﴾ के समान असंभव के साथ संबन्धित करना है अर्थात जैसे सूई के नाके में ऊँट का प्रवेश असंभव है इसी प्रकार हमारा अपने पूवर्जों के धर्म में पुनर्गमन असंभव है।

[2]कि वह हमें ईमान पर दृढ़ रखेगा तथा हमारे एवं अधर्म तथा अधर्मियों के मध्य आड़ बना रहेगा। हम पर अपने उपकार की वर्षा करेगा तथा अपनी यातना से सुरक्षित रखेगा।

[3]तथा जब अल्लाह निर्णय कर लेता है तो यही होता है कि वह ईमान वालों को सुरक्षित रख कर झूठे तथा घमण्डियों का सर्वनाश कर देता है। यह मानो अल्लाह के प्रकोप की माँग है।

[4]अपने पूर्वजों के धर्म को छोड़ना तथा माप-तौल में कमी न करना, यह उनके निकट हानिवाली बात थी। वास्तविकता यह थी कि इसमें उन्हीं का लाभ था, परन्तु संसार वालों की दृष्टि में लाभ ही सभी कुछ होता है, जो माप-तौल में डंडी मारने से उन्हें प्राप्त हो रहा था, वह ईमानवालों के दीर्घगामी लाभ के लिए उसे क्यों छोड़ते ?

The Ummah Technology Mission

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جٰثِمِينَ ﴿٩١﴾

(९१) तो उनको भूकम्प ने आ पकड़ा, इसलिए वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।[1]

الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا هُمُ الْخَاسِرِينَ ﴿٩٢﴾

(९२) जिन्होंने शुऐब को झुठलाया, उनकी यह स्थिति हो गयी कि जैसे उन (घरों) में कभी बसे ही नहीं थे।[2] जिन्होंने शुऐब को झुठलाया वही हानि में पड़ गये।[3]

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۖ فَكَيْفَ ءَاسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِينَ ﴿٩٣﴾

(९३) उस समय शुऐब उनसे मुहँ मोड़ कर चले तथा कहने लगे कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! मैंने अपने प्रभु के संदेश तुम्हें पहुंचा दिये तथा मैं ने तुम्हारी शुभ चिन्ता की, फिर मै उन काफिरों पर दुखी क्यों हूँ ?[4]

---

[1] यहाँ رَجْفَة (रजफ़ः) आया है जिसका अर्थ भूकम्प है तथा सूरः हूद आयत संख्या ९४ में صَيْحَة शब्द जिसका अर्थ "चीख" प्रयोग हुआ है। इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि प्रकोप में यह सब हुआ। अर्थात छाया वाले दिन प्रकोप आया, सर्वप्रथम मेघों की छाया में आग के शोले चिंगारियाँ, फिर आकाश से अति तीव्र गर्जन हुई तथा धरती में भूकम्प आया, जिसके कारण उनकी आत्माओं ने शरीर छोड़ दिया तथा अजीवित शव बन कर पक्षियों की भाँति घुटनों में मुँह देकर औंधे के औंधे पड़े रह गये।

[2] अर्थात जिस बस्ती से यह अल्लाह के दूत तथा उनके अनुयायियों को निकालने पर अड़े थे, अल्लाह की ओर से प्रकोप होने के कारण ऐसे हो गये, जैसे वह यहाँ रहते ही न रहे हों।

[3] अर्थात हानि में वही लोग रहे जिन्हों ने पैग़म्बरों को झुठलाया, न कि पैग़म्बर तथा उन पर ईमान लाने वाले। तथा हानि भी दोनों लोक में। संसार में अपमान की यातना का स्वाद चखा तथा परलोक में उनके लिए अत्यधिक दुखदायी कठोर यातना तैयार है।

[4] यातना, तथा सर्वनाश के पश्चात जब वह (आदरणीय शुऐब) वहाँ से चले, तो अत्यधिक भावुक हो कर कहा। तथा साथ ही साथ यह भी कह दिया कि जब मैंने सत्य की चेतावनी का दायित्व अदा कर दिया एवं अल्लाह का संदेश उन तक पहुंचा दिया, तो अब मैं ऐसे लोगों पर अपने संवेदना का प्रदर्शन करूँ तो क्यों करूँ ? जो इसके उपरान्त अपने अविश्वास तथा अनेकेश्वरवाद पर अड़े रहे।

The Ummah Technology Mission

وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ﴿٩٤﴾

(९४) तथा हमने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा कि वहाँ के निवासियों को हम ने रोग तथा दरिद्रता से पकड़ा न हो, ताकि वे गिड़गिड़ायें (विनती करें)।[1]

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩٥﴾

(९५) फिर हमने उस दरिद्रता को सुसम्पन्नता से बदल दिया, यहाँ तक जब वे सम्पन्न हो गये तथा कहने लगे कि हमारे पूर्वजों को भी तंगी तथा उन्नति का सामना करना पड़ा, तो हमने सहसा उनको पकड़ लिया।[2] तथा उनको सूचना भी न थी।

---

[1] بَأْسَاءُ (बासाअ) का शब्दार्थ शारीरिक दुख अर्थात रोग है तथा ضرّاء (जर्राअ) का अर्थ निर्धनता एवं दरिद्रता है। तात्पर्य यह है कि जिस बस्ती में भी हमने संदेशवाहक भेजा, उन्होंने उसे झुठलाया, जिसके प्रत्युपकार में हमने उन्हें रोग एवं दीनता में ग्रस्त कर दिया, जिस से उद्देश्य यह था कि यह अल्लाह की ओर पलट आयें तथा उस से विनय करें।

[2] अर्थात निर्धनता तथा रोग में ग्रस्त होने के कारण जब उन में अल्लाह की ओर ध्यान केन्द्रित करने तथा उसके मार्ग पर चलने की भावना भी उत्पन्न नहीं हुई, तो हमने उनकी निर्धनता को धन-धान्य से परिपूर्ण तथा रोग को स्वस्थ में परिवर्तित कर दिया ताकि वह उस पर अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त कर सकें। परन्तु इस आन्दोलन से भी उनकी जीवन शैली में परिवर्तन न आया तथा उन्होंने कहा कि यह तो सदैव से होता चला आया है कभी निर्धनता आ गयी कभी धन धान्य से परिपूर्ण हो गये। कभी रोग तो कभी स्वस्थ, कभी रंक कभी राजा अर्थात निर्धनता का प्रथम उपचार न उनके लिए सफल रहा तथा न धन-धान्य से परिपूर्णता, उनके सुधार के लिए सफल सिद्ध हुई। वह इसे रात-दिन की चाल ही समझते रहे तथा उसके पीछे कार्यरत अल्लाह की इच्छा को समझने में असफल रहे, तो फिर हमने उन्हें सहसा अपने प्रकोप के चंगुल में पकड़ लिया। इसीलिए हदीस में मुसलमानों के लिए इसके विपरीत वर्णित किया गया है कि वह वैभव तथा सुविधा प्राप्त होने पर अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करते हैं तथा दुख पहुँचने पर धैर्य से काम लेते हैं, इस प्रकार दोनों ही स्थिति उनके लिए कल्याणकारी तथा पुण्य का कारण बनती है। (सहीह मुस्लिम किताबुज जुहद बाबुल मोमिन अमरुहू कुल्लुहू ख़ैर)

The Ummah Technology Mission

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٦﴾

(९६) और यदि उन नगरों के निवासी ईमान लाते तथा संयम बरतते तो हम आकाश एवं धरती की विभूतियों के द्वार उन पर खोल देते परन्तु उन्होंने झुठलाया तो हम ने उन्हें उन के कुकर्मों के कारण घेर लिया।

اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿٩٧﴾

(९७) क्या फिर भी इन बस्तियों के निवासी इस बात से निश्चिन्त हो गये हैं कि उन पर हमारा प्रकोप रात्रि के समय आ पड़े जिस समय वह निद्रा में हों।

اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٨﴾

(९८) तथा क्या उन बस्तियों के निवासी इस बात से निश्चिन्त हो गये हैं ? कि उन पर हमारा प्रकोप दिन चढ़े में आये जिस समय वे खेलों में व्यस्त हों।

اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩٩﴾

(९९) क्या वह अल्लाह की योजना से निर्भय हो गये सो अल्लाह की योजना से क्षतिग्रस्त लोग[1] ही निर्भय होते हैं।

اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَآ

(१००) तो क्या जो लोग धरती में उस के निवासियों के विनाश के पश्चात उत्तराधिकारी

---

[1]इन आयतों में अल्लाह तआला ने सर्वप्रथम यह वर्णन किया है कि ईमान (विश्वास) तथा संयम ऐसा विषय है कि जिस बस्ती के लोग उसे अपना लें उस पर अल्लाह तआला आकाश तथा धरती के धन-सम्पत्तियों के द्वार खोल देता है अर्थात आवश्यकतानुसार आकाश से वर्षा करता है तथा धरती को उससे सिंचाई करके उपज को बढ़ाता है। परिणामस्वरूप उन्नति तथा समृद्धि होती है, परन्तु इसके विपरीत झुठलाने वाले तथा कुफ़्र का मार्ग अपनाने वाले समुदाय अल्लाह के प्रकोप के अधिकारी होते हैं, फिर ज्ञात नहीं होता कि रात्रि-दिन किस समय प्रकोप आ पड़े तथा खेलती-खाती इस बस्ती को एक क्षण में खण्डहर बना कर रख दे। इसलिए अल्लाह के इन प्रकोपों से निश्चिन्त नहीं होना चाहिए। इस निश्चिन्तता का परिणाम मात्र हानि के अन्य कुछ नहीं। مَكْرٌ (मकर) के भावार्थ के लिए देखिए सूरः आले इमरान आयत ५४ की व्याख्या।

The Ummah Technology Mission

أَنْ لَّوْ نَشَآءُ أَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝١٠٠

बने हैं उन्हें ज्ञान नहीं हुआ कि यदि हम चाहें तो उनके पापों के कारण उन्हें विपदा में डाल दें तथा उनके दिलों पर बन्द लगा दें फिर वे सुन न सकें।[1]

تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْۢبَآئِهَا ۚ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا

(१०१) इन नगरों की कुछ घटनायें हम आप को बता रहे हैं तथा उन के ईशदूत उनके पास तर्कों सहित आये[2] फिर भी जिसे उन्होंने पहले नहीं माना उसे फिर मानने योग्य न हुये।[3] इसी

---

[1]अर्थात पापों के परिणाम स्वरूप केवल प्रकोप ही नहीं आता है, दिलों पर भी ताले लग जाते हैं। फिर बड़े से बड़े प्रकोप भी उनको निश्चिन्तता की निद्रा से नहीं जगा सकते। अन्य कुछ स्थानों की भाँति अल्लाह तआला ने यहाँ भी वर्णन किया है कि जिस प्रकार हमने पूर्व के समुदायों को उनके पाप के कारण नष्ट किया, हम चाहें तो तुम्हें भी तुम्हारे कुकर्मों के परिणाम स्वरूप नष्ट कर दें। तथा दूसरी बात यह वर्णित की गयी कि सत्य की आवाज़ के लिए उनके कान बन्द हो जाते हैं। फिर चेतावनी एवं शिक्षा-दीक्षा उन के लिये व्यर्थ होकर रह जाती है।

[2]जिस प्रकार पूर्व के पृष्ठों पर कुछ नबियों का वर्णन गुज़रा, بَيِّنات (बइय्येनात) का अर्थ तर्क, तथा युक्ति एवं चमत्कार दोनों से हैं। उद्देश्य यह है कि रसूल के द्वारा जब तक हमने अपनी निशानियाँ नहीं दिखा दीं, हमने उनको नष्ट नहीं किया। क्योंकि

﴿ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ﴾

"जब तक हम रसूल नहीं भेज देते प्रकोप नहीं उतारते।" (सूरः बनी इस्राईल-१५)

[3]इसका एक भावार्थ यह है कि प्रतिज्ञा दिवस को जब उन से वचन लिया गया था तो ये अल्लाह के ज्ञान में ईमान लाने वाले न थे, इसलिए जब उन के पास अल्लाह के रसूल आये तो अल्लाह के ज्ञान के अनुसार वे ईमान नहीं लाये। क्योंकि उनके भाग्य में ईमान लाना नहीं था, जिसे अल्लाह ने अपने ज्ञान के अनुसार लिख दिया था। जिसको हदीस में فَكُلٌّ مُيَسَّرٌ لِمَا خُلِقَ لَهُ (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरतुल लैल) से तुलना की गयी है। दूसरा भावार्थ यह है कि जब उनके पास पैग़म्बर आये, तो वह इस कारण उन पर ईमान नहीं लाये कि वह इससे पूर्व सत्य को झुठला चुके थे। अर्थात प्रारम्भ में ही जिस चीज़ को झुठला चुके थे, यही पाप उनके ईमान न लाने का कारण बन गया तथा ईमान लाने के सौभाग्य से वे वंचित हो गये, इसलिए अगले वाक्य में मोहर लागने से तुलना की गयी है।

The Ummah Technology Mission

بِمَا كَذَّبُوا مِنْ قَبْلُ ۚ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠١﴾

प्रकार अल्लाह विश्वासहीनों के दिलों पर मुद्रा लगा देता है।

وَمَا وَجَدْنَا لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَاِنْ وَّجَدْنَآ اَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٢﴾

(१०२) तथा हमने उनके अधिकतर लोगों को वचन का पालन करते नहीं पाया [1] तथा हम ने उनमें से अधिकतर को अवज्ञाकारी पाया।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٠٣﴾

(१०३) फिर उनके पश्चात हमने (ईशदूत) मूसा को अपने लक्षणों के साथ फ़िरऔन एवं उस के प्रमुखों के पास भेजा।[2] तो उन्होंने उनका हक़ पूरा न किया। फिर देखो कि उपद्रवियों का अन्त कैसा रहा।[3]

وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾

(१०४) तथा मूसा ने फ़रमाया, ऐ फ़िरऔन! मैं अखिल जगत के प्रभु की ओर से पैग़म्बर हूँ।

﴿ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَآ إِذَا جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ * وَنُقَلِّبُ أَفْـِٔدَتَهُمْ وَأَبْصَـٰرَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا۟ بِهِۦٓ أَوَّلَ مَرَّةٍ ﴾

"तथा तुझे क्या ज्ञात है ये तो ऐसे (दुर्भाग्यशाली) हैं कि इन के पास निशानियाँ भी आ जायें तब भी ईमान न लायें तथा हम उनके दिलों तथा आँखों को उलट देंगें (तो) जैसे यह इस (क़ुरआन) पर पहली बार ईमान नहीं लाये वैसे फिर न लायेंगे" (सूरः अल-अनाम १०९ तथा ११०)

[1]इससे कुछ ने अल्लाह के प्रभु होने का वचन लिया है जो आत्माओं के लोक में लिया गया था, कुछ ने प्रकोप टालने के लिए पैग़म्बर से जो सन्धि करते थे, वे वचन अथवा सन्धियाँ तथा कुछ ने सामान्य वचन का तात्पर्य लिया है, जो आपस में एक-दूसरे से करते थे। और यह वचन तोड़ना, चाहे वह किसी भी प्रकार हो, भ्रष्ट कार्य है।

[2]यहाँ से आदरणीय मूसा का वर्णन प्रारम्भ हो रहा है, जो वर्णित नबियों के पश्चात आये, जो महान सम्मानित पैग़म्बर थे, जिन्हें मिस्र के फ़िरऔन तथा उसकी जनता के पास निशानियाँ तथा चमत्कार दे कर भेजा गया था।

[3]अर्थात उन्हें डुबो दिया गया जैसा कि आगे आयेगा।

The Ummah Technology Mission

حَقِيْقٌ عَلٰٓى اَنْ لَّآ اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ مَعِيَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٠٥﴾

(१०५) मेरे लिए यही योग्य है कि सत्य के सिवाय अल्लाह पर कोई बात न बोलूँ। मैं तुम्हारे प्रभु की ओर से एक बड़ी निशानी भी लाया हूँ।[1] इसलिए तू इस्राईल की संतान को मेरे साथ भेज दे।[2]

قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٠٦﴾

(१०६) उस (फ़िरऔन) ने कहा यदि आप कोई चमत्कार लेकर आये हैं, तो उसे प्रस्तुत कीजिए यदि आप सच्चे हैं।

فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٠٧﴾

(१०७) फिर आपने अपनी छड़ी डाल दी, तो सहसा वह एव स्पष्ट अजगर सर्प बन गया।

وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾

(१०८) तथा अपना हाथ बाहर निकाला, तो वह सहसा सभी देखने वालों के समक्ष बहुत ही चमकता हुआ हो गया।[3]

قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ

(१०९) फ़िरऔन के वर्ग के प्रमुखों ने कहा

---

[1]जो इस बात का प्रमाण है कि मैं वास्तव में अल्लाह की ओर से भेजा गया रसूल हूँ। इस चमत्कार और बड़ी निशानी का वर्णन भी आगे आयेगा।

[2]इस्राईल की सन्तान जिनका मूल निवास सीरिया का क्षेत्र था, आदरणीय यूसुफ़ के समय में मिस्र चली गयी थी फिर वहीं के निवासी हो गये। फ़िरऔन ने उन्हें दास बना लिया था। तथा उन पर नाना प्रकार के अत्याचार करता था जिसका विस्तृत वर्णन सूरः अल बक़रः में गुज़र चुका है तथा आगे भी आयेगा। फ़िरऔन तथा उसके दरबार के मन्त्रियों ने जब आदरणीय मूसा के आमन्त्रण को ठुकरा दिया तो आदरणीय मूसा ने दूसरी माँग की कि इस्राईल की संतान को स्वतन्त्र कर दे ताकि यह अपने मूल स्थान पर जाकर मान-सम्मान का जीवन व्यतीत करें तथा अल्लाह की इबादत करें।

[3]अर्थात अल्लाह तआला ने जो दो बड़े चमत्कार प्रदान किये थे, अपनी सच्चाई के लिए उसे प्रस्तुत कर दिया।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٠٩﴾

कि यह बड़ा ज्ञाता (निपुण) जादूगर है।[1]

يُرِيدُ أَن يُخْرِجَكُم مِّنْ أَرْضِكُمْ ۖ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿١١٠﴾

(११०) वह तुम्हें तुम्हारे देश से निकलना चाहता है फिर तुम लोग क्या विचार देते हो ?

قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿١١١﴾

(१११) उन्होंने कहा कि आप उसे तथा उसके भाई को समय दीजिए तथा नगरों में एकत्र कर्ताओं को भेज दीजिए।

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيمٍ ﴿١١٢﴾

(११२) कि वे सभी माहिर जादूगरों को आप के समक्ष लाकर उपस्थित करें।[2]

وَجَاءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوا إِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿١١٣﴾

(११३) तथा जादूगर फ़िरऔन के पास आये और कहा कि यदि हम सफल हो गये तो क्या हमारे लिए कोई प्रतिकार है ?

---

[1]चमत्कार को देख कर ईमान लाने के बजाय फ़िरऔन के सभासदों ने उसे जादू कह दिया कि यह तो बड़ा दक्ष जादूगर है जिससे उसका उद्देश्य तुम्हारा राज्य समाप्त करना है। क्योंकि आदरणीय मूसा के समय में जादू का सामान्य प्रचलन हो रहा था, इसलिए चमत्कार को भी उन्होंने जादू समझा, जिन में लेश मात्र भी मनुष्य का अधिकार नहीं होता। शुद्ध रूप से अल्लाह की इच्छा से ही प्रदर्शित होते हैं। इस प्रकार इस विषय से फ़िरऔन के दरबारियों के लिए आदरणीय मूसा के विरुद्ध फ़िरऔन को बहकाने का अवसर प्राप्त हो गया।

[2]आदरणीय मूसा के समय में जादूगरों को बड़ा सम्मान प्राप्त था, इसीलिए आदरणीय मूसा द्वारा प्रस्तुत चमत्कार को भी उन्होंने जादू समझा तथा जादू के द्वारा उसके काट की योजना बनायी। जिस प्रकार से अन्य स्थान पर फ़रमाया कि फ़िरऔन तथा उसके दरबारियों ने कहा, "हे मूसा ! क्या तू चाहता है कि अपने जादू की शक्ति से हमें अपनी धरती से निकाल दे अत: हम भी इस जैसा जादू इसके मुकाबिले में लायेंगे, इसके लिए किसी उचित स्थान तथा समय का निर्धारण हम स्वयं करें जिसका दोनों पालन करें। आदरणीय मूसा ने कहा कि नौरोज़ का दिन तथा चाश्त का समय है, इस हिसाब से लोग एकत्रित हो जायें।" (सूर: ताहा- ५७ से ८१)

The Ummah Technology Mission

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿١١٤﴾

(११४) उसने कहा हाँ, और तुम सब निकट-वर्ती लोगों में हो जाओगे।[1]

قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِمَّا أَن تُلْقِيَ وَإِمَّا أَن نَّكُونَ نَحْنُ الْمُلْقِينَ ﴿١١٥﴾

(११५) उन (जादूगरों) ने कहा कि ऐ मूसा चाहे आप डालिए अथवा हम ही डालें।[2]

قَالَ أَلْقُوا ۖ فَلَمَّا أَلْقَوْا سَحَرُوا أَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَاءُو بِسِحْرٍ عَظِيمٍ ﴿١١٦﴾

(११६) (मूसा) ने कहा कि तुम ही डालो।[3] तो जब उन्होंने डाला तो लोगों की नज़रबन्दी कर दी तथा उन को भयभीत कर दिया तथा एक प्रकार का बड़ा जादू दिखाया।[4]

---

[1]जादूगर चूँकि दुनिया पाने की इच्छा रखते थे इसलिए उन्होंने जादू का प्रशिक्षण लिया था, इसलिए अच्छा अवसर देखा कि राजा को हमारी आवश्यकता हुई है, क्यों न अवसर का लाभ उठा कर अधिक से अधिक लाभ उठायें। अत: उन्हों ने सफलता के पश्चात उसके बदले में माँग प्रस्तुत कर दी, जिस पर फ़िरऔन ने कहा कि केवल धन ही नहीं मिलेगा अपितु हमारे निकटवर्ती लोगों में सम्मिलित हो जाओगे।

[2]जादूगरों ने यह अधिकार अपने ऊपर पूर्ण भरोसा होने के कारण दिया। वे पूर्ण विश्वास करते थे कि उनके मुक़ाबिले में मूसा का चमत्कार जिसे वे जादू ही समझते थे, कोई स्थान नहीं रखता तथा यदि मूसा को पहले अपनी कला का प्रदर्शन का अवसर दे भी दिया, तो उससे कोई अन्तर नहीं पड़ेगा। हम उसकी कला का तोड़ किसी प्रकार कर देंगे।

[3]परन्तु मूसा अलैहिस्सलाम चूँकि अल्लाह के रसूल थे तथा उन्हें अल्लाह का समर्थन प्राप्त था, इसलिए उन्हें अपने अल्लाह पर पूर्ण विश्वास था। अत: उन्होंने बिना किसी चिन्ता तथा विचार के उन से कह दिया कि तुम्हें जो कुछ दिखाना हो दिखाओ। इसके अतिरिक्त इसमें यह बुद्धिमानी भी हो सकती है कि जादूगरों के द्वारा प्रस्तुत जादू का तोड़ यदि आदरणीय मूसा द्वारा प्रदर्शित होगा तो वह लोगों को अधिक प्रभावित करेगा, जिससे उनकी सच्चाई स्पष्ट हो जायेगी तथा लोगों को ईमान लाने में कठिनाई नहीं होगी।

[4]कुछ पुरातत्व में बताया गया है कि इन जादूगरों की संख्या सत्तर हज़ार थी। प्रत्यक्ष रूप से यह संख्या अतिश्योक्ति से वंचित नहीं, जिनमें से प्रत्येक ने एक लाठी तथा एक रस्सी मैदान में फेंकी जो देखने वालों को दौड़ती प्रतीत हुई थीं। यह अर्थात उनके द्वारा प्रदर्शित बहुत बड़ा जादू था।

The Ummah Technology Mission

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَاِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿١١٧﴾

(११७) तथा हमने मूसा को आदेश किया कि अपनी छड़ी डाल दो, फिर वह अकस्मात उन के स्वांग को निगलने लगी।[1]

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٨﴾

(११८) अत: सत्य प्रकट हो गया तथा उन्होंने जो कुछ बनाया था सब जाता रहा।

فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ﴿١١٩﴾

(११९) अत: वह लोग इस अवसर पर हार गये और अति अपमानित होकर फिरे।

وَاُلْقِىَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿١٢٠﴾

(१२०) तथा जादूगर सजदे में गिर गये।

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢١﴾

(१२१) कहने लगे हम ईमान लाये अखिल जगत के प्रभु पर।

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٢﴾

(१२२) जो मूसा तथा हारून का भी प्रभु है।[2]

قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِى الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا

(१२३) फ़िरऔन ने कहा तुम उस (मूसा) पर ईमान मेरी आज्ञा से पहले ले आए नि:संदेह यह एक षड़यन्त्र है जो तुम ने नगर में उसके

---

[1]परन्तु यह जो कुछ भी था, एक काल्पनिक, जादूगरी, तथा जादू था, जो वास्तविकता का सामना नहीं कर सकता था। अत: मूसा के लाठी डालते ही सब कुछ समाप्त हो गया तथा लाठी ने एक भयानक अजगर का रूप धारण करके सब कुछ निगल लिया।

[2]जादूगरों ने, जो जादू की कला तथा उसकी असली वास्तविकता को जानते थे, यह देखा तो समझ गये कि मूसा ने जो कुछ यहाँ प्रस्तुत किया है, जादू नहीं है, यह वास्तव में अल्लाह के दूत हैं तथा अल्लाह की सहायता से ही यह चमत्कार प्रस्तुत किया है जिसने एक क्षण में हम सभी की कला पर पानी फेर दिया। अत: उन्हों ने मूसा पर ईमान लाने की घोषणा कर दी। इससे यह बात स्पष्ट हो गयी कि असत्य-असत्य है, चाहे उस पर कितने ही आकर्षक वस्त्र चढ़ा दिये जायें तथा सत्य-सत्य ही है, चाहे उस पर कितने ही पट डाल दिये जायें। अन्तिम विजय सत्य की होती है।

The Ummah Technology Mission

निवासियों को उससे निकालने के लिये रच लिया है। अतः तुम्हें शीघ्र पता चल जायेगा।[1]

مِنْهَا أَهْلَهَا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿١٢٣﴾

(१२४) मैं तुम्हारे एक ओर का हाथ तथा दूसरे ओर की टाँग काटूँगा। फिर तुम सबको फाँसी पर लटका दूँगा।[2]

لَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٢٤﴾

(१२५) (उन्होंने) उत्तर दिया कि हम (मर कर) अपने प्रभु के पास ही जायेंगे।[3]

قَالُوا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنقَلِبُونَ ﴿١٢٥﴾

(१२६) तथा तुमने हम में यही दोष तो देखा है कि हमने अपने परमेश्वर की आयतों (लक्षणों) के प्रति विश्वास कर लिया[4] जब वह हमारे पास आ गईं, हे हमारे परमेश्वर हम

وَمَا تَنقِمُ مِنَّا إِلَّا أَنْ آمَنَّا بِآيَاتِ رَبِّنَا لَمَّا جَاءَتْنَا ۖ رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَفَّنَا مُسْلِمِينَ ﴿١٢٦﴾

---

[1]यह जो कुछ हुआ फ़िरऔन के लिए बड़ी आश्चर्यचकित विषय था, इसलिए उसे और कुछ न समझ में आयी यह कह दिया कि तुम सब आपस में मिले हुए हो तथा उसका उद्देश्य हमारे राज्य को समाप्त करना है। अच्छा, इसका परिणाम निकट भविष्य में तुम्हें ज्ञात होगा।

[2]अर्थात दायाँ पाँव तथा बायाँ हाथ अथवा बायाँ पाँव तथा दायाँ हाथ, फिर यही नहीं फाँसी पर चढ़ा कर दूसरों के लिए शिक्षा बना दूँगा।

[3]इसका भावार्थ यह है कि यदि तू हमारे साथ ऐसा व्यवहार करेगा, तो तुझे भी इस बात के लिए तैयार रहना चाहिए कि क़ियामत वाले दिन अल्लाह तआला तुझे इस अपराध का कठोर दण्ड देगा, इसलिए कि हम सभी को मरकर उसी के पास जाना है, उसके दण्ड से कौन बच सकता है ? अर्थात फ़िरऔन को दुनिया की यातना के सापेक्ष आख़िरत की यातना से डराया गया है। दूसरा भावार्थ है कि मृत्यु तो हमें आयेगी ही इससे क्या अन्तर पड़ता है कि फाँसी के फंदे से आये अथवा किसी अन्य साधन से।

[4]अर्थात तेरे निकट हमारा यही दोष है जिससे तू हम से क्रोधित है तथा हमें दण्ड देने को है। जबकि यह कोई दोष नहीं यह तो गुण है कि जब वास्तविकता हमारे समक्ष आ गयी, तो हमने उसकी तुलना में दुनिया के सारे लाभ ठुकरा दिये तथा वास्तविकता को अपना लिया। फिर उन्होंने अपने मुख फिरऔन की ओर से मोड़ कर अल्लाह की ओर कर लिये तथा अल्लाह के दरबार में प्रार्थना करने लगे।

The Ummah Technology Mission

पर धैर्य बहा दे[1] तथा हमें मुसलमान ही रहते हुए मृत्यु दे।[2]

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَذَرُ مُوسَىٰ وَقَوْمَهُ لِيُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَيَذَرَكَ وَآلِهَتَكَ ۚ قَالَ سَنُقَتِّلُ أَبْنَاءَهُمْ وَنَسْتَحْيِي نِسَاءَهُمْ ۚ وَإِنَّا فَوْقَهُمْ قَاهِرُونَ ﴿١٢٧﴾

(१२७) तथा फ़िरऔन की जाति के प्रमुखों ने कहा कि क्या आप मूसा एवं उसकी जाति को यूं ही रहने देंगे ताकि प्रदेश में उपद्रव करें[3] तथा आप को एवं आपके देवताओं को त्याग दें।[4] उसने कहा हम उन के पुत्रों की हत्या करेंगे तथा उनकी स्त्रियों को जीवित रहने देंगे। हम उन पर प्रभावी हैं।[5]

قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ وَاصْبِرُوا ۚ إِنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ

(१२८) मूसा ने अपनी जाति से कहा कि अल्लाह (तआला) की सहायता लो तथा धैर्य रखो यह धरती अल्लाह (तआला) की है, वह

---

[1]ताकि हम तेरे इस शत्रु की यातनाओं को सहन कर लें तथा सत्य से सम्बन्धित एवं ईमान पर दृढ़ता से स्थापित रहें।

[2]इस सांसारिक परीक्षा से हमारे अन्दर ईमान के लिए न परिवर्तन आये न किसी अन्य विषय में हम फँस जायें।

[3]यह प्रत्येक काल के भ्रष्टाचारियों का कार्य रहा है कि वे ईमानवालों को उपद्रवी तथा उनके ईमान के आमन्त्रण तथा एकेश्वरवाद (तौहीद) को उपद्रव से तुलना करते हैं फ़िरऔन के अनुयायियों ने भी यही किया।

[4]फ़िरऔन को भी स्वयं को यद्यपि प्रभु होने का दावा था ﴿أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ﴾ "मैं तुम्हारा बड़ा प्रभु हूँ। (वह कहा करता था) परन्तु दूसरे छोटे-छोटे देवता भी थे जिन के द्वारा लोग फ़िरऔन की निकटता प्राप्त करते थे।

[5]हमारे इस प्रबन्ध में यह रुकावट नहीं डाल सकते। पुत्रों की हत्या का यह कार्य क्रम पुनः फ़िरऔन के अनुयायियों के कहने से बनाया गया। इससे पूर्व भी जब मूसा अलैहिस्सलाम का जन्म नहीं हुआ था, इस्राईल की सन्तानों के नवजात शिशु की हत्या करना प्रारम्भ कर दिया था। मूसा के जन्म के पश्चात अल्लाह ने उनको बचाने का प्रबन्ध किया कि मूसा को स्वयं फ़िरऔन के महल में पहुँचा दिया तथा उसकी गोद में पालन-पोषण करवाया।

The Ummah Technology Mission

يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَ الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾

अपने भक्तों में से जिसे चाहता है स्वामित्व प्रदान कर देता है तथा अन्तिम सफलता उन्हीं की होती है जो अल्लाह से डरते हैं।[1]

قَالُوْۤا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ؕ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾

(१२९) उन्होंने कहा कि आप के आने से पूर्व भी[2] हमें कष्ट दिया गया तथा आप के आगमन के पश्चात भी।[3] उन्होंने कहा कि शीघ्र ही अल्लाह तुम्हारे शत्रुओं का विनाश कर देगा तथा इस धरती का स्वामित्व तुम को देगा फिर यह देखेगा कि तुम्हारा आचरण कैसा है ?[4]

وَلَقَدْ اَخَذْنَاۤ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾

(१३०) तथा हमने फ़िरऔन वालों को सूखे एवं फलों की कमी द्वारा घेर लिया ताकि वह शिक्षा प्राप्त कर लें।[5]

---

[1]जब फ़िरऔन की ओर से पुनः अत्याचार प्रारम्भ हुआ तो आदरणीय मूसा ने अपनी जाति के लोगों को अल्लाह की सहायता प्राप्त करने तथा धैर्य रखने की शिक्षा दी कि यदि तुम सत्य मार्ग पर रहे तो अन्ततः धरती का राज्य तुम्हें ही प्राप्त होगा।

[2]यह संकेत उन अत्याचारों की ओर है, जो मूसा के जन्म से पूर्व उन पर होते रहे।

[3]जादूगरों की घटना के पश्चात अत्याचार का यह नया दौर प्रारम्भ हुआ, जो मूसा अलैहिस्सलाम के आने के पश्चात प्रारम्भ हुआ।

[4]आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम ने सांत्वना दी कि घबराओ नहीं, तुम्हारे शत्रु शीघ्र ही नष्ट कर दिये जायेंगे, तथा धरती पर स्वामित्व तुम्हें प्राप्त होगा। फिर तुम्हारी परीक्षा का एक नया दौर प्रारम्भ होगा। अभी तो कष्टों तथा कठिनाई से परीक्षा ली जा रही है, फिर तुम्हें पुरस्कृत तथा कृपा की वर्षा करके तथा स्वामित्व प्रदान कर के तुम्हारी परीक्षा ली जायेगी।

[5]फ़िरऔन की सन्तान से तात्पर्य फ़िरऔन के अनुयायी हैं। तथा सेनीन (سِنِين) से अकाल अथवा सूखा अर्थात वर्षा की कमी तथा वृक्षों में कीड़े लग जाने के कारण पैदावार में कमी है। इस परीक्षा से उद्देश्य यह था कि शायद वह इस अत्याचार तथा घमण्ड से रुक जायें जिसमें वे लिप्त हैं।

The Ummah Technology Mission

فَإِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ؕ أَلَآ إِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣١﴾

(१३१) यदि उनके पास भलाई आती है तो कहते हैं कि यह हमारे लिए होना ही चाहिए तथा यदि विपदा आती है तो मूसा तथा उनके अनुयायियों से अपशगुन लेते हैं[1] सुन लो उन का अपशगुन अल्लाह के पास है[2] किन्तु उन में अधिकतर लोग नहीं जानते।

وَقَالُوْا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾

(१३२) तथा उन्होंने कहा, कि हमारे पास जो भी निशानी हम पर जादू चलाने के लिये लाओ हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे।[3]

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ

(१३३) फिर हमने उन पर तूफ़ान तथा टिड्डियाँ एवं जूयें तथा मेढक एवं रक्त भेजा

---

[1] حَسَنَة (हसन:) से तात्पर्य अनाज तथा फलों की बहुतायत तथा سَيِّئَةٌ का अर्थ है बुराई, जिससे तात्पर्य हसन: के विपरीत अकाल, सूखा तथा पैदावार में कमी है حَسَنَة (हसन:) की सम्पूर्ण विशेषता स्वयं ले लेते कि यह हमारे प्रयत्नों का परिणाम है तथा विपदा का कारण आदरणीय मूसा तथा उनके अनुयायियों को बताते कि यह तुम लोगों के अशुभ प्रभाव हमारे देश पर पड़ रहे हैं।

[2] طائر का अर्थ है "उड़ने वाला" अर्थात पक्षी। क्यों कि वे लोग पक्षी के दायें तथा बायें उड़ने से शुभ तथा अशुभ लिया करते थे। इसलिए यह शब्द पूर्ण रूप से 'फ़ालनामा' के लिए प्रयोग होने लगा तथा यहाँ यह इसी अर्थ में प्रयोग हुआ है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अच्छाई अथवा बुराई, खुशहाली अथवा अकाल उन्हें जो पहुंचता है, उसके कारण अल्लाह तआला की ओर से हैं, मूसा तथा उनके अनुयायियों की ओर से नहीं हैं। ﴿طَٰٓئِرُهُمْ عِندَ ٱللَّهِ﴾ का अर्थ होगा कि अपशगुन का कारण अल्लाह के ज्ञान में है तथा वह उनका कुफ़्र तथा अवहेलना है न कि कुछ अन्य अथवा अल्लाह की ओर से है तथा इसका कारण उनका कुफ़्र है।

[3] यह उसी कुफ़्र तथा झुठलाने का प्रदर्शन है जिसमें वे ग्रसित हुए थे तथा चमत्कार तथा अल्लाह की निशानियों को अब भी जादूगरी कहते तथा कहलवाते थे।

The Ummah Technology Mission

وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿١٣٣﴾

अलग अलग निशानियाँ[1] फिर उन्होंने अहंकार किया तथा वह पापी लोग थे।

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٣٤﴾

(१३४) तथा जब उन पर कोई प्रकोप आता तो कहते कि हे मूसा हमारे लिये अपने परमेश्वर से उस वचन के द्वारा जो आप को दिया है प्रार्थना कर दीजिये, यदि आप ने हम से प्रकोप दूर कर दिया तो हम अवश्य आप पर ईमान ले आयेंगे तथा आपके साथ इस्राईल के पुत्रों को भेज देंगे।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰٓى اَجَلٍ

(१३५) फिर जब हम उन से उस प्रकोप को एक विशेष समय तक कि उस तक उनको

---

[1]तूफ़ान से तात्पर्य है बाढ़, अत्यधिक वर्षा, जिससे हर वस्तु डूब गयी अथवा मृतकों की अधिक संख्या है। जिससे प्रत्येक घर में दुख के बादल छा गये। جَراد (जराद) टिड्डी को कहते हैं। टिड्डी दल का आक्रमण फसलों की बरबादी का सूचक है तथा इसके लिए प्रसिद्ध है। ये टिड्डियाँ उन की फसलों तथा फलों को खाकर चट कर जातीं। قُمَّل (कुम्मल) से तात्पर्य जूँ जो मनुष्य के शरीर तथा कपड़ों तथा बालों में हो जाती हैं अथवा घुन का कीड़ा जो अनाज में लग जाता है, तो उसके अधिकतर भाग को समाप्त देता है। जूँ से मनुष्य को घृणा भी होती है तथा उसकी अधिकता से अत्यधिक कठिनाई भी, तथा जब यह प्रकोप के रूप में हो तो उसकी कठिनाई का अनुमान लगाया जा सकता है। इस प्रकार घुन का प्रकोप भी अर्थिक स्थिति को खोखला कर देने के लिए पर्याप्त है। ضَفادِع अरबी भाषा में ضفدع (दिफ्दअ:) का बहुवचन है। यह मेंढक को कहते हैं, जो पानी, धरती तथा झोपडियों के छप्परों में रहता है। यह मेंढ़क उनके भोजन मे, शैय्या पर, रखे हुए अनाजों में अर्थात प्रत्येक स्थान पर तथा प्रत्येक ओर मेंढ़क ही मेंढ़क हो गये, जिससे उनका खाना-पीना सोना तथा विश्राम करना कठिन हो गया। دَم (दम) का अर्थ रक्त है जिसका तात्पर्य है कि पानी का रक्त बन जाना, इस प्रकार पानी पीना उनके लिए असम्भव हो गया। कुछ ने रक्त का तात्पर्य नकसीर का रोग लिया है अर्थात प्रत्येक व्यक्ति की नाक से रक्त प्रवाहित हो गया। آيات مُفَصَّلات यह स्पष्ट तथा भिन्न-भिन्न चमत्कार थे, जो समय-समय से उनके पास आये।

The Ummah Technology Mission

هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿١٣٥﴾

पहुँचना था, हटा देते, तो वे तुरंत वचन भंग करने लगते।[1]

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٣٦﴾

(१३६) फिर हमने उन से बदला लिया अर्थात उनको समुद्र में डूबो दिया, इस कारण कि वे हमारी निशानियों को झुठलाते थे तथा उनसे अत्यन्त असावधानी बरतते थे।[2]

وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى

(१३७) तथा हमने उन लोगों को जो अति निर्बल गिने जाते थे[3] उस धरती के पूर्व एवं पश्चिम का अधिपति बना दिया जिसमें हमने विभूतियाँ रखी हैं।[4] तथा आपके पोषक का

---

[1]अर्थात एक प्रकोप आता तो उससे तंग आकर मूसा के पास आते, उनकी प्रार्थना से वह टल जाता तो ईमान लाने के बजाय, फिर उस कुफ़्र तथा शिर्क (बहुदेववाद) में दृढ़ रहते। फिर दूसरा प्रकोप आ जाता, तो फिर इसी प्रकार करते, इस प्रकार कुछ-कुछ समय के अन्तर पर उन पर पाँच प्रकार के प्रकोप आये। परन्तु उनके हृदय में जो गर्व तथा मस्तिष्क में जो घमण्ड था, वह सत्य के मार्ग पर आने के लिए उनके पैर में बेड़ी बना रहा तथा इतनी स्पष्ट निशानियाँ देखने के उपरान्त भी वह ईमान की दौलत से वंचित ही रहे।

[2]इतनी बड़ी-बड़ी निशानियों के उपरान्त वह ईमान लाने तथा अचेत निद्रा से सचेत होने को तैयार नहीं हुए। अन्ततः उन्हें समुद्र में डूबो दिया गया, जिसका विवरण क़ुरआन मजीद में विभिन्न स्थानों में विद्यमान है।

[3]अर्थात इस्राईल की सन्तान को जिन्हें फ़िरऔन ने दास बना रखा था। इस कारण वास्तव में वे मिस्र में कमजोर समझे जाते थे क्योंकि वे पराजित तथा दास थे। परन्तु जब अल्लाह ने चाहा तो उसी पराजित तथा दास जाति को धरती का उत्तराधिकारी बना दिया। ﴿وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ﴾ (सूरः आले इमरानः २६)

[4]धरती से तात्पर्य सीरिया का क्षेत्र फ़िलस्तीन है, जहाँ अल्लाह तआला ने अमालक़ः के पश्चात इस्राईल की सन्तान को विजय प्रदान की। सीरिया में इस्राईल की सन्तान आदरणीय मूसा तथा हारून के देहान्त के पश्चात उस समय गये जब आदरणीय यूशआ बिन नून ने अमालकः को पराजित करके इस्राईल की सन्तान के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया। तथा धरती के उस भाग में अल्लाह की कृपा रही, अर्थात सीरिया

The Ummah Technology Mission

بَنِيٓ إِسۡرَٰٓءِيلَ ٱلۡحُسۡنَىٰ عَلَىٰ بِمَا صَبَرُواْۖ وَدَمَّرۡنَا مَا كَانَ يَصۡنَعُ فِرۡعَوۡنُ وَقَوۡمُهُۥ وَمَا كَانُواْ يَعۡرِشُونَ ١٣٧

शुभ वचन बनी इस्राईल के विषय में उनकी सहनशीलता के कारण पूरा हो गया[1] तथा हमने फ़िरऔन एवं उसके निर्मित उद्योगों को तथा जो ऊँचे भवन निर्माण करते थे सब को तहस-नहस कर दिया।[2]

وَجَٰوَزۡنَا بِبَنِيٓ إِسۡرَٰٓءِيلَ ٱلۡبَحۡرَ فَأَتَوۡاْ عَلَىٰ قَوۡمٖ يَعۡكُفُونَ عَلَىٰٓ أَصۡنَامٖ لَّهُمۡۚ قَالُواْ يَٰمُوسَى

(१३८) तथा हम ने बनू इस्राईल (इस्राईल के पुत्रों) को समुद्र के पार उतार दिया। फिर उनका एक जाति पर गुज़र हुआ जो अपने कुछ बुतों (प्रतिमाओ) से लगे बैठे थे। कहने

के क्षेत्र में जो अधिकतर नबियों का निवास स्थान तथा समाधि स्थली रहा, तथा भौतिक सुख सम्पन्नता एवं खुशहाली में भी श्रेष्ठ रहा है। अर्थात भौतिक तथा अलौकिक दोनों प्रकार की विभूतियों से वह धरती माला-माल रही है। मशारिक़ अरबी भाषा में मशरिक़ का तथा मग़ारिब मग़रिब का बहुवचन है। यद्यपि पूर्व तथा पश्चिम एक-एक ही हैं। बहुवचन से तात्पर्य समृद्धिशाली धरती के पूर्वी तथा पश्चिमी भाग हैं अर्थात पूर्व तथा पश्चिम दिशा।

[1]यह वचन वही है जो आदरणीय मूसा के मुख से इससे पूर्व आयत संख्या १२८ तथा १२९ में किया गया है। तथा सूर: क़सस में भी

﴿ وَنُرِيدُ أَن نَّمُنَّ عَلَى ٱلَّذِينَ ٱسۡتُضۡعِفُواْ فِي ٱلۡأَرۡضِ وَنَجۡعَلَهُمۡ أَئِمَّةٗ وَنَجۡعَلَهُمُ ٱلۡوَٰرِثِينَ * وَنُمَكِّنَ لَهُمۡ فِي ٱلۡأَرۡضِ وَنُرِيَ فِرۡعَوۡنَ وَهَٰمَٰنَ وَجُنُودَهُمَا مِنۡهُم مَّا كَانُواْ يَحۡذَرُونَ ﴾

"हम चाहते हैं कि उन पर उपकार करें जो धरती में कमज़ोर समझे जाते हैं तथा उनको नेतृत्व प्रदान करें तथा राज्य का उत्तराधिकारी बनायें तथा राज्य में उन्हें शक्ति तथा समृद्धि प्रदान करें तथा फ़िरऔन एवं हामान तथा उनकी सेना को वह राज दिखा दें जिससे वे डरते हैं।" (सूर: अल-क़सस-५ तथा ६)

तथा यह कृपा और उपकार उस धैर्य के कारण हुआ जिसका प्रदर्शन उन्होंने फ़िरऔन के अत्याचार को सहन करके किया।

[2]उद्योग से तात्पर्य कल-कारखाने, भवन तथा हथियार आदि हैं तथा يَعۡرِشُونَ "जो वह ऊँचा उठाते थे" से तात्पर्य ऊँचे-ऊँचे भवन भी हो सकते हैं। तथा अंगूरों आदि की लतायें भी जो वह छप्परों पर चढ़ाते थे। अर्थ यह हुआ कि उनके शहरों के ऊँचे-ऊँचे भवन, उद्योग, हथियार तथा अन्य सामान भी नष्ट कर दिया तथा उनके बाग़ भी।

The Ummah Technology Mission

اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ ؕ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿۱۳۸﴾

लगे कि हे मूसा ! हमारे लिये भी एक ऐसा ही पूज्य निर्धारित कर दीजिए जैसे उनके यह देवता हैं आप ने फ़रमाया वास्तव में तुम लोगों में बड़ी मूर्खता है।[1]

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۹﴾

(१३९) यह लोग जिन कार्य में लगे हुए हैं वह नाश कर दिया जायेगा तथा उनका यह काम मात्र निर्मूल है।[2]

قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۴۰﴾

(१४०) फ़रमाया कि क्या अल्लाह (परमेश्वर) के सिवाय और किसी को तुम्हारा पूज्य निर्धारित कर दूँ, यद्यपि उसने समस्त विश्व वासियों पर तुम्हें प्रधानता दी है।[3]

وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ

(१४१) तथा वह समय याद करो जब हमने तुम्हें फ़िरऔन के अनुयायियों से बचा लिया जो तुम्हें कड़ी यातनायें देते थे, तुम्हारे पुत्रों को हत कर देते थे तथा तुम्हारी नारियों को

---

[1]इससे बड़ी अज्ञानता तथा मूर्खता और क्या होगी कि जिस अल्लाह ने उन्हें फ़िरऔन जैसे बड़े शत्रु से न केवल स्वतंत्रता प्रदान करायी अपितु उनकी आँखों के समक्ष उसे उसकी सेना के साथ डूबो दिया तथा उन्हें चमत्कारिक रूप से समुद्र पार करा दी। वे समुद्र के पार करते ही अल्लाह को भूल कर स्वयं बनाये गये देवता खोजने लगे। कहते हैं यह मूर्तियाँ गाय के आकृति की थीं, जो पत्थर की बनी थीं।

[2]अर्थात इन मूर्तिपूजकों के व्यवहार ने तुम्हें भी धोखे में रख दिया है, उनके भाग्य में विनाश तथा उनके कर्म व्यर्थ तथा हानिकारक हैं।

[3]क्या जिस अल्लाह ने तुम पर इतने उपकार किये तथा अखिल जगत पर श्रेष्ठता प्रदान की, उसे छोड़कर मैं तुम्हारे लिए पत्थर से निर्मित मूर्तियाँ खोजूँ ? अर्थात यह कृतघ्नता तथा अनुपकार मैं कैसे कर सकता हूँ ? अगली आयतों में कुछ अन्य उपकारों की चर्चा है।

The Ummah Technology Mission

مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿١٤١﴾

जीवित छोड़ देते थे तथा इसमें तुम्हारे पालन-हार की ओर से भारी परीक्षा थी।[1]

وَوٰعَدْنَا مُوسٰى ثَلٰثِينَ لَيْلَةً وَّأَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيقَاتُ رَبِّهٖٓ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوسٰى لِأَخِيهِ هٰرُونَ اخْلُفْنِي فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٤٢﴾

(१४२) तथा हम ने मूसा को तीस रात्रि का वचन दिया तथा दस रात्रि अधिक से उसको पूरा किया इस प्रकार उनके पोषक का समय पूरा चालीस रात्रि का हो गया[2] तथा मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, मेरे (जाने के) पश्चात इनकी (समुदाय को) व्यवस्था करना एवं सुधार करते रहना तथा उपद्रवी लोगों के मार्ग का अनुसरण न करना।[3]

وَلَمَّا جَآءَ مُوسٰى لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ أَرِنِيٓ أَنظُرْ إِلَيْكَ ۖ قَالَ لَن تَرٰىنِي وَلٰكِنِ انظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ

(१४३) तथा जब मूसा हमारे समय पर आये और उनके पोषक ने उनसे बातें की तो उन्होंने विनय किया कि हे मेरे पोषक! मुझे अपना दर्शन करा दे मैं तुझे एक पल देख लूँ आदेश हुआ कि तुम मुझको कदापि नहीं देख

---

[1]यह वही परीक्षायें हैं जिनकी चर्चा सूरः अल-बक़रः में आ चुकी है तथा सूरः इब्राहीम में भी आयेगी।

[2]फिरऔन तथा उसकी सेना को डूबो कर नष्ट कर देने के पश्चात यह आवश्यकता प्रतीत हुई कि इस्राईल की सन्तान को मार्गदर्शन तथा निर्देश के लिए कोई किताब उन्हें प्रदान की जाये। अतः अल्लाह तआला ने आदरणीय मूसा को तूर पर्वत पर तीस रात्रि के लिए बुलाया जिसमें दस रात्रि को बढ़ाकर चालीस कर दिया गया। आदरणीय मूसा ने जाते समय, आदरणीय हारून को जो उनके भाई थे तथा नबी भी अपना उत्तरदायी नियुक्त किया ताकि वह इस्राईल की संतान को मार्गदर्शन तथा सुधार का कार्य करते रहें तथा उन्हें हर प्रकार के उपद्रव अथवा षडयन्त्र से बचायें। इस आयत में यही वर्णन किया गया है।

[3]आदरणीय हारून स्वयं नबी थे सुधार करना उनके उत्तरदायित्व में सम्मिलित था, आदरणीय मूसा ने मात्र चेतावनी तथा सावधानी के लिये यह शिक्षायें दीं यहाँ मिकात से तात्पर्य निर्धारित समय है।

The Ummah Technology Mission

مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٤٣﴾

सकोगे।[1] परन्तु तुम इस पर्वत की ओर देखते रहो। यदि वह अपने स्थान पर स्थिर रहा तो तुम भी मुझे देख सकोगे, फिर उन के पोषक ने जब उस पर प्रकाश किया तो तजल्ली (प्रकाश-आभा) ने उसे खंडित कर दिया एवं मूसा मूर्छित होकर गिर पड़े[2] फिर जब सचेत हुये तो कहा कि नि:संदेह आप पवित्र हैं मैं आप से क्षमा-याचना करता हूँ तथा मैं सर्वप्रथम इस पर विश्वास करता हूँ।[3]

---

[1]जब मूसा तूर पर गये तथा अल्लाह से सीधे बात की तो उनके दिल में अल्लाह का दर्शन करने की भावना उत्पन्न हुई तथा अपनी इस भावना को ﴿رَبِّ أَرِنِي﴾ कह कर व्यक्त किया "तू मुझे अपना दर्शन करा दे", उत्तर मिला ﴿لَن تَرَانِي﴾ तू मुझे नहीं देख सकता," मुअतजिला (एक पथभ्रष्ट समुदाय) ने इस से तर्क देते हुये कहा कि لَنْ शब्द सदा इंकार के लिये आता है इस लिये अल्लाह का दर्शन न आलोक (लोक) में संभव है न परलोक में। किन्तु यह विचार सहीह हदीसों के विपरीत है। लगातार सही विश्वस्त हदीसों से प्रमाणित है कि परलोक में ईमान वाले अल्लाह का दर्शन करेंगे तथा स्वर्ग में भी अल्लाह के दर्शन से सम्मानित होंगे, सभी अहले सुन्नत का यही विश्वास है तथा इस दर्शन के नकार का संबन्ध मात्र इस संसार (लोक) से है। कोई मानवी आँख संसार में अल्लाह के दर्शन का सामर्थ्य नहीं रखती, किन्तु परलोक में अल्लाह इन आँखों में इतनी शक्ति उत्पन्न कर देगा कि वह परम अल्लाह के प्रकाश को सहन कर सके।

[2]अर्थात वह पर्वत भी प्रभु की ज्योति को सहन न कर सका तथा मूसा मूर्छित हो कर गिर पड़े। हदीस में आता है कि क़ियामत वाले दिन सभी लोग मूर्छित होंगे (यह मूर्छा इमाम इब्ने कसीर के अनुसार प्रलय के मैदान में उस समय होगी जब अल्लाह तआला निर्णय करने के लिये प्रकट होगा।) तथा जब चेतना आयेगी तो मैं सर्वप्रथम उस समय चेतना शक्ति प्राप्त करने वालों में हूँगा, मैं देखूँगा कि आदरणीय मूसा अर्श का स्तम्भ पकड़े खड़े हैं, मुझे यह ज्ञात नहीं कि वह मुझ से पूर्व चेतना में आये अथवा उन्हें तूर पर्वत की मूर्छा के परिणाम स्वरूप प्रलय की मूर्छा से पृथक रखा गया (सहीह बुखारी तफ़सीर सूर: अल-आराफ़ सहीह मुस्लिम बाब फ़जाएले मूसा अलैहिस्सलाम)

[3]तेरी महानता तथा श्रेष्ठता का एवं इस बात का कि मैं तेरा शक्तिहीन भक्त हूँ, दुनिया में तेरे दर्शन की शक्ति भी नहीं है।

The Ummah Technology Mission

قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِىْ وَبِكَلَامِىْ ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾

(१४४) आदेश हुआ कि, हे मूसा ! मैंने अपने दूतत्व एवं अपने साथ वार्तालाप से अन्य लोगों पर तुम्हें विशेषता दी है। तो जो कुछ मैं ने तुमको प्रदान किया है उसे ग्रहण करो एवं कृतज्ञता करो।[1]

وَكَتَبْنَا لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ۭ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٤٥﴾

(१४५) और हमने कुछ पट्टिकाओं पर प्रत्येक प्रकार की शिक्षायें तथा प्रत्येक वस्तु का विवरण उन को लिख कर दिया,[2] तुम उनको पूरी शक्ति से पकड़ लो, तथा अपनी जाति को आदेश करो कि उन के उत्तम आदेशों पर कार्यरत हों,[3] अब अति शीघ्र तुम लोगों को उन अवज्ञाकारियों का स्थान दिखाता हूँ।[4]

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِىَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ

(१४६) मैं ऐसे लोगों को अपनी आयतों से विमुख ही रखूगाँ जो संसार में अभिमान करते हैं जिसका उन्हें कोई अधिकार नहीं यदि वह सभी निशानियाँ (लक्षण) देख भी लें

---

[1]यह अल्लाह तआला से वार्ता का दूसरा अवसर था जिससे आदरणीय मूसा को सम्मानित किया गया। इससे पूर्व जब आग लेने गये थे, तो अल्लाह तआला से वार्तालाप हुई थी तथा दूतत्व प्रदान किया गया था।

[2]अर्थात तौरात पट्टिकाओं के रूप में प्रदान की गयी थी जिसमें उनके लिए धर्मिक आदेश थे, कहने तथा करने के एवं शिक्षा-दीक्षा का पूर्ण विवरण था।

[3]अर्थात छूट की खोज में न रहो, जैसा कि आलसियों की दशा होती है।

[4]دار (दार) से तात्पर्य या तो परिणाम अर्थात विनाश है अथवा इससे तात्पर्य यह है कि दुराचारियों के देश पर तुम्हें राज दूँगा तथा इस से तात्पर्य सीरिया देश है जिस पर उस समय अमालिका का राज्य था जो अल्लाह के अवज्ञाकारी थे।

The Ummah Technology Mission

وَإِن يَرَوْا سَبِيلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ۖ وَإِن يَرَوْا سَبِيلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ ﴿١٤٦﴾

तब भी उन पर विश्वास नहीं करेंगे।[1] तथा यदि वे सत्य मार्ग का दर्शन कर लें तो उसे अपना मार्ग न बनायें, और यदि वे कुमार्ग को देख लें तो उसको अपना मार्ग बना लें।[2] यह इस कारण है कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तथा उनसे अचेत रहे।[3]

---

[1]गर्व का अर्थ है कि अल्लाह की आयतों तथा आदेशों की तुलना में अपने आपको श्रेष्ठ समझना तथा अन्य लोगों को हीन समझना। यह गर्व मनुष्य को शोभा नहीं देता है, क्योंकि अल्लाह स्रष्टा है तथा वह उसकी सृष्टि। सृष्टि हो कर स्रष्टा से तुलना करना तथा उसके आदेशों की अवहेलना तथा असावधानी किसी प्रकार भी उचित नहीं है। इसलिए गर्व अल्लाह को कदापि प्रिय नहीं है। इस आयत में गर्व का परिणाम बताया गया है कि अल्लाह तआला उन्हें अपनी आयतों से दूर ही रखता है तथा फिर वे इतने दूर हो जाते हैं कि किसी भी प्रकार की निशानी उन्हें सत्य की ओर बुलाने में सफल नहीं होती। जैसा कि अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ﴾

"जिन पर तेरे प्रभु की बात सिद्ध हो गयी, वे ईमान नहीं लायेंगे, चाहे उनके पास हर प्रकार की निशानी आ जाये। यहाँ तक कि वे दु:खदायी यातना देख लें।" (सूर: युनूस-९६ तथा ९७)

[2]इसमें अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करने वालों के एक और चरित्र तथा व्यवहार का वर्णन किया गया है कि मार्गदर्शन की कोई बात उनके समक्ष आये भी तो उसे नहीं मानते, परन्तु भटकने की कोई बात देखते हैं तो उसे तुरंत अपना लेते हैं। क़ुरआन करीम के इस वर्णन का दर्शन हर काल में किया जा सकता है। आज हम भी प्रत्येक स्थान एवं प्रत्येक समाज में यहाँ तक कि मुस्लिम समुदाय में भी यही कुछ देख रहे हैं कि पुण्य मुँह छिपाये फिर रहा है। तथा बुराई को हर व्यक्ति हाथ बढ़ा कर पकड़ रहा है।

[3]यह इस बात का कारण बताया जा रहा है कि लोग पुण्य के बदले पाप तथा सत्य की अपेक्षा असत्य का मार्ग क्यों अधिक अपनाते हैं ? यह कारण है अल्लाह की आयतों को झुठलाने, तथा उनसे असावधानी एवं अवहेलना का। यह प्रत्येक समाज में सामान्य रूप से व्याप्त है।

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ
الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ
هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۷﴾

(१४७) तथा यह लोग जिन्होंने हमारी आयतों एवं प्रलय के आने को झुठलाया, उन के सब कर्म अकारथ गये। उन्हें वही यातना दी जायेगी जो ये करते थे।[1]

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ
مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ؕ
اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ
وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ
وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۸﴾

(१४८) तथा मूसा के अनुयायियों ने उनके पश्चात अपने आभूषणों से एक बछड़ा बना कर देवता बना लिया जो एक ढाँचा था जिस में एक ध्वनि थी। क्या उन्होंने यह न देखा कि वह उनसे बात नहीं करता था तथा न उनको कोई मार्ग बताता था, उसको उन्होंने (देवता) बना लिया तथा बड़े अन्याय का कार्य किया।[2]

---

[1]इसमें अल्लाह की आयतों को झुठलाने तथा आख़िरत को अस्वीकार करने वालों का परिणाम बताया गया है। चूँकि उनके कर्मों का आधार न्याय तथा सत्य नहीं, अपितु अत्याचार तथा असत्य है इसलिए उनके कर्म पत्र में पाप ही पाप होगा, जिसका अल्लाह तआला के यहाँ कोई मूल्य न होगा। हाँ, उनको इस पत्र का बदला वहाँ अवश्य दिया जायेगा।

[2]मूसा अलैहिस्सलाम जब चालीस रात्रियों के लिए तूर पर्वत पर गये, तो सामरी नामक व्यक्ति ने सोने के आभूषण एकत्र करके एक बछड़ा तैयार किया, जिसमें उसने जिब्रील के घोड़े के खुर की मिट्टी भी, जो उसने संभाल कर रखी हुई थी उसमें सम्मिलित कर दी, जिसमें अल्लाह तआला ने जीवन के प्रभाव रखा था, जिसके कारण बछड़ा कुछ-कुछ बैल की ध्वनि निकालता था (यद्यपि स्पष्ट वार्ता करने तथा मार्गदर्शन करने से विवश था, जैसा कि क़ुरआन के शब्दों से स्पष्ट होता है) इसमें मतभेद है कि वह माँस का बछड़ा बन गया, अथवा था वह सोने का ही परन्तु किसी प्रकार से उसमें वायु प्रवेश करती थी तो गाय बैल जैसी आवाज़ उसमें से निकलती। (इब्ने कसीर) इस ध्वनी के आधार पर सामरी ने इस्राईल की सन्तान को भटकाया कि तुम्हारा देवता तो यह है, मूसा भूल गये हैं तथा वह देवता की खोज में तूर पर्वत पर गये हैं। (यह घटना सूरः ताहा में आयेगी)

The Ummah Technology Mission

وَلَمَّا سُقِطَ فِيْٓ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾

(१४९) तथा जब लज्जित हुए[1] एवं ज्ञात हुआ कि वास्तव में वे लोग भटकावे में पड़ गये, तो कहने लगे कि यदि हमारा पोषक हम पर कृपा न करे तथा हमारा पाप क्षमा न करे, तो हम बिल्कुल ही हानि पाने वालों में हो जायेंगे।

وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ مِنْۢ بَعْدِيْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ وَاَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗٓ اِلَيْهِ ۭ قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَكَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِيْ ۡ فَلَا

(१५०) तथा जब मूसा अपने सम्प्रदाय की ओर वापस आये क्रोध तथा क्षोभ में डूबे हुए तो कहा कि तुमने मेरे पश्चात यह बड़ी बुरी जानशीनी की है। क्या अपने प्रभु के आदेश से पूर्व ही तुम ने शीघ्रता की, तथा शीघ्रता से पट्टिकायें एक ओर डाल दीं।[2] तथा अपने भाई हारून का सिर पकड़ कर अपनी ओर घसीटने लगे। हारून ने कहा कि हे मेरी माँ से जन्मे![3] इन लोगों ने मुझे कमज़ोर समझा

---

[1] سُقِطَ فِي أَيْدِيهِم यह एक वाक शैली है, जिसका अर्थ लज्जित होना है, यह लज्जा मूसा अलैहिस्सलाम की वापसी के पश्चात हुई जब उन्होंने आकर इस पर बुरा-भला कहा तथा डाँटा जैसा सूरः ताहा में आयेगा। यहाँ इसे इसलिए प्रथम लाया गया है कि उनकी कथनी-करनी एकत्रित हो जाये। (फ़तहुल क़दीर)

[2]जब आदरणीय मूसा ने आकर देखा कि वे बछड़े की पूजा में लगे हुए हैं, तो अत्यधिक क्रोधित हुए तथा शीघ्रता में पट्टिकायें, जो तूर पर्वत से लाये थे, इस प्रकार रखीं कि देखने वाले को प्रतीत हुआ कि उन्होंने नीचे फेंक दी हैं, जिसे क़ुरआन ने "डाल दीं" से तुलना की है फिर भी यदि फेंक दी हों, तो इसमें अनादर नहीं था क्योंकि उनका विचार पट्टिकाओं का अनादर करना नहीं था, अपितु धार्मिक मान-मर्यादा में लीन हो कर अप्रत्याशित रूप से उनसे यह कार्य हो गया।

[3]आदरणीय हारून तथा मूसा सगे भाई थे, परन्तु यहाँ आदरणीय हारून ने "माँ से जन्मे" इसलिए कहा कि इन शब्दों में प्रेम तथा कोमलता का पक्ष अधिक है।

The Ummah Technology Mission

تُشْمِتْ بِيَ الْاَعْدَآءَ وَلَا تَجْعَلْنِيْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٥٠﴾

तथा निकट था कि मेरी हत्या कर दें।[1] तो तुम मुझ पर शत्रुओं को न हंसवाओ।[2] तथा मुझे इन अत्याचारियों की श्रेणी में न गिनो।[3]

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِاَخِيْ وَاَدْخِلْنَا فِيْ رَحْمَتِكَ ۖ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٥١﴾

(१५१) (मूसा ने) कहा ऐ मेरे पोषक ! मेरी त्रुटियों को क्षमा कर तथा मेरे भाई की भी तथा हम दोनों को अपनी कृपा परिधि में सम्मिलित कर ले तथा तू कृपा करने वालों में सर्वाधिक कृपालु है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَكَذٰلِكَ

(१५२) नि:सन्देह जिन लोगों ने गौ की पूजा की है, उन पर अति शीघ्र उनके प्रभु की ओर से क्रोध तथा अपमान इस सांसारिक जीवन

---

[1]आदरणीय हारून ने अपना तर्क यह प्रस्तुत किया जिसके कारण वह अपने सम्प्रदाय को मिश्रणवाद (शिर्क) जैसे महापाप से रोकने में असफल रहे। एक अपनी क्षीणता तथा दूसरा इस्राईल की सन्तान का उपद्रव तथा सीमा उल्लंघन कि वे उनकी हत्या कर देने पर तैयार थे तथा उन्हें अपने जीवन रक्षा के लिए मौन रहना पड़ा, जिसकी आज्ञा अल्लाह ने ऐसे अवसरों पर प्रदान की है।

[2]मेरी ही भर्त्सना से शत्रु प्रसन्न होंगे, जबकि यह अवसर तो शत्रुओं के सिर कुचलने का तथा उनसे अपने सम्प्रदाय को बचाने का है।

[3]तथा वैसे भी विश्वास तथा कर्म के आधार पर मुझे उनकी श्रेणी में किस प्रकार सम्मिलित किया जा सकता है? मैंने न शिर्क किया न इसकी आज्ञा दी, न इस पर प्रसन्न हुआ, केवल मौन रहा तथा इसके लिए मेरे पास समुचित तर्क हैं, फिर मेरी गणना अत्याचारियों (बहुदेववादियों) के साथ किस प्रकार हो सकती है ? अत: आदरणीय मूसा ने अपने तथा अपने भाई हारून के लिए क्षमा तथा कृपा के लिए प्रार्थना की।

The Ummah Technology Mission

نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ﴿١٥٢﴾

में ही पड़ेगा ।[1] तथा हम मिथ्यारोपियों को ऐसा ही दण्ड देते हैं ।[2]

وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِن بَعْدِهَا وَآمَنُوا إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٥٣﴾

(१५३) तथा जिन लोगों ने पाप के कार्य किये फिर वह उनके पश्चात उन से क्षमा माँग लें तथा ईमान ले आयें, तो तुम्हारा प्रभु उस क्षमा के पश्चात पाप क्षमा कर देने वाला कृपालु है ।[3]

وَلَمَّا سَكَتَ عَن مُّوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحَ ۖ وَفِي نُسْخَتِهَا هُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ ﴿١٥٤﴾

(१५४) तथा जब मूसा का क्रोध शान्त हुआ तो उन पट्टिकाओं को उठा लिया । उनके लेखों में[4] उन लोगों के लिए, जो अपने प्रभु से डरते थे, मागदर्शन के निर्देश तथा कृपा थी ।[5]

---

[1]अल्लाह का प्रकोप यह था कि क्षमा के लिये वध आवश्यक किया गया । तथा इससे पूर्व जब तक जीवित रहे अपमान तथा निन्दा के अधिकारी रहे ।

[2]तथा यह दण्ड विशेष रूप से उन्हीं के लिए नहीं है, जो भी अल्लाह पर मिथ्यारोपण करता है, उसको हम यही दण्ड देते हैं ।

[3]हाँ, जिन्होंने क्षमा माँग ली, उनके लिए अल्लाह तआला क्षमावान कृपालु है, ज्ञात हुआ कि क्षमा माँगने से हर पाप क्षमा हो जाता है, परन्तु यह क्षमा शुद्ध हृदय से माँगी जाये ।

[4]نُسْخَة (नुस्ख:) शब्द (फुअल:) के समतुल्य कारक के अर्थ में है । यह उस मूल को भी कहते हैं जिससे अनुकृत किया जाये तथा प्रतिलिपि को भी नुस्ख: कहते हैं । यहाँ नुस्ख: से तात्पर्य या तो वे मूल पट्टिकायें हैं, जिन पर तौरात लिखी गयी थी, अथवा इससे तात्पर्य वह दूसरा नुस्ख: हो जो पट्टिकायें जोर से फेंकने के कारण टूट जाने के पश्चात अनुकृत करके तैयार किया गया था । फिर भी उचित बात पहली ही लगती है । क्योंकि आगे चल कर आता है कि आदरणीय मूसा ने उन "पट्टिकाओ को उठा लिया ।" जिस से ज्ञात होता है कि पट्टिकायें टूटी नहीं थीं, अतएव इसका मुख्य उद्देश्य "विषय" हैं, जो अनुवाद में लिया गया है ।

[5]तौरात को भी, क़ुरआन की भाँति, उन्हीं लोगों के लिए मार्गदर्शन तथा कृपा कहा गया है जो अल्लाह से डरते हैं, क्योंकि मुख्य लाभ आकाश शास्त्रों का उन्हीं लोगों को होता

The Ummah Technology Mission

وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّاۤ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّايَ ؕ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَآءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِيَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ؕ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَآءُ وَتَهْدِيْ مَنْ تَشَآءُ ؕ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ﴿۱۵۵﴾

(१५५) तथा मूसा ने सत्तर व्यक्ति अपने सम्प्रदाय में से हमारे निर्धारित समय के लिए घोषित किये, तो जब उनको भूकम्प ने आ पकड़ा ।[1] तो (मूसा) विनती करने लगे कि हे हमारे प्रभु ! यदि तुझ को यह स्वीकार होता तो इससे पूर्व ही इनको तथा मुझ को नाश कर देता, क्या तू हम में से कुछ मूर्खों के कारण सबको नाश कर देगा ? यह घटना केवल तेरी ओर से एक परीक्षा है । ऐसी परीक्षाओं से जिसे तू चाहे भटकावे में डाल दे तथा जिसको चाहे मार्ग दर्शन दे दे । तू ही हमारा संरक्षक है, अब हमें क्षमा कर तथा कृपा कर तथा तू क्षमा करने वालों में सर्वोत्तम क्षमावान है ।[2]

है । दूसरे लोग तो चूँकि अपने कानों को सत्य सुनने से, आँखों को सत्यता देखने से वन्द किये होते हैं, इसलिए वह कृपा स्रोत से सामान्य रूप से लाभ उठाने से वंचित ही रहते हैं ।

[1]इन सत्तर व्यक्तियों का विस्तृत विवरण अगली टिप्पणी में आ रहा है । यहाँ यह वतलाया जा रहा है कि आदरणीय मूसा ने अपने सम्प्रदाय में से सत्तर व्यक्तियों का चयन किया, तथा उन्हें तूर पर्वत पर ले गये, जहाँ यातना के रूप में उन्हें मार दिया गया, जिस पर आदरणीय मूसा ने कहा .....

[2]इस्राईल की सन्तान में ये सत्तर व्यक्ति कौन थे? इसमें व्याख्याकारों का मतभेद है एक मत यह है कि जब आदरणीय मूसा ने तौरात के आदेश उन्हें सुनाया तो उन्होंने कहा कि हम कैसे विश्वास कर लें कि यह किताब वास्तव में अल्लाह की ओर से उतारी गयी है ? हम तो जब तक स्वयं अल्लाह तआला को वार्तालाप करते न सुन लें, इसे नहीं मानेंगे । अत: उन्होंने सत्तर महात्माओं का चयन किया तथा उन्हें तूर पर्वत पर ले गये । वहाँ अल्लाह तआला ने आदरणीय मूसा से वार्ता की, जिसे उन लोगों ने सुना । परन्तु वहाँ उन लोगों ने एक नई माँग रख दी कि हम जब तक अल्लाह तआला को अपनी आँख से न देख लेंगे ईमान नहीं लायेंगे । दूसरा मत यह है कि ये सत्तर व्यक्ति वह हैं, जो पूरे समुदाय की ओर से बछड़े की पूजा के महापाप से क्षमा-याचना के लिए तूर पर्वत पर

The Ummah Technology Mission

وَاكْتُبْ لَنَا فِي هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَآ اِلَيْكَ ؕ قَالَ عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٥٦﴾

(१५६) तथा हम लोगों के नाम दुनिया में भी भलाई (पुण्य) लिख दे तथा परलोक में भी। हम तेरी ओर ध्यान केन्द्रित करते हैं।[1] अल्लाह (तआला) कहता है कि मैं अपना प्रकोप उसी पर घटित करता हूँ, जिस पर चाहता हूँ। तथा मेरी कृपा की परिधि में प्रत्येक वस्तु है।[2] तो वह कृपा उन लोगों के नाम अवश्य लिखूँगा, जो अल्लाह से डरते हैं तथा ज़कात (धर्मदान)

ले जाये गये थे तथा वहाँ जाकर उन्होंने अल्लाह तआला को देखने की इच्छा व्यक्त की। तीसरा मत यह है कि ये सत्तर व्यक्ति वे हैं, जिन्होंने इस्राईल की सन्तान को बछड़े की पूजा करते देखा, परन्तु उन्होंने इससे मना नहीं किया। चौथा मत यह है कि ये सत्तर व्यक्ति वे हैं, जिन्हें अल्लाह तआला के आदेश पर तूर पर्वत पर ले जाने के लिए चुना गया था। वहाँ जाकर उन्होंने अल्लाह से प्रार्थनायें कीं। जिनमें एक प्रार्थना यह भी थी कि "हे अल्लाह! हमें तू वह कुछ प्रदान कर, जो इससे पूर्व किसी को प्रदान नहीं किया तथा न भविष्य में किसी को प्रदान करेगा।" अल्लाह तआला को यह प्रार्थना प्रिय नहीं लगी, जिसके कारण भूकम्प आया तथा वे लोग उसमें मर गये। अधिकतर व्याख्याकार दूसरे मत के पक्ष में हैं तथा उसे उन्होंने वही घटना बताया है जो सूरः अल-बक़रः की आयत संख्या-५६ में आयी है, जहाँ उन पर बिजली की कड़क से मृत्यु होने का कारण वर्णित किया गया है। तथा यहाँ भूकम्प से मृत्यु का वर्णन है। इसके समर्थन में यह कहा गया है कि सम्भव है कि दोनों ही प्रकोप हुए हों अर्थात ऊपर से बिजली की कड़क तथा नीचे से भूकम्प। अतएव आदरणीय मूसा की उस विनय निवेदन के पश्चात कि यदि उनको मरना ही था तो उससे पूर्व उस समय मारता जब ये बछड़े की पूजा करते थे, अल्लाह तआला ने उन्हें पुनः जीवित कर दिया।

[1]अर्थात क्षमा माँगते हैं।

[2]यह उसकी अपार कृपा ही तो है कि जिसके कारण अच्छे-बुरे, ईमानवाले तथा काफ़िर दोनों ही उसकी कृपा से लाभान्वित हो रहे हैं। हदीस में आता है, "अल्लाह तआला की दया के सौ भाग हैं यह उसकी दया का ही भाग है कि जिससे सृष्टि एक-दूसरे पर दया करती है तथा नरभक्षी पशु अपने बच्चों पर दया-प्रेम करते हैं तथा उसने अपनी दया के निन्नावे भाग अपने पास रखे हैं।" (सहीह मुस्लिम संख्या २१०८ तथा इब्ने माजः संख्या ४२९३)

The Ummah Technology Mission

देते हैं तथा जो हमारी आयतों के प्रति ईमान रखते हैं।

اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ ۡ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا

(१५७) जो लोग ऐसे अभिज्ञ ईशदूत (सांसारिक गुरुओं द्वारा शिक्षा न प्राप्त की हो) नबी का अनुकरण करते हैं, जिनको वह लोग अपने पास तौरात तथा इंजील में लिखा हुआ पाते हैं।[1] वह उनको पुण्य के कार्यों का आदेश करते हैं तथा पाप के कार्यों से रोकते हैं।[2] तथा पवित्र पदार्थों को वैध (प्रयोग करने योग्य) बताते हैं तथा अपवित्र (अशुद्ध) पदार्थों को निषेध (प्रयोग करने से रोकना) बताते हैं तथ उन लोगों पर जो भार एवं गले के फंदे थे[3] उन को दूर करते हैं। इसलिए जो लोग

---

[1]यह आयत भी इस बात को स्पष्ट करने के लिए परम आवश्यक विशेषता रखती है कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाये बिना पारलौकिक मोक्ष सम्भव नहीं तथा उचित एवं स्वीकार्य ईमान वही है जिसका विस्तृत वर्णन मोहम्मदु र्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किया है। इस आयत से भी "सर्व धर्म संभाव" की जड़ कटती है।

[2]भला वह है जिसे धर्म विधान ने भला कहा तथा बुरा वह है जिसे धर्म विधान ने अनुचित किया है।

[3]ये भार तथा फंदे वे हैं जो पिछले धर्मों के नियमों में थे कि जैसे प्राण के बदले प्राण अनिवार्य था दियत (खून का मूल्य जो मृतकों के उत्तराधिकारियों द्वारा माँगा जाये जो देने भी हों अथवा क्षमा नहीं था) अथवा जिस वस्त्र को अपवित्र चीज लग जाती, उसका त्याग करना आवश्यक था, इस्लामी धार्मिक नियम ने इसे केवल धोने का उपदेश दिया। जिस प्रकार हत्या के बदले में रक्त का मूल्य माँगने तथा क्षमा करने की अनुमति प्रदान की है आदि। तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि, "मुझे सरल एकेश्वरवादी धर्म के साथ भेजा गया है।" (मुसनद अहमद भाग ५, पृ० २६६, भाग ६, पृ० ११६ तथा २३३) परन्तु दुर्भाग्य से इस समुदाय ने अपनी ओर से रीति-रीवाज का बोझ अपने ऊपर लाद लिया है तथा अज्ञानता का फंदा अपने गले का आभूषण बना लिया है, जिससे विवाह तथा शोक दोनों यातना बन गये हैं।

The Ummah Technology Mission

النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٥٧﴾

इस नबी पर ईमान लाते हैं तथा उनका समर्थन करते हैं एवं उनकी सहायता करते हैं तथा उस प्रकाश का अनुकरण करते हैं, जो उनके साथ भेजा गया है। ऐसे लोग पूर्ण सफलता प्राप्त करने वाले हैं।[1]

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۠ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ

(१५८) (आप) कह दीजिए कि हे लोगो ! मैं तुम सभी की ओर उस अल्लाह का भेजा हुआ हूँ जिसका राज्य सभी आकाशों तथा धरती में है, उसके अतिरिक्त कोई भी इबादत के योग्य नहीं, वही जीवन प्रदान करता है तथा वही मृत्यु प्रदान करता है। इसलिए अल्लाह के प्रति तथा उसके अभिज्ञ दूत के प्रति

---

[1]इन अन्तिम शब्दों से भी यही स्पष्ट होता है कि सफल वही लोग हैं जो परम आदरणीय मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने वाले तथा अनुकरण करने वाले होंगे। जो मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान नहीं लायेंगे वे सफल नहीं, हानि उठाने वाले तथा असफल होंगे। इसके अतिरिक्त सफलता से भी परलोक की सफलता का तात्पर्य है। यह सम्भव है कि कोई समुदाय जो मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (दूतत्व) पर ईमान न रखता हो तथा उसे सांसारिक वैभव तथा आनन्द की बाहुल्यता प्राप्त हो। जिस प्रकार इस समय पाश्चात्य देश तथा यूरोपीय एवं अन्य समुदायों की दशा है कि वे ईसाई, यहूदी, नास्तिक अथवा मूर्तिपूजक होने के उपरान्त भी भौतिक उन्नति एवं वैभव में श्रेष्ठ हैं। परन्तु उन की यह उन्नति अस्थाई तथा परीक्षा के लिए है। यह उनकी आख़ीरत की सफलता का प्रमाण नहीं है। इसी प्रकार واتّبعوا النور الذي أنزل معه से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि सूर: अल-मायदा की आयत संख्या-१५ में प्रकाश का तात्पर्य क़ुरआन मजीद ही है। (जैसाकि वहाँ भी स्पष्ट किया गया था) क्यों कि जो प्रकाश आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के साथ उतारा गया, वह क़ुरआन मजीद ही है। इसलिए इस प्रकाश से स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तात्पर्य नहीं है। परन्तु यह अलग बात है कि आप की विशेषताओं में से एक विशेषता प्रकाश भी है। जिससे नास्तिकता, कुफ़्र एवं बहुदेववाद के अंधेरे दूर हुए। परन्तु आपकी प्रकाशमयी विशेषता होने के कारण आपका نورٌ من نور الله होना सिद्ध नहीं हो सकता। जिस प्रकार से धर्म में आधुनिकीकरण करने वाले यह सिद्ध करते हैं।

The Ummah Technology Mission

الَّذِیْ یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۸﴾

विश्वास करो । जो कि अल्लाह पर तथा उसके आदेश पर ईमान रखते हैं तथा उनका अनुसरण करो ताकि तुम सत्य मार्ग पर आ जाओ ।[1]

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰۤى اُمَّةٌ یَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ یَعْدِلُوْنَ ﴿۱۵۹﴾

(१५९) तथा मूसा के समुदाय में एक वर्ग ऐसा भी है जो सत्य के अनुरूप ही निर्देश करता है तथा उसके अनुरूप न्याय करता है ।[2]

وَ قَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَیْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ؕ وَ اَوْحَیْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى

(१६०) तथा हम ने उनको बारह परिवारों में बाँट कर सब का अलग-अलग समुदाय

---

[1]यह आयत भी मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दूतत्व के विश्वव्यापी होने का खुला प्रमाण है । इसमें अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह आदेश दिया है कि कह दीजिए कि हे अखिल जगत के मनुष्यों ! मैं सभी की ओर अल्लाह का दूत बना कर भेजा गया हूँ । इस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समस्त मानव जाति के मोक्ष दाता तथा ईशदूत हैं । अब न मोक्ष तथा मार्गदर्शन ईसाइयत में है और न यहूदियत में एवं न किसी अन्य धर्म में केवल इस्लाम में है । इस आयत में तथा इससे पूर्व आयत में आपको अनभिज्ञ नबी कहा गया है । यह आपकी प्रमुख विशेषता है । उम्मी (اُمِّی) का अर्थ है अशिक्षित अथवा अनपढ़ । अर्थात आपने किसी गुरु से अथवा शिक्षक से किसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त नहीं की । परन्तु इसके उपरान्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो क़ुरआन करीम प्रस्तुत किया उसकी विशेषता तथा भाषा के समक्ष संसार भर के भाषणकर्ता तथा भाषा विशेषज्ञों ने घुटने टेक दिये तथा आपने जो शिक्षायें प्रस्तुत कीं उनकी यर्थाता तथा वास्तविकता को समस्त संसार स्वीकार करता है, जो इस बात का प्रमाण है कि आप वास्तव में अल्लाह के सच्चे दूत हैं, वरन् एक अनपढ़ न ऐसा क़ुरआन प्रस्तुत कर सकता है तथा न ऐसी शिक्षायें वर्णन कर सकता है, जो न्याय का श्रेष्ठ नमूना है तथा मानवता की सफलता एवं उन्नति के लिए अनिवार्य है । उन्हें अपनाये बिना संसार वास्तविक सुख शांति एवं कुशलता से आलिंगित नहीं हो सकता ।

[2]इससे तात्पर्य वही कुछ लोग हैं जो मुसलमान हो गये थे । अब्दुल्लाह बिन सलाम, आदि رضي الله عنهم

The Ummah Technology Mission

إِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗۤ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۶۰﴾

निर्धारित कर दिया |[1] तथा हमने मूसा को आदेश दिया जबकि उनके समुदाय ने उनसे पानी मांगा कि अपनी छड़ी को अमुक पत्थर पर मारो, फिर तुरन्त उसमें से बारह स्रोत बह निकले | प्रत्येक व्यक्ति ने अपने पानी पीने का स्थान जान लिया | तथा हमने उन पर बादलों की छाया की, तथा उनको तुरंजबीन तथा बटेरें पहुँचायीं कि खाओ पवित्र स्वादिष्ट वस्तुयें जो कि हमने तुम को प्रदान की हैं | तथा उन्होंने हमारा कोई हानि नहीं किया परन्तु अपनी ही हानि करते थे |

وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ ؕ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۶۱﴾

(१६१) तथा जब उनको आदेश दिया गया कि तुम लोग उस बस्ती में जाकर रहो तथा खाओ उससे जिस स्थान पर तुम रूचि रखो तथा मुख से यह कहते जाना कि क्षमा माँगते हैं तथा झुक-झुक कर द्वार से प्रवेश करना | हम तुम्हारी त्रुटियाँ क्षमा कर देंगे | जो सदाचार करेंगे उनको इससे अधिक प्रदान करेंगे |

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِىْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا

(१६२) तो बदल डाला उन अत्याचारियों ने एक कथन को जो विरुद्ध था उस कथन के जिसका उन्हें आदेश दिया गया था | इस पर हम

---

[1] أسباط बहुवचन है سِبْط का तथा इसका अर्थ पौत्र है | यहाँ अस्बात वंशों के लिए प्रयोग किया गया है | अर्थात आदरणीय याक़ूब के बारह पुत्रों से बारह वंश धरती पर बने | प्रत्येक वंश पर अल्लाह तआला ने एक-एक निरीक्षक भी नियुक्त किया था तथा कह दिया था ﴿وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا﴾ (सूरः अल-मायदः-१२) यहाँ अल्लाह तआला उन बारह समुदायों के कुछ-कुछ विशेषताओं में परस्पर विभेद होने के कारण उनके अलग-अलग समुदाय होने की चर्चा उपकार जताने हेतु कर रहा है |

The Ummah Technology Mission

عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٣﴾

ने आकाश से एक आपदा भेजी इस कारण कि वे अत्याचार किया करते थे।[1]

وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۚ كَذٰلِكَ ۚ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٣﴾

(१६३) तथा आप उन लोगों से[2] उस नागरिकों[3] का जो समुद्र के निकट बसे थे उस समय की दशा पूछिये जब कि वह शनिवार के दिन के विषय में सीमा लांघ रहे थे, जब कि उनके शनिवार के दिन उनको मछलियाँ प्रत्यक्ष हो-हो कर उनके समक्ष आतीं थीं। तथा जब शनिवार का दिन न होता, तो उनके समक्ष न आती थीं। हम उनकी इस प्रकार परीक्षा ले रहे थे। इस कारण से कि वे आदेशों की अवहेलना करते थे।[4]

---

[1]आयत संख्या १६० से १६२ तक जो बातें वर्णित की गयी हैं यह वे हैं जो प्रथम भाग के सूरः अल बक़रः के प्रारम्भ में वर्णित की गयी हैं। वहाँ उन की विस्तृत व्याख्या देख ली जाये।

[2] وَسْـَٔلْهُمْ में هُمْ सर्वनाम है, जिसका संकेत यहूदियों की ओर है अर्थात 'उनसे पूछिये' इससे यहूदियों को यह बताने का भी उद्देश्य है कि इसका ज्ञान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी है, जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सत्यता का प्रमाण है क्योंकि अल्लाह की ओर से प्रकाशना (वह्यी) के बिना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस घटना का ज्ञान होना असम्भव है।

[3]उस वस्ती के निर्धारण में मतभेद है, कोई उसका नाम ईला, कोई तबरीया, कोई ईलिया तथा कोई सीरिया की कोई बस्ती जो समुद्र के निकट थी, बतलाता है। व्याख्याकारों का अधिकतर झुकाव ईला की ओर है जो मदयन तथा तूर पर्वत के मध्य कुलज़ुम सागर के किनारे पर आबाद थी।

[4]حِيتَانٌ शब्द حوت शब्द का बहुवचन है। जिसका अर्थ है मछली। شُرَّعًا शब्द شارع शब्द का बहुवचन है। अर्थ है जल तल पर उभर-उभर कर आने वालियाँ। यह यहूदियों की उस घटना की ओर संकेत है, जिसमें उन्हें शनिवार के दिन मछली के शिकार से रोक दिया गया था। परन्तु परीक्षा के रूप में शनिवार के दिन मछलियाँ जल-तल पर उभर-उभर कर उन्हें शिकार करने के लिए आमन्त्रित करतीं। तथा जब यह दिन समाप्त हो

The Ummah Technology Mission

وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُونَ قَوْمًا ۙ اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ قَالُوا مَعْذِرَةً إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٦٤﴾

(१६४) तथा जबकि उनमें से एक गुट ने यह कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों उपदेश देते हो ? जिनको अल्लाह पूर्ण रूप से विनाश करने वाला है। अथवा उनको कठोर दण्ड देने वाला है ।[1] उन्होंने उत्तर दिया कि तुम्हारे पोषक के समक्ष याचना करने के लिए तथा इसलिए कि संभवत: ये डर जायें।

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنجَيْنَا

(१६५) तो जब वह उसको भूल गये जिस का स्मरण उनको दिलाया जाता रहा ।[2] तो हमने

जाता तो उस प्रकार न आतीं। अन्ततः यहूदियों ने एक बहाना निकाल कर अल्लाह के आदेश की अवहेलना की कि गड्ढे खोद लिए ताकि मछलियाँ उसमें फंसी रहें तथा जब शनिवार का दिन समाप्त हो जाता, तो उनको पकड़ लेते।

[1]इस गुट से तात्पर्य सत्कर्मियों का वह गुट है, जो ऐसे बहाने नहीं बनाता था तथा अन्य लोगों को समझा-समझा कर उनके सुधार से निराश भी हो गया था। इस प्रकार उनमें कुछ लोग ऐसे भी समझाने वाले थे जो उन्हें शिक्षा देते तथा इस कार्य से रोकते थे। सत्कर्मियों का यह गुट उन्हें यह कहता कि ऐसे लोगों को समझाने-बुझाने से क्या लाभ जिनके भाग्य में विनाश तथा अल्लाह की यातना है। अथवा इस गुट से तात्पर्य वही उल्लघंनकारी तथा अवज्ञाकारी लोग हैं, जब उन्हें समझाने वाले लोग शिक्षा देते तो कहते कि जब तुम्हारे विचार से विनाश तथा अल्लाह की यातना हमारा भाग्य है, तो फिर हमें क्यों शिक्षा-दीक्षा देते हो ? तो वे उत्तर देते कि एक तो अपने प्रभु के समक्ष क्षमा प्रस्तुत करने के लिए ताकि हम तो अल्लाह की पकड़ से सुरक्षित रहें क्योंकि अल्लाह के आदेशों की अवहेलना होते देखना तथा उससे लोगों को न रोकना भी अपराध है, जिसके कारण अल्लाह तआला पकड़ सकता है। दूसरा लाभ यह है कि शायद यह लोग अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करने से रुक जायें। पहली व्याख्या से तीन गुट हुए १. अवज्ञाकारी तथा शिकार करनेवाला गुट २. वह गुट जिसने बिल्कुल एकान्त धारण कर लिया था, न वह अवज्ञाकारियो में से था न रोकने वालों में से ३. वह गुट जो अवज्ञाकारी न था तथा बिल्कुल एकान्त धारण भी नहीं किया था। अपितु अवज्ञाकारियों को रोकता भी था। दूसरी व्याख्या के आधार पर दो गुट हुए एक अवज्ञाकारियों का गुट दूसरा रोकने वालों का गुट।

[2]अर्थात शिक्षा-दीक्षा की उन्होंने कोई चिन्ता नहीं की तथा अवज्ञाकरिता पर अड़े रहे।

The Ummah Technology Mission

الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَـِٔيْسٍۢ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٥﴾

उन लोगों को तो बचा लिया जो उन को बुरी बातों से रोकते थे तथा उन लोगों को जो अत्याचार करते थे एक कड़ी यातना में पकड़ लिया। इस कारण कि वे आज्ञा का उल्लघंन करते थे।[1]

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿١٦٦﴾

(१६६) अर्थात जब वह जिस काम से मना किया गया था उसमें सीमा को पार कर गये, तो हमने उनको कह दिया कि तुम अपमानित बन्दर बन जाओ।[2]

وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۚ وَاِنَّهٗ

(१६७) तथा वह समय याद रखना चाहिए कि आपके पालक ने बता दिया कि वह इन (यहूदियों) पर प्रलय तक ऐसे व्यक्ति को अधिकृत रखेगा जो इन लोगों को कठोर दण्ड द्वारा दुख पहुँचाता रहेगा।[3] नि:संदेह आपका

---

[1]अर्थात वे अत्याचारी भी थे, अल्लाह तआला के आदेशों की अवहेलना करके उन्होंने अपने प्राणों पर अत्याचार किया तथा उन्हें नरक का ईंधन बना लिया तथा उपद्रवी भी कि अल्लाह के आदेशों की अवहेलना को अपना आचरण तथा कर्म बना लिया।

[2]عَتَوا का अर्थ है जो ईश्वरीय आदेशों के उल्लंघन में सीमा पार कर गये। व्याख्याकारों में इस बात पर मतभेद है कि मोक्ष प्राप्त करने वाले केवल वही व्यक्ति थे, जो मना करते थे तथा शेष दोनों अल्लाह की यातना के भोगी हुए ? अथवा पकड़ में आने वाले केवल अवहेलना करने वाले थे ? तथा शेष दो गुट मोक्ष प्राप्त करने वाले थे। इमाम इब्ने कसीर ने दूसरे मत को प्रमुखता दी है।

[3]تَأَذَّن-إِيذَان शब्द का अर्थ إعْلام शब्द के समतुल्य है, जिसका अर्थ घोषणा है (सूचित कर देना, जता देना) अर्थात वह समय भी स्मरण करो जब आप के पोषक ने इन यहूदियों को भली-भाँति सूचित कर दिया था। لَيَبْعَثَنَّ शब्द में अरबी का अक्षर "लाम" बल देने के लिये है जो सौगन्ध के अर्थ का लाभ देता है। अर्थात सौगन्धा खाकर अत्यधिक प्रभावित ढ़ंग से अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं कि वह इन लोगों पर प्रलय तक ऐसे लोगों को प्रभावित रखेगा, जो इनको कठोर यातनाओं में ग्रसित रखेंगे। अत: यहूदियों का इतिहास इसी अपमान निन्दा तथा दासता एवं अधीनता का इतिहास है जिसकी सूचना अल्लाह तआला ने इस आयत में दी है। इस्राईल की वर्तमान सरकार क़ुरआन की

The Ummah Technology Mission

لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٧﴾

पोषक अतिशीघ्र दण्ड देता है तथा नि:संदेह वह वास्तव में अत्यधिक क्षमाशील तथा कृपालु है।[1]

وَقَطَّعْنٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٦٨﴾

(१६८) तथा हमने संसार में उनके (विभिन्न) गुट कर दिये। कुछ उनमें पुनीत थे तथा कुछ अन्य आचरण के थे एवं हम उनको सम्पन्नता तथा दरिद्रता के द्वारा उनकी परीक्षा लेते रहे कि संभवत: वे लौट जायें।[2]

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ

(१६९) फिर उनके पश्चात ऐसे लोग उनके कपूत हुए[3] कि धर्मशास्त्र को उनसे प्राप्त किया। वह इस तुच्छ संसार का थोड़ा-सा भी धन ले लेते हैं[4] तथा कहते हैं कि हमें अवश्य मोक्ष प्राप्त हो जायेगी।[5] यद्यपि उनके

वर्णित यथार्थता के विपरीत नहीं है इस लिये की क़ुरआन के वर्णित अनिवंधन وَ حَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ की द्योतक है जो क़ुरआनी यथार्थता के विपरीत नहीं अपितु उस की समर्थक है। (विस्तार के लिए देखिए सूर: अले इमरान -११२ की व्यख्या)

[1]अर्थात यदि उनमें से कोई क्षमा माँग कर मुसलमान हो जायेगा, तो वह इस अपमान तथा घोर यातना से बच जायेगा।

[2]इसमें यहूदियों के विभिन्न गुटों में विभाजित हो जाने एवं उनमें कुछ के पुनीत होने की चर्चा है। तथा उनकी दोनों प्रकार से परीक्षा लेने का वर्णन है कि संभवत: वह अपनी करतूतों से रुक जायें तथा अल्लाह की ओर पलट आयें।

[3]خَلَف (लाम पर ज़बर के साथ) सपूत को خَلْف (लाम के लिप्त होने पर) कुपूत के अर्थों में प्रयोग होता है।

[4]دُنُوٌّ, أدنى (निकट) से लिया गया है अर्थात निकट का धन उगाहते हैं, जिसका तात्पर्य दुनिया है अथवा यह دَنَاءَةٌ से लिया गया है,जिससे अभिप्राय तुच्छ, हीन तथा गिरा पड़ा धन है। दोनों का उद्देश्य उनकी माया मोह को दर्शाता है।

[5]अर्थात माया मोह के उपरान्त भी मोक्ष की कामना करते हैं। जैसे आजकल के मुसलमानों की दशा है।

The Ummah Technology Mission

مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۶۹﴾

पास वैसा ही धन-द्रव्य आने लगे तो उसे भी ले लेंगे। क्या उनसे इस शास्त्र के इस विषय का वचन नहीं लिया गया ? कि अल्लाह की ओर सत्य कथन के अतिरिक्त अन्य कथन को सम्बन्धित न करें ?[1] तथा उन्होंने इस शास्त्र में जो कुछ था उसको पढ़ लिया।[2] तथा परलोक गृह उन लोगों के लिए उत्तम है जो अल्लाह का भय रखते हैं, फिर क्या तुम नहीं समझते।

وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿۱۷۰﴾

(१७०) तथा जो लोग धर्मशास्त्र पर अडिग हैं तथा नमाज़ की स्थापना करते हैं, हम ऐसे लोगों का जो स्वयं का सुधार कर लें प्रत्युपकार व्यर्थ न करेंगें।[3]

---

[1]इसके उपरान्त भी यह झूठी बातें अल्लाह तआला से सम्बन्धित करने से नहीं चुकते। उदाहरणार्थ उपरोक्त मोक्ष की बात।

[2]इसका एक दूसरा भावार्थ मिटाना भी हो सकता है जैसे دَرَست الرِّيح الآثار (वायु ने चिन्ह मिटा डाले) अर्थात धर्मशास्त्र की बातों को मिटा डाला अर्थात तदानुसार कर्म नहीं किया।

[3]इन लोगों में से जो अल्लाह के मार्ग को अपना लें, शास्त्र को सुदृढ़ता से थाम लें, जिससे तात्पर्य मूल तौरात है तथा जिस के अनुसार कर्म करते हुए मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि) वसल्लम के दूतत्व पर विश्वास रखें, नमाज़ आदि को दृढ़ता से पढ़ते रहें, तो अल्लाह तआला ऐसे सुधार करने वालों के पुण्य को अकारथ न करेगा। इसमें उन शास्त्रधारियों (सम्बोधित विषय का सम्बन्ध विशेष रूप से यहूदियों से है) का वर्णन है, जो अल्लाह के भय, किताब पर दृढ़ता से पालन करना, तथा नमाज़ को निश्चित समय पर निरन्तर पढ़ना। अत: उनके लिए परलोक की शुभसूचना है। इसका अर्थ यह हैं कि वे मुसलमान हो जायें तथा मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान ले आयें। क्योंकि अखिल जगत के लिए अब अन्तिम ईशदूत परम आदरणीय मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाये बिना मोक्ष सम्भव नहीं।

The Ummah Technology Mission

وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ وَظَنُّوا أَنَّهُ وَاقِعٌ بِهِمْ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٧١﴾

(१७१) तथा वह समय भी स्मरणीय है, जब हम ने पर्वत को छत्री के समान उनके ऊपर लटका दिया और उनको विश्वास हो गया कि अब उन पर गिरा तथा कहा कि हम ने जो शास्त्र तुम को दिया है उसे सुदृढ़ता से स्वीकार करो तथा याद रखो जो आदेश इसमें हैं, उससे सम्भावना है कि तुम अल्लाह से डरने लगो।[1]

وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِن بَنِي آدَمَ مِن ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۛ شَهِدْنَا ۛ أَن تَقُولُوا

(१७२) तथा जब आप के पोषक ने आदम की सन्तान की पीठों से उनकी सन्तान को निकाला तथा उनसे उन ही के सम्बन्ध में वचन लिया कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? सब ने उत्तर दिया, क्यों नहीं, हम सभी साक्षी हैं,[2]

---

[1]यह उस समय की घटना है जब आदरणीय मूसा उनके पास तौरात लाये तथा उसके आदेश उनको सुनाये। तो उन्हों ने अपने व्यवहार के अनुसार उन के अनुसार कार्य करना अस्वीकार किया तथा अवहेलना की। जिसके कारण अल्लाह तआला ने उनके सिर पर पर्वत ला खड़ा किया कि तुम पर गिरा कर कुचल दिया जायेगा, जिससे डर कर उन्होंने वचन दिया कि तौरात के अनुसार कार्य करेंगे। कुछ कहते हैं कि यह घटना रफ़आ पर्वत की है जो उनकी माँग के कारण घटित हुई। जब उन्होंने कहा कि हम तौरात के नियमों के अनुसार कार्य तब करेंगे जब हमारे सिरों पर पर्वत उठा कर दिखायी दे। परन्तु पहली बात अधिक उचित लगती है। واللہ أعلم, यहाँ मात्र पर्वत का वर्णन है। परन्तु इससे पूर्व सूरः अल-बक़रः आयत संख्या ६३ तथा आयत संख्या ९३ में, दो स्थानों पर इस घटना का वर्णन आया है। वहाँ इसका नाम स्पष्ट रूप से तूर पर्वत बताया गया है।

[2]यह عَهْدِ ألست वचन कहलाता है जो ألستُ بربّكم से बनाया गया योग है। यह वचन आदरणीय आदम की सृष्टि के उपरान्त उनके पीछे होने वाली संतान से लिया गया था। इसका विस्तृत विवरण एक सहीह हदीस में इस प्रकार आताा है कि, "अरफ़ा वाले दिन 'नोमान' नामी स्थान पर अल्लाह तआला ने आदम की सन्तानों से वचन लिया। इस प्रकार कि आदम की पीठ से उनकी पैदा होने वाली सन्तानों को निकाला गया तथा उनको अपने समक्ष फैला दिया तथा उनसे पूछा कि क्या मैं तुम्हारा प्रभु नहीं हूँ?

The Ummah Technology Mission

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٧٢﴾

ताकि तुम लोग प्रलय के दिन यह न कहो कि हम तो इससे मात्र अनजान थे।

اَوْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اَشْرَكَ اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿١٧٣﴾

(१७३) अथवा यह कहो कि सर्व प्रथम मिश्रण (शिर्क) तो हमारे पूर्वजों ने किया तथा हम उन के पश्चात उनके वंश में हुए, तो क्या उन कुकर्मियों के कुकर्मो पर तू हमें विनाश में झोंक देगा।[1]

सभी ने उत्तर दिया بَلٰى، شَهِدْنَا (क्यों नहीं, हम सब साक्षी हैं)। (मुसनद अहमद भाग १, पृष्ठ २७२, तथा अल-हाकिम भाग २, पृष्ठ संख्या ५४४ एवं इसको सहीह कहा है और इमाम ज़हबी उनसे सहमत हैं) इमाम शौकानी इस हदीस के विषय में लिखते हैं "इसके प्रमाण में कोई कमी नहीं है" (फ़तहुल क़दीर) इसके अतिरिक्त इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि "यह 'सृष्टि लोक' कहलाता है इसकी यही व्याख्या ठीक तथा उचित एवं सत्य है, जिससे हटकर किसी अन्य भाव की ओर जाना उचित नहीं क्योंकि यह प्रमाणित हदीस है तथा इसके सम्बन्ध सहाबा से सिद्ध हैं तथा इसे किसी अन्य भावार्थ में लेना उचित नहीं है।" अत: अल्लाह के रब्ब होने की गवाही प्रत्येक मनुष्य की प्रकृति में समावेशित है। इस विषय को रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस प्रकार वर्णन किया है, कि "प्रत्येक शिशु प्रकृति पर जन्म लेता है, परन्तु उसके माता-पिता उसे यहूदी, ईसाई अथवा अग्निपूजक बना देते हैं। जिस प्रकार जानवर का बच्चा पूर्ण रूप से पैदा होता है, उस का नाक कान कटा नहीं होता।" (सहीह बुखारी किताबुल जनायेज़ तथा सहीह मुस्लिम किताबुल क़द्र) तथा सहीह मुस्लिम का शब्द है। अल्लाह तआला फ़रमाता है, "मैंने अपने भक्तों को हनीफ़ (अल्लाह की ओर एकाग्रता से लीन होने वाला) पैदा किया है परन्तु शैतान उनको इनके प्राकृतिक धर्म से विचलित कर देता है।" अल-हदीस (सहीह मुस्लिम किताबुल जन्न:) यह प्रकृति अथवा प्राकृतिक धर्म ही एकेश्वरवाद (तौहीद) है तथा उसके द्वारा उतारा धर्म विधान है जो अब इस्लाम के रूप में सुरक्षित तथा विद्यमान है।

[1]अर्थात हमने तुमसे यह वचन तथा अपने स्वामित्व की गवाही इसलिए ली थी ताकि तुम यह तर्क प्रस्तुत न कर सको कि हम तो अनजान थे अथवा हमारे पूर्वज बहुदेव उपासना (शिर्क) करते चले आये थे। यह तर्क प्रलय के दिन अल्लाह के न्यायालय में मान्य नहीं होगा।

The Ummah Technology Mission

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٧٤﴾

(१७४) तथा हम इसी प्रकार आयतों को स्वच्छता पूर्वक वर्णन कर देते हैं ताकि वे वापस आ जायें।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿١٧٥﴾

(१७५) तथा उन लोगों को उस व्यक्ति की दशा पढ़ कर सुनाईये कि जिसको हमने अपनी निशानियाँ प्रदान कीं, फिर वह उनसे बिल्कुल निकल गया, फिर शैतान उसके पीछे लग गया, इस प्रकार वह भटके हुए लोगों में सम्मिलित हो गया।[1]

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ۭ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ

(१७६) तथा यदि हम चाहते तो उसको इन निशानियों के कारण उच्च पद पर आसीन कर देते, परन्तु वह तो संसार के माया मोह में पड़ गया एवं अपनी इच्छाओं के अनुसरण करने लगा तो उसकी दशा कुत्ते के समान हो गयी कि यदि तुम उस पर आक्रमण करो तब भी हाँफे अथवा उस को छोड़ दो तब भी हाँफे।[2] यही दशा उन लोगों की है जिन्होंने

---

[1] व्याख्याकारों ने इसे एक निश्चित व्यक्ति से सम्बन्धित माना है जिसे ईश्वरीय ग्रन्थ का ज्ञान प्राप्त था परन्तु वह संसार एवं शैतान का अनुयायी बन कर पथभ्रष्ट हो गया। किन्तु उसके निर्धारण के संदर्भ में कोई प्रमाण नहीं अत: उसके निर्धारण की कोई आवश्यकता भी नहीं है।

[2] لَهَثٌ थकान अथवा पियास के कारण जीभ निकालने को कहते हैं। कुत्ते का यही स्वभाव होता है कि उसे डांटो-डपटो अथवा उसकी दशा पर छोड़ दो दोनों परिस्थितियों में यह भौंकने से नहीं रुकता, इसी प्रकार इसका यह भी स्वभाव है कि वह पेट भर खाये हो अथवा भूखा, स्वस्थ हो अथवा रोगी, थका हुआ हो अथवा चुस्त, प्रत्येक अवस्था में जीभ निकाले हाँफता रहता है। यही दशा ऐसे व्यक्ति की है उसे शिक्षा-दीक्षा दो अथवा न दो, उसकी दशा एक ही रहेगी तथा संसारिक धन-दौलत के लिए लार टपकती रहेगी।

The Ummah Technology Mission

فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٧٦﴾

हमारी निशानियों को झुठलाया । अत: आप इस दशा का वर्णन कर दीजिए, संभवत: वह लोग कुछ सोचें ।[1]

سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمُ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَأَنفُسَهُمْ كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿١٧٧﴾

(१७७) उन लोगों की दशा भी बुरी दशा है ।[2] जो हमारी आयतों को मिथ्या मानते हैं । तथा अपनी हानि करते हैं ।

مَن يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِي ۖ وَمَن يُضْلِلْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٧٨﴾

(१७८) जिसको अल्लाह तआला स्वयं मार्ग दर्शन देता है वही संमार्ग पर होता है । तथा जिन्हें अल्लाह कुपथ कर दे वही क्षतिग्रस्त हैं ।[3]

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ لَهُمْ قُلُوبٌ لَّا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ آذَانٌ لَّا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٧٩﴾

(१७९) तथा हमने ऐसे बहुत से जिन्न तथा मनुष्य नरक के लिए पैदा किये हैं ।[4] जिनके दिल ऐसे हैं, जिनसे नहीं समझते तथा जिन की आंखें ऐसी हैं, जिनसे नहीं देखते, एवं जिनके कान ऐसे हैं जिनसे नहीं सुनते । यह लोग चौपाये (पशु) की भाँति हैं, बल्कि उन से भी अधिक भटके हुए हैं ।[5] यही लोग विमुख हैं ।

---

[1]तथा इस प्रकार के व्यक्ति से शिक्षा लेकर भटकने से बचें तथा सत्य को अपनायें ।

[2]مَثَلًا शब्द विशेषक है । मूल वाक्य इस प्रकार होगा ﴿سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمُ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا﴾

[3]यह अल्लाह तआला के उस विधान का वर्णन है जिसकी चर्चा एवं व्याख्या दो, तीन वार की जा चुकी है ।

[4]इसका सम्बन्ध भाग्य से है । अर्थात प्रत्येक मानव एवं दानव भूलोक में जाकर क्या करेगा ? इसका ज्ञान अल्लाह तआला को था, उसके अनुसार उसने लिख रखा है । यहाँ उन्हीं नरकियों की चर्चा है । जिन्हें अल्लाह के ज्ञान से नरक वाले ही काम करने थे । आगे उसको कुछ और स्पष्ट कर दिया गया है कि जिन लोगों के अन्दर ये दोष उसी रूप में हों, जिनका वर्णन यहाँ किया है, तो समझ लो उनका परिणाम बुरा है ।

[5]अर्थात हृदय, आँख तथा कान अल्लाह तआला ने इसलिए प्रदान की हैं कि मनुष्य इनसे लाभ उठाते हुए अपने प्रभु को समझे, उसके निशानियों को देखे तथा सत्य बात को

The Ummah Technology Mission

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪ وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ؕ سَيُجْزَوْنَ

(१८०) तथा शुभ नाम अल्लाह के लिए ही हैं, इसलिए इन नामों से अल्लाह ही को नामांकित किया करो।[1] तथा ऐसे लोगों से सम्बन्ध भी न रखो जो उसके नामों में टेढ़ापन करते हैं।[2]

ध्यानपूर्वक सुने। परन्तु जो व्यक्ति इन चीजों से यह कार्य नहीं लेता, वह उनसे लाभान्वित न होने के कारण पशुओं के समान है, अपितु उनसे भी अधिक भटका हुआ है। इसलिए की पशु फिर भी कुछ अपने लाभ-हानि की समझ रखते हैं। क्योंकि वे लाभदायक चीजों से लाभ उठाते हैं तथा हानिकारक पदार्थों से दूर रहते हैं। परन्तु अल्लाह तआला के मार्गदर्शन से विमुख व्यक्ति के अन्दर तो यह समझ भी नहीं होती कि उसके लिए लाभकारी वस्तुऐं कौन-सी हैं तथा हानिकारक कौन-सी। इसीलिए अगले वाक्य में उन्हें असावधान कहा गया है।

[1] حُسْنٰى अरबी भाषा में أَحْسَن का स्त्रीलिंग है। अल्लाह के इन अच्छे नामों से तात्पर्य अल्लाह के वे नाम हैं जिनसे उसकी विभिन्न विशेषता, उसकी श्रेष्ठता तथा प्रभुत्व एवं उसका सामर्थ्य एवं शक्ति का प्रकाशन होता है। सहीहैन की हदीस में इनकी संख्या ९९ (निन्नावे) बतायी गयी है। तथा फ़रमाया गया,"जो इनकी गणना करेगा, स्वर्ग में जायेगा, अल्लाह तआला विषम है विषमता प्रेमी है।" (बुख़ारी किताबुद दावात बाब लिल्लाहे मेअत ईस्म, मुस्लिम किताबुल ज़िक्र बाब अस्माये अल्लाह तआला व फ़ज़ले मन अहसाहा) गणना करने का अर्थ यही प्रतीत होता है कि उनके द्वारा प्रार्थना की जाये। कुछ कथनों में इन ९९ नामों का वर्णन किया गया है, परन्तु यह कथन अस्पष्ट हैं तथा विद्वानों ने इसे प्रवेशित माना है अर्थात कथाकारों ने बढ़ाया है। वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस का भाग नहीं है। इसके अतिरिक्त आलिमों ने यह भी स्पष्ट किया है कि अल्लाह तआला के नामों की संख्या मात्र ९९ नहीं है, अपितु इससे भी अधिक है। (इब्ने कसीर तथा फ़तहुल क़दीर) एक और बात स्पष्ट करता चलूँ कि अल्लाह तआला का अपना नाम जिसे हिन्दी व्याकरण में जाति वाचक संज्ञा कहेंगे मात्र "अल्लाह" है इसके अतिरिक्त सभी उपरोक्त गौणिक हैं।

[2] إِلْحَاد (इल्हाद) का अर्थ है किसी एक ओर टेढ़ा हो जाना। इसी शब्द से لَحْد (लहद) शब्द बना है, जो उस क़ब्र को कहते हैं, जो एक ओर बनायी जाती है। धर्म में इल्हाद का मार्ग अपनाने का अर्थ है कुटिलता तथा कुमार्ग अपनाना। अल्लाह तआला के नामों में इल्हाद तीन प्रकार से हो सकता है। १. अल्लाह तआला के नामों में परिवर्तन कर दिया जाये, जैसे मूर्तिपूजकों ने किया। जैसे अल्लाह के नामों में से "अज़ीज़" से "उज़्ज़ा" तथा "मन्नान" से "मनात" मूर्तियों के नाम बना लिये, २. अथवा अल्लाह के नामों में अपनी ओर से बढ़ा देना, जिसका आदेश अल्लाह ने नहीं दिया, ३. अथवा इसके नामों में कमी कर दी जाये। जैसे उसे किसी एक ही नाम से पुकारा जाये दूसरे विशेषता वाले

The Ummah Technology Mission

مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٨٠﴾

उन लोगों को उनके किये का दण्ड अवश्य मिलेगा।

وَمِمَّنْ خَلَقْنَا أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ﴿١٨١﴾

(१८१) तथा हमारे प्राणि वर्ग में एक समुदाय ऐसा भी है जो सत्यानुसार निर्देश करते हैं एवं तदानुसार न्याय करते हैं।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٢﴾

(१८२) तथा जो लोग हमारी आयतों (चिन्हों) को झुठलाते हैं हम उनको धीरे-धीरे (पकड़ में) ऐसे लिये जा रहे हैं कि उनको पता भी नही।

وَأُمْلِي لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ﴿١٨٣﴾

(१८३) तथा उनको अवसर देता हूँ। नि:संदेह मेरा उपाय बड़ा सुनियोजित है।[1]

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا ۗ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِنْ جِنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿١٨٤﴾

(१८४) क्या उन लोगों ने इस बात पर विचार नहीं किया कि उनके साथ को तनिक भी उन्माद नहीं, वह तो केवल एक स्पष्ट डराने वाले हैं।[2]

नामों से पुकारने को बुरा समझा जाये। (फ़तहुल क़दीर) अल्लाह के नाम में इल्हाद का एक रूप यह भी है कि उनमें कष्ट, कल्पना, समानता एवं बेकारी का भाव लिया जाये (ऐसरुत्तफ़ासीर) जैसा कि कुमार्ग समुदायों का चलन रहा है। अल्लाह तआला ने आदेश दिया है इन लोगों से बच कर रहो।

[1]यह वही अवसर है जो अल्लाह तआला परीक्षा के लिए व्यक्तियों तथा वर्गों को देता है फिर जब उसे पकड़ना चाहता है तो कोई बचाने में समर्थ नहीं हो सकता क्योंकि उसका उपाये गंभीर है।

[2]صاحب (साहिब) से तात्पर्य अन्तिम ईशदूत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं जिनको मिश्रणवादी कभी जादूगर कभी पागल (نعوذ بالله) कहते थे अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यह तुम्हारे विचार न करने का परिणाम है। वह तो हमारा पैग़म्बर है, जो हमारे आदेश पहुँचाने वाला तथा उनसे असावधान रहने वालों तथा अवहेलना करने वालों को डराने वाला है।

The Ummah Technology Mission

أَوَلَمْ يَنْظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّأَنْ عَسٰى أَنْ يَّكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ ۚ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٥﴾

(१८५) तथा क्या उन लोगों ने विचार नहीं किया आकाशों तथा धरती लोक में एवं अन्य वस्तुओं में, जो अल्लाह ने पैदा की हैं तथा इस बात में कि सम्भव है कि उनकी मृत्यु निकट ही आ पहुँची हो।[1] फिर (क़ुरआन) के पश्चात कौन सी-बात पर ये लोग ईमान लायेंगे ?[2]

مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ۭ وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٨٦﴾

(१८६) जिसको अल्लाह (तआला) भटका दे उसे कोई मार्ग पर नहीं ला सकता। तथा अल्लाह (तआला) उनको उनके कुमार्ग में भ्रमित छोड़ देता है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسٰىهَا ۭ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ إِلَّا هُوَ ۭ

(१८७) यह लोग आप से क़ियामत के[3] सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं कि वह कब घटित होगी।[4] (आप) कह दीजिए कि इसका ज्ञान केवल मेरे

---

[1]अर्थ यह है कि उन वस्तुओं पर भी यदि ये विचार करें तो निश्चित ही ये अल्लाह पर ईमान ले आयें, उसके रसूल की पुष्टि तथा उसे अनुकरण का मार्ग अपना लें तथा उन्होंने अल्लाह के साझीदार बन रखे हैं, उन्हें छोड़ दें तथा इस बात से डरें कि उन्हें इस अवस्था में मृत्यु आ जाये कि वे कुफ़्र में हों।

[2]हदीस से यहाँ तात्पर्य क़ुरआन मजीद है अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सचेत करने तथा शुभसूचना देने एवं क़ुरआन करीम के पश्चात भी यदि यह ईमान न लायें तो इनसे बढ़कर उनको डराने वाली चीज़ अन्य क्या होगी जो अल्लाह की ओर से उतरे तथा फिर यह उस पर ईमान लायें ?

[3]ساعة (साअ:) का अर्थ है (क्षण अथवा पल) प्रलय को साअ: इसलिए कहा गया है कि यह सहसा इस प्रकार आ जायेगी कि यह सारी सृष्टि एक पल में नष्ट भ्रष्ट हो जायेगी अथवा हिसाब की शीघ्रता के आधार पर प्रलय के समय को साअत से तुलना की गयी है।

[4]أرسى يُرسي का अर्थ निर्धारण अथवा घटित होना है अर्थात यह प्रलय कब आयेगी अथवा घटित होगी ?

The Ummah Technology Mission

ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ؕ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۷﴾

प्रभु के पास ही है।[1] इसको इसके समय पर सिवाय अल्लाह (तआला) के कोई अन्य प्रदर्शित न करेगा। वह आकाशों तथा धरती की बहुत बड़ी (घटना) होगी।[2] वह तुम पर सहसा आ पड़ेगी। वह आप से इस प्रकार पूछते हैं।[3] जैसाकि आप उसकी खोज कर चुके हैं। (आप) कह दीजिए कि इसका ज्ञान विशेष रूप से अल्लाह ही के पास है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

قُلْ لَّاۤ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۛۚ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ ؕ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۱۸۸﴾

(१८८) (आप) कह दीजिए कि स्वयं मैं अपने विशेष के लिए किसी लाभ का अधिकार नहीं रखता तथा न किसी हानि का। परन्तु इतना ही जितना कि अल्लाह ने चाहा हो। तथा यदि मैं परोक्ष की बातें जानता होता तो मैं बहुत से लाभ प्राप्त कर लेता, तथा कोई हानि मुझे नहीं पहुँचती।[4] मैं तो मात्र डराने

---

[1]अर्थात इसका निश्चित ज्ञान न किसी फ़रिश्ते को है, न किसी ईशदूत को है, अल्लाह के अतिरिक्त यह ज्ञान किसी के पास नहीं, वही उस को समय पर घटित करेगा।

[2]इसका एक अन्य अर्थ यह है कि इसका ज्ञान आकाश तथा धरती के लिए भारी है, क्योंकि वह गुप्त है तथा गुप्त चीज़ दिलों पर भारी होती है।

[3]حفي (हफीय्युन) कहते हैं पीछे पड़ कर प्रश्न करने वाले को तथा खोजबीन करने वाले को। अर्थात यह आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से प्रलय के विषय में इस प्रकार प्रश्न करते हैं जैसा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने प्रभु के पीछे पड़कर इस विषय में अवश्य ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

[4]यह आयत इस बात के लिए कितनी स्पष्ट है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अन्तर्यामी नहीं। अन्तर्यामी केवल अल्लाह तआला स्वयं है। परन्तु अत्याचार तथा अज्ञान की सीमा से आगे है कि इसके उपरान्त धर्म में आधुनिकीकरण वाले आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अन्तर्यामी सिद्ध करने का असफल प्रयत्न करते हैं। यद्यपि कुछ युद्धों में आपके पवित्र दाँत भी आहत हुए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

The Ummah Technology Mission

वाला तथा शुभसूचक हूँ, उन लोगों के लिए जो विश्वास (आस्था) रखते हैं।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا ۖ فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيفًا فَمَرَّتْ

(१८९) वह अल्लाह तआला ऐसा है कि जिस ने तुम्हें मात्र एक व्यक्ति से पैदा किया।[1] तथा उसी से उसका जोड़ा बनाया।[2] ताकि वह अपने उस जोड़े से संतोष प्राप्त करे।[3]

का मुख मंडल भी घायल हुआ, तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह समुदाय किस प्रकार उन्नति करेगा कि जिसने अपने नबी के सिर को घायल कर दिया (हदीस की किताबों में यह घटना तथा निम्नलिखित घटनायें भी लिखीं हैं) आदरणीया आयशा (رضي الله عنها) पर आक्षेप लगा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूर्ण एक माह तक अत्यधिक व्याकुल तथा अत्यधिक दुखी रहे। एक यहूदी औरत ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को निमन्त्रण दिया तथा खाने में विष मिला दिया, जिसे आप ने भी चखा तथा सहाबा ने भी यहाँ तक कि कुछ सहाबा की विष के कारण मृत्यु हो गयी। तथा स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सम्पूर्ण आयु इस विष का प्रभाव प्रतीत करते रहे। ये तथा इसी प्रकार की अन्य घटनायें जिनसे स्पष्ट होता है कि आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम को अज्ञान वश दुख पहुँचा, हानि उठानी पड़ी, जिससे क़ुरआन के द्वारा कथित बात सत्य सिद्ध होती है कि, "यदि मैं अन्तर्यामी होता तो मुझे कोई हानि न पहुँचती।"

[1]आदरणीय आदम से। इसीलिए उनको प्रथम मनु तथा 'मानव पिता' कहा जाता है।

[2]इससे तात्पर्य आदरणीय हव्वा हैं, जो आदरणीय आदम की पत्नी बनीं। उनकी उत्पत्ति आदरणीय आदम से हुई, जिस प्रकार से مِنها के सर्वनाम से, जो एक वचन प्रकट करता है स्पष्ट है। (विस्तार के किए देखिए सूर: निसा आयत संख्या १ की व्याख्या)

[3]अर्थात एक-दूसरे से सुख शान्ति प्राप्त करे इसलिए कि एक वर्ग अपने ही वर्ग से अधिक निकट तथा प्रेम कर सकता है, जो शान्ति प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। घनिष्टता के बिना यह सम्भव ही नहीं है। अन्य स्थान पर अल्लाह तआला फ़रमाता है

﴿ وَمِنْ ءَايَٰتِهِۦٓ أَنْ خَلَقَ لَكُم مِّنْ أَنفُسِكُمْ أَزْوَٰجًا لِّتَسْكُنُوٓا۟ إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُم مَّوَدَّةً وَرَحْمَةً ﴾

"अल्लाह की निशानियों में से यह भी हैं कि उसने तुम्हारे लिए तुम ही में से (अथवा तुम्हारे वर्ग ही में से) जोड़े पैदा किये ताकि तुम उन से शान्ति प्राप्त करो तथा तुम्हारे मध्य उसने प्यार व प्रेम उत्पन्न कर दिया।" (सूर: रूम-२१)

अर्थात अल्लाह तआला ने पुरुष तथा स्त्री दोनों में एक-दूसरे के लिए जो आकर्षण तथा भावना रखी है। प्रकृति की यह देन वह जोड़ा बन कर पूरा करते हैं तथा एक-दूसरे से

The Ummah Technology Mission

بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثۡقَلَتۡ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنۡ اٰتَيۡتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوۡنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيۡنَ ﴿۱۸۹﴾

फिर पति ने पत्नी से समीपता की,[1] तो उसे गर्भ रह गया, हल्का-सा। फिर वह उसको लेकर चलती फिरती रही।[2] जब वह भार का आभास करने लगी, तो पति-पत्नी दोनों अल्लाह से जो उनका मालिक है प्रार्थना करने लगे कि यदि तूने हम को स्वस्थ संतान प्रदान कर दी तो हम अति कृतज्ञा करेंगे।[3]

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيۡمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى

(१९०) तो जब अल्लाह ने दोनों को स्वस्थ शिशु प्रदान किया तो अल्लाह के प्रदान में वह दोनों अल्लाह का साझी ठहराने लगे।[4]

घनिष्ठता तथा प्रेम प्राप्त करते हैं। अत: यह सत्य है कि जो आपसी प्रेम पति-पत्नी के मध्य होता है, वह दुनिया के अन्य किसी सम्बन्ध में नहीं होता।

[1]अर्थात यह मानव वंश इस प्रकार बढ़ा तथा आगे चल कर जब उनमें के एक साथी अर्थात पति-पत्नी ने एक-दूसरे से निकटता प्राप्त की। تَغَشّٰىهَا का अर्थ 'पत्नी के संग सम्भोग करना' है। अर्थात संभोग करने के लिए ढांका।

[2]अर्थात गर्भ के आरम्भिक दिनों में यहाँ तक कि वीर्य से रूधिर की ग्रन्थियाँ बनने तक तथा रूधिर ग्रन्थियों से भ्रूण बनने तक, गर्भ हल्का ही रहता है, प्रतीत भी नहीं होता है तथा स्त्री को कोई कठिनाई नहीं होती।

[3]भारी हो जाने से तात्पर्य, जब बच्चा गर्भ में बड़ा हो जाता है, तो ज्यों-ज्यों जन्म का समय निकट आता जाता है, माता-पिता के हृदय में भय तथा शंका उत्पन्न होती जाती है। (विशेषरूप से जब स्त्री को स्त्री रोग हो) तो मनुष्य की प्रकृति है कि भय के कारण अल्लाह की ओर अकर्षित होते है। अत: वे दोनों अल्लाह से प्रार्थना करते हैं तथा कृतज्ञता व्यक्त करने का वचन देते हैं।

[4]साझीदार बना देने से तात्पर्य या तो बच्चे का नाम ऐसा रखना है, जैसे इमाम बख्श, पीराँदत्ता, अब्दुशम्स बन्द:अली आदि, जिससे यह स्पष्ट होता है कि बच्चा अमुक महात्मा अमुक सन्त के (نعوذ باللہ) कृपा दृष्टि का परिणाम है अथवा अपने इस विश्वास को प्रकट करे कि हम तो अमुक सन्त महात्मा अथवा अमुक क़ब्र पर गये थे जिसके परिणाम से बच्चा पैदा हुआ। अथवा किसी मृतक के नाम का प्रसाद, भोग, नजर व नियाज आदि कराये अथवा बच्चे को किसी क़ब्र पर ले जाकर माथा टेकाये कि उनकी

The Ummah Technology Mission

اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٩٠﴾

अत: अल्लाह पवित्र है उनके मिश्रण करने से।

اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿١٩١﴾

(१९१) क्या ऐसों को साझीदार ठहराते हैं, जो किसी वस्तु को न बना सकें, स्वयं उनको ही बनाया गया हो।

وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٢﴾

(१९२) तथा वह उनको किसी प्रकार की सहायता नहीं दे सकते, और वे स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकते।

وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ﴿١٩٣﴾

(१९३) तथा यदि तुम कोई बात बताने को उनको पुकारो तो तुम्हारे कहने पर न चलें।[1] तुम्हारे लगाव से दोनों बातें समान हैं चाहे तुम उनको पुकारो अथवा मौन रहो।

اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ

(१९४) वास्तव में तुम अल्लाह को छोड़ कर जिन को पुकारते (उपासना करते) हो वह भी तुम ही जैसे दास हैं।[2] तो तुम उनको पुकारो

कृपा से बच्चा प्राप्त हुआ। यह सभी अवस्थायें अल्लाह का साझीदार बनाने की हैं। जो दुर्भाग्य से मुसलमानों में भी सामान्य रूप से व्याप्त है। अगली आयत में अल्लाह तआला शिर्क का खण्डन कर रहा है।

[1]अथवा तुम्हारी बातों के अनुसार कर्म नहीं करेंगे। एक अन्य भावार्थ इसका यह भी है कि यदि तुम उनसे ज्ञान तथा मार्गदर्शन माँगो, तो वह तुम्हारी बात नहीं मानेंगे, न तुम्हें कोई उत्तर ही देंगे। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात जब वह जीवित थे अपितु अब तो तुम उनसे अधिक योग्य हो। अब वह देख नहीं सकते, तुम देख सकते हो वह सुन नहीं सकते, तुम सुनते हो। वह किसी की बात समझ नहीं सकते, तुम समझते हो। वह उत्तर नहीं दे सकते, तुम देते हो। इससे ज्ञात हुआ कि मूर्तिपूजक जिनकी मूर्तियाँ बना कर पूजते थे, वह भी पहले अल्लाह के भक्त थे अर्थात मनुष्य ही थे। जैसे आदरणीय नूह के समुदाय की पाँच मूर्तियों के विषय में सहीह बुख़ारी में सविस्तार स्पष्ट है कि वह अल्लाह के परम भक्त थे।

The Ummah Technology Mission

فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٩٤﴾

फिर उनको चाहिए कि वह तुम्हारा कहना कर दें, यदि तुम सच्चे हो।

أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا ۗ قُلِ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كِيدُونِ فَلَا تُنظِرُونِ ﴿١٩٥﴾

(१९५) क्या उनके पैर हैं जिनसे वे चलते हों अथवा उनके हाथ हैं जिससे किसी चीज़ को थाम सकें अथवा उनकी आँखें हैं जिनसे देखते हों, अथवा उनके कान हैं जिनसे वे सुनते हैं।[1] (आप) कह दीजिए कि तुम अपने सभी साझीदारों को बुला लो, फिर मुझे (हानि पहुँचाने की) उपाय करो, फिर मुझे तनिक अवसर न दो।[2]

إِنَّ وَلِيِّيَ اللَّهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ ﴿١٩٦﴾

(१९६) नि:संदेह मेरा सहायक अल्लाह ही है, जिसने यह धर्मशास्त्र (पवित्र क़ुरआन) उतारा तथा वह सदाचारी भक्तों की सहायता करता है।

وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَا أَنفُسَهُمْ يَنصُرُونَ ﴿١٩٧﴾

(१९७) तथा तुम जिन लोगों को, अल्लाह को छोड़ कर, पुकारते (उपासना करते) हो वह तुम्हारी कुछ सहायता नहीं कर सकते तथा न वह अपनी सहायता कर सकते हैं।[3]

---

[1]अर्थात अब इनमें से कोई शक्ति भी उनमें नहीं है, मरने के साथ ही देखने, सुनने समझने तथा चलने की शक्ति समाप्त हो गयी अब उन से सम्बन्धित या तो पत्थर अथवा लकड़ी की स्वयं बनायी हुई मूर्तियाँ हैं, अथवा गुम्बद, कुब्बे तथा आस्ताने हैं जो उनकी क़ब्रों पर बना लिये गये हैं। इस प्रकार धर्म के नाम पर अधर्म का प्रचार-प्रसार हो रहा है।

[2]अर्थात यदि तुम अपने वादे में सच्चे हो कि यह तुम्हारी सहायता करेंगे, तो इनसे कहो कि मेरे विरुद्ध षडयन्त्र रचायें।

[3]जो अपनी सहायता आप करने में सक्षम न हो, वे भला अन्यों की सहायता क्या करेंगे।

जो खुद मोहताज होवे दूसरे का : भला उससे मदद का माँगना क्या।

The Ummah Technology Mission

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَسْمَعُوا ۖ وَتَرَاهُمْ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٩٨﴾

(१९८) तथा यदि उनको कोई बात बताने को पुकारो तो उसको न सुनें।[1] तथा उनको आप देखते हैं कि वह आपको देख रहे हैं तथा वह कुछ भी नहीं देखते।

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ ﴿١٩٩﴾

(१९९) आप क्षमा का मार्ग अपनायें।[2] पुण्य के कार्य की शिक्षा दें।[3] तथा अशिक्षितों से अलग रहें।[4]

---

[1]इसका यही भावार्थ है जो आयत संख्या १९३ का है।

[2]कुछ आलिमों ने इसका अर्थ यह किया है (خُذْ مَا عَفَا لَكَ مِنْ أَمْوَالِهِمْ) أي : مَا فَضَلَ अर्थात "जो आवश्यकता से अधिक धन हो, वह ले लो।" तथा यह ज़कात की अनिवार्यता से पूर्व का आदेश है। (फ़तहुल बारी, भाग ८, पृष्ट ३०५)। परन्तु अन्य व्याख्याकारों ने इससे नैतिक निर्देश अर्थात क्षमा करना तात्पर्य लिया है तथा इमाम जरीर तथा इमाम बुख़ारी आदि ने इसी को प्राथमिकता दी है। अत: इमाम बुख़ारी ने इसके पक्ष में आदरणीय उमर (رضي الله عنه) की एक घटना का वर्णन किया है। उयेन: बिन हिस्न आदरणीय उमर (رضي الله عنه) की सेवा में उपस्थित हुए तथा आकर उन पर टिप्पणी करने लगे कि आप हमें न तो पूरा धन प्रदान करते हैं तथा न हमारे मध्य न्याय करते हैं, जिस पर आदरणीय उमर (رضي الله عنه) क्रोधित हुए यह परिस्थित देख कर आदरणीय उमर (رضي الله عنه) के सलाहकार हुर बिन क़ैस ने (जो उयैन: के भतीजे थे) आदरणीय उमर (رضي الله عنه) से कहा कि अल्लाह तआला ने अपने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को आदेश दिया था। ﴿خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ﴾ "क्षमा का मार्ग अपनाईये तथा पुण्य का उपदेश दीजिए एवं अज्ञानियों से बचिये। तथा यह भी अज्ञानियों में से है।" जिस पर अदरणीय उमर (رضي الله عنه) ने क्षमा कर दिया। "तथा आदरणीय उमर (رضي الله عنه) अल्लाह की किताब का आदेश सुनकर तुरन्त माथा टेक देते थे।" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: अल-आराफ़) इसका समर्थन इन हदीसों से भी होता है, जिन में अत्याचार के बदले क्षमा कर देने, कष्टों के बदले कृपा तथा बुराई के बदले भलाई एवं उपकार करने पर बल दिया गया है।

[3]عُرْف (उर्फ़) से तात्पर्य مَعروف (मारूफ़) अर्थात पुण्य है।

[4]अर्थात जब आप पुण्य के कार्य करने के आदेश देने को पूर्ण रूप से इस प्रकार समाप्त कर लें कि अब उनके पास कोई तर्क न हो तथा उसके उपरान्त भी न मानें तो, उनसे मुख मोड़ लें तथा उनके झगड़ो, तथा मूर्खताओं का उत्तर न दें।

The Ummah Technology Mission

وَإِمَّا يَنزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُۥ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٠٠﴾

(२००) तथा यदि आपको कोई शंका शैतान की ओर से आने लगे तो अल्लाह की शरण माँग लिया कीजिए।[1] नि:सन्देह वह अत्यधिक सुनने वाला तथा अत्यधिक जानने वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطَٰنِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُم مُّبْصِرُونَ ﴿٢٠١﴾

(२०१) नि:संदेह जो लोग अल्लाह से डरते हैं, जब उनको कोई शंका शैतान की ओर से आ जाती है, तो वह याद में लग जाते हैं। अत: सहसा उनकी आंखें खुल जाती हैं।[2]

وَإِخْوَٰنُهُمْ يَمُدُّونَهُمْ فِى الْغَىِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ ﴿٢٠٢﴾

(२०२) तथा जो शैतानों के अनुगामी हैं वह उनको विपदा में खींचे लिए जाते है फिर वे नहीं रुकते।[3]

وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِم بِـَٔايَةٍ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ۚ قُلْ إِنَّمَآ أَتَّبِعُ مَا يُوحَىٰٓ إِلَىَّ مِن رَّبِّى ۚ هَٰذَا

(२०३) तथा जब आप कोई चमत्कार उनके समक्ष प्रस्तुत नहीं करते तो वह लोग कहते हैं कि आप यह चमत्कार क्यों न लाये।[4] (आप) फ़रमा दीजिए कि मैं उसका पालन करता हूँ

---

[1]तथा इस समय यदि शैतान आपको उत्तेजित करने का प्रयत्न करे, तो अल्लाह की शरण माँगे।

[2]इसमें अल्लाह से भय रखने वालों के विषय में बताया गया है कि वे शैतान से सावधान रहते हैं। طائف अथवा طَيْفٌ उस मानसिक विचारों को कहते हैं जो दिल में आये अथवा स्वप्न में आये। यहाँ उसे शैतान के द्वारा डाली गयी शंकाओं के लिए प्रयोग हुआ है, क्योंकि शैतान के द्वारा शंकाऐं भी मानसिक विचारों में ही उत्पन्न होते हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[3]अर्थात शैतान काफ़िरों को भटकाने की ओर खींच ले जाता है, फिर वह काफ़िर (भटकावे की ओर जाने में) अथवा शैतान उनको ले जाने में आनाकानी नहीं करता है। अर्थात لا يُقصرون क्रिया के कर्ता अधर्मी भी बन सकते हैं तथा "शैतान" भी।

[4]तात्पर्य ऐसा चमत्कार है जो उनके कहने पर उनकी इच्छानुसार प्रदर्शित किया जाये जैसे उनकी कुछ माँगों की सूर: बनी इस्राईल आयत ९० से ९३ तक में चर्चा की गयी है।

The Ummah Technology Mission

بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠٣﴾

जो मुझ पर मेरे प्रभु की ओर से आदेश भेजा गया है। यह मानो तुम्हारे पोषक की ओर से बहुत से तर्क हैं एवं निर्देश तथा कृपा उन लोगों के लिये जो विश्वास रखते हैं।[1]

وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٢٠٤﴾

(२०४) तथा जब क़ुरआन पढ़ा जाये तो उसे ध्यानपूर्वक सुनो एवं मौन साध लो आशा है कि तुम पर कृपा हो।[2]

---

[1] لولا اجتبيتها का अर्थ है कि तू अपने पास से ही क्यों नहीं बना लाता। इसके उत्तर में फ़रमाया गया) कि आप कह दें, चमत्कार प्रस्तुत करना मेरे वश में नहीं है। मैं तो अल्लाह की प्रकाशनाओं (वह्यी) का पालन करने वाला हूँ। हाँ, यदि यह क़ुरआन जो मेरे पास आया है, यह स्वयं ही एक बहुत बड़ा चमत्कार है। इसमें तुम्हारे प्रभु की ओर से निर्देश (सूचनायें तथा शुभ सन्देश) तथा मार्गदर्शन एवं कृपा है यदि कोई ईमानवाला हो।

[2] यहाँ काफ़िरों को कहा जा रहा है जो क़ुरआन के पढ़ते समय शोर करते थे तथा अपने साथियों से कहते थे :

﴿لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا﴾

"यह क़ुरआन मत सुनो तथा शोर करो।" (सूर: हा॰ मीम॰ सजद:-२६)

उन से कहा जा रहा है कि इसके बजाय यदि ध्यानपूर्वक सुनो तथा शान्त रहो, तो शायद अल्लाह तआला तुम्हें मार्गदर्शन प्रदान कर दे। इस प्रकार तुम अल्लाह की कृपा के अधिकारी बन जाओ।

कुछ विद्वान इसे सामान्य रूप से लेते हैं अर्थात जब भी क़ुरआन पढ़ा जाये चाहे नमाज़ हो अथवा नमाज़ न हो सबको शान्त हो कर सुनने का आदेश है। इस सामान्य आदेश से भाव निकाल कर जोर से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में मुक़तदी (नमाज़ में इमाम के अतिरिक्त सभी नमाजियों को कहते हैं) के सूर: फ़ातिहा पढ़ने को भी क़ुरआन के इस आदेश के विरुद्ध मानते हैं। जब कि उच्च स्वर से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में इमाम के पीछे सूर: फ़ातिहा पढ़नें के लिए आदेश नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सहीह हदीसों से सिद्ध है, जैसाकि इसके मक्की होने से भी सिद्ध होता है। परन्तु यदि इसे सामान्य रूप से मान भी लिया जाये, तब भी इस सामान्य से मुक़तदियों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निकाल दिया। तथा इस प्रकार इस आयत के सामान्य होने के उपरान्त भी उच्च स्वर से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में मुक़तदियों को सूर:

The Ummah Technology Mission

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿٢٠٥﴾

(२०५) तथा हे, मानव, अपने मन में विनीत एवं भयभीत होकर अपने पोषक को स्मरण करता रह प्रात: एवं संध्या काल में उच्च स्वर से आवाज़ को कम करके तथा अचेतों की गणना में न होना।

اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ﴿٢٠٦﴾ السجدة

(२०६) नि:संदेह जो तेरे पोषक के समीप हैं वे उसकी इबादत से अहंकार नहीं करते। तथा उसकी पवित्रता का वर्णन करते तथा उसको सजदा करते हैं।

سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ

सूरतुल अंफ़ाल-८

सूर: अंफाल मदीना में उतरी तथा इसकी पचहत्तर आयतें एवं दस रुकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ, जो अत्यन्त कृपालु तथा अत्यन्त दयालु है

फ़ातिहा अवश्य पढ़नी होगी। क्योंकि क़ुरआन के इस सामान्य आदेश से मुक़तदियों की छूट के लिए सहीह हदीस तथा ठोस हदीसों से सिद्ध होता है। जिस प्रकार क़ुरआन की अन्य सामान्य रूप से आदेशित आयतों में कुछ को छूट प्राप्त है उसी प्रकार इस आयत को भी मान्यता प्राप्त है। जैसे ﴿اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا﴾ (सूर: नूर-२) के सामान्य आदेश विवाहित व्याभिचारी निष्कासित हैं, तथा السارق و السارقة के सामान्य आदेश से ऐसे चोर निष्कासित हैं जिसने चौथाई दीनार से कम मूल्य की चीज़ चोरी की हो अथवा चोरी की हुई चीज़ सुरक्षा में न रखी हो आदि। इसी प्रकार ﴿فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا﴾ के सामान्य आदेश से मुक़तदी निष्कासित होंगे। तथा उनके लिए उच्च स्वर में पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में भी सूर: फ़ातिहा पढ़ना आवश्यक होगा क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस पर बल दिया है (जैसाकि सूर: फ़ातिहा की व्याख्या में यह हदीसें वर्णन की गयी हैं)।

The Ummah Technology Mission

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۪ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝١

(१) ये लोग आप से युद्ध में प्राप्त माल के विषय में पूछते हैं।[1] आप कह दीजिए कि वे युद्ध से प्राप्त माल अल्लाह के हैं तथा रसूल के हैं।[2] इसलिए तुम अल्लाह से डरो तथा अपने आपसी सम्बन्धों को सुधारो तथा अल्लाह तआला एवं उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो, यदि तुम ईमानवाले हो।[3]

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۚ ۝٢

(२) बस ईमान वाले ही ऐसे होते हैं कि जब अल्लाह (तआला) का वर्णन होता है, तो उन के हृदय भयभीत हो जाते हैं। तथा जब अल्लाह की आयतें उनको पढ़कर सुनायी जाती हैं, तो वे आयतें उनके ईमान को और अधिक कर

---

[1] أنفال शब्द نَفل शब्द का बहुवचन है, जिसका अर्थ है अधिक। ये उस माल-सामग्री को कहा जाता है जो काफ़िरों के साथ युद्ध में हाथ लगे, इसे अंफाल इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह उन चीज़ों में से है जो पूर्व के समुदायों के लिए निषेध थीं। अर्थात यह मुसलमानों के लिए एक अधिक वस्तु मान्य की गयी है अथवा इसलिए कि ये धर्मयुद्ध के प्रतिफल से (जो परलोक में मिलेगा) एक अधिक चीज़ है, जो कई बार दुनिया ही में मिल जाती है।

[2] अर्थात इसका निर्णय करने के अधिकारी हैं। अल्लाह के रसूल, अल्लाह के आदेश से इसे विभाजित करेंगे, न कि तुम आपस में जिस प्रकार चाहो विभाजित कर लो।

[3] इसका अर्थ यह हुआ कि वर्णित तीनों बातों के अनुसार कर्म किये बिना ईमान पूर्ण नहीं। इससे अल्लाह का भय (तक़वा), आपस में सम्बन्धों का सुधार, तथा अल्लाह तथा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आज्ञापालन की विशेषता को स्पष्ट किया गया है। विशेष रूप से युद्ध में प्राप्त सामग्री के बँटवारे में इन तीनों बातों को ध्यान में रखना अनिवार्य है। क्योंकि माल के बंटवारे में आपसी सम्बन्धों के बिगड़ने का अधिक भ्रम रहता है, इसलिये आपसी सम्बन्ध के सुधारने पर बल दिया गया है। हेराफेरी, तथा विश्वासघात की सम्भावना रहती है इसलिए अल्लाह के भय का आदेश दिया गया है। इसके उपरान्त भी कोई कमी रह जाये तो उसका समाधान अल्लाह तथा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुकरण पर आधारित है।

The Ummah Technology Mission

देती हैं। तथा वह लोग अपने प्रभु पर भरोसा करते हैं।[1]

---

[1]इन आयतों में ईमानवालों के चार गुण बताये गये हैं। १. यह अल्लाह तथा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञा का पालन करते हैं, न कि केवल अल्लाह का अर्थात क़ुरआन का, २. अल्लाह का वर्णन सुन कर उसकी शक्ति तथा महिमा से प्रभावित होकर दिल काँप उठते हैं, ३. क़ुरआन पढ़नें से उनके ईमान में बढ़ोत्तरी होती है, ४. वे अपने प्रभु पर भरोसा करते हैं। तवक्कुल का अर्थ है कि प्राप्त साधनों को अपनाने के उपरान्त अल्लाह पर भरोसा करते हैं। अर्थात प्राप्त साधन से मुँह नहीं मोड़ते क्योंकि उनको अपनाने का अल्लाह ने आदेश दिया है, परन्तु प्राप्त साधनों को ही सब कुछ नहीं समझ लेते अपितु उनको यह पूर्ण विश्वास होता है कि वास्तविक रूप से करने वाला अल्लाह ही है, इसलिए जब तक अल्लाह की इच्छा नहीं होगी, यह प्राप्त साधन कुछ नहीं कर सकते तथा इस विश्वास तथा भरोसे के आधार पर फिर भी अल्लाह की सहायता तथा कृपा प्राप्त करने के लिए एक क्षण के लिए भी असावधान नहीं होते। आगे इनके अन्य गुणों का वर्णन है तथा इन गुणों से अलंकृत लोगों के लिए अल्लाह की ओर से सच्चे मुसलमान होने का प्रामण पत्र तथा मोक्ष एवं कृपा तथा पाक रोज़ी की शुभ सूचना है। (अल्लाह तआला हमें भी उनमें सम्मिलित कर ले)

<u>बद्र के युद्ध का दृश्य</u> : बद्र का युद्ध सन् २ हिजरी में काफ़िरों के साथ मुसलमानों का प्रथम युद्ध था। इसके अतिरिक्त यह बिना किसी योजना तथा तैयारी के अचानक हुआ। इसके अतिरिक्त बिना साधन-सामग्री के कारण कुछ मुसलमान बौद्धिक रूप से इसके लिए तैयार भी नहीं थे। सारांश में उसका दृश्य इस प्रकार है कि आदरणीय अबू सुफ़ियान (जो अभी मुसलमान नहीं हुए थे) के नेतृत्व में एक व्यापारिक काफ़िला सीरिया से मक्का जा रहा था, चूँकि मुसलमानों की भी बहुत-सी माल-सामग्री मक्के में हिजरत के कारण रह गयी थी अथवा काफ़िरों ने छीन लिया था। इसके अतिरिक्त काफ़िरों की शक्ति तथा अभिमान को तोड़ना भी समय की माँग थी। इन सभी बातों के कारण रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस काफ़िले पर आक्रमण करने की योजना बनायी तथा मुसलमान इस विचार से मदीने से चल पड़े। अबू सुफ़ियान को भी इस बात की सूचना मिल गयी। अत: उन्होंने अपना मार्ग बदल दिया तथा मक्के में सूचना भेजवा दी, जिसके कारण अबूजहल एक सेना लेकर अपने काफ़िले की सुरक्षा के लिए निकल पड़ा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस बात की सूचना मिली, तो यह बात सहाबा के समक्ष रख दी तथा अल्लाह का वायदा भी बतलाया कि इन दोनों (व्यापारिक काफ़िला तथा सेना) में से एक तुम्हें अवश्य प्राप्त होगी फिर भी कुछ सहाबा ने असमंजस्य का प्रर्दशन किया तथा व्यापारिक काफ़िले का पीछा करने की राय दी, जब कि अन्य सभी सहाबा ने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के

The Ummah Technology Mission

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٣

(३) जो कि नमाज़ नियमित रूप से पढ़ते हैं तथा हमने जो कुछ उनको दिया है वे उस में से व्यय करते हैं।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝٤

(४) सच्चे ईमानवाले यही लोग हैं, उनके लिए बड़े पद हैं, उनके प्रभु के पास तथा मोक्ष एवं सम्मान की जीविका है।

كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۖ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۝٥

(५) जैसाकि आपके प्रभु ने आप के घर से सत्य के साथ आपको निकाला,[1] तथा मुसलमानों का एक गुट इसको भारी समझता था।[2]

يُجَادِلُوْنَكَ فِى الْحَقِّ بَعْدَمَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝٦

(६) वह स्पष्ट हो जाने के पश्चात[3] सत्य के विषय में आप से झगड़ा कर रहे थे जैसेकि वह मृत्यु की ओर हाँके जा रहे हों तथा (उसे) देख रहे हों।[4]

साथ युद्ध में लड़ने के लिए पूर्ण समर्थन का विश्वास दिलाया। इसी कारण यह आयतें उतरी।

[1]अर्थात जिस प्रकार युद्ध में प्राप्त माल-सामग्री के बँटवारे की समस्या मुसलमानों के मध्य मतभेद का कारण बनी हुई थी फिर उसे अल्लाह तथा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हवाले कर दी गयी थी, तो उसी में मुसलमानों की भलाई थी उसी प्रकार आपका मदीने से निकलना, तथा फिर आगे चल कर व्यापारिक काफ़िले के बजाय क़ुरैश की सेना से मुठभेड़ हो जाना, यद्यपि कुछ आज्ञाकारियों को उचित न लगा था, परन्तु इसमें भी मुसलमानों का अन्ततः लाभ था।

[2]यह अप्रसन्नता क़ुरैश की सेना से लड़ने के विषय में थी, जिसको कुछ लोगों ही ने प्रकट किया तथा इस का कारण भी साधन विहीन होना था।

[3]अर्थात यह बात स्पष्ट हो गयी थी कि क़ाफ़िला तो बच कर निकल गया है तथा अब क़ुरैश की सेना ही सामने है, जिससे लड़ाई टलना असम्भव है।

[4]यह बिना साधन-सामग्री की अवस्था में लड़ने के कारण से कुछ मुसलमानों की जो अवस्था थी, इसका प्रदर्शन है।

The Ummah Technology Mission

وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۙ﴿۷﴾

(७) तथा तुम लोग उस समय को याद करो कि जब कि अल्लाह तुम से उन दो गुटों में से एक का वायदा करता था कि वह तुम्हारे हाथ आ जायेगा।[1] तथा तुम इस आशा में थे कि बिना हथियारों वाला गुट तुम्हारे हाथ आ जाये।[2] तथा अल्लाह तआला को स्वीकार था कि अपने आदेश से सत्य का सत्य होना सिद्ध कर दे तथा उन काफ़िरों की जड़ काट दे।

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۚ﴿۸﴾

(८) ताकि सत्य का सत्य होना एवं असत्य का असत्य होना सिद्ध कर दे, चाहे ये अपराधी लोग पसन्द न करें।[3]

اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ۝﴿۹﴾

(९) उस समय को याद करो जब कि तुम अपने पालक से विनती कर रहे थे, फिर अल्लाह तआला ने तुम्हारी सुन ली कि मैं तुम को एक हज़ार फ़रिश्तों से सहायता दूँगा जो निरन्तर चले आयेंगे।[4]

---

[1]अर्थात या तो व्यापारिक क़ाफ़िला तुम्हें मिल जायेगा, जिससे तुम्हें लड़ाई के बिना अत्यधिक माल-सामग्री मिल जायेगी, दूसरी अवस्था में कुरैश की सेना से तुम्हारा मुक़बिला होगा तथा तुम्हारी विजय होगी तथा युद्ध से प्राप्त माल-सामग्री मिलेगी।

[2]अर्थात व्यापारिक क़ाफ़िला, ताकि बिना लड़े माल हाथ लग जाये।

[3]परन्तु अल्लाह इसके विपरीत यह चाहता है कि कुरैश की सेना से तुम्हारा युद्ध हो, ताकि काफ़िरों की शक्ति तथा गर्व को धक्का पहुँचे, चाहे यह बात अपराधियों (मूर्तिपूजकों) के लिए अप्रिय ही हो।

[4]इस युद्ध में मुसलमानों की संख्या ३१३ थी, जब कि काफ़िर उनके तीन गुने (अर्थात) लगभग एक हज़ार थे, फिर मुसलमान निहत्थे थे तथा अस्त्र-शस्त्र हीन थे, जबकि काफ़िरों के पास अस्त्र-शस्त्रों की अधिकता थी। इन परिस्थितियों में मुसलमानों को सहारा केवल अल्लाह ही की शक्ति का था, जिससे वे विनम्र निवेदन एवं विनती कर रहे थे, स्वयं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक खेमें में आग्रह पूर्ण विनय

The Ummah Technology Mission

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝١٠

(१०) तथा अल्लाह (तआला) ने यह सहायता मात्र इस कारण की कि शुभ सूचना हो तथा तुम्हारे दिलों को संतोष हो जाये। तथा विजय मात्र अल्लाह की ओर से है।[1] जो कि अत्यधिक शक्तिशाली विवेकशील है।

اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ۝١١

(११) उस समय को याद करो, जबकि (अल्लाह तआला) तुम पर ओंघाई अच्छादित कर रहा था, अपनी ओर से शान्ति प्रदान करने के लिए।[2] तथा तुम पर आकाश से पानी वर्षा रहा था कि इस पानी द्वारा तुम को पवित्र कर दे तथा तुमसे शैतानी शंकाओं को दूर कर दे।[3]

पूर्वक प्रार्थना में लीन थे सहीह बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी)। अत: अल्लाह तआला ने प्रार्थनायें स्वीकार कीं तथा एक हज़ार फ़रिश्ते एक-दूसरे के पीछे निरन्तर मुसलमानों की सहायता केलिए आ गये।

[1]अर्थात फ़रिश्तों का उतारना तो केवल शुभ सूचना तथा तुम्हारे दिलों की शान्ति के लिए था, अपितु मूल सहायता तो अल्लाह की ओर से थी। जो फ़रिश्तों के बिना भी तुम्हारी सहायता कर सकता था, फिर भी इससे यह समझना भी उचित नहीं कि फ़रिश्तों ने युद्ध में भाग नहीं लिया। हदीसों से ज्ञात होता है कि युद्ध में फ़रिश्तों ने भाग लिया तथा कई काफ़िरों का वध भी किया, (देखिए सहीह बुख़ारी तथा सहीह मुस्लिम किताबुल मग़ाज़ी व फ़ज़ायेल अस्सहाबा)

[2]ओहद के युद्ध की भाँति बद्र के युद्ध में भी अल्लाह तआला ने मुसलमानों पर ऊँघ प्रभावशाली कर दिया, जिससे उनके दिलों के भार हल्के हो गये तथा संतोष एवं शान्ति की एक विशेष अवस्था उन पर प्रभावी हो गया।

[3]तीसरा उपहार यह किया कि वर्षा कर दिया, जिससे एक तो रेत में आवागमन सरल हो गया दूसरे वज़ू तथा पवित्रता में सरलता हो गयी। तीसरे इस से शैतानी शंकाओं का खण्डन कर दिया, जो वह ईमानवालों के दिलों में डाल रहा था कि तुम अल्लाह के अच्छे बन्दे होते हुए भी पानी से दूर हो, दूसरे अपवित्रता की अवस्था में तुम लड़ोगे तो कैसे अल्लाह की कृपा तथा दया तुम्हें प्राप्त होगी ? तीसरे तुम प्यासे हो, जबकि तुम्हारे शत्रुओं के पास पानी है इत्यादि।

The Ummah Technology Mission

तथा तुम्हारे दिलों को दृढ़ कर दे तथा तुम्हारे पाँव जमा दे।[1]

إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا ۚ سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٢﴾

(१२) उस समय को याद करो, जब कि आप का प्रभु फ़रिश्तों को आदेश दे रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, इसलिए तुम ईमान वालों का साहस बढ़ाओ। मैं अभी काफ़िरों के दिलों में भय डालता हूँ।[2] इसलिए तुम गर्दनों पर मारो और उनके जोड़-जोड़ पर चोट लगाओ।[3]

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَمَن يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١٣﴾

(१३) यह इस बात का दण्ड है कि उन्होंने अल्लाह का तथा उसके रसूल का विरोध किया तथा जो अल्लाह का तथा उसके रसूल का विरोध करता है, तो अल्लाह तआला कड़ा दण्ड देने वाला है।

ذَٰلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾

(१४) तो यह दण्ड का स्वाद चखो तथा ध्यान रहे कि काफ़िरों के लिए नरक की यातना निर्धारित ही है।

---

[1]यह चौथा उपहार है जिसने दिलों में दृढ़ता प्रदान की।

[2]यह अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों के द्वारा तथा विशेष रूप से अपनी ओर से जिस-जिस प्रकार मुसलमानों की बद्र में सहायता की, उसका वर्णन है।

[3]بَنَان (बनान) का अर्थ हाथों तथा पैरों की उँगलियों के पोर हैं। अर्थात किनारे, यह किनारे काट दिये जायें तो स्पष्ट है कि वे विवश हो जायेंगे। इस प्रकार वह हाथ से तलवार चलाने तथा पैरों से भागने योग्य नहीं रहेंगे।

The Ummah Technology Mission
628 7 2287

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا لَقِيتُمُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوهُمُ ٱلْأَدْبَارَ ﴿١٥﴾

(१५) हे ईमान वालो ! जब तुम काफ़िरों से मुठभेड़ करो तो उन से पीठ मत फेरना ।[1]

وَمَن يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُۥٓ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ ٱللَّهِ وَمَأْوَىٰهُ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ ﴿١٦﴾

(१६) तथा जो व्यक्ति उन से उस अवसर पर पीठ फेरेगा, परन्तु यदि कोई लड़ाई के लिए पैंतरा बदलता हो अथवा जो अपने गुट की ओर शरण लेने आता हो, (वह अलग है)[2] शेष अन्य जो ऐसा करेगा वह अल्लाह के क्रोध को पायेगा । तथा उसका ठिकाना नरक होगी तथा वह बहुत ही बुरा स्थान है ।[3]

---

[1] زحفًا (ज़हफन) शब्द का अर्थ है एक-दूसरे के सामने होना तथा संघर्ष करना । अर्थात मुसलमान तथा काफ़िर जब सम्मुख हो कर लाम बन्दी करें तो पीठ फेर कर भागने की आज्ञा नहीं है । एक हदीस में है «اجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُوبِقَاتِ» "सात विनाशकारी से बचो ।" इन सात में से एक «وَالتَّوَلِّي يومَ الزَّحْفِ» "लड़ाई के दिन पीठ फेर जाना है ।" (सहीह बुख़ारी संख्या २७६६ किताबुल वसाया, मुस्लिम किताबुल ईमान)

[2] पिछली आयत में पीठ फेरने से जो मना किया गया है । दो अवस्थायें इससे विलग हैं । एक تحرّف की, दूसरी تحيُّز की । تحرّف का अर्थ है एक ओर फिर जाना । "अर्थात युद्ध में यौद्धिक योजना के अनुसार अथवा शत्रु को धोखे में डालने के विचार से लड़ता-लड़ता एक ओर फिर जाये, जिससे शत्रु यह समझे कि यह पराजित होकर भाग रहा है, परन्तु फिर एक क्षण में चाल बदल कर सहसा शत्रु पर आक्रमण कर दे । यह पीठ दिखाना नहीं है, अपितु यह यौद्धिक योजना है, जो कई बार आवश्यक तथा लाभकारी होता है ।" تحيّز का अर्थ है मिलना तथा शरण लेना । कोई सैनिक लड़ता-लड़ता अकेला रह जाये, तो वह किसी प्रयोजन से युद्ध के मैदान में एक किनारे हो जाये ताकि वह अपने गुट की शरण प्राप्त कर सके तथा उसकी सहायता से पुन: आक्रमण करे । यह दोनों अवस्थायें उचित हैं । तथा धार्मिक रूप से मान्य हैं ।

[3] अर्थात उपरोक्त दोनों दशा के सिवाय यदि कोई सैनिक समर भूमि से मुख मोड़ेगा, उसके लिए यह कठोर चेतावनी आयी है ।

The Ummah Technology Mission

فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ۚ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ⑰

(१७) तो तुमने उन्हें हत नहीं किये, परन्तु अल्लाह तआला ने उन्हें हत किया।[1] तथा आप ने (धूल की मुट्ठी) नहीं फेंकी, परन्तु अल्लाह तआला ने फेंकी।[2] तथा ताकि मुसलमानों कोअपनी ओर से उनकी प्रयास का अत्यधिक फल प्रदान करे[3] नि:सन्देह अल्लाह तआला अत्यधिक सुनने वाला अत्यधिक जानने वाला है।

ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ⑱

(१८) (एक बात तो) यह हुई (दूसरी बात है) कि अल्लाह तआला को काफ़िरों की योजनाओं को विफल करना था।[4]

---

[1]अर्थात बद्र के युद्ध का यह सारा विवरण तुम्हारे समक्ष प्रस्तुत कर दिया गया है तथा जिस-जिस प्रकार से अल्लाह ने तुम्हारी सहायता की है, उसके स्पष्टीकरण के पश्चात तुम यह न समझ लेना कि काफ़िरों का वध, यह तुम्हारा कारनामा है। नहीं, अपितु यह अल्लाह ही की सहायता का परिणाम है, जिसके कारण तुम्हें यह शक्ति प्राप्त हुई। इसलिए वास्तव में उनका वध करने वाला अल्लाह तआला है।

[2]बद्र के युद्ध में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कंकरियों को मुट्ठी में भर कर काफ़िरों की ओर फेंका था, जिसे एक तो अल्लाह तआला ने काफ़िरों के मुँह तथा आँखों तक पहुँचा दिया। दूसरे उसमें यह गुण उत्पन्न कर दिया कि जिसके कारण उनकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया तथा उन्हें कुछ नहीं दिखायी देता था, यह चमत्कार भी, जो उस समय अल्लाह की सहायता से प्रकट हुआ, मुसलमानों की सफलता में अत्यधिक सहायक सिद्ध हुआ। अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि हे पैग़म्बर ! कंकरियाँ नि:संदेह तुम ने फेंकी थी, परन्तु उसमें गुण हम ने उत्पन्न किये थे, यदि हम इसमें यह गुण उत्पन्न न करते, तो यह कंकरियाँ क्या कर सकती थीं ? इसलिए वास्तव में यह भी हमारा ही कार्य था, न कि आप का।

[3]بَلَاءً (बलाअन) यहाँ उपकार के अर्थ में प्रयोग हुआ है। अर्थात अल्लाह का यह समर्थन व कृपा अल्लाह का उपकार है, जो ईमानवालों पर हुआ।

[4]दूसरा उद्देश्य इसका काफ़िरों की योजनाओं को निर्बल करना तथा उनकी शक्ति एवं गर्व को तोड़ना था।

The Ummah Technology Mission

إِنْ تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَإِنْ تَنْتَهُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَإِنْ تَعُودُوا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٩﴾

(१९) यदि तुम लोग निर्णय चाहते हो, तो वह निर्णय तुम्हारे समक्ष विधान है।[1] तथा यदि रुक जाओ तो यह तुम्हारे लिए अति श्रेष्ठ है, तथा यदि तुम फिर भी वही कार्य करोगे, तो हम भी फिर वही कार्य करेंगे तथा तुम्हारा समुदाय तुम्हारे तनिक काम नहीं आयेगा। चाहे कितनी अधिक संख्या हो। तथा वास्तविक बात यह है कि अल्लाह तआला ईमानवालों के साथ है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَأَنْتُمْ تَسْمَعُونَ ﴿٢٠﴾

(२०) हे ईमान वालो ! अल्लाह का तथा उस के रसूल (संदेशवाहक) का कहना मानो तथा उस (का कहना मानने) से मुख न फेरो सुनते जानते हुए।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿٢١﴾

(२१) तथा तुम उन लोगों के समान न होना, जो दावा तो करते हैं कि हमने सुन लिया हालाँकि वह सुनते (सुनाते) कुछ नहीं।[2]

---

[1]अबूजहल आदि कुरैश की सेना का नेतृत्व करने वालों ने मक्के से निकलते समय यह प्रार्थना की थी, "हे अल्लाह ! हम में से जो तेरा अधिक अवज्ञाकारी तथा संबंध विच्छेदक हो, कल तू उसे नष्ट कर दे।" अपने विचार से वे मुसलमानों को अवज्ञाकारी समझते थे, इसलिए इस प्रकार की प्रार्थना की। अब जब अल्लाह तआला ने मुसलमानों को विजय का सौभाग्य प्रदान किया, तो अल्लाह तआला काफ़िरों से फ़रमा रहा है कि तुम विजय अर्थात सत्य-असत्य के मध्य निर्णय की प्रार्थना कर रहे थे, तो वह निर्णय सामने आ चुका है, इसलिए अब तुम अधर्म का मार्ग छोड़ दो, तो तुम्हारे लिए लाभकारी है, तथा यदि पुनः मुसलमानों का सामना करने आओगे, तो हम भी पुनः उनकी सहायता करेंगे तथा तुम्हारा समूह संख्या में अधिक होते हुए भी तुम्हारे काम न आ सकेगा।

[2]अर्थात सुन लेने के उपरान्त उसके अनुसार कर्म न करना यह काफ़िरों का तरीका है, तुम इस नीति से बचो। अगली ही आयत में ऐसे लोगों को मूक, बधिर, अज्ञानी तथा दुराचारी बताया गया है। دَوَابّ बहुवचन है دَابَّة का, जो धरती पर चलने-फिरने वाले

The Ummah Technology Mission

إِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِندَ اللَّهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٢٢﴾

(२२) नि:संदेह अत्यधिक बुरे प्राणी वर्ग अल्लाह तआला के निकट वे लोग हैं जो बधिर हैं मूक हैं जो कि तनिक भी नहीं समझते।[1]

وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَّأَسْمَعَهُمْ وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوا وَّهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) तथा यदि अल्लाह (तआला) उनमें कोई गुण देखता, तो उनको सुनने की शक्ति प्रदान करता।[2] तथा यदि उनको अब सुना दे तो अवश्य मुँह फेरेंगे, विमुख होते हुए।[3]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ

(२४) हे ईमानवालो ! तुम अल्लाह तथा रसूल के आदेशों का पालन करो, जब कि रसूल तुमको तुम्हारे जीवनप्रद विषय की ओर बुलाते

प्राणी हैं वह बधिर हैं। तात्पर्य प्राणी वर्ग है अर्थात यह सबसे बुरे हैं जो सत्य के विषय में बधिर, मूक तथा अज्ञानी हैं।

[1]इसी बात को क़ुरआन करीम में अन्य स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया गया है।

﴿لَهُمْ قُلُوبٌ لَّا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ آذَانٌ لَّا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ﴾

"उनके दिल हैं, परन्तु उससे समझते नहीं, उनको आँखें हैं, परन्तु उससे देखते नहीं, तथा उनके कान हैं, परन्तु उससे सुनते नहीं, यह चौपाये की भाँति हैं, अपितु उनसे भी अधिक भटके हुए, ये लोग (अल्लाह से) अनजान हैं।" (सूर: अल- आराफ -१७९)

[2]अर्थात उनके सुनने की शक्ति को लाभकारी करके उन्हें ठीक समझ प्रदान कर देता, जिससे वे सत्य को स्वीकार कर लेते तथा उसे अपना लेते परन्तु चूँकि उनके अन्दर भलाई अर्थात सत्य की खोज नहीं है, इसलिए वह ठीक समझ से भी वंचित हैं।

[3]पहले सुनने से तात्पर्य लाभकारी सुनना है। इस दूसरे सुनने से प्राकृतिक रूप से सुनने की शक्ति है। अर्थात यदि अल्लाह तआला उन्हें सत्य बात सुना भी देता, तो चूँकि उनके हृदय में सत्य जानने की खोज ही नहीं, इसलिए वे निरंतर इससे मुँह फेरते रहेंगे।

The Ummah Technology Mission

يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾

हों,[1] तथा याद रखो कि अल्लाह तआला मनुष्य के तथा उसके दिल के मध्य आड़ बन जाता है |[2] तथा नि:संदेह तुम्हें अल्लाह ही के पास एकत्रित होना है |

وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ

(२५) तथा तुम ऐसी आपदा से बचो कि जो विशेष रूप से उन ही लोगों पर घटित न

---

[1] يُحييكم ऐसी वस्तुओं की ओर जिससे तुम्हें जीवन मिले | कुछ ने इससे धर्मयुद्ध का भाव लिया है कि इसमें तुम्हारा जीवन साधन है | कुछ ने क़ुरआन के आदेश, परिकलन तथा धार्मिक नियम भाव निकाला है | जिनमें धर्मयुद्ध भी आता है अर्थ यह कि केवल अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आज्ञा पालन करो, तथा उसके अनुसार कार्य करो, इसमें तुम्हारा जीवन है |

[2] अर्थात मृत्यु देकर जिसका स्वाद प्रत्येक जीवधारी को चखना है | इसका अर्थ यह है कि इससे पूर्व कि तुम्हें मृत्यु आ जाये अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात मान लो तथा उसके अनुसार कर्म करो | कुछ ने कहा है कि अल्लाह तआला मनुष्य के दिल के जिस प्रकार निकट है, इसमें उसे तुलनात्मक रूप से वर्णन किया गया है | तथा अर्थ यह है कि वह दिलों के भेदों को जानता है, उससे कोई बात छिपी नहीं | इमाम इब्ने जरीर ने इसका भावार्थ यह वर्णित किया है कि वह अपने भक्तों के दिलों पर पूर्ण रूप से प्रभाव रखता है तथा जब चाहता है उनके तथा उनके दिलों के मध्य खड़ा हो जाता है | यहाँ तक कि मनुष्य उसकी इच्छा के बिना किसी चीज़ को प्राप्त नहीं कर सकता | कुछ ने बद्र के युद्ध से सम्बन्धित कहा है कि मुसलमान शत्रुओं की संख्या के कारण भयभीत थे, तो अल्लाह तआला ने उनके दिलों के मध्य खड़े होकर उनके भय को शान्ति में बदल दिया | इमाम शौकानी कहते हैं कि आयत के यह सभी भावार्थ हो सकते हैं | (फ़तहुल क़दीर) इमाम इब्ने जरीर के कथन की पुष्टि उन हदीसों से होती है जिनमें धर्म के मार्ग पर दृढ़ता से रहने की प्रार्थना करने पर बल दिया गया है | जैसे एक हदीस में रसलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "आदम की संतान के दिल, एक दिल की भाँति कृपालु की दो उँगलियों के मध्य है उन्हें जिस प्रकार चाहता है फेरता रहता है |" फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह प्रार्थना की «اللَّهُمَّ مُصَرِّفَ الْقُلُوبِ، صَرِّفْ قُلُوبَنَا إِلَى طَاعَتِكَ». "ऐ दिलों के फेरने वाले ! हमारे दिलों को अपनी आज्ञापालन की ओर फेर दे |" (सहीह मुस्लिम किताबुल क़दर बाब तसरीफ़ अल्लाह तआला अल कुलूब कैफ़ शाआअ) कुछ कथनों में ثَبِّت قلبي على دينك है (त्रिमजी अबवाबुल क़द्र) |

The Quran Technology Mission

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾

होगी जो तुम में से उन पापों के दोषी हैं।[1] तथा यह जान रखो कि अल्लाह तआला अति घोर दण्ड देने वाला है।

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِى الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٦﴾

(२६) तथा उस स्थिति को याद करो, जब कि तुम धरती पर थोड़े थे, निर्बल माने जाते थे। इस भय में रहते थे कि तुम को लोग नोच खसोट न लें, तो अल्लाह ने तुम्हें निवास के लिए स्थान दिया तथा तुमको अपनी सहायता से शक्ति प्रदान की तथा तुम को स्वच्छ खाद्य प्रदान किये, ताकि तुम कृतज्ञता करो।[2]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾

(२७) हे ईमानवालो ! तुम अल्लाह तथा रसूल (के अधिकार) का हनन न करो तथा अपनी सुरक्षित वस्तुओं में विश्वासघात न करो।[3] तथा तुम जानते हो।

---

[1]इससे तात्पर्य या तो भक्तों का एक-दूसरे पर अधिकार है, जो बिना किसी प्रकार के सामान्य तथा विशेष की छूट के अत्याचार करते हैं अथवा वे सामान्य प्रकोप हैं, जो वर्षा की अधिकता, अथवा बाढ़ आदि धरती तथा आकाश की विपदा के रूप में घटित होते हैं तथा पुण्य तथा पाप दोनों के करने वाले समान रूप से प्रभावित होते हैं। अथवा कुछ हदीसों में पुण्य के कार्यों का आदेश देना तथा पाप के कर्मों से रोकने को छोड़ देने से जिन प्रकोप की चेतावनी का वर्णन किया गया है, वह तात्पर्य है।

[2]इससे मक्की जीवन की कठिनाईयों तथा भय का वर्णन तथा उसके उपरान्त मदीने के जीवन में सुख-शान्ति तथा समृद्धि जो अल्लाह की कृपा से प्राप्त हुई, उसका वर्णन है।

[3]अल्लाह तआला तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अधिकारों में विश्वासघात का तात्पर्य यह है कि प्रत्यक्ष रूप से तो अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि के आज्ञाकारी बन कर रहें, एकान्त में उसके विपरीत कार्य करें। विश्वासघात यह भी है कि किसी अनिवार्य कार्य को छोड़ दे तथा निषेधित कार्य को करे। तथा ﴿وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ﴾ का अर्थ है कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के पास कोई वस्तु सुरक्षा के विचार से रखाये, उसमें विश्वासघात न करे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी अमानत की सुरक्षा

The Ummah Technology Mission

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾

(२८) तथा तुम इस बात को जान रखो, कि तुम्हारा धन तथा तुम्हारी सन्तान एक परीक्षा के लिए हैं।[1] (तथा इस बात को भी जान रखो) कि अल्लाह तआला के पास बहुत बड़ा प्रत्युपकार है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾

(२९) हे ईमानवालो ! यदि तुम अल्लाह से डरते रहोगे, तो अल्लाह (तआला) तुम्हें एक निर्णय की चीज़ प्रदान करेगा। तथा तुम से तुम्हारे पाप दूर करेगा तथा तुमको क्षमा कर देगा तथा अल्लाह (तआला) महाकृपालु है।[2]

पर बल दिया गया है। हदीसों में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने अधिकतर भाषणों में अवश्य फ़रमाते :

«لاَ إِيمَانَ لِمَنْ لا أَمَانَةَ لَهُ، وَلاَ دِينَ لِمَنْ لاَ عَهْدَ لَهُ».

"उसका ईमान नहीं जिससे अमानत सुरक्षित नहीं, तथा उसका धर्म नहीं, जिसको वचन पूरा करने की दृढ़ता का आभास नहीं।" (मुसनद अहमद भाग ३, पृष्ठ १३९ तथा हदीस के विशेषज्ञ अलबानी ने कहा कि "यह स्वच्छ हदीस है।"

[1]धन एवं सन्तान का प्रेम ही किसी व्यक्ति को सामान्य रूप से विश्वासघात करने पर तथा अल्लाह एवं रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञा भंग करने पर विवश करता है। इसलिए इनको आपत्ति (परीक्षा) कहा गया है अर्थात इसके द्वारा मनुष्य की परीक्षा ली जाती है कि उनके प्रेम के साथ विश्वास तथा आज्ञापालन की माँग को पूरा करता है अथवा नहीं ? यदि वह पूरा करता है, तो समझ लो वह अपनी परीक्षा में सफल हो गया। उसके दूसरे रूप अर्थात विपरीत में असफल। इस अवस्था में यह धन तथा सन्तान उसके लिए अल्लाह की यातना को भोगने का कारण बन जायेंगे।

[2]अल्लाह का भय (तक़वा) का अर्थ यह है कि अल्लाह के आदेशों की अवहेलना तथा निषेधित कार्यों से बचना। तथा फ़ुरक़ान के कई अर्थ वर्णन किये गये हैं। जैसे ऐसी वस्तु जिसके द्वारा सत्य तथा असत्य के मध्य भेद किया जा सके। अर्थ यह है कि अल्लाह के भय (तक़वा) के कारण हृदय दृढ़, दूर दृष्टि तथा सत्य का मार्ग प्रशस्त हो जाता है, जिसके कारण मनुष्य प्रत्येक ऐसे अवसर पर, जब जन सामान्य शंका तथा संदेह की वादियों में भटक रहा होता है, उसे सीधे मार्ग का सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। इसके

The Ummah Technology Mission

وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ ۚ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ ۖ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा उस घटना का भी वर्णन कीजिए, जबकि काफ़िर लोग आपके विषय में षड़यन्त्र कर रहे थे कि आप को बंदी बना लें अथवा आपकी हत्या कर दें अथवा आपको देश निकाला दे दें ।[1] तथा वह अपना षड़यन्त्र रच रहे थे तथा अल्लाह तआला अपनी योजना बना रहा था तथा अल्लाह तआला सर्वोत्तम नियोजक है ।[2]

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَٰذَا ۙ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣١﴾

(३१) तथा जब उनके समक्ष हमारी आयतें पढ़ी जातीं हैं तो कहते हैं कि हमने सुन लिया, यदि हम चाहें तो हम भी इसके समान कह दें , यह तो कुछ भी नहीं मात्र पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं ।

अतिरिक्त विजय, कृपा, मोक्ष तथा मुक्ति भी इसके अर्थ् किये गये हैं तथा सभी अर्थों का तात्पर्य हो सकता है । क्योंकि तक़वा से अवश्य यह सारे लाभ प्राप्त होते हैं । बल्कि इसके साथ पापों से छुटकारा, अन्तिम मोक्ष, तथा महान कृपा प्राप्त होती है ।

[1]यह उस षडयन्त्र का वर्णन है जो मक्का के मूर्तिपूजक नेताओं ने एक रात्रि दारुल नदवा में तैयार किया था । अन्त में यह निर्धारित किया गया कि प्रत्येक जाति के युवकों को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हत्या करने के लिए नियुक्त किया जाय, ताकि किसी एक की हत्या के बदले में हत्या न की जा सके बल्कि धन देकर जान छूट जाये ।

[2]अतः इस षड़यन्त्र की पूर्ति के लिए मूर्ति पुजारी युवक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर के बाहर एक रात्रि इस प्रतीक्षा में खड़े रहे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर से बाहर निकलें तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हत्या कर दें । अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस षडयन्त्र की सूचना दे दी तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने घर से बाहर निकलते समय मिट्टी की एक मुट्ठी ली तथा उनके सिरों पर डालते हुए निकल गये, किसी को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकलने का पता भी नहीं चला, यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुरक्षित सौर नामक गुफ़ा में पहुँच गये । यह काफ़िरों के मुकाबिले में अल्लाह की योजना थी जिससे अच्छी योजना कोई नहीं बना सकता । (मकर के अर्थ के लिए देखें सूरः आले इमरान की आयत संख्या ५४ की व्याख्या)

The Ummah Technology Mission

وَإِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ إِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा जबकि उन लोगों ने कहा, हे अल्लाह ! यदि यह क़ुरआन वास्तव में आप की ओर से है, तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा, अथवा हम पर कोई कष्टदायक प्रकोप घटित कर दे।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿٣٣﴾

(३३) तथा अल्लाह (तआला) ऐसा न करेगा कि उनमें आपके होते हुए उनको यातना दे। तथा अल्लाह (तआला) उनको यातना न देगा [1] इस अवस्था में कि यह क्षमा-याचना भी करते हों।[2]

وَمَا لَهُمْ أَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ ۚ إِنْ أَوْلِيَاؤُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा उनमें क्या बात है कि उनको अल्लाह (तआला) दण्ड न दे यद्यपि कि वे लोगों को मस्जिदे हराम से रोकते हैं जबकि वह लोग इस मस्जिद के संरक्षक नहीं, उसके संरक्षक अल्लाह की आज्ञापालकों के सिवाय कोई नहीं, परन्तु उनमें अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते।[3]

---

[1]अर्थात ईशदूतों की उपस्थिति में समुदायों पर प्रकोप नहीं होता, इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उपस्थिति भी उन लोगों की सुरक्षा एवं शान्ति से रहने का कारण था।

[2]इससे तात्पर्य है कि वे भविष्य में मुसलमान होकर क्षमा-याचना करेंगे अथवा परिक्रमा करते समय मूर्तिपूजक«غُفْرَانَكَ رَبَّنَا! غُفْرَانَكَ»कहा करते थे (हमारे पालनहार हमें क्षमा कर दे)

[3]अर्थात वे मूर्तिपूजक अपने आप को मस्जिदे हराम (ख़ानये काअबा) का संरक्षक समझते थे, इस के कारण जिसको चाहते थे परिक्रमा की अज्ञा देते थे जिसको चाहते थे नहीं देते थे। अत: वह मुसलमानों को भी मस्जिदे हराम में आने से रोकते थे, जबकि वास्तविकता यह थी कि वे संरक्षक नहीं थे। ظُلْمًا अन्याय पूर्वक बने हुए थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, उसके संरक्षक तो अल्लाह से भय रखने वाले व्यक्ति ही बन

The Ummah Technology Mission

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ
إِلَّا مُكَاءً وَتَصْدِيَةً ۚ
فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ
تَكْفُرُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) तथा उनकी नमाज़ कआबा: के निकट केवल यह थी, सीटियाँ बजाना तथा तालियाँ बजाना[1] तो अपने कुफ़्र के कारण इस यातना का स्वाद चखो।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنْفِقُونَ
أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا
عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَسَيُنْفِقُونَهَا
ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ
يُغْلَبُونَ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ ﴿٣٦﴾

(३६) नि:संदेह यह विश्वासहीन लोग अपना धन इसलिए व्यय कर रहे हैं कि अल्लाह के मार्ग से रोकें, तो ये लोग अपना धन व्यय करते ही रहेंगे, फिर वह धन उनके लिए पश्चाताप का कारण बन कर रह जायेंगे, फिर पराजित हो जायेंगे। तथा काफ़िरों को नरक की ओर एकत्रित किया जायेगा।[2]

सकते हैं, न कि मूर्तिपूजक। इस आयत में जिस यातना का वर्णन है, उसका तात्पर्य मक्का विजय है, जो मक्का के मूर्तिपूजकों के लिए एक कठोर यातना की स्थिति रखता है। इससे पूर्व की आयत में जिस यातना को मना किया गया है, जो पैग़म्बरों की उपस्थिति अथवा क्षमा-याचना करते रहने के कारण नहीं आता, उससे तात्पर्य नष्ट-भ्रष्ट करने वाला प्रकोप तथा सम्पूर्ण विनाश है। शिक्षा देने के लिए तथा चेतावनी के लिए छोटे-छोटे प्रकोप इसमें सम्मिलित नहीं हैं।

[1]मूर्तिपूजक जिस प्रकार अल्लाह के घर (ख़ानये काअबा) की नंगे होकर परिक्रमा करते थे, उसी प्रकार परिक्रमा करते समय मुख में उंगलिया डाल कर सीटियाँ बजाते थे तथा तालियाँ बजाते थे। इसको भी यह आराधना और पुण्य का कार्य समझते थे। जिस प्रकार आज भी अशिक्षित सूफ़ी मस्जिदों तथा आस्तानों पर नाचते हैं। ढ़ोल पीटते तथा धमालें डालते हैं। यही हमारी नमाज़ तथा आराधना है। नाच-नाच कर अपने यार (अल्लाह) को मना लेंगे। (نعوذ بالله من هذه الخرافات)

[2]जब बद्र में मक्का के क़ुरैश की पराजय हुई तथा उन के पराजित लोग वहाँ पहुँच गये। इधर अबू सुफ़ियान भी अपना व्यापारिक क़ाफ़िला लेकर पहुँच चुके थे, तो कुछ लोग जिनके पिता व पुत्र अथवा भाई इस युद्ध में मारे गये थे, अबू सुफ़ियान तथा जिनकी उस व्यापारिक क़ाफ़िले में भागीदारी थी, उनके पास गये और प्रार्थना की कि इस माल का प्रयोग मुसलमानों के विरुद्ध करें। मुसलमानों ने हमें अत्यधिक हानि पहुँचायी है, इसलिए उनसे बदला लेने के लिए युद्ध करना आवश्यक है। अल्लाह तआला ने इस आयत में इसी प्रकार के लोगों अथवा इसी प्रकार का कार्य करने वालों

The Ummah Technology Mission

لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۳۷﴾

(३७) इसलिए कि अल्लाह (तआला) अपवित्रों को पवित्रों से अलग कर दे।[1] तथा अपवित्रों को एक-दूसरे से मिला दे, फिर उन सबको इकट्ठा करे, फिर उन सब को नरक में डाल दे। ऐसे लोग पूर्ण रूप से हानि में हैं।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا

(३८) (आप) अविश्वसियों से कह दीजए कि यदि यह लोग रुक जायें तो इनके सारे पाप जो पहले कर चुके हैं, क्षमा कर दिये जायेंगे।[2]

के विषय में फ़रमाया है कि नि:संदेह यह अल्लाह के मार्ग से लोगों के रोकने के लिए अपना माल व्यय कर लें, परन्तु उनके भाग्य में केवल पश्चाताप तथा पराजय के अतिरिक्त कुछ भी नहीं आयेगा तथा परलोक में उनका ठिकाना नरक होगी।

[1]यह अलगाव आख़िरत में होगा कि आज्ञाकारियों को अवज्ञाकारियों से अलग कर दिया जायेगा, जैसाकि फ़रमाया,

﴿ وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ﴾

"हे मुजरिमों ! आज अलग हो जाओ।" (सूर: यासीन-५९)

अर्थात पुण्यात्माओं से तथा अपराधियों एवं मिश्रणवादियों तथा अवज्ञाकारियों को एकत्रित करके सब को नरक में डाल दिया जायेगा। अथवा फिर इसका संबन्ध दुनिया से है। अक्षर "लाम" का प्रयोग सम्बन्ध बताने के लिए है। अर्थात काफ़िर अल्लाह के मार्ग से रोकने के लिए जो धन व्यय कर रहे हैं, हम उनको ऐसा करने का अवसर प्रदान करेंगे, ताकि इसके द्वारा अल्लाह तआला अपवित्र को पवित्र से काफ़िरों को ईमानवालों से एवं स्वार्थियों को नि:स्वार्थियों से अलग कर दे। इस आधार पर आयत का अनुवाद होगा। काफ़िरों के द्वारा हम तुम्हारी परीक्षा लेंगे, वह तुम से लड़ेंगे तथा हम उन्हें उनके माल भी लड़ाई में व्यय करने की शक्ति देंगे ताकि अपवित्र, पवित्र से विलग हो जाये फिर उन काफ़िरों को परस्पर मिला देगा अर्थात सब को एकत्रित कर देगा। (इब्ने कसीर)

[2]रुक जाने का अर्थ मुसलमान हो जाना है जिस प्रकार हदीस में भी है, "जिसने इस्लाम धर्म स्वीकार करके पुण्य का मार्ग अपना लिया, उससे उसके पापों की पूछ-ताछ नहीं होगी, जो उसने अज्ञानकाल में किये होंगे तथा जिसने इस्लाम धर्म स्वीकार करके भी बुराई न छोड़ी, उससे पूर्व तथा पश्चात सभी कर्मों का हिसाब होगा।" (सहीह बुख़ारी

The Ummah Technology Mission

فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾

तथा यदि अपनी वही रीति रखेंगे तो पूर्व के (विश्वासहीनों के) लिए नियम लागू हो चुका है।[1]

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ ۚ فَإِنِ انتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٣٩﴾

(३९) तथा तुम उन से उस समय तक संघर्ष करो कि उनकी आस्था में बिगाड़ न रहे[2] तथा धर्म अल्लाह ही का हो जाय।[3] फिर यदि यह रुक जायें, तो अल्लाह (तआला) उनके कर्मों को ख़ूब देखता है।[4]

وَإِن تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَوْلَاكُمْ ۚ نِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ﴿٤٠﴾

(४०) तथा यदि मुँह फेरें,[5] तो विश्वास रखें कि अल्लाह (तआला) तुम्हारा मित्र है।[6] वह उत्तम मित्र तथा उत्तम सहाय है।[7]

बाब इस्तेताबतिल मुर्तद्दीन, मुस्लिम किताबुल ईमान बाब हल यूआख़ज़ बे आमाल अल-जाहिलीया:) एक अन्य हदीस में है

«الإِسْلَامُ يَجُبُّ مَا قَبْلَهُ».

"इस्लाम पूर्व के पापों को मिटा देता है।" (मुसनद अहमद भाग ४, पृ.१९९)

[1]अर्थात यदि वे अपने अविश्वास एवं द्वेष पर अडिग रहे तो शीघ्र अथवा देर से यातनाओं के भोगी बनकर रहेंगे।

[2]फ़ित्ना से तात्पर्य है शिर्क (मिश्रणवाद) अर्थात उस समय तक धर्मयुद्ध जारी रखो जब तक मिश्रणवाद समाप्त न हो जाये।

[3]अर्थात एकेश्वरवाद (तौहीद) का ध्वज पूरे विश्व में लहरा जाये।

[4]अर्थात तुम्हारे लिए उनका ऊपरी इस्लाम ही बस है अन्त:करण का विषय अल्लाह को समर्पित कर दो क्योंकि उसे प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सब का ज्ञान है।

[5]अर्थात इस्लाम स्वीकार न करें तथा अविश्वास एवं तुम्हारे विरोध पर अडिग रहें।

[6]अर्थात तुम्हारे शत्रुओं पर तुम्हारा सहायक, समर्थक एवं संरक्षक है।

[7]अत: सफल भी वही होगा जिसका स्वामी (रक्षक) अल्लाह हो तथा प्रभावी भी वही होगा जिसका सहायक वही हो।

The Ummah Technology Mission

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا

(४१) तथा जान लो कि तुम जिस प्रकार का जो भी युद्ध का धन [1] (परिहार) प्राप्त करो उसमें से पाँचवाँ भाग तो अल्लाह एवं ईशदूत तथा समीपवर्तियों एवं अनाथों तथा निर्धनों एवं यात्रियों[2] के लिये है, यदि तुम ने अल्लाह के प्रति ईमान रखा है तथा उसके प्रति जो

---

[1]ग़नीमत (परिहार) से तात्पर्य वह धन है जो संग्राम में काफ़िरों को पराजित करके प्राप्त किया जाता है। पूर्व समुदाय में यह रीति थी कि लड़ाई की समाप्ती के पश्चात परिहार को एकत्रित किया जाता तथा आकाश से अग्नि आकर उसे जला कर भस्म कर देती किन्तु मुसलमानों के लिये परिहार वैधानिक बना दिया गया तथा जो धन बिना लड़ाई, संधि अथवा कर द्वारा प्राप्त हो उसे "फ़ैय" कहा जाता है कभी ग़नीमत को भी "फ़ैय" कहा जाता है, مِن شَيءٍ से अभिप्राय है जो कुछ भी हो अर्थात तनिक अथवा अधिक मूल्यवान अथवा साधारण सब को एकत्रित कर नियमानुसार वितरण किया जायेगा। किसी सैनिक को वितरण से पूर्व अपने पास रखने की अनुमति नहीं।

[2]अल्लाह का शब्द मात्र शुभ के लिए अथवा इसलिये है कि प्रत्येक वस्तु का वास्तविक मालिक तो वही है तथा आदेश भी उसी का चलता है। तात्पर्य अल्लाह तथा रसूल के भाग से एक ही है, अर्थात सारे माल को पाँच भागों में विभाजित करके चार भाग तो उन विजयी सैनिकों को बाँट दिये जायेंगे जिन्होंने युद्ध में भाग लिया हो। उन में भी पैदल को एक भाग तथा सवार को तीन गुना भाग मिलेगा। पाँचवां भाग जिसे अरबी भाषा में ख़ुम्स कहते हैं। कहा जाता है कि इसके पुन: पाँच भाग किये जायेंगे एक भाग रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को (तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात सार्वजनिक सेवा में व्यय किया जायेगा) जैसाकि स्वयं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी यह भाग मुसलमानों पर ही व्यय करते थे, बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया भी है

«وَالْخُمُسُ مَرْدُودٌ عَلَيْكُمْ».

"अर्थात मेरा जो पाँचवाँ भाग है, वह भी मुसलमानों की समस्या समाधान पर व्यय होता है।" (सुनने नसाई, इस हदीस को अलबानी ने सहीह नसाई में प्रमाणित माना है, अल-निसाई ३८५८, तथा मुसनद अहमद भाग ५ पृष्ठ ३१९)

दूसरा भाग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकटतम सम्बन्धियों का, फिर अनाथ, निर्धन तथा यात्रियों का। कहा जाता है कि यह ख़ुम्स आवश्यकतानुसार व्यय किया जायेगा।

Tilawah Technology Mission

يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤١﴾

हम ने अपने भक्त पर उस दिन उतारा है जो सत्य-असत्य[1] के बीच विलगाव का[2] था जिस दिन दोनों सेनायें भिड़ गई थीं, [3] तथा अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर सर्वशक्तिमान है।

اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ ؕ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِى الْمِيْعٰدِ ۙ وَلٰكِنْ

(४२) जबकि तुम समीप के किनारे पर तथा वे दूर के किनारे पर थे,[4] तथा यात्रीगण तुम से (बहुत) नीचे थे,[5] यदि तुम परस्पर वचन देते तो निर्धारित समय पर पहुँचने में विभेद कर जाते,[6] किन्तु अल्लाह को एक काम कर

---

[1]इस उतरने से तात्पर्य फ़रिश्तों का तथा अल्लाह की आयतों (चमत्कारों आदि) का उतरना जो बद्र के युद्ध में हुआ।

[2]बद्र का युद्ध १७ रमज़ानुल मुबारक २ हिजरी को हुआ। उस दिन को यौमुल फ़ुरक़ान इसलिए कहा गया कि यह काफ़िरों तथा मुसलमानों के मध्य प्रथम युद्ध था तथा मुसलमानों को विजय तथा प्रभाव प्रदान करके यह सिद्ध कर दिया कि इस्लाम सत्य है तथा कुफ़्र एवं शिर्क (बहुदेववाद) असत्य है।

[3]अर्थात मुसलमानों तथा काफ़िरों की सेनायें।

[4]दुनिया शब्द अरबी भाषा का है, इसका उद्गम दूतत्व (دُنوٌّ) से है जिसका अर्थ है निकट तात्पर्य है वह किनारा जो मदीना नगर की ओर था जिस ओर मुसलमान थे। قُصوى कुस्वा कहते हैं दूर को, काफ़िर दूसरे किनारे पर थे जो मदीना नगर से दूर था।

[5]इससे तात्पर्य वह व्यापारिक क़ाफ़िला था जो आदरणीय अबु सुफ़ियान के नेतृत्व में सीरिया से वापस मक्का की ओर जा रहा था तथा जिसे प्राप्त करने के लिए ही वास्तव में मुसलमान इस ओर आये थे। यह पर्वत से बहुत दूर पश्चिम की ओर घाटी में था, जबकि बद्र जहाँ युद्ध हुआ वह ऊँचाई पर था

[6]अर्थात यदि युद्ध के लिए योजनानुसार दिन-तिथि की एक दूसरे के साथ वायदा होता अथवा घोषणा होती, तो सम्भव था कि कोई भी पक्ष बिना युद्ध के पराजय स्वीकार कर लेता, परन्तु इस युद्ध का होना अल्लाह ने लिख रखा था, इसलिए ऐसे कारण उत्पन्न कर दिये गये कि बिना किसी घोषणा के दोनों पक्ष आमने-सामने एक-दूसरे के विरुद्ध पंक्तिवद्ध हो गये।

The Ummah Technology Mission

لِّيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ۙ لِّيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَيَحْيَىٰ مَنْ حَيَّ عَنْ بَيِّنَةٍ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٤٢﴾

ही डलाना था जो निर्धारित हो चुका था ताकि जो नाश हो वह तर्क पर (अर्थात निश्चय जानकर) नाश हो एवं जो जीवित रह जाये वह भी तर्क पर (सत्य पहचान कर) जीवित रहे तथा अल्लाह भली-भाँति सुनने वाला जानने वाला है।[1]

إِذْ يُرِيكَهُمُ اللَّهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا ۖ وَلَوْ أَرَاكَهُمْ كَثِيرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٤٣﴾

(४३) जब कि तुझे तेरे सपने में अल्लाह ने उन की संख्या कम दिखाई, यदि उन की अधिकता दिखाता तो तुम कायर बन जाते तथा इस विषय में परस्पर मतभेद करते किन्तु अल्लाह ने बचा लिया, निश्चय वह अन्तर्यामी है।[2]

وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَيُقَلِّلُكُمْ فِي أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا

(४४) तथा जब कि उसने मिलने के समय उन्हें तुम्हारी दृष्टि में बहुत कम दिखाया तथा तुम्हें उनकी दृष्टि में कम दिखाया।[3]

---

[1]यह कारण है अल्लाह के उस भाग्य लेख का जिसके आधार पर बद्र में दोनों पक्ष एकत्रित हुए। ताकि जो ईमान पर जीवित रहे तो वह इस प्रमाण के साथ जीवित रहे तथा उसे दृढ़ विश्वास हो कि इस्लाम सत्य है क्योंकि सत्यता को वह बद्र में देख चुका है, तथा जो अधर्म की अवस्था में मरे तो वह भी इस प्रमाण के साथ मरे कि उसका मार्ग भटका हुआ था क्योंकि यह स्पष्ट हो चुका।

[2]अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को स्वप्न में मूर्तिपूजकों की संख्या कम दिखायी तथा वही संख्या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा के सामने वर्णन कर दी, जिससे उनके साहस बढ़ गये। यदि इसके विपरीत काफ़िरों की संख्या अधिक दिखायी जाती तो सहाबा के दिलों में कायरता उत्पन्न होती तथा आपसी मतभेद उत्पन्न होने की सम्भावना थी। परन्तु अल्लाह ने इन दोनों परिस्थितियों से मुसलमानों को बचा लिया।

[3]ताकि वह काफ़िर भी तुम से भयभीत होकर पीछे न हटें। प्रथम घटना स्वप्न की थी तथा यह दिखाना ठीक युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व था, जैसाकि क़ुरआन के शब्दों से स्पष्ट होता है। फिर भी यह घटना युद्ध प्रारम्भ होने के पूर्व की है। परन्तु जब युद्ध प्रारम्भ

The Ummah Technology Mission

كَانَ مَفْعُوْلًا ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝

ताकि अल्लाह (तआला) उस कार्य को अन्त तक पहुँचा दे, जो करना ही था।[1] तथा सभी विषय अल्लाह ही की ओर फेरे जाते हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

(४५) हे ईमानवालो ! जब तुम किसी (विरोधी) सेना से भिड़ जाओ, तो अड़ जाओ तथा अल्लाह को अत्यधिक याद करो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।[2]

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ۭ

(४६) तथा अल्लाह की एवं उसके रसूल की आज्ञा का पालन करते रहो, आपस में मतभेद मत रखो, वरन् कायर हो जाओगे तथा तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी तथा धैर्य और

हो गया, तो काफ़िरों को मुसलमान अपने से दुगुना दिखायी पड़ रहे थे। जैसा कि सूरः आले इमरान की आयत संख्या १३ से ज्ञात होता है बद्र में अधिक दिखाने का तात्पर्य यह था कि मुसलमानों की अधिक संख्या देख कर काफ़िरों के दिलों में मुसलमानों का भय उत्पन्न हो जिसके कारण उनमें कायरता उत्पन्न हो। इसके विपरीत प्रारम्भ में कम संख्या दिखाने का उद्देश्य यह था कि वे युद्ध से मुह न फेर लें।

[1]इस सभी का उद्देश्य यही था कि अल्लाह तआला ने जो निर्णय कर दिया था, वह पूर्ण हो जाये, इसलिए उसने इसके कारण उत्पन्न कर दिये।

[2]अब मुसलमानों को युद्ध के वे नियम बताये जा रहे हैं, जो शत्रु से युद्ध करते समय ध्यान में रखना आवश्यक है सर्वप्रथम बात, दृढ़ता तथा साहस रखना है क्योंकि इसके बिना युद्ध के मैदान में ठहरना ही सम्भव नहीं है, तथापि इस से पुनः आक्रमण करने के लिए अथवा अपनी सेना में मिलने के लिये पीठ दिखाना अलग है क्योंकि कभी पुनः आक्रमण करने के लिए भी पीछे हटना अनिवार्य होता है जिसका वर्णन इससे पूर्व किया जा चुका है। दूसरा निर्देश यह है कि अल्लाह को अधिकता से याद करो ताकि यदि मुसलमान थोड़े भी हों तो अधिक याद करने के कारण अल्लाह भी उनकी ओर आकर्षित रहे तथा यदि मुसलमान अधिक हों, तो अधिक याद करने के कारण मुसलमानों में गर्व तथा घमंड उत्पन्न न हो। बल्कि वास्तविक ध्यान अल्लाह की सहायता पर ही रहे।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّٰبِرِينَ ﴿٤٦﴾

विश्वास रखो, नि:संदेह अल्लाह तआला सहनशील, धैर्यवानों के साथ है।[1]

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَٰرِهِم بَطَرًا وَرِئَآءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा उन लोगों जैसे न बनो, जो गर्व करते हुए, तथा लोगों में अभिमान करते हुए अपने घरों से चले तथा अल्लाह के मार्ग से रोकते थे।[2] जो कुछ वह कर रहे हैं, अल्लाह उसे घेर लेने वाला है।

وَإِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَٰنُ أَعْمَٰلَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّى جَارٌ لَّكُمْ ۖ فَلَمَّا تَرَٰٓءَتِ الْفِئَتَانِ نَكَصَ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ

(४८) तथा जब कि उनके कर्मों को शैताान उन्हें सुशोभित दिखा रहा था तथा कह रहा था कि मनुष्यों में से कोई भी आज तुम पर प्रभावशाली नहीं हो सकता मैं स्वयं तुम्हारा समर्थक हूँ, परन्तु जब दोनों गुट प्रकट हुए,

---

[1]तीसरा निर्देश अल्लाह तथा उसके रसूल की आज्ञापालन है। स्पष्ट बात है कि इस कठोर स्थिति में अल्लाह तथा उसके रसूल की अवहेलना कितनी भयानक हो सकती है। इसलिए एक मुसलमान को प्रत्येक समय अल्लाह तथा उसके रसूल की आज्ञा पालन आवश्यक है। फिर भी रण क्षेत्र में इसकी विशेषता और बढ़ जाती है। तथा इस अवसर पर थोड़ी सी अवज्ञा अल्लाह की सहायता से वंचित कर सकती है। चौथी बात आपस में मतभेद एवं संघर्ष मत करो, इससे तुम कायर बन जाओगे तथा हवा उखड़ जायेगी। तथा पाँचवाँ निर्देश धैर्य रखो। अर्थात युद्ध में कितनी ही कठिन परिस्थिति आ जाये तथा युद्ध में तीव्रता आ जाये तब भी धैर्य न छोड़ो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी एक हदीस में फ़रमाया,

"लोगो ! शत्रु से मुढभेड़ की कामना न करो तथा अल्लाह से शान्ति की कामना करो। फिर भी यदि शत्रु से सामना करने का अवसर आ जाये, तो धैर्य रखो (अर्थात दृढ़ता से लड़ो) तथा जान लो कि स्वर्ग तलवार की छाया के नीचे है।"(सहीह बुख़ारी किताबुल जिहाद) अध्याय जब ईशदूत अपराहन लड़ाई आरम्भ न करते तो सूर्य ढ़लने तक लड़ाई में विलम्ब करते।

[2]मक्का के मिश्रणवादी जब अपने यात्रीगण की सुरक्षा तथा युद्ध की इच्छा से निकले, तो बड़े गर्व तथा घमण्ड से निकले, मुसलमानों को इस प्रकार के काफ़िरों के कर्मों से रोका गया।

The Usmah Technology Mission

وَقَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنكُمْ إِنِّي أَرَىٰ مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ ۚ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾

तो अपनी ऐड़ियों के बल पीछे पलट गया तथा कहने लगा कि मैं तो तुम से अलग हूँ। मैं वह देख रहा हूँ जो तुम नहीं देख रहे।[1] मैं अल्लाह से डरता हूँ।[2] तथा अल्लाह (तआला) कठोर यातना वाला है।[3]

إِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ غَرَّ هَٰؤُلَاءِ دِينُهُمْ ۗ وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ

(४९) जब कि मुनाफ़िक (द्वयवादी) लोग कह रहे थे तथा वह भी जिनके दिलों में रोग था।[4] कि उन्हें तो उनके धर्म ने धोके में डाल दिया है।[5] और जो भी अल्लाह पर भरोसा करे तो

---

[1]मूर्तिपूजक जब मक्का से निकले तो उन्हें अपने विरोधी क़बीले बनी किनान से यह भय था कि वे पीछे से उन्हें हानि न पहुँचायें। अतः शैतान सुराका बिन मालिक के रूप में आया, जो बनी बक्र बिन किनान के मुखिया थे, तथा उन्होंने न केवल विजय की ही भविष्यवाणी की अपितु अपने पूर्ण समर्थन का विश्वास दिलाया। परन्तु जब फ़रिश्तों को उसने देखा तो उसे अल्लाह की सहायता दृष्टिगोचर हुई, तो एड़ियों के बल भाग खड़ा हुआ।

[2]अल्लाह का भय उसके दिल में क्या होना था? परन्तु उसे पूर्ण विश्वास हो गया था कि अल्लाह की विशेष सहायता मुसलमानों के साथ है। मूर्तिपूजक उनके सम्मुख नहीं ठहर सकेंगे।

[3]सम्भव है कि यह शैतान के कथन का भाग हो तथा यह भी सम्भव है कि यह अल्लाह तआला की ओर से वाक्य की पुनरावृति हो।

[4]इससे तात्पर्य या तो वह मुसलमान हैं, जो नये-नये मुसलमान हुए थे तथा मुसलमानों की सफलता पर उन्हें संदेह था, अथवा इससे तात्पर्य मूर्तिपूजक हैं तथा यह भी सम्भव है कि मदीने के निवासी यहूदी तात्पर्य हों।

[5]अर्थात उनकी संख्या तो देखो तथा संसाधन की जो दशा है, वह भी स्पष्ट है। परन्तु वह मुक़बिला करने चलें हैं मक्का के मूर्तिपूजकों से, जो संख्या में कहीं अधिक हैं तथा हर प्रकार के अस्त्र-शस्त्र से तथा साधन से भरपूर हैं। लगता है कि उनके धर्म ने उनको धोखे में डाल दिया है। तथा यह मोटी सी बात भी उनकी समझ में नहीं आ रही है।

The Umrah Technology Mission

فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٩﴾

अल्लाह तआला नि:संदेह प्रभावशाली तथा विज्ञाता है।[1]

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٥٠﴾

(५०) तथा काश कि तू देखता जबकि यमदूत विश्वासहीनों की प्राण निकालते हैं, उनके मुख तथा कमर पर मार मारते हैं (तथा कहते हैं) तुम जलने की यातना का स्वाद चखो।[2]

ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٥١﴾

(५१) यह उन कर्मों के कारण जो तुम्हारे हाथों ने पूर्व ही भेज रखा है, नि:संदेह अल्लाह (तआला) अपने भक्तों पर तनिक अत्याचार नहीं करता।[3]

---

[1]अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "भौतिक वादियों को उन ईमानवालों के साहस तथा विश्वास का क्या अनुमान हो सकता है जिनकी पूर्ण आस्था अल्लाह में है, जो प्रभावशाली भी है अर्थात अपने आश्रितों को अल्लाह असहाय नहीं छोड़ता तथा विज्ञाता है उस के प्रत्येक कर्म में कूटनीति होती है, जिसके बोध से मनुष्य की समझ विवश है।"

[2]कुछ व्याख्याकारों ने इसे बद्र के युद्ध में हत मूर्तिपूजकों के विषय में बताया है। आदरणीय इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं कि जब मूर्तिपूजक मुसलमानों की ओर आते तो मुसलमान उन्के मुखों पर तलवारें मारते, जिससे बचने के लिए वे पीठ फेर कर भागते, तो फ़रिश्ते उनके पिछले भाग पर तलवार मारते। परन्तु यह साधारण आयत है कि जो प्रत्येक काफ़िर तथा मूर्तिपूजक को सम्मिलित किये हुए है। तथा अर्थ है कि मृत्यु के समय फ़रिश्ते उनके मुख तथा पीठ के उर्धव भाग पर मारते हैं, जिस प्रकार सूर: अल-अनाम में भी फ़रमाया गया है कि

﴿وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُوا أَيْدِيهِمْ﴾

"फ़रिश्ते उन्हें मारने के लिए हाथ बढ़ाते हैं।"(सूर: अल-अनाम-९३)

तथा कुछ के निकट फ़रिश्तों की यह मार प्रलय के दिन नरक की ओर ले जाते समय होगी तथा नरक का अधिकारी कहेगा कि अब "तुम डाह की यातना का स्वाद चखो।"

[3]यह चोट तथा यातना तुम्हारे कर्मों के परिणाम स्वरूप है, वरन् अल्लाह अपने भक्तों पर अत्याचार तथा अन्याय करने वाला नहीं है, अपितु वह तो न्यायकारी हर प्रकार के

The Ummah Technology Mission

كَدَأْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾

(५२) फ़िरऔन के अनुयायियों की दशा के समान तथा उनके पूर्वजों के, [1] कि उन्होंने अल्लाह की आयतों के प्रति अविश्वास किया तो अल्लाह ने उनके पापों के कारण उन्हें पकड़ लिया। अल्लाह (तआला) नि:संदेह शक्तिशाली तथा गंभीर यातना वाला है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٣﴾

(५३) ये इसलिए कि अल्लाह (तआला) ऐसा नहीं कि किसी समुदाय पर कोई कृपा कर के फिर बदल दे, जब तक कि वह स्वयं अपनी उस स्थिति को न बदल दें, जो कि उनकी अपनी थी।[2] तथा यह कि अल्लाह तआला सुनने वाला जानने वाला है।

अत्याचार तथा अन्याय से पवित्र है। हदीस क़ुदसी में भी है (हदीस क़ुदसी वह है जो प्रकाशना का भाग न हो परन्तु मुसलमानों के लिए आवश्यक हो उसे अल्लाह तआला आदरणीय जिब्रील के द्वारा मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बतायें)। अल्लाह तआला फ़रमाता है :

"हे मेरे भक्तो ! मैं ने अपने ऊपर अत्याचार निषेध कर लिया है तथा मैंने उसे तुम्हारे मध्य भी निषेध किया है। अतएव तुम एक-दूसरे पर अत्याचार न करो। हे मेरे भक्तो ! ये तुम्हारे ही कर्म हैं जिनकी गणना मैंने कर रखी है। अत: जो अपने कर्मों में भलाई पाये तो अल्लाह की महीमा का वर्णन करे तथा जो इसके विपरीत पाये, वह स्वयं अपने ही को बुरा कहे।" (सहीह मुस्लिम किताबुल बिरं बाब तहरीमुज़ ज़ुल्म)

[1] دَأْب दाब का अर्थ है आदत (व्यवहार) अक्षर काफ़ उपमा के लिए है। अर्थात उन मूर्तिपूजकों की आदत अथवा हाल अथवा व्यवहार ही ऐसा था कि अल्लाह के पैग़म्बरों को झुठलाते, उसी प्रकार जिस प्रकार फ़िरऔन तथा उसके पूर्व के झूठ बोलने वालों की आदत अथवा हाल था।

[2] इसका अर्थ यह है कि जब तक कोई समुदाय कृतघ्नता का मार्ग अपना कर तथा अल्लाह तआला द्वारा निर्देशित निषेधों से मुख मोड़ कर अपनी दशाओं एवं व्यवहारों को बदल नहीं लेती अल्लाह तआला उस पर अपने सुख-सुविधाओं एवं कृपा के द्वार बन्द नहीं करता। अन्य शब्दों में अल्लाह तआला पापों के कारण अपनी कृपायें समाप्त कर

The Ummah Technology Mission

كَدَأْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَاۤ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥٤﴾

(५४) फ़िरऔन के वर्ग तथा उनके पूर्व के जनों के समतुल्य कि उन्होंने अपने पोषक की बातों को झुठलाया तो हम ने उनके पापों के कारण उन्हें ध्वस्त कर दिया और फ़िरऔन वालों को डुबो दिया तथा यह सभी अत्याचारी थे।[1]

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٥﴾

(५५) सभी जीवों से बुरे अल्लाह के निकट वह हैं जो कुफ़्र करें फिर वह ईमान न लायें।[2]

اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٦﴾

(५६) जिनसे आपने वचन लिया, फिर भी वे अपना वचन हर बार तोड़ते हैं तथा कदापि संयम नहीं बरतते।[3]

देता है तथा अल्लाह तआला की कृपा का पात्र होने के लिए आवश्यक है कि पापों से बचा जाय। अर्थात परिवर्तन से तात्पर्य है कि समुदाय पापों को त्याग कर अल्लाह की आज्ञा का पालन करने लगे।

[1]यह इसी बात पर पुनः बल दिया गया है, जो पूर्व गुजर चुकी है। परन्तु इसमें विनाश की अवस्था का वर्णन अधिक है कि उन्हें डुबो दिया गया। इसके अतिरिक्त यह स्पष्ट कर दिया गया कि अल्लाह ने उनको डूबो कर अत्याचार नहीं किया, अपितु ये स्वयं ही अपने प्राणों पर अत्याचार कर रहे थे। अल्लाह तो किसी पर अत्याचार नहीं करता। ﴿وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ﴾ (सूरः हाम मीम सज्दः ४६)

[2]شرُّ النـــاس (लोगों में सबसे बुरे) कहने की जगह شرّ الدّاوب कहा गया है। जो भाषा के आधार पर मनुष्य तथा चौपाये जीवों आदि सब के लिए प्रयोग होता है। लेकिन समान्यरूप से चौपायों के लिए प्रयोग होता है। अर्थात काफ़िरों का सम्बन्ध मनुष्यों से नहीं कृतघ्नता कर के पशु अपितु पशुओं से भी बुरे पशु बन गये।

[3]यह काफ़िरों ही के एक व्यवहार का वर्णन है कि हर बार वचन तोड़ने का कार्य करते हैं तथा उसके परिणाम से तनिक भी भयभीत नहीं होते। कुछ लोगों ने इससे यहूदियों के वंश बनू कुरैज़ा का भावार्थ लिया है, जिनसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह सन्धि थी कि वे मूर्तिपूजकों की सहायता नहीं करेंगे, परन्तु उन्होंने इसे नहीं निभाया।

The Ummah Technology Mission

فَإِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿٥٧﴾

(५७) अत: जब कभी तू उन पर लड़ाई में प्रभावी हो जाओ तो उन्हें ऐसी मार मारो कि उनके अनुगामी भी भाग खड़े हों।[1] सम्भवत: वह शिक्षा प्राप्त कर लें।

وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْبِذْ إِلَيْهِمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ ﴿٥٨﴾

(५८) तथा यदि तुझे किसी समुदाय से विश्वासघात का भय हो तो समानता की अवस्था में उन की सन्धि तोड़ दे।[2] अल्लाह विश्वासघातियों को प्रिय नहीं रखता।[3]

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا ۚ إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ ﴿٥٩﴾

(५९) तथा काफ़िर यह विचार न करें कि वे भाग निकले, नि:संदेह वे विवश नहीं कर सकते।

---

[1] شَرِّدْ بِهِمْ का अर्थ है कि उनको ऐसी मार मारो कि जिससे उनके समर्थकों तथा साथियों में भगदड़ मच जाये, यहाँ तक कि वह आपकी ओर इस सम्भावना से मुख ही न करें कि कहीं उनका भी वही परिणाम न हो जो उनके अग्रगामियों का हुआ।

[2] विश्वासघात से तात्पर्य है जिस समुदाय से सन्धि हुई उससे यह भय कि वह सन्धि भंग कर दे। तथा على سواء (समानता की अवस्था में) का अर्थ है कि उन्हें उचित रूप से सूचित कर दो कि भविष्य में हमारे तुम्हारे मध्य कोई सन्धि नहीं। ताकि दोनों पक्ष अपनी-अपनी सुरक्षा के स्वयं उत्तरदायी हों, कोई एक पक्ष अज्ञान वश तथा धोखे में मारा न जाये।

[3] अर्थात यह सन्धि भंग यदि मुसलमानों की ओर से भी हो, तो भी यह विश्वासघात है, अर्थात जिसे अल्लाह तआला प्रेम नहीं करता। आदरणीय मुआविया (رضي الله عنه) तथा रूमियों के मध्य सन्धि थी। जब सन्धि की अवधि समाप्त होने के निकट आयी तो आदरणीय मुआविया (رضي الله عنه) ने रूम की धरती के निकट अपनी सेनायें एकत्रित करनी प्रारम्भ कर दीं उद्देश्य यह था कि सन्धि की अवधि समाप्त होते ही रूमियों पर आक्रमण कर दिया जाय। एक सहाबी अम्र बिन अबस: के ज्ञान में आदरणीय मुआविया की यह तैयारियाँ आईं तो इसे विश्वाघात कहा तथा ईशदूत (उन पर परमेश्वर की दया एवं शान्ति हो) का एक कथन प्रस्तुत करके उसे संधि भंग बताया, जिस पर आदरणीय मुआविया (رضي الله عنه) ने अपनी सेनाऐं वापस बुला लीं। (मुसनद अहमद भाग ५, पृ०१११, अबू दाऊद किताबुल जिहाद)

The Ummah Technology Mission

وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٦٠﴾

(६०) तथा उनसे (लड़ने के) लिये अपने सामर्थ्य भर शक्ति तैयार करो तथा घोड़े तैयार रखने की भी,[1] कि उस से तुम अल्लाह के शत्रुओं को भयभीत कर सको तथा उनके अतिरिक्त अन्यों को भी, जिन्हें तुम नहीं जानते, अल्लाह उन्हें भली-भाँति जान रहा है, तथा जो कुछ भी अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करोगे, वह तुम्हें पूरा-पूरा दिया जायेगा तथा तुम्हारे अधिकारों का हनन नहीं किया जायेगा।

وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦١﴾

(६१) तथा यदि वे सन्धि की ओर झुकें, तो तू भी सन्धि की ओर झुक जा तथा अल्लाह पर भरोसा रख।[2] नि:संदेह वह सुनने वाला जानने वाला है।

---

[1] قوّة की व्याख्या नबी करीम के कथनानुसार वाण चलाना है, (सहीह मुस्लिम किताबुल इमार: तथा अन्य हदीस की पुस्तकें) क्योंकि उस समय यह बहुत बड़ा युद्ध का हथियार था तथा अत्यन्त महत्वपूर्ण शिक्षा थी, जिस प्रकार घोड़े युद्ध के लिए अति आवश्यक थे, जैसाकि इस आयत से भी स्पष्ट होता है परन्तु अब तीर चलाने तथा घोड़े की युद्ध में इतनी आवश्यकता तथा महत्व नहीं रहा। इसलिए ﴿وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ﴾ के अधीन आज कल के आधुनिक हथियार आते हैं (जैसे- मिजाईल, टैंक, बम, तथा युद्ध के विमान तथा पोत तथा युद्ध के लिए पनडुब्बियाँ आदि) जिनकी तैयारी आवश्यक है।

[2] अर्थात यदि परिस्थितियाँ युद्ध की अपेक्षा शान्ति के पक्ष में हों तथा शत्रु भी सन्धि करना चाहे तो सन्धि कर लेना कोई अनुचित नहीं। यदि सन्धि से शत्रु का उद्देश्य छल तथा धोखा देना हो तो भी चिन्ता की आवश्यकता नहीं, अल्लाह पर भरोसा रखो, नि:संदेह अल्लाह शत्रु के छल तथा षड़यन्त्र से भी सुरक्षित रखेगा, तथा वह आप के लिए पर्याप्त है। परन्तु सन्धि की यह आज्ञा उस परिस्थिति में है जब मुसलमानों की शक्ति क्षीण हो तथा सन्धि में इस्लाम तथा मुसलमानों का लाभ हो परन्तु जब परिस्थिति इसके विपरीत हो, मुसलमान शक्ति तथा साधन में श्रेष्ठ हों तथा काफ़िरों की शक्ति क्षीण हो तथा अपमानित हो तो इस परिस्थिति में सन्धि के बजाय काफ़िरों की शक्ति तथा गर्व को तोड़ना आवश्यक है। (सूर: मोहम्मद ३५) ﴿وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ﴾ (सूर: अल-अंफाल-३९)

The Ummah Technology Mission

وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ؕ هُوَ الَّذِيْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۶۲﴾

(६२) तथा यदि वे तुझसे विश्वासघात करना चाहेंगे। तो अल्लाह तुझे बस है, उसी ने अपनी सहायता से तथा ईमानवालों से तेरा समर्थन कराया है।

وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۶۳﴾

(६३) तथा उन के दिलों में परस्पर प्रेम भी उसी ने उत्पन्न किया है। यदि आप धरती की सभी वस्तुऐं व्यय कर देते तो भी उनके दिलों में प्रेम की भावना नहीं उत्पन्न कर सकते थे[1] परन्तु अल्लाह ही ने उनके दिलों

---

[1]इन आयतों में अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा ईमानवालों पर जो उपकार किये उनमें से एक बड़े उपकार का वर्णन किया है वह यह कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ईमानवालों के द्वारा सहायता की, वे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दाहिने हाथ तथा रक्षक एवं सहायक बन गये। ईमानवालों पर यह उपकार किया कि इससे पूर्व जो उनमें दुश्मनी थी, उसे प्रेम में परिवर्तित कर दिया। पहले वे एक दूसरे के रक्त के प्यासे थे, परन्तु अब परस्पर मोहित हो गये। पहले उन में हार्दिक शत्रुता थी, परन्तु अब आपस में प्रेमी तथा मित्र बन गये, सदियों पुराने वैमनस्य को इस प्रकार समाप्त कर, आपसी प्रेम भाव उत्पन्न कर देना, यह अल्लाह तआला की विशेष कृपा थी, तथा उसकी सामर्थ्य तथा इच्छा का प्रभाव था अन्यथा यह ऐसा कार्य था कि संसार भर के कोष व्यय करके भी यह अमूल्य रत्न प्राप्त न होता। अल्लाह तआला ने अपने इस उपकार को सूरः आले इमरान की आयत संख्या १०३ में फ़रमाया है ﴿إِذْ كُنتُمْ أَعْدَاءً فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ﴾ तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी हुनैन के परिहार के विभाजित के अवसर पर अन्सार को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया, "हे अन्सार के गुट ! क्या यह सत्य नहीं कि तुम भटके हुए थे, अल्लाह ने मेरे माध्यम से तुम्हें मार्गदर्शन प्रदान किया, तुम निर्धन थे अल्लाह ने तुम्हें मेरे माध्यम से खुशहाली प्रदान की तथा तुम एक-दूसरे से पृथक-पृथक थे, अल्लाह ने मेरे माध्यम से तुम्हें आपस में जोड़ दिया।" नबी सल्लाहु अलैहि वसल्लम जो भी बात कहते अन्सार उसके उत्तर में यही कहते «اللهُ وَرَسُولُهُ أَمَنُّ» ("अल्लाह तथा उसके रसूल के उपकार इससे कहीं अधिक हैं।" (सहीह बुख़ारी किताबुल माग़ाज़ी बाब गज़वतुत तायेफ़ सहीह मुस्लिम किताबुल ज़कात बाब ऐताऊल मुअल्लिफते कुलूबुहुम अलल इस्लाम)

The Ummah Technology Mission

में प्रेम डाल दिया नि:सन्देह वह प्रभावी विज्ञाता है।

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٤﴾

(६४) हे नबी (ईशदूत) आप तथा आप के अनुयायी मुसलमानों को अल्लाह बस है।

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ؕ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾

(६५) हे ईशदूत ! मुसलमानों को जिहाद (धर्मयुद्ध) का प्रलोभन दो।[1] यदि तुम में से बीस धैर्यवान भी होंगे, तो भी दो सौ पर प्रभावी रहेंगे। तथा यदि तुम में से एक सौ होंगे तो एक हज़ार काफ़िरों पर प्रभावी रहेंगे।[2] इस कारण कि वे अज्ञानी लोग हैं।

اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ؕ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ

(६६) अच्छा अब अल्लाह तुम्हारा बोझ हल्का करता है, वह भली-भाँति जानता है कि तुम में निर्बलता है, तो यदि तुम में से एक सौ धैर्यवान होंगे, तो वे दो सौ पर प्रभावी रहेंगे

---

[1] تحريض तहरीद का अर्थात प्रलोभन देने में अति करना अर्थात उत्तेजित करना एवं भड़काना है अत: तदानुसार ईशदूत युद्ध से पूर्व सहाबा को जिहाद (धर्मयुद्ध) का प्रलोभन देते थे तथा उस के महत्व की चर्चा करते जैसा कि "बद्र" के अवसर पर जब मूर्तिपूजक अपनी भारी संख्या तथा भरपूर संसाधनों के साथ रणक्षेत्र में उपस्थित हो गये तो आप ने फ़रमाया "ऐसी स्वर्ग में प्रवेश के लिये तैयार हो जाओ जिस का विस्तार आकाशों एवं धरती के समतुल्य है।" एक सहाबी उमैर पुत्र हमाम ने कहा आकाशों एवं धरती की चौड़ाई के बराबर ? आप ने फ़रमाया "हाँ" इस पर उन्होंने बख़, बख़ कहा अर्थात प्रसन्नता व्यक्त की तथा यह आशा व्यक्त की मैं भी स्वर्गगामियों में रहूँगा, आप ने फ़रमाया, तुम स्वर्गगामियों में होगे। फिर अपनी तलवार की खोल तोड़ दी और कुछ खजूरें निकाल कर खाने लगे। फिर शेष फेंक दी तथा कहा इन के खाने तक जीवित रहा तो यह लम्बी आयु होगी फिर आगे बढ़े एवं साहस दिखाने लगे यहाँ तक कि शहीद (बलिदान) हो गये। (सहीह मुस्लिम किताबुल इमारत अध्याय स्वर्ग का प्रमाण शहीद हेतु)

[2] यह मुसलमानों के लिए शुभ सूचना है कि तुम्हारे दृढ़ता से लड़ने वाले २० सैनिक दो सौ पर तथा सौ एक हज़ार पर प्रभावशाली रहेंगे।

The Ummah Technology Mission

وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٦٦﴾

तथा यदि तुम में से एक हज़ार होंगे तो, वह अल्लाह के आदेश से दो हज़ार पर प्रभावी रहेंगे। [1] तथा अल्लाह (तआला) धैर्यवानों के साथ है।[2]

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِى الْاَرْضِ ؕ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٧﴾

(६७) नबी के हाथ में बन्दी नहीं चाहिए, जब तक कि देश में हिंसक युद्ध न हो जाये। तुम तो दुनिया के धन चाहते हो तथा अल्लाह का विचार परलोक का है। [3] तथा अल्लाह तआला प्रभावशाली विज्ञाता है।

---

[1]पिछला आदेश सहाबा पर भारी हुआ, क्योंकि इसका अर्थ था, एक मुसलमान दस काफ़िरों के लिए बीस दो सौ के लिए तथा एक सौ एक हज़ार के लिए पर्याप्त है। तथा काफ़िरों के सापेक्ष मुसलमानों की इतनी संख्या हो तो धर्मयुद्ध अनिवार्य तथा इससे बचना अनुचित है। अत: अल्लाह तआला ने कमी करके एक और दस के अनुपात को एक और दो का अनुपात कर दिया। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: अल-अंफाल) अब इस अनुपात पर धर्म युद्ध आवश्यक तथा इससे कम पर अनावश्यक है।

[2]यह कह कर धैर्य एवं साहस से लड़ने के महत्व पर बल दिया कि अल्लाह की सहायता के लिये इस का तत्वाधान आवश्यक है।

[3]बद्र के रण में सत्तर मूर्तिपूजक हत हुये एवं इसी संख्या में बंदी बनाये गये। यह इस्लाम एवं अधर्म के बीच प्रथम रण था, अत: बंदियों के विषय में क्या नीति हो इस संदर्भ में आदेश पूर्ण रूपेण स्पष्ट न थे अत: ईशदूत ने इस विषय में परामर्श लिया कि उन्हें हत किया जाये अथवा प्रतिशोध में धन लेकर मुक्त कर दिया जाये। उचित की परिधि में दोनों का ही अवकाश था अत: दोनों विचारधीन आईं किन्तु कुछ अवसर पर उचितोचित से अलग स्थितियों तथा समय अनुसार अधिक उत्तम नीति अपनाने की आवश्यकता होती है, यहाँ भी आवश्यकता अति उत्तम नीति अपनाने की थी किन्तु उचित को देखते हुए न्यूनतम नीति अपनाई गई जिस पर अल्लाह का क्रोध उतरा। परामर्श में आदरणीय उमर आदि का विचार था कि अधर्म के प्रभाव को तथा गर्व को तोड़ने के लिये आवश्यक है कि इन बन्दियों को हत कर दिया जाये क्योंकि यह अधर्म एवं अधर्मियों के प्रमुख हैं यह स्वतंत्र होकर मुसलमानों के विरुद्ध अधिक षड़यन्त्र रचेंगे जब कि आदरणीय अबू बक्र आदि का विचार इस के विपरीत यह था कि प्रतिशोध में धन लेकर उन्हें मुक्त कर दिया जाये तथा उस धन से आगामी युद्ध की तैयारी की

The Ummah Technology Mission

لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٦٨﴾

(६८) यदि पहले से ही अल्लाह की ओर से बात लिखी न होती[1] तो जो कुछ तुमने लिया है, उसके विषय में तुम्हें कोई घोर यातना होती।

فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٩﴾ ع

(६९) अत: जो वैध एवं पवित्र धन लड़ाई से प्राप्त करो उसे खाओ।[2] तथा अल्लाह से डरते रहो, नि:संदेह अल्लाह तआला अत्यधिक करूणामयी तथा कृपालु है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْٓ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰٓى ۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ

(७०) हे नबी! अपने हाथ के नीचे के बन्दियों से कह दो कि यदि अल्लाह तआला तुम्हारे

जाये। ईशदूत ने इसी विचार को उचित समझा जिस पर यह आयत उतरीं जिनसे तात्पर्य यह है कि यदि देश में अधर्म का प्रभाव हो (जैसाकि उस समय अरब देश में था) तो अधर्मियों का रक्तपात करके अधर्म की शक्ति को तोड़ना आवश्यक है। इस बिन्दू को त्याग कर तुम ने धन लिया है तो तुम ने उत्तम की जगह न्यूनतम की नीति अपनाई जो तुम्हारी भूल है अन्त में जब अधर्म का बल टूट गया तो मुसलमानों के राज्य प्रमुख को अधिकार दे दिया गया कि बंदियों को चाहे तो हत कर दे अथवा धन लेकर मुक्त करे या मुसलमान बंदियों से बदल ले तथा परिस्थितियों के अनुसार दास बना ले इन सभी की अनुमति है।

[1]इसमें व्याख्याकारों में मतभेद है कि यह लिखी हुई बात क्या थी? कुछ ने कहा कि इस से तात्पर्य युद्ध में प्राप्त धन-सामग्री को अवर्जित करने का आदेश है अर्थात चूंकि यह भाग्य लेख लिखी थी कि मुसलमानों को युद्ध में प्राप्त धन-सामग्री अवर्जित होगी। इसलिए तुम ने फ़िदया ले कर उचित कार्य किया। यदि ऐसा न होता तो फ़िदया लेने के कारण तुम्हें अत्यधिक प्रकोप सहन करना पड़ता। कुछ ने बद्र में शहीद होने वालों की क्षमा-याचना इस से तात्पर्य लिया है। कुछ ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उपस्थिति को प्रकोप न आने का कारण तात्पर्य लिये हैं आदि (विस्तार पूर्वक जानकारी के लिए देखें फ़तहुल क़दीर)

[2]इसमें युद्ध में प्राप्त माल-सामग्री को उचित तथा पवित्र ठहराकर फ़िदया को उचित होना बताया गया है जिससे इस बात का समर्थन होता है कि "लिखी हुई बात" शायद इससे तात्पर्य युद्ध में प्राप्त धन-सामग्री है।

The Ummah Technology Mission

فِيْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٧٠

दिलों में पुण्य विचार देखेगा,[1] तो जो कुछ तुमसे लिया गया है, उससे अच्छा तुम्हें प्रदान करेगा।[2] तथा फिर पाप भी क्षमा कर देगा तथा अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है।

وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٧١

(७१) तथा यदि वे तुझ से विश्वासघात का विचार करेंगे, तो यह तो इससे पूर्व स्वयं अल्लाह के साथ विश्वासघात कर चुके हैं। अन्ततः उसने उन्हें पकड़वा दिया।[3] तथा अल्लाह तआला ज्ञान वाला हिक्मत वाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا

(७२) जो लोग (इस्लाम) धर्म के प्रति ईमान लाये एवं हिजरत (प्रस्थान) कर गये तथा अपने धन, प्राण से अल्लाह के मार्ग में जिहाद (धर्मयुद्ध) किये।[4] एवं जिन लोगों ने उन को शरण तथा सहायता दी,[5] यह सब परस्पर

---

[1]अर्थात ईमान तथा इस्लाम स्वीकार कर लेने का विचार तथा उसे स्वीकार करने की भावना है।

[2]अर्थात जो फ़िदया तुमसे लिया गया है इससे अच्छा अल्लाह तआला तुम्हें इस्लाम स्वीकार करने के पश्चात प्रदान करेगा। अतः ऐसा ही हुआ। अब्बास (رضي الله عنه) आदि जो उनके क़ैदियों में से थे, मुसलमान हो गये, तो उसके पश्चात अल्लाह ने उन्हें सांसारिक धन वैभव भी अधिक प्रदान किया।

[3]अर्थात मुख से इस्लाम स्वीकार कर लें परन्तु उद्देश्य धोखा देना हो, तो इससे पूर्व उन्होंने अविश्वास तथा मिश्रण (शिर्क) कर के क्या प्राप्त किया? यही कि वह मुसलमानों के बन्दी बन गये, इसलिए यदि भविष्य में भी अनेकेश्वरवाद के मार्ग पर स्थिर रहे तो इससे अत्यधिक अपमान के सिवाय कुछ और नहीं मिलेगा।

[4]ये "सहाबा" मुहाजेरीन (जो मक्का नगरी त्याग कर मदीना आये) कहलाते हैं, जो महानता में सहाबा में सर्वश्रेष्ठ हैं।

[5]ये अन्सार कहलाते हैं (ये मदीना के मूल निवासी हैं) ये श्रेष्ठता के दूसरे स्थान पर हैं।

The Ummah Technology Mission

أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يُهَاجِرُوا مَا لَكُم مِّن وَلَايَتِهِم مِّن شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا ۚ وَإِنِ اسْتَنصَرُوكُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٧٢﴾

एक-दूसरे के मित्र हैं।[1] तथा जो ईमान लाये किन्तु हिजरत (प्रवास) नहीं किया तुम से उनकी तनिक भी मित्रता नहीं जब तक कि वह हिजरत (देश त्याग) न करें।[2] हाँ यदि वह धर्म के विषय में तुमसे सहायता माँगें, तो तुम पर सहायता देना आवश्यक है।[3] सिवाये उन लोगों के कि तुम्हारे तथा उनके बीच संप्रतिज्ञा है।[4] तथा जो भी तुम कर रहे हो अल्लाह भली प्रकार देख रहा है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُن فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ﴿٧٣﴾

(७३) तथा विश्वासहीन परस्पर एक-दूसरे के मित्र हैं, यदि तुम ने ऐसा न किया तो देश में आतंक होगा तथा घोर उत्पात उत्पन्न हो जायेगा।[5]

---

[1]अर्थात एक-दूसरे के सहायक तथा पक्षधर हैं। तथा कुछ ने कहा कि परस्पर के उत्तराधिकारी हैं जैसा कि हिजरत के पश्चात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक-एक मुहाजिर तथा एक-एक अंसार के मध्य भाई चारा करा दिया था। यहाँ तक कि वे एक-दूसरे के उत्तराधिकारी भी बनते थे। (बाद में उत्तराधिकारी का आदेश निरस्त कर दिया गया)

[2]यह सहाबा की तीसरी श्रेणी है जो मुहाजिर तथा अंसार के अतिरिक्त हैं। ये मुसलमान होने के पश्चात अपने ही क्षेत्र तथा जाति में रहते थे। इसलिए फ़रमाया कि तुम्हारे पक्ष अथवा उत्तराधिकार के वे अधिकारी नहीं।

[3]मूर्तिपूजकों के विरुद्ध सहायता मांगे तो फिर उनकी सहायता करनी आवश्यक है।

[4]हाँ यदि वह तुम से ऐसे समुदाय के विरूद्ध सहायता माँगे जिस के तथा तुम्हारे मध्य संधि एवं युद्ध न करने की संप्रतिज्ञा हो तो फिर मुसलमानों की सहायता की अपेक्षा संविदा का पालन आवश्यक है।

[5]अर्थात जिस प्रकार अधर्मी परस्पर मित्र एवं पक्षधर हैं उसी प्रकार यदि तुम भी ईमान के आधार पर परस्पर पक्षपात तथा कृतघ्नों से सम्बन्ध विच्छेद न रखा तो, फिर बड़ा उपद्रव होगा। और वह यह कि ईमानवालों तथा काफ़िरों में आपसी मेल-मिलाप से

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٤﴾

(७४) जो लोग ईमान लाये तथा प्रवास किये एवं अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध किये तथा जिन्होंने आश्रय दिया तथा सहायता पहुँचायी। यही लोग सच्चे ईमानवाले हैं, उनके लिए क्षमा तथा ससम्मान जीविका है।[1]

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٥﴾

(७५) तथा जो लोग इसके पश्चात ईमान लाये तथा प्रवास किये तथा तुम्हारे साथ होकर धर्मयुद्ध किये। तो यह लोग भी तुम में से ही हैं।[2] तथा जाति सम्बन्धी वाले उनमें से परस्पर एक-दूसरे के अधिक समीपवर्ती हैं अल्लाह के आदेश में,[3] नि:संदेह अल्लाह सर्वज्ञ है।

धर्म के सम्बन्ध में शंका तथा आलस्य उत्पन्न होगा। कुछ ने ﴿بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ﴾ से उत्तराधिकारी होना भाव निकाला है तथा अर्थ यह है कि एक मुसलमान काफ़िर का तथा काफ़िर मुसलमान का उत्तराधिकारी नहीं हो सकता। जैसाकि हदीस में इसको अधिक स्पष्ट रूप से समझाया गया है। यदि तुम उत्तराधिकार में कुफ़्र तथा ईमान पर ध्यान न देकर मात्र जाति संबन्ध को समक्ष रखोगे, तो इससे बड़ा उत्पात तथा अशांति पैदा होगी।

[1]यह उपरोक्त मुहाजेरीन तथा अंसार के दो गुटों की चर्चा है, जिसका वर्णन पहले गुज़र चुका है। यहाँ पुन: वर्णन उनकी प्रधानता व्यक्त करने के लिए है। जब कि उनकी पूर्व चर्चा परस्पर सहायता एवं पक्षपात की अनिवार्यता के वर्णन के लिए थी।

[2]यह एक चौथे गुट की चर्चा है, जो श्रेष्ठता में पहले दो गुटो के पश्चात तथा तीसरे गुट, जिन्होंने हिजरत नहीं की थी से प्रथम है।

[3]भाईचारे तथा शपथ के आधाार पर उत्तराधिकार में जो भागीदार बनते थे। इस आयत में उसे निरस्त कर दिया गया है अब उत्तराधिकारी वही होगा जो जिसका वंशीय अथवा ससुराली सम्बन्ध होगा। अल्लाह की किताब अथवा अल्लाह के आदेश से तात्पर्य है कि 'सुरक्षित पुस्तक' में मूल आदेश यही था। परन्तु भाईचारे के आधार पर अस्थाई रूप से एक-दूसरे को उत्तराधिकारी बना दिया गया था, जो अब आवश्यकता समाप्त हो जाने के पश्चात अनावश्यक हो गया तथा मूल आदेश लागू कर दिया गया।

The Ummah Technology Mission

सूरतुत्तौब:-९

سُوْرَةُ التَّوْبَةِ

सूर: तौब: * मदीने में उतरी तथा इसमें एक सौ उनत्तीस आयतें एव सोलह रुकूअ हैं।

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖۤ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١

(१) (यह) अल्लाह एवं उसके रसूल (दूत) की ओर से विमुक्ति की घोषणा है[1] उन मिश्रण-वादियों के संबन्ध में जिन से तुम ने संप्रतिज्ञा (मुआहद:) की है।

فَسِيْحُوْا فِى الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ

(२) अत: (हे मिश्रणवादियो !) तुम देश में चार महीने यातायात कर लो[2] तथा जान लो

(*) **नामकरण के कारण :-** इसके व्याख्याकारों ने कई नामों का वर्णन किया है, परन्तु अधिक प्रसिद्ध दो नाम हैं प्रथम 'तौबा' इस लिए कि इसमें ईमानवालों की तौबा स्वीक़ार होने का वर्णन है। द्वितीय नाम 'बराअत' है। इसलिए कि इसमें मूर्तिपूजकों से सन्धि से मुक्ति की घोषणा की गयी है। यह क़ुरआन मजीद की एक ही सूर: है जिसके प्रारम्भ में बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम नहीं लिखा है इसके भी विभिन्न कारण भाष्य पुस्तकों में लिखे हुए हैं। परन्तु अधिक उचित बात यह लगती है कि सूर: अंफ़ाल तथा सूर: तौबा इन दोनों के विषय में समानता पायी जाती है अत: यह सूर: अंफ़ाल की पूरक अथवा शेष है। यह सात बड़ी सूरतों में से सातवीं बड़ी सूर: है, जिन्हें सबआ तिवाल कहा जाता है।

[1]मक्का विजय के पश्चात ९ हिजरी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय अबू बक्र, आदरणीय अली (رضي الله عنهما) तथा अन्य कुछ सहचरों को यह आयतें तथा आदेश दे कर भेजा ताकि वह मक्के में उनको जन-सामान्य के समक्ष घोषित कर दें। उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशानुसार घोषणा कर दी कि कोई व्यक्ति अब (काबा) की नंगी परिक्रमा नहीं कर सकेगा। बल्कि अगले वर्ष से किसी मूर्तिपूजक को बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) के हज की आज्ञा नहीं प्रदान की जायेगी। (सहीह बुख़ारी संख्या १३६९, मुस्लिम संख्या ९८३)

[2]यह मुक्ति की घोषणा उन मूर्तिपूजकों के लिए थी जिन से बिना अवधि की सन्धियाँ थीं अथवा चार महीने से कम की थीं अथवा जिनसे चार महीने अथवा उससे अधिक की तो थीं, परन्तु उनकी ओर से सन्धि के नियमों का पालन नहीं हो रहा था। उन सभी को चार महीने की अवधि तक मक्का में निवास का समय दे दिया गया। इसका अर्थ यह था कि यदि यह चार महीने के अन्दर इस्लाम धर्म स्वीकार कर लें, तो उन्हें यहाँ रहने

The Ummah Technology Mission

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ مُخْزِى الْكٰفِرِيْنَ ۝٢

कि तुम अल्लाह को विवश नहीं कर सकते तथा अल्लाह विश्वासहीनों को निरादर करने वाला है।[1]

وَ اَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ وَرَسُوْلُهٗ ؕ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ؕ وَ بَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٣

(३) अल्लाह एवं उस के रसूल (दूत) की ओर से महा हज के दिन[2] स्पष्ट घोषणा है कि अल्लाह मिश्रणवादियों से असंतुष्ट है तथा उसका दूत भी, यदि अब भी तुम क्षमा-याचना कर लो तो तुम्हारे लिये उत्तम है तथा यदि तुम मुख फेरो तो जान लो कि तुम अल्लाह को विवश नहीं कर सकोगे तथा विश्वासहीनो (काफ़िरों) को घोर यातना का शुभ समाचार दे दो।

की आज्ञा होगी अन्यथा उनके लिये यह आवश्यक होगा कि वे अरब महाद्वीप से निकाल जायें। यदि इन दोनों नियमों में से वे कोई भी नहीं अपनाते हैं, तो उनकी गणना उन काफ़िरों में होगी जिनसे लड़ना मुसलमानों के लिए आवश्यक होगा, ताकि अरब महाद्वीप अनेकेश्वरवाद तथा मूर्तिपूजा से पवित्र हो जाये।

[1]अर्थात यह समय इसलिए नहीं दिया जा रहा है कि इस समय तुम्हारे विरुद्ध कार्यवाही सम्भव नहीं है, अपितु इसका उद्देश्य भी तुम्हारी भलाई तथा लाभ है, जो तौबा करके मुसलमान होना चाहे, तो वह मुसलमान हो जाये। वरन् याद रखो कि तुम्हारे लिए अल्लाह ने अपने विवेक से भाग्य में लिख दिया है, उसे तुम टाल नहीं सकते तथा अल्लाह की ओर से उतारे गये अपमान तथा अनादर से तुम बच नहीं सकते।

[2]सहीह बुख़ारी तथा मुस्लिम तथा अन्य सहीह हदीस की किताबों से सिद्ध है कि हज अकबर के दिन से तात्पर्य योमुन्नहर (अर्थात १० ज़िलहिज्जा) का दिन है। (त्रिमिज़ी संख्या ९५७ बुख़ारी संख्या ४६५५, मुस्लिम संख्या ९८२) उसी दिन मिना के स्थान पर मुक्ति की घोषणा की गयी। १० ज़िलहिज्जा को हज अकबर इसलिए कहा जाता है कि इस दिन हज की सबसे अधिक तथा विशेष धार्मिक रीतियों को अदा किया जाता है। तथा जन मानस उमरे को हज असग़र कहा करते थे। इसलिए उमरे से श्रेष्ठ करने के लिए हज को महा हज (अकबर) कहा गया। लोगों में जो यह प्रसिद्ध है कि शुक्रवार को आये वह हज अकबर है, निराधार है

The Ummah Technology Mission

إِلَّا الَّذِينَ عَٰهَدتُّم مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنقُصُوكُمْ شَيْـًٔا وَلَمْ يُظَٰهِرُوا۟ عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتِمُّوٓا۟ إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝٤

(४) परन्तु वह मिश्रणवादी जिन से तुमने संविदा कर लिया है तथा उन्होंने तुम्हें तनिक भी हानि नहीं पहुंचाई तथा तुम्हारे विरुद्ध किसी की सहायता नहीं की तो तुम भी संविदा की अवधि उनके साथ पूरी करो। निःसन्देह अल्लाह परहेज़गारों से प्रेम करता है।[1]

فَإِذَا انسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ

(५) फिर प्रतिष्ठित महीनों[2] के व्यतीत होते ही मूर्तिपूजकों को जहाँ पाओ वध करो।[3]

---

[1]मूर्तिपूजकों की यह चौथी श्रेणी है इनसे जितनी अवधि की सन्धि थी उन्हें उतने समय रहने की आज्ञा दी गई। क्योंकि उन्होंने सन्धि के नियमों का पालन किया तथा उसके विरुद्ध कोई कार्य नहीं किया, इसलिए मुसलमानों के लिए भी उसके पालन को आवश्यक कहा गया।

[2]इन प्रतिष्ठित महीनों से तात्पर्य क्या है ? इसमें मतभेद है। एक विचार तो यह है कि इससे तात्पर्य वही चार महीने हैं जो सम्मानित हैं। अर्थात मुहर्रम, रजब, ज़ीकादः तथा ज़िलहिज्जाः। तथा विमुक्ति की घोषणा १० ज़िलहिज्जा को की गयी। इस आधार पर यह हुआ कि जैसे उन्हें केवल पचास दिन का समय दिया गया। क्योंकि सम्मानित महीनों के व्यतीत होने के पश्चात मूर्तिपूजकों को पकड़ कर वध करने की आज्ञा दे दी गयी थी। परन्तु इमाम इब्ने कसीर के अनुसार यहाँ निषेधित महीने नहीं हैं। अपितु १० ज़िलहिज्जा से १० रबीउस्सानी तक के चार महीने तात्पर्य हैं। उन्हें सम्मानित महीने इसलिए कहा गया है कि विमुक्ति की घोषणा के आधार पर इन चार महीनों में उन मूर्तिपूजकों से लड़ने तथा उनके विरुद्ध किसी भी कार्यवाही की आज्ञा नहीं थी। मुक्ति की घोषणा के आधार पर यह तर्क अधिक उचित प्रतीत होता है।

[3]कुछ व्याख्याकारों ने इस आदेश को सामान्य माना है अर्थात हरम के क्षेत्र अथवा उसके बाहर के क्षेत्र में जहाँ भी पाओ मारो। तथा कुछ व्याख्याकारों ने सूरः बक़रः की यह आयत वर्णन किया है।

﴿ وَلَا تُقَٰتِلُوهُمْ عِندَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّىٰ يُقَٰتِلُوكُمْ فِيهِ ۖ فَإِن قَٰتَلُوكُمْ فَٱقْتُلُوهُمْ ﴾

"मस्जिदे हराम के निकट उनसे न लड़ो। यहाँ तक कि वे स्वयं तुम से न लड़ें, यदि वे लड़ें तो तुम्हें भी उनसे लड़ने की आज्ञा है।" (सूरः अल-बक़रः:-१९१)

इस आयत से विशेष निर्धारण करके केवल हरम की सीमा से बाहर के क्षेत्र में वध करने की आज्ञा प्रदान की गयी है। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ وَاحْصُرُوهُمْ وَاقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝٥

उन्हें बन्दी बनाओ ।[1] उनका घेराव करो तथा उनके ताक में हर घाटी में जा बैठो ।[2] परन्तु यदि वे क्षमा-याचना कर लें तथा नमाज़ स्थाई रूप से निरन्तर पढ़ने लगें तथा ज़कात अदा करने लगें, तो तुम उनका मार्ग छोड़ दो ।[3] निःसंदेह अल्लाह तआला क्षमा-शील कृपालु है ।

وَإِنْ أَحَدٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ۚ

(६) यदि मिश्रणवदियों में से कोई तुझसे शरण माँगे तो, तू उसे शरण प्रदान कर दे यहाँ तक कि वह अल्लाह का कथन सुन ले फिर उसे उसके शान्ति स्थान तक पहुँचा दे ।[4] यह इस

---

[1]अर्थात उन्हें बन्दी बना लो अथवा वध कर दो ।

[2]अर्थात इस बात पर बस न करो कि वह जहाँ मिलें कार्यवाही करो बल्कि जहाँ-जहाँ उनके सुरक्षा स्थान दुर्ग अथवा शरणागार हों, वहाँ-वहाँ उनकी ताक में रहो । यहाँ तक कि तुम्हारी आज्ञा के बिना उनके लिए आवागमन सम्भव न रहे ।

[3]अर्थात उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही न की जाये क्योंकि वे मुसलमान हो गये हैं । अर्थात इस्लाम स्वीकार करने के पश्चात नमाज़ निरन्तर पढ़ना तथा ज़कात देना अनिवार्य है, यदि कोई व्यक्ति इनमें से कोई एक कर्त्तव्य छोड़ देता है, तो वह मुसलमान नहीं समझा जायेगा । जिस प्रकार आदरणीय अबू बक्र (رضي الله عنه) ने ज़कात अदा न करने वालों के विरुद्ध इसी आयत से अर्थ प्रमाणित पाया तथा फ़रमाया:

(وَاللهِ لأُقَاتِلَنَّ مَنْ فَرَّقَ بَيْنَ الصَّلٰوةِ والزَّكَاةِ)

"अल्लाह की सौगन्ध मैं उन लोगों से अवश्य लड़ूँगा जो नमाज़ तथा ज़कात के मध्य अन्तर करेंगे अर्थात नमाज़ को पढ़ें परन्तु ज़कात अदा करने से भागें ।"
(बुख़ारी व मुस्लिम बहवाला मिशकात किताबुज़ ज़कात फ़सले सालिस)

[4]इस आयत में उपरोक्त विरोधी मूर्तिपूजकों के सम्बन्ध में एक छूट प्रदान की गयी है कि यदि कोई मूर्तिपूजक शरण माँगे तो उसे शरण प्रदान कर दो अर्थात उसे अपनी सुरक्षा में सुरक्षित रखो ताकि कोई अन्य मुसलमान उसे मार न सके । ताकि उसे

The Ummah Technology Mission

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۝٦

लिए कि वह लोग अज्ञानी हैं।[1]

كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖٓ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝٧

(७) मूर्तिपूजकों का वचन अल्लाह तथा उस के रसूल के निकट कैसे रह सकता है, सिवाय उनके जिन से संविदा तुम ने मस्जिदे हराम के पास किया है।[2] तो जब तक वे लोग तुम से सन्धि निभायें, तुम भी उन से वचन का निर्वाह करो। अल्लाह (तआला) परहेज़गार लोगों से प्रेम करता है।[3]

كَيْفَ وَاِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ۭ

(८) उनके वचनों का क्या भरोसा, उनको यदि तुम पर प्रभुत्व मिल जाये तो न ये सम्बन्ध का विचार करें न सन्धि वचन का।[4] अपने

अल्लाह की बातें सुनने तथा इस्लाम धर्म स्वीकार करने का सौभाग्य प्राप्त हो जाये। परन्तु यदि अल्लाह की बातें सुनने के पश्चात भी वह इस्लाम धर्म नहीं स्वीकार करता है, तो उसे उसके सुरक्षित स्थान तक पहुँचा दो। अर्थात अपनी सुरक्षा का कर्त्तव्य अन्तिम क्षण तक निभाना है। जब तक वह अपनी सुरक्षित स्थान तक नहीं पहुँच जाता उसकी सुरक्षा का दायित्व तुम्हारे ऊपर है।

[1]अर्थात शरणार्थियों को शरण की छूट इसलिए प्रदान की गयी है क्योंकि यह लोग अज्ञानी हैं सम्भव है अल्लाह तथा उसके रसूल की बातें उनके ज्ञान में आयें तथा मुसलमानों का आचरण तथा व्यवहार वह देखें, तो इस्लाम धर्म स्वीकार करके परलोक की यातना से बच जायें। जिस प्रकार हुदैबिया की सन्धि के पश्चात बहुत से काफ़िर मदीना आते-जाते रहे, तो मुसलमानों के व्यवहार तथा आचरण को देख कर इस्लाम धर्म को समझने में बहुत सहायता मिली तथा बहुत से लोग मुसलमान हो गये।

[2]यह नकारात्मक प्रश्न है, अर्थात जिन मूर्तिपूजकों से तुम्हारी सन्धि है, उनके अतिरिक्त अब किसी से सन्धि शेष नही रही है।

[3]अर्थात वचन निभाना, अल्लाह के समक्ष प्रिय बात है। इसलिए सम्बन्ध में सावधानी आवश्यक है।

[4] كيف (कैफ़) का अर्थ है 'कैसे' यह प्रश्न भी अस्वीकृति को बल देने के लिए प्रयोग हुआ है إِلٌّ (इल्ल) का अर्थ नाता (सम्बन्ध) तथा ذِمَّة (जिम्मः) का अर्थ वचन हैं अर्थात उन मूर्तिपूजकों की बातों का क्या भरोसा ? जबकि उनकी दशा यह है कि यदि ये तुम

The Ummah Technology Mission

يُرْضُونَكُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَىٰ قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٨﴾

मुख से ये तुम्हें परिचा रहे हैं परन्तु इनके हृदय नहीं मानते और उनमें से अधिकतर तो (दुराचारी) फ़ासिक़ हैं ।

اشْتَرَوْا بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا عَن سَبِيلِهِ ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩﴾

(९) उन्होंने अल्लाह की आयतों को अति कम मूल्य में बेच दिया तथा उसके मार्ग से रोका। अत्यधिक बुरा है जो यह कर रहे हैं।

لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ﴿١٠﴾

(१०) यह तो किसी मुसलमान के पक्ष में किसी सम्बन्ध का अथवा सन्धि का कदापि चिन्ता नहीं करते, यह हैं ही अतिक्रमणकारी।[1]

فَإِن تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ ۗ وَنُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ

(११) अब भी यदि ये क्षमा-याचना (पश्चाताप) कर लें तथा नमाज़ निरन्तर पढ़नें लगें तथा ज़कात देते रहें, तो तुम्हारे धर्म भाई हैं।[2]

पर विजयी हों तो किसी सम्बन्ध अथवा वचन की कोई चिन्ता नहीं करेंगे। कुछ व्याख्याकारों का मत है कि प्रथम कैफ़ का अर्थ मूर्तिपूजक तथा द्वितीय का अर्थ यहूदी हैं क्योंकि उनकी विशेषता वर्णन की गयी है कि वे अल्लाह की आयतों को तुच्छ मूल्य पर विक्रय कर देते हैं। तथा यह दुर्गुण यहूदियों का ही रहा है।

[1]बार-बार स्पष्टीकरण का उद्देश्य मूर्तिपूजकों तथा यहूदियों की इस्लाम धर्म से शत्रुता तथा उनके दिलों में बसे द्वेष भावों को प्रदर्शित करना है।

[2]नमाज़, तौहीद (एकेश्वरवाद में विश्वास) तथा रिसालत के स्वीकार करने के पश्चात, इस्लाम का सबसे श्रेष्ठ तथा विशेष मूल स्तम्भ है, जो अल्लाह का अधिकार है, उसमें अल्लाह की उपासना के विभिन्न रूप हैं। इसमें हाथ बाँधकर खड़ा होना है, दण्डवत तथा माथा टेकना है, प्रार्थना तथा अर्चना है, अल्लाह की श्रेष्ठता तथा प्रताप का तथा अपनी निर्बलता तथा विवशता का प्रदर्शन है। उपासना की यह सारी विधियाँ तथा रूप मात्र अल्लाह के लिए योग्य हैं। नमाज़ के पश्चात द्वितीय कर्त्तव्य ज़कात अदा करना है जिसमें वंदनीय पथ होने के साथ-साथ दूसरे मनुष्यों के प्रति उनके मौलिक अधिकार भी सम्मिलित हैं। ज़कात से समाज तथा उसकी जाति के निर्धन अनाथ, अपंग, असहाय, लोग लाभ उठाते हैं इसीलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथनों में भी तौहीद की गवाही देने के पश्चात उन्हीं दो बातों को अधिक स्पष्ट रूप एवं विशेषता से वर्णित किया गया है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मुझे आदेश दिया गया है कि मै लोगों से युद्ध करूँ, यहाँ तक कि वे इस बात की

The Ummah Technology Mission

يَعْلَمُوْنَ ⑪

हम तो जानकारों के लिए अपनी आयतों को सविस्तार वर्णन कर रहे हैं।

وَاِنْ نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْٓا اَىِٕمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَآ اَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ ⑫

(१२) यदि ये लोग प्रतिज्ञा तथा वचन के पश्चात भी अपनी प्रतिज्ञा भंग कर दें तथा तुम्हारे धर्म की निन्दा भी करें, तो तुम भी उन अधर्मियों के प्रमुखों से भिड़ जाओ। उनकी सौगन्ध कोई वस्तु नहीं, संभव है कि इस प्रकार वह रुक जायें।[1]

اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَهُمْ بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ

(१३) तुम उन लोगों के सिर कुचलने के लिए क्यों तैयार नहीं होते।[2] जिन्होंने अपनी प्रतिज्ञाओं को तोड़ दिया तथा (अन्तिम)

गवाही दें कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, तथा मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के संदेशवाहक हैं। तथा नमाज़ स्थापित करें तथा ज़कात दें।" (सहीह बुख़ारी किताबुल ईमान बाब फइन ताबू व अकामुस्सलात, मुस्लिम किताबुल ईमान बाबुल अमरे बिकितालिन्नास .....) आदरणीय अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद का कथन है (وَمَنْ لَّمْ يُزَكِّ فَلَا صَلَاةَ لَهُ) 'जिसने ज़कात नहीं दी, उसकी नमाज़ भी नहीं होती।'

[1] أَيْمَان (ऐमान) (यमीन) का बहुवचन है, जिसका अर्थ 'सौगन्ध है'। أَئِمَّة (अइम्मा) إِمَام (इमाम) का बहुवचन है। अर्थ मुखिया, नेता है। अर्थ यह है कि यदि ये लोग वचन तोड़ दें, तथा धर्म को कलंकित करने का प्रयत्न करें, तो प्रत्यक्ष रूप से यह सौगन्ध भी खायें तो उनका कोई भरोसा नहीं। काफ़िरों के इन नेताओं से युद्ध करो। सम्भव है कि वे इस प्रकार अपने कुफ़्र से रुक जायें। इससे कुछ लोगों ने यह अर्थ निकाला है कि यदि इस्लामी राज्य में निवास करने वाले मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य धर्मों का अनुयायी यदि वचन अथवा सन्धि को नहीं तोड़ता परन्तु केवल इस्लाम धर्म को कलंकित करता है तो उसका वध नहीं किया जायेगा। क्योंकि कुरआन ने उनसे युद्ध करने के लिए दो चीज़ें वर्णित की हैं, इसलिए जब तक दोनों चीज़ों को वे नहीं करेंगे वे वध कर डलाने के अधिकारी नहीं होंगे परन्तु इमाम मालिक, इमाम शाफ़ई तथा अन्य इमामों का मत है कि धर्म को कलंकित करने का प्रयत्न ही वचन तोड़ने के समान है इसलिए उनके निकट वे दोनों चीज़ें आ जाती हैं, अतः इस शरणार्थी का वध उचित है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] أَلَا का प्रयोग उत्तेजित करने के लिए किया जाता है, अल्लाह तआला मुसलमानों को धर्मयुद्ध के लिये प्रलोभन दे रहा है।

The Ummah Technology Mission

مَرَّةٍ ؕ اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣﴾

ईशदूत (नराशंस) को देश से निकाल देने की सोच में हैं।[1] तथा स्वय ही प्रथम बार उन्होंने तुम से छेड़ की है।[2] क्या तुम उनसे डरते हो ? अल्लाह ही को सबसे अधिक अधिकार है कि तुम उससे डर रखो यदि तुम ईमान वाले हो।

قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٤﴾

(१४) उनसे तुम युद्ध करो, अल्लाह तआला तुम्हारे हाथों उनको यातना देगा, उन्हें अपमानित तथा निरादर करेगा, तुम्हें उन पर सहायता देगा तथा मुसलमानों के दिलों को ठन्डा करेगा।

وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ

(१५) तथा उनके दिलों के दुख तथा क्रोध को दूर करेगा,[3] तथा वह जिसकी ओर चाहता है

---

[1]इससे तात्पर्य दारुननदवा है जिसमें मक्का के प्रमुखों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देश निकाला देने, बन्दी बनाने अथवा हत्या करने के प्रस्ताव पर विचार किया।

[2]इससे तात्पर्य बद्र के युद्ध में मक्का के मूर्तिपूजकों का व्यवहार है कि वे अपने व्यापारिक क़ाफ़िले की सुरक्षा के लिए गये। परन्तु इसके उपरान्त कि उन्होंने देख लिया कि क़ाफ़िला बच कर निकल गया है, वह बद्र के स्थान पर मुसलमानों से लड़ने की तैयारी तथा छेड़खानी करते रहे, जिसके परिणामस्वरूप अन्त में युद्ध होकर ही रहा। अथवा इससे तात्पर्य क़बीला बनी बक्र की वह सहायता है जो क़ुरैश ने उनकी की, जब कि उन्होंने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सन्धि किये हुए क़बीला पर चढ़ाई की थी, जब कि क़ुरैश की यह सहायता सन्धि के विरुद्ध थी।

[3]अर्थात जब यह मुसलमान कमज़ोर थे, तो यह मूर्तिपूजक उन पर अत्याचार करते थे, जिसके कारण मुसलमानों के हृदय उन से अत्यधिक दुखी तथा घायल थे। जब मुसलमानों के हाथों वह मारे जायेंगे तथा अनादर तथा अपमान उनके भाग्य में आयेगी, तो प्राकृतिक बात है कि इससे उत्पीड़ित एवं दुखी मुसलमानों के दिलों को ठंढक मिलेगी तथा मानसिक क्रोध का निवारण होगा।

The Ummah Technology Mission

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٥﴾

दया से आकर्षित होता है, तथा अल्लाह तआला ज्ञाता एवं विवेकी है।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾

(१६) क्या तुम यह समझ बैठे हो कि तुम छोड़ दिये जाओगे ?[1] यद्यपि कि अल्लाह (तआला) ने तुम में से उन्हें श्रेष्ठ नहीं किया है जो धर्मयुद्ध के सैनिक हैं।[2] तथा जिन्होंने अल्लाह के तथा उसके रसूल के एवं ईमानवालों के अतिरिक्त किसी को मित्र नहीं बनाया।[3] और अल्लाह (तआला) भली-भाँति जानने वाला है जो तुम कर रहे हो।[4]

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ

(१७) असम्भव है कि मूर्तिपूजक अल्लाह की मस्जिद को आबाद करें, जबकि हाल यह है कि यह अपने अविश्वास के स्वयं साक्षी हैं।[5]

---

[1]अर्थात बिना किसी परीक्षा के।

[2]जैसे कि धर्मयुद्ध के द्वारा परीक्षा ली गयी।

[3]وَلِيجَة (वलीजः) घनिष्ठ तथा हार्दिक मित्र को कहते हैं। मुसलमानों को चूँकि अल्लाह तथा उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के शत्रुओं से प्रेम करने तथा मित्रता पूर्ण सम्बन्ध रखने से भी रोका गया था, अतः यह भी परीक्षा का एक साधन था, जिससे निःस्वार्थी ईमानवालों को अन्यों से अलग किया गया।

[4]अर्थ यह है कि अल्लाह को तो पहले ही हर वस्तु का ज्ञान है, परन्तु धर्मयुद्ध में बुद्धिमत्ता यह है कि इससे स्वार्थी तथा निःस्वार्थी आज्ञाकारी तथा अवज्ञाकारी भक्त स्पष्ट हो जाते हैं, जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति देख तथा पहचान लेता है।

[5]مساجد اللہ से तात्पर्य मस्जिदे हराम है। बहुवचन शब्द इसलिए प्रयोग किया गया है कि दुनिया की सभी मस्जिदों का यह केन्द्र (क़िबला) है। अथवा अरबों में एक वचन के लिए बहुवचन का प्रयोग भी उचित कहा जाता है। अर्थ यह है कि अल्लाह के घर (अर्थात मस्जिदे हराम) का निर्माण करना अथवा बसाना मुसलमानों का काम है, न कि उनका जो कुफ़्र तथा शिर्क करते हैं। तथा उसको स्वीकार भी करते हैं। जैसे कि वे तलबिया में (धर्मघोष) कहा करते थे «لَبَّيْكَ! لَا شَرِيْكَ لَكَ، إِلَّا شَرِيْكًا هُوَ لَكَ، تَمْلِكُهُ وَمَا مَلَكَ»

The Ummah Technology Mission

أَعْمَالُهُمْ ۖ وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ ﴿١٧﴾

उनके कर्म नष्ट तथा बेकार हैं, तथा वे स्थाई रूप से नरकवासी हैं।[1]

إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ ۖ فَعَسَىٰ أُولَٰئِكَ أَنْ يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ﴿١٨﴾

(१८) अल्लाह की मस्जिदों को तो वह आबाद करते हैं, जो अल्लाह पर तथा प्रलय के दिन पर ईमान रखते हों। नमाज़ निरन्तर पढ़ते हों, ज़कात देते हों, और अल्लाह के अतिरिक्त किसी से न डरते हों, सम्भव है कि यही लोग निःसंदेह मार्गदर्शन प्राप्त हैं।[2]

أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَجَاهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ لَا يَسْتَوُونَ

(१९) क्या तुम ने हाजियों को पानी पिला देना तथा मस्जिदे हराम की सेवा करना उस के समान कर दिया है जो अल्लाह पर तथा प्रलय के दिन पर ईमान लाये तथा अल्लाह के मार्ग में धर्म युद्ध किया, यह अल्लाह के

(सहीह मुस्लिम बाबुत तलबीयः) अथवा इससे तात्पर्य वह स्वीकार्य है जो प्रत्येक धर्मावलम्बी करता है कि मैं यहूदी, ईसाई, साबई अथवा मूर्तिपूजक हूँ। (फ़तहुल क़दीर)

[1]अर्थात उनके वे कर्म जो देखने में पुण्य लगते हैं, जैसे खाना-ए-काअबा की परिक्रमा, उमरा तथा हाजियों की सेवा आदि। परन्तु ईमान के बिना वह ऐसे वृक्ष के समान हैं जो बिना छाया तथा बिना फल के हो अथवा वे उन फूलों के समान हैं जिनमें सुगन्ध नहीं है।

[2]जिस प्रकार हदीस में भी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

« إِذَا رَأَيْتُمُ الرَّجُلَ يَعْتَادُ الْمَسْجِدَ، فَاشْهَدُوا لَهُ بِالإِيمَانِ » .

"जब तुम देखो कि कोई मस्जिद में नियमित रूप से आता है, तो तुम उसके ईमान की गवाही दो।" (त्रिमिज़ी तफ़सीर सूरः तौबः)

क़ुरआन करीम में यहाँ पर भी अल्लाह पर ईमान तथा आख़िरत पर ईमान के पश्चात जिन कर्मों का वर्णन किया गया है वह नमाज़ ज़कात तथा अल्लाह से डरना है जिससे नमाज़, ज़कात तथा तक़वा (अल्लाह के डर) का महत्व प्रकाशित है।

The Ummah Technology Mission

عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾

निकट समान नहीं[1] तथा अल्लाह (तआला) अन्यायियों को मार्ग नहीं दिखाता है।[2]

---

[1]मूर्तिपूजक हाजियों को पानी पिलाने तथा मस्जिदे हराम के देख भाल करने का जो कार्य करते थे उस पर उन्हें बड़ा गर्व था तथा इसके सापेक्ष वे ईमान तथा धर्मयुद्ध को कोई विशेषता नहीं देते थे। जिसकी विशेषता मुसलमानों में थी। अल्लाह ने फ़रमाया क्या तुम हाजियों को पानी पिलाने तथा मस्जिदे हराम का प्रबन्ध करने को अल्लाह पर ईमान तथा अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध के समान समझते हो? याद रखो, अल्लाह के निकट ये समान नहीं हैं। अपितु मूर्तिपूजक का कोई भी कर्म स्वीकार नहीं चाहे वह पुण्य के रूप में ही हो जैसाकि इससे पूर्व की आयत के वाक्य حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ में स्पष्ट किया जा चुका है। कुछ कथनों में इसके उतरने का कारण मुसलमानों की आपस की बातचीत है कि एक रोज कुछ मुसलमान मिम्बरे नबवी के निकट एकत्रित थे, उन में से एक ने कहा कि इस्लाम लाने के पश्चात मेरे निकट सबसे श्रेष्ठ कर्म हाजियों को पानी पिलाना है, दूसरे ने कहा मस्जिदे हराम आबाद करना, तीसरे ने कहा बल्कि अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध करना इस सभी से श्रेष्ठ है, जो तुम ने वर्णन किये हैं। आदरणीय उमर (رضی اللہ عنہ) ने जब उनमें आपस में यह बात करते हुए सुना तो डाँटा तथा फ़रमाया कि मिम्बरे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकट आवाजें ऊँची करके मत बात करो। यह शुक्रवार का दिन था। हदीस को कहने वाले आदरणीय नौमान बिन बशीर (رضی اللہ عنہ) कहते हैं कि मैं शुक्रवार की नमाज के पश्चात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ तथा अपनी आपस की इस बातचीत के विषय में पूछा। जिस पर यह आयत उतरी। (सहीह मुस्लिम किताबुल इमारः बाब फ़जलिल जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह) जिसमें जैसाकि यह स्पष्ट कर दिया गया है कि अल्लाह पर ईमान, आख़िरत पर ईमान, तथा अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध सर्वश्रेष्ठ तथा विशेषता वाले कर्म हैं। वार्तालाप के माध्यम से वास्तविक विशेषता तथा श्रेष्ठता तो धर्मयुद्ध का वर्णन करना था, परन्तु अल्लाह पर ईमान के बिना किसी प्रकार के कर्म स्वीकार नहीं किये जाते, इसलिए सर्वप्रथम अल्लाह पर ईमान का वर्णन किया गया। अतः इससे यह ज्ञात हुआ कि इसके उतरने का कारण केवल मूर्तिपूजकों के कुकर्मों के कारण ही नहीं, अपितु इसके अतिरिक्त स्वयं मुसलमानों का अपनी-अपनी ओर से किसी कर्म को किसी कर्म पर अधिक श्रेष्ठता देने का कारण था, जबकि यह काम शरीअत वाले अर्थात ईशदूत का है न कि मुसलमानों का। मुसलमानों का कार्य तो प्रत्येक उस बात के अनुसार कर्म करना है जो अल्लाह तथा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से उन्हें बतायीं जायें।

[2]अर्थात ये लोग चाहे जैसे भी दावा करें वास्तव में अत्याचारी हैं अर्थात मूर्तिपूजक हैं, इसलिए कि शिर्क सब से बड़ा अत्याचार है। इस अत्याचार के कारण ही वे अल्लाह के

The Ummah Technology Mission

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾

(२०) जो लोग ईमान लाये, हिजरत की, अल्लाह के मार्ग में अपने माल तथा अपने प्राण से धर्मयुद्ध किया वह अल्लाह के समक्ष अत्यधिक सम्मानित हैं, तथा यही लोग सफलता प्राप्त करने वाले हैं।

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ﴿٢١﴾

(२१) उनका पोषक उन्हें अपनी कृपा एवं अनुग्रह तथा ऐसी स्वर्गों की शुभ सूचना देता है जिनमें उनके लिये स्थाई सुख है।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٢﴾

(२२) वहाँ ये नित्य रहेंगे, अल्लाह के पास नि:सन्देह बहुत बड़े बदले हैं।[1]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَآءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾

(२३) हे ईमानवालों ! अपने पिताओं और अपने भाईयों को मित्र न बनाओ, यदि वह कुफ़्र को इस्लाम से अधिक प्रिय समझें। तुममें से जो भी उनसे प्रेम रखेगा वह पूर्ण पापी अत्याचारी है।[2]

मार्गदर्शन से वंचित हैं इसलिए उनकी तथा मुसलमानों की जिनको अल्लाह का मार्गदर्शन प्राप्त है, आपस में कोई तुलना ही नहीं।

[1]इन आयतों में उन ईमानवालों की प्रधानता की चर्चा की गयी है जिन्होंने प्रवास किया तथा अपने तन-मन-धन से धर्मयुद्ध में भाग लिया। फ़रमाया कि अल्लाह के यहाँ उन्हीं का पद श्रेष्ठ है तथा यही सफल हैं, यह अल्लाह की कृपा तथा प्रसन्नता एवं स्थाई पुरस्कार के पात्र हैं, न कि वे जो स्वयं अपने मुहँ मियाँ मिट्ठू बनते हैं तथा अपने पूर्वजों के रीति रिवाजों को ही अल्लाह पर ईमान की तुलना में प्रिय रखते हैं।

[2]यह वही विषय है जिसकी पवित्र क़ुरआन में विभिन्न स्थानों में चर्चा की गई है। (देखिये सूर: आले इमरान आयत-२८ से ११८ तक, सूर: मायद: आायत ५१ तथा सूर: मुजादिल:-२२) यहाँ धर्मयुद्ध तथा देश त्याग के विषय में भी चूँकि इसकी विशेषता स्पष्ट है, इसलिए इसका वर्णन यहाँ भी किया गया है। अर्थात धर्मयुद्ध तथा हिजरत में तुम्हारे पिताओं तथा भाईयों का प्रेम आड़े न आये, क्योंकि यदि वे अब भी काफ़िर हैं,

The Ummah Technology Mission

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَ اَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَ اَمْوَالُ ِۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۲۴﴾

(२४) (आप) कह दीजिए कि यदि तुम्हारे पिता, तथा तुम्हारे पुत्र एवं तुम्हारे भाई तथा तुम्हारी पत्नियाँ तथा तुम्हारे वंश तथा अर्जित धन तथा वह व्यापार जिसकी कमी से तुम डरते हो तथा वे आवास जिन्हें तुम प्रिय रखते हो (यदि) यह तुम्हें अल्लाह एवं उसके रसूल तथा अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध से प्रियवर हैं, तो तुम प्रतिक्षा करो कि अल्लाह तआला अपनी यातना को ले आए। अल्लाह तआला भ्रष्टाचारियों को मार्ग नहीं दिखाता है।[1]

तो तेरे मित्र हो ही नहीं सकते, अपितु वे तो तुम्हारे शत्रु हैं। यदि तुम उनसे प्रेम पूर्ण सम्बन्ध रखोगे, तो याद रखो तुम भी अत्याचारी कहलाओगे।

[1]इस आयत में भी विगत विषय का बड़े प्रबल रूप से वर्णन किया गया है। عشيرة बहुवचन संज्ञा है वह निकटतम सम्बन्धी जिनके साथ मनुष्य दैनिक जीवन व्यतीत करता है अर्थात परिवार, वंश। اقتراف (इक़तेराफ़) कमाई के अर्थ के लिये आता है। تجارة (तिजारत), व्यापार के क्रय-विक्रय को कहते हैं जिसका उद्देश्य लाभ की प्राप्ति होती हो। كساد (कसाद) मन्दी को कहते हैं अर्थात बिक्री की वस्तु उपस्थित हो परन्तु ग्राहक न हों अथवा उस वस्तु का समय निकल गया हो। जिसके कारण लोगों को उसकी आवश्यकता न हो। दोनों परिस्थितियाँ मन्दी की हैं। مساكن (मसाकिन) मस्कन का बहुवचन है। इससे तात्पर्य वे घर हैं जिनमें निवास कर मनुष्य ऋतुओं की तीव्रता तथा घटना से बचने, सम्मान पूर्वक रहने-सहने तथा अपने परिवार की सुरक्षा के लिए निर्माण करता हैं, ये सभी वस्तुऐं अपने-अपने स्थान पर आवश्यक हैं, तथा इनकी उपयोगिता तथा विशेषता भी अति आवश्यक तथा मनुष्य को इन सभी वस्तुओं से हार्दिक प्रेम एक प्राकृतिक बात है। (जो निन्दनीय नहीं) परन्तु यदि यह प्रेम अल्लाह तथा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम से अधिक तथा अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध करने में रुकावट बन जाये, तो यह बात अल्लाह को अति अप्रिय है। तथा उसकी अप्रसन्नता का कारण बनती है तथा यह वह अवज्ञा अथवा अवहेलना है जिसके कारण मनुष्य अल्लाह के मार्गदर्शन से वंचित हो सकता है। जिस प्रकार कि अन्तिम शब्दों में चेतावनी से स्पष्ट होता है। हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी इस विषय को बड़े स्पष्ट शब्दों में वर्णन किया है। जैसे एक अवसर पर आदरणीय

The Ummah Technology Mission

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ۚ﴿۲۵﴾

(२५) निःसंदेह अल्लाह तआला ने तुम्हें बहुत से रण क्षेत्रों में विजय प्रदान की है। तथा हुनैन के युद्ध के दिन भी, जबकि तुम्हें अपनी अधिक संख्या पर गर्व था, परन्तु इसने तुम्हें कोई लाभ नहीं दिया, अपितु धरती अपने विस्तार के उपरान्त भी तुम्हारे लिए संकीर्ण हो गयी, फिर तुम पीठ फेर कर मुड़ गये।

ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۗ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۶﴾

(२६) फिर अल्लाह ने अपनी ओर से शान्ति अपने नबी पर तथा ईमानवालों पर उतारी तथा अपनी वह सेना भेजी, जिन्हें तुम देख नहीं रहे थे तथा काफ़िरों को पूरा दण्ड दिया। और इन काफ़िरों का यही बदला था।

उमर (رضي الله عنه) ने कहा, "हे रसूलु-ल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ! मुझे आप अपने अतिरिक्त, प्रत्येक वस्तु से अधिक प्रिय हैं।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "जब तक मैं उसकी अपनी जान से अधिक प्रिय न हो जाऊँ, उस समय तक वह ईमानवाला नहीं।" आदरणीय उमर (رضي الله عنه) ने कहा, "परन्तु अब अल्लाह की सौगन्ध आप मुझे अपनी जान से भी अधिक प्रिय हैं।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "हे उमर ! अब तुम मोमिन हो।" (सहीह बुख़ारी किताबुल ऐमान वन्नुजुर बाब कैफ़ कान यमिनुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) एक अन्य कथन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "सौगन्ध है उस शक्ति की जिसके हाथों में मेरा प्राण है, तुम में से कोई व्यक्ति उस समय तक मुसलमान नहीं, जब तक मैं उस को उसके पिता से, उसकी सन्तान से तथा सभी लोगों से अधिक प्रिय न हो जाऊँ।" (सहीह बुख़ारी किताबुल ईमान बाब हुब्बिर्रसूले सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिनल ईमान, तथा मुस्लिम किताबुल ईमान) तथा एक अन्य हदीस (ईशदूत के कथन) में धर्म युद्ध के महत्व की चर्चा करते हुये आप ने कहा कि जब तुम निश्चित समय के लिये वस्तु उधार देकर उसे कम मूल्य पर क्रय करना अपना व्यवहार बना लोगे तथा बैलों की पूँछ पकड़ कर खेती करने पर प्रसन्न एवं सन्तुष्ट हो जाओगे तथा धर्मयुद्ध छोड़ बैठोगे तो अल्लाह तुम पर ऐसा अपमान आच्छादित कर देगा जिससे तुम उस समय तक न निकल सकोगे जब तक अपने धर्म की ओर न लौटोगे। (अबू दाऊद, किताबुल बुयूअ बाबुन्नहय अनिल इनः मुसनद अहमद, भाग २, पृ॰ ४२)

The Ummah Technology Mission

ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ مِنۢ بَعۡدِ ذَٰلِكَ عَلَىٰ مَن يَشَآءُۚ وَٱللَّهُ غَفُورٞ رَّحِيمٞ ٢٧

(२७) फिर उसके पश्चात भी जिसे चाहे अल्लाह (तआला) क्षमा करे।[1] अल्लाह ही क्षमावान तथा कृपालु है।

---

[1]हुनैन मक्का तथा तायफ़ नगरों के बीच एक घाटी का नाम है यहाँ हवाज़िन तथा सक़ीफ़ के दो क़बीले रहते थे, जो अपनी धनुष विद्या में प्रसिद्ध थे। यह मुसलमानों के विरुद्ध लड़ने की तैयारी कर रहे थे कि इसकी सूचना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिली तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बारह हज़ार मुसलमानों की सेना लेकर इन क़बीलों से युद्ध करने के लिए हुनैन की घाटी में गये, यह मक्का विजय के १८ अथवा १९ दिन के पश्चात शव्वाल की घटना है। उपरोक्त वर्णित क़बीले ने पूर्ण तैयारी कर रखी थी तथा विभिन्न सुरक्षित स्थानों पर तीर चलाने वालों को निर्धारित कर दिया था। इधर मुसलमानों में भी यह भावना उत्पन्न हो चुकी थी कि आज कम से कम संख्या की कमी के कारण हम पराजित नहीं होंगे। अर्थात अल्लाह तआला की सहायता के बजाय अपनी अधिक संख्या पर भरोसा अधिक हो गया। अल्लाह तआला को यह गर्व तथा विचार प्रिय नहीं लगा। परिणाम स्वरूप जब हवाज़िन के धनुर्धारियों ने विभिन्न स्थानों से मुसलमानों की सेना पर अचानक तीर चलाना प्रारम्भ कर दिया। तो यह असंभावित तथा तीरों की बौछार से मुसलमानों के पैर उखड़ गये तथा वे भाग खड़े हुए। मैदान में केवल रसूलुल्लाह सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम तथा सौ के लगभग मुसलमान रह गये। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुसलमानों को पुकार रहे थे, "अल्लाह के भक्तो ! मेरे पास आओ, मैं अल्लाह का रसूल हूँ।" कभी यह वाक्य पढ़ते أنا النبي لاكذب أنا ابن عبدالمطلب फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय अब्बास (رضي الله عنه) (जिनकी आवाज़ अति तीव्र थी) को आदेश दिया कि मुसलमानों को एकत्रित करने के लिए आवाज़ दें। अतः उनकी आवाज़ सुन कर मुसलमान अति लज्जित हुए तथा पुनः मैदान में आ गये तथा पुनः इस प्रकार दृढ़ता से लड़े कि अल्लाह ने विजय प्रदान की, अल्लाह तआला की भी सहायता इस प्रकार प्राप्त हुई कि एक तो उनके हृदय को शान्ति प्रदान की, जिससे उनके दिलों से शत्रु का भय दूर हो गया। दूसरे फ़रिश्ते भी उतरे इस युद्ध में मुसलमानों ने छः हज़ार काफ़िरों को बन्दी बनाया जिन्हें बाद में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कहने पर छोड़ दिया गया तथा बहुत अधिक सामग्री युद्ध में प्राप्त हुई। युद्ध के पश्चात उनके बहुत से सरदार भी मुसलमान हो गये। यहाँ तीन आयतों में अल्लाह तआला ने इस घटना को संक्षिप्त रूप से वर्णन किया है।

The Ummah Technology Mission

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِنَّمَا ٱلْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا۟ ٱلْمَسْجِدَ ٱلْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هَٰذَا ۚ وَإِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيكُمُ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦٓ إِن شَآءَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٢٨﴾

(२८) हे ईमानवालो ! अवश्य मूर्तिपूजक अपवित्र हैं।[1] वह इस वर्ष के पश्चात मस्जिदे हराम के निकट भी न आने पायें।[2] यदि तुम्हें निर्धनता का भय है, तो अल्लाह तुम्हें अपनी कृपा से धनवान बना देगा यदि चाहे।[3] नि:सन्देह अल्लाह ज्ञानी तथा विवेकशील है ।

قَٰتِلُوا۟ ٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِٱللَّهِ وَلَا بِٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ

(२९) उन लोगों से लड़ो जो अल्लाह पर तथा प्रलय पर विश्वास नहीं रखते, जो अल्लाह

---

[1]मूर्तिपूजकों के अपवित्र तथा अशुद्ध होने का तात्पर्य आस्था, विश्वास तथा कर्मों की अपवित्रता है। कुछ के निकट मूर्तिपूजक बाह्य तथा आन्तरिक दोनो रूप में अपवित्र हैं क्योंकि वे शौच (सफ़ाई, स्वच्छता तथा पवित्रता) का इस प्रकार प्रबन्ध नहीं करते, जिसका आदेश धार्मिक नियमों ने दिया है।

[2]यह वही आदेश है जो ९ हिजरी में मुक्ति की घोषणा के समय किया गया था। जिसका विवरण पूर्व में गुज़र चुका है। यह निषेध कुछ के निकट केवल मस्जिदे हराम के लिए है। वरन् आवश्यकतानुसार मूर्तिपूजक अन्य मस्जिदों में प्रवेश कर सकते हैं। जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुमामा बिन उसाल को मस्जिदे नबवी के एक स्तम्भ से बाँध कर रखा था। यहाँ तक कि अल्लाह ने उनके दिल में इस्लाम तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रेम डाल दिया तथा वह मुसलमान हो गये। इसके अतिरिक्त अधिकतर आलिमों के निकट यहाँ मस्जिदे हराम से तात्पर्य सम्पूर्ण हरम है। अर्थात हरम की सीमा में मूर्तिपूजकों का प्रवेश वर्जित है। कुछ तत्वों के आधार पर आदेश से उन ग़ैर मुस्लिमों तथा सेवक को जो मुस्लिम राज्य में निवास करते है पृथक किया गया है। इसी प्रकार आदरणीय उमर बिन अब्दुल अजीज़ ने इससे अर्थ निकालते हुए अपने राज्यकाल में यहूदी तथा ईसाईयों को भी मस्जिद में प्रवेश से निषेधाज्ञा लागू किया था। (इब्ने कसीर)

[3]मूर्तिपूजकों को रोकने के उपरान्त कुछ मुसलमानों के दिलों में यह विचार आया कि हज के अवसर पर जो व्यापार के द्वारा लाभ होता था, वह अब न होगा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि, इस व्यापार में कमी से डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। अल्लाह तआला अपनी कृपा से निकट भविष्य में तुम्हें धनवान कर देगा। अत: विजय के कारण धन तथा सामग्री अधिक मात्रा में प्राप्त हुई। फिर धीरे-धीरे सारा अरब मुसलमान हो गया। इस प्रकार पुन: हज ऋतु में हाजियों की संख्या उसी प्रकार हो गयी, अपितु उससे कहीं अधिक हो गयी तथा नित्य यह संख्या बढ़ती ही जा रही है।

The Ummah Technology Mission

مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٢٩﴾

तथा उसके रसूल के द्वारा निषेधित वस्तु को वर्जित नहीं समझते, न सत्य धर्म को स्वीकार करते हैं उन लोगों में से जिन्हें किताब प्रदान की गयी है, यहाँ तक कि वह अपमानित होकर अपने हाथों से सुरक्षा कर अदा करें।[1]

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ۨ ابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٠﴾

(३०) यहूदी कहते हैं कि उज़ैर अल्लाह का पुत्र है और इसाई कहते हैं कि मसीह अल्लाह का पुत्र है। यह कथन केवल उनके मुख की बात है। पूर्व के विश्वासहीनों के कथन का यह भी समानता करने लगे हैं। अल्लाह इनका नाश करे यह कहाँ फिरे जा रहे हैं ?

اِتَّخَذُوْۤا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

(३१) उन लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर अपने विद्वानों तथा धर्माचारियों को रब्ब (पोषक) बनाया है,[2] तथा मरियम के पुत्र मसीह को।

---

[1]मिश्रणवादियों से लड़ने के आदेश के पश्चात यहूदियों तथा ईसाईयों से लड़ने का आदेश दिया जा रहा है। यदि वे इस्लाम धर्म स्वीकार करें अथवा सुरक्षा कर दे कर मुसलमानों की शरण में रहना स्वीकार कर लें। सुरक्षा कर को "जिज़यः" कहते हैं। यह उनके लिए है जो गैर मुस्लिम हैं, परन्तु इस्लामी राज्य में रह रहे हों। यह एक वार्षिक निर्धारित कर है। इस कर के अदा करने के पश्चात उनके धन, मान-सम्मान, जीवन की सुरक्षा का दायित्व मुस्लिम राज्य पर आ जाता है यहूदी तथा ईसाई इसके अतिरिक्त की वे अल्लाह तथा आख़िरत के दिन पर ईमान रखते थे, उनके विषय में कहा गया है कि वे अल्लाह तथा अन्त दिवस पर ईमान नहीं रखते थे इससे यह विदित होता है कि जब तक मनुष्य उस प्रकार का ईमान न रखे जिस प्रकार अल्लाह ने अपने पैग़म्बरों (दूतों) के द्वारा बतलाया है, उस समय तक उसका अल्लाह पर ईमान विश्वासनीय न होगा। तथा यह भी स्पष्ट है कि उन के अल्लाह पर ईमान को विश्वास के अयोग्य इसलिए कहा गया कि यहूदी तथा ईसाईयों ने आदरणीय उज़ैर तथा आदरणीय मसीह को अल्लाह का पुत्र तथा पूज्य का विश्वास गढ़ लिया था, जैसा कि अगली आयत में उनके इस विश्वास को स्पष्ट किया गया है।

[2]इसकी व्याख्या आदरणीय अदी पुत्र हातिम के द्वारा वर्णित हदीस से स्पष्ट है, वह कहते हैं कि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह आयत सुनकर पूछा कि

The Ummah Technology Mission

وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَا أُمِرُوا
إِلَّا لِيَعْبُدُوا إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ لَا إِلَٰهَ
إِلَّا هُوَ ۚ سُبْحَانَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣١﴾

यद्यपि कि उन्हें एक अकेले अल्लाह ही की उपासना का आदेश दिया गया था। जिसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, वह उनके मिश्रण करने से पवित्र है।

يُرِيدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ
بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَنْ يُتِمَّ
نُورَهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿٣٢﴾

(३२) वह अल्लाह की ज्योति को अपने मुखों से बुझा देना चाहते हैं। तथा अल्लाह इंकार करता है किन्तु यह कि अपनी ज्योति को पूर्ण करे यद्यपि अधर्मी लोग अप्रसन्न हों।[1]

यहूदियों तथा ईसाईयों ने अपने विद्वानों की कभी पूजा नहीं की, फिर यह क्यों कहा गया कि, उन्होंने उनको स्वामी बना लिया ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "यह ठीक है कि, उन्होंने उनकी पूजा कभी नहीं की, परन्तु यह बात सत्य है कि उनके विद्वानों ने जिस वस्तु को उचित कहा उसको उचित तथा जिसको अनुचित कहा उसको अनुचित समझा। यही उनकी पूजा है।" (सहीह त्रिमिज़ी लिल अलबानी संख्या २४७१) क्योंकि वर्जित तथा मान्य करने का अधिकार केवल अल्लाह को है। यही अधिकार यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य के अन्दर स्वीकार करता है, तो वह व्यक्ति उसकी पूजा करता है। इस आयत में उन लोगों को बड़ी चेतावनी है, जो अपने नेताओं तथा विचारकों के वैध तथा अवैध को मान्यता देते हैं। उनके कथन के समक्ष क़ुरआन की आयतों तथा हदीसों को भी स्वीकार करने को तैयार नहीं होते।

[1]अर्थात अल्लाह ने ईशदूत (आप पर परमेश्वर का दया एवं शान्ति हो) को जो प्रकाश तथा सत्य धर्म दे कर भेजा है। यहूदी तथा इसाई एवं मूर्तिपूजक चाहते हैं कि उसे विवाद तथा लांछन से मिटा दें, तो उनकी तुलना उस जैसी है जो अपनी फूंक से सूर्य की किरण तथा चन्द्रमा के प्रकाश को बुझाने का प्रयत्न करे। तो जिस प्रकार यह असम्भव है, उसी प्रकार जो सत्य धर्म अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देकर भेजा है, उसको मिटाना भी असम्भव है। वह सभी धर्मों पर विजयी होकर रहेगा। जैसाकि अगली आयत में अल्लाह ने फ़रमाया। काफ़िर का शाब्दिक अर्थ है छिपाने वाला। इसी कारण रात्रि को भी काफ़िर कहते हैं क्योंकि वह सभी वस्तुओं को अपने अंधकार में छिपा लेती है। कृषक को भी काफ़िर कहते हैं क्योंकि वह अनाज के दाने को धरती में छिपा देता है। अत: काफ़िर भी अल्लाह के प्रकाश को छिपाना चाहते हैं अथवा अपने दिलों में कुफ़्र तथा षड़यन्त्र तथा मुसलमानों एवं इस्लाम के विरुद्ध द्वेष तथा ईर्ष्या को छिपाये हुए हैं। इसलिए उन्हें काफ़िर कहा जाता है।

The Ummah Technology Mission

هُوَ الَّذِيٓ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَهٗ بِالۡهُدٰى وَدِيۡنِ الۡحَقِّ لِيُظۡهِرَهٗ عَلَى الدِّيۡنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوۡ كَرِهَ الۡمُشۡرِكُوۡنَ ﴿۳۳﴾

(३३) उसी ने अपने दूत (नराशंस) को सत्य मार्ग तथा सत्य धर्म के साथ भेजा कि उसे अन्य सभी धर्मों पर प्रभावी कर दे।[1] यद्यपि मिश्रणवादी बुरा मानें।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِنَّ كَثِيۡرًا مِّنَ الۡاَحۡبَارِ وَالرُّهۡبَانِ لَيَاۡكُلُوۡنَ اَمۡوَالَ النَّاسِ بِالۡبَاطِلِ وَيَصُدُّوۡنَ عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيۡنَ يَكۡنِزُوۡنَ الذَّهَبَ وَالۡفِضَّةَ وَلَا يُنۡفِقُوۡنَهَا فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرۡهُمۡ بِعَذَابٍ اَلِيۡمٍ ﴿۳۴﴾

(३४) हे ईमानवालो! अधिकतर पन्डित एवं पुजारी लोगों का धन अनृत से खा जाते हैं तथा अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं।[2] एवं जो लोग सोने चाँदी का कोष रखते हैं तथा अल्लाह के मार्ग में व्यय नहीं करते उन्हें दुखद यातना का समाचार सुना दो।[3]

---

[1]तर्क तथा युक्ति के आधार पर यह प्रभुत्व हर समय प्राप्त है। परन्तु जब मुसलमानों ने धर्म के आदेशानुसार कर्म किया तो उन्हें सांसारिक प्रभुत्व प्राप्त हुआ। तथा अब भी मुसलमान अपने धर्म के अनुसार कार्य करने लगें तो उनका प्रभाव अवश्य सम्भावी है। इसलिए कि अल्लाह का वायदा है कि अल्लाह के मानने वाले ही प्रभावशाली तथा विजयी होंगे। शर्त यह है कि मुसलमान अल्लाह वाले बन जायें।

[2]أحبار (अहबार) حبر (हिबर) का बहुवचन है। यह ऐसे व्यक्ति को कहते हैं, जो बात को बड़ी सुन्दरतापूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने की विधि जानता हो। सुन्दर तथा आकर्षित वस्त्र को ثوب محبّر कहते हैं। तात्पर्य यहूदियों के विद्वना हैं رهبان (रूहबान) راهب (राहिब) का बहुवचन है, जिसकी उत्पत्ति رهبة (रुहब:) से है इससे तात्पर्य इसाईयों के पन्डित हैं। कुछ के निकट इसाईयों के महात्मा हैं, विद्वानों के लिए इनके यहाँ قسّيسين (क़िस्सीसीन) का शब्द है। ये दोनों ही अल्लाह के कथनों में परिवर्तन करके लोगों की इच्छाओं के अनुसार नियम बनाते हैं इस प्रकार लोगों कोअल्लाह के मार्ग से रोकते हैं। दूसरे इस प्रकार लोगों से माल ऐंठते हैं, जो उनके लिए अनुचित तथा अवैध था। दुर्भाग्य से मुसलमानों के विद्वानों में भी कुछ की यही दशा है। तथा इस प्रकार नबी सल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी सत्य होती है जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था «لَتَتْبَعُنَّ سُنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ». (सहीह बुख़ारी किताबुल ऐतेसाम में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह फ़रमान अध्याय का शीर्षक है) "तुम पूर्व के समुदायों के रीति-रिवाज के अनुयायी अवश्य बनोगे।"

[3]आदरणीय अब्दुल्लाह बिन उमर फ़रमाते हैं कि यह ज़कात के आदेश से पूर्व का आदेश है। ज़कात के आदेश के पश्चात ज़कात द्वारा लोगों के माल की शुद्धता का साधन बताया है। इसलिए विद्वानों का कहना है कि जिस धन से ज़कात अदा कर दी

The Ummah Technology Mission

يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَ جُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿۳۵﴾

(३५) जिस दिन उस कोष को नरक की अग्नि में तपाया जायेगा फिर उससे उनके माथे तथा पार्श्व तथा पीठें दागी जायेंगी (उनसे कहा जायेगा) यह है जिसे तुमने अपने लिए कोष बना कर रखा था, तो अपने कोषों का स्वाद चखो।

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ مِنْهَآ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ۬

(३६) महीनों की गणना अल्लाह के निकट अल्लाह के ग्रन्थ में बारह की है, उसी दिन से जब से आकाशों तथा धरती को उसने पैदा किया है। उनमें से चार सम्मान तथा आदर के हैं।[1] यही शुद्ध धर्म है।[2] तुम इन महीनों

जाये वह कोष नहीं है तथा जिससे ज़कात न दी जाय वह कोष है, जिस पर क़ुरआन की यह चेतावनी आयी है। अत: सहीह हदीस में है कि जो व्यक्ति अपने माल की ज़कात नहीं निकालता प्रलय के दिन उसके धन की अग्नि पट्टिकायें बनायी जायेंगी, जिससे उसके दोनों बाज़ूओं को, माथा को तथा कमर को जलाया जायेगा। यह दिन पचास हज़ार वर्ष का होगा तथा लोगों का निर्णय होने तक उसका यही हाल रहेगा, उसके पश्चात उसे स्वर्ग अथवा नरक में ले जाया जायेगा। (सहीह मुस्लिम किताबुज़्ज़कात) यह बिगड़े विद्वान तथा सूफ़ियों के पश्चात बिगड़े हुए धनवान हैं, तीनों पक्ष जनता में बिगाड़ के सबसे अधिक जिम्मेदार हैं। اللهم احفظنا منهم

[1] فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ से तात्पर्य 'लौहे महफ़ूज़' (सुरक्षित पुस्तक) है अर्थात अल्लाह तआला के अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर लिखी है। अर्थात उत्पत्ति के आरम्भ से ही अल्लाह तआला ने बारह महीने निर्धारित कर दिये हैं, जिनमें से चार निषेधित हैं, जिनमें विशेष रूप से युद्ध तथा लड़ाई निषेध है। इसी बात को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस प्रकार वर्णन किया है कि, युग घूम घाम कर फिर उसी अवस्था में लौट आया है, जिस अवस्था में उस समय था, जब अल्लाह ने आकाशों तथा धरती की सृष्टि की थी। वर्ष बारह महीनों का है, जिनमें से चार सम्मानित हैं, तीन निरन्तर ज़िलक़ाअदः, ज़िलहिज्जा, मुहर्रम तथा चौथा रजब जो जमादिल आख़िर तथा शाबान के मध्यमें है। (सहीह बुख़ारी संख्या ४४०६ तथा सहीह मुस्लिम संख्या १३०५) युग उसी अवस्था में आ गया का तात्पर्य यह है कि अरब के मूर्तिपूजक महीनों आगे पीछे उसी प्रकार से करते थे जिस प्रकार आजकल हिन्दू धर्म में पंडित करते हैं, जिसका विस्तृत वर्णन आगे आयेगा यह उसका अन्त है।

[2] अर्थात उन महीनों का उसी क्रम में होना, जो अल्लाह ने रखा है तथा जिनमें चार सम्मानित हैं। तथा यही गणित सही और संख्या पूर्ण है।

The Ummah Technology Mission

فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝٣٦

में अपने प्राणों पर अत्याचार न करो।[1] तथा तुम सभी मूर्तिपूजकों से धर्मयुद्ध करो, जैसेकि वे तुम सभी से लड़ते हैं।[2] तथा जान रखो कि अल्लाह तआला परहेज़गारों के साथ है।

اِنَّمَا النَّسِيْٓءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّيُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ زُيِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ اَعْمَالِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ

(३७) महीनों का आगे पीछे कर देना कुफ़्र का परिवर्धन है।[3] उससे वह विपथ किये जाते हैं जो विश्वासहीन हैं। एक वर्ष को अवर्जित कर लेते हैं तथा एक वर्ष को आदरणीय बना लेते हैं कि अल्लाह ने जो निषेध रखा है उसकी गणना में तो समानता कर लें।[4] फिर जिसे निषेध किया है उसे

---

[1]अर्थात इन महीनों में रक्तपात करके उनका निरादर तथा अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करके।

[2]परन्तु सम्मानित महीनों के व्यतीत होने के पश्चात। किन्तु यदि वह लड़ने पर बाध्य कर दें तो फिर सम्मानित महीनों में तुम्हारे लिए लड़ना भी उचित होगा।

[3]نَسِيْ (नसीउन) के अर्थ 'पीछे करने के' हैं। अरबों में भी सम्मानित महीनों में लूटमार, रक्तपात तथा युद्ध को अप्रिय समझा जाता था। परन्तु निरन्तर तीन महीनों का आदर करना रक्तपात से रुके रहना, उनके लिए कठिन था। इसलिए उसका समाधान उन्होंने यह निकाल रखा था कि जिस सम्मानित महीने में वे रक्तपात करना चाहते, वह कर लेते तथा यह घोषणा कर देते कि इस सम्मानित महीने के बदले अमुक महीना सम्मानित होगा। जैसे मोहर्रम के महीने का आदर समाप्त करके सफर के महीने को सम्मानित घोषित कर देते। इस प्रकार आदर वाले महीनों में परिवर्तन तथा हेर फेर का परिवर्धन लिया करते थे। इसको 'नसी' कहा जाता था। अल्लाह तआला ने उसके विषय में फ़रमाया कि यह अधर्म का परिवर्धन है क्योंकि इस अदल-बदल से उद्देश्य लड़ाई-झगड़ा, रक्तपात तथा सांसारिक लाभ के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। तथा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी उसके समापन की घोषणा इस प्रकार की कि युग घूम-घूमा के अपनी वास्तविक अवस्था में आ गया। अर्थात अब भविष्य में इसका क्रम इसी प्रकार रहेगा, जिस प्रकार उत्पत्ति के प्रारम्भ से चला आ रहा है।

[4]अर्थात एक महीने का आदर समाप्त करके उसके स्थान पर दूसरे महीने को आदरणीय घोषित कर देने से उनका उद्देश्य यह होता था कि अल्लाह तआला ने जो चार आदर

The Ummah Technology Mission

لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٧﴾

वैधानिक बना लें, उनके कुकर्म उन्हें सत्कर्म दिखा दिये गये हैं तथा अल्लाह काफ़िरों को मार्गदर्शन नहीं देता है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ ؕ اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿٣٨﴾

(३८) हे ईमानवालो ! तुम्हें क्या हो गया है ? कि जब तुम से कहा जाता है कि चलो अल्लाह के मार्ग में प्रस्थान करो तो तुम धरती पकड़ लेते हो क्या तुम परलोक के बदले दुनिया के जीवन पर ही रीझ गये हो। सुनो ! दुनिया का जीवन परलोक की तुलना में अति तुच्छ है।

اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٩﴾

(३९) यदि तुमने प्रस्थान न किया, तो अल्लाह (तआला) तुम्हें दुखदायी दण्ड देगा तथा तुम्हारे अतिरिक्त अन्य लोगों को बदल लायेगा, तुम अल्लाह (तआला) को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते ।[1] तथा अल्लाह तआला सर्वशक्तिमान है।

वाले महीने रखे हैं, उनकी गणना पूरी कर दी जाये, अर्थात गणना पूरी करने में अल्लाह तआला का पक्ष करते थे, परन्तु अल्लाह तआला ने रक्तपात, युद्ध तथा लड़ाई-झगड़े से जो मना किया था, उसकी उन्हें कोई चिन्ता नहीं थी, बल्कि उन्हीं अत्याचारी प्रवृत्तियों के कारण ही उनके क्रम में फेर बदल करते थे।

[1]रोम के ईसाई राजा हरकूलिस के विषय में यह सूचना मिली कि वह मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध की तैयारी कर रहा है । अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी इसके लिए तैयारी का आदेश दे दिया। यह शव्वाल ९ हिजरी की घटना है। ग्रीष्म ऋतु थी तथा लम्बी यात्रा थी। कुछ मुसलमानों तथा अवसरवादियों को यह आदेश भारी लगा जिसका वर्णन इस आयत में किया गया है। तथा उन्हें सचेत तथा सावधान किया गया है । यह तबूक का युद्ध कहलाता है, जो वास्तव में नहीं हुआ। २० दिन मुसलमान सीरिया के निकट तबूक के स्थान पर प्रतीक्षा करके वापस आ गये। इसको कठिनाईयों का युद्ध कहा जाता है। क्योंकि इस लम्बी यात्रा में इस सेना को अधिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा था। اثَّاقَلْتُم अर्थात आलस्य करने तथा पीछे रहना चाहते हो। इसका प्रदर्शन कुछ लोगों की ओर से हुआ, परन्तु इसको सम्बोधित सभी से कर दिया गया। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

إِلَّا تَنصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ
إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ
اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ
لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا ۚ
فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ
وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا
وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا
السُّفْلَىٰ ۗ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ۗ
وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٠﴾

(४०) यदि तुम उसकी (ईशदूत मुहम्मद) सहायता न करो तो अल्लाह ही ने उसकी सहायता की उस समय जब अधर्मियों ने उसे (देश से) निकाल दिया था। दो में से दूसरा जबकि वह दोनों गुफ़ा में थे जब यह अपने साथी से कह रहे थे कि चिन्ता न करो अल्लाह हमारे साथ है।[1] तब अल्लाह ही ने अपनी ओर से शान्ति उतार कर उन सेनाओं से उसकी सहायता की जिन्हें तुम ने देखा भी नहीं।[2] उसने काफ़िरों की बात नीची कर दी तथा उच्च एवं श्रेष्ठ तो अल्लाह का ही कथन है।[3] अल्लाह (तआला) प्रभावशाली तथा विवेकी है।

---

[1]धर्मयुद्ध से पीछे रहने वालों अथवा उससे प्राण छुड़ाने वालों से कहा जा रहा है कि यदि तुम सहायता नही करते हो, तो अल्लाह को तुम्हारे सहायता की आवश्यकता भी नहीं है। अल्लाह तआला ने अपने संदेशवाहक की उस समय भी सहायता की, जब उसने गुफ़ा में शरण ली थी तथा अपने साथी (आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक) से कहा था, "चिन्ता न करो अल्लाह हमारे साथ है।" इस की विस्तृत हदीस आती है। आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं, जब हम लोग गुफ़ा में थे, तो मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से कहा "यदि इन मूर्तिपूजकों ने (जो हमारी खोज में हैं) अपने पैरों की ओर देखा, तो हमें देख लेंगे।" परम आदरणीय नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया,

« يَا أَبَا بَكْرٍ! مَا ظَنُّكَ بِاثْنَيْنِ اللهُ ثَالِثُهُمَا »

"हे अबू बक्र ! तुम्हारा उन दो के विषय में क्या विचार है जिसका तीसरा अल्लाह है।" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः तौबः)

[2]य सहायता की वे दो परिस्थितियाँ वर्णन की हैं जिन से अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सहायता की गयी। एक हृदय की शान्ति तथा दूसरी फ़रिश्तों का समर्थन।

[3]काफ़िरों के कथन से शिर्क तथा अल्लाह के कथन से तौहीद (एकेश्वरवाद) का तात्पर्य है। जिस प्रकार एक हदीस में वर्णन किया गया है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

The Ummah Technology Mission

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۴۱﴾

(४१) निकल खड़े हो जाओ हल्के-फुल्के हो तो भी तथा भारी-भरकम हो तो भी,[1] तथा अल्लाह के मार्ग में अपने तन-मन-धन से धर्मयुद्ध करो, यही तुम्हारे लिए अच्छा है, यदि तुम में ज्ञान हो।

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ؕ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ

(४२) यदि शीघ्र प्राप्त होने वाली धन-सामग्री होती[2] तथा हल्की-सी यात्रा होती तो ये अवश्य आप के पीछे हो लेते।[3] परन्तु उन पर तो दूरी तथा दूरी के कष्ट पड़ गये। तथा अब तो ये अल्लाह की सौगन्ध खायेंगे कि यदि हम में शक्ति तथा सामर्थ्य होता तो

वसल्लम से पूछा गया। "एक व्यक्ति वीरता के प्रदर्शन के लिए लड़ता है, एक अपने जाति के सम्मान तथा आदर के लिए लड़ता है, तथा एक अन्य देखावे अथवा छल-कपट के लिए लड़ता है। इनमें से अल्लाह के मार्ग में लड़ने वाला कौन है ?" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "जो इसलिए लड़ता है कि अल्लाह का कथन सर्वोच्च हो जाये, वह अल्लाह के मार्ग में लड़ता है।" (सहीह बुखारी किताबुल इल्म व मुस्लिम किताबुल इमार :)

[1]इसके विभिन्न भावार्थ वर्णन किये जाते हैं। व्यक्तिगत रूप से अथवा सामूहिक रूप से, प्रसन्नता से अथवा अप्रसन्नता से, निर्धन हो अथवा धनवान हो, युवक हो अथवा वृद्ध हो, पैदल हो अथवा सवार हो, विवाहित हो अथवा अविवाहित हो, वह प्रस्थान करने वालों में से हो अथवा रह जाने वालों में। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि आयत का प्रभाव सभी क्षेत्र पर हो सकता है क्योंकि आयत का अर्थ यह है कि तुम प्रस्थान करो, चाहे आवागमन तुम्हारे लिए बोझ हो अथवा हल्का। तथा इस भावार्थ में वर्णित सभी भावार्थ आ जाते हैं।

[2]यहाँ से उन लोगों का वर्णन हो रहा है जिन्होंने कारण बता कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आज्ञा ले ली थी। जब कि वास्तव में उनके पास कोई कारण नहीं था। عَرَض से तात्पर्य जो सांसारिक लाभ सामने आयें, अर्थ है युद्ध में प्राप्त धन सामग्री।

[3]अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ धर्मयुद्ध में सम्मिलित होते, परन्तु लम्बी यात्रा ने उन्हें बहाने बनाने पर विवश कर दिया।

The Ummah Technology Mission

اَنْفُسَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۴۲﴾

हम अवश्य आप के साथ निकलते, यह अपने प्राणों को स्वयं ही विनाश की ओर डाल रहे हैं ।[1] इनके झूठे होने का सत्य ज्ञान अल्लाह को है ।

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۴۳﴾

(४३) अल्लाह तुझे क्षमा कर दे, तूने उन्हें क्यों आज्ञा दे दी, बिना इसके कि तेरे समक्ष सत्यवादी लोग स्पष्ट रूप से प्रकट हो जायें तथा तू झूठे लोगों को भी जान ले ।[2]

لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۴﴾

(४४) अल्लाह पर तथा क़ियामत (प्रलय) के दिन पर ईमान तथा विश्वास रखने वाले तो माल से तथा जान से धर्मयुद्ध करने से रूके रहने की कभी भी तुझ से अनुमति नहीं माँगेंगे[3] और अल्लाह तआला सदाचारियों को भली-भाँति जानता है ।

---

[1]अर्थात झूठी सौगन्ध खाकर । क्योंकि झूठी सौगन्ध खाना महापाप है ।

[2]यह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा जा रहा है कि धर्मयुद्ध में सम्मिलित न होने के लिए आज्ञा मांगने वालों को तूने क्यों बिना मालूम किये कि इसके पास ठोस कारण भी हैं या नहीं ? आज्ञा दे दी । परन्तु इस चेतावनी में भी प्रेम के पक्ष का वर्चस्व है, इसलिए कि इस भूल पर क्षमा का स्पष्टीकरण पहले कर दिया गया । याद रहे कि यह चेतावनी इसलिए कि आज्ञा देने में शीघ्रता की गयी तथा पूर्ण रूप से मालूम करने की आवश्यकता नही समझी गयी । वरन् खोज करने के पश्चात आवश्यक लोगों को आज्ञा प्रदान करने की आप को आज्ञा थी जैसा कि फ़रमाया गया ।

﴿فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَن لِّمَن شِئْتَ مِنْهُمْ﴾

"जब यह लोग तुझ से अपने कुछ कर्मों के कारण आज्ञा माँगें, तो जिसको तू चाहे आज्ञा प्रदान कर दे ।"(सूरः अल-नूर-६२)

"जिसको चाहे" का अर्थ यह है कि जिसके पास उचित कारण हो, उसे आज्ञा प्रदान करने का अधिकार तुझे प्राप्त है ।

[3]यह मात्र शुद्ध ईमानदारों के व्यवहार का वर्णन है, बल्कि उनका तो आचरण एवं व्यवहार ही ऐसा है कि वह धर्मयुद्ध में आगे बढ़-चढ़कर अधिक प्रसन्नता के साथ भाग लेते हैं ।

The Ummah Technology Mission

إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَهُمْ فِي رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُونَ ﴿٤٥﴾

(४५) यह आज्ञा तो तुझ से वही माँगते हैं, जिन्हें न अल्लाह पर ईमान है, न आख़िरत के दिन पर विश्वास है, जिनके दिल सन्देह में पड़े हुए है तथा यह अपने सन्देह ही में उद्विग्न हैं।[1]

وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً وَلَٰكِن كَرِهَ اللَّهُ انبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ الْقَاعِدِينَ ﴿٤٦﴾

(४६) यदि उनका विचार [धर्मयुद्ध (जिहाद) पर] निकलने का होता, तो वह इस (यात्रा) के लिए संसाधन की तैयारी रखते।[2] परन्तु अल्लाह को उनका उठना प्रिय नहीं था,

---

[1]यह उन मुनफ़िक़ों (अवसरवादियों) का वर्णन है, जिन्होंने झूठे बहाने बना कर रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से धर्मयुद्ध में भाग न लेने की आज्ञा प्राप्त कर ली थी। उनके विषय में कहा गया है कि ये अल्लाह पर तथा आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते। इसका अर्थ यह है कि इस ईमान के अभाव ने उनको धर्मयुद्ध में भाग न लेने पर विवश किया है। यदि ईमान इनके दिलों में सुदृढ़ होता तो न तो यह धर्मयुद्ध से भागते तथा न इनको शंका तथा संदेह ने घेरा होता।

टिप्पणीः- ध्यान रहे कि इस धर्मयुद्ध में भाग लेने के विषय में मुसलमानों की चार श्रेणियाँ थीं :

प्रथम वह मुसलमान जो बिना किसी सोच-विचार के तैयार हो गये, द्वितीय वे जिन्हें प्रारम्भ में कुछ उनके हृदय में विचलन उत्पन्न हुआ, परन्तु फिर उस विचलन से निकल आये, तृतीय वे जो कुछ वृद्धावस्था, रोग अथवा सवारी एवं यात्रा का खर्च उठाने में वास्तव मे योग्य नहीं थे। तथा जिन्हें स्वयं अल्लाह तआला ने भाग न लेने की आज्ञा प्रदान कर दी थी (उनका वर्णन आयत संख्या ९१ तथा ९२ में है) तथा चतुर्थ श्रेणी में वे जो मात्र आलस्य के कारण भाग न ले सके। तथा जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वापस आये तो उन्होंने अपना पाप स्वीकार करके अपने आपको तौबा तथा दण्ड के लिए प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त शेष सभी मुनाफ़िक़ (भ्रष्टाचारी) तथा उनके गुप्तचर थे। यहाँ मुसलमानों के प्रथम गिरोह तथा भ्रष्टाचारी (मुनाफ़िक़ों) का वर्णन है मुसलमानों की शेष तीन श्रेणियों का वर्णन आगे आयेगा।

[2]यह उन्हीं मुनाफ़िक़ों (द्वयवादियों) के विषय में कहा जा रहा है जिन्होंने झूठ बोल कर आज्ञा प्राप्त कर ली थी कि यदि वे धर्मयुद्ध में जाने का विचार रखते तो अवश्य जाने का प्रबन्ध करते।

The Ummah Technology Mission

इसलिए उन्हें कुछ करने से रोक दिया।[1] तथा कह दिया गया कि तुम बैठने वालों के साथ बैठे ही रहो।[2]

لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَاۡ اَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۷﴾

(४७) यदि यह तुम में मिल कर निकलते भी तो तुम्हारे लिए उपद्रव के अतिरिक्त अन्य कोई चीज़ न बढ़ाते।[3] बल्कि तुम्हारे मध्य खूब घोड़े दौड़ाते तथा तुम में मतभेद डालने की खोज में रहते।[4] उनके मानने वाले स्वयं तुम में उपस्थित हैं।[5] तथा अल्लाह तआला अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है।

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ

(४८) ये तो इससे पूर्व भी मतभेद उत्पन्न करने की खोज में रहे हैं तथा तेरे लिए कार्यों

---

[1] فَثَبَّطَهُمْ के अर्थ हैं उनको रोक दिया अर्थात पीछे रहना उनके लिए प्रिय बना दिया गया, अतः वह सुस्त हो गये तथा मुसलमानों के साथ नहीं निकले। (ऐसरूत्तफ़ासीर) अर्थ यह है कि अल्लाह के ज्ञान में उनके कुविचार तथा षड़यन्त्र थे, इसलिए अल्लाह के भाग्य का लिखा हुआ यही था कि वह न जायें।

[2] यह या तो अल्लाह की उसी इच्छा के अनुरूप है जो भाग्य में लिखा हुआ था। अथवा अप्रसन्नता तथा क्रोध के कारण रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से कहा गया है कि अच्छा ठीक है तुम स्त्रियों, बच्चों, रोगियों, तथा वृद्धों की श्रेणी में सम्मिलित होकर उनके समान घरों में बैठे रहो।

[3] यह मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) यदि इस्लामी सेना में सम्मिलित होते तो अपने त्रुटिपूर्ण विचार तथा परामर्श से मुसलमानों में उपद्रव ही का कारण बनते।

[4] إِيضَاع का अर्थ होता है, अपनी सवारी तेज़ी से दौड़ाना। अर्थ यह है कि अपवाद आदि के द्वारा तुम्हारे अन्दर उपद्रव उत्पन्न करने में कोई कमी न रखते तथा उपद्रव का अर्थ एकता में फूट डालना तथा उनके मध्य द्वेष तथा घृणा उत्पन्न कर देना है।

[5] इससे ज्ञात होता है कि मुनाफ़िक़ों (अवसरवादियों) के लिए गुप्तचर का कार्य करने वाले कुछ लोग मुसलमानों के साथ सेना में उपस्थित थे, जो मुनाफ़िक़ों (अवसरवादियों) को मुसलमानों की सूचनायें पहुँचाया करते थे।

The Ummah Technology Mission

وَقَلَّبُوا لَكَ الْأُمُورَ حَتَّىٰ جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَارِهُونَ ﴿٤٨﴾

को उलट-पुलट करते रहे हैं, यहाँ तक कि सत्य आ पहुँचा तथा अल्लाह का आदेश प्रभावी हो गया।[1] इसके उपरान्त कि वे अप्रसन्नता में ही रहे।[2]

وَمِنْهُم مَّن يَقُولُ ائْذَن لِّي وَلَا تَفْتِنِّي ۚ أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا ۗ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿٤٩﴾

(४९) उन में से कोई तो कहता है कि मुझे आज्ञा दे दीजिए मुझे विपदा में न डालिए, सचेत रहो कि वह तो भेद में पड़ चुके हैं तथा निःसंदेह नरक काफ़िरों को घेर लेने वाली है।[3]

---

[1]इसीलिए उसने भूत तथा भविष्य की बातें तुम्हें सूचित कर दीं तथा यह भी बतला दिया कि जो मुनाफ़िक़ (भ्रष्टाचारी लोग) साथ नहीं गये, तो तुम्हारे पक्ष में अच्छा ही हुआ, यदि वे जाते तो ये-ये ख़राबियाँ उत्पन्न होतीं।

[2]अर्थात ये मुनाफ़िक़ (भ्रष्टाचारी) तो जब से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना नगर में आये हैं, तभी से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरुद्ध षड़यन्त्र करने तथा सम्बन्धों को बिगाड़ने में तत्पर रहे हैं यहाँ तक कि बद्र में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को विजय प्रदान की, जो इनके लिए अत्यधिक अप्रिय थी, इसी प्रकार ओहद के युद्ध के अवसर पर भी इन मुनाफ़िक़ों (अवसरवादियों) ने मार्ग से ही वापस होकर कठिनाई उत्पन्न करने की तथा उसके पश्चात सभी अवसरों पर बिगाड़ का प्रयत्न करते रहे। यहाँ तक कि मक्का विजय हो गया तथा अधिकतर अरब मुसलमान हो गये, जिस पर वे दुख से अपने हाथ मल रहे हैं।

[3]"मुझे फितने (भेद) में न डालिए।" इसका एक अर्थ तो यह होगा यदि आप मुझे आज्ञा नहीं देंगे तो मुझे बिना आज्ञा रुकने पर अत्यधिक पाप होगा, इस आधार पर भेद 'पाप' के अर्थ में होगा। अर्थात मुझे पाप में न डालिए। दूसरा अर्थ भेद का विनाश है अर्थात मुझे साथ ले जाकर विनाश में न डालिए। कहा जाता है कि जद बिन क़ैस ने निवेदन किया कि मुझे साथ न ले जायें। रोम की स्त्रियों को देख कर मैं धैर्य न रख सकूंगा। इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुख फेर लिया और आज्ञा दे दी। उसके पश्चात आयत उतरी अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "भेद में तो वह गिर चुके हैं।" अर्थात धर्मयुद्ध में पीछे रहना तथा उससे प्राण चुराना, स्वयं एक भेद तथा महापाप है। जिसमें ये सम्मिलित हैं तथा मरने के पश्चात नरक की अग्नि उनको घेर लेने वाली है, जिससे भागने का कोई मार्ग उनके लिए न होगा।

The Ummah Technology Mission

إِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَإِنْ تُصِبْكَ مُصِيبَةٌ يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا أَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوا وَهُمْ فَرِحُونَ ﴿٥٠﴾

(५०) आपको यदि कोई भलाई प्राप्त हो जाये, तो उन्हें बुरा लगता है तथा कोई बुराई पहुँच जाये तो कहते हैं, हमने तो अपनी बात पूर्व ही से ठीक कर ली थी, फिर तो बड़े इतराते हुए लौटते हैं।[1]

قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلَانَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾

(५१) (आप) कह दीजिए कि हमें सिवाय अल्लाह के हमारे पक्ष में लिखे हुए के कोई चीज़ पहुँच ही नहीं सकती, वह हमारा मालिक है, तथा (आप कह दीजिए) ईमानवालों को अल्लाह ही पर पूर्ण भरोसा करना चाहिए।[2]

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلَّا إِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ۖ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَنْ يُصِيبَكُمُ اللَّهُ بِعَذَابٍ مِنْ عِنْدِهِ أَوْ بِأَيْدِينَا ۖ فَتَرَبَّصُوا

(५२) कह दीजिये कि तुम हमारे विषय में जिस की प्रतीक्षा में हो, वह दो भलाईयों में से एक है,[3] तथा हम तुम्हारे पक्ष में इस बात की प्रतीक्षा में हैं कि या तो अल्लाह (तआला) तुम्हें अपने पास से कोई दंड दे अथवा हमारे

---

[1]सम्बन्धित कथन के आधार पर حسنة से यहाँ सफलता तथा लाभ एवं سيئة से असफ़लता, पराजय तथा इसी प्रकार की हानियाँ जो युद्ध में होती हैं, तात्पर्य है इसमें उनके आन्तरिक बुराईयों का प्रदर्शन है। जो मुनाफ़िक़ों (भ्रष्टाचारियों) के दिलों में था। इसलिए कि कष्ट पर प्रसन्न होना तथा भलाई प्राप्त होने पर दुख तथा कष्ट का आभास करना शत्रुता के कारणों को प्रदर्शित करता है।

[2]यह मुनाफ़िक़ों (अवसरवादियों) के उत्तर में मुसलमानों के धैर्य, दृढ़ता तथा साहस के लिए कहा जा रहा है। क्योंकि जब मनुष्य को यह ज्ञात हो कि अल्लाह की ओर से भाग्य में लिखा हुआ प्रत्येक अवस्था में होना है तथा जो भी कठिनाई तथा भलाई हमें पहुंचती है, उसी अल्लाह द्वारा लिखित भाग्य का भाग है। तो मनुष्य के लिए कठिनाई का सहन करना सरल तथा उसका साहस बढ़ जाता है।

[3]अर्थात सफलता अथवा शहादत, इन दोनों में से जो भी हमें प्राप्त हो हमारे लिए भलाई है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُونَ ﴿٥٢﴾

हाथों से |[1] बस एक ओर तुम प्रतीक्षा करो, दूसरी ओर हम तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं |

قُلْ أَنفِقُوا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَّن يُتَقَبَّلَ مِنكُمْ ۖ إِنَّكُمْ كُنتُمْ قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٥٣﴾

(५३) कह दीजिए कि तुम इच्छा अथवा अनिच्छा किसी प्रकार भी ख़र्च करो स्वीकार तो कदापि नहीं किया जायेगा |[2] नि:संदेह तुम अवज्ञाकारी लोग हो |

وَمَا مَنَعَهُمْ أَن تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَاتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَبِرَسُولِهِ وَلَا يَأْتُونَ الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ كُسَالَىٰ وَلَا يُنفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ كَارِهُونَ ﴿٥٤﴾

(५४) कोई कारण उनके ख़र्च को अस्वीकार होने का इसके अतिरिक्त नहीं कि ये अल्लाह तथा उसके रसूल के अवज्ञाकारी हैं तथा बड़े आलस्य से नमाज़ में आते हैं तथा बुरे दिल से ख़र्च करते हैं |[3]

---

[1]अर्थात हम तुम्हारे लिए दो बुराईयों में से एक बुराई की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि या तो आकाश से अल्लाह तआला तुम पर प्रकोप उतारे जिससे तुम नष्ट हो जाओ अथवा हमारे हाथों से ही अल्लाह तआला तुम्हें (वध करने, अथवा बन्दी बनाने आदि प्रकार की) दण्ड दिलवाये | वह दोनों बातों का सामर्थ्य रखता है |

[2]أنفقوا आदेश है परन्तु यहाँ इस वाक्य का अर्थ यह है कि यदि तुम ख़र्च करोगे तो स्वीकार नहीं किया जायेगा | अथवा यह सूचक वाक्य के अर्थ में है | अर्थ यह है कि दोनों बातें समान हैं, खर्च करो अथवा न करो | अपनी इच्छा से अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करोगे तो भी अस्वीकार है | क्योंकि स्वीकर करने की प्रथम शर्त ईमान है और वही तुम्हारे अन्दर नहीं हैं तथा अप्रसन्नता से ख़र्च किया हुआ माल अल्लाह के यहाँ वैसे ही ठुकराया हुआ है, क्योंकि वहाँ उचित उद्देश्य नहीं उपस्थित है, जो स्वीकार करने के लिए आवश्यक है | यह आयत भी इसी प्रकार है जिस प्रकार यह है |

﴿اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ﴾

"आप इनके लिए क्षमा माँगें अथवा न माँगें |" (सूर: अल-तौबः-८०)

अर्थात दोनों बातें समान हैं |

[3]इसमें उनके दान के अस्वीकार किये जाने के तीन कारण बताये गये हैं | प्रथम उनका अविश्वास तथा अवैज्ञा, द्वितीय नमाज़ में आलस्य | इसलिए कि वह इस पर न पुण्य की

The Ummah Technology Mission

فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَآ أَوْلَادُهُمْ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُم بِهَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿٥٥﴾

(५५) अतः आपको उन के धन तथा सन्तान आश्चर्य में न डाल दें।[1] अल्लाह यही चाहता है कि उन्हें दुनिया के जीवन में ही दंड दे।[2] तथा उनके अविश्वास की ही अवस्था में उनके प्राण निकल जायें।[3]

आशा रखते हैं तथा न उनको उसके दण्ड का कोई भय है क्योंकि आशा तथा भय, यह भी ईमान का लक्षण है, जिससे यह वंचित हैं। तथा तृतीय अनिच्छा से खर्च करना, तथा जिस कार्य में दिल की प्रसन्नता न हो, वह स्वीकार किस प्रकार हो सकता है? अतः ये तीनों कारण ऐसे हैं कि इनमें एक-एक कारण भी कर्म के अस्वीकार के लिए पर्याप्त है। यदि ये तीनों कारण जहाँ एकत्रित हों, तो उस ठुकराये हुए कर्म को अल्लाह के दरबार में किस प्रकार स्वीकृति प्राप्त हो सकती है।

[1]इसलिए कि यह सब परीक्षा के रूप में हैं। जिस प्रकार फ़रमाया :

﴿وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ﴾

"तथा कई प्रकार के लोगों को जो हमने संसारिक जीवन में सुख- सुविधा की वस्तुओं से परिपूर्ण किया है, ताकि उनकी परीक्षा लें, उनकी ओर न देखो।" (सूरः ताहा-१३१)

तथा फ़रमाया :

﴿أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُم بِهِ مِن مَّالٍ وَبَنِينَ * نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرَاتِ ۚ بَل لَّا يَشْعُرُونَ﴾

"क्या यह लोग विचार करते है? कि जो हम संसार में उनको धन तथा पुत्र से सहायता देते हैं (तो उस से) उनकी भलाई में हम शीघ्रता कर रहे हैं? (नहीं) अपितु यह समझते ही नहीं।" (सूरः अल-मोमिनून-५५तथा ५६)

[2]इमाम इब्ने कसीर तथा इमाम इब्ने जरीर तबरी ने इससे ज़कात तथा अल्लाह के मार्ग में दान करना तात्पर्य निकाला है। अर्थात इन मुनफ़िकों (अवसरवादियों) से ज़कात तथा दान तो (जो वह मुसलमान प्रदर्शित करने के लिए देते हैं) दुनिया में स्वीकार किये जायें ताकि इस प्रकार से उन्हें दुनिया में धन की मार भी दी जाये।

[3]अन्त में उनकी मृत्यु अधर्म की अवस्था में होगी इसलिए कि वे अल्लाह के पैग़म्बर को सच्चे दिल से स्वीकार करने को तैयार ही नहीं तथा अपने अविश्वास तथा द्वयवाद पर ही अडिग तथा दृढ़ हैं।

The Ummah Technology Mission

وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ؕ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ ﴿٥٦﴾

(५६) तथा ये अल्लाह की सौगन्ध खा-खा कर कहते हैं कि ये तुम्हारे गुट के लोग हैं, यद्यपि कि वे वास्तव में तुम्हारे नहीं, बात केवल इतनी है कि ये कायर लोग हैं।[1]

لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ﴿٥٧﴾

(५७) यदि ये कोई सुरक्षित स्थान अथवा कोई गुफ़ा अथवा कोई भी सिर छिपाने का स्थान पा लें तो अभी उस ओर लगाम तोड़ कर उल्टे भाग छूटें।[2]

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِي الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَا اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ﴿٥٨﴾

(५८) उनमें वे भी हैं जो दान के माल के बंटवारे के विषय में आप पर लांछन रखते हैं।[3] यदि उसमें से उनको मिल जाये तो प्रसन्न हैं तथा यदि उसमें से न मिला तो तुरन्त ही बिगड़ खड़े होते हैं।[4]

---

[1]इस डर तथा भय के कारण मिथ्या शपथ ग्रहण करके यह सिद्ध करना चाहते हैं कि हम भी तुम में से ही हैं।

[2]अर्थात अति तीव्र गति से दौड़ कर वे उन सुरक्षित स्थानों में चले जायें, इसलिए तुम से इनका जितना भी सम्बन्ध है वह प्रेम तथा निःस्वार्थ का नहीं, द्वेष, ईष्या तथा घृणा पर है।

[3]यह उनकी एक अन्य बहुत बड़े दोष का वर्णन है कि वह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रशस्त व्यक्तित्व को (نعوذ باللہ) दान तथा युद्ध में प्राप्त सामग्री के बंटवारे में अन्यायकारी बताते। जिस प्रकार इब्ने जिलखुवैसरः के विषय में आता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार बाँट रहे थे कि उसने कहा, "न्याय से काम लीजिए।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "अफसोस है तुझ पर, यदि मैं ही न्याय न करूँगा, तो फिर अन्य कौन करेगा?" अल हदीस (सहीह बुखारी संख्या ६१६३ तथा सहीह मुस्लिम संख्या ७४४)

[4]अर्थात इस प्रकार का अभियोग लगाने का उद्देश्य मात्र धन का लाभ प्राप्त करना था कि इस प्रकार उन से भय के कारण उन्हें अधिक धन मिल जायेगा, अथवा वे अधिकारी हों अथवा न हों परन्तु भाग उन्हें अवश्य मिल जायेगा।

The Ummah Technology Mission

وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ۝٥٩

(५९) यदि ये लोग अल्लाह तथा उसके रसूल के दिये हुए पर प्रसन्न रहते तथा कह देते कि अल्लाह हमें पर्याप्त है, अल्लाह हमें अपनी कृपा से देगा तथा उसका रसूल भी। हम तो अल्लाह ही से आशा रखने वाले हैं।

اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٦٠

(६०) दान केवल भिक्षुकों[1] के लिए हैं तथा निर्धनों के लिए तथा उनके कार्यकर्ताओं के लिए तथा उनके लिए जिनके दिल परचाये जा रहे हों तथा दास मुक्ति एवं ऋणी लोगों के लिए तथा अल्लाह के मार्ग में तथा यात्रियों के लिए,[2] अनिवार्य है अल्लाह की ओर से तथा अल्लाह ज्ञान वाला विवेककारी है।

---

[1]इस आयत में उस अभियोग का द्वार बन्द करने के लिए दान पाने योग्य लोगों का वर्णन किया जा रहा है। दान से तात्पर्य यहाँ अनिवार्य दान अर्थात ज़कात है। आयत का प्रारम्भ اِنَّمَا से किया गया है, जो सीमित रूप करने का अर्थ देता है। तथा الصدقات में अरबी भाषा का अक्षर (अलिफ़ लाम) वस्तु की साधारणता के लिए है। अर्थात धन दान इन्हीं आठ प्रकारों में सीमित है; जिनकी चर्चा आयत में है। इनके अतिरिक्त ज़कात का धन किसी अन्य प्रयोग में लाना उचित नहीं। विद्वानों में इस बात पर मतभेद है कि इन आठों प्रकार को देना आवश्यक है अथवा इन में से जिस प्रकार के लिए अति आवश्यक हो उन में से एक अथवा अन्य को जिस पर इमाम अथवा विभाजनकारी उचित तथा आवश्यक समझे आवश्यकतानुसार ख़र्च करे। इमाम शाफ़ई आदि पहले मत के पक्ष में हैं कि ज़कात की राशि को बिना किसी सोच-विचार के आठ भागों में विभाजित करनी होगी, फिर आठों स्थान पर थोड़ी-थोड़ी ख़र्च की जाये तथा इमाम मालिक एवं इमाम अबू हनीफ़ा आदि दूसरे मत के पक्ष में हैं कि आवश्यकता तथा हित का ध्यान रखना आवश्यक है, जिस कार्य पर ख़र्च करने की आवश्यकता अधिक हो तथा परिस्थिति के अनुसार जितनी उनकी आवश्यकता हो उतनी ज़कात की राशि उन पर व्यय की जायेगी, चाहे दूसरे कार्यों के लिए राशि बचे अथवा न बचे इस विचार में जो औचित्य है वह प्रथम विचार में नहीं है।

[2]इन आठ प्रयोजनों पर ख़र्च करने का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है। (१,२) भिखारी तथा निर्धन लगभग निकट ही निकट है तथा एक अर्थ दूसरे से मिलता-जुलता है अर्थात

The Ummah Technology Mission

निर्धन को भिखारी तथा भिखारी को निर्धन कह ही लिया जाता है। इसलिए इनकी अलग-अलग परिभाषा पर बहुत मतभेद है। परन्तु दोनों के भावार्थ में यह बात तो स्पष्ट है कि जिनको आवश्यकता है तथा अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिए आवश्यक धन तथा साधन से वंचित हैं। उनको भिखारी तथा निर्धन कहा जाता है। निर्धन की परिभाषा के लिए हदीस आती है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "निर्धन वह नहीं है जो एक-एक, दो-दो निवाला अथवा खजूर के लिए घर-घर फिरता है, अपितु निर्धन वह है कि जिसके पास इतना धन भी न हो कि वह अपनी आवश्यकता पूरी कर ले, न अपने मुख पर इस प्रकार के आभास भी उत्पन्न होने दे कि लोग उसे निर्धन तथा आवश्यकता के योग्य समझ कर दान करें तथा न दूसरों के समक्ष हाथ फैलाये।" (सहीह बुख़ारी किताबुज़ ज़कात) हदीस में इस प्रकार निर्धन, वर्णित व्यक्ति ही को बनाया गया है। वरन् आदरणीय इब्ने अब्बास आदि से निर्धन की यह परिभाषा बतायी जाती है, कि जो हाथ फैलाने वाला हो, घूम-फिर कर अन्य लोगों के पीछे पड़कर माँगता हो तथा भिखारी वह है जो निर्धन होने के उपरान्त छल करने से बचे तथा लोगों से किसी वस्तु का प्रश्न न करे। (इब्ने कसीर) (३) कार्यकर्ता से तात्पर्य सरकारी कर्मचारी हैं, जो ज़कात व दान की राशि वसूल करते हैं तथा बाँटते हैं तथा उसका लेखा-जोखा रखते हैं। (४) आकर्षित हृदय एक तो वह काफ़िर हैं जो थोड़ा-थोड़ा इस्लाम की ओर आकर्षित होते हों तथा उनकी सहायता करने पर यह आशा हो कि वह मुसलमान हो जायेंगे। दूसरे नये मुसलमान हैं जिनको इस्लाम पर दृढ़ता से स्थित रहने के लिए सहायता की आवश्यकता हो। तीसरे वे लोग भी हैं जिनकी सहायता करने से यह आशा हो कि वह अपने क्षेत्र के लोगों को मुसलमानों पर आक्रमण करने से रोकेंगे तथा इस प्रकार वह निकटवर्ती कमज़ोर मुसलमानों की रक्षा करेंगे। यह और इस प्रकार की अन्य अवस्थायें हृदय आकर्षित करने की हैं, जिन पर ज़कात की राशि ख़र्च की जा सकती है। चाहे वर्णित लोग धनवान ही हों। कुछ लोगों के अनुसार यह प्रयोग समाप्त हो गया है परन्तु यह बात ठीक नहीं है। परिस्थितियाँ तथा समय के अनुसार हर काल में इस कर्त्तव्य पर ज़कात की राशि ख़र्च करना उचित है। (५) गर्दनें स्वतन्त्र कराने के लिए। कुछ विद्वानों ने केवल सम्बन्धित दास को लिया है। तथा अन्य विद्वानों ने सम्बन्धित तथा असम्बन्धित दोनों प्रकार के दास लिए हैं, इमाम शौकानी ने इसी विचार को प्रधानता दी है। (६) ऋणी से एक तो उन ऋणियों का तात्पर्य हैं जो अपने परिवार को जीवन-यापन तथा जीवन की आवश्यकता की पूर्ति करते-करते दूसरे लोगों के ऋण से दब गये हों तथा उनके पास नगद राशि भी नहीं है तथा ऐसा सामान भी नहीं है जिसे बेचकर वे उस ऋण को चुका सकें। दूसरे वे ज़िम्मेदार लोग जिन्होंने किसी अन्य की ज़मानत दी हो तथा फिर वह उसकी अदायगी के ज़िम्मेदार बना दिये गये हों, अथवा किसी की फ़सल नष्ट हो गयी हो, अथवा व्यापार में हानि हो गयी हो तथा इस कारण ऋणी हो गया हों। इन सभी लोगों को

The Ummah Technology Mission

وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦١﴾

(६१) तथा उनमें से वे भी हैं जो पैग़म्बर (संदेशवाहक) को कष्ट देते हैं तथा कहते हैं कि हल्के कान का है। (आप) कह दीजिए कि वह कान तुम्हारी भलाई के लिए हैं।[1] वह अल्लाह पर ईमान रखता है तथा मुसलमानों की बातों का विश्वास करता है तथा तुम में से जो ईमानवाले हैं यह उनके लिए कृपा है, और रसूलुल्लाह (अल्लाह के दूत) को जो लोग कष्ट देते हैं उनके लिए दुखदायी यातना है।

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾

(६२) वे मात्र तुम्हें प्रसन्न करने के लिए तुम्हारे समक्ष अल्लाह की सौगंध खा जाते हैं हालाँकि यदि यह ईमानदार होते तो अल्लाह तथा उसके रसूल प्रसन्न किये जाने के अधिक अधिकारी थे।

ज़कात की राशि से सहायता करना उचित है। (७) अल्लाह के मार्ग से तात्पर्य धर्मयुद्ध है अर्थात युद्ध की सामग्री तथा आवश्यकताओं एवं मुजाहिद (चाहे वह मालदार ही हो) पर ज़कात की राशि ख़र्च करनी उचित है। तथा हदीसों में आता है कि हज तथा उमरः भी अल्लाह के मार्ग में ही आता है। इसी प्रकार कुछ विद्वानों के निकट तबलीग़ (निमन्त्रण) तथा आमन्त्रण भी अल्लाह के मार्ग में सम्मिलित है क्योंकि इसका भी उद्देश्य अल्लाह के कथन को जन-जन तक पहुँचाना है। (८) मार्ग के लोगों से तात्पर्य यात्री हैं। अर्थात कोई भी व्यक्ति यात्रा के समय सहायता का पात्र हो गया हो, तो चाहे वह अपने देश में धनवान ही हो, उसकी सहायता ज़कात की राशि से की जा सकती है।

[1]यहाँ से पुनः मुनाफ़िक़ों (द्वयवादियों) की चर्चा हो रही है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरुद्ध एक लांछन यह उन्होंने लगाया कि यह कान का कच्चा (अथवा हल्का) है। अर्थ यह है कि यह हर व्यक्ति की बात सुन लेता है (अर्थात यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज्ञान तथा कृपा एवं क्षमा करने के गुणों से उन्हें धोखा हुआ)। अल्लाह ने फ़रमाया कि नहीं, हमारा पैग़म्बर उपद्रव तथा अशान्ति की कोई बात नहीं सुनता, जो भी सुनता है, तुम्हारा उसमें हित, पुण्य तथा भलाई है।

The Ummah Technology Mission

أَلَمْ يَعْلَمُوٓا أَنَّهُۥ مَن يُحَادِدِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ فَأَنَّ لَهُۥ نَارَ جَهَنَّمَ خَٰلِدًا فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ ٱلْخِزْىُ ٱلْعَظِيمُ ﴿٦٣﴾

(६३) क्या ये नहीं जानते कि जो भी अल्लाह का तथा उसके रसूल का विरोध करेगा उस के लिए निःसंदेह नरक की अग्नि है, जिसमें वे सदैव रहने वाले हैं, यह बहुत बड़ा अपमान है।

يَحْذَرُ ٱلْمُنَٰفِقُونَ أَن تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُم بِمَا فِى قُلُوبِهِمْ ۚ قُلِ ٱسْتَهْزِءُوٓا۟ إِنَّ ٱللَّهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُونَ ﴿٦٤﴾

(६४) अवसरवादियों को (हर समय) यह भय लगा रहता है कि कहीं (मुसलमानों) पर कोई आयत न उतरे, जो उनके दिलों की बातें उन्हें बता दे। कह दीजिए कि तुम उपहास उड़ाते रहो। निःसंदेह अल्लाह तआला उसे व्यक्त करने वाला है जिससे तुम भयभीत हो।

وَلَئِن سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ ۚ قُلْ أَبِٱللَّهِ وَءَايَٰتِهِۦ وَرَسُولِهِۦ كُنتُمْ تَسْتَهْزِءُونَ ﴿٦٥﴾

(६५) यदि आप उनसे पूछें तो साफ़ कह देंगे कि हम तो यूँ ही आपस में हँस-बोल रहे थे। कह दीजिए कि अल्लाह, उसकी आयतें तथा उसका रसूल ही तुम्हारी हंसी उपहास के लिए शेष रह गये हैं ?[1]

---

[1]मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) अल्लाह की आयतों का उपहास उड़ाते थे, ईमानवालों का अपमान करते, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में अपशब्द का प्रयोग करने में संकोच न करते, जिसकी सूचना किसी प्रकार से ईमानवालों तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हो जाती, परन्तु यदि उन से पूछा जाता तो साफ़ मुकर जाते तथा कहते कि हम तो आपस में इसी प्रकार हंसी-मज़ाक़ कर रहे थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "हंसी-मज़ाक़ के लिए तुम्हारे समक्ष अल्लाह तथा उसकी आयतें एवं उसका रसूल ही रह गया है ?" अर्थ यह कि यदि तम्हारा उद्देश्य आपस में हंसी-मज़ाक़ का होता तो उसमें अल्लाह, उसकी आयतें तथा रसूल मध्य में क्यों आते ? ये निःसन्देह उस द्वेष तथा ईर्ष्या का संकेत है, जो अल्लाह की आयतों तथा हमारे पैग़म्बर के विरुद्ध तुम्हारे दिलों में स्थित है।

The Ummah Technology Mission

لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيْمَانِكُمْ ۭ إِنْ نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةً ۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝٦٦

(६६) तुम बहाने न बनाओ, निःसंदेह तुम अपने ईमान लाने के पश्चात बेईमान हो गये।[1] यदि हम तुम में से कुछ लोगों से अनदेखी भी कर लें,[2] तो कुछ लोगों को उनके अपराध का कठोर दण्ड भी देंगे।[3]

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ۭ نَسُوا اللّٰهَ

(६७) सभी मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) पुरुष तथा स्त्री आपस में एक ही हैं।[4] ये बुरी बातों का आदेश देते हैं तथा भली बातों से रोकते हैं तथा अपनी मुट्ठी बन्द रखते हैं।[5] ये अल्लाह को भूल

---

[1]अर्थात तुम जो ईमान प्रदर्शित करते रहे हो अल्लाह तथा उसके रसूल के उपहास के पश्चात उसका कोई महत्व नहीं। प्रथम तो वह भी भ्रष्टाचार पर ही आधारित था। फिर भी उसी के कारण तुम्हारी गणना मुसलमानों में होती थी, परन्तु अब उसका भी स्थान समाप्त हो गया।

[2]इससे तात्पर्य ऐसे लोग हैं, जिन्हें अपनी त्रुटि का आभास हो गया तथा उन्होंने क्षमा-याचना कर ली एवं निःस्वार्थी मुसलमान बन गये।

[3]यह वे लोग हैं जिन्हें तौबा का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ तथा अधर्म एवं भ्रष्टाचार में लिप्त रहे। इसीलिए उस यातना का कारण भी बता दिया गया है कि वे अपराधी हैं।

[4]स्वार्थी जो सौगन्ध खाकर मुसलमानों को विश्वास दिलाया करते थे कि "हम तुम ही में से हैं" अल्लाह तआला ने इसका खण्डन किया कि ईमानवालों से उनका क्या सम्बन्ध? परन्तु यह सभी अवसरवादी चाहे पुरुष हों अथवा स्त्रियाँ एक ही हैं अर्थात कुफ़्र तथा भ्रष्टाचार में एक, दूसरे से बढ़-चढ़ कर हैं। आगे उनके दुगुणों को व्यक्त किया जा रहा है। जो ईमानवालों के गुणों के ठीक प्रतिकूल तथा विपरीत हैं।

[5]इससे तात्पर्य कंजूसी है अर्थात ईमानवालों का गुण अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करना है तथा पाखण्डी का इसके विपरीत कंजूसी। अर्थात अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने में संकोच करना है।

The Ummah Technology Mission

فَنَسِيَهُمْ ۚ إِنَّ الْمُنٰفِقِينَ هُمُ الْفٰسِقُونَ ﴿٦٧﴾

गये, अल्लाह ने भी उन्हें भुला दिया।[1] नि:संदेह मुनाफ़िक़ (द्वयवादी) ही भ्रष्टाचारी हैं।

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِينَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِينَ فِيهَا ۚ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٦٨﴾

(६८) अल्लाह तआला इन मुनाफ़िक़ (अवसर-वादी) पुरुषों स्त्रियों तथा काफ़िरों से नरक की अग्नि का वायदा कर चुका है, जहाँ ये सदा रहेंगे, वही उनके लिए पर्याप्त है, उन पर अल्लाह की धिक्कार है। तथा उन के लिए स्थाई यातना है।

كَالَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ كَانُوٓا أَشَدَّ مِنكُمْ قُوَّةً وَأَكْثَرَ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا ۖ فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُم بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ

(६९) तुम से पूर्वजनों[2] के समान जो तुम से बलवान तथा धन संतान में अत्यधिक थे तो वह अपना धार्मिक भाग बरत गये फिर तुम ने भी अपना भाग बरत लिया।[3] जैसे तुम से

---

[1]अर्थात अल्लाह भी उनसे ऐसा ही व्यवहार करेगा कि जैसे कि उसने उन्हें भुला दिया। इस प्रकार अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ٱلْيَوْمَ نَنسَىٰكُمْ كَمَا نَسِيتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا﴾

"आज हम तुम्हें उसी प्रकार भुला देंगे, जिस प्रकार तुम हमारी मुलाकात के इस दिन को भुलाये हुए थे।" (सूर: अल-जासिय:-३४)

अर्थ यह है कि जिस प्रकार संसार में उन्होंने अल्लाह के आदेश को छोड़े रखा, क़ियामत वाले दिन अल्लाह तआला अपनी दया तथा कृपा से वंचित रखेगा। अत: نسيان (निस्यान) का सम्बन्ध अल्लाह तआला की ओर ज्ञान शास्त्र में नियमों के अनुसार समानता के रूप से है। अपितु अल्लाह तआला भूलने के दोष से पवित्र है, अर्थात उसकी यह विशेषता है कि वह किसी भी प्रकार से नहीं भूलता।

[2]अर्थात तुम्हारा हाल भी कर्मों तथा परिणामों के आधार पर पूर्व के समुदायों के काफ़िरों जैसा ही है। अब अनुपस्थिति के बजाय, मुनाफ़िक़ों को सम्बोधित किया जा रहा है।

[3]خلاق का अन्य अनुवाद सांसारिक भाग भी किया गया है। अर्थात तुम्हारे भाग्य में दुनिया का जितना भाग लिख दिया गया है, उसे बरत लो, जिस प्रकार से तुम से पूर्व के लोगों ने अपना भाग बरता। तथा फिर अंत में अथवा यातना से आलिंगित हो गये।

The Ummah Technology Mission

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۶۹﴾

पूर्व लोग अपने भाग से लाभान्वित हुये थे तथा तुम ने भी उसी प्रकार ठठ्ठा वाला गप किया जैसे उन्होंने किया था।[1] उनके कार्य लोक-परलोक में नष्ट हो गये तथा यही लोग क्षतिग्रस्त हैं।[2]

اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ ۙ وَ قَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ وَ اَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَ الْمُؤْتَفِكٰتِ ؕ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ

(७०) क्या उन्हें अपने से पूर्व के लोगों के समाचार नहीं पहुँचे। नूह तथा आद एवं समूद के समुदाय तथा इब्राहीम के समुदाय एवं मदयन के निवासी और (उलट-पुलट कर दी गयी बस्तियों के) लोगों के,[3] उनके

---

[1]अर्थात अल्लाह की आयतों तथा अल्लाह के पैग़म्बरों को झुठलाने के लिए। अथवा अन्य भावार्थ यह है कि दुनिया के साधनों तथा आनन्द एवं खेल-कूद में जिस प्रकार मग्न रहे, तुम्हारी भी यही दशा है। आयत में पूर्व के लोगों से तात्पर्य अहले किताब अर्थात यहूदी तथा ईसाई हैं। जैसे एक हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "सौगन्ध है उस शक्ति की जिसके हाथों में मेरा प्राण है, तुम अपने से पूर्व के लोगों का अनुसरण अवश्य करोगे। पंजा से पंजा, बाँह से बाँह तथा हाथ से हाथ, यहाँ तक कि यदि वह किसी गोह की बिल में घुसे हैं तो तुम भी अवश्य घुसोगे।" लोगों ने पूछा, "क्या इससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तात्पर्य अहले किताब हैं" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "अन्य कौन ?" (सहीह बुख़ारी)

[2]أولئك से तात्पर्य वह लोग हैं जो उपरोक्त दोषों तथा दुर्गुणों से युक्त होते हैं। जिस प्रकार वे हानि युक्त तथा असफल रहे तुम भी उसी प्रकार रहोगे। यद्यपि शक्ति में वह तुम से अधिक शक्तिशाली तथा धन तथा सन्तान में भी अधिक थे। उसके उपरान्त भी अल्लाह के प्रकोप से सुरक्षित न रह सके, तो तुम जो उनसे प्रत्येक क्षेत्र में कम हो, किस प्रकार अल्लाह की पकड़ से बच सकते हो।

[3]यहाँ उन छः समुदायों का वर्णन किया गया है, जिनका स्थान सीरिया देश रहा है। यह अरब क्षेत्र के निकट है तथा उनकी कुछ बातें शायद उन्होंने अपने पूर्वजों से सुनी भी हों। नूह का समुदाय जो जल प्रलय में डूबो दिया गया, आद का समुदाय जो सामर्थ्य तथा शक्ति में श्रेष्ठ होने के उपरान्त, तेज हवाओं के झोंकों से नष्ट कर दिये गये। समूद का समुदाय, जिसे आकाश की चीख ने नष्ट कर दिया। इब्राहीम के समुदाय जिसके राजा नमरूद बिन किनआन बिन कोश को मच्छर से मरवा दिया गया। मदयन के

The Ummah Technology Mission

بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝٧٠

पास रसूल (ईशदूत) दलीलें लेकर पहुँचे,[1] तो अल्लाह तआला ऐसा न था कि उन पर अत्याचार करे, अपितु उन्होंने स्वयं ही अपने ऊपर अत्याचार किया।[2]

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ

(७१) मुसलमान पुरुष व स्त्री एक-दूसरे के (पक्षपाती सहायक तथा) मित्र हैं[3] वे भलाईयों

निवासी (आदरणीय शुऐब का समुदाय) जिन्हें चीख, भूकम्प तथा बादलों की छाया के प्रकोप से नष्ट किया गया। तथा उल्टे-पल्टे गये लोग, इससे तात्पर्य लूत का समुदाय है, जिनकी बस्ती का नाम "सदूम" था। ائتكاف का अर्थ है उलट-पलट देना। उन पर एक तो आकाश से पत्थर बरसाये गये, दूसरे उनकी बस्ती को ऊपर उठा कर नीचे फेंका गया, जिससे पूरी बस्ती ऊपर तले हो गयी। इस आधार पर उन उल्टे-पल्टे लोगों को "असहाब मुतफ़िकात" कहा जाता है।

[1]इन सभी समुदायों के पास उनके पैग़म्बर, जो उन्हीं के समुदाय का एक पुरुष होता था, आये। परन्तु उन्होंने उनकी बातों को कोई महत्व ही नहीं दिया। अपितु झुठलाने तथा द्वेष का मार्ग अपनाया, जिसका परिणाम अन्त में अल्लाह के प्रकोप के रूप में सामने आया।

[2]अर्थात यह प्रकोप उनके निरन्तर अत्याचार का प्रतिफल है। अकारण अल्लाह के प्रकोप का शिकार नहीं हुए।

[3]मुनफ़िक़ों (द्वयवादियों) के दुर्गुणो की तुलना में मुसलमानों के सदगुणों की चर्चा हो रही है। प्रथम विशेषता : वे एक-दूसरे के मित्र, सहायक तथा दुख के साथी हैं जिस प्रकार हदीस में है।

« اَلْمُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ، يَشُدُّ بَعْضُهُ بَعْضًا ».

"मोमिन मोमिन के लिए एक दीवार की तरह है जिसकी एक ईंट दूसरी ईंट की मज़बुती का साधन है।" (सहीह बुखारी किताबुस्सलात बाब तश्बीकिल असाबेअ फ़िल मस्जिदे व गैरेही, मुस्लिम बाब तराहुमुल मोमिनीन)

दूसरी हदीस में आया है।

« مَثَلُ الْمُؤْمِنِينَ فِي تَوَادِّهِمْ، وتَرَاحُمِهِمْ، كَمَثَلِ الْجَسَدِ الْوَاحِدِ إِذَا اشْتَكَى مِنْهُ عُضْوٌ، تَدَاعَى لَهُ سَائِرُ الْجَسَدِ بِالْحُمَّى وَالسَّهَرِ ».

The Ummah Technology Mission

بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ
وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ
سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾

का आदेश देते हैं तथा बुराईयों से रोकते हैं,[1] नमाज़ें नियमित रूप से पढ़ते हैं, ज़कात अदा करते हैं, अल्लाह तथा उसके रसूल की बात मानते हैं,[2] यही लोग हैं जिन पर अल्लाह (तआला) अतिशीघ्र कृपा करेगा, निःसंदेह अल्लाह विवेकी प्रभावी है।

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا
وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ
عَدْنٍ ؕ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ

(७२) इन ईमानदार पुरुषों तथा स्त्रियों से अल्लाह (तआला) ने उन स्वर्गों का वायदा किया है जिनके नीचे नहरें बह रहीं हैं, जहाँ वे सदैव रहने वाले हैं तथा उन स्वच्छ पवित्र भवन का,[3] जो उन अनन्त स्वर्ग में हैं, तथा

"मोमिन का उदाहरण आपस में एक-दूसरे के साथ प्रेम करने तथा कृपा करने में एक शरीर की भाँति है कि जब शरीर के एक अंग को दर्द होता है तो सारे शरीर को बुखार हो जाता है तथा सजग रहता है।" (सहीह मुस्लिम बाब मज़कूर तथा अलबुखारी किताबुल आदाब बाब रहमतुन्नास वल बहाएम)

[1]यह ईमानवालों का दूसरा विशेष गुण है معروف (मारूफ़) वह है जिसे धर्म विधान ने मारूफ़ (अर्थात नेकी, पुण्य तथा भलाई) कहा है مُنكر (मुनकर) वह है जिसे धर्म विधान ने मुनकर (अर्थात बुरा) माना है न कि वह जिसे लोग अच्छा या बुरा कहें।

[2]नमाज़ अल्लाह के अधिकारों में परम आराधना है तथा ज़कात अन्य लोगों के अधिकार के आधार पर विशेष स्थान रखती है, इसी कारण इन दोनों का विशेष रूप से वर्णन करके कहा गया है कि वह प्रत्येक विषय में अल्लाह तथा उसके रसूल के आदेशों का पालन करते हैं।

[3]जो मोती तथा याक़ूत (पुलक) से तैयार किये गये होंगे عدن के कई अर्थ किये गये हैं एक अर्थ सदैव का है।

The Ummah Technology Mission

ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٧٢﴾

अल्लाह की प्रसन्नता सब से महान है,[1] यही बहुत बड़ी सफलता है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٧٣﴾

(७३) हे नबी ! काफ़िरों तथा पाखंडियों से धर्मयुद्ध करते रहो।[2] तथा उन पर कड़ाई करो।[3] उनका मूल स्थान नरक है, जो अत्यधिक बुरा स्थान है।[4]

---

[1]हदीस (रसूल का कथन) में भी आता है कि स्वर्ग की सभी प्रदानों के बाद स्वर्ग वासियों को सर्वोत्तम प्रदान अल्लाह की प्रसन्नता के रूप में मिलेगा। (सहीह बुख़ारी तथा मुस्लिम किताबुल रिकाक तथा किताबुल जन्नः)

[2]इस आयत में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को काफ़िरों तथा अवसरवादियों से धर्मयुद्ध तथा उन पर कड़ाई करने का आदेश दिया जा रहा है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात इससे सम्बन्धित आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुयायी है। काफ़िरों के साथ द्वयवादियों से भी जो धर्मयुद्ध करने का आदेश है, इसके विषय में मतभेद है। एक मत तो यही है कि यदि अवसरवादी का द्वयवाद तथा भ्रष्टता स्पष्ट हो जाये, तो उनसे भी उसी प्रकार धर्मयुद्ध किया जाये, जिस प्रकार काफ़िरों के साथ किया जाता है। दूसरा मत यह है कि अवसरवादियों से धर्मयुद्ध करना यह है कि उन्हें शिक्षा, भाषण तथा मुख से समझाया जाये। अथवा वे सभ्यता के विरुद्ध अपराध करें तो उनको दंडित किया जाये। तीसरा मत यह है कि धर्मयुद्ध का आदेश काफ़िरों से सम्बन्धित है तथा कठोरता करना पाखंडियों के लिए। इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि इन मतों में आपस में कोई भेद तथा विरोध नहीं, इसलिए समय तथा परिस्थितियों के अनुसार इनमें से किसी भी मत के आधार पर कार्य करना चाहिए।

[3] غِلْظَة का विलोम رَأفَة है, जिसका अर्थ कोमलता तथा प्रेम करने के हैं। इस आधार से غِلْظَة का अर्थ कड़ाई तथा बलपूर्वक शत्रुओं के विरुद्ध कार्यवाही है। मात्र मुख के कड़े भाषण का तात्पर्य नहीं है। इसलिए कि वह तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदव्यवहार के ही विरुद्ध है, उसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं न कर सकते थे न अल्लाह तआला की ओर से ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आदेश मिल सकता था।

[4]धर्मयुद्ध तथा कठोरता के आदेश का सम्बन्ध संसार से है। आख़िरत में उनके लिए नरक है जो सबसे बुरा स्थान है।

The Ummah Technology Mission

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ۚ وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ

(७४) ये अल्लाह की सौगन्ध खा कर कहते हैं कि उन्होंने नहीं कहा, यद्यपि कि निःसंदेह कुफ़्र का शब्द इनके मुख से निकल चुका है। तथा ये अपने इस्लाम के उपरान्त भी नास्तिक हो गये हैं।[1] तथा इन्होंने उस कार्य का निश्चय भी किया है जिसे प्राप्त न कर सके।[2] ये केवल इसी बात का बदला ले रहे हैं कि उन्हें अल्लाह ने अपनी कृपा से तथा इसके रसूल ने धनवान कर दिया।[3] यदि यह अब

---

[1]व्याख्याकारों ने इसकी व्याख्या में विभिन्न घटनाओं का वर्णन किया है, जिनमें अवसरवादियों ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में अपशब्द कहे, जिसे मुसलमानों ने सुन लिया तथा आकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बताया, परन्तु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पूछने पर साफ मुकर गये, अपितु सौगन्ध तक खा लिया कि उन्होंने ऐसी बातें नहीं कीं। जिस पर यह आयत उतरी। इससे यह भी ज्ञात हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में अपमान करना कुफ़्र है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में अपशब्द कहने वाला मुसलमान नहीं रह सकता।

[2]इसके विषय में भी कुछ घटनाओं का वर्णन मिलता है जैसे तबूक से वापसी के समय अवसरवादियों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरुद्ध षड़यन्त्र रचा जिसमें वे सफल नहीं हो सके कि दस-बारह अवसरवादी एक घाटी में आप के पीछे लग गये जहाँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शेष सेना से अलग लगभग अकेले गुज़र रहे थे। उनकी योजना यह थी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आक्रमण करके आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का काम तमाम कर देंगे। इसकी सूचना प्रकाशना (वहची) के द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह ने दे दी, जिससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना बचाव कर लिया।

[3]मुसलमानों की हिजरत के पश्चात मदीना नगर को केन्द्रीय अस्तित्व प्राप्त हो गया, जिसके कारण वहाँ व्यापार की भी उन्नति हुई, तथा मदीना के निवासियों की आर्थिक परिस्थितियों में प्रगति हुई। मदीना के द्वयवादियों को भी इससे लाभ हुआ। अल्लाह तआला इस आयत में यही फ़रमा रहे हैं कि क्या उन लोगों को इस बात की अप्रसन्नता है कि अल्लाह ने उनको अपनी कृपा से धनवान बना दिया है ? अर्थात यह

The Ummah Technology Mission

فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٧٤﴾

भी क्षमा-याचना कर लें तो यह इनके पक्ष में अच्छा है तथा यदि मुहँ मोड़े रहें, तो अल्लाह (तआला) उन्हें लोक-परलोक में दुखदायी यातना देगा । तथा समस्त धरती में उनका कोई पक्षधर तथा सहाय न खड़ा होगा ।

وَمِنْهُمْ مَنْ عَاهَدَ اللَّهَ لَئِنْ آتَانَا مِنْ فَضْلِهِ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُونَنَّ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٧٥﴾

(७५) इनमें वह भी हैं जिन्होंने अल्लाह से वायदा किया था कि यदि वह हमें अपनी कृपा से धन प्रदान करेगा तो हम अवश्य सत्कार करेंगे तथा पूर्ण रूप से पुनीतों में हो जायेंगे ।

فَلَمَّا آتَاهُمْ مِنْ فَضْلِهِ بَخِلُوا بِهِ وَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُعْرِضُونَ ﴿٧٦﴾

(७६) परन्तु जब अल्लाह ने अपनी कृपा से उन्हें दिया तो यह उसमें कंजूसी करने लगे तथा टाल-मटोल करके मुख मोड़ लिया ।[1]

فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِي قُلُوبِهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ يَلْقَوْنَهُ بِمَا أَخْلَفُوا اللَّهَ مَا وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ﴿٧٧﴾

(७७) तो इसके दंडस्वरूप अल्लाह ने उनके दिलों में द्वयवाद डाल दिया, अल्लाह से मिलने के दिनों तक । क्योंकि उन्होंने अल्लाह से किये हुए वायदे का विरोध किया तथा झूठ बोलते रहे ।

अप्रसन्नता तथा क्रोध वाली बातें तो नहीं हैं, अपितु उनको तो अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करना चाहिए कि उसने उन्हें निर्धनता से निकाल कर सुसम्पन्न बना दिया ।

नोट:- अल्लाह तआला के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वर्णन इस लिए है कि इस उन्नति का स्पष्ट कारण तथा साधन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही बने थे, वरन् वास्तव में धनवान बनाने वाला तो अल्लाह ही था । इसी लिए आयत में من فضله में एक वचन सर्वनाम है कि अल्लाह ने अपनी कृपा से उसे धनवान कर दिया ।

[1]इस आयत को कुछ व्याख्याकार एक सहाबी आदरणीय साअलबा बिन हातिब अन्सारी के विषय में बताते हैं परन्तु प्रमाण के आधार पर यह सही नही है । सही बात यह है कि इसमें भी अवसरवादियों के एक अन्य कर्म का वर्णन किया गया है ।

The Ummah Technology Mission

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٧٨﴾

(७८) क्या वे यह नहीं जानते कि अल्लाह (तआला) को उनके दिल का भेद तथा उनकी कानाफूसी सब ज्ञात है तथा अल्लाह (तआला) सभी गुप्त बातों का जानकार है ?[1]

اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِى الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ۙ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٩﴾

(७९) जो लोग उन मुसलमानों पर आक्षेप लगाते हैं, जो दिल खोलकर दान करते हैं तथा उन लोगों पर जिनको अपने परिश्रम के सिवाय कुछ प्राप्त ही नहीं, तो ये उनका उपहास करते हैं।[2] अल्लाह भी उनसे उपहास करता है।[3] और उन्हीं के लिए दुखदायी यातना है।

---

[1]इसमें उन अवसरवदियों के लिए कड़ी चेतावनी है जो अल्लाह तआला से वायदा करते हैं फिर उसकी चिन्ता नहीं करते। जैसे कि वे यह समझते हैं कि अल्लाह उनकी गुप्त बातों तथा भेदों को नहीं जानता। यद्यपि कि अल्लाह सभी कुछ जानता है, क्योंकि वह तो अन्तर्यामी है। सभी अप्रत्यक्ष बातों को जानता है।

[2]الْمُطَّوِّعِيْن का अर्थ है जो आवश्यक दान के अतिरिक्त स्वेच्छा से अल्लाह के मार्ग में अधिक ख़र्च करते हैं। جُهْد का अर्थ परिश्रम तथा प्रयत्न है। अर्थात वे लोग जो धनवान तो नहीं हैं, परन्तु इसके उपरान्त भी अपनी परिश्रम तथा प्रयास की कमाई के थोड़ी होने के उपरान्त भी कुछ धन अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करते हैं। आयत में पाखण्डियों के एक अन्य अत्यन्त कुरूप कर्म का वर्णन है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम युद्ध आदि के अवसर पर मुसलमानों से चन्दे के लिए अपील करते तो मुसलमान आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अपील पर अपने सामर्थ्य के अनुसार उसमें भाग लेते। किसी के पास अधिक माल होता, वह अधिक दान देता, जिसके पास थोड़ा होता, वह थोड़ा देता। पाखण्डी दोनों प्रकार के मुसलमानों की आलोचना करते। अधिक देने वालों के विषय में कहते कि यह दिखावा है तथा अभिमान है तथा थोड़ा देने वालों को कहते कि तेरे इस माल से क्या बनेगा? अथवा अल्लाह तआला तेरे इस दान से निस्पृह है। (सहीह बुख़ारी-१४१५ तथा मुस्लिम-७०६) इस प्रकार वे मुसलमानों का मज़ाक़ उड़ाते।

[3]अर्थात ईमानवालों से उपहास करने का प्रतिफल उन्हें इस प्रकार देता है कि उन्हें अपमानित तथा निरादर करता है। यह साहित्य शास्त्र का नियम है कि किसी अर्थ के लिये वही शब्द प्रयोग कर दिया जाता है जो पहले आया हो इस विधि को अरबी भाषा

The Ummah Technology Mission

إِسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ط إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ط ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ط وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٨٠﴾

(८०) आप इनके लिए क्षमा-याचना करें अथवा न करो। यदि आप सत्तर बार भी इनके लिए क्षमा-याचना करें तो भी अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा नहीं करेगा।[1] ये इसलिए कि उन्होंने अल्लाह तथा उसके रसूल के प्रति कुफ़्र किया है।[2] और ऐसे भ्रष्टाचारियों को कृपालु अल्लाह मार्गदर्शन नहीं देता।[3]

فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا أَنْ يُّجَاهِدُوْا

(८१) पीछे रह जाने वाले लोग रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विरुद्ध अपने

में "मुशाकलत" कहा जाता है, जैसे यहाँ उपहास के प्रतिफल के लिये उपहास (इस्तेहज़ा) का शब्द प्रयोग कर दिया गया है। अथवा यह शाप है अल्लाह तआला उनसे भी इसी प्रकार उपहास करेगा। जिस प्रकार ये मुसलमानों के साथ उपहास करते हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[1]सत्तर की संख्या अतिश्योक्ति तथा अधिकता के लिए है, कि चाहे जितना अधिक उन की दोष मुक्ति के लिए विनती करें, अल्लाह तआला उनको कदापि क्षमा नहीं करेगा। यह अर्थ नहीं कि यदि सत्तर से अधिक बार दोष मुक्ति के लिए विनय की गयी तो उनको क्षमा कर दिया जायेगा।

[2]यह क्षमा से वंचित करने का कारण बता दिया गया है, ताकि लोग किसी की सिफ़ारिश की आशा में न रहें वरन् ईमान तथा पुण्य कर्म की दौलत लेकर अल्लाह के सदन में उपस्थित हों। यदि प्रलय सामग्री किसी के पास नहीं होगी तो ऐसे नास्तिकों तथा अवज्ञाकारियों की कोई सिफ़ारिश भी नहीं करेगा, इसलिए कि अल्लाह तआला ऐसे लोगों के लिए सिफ़ारिश की आज्ञा ही प्रदान नहीं करेगा।

[3]इस मार्गदर्शन से तात्पर्य वह मार्गदर्शन है, जो मनुष्य को लक्ष्य (ईमान) तक पहुँचा देता है अन्यथा मार्गदर्शन का वास्तविक अर्थ मार्ग दिखा देना है। इसका प्रबन्ध तो संसार में प्रत्येक मुसलमान तथा काफ़िर के लिए कर दिया गया है

﴿إِنَّا هَدَيْنَٰهُ ٱلسَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا﴾

"तथा हमने उस (मानवगण को) संमार्ग दिखा दिया है या तो कृतज्ञ हो अथवा कृतघ्न बने।" (सूरः अल-दहर)

﴿وَهَدَيْنَٰهُ ٱلنَّجْدَيْنِ﴾

"हमने उस (मानव) को (भलाई, बुराई) के दोनों मार्ग दिखा दिये हैं।" (सूरः अल-बलद-१०)

The Ummah Technology Mission

بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ ۭ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ۭ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ۝۸۱

बैठे रह जाने पर प्रसन्न हैं।[1] उन्होंने अल्लाह के मार्ग में अपने धन तथा अपने प्राण से धर्मयुद्ध करना अप्रिय रखा तथा उन्होंने कह दिया कि इस गरमी में न निकलो। कह दीजिए कि नरक की अग्नि अत्यधिक गरम है, काश कि वे समझते होते।[2]

فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ جَزَاۗءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝۸۲

(८२) अत: उन्हें चाहिए कि बहुत कम हँसें तथा अधिक रोयें,[3] बदले में उसके जो ये करते थे।

فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَاۗىِٕفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِيَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ۭ

(८३) तो यदि अल्लाह तआला आप को उनके किसी गुट[4] कि ओर लौटा कर वापस ले आये फिर ये आप से युद्ध के मैदान में निकलने की आज्ञा माँगें,[5] तो आप कह दीजिए कि तुम मेरे साथ कदापि नहीं चल सकते तथा न मेरे

---

[1]यह उन द्वयवादियों की चर्चा है जो तबूक में नहीं गये थे तथा झूठे कारण बता कर रुकने की अनुमति ले ली। خِلاف का अर्थ है, पीछे अथवा विरोध अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जाने के पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे अथवा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरोध में मदीना मे बैठे रहे।

[2]अर्थात यदि इनको ज्ञात होता कि नरक की अग्नि कि गर्मी के समक्ष दुनिया की गर्मी कोई महत्व नहीं रखती, तो वे कभी भी पीछे न रहते। हदीस में वर्णित है कि दुनिया की यह अग्नि नरक की अग्नि का ७०वाँ भाग है। अर्थात नरक की अग्नि की गर्मी संसार की अग्नि की गर्मी से ६९ गुणा अधिक है। (सहीह बुख़ारी, बदउल ख़ल्क) اللهم احفظنا منها

[3]अर्थ यह है कि ये हँसेंगे थोड़ा तथा रोयेंगे अधिक।

[4]इससे तात्पर्य द्वयवादियों का गुट है। अर्थात यदि अल्लाह तआला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तबूक से मदीने वापस ले आये, जहाँ ये पीछे रह जाने वाले मुनाफ़िक़ीन भी हैं।

[5]अर्थात किसी अन्य युद्ध के लिए, साथ जाने के लिए इच्छा व्यक्त करें।

The Ummah Technology Mission

إِنَّكُمْ رَضِيتُم بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ الْخَالِفِينَ ﴿٨٣﴾

साथ शत्रु से लड़ाई कर सकते हो। तुमने प्रथम बार ही बैठे रहने को प्रिय समझा था,[1] तो तुम पीछे रह जाने वालों में ही बैठे रहो।[2]

وَلَا تُصَلِّ عَلَىٰٓ أَحَدٍ مِّنْهُم مَّاتَ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَىٰ قَبْرِهِۦٓ ۖ إِنَّهُمْ

(८४) तथा इनमें से कोई मर जाये तो उसकी अर्थी पर नमाज़ आप कदापि न पढ़ें तथा न उसकी क़ब्र (समाधि) पर खड़े हों।[3] यह

---

[1]ये भविष्य में साथ न ले जाने का कारण है कि तुम प्रथम बार साथ नहीं गये, अतः अब तुम इस योग्य नहीं कि तुम्हें किसी युद्ध में साथ ले जाया जाये।

[2]अर्थात अब तुम्हारी दशा यही है कि तुम स्त्रियों, बच्चों तथा वृद्धों के साथ बैठे रहो, जो युद्ध करने के बजाय घर में ही बैठे रहते हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह निर्देश इसलिए दिया गया है ताकि उनके उस दुख तथा क्षोभ एवं पश्चाताप में और तीव्रता आये, जो उन्हें पीछे रह जाने के कारण से था। (यदि था)

[3]यह आयत यद्यपि द्वयवादियों के प्रमुख अब्दुल्लाह बिन उबैय के विषय में उतरी है। परन्तु इसका आदेश सामान्य है। प्रत्येक व्यक्ति जिसकी मृत्यु कुफ़्र तथा द्वयवाद की स्थिति में हुई हो, वह उसमें सम्मिलित है।इसके उतरने का कारण यह है कि अब्दुल्लाह बिन उबैय की मृत्यु हुई, तो उसके पुत्र अब्दुल्लाह (जो मुसलमान तथा अपने पिता के समनाम थे) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तथा कहा कि एक तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (प्रसाद स्वरूप) अपनी कमीज़ प्रदान कर दें ताकि इसमें मैं अपने पिता का कफ़न (शव वस्त्र) बना दूँ। दूसरे यह कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ा दें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कमीज़ प्रदान की तथा नमाज पढ़ाने के लिए भी गये। आदरणीय उमर (رضي الله عنه) ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ऐसे लोगों की नमाज़ पढ़ाने से रोका है, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस के पक्ष में दोष मुक्ति की प्रार्थना क्यों करते हैं ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने मुझे अधिकार दिया है अर्थात रोका नहीं है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि यदि तू सत्तर बार भी उनके दोष मुक्ति के लिए प्रार्थना करेगा तो अल्लाह तआला उन्हें क्षमा न करेगा, तो मैं उनके लिए सत्तर बार से अधिक दोष मुक्ति की प्रार्थना कर लूँगा।" अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ा दी जिस पर अल्लाह तआला ने यह आयत उतार कर भविष्य में मुनाफ़िक़ों के पक्ष में दोष मुक्ति की प्रार्थना पूर्णतः निषेध

The Ummah Technology Mission

رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨٧﴾

(८७) यह तो घर में रहने वाली स्त्रियों का साथ देने पर रीझ गये तथा उनके दिलों पर मुहर लगा दी गयी अब वह कुछ समझ-बूझ नहीं रखते।[1]

لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨٨﴾

(८८) परन्तु स्वयं रसूल (ईशदूत) तथा उसके साथ के ईमानवाले अपने धनों एवं प्राणों से धर्मयुद्ध (जिहाद) करते हैं, उन्हीं के लिए भलाई है तथा यही लोग सफलता पाने वाले हैं।

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾

(८९) इन्हीं के लिए अल्लाह (तआला) ने वह स्वर्ग तैयार कीं हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जिनमें वह नित्यवासी होंगे। यही बहुत बड़ी सफलता है।[2]

وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ

(९०) गँवारों में से बहाना बनाने वाले लोग उपस्थित हुए कि उन्हें अनुमति दी जाये तथा वह बैठे रहें जिन्होंने अल्लाह से तथा उसके

चाहिए था, क्योंकि उनके पास अल्लाह का प्रदान किया हुआ सभी कुछ था। قاعدين का तात्पर्य कुछ मजबूरी के कारण घर में बैठे रहने वाले आदि हैं, जैसाकि अगली आयत में उनको خوالف से तुलना किया गया है, जो خالفة का बहुवचन है अर्थात "पीछे रहने वाली स्त्रियाँ।"

[1]दिलों पर मोहर (मुद्रा) लग जाना, यह निरन्तर पाप करने के कारण होता है जिसका स्पष्टीकरण पहले किया जा चुका है, इसके उपरान्त मनुष्य सोचने-समझने की शक्ति से वंचित हो जाता है।

[2]उन पाखण्डियों के विपरीत ईमानवालों का व्यवहार यह है कि वह अपने तन-मन-धन से अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध करते हैं, अल्लाह के मार्ग में उन्हें अपने प्राणों की चिन्ता भी नहीं है तथा न धन की। उनके निकट अल्लाह का आदेश सर्वोपरि है उन्हीं के लिए भलाई है अर्थात परलोक की भलाई तथा स्वर्ग का सुख। तथा कुछ के निकट लोक-परलोक दोनों स्थानों का लाभ, तथा यही लोग सफल तथा उच्च पदों पर आसीन होने के योग्य होंगे।

The Ummah Technology Mission

سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾

रसूल से झूठी बातें बनायीं थीं। अब तो उनमें जितने भी काफ़िर है उन्हें दुखदायी यातना पहुँच कर रहेगी।[1]

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩١﴾

(९१) निर्बलों एवं रोगियों पर तथा उन पर जो ख़र्च करने को कुछ नहीं पाते कोई दोष नहीं जब तक वह अल्लाह तथा उसके रसूल (दूत) के हितैषी हों। ऐसे पुण्यकारों पर कोई मार्ग नहीं तथा अल्लाह क्षमावान दयालु है।[2]

---

[1]इन مُعذّرين के विषय में व्याख्याकारों में मतभेद है। कुछ के निकट नगर से दूर रहने वाले वह ग्रामीण थे जिन्होंने झूठे कारण बता कर आज्ञा प्राप्त कर ली थी। दूसरे उनमें वे भी थे जिन्होंने आकर कारण बताना भी उचित न समझा तथा बैठे रहे। इस प्रकार इस आयत में पाखण्डियों के दो गुटों का वर्णन है। مِنهُم से झूठे कारण प्रस्तुत करने वाले तथा बैठे रह जाने वाले दोनों ही गुटों का वर्णन है अन्य व्याख्याकारों ने معذّرون से तात्पर्य ऐसे ग्रामीण मुसलमान लिए हैं, जिन्होंने उचित कारण प्रस्तुत करके आज्ञा प्राप्त की थी। और معذّرون उनके निकट वास्तव में مُعتذرون हैं। अरबी का अक्षर 'त' को अक्षर ज़ाल में संधि कर दी गई है। तथा معتذر का अर्थ है, वास्तविक कारण रखने वाले। इस आधार पर आयत के अगले वाक्य में पाखण्डियों का वर्णन है। तथा आयत में दो गुटों का वर्णन है पहले वाक्य में उन मुसलमानों का जिनके पास वास्तव में कारण थे तथा दूसरे पाखण्डी, जो बिना कारण बताये बैठे रहे तथा आयत के अन्त में जो चेतावनी है, इसी दूसरे गुट के लिए है। واللہ أعلم

[2]इस आयत में उन लोगों का वर्णन है जो वास्तव में विवश थे तथा उनका कारण भी स्पष्ट था। जैसाकि १. निर्बल तथा कमज़ोर अर्थात बूढ़े तथा अंधे अथवा लंगड़े आदि मजबूर इसी परिधि में आते हैं। कुछ ने उनको रोगियों में सम्मिलित किया है २. रोगी ३. जिनके पास धर्मयुद्ध के ख़र्च उठाने की शक्ति नहीं थी तथा बैतुल माल (धार्मिक कोष) में भी उनके खर्च उठाने की शक्ति न थी। अल्लाह तथा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हित से तात्पर्य है, धर्मयुद्ध की उनके दिलों में तड़प, मुजाहिदीन (धर्मयुद्ध के सैनिको) से प्रेम रखते हैं तथा अल्लाह एवं उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों का पालन करते हैं। ऐसे मोहसिनीन (परोपकारी) यदि धर्मयुद्ध में सम्मिलित होने के अयोग्य हों तो उन पर कोई पाप नहीं।

The Ummah Technology Mission

وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۖ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿٩٢﴾

(९२) तथा न उन पर जो आप के पास आते हैं कि आप उन्हें सवारी का प्रबन्ध कर दें तो आप उत्तर देते हैं कि मैं तुम्हारे वाहन के लिये कुछ नहीं पाता तो वह दुःख से अश्रु बहाते लौट जाते हैं कि उन्हें ख़र्च करने के लिए कुछ भी प्राप्त नहीं।[1]

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

(९३) निश्चय उन पर मार्ग (इल्ज़ाम) है जो धनी रह कर भी आप से अनुमती माँगते हैं। यह नारियों के साथ रह जाने पर प्रसन्न हैं एवं अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है जिस के कारण वह अज्ञान हो गये हैं।[2]

---

[1]यह मुसलमानों के एक गुट का वर्णन है, जिनके पास अपनी सवारियाँ भी नहीं थीं तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी उन्हें सवारियाँ उपलब्ध कराने में असमर्थता व्यक्त की जिस पर उन्हें इतना दुख हुआ कि आँखों से आँसू निकल पड़े। رضي الله عنهم अर्थात निःस्वार्थी मुसलमान, जो किसी भी प्रकार से उचित कारण रखते थे। अल्लाह तआला ने जो प्रत्येक प्रत्यक्ष तथा छिपी बातों का जानने वाला है, उनको धर्मयुद्ध में सम्मिलित होने से अलग कर दिया। बल्कि हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन असमर्थ लोगों के विषय में धर्मयुद्ध में सम्मिलित होने वाले लोगों से फ़रमाया कि, "तुम्हारे पीछे मदीने में कुछ लोग ऐसे भी हैं कि तुम जिस घाटी को तय करते हो, तथा जिस मार्ग पर चलते हो, तुम्हारे साथ वह बदला पाने में समान रूप से सम्मिलित हैं।" सहाबा कराम ने पूछा, यह किस प्रकार हो सकता है, जब कि वे मदीने में बैठे हैं ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया «حَبَسَهُمُ الْعُذْرُ». "कारण ने उन्हें वहाँ रोक दिया है।" (सहीह बुख़ारी जिहाद तथा सहीह मुस्लिम संख्या-१५१८)

[2]ये पाखण्डी हैं जिनका वर्णन आयत संख्या ८६ तथा ८७ में गुजर चुका है। यहाँ पुनः उनका वर्णन निःस्वार्थ मुसलमानों की तुलना में हुआ है। خوالف बहुवचन خالفة का है (पीछे रहने वाली) तात्पर्य स्त्रियाँ, बच्चे, असमर्थ तथा अत्यधिक रोग से पीड़ित एवं वृद्ध हैं, जो युद्ध में सम्मिलित होने से असमर्थ हैं। لا يعلمون का अर्थ है वे नहीं जानते कि पीछे रहना कितना बड़ा अपराध है, वरन् संभवतः वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पीछे न रहते।

The Ummah Technology Mission

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ؕ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٤﴾

(९४) वे तुमसे बहाने बनायेंगे जब तुम उनके पास जाओगे, (हे नबी) कह दो कि बहाने न बनाओ, हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे अल्लाह ने हमें तुम्हारे (करतूतों) से सूचित कर दिया है, तथा अल्लाह एवं उसके रसूल (संदेशवाहक) तुम्हारे कर्म देख लेंगे फिर तुम परोक्ष एवं प्रत्यक्ष के जानकार के पास लौटाये जाओगे फिर वह तुम्हें सूचित कर देगा जो तुम कर रहे थे।

سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ اِنَّهُمْ رِجْسٌ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٥﴾

(९५) हाँ वह तुम्हारे समक्ष अल्लाह की शपथ ले लेंगे जब तुम उनके पास वापस जाओगे ताकि तुम उनको उनकी दशा पर छोड़ दो, अतः तुम उन्हें उनकी स्थिति पर छोड़ दो, वस्तुतः वह अत्यन्त अपवित्र हैं तथा उनका स्थान नरक है उनके करतूतों के बदले जो किया करते थे।

يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٩٦﴾

(९६) यह तुम्हारे निकट इसलिये शपथ लेंगे कि तुम उनसे प्रसन्न हो जाओ तो यदि तुम उनसे प्रसन्न हो भी जाओ तो अल्लाह ऐसे दुराचारियों से प्रसन्न नहीं होता।[1]

---

[1]इन तीन आयतों में उन द्वयवादियों (मुनाफ़िकों) का वर्णन है जो तबूक के युद्ध के समय मुसलमानों के साथ नहीं गये थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा मुसलमानों के सुरक्षित वापस आने पर अपने बहाने प्रस्तुत करके उनकी दृष्टि में वफ़ादार बनना चाहते थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया जब तुम उनके पास आओगे तो यह बहाने बनायेंगे। उनसे कह दो कि मेरे समक्ष कारण बताने की आवश्यकता नहीं है, इसलिए कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी वास्तविक स्थिति से हमें सूचित कर दिया है। अब तुम्हारे झूठे बहानों पर हम विश्वास किस प्रकार कर सकते हैं? परन्तु उन बहानों की वास्तविकता निकट भविष्य में खुल जायेगी, तुम्हारे कर्म से जिसे अल्लाह तआला देख रहा है तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भी दृष्टि उस पर है तुम्हारे कारणों

The Ummah Technology Mission

اَلۡاَعۡرَابُ اَشَدُّ كُفۡرًا وَّنِفَاقًا وَّاَجۡدَرُ اَلَّا يَعۡلَمُوۡا حُدُوۡدَ مَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوۡلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ﴿۹۷﴾

(९७) असभ्य ग्रामीण लोग कुफ़्र तथा उन्माद में बहुत ही कठोर हैं,[1] तथा उनको ऐसा होना ही चाहिए कि उनको इन आदेशों का ज्ञान न हो, जो अल्लाह ने अपने रसूल पर

का स्वंय पर्दा उठ जायेगा। तथा यदि तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा मुसलमानों को फिर भी धोखा तथा छल देने में सफल हो गये तो अन्त में वह एक समय तो आयेगा ही, जब तुम ऐसी शक्ति के दरबार में उपस्थित किये जाओगे जो छिपी और स्पष्ट सभी बातों को जानने वाला है। उसे तो तुम कदापि धोखा नहीं दे सकते वह अल्लाह तआला तुम्हारे सभी कच्चे-चिट्ठे को तुम्हारे सामने खोलकर रख देगा। दूसरी आयत में फ़रमाया कि तुम्हारे लौटने पर सौगन्ध खायेंगे ताकि तुम उन्हें क्षमा कर दो। परन्तु तुम उन को उनके हाल पर छोड़ दो। ये लोग अपने विश्वास तथा कर्म के अनुसार अशुद्ध हैं, उन्होंने जोकुछ किया है इसका बदला नरक ही है। तीसरी आयत में फ़रमाया कि ये तुम्हें प्रसन्न करने के लिये सौगन्ध खायेंगे। परन्तु इन मूर्खों को यह नहीं ज्ञात है कि यदि तुम इन से प्रसन्न भी हो जाओ, तो उन्होंने जिस फिस्क अर्थात अल्लाह की आज्ञा पालन से मुँह मोड़कर भागने का मार्ग अपनाया है, उसके कारण अल्लाह तआला उनसे किस प्रकार प्रसन्न हो सकता है ?

[1]उपरोक्त आयतों में उन द्वयवादियों का वर्णन था जो मदीना नगर के निवासी थे तथा कुछ पाखण्डी वे भी थे, जो मदीना नगर के निकटवर्ती गाँवों के निवासी थे। उसे अरबी भाषा में أعراب कहा जाता है जो أعرابي का बहुबचन है। नगरवासियों के व्यवहार एवं चरित्र की अपेक्षा जिस प्रकार उनमें अभद्रता तथा कठोरता पायी जाती थी उसी प्रकार उनमें जो काफिर तथा पाखण्डी थे वह कुफ्र तथा पाखण्ड में नगरवासियों से अधिक कठोर तथा धार्मिक आदेशों से अधिक अनभिज्ञ थे। इस आयत में उन्हीं का वर्णन तथा उनके इसी व्यवहार का स्पष्टीकरण है। कुछ हदीसों से भी उनके व्यवहार पर प्रकाश पड़ता है। जैसे एक समय कुछ अरब ग्रामीण लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तथा उन्होंनें पूछा (أَتُقَبِّلُونَ صِبْيَانَكُمْ) 'क्या तुम अपने बच्चों का चुम्बन करते हो ?" सहाबा ने कहा "हाँ" उन्होंने कहा, "अल्लाह की सौगन्ध हम तो चुम्बन नहीं करते" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सुनकर फ़रमाया "यदि अल्लाह ने तुम्हारे दिलों से प्रेम तथा दया की भावना निकाल दिया है, तो उसमें मेरा क्या अधिकार ?" (सहीह बुखारी किताबुल अदब बाब रहमतुल वलदे व तकबीलुहु व मुआनकतहू, सहीह मुस्लिम किताबुल फ़ज़ायल बाब रहमतुहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अस्सिबयान वल अयाल)।

The Ummah Technology Mission

उतारे हैं [1] तथा अल्लाह अत्यधिक ज्ञान वाला अत्यधिक विवेक वाला है।

وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٩٨﴾

(९८) तथा उन ग्रामीणों में से कुछ ऐसे हैं[2] कि जो कुछ ख़र्च करते हैं उसको दण्ड समझते हैं।[3] तथा तुम (मुसलमानों) के लिये बुरे दिन की प्रतीक्षा में रहते हैं।[4] बुरा समय उन पर ही पड़नें वाला है,[5] तथा अल्लाह सुननेवाला तथा जाननेवाला है।

وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ؕ اَلَاۤ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ سَيُدْخِلُهُمُ

(९९) तथा कुछ ग्रामीणों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर तथा क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हैं तथा जो कुछ ख़र्च करते हैं उसको अल्लाह की निकटता तथा रसूल का आशीर्वाद प्राप्त करने का साधन बनाते हैं।[6] याद रखो

---

[1] इसका कारण यह है कि चूँकि वे नगर से दूर रहते हैं तथा अल्लाह तथा रसूल की बातें सुनने का अवसर उनको नहीं मिलता।

[2] अब इन ग्रामीणों के दो प्रकार बताये जा रहे हैं। यह प्रथम प्रकार है।

[3] غُرْمٌ आर्थिक दण्ड को कहते हैं अर्थात ऐसा व्यय जो अप्रसन्नता के साथ बाध्य होकर किया जाये।

[4] دائرةٌ का बहुबचन دَوائرٌ है। सांसारिक घटनाचक्र अर्थात कठिनाईयाँ तथा कष्ट। अर्थात वे प्रतीक्षा में रहते हैं कि मुसलमान सांसारिक घटनाचक्र की कठिनाइयों तथा दुखों के शिकार हों।

[5] यह श्राप अर्थात विधेय है कि सांसारिक घटनाचक्र की कठिनाइयाँ तथा दुख उन्हीं पर पड़े क्योंकि वही इस के योग्य हैं।

[6] ये अरब ग्रामीणों का दूसरा प्रकार है जिनको अल्लाह ने शहरी क्षेत्र से दूर रहने के उपरान्त, अल्लाह तथा अख़िरत के दिन पर ईमान लाने का सौभाग्य प्रदान किया। तथा इस ईमान के कारण उनसे वह गँवारपन भी दूर कर दिया जो ग्रामीण जीवन के कारण ग्रामीणों में सामान्य रूप से पाया जाता है। अतः वह अल्लाह के मार्ग में खर्च हुए माल को दण्ड समझने के बजाय अल्लाह की निकटता तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

The Ummah Technology Mission

اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٩﴾

कि उनका यह ख़र्च करना निस्सन्देह उनके लिए निकटता का साधन है, उनको अल्लाह अवश्य अपनी कृपा में प्रवेश देगा।[1] अल्लाह तआला अति क्षमाशील कृपानिधि है।

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ

(१००) तथा जो मोहाजिर (मक्का से मदीना आये हुए लोग) तथा अंसार (मदीना के मूल निवासी) आदिम तथा प्रथम हैं तथा जितनें लोग निःस्वार्थ रूप से उन के अनुयायी हैं,[2]

वसल्लम का आशीर्वाद लेने का साधन समझते हैं। यह संकेत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस व्यवहार की ओर जो दान देने वालों के लिये आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का था। अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके पक्ष में पुण्य प्रदान के लिये अल्लाह से प्रार्थना करते। जिस प्रकार हदीस में आता है कि एक दान लाने वाले के लिये आपने प्रार्थना की। «اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ آلِ أَبِيْ أَوفَىٰ» (सहीह बुख़ारी संख्या ४१६६, सहीह मुस्लिम संख्या ७५६) "ऐ अल्लाह ! अबी औफा की संतान पर दया कर।"

[1]यह शुभ सूचना है कि अल्लाह की निकटता उन्हें प्राप्त है तथा अल्लाह की कृपा के वे पात्र हैं।

[2]इसमें तीन गुटों का वर्णन है। एक मोहाजिरों का, जिन्होंने धर्म के लिये अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश पर मक्का तथा अन्य क्षेत्रों से स्थानान्तरण किया तथा सब कुछ छोड़-छाड़ कर मदीना आ गये। दूसरे अंसार जो मदीना के निवासी थे। उन्होंने प्रत्येक अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सहायता तथा सुरक्षा की तथा मदीने आने वाले मोहाजिरों की भी अत्यधिक सहायता तथा सम्मान किया। तथा अपना सब कुछ उनकी सेवा में प्रस्तुत कर दिया। यहाँ दोनों गुटों के पहल करने वालों का वर्णन है, अर्थात दोनों गुटों में जो इस्लाम धर्म स्वीकार करने में सबसे प्रथम रहे। इसकी परिभाषा में मतभेद है। कुछ के निकट प्रथम पहल करने वाले वे हैं जिन्होंने दोनों किबलों की ओर मुख करके नमाज़ पढ़ी अर्थात क़िबला परिवर्तन के पूर्व मुसलमान होने वाले मोहाजिर तथा अंसार। कुछ के निकट वे सहाबी हैं जो हुदैबिया में बैअते रिज़वान में उपस्थित थे। कुछ के निकट बद्र के युद्ध वाले हैं। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं ये सारे ही हो सकते हैं। तीसरा गुट वह है जो इन मोहाजिरों तथा अंसार के सदव्यवहार तथा उपकार के साथ अनुयायी हैं। इस गुट से तात्पर्य कुछ के निकट परिभाषित ताबईन हैं जिन्होने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

The Ummah Technology Mission

عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝١٠٠

अल्लाह उन सभी से प्रसन्न हुआ तथा वे सब अल्लाह से प्रसन्न हुए तथा अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ का प्रबन्ध कर रखा है जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जिनमें वे सदैव रहेंगे,[1] यह बड़ी सफलता है।

وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۛ وَمِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ۛ مَرَدُوْا عَلَي النِّفَاقِ ۡ لَا تَعْلَمُهُمْ ۭ

(१०१) तथा कुछ तुम्हारे आसपास के ग्रामीणों में से एवं मदीना के निवासियों में ऐसे अवसरवादी हैं जो द्वयवाद पर अड़े हुए हैं,[2]

वसल्लम को नहीं देखा परन्तु उन्हें सहाबा की निकटता एवं साथ्यता का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा कुछ के निकट इससे तात्पर्य सामान्य मुसलमान हैं अर्थात क़ियामत तक जितने भी अंसार तथा मोहाजिर से प्रेम रखने वाले तथा उनके पदचिन्हों पर चलने वाले मुसलमान हैं, वे उसमें सम्मिलित हैं। इसमें परिभाषित ताबईन भी सम्मिलित हो जाते हैं।

[1]अल्लाह तआला उनसे प्रसन्न हो गया का अर्थ है अल्लाह तआला ने उनके पुण्य स्वीकार कर लिये, उनके मनुष्य होने के कारण जो त्रुटियाँ हुईं क्षमा कर दिया तथा वह उनपर क्रोधित नहीं। क्योंकि यदि ऐसा न होता तो उनके लिये स्वर्ग के सुखों की शुभ सूचना क्यों दी जाती ? जो इसी आयत में दी गयी है। इससे यह भी ज्ञात हुआ कि अल्लाह की प्रसन्नता सामयिक अथवा अस्थाई नहीं, अपितु स्थाई है। यदि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात सहाबा कराम को धर्मभ्रष्ट हो जाना था। (जैसा कि एक झूठे गुट का विश्वाश है) तो अल्लाह तआला उन्हें स्वर्ग के सुखों की शुभ सूचना से सम्मानित न करता। इससे यह भी ज्ञात हुआ कि जब अल्लाह ने उनकी सारी त्रुटियाँ क्षमा कर दीं तो अब आलोचना तथा टिप्पणी के रूप में उनकी कमियों का वर्णन करना किसी मुसलमान को शोभा नहीं देता। इसके अतिरिक्त यह भी ज्ञात हुआ कि उनका प्रेम तथा अनुकरण अल्लाह की प्रसन्नता का साधन है तथा उनसे द्वेष तथा वैर एवं ईर्ष्या रखना अल्लाह की प्रसन्नता से वंचित होने का कारण है।

[2] مَـرَدَ तथा تَمرَّد का अर्थ है कोमलता, चिकनाहट तथा नंगा। अत: उस शाखा को जिसमें पत्ता न हो। जिस घोड़े के बाल न हों, जिस लड़के के मुख पर बाल न हों, इन सबको أمرد कहा जाता है तथा शीशे को صَرْحٌ مُمَرَّدٌ أي مجردٌ कहा जाता है। مرد وا على النفاق का अर्थ होगा تجردوا على النفاق जैसाकि उन्होंने द्वयवाद के लिये अपने आपको शुद्ध रूप से अर्पित कर दिया है अर्थात इस पर उनका प्रबल तथा निरन्तर कार्य करना है।

The Ummah Technology Mission

نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ۚ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ۚ ﴿١٠١﴾

आप उनको नहीं जानते।[1] उनको हम जानते हैं हम उन को दोहरा दण्ड देंगे।[2] फिर वे बहुत बड़ी यातना की ओर भेजे जायेंगे।

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠٢﴾

(१०२) तथा कुछ अन्य लोग हैं जो अपनी त्रुटियों को स्वीकार करते हैं,[3] जिन्होंने मिश्रित कर्म किये थे। कुछ अच्छे तथा कुछ बुरे।[4] अल्लाह से आशा है कि उन की क्षमा स्वीकार करे।[5] निःसंदेह अल्लाह अत्यधिक क्षमाशील एवं अत्यधिक कृपालु है।

خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ؕ

(१०३) आप उनके मालों में से दान ले लीजिये, जिसके द्वारा आप उनको शुद्ध एवं पवित्र कर दें तथा उनके लिए प्रार्थना कीजिए।[6] निःसन्देह

---

[1]कितने स्पष्ट शब्दों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के परोक्षज्ञ होने का खण्डन है। काश अहले बिदअत (धर्म में अधुनीकीकरण करने वाले) को क़ुरआन समझने का सौभाग्य प्राप्त हो।

[2]इससे तात्पर्य कुछ के निकट दुनिया का अपमान तथा निरादर तथा फिर आख़िरत की यातना है तथा कुछ के निकट दुनिया में ही दोहरा दण्ड है।

[3]ये वे निःस्वार्थी मुसलमान हैं जो बिना कारण के मात्र आलस्य के कारण तबूक में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नहीं गये तथा बाद में उन्हें अपनी त्रुटि का आभास हो गया तथा पाप को स्वीकार कर लिया।

[4]भले से तात्पर्य वह पुण्य कार्य हैं जो धर्मयुद्ध में पीछे रह जाने के पूर्व वे करते रहे हैं, जिनमें विभिन्न धर्मयुद्ध में सम्मिलित होना भी है तथा कुछ "बुरे" से तात्पर्य यही तबूक के अवसर पर उनका पीछे रहना है।

[5]अल्लाह तआला की ओर से आशा विश्वास का लाभ प्रदान करती है अर्थात अल्लाह तआला ने उनकी ओर आकर्षित होकर उनके पाप स्वीकार करने को तौबा के समतुल्य मानकर उन्हें क्षमा कर दिया।

[6]यह सामान्य आदेश है। दान से तात्पर्य अनिर्वाय दान अर्थात ज़कात भी हो सकती है तथा ऐच्छिक दान भी है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित किया जा रहा

The Ummah Technology Mission

إِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ۗ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٠٣﴾

आपकी प्रार्थना उनके लिए शान्ति संतोष का साधन है तथा अल्लाह (तआला) भली प्रकार सुनता है, भली-भाँति जानता है।

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾

(१०४) क्या उनको यह ज्ञान नहीं कि अल्लाह ही अपने भक्तों की क्षमा (तौबा) स्वीकार करता है तथा वही दान को अंगीकार करता है।[1] तथा यह कि अल्लाह ही तौबा स्वीकार करनें में तथा कृपा करने में परिपूर्ण है।

وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۗ وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ

(१०५) तथा कह दीजिए कि तुम कर्म किये जाओ तुम्हारे कर्म अल्लाह स्वयं देख लेगा तथा उसका रसूल तथा ईमानवाले (भी देख लेंगे) तथा अवश्य तुमको ऐसे के पास जाना

कि उसके द्वारा आप मुसलमानों को शुद्धि तथा उनके मन को पवित्र करें। जिससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ज़कात तथा सामान्य दान मनुष्य के मन तथा धन की स्वच्छता तथा पवित्रता का साधन है। इसके अतिरिक्त अरबी भाषा में दान को "सदक़ा" इसलिए कहा जाता है कि यह देने वाले के ईमान की सदाक़त अर्थात सादिक़ (सच्चा) होने पर प्रमाण है। दूसरी बात यह ज्ञात हुई कि सदक़ा लेने वाले को दान देने वाले के पक्ष में शुभ की प्रार्थना करनी चाहिए। जिस प्रकार यहाँ पर अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रार्थना करने का आदेश दिया है। तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके अनुसार प्रार्थना करते थे। इस आदेश के अनुसार सामान्य रूप से यह निष्कर्ष भी निकाला गया है कि ज़कात वसूल करने का अधिकार उस समय के इमाम को है। यदि कोई इससे इंकार करे तो आदरणीय अबू बक़्र सिद्दीक़ तथा सहाबा कराम के कर्मों के अनुसार एवं प्रकाश में उसके विरूद्ध धर्मयुद्ध आवश्यक है। (इब्ने कसीर)

[1]दान स्वीकार करता है का अर्थ (यदि वह उचित कमायी से हो) यह है कि उसे बढ़ाता है। जिस प्रकार हदीस में आया है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "अल्लाह तआला तुम्हारे दान की इस प्रकार पालन-पोषण करता है जिस प्रकार तुम में से कोई व्यक्ति अपने घोड़े के बच्चे का पालन-पोषण करता है, यहाँ तक कि एक खजूर के समान दान (बढ़-बढ़कर) ओहुद पर्वत के समान हो जाता है।" (सहीह बुख़ारी किताबुज़ जकात, तथा मुस्लिम किताबुज़ ज़कात)

The Ummah Technology Mission

فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾

लेंगे) तथा अवश्य तुमको ऐसे के पास जाना है जो सभी छिपी तथा खुली बातों का जानने वाला है। अतः वह तुमको तुम्हारे सब किये हुए को बतला देगा।[1]

وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠٦﴾

(१०६) तथा कुछ अन्य लोग हैं जिनका मामला अल्लाह के आदेश आने तक स्थगित है।[2] या तो उन को दण्ड देगा[3] अथवा उन की तौबा (पश्चाताप) स्वीकार कर लेगा।[4] तथा अल्लाह अत्यधिक जानने वाला है अत्यधिक विवेकी है।

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَيَحْلِفُنَّ

(१०७) तथा कुछ ऐसे हैं जिन्होंने इन उद्देश्यों से मस्जिद बनायी है कि हानि पहुँचायें तथा कुफ़्र अर्धम की बातें करें तथा ईमानवालों में फूट डालें तथा उस व्यक्ति के ठहरने का प्रबन्ध करें जो इसके पूर्व से अल्लाह तथा

---

[1]देखने से तात्पर्य देखना एवं ज्ञान है। अर्थात तुम्हारे करतूतों को अल्लाह तआला ही नहीं देखता, अपितु उनका ज्ञान अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा मुसलमानों को भी (वह्यी के द्वारा) हो जाता है। (यह पाखण्डियों ही के विषय में कहा जा रहा है) इस विषय पर आयत पूर्व में भी गुज़र चुकी है। यहाँ ईमान वालों को भी सम्मिलित कर लिया गया है, जिनको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बताने से ज्ञान हो जाता है।

[2]तबूक के युद्ध में पीछे रह जाने वालों में एक तो पाखण्डी लोग थे, दूसरे वे जो अकारण ही पीछे रह गये थे। तथा उन्होंने अपनी त्रुटि को स्वीकार कर लिया था, परन्तु उन्हें क्षमा नहीं किया गया था। इस आयत में उन्हीं का वर्णन है जिनका मामला स्थगित कर दिया था। यह तीन व्यक्ति थे जिनकी चर्चा आगे आयेगी।

[3]यदि वह अपनी त्रुटि पर अडिग रहे।

[4]यदि वह शुद्ध तौबा कर लेंगे।

The Ummah Technology Mission

إِنْ أَرَدْنَآ إِلَّا الْحُسْنَىٰ ۖ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَٰذِبُونَ ﴿١٠٧﴾

उसके रसूल का विरोधी है [1] तथा सौगन्ध खा जायेंगे कि मात्र भलाई के अतिरिक्त हमारा कोई उद्देश्य नहीं, अल्लाह गवाह है कि वे पूर्णरूप से झूठे हैं।[2]

لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا ۚ لَّمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَن

(१०८) आप उसमें कभी खड़े न हों,[3] परन्तु जिस मस्जिद की आधारशिला प्रथम दिन से ही संयम पर रखी गयी हो, वह इस योग्य है

---

[1]इसमें पाखण्डियों के अत्यन्त कुरुप व्यवहार का वर्णन है कि उन्होंने एक मस्जिद बनवायी तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह बताया कि वर्षा, शीत तथा इस प्रकार के अवसरों पर रोगियों तथा कमज़ोरों को दूर जाने में कष्ट होता है। उनकी सुविधा के लिये हमने मस्जिद बनायी है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वहाँ चलकर नमाज़ पढ़े ताकि शुभ प्राप्त हो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस समय तबूक के लिए पूर्णरूप से तैयार थे। आप ने वापसी में नमाज़ पढ़ने का वायदा किया। परन्तु वापसी में वह्यी (प्रकाशना) द्वारा अल्लाह तआला ने पाखण्डियों के वास्तविक उद्देश्य को खोल दिया कि इससे वह मुसलमानों को हानि पहुँचाकर कुफ़्र का प्रचार-प्रसार करना, मुसलमानों के मध्य मतभेद उत्पन्न करना तथा अल्लाह एवं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शत्रुओं के लिए निवास स्थान उपलब्ध कराना चाहते हैं।

[2]अर्थात झूठी सौगन्ध खाकर वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को धोखा देना चाहते थे परन्तु अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनके छल-कपट से बचा लिया तथा फ़रमाया कि उनके विचार शुद्ध नहीं हैं तथा जो कुछ प्रकट कर रहे हैं उसमें झूठे हैं।

[3]अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वहाँ जाकर जो नमाज़ पढ़ने का वायदा किया है उसके अनुसार वहाँ जाकर नमाज़ न पढ़ें। अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने न केवल यह कि न वहाँ नमाज़ पढ़ी, बल्कि अपने कुछ साथियों को भेजकर मस्जिद गिरा दी तथा उसे नष्ट कर डाला। इससे धर्मगुरूओं नें निष्कर्ष निकाला है कि जो मस्जिद अल्लाह की इबादत के बजाय मुसलमानों के मध्य मतभेद उत्पन्न करने के लिए बनायी जाये वह मस्जिद ज़रार है, उसको गिरा दिया जाये ताकि मुसलमानों में भेद तथा बिखराव न उत्पन्न हो।

The Ummah Technology Mission

تَقُوْمَ فِيْهِ ؕ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ۝

कि आप उसमें खड़े हों।[1] इसमें ऐसे मनुष्य हैं कि वे अत्यधिक पवित्र होने को प्रिय समझते हैं।[2] तथा अल्लाह तआला अत्यधिक पवित्र रहने वालों को प्रिय रखता है।

اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

(१०९) फिर क्या ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ है जिसने अपने भवन की आधारशिला अल्लाह से डरने पर तथा अल्लाह की प्रसन्नता पर रखी हो अथवा वह व्यक्ति कि जिसने अपने भवन की आधारशिला घाटी के किनारे पर जोकि गिरने ही को हो रखी हो, फिर वह उसे लेकर नरक की आग में गिर पड़े ?[3] तथा अल्लाह तआला ऐसे अत्याचारियों को समझ ही नहीं देता।

---

[1]इससे तात्पर्य कौन-सी मस्जिद है ? इसमें मतभेद है। कुछ ने मस्जिदे "कुबा" तथा कुछ ने मस्जिदे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहा है। सलफ़ का एक गुट दोनों के पक्ष में रहा है। इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि आयत से यदि मस्जिदे कुबा तात्पर्य है तो कुछ हदीसों में मस्जिद नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ﴿أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَى﴾ का कृतार्थ सिद्ध किया गया है। तथा इन दोनों में कोई मतभेद नहीं। इसलिये कि यदि मस्जिदे कुबा के अन्दर यह गुण है कि प्रथम दिन से ही इसकी आधार शिला तक़वा पर रखी गयी है, तो मस्जिदे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो प्रथम प्रकरण से ही इस गुण से विभूषित है तथा उसके अनुरूप है।

[2]हदीस में आता है कि इससे तात्पर्य कुबा के निवासी हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे पूछा कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी पवित्रता की प्रशंसा की है, तुम क्या करते हो ? उन्होंने कहा कि हम ढेले प्रयोग करने के साथ-साथ पानी भी प्रयोग करते हैं। (इब्ने कसीर) इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि यह आयत इस बात का प्रमाण है कि ऐसी प्राचीन मस्जिद में नमाज़ पढ़ना उत्तम है, जो अल्लाह मात्र की इबादत के उद्देश्य से निर्मित की गयी हो। इसके अतिरिक्त महापुरूषों के ऐसे गिरोह के साथ नमाज़ पढ़ना उत्तम है जो पूर्ण वज़ू करने तथा पवित्रता तथा शुद्धता का ठीक प्रकार से प्रयोजन करने वाले हों।

[3]इसमें ईमानवालों तथा पाखण्डियों के कर्मों के उदाहरण दिये गये हैं। ईमानवालों का कर्म अल्लाह के भय पर तथा उसकी प्रसन्नता के लिए होता है, जबकि पाखण्डियों का

The Ummah Technology Mission

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١١٠﴾

(११०) उनका यह भवन जिसे उन्होंने बनाया है सदा उन के दिलों में दुविधा के आधार पर (काँटा बनकर) खटकता रहेगा, परन्तु यह कि उनके दिल ही खंड-खंड हो जायें,[1] तथा अल्लाह ज्ञानी एवं हिक्मत वाला है।

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ ۖ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي

(१११) नि:संदेह अल्लाह ने मुसलमानों से उनके प्राणों तथा धनों को स्वर्ग के बदले[2] ख़रीद लिया है, वह अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं जिसमें हत करते एवं हत होते हैं, उस पर सत्य वचन है तौरात तथा इंजील एवं क़ुरआन में। तथा अल्लाह से अधिक अपने वचन का पालन कौन कर सकता है?[3] अत: तुम अपने इस विक्रय पर जो कर लिये हो

कर्म पाखण्ड तथा उपद्रव पर आधारित होता है जो धरती के उस क्षेत्र के भाँति है जिसके नीचे से घाटी का पानी बहता है तथा मिट्टी को साथ बहा ले जाता है, वह क्षेत्र नीचे से खोखला हो जाता है जिस पर कोई भी निर्माण किया जाये वह गिर पड़ेगा। इन पाखण्डियों का मस्जिद बनाने का कार्य भी ऐसा ही है, जो उन्हें नरक में साथ ले गिरेगा।

[1]दिल खण्ड-खण्ड हो जाये का अर्थ है मृत्यु आ जाये। अर्थात मृत्यु तक यह भवन उनके दिलों में अन्य शंका तथा भेद उत्पन्न करने का साधन बना रहेगा। जिस प्रकार वछड़े के पुजारियों में बछड़े का प्रेम रच-बस गया था।

[2]यह अल्लाह तआला की विशेष कृपा व दया का वर्णन है कि उसने ईमान वालों को उनके प्राण तथा धन के बदले जो उन्होंने अल्लाह के मार्ग में ख़र्च किये, स्वर्ग प्रदान कर दिये, जबकि यह प्राण तथा धन भी उसी का प्रदान किया हुआ है। फिर मूल्य अथवा बदला भी जो प्रदान किये अर्थात स्वर्ग वह अत्यन्त बहुमूल्य है।

[3]यह उसी सौदे का पुनरावृत्ति है कि अल्लाह तआला ने यह सच्चा वायदा पिछली किताबों में भी एवं कुरआन में भी किया है, और अल्लाह से अधिक वचन को पूरा करने वाला कौन हो सकता है?

The Ummah Technology Mission

بَايَعْتُمْ بِهٖ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١١١﴾

प्रफुल्ल हो जाओ, [1] और यह बड़ी सफलता है।

اَلتَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّآئِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾

(११२) वे ऐसे हैं जो तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं, (ईश्वर का) महिमागान करने वाले, रोज़ा (व्रत) रखने वाले, (अथवा सत्य मार्ग पर यात्रा करने वाले) रूकुअ तथा सजदा करने वाले अच्छी बातों की शिक्षा देने वाले तथा बुरी बातों से रोकने वाले तथा अल्लाह के नियमों को ध्यान में रखने वाले हैं।[2] तथा ऐसे ईमानवालों को शुभसूचना सुना दीजिए।[3]

---

[1]यह मुसलमानों को कहा जा रहा है, परन्तु वह खुशी उसी समय मनायी जा सकती है जब मुसलमानों को भी यह सौदा स्वीकार हो। अर्थात अल्लाह के मार्ग में प्राण तथा माल के बलिदान से उन्हें पीछे नहीं हटना है।

[2]यह इन्हीं ईमानवालों की अन्य विशेषताओं का वर्णन निरन्तर हो रहा है जिनके प्राणों तथा माल का सौदा अल्लाह ने कर लिया है। वे तौबा करने वाले अर्थात पापों तथा दोषों से। समयबद्ध रूप से अपने प्रभु की इबादत करने वाले, मुख से अल्लाह की महिमा तथा गुणों का वर्णन करने वाले तथा अन्य उन गुणों से युक्त हैं जो आयत में वर्णित हैं। سَائِحُوْنَ से तात्पर्य अधिकतर व्याख्याकारों ने रोज़ा (व्रत) लिया है तथा इसी को इब्ने कसीर ने अत्यधिक उचित तथा अत्यधिक प्रसिद्ध कथन कहा है। तथा कुछ ने धर्मयुद्ध तात्पर्य लिया है। परन्तु इससे धरती का भर्मण तात्पर्य नहीं है जिस प्रकार कि कुछ लोगों ने समझा है। इसी प्रकार अल्लाह की इबादत (उपासना) के लिए पर्वतों की चोटियों, गुफ़ाओं तथा निर्जन स्थानों में जाकर डेरा लगा लेना भी इससे तात्पर्य नहीं है। इसलिए कि यह त्याग तथा बैराग का एक भाग है जो इस्लाम में नहीं है। परन्तु उपद्रव के समय अपने धर्म की रक्षा के लिये नगरों तथा आबादियों को त्याग कर जंगलों तथा वनों में जाकर रहने की अनुमति हदीस में दी गयी है। (सहीह बुख़ारी किताबुल ईमान, बाब मिनद्दीन अल फ़िरार मिनल फ़ेतन व किताबुल फ़ेतन बाबुत तअर्रूब, अइस्सुकना मअल आराब फ़िल फ़ितन:)

[3]अर्थ यह है कि पूर्ण ईमानवाला वह है जो कथनी-करनी में इस्लाम की शिक्षाओं का सुन्दर उदाहरण हो तथा उन वस्तुओं से बचने वाला हो जिनसे अल्लाह ने रोक दिया है

The Ummah Technology Mission

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْۤا اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١١٣﴾

(११३) पैग़म्बर तथा अन्य मुसलमानों को आज्ञा नहीं कि मूर्तिपूजकों के लिए क्षमा की प्रार्थना करें यद्यपि वे सम्बन्धी ही हों, इस आदेश के स्पष्ट होने के पश्चात कि ये लोग नरक में जायेंगे।[1]

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ

(११४) तथा इब्राहीम का अपने पिता के लिए मोक्ष की प्रार्थना करना वह मात्र वचन के

तथा अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करने वाला नहीं अपितु उनका रक्षक हो। ऐसे ही पूर्ण ईमानवाले शुभसूचना के अधिकारी हैं। यह वही बात है जिसे क़ुरआन में آمنوا و عملوا الصالحات के शब्दों में बार-बार वर्णन किया गया है। यहाँ पुण्य के कार्यों का कुछ विस्तृत वर्णन कर दिया गया है।

[1]इसकी व्याख्या सहीह बुख़ारी में इस प्रकार की गयी है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रिय चाचा अबू तालिब का अन्तिम समय आ गया तब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके पास गये जबकि उनके पास अबू जहल तथा अब्दुल्लाह बिन अबी उमैय्या भी बैठे हुए थे। आपने फ़रमाया "चाचा لا إله إلا الله पढ़ लें ताकि मैं अल्लाह के सामने आप के लिए तर्क प्रस्तुत कर सकूँ।" अबू जहल तथा अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या ने कहा "हे अबू तालिब क्या अब्दुल मुत्तलिब के धर्म से मुख मोड़ोगे? (अर्थात मरते समय यह क्या करने लगे? यहाँ तक कि इसी अवस्था में उनकी मृत्यु हो गयी)" नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "जब तक अल्लाह तआला की ओर से मुझे रोक नहीं दिया जायेगा, मैं आप के लिए क्षमा-याचना करता रहूँगा" जिस पर यह आयत उतरी जिसमें मूर्ति-पूजकों के लिए मोक्ष की प्रार्थना से रोक दिया गया। (सहीह बुख़ारी किताबुत तफ़सीर, सूरः तौबः) सूरः कसस की आयत ५६ إنك لا تهدي من أحببت भी इसी सम्बन्ध में उतरी। मुसनद अहमद के एक कथन में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी माता के लिए मोक्ष की प्रार्थना करने की आज्ञा माँगी, जिस पर यह आयत उतरी। (मुसनद अहमद भाग ५, पृष्ठ ३५५) तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मूर्तिपूजक समुदाय के लिए प्रार्थना की थी «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِي فَإِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ» "हे अल्लाह मेरा समुदाय अज्ञानी है इस को क्षमा कर दे।" यह आयत के विपरीत नहीं है। इसलिए कि इसका अर्थ उनके मार्ग दर्शन की प्रार्थना है। अर्थात वे मेरे पद तथा गरिमा से अनभिज्ञ हैं। इसे मार्गदर्शन प्रदान कर ताकि मोक्ष के पात्र हो जायें। तथा जीवित काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों के लिए मार्ग दर्शन की प्रार्थना उचित है।

The Ummah Technology Mission

إِلَّا عَن مَّوْعِدَةٍ وَعَدَهَآ إِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُۥٓ أَنَّهُۥ عَدُوٌّ لِّلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرَٰهِيمَ لَأَوَّٰهٌ حَلِيمٌ ﴿١١٤﴾

कारण था, जो उन्होंने उसे दिया था। फिर जब उन पर यह बात स्पष्ट हो गयी कि वह अल्लाह का शत्रु है, तो वह उससे असम्बन्धित मात्र हो गये,[1] वास्तव में इब्राहीम बड़े कोमल दिल सहनशील थे।[2]

وَمَا كَانَ ٱللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًۢا بَعْدَ إِذْ هَدَىٰهُمْ حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُم مَّا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾

(११५) तथा अल्लाह ऐसा नहीं करता कि किसी समुदाय को मार्गदर्शन देने के पश्चात भटका दे जब तक उन बातों को साफ-साफ न बता दे जिनसे वे बचें।[3] निःसन्देह अल्लाह हर वस्तु को भली-भाँति जानता है।

إِنَّ ٱللَّهَ لَهُۥ مُلْكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ يُحْىِۦ وَيُمِيتُ ۗ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ مِن وَلِىٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١١٦﴾

(११६) निःसन्देह अल्लाह ही का राज्य है आकाशों तथा धरती में। वही जिलाता तथा मारता है, तथा तुम्हारा अल्लाह के अतिरिक्त न कोई मित्र है न कोई सहायता करने वाला है।

---

[1]आदरणीय इब्राहीम पर भी जब यह बात स्पष्ट हुई कि मेरा पिता अल्लाह का शत्रु है तथा नरक में जाने वाला है, तो उन्होंने उससे अलगाव कर लिया तथा उसके पश्चात मोक्ष की प्रार्थना नहीं की।

[2]तथा प्रारम्भ में अपने पिता के लिए मोक्ष की प्रार्थना भी अपने इसी मृदल एवं सयंमी स्वभाव के कारण से थी।

[3]जब अल्लाह तआला ने मूर्तिपूजकों के पक्ष में क्षमादान करने की प्रार्थना से रोका तो कुछ सहावा को जिन्होंने ऐसा किया था, यह शंका उत्पन्न हुई कि कहीं उन्होंने गुमराही का कार्य तो नहीं किया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला जब तक बचने वाले कार्यों का स्पष्टीकरण नहीं कर देता उस समय तक उस पर पकड़ भी नहीं करता, तथा न उसे भटकाव सिद्ध करता है। परन्तु जब उन कार्यों से नहीं बचता जिनसे रोका जा चुका है, तो फिर अल्लाह तआला उसे विपथ कर देता है। इसलिए जिन लोगों ने इससे पूर्व अपने मृतक सम्बन्धियों के लिए क्षमा की प्रार्थनायें की हैं उनकी पकड़ न होगी, क्योंकि उन्हें नियम का उस समय ज्ञान ही नहीं था।

The Ummah Technology Mission

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾

(११७) अल्लाह (तआला) ने पैग़म्बर (ईशदूत) की दशा पर ध्यान दिया तथा मोहाजिरों एवं अंसार की दशा पर भी जिन्होंने ऐसी तंगी के समय पैग़म्बर का साथ दिया[1] उसके पश्चात कि उनमें से एक गुट के दिल डाँवाडोल होने लगे थे[2] फिर अल्लाह ने उनकी दशा पर दया की । निःसन्देह अल्लाह (तआला) उन सब पर अत्यधिक दयालु एवं कृपालु है ।

وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ

(११८) तथा तीन व्यक्तियों की स्थिति पर भी जिनका मामला स्थागित कर दिया गया था ।[3]

---

[1]तबूक के युद्ध की यात्रा को कठिनाई (कष्ट) का समय कहा गया है । इसलिए कि एक तो कड़ी धूप का समय था, दूसरे फसलें तैयार थीं, तीसरे यात्रा लम्बी थी तथा चौथे साधन की कमी थी । इसलिये इसे جيش العسرة (कठिनाई की यात्रा अथवा सेना) कहा जाता है । तौबा के लिये आवश्यक नहीं कि पहले पाप अथवा त्रुटिपूर्ण कार्य हों । इसके बिना भी सम्मान प्राप्त करने के लिये तथा अनजाने में हो जाने वाली त्रुटियों के लिये तौबा होती है । यहाँ मोहाजिरों तथा अंसार के इस पहले गुट की तौबा इसी भाव में है, जो बिना किसी आनाकानी के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश पर धर्मयुद्ध के लिये तैयार हो गये ।

[2]यह उस दूसरे गुट का वर्णन है जिसे उपरोक्त कारणों से प्रारम्भ में आलस्य हुआ । परन्तु फिर शीघ्र ही वह इस अवस्था से निकल आया तथा प्रसन्नता से धर्मयुद्ध में सम्मिलित हुआ । दिलों में आनाकानी से तात्पर्य धर्म के विषय में किसी प्रकार का कम्पन आनाकानी अथवा शंका नहीं है, अपितु वर्णित सांसारिक कारणों के आधार पर धर्मयुद्ध में सम्मिलित होने में जो दुविधा तथा आलस्य था वह तात्पर्य है ।

[3] خُلِّفُوا का वही अर्थ है जो مُرجَون का है अर्थात जिनका मामला स्थगित कर दिया गया था तथा पचास दिन के पश्चात उनकी तौबा स्वीकार हुई । यह तीन सहाबा थे काअब बिन मालिक, मुरारः बिन रबिअ तथा हिलाल बिन उमैय्या । यह पक्के मुसलमान थे । इससे पूर्व प्रत्येक धर्मयुद्ध में सम्मिलित होते रहे । इस तबूक के धर्मयुद्ध में आलस्य के कारण सम्मिलत नहीं हो सके । बाद में उन्हें अपनी ग़लती का आभास हुआ । सोचा एक त्रुटि (पीछे रहने की) तो हो ही गयी है । परन्तु पाखण्डियों के समान अब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समक्ष झूठा तर्क न प्रस्तुत करेंगे । अतः

The Ummah Technology Mission

حَتّٰٓى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْٓا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّآ اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۱۸﴾

यहाँ तक कि जब धरती अपने विस्तार के उपरान्त भी उनके लिए संकुचित होने लगी तथा वे स्वयं अपने अस्तित्व से तंग आ गये।[1] तथा उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से कहीं शरण नहीं मिल सकती सिवाय इसके कि उसकी ओर पलटा जाये, फिर उनकी दशा पर दया की ताकि वे भविष्य में भी तौबा कर सकें।[2] नि:सन्देह अल्लाह तआला अत्यधिक दयावान अत्यधिक दयालु है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۹﴾

(११९) ऐ ईमानवालो ! अल्लाह (तआला) से डरो तथा सच्चों के साथ रहो।[3]

उपस्थित होकर अपनी त्रुटि को स्पष्टरूप से अंगीकार कर लिया तथा उसके दण्ड के लिये अपने आप को प्रस्तुत कर दिया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके मामले को अल्लाह पर छोड़ दिया कि वह उनके विषय में कोई आदेश उतारेगा। फिर भी उस अवधि में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा कराम को इन तीनों से सम्बन्ध रखने यहाँ तक की बातचीत तक करने से रोक दिया तथा चालीस रातों के पश्चात उन्हें आदेश दिया गया कि वह अपनी पत्नियों से भी दूर रहें। अत: पत्नियों से भी वियोग हो गया तथा दस दिन व्यतीत होने के पश्चात तौबा स्वीकार कर ली गयी तथा वर्णित आयत उतरी। इस घटना की विस्तृत जानकारी आदरणीय काब बिन मालिक के कथनानुसार हदीस में विद्यमान है। देखिये (सहीह बुखारी किताबुल मग़ाज़ी बाब ग़ज़व: तबूक, मुस्लिम किताबुत तौब: बाब हदीस तोबते काअब बिन मालिक)

[1]यह उन दिनों का वर्णन है जिससे सामाजिक बहिष्कार के कारण उन्हें गुज़रना पड़ा।

[2]अर्थात पचास दिन के पश्चात अल्लाह तआला ने उनकी विनय तथा तौबा (क्षमा-याचना) स्वीकार की।.

[3]सत्यता के कारण ही अल्लाह तआला ने इन तीन सहाबियों की त्रुटियों को न केवल क्षमा ही किया अपितु उनकी तौबा को क़ुरआन की आयत बनाकर उतारा رضي الله عنهم و رضوا عنه इसलिये ईमानवालों को आदेश दिया गया कि अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ रहो। इसका अर्थ यह है कि जिसके दिल के अन्दर तक़वा (अर्थात अल्लाह का भय) होगा, वह सच्चा होगा तथा जो झूठा होगा समझ लो कि उसका दिल तक़वा से

The Ummah Technology Mission

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَ مَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

(१२०) मदीना तथा उसके पड़ोस के ग्राम-वासियों के लिए उचित न था कि रसूलुल्लाह का साथ छोड़कर पीछे रह जायें[1] तथा न यह कि अपने प्राण को उनके प्राण से अधिक प्रिय समझें,[2] यह इस कारण से कि[3] उनको अल्लाह के मार्ग में जो प्यास लगी तथा जो थकान पहुँची एवं जो भूख लगी तथा जो चलना चले, जो काफ़िरों के लिए क्रोध का

शून्य है। इसीलिये हदीस में आता है कि ईमानवालों से कुछ अन्य त्रुटियाँ तो हो सकती हैं, परन्तु वह झूठा नहीं हो सकता।

[1]तबूक के युद्ध के लिये सामान्य रूप से घोषणा कर दी गयी थी, इसलिये विवश, बूढ़े तथा अन्य धार्मिक कारण रखने वालों के सिवाय सभी के लिये इसमें सम्मिलित होना आवश्यक था, परन्तु फिर भी जो मदीनावासी तथा मदीने के निकटवर्ती क्षेत्रों के निवासी धर्मयुद्ध में सम्मिलत नहीं हुए अल्लाह तआला उन्हीं को सावधान करते तथा चेतावनी देते हुये कह रहा है कि उनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पीछे नहीं रहना चाहिए था।

[2]अर्थात यह उनके लिये शोभा नहीं देता कि स्वंय अपने प्राणों की सुरक्षा कर लें तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्राणों की सुरक्षा का उन्हें ध्यान भी न हो, अपितु उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहकर अपने से अधिक उनकी सुरक्षा का प्रबन्ध करना चाहिए।

[3] ذٰلِكَ से पीछे न रहने का कारण बताया है कि उन्हें इसलिये पीछे नहीं रहना चाहिए कि अल्लाह के मार्ग में उन्हें जो प्यास, थकावट, भूख पहुँचेगी अथवा ऐसा कार्य जिससे काफ़िरों का क्रोध बढ़े, इसी प्रकार शत्रुओं के आदमियों को हत करना अथवा बन्दी बनाना, यह सभी कार्य पुण्य कर्म लिखे जायेंगे अर्थात पुण्य का कार्य केवल यही नहीं कि कोई मस्जिद में अथवा किसी एक कोने में बैठकर ऐच्छिक से नमाज़ पढ़े, क़ुरआन पढ़े, अल्लाह को याद करे आदि बल्कि धर्मयुद्ध में घटित होने वाली कठिनाईयाँ तथा दुखों यहाँ तक कि वह योजनाएँ जिनसे शत्रुओं के हृदय में भय उत्पन्न हो अथवा उत्तेजित हों, इनमें से प्रत्येक कार्य अल्लाह के समक्ष पुण्य के कर्मों में लिखा जायेगा। इसलिये मात्र इबादत की अभिलाषा में भी धर्मयुद्ध से बचना उचित नहीं है तब तो बिना कारणों के ही मनुष्य धर्मयुद्ध से दूर क्यों ?

The Ummah Technology Mission

وَلَا يَطَـُٔونَ مَوْطِئًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا إِلَّا كُتِبَ لَهُم بِهِۦ عَمَلٌ صَالِحٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢٠﴾

कारण हुआ हो,[1] तथा शत्रुओं की जो कुछ सूचना ली, [2] उन सब पर उनके नाम (एक-एक) पुण्य कार्य लिखा गया। निःसन्देह अल्लाह तआला निःस्वार्थियों का बदला नष्ट नहीं करता।

وَلَا يُنفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢١﴾

(१२१) तथा जो भी छोटा तथा बड़ा उन्होंने ख़र्च किया तथा जितने मैदान उनको पार करने पड़े,[3] यह सब भी उनके नाम लिखा गया ताकि अल्लाह (तआला) उनके कामों का अच्छे से अच्छा प्रतिफल प्रदान करे।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِن كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا

(१२२) तथा मुसलमानों को यह न चाहिए कि सब के सब निकल खड़े हों, तो ऐसा क्यों न किया जाये कि उनके प्रत्येक बड़े गुट से छोटा गुट जाया करे ताकि वे धर्म को समझ-बूझकर प्राप्त करे तथा ताकि यह

---

[1] इससे तात्पर्य पैदल अथवा घोड़ों आदि पर सवार होकर ऐसे क्षेत्रों से गुज़रना है कि उनके कदमों की चापों तथा घोड़ों के टापों से शत्रुओं के दिल काँप जायें तथा उनमें क्रोध की अग्नि भड़क उठे।

[2] ولا ينالون من عدو نيلا (शत्रु से कोई वस्तु लेते हैं अथवा उनका समाचार लेते हैं) से तात्पर्य उनके आदमियों को मारते तथा बन्दी बनाते हैं, उन्हें पराजित करते हैं तथा परिहार प्राप्त करते हैं।

[3] पर्वतों के मध्य मैदान तथा पानी के निकास के मार्ग को घाटी कहते हैं। तात्पर्य यहाँ साधारण घाटियाँ तथा क्षेत्र हैं। अर्थात अल्लाह तआला के मार्ग में कम अथवा अधिक जितना भी ख़र्च करोगे, इसी प्रकार जितने भी मैदान तथा क्षेत्र पार करोगे (अर्थात धर्मयुद्ध में छोटी अथवा लम्बी यात्रा करोगे) यह सब पुण्य तुम्हारे कर्मपत्र में अंकित होंगे, जिन पर अल्लाह तआला अच्छे से अच्छा बदला प्रदान करेगा।

The Ummah Technology Mission

إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾

लोग अपने समुदाय को जबकि वह उनके पास आयें, डरायें ताकि वे डर जायें।[1]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ

(१२३) ऐ ईमानवालो ! उन काफ़िरों से लड़ो जो तुम्हारे आस-पास हैं।[2] तथा उनको

---

[1]कुछ व्याख्याकारों के निकट इसका भी सम्बन्ध धर्मयुद्ध के आदेश से है। तथा अर्थ यह है कि पिछली आयतों में पीछे रहने वालों के लिये कड़ी चेतावनी तथा फटकार का वर्णन किया गया तो सहाबा कराम अति सर्तक हो गये तथा जब भी धर्मयुद्ध की बात आती तो सबके सब सम्मिलित होने का प्रयत्न करते। आयत में उन्हें आदेश दिया जा रहा है कि प्रत्येक धर्मयुद्ध इस प्रकार का नहीं होता कि प्रत्येक व्यक्ति का साथ लेना आवश्यक हो (जैसा कि तबूक में आवश्यक था) अपितु एक ही गुट का सम्मिलित होना पर्याप्त है। उनके निकट لِيَتَفَقَّهُوا से संबोधित पीछे रह जाने वाला गिरोह है। अर्थात एक गिरोह धर्मयुद्ध पर चला जाये وَتَبْقَى طَائِفَةٌ (यह लुप्त होगा) तथा एक गिरोह पीछे रहे जो धर्म शिक्षा प्राप्त करे तथा जब मुजाहिदीन (धर्मयुद्ध के सैनिक) वापस आयें तो उन्हें भी धर्म के नियमों से परिचित कराके अल्लाह से डरायें। दूसरी व्याख्या इसकी यह है कि इस आयत का सम्बन्ध धर्मयुद्ध से नहीं है, बल्कि इसमें धर्म की शिक्षा प्राप्त करने की महत्ता का वर्णन है, उसके प्रोत्साहन तथा मार्ग का स्पष्टीकरण है तथा वह यह है कि प्रत्येक बड़ा गुट अथवा क़बीले में से कुछ लोग धर्म की शिक्षा प्राप्त करने के लिये अपना घर-बार छोड़ें तथा मदरसों तथा धार्मिक शिक्षा केन्द्रों पर जाकर उसे प्राप्त करें तथा फिर वापस आकर अपने समाज के समक्ष भाषण तथा दीक्षा दें धर्म में تفقه प्राप्त करने का अर्थ आदेश एवं मनाही के नियमों की शिक्षा प्राप्त करना है ताकि अल्लाह के आदेश का पालन कर सके तथा वातावरण की बुराई से बचते रहे तथा अपने समाज के लोगों को भलाई का आदेश दे तथा बुराई से रोके।

[2]इसमें काफ़िरों से लड़ने के एक महत्वपूर्ण नियम का वर्णन किया गया है कि الأول فالأول तथा الأقرب فالأقرب के अनुसार काफ़िरों से धर्मयुद्ध करना है जैसाकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्रथम अरब द्वीप के अंदर निवास करने वाले मूर्तिपूजकों से युद्ध किया जब उनसे छूटे तो अल्लाह तआला ने मक्का, तायफ़, यमन, यमामा, हिज्र, ख़ैबर, हदरमुत आदि स्थानों पर मुसलमानों का अधिपत्य जमा दिया तथा अरब के सारे क़बीले झुंड के झुंड इस्लाम धर्म में प्रवेश करने लगे तो फिर अहले किताब से युद्ध प्रारम्भ किया तथा ९ हिजरी में रोम वासियों से युद्ध करके तबूक की ओर प्रस्थान किया, जो अरब महाद्वीप के निकट है। इसी के आधार पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु के पश्चात खुलफ़ाये राशदीन ने रोम के ईसाईयों से युद्ध किया तथा ईरान के अग्नि पूजकों से युद्ध किया।

The Ummah Technology Mission

يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٣﴾

तुम्हारे अन्दर कठोरता पाना चाहिए |[1] तथा यह विश्वास करो कि अल्लाह तआला तक़वा (संयम) वालों के साथ है |

وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖٓ اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿١٢٤﴾

(१२४) तथा जब कोई सूरः उतारी जाती है तो कुछ (द्वयवादी) कहते हैं कि इस सूरः ने तुम में से किसके ईमान को बढ़ाया है |[2] तो जो लोग ईमानदार हैं इस सूरः ने उनके ईमान में प्रगति प्रदान की है तथा वे प्रसन्न हो रहे हैं |[3]

وَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٢٥﴾

(१२५) तथा जिनके दिलों में रोग है, इस सूरः ने उनमें उनकी मलीनता के साथ और मलीनता बढ़ा दी है तथा वे कुफ़्र की अवस्था ही में मर गये |[4]

---

[1]अर्थात काफ़िरों के लिये मुसलमानों के दिलों में किसी प्रकार की कोमलता नहीं होनी चाहिये | कठोरता होनी चाहिए, जैसाकि "أشِدّآء علي الكفار رحمآء بينهم" में सहाबा के गुणों का वर्णन है | इसी प्रकार सूरः *अल-मायदः*, ५४ में ईमानवालों के गुण हैं "أذلة على المؤمنين أعزة على الكافرين"।

[2]इस सूरः में पाखण्डियों के जिन कर्मों का पर्दा उठाया गया है, ये आयतें उनका परिशिष्ट एवं पूरक हैं | इसमें बताया जा रहा है कि जब उनकी अनुपस्थिति में कोई सूरः अथवा उसका कोई भाग उतरता तथा उनके ज्ञान में बात आती, तो वे उपहास तथा परिहास के रूप में एक-दूसरे से कहते कि इससे तुममें से किस के ईमान में अधिकता हुई |

[3]अल्लाह तआला ने फ़रमाया, जो भी सूरः उतरती है उससे ईमानवालों के ईमान में अवश्य अधिकता होती है तथा वे अपने ईमान की उन्नति पर प्रसन्न होते हैं | यह आयत भी इस बात का प्रमाण है कि ईमान में कमी तथा अधिकता होती है जिस प्रकार कि मुहद्देसीन का मत है |

[4]रोग से तात्पर्य द्वयवाद तथा अल्लाह की आयतों के विषय में शंका तथा संदेह है | फ़रमाया "परन्तु यह सूरः पाखण्डियों को उनके पाखण्ड तथा दुष्टता में अधिकता करती है तथा वह अपने कुफ़्र तथा मिथ्याचार में इस प्रकार दृढ़ हो जाते हैं कि उन्हें तौबा का

The Ummah Technology Mission

أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٢٦﴾

(१२६) तथा क्या उनको नहीं दिखायी देता कि यह लोग प्रत्येक वर्ष एक बार अथवा दो बार किसी न किसी आपत्ति में डाले जाते हैं, फिर भी न प्रायश्चित करते हैं न शिक्षा ग्रहण करते हैं।[1]

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ هَلْ يَرَاكُم مِّنْ أَحَدٍ ثُمَّ انصَرَفُوا صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُم بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ﴿١٢٧﴾

(१२७) तथा जब कोई सूरः उतारी जाती है तो एक-दूसरे को देखने लगते हैं कि तुमको कोई देखता तो नहीं फिर चल देते हैं।[2] अल्लाह (तआला) ने उनका दिल मोड़ दिया है, इस कारण कि वे नासमझ लोग हैं।[3]

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ

(१२८) तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़म्बर (ईशदूत) का आगमन हुआ है जो तुम्हारी ही जाति से

तौबा का सौभाग्य नहीं होता तथा कुफ़्र (अधर्म) पर ही उनका अन्त हो जाता है।" जिस प्रकार अल्लाह तआला ने अन्य स्थान पर फ़रमाया, "हम क़ुरआन में ऐसी बातें उतारते हैं जो ईमानवालों के लिये स्वास्थवर्धक तथा कृपा है। परन्तु अल्लाह तआला उनसे अत्याचारियों की हानि में बढ़ोत्तरी ही करता है।" (सूरः *बनी इस्राईल*-८२) यह जैसे कि उनके दुर्भाग्य की चरम सीमा है कि जिससे लोगों के दिल मार्गदर्शन पाते हैं वही बातें उनके अपमान, अनादर, हानि तथा अन्त का कारण बनती हैं। जिस प्रकार से किसी भी व्यक्ति की पाचन क्रिया बिगड़ जाये तो वह भोजन जिससे अन्य लोग शक्ति तथा स्वाद प्राप्त करते हैं, उसके रोग में और भी बिगाड़ तथा खराबी का कारण बनता है।

[1] يُفتنون का अर्थ है, परीक्षा ली जाती है। आपत्ति से तात्पर्य या तो आकाशीय प्रकोप है। जैसे अकाल आदि (परन्तु यह दूर है) अथवा शारीरिक रोग तथा दुख हैं अथवा युद्ध हैं जिनमें सम्मिलित होने के अवसर पर उनकी परीक्षा होती है।

[2] अर्थात उनकी उपस्थिति में सूरः उतरती जिसमें पाखण्डियों के दुराचारों एवं षड़यन्त्रों की ओर संकेत होता तो फिर यह देखकर कि मुसलमान उन्हें देख तो नहीं रहे हैं, चुपचाप खिसक जाते हैं।

[3] अर्थात अल्लाह की आयतों पर मनन-चिंतन तथा विचार न करने के कारण अल्लाह तआला ने उनके दिलों को पुण्य तथा भलाई के कार्यों से फेर दिया है।

The Ummah Technology Mission

عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢٨﴾

हैं,[1] जिनको तुम्हारी हानि की बातें अत्यन्त भारी लगती हैं,[2] जो तुम्हारे लाभ के बड़े इच्छुक रहते हैं,[3] ईमान वालों के लिए अत्यन्त ही करूणाकारी कोमल हृदय हैं।[4]

فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ

(१२९) फिर यदि मुख मोड़ें[5] तो (आप) कह दीजिए कि मेरे लिए अल्लाह बस है,[6] उसके अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं। मैंने उसी

---

[1]सूरः के अन्त में मुसलमानों पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रूप में जो महान उपकार किया गया है उसका वर्णन किया जा रहा है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रथम विशेषता यह वर्णन की जा रही है कि वह तुम्हारी जाति से हैं अर्थात पुरूष के रूप में हैं (वह दिव्य प्रकाश अथवा अन्य कुछ नहीं) जैसाकि दुर्आस्था के शिकार लोग जनता को इस प्रकार के गौरख धन्धे में फसाते हैं।

[2] عَنِتٌّ ऐसी वस्तुऐं जिनसे मनुष्य को दुख हो, इसमें साँसारिक दुख तथा आख़िरत की यातनायें दोनों आ जाती हैं। इस पैग़म्बर पर तुम्हारी हर प्रकार की कठिनाई तथा कष्ट दुखदायी होती हैं। इसीलिये आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मैं सरल धर्म एकेश्वरवाद प्रदान करके भेजा गया हूँ।" (मुसनद अहमद भाग ५, पृष्ठ २६६, भाग ६, पृष्ठ २३३) एक अन्य हदीस में फ़रमाया «إِنَّ هٰذَا الدِّينَ يُسْرٌ» (सहीह बुख़ारी किताबुल ईमान) यह धर्म सरल है।

[3]तुम्हारे मार्गदर्शन तथा तुम्हारे साँसारिक तथा पारलौकिक लाभ की कामना करने वाले हैं। तुम्हारा नरक में जाना प्रिय नहीं समझते। इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मैं तुम्हें तुम्हारी पीठ पकड़-पकड़ कर खींचता हूँ, परन्तु तुम मुझसे दामन छुड़ाकर स्वंय ही नरक की आग में प्रवेश करते हो।" (सहीह बुख़ारी किताबुल रिकाक़ बाबुल इन्तेहाये मिनल मआसी)

[4]यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चौथी विशेषता का वर्णन किया गया है। यह सभी विशेषतायें आपके उच्च व्यवहार तथा नम्र स्वभाव की सूचक है। निःसन्देह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अत्यन्त सुशील हैं। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

[5]अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लाये धार्मिक नियम तथा शान्ति-धर्म से।

[6]जो कुफ़्र तथा मुख मोड़ने वालों के पाखण्ड तथा षडयंत्र से मुझे बचा लेगा।

The Ummah Technology Mission

وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿١٢٩﴾

पर भरोसा किया तथा वह विशाल अर्श (सिंहासन) का मालिक (स्वामी) है।[1]

سُورَةُ يُونُسَ

सूरतु यूनुस-१०

सूरः यूनुस मक्के में उतरी[2] तथा इसकी एक सौ नौ आयतें हैं तथा ग्यारह रूकुअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ○

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु तथा अत्यन्त दयालु है

الر ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ○

(१) अलिफ ॰ लाम॰ रा॰। यह तत्वज्ञान भरी किताब की आयतें हैं।[3]

أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا

(२) क्या उन लोगों को इस बात से आश्चर्य हुआ[4] कि हमने उनमें से एक व्यक्ति के पास

---

[1]आदरणीय अबूद दरदा फ़रमाते हैं कि जो व्यक्ति यह आयत حسبي الله प्रातः तथा सायंकाल सात-सात बार पढ़ लेगा, अल्लाह तआला उसकी चिंताओं (चिन्ता तथा कठिनाई) को पर्याप्त हो जायेगा (सुनन अबू दाऊद संख्या ५०८१)

[2]सूरः यूनुस मक्की है, परन्तु इसकी दो आयतें तथा कुछ ने तीन आयतें मदनी बतायी हैं (फ़तहुल क़दीर)

[3] الحكيم। किताब अर्थात क़ुरआन मजीद का विशेषण है। इसका एक तो वही अर्थ है जो अनुवाद में प्रयोग किया गया है। इसके अन्य भी कई अर्थ किये गये हैं। जैसे الحكم अर्थात हलाल तथा हराम एवं नियम तथा आदेश में दृढ़ है। حَكِيم का अर्थ حاكم (अधिकारी) के, अर्थात मतभेद में लोगों के मध्य निर्णय करने वाली किताब (सूरः अल-बकरः, २३) حَكِيم का अर्थ محكوم فيه अर्थात अल्लाह तआला ने इसमें न्याय के साथ निर्णय किये हैं।

[4]प्रश्न आश्चर्य को नकारने के लिये है, जिसमें निन्दा का भाव भी सम्मिलित है। अर्थात इस बात पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि अल्लाह तआला ने मनुष्यों में से ही एक व्यक्ति को आदेश (प्रकाशना) तथा रिसालत के लिये चुन लिया, क्योंकि उनके अपने सहजाति होने के कारण वह उचित अर्थों में उनका मार्ग दर्शन कर सकता है। यदि वह किसी अन्य जाति से होता तो फ़रिश्ता अथवा जिन्न होता तथा दोनों ही परिस्थितियों में रिसालत (संदेश पहुँचाने) का मूल उद्देश्य समाप्त हो जाता, इसलिए कि मनुष्य उससे

The Ummah Technology Mission

إِلَىٰ رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ أَنذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِندَ رَبِّهِمْ ۗ قَالَ الْكَافِرُونَ إِنَّ هَٰذَا لَسَاحِرٌ مُّبِينٌ ۝٢

वह्यी (प्रकाशना) भेज दी कि सभी मानवगण को डराइये तथा जो ईमान ले आये उनको यह शुभ सूचना सुना दीजिए कि उनके प्रभु के पास उन को पूरा प्रतिफल एवं सम्मान मिलेगा [1] काफ़िरों ने कहा कि यह व्यक्ति नि:सन्देह स्पष्ट जादूगर (तांत्रिक) है।[2]

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۖ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۖ مَا مِن شَفِيعٍ إِلَّا مِن بَعْدِ إِذْنِهِ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ

(३) नि:सन्देह तुम्हारा पोषक ही है जिसने छ: दिनों में आकाशों तथा धरती को पैदा कर दिया फिर अर्श पर स्थिर हुआ।[3] वह प्रत्येक कार्य का प्रयोजन करता है।[4] उसकी आज्ञा के बिना उसके पास कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं,[5] ऐसा अल्लाह तुम्हारा

लगाव रखने के बजाय भय का आभास करते। दूसरे, इनके लिए उसको देखना भी संभव न होता। तथा यदि हम किसी जिन्न अथवा फ़रिश्ते को मनुष्य के शरीर में भेज देते, तो फिर वही आरोप होता कि यह तो हमारी तरह का ही मनुष्य है। इसलिये इनके इस आश्चर्य में कोई सार्थकता नहीं है।

[1] ﴿قَدَمَ صِدْقٍ﴾ का अर्थ उच्च पद, अच्छा बदला तथा पुण्य का कार्य है, जो एक ईमानवाला आगे भेजता है।

[2] काफ़िरों को जब नकारने के लिये कोई अन्य बात न सूझती तो यह कहकर भाग निकलते कि यह तो जादूगर है। نعوذ بالله

[3] इसकी व्याख्या के लिये देखें सूरः *अल-आराफ़* आयत संख्या ५४ की व्याख्या।

[4] अर्थात आकाश तथा धरती की सृष्टि करके उसने उसे यूँ ही नहीं छोड़ दिया, बल्कि सारी सृष्टि का नियंत्रण एवं संचालन इस प्रकार कर रहा है कि कभी किसी का आपस में टकराव नहीं हुआ, प्रत्येक वस्तु उसके निर्देशानुसार अपने-अपने कार्य में व्यस्त है।

[5] मूर्तिपूजक तथा काफ़िर जो मूलरूप से सम्बोधित थे, उनका विश्वास था कि ये मूर्तियाँ जिनकी वे पूजा करते थे, अल्लाह के समक्ष उनकी सिफ़ारिश करेंगी तथा उनको अल्लाह की यातना से मुक्त करा देंगी। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, वहाँ अल्लाह की आज्ञा के बिना किसी को सिफ़ारिश करने की अनुमति ही नहीं होगी, तथा यह आज्ञा भी

The Ummah Technology Mission

स्वामी है, तो तुम उस की इबादत करो।[1] क्या तुम फिर भी शिक्षा ग्रहण नहीं करते ?

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٣﴾

(४) तुम सबको अल्लाह ही के पास जाना है, अल्लाह ने सच्चा वादा कर रखा है। नि:सन्देह वही प्रथम बार पैदा करता है फिर वही पुन: पैदा करेगा ताकि ऐसे लोगों को जो कि ईमान लाये तथा उन्होंने पुण्य के कार्य किये, न्याय के साथ बदला दे तथा जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके लिए खौलता हुआ पानी पीने को मिलेगा तथा कष्टदायी यातना होगी उनके कुफ़्र के कारण।[2]

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۚ إِنَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٤﴾

(५) वह (अल्लाह तआला) ऐसा है जिसने सूर्य को प्रकाशमान बनाया तथा चन्द्रमा को ज्योतिर्मय बनाया।[3] तथा उसके लिए स्थान

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَّرَهُ مَنَازِلَ

उन लोगों के लिए होगी जिनको अल्लाह तआला प्रिय समझेगा। ﴿وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَىٰ﴾ (सूरः अल-अम्बिया, २८) "لا تغني شفاعتهم شيئا إلا من بعد أن يأذن الله لمن يشآء و يرضى" (सूरः अन-नज्म, २६)

[1] अर्थात ऐसा अल्लाह जो सृष्टि का स्रष्टा भी है तथा उसका नियोजक एवं संचालक भी इसके अतिरिक्त सभी अधिकारों का पूर्ण मालिक है, वही इस योग्य है कि उसकी इबादत (आराधना) की जाये।

[2] इस आयत में प्रलय के आने, अल्लाह के समक्ष सभी के एकत्रित होने, बदले तथा दण्ड का वर्णन है। यह विषय क़ुरआन करीम में विभिन्न शैली से विभिन्न स्थान पर वर्णन हुआ है।

[3] ضِيَاءً का समार्थी ضَوْءٌ है। सबंध्य यहाँ लोप है। ذات ضياء و القمر ذا نور सूर्य को चमकने वाला तथा चन्द्रमा को प्रकाश वाला बनाया। अथवा फिर उन्हें अतिश्योक्ति पर आधारित किया जावें जैसाकि यह स्वंय प्रकाश एवं कान्ति हैं। आकाश तथा धरती की सृष्टि तथा उनके नियोजित होने के वर्णन के पश्चात उदाहरण स्वरूप कुछ अन्य वस्तुओं का वर्णन किया जा रहा है, जिसका सम्बन्ध सृष्टि नियोजन से है, जिसमें सूर्य तथा चन्द्रमा का महत्वपूर्ण स्थान है। सूर्य की गर्मी, ताप तथा उसका प्रकाश कितना

The Ummah Technology Mission

لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝

(गंतव्य) निर्धारित किये ताकि तुम वर्षों की गणना कर सको तथा गणना (हिसाब) को जान लो।[1] अल्लाह तआला ने ये सभी वस्तुऐं व्यर्थ नहीं पैदा कीं। वह यह प्रमाण उन्हें साफ़ बता रहा है जो बुद्धि रखते हैं।

اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝

(६) नि:सन्देह रात-दिन के एक-दूसरे के बाद आने में तथा अल्लाह तआला ने आकाश तथा धरती में जो कुछ पैदा कर रखा है, उन सब में उन लोगों के लिए प्रमाण हैं जो अल्लाह का डर रखते हैं।

आवश्यक है, उसे हर बुद्धि रखने वाला व्यक्ति जानता है। इसी प्रकार चन्द्रमा के प्रकाश से जो आनन्द तथा लाभ है उसे वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। वैज्ञानिकों का विचार है कि सूर्य का प्रकाश स्वयं उसका है तथा चन्द्रमा का प्रकाश दूसरे से है, अर्थात सूर्य से प्राप्त है। (फ़तहुल कदीर)

[1]अर्थात हमने चन्द्रमा का गंतव्य निर्धारित कर दिया है। इन स्थानों से तात्पर्य वह दूरी है जो वह एक रात तथा एक दिन में अपनी निर्धारित गति के साथ पूरी करता है। यह २८ गंतव्य हैं। प्रत्येक रात को एक स्थान पर पहुँचता है, जिसमें कभी त्रुटि नहीं होती। पहली अवस्था में वह क्षीण तथा पतला दिखाई पड़ता है, फिर निरन्तर बड़ा होता चला जाता है, यहाँ तक चौदहवीं रात्रि अथवा चौदहवीं अवस्था में पूर्ण चन्द्रमा हो जाता है। इसके पश्चात फिर वह सिकुड़ने लगता है तथा पतला होने लगता है। यहाँ तक कि अन्त में एक अथवा दो रात्रि गुप्त रहता है। तथा पुन: सोम बनकर उदित होता है। इसका यह लाभ बताया गया है कि तुम वर्षों की गणना तथा हिसाब जान सको। अर्थात चन्द्रमा की इन स्थितियों तथा गति से महीने तथा वर्ष बनते हैं, जिनसे तुम्हें हर चीज़ का हिसाब करने में सुविधा होती है। अर्थात वर्ष १२ महीना का तथा महीना २९ अथवा ३० दिन का। एक दिन चौबीस घंटे अर्थात रात्रि तथा दिन का। जो बराबर दिन रात में १२-१२ घंटे तथा सर्दी एवं गर्मी में क्षीण तथा बड़े होते हैं। इसके अतिरिक्त साँसारिक लाभ तथा व्यापार ही इन अवस्थाओं से सम्बन्धित नहीं धार्मिक लाभ भी इससे प्राप्त होते हैं। इसी चन्द्रोदय से हज, रमज़ान के रोज़े, सम्मानित महीने तथा अन्य इबादतों का निर्धारण होता है जिनका प्रायोजन ईमानवाला करता है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاطْمَأَنُّوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آيَاتِنَا غَافِلُونَ ۝٧

(७) जिन लोगों को हमारे पास आने का विश्वास नहीं है, तथा वह साँसारिक जीवन पर प्रसन्न हो गये हैं तथा उसमें जी लगा बैठे हैं तथा जो लोग हमारी आयतों से विमुख हैं।

أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝٨

(८) ऐसे लोगों का ठिकाना (स्थान) उनके कर्मों के कारण नरक है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِإِيمَانِهِمْ ۖ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝٩

(९) नि:सन्देह जो लोग ईमान लाये तथा उन्होंने पुण्य कार्य किये उनका पालनहार उनको ईमान वाले होने के कारण (उनके लक्ष्य तक) पहुँचा देगा,[1] सुख के बाग़ों में जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी।

دَعْوَاهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۚ وَآخِرُ

(१०) वहाँ उनके मुख से यह बात निकलेगी 'सुब्हानल्लाह'[2] तथा उनका आपसी सलाम (अभिवादन) यह होगा 'अस्सलामु अलैकुम'[3]

---

[1]इसका एक अन्य अनुवाद यह किया गया है कि संसार में ईमान के कारण प्रलय के दिन अल्लाह तआला उनके लिये पुल सिरात से गुज़रना सरल कर देगा, कुछ के निकट यह अल्लाह तआला से सहायता प्राप्त करने के लिये है तथा अनुवाद यह होगा कि अल्लाह तआला प्रलय के दिन उनके लिये एक दिव्य ज्योति उपलब्ध करेगा जिसके प्रकाश में वे चलेंगे जैसाकि सूर: हदीद में इसका वर्णन आता है।

[2]अर्थात स्वर्ग में जाने वाले हर क्षण अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा में लीन होंगे। जिस प्रकार हदीस में आता है : "स्वर्ग के निवासियों के मुख से अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा इस प्रकार निकलेगी जिस प्रकार साँस निकलती है।" (सहीह मुस्लिम किताबुल जन्न: व सिफ़ति नईमेहा, बाबुन फ़ी सिफ़ातिल जन्न: व अहलेहा व तस्बीहेहिम फ़ीहा वुकरतन व अशीया) अर्थात जिस प्रकार निरन्तर साँस का अन्दर आना तथा बाहर जाना रहता है, उसी प्रकार स्वर्ग वालों के मुख पर बिना किसी प्रयोजन के अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा के गुणगान रहेंगे।

[3]अर्थात एक-दूसरे को इस प्रकार सलाम करेंगे, इसी प्रकार फ़रिश्ते भी उन्हें सलाम करेंगे।

The Ummah Technology Mission

دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠﴾

तथा उनकी अन्तिम बात यह होगी कि सारी प्रशंसाएं अल्लाह ही के लिए हैं जो अखिल जगत का पालनहार है।

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ؕ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١﴾

(११) तथा यदि अल्लाह लोगों को तुरंत हानि पहुँचा देता जैसे लोग तुरंत लाभ चाहते हैं तो उनका वचन कभी का पूरा हो चुका होता।[1] तो हम उन लोगों को जिन्हें हमारे पास आने का विश्वास नहीं है उनके हाल पर छोड़ देते हैं कि वे अपनी उदण्डता में भटकते रहें।

وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖۤ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا

(१२) तथा जब मनुष्य को कोई कष्ट पहुँचता है, तो हमको पुकारता है लेटे भी, बैठे भी, खड़े भी। फिर जब हम उसके कष्ट

---

[1]इसका एक अर्थ यह है कि जिस प्रकार मनुष्य पुण्य को प्राप्त करने में शीघ्रता करता है, उसी प्रकार अशुभ (यातना) को प्राप्त करने में भी शीघ्रता करता है, अल्लाह के पैग़म्बरों (ईशदूतों) से कहता है यदि तुम सच्चे हो तो वह यातना लेकर आओ जिससे तमु डराते हो। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यदि उनकी इस माँग के अनुसार हम शीघ्र यातना भेज देते, तो कभी के यह मृत्यु तथा विनाश का स्वाद चख चुके होते। परन्तु हम उनको समय देकर पूर्ण अवसर प्रदान करते हैं। दूसरा अर्थ यह है कि जिस प्रकार मनुष्य अपने लिये पुण्य तथा भलाई की प्रार्थनाऐं करता है, जिन्हें हम स्वीकार करते हैं। इसी प्रकार जब मनुष्य क्रोध अथवा कष्ट में होता है, तो अपने लिये तथा अपनी संतान आदि के लिये शाप की प्रार्थना करता है, जिन्हें हम इसलिये अनदेखा कर देते हैं कि यह मुख से विनाश माँग रहा है, परन्तु दिल में उसका ऐसा विचार नहीं है। परन्तु यदि हम मनुष्य के शाप की माँग के अनुसार उन्हें तुरन्त विनाश में डाल दें, तो फिर शीघ्र ही यह लोग मृत्यु का स्वाद चख लें, इसीलिये हदीस में आता है : "तुम अपनी संतान के लिये तथा अपने माल-व्यापार के लिये अपशब्द मत निकाला करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे अपशब्द उस क्षण को प्राप्त कर लें, जिस समय अल्लाह की ओर से प्रार्थनाऐं स्वीकार की जाती हैं। अत: वह तुम्हारे अपशब्द स्वीकार कर ले।" (सुनन अवी दाऊद, किताबुल वित्र, बाबुन नहये अन यदअऊल इन्सान अला अहलेही व मालेही, तथा मुस्लिम किताबुल ज़ुहद, फ़ी हदीस जाबिर अत-तवील)

The Ummah Technology Mission

كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ كَأَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ إِلَىٰ ضُرٍّ مَّسَّهُ ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢﴾

को दूर कर देते हैं, तो वह ऐसा हो जाता है कि जैसे उसने अपने कष्ट के लिए जो उसे पहुँचा था कभी हमें पुकारा ही नहीं था।[1] इन सीमा उल्लंघन करने वालों के कर्म को उनके लिए उसी प्रकार प्रिय प्रतीत होने वाला बना दिया गया है।[2]

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ مِن قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا۟ وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَٰتِ وَمَا كَانُوا۟ لِيُؤْمِنُوا۟ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٣﴾

(१३) तथा हमने तुमसे पूर्व बहुत से ऐसे गिरोहों को नष्ट कर दिया जबकि उन्होंने अत्याचार किया, यद्यपि उनके पास उनके पैग़म्बर भी निशानियाँ लेकर आये तथा वे कब ऐसे थे कि ईमान ले आते? हम

---

[1] यह मनुष्य की उस अवस्था का वर्णन है जो मनुष्य के बहुमत की करनी है। बल्कि बहुत से अल्लाह के मानने वाले भी इस आलस्य का कार्य सामान्य रूप से करते हैं कि दुख के समय अत्यधिक अल्लाह-अल्लाह हो रहा है, प्रार्थनायें की जा रही हैं, तौबा तथा क्षमा-याचना का प्रयोजन हो रहा है। परन्तु जब अल्लाह तआला दुख का वह कठोर समय निकाल देता है, तो फिर अल्लाह के दरबार में विनय एवं प्रार्थना से भी अनजान हो जाते हैं तथा अल्लाह ने उनकी प्रार्थनाओं को स्वीकार करके जिस कठिनाईयों से स्वतन्त्रता दिलायी उस पर अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करने का भी सौभाग्य उनको नहीं होता।

[2] यह कर्मों की शोभा परीक्षा एवं अवसर के अनुरूप अल्लाह की ओर से भी हो सकती है, शंकाओं के द्वारा शैतान की ओर से भी हो सकती है तथा मनुष्य के उस इन्द्रीय की ओर से भी हो सकती है, जो मनुष्य को बुराई करने पर तैयार करता है। ﴿إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌۢ بِالسُّوٓءِ﴾ (सूरः यूसुफ़, ५३) फिर भी इसके शिकार वही लोग होते हैं जो सीमा पार कर जाते हैं। यहाँ अर्थ यह हुआ कि उनके लिये प्रार्थना से मुँह मोड़ना, अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करने में आलस्य तथा इच्छाओं तथा इन्द्रियों के साथ कर्म सुशोभित कर दिया गया है। (फ़तहुल-क़दीर)

The Ummah Technology Mission

अपराधी लोगों को इसी प्रकार दण्ड दिया करते हैं।[1]

ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾

(१४) फिर उनके पश्चात हमने संसार में उनके स्थान पर तुमको बसाया,[2] ताकि हम देख लें कि तुम कैसे कार्य करते हो।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾

(१५) तथा जब उनके समक्ष हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं[3] जो बिल्कुल स्पष्ट हैं, तो यह लोग जिनको हमारे पास आने का विश्वास नहीं है, इस प्रकार कहते हैं कि इसके अतिरिक्त अन्य क़ुरआन लाईये[4] अथवा इसमें कुछ परिवर्तन कर दीजिए, (आप सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम) यह कह दीजिए कि मुझे यह अधिकार नहीं कि अपनी ओर से उसमें परिवर्तन कर दूँ,[5] बस मैं तो उसी का पालन करूँगा जो मेरे पास वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा मेरे पास आयी है। यदि मैं अपने प्रभु

---

[1]यह मक्का के काफ़िरों को चेतावनी है कि पूर्व के समुदायों की भाँति तुम भी विनाश का सामना कर सकते हो।

[2] خلائف बहुबचन है خليفة का। इसके अर्थ हैं, जो विगत समुदायों का स्थान ले अथवा एक समुदाय जो दूसरे की जगह ले।

[3]अर्थात जो अल्लाह के पूज्य तथा एक होने का प्रमाण है।

[4]अर्थ यह है कि या तो इस पवित्र क़ुरआन के स्थान पर दूसरा लायें अथवा फिर इसमें हमारी इच्छानुसार परिवर्तन करें।

[5]अर्थात मुझसे दोनों ही बातें सम्भव नहीं, क्योंकि मुझे इसमें किसी प्रकार के परिवर्तन की भी शक्ति नहीं।

The Ummah Technology Mission

की अवज्ञा करूँ तो मैं एक बड़े दिन की यातना का भय रखता हूँ।[1]

قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَاۤ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۶﴾

(१६) (आप) कह दीजिए कि यदि अल्लाह ने चाहा होता तो न तो मैं तुमको वह पढ़कर सुनाता तथा न अल्लाह (तआला) तुमको उसकी सूचना देता,[2] क्योंकि इससे पूर्व तो मैं एक दीर्घ आयु तक तुम में रह चुका हूँ। फिर क्या तुम समझ नहीं रखते ?[3]

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۱۷﴾

(१७) तो उससे अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्यारोपण करे अथवा उसकी आयतों को मिथ्या कहे, निश्चय ऐसे अपराधी कभी सफल नहीं होंगे।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

(१८) तथा ये लोग अल्लाह को छोड़ कर[4] ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जो न उनको

---

[1]यह उस पर अधिक बल दिया गया है। मैं तो मात्र उसी का अनुयायी हूँ जो अल्लाह की ओर से मुझपर उतारा गया है। इसमें किसी प्रकार की कमी अथवा बढ़ोत्तरी मैं करूँगा तो उस महान दिन की यातना से मैं सुरक्षित नहीं रह सकता।

[2]अर्थात सम्पूर्ण मामला अल्लाह की इच्छा पर आधारित है, वह चाहता तो मैं पढ़कर नहीं सुनाता, न तुम्हें इसकी कोई सूचना होती। कुछ ने इसका अर्थ यह किया है कि मेरे मुख से वह तुम्हें इस क़ुरआन के विषय में कुछ नहीं बतलाता।

[3]तथा तुम भी जानते हो कि नबूअत की घोषणा से पूर्व तुम्हारे साथ चालीस वर्ष मैंने व्यतीत किये हैं। क्या मैंने किसी गुरू से कुछ सीखा ? इसी प्रकार तुम मेरे सच्चे होने तथा माल को सुरक्षित रखने वाला समझते रहे हो। क्या अब यह सम्भव है कि मैं अल्लाह पर झूठ गढ़ना प्रारम्भ कर दूँ ? इन दोनों बातों का यह अर्थ है कि यह क़ुरआन अल्लाह ही का उतारा हुआ है, न मैंने किसी से सुना अथवा सीख कर इसे वर्णन किया है तथा न यों ही झूठ इसे अल्लाह से सम्बन्धित कर दिया है।

[4]अर्थात अल्लाह की उपासना की सीमा पार करके न कि अल्लाह की इबादत को त्याग कर। क्योंकि मूर्तिपूजक अल्लाह की भी इबादत करते थे और अन्यों को भी।

The Ummah Technology Mission

مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِندَ اللَّهِ ۚ قُلْ أَتُنَبِّئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٨﴾

हानि पहुँचा सकें तथा न उनको लाभ पहुँचा सकें [1] तथा कहते हैं कि ये अल्लाह के समक्ष हमारी सिफ़ारिश करने वाले हैं।[2] (आप) कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह को ऐसे विषय की सूचना देते हो जिसे वह नहीं जानता आकाशों में तथा न धरती में।[3] वह पवित्र तथा सर्वश्रेष्ठ है उन लोगों के शिर्क (अनेकेश्वरवाद) से।[4]

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ

(१९) तथा सभी लोग एक ही उम्मत (समुदाय-धर्म) के थे, फिर उन्होंने मतभेद उत्पन्न किये [5] तथा यदि एक बात न होती जो आपके प्रभु

---

[1]जबकि पूजनीय की गरिमा यह होती है कि वह अपने आज्ञाकारियों को प्रतिफल तथा अवज्ञाकारियों को दण्ड देने में सामर्थ्य हो।

[2]अर्थात उनकी सिफ़ारिश से अल्लाह हमारी आवश्यकतायें पूरी कर देता है। हमारी विगड़ी बना देता है अथवा हमारे शत्रु की बनी हुई को बिगाड़ देता है। अर्थात मूर्तिपूजक भी अल्लाह के अतिरिक्त जिनकी पूजा करते थे उनको लाभ-हानि में पूर्ण रूप से निश्चित नहीं समझते थे। बल्कि अपने तथा अल्लाह के मध्य माध्यम तथा सिफ़ारिश करने वाला समझते थे।

[3]अर्थात अल्लाह को तो इस बात का ज्ञान नहीं कि उसका कोई साझीदार भी है अथवा उसके दरबार में सिफ़ारिश करने वाले भी होगें ? इस प्रकार यह मूर्तिपूजक अल्लाह को सूचना देते हैं कि तुझे यदि सूचना नहीं परन्तु हम तुझे बताते हैं कि तेरे साझीदार भी हैं और सिफ़ारिश करने वाले भी हैं जो अपने श्रृद्धालुओं की सिफ़ारिश करेंगे।

[4]अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मूर्तिपूजकों की यह बात निराधार है, अल्लाह तआला इन सभी बातों से पवित्र तथा श्रेष्ठ है।

[5]अर्थात यह शिर्क (अनेकेश्वरवाद) लोगों की अपनी उपज है। वरन् पहले इसका कोई स्तित्व नहीं था। सभी लोग एक ही धर्म तथा एक ही मार्ग पर थे जो इस्लाम है जिसमें एकेश्वरवाद को मूल स्थान प्राप्त है। आदरणीय नूह तक लोग इसी मार्ग एकेश्वरवाद पर चलते रहे। फिर उनमें मतभेद हो गया तथा कुछ लोगों ने अल्लाह के साथ अन्य को भी देवता, चिन्ताहारक तथा कष्टनिवारक समझना प्रारम्भ कर दिया।

The Ummah Technology Mission

مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٩﴾

की ओर से निर्धारित की जा चुकी है, तो जिस चीज़ में यह लोग मतभेद कर रहे हैं उनका पूर्ण रूप से निर्णय हो चुका होता।[1]

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۖ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانتَظِرُوا ۖ إِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा ये लोग यह कहते हैं कि उन पर कोई चमत्कार क्यों नहीं उतरा?[2] (तो आप) कह दीजिए कि परोक्ष का ज्ञान मात्र अल्लाह को है,[3] तो तुम भी प्रतीक्षा में रहो मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा में हूँ।

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُم مَّكْرٌ

(२१) तथा जब हम लोगों को दुख पहुँचने के पश्चात सुख का स्वाद चखाते हैं,[4] तो वह तुरंत हमारी आयतों के विषय में धूर्तता करने

---

[1]अर्थात यदि अल्लाह का यह निर्णय न होता कि सभी बातों के बताने से पूर्व किसी को यातना नहीं देना है, उसी प्रकार उसने सृष्टि के लिये भी एक निर्धारित समय का निर्धारण न किया होता तो नि:सन्देह उनके मध्य मतभेद का निर्णय तथा ईमानवालों को आज्ञाकारी तथा काफ़िरों को यातना तथा कष्ट में लिप्त कर चुका होता।

[2]इससे तात्पर्य कोई बड़ा तथा खुला चमत्कार है। जैसे समूद के समुदाय के लिये ऊँटनी का प्रकट होना। उनके लिये सफ़ा पर्वत को स्वर्ण का अथवा मक्के के पर्वतों को समाप्त कर उनके स्थान पर नहरें तथा बाग़ बनाने का अथवा अन्य इस प्रकार का कोई चमत्कार प्रकट करके दिखाया जाये।

[3]अर्थात यदि अल्लाह तआला चाहे तो उनकी इच्छाओं के अनुसार चमत्कार प्रदर्शित कर सकता है। परन्तु उसके पश्चात भी यदि वे ईमान नहीं लाये तो फिर अल्लाह का नियम यह है कि ऐसे समुदाय को तुरन्त समाप्त कर देता है। इसलिये इस बात का ज्ञान केवल उसी को है कि किसी समुदाय के लिये उसकी इच्छाओं के अनुसार चमत्कार प्रदर्शन करना, उसके पक्ष में अच्छा है अथवा नहीं? तथा उसी प्रकार इसका भी ज्ञान केवल उसी को है कि उनके इच्छित चमत्कार यदि उनको न दिखाये गये तो उन्हें कितना समय दिया जायेगा? इसीलिये आगे कहा गया कि तुम भी प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में से हूँ।

[4]दुख के पश्चात सुख का अर्थ है निर्धनता, सूखा तथा दुख एवं आपत्ति के पश्चात जीविका का बाहुल्य, जीवन हेतु सामग्री की अधिकता आदि।

The Ummah Technology Mission

فِيْٓ اٰيَاتِنَا ؕ قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا ؕ اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ﴿٢١﴾

लगते हैं।[1] (आप) कह दीजिए कि अल्लाह प्रयोजन में तुमसे अधिक तीव्र है।[2] नि:सन्देह हमारे फ़रिश्ते तुम्हारे छलकपट को लिख रहे हैं।

هُوَ الَّذِيْ يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلْكِ ۚ وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ

(२२) वह (अल्लाह) ऐसा है जो तुम्हें जल तथा थल में यात्रा कराता है।[3] यहाँ तक कि जब तुम नाव में होते हो, तथा वे नवकाऐं लोगों को अनुकूल वायु के द्वारा लेकर चलती है तथा वे लोग उनसे प्रफुल्ल होते हैं, उन पर एक प्रचन्ड वायु का झोंका आता है तथा प्रत्येक ओर से लहरें उठती हैं तथा वे समझते हैं कि (बुरे) आ घिरे,[4] (उस समय)

---

[1] इसका अर्थ यह है कि वे हमारे इन प्रदानों का सम्मान तथा उनपर अल्लाह के कृतज्ञ नहीं होते अपितु कुफ्र तथा शिर्क करने लगते हैं अर्थात यह उनका वह बुरा उपाय है जिसे अल्लाह के प्रदानों की तुलना में अपनाते हैं।

[2] अर्थात अल्लाह का उपाय इससे कहीं अधिक तीव्र है, जो वे अपनाते हैं। तथा वह यह है कि वह उनको पकड़ने का सामर्थ्य रखता है, वह जब चाहे उन को पकड़ सकता है, तुरंत भी तथा उसका उपाय देर का हो तो बाद में भी। मकर مكر अरबी भाषा में उपाय तथा कूटनीति को कहते हैं, जो अच्छा भी हो सकता है, बुरा भी। यहाँ अल्लाह के दण्ड तथा पकड़ को मकर مكر कहा गया है।

[3] يسيركم वह तुम्हें चलाता अथवा चलने-फिरने का सामर्थ्य प्रदान करता है। "थल में" अर्थात उसने तुम्हें पग दिया जिनसे तुम चलते हो, सवारियाँ उपलब्ध कीं, जिन पर सवार होकर दूर स्थान की यात्रा करते हो। तथा "जल में" अर्थात अल्लाह (तआला) ने तुम्हें नवकाएँ तथा पोत बनाने का गुण तथा समझ प्रदान किया, तुमने उन्हें निर्मित किया तथा उनके द्वारा समुद्र में दूर तक यात्रा करते हो।

[4] أحيط بهم का अर्थ है, जिस प्रकार से शत्रु किसी समुदाय अथवा नगर का घेरा अर्थात नाकेबन्दी कर लेता है तथा फिर वे शत्रु की दया तथा कृपा पर होते हैं, उसी प्रकार जब वे तीव्र वायु के थपेड़ों तथा भंवर में घिर जाते हैं तथा मृत्यु उनके समक्ष नृत्य कर रही होती है।

The Ummah Technology Mission

لَئِنْ أَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٢٢﴾

सभी शुद्ध विश्वास तथा आस्था के साथ अल्लाह ही को पुकारते हैं[1] कि यदि तू इससे बचा ले तो हम अवश्य (तेरे) कृतज्ञ बन जायेंगे।

---

[1]अर्थात फिर वे प्रार्थना में अल्लाह के अतिरिक्त अन्य का सममिश्रण नहीं करते जिस प्रकार सामान्य अवस्था में करते हैं। सामान्य अवस्था में वे कहते हैं कि ये महात्मा भी अल्लाह के प्रिय भक्त हैं, इन्हें भी अल्लाह ने कुछ अधिकार दे रखा है तथा उन्हीं के द्वारा हम अल्लाह की निकटता प्राप्त करने की खोज में हैं। परन्तु जब इस प्रकार की कठिनाईयों में घिर जाते हैं, तो सभी राक्षसी तर्क भूल जाते हैं तथा केवल अल्लाह ही याद रह जाता है तथा फिर उसी को पुकारते हैं। इससे एक बात विदित होती है कि मनुष्य की प्रकृति में एक अल्लाह की ओर आकर्षित होने की भावना रखी गयी है। मनुष्य समाज से प्रभावित होकर इस प्रकृति अथवा भावना को दबा देता है, परन्तु कष्ट के समय यह भावना उभर आती है तथा यह प्रकृति प्रकट होती है जिससे ज्ञात हुआ कि एकेश्वरवाद मनुष्य की अन्तरात्मा की पुकार है तथा मूल वस्तु है, जिससे मनुष्य को मुख नहीं मोड़ना चाहिए। क्योंकि इससे मुख मोड़ना प्रकृति से मुँह मोड़ना है जो स्पष्टतया भटकाव है। दूसरी बात यह ज्ञात हुई कि मूर्तिपूजक जब इस प्रकार के कष्ट में घिर जाते तो अपने स्वीकृत देवताओं के बजाय केवल एक अल्लाह को पुकारते थे। अत: आदरणीय इकरमा बिन अबी जहल के विषय में आता है कि जब मक्का विजय हुआ तो ये वहाँ से भाग गये। बाहर किसी स्थान पर नाव पर सवार हुए, तो नाव तूफ़ान के घेरे में आ गयी, जिस पर मल्लाह ने नाव में सवार लोगों से कहा कि आज एक अल्लाह से प्रार्थना करो, तुम्हें उसके अतिरिक्त इस तूफ़ान से कोई मुक्ति दिलाने वाला नहीं। आदरणीय इकरमा कहते हैं कि मैंने सोचा यदि समुद्र में मुक्ति दिलाने वाला एक अल्लाह ही है, तो धरती में भी मुक्ति दिलाने वाला अवश्य ही वही है। तथा यही बात मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कहते हैं। अत: उन्होंने निर्णय कर लिया यदि मैं यहाँ से जीवित बच गया तो मक्का वापस जाकर इस्लाम धर्म स्वीकार कर लूँगा। अत: ये नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तथा मुसलमान हो गये رضي الله عنه (सुनन नसाई, अबू दाऊद संख्या २६८३, तथा अलबानी के वर्णनानुसार 'सहीह' संख्या १७२३) परन्तु दुर्भाग्य से मुसलमानों में जनता इस प्रकार के शिर्क में फंसी हुई है कि संकट के समय में भी अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को पुकारती है। मरे हुए महात्माओं को संकटहारी समझती है तथा उन्ही को सहायता के लिए पुकारती है। فإنا لله و إنا إليه راجعون अफ़सोस !

The Ummah Technology Mission

فَلَمَّآ اَنْجٰىهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِى
الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ
اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ
فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٣﴾

(२३) फिर जब अल्लाह (तआला) उनको बचा लेता है, तो तुरंत ही वह धरती में अनर्थ उपद्रव करने लगते हैं।[1] हे लोगो ! यह तुम्हारी उदण्डता तुम्हारे लिए दुखदायी होने वाली है,[2] साँसारिक जीवन के (कुछ) लाभ हैं, फिर तुमको हमारे पास आना है। फिर हम सब तुम्हारा किया हुआ तुम को बता देंगे।

اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ
بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ
النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ
اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ
وَظَنَّ اَهْلُهَآ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ
عَلَيْهَآ ۙ اَتٰىهَآ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا
فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ
بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ

(२४) साँसारिक जीवन की दशा ऐसी है, जैसे हमने आकाश से पानी बरसाया, फिर उस से धरती की वनस्पति जिनको मनुष्य तथा पशु खाते हैं, खूब हरी-भरी होकर निकली। यहाँ तक जब वह धरती अपनी शोभा का पूरा भाग ले चुकी तथा उसका अत्यन्त सौन्दर्य हो गया तथा उसके मालिकों ने समझा कि अब हम इस पर पूर्ण रूपेण अधिकारी हो चुके तो दिन में अथवा रात में उस पर हमारी ओर से कोई आदेश (दुर्घटना) आ गया, तो हमने उसको ऐसा साफ़ कर दिया[3] कि जैसे कल

---

[1] यह मनुष्य की उसी कृतघ्नता के व्यवहार का वर्णन है, जिसका वर्णन अभी आयत संख्या १२ में गुजर चुका है तथा क़ुरआन में भी अन्य विभिन्न स्थानों पर अल्लाह ने इसका वर्णन किया है।

[2] अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुम यह कृतघ्नता तथा उदण्डता कर लो चार दिन के जीवन का आन्नद लेकर। अन्ततः तुम्हें हमारे ही पास आना है, फिर हम तुम्हें, जो कुछ तुम करते रहे होगे बतायेंगे अर्थात उसका दण्ड देंगे।

[3] حَصِيدًا का अर्थ है محصودًا अर्थात ऐसी खेती जिसे काटकर एक ओर रख दिया गया हो तथा खेत साफ हो गया हो। साँसारिक जीवन को इस प्रकार खेती से उपमा देकर इसके अस्थायित्व तथा सामयिकता को प्रदर्शित किया गया है कि खेती भी वर्षा के पानी से फलती-फूलती है तथा बढ़ती है। परन्तु उसे भी काटकर विनाश के घाट उतार दिया जाता है।

The Ummah Technology Mission

لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾

यहाँ थी ही नहीं। हम इसी प्रकार निशानियों का सविस्तार वर्णन करते हैं ऐसे लोगों के लिए जो विचार करते हैं।

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा अल्लाह (तआला) शान्त स्थान की ओर तुम को बुलाता है तथा जिसको चाहता है संमार्ग दर्शाता है।

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ؕ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٦﴾

(२६) जिन लोगों ने पुण्य किया है उनके लिए भलाई है तथा कुछ अधिक भी[1] तथा उनके मुख पर न कालिमा छायेगी तथा न अपमान, ये लोग स्वर्ग में रहने वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।

وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ

(२७) तथा जिन लोगों ने बुरे कर्म किये उनको बुराई का दण्ड समान मिलेगा[2] तथा उन पर अपमान छा जायेगा, उनको अल्लाह (तआला) से कोई बचा न पायेगा।[3] जैसे कि उनके मुख

---

[1] زِيَادَةٌ का कई अर्थ लिया गया है, परन्तु हदीस में इसकी व्याख्या अल्लाह के दर्शन से की गयी है, जो स्वर्ग वालों को स्वर्ग तथा स्वर्ग के सुख प्रदान के पश्चात प्रदान किया जायेगा। (सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान बाब इस्बाते रूयतिल मोमिनीन फ़िल आख़िरते लेरब्बेहिम)

[2] पूर्व की आयत में स्वर्ग में निवास करने वाले लोगों का वर्णन था, उसमें बताया गया था कि उन्हें इन पुण्य कार्यों का बदला कई-कई गुना मिलेगा तथा फिर इससे अधिक अल्लाह के दर्शन से सम्मानित होंगे। इस आयत में बताया जा रहा है कि बुराई का बदला बुराई के बराबर ही मिलेगा। سَيِّئَات का तात्पर्य कुफ़्र (अधर्म) तथा शिर्क तथा अन्य बुराईयाँ हैं।

[3] जिस प्रकार ईमान वालों को बचाने वाला अल्लाह तआला होगा, वह उस दिन उन्हें अपनी विशेष कृपा प्रदान करेगा, इसके अतिरिक्त उनके लिये अल्लाह तआला अपने विशेष भक्तों को सिफ़ारिश की आज्ञा प्रदान करेगा, जिनकी सिफ़ारिश वह स्वीकार करेगा।

The Ummah Technology Mission

أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٧﴾

पर अंधेरी रात के पर्त लपेट दिये गये हैं।[1] ये लोग नरक में रहने वाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنتُمْ وَشُرَكَاؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَاؤُهُم مَّا كُنتُمْ إِيَّانَا تَعْبُدُونَ ﴿٢٨﴾

(२८) तथा वह दिन भी स्मरणीय है, जिस दिन हम उन सभी को एकत्रित करेंगे।[2] फिर मूर्तिपूजकों से कहेंगे कि तुम तथा तुम्हारे साझीदार अपने स्थान पर ठहरो।[3] फिर हम उनमें आपस में फूट डाल देंगे,[4] तथा उनके

---

[1]यह अतिश्योक्ति है कि उनके मुख इतने काले होंगे। इसके विपरीत ईमानवालों के मुख कोमल तथा प्रकाश युक्त होंगे। जिस प्रकार सूरः *आले इमरान* आयत संख्या १०६ में है ﴿يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ﴾ तथा (सूरः *अबस*, ३८-४१) तथा सूरः *कियामः* में है।

[2] جميعاً से तात्पर्य आदि से अन्त तक के सभी धरती वासी मनुष्य तथा जिन्नात हैं, सबको अल्लाह तआला एकत्र करेगा। जिस प्रकार कि अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَحَشَرْنَاهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا﴾

"हम उन सभी को एकत्रित करेंगे, किसी एक को भी न छोड़ेंगे।"(सूरः *कहफ़*, ४७)

[3]उनकी अपेक्षा ईमानवालों को दूसरी ओर कर दिया जायेगा। अर्थात ईमानवालों तथा शिर्क एवं कुफ़्र करने वालों को पृथक-पृथक एक-दूसरे से अलग कर दिया जायेगा। जैसे फ़रमाया :

﴿وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ﴾

"ऐ अपराधियो ! आज तुम (एक-दूसरे से) अलग हो जाओ।" (सूरः *यासीन*, ५८)

﴿يَوْمَئِذٍ يَصَّدَّعُونَ﴾

"उस दिन लोग गुटों में बट जायेंगे।" (सूरः *रोम*, ४३)

अर्थात दो गुटों में। أي يصيرون صدعين (इब्ने कसीर)

[4]अर्थात संसार में उनका आपस में जो विशेष सम्बन्ध था, वह समाप्त कर दिया जायेगा तथा वे एक-दूसरे के शत्रु बन जायेंगे तथा उनके देवता इस बात ही को नकार देंगे कि ये लोग उनकी पूजा किया करते थे, उनको सहायता के लिये पुकारते थे, उनके नाम का प्रसाद-भोग लगाते थे।

The Ummah Technology Mission

वे साझीदार कहेंगे कि तुम हमारी इबादत (पूजा) नहीं करते थे।

فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿٢٩﴾

(२९) तो हमारे तुम्हारे मध्य अल्लाह पर्याप्त है गवाह के रूप में कि हमको तुम्हारी इबादत की सूचना भी न थी।[1]

هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٣٠﴾

(३०) उस स्थान पर प्रत्येक व्यक्ति अपने पूर्व किये गये कार्यों का परीक्षण कर लेगा,[2] तथा ये लोग अल्लाह की ओर जो उनका वास्तविक मालिक है, लौटाये जायेंगे तथा जो कुछ झूठ (ईष्टदेव) बना रखे थे, सभी उन से खो जायेंगे।[3]

---

[1]यह अस्वीकार का कारण है कि हमें तो कुछ पता ही नहीं, तुम क्या कुछ किया करते थे तथा हम झूठ बोल रहे हों तो हमारे मध्य अल्लाह तआला गवाह है तथा वह पर्याप्त है, उस की गवाही के पश्चात किसी अन्य साक्षी की कोई आवश्यकता ही नहीं रह जाती। यह आयत इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि मूर्तिपूजक जिनको सहायता के लिये पुकारते थे, वह मात्र पत्थर की मूर्तियाँ नहीं थीं (जिस प्रकार आजकल क़ब्रपूजक अपनी क़ब्रपूजा को उचित सिद्ध करने के लिए कहते हैं कि इस प्रकार की आयतें तो मूर्तियों के लिये हैं) अपितु वह बुद्धि तथा ज्ञान रखने वाले लोग ही होते थे जिनके मरने के पश्चात लोग उनकी मूर्तियाँ बनाकर पूजना प्रारम्भ कर देते थे। जिस प्रकार आदरणीय नूह के समुदाय के कर्मों से भी सिद्ध होता है जिसका विस्तृत वर्णन सहीह बुख़ारी में लिखा है। दूसरे यह भी ज्ञात हुआ कि मरने के पश्चात मनुष्य कितना भी बड़ा महात्मा क्यों न हों, यहाँ तक कि नबी तथा रसूल हो। उसे दुनिया की स्थिति का ज्ञान नहीं होता, उसके अनुयायी तथा श्रद्धालु उसे सहायता के लिये पुकारते हैं, उसके नाम का प्रसाद-भोग चढ़ाते हैं, उसकी क़ब्र पर मेले-ठेले का आयोजन होता है, परन्तु वह अंजान होता है तथा इन सभी बातों का इंकार ऐसे लोग क़ियामत (प्रलय) वाले दिन करेंगे। यही बात *सूरः अहक़ाफ़* आयत संख्या ५ तथा ६ में वर्णित की गयी है।

[2]अथवा स्वाद चख लेगा।

[3]अर्थात कोई देवता तथा कष्टनिवारक वहाँ काम नहीं आयेगा। कोई किसी की कठिनाई दूर करने का सामर्थ्य न रखेगा।

The Ummah Technology Mission

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣١﴾

(३१) (आप) कहिए कि वह कौन है, जो तुमको आकाश तथा धरती से जीविका पहुँचाता है अथवा वह कौन है जो कानों तथा आँखों पर पूर्ण अधिकार रखता है तथा वह कौन है जो जीवधारी को निर्जीव से निकालता है तथा निर्जीव से सजीव को निकालता है तथा वह कौन है जो सभी कार्यों का संचालन करता है ? अवश्य वह यही कहेंगे कि अल्लाह।[1] तो उनसे कहिए कि फिर डरते क्यों नहीं ?

فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۖۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٣٢﴾

(३२) तो यह है अल्लाह (तआला) जो तुम्हारा सत्य प्रभु है। फिर सत्य के पश्चात अन्य क्या रह गया सिवाय भटकावे के, फिर कहाँ भटके जाते हो ?[2]

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾

(३३) इसी प्रकार आप के प्रभु की यह बात कि यह ईमान न लायेंगे, सभी अवज्ञाकारी लोगों के विषय में में सिद्ध हो चुकी है।[3]

---

[1]इस आयत से भी स्पष्ट होता है कि मूर्तिपूजक अल्लाह के प्रभुत्व, सृजन, स्वामित्व तथा उसको प्रत्येक कार्य का हल करने वाला स्वीकार करते थे। परन्तु उसके उपरान्त चूँकि वह उसकी उपासना में दूसरों को साझीदार ठहराते थे, इसीलिये अल्लाह ने उन्हें नरक का ईंधन बताया। आजकल के ईमान के दावेदार भी इसी उपासना-एकेश्वरवाद के इंकार करने वाले हैं।

[2]अर्थात पोषक तथा पूज्य तो यही है, जिसके सम्बन्ध में तुम्हें स्वयं स्वीकार है कि प्रत्येक वस्तु का स्रष्टा तथा स्वामी एवं संयोजक वही है। फिर इस इबादत के योग्य को छोड़कर जो तुम अन्य को देवता बनाये फिरते हो वह भटकावे के अतिरिक्त क्या है तुम्हारी समझ में यह बात क्यों नही आती ? तुम कहाँ फिरे जाते हो ?

[3]अर्थात जिस प्रकार मूर्तिपूजक सारी बातों को स्वीकार कर लेने के उपरान्त अपनी मूर्तिपूजा पर स्थिर हैं तथा उसे त्यागने के लिये तैयार नहीं, इसी प्रकार तेरे प्रभु की यह बात सिद्ध हो गयी कि यह ईमान नहीं लाने वाले हैं। क्योंकि यह दोषपूर्ण मार्ग

The Ummah Technology Mission

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٤﴾

(३४) (आप इस प्रकार) कहिए कि क्या तुम्हारे साझीदारों में कोई ऐसा है जो प्रथम बार भी पैदा करे फिर पुन: पैदा करे ? (आप) कह दीजिए कि अल्लाह ही पहली बार पैदा करता है फिर वही पुन: भी पैदा करेगा। फिर तुम कहाँ फिरे जाते हो ?[1]

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) (आप) कहिए कि तुम्हारे साझीदारों में कोई ऐसा है कि सत्य का मार्ग बताता हो ? (आप) कह दीजिए कि अल्लाह ही सत्य का मार्ग बताता है।[2] तो फिर जो शक्ति सत्य बात का मार्ग बतलाती हो, वह अधिक अनुसरण एवं पालन के योग्य है अथवा वह व्यक्ति जिसको बिना बताये स्वयं ही मार्ग न

छोड़कर सत्य मार्ग पर चलने के लिये तैयार नहीं हैं, तो मार्गदर्शन तथा ईमान उन्हें किस प्रकार प्राप्त हो सकता है ? यह वही बात है जिसे अन्य स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया गया है।

﴿ وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴾

"परन्तु प्रकोप की बात काफ़िरों पर सिद्ध हो गयी।"(सूरः अज़्ज़ुमर,७१)

[1]मूर्तिपूजकों के मूर्तिपूजन के खोखलापन को स्पष्ट करने के लिये उनसे पूछा जा रहा है कि बताओ जिन्हें तुम अल्लाह का साझीदार बताते हो, क्या उन्होंने इस सृष्टि को प्रथम बार पैदा किया है ? अथवा पुन: उसे पैदा करने का सामर्थ्य रखते हैं ? नहीं, नि:सन्देह नहीं, प्रथम बार पैदा करने वाला भी अल्लाह ही है तथा पुन: दोबारा वही क़ियामत (प्रलय) के दिन सभी को जीवित करेगा, तो तुम प्रकाश का मार्ग छोड़कर कहाँ फिरे जा रहे हो ?

[2]अर्थात भटके हुए यात्रियों का मार्ग बताने वाला तथा दिलों को भटकावे से सत्य की ओर फेरनेवाला भी अल्लाह तआला ही है। उनके साझीदारों में कोई ऐसा नहीं जो इस कार्य को कर सके।

The Ummah Technology Mission

दिखायी दे ?[1] तो तुम को क्या हो गया है, तुम कैसे निर्णय करते हो ?[2]

وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا ۚ إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा उनमें से अधिकतर लोग निराधार (अनुमानित) विचारों पर चल रहे हैं। नि:सन्देह निर्मूल (अनुमानित) विचार सत्य (की पहचान) में तनिक भी काम नहीं दे सकता।[3] ये जो कुछ कर रहे हैं नि:सन्देह अल्लाह सब कुछ जानता है।[4]

وَمَا كَانَ هَٰذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ

(३७) तथा यह क़ुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह (की प्रकाशना) के सिवाय (स्वयं ही) गढ़ लिया गया हो, अपितु यह तो (उन किताबों) की प्रमाण पुस्तक है, जो इसके पूर्व

---

[1]फिर अनुसरण योग्य कौन है? वह व्यक्ति जो देखता, सुनता तथा लोगों को सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है? अथवा जो अंधा तथा बहरा होने के कारण स्वयं मार्ग पर चल भी नहीं सकता, जब तक कि अन्य लोग उसे मार्ग पर न डाल दें अथवा हाथ पकड़कर न ले जायें?

[2]अर्थात तुम्हारी बुद्धि को क्या हो गया है? तुम किस प्रकार अल्लाह तथा उसकी सृष्टि को उसके समान ठहरा रहे हो? तथा अल्लाह के साथ अन्यों को भी इबादत में साझीदार बना रहे हो? जबकि इन प्रमाणों की माँग है कि केवल इसी एक अल्लाह को इबादत (आराधना) के योग्य माना जाये तथा सभी प्रकार की इबादतें उसी के लिए विशेष रूप से मानी जायें।

[3]परन्तु बात यह है कि लोग निराधार बातों पर चलने वाले हैं, यद्यपि जानते हैं कि प्रमाणों के सापेक्ष अन्ध विश्वास, अनुमान तथा कल्पना एवं विचार का कोई महत्व नहीं, क़ुरआन में ظن विश्वास तथा अनुमान दोनों अर्थों में प्रयोग हुआ है। यहाँ दूसरा अर्थ लिया गया है।

[4]अर्थात इस हटधर्मी का दण्ड वह देगा कि प्रमाण न रखने के उपरान्त यह मात्र अंधविश्वास तथा कुविचारों के पीछे लगे रहे तथा बुद्धि एवं समझ से तनिक काम नहीं लिया।

The Ummah Technology Mission

لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٧﴾

(उतर) चुकी है,[1] तथा पुस्तक (आवश्यक नियमों) का विस्तृत वर्णन है।[2] इसमें कोई बात सन्देह[3] की नहीं कि अखिल जगत के प्रभु की ओर से है।[4]

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾

(३८) क्या यह लोग इस प्रकार कहते हैं कि आपने उसको गढ़ लिया है? (आप) कह दीजिए कि तो फिर तुम इसके समान एक ही सूरः लाओ तथा अल्लाह के अतिरिक्त जिन-जिन को बुला सको उनको बुला लो यदि तुम सत्यवादी हो।[5]

---

[1]जो इस बात का प्रमाण है कि क़ुरआन गढ़ा हुआ नहीं है, बल्कि उस शक्ति का उतारा हुआ है जिसने पूर्व की किताबें भी उतारीं।

[2]अर्थात हराम एवं हलाल तथा उचित एवं अनुचित का विस्तृत वर्णन करने वाला।

[3]उसकी शिक्षाओं में, उसकी वर्णित कथाओं तथा घटनाओं में तथा भविष्य में होने वाली घटनाओं के विषय में।

[4]यह सब बातें स्पष्ट करती हैं कि ये अखिल जगत के प्रभु ही की ओर से उतारी गयी है जो "भूत का ज्ञाता" भी है तथा "भविष्य का ज्ञाता" भी।

[5]इन सभी यर्थाथ तथा प्रमाण के उपरान्त भी यदि तुम्हारा यही दावा है कि यह क़ुरआन मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का गढ़ा हुआ है, तो वह भी तुम्हारी ही तरह का एक मनुष्य है, तुम्हारी भाषा भी उसकी ही तरह अरबी है। वह तो एक है, तुम यदि अपने दावे में सच्चे हो तो तुम संसार भर के साहित्यकारों, ज्ञानियों, वाक पटुता में दक्ष तथा वैज्ञानिकों एवं लेखकों को एकत्र कर लो तथा इस क़ुरआन की एक छोटी सी छोटी सूरः के समान प्रस्तुत कर दो। क़ुरआन करीम का यह चैलेंज आज तक उत्तर न पा सका, जिसका स्पष्ट अर्थ यह है कि यह क़ुरआन किसी व्यक्ति का कल्पित तथा बनाया हुआ नहीं है, बल्कि वास्तव में अल्लाह का कथन है जो परम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतरा है।

The Ummah Technology Mission

(३९) अपितु वे ऐसी चीज़ को झुठलाने लगे जिसको अपने ज्ञान की परिधि में नहीं लाये[1] तथा अभी उनको इसका अन्तिम परिणाम नहीं मिला।[2] जो लोग उनसे पूर्व हुए हैं उसी प्रकार उन्होंने भी झुठलाया था, तो देख लीजिए कि उन अत्याचारियों का अन्त कैसा हुआ ?[3]

بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿٣٩﴾

(४०) तथा उनमें से कुछ ऐसे हैं जो इस पर ईमान ले आयेंगे तथा कुछ ऐसे हैं कि उस पर ईमान न लायेंगे। तथा आप का प्रभु भ्रष्टाचारियों को भलि-भाँति जानता है।[4]

وَمِنْهُم مَّن يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُم مَّن لَّا يُؤْمِنُ بِهِ ۚ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٤٠﴾

---

[1]अर्थात क़ुरआन में चिन्तन तथा उसके अर्थों पर विचार किये बिना, उसको झुठलाने पर तुल गये।

[2]अर्थात क़ुरआन ने जो पूर्व की घटनायें तथा भविष्य की संभावनाओं का वर्णन किया है उसकी पूर्ण सत्यता एवं वास्तविकता भी उन पर स्पष्ट नहीं हुई, उसके बिना ही झुठलाना प्रारम्भ कर दिया अथवा दूसरा भावार्थ यह है कि उन्होंने क़ुरआन पर उचित चिन्तन किये बिना ही उसे झुठलाया, यद्यपि वह सहीह अर्थों में उस पर प्रयत्न करते तथा उन बातों पर विचार करते जो इसके अल्लाह के कथन होनें का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं, तो निस्सन्देह उसकी समझ तथा अर्थ के द्वार उनके लिये खुल जाते इस अवस्था में تَأْوِيل का अर्थ, क़ुरआन करीम की प्रस्तुति एवं रहस्य तथा मार्मिकता एवं अर्थ के स्पष्ट हो जाने के होंगे।

[3]ये उन काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों को चेतावनी देकर सावधान किया जा रहा है कि तुमसे पूर्व के समुदायों ने भी अल्लाह की आयतों को झुठलाया तो देख लो उनका क्या परिणाम हुआ ? यदि तुम इसे झुठलाने से न रूके तो तुम्हारा भी परिणाम इससे भिन्न न होगा।

[4]वह भली-भाँति जानता है कि मार्गदर्शन का अधिकारी कौन है, उसे मार्गदर्शन प्रदान कर देता है, तथा भटकावे का कौन अधिकारी है, उसके लिये भटकावे का द्वार पूर्णरूप से खोल देता है। वह न्याय करने वाला है, उसके किसी कार्य में लेशमात्र भी अत्याचार

The Ummah Technology Mission

وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ لِّي عَمَلِي وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۖ أَنتُمْ بَرِيئُونَ مِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٤١﴾

(४१) तथा यदि वे आप को झुठलाते रहें तो यह कह दीजिए कि मेरा किया हुआ मुझको मिलेगा तथा तुम्हारा किया हुआ तुमको मिलेगा। तुम मेरे किये हुए के उत्तरदायी नहीं हो और मैं तुम्हारे किये हुए का उत्तरदायी नहीं हूँ।[1]

وَمِنْهُم مَّن يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ ۚ أَفَأَنتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٢﴾

(४२) तथा उनमें कुछ ऐसे हैं जो आपकी ओर कान लगा कर सुनते हैं। क्या आप बहरों को सुनाते हैं चाहे उनको बुद्धि भी न हो ?[2]

وَمِنْهُم مَّن يَنظُرُ إِلَيْكَ ۚ أَفَأَنتَ

(४३) तथा उनमें कुछ ऐसे हैं कि आपको देख रहे हैं। फिर क्या आप अंधों को मार्ग

नहीं। जो जिस बात के योग्य होता है, उसके अनुसार वह वस्तु उसको प्रदान कर देता है।

[1]अर्थात हर प्रकार के समझाने तथा प्रमाण प्रस्तुत करने के पश्चात भी यदि वह झुठलाना न बन्द करे, तो फिर आप यह कह दें, अर्थ यह है कि मेरा कार्य मात्र आमन्त्रण देना तथा सचेत करना है, तो वह मैं कर चुका हूँ। अब न तुम मेरे कर्मों के उत्तरदायी हो, न मैं तुम्हारे कर्मों का, सबको अल्लाह के दरबार में प्रस्तुत होना है, वहाँ प्रत्येक व्यक्ति से उसके अच्छे तथा बुरे कर्मों की पूछताछ होगी। यह वही बात है जो ﴿قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ * لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ﴾ में है तथा आदरणीय इब्राहीम ने इन शब्दों में कही थी।

﴿إِنَّا بُرَآءُ مِنكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ﴾

"निःसन्देह हम तुमसे अलग हैं तथा जिसकी तुम अल्लाह के अतिरिक्त पूजा करते हो उनसे, हम तुम्हारे (मत) को नकारने वाले हैं।" (सूरः अल-मुमतहे नः, ४)

[2]अर्थात देखावे के लिये क़ुरआन तो सुनते हैं, परन्तु सुनने का अर्थ मार्ग-प्रदर्शन प्राप्त करना नहीं, इसलिये उसी प्रकार कोई लाभ नहीं होता, जिस प्रकार एक बहरे को लाभ नहीं होता। विशेष रूप से जब बहरा बुद्धि न रखता हो। क्योंकि बुद्धिमान बहरा फिर भी संकेत से कुछ समझ लेता है परन्तु उस की तुलना अबोध बहरे के समान है जो बिल्कुल ही बहरा है।

The Ummah Technology Mission

दिखाना चाहते हैं चाहे उनकी दृष्टि भी न हो ?[1]

تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوا لَا يُبْصِرُونَ ﴿٤٣﴾

(४४) यह विश्वस्त बात है कि अल्लाह लोगों पर तनिक भी अत्याचार नहीं करता परन्तु लोग स्वयं ही अपने आप पर अत्याचार करते हैं।[2]

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَٰكِنَّ النَّاسَ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤٤﴾

(४५) तथा उनको वह दिन याद दिलाइए जिसमें अल्लाह उनको (अपनी सेवा में) इस अवस्था में एकत्रित करेगा (कि उन्हें लगेगा) कि (संसार में) सारे दिन का एक आध क्षण रहे हों[3] तथा आपस में एक-दूसरे को पहचाननें को खड़े

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَن لَّمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ ۚ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿٤٥﴾

---

[1]इसी प्रकार कुछ लोग आप की ओर देखते हैं, परन्तु उद्देश्य उनका भी चूँकि कुछ और होता है, इसलिये उन्हें भी उसी प्रकार कोई लाभ नहीं होता, जिस प्रकार से एक अंधे को नहीं होता। विशेष रूप से वह अंधा जो दृष्टि के साथ-साथ समझ से भी वंचित हो। क्योंकि कुछ अंधे हृदय की दृष्टि रखते हैं, वह आँखों की ज्योति से वंचित होने के उपरान्त, बहुत कुछ समझ लेते हैं। परन्तु उनकी तुलना ऐसे ही है, जैसे कोई अंधा हो जो हृदय की दृष्टि ज्योति से भी वंचित हो। उद्देश्य इन सब बातों के द्वारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सांत्वना है। जिस प्रकार एक वैद्य तथा चिकित्सक को जब यह ज्ञात हो जाये कि रोगी उपचार कराने के लिये तैयार नहीं है तथा वह मेरे निर्देश तथा चिकित्सा की चिन्ता नहीं करता तो वह उसे अनदेखी कर देता है तथा वह उस पर अपना समय नष्ट करना नहीं चाहता।

[2]अर्थात अल्लाह तआला ने उन्हें सारी चीज़ें प्रदान की हैं, आँखें भी दी हैं जिनसे देख सकते हैं, कान दिये हैं जिससे सुन सकते है, बुद्धि तथा समझ दी है जिनसे सत्य तथा असत्य एवं झूठ तथा सच मे मध्य अंतर कर सकते हैं। परन्तु इन शक्तियों का यदि उचित प्रयोग करके सत्य का मार्ग नहीं अपनाते तो फिर ये स्वयं ही अपने आप पर अत्याचार कर रहे हैं। अल्लाह तआला ने उन पर कोई अत्याचार नहीं किया।

[3]अर्थात प्रलय की कठिनाईयाँ देखकर संसार के सारे स्वाद भूल जायेंगे तथा संसार का जीवन उन्हें ऐसा प्रतीत होगा कि जैसे कि वे दुनिया में एक-आध क्षण ही रहे हैं।

The Ummah Technology Mission

हों ।[1] वास्तव में हानि में पड़े वह लोग जिन्होंने अल्लाह के पास जाने को झुठलाया तथा वे मार्गदर्शन पाने वाले नहीं थे।

وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٦﴾

(४६) तथा हम जिसका उनसे वादा कर रहे हैं उसमें से कुछ तनिक सा आपको दिखला दें अथवा (उनके प्रकट होने से पूर्व) हम आप को मौत दे दें, तो हमारे पास तो उनको आना ही है। फिर अल्लाह उनके सभी कर्मों का साक्षी है।[2]

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَسُولٌ ۚ فَإِذَا جَاءَ

(४७) तथा प्रत्येक समुदाय के लिए एक रसूल (संदेशवाहक) है, फिर जब उनका रसूल

---

[1]प्रलय में विभिन्न अवस्थायें होंगी, जिन्हें क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर वर्णन किया गया है। एक समय ऐसा होगा कि एक-दूसरे को पहचानेंगे, कुछ अवसर ऐसे आयेंगे कि आपस में एक-दूसरे पर भटकावे का दोषारोपण करेंगे। कुछ अवसरों पर ऐसा भयभीत होंगे कि

﴿فَلَآ أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَآءَلُونَ﴾

"आपस में एक दूसरे के सम्बन्धों का न पता होगा तथा न एक-दूसरे को पूछेंगे।" (सूरः अल-मोमिनून, १०१)

[2]इस आयत में अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि हम उन काफ़िरों के विषय में जो वायदा कर रहे हैं यदि उन्होंने कुफ़्र (अधर्म) तथा मूर्तिपूजा को प्रचलित रखा तो उन पर भी उसी प्रकार अल्लाह का प्रकोप आ सकता है, जिस प्रकार से पूर्व के समुदायों पर आया, इनमें से कुछ यदि आप के जीवन में भेज दें तो यह भी सम्भव है, जिससे आपकी आँखे ठंडी होंगी। परन्तु यदि आप इससे पूर्व ही संसार से उठा लिये गये, तब भी कोई बात नहीं, इन काफ़िरों को अन्त में हमारे पास ही आना है। इनके सारे कर्मों तथा हाल की हमें सूचना है वहाँ ये हमारी यातनाओं से किस प्रकार बच सकेंगे ? अर्थात संसार में सम्भव है कि हमारे विशेष रहस्य के कारण यातना से बच जायें, परन्तु आख़िरत में तो उनके लिये हमारी यातनाओं से बचना सम्भव नहीं होगा क्योंकि प्रलय आने का उद्देश्य ही यही है कि वहाँ आज्ञापालकों को उनके आज्ञापालन का फल तथा अवहेलना करने वालों को उनकी अवज्ञा का दण्ड दिया जाये।

The Ummah Technology Mission

رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

आ चुकता है उनका निर्णय न्याय के साथ किया जाता है |[1] तथा उस पर अत्याचार नहीं किया जाता |

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा यह लोग कहते हैं कि यह वचन कब होगा यदि तुम सच्चे हो ?

قُل لَّا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۚ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ

(४९) (आप) कह दीजिए कि मैं स्वयं अपने लिए तो किसी लाभ तथा किसी हानि का अधिकार रखता ही नहीं परन्तु जितना अल्लाह की इच्छा हो | प्रत्येक समुदाय के लिए एक निर्धारित समय है | जब उनका वह निर्धारित

---

[1]इसका एक अर्थ तो यह है कि प्रत्येक समुदाय में हम रसूल भेजते रहे | तथा जब रसूल अपना सचेत करने तथा संदेश पहुँचाने का कर्तव्य पूर्ण कर देता तो फिर हम उनके मध्य न्याय के साथ निर्णय कर देते | अर्थात पैग़म्बर तथा उन पर ईमान ले आने वालों को बचा लेते तथा दूसरों को नष्ट कर देते | क्योंकि :

﴿ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ﴾

"तथा हमारी रीति नहीं कि संदेशवाहक भेजने के पूर्व ही दण्ड देने लगें |" (सूरः *बनी इस्राईल*, १५)

तथा इस निर्णय में उन पर कोई अत्याचार नहीं होता था | क्योंकि अत्याचार तो तब होता जब बिना पाप के उन पर प्रकोप भेज दिया जाता अथवा बिना सर्तक किये उन्हें घेर लिया जाता | (फ़तहुल कदीर) दूसरा भावार्थ यह वर्णन किया गया है कि इसका सम्बन्ध क़ियामत (प्रलय) से है अर्थात क़ियामत के दिन सभी समुदाय जब अल्लाह के दरबार में प्रस्तुत होंगे, तो उस समुदाय में भेजा गया रसूल भी साथ होगा | सभी के कर्मपत्र भी होंगे तथा फ़रिश्ते भी गवाह के रूप में प्रस्तुत होंगे | तथा इस प्रकार हर समुदाय तथा उसके रसूल के मध्य न्यायपूर्वक निर्णय किया जायेगा | तथा हदीस में आता है कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समुदाय का निर्णय सर्वप्रथम होगा | जैसाकि फ़रमाया: "हम यद्यपि सबसे पश्चात आने वाले हैं परन्तु क़ियामत को सबसे आगे होंगे, तथा सम्पूर्ण सृष्टि से पूर्व हमारा निर्णय किया जायेगा |" (सहीह मुस्लिम किताबुल जुमुअ: बाब हिदायति हाज़ेहिल उम्म: ले यौमिल जुमुअ:) (तफ़सीर इब्ने कसीर) |

The Ummah Technology Mission

فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٤٩﴾

समय आ पहुँचता है, तो एक क्षण न पीछे हट सकते हैं तथा न आगे खिसक सकते हैं।[1]

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِنْ أَتَىٰكُمْ عَذَابُهُۥ بَيَٰتًا أَوْ نَهَارًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ ٱلْمُجْرِمُونَ ﴿٥٠﴾

(५०) (आप) कह दीजिए कि यह तो बताओ कि यदि तुम पर अल्लाह का प्रकोप रात को आ पड़े अथवा दिन को, तो प्रकोप में कौन सी ऐसी वस्तु है कि अपराधी लोग उसको शीघ्र माँग रहे हैं।[2]

---

[1]यह मूर्तिपूजकों के अल्लाह के प्रकोप की माँग पर कहा जा रहा है कि मैं तो अपने स्वयं के लाभ-हानि का अधिकार नहीं रखता, तो क्योंकर मैं दूसरों को लाभ अथवा हानि पहुँचा सकूँ ? हाँ, यह सारा अधिकार अल्लाह ही के हाथ में है तथा वह अपनी इच्छानुसार ही किसी को लाभ अथवा हानि पहुँचाने का निर्णय करता है। इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला ने प्रत्येक समुदाय के लिये एक समय निर्धारित किया हुआ है, इस निर्धारित समय तक अवसर देता है। परन्तु जब वह समय आ जाता है तो फिर वह एक क्षण पीछे हो सकते हैं न आगे खिसक सकते हैं।

टिप्पणी : यहाँ यह बात अति आवश्यक है कि जब सर्वोत्तम पुरुष रसूलों के प्रमुख मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक को किसी को लाभ-हानि पहुँचाने पर वश नहीं, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात के लोगों में कौन-सा व्यक्ति ऐसा हो सकता है जो किसी की आवश्यकता की पूर्ति कर दे तथा कष्ट निवारण पर वश रखता हो ? इस प्रकार स्वयं अल्लाह के पैग़म्बर से सहायता माँगना, उनसे विनती करना "या रसूलुल्लाह अलमदद" तथा "أغثني يا رسول الله" आदि शब्द से पुकारना अथवा ध्यान लगाना किसी भी प्रकार उचित नहीं क्योंकि यह क़ुरआन की इस आयत तथा इसी प्रकार की अन्य स्पष्ट शिक्षाओं के विरूद्ध है बल्कि यह शिर्क की परिधि में आता है।

[2]अर्थात प्रकोप तो अत्यन्त अप्रिय वस्तु है जिससे दिल घृणा करते हैं तथा इच्छायें अस्वीकार करती हैं, फिर यह उसमें क्या अच्छाई देखते हैं कि उसे शीघ्र लाने की माँग करते हैं ?

The Ummah Technology Mission

أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ آمَنتُم بِهِۦٓ ءَآلْـَٰٔنَ وَقَدْ كُنتُم بِهِۦ تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٥١﴾

(५१) क्या फिर जब वह आ ही पड़ेगा तब उस पर ईमान लाओगे, हाँ अब मान लिया[1] जब कि तुम उसकी शीघ्रता मचा रहे थे।

ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ ذُوقُوا۟ عَذَابَ ٱلْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٥٢﴾

(५२) फिर अत्याचारियों से कहा जायेगा कि अब स्थाई यातना का स्वाद चखो। तुमको तो तुम्हारे किये का ही बदला मिला है।

وَيَسْتَنۢبِـُٔونَكَ أَحَقٌّ هُوَ ۖ قُلْ إِى وَرَبِّىٓ إِنَّهُۥ لَحَقٌّ ۖ وَمَآ أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ﴿٥٣﴾

(५३) तथा वे आप से पूछते हैं कि क्या वह (प्रकोप) वास्तविक बात है ?[2] (आप) कह दीजिए कि हाँ, सौगन्ध है मेरे प्रभु की कि वह वास्तविक बात है तथा तुम अल्लाह को किसी प्रकार भी विवश नहीं कर सकते।

وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِى ٱلْأَرْضِ لَٱفْتَدَتْ بِهِۦ ۗ وَأَسَرُّوا۟ ٱلنَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا۟ ٱلْعَذَابَ ۚ وَقُضِىَ بَيْنَهُم بِٱلْقِسْطِ وَهُمْ

(५४) तथा यदि प्रत्येक प्राण जिसने अत्याचार (मिश्रण) किया है, के पास इतना हो कि सम्पूर्ण धरती भर जाये तब भी उसको देकर अपना प्राण बचाने लगे।[3] तथा जब प्रकोप देख लेगें तो लज्जा को छिपाये रखेंगे तथा

---

[1]परन्तु प्रकोप आने के पश्चात मानने का क्या लाभ ?

[2]अर्थात यह पूछते हैं कि पुर्नजन्म, प्रलय तथा उनका फिर जीवित हो जाना सत्य है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ पैग़म्बर ! इनसे कह दीजिये कि तुम्हारा मिट्टी होकर मिट्टी में मिल जाना, अल्लाह तआला को पुन: जीवित करने से नहीं रोक सकता। इसलिये यह अवश्य होकर रहेगा। इमाम इब्नें कसीर फ़रमाते हैं कि इस आयत के संदर्भ में क़ुरआन में अन्य केवल दो आयतें हैं कि जिनमें अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर को आदेश दिया है कि वह सौगन्ध खाकर क़ियामत (प्रलय) के आने की घोषणा करें। एक सूर: सबा आयत संख्या ३ तथा दूसरी सूर: *तग़ाबुन* आयत संख्या ७

[3]अर्थात यदि संसार भर का कोष देकर यातना से मुक्त हो जायें तो देने के लिये तैयार होगा। परन्तु वहाँ किसी के पास होगा ही क्या ? अर्थात यातना से छुटकारा पाने का कोई मार्ग न होगा।

The Ummah Technology Mission

لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٥٤﴾

उनका निर्णय न्याय के साथ होगा। और उन पर अत्याचार न होगा।

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾

(५५) याद रखो कि जितनी वस्तुऐं आकाशों तथा धरती में हैं, सभी अल्लाह के स्वामित्व में हैं। याद रखो कि अल्लाह का वादा सच्चा है परन्तु बहुत से लोग ज्ञान ही नहीं रखते।

هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٦﴾

(५६) वही प्राण डालता है वही प्राण निकालता है तथा तुम सब उसी के पास लाये जाओगे।[1]

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا

(५७) हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे प्रभु की ओर से एक ऐसी वस्तु आयी है जो शिक्षाप्रद है।[2] तथा दिलों में जो (रोग) है उनके लिए

---

[1]इन आयतों में आकाश तथा धरती के मध्य प्रत्येक वस्तु पर अल्लाह तआला का स्वामित्व, अल्लाह के वायदे का सत्य होना, जीवन-मृत्यु पर उसका अधिकार तथा उसके दरबार में सब की उपस्थिति का वर्णन है, जिससे उद्देश्य पूर्व बातों की पुष्टि तथा सहमति है कि जो शक्ति इतने अधिकारों की मालिक है, उसकी पकड़ से बच निकलकर कोई कहाँ जा सकता है ? तथा उसने लेखा-जोखा के लिये जो दिन निर्धारित किया है, उसे कौन टाल सकता है ? नि:सन्देह अल्लाह का वायदा सत्य है, वह एक दिन अवश्य आयेगा तथा प्रत्येक अच्छे-बुरे को उसके कर्मों के अनुसार पुण्य तथा दण्ड दिया जायेगा।

[2]अर्थात जो क़ुरआन को दिल लगा कर पढ़े तथा उसके अर्थ तथा भाव पर विचार करे, उसके लिये क़ुरआन शिक्षा है। शिक्षा एवं उपदेश का मूल अर्थ है पूर्व तथा पश्चात के परिणाम को याद दिलाना, चाहे डराने के द्वारा हो अथवा प्रलोभन द्वारा। तथा वक्ता की तुलना चिकित्सक जैसी है जो रोगी को उन सब बातों से रोकता है जो उसके शरीर तथा स्वास्थ के लिये हानिकारक है। उसी प्रकार क़ुरआन भी प्रलोभन देकर तथा भय दिलाकर शिक्षा तथा उपदेश देता है तथा उन परिणामों से सावधान करता है जिनका अल्लाह की अवज्ञा की परिस्थिति में सामना करना होगा तथा उन कार्यों से रोकता है जिन से मनुष्य का परलोक का जीवन नष्ट हो सकता है।

The Ummah Technology Mission

فِي الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾

निवारण है।[1] तथा मार्गदर्शन करने वाला है तथा कृपा है ईमान वालों के लिए।[2]

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٥٨﴾

(५८) (आप) कह दीजिए कि बस लोगों को अल्लाह के उपहार तथा कृपा पर प्रसन्न होना चाहिए।[3] वह उससे कहीं अधिक श्रेष्ठ है जिसको वह एकत्रित कर रहे हैं।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ

(५९) (आप) कहिए कि ये तो बताओ कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो जीविका भेजी थी, फिर तुमने उसका कुछ भाग हराम तथा कुछ हलाल कर लिया।[4] (आप) पूछिए कि क्या

---

[1]अर्थात दिलों में एकेश्वरवाद (तौहीद) तथा ऋषित्व (रिसालत) एवं सत्य विश्वास के विषय में जो संदेह तथा शंका उत्पन्न होती है, उनका निवारण तथा अविश्वास एवं द्वयवाद की अपवित्रता तथा दोष को स्वच्छ करता है।

[2]यह क़ुरआन ईमानवालों के लिये मार्गदर्शन तथा कृपा का साधन है, वैसे तो यह क़ुरआन अखिल मानव जगत के लिये मार्गदर्शन तथा कृपा का साधन है, परन्तु उससे लाभान्वित केवल ईमानवाले होते हैं, इसलिये यहाँ उन्हीं के लिये केवल मार्गदर्शन तथा कृपा का साधन कहा गया है। इस विषय को क़ुरआन करीम में *सूरः बनी इस्राईल* आयत संख्या ८२ तथा *सूरः अलिफ़॰ लाम॰ मीम सजदः* आयत संख्या ४४ में भी वर्णन किया गया है (इसके अतिरिक्त هُدًى للمتقين की व्याख्या देखिए)

[3]खुशी उस अवस्था का नाम है जो किसी प्रिय वस्तु की प्राप्ति पर मनुष्य अपने हृदय में संवेदन करता है। ईमानवालों से कहा जा रहा है कि यह क़ुरआन अल्लाह की विशेष कृपा तथा उसकी दया है, इस पर ईमानवालों को प्रसन्न होना चाहिए अर्थात उनके दिलों में हर्ष तथा आन्नद होना चाहिए। उसका अर्थ यह नहीं है कि प्रसन्नता व्यक्त करने के लिये सभा तथा जुलूसों का, दीप जलाने का तथा इसी प्रकार के अन्य निरर्थक तथा अपव्यय का काम करो। जैसाकि आजकल के धार्मिक आधुनिकीकरण वाले इस आयत से 'जश्ने ईद मीलाद' तथा इसकी कुरीति का औचित्य सिद्ध करते हैं।

[4]इससे तात्पर्य वही कुछ पशुओं का हराम करना है जो मूर्तिपूजक अपनी मूर्तियों के नाम से छोड़ दिया करते थे, जिसका विस्तृत वर्णन *सूरः अल-अनआम* में गुज़र चुका है।

The Ummah Technology Mission

لَكُمْ آٰمِرْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٩﴾

तुमको अल्लाह ने आदेश दिया था अथवा अल्लाह पर झूठ गढ़ते हो ?

وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦٠﴾

(६०) तथा जो लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं उनका क़ियामत (प्रलय) के विषय में क्या विचार है ? [1] वास्तव में लोगों पर अल्लाह तआला का बड़ा ही उपकार है।[2] परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता व्यक्त नहीं करते।[3]

وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ وَلَاۤ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦١﴾

(६१) तथा आप किसी अवस्था में हों तथा इन अवस्थाओं में आप कहीं से क़ुरआन पढ़ते हों तथा तुम लोग जो कार्य भी करते हो हमको सभी की सूचना रहती है जब तुम उस कार्य में व्यस्थ रहते हो तथा आपके प्रभु से कोई वस्तु कण बराबर लुप्त नहीं, न धरती में न आकाश में तथा न कोई वस्तु उससे छोटी और न कोई बड़ी, परन्तु यह सब खुली किताब में है।[4]

---

[1]अर्थात क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उनसे क्या व्यवहार करेगा।

[2]कि वह मनुष्यों की दुनिया में तुरंत पकड़ नहीं करता। बल्कि उसके लिये एक दिन निर्धारित कर रखा है। अर्थ यह है कि वह दुनिया का सुख मुसलमान तथा काफ़िर सभी को अंतर किये बिना देता है। अथवा जो चीजें मनुष्यों के लिये लाभकारी तथा आवश्यक हैं, उन्हें उचित तथा वैध बनाया है, उन्हें हराम नहीं किया।

[3]अर्थात् अल्लाह के प्रदान किये हुए सुखों की कृतज्ञता व्यक्त नहीं करते, अथवा उसकी हलाल की हुई वस्तुओं को हराम कर लेते हैं।

[4]इस आयत में अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा ईमानवालों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वह सारी सृष्टि के हाल से परिचित है तथा हर पल प्रत्येक क्षण मनुष्यों पर उसकी दृष्टि है। धरती एवं आकाश की कोई वस्तु उससे छिपी हुई नही है। यह वही विषय है जो सूरः *अल-अनआम* आयत संख्या ५९ में गुज़र चुका है कि "उसी के पास परोक्ष के कोष हैं, जिन्हें वही जानता है। उसे वन तथा जल की

The Ummah Technology Mission

(६२) याद रखो कि अल्लाह के मित्रों पर[1] न कोई भय है न वे दुखी होते हैं।[2]

الآ إِنَّ أَوْلِيَآءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

सब वस्तुओं का ज्ञान है, तथा कोई पत्ता नहीं झड़ता परन्तु वह उसको जानता है, तथा धरती के अधरों में कोई दाना तथा कोई हरी एवं सूखी वस्तु नहीं है, परन्तु 'किताबे मोबीन' में (लिखी हुई) है।" उसी प्रकार सूरः अल-अनआम की आयत संख्या ३८ तथा सूरः हूद की आयत संख्या ६ में भी इस विषय का वर्णन किया गया है। जब वास्तविकता यह है कि वह आकाश तथा धरती में उपस्थित वस्तुओं की गति को जानता है, तो वह मनुष्य तथा जिन्नों की गति तथा कर्मों से क्योंकर अनजान रह सकता है, जो अल्लाह की इबादत करने के लिये बनाये तथा भेजे गये हैं ?

[1]अवज्ञाकारियों के पश्चात अल्लाह तआला अपने आज्ञाकारियों की चर्चा कर रहा है तथा वह हैं औलिया अल्लाह, (अल्लाह के मित्र)। 'औलिया' बहुवचन है 'वली' शब्द का जिसका शाब्दिक अर्थ 'निकटवर्ती' है। इस आधार पर "औलिया अल्लाह" का अर्थ होगा वे सच्चे तथा निःस्वार्थी ईमानवाले जिन्होंने अल्लाह की आज्ञापालन कर तथा निषेधित कार्यों से बचकर अल्लाह की निकटता प्राप्त कर ली। इसीलिये अल्लाह तआला ने स्वयं अगली आयत में उनकी प्रशंसा इन शब्दों में की है, "जो ईमान लाये तथा जिन्होंने अल्लाह का भय दिल में रखा।" तथा ईमान एवं अल्लाह का भय ही अल्लाह की निकटता प्राप्त करने का आधार तथा प्रमुख साधन है। इस आधार पर हर अल्लाह का भय रखने वाला ईमानदार अल्लाह का वली है। लोग वली होने के लिये चमत्कार दिखाना आवश्यक समझते हैं तथा फिर वे अपने बनाये हुए वलियों के झूठे-सच्चे चमत्कारों का प्रचार करते हैं, यह विचार पूर्णतः दोषपूर्ण है। चमत्कार तथा वली का न चोली-दामन का साथ है न इसके लिये आवश्यक प्रतिबन्ध। यह अलग बात है कि किसी से चमत्कार प्रदर्शित हो जाये तो अल्लाह की इच्छा है, इसमें उस महात्मा की इच्छा सम्मिलित नहीं है। परन्तु किसी अल्लाह से भय करने वाले मोमिन तथा सुन्नत के पालन करने वाले से चमत्कार का प्रदर्शन हो अथवा न हो उसके वली होने में कोई सन्देह नहीं।

[2]भय का सम्बन्ध भविष्य से है तथा दुख का भूतकाल से। अर्थ यह है कि यदि जीवन अल्लाह के भय में व्यतीत किया होता है। इसलिये क़ियामत की भयानकता का भय इतना उन्हें नहीं होगा जिस प्रकार दूसरों को होगा। बल्कि वे अपने ईमान तथा अल्लाह के भय के कारण अल्लाह की दया तथा विशेष कृपा के अभिलाषी तथा उसके साथ अच्छे विचार रखने वाले होंगे। इसी प्रकार दुनिया में वे जो कुछ छोड़ गये होंगे अथवा दुनिया के स्वाद उन्हें नहीं प्राप्त हुए होंगे उन पर उन्हें कोई दुख नहीं होगा। एक अन्य अर्थ यह भी है कि दुनिया में जो इच्छित वस्तु उन्हें नहीं मिली, उस पर वे

The Ummah Technology Mission

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾

(६३) ये वे लोग हैं जो ईमान लाये तथा (पाप से) संयम बरतते हैं।

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٤﴾

(६४) उनके लिए साँसारिक जीवन में भी[1] तथा परलोक में भी शुभ सूचना है, अल्लाह तआला की बातों में कुछ परिवर्तन नहीं हुआ करता। यह बड़ी सफलता है।

وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ؕ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٥﴾

(६५) तथा आपको उनकी बातें दुख में न डालें, सार्वभौमिक प्रभुत्व अल्लाह ही के लिए है, वह सुनने वाला जानने वाला है।

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٦٦﴾

(६६) याद रखो कि जितना कुछ आकाशों में हैं तथा जितने धरती में हैं यह सब अल्लाह के ही हैं तथा जो लोग अल्लाह को छोड़कर अन्य साझीदारों को पुकारते हैं किस वस्तु का पालन कर रहे है। मात्र कल्पित विचारों का पालन कर रहे हैं तथा मात्र अनुमानित बातें कर रहे हैं।[2]

दुख का प्रदर्शन नहीं करते, क्योंकि वह जानते हैं कि यह सब कुछ अल्लाह के निर्णय एवं भाग्य की देन है। जिससे उनके दिलों में दुख तथा मैल उत्पन्न नहीं होता, अपितु उनके दिल अल्लाह के निर्णय पर प्रसन्न तथा शान्त रहते हैं।

[1]दुनिया में शुभसूचना से तात्पर्य पुण्य के कार्य हैं अथवा वह शुभसूचना कि जो मृत्यु के समय फ़रिश्ते एक ईमानवाले को देते हैं, जैसाकि क़ुरआन तथा हदीस से सिद्ध है।

[2]अर्थात अल्लाह के साथ किसी को साझीदार ठहराना किसी तर्क के आधार पर नहीं। बल्कि एक वैचारिक मन्थन, तथा कल्पना एवं अनुमान की देन है। आज यदि मनुष्य अपनी बुद्धि तथा समझ को उचित रूप से प्रयोग करे तो नि:सन्देह उसपर यह स्पष्ट हो सकता है कि अल्लाह का कोई साझीदार नहीं। तथा जिस प्रकार वह आकाश तथा धरती को पैदा करने में अकेला है कोई उसका साझीदार नहीं, तो फिर इबादत में अन्य उसका साझीदार किस प्रकार हो सकते हैं ?

The Ummah Technology Mission

هُوَ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الَّیْلَ لِتَسْكُنُوْا فِیْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٧﴾

(६७) वह ऐसा है जिसने तुम्हारे लिए रात बनायी ताकि तुम उसमें विश्राम करो तथा दिन भी इस रूप से बनाया कि देखने भालने का साधन है, वस्तुतः इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं।

قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ الْغَنِیُّ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَی اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾

(६८) वे कहते हैं कि अल्लाह संतान रखता है। वह इससे पवित्र है! वह तो किसी का आश्रित नहीं।[1] उसी का स्वामित्व है, जो कुछ आकाशों में है तथा जो कुछ धरती में है।[2] तुम्हारे पास इस पर कोई प्रमाण नहीं। क्या अल्लाह पर ऐसी बात लगाते हो जिसका तुम ज्ञान नहीं रखते।

---

[1]तथा जो सबसे निस्पृह हो, उसे सन्तान की भी आवश्यकता नहीं है क्योंकि संतान तो सहारे के लिये होती है तथा जब उसे सहारे की आवश्यकता नहीं तो उसे सन्तान की क्या आवश्यकता?

[2]जब आकाश तथा धरती की प्रत्येक वस्तु उसी की है तो प्रत्येक उसके प्राधीन एवं दास हुए। फिर उसे सन्तान की क्या आवश्यकता? सन्तान की आवश्यकता उसे होती है, जिसे कुछ सहायता तथा सहारे की आवश्यकता हो। तथा जिसका आदेश आकाश तथा धरती की प्रत्येक वस्तु पर चलता हो, उसे क्या आवश्यकता उत्पन्न हो सकती है? इसके अतिरिक्त सन्तान की आवश्यकता की रुचि उसे होती है जो अपने पश्चात अपने स्वामित्व का उत्तराधिकारी बनाना चाहता हो। तथा अल्लाह तआला तो अनन्त है इसलिये अल्लाह के लिये सन्तान ठहराना इतना बड़ा अपराध है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है :

﴿ تَكَادُ السَّمَوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا * أَن دَعَوْا لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدًا ﴾

"इस बात से कि वे कहते हैं कृपालु की संतान है, निकट है कि आकाश फट जाये, धरती चिर जाये तथा पर्वत कण-कण हो जाये।" (सूरः *मरियम*-९०,९१)

The Ummah Technology Mission

قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾

(६९) (आप) कह दीजिए कि जो लोग अल्लाह पर मिथ्यारोपण करते हैं[1] वे सफल न होंगे।[2]

مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾

(७०) (यह) संसार में थोड़ा सा सुख है फिर हमारे पास उनको आना है फिर हम उनको उनके कुफ़्र (अविश्वास) के बदले कठोर दण्ड चखायेंगे।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ إِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَقَامِي وَتَذْكِيرِي بِآيَاتِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ

(७१) तथा आप उनको नूह की कथा पढ़कर सुनाइए जबकि उन्होंने अपने समुदाय से कहा कि हे मेरे समुदाय के लोगो यदि तुमको मेरा रहना तथा अल्लाह के आदेशों की शिक्षा देना भारी लगता है तो मेरा तो अल्लाह ही पर भरोसा है। तुम अपनी योजना अपने साथियों

---

[1] افتراء (इफ़तरा) का अर्थ है झूठी बातें कहना। फिर उसको झूठ कहना बल देने के लिये है।

[2] इससे स्पष्ट है कि सफलता से तात्पर्य परलोक की सफलता अर्थात अल्लाह के क्रोध तथा उसकी यातना से बचना है। मात्र दुनिया का अस्थाई सुख सफलता नहीं। जैसाकि बहुत से लोग अधर्मियों के अस्थाई सुख-सुविधा से त्रुटि तथा शंका एवं संदेह में पड़ जाते हैं। इसलिये अगली आयत में फ़रमाया : "ये दुनिया में थोड़ा सा सुख भोग लें फिर अन्त में हमारे ही पास आना है।" अर्थात यह दुनिया का सुख परलोक के सुखों की अपेक्षा अत्यन्त तुच्छ है। इसके पश्चात उन्हें अत्यन्त कठोर यातना भोगना पड़ेगा। इसलिए इस बात को अच्छे प्रकार से समझ लेना चाहिये कि काफ़िरों, मूर्तिपूजकों तथा अल्लाह के अवज्ञाकारियों का सांसारिक सुख तथा वैभव इस बात का प्रमाण नहीं है कि ये समुदाय सफल हैं तथा अल्लाह तआला उनसे प्रसन्न है, यह भौतिक सफलतायें उनके निरन्तर प्रयत्नों का परिणाम हैं, जो प्रत्यक्ष कारणों के अनुसार प्रत्येक उस समुदाय को प्राप्त हो सकता है जो साधनों को व्यवहार में लाते हुए उसी प्रकार परिश्रम करेगा, चाहे वह ईमानवाला हो अथवा काफ़िर। इसके अतिरिक्त यह अस्थाई सफलतायें अल्लाह के निर्धारित नियम तथा अवसर प्रदान करने का परिणाम भी हो सकता है। जिसका स्पष्टीकरण हम इससे पूर्व कई स्थानों पर कर चुके हैं।

The Ummah Technology Mission

عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٧١﴾

के साथ सुदृढ़ कर लो।[1] फिर तुम्हारी योजना तुम्हारे लिए घूटन का कारण न होनी चाहिए।[2] फिर मेरे साथ घटित कर दो तथा मुझे अवसर न दो।

فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٧٢﴾

(७२) फिर भी यदि तुम मुख मोड़ते जाओ तो मैंने तुमसे कोई बदला तो नहीं माँगा,[3] मेरा बदला तो केवल अल्लाह ही देगा तथा मुझे आदेश दिया गया है कि मैं मुसलमानों में से रहूँ।[4]

فَكَذَّبُوْهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا

(७३) तो वे लोग उनको झुठलाते रहे,[5] फिर हमने उनको तथा जो उनके साथ नाव में सवार थे उनको मुक्ति प्रदान किया तथा उनको

---

[1]अर्थात जिनको तुमने अल्लाह का साझीदार बना रखा है, उनकी सहायता भी प्राप्त कर लो। (यदि वे तुम्हारे विचार के अनुसार तुम्हारी सहायता कर सकते हैं)

[2] غُمَّةً का अन्य अर्थ है अस्पष्ट तथा छिपा हुआ होना। अर्थात मेरे विरूद्ध तुम्हारा प्रयत्न स्पष्ट तथा साफ़ होना चाहिए।

[3]कि जिसके कारण तुम यह आरोप लगा सको कि नबूअत के दावे से उसका उद्देश्य धन-दौलत एकत्रित करना है।

[4]आदरणीय नूह के इस कथन से भी ज्ञात हुआ कि सभी नबियों का धर्म इस्लाम ही रहा है यद्यपि धार्मिक नियम भिन्न-भिन्न तथा विधियाँ उनकी अलग रहीं। जैसाकि आयत सूरः *अल-मायदः*, ४८ से स्पष्ट है। [٤٨:المائدة] ﴿لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا﴾, परन्तु धर्म सभी का इस्लाम था, देखिये *सूरः अल-बकरः*- १३१ तथा १३२, सूरः यूसुफ़-१०१, सूरः *अननम्ल*-९१, *सूरः यूनुस*-८४, *सूरः अल-आराफ़*-१२६, *सूरः नम्ल*-४४, *सूरः अल-मायदः*-४४,१११ एवं *सूरः अल-अनआम*-१६२ तथा १६३।

[5]अर्थात नूह के समुदाय वालों ने सभी प्रकार के शिक्षा एवं उपदेश के उपरान्त भी झुठलाने का मार्ग नहीं छोड़ा, अतः अल्लाह तआला ने आदरणीय नूह तथा उन पर ईमान लाने वालों को एक नाव में सवार कराके बचा लिया तथा शेष सभी को, यहाँ तक की आदरणीय नूह के एक पुत्र को भी डुबा दिया।

The Ummah Technology Mission

الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾

उत्तराधिकारी बनाया[1] तथा जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था उनको डुबो दिया। तो देखना चाहिए क्या परिणाम हुआ उन लोगों का जो डराये जा चुके थे।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٧٤﴾

(७४) फिर उनके (नूह) के पश्चात हमने अन्य रसूलों को उनके समुदाय की ओर भेजा, तो वे उनके पास स्पष्ट प्रमाण लेकर आये।[2] पर जिस चीज़ को उन्होंने प्रथम समय में झूठा कह दिया, यह न हुआ कि फिर उस पर ईमान ले आते।[3] हम इसी प्रकार सीमा उल्लघंन करने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं।[4]

---

[1]अर्थात धरती में उन बचने वालों को पूर्व के लोगों का उत्तराधिकारी बनाया। फिर मनुष्यों का आगामी वंश उन्हीं लोगों विशेष रूप से आदरणीय नूह के तीन पुत्रों से चला, इसीलिये आदरणीय नूह को दूसरा आदम (द्वितीय मनु) कहा जाता है।

[2]अर्थात ऐसे लक्षण तथा चमत्कार ले कर आये जो इस बात को प्रमाणित करते थे कि वास्तव में यह अल्लाह के सच्चे रसूल हैं, जन्हें अल्लाह ने मार्गदर्शन तथा निर्देश देने के लिये भेजा है।

[3]परन्तु इन समुदायों ने रसूलों की बात नहीं मानीं, मात्र इसलिये कि जब पहले-पहल ये रसूल उनके पास आये तो तुरन्त बिना किसी विचार-विमर्श के उनको नकार दिया, यह पहली बार का इंकार उनके लिये स्थाई पर्दा बन गया। तथा वे यही सोचते रह गये कि हम तो पहले नकार चुके हैं, अब इसको स्वीकार करना क्यों ? परिणाम स्वरूप ईमान से वंचित रहे।

[4]अर्थात जिस प्रकार इन पूर्व के समुदायों पर उनके अविश्वास तथा झुठलाने के कारण मुहरें लगती रही हैं, उसी प्रकार भविष्य में भी जो समुदाय रसूलों को झुठलायेगा तथा अल्लाह की निशानियों को झुठलाने का मार्ग अपनायेगा, उनके दिलों पर भी सील लगती रहेगी तथा वे संमार्ग से उसी प्रकार वंचित रहेंगे जिस प्रकार पूर्व के समुदाय वंचित रहे।

The Ummah Technology Mission

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ
اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا
فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا
مُّجْرِمِيْنَ ﴿٧٥﴾

(७५) फिर हमने उन (पैग़म्बरों) के पश्चात मूसा तथा हारून को फ़िरऔन[1] तथा उसके प्रमुखों के पास अपने चमत्कार देकर भेजा।[2] तो उन्होंने अभिमान किया तथा वे लोग अपराधी समुदाय थे।[3]

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا
قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٦﴾

(७६) फिर जब उनको हमारे पास से सत्य (प्रमाण) पहुँचा तो वे लोग कहने लगे कि नि:सन्देह यह खुला जादू है।[4]

قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا
جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ
السّٰحِرُوْنَ ﴿٧٧﴾

(७७) मूसा ने कहा कि क्या तुम इस सत्य के सम्बन्ध में जबकि वह तुम्हारे पास आ पहुँचा है, ऐसी बात कहते हो, क्या यह जादू है, जब कि जादूगर सफल नहीं होते ?[5]

---

[1]रसूलों का सामान्य वर्णन करने के पश्चात आदरणीय मूसा तथा हारून का वर्णन किया जा रहा है, यद्यपि रसूलों के मध्य वह भी आ जाते हैं, परन्तु उनकी गणना गणमान्य रसूलों में होती है, इसलिये विशेषरूप से उनका अलग वर्णन किया।

[2]आदरणीय मूसा के ये चमत्कार विशेष रूप से नौ दिव्य निशानियाँ, जिनका वर्णन अल्लाह ने सूरः *बनी इस्राईल* आयत १०१ में किया है, प्रसिद्ध हैं।

[3]अर्थात वे चूँकि बड़े-बड़े अपराध तथा पापों में लीन थे, इसलिये उन्होंने अल्लाह के भेजे हुए रसूलों को भी झुठलाया। क्योंकि एक पाप दूसरे पाप का साध्य बनता है। तथा पापों का निरंतर करते जाना बड़े-बड़े पापों को करने का दुस्साहस उत्पन्न कर देता है।

[4]जब अस्वीकार करने के लिये उचित तर्क अथवा प्रमाण नहीं मिलता, तो उससे छुटकारा प्राप्त करने के लिये कह देते हैं कि यह जादू है।

[5]आदरणीय मूसा ने कहा कि तनिक विचार तो करो। सत्य के आमन्त्रण तथा उचित बात को तुम लोग जादू कहते हो, भला यह जादू है ? जादूगर तो सफल ही नहीं होते। अर्थात इच्छित उद्देश्य प्राप्त करने तथा अप्रिय परिणाम से बचने में वे असफल ही रहते हैं। तथा मैं तो अल्लाह का रसूल हूँ, मुझे अल्लाह की सहायता प्राप्त है तथा उसकी ओर से मुझे चमत्कार तथा दिव्य निशानियाँ प्रदान की गयी हैं, मुझे जादू तथा जादूगरी

The Ummah Technology Mission

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِي الْاَرْضِ ۭ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ۝۷۸

(७८) वह लोग कहने लगे क्या तुम हमारे पास इसलिए आये हो कि हमको उस मार्ग से हटा दो जिस पर हमने अपने पूर्वजों को पाया है, तथा तुम दोनों को दुनिया में बड़ापन मिल जाये,[1] तथा हम तुम दोनों को कभी नहीं मानेंगे।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ۝۷۹

(७९) तथा फ़िरऔन ने कहा कि मेरे पास सभी दक्ष जादूगरों को लाओ।

فَلَمَّا جَاۗءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ۝۸۰

(८०) फिर जब जादूगर आये तो मूसा ने उनसे कहा कि डालो जो कुछ तुम डालने वाले है।

فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰي مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝۸۱

(८१) तो जब उन्होंने डाला तो मूसा ने कहा कि यह जो कुछ तुम लाये हो जादू है। निश्चित बात है कि अल्लाह इसको अभी नष्ट किये देता है,[2] अल्लाह ऐसे भ्रष्टाचारियों का कार्य

की क्या आवश्यकता है ? तथा अल्लाह के प्रदान किये हुए चमत्कार के समक्ष इसका क्या स्थान है ?

[1]यह न मानने वालों के अन्य कुतर्क हैं, जो तर्क से विवश हो कर प्रस्तुत करते हैं। एक यह कि तुम हमें हमारे पूर्वजों के मार्ग से हटाना चाहते हो, दूसरे यह कि हमें मान-मर्यादा तथा राज्य प्राप्त है, उसे छीनकर स्वयं अधिकार करना चाहते हो। इसलिये हम तो कभी भी तुम पर ईमान नहीं लायेंगे। अर्थात पूर्वजों का अनुकरण तथा सांसारिक राज्य एवं मान-मर्यादा ने उन्हें ईमान लाने से रोके रखा। उसके पश्चात आगे वही कथा है कि फ़िरऔन ने दक्ष जादूगरों को बुलाया तथा आदरणीय मूसा एवं जादूगरों का मुकाबला हुआ, जिस प्रकार सूरः *आराफ़* में गुज़रा तथा सूरः *ताहा* में भी इसका कुछ विवरण आयेगा।

[2]अतः ऐसा ही हुआ। भला झूठ भी सत्य के सामने सफल हो सकता है ? जादूगरों ने, चाहे वह अपने कला में कितने ही दक्ष थे, जो कुछ प्रस्तुत किया वह जादू ही था तथा नज़रबन्दी की कला ही थी तथा जब आदरणीय मूसा ने अल्लाह के आदेश पर छड़ी फेंकी तो उसने सारे जादूगरों की जादूगरी को एक क्षण में समाप्त कर दिया।

The Ummah Technology Mission

बनने नहीं देता।[1]

وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨٢﴾

(८२) तथा अल्लाह तआला सत्य प्रमाण को अपने कथनानुसार स्पष्ट[2] कर देता है, चाहे अपराधी को कितना ही बुरा लगे।

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ

(८३) फिर मूसा पर उनके समुदाय वालों में से केवल कुछ ही ईमान लाये,[3] वह भी फ़िरऔन तथा अपने अधिकारियों से डरते-डरते कि कहीं उनको दुख न पहुँचाये,[4] तथा वास्तव

---

[1]तथा यह जादूगर भी भ्रष्टाचारी थे। जिन्होंने मात्र धन कमाने के लिये यह कला सीख रखी थी तथा जादू की कला दिखाकर लोगों को मूर्ख बनाते थे, अल्लाह तआला उनके इस भ्रष्टाचारों को किस प्रकार सुसज्जित बना सकता था ?

[2]अथवा कथन से तात्पर्य वह तर्क तथा युक्तियाँ हैं, जो अल्लाह तआला अपनी किताबों में उतारता रहा है, जो पैग़म्बरों को उसने प्रदान किया था। अथवा वे चमत्कार हैं, जो अल्लाह तआला के आदेश से नबियों के हाथों प्रदर्शित हुए अथवा अल्लाह का वह आदेश है जो शब्द كُن (कुन) द्वारा करता है।

[3] قومه के अक्षर هـ के सम्बन्ध में व्याख्याकारों में मतभेद है। कुछ ने इसे आदरणीय मूसा की ओर संकेत किया है क्योंकि आयत में सर्वनाम से पूर्व उन्हीं का नाम (वर्णन) आया है। अर्थात मूसा के समुदाय से थोड़े से लोग ईमान लाये। परन्तु इमाम इब्ने कसीर आदि ने इसका संकेत फ़िरऔन की ओर किया है अर्थात फ़िरऔन के समुदाय में से थोड़े से लोग ईमान लाये। उनका तर्क यह है कि इस्राईल की सन्तान के लोग तो एक रसूल तथा छुटकारा दिलाने वाले की प्रतीक्षा में थे जो आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम के रूप में उन्हें मिल गये तथा इस आधार पर इस्राईल का वंश (सिवाय कारून के) उन पर ईमान रखते थे। इसलिये उचित बात यही है कि ﴿ذُرِّيَّةٌ مِّن قَوْمِهٖ﴾ से तात्पर्य फ़िरऔन के समुदाय से थोड़े से लोग हैं, जो आदरणीय मूसा पर ईमान लाये। उन्हीं में से उनकी पत्नी (आदरणीया) आसिया भी हैं।

[4]कुरआन करीम की यह व्याख्या भी इस बात की द्योतक है कि ईमान लाने वाले थोड़े से लोग फ़िरऔन के समुदाय में से थे, क्योंकि उन्हीं को फ़िरऔन तथा उसके दरबारियों तथा अधिकारियों से कष्ट पहुँचाये जाने का भय था, इस्राईल की संतान वैसे फ़िरऔन की दासता तथा अधीनता का अपमान एक लम्बे समय से सहन कर रहे थे।

The Ummah Technology Mission

لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٨٣﴾

में फ़िरऔन उस देश में उच्च (शक्तिवाला) था, तथा यह भी बात थी कि वह सीमा से बाहर हो जाता था।[1]

وَقَالَ مُوسَىٰ يَا قَوْمِ إِن كُنتُمْ آمَنتُم بِاللَّهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا إِن كُنتُم مُّسْلِمِينَ ﴿٨٤﴾

(८४) तथा मूसा ने कहा, हे मेरे समुदाय के लोगो ! यदि तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो, यदि तुम मुसलमान (आज्ञापालक) हो।[2]

فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٨٥﴾

(८५) तो उन्होंने कहा कि हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया। हे हमारे प्रभु ! हमको इन अत्याचारी समुदाय का भोगी न बना।

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾

(८६) तथा हमको अपनी कृपा से इन काफ़िर लोगों से मुक्ति प्रदान कर।[3]

परन्तु मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने से उसका कोई सम्बन्ध नहीं था, न उन्हें इसके कारण से अधिक कष्ट का भय था।

[1]तथा ईमानवाले उस के उसी अत्याचार तथा क्रूरता के व्यवहार से भयभीत थे।

[2]इस्राईल की संतान फ़िरऔन की ओर से जिस अनादर एवं अपमान का शिकार थी आदरणीय मूसा के आने के पश्चात भी उसमें कमी नहीं आयी, इसलिये वे अधिक परेशान थे, अपितु आदरणीय मूसा से उन्होंने यहाँ तक कह दिया, ऐ मूसा ! जिस प्रकार तेरे आने से पूर्व हम फ़िरऔन तथा उसके समुदाय की ओर से ढाये जा रहे दुखों में पड़े थे, तेरे आने के पश्चात भी हमारा यही हाल है जिस पर आदरणीय मूसा ने उन्हें उत्तर दिया कि आशा है कि मेरा प्रभु शीघ्र ही तुम्हारे शत्रु को नष्ट कर देगा। परन्तु उसके लिये आवश्यक है कि तुम केवल एक अल्लाह से सहायता चाहो तथा धैर्य का दामन न छोड़ो। (देखिये *सूरः अल-आराफ़*, आयत १२८ तथा १२९) यहाँ भी आदरणीय मूसा ने उन्हें बलपूर्वक कहा कि यदि तुम अल्लाह के सच्चे आज्ञाकारी हो, तो उसी पर भरोसा करो।

[3]अल्लाह पर भरोसा करने के साथ-साथ उन्होंने अल्लाह के दरबार में प्रार्थनायें भी कीं। तथा अवश्य ईमानवालों के लिये यह एक बहुत बड़ा हथियार भी है तथा सहारा भी।

The Ummah Technology Mission

وَ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَ اَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّ اجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَ بَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۸۷﴾

(८७) तथा हमनें मूसा तथा उनके भाई की ओर वह्यी (प्रकाशना) भेजी कि तुम दोनों अपने इन लोगों के लिए मिस्र में घर स्थापित रखो तथा तुम सब उन्हीं घरों को नमाज़ पढ़ने का स्थान निर्धारित कर लो।[1] तथा निरन्तर नमाज़ पढ़ो तथा आप ईमानवालों को शुभ सूचना दे दें।

وَ قَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَ مَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّ اَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَ اشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿۸۸﴾

(८८) तथा मूसा ने विनती की हे मेरे प्रभु! तूने फ़िरऔन तथा उसके पदाधिकारियों को शोभा तथा प्रत्येक प्रकार के धन सांसारिक जीवन में प्रदान किये। हे हमारे प्रभु! (इसलिए प्रदान किये हैं) कि वे तेरे मार्ग से भटकावें। हे हमारे प्रभु! उनके धनों को ध्वस्त कर दे तथा उनके दिलों को कठोर कर दे,[2] ताकि यह ईमान न लाने पायें यहाँ तक कि दुखदायी यातनाओं को देख लें।[3]

---

[1]इसका अर्थ यह है कि अपने घरों को ही मस्जिदें बना लो तथा उनके मुख अपने क़िबले (बैतुल मुक़द्दस) की ओर कर लो ताकि तुम्हें इबादत करने के लिये चर्च आदि में जाने की आवश्यकता ही न रहे, जहाँ तुम्हें फ़िरऔन के कर्मचारियों के अत्याचार एवं क्रूरता का भय रहता है।

[2]जब मूसा अलैहिस्सलाम ने देखा कि फ़िरऔन तथा उसके समुदाय पर शिक्षा एवं उपदेश का भी कोई प्रभाव नहीं हुआ तथा इस प्रकार के चमत्कार देखकर भी उनके अंदर कोई परिवर्तन नहीं आया, तो फिर उनको शाप दिया, जिसे अल्लाह तआला ने वर्णित किया है।

[3]अर्थात यदि वे ईमान लायें भी तो प्रकोप देखकर ही ईमान लायें जो उनके लिये लाभकारी न होगा। यहाँ मस्तिष्क में यह शंका नहीं उत्पन्न होनी चाहिये कि पैग़म्बर तो मार्गदर्शन के लिये प्रार्थना करते हैं न कि नष्ट हो जाने का श्राप। इसलिये कि आमंत्रण तथा चेतावनी तथा हर प्रकार के साधन के प्रयोग कर लेने के पश्चात यह

The Ummah Technology Mission

قَالَ قَدْ أُجِيبَت دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيمَا وَلَا تَتَّبِعَانِّ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾

(८९) (अल्लाह तआला ने) कहा कि तुम दोनों की प्रार्थना स्वीकार कर ली गयी तुम सीधे मार्ग पर रहो ।[1] तथा उन लोगों के मार्ग पर न चलना जो अज्ञानी है ।[2]

وَجَاوَزْنَا بِبَنِي إِسْرَائِيلَ الْبَحْرَ فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُودُهُ بَغْيًا وَعَدْوًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا أَدْرَكَهُ الْغَرَقُ

(९०) तथा हमने ईस्राइल की सन्तान को समुद्र से पार कर दिया ।[3] फिर उनके पीछे-पीछे फ़िरऔन अपनी सेना के साथ अत्याचार तथा क्रूरता के उद्देश्य से चला, यहाँ तक कि

स्पष्ट हो जाये कि अब ईमान लाने की कोई आशा शेष नहीं रही है, तो फिर अन्तिम उपाय यही रह जाता है कि इस समुदाय का मामला अल्लाह को अर्पित कर दिया जाये । यह जैसे अल्लाह की इच्छा ही होती है जो पैग़म्बर के मुख से अकस्मात् निकल जाती है । जिस प्रकार आदरणीय नूह ने भी साढ़े नौ सौ वर्ष चेतावनी देने के पश्चात अन्ततः अपने समुदाय को श्राप ही दिया ।

﴿ رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ﴾

"हे प्रभु ! धरती पर एक भी काफ़िर को बसा न रहने दे ।" (सूरः नूह-२६)

[1]इसका एक अर्थ तो यह है कि अपने श्राप पर स्थिर रहना, चाहे उसके प्रदर्शित होने में देर हो जाये । क्योंकि तुम्हारी प्रार्थना अवश्य स्वीकार कर ली गयी है परन्तु उसको कार्यान्वयन हम कब करेंगे यह मात्र हमारी इच्छा तथा योजनाओं पर आधारित है । अतः कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि इस श्राप के चालीस वर्ष पश्चात फ़िरऔन तथा उसका समुदाय नष्ट किया गया तथा श्राप के अनुसार जब फ़िरऔन डूबने लगा, उस समय उसने ईमान लाने की घोषणा की, जिसका उसे कोई लाभ नहीं हुआ । दूसरा अर्थ उसका यह है कि तुम अपने प्रचार तथा इस्राईल के वंश को मार्ग दर्शाने तथा सीधा मार्ग दिखाने एवं उनको फ़िरऔन की दासता से मुक्ति दिलाने का प्रयत्न जारी रखो ।

[2]अर्थात जो लोग अल्लाह के व्यवहार, उसके नियम, तथा उसके हितों व भेदों को नहीं जानते, तुम उनकी तरह न होना, अपितु अब प्रतीक्षा तथा धैर्य करो, अल्लाह तआला अपने ज्ञान तथा योजनानुसार शीघ्र अथवा देर से अवश्य अपना वायदा पूरा करेगा । क्योंकि वह वायदा के विरूद्ध नहीं करता ।

[3]अर्थात समुद्र को फाड़कर मार्ग बना दिया (जिस प्रकार सूरः *अल-बकरः* आयत ५० में गुज़रा तथा अन्य विवरण सूरः *शोअरा* में आयेगा) तथा तुम्हें एक किनारे से दूसरे किनारे पर पहुँचा दिया ।

The Ummah Technology Mission

قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْۤ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْۤا اِسْرَآءِیْلَ وَ اَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۹۰﴾

जब डूबने लगा,[1] तो कहने लगा, मैं ईमान लाता हूँ कि जिस पर इस्राईल की सन्तान ईमान लायी हैं, कोई उसके सिवाय पूजने योग्य नहीं तथा मैं मुसलमानों में से हूँ।

آٰلْـٰٔنَ وَ قَدْ عَصَیْتَ قَبْلُ وَ كُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِیْنَ ﴿۹۱﴾

(९१) (उत्तर दिया गया कि) अब ईमान लाता है ? तथा पहले अवज्ञा करता रहा तथा भ्रष्टाचारियों में सम्मिलित रहा।[2]

فَالْیَوْمَ نُنَجِّیْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰیَةً ؕ وَ اِنَّ كَثِیْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰیٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿۹۲﴾

(९२) तो आज हम तेरे शव को छोड़ देंगे ताकि तू उन लोगों के लिए शिक्षा का चिन्ह हो जाये जो तेरे पश्चात हैं।[3] तथा वस्तुतः अधिकाँश लोग हमारे प्रमाण-चिन्हों से विमुख हैं।

وَ لَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّ رَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰی

(९३) तथा हमने इस्राईल की सन्तान को अति उत्तम रहने का ठिकाना दिया तथा हमने उन्हें स्वादिष्ट वस्तुऐं भोजन के लिए प्रदान कीं तो उन्होंने मतभेद नहीं किया यहाँ तक कि उनके

---

[1]अर्थात अल्लाह के आदेश पर चमत्कारिक रूप से बने हुए जलीय मार्ग पर, जिस पर चलकर मूसा तथा उसके समुदाय ने समुद्र पार किया था, फ़िरऔन तथा उसकी सेना भी समुद्र पार करने के विचार से चलना प्रारम्भ किया। उद्देश्य यह था कि मूसा इस्राईल की संतान को, जो मेरी दासता से स्वतंत्र कराने के उद्देश्य से रातों-रात ले आया, तो उसे पुनः बन्दी बना लिया जाये। जब फ़िरऔन तथा उसकी सेना उस समुद्र मार्ग में प्रवेश कर गया, तो अल्लाह ने समुद्र को पूर्व की भाँति बहने का आदेश दे दिया। परिणाम स्वरूप फ़िरऔन सहित सब के सब समुद्र में डूब गये।

[2]अल्लाह की ओर से उत्तर दिया गया कि अब ईमान का कोई लाभ नहीं होगा क्योंकि जब ईमान लाने का समय था, उस समय तो अवहेलना, अवज्ञाकारी तथा भ्रष्टाचार में लिप्त रहे।

[3]जब फ़िरऔन डूब गया तो उसकी मृत्यु का बहुत से लोगों को विश्वास नहीं आता था। अल्लाह तआला ने समुद्र को आदेश दिया, उसने उसकी लाश किनारे पर फेंक दिया, जिसको फिर सबने देखा। प्रसिद्ध है कि आज भी यह लाश मिस्र के अजायबघर में सुरक्षित है। واللہ أعلم بالصواب

The Ummah Technology Mission

جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِىْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٣﴾

पास ज्ञान पहुँच गया।[1] निश्चित बात है कि आपका प्रभु उनके मध्य क़ियामत के दिन उन बातों में निर्णय कर देगा जिन बातों में वे मतभेद करते थे।

فَاِنْ كُنْتَ فِىْ شَكٍّ مِّمَّاۤ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ فَسْـَٔلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٩٤﴾

(९४) फिर यदि आप उसकी ओर से शंका में हों जिसको हमने आप की ओर भेजा है, तो आप उन लोगों से पूछिए, जो आप से पूर्व की किताबों को पढ़ते हैं। नि:सन्देह आप के पास आप के प्रभु की ओर से सच्ची किताब आयी है। आप कदापि सन्देह करनें वालों में से न हों।[2]

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٥﴾

(९५) तथा न उन लोगों में से हों, जिन्होंने अल्लाह (तआला) की आयतों को झुठलाया, तो आप घाटे पाने वालों में से हो जायें।[3]

---

[1]अर्थात एक तो अल्लाह की कृतज्ञता करने के बजाय, आपस में मतभेद प्रारम्भ कर दिया, फिर यह मतभेद भी अज्ञानता तथा मूर्खता के कारण नहीं किया, अपितु ज्ञान आ जाने के पश्चात किया। जिसका स्पष्ट अर्थ यह है कि यह मतभेद मात्र बैर तथा घमंड के आधार पर था।

[2]यह सम्बोधन या तो जन सामान्य के लिये है अथवा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माध्यम से मुसलमानों को शिक्षा दी जा रही है। क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वह्यी (प्रकाशना) के विषय में संदेह हो ही नहीं सकता था। "जो किताब पढ़ते हैं, उनसे पूछ लें" का अर्थ है कि क़ुरआन मजीद से पूर्व की आकाशीय पुस्तकें (तौरात तथा इंजील आदि)। अर्थात जिन के पास यह किताबें उपलब्ध हैं, उनसे इस क़ुरआन के विषय में ज्ञात करें क्योंकि उनमें इसका लक्षण तथा अन्तिम पैग़म्बर (ईशदूत) के गुणों का वर्णन किया गया है।

[3]यह भी वास्तव में मुसलमानों को ही समझाया जा रहा है कि झुठलाने का मार्ग हानि तथा विनाश का मार्ग है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٩٦﴾

(९६) नि:सन्देह जिन लोगों के विषय में आप के प्रभु की बातें सिद्ध हो चुकी हैं, वे ईमान न लायेंगे।

وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٩٧﴾

(९७) चाहे उसके पास सभी तर्क पहुँच जायें, जब तक वे दुखदायी यातना को न देख लें।[1]

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ آمَنَتْ فَنَفَعَهَا إِيمَانُهَا إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ ۖ

(९८) अत: कोई बस्ती ईमान नहीं लायी कि ईमान लाना उनके लिए लाभकारी होता, सिवाय यूनुस के समुदाय के।[2] जब वे ईमान ले आये,

---

[1] ये वही लोग हैं जो अधर्म तथा अल्लाह की अवज्ञा में इतने डूब चुके होते हैं कि उन पर किसी शिक्षा-दीक्षा का प्रभाव नहीं पड़ता, तथा कोई तर्क उनके लिये प्रभावी नहीं होता। इसीलिये कि अवहेलना तथा अवज्ञाकारिता के कारण सत्य को स्वीकार करने के प्राकृतिक गुण तथा विशेषता को वे समाप्त कर चुके होते हैं, उनकी आँखें यदि खुलती हैं तो उस समय जब अल्लाह का प्रकोप उनके सिर पर आ जाता है, तब वह ईमान अल्लाह के दरबार में स्वीकार नहीं होता।

﴿ فَلَمْ يَكُ يَنفَعُهُمْ إِيمَٰنُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا ﴾

"जब वे हमारा प्रकोप देख चुके (उस समय) उनके ईमान ने उन्हें कोई लाभ नहीं दिया।"(सूरः अल-मोमिन, ८५)

[2] لَوْلَا यह उत्तेजित के लिये هَلَّا के अर्थ में है, अर्थात जिन बस्तियों को हमने विनाश किया, उनमें से कोई एक बस्ती ऐसी क्यों न हुई, जो ऐसा ईमान लाती जो उनके लिये लाभकारी होता। हाँ, केवल यूनुस का समुदाय ऐसा हुआ है कि जब वह ईमान ले आयी तो अल्लाह ने उससे प्रकोप दूर कर दिया। इसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि जब यूनुस अलैहिस्सलाम ने देखा कि उनकी चेतावनी तथा धार्मिक शिक्षा का प्रभाव उनके समुदाय पर नहीं हो रहा है, तो उन्होंने अपने समुदाय में घोषणा कर दी कि अमुक-अमुक दिन तुम पर प्रकोप आ जायेगा तथा स्वयं वहाँ से निकल गये। जब प्रकोप मेघ के रूप में उन पर उमड आया तो वह बच्चे, स्त्रियाँ यहाँ तक कि पशुओं को लेकर एक मैदान में एकत्रित हो गये तथा अल्लाह के दरबार में विनम्र विनती, तौबा, क्षमा-याचना प्रारम्भ कर दिया। अल्लाह तआला ने उनकी तौबा स्वीकार करके उनके ऊपर से प्रकोप टाल दिया। आदरणीय यूनुस आने-जाने वाले यात्रियों से अपने समुदाय का समाचार पूछते रहते थे, उन्हें जब पता चला कि अल्लाह तआला ने उनके समुदाय के ऊपर से प्रकोप टाल दिया है, तो उन्हें अपने झुठलाने के पश्चात अपने उस समुदाय में वापस जाना अच्छा नहीं लगा, बल्कि उनसे अप्रसन्न होकर किसी अन्य

The Ummah Technology Mission

لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٩٨﴾

तो हमने अपमान की यातना साँसारिक जीवन में उनसे हटा दी तथा उनको एक (निश्चित) समय तक सुख भोगने (का अवसर) दिया।[1]

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾

(९९) यदि आप का प्रभु चाहता तो समस्त धरती के सभी लोग ईमान ले आते,[2] तो क्या आप लोगों को बाध्य कर सकते हैं यहाँ तक कि वह मोमिन ही हो जायें ?

ओर चल दिये, जिस पर वह नाव की घटना घटित हुई (जिसका विस्तृत वर्णन अपने स्थान पर आयेगा)। (फ़तहुल क़दीर) परन्तु व्याख्याकारों का इस बात के मध्य मतभेद है कि यूनुस का समुदाय ईमान कब लाया ? प्रकोप देख कर लाया, जबकि ईमान लाना लाभकारी नहीं होता। परन्तु अल्लाह तआला ने उसे अपने इस नियम से अलग करके उस के ईमान को स्वीकार कर लिया। अथवा अभी प्रकोप नहीं आया था अर्थात वह अवस्था नहीं आयी थी कि जब ईमान लाना लाभकारी नहीं होता, परन्तु क़ुरआन करीम ने यूनुस के समुदाय को لَمَّا के शब्द के साथ जो अलग किया है वह प्रथम व्याख्या की पुष्टि करता है।

[1]क़ुरआन ने साँसारिक प्रकोप को हटाने का वर्णन तो किया है, परलोक की यातना के विषय में कोई वर्णन नहीं किया, इसलिये कुछ व्याख्याकारों का विचार है कि उनसे परलोक की यातना समाप्त नहीं की गयी। परन्तु जब क़ुरआन ने यह स्पष्ट कर दिया कि साँसारिक प्रकोप ईमान लाने के कारण टाला गया था, तो फिर परलोक की यातना का वर्णन करने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती है। क्योंकि परलोक की यातना का निर्णय ईमान तथा ईमान न होने के आधार पर ही होना है। यदि ईमान लाने के पश्चात यूनुस का समुदाय अपने ईमान पर स्थिर रहा होगा (जिसका वर्णन यहाँ नहीं है) तो निःसंदेह वह परलोक की यातना से सुरक्षित रहेंगे। परन्तु अन्य परिस्थिति में प्रकोप से सुरक्षा केवल दुनिया की सीमा तक होगी।

[2]परन्तु अल्लाह ने ऐसा नहीं चाहा, क्योंकि यह उसकी योजना तथा इच्छा के विपरीत है, जिसको पूर्णरूप से वही जानता है। यह इसलिये फ़रमाया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तीव्र इच्छा होती थी कि सब मुसलमान हो जायें, अल्लाह तआला ने फ़रमाया : यह नहीं हो सकता क्योंकि अल्लाह की इच्छा सर्वोच्च ज्ञान तथा श्रेष्ठतम रहस्य पर आधारित है, उसकी यह माँग नहीं। इसलिये आगे फ़रमाया कि आप लोगों को बलपूर्वक ईमान लाने पर कैसे बाध्य कर सकते हैं ? जबकि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)के अन्दर न इसकी शक्ति है न उसके आप उत्तरदायी हैं।

The Ummah Technology Mission

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَ يَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰۰﴾

(१००) यद्यपि किसी का ईमान लाना अल्लाह की आज्ञा के बिना सम्भव नहीं। तथा अल्लाह (तआला) निर्बोध लोगों पर अशुद्धि थोप देता है।[1]

قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰۱﴾

(१०१) आप कह दीजिए कि तुम विचार करो कि क्या-क्या वस्तुऐं आकाशों तथा धरती में हैं तथा जो लोग ईमान नहीं लाते उनको तर्क तथा चेतावनी कोई लाभ नहीं पहुँचाते।

فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ قُلْ فَانْتَظِرُوْا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿۱۰۲﴾

(१०२) तो क्या वे लोग केवल उन लोगों की सी घटनाओं की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जो उनसे पूर्व गुजर चुके हैं, (आप) कह दीजिए कि ठीक है तो तुम प्रतीक्षा में रहो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में से हूँ।[2]

ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۰۳﴾

(१०३) फिर हम अपने पैग़म्बरों को तथा ईमानवालों को बचा लेते थे, इसी प्रकार हमारे अधिकार में है कि हम ईमान वालों को छुटकारा दिया करते हैं।

---

[1]अशुद्धता से तात्पर्य यातना अथवा कुफ़्र (अविश्वास) है। अर्थात जो लोग अल्लाह की निशानियों पर विचार नहीं करते, वे कुफ़्र (अधर्म) में ही लिप्त रहते हैं तथा इस प्रकार यातना के अधिकारी हो जाते हैं।

[2]अर्थात जिन लोगों पर किसी तर्क तथा चेतावनी का प्रभाव नहीं होता, इसलिये वे ईमान नहीं लाते। क्या इस बात की प्रतीक्षा में हैं कि उनके साथ भी वही इतिहास की पुनरावृत्ति की जाये, जो उनसे पूर्व के समुदायों पर गुज़र चुका है। अर्थात ईमानवालों को बचाकर (जैसाकि अगली आयत में स्पष्टीकरण है) शेष सभी को नष्ट कर दिया जाता था। यदि इस बात की प्रतीक्षा है तो ठीक है, तुम भी प्रतीक्षा करो, मैं भी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

The Ummah Technology Mission

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ
شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ
تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ
اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۖ
وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۙ﴿١٠٤﴾

(१०४) (आप) कह दीजिए[1] कि ऐ लोगो ! यदि तुम मेरे धर्म की ओर से शंका में हो, तो मैं उन देवताओं की उपासना नहीं करता, जिनकी तुम अल्लाह को छोड़कर पूजा करते हो।[2] परन्तु हाँ, उस अल्लाह की इबादत करता हूँ, जो तुम्हारे प्राण निकालता है।[3] तथा मुझको आदेश हुआ है कि मैं ईमानवालों में से हूँ।

وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ
وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۚ﴿١٠٥﴾

(१०५) तथा यह कि एकाग्र होकर अपना चेहरा इस धर्म की ओर[4] कर लेना तथा कभी मूर्तिपूजकों में से न बनना।

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا
لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ

(१०६) तथा अल्लाह को छोड़कर कभी ऐसी चीज़ की इबादत न करना, जो तुझको न कोई लाभ पहुँचा सके तथा न कोई हानि पहुँचा

---

[1]इस आयत में अल्लाह तआला अपने अन्तिम पैग़म्बर परम आदरणीय मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आदेश दे रहा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जन सामान्य पर स्पष्ट कर दें कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग तथा मूर्तिपूजकों के मार्ग एक-दूसरे से भिन्न है।

[2]अर्थात यदि तुम मेरे धर्म के विषय में सन्देह करते हो जिसमें मात्र एक अल्लाह की इबादत है तथा यही धर्म सत्य है, न कि अन्य कोई, तो याद रखो कि मैं कभी भी इन देवताओं की किसी भी अवस्था में पूजा नहीं करूँगा, जिसकी तुम करते हो।

[3]अर्थात जीवन-मृत्यु उसी के हाथ में है, इसलिये जब वह चाहे तुम्हें मार सकता है क्योंकि मनुष्यों के प्राण उसी के हाथ में हैं।

[4]हनीफ़ का अर्थ है एकाग्रता, अर्थात प्रत्येक अन्य धर्म छोड़कर केवल इस्लाम धर्म धारण करना तथा प्रत्येक ओर से मुँह मोड़कर केवल एक अल्लाह की ओर एकाग्रता से आकर्षित होना। सबसे विच्छेद एवं अल्लाह से सम्बंध रखना।

The Ummah Technology Mission

فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ الظَّٰلِمِينَ ﴿١٠٦﴾

सके । फिर यदि ऐसा किया, तो तुम उस अवस्था में अत्याचारियों में से हो जाओगे ।[1]

وَإِن يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُۥٓ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِن يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهِۦ ۚ يُصِيبُ بِهِۦ مَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦ ۚ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٧﴾

(१०७) तथा यदि तुमको अल्लाह कोई दुख पहुँचाये तो सिवाय उसके कोई अन्य उसको दूर करने वाला नहीं है तथा यदि वह तुम्हें कोई सुख पहुँचाना चाहे, तो उसकी कृपा को कोई हटाने वाला नहीं,[2] वह अपनी कृपा अपने भक्तों में से जिस पर चाहे विस्तार कर दे तथा वह अति कृपालु तथा अत्यन्त दयालु है ।

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِى لِنَفْسِهِۦ ۖ وَمَن ضَلَّ

(१०८) (आप) कह दीजिए ऐ लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे प्रभु की ओर से सत्य पहुँच चुका है ।[3] इसलिए जो व्यक्ति सीधे मार्ग पर आ जाये, तो वह अपने लिए सीधे मार्ग पर

---

[1]अर्थात यदि अल्लाह को छोड़कर ऐसे देवताओं को आप पुकारेंगे जो किसी को लाभ अथवा हानि पहुँचाने का सामर्थ्य नहीं रखते, तो यह अत्याचार होगा । अत्याचार का अर्थ है وَضْعُ الشيءِ فِي غَيرِ محلّه किसी वस्तु को उसके मूल स्थान से हटाकर किसी अन्य स्थान पर रख देना । इबादत चूँकि केवल उस अल्लाह का अधिकार है, जिसने सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण किया है तथा जीवन के सभी साधन वही उपलब्ध कराता है, तो इस इबादत के अधिकारी शक्ति को छोड़कर किसी अन्य की पूजा-उपासना करना, जैसाकि इबादत का अत्यधिक त्रुटिपूर्ण प्रयोग है । इसलिये शिर्क को घोर अत्याचार कहा गया है । यहाँ भी यद्यपि सम्बोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को है, परन्तु वास्तविक संबोधन मानव जाति तथा मुसलमानों को है ।

[2]पुण्य को यहाँ कृपा से इसलिये वर्णन किया गया है कि अल्लाह तआला अपने भक्तों के साथ जो भलाई का मामला करता है, कर्मों के आधार पर यद्यपि भक्त उसके अधिकारी नहीं होते, परन्तु यह मात्र उसकी कृपा है कि वह कर्मों की अनदेखी करते हुए मनुष्यों पर कृपा तथा दया करता है ।

[3]सत्य से तात्पर्य इस्लाम धर्म तथा क़ुरआन है, जिसमें अल्लाह के एक होने तथा मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाना अनिवार्य है ।

The Ummah Technology Mission

فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِوَكِيلٍ ﴿١٠٨﴾

आयेगा,[1] तथा जो व्यक्ति मार्ग से भटक गया, तो उसका भटकना उसी पर पड़ेगा।[2] तथा मैं तुम पर प्रभारी नहीं बनाया गया।[3]

وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿١٠٩﴾

(१०९) तथा आप उसका पालन करते रहिएजो कुछ वह्यी (आदेश) आपके पास भेजी जाती है तथा धैर्य रखिए,[4] यहाँ तक कि अल्लाह निर्णय कर दे तथा वह सभी निर्णायकों से श्रेष्ठ निर्णायक है।[5]

---

[1]अर्थात इस का लाभ उसी को होगा जो क़ियामत के दिन अल्लाह की यातना से बच जायेगा।

[2]अर्थात उसकी हानि तथा दण्ड उसी पर पड़ेगा जो प्रलय के दिन नरक की आग में जलेगा अर्थात यदि कोई संमार्ग अपनायेगा, तो उससे ऐसा नहीं कि अल्लाह की शक्ति बढ़ जायेगी, तथा यदि कोई इंकार तथा भटकाव का मार्ग अपनायेगा, तो उससे अल्लाह के राज्य तथा शक्ति में अंतर हो जाये। अर्थात ईमान तथा सत्य का प्रलोभन तथा अधर्म एवं गुमराही से बचने पर बल देना दोनों ही का उद्देश्य मानव जाति की भलाई तथा हित है, इस में अल्लाह का अपना कोई स्वार्थ नहीं है।

[3]अर्थात मेरा दायित्व यह नहीं कि तुम्हें मुसलमान बना दूँ अपितु मैं तो केवल भासक, शुभसूचक, तथा प्रचारक एवं निवेदक हूँ। मेरा कार्य केवल ईमानवालों को शुभसूचना देना, अवज्ञाकारियों को अल्लाह की उस पकड़ से डराना तथा अल्लाह के आदेश की ओर आमन्त्रित करके सचेत करना है। कोई इस आमन्त्रण को स्वीकार करके ईमान लाता है तो ठीक है, कोई नहीं स्वीकार करता तो मैं उसका उत्तरदायी नहीं हूँ कि बलपूर्वक करा के छोड़ूँ।

[4]अल्लाह तआला जिस चीज़ की वह्यी (प्रकाशना) करे उसे दृढ़ता से पकड़ लें, जिसका आदेश करे उसे करें तथा जिससे रोके उससे रुक जायें तथा किसी बात में आलस्य न करें। तथा वह्यी (प्रकाशना) का पालन तथा कार्यान्वयन करने में जो कठिनाईयाँ आयें, विरोधियों की ओर से जो कष्ट पहुँचाये जायें तथा सचेत करने तथा आमन्त्रित करने के मार्ग में जिन कठिनाईयों से गुज़रना पड़े उन पर धैर्य रखें तथा दृढ़ता से सब का सामना करें।

[5]क्योंकि उसका ज्ञान भी पूर्ण है, उसकी शक्ति तथा सामर्थ्य भी विस्तृत है तथा उसकी कृपा भी सामान्य है। इसलिये उससे अधिक उचित निर्णय करने वाला अन्य कौन हो सकता है?

The Ummah Technology Mission

सूरतु हूद-११

سُوْرَةُ هُوْدٍ

सूर हूद* मक्का में उतरी तथा इसकी एक सौ तेईस आयतें तथा दस रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु तथा अत्यन्त दयालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

(१) अलिफ़॰ लाम॰ रा॰ यह एक ऐसी किताब है कि इसकी आयतें सुदृढ़ की गयी हैं [1]फिर सविस्तार वर्णन की गयी हैं।[2] एक विवेकी पूर्णज्ञान वाले की ओर से।[3]

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۝١

(२) यह कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी की इबादत (उपासना) न करो, मैं तुम को

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنَّنِيْ لَكُمْ

---

*इस सूरः में भी उन समुदायों का वर्णन है जिन्होंने अल्लाह की निशानी तथा पैग़म्बरों को झुठलाया, जिसके कारण अल्लाह के प्रकोप का निशाना बने तथा इतिहास के पृष्ठों से त्रुटिपूर्ण शब्दों की भाँति मिटा दिये गये, अथवा इतिहास के पृष्ठों में शिक्षा का नमूना बनकर वर्तमान बनी हुई हैं। इसीलिए हदीस में है कि आदरणीय अबू बकर सिद्दीक (رضی اللہ عنہ) ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि क्या बात है आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बूढ़े से दिखायी देते हैं ? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उत्तर दिया कि मुझे सूरः हूद, वाक़यः, अम्मयतसाअलून तथा इज़ा अश्शम्सु कूवेरत आदि ने बूढ़ा कर दिया है। (त्रिमज़ी संख्या ३२९७, सहीह त्रिमज़ी अलबानी ३\११३)

[1]अर्थात शब्द तथा शैली में इतनी सुदृढ़ तथा पक्की है कि उनके क्रम तथा अर्थ में कोई त्रुटि नहीं।

[2]फिर इसमें आदेश तथा नियम, उपदेश तथा कथाएँ, विश्वास तथा ईमान, चरित्र एवं सम्मान जिस प्रकार स्पष्ट रूप से तथा विस्तार से वर्णन किये गया हैं, पूर्व की किताबों में उसकी तुलना प्रस्तुत करनें में असमर्थ हैं।

[3]अर्थात अपने कथन में ज्ञानी है, इसलिए उसकी ओर से उतारी हुई बातें ज्ञान से खाली नहीं हैं तथा वह सूचित भी है अर्थात सभी विषय तथा उनके परिणाम से अवगत है। इसलिए उसकी बातों पर कर्म करने से ही मनुष्य दुष्परिणाम से बच सकता है।

The Ummah Technology Mission

مِّنْهُ نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ ﴿٢﴾

अल्लाह की ओर से डराने वाला तथा शुभसूचना देने वाला हूँ।

وَأَنِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُمَتِّعْكُم مَّتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَيُؤْتِ كُلَّ ذِي فَضْلٍ فَضْلَهُ ۖ وَإِن تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيرٍ ﴿٣﴾

(३) तथा यह कि तुम लोग अपने पाप अपने प्रभु से क्षमा कराओ, फिर उसी की ओर ध्यान-मग्न हो जाओ, वह तुम को निर्धारित समय तक सुख-सुविधा देगा[1] तथा प्रत्येक अधिक अच्छे कार्य करने वाले को अधिक पुण्य देगा। तथा यदि तुम लोग मुख मोड़ते रहे, तो मुझको तुम्हारे लिए एक महान दिन[2] की यातना की चिन्ता है।

إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤﴾

(४) तुमको अल्लाह ही के पास जाना है तथा वह प्रत्येक वस्तु पर पूर्ण सामर्थ्य रखता है।

أَلَا إِنَّهُمْ يَثْنُونَ صُدُورَهُمْ لِيَسْتَخْفُوا مِنْهُ ۚ أَلَا حِينَ

(५) याद रखो वह लोग अपनी छातियों को दोहरा किये देते हैं ताकि अपनी बातें (अल्लाह से) छिपा सकें।[3] याद रखो कि वह

---

[1]यहाँ उस साँसारिक संसाधनों को जिसको क़ुरआन ने सामान्य रूप से "गर्व का साधन" धोखे का सामान कहा है, यहाँ इसे "सुख सामग्री" कहा गया है। इसका अर्थ यह हुआ कि जो परलोक से निश्चिन्त होकर साँसारिक सुख से लाभ प्राप्त करेगा उसके लिए यह धोखे का साधन है, क्योंकि उसके पश्चात उसे दुष्परिणाम भोगना है तथा जो परलोक की तैयारी के साथ-साथ उससे लाभ उठायेगा, उसके लिये क्षणिक जीवन सामग्री सुख सामग्री है, क्योंकि उसने उसको अल्लाह के आदेश के अनुसार प्रयोग किया है।

[2]बड़े दिन से तात्पर्य क़ियामत का दिन है।

[3]इसके उतरने की विशेषता में व्याख्याकारों का मतभेद है। अत: इसके भावार्थ में भी मतभेद है। फिर भी सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः हूद में वर्णित अवतरण की विशेषता से ज्ञात होता है कि यह उन मुसलमानों के विषय में उतरी है जो शर्म के प्रभाव से प्रभावित होने के कारण शौच तथा पत्नी के साथ सम्भोग के समय निर्वस्त्र होना प्रिय नहीं समझते थे कि अल्लाह तआला हमें देख रहा है, इसलिए ऐसे अवसरों पर वह गुप्ताँगों को छिपाने के लिए अपनी छातियों को दोहरा कर लेते थे। अल्लाह तआला ने

The Ummah Technology Mission

يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

लोग जिस समय अपने वस्त्र लपेटते हैं वह उस समय भी सब कुछ जानता है, जो कुछ छिपाते (चुपके-चुपके बातें करते) हैं तथा जो कुछ स्पष्ट (बातें) करते हैं। नि:सन्देह वह दिलों के अन्दर की बातें जानता है।

फ़रमाया कि रात्रि के अंधेरे में जब वे बिस्तरों पर अपने आपको कपड़ों से ढाँक लेते थे, तो उस समय भी वह (अल्लाह) उनको देखता तथा उनकी छुपी तथा प्रकट बातों को जानता है। अर्थ यह है कि लज्जा एवं भय का भाव अपने स्थान पर अत्यन्त प्रशंसनीय है परन्तु इसमें इतनी अधिकता भी उचित नहीं इसलिए कि जिस शक्ति (अल्लाह) के भय से वे ऐसा करते हैं, उससे तो फिर भी नहीं छुप सकते, तो फिर इस प्रकार के कष्ट के क्या लाभ ?

The Ummah Technology Mission

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝٦

(६) धरती पर चलते-फिरते जितने भी जीवधारी हैं सभी की जीविका अल्लाह (तआला) पर है[1] वही उनके रहने का स्थान भी जानता है तथा उनको अर्पित किये जाने का स्थान[2] भी, सभी कुछ खुली किताब में विद्यमान है।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۗ وَلَئِن قُلْتَ إِنَّكُم مَّبْعُوثُونَ مِن بَعْدِ الْمَوْتِ

(७) तथा अल्लाह ही वह है जिस ने छः दिन में आकाशों तथा धरती को उत्पन्न किया तथा उसका अर्श (सिंहासन) पानी पर था,[3] ताकि वह तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में अच्छे कर्म वाला कौन है ?[4] यदि आप उनसे कहें कि

---

[1]अर्थात वह प्रभारी तथा उत्तरदायी है। धरती पर चलने वाला प्रत्येक जीव मानव हो अथवा जिन्न, पशु हो अथवा पक्षी, छोटा हो अथवा बड़ा, जलीय हो अथवा थलीय, प्रत्येक के लिए उसकी श्रेणी तथा जाति की आवश्यकतानुसार वह भोजन का प्रबंध करता है।

[2] مستقر तथा مستودع के भावार्थ में मतभेद है। कुछ के निकट वह स्थान जहाँ चल-फिर कर पहुँचने पर रुक जाये مستقر (मुस्तक़र) कहते हैं तथा जिसको स्थाई निवास बनाये वह مستودع है। कुछ के निकट माता का गर्भाशय (मुस्तकर) तथा पिता की पीठ (मुस्तौदआ) है तथा कुछ के निकट जीवन काल में मानव तथा पशु जहाँ निवास करे, वह उसका (मुस्तकर) है तथा जहाँ मरने के पश्चात गाड़ दिया गया हो वह (मुस्तौदआ) है (तफ़सीर इब्ने कसीर) इमाम शौकानी कहते हैं "मुस्तकर" का तात्पर्य माता का गर्भाशय तथा "मुस्तौदआ" से धरती का वह भाग है जिस में वह गाड़ा गया हो तथा इमाम हाकिम के एक कथनानुसार इसी को प्राथमिकता दी है। अन्ततः जो भी अर्थ लिया जाये, आयत का भावार्थ स्पष्ट है कि चूँकि अल्लाह तआला को प्रत्येक के (मुस्तकर) तथा (मुस्तौदआ) का ज्ञान है, इसलिये वह प्रत्येक को भोजन पहुँचाने का सामर्थ्य रखता है तथा ज़िम्मेदार है तथा वह अपना कर्तव्य पूरा करता है।

[3]यही बात सहीह हदीस से भी सिद्ध होती है। अतः एक हदीस में आता है "अल्लाह तआला ने आकाश तथा धरती की उत्पत्ति से पचास हज़ार वर्ष पूर्व जीवों का भाग्य लिखा, उस समय उस का अर्श पानी पर था।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़द्र, अन्य देखिये सहीह बुख़ारी, बदउल ख़ल्क़)

[4]अर्थात ये आकाश तथा धरती यूँ ही व्यर्थ बिना उद्देश्य के नहीं बनाये गये, बल्कि उसका उद्देश्य मानव तथा दानव की परीक्षा लेना है कि कौन अच्छे कर्म करता है ?

The Ummah Technology Mission

لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوٓا إِنْ هَٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝٧

तुम लोग मरने के पश्चात् फिर जीवित किये जाओगे, तो काफ़िर (अधर्मी) उत्तर देंगे कि ये तो केवल खुला जादू ही है।

وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَىٰٓ أُمَّةٍ مَّعْدُودَةٍ لَّيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ ۗ أَلَا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ۝٨

(८) तथा यदि हम उन से यातना को कुछ समय तक के लिये निलम्बित कर दें, तो यह अवश्य पुकार उठेंगे कि यातना को कौन-सी चीज़ रोके हुई है। सुनो ! जिस दिन वह उनके निकट आयेगा, फिर उनसे टलने वाला नहीं, फिर तो जिसका उपहास कर रहे थे, वह उन्हीं पर उलट पड़ेगा। [1]

وَلَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنسَٰنَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنَٰهَا مِنْهُ إِنَّهُۥ لَيَـُٔوسٌ كَفُورٌ ۝٩

(९) तथा यदि हम मानव को किसी सुख का स्वाद चखा कर फिर उसे उस से ले लें तो वह अत्यधिक निराश तथा अत्यधिक कृतघ्न बन जाता है। [2]

وَلَئِنْ أَذَقْنَٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّـَٔاتُ

(१०) तथा यदि हम उसे कोई सुख पहुँचायें, उस कठिनाई के पश्चात् जो उसे पहुँच चुकी थी तो वह कहने लगता है कि बस बुराईयाँ

टिप्पणी : अल्लाह तआला ने यहाँ यह नहीं कहा कि कौन अधिक कर्म करता है अपितु कहा कि कौन अधिक अच्छे कर्म करता है इसलिये कि अच्छा कर्म वही होता है, जो अल्लाह की प्रसन्नता के लिये किया जाये, तथा दूसरा सुन्नत के अनुसार हो। इन दो प्रतिबन्धों में से एक भी न रह जाये, तो वह अच्छा कर्म नहीं रहेगा, फिर वह चाहे जितना अधिक क्यों न हो, अल्लाह के यहाँ उस का कोई मूल्य नहीं है।

[1]यहाँ शीघ्र माँग करने को "उपहास" कहा गया है क्योंकि वह शीघ्रता की माँग उपहास के लिये ही होती थी। अतः उद्देश्य यह समझाना है कि अल्लाह (तआला) की ओर से देरी पर मनुष्य को असावधान नहीं रहना चाहिये, उसकी पकड़ किसी भी समय हो सकती है।

[2]मानव जाति में सामान्यतः जो दुर्गुण पाये जाते हैं इस में तथा अगली आयत में उन का वर्णन है। निराशा का सम्बंध भविष्य से है तथा कृतघ्नता का भूत तथा वर्तमान से।

The Ummah Technology Mission

عَنِّيْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ۝١٠

मुझ से जाती रहीं,[1] नि:सन्देह वह बड़ा ही प्रसन्न होकर गर्व करने लगता है।[2]

اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝١١

(११) उनके सिवाय जो धैर्य रखते हैं तथा पुण्य कार्यों में लगे रहते है। उन्हीं लोगों के लिये क्षमा भी है तथा बहुत बड़ा प्रत्युप्कार भी।[3]

---

[1]अर्थात समझता है कि कठिनाईयों का काल समाप्त हो गया है, अब उसे कोई कठिनाई नहीं आयेगी।

समुदाय के विभिन्न भावार्थ : आयत संख्या ८ में "उम्मत" शब्द आया है। यह क़ुरआन मजीद में विभिन्न स्थानों पर विभिन्न अर्थों में प्रयोग हुआ है। أمة शब्द أم से बना है जिसका अर्थ निश्चय करने के हैं। यहाँ इसका अर्थ 'उस समय' तथा अवधि के हैं, जो यातना के लिये निश्चित है (फ़तहुल क़दीर) सूरः यूसुफ़ की आयत संख्या ४५ ﴿وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ﴾ में भी यही अर्थ है। इसके अतिरिक्त जिन अर्थों में इसका प्रयोग हुआ है, उनमें एक इमाम तथा अगुवा है। जैसे ﴿إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً﴾ (अन्नहल-१२०) नियम तथा धर्म है, जैसे ﴿إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ﴾ (अल-ज़ुख़रूफ़-२३) पार्टी तथा गुट है जैसे ﴿وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِّنَ النَّاسِ﴾ (सूरः अल-क़सस-२३) ﴿وَمِن قَوْمِ مُوسَىٰ أُمَّةٌ﴾ (सूरः अल-आराफ़-१५९) आदि। वह विशेष समुदाय अथवा सम्प्रदाय है, जिसकी ओर कोई रसूल भेजा गया हो। ﴿وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ﴾ (सूरः यूनुस-४७) इसको आमंत्रित समुदाय भी कहते हैं। तथा उसी प्रकार पैग़म्बर पर ईमान लाने वालों को भी उम्मत (समुदाय) अथवा अनुयायी समुदाय अथवा आज्ञाकारी समुदाय कहा जाता है। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात जो कुछ उसके पास है, उस पर इतराता तथा दूसरों पर गर्व तथा अहकार दिखाता है परन्तु इन दुर्गुणों से ईमान वाले तथा पुनीत लोग अलग हैं, जैसाकि अगली आयत से स्पष्ट है।

[3]अर्थात ईमानवाले सुख-सुविधा हो अथवा तंगी तथा दुख, दोनों अवस्थाओं में अल्लाह के आदेशों के अधीन काम करते हैं। जैसाकि हदीस में आता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सौगन्ध खाकर कहा, "सौगन्ध है उस शक्ति की जिसके नियन्त्रण में मेरे प्राण हैं, अल्लाह तआला ईमानवालों के लिये जो भी निर्णय करता है, उसमें उसके लिये भलाई का पक्ष होता है। यदि उसको सुख प्राप्त होता है, तो वह अल्लाह का कृतज्ञ होता है जो उसके लिये अच्छा है (अर्थात प्रतिफल का कारण) है तथा यदि कोई दुख पहुँचता है तो धैर्य रखता है, वह भी उसके लिये अच्छा (अर्थात प्रतिफल तथा पुण्य का कारण) है यह विशेषता एक ईमानवाले के अतिरिक्त किसी को प्राप्त नहीं।" (सहीह मुस्लिम किताबुल ज़ोहद, बाबुल मोमिन अमरुहू कुल्लुहु ख़ैर) तथा एक अन्य हदीस में फ़रमाया:

The Ummah Technology Mission

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوْحٰٓى
اِلَيْكَ وَضَآئِقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ اَنْ
يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ
اَوْ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ
نَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ
وَّكِيْلٌ ؕ﴿۱۲﴾

(१२) तो शायद कि आप उस वह्यी (प्रकाशना) के किसी भाग को छोड़ देने वाले हैं, जो आप की ओर उतारी जाती है तथा उससे आपका हृदय संकुचित है, केवल उनकी इस बात पर कि इस पर कोई कोष क्यों नही उतरा ? अथवा इस के साथ कोई फ़रिश्ता ही आता, सुन लीजिये ! आप तो केवल डराने वाले ही हैं[1] तथा हर चीज़ का संरक्षक केवल अल्लाह तआला है।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ
سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ وَّ ادْعُوْا

(१३) क्या ये कहते हैं कि इस क़ुरआन को उसी ने गढ़ा है। उत्तर दीजिये कि फिर तुम भी इस के समान दस सूरः गढ़ी हुई ले आओ

"मोमिन को जो भी दुख-दर्द तथा कठिनाई पहुँचती है, यहाँ तक कि उसे काँटा चुभ जाता है, तो अल्लाह तआला उस के कारण उस की त्रुटियों को क्षमा कर देता है।" (मुसनद अहमद भाग ३, पृष्ठ ४) सूरः *मआरिज* की आयतों संख्या १९ तथा २२ में भी इस विषय का वर्णन है।

[1]मूर्तिपूजक नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में कहा करते थे कि उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतरता, अथवा उस की ओर कोई कोष क्यों नहीं उतार दिया जाता ? (सूरः *अल-फ़ुरक़ान-८*) एक अन्य स्थान पर कहा गया है "हमें ज्ञान है कि यह लोग आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विषय में जो बातें कहते हैं, उन से आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) दुखी होते हैं।" (सूरः *अल-हिज्र-९८*) इस आयत में उन्हीं बातों के सम्बन्ध में कहा जा रहा है कि शायद आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) दुखी होते हों, सम्भव है आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) वह उन्हें सुनाना अप्रिय समझें। परन्तु आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इन बातों से निश्चिंत होकर, उन को अल्लाह की वह्यी (प्रकाशना) सुनायें, उन्हें प्रिय हो अथवा अप्रिय, वे स्वीकार करें अथवा अस्वीकार। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का कर्तव्य केवल सर्तक करना तथा चेतावनी है, वह आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) प्रत्येक अवस्था में किये जायें।

The Ummah Technology Mission

مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٣﴾

तथा अल्लाह के अतिरिक्त जिसे चाहो अपने साथ सम्मिलित भी कर लो यदि तुम सच्चे हो।[1]

فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٤﴾

(१४) फिर यदि वे तुम्हारी इस बात को स्वीकार न करें, तो तुम निश्चित रूप से जान लो कि यह क़ुरआन अल्लाह के ज्ञान के साथ उतारा गया है। तथा यह कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, तो क्या तुम मुसलमान होते हो ?[2]

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ

(१५) जो व्यक्ति सांसारिक जीवन तथा उसकी शोभा पर रीझा हुआ हो, हम ऐसों को उनके

---

[1]इमाम इब्ने कसीर लिखते हैं कि पहले अल्लाह तआला ने चुनौती दी कि यदि तुम इस दावे में सच्चे हो कि यह मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का गढ़ा हुआ क़ुरआन है, तो इस के समान प्रस्तुत कर के दिखा दो, तथा तुम जिसकी चाहो, सहायता प्राप्त कर लो, परन्तु तुम कभी भी ऐसा न कर सकोगे। फ़रमाया :

﴿قُل لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَىٰ أَن يَأْتُوا بِمِثْلِ هَٰذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا﴾

"कह दीजिये ! यदि कुल मानव तथा दानव मिलकर ऐसा क़ुरआन लाना चाहें तो इस के समान नहीं ला सकेंगे यद्यपि वह परस्पर में सहायक बन जायें।"(सूरः *बनी इस्राईल*-८८)

इस के पश्चात् अल्लाह तआला ने यह चुनौती दिया कि पूरा क़ुरआन बनाकर प्रस्तुत नहीं कर सकते, तो दस सूरतें ही बना कर प्रस्तुत करो। जैसाकि इस स्थान पर है। फिर तृतीय स्थान पर चुनौती दिया कि चलो एक ही सूरः बना कर प्रस्तुत करो जैसाकि सूरः यूनुस की आयत संख्या ३१ तथा सूरः *अल-बकरः* के प्रारम्भ में कहा गया है (तफ़सीर इब्ने कसीर *सूरः यूनुस* प्रस्तुत आयत के अर्न्तगत) तथा इस आधार पर अन्तिम चुनौती यह हो सकती है कि इस जैसी एक बात ही बना कर प्रस्तुत करो।

﴿فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِن كَانُوا صَادِقِينَ﴾ (सूरः *अल-तूर*-३४) परन्तु आयतों के उतरने के क्रम चुनौती के इस क्रम को समर्थन नहीं देता। والله أعلم بالصواب

[2]अर्थात क्या इस के पश्चात भी कि तुम इस चुनौती का उत्तर देने में असमर्थ हो, यह मानने के लिये, कि यह क़ुरआन अल्लाह ही का उतारा हुआ है, तैयार नहीं हो तथा न मुसलमान होने के लिये तैयार हो ?

The Ummah Technology Mission

فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ﴿١٥﴾

सभी कर्म (का बदला) यहीं पूर्णरूप से पहुँचा देते हैं तथा यहाँ उन्हें कोई कमी नहीं की जाती।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبَاطِلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾

(१६) हाँ, यही वे लोग हैं जिन के लिये परलोक में आग के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं तथा जो कुछ उन्होंने यहाँ किया होगा वहाँ सब व्यर्थ है तथा जो कुछ उन के कर्म थे वह सब नाश होने वाले हैं।[1]

أَفَمَن كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِن قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمَن يَكْفُرْ بِهِ

(१७) वह जो अपने पालनहार की ओर से एक तर्क पर हो तथा उस के साथ अल्लाह की ओर से गवाह हो तथा उस से पूर्व मूसा की किताब (गवाह हो) जो पथ-प्रदर्शक तथा दया है (अन्यों के समान हो सकता है ?)[2] यही

---

[1]इन दो आयतों के विषय में कुछ का विचार है कि इस में पाखण्डी लोगों की चर्चा है, कुछ के निकट इस से तात्पर्य यहूदी तथा इसाई हैं तथा कुछ के निकट इस में दुनिया के अभिलाषी लोगों का वर्णन है। क्योंकि अवसरवादी भी जो अच्छे कर्म करते हैं, अल्लाह तआला उन का बदला उन्हें दुनिया में दे देता है, आख़िरत में उनके लिये दण्ड के सिवाय कुछ न होगा। इस विषय को क़ुरआन मजीद में सूरः बनी इस्राईल आयत १८ तथा २१ एवं सूरः शूरा आयत २० में वर्णन किया गया है।

[2]निवर्तियों तथा काफ़िरों के सापेक्ष स्वाभावयुक्त लोगों तथा ईमान वालों का वर्णन किया जा रहा है। "अपने प्रभु की ओर से तर्क" से तात्पर्य वह प्रकृति है जिस पर अल्लाह तआला ने मानव को पैदा किया तथा वह है एक अल्लाह को मानना तथा उसी की इबादत (वंदना)। जिस प्रकार कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदेश है, "प्रत्येक बच्चा प्रकृति पर जन्म लेता है, परन्तु उसके पीछे उसके माता-पिता उसे यहूदी, इसाई अथवा अग्निपूजक बना देते हैं .....।" (सहीह बुख़ारी किताबुल जनायेज़ तथा सहीह मुस्लिम किताबुल क़द्र) يتلوه का अर्थ है उसके पीछे अर्थात उसके साथ अल्लाह की ओर से एक गवाह भी हो, गवाह से तात्पर्य क़ुरआन अथवा मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं, जो उस सत्य प्रकृति की ओर आमंत्रित तथा उसकी ओर संकेत करते हैं। तथा इससे पूर्व मूसा की किताब तौरात जो पथ-प्रदर्शक थी तथा कृपा का कारण भी थी।

The Ummah Technology Mission

مِنَ الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۫ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٧﴾

लोग हैं जो उस पर ईमान रखते हैं।[1] तथा सभी गुटों में से जो भी इसका इंकारी हो, उसके अन्तिम वायदे का स्थान नरक है,[2] फिर तू उसमें किसी प्रकार के संदेह में न हो, नि:संदेह यह तेरे प्रभु की ओर से साक्षात सत्य है, परन्तु अधिकतर लोग ईमान लाने वाले नहीं होते।[3]

अर्थात यह मूसा की किताब भी क़ुरआन पर ईमान लाने का मार्ग दिखाती है। अर्थ यह है कि एक व्यक्ति वह है जो इंकार करता है तथा काफ़िर है तथा उसकी तुलना में एक अन्य व्यक्ति है जो अल्लाह की ओर से आये तर्क पर स्थिर है, उस पर एक गवाह (क़ुरआन अथवा इस्लाम के पैग़म्बर) भी हैं, उसी प्रकार उससे पूर्व उतरने वाली किताब तौरात से भी उसके लिये मार्ग दर्शन का प्रबन्ध है। तथा वह ईमान ले आता है, क्या यह दोनों व्यक्ति समान हो सकते हैं ? अर्थात यह दोनों व्यक्ति समान नहीं हो सकते। क्योंकि एक ईमान वाला है दूसरा काफ़िर। एक प्रत्येक प्रकार के प्रमाणों से विभूषित है तथा दूसरा बिल्कुल शून्य है।

[1]जिनके अंदर पूर्वोक्त विशेषतायें पायी जायेंगी, वह पवित्र क़ुरआन तथा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लायेंगे।

[2]सभी गुटों से तात्पर्य सम्पूर्ण धरती पर पाये जाने वाले धर्म हैं, यहूदी, इसाई, अग्निपूजक, बौद्धधर्म, मूर्तिपूजक, काफ़िर तथा अन्य, जो भी मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तथा क़ुरआन पर ईमान नहीं लायेगा, उसका निवास नरक है। यह वही विषय है जिसे इस हदीस में वर्णित किया गया है "सौगन्ध है उस शक्ति की जिसके नियन्त्रण में मेरा प्राण है, इस समुदाय के जिस यहूदी अथवा इसाई ने भी मेरी नबूअत के विषय में सुना तथा फिर मुझ पर ईमान नहीं लाया, वह नरक में जायेगा।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान बाब वजूबुल ईमान विरिसालते नबियेना मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इला जमीइन्नासे) यह विषय इससे पूर्व सूर: अल-बक़र: आयत संख्या ६२ तथा सूर: निसा आयत संख्या १५० तथा १५२ में भी गुज़र चुका है।

[3]यह वही विषय है जो क़ुरआन मजीद के अनेक स्थानों पर वर्णित किया गया है।

﴿ وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴾

"तेरी इच्छा के उपरान्त अधिकतर लोग ईमान नहीं लायेंगे।" (सूर: यूसुफ-१०३)

The Ummah Technology Mission

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ؕ أُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَيَقُوْلُ الْأَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۙ﴿١٨﴾

(१८) तथा उससे अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे।[1] ये लोग अपने पालनहार के समक्ष प्रस्तुत किये जायेंगे तथा सारे गवाह कहेंगे कि ये वह लोग हैं जिन्होंने अपने पालनहार पर झूठ बाँधा, सावधान ! अल्लाह की धिक्कार है अत्याचारियों पर।[2]

الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ وَهُمْ بِالْأٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٩﴾

(१९) जो अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं तथा उसमें त्रुटि की खोज कर लेते हैं।[3] यही वह लोग हैं जो परलोक का इंकार करते हैं।

أُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ أَوْلِيَآءَ ؕ يُضٰعَفُ لَهُمُ

(२०) न ये लोग संसार में अल्लाह को पराजित कर सके तथा न उनका कोई पक्षधर अल्लाह के सिवाय हुआ, उनके लिये यातना दुगुनी की

﴿ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴾

"इब्लीस ने अपना विचार सच्चा कर दिखाया, ईमान वालों के एक गुट के अतिरिक्त, सब उसके अनुयायी बन गये।"(सूरः *सबा*-२०)

[1]अर्थात जिनको अल्लाह तआला ने सृष्टि में उपभोग करने का तथा आख़िरत में सिफ़ारिश करने का अधिकार नहीं दिया है, उनके विषय में यह कहा जाये कि अल्लाह ने उन्हें यह अधिकार दिया है।

[2]हदीस में इस की व्याख्या इस प्रकार आती है कि क़ियामत (प्रलय) के दिन अल्लाह तआला एक ईमान वाले से उसके पापों को स्वीकार करायेगा कि तुझे ज्ञात है कि तूने अमुक पाप किया था, अमुक भी किया था, वह ईमान वाला कहेगा हाँ ठीक है। अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि मैंने उन पापों पर दुनिया में भी पर्दा डाल रखा था, जा आज भी उन्हें क्षमा करता हूँ। परन्तु अन्य लोग अथवा काफ़िरों का मामला ऐसा होगा कि उन्हें गवाहों के समक्ष पुकारा जायेगा तथा गवाह यह गवाही देंगे कि यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने प्रभु पर झूठ बाँधा था। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरः हूद)

[3]अर्थात लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोकने के लिये उसमें त्रुटियाँ खोजते हैं तथा लोगों को उससे भड़काते हैं।

The Ummah Technology Mission

الْعَذَابُ ۚ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ ﴿٢٠﴾

जायेगी, न ये सुनने की शक्ति रखते थे तथा न ये देखते ही थे।[1]

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢١﴾

(२१) यही हैं जिन्होंने अपनी हानि आप कर लिया तथा जिन से अपना बाँधा हुआ झूठ खो गया।

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ﴿٢٢﴾

(२२) नि:संदेह यही लोग आख़िरत (परलोक) में क्षतिग्रस्त होंगे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَخْبَتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) नि:संदेह जो लोग ईमान लाये तथा उन्होंने कार्य भी पुण्य के किये तथा अपने पालनहार की ओर झुकते रहे, वही स्वर्ग में जाने वाले हैं, जहाँ वे सदैव रहने वाले हैं।

مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۚ هَلْ

(२४) इन दोनों गुटों का उदाहरण अंधे-बहरे तथा देखने-सुनने वाले जैसा है।[2] क्या यह

---

[1]अर्थात उनका सत्य से मुख मोड़ना तथा द्वेष उस चरम सीमा पर पहुँचा हुआ था कि ये उसे देखने तथा सुनने की शक्ति नहीं रखते थे। अथवा यह अर्थ है कि अल्लाह ने उनको कान तथा आँखें तो दी थीं परन्तु उन्होंने उनसे सत्य बात न सुनी, न देखी। अर्थात

﴿ فَمَآ أَغْنَىٰ عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَآ أَبْصَٰرُهُمْ وَلَآ أَفْـِٔدَتُهُم مِّن شَىْءٍ ﴾

"न उनके कानों ने उन्हें कोई लाभ पहुँचाया, न उनकी आँखों तथा दिलों ने। क्योंकि सत्य सुनने से बहरे तथा सत्य देखने से अंधे बने रहे।" (सूर: *अल-अहक़ाफ-२६*)

जिस प्रकार कि वह नरक में प्रवेश करते हुए कहेंगे।

﴿ لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِىٓ أَصْحَٰبِ ٱلسَّعِيرِ ﴾

"यदि हम सुनते तथा समझ से काम लेते तो आज नरक में न जाते।"(सूर: *अल-मुल्क-१०*)

[2]पूर्व की आयतों में ईमान वालों, काफ़िरों तथा भाग्यवानों एवं हतभागों दोनों का वर्णन किया गया है। अब इस में दोनों की अवस्था का वर्णन करके दोनों की वास्तविकता को स्पष्ट किया जा रहा है। कहा, एक का उदाहरण अंधे तथा बहरे की तरह है तथा दूसरे

The Ummah Technology Mission

يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾

दोनों तुलना में समान हैं ? क्या फिर भी तुम शिक्षा प्राप्त नहीं करते ?

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِۦٓ إِنِّى لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा नि:संदेह हमने नूह (अलैहिस्सलाम) को उसके समुदाय की ओर रसूल (संदेशवाहक) बना कर भेजा कि मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से सचेत कर देने वाला हूँ।

أَن لَّا تَعْبُدُوٓا۟ إِلَّا ٱللَّهَ ۖ إِنِّىٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿٢٦﴾

(२६) कि तुम केवल अल्लाह की इबादत ही किया करो,[1] मुझे तो तुम पर दुखदायी दिन

की तुलना देखने तथा सुनने वाले की तरह है। काफ़िर दुनियाँ में सत्य का सौंदर्य देखने से वंचित तथा आख़िरत (परलोक) में मोक्ष के मार्ग से दूर, उसी प्रकार सत्य का तर्क सुनने से वंचित रहता है, इसीलिये ऐसी बातों से वंचित रहता है, जो उसके लिये लाभकारी हों। इसके विपरीत ईमानवाले, समझदार, सत्यदर्शी तथा सत्य तथा अनृत (असत्य) के मध्य विवेककारी होते हैं। अत: वह सत्य तथा पुण्य का अनुसरण करते हैं, तर्क को सुनते हैं तथा उसके द्वारा शंका का निवारण करते तथा अनृत से दूर रहते हैं। क्या ये दोनों समान हो सकते हैं ? प्रश्न नकारने के लिये है। अर्थात दोनों समान नहीं हो सकते। जैसे अन्य स्थान पर कहा गया है :

﴿ لَا يَسْتَوِىٓ أَصْحَٰبُ ٱلنَّارِ وَأَصْحَٰبُ ٱلْجَنَّةِ ۖ أَصْحَٰبُ ٱلْجَنَّةِ هُمُ ٱلْفَآئِزُونَ ﴾

"स्वर्ग में जाने वाले तथा नरक में जाने वाले समान नहीं हो सकते, स्वर्ग में तो जाने वाले सफल होने वाले हैं।" (सूरः अल-हश्र-२०)

एक अन्य स्थान पर इसे इस प्रकार वर्णित किया गया है,

"अंधा तथा आँख वाला समान नहीं। अंधकार तथा प्रकाश, छाया तथा धूप समान नहीं, जीवित तथा मृत समान नहीं।" (सूरः फ़ातिर-१९ से २२)

[1]यह वही एकेश्वरवाद का आमंत्रण है जो प्रत्येक नबी ने आकर अपने-अपने समुदाय को दिया। जिस प्रकार कहा.:

﴿ وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِىٓ إِلَيْهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعْبُدُونِ ﴾

"जो पैग़म्बर हमनें आप से पूर्व भेजे, उनकी ओर वह्यी (प्रकाशना) की कि मेरे अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, बस मेरी ही इबादत करो।"(सूरः अल-अम्बिया-२५)

The Ummah Technology Mission

की यातना का भय है।[1]

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ مَا نَرَاكَ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرَاكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّأْيِ ۖ

(२७) उसके समुदाये के काफ़िरों के मुखियाओं ने उत्तर दिया कि हम तो तुझे अपने समान मनुष्य ही देखते हैं,[2] तथा तेरे अनुयायी को भी देखते हैं कि स्पष्ट रूप से सिवाय नीच[3] लोगों के[4] अन्य कोई नहीं (जो तुम्हारा अनुसरण कर

---

[1]अर्थात यदि मुझ पर ईमान नहीं लाये तथा उस एकेश्वरवाद के आमन्त्रण को नहीं स्वीकार किया तो अल्लाह की यातना से नहीं बच सकोगे।

[2]यह वही संदेह है जिसकी व्याख्या कई स्थानों पर की जा चुकी है कि काफ़िरों के निकट मानवता के साथ नबूअत तथा रिसालत का संयोग बड़ा विचित्र था, जिस प्रकार आजकल धार्मिक आधुनिकीकरण करने वालों को भी विचित्र लगता है तथा वे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के मानव होने का इंकार करते हैं।

[3]सत्य के इतिहास में यह बात भी हर काल में सामने आती रही है कि प्रारम्भ में इस को अपनाने वाले सदैव वे लोग होते हैं जिन्हें समाज में हीन तथा निर्बल समझा जाता था तथा धनवान तथा वैभवशाली गुट इससे वंचित रहता। यहाँ तक कि ये चीज़ पैग़म्बरों के अनुयायियों का लक्षण बन गई। अत: जब रोम के बादशाह हरकुलस ने आदरणीय अबू सुफ़ियान (जो अभी तक ईमान नहीं लाये थे) से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में बात पूछी तो उस में उनसे एक बात यह भी पूछी कि उसके अनुयायियों में समाज के सम्मानित व्यक्ति हैं अथवा कमज़ोर लोग ? तो आदरणीय सुफ़ियान ने उत्तर में कहा, "कमज़ोर लोग" जिस पर हरकुलस ने कहा "रसूलों के अनुयायी यही लोग होते हैं।" (सहीह बुख़ारी हदीस संख्या-७) क़ुरआन करीम में भी स्पष्टीकरण किया गया है कि सामर्थ्यवान लोग ही सर्वप्रथम पैग़म्बरों को झुठलाते रहे हैं। (सूरः ज़ुखरूफ़-२३) तथा यह ईमान वालों की सांसारिक परिस्थिति थी जिसके कारण काफ़िर लोग उन्हें हीन समझते थे, वरन् वास्तविकता तो यह है कि सत्य के अनुयायी सम्मानित तथा प्रतिष्ठित हैं, चाहे वह धन-सम्पत्ति में कम हों तथा सत्य के निर्वती नीच तथा निरादर हैं चाहे वे सांसारिक रूप से धनवान ही हों।

[4]ईमान वाले चूंकि अल्लाह तथा रसूल के आदेशों के सापेक्ष अपनी बुद्धि तथा विचार एवं तर्क का प्रयोग नहीं करते, इसलिये असत्य के अनुयायी यह समझते हैं कि यह मोटी बुद्धि वाले हैं कि अल्लाह का रसूल इन्हें जिस ओर मोड़ देता है, ये मुड़ जाते हैं, जिस चीज़ से रोक देता है, रूक जाते हैं। यह भी ईमान वालों की बड़ी विशेषता है, बल्कि ईमान की आवश्यक माँग है। परन्तु काफ़िरों तथा असत्यवादियों के निकट यह विशेषता भी 'दोष' है।

The Ummah Technology Mission

وَمَا نَرٰىكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾

रहे हैं) हम तो तुम्हारी किसी प्रकार की श्रेष्ठता अपने ऊपर नहीं देख रहे, बल्कि हम तो तुझे झूठा समझ रहे हैं।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰنِيْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ؕ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ﴿٢٨﴾

(२८) नूह ने कहा, ऐ मेरे समुदाय वालो ! मुझे बताओ तो यदि मैं अपने प्रभु की ओर से मिली निशानी पर हुआ तथा मुझे उसने अपने पास की (कोई उत्तम) कृपा प्रदान की हो,[1] फिर वह तुम्हारी आँखों में न समाई,[2] तो क्या बलपूर्वक उसे तुम्हारे गले में डाल दूँ जबकि तुम उसे नहीं चाहते हो।[3]

وَيٰقَوْمِ لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٩﴾

(२९) हे मेरे समुदाय वालो ! मैं इसके बदले तुम से कोई धन नहीं माँगता।[4] मेरा प्रतिकार तो केवल अल्लाह तआला के पास है। न मै ईमानवालों को अपने पास से निकाल सकता हूँ,[5] उन्हें अपने प्रभु से मिलना है, परन्तु मैं

---

[1] بينة से तात्पर्य ईमान तथा विश्वास है तथा कृपा से नबूअत। जिस से अल्लाह तआला ने नूह को विभूषित किया था।

[2] अर्थात तुम उसको देखने से अंधे हो गये। अतः तुमने उसका आदर किया न अपनाने के लिये तैयार हुए, अपितु उसको झुठलाने तथा खण्डन करने में लग गये।

[3] जब यह बात है तो सत्य का प्रदर्शन तथा कृपा तुम्हारे भाग्य में किस प्रकार आ सकती है ?

[4] ताकि तुम्हारे मन में यह शंका न उत्पन्न हो जाये कि इस नबूअत के दावे से उसका उद्देश्य सांसारिक धन एकत्रित करना है। मैं तो यह कार्य केवल अल्लाह के आदेश से तथा उसकी प्रसन्नता के लिये कर रहा हूँ, वही मुझे इस का बदला अर्थात फल देगा।

[5] इस से ज्ञात होता है कि नूह अलैहिस्सलाम के समुदाय के प्रमुखों ने भी समाज में कमज़ोर समझे जाने वाले ईमान वालों को आदरणीय नूह से अपनी सभा अथवा अपनी निकटता से दूर करने की माँग की होगी, जिस प्रकार मक्का के सरदारों ने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस प्रकार की माँग की थी, जिस पर अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम की यह आयतें उतारी थी।

The Ummah Technology Mission

देखता हूँ कि तुम लोग मूर्खता कर रहे हो।[1]

وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा ऐ मेरे समुदाय के लोगो ! यदि मैं ईमान वालों को अपने पास से निकाल दूँ, तो अल्लाह की तुलना में मेरी सहायता कौन कर सकता है।[2] क्या तुम कुछ भी सोच-विचार नहीं करते ?

وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ اِنِّيْ مَلَكٌ وَّلَاۤ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْۤ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ ۖ

(३१) तथा मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के कोष हैं, (सुनो) मैं परोक्ष का ज्ञान भी नहीं रखता, न मैं यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, न मेरा यह कथन है कि जिन पर तुम्हारी दृष्टि अपमान से पड़ रही है उन्हें अल्लाह (तआला) कोई उत्तम वस्तु देगा ही

﴿ وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ ﴾

"हे पैग़म्बर ! उन लोगों को अपने से दूर मत करना जो प्रातः तथा सायं अपने प्रभु को पुकारते हैं।" (सूरः अल-अनाम-५२)

﴿ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ﴾

"अपने आप को उन लोगों के साथ जोड़े रखिये जो अपने प्रभु को प्रातः एवं सायं पुकारते हैं, अपने प्रभु की प्रसन्नता चाहते हैं, आपकी आँखें उनसे हट कर किसी अन्य की ओर न जायें।" (सूरः अल-कहफ़-२८)

[1]अर्थात अल्लाह तथा रसूल के अनुयायियों को तुच्छ समझना तथा फिर उन्हें नबी की निकटता से दूर करने की माँग करना, यह तुम्हारी मूर्खता है। ये लोग तो इस योग्य हैं कि उन्हें सिर-आँखें पर बिठाया जाये न कि दूर से धिक्कारा जाये।

[2]अर्थात ऐसे लोगों को अपने से दूर करना, अल्लाह के क्रोध तथा अप्रसन्नता का कारण है।

The Ummah Technology Mission

إِنِّيٓ إِذًا لَّمِنَ الظَّٰلِمِينَ ﴿٣١﴾

नहीं ।[1] उनके दिल में जो कुछ है अल्लाह भली-भाँति जानता है, यदि मैं ऐसा कहूँ तो नि:संदेह मेरी भी गणना अत्याचारियों में हो जायेगी ।[2]

قَالُوا۟ يَٰنُوحُ قَدْ جَٰدَلْتَنَا فَأَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ إِن كُنتَ مِنَ الصَّٰدِقِينَ ﴿٣٢﴾

(३२) (समुदाय के लोगों ने) कहा : ऐ नूह ! तू हम से विवाद तथा अत्यधिक विवाद कर चुका ।[3] अब तो तू जिस चीज़ से हमें डरा रहा है, वही हमारे पास ले आ यदि तू सच्चा है ।[4]

قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُم بِهِ ٱللَّهُ إِن شَآءَ وَمَآ أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ﴿٣٣﴾

(३३) उत्तर दिया कि उसे भी अल्लाह (तआला) ही लायेगा यदि वह चाहे तथा हाँ, तुम उसे विवश नहीं कर सकते ।[5]

وَلَا يَنفَعُكُمْ نُصْحِىٓ إِنْ أَرَدتُّ أَنْ أَنصَحَ لَكُمْ إِن كَانَ ٱللَّهُ

(३४) तुम्हें मेरी शुभचिन्ता कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकती, चाहे मैं जितना ही

---

[1]बल्कि अल्लाह तआला ने तो उन्हें ईमान के रूप में सर्वश्रेष्ठ पुण्य प्रदान कर रखा है तथा जिसके आधार पर वे आख़िरत (परलोक) में भी स्वर्ग की सुख-सुविधाओं का आनन्द लेंगे तथा दुनिया में भी यदि अल्लाह तआला चाहेगा तो उच्च पद प्रदान करेगा। अर्थात तुम्हारा इन को तुच्छ समझना इन के लिये हानिकारक नहीं है, परन्तु तुम ही अल्लाह के समक्ष अपराधी होगे कि अल्लाह के पुनीत भक्तों को जिनको अल्लाह के दरबार में उच्च स्थान प्राप्त है, तुम नीच तथा अछूत समझते हो।

[2]क्योंकि मैं उन के विषय में ऐसी बात कहूँ जिसका मुझे ज्ञान नहीं, केवल अल्लाह जानता है, तो यह अत्याचार है।

[3]परन्तु इसके उपरान्त हम ईमान नहीं लाये।

[4]यह वही मूर्खता है जिस को भटके हुए समुदाय करते आये हैं कि वे अपने पैग़म्बर से कहते रहे यदि तू सच्चा है तो हम पर प्रकोप उतारकर हमें नष्ट करवा दे। यदि उन में बुद्धि होती तो वे कहते कि यदि तू सच्चा है तथा वास्तव में अल्लाह का रसूल है, तो हमारे लिये भी दुआ कर कि अल्लाह तआला हमारे हृदय भी खोल दे ताकि हम इसे अपना लें।

[5]अर्थात प्रकोप का आना पूर्णरूप से अल्लाह की इच्छा पर आधारित है, यह नहीं कि जब मैं चाहूँ तुम पर प्रकोप आ जाये। परन्तु जब अल्लाह प्रकोप का निर्णय कर लेगा अथवा भेज देगा, तो फिर उस को रोकने वाला कोई नहीं है।

The Ummah Technology Mission

يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ؕ هُوَ رَبُّكُمْ ۫ وَ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۳۴﴾

तुम्हारा शुभचिंतक क्यों न हूँ, यदि अल्लाह की इच्छा तुम्हें भटकाने की हो।[1] वही तुम सब का प्रभु है[2] तथा उसी की ओर लौट कर जाओगे।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَعَلَيَّ اِجْرَامِيْ وَ اَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ﴿۳۵﴾

(३५) क्या ये कहते हैं कि उसे स्वयं उसी ने गढ़ लिया है? तो उत्तर दो कि यदि मैंने उसे गढ़ लिया हो तो मेरा पाप मुझ पर है तथा मैं उन पापों से अलग हूँ। जिनको तुम कर रहे हो।[3]

وَ اُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا

(३६) तथा नूह की ओर वह्यी (प्रकाशना) भेजी गयी कि तेरे समुदाय में जो भी ईमान ला

---

[1] إِغْـــوَاء शब्द إضلال शब्द के अर्थों मे प्रयोग हुआ है, जिस का अर्थ है "गुमराह करना"। अर्थात तुम्हारा कुफ़्र तथा झठलाना यदि उस स्थान तक पहुँच चुका है, जहाँ से किसी व्यक्ति का पलटना तथा प्रकाश प्राप्त करना असंभव है, तो उसी अवस्था को अल्लाह तआला की ओर से 'मोहर लगा देना' कहा जाता है, जिस के पश्चात् मार्गदर्शन प्राप्त करने की कोई आशा शेष नहीं रह जाती है। अर्थ यह है कि यदि तुम भी उस भयानक मोड़ तक पहुँच चुके हो, तो फिर तुम्हारी भलाई करना चाहूँ अर्थात मार्ग पर लाने की और अधिक प्रयत्न करूँ, तो यह प्रयत्न तथा भलाई तुम्हारे लिये लाभकारी नहीं, क्योंकि तुम भटकावे की अन्तिम चरम सीमा पर पहुँच चुके हो।

[2] मार्गदर्शन तथा भटकाना भी उसी के हाथ में है तथा तुम्हें उसी की ओर पलट कर जाना है, जहाँ वह तुम्हें तुम्हारे कर्मों का बदला देगा। पुनीत कार्य करने वालों को प्रतिफल तथा बुरों को बुराई का दण्ड देगा।

[3] कुछ व्याख्याकारों के निकट यह वार्तालाप नूह के समुदाय के लोगों तथा आदरणीय नूह के मध्य हुई तथा कुछ के विचार से यह प्रासंगिक वाक्य के रूप में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा मक्का के मूर्तिपूजकों के मध्य होने वाली वार्तालाप है। अर्थ यह है कि यदि यह क़ुरआन मेरा गढ़ा हुआ है तथा मैं अल्लाह की ओर सम्बन्धित करने में झूठा हूँ, तो यह मेरा अपराध है, इस का दण्ड मैं ही भोगूंगा। परन्तु तुम जो कर रहे हो, जिस से मैं असम्बन्धित हूँ, उस का भी तुम्हें पता है? इसका दुष्परिणाम तो मुझ पर नहीं, तुम पर ही पड़ेगा, उस की भी तुम्हें कुछ चिन्ता है।

The Ummah Technology Mission

تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

चुके उन के सिवाय अब कोई ईमान लायेगा ही नहीं, फिर तो उनके कर्मों पर दुखी न हो।[1]

وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٣٧﴾

(३७) तथा एक नाव हमारी आँखों के सामने तथा हमारी वह्यी (प्रकाशना) से तैयार कर[2] तथा अत्याचारियों के विषय में हमसे कोई बात न कर, वे पानी में डूबो दिये जाने वाले हैं।[3]

وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ ۖ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ ۭ قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا

(३८) वह (नूह) नाव बनाने लगे। उसके समुदाय के जो भी गुट के लोग उसके निकट से गुज़रते वे उसका उपहास उड़ाते।[4] वह कहते यदि तुम हमारा उपहास उड़ाते हो तो

---

[1]यह उस समय कहा गया जब नूह के समुदाय ने आपदा की माँग की तथा आदरणीय नूह ने अल्लाह से प्रार्थना की कि ऐ प्रभु! धरती पर एक काफ़िर भी बसने वाला न रहने दे। अल्लाह ने फ़रमाया : अब अन्य कोई ईमान नहीं लायेगा, तू उन पर दुखी न हो।

[2]"हमारी आँखों के समक्ष" का अर्थ है "हमारी देख-भाल में" परन्तु यह आयत अल्लाह तआला के लिये आँख होने के गुण को बताती है जिस पर आस्था अनिवार्य है। तथा "हमारी वह्यी (प्रकाशना) से" का अर्थ उसकी लम्बाई-चौड़ाई आदि की जो अवस्था हम ने बतलायी है, उस प्रकार उसे बना। इस स्थान पर कुछ व्याख्याकारों ने नाव की लम्बाई-चौड़ाई, उस के तलों तथा किस प्रकार की लकड़ी तथा अन्य सामान उस में प्रयोग किया गया, उस का विस्तृत वर्णन किया है, जो स्पष्ट है, कि किसी प्रमाणिता पर आधारित नहीं है। उसका सही विस्तृत ज्ञान केवल अल्लाह ही को है।

[3]कुछ ने इस से तात्पर्य आदरणीय नूह के पुत्र तथा पत्नी को लिया है, जो ईमान नहीं लाये थे तथा डूबने वालों में से थे। कुछ ने इस से डूबने वाला सम्पूर्ण समुदाय लिया है तथा अर्थ यह है कि इन के लिये अवसर देने की माँग न करना क्योंकि अब उन के विनाश का समय आ गया है अथवा यह अर्थ है कि उन के विनाश के लिये शीघ्रता न करें, निर्धारित समय में यह सब डूब जायेंगे। (फ़तहुल क़दीर)

[4]उदाहरणार्थ कहते ऐ नूह! नबूअत करते-करते अब बढ़ई का काम प्रारम्भ कर दिया। अथवा ऐ नूह! थल में नाव किस लिये बना रहे हो?

The Ummah Technology Mission

نَسْخَرُ مِنكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ﴿٣٨﴾

हम भी तुम पर एक दिन हँसेंगे जैसे तुम उपहास कर रहे हो।

فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٩﴾

(३९) तुम्हें अति शीघ्र ज्ञात हो जायेगा कि किस पर प्रकोप आना है, जो उसे अपमानित करे तथा उस पर स्थाई दण्ड[1] उतर जाये।

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِن كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ ۚ

(४०) यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आ गया तथा तन्दूर उबलने लगा।[2] हम ने कहा कि इस नाव में हर प्रकार के जोड़े दोहरे सवार करा ले।[3] तथा अपने घर के लोगों को भी, सिवाय उनके जिन पर पूर्व से बात पड़ चुकी है।[4] तथा

---

[1]इस से तात्पर्य नरक की स्थाई यातना है, जो सांसारिक प्रकोप के पश्चात उन के लिये तैयार है।

[2]इस से कुछ ने रोटी पकाने वाला तन्दूर, कुछ ने निर्धारित स्थान जैसे ऐनुलवर्द: तथा कुछ ने धरती का तल लिया है। हाफिज इब्ने कसीर ने इसी अन्तिम अर्थ को प्राथमिकता दी है अर्थात सम्पूर्ण धरती स्रोतों की तरह उबल पड़ी, ऊपर से आकाश की वर्षा ने शेष बची कमी को पूर्ण कर दिया।

[3]इससे तात्पर्य स्त्री तथा पुरूष अर्थात नर तथा मादा है। इस प्रकार प्रत्येक जीवधारी का युगल नाव में रख लिया गया तथा कुछ कहते हैं कि वनस्पति भी रखी गयी थी।

[4]अर्थात जिनको डूबना अल्लाह के लिखे हुए भाग्य के अनुरुप है। इस से तात्पर्य सामान्य काफ़िर हैं अथवा यह नष्ट होने वालों के अतिरिक्त से हैं अर्थात अपने घर वालों को भी नाव में सवार करा लें अतिरिक्त उन के जिन पर अल्लाह की बात स्पष्ट कर दी गयी है अर्थात एक पुत्र (कन्आन अथवा (याम) तथा आदरणीय नूह की पत्नी (वायल:) ये दोनों काफ़िर थे, इन को नाव में बिठाने से निषिद्ध कर दिया गया।

The Ummah Technology Mission

وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿٤٠﴾

सभी ईमान वालों को भी,[1] उसके साथ ईमान लाने वाले बहुत ही कम थे।[2]

وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ۭ اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤١﴾

(४१) तथा नूह ने कहा कि इस नाव में बैठ जाओ अल्लाह ही के नाम से इसका चलना तथा ठहरना है,[3] नि:संदेह मेरा पालनहार अत्यधिक क्षमाशील एवं अत्यधिक कृपालु है।

وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۡ وَنَادٰى نُوْحُ ِۨ ابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ

(४२) तथा वह नाव उन्हें पर्वतों जैसी लहरों में लेकर जा रही थी।[4] तथा नूह ने अपने पुत्र

---

[1]अर्थात सब ईमानवालों को नाव में सवार करा ले।

[2]कुछ ने उनकी संख्या (स्त्री तथा पुरूष सहित) ८० तथा कुछ ने इस से भी कम बतायी है। इन में आदरणीय नूह के तीन पुत्र जो ईमान लाने वालों में सम्मिलित थे। साम, हाम, तथा याफ़िस तथा उनकी पत्नियाँ तथा चौथी पत्नी याम की थी, जो काफ़िर था परन्तु उसकी पत्नी मुसलमान होने के कारण नाव में सवार थी।

[3]अर्थात अल्लाह ही के नाम से उसका जल की सतह पर चलना तथा उसी के नाम पर रूकना है। इससे एक उद्देश्य ईमान वालों को सांत्वना देना तथा साहस देना था कि किसी प्रकार के भय के बिना नाव में सवार हो जाओ, अल्लाह ही इस नाव का रक्षक तथा निरीक्षक है, उसी के आदेश से चलेगी तथा उसी के आदेश से ठहरेगी। जिस प्रकार अल्लाह तआला ने अन्य स्थान पर फ़रमाया : कि ऐ नूह ! जब तुम तथा तेरे साथी नाव में आराम से बैठ जायें तो कहो –

﴿ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِى نَجَّىٰنَا مِنَ ٱلْقَوْمِ ٱلظَّٰلِمِينَ * وَقُل رَّبِّ أَنزِلْنِى مُنزَلًا مُّبَارَكًا وَأَنتَ خَيْرُ ٱلْمُنزِلِينَ﴾

"सभी प्रशंसायें अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें अत्याचारी लोगों से मोक्ष प्रदान किया तथा कहो कि हे मेरे प्रभु ! मुझे सुरक्षित उतारना, तू ही उत्तम उतारने वाला है।" (*सूरः अल-मोमिनून*-२८,२९)

कुछ आलिमों ने नाव तथा सवारी में बैठते समय بسم الله مجريها و مُرسٰها का पढ़ना उचित माना है। परन्तु हदीस से ﴿سُبْحَانَ ٱلَّذِى سَخَّرَ لَنَا هَٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُۥ مُقْرِنِينَ * وَإِنَّآ إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنقَلِبُونَ﴾ का पढ़ना सिद्ध है।

[4]अर्थात जब धरती पर पानी था, यहाँ तक कि पर्वत भी डूबे हुए थे यह नाव आदरणीय नूह तथा उनके साथियों को अपने अंदर सुरक्षित लिये अल्लाह के आदेश से तथा उस की

The Ummah Technology Mission

مَعْزِلٍ يٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٢﴾

को जो एक किनारे पर था पुकार कर कहा, ऐ मेरे प्यारे बच्चे ! हमारे साथ सवार हो जा तथा काफ़िरों में सम्मिलित न रह |[1]

قَالَ سَاٰوِيْٓ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ؕ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ﴿٤٣﴾

(४३) उसने उत्तर दिया कि मैं तो किसी ऊँचे पर्वत की शरण में आ जाऊँगा जो मुझे पानी से बचा लेगा |[2] नूह ने कहा आज अल्लाह के आदेश से बचाने वाला कोई नहीं वही केवल बचेंगे जिन पर अल्लाह की कृपा हुई | उसी समय उनके मध्य लहर आ गयी तथा वह डूबने वालों में हो गया |[3]

وَقِيْلَ يٰٓاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ

(४४) तथा कह दिया गया कि ऐ धरती ! अपने पानी को निगल जा, [4] तथा ऐ आकाश ! बस

सुरक्षा में पर्वत की भाँति चल रही थी, वरन् इतने तूफ़ान वाले पानी में नाव का क्या महत्व होता है ? इसीलिये अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने इसे अभार के रूप में वर्णन किया है |

﴿ إِنَّا لَمَّا طَغَى الْمَاءُ حَمَلْنَاكُمْ فِي الْجَارِيَةِ * لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَا أُذُنٌ وَاعِيَةٌ ﴾

"जब पानी में बाढ़ आ गई तो उस समय हमने तुम्हें नाव पर चढ़ा लिया, ताकि उसे तुम्हारे लिये शिक्षाप्रद और यादगार बना दें तथा याद रखने वाले कान उसे याद रखें |" (सूरः अल-हाक़्क़ः-११,१२)

[1]यह आदरणीय नूह का चौथा पुत्र था जिस की उपाधि 'कन्आन' तथा नाम 'याम' था, उस से आदरणीय नूह ने निवेदन किया कि मुसलमान हो जा, तथा काफ़िरों के साथ सम्मिलित होकर डूबने वालों में न हो |

[2]उस का विचार था कि किसी ऊँचे पर्वत की शिखर पर चढ़कर मैं शरण ले लूँगा, वहाँ पानी कैसे पहुँचेगा ?

[3]पिता-पुत्र के मध्य यह वार्ता हो ही रही थी कि एक तूफ़ानी धारा ने उसे अपने लपेट में ले लिया |

[4]निगलने का प्रयोग पशु के लिये होता है कि वह अपने मुख का कौर निगल जाता है | यहाँ पानी के सूखने को निगल जाने से तुलना करने में इस मार्मिकता का ज्ञान होता है कि पानी धार-धार नहीं सूखा, अपितु अल्लाह तआला के आदेश से धरती ने तत्क्षण अपने अंदर सारा पानी इस प्रकार निगल लिया जिस प्रकार पशु कौर निगल जाता है |

The Ummah Technology Mission

الْأَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤٤﴾

कर थम जा, उसी समय पानी सुखा दिया गया तथा कार्य पूर्ण कर दिया गया।[1] तथा नाव जूदी नामक पर्वत[2] पर जा लगी, तथा कहा गया कि अन्याय करने वालों पर धिक्कार उतरे।[3]

وَنَادَىٰ نُوحٌ رَّبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنتَ أَحْكَمُ الْحَاكِمِينَ ﴿٤٥﴾

(४५) तथा नूह ने अपने प्रभु को पुकारा तथा कहा कि ऐ मेरे प्रभु! मेरा पुत्र तो मेरे परिवार वालों मे से है। नि:संदेह तेरा वायदा पूर्णरूप से सत्य है तथा तू सभी अधिपतियों से श्रेष्ठ अधिपति है।[4]

قَالَ يَا نُوحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ ۖ إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْأَلْنِ

(४६) (अल्लाह तआला ने) फ़रमाया ऐ नूह! नि:संदेह वह तेरे परिवार से नहीं है,[5] उस के कर्म बिल्कुल अप्रिय हैं,[6] तुझे कदापि वह

---

[1]अर्थात सभी काफ़िरों को डूबो दिया गया।

[2]जूदी पर्वत का नाम है, जो कुछ लोगों के कथनानुसार ईराक के नगर मूसल के निकट है, आदरणीय नूह का समुदाय भी इसी के निकट आबाद था।

[3] بعد यह विनाश तथा अल्लाह के धिक्कार के अर्थ में प्रयोग हुआ है तथा क़ुरआन करीम में विशेष रूप से अल्लाह के क्रोध का कारण बनने वाले समुदायों के लिये कई स्थान पर प्रयोग हुआ है।

[4]आदरणीय नूह ने संभवत: अपने पिता प्रेम की भावना से प्रेरित होकर अल्लाह के दरबार में प्रार्थना की तथा कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि उन्हें यह सम्भावना थी कि संभवत: यह मुसलमान हो जायेगा, इसलिये उस के विषय में यह प्रार्थना की।

[5]आदरणीय नूह ने अपनी वंशीय निकटता के कारण उसे अपना पुत्र कहा था। परन्तु अल्लाह तआला ने ईमान के आधार पर धर्म की निकटता के नियमानुसार इस बात को नकारा कि वह तेरे परिवार से है इसलिए कि एक नबी का मूल परिवार तो वही है जो उस पर ईमान लाये, चाहे वह कोई भी हो। तथा यदि ईमान न लाये, तो चाहे वह नबी का पिता हो, पुत्र हो, अथवा पत्नी। वह नबी के परिवार का सदस्य नहीं।

[6]यह अल्लाह तआला ने उसके कारण का वर्णन किया है। इस से ज्ञात हुआ कि जिस के पास ईमान तथा पुण्य कर्म नहीं होगा, उसे अल्लाह की यातना से अल्लाह का पैग़म्बर

The Ummah Technology Mission

مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنِّيْۤ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۴۶﴾

वस्तु नहीं मांगनी चाहिये जिसका तुझे तनिक भी ज्ञान न हो,[1] मैं तुझे शिक्षा देता हूँ कि तू अशिक्षितों में से अपनी गणना कराने से रूक जा।[2]

قَالَ رَبِّ اِنِّيْۤ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَ اِلَّا تَغْفِرْ لِيْ وَ تَرْحَمْنِيْۤ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۴۷﴾

(४७) नूह ने कहा ऐ मेरे प्रभु ! मैं तेरी ही शरण चाहता हूँ, इस बात से कि तुझसे वह माँगू जिसका मुझे ज्ञान ही न हो। यदि तू मुझे क्षमा नहीं करेगा तथा तू मुझ पर दया न करेगा तो मैं हानि उठाने वालों में हो जाऊँगा।[3]

قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَ بَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَ عَلٰۤى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ؕ وَ اُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ

(४८) कहा गया कि हे नूह ! हमारी ओर से सुरक्षा तथा उन विभूतियों के साथ उतर[4] जो तुझ पर है तथा तेरे साथ के बहुत से समुदायों पर।[5] तथा बहुत से वे समुदाय होंगे जिन्हें

भी बचाने का सामर्थ्य नहीं रखता। आजकल लोग पीरों, फ़क़ीरों तथा गद्दी नशीनों (पुजारियों) से सम्बन्ध होने को ही मोक्ष के लिये पर्याप्त मानते हैं तथा पुण्य के कार्य करने की आवश्यकता नहीं समझते। यद्यपि जब पुण्य के कार्य के बिना नबी के साथ वंशीय सम्बंध भी काम नहीं आता, तो ये सम्बंध क्या काम आयेंगे ?

[1]इससे ज्ञात हुआ कि नबी को परोक्ष का ज्ञान नहीं होता, उसको उतना ही ज्ञान होता है, जितना वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा अल्लाह तआला उसे प्रदान करता है। यदि आदरणीय नूह को पूर्व ज्ञान होता कि उनकी प्रार्थना स्वीकार न होगी, तो नि:संदेह वह उस से बचते।

[2]यह अल्लाह तआला की ओर से आदरणीय नूह को शिक्षा है, जिसका उद्देश्य उन को उस उच्च स्थान पर आसीन करना है, जो कर्मी ज्ञानियों के लिये अल्लाह के सदन में है।

[3]जब आदरणीय नूह यह जान गये कि उनका प्रश्न घटना के अनुसार नहीं था, तो तुरन्त उससे क्षमा माँग ली तथा अल्लाह तआला की कृपा तथा दया के प्रार्थी हो गये।

[4]यह उतरना नाव से अथवा उस पर्वत से है, जिस पर नाव जा कर ठहर गयी थी।

[5]इससे तात्पर्य वह गुट हैं जो आदरणीय नूह के साथ नाव में सवार थे अथवा भविष्य में होने वाले वे गुट हैं जो उनके वंश से होने वाले थे। अगले वाक्य के अनुसार यही दूसरा भावार्थ अधिक उचित है।

The Ummah Technology Mission

يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٨﴾

हम लाभ तो अवश्य पहुँचायेंगे, परन्तु फिर उन्हें हमारी ओर से दुखदायी यातना भी पहुँचेगी।[1]

تِلْكَ مِنْ أَنبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ ۖ مَا كُنتَ تَعْلَمُهَا أَنتَ وَلَا قَوْمُكَ مِن قَبْلِ هَٰذَا ۛ فَاصْبِرْ ۖ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٤٩﴾

(४९) यह समाचार परोक्ष के समाचारों में से है जिनकी वह्यी (प्रकाशना) हम आप की ओर करते हैं, इन्हें इससे पूर्व न आप जानते थे तथा न आप का सुमदाय[2] इसलिये आप धैर्य धारण करें विश्वास कीजिये कि परिणाम संयमियों के लिये ही है।[3]

---

[1]ये वह गुट हैं जो नाव में बच जाने वालों के वंश से क़ियामत (प्रलय) तक होंगे। अर्थ यह है कि उन काफ़िरों को दुनियाँ का क्षणिक जीवन व्यतीत करने के लिये हम दुनियाँ की सुख-सुविधा अवश्य देंगे परन्तु वे अन्त में दुखदायी यातना भी भोगेंगे।

[2]यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सम्बोधन है तथा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से परोक्ष ज्ञान को नकारा जा रहा है कि यह परोक्ष की बातें हैं जिनसे हम आपको सूचित कर रहे हैं, वरन् आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तथा आप का समुदाय उनसे अनभिज्ञ था।

[3]अर्थात आप का समुदाय जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को झुठला रहा है तथा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को दुख पहुँचा रहा है, उस पर धैर्य से काम लें, इसलिये कि हम आप की सहायता करने वाले हैं, तथा सुपरिणाम आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के तथा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अनुयायियों के लिये ही है, जो संयम के गुण से युक्त हैं। (आक़िबत) संसार तथा परलोक के सुफल को कहते हैं। इस में अल्लाह से डरने वालों के लिये शुभ सूचना है कि प्रारम्भ में उन्हें चाहे कितने भी कठिनाईयों का सामना करना पड़े, परन्तु अल्लाह तआला की सहायता एवं सुफल के वही अधिकारी हैं। जिस प्रकार से अन्य स्थान पर कहा :

﴿ إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ﴾

"अवश्य हम अपने रसूलों की और विश्वास करने वालों की सहायता इस लोक के जीवन में भी करेंगे तथा उस दिन भी जब साक्षी लोग खड़े होंगे।" (सूरः *अल-मोमिन*, ५१)

﴿ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ * إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنصُورُونَ * وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴾

"हमारा वादा पहले ही अपने रसूलों के लिए हो चुका है कि वह सफल होंगे तथा हमारी सेना ही विजेता रहेगी।" (सूरः *अल-साफ़्फ़ात*,१७१ से १७३)

The Ummah Technology Mission

وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ ﴿٥٠﴾

(५०) तथा आद सुमदाय की ओर उनके भाई हूद को हमने भेजा,[1] उसने कहा मेरे समुदाय के लोगो ! अल्लाह ही की इबादत करो, उस के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, तुम तो केवल आक्षेप लगा रहे हो।[2]

يَا قَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى الَّذِي فَطَرَنِي ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٥١﴾

(५१) मेरे समुदाय के लोगो ! मैं तुम से इस का कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता, मेरा बदला उसके ऊपर है जिसने मुझे पैदा किया है, तो क्या फिर भी तुम बुद्धि से काम नहीं लेते।[3]

وَيَا قَوْمِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُم مِّدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَىٰ قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِينَ ﴿٥٢﴾

(५२) तथा हे मेरे समुदाय के लोगो ! तुम अपने प्रभु से अपने पापों की क्षमा माँगो तथा उसके सदन में तौबा करो ताकि वह वर्षा वाले बादल तुम पर भेज दे तथा तुम्हारी शक्ति में और वृद्धि करे,[4] तथा तुम

---

[1]भाई से तात्पर्य उन्हीं के समुदाय का एक सदस्य।

[2]अर्थात अल्लाह के साथ अन्यों को साझीदार ठहरा कर तुम अल्लाह पर झूठ गढ़ रहे हो।

[3]तथा ये नहीं समझते कि जो बिना पारिश्रमिक तथा लालच के तुम्हें अल्लाह की ओर बुला रहा है, वह तुम्हारा शुभचिन्तक है। आयत में يا قوم से आह्वान की एक विधि का ज्ञान होता है, अर्थात हे काफ़िरो, हे मूर्तिपूजको कहने के स्थान पर हे मेरे समुदाय से सम्बोधित किया गया है।

[4]आदरणीय हूद ने क्षमा-याचना की शिक्षा अपने वर्ग अर्थात अपने समुदाय को दी तथा उसके वे लाभ बताये, जो क्षमा-याचना करने वाली जाति को प्राप्त होते हैं। जिस प्रकार से क़ुरआन करीम में अन्य स्थानों पर ये लाभ वर्णित किये गये हैं (देखिये सूरः नूह-११) तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है :

« مَنْ لَزِمَ الْاِسْتِغْفَارَ جَعَلَ اللهُ لَهُ مِنْ كُلِّ هَمٍّ فَرَجًا، وَمِنْ كُلِّ ضِيقٍ مَخْرَجًا، ورَزَقَهُ مِنْ حَيْثُ لاَ يَحْتَسِبُ »

The Ummah Technology Mission
8087 2287

पापी होकर मुख न मोड़ो।[1]

قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٣﴾

(५३) (उन्होंने कहा) हे हूद ! तू हमारे पास कोई लक्षण तो लाया नहीं तथा हम केवल तेरे कहने से अपने देवताओं को छोड़ने वाले नहीं तथा न हम तुझ पर ईमान लाने वाले हैं।[2]

اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ۭ قَالَ اِنِّىْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّىْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٥٤﴾

(५४) अपितु हम तो यही कहते हैं कि तू हमारे किसी देवता के बुरे झपेटे में आ गया है।[3]उसने उत्तर दिया कि मैं अल्लाह को साक्षी बनाता हूँ तथा तुम भी साक्षी रहो

"जो निरन्तर क्षमा-याचना करता है, अल्लाह तआला उसे प्रत्येक चिन्ता से मुक्ति तथा प्रत्येक तंगी से निकलने का कोई मार्ग बना देता है तथा उसको जीविका ऐसे स्थान से देता है जो उसके विचार में भी नहीं होती।"(अबू दाऊद किताबुल वित्र बाब फ़िल इस्तिग़फ़ार संख्या १५१८, तथा इब्ने माज: संख्या ३८१९)

[1]अर्थात मैं जो तुम्हें आमन्त्रण दे रहा हूँ, उससे मुख न फेरो तथा अपने इंकार पर अडिग न रहो। ऐसा करोगे तो अल्लाह के सदन में अपराधी तथा पापी बनकर प्रस्तुत होगे।

[2]एक नबी युक्तियों तथा तर्कों की पूरी शक्ति अपने साथ रखता है, परन्तु अंधों को वे दिखायी नहीं देते। हूद के समुदाय ने इसी दृढ़ता का प्रदर्शन करते हुए कहा कि हम बिना किसी तर्क के मात्र तेरे कहने पर अपने देवताओं को किस प्रकार छोड़ दें ?

[3]अर्थात तू जो हमारे देवताओं का अपमान तथा अनादर करता है कि वे कुछ नहीं कर सकते, लगता है कि हमारे देवताओं में से किसी ने इसी अनादर के कारण तुझे कुछ कर दिया है। तथा तू सनक गया है। जैसे आजकल के नाम के मुसलमान भी इसी प्रकार की शंकाओं के शिकार हैं, जब उन्हें कहा जाता है कि ये मृत व्यक्ति तथा महात्मा कुछ नहीं कर सकते, तो कहते हैं कि ये उन का अनादर है तथा भय है कि इस प्रकार के अपमान करने वालों को ध्वस्त कर दें।

The Ummah Technology Mission

कि मैं तो अल्लाह के अतिरिक्त उन सब से अलग हूँ, जिन्हें तुम साझीदार बना रहे हो।[1]

مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٥٥﴾

(५५) अच्छा तुम सब मिलकर मेरे विरूद्ध बुराई कर लो तथा मुझे कदापि अवसर भी न दो।[2]

اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ؕ مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٦﴾

(५६) मेरा भरोसा केवल अल्लाह तआला पर ही है, जो मेरा प्रभु तथा तुम सब का प्रभु है, जितने भी चलने-फिरने वाले हैं सबका मस्तक वही थामे हुए है।[3] निश्चय ही मेरा प्रभु बिल्कुल सीधे मार्ग पर है।[4]

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّاۤ اُرْسِلْتُ بِهٖۤ اِلَيْكُمْ ؕ وَيَسْتَخْلِفُ

(५७) फिर भी तुम मुख फेरते हो तोफेरो, मैं तो तुम्हें वह सन्देश पहुँचा चुका, जो देकर मुझे तुम्हारी ओर भेजा गया था।[5]मेरा प्रभु तुम्हारे

---

[1]अर्थात मैं उन सभी मूर्तियों तथा देवताओं को नहीं मानता तथा तुम्हारा यह विश्वास कि उन्होंने मुझे कुछ कर दिया है, पूर्णरूप से अनुचित है, उनके अन्दर यह सामर्थ्य ही नहीं कि किसी को लाभ अथवा हानि पहुँचा सकें।

[2]तथा यदि तम्हें मेरी बातों पर विश्वास नहीं है, अपितु तुम अपने इस दावे में सच्चे हो कि ये मूर्तियाँ कुछ कर सकती हैं तो लो ! मैं उपस्थिति हूँ तुम तथा तुम्हारे देवता मिलकर मेरे विरूद्ध कुछ करके दिखाओ। और इस से नबी के उस शैली का बोध होता है कि वह कितना ज्ञानी होता है कि उसे अपने सत्य पर होने का विश्वास होता है।

[3]अर्थात जिस शक्ति के हाथ में प्रत्येक वस्तु का अधिकार तथा नियन्त्रण है, वह वही शक्ति है, जो मेरा तथा तुम्हारा प्रभु है, मेरा भरोसा उसी पर है। उद्देश्य इन शब्दों से आदरणीय हूद अलैहिस्सलाम का यह है कि जिनको तुमने अल्लाह का साझीदार बना रखा है, उन पर भी अल्लाह ही का नियन्त्रण है, अल्लाह तआला उन के साथ जो चाहे कर सकता है, वे किसी का कुछ नहीं कर सकते।

[4]अर्थात वह जो एकेश्वरवाद का आमन्त्रण दे रहा है, नि:संदेह यह आमन्त्रण ही सीधा मार्ग है, इसी पर चलकर मोक्ष तथा सफलता प्राप्त की जा सकती है तथा इस सीधे मार्ग से फिरना तथा विचलित होना विनाश का कारण है।

[5]अर्थात उसके पश्चात मेरा कर्तव्य समाप्त तथा तुम पर तर्क पूर्ण हो गया।

The Ummah Technology Mission

رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ۝۵۷

स्थान पर अन्य लोगों को कर देगा तथा तुम उसका कुछ भी न बिगाड़ सकोगे,[1] नि:संदेह मेरा प्रभु हर वस्तु का रक्षक है।[2]

وَلَمَّا جَاۗءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝۵۸

(५८) तथा जब हमारा आदेश आ पहुँचा, तो हम ने हूद को तथा उसके मुसलमान साथियों को अपनी विशेष कृपा से मुक्ति प्रदान की तथा हम ने उन सब को घोर (कड़ी) यातना से बचा लिया।[3]

وَتِلْكَ عَادٌ ۭ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۝۵۹

(५९) यह था आद का समुदाय, जिन्होंने अपने प्रभु की आयतों को नकार दिया तथा उसके रसूलों की अवज्ञा की[4] तथा प्रत्येक दुष्ट अवज्ञा-

---

[1]अर्थात तुम्हें नाश करके तुम्हारी भूमि तथा सम्पत्ति का दूसरों को स्वामी बना दे, तो वह ऐसा करने का सामर्थ्य रखता है तथा तुम उस का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। बल्कि वह अपनी इच्छा तथा विवेक के अनुसार ऐसा करता रहता है।

[2]नि:संदेह वह मुझे तुम्हारे धोखे तथा षड्यन्त्र से सुरक्षित भी रखेगा तथा शैतानी चालों से बचायेगा। इस के अतिरिक्त प्रत्येक अच्छे तथा बुरे को उनके कर्मों के अनुसार अच्छा-बुरा फल भी देगा।

[3]कड़ी यातना से तात्पर्य वही प्रचंड वायु का प्रकोप है, जिस के द्वारा आदरणीय हूद के समुदाय 'आद' को ध्वस्त कर दिया गया तथा जिस से आदरणीय हूद तथा उन पर ईमान लाने वालों को बचा लिया गया।

[4]'आद' की ओर केवल एक नबी आदरणीय हूद ही भेजे गये थे। परन्तु यहाँ अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उन्होंने रसूलों की अवज्ञा की। इस से या तो यह तात्पर्य हो कि एक रसूल को झुठलाना यह हुआ जैसे कि सभी को झुठलाया है। क्योंकि सभी रसूलों पर ईमान लाना अनिवार्य है। अथवा यह अर्थ है कि यह समाज अपने कुफ़्र तथा इंकार में इतनी बढ़ गयी थी कि यदि आदरणीय हूद के पश्चात कई रसूल भी भेजते तो यह समुदाय सब को झुठलाता। तथा इससे कदापि यह आशा नही थी कि वह किसी भी रसूल पर ईमान ले आता। अथवा संभव है कि और भी नबी भेजे गये हों तथा उस समुदाय ने प्रत्येक को झुठलाया हो।

The Ummah Technology Mission

कारियों के आदेशों का पालन किया।[1]

وَأُتْبِعُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا إِنَّ عَادًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۗ أَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُودٍ ﴿٦٠﴾

(६०) तथा संसार में भी उनके पीछे धिक्कार लगा दिया गया तथा क़ियामत (प्रलय) के दिन भी।[2] देख लो आद के समुदाय ने अपने प्रभु से कुफ़्र (इंकार) किया, हूद के समुदाय आद पर धिक्कार हो।[3]

وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ هُوَ أَنشَأَكُم مِّنَ الْأَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا

(६१) तथा समूद के समुदाय की ओर उनके भाई स्वालेह को भेजा।[4] उसने कहा कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! तुम अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नही[5] उसी ने तुम्हें धरती से पैदा किया

---

[1]अर्थात अल्लाह के पैग़म्बरों को तो झुठलाया परन्तु जो लोग अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करते थे, उन का इस समुदाय ने अनुसरण किया।

[2]धिक्कार का अर्थ है अल्लाह की कृपा से दूरी, पुण्य के कार्यों से वंचित तथा लोगों की ओर से धिक्कार तथा विलगाव। संसार में यह धिक्कार इस प्रकार कि ईमानवालों में इन का वर्णन सदैव धिक्कार तथा विलगाव के रूप में होगा तथा क़ियामत (प्रलय) मे इस प्रकार कि वहाँ सभी के सामने अपमानित तथा अनादर का सामना करेंगे तथा अल्लाह की यातना में फसेंगे।

[3] بُعْدٌ का यह शब्द धिक्कार तथा विनाश के अर्थ के लिये है, जैसाकि इस से पूर्व भी स्पष्ट किया जा चुका है।

[4] وإلى ثمود आधारित है पूर्व पर अर्थात وأرسلنا إلى ثمودَ हमनें समूद की ओर भेजा। यह समुदाय तबूक तथा मदीना के मध्य मदाएन स्वालेह (अर्थात हिजर) में निवास करता था तथा यह समुदाय आद के पश्चात् हुआ। आदरणीय स्वालेह को यहाँ भी समूद का भाई कहा गया है, जिस से तात्पर्य उन्हीं के वंश तथा जाति का एक सदस्य है।

[5]आदरणीय स्वालेह ने भी अपने समुदाय को सर्वप्रथम एकेश्वरवाद का आमन्त्रण दिया, जिस प्रकार सभी नबियों का नियम रहा है।

The Ummah Technology Mission

فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ﴿٦١﴾

है [1] तथा उसी ने तुम्हें इस धरती पर बसाया है। [2] अतः तुम उस से क्षमा माँगो तथा उसकी ओर ध्यान करो। निःसंदेह मेरा प्रभु प्रार्थनाओं का स्वीकार करने वाला निकट है।

قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَآ اَتَنْهٰىنَآ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿٦٢﴾

(६२) उन्होंने कहा ऐ स्वालेह ! इस से पूर्व हम तुम से बहुत-सी आशायें लगाये हुए थे, क्या तू हमें उनकी पूजा-अर्चना से रोकता है, जिन की पूजा-अर्चना हमारे पूर्वज करते चले आये, हमें तो इस धर्म में सन्देह है, जिस की ओर तू हमें बुला रहा है, हम तो चकित हैं।[3]

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ

(६३) उसने उत्तर दिया कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! तनिक बताओ तो यदि मैं अपने प्रभु की ओर से किसी ख़ास तर्क पर हुआ। तथा उसने मुझे अपने पास से कृपा प्रदान की हो।[4]

---

[1] अर्थात प्रारम्भ में तुम्हें धरती से पैदा किया, वह इस प्रकार कि तुम्हारे परम पिता आदम की उत्पत्ति मिट्टी से हुई तथा सभी मुनष्य आदम के वंश में पैदा हुए, इस प्रकार सभी मनुष्यों की उत्पत्ति धरती से हुई। अथवा इस का अर्थ है कि तुम जो कुछ खाते-पीते हो, सब धरती से पैदा होता है तथा उसी भोज्य पदार्थ से वीर्य बनता है, जो माता के गर्भाशय में जाकर मनुष्य के अस्तित्व का कारण बनता है।

[2] अर्थात तुम में धरती को बसाने तथा आबाद करने की शक्ति तथा गुण उत्पन्न किये, जिस से तुम रहने के लिये मकानों का निर्माण करते हो, भोजन के लिये कृषि करते हो तथा अन्य जीवन सामग्री को उपलब्ध कराने के लिये उद्योग तथा कला से काम लेते हो।

[3] अर्थात पैग़म्बर अपने समुदाय में चूँकि चरित्र, आचरण न्याय तथा सत्यता में श्रेष्ठ होता है, इसलिये समुदाय की उस से शुभ आशायें सम्बन्धित होती हैं। इसी कारण आदरणीय स्वालेह के समुदाय ने भी उन से यह कहा। परन्तु एकेश्वरवाद का आमन्त्रण देते ही उन की आशाओं का यह केन्द्र उनकी आँखों का काँटा बन गया तथा उस धर्म में शंका का प्रदर्शन किया जिसकी ओर आदरणीय स्वालेह उन्हें बुला रहे थे अर्थात एकेश्वरवादी धर्म का।

[4] بَيِّنَة से तात्पर्य वह ईमान तथा विश्वास है, जो अल्लाह तआला पैग़म्बरों को प्रदान करता है तथा कृपा से नबूअत। जैसाकि पहले व्याख्या की जा चुकी है।

The Ummah Technology Mission

إِنْ عَصَيْتُهُ ۖ فَمَا تَزِيدُونَنِي غَيْرَ تَخْسِيرٍ ﴿٦٣﴾

फिर यदि मैंने उसकी अवज्ञा की,[1] तो कौन है जो उसके समक्ष मेरी सहायता करे ? तुम तो मेरी हानि ही में वृद्धि कर रहे हो।[2]

وَيَا قَوْمِ هَٰذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةً فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ﴿٦٤﴾

(६४) तथा ऐ मेरे समुदाय वालो ! यह अल्लाह की भेजी हुई ऊँटनी है, जो तुम्हारे लिये एक चमत्कार है, अब तुम इसे अल्लाह की धरती पर खाती हुई छोड़ दो तथा उसे किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाओ, अन्यथा शीघ्र ही तुम्हें यातना पकड़ लेगी।[3]

فَعَقَرُوهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوا فِي دَارِكُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ ۖ ذَٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوبٍ ﴿٦٥﴾

(६५) फिर भी उन लोगों ने उस ऊँटनी के पैर काट कर (मार डाला)। इस पर स्वालेह ने कहा कि अच्छा तो तुम अपने घरों में तीन दिन तक रह लो, यह वायदा झूठा नहीं है।[4]

---

[1]अवज्ञा से तात्पर्य यह है कि यदि मैं तुम्हें सत्य की ओर तथा एक अल्लाह की इबादत की ओर बुलाना छोड़ दूँ, जैसाकि तुम चाहते हो।

[2]अर्थात यदि मैं ऐसा करूँ तो तुम मुझे कोई लाभ नहीं पहुँचा सकते, परन्तु इस प्रकार तुम मेरी हानि में वृद्धि करोगे।

[3]यह वही ऊँटनी है जो अल्लाह तआला ने उन की माँग पर उनकी आँखों के सामने एक पर्वत अथवा चट्टान से निकाली। इसीलिये उसे 'अल्लाह की ऊँटनी' कहा गया है क्योंकि वह मात्र अल्लाह के आदेश से चमत्कारिक रूप से अस्वभाविक विधि से प्रकट हुई थी। उस के लिये उन्हें निर्देशित कर दिया गया था कि इसे कष्ट न पहुँचाओ, वरन् तुम अल्लाह के प्रकोप की पकड़ में आ जाओगे।

[4]परन्तु वे अत्याचारी इस विशिष्ट चमत्कार के प्रदर्शित होने के उपरान्त भी न केवल ईमान ही नहीं लाये, अपितु अल्लाह के निर्देशों की भी अवहेलना करके उसे मार डाला, जिस के पश्चात् उन्हें तीन दिन का समय दे दिया गया कि तीन दिन के उपरान्त तुम्हें अल्लाह के प्रकोप के द्वारा नष्ट कर दिया जायेगा।

The Ummah Technology Mission

فَلَمَّا جَآءَ اَمۡرُنَا نَجَّيۡنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَهٗ بِرَحۡمَةٍ مِّنَّا وَمِنۡ خِزۡيِ يَوۡمِئِذٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الۡقَوِيُّ الۡعَزِيۡزُ ﴿۶۶﴾

(६६) फिर जब हमारा आदेश आ पहुँचा,[1] हम ने स्वालेह तथा उन पर ईमान लाने वालों को अपनी कृपा से उस से भी बचा लिया तथा उस दिन के अपमान से भी। नि:संदेह तुम्हारा प्रभु शक्तिशाली तथा प्रभावशाली है।

وَاَخَذَ الَّذِيۡنَ ظَلَمُوا الصَّيۡحَةُ فَاَصۡبَحُوۡا فِىۡ دِيَارِهِمۡ جٰثِمِيۡنَ ﴿۶۷﴾

(६७) तथा अत्याचारों को बड़ी तीव्र कड़क ने आ दबोचा,[2] फिर तो वह अपने घरों में मुँह के बल मरे पड़े हुए रह गये।[3]

كَاَنۡ لَّمۡ يَغۡنَوۡا فِيۡهَا ؕ اَلَاۤ اِنَّ ثَمُوۡدَا كَفَرُوۡا رَبَّهُمۡ ؕ اَلَا بُعۡدًا لِّثَمُوۡدَ ﴿۶۸﴾

(६८) इस प्रकार कि जैसे वे वहाँ कभी आबाद न थे।[4] सावधान रहो कि समूद के समुदाय ने अपने प्रभु से कुफ्र किया। सुन लो, उन समूद वालों पर धिक्कार है।

وَلَقَدۡ جَآءَتۡ رُسُلُنَاۤ اِبۡرٰهِيۡمَ

(६९) तथा हमारे भेजे हुए संदेशवाहक इब्राहीम के पास शुभसूचना लेकर पहुँचे[5] तथा सलाम

---

[1]इससे तात्पर्य वही प्रकोप है जो वचनानुसार चौथे दिन आया तथा आदरणीय स्वालेह तथा उन पर ईमान लाने वालों के अतिरिक्त सभी को मार दिया गया।

[2]यह प्रकोप चीख तथा तीव्र कड़क के रूप में आया, कुछ के निकट यह आदरणीय जिब्रील की चीख थी तथा कुछ के निकट आकाश से आयी थी जिससे उनके दिल क्षिन्न-भिन्न हो गये तथा वे मर गये, उस के पश्चात् अथवा उसके साथ भूकम्प भी आया, जिस ने सब कुछ ऊपर-नीचे कर दिया। जैसाकि *सूरः आराफ़*-७८ के शब्द हैं।

[3]जिस प्रकार पक्षी मरने के पश्चात् धरती पर मिट्टी के साथ पड़ा होता है, उसी प्रकार यह मर कर मुँह के बल धरती पर पड़े हुए थे।

[4]उन की बस्ती अथवा ये लोग अथवा ये दोनों ही, इस प्रकार मिटा दिये गये कि उनका नामोनिशान शेष न रह गया, जैसे कि वे कभी वहाँ बसे भी नहीं थे।

[5]यह वास्तव में आदरणीय लूत तथा उनके समुदाय की घटना का एक भाग है। आदरणीय लूत आदरणीय इब्राहीम के चाचा के पुत्र थे। आदरणीय लूत की बस्ती 'मृत्यु सागर' के दक्षिण-पूर्व में थी जबकि आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम फ़िलिस्तीन में निवास कर रहे थे। जब आदरणीय लूत के समुदाय को समाप्त करने का निर्णय ले लिया गया तो उनकी

The Ummah Technology Mission

بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿٦٩﴾

कहा [1] उन्होंने भी सलाम का उत्तर दिया [2] तथा बिना किसी देर के गाय का भूना हुआ बच्चा ले आये।[3]

فَلَمَّا رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ﴿٧٠﴾

(७०) अब जो देखा कि उन के तो हाथ भी उसकी ओर नहीं पहुँच रहे, तो उन्हें अनजान पाकर दिल ही दिल में उनसे भयभीत होने लगे।[4] उन्होंने कहा डरो नहीं, हम तो लूत के समुदाय की ओर भेजे हुए आये हैं।[5]

ओर फ़रिश्ते भेजे गये। ये फ़रिश्ते लूत के समुदाय की ओर जाते समय मार्ग में आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास ठहरे तथा उन्हें पुत्र की शुभसूचना दी।

[1]अर्थात سلمنا عليك سلاما "हम आपको सलाम करते हैं।"

[2]जिस प्रकार प्रथम सलाम एक लुप्त क्रिया के साथ जबर की स्थिति में था उसी प्रकार سلام यह उद्देश्य अथवा विधेय के कारण पेश की स्थिति में है। वाक्य होगा। أمركم سلام - عليكم سلام

[3]आदरणीय इब्राहीम अतिथियों का अत्यधिक सत्कार करते थे। वह यह नहीं समझ सके कि यह फ़रिश्ते हैं, जो मानव के रूप में आये हैं तथा खाते-पीते नहीं हैं बल्कि उन्होंने उन्हें अतिथि समझा तथा तुरन्त अतिथियों की सेवा-सत्कार के लिये बछड़े का भुना हुआ माँस उन की सेवा में प्रस्तुत किया। इससे यह भी पता चलता है कि अतिथि से पूछने की आवश्यकता नहीं बल्कि जो उपलब्ध हो सेवा में प्रस्तुत कर दिया जाये।

[4]आदरणीय इब्राहीम ने जब देखा कि उन के हाथ खाने की वस्तुओं की ओर नहीं बढ़ रहे हैं तो उन्हें भय प्रतीत हुआ। कहते हैं कि उन के यहाँ यह बात प्रसिद्ध थी कि आया हुआ अतिथि यदि भोजन का लाभ न उठाये, तो समझा जाता था कि आने वाला अतिथि अच्छे विचार से नहीं आया है। इस से यह भी ज्ञात हुआ कि अल्लाह के पैग़म्बरों को परोक्ष का ज्ञान नहीं होता। यदि इब्राहीम अलैहिस्सलाम परोक्ष के जानने वाले होते, तो बछड़े का भुना हुआ माँस भी न लाते तथा उन से भयभीत भी न होते।

[5]इस भय का फ़रिश्तों ने आभास किया, या तो उन लक्षणों से जो ऐसे अवसरों पर मनुष्य के मुख पर प्रदर्शित होते हैं अथवा अपनी वार्तालाप में आदरणीय इब्राहीम ने इसका चर्चा किया, जैसाकि अन्य स्थान पर स्पष्टीकरण है ﴿إِنَّا مِنكُمْ وَجِلُونَ﴾ "हमें तो तुम से भय लगता है।" (सूरः अल-हिज्र,५२) अतः फ़रिश्तों ने कहा डरो नहीं, आप जो समझ रहे हैं,

The Ummah Technology Mission

وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿٧١﴾

(७१) तथा उसकी पत्नी जो खड़ी हुई थी वह हँस दी,[1] तो हम ने उसे इसहाक़ की तथा उसके पश्चात् याक़ूब की शुभसूचना दी।

قَالَتْ يٰوَيْلَتٰٓى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٧٢﴾

(७२) वह कहने लगी वाह ! मेरे यहाँ संतान हो सकती है, मैं स्वयं बुढ़िया तथा मेरे पति भी अति दीर्घ आयु के हैं, यह नि:संदेह अत्यधिक आश्चर्य की बात है।[2]

قَالُوْٓا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿٧٣﴾

(७३) (फ़रिश्तों ने) कहा कि क्या तू अल्लाह के सामर्थ्य से आश्चर्य कर रही है,[3] तुम पर हे इस घर के लोगो ! अल्लाह की कृपा तथा उस की विभूतियाँ उतरे,[4] नि:संदेह अल्लाह ही के लिये सारी प्रशंसायें तथा महिमा हैं।

हम वह नहीं हैं, बल्कि हम अल्लाह के फ़रिश्ते हैं तथा हम लूत के समुदाय की ओर जा रहे हैं।

[1]आदरणीय इब्राहीम की पत्नी क्यों हँसी ? कुछ लोग कहते हैं कि लूत के समुदाय के उपद्रव से वह भी अवगत थी, उन के विनाश की सूचना पाकर वह भी प्रसन्न हुई। कुछ कहते हैं कि इस लिये हँसी आयी कि देखो आकाश से उनके विनाश का निर्णय हो चुका है तथा यह समुदाय अब भी निश्चिंत है। तथा कुछ कहते हैं कि इस हँसने का सम्बन्ध उस शुभसूचना से है, जो फ़रिश्तों ने इस बूढ़े जोड़े को दी।

[2]यह पत्नी आदरणीय सारह थीं, जो स्वयं भी बूढ़ी थीं तथा उनके पति आदरणीय इब्राहीम भी बूढ़े थे, इसलिये आश्चर्य एक स्वाभाविक बात थी, जिसे उन्होंने व्यक्त किया।

[3]यह प्रश्न नकारात्मक है। अर्थात तू अल्लाह तआला के न्याय तथा निर्णय पर किस प्रकार आश्चर्य का प्रदर्शन करती हो, जबकि उसके लिये कोई कार्य कठिन नहीं। तथा उसे सामयिक साधनों की आवश्यकता नहीं। वह तो जो चाहे, उस के केवल शब्द (कुन) (हो जा) से प्रदर्शन अस्तित्व में आ जाता है।

[4]आदरणीय इब्राहीम की पत्नी को यहाँ पर फ़रिश्तों ने اَهل بيت (अहले बैत) (घर वाले) कहा है तथा उन्हें पुल्लिंग बहुवचन عليكم से सम्बोधित किया है। जिस से एक बात तो यह सिद्ध हो गई कि 'अहले बैत' में किसी भी व्यक्ति की पत्नी सर्वप्रथम सम्मिलित होती

The Ummah Technology Mission

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِيْ قَوْمِ لُوْطٍ ﴿٧٤﴾

(७४) जब इब्राहीम का भय समाप्त हो गया तथा उसे शुभसूचना भी पहुँच चुकी तो हम से लूत के समुदाय के विषय में कहने सुनने लगे।[1]

إِنَّ إِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ أَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ﴿٧٥﴾

(७५) नि:संदेह इब्राहीम अत्यधिक धैर्यवान तथा कोमल हृदय तथा अल्लाह की ओर झुकने वाले थे।

يٰٓإِبْرٰهِيْمُ أَعْرِضْ عَنْ هٰذَا إِنَّهُ قَدْ جَآءَ أَمْرُ رَبِّكَ وَإِنَّهُمْ آتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ﴿٧٦﴾

(७६) हे इब्राहीम ! इस विचार को त्याग दो, आपके प्रभु का आदेश आ पहुँचा है, तथा उन पर न लौटायी जाने वाली यातना अवश्य आने वाली है।[2]

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿٧٧﴾

(७७) तथा जब हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते लूत के पास पहुँचे तो वह उनके कारण अत्यधिक दुखी हो गये तथा दिल ही दिल में दुखी होने लगे तथा कहने लगे कि आज का दिन अत्यधिक दुखों का दिन है।[3]

है। दूसरी यह कि अहले बैत के लिए पुल्लिंग बहुवचन का प्रयोग करना भी उचित है। जैसाकि सूरः *अहज़ाब* आयत संख्या ३३ में अल्लाह तआला ने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नियों को भी अहले बैत कहा है तथा उन्हें पुरूषवाचक बहुवचन सर्वनाम से सम्बोधित भी किया है।

[1]इस वार्तालाप से तात्पर्य यह है कि आदरणीय इब्राहीम ने फ़रिश्तों से कहा कि जिस बस्ती को ध्वस्त करने तुम जा रहे हो, उसी में आदरणीय लूत भी उपस्थिति हैं। जिस पर फ़रिश्तों ने उत्तर दिया "हम जानते हैं कि लूत भी वहीं रहते हैं। परन्तु हम उन को तथा उन के परिवार को सिवाय उन की पत्नी के बचा लेंगे।" (सूरः *अल-अनकबूत*, ३२)

[2]यह फ़रिश्तों ने आदरणीय इब्राहीम से कहा कि अब इस वार्तालाप से कोई लाभ नहीं, उसे छोड़िये ! अल्लाह का वह आदेश (विनाश का) आ चुका है, जो अल्लाह के यहाँ भाग्य में था। तथा अब यह प्रकोप न किसी की वार्तालाप से रूकेगा, न किसी प्रार्थना से टलेगा।

[3]आदरणीय लूत की इस अत्यधिक व्याकुलता का कारण व्याख्याकारों ने यहाँ लिखा है कि यह फ़रिश्ते बिना दाढ़ी-मूँछ के नवयुवक के रूप में आये थे जिससे आदरणीय लूत ने

The Ummah Technology Mission

وَجَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ؕ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيْ هُنَّ اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ؕ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ ﴿٧٨﴾

(७८) तथा उस का समुदाय उस की ओर दौड़ता हुआ, आया वह तोपहले ही से कुकर्मों में लीन था।[1] लूत ने कहा कि ऐ मेरे समुदाय के लोगो ! ये हैं मेरी पुत्रियाँ जो तुम्हारे लिये अत्यधिक पवित्र हैं।[2] अल्लाह से डरो तथा मुझे मेरे अतिथियों के विषय में अपमानित न करो। क्या तुम में एक भी भला आदमी नहीं है।[3]

قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَاِنَّكَ

(७९) उन्होंने उत्तर दिया कि तू भली-भाँति जानता है कि हमें तो तेरी पुत्रियों पर कोई

अपने समुदाय के दुराचार के कारण भय का आभास किया। क्योंकि उन को यह ज्ञात नहीं था कि आने वाले ये नवयुवक अतिथि नहीं हैं, अपितु अल्लाह की ओर से भेजे हुए फ़रिश्ते हैं, जो इस समुदाय को विनाश करने के लिये ही आये हैं।

[1]जब बाल मैथुन के इन रोगियों को पता चला कि कुछ सुन्दर युवक लूत के घर आये हैं तो दौड़े हुए आये तथा उन्हें अपने साथ ले जाने के लिये बाध्य करने लगे ताकि वे अपनी काम वासना की पूर्ति करें।

[2]अर्थात यदि तुम्हें काम वासना की संतृप्ति करनी है, तो उस के लिये मेरी अपनी पुत्रियाँ हैं, जिन से तुम विवाह करके अपना उद्देश्य पूरा कर लो। यह तुम्हारे लिये हर प्रकार से श्रेष्ठ हैं। कुछ ने कहा कि पुत्रियाँ से तात्पर्य समाज की सामान्य स्त्रियाँ हैं, तथा उन्हें अपनी पुत्रियाँ इसलिये कहा गया कि पैग़म्बर अपने समुदाय के पिता समान होता है। अर्थ यह है कि इस काम वासना के लिये स्त्रियाँ हैं, उनसे विवाह करो तथा अपना उद्देश्य पूर्ण करो। (इब्ने कसीर)

[3]अर्थात मेरे घर आये अतिथियों के साथ दुर्व्यवहार एवं बल प्रयोग करके मुझे अपमानित न करो। क्या तुम में से एक भी व्यक्ति समझदार नहीं है जो अतिथि सत्कार के नियमों को समझे ? तथा तुम्हारे बुरे उद्देश्य से तुम्हें रोक सके ? आदरणीय लूत ने यह सारी बातें इस आधार पर कीं कि उन्हें यह ज्ञात नहीं था कि ये वास्तव में फ़रिश्ते हैं, वह उन्हें नव आगन्तुक तथा यात्री ही समझते रहे। इसलिये उचित रूप से उनकी सुरक्षा को अपने आदर तथा सम्मान के लिये आवश्यक समझते रहे। यदि उनको ज्ञात हो जाता अथवा परोक्ष का ज्ञान होता, तो स्पष्ट बात है कि उन को यह व्याकुलता कदापि प्रतीत न होती, जो उन्हें हुई तथा जिस का दृश्य यहाँ क़ुरआन मजीद में खींचा गया है।

The Ummah Technology Mission

لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ﴿٧٩﴾

अधिकार ही नहीं तथा तू हमारी मूल इच्छा से भली-भाँति परिचित है।[1]

قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِيْٓ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ﴿٨٠﴾

(८०) लूत ने कहा कि काश कि मुझ में तुम से लड़ने की शक्ति होती अथवा मैं किसी सुदृढ़ शरण में होता।[2]

قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ

(८१) अब फ़रिश्तों ने कहा हे लूत ! हम तेरे प्रभु के भेजे हुए हैं, असंभव है ये तुझ तक पहुँच जायें, बस तू अपने घरवालों को लेकर कुछ रात रहते निकल खड़ा हो। तुम में से

---

[1]अर्थात एक उचित तथा स्वाभाविक नियम को उन्होंने बिल्कुल रद्द कर दिया तथा अस्वाभाविकता एवं असभ्यता पर बल दिया, जिससे अनुमान लगाया जा सकता है कि वह समुदाय अपनी असभ्यता के कुकर्म में कितना बढ़ गया था तथा किस प्रकार अंधा हो गया था।

[2]शक्ति से अपने बाहुबल तथा अपने संसाधन की शक्ति तथा संतान की शक्ति तात्पर्य है तथा सुदृढ़ शरण से परिवार, क़बीला अथवा इसी प्रकार का कोई सुदृढ़ सहारा तात्पर्य है। अर्थात अति विवशता की अवस्था में कामना कर रहे हैं कि काश मेरे पास अपनी कोई शक्ति होती अथवा क़िसी परिवार अथवा क़बीले की शरण अथवा सहायता मुझे प्राप्त होती तो आज अतिथियों के कारण यह अपमान तथा अनादर न होता, मैं इन कुकर्मियों से निपट लेता तथा अतिथियों की सुरक्षा कर लेता। आदरणीय लूत की यह कामना, अल्लाह तआला पर भरोसा के विरूद्ध नहीं है। अपितु प्रत्यक्ष साधन के अनुकूल है। तथा अल्लाह तआला पर भरोसा का उचित अर्थ भी यही है कि पहले सभी स्पष्ट कारणों तथा साधनों का प्रयोग में लाया जाये तथा फिर अल्लाह पर भरोसा किया जाये। यह भरोसे का ग़लत अर्थ है कि हाथ-पैर तोड़कर बैठ जाओ तथा कहो कि हमारा भरोसा अल्लाह पर है। इसलिए आदरणीय लूत ने जो कुछ कहा, प्रत्यक्ष साधनों के आधार पर पूर्णरूप से उचित कहा। जिससे यह बात ज्ञात होती है कि अल्लाह का पैग़म्बर जिस प्रकार परोक्ष का जानने वाला नहीं होता, उसी प्रकार वह पूर्ण अधिकार वाला भी नहीं होता (जैसाकि आजकल लोगों ने यह विश्वास गढ़ लिया है)। यदि नबी दुनियाँ में अधिकार पूर्ण होते तो नि:संदेह आदरणीय लूत अपनी निस्सहाय स्थिति का तथा इस कामना का प्रदर्शन न करते जो उन्होंने वर्णित शब्दों में की।

The Ummah Technology Mission

किसी को मुड़कर भी नहीं देखना चाहिये, सिवाय तेरी पत्नी के, इसलिये कि उसे भी वही पहुँचने वाला है, जो सब को पहुँचेगा, नि:संदेह उनके वायदे का समय प्रात: का है, क्या प्रात: अति निकट नहीं ?[1]

اَحَدٌ اِلَّا امۡرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيۡبُهَا مَاۤ اَصَابَهُمۡ ؕ اِنَّ مَوۡعِدَهُمُ الصُّبۡحُ ؕ اَلَيۡسَ الصُّبۡحُ بِقَرِيۡبٍ ﴿۸۱﴾

(८२) फिर जब हमारा आदेश आ पहुँचा, हमने उस बस्ती को उलट-पलट कर दिया। ऊपर का भाग नीचे कर दिया तथा उन पर कंकड़ीले पत्थरों की वर्षा की जो तह पर तह थे।

فَلَمَّا جَآءَ اَمۡرُنَا جَعَلۡنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمۡطَرۡنَا عَلَيۡهَا حِجَارَةً مِّنۡ سِجِّيۡلٍ ۙ مَّنۡضُوۡدٍ ﴿۸۲﴾

(८३) तेरे प्रभु की ओर से चिन्हित थे तथा वे उन अत्याचारियों से तनिक भी दूर न थे।[2]

مُّسَوَّمَةً عِنۡدَ رَبِّكَ ؕ وَمَا هِىَ مِنَ الظّٰلِمِيۡنَ بِبَعِيۡدٍ ﴿۸۳﴾

(८४) तथा हमने मदयन वालों की ओर[3] उन के भाई शुऐब को भेजा, उस ने कहा हे मेरे समुदाय के लोगो ! अल्लाह की इबादत करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं,तथा तुम नाप-तौल में भी कमी न करो।[4] मैं तुम्हें

وَاِلٰى مَدۡيَنَ اَخَاهُمۡ شُعَيۡبًا ؕ قَالَ يٰقَوۡمِ اعۡبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمۡ مِّنۡ اِلٰهٍ غَيۡرُهٗ ؕ وَلَا تَنۡقُصُوا الۡمِكۡيَالَ وَالۡمِيۡزَانَ اِنِّىۡۤ اَرٰىكُمۡ بِخَيۡرٍ

---

[1]जब फ़रिश्तों ने आदरणीय लूत की विवशता तथा उनके समुदाय की दुष्टता को देखा तो बोले, ऐ लूत ! घबराने की आवश्यकता नहीं है, हम तक तो क्या अब ये तुझ तक भी नहीं पहुँच सकते। अब रात्रि के एक भाग में अपनी पत्नी के सिवाय अपने घरवालों को लेकर यहाँ से निकल जा। प्रात: होते ही इस बस्ती को ध्वस्त कर दिया जायेगा।

[2]इस आयत में هِيَ का सम्बंध कुछ व्याख्याकारों के निकट चिन्हित कंकड़ीले पत्थर से है जो उन पर बरसाये गये तथा कुछ के निकट इसका सम्बन्ध उन बस्तियों से है जो ध्वस्त कर दी गयीं तथा जो सीरिया तथा मदीना के मध्य थीं तथा अत्याचारियों से तात्पर्य मक्का के मूर्तिपूजक तथा अन्य झूठे हैं। उद्देश्य उनको डराना है कि तुम्हारा परिणाम भी वैसा हो सकता है जिस का विगत समुदायों को सामना करना पड़ा।

[3]मदयन के शोध के लिये देखिये सूरः *अल-आराफ़* आयत संख्या ८५ की व्याख्या।

[4]एकेश्वरवाद का आमंत्रण देने के पश्चात् उस समुदाय में जो खुली चारित्रक ख़राबी नाप-तौल में कमी की थी, उस से उन्हें रोका। उन का यह व्यवहार था कि यदि कोई

The Ummah Technology Mission

وَإِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ﴿٨٤﴾

सम्पन्न देख रहा हूँ[1] तथा मुझे तुम पर घेरने वाले दिन के प्रकोप का भय भी है।[2]

وَيَٰقَوْمِ أَوْفُوا۟ ٱلْمِكْيَالَ وَٱلْمِيزَانَ بِٱلْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا۟ ٱلنَّاسَ أَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا۟ فِى ٱلْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٨٥﴾

(८५) ऐ मेरे समुदाय के लोगो ! नाप-तौल न्यायपूर्वक पूरा-पूरा करो, लोगों को उनकी वस्तुऐं कम न दो,[3] तथा धरती में उपद्रव तथा आतंक न मचाओ।[4]

بَقِيَّتُ ٱللَّهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۚ وَمَآ أَنَا۠

(८६) अल्लाह तआला का हलाल किया हुआ शेष लाभ तुम्हारे लिये बहुत ही उत्तम है यदि

उन के पास कोई वस्तु विक्रय करने के लिये आता तो उस से अधिक वस्तु ले लेते तथा यदि कोई ग्राहक ख़रीदने आता तो उस से नाप-तौल में कमी करते।

[1]यह उस मना करने का कारण है कि जब तुम पर अल्लाह की कृपा बनी हुई है तथा उसने सम्पन्नता तथा धन-धान्य से परिपूर्ण किया है तो फिर तुम में यह दुराचार क्यों है ?

[2]यह दूसरा कारण है यदि तुम अपने उस व्यवहार से न रूके, तो फिर संभव है कि क़ियामत के दिन की यातना से तुम न बच सकोगे। घेरने वाले दिन से तात्पर्य प्रलय का दिन है कि उस दिन कोई पापी अल्लाह की पकड़ से न बच सकेगा, न भाग कर कहीं छिप सकेगा।

[3]अब बलपूर्वक न्याय के साथ उन्हें पूरा-पूरा तौलने-नापने का आदेश दिया जा रहा है तथा लोगों को वस्तुएँ कम करके देने से रोका जा रहा है। क्योंकि अल्लाह के समक्ष यह भी महा अपराध है तथा अल्लाह तआला ने एक पूरी सूरः में इस अपराध के लक्षण दोष तथा उसके पारलौकिक दण्डों का वर्णन किया है।

﴿وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ * ٱلَّذِينَ إِذَا ٱكْتَالُوا۟ عَلَى ٱلنَّاسِ يَسْتَوْفُونَ * وَإِذَا كَالُوهُمْ أَو وَّزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ﴾

"मुतफ़्फ़ेफ़ीन अर्थात नाप-तौल में घटा-बढ़ा करने वालों के लिये विनाश है। ये वे लोग हैं जो लोगों से जब कोई वस्तु लेते हैं, तो पूरी लेते हैं तथा जब दूसरों को नाप अथवा तौल कर देते हैं, तो कम कर के देते हैं।" (सूरः मुतफ़्फ़ेफ़ीन)

[4]अल्लाह की अवज्ञा से, विशेषरूप से जिन का सम्बन्ध व्यक्ति के अधिकार से हो, जैसे यहाँ नाप-तौल में कमी तथा अधिकता में है, धरती पर अवश्य बिगाड़ तथा उपद्रव उत्पन्न होता है, जिस से उन्हें रोका गया है।

The Ummah Technology Mission

तुम ईमानदार हो।[1] मैं कोई तुम्हारा संरक्षक (तथा अधिकारी) नहीं हूँ।[2]

عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ﴿٨٦﴾

(८७) उन्होंने उत्तर दिया कि हे शुऐब ! क्या तेरी सलात[3] तुझे यही आदेश देती है कि हम अपने पूर्वजों के देवताओं को छोड़ दें तथा हम अपने माल में जो कुछ करना चाहे उस का करना भी छोड़ दें।[4] तू तो अति सम्मानित तथा सतकर्मी है।[5]

قَالُوا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ فِيْٓ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ﴿٨٧﴾

(८८) कहा कि ऐ मेरे समुदाय ! देखो तो यदि मैं अपने प्रभु की ओर से प्रत्यक्ष प्रमाण लिए हुए हूँ तथा उसने अपने पास से उत्तम

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ

---

[1] بَقِيَّتُ اللهِ से तात्पर्य वह लाभ है जो नाप-तौल में किसी प्रकार की कमी किये बिना ईमानदारी के साथ सौदा देने के पश्चात् प्राप्त होता है। यह चूँकि हलाल तथा पवित्र है तथा पुण्य एवं शुभ भी इसी में है, इसलिये अल्लाह का शेष कहा गया है।

[2] अर्थात मैं तुम्हें केवल सावधान तथा सतर्क कर सकता हूँ तथा वह अल्लाह के आदेश से कर रहा हूँ। परन्तु बुराईयों से तुम्हें रोक दूँ अथवा उस पर दण्ड दूँ, यह मेरे अधिकार में नहीं है। इन दोनों बातों का अधिकार केवल अल्लाह को है।

[3] صَلٰوةٌ से तात्पर्य इबादत, धर्म अथवा क़ुरआन पढ़ना है।

[4] इससे तात्पर्य कुछ व्याख्याकारों के निकट ज़कात तथा दान है, जिन का आदेश प्रत्येक दैवी धर्मों में दिया गया है। अल्लाह के आदेश से ज़कात तथा दान का निकालना, अल्लाह के अवज्ञाकारियों को कष्टदायक होता है तथा वह समझते हैं कि जब हम अपने परिश्रम तथा योग्यता से माल कमाते हैं, तो उस को ख़र्च करने अथवा न करने पर हम पर प्रतिबन्ध क्यों हो ? तथा उस का एक निर्धारित भाग निकालने पर हमें बाध्य क्यों किया जाये ? इसी प्रकार से कमाई तथा व्यापार में वैध तथा अवैध एवम् उचित तथा अनुचित का प्रतिबन्ध भी ऐसे लोगों को अत्यन्त कष्टपद्र लगता है। सम्भव है कि नाप-तौल में कमी से रोकने को भी उन्होंने अपने अर्थ-उपभोग में हस्तक्षेप समझा हो। तथा इन शब्दों में उसे अस्वीकार किया हो। दोनों ही भावार्थ इस के उचित हैं।

[5] आदरणीय शुऐब के लिये ये शब्द उन्होंने उपहास के रूप में प्रयोग किये।

The Ummah Technology Mission

إِلَىٰ مَآ أَنْهَىٰكُمْ عَنْهُ ۚ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا ٱلْإِصْلَٰحَ مَا ٱسْتَطَعْتُ ۚ وَمَا تَوْفِيقِىٓ إِلَّا بِٱللَّهِ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ﴿٨٨﴾

जीविका दे रखी है,[1] मेरी कदापि यह इच्छा नहीं कि तुम्हारा विरोध करके स्वयं उस वस्तु की ओर झुक जाऊँ जिससे तुम्हें रोक रहा हूँ,[2] मेरा विचार तो अपनी शक्ति भर सुधार करने का ही है।[3] तथा मेरी सन्मति अल्लाह ही की सहायता से है,[4] उसी पर मेरा भरोसा है तथा उसी की ओर मैं आकर्षित हूँ।

وَيَٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِىٓ أَن يُصِيبَكُم مِّثْلُ مَآ أَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ أَوْ قَوْمَ هُودٍ أَوْ قَوْمَ صَٰلِحٍ ۚ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِّنكُم بِبَعِيدٍ ﴿٨٩﴾

(८९) तथा ऐ मेरे समुदाय (के लोगो)! कहीं ऐसा न हो कि तुम मेरे विरोध में आकर उन यातनाओं के पात्र हो जाओ, जो नूह के समुदाय तथा हूद के समुदाय एवं स्वालेह के समुदाय को आयीं।[5] तथा लूत का समुदाय तो तुम से तनिक दूर नहीं।

وَٱسْتَغْفِرُوا۟ رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوٓا۟ إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّى رَحِيمٌ وَدُودٌ ﴿٩٠﴾

(९०) तथा तुम अपने प्रभु से क्षमा-याचना करो तथा उसकी ओर झुक जाओ, विश्वास करो कि मेरा प्रभु अत्यधिक कृपालु एवं अत्यधिक प्रेम करने वाला है।

---

[1]उत्तम जीविका का दूसरा अर्थ नबूअत भी वर्णन किया गया है।

[2]अर्थात जिस काम से मैं तुम्हें रोकूँ, तुम से छिपकर, वह मैं स्वयं करूँ, ऐसा नहीं हो सकता।

[3]मैं तुम्हें जिस कार्य के करने अथवा जिससे रूकने का आदेश देता हूँ, इससे उद्देश्य अपनी शक्ति भर तुम्हारा सुधार ही है।

[4]अर्थात सत्य तक पहुँचने का जो मेरा लक्ष्य है, वह अल्लाह की इच्छा से संभव है, इसलिये सभी मामलों में मेरा भरोसा उसी पर है तथा उसी की ओर मैं ध्यान केन्द्रित करता हूँ।

[5]अर्थात उन का स्थान तुम से दूर नहीं, अथवा उस कारण मैं तुम से दूर नहीं, जो उन के ऊपर प्रकोप का कारण बना।

The Ummah Technology Mission

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۡ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ﴿٩١﴾

(९१) उन्होंने कहा हे शुऐब ! तेरी अधिकाँश बातें हमारी समझ में नहीं आतीं, [1] तथा हम तो तुझे अपने अंदर बहुत निर्बल पाते हैं।[2] यदि तेरे क़बीले का आदर न होता तो हम तो तुझे पथराव कर देते,[3] तथा हम तुझे कोई सम्मानित व्यक्ति नहीं समझते[4]।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٩٢﴾

(९२) उन्होंने उत्तर दिया कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! क्या तुम्हारे निकट मेरे क़बीले के लोग अल्लाह से भी अधिक सम्मानित हैं कि तुम ने उसे पीठ के पीछे डाल दिया है।[5]

---

[1]यह या तो उन्होंने उपहास स्वरूप तथा अपमान के लिये कहा, जबकि बातें द्विवोध नहीं थीं। इस अवस्था में वोध का इंकार अवास्तविक होगा अथवा उनका उद्देश्य उन बातों के समझने से विवशता व्यक्त करना है जिनका सम्बंध परोक्ष से है, जैसे मरने के पश्चात् जीवित होना, क़ियामत के निर्णय तथा न्याय, स्वर्ग-नरक आदि। इस आधार पर समझ से असमर्थता वास्तविक होगी।

[2]यह निर्बलता शारीरिक आधार पर थी, जैसा कि कुछ का विचार है कि आदरणीय शुऐब की दृष्टि कमज़ोर थी अथवा वह क्षीण तथा शारीरिक रूप से कमज़ोर थे अथवा इस आधार पर उन्हें कमज़ोर कहा कि वह स्वयं भी विरोधियों का अकेले सामना करने की शक्ति नहीं रखते थे।

[3]आदरणीय शुऐब का वंश कहा जाता है कि उनका सहायक नहीं था, परन्तु वह क़बीला कुफ़्र (अधर्म) तथा शिर्क में अपने समुदाय के साथ था, इसलिये अपना सहधर्मी होने के कारण उस जाति का आदर, अन्ततः आदरणीय शुऐब के साथ कड़ा व्यवहार तथा उन्हें हानि पहुँचाने में बाधक था।

[4]परन्तु चूँकि तेरे क़बीले का सम्मान किसी भी प्रकार से हमारे दिलों में है, इसलिये हम तुम्हें छोड़ रहे हैं।

[5]कि तुम मुझे मेरी जाति के कारण क्षमाकर रहे हो। परन्तु जिस अल्लाह ने मुझे नबूअत के सम्मान से विभूषित किया है, उसका कोई सम्मान तथा पद की गरिमा का कोई आदर तुम्हारे दिलों में नहीं है तथा तुमने उसे पीठ के पीछे डाल दिया है। यहाँ आदरणीय शुऐब ने ﴿اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ﴾ (अल्लाह से अधिक आदरणीय) कहा जिससे यह बताना उद्देश्य है

The Ummah Technology Mission

नि:संदेह मेरा प्रभु जो कुछ तुम कर रहे हो सबको घेरे हुए है।

وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ؕ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ؕ وَارْتَقِبُوْۤا اِنِّيْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿۹۳﴾

(९३) तथा ऐ सामुदायिक (भाईयो) ! अब तुम अपने स्थान पर कार्य किये जाओ, मैं भी कार्य कर रहा हूँ, तुम्हें निकट में ज्ञात हो जायेगा कि किस के पास वह यातना आती है जो उसे अपमानित कर दे तथा कौन है जो झूठा है ? तुम प्रतीक्षा करो तथा मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ।[1]

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿۹۴﴾

(९४) तथा जब हमारा आदेश (प्रकोप) आ पहुँचा, हमने शुऐब को तथा उनके साथ सभी ईमानवालों को अपनी विशेष कृपा से मुक्ति प्रदान की तथा अत्याचारियों को कड़ी ध्वनि की यातना ने आ दबोचा,[2] जिस से वह अपने घरों में औंधे पड़े हुए शेष हो गये।

कि नबी का उपहास वास्तव में अल्लाह का उपहास है। इसलिये कि नबी अल्लाह का दूत होता है। तथा इसी आधार पर अब सत्यवादी आलिमों (धर्मज्ञानियों) का अपमान तथा उनकी हीनाई यह अल्लाह के धर्म का अपमान तथा उसकी हीनाई है, इसलिये कि वे अल्लाह के धर्म के प्रतिनिधि हैं। واتخذتموه में सर्वनाम का संकेत अल्लाह की ओर है तथा अर्थ यह है कि अल्लाह के उस मामले को जिसे लेकर उस ने मुझे भेजा है, उसे तुम ने अपमानित कर दिया है तथा उस की तुम ने कोई चिन्ता नहीं की।

[1]जब उन्होंने देखा कि यह समुदाय अपने कुफ़्र (अविश्वास) तथा अनेकेश्वरवाद पर अडिग है तथा शिक्षा-दीक्षा का भी कोई प्रभाव नहीं हो रहा तो कहा अच्छा तुम अपने मार्ग पर चलते रहो, निकट में ही तुम्हें सत्य-असत्य का तथा इस बात का कि अपमानित करने वाला प्रकोप का अधिकारी कौन है ? ज्ञान हो जायेगा।

[2]इसी चीख़-चिंघाड़ से उन के दिल खन्ड-खन्ड हो गये तथा वे मर गये, उस के पश्चात् भूकम्प भी आया, जैसाकि *सूरः आराफ़*-९१ तथा *सूरः अनकबूत*-३७ में है।

The Ummah Technology Mission

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿٩٥﴾

(९५) जैसेकि वह उन घरों में कभी बसे ही न थे, सावधान रहो, मदयन के लिये भी वैसी ही दूरी[1] हो जैसी दूरी समूद की हुई।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٦﴾

(९६) तथा निश्चय ही हम ने मूसा को अपनी आयतों तथा ज्योर्तिमय प्रमाणों के साथ भेजा था।[2]

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاتَّبَعُوْۤا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَاۤ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ﴿٩٧﴾

(९७) फ़िरऔन तथा उसके मुखियाओं की ओर[3] ओर, फिर भी उन लोगों ने फ़िरऔन के आदेशों का पालन किया तथा फ़िरऔन का कोई आदेश उचित तथा ठीक था ही नहीं।[4]

يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ

(९८) वह तो क़ियामत (प्रलय) के दिन अपनी जाति का अगुवा बनकर उन सब को नरक

---

[1] अर्थात धिक्कार, फटकार, अल्लाह की कृपा से वंचित तथा दूरी।

[2] 'आयात' से कुछ के निकट धर्मशास्त्र (तौरात) तथा 'सुलतानिम मोबीन' से चमत्कार तात्पर्य है तथा कुछ के निकट 'आयात' से 'नौ निशानियाँ' तथा 'सुलतानिम मोबीन' (ज्योर्तिमय प्रमाण) से छड़ी तात्पर्य है। छड़ी यद्यपि 'नौ निशानियों' में सम्मिलित है, परन्तु यह चमत्कार चूँकि अत्यधिक भव्य था, इसलिये विशेषरूप से वर्णन किया गया है।

[3] مَلَإٌ समुदाय के सम्मानित तथा श्रेष्ठ लोगों को कहा जाता है। (इसकी व्याख्या पहले गुज़र चुकी है) फ़िरऔन के साथ, उसके सदन के सम्मानित लोगों का नाम इसलिये लिया गया है कि समुदाय के सम्मानित ही हर बात के उत्तरदायी होते थे तथा समुदाय उन्हीं के पीछे चलता था। यदि ये आदरणीय मूसा पर ईमान ले आते तो नि:संदेह फ़िरऔन का सारा समुदाय ईमान ले आता।

[4] رَشِيدٍ का अर्थ निर्देशित है। अर्थात बात तो आदरणीय मूसा की दीक्षा तथा निर्देशन की थी, परन्तु उसे उन लोगों ने रद्द कर दिया तथा फ़िरऔन की बात, जो दीक्षा तथा निर्देशन से दूर थी, उस का उन्होंने अनुकरण किया।

The Ummah Technology Mission

النَّارَ ۖ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُودُ ﴿٩٨﴾

में जा खड़ा करेगा,[1] वह अत्यधिक बुरा घाट है [2] जिस पर ला खड़े किये जायेंगे ।

وَأُتْبِعُوا فِي هَٰذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُودُ ﴿٩٩﴾

(९९) तथा उन पर इस लोक में भी धिक्कार हुई तथा क़ियामत के दिन भी[3] कितना बुरा पुरस्कार है जो दिया गया ।[4]

ذَٰلِكَ مِنْ أَنبَاءِ الْقُرَىٰ نَقُصُّهُ عَلَيْكَ مِنْهَا قَائِمٌ وَحَصِيدٌ ﴿١٠٠﴾

(१००) बस्तियों के यह कुछ समाचार जो हम तेरे समक्ष वर्णन कर रहे हैं, उन में से कुछ विद्यमान हैं तथा कुछ पूर्णत: ध्वस्त हो गयी हैं ।[5]

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِن ظَلَمُوا

(१०१) तथा हम ने उन पर कोई अत्याचार नहीं किया,[6] अपितु स्वयं ही उन्होंने अपने ही

---

[1] अर्थात फ़िरऔन जिस प्रकार दुनिया में उसका अगुवा तथा मुखिया था, क़ियामत के दिन भी यह आगे-आगे ही होगा तथा अपने समुदाय को अपने नेतृत्व में नरक में लेकर जायेगा ।

[2] ورد पानी के घाट को कहते हैं, जहाँ प्यासे जाकर अपनी प्यास बुझाते हैं। परन्तु यहाँ नरक को ورد कहा गया है । مورود वह स्थान अथवा घाट अर्थात नरक जिस में लोग ले जाये जायेंगे अर्थात स्थान भी बुरा तथा जाने वाले भी बुरे ।

[3] لعنة से तात्पर्य धिक्कार तथा अल्लाह की दया से दूरी तथा वंचित होना है, जैसाकि दुनिया में भी वह अल्लाह की कृपा से वंचित तथा अख़िरत (परलोक) में भी उससे वंचित ही रहेंगे, यदि ईमान न लाये ।

[4] رفد परितोषिक तथा उपहार को कहा जाता है । यहाँ धिक्कार को رفد कहा गया है । इसीलिये इसे बुरा उपहार कहा गया है । مرفود से तात्पर्य वह उपहार है जो किसी को दिया जाये । यह الرفد पर बल देने के लिये है ।

[5] قائم से तात्पर्य वह बस्तियाँ, जो अपनी छतों पर स्थित हैं । तथा حصيد - محصود के अर्थों में प्रयोग हुआ है, जिससे तात्पर्य वह बस्तियाँ जो कटी हुई खेतियों के समान ध्वस्त हो गयीं । अर्थात जिन पूर्वोक्त बस्तियों (नगरों) की कथा की चर्चा हम कर रहे हैं उनमें से कुछ तो अब भी विद्यमान हैं जिन के अवशेष शिक्षा प्राप्ति करने के चिन्ह हैं तथा कुछ ध्वस्त हो गईं जिन का नाम इतिहास के पन्नों में शेष रह गया है ।

[6] उन को प्रकोप तथा विनाश में डालकर ।

The Ummah Technology Mission

أَنفُسَهُمْ فَمَآ أَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِي يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مِن شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ أَمْرُ رَبِّكَ ۖ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتْبِيبٍ ﴿١٠١﴾

ऊपर अत्याचार किया,[1] तथा उन्हें उन के देवताओं नें कोई लाभ नहीं पहुँचाया, जिन्हें वे अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते थे, जबकि तेरे प्रभु का आदेश आ पहुँचा, अपितु उन्होंने उनकी हानि ही बढ़ा दी।[2]

وَكَذَٰلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَآ أَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ ۚ إِنَّ أَخْذَهُۥٓ أَلِيمٌ شَدِيدٌ ﴿١٠٢﴾

(१०२) तथा तेरे प्रभु की पकड़ का यही नियम है, जबकि वह बस्तियों में रहने वाले अत्याचारियों को पकड़ता है, नि:संदेह उस की पकड़ दुखदायी एवं अत्यन्त कड़ी है।[3]

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوعٌ لَّهُ

(१०३) नि:संदेह इस में[4] उन लोगों के लिये शिक्षाप्रद चिन्ह है, जो क़ियामत (प्रलय) की यातना से डरते हैं। वह दिन जिस में सब

---

[1]अधर्म तथा अवज्ञाकारिता करके।

[2]जबकि उनका विश्वाश यह था कि ये उन्हें हानि से बचायेंगे तथा लाभ पहुँचायेंगे। परन्तु जब अल्लाह का प्रकोप आया तो स्पष्ट हो गया कि उन का यह अंध-विश्वास था तथा यह बात सिद्ध हो गयी कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई किसी को लाभ-हानि पहुँचाने का सामर्थ्य नहीं रखता।

[3]अर्थात जिस प्रकार अल्लाह ने प्राचीन बस्तियों को ध्वस्त कर दिया, भविष्य में भी वह अत्याचारियों को इसी प्रकार पकड़ने का सामर्थ्य रखता है। हदीस में आता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

« إِنَّ اللهَ لَيُمْلِي لِلظَّالِمِ، حَتَّى إِذَا أَخَذَهُ لَمْ يُفْلِتْهُ ».

"अल्लाह तआला नि:संदेह अत्याचारियों को अवसर देता है। परन्तु जब उस की पकड़ करने पर आता है, तो फिर उसी प्रकार सहसा करता है कि फिर अवसर नहीं देता।"

फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यही आयत (मंत्र) पढ़ी (सहीह बुखारी, किताबुल तफ़सीर, सूरः-हूद, मुस्लिम किताबुल बिर्रे वस्सिल:, बाबु तहरीमिज़्ज़ुल्मे)

[4]अर्थात अल्लाह की पकड़ में अथवा उन घटनाओं में जो शिक्षा एवं उपदेश के लिये वर्णन की गयी हैं।

The Ummah Technology Mission

لَهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿١٠٣﴾

लोग एकत्रित किये जायेंगे तथा वह, वह दिन है जिस में सब उपस्थिति किये जायेंगे।[1]

وَمَا نُؤَخِّرُهٗۤ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ﴿١٠٤﴾

(१०४) तथा उसे हम जो देर करते हैं, वह केवल एक निर्धारित समय तक के लिये है।[2]

يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ﴿١٠٥﴾

(१०५) जिस दिन वह आ जायेगी किसी को साहस न होगा कि अल्लाह की अनुमति के बिना कोई बात भी कर ले,[3] तो उनमें से कोई दुर्भाग्यशाली होगा तथा कोई भाग्यशाली।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِى النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ﴿١٠٦﴾

(१०६) परन्तु जो दुर्भाग्यशाली हुए वे नरक में होंगे, वहाँ उनकी धीमी तथा ऊँची ध्वनि होगी।

---

[1]अर्थात आदि से अन्त तक के सभी लोग एकत्र होंगे। कोई शेष नहीं रहेगा।

[2]अर्थात क़ियामत (प्रलय) के दिन में देरी का कारण यह है कि अल्लाह तआला उस के लिये एक दिन निर्धारित किये हुआ है। जब वह निर्धारित समय आ जायेगा तो एक क्षण की देरी न होगी।

[3]वार्तालाप न करने से तात्पर्य, किसी को अल्लाह तआला से तर्क-वितर्क की अथवा सिफ़ारिश करने का साहस नहीं होगा। इसके अतिरिक्त कि वह अनुमति प्रदान करे। सिफ़ारिश (अभिस्तावना) की एक विस्तृत हदीस में है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

« ولاَ يَتَكَلَّمُ يَوْمَئِذٍ إِلاَّ الرُّسُلُ، وَدَعْوَى الرُّسُلِ يَوْمئذٍ؛ اللَّهُمَّ سَلِّمْ سَلِّمْ ».

"उस दिन नबियों के सिवाय किसी को वार्तालाप का साहस न होगा तथा नबियों के मुख पर उस दिन भी केवल यही होगा कि ऐ अल्लाह ! हमें बचा लें।"(सहीह बुख़ारी किताबुल ईमान, बाब फ़ज़लिस्सुजूद, तथा मुस्लिम किताबुल ईमान, बाबु मारिफ़त तरीक़िर्रूय:)

The Ummah Technology Mission

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ﴿۱۰۷﴾

(१०७) वे वहीं सदैव रहने वाले हैं, जब तक आकाश तथा धरती स्थापित रहें,[1] सिवाय उस समय के जो तुम्हारे प्रभु की इच्छा हो।[2] नि:संदेह तेरा प्रभु जो कुछ चाहे कर डालता है।

---

[1]इन शब्दों से कुछ लोगों में यह भ्रम हुआ है कि काफ़िरों के लिये नरक की यातना स्थाई नहीं है, अपितु एक समय तक है अर्थात जब तक धरती तथा आकाश का अस्तित्व रहेगा। परन्तु यह बात सही नहीं है क्योंकि यहाँ ما دامت السموات و الأرض अरब वासियों के दैनिक बोलचाल तथा मुहाविरे के अनुसार उतरा है। अरबों की यह आदत थी कि जब किसी वस्तु का स्थायित्व निर्धारित करने का उद्देश्य होता था तो कहते थे هذا دائمٌ دوام السموات و الأرض (यह वस्तु उसी प्रकार नित्य रहेगी जिस प्रकार आकाश तथा धरती नित्य है। इस वाक शैली को क़ुरआन करीम में प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ यह है कि काफ़िर तथा मूर्तिपूजक नरक में सदैव रहेंगे जिसको क़ुरआन करीम में विभिन्न स्थानों पर خالدين فيها أبداً के शब्दों में वर्णन किया गया है। एक अन्य अर्थ यह भी वर्णन किया गया है कि आकाश तथा धरती से तात्पर्य संसार के आकाश तथा धरती नहीं जो ध्वस्त हो जायेंगे, परन्तु परलोक के आकाश तथा धरती हैं जो इससे भिन्न होंगे, जैसाकि क़ुरआन करीम में इसका वर्णन है।

﴿ يَوْمَ تُبَدَّلُ ٱلْأَرْضُ غَيْرَ ٱلْأَرْضِ وَٱلسَّمَٰوَٰتُ ﴾

"उस दिन यह धरती अन्य धरती से बदल दी जायेगी तथा आकाश भी (बदल दिये जायेंगे)"(*सूरः इब्राहीम-४८*)

तथा आख़िरत (परलोक) के यह धरती तथा आकाश स्वर्ग तथा नरक की भाँति सदैव रहेंगे। इस आयत में यही आकाश तथा धरती तात्पर्य है, न कि संसार के धरती तथा आकाश, जो ध्वस्त हो जायेंगे। (इब्ने कसीर) इन दोनों भावार्थों में से कोई भी भावार्थ ले लिया जाये, आयत का भावार्थ स्पष्ट हो जाता है तथा वह भ्रम उत्पन्न नहीं होता, जो वर्णित हुआ है। इमाम शौकानी ने इसके अन्य कई भावार्थ वर्णन किये हैं, जिन्हें ज्ञान वाले देख सकते हैं (फ़तहुल क़दीर)

[2]इस अनिवर्धत के भी कई भावार्थ वर्णन किये गये हैं। उनमें सर्वाधिक सही भावार्थ यही है कि यह निबंधन उन पापियों के लिये है जो एकेश्वरवादी तथा ईमानवाले होंगे। इस आधार पर इस से पूर्व की आयत में شقيٌ का शब्द साधारणत: अर्थात काफ़िर तथा अवज्ञाकारी दोनों को सम्मिलित होंगे तथा إلا ماشاء ربك से अवज्ञाकारी ईमानवाले अलग हो जायेंगे। तथा ماشاء में مَا शब्द مَن के अर्थ में है।

The Ummah Technology Mission

وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِي الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ﴿١٠٨﴾

(१०८) तथा जो भाग्यशाली किये गये, वे स्वर्ग में होंगे जहाँ वे सदैव रहेंगे जब तक आकाश तथा धरती शेष रहे, परन्तु जो तेरा प्रभु चाहे।[1] यह असीम वरदान है।[2]

فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿١٠٩﴾

(१०९) इसलिये आप उन चीज़ों से शंका व सन्देह में न रहें, जिन्हें ये लोग पूज रहे हैं, उनकी पूजा तो इस प्रकार है, जिस प्रकार इनके पूर्वजों की इससे पूर्व थी। हम उन सब को पूरा-पूरा भाग बिना कमी के देनें वाले ही हैं।[3]

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ

(११०) नि:संदेह हमने मूसा को किताब प्रदान की। फिर उस में मतभेद किया गया।[4] यदि पहले ही आप के प्रभु की बात लागू न हो गई होती तो निश्चय ही उनका निर्णय कर दिया

---

[1] यह निबंधन भी अवज्ञाकारी ईमानवालों के लिये है। अर्थात अन्य स्वर्ग में जाने वालों की भाँति ये अवज्ञाकारी ईमानवाले भी सदैव स्वर्ग में नहीं रहे होंगे। बल्कि प्रारम्भ में कुछ समय नरक में व्यतीत करेंगे, उस के पश्चात् नबियों तथा ईमानवालों की सिफ़ारिश से नरक से निकालकर स्वर्ग में डाल दिये जायेंगे, जैसाकि सहीह हदीस से यह बातें सिद्ध हैं।

[2] غَيْرَ مَجْذُوذٍ का अर्थ है अनन्त असीम कृपा। इस वाक्य से यह स्पष्ट होता है कि जिन पापियों को नरक से निकाल कर स्वर्ग में डाला जायेगा, यह प्रवेश अस्थाई नहीं, स्थाई होगा, तथा सभी स्वर्गवासी सदैव अल्लाह की प्रदान एवम् अनुकम्पाओं का आनन्द लेते रहेंगे उस मे कोई टूट न होगी।

[3] इससे तात्पर्य वह प्रकोप है जिसके वे अधिकारी होंगे, इसमें कोई कमी नहीं की जायेगी।

[4] अर्थात किसी ने इस किताब को माना किसी ने नहीं माना। यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी जा रही है कि पूर्व के नबियों के साथ भी यही व्यवहार होता आया है, कुछ लोग उन पर ईमान लाने वाले होते तथा कुछ अन्य झुठलाने वाले होते। इसलिये आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने इस झुठलाये जाने की चिन्ता न करें।

The Ummah Technology Mission

وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿١١٠﴾

जाता,[1] उन्हें तो इस में शंका लग रही है (ये तो दुविधा में हैं)।

وَإِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ أَعْمَالَهُمْ ۚ إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١١﴾

(१११) तथा वस्तुतः उन में से प्रत्येक को (जब उनके समक्ष जायेगा तो) आप का प्रभु उसे उसके कर्मों का पूरा प्रतिकार प्रदान करेगा। निश्चय वे जो कुछ कर रहे हैं उनसे वे अवगत हैं।

فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَن تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۚ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٢﴾

(११२) बस आप अडिग रहिये जैसाकि आपको आदेश दिया गया है तथा वे लोग भी जो आप के साथ तौबा (क्षमा-याचना) कर चुके हैं। सावधान ! तुम सीमा से न बढ़ना,[2] अल्लाह तुम्हारे सारे कर्मों को देख रहा है।

وَلَا تَرْكَنُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ

(११३) तथा देखो अत्याचारियों की ओर कदापि न झुकना वरन् तुम्हें भी अग्नि की लौ लग जायेगी[3] तथा अल्लाह के अतिरिक्त

---

[1]इससे तात्पर्य यह है कि यदि अल्लाह तआला ने पूर्व से ही उन के लिये यातना का दिन निर्धारित न कर लिया होता, तो वह उन्हें तुरन्त नाश कर डालता।

[2]इस आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा ईमानवालों को एक तो दृढ़ रहने की शिक्षा दी जा रही है, जो शत्रु का सामना करने के लिये एक बहुत बड़ा हथियार है। अन्य طغيانٌ अर्थात بَغيٌ (सीमा उल्लघंन) से रोका गया है, जो ईमानवालों के लिये नैतिक शक्ति तथा उत्तम कर्म के लिये अति आवश्यक है। यहाँ तक कि यह उल्लंघन शत्रु के साथ मामला करते समय भी उचित नहीं है।

[3]इसका अर्थ यह है कि अत्याचारियों के साथ कोमलता तथा प्रशंसा करके उनसे सहायता न लो। इससे उनको यह आभास होगा कि जैसे तुम उनकी अन्य बातों को भी प्रिय समझते हो। इस प्रकार यह तुम्हारा एक बड़ा अपराध बन जायेगा, जो तुम्हें भी उनके साथ नरक की अग्नि का अधिकारी बना सकता है। इससे अत्याचारी राज्य अधिकारियों के साथ सम्बन्ध बनाने को भी निषेध करने का अर्थ निकलता है। किन्तु जो कि जनहित

The Ummah Technology Mission

اللّٰهِ مِنۡ اَوۡلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنۡصَرُوۡنَ ﴿۱۱۳﴾

अन्य तुम्हारी सहायता करने वाला न खड़ा हो सकेगा तथा न तुम्हें सहायता दी जायेगी।

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَىِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيۡلِ ؕ اِنَّ الۡحَسَنٰتِ يُذۡهِبۡنَ السَّيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكۡرٰى لِلذّٰكِرِيۡنَ ۚ﴿۱۱۴﴾

(११४) तथा दिन के दोनों किनारों में नमाज़ स्थापित रख तथा रात्रि की कई घड़ियों में भी, [1] नि:संदेह पुण्य बुराईयों को दूर कर देते हैं। [2] यह शिक्षा है शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिये।

में हो अथवा धार्मिक लाभ प्राप्ति के लिए हो। ऐसी अवस्था में दिल से घृणा रखते हुए उन से सम्बन्ध रखने की आज्ञा होगी। जैसा कि कुछ हदीसों से स्पष्ट है।

[1]'दोनों किनारों' से तात्पर्य कुछ ने भोर तथा मग़रिब (सूर्यास्त), कुछ ने मात्र इशा (रात्रि) तथा कुछ ने मग़रिब (सूर्यास्त) तथा इशा दोनों का समय लिया है। इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि संभव है कि यह आयत मेराज से पूर्व उतरी हो, जिस में पाँच नमाज़ें अनिवार्य की गयीं। क्योंकि इससे पूर्व केवल दो ही नमाज़ें अनिवार्य थीं एक सूर्योदय से पूर्व तथा एक सूर्यास्त से पूर्व तथा रात्रि के पिछले भाग में तहज्जुद की नमाज़। फिर तहज्जुद की नमाज़ साधारण मुसलमानों से क्षमा कर दी गई। फिर उस तहज्जुद नमाज़ की अनिवार्यता कुछ के कथन अनुसार आप से भी समाप्त कर दी गई। (इब्ने कसीर)

[2]जिस प्रकार की हदीसों में भी इसका विस्तार से वर्णन किया गया है। जैसे "पाँच नमाज़ें, जुमअ: (शुक्रवार) से जुमअ: (शुक्रवार) तक तथा रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक, इनके मध्य होने वाले पापों को दूर कर देने वाले हैं, यदि महापाप से बचा जाये" (सहीह मुस्लिम किताबुल तहारः.....) एक अन्य हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

"बताओ ! यदि तुम में किसी के द्वार के सामने एक बड़ी नहर बहती हो, वह प्रत्येक दिन उस में पाँच बार स्नान करता हो, क्या उसके शरीर पर उस के पश्चात् मैल-कुचैल शेष रह जायेगी।" सहाबा (आपके सहचरों) ने उत्तर दिया, "नहीं" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

इसी प्रकार पाँच नमाज़ें हैं, उनके द्वारा अल्लाह तआला पापों तथा त्रुटियों को मिटा देता है। (सहीह बुख़ारी किताबुल मवाकीत, बाबुस्सलवातिल ख़मसे कफ्फ़ारतुन (तथा) मुस्लिम किताबुल मसाजिद बाबुल मशये इलस्सलाते तुमहा बिहिल ख़ताया व तुरफ़अ बिहिद दरजात)

The Ummah Technology Mission

وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٥﴾

(११५) तथा आप धैर्य रखिये नि:संदेह अल्लाह (तआला) सदाचारियों का फल नष्ट नहीं करता।

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِن قَبْلِكُمْ أُولُو بَقِيَّةٍ يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّنْ أَنجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أُتْرِفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿١١٦﴾

(११६) तो क्यों न तुम से पहले के युग के लोगों में से ऐसे परोपकारी लोग हुए जो धरती में उपद्रव फैलाने से रोकते, अतिरिक्त उन कुछ के जिन्हें हमने उनमें से मुक्ति प्रदान की थी।[1] अत्याचारी लोग तो उस वस्तु के पीछे पड़ गये, जिस में उन्हें सम्पन्नता दी गई थी और वे पापी थे।[2]

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا مُصْلِحُونَ ﴿١١٧﴾

(११७) आपका प्रभु ऐसा नहीं कि किसी बस्ती को अत्याचार से ध्वस्त कर दे जबकि वहाँ के लोग सदाचारी हों।

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَا يَزَالُونَ مُخْتَلِفِينَ ﴿١١٨﴾

(११८) यदि आप का प्रभु चाहता तो सब लोगों को एक मार्ग पर एक समुदाय कर देता। वे तो सदैव विरोध करने वाले ही रहेंगे।

إِلَّا مَن رَّحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذَٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۗ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ

(११९) सिवाय उनके जिन पर आपका पालनहार दया करे, उन्हें तो इसीलिये पैदा किया है,[3] तथा

---

[1]अर्थात पूर्व के समुदायों में ऐसे भले लोग क्यों न हुए जो उपद्रवियों तथा दुराचारियों को उपद्रव तथा दुराचार से रोकते ? फिर कहा कि ऐसे लोग हुए तो सही, परन्तु बहुत थोड़े। जिन्हें हमने उस समय छोड़ दिया, जब अन्यों को प्रकोप के द्वारा ध्वस्त कर दिया।

[2]अर्थात ये अत्याचारी अपने अत्याचार पर अडिग रहे तथा अपने गर्व में मस्त रहे। यहाँ तक कि उन को प्रकोप ने आकर धर लिया।

[3]'इसीलिये' का अर्थ कुछ विद्वानों ने मतभेद तथा कुछ ने कृपा लिया है। दोनों परिस्थितियों में भावार्थ यह होगा कि हमने मनुष्य को परीक्षा के लिये पैदा किया है। जो सत्य धर्म से मतभेद का मार्ग अपनायेगा, वह परीक्षा में असफल तथा जो उसको अपना लेगा, वह सफल तथा अल्लाह की कृपा का अधिकारी होगा।

The Ummah Technology Mission

جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١١٩﴾

आपके प्रभु की यह बात पूरी है कि मैं नरक को जिन्नों तथा इन्सानों सब से भर दूँगा।[1]

وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَاءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهِ فُؤَادَكَ ۚ وَجَاءَكَ فِي هَٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٢٠﴾

(१२०) तथा रसूलों की सब स्थितियाँ हम आप के समक्ष आप के दिल के सन्तोष के लिए वर्णन कर रहे हैं। आप के पास इस सूरः (अंश) में भी सत्य पहुँच चुका, जो शिक्षा तथा उपदेश है, ईमान वालों के लिए।

وَقُل لِّلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنَّا عَامِلُونَ ﴿١٢١﴾

(१२१) तथा ईमान न लाने वालों से कह दीजिये कि तुम लोग अपने स्तर से कर्म किये जाओ, हम भी कर्मों में लीन हैं।

وَانتَظِرُوا إِنَّا مُنتَظِرُونَ ﴿١٢٢﴾

(१२२) तथा तुम भी प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।[2]

---

[1]अर्थात अल्लाह के बनाये भाग्य तथा निर्णय में यह बात स्थित है कि कुछ लोग स्वर्ग तथा कुछ नरक के अधिकारी होंगे तथा स्वर्ग एवं नरक को जिन्नों और इन्सानों से भर दिया जायेगा, जैसाकि हदीस (रसूल के कथन) में है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

"स्वर्ग तथा नरक ने परस्पर विवाद किया, स्वर्ग ने कहा कि क्या कारण है कि मुझ में निर्बल तथा समाज के नीच, पतित लोग होंगे, नरक ने कहा कि मुझ में बड़े-बड़े अत्याचारी तथा अहंकारी लोग होंगे। अल्लाह ने स्वर्ग से कहा कि तू मेरी दया की सूचक है तेरे द्वारा मैं जिस पर चाहूँ अपनी दया करूँ, तथा नरक से अल्लाह ने फ़रमाया तू मेरी यातना की द्योतक है तेरे द्वारा मैं जिस को चाहूँ यातना दूँ। अल्लाह स्वर्ग तथा नरक दोनों को भर देगा, स्वर्ग में नित्य उस की दया होगी यहाँ तक कि वह ऐसी सृष्टि उत्पन्न करेगा जो स्वर्ग के शेष क्षेत्र में निवास करेगी तथा नरक नरकवासियों की अधिकता के उपरान्त भी هلْ مِنْ مزيدٍ (क्या और भी हैं) पुकारती रहेगी, यहाँ तक कि अल्लाह उसमें अपने पग रख देगा, जिस पर नरक पुकारेगी «قَطْ قَطْ، وَعِزَّتِكَ!» वस, बस तेरी मर्यादा तथा प्रताप की शपथ (सहीह बुख़ारी किताबुत तौहीद, बाबो माजाअ फ़ी कौलिहि तआला إن رحمة الله قريب من المحسنين तथा तफ़सीर सूरः क़ाफ़-मुस्लिम किताबुल जन्नते, बाबुन्नार यदख़ुलुहल जब्बारून वल्जन्नते यदख़ुलुह ज्जोअफ़ा)।

[2]अर्थात शीघ्र ही तुम्हें पता चल जायेगा कि सफलता किस के भाग्य में आती है तथा यह भी ज्ञात हो जायेगा कि अत्याचारी लोग सफल नहीं होंगे। अतः यह वचन शीघ्र ही पूर्ण

The Ummah Technology Mission

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۳﴾

(१२३) तथा आकाशों एवं धरती का परोक्ष ज्ञान अल्लाह (तआला) को ही है, तथा सारे कार्यों की प्रत्यागता भी उसी की ओर है। अत: तुझे उसी की इबादत करनी चाहिए तथा उसी पर भरोसा रखना चाहिये एवं तुम जो कुछ करते हो उससे अल्लाह (तआला) अनजान नहीं।

सूरतु यूसुफ़-१२

سُوْرَةُ يُوْسُفَ

सूर: यूसुफ़ मक्का में अवतरित हुई तथा इस की एक सौ ग्यारह आयतें एवं बारह रुकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है।

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿۱﴾

(१) अलिफ़॰ लाम॰ रा॰, यह दिव्य प्रकाश वाली पुस्तक की आयतें हैं।

اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۲﴾

(२) नि:संदेह हम ने इसे अरबी क़ुरआन उतारा है कि तुम समझ सको।[1]

हुआ तथा अल्लाह तआला ने मुसलमानों को विजयी किया तथा सम्पूर्ण अरब महाद्वीप इस्लाम के अधीनस्थ हो गया।

[1]आकाशीय किताबों को उतारने का उद्देश्य लोगों को मार्गदर्शन एवं निर्देशन देना है तथा यह लक्ष्य तभी प्राप्त हो सकता है, जब वह किताब उस भाषा में हो जिस को वे समझ सके, इसलिये सभी आकाशीय किताबें उस समुदाय की अपनी भाषा में उतारी गयीं, जिस समुदाय के मार्गदर्शन के लिये वह उतारी गई थीं। क़ुरआन करीम के प्रथम सम्बोधित लोग अरबवासी थे, इसलिये क़ुरआन भी अरबी भाषा में उतारा गया। इस के अतिरिक्त अरबी भाषा अपनी व्याख्या, प्रभाव तथा शब्दार्थों के वर्णन के आधार पर संसार की अन्य भाषाओं से श्रेष्ठ भाषा है। इसीलिये अल्लाह तआला ने इस श्रेष्ठ किताब (क़ुरआन मजीद) को श्रेष्ठ भाषा (अरबी) में श्रेष्ठ रसूल (परम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर श्रेष्ठ फ़रिश्ते (जिब्रील) के द्वारा अवतरित किया तथा मक्का नगर जहाँ इस का आरम्भ हुआ, संसार के श्रेष्ठतम नगरों में श्रेष्ठ नगर है तथा जिस महीनें में इस का अवतरण शुभारम्भ हुआ, वह भी श्रेष्ठ महीना रमज़ान का है।

The Ummah Technology Mission

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ هَٰذَا الْقُرْآنَ وَإِن كُنتَ مِن قَبْلِهِ لَمِنَ الْغَافِلِينَ ﴿٣﴾

(३) हम आपके समक्ष सर्वश्रेष्ठ वर्णन[1] प्रस्तुत करते हैं, इस कारण कि हमने आपकी ओर यह क़ुरआन वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा उतारा है तथा निश्चय इससे पूर्व आप अनजानों में से थे।[2]

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ

(४) जबकि यूसुफ़[3] ने अपने पिता से बताया कि पिताजी मैंने ग्यारह सितारों को तथा सूर्य-

---

[1] قَصَصٌ यह धातु है। अर्थ है किसी वस्तु का अनुगमण, अभिप्राय एक रमणीय घटना है। قِصَّة मात्र कहानी अथवा कल्पित कथा को नहीं कहा जाता है, बल्कि पूर्व में व्यतीत घटना के वर्णन को (अर्थात उस के पीछे लगने को) किस्सा कहा जाता है। यह विगत समाचारों का सत्य तथा वास्तविक वर्णन है तथा उस घटना में ईर्ष्या-द्वेष का परिणाम, अल्लाह की सहायता का चमत्कार, अहंवाद की चंचलता तथा दुराचार का परिणाम तथा अन्य मानवी स्थितियों एवं घटनाओं का मनोरम वर्णन तथा बड़े शिक्षाप्रद पक्ष हैं, इसलिये क़ुरआन ने इसे श्रेष्ठतम सर्वोत्तम कथा कहा है।

[2] क़ुरआन करीम के इन शब्दों से भी स्पष्ट होता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को परोक्ष का ज्ञान नहीं था, वरन् अल्लाह तआला आपको अनजान न कहता। दूसरी बात यह विदित हुई कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के सच्चे नबी हैं क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वह्यी (प्रकाशना) द्वारा ही इस सत्यकथा का वर्णन किया गया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न किसी के शिष्य थे, कि किसी गुरू से सीख कर वर्णन कर देते, तथा न किसी अन्य से ही ऐसा सम्बन्ध था कि जिस से सुनकर इतिहास की यह घटना उसके विशेष खण्डों के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रसारित कर देते। यह निःसंदेह अल्लाह तआला ही ने वह्यी (प्रकाशना) द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारा है, जैसाकि इस स्थान पर स्पष्ट किया गया है।

[3] अर्थात हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने समुदाय के समक्ष यूसुफ़ की कथा का वर्णन करो, जब उसने अपने पिता से कहा। पिता आदरणीय याकूब थे, जैसाकि अन्य स्थान पर वर्णन है तथा हदीस में भी इस वंशावली को उल्लेख किया गया है, अलकरीम इब्नुल करीम इब्नुल करीम इब्नुल करीम यूसुफ़ बिन (पुत्र) याक़ूब बिन (पुत्र) इसहाक़ बिन इब्राहीम (मुसनद अहमद भाग २, पृष्ठ ९६)

The Ummah Technology Mission

وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ۝٤

चन्द्रमा को[1] देखा कि वे सभी मुझे दण्डवत् कर रहे हैं।

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝٥

(५) (याक़ूब अलैहिस्सलाम ने) कहा कि हे मेरे प्यारे पुत्र ! अपने इस स्वप्न की चर्चा अपने भाईयों से न करना। ऐसा न हो कि वे तेरे साथ कोई छल करें,[2] शैतान तो मनुष्य का खुला शत्रु है।[3]

وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ

(६) तथा इसी प्रकार[4] तेरा प्रभु तुझे निर्वाचित करेगा तथा तुझे मामला बात समझने (अर्थात स्वप्न-फल बताने) की भी शिक्षा देगा तथा

---

[1]कुछ व्याख्याकारों ने कहा है कि यह ग्यारह सितारों से तात्पर्य आदरणीय यूसुफ़ के भाई हैं जो ग्यारह ही थे तथा चन्द्रमा तथा सूर्य से तात्पर्य माता-पिता हैं तथा स्वप्न-फल चालीस वर्ष पश्चात् उस समय सामने आया जब ये सभी भाई अपने माता-पिता के साथ मिस्र गये तथा वहाँ आदरणीय यूसुफ़ के समक्ष झुक गये। जैसाकि इसका विवरण सूरः के अन्त में आयेगा।

[2]आदरणीय याक़ूब ने स्वप्न से यह अनुमान लगा लिया कि उन का यह पुत्र मर्यादित पुरूष होगा, इसलिये उन्हें भय हुआ कि उस की इस प्रतिष्ठा का अनुमान लगाकर उस के अन्य भाई उसे कोई हानि न पहुँचाये, इस कारण उन्होंने इस स्वप्न की चर्चा करने से रोक दिया।

[3]यह भाईयों के छल-कपट के कारण की चर्चा कर दी कि शैतान मनुष्य का आदि से ही शत्रु है। इसलिये वह मनुष्यों को भटकाने, बहकाने तथा उन्हें ईर्ष्या तथा द्वेष में लीन रहने के लिये हर समय प्रेरित करता रहता है तथा घात में रहता है। अतः यह शैतान के लिये सुअवसर था कि आदरणीय यूसुफ़ के विरूद्ध भाईयों के दिलों में द्वेष तथा ईर्ष्या की अग्नि भड़का दे। जैसाकि वास्तव में उस ने बाद में ऐसा ही किया तथा आदरणीय याक़ूब का अनुमान सत्य सिद्ध हुआ।

[4]अर्थात जिस प्रकार तेरे प्रभु ने सर्वश्रेष्ठ स्वप्न दिखाने के लिये चुन लिया, उसी प्रकार तेरा प्रभु तुझे सम्मान भी प्रदान करेगा तथा स्वप्नों के फल सिखायेगा। تأويل الأحاديث का मूल अर्थ बातों की तह तक पहुँचना है। यहाँ इस से तात्पर्य स्वप्न-फल है।

The Ummah Technology Mission

وَعَلٰٓ اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓ اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۶

अपनी अनुकम्पा तुझे पूर्णरूप से प्रदान करेगा,[1] तथा याक़ूब के परिवार को भी[2] जैसाकि उस ने इससे पूर्व तेरे दो पूर्वजों अर्थात इब्राहीम तथा इसहाक़ को भी भरपूर कृपा प्रदान की, नि:संदेह तेरा प्रभु बड़े ज्ञान वाला तथा अत्यधिक विवेक वाला है।

لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ ۷

(७) नि:संदेह यूसुफ़ तथा उस के भाईयों में प्रश्न करने वालों के लिये बड़ी निशानियाँ हैं।[3]

اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ ۸

(८) जबकि उन्होंने कहा कि यूसुफ़ तथा उसका भाई[4] हमारे पिता को हमसे अत्यधिक प्रिय हैं यद्यपि हम लोग शक्तिशाली पक्ष हैं,[5] कोई सन्देह नहीं कि हमारे पिता स्पष्ट ग़लती पर हैं।[6]

---

[1]इससे तात्पर्य नबूअत है, जो आदरणीय यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को प्रदान की गयी, अथवा वे पुरस्कार हैं जिन के मिश्र में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अधिकारी बने।

[2]इस से तात्पर्य आदरणीय यूसुफ़ के भाई, उन की संतान आदि हैं, जो बाद में अल्लाह के पुरस्कार के अधिकारी बने।

[3]अर्थात इस घटना में अल्लाह तआला के विशाल सामर्थ्य तथा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूअत की सच्चाई की बड़ी निशानियाँ हैं। कुछ व्याख्याकारों ने यहाँ उन भाईयों के नाम तथा विवरण भी बताये हैं।

[4]"उस का भाई" से तात्पर्य बिनयामीन है।

[5]अर्थात हम दस भाई शक्तिशाली पक्ष तथा बहुसंख्यक हैं, जबकि यूसुफ़ तथा बिनयामीन (जिन की माता अथवा मातायें अलग थीं) केवल दो हैं, इस के पश्चात् भी पिता की आँखों के तारे एवं हृदय की शान्ति हैं।

[6]यहाँ ضَلَال से तात्पर्य वह त्रुटि है, जो उनके विचार में पिता का यूसुफ़ तथा बिनयामीन से अत्यधिक प्रेम था।

The Ummah Technology Mission

اقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ۝٩

(९) यूसुफ़ की हत्या कर दो अथवा उसे (अज्ञात) स्थान पर पहुँचा दो, ताकि तुम्हारे पिता का ध्यान तुम्हारी ओर ही हो जाये। उसके पश्चात् तुम भले हो जाना।[1]

قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝١٠

(१०) उन में से एक ने कहा कि यूसुफ़ की हत्या तो न करो, अपितु किसी अज्ञात कुऐं की तली में डाल आओ[2] कि उसे कोई यात्रियों का गिरोह उठा ले जाये, यदि तुम्हें करना ही है तो इस प्रकार करो।[3]

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ وَاِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ۝١١

(११) (उन्होंने) कहा कि हे पिता! अन्ततः आप यूसुफ़ के विषय में हम पर विश्वास क्यों नहीं करते, हम तो उस के शुभचिन्तक हैं।[4]

---

[1] इस से तात्पर्य क्षमा-याचना है अर्थात कुऐं में डालकर अथवा हत्या करके अल्लाह से उस पाप की क्षमा माँग लेंगे।

[2] جُبٌّ कुऐं को तथा غَيَابَةٌ उसकी तली तथा गहराई को कहते हैं। कुआँ वैसे भी गहरा ही होता है तथा उसमें गिरी हुई वस्तु किसी को दिखायी नहीं देती। जब उस के साथ कुऐं की गहराई का भी वर्णन किया तो जैसेकि अतिश्योक्ति का प्रदर्शन किया।

[3] अर्थात आने-जाने वाले नवागन्तुक यात्री, जब पानी की खोज में कुऐं के निकट आयेंगे तो सम्भव है कि किसी के ज्ञान में आ जाये कि कुऐं में कोई मनुष्य गिरा हुआ है तथा वह उसे निकालकर अपने साथ ले जायें। यह विचार एक भाई ने प्रेम भावना से प्रस्तुत किया। हत्या की तुलना में यह प्रस्ताव वास्तव में प्रेम भावना ही का पक्ष है। भाईयों की ईर्ष्या तथा द्वेष की अग्नि इतनी भड़की हुई थी कि उस ने यह प्रस्ताव डरते-डरते प्रस्तुत किया कि यदि तुम्हें कुछ करना ही है, तो यह कार्य इस प्रकार कर लो।

[4] इस से ज्ञात होता है कि इससे पूर्व भी यूसुफ़ के भाईयों ने यूसुफ़ को ले जाने का प्रयत्न किया होगा तथा पिता ने अस्वीकार कर दिया होगा।

The Ummah Technology Mission

اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَ
اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿١٢﴾

(१२) कल आप उसे अवश्य हम लोगों के साथ भेज दीजिये कि खूब खाये-पिये तथा खेले [1] उसकी सुरक्षा के हम उत्तरदायी हैं।

قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْٓ اَنْ تَذْهَبُوْا
بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ
وَاَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ﴿١٣﴾

(१३) (याक़ूब ने) कहा कि उसे तुम्हारा ले जाना मेरे लिये अति दुखद होगा, मुझे यह भी भय लगा रहेगा कि तुम्हारी असावधानी में उसे भेड़िया खा जाये।

قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ
عُصْبَةٌ اِنَّآ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿١٤﴾

(१४) उन्होंने उत्तर दिया कि हम जैसे बड़े शक्तिशाली गिरोह की उपस्थिति में भी यदि उसे भेड़िया खा जाये तो हम बिल्कुल विवश हुए।[2]

فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْٓا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ
فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ
لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ
لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٥﴾

(१५) फिर जब उसे ले चले तथा सभी ने मिल कर ठान लिया कि उसे सुनसान गहरे कुऐं की तह में फेंक दें, हमने यूसुफ़ की ओर वह्यी (प्रकाशना) की कि निःसंदेह (समय आ रहा है) कि तू उन्हें इस बात की सूचना उस अवस्था में देगा कि वे जानते ही न हों।[3]

---

[1]खेल-कूद की ओर आकर्षण, मनुष्य की प्रकृति में सम्मिलित है। इसीलिये उचित खेल-कूद पर अल्लाह तआला ने किसी युग में भी प्रतिबन्ध नहीं लगाया। इस्लाम में भी इन की आज्ञा है परन्तु प्रतिबन्धित। अर्थात ऐसे खेल-कूद की आज्ञा है, जो उचित हैं जिन में धार्मिक नियमों द्वारा निषेध न हों अथवा निषेधित तक पहुँचने का साधन न बनें। अतः आदरणीय याक़ूब ने भी खेल-कूद की सीमा तक मना नहीं किया। परन्तु यह शंका व्यक्त की कि तुम लोग खेल-कूद में लीन हो जाओ तथा उसे भेड़िया खा जाये। क्योंकि खुले मैदान तथा रेगिस्तानों में वहाँ भेड़िये सामान्य रूप से पाये जाते थे।

[2]यह पिता को विश्वास दिलाया जा रहा है कि यह किस प्रकार हो सकता है कि हम इतने भाईयों की उपस्थिति में भेड़िया यूसुफ़ को खा जाये।

[3]क़ुरआन करीम अति संक्षेप में घटना का वर्णन कर रहा है। अर्थ यह है कि जब अपने पूर्व योजना के अनुसार उन्होंने यूसुफ़ को कुऐं में फेंक दिया, तो अल्लाह तआला ने

The Ummah Technology Mission

وَجَآءُوْۤ اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ﴿۱۶﴾

(१६) तथा रात्रि (एशा) के समय (वे सब) अपने पिता के पास रोते हुए पहुँचे।

قَالُوْا يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَاۤ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ﴿۱۷﴾

(१७) तथा कहने लगे कि प्रिय पिताजी ! हम आपस में दौड़ में लग गये तथा यूसुफ़ को सामान के पास छोड़ दिया तो भेड़िया उसे खा गया, आप तो हमारी बात पर विश्वास करने वाले नहीं चाहे हम पूरे सच्चे ही हों।[1]

وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ ؕ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ

(१८) तथा यूसुफ़ के कुर्ते को झूठे रक्त से भिगा कर लाये थे। (पिता ने) कहा, (इस प्रकार नहीं) बल्कि तुम ने अपने मन से ही एक बात बना ली है। अब धैर्य ही श्रेष्ठ है,[2] तथा

आदरणीय यूसुफ़ को सांत्वना दी तथा साहस रखने के लिये वह्यी (प्रकाशना) की कि चिन्ता की आवश्यकता नहीं है, हम तेरी सुरक्षा ही नहीं करेंगे अपितु ऐसे उच्च स्थान पर तुझे आसीन करेंगे कि ये भाई भीख का प्याला तेरे समक्ष ले कर आयेंगे तथा फिर तू उन्हें बता देगा कि तुम ने अपने एक भाई के साथ इस प्रकार निष्ठुरता की थी जिसे सुन कर वह चकित तथा लज्जित होंगे। आदरणीय यूसुफ़ यद्यपि उस समय बालक थे, परन्तु जो बालक नबूअत से विभूषित होने वाले होते हैं, उन पर बचपन में ही वह्यी (प्रकाशना) आ जाती है, जैसे आदरणीय ईसा तथा यह्या आदि पर आयी।

[1]अर्थात यदि हम आप के लिये विश्वस्त तथा सत्यवादी होते तब भी आप यूसुफ़ के मामले में हमारी बात न मानते, अब तो वैसे ही हमारी स्थिति संदिग्ध व्यक्ति जैसी है, अब आप किस प्रकार हमारी बात मानेंगे।

[2]कहते हैं कि एक बकरी का बच्चा काट कर उस के रक्त से यूसुफ़ की कमीज़ भिगा ली तथा यह भूल गये कि यदि भेड़िया यूसुफ़ को खाता तो कमीज़ भी फाड़ता, कमीज़ फटी ही नहीं थी, जिस को देखकर और साथ ही आदरणीय यूसुफ़ के स्वप्न तथा नबूअत की शक्ति से अनुमान लगा कर आदरणीय याक़ूब ने कहा कि यह घटना इस प्रकार घटित नहीं हुई है, जैसे तुम वर्णन कर रहे हो, अपितु यह तुम्हारी मनगढ़त है। फिर भी जो होना था हो चुका था, आदरणीय याक़ूब उस के विवरण से अनजान थे, इसलिये केवल धैर्य के सिवाय कोई चारा न था तथा अल्लाह की सहायता के अतिरिक्त कोई सहारा न था।

The Ummah Technology Mission

عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾

तुम्हारी बनायी हुई बातों पर अल्लाह ही से सहायता की प्रार्थना है।[1]

وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ؕ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ؕ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾

(१९) तथा एक यात्री का गिरोह आया तथा उन्होंने अपने पानी लाने वाले को भेजा, उस ने अपना डोल लटका दिया। कहने लगा वाह-वाह ! प्रसन्नता की बात है, यह तो एक बालक है।[2] उन्होंने उसे व्यापार का धन समझकर छिपा दिया[3] तथा अल्लाह (तआला)

---

[1] द्वयवादियों ने आदरणीय आयेशा पर जब आक्षेप लगाया तो उन्होंने भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रश्न तथा कथन का यही उत्तर दिया था।

«وَاللهِ لاَ أَجِدُ لِي وَلاَ لَكُمْ مَثَلًا إِلاَّ أَبَا يُوسُفَ، ﴿فَصَبْرٌ جَمِيلٌ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ﴾».

"अल्लाह की सौगन्ध मैं स्वयं तथा आप लोगों के लिये वही उदाहरण पाती हूँ जिससे यूसुफ़ के पिता याक़ूब को दो चार होना पड़ा था तथा उन्होंने فَصَبْرٌ ، جَمِيلٌ (धैर्य रखना अत्योत्तम है) कह कर धैर्य तथा सहनशीलता का मार्ग अपनाया था।"(सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः यूसुफ़)

अर्थात मेरे लिये भी धैर्य एवं सहनशीलता के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं।

[2] وارد (वारिद) उस व्यक्ति को कहते हैं जो यात्रियों के गिरोह के लिये पानी आदि का प्रबन्ध करने के उद्देश्य से आगे-आगे चलता है ताकि उचित स्थान देखकर यात्रियों को ठहराया जा सके। यह वारिद (यात्रियों के लिये पानी का प्रबन्ध करने वाला) जब कुएं पर आया तथा अपना डोल नीचे लटकाया तो आदरणीय यूसुफ़ ने उस की डोरी पकड़ ली। वारिद (जल-प्रबन्धक) ने एक सुन्दर बच्चे को देखा तो ऊपर खीच लिया तथा अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

[3] بضاعة व्यापार के सामान को कहते हैं اَسَرُّوْهُ का कर्ता कौन है ? अर्थात आदरणीय यूसुफ़ को व्यापार सामग्री समझकर छिपा लेने वाला कौन है ? इसमें मतभेद है। हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने यूसुफ़ के भाईयों को कर्ता बताया है। इसका अर्थ यह है कि जब डोल के साथ यूसुफ़ भी कुएं से बाहर निकले तो वहाँ यह भाई उपस्थिति थे, फिर भी उन्होंने वास्तविकता को छिपाये रखा, यह नहीं कहा कि यह हमारा भाई है तथा आदरणीय यूसुफ़ ने भी हत्या के डर से अपना भाई होना व्यक्त नहीं किया, बल्कि भाईयों ने उन्हें बिकाऊ

The Ummah Technology Mission

उससे सूचित था जो वे कर रहे थे।[1]

(२०) तथा उन्होंने[2] उसे बहुत ही कम मूल्य गिनती के कुछ दिरहमों पर बेच डाला, वे तो यूसुफ़ के विषय में अत्यधिक रूचिहीन थे।[3]

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۭ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ ۚ وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ ﴿٢٠﴾

कहा तो वे चुप रहे और अपना बिकना पसंद किया। अत: इस जल-प्रबंधक ने अपनी यात्रा के साथियों को यह शुभसूचना सुनाई कि एक बालक बिक रहा है। परन्तु यह बात घटनाक्रम से मेल नहीं खाती है। इन के विपरीत इमाम शौकानी ने أَسَرُّوهُ का कर्ता जल-प्रबंधक तथा उस की यात्रा के साथियों को कहा है क्योंकि उन्होंने यह प्रकट नहीं किया कि यह बालक कुऐं से निकला है, क्योंकि सभी यात्रियों का भाग 'व्यापारिक सामग्री' में हो जाता, बल्कि यात्रियों को उन्होंने जाकर यह बताया कि कुऐं के मालिकों ने यह बच्चा उनको सौंप दिया है ताकि इसे वे मिस्र जाकर बेच दें। परन्तु समीपवर्ती बात यह है कि यात्रियों ने बच्चे को 'व्यापार सामग्री' बनाकर छिपा लिया कि कहीं उसके निकट-सम्बंधी उसकी खोज में न आ जायें तथा इस प्रकार लेने के देने पड़ जायें, क्योंकि बच्चा होना तथा कुऐं में पाया जाना, इस बात का संकेत है कि वह किसी निकटवर्ती क्षेत्र का रहने वाला है तथा खेलते-कूदते आ गिरा है।

[1]अर्थात यूसुफ़ के साथ यह जो कुछ हो रहा था, अल्लाह तआला को उस का ज्ञान था। परन्तु अल्लाह तआला ने यह सब कुछ इसलिये होने दिया ताकि भाग्य का लिखा पूरा हो। इसके अतिरिक्त इस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये संकेत है अर्थात अल्लाह अपने पैग़म्बर को बता रहा है कि आप के समुदाय के लोग अवश्य दुख दे रहे हैं तथा मैं उस से रोकने का सामर्थ्य भी रखता हूँ। परन्तु मैं उसी प्रकार उन्हें अवसर दे रहा हूँ जिस प्रकार यूसुफ़ के भाईयों को अवसर दिया था। तथा अन्त में मैंने यूसुफ़ को मिस्र के राजसिंहासन पर आसीन करा दिया, तथा उस के भाईयों को उस के दरबार में तुच्छ तथा निस्सहाय करके खड़ा कर दिया। हे पैग़म्बर ! एक समय आयेगा कि आप भी सफल होंगे तथा ये कुरैश के सरदार आप की आँखों के संकेत तथा होठों के हिलने की प्रतीक्षा में रहेंगे। अत: मक्का विजय के अवसर पर यह समय शीघ्र ही आ गया।

[2]भाईयों ने अथवा दूसरी व्याख्या के अनुसार व्यापारिक यात्रा के यात्रियों ने बेचा।

[3]क्योंकि गिरी पड़ी वस्तु मनुष्य को बिना किसी परिश्रम के मिल जाती है, इसलिये वह चाहे कितनी भी बहुमूल्य हो, उस का सही मूल्य तथा आदर-सम्मान मनुष्य पर प्रकट नहीं होता।

The Ummah Technology Mission

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِن مِّصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي مَثْوَاهُ عَسَىٰ أَن يَنفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا ۚ وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢١﴾

(२१) मिस्रवासियों में से जिस ने उसे ख़रीदा था उस ने अपनी पत्नी[1] से कहा कि इसे आदर तथा सम्मान के साथ रखो, बहुत संभव है कि यह हमें लाभ पहुँचाये अथवा हम इसे अपना पुत्र ही बना लें, इस प्रकार हमने (मिस्र की) धरती पर यूसुफ़ के पाँव जमाये।[2] कि हम उसे स्वप्न के फलों कुछ का ज्ञान सीखा दें। अल्लाह अपनी इच्छाओं की पूर्ति में सामर्थ्य रखता है, परन्तु अधिकतर लोग अनजान होते हैं।

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा जब (यूसुफ़) पूर्ण यौवन को पहुँच गये, हमने उसे निर्णय की शक्ति तथा ज्ञान दे दिया।[3] हम भलाई करने वालों को इसी प्रकार बदला देते हैं।

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَن نَّفْسِهِ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ۚ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ ۖ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) तथा उस स्त्री ने जिस के घर यूसुफ़ थे यूसुफ़ को फुसलाना प्रारम्भ किया कि वह अपने मन की सुरक्षा करना छोड़ दे। तथा द्वार बन्द करके कहने लगी लो आ जाओ। (यूसुफ़ ने) कहा, अल्लाह बचाये ! वह मेरा प्रभु है, मुझे

---

[1]कहा जाता है कि उस समय मिस्र के राज-सिंहासन पर रय्यान बिन वलीद आसीन था, तथा यह अज़ीज़ जिस ने यूसुफ़ को ख़रीदा था, उस का वित्त मंत्री था, उस की पत्नी का नाम कुछ ने राईल तथा कुछ ने जुलेख़ा बतलाया है। والله أعلم

[2]अर्थात जिस प्रकार हम ने यूसुफ़ को कुऐं तथा अत्याचारी भाईयों से मुक्ति दी, उसी प्रकार यूसुफ़ को हम ने मिस्र की धरती में एक उचित स्थान प्रदान किया।

[3]अर्थात नबूअत अथवा नबूअत से पूर्व की बुद्धिमानी तथा निर्णय की शक्ति।

The Ummah Technology Mission

उसने अति उत्तम प्रकार से रखा है। अन्याय करने वालों का भला नहीं होता।[1]

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَآ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ

(२४) तथा उस स्त्री ने यूसुफ़ की इच्छा किया तथा यूसुफ़ उसकी इच्छा करते,[2] यदि वह अपने प्रभु का प्रतीक देख न लेते।[3] इसी प्रकार हुआ, इसलिये कि हम उससे बुराई तथा

---

[1]यहाँ से आदरणीय यूसुफ़ की एक नई परीक्षा प्रारम्भ हुई। मिस्री अज़ीज़ की पत्नी, जिस को उस के पति ने विशेषरूप से कहा था कि यूसुफ़ को आदर-सम्मान के साथ रखे, वह आदरणीय यूसुफ़ की सुन्दरता पर मोहित हो गयी, तथा उन्हें पाप की प्रेरणा देने लगी, जिसे आदरणीय यूसुफ़ ने ठुकरा दिया।

[2]यह अनुवाद अधिकतर व्याख्याकारों की व्याख्या के अनुसार है। तथा जिन लोगों ने لَوْلَا के साथ जोड़कर यह अर्थ बताया है कि यूसुफ़ ने इच्छा ही नहीं की, इन व्याख्याकारों ने उसे अरबी भाषा शैली के विरूद्ध बताया है। तथा यह अर्थ लिखा है कि इच्छा तो यूसुफ़ ने भी कर ली थी, परन्तु एक तो यह स्वयं नहीं था, बल्कि मिस्री अज़ीज़ की पत्नी का प्रलोभन तथा दबाव उस में सम्मिलित था। दूसरे यह कि पाप की इच्छा करना पवित्रता के विरूद्ध नहीं है अपितु उस के अनुसार कर्म करना पवित्रता के विरूद्ध है (फ़तहुल क़दीर, इब्ने कसीर) परन्तु शोधकर्ता व्याख्याकारों ने यह अर्थ वर्णित किये हैं कि यूसुफ़ भी उस की इच्छा कर लेते यदि अपने प्रभु की निशानी न देखे होते। अर्थात उन्होंने अपने प्रभु की निशानी देख रखी थी। इसलिये मिस्री अज़ीज़ की पत्नी की इच्छा ही नहीं की। बल्कि पाप की प्रेरणा मिलते ही पुकार उठे مَعاذ الله, परन्तु इच्छा न करने का यह अर्थ नहीं है कि मन में उत्तेजना ही नहीं उत्पन्न हुई। उत्तेजना उत्पन्न हो जाना अलग बात है तथा इच्छा करना अलग बात है। तथा वास्तविक बात यह है कि यदि किसी के पास काम उत्तेजना ही न उत्पन्न हो तो ऐसे व्यक्ति का पाप से बचना कोई कमाल नहीं। कमाल तो तब है कि जब मन में काम उत्तेजना उत्पन्न हो तथा फिर मनुष्य उस पर नियंत्रण करे तथा पाप से बच जाये। आदरणीय यूसुफ़ ने इसी चरम सीमा पर धैर्य तथा नियंत्रण का अनूठा नमूना प्रस्तुत किया।

[3]यहाँ प्रथम व्याख्या के आधार पर لَوْلَا का उत्तर नहीं दिया गया है। لَفَعل مَا هَمَّ به लुप्त है अर्थात यदि यूसुफ़ प्रभु की निशानी नहीं देखते तो जो इच्छा की थी, कर डालते। यह प्रतीक क्या था? इसमें विभिन्न कथन हैं। अर्थ यह है कि प्रभु की ओर से कोई ऐसी वस्तु आप को दिखाई गयी कि उसे देखकर आप मनोकामना को दबाने तथा रोकने में सफल हो गये। अल्लाह तआला अपने पैग़म्बरों की इसी प्रकार सुरक्षा करता है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّهُۥ مِنْ عِبَادِنَا ٱلْمُخْلَصِينَ ﴿٢٤﴾

निर्लज्जा दूर कर दें।[1] नि:संदेह वह हमारे चयन किये हुए भक्तों मे से था।

وَٱسْتَبَقَا ٱلْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُۥ مِن دُبُرٍ وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا ٱلْبَابِ ۚ قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوٓءًا إِلَّآ أَن يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा दोनों द्वार की ओर दौड़े[2] उस स्त्री ने यूसुफ़ का वस्त्र (कुर्ता) पीछे से खींच कर फाड़ दिया तथा उस स्त्री का पति दोनों को द्वार के निकट ही मिल गया, तो कहने लगी जो व्यक्ति तेरी पत्नी के साथ बुरी इच्छा रखे बस उसका दण्ड यही है कि उसे बन्दी बना लिया जाये अथवा अन्य कोई घोर यातना दी जाये।[3]

قَالَ هِىَ رَٰوَدَتْنِى عَن نَّفْسِى ۚ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ أَهْلِهَآ إِن كَانَ قَمِيصُهُۥ قُدَّ مِن قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ ٱلْكَٰذِبِينَ ﴿٢٦﴾

(२६) (यूसुफ़ ने) कहा, यह स्त्री ही मुझे बहला फुसला कर (मेरी मनोकामना की सुरक्षा से असावधान करना) चाहती थी,[4] तथा स्त्री की जाति के एक व्यक्ति ने गवाही दी[5] कि

---

[1]अर्थात जिस प्रकार हमने यूसुफ़ को युक्ति दिखाकर, बुराई की इच्छा से उसे बचा लिया, उसी प्रकार हम ने उसे हर मामले में दुराचार तथा निर्लज्जता की बातों से दूर रखने का प्रबन्ध किया। क्योंकि वह हमारे चयनित भक्तों में से था।

[2]जब आदरणीय यूसुफ़ ने देखा कि वह स्त्री बुराई के कर्म करने पर बाध्य कर रही है, तो वह बाहर निकलने के लिये द्वार की ओर भागे, यूसुफ़ को पकड़ने के लिये स्त्री उन के पीछे दौड़ी, इस प्रकार दोनों द्वार की ओर लपके तथा दौड़े।

[3]अर्थात पति को देखते ही स्वयं निर्दोष बन गयी तथा सारा दोष यूसुफ़ पर लगा दिया तथा अपराधी बना कर के उनके लिये दण्ड भी निर्धारित कर दिया। यद्यपि वास्तविकता इस के विपरीत थी, अपराधिनी स्वयं थी जबकि आदरणीय यूसुफ़ निर्दोष थे तथा इस बुराई से बचने के इच्छुक तथा इस से बचने के लिये प्रयत्नशील रहा करते थे।

[4]आदरणीय यूसुफ़ ने जब यह देखा कि यह स्त्री सारे दोष उन्हीं पर आरोपित कर रही है, तो वास्तविकता स्पष्ट कर दी तथा कहा कि मुझे बुराई के लिये बाध्य तो यही करती रही है। मैं इस से बचने के लिये बाहर द्वार की ओर भागता हुआ आया हूँ।

[5]यह उन्हीं के परिवार का कोई बुद्धिमान व्यक्ति था जिस ने यह निर्णय दिया। निर्णय को यहाँ साक्ष्य के शब्द से वर्णन किया गया है, क्योंकि समस्या अभी जानकारी प्राप्त करने की थी। नवजात शिशु की साक्ष्य वाली बात प्रमाणित कथनों से सिद्ध नहीं। सहीहैन की

The Ummah Technology Mission

यदि उसका कुर्ता आगे से फटा हो तो स्त्री सच्ची है तथा यूसुफ़ झूठ बोलने वालों मे से है।

(२७) तथा यदि उसका कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है, तो स्त्री झूठी है तथा यूसुफ़ सच्चों में से है।

وَإِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٧﴾

(२८) पति ने जो देखा कि कुर्ता पीछे से फटा है तो यह स्पष्ट कह दिया कि यह तो तुम स्त्रियों की चाल है, निःसंदेह तुम्हारे हथकंडे भारी हैं।[1]

فَلَمَّا رَأَىٰ قَمِيصَهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِنْ كَيْدِكُنَّ ۖ إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾

(२९) यूसुफ़, अब इस बात को भूल जाओ,[2] तथा (हे स्त्री)! अपने पापों से क्षमा माँग, निःसंदेह तू पापियों में से है।[3]

يُوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَا ۚ وَاسْتَغْفِرِي لِذَنبِكِ ۖ إِنَّكِ كُنتِ مِنَ الْخَاطِئِينَ ﴿٢٩﴾

(३०) तथा नगर की स्त्रियों में चर्चा होने लगी कि अज़ीज़ की पत्नी अपने (युवक) दास को अपनी स्वार्थ सिद्धी के लिये बहलाने-फुसलाने में लगी रहती है, उस के दिल में यूसुफ़ का प्रेम संचित है, हमारी समझ से तो वह स्पष्ट ग़लती पर है।[4]

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَن نَّفْسِهِ ۖ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۖ إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٠﴾

हदीस से तीन नवजात शिशुओं के बात करने की हदीस है, जिन में यह चौथा नहीं है, जिस का वर्णन इस स्थान पर किया जाता है।

[1]यह अज़ीज़े मिस्र का क़थन है जो उस ने अपनी पत्नी की कुचरित्रता को देखकर स्त्रियों के विषय में कहा। यह न अल्लाह का कथन है तथा न यह प्रत्येक स्त्री के विषय में उचित है। इसलिये इसे प्रत्येक स्त्री पर आरोपण करके तथा इस आधार पर स्त्री को छल-कपट की मूर्ति बताना, क़ुरआन का कदापि उद्देश्य नहीं है। जैसाकि कुछ लोग इस वाक्य के आधार पर इस विषय में विचार व्यक्त करते हैं।

[2]अर्थात इस का प्रचार न करो।

[3]इससे ज्ञात होता है कि अज़ीज़ मिस्र पर आदरणीय यूसुफ़ की सत्यता प्रकट हो गयी थी।

[4]जिस प्रकार सुगन्ध को बन्द करके छुपाया नहीं जा सकता, प्रेम का मामला भी ऐसा ही है। यद्यपि अज़ीज़े मिस्र ने आदरणीय यूसुफ़ को इसे भूल जाने ले लिये कहा तथा

The Ummah Technology Mission

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَأً وَآتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۖ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَٰذَا بَشَرًا إِنْ هَٰذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ﴿٣١﴾

(३१) उसने जब उनकी इस छलपूर्ण पिशुनता को सुना तो उन्हें आमंत्रित किया,[1] तथा उन के लिये एक सभा का आयोजन किया,[2] तथा उन में से प्रत्येक को एक छुरी दे दी। तथा कहा कि हे यूसुफ़ इनके समक्ष चले आओ [3] उन स्त्रियों ने जब उसे देखा तो अति महान जाना तथा अपने हाथ काट लिये, [4] तथा मुख से निकल गया कि पाकी अल्लाह के लिये है

नि:संदेह आप के मुख से उस का कभी वर्णन भी नहीं आया होगा, फिर भी यह घटना जगल की आग की तरह नगर में फैल गयी तथा मिस्री स्त्रियों में इस का चर्चा सामान्य रूप से होने लगा, स्त्रियाँ आश्चर्य चकित थीं कि यदि प्रेम करना था तो किसी सुन्दर आकर्षक पुरूष से करती, यह क्या कि अपने ही दास पर मर मिटी, यह तो उस की बहुत बड़ी मूर्खता है।

[1]मिस्री स्त्रियों की पिशुनता की बातों तथा व्यंग एवं कटाक्ष को छल कहा गया है। जिस का कारण कुछ व्याख्याकारों ने यह वर्णन किया है कि उन स्त्रियों को भी यूसुफ़ की सुन्दरता के विषय में सूचनायें मिल रही थीं। अत: साक्षात् सुन्दरता को देखना चाहती थीं। अत: वह अपने छल (षडयंत्र) में सफल हो गयीं। अज़ीज़ की पत्नी ने यह बतलाने के लिये कि जिस पर मैं मोहित हुई हूँ वह एक दास अथवा जनसामान्य नहीं है, अपितु उस को देखकर अपना दिल व जान हार जाना कोई अनहोनी बात नहीं, उन स्त्रियों के लिए भोज का प्रबन्ध किया तथा उन्हें भोज का निमंत्रण भेजा।

[2]अर्थात उन के लिये ऐसा आसन का प्रबंध किया जहाँ तकिये लगे थे, जैसाकि आजकल भी अरबों में ऐसा आसन सामान्य रूप से मिलता है यहाँ तक कि होटलों तथा भोजनालयों में भी इस का प्रबंध है।

[3]अर्थात आदरणीय यूसुफ़ को उस समय तक छिपाये रखा। जब सभी स्त्रियों ने हाथों में छूरियाँ पकड़ लीं तो अज़ीज़ की पत्नी (जुलेख़ा) ने आदरणीय यूसुफ़ को सभा में उपस्थिति होने का आदेश दिया।

[4]अर्थात यूसुफ़ का सौन्दर्य देखकर एक तो उनकी श्रेष्ठता तथा प्रतिष्ठा को स्वीकार किया तथा दूसरे उन पर ऐसी वेसुध तथा मुग्ध हो गईं कि छुरियाँ अपने हाथों पर चला लीं, जिससे उन के हाथ कट कर रक्त रंजित हो गये। हदीस में आता है कि आदरणीय यूसुफ़ को आधी सुन्दरता प्रदान की गयी है। (सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान, बाबुल इसराअ)

The Ummah Technology Mission

यह मनुष्य कदापि नहीं, यह तो नि:संदेह कोई बहुत बड़ा फ़रिश्ता है।[1]

قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ ۖ وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهُ عَن نَّفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ ۖ وَلَئِن لَّمْ يَفْعَلْ مَآ آمُرُهُ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُونًا مِّنَ الصَّاغِرِينَ ﴿٣٢﴾

(३२) (उस समय मिस्र के अज़ीज़ की पत्नी ने) कहा कि यही है जिन के विषय में तुम मुझे बुरा भला कह रहीं थीं।[2] मैंने हर प्रकार से इससे अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहा, परन्तु यह बेदाग़ बचा रहा, तथा जो कुछ मैं इस से कह रही हूँ, यदि यह न करेगा तो नि:संदेह यह बन्दी बना दिया जायेगा तथा निश्चय यह अत्यधिक अपमानित होगा।[3]

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ ۖ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي

(३३) (यूसुफ़ ने) कहा कि ऐ मेरे प्रभु! जिस बात की ओर यह स्त्रियाँ मुझे बुला रही हैं, उस से तो कारागार मुझे अत्यधिक प्रिय है,

---

[1]इस का यह अर्थ नहीं कि फ़रिश्ते मनुष्य से रूप-रेखा में अच्छे अथवा श्रेष्ठ हैं। क्योंकि फ़रिश्तों को मनुष्यों ने देखा ही नही है। इस के अतिरिक्त मनुष्यों के लिये स्वयं अल्लाह ने क़ुरआन में स्पष्ट किया है कि हमने उसे सर्वोत्तम रूप में पैदा किया है। इन स्त्रियों ने मनुष्य के रूप को इसलिये नगण्य किया कि उन्होंने सुन्दरता का रूप जो मनुष्य के रूप में देखा उन की दृष्टि ने कभी नहीं देखा था। तथा उन्होंने फ़रिश्तों से तुलना इसलिये की कि जन सामान्य यही समझता है कि फ़रिश्ते गुण तथा रूप के अनुसार ऐसा रूप रखते हैं जो मनुष्य के रूप से उच्च है। इससे यह ज्ञात होता है कि नबियों के असाधारण विशेषताओं तथा गुणों के कारण उन्हें मानव जाति से निकाल कर दिव्य प्रकाश वाली प्राणी में रख देना प्रत्येक युग के ऐसे लोगों का कार्य रहा है, जो नबूअत तथा उस के पद से अनभिज्ञ होते हैं।

[2]जब अज़ीज़ की पत्नी ने देखा कि उस की चाल सफल रही है तथा स्त्रियाँ यूसुफ़ की सुन्दरता के प्रकाश से मुग्ध हो गयी हैं, तो कहने लगी कि इस की एक झलक से तुम्हारी यह दशा हो गयी है तो क्या तुम अब भी मुझे इस के प्रेम में पड़े रहने को बुरा कहोगी? यही वह दास है जिस के विषय में तुम मुझे धिक्कारती हो।

[3]स्त्रियों को मुग्ध होती देखकर उस का साहस और बढ़ा तथा बेशर्म तथा लज्जा रहित होकर उस ने अपनी बुरी इच्छा को एक बार पुन: व्यक्त किया।

The Ummah Technology Mission

كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٣﴾

यदि तूने उन के छल मुझ से दूर न किया तो मैं इन की ओर आकर्षित हो जाऊँगा, तथा बिल्कुल मूर्खों में सम्मिलित हो जाऊँगा।[1]

فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٤﴾

(३४) उस के प्रभु ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली तथा उन स्त्रियों के छल से उसे बचा लिया। नि:संदेह वह सुनने वाला तथा जानने वाला है।

ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا رَأَوُا الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهُ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٣٥﴾

(३५) फिर उन सभी लक्षणों के देख लेने के पश्चात् उन्हें यही भला लगा कि यूसुफ़ को कुछ समय के लिये कारागार में रखें।[2]

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ۖ قَالَ أَحَدُهُمَآ إِنِّيْٓ أَرٰىنِيْٓ أَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ الْاٰخَرُ إِنِّيْٓ أَرٰىنِيْٓ أَحْمِلُ فَوْقَ رَأْسِيْ خُبْزًا تَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ۖ نَبِّئْنَا بِتَأْوِيْلِهٖ ۚ إِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा उस के साथ ही दो अन्य नवयुवक कारागार में आये। उन में से एक ने कहा कि मैंने स्वप्न में अपने आप को मदिरा निचोड़ते हुए देखा है, तथा दूसरे ने कहा कि मैंने अपने आप को देखा है कि मैं अपने सिर पर रोटी उठाये हुए हूँ, जिसे पक्षी खा रहे हैं हमें आप

---

[1]आदरणीय यूसुफ़ ने यह प्रार्थना अपने दिल में की, क्योंकि एक ईमानवाले के लिये प्रार्थना भी एक हथियार है। हदीस में आता है सात आदमियों को अल्लाह तआला अर्श की छाया प्रदान करेगा। उन में से एक वह व्यक्ति है जिसे एक ऐसी स्त्री पाप के लिये आमान्त्रित करे जो सुन्दर भी हो तथा उच्च पद पर आसीन भी हो। परन्तु वह उस के उत्तर में यह कह दे कि मैं तो "अल्लाह से डरता हूँ।" (सहीह बुख़ारी किताबुल आज़ान बाबु मन जलस फ़िल मस्जिद यन्तज़िरूस्सलात व फ़ज़लुल मस्जिद तथा सहीह मुस्लिम किताबुज़्ज़कात बाबु फ़ज़ल एख़फा इअस्सदक:)

[2]सत्यता तथा पवित्रता स्पष्ट हो जाने के पश्चात् भी यूसुफ़ को कारागार में डालने का यही कारण उन के समक्ष हो सकता था कि मिस्री अज़ीज़ आदरणीय यूसुफ़ को अपनी पत्नी से दूर रखना चाहता होगा ताकि पुन: वह यूसुफ़ को अपनी चाल में फंसानें का प्रयत्न न करे, जैसाकि उस का ऐसा विचार था।

The Ummah Technology Mission

इसका फल बतायें, हमें तो आप गुणी व्यक्ति प्रतीत होते हैं।[1]

قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقَانِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ؕ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ؕ اِنِّيْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۷﴾

(३७) (यूसुफ़ ने) कहा तुम्हें जो खाना दिया जाता है उस के तुम्हारे पास पहुँचने से पूर्व ही मैं तुम्हें उसका फल बता दूँगा। यह सब कुछ उस ज्ञान का परिणाम है जो मुझे मेरे प्रभु ने सिखाया है।[2] मैंने उन लोगों का धर्म छोड़ दिया है, जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते तथा आख़िरत को भी अस्वीकार करते हैं।[3]

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ مَا كَانَ لَنَآ

(३८) मैं अपने पिता तथा पूर्वजों के धर्म का अनुयायी हूँ अर्थात इब्राहीम, इसहाक़ एवं याक़ूब के धर्म का,[4] हमें कदापि यह स्वीकार नहीं कि

---

[1]यह दोनों नवयुवक राज दरबार से सम्बन्ध रखते थे। एक शराब पिलाने पर नियुक्त था, दूसरा रोटी बनाता था। किसी कारण से उन्हें कारागार में डाल दिया गया था। आदरणीय यूसुफ़ अल्लाह के पैग़म्बर थे, धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ इबादत, तपस्या, संयम, सत्यता तथा चरित्र एवं कर्म में अन्य बन्दियों से श्रेष्ठ थे। इस के अतिरिक्त स्वप्नों के फलों का ज्ञान अल्लाह ने प्रदान कर रखा था। इन दोनों ने स्वप्न देखा तो प्राकृतिक रूप से वे आदरणीय यूसुफ़ के पास आये तथा कहा कि आप हमें अच्छे लोगों में से दिखायी दे रहे हैं। हमें हमारे स्वप्नों का फल बताईये। محسن का एक अर्थ कुछ ने यह भी किया है कि आप स्वप्नों का फल अच्छा बताते हैं।

[2]अर्थात मैं जो फल बताऊँगा वह भविष्यवेत्ताओं तथा ज्योतिष्यों के विचार तथा अनुमान पर आधारित नहीं होगी जिस में त्रुटि तथा उचित दोनों की सम्भावना होती है। बल्कि मेरा स्वप्न फल निश्चित ज्ञान पर आधारित होगा, जो अल्लाह की ओर से मुझे प्रदान किया गया है, जिस में त्रुटि होने की कोई भी सम्भावना नहीं है।

[3]यह अन्तर्ज्ञान तथा अल्लाह द्वारा प्रदान किया हुआ ज्ञान का कारण बताया जा रहा है कि मैंने उन लोगों का धर्म त्याग दिया है, जो अल्लाह तथा आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते, उस के परिणाम स्वरूप अल्लाह की कृपा मुझ पर हुई।

[4]पूर्वज को भी पिता कहा गया है क्योंकि वे भी पिता ही हैं। फिर क्रम में भी पितामह (इब्राहीम) फिर निकटवर्ती दादा (इसहाक़) एवं फिर पिता (याक़ूब) का वर्णन किया। अर्थात प्रथमतः, प्रथम मूल, फिर द्वितीय मूल एवं फिर तृतीय मूल का वर्णन किया।

The Ummah Technology Mission

أَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٨﴾

हम अल्लाह तआला के साथ किसी को भी साझीदार बनायें,[1] हम पर तथा अन्य सभी लोगों पर अल्लाह (तआला) की यह विशेष कृपा है, परन्तु अधिकतर लोग कृतघ्न होते हैं।

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَأَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ أَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾

(३९) ऐ मेरे कारागार के साथियो ![2] क्या विभिन्न प्रकार के कई देवता श्रेष्ठ हैं[3] अथवा एक अल्लाह सर्वशक्तिमान ?

مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ إِلَّاۤ أَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَاۤ أَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمْ مَّا أَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلّٰهِ ؕ أَمَرَ أَلَّا تَعْبُدُوْۤا إِلَّاۤ إِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٠﴾

(४०) उसके अतिरिक्त जिनकी पूजा तुम कर रहे हो, वे सब नाम ही के हैं, जो तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने स्वयं गढ़ लिया है। अल्लाह तआला ने इनका कोई प्रमाण नहीं उतारा,[4] निर्णय देना अल्लाह (तआला) ही का कार्य है, उस का आदेश है कि तुम सभी उसके अतिरिक्त किसी की इबादत (वंदना) न करो।

---

[1]यह वही एकेश्वरवाद का आमन्त्रण तथा मूर्तिपूजन का खण्डन है, जो प्रत्येक नबी की मूल तथा प्रथम शिक्षा तथा आमन्त्रण होता था।

[2]कारागार के साथी इसलिये कहा कि यह सब एक अवधि से कारागार में बंद चले आ रहे थे।

[3]यह विभेद अस्तित्व, गुणों तथा संख्या के आधार पर है। अर्थात वह प्रभु, जो अस्तित्व में एक-दूसरे से भिन्न तथा गुणों में एक-दूसरे से अलग तथा संख्या में भी अनेक हों ये श्रेष्ठ हैं अथवा वह अल्लाह, जो अस्तित्व एवं गुणों में एक है जिस के न कोई बराबर है न साझीदार तथा वह सब पर प्रभावशाली तथा शासक है ?

[4]इसका एक अर्थ तो यह है कि उसका नाम देवता तुमने स्वयं रखा है, जबकि न वे देवता हैं न उनके विषय में अल्लाह की ओर से कोई प्रमाण ही उतरा है। दूसरा अर्थ यह है कि उन देवताओं के जो विभिन्न नाम तुमने रखे हैं, जैसे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, गंज बख़्श, शकरगंज आदि। यह सब तेरे अपने बनाये हुए हैं। उन का कोई प्रमाण अल्लाह ने नहीं उतारा।

The Ummah Technology Mission

यही धर्म सत्य है,[1] परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।[2]

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُكُمَا فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ؕ قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ؕ ﴿۴۱﴾

(४१) ऐ मेरे कारागार के साथियो![3] तुम दोनों में से एक तो अपने राजा को मदिरा पान कराने के लिये नियुक्त हो जायेगा,[4] परन्तु दूसरे को फांसी दी जायेगी तथा पक्षी उसका सिर नोच-नोच कर खायेंगे।[5] तुम दोनों जिसके विषय में पूछ रहे थे, उसका निर्णय हो गया।[6]

---

[1]यही धर्म, जिस की ओर मैं तुम्हें बुला रहा हूँ, जिस में एक अल्लाह की इबादत है, सत्य तथा स्थाई है, जिसका आदेश अल्लाह ने दिया है।

[2]जिस के कारण अधिकतर लोग शिर्क करते हैं।

﴿ وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ﴾

"उनमें अधिकतर लोग अल्लाह पर ईमान रखने के उपरान्त भी शिर्क करने वाले ही हैं।" (सूरः यूसुफ़-१०६)

तथा फ़रमाया :

﴿ وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴾

"हे पैग़म्बर ! तेरी इच्छा के उपरान्त अधिकतर लोग अल्लाह पर ईमान लाने वाले नहीं हैं।"(सूरः यूसफ़-१०३)

[3]एकेश्वरवाद का प्रवचन देने के पश्चात अब आदरणीय यूसुफ़ उन के द्वारा वर्णित स्वप्नों के फलों का वर्णन कर रहे हैं।

[4]यह वह व्यक्ति है जिस ने स्वप्न में अपने को अंगूर का रस तैयार करते देखा था। फिर भी आपने दोनों में से किसी एक को निर्धारित करके नहीं बताया कि मरने वाला पहले ही दुख तथा चिन्ता में घिर जाये।

[5]यह वह व्यक्ति है जिस ने स्वप्न में अपने सिर पर रोटी रखे देखा था।

[6]अर्थात अल्लाह के द्वारा लिखे भाग्य में पहले ही से लिखा था तथा जो फल मैंने बताया है यह अन्ततः पूरा होकर रहेगा। जैसाकि हदीस में है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

The Ummah Technology Mission

وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِي عِندَ رَبِّكَ فَأَنسَاهُ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِينَ ﴿٤٢﴾

(४२) तथा जिस के सम्बन्ध में यूसुफ़ का विचार था कि उन दोनों में से यह छूट जायेगा, उस से कहा कि अपने राजा से मेरी चर्चा भी कर देना, फिर उसे शैतान ने राजा से वर्णन करना भुला दिया तथा यूसुफ़ ने कई वर्ष कारागार में काटे।[1]

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَىٰ سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعَ سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي رُؤْيَايَ إِن كُنتُمْ لِلرُّؤْيَا تَعْبُرُونَ ﴿٤٣﴾

(४३) तथा राजा ने कहा कि मैंने स्वप्न देखा है कि सात मोटी-ताज़ी गायें हैं, जिनको सात दुबली-क्षीण सी गायें खा रही हैं तथा सात बालियाँ हैं हरी-भरी तथा सात अन्य बिल्कुल सूखी हुई। हे सभासदो ! मेरे इस स्वप्न का फल बताओ यदि तुम स्वप्न का फल बता सकते हो।

قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَامِ بِعَالِمِينَ ﴿٤٤﴾

(४४) उन्होंने उत्तर दिया कि यह तो उड़ते हुए व्यग्र स्वप्न हैं तथा इस प्रकार के व्यग्र स्वप्न के फल जानने वाले हम नहीं।[2]

"स्वप्न जब तक उसका फल न निकाल लिया जाये, पक्षी के पैर पर है। जब फल निकाल लिया जाये तो घटित हो जाता है।" (मुसनद अहमद, उदधृत इब्ने कसीर)

[1] بِضْعَ का शब्द तीन से लेकर नौ तक के अंकों को कहा जाता है। वहब बिन मुनब्बह का कथन है कि आदरणीय अय्यूब परीक्षा में तथा यूसुफ़ कारागार में सात वर्ष रहे तथा बुख़्तनसर का प्रकोप भी सात वर्ष रहा। और कुछ के निकट बारह वर्ष तथा कुछ के निकट चौदह वर्ष कारागार में रहे।

[2] أَضْغَاثٌ बहुवचन है ضِغْث का, जिसका अर्थ 'घास के गट्ठर' है। حِلْمٌ ، أَحْلَام (अर्थ स्वप्न) का बहुवचन है। أَضْغَاث أَحْلَام का अर्थ होगा 'चिन्तापूर्ण स्वप्न' अथवा 'व्यग्रचित स्वप्न', जिनका कोई फल न हो। यह स्वप्न उस राजा को आया मिस्री अजीज जिस का मंत्री था। अल्लाह तआला को इस स्वप्न के द्वारा यूसुफ़ को कारागार से निकालना था। अत: राजा के भविष्यवेत्ताओं, तथा ज्योंतिषियों ने इस विलक्षण स्वप्न का फल बताने में अपनी असमर्थता व्यक्त की। कुछ कहते हैं कि ज्योंतिषियों के इस कथन का अर्थ साधारणत: स्वप्न फल बताने के ज्ञान का खण्डन है तथा कुछ कहते हैं कि वे स्वप्न फल बताने के

The Ummah Technology Mission

وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُمْ بِتَأْوِيْلِهٖ فَأَرْسِلُوْنِ ﴿٤٥﴾

(४५) तथा उन बंदियों में से छूटे हुए को एक समय के पश्चात् याद आ गया तथा कहने लगा मैं तुम्हें इस का फल बतला दूँगा, मुझे जाने की आज्ञा प्रदान कीजिए।[1]

يُوْسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيْقُ أَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَّأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعِ سُنْبُلَاتٍ خُضْرٍ وَّأُخَرَ يٰبِسَاتٍ لَّعَلِّيْ أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٦﴾

(४६) हे यूसुफ़ ! हे अति सत्यवादी यूसुफ़ ! आप हमें इस स्वप्न का फल बताइए कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली (अस्वस्थ) गायें खा रही हैं तथा सात बिल्कुल हरी बालियाँ है तथा सात ही अन्य भी बिल्कुल सूखी हैं, ताकि मैं वापस जाकर उन लोगों से कहूँ कि वे सभी जान लें।

قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَأَبًا ۚ فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْبُلِهٖٓ إِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَأْكُلُوْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) (यूसुफ़ ने) उत्तर दिया कि तुम सात वर्ष निरन्तर नियमबद्ध होकर अन्न बोना तथा उसे काटकर बालियों सहित ही रहने देना, अपने भोजन के लिये थोड़ी-सी मात्रा के सिवाय।

ثُمَّ يَأْتِيْ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ

(४८) उस के पश्चात् सात वर्ष अत्यन्त अकाल के आयेंगे, वे उस अन्न को खा जायेंगे, जो तुम ने उन के लिये भण्डार कर रखा था,[2] सिवाय

ज्ञान से अनजान नहीं थे न इस को उन्होंने नकारा, उन्होंने केवल इस स्वप्न का फल बताने में असमर्थता व्यक्त की।

[1]यह कारागार से छूटने वाला एक साथी था, जिस से आदरणीय यूसुफ़ ने कहा था कि अपने मालिक से मेरा वर्णन करना ताकि मेरे छूटने की व्यवस्था हो जाये। उसे अचानक याद आया तथा उस ने कहा कि मुझे समय दो मैं तुम्हें आकर इसका फल बतलाता हूँ। अतः वह निकलकर सीधे यूसुफ़ के पास पहुँचा तथा स्वप्न का विवरण सुनाया तथा उसका फल पूछा।

[2]अल्लाह तआला ने आदरणीय यूसुफ़ को 'स्वप्न फल' का ज्ञान भी प्रदान किया था। इसलिये वह इस स्वप्न की तह तक शीघ्र पहुँच गये। उन्होंने पुष्ट-स्वस्थ गायों से तात्पर्य सात वर्ष ऐसे लिये जिन में अधिक उपज होगी तथा सात दुर्बल गायों से उस के विपरीत सात वर्ष सूखा अकाल के। इसी प्रकार सात हरी बालियों से तात्पर्य लिया कि धरती अधिक पैदावार देगी तथा सात सूखी बालियों से अर्थ यह लिया कि इन सात वर्षों

The Ummah Technology Mission

إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تُحْصِنُونَ ﴿٤٨﴾

उस के जो थोड़े से तुम रोक रखते हो।[1]

ثُمَّ يَأْتِي مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ ﴿٤٩﴾

(४९) फिर इस के पश्चात् जो वर्ष आयेगा उस में लोगों पर बहुत वर्षा होगी और उस में (अंगूर का रस भी) बहुत निचोड़ेंगे।[2]

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَاسْأَلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ اللَّاتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ۚ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ﴿٥٠﴾

(५०) तथा राजा ने कहा कि उसे (यूसुफ़) को मेरे पास लाओ।[3] जब संदेशवाहक उसके (यूसुफ़ के) पास पहुँचा तो उन्होंने कहा कि अपने राजा के पास वापस जाओ तथा उनसे पूछो कि उन स्त्रियों की वास्तविक घटना क्या है जिन्होंने अपने हाथ काट लिये थे।[4] उनके छल को उचितरूप से जानने वाला मेरा प्रभु ही है।

में धरती पर उपज नहीं होगी। तथा फिर उसके लिये प्रयोजन भी बताया कि सात वर्ष तुम निरन्तर कृषि करो तथा जो अनाज हो उसे काटकर बालियों सहित रखो ताकि उनमें अनाज अधिक सुरक्षित रहे, फिर जब सात वर्ष अकाल के आयेंगे तो यह अनाज तुम्हारे काम आयेगा, जिस का भण्डार तुम अब करोगे।

[1] مما تحصنون से तात्पर्य बीज के लिये सुरक्षित दाने हैं, जो पुनः बोये जाते हैं।

[2] अर्थात अकाल के सात वर्ष व्यतीत होने के पश्चात् खूब वर्षा होगी, जिसके परिणाम स्वरूप खूब पैदावार होगी तथा तुम अंगूरों से उस का रस निकालोगे, ज़ैतून का तेल निकालोगे तथा पशुओं के दूध निकालोगे। स्वप्न के इस फल से स्वप्न का कितना सुन्दर सम्बन्ध है, जिस को केवल वही समझ सकता है, जिसे अल्लाह तआला ऐसी उचित योग्यता, प्रबोध तथा ज्ञान प्रदान करे जो अल्लाह तआला ने आदरणीय यूसुफ़ को प्रदान किया था।

[3] अर्थ यह है कि जब वह व्यक्ति स्वप्न का फल ज्ञात करके राजा के पास गया तथा उसे बताया, तो वह उस फल से तथा आदरणीय यूसुफ़ की बतायी हुई योजना से अत्यधिक प्रभावित हुआ तथा उस ने अनुमान लगाया कि वह व्यक्ति, जिसे दीर्घकाल से कारागार में रखा गया है, विशेष ज्ञान, महानता एवं उत्तम प्रतिभा का व्यक्ति है। अतः राजा ने उन्हें दरबार में प्रस्तुत करने का आदेश दिया।

[4] आदरणीय यूसुफ़ ने देखा कि राजा अब कृपा करना चाहता है, तो उन्होंने इस प्रकार मात्र शाही कृपा से कारागार से निकलना नहीं चाहा, बल्कि अपने चरित्र की उच्चता तथा पवित्रता के सिद्ध करने को प्राथमिकता दी ताकि दुनियाँ के समक्ष आप के चरित्र का सौन्दर्य तथा उच्चता प्रष्ट हो जाये। क्योंकि अल्लाह की ओर से आह्वान करने वाले के लिये ये सत्यता तथा पवित्रता एवं सुचरित्रता अति आवश्यक है।

The Ummah Technology Mission

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ إِذْ رَاوَدْتُنَّ يُوسُفَ عَن نَّفْسِهِ ۚ قُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِن سُوءٍ ۚ قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ الْآنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ أَنَا رَاوَدْتُهُ عَن نَّفْسِهِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٥١﴾

(५१) (राजा ने) पूछा, ऐ स्त्रियो ! उस समय की सत्य घटना क्या है, जब तुम छल करके यूसुफ़ को उस की हार्दिक इच्छा से भटकाना चाहती थीं, उन्होंने स्पष्ट उत्तर दिया कि (अल्लाह जानता है) हम ने यूसुफ़ में कोई बुराई नहीं पायी, [1] फिर तो अज़ीज़ की पत्नी भी बोल उठी कि अब तो सच्ची बात स्पष्ट हो गई है। मैंने ही उसे बहकाने का प्रयत्न किया था उसकी हार्दिक इच्छा से, तथा नि:संदेह वह सत्यवादियों मे से है।[2]

ذَٰلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي لَمْ أَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَائِنِينَ ﴿٥٢﴾

(५२) (यूसुफ़ ने कहा) यह इस कारण कि (अज़ीज़) को ज्ञात हो जाये कि मैंने उसके साथ विश्वासघात नहीं किया[3] तथा यह भी कि अल्लाह छली एवं कपटियों की चाल नहीं चलने देता।[4]

---

[1]राजा द्वारा पूछे जाने पर सभी स्त्रियों ने यूसुफ़ की पवित्रता को स्वीकार किया।

[2]अब अज़ीज़ की पत्नी (ज़ुलेख़ा) के लिये भी यह स्वीकार कर लेने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं शेष नहीं रहा कि यूसुफ़ निर्दोष है तथा यह चाल मेरी ही ओर से हुई थी, इस फ़रिश्ता जैसे आदमी का इस ग़लती से कोई सम्बन्ध नहीं।

[3]जब कारागार में आदरणीय यूसुफ़ को यह सारा वृतान्त सुनाया गया, तो उसे सुनकर यूसुफ़ ने कहा तथा कुछ कहते हैं कि राजा के पास जाकर उन्होंने यह कहा तथा कुछ व्याख्याकारों के निकट यह भी अज़ीज़ की पत्नी (ज़ुलेख़ा) का ही कथन है तथा अर्थ यह है कि यूसुफ़ की अनुपस्थिति में भी उसे अनुचित रूप से दोषी करके विश्वासघात नहीं करती हूँ बल्कि ईमानदारी की माँगों को अपने सामने रखते हुए अपनी ग़लती स्वीकार करती हूँ। अथवा यह अर्थ है कि मैं ने अपने पति के साथ विश्वासघात नहीं किया तथा किसी महापाप में नहीं पड़ी। इमाम इब्ने कसीर ने इसी कथन को प्राथमिकता दी है।

[4]कि वह सदैव अपने छल-कपट में सफल ही रहें। बल्कि उन का प्रभाव अस्थाई तथा सीमित होता है अन्त में विजय सत्य एवं सत्यवादियों की होती है, यद्यपि सत्यमार्गियों को अस्थाई रूप से परीक्षा के मार्ग से गुज़रना पड़े।

The Ummah Technology Mission

وَمَآ أُبَرِّئُ نَفْسِيٓ ۚ إِنَّ ٱلنَّفْسَ لَأَمَّارَةٌۢ بِٱلسُّوٓءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّيٓ ۚ إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٣﴾

(५३) तथा मैं अपनी इन्द्रियों की पवित्रता का वर्णन नहीं करती ।[1] नि:संदेह मन तो बुराई की प्रेरणा देने वाला ही है,[2] परन्तु यह कि मेरा प्रभु ही अपनी दया करे।[3] निश्चय ही मेरा पालनहार क्षमाशील कृपानिधि है।

وَقَالَ ٱلْمَلِكُ ٱئْتُونِي بِهِۦٓ أَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِي ۖ فَلَمَّا كَلَّمَهُۥ قَالَ إِنَّكَ ٱلْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ﴿٥٤﴾

(५४) तथा राजा ने कहा उसे मेरे समक्ष लाओ कि मैं उसे अपने निजी कार्यों के लिये नियुक्त कर लूँ।[4] फिर जब उससे वार्तालाप करने लगा तो कहने लगा कि आप हमारे यहाँ आज से सम्मानित तथा विश्वस्त हैं।[5]

---

[1]इसे यदि आदरणीय यूसुफ़ का कथन स्वीकार कर लिया जाये तो विन्रमता के रूप में है, अन्यथा स्पष्ट रूप से प्रकट है कि उनकी पवित्रता हर प्रकार से सिद्ध हो चुकी थी। तथा यदि मिस्र के मंत्री की पत्नी का कथन है (जैसाकि इमाम इब्ने कसीर का विचार है) तो यह वास्तविकता पर आधारित है क्योंकि उसने अपने पाप तथा यूसुफ़ के बहलाने-फुसलाने को स्वीकार कर लिया।

[2]यह उसने अपनी त्रुटियों की कष्ट कल्पना अथवा उसका कारण बताया है कि मनुष्य का मन ही ऐसा है कि उसे बुराई के लिये उभारता तथा उकसाता है।

[3]इन्द्रियों के छल से वही सुरक्षित रहता है जिस पर अल्लाह तआला की कृपा हो। जिस प्रकार कि आदरणीय यूसुफ़ को अल्लाह तआला ने बचा लिया।

[4]जब राजा (रय्यान पुत्र वलीद) पर यूसुफ़ के ज्ञान तथा गुणों के साथ उसके आचरण की महत्ता तथा पवित्रता स्पष्ट हो गयी, तो उसने आदेश दिया कि उन्हें मेरे समक्ष प्रस्तुत करो, मैं उन्हें अपने लिये चयन करता हूँ अर्थात अपना निकटवर्ती तथा विशेष सलाहकार नियुक्त करना चाहता हूँ।

[5] مَكِينٌ (मकीन) का अर्थ है पदाधिकारी أَمِينٌ (अमीन), राज्य का भेद जानने वाला।

The Ummah Technology Mission

قَالَ اجْعَلْنِيْ عَلٰى خَزَآئِنِ الْاَرْضِ ۚ اِنِّيْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٥﴾

(५५) (यूसुफ़ ने) कहा कि आप मुझे देश के कोष पर नियुक्त कर दीजिये।[1] मैं रक्षक तथा जानने वाला हूँ।[2]

وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي الْاَرْضِ ۚ يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ ؕ نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾

(५६) तथा इस प्रकार हमने यूसुफ़ को देश की बागडोर दे दी कि वह जहाँ चाहे रहे-सहे।[3] हम जिसे चाहें अपनी कृपा पहुँचा देते हैं। हम पुण्य करने वालों के कर्मों का फल नष्ट नहीं करते।[4]

---

[1] خَزَائِنُ (ख़ज़ाएन) बहुवचन है خِزَانَةٌ (ख़ज़ाना) का। ख़ज़ाना का अर्थ है 'कोष' अर्थात ऐसे स्थान को कहते हैं जहाँ वस्तुऐं सुरक्षित रखी जाती हैं। धरती के कोष से तात्पर्य वे भण्डार हैं जहाँ अनाज एकत्रित किया जाता था। इसकी व्यस्था अपने हाथ में लेने की इच्छा इसलिये व्यक्त की कि निकट भविष्य में (स्वप्न के फल को देखते हुए) जो सूखे के वर्ष आने वाले थे, उससे निपटने के लिये विशेष प्रबन्ध किये जा सकें तथा अनाज की पर्याप्त मात्रा सुरक्षित रखी जा सके। सामान्य अवस्था में यद्यपि पद तथा पदवी की इच्छा उचित नहीं है, परन्तु आदरणीय यूसुफ़ के इस व्यवहार से ज्ञात होता है कि विशेष अवस्था में यदि कोई व्यक्ति यह समझता है कि राष्ट्र तथा देश के सामने जो कठिनाईयाँ हैं उनसे निपटने में मनुष्य में उत्तम योग्यताऐं हों तथा वह अन्य लोगों में न हो, तो वह अपनी योग्यता के अनुसार पद तथा पदवी की माँग कर सकता है। इसके अतिरिक्त आदरणीय यूसुफ़ ने पद तथा पदवी की कामना नहीं की। परन्तु जब मिस्र के राजा ने स्वयं प्रस्तुत किया तो फिर ऐसे पद की इच्छा व्यक्त की जिसमें उन्होंने देश तथा राष्ट्र की सेवा के पक्ष को अधिक प्रत्यक्ष देखा।

[2] حَفِيْظٌ मैं उसकी उस प्रकार सुरक्षा करूँगा कि उसका कोई अपव्यय नहीं करूँगा, عَلِيْمٌ उसको एकत्रित करने तथा व्यय करने एवं उसके रखने तथा निकालने का उत्तम ज्ञान रखता हूँ।

[3] अर्थात हमने यूसुफ़ को धरती पर ऐसी शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान किया कि राजा वही आदेश करता जो आदरणीय यूसुफ़ करते, तथा मिस्र की धरती में इस प्रकार अधिकार चलाते जिस प्रकार मनुष्य अपने घर पर चलाता है तथा जहाँ चाहते वहाँ रहते, सम्पूर्ण मिस्र उनके आधीन था।

[4] यह जैसे कि बदला था उनके धैर्य का जो भाईयों की क्रूरता तथा अत्याचार पर उन्होंने रखा तथा उस सुदृढ़ता का जो ज़ुलेख़ा के पाप के निमन्त्रण के समक्ष प्रयोग किया तथा

The Ummah Technology Mission

وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٧﴾

(५७) तथा नि:संदेह ईमानदारों तथा परहेज़गारों का पारलौकिक बदला अति उत्तम है।

وَجَآءَ اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٨﴾

(५८) तथा युसुफ़ के भाई आये एवं यूसुफ़ के पास गये, तो उसने उन्हें पहचान लिया तथा उन्होंने उसे नहीं पहचाना।[1]

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِيْ بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ اَنِّيْٓ اُوْفِي الْكَيْلَ وَاَنَا

(५९) तथा जब उनका सामान तैयार करा दिया तो कहा कि तुम मेरे पास अपने उस भाई को लाना जो तुम्हारे पिता से है, क्या तुमने नहीं देखा कि मैं नाप भी पूरा कर देता हूँ

उस पूर्ण दृढ़ता का जो कारागार के जीवनकाल में अपनाये रखा। आदरणीय यूसुफ़ का पद वही था जिस पर पूर्व मिस्री अज़ीज़ आसीन था जिसकी पत्नी ने आदरणीय यूसुफ़ को बहकाने का असफल प्रयत्न किया था। कुछ लोग कहते हैं कि राजा आदरणीय यूसुफ़ की शिक्षा-दीक्षा के कारण मुसलमान हो गया था। इसी प्रकार कुछ लोग कहते हैं कि मिस्री अज़ीज़ जिसका नाम 'इत्फ़ीर' था उसकी मृत्यु हो गई थी तो उसके पश्चात ज़ुलेख़ा का विवाह आदरणीय यूसुफ़ से हो गया तथा दो पुत्र भी हुए, एक का नाम अफ़राईम तथा दूसरे का नाम मीशा था, अफ़राईम ही यूशअ बिन नून तथा आदरणीय अय्यूब की पत्नी 'रहमत' के पिता थे (तफ़सीर इब्ने कसीर) परन्तु यह बात किसी प्रमाणित कथन से सिद्ध नहीं होती, इसलिये विवाह वाली बात उचित प्रतीत नहीं होती है। इसके अतिरिक्त उस स्त्री से जिसका आचरण का प्रदर्शन हुआ, उसके होते हुए एक नबी के परिवार से सम्बन्ध, अत्यधिक अनुचित बात लगती है।

[1]यह उस समय की घटना है जब समृद्धि के सात वर्ष समाप्त होकर अकाल प्रारम्भ हो गया, जिसने मिस्र देश के अधिकाँश क्षेत्र को पीड़ित कर दिया, यहाँ तक कि कनआन तक भी इसका प्रभाव पहुँचा, जहाँ आदरणीय याक़ूब तथा आदरणीय यूसुफ़ के भाई निवास करते थे। आदरणीय यूसुफ़ ने इससे निपटने के लिये जो सुव्यवस्था की थी, वे सार्थक हुई तथा प्रत्येक ओर से लोग आदरणीय यूसुफ़ से अनाज लेने के लिये आ रहे थे। आदरणीय यूसुफ़ की प्रसिद्धि कनआन तक भी पहुँची कि मिस्र का राजा इस प्रकार अनाज बिक्री कर रहा है। अत: पिता के आदेश पर यूसुफ़ के भाई भी घर की पूँजी लेकर अनाज प्राप्ति के लिये राजदरबार में पहुँचे, जहाँ आदरणीय यूसुफ़ विराजमान थे, जिन्हें ये भाई तो न पहचान सके, परन्तु यूसुफ़ ने अपने भाईयों को पहचान लिया।

The Ummah Technology Mission

तथा मैं हूँ भी उत्तम प्रकार से अतिथि सत्कार करने वालों में।[1]

خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ﴿٥٩﴾

(६०) परन्तु यदि तुम उसे मेरे पास लेकर न आये तो मेरी ओर से तुम्हें कोई नाप नहीं मिलेगा बल्कि तुम मेरे निकट भी न आ सकोगे।[2]

فَإِنْ لَّمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِندِي وَلَا تَقْرَبُونِ ﴿٦٠﴾

(६१) उन्होंने कहा ठीक है हम उसके पिता से इस विषय में फुसलाकर पूरा प्रयास करेंगे।[3]

قَالُوا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ أَبَاهُ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ ﴿٦١﴾

(६२) तथा अपने सेवकों से कहा कि[4] उनका धन उन्हीं की बोरियों में रख दो[5] कि जब लौट

وَقَالَ لِفِتْيَانِهِ اجْعَلُوا بِضَاعَتَهُمْ فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا

---

[1]आदरणीय यूसुफ़ ने अनजान बनकर जब अपने भाईयों से बातें पूछीं, तो उन्होंने जहाँ अन्य सब कुछ बताया यह भी बता दिया कि हम दस भाई यहाँ उपस्थित हैं। परन्तु हमारे दो सौतेले भाई (अर्थात दूसरी माता से) अन्य भी हैं, उनमें से एक जंगल में मर गया तथा उसके दूसरे भाई को पिता ने अपनी सान्तवना के लिये अपने पास रखा है, उसे हमारे साथ नहीं भेजा। जिस पर आदरणीय यूसुफ़ ने कहा कि भविष्य में उसे भी साथ लेकर आना। देखते नहीं कि मैं नाप भी पूरा देता हूँ तथा अतिथि सत्कार तथा सेवा भी भली प्रकार करता हूँ।

[2]प्रलोभन के साथ यह चेतावनी भी है कि यदि ग्यारहवें भाई को साथ न लाये, तो न तुम्हें अनाज मिलेगा न मेरी ओर से यह सेवा-सत्कार का प्रबन्ध होगा।

[3]अर्थात हम अपने पिता से उस भाई को लाने की माँग करेंगे तथा हमें विश्वास है कि हम उसमें सफल होंगे।

[4] فتيان (फ़ित्यान) का अर्थ है नवयुवक जिससे तात्पर्य है नौकर, सेवक तथा दास, जो राजदरबार में नियुक्त थे।

[5]इससे तात्पर्य वह पूँजी है जो यूसुफ़ के भाई अनाज ख़रीदने के लिये अपने साथ लाये थे। رحال (रेहाल) से तात्पर्य उनका सामान जो यात्रा के लिये बाँधे गये थे। पूँजी गुप्तरूप से उनके यात्रा के सामान में रख दो कि सम्भव है पुनः आने के लिये और पूँजी न हो, तो यही पूँजी लेकर आ जायें। कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि भाईयों से अनाज का मूल्य लेना उन्होंने पसन्द नहीं किया, इसलिये पूँजी वापस रखवा दी।

The Ummah Technology Mission

انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٢﴾

कर अपने परिवार में जायेंगे तथा धन को पहचान लें, तो अति संभव है कि यह फिर आयें।

فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٦٣﴾

(६३) जब ये लोग लौटकर अपने पिता के पास गये तो कहने लगे हम से तो अनाज का नाप रोक लिया गया।[1] अब आप हमारे साथ भाई को भेजिये कि हम नाप भर कर लायें हम उसकी रक्षा के उत्तरदायी हैं।

قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾

(६४) (याक़ूब ने) कहा कि क्या मैं इसके विषय में तुम्हारा वैसे ही विश्वास कर लूँ जैसे इस से पूर्व उसके भाई के विषय में विश्वास किया ?[2] बस अल्लाह तआला ही अति उत्तम रक्षक है तथा वह सभी दयावानों से अत्यधिक दयावान है।[3]

وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ؕ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا

(६५) तथा जब उन्होंने अपना सामान खोला तो अपना धन विद्यमान पाया जो उनकी ओर लौटा दिया गया था। कहने लगे हमारे पिताजी ! हमें अन्य क्या चाहिये ?[4] यह हमारा धन

---

[1]अर्थ यह है कि भविष्य में अनाज बिनयामीन के भेजने के साथ प्रतिबन्धित है। यदि यह साथ न जायेगा तो अनाज नहीं मिलेगा। इसलिये इसे अवश्य साथ भेजें ताकि हमें पुनः इसी प्रकार अनाज मिल सके, जिस प्रकार से इस बार मिला है। तथा इस प्रकार का भय न करें जिस प्रकार यूसुफ़ को भेजते हुए किया था। हम उसकी रक्षा करेंगे।

[2]अर्थात तुमने यूसुफ़ को भी साथ ले जाते समय इसी प्रकार संरक्षण का वचन दिया था, परन्तु जो कुछ हुआ, वह सामने है। अब तुम्हारा किस प्रकार विश्वास करूँ ?

[3]फिर भी चूँकि अनाज की अत्यधिक आवश्यकता थी, इसलिये भय के उपरान्त भी बिनयामीन को साथ भेजने से इंकार उचित नहीं समझा तथा अल्लाह पर भरोसा करके उसे भेजने के लिये तैयार हो गये।

[4]अर्थात राजा के इस प्रकार के सदव्यवहार के उपरान्त कि उसने हमारी सेवा तथा सत्कार भी भली प्रकार किया तथा हमारी पूँजी भी वापस कर दी अन्य हमें क्या चाहिए ?

The Ummah Technology Mission

رُدَّتْ اِلَيْنَا ؕ وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿٦٥﴾

हमें लौटा दिया गया है, तथा हम अपने परिवार के लिये अन्न ला देंगे तथा अपने भाई की सुरक्षा रखेंगे तथा एक ऊँट का नाप अधिक लायेंगे।[1] यह नाप तो अधिक सरल है।[2]

قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّاۤ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾

(६६) (याक़ूब ने) कहा कि मैं तो उसे कदापि तुम्हारे साथ न भेजूँगा जब तक तुम अल्लाह को बीच में रखकर मुझे वचन न दो कि तुम उसे मेरे पास पहुँचा दोगे अतिरिक्त इसके कि तुम सब बन्दी बना लिये जाओ।[3] जब उन्होंने पक्का वचन दिया तो उन्होंने कहा कि हम जो कुछ कहते हैं अल्लाह उसका संरक्षक है।

وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ

(६७) तथा (याक़ूब ने) कहा कि ऐ मेरे बच्चो! तुम सब एक द्वार से न जाना बल्कि कई द्वारों से अलग-अलग रूप से प्रवेश करना।[4]

---

[1]क्योंकि प्रति व्यक्ति ऊँट जितना बोझ उठा सकता था अनाज दिया जाता था, बिनयामीन के कारण एक ऊँट की भरती अधिक मिलती।

[2]इसका एक अभिप्राय तो यह है कि राजा के लिये एक ऊँट का भार कोई कठिन कार्य नहीं है, सरल है। दूसरा भावार्थ यह है कि ذلك का संकेत उस अनाज की ओर है, जो साथ लाये थे तथा يَسِيرٌ का अर्थ थोड़ी मात्रा है अर्थात हम जो अनाज लाये हैं वह थोड़ी मात्रा में है, बिनयामीन के जाने से हमें अधिक अनाज मिल जायेगा, तो अच्छी ही बात है, हमारी आवश्यकता अधिक सुचारू रूप से पूर्ण हो जायेगी।

[3]अर्थात तुम्हें सामूहिक कठिनाई आ पड़े अथवा तुम सब मर जाओ अथवा बन्दी बना लिये जाओ, जिससे छुटने में पर तुम असमर्थ हो, तो अन्य बात है, उस स्थिति में तुम क्षम्य होगे।

[4]जब बिनयामीन सहित ग्यारह भाई मिस्र जाने लगे, तो यह निर्देश दिया, क्योंकि एक ही पिता के ग्यारह पुत्र जो शरीरिक ऊँचाई एवं आकार में भी श्रेष्ठ हों, जब एक साथ एक ही स्थान अथवा एक साथ कहीं से गुजरें तो सामान्यत: उन्हें लोग आश्चर्य तथा ईर्ष्या से देखते हैं तथा यही बात नज़र लगने का कारण बनती है। अत: उन्हें बुरी दृष्टि से बचने

The Ummah Technology Mission

مُّتَفَرِّقَةٍ ۖ وَمَا أُغْنِي عَنكُم مِّنَ اللَّهِ مِن شَيْءٍ ۖ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٦٧﴾

मैं अल्लाह की ओर से आयी हुई किसी चीज़ को तुम से टाल नहीं सकता। आदेश केवल अल्लाह ही का चलता है।[1] मेरा पूर्ण विश्वास उसी पर है तथा प्रत्येक भरोसा करने वाले को उसी पर भरोसा करना चाहिये।

وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُم ۖ مَّا كَانَ يُغْنِي عَنْهُم مِّنَ اللَّهِ مِن شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِي نَفْسِ يَعْقُوبَ قَضَاهَا ۚ وَإِنَّهُ

(६८) तथा जब वे उन्हीं मार्गों से जिनका आदेश उनके पिता ने दिया था गये। कुछ न था कि अल्लाह ने जो बात निर्धारित कर दी है वह उन्हें उससे तनिक भी बचा ले। हाँ याक़ूब ने अपने अन्त:करण के भय को पूरा किया।[2]

के लिये उपाय के रूप में यह निर्देश दिये। नज़र लग जाना सत्य है, जैसाकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी सहीह हदीस में सिद्ध है। जैसे العين حق "नज़र लग जाना सत्य है" (सहीह बुखारी किताबुल तिब्ब, बाबुल ऐन हक़्कुन तथा सहीह मुस्लिम किताबुस्सलाम बाबुल तिब्बे वलमरजे वलरुकी) तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बुरी दृष्टि से बचने के लिये यह विनती के वाक्य अपने समुदाय को बताये हैं। जैसे कहा कि जब तुम्हें कोई वस्तु अच्छी लगे तो بارك الله कहो (मुअत्ता इमाम मालिक बाबुलवदुअे मिनल ऐन ताअलीक़ाते मिशकात अलबानी संख्या १२८६) जिसकी नज़र लगे उसको कहा जाये कि स्नान करे तथा उसके स्नान का यह पानी उस व्यक्ति के सिर तथा शरीर पर डाला जाये जिसको नज़र लगी हो (वर्णित संकेत) इसी प्रकार ﴿مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ﴾ पढना क़ुरआन से सिद्ध है। (सूरः कहफ़-३९) ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ﴾ तथा ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾ नज़र के लिये पढ़कर फूँकना चाहिये (जामेअ तिर्मिजी अबवाबुल त्तिब्बे, बाब माजाअ फ़िररुक्य: बिल मुअव्वजतैन)

[1]अर्थात यह निर्देश प्रत्यक्ष साधनों तथा बचाव एवं उपाय के रूप में है जिसके प्रयोग का मानव को आदेश दिया गया है परन्तु इससे अल्लाह तआला के लिखे भाग्य में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। उसी के भाग्य लेखानुसार वह घटित होगा।

[2]अर्थात इस उपाय से अल्लाह के भाग्यलेखा को टाला नहीं जा सकता था। परन्तु आदरणीय याक़ूब ने जो (नज़र लग जाने का) भय था, उसके कारण उन्होंने ऐसा कहा।

The Ummah Technology Mission

لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾

नि:संदेह वह हमारे सिखाये उस ज्ञान का ज्ञानी था, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।[1]

وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَيْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْۤ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٩﴾

(६९) तथा ये सब जब यूसुफ़ के पास पहुँच गये, तो उसने अपने भाई को अपने निकट बिठा लिया तथा कहा कि मैं तेरा भाई (यूसुफ़) हूँ। अब तक ये जो कुछ करते रहे उसकी कुछ चिन्ता न कर।[2]

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِيْ رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ ﴿٧٠﴾

(७०) फिर जब उनका सामान तैयार कर दिया तो अपने भाई के सामान में अपना पानी पीने का प्याला[3] रख दिया। फिर एक पुकारने वाले ने पुकार कर कहा हे यात्री दल![4] तुम लोग तो चोर हो।[5]

---

[1]अर्थात यह उपाय अल्लाह की वह्यी (प्रकाशना) के प्रकाश में थी तथा यह विश्वास भी कि حذر (बचाव व्यवस्था) भाग्य को नहीं बदल सकती, अल्लाह तआला के सिखलाये हुए ज्ञान पर आधारित थी, जिससे अधिकतर लोग अनजान हैं।

[2]कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि दो-दो व्यक्तियों को एक-एक कमरे में ठहराया गया। इस प्रकार बिनयामीन अकेले रह गये, तो यूसुफ़ ने उन्हें अकेले एक कमरे में रखा तथा फिर एकान्त में उनसे बातें कीं तथा उन्हें पूर्व की बातें याद दिलाकर कहा कि उन भाईयों ने मेरे साथ जो कुछ किया, उस पर दुख न कर। कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि बिनयामीन को रोकने के लिये जो बहाना प्रयोग करना था, उससे भी उन्हें परिचित करा दिया था ताकि वह दुखी न हों।

[3]कहा जाता है कि यह سقاية (पानी पीने का बर्तन) स्वर्ण अथवा चाँदी का था, पानी पीने के अतिरिक्त अनाज नापने का भी कार्य उससे लिया जाता था। उसे गुप्त रूप से बिनयामीन के सामान में रख दिया गया।

[4]العِيرُ वास्तव में उन ऊँटों, गधों अथवा खच्चर को कहा जाता है, जिन पर अनाज लाद कर ले जाया जाता है। यहाँ तात्पर्य أصحابُ العِيرِ अर्थात यात्रा वाले यात्री हैं।

[5]चोरी का यह सम्बन्ध अपने स्थान पर उचित था क्योंकि पुकारने वाला सेवक आदरणीय यूसुफ़ की सोची-समझी योजना से अवगत नहीं था, इसका अर्थ यह है कि तुम्हारा हाल तो चोरों जैसा है कि राजा का प्याला, राजा की इच्छा के बिना तुम्हारे सामान के अन्दर है।

The Ummah Technology Mission

قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ﴿٧١﴾

(७१) उन्होंने उनकी ओर मुँह फेर कर कहा कि तुम्हारी क्या वस्तु खो गयी है ?

قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ﴿٧٢﴾

(७२) उत्तर दिया कि राजकीय प्याला खो गया है जो उसे ले आये उसे एक ऊँट के बोझ का अन्न मिलेगा। उस वचन का मैं प्रतिभूत (ज़मानतदार) हूँ।[1]

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِى الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾

(७३) उन्होंने कहा, अल्लाह की सौगन्ध ! तुम्हें भली-भाँति ज्ञात हैं कि हम देश में आशान्ति उत्पन्न करने के लिये नहीं आये तथा न हम चोर हैं।[2]

قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٧٤﴾

(७४) उन्होंने कहा अच्छा चोरी का क्या दण्ड है यदि तुम झूठे हो।[3]

قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِىْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ

(७५) उत्तर दिया कि इसका दण्ड यही है कि जिसके सामान में से पाया जाये वही उसका

---

[1]अर्थात मैं इस बात की ज़मानत देता हूँ कि खोज से पूर्व जो व्यक्ति यह पीने का शाही कटोरा हमको समर्पित कर देगा, तो उसे उपहार अथवा मज़दूरी के रूप में इतना अनाज दिया जायेगा जो एक ऊँट उठा सके।

[2]यूसुफ़ के भाई इस योजना से अनभिज्ञ थे जो आदरणीय यूसुफ़ ने बना रखी थी। इसलिये सौगन्ध खाकर उन्होंने अपने चोर होने का तथा धरती पर आतंक उत्पन्न करने से इंकार किया।

[3]अर्थात यदि तुम्हारे सामान से वह शाही कटोरा मिल गया तो फिर उसका क्या दण्ड होगा ?

The Ummah Technology Mission

بدला है |[1] हम तो अत्याचारियों को यही दण्ड दिया करते हैं |[2]

نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٥﴾

(७६) फिर (यूसुफ़ ने) सामान में खोज प्रारम्भ कर दी अपने भाई के सामान की खोज से पूर्व | फिर उसने पीने के प्याले को अपने भाई के सामान (थैले) से निकाला |[3] हमने यूसुफ़ के लिये इसी प्रकार यह साधन बनाया |[4] उस राजा के प्रावधान के अनुसार यह अपने भाई को न ले सकता था,[5] परन्तु यह कि अल्लाह को अंगीकार हो | हम जिसका

فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ
اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ
اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ
مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ
الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ
دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ
عِلْمٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٦﴾

---

[1]अर्थात चोर को कुछ समय के लिये उस व्यक्ति के हवाले कर दिया जाता था, जिसकी उसने चोरी की होती थी | यह आदरणीय याक़ूब के धर्म विधान में दण्ड था, जिसके अनुसार यूसुफ़ के भाईयों ने यह दण्ड निर्धारित किया |

[2]यह कथन भी यूसुफ़ के भाईयों का है | कुछ व्याख्याकारों के निकट यह कथन यूसुफ़ के निकटवर्ती अधिकारियों का है कि उन्होंने कहा कि हम अत्याचारियों (अपराधियों) को इसी प्रकार ही दण्ड देते हैं परन्तु आयत का अगला भाग कि "राजा के धर्म में वह अपने भाई को बन्दी न बना सकते थे" इस कथन का खण्डन करता है |

[3]पहले भाईयों के सामान को देखा, अन्त में बिनयामीन का सामान देखा ताकि उन्हें यह सन्देह न हो कि यह सोची समझी योजना है |

[4]अर्थात हमने वह्यी (प्रकाशना) द्वारा यूसुफ़ को यह उपाय समझाया | इससे ज्ञात होता है कि किसी उचित उद्देश्य के लिये ऐसा मार्ग अपनाना जिसकी प्रदर्शित अवस्था बहाने तथा योजना की हो, उचित है, यदि वह विधि किसी धार्मिक नियम के विरूद्ध न हो (फ़तहुल क़दीर)

[5]अर्थात राजा का मिस्र में जो कानून तथा नियम प्रचलित था, उसके अनुसार बिनयामीन को रोकना सम्भव नहीं था | इसलिये उन्होंने यात्रियों ही से पूछा कि बताओ ! इस अपराध का क्या दण्ड हो ?

The Ummah Technology Mission

चाहें पद उच्च कर दें।[1] प्रत्येक ज्ञानी के ऊपर एक प्रज्ञ विद्यमान है।[2]

قَالُوْٓا اِنْ يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِيْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ۝٧٧

(७७) उन्होंने कहा कि यदि उसने चोरी की, तो (आश्चर्य की बात नहीं) इसका भाई भी पहले चोरी कर चुका है।[3] यूसुफ़ ने यह बात अपने दिल में रख ली, तथा उनके समक्ष बिल्कुल व्यक्त नहीं किया। कहा कि तुम बुरे स्थान में हो,[4] तथा जो तुम वर्णन कर रहे हो उसे अल्लाह भली-भाँति जानता है।

قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗٓ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا

(७८) उन्होंने कहा कि हे मिस्री अज़ीज़।[5] इसके पिता वयोवृद्ध व्यक्ति हैं। आप इस के

---

[1]जिस प्रकार यूसुफ़ का पद हमने उच्च किया।

[2]अर्थात प्रत्येक ज्ञानी से बढ़कर कोई न कोई ज्ञानी होता है, इसलिये कोई ज्ञानी इस गर्व में न रहे कि मैं ही अपने समय का श्रेष्ठ ज्ञानी हूँ। तथा कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि इसका अर्थ है कि प्रत्येक ज्ञानी के ऊपर सर्वज्ञाता अल्लाह तआला है।

[3]यह उन्होंने अपनी पवित्रता तथा सज्जनता को प्रदर्शित करने के लिये कहा, क्योंकि यूसुफ़ तथा बिनयामीन उनके सगे भाई नहीं थे, सौतेले थे। कुछ व्याख्याकारों ने यूसुफ़ की चोरी के लिये दो गुप्त बातें उदघृत की हैं, जो कोई प्रमाणित कथन पर आधारित नहीं है। उचित बात यही ज्ञात होती है कि उन्होंने अपने को तो अत्यधिक प्रतिष्ठित तथा सुचरित्र सिद्ध किया तथा यूसुफ़ तथा बिनयामीन को तुच्छ चरित्र का तथा मिथ्या बोलते हुए उन्हें चोर तथा बेईमान सिद्ध करने का प्रयत्न किया।

[4]आदरणीय यूसुफ़ के इस कथन से भी ज्ञात होता है कि उन्होंने यूसुफ़ से चोरी को सम्बन्धित करके स्पष्टरूप से असत्य कथन का कार्य किया।

[5]आदरणीय यूसुफ़ को मिस्री अज़ीज़ इसलिये कहा गया कि उस समय सारे वास्तविक अधिकार आदरणीय यूसुफ़ के पास थे, राजा नाम मात्र के लिये ही राजाधिराज था।

The Ummah Technology Mission

مَكَانَهٗۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٧٨

बदले हम में से किसी को ले लीजिये। हम देखते हैं कि आप बड़े उपकारी व्यक्ति हैं।[1]

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗٓ ۙ اِنَّآ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ۝٧٩

(७९) (यूसुफ़ ने) कहा कि हमने जिसके पास अपनी वस्तु पाई है उसके अतिरिक्त अन्य को बन्दी बनाने से अल्लाह की शरण चाहते हैं। ऐसा करने से हम नि:संदेह अन्याय करने वाले हो जायेंगे।[2]

فَلَمَّا اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ۭ قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْٓ اَبِيْٓ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝٨٠

(८०) जब यह उससे निराश होगये तो एकान्त में बैठकर विचार-विमर्श करने लगे।[3] उनमें जो सबसे बड़ा था उसने कहा कि तुम्हें ज्ञात नहीं कि तुम्हारे पिता ने तुमसे अल्लाह को मध्य रखकर दृढ़ प्रतिज्ञा तथा वचन लिया है तथा इससे पूर्व तुम यूसुफ़ के विषय में अपराध कर चुके हो। अब तो मैं इस धरती से न हटूँगा जब तक पिता स्वयं

---

[1]पिता तो अवश्य वृद्ध थे, परन्तु यहाँ उनका मुख्य उद्देश्य बिनयामीन को छुड़ाना था। उनके विचार में वही यूसुफ़ वाली बात रही कि हमें पुन: बिनयामीन के बिना पिता के पास न जाना पड़े तथा पिता हमसे कहें कि तुमने मेरे बिनयामीन को भी यूसुफ़ की भाँति खो दिया। इसलिये यूसुफ़ के उपकारों को वर्णन करके यह बात की कि वह शायद यह उपकार भी कर दें कि बिनयामीन को छोड़ दें तथा उसके स्थान पर किसी अन्य भाई को रख लें।

[2]यह उत्तर इसलिये दिया कि आदरणीय यूसुफ़ का मूल उद्देश्य तो बिनयामीन को ही रोकना था।

[3]क्योंकि बिनयामीन को छोड़कर जाना उनके लिए अत्यन्त कठिन था, वे पिता को मुख दिखाने योग्य न रहे थे। इसलिये आपस में विचार-विमर्श करने लगे कि अब क्या किया जाये ?

The Ummah Technology Mission

मुझे आज्ञा न दें।[1] अथवा अल्लाह तआला मेरी इस समस्या का निर्णय कर दे, वह सर्वश्रेष्ठ निर्णायक है।[2]

(८१) तुम सब पिताजी की सेवा में वापस जाओ तथा कहो कि हे पिताजी ! आपके पुत्र ने चोरी की तथा हमने वही गवाही दी थी जो हम जानते थे।[3] हम कुछ अप्रत्यक्ष की सुरक्षा करने वाले तो न थे।[4]

ارْجِعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَآ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ۝٨١

(८२) तथा आप उन नगरवासियों से पूछ लें, जहाँ हम थे तथा उन यात्रियों से भी पूछ लें

وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ؕ

---

[1]उस बड़े भाई ने इस परिस्थिति में पिता का सामना करने की अपने में शक्ति तथा क्षमता नही पायी तो स्पष्ट कह दिया कि मैं तो यहाँ से उस समय तक नहीं जाऊँगा जब तक स्वयं पिताजी खोज करके मेरे निर्दोष होने का विश्वास न कर लें तथा मुझे आने की आज्ञा न दें।

[2]अल्लाह मेरी समस्या हल कर दे का अर्थ है कि किसी प्रकार (मिस्री अज़ीज़) बिनयामीन को छोड़ दे तथा मेरे साथ जाने की आज्ञा दे दे अथवा यह अर्थ है कि अल्लाह तआला मुझे इतनी शक्ति दे कि मैं बिनयामीन को तलवार अथवा शक्ति से मुक्त कराकर अपने साथ ले जाऊँ।

[3]अर्थात हमने जो वचन दिया था कि बिनयामीन को सकुशल वापस लौटाकर ले आयेंगे, तो यह हमने अपने ज्ञान के आधार पर किया था, तदुपरान्त जो घटना घटित हुई तथा जिसके कारण बिनयामीन को हमें छोड़ना पड़ा, यह हमारे बुद्धि तथा विचार में भी न था। दूसरा अर्थ यह है कि हमने चोरी का जो दण्ड वर्णित किया था कि चोर को ही चोरी के बदले में रख लिया जाये, तो यह दण्ड हमने अपने ही ज्ञान के आधार पर निर्धारित की थी, इसमें किसी प्रकार के कुविचार नहीं मिश्रित थे, परन्तु यह घटना थी कि जब सामान में ढूँढ़ा गया तो चुराया गया कटोरा बिनयामीन के सामान में से निकल आया।

[4]अर्थात भविष्य में घटित होने वाली घटना से हम अनजान थे।

The Ummah Technology Mission

وَإِنَّا لَصٰدِقُونَ ﴿٨١﴾

जिनके साथ हम आये हैं तथा नि:संदेह हम पूर्णरूप से सच्चे हैं।[1]

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۖ عَسَى اللَّهُ أَن يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَمِيعًا ۖ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿٨٣﴾

(८३) (याक़ूब ने) कहा यह तो नहीं बल्कि तुमने अपनी ओर से बात बना ली,[2] अत: धैर्य ही उत्तम है। हो सकता है कि अल्लाह (तआला) उन सबको मेरे पास ही पहुँचा दे।[3] वह ही ज्ञान तथा विज्ञानी है।

وَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا أَسَفَىٰ عَلَىٰ يُوسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنَاهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٨٤﴾

(८४) तथा फिर उन से मुँह फेर लिया और कहा हाय यूसुफ़ ![4] उनकी आँखें दुख-शोक के कारण से सफेद हो गयी थीं।[5] तथा वह दुख शोक को सहन किये हुए थे।

---

[1]नगर से तात्पर्य मिस्र है जहाँ वे अनाज लेने गये थे, अभिप्राय मिस्रवासी हैं। इसी प्रकार والعير से तात्पर्य أصحاب العير अर्थात यात्रा के साथी हैं। आप मिस्र जाकर मिस्रवासियों से तथा उन यात्रियों से जिनके साथ यात्रा करके हम आये हैं, पूछ लें कि जो कुछ हम वर्णन कर रहे हैं, वह सत्य है, इसमें असत्य का कोई मिश्रण नहीं है।

[2]आदरणीय याक़ूब वास्तविक दशा से पूर्णत: अनभिज्ञ थे तथा अल्लाह ने भी वह्यी (प्रकाशना) द्वारा वास्तविक स्थिति नहीं बतायी। इसलिये वह यही समझे कि मेरे इन पुत्रों ने जिस प्रकार इससे पूर्व यूसुफ़ के विषय में बात गढ़कर वर्णन की थी, अब पुन: उसी प्रकार उन्होंने अपनी ओर से बात बना ली है। बिनयामीन के साथ उन्होंने क्या किया उसका निश्चित ज्ञान आदरणीय याक़ूब के पास नहीं था, परन्तु यूसुफ़ की घटना के आधार पर अनुमान करते हुए उनकी ओर से आदरणीय याक़ूब के हृदय में शंका एवं संदेह उचित था।

[3]अब पुन: धैर्य के अतिरिक्त कोई मार्ग न था। फिर भी धैर्य के साथ आशा का दामन भी नहीं छोड़ा। جميعا से तात्पर्य यूसुफ़ बिनयामीन तथा बड़ा पुत्र है जो लज्जा के कारण वहीं मिस्र में रूक गया था कि या तो पिताजी मुझे इसी दशा में आने की आज्ञा दें अथवा मैं किसी प्रकार बिनयामीन को अपने साथ लेकर आऊँगा।

[4]अर्थात इस नये दुख ने यूसुफ़ की जुदाई के पुराने दुख को भी नया कर दिया।

[5]अर्थात आँखों की कालिमा दुख के कारण सफेदी में परिवर्तित हो गयी थी।

The Ummah Technology Mission

قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿٨٥﴾

(८५) (पुत्रों ने) कहा अल्लाह की सौगन्ध ! आप सदैव यूसुफ़ के स्मरण में ही लीन रहेंगे यहाँ तक कि घुल जायेंगे अथवा मर जायेंगे ।[1]

قَالَ اِنَّمَاۤ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْۤ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾

(८६) उन्होंने कहा कि मैं तो अपनी विपता तथा दुख की गुहार अल्लाह से कर रहा हूँ। मुझे अल्लाह की ओर से उन बातों का ज्ञान प्राप्त है, जिनसे तुम अनजान हो ।[2]

يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٧﴾

(८७) मेरे प्यारे पुत्रो ! तुम जाओ तथा यूसुफ़ और उसके भाई की भली प्रकार खोज करो ।[3] तथा अल्लाह की कृपा से निराश न हो। निःसंदेह अल्लाह की कृपा से वही निराश होते हैं जो काफ़िर होते हैं ।[4]

---

[1] حَـرَضٌ उस शारीरिक विकार अथवा मानसिक निर्बलता को कहते हैं, जो बुढ़ापे प्रेम अथवा निरन्तर दुख के कारण मनुष्य को हो जाती है, यूसुफ़ के वर्णन से भाईयों की द्वेष अग्नि भड़क उठी, तथा अपने पिता को यह कहा।

[2] इससे तात्पर्य तो वह स्वप्न है जिसके विषय में उन्हें पूर्ण विश्वास था कि अवश्य साकार होगा तथा वे यूसुफ़ के समक्ष दण्डवत होंगे अथवा उनका यह विश्वास था कि यूसुफ़ जीवित हैं तथा उनसे जीवन में अवश्य मिलन होगा।

[3] अत: उसी विश्वास से प्रेरित होकर उन्होंने अपने पुत्रों को यह आदेश दिया।

[4] जिस प्रकार से अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने वर्णन किया।

﴿وَمَن يَقْنَطُ مِن رَّحْمَةِ رَبِّهِۦٓ إِلَّا ٱلضَّآلُّونَ﴾

"भटके हुए लोग ही अल्लाह की दया से निराश होते हैं।" (सूरः अल-हज्र ,५६)

इसका अर्थ यह है कि ईमानवालों को कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य तथा संयम का तथा अल्लाह की असीम कृपा की आशाओं का दामन नहीं छोड़ना चाहिये।

The Ummah Technology Mission

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿۸۸﴾

(८८) फिर ये लोग जब यूसुफ़[1] के पास पहुँचे तो कहने लगे कि हे अज़ीज़ ! हम तथा हमारा परिवार अत्यधिक कठिनाई में है। हम थोड़े से तुच्छ धन लाये हैं।[2] परन्तु आप हमें पूरे अन्न का नाप दे दीजिये,[3] तथा हम पर दान कीजिये[4] अल्लाह तआला दान करने वालों को बदला देता है।

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ﴿۸۹﴾

(८९) (यूसुफ़ ने) कहा जानते भी हो कि तुमने यूसुफ़ तथा उसके भाई के साथ अपनी अज्ञानतावश क्या-क्या किया ?[5]

قَالُوْٓا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ قَالَ اَنَا

(९०) उन्होंने कहा क्या (वास्तव में) तू ही यूसुफ़ है।[6] उत्तर दिया हाँ, मैं ही यूसुफ़ हूँ।

---

[1]यह तीसरी बार उनका मिस्र आना था।

[2]अर्थात अनाज लेने के लिये हम जो मूल्य लेकर आये हैं वह अत्यन्त तुच्छ है तथा थोड़ा है।

[3]अर्थात हमारी छोटी पूंजी को न देखें, हमें उसके बदले में पूरा नाप दें।

[4]अर्थात हमारी कम पूंजी स्वीकार करके हम पर उपकार तथा दान करें। तथा कुछ व्याख्याकारों ने इसका अर्थ लिखा है कि हमारे भाई बिनयामीन को स्वतंत्र करके हम पर उपकार करें।

[5]जब उन्होंने अत्यन्त नम्रतापूर्वक भाव से दान-पुण्य अथवा भाई के स्वतन्त्रता की अपील की तो साथ ही पिता की वृद्धावस्था, स्वास्थ की क्षीणता तथा पुत्र की जुदाई का भी वर्णन किया, जिससे यूसुफ़ का दिल भर आया, आँखें छलक उठीं, तथा वास्ताविकता प्रदर्शित करने के लिये बाध्य हो गये। फिर भी भाईयों की क्रूरता के वर्णन के साथ ही नम्र चरित्र का भी प्रदर्शन किया कि यह कार्य तुमने ऐसी अवस्था में किया जब तुम अशिक्षित तथा बुद्धिहीन थे।

[6]भाईयों ने जब मिस्री अधिकारी के मुख से उस यूसुफ़ का वर्णन सुना, जिसे उन्होंने बाल्यकाल मे कनआन के एक अंधेरे कुएं में फेंक दिया था, तो वे आश्चर्य में पड़ गये तथा ध्यानपूर्वक देखने के लिये बाध्य भी हो गये कि कहीं हम से सम्बोधक राजा, यूसुफ़

The Ummah Technology Mission

يُوْسُفُ وَهٰذَآ اَخِيْ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٠﴾

तथा यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हम पर कृपा तथा दया की। बात यह है कि जो भी परहेज़गारी तथा धैर्य से रहे, तो अल्लाह (तआला) किसी पुण्य करने वाले का बदला नष्ट नहीं करता है।[1]

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِـِٕيْنَ ﴿٩١﴾

(९१) उन्होंने कहा, अल्लाह की सौगन्ध कि अल्लाह ने तुझे हम पर श्रेष्ठता प्रदान की है तथा यह भी सत्य है कि हम अपराधी हैं।[2]

قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۫ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٩٢﴾

(९२) उत्तर दिया, आज तुम पर कोई आरोप नहीं है।[3] अल्लाह तुम्हें क्षमा करे वह सभी दयावानों में दयानिधि है।

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ

(९३) मेरा यह कुर्ता तुम ले जाओ तथा मेरे पिता के मुख पर डाल दो कि वह देखने लगें[4]

तो नहीं ? वरन् यूसुफ़ की घटना का ज्ञान उन्हें किस प्रकार हो सकता है ? अत: उन्होंने प्रश्न किया कि क्या तू यूसुफ़ ही तो नहीं ?

[1]प्रश्नोत्तर में स्वीकार के साथ अल्लाह के उपकार का वर्णन तथा धैर्य एवं संयम के अच्छे परिणाम का भी वर्णन करके बता दिया कि तुमने मुझे मार डालने में कोई कसर नहीं छोड़ी। परन्तु यह अल्लाह तआला की दया तथा उपकार है कि उसने न केवल कुऐं से निकाला, अपितु मिस्र का राज्य भी प्रदान किया तथा यह फल है उस धैर्य तथा अल्लाह से भय करने का जिसकी सन्मति अल्लाह ने मुझे प्रदान की।

[2]भाईयों ने जब यूसुफ़ की यह प्रतिष्ठा देखी तो अपनी त्रुटियों तथा दोषों को स्वीकार कर लिया।

[3]आदरणीय यूसुफ़ ने भी ईशदूतत्व की गरिमा दिखाते हुए क्षमा करके कहा कि जो हुआ सो हो गया। आज तुम्हारी कोई भर्त्सना अथवा निन्दा नहीं की जायेगी। मक्का विजय के दिन रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी उन काफ़िरों तथा कुरैश के प्रमुखों को, जो आप के खून के प्यासे थे तथा आप को नाना प्रकार के कष्ट दिये थे, इन्ही शब्दों को कहकर उन्हें क्षमा कर दिया था। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

[4]कमीज़ के मुख पर पड़ने से आँखों की ज्योंति का आ जाना, एक विचित्रता तथा चमत्कार के रूप में था।

The Ummah Technology Mission

وَأْتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٣﴾

तथा आ जायें एवं अपने पूरे परिवार को मेरे पास ले आओ।[1]

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ لَوْلَا أَن تُفَنِّدُونِ ﴿٩٤﴾

(९४) तथा जब ये यात्री दल विदा हुआ तो उनके पिता ने कहा कि मुझे यूसुफ़ की सुगन्ध आ रही है, यदि तुम मुझे निर्बोध न समझो।[2]

قَالُوا تَاللَّهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ ﴿٩٥﴾

(९५) वे कहने लगे कि अल्लाह की सौगन्ध, आप तो अपनी उसी पुरानी त्रुटि[3] पर स्थिर हैं।

فَلَمَّا أَن جَاءَ الْبَشِيرُ أَلْقَاهُ عَلَىٰ وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيرًا ۖ قَالَ

(९६) जब शुभसूचना देने वाले ने पहुँचकर उनके मुख पर कुर्ता डाला उसी क्षण वह पुनः देखने लगे।[4] कहा कि क्या मैं तुमसे न

---

[1]यह यूसुफ़ ने अपने पूरे परिवार को मिस्र आने का आमंत्रण दिया।

[2]उधर वह कमीज़ लेकर यात्री मिस्र से चले तथा इधर आदरणीय याक़ूब को अल्लाह तआला की ओर से अद्भुत प्रकार से आदरणीय यूसुफ़ की सुगन्ध आने लग गयी। यह जैसे इस बात की घोषणा थी कि अल्लाह के पैग़म्बर (ईशदूत) को भी, जब तक अल्लाह तआला की ओर से व्यवस्था तथा सूचना न पहुँचे, तो पैग़म्बर अनजान होता है, चाहे पुत्र अपने नगर के किसी कुएं में ही क्यों न हो ? तथा जब अल्लाह प्रबन्ध कर दे, तो मिस्र जैसे दूरस्थ क्षेत्र से भी पुत्र की सुगन्ध आ जाती है।

[3] ضلال से तात्पर्य प्रेम तथा प्यार की मुग्धता है, जो आदरणीय याक़ूब को अपने पुत्र युसुफ़ के साथ थी। पुत्र कहने लगे, अभी तक आप उसी पुरानी (त्रुटि) पर अर्थात यूसुफ़ के प्रेम में लीन हैं इतना दीर्घकाल समाप्त होने के पश्चात भी आपके हृदय से यूसुफ़ का प्रेम न निकला।

[4]अर्थात जब वह शुभसूचना देने वाला आ गया तथा आकर वह कमीज आदरणीय याक़ूब के मुख पर डाल दी, तो उसे चमत्कारिक रूप से उनकी नयन ज्योति फिर से वापस आ गयी।

The Ummah Technology Mission

اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾

कहा करता था कि मैं अल्लाह की ओर से वह बातें जानता हूँ, जो तुम नहीं जानते।[1]

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ اِنَّا كُنَّا خٰطِـِٕيْنَ ﴿٩٧﴾

(९७) उन्होंने कहा हे पिता! आप हमारे पापों की क्षमा याचना कीजिये, नि:संदेह हम अपराधी हैं।

قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٩٨﴾

(९८) कहा, अच्छा मैं शीघ्र ही तुम्हारे लिये अपने प्रभु से क्षमा की प्रार्थना करूँगा।[2] वह अत्यधिक क्षमा करने वाला तथा अत्यन्त कृपालु है।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾ ؕ

(९९) जब ये पूर्ण परिवार यूसुफ़ के पास पहुँच गया तो यूसुफ़ ने अपने माता-पिता को अपने निकट स्थान दिया।[3] तथा कहा कि अल्लाह को स्वीकार है तो आप सब सुख-शाँति से मिस्र में आ जाओ।

وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا

(१००) तथा अपने सिंहासन पर अपने माता-पिता[4] को उच्च स्थान पर बिठाया तथा सब

---

[1]क्योंकि मेरे पास ज्ञान का एक साधन वह्यी (प्रकाशना) भी है, जो तुममें से किसी के पास नहीं है। इस वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा अल्लाह तआला अपने पैग़म्बरों को हालात से आवश्यकतानुसार तथा कारणवश अवगत करता रहता है।

[2]तुरन्त क्षमा-याचना न करके क्षमा-याचना का वचन दिया। उद्देश्य यह था कि रात्रि के अन्तिम पहर में, जो अल्लाह के विशेष भक्तों का अल्लाह की इबादत करने का विशेष समय होता है, अल्लाह से उनकी क्षमा के लिये प्रार्थना करूँगा।

[3]अर्थात आदर-सम्मान के साथ उन्हें अपने निकट स्थान दिया तथा उनका बहुत सत्कार किया।

[4]कुछ व्याख्याकारों का विचार है कि यह सौतेली माता तथा सगी मौसी थीं, क्योंकि यूसुफ़ की माता का बिनयामीन के जन्म के पश्चात देहान्त हो गया था, आदरणीय याक़ूब ने उनके देहान्त के पश्चात उनकी बहन के साथ विवाह कर लिया था। यही

The Ummah Technology Mission

لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ ۖ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ۭ وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْٓ اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَجَاۗءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ۭ اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝١٠٠

उसके समक्ष दण्डवत हो गये[1] तथा तब कहा कि पिताजी ! यह मेरे प्रथम स्वप्न का फल है [2] मेरे प्रभु ने उसे साकार कर दिखाया। उस ने मेरे साथ बड़ा उपकार किया जबकि मुझे कारागार [3] से निकाला तथा आप लोगों को रेगिस्तान (मरूस्थल) से[4] ले आया, उस भेद के पश्चात जो शैतान ने मुझ में तथा मेरे भाईयों में डाल दिया था।[5] मेरा प्रभु जो चाहे उसके लिए अच्छी व्यवस्था करने वाला है तथा सर्वज्ञाता विज्ञानी है।

मौसी (ख़ाला) अब आदरणीय याक़ूब के साथ मिस्र गयी थीं (फ़तहुल क़दीर) परन्तु इमाम इब्ने जरीर तबरी ने इसके विपरीत यह कहा है कि यूसुफ़ की माता का देहान्त नहीं हुआ था तथा वही सगी माता साथ थीं। (इब्ने कसीर)

[1]कुछ ने इसका अनुवाद यह किया है कि मान-सम्मान के लिये यूसुफ़ के समक्ष झुक गये परन्तु وَ خَرُّوا له سُجَّدًا के शब्द बताते हैं कि वे धरती पर यूसुफ़ के समक्ष माथा रख दिये। यह सिजद: (दण्डवत) माथा टेकने के अर्थों में है फिर भी यह सजद: सम्मान के लिये है, वंदना के रूप में नहीं तथा सम्मान सूचक सजद: आदरणीय याक़ूब के धर्म-विधान में वैध था। इस्लाम में शिर्क (मिश्रण) को रोकने के लिये आदर-मान हेतु सजद: करना अवैध कर दिया गया, तथा अब सम्मान स्वरूप सजदा भी किसी को करना वर्जित है।

[2]अर्थात आदरणीय यूसुफ़ ने जो स्वप्न देखा था इतनी परीक्षाओं को पार करने के पश्चात अन्तत: उसका यह फल सामने आया कि अल्लाह तआला ने आदरणीय यूसुफ़ को राजसिंहासन पर बैठाया तथा माता-पिता सहित सभी भाईयों ने उनको दण्डवत किया।

[3]अल्लाह के उपकार में कुऐं से निकलने की चर्चा नहीं किया ताकि भाई लज्जित न हों। यह नबूअत (ईशदूत) का आचरण है।

[4]मिस्र जैसे विकसित क्षेत्र की अपेक्षा किनआन का स्थान एक मरूस्थल का सा था इसी लिये उसे بَدْوٌ शब्द से वर्णित किया।

[5]यह भी एक दयापूर्ण आचरण का नमूना है कि भाईयों पर तनिक भी आक्षेप न लगाये तथा शैतान को इस कार्यवाही का कारण ठहराया।

The Ummah Technology Mission

رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۫ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠١﴾

(१०१) हे मेरे प्रभु ! तूने मुझे राज्य प्रदान किया[1] तथा मुझे स्वप्नों के फल का ज्ञान दिया[2] हे आकाशों तथा धरती के उत्पन्न करने वाले ! तू ही दुनियाँ तथा आख़िरत में मेरा संरक्षक तथा सहायक है, तू मुझे मुसलमान की अवस्था में मार तथा पुण्य करने वालों में सम्मिलित कर दे।[3]

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿١٠٢﴾

(१०२) यह परोक्ष की सूचनाओं में से है जिस की हम आपकी ओर वह्यी (प्रकाशना) कर रहे हैं। तो आप उनके पास न थे जबकि उन्होंने अपनी बात ठान ली थी तथा वे छल तथा कपट करने लगे थे।[4]

---

[1]अर्थात मिस्र का राज्य प्रदान किया जैसाकि विस्तृत वर्णन हो चुका है।

[2]आदरणीय यूसुफ़ अल्लाह के पैग़म्बर थे, जिन पर अल्लाह की ओर से प्रकाशना अवतरण होती तथा विशेष तथा मुख्य बातों का ज्ञान उनको दिया जाता था। अत: इस नबूअत के ज्ञान के प्रकाश में पैग़म्बर स्वप्नों का फल भी ठीक-ठीक निकाल लेते थे। फिर भी स्वप्न फल निकालने की यह योग्यता अल्लाह (परमेश्वर) अब भी किसी को प्रदान कर देता है।

[3]अल्लाह तआला ने आदरणीय यूसुफ़ पर जो उपकार किये उन्हें याद करके तथा अल्लाह तआला के अन्य गुणों का वर्णन करके प्रार्थना कर रहे हैं कि जब मुझे मृत्यु (मौत) आये तो इस्लाम की अवस्था में आये तथा मुझे सज्जन (पुनीत) पुरूषों के साथ मिला दे। इससे तात्पर्य आदरणीय यूसुफ़ के पूर्वज आदरणीय इब्राहीम तथा इसहाक़ आदि हैं, कुछ लोगों को इस प्रार्थना से यह शंका उत्पन्न हुई कि आदरणीय यूसुफ़ ने मृत्यु की प्रार्थना की यद्यपि यह मृत्यु की प्रार्थना नहीं है, अन्तिम क्षण तक इस्लाम पर दृढ़ रहने की प्रार्थना है।

[4]अर्थात यूसुफ़ के साथ, जबकि उन्हें कुऐं में फेंक आये अथवा तात्पर्य आदरणीय याक़ूब है अर्थात उनको यह कह कर कि यूसुफ़ को भेड़िया खा गया है तथा यह उसकी कमीज़ है, जो रक्तरंजित है उनके साथ छल किया गया। अल्लाह तआला ने इस स्थान पर इस बात का खण्डन किया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को परोक्ष का ज्ञान था। परन्तु यह खण्डन साधारण ज्ञान की नही है क्योंकि अल्लाह तआला ने आपको

The Ummah Technology Mission

وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾

(१०३) यद्यपि आप लाख चाहें अधिकतर लोग ईमानदार न होंगे।[1]

وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾

(१०४) तथा आप उनसे उस पर कोई मज़दूरी नहीं माँग रहे हैं।[2] यह तो समस्त संसार के लिये शिक्षा ही शिक्षा है।[3]

وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ

(१०५) तथा आकाशों तथा धरती में बहुत से प्रतीक हैं, जिनसे ये मुँह फेर कर निकल

प्रकाशना के द्वारा अवगत करा दिया। यह खण्डन प्रत्यक्ष दर्शन का है कि उस समय आप वहाँ उपस्थित नहीं थे। इसी प्रकार ऐसे लोगों से आपका सम्बन्ध तथा सम्पर्क नहीं रहा है जिनसे आप ने सुना हो। यह केवल अल्लाह तआला ही है जिसने आपको इस अनदेखी घटना की सूचना दी है, जो इस बात का प्रमाण है कि आप अल्लाह के सच्चे नबी हैं तथा अल्लाह तआला की ओर से आप पर प्रकाशना अवतरित होती है। अल्लाह तआला ने अन्य भी कई स्थानों पर इसी प्रकार अन्तर्ज्ञानी तथा परोक्षज्ञ होने का खण्डन किया है। जैसे देखिये *सूरः आले इमरान*-७ तथा ४४, *अल-कसस*-४५ तथा ४६, *सूरः स्वाद*- ६९ तथा ७०।

[1]अर्थात अल्लाह तआला आप को पूर्व कालिक घटनाओं से अवगत करा रहा है ताकि लोग उनसे शिक्षा लें तथा अल्लाह के पैग़म्बरों (ईशदूतों) के मार्ग का अनुसरण करें तथा सफलता के अधिकारी बन जायें। परन्तु इसके उपरान्त भी लोगों की अधिकतर संख्या ईमान लाने वाली नहीं है क्योंकि वे विगत के समुदायों की घटनायें सुनते तो हैं, परन्तु शिक्षा प्राप्त करने के लिये नहीं, केवल मनोरंजन तथा आनंद के लिये। इसलिये वे ईमान से वंचित रहते हैं।

[2]कि जिस से उनको यह शंका हो कि यह नबूअत का दावा तो केवल धन एकत्रित करने का बहाना है।

[3]ताकि लोग इससे शिक्षा प्राप्त करें तथा अपना यह लोक तथा परलोक सजा लें। अब दुनियाँ के लोग इससे आँखें फेरे रखें तथा इससे शिक्षा न प्राप्त करें तो लोगों की त्रुटि है तथा उनका दुर्भाग्य है, क़ुरआन तो वास्तव में दुनियाँ वालों के लिये संमार्ग तथा शिक्षा ही के लिये आया है।

The Ummah Technology Mission

عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿١٠٥﴾

जाते हैं।[1]

وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ﴿١٠٦﴾

(१०६) तथा उनमें से अधिकतर लोग अल्लाह पर ईमान रखने के उपरान्त भी मुशरिक ही हैं।[2]

اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٠٧﴾

(१०७) क्या वे इस बात से निर्भय हो गये हैं कि उनके पास अल्लाह के प्रकोपों में से कोई सामान्य प्रकोप आ जाये अथवा उन पर सहसा क़ियामत टूट पड़े तथा वे अचेत हों।

قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۣ عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ؕ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٨﴾

(१०८) (आप) कह दीजिये, मेरा यही मार्ग है। मैं तथा मेरे अनुयायी अल्लाह की ओर बुला रहे हैं, पूर्ण विश्वास तथा निश्चता के उपरान्त[3] तथा अल्लाह पवित्र

---

[1]आकाश तथा धरती की उत्पत्ति तथा उनमें असंख्य वस्तुओं का अस्तित्व, इस बात का प्रमाण है कि एक स्रष्टा तथा रचयिता है जिसने इन वस्तुओं को बनाया है तथा एक नियोजक वही है जो उनका ऐसा प्रबन्ध कर रहा है कि आदिकाल से यह प्रबन्ध चल रहा है परन्तु इन में कभी आपस में टकराव तथा दुर्घटना नहीं हुई है। परन्तु लोग इन चीज़ों को देखते हुए यूँ ही चले जाते हैं इन पर विचार नहीं करते तथा न उनसे प्रभु का परिचय प्राप्त करते हैं।

[2]यह वह वास्तविकता है जिसे क़ुरआन ने विभिन्न स्थानों पर बड़ी स्पष्टता के साथ वर्णन किया है कि ये मूर्तिपूजक यह स्वीकार करते हैं कि आकाश तथा धरती का स्रष्टा, स्वामी पोषक तथा संचालक केवल अल्लाह तआला ही है। परन्तु इसके उपरान्त इबादत में अल्लाह के साथ अन्यों को भी सम्मिलित कर लेते हैं तथा इस प्रकार अधिकतर लोग मुशरिक (बहुदेववादी) हैं। अर्थात प्रत्येक युग के लोग तौहीद उपासना (पूजा) को मानने के लिये तैयार नहीं होते हैं। आज के समाधि पूजकों का शिर्क भी यही है कि वह क़ब्रों में गड़े महापरूषों को पूजा गुणों का अधिकारी समझकर उन्हें सहायता के लिये पुकारते भी हैं तथा इबादत की कई रीतियाँ भी अपनाते हैं।

[3]अर्थात यह तौहीद (एकेश्वरवाद) का मार्ग ही मेरा मार्ग है, बल्कि प्रत्येक पैग़म्बरों का यही मार्ग रहा है, इसी की ओर मैं तथा मेरे अनुयायी दृढ़ विश्वास के साथ तथा धार्मिक नियमों के प्रमाणों के साथ लोगों को बुलाते हैं।

The Ummah Technology Mission

है[1] तथा मैं मूर्तिपूजकों (मिश्रणवादियों) में नहीं।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ؕ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰۹﴾

(१०९) तथा आप से पूर्व हमने बस्ती वालों में जितने भी रसूल भेजे हैं सब पुरूष ही थे, जिनकी ओर हम वह्यी (प्रकाशना) उतारते गये।[2] क्या धरती पर चल-फिर कर उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पूर्व के लोग का कैसा परिणाम हुआ? नि:संदेह आख़िरत का घर परहेज़गारों (संयम बरतने वालों) के लिये अति उत्तम है, क्या तुम फिर भी नहीं समझते?

حَتّٰٓى اِذَا اسْتَيْـَٔسَ الرُّسُلُ وَ ظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَآءَهُمْ

(११०) यहाँ तक कि जब रसूल निराश होने लगे[3] तथा समुदाय के लोग यह विचार करने लगे कि उन्हें झूठ कहा गया।[4] तुरन्त हमारी

---

[1]अर्थात मैं शुद्धता तथा पवित्रता का वर्णन कर रहा हूँ, इस बात से कि उसका कोई साझीदार, समतुल्य, प्रतिमा अथवा मंत्री तथा सलाहकार अथवा सन्तान तथा पत्नी हो। वह इन सभी वस्तुओं से पवित्र है।

[2]यह आयत इस बात का प्रमाण है कि सभी नबी पुरूष हुए हैं, स्त्रियों से किसी को भी नबूअत का पद नहीं मिला, इसी प्रकार उनका सम्बन्ध नगरों से था, उनमें से कोई भी ग्रामीण (ग्रामवासियों) में से न था। क्योंकि ग्रामीण तथा देहाती नगरवासियों की अपेक्षा स्वाभाविक रूप से कठोर तथा व्यवहार में कटु होते हैं तथा नगरवासी उनकी अपेक्षा कोमल, सरल तथा सभ्य होते हैं तथा यह विशेषतायें नबूअत के लिये आवश्यक हैं।

[3]यह निराशा अपने समुदाय के ईमान न लाने से हुई।

[4]अर्थात इन पैग़म्बरों के अनुयायियों के हृदय में यह शंका उत्पन्न होंने लगी कि उनसे यूँ ही यातना का झूठा वायदा किया गया है, यातना शायद आयेगी ही नहीं। ध्यान रहे कि मात्र इस प्रकार की शंका का उत्पन्न होना ईमान के विरूद्ध नहीं है। कुछ ने ظنوا का कर्ता समुदाय अर्थात काफ़िर लोगों को कहा है अर्थात काफ़िर लोग यातना की चेतावनी पर पहले तो भयभीत हुए परन्तु जब अधिक देर होने लगी तो विचार किया कि यातना तो आती नहीं है (जैसाकि पैग़म्बर की ओर से दावा हो रहा है) तथा न आता दिखाई पड़ रहा है, प्रतीत होता है कि नबियों से भी यूँ ही झूठा वायदा किया गया है। तात्पर्य नबी

The Ummah Technology Mission

نَصْرُنَا ۖ فَنُجِّيَ مَن نَّشَاءُ ۖ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١١٠﴾

सहायता उन्हें आ पहुँची[1] जिसे हमने चाहा उसे मुक्ति प्रदान की।[2] बात यह है कि हमारा प्रकोप पापियों से वापस नहीं किया जाता।

لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۗ مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَٰكِن تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١١١﴾

(१११) इनकी कथाओं में बुद्धिमानों के लिये नि:संदेह शिक्षा तथा चेतावनी है, यह क़ुरआन झूठ बनायी हुई बातें नहीं, बल्कि यह युक्ति-शास्त्र है, उन किताबों के लिये जो इससे पूर्व की हैं। तथा प्रत्येक वस्तु का सविस्तार वर्णन एवं मार्गदर्शन तथा कृपा है ईमान वालों के लिये।[3]

करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना देना है कि आपके समुदाय पर यातना में जो देरी हो रही है, उससे घबराने की आवश्यकता नहीं है। प्राचीन काल के समुदायों पर भी यातना में देरी की गयी थी तथा अल्लाह की ओर से उसकी चाहत तथा ज्ञानानुसार उन्हें अत्यधिक समय प्रदान किया गया। यहाँ तक कि रसूल अपने समुदाय के ईमान से निराश हो गये तथा लोग यह विचार करने लगे कि शायद उन्हें यातना का यूँ ही झूठ कह दिया गया है।

[1]जब उनकी निराशा इस भयानक शंका तथा संदेह तक पहुँच गयी तो तुरन्त हमारी सहायता उनके पास पहुँच गयी तथा उनके दिलों से शंका के काँटे निकल गये। इसमें वास्तव में अल्लाह तआला की उस अवसर देने की नीति का वर्णन है, जो वह अवज्ञाकारियों को देता है, यहाँ तक कि इस विषय में वह अपने पैग़म्बर की इच्छा के विपरीत भी अधिक से अधिक समय प्रदान करता है, शीघ्रता नहीं करता, यहाँ तक कि कई बार पैग़म्बरों के अनुयायी भी यातना से निराश होकर यह समझने लगते हैं कि उनसे यूँ ही मिथ्यावचन किया गया है।

[2]यह मुक्ति प्राप्त करने वाले ईमान वाले ही होते थे।

[3]अर्थात यह क़ुरआन जिस में यह यूसुफ़ की कथा तथा अन्य समुदायों की घटनाओं का वर्णन है, कोई गढ़ा हुआ नही है। बल्कि यह पूर्व की किताबों की पुष्टि करने वाला तथा उसमें धर्म के विषयों सभी आवश्यक बातों का विस्तृत वर्णन है तथा ईमानवालों के लिये संमार्ग तथा कृपा है।

The Ummah Technology Mission

सूरतु-र्रा'द-१३

سُوْرَةُ الرَّعْدِ

सूरः *अल-राअद* मदीने में उतरी तथा इस में तैंतालीस आयतें एवं छः रुकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है।

الٓمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ۗ وَالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ①

(१) अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰ रा॰। ये क़ुरआन की आयतें हैं तथा जो कुछ आपकी ओर आपके प्रभु की ओर से उतारा गया है सब सत्य है। परन्तु अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते (विश्वास नहीं करते)।

اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ

(२) अल्लाह वह है जिसने आकाशों को बिना स्तम्भ के ऊँचा कर रखा है कि तुम उसे देख रहे हो। फिर वह अर्श पर स्थिर है,[1] उसी ने सूर्य तथा चन्द्रमा को आधीन बना रखा है। प्रत्येक एक निर्धारित समय तक चल रहा है।[2] वही कार्य की व्यवस्था करता है, वह

---

[1]"इस्तवा अलल अर्श" का भावार्थ इससे पूर्व वर्णन हो चुका है कि इससे तात्पर्य अल्लाह तआला का अर्श पर स्थिर होना है। मोहद्देसीन (हदीसों के ज्ञानियों) का यही पथ है। वह इसका विस्तृत कल्पना नहीं करते, जैसे कुछ अन्य गिरोह इसमें तथा प्रभु के अन्य गुणों में कष्ट कल्पना करते हैं। परन्तु मोहद्देसीन कहते हैं कि इस अवस्था का वर्णन नहीं किया जा सकता है तथा न इसे किसी वस्तु के साथ उपमा दी जा सकती है। (*अल-शूरा*)

[2]इसका एक अर्थ यह भी है कि एक निर्धारित समय तक अर्थात क़ियामत तक अल्लाह के आदेश से चलते रहेंगे। जैसाकि कहा है।

﴿ وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴾

"तथा सूर्य अपने स्थिर होने के समय तक चल रहा है।" (सूरः *यासीन*-३८)

दूसरा अर्थ यह है कि चन्द्रमा तथा सूर्य दोनों अपने-अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहते हैं, सूर्य अपने चक्र एक वर्ष में तथा चन्द्रमा एक महीने में पूरा कर लेता है। जिस प्रकार कहा।

The Ummah Technology Mission

بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ ۝٢

अपनी निशानियाँ खोल-खोल कर वर्णन कर रहा है कि तुम अपने प्रभु से मिलने का विश्वास कर लो।

وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا ۖ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ

(३) तथा उसी ने धरती को फैला कर बिछा दिया तथा उसमें पर्वत तथा नदियाँ उत्पन्न कर दी हैं,[1] तथा उसमें हर प्रकार के फलों के जोड़े दोहरे-दोहरे पैदा किये हैं।[2] वह रात्रि

﴿ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنَاهُ مَنَازِلَ ﴾

"तथा हमने चन्द्रमा के अनेक स्थान निर्धारित किये हैं।" *(सूरः यासीन-३९)*

सात बड़े ग्रह-समूह हैं, जिनमें से दो सूर्य तथा चन्द्रमा हैं। यहाँ केवल इन दो का वर्णन किया है क्योंकि यही दो सबसे विशाल तथा महत्वपूर्ण हैं। जब यह दोनों भी अल्लाह के आदेश के अधीन हैं तो दूसरे ग्रह उससे अधिक अधीन हैं। तथा जब यह अल्लाह के आदेश के अधीन हैं तो यह देवता अथवा पूजनीय नहीं हो सकते, पूजा के योग्य तो वही है जिसने उनको अधीन बना रखा है इसलिए कहा।

﴿ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴾

"सूर्य तथा चन्द्रमा के समक्ष शीश न झुकाओ उस अल्लाह के समक्ष शीश झुकाओ जिसने उन्हें उत्पन्न किया यदि तुम केवल उसकी इबादत करना चाहते हो।" *(सूरः हा॰मीम॰ सजदः-३८)*

﴿ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ ﴾

"सूर्य, चन्द्रमा तथा तारे, सब उसके आदेश के अधीन हैं।" *(सूरः अल-आराफ़, ५४)*

[1]धरती की लम्बाई-चौड़ाई का अनुमान भी जनसामान्य के लिये कठिन है तथा उच्च तथा विशाल पर्वतों के द्वारा धरती में जैसे कील गाड़ी गयी हैं। नदियों, नालों तथा स्रोतों की ऐसी श्रृंखला स्थापित किया कि जिससे मनुष्य स्वयं भी लाभान्वित होते हैं तथा अपने खेतों की सिंचाई भी करते हैं, जिनसे विभिन्न प्रकार के अनाज तथा फल पैदा होते हैं, जिनके आकार-प्रकार भी भिन्न होते हैं तथा स्वाद में भिन्न होते हैं।

[2]इसका एक अर्थ यह है नर तथा मादा दोनों बनाये जैसाकि आधुनिक अविष्कारों ने इसकी पुष्टि कर दी है। दूसरा अर्थ (जोड़े-जोड़े का) यह है कि मीठा-खट्टा, ठंड-गर्म, श्याम-श्वेत तथा स्वादिष्ट-कटुस्वाद इसी प्रकार एक-दूसरे से भिन्न तथा विपरीत प्रकार का पैदा किया।

The Ummah Technology Mission

से दिन को छिपाता है। निश्चय ही विचार एवं चिन्तन करने वालों के लिये उसमें बहुत-सी निशानियाँ (लक्षण) हैं।

اثْنَيْنِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٣﴾

(४) तथा धरती में विभिन्न प्रकार के टुकड़े एक-दूसरे से मिले-जुले हैं।[1] तथा अंगूरों के बाग़ हैं तथा खेत हैं एवं खजूरों के वृक्ष हैं। शाखाओं वाले तथा कुछ ऐसे हैं[2] जो शाखाओं वाले नहीं, सब एक ही पानी से सींचे जाते हैं। फिर भी हम को एक पर फलों में श्रेष्ठता देते हैं।[3] इसमें बुद्धिमानों के लिये बहुत सी निशानियाँ हैं।

وَفِي الْأَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجَاوِرَاتٌ وَجَنَّاتٌ مِّنْ أَعْنَابٍ وَزَرْعٌ وَنَخِيلٌ صِنْوَانٌ وَغَيْرُ صِنْوَانٍ يُسْقَىٰ بِمَاءٍ وَاحِدٍ ۖ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الْأُكُلِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٤﴾

(५) तथा यदि तुझे आश्चर्य हो तो वास्तव में उनका यह कहना आश्चर्यजनक है कि क्या जब हम मिट्टी हो जायेंगे तो क्या हम नया जन्म लेंगे।[4] यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने प्रभु से कुफ्र किया। तथा यही हैं जिनकी

وَإِن تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ أَإِذَا كُنَّا تُرَابًا أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۗ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ الْأَغْلَالُ

---

[1] متجاورات एक-दूसरे के निकट तथा सामान्तर अर्थात धरती का एक क्षेत्र विकसित तथा उपजाऊ है, अत्यधिक पैदावार देता है। उसके साथ ही ऊसर भूमि है, जिसमें किसी प्रकार की भी पैदावार नहीं होती।

[2] صنوان का एक अर्थ मिले हुए तथा غير صنوان के अलग-अलग किये गये हैं। दूसरा अर्थ صنـــوان एक वृक्ष जिसकी कई शाखायें तथा तने हों, जैसे अनार, इंजीर तथा कुछ खजूरें। तथा غير صنوان जो इस प्रकार का न हो अपितु एक ही तने वाला हो।

[3] अर्थात धरती भी एक, पानी, वायु भी एक। परन्तु फल तथा अनाज विभिन्न प्रकार के तथा उनके स्वाद एवं बनावट भी एक-दूसरे से भिन्न।

[4] अर्थात जिस शक्ति ने प्रथम बार जन्म दिया, उसके लिये पुनः उस वस्तु का बनाना कोई कठिन कार्य नहीं। परन्तु यह काफ़िर विचित्र बात कहते हैं कि पुनः हम किस प्रकार पैदा किये जायेंगे ?

The Ummah Technology Mission

فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٥

गर्दनों में फंदे होंगे। तथा यही हैं जो नरक में रहने वाले हैं जो उसमें सदैव रहेंगे।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ
الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ
الْمَثُلٰتُ ۭ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ
لِّلنَّاسِ عَلٰي ظُلْمِهِمْ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ
لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٦

(६) तथा जो तुझसे दण्ड की माँग में शीघ्रता कर रहे हैं सुख से पूर्व ही, निश्चय उनसे पूर्व (उदाहरण स्वरूप) यातनायें आ चुकी हैं।[1] तथा नि:संदेह तेरा प्रभु क्षमावान है, लोगों के अनायास अत्याचार का भी।[2] तथा यह भी निश्चित बात है कि तेरा प्रभु कठोर दण्ड देने वाला भी है।[3]

---

[1]अर्थात अल्लाह के प्रकोप से समुदाय तथा आबादियों की बर्बादी के कई उदाहरण पूर्व में गुज़र चुके हैं, इसके उपरान्त ये प्रकोप शीघ्र माँगते हैं ? यह काफ़िरों के उत्तर में कहा गया जो कहते थे कि हे पैग़म्बर ! यदि तू सच्चा है तो वह प्रकोप हम पर ले आ, जिससे तू हमें डराता रहता है।

[2]अर्थात लोगों के अत्याचार तथा अवज्ञा के उपरान्त भी वह प्रकोप में शीघ्रता नहीं करता, अपितु समय देता है कई बार इतनी देर कर देता है कि निर्णय क़ियामत पर छोड़ देता है। यह उसकी दया तथा कृपा एवं करूणा का परिणाम है। यदि वह तुरन्त पकड़ लेने तथा यातना देने पर आ जाये तो इस पूरी धरती पर एक मनुष्य शेष न रहे।

﴿وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ﴾

"यदि अल्लाह तआला लोगों को उनके कर्म के कारण पकड़ने लगे तो धरती पर एक भी जीव न छोड़े।" (सूर: फ़ातिर-४५)

[3]यह अल्लाह के दूसरे गुण का वर्णन है ताकि मनुष्य एक ही ओर दृष्टि न रखे। दूसरी ओर भी देखता रहे। क्योंकि एक ही ओर तथा एक ही कोण से निरन्तर देखते रहने से बहुत-सी वस्तुयें अदृश्य रह जाती हैं। इसलिये क़ुरआन करीम में जहाँ अल्लाह की दया, कृपा तथा क्षमा का वर्णन होता है, तो साथ ही साथ उसकी दूसरी विशेषता, प्रभुत्व प्रचण्डता तथा शक्ति का वर्णन भी मिलता है। जैसाकि यहाँ भी है ताकि आशा तथा भय दोनों भाव समक्ष रहें, क्योंकि यदि आशा ही आशा सामने रहे तो मनुष्य अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करने के लिये निडर हो जाता है तथा यदि भय ही भय हर समय दिल तथा मस्तिष्क में छाया रहे, तो अल्लाह की कृपा से निराश हो जाता है तथा दोनों ही

The Ummah Technology Mission

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۗ إِنَّمَا أَنتَ مُنذِرٌ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ﴿٧﴾

(७) तथा काफ़िर (कृतघ्न) कहते हैं कि उस पर उसके प्रभु की ओर से कोई निशानी (चमत्कार) क्यों नहीं उतारी गयी। बात यह है कि आप तो केवल सचेत करने वाले हैं[1] तथा प्रत्येक समुदाय के लिये मार्गदर्शन करने वाला है।[2]

बातें उचित नहीं हैं तथा मनुष्य के विनाश का कारण बन सकती हैं। इसीलिये कहा जाता है।

«الإيمَانُ بَيْنَ الْخَوفِ وَالرَّجَاءِ»

"ईमान भय तथा आशा के मध्य है।"

अर्थात दोनों ही बातों के मध्य संतुलन तथा समानता का नाम ईमान है। मनुष्य अल्लाह के प्रकोप से निर्भय हो तथा न उसकी कृपा से निराश हो। इस विषय के लिये देखें सूरः *अल-अनाम*-४७, सूरः *अल-आराफ़*-१६७, सूरः *अल-हिज्र*-४९ तथा ५० आदि आयतें।

[1]प्रत्येक नबी को अल्लाह तआला हालात तथा आवश्यकतानुसार तथा अपनी नीति तथा विवेक के आधार पर कुछ निशानियाँ तथा चमत्कार प्रदान करता है। परन्तु काफ़िर अपनी इच्छाओं के अनुसार चमत्कार के अभिलाषी रहे हैं। जैसे मक्का के काफ़िर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहते सफ़ा नामक पर्वत को सोना का बना दिया जाये अथवा पर्वतों के स्थान पर स्रोत तथा नदियाँ बहने लगें आदि-आदि। जब उनकी इच्छाओं के अनुसार चमत्कार न दिखलाया जाता तो कहते कि इस पर कोई निशानी, चमत्कार क्यों न अवतरित किया गया ? अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

> "हे पैग़म्बर ! तेरा काम केवल आमंत्रण तथा सतर्क कर देना है। वह तू करता रह। कोई स्वीकार करे न करे उससे तुझे कोई मतलब नहीं, इसलिये कि मार्ग पर चला देना यह हमारा काम है। तेरा काम मार्ग दिखाना है, उस मार्ग पर चला देना, यह तेरा नहीं, हमारा काम है।"

[2]अर्थात प्रत्येक समुदाय के मार्गदर्शन के लिये अल्लाह तआला ने मार्गदर्शक अवश्य भेजा है। यह अलग बात है कि समुदायों ने यह मार्ग अपनाया अथवा नहीं अपनाया। परन्तु सीधे मार्ग का दर्शन करने के लिये संदेशवाहक प्रत्येक समुदाय के अंदर अवश्य आया।

﴿وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ﴾

"प्रत्येक समुदाय में एक पथ दर्शक अवश्य आया है।" (सूरः *फ़ातिर*-२४)

The Ummah Technology Mission

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ؕ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝٨

(८) मादा अपने गर्भ में जो कुछ रखती है, उसे अल्लाह तआला भली-भाँति जानता है।[1] तथा पेट (गर्भाशय) का घटना-बढ़ना भी।[2] प्रत्येक वस्तु उसके पास अनुमानित है।[3]

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ۝٩

(९) गुप्त तथा खुली बातों का वह ज्ञान रखने वाला है, सबसे बड़ा तथा सबसे उच्च तथा उत्तम है।

سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۢ بِالَّيْلِ وَ سَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ۝١٠

(१०) तुम में से किसी का अपनी बात छुपा कर कहना तथा उच्च स्वर में उसे कहना तथा जो रात्रि को छिपा हो तथा जो दिन में चल रहा हो, सब अल्लाह पर समान हैं।

لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَ مِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاِذَآ

(११) उस के रक्षक[4] मनुष्य के आगे पीछे नियुक्त हैं, जो अल्लाह के आदेश से उसकी रक्षा करते हैं। किसी समुदाय की अवस्था अल्लाह (तआला) नहीं बदलता जब तक कि वे स्वयं न बदलें, जो उन के हृदय[5] में है।

---

[1]माता के गर्भ में क्या है? नर है अथवा मादा, सुन्दर है अथवा कुरूप, सपूत अथवा कुपूत, दीर्घ आयु अथवा अल्प आयु? सभी बातें केवल अल्लाह तआला ही जानता है।

[2]इससे तात्पर्य गर्भ की अवधि है जो सामान्यत: नौ माह होता है, परन्तु घटती तथा बढ़ती भी है, किसी समय यह दस माह तथा किसी समय सात-आठ माह हो जाती है, इसका भी ज्ञान अल्लाह के अतिरिक्त किसी को नहीं।

[3]अर्थात किसी का जीवनकाल कितना है? उसे भोजन का कितना भाग मिलेगा? इसका पूरा अनुमान अल्लाह को है।

[4] معقبات बहुवचन है معقبة का। एक-दूसरे के पीछे आने वाले अर्थात फ़रिश्ते हैं, जो बारी-बारी एक-दूसरे के पश्चात आते हैं। दिन के फ़रिश्ते जाते हैं तो रात के फ़रिश्ते आ जाते हैं। शाम के जाते हैं तो दिन के आ जाते हैं।

[5]इसकी व्याख्या के लिये देखें सूरः *अंफ़ाल*-५३ की व्याख्या।

The Ummah Technology Mission

اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ﴿١١﴾

अल्लाह (तआला) जब किसी समुदाय को दण्ड देने का निर्णय कर लेता है, तो वह बदला नहीं करता तथा अतिरिक्त उसके कोई भी उनका संरक्षक भी नहीं।

هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿١٢﴾

(१२) वह अल्लाह ही है जो तुम्हें विद्युत की चमक डराने तथा आशा दिलाने के लिये [1] दिखाता है तथा भारी बादलों को पैदा करता है।[2]

وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِي اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ﴿١٣﴾

(१३) तथा गर्जन उसकी प्रशंसा तथा महिमा का वर्णन करती है तथा फ़रिश्ते भी उसके भय से,[3] वही आकाश से बिजली गिराता है तथा जिस पर चाहता है, उस पर डालता है।[4] काफ़िर अल्लाह के विषय में लड़-झगड़ रहे हैं तथा अल्लाह सर्वशक्तिशाली है।[5]

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۭ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ

(१४) उसी को पुकारना सत्य है,[6] जो लोग अन्यों को उसके अतिरिक्त पुकारते हैं वे

---

[1] जिससे राहगीर यात्री डरते हैं तथा घरों में रहने वाले किसान तथा कृषक उसके आर्शीवाद तथा लाभ की आशा रखते हैं।

[2] भारी बादलों से तात्पर्य वह बादल जिनमें वर्षा का पानी होता है।

[3] जैसा अन्य स्थान पर कहा।

﴿ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ ﴾

"प्रत्येक वस्तु अल्लाह की महिमा का वर्णन करती है।" (सूरः *बनी इस्राईल*-४४)

[4] अर्थात इसके द्वारा जिसे चाहता है नाश कर डालता है।

[5] مِحَالٌ का अर्थ शक्ति, पूछ-ताछ तथा प्रगाढ़ आदि के किये गये हैं। अर्थात वह अत्यन्त शक्तिशाली, अत्यधिक पूछ करने वाला तथा प्रगाढ़ विचार वाला है।

[6] अर्थात भय तथा आशा के समय उसी एक अल्लाह को पुकारना उचित है क्योंकि वही सभी की पुकार सुनता तथा स्वीकार करता है अथवा आमन्त्रण, इबादत (वंदना) के अर्थ

The Ummah Technology Mission

بِشَيْءٍ إِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهِ ۚ وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ﴿١٤﴾

उनकी किसी पुकार का उत्तर नहीं देते, जैसे कोई व्यक्ति अपने हाथ पानी की ओर फैलाये हुए हो कि उसके मुख में पड़ जाये, जबकि वह पानी उसके मुख में पहुँचने वाला नहीं।[1] उन भ्रष्टाचारियों की जितनी पुकार है सभी भ्रष्ट है।[2]

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلَالُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ﴿١٥﴾ سجدة

(१५) तथा अल्लाह ही के लिये आकाशों तथा धरती के सभी जीव प्रसन्नता तथा अप्रसन्नता से सिजद: (दण्डवत) करते हैं तथा उनकी छाया भी प्रात: एवं संध्या।[3]

में है। उसी की इबादत सत्य एवं उचित है, उसके अतिरिक्त कोई इबादत (वन्दना) के योग्य नहीं, क्योंकि सृष्टि का स्रष्टा, स्वामी तथा चलाने वाला केवल वही है, इसलिये इबादत भी केवल उसी का अधिकार है।

[1]अर्थात जो अल्लाह को छोड़कर अन्यों को सहायता के लिये पुकारते हैं, उनकी तुलना ऐसी है जैसे कोई व्यक्ति दूर से पानी की ओर अपनी हथेलियाँ फैलाकर पानी से कहे कि तू मेरे मुँह तक आ जा, स्पष्ट है कि पानी अचल है, उसे पता नहीं कि हथेलियाँ फैलाने वाले की आवश्यकता क्या है ? तथा न उसे यह पता है कि वह मुझे अपने मुख तक पहुँचने की माँग कर रहा है। तथा न उसमें यह शक्ति है कि अपने स्थान से चलकर उसके हाथ अथवा मुख तक पहुँच जाये। इसी प्रकार ये मूर्तिपूजक, अल्लाह के अतिरिक्त जिनको पुकारते हैं, उन्हें न यह पता है कि कोई उन्हें पुकार रहा है तथा उसकी अमुक आवश्यकता है। तथा न उस आवश्यकता की पूर्ति की उनमें शक्ति ही है।

[2]तथा व्यर्थ भी है। क्योंकि उससे उनको कोई लाभ नहीं होगा।

[3]इसमें अल्लाह तआला की महिमा एवं शक्ति का वर्णन है कि प्रत्येक वस्तु पर उसका अधिकार है तथा प्रत्येक वस्तु उसके अधीन तथा उसके समक्ष नत्मस्तक है, चाहे ईमानवालों की तरह प्रसन्नता से करें अथवा मूर्तिपूजकों की भाँति अप्रसन्नता से। तथा उनकी छाया भी प्रात:-सायं दण्डवत होती हैं। जैसे अन्य स्थान पर कहा।

﴿ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لِّلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ ﴾

"क्या उन्होंने नही देखा कि अल्लाह ने जो वस्तु भी उत्पन्न की हैं उनकी छाया दाहिने तथा बायें से अल्लाह को दण्डवत करती हुई ढलती हैं तथा वे विनम्रता करती हैं।" (सूर: अन-नहल-४८)

The Ummah Technology Mission

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ
دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ
نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي
الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ اَمْ هَلْ تَسْتَوِي
الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ
شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ
الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ
كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۱۶﴾

(१६) (आप) पूछिये कि आकाशों तथा धरती का पालनहार कौन है ? कह दीजिये अल्लाह |[1] कह दीजिये क्यों तुम फिर भी इस के अतिरिक्त अन्यों को सहायक बना रहे हो जो स्वयं अपने प्राण के भी भले-बुरे का अधिकार नहीं रखते |[2] कह दीजिये क्या अंधा तथा आँखों वाला समान हो सकता है ? अथवा क्या अंधकार तथा प्रकाश समान हो सकता है ?[3] क्या जिन्हें ये अल्लाह का साझीदार बना रहे हैं उन्होंने भी अल्लाह की तरह उत्पत्ति की है कि उनके देखने में उत्पत्ति संदिग्ध हो गई ?

इस दण्डवत की स्थिति क्या है ? यह अल्लाह भली-भाँति जानता है अथवा दूसरा भावार्थ इसका यह है कि काफ़िर सहित सभी सृष्टि अल्लाह के आदेशों के अधीन है, किसी में उसके उल्लंघन की शक्ति नहीं अल्लाह तआला किसी को स्वास्थ दे, रोग दे, धनवान कर दे अथवा निर्धन बना दे, जीवन दे अथवा मृत्यु | इन उत्पत्ति के नियमों में किसी काफ़िर को भी इंकार की शक्ति नहीं |

[1]यहाँ तो पैग़म्बरों के मुख से स्वीकार है | परन्तु क़ुरआन के अन्य स्थानों से स्पष्ट है कि मूर्तिपूजकों का उत्तर भी यही होता था |

[2]अर्थात जब तुम्हें स्वीकार तथा मान्य है कि आकाश तथा धरती का मालिक (प्रभु) अल्लाह है, जो सभी अधिकारों का बिना किसी साझीदार के अकेला मालिक है, तो फिर तुम उसे छोड़कर ऐसों को अपना मित्र तथा पक्षधर क्यों समझते हो जो स्वयं अपने लिये लाभ-हानि का अधिकार नहीं रखते |

[3]अर्थात जिस प्रकार अंधा तथा आँख वाला समान नहीं हो सकते, उसी प्रकार एकेश्वरवादी तथा अनेकश्वरवादी समान नहीं हो सकते | इसलिये एक अल्लाह के पुजारी का हृदय एकेश्वरवाद की ज्योति से पूर्ण है, जबकि अनेकों के पुजारी उससे वंचित हैं एकेश्वरवादी की आँखें हैं, वह एकेश्वरवाद का प्रकाश देखता है तथा अनेकों के पुजारी को यह एकेश्वरवाद का प्रकाश दिखायी नहीं पड़ता, इसलिये वह अंधा है | इसी प्रकार जिस प्रकार अंधकार तथा प्रकाश समान नहीं हो सकते | एक अल्लाह का पुजारी जिसका हृदय दिव्य ज्योति से परिपूर्ण है, तथा एक मूर्तिपूजक (अनेकश्वरवादी) अज्ञान तथा अंधविश्वास के अंधेरों में भटक रहा है, समान नहीं हो सकते |

The Ummah Technology Mission

कह दीजिये कि केवल अल्लाह ही सभी वस्तुओं का उत्पत्ति कर्ता है वह अकेला है, [1] तथा सर्वशक्तिमान है।

أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ۚ وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۚ فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً ۖ وَأَمَّا مَا يَنفَعُ

(१७) उसी ने आकाश से वर्षा की फिर अपनी अपनी शक्ति अनुसार नाले बह निकले। [2] फिर जल के धारे ने ऊपर चढ़कर झाग को उठा लिया। [3] तथा उस वस्तु में भी जिसको अग्नि में डाल कर तपाते हैं आभूषण अथवा सामान के लिये उसी प्रकार के झाग हैं। [4] इसी प्रकार अल्लाह तआला सत्य-असत्य को स्पष्ट करने का उदाहरण देता है। [5] अब झाग

---

[1] अर्थात ऐसी बात नहीं है कि यह किसी शंका के शिकार हो गये हों अपितु यह बात मानते हैं कि प्रत्येक वस्तु का रचयिता केवल तथा मात्र अल्लाह ही है।

[2] بِقَدَرِهَا (विस्तारानुसार) का अर्थ है नाले अर्थात घाटी (दो पर्वतों के मध्य का स्थान) संकरी हो तो कम पानी तथा विस्तृत हो तो अधिक पानी उठाती है। अर्थात क़ुरआन के उतरने को जो मार्गदर्शन तथा वर्णन का संकलन है, वर्षा होने से उपमा दी है। इसलिये कि क़ुरआन का लाभ भी वर्षा के लाभ की भाँति सामान्य है। तथा घाटियों की उपमा दी है दिल के साथ। इसलिये की घाटियों (नालों) में पानी जाकर रुकता है, जिस प्रकार क़ुरआन तथा ईमान ईमानवालों के दिलों में स्थिर होता है।

[3] उस झाग से जो पानी के ऊपर आ जाता है तथा जो घुल जाता है तथा हवायें जिसे उड़ा ले जाती हैं, कुफ़्र तात्पर्य है, जो झाग की तरह उड़ जाने वाला तथा समाप्त हो जाने वाला है।

[4] यह दूसरा उदाहरण है कि ताँबा, पीतल, सीसा अथवा स्वर्ण चाँदी के आभूषण अथवा सामान बनाने के लिये आग में तपाया जाता है, तो उस पर भी झाग आता है। इस झाग से तात्पर्य मैल-कुचैल है जो इन धातुओं के अंदर होती है। आग में तपाने से झाग के रूप में ऊपर आ जाता है फिर यह झाग भी देखते-देखते समाप्त हो जाता है तथा धात असली रूप में शेष रह जाती है।

[5] अर्थात जब सत्य तथा असत्य का आपस में सामना तथा टकराव होता है, तो असत्य को उसी प्रकार स्थाईत्व तथा स्थिरता नहीं मिलता जिस प्रकार से बाढ़ की धारा का झाग

The Ummah Technology Mission

النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ﴿١٧﴾

व्यर्थ होकर चला जाता है।[1] परन्तु जो लोगों को लाभ पहुँचाने वाली वस्तुऐं हैं, वह धरती में ठहरी रहती हैं।[2] अल्लाह (तआला) इसी प्रकार उदाहरण दिया करता है।[3]

لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنَىٰ ۖ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٨﴾

(१८) जिन लोगों ने अपने प्रभु के आदेशों का पालन किया उनके लिये भलाई है तथा जिन लोगों ने उसके आदेश का पालन न किया यदि उनके लिये धरती में जो कुछ है सब कुछ हो, तथा उसके साथ वैसा ही अन्य भी हो, तो वह सब कुछ अपने बदले में दे दें।[4] यही हैं जिनके लिये बुरा हिसाब है,[5] तथा

पानी के साथ धातुओं का झाग, जिनको आग में तपाया जाता है, धातुओं के साथ शेष नहीं रहता। बल्कि समाप्त तथा नष्ट हो जाता है।

[1]अर्थात इससे कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि झाग, पानी अथवा धातु के साथ शेष नहीं बचता अपितु धीरे-धीरे बैठ जाता है अथवा हवायें उसे उड़ा ले जाती हैं। असत्य की तुलना भी झाग की ही तरह है।

[2]अर्थात पानी, तथा स्वर्ण, चाँदी, ताँबा, पीतल आदि ये चीज़ें शेष रहती हैं जिन से लोग लाभान्वित होते हैं। उसी प्रकार सत्य शेष रहता है जिसके अस्तित्व को भी विनाश नहीं तथा जिसका लाभ भी स्थाई है।

[3]अर्थात बात को समझाने तथा मस्तिष्क में रखने के लिये उपमायें तथा उदाहरणों का वर्णन होता है, जैसे यहाँ दो उदाहरण वर्णन किये गये तथा उसी प्रकार सूरः अल-बकरः के प्रारम्भ में पाखण्डियों के लिये उदाहरणों का वर्णन है। इसी प्रकार सूरः नूर-३९ तथा ४० में काफ़िरों के लिये दो उपमायें हैं तथा हदीसों में भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उदाहरणों के द्वारा लोगों को बहुत सी बातें समझायीं। (विस्तृत जानकारी के लिये देखें तफ़सीर इब्ने कसीर)

[4]यह विषय इससे पूर्व भी दो तीन स्थानों पर गुज़र चुका है।

[5]क्योंकि उनसे प्रत्येक छोटे-बड़े कर्मों का हिसाब लिया जायेगा तथा उनका मामला (जिससे हिसाब में प्रति प्रश्न की गयी उसका बच निकलना कठिन होगा, उसे दण्ड मिलकर ही रहेगा) का समतुल्य होगा। इसलिये आगे फ़रमाया उनका ठिकाना नरक है।

The Ummah Technology Mission

उनका ठिकाना नरक है, जो बहुत बुरा स्थान है।

أَفَمَن يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿١٩﴾

(१९) क्या वह व्यक्ति जो यह ज्ञान रखता हो कि जो आपकी ओर आपके प्रभु की ओर से उतारा गया है, वह सत्य है, उस व्यक्ति जैसा हो सकता है जो अंधा हो।[1] शिक्षा तो वही स्वीकार करते हैं, जो बुद्धिमान हों।[2]

الَّذِينَ يُوفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنقُضُونَ الْمِيثَاقَ ﴿٢٠﴾

(२०) जो अल्लाह को दिये गये वचन को पूरा करते हैं।[3] तथा वचन भंग नहीं करते।[4]

وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ﴿٢١﴾

(२१) तथा अल्लाह (तआला) ने जिन वस्तुओं को जोड़ने का आदेश दिया है, वह उसे जोड़ते हैं।[5] तथा वे अपने प्रभु से डरते हैं तथा हिसाब की कठोरता का डर रखते हैं।

---

[1]अर्थात एक वह व्यक्ति जो क़ुरआन की यर्थातता तथा सत्यता पर विश्वास रखता हो, तथा दूसरा अंधा हो अर्थात उसे क़ुरआन की सत्यता पर संदेह हो, क्या ये दोनों समान हो सकते हैं ? प्रश्न, नकारात्मक है अर्थात ये दोनों उसी प्रकार समान नहीं हो सकते जिस प्रकार झाग तथा पानी अथवा स्वर्ण, ताँबा तथा उसकी मैल-कुचैल समान नहीं हो सकते।

[2]अर्थात जिसके पास स्वच्छ दिल तथा उचित बुद्धि न हो तथा जिन्होंने अपने दिलों को पापों का मुर्चा लगा रखा हो तथा अपनी बुद्धि भ्रष्ट कर ली हो, वह इस क़ुरआन से शिक्षा प्राप्त ही नहीं कर सकते।

[3]यह बुद्धिमानों के गुणों का वर्णन हो रहा है। अल्लाह के वचन से तात्पर्य, उसके आदेश (आज्ञा तथा निषेध) हैं, जिनका वे पालन करते हैं। अथवा वह वचन है, जो वचन عَهْدِ ٱلسْت कहलाता है, जिसका विस्तृत वर्णन सूरः *आराफ़* में आ चुका है।

[4]इससे तात्पर्य वह परस्पर संधि तथा वचन हैं, जो मनुष्य आपस में एक-दूसरे से करते हैं अथवा वह जो उनके तथा उनके प्रभु के मध्य हैं।

[5]अर्थात सम्बन्धों तथा नातों को तोड़ते नहीं अपितु उनको जोड़ते हैं तथा आपस में सम्बन्ध का पालन करते हैं।

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा वे अपने प्रभु की प्रसन्नता के लिये धैर्य रखते हैं।[1] तथा नमाज़ों को निरन्तर स्थापित रखते हैं।[2] तथा जो कुछ हमनें उन्हें दे रखा है उसे प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से ख़र्च करते हैं।[3] तथा बुराई को भी भलाई से टालते हैं,[4] उन्हीं के लिये पारलौकिक निवास स्थान है।[5]

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ

(२३) सदैव रहने के बाग़[6] जहाँ ये स्वयं जायेंगे तथा उनके पूर्वजों तथा पत्नियों एवं सन्तान में से भी जो पुण्य कार्य करने वाले

---

[1]अल्लाह की अवज्ञा तथा पापों से बचते हैं। यह धैर्य का एक प्रकार है। कठिनाईयों एवं दुखों में धैर्य रखते हैं। यह दूसरा प्रकार है।

[2]उनकी सीमाओं तथा प्रतिबन्ध, मन तथा चित्त से लीन एवं निर्धारित नियमानुसार।

[3]अर्थात जहाँ-जहाँ जब-जब व्यय करने की आवश्यकता पड़ती है, अपनों तथा बेगानों में तथा छिपाकर एवं प्रत्यक्ष रूप से व्यय करते हैं।

[4]अर्थात उनके साथ कोई बुराई करता है, तो वे उसका उत्तर अच्छाई से देते हैं, अथवा क्षमा तथा भुला देने एवं अत्यन्त सहनशीलता से काम लेते हैं। जिस प्रकार से अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ادْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ﴾

"बुराई का उत्तर इस प्रकार दो जो अच्छा हो (यदि तुम ऐसा करोगे) तो वह व्यक्ति जो तुम्हारा शत्रु है, ऐसा हो जायेगा जैसे कि तुम्हारा घनिष्ठ मित्र है।"
(सूरः हा॰मीम॰सजदः-३४)

[5]अर्थात जो इन उत्तम चरित्रों का पालन करने तथा वर्णित विशेषताओं से युक्त होंगे, उनके लिये परलोक में घर है।

[6]अदन का अर्थ है स्थायी अर्थात सदैव रहने वाले बाग।

The Ummah Technology Mission

عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾

होंगे,[1] उनके निकट फ़रिश्ते प्रत्येक द्वार से आयेंगे।

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾

(२४) (कहेंगे कि) तुम पर सलामती (शान्ति) हो, धैर्य के बदले, क्या ही अच्छा बदला है इस पारलौकिक घर का।

وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ ۙ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा जो लोग अल्लाह के वचन को उस की सुदृढ़ता के पश्चात तोड़ देते हैं तथा जिन वस्तुओं के जोड़ने का अल्लाह का आदेश है उन्हें तोड़ देते हैं, तथा धरती में उपद्रव फैलाते हैं, उन के लिए धिक्कार है तथा उन के लिए बुरा घर है।[2]

---

[1]अर्थात इस प्रकार सद्व्यवहार सम्बन्धियों को आपस में एकत्रित कर देगा, ताकि एक-दूसरे का दर्शन करके नेत्र शीतलता प्राप्त हो, यहाँ तक कि नीच श्रेणी के स्वर्गवासी को भी उच्च श्रेणी प्रदान कर देगा ताकि वे अपने सम्बन्धियों के साथ एकत्रित हो जाये, कहा।

﴿ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَٱتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم بِإِيمَٰنٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ أَلَتْنَٰهُم مِّنْ عَمَلِهِم مِّن شَىْءٍ ﴾

"तथा वे लोग जो ईमान लाये तथा उनकी सन्तान ने ईमान के साथ उनका अनुसरण किया तो हम मिला देंगे उनके साथ उनकी संतान को तथा उनके कर्मों से हम कुछ घटायेंगे नहीं।" (सूरः अल-तूर-२१)

इससे जहाँ यह ज्ञात होता है कि चरित्रवान सम्बन्धियों को अल्लाह तआला, स्वर्ग में एकत्रित करेगा, वहीं यह भी ज्ञात हुआ कि यदि किसी के पास ईमान तथा सत्कर्म की पूँजी नहीं होगी, तो वह स्वर्ग में नहीं जायेगा, चाहे उसके अन्य अति निकट सम्बन्धी स्वर्ग में चले गये हों। क्योंकि स्वर्ग में प्रवेश वंश तथा परिवार के आधार पर नहीं, ईमान तथा कर्म के आधार पर होगा।

« مَنْ بَطَّأَ بِهِ عَمَلُهُ لَمْ يُسْرِعْ بِهِ نَسَبُهُ ».

"जिसे उसका कर्म पीछे छोड़ गया, उसका वंश उसे आगे नहीं बढ़ायेगा।"(सहीह मुस्लिम किताबुल जिक्र वदआ, ब्राब फ़ज़लिल इज्तेमाअे अला तिलावतिल क़ुरआन)

[2]यह सत्कर्मियों के साथ कुकर्मियों के परिणाम का वर्णन कर दिया ताकि मनुष्य इस परिणाम से बचने का प्रयत्न करे।

The Ummah Technology Mission

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۭ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ۝۲۶

(२६) अल्लाह (तआला) जिसकी जीविका चाहता है बढ़ाता है तथा घटाता है।[1] ये तो दुनिया के जीवन में मुग्ध हो गये।[2] यद्यपि कि दुनिया परलोक की तुलना में अत्यधिक तुच्छ पूँजी है।[3]

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ۝۲۷ۚ

(२७) काफ़िर कहते हैं कि उस पर कोई निशानी (चमत्कार) क्यों उतारी नहीं गयी? उत्तर दीजिये कि जिसे अल्लाह भटकाना चाहे कर देता है तथा जो उसकी ओर झुके उसे मार्ग दिखा देता है।

---

[1]जब काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों के लिये यह कहा कि उनके लिए बुरा घर है तो मन में यह संदेह उत्पन्न हो सकता है कि संसार में तो उन्हें हर प्रकार का सुख प्राप्त है। उसके खण्डन के लिये कहा कि सांसारिक साधन तथा व्यवसाय की कमी अथवा अधिकता यह अल्लाह के अधिकार में है वह अपनी इच्छा से तथा किसी कारणवश (जिसको केवल वही जानता है) किसी को अधिक तथा किसी को कम देता है। जीविका की अधिकता, इस बात का प्रमाण नहीं कि अल्लाह तआला उससे प्रसन्न है तथा कमी का अर्थ यह नहीं कि अल्लाह तआला उस पर क्रोधित है।

[2]किसी को यदि दुनिया का धन अधिक मिल रहा है, जबकि वह अल्लाह का अवज्ञाकारी है, तो यह प्रसन्न तथा निश्चिन्त होने का स्थान नहीं, क्योंकि यह अवसर है। पता नहीं कब यह अवधि समाप्त हो जाये तथा अल्लाह की पकड़ में जकड़ लिया जाये।

[3]हदीस में आता है कि दुनिया का मूल्य परलोक की अपेक्षा इस प्रकार है, जैसे कोई व्यक्ति अपनी उँगली समुद्र में डिबो कर निकाले, तो देखे कि समुद्र के जल की अपेक्षा उसकी उँगली में कितना पानी आया? (सहीह मुस्लिम किताबुलजन्नः, बाबु फ़नाइद्दुनिया व बयानुल हश्र यौमल क़ियामः) एक अन्य हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र बकरी के एक मरे बच्चे के पास से हुआ, तो उसे देखकर आप ने फ़रमाया :

> "अल्लाह की सौगन्ध, संसार अल्लाह के निकट इससे भी अधिक तुच्छ है जितना यह मरा बच्चा अपने स्वामियों के निकट उस समय तुच्छ था, जब उन्होंने उसे फेंका।" (सहीह मुस्लिम किताबुज्जुहदे वर्रैक़ाक़)

The Ummah Technology Mission

(२८) जो लोग ईमान लाये उनके हृदय अल्लाह को स्मरण करने से शान्ति प्राप्त करते हैं। याद रखो कि अल्लाह के स्मरण से ही हृदय को शान्ति प्राप्त होती है।[1]

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ﴿۲۸﴾

(२९) जो लोग ईमान लाये तथा जिन्होंने पुण्य के कार्य भी किये उनके लिये खुशहाली है।[2] तथा सर्वश्रेष्ठ स्थान है।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ﴿۲۹﴾

(३०) उसी प्रकार हमने आपको उस समुदाय में भेजा है,[3] जिससे पूर्व बहुत से समुदाय गुज़र चुके हैं कि आप उन्हें हमारी ओर से जो वह्यी (प्रकाशना) आप पर उतरी है, पढ़कर सुनाइए, यह अल्लाह कृपालु के नकारने वाले हैं।[4] (आप) कह दीजिये कि मेरा प्रभु तो वही

كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِيْۤ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَاۤ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَا عَلَيْهِمُ الَّذِيْۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ؕ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ

---

[1]अल्लाह के वर्णन से तात्पर्य उसके एकेश्वरवाद का वर्णन है, जिससे मूर्तिपूजकों के दिलों में संकोच उत्पन्न हो जाता है, अथवा उसकी इबादत, क़ुरआन पढ़ना, ऐच्छिक प्रार्थनायें, विनती तथा ध्यान लगाना है, जो ईमानवालों के दिलों का भोजन है अथवा उसके आदेशों एवं निर्देशों का अनुगमन तथा पालन करना है, जिसके बिना ईमानवाले तथा अल्लाह से डरने वाले बेक़रार रहते हैं।

[2] طُوبٰى के विभिन्न अर्थ बताये गये हैं। जैसे पुण्य, पवित्र, चमत्कार, प्रतिस्पर्धा, स्वर्ग में विशेष वृक्ष अथवा निर्धारित स्थान आदि। भावार्थ सभी का एक है अर्थात स्वर्ग में उत्तम स्थान तथा उसकी सुख-सुविधा।

[3]जिस प्रकार हमने आपको सचेत करने वाले रसूल के रूप में भेजा है, उसी प्रकार आप से पूर्व के समुदायों में रसूल भेजे थे, उनको भी इसी प्रकार झुठलाया गया था जिस प्रकार आपको किया गया तथा जिस प्रकार झुठलाने के परिणाम स्वरूप वे समुदाय नाश कर दिये गये, इन्हें भी उस परिणाम से निश्चिन्त नहीं रहना चाहिये।

[4]मक्का के मूर्तिपूजक *'रहमान'* (कृपानिधि) शब्द से बहुत भड़कते थे, *हुदैबिया* की संधि के अवसर पर जब *बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम* के शब्द लिखे गये, तो उन्होंने कहा कि *'रहमान'* (कृपानिधि) तथा *रहीम* (दयालु) क्या है ? हम नहीं जानते। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

وَإِلَيْهِ مَتَابِ ﴿٣٠﴾

है, उसके अतिरिक्त वस्तुत: कोई भी इबादत के योग्य नहीं,[1] उसी के ऊपर मेरा भरोसा है। तथा उसी की ओर मेरा आकर्षण है।

وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتَىٰ ۗ بَل لِّلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا ۗ أَفَلَمْ يَايْأَسِ الَّذِينَ آمَنُوا أَن لَّوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيعًا ۗ وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُم بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا مِّن دَارِهِمْ حَتَّىٰ يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ﴿٣١﴾

(३१) तथा यदि (मान लिया जाये कि) क़ुरआन के द्वारा पर्वत चला दिये जाते अथवा धरती खन्ड-खन्ड कर दी जाती अथवा मृतकों से बाते करा दी जातीं (फिर भी वह ईमान न लाते) बात यह है कि सब कार्य अल्लाह के हाथ में है।[2] तो क्या ईमान वालों का इस बात पर दिल नहीं जमता कि यदि अल्लाह तआला चाहे तो सभी लोगों को मार्गदर्शन दे दे। काफ़िर को तो उनके कुफ़्र के बदले सदैव ही कोई न कोई कठोर यातना पहुँचती रहेगी अथवा उनके मकानों के आस-पास उतरती रहेगी[3]

---

[1]अर्थात रहमान मेरा वह प्रभु है जिसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं।

[2]इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि प्रत्येक आकाशीय पुस्तक को क़ुरआन कहा जाता है, जिस प्रकार एक हदीस में आता है कि आदरणीय दाऊद पशुओं को तैयार करने का आदेश देते तथा इतनी देर में एक बार क़ुरआन पढ़ लेते (सहीह बुख़ारी किताबुल अंबिया) यहाँ स्पष्ट बात है कि क़ुरआन से तात्पर्य ज़बूर है। आयत का अर्थ यह है कि यदि पूर्व में कोई आकाशीय पुस्तक ऐसी अवतरित हुई होती जिसे सुनकर पर्वत चलने लगते अथवा धरती की दूरी तय हो जाती अथवा मरे हुए लोग बोल उठते तो क़ुरआन करीम में यह विशेषता इससे भी उत्तम रूप में विद्यमान होती क्योंकि यह चमत्कार तथा भाषा शैली में पूर्व की सभी पुस्तकों से उच्च है। तथा कुछ ने इसका भावार्थ यह वर्णन किया है कि यदि इस क़ुरआन के द्वारा यह चमत्कार प्रकट होते, तब भी ये काफ़िर ईमान न लाते, क्योंकि ईमान लाना अथवा न लाना यह अल्लाह की इच्छा पर निर्भर है, चमत्कारों पर नहीं। इसीलिये फ़रमाया सभी कार्य अल्लाह के हाथ में है।

[3]जो उनके देखने अथवा ज्ञान में अवश्य आयेगी ताकि वह शिक्षा ग्रहण कर सकें।

The Ummah Technology Mission

यहाँ तक कि अल्लाह का वचन आ पहुँचे।[1] नि:संदेह अल्लाह तआला वचन भंग नही करता।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَأَمْلَيْتُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा नि:संदेह आप से पूर्व के पैग़म्बरों के साथ उपहास किया गया था तथा मैंने भी क़ाफ़िरों को ढील दी थी फिर उन्हें पकड़ लिया था, तो मेरा प्रकोप कैसा रहा ?[2]

أَفَمَنْ هُوَ قَائِمٌ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۗ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ ۚ قُلْ سَمُّوهُمْ ۚ أَمْ تُنَبِّئُونَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ

(३३) अथवा वह अल्लाह जो ख़बर लेने वाला है प्रत्येक व्यक्ति का उसके किये हुए कर्म पर[3] उन लोगों ने अल्लाह के साझीदार ठहराये हैं, कह दीजिये तनिक उनके नाम तो लो,[4] क्या

---

[1]अथवा क़ियामत (प्रलय) आ जाये अथवा मुसलमानों को पूर्ण विजय तथा अधिकार प्राप्त हो जाये।

[2]हदीस में आता है।

« إِنَّ اللهَ لَيُمْلِي لِلظَّالِمِ حَتَّى إِذَا أَخَذَهُ لَمْ يُفْلِتْهُ »

"अल्लाह तआला अत्याचारियों को अवसर दिये जाता है, यहाँ तक कि जब उसे पकड़ता है तो फिर छोड़ता नहीं।"

इसके पश्चात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह क़ुरआन की आयत पढ़ी।

﴿وَكَذَٰلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَىٰ وَهِيَ ظَالِمَةٌ ۚ إِنَّ أَخْذَهُ أَلِيمٌ شَدِيدٌ ﴿١٠٢﴾﴾

"इसी प्रकार तेरे प्रभु की पकड़ है जब वह अत्याचार करने वाली बस्तियों को पकड़ता है। नि:संदेह उसकी पकड़ अत्यन्त कड़ी एवं कठोर है।" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः हूद तथा सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्रे, बाब तहरिमिज्जुलम)

[3]यहाँ इसका उत्तर लिप्त है। अर्थात क्या वह इन झूठे देवताओं के समान हो सकता है, जिनकी ये पूजा करते हैं, जो किसी को लाभ पहुँचाने अथवा न हानि पहुँचाने की शक्ति रखते हैं, न वे देखते हैं तथा न वे बुद्धि तथा समझ रखते हैं।

[4]अर्थात हमें भी बताओ कि उन्हें पहचान सकें इसलिये कि उनकी कोई वास्तविकता ही नहीं है। इसलिये आगे कहा। क्या तुम अल्लाह को वह बातें बताते हो, जो वह धरती में

The Ummah Technology Mission

فِي الْأَرْضِ أَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ۗ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوا عَنِ السَّبِيلِ ۗ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

तुम अल्लाह को वह बातें बताते हो, जो वह धरती पर जानता ही नहीं, अथवा केवल ऊपरी-ऊपरी बातें बना रहे हो, [1] बात वास्तविक यह है कि कुफ़्र करने वालों के लिए उनके छल भले ही सुझाये गये हैं।[2] तथा वे सत्य मार्ग से रोक दिये गये हैं, तथा जिसे अल्लाह भटका दे उसे मार्ग दिखाने वाला कोई नहीं।[3]

जानता ही नहीं, अर्थात उनका अस्तित्व ही नहीं। इसलिये कि यदि धरती में उनका अस्तित्व होता तो अल्लाह तआला के ज्ञान में अवश्य होता, उससे कोई बात छिपी नहीं है।

[1]यहाँ ظاهر (ज़ाहिर) कल्पना के अर्थ में है अर्थात यह केवल उनकी काल्पनिक बातें हैं। अर्थ यह है कि तुम इन मूर्तियों की पूजा इस कल्पना से करते हो कि ये लाभ-हानि पहुँचा सकती हैं तथा तुमने उनके नाम भी देवता रखे हुए हैं। यद्यपि ये नाम तुम्हारे तथा तुम्हारे पूर्वजों के रखे हुए हैं, जिनका कोई प्रमाण अल्लाह ने अवतरित नहीं किया। ये केवल कल्पना तथा मनमानी करते हैं। (सूरः *अल-नज्म*-२३)

[2]छल से तात्पर्य, उनके वे पथभ्रष्ट विश्वास का कर्म है, जिनमें शैतान ने उनको फंसा रखा है, शैतान ने पथभ्रष्टता पर भी आकर्षित आवरण चढ़ा रखा है।

[3]जिस प्रकार अन्य स्थान पर है।

﴿وَمَن يُرِدِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ فَلَن تَمْلِكَ لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا﴾

"जिस को अल्लाह भटकाने का विचार कर ले तो तू अल्लाह से, उसके लिये कुछ अधिकार नहीं रखता।" (सूरः *अल-मायदः*-४१)

तथा फरमाया :

﴿إِن تَحْرِصْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَن يُضِلُّ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ﴾

"यदि तुम उनके मार्गदर्शन की इच्छा रखते हो तो (याद रखो) अल्लाह तआला उसे मार्गदर्शन नहीं प्रदान करता जिसे वह पथ भ्रष्ट करता है तथा उनकी कोई सहायता नहीं होगी।" (सूरः *अल-नहल*-३७)

The Ummah Technology Mission

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾

(३४) उनके लिये साँसारिक जीवन में भी दुख है।[1] तथा आख़िरत (परलोक) की यातना तो अत्यधिक कठोर है।[2] तथा उन्हें अल्लाह के क्रोध से बचाने वाला कोई नहीं।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ؕ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿٣٥﴾

(३५) उस स्वर्ग की विशेषता जिसका वचन परहेज़गारों को दिया गया है यह है कि उसके नीचे नहरें बह रही हैं। उसके फल सदैव रहने वाले हैं तथा उसकी छाया भी। यह है प्रतिफल परहेज़गारों (जितेन्द्रियों) का,[3] तथा काफ़िरों का परिणाम नरक है।

وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ

(३६) तथा जिन्हें हमने किताब प्रदान की है,[4] वे तो जो कुछ आप पर उतारा जाता है, उस

---

[1]इससे तात्पर्य हत्या तथा बन्दी बनाना है जो मुसलमानों के साथ युद्ध में उन काफ़िरों के भाग में आती है।

[2]जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी لِعَان करने वाले जोड़े से कहा था।

«إِنَّ عَذَابَ الدُّنْيَا أَهْوَنُ مِنْ عَذَابِ الآخِرَةِ».

"साँसारिक यातना परलोक की यातना से अत्यधिक सहज है।"(सहीह मुस्लिम किताबुल लेआन)

इसके अतिरिक्त साँसारिक यातना (जैसा कुछ तथा जितनी कुछ भी हो) अस्थाई तथा साम्यिक है तथा परलोक की यातना स्थाई है, उसमें कमी अथवा अन्त नहीं। इसके अतिरिक्त नरक की अग्नि साँसारिक अग्नि से उन्हत्तर गुना अधिक गर्म है। तथा इसी प्रकार अन्य वस्तुऐं हैं। इसलिये यातना की तीव्रता में क्या सन्देह हो सकता है।

[3]काफ़िरों के दुष्परिणाम के उपरान्त ईमानवालों के अति उत्तम परिणाम का भी वर्णन कर दिया गया ताकि स्वर्ग की प्राप्ति के लिये अभिलाषा तथा रूचि उत्पन्न हो, इस स्थान पर इमाम इब्ने कसीर ने स्वर्ग की सुख-सुविधाओं तथा उनकी विशेष महत्ता पर आधारित हदीसों का वर्णन किया है, जिन्हें वहाँ देख लिया जाये।

[4]इससे तात्पर्य मुसलमान हैं तथा अर्थ है जो क़ुरआन के आदेशानुसार कर्म करते हैं।

The UmmahTechnology Mission

مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ؕ قُلْ اِنَّمَاۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَاۤ اُشْرِكَ بِهٖ ؕ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ﴿۳۶﴾

से प्रसन्न होते हैं [1] तथा अन्य सम्प्रदाय उस की कुछ बातों को अस्वीकार करते हैं।[2] आप घोषणा कर दीजिये कि मुझे तो केवल यही आदेश दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ तथा उसके साथ साझीदार न बनाऊँ, मैं उसी की ओर आमंत्रित कर रहा हूँ तथा उसी की ओर मेरा आकर्षित होना है।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ﴿۳۷﴾

(३७) तथा इसी प्रकार हमने इस क़ुरआन को अरबी भाषा का आदेश उतारा है।[3] तथा यदि आप ने उनकी इच्छाओं[4] का अनुगमण किया इसके उपरान्त की आप के पास ज्ञान आ चुका है[5] तो अल्लाह (की यातनाओं) से

---

[1]अर्थात क़ुरआन की सत्यता के प्रमाण तथा साक्ष्य देखकर और प्रसन्न होते हैं।

[2]इससे तात्पर्य यहूदी, इसाई, काफ़िर तथा मूर्तिपूजक हैं। कुछ के निकट पुस्तक से तात्पर्य तौरात तथा इंजील है, इनमें से जो मुसलमान हुए, वे प्रसन्न होते हैं तथा अस्वीकार करने वाले वे यहूदी तथा इसाई हैं जो मुसलमान नहीं हुए।

[3]अर्थात जिस प्रकार से आप के पूर्व के रसूलों पर भी स्थानीय भाषा में पुस्तकें अवतरित की गयीं उसी प्रकार आप पर क़ुरआन हमने अरबी भाषा में उतारा है, इसलिए कि आपके प्रथम सम्बोधित अरबी लोग हैं, जो केवल अरबी भाषा ही जानते हैं। यदि यह क़ुरआन किसी अन्य भाषा में अवतरित होता तो यह इनकी समझ से ऊपर होता तथा मार्गदर्शन प्राप्त करने में इनके लिये बहाना हो जाता। हमनें क़ुरआन को अरबी भाषा में अवतरित करके यह बहाना भी दूर कर दिया।

[4]इससे तात्पर्य अहले किताब की कुछ आकांक्षायें हैं जिनको वह चाहते थे कि अल्लाह के अन्तिम रसूल अपनायें जैसे बैतुल मोक़द्दस को स्थाई "क़िबला" बनाये रखना तथा उनके अंधविश्वासों का विरोध न करना आदि।

[5]इससे तात्पर्य वह ज्ञान है जो वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रदान किया गया है, जिसमें अहले किताब के अंधविश्वासों की वास्तविकता भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर प्रकट कर दी गयी।

The Ummah Technology Mission

आपका न पक्षधर मिलेगा तथा न रक्षा करने वाला।[1]

(३८) तथा हम आपसे पूर्व भी बहुत से रसूल भेज चुके हैं तथा हमने उन सब को पत्नी तथा सन्तान वाला बनाया था।[2] किसी रसूल से नहीं हो सकता कि कोई निशानी बिना अल्लाह की आज्ञा के ले आये।[3] हर निर्धारित वचन की एक लिखित है।[4]

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ؕ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ﴿۳۸﴾

---

[1]यह वास्तव में मुसलमानों के धार्मिक ज्ञान रखने वालों को चेतावनी है कि वे संसार के अस्थाई लाभ के लिये क़ुरआन तथा हदीस के स्पष्ट आदेशों की तुलना में लोगों की भावनाओं के पीछे न लगें, यदि वह ऐसा करेंगे तो उन्हें अल्लाह की यातना से बचाने वाला कोई नहीं होगा।

[2]अर्थात आप सहित जितने भी रसूल तथा नबी आये, सभी मानव पुरूष थे, जिनका परिवार तथा वंश था तथा पत्नी एवं सन्तान थी, वे फ़रिश्ते न थे तथा न मनुष्य के रूप में कोई ज्योति से उत्पन्न सृष्टि थे। अपितु मनुष्य की श्रेणी से ही थे। क्योंकि यदि फ़रिश्ते होते तो मनुष्य के लिये उनसे निकट होना तथा लगाव रख पाना संभव नही था। जिससे उनके भेजने का मुख्य उद्देश्य ही समाप्त हो जाता तथा यदि वे फ़रिश्ते मनुष्य के रूप में होते, तो संसार में उनका न परिवार तथा वंश होता तथा न उनकी पत्नी तथा सन्तान होती। जिससे ज्ञात होता है कि सभी नबी श्रेणी के आधार पर मनुष्य ही थे, मनुष्य के रूप में फ़रिश्ते अथवा कोई ज्योति से उत्पन्न सृष्टि नहीं थे।

[3]अर्थात चमत्कार को प्रदर्शित करना रसूलों के वश में नहीं है कि जब उनसे माँग की जाये तो वह उसको प्रदर्शित कर दें। अपितु पूर्णत: अल्लाह ही के वश में है, वह अपनी इच्छा तथा ज्ञान के अनुसार निर्णय करता है कि चमत्कार की आवश्यकता है अथवा नहीं ? तथा यदि है तो किस प्रकार दिखाया जाये ?

[4]अर्थात अल्लाह तआला ने जिस बात का भी वायदा किया है, उसका एक समय निर्धारित है, उस निर्धारित समय पर वह अवश्य व्यक्त होगा, क्योंकि अल्लाह का वचन भंग नही होता। तथा कुछ विद्वान कहते हैं कि वाक्य में प्रथम अर्थ को बाद में कर दिया गया है। मूल वाक्य لِكُلِّ كِتَابٍ أَجَلٌ है। तथा अर्थ है कि प्रत्येक विषय, जिसे अल्लाह ने लिख रखा है, उसका एक निर्धारित समय है। अर्थात मामला काफ़िर की इच्छा तथा आकाक्षाँ पर नहीं बल्कि केवल अल्लाह की इच्छा पर निर्भर है।

The Ummah Technology Mission

يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚ وَعِنْدَهٗۤ اُمُّ الْكِتٰبِ ﴿۳۹﴾

(३९) अल्लाह जो चाहे निरस्त कर दे तथा जो चाहे सुरक्षित रखे, सुरक्षित पुस्तक (लौहे महफ़ूज़) उसी के पास है।[1]

وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا

(४०) तथा उन से किये हुए वचनों में से कोई यदि हम आपको दिखा दें अथवा आपको

---

[1]इसका एक अर्थ तो यह है कि वह जिस आदेश को चाहे निरस्त कर दे तथा जिसे चाहे शेष रखे। दूसरा अर्थ यह कि उसने जो भाग्य में लिख रखा है, उसमें वह परिवर्तन करता रहता है, उसके पास सुरक्षित पुस्तक है जिसकी पुष्टि कुछ हदीसों से होती है। जैसे एक हदीस में आता है कि

> "मनुष्य पापों के कारण जीविका से वंचित कर दिया जाता है, प्रार्थना से भाग्य बदल जाता है तथा संबन्धियों के साथ सद्भाव से आयु में वृद्धि होती है।" (मुसनद अहमद भाग ५ पृष्ठ २७७)

कुछ सहाबियों (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथियों) से यह प्रार्थना उदघृत है।

«اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنَا أَشْقِيَاءَ فَامْحُنَا وَاكْتُبْنَا سُعَدَاءَ، وَإِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنَا سُعَدَاءَ فَأَثْبِتْنَا، فَإِنَّكَ تَمْحُو مَا تَشَاءُ وَتُثْبِتُ وَعِنْدَكَ أُمُّ الْكِتَابِ».

आदरणीय उमर से सम्बन्धित यह कथन है कि काबा की परिक्रमा के समय रोते हुए यह दुआ पढ़ते। (इब्ने कसीर)

> "ऐ अल्लाह ! यदि तूने मुझ पर दुर्भाग्य तथा पाप लिख दिया है तो उसे मिटा दे, इसलिये कि तू जो चाहे मिटा दे तथा जो चाहे शेष रखे, तेरे पास ही सुरक्षित पुस्तक है, बस तू दुर्भाग्य को सौभाग्य में तथा क्षमा में बदल दे।"

इस भाव पर यह आलोचना हो सकती है कि हदीस में तो यह आता है।

«جَفَّ الْقَلَمُ بما هُوَ كَائِنٌ».

> "जो कुछ होने वाला है, क़लम उसे लिखकर सूख चुका है।" (सहीह बुख़ारी संख्या ५०७६)

इसका उत्तर यह है कि उसका यह परिवर्तन भी भाग्य में लिखे हुए निर्णय के आधार पर है। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَ عَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾

हम मृत्यु प्रदान कर दें, तो आप पर केवल पहुँचा देना ही है। हिसाब तो हमें लेना है।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ؕ وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٤١﴾

(४१) क्या वे नहीं देखते कि हम धरती को उसके किनारों से घटाते चले आ रहे हैं ?[1] अल्लाह आदेश करता है तथा कोई उसके आदेश को पीछे डालने वाला नहीं,[2] वह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ؕ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ؕ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾

(४२) तथा उनसे पूर्व के लोगों ने भी अपने छल-कपट में कमी न की थी परन्तु सभी व्यवस्था अल्लाह ही की हैं,[3] जो व्यक्ति कुछ कर रहा है अल्लाह के ज्ञान में है।[4] काफ़िरों को अभी ज्ञात हो जायेगा कि उस लोक (परलोक) का बदला किस के लिये है।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ؕ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۢ بَيْنِيْ

(४३) तथा यह काफ़िर कहते हैं कि आप अल्लाह के रसूल नहीं। (आप) उत्तर दीजिये कि मुझ में तथा तुम में अल्लाह गवाही देने

---

[1] अर्थात अरब की धरती मूर्तिपूजकों के लिये क्षण-क्षण संकुचित हो रही है तथा इस्लाम का प्रभाव तथा उत्थान हो रहा है।

[2] अर्थात कोई भी अल्लाह के आदेशों को रद नहीं कर सकता।

[3] अर्थात मक्का के मूर्तिपूजकों से पूर्व भी लोग रसूलों के साथ छल-कपट करते रहे हैं, परन्तु अल्लाह की योजना के आगे उनका कोई छल तथा कपट सफल नहीं हो पाया, उसी प्रकार भविष्य में भी उनका कोई छल तथा कपट अल्लाह की योजनाओं के समक्ष सफल नहीं होगा।

[4] वह उसके अनुसार प्रत्युप्कार तथा दण्ड देगा, अच्छे कर्म करने वालों को उसका अच्छा बदला तथा कुकर्मियों को उनके कुकर्मों का दण्ड।

The Ummah Technology Mission

وَبَيْنَكُمْ ۖ وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الْكِتٰبِ ﴿٤٣﴾ वाला पर्याप्त है।[1] तथा वह जिसके पास किताब का ज्ञान है।[2]

सूरतु इब्राहीम-१४ سُوْرَةُ اِبْرٰهِيْمَ

सूरः इब्राहीम मक्का में उतरी तथा इसकी बावन आयतें हैं तथा सात रुकूअ हैं।

अल्लाह कृपालु तथा दयालु के नाम से प्रारम्भ करता हूँ। بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

(१) अलिफ़॰लाम॰रा॰ यह सर्वश्रेष्ठ पुस्तक हमने आपकी ओर उतारी है कि आप लोगों को अंधकार से प्रकाश की ओर लायें[3] उनके الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ

---

[1] अतः वह जानता है कि मैं उसका सच्चा रसूल तथा उसके संदेश का आमन्त्रण देने वाला हूँ तथा तुम झूठे हो।

[2] किताब से तात्पर्य वास्तविक पुस्तक है तथा तात्पर्य तौरात तथा इंजील का ज्ञान है। अर्थात अहले किताब में वे लोग जो मुसलमान हो गये हैं जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम, सलमान फ़ारसी तथा तमीम दारी इत्यादि अर्थात यह भी जानते हैं कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ। अरब के मूर्तिपूजक विशेष समस्याओं में अहले किताब से मंत्रणा करते तथा उनसे पूछते थे, अल्लाह तआला ने उनको मार्गदर्शन प्रदान किया कि अहले किताब जानते हैं, उनसे तुम पूछ लो। कुछ विद्वान कहते हैं कि किताब से तात्पर्य क़ुरआन है तथा किताब का ज्ञान रखने वाले मुसलमान हैं। तथा कुछ विद्वानों ने किताब से तात्पर्य सुरक्षित पुस्तक लिया है। अर्थात जिसके पास सुरक्षित पुस्तक का ज्ञान है अर्थात अल्लाह तआला। परन्तु प्रथम भावार्थ अधिक उपयुक्त है।

[3] जिस प्रकार अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ﴾

"वही शक्ति जो अपने भक्ति पर स्पष्ट निशानियाँ अवतरित करती है ताकि वह तुम्हें अंधेरों से प्रकाश की ओर निकाल लाये।" (*सूरः अल-हदीद-९*)

The Ummah Technology Mission

بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَىٰ صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ①

प्रभु के आदेश से,[1] शक्तिमान प्रशंसित अल्लाह के मार्ग की ओर।

اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ②

(२) जिस अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है। तथा काफ़िरों (कृतघ्नों) के लिये घोर यातना की विपत्ति है।

الَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ③

(३) जो आख़िरत (परलोक) की तुलना में सांसारिक जीवन का मोह करते हैं तथा अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं तथा उसमें टेढ़ापन उत्पन्न करना चाहते हैं।[2] यही लोग परले दर्जे की गुमराही (पथभ्रष्टता) में हैं।[3]

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۖ فَيُضِلُّ

(४) तथा हमने प्रत्येक नबी (संदेशवाहक) को उसकी सामुदायिक (राष्ट्रीय) भाषा में ही भेजा है ताकि उनके समक्ष स्पष्टरूप से वर्णन कर

﴿اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ﴾

"अल्लाह तआला ईमानवालों का मित्र है, वह उन्हें अंधकार से निकालकर प्रकाश की ओर लाता है।" (सूरः *अल-बकरः*-२५७)

[1]अर्थात पैग़म्बर (ईशदूत) का कार्य प्रकाश का मार्ग दिखाना है, यदि कोई उसे अपना लेता है, तो यह केवल अल्लाह के आदेश तथा इच्छा से होता है क्योंकि मूल मार्गदर्शक वही है। उसकी इच्छा यदि न हो तो पैग़म्बर चाहे जितनी शिक्षा-दीक्षा दे, लोग प्रकाश का मार्ग अपनाने के लिए तैयार नहीं होते, जिसके कई उदाहरण पूर्व के नबियों में हैं तथा स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी तीव्र इच्छा के उपरान्त अपने प्रिय चाचा अबू तालिब को मुसलमान न कर सके।

[2]इसका एक अर्थ तो यह हुआ कि इस्लाम की शिक्षाओं में लोगों में बुरी धारणा उत्पन्न करने के लिये त्रुटियाँ निकालने का प्रयत्न करते हैं तथा उसे कुरूप बनाकर प्रस्तुत करते हैं। दूसरा अर्थ यह है कि अपनी आकांक्षाओं के अनुसार इसमें परिवर्तन करना चाहते हैं।

[3]इसलिये कि उनमें वर्णित विभिन्न दोष एकत्रित हो गये हैं। जैसे परलोक की अपेक्षा दुनिया को महत्व देना, अल्लाह के मार्ग से लोगों को रोकना तथा इस्लाम धर्म में त्रुटि खोजना।

The Ummah Technology Mission

दे ।[1] अब अल्लाह जिसे चाहे भटका दे, तथा जिसे चाहे मार्ग दिखा दे, वह प्रभावशाली तथा विज्ञानी है ।[2]

اللّٰهُ مَنۡ يَّشَآءُ وَيَهۡدِىۡۤ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ۞

(५) (याद करो जब कि) हमने मूसा को अपनी निशानियाँ देकर भेजा कि तू अपने समुदाय को अंधकार से प्रकाश में निकाल,[3] तथा उन्हें अल्लाह के उपकार याद दिला ।[4] इसमें निशानियाँ हैं प्रत्येक धैर्यवान के लिये ।[5]

وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا مُوۡسٰى بِاٰيٰتِنَاۤ اَنۡ اَخۡرِجۡ قَوۡمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوۡرِ ۙ وَذَكِّرۡهُمۡ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوۡرٍ ۞

---

[1]फिर जब अल्लाह तआला ने दुनिया वालों पर यह उपकार किया कि उनके मार्गदर्शन के लिए किताबें अवतरित कीं तथा रसूल भेजे, तो इस उपकार को इस प्रकार पूर्ण किया कि प्रत्येक रसूल को सामुदायिक (जातीय) भाषा में भेजा ताकि किसी को प्रकाश के मार्ग को समझने में कठिनाई न हो ।

[2]परन्तु इस वर्णन तथा व्याख्या के उपरान्त मार्गदर्शन उसी को प्राप्त होगा जिसको अल्लाह चाहे ।

[3]अर्थात जिस प्रकार हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हमने आपको अपने समुदाय की ओर भेजा तथा किताब अवतरित की, ताकि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने समुदाय को कुफ्र तथा मूर्तिपूजा के अंधकार से निकाल कर ईमान के प्रकाश की ओर लायें, उसी प्रकार मूसा को भी हमने चमत्कार तथा तर्क प्रदान करके उनके समुदाय की ओर भेजा ताकि वह उन्हें कुफ्र तथा अज्ञान के अंधकार से निकालकर ईमान का प्रकाश प्रदान करें । "*आयात*" से तात्पर्य चमत्कार हैं जो मूसा अलैहिस्सलाम को प्रदान किये गये थे अथवा वे नौ चमत्कार जिनका वर्णन *सूरः बनी इस्राईल* में किया गया है ।

[4] أيام الله से तात्पर्य अल्लाह के वे उपकार हैं जो इस्राईल की संतान पर किये गये जिनका विस्तृत वर्णन पूर्व में कई बार आ चुका है । अथवा وقائع ايام, घटनाओं के अर्थ में है अर्थात वे घटनायें उनको याद दिला जिनसे ये गुज़र चुके हैं, जिनमें अल्लाह तआला के विशेष उपकार हुए जिनमें से कुछ का वर्णन यहाँ पर आ रहा है ।

[5]धैर्य तथा कृतज्ञता ये दो प्रमुख गुण हैं तथा ईमान का आधार इन्ही पर है । इसलिये यहाँ पर इन दो का वर्णन किया गया है दोनों अतिश्योक्ति के रूप में हैं । صبّار अत्यधिक धैर्य रखने वाला, شكور अत्यधिक कृतज्ञता प्रकट करने वाला । तथा धैर्य को कृतज्ञता के पहले रखा गया है । इसलिये कि شكر (कृतज्ञता) धैर्य का ही फल है । हदीस में

The Ummah Technology Mission

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَنجَاكُم مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۚ وَفِي ذَٰلِكُم بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿٦﴾

(६) तथा जिस समय मूसा ने अपने समुदाय से कहा कि अल्लाह के वे उपकार याद करो जो उसने तुम पर किये हैं, जबकि उसने तुम्हें फ़िरऔन के साथियों से मुक्त किया जो तुम्हें बहुत दुख पहुँचाते थे। तुम्हारे पुत्रों की हत्या करते थे तथा तुम्हारी पुत्रियों को जीवित छोड़ते थे, इसमें तुम्हारे प्रभु की ओर से तुम पर बड़ा उपकार था।[1]

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ﴿٧﴾

(७) तथा जब तुम्हारे प्रभु ने तुम्हें सावधान कर दिया,[2] कि यदि तुम कृतज्ञता व्यक्त करोगे तो नि:संदेह मैं तुम्हें अधिक प्रदान करूँगा।[3] तथा यदि तुम कृतघ्न होगे, तो निश्चय मेरा प्रकोप कठोर है।[4]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मोमिन का मामला भी विचित्र है। अल्लाह तआला इसके लिये जिस बात का भी निर्णय कर ले, वह उसके पक्ष में अच्छा होता है, यदि उसे दुख पहुँचे तथा वह धैर्य रखे तो यह भी उसके पक्ष में श्रेष्ठ है तथा यदि उसे कोई प्रसन्नता प्राप्त हो, वह उस पर अल्लाह का आभारी हो तो यह भी उसके पक्ष में उत्तम है।" (सहीह मुस्लिम किताबुल ज़ोहद बाब "अल-मोमिन अम्रोहु कुल्लहु ख़ैर "

[1]अर्थात जिस प्रकार यह बहुत बड़ी परीक्षा थी, उससे मुक्ति अल्लाह का बहुत बड़ा उपकार था। इसीलिये कुछ अनुवादकों ने بلاء का अनुवाद परीक्षा तथा कुछ ने उपकार किया है।

[2] تأذن का अर्थ أعلمكم بوعده لكم उसने अपने वायदे के साथ तुम्हें सर्तक तथा सचेत कर दिया है। तथा यह भी सम्भव है कि यह सौगन्ध के अर्थ में हो अर्थात जब तुम्हारे प्रभु ने अपनी मान-मर्यादा तथा महिमा की सौगन्ध खाकर कहा। (इब्ने कसीर)

[3]अल्लाह की कृपा पर कृतज्ञ होने पर और अधिक कृपाएं प्रदान करता है।

[4]इसका अर्थ यह हुआ कि कृतघ्नता अल्लाह को अत्यधिक अप्रिय है, जिस पर उसने कठोर (कड़ी) यातना की चेतावनी दी है। इसलिये नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी

The Ummah Technology Mission

وَقَالَ مُوسَىٰٓ إِن تَكۡفُرُوٓاْ أَنتُمۡ وَمَن فِي ٱلۡأَرۡضِ جَمِيعٗا فَإِنَّ ٱللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ٨

(८) तथा मूसा ने कहा कि यदि तुम सब तथा धरती पर निवास करने वाले सभी लोग अल्लाह की कृतघ्नता करें, तो भी अल्लाह महान तथा प्रशंसा वाला है।[1]

أَلَمۡ يَأۡتِكُمۡ نَبَؤُاْ ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ قَوۡمِ نُوحٖ وَعَادٖ وَثَمُودَ ۛ

(९) क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पूर्व के लोगों के समाचार नहीं आये ? अर्थात नूह के समुदाय का एवं आद तथा समूद का, तथा

फ़रमाया कि स्त्रियों की बहुमत अपने पतियों की कृतघ्नता के कारण नरक में जायेंगी। (मुस्लिम, किताबु सलातिल ईदैन का आरम्भ)

[1]अभिप्राय यह है कि मनुष्य अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करेगा तो उसमें उसी का लाभ है। कृतघ्नता व्यक्त करेगा तो अल्लाह की उसमें क्या हानि है ? वह तो निस्पृह है। अखिल जगत उसका कृतघ्न हो जाये तो उसका क्या बिगड़ेगा ? जिस प्रकार हदीस कुदसी में आता है अल्लाह तआला फ़रमाता है :

«يَاعِبَادِي! لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ، وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ، كَانُوا عَلَىٰ أَتْقَىٰ قَلْبِ رَجُلٍ مِّنْكُمْ، مَازَادَ ذٰلِكَ فِي مُلْكِي شَيْئًا، يَاعِبَادِي! لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ، وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ كَانُوا عَلَىٰ أَفْجَرِ قَلْبِ رَجُلٍ مِّنْكُمْ مَا نَقَصَ ذٰلِكَ فِي مُلْكِي شَيْئًا، يَاعِبَادِي! لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ، وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ قَامُوا فِي صَعِيدٍ وَاحِدٍ، فَسَأَلُونِي فَأَعْطَيْتُ كُلَّ إِنْسَانٍ مَسْأَلَتَهُ، مَا نَقَصَ ذٰلِكَ مِنْ مُلْكِي شَيْئًا، إِلَّا كَمَا يُنْقِصُ الْمِخْيَطُ إِذَا أُدْخِلَ فِي الْبَحْرِ».

"हे मेरे भक्तो ! यदि तुम्हारे आदि तथा अन्त एवं उसी प्रकार सभी मनुष्य तथा जिन्न उस एक मनुष्य के दिल के भाँति हो जायें जो तुममें से अधिक अल्लाह से डरने वाला तथा परहेज़गार हो (अर्थात कोई भी अवहेलना करने वाला न हो) तो उससे मेरे राज्य में विस्तार न होगा। ऐ मेरे भक्तो ! यदि तुम्हारे आदि तथा अन्त तथा मनुष्य एवं जिन्न उस एक मनुष्य के दिल की भाँति हो जायें जो तुममें सबसे बड़ा अवज्ञाकारी तथा कुकर्मी हो तो उससे मेरे राज्य में कोई कमी नहीं होगी। हे मेरे भक्तो ! यदि तुम्हारे आदि तथा अन्त तथा मनुष्य एवं जिन्न सभी एक मैदान में एकत्रित हो जायें तथा मुझसे प्रश्न करें, तथा मैं प्रत्येक व्यक्ति को उसके प्रश्न के अनुसार प्रदान कर दूँ तो उससे मेरे कोष में तथा राज्य में इतनी ही कमी होगी जितनी सुई को समुद्र में डुबोने पर निकालने से समुद्र के जल में होती है।" فَسُبْحَانه و تعالى الغني الحميد (सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्रे बाब तहरीमिज़ ज़ुल्मे)

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِينَ مِنۢ بَعۡدِهِمۡۚ لَا يَعۡلَمُهُمۡ إِلَّا ٱللَّهُۚ جَآءَتۡهُمۡ رُسُلُهُم بِٱلۡبَيِّنَٰتِ فَرَدُّوٓاْ أَيۡدِيَهُمۡ فِيٓ أَفۡوَٰهِهِمۡ وَقَالُوٓاْ إِنَّا كَفَرۡنَا بِمَآ أُرۡسِلۡتُم بِهِۦ وَإِنَّا لَفِي شَكّٖ مِّمَّا تَدۡعُونَنَآ إِلَيۡهِ مُرِيبٖ ٩

उनके पश्चात वालों का जिन्हें अल्लाह के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं जानता, उनके पास उनके रसूल चमत्कार लाये, परन्तु वे अपने हाथ अपने मुख में फेर ले गये [1] तथा स्पष्ट रूप से कह दिया कि जो कुछ तुम्हें देकर भेजा गया है, हम उसे नही मानते हैं तथा जिस चीज़ की ओर तुम हमें आमन्त्रित कर रहे हो हमें तो उसमें बहुत बड़ी शंका है (हमें विश्वास नहीं)।[2]

قَالَتۡ رُسُلُهُمۡ أَفِي ٱللَّهِ شَكّٞ فَاطِرِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۖ يَدۡعُوكُمۡ لِيَغۡفِرَ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمۡ وَيُؤَخِّرَكُمۡ إِلَىٰٓ أَجَلٖ مُّسَمّٗىۚ قَالُوٓاْ إِنۡ أَنتُمۡ

(१०) उनके रसूलों ने उन से कहा कि क्या अल्लाह (जो सत्य है) उसके विषय में संदेह है, जो आकाशों तथा धरती का उत्पन्न करने वाला है, वह तो तुम्हें इसलिये बुला रहा है ताकि वह तुम्हारे सारे पाप क्षमा कर दे,[3]

---

[1] व्याख्याकारों ने इसके विभिन्न अर्थों का वर्णन किया है। १- जैसे उन्होंने अपने हाथ अपने मुँह में रख लिये तथा कहा कि हमारा तो केवल एक ही उत्तर है कि हम तुम्हारी रिसालत को अस्वीकार करते हैं। २- उन्हें अपनी उंगलियों से अपने मुख की ओर संकेत कर के कहा कि सावधान रहो तथा ये जो संदेश लेकर आये हैं उन की ओर आकर्षित न हो। ३- उन्होंने अपने हाथ मुँह पर उपहास तथा आश्चर्य से रख लिये जिस प्रकार से एक व्यक्ति हँसी दबाने के लिये ऐसा करता है। ४- उन्होंने अपने हाथ रसूलों के मुख पर रख कर कहा चुप रहो। ५- क्रोध तथा जलन के कारण अपने हाथ अपने मुख में ले लिये। जिस प्रकार पाखण्डियों के विषय में अन्य स्थान पर आता है।

﴿ عَضُّواْ عَلَيۡكُمُ ٱلۡأَنَامِلَ مِنَ ٱلۡغَيۡظِۚ ﴾

"वह तुम पर उँगलियाँ क्रोध तथा जलन से काटते हैं।" (सूरः *आले इमरान*-११९)

इमाम शौकानी तथा तबरी ने इसी अन्तिम अर्थ को प्राथमिकता प्रदान की है।

[2] مريب अर्थात ऐसा संदेह कि जिससे मन अत्यधिक व्याकुलता तथा दुविधा में घिर जाये।

[3] अर्थात तुम्हें अल्लाह के विषय मे संदेह है जो आकाशों तथा धरती का रचयिता है। इसके अतिरिक्त वह ईमान तथा एकेश्वर की ओर आमन्त्रित भी केवल इसलिये कर रहा

The Ummah Technology Mission

إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ تُرِيدُونَ أَن تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَأْتُونَا بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿١٠﴾

तथा एक निर्धारित समय तक तुम्हें अवसर प्रदान करे, उन्होंने कहा कि तुम तो हम जैसे ही मनुष्य हो,[1] तुम चाहते हो कि हमको उन देवताओं की पूजा से रोक दो जिनकी पूजा हमारे पूर्वज करते रहे |[2] अच्छा तो कोई हमारे समक्ष स्पष्ट युक्ति प्रस्तुत करो |[3]

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِن نَّحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَمَا كَانَ لَنَا أَن نَّأْتِيَكُم بِسُلْطَانٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ

(११) उनके पैग़म्बरों ने उनसे कहा कि यह तो सत्य है कि हम तुम जैसे मनुष्य हैं | परन्तु अल्लाह (तआला) अपने भक्तों में से जिस पर चाहता है अपनी कृपा करता है |[4] अल्लाह के आदेश के बिना हमारी शक्ति नहीं

है कि तुम्हें पाप से शुद्ध कर दे | इसके विपरीत भी तुम उस धरती व आकाश के स्रष्टा को मानने के लिये तैयार नहीं तथा उसके आमंत्रण से तुम्हें इंकार है ?

[1]ये वही संदेह है जो काफ़िरों को उत्पन्न होता रहा कि मनुष्य होकर किस प्रकार कोई अल्लाह की प्रकाशना (वह्यी) तथा नबूअत एवं रिसालत के योग्य हो सकता है |

[2]यह दूसरी रूकावट (विघ्न) है कि हम उन देवताओं की उपासना किस प्रकार छोड़ दें जिनकी उपासना हमारे पूर्वज करते आये हैं ? जबकि तुम्हारा उद्देश्य हमें उनकी उपासना से रोक कर एक ईश्वर की इबादत (वंदना) पर लगाना है |

[3]निशानियाँ तथा चमत्कार प्रत्येक नबी के साथ होते थे, इससे तात्पर्य ऐसी युक्ति अथवा चमत्कार है, जिसे देखने की उनकी इच्छा होती थी, जैसे मक्का के मूर्तिपूजकों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से विभिन्न प्रकार के चमत्कारों को दिखाने की माँग की थी, जिसका वर्णन *सूरः बनी इस्राईल* में आयेगा |

[4]रसूलों ने पहले संदेहों का उत्तर दिया कि नि:संदेह हम तुम जैसे मनुष्य ही हैं | परन्तु तुम्हारा यह समझना त्रुटिपूर्ण है कि मनुष्य रसूल नहीं हो सकता | अल्लाह तआला मनुष्यों के मार्गदर्शन के लिये मनुष्यों में से ही कुछ मनुष्यों को प्रकाशना (वह्यी) तथा रिसालत के लिये चुन लेता है तथा तुम सभी में से यह उपकार अल्लाह ने हम पर किया है |

The Ummah Technology Mission

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾

कि हम कोई चमत्कार तुम्हें ला दिखायें।[1] तथा ईमानदारों को केवल अल्लाह (तआला) पर भरोसा रखना चाहिये।[2]

وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿١٢﴾

(१२) तथा अन्ततः क्या कारण है कि हम अल्लाह (तआला) पर भरोसा न रखें, जबकि उसी ने हमें हमारा मार्ग दिखाया है। तथा जो दुख तुम हमें दोगे हम उन पर अवश्य धैर्य ही रखेंगे। भरोसा करने वालों को यही योग्य है कि अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिये।[3]

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٣﴾

(१३) तथा काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा कि हम तुम्हें देश से निकाल देंगे अथवा तुम फिर से हमारे धर्म में लौट आओ, तो उनके प्रभु ने उनकी ओर वह्यी (प्रकाशना) भेजी कि हम उन अत्याचारियों का ही नाश कर देंगे।[4]

---

[1]उनकी इच्छानुसार चमत्कार के संदर्भ में रसूलों ने उत्तर दिया कि चमत्कार दिखाना हमारे वश में नहीं यह मात्र अल्लाह के वश में है।

[2]यहाँ ईमानवालों से तात्पर्य प्रथम तो स्वयं नबी हैं अर्थात हमें पूर्ण भरोसा अल्लाह ही पर करना चाहिये। जैसाकि आगे फ़रमाया :

"आख़िर क्या कारण है कि हम अल्लाह पर भरोसा न रखें ?"

[3]कि वही काफ़िरों के षडयन्त्र तथा कुविचार से बचाने वाला है। यह अर्थ भी हो सकता है कि हमसे चमत्कारों की माँग न करो, अल्लाह पर भरोसा करो, उसकी इच्छा होगी तो चमत्कार प्रदर्शित कर देगा, अपितु नहीं।

[4]जैसे अन्य कई स्थानों पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

The Ummah Technology Mission

وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ ﴿١٤﴾

(१४) तथा उसके पश्चात हम स्वयं तुम्हें धरती पर बसायेंगे।[1] यह है उनके लिये जो मेरे समक्ष खड़े होने से भय रखें तथा मेरी चेतावनी से भयभीत रहें।[2]

﴿وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ * إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُورُونَ * وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ﴾

"तथा पूर्व ही हो चुका हमारा आदेश अपने भक्तों के पक्ष में जो रसूल है, नि:संदेह वे विजयी तथा सफल होंगे तथा हमारी सेना भी प्रभावशाली होगी।" (सूर: *अस्साफ़्फ़ात*-१७१ से १७३ तक)

﴿كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي﴾

"अल्लाह ने यह बात लिख दी है कि मैं तथा मेरे रसूल ही प्रभावशाली होंगे।" (सूर: *अल-मुजादिल:*-२१)

[1]यह विषय भी अल्लाह ने कई स्थान पर वर्णित किया है। जैसे,

﴿وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِن بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ﴾

"हमने लिख दिया ज़बूर में शिक्षाओं के पश्चात कि अन्तत:धरती के उत्तराधिकारी मेरे सत्कर्मी भक्त होंगे।" (सूर: *अल-अंबिया*-१०५)

अन्य जानकारी के लिये देखिये सूर: *अल-आराफ़*-१२८ तथा १३७। अत: इसके अनुसार अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सहायता की, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बड़े दुखी हृदय से मक्के से निकलना पड़ा तथा कुछ ही वर्षों के पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्के में विजेता के रूप में प्रवेश किया तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्के से निकलने पर बाध्य करने वाले अत्याचारी सिर झुकाये खड़े आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नयनों के संकेत की प्रतीक्षा में थे। परन्तु आपने महान चरित्र का प्रदर्शन करते हुए لا تثريب عليكم اليوم कहकर सबको क्षमा कर दिया।

[2] जिस प्रकार से अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ * فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ﴾

"जो अपने प्रभु के समक्ष खड़ा होने से डर गया तथा अपने मन को इच्छाओं से रोके रखा। नि:संदेह स्वर्ग ही उसका ठिकाना है।" (सूर: *अल-नाज़िआत*-४०,४१)

The Ummah Technology Mission
917012287

وَاسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿١٥﴾

(१५) तथा उन्होंने निर्णय माँगा,[1] तथा सभी उद्दण्ड अड़ियल लोग असफल हो गये।

مِّن وَرَائِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِن مَّاءٍ صَدِيدٍ ﴿١٦﴾

(१६) उसके समक्ष नरक है जहाँ उन्हें पीव का पानी पिलाया जायेगा।[2]

يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِن كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ

(१७) जिसे कष्ट से घूँट-घूँट पियेगा। फिर भी उसे गले से उतार न सकेगा तथा उसे प्रत्येक स्थान से मृत्यु आती दिखायी देगी परन्तु

﴿ وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ ﴾

"जो अपने प्रभु के समक्ष खड़े होने से डर गया, उसके लिए दो स्वर्ग हैं।" (सूरः *अर-रहमान*-४६)

[1]इसके कर्ता अत्याचारी काफ़िर भी हो सकते हैं कि उन्होंने अन्ततः अल्लाह से निर्णय की माँग की। अर्थात यदि यह रसूल सच्चे हैं तो हे अल्लाह अपने निर्णय के अनुसार हमें नष्ट कर दे, जैसे मक्का के मूर्तिपूजकों ने कहा।

﴿ اللَّهُمَّ إِن كَانَ هَٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِندِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴾

"ऐ अल्लाह यदि यह क़ुरआन आपकी ओर से अवश्य है तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा अथवा हम पर कोई कष्टदायक प्रकोप उतार दे।" (सूरः *अंफ़ाल*-३२)

अथवा जिस प्रकार बद्र के युद्ध के अवसर पर मक्का के मूर्तिपूजकों ने यह इच्छा व्यक्त की थी जिसका वर्णन अल्लाह ने सूरः *अंफ़ाल*-१९ में किया है। अथवा क्रिया के कर्ता रसूल हों जिन्होंने अल्लाह से विजय तथा सफलता के लिये दुआऐं कीं, जिन्हें अल्लाह ने स्वीकार की।

[2] صديد पीव अथवा वह रक्त है जो नरक में जाने वालों के माँस तथा खालों से बहा होगा। कुछ हदीसों में इसे «عُصَارَةُ أهلِ النَّارِ» (मुसनद अहमद भाग ५, पृष्ठ १७१) (नरक वासियों के शरीर से निचोड़ा हुआ) तथा कुछ हदीसों में है कि यह इतना गर्म तथा उबलता हुआ होगा कि उनके मुख के निकट पहुँचते ही उनके चेहरे की खाल झुलस कर गिर पड़ेगी तथा एक घूँट पीते ही पेट की आँतें गुहय द्वार से निकल पड़ेंगी। أعاذنا الله منه

The Ummah Technology Mission

بِمَيِّتٍ ۭ وَمِنْ وَّرَآىِٕهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ⑰

वह मरने वाला नहीं।[1] फिर उसके पीछे कड़ी यातना है।

مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ۨ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ۭ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰي شَيْءٍ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ⑱

(१८) उन लोगों का उदाहरण जिन्होंने अपने पालनहार से कुफ़्र किया उनके कर्म उस राख के समतुल्य हैं, जिस पर तीव्र वायु आँधी वाले दिन चले।[2] जो भी उन्होंने किया उसमें से किसी वस्तु पर समर्थ न होंगे, यही दूर का भटकाव है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۭ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ⑲

(१९) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह तआला ने आकाशों को तथा धरती को सर्वश्रेष्ठ प्रबन्ध से पैदा किया है। यदि वह चाहे तो तुम सबका विनाश कर दे तथा नई सृष्टि ले आये।

وَّمَا ذٰلِكَ عَلَي اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ⑳

(२०) तथा अल्लाह पर यह कार्य कुछ भी कठिन नहीं।[3]

وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ

(२१) तथा सब के सब अल्लाह के समक्ष खड़े होंगे।[4] उस समय कमज़ोर लोग घमन्ड

---

[1] अर्थात नाना प्रकार तथा विभिन्न प्रकार की यातनाओं का स्वाद चख कर वे मृत्यु की कामना करेंगे। परन्तु मृत्यु वहाँ कहाँ ? वहाँ तो उसी प्रकार स्थाई रूप से यातना होगी।

[2] क़ियामत (प्रलय) के दिन काफ़िरों के कर्मों का भी यही परिणाम होगा कि उसका कोई सुफल तथा पुण्य उन्हें नहीं मिलेगा।

[3] अर्थात यदि तुम अवज्ञा तथा अवहेलना करने से न रूके तो अल्लाह तआला इसका सामर्थ्य रखता है कि वह तुम्हें ध्वस्त करके, तुम्हारे स्थान पर नई सृष्टि उत्पन्न कर दे। यही विषय अल्लाह ने *सूरः फ़ातिर*-१५ से १७ तक, *सूरः मोहम्मद*-३८, *सूरः अल-मायदः*-५४ तथा *सूरः निसा*-१३३ में भी वर्णन किया है।

[4] अर्थात सभी महशर के मैदान (निर्णय वाले दिन जहाँ सभी एकत्रित होंगे) में अल्लाह के समक्ष होंगे, कोई कहीं छिप नही सकेगा।

The Ummah Technology Mission

تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٢١﴾

वालों से कहेंगे कि हम तो तुम्हारे अधीनस्थ थे, तो क्या तुम अल्लाह की यातनाओं से कुछ यातनायें हम से दूर कर सकने वाले हो, वे उत्तर देंगे कि यदि अल्लाह हमें मार्गदर्शन देता तो हम भी तुम्हें मार्गदर्शन देते, अब तो हम पर व्यग्रता तथा धैर्य रखना दोनों समान है, हमारे लिये कोई छुटकारा नहीं ।[1]

وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ وَمَا كَانَ

(२२) जब कार्य का निर्णय कर दिया जायेगा तो शैतान कहेगा[2] कि अल्लाह ने तो तुम्हें सत्य वचन दिया था तथा मैंने तुम को जो वचन दिया उसका उल्लंघन किया,[3] मेरा

---

[1]कुछ विद्वान कहते हैं कि नरकवासी आपस में कहेंगे कि स्वर्गवालों को स्वर्ग इसलिये मिला कि वे अल्लाह के समक्ष रोते तथा गिड़गिड़ाते थे, आओ हम भी अल्लाह के समक्ष वेदना से रोयें-धोयें, अतएवं वे रोयेंगे तथा अत्यधिक विलाप करेंगे। परन्तु उसका कोई लाभ न होगा, फिर कहेंगे कि स्वर्ग वालों को स्वर्ग उनके धैर्य तथा संयम के कारण मिला, चलो हम भी धैर्य धारण करें, फिर वे धैर्य का भरपूर प्रदर्शन करेंगे, परन्तु उसका भी कोई लाभ न होगा तब उस समय कहेंगे कि हम धैर्य रखें अथवा वेदना के साथ रोयें गिड़गिड़ायें, अब छुटकारे का कोई अवसर नहीं है। यह उनकी आपसी बातचीत नरक के अन्दर होगी। क़ुरआन करीम में इसको अन्य भी कई स्थान पर वर्णन किया गया है जैसे सूरः *मोमिन*-४७ तथा ४८, सूरः *आराफ़*-३८ तथा ३९, सूरः *अल-अहजाब* ६६ से ६८ तक, इसके अतिरिक्त वे आपस में झगड़ेंगे तथा एक-दूसरे पर भटकाने का आक्षेप लगायेंगे। इमाम इब्ने कसीर लिखते हैं कि झगड़ा महशर के मैदान में होगा। इसका अधिक विस्तृत वर्णन अल्लाह तआला ने सूरः *सबा*- ३१ से ३३ तक में किया है।

[2]अर्थात ईमान वाले स्वर्ग में तथा काफ़िर एवं मूर्तिपूजक नरक में चले जायेंगे, तो शैतान नरक वासियों से कहेगा।

[3]अल्लाह ने जो वचन अपने पैग़म्बरों के द्वारा दिया था कि मोक्ष मेरे पैग़म्बरों पर ईमान लाने में है, वे सत्य थे, उनकी तुलना में मेरे वचन तो पूर्ण छल तथा कपट थे। जिस प्रकार अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۚ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا﴾

The Ummah Technology Mission

لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ
دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ
وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ
وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ۭ اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَآ
اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ۭ اِنَّ
الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ٢٢

कोई दबाव तुम पर तो था ही नहीं [1] हाँ,मैंने तुम्हें पुकारा तथा तुमने मेरी मान ली,[2] अब तुम मुझ पर अभियोग न लगाओ, बल्कि स्वयं अपने आप को धिक्कारो,[3] न मैं तुम्हारी सहायता कर सकता, तथा न तुम मेरी गुहार को पहुँचने वाले,[4] मैं तो (प्रारम्भ से) मानता ही नहीं कि तुम मुझे इससे पूर्व अल्लाह का साझीदार समझते रहे।[5] नि:संदेह अत्याचारियों के लिये दुखदायी यातनायें हैं।[6]

"शैतान उनसे वायदे करता तथा आशायें दिलाता है परन्तु शैतान के ये वायदे मात्र छल हैं।" (सूरः *अल-निसा*-१२०)

[1]दूसरा यह कि मेरी बातों में कोई सत्यता तथा युक्ति नहीं होती थी, न मेरा कोई दबाव तुम पर था।

[2]हाँ मात्र आमन्त्रण तथा संदेश था, तुमने मेरी तर्कहीन बातों को तो स्वीकार कर लिया तथा पैग़म्बरों के तर्क तथा प्रमाण संगत बातों का खण्डन कर अस्वीकार कर दिया।

[3]इसलिये सब दोष तुम्हारा स्वयं का है, तुमने बुद्धि तथा विवेक से काम न लिया, स्पष्ट निशानियों को तुमने अपेक्षा कर दी, तथा खोखले दावों के पीछे लगे रहे, जिसके पीछे कोई प्रमाण नहीं था।

[4]अर्थात न मैं तुम्हें उस यातना से निकलवा सकता हूँ, जिसमें तुम घिरे हुए हो तथा न तुम मुझे उस क्रोध तथा आक्रोश से बचा सकते हो, जो अल्लाह की ओर से मुझ पर है।

[5]मुझे यह बात भी अस्वीकार है कि मैं अल्लाह का साझीदार हूँ, यदि तुम मुझे अथवा किसी अन्य को अल्लाह का साझीदार बनाते रहे तो यह तुम्हारी अपनी त्रुटि तथा अज्ञानता थी, जिस अल्लाह ने सारी सृष्टि की उत्पत्ति की थी तथा उसको नियोजित भी वही करता रहा, भला उसका साझीदार कौन हो सकता था ?

[6]कुछ विद्वान कहते हैं कि यह वाक्य भी शैतान का है तथा यह उसके भाषण का परिशिष्ट है। कुछ विद्वान कहते हैं कि शैतान का भाषण مِن قبل पर समाप्त हो गया। यह अल्लाह तआला का कथन है।

The Ummah Technology Mission

وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ؕ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ﴿٢٣﴾

(२३) तथा जो लोग ईमान लाये और पुण्य के कार्य किये वे उन स्वर्गों में प्रवेश किये जायेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जहाँ वे सदैव रहेंगे, अपने प्रभु के आदेश से,[1] जहाँ उनका स्वागत सलाम ही सलाम से होगा।[2]

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ﴿٢٤﴾

(२४) क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) ने पवित्र बात का उदाहरण एक पवित्र वृक्ष जैसा वर्णन किया जिसकी जड़ मज़बूत है तथा जिसकी शाखायें आकाश में हैं।

تُؤْتِيْۤ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍ بِاِذْنِ رَبِّهَا ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٥﴾

(२५) जो अपने प्रभु के आदेश से प्रत्येक समय अपने फल लाता है।[3] तथा अल्लाह (तआला) लोगों के समक्ष उदाहरणों का वर्णन करता है ताकि वे शिक्षा प्राप्त करें।

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ِۨاجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ

(२६) तथा दूषित बात की तुलना गन्दे वृक्ष जैसी है, जो धरती के कुछ ही ऊपर से

---

[1]यह कुकर्मियों तथा काफ़िरों की तुलना में सत्यकर्मियों तथा ईमान वालों का वर्णन है। इनका वर्णन उनके साथ इसलिये किया गया है कि ताकि लोगों के अन्दर ईमान के कार्य अपनाने की रूचि तथा लोभ उत्पन्न हो।

[2]अर्थात आपस में उनका उपहार एक-दूसरे को सलाम करना होगा। इसके अतिरिक्त फ़रिश्ते भी प्रत्येक द्वार से प्रवेश करके उन्हें सलाम करेंगे।

[3]इसका अभिप्राय यह है कि ईमानवालों का उदाहरण उस वृक्ष जैसा है, जो गर्मी तथा सर्दी प्रत्येक ऋतु में फल देता है। इसी प्रकार ईमानवालों के पुण्य के कार्य रात्रि-दिन के प्रत्येक क्षण में आकाश की ओर ले जाये जाते हैं, "***पवित्र वाक्य***" से इस्लाम अथवा لا إله إلا الله तथा पवित्र वृक्ष से खजूर का वृक्ष तात्पर्य है जैसाकि हदीस से सिद्ध है। (सहीह बुख़ारी किताबुल इल्म बाबुल फ़हम फ़िलइल्म तथा सहीह मुस्लिम किताबु सिफ़तिल कियाम: बाब मिस्लुल मोमिन मिस्लुल नख़्ल:)

The Ummah Technology Mission

उखाड़ लिया गया। उसे कुछ स्थिरता तो है नहीं।[1]

الْأَرْضِ مَا لَهَا مِن قَرَارٍ ﴿٢٦﴾

(२७) ईमानवालों को अल्लाह (तआला) पक्की बात के साथ स्थिर रखता है, सांसारिक जीवन में भी तथा परलोक में भी।[2] हाँ अन्यायी व्यक्तियों को अल्लाह (तआला) भटका देता है, तथा अल्लाह जो चाहे कर डाले।

يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۖ وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ ۚ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ﴿٢٧﴾

---

[1]"बुरे वाक्य" से तात्पर्य कुफ्र तथा 'बुरे वृक्ष' से इन्द्रायन का वृक्ष तात्पर्य है जिसकी जड़ धरती के ऊपर ही होती है तथा तनिक संकेत से उखड़ जाती है अर्थात काफ़िर के कर्म का कोई मूल्य नहीं है। न वे आकाश पर जाते हैं तथा न अल्लाह के दरबार में स्वीकार होते हैं।

[2]इसकी व्याख्या हदीस में इस प्रकार आती है कि मृत्यु के पश्चात कब्र में जब मुसलमान से प्रश्न किया जाता है, तो वह उत्तर में इस बात की गवाही देता है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं तथा मोहम्मद (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) अल्लाह के रसूल हैं। बस यही अर्थ है अल्लाह के इस कथन يُثَبِّتُ اللهُ الذين آمنوا का (सहीह बुखारी तफ़सीर सूरः इब्राहीम तथा सहीह मुस्लिम किताबुल जन्नः व सिफ़ाते नअीमेहा वाब अरद मक़अदिल मय्यते अलैहि व इस्बातु अज़ाबुल क़ब्रे) एक अन्य हदीस में है कि "जब मुसलमान को क़ब्र (समाधि) में रख दिया जाता है तथा उसके साथी चले जाते हैं तथा वह उनके जूतों की आहट सुनता है, उसके पश्चात उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं। तथा उसे उठाकर पूछते हैं कि उस व्यक्ति के विषय में तेरा क्या विचार है, यदि वह ईमानवाला होता है, तो उत्तर देता है कि वह अल्लाह के भक्त तथा उसके रसूल हैं। फ़रिश्ते उसे नरक का स्थान दिखाते हैं तथा कहते हैं कि अल्लाह ने इसके स्थान पर तेरे लिए स्वर्ग में स्थान बना दिया है। इस प्रकार वह दोनों ठिकाने देखता है तथा उसकी क़ब्र सत्तर हाथ विस्तृत कर दी जाती है तथा उसकी क़ब्र को क़ियामत तक के लिये ईश्वरीय पुरस्कार से भर दिया जाता है। (सहीह मुस्लिम उपरोक्त वर्णित अध्याय (बाब)। एक हदीस में है, उससे पूछा जाता है «مَنْ رَبُّكَ ؟ مَا دِينُكَ ؟ مَنْ نَبِيُّكَ ؟» तेरा प्रभु कौन है ? तेरा धर्म क्या है ? तेरा नबी कौन है ? तो अल्लाह तआला उसे सीधा मार्ग प्रदान करता है तथा वह उत्तर देता है رَبِّيَ اللهُ (मेरा प्रभु अल्लाह है) وَدِينِيَ الإِسلام (मेरा धर्म इस्लाम है) و نَبِيِّي مُحَمَّدٌ (तथा मेरे नबी मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं) (तफ़सीर इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾

(२८) क्या आपने उनकी ओर दृष्टि नहीं डाली, जिन्होंने अल्लाह के उपकार के बदले कृतघ्नता व्यक्त की तथा अपने समुदाय को विनाश के घर में ला उतारा।[1]

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا ؕ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾

(२९) अर्थात नरक में जिसमें यह सब जायेंगे, जो बुरा ठिकाना है।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा उन्होंने अल्लाह के समान बना लिये कि लोगों को अल्लाह के मार्ग से भटकायें। (आप) कह दीजिये कि ठीक है आनन्द उड़ा लो तुम्हारा स्थान तो अन्त में नरक ही है।[2]

قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ

(३१) मेरे ईमान वाले भक्तों से कह दीजिये कि नमाज़ को स्थापित रखें तथा जो कुछ हमने उन्हें दे रखा है, उसमें से कुछ छिपाकर तथा खुल करके ख़र्च करते रहें, इससे पूर्व की वह

---

[1]इसकी व्याख्या सहीह बुख़ारी में है कि इससे तात्पर्य मक्का के काफ़िर हैं (सहीह बुख़ारी तफ़सीर *सूरः इब्राहीम*) जिन्होंने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत का विरोध करके बद्र के युद्ध में मुसलमानों मे लड़ा कर अपने लोगों की हत्या करवा डाली थी। परन्तु अपने भावार्थ के आधार पर यह सामान्य है तथा अर्थ यह होगा कि परम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने समस्त संसार के लिये दया तथा लोगों के लिये ईश्वरीय पुरस्कार बनाकर भेजा, तो जिसने उस वरदान का सम्मान किया, उसे स्वीकार किया, उस ने कृतज्ञता निभाया तथा वह स्वर्ग में जाने वाला (स्वर्गीय) हो गया तथा जिसने उस पुरस्कार का अपमान किया खण्डन किया तथा विरोध किया, वह नरकीय हो गया।

[2]यह धमकी तथा चेतावनी है कि दुनिया में तुम जो चाहो कर लो, परन्तु कब तक ? अन्ततः तुम्हारा ठिकाना नरक है।

The Ummah Technology Mission

दिन आ जाये जिसमें न कोई क्रय-विक्रय होगा न मित्रता एवं प्रेम।[1]

يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خِلَٰلٌ ﴿٣١﴾

(३२) अल्लाह वह है जिसने आकाशों तथा धरती को पैदा किया है तथा आकाशों से वर्षा करके उसके द्वारा तुम्हारी जीविका के लिये फल निकाले हैं तथा नावों को तुम्हारे वश में कर दिया है कि नदियों में उसके आदेश से चलें फिरें। उसी ने नदियाँ तथा नहरें तुम्हारे वश में कर दी हैं।[2]

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهَارَ ﴿٣٢﴾

(३३) उसी ने तुम्हारे लिये सूर्य तथा चन्द्रमा को अधीन कर दिया है कि बराबर ही चल

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَائِبَيْنِ ۖ

---

[1]नमाज़ स्थापित करने का अर्थ है कि उसे अपने समय पर तथा नियमानुसार एवं ध्यान तथा विनम्र होकर अदा किया जाये जिस प्रकार से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की "*सुन्नत*" है। "*इंफाक*" का अभिप्राय है ज़कात अदा करना, निकट सम्बन्धियों के साथ दया भाव प्रकट किया जाये तथा अन्य निर्धनों पर उपकार किया जाये। यह नहीं कि अपनी आवश्यकताओं तथा अपने ऊपर खूब व्यय किया जाये तथा अल्लाह के बतलाये हुए स्थानों पर व्यय करने से बचा जाये। क़ियामत का दिन ऐसा होगा जहाँ न ख़रीद-बेच सम्भव होगा न कोई मित्रता ही किसी के काम आयेगी।

[2]अल्लाह तआला ने जीवधारियों पर जो उपकार किये, उनमें से कुछ का वर्णन किया जा रहा है। फ़रमाया आकाश को छत तथा धरती को बिस्तर बनाया। तथा आकाश से वर्षा करके विभिन्न प्रकार के वृक्ष तथा फसलें उगायीं जिनमें स्वाद तथा बल के लिये फल भी हैं तथा नाना प्रकार के अन्न भी, जिनके रंग-रूप एक-दूसरे से भिन्न हैं तथा स्वाद एवं सुगन्ध तथा लाभ भी भिन्न हैं। नाव तथा जहाज़ को सेवा के लिये लगा दिया कि वे तीव्र धाराओं को चीरकर उनमें चलते हैं। मनुष्यों को भी एक देश से दूसरे देश पहुँचाते हैं तथा व्यापार की सामग्री भी एक स्थान से दूसरी जगह स्थानान्तरित करते हैं। धरती तथा पर्वतों से स्रोत तथा नदियाँ निकालीं ताकि तुम भी पी सको तथा अपने खेतों की सिंचाई करो।

The Ummah Technology Mission

وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿٣٣﴾

रहे हैं।[1] तथा रात-दिन को भी तुम्हारे कार्य में लगा रखा है।[2]

وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ؕ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा उसी ने तुम्हें तुम्हारी मुँह माँगी सभी वस्तुओं में से दे रखा है।[3] यदि तुम अल्लाह के उपकार, अनुग्रह गिनना चाहो तो उन्हें पूरा गिन भी नहीं सकते,[4] नि:संदेह मनुष्य बड़ा अन्यायी तथा कृतघ्न है।[5]

---

[1]अर्थात निरन्तर चलते रहते हैं, कभी रात को भी नहीं ठहरते तथा न दिन को। इसके अतिरिक्त एक-दूसरे के पीछे चलते हैं, परन्तु कभी भी उनमें आपसी टकराव तथा टक्कर नहीं होती।

[2]रात-दिन उनका आपसी अन्तर जारी रहता है। कभी रात-दिन का कुछ भाग लेकर लम्बी हो जाती है तथा कभी दिन-रात का कुछ भाग लेकर लम्बा हो जाता है। तथा यह क्रम जगत के आदि से चल रहा है, इसमें बाल बराबर अन्तर नहीं आया।

[3]अर्थात उसने तुम्हारी आवश्यकता की सभी वस्तुएं उपलब्ध करायीं, जो तुम उससे माँगते हो। तथा कुछ विद्वान कहते हैं कि जिसे तुम माँगते हो उसे भी वह देता है तथा जिसे नहीं माँगते, परन्तु उसे ज्ञात है कि तुम्हें उसकी आवश्यकता है, वह भी देता है। अर्थात तुम्हारी जीविका की सभी सुविधायें उपलब्ध कराता है।

[4]अर्थात अल्लाह के उपकार अंगणित हैं, उन्हें कोई गिन नहीं सकता। फिर कैसे हो सकता है कि कोई उन उपकारों के प्रति कृतज्ञता कर सके। एक हदीस में आदरणीय दाऊद अलैहिस्सलाम का कथन वर्णन किया गया है। उन्होंने कहा, "हे पालनहार! मैं तेरी कृतज्ञता किस प्रकार अदा करूँ? जबकि कृतज्ञता करना स्वयं तेरी ओर से उपकार है।" अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

> "ऐ दाऊद! अब तूने मेरी कृतज्ञता अदा कर दी जब तूने यह स्वीकार कर लिया कि हे अल्लाह! मैं तेरे उपकार की कृतज्ञता अदा करने से भी असमर्थ हूँ।" (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[5]अल्लाह के उपकारों पर अनुगृहीत होनें में आलस्य के कारण मनुष्य अपने स्वयं के साथ अत्याचार तथा अन्याय करता है। विशेष रूप से काफ़िर जो पूर्णरूप से ही अल्लाह से विमुख हैं।

The Ummah Technology Mission

وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ﴿٣٥﴾

(३५) (इब्राहीम की यह प्रार्थना भी याद करो) जब इब्राहीम ने कहा हे मेरे प्रभु ! इस नगर को शान्ति वाला बना दे।[1] तथा मुझे एवं मेरी सन्तान को मूर्तिपूजा से सुरक्षित रख।

رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٦﴾

(३६) हे मेरे प्रभु ! उन्होंने बहुत से लोगों को मार्ग से भटका दिया है।[2] अब मेरा अनुयायी मेरा है तथा जो अवज्ञा करे तो तू बहुत ही क्षमा तथा दया करने वाला है।

رَبَّنَآ اِنِّيْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

(३७) हे मेरे प्रभु ! मैंने अपनी कुछ सन्तान[3] इस बंजर वन में तेरे पवित्र घर के निकट बसायी है। हे मेरे प्रभु ! यह इसलिये कि वे

---

[1] "इस नगर" से तात्पर्य मक्का है। अन्य दुआओं (प्रार्थनाओं) से पूर्व यह दुआ की कि इसे शान्ति मय बना दे, इसलिये कि शान्ति होगी तो लोग अन्य उपकारों से भी सही रूप से लाभान्वित हो सकेंगे। वरन् शान्ति के बिना सभी सुख-सुविधाओं के उपरान्त भय, आतंक की छाया मनुष्य को व्यग्र एवं व्याकुल रखती है। जैसे कि आजकल के सामान्य समाज की दशा है अतिरिक्त सऊदी अरब के। वहाँ इस दुआ के प्रभाव से तथा इस्लामी नियमों के लागू होने के कारण, आज भी शान्ति का एक उदाहरण विद्यमान है।

यहाँ अल्लाह के पुरस्कारों के अन्तर्गत इसे वर्णन करके संकेत कर दिया कि कुरैश जहाँ अल्लाह के अन्य पुरस्कार से अपेक्षित हैं इस विशेष अनुकम्पा से भी अनजान हैं, कि उसने उन्हें मक्का जैसे शान्ति वाले नगर का वासी बनाया।

[2] भटकाने का सम्बन्ध उन पत्थर की मूर्तियों से सम्बन्धित किया जिनको मूर्तिपूजक पूजते थे, इसके उपरान्त कि वे निबोध हैं, क्योंकि वे भटकावे का कारण थीं तथा हैं।

[3] مِنْ ذُرِّيَّتِي में مِنْ 'कुछ' के लिये है अर्थात कुछ सन्तानें। कहते हैं कि आदरणीय इब्राहीम के आठ पुत्र विभिन्न पत्नियों से थे, जिनमें से केवल आदरणीय इस्माईल को यहाँ बसाया। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيٓ إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُم مِّنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ﴿٣٧﴾

नमाज़ स्थापित करें[1] अत: तू कुछ लोगों[2] के दिलों को उनकी ओर आकर्षित कर दे।[3] तथा उन्हें फलों की जीविका प्रदान कर ताकि ये कृतज्ञता व्यक्त करें।

رَبَّنَآ إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا نُعْلِنُ ۗ وَمَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِن شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ﴿٣٨﴾

(३८) हे हमारे प्रभु ! तू भली-भाँति जानता है जो हम छिपायें तथा जो व्यक्त करें। धरती तथा आकाश की कोई वस्तु अल्लाह से छिपी नहीं।[4]

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَٰعِيلَ وَإِسْحَٰقَ ۚ إِنَّ رَبِّي لَسَمِيعُ الدُّعَآءِ ﴿٣٩﴾

(३९) अल्लाह की प्रशंसा है, जिसने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल तथा इसहाक़ प्रदान किये, नि:संदेह मेरा प्रभु (अल्लाह) प्रार्थनाओं का सुनने वाला है।

---

[1]इबादतों (आराधनाओं) में से केवल नमाज़ की चर्चा किया, जिससे नमाज़ का महत्व स्पष्ट होता है।

[2]यहाँ भी مِنْ 'कुछ' के लिये है। कि कुछ लोग, तात्पर्य इससे मुसलमान हैं। अत: देख लीजिये कि किस प्रकार दुनियाँ भर के मुसलमान मक्का में एकत्रित होते हैं तथा हज के सिवाय पूरे वर्ष भर यह क्रम निरन्तर बना रहता है। यदि आदरणीय इब्राहीम أَفْئِدَةً النَّاسِ (लोगों के दिलों) कहते तो इसाई, यहूदी, अग्निपूजक तथा अन्य सभी लोग मक्का पहुँचते। مِنَ النَّاسِ के مِنْ ने इस दुआ को मुसलमानों तक सीमित कर दिया। (इब्ने कसीर)

[3]इस दुआ का प्रभाव भी देख लिया जाये कि मक्का जैसी निर्जल धरती पर जहाँ कोई फलदार वृक्ष नहीं, संसार भर के फल अधिक मात्रा में उपलब्ध हैं तथा हज के अवसर पर भी जब कि लाखों अधिक लोग वहाँ पहुँच जाते हैं फल के प्राचुर्य में कोई कमी नहीं आती।

कहा जाता है कि यह दुआ खाना-ए-काअ़बा के निर्माण के पश्चात माँगी, जबकि प्रथम दुआ (शान्ति मय बना दे) उस समय माँगी जब अपनी पत्नी तथा नवजात शिशु इस्माईल को अल्लाह तआला के आदेश पर वहाँ छोड़कर चले गये। (इब्ने कसीर)

[4]तात्पर्य यह है कि मेरी दुआ का उद्देश्य तू भली-भाँति जानता है, इस नगर वालों के लिये दुआ से मूल उद्देश्य तेरी प्रसन्नता है तू तो प्रत्येक वस्तु की वास्तविकता को भली-भाँति जानता है। आकाश तथा धरती की कोई वस्तु तुझसे छिपी नहीं।

The Ummah Technology Mission

رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿٤٠﴾

(४०) हे मेरे प्रभु ! मुझे नमाज़ का पाबन्द रख तथा मेरी सन्तान को भी,[1] हे मेरे प्रभु ! मेरी प्रार्थना स्वीकार कर |

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَ لِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾

(४१) हे हमारे प्रभु ! मुझे क्षमा प्रदान कर तथा मेरे माता-पिता को भी क्षमा कर दे |[2] तथा अन्य ईमानवालों को भी क्षमा कर, जिस दिन हिसाब होने लगे |

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۬ؕ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ﴿٤٢﴾

(४२) अन्यायियों के कर्मों से अल्लाह को अनजान न समझ, वह तो उन्हें उस दिन तक अवसर दिये हुए है, जिस दिन आँखें फटी रह जायेंगी |[3]

---

[1]अपने साथ अपनी संतान के लिये भी दुआ माँगी | जैसे इससे पूर्व भी अपने साथ अपनी सन्तान के लिए भी यह दुआ माँगी कि उन्हें पत्थर की मूर्तियों को पूजने से बचा कर रखना | जिससे ज्ञात हुआ कि अल्लाह के धर्म की ओर निमंत्रण देने वालों को अपने घर वालों के मार्गदर्शन तथा उनकी धर्मिक शिक्षा तथा प्रशिक्षण की ओर से कभी निश्चिन्त नहीं होना चाहिए | जैसाकि अल्लाह तआला ने अपने अन्तिम पैग़म्बर (ईशदूत) परम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी आदेश दिया |

﴿وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ﴾

"अपने समीपवर्ती सम्बन्धियों को डराइये" (सूरः अल-शो अराः२१४)

[2]आदरणीय इब्राहीम नें यह दुआ उस समय की जब कि अभी उन पर अपने पिता का अल्लाह का शत्रु होना विदित नहीं हुआ था, जब यह स्पष्ट हो गया कि मेरा पिता अल्लाह का शत्रु है तो उससे अपने को अलग कर लिया | इसलिये कि मूर्तिपूजक के लिये मोक्ष तथा क्षमा की दुआ करना उचित नहीं, चाहे वह कितना घनिष्ठ अथवा निकटवर्ती ही क्यों न हो ?

[3]अर्थात क़ियामत की भयानकता के कारण | यदि संसार में अल्लाह ने किसी को अधिक अवसर प्रदान कर दिया तथा उनके मरने तक उसकी पकड़ नहीं की तो क़ियामत के दिन अल्लाह के हिसाब-किताब से वह न बच सकेगा, जो काफ़िरों के लिये इतना भयानक होगा कि आँखें फटी की फटी रह जायेंगी |

The Ummah Technology Mission

مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَ اَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ﴿۴۳﴾

(४३) वे अपने सिर उठाये दौड़ भाग कर रहे होंगे[1] स्वयं अपनी ओर भी उनकी दृष्टि न लौटेगी तथा उनके दिल उड़े तथा गिरे हुए (शून्य) होंगे।[2]

وَ اَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَاۤ اَخِّرْنَاۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَ نَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ اَوَ لَمْ تَكُوْنُوْۤا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ﴿۴۴﴾

(४४) तथा लोगों को उस दिन से सर्तक कर दे जब कि उनके निकट प्रकोप आ जायेगा तथा अत्याचारी कहेंगे कि हे हमारे प्रभु ! हमें बहुत थोड़े निकट के समय तक का ही अवसर प्रदान कर दे कि हम तेरा निमन्त्रण मान लें तथा तेरे पैग़म्बरों के अनुसरण में लग जायें। क्या तुम उससे पूर्व भी सौगन्ध नहीं खा रहे थे कि तुम्हारे लिये दुनिया से टलना ही नहीं।[3]

وَ سَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَ تَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَ ضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿۴۵﴾

(४५) तथा क्या तुम उन लोगों के घरों में रहते-सहते न थे जिन्होंने अपने प्राणों पर अत्याचार किया तथा क्या तुम पर वह मामला खुला नहीं कि हमनें उनके साथ कैसा

---

[1] مُهطِعين तेज़ी से दौड़ रहे होंगे अन्य स्थान पर फरमाया :

﴿مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ﴾

"बुलाने वाले की ओर दौड़ेगे।" (सूर:अल-क़मर-८)

مقنعي رءوسهم "आश्चर्य से उनके सिर उठे हुए होंगे।"

[2]जो भयानकता वे देखेंगे तथा जो चिन्ता तथा भय अपने विषय में उन्हें होगा, उनके कारण उनकी आँखें एक क्षण के लिये भी नहीं झुकेंगी तथा भय की अधिकता के कारण उनके दिल गिरे हुए तथा शून्य होंगे।

[3]अर्थात संसार में तुम सौगन्ध खाकर कहा करते थे कि कोई हिसाब-किताब तथा स्वर्ग-नरक नहीं तथा पुन: किसको जीवित होना है।

The Ummah Technology Mission

कुछ किया ? हमने तो तुम्हारे समझाने को बहुत से उदाहरणों का वर्णन कर दिया।[1]

وَقَدْ مَكَرُوا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكْرُهُمْ ط وَإِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٤٦﴾

(४६) तथा यह अपने चाल चल रहे हैं तथा अल्लाह को उन की सभी चालों का ज्ञान है।[2] उनकी चालें ऐसी न थीं कि उनसे पर्वत अपने स्थान से टल जायें।[3]

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلِفَ وَعْدِهِ رُسُلَهُ ط إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤٧﴾

(४७) आप यह कदापि विचार न करें कि अल्लाह अपने नबियों से वचन के विरूद्ध

---

[1]अर्थात शिक्षा ग्रहण करने के लिये हमने तो उन विगत समुदायों की घटनाओं का वर्णन कर दिये है, जिनके घरों में अब तुम निवास करते हो तथा उनके खण्डहर भी तुम्हें विचार तथा चिन्तन का आमन्त्रण दे रहे हैं। यदि तुम उनसे शिक्षा ग्रहण न करो तथा उनके परिणाम से बचने का प्रयत्न न करो, तो तुम्हारी इच्छा। फिर तुम भी उसी परिणाम के लिये तैयार रहो।

[2]यह वाक्य अवस्था का वाचक है कि हमने उनके साथ जो किया वह किया जबकि उन्होंने अनृत को सिद्ध तथा सत्य के खण्डन के लिये विभिन्न प्रकार के बहाने तथा छल किये तथा अल्लाह को उन सभी चालों का ज्ञान है अर्थात उसके पास लिखा है जिसका वह उनको बदला देगा।

[3]क्योंकि यदि पर्वत विचलित हुए होते तो अपने स्थान पर न होते, जबकि सभी पर्वत मालायें अपने स्थान पर हैं। यह इंकार के लिये है। दूसरा अर्थ إن مخففة من المثقلة के लिये गये हैं अर्थात निःसंदेह उनके छल तो इतने बड़े थे कि पर्वत भी अपने स्थान से विचलित हो जाते। यह तो अल्लाह तआला ही है जिसने उनके छलों को सफल नहीं होने दिया (जैसाकि मूर्तिपूजकों के मूर्तिपूजन के विषय में अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ تَكَادُ السَّمَاوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا * أَن دَعَوْا لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدًا ﴾

"निकट है कि आकाश फट पड़े धरती में दरार पड़ जाये तथा पर्वत कण-कण हो जाये इस बात पर कि उन्होंने कहा अल्लाह दयालु की सन्तान है।" (सूरः *मरियम*-९० तथा ९१)

The Ummah Technology Mission

करेगा ।[1] अल्लाह अत्यन्त प्रभावशाली तथा बदला लेने वाला है ।[2]

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٤٨﴾

(४८) जिस दिन धरती इस धरती के अतिरिक्त अन्य ही बदल दी जायेगी तथा आकाशों को भी, [3]तथा सभी के सभी एक अल्लाह प्रभावशील के सम्मुख होंगे ।

وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْأَصْفَادِ ﴿٤٩﴾

(४९) तथा आप उस दिन पापियों को देखेंगे कि जंजीरों में मिले-जुले एक स्थान पर जकड़े होंगे ।

---

[1]अर्थात अल्लाह ने अपने रसूलों से संसार तथा परलोक में सहायता करने की जो प्रतिज्ञा की है वह नि:सदेह सत्य है, उससे वचन का विरोध संभव नहीं ।

[2]अर्थात अपने मित्रों के लिये अपने शत्रुओं से बदला लेने वाला है ।

[3]इमाम शौकानी का मत है कि आयत में दोनों सम्भावनायें हैं कि यह परिवर्तन विशेषताओं के आधार से हो अथवा अस्तित्व के आधार पर । अर्थात इस आकाश तथा धरती के गुण बदल जायेंगे अथवा वैसे ही अस्तित्व बदल जायेगा, न यह धरती रहेगी, न यह आकाश । धरती भी कोई अन्य होगी तथा आकाश भी कोई अन्य । हदीस में आता है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«يُحْشَرُ النَّاسُ يَومَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ أَرْضٍ بَيْضَاءَ عَفْرَاءَ، كَقُرْصَةِ النَّقِيِّ لَيْس فِيهَا عَلَمٌ لأَحَدٍ».

"क़ियामत के दिन लोग सफेद भूरी धरती पर एकत्रित होंगे, जो मैदा की रोटी की भाँति होगी । उसमें किसी का कोई झंड़ा (अथवा प्रतीक के रूप में चिन्ह) नहीं होगा ।" (सहीह मुस्लिम सिफ़तुल कियाम: बावुन फ़िल बअ्से वन्नोशूर)

आदरणीया आयशा ने पूछा कि जब यह आकाश धरती बदल दिये जायेंगे, तो फिर लोग उस दिन कहाँ होंगे ? नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : सिरात पर अर्थात "*पुल सिरात*" पर । "लोग उस दिन पुल सिरात के निकट अंधेरे में होंगे ।" (सहीह मुस्लिम किताबुल हैज बाब बयान सिफ़ते मनीयिर्रजुले)

The Ummah Technology Mission

سَرَابِيلُهُم مِّن قَطِرَانٍ وَتَغْشَىٰ وُجُوهَهُمُ النَّارُ ﴿٥٠﴾

(५०) उनके वस्त्र गन्धक के होंगे[1] तथा अग्नि उनके मुख पर आच्छादित होगी।

لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾

(५१) यह इसलिये कि अल्लाह (तआला) प्रत्येक व्यक्ति को उसके किये हुए कर्मों का बदला दे। नि:संदेह अल्लाह (तआला) को हिसाब लेते देर नहीं लगेगी।

هَٰذَا بَلَاغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنذَرُوا بِهِ وَلِيَعْلَمُوا أَنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ وَلِيَذَّكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٥٢﴾

(५२) यह क़ुरआन [2] सभी लोगों के लिए सूचना पत्र है कि इसके द्वारा वे सर्तक कर दिये जायें तथा पूर्णरूप से ज्ञात कर लें कि अल्लाह एक ही इबादत योग्य है तथा ताकि बुद्धिमान लोग सोच समझ लें।

सूरतुल हिज्र-१५

سُورَةُ الْحِجْرِ

सूर: *अल-हिज्र* मक्का में उतरी तथा इसकी निन्नानवे आयतें हैं तथा छ: रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह तआला अत्यन्त कृपालु तथा दयालु के नाम से प्रारम्भ करता हूँ।

الر ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ مُّبِينٍ ﴿١﴾

(१) अलिफ़॰लाम॰रा॰, यह (अल्लाह की) किताब की आयतें हैं तथा खुले एवं प्रकाशमान क़ुरआन की।[3]

---

[1]जो आग से तुरन्त भड़क उठती है। इसके अतिरिक्त आग ने उनके मुख को भी ढाँक रखा होगा।

[2]यह संकेत क़ुरआन की ओर है अथवा पिछले वृतान्त की ओर जो "ولا تحسبن الله غافلا" से वर्णन किया गया है।

[3]किताब तथा क़ुरआन मोबीन से तात्पर्य क़ुरआन करीम ही है जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अवतरित हुआ।

The Ummah Technology Mission

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ۝٢

(२) वह भी समय होगा जब काफ़िर अपने मुसलमान होने की कामना करेंगे।[1]

ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝٣

(३) आप उन्हें खाता, लाभ उठाता तथा (झूठी) आशाओं में लीन होता छोड़ दें, वह स्वयं अभी जान लेंगे।[2]

وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ۝٤

(४) तथा किसी बस्ती को हमने ध्वस्त नहीं किया, परन्तु यह कि उसके लिए निर्धारित लेख था।

مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ۝٥

(५) कोई गुट अपनी मृत्यु से न आगे बढ़ता है, न पीछे रहता है।[3]

وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ۝٦

(६) तथा उन्होंने कहा कि हे वह व्यक्ति! जिसके ऊपर क़ुरआन उतारा गया है, निःसंदेह तू तो कोई दीवाना है।

---

[1]यह कामना कब करेंगे? मृत्यु के समय, जब फ़रिश्ते उन्हें नरक की आग दिखाते हैं अथवा जब नरक में चले जायेंगे अथवा उस समय जब पापी ईमानवालों को कुछ समय नरक में रखकर उसके पश्चात उन्हें वहाँ से निकाला जायेगा अथवा महशर के मैदान में, जहाँ हिसाब-किताब हो रहा होगा तथा काफ़िर देखेंगे कि मुसलमान स्वर्ग में जा रहे हैं, तो कामना करेंगे कि यदि वे भी मुसलमान होते। رُبَمَا का अर्थ वास्तव में तो अधिकता है परन्तु कभी-कमी के लिये भी प्रयोग होता है। कुछ विद्वान कहते हैं कि उनकी यह कामना प्रत्येक अवसर पर होती रहेगी, परन्तु उसका उन्हें कोई लाभ न होगा।

[2]यह धमकी तथा फटकार है कि ये काफ़िर (अधर्मी) तथा मूर्तिपूजक (बहुदेववादी) अपने कुफ़्र तथा मूर्तिपूजन से न रूकें तो उन्हें छोड़ दीजिये, यह सांसारिक सुखों का भोग कर लें तथा अपनी आशाओं की पूर्ति कर लें। निकट भविष्य में उन्हें अपने कुफ़्र तथा मूर्तिपूजन का परिणाम ज्ञात हो जायेगा।

[3]जिस बस्ती को भी अवज्ञा के कारण ध्वस्त करते हैं, तो शीघ्र ही नहीं करते, बल्कि हमने एक समय निर्धारित कर रखा है, उस समय तक उस बस्ती वालों को अवसर प्रदान किया जाता है, परन्तु जब वह निर्धारित समय आ जाता है, तो उन्हें नष्ट कर दिया जाता है फिर वह उससे आगे अथवा पीछे नहीं होते।

The Ummah Technology Mission

لَوْمَا تَأْتِينَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ۝٧

(७) यदि तू सच्चा ही है तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नही लाता ?[1]

مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوٓا إِذًا مُّنظَرِينَ ۝٨

(८) हम फ़रिश्तों को सत्य के साथ ही उतारते हैं तथा उस समय वे अवसर दिये गये नहीं होते ।[2]

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحٰفِظُونَ ۝٩

(९) नि:संदेह हमने ही इस क़ुरआन को उतारा है तथा हम ही इसके रक्षक हैं ।[3]

---

[1]यह काफ़िरों के कुफ्र तथा वैर का वर्णन है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दीवाना कहते तथा कहते कि यदि तू (हे मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सच्चा है तो अपने अल्लाह से कह कि वह फ़रिश्ते हमारे पास भेजे ताकि वे तेरी रिसालत की पुष्टि करें अथवा हमें नष्ट कर दें ।

[2]अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि फ़रिश्ते हम सत्य के साथ ही भेजते हैं अर्थात जब हमारी नीति तथा इच्छा यातना भेजने की होती है, तो फिर फ़रिश्ते धरती पर उतरते हैं । तथा फिर वे अवसर नहीं दिये जाते तुरन्त नाश कर दिये जाते हैं ।

[3]अर्थात उसको युग के हस्तक्षेप से तथा परिवर्तन एवं बदलने से सुरक्षित रखना हमारा काम है । अत: क़ुरआन आज तक उसी प्रकार सुरक्षित है, जिस प्रकार अवतरित हुआ था, भटके हुए गुट अपने-अपने विचारों के आधार पर इसके अर्थ में तो परिवर्तन करते रहे हैं तथा आज भी करते हैं, परन्तु पूर्व की आकाशीय पुस्तकों की भाँति शाब्दिक परिवर्तन अथवा कमी एवं अधिकता से सुरक्षित है । इसके अतिरिक्त प्रत्येक समय में सत्यवादियों के एक गुट ने इस अर्थ परिवर्तन का विरोध किया है, तथा उन अर्थ में परिवर्तन करने वालों के मुख से पर्दा हटाकर असली मुख समाज के समक्ष प्रस्तुत करता रहा है तथा आज भी वह इस मैंदान में सक्रिय है । इसके अतिरिक्त क़ुरआन के लिये ذِكْر (शिक्षा) का शब्द प्रयोग किया गया है, जिससे ज्ञात होता है कि क़ुरआन संसार वालों के लिए ذِكْر (सर्तक करने तथा शिक्षाप्रद होने) के पक्ष को, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन चरित्र के प्रकाशमयी चित्रों तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथनों को भी सुरक्षित करके, क़ियामत तक के लिए शेष रखा गया है । अत: क़ुरआन करीम तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन चरित्र के द्वारा लोगों को इस्लाम का आमंत्रण देने का मार्ग सदैव के लिए खुला हुआ है । यह सम्मान तथा सुरक्षा का स्थान पूर्व की आकाशीय पुस्तकों तथा रसूलों को प्राप्त नहीं हुआ ।

The Ummah Technology Mission

(१०) तथा हमने आप से पूर्व के समुदायों में भी अपने रसूल (निरन्तर) भेजे।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ فِي شِيَعِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٠﴾

(११) तथा (लेकिन) जो भी रसूल (संदेशवाहक) आता, उस का वे उपहास उड़ाते।[1]

وَمَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿١١﴾

(१२) पापियों के दिलों में हम इसी प्रकार यही रचा दिया करते हैं।[2]

كَذَٰلِكَ نَسْلُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٢﴾

(१३) वे इस पर ईमान नहीं लाते तथा नि:संदेह विगत लोगों का आचरण (व्यतीत) हुआ है।[3]

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾

(१४) तथा यदि हम उन पर आकाश का द्वार खोल भी दें तथा ये वहाँ चढ़ने लग जायें।

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ﴿١٤﴾

(१५) जब भी वे यही कहेंगे कि हमें दृष्टिबंध कर दिया गया है, बल्कि हम लोगों पर जादू करदिया गया है।[4]

لَقَالُوا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ ﴿١٥﴾

---

[1]यह जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी जा रही है कि केवल आप ही को झुठलाया नहीं गया, प्रत्येक रसूल के साथ उसके समुदाय ने यही व्यवहार किया है।

[2]अर्थात यह कुफ़्र तथा रसूलों का उपहास हम अपराधियों के दिलों में डाल देते हैं अथवा बसा देते हैं, यह सम्बन्ध अल्लाह तआला ने अपनी ओर इसलिए किया कि प्रत्येक वस्तु का स्रष्टा अल्लाह तआला ही है। यद्यपि उनका यह कर्म उनके निरन्तर व्यवहार के परिणाम स्वरूप अल्लाह की इच्छा से उत्पन्न हुआ हो।

[3]अर्थात उनके नष्ट करने का वही साधन है, जो अल्लाह ने पूर्व से ही निर्धारित कर रखा है कि झुठलाने तथा उपहास उड़ाने के पश्चात समुदायों को नष्ट करता रहा है।

[4]अर्थात उनका कुफ़्र तथा वैर उस सीमा तक बढ़ा हुआ है कि फ़रिश्तों का अवतरित होना तो एक ओर, यदि स्वयं उनके लिए आकाश के द्वार खोल दिये जायें तथा ये उन द्वारों से आकाश पर आयें-जायें तब भी उनको अपनी आँखों पर विश्वास नहीं आयेगा तथा रसूलों को नहीं मानेंगे, बल्कि यह कहेंगे कि हमारी नज़रबन्दी कर दी गयी है अथवा हम पर

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ ﴿١٦﴾

(१६) तथा नि:संदेह हमने आकाश में ग्रहों बनाये हैं,[1] तथा देखने वालों के लिए इसे शोभामान किया है।

وَحَفِظْنَاهَا مِن كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ﴿١٧﴾

(१७) तथा उसे प्रत्येक धिक्कारे शैतान से सुरक्षित रखा है।[2]

إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَأَتْبَعَهُ

(१८) हाँ, जो चोरी छुपे सुनने का प्रयत्न करे

जादू कर दिया गया है, जिसके कारण हम ऐसा आभास कर रहे हैं कि हम आकाश पर आ जा रहे हैं। जबकि ऐसा नहीं है।

[1] بُـروج बहुवचन है بُرج का, जिसका अर्थ प्रत्यक्ष अथवा प्रकाशित होने के हैं। इसी से تَـبَرُّج है जो स्त्री के श्रृंगार प्रदर्शन के अर्थ में प्रयोग होता है। यहाँ आकाश के तारों-ग्रहों को بروج कहा गया है क्योंकि वह भी उच्च तथा प्रत्यक्ष होते हैं। कुछ विद्वान यह कहते हैं कि بروج से तात्पर्य सूर्य तथा चन्द्रमा तथा अन्य ग्रहों की वे कलायें हैं, जो उनके लिए निर्धारित हैं तथा ये १२ हैं, कुम्भ, मेष, कर्क, मकर, मिथुन, सिंह, तुला, मंगल, शनि, वृश्चिक, वृष तथा कन्या। अरब के लोग इन ग्रहों की कलाओं तथा उनके द्वारा ऋतु की स्थिति ज्ञात करते थे। इसमें कोई आपत्ति नहीं। (लेकिन) उनके द्वारा अनहोनी, होने वाली घटनाओं के ज्ञान का दावा करना, जैसेकि आजकल भी अशिक्षितों में इसका विशेष प्रचलन है। तथा लोगों के भाग्य को उनके द्वारा देखा तथा समझा जाता है, यद्यपि इनका सम्बन्ध संसार में होने वाली घटनाओं से नहीं होता, जो कुछ भी होता है, वह अल्लाह के आदेश से होता है। अल्लाह तआला ने उन ग्रहों का वर्णन अपने सामर्थ्य तथा अनुपम कारीगरी के रूप में किया है। इसके अतिरिक्त यह भी स्पष्ट किया है कि ये आकाश कि शोभा भी हैं।

[2] مرجوم ، رجيم के अर्थ में है पत्थर मारना। शैतान को रजीम इसलिए कहा गया है कि यह जब भी आकाश की ओर जाने का प्रयत्न करता है, तो आकाश से 'शहाब साक़िब' (उल्का) उस पर टूट कर गिर पड़ते हैं। फिर रजीम धिक्कारे तथा बुरे के अर्थ में भी प्रयोग होता है, क्योंकि जिसे पत्थरों से मारा जाता है, उसे प्रत्येक ओर से धिक्कारा तथा बुरा भी कहा जाता है। यहाँ अल्लाह तआला ने यही फ़रमाया है कि हमने आकाशों की सुरक्षा की है प्रत्येक शैतान रजीम से, अर्थात इन सितारों के द्वारा क्योंकि ये शैतान को मारते हैं तथा उसे भागने पर विवश कर देते हैं।

Ihe Ummah Technology Mission

شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾

उसके पीछे प्रज्वलित (खुला) शोला लगता है।[1]

وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُوْنٍ ﴿١٩﴾

(१९) तथा धरती को हमने फैला दिया है तथा उस पर पर्वत डाल रखे हैं। तथा उसमें हम ने प्रत्येक चीज निश्चित मात्रा में उगा दी है।[2]

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा उसी में हमने तुम्हारी जीविकायें बना दी हैं,[3] तथा जिन्हें तुम जीविका देने वाले नहीं हो।[4]

وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا

(२१) तथा जितनी भी वस्तुयें हैं, सबका कोष

---

[1] इसका अर्थ यह है कि शैतान आकाशों पर बातें सुनने के लिए जाते हैं, जिन पर 'शहाव साक़िब' (उल्का) टूट कर गिरते हैं, जिनसे कुछ तो जल जाते हैं तथा कुछ बच जाते हैं तथा कुछ सुन आते हैं। हदीस में इसकी व्याख्या इस प्रकार आयी है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं : "जब अल्लाह तआला आकाश पर कोई निर्णय करता है, तो फ़रिश्ते उसे सुनकर अपने पंख अथवा बाँह फड़फड़ाते हैं (भक्ति तथा विवशता को प्रदर्शित करने के लिए) जैसेकि वह किसी चट्टान पर जंजीर की आवाज़ (ध्वनि) है। फिर जब फ़रिश्तों के दिलों से अल्लाह का भय दूर होता है, तो वे एक-दूसरे से पूछते हैं, तुम्हारे प्रभु ने क्या कहा ? वे कहते हैं, उसने जो कहा सत्य कहा तथा वह उच्च एवं महान है। (उसके पश्चात अल्लाह का वह निर्णय ऊपर से नीचे तक एक के पश्चात दूसरे को सुनाया जाता है) इस अवसर पर शैतान चोरी-छिपे बातें सुन लेते हैं। तथा यह चोरी-छिपे सुनने वाले शैतान थोड़ी-थोड़ी दूरी पर एक-दूसरे के ऊपर होते हैं तथा वह एक आध बात सुनकर अपने मित्र ज्योतिषी तथा तान्त्रिकों के कान में फूंक देते हैं, वह उसके साथ सौ झूठ मिला कर लोगों से बताते हैं। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः अल-हिज्र)

[2] موزونٌ का अर्थ ज्ञात अथवा अनुमान से अर्थात आवश्यकतानुसार।

[3] معايش बहुवचन है معيشة का। अर्थात धरती में तुम्हारे जीवन निर्वाह तथा जीविका के लिए अनगिनत वस्तुयें तथा साधन पैदा कर दिये।

[4] इससे तात्पर्य नौकर-चाकर, दास तथा पशु हैं। अर्थात पशुओं को तुम्हारे अधीन कर दिया जिन पर तुम यात्रा करते हो, सामान भी लाद कर ले जाते हो तथा उनका बध करके खा भी जाते हो। दास-दासियाँ हैं जिनसे तुम सेवा का कार्य लेते हो। ये यद्यपि तुम्हारे अधीन हैं। तथा उनके खाने का प्रबन्ध भी तुम करते हो, परन्तु वास्तव में उनकी जीविका पैदा करने वाला अल्लाह तआला है, तुम नहीं हो। तुम यह न समझना की तुम उनकी जीविका देने वाले हो, यदि तुम उनको भोजन न दोगे तो वह भूख से मर जायेंगे।

The Ummah Technology Mission

خَزَآئِنُهٗ وَمَا نُنَزِّلُهٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿۲۱﴾

हमारे पास है,[1] तथा हम प्रत्येक चीज़ को उसके निर्धारित मात्रा में उतारते हैं।

وَاَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ وَمَاۤ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ﴿۲۲﴾

(२२) तथा हम बोझल हवायें[2] भेजते हैं, फिर आकाश से वर्षा करके तुम्हें पिलाते हैं, और तुम उसका भण्डार करने वाले नहीं हो।[3]

وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ﴿۲۳﴾

(२३) तथा हम ही जिलाते तथा मारते हैं तथा (अन्ततः) हम ही उत्तराधिकारी हैं।

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ﴿۲۴﴾

(२४) तथा तुममें से आगे बढ़ने वाले तथा पीछे हटने वाले भी हमारे ज्ञान में हैं।

وَاِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۵﴾

(२५) तथा आपका प्रभु सब लोगों को एकत्रित करेगा, निःसंदेह वह बड़ा विज्ञानी बड़े ज्ञान वाला है।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿۲۶﴾

(२६) तथा वस्तुतः हमने मनुष्य को खनखनाती (सूखी) मिट्टी से, जो कि सड़े हुए गारे की थी,

---

[1]कुछ विद्वानों ने خزائن से तात्पर्य वर्षा लिया है क्योंकि वर्षा ही पैदावार का साधन है, परन्तु अधिक उचित बात यह है कि इससे तात्पर्य सभी सम्भावित कोष हैं, जिन्हें अल्लाह तआला अपनी इच्छानुसार तथा योजना के आधार पर नास्तित्व से स्तित्व में लाता रहता है।

[2]वायु को बोझल इसलिए कहा गया है कि यह उन बादलों को उठाती हैं जिनमें पानी होता है। जिस प्रकार لَقِحَةٌ गर्भवती ऊँटनी को कहा जाता है, जो गर्भ में बच्चा उठाये होती है।

[3]अर्थात यह पानी जो हम उतारते हैं, उसे तुम एकत्रित करके रखने का सामर्थ्य नहीं रखते। यह हमारी शक्ति तथा कृपा है कि हम उस पानी को स्रोतों, कुओं तथा नदियों के द्वारा सुरक्षित रखते हैं। वरन हम चाहें तो पानी का तल इतना नीचा कर दें कि स्रोतों तथा कुँओं से पानी लेना तुम्हारे लिए असम्भव हो जाये। जिस प्रकार कई बार अल्लाह तआला कुछ स्थानों पर अपनी शक्ति का नमूना प्रदर्शित करता है।

The Ummah Technology Mission

पैदा किया है।[1]

وَالْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा उससे पूर्व जिन्नात को हमने लौ (ज्वाला) वाली अग्नि[2] से पैदा किया।

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٨﴾

(२८) तथा जब तेरे प्रभु ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं एक मनुष्य को काली सड़ी हुई खनखनाती मिट्टी से पैदा करने वाला हूँ।

فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٢٩﴾

(२९) तो जब मैं उसे पूरा बना चुकूँ तथा उसमें अपनी आत्मा फूँक दूँ तो तुम सब उसके लिए मस्तक झुका देना।[3]

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٣٠﴾

(३०) अतः सभी फ़रिश्तों ने सबके सब ने माथा टेक दिया।

---

[1]मिट्टी की विभिन्न अवस्थाओं के विभिन्न नाम हैं। सूखी मिट्टी تراب भीगी हुई, طين गूँधी हुई दुर्गन्धित, حمإ مسنون यह ﴿حَمَإٍ مَّسْنُوْنٍ﴾ सूखकर खनखन बोलने लगे तो صلصال तथा जब उसे अग्नि में पका लिया जाये तो فخار (ठीकरी) कहलाती है। यहाँ अल्लाह तआला ने मनुष्य की उत्पत्ति का जिस प्रकार वर्णन किया है इससे ज्ञात होता है कि आदम मिट्टी का पुतला حمإ مسنون (गूँधी हुई सड़ी हुई बदबूदार) मिट्टी से बनाया गया, जब वह सूखकर खनखन करने लगा (अर्थात صلصال) हो गया तो उसमें आत्मा फूँकी गयी, इसी صلصال को क़ुरआन में अन्य स्थान पर كالفخار (فخار के समान) कहा गया है।

﴿خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ﴾ [الرحمن: ١٤]

"पैदा किया मनुष्य को खनखनाती मिट्टी से जैसे ठीकरा।" (सूरः *अर्रहमान*-१४)

[2] جنّ को جن इसलिए कहा जाता है कि वह आँखों से दिखाई नहीं देते। सूरः *रहमान* में जिन्नात की उत्पत्ति مارج مّن نار से बताई गयी है तथा सहीह मुस्लिम की एक हदीस में यही कहा गया है "خُلقت الملائكة من نور و خلق الجانّ من نار و خلق آدم مما و صف لكم" (किताबुज़ ज़ोहद बाब फी अहादीसि मुतफ़र्रेक:) इस आधार पर लौ वाली अग्नि अथवा अग्नि के शोले का एक ही अर्थ होगा।

[3]दण्डवत (सजदा) का यह आदेश सम्मान स्वरूप था, इबादत के रूप में नहीं तथा चूँकि यह अल्लाह का आदेश था इसलिए इसके मान्य होने में कोई संदेह नहीं। परन्तु अब इस्लामी धार्मिक नियम में किसी को सम्मान स्वरूप भी दण्डवत करना उचित नहीं।

The Ummah Technology Mission

إِلَّآ إِبۡلِيسَۖ أَبَىٰٓ أَن يَكُونَ مَعَ ٱلسَّٰجِدِينَ ٣١

(३१) परन्तु इबलीस, कि उसने सजदा करने वालों में सम्मिलित होने से इंकार कर दिया।

قَالَ يَٰٓإِبۡلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ ٱلسَّٰجِدِينَ ٣٢

(३२) (अल्लाह तआला ने) कहा, हे इबलीस ! तुझे क्या हुआ कि तू सजदा करने वालों में सम्मिलित न हुआ ?

قَالَ لَمۡ أَكُن لِّأَسۡجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقۡتَهُۥ مِن صَلۡصَٰلٖ مِّنۡ حَمَإٖ مَّسۡنُونٖ ٣٣

(३३) वह बोला कि मैं ऐसा नहीं कि इस मनुष्य को सजदा करूँ जिसे तूने काली तथा सड़ी हुई खनखनाती मिट्टी से पैदा किया है।[1]

قَالَ فَٱخۡرُجۡ مِنۡهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٞ ٣٤

(३४) कहा कि अब तू स्वर्ग से निकल जा क्योंकि तू धिक्कारा हुआ है।

وَإِنَّ عَلَيۡكَ ٱللَّعۡنَةَ إِلَىٰ يَوۡمِ ٱلدِّينِ ٣٥

(३५) तथा तुझ पर मेरी धिक्कार है क़ियामत के दिन तक।

قَالَ رَبِّ فَأَنظِرۡنِيٓ إِلَىٰ يَوۡمِ يُبۡعَثُونَ ٣٦

(३६) कहने लगा हे मेरे प्रभु ! मुझे उस दिन तक अवसर प्रदान कर कि लोग पुनः उठा खड़े किये जायें।

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ ٱلۡمُنظَرِينَ ٣٧

(३७) कहा कि (ठीक है) तू उनमें से है, जिन्हें अवसर दिया गया है।

إِلَىٰ يَوۡمِ ٱلۡوَقۡتِ ٱلۡمَعۡلُومِ ٣٨

(३८) निर्धारित दिन के समय तक का।

قَالَ رَبِّ بِمَآ أَغۡوَيۡتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ

(३९) (शैतान ने) कहा कि हे मेरे प्रभु ! तूने मुझे भटकाया है, मुझे भी सौगन्ध है कि मैं भी

---

[1]शैतान ने अस्वीकार करने का कारण आदरणीय आदम का मिट्टी तथा मनुष्य होना बताया। जिसका अर्थ यह हुआ कि मनुष्य को उसके मनुष्य होने के कारण हीन समझना यह शैतान का (दर्शन) विचार है, जो सत्यवादियों का विश्वास नहीं हो सकता। इसलिए सत्यवादी नबियों के मनुष्य होने को अस्वीकार नहीं करते, इसलिए कि उनके मनुष्य होने को क़ुरआन करीम ने स्वयं अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में वर्णित किया है, इसके अतिरिक्त उनके मनुष्य होने से उनके मान तथा सम्मान में कोई अंतर नहीं पड़ता।

The Ummah Technology Mission

لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾

धरती में उनके लिए मोह उत्पन्न करूँगा तथा उन सबको भटकाऊँगा।

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾

(४०) अतिरिक्त तेरे उन भक्तों के जो चयन कर लिये गये हैं।

قَالَ هَٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾

(४१) कहा कि हाँ यही मुझ तक पहुँचने का सीधा मार्ग है।[1]

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿٤٢﴾

(४२) मेरे भक्तों पर तेरा कोई प्रभाव नहीं,[2] परन्तु हाँ जो भटके हुए लोग तेरा अनुकरण करें।

وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾

(४३) तथा निःसंदेह उन सबके वचन का स्थान नरक है।[3]

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِّكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ﴿٤٤﴾

(४४) जिसके सात द्वार हैं। प्रत्येक द्वार के लिए उनका एक भाग बँटा हुआ है।[4]

---

[1]अर्थात तुम सबको अन्ततः मेरे पास ही लौट कर आना है, जिसने मेरा तथा मेरे रसूलों का अनुसरण किया होगा, उसे अच्छा बदला दूँगा तथा जो शैतान का अनुकरण करता रहा होगा उसे कड़ा दण्ड दूँगा, जो नरक के रूप में तैयार है।

[2]अर्थात मेरे सदाचारी भक्तों पर तेरा कोई दाँव नहीं चलेगा। इसका यह अर्थ नहीं कि उनसे कोई पाप नहीं होगा, अपितु इसका अर्थ यह है कि उनसे ऐसा पाप न होगा जिसके पश्चात वे लज्जित तथा क्षमा न माँगें क्योंकि वही पाप मनुष्यों के विनाश का कारण है कि जिसके पश्चात मनुष्य में लज्जा तथा अल्लाह से क्षमा माँगने की भावना जागृत न हो। ऐसे पाप के पश्चात ही मनुष्य पाप पर पाप किये चला जाता है, तथा अन्त में स्थाई विनाश तथा बर्बादी उसका दुर्भाग्य बन जाता है। तथा ईमानवालों का गुण यह है कि पाप की पुनरावृत्ति नहीं करते, अपितु तुरन्त क्षमा माँगकर भविष्य में उससे बचने का प्रयत्न करते हैं।

[3]अर्थात जितने भी तेरे अनुयायी होंगे सब नरक के ईंधन बनेंगे।

[4]अर्थात प्रत्येक द्वार विशेष प्रकार के लोगों के लिए निर्धारित होंगे। जैसे एक द्वार मूर्तिपूजकों के लिए, एक नास्तिकों के लिए, एक काफ़िरों के लिए, एक व्यभिचारियों, ब्याज खाने वालों, चोरों तथा डाकूओं के लिए आदि। अथवा सात द्वारों से तात्पर्य सात तह

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾

(४५) नि:संदेह परहेज़गार लोग बागों तथा स्रोतों में होंगे।[1]

ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ آمِنِينَ ﴿٤٦﴾

(४६) (उनसे कहा जायेगा) सुरक्षा एवं शान्ति के साथ उसमें प्रवेश कर जाओ।[2]

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा उनके दिलों में जो कुछ भी आक्रोश तथा कटुता थी हम सब कुछ निकाल देंगे।[3] वे भाई-भाई बने हुए एक-दूसरे के सम्मुख सिंहासन पर बैठे होंगे।

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُم مِّنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾

(४८) न तो वहाँ उन्हें कोई दुख स्पर्श कर सकता है तथा न वह वहाँ से कभी निकाले जायेंगे।

तथा कक्ष हैं। पहला तह, अथवा कक्ष नरक है, दूसरा अग्नि, फिर तीव्र अग्नि, फिर भभकती आग, फिर नरक की आग का निचला भाग, फिर तन्दूर की तरह भून देने वाली आग, फिर पाताल की आग। सबसे ऊपर वाले भाग में वे एकेश्वरवादी लोग होंगे जिनसे छोटे-छोटे पाप हुए होंगे तथा जिन्हें कुछ समय दण्ड देने के उपरान्त निकाल दिया जायेगा अथवा सिफ़ारिश पर निकाल दिया जायेगा। दूसरे में यहूदी, तीसरे में इसाई, चौथे में नास्तिक, पाँचवें में अंधविश्वासी (अग्निपूजक), छठें में मूर्तिपूजक तथा सातवें में पाखण्डी होंगे। सबसे ऊपर वाले कक्ष का नाम नरक है, उसके पश्चात इसी क्रम से नाम हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[1]नरक तथा नरकवासियों के पश्चात स्वर्ग तथा स्वर्ग में जाने वालों का वर्णन है ताकि स्वर्ग में जाने की रुचि हो, अल्लाह से डरने वालों से तात्पर्य मूर्तिपूजा से बचने वाले एकेश्वरवादी हैं तथा कुछ विद्वानों के निकट वह ईमानवाले हैं जो सभी बुराईयों से बचते हैं। جنات से तात्पर्य बाग़ तथा عيون से तात्पर्य नदियाँ हैं। ये बाग़ तथा नदियाँ सभी अल्लाह से डरने वालों के लिए संयुक्त रूप से होंगी अथवा प्रत्येक के लिए अलग-अलग बाग़ तथा नदियाँ होंगी अथवा एक-एक बाग़ तथा नदी होगी।

[2]सुरक्षा प्रत्येक प्रकार की विपत्ति से तथा शान्ति प्रत्येक प्रकार के भय से। अथवा यह अर्थ है कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को अथवा फ़रिश्ते स्वर्ग वालों के लिए सुरक्षित रहने की दुआ देंगे अथवा अल्लाह की ओर से उनके लिए शान्ति तथा सुरक्षा की घोषणा होगी।

[3]संसार में उनके मध्य जो भी ईर्ष्या, द्वेष तथा कटुता के भाव होंगे, वे उनके हृदय से निकाल दिये जायेंगे तथा एक-दूसरे के विषय में उनके दिल दर्पण की भाँति साफ होंगे।

The Ummah Technology Mission

نَبِّئْ عِبَادِيٓ أَنِّيٓ أَنَا ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾

(४९) मेरे भक्तों को सूचित कर दो कि मैं बहुत क्षमा करने वाला तथा अत्यन्त कृपालु हूँ।

وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ ٱلْعَذَابُ ٱلْأَلِيمُ ﴿٥٠﴾

(५०) तथा साथ ही मेरी यातनायें भी अत्यन्त दुखदायी हैं।

وَنَبِّئْهُمْ عَن ضَيْفِ إِبْرَٰهِيمَ ﴿٥١﴾

(५१) तथा उन्हें इब्राहीम के अतिथियों का (भी) हाल सुना दो।

إِذْ دَخَلُوا۟ عَلَيْهِ فَقَالُوا۟ سَلَٰمًا ۖ قَالَ إِنَّا مِنكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٢﴾

(५२) कि जब उन्होंने उसके पास आकर सलाम किया, तो उसने कहा कि हमको तो तुमसे भय लगता है।[1]

قَالُوا۟ لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَٰمٍ عَلِيمٍ ﴿٥٣﴾

(५३) उन्होंने कहा भय न करो, हम तुझे एक सुबोध वाणी वाले पुत्र की शुभ सूचना देते हैं।

قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي عَلَىٰٓ أَن مَّسَّنِيَ ٱلْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُونَ ﴿٥٤﴾

(५४) कहा क्या इस बुढ़ापे के छू लेने के पश्चात तुम मुझे शुभ सूचना देते हो! ये शुभ-सूचना तुम कैसे दे रहे हो?

قَالُوا۟ بَشَّرْنَٰكَ بِٱلْحَقِّ فَلَا تَكُن مِّنَ ٱلْقَٰنِطِينَ ﴿٥٥﴾

(५५) उन्होने कहा, हम आपको पूर्णत: सत्य, शुभ-सूचना सुनाते हैं। आप निराश लोगों में सम्मिलित न हों।

---

[1]आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम को इन फ़रिश्तों से भय इसलिए हुआ कि उन्होंने आदरणीय इब्राहीम का तैयार किया भुना हुआ बछड़े का माँस नहीं खाया, जैसाकि सूरः हूद में वर्णन हो चुका है। इससे ज्ञात हुआ कि अल्लाह तआला के महान सम्मानित पैग़म्बर को भी (गुप्त बातों) परोक्ष का ज्ञान नहीं होता, यदि उन्हें परोक्ष का ज्ञान होता तो आदरणीय इब्राहीम समझ जाते कि आने वाले मेहमान (अतिथि) फ़रिश्ते हैं तथा उनके लिए भोजन तैयार करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि फ़रिश्ते को मनुष्यों की भाँति खाने-पीने की आवश्यकता नहीं है।

The Ummah Technology Mission

قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ﴿٥٦﴾

(५६) कहा अपने प्रभु की कृपा से निराश तो केवल (भटके तथा) बहके हुए लोग ही होते हैं।[1]

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٧﴾

(५७) पूछा कि हे अल्लाह के भेजे हुए (फ़रिश्तो)! तुम्हारा ऐसा क्या विशेष कार्य है?[2]

قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٥٨﴾

(५८) उन्होंने उत्तर दिया कि हम पापी लोगों की ओर भेजे गये हैं।

اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ؕ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٩﴾

(५९) परन्तु लूत का परिवार कि हम उन सबको अवश्य बचा लेंगे।

اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۙ قَدَّرْنَآ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٦٠﴾

(६०) सिवाय लूत की पत्नी के कि हमने उसे रुकने तथा शेष रह जाने वालों में निर्धारित कर दिया है।

فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ ِۨ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٦١﴾

(६१) जब भेजे हुए फ़रिश्ते लूत परिवार के पास पहुँचे।

قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿٦٢﴾

(६२) तो लूत ने कहा तुम लोग तो कुछ अपरिचित से प्रतीत होते हो।[3]

---

[1]अर्थात संतान पैदा होने के समाचार पर मैं आश्चर्य तथा असम्भव होने का प्रदर्शन कर रहा हूँ तो केवल अपने बुढ़ापे के कारण कर रहा हूँ। यह बात नहीं कि मैं अपने प्रभु की कृपा से निराश हूँ। प्रभु की कृपा से निराश तो केवल भटके हुए लोग होते हैं।

[2]आदरणीय इब्राहीम ने इन फ़रिश्तों की बातचीत से यह अनुमान लगाया कि यह केवल संतान की शुभसूचना देने ही नहीं आये हैं, बल्कि उनके आगमन का मूल कारण कुछ और है। अतः उन्होंने पूछा।

[3]यह फ़रिश्ते सुन्दर तथा नवयुवकों के रूप में आये थे तथा आदरणीय लूत के लिए बिल्कुल अन्जान थे, इसलिए उन्होंने उनसे अनभिज्ञता तथा अपरिचितता का प्रदर्शन किया।

The UmmahTechnology Mission

قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٦٣﴾

(६३) उन्होंने कहा (नहीं) अपितु हम तेरे पास वह चीज़ लाये हैं, जिसमें ये लोग संदेह कर रहे थे।[1]

وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٦٤﴾

(६४) तथा हम तो तेरे पास (स्पष्ट) सत्य लेकर आये हैं तथा हम हैं भी पूर्ण सत्यवादी।[2]

فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٥﴾

(६५) अब तू अपने परिवार सहित इस रात के किसी भाग में चल दे, तू स्वयं उनके पीछे रहना,[3] (तथा सावधान)! तुम में से कोई भी मुड़कर न देखे तथा जहाँ का आदेश तुम्हें किया जा रहा है, वहाँ चले जाना।

وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿٦٦﴾

(६६) तथा हमने उसकी ओर इस बात का निर्णय कर दिया कि प्रातः होते-होते उन सबकी जड़े काट दी जायेंगी।[4]

وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٦٧﴾

(६७) तथा शहरी लोग ख़ुशियाँ मनाते हुए आये।[5]

---

[1] अर्थात अल्लाह का प्रकोप जिसमें तेरे समुदाय को संदेह है कि वह आ भी सकता है।

[2] इस स्पष्ट सत्य से भी तात्पर्य प्रकोप है, जिसके लिए वे भेजे गये थे, इसलिए उन्होंने यह कहा कि हम हैं भी अत्यन्त सच्चे। अर्थात प्रकोप की जो बात हम कह रहे हैं इसमें सच्चे हैं। अब इस समुदाय के विनाश का समय अत्यन्त निकट आ पहुँचा है।

[3] ताकि कोई ईमानवाला पीछे न रहे, तू उनको आगे करता रहे।

[4] अर्थात लूत को प्रकाशना (वह्यी) के द्वारा इस निर्णय से सूचित कर दिया गया कि प्रातः होने से पूर्व इन लोगों की जड़ें काट दी जायेंगी अथवा دابر से तात्पर्य वह अन्तिम मनुष्य है जो शेष रह जायेगा, फरमाया : वह भी प्रातः होने तक नष्ट कर दिया जायेगा।

[5] इधर तो आदरणीय लूत के घर में समुदाय के विनाश का निर्णय हो रहा था। उधर लूत के समुदाय वालों को पता चला कि लूत के घर में सुन्दर नवयुवक अतिथि आये हैं, तो अपनी समलैंगिक दुराचार के कारण बड़े प्रसन्न हुए तथा प्रसन्न होकर आदरणीय लूत के घर आये तथा उनसे माँग की कि उन नवयुवकों को उनके हवाले कर दिया जाये ताकि वे उनके साथ दुराचार करके अपनी कामवासना शान्त कर सकें।

The Ummah Technology Mission

قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيۡفِىۡ فَلَا تَفۡضَحُوۡنِ ۙ﴿۶۸﴾

(६८) (लूत ने) कहा ये लोग मेरे अतिथि हैं तुम मुझे अपमानित न करो।[1]

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخۡزُوۡنِ ﴿۶۹﴾

(६९) तथा अल्लाह (तआला) से डरो एवं मुझे अपमानित न करो।

قَالُوۡۤا اَوَلَمۡ نَنۡهَكَ عَنِ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۷۰﴾

(७०) वे बोले कि क्या हमने तुम्हें संसार भर (की ठीकेदारी) लेने से मना नहीं कर रखा?[2]

قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِىۡۤ اِنۡ كُنۡتُمۡ فٰعِلِيۡنَ ﴿۷۱﴾

(७१) (लूत ने) कहा यदि तुम्हें करना ही है, तो ये मेरी पुत्रियाँ उपस्थित हैं।[3]

لَعَمۡرُكَ اِنَّهُمۡ لَفِىۡ سَكۡرَتِهِمۡ يَعۡمَهُوۡنَ ﴿۷۲﴾

(७२) तेरी आयु की सौगन्ध! वे तो अपने नशे में फिर रहे थे।[4]

---

[1]आदरणीय लूत ने उन्हें समझाने का प्रयत्न किया कि वे अतिथि हैं उन्हें मैं किस प्रकार तुम्हारे हवाले कर सकता हूँ, इसमें तो मेरा अपमान है।

[2]उन्होंने दुराग्रह तथा दुर्व्यवहार का प्रदर्शन करते हुए कहा कि हे लूत! तू इन अजनबी मेहमानों का क्या लगता है? तथा उनका पक्ष क्यों लेता है? क्या हमने तुझे मना नहीं किया कि अजनबियों का पक्ष न लिया कर, अथवा उनको अपना अतिथि न बनाया कर? यह सारी बातचीत उस समय हुई जब कि आदरणीय लूत को यह ज्ञात नहीं था कि ये अजनबी अतिथि अल्लाह के भेजे हुए फ़रिश्ते हैं तथा वे इसी दुष्चरित्र समुदाय को ध्वस्त करने के लिए आये हैं, जो इन फ़रिश्तों के साथ दुराचार करने के लिए दृढ़ थे, जैसाकि सूरः हूद में वर्णन आ चुका है। यहाँ उनके फ़रिश्ते होने का वर्णन पहले आ गया है।

[3]अर्थात तुम उनसे विवाह कर लो अथवा अपने समुदाय की स्त्रियों को पुत्रियाँ कहा, अर्थात तुम स्त्रियों के साथ विवाह करो अथवा जो विवाहित हैं उन्हें कामवासना की तृप्ति अपनी पत्नियों से करनी चाहिए।

[4]अल्लाह तआला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित कर, उनके जीवन की सौगन्ध खा रहा है, जिससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गरिमा तथा सम्मान का स्पष्टीकरण हो रहा है, परन्तु अन्य किसी के लिए अल्लाह के अतिरिक्त अन्य किसी की सौगन्ध खाना उचित नहीं है। अल्लाह तआला तो पूर्ण स्वामी है, वह जिसकी चाहे सौगन्ध खाये, उससे कौन पूछने वाला है? अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जिस प्रकार शराब के नशे में धुत्त मनुष्य की बुद्धि विकृत हो जाती है, उसी प्रकार यह अपनी बुराई

The Ummah Technology Mission

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾

(७३) फिर सूर्योदय होते-होते उन्हें एक कड़ी आवाज़ ने पकड़ लिया।[1]

فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿٧٤﴾

(७४) अन्ततः हमने उस (नगर) को ऊपर नीचे कर दिया[2] तथा उन लोगों पर कंकड़ वाले पत्थर[3] बरसाये।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿٧٥﴾

(७५) निःसंदेह हर एक शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए[4] इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं।

وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ﴿٧٦﴾

(७६) और यह बस्ती ऐसे मार्ग पर है, जिस पर निरन्तर यातायात होती रहती है।[5]

तथा भटकावे में इतने मस्त थे कि आदरणीय लूत की इतनी उचित बात भी उनकी समझ में नहीं आ पायी।

[1]एक चिंघाड़ ने जबकि सूर्योदय हो चुका था, उनका अन्त कर दिया। कुछ विद्वान कहते हैं कि यह तीव्र आवाज़ आदरणीय जिब्रील की थी।

[2]कहा जाता है कि उनकी बस्तियों को धरती से उठाकर ऊपर आकाश पर ले जाया गया तथा वहाँ से उनको उल्टा करके धरती पर फेंक दिया गया। इस प्रकार ऊपर का भाग नीचे तथा नीचे का भाग ऊपर कर दिया गया, तथा कहा जाता है कि इससे तात्पर्य मात्र उस बस्ती की छतों सहित धरती में धंसा देना है।

[3]इसके पश्चात खिंगर के रूप में विशेष प्रकार के पत्थर बरसाये गये। इस प्रकार उन्हें तीन प्रकार के प्रकोपों से पीड़ित कर शिक्षाप्रद-चिन्ह के रूप में बना दिया गया।

[4]गूढ़ दृष्टि से परीक्षण करने तथा सोच-विचार करने वालों को متوسمين कहा गया है। मोतवस्सेमीन के लिए उस घटना में शिक्षा के पहलू तथा लक्षण हैं।

[5]तात्पर्य मुख्य मार्ग है। अर्थात लूत के समुदाय की बस्तियाँ मदीने से सीरिया जाते समय मार्ग में पड़ती हैं। प्रत्येक यात्री को उन्हीं मार्ग से होकर गुज़रना पड़ता है। कहते हैं ये पाँच बस्तियाँ थीं-सदूम, (यह केन्द्रीय बस्ती थी) साअबः, सावः, असरः तथा दूमा। कहा जाता है कि आदरणीय जिब्रील ने उन्हें बाँह पर उठाया तथा आकाश पर चढ़ गये, यहाँ तक कि आकाश वालों ने उनके कुत्तों के भोंकने तथा मुर्गों के बोलने की आवाज़ें सुनीं तथा फिर उन्हें धरती पर दे मारा। (इब्ने कसीर) परन्तु इस बात का कोई प्रमाण नहीं है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾

(७७) तथा इसमें ईमानवालों के लिए बड़ी निशानी है।

وَإِن كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَالِمِينَ ﴿٧٨﴾

(७८) तथा ऐक: बस्ती के रहने वाले भी बड़े अत्याचारी थे।[1]

فَانتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۖ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُّبِينٍ ﴿٧٩﴾

(७९) जिनसे अन्त में हमने बदला ले ही लिया। ये दोनों नगर खुले (सामान्य) मार्ग पर हैं।[2]

وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٨٠﴾

(८०) तथा हिज्र वालों ने भी रसूलों को झुठलाया।[3]

وَآتَيْنَاهُمْ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٨١﴾

(८१) तथा उन्हें हमने अपनी निशानियाँ प्रदान की थीं, परन्तु फिर भी वे उनसे गर्दन मोड़ने

---

[1] أيكة घने वृक्ष को कहते हैं। इस बस्ती में घने वृक्ष होंगे। इसलिए उन्हें أصحاب الأيكة (वन अथवा जंगल वाले) कहा गया है। तात्पर्य उससे शुऐब का समुदाय है तथा उनका काल आदरणीय लूत के पश्चात का है तथा उनका क्षेत्र मदीना तथा सीरिया के मध्य लूत के समुदाय की बस्तियों के निकट था। इसे मदयन कहा जाता है, जो आदरणीय इब्राहीम के पुत्र अथवा पौत्र का नाम था तथा उन्हीं के नाम पर बस्ती का नाम पड़ गया था। उनका अत्याचार यह था कि अल्लाह के साथ साझीदार बनाते थे, लूट उनका कर्म था, तथा कम तौलना तथा नापना उनका व्यवहार था। उन पर जब प्रकोप आया तो एक बादल की घटा ने छा लिया फिर कड़क तथा भूकम्प ने उन्हें ध्वस्त कर दिया।

[2] إمام مبين का अर्थ भी मुख्य मार्ग है, जहाँ से रात-दिन गुज़रते हैं। दोनों नगरों से तात्पर्य लूत के समुदाय की बस्ती तथा शुऐब के समुदाय का निवास स्थान मदयन तात्पर्य है। ये दोनों एक-दूसरे के निकट ही थे।

[3] حجر आदरणीय स्वालेह के समुदाय समूद की बस्तियों का नाम था। उन्हें أصحاب الحجر कहा गया है। यह बस्ती मदीना तथा तबूक के मध्य थी। उन्होंने अपने पैग़म्बर आदरणीय स्वालेह को झुठलाया, परन्तु यहाँ अल्लाह तआला ने फ़रमाया : "उन्होंने पैग़म्बरों को झुठलाया।" यह इसलिए है कि एक पैग़म्बर का झुठलाना वैसे ही है जैसे सारे पैग़म्बरों को झुठलाया।

The Ummah Technology Mission

वाले ही रहे।[1]

وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ﴿٨٢﴾

(८२) तथा ये लोग अपने घर पर्वतों से काट-काट कर बना लिया करते थे बिना भय के।[2]

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ﴿٨٣﴾

(८३) अन्त में उन्हें भी प्रातः होते-होते कड़ी चीख़ (ध्वनि) ने आ दबोचा।[3]

فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٤﴾

(८४) अतः उनके किसी उपाय तथा कर्म ने उन्हें कोई लाभ न दिया।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ﴿٨٥﴾

(८५) तथा हमने आकाशों तथा धरती को एवं उनके मध्य की सभी चीज़ों को सत्य के साथ ही रचा है।[4] तथा क़ियामत अवश्य-अवश्य आने वाली है, बस तू सभ्यता तथा अच्छाई से सहन कर ले।

---

[1]इन निशानियों में वह ऊँटनी भी थी, जो उनके कहने पर एक चट्टान से चमत्कार स्वरूप निकली थी, परन्तु अत्याचारियों ने उसे भी मार डाला।

[2]अर्थात बिना किसी भय अथवा संकोच के पर्वतों को शिल्प विद्या द्वारा काट लिया करते थे। ९ हिजरी में तबूक जाते समय जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस बस्ती से गुज़रे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सिर पर कपड़ा लपेट लिया था, अपनी सवारी की गति तेज़ कर दी तथा सहाबा से फ़रमाया कि रोते हुए तथा अल्लाह के प्रकोप से भयभीत होते हुए इस बस्ती से गुज़रो। (इब्ने कसीर) सहीह बुख़ारी तथा सहीह मुस्लिम में संख्या ४३३ तथा २२८५ में वर्णित है।

[3]आदरणीय स्वालेह ने उनसे कहा कि तीन दिन पश्चात तुम पर प्रकोप आयेगा, अतः चौथे दिन उन पर प्रकोप आ गया।

[4]सत्य से तात्पर्य वे लाभ तथा हित हैं जो आकाश तथा धरती की रचना का उद्देश्य है। अथवा सत्य से तात्पर्य सत्कर्मी को उसके सत्कर्म का बदला तथा कुकर्मियों को उनके कुकर्म का दण्ड देना है। जिस प्रकार एक अन्य स्थान पर फ़रमाया : अल्लाह ही के लिए है जो आकाशों में है तथा जो धरती में है ताकि वह बुरों को उनकी बुराईयों तथा सत्कर्मियों को उनके सत्कर्म का बदला दे। (सूरः *अल-नजम*-३१)

The Ummah Technology Mission

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ﴿٨٦﴾

(८६) नि:संदेह तेरा प्रभु ही पैदा करने वाला तथा जानने वाला है।

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ﴿٨٧﴾

(८७) तथा नि:संदेह हमने आपको सात आयतें दे रखी हैं[1] जो दुहराई जाती हैं। तथा महान क़ुरआन भी दे रखा है।

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾

(८८) आप कदापि अपनी आँखें इस बात की ओर न दौड़ायें[2] जिसे हमने उनमें से कई प्रकार के लोगों को प्रदान की है, न उन पर आप शोक करें तथा ईमानवालों के लिए अपनी बाँह झुकाये रहें।

وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ﴿٨٩﴾

(८९) तथा कह दीजिए कि मैं स्पष्टरूप से डराने वाला हूँ।

---

[1] سبع مثاني से तात्पर्य क्या है ? इसमें व्याख्याकारों में मतभेद है। उचित बात तो यह है कि इससे तात्पर्य *सूरः फ़ातिहा* है। यह सात आयतें हैं तथा जो प्रत्येक नमाज़ की प्रत्येक रकअत में पढ़ी जाती हैं (मसानी का अर्थ पुनरावृत्ति के किये गये हैं) हदीस से भी इसकी पुष्टि होती है। अत: एक हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ﴾ यह "सबअ मसानी तथा क़ुरआन अज़ीम है जो मैं दिया गया हूँ।" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर *सूरः अल-हिज्र*) एक अन्य हदीस में फ़रमाया «أُمُّ الْقُرْآنِ هِيَ السَّبْعُ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنُ الْعَظِيمُ». (उपरोक्त संदर्भ) *सूरः फ़ातिहा* क़ुरआन का एक भाग है इस लिए क़ुरआन अज़ीम का वर्णन भी साथ ही किया गया है।

[2] अर्थात हमने *सूरः फ़ातिहा* तथा क़ुरआन अज़ीम जैसे प्रदानों से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्मानित किया है, इसलिए दुनिया तथा उसकी शोभा एवं उन विभिन्न प्रकार के दुनिया वालों की ओर न देखें जिनको नश्वर दुनिया की अस्थाई वस्तुयें हमने दी हैं तथा वह जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठलाते हैं इस पर दुखी न हों तथा ईमानवालों के लिए अपनी बाँह झुकाये रखें। अर्थात उनके लिए नम्रता तथा प्रेम भाव अपनायें। इस लोकोक्ति की यर्थाता यह है कि जब पक्षी अपने बच्चों को अपनी प्रेमछाया में लेता है, तो उनको अपने बाँह अर्थात पंखों में ले लेता है। इस प्रकार यह शब्दों का योग (समस्त) नम्रता, प्रेम एवं प्यार का भाव अपनाने के भावार्थ में प्रयोग होता है।

The Iqmah Technology Mission

كَمَآ أَنزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ ﴿٩٠﴾

(९०) जैसाकि हमने उन भाग खण्ड करने वालों पर उतारा।[1]

الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ﴿٩١﴾

(९१) जिन्होंने इस क़ुरआन के टुकड़े-टुकड़े कर दिये।

فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٢﴾

(९२) सौगन्ध है तेरे प्रभु की हम उन सबसे अवश्य पूछ करेंगे।

عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

(९३) हर उस चीज़ की जो वह करते थे।

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٤﴾

(९४) बस आप[2] इस आदेश को जो आपको किया जा रहा है खोलकर सुना दीजिए तथा मुशरिकों (मिश्रणवादियों) से मुँह फेर लीजिए।

---

[1]कुछ व्याख्याकारों के निकट أنزلنا का कर्म कारक العذاب लुप्त है। अर्थ यह है कि मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से डराने वाला हूँ प्रकोप से। जैसे इस प्रकोप के जो مُقتسمين पर अवतरित हुआ। مقتسمين कौन हैं? जिन्होंने अल्लाह की किताब को टुकड़े-टुकड़े कर दिया। कुछ विद्वान कहते हैं कि इससे कुरैश का समुदाय अभिप्राय है जिन्होंने अल्लाह की किताब को विभाजित कर दिया, इसके कुछ भाग को कविता, कुछ भाग को जादू, कुछ को अंधविश्वास तथा कुछ को पूर्वजों की कथायें बताया। कुछ विद्वान कहते हैं مقتسمين से अहले किताब तथा क़ुरआन से तात्पर्य तौरात तथा इंजील हैं। उन्होंने इन आकाशीय पुस्तकों को विभिन्न भागों में विभाजित कर दिया था। कुछ विद्वान कहते हैं कि यह आदरणीय स्वालेह का समुदाय है, जिन्होंने आपस में सौगन्ध खायी थी कि स्वालेह तथा उनके परिवार वालों की रात्रि के अंधेरे में हत्या कर डालेंगे।

﴿تَقَاسَمُوا بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ وَأَهْلَهُ﴾ [النمل: ٤٩]

"उन्होंने अल्लाह की सौगन्ध खाई कि रात ही को हम स्वालेह तथा उसके परिवार वालों पर छापा मारेंगे।" (सूरः *अन-नमल*-४९)

तथा आकाशीय पुस्तक को टुकड़े-टुकड़े कर डाला। عِضين का एक अर्थ यह भी किया गया है कि इसकी कुछ बातों पर ईमान रखना तथा कुछ के साथ इंकार करना।

[2] اصدع का अर्थ स्पष्ट करके वर्णन करना, इस आयत के अवतरित होने से पूर्व आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम छुपकर धर्म का प्रचार करते थे, इसके पश्चात आप

The Ummah Technology Mission

(९५) आप से जो लोग उपहास करते हैं उनके (दण्ड) के लिए हम पर्याप्त हैं।

إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِءِينَ ﴿٩٥﴾

(९६) जो अल्लाह के साथ अन्य देवता (पूज्य) बनाते हैं, उन्हें शीघ्र ही ज्ञात हो जायेगा।

الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾

(९७) तथा हमें भली-भाँति ज्ञात है कि उनकी बातों से आपका दिल संकुचित होता है।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ﴿٩٧﴾

(९८) आप अपने प्रभु की महिमा तथा प्रशंसा का वर्णन करते रहें। तथा शीश (सिर) झुकाने वालों में सम्मिलित हो जायें।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ﴿٩٨﴾

(९९) तथा अपने प्रभु की इबादत करते रहें यहाँ तक कि आपको मृत्यु आ जाये।[1]

وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ﴿٩٩﴾

सूरतुन-नहल-१६

سُورَةُ النَّحْلِ

सूरः नहल मक्का में उतरी तथा इसकी एक सौ अटठाईस आयतें और सोलह रूकअ हैं।

अल्लाह तआला के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

(१) अल्लाह (तआला) का आदेश आ पहुँचा, अब

أَتَىٰ أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ ۚ

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्पष्टरूप से धर्म का प्रचार-प्रसार करना प्रारम्भ कर दिया। (फ़तहुल क़दीर)

[1]मुशरेकीन जो अल्लाह की पूजा एवं गुणों में अन्य को साझी बनाते हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जादूगर, दीवाना, भविष्यवेत्ता आदि कहते जिससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मानवी प्रकृति के कारण दुखी हो जाते, अल्लाह तआला ने सांत्वना देते हुए फ़रमाया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह की प्रशंसा तथा गुणगान करें, नमाज़ पढ़ें तथा अपने प्रभु की इबादत करें, इससे आपको हार्दिक शान्ति भी प्राप्त होगी तथा अल्लाह की सहायता भी प्राप्त होगी। दण्डवत (सजदा से यहाँ नमाज़ तथा यक़ीन से मृत्यु तात्पर्य है।

The Ummah Technology Mission

سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ①

इसकी शीघ्रता न मचाओ[1], सारी पवित्रता उसके लिए है वह श्रेष्ठतम है उन सबसे जिन्हें ये अल्लाह के निकट साझा बतलाते हैं।

يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اَنْ اَنْذِرُوْٓا اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ②

(२) वही फ़रिश्तों को अपनी प्रकाशना (वह्यी)[2] देकर अपने आदेश द्वारा अपने भक्तों में से जिस पर चाहता है,[3] उतारता है कि तुम लोगों को सचेत कर दो कि मेरे अतिरिक्त अन्य कोई पूजने योग्य नहीं, अतः तुम मुझसे डरो।

---

[1]इससे तात्पर्य क़ियामत है, अर्थात वह क़ियामत निकट आ गयी है, जिसे तुम दूर समझते थे, तो शीघ्रता न मचाओ, अथवा वह प्रकोप तात्पर्य है, जिसकी मूर्तिपूजक माँग करते थे। उसे भविष्यकाल के बजाय भूतकाल में वर्णन किया है, क्योंकि उसका आना निश्चित है।

[2] روح से तात्पर्य प्रकाशना (वह्यी) है, जैसाकि क़ुरआन मजीद में अन्य स्थान पर है।

﴿وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا ۚ مَا كُنتَ تَدْرِى مَا ٱلْكِتَٰبُ وَلَا ٱلْإِيمَٰنُ﴾

"इसी प्रकार हमने आपकी ओर अपने आदेश से प्रकाशना (वह्यी) की, इससे पूर्व आपको ज्ञान नहीं था कि किताब क्या है तथा ईमान क्या है" (सूरः *अल-शूरा-* ५२)

[3]तात्पर्य नबी हैं जिन पर प्रकाशना (वह्यी) अवतरित हुई। जिस प्रकार अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ٱللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُۥ﴾

"अल्लाह भली-भाँति जानता है कि वह कहाँ अपनी रिसालत रखे।" (सूर *अल-अनाम-१२४*)

﴿يُلْقِى ٱلرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِۦ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦ لِيُنذِرَ يَوْمَ ٱلتَّلَاقِ﴾

"वह अपने आदेश से अपने भक्तों में जिस पर चाहता है प्रकाशना (वह्यी) अवतरित करता है ताकि वे मिलन वाले दिन (क़ियामत के दिन) से लोगों को डरायें।" (सूरः *अल-मोमिन-१५*)

The Ummah Technology Mission

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٣

(३) उसी ने आकाशों तथा धरती को सत्यता के साथ उत्पन्न किया, [1] वह उससे स्वच्च है जो मुशरिक (मिश्रणवादी) करते हैं।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ۝٤

(४) उस ने मनुष्यों को वीर्य से पैदा किया फिर वह स्पष्ट झगड़ालू बन बैठा।[2]

وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝٥

(५) उसी ने पशु पैदा किये, जिनमें तुम्हारे लिए गर्मी के वस्त्र हैं, तथा अन्य भी बहुत-से लाभ हैं,[3] तथा कुछ तुम्हारे भोजन के काम आते हैं।

وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۝٦

(६) तथा उनमें तुम्हारी शोभा भी है, जब चराकर लाओ तब भी और जब चराने ले जाओ तब भी।[4]

---

[1]अर्थात मात्र आनन्द, आमोद-प्रमोद एवं खेल-कूद के लिए नहीं बनाया, अपितु एक उद्देश्य है तथा वह है उपहार तथा दण्ड, जैसाकि विस्तार से अभी गुज़र चुका है।

[2]अर्थात एक निर्जीव वस्तु से जो एक जीवधारी के अन्दर से निकलती है, जिसे वीर्य कहा जाता है। उसे विभिन्न अवस्थाओं से गुज़ार कर एक पूर्ण रूप प्रदान करता है, फिर उसमें अल्लाह तआला आत्मा फूँकता है तथा माता के गर्भ से निकालकर संसार में लाता है, जिसमें वह जीवन व्यतीत करता है, परन्तु जब उसे समझ आती है तो उसी प्रभु के मामले में झगड़ता है, उसको अस्वीकार करता अथवा उसके साथ साझीदार ठहराता है।

[3]इस (अनुग्रह) के साथ अन्य अनुग्रह का वर्णन किया कि चौपाये (ऊँट, गाय तथा बकरियाँ) भी उसी ने पैदा किये, जिनके बालों से तुम ऊन तथा गर्म कपड़े तैयार करके गर्मी प्राप्त करते हो। इसी प्रकार उनसे अन्य लाभ प्राप्त करते हो, जैसे उनसे दूध प्राप्त करते हो, उन पर सवारी करते तथा सामान लादते हो, उनके द्वारा हल चलाते तथा खेतों की सिंचाई करते हो आदि।

[4] تریحون का अर्थ है जब शाम को चराकर घर वापस लाओ, تسرحون जब प्रातः चराने के लिए ले जाओ, इन दोनों समयों में यह लोगों की दृष्टि में आते हैं जिससे तुम्हारे सौन्दर्य तथा सुन्दरता में बढ़ोत्तरी होती है। इन दोनों समयों के अतिरिक्त वे दृष्टि से ओझल रहते हैं अथवा बाड़ों में बन्द रहते हैं।

The Ummah Technology Mission

وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَلَدٍ لَّمْ تَكُونُوا بَالِغِيهِ إِلَّا بِشِقِّ الْأَنفُسِ ۚ إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٧﴾

(७) तथा वह तुम्हारे बोझ उन नगरों तक उठाकर ले जाते हैं, जहाँ तुम बिना आधे प्राण किये पहुँच नहीं सकते थे। नि:संदेह तुम्हारा प्रभु बड़ा ही करूणाकारी तथा अत्यन्त कृपालु है।

وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً ۚ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨﴾

(८) तथा घोड़ों को, खच्चरों को, गधों को (उसने पैदा किया) ताकि तुम उनको याता-यात के साधन के रूप में प्रयोग में ले आओ तथा वे शोभा का साधन भी हैं।[1] अन्य भी वह

---

[1]अर्थात उनको पैदा करने का मूल उद्देश्य एवं लाभ तो उन पर सवारी करना है, फिर भी यह शोभा हेतु भी हैं। घोड़े, खच्चर, तथा गधों का अलग से वर्णन करने से कुछ विचारकों ने अर्थ निकाला है कि घोड़ा भी उसी प्रकार निषेध (हराम) है जिस प्रकार गधा तथा खच्चर। इसके अतिरिक्त खाने वाले पशुओं का वर्णन पूर्व में आ चुका है। इसलिए इस आयत में जिन तीन पशुओं का वर्णन है, यह केवल वाहन (सवारी) के लिए है। परन्तु यह अर्थ इसलिए उचित नहीं क्योंकि हदीस में घोड़ा खाने का औचित्य प्रमाणित है। आदरणीय जाबिर (رضي الله عنه) का कथन है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने घोड़ों का माँस खाने की आज्ञा दी है। «أَذِنَ فِي لُحُومِ الْخَيلِ».(सहीह बुख़ारी किताबुल ज़बाएह बाबु लुहूमिल ख़ैले तथा सहीह मुस्लिम किताबुस सैदे बाब फ़ी अकले लुहुमिल ख़ैले)। इसके अतिरिक्त सहाबा कराम ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उपस्थिति में ख़ैबर तथा मदीने में घोड़े को बध करके उसका माँस पकाया तथा खाया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना नहीं किया। (देखिये सहीह मुस्लिम उपरोक्त वर्णित अध्याय में तथा मुसनद अहमद भाग ३, पृष्ठ ३५६, अबू दाऊद किताबुल अत्एमः, बाब फ़ी अकले लुहुमिल ख़ैले)। इसलिए अधिकाँश आलिम, तथा सलफ़ तथा उनके पश्चात के अधिकाँश घोड़े के माँस का उचित (हलाल) होने के पक्ष में हैं। (तफ़सीर इब्ने कसीर) यहाँ घोड़े का वर्णन सवारी के विषय में इसलिए किया गया है कि इसका अधिकतर प्रयोग इसी उद्देश्य से है, वह सम्पूर्ण संसार में इतना मूल्यवान है कि इसका भोजन के रूप में प्रयोग अत्यधिक कठिन है। भेड़, बकरी की भाँति इसका बध नहीं किया जाता। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि इसको बिना किसी प्रमाण के अनुचित (हराम) ठहरा दिया जाये।

The Ummah Technology Mission

ऐसी वस्तुएँ पैदा करता है जिनका तुम्हें ज्ञान भी नहीं।[1]

وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ ؕ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٩

(९) तथा अल्लाह पर सीधा मार्ग बता देना है।[2] तथा कुछ टेढ़े मार्ग हैं। तथा यदि वह चाहता तो तुम सबको सीधे मार्ग पर लगा देता।[3]

هُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۝١٠

(१०) वही तुम्हारे लाभ के लिए आकाश से वर्षा करता है, जिसे तुम पीते भी हो तथा उसी से उगे हुए वृक्षों को तुम अपने पशुओं को चराते हो।

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝١١

(११) इसी से वह तुम्हारे लिए खेती एवं ज़ैतून तथा खजूर और अंगूर एवं हर प्रकार के फल उगाता है। नि:संदेह विचार करने वाले लोगों के लिए तो इसमें बड़ी निशानियाँ हैं।[4]

---

[1]धरती के निचले भाग में, इसी प्रकार समुद्र में, तथा निर्जल मरूस्थल में तथा वनों में अल्लाह तआला जीवधारी उत्पन्न करता है, जिनका ज्ञान अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी को नहीं तथा उसी में मनुष्य द्वारा निर्मित वस्तुयें भी आ जाती हैं, जो अल्लाह तआला की प्रदान की हुई बुद्धि तथा विचार को प्रयोग करते हुए उसी की उत्पन्न की हुई विभिन्न वस्तुओं को विभिन्न प्रकार से जोड़कर निर्मित करता है, जैसे बस, कार, रेलगाड़ी, जहाज़ तथा वायुयान एवं इसी प्रकार की असंख्य वस्तुएँ तथा जो भविष्य में भी आती रहेंगी।

[2]इसका एक अर्थ है "तथा अल्लाह ही पर है सीधा मार्ग।" अर्थात उसका वर्णन करना। अत: उसने उसे वर्णित कर दिया तथा प्रकाश तथा अंधकार दोनों को स्पष्ट कर दिया, इसीलिए आगे कहा कि कुछ मार्ग टेढ़े हैं अर्थात भटकाने वाले हैं।

[3]परन्तु इसमें चूँकि दबाव होता तथा मनुष्य की परीक्षा न होती, इसलिए अल्लाह ने अपनी इच्छा से सभी को बाध्य नहीं किया। अपितु दोनों मार्गों के विषय में बता कर मनुष्य को अपनी इच्छा तथा अधिकार की स्वतन्त्रता प्रदान कर दी।

[4]इसमें वर्षा के वे लाभ वर्णित किये गये हैं, जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति देखता तथा अनुभव करता है, यह किसी को बताने की आवश्यकता नहीं, इसके अतिरिक्त इनका वर्णन पहले भी आ चुका है।

The Ummah Technology Mission

وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۙ﴿۱۲﴾

(१२) तथा उसी ने रात-दिन तथा सूर्य एवं चन्द्रमा को तुम्हारी सेवा में लगा रखा है तथा सितारे भी उसी के आदेश के अधीन हैं। नि:संदेह इसमें बुद्धि वालों के लिए कई प्रकार की निशानियाँ विद्यमान हैं।[1]

وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ؕ﴿۱۳﴾

(१३) तथा अन्य भी (नाना प्रकार की) वस्तुएँ विभिन्न रंग-रूप की उसने तुम्हारे लिए धरती में फैला रखी हैं। नि:संदेह शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिए इसमें बड़ी भारी निशानियाँ हैं।[2]

وَهُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ؕ﴿۱۴﴾

(१४) तथा नदियाँ भी उसी ने तुम्हारे वश में कर दी हैं कि तुम इसमें से निकला हुआ ताज़ा माँस खाओ तथा उसमें से अपने पहनने के लिए आभूषण निकाल सको। और तुम देखोगे कि नवकायें इसमें पानी चीरती हुई (चलती) हैं तथा इसलिए भी कि तुम उस की कृपा की खोज करो तथा हो सकता है कि तुम कृतज्ञता भी व्यक्त करो।[3]

---

[1]किस प्रकार रात तथा दिन छोटे तथा बड़े होते हैं, चन्द्रमा तथा सूर्य किस प्रकार अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं तथा उनमें कोई अन्तर नहीं उत्पन्न होता, सितारे किस प्रकार आकाश की शोभा हैं तथा रात के अन्धेरों में खोये हुए लोगों तथा यात्रियों के लिए पथ प्रदर्शक हैं। ये सब अल्लाह तआला के पूर्ण सामर्थ्य तथा विस्तृत राज्य के प्रमाण हैं।

[2]अर्थात धरती में अल्लाह ने जो खनिज, वनस्पति, निर्जीव तथा जीवधारी एवं उनसे होने वाले लाभ तथा विशेषता उत्पन्न किये हैं, उनमें भी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए निशानियाँ हैं।

[3]इसमें समुद्र की तीव्र धाराओं को मनुष्य के अधीन कर देने के वर्णन के साथ, उसके तीन लाभ भी वर्णित किये गये हैं। एक यह कि उससे मछली के रूप में ताज़ा माँस

The Ummah Technology Mission

وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥﴾

(१५) तथा उसने धरती पर पर्वत गाड़ दिये हैं ताकि तुम्हें लेकर न हिले।[1] तथा नदियाँ एवं मार्ग बना दिये ताकि तुम लक्ष्य तक पहुँचो।[2]

وَعَلٰمٰتٍ ؕ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿١٦﴾

(१६) अन्य भी बहुत-सी निशानियाँ (निर्धारित की)। तथा सितारों से भी लोग मार्ग प्राप्त करते हैं।

اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٧﴾

(१७) तो क्या वह जो पैदा करे उस जैसा है जो पैदा नहीं कर सकता? क्या तुम कदापि नहीं सोंचते?[3]

खाते हो (तथा मछली मरी भी हो तब भी हलाल है। यहाँ तक कि एहराम की अवस्था में भी उसका शिकार हलाल है) दूसरे उससे तुम मोती, सीपियाँ, (जवाहरात) निकालते हो। तीसरे इसमें तुम नाव तथा जहाज़ चलाते हो, जिनके द्वारा तुम एक देश से दूसरे देश जाते हो, व्यापारिक सामग्रियाँ भी लाते ले जाते हो, जिससे तुम्हें अल्लाह की अनुकम्पा प्राप्त होती है, जिस पर तुम्हें अल्लाह का कृतज्ञ होना चाहिए।

[1]यह पर्वतों का लाभ वर्णन किया जा रहा है। तथा अल्लाह का एक महान उपकार भी, क्योंकि यदि धरती हिलती रहती तो धरती पर निवास करना ही असम्भव होता। इसका अनुमान उन भूकम्पों से लगाया जा सकता है जो क्षणिक अथवा कुछ देर के लिए आते हैं, परन्तु किस प्रकार ऊँची-ऊँची भवनों को धराशायी करके नगरों को खण्डहर में परिवर्तित कर देते हैं।

[2]नदियों का क्रम भी विचित्र है, कहाँ से वे प्रारम्भ होती हैं तथा कहाँ-कहाँ, दायें-बायें, उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम प्रत्येक दिशा को सींचती हैं। इसी प्रकार मार्ग बनाये, जिसके द्वारा तुम अपने लक्ष्य तक पहुँचते हो।

[3]इन सभी अनुकम्पाओं तथा उपकारों के वर्णन से एकेश्वर के महत्व को स्पष्ट तथा प्रदर्शित किया कि अल्लाह तो इन सभी वस्तुओं का स्रष्टा है, परन्तु उसको छोड़कर जिनकी तुम पूजा करते हो, उन्होंने भी कुछ उत्पन्न किया है? नहीं, अपितु वे तो स्वयं अल्लाह की सृष्टि हैं। तो फिर किस प्रकार स्रष्टा एवं सृष्टि समान हो सकते हैं? जबकि तुमने स्वयं उन्हें ईष्टदेव बनाकर अल्लाह के समान साझी ठहरा रखा है। क्या तुम तनिक भी विचार नहीं करते?

The Ummah Technology Mission

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨﴾

(१८) तथा यदि तुम अल्लाह की अनुकम्पाओं की गणना करना चाहो, तो तुम उसे नहीं कर सकते। नि:संदेह अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला कृपालु है।

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿١٩﴾

(१९) तथा जो कुछ तुम छिपाओ अथवा व्यक्त करो, अल्लाह सब कुछ जानता है।[1]

وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा जिन-जिन को ये लोग अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त पुकारते हैं, वे किसी वस्तु को पैदा नहीं कर सकते, अपितु वे स्वयं पैदा किये हुए हैं।[2]

اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٢١﴾

(२१) मृत हैं जीवित नहीं,[3] उन्हें तो यह भी ज्ञात नहीं कि कब उठाये जायेंगे।[4]

اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ

(२२) तुम सभी का पूज्य मात्र अल्लाह (तआला) अकेला है तथा परलोक (आख़िरत) पर ईमान

---

[1]तथा इसके अनुसार वह क़यामत के दिन फ़ल तथा दण्ड देगा। सत्कर्मियों को सत्कर्म का बदला मिलेगा तथा कुकर्मियों को कुकर्म का दण्ड।

[2]इसमें एक वस्तु की अधिकता है अर्थात विशेष गुण (रचयिता होने) के इंकार के साथ न्यूनता अर्थात कमी (रचयिता न होने) को प्रमाणित करना। (फ़तहुल क़दीर)

[3]मृत से तात्पर्य वह पाषाण (पत्थर) भी हैं जो निर्जीव तथा निर्बोध हैं तथा मरे हुए महात्मा भी हैं। क्योंकि मरने के पश्चात उठाया जाना (जिसका उन्हें ज्ञान नहीं) वह तो निर्जीव के अतिरिक्त महात्मा पर सत्य सिद्ध हो सकता है। उनको केवल मृत नहीं कहा, अपितु और अधिक स्पष्ट कर दिया कि, "वह जीवित नहीं हैं।" इससे कब्र पूजन करने वालों का भी स्पष्ट खण्डन होता है, जो कहते हैं कि क़ब्र में गड़े मृत नहीं जीवित हैं तथा हम जीवितों को ही पुकारते हैं। अल्लाह तआला के इस कथन से ज्ञात हुआ कि मृत्यु हो जाने के पश्चात सांसारिक जीवन किसी को नहीं प्राप्त हो सकता, न संसार से उनका कोई सम्बन्ध शेष रहता है।

[4]फिर उनसे लाभ की तथा पुण्य व प्रतिफल की आशा कैसे की जा सकती है।

The Ummah Technology Mission

مُّنكِرَةٌ قُلُوبُهُم وَهُم مُّسْتَكْبِرُونَ ﴿٢٢﴾

न रखने वालों के दिल भ्रष्ट (निवर्ती) हैं तथा वे स्वयं गर्व से परिपूर्ण हैं।[1]

لَا جَرَمَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ﴿٢٣﴾

(२३) नि:संदेह अल्लाह (तआला) हर उस वस्तु को जिसको वे छिपाते हैं तथा जिसे व्यक्त करते हैं, भली-भाँति जानता है। वह अभिमानियों को प्रिय नहीं रखता।[2]

وَإِذَا قِيلَ لَهُم مَّاذَا أَنزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा उनसे जब पूछा जाता है कि तुम्हारे प्रभु ने क्या उतारा है, तो उत्तर देते हैं कि पूर्वजों की कथायें हैं।[3]

---

[1]अर्थात एक पूज्य को मानना नास्तिकों तथा अनेकेश्वर-वादियों के लिए अत्यन्त कठिन है। वह कहते हैं।

﴿أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ﴾

"उसने सभी पूजनीयों को एक ही पूज्य कर दिया है यह तो अत्यन्त विचित्र बात है।" (सूरः साद-५)

अन्य स्थान पर फ़रमाया:

﴿وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۖ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِن دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ﴾

"जब एक अल्लाह का वर्णन किया जाता है तो आख़िरत को नकारने वालों के दिल संकुचित हो जाते हैं तथा जब अल्लाह के अतिरिक्त अन्य देवताओं का वर्णन किया जाता है, तो प्रसन्न होते हैं।" (सूरः अल-ज़ुमर-४५)

[2] استكبار का अर्थ होता है कि अपने आपको बड़ा समझते हुए सत्य तथा उचित बात को अस्वीकार कर देना तथा अन्य व्यक्तियों को तुच्छ एवं हीन समझना। كِبر की यही परिभाषा हदीस में भी वर्णन की गयी है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब तहरीमिल किब्रे व बयानेहि) यह घमंड तथा अहंकार अल्लाह को अति अप्रिय है। हदीस में है कि वह व्यक्ति स्वर्ग में नहीं जायेगा जिसके हृदय में लेश मात्र भी घंमड होगा। (उपरोक्त संदर्भ)

[3]अर्थात विमुखता तथा उपहास का प्रदर्शन करते हुए ये झूठे उत्तर देते हैं कि अल्लाह तआला ने तो कुछ नहीं उतारा तथा यह मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हमें जो पढ़कर सुनाता है, वह तो पूर्व कालिक कथायें हैं, जो कहीं से सुनकर वर्णन करता है।

The Ummah Technology Mission

لِيَحْمِلُوٓا۟ أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ أَلَا سَآءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٢٥﴾

(२५) (इसी का परिणाम होगा) कि क़ियामत के दिन ये लोग अपने पूर्ण बोझ के साथ ही उनके बोझ के भी भागीदार होंगे जिन्हें अज्ञानवश भटकाते रहे। देखो तो कैसा बुरा बोझ उठा रहे हैं।[1]

قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَى اللَّهُ بُنْيَٰنَهُم مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِن فَوْقِهِمْ وَأَتَىٰهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾

(२६) उनसे पूर्व के लोगों ने भी छल किया था। (अन्त में) अल्लाह ने उनके (षड़यन्त्र के) घरों को जड़ों से उखाड़ दिया तथा उनके (सिरों पर) छतें ऊपर से[2] गिर पड़ीं तथा उनके पास प्रकोप वहाँ से आ गया जहाँ का उन्हें ध्यान तथा विचार भी न था।[3]

---

[1]अर्थात उनके मुख से यह बात अल्लाह तआला ने निकलवायी ताकि वे लोग अपने बोझों के अतिरिक्त अन्यों का भी बोझ उठायें। जिस प्रकार से हदीस में है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिसने लोगों को संमार्ग की ओर बुलाया, तो उस व्यक्ति को उन सभी व्यक्तियों का भी बदला मिलेगा जो उसके आमन्त्रण पर सत्य का मार्ग अपनायेंगे तथा जिसने भटकावे की ओर बुलाया, तो उसको उन सभी लोगों के पाप का भार भी उठाना पड़ेगा, जो उसके प्रयत्न पर भटके।" (अबू दाऊद किताबुस सुन्नः बाबु लोज़ूमिस्स सुन्नः)

[2]कुछ व्याख्याकार इस्राईली कथाओं के आधार पर कहते हैं कि इससे तात्पर्य नमरूद अथवा बुख़्त नस्सर है, जो किसी प्रकार आकाश की ओर चढ़कर अल्लाह के विरूद्ध षड़यन्त्र किया, परन्तु वे विफल होकर वापस आ गये तथा कुछ व्याख्याकारों के निकट एक उदाहरण है जिससे यह बताना उद्देश्य है कि अल्लाह के साथ कुफ़्र तथा साझी बनाने वालों के कर्म इसी प्रकार विफल होंगे, जिस प्रकार किसी के घर की नींव हिल जाये, तथा वे छत सहित गिर पड़े। परन्तु अधिक उचित बात यह है कि इसका उद्देश्य उन समुदायों के परिणाम की ओर संकेत करना है, जिन समुदायों ने पैग़म्बरों को निरन्तर झुठलाया तथा अन्त में अल्लाह के प्रकोप के भोगी होकर अपने घरों सहित ध्वस्त हो गये। जैसे आद का समुदाय तथा लूत का समुदाय आदि।

[3]जिस प्रकार से अन्य स्थान पर है।

The Ummah Technology Mission

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ
اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ
تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ۭ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ
وَالسُّوْۗءَ عَلَي الْكٰفِرِيْنَ ۝۲۷

(२७) फिर क़ियामत के दिन भी अल्लाह (तआला) उन्हें अपमानित करेगा तथा कहेगा कि मेरे वे साझीदार कहाँ हैं जिनके विषय में तुम लड़ते-झगड़ते थे |[1] जिन्हें ज्ञान दिया गया था वे उत्तर देंगे[2] कि आज तो काफ़िरों को अपमान तथा बुराई चिमट गयी |

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ
ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۠ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ
مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْۗءٍ ۭ بَلٰٓى

(२८) वह जो अपने प्राणों पर अत्याचार करते हैं, फ़रिश्ते जब उनके प्राण निकालने लगते हैं तो उस समय वे संधि की बात डालते हैं कि हम बुराई नहीं करते थे |[3] क्यों नहीं ? अल्लाह

"तो अल्लाह (का प्रकोप) उनके पास ऐसे स्थान से आया जहाँ से उन्होंने कभी सोचा भी न था |" (सूरः अल-हश्र-२)

[1]अर्थात यह तो वे प्रकोप थे जो उन पर संसार में आये तथा क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उन्हें इस प्रकार अपमानित तथा निरादर करेगा कि उनसे पूछेगा, तुम्हारे वे भागीदार कहाँ हैं, जो तुमने मेरे लिए बना रखे थे तथा जिनके कारण तुम ईमानवालों से लड़ते-झगड़ते थे |

[2] अर्थात जिनको धर्म का ज्ञान था, वे धर्म पर दृढ़ थे वे उत्तर देंगे |

[3]यह मूर्तिपूजक अत्याचारियों की मृत्यु के समय की अवस्था का वर्णन है | जब फ़रिश्ते उनकी (प्राण) आत्मायें निकालते हैं तो वे संधि की बात डालते हैं अर्थात सुनने, मानने तथा लाचारी का प्रदर्शन करते हुए कहते हैं कि हम तो बुराई नहीं करते थे | जिस प्रकार प्रलय के मैदान में अल्लाह के समक्ष भी झूठी सौगन्ध खायेंगे तथा कहेंगे |

﴿وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ﴾

"अल्लाह की सौगन्ध हम मुशरिक (मिश्रणवादी) नहीं थे |" (सूरः अल-अनाम-२३)

अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ﴾

"जिस दिन अल्लाह तआला उन सबको जीवित कर (अपने समक्ष एकत्रित करेगा) तो अल्लाह के समक्ष भी ये इसी प्रकार (झूठी) सौगन्ध खायेंगे, जिस प्रकार तुम्हारे समक्ष सौगन्ध खाते हैं |" (सूरः अल-मुजादिलः-१८)

The Ummah Technology Mission

إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾

(तआला) भली-भाँति जानने वाला है, जो कुछ तुम करते थे।[1]

فَادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٢٩﴾

(२९) तो अब तुम सदा के लिए नरक के द्वारों (से नरक) में प्रवेश करो,[2] तो क्या ही बुरा स्थान है अहंकार करने वालों का।

وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا مَاذَا أَنزَلَ رَبُّكُمْ ۚ قَالُوا خَيْرًا ۗ لِّلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۚ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ ۚ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा सदाचारियों से प्रश्न किया जाता है कि तुम्हारे पालनहार ने क्या अवतरित किया है। तो वह उत्तर देते हैं कि अच्छे से अच्छा। जिन लोगों ने सत्कर्म किये उन के लिए इस लोक में भलाई है, तथा वस्तुतः परलोक का घर तो अत्योत्तम है, तथा क्या ही उत्तम सदाचारियों का घर है।

جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ ۚ كَذَٰلِكَ يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣١﴾

(३१) सदा रहने वाले बाग़ में वे जायेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जो वह माँग करेंगे वहाँ उनके लिए उपस्थित होंगी, सदाचारियों को अल्लाह ऐसे ही प्रतिफल प्रदान करता है।

الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ ۙ يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمُ ۙ

(३२) वे जिनके प्राण फ़रिश्ते ऐसी अवस्था में निकालते हैं कि वह स्वच्छ पवित्र हों कहते हैं कि तुम्हारे लिये शान्ति ही शान्ति है, अपने

---

[1]फ़रिश्ते उत्तर देंगे क्यों नहीं ? अर्थात तुम झूठ बोलते हो। तुम्हारी तो पूरी आयु ही बुराईयों में व्यतीत हुई है। तथा अल्लाह के पास तुम्हारे सभी कर्मों का लेख सुरक्षित है, तुम्हारे इस नकारने से क्या बनेगा ?

[2]इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि उनकी मृत्यु के पश्चात तुरन्त उनकी आत्मायें नरक में चली जाती हैं, तथा उनके शव समाधि (क़ब्र) में रहते हैं जहाँ अल्लाह अपने सामर्थ्य से शरीर तथा आत्मा में दूरी होते हुए भी एक प्रकार का लगाव पैदा करके यातना देता है तथा प्रातः, संध्या उन पर आग प्रस्तुत की जाती है। फिर जब प्रलय स्थापित होगा उनकी आत्मा उनके शरीरों में पुनः आ जायेंगी तथा वे सदा के लिए नरक में डाल दिये जायेंगे।

The Ummah Technology Mission

ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٢﴾

उन कर्मों के बदले स्वर्ग में जाओ जो तुम कर रहे थे।[1]

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرُ رَبِّكَ ۚ كَذَٰلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٣٣﴾

(३३) क्या यह इसी बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आ जायें अथवा तेरे प्रभु का आदेश आ जाये ?[2] ऐसा ही उन लोगों ने भी किया जो इन से पूर्व थे।[3] उन पर अल्लाह (तआला) ने कोई अत्याचार नहीं किया।[4] अपितु वह स्वयं अपने प्राणों पर अत्याचार करते रहे।[5]

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٤﴾

(३४) तो उनके कुकर्मों का कुफल उन्हें मिल गया तथा जिसका उपहास उड़ाते थे, उसने उन को घेर लिया।[6]

---

[1]इन आयतों में अत्याचारी मूर्तिपूजकों की तुलना में ईमानवालों के आचरण एवं उनके शुभ अन्त (परिणाम) का वर्णन किया गया है।

[2]अर्थात क्या वह भी उस समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब फ़रिश्ते उनकी आत्मायें निकालेंगे अथवा प्रभु का आदेश (अर्थात प्रकोप अथवा क़ियामत) आ जाये।

[3]अर्थात इस प्रकार की दुष्टता तथा अवज्ञा, उनसे पूर्व के लोगों ने भी अपनायी, जिसके कारण वे अल्लाह के क्रोध के अधिकारी बने।

[4]इसलिए कि अल्लाह ने उनके लिए कोई बहाना ही शेष नहीं छोड़ा। रसूलों को भेजकर तथा किताबें अवतरित करके उन पर तर्क को पूर्ण कर दिया।

[5]अर्थात रसूलों का विरोध तथा उनको झुठलाकर स्वयं ही उन्होंने अपने आप पर अत्याचार किया।

[6]अर्थात जब रसूल उनसे कहते कि यदि तुम उन पर ईमान नहीं लाओगे तो अल्लाह का प्रकोप आ जायेगा, तो ये उपहास स्वरूप कहते कि जा अपने अल्लाह से कह दे कि वह प्रकोप भेजकर हमें नाश कर दे। अत: उस प्रकोप ने उन्हें घेर लिया जिसका वह उपहास करते थे, फिर उससे बचाव का कोई मार्ग उनके पास नहीं रहा।

The Ummah Technology Mission

وَ قَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۳۵﴾

(३५) तथा मिश्रणवादियों (मुशरिकों) ने कहा यदि अल्लाह (तआला) चाहता तो हम तथा हमारे पूर्वज उसके अतिरिक्त अन्य की पूजा न करते न उसके आदेश के बिना किसी वस्तु को हराम करते। यही कर्म उनसे पूर्व के लोगों का रहा। तो रसूलों पर तो केवल स्पष्टतया संदेश पहुँचा देना है।[1]

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ

(३६) तथा हमने प्रत्येक समुदाय में रसूल भेजे कि (लोगो) ! केवल अल्लाह की उपासना (इबादत) करो तथा राक्षसों (उसके अतिरिक्त सभी मिथ्या पूज्यों) से बचो। तो कुछ लोगों

---

[1]इस आयत में अल्लाह तआला ने मुशरिकों के एक भ्रम तथा भ्रान्ति का निवारण किय है, वे कहते थे कि हम जो अल्लाह को छोड़कर अन्यों की पूजा करते हैं अथवा उसके आदेश के बिना ही कुछ वस्तुओं को वर्जित (हराम) कर लेते हैं, यदि हमारी यह बातें अनुचित हैं तो अल्लाह तआला अपने सामर्थ्य से हमें उनसे रोक क्यों नहीं देता ? वह यदि चाहे तो हम इन कार्यों को कर ही नहीं सकते। यदि वह नहीं रोकता तो इसका अर्थ यह है कि हम जो कुछ कर रहे हैं, उसकी इच्छानुसार है। अल्लाह तआला ने उनके इस भ्रम का निवारण, "रसूलों का कार्य केवल पहुँचा देना है" कहकर कर दिया। अर्थ यह है कि तुम्हारा यह भ्रम उचित नहीं है। अल्लाह तआला ने तो तुम्हें इन मिश्रण के कार्यों से अति कड़ाई से रोका है। इसलिए प्रत्येक समुदाय में वह रसूल भेजता तथा किताबें अवतरित करता रहा है। तथा प्रत्येक नबी ने आकर सर्वप्रथम अपने समुदाय को शिर्क ही से बचाने का प्रयत्न किया है। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि अल्लाह तआला कदापि यह नहीं चाहता कि लोग शिर्क करें क्योंकि यदि उसे प्रिय होता तो इनके खण्डन के लिए वह रसूल क्यों भेजता ? परन्तु इसके उपरान्त भी तुमने रसूलों को झुठलाकर शिर्क का मार्ग अपनाया तथा अल्लाह ने अपनी उत्पत्ति नीति के कारण बल पूर्वक तथा दबाव से नहीं रोका, तो यह उसके विवेक तथा नीति का एक भाग है जिसके अर्न्तगत उसने मनुष्यों को अपनी इच्छा के अनुरूप चलने की स्वतन्त्रता प्रदान कर रखी है। क्योंकि इसके बिना उनकी परीक्षा सम्भव नहीं थी। हमारे रसूल हमारा संदेश पहुँचाकर यही समझाते रहे कि इस स्वतन्त्रता का दुरूपयोग न करो, अपितु उसे अल्लाह की प्रसन्नता के अनुरूप प्रयोग करो। हमारे रसूल यही कुछ कर सकते थे, जो उन्होंने किया। तथा तुमने शिर्क करके उसका दुरूपयोग किया जिसका दण्ड स्थाई यातना है।

The Ummah Technology Mission

وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٦﴾

को अल्लाह ने मार्गदर्शन प्रदान किया तथा कुछ पर कुमार्गता सिद्ध हो गई।[1] अब तुम स्वयं धरती पर भ्रमण करके देख लो कि झुठलाने वालों का फल कैसा हुआ।

اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٧﴾

(३७) यद्यपि आप उनके मार्गदर्शन के इच्छुक रहे हैं किन्तु अल्लाह (तआला) उसे मार्ग-दर्शन नहीं देता है, जिसे भटका दे तथा न कोई उनका सहायक होता है।[2]

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ ؕ بَلٰى وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٨﴾

(३८) तथा वे लोग बहुत बड़ी-बड़ी सौगन्ध खाकर कहते हैं कि मरे हुए लोगों को अल्लाह (तआला) जीवित नहीं करेगा।[3] क्यों नहीं, (अवश्य जीवित करेगा) यह तो उसका सत्य अनिवार्य वचन है, परन्तु अधिकतर लोग अज्ञानता कर रहे हैं।[4]

---

[1]वर्णित शंका के समाधान के लिए और अधिक फ़रमाया कि हमने प्रत्येक समुदाय में रसूल भेजा तथा यह संदेश उनके द्वारा पहुँचाया कि मात्र एक अल्लाह की इबादत करो। परन्तु जिन पर भटकाव सिद्ध हो चुका था उन्होंने इसकी चिन्ता ही नहीं की।

[2]इसमें अल्लाह फ़रमा रहा है : हे पैग़म्बर ! तेरी इच्छा तो यही है कि यह सभी मार्गदर्शन का मार्ग अपना लें, परन्तु अल्लाह के नियमों के अधीन जो भटक गये हैं, उनको प्रकाश के मार्ग पर तू नहीं ला सकता। यह तो अपने अन्तिम परिणाम को पहुँचकर रहेंगे, जहाँ इनकी कोई सहायता न करेगा।

[3]क्योंकि मिट्टी में मिल जाने के पश्चात उनका पुन: जीवित होना, उन्हें दूर तथा असम्भव प्रतीत होता था। इसीलिए रसूल जब मृत्यु के पश्चात पुन: खड़े होने की बात कहता है, तो उसे झुठलाते हैं, उसको स्वीकार नहीं करते, अपितु इसके विपरीत पुन: जीवित न होने पर सौगन्ध खाते हैं, सौगन्ध भी बलपूर्वक एवं पूर्ण विश्वास के साथ।

[4]इसी अज्ञानता तथा मूर्खता के कारण रसूलों का विरोध करते तथा झुठलाते हुए कुफ़्र के समुद्र में डूब जाते हैं।

The Ummah Technology Mission

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يَخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَاذِبِينَ ﴿٣٩﴾

(३९) इसलिए भी कि ये लोग जिस बात में मतभेद करते थे, उसे अल्लाह (तआला) साफ वर्णन कर दे तथा इसलिए भी कि काफ़िर स्वयं अपना झूठा होना जान लें।[1]

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَنْ نَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤٠﴾

(४०) हम जब किसी चीज़ की इच्छा करते हैं तो केवल हमारा इतना कह देना होता है कि हो जा बस वह हो जाती है।[2]

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ

(४१) तथा जिन लोगों ने अत्याचार सहन करने के पश्चात अल्लाह के मार्ग में देश छोड़ा है[3]

---

[1]यह प्रलय (क़ियामत) आने के कारण तथा रहस्य का वर्णन हो रहा है कि उस दिन अल्लाह तआला उन बातों पर निर्णय करेगा जिन पर ये लोग आपस में मतभेद रखते थे तथा सत्यवादियों तथा अल्लाह से डरने वालों कोअच्छा फल तथा अधर्मी तथा अवज्ञाकारियों को उनके कुकर्मों का दण्ड देगा। इसके अतिरिक्त उस दिन काफ़िरों पर भी यह स्पष्ट हो जायेगा कि वह क़ियामत के न आने पर जो सौगन्ध खाते थे, उनमें वे झूठे थे।

[2]अर्थात लोगों के विचार से प्रलय (क़ियामत) का होना कितना भी कठिन अथवा असम्भव हो परन्तु अल्लाह के लिए तो कोई कठिन नहीं, उसे धरती तथा आकाश ध्वस्त करने के लिए मज़दूरों, इंजीनियरों तथा मिस्त्रियों तथा अन्य संसाधन की आवश्यकता नहीं। उसे तो मात्र शब्द كُن (कुन) कहना है, उसके शब्द كُن (कुन) से पलक झपकते क़ियामत व्याप्त हो जायेगी।

﴿وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ﴾

"क़ियामत का मामला पलक झपकते अथवा उससे भी कम अवधि में घटित हो जायेगा।" (सूरः अल-नहल-७७)

[3]हिजरत का अर्थ है कि अल्लाह के धर्म के लिए, अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए अपना देश, अपने सम्बन्धी तथा मित्र एवं साथियों को छोड़कर ऐसे क्षेत्र में चला जाना, जहाँ सरलतापूर्वक अल्लाह का कार्य किया जा सके। इस आयत में मुहाजिरों की विशेषता का वर्णन किया गया है। यह आयत सामान्य है जो सभी मुहाजिरों को सम्मिलित करती है तथा यह भी सम्भव है कि यह उन मुहाजिरों के विषय में अवतरित हुई हो, जो अपने समुदाय के कष्ट देने से पीड़ित होकर इथोपिया स्थानान्तरित हो गये थे।

The Ummah Technology Mission

مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۭ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝

हम उन्हें सर्वश्रेष्ठ स्थान संसार में प्रदान करेंगे,[1] तथा आख़िरत का प्रतिफल तो बहुत बड़ा है,[2] काश ! लोग इससे परिचित होते |

الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰي رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝

(४२) वे जिन्होंने धैर्य धारण किया तथा अपने प्रभु पर ही भरोसा करते रहे |

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔـلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

(४३) तथा आप से पूर्व भी हम मानव पुरूष को ही भेजते रहे जिनकी ओर प्रकाशना (वह्यी) उतारा करते थे | यदि तुम नहीं जानते, तो विद्वानों से पूछ लो |[3]

उनकी संख्या स्त्रियों सहित एक सौ अथवा उससे अधिक थी, जिसमें आदरणीय उस्मान ग़नी तथा उनकी पत्नी, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पुत्री रूक़ैय्या भी थीं |

[1]इससे पवित्र जीविका एवं कुछ विद्वानों ने 'मदीना' तात्पर्य लिया है, जो मुसलमानों का केन्द्र बना | इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि दोनों कथनों में प्रतिकूलता नहीं है | इसलिए कि जिन लोगों ने अपने व्यापार तथा घर छोड़कर स्थानान्तरण (हिजरत) किया था अल्लाह तआला ने संसार में ही उनका बदला प्रदान कर दिया | 'पवित्र जीविका' भी दी तथा सम्पूर्ण अरब पर उन्हें प्रभुत्व तथा अधिकार प्रदान किया |

[2]आदरणीय उमर (رضي الله عنه) ने जब मुहाजिरों तथा अन्सार का भत्ता निर्धारित किया तो प्रत्येक मुहाजिर को भत्ता देते समय कहा "هذا ما وعدك الله في الدنيا" "यह वह है जिसका अल्लाह ने दुनिया में वचन दिया है |" "وما ادخر لك في الآخرة أفضل" "तथा परलोक में तेरे लिए जो भण्डार है, वह इससे कहीं श्रेष्ठ है |" (इब्ने कसीर)

[3] أهل الذكر से तात्पर्य अहले किताब हैं, जो पिछले नबियों तथा उनके इतिहास से परिचित थे | अर्थ यह है कि हमने जितने भी रसूल भेजे वे मनुष्य ही थे, इसीलिए मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी यदि मनुष्य हैं, तो यह कोई नई बात नहीं कि तुम उनके मनुष्यत्व के कारण उनकी रिसालत को अस्वीकार कर दो | यदिं संदेह हो तो तुम अहले किताब से पूछ लो कि पूर्व कालिक सभी नबी मनुष्य थे अथवा फ़रिश्ते, यदि वे फ़रिश्ते थे तो नि:संदेह अस्वीकार कर देना, यदि वे भी सभी मनुष्य थे तो फिर मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत का मात्र मनुष्य होने के कारण इंकार क्यों ?

The Ummah Technology Mission

بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ؕ وَاَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٤﴾

(४४) निशानियों तथा किताबों के साथ। यह स्मृति (पुस्तक) हमने आपकी ओर उतारी है कि लोगों की ओर जो उतारा गया है आप उसे स्पष्टरूप से वर्णन कर दें। शायद कि वे सोच विचार करें।

اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٤٥﴾

(४५) बुरा छल-कपट करने वाले क्या इस बात से निर्भय हो गये हैं कि अल्लाह (तआला) उन्हें धरती में धंसा दे अथवा उनके पास ऐसे स्थान से प्रकोप आ जाये, जहाँ का उन्हें संदेह एवं विचार भी न हो।

اَوْ يَاْخُذَهُمْ فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٤٦﴾

(४६) अथवा उनको चलते-फिरते पकड़ ले,[1] यह किसी प्रकार से भी अल्लाह (तआला) को विवश नहीं कर सकते।

اَوْ يَاْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ ؕ فَاِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤٧﴾

(४७) अथवा उन्हें डरा-धमका कर पकड़ ले।[2] फिर नि:संदेह तुम्हारा प्रभु अत्यन्त करूणाकारी तथा अत्यन्त कृपालु है।[3]

---

[1] इसके विभिन्न भावार्थ हो सकते हैं। जैसे १- जब तुम व्यापार तथा व्यवसाय के लिए यात्रा पर जाओ, २- जब तुम व्यवसाय की उन्नति के लिए विभिन्न साधन तथा रीति अपनाओ ३- अथवा, रात्रि को विश्राम करने के लिए बिस्तर पर जाओ। यह تقلب के विभिन्न भावार्थ हैं। अल्लाह तआला जब चाहे इन अवस्थाओं में भी तुम्हारी पकड़ कर सकता है।

[2] تخوف का यह अर्थ भी हो सकता है कि पूर्व से ही हृदय में यातना तथा पकड़ का भय हो। जिस प्रकार कई बार मनुष्य कोई महापाप कर बैठता है, तो भय का आभास करता है कि कहीं अल्लाह मेरी पकड़ न कर ले, अत: कई बार इस प्रकार भी पकड़ होती है।

[3] कि वह पापों पर तुरन्त पकड़ नहीं करता, बल्कि अवसर प्रदान करता है तथा उस अवसर से अधिकतर लोगों को तो क्षमा-याचना तथा विनती का सौभाग्य भी प्राप्त हो जाता है।

The Ummah Technology Mission

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لِّلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ ﴿٤٨﴾

(४८) क्या उन्होंने अल्लाह की सृष्टि में से किसी को भी नहीं देखा कि उसकी छाया दायें-बायें झुक-झुक कर अल्लाह (तआला) के समक्ष दण्डवत (सजदा) करती हैं तथा विवशता का प्रदर्शन करती हैं।[1]

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مِن دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٩﴾

(४९) तथा निःसंदेह आकाशों तथा धरती के सभी जीवधारी तथा सभी फ़रिश्ते अल्लाह (तआला) के समक्ष दण्डवत (सजदा) करते हैं तथा तनिक भी गर्व नहीं करते।

يَخَافُونَ رَبَّهُم مِّن فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٥٠﴾ ع

(५०) तथा अपने प्रभु से जो उनके ऊपर है भयभीत (कम्पित) रहते है[2] तथा जो आदेश मिल जाये उसके पालन करने में लगे रहते हैं।[3]

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۖ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ﴿٥١﴾

(५१) तथा अल्लाह (तआला) कह चुका है कि दो पूज्य न बनाओ। पूज्य तो वही मात्र अकेला है।[4] बस तुम सब केवल मेरा ही डर रखो।

---

[1]अल्लाह तआला की महिमा तथा महानता एवं उसकी गरिमा की महिमा का वर्णन है कि प्रत्येक वस्तु उसके समक्ष दण्डवत (सजदा) में तथा अधीन है, निर्जीव हों अथवा जीवधारी अथवा जिन्न एवं मनुष्य तथा फ़रिश्ते प्रत्येक वस्तु जिसकी छाया दाहिने बायें झुकती है, तो वह सुबह शाम अपनी छाया के सहित अल्लाह को दण्डवत करती है। इमाम मुजाहिद फ़रमाते हैं कि जब सूर्य ढलता है, तो प्रत्येक वस्तु अल्लाह के समक्ष दण्डवत हो जाती है।

[2]अल्लाह के भय से कंपित तथा भयभीत रहती है।

[3]अल्लाह के आदेशों की अवहेलना नहीं करते, बल्कि जिसका आदेश दिया जाता है पालन करते हैं, जिससे मना किया जाता है, उससे दूर रहते हैं।

[4]क्योंकि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य है ही नहीं। यदि आकाश तथा धरती के दो अथवा अन्य ईष्टदेव होते तो संसार की यह सारी व्यवस्था स्थिर रह ही नहीं सकती थी, बिगाड़ तथा विनाश का शिकार हो चुकी होती। ﴿لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا﴾ (सूरः अल-अंबिया-२२) इसलिए ثنويت (दो अस्तित्वों) का विश्वास जिसके (अग्निपूजक) मानने

The Usman Technology Mission

وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاصِبًا ؕ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ﴿۵۲﴾

(५२) तथा आकाशों में तथा धरती में जो कुछ है, सब उसी का है तथा उसी की इबादत सदैव अनिवार्य है, [1] क्या फिर भी तुम उस के अतिरिक्त अन्यों से डरते हो ?

وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْـَٔرُوْنَ ﴿۵۳﴾

(५३) तथा तुम्हारे पास जितनी भी सामग्री हैं, सब उसी की प्रदान की हुई हैं, [2] अब भी जब तुम्हें कोई कठिनाई आ जाये, तो उसी की ओर प्रार्थना तथा विनती करते हो।[3]

ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿۵۴﴾

(५४) तथा जहाँ उसने वह कठिनाई तुम से दूर कर दी, तुम में से कुछ लोग अपने प्रभु के साथ साझीदार बनाने लगते हैं।

वाले रहे हैं अथवा تعدد الٰہ (अनेकश्वरवादी) का विश्वास, जिसके अधिकतर मूर्तिपूजक मानने वाले रहे हैं यह सब असत्य हैं। जब सृष्टि का स्रष्टा एक है तथा वही बिना किसी की साझेदारी के सृष्टि को व्यवस्थित कर रहा है, तो पूज्य भी केवल वही है, जो अकेला है। दो अथवा दो से अधिक नहीं हैं।

[1]उसी की उपासना (इबादत) तथा आज्ञापालन स्थाई तथा अनिवार्य है। واصبٌ का अर्थ 'सदैव' के हैं। "उनके लिए यातना है सदैव के लिए" (सूरः *अल-साफ़्फ़ात*-९) तथा इसका वही अर्थ है जो अन्य स्थान पर वर्णन किया गया है।

﴿ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ۞ اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ﴾

"तो अल्लाह की इबादत करो, उसी के लिए दीन को विशेष करते हुए, सावधान ! उसी के लिए विशेषरूप से भक्ति है।" (सूरः *अल-ज़ुमर*-२,३)

[2]जब सभी सुख सुविधा अल्लाह ही देता है तो फिर उपासना (इबादत) अन्य की क्यों ?

[3]इसका अर्थ यह है कि अल्लाह के एक होने का विश्वास हृदय की गहराईयों में स्थित है, जो उस समय उभर कर सामने आ जाता है, जब प्रत्येक ओर से निराशा के बादल गहरे हो जाते हैं।

The Ummah Technology Mission

لِيَكْفُرُوا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ۟ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾

(५५) कि हमारे प्रदान की हुई अनुकम्पाओं पर कृतघ्नता व्यक्त करें।[1] (ठीक है) कुछ लाभ उठा लो अन्त में तुम्हें ज्ञात हो ही जायेगा।[2]

وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ؕ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٦﴾

(५६) तथा जिसे जानते बूझते भी नहीं, उस का भाग हमारी प्रदान की हुई वस्तुओं में निर्धारित करते हैं।[3] अल्लाह की सौगन्ध! तुम्हारे इस आक्षेप का प्रश्न तुमसे अवश्य ही किया जायेगा।[4]

---

[1]परन्तु मनुष्य भी कितना कृतघ्न है कि कष्ट (रोग, दरिद्रता तथा हानि आदि) के दूर होते ही, वह पुनः प्रभु के साथ शिर्क करने लगता है।

[2]यह उसी प्रकार ही है जैसे इससे पूर्व फ़रमाया था।

﴿قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ﴾

"क्षणिक जीवन में लाभ उठा लो, अन्ततः तुम्हारा ठिकाना नरक है।" (सूरः *इब्राहीम*-३०)

[3]अर्थात जिनको ये हितकारक संकटहारी तथा पूज्य समझते हैं वे पत्थर की मूर्तियाँ हैं, जिनकी वास्तविकता का उन्हें ज्ञान ही नहीं। उसी प्रकार कब्रों के गड़े हुए लोगों की वास्तविकता भी कोई नहीं जानता कि उनके साथ वहाँ क्या घटित हो रहा है? वे अल्लाह के प्रिय की सूची में हैं अथवा किसी अन्य में? इन बातों को कोई नहीं जानता परन्तु इन अत्याचारी लोगों ने उनकी वास्तविकता से अनभिज्ञ होते हुए भी, उन्हें अल्लाह का साझीदार बना रखा है। तथा अल्लाह के दिये हुए माल में से उनके लिए भी (भोग-प्रसाद के रूप में) भाग निर्धारित करते हैं, बल्कि अल्लाह का भाग रह जाये तो कोई चिन्ता नहीं, उनके भाग में कमी नहीं करते। जैसाकि सूरः *अल अनआम*-१३६ में वर्णन किया गया है।

[4]तुम जो अल्लाह पर झूठ गढ़ते हो कि उसका साझी अथवा उसके कई साझीदार हैं, उसके विषय में क़ियामत के दिन तुम से पूछा जायेगा।

The Ummah Technology Mission

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٥٧﴾

(५७) तथा वह पवित्र अल्लाह (तआला) के लिए लड़कियाँ निर्धारित करते हैं तथा अपने लिए वह जो अपनी इच्छानुसार हो।[1]

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٥٨﴾

(५८) तथा उनमें से जब किसी को लड़की होने की सूचना दी जाये तो उसका मुख काला हो जाता है तथा दिल ही दिल में घुटने लगता है।

يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٥٩﴾

(५९) इस बुरी सूचना के कारण लोगों से छिपा-छिपा फिरता है। सोचता है क्या इस अपमान को लिये ही रहे अथवा इसे मिट्टी में दबा दे। आह! क्या ही बुरे निर्णय करते हैं?[2]

---

[1]अरब के कुछ क़बीले (ख़ुजाआ तथा किनाना) फ़रिश्तों की पूजा करते थे तथा कहते थे कि ये अल्लाह की पुत्रियाँ हैं, अर्थात एक अत्याचार तो यह किया कि अल्लाह की संतान बनायी, जबकि उसकी कोई संतान नहीं। फिर संतान भी स्त्रीलिंग, जिसे वे अपने लिए अप्रिय समझते अल्लाह के लिए वह पसन्द किया। जैसाकि अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ۞ تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى﴾

"क्या तुम्हारे लिए पुत्र तथा उसके लिए पुत्रियाँ ? यह तो बड़ा भद्दा बटवारा है।" (सूरः अल-नज्म-२१,२२)

यहाँ यह कहा कि तुम तो यह कामना करते हो कि पुत्र हों कोई पुत्री न हो।

[2]अर्थात पुत्री का जन्म सुनकर उनकी यह दशा होती है जो वर्णित हुई, तथा अल्लाह के लिए पुत्रियाँ चयन करते हैं। कैसा अनुचित निर्णय है ? यहाँ यह न समझा जाये कि अल्लाह तआला भी लड़कों की अपेक्षा लड़कियों को तुच्छ समझता है। नहीं, अल्लाह के समक्ष लड़का-लड़की में कोई अन्तर नहीं। न लिंग के आधार पर किसी की हीनता तथा श्रेष्ठता का विचार उसके यहाँ है। यहाँ तो केवल अरबों के इस अन्याय तथा पूर्णरूप से अनुचित व्यवहार का स्पष्टीकरण उद्देश्य है, जो उन्होंने अल्लाह के साथ किया है। जबकि अल्लाह की महिमा तथा श्रेष्ठता को वे भी स्वीकार करते थे। जिसका तर्कपूर्ण परिणाम यह था कि जो वस्तु ये अपने लिए प्रिय नहीं रखते, अल्लाह के लिए भी वह निर्धारित न करते, परन्तु उन्होंने इसके विपरीत किया। यहाँ केवल उसी अन्याय का स्पष्टीकरण किया गया है।

The Ummah Technology Mission

لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٦٠

(६०) परलोक (आख़िरत) पर ईमान न रखने वालों का ही बुरा उदाहरण है,[1] अल्लाह के लिए तो अति उच्च महिमा है, वह बड़ा प्रभावशाली तथा विवेकी है।[2]

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ

(६१) तथा यदि लोगों के पाप पर अल्लाह उनकी पकड़ करता, तो धरती पर एक भी जीव न बचता,[3] परन्तु वह तो उन्हें एक निर्धारित समय तक ढील देता है,[4] फिर जब उनका

---

[1]अर्थात काफ़िरों के जो घोर कुकर्म वर्णन किये गये हैं उन्हीं के लिए बुरा उदाहरण अथवा दुर्गुण है अर्थात अज्ञान तथा कुफ़्र का दुर्गुण। अथवा यह अर्थ है कि अल्लाह की पत्नी तथा संतान जो ये निर्धारित करते हैं, यह बुरा उदाहरण है, जो आख़िरत को नकारने वाले अल्लाह के लिए वर्णन करते हैं।

[2]अर्थात उसका प्रत्येक गुण सृष्टि की तुलना में श्रेष्ठतम तथा महान है। जैसे उसका ज्ञान विस्तृत है, उसका सामर्थ्य असीम है, उसकी दया तथा प्रदान अनुपम है। و على هـذا القياس. अथवा यह अर्थ है कि वह सामर्थ्यवान है, स्रष्टा है, जीविका प्रदान करने वाला है तथा देखने सुनने वाला है आदि (फ़तहुल क़दीर)। अथवा बुरा उदाहरण का अर्थ कमी, आलस्य है तथा مثل أعلى का अर्थ पूर्ण सामर्थ्य, प्रत्येक रूप से अल्लाह के लिए है। (इब्ने कसीर)

[3]यह उसका धैर्य है तथा उसके विवेक एवं ज्ञान का परिणाम है कि वह अपनी अवहेलना देखता है परन्तु फिर भी वह अपनी जीविका प्रदान करना न रोकता है तथा न तुरन्त पकड़ करता है। यदि वह कुकर्म करने के साथ ही पकड़ करना प्रारम्भ कर दे तो अत्याचार, पाप तथा कुफ़्र एवं शिर्क इतने अधिक हैं कि धरती पर कोई जीवधारी शेष न रहे, क्योंकि जब बुराई चारों ओर फैल जाये तो फिर प्रकोप भी चारों ओर होगा जिससे सत्कर्मी भी नाश कर दिये जाते हैं। परन्तु परलोक में अल्लाह की ओर से वे (सत्कर्मी) सम्मानित होंगे, जैसाकि हदीस में स्पष्टीकरण आता है। (देखिये सहीह बुख़ारी संख्या २११८ तथा मुस्लिम संख्या २२०६ तथा २२१०)

[4]यह उस विवेक का वर्णन है जिसकें अधीन वह एक निर्धारित समय तक अवसर देता है ताकि उनके लिए कोई तर्क शेष न रहे। दूसरे, उनकी संतानों में से कुछ ईमानदार निकल आयें।

The Ummah Technology Mission

لَا يَسْتَأْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٦١﴾

वह समय आ जाता है, तो वह एक क्षण पीछे नहीं रह सकते तथा न आगे बढ़ सकते हैं।

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ؕ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٢﴾

(६२) तथा वह अपने लिए जो अप्रिय समझते हैं, उसे अल्लाह के लिए सिद्ध करते हैं,[1] तथा उनकी जीभें असत्य बातों का वर्णन करती हैं कि उनके लिए श्रेष्ठता है।[2] (नहीं-नहीं) वास्तव में उनके लिए अग्नि है तथा ये नरकवासियों के अग्रणी हैं।[3]

تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰۤى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ

(६३) अल्लाह की सौगन्ध! हमने तुझसे पूर्व के समुदायों की ओर भी (अपने रसूल) भेजे परन्तु शैतान ने उनके कुकर्मों को उनकी दृष्टि में उचित ठहराया,[4] वह शैतान आज भी

---

[1]अर्थात पुत्रियाँ, यह पुनरावृत्ति विशेष बल के लिए है।

[2]यह उनके दूसरे दुर्गुण का वर्णन है कि वे अल्लाह के साथ अन्याय का मामला करते हैं, परन्तु उनके मुख ये झूठ बोलते हैं कि उनका अन्त अच्छा है, उनके लिए भलाईयाँ हैं तथा दुनिया - की भाँति उनकी आख़िरत भी अच्छी होगी। जब कि ऐसा नहीं, न यह सम्भव ही है।

[3]अर्थात नि:संदेह उनका अन्त अच्छा नहीं है तथा वह है नरक की अग्नि। जिसमें वे नरक में जाने वालों का नेतृत्व करेंगे। فرط का यही अर्थ हदीस से भी सिद्ध है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : «أَنَا فَرَطُكُمْ عَلَى الْحَوْضِ». (सहीह बुखारी संख्या ६५८४ तथा मुस्लिम संख्या १७९३) "मैं हौज़े कौसर पर तुम्हारा नेतृत्व करूँगा।" एक अन्य अर्थ مُفرطون का यह किया गया है कि उन्हें नरक में डालकर भूला दिया जायेगा।

[4]जिसके कारण उन्होंने भी रसूलों को झुठलाया जिस प्रकार हे पैग़म्बर मक्का के कुरैश तुझे झुठला रहे हैं।

The Ummah Technology Mission

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾

उनका मित्र बना हुआ है।[1] तथा उनके लिए दुखदायी यातना है।

وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾

(६४) इस किताब को हमने आप पर इसलिए उतारा है कि आप हर उस बात को व्यक्त कर दें जिसमें वे मतभेद कर रहे हैं।[2] और यह ईमानवालों के लिए मार्गदर्शन तथा कृपा है।

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾

(६५) तथा अल्लाह (तआला) आकाशों से वर्षा करके उससे धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवित कर देता है। निःसंदेह इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं, जो सुनें।

وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٦٦﴾

(६६) तथा तुम्हारे लिए तो[3] पशुओं में भी बड़ी शिक्षा है कि हम तुम्हें उसके पेट में जो कुछ है, उसी में से गोबर तथा रक्त के मध्य से शुद्ध दूध पिलाते हैं, जो पीने वालों के लिए सहजता से पचता है।[4]

---

[1] اليوم से तात्पर्य सांसारिक समय है जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है, अथवा इससे तात्पर्य आख़िरत है कि वहाँ भी यह इनका साथी होगा। अथवा وليهم में هم का संकेत मक्का के काफ़िरों की ओर है। अथवा यही शैतान जिसने पिछले समुदायों को भटकाया, आज वह इन मक्का के काफ़िरों का मित्र है तथा उन्हें रिसालत को झुठलाने के लिए बाध्य कर रहा है।

[2] इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह पदवी वर्णन की जा रही है कि आस्था तथा धार्मिक नियमों के सम्बन्ध में यहूदी तथा इसाई के मध्य, उसी प्रकार अंधविश्वासियों तथा मूर्तिपूजकों के मध्य तथा अन्य धर्मों के अनुयायियों के मध्य जो आपसी मतभेद हैं, उनका विस्तृत वर्णन इस प्रकार करें कि सत्य तथा असत्य स्पष्ट हो जाये ताकि लोग सत्य को अपना कर असत्य से बचें।

[3] اَنعام (चौपाये, पशु) से ऊँट, गाय, बकरी (तथा भेड़ एवं दुम्बा) तात्पर्य हैं।

[4] यह चौपाये जो कुछ खाते हैं, आमाशय में जाता है, उसी भोजन से दूध, रक्त, गोबर तथा मूत्र बनता है। रक्त नसों में तथा दूध थनों में, उसी प्रकार गोबर तथा मूत्र अपने

The Ummah Technology Mission

وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا حَسَنًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾

(६७) तथा खजूर एवं अंगूर के वृक्षों के फलों से तुम मदिरा बना लेते हो तथा उत्तम जीविका सामग्री भी। जो लोग बुद्धि रखते हैं, उनके लिए तो इसमें भी बहुत बड़ी निशानी है।

وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِيْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ﴿٦٨﴾

(६८) तथा आपके प्रभु ने मधुमक्खी को यह समझ दिया [1] कि पर्वतों में, वृक्षों में तथा लोगों की बनायी हुई ऊँची-ऊँची टट्टियों में अपने घर (छत्ते) बना।

ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِيْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ

(६९) तथा हर प्रकार के फल खा, तथा अपने (पालनहार) के सरल मार्गों पर चलती फिरती रह, उनके पेट से (पीने वाला पदार्थ) पेयद्रव निकलता है,[2] जिसके रंग भिन्न हैं[3] तथा जिसमें लोगों के लिए स्वास्थ्यवर्धक है,[4]

अपने निकास स्थान में स्थानान्तरित हो जाता है तथा दूध में न तो रक्त का रंग होता है तथा न गोबर एवं मूत्र की दुर्गन्ध। सफेद, स्वच्छ दूध बाहर आता है, जो अत्यन्त सरलता से गले के नीचे उतर जाता है।

[1]प्रकाशना (वह्यी) से तात्पर्य वह बोध तथा वह समझ-बूझ है, जो अल्लाह तआला ने अपनी स्वाभाविक आवश्यकता की पूर्ति के लिए जीवों को प्रदान की है।

[2]मधुमक्खी प्रथम पर्वतों पर, वृक्षों पर, तथा ऊँचे भवनों में अपना छत्ता इस प्रकार बनाती है कि उसमें कोई छिद्र अथवा दरार नहीं रहता। फिर वह बाग़ों, वनों घाटियों एवं पर्वतों में घूमती फिरती है तथा हर प्रकार के फलों का रस अपने पेट में एकत्रित करती है तथा फिर उन्हीं मार्गों से जहाँ से गुज़रती है वापस लौटती है तथा अपने छत्ते में आकर बैठ जाती है, जहाँ उसके मुख से मधु निकलता है, जिसे क़ुरआन ने पेय द्रव कहा है अर्थात स्वास्थवर्धक पेय द्रव।

[3]कोई लाल, कोई सफेद, कोई नीला तथा कोई बंसती रंग का। जिस प्रकार फलों तथा खेतों से वह भोजन प्राप्त करती हैं, उसी प्रकार उसका रंग तथा स्वाद भी भिन्न होता है।

[4] شفآء जाति वाचक संज्ञा महत्व दिखाने के लिए है अर्थात बहुत से रोगों के लिए मधु स्वास्थवर्धक है। यह नहीं कि प्रत्येक रोग का इलाज है। वैद्यों तथा चिकित्सकों ने भी

The Ummah Technology Mission

لِّلنَّاسِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٦٩﴾

चिन्तन तथा विचार करने वालों के लिए इसमें भी बहुत बड़ी निशानी (लक्षण) है।

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّاكُمْ ۚ وَمِنكُم مَّن يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٧٠﴾

(७०) तथा अल्लाह (तआला) ने ही तुम सबको जन्म दिया है, वही फिर तुम्हें मृत्यु देगा, तथा तुममें ऐसे भी हैं जो बहुत बुरी आयु की ओर लौटाये जाते हैं कि बहुत कुछ जानने के पश्चात भी न जानें।[1] नि:संदेह अल्लाह (तआला) जानने वाला तथा सामर्थ्यवान है।

وَاللَّهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِينَ فُضِّلُوا

(७१) तथा अल्लाह (तआला) ने ही तुम में से एक को दूसरे पर जीविका में अधिकता प्रदान कर रखी है, परन्तु जिन्हें अधिक प्रदान किया

मधु को स्वास्थवर्धक प्राकृतिक द्रव के रूप में माना है। परन्तु विशेष रोगों के लिए न कि प्रत्येक रोग के लिए। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिष्ठान एवं मधु रूचिकर थे। (सहीह बुख़ारी किताबुल अशरिब: बाबु शराबिल हलवाए वल असले) एक अन्य कथन में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तीन वस्तुओं में स्वास्थ है सिंघी लगवाने में, मधु के पीने में तथा आग से दागने में। परन्तु मैं अपने अनुयायियों को आग से दागने से मना करता हूँ। (सहीह बुख़ारी बाबुद दवाए विल असले)। हदीस में एक घटना का वर्णन मिलता है। उदरामय (दस्त) के रोग में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मधु प्रयोग करने की सलाह दी जिससे उदरामय बढ़ गया, आकर बतलाया गया, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पुन: मधु पीने की सलाह दी जिससे और अधिक उदरामय आने लगा तथा घर वालों ने समझा कि शायद रोग बढ़ गया है। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीसरी बार भी फ़रमाया अल्लाह सच्चा है तथा तेरे भाई का पेट झूठा है। जा, तथा उसको मधु पिला। अत: तीसरी बार में वह पूर्ण स्वस्थ हो गया'। (सहीह बुख़ारी बाबु दवाइल मबतून तथा सहीह मुस्लिम किताबुस सलाम)

[1]जब मनुष्य प्राकृतिक आयु से बढ़ जाता है, तो फिर उसकी बुद्धि भी कमजोर हो जाती है तथा कई बार बुद्धि समाप्त हो जाती है तथा वह बच्चे के समान हो जाता है। यही वृद्धावस्था है जिससे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शरण माँगी है।

The Quran Technology Mission

بِرَآدِّيْ رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ؕ
اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٧١﴾

गया है, वह अपनी जीविका को अपने अधीन दास को नहीं देते कि वह और ये उसमें समान हो जायें,[1] तो क्या ये लोग अल्लाह के उपकारों को अस्वीकार कर रहे हैं ?[2]

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ
اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ
اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً
وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ
اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ
اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٢﴾

(७२) तथा अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए तुममें से ही तुम्हारी पत्नियाँ पैदा कीं तथा तुम्हारी पत्नियों से तुम्हारे पुत्र तथा पौत्र पैदा किये तथा तुम्हें अच्छी-अच्छी वस्तुऐं खाने के लिए प्रदान कीं । तो क्या फिर भी लोग असत्य पर ईमान लायेंगे ?[3] तथा अल्लाह तआला के उपहारों की कृतघ्नता करेंगे ?

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا
يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٧٣﴾

(७३) तथा वे अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त उनकी पूजा करते हैं, जो आकाशों तथा धरती से उन्हें कुछ भी तो जीवन साधन नहीं दे सकते तथा न कुछ शक्ति रखते हैं ।[4]

---

[1]अर्थात जब तुम अपने दासों को इतना धन तथा सांसारिक सुख साधन नहीं देते कि वे तुम्हारे समान हो जायें तो अल्लाह तआला कब प्रिय समझेगा कि तुम कुछ लोगों को, जो अल्लाह के भक्त तथा दास हैं अल्लाह के साझीदार तथा समान बना दो ।

[2]कि अल्लाह के दिये हुए धन में से अन्य देवताओं का भोग-प्रसाद निकालते हो तथा इस प्रकार उसकी अनुकम्पा की कृतघ्नता करते हो ।

[3]अर्थात अल्लाह तआला अपने इन उपहारों का वर्णन करके जो आयत में वर्णित हैं, प्रश्न कर रहा है कि सब कुछ देने वाला तो अल्लाह है, परन्तु ये उसे छोड़कर अन्यों की पूजा करते हैं तथा अन्यों का कहना मानते हैं ।

[4]अर्थात अल्लाह को छोड़कर पूजा भी ऐसे लोगों की करते हैं जिनके पास किसी बात का अधिकार नहीं है ।

The Ummah Technology Mission

فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧٤﴾

(७४) तो अल्लाह (तआला) के लिए समतुल्य न बनाओ,[1] अल्लाह (तआला) भलीभाँति जानता है तथा तुम नहीं जानते।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ؕ هَلْ يَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾

(७५) अल्लाह (तआला) एक उदाहरण का वर्णन कर रहा है कि एक दास है अन्य के स्वामित्व का, जो किसी बात का अधिकार नहीं रखता तथा एक अन्य व्यक्ति है जिसे हमने अपने पास से समुचित धन दे रखा है, जिसमें से वह छुपे तथा खुले रूप से ख़र्च करता है। क्या ये सब समान हो सकते हैं ?[2] अल्लाह (तआला)

---

[1]जिस प्रकार से मुशरेकीन उदाहरण देते हैं कि जिस प्रकार राजा से मिलना हो अथवा उससे कोई काम हो तो कोई सीधे राजा से नहीं सम्पर्क स्थापित कर सकता, उसे सर्वप्रथम राजा के निकटवर्ती से सम्बन्ध स्थापित करना पड़ता है। तब जाकर कहीं उसका राजा से सम्पर्क होता है। उसी प्रकार अल्लाह का मान तथा महिमा अपरमपार है। उस तक पहुँचने के लिए हम इन देवताओं को साधन बनाते हैं अथवा महात्मा का माध्यम पकड़ते हैं। अल्लाह (तआला) ने फ़रमाया कि तुम अल्लाह को अपने जैसा न समझो न इस प्रकार के उदाहरण दो। इसलिए कि वह तो एक है उसकी कोई उपमा ही नहीं है। फिर राजा न छिपी बातों को जानता है न अन्तर्यामी, न सब कुछ देखने वाला तथा न भली प्रकार सुनने वाला कि वह बिना किसी साधन के जनता की दशा तथा आवश्यकताओं को जान जाये। जबकि अल्लाह तआला प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष, स्पष्ट-अस्पष्ट, दर्शी-अदर्शी हर प्रकार की वस्तु का ज्ञान रखने वाला है तथा प्रत्येक की विनती सुनने का सामर्थ्य रखता है। भला एक मनुष्य राजा की अल्लाह के साथ क्या तुलना तथा उदाहरण ?

[2]कुछ विद्वान कहते हैं कि यह दास तथा स्वतन्त्र का उदाहरण है कि प्रथम व्यक्ति दास तथा द्वितीय स्वतन्त्र है। ये दोनों समान नहीं हो सकते। कुछ कहते हैं कि यह ईमान वालों तथा काफ़िरों की तुलना है। प्रथम काफ़िर तथा द्वितीय ईमान वाला है। ये समान नहीं। कुछ कहते हैं कि यह अल्लाह तआला तथा झूठे देवताओं की तुलना है। प्रथम से तात्पर्य झूठे देवता तथा द्वितीय से अल्लाह है। ये दोनों समान नहीं हो सकते। अर्थ यही है कि एक दास तथा स्वतन्त्र, इसके उपरान्त कि दोनों मनुष्य हैं, दोनों अल्लाह की सृष्टि हैं तथा अन्य भी बहुत-सी बातें दोनों के मध्य समान हैं इसके उपरान्त मान, सम्मान मर्यादा तथा आदर में दोनों को समान नहीं समझते। तो

The Ummah Technology Mission

ही के लिए सारी प्रशंसा है, बल्कि उनमें के अधिकतर नहीं जानते।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٦﴾

(७६) तथा अल्लाह (तआला) एक अन्य उदाहरण वर्णन करता है[1] दो व्यक्तियों की जिन में से एक गूँगा है तथा किसी वस्तु पर अधिकार नहीं रखता, बल्कि वह अपने स्वामी पर बोझ है, कहीं भी उसे भेजे वह कोई भलाई नहीं लाता, क्या यह तथा वह जो न्याय का आदेश देता है[2] तथा है भी सीधे मार्ग पर, समान हो सकते हैं ?

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ

(७७) तथा आकाशों तथा धरती का परोक्ष केवल अल्लाह ही को ज्ञात है।[3] तथा क़ियामत की बात तो ऐसी ही है, जैसे आँख का झपकना, बल्कि इससे भी अधिक निकट। नि:संदेह

अल्लाह तआला तथा पत्थर की एक मूर्ति अथवा एक क़ब्र की ढेरी, ये दोनों किस प्रकार समान हो सकते हैं ?

[1]यह एक अन्य उदाहरण है जो पहले से अधिक स्पष्ट है।

[2]तथा हर कार्य करने का सामर्थ्य रखता है क्योंकि हर बात बोलता तथा समझता है तथा है भी सीधे मार्ग पर अर्थात प्राकृतिक धर्म तथा सुचरित्र पर। अर्थात अधिकता एवं कमी से पवित्र। जिस प्रकार से ये दोनों समान नहीं, उसी प्रकार अल्लाह तआला तथा वे वस्तुएँ जिनको लोग अल्लाह का साझीदार ठहराते हैं, समान नहीं हो सकते।

[3]अर्थात आकाश तथा धरती में जो वस्तुएँ अप्रत्यक्ष हैं तथा वे असंख्य हैं तथा उन्हीं में क़ियामत का ज्ञान है उनका ज्ञान अल्लाह के अतिरिक्त किसी को नहीं। इसलिए इबादत के योग्य एक अल्लाह है न कि वे मूर्तियाँ अथवा मृत धर्मात्मा व्यक्ति जिनको किसी वस्तु का ज्ञान नहीं न वे किसी को लाभ-हानि पहुँचाने का सामर्थ्य रखते हैं।

The Umman Technology Mission

अल्लाह (तआला) हर चीज़ पर सामर्थ्य रखने वाला है।[1]

شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٧٧﴾

(७८) तथा अल्लाह (तआला) ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भ से निकाला है कि उस समय तुम कुछ भी नहीं जानते थे,[2] उसी ने तुम्हारे कान तथा आँखें तथा दिल बनाये[3] कि तुम कृतज्ञता व्यक्त कर सको।[4]

وَاللَّهُ أَخْرَجَكُم مِّن بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُونَ شَيْئًا ۙ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٧٨﴾

---

[1]अर्थात उसके सामर्थ्य का प्रमाण है कि यह विस्तृत विशाल सृष्टि उसके आदेश से पलक झपकने में बल्कि उससे भी कम समय में प्रलय तथा समाप्त हो जायेगी। यह बात अतिश्योक्ति के रूप में नहीं बल्कि यह एक वास्तविक घटना है क्योंकि उसका सामर्थ्य असीम है जिसका हम अनुमान भी नहीं कर सकते, उसके एक शब्द कुन كن से वह सब कुछ हो जाता है जो वह चाहता है। तो यह क़ियामत भी उसके كن कुन कहने से हो जायेगी।

[2] شَيْئًا जाति वाचक है, तुम कुछ नहीं जानते थे, न शुभ-अशुभ को, न लाभ हानि को।

[3]ताकि कानों द्वारा तुम स्वर सुनो, आँखों के द्वारा वस्तुओं को देखो तथा हृदय अर्थात बुद्धि (क्योंकि बुद्धि का केन्द्र हृदय है) दी, जिससे वस्तुओं के मध्य अन्तर कर सको तथा लाभ-हानि पहचान सको, ज्यों-ज्यों मनुष्य बड़ा होता जाता है, उसकी शक्ति तथा बुद्धि में वृद्धि होती जाती है यहाँ तक कि जब मनुष्य समझ तथा वयस्क आयु को पहुँचता है, तो उसकी क्षमता भी शक्तिशाली हो जाती है, यहाँ तक कि फिर पूर्णता की सीमा को पहुँच जाती है।

[4]अर्थात यह क्षमता तथा शक्ति अल्लाह तआला ने इसलिए प्रदान की हैं कि मनुष्य इन अंगों-प्रत्यंगों को इस प्रकार प्रयोग करे कि जिससे अल्लाह तआला प्रसन्न हो जाये। उनसे अल्लाह की इबादत तथा आज्ञा पालन करे। यही अल्लाह के उन उपहारों की व्यवहारिक कृतज्ञता है। हदीस में आता है, मेरा भक्त जिन वस्तुओं के द्वारा मेरी निकटता प्राप्त करता है उनमें सबसे अधिक प्रिय वस्तुयें वह हैं जो मैंने उस पर अनिवार्य की हैं। इसके अतिरिक्त ऐच्छिक इबादत के द्वारा भी वह मेरी अधिक निकटता प्राप्त करने का प्रयत्न करता है यहाँ तक कि मैं उससे प्रेम करने लग जाता हूँ। तथा जब मैं उससे प्रेम करने लग जाता हूँ तो मैं उसका कान हो जाता हूँ जिससे वह सुनता है, आँख हो जाता हूँ जिससे वह देखता है, हाथ हो जाता हूँ जिससे वह पकड़ता है, पैर बन जाता हूँ जिससे वह चलता है तथा यदि वह मुझसे प्रश्न करता है तो मैं उसे प्रदान करता हूँ

The Ummah Technology Mission

اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٧٩﴾

(७९) क्या उन लोगों ने पक्षियों को नहीं देखा जो आज्ञा के अधीन बँधे हुए आकाश में हैं, जिन्हें अल्लाह के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं थामे हुए है।[1] नि:संदेह इसमें ईमान लाने वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٨٠﴾

(८०) तथा अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों में निवास स्थान बना दिया है, और उसी ने तुम्हारे लिये पशुओं की खालों के घर बना दिये हैं, जिन्हें तुम हल्का पाते होअपने प्रस्थान के दिन तथा अपने पड़ाव के दिन भी,[2] तथा उनके ऊन, रोयें तथा बालों से भी उसने बहुत-सी वस्तुएँ तथा एक निर्धारित समय तक के लिए लाभ की वस्तुएँ बना दीं।[3]

तथा मुझसे किसी वस्तु से मुक्ति चाहता है तो मैं उसे शरण देता हूँ। (सहीह बुखारी किताबुर रिक़ाक़ बाबुत तवाजुअ) इस हदीस का ग़लत भाव लेकर कुछ लोग महात्माओं को अल्लाह की शक्ति धारणकर्त्ता बना देते हैं। यद्यपि कि हदीस का स्पष्ट अर्थ यह है कि जब भक्त अपनी इबादत तथा आज्ञा पालन को शुद्ध रूप से अल्लाह ही के लिए कर लेता है,तो उसका प्रत्येक कार्य अल्लाह की प्रसन्नता के लिए होता है, अपने कानों से वही बात सुनता है तथा अपनी आँखों से वही वस्तु देखता है जिसकी अल्लाह ने आज्ञा प्रदान की है, जिस वस्तु को हाथ से पकड़ता है तथा पैरों से चलकर उस ओर जाता है, तो वह वही वस्तु होती है जिसको धार्मिक नियमों ने मान्यता दी हो। वह उनको अल्लाह की अवज्ञा के लिए प्रयोग नहीं करता केवल आज्ञा पालन में प्रयोग करता है।

[1]यह अल्लाह तआला ही है जिसने पक्षियों को इस प्रकार उड़ने की तथा हवाओं को उन्हें अपने ऊपर उठाये रखने की शक्ति प्रदान की।

[2]अर्थात चमड़े के खेमें जिन्हें तुम यात्राओं में सरलतापूर्वक उठाये फिरते हो, तथा जहाँ आवश्यक पड़ती है तान कर ऋतु की तीव्रता से अपने को सुरक्षित कर लेते हो।

[3] أصواف बहुवचन है صوفٌ का। भेड़ का ऊन। أوبارٌ बहुवचन है وبرٌ का, ऊँट के बाल, أشعار बहुवचन है شَعَرٌ का, भेड़ तथा बकरी के बाल। इनसे नाना प्रकार की वस्तुएँ

The Ummah Technology Mission

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾

(८१) तथा अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई वस्तुओं में से छाया बनायी है।[1] तथा उसी ने तुम्हारे लिए पर्वतों में गुफ़ा बनायी हैं तथा उसी ने तुम्हारे लिए वस्त्र बनाये हैं जो तुम्हें गर्मी से सुरक्षित रखें तथा ऐसे कवच भी जो तुम्हें युद्ध के समय काम आयें।[2] वह इसी प्रकार अपने पूरे-पूरे उपहार प्रदान कर रहा है कि तुम आज्ञा पालक बन जाओ।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٢﴾

(८२) फिर भी यदि ये मुख मोड़े रहें, तो आप पर केवल स्पष्ट रूप से पहुँचा देना है।

يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٣﴾

(८३) ये अल्लाह के उपहार जानते-पहचानते हुए भी उनको नकार रहे हैं, बल्कि उनमें से अधिकतर कृतघ्न हैं।[3]

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ

(८४) तथा जिस दिन हम हर समुदाय में से गवाह खड़ा करेंगे फिर काफ़िरों को न तो

बनती हैं, जिनसे मनुष्य को धन अर्जित होता है तथा उनसे एक समय तक लाभ भी उठाया जाता है।

[1]अर्थात वृक्ष जिनसे छाया प्राप्त करते हो।

[2]अर्थात ऊन तथा रूई के कुर्ते-कमीज़ तथा अन्य वस्त्र जो सामान्यत: पहनने में आते हैं तथा लोहे की कवच तथा मुकुट जो युद्ध में पहना जाता है।

[3]अर्थात इस बात को जानते तथा समझते हैं कि ये सारी सुख-सुविधायें उत्पन्न करने वाला तथा उनका प्रयोग में लाने की क्षमता प्रदान करने वाला केवल अल्लाह तआला ही है, फिर भी अल्लाह को नहीं मानते तथा अधिकतर कृतघ्न होते हैं। अर्थात अल्लाह को छोड़कर अन्यों की पूजा करते हैं।

The Ummah Technology Mission

يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٨٤﴾

आज्ञा दी जायेगी तथा न क्षमा-याचना करने को कहा जायेगा।[1]

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٨٥﴾

(८५) तथा जब ये अत्याचारी लोग यातना देख लेंगे, फिर न तो उनसे हल्की की जायेगी तथा न वे ढील दिये जायेंगे।[2]

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ شُرَكَاؤُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُو مِن دُونِكَ ۖ فَأَلْقَوْا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٨٦﴾

(८६) तथा जब मिश्रणवादी अपने भागीदारों को देख लेंगे, तो कहेंगे कि हे हमारे प्रभु! यही हमारे साझीदार हैं, जिन्हें हम तुझे छोड़कर पुकारा करते थे। फिर वे उनको उत्तर देंगे कि तुम पूरे ही झूठे हो।[3]

---

[1]अर्थात प्रत्येक अनुयायियों के गुट पर उस अनुयायी गुट का पैग़म्बर गवाही देगा कि उन्हें अल्लाह का संदेश पहुँचा दिया गया था। परन्तु उन्होंने उसकी चिन्ता नहीं की। इन काफ़िरों को कारण बताने का समय भी नहीं दिया जायेगा, क्योंकि वास्तव में उनके पास कोई कारण अथवा तर्क होगा ही नहीं। न उनसे पलटने तथा यातना दूर करने की माँग की जायेगी। क्योंकि इसकी आवश्यकता उस समय आती है जब किसी को अवसर देने का विकल्प हो। لا يُستعتبون के एक अन्य अर्थ यह किये गये हैं कि उन्हें अपने प्रभु को प्रसन्न करने का अवसर नहीं प्रदान किया जायेगा क्योंकि वह समय उनको संसार में दिया जा चुका है जो कर्मशाला है। परलोक तो कर्मशाला नहीं, वह तो प्रतिकार का घर है, वहाँ तो उस चीज़ का बदला मिलेगा, जो मनुष्य संसार से करके गया होगा, वहाँ कुछ करने का अवसर किसी को नहीं मिलेगा।

[2]हल्का न करने का अर्थ, मध्य में कोई विराम नहीं होगा, यातना निरन्तर बिना किसी प्रकार के विलम्ब के होगी। तथा न ढील ही दी जायेगी अर्थात उन्हें तुरन्त कसकर पकड़ लिया जायेगा तथा जंजीरों से जकड़कर नरक में फेंक दिया जायेगा अथवा क्षमा माँगने का अवसर भी प्रदान नहीं किया जायेगा। क्योंकि परलोक कर्मस्थली नहीं बदला प्राप्त करने का स्थान है।

[3]झूठे देवताओं की पूजा करने वाले अपने दावे में झूठे तो नहीं होंगे परन्तु वे देवी-देवता जिनको ये अल्लाह का साझीदार बताते थे, कहेंगे ये झूठे हैं। यह या तो साझीदारी को नकारना है अर्थात हमें अल्लाह तआला का साझीदार बनाने में ये झूठे हैं, भला अल्लाह का साझीदार कौन हो सकता है? अथवा इसलिए उन्हें झूठा बतायेंगे कि

The Ummah Technology Mission

وَ اَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَىِٕذِ ۨ السَّلَمَ وَ ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۸۷﴾

(८७) तथा उस दिन वे सब (विवश होकर) अल्लाह. के सामने आज्ञाकारी होना स्वीकार करेंगे तथा जो आक्षेप लगाया करते थे, वह सब उनसे खो जायेंगे।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ صَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ ﴿۸۸﴾

(८८) जिन्होनें अधर्म (कुफ़्र) किया तथा अल्लाह के मार्ग से रोका हम उन्हें प्रकोप पर प्रकोप बढ़ाते जायेंगे, [1] यह प्रतिकार होगा उनके उपद्रव उत्पन्न करने का।

वे उनकी पूजा से कदापि अनभिज्ञ थे। जिस प्रकार क़ुरआन करीम ने विभिन्न स्थानों पर इस बात का वर्णन किया है।

﴿ فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِن كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغَافِلِينَ ﴾

"हमारे तथा तुम्हारे मध्य अल्लाह ही पर्याप्त गवाह है कि हम इस बात से अनभिज्ञ थे कि तुम हमारी पूजा करते थे।" (सूरः यूनुस-२९)

अन्य स्थान पर भी देखिये सूरः *अल-अहक़ाफ़* आयत ५ तथा ६, सूरः *मरियम*-८१ तथा ८२, सूरः *अल-अनकबूत*-२५, सूरः *अल कहफ़*-५२ आदि। एक यह अर्थ भी हो सकता है कि हमने तुम्हें अपनी पूजा करने के लिए कभी नहीं कहा था, इसलिए तुम ही झूठे हो। यह देवी-देवता यदि पत्थर तथा वृक्ष होंगे तो अल्लाह तआला उन्हें बोलने की शक्ति प्रदान करेगा, जिन्नात तथा शैतान होंगे तो कोई शंका ही नहीं है तथा यदि अल्लाह के पुण्यात्मा व्यक्ति होंगे, जिस प्रकार से लोग पुण्यात्मा व्यक्तियों, महात्मा एवं अल्लाह की निकटता प्राप्त लोगों को पुकारते हैं, उनके नाम का भोग तथा प्रसाद चढ़ाते हैं तथा उनकी कब्रों पर जाकर उनका उसी प्रकार मान-सम्मान करते हैं जिस प्रकार ईष्टदेव का, भय तथा आशा के भाव के साथ किया जाता है। तो अल्लाह तआला उनको हश्र के मैदान में मुक्ति प्रदान कर देगा तथा उनकी पूजा करने वालों को नरक में डाल दिया जायेगा। जैसाकि आदरणीय ईसा से अल्लाह तआला का प्रश्न तथा उनका उत्तर सूरः *मायदः* के अन्त में वर्णित है।

[1]जिस प्रकार स्वर्ग में ईमान वालों के विभिन्न पद होंगे, उसी प्रकार नरक में काफ़िरों की यातना में भिन्नता होगी। जो भटके हुए होने के साथ अन्य लोगों को भटकाने का कारण बने होंगे, उनकी यातना अन्यों की अपेक्षा तीव्र होगी।

The Ummah Technology Mission

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ؕ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿٨٩﴾

(८९) तथा जिस दिन हम प्रत्येक समुदाय में उन्हीं में से उनके ऊपर गवाह खड़ा करेंगे तथा तुझे उन सब पर गवाह बनाकर लायेंगे।[1] तथा हमने तुझ पर यह किताब उतारी है जिसमें हर बात का स्वच्छ वर्णन है[2] तथा मार्गदर्शन एवं कृपा तथा शुभसूचना है मुसलमानों के लिए।

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٩٠﴾

(९०) नि:संदेह अल्लाह (तआला) न्याय का, भलाई का तथा निकट सम्बन्धियों के साथ सदव्यवहार करने का आदेश देता है तथा निर्लज्जता के कार्यों तथा दुराचारों एवं अत्याचार तथा क्रूरता से रोकता है।[3] वह

---

[1]अर्थात प्रत्येक नबी अपने अनुयायियों पर गवाही देगा तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायी नबियों के विषय में गवाही देंगे कि ये सच्चे हैं, उन्होंने नि:संदेह तेरा सन्देश पहुँचा दिया था। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: निसा)

[2]किताब से तात्पर्य अल्लाह की किताब तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की व्याख्या अर्थात हदीस है। अपनी हदीसों को भी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह की किताब कहा है। जैसाकि उसैफ़ की कथा आदि में है। (देखिये सहीह बुख़ारी किताबुल मुहारेबीन बाब हल यामुरू इमाम रजुलन फ़यज़रेबुल हद ग़ायबन अन्ह, किताबुस सलात बाबु ज़िक्रल बैये वश शेराअे अलल मिम्बर फ़िल मस्जिद) तथा प्रत्येक वस्तु का अर्थ है भूत तथा भविष्य की वे सूचनायें, जिनका ज्ञान आवश्यक एवं लाभदायक है। उसी प्रकार मान्य तथा निषेध का विवरण तथा वे बातें जिन का धर्म एवं संसार तथा व्यवसाय एवं जीविका के सम्बन्ध में मनुष्य बाध्य है। क़ुरआन तथा हदीस दोनों में यह सब बातें स्पष्ट कर दी गयी हैं।

[3]न्याय का साधारण अर्थ निष्पक्ष निर्णय करना है अर्थात अपनों-बेगानों सबके साथ न्याय किया जाये। किसी के साथ शत्रुता तथा बैर अथवा प्रेम तथा सम्बन्ध के कारण न्याय के नियमों का उल्लंघन न हो। एक अन्य अर्थ संतुलन है अर्थात किसी मामले में अधिकता अथवा कमी न की जाये। यहाँ तक कि धर्म के विषय में भी। क्योंकि धर्म में अत्यधिकता अतिश्योक्ति है, जो अत्यधिक निन्दनीय है तथा कमी, धर्म के कार्य में आलस्य है यह भी अप्रिय है। उपकार का एक अर्थ सदव्यवहार, क्षमा है। दूसरा अर्थ

The Ummah Technology Mission

स्वयं तुमको शिक्षा दे रहा है, ताकि तुम शिक्षा प्राप्त करो।

(९१) तथा अल्लाह से किये हुए वचन को पूरा करो, जबकि तुम आपस में वचन तथा अनुबन्ध करो तथा सौगन्धों को उनकी दृढ़ता के पश्चात मत तोड़ो, जबकि तुम अल्लाह (तआला)

وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ وَلَا تَنقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ

आधिक्य के है अर्थात देय अधिकार से अधिक देना अथवा अनिवार्य कर्म से अधिक कर्म करना। जैसे किसी की मज़दूरी सौ रूपये तय की है, परन्तु देते समय दस-बीस रूपये अधिक देना क्योंकि निर्धारित मज़दूरी सौ रूपये थी जो मज़दूर का वास्तविक अधिकार है तथा यह न्याय है। दस-बीस रूपये अधिक देना यह उपकार है। न्याय से समाज में शान्ति स्थापित होती है, परन्तु उपकार से अधिक प्रेमभाव तथा अपनापन उत्पन्न होता है। तथा अनिवार्य कर्म के पूर्णरूप से करने के उपरान्त ऐच्छिक कर्म का प्रबन्ध करना, आवश्यक कर्म से अधिक कर्म है जिससे अल्लाह तआला की विशेष निकटता प्राप्त होती है। उपकार का एक तीसरा अर्थ है पवित्र कर्म तथा इबादत की सुन्दरता। जिसको हदीस में «أَنْ تَعْبُدَ اللَّهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ». (अल्लाह की इबादत इस प्रकार करो कि जैसे तुम उसे देख रहे हो) कहा गया है إيتاء ذي القربى (सम्बन्धियों के अधिकारों को अदा करना अर्थात उनकी सहायता करना) इसे हदीस में सम्बन्ध का जोड़ना कहा गया है तथा इस पर अत्यधिक बल हदीस में दिया गया है। न्याय, तथा उपकार के वर्णन के पश्चात इसका अलग से वर्णन यह भी सम्बन्ध के जोड़ने के महत्व को स्पष्ट कर रहा है। فحشاء से तात्पर्य निर्लज्जता के कर्म हैं। आजकल निर्लज्जता इतना सामान्य हो गयी है कि उसका नाम संस्कृति, उन्नति तथा कला पड़ गया है अथवा "मनोरंजन" के नाम पर उसका औचित्य मान लिया गया है। परन्तु मात्र सुन्दर आवरण से किसी वस्तु की वास्तविकता नहीं बदली जा सकती, इसी प्रकार इस्लामी धार्मिक नियमों में बलात्कार तथा उसके साधन, नाच, गाने, नग्नता तथा फैशन को, स्त्री-पुरूष के निर्लज्जता पूर्ण मिश्रण तथा मिश्रित समाज तथा अन्य इसी प्रकार के कुकर्मों को निर्लज्जता कहा गया है, इनका कितना ही अच्छा नाम रख लिया जाये, पाश्चात्य देश से आयातित कुकर्म मान्यता नहीं प्राप्त कर सकते। مُنكر हर वह कार्य है जिसे धार्मिक नियमों से अप्रिय घोषित कर दिया गया है। तथा بغيٌ का अर्थ अत्याचार तथा क्रूरता करना है। एक हदीस में बताया गया है कि सम्बन्ध विच्छेद तथा بغي ये दोनों अपराध अल्लाह को इतने अप्रिय हैं कि अल्लाह तआला की ओर से (परलोक के अतिरिक्त) दुनिया में भी उनके शीघ्र दण्ड की सम्भावना का भय रहता है। (इब्ने माजः किताबुज़ ज़ोहद बाबुल बग़्ये)

The Ummah Technology Mission

عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ۚ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٩١﴾

-को अपना उत्तरदायी ठहरा चुके हो।[1] तुम जो कुछ करते हो अल्लाह तआला उसे भली-भाँति जानता है।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَاثًا ۚ تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ ۚ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ ۚ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٩٢﴾

(९२) तथा उस (स्त्री) की भाँति न हो जाना कि जिसने अपना सूत मज़बूत कातने के उपरान्त टुकड़े-टुकड़े तोड़ दिया,[2] कि तुम अपनी सौगन्धों को आपस में छल-कपट का कारण बनाओ[3] इसलिए कि एक गुट दूसरे गुट से ऊँचा हो जाये।[4] बात केवल यही है कि इस वचन से अल्लाह तुम्हारी परीक्षा ले रहा है। नि:संदेह अल्लाह तआला तुम्हारे लिए

---

[1]शपथ एक तो वह है जो किसी संधि अथवा वचन के समय, उसे पक्का करने के लिए खायी जाती है। दूसरी शपथ वह है जो मनुष्य अपने रूप से किसी समय भी ले लेता है कि अमुक कार्य करूँगा अथवा नहीं करूँगा। यहाँ आयत में प्रथम वर्णित शपथ का तात्पर्य है कि तुमने सौगन्ध खायी है। क्योंकि द्वितीय वर्णित सौगन्ध के विषय में हदीस में आदेश दिया गया है कि कोई व्यक्ति किसी कार्य के लिए भी सौगन्ध खा ले, फिर देखे कि अधिक पुण्य दूसरे कर्म में है (अर्थात सौगन्ध के विरूद्ध करने में है) तो वह पुण्य का कार्य करे तथा सौगन्ध को तोड़कर उसका कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) अदा करे (सहीह मुस्लिम संख्या १२७२) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का व्यवहार भी यही था। (सहीह बुख़ारी संख्या ६६२३ तथा मुस्लिम संख्या १२६९)

[2]शपथ द्वारा दिया गया वचन को तोड़ देना ऐसा ही है जैसे कोई स्त्री सूत कातने के पश्चात उसे स्वयं ही टुकड़े-टुकड़े कर डाले। यह उपमा है।

[3]अर्थात धोखा, छल-कपट का साधन बनाओ।

[4] أَرْبَىٰ का अर्थ अधिक है अर्थात जब तुम देखो कि तुम अधिक हो गये तो अपनी अधिक संख्या के गर्व में सौगन्ध तोड़ दो, जबकि सौगन्ध तथा सन्धि के समय वह गुट कमज़ोर था, परन्तु कमज़ोरी के उपरान्त भी वह निश्चिन्त था कि सन्धि के कारण हमें हानि नहीं पहुँचायी जायेगी। परन्तु तुम विश्वासघात तथा सन्धि को तोड़कर हानि पहुँचाओ। अज्ञान काल में चरित्रहीनता के कारण इस प्रकार सन्धि विच्छेद सामान्य रूप से व्याप्त था। मुसलमानों को इस चरित्रहीनता से रोका गया।

The Ummah Technology Mission

क़ियामत के दिन हर उस वस्तु को स्पष्ट करके वर्णन कर देगा, जिसमें तुम मतभेद कर रहे थे।

(९३) तथा यदि अल्लाह (तआला) चाहता तो तुम सबको एक मत बना देता परन्तु वह जिसे चाहे भटका देता है तथा जिसे चाहे मार्गदर्शन देता है। नि:संदेह तुम जो कुछ कर रहे हो उसकी पूछताछ की जाने वाली है।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

(९४) तथा तुम अपनी सौगन्धों को आपस के छल-कपट का साधन न बनाओ। फिर तो तुम्हारे पग अपनी स्थिरता के पश्चात डगमगा जायेंगे तथा तुम्हें कठोर दण्ड चखना पड़ जायेगा क्योंकि तुमने अल्लाह के मार्ग से रोक दिया तथा अत्यधिक घोर यातना दी जायेगी।[1]

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًاۢ بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٩٤﴾

(९५) तथा तुम अल्लाह के वादे को तुच्छ मूल्य के बदले न बेच दिया करो। याद रखो, अल्लाह

وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ

---

[1]मुसलमानों को पुन: उपरोक्त वचन भंग करने से रोका गया है कि कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे इस नैतिक पतन के कारण किसी के पग डगमगा जाये तथा काफ़िर तुम्हारा यह व्यवहार देखकर इस्लाम धर्म धारण करने से रूक जाये तथा इस प्रकार तुम लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोकने के अपराधी तथा दण्ड के अधिकारी बन जाओ। कुछ व्याख्याकारों ने اَيْمَانٌ [यमीन (सौगन्ध) के अर्थ में] का बहुवचन से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बैयअत (अर्थात वचन देना) तात्पर्य लिया है। अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की (*बैयअत*) अर्थात आप से किये वचन को तोड़कर फिर धर्म से न फिरना क्योंकि तुम्हारे धर्म परिवर्तन को देखकर अन्य भी इस्लाम धर्म धारण करने से रूक जायेंगे तथा इस प्रकार तुम दुगुनी यातना के अधिकारी बन जाओगे। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٩٥﴾

के पास की वस्तु ही तुम्हारे लिए उत्तम है, यदि तुम में ज्ञान हो।

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِينَ صَبَرُوا أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾

(९६) तुम्हारे पास जो कुछ है सब नाशवान है तथा अल्लाह के पास जो कुछ है स्थाई रहने वाला है। तथा धैर्य रखने वालों को हम अच्छे कर्मों का उत्तम बदला अवश्य प्रदान करेंगे।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُ حَيَاةً طَيِّبَةً وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٧﴾

(९७) जो व्यक्ति पुण्य के कार्य करे नर हो अथवा नारी, और वह ईमानवाला हो तो हम उसे नि:संदेह सर्वोत्तम जीवन प्रदान करेंगे।[1] तथा उनके पुण्य के कार्यों का उत्तम बदला भी उन्हें अवश्य देंगे।

فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿٩٨﴾

(९८) क़ुरआन पढ़ते समय धिक्कारे हुए शैतान से अल्लाह की शरण माँगा करो।[2]

إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطَانٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٩٩﴾

(९९) ईमानवालों तथा अपने प्रभु पर भरोसा रखने वालों पर उसका कदापि ज़ोर नहीं चलता।

---

[1] पवित्र जीवन से तात्पर्य सांसारिक जीवन है, इसलिए कि परलोक के जीवन का वर्णन अगले वाक्य में है तथा अर्थ यह है कि सदाचारी मुसलमान को सत्य संयमशील जीवन व्यतीत करने तथा अल्लाह की इबादत तथा आज्ञापालन एवं भक्ति तथा संतोष में जो स्वाद तथा मिठास प्रतीत होता है, वह एक काफ़िर तथा अवज्ञाकारी को दुनिया भर के सुख-सुविधाओं के उपरान्त भी प्राप्त नहीं होता, बल्कि वह एक व्यग्रता तथा अशान्ति का शिकार रहता है।

﴿ وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنْكًا ﴾

"जो मेरी याद से विमुख हुआ, उसका निर्वाह संकीर्ण होगा।" (सूरः *ताहा*-१२४)

[2] सम्बोधन यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है परन्तु सम्बोधित सम्पूर्ण मुसलमान हैं। अर्थात क़ुरआन पढ़ने के प्रारम्भ में (أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ) पढ़ा जाये।

The Ummah Technology Mission

إِنَّمَا سُلْطَٰنُهُۥ عَلَى ٱلَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُۥ وَٱلَّذِينَ هُم بِهِۦ مُشْرِكُونَ ﴿١٠٠﴾

(१००) हाँ, उसका प्रभाव उन पर अवश्य है जो उससे मित्रता करें तथा उसे अल्लाह का साझीदार बनायें।

وَإِذَا بَدَّلْنَآ ءَايَةً مَّكَانَ ءَايَةٍ ۙ وَٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوٓا۟ إِنَّمَآ أَنتَ مُفْتَرٍۭ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾

(१०१) तथा जब हम किसी आयत के स्थान पर अन्य आयत बदल देते हैं तथा जो कुछ अल्लाह (तआला) उतारता है, उसे वह भली-भाँति जानता है, तो यह कहते हैं कि तू तो आक्षेप लगाने वाला है। बात यह है कि उनमें से अधिकतर जानते ही नहीं।[1]

قُلْ نَزَّلَهُۥ رُوحُ ٱلْقُدُسِ مِن رَّبِّكَ بِٱلْحَقِّ لِيُثَبِّتَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟

(१०२) आप कह दीजिए कि उसे आपके पालनहार की ओर से जिब्रील सत्य के साथ लेकर आये हैं,[2] ताकि ईमान वालों को अल्लाह

---

[1]अर्थात एक आदेश निरस्त करके उसके स्थान पर दूसरा आदेश अवतरित करते हैं। जिसका भेद तथा कारण अल्लाह तआला भली-भाँति जानता है तथा उसके अनुसार आदेशों में फेरबदल करता है, तो काफ़िर कहते हैं कि यह कथन हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तेरा अपना गढ़ा हुआ है क्योंकि अल्लाह तआला ऐसा नहीं कर सकता। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उनके अधिकतर लोग अज्ञानी हैं, इसलिए यह निरस्त करने का कारण तथा भेद क्या जानें (और अधिक जानकारी के लिए देखिए सूरः *अल-बक़रः* आयत १०६ की व्याख्या)

[2]अर्थात यह क़ुरआन मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बनाया हुआ नहीं है। अपितु इसे आदरणीय जिब्रील जैसे महान फ़रिश्ते ने सत्यता के साथ प्रभु की ओर से उतारा है। जैसे अन्य स्थान पर है।

﴿ نَزَلَ بِهِ ٱلرُّوحُ ٱلْأَمِينُ ۝ عَلَىٰ قَلْبِكَ ﴾

"उसे सत्यात्मा (जिब्रील) ने तेरे हृदय पर उतारा है।" (सूरः *अल-शुअरा*-१९३,१९४)

The Ummah Technology Mission

وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٠٢﴾

(तआला) स्थिरता प्रदान करे[1] तथा मुसलमानों के लिए मार्गदर्शन तथा शुभसूचना हो जाये।[2]

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ الَّذِىْ يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِىٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِىٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٠٣﴾

(१०३) तथा हमें भली-भाँति ज्ञात है जो काफ़िर कहते हैं कि उसे तो एक आदमी सिखाता है[3] उसकी भाषा जिसकी ओर यह संबन्धित कर रहे हैं अजमी (स्वच्छ अरबी भाषा नहीं) है। तथा यह क़ुरआन तो स्वच्छ अरबी भाषा में है।[4]

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ

(१०४) जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों पर ईमान नहीं रखते, उन्हें अल्लाह की ओर

---

[1]इसलिए कि वे कहते हैं कि निरस्त तथा परिवर्तित दोनों ही प्रभु की ओर से हैं। इसके अतिरिक्त, निरस्तता के कारण एवं रहस्य भी जब उनके सामने आते हैं, तो उनके अन्दर और अधिक स्थायित्व एवं ईमान में दृढ़ता आती है।

[2]तथा यह क़ुरआन मुसलमानों के लिए मार्गदर्शन एवं शुभसूचना का साधन है क्योंकि क़ुरआन भी वर्षा के समान है, जिससे धरती का कुछ भाग अत्यधिक हरा-भरा होता है तथा कुछ में काँटें एवं सूखी घास के अतिरिक्त कुछ नहीं उगता। ईमानवालों का हृदय पवित्र एवं उज्ज्वल है, जो क़ुरआन की महिमा से तथा ईमान के प्रकाश से प्रकाशित होता है तथा काफ़िर का हृदय ऊसर भूमि की तरह है, जो कुफ़्र एवं मार्गभ्रष्टता (गुमराही) के अंधकार से परिपूर्ण है, जहाँ क़ुरआन की ज्योति का भी प्रभाव नहीं होता।

[3]कुछ दास थे जो तौरात तथा इंजील से अवगत थे, पहले वे यहूदी अथवा इसाई थे, फिर मुसलमान हो गये उनकी भाषा भी अस्वच्छ थी, मक्का के मूर्तिपूजक कहते थे कि अमुक दास मोहम्मद को क़ुरआन सिखाता है।

[4]अल्लाह तआला ने उत्तर में कहा कि यह जिस व्यक्ति, अथवा व्यक्तियों का नाम लेते हैं वह तो अरबी भाषा भी उचित ढंग से नहीं बोल सकते, जबकि क़ुरआन तो ऐसी स्वच्छ अरबी भाषा में है जो प्रभावशाली, हृदयस्पर्शी एवं मार्मिक वर्णन में अतुलनीय है तथा चैलेंज के उपरान्त भी इसके समान एक अंश भी बनाकर प्रस्तुत नहीं कर सकते। अरबी भाषा में उस व्यक्ति को अजमी (गूँगा) कहते थे जो स्वच्छ एवं सरल भाषा बोलने योग्य नहीं होता था तथा ग़ैर अरबी भाषी को भी अजमी कहा जाता है कि अजमी भाषाओं में प्रवाह तथा प्रभाव में अरबी भाषा की तुलना नहीं कर सकतीं।

The Ummah Technology Mission

से भी मार्गदर्शन प्राप्त नहीं होता तथा उनके लिए दुखदायी यातना है।

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٠٤﴾

(१०५) मिथ्या आरोप तो वही लगाते हैं जिन्हें अल्लाह (तआला) की आयतों पर ईमान नहीं होता। और यही लोग झूठे हैं।[1]

اِنَّمَا يَفْتَرِى الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٠٥﴾

(१०६) जो व्यक्ति अपने ईमान के पश्चात अल्लाह से कुफ़्र करे उसके सिवाय जिसे बाध्य किया जाये तथा उसका दिल ईमान पर स्थिर हो,[2] परन्तु जो लोग खुले दिल से कुफ़्र करें, तो उन पर अल्लाह का क्रोध है तथा उन्हीं के लिए बहुत बड़ी यातना है।[3]

مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِهٖٓ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَقَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّ بِالْاِيْمَانِ وَلٰكِنْ مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠٦﴾

(१०७) यह इसलिए कि उन्होंने सांसारिक जीवन को पारलौकिक जीवन से प्रियतर समझा।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ

---

[1]तथा हमारा पैग़म्बर ईमानदारों का प्रमुख तथा उनका अगुवा है, वह किस प्रकार अल्लाह पर झूठ बाँध सकता है कि यह किताब अल्लाह की ओर से उस पर अवतरित न हुई हो तथा वह झूठ ही कह दे कि यह किताब मुझ पर अल्लाह की ओर से अवतरित हुई है। इसलिए झूठा हमारा पैग़म्बर नहीं, वे स्वयं झूठे हैं जो क़ुरआन के अल्लाह की ओर से अवतरित होने को स्वीकार नहीं करते।

[2]ज्ञानियों की इस बात पर सहमति है कि जिस व्यक्ति को कुफ़्र के लिए बाध्य किया जाये तथा वह प्राण रक्षा के लिए कर्म तथा वचन से कुफ़्र करे, जबकि उसका हृदय ईमान पर दृढ़ है, तो वह काफ़िर नहीं होगा, न उसकी पत्नी उससे अलग होगी तथा न उस पर अन्य कुफ़्र के आदेश लागू किये जायेंगे। क़ुर्तबी का यह कथन है। (फ़तहुल क़दीर)

[3]यह धर्म त्याग का दण्ड है कि वह अल्लाह के क्रोध तथा घोर यातना के अधिकारी होंगे तथा उसका सांसारिक दण्ड हत्या है। जैसाकि हदीस में है (अन्य जानकारी के लिए देखिए *सूरः बक़रः* आयत २१७ तथा २५६ की व्याख्या)

The Ummah Technology Mission

لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠٧﴾

नि:संदेह अल्लाह (तआला) काफ़िर लोगों का मार्गदर्शन नहीं करता।[1]

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۚ وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٠٨﴾

(१०८) यह वे लोग हैं जिनके दिलों पर तथा जिनके कानों एवं जिनकी आँखो पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है तथा यही लोग अचेत हैं।[2]

لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٠٩﴾

(१०९) कोई संदेह नहीं कि यही लोग आख़िरत में अधिक हानि उठाने वाले हैं।

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٠﴾

(११०) जिन लोगों ने परीक्षा में डाले जाने के पश्चात (धार्मिक कारणों से) स्थानान्तरण किया फिर धर्मयुद्ध किया एवं धैर्य का प्रदर्शन किया। नि:संदेह तेरा प्रभु इन बातों के पश्चात उन्हें क्षमा करने वाला तथा कृपा करने वाला है।[3]

---

[1]यह ईमान के पश्चात कुफ़्र का मार्ग अपनाने (अधर्मी हो जाने) का कारण है कि उन्हें एक तो दुनिया से प्रेम है। दूसरे अल्लाह के दरबार में यह मार्गदर्शन के योग्य ही नहीं हैं।

[2]तो ये शिक्षा-दीक्षा की बातें सुनते हैं न उन्हें समझते हैं तथा न वे निशानियाँ (लक्षण) देखते हैं जो उन्हे सत्य की ओर ले जाने वाली हैं बल्कि वे ऐसे अवचेतन में घिरे हुए हैं जिसने प्रकाश के मार्ग उनके लिए बन्द कर दिये हैं।

[3]यह मक्के के उन मुसलमानों का वर्णन है जो कमज़ोर थे तथा इस्लाम धर्म धारण करने के कारण काफ़िरों के अत्याचार तथा क्रूरता का निशाना बने रहे। अन्ततः उन्हें स्थानान्तरण का आदेश दिया गया तो वे अपने सगे सम्बन्धियों, देश तथा धरती एवं माल तथा भूमि सब कुछ छोड़कर इथोपिया अथवा मदीना चले गये, फिर जब काफ़िरों के साथ युद्ध का अवसर आया तो वीरता पूर्ण लड़ने के लिए धर्मयुद्ध में पूर्णरूप से भाग लिया तथा फिर उस मार्ग की कठिनाईयों एवं दुखों को धैर्य के साथ सहन किया। इन सभी बातों के पश्चात नि:संदेह उनके लिए तुम्हारा प्रभु दयालु एवं कृपालु है अर्थात प्रभु की दया एवं कृपा की प्राप्ति के लिए ईमान तथा पुण्य के कर्म का होना आवश्यक है। जैसाकि वर्णित मुहाजिरों ने ईमान तथा कर्म का सर्वोत्तम प्रदर्शन किया, तो प्रभु की दया एवं कृपा से वे सफल हुए।

The Ummah Technology Mission

يَوْمَ تَاْتِيْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١١١﴾

(१११) जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए लड़ता-झगड़ता आयेगा[1] तथा प्रत्येक व्यक्ति को उसके किये का पूरा बदला दिया जायेगा तथा लोगों पर कदापि अत्याचार न किया जायेगा।[2]

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١١٢﴾

(११२) तथा अल्लाह (तआला) उस बस्ती का उदाहरण प्रस्तुत करता है, जो पूर्ण सुख-शान्ति से थी, उसकी जीविका उसके पास सम्पन्नता के साथ प्रत्येक मार्ग से चली आ रही थी। फिर उसने अल्लाह (तआला) के अनुकम्पाओं का इंकार किया, तो अल्लाह (तआला) ने उसे भूख तथा भय का स्वाद चखा दिया, जो बदला था उनके करतूतों का।[3]

---

[1]अर्थात कोई अन्य किसी की सहायता के लिए नहीं आयेगा न पिता, न भाई,न पुत्र, न पत्नी, न कोई अन्य। बल्कि एक-दूसरे से भागेंगे। भाई-भाई से, पुत्र माता-पिता से, पति-पत्नी से भागेगा। प्रत्येक व्यक्ति को केवल अपनी ही चिन्ता होगी जो उसे दूसरे से निश्चिन्त कर देगी।

[2]अर्थात पुण्य के फल में कमी कर दी जाये तथा बुराई का प्रतिकार बढ़ा दिया जाये ऐसा नहीं होगा, किसी पर तनिक भी अत्याचार न होगा। बुराई का केवल उतना ही बदला मिलेगा, जितना होगा। परन्तु पुण्य का बदला अल्लाह तआला ख़ूब बढ़ा-चढ़ाकर कर देगा तथा यह उसके उपकार एवं दया का प्रदर्शन होगा जो क़ियामत के दिन ईमान वालों के लिए होगा।

[3]अधिकतर व्याख्याकारों ने इस ग्राम से तात्पर्य मक्का लिया है। अर्थात इसमें मक्का तथा मक्कावासियों का वर्णन किया गया है तथा यह उस समय हुआ जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके लिए शाप की प्रार्थना की।

«اللَّهُمَّ اشْدُدْ وَطْأَتَكَ عَلَىٰ مُضَرَ، وَاجْعَلْهَا عَلَيْهِمْ سِنِينَ كَسِنِي يُوسُفَ»

"हे अल्लाह ! मुदर (क़बीले) पर अपनी पकड़ कड़ी कर तथा उन पर अकाल को उस प्रकार से डाल जिस प्रकार से आदरणीय यूसुफ़ के समय में मिस्र में हुआ। (सहीह बुख़ारी संख्या ४८२१, सहीह मुस्लिम संख्या २१५६)"

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١١٣﴾

(११३) तथा उनके पास उन्हीं में से रसूल पहुँचा, फिर भी उन्होंने उसे झुठलाया, तो उन्हें प्रकोप ने आ पकड़ा [1] तथा वे थे भी अत्याचारी ।

فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١١٤﴾

(११४) जो कुछ उचित (हलाल) तथा पवित्र जीविका अल्लाह ने तुम्हें प्रदान कर रखा है, उसे खाओ तथा अल्लाह के अनुकम्पा की कृतज्ञता व्यक्त करो, यदि तुम उसी की इबादत करते हो ।[2]

اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ

(११५) तुम पर केवल मृत तथा रक्त एवं सूअर का माँस तथा जिस चीज पर अल्लाह के सिवाय अन्य का नाम लिया जाये हराम (निषेध) है, [3]

अत: अल्लाह तआला ने मक्के की शान्ति को भय में तथा सम्पन्नता को भुखमरी में बदल दिया । यहाँ तक कि उनको यह हाल हो गया कि हड्डियाँ तथा वृक्षों के पत्ते खाकर जीवन निर्वाह करना पड़ा । तथा कुछ व्याख्याकारों का विचार है कि यह अनिश्चित ग्राम है तथा उदाहरण के रूप में यह बात कही गई है कि उपकार को अस्वीकार करने वालों का यही हाल होगा, वे जहाँ भी हों तथा जब भी हों । इसके इस सामान्य भावार्थ से अधिकाँश व्याख्याकारों को भी इंकार नहीं है, यद्यपि इस अवतरण का कारण उनके निकट विशेष है ।

[1]इस यातना से तात्पर्य वही यातना, भय तथा भूख है जिसका वर्णन इससे पूर्व की आयत में है अथवा इससे तात्पर्य काफ़िरों की वह हत्या है जो बद्र के युद्ध में मुसलमानों के हाथों हुई ।

[2]इसका अर्थ यह हुआ कि वैध तथा पवित्र वस्तुओं को छोड़कर निषेधित तथा अपवित्र वस्तुओं का प्रयोग तथा अल्लाह को छोड़कर किसी अन्य की इबादत करना, यह अल्लाह के उपकारों की कृतघ्नता है ।

[3]यह आयत इससे पूर्व तीन बार गुज़र चुकी है । सूरः *अल-बकरः*-१७३, सूरः *अल-मायदः*-३, तथा सूरः *अल-अनआम*-१४५ में । यह चौथा स्थान है जहाँ अल्लाह तआला ने पुनः वर्णन किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इस आयत में जिन चार निषेधित वस्तुओं का वर्णन है, उनसे अल्लाह तआला मुसलमानों को अति बलपूर्वक बचाना चाहता है । इसकी आवश्यक व्याख्या पूर्व में की जा चुकी है । फिर भी इसमें ﴿وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ﴾ (जिस वस्तु पर अल्लाह के अतिरिक्त अन्य का नाम पुकारा जाये) जो

The Ummah Technology Mission

चौथा प्रकार है इसके भावार्थ में तर्क, कल्पना एवं व्याख्या करके शिर्क के लिए चोर दरवाज़ा खोजे जाते हैं। इसलिए उसकी कुछ और व्याख्या प्रस्तुत है।

जो पशु अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को अर्पित किया जाये, उसके विभिन्न प्रकार हैं। एक प्रकार यह है कि अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की निकटता तथा प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए उसकी बलि दी जाये तथा बलि चढ़ाते समय उसी देवता, मूर्ति अथवा महात्मा का नाम लिया जाये, जिसको प्रसन्न करने का उद्देश्य हो। दूसरा प्रकार यह है कि उद्देश्य तो अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की प्रसन्नता हो परन्तु बलि अल्लाह के नाम पर दी जाये, जिस प्रकार समाधियों के पुजारियों में यह कार्य सामान्य रूप से है। वह पशुओं को महात्माओं के नाम से नामांकित करते हैं। जैसे यह बकरा अमुक पीर का है, यह गाय अमुक पीर की है, यह पशु ग्यारहवीं के लिए अर्थात शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी के लिए है आदि। तथा उनकी बलि बिस्मिल्लाह पढ़कर ही देते हैं, इसलिए वे कहते हैं कि पहली प्रकार अवश्य निषेधित है, परन्तु यह दूसरी प्रकार निषेधित नहीं, बल्कि मान्य है क्योंकि यह अल्लाह के अतिरिक्त किसी के नाम पर बलि नहीं दिया गया है और इस प्रकार शिर्क का मार्ग खोला गया है। जबकि विचारकों ने इस दूसरी प्रकार को भी निषेधित कहा है। इसलिए कि यह भी ﴿وَمَآ أُهِلَّ لِغَيۡرِ ٱللَّهِ بِهِۦ﴾ में सम्मिलित है, अतः बैदावी की व्याख्या में है "हर वह पशु जिस पर अल्लाह के अतिरिक्त अन्य का नाम पुकारा जाये, निषेध है, यद्यपि बलि देते समय उस पर अल्लाह ही का नाम लिया गया हो। इसलिए धर्मज्ञानी सहमत हैं कि मुसलमान यदि अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की निकटता प्राप्त करने के लिए पशु की बलि देगा तो वह विधर्मी हो जायेगा तथा उसकी बलि विधर्मी की बलि होगी।" तथा हनफ़ी विचार की प्रख्यात पुस्तक 'दुर्रे मुख़्तार' में है, "किसी अधिकारी तथा उसी प्रकार किसी उच्च अधिकारी के आगमन पर (उसकी मेहमानी के लिए नहीं अपितु उसे खुश करने अथवा उसके सम्मान स्वरूप) पशु की बलि दी जाये, तो वह निषेधित होगा, इसलिए कि वह "وما أهل لغير الله به" में आ गया, यद्यपि उस पर अल्लाह ही का नाम लिया गया हो तथा अल्लामा शामी ने इस पर बल दिया है।" (किताबुल ज़बाएह प्राचीन प्रकाशन १२७७ हिजरी, पृष्ठ २२७ फ़तावा शामी भाग ५, पृष्ठ २०३, मेमनीय: प्रकाशन मिस्र) परन्तु कुछ विचारक इस दूसरे प्रकार को "وما أهل لغير الله به" का अर्थ तथा इसमें सम्मिलित नहीं समझते तथा अल्लाह के सिवाय अन्य की निकटता प्राप्त करने के कारण इसे निषेधित समझते हैं। अर्थात निषेध होने में कोई मतभेद नहीं। केवल तर्क तथा प्रमाण प्रस्तुत करने के ढंग में मतभेद है। इसके अतिरिक्त यह दूसरा प्रकार ﴿وَمَا ذُبِحَ عَلَى ٱلنُّصُبِ﴾ (जो मूर्तियों के निकट अथवा स्थानों पर बलि चढ़ायी जायें) में भी सम्मिलित है। जिसे *सूरः अल-मायदः* में निषेधित में वर्णन किया गया है। तथा हदीसों से भी ज्ञात होता है कि आस्ताना, दरबारों, मन्दिरों तथा दैवी स्थानों पर बलि चढ़ाये गये पशु निषेध हैं, इसलिए कि वहाँ बलि चढ़ाने का अथवा बाँटने का उद्देश्य अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की निकटता प्राप्त करनी है।

The Ummah Technology Mission

لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٥﴾

फिर भी यदि कोई व्यक्ति विवश कर दिया जाये न वह अत्याचारी हो एवं न अतिकारी हो, तो नि:संदेह अल्लाह क्षमा करने वाला तथा कृपा करने वाला है।

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿١١٦﴾

(११६) तथा किसी चीज़ को अपने मुख से झूठ ही न कह दिया करो कि यह उचति (हलाल) है तथा यह निषेध (हराम) है कि अल्लाह पर मिथ्यारोपण कर दो, [1] नि:संदेह अल्लाह (तआला) पर मिथ्यारोपण करने वाले सफलता से वंचित ही रहते हैं।

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۖ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١١٧﴾

(११७) उन्हें अति तुच्छ लाभ प्राप्त होता है तथा उनके लिए ही कष्टदायी यातनायें हैं।

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا

(११८) तथा यहूदियों पर जो कुछ हमने निषेध किया था, उसे हम पहले ही से आप को सुना

एक हदीस में है, एक व्यक्ति ने आकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि मैंने मन्नत मानी है कि बवाना के स्थान पर मैं ऊँट की बलि चढ़ाऊँगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि क्या वहाँ अज्ञान काल की मूर्तियों में से कोई मूर्ति थी जिसकी पूजा की जाती थी ? लोगों ने बताया नहीं, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि वहाँ उनके धार्मिक उत्सव में से कोई उत्सव तो नहीं मनाया जाता था ? लोगों ने उसका भी न में उत्तर दिया, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्रश्नकर्त्ता को मन्नत पूरी करने की अनुमति दी। (अबू दाऊद किताबुल ऐमान वन्नज़ूर, वाब मायूमर, बिहि मिन वफ़ाइन्नज़्र) इससे ज्ञात हुआ कि मूर्तियों के हटाये जाने के पश्चात भी निर्वासित आस्तानों पर जाकर पशुओं की बलि चढ़ाना निषेध है, तो उसका क्या कहना जबकि उन आस्तानों, दरबारों, मन्दिरों तथा दैवी स्थलों पर जाकर बलि चढ़ाये जायें जो पूजा-पाठ, भोग-प्रसाद के लिए सामान्य घोषित स्थल हैं।

[1]यह संकेत है उन पशुओं की ओर जो वह मूर्तियों के नाम अर्पित करके उनको अपने लिए निषेध कर लेते थे। जैसे बहीर:, साएब:, वसील: एवम् हाम आदि। (देखिये सूरः *अल-मायद:*-१०३ तथा सूरः *अल-अनाम*-१३९ से १४९ तक की व्याख्या)

The Ummah Technology Mission

مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٨﴾

चुके हैं,[1] हमने उन पर अत्याचार नहीं किया, अपितु वे स्वयं अपने प्राणों पर अत्याचार करते रहे।

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٩﴾

(११९) जो कोई अज्ञानतावश बुरे कर्म करे, फिर उसके पश्चात तौबा (क्षमा-याचना) कर ले तथा सुधार भी कर ले तो फिर आपका प्रभु निःसंदेह बड़ा क्षमा करने वाला तथा अत्यन्त दयालु है।

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ۭ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٠﴾

(१२०) निःसंदेह इब्राहीम अगुवा[2] एवं अल्लाह तआला के आज्ञापालन करने वाले एकाग्र निःस्वार्थ थे। तथा वह मिश्रणवादियों में से न थे।

شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ۭ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٢١﴾

(१२१) अल्लाह तआला के प्रदान किये हुए उपहारों के कृतज्ञ थे, अल्लाह (तआला) ने उन्हें निर्वाचित कर लिया था तथा उन्हें मार्गदर्शन दे दिया था।

وَاٰتَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۭ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٢٢﴾

(१२२) तथा हमने उन्हें दुनिया में भी अच्छाई दी, तथा निःसंदेह वह आख़िरत में भी नेक लोगों में से हैं।

ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۭ وَمَا كَانَ

(१२३) फिर हमने आप की ओर प्रकाशना (वह्यी) भेजी कि आप इब्राहीम हनीफ़ के मत

---

[1] देखिये सूरः *अल-अनाम*-१४६ की व्याख्या, इसके अतिरिक्त सूरः *अल-निसा*-१६० में भी इस का वर्णन है।

[2] 'उम्मत' का अर्थ मुखिया तथा अगुवा भी है जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है तथा उम्मत का अर्थ अनुयायी भी है। इस आधार पर आदरणीय इब्राहीम का अस्तित्व एक उम्मत के बराबर था। (उम्मत के अर्थ के लिए सूरः हूद-८ की व्याख्या देखिये)

The Ummah Technology Mission

مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٢٣﴾

का अनुसरण करें।[1] और वह मिश्रणवादियों (अनेकेश्वर के पुजारियों) में न थे।

إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٢٤﴾

(१२४) शनिवार के दिन (के महत्व) को तो केवल उन लोगों के लिए ही आवश्यक किया गया था, जिन्होंने उसमें मतभेद किया था,[2] बात यह है कि आपका प्रभु स्वयं ही उनमें उनके मतभेद का निर्णय क़ियामत के दिन करेगा।

---

[1]'मिल्लत' का अर्थ है, ऐसा धर्म जिसे अल्लाह तआला ने अपने किसी नबी के द्वारा लोगों के लिए उचित तथा अनिवार्य किया है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसके उपरान्त कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सभी नबियों सहित आदम की संतान के सरदार हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इब्राहीम के धार्मिक नियमों का अनुसरण करने के लिए कहा गया है, जिससे आदरणीय इब्राहीम के महत्व एवं विशेषता की पुष्टि होती है। वैसे मौलिक रूप से सभी नबियों के धार्मिक नियम एवं मत एक ही रहे हैं, जिसमें रिसालत के साथ अद्वैत तथा आख़िरत को आधार भूत स्थान प्राप्त है।

[2]इस मतभेद का रूप क्या है ? इसकी व्याख्या में मतभेद है। कुछ कहते हैं कि आदरणीय मूसा ने उनके लिए शुक्रवार का दिन निर्धारित किया था, परन्तु इस्राईल की संतान ने उनका विरोध किया तथा शनिवार का दिन आदर तथा इबादत के लिए चयन किया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया मूसा ! उन्होंने जो दिन चयन किया है, वही दिन रहने दो। कुछ कहते हैं कि अल्लाह तआला ने उन्हें आदेश दिया था कि सम्मान के लिए सप्ताह में कोई एक दिन निर्धारित कर लो जिसके निर्धारण में उनमें आपस में मतभेद हुआ। परन्तु यहूदियों ने अपने विचार से शनिवार का दिन तथा ईसाईयों ने रविवार का दिन निर्धारित कर लिया। तथा शुक्रवार का दिन अल्लाह तआला ने मुसलमानों के लिए विशेष कर दिया। तथा कुछ कहते हैं कि ईसाईयों ने रविवार का दिन यहूदियों के विरोध भावना से अपने लिए निर्धारित किया था, इसी प्रकार इबादत के लिए उन्होंने अपने को यहूदियों से अलग रखने के लिए बैतुल मोक़द्दस के पूर्वी भाग को क़िबला के रूप में प्रयोग किया। शुक्रवार का दिन अल्लाह तआला के अपनी ओर से मुसलमानों के लिए निर्धारित करने का वर्णन हदीस में विद्यमान है। (देखिये सहीह बुख़ारी किताबुल जुमा, बाब हिदायत हाज़ेहिल उम्मत, लेयोमिल जुमुअः, तथा सहीह मुस्लिम वर्णित अध्याय)

The Ummah Technology Mission

(१२५) अपने प्रभु की ओर लोगों को विवेक तथा उत्तम शिक्षा के साथ बुलायें तथा उनसे भली प्रकार से बात करें,[1] नि:संदेह आप का प्रभु अपने मार्ग से भटकने वालों को भी भली-भाँति जानता है तथा वह मार्ग पर चलने वालों से भी पूर्ण रूप से परिचित है।[2]

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٢٥﴾

(१२६) तथा यदि बदला लो भी तो बिल्कुल उतना ही जितना दुख तुम्हें पहुँचाया गया हो, तथा यदि धैर्य रखो तो नि:संदेह धैर्यवानों के लिए यही उत्तम है।[3]

وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿١٢٦﴾

(१२७) आप धैर्य रखें बिना अल्लाह की कृपा से आप धैर्य रख ही नहीं सकते तथा उनकी अवस्था से दुखी न हों तथा जो छल-कपट यह करते हैं, उनसे संकुचित न हो।[4]

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٧﴾

(१२८) विश्वास करो कि अल्लाह (तआला) परहेज़गारों तथा पुण्य कार्य करने वालों के साथ है।

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿١٢٨﴾

---

[1]इसमें धर्म प्रचार एवं प्रसार के नियम वर्णित किये गये हैं जो हिक्मत, सत्य भाषण, प्रेम तथा विनम्रता पर आधारित हैं। उत्तम विवाद, तर्क-वितर्क तथा कड़ाई एवं कटुता से बचते हुए कोमल तथा प्रेमपूर्ण भाव का प्रयोग करना है।

[2]अर्थात आप का कार्य वर्णित नियमों के अनुसार शिक्षा-दीक्षा देना है, सत्य मार्ग पर चला देना, यह केवल अल्लाह के अधिकार में है तथा वह जानता है कि मार्गदर्शन प्राप्त करने वाला कौन है तथा कौन नहीं ?

[3]इसमें यद्यपि बदला लेने की आज्ञा है परन्तु अति नहीं, वरन यह स्वयं अत्याचार हो जायेगा, फिर भी क्षमा कर देने तथा धैर्य का मार्ग अपनाने को अधिक श्रेष्ठ बताया गया है।

[4]इसलिए कि अल्लाह तआला उनके षडयन्त्रों के विरोध में ईमान वालों तथा अल्लाह से भय रखने वालों एवं सत्कर्मियों के संग है तथा जिसके साथ अल्लाह हो, उसे दुनिया वालों की चाल हानि नहीं पहुँचा सकती जैसाकि इसके पूर्व की आयत में है।

The Ummah Technology Mission

सूरतु बनी इस्राईल-१७

سُوْرَةُ بَنِيْ اِسْرَآءِيْلَ

सूरः वनी इस्राईल* मक्के में उतरी तथा इसकी एक सौ ग्यारह आयतें तथा वारह रूकूअ हैं।

अल्लाह तआला के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

(१) पवित्र है[1] वह (अल्लाह तआला) जो अपने भक्त[2] को रातों रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे

سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا

---

*यह सूरः मक्के में अवतरित हुई। इसलिए इसे मक्की कहते हैं। इस सूरः का दूसरा नाम *अल-इस्रा* भी है। इसलिए कि इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस्रा (रात्रि के समय मस्जिदे अक्सा ले जाने) का वर्णन है। सहीह बुख़ारी में है कि आदरणीय अब्दुल्लाह बिन मसऊद स्वयं सुनकर कहते हैं कि सूरः *कहफ़, मरियम* तथा *बनी इस्राईल* यह प्रथम कालीन में से हैं। (तफ़सीर सूरः *बनी इस्राईल*) عتيق का बहुवचन है عتاق (प्राचीन) तथा تلاد भी تالد का बहुवचन है। तालिद प्राचीन धन को कहते हैं। अर्थ यह है कि तीन सूरतें उन प्राचीन सूरतों में से हैं जो मक्का में प्रथम काल में अवतरित हुईं। रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रत्येक रात्रि को सूरः *बनी इस्राईल* तथा सूरः *ज़ुमर* का पाठ करते थे। (मुसनद अहमद भाग ६, पृष्ठ ६८ तथा १२२, तिर्मिज़ी संख्या २९२-३४०० तथा अलबानी ने इसे सही कहा है। सहीहः संख्या ६४१, भाग २)

[2] سبحان، سبح يسبح का रूप है। अर्थ है أنزه الله تنزيها अर्थात मैं अल्लाह को प्रत्येक दोष से पवित्र तथा शुद्ध मानता हूँ। सामान्य रूप से इसका प्रयोग ऐसे अवसरों पर होता है जब किसी महान विषय का वर्णन हो। अर्थ यह होता है कि लोगों के निकट प्रत्यक्ष साधन के आधार पर यह घटना कितनी भी असम्भव हो, अल्लाह के लिए कोई कठिन नहीं। इसलिए कि वह किसी साधन के लिए बाध्य नहीं वह तो शब्द कुन (كن) से पलक झपकते में जो चाहे कर सकता है। साधन मनुष्य के लिए हैं। अल्लाह तआला इन बंधनों तथा न्यूनता से पवित्र है।

[2] إسراء का अर्थ होता है रात्रि के समय ले जाना। आगे ليلا (रात्रि) इसलिए वर्णन किया गया ताकि रात्रि की अल्पता स्पष्ट हो जाये, इसीलिए वह जातिवाचक संज्ञा है। अर्थात रात्रि के एक भाग अथवा थोड़े से भाग में। अर्थात चालीस रात्रि की यह यात्रा, पूर्ण रात्रि में भी नहीं, अपितु रात्रि के एक थोड़े से भाग में पूरी हुई।

The Ummah Technology Mission

الَّذِىْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ اٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ①

अकसा [1] तक ले गया जिसके निकटवर्ती क्षेत्रों में हमने बरकतें (विभूतियाँ) प्रदान कर रखी हैं,[2] इसलिए कि हम उसे अपने सामर्थ्य के कुछ प्रतीक दिखायें।[3] नि:संदेह अल्लाह (तआला) ही भली-भाँति सुनने देखने वाला है।

---

[1] اقصـــى दूर को कहते हैं। बैतुल मक़दिस, जो अल-कुदस अथवा इलिया (प्राचीन नाम) नगर में है तथा फ़िलिस्तीन में स्थित है, मक्का से अल-कुदस तक की यात्रा ४० दिन की है, इस आधार पर मस्जिदे हराम की तुलना में बैतुल मक़दिस को मस्जिदे अक्सा (दूर की मस्जिद) कहा गया है।

[2]यह क्षेत्र प्राकृतिक नदियों तथा फलों की अधिकता तथा नबियों की धरती है जहाँ उनका निवास स्थान तथा समाधि स्थल होने के कारण श्रेष्ठ है, इसलिए इसे शुभस्थली कहा गया है।

[3]इस यात्रा का यह उद्देश्य है ताकि हम अपने इस भक्त को विचित्रता तथा बड़ी निशानियाँ दिखायें। जिनमें से एक निशानी तथा चमत्कार यह यात्रा भी है कि इतनी लम्बी यात्रा रात्रि के एक छोटे से भाग में हो गयी। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो मेराज हुई अर्थात आकाशों पर ले जाया गया, वहाँ विभिन्न आकाशों पर अंबिया अलैहिस्सलाम से मिलन हुआ तथा "*सिदरतुल मुन्तहा*" पर, जो अर्श से नीचे सातवें आकाश पर है, अल्लाह तआला ने प्रकाशना (वह्यी) के द्वारा नमाज़ तथा अन्य कुछ वस्तुएँ प्रदान कीं जिसका विस्तृत वर्णन सहीह हदीसों में हुआ है तथा सहाबा एवं ताबईन से लेकर आज तक मुसलमान समुदाय के सभी ज्ञानी तथा विचारक इस बात को मानते चले आये हैं कि यह मेराज शारीरिक रूप में सचेत अवस्था में हुई है। यह स्वप्न अथवा आत्मिक यात्रा तथा दर्शन नहीं है, बल्कि प्रत्यक्ष दर्शन है, जो अल्लाह ने अपने पूर्ण सामर्थ्य से अपने पैग़म्बर को कराया है। इस मेराज के दो भाग हैं। प्रथम भाग इस्रा कहलाता है, जिसका वर्णन यहाँ किया गया है तथा जो मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक्सा तक की यात्रा के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ पहुँचने के पश्चात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सभी नबियों की इमामत की। बैतुल मक़दिस से फिर आपको आकाशों पर ले जाया गया। यह इस यात्रा का द्वितीय भाग है जिसे मेराज कहा जाता है। इस का कुछ वर्णन सूरः *नज्म* में किया गया है तथा शेष विस्तृत जानकारी हदीसों में वर्णित की गयी हैं। सामान्य रूप से इस पूरी यात्रा को मेराज से ही सम्बोधित किया जाता है। मेराज सीढ़ी को कहते हैं, यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र मुख से निकले हुए शब्द «عُرِجَ بِي إِلَى السَّمَاءِ». (मुझे आकाश पर ले जाया गया अथवा चढ़ाया गया) से लिया गया है। क्योंकि इस यात्रा का द्वितीय भाग प्रथम से अत्यधिक महत्वपूर्ण है, इसलिए मेराज का

The Ummah Technology Mission

وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا ۝٢

(२) तथा हम ने मूसा को किताब प्रदान की तथा उसे इस्राईल की संतान के लिए मार्ग-दर्शन बना दिया, कि तुम मेरे अतिरिक्त किसी अन्य को कार्यक्षम न बनाना।

ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ۝٣

(३) हे उन लोगों की संतान! जिन्हें हमने नूह के साथ सवार किया था, वह हमारा अत्यधिक कृतज्ञ भक्त था।[1]

وَقَضَيْنَآ اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ فِي الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْاَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيْرًا ۝٤

(४) तथा हमने इस्राईल की संतान के लिए उनकी किताब में स्पष्ट निर्णय कर दिया था कि तुम धरती पर दो बार उपद्रव उत्पन्न करोगे तथा तुम अत्यधिक अत्याचार करोगे।

فَاِذَا جَاۗءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا

(५) इन दोनों वादों में से प्रथम के आते ही हम ने तुम्हारे समक्ष अपने भक्तों को उठा खड़ा किया, जो बड़े लड़ाकू थे। फिर वह तुम्हारे

शब्द ही अधिक प्रसिद्ध हुआ। इसकी तिथि में मतभेद है, फिर भी इस पर सहमति है कि यह हिजरत से पूर्व की घटना है। कुछ कहते हैं कि एक वर्ष पूर्व की तथा कुछ कहते हैं कि कई वर्ष पूर्व की यह घटना घटित हुई। इसी प्रकार मास तथा तिथि में भी मतभेद है, कोई रबीउल अव्वल १७ अथवा २७, कोई रजब की २७ तथा कुछ कोई अन्य मास तथा इसकी तिथि बताते हैं।

[1]नूह के समय के तूफ़ान (जल-प्रलय) के पश्चात मनुष्य का वंश नूह के उन पुत्रों के वंश से है जो नूह की नाव में सवार हुए थे तथा तूफ़ान से बच गये थे। इसलिए इस्राईल की संतान को सम्बोधित करते हुए कहा गया कि तुम्हारे पिता नूह अल्लाह का अति कृतज्ञ भक्त था। तुम भी अपने पिता की तरह कृतज्ञता का मार्ग अपनाओ तथा हमने जो मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रसूल बनाकर भेजा है, उनको अस्वीकार करके कृतघ्नता न करो।

The Ummah Technology Mission

خِلٰلَ الدِّيَارِ ؕ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ۝

घरों के अन्दर तक फैल गये। तथा अल्लाह का वचन पूरा होना ही था।[1]

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَجَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِيْرًا ۝

(६) फिर हम ने उन पर तुम्हारा प्रभाव दे कर (तुम्हारा दिन) फेर दिया तथा धन एवं संतान से तुम्हारी सहायता की तथा तुम्हें बड़े जत्थे वाला कर दिया।[2]

اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ ۫ وَاِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا ؕ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِيَسُوْٓءٗا وُجُوْهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا تَتْبِيْرًا ۝

(७) यदि तुम ने अच्छे कार्य किये तो स्वयं अपने लाभ के लिए, तथा यदि तुमने बुराईयाँ कीं, तो भी स्वयं अपने ही लिए, फिर जब दूसरा वादा आया तो (हम ने दूसरे भक्तों को भेज दिया) ताकि वे तुम्हारा मुख बिगाड़ दें तथा प्रथम बार की भाँति फिर उसी मस्जिद में घुस जायें। तथा जिस-जिस वस्तु पर अधिकार पायें तोड़-फोड़ कर जड़ से उखाड़ दें।[3]

---

[1]यह संकेत उस अपमान तथा नाश की ओर है जो बाबुल के राजाधिराज बोख़्त नस्सर के हाथों आदरणीय मसीह के लगभग छः सौ वर्ष पूर्व यहूदियों पर योरूशलम में घटित हुआ। उसने निःसंकोच यहूदियों का नरसंहार किया तथा एक बड़ी संख्या को दास बना लिया तथा यह उस समय हुआ जब उन्होंने अल्लाह के नबी आदरणीय शअया की हत्या अथवा आदरणीय अरमिया अलैहिस्सलाम को बन्दी बनाया तथा तौरात के आदेशों का उल्लंघन किया तथा पाप करके धरती में आतंक मचा कर अपराधी बने। कुछ कहते हैं कि बोख़्त नस्सर के बजाय जालूत को अल्लाह तआला ने दण्ड स्वरूप उन पर डाला, जिस ने उन पर अत्याचार तथा क्रूरता के पहाड़ तोड़े यहाँ तक कि तालूत के नेतृत्व में आदरणीय दाऊद ने जालूत का वध किया।

[2]अर्थात बोख़्त नस्सर अथवा जालूत के वध के पश्चात हमने तुम्हें पुनः धन-धान्य, पुत्रों तथा सम्मान से अलंकृत किया, जबकि यह सारी वस्तुयें तुमसे छिन चुकी थीं। तथा तुम्हें पुनः अधिक जनसंख्या वाला तथा शक्तिशाली बना दिया।

[3]यह दूसरी बार उन्होंने उपद्रव उत्पन्न किया कि आदरणीय जकरिया की हत्या कर दी तथा आदरणीय ईसा की हत्या करने की योजना बनाते रहे जिन्हें अल्लाह तआला ने जीवित आकाश पर उठा कर उनसे बचा लिया। इसके परिणाम स्वरूप पुनः रोम के राजा टाईटस को

The Ummah Technology Mission

عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ ۚ وَاِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ۝٨

(८) आशा है कि तुम्हारा प्रभु तुम पर दया करे। हाँ, यदि तुम फिर भी वही करने लगे तो हम भी पुनः ऐसा ही करेंगे।[1] तथा हम ने नकारने वालों के लिए बन्दीगृह नरक को बना रखा है।[2]

اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ اَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ۝٩

(९) निःसंदेह यह क़ुरआन वह मार्ग दिखाता है जो सबसे सीधा है तथा ईमानदार पुनीतों को जो पुण्य के कर्म करते हैं, इस बात की शुभसूचना देता है कि उनके लिए अति उत्तम बदला (प्रतिफल) है।

وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝١٠

(१०) तथा वह लोग जो आख़िरत पर विश्वास नहीं करते, उनके लिए हमने दुखद यातना तैयार कर रखी है।

अल्लाह ने उन पर प्रभुत्व दे दिया, उसने योरूशलम पर आक्रमण करके उनके कटे शरीर की दीवार बना दी तथा बहुत से लोगों को बन्दी बना लिया, उनका माल लूट लिया, धार्मिक पुस्तकों को पैरों तले रौंदा तथा बैतुल मक़दिस तथा सुलैमान के धर्मस्थान को गिरा दिया, उन्हें सदैव के लिए बैतुल मक़दिस से देश निकाला दे दिया। तथा इस प्रकार उनके अपमान तथा अनादर के अन्य साधन उत्पन्न किये। यह विनाश ७० ई॰ में उन पर आया।

[1]यह उन्हें चेतावनी दी गयी कि यदि तुमने सुधार कर लिया तो अल्लाह की कृपा के पात्र बनोगे जिसका अर्थ इस लोक तथा परलोक में सम्मान तथा सफलता है, तथा यदि पुनः अल्लाह की कृतघ्नता का मार्ग अपनाकर धरती पर उपद्रव उत्पन्न किया, तो फिर तुम्हें उसी प्रकार अपमानित तथा तिरस्कार से दो-चार कर देंगे जैसे इस से पूर्व दो बार हम तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार कर चुके हैं। अतएव ऐसा ही हुआ, यह यहूदी अपने व्यवहार को न बदल सके तथा वही व्यवहार मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत के साथ दुहराया जो मूसा तथा ईसा की रिसालत के साथ कर चुके थे जिसके कारण यह यहूदी तीसरी बार मुसलमानों के हाथों अपमानित हुए तथा अनादर के साथ उन्हें मदीना तथा ख़ैबर से निकलना पड़ा।

[2]अर्थात इस दुनिया के अपमान के पश्चात परलोक में नरक का दण्ड तथा उसकी यातना अतिरिक्त है जो उन्हें वहाँ भुगतनी है।

The Ummah Technology Mission

وَيَدْعُ الْإِنسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ ۖ وَكَانَ الْإِنسَانُ عَجُولًا ﴿١١﴾

(११) तथा मनुष्य बुराई की प्रार्थनायें करने लगता है, पूर्णतः उसकी अपनी भलाई की प्रार्थनाओं के समान, मनुष्य बड़ा ही उतावला है।[1]

وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ فَمَحَوْنَا آيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنَاهُ تَفْصِيلًا ﴿١٢﴾

(१२) तथा हमने रात तथा दिन को (अपने सामर्थ्य के) लक्षण बनाये हैं, रात्रि के प्रतीक को हमने प्रकाशहीन कर दिया तथा दिन की निशानी को प्रकाशमान दिखाने वाली बनाया है ताकि तुम अपने प्रभु की कृपा की खोज कर सको तथा इसलिए भी कि वर्षों की गणना तथा हिसाब जान सको[2] तथा प्रत्येक विषय का हम ने सविस्तार वर्णन कर दिया है।[3]

---

[1]मनुष्य चूँकि उतावला तथा निरूत्साही है, इसलिए जब उसे दुख पहुँचता है तो अपनी विनाश की कामना इस प्रकार करता है जिस प्रकार सुख के लिए अपने प्रभु से प्रार्थना करता है। यह तो प्रभु की कृपा तथा दया है कि उसके श्राप को स्वीकार नहीं करता। यही विषय सूरः यूनुस आयत ११ में आ चुका है।

[2]अर्थात रात्रि को प्रकाशहीन अर्थात अंधकारमय कर दिया ताकि तुम विश्राम कर सको तथा तुम्हारे दिन भर की थकान दूर हो जाये तथा दिन को प्रकाश प्रदान किया ताकि तुम जीविका आर्जन के लिए अपने प्रभु की कृपा की खोज करो। इसके अतिरिक्त रात्रि-दिन का एक अन्य लाभ यह है कि इस प्रकार सप्ताह, मास, तथा वर्षों की गणना तुम कर सको, इस गणना के असंख्य लाभ हैं। यदि रात्रि के पश्चात दिन तथा दिन के पश्चात रात्रि न आती बल्कि सदैव रात्रि ही रात्रि रहती अथवा दिन ही दिन रहता, तो तुम्हें विश्राम तथा शांति एवं व्यवसाय का अवसर न मिलता तथा इसी प्रकार मास तथा वर्षों की गणना भी असम्भव रहती।

[3]अर्थात मनुष्य के लिए धर्म तथा संसार की आवश्यक बातें खोलकर वर्णन कर दी हैं, ताकि उनसे मनुष्य लाभ उठायें, अपनी दुनिया भी सुखमय करें तथा आख़िरत की भी चिन्ता तथा उसके लिए तैयारी करें।

The Ummah Technology Mission

وَكُلَّ إِنسَانٍ أَلْزَمْنَٰهُ طَٰٓئِرَهُۥ فِى عُنُقِهِۦ ۖ وَنُخْرِجُ لَهُۥ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ كِتَٰبًا يَلْقَىٰهُ مَنشُورًا ﴿١٣﴾

(१३) तथा हम ने प्रत्येक मनुष्य की बुराई-भलाई को उसके गले डाल दिया है[1] तथा प्रलय के दिन हम उसके कर्मपत्र को निकालेंगे, जिसे वह अपने ऊपर खुला हुआ पा लेगा।

ٱقْرَأْ كِتَٰبَكَ ۖ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ ٱلْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ﴿١٤﴾

(१४) लो स्वयं ही अपना कर्मपत्र आप पढ़ लो। आज तो तू आप ही अपना स्वयं निर्णय करने को पर्याप्त है।

مَّنِ ٱهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِى لِنَفْسِهِۦ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۗ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ﴿١٥﴾

(१५) जो संमार्ग प्राप्त करता है, वह स्वयं अपने भले के लिए मार्ग प्राप्त करता है तथा जो पथभ्रष्ट हो जाये उसका बोझ उसी के ऊपर है, कोई बोझ वाला किसी अन्य का बोझ अपने ऊपर न लादेगा[2] तथा हमारा नियम ही नहीं कि रसूल भेजने से पूर्व ही प्रकोप भेजें।[3]

---

[1] طائر का अर्थ पक्षी है तथा عنق का अर्थ गर्दन है। इमाम इब्ने कसीर ने तायेर से तात्पर्य मनुष्य के कर्म लिये हैं। في عنقه का अर्थ है, उसके अच्छे अथवा बुरे कर्म, जिस पर उसको अच्छा अथवा बुरा वदला दिया जायेगा, गले के हार की भाँति उनके साथ होंगे। अर्थात उसका प्रत्येक कर्म लिखा जा रहा है अल्लाह के यहाँ उसका पूरा लेखा सुरक्षित होगा। क़ियामत के दिन उसके आधार पर निर्णय किया जायेगा। तथा इमाम शौकानी ने तायेर से तात्पर्य मनुष्य का भाग्य लिया है जिसे अल्लाह ने अपने ज्ञानानुसार लिख दिया है, जिसे सौभाग्यशाली तथा अल्लाह का अवज्ञाकारी होना था, वह भी उसके ज्ञान में था, यही भाग्य (सौभाग्य अथवा दुर्भाग्य) प्रत्येक मनुष्य के साथ गले के हार की भाँति लगा हुआ है। उसी के अनुरूप उसके कर्म होंगे तथा क़ियामत के दिन उसी के अनुसार निर्णय होंगे।

[2] हाँ जो भटके हुए तथा भटकाने वाले भी होंगे, उन्हें अपने भटकाव के बोझ के साथ, उनके पाप का भी बोझ (बिना उनके पाप में कमी किये) उठाना पड़ेगा, जो उनके प्रयत्नों से भटके हुए होंगे। जैसाकि क़ुरआन के अन्य स्थानों तथा हदीसों से स्पष्ट है। यह वास्तव में उन्हीं के पापों का भार होगा जो अन्यों को भटकाकर उन्होंने कमाया।

[3] कुछ व्याख्याकारों ने इससे केवल सांसारिक यातना का भावार्थ लिया है। अर्थात आख़िरत की यातना से बच न सकेंगे। परन्तु क़ुरआन करीम के अन्य स्थानों से स्पष्ट है कि अल्लाह तआला लोगों से पूछेगा कि क्या तुम्हारे पास रसूल नहीं आये थे ? जिस पर वे

The Ummah Technology Mission

وَإِذَآ أَرَدْنَآ أَن نُّهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا۟ فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا ٱلْقَوْلُ فَدَمَّرْنَٰهَا تَدْمِيرًا ﴿١٦﴾

(१६) तथा जब हम किसी बस्ती के विनाश की इच्छा कर लेते हैं, तो वहाँ के सम्पन्न लोगों को कुछ आदेश देते हैं तथा वे उस बस्ती में स्पष्ट रूप से अवहेलना करने लगते हैं, तो उन पर (प्रकोप का) निर्णय लागू हो जाता है तथा फिर हम उसे उलट-पलट कर देते हैं।[1]

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ ٱلْقُرُونِ مِنۢ بَعْدِ نُوحٍ ۗ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِۦ

(१७) तथा हमने नूह के पश्चात भी बहुत से समुदाय नष्ट किये[2] तथा तेरा प्रभु अपने

सकारात्मक उत्तर देंगे, जिससे यह प्रतीत होता है कि रसूलों को भेजने तथा धर्मशास्त्र उतारे बिना वह किसी को प्रकोप नहीं देगा फिर भी इसका निर्णय कि किस समुदाय अथवा किस व्यक्ति तक उसका संदेश नहीं पहुँचा, क़ियामत के दिन वह स्वयं ही कर देगा। वहाँ नि:संदेह किसी पर अत्याचार नहीं होगा। इसी प्रकार बहरा, पागल, बुद्धिहीन तथा अज्ञान काल के मृत लोगों की समस्या है, उनके विषय में कुछ कथनों में आता है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उनकी ओर फ़रिश्ते भेजेगा तथा वह उन्हें कहेंगे कि नरक में चले जाओ, यदि वे अल्लाह के इस आदेश को मानकर नरक में प्रवेश कर लेंगे, तो नरक उनके लिए फूलों की सेज बन जायेगा, दूसरी अवस्था में उन्हें घसीटकर नरक में डाल दिया जायेगा। (मुसनद अहमद भाग ४ पृष्ठ २४ तथा इब्ने हिब्बान भाग ९ पृष्ठ २२६ अल्लामा अलबानी ने सहीहुल जामे अस्सगीर संख्या ८८१ में इसका वर्णन किया है) मुसलमानों के बच्चे तो स्वर्ग में जायेंगे ही परन्तु काफ़िरों के छोटे बच्चों के विषय में मतभेद है कोई विलम्ब का, कोई स्वर्ग में जाने का, तथा कुछ नरक में जाने को मानते हैं। इमाम इब्ने कसीर ने कहा हश्र के मैदान में उनकी परीक्षा ली जायेगी, इमाम इब्ने कसीर ने इसी कथन को प्राथमिकता दी है तथा कहा है कि इससे विरोधी कथन का खण्डन भी हो जाता है। (विस्तार के लिए तफ़सीर इब्ने कसीर देखिये) परन्तु सहीह बुख़ारी के कथन से ज्ञात होता है कि मूर्तिपूजकों के बच्चे भी स्वर्ग में जायेंगे। (सहीह बुख़ारी ३:२५१, १२:३४८)

[1]इसमें यह नियम वर्णित किये गये हैं, जिसके आधार पर समुदायों के विनाश का निर्णय किया जाता है, तथा वह यह कि उनका धनाड्य समाज अल्लाह के आदेशों की अवहेलना प्रारम्भ कर देता है। तथा उन्हीं का अनुकरण फिर अन्य लोग करते हैं, इस प्रकार उस समुदाय में अल्लाह की अवहेलना सामान्य हो जाती है तथा वह यातना के अधिकारी घोषित कर दिये जाते हैं।

[2]वह भी इसी विनाश के नियमानुसार नाश हुए।

The Ummah Technology Mission

خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ﴿١٧﴾

भक्तों के पापों से भली प्रकार परिचित एवं भली-भाँति देखने वाला है।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿١٨﴾

(१८) जिसकी इच्छा केवल इस शीघ्रता वाली दुनिया की ही हो, उसे हम यहाँ जितना जिसके लिए चाहें शीघ्रता से प्रदान कर देते हैं। अन्त में उसके लिए हम नरक निर्धारित कर देते हैं जहाँ वह निन्दित धिक्कारा हुआ प्रवेश करेगा।[1]

وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿١٩﴾

(१९) तथा जिसकी इच्छा परलोक की हो तथा जैसा प्रयत्न होना चाहिए वह करता भी हो तथा वह ईमान के साथ भी हो, फिर तो यही लोग हैं जिनके प्रयत्न को अल्लाह के यहाँ पूरा सम्मान किया जायेगा।[2]

كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ؕ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ﴿٢٠﴾

(२०) प्रत्येक को हम देते हैं, इन्हें भी तथा उन्हें भी, तेरे प्रभु के उपकार में से, तेरे पालनहार का उपकार रुका हुआ नहीं है।[3]

---

[1]अर्थात प्रत्येक संसार के लोभी को दुनिया नहीं मिलती, केवल उसको मिलती है, जिसको हम चाहें, फिर उसको भी दुनिया उतनी नहीं मिलती जितने की वह कामना करता है, बल्कि उतनी ही मिलती है जितनी हम उसके लिए निर्णय कर देते हैं, परन्तु इस मार्ग मोह का परिणाम नरक की स्थाई यातना तथा उसका अपमान है।

[2]अल्लाह तआला के यहाँ सम्मान के लिए तीन बातों का वर्णन किया गया है। १- परलोक की चिन्ता अर्थात शुद्धता तथा अल्लाह की प्रसन्नता। २- ऐसा प्रयत्न जो उसके योग्य हो अर्थात सुन्नत के अनुसार। ३- ईमान, क्योंकि इसके बिना कोई भी कर्म ध्येय नहीं। अर्थात कर्म की स्वीकृति के लिए ईमान के साथ शुद्धता (एकेश्वरवाद) तथा सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसार होना आवश्यक है।

[3]अर्थात दुनिया की जीविका तथा उसकी सुख-सुविधायें बिना किसी अंतर के मुसलमान तथा काफ़िर, दुनिया की कामना करने वाले तथा परलोक की चिन्ता करने वाले सबको देते हैं। अल्लाह के उपकार किसी से भी रोके नही जाते।

The Ummah Technology Mission

(२१) देख ले, उनमें एक को एक पर किस प्रकार विशेषता प्रदान कर रखी है तथा परलोक (आख़िरत) तो पदों के अनुसार अति उत्तम है तथा सम्मान के अनुसार भी अति उत्तम है।[1]

اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ﴿٢١﴾

(२२) अल्लाह के साथ किसी अन्य को पूज्य न बना कि अन्ततः तू निन्दित निस्सहाय होकर बैठ रहेगा।

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ﴿٢٢﴾

(२३) तथा तेरा प्रभु खुला आदेश दे चुका है कि तुम उसके अतिरिक्त किसी अन्य की आराधना (इबादत) न करना तथा माता-पिता के साथ उपकार करना। यदि तेरी उपस्थिति में इनमें से एक अथवा ये दोनों वृद्धावस्था को पहुँच जायें, तो उनको 'ऊफ़' तक न कहना, उन्हें डाँटना नहीं, बल्कि उनके साथ सम्मान तथा आदर से बातचीत करना।[2]

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ﴿٢٣﴾

---

[1]फिर भी दुनिया की यह वस्तुयें किसी को कम, किसी को अधिक मिलती हैं, अल्लाह तआला अपनी इच्छा एवं ज्ञानानुसार यह जीविका विभाजित करता है। परन्तु आख़िरत में श्रेणियों का यह अन्तर अधिक स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष होगा तथा वह इस प्रकार कि ईमान वाले स्वर्ग में तथा काफ़िर लोग नरक में जायेंगे।

[2]इस आयत में महाकृपालु अल्लाह तआला ने अपनी इबादत के पश्चात द्वितीय चरण में माता-पिता के साथ सदव्यवहार का आदेश दिया है, जिससे माता-पिता के आज्ञापालन, उनकी सेवा तथा उनके आदर-सत्कार का महत्व स्पष्ट होता है। महा पालनहार अल्लाह के प्रतिपालन की माँग पूरा करने के साथ छोटे पोषक माता-पिता के आज्ञापालन की माँग को भी पूरा करना है। हदीसों में भी इसके महत्व तथा विशेषता को अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में उजागर किया गया है, फिर वृद्धावस्था में विशेष रूप से उनके समक्ष 'उफ़' शब्द तक कहने से रोका गया है तथा उन्हें डाँटने से मना किया गया है, क्योंकि वृद्धावस्था में माता-पिता कमज़ोर, असहाय तथा लाचार हो जाते हैं, जबकि संतान जवान तथा जीविका साधन पर अधिकृत हो जाती है। इसके अतिरिक्त जवानी-दीवानी की भावना

The Ummah Technology Mission

وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِي صَغِيْرًا ﴿٢٤﴾

(२४) तथा नम्रता एवं प्रेम के साथ उनके सामने सत्कार के हाथ फैलाये रखना [1] तथा प्रार्थना करते रहना कि हे मेरे प्रभु ! इन पर ऐसी ही दया करना, जैसाकि इन्होंने मेरे बाल्यकाल में मेरा पालन-पोषण किया है।

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ۭ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ﴿٢٥﴾

(२५) जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे तुम्हारा प्रभु भली-भाँति जानता है, यदि तुम सदाचारी हो, तो वह क्षमा-याचना करने वालों को क्षमा करने वाला है।

وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿٢٦﴾

(२६) तथा सम्बन्धियों का, एवं निर्धनों का, तथा यात्रियों का अधिकार अदा करते रहो।[2] तथा अनर्थ तथा अपव्यय से बचो।

एवं बुढ़ापे के सीत तथा रमें दुखी अनुभव में मुठभेड़ होती है। इन परिस्थितियों में माता-पिता के आदर-सत्कार के नियमों पर ध्यान देना अत्यधिक कठिन विषय होता है। फिर भी अल्लाह के दरबार में सम्मानित एवं सफल वही होगा जो इन नियमों का पालन करेगा।

[1]पक्षी जब अपने बच्चों को अपनी प्रेम छाया में लेता है, तो उनके लिए अपने पंख नीचे गिरा देता है, अर्थात तू भी अपने माता-पिता के साथ इसी प्रकार अच्छा एवं प्रेम पूर्ण व्यवहार कर तथा उनकी इसी प्रकार पालन-पोषण कर जिस प्रकार उन्होंने बचपन में तेरा किया अथवा यह अर्थ हैं कि जब पक्षी उड़ने अथवा ऊँचा उठने का प्रयत्न करता है, तो अपने पंख फैला लेता है तथा जब नीचे उतरता है तो पँख को नीचे कर लेता है। इस आधार पर बाँहें नीचे करने का अर्थ माता-पिता के समक्ष सत्कार तथा नम्रता व्यक्त करने के होंगे।

[2]क़ुरआन करीम के इन शब्दों से ज्ञात हुआ कि निर्धन निकट सम्बन्धियों, निर्धनों तथा किसी प्रकार की आवश्यकता वाले यात्रियों की सहायता करके उनपर उपकार जताना नहीं चाहिए, क्योंकि यह उपकार नहीं बल्कि माल का वह भाग है जो अल्लाह तआला ने धनवानों के धन में वर्णित व्यक्तियों का रखा है। यदि धनवान यह धन अदा नहीं करेगा तो अल्लाह के समक्ष अपराधी होगा। अर्थात यह अधिकार को अदा करना है, न कि किसी पर उपकार। इसके अतिरिक्त निकट सम्बन्धियों का वर्णन करने से उन की प्राथमिकता एवं

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيَاطِينِ ۖ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ﴿٢٧﴾

(२७) अपव्यय करने वाले शैतानों के भाई हैं तथा शैतान अपने प्रभु का अत्यधिक कृतघ्न है।[1]

وَإِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاءَ رَحْمَةٍ مِّن رَّبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُل لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا ﴿٢٨﴾

(२८) तथा यदि तुझे उनसे मुख फेर लेना पड़े अपने प्रभु की इस कृपा की खोज में जिस की तू आशा रखता है, तो भी तुझे चाहिए कि भली प्रकार तथा कोमलता से उन्हें समझा दे।[2]

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ

(२९) तथा अपना हाथ अपनी गर्दन से बँधा हुआ न रख तथा न उसे पूर्णरूप से खोल दे

अधिकार भी स्पष्ट होता है। निकट सम्बन्धियों के अधिकारों को अदा करना तथा उनके साथ सदव्यवहार करने को सम्बन्ध जोड़ना कहा जाता है, जिसका इस्लाम में बड़ा महत्व है।

[1] تَبذِيرٌ का मूल धातु (बीज बोना) بذرٌ है। जिस प्रकार खेत में बीज बोते समय यह नहीं देखा जाता कि यह उचित स्थान पर पड़ रहा है अथवा उससे इधर-उधर। बल्कि किसान बीज बोता चला जाता है। تبذيرٌ (अपव्यय) भी यही है कि मनुष्य अपना धन बीज की भाँति उड़ाता फिरे तथा व्यय करने में धार्मिक नियमों का भी उल्लंघन करे तथा कुछ कहते हैं कि 'तबज़ीर' का अर्थ है अनुचित स्थान पर व्यय करना चाहे थोड़ा ही हो। हमारे विचार से दोनों ही बातें 'तबज़ीर' में आ जाती हैं। तथा यह इतना बुरा कर्म है कि इसके करने वाले को शैतान के समान कहा गया है तथा शैतान के अनुरूपता से बचना चाहिए, चाहे वह किसी एक ही प्रकार का हो, मनुष्य के लिए बचना आवश्यक है। फिर शैतान को كفورٌ (अत्यधिक कृतघ्न) कहकर और अधिक बचने पर बल दिया गया है कि यदि तुम शैतान के अनुरूप अपनाओगे तो तुम भी उसकी भाँति كفورٌ घोषित कर दिये जाओगे। (फ़तहुल क़दीर)

[2] अर्थात धन की शक्ति की कमी के कारण, जिसके दूर होने की तथा जीविका में वृद्धि की तुम अपने प्रभु से आशा रखते हो। यदि तुझे निर्धन सम्बन्धियों तथा निर्धनों से बचना अर्थात असमर्थता व्यक्त करना पड़े तो, बड़ी नम्रता तथा कोमलता से असमर्थता व्यक्त कर, अर्थात उत्तर भी दिया जाये तो नम्रता तथा प्रेम की भाषा में न कि कटु वचन तथा दुर्व्यवहार के साथ, जैसाकि सामान्यत: लोग निर्धनों तथा भिखारियों के साथ व्यवहार करते हैं।

The Ummah Technology Mission

فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا ﴿٢٩﴾

कि फिर धिक्कारा हुआ तथा पछताया हुआ बैठ जाये।[1]

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٣٠﴾

(३०) नि:संदेह तेरा प्रभु जिसके लिए चाहे जीविका का विस्तार कर देता है तथा जिसके लिए चाहे तंग कर देता है।[2] नि:संदेह वह अपने भक्तों से सूचित है एवं सूक्ष्मता से देखने वाला है।

وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ ۚ إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْئًا كَبِيرًا ﴿٣١﴾

(३१) तथा निर्धनता के भय से अपनी संतानों को न मार डालो ! उनको तथा तुमको हम ही जीविका प्रदान करते हैं। नि:संदेह उनकी हत्या करना महापाप है।[3]

---

[1]पूर्व की आयत में नकारात्मक उत्तर देने के नियम एवं व्यवहार का वर्णन किया गया है। अब माल ख़र्च करने के नियमों का वर्णन किया जा रहा है तथा वह यह कि मनुष्य को न कंजूसी करना चाहिए कि अपने परिवार की आवश्यकताओं पर भी न व्यय करे तथा न अपव्यय ही करे कि अपनी शक्ति तथा आय देखे बिना बे रोक-टोक व्यय करता रहे। कंजूसी का परिणाम यह होगा कि मनुष्य धिक्कार तथा निन्दा का पात्र घोषित किया जायेगा तथा अपव्यय के परिणाम स्वरूप محسور (थका हारा तथा पछताने वाला) उस पशु को कहते हैं, जो चल-चलकर थक चुका हो तथा चलने से विवश हो चुका हो। अपव्यय करने वाला भी अन्त में ख़र्च करके ख़ाली हाथ होकर बैठ जाता है। अपने हाथों को अपनी गर्दनों से बाँधे हुए न रख का भावार्थ कंजूसी से बचना है तथा "न उसे नितांत ही खोल दे" यह अपव्यय से बचना है।

[2]इसमें ईमानवालों के लिये सांत्वना है कि उनके पास जीविका उपार्जन के साधनों की अधिकता नहीं तो इसका अर्थ यह नहीं है कि अल्लाह के सदन में उनका स्थान नहीं है, बल्कि यह जीविका की अधिकता अथवा कमी का सम्बन्ध अल्लाह के उस भेद तथा निर्णय से है, जिसे केवल वही जानता है। वह अपने शत्रुओं को धनवान बना दे तथा अपनों को इतना ही दे कि जिससे वे कठिनाई से अपना निर्वाह कर सकें। यह उसकी इच्छा है। जिसको वह अधिक दे, वह उसका प्रिय नहीं तथा आवश्यकतानुसार जीविकाधारी उसका अप्रिय नहीं।

[3]यह आयत *सूरः अनआम*-१५१ में भी आ चुकी है। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शिर्क के पश्चात जिसे महापाप घोषित किया है वह यही है कि :

The Ummah Technology Mission

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿۳۲﴾

(३२) तथा सावधान ! व्यभिचार के निकट भी न जाना क्योंकि वह घोर निर्लज्जता है तथा अत्यधिक बुरा मार्ग है ।[1]

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِىْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّى الْقَتْلِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ﴿۳۳﴾

(३३) तथा किसी जीव को जिसका मारना अल्लाह ने निषेध कर दिया है कदापि अवैध हत्या न करना ।[2] तथा जो व्यक्ति निर्दोष मार डाला जाये हमने उसके उत्तराधिकारी को अधिकार दे रखा है, परन्तु उसे चाहिए कि

«أَنْ تَقْتُلَ وَلَدَكَ خَشْيَةَ أَنْ يَطْعَمَ مَعَكَ».

"कि तू अपनी संतान को इस भय से मार डालो कि वह तेरे साथ खायेगी ।" (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरः बक़रः, किताबुल अदब, सहीह मुस्लिम किताबुत तौहीद बाब फला तजअलू लिल्लाहे अनदादा)

वर्तमान युग में संतान की हत्या का पाप अत्यन्त नियोजित ढंग से परिवार नियोजन के आकर्षक नाम से सम्पूर्ण संसार में हो रहा है । तथा पुरूष लोग अच्छी "शिक्षा तथा प्रशिक्षण" के नाम पर तथा स्त्रियाँ अपनी "सुन्दरता" की रक्षा के लिए साधारणत: यह अपराध कर रही हैं ।

[1]इस्लाम में चूँकि व्यभिचार अतिघोर महापाप तथा अपराध है, इतना घोर कि यदि कोई विवाहित पुरूष तथा स्त्री इसे करे तो समाज में जीवित रहने का अधिकार ही नहीं है । फिर उसे तलवार के एक वार से मार डालना ही बस नहीं है अपितु आदेश है कि पत्थर मार-मार कर उसके जीवन का अन्त कर दिया जाये ताकि वह समाज के लिए शिक्षा का प्रतीक बन जाये । इसलिए यहाँ कहा गया कि व्यभिचार के निकट न जाओ अर्थात उसके कारण तथा साधन से ही बचकर रहो, जैसे पराई नारियों को देखना, उनसे मिलना तथा बात करने का साधन बनाना, इसी प्रकार स्त्रियों का बन संवर कर बिना पर्दा घर से बाहर निकलना आदि इन सभी बातों से बचना आवश्यक है ताकि इस निर्लज्जता से बचा जा सके ।

[2]अधिकार के साथ हत करने का अर्थ हत्यारे का प्रतिहत्या में हत करना है, जिसको मानव समाज के जीवन तथा सुख-शान्ति का कारण बताया गया है । इसी प्रकार विवाहित व्यभिचारी तथा विधर्मी के हत करने का आदेश दिया गया है ।

The Ummah Technology Mission

मार डालने में अति न करे, नि:संदेह उसकी सहायता की गयी है।[1]

(३४) तथा अनाथ के धन के निकट न जाओ सिवाय उस विधि के जो अति उत्तम हो यहाँ तक कि वह अपनी व्यस्कावस्था को पहुँच जाये[2] तथा वचन पूरे करो क्योंकि वचन के विषय में पूछ होगी।[3]

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۪ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُوْلًا ﴿٣٤﴾

(३५) तथा जब नापने लगो तो पूरे नाप से नापो तथा सीधी तराज़ू से तौलो। यही उत्तम है[4] तथा इसका परिणाम भी अति उत्तम है।

وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿٣٥﴾

---

[1]अर्थात हत के उत्तराधिकारियों को यह अधिकार अथवा प्रभुत्व अथवा शक्ति प्रदान की गयी है कि वह हत्यारे को न्यायधीश के धार्मिक निर्णय के बाद प्रतिहत्या में हत कर दें अथवा उससे धन ले लें अथवा क्षमा कर दें। तथा यदि हत ही करके प्रतिहत्या लेना है तो उसमें अति न करें कि एक के बदले दो अथवा तीन चार को मार डालें अथवा उसके अंग काटकर कुचल डालें अथवा यातना दे देकर मारें, हत का उत्तराधिकारी सहायता प्राप्त है अर्थात न्यायाधीशों तथा अधिकारियों को उसकी सहायता करने पर बल दिया गया है, इस लिए इस पर अल्लाह का कृतज्ञ होना चाहिए, न यह कि अति करके अल्लाह का कृतघ्न हो।

[2]किसी का प्राण अनुचित रूप से बर्बाद करने से मना करने के पश्चात धन के अपव्यय से रोका जा रहा है तथा इसमें अनाथ का धन विशेष महत्व रखता है। इसलिए कहा कि अनाथ के व्यस्क होने तक उसके धन को इस प्रकार से प्रयोग करो, जिसमें उसका लाभ हो। यह न हो कि बिना सोचे-विचारे ऐसे कार्य में लगा दो कि वह विनाश अथवा हानि में जाये अथवा युवावस्था तक पहुँचने से पूर्व ही तुम उसे समाप्त कर दो।

[3]वचन से वह संधियाँ भी तात्पर्य हैं जो अल्लाह तथा उसके भक्त के मध्य है तथा वह भी जो लोग आपस में एक-दूसरे से करते हैं। दोनों प्रकार के वचन का पालन करना आवश्यक है तथा वचन भंग करने पर पकड़ होगी।

[4]प्रतिफल तथा प्रतिकार के आधार पर उत्तम है। इसके अतिरिक्त लोगों के अन्दर विश्वास उत्पन्न करने में भी नाप-तौल में ईमानदारी लाभकारी है।

The Ummah Technology Mission

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُوْلًا ﴿٣٦﴾

(३६) तथा जिस बात की तुझे सूचना ही न हो, उसके पीछे मत पड़ ।[1] क्योंकि कान तथा आँख एवं दिल इनमें से प्रत्येक से पूछताछ की जाने वाली है ।[2]

وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ﴿٣٧﴾

(३७) तथा धरती पर अकड़ कर न चलो, क्योंकि न तू धरती को चीर सकता है तथा न लम्बाई में पर्वतों को पहुँच सकता है ।[3]

كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ﴿٣٨﴾

(३८) यह सब कार्यों की बुराई तेरे पालनहार के समीप अति अप्रिय हैं ।[4]

ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ؕ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِىْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿٣٩﴾

(३९) यह भी उस प्रकाशना (वह्यी) में से है जिसे तेरे पालनहार ने तेरी ओर सुनीति से उतारी है, अत: अल्लाह के साथ किसी अन्य को पूज्य न बनाना कि धिक्कार कर तथा अपमानित करके नरक में डाल दिया जाये ।

---

[1] قَفَا يَقْفُو का अर्थ है पीछे लगना । अर्थात जिस बात का ज्ञान नहीं उसके पीछे मत लगो, अर्थात कुविचार न रखो, किसी की खोज में न रहो, इसी प्रकार जिस बात का ज्ञान नहीं उसका अनुसरण न करो ।

[2]अर्थात जिस वस्तु के पीछे तुम पड़ोगे उसके सम्बन्ध में कान से प्रश्न किया जायेगा कि क्या उसने सुना था, आँख से प्रश्न होगा कि क्या उसने देखा था तथा हृदय से प्रश्न होगा कि क्या उसने जाना था । क्योंकि यही तीन ज्ञान के साधन हैं । अर्थात इन अंगों को अल्लाह तआला प्रलय के दिन बोलने की शक्ति प्रदान करेगा तथा उनसे पूछा जायेगा ।

[3]इतराकर तथा अकड़कर चलना, अल्लाह तआला को अत्यंत अप्रिय है । क़ारून को इसीलिए उस के घर तथा कोष सहित धरती में धँसा दिया (सूरः *अल-क़सस-८१*) हदीस में आता है, "एक व्यक्ति दो चादरें पहनकर अकड़ कर चल रहा था कि उसको धरती में धँसा दिया गया तथा वह क़ियामत तक धँसता चला जायेगा ।" (सहीह मुस्लिम किताबुल लिबास, बाब तहरीमुत तबख़्तुरे फ़िल मश्य मअ एजाबिहि बिसियाबिहि) अल्लाह तआला को नम्रता तथा विनम्रता प्रिय है ।

[4]अर्थात जो बातें वर्णित हुईं, उनमें से जो बुरी हैं, जिन से मना किया गया है, वह अप्रिय हैं ।

The Ummah Technology Mission

اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ اِنَاثًا ؕ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ﴿٤٠﴾

(४०) क्या पुत्रों के लिए अल्लाह ने तुम्हें निर्वाचित कर लिया है तथा स्वयं अपने लिए फ़रिश्तो को पुत्रियाँ बना लिया ? नि:संदेह तुम बहुत बड़ा बोल बोल रहे हो।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ؕ وَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ﴿٤١﴾

(४१) तथा हमने तो इस क़ुरआन में हर प्रकार से वर्णन कर दिया[1] कि लोग समझ जायें। परन्तु इस पर भी उनकी घृणा ही अधिक होती है।

قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗٓ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِي الْعَرْشِ سَبِيْلًا ﴿٤٢﴾

(४२) कह दीजिए कि यदि अल्लाह के साथ अन्य देवता (पूज्य) भी होते जैसाकि ये लोग कहते हैं, तो अवश्य वह अब तक अर्श के स्वामी की ओर मार्ग खोज लेते।[2]

سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا ﴿٤٣﴾

(४३) जो कुछ ये कहते हैं, उससे वह पवित्र एवं महान, अति दूर एवं अत्यधिक उच्च हैं।[3]

---

[1]नाना प्रकार से अर्थ है, भाषण तथा शिक्षा, तर्क तथा युक्ति, प्रलोभन तथा चेतावनी, तथा उदाहरण एवं घटनायें हर प्रकार से बार-बार समझाया गया है ताकि वे समझ जायें, परन्तु वह कुफ़्र तथा मूर्तिपूजा में इस प्रकार फंसे हुए हैं कि वह सत्य के निकट होने के बजाय उससे अधिक दूर हो गये हैं। इसलिए कि वह यह समझते हैं कि यह क़ुरआन जादू, ज्योतिष तथा कविता है, फिर वह इस क़ुरआन से किस प्रकार मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे।

[2]इसका एक अर्थ तो यह है कि जिस प्रकार एक राजा दूसरे राजा पर आक्रमण करके विजय प्राप्त कर लेता है, उसी प्रकार यह देवता भी अल्लाह पर अधिकार प्राप्त करने का मार्ग खोज निकालते। तथा अब तक ऐसा नहीं हुआ, जब कि उन देवताओं को पूजते युग बीत गये, तो इसका अभिप्राय यह है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। कोई स्वाधीन शक्ति ही नहीं, कोई लाभ तथा हानि पहुँचाने वाला नहीं। दूसरा अर्थ यह है कि वह अब तक अल्लाह की निकटता प्राप्त कर चुके होते तथा यह मूर्तिपूजक जो विश्वास रखते हैं कि उनके द्वारा वह अल्लाह की निकटता प्राप्त करते हैं, उन्हें भी वह अल्लाह के निकट कर चुके होते।

[3]अर्थात वास्तविकता यह है कि यह लोग अल्लाह के विषय में जो कहते हैं कि उसके साझीदार हैं। अल्लाह तआला इन सब बातों से शुद्ध तथा अत्यन्त महान है।

The Ummah Technology Mission

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ وَاِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿۴۴﴾

(४४) सातों आकाश तथा धरती एवं जो कुछ उनमें है उसी की महिमागान करती है। ऐसी कोई वस्तु नहीं जो पवित्रता तथा महानता के साथ उसे याद न करती हो। हाँ, यह सत्य है कि तुम उसका महिमागान समझ नहीं सकते।[1] वह बड़ा सहनशील तथा क्षमा करने वाला है।

---

[1]अर्थात सब उसी के आज्ञाकारी तथा अपनी-अपनी शैली में उसकी महिमा तथा गुणों का वर्णन करते हैं यद्यपि हम उनकी महिमा तथा गुणों के वर्णन को न समझ सकें। इसकी पुष्टि क़ुरआन की अन्य आयतों से भी होती है। जैसे : आदरणीय दाऊद के विषय में आता है।

﴿إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ﴾

"हमने पर्वतों को दाऊद के अधीन कर दिया, बस वे संध्या तथा प्रात: उसके साथ अल्लाह की महिमा (शुद्धता) का वर्णन करते हैं।" (सूर: साद-१८)

कुछ पत्थरों के विषय में अल्लाह तआला ने सूर: अल-बकर:-७४ में फ़रमाया :

﴿وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ﴾

"तथा कुछ अल्लाह तआला के भय से गिर पड़ते हैं।"

"कुछ सहाबा वर्णन करते हैं कि वह रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ भोजन कर रहे थे कि उन्होंने भोज्य पदार्थ से अल्लाह की महिमागान करने की ध्वनि सुनी" (सहीह बुख़ारी किताबुल मनाक़िब संख्या ३५७९)। एक अन्य हदीस से सिद्ध है कि चीवँटियाँ अल्लाह की महिमागान करती हैं। (सहीह बुख़ारी संख्या ३०१९ तथा सहीह मुस्लिम संख्या १७५९)। इसी प्रकार जिस तनों की टेक लगा कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भाषण दिया करते थे, जब लकड़ी का मंच (बैठने तथा खड़ा होने का स्थान) बन गया तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस स्थान को छोड़ दिया तो बच्चे की तरह उससे रोने की आवाज़ आती थी (सहीह बुख़ारी संख्या ३५८३)। मक्के में एक पत्थर था जो रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम किया करता था (सहीह मुस्लिम संख्या १७८२)। इन आयतों तथा सहीह हदीसों से स्पष्ट है कि जड़ पदार्थ तथा बनस्पति के अन्दर एक विशेष प्रकार का संवेदन विद्यमान है, जिसे यद्यपि हम न समझ सकें, परन्तु वे उस संवेदन के आधार पर अल्लाह की महिमा का वर्णन करते हैं। कुछ विद्वान कहते हैं कि इससे तात्पर्य सांकेतिक महिमा है अर्थात ये वस्तुयें इस बात का संकेत हैं कि समस्त विश्व का रचयिता तथा सर्वशक्तिमान अल्लाह ही है।

The Ummah Technology Mission

وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُورًا ﴿٤٥﴾

(४५) तथा तू जब क़ुरआन पढ़ता है, हम तेरे तथा उन लोगों के मध्य जो परलोक के प्रति (आख़िरत) पर विश्वास नहीं रखते एक गुप्त आवरण (पर्दा) डाल देते हैं।[1]

وَّجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۖ وَإِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَّوْا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ نُفُورًا ﴿٤٦﴾

(४६) तथा उनके दिलों पर हमने पर्दे डाल दिये हैं कि वह उसे समझें तथा उनके कानों में बोझ, तथा जब तू केवल अल्लाह ही का वर्णन उसकी एकता के साथ इस क़ुरआन में करता है, तो वे मुख फेर कर पीठ मोड़कर भाग खड़े होते हैं।[2]

نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَىٰ إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ﴿٤٧﴾

(४७) जिस उद्देश्य से वे उसे सुनते हैं उनके विचारों से हम भली-भाँति परिचित हैं, जब ये आपकी ओर कान लगाये हुए होते हैं, तब भी तथा जब ये विचार-विमर्श करते हैं तब भी, जबकि यह अत्याचारी कहते हैं कि तुम

وَفِي كُلِّ شَيْءٍ لَهُ آيَةٌ * تَدُلُّ عَلَىٰ أَنَّهُ وَاحِدٌ

"प्रत्येक वस्तु इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह तआला एक है।"

परन्तु उचित बात प्रथम ही है कि महिमानगान अपने वास्तविक अर्थ में है।

[1] ساتر ، مستور के अर्थ में है। इसका अर्थ विघ्न तथा आवरण है। अथवा مستور عن الأبصار (आँखों से ओझल) अंतत: वह उसे देखते नहीं। इसके साथ उनके तथा मार्गदर्शन के मध्य पर्दा पड़ा है।

[2] كنان ، أكنة (किनान) का बहुवचन है, ऐसा पर्दा जो दिलों पर पड़ जाये। وقر कानों में ऐसा बोझ जो क़ुरआन के सुनने में बाधित हो। अर्थ यह हुआ कि उनके दिल क़ुरआन के समझने योग्य नहीं तथा कान क़ुरआन सुन कर मार्गदर्शन प्राप्त करने योग्य नहीं हैं। तथा अल्लाह की एकता से तो उन्हें इतनी घृणा है कि उसे सुनकर भाग खड़े होते हैं, इन कार्यों का सम्बन्ध अल्लाह से इन्हे पैदा करने के कारण है। वरन् मार्गदर्शन से वंचित होना उनके इंकार तथा घृणा ही का परिणाम था।

The Ummah Technology Mission

उसके अनुसरण में लगे हुए हो जिस पर जादू कर दिया गया है।[1]

(४८) देखें तो सही, वे आपके लिए क्या-क्या उदाहरण देते हैं, अत: वे बहक रहे हैं। अब तो मार्ग पाना उनके वश में नहीं रहा।[2]

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٤٨﴾

(४९) उन्होनें कहा कि क्या जब हम अस्थियाँ तथा धूल हो जायेंगे तो क्या हम नये जन्म में पुन: उठाकर खड़े कर दिये जायेंगे।

وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٤٩﴾

(५०) उत्तर दीजिए कि तुम पत्थर बन जाओ अथवा लोहा।[3]

قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ﴿٥٠﴾

(५१) अथवा कोई ऐसी वस्तु जो तुम्हारे दिलों में बहुत ही महान प्रतीत होती हो[4] फिर वह पूछें कि कौन है जो पुन: हमारा जीवन लौटाये ? (आप) उत्तर दें कि वही (अल्लाह) जिसने तुम्हें प्रथम बार जन्म दिया, इस पर वे अपने सिर हिला-हिलाकर[5] आपसे पूछेंगे

اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا ۭ قُلِ الَّذِيْ فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُوْنَ اِلَيْكَ رُءُوْسَهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ ۭ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ﴿٥١﴾

---

[1]अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह जादू से पीड़ित समझते हैं तथा यह समझते हुए क़ुरआन सुनते तथा आपस में कानाफूसी करते हैं, इसलिए मार्गदर्शन से वंचित ही रहते हैं।

[2]कभी जादूगर, कभी जादू से पीड़ित कभी पागल तथा कभी ज्योतिषी कहते हैं, अत: इस प्रकार भटक रहे हैं। मार्गदर्शन उन्हें किस प्रकार मिले ?

[3]जो मिट्टी तथा हड्डी से भी अधिक कठोर है तथा जिसमें जीवन के चिन्ह उत्पन्न करना अधिक जटिल है।

[4]अर्थात उससे भी कड़ी वस्तु जो तुम्हारे ज्ञान में हो, वह बन जाओ तथा फिर पूछो कि कौन जीवित करेगा ?

[5] أنغض يُنغض का अर्थ है सिर हिलाना। अर्थात उपहास स्वरूप सिर हिलाकर वह कहेंगे कि यह पुर्नजीवन कब होगा ?

The Ummah Technology Mission

कि अच्छा यह होगा कब ? तो (आप) उत्तर दें कि क्या आश्चर्य कि वह निकट ही आ लगी हो।[1]

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ وَتَظُنُّونَ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٥٢﴾

(५२) जिस दिन वह तुम्हें बुलायेगा[2] तुम उसकी प्रशंसा करते हुए आज्ञा पालन करोगे तथा अनुमान करोगे कि तुम्हारा रहना अति अल्प है।[3]

وَقُل لِّعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنزَغُ بَيْنَهُمْ ۚ

(५३) तथा मेरे भक्तों से कह दीजिए कि वह बहुत ही अच्छी बात अपने मुख से निकाला

---

[1] قريب का अर्थ है होने वाली वस्तु كل ما هو آت فهو قريبٌ "प्रत्येक घटने वाली वस्तु समीप है।" तथा عسى भी क़ुरआन में निश्चय तथा अवश्य होने के अर्थ में प्रयोग हुआ है अर्थात क़ियामत का होना निश्चित तथा आवश्यक है।

[2]'बुलायेगा' का अर्थ है क़ब्रों (समाधियों) से जीवित करके सदन में उपस्थिति करेगा, तुम उसकी महिमा का वर्णन करते हुए आदेश का पालन करोगे अथवा उसे पहचानते हुए उसके समक्ष उपस्थित हो जाओगे।

[3]वहाँ यह दुनिया का जीवन अति अल्प प्रतीत होगा।

﴿ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا ﴾

"जब क़ियामत को देख लेंगे, तो सांसारिक जीवन ऐसा लगेगा कि जैसे एक संध्या अथवा एक प्रातः रहे हैं।" (सूरः *अल-नाज़िआत*-४६)

इसी विषय कोअन्य स्थानों पर भी वर्णन किया गया है। जैसे सूरः *ताहा*-१०२ तथा १०४, सूरः *अल-रूम*-५५, सूरः *अल-मोमिनून*-११२ तथा ११४। कुछ विद्वान कहते हैं कि प्रथम फूंक होगी तो मरे हुए लोग जीवित हो जायेंगे। फिर दूसरी फूंक (नाद) पर हश्र के मैदान में हिसाब-किताब के लिए एकत्रित होंगे, दोनों फूंक (नाद) के मध्य की अवधि में उन्हें कोई यातना नहीं दी जायेगी, वे सो जायेंगे। दूसरी फूंक पर उठेंगे तो कहेंगे, "अफ़सोस हमें हमारी निद्रा से किसने उठाया है ?" (सूरः *यासीन*-५२) (फ़तहुल क़दीर) पहली बात अधिक ठीक है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنسَانِ عَدُوًّا مُّبِينًا ﴿٥٣﴾

करें [1] क्योंकि शैतान आपस में फूट डलवाता है।[2] नि:संदेह शैतान मनुष्य का खुला शत्रु है।

رَّبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ ۖ إِن يَشَأْ يَرْحَمْكُمْ أَوْ إِن يَشَأْ يُعَذِّبْكُمْ ۚ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ﴿٥٤﴾

(५४) तुम्हारा पोषक तुम्हारी अपेक्षा तुमसे अत्यधिक जानने वाला है, वह यदि चाहे तो तुम पर दया कर दे, चाहे तुम्हें दण्ड दे।[3] हमने आपको उनका उत्तरदायी बनाकर नहीं भेजा।[4]

وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّينَ

(५५) तथा आकाशों एवं धरती में जो कुछ भी है आपका प्रभु सबको भली-भाँति जानता है। हमने कुछ पैग़म्बरों को कुछ पर श्रेष्ठता

---

[1]अर्थात आपस में बातचीत करते समय भाषा के प्रयोग में सावधानी रखें, अच्छे शब्द बोलें, इसी प्रकार काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों एवं अहले किताब को सम्बोधित करने की आवश्यकता पड़ जाये तो उनसे भी प्रेमपूर्वक एवं मृदल शब्दों में बातचीत करें।

[2]भाषा की ज़रा-सी चूक से शैतान, जो तुम्हारा खुला तथा आदि से शत्रु है, तुम्हारे मध्य आपस में उपद्रव करवा सकता है अथवा काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों के दिलों में तुम्हारे लिए अधिक द्वेष तथा घृणा उत्पन्न कर सकता है। हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "तुम में से कोई व्यक्ति अपने भाई (मुसलमान) की ओर हथियार के साथ संकेत न करे, इसलिए कि वह नहीं जानता कि शैतान शायद उसके हाथ से वह हथियार चलवा दे। (तथा वह उस मुसलमान भाई को जा लगे, जिससे उसकी मृत्यु हो जाये) तो वह नरक के गढ़े में जा गिरे।" (सहीह बुख़ारी किताबुल फ़ेतन बाब मन हमल अलैन स्सेलाह फलैस मिन्ना, सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्रे बाबुन नह्ये मिनल इशारते बिस-सेलाह)

[3]यदि सम्बोधन मूर्तिपूजकों से हो तो कृपा का अर्थ इस्लाम धर्म धारण करने का सौभाग्य के होगा तथा यातना से तात्पर्य मूर्तिपूजा करते ही मौत है, जिसके कारण वे यातना के अधिकारी होंगे तथा यदि सम्बोधन ईमान वालों से हो तो कृपा का अर्थ होगा कि वह काफ़िरों से तुम्हारी सुरक्षा करेगा तथा यातना का अर्थ है काफ़िरों का मुसलमानों पर प्रभुत्व तथा अधिपत्य।

[4]कि आप उन्हें अवश्य कुफ़्र के दलदल से निकालें अथवा उनके कुफ़्र पर दृढ़ रहने पर आप से पूछताछ हो।

The Ummah Technology Mission

عَلٰى بَعْضٍ وَّ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿٥٥﴾

तथा प्रतिष्ठा प्रदान की है।[1] तथा दाऊद को ज़बूर हमने ही प्रदान की है।

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ﴿٥٦﴾

(५६) कह दीजिये कि (अल्लाह के) अतिरिक्त जिन्हें तुम [देवता (वंदनीय)] समझ रहे हो, उन्हें पुकारो परन्तु न तो वह तुमसे किसी दुख को दूर कर सकते हैं न परिवर्तित कर सकते हैं।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ؕ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ﴿٥٧﴾

(५७) जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे स्वयं अपने पालनहार के सामीप्य की खोज में रहते हैं कि उनमें से कौन अधिक निकट हो जाये, वे स्वयं उसकी कृपा की आशा रखते हैं तथा उसकी यातना से भयभीत रहते हैं,[2] (बात भी यही है) कि तेरे प्रभु की यातना डरने की चीज़ है।

---

[1]यह विषय ﴿ تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ﴾ में भी गुज़र चुका है। यहाँ पुनः मक्का के काफ़िरों के उत्तर में इस विषय की पुनरावृत्ति हुई है जो कहते थे कि क्या अल्लाह को रिसालत के लिए यह मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ही मिला था ? अल्लाह तआला ने उत्तर दिया कि किसी को रिसालत के लिए चयन करना तथा किसी एक नबी को दूसरे पर श्रेष्ठता देना, यह अल्लाह के ही अधिकार में है।

[2]प्रस्तुत आयत में من دون الله से तात्पर्य फ़रिश्तों तथा महात्माओं के वे चित्र तथा मूर्तियाँ हैं जिनकी वे पूजा करते थे अथवा आदरणीय उज़ैर तथा मसीह हैं जिन्हें यहूदी तथा इसाई अल्लाह का पुत्र कहते तथा उन्हें दैवी गुणों से युक्त मानते थे अथवा वे जिन्नात हैं जो मुसलमान हो गये थे तथा मूर्तिपूजक उनकी पूजा करते थे। इसलिए कि इस आयत में बताया जा रहा है कि वे स्वयं भी अल्लाह की निकटता प्राप्त करने का प्रयत्न करते तथा उसकी कृपा की कामना करते तथा उसकी यातना से भयभीत हैं तथा यह गुण जड़ पदार्थों (पत्थरों) में नहीं हो सकता। इस आयत से स्पष्ट हो जाता है कि من دون الله (अल्लाह के अतिरिक्त जिनकी पूजा की जाती रही है) वे केवल पत्थर की मूर्तियाँ ही नहीं थीं, अल्लाह के वे भक्त भी थे जिन में से कुछ फ़रिश्ते, कुछ पुण्यात्मा, कुछ नबी तथा कुछ जिन्नात थे। अल्लाह तआला ने सब के विषय में फ़रमाया कि वह कुछ नहीं कर सकते, न किसी के दुख का निवारण कर सकते हैं, न किसी की परिस्थितियाँ बदल सकते हैं। "अपने प्रभु की निकटता प्राप्त करने की धुन में रहते हैं।" का अर्थ सत्यकर्म से अल्लाह की निकटता खोजते हैं। यही माध्यम है जिसे क़ुरआन में वर्णन किया गया है,

The Ummah Technology Mission

وَإِنْ مِّن قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ﴿٥٨﴾

(५८) तथा जितनी भी बस्तियाँ हैं हम क़ियामत के दिन से पूर्व या तो उन्हें ध्वस्त कर देने वाले हैं अथवा अत्यधिक घोर दण्ड देने वाले हैं। यह तो किताब में लिखा जा चुका है।[1]

وَمَا مَنَعَنَا أَن نُّرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَن كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ ۚ وَآتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوا بِهَا ۚ

(५९) तथा हमें निशानियाँ (चमत्कार) उतारने से रोक केवल इसी की है कि अगले लोग इन्हें झुठला चुके हैं।[2] हमने समूद को प्रतीक के रूप में ऊँटनी दी परन्तु उन्होंने उस पर

वह नहीं है जिसे क़ब्र पूजक वर्णन करते हैं कि मरे हुए व्यक्तियों के नाम का भोग-प्रसाद (नज़र-नियाज़) दो, उनके क़ब्रों पर चादर चढ़ाओ तथा मेले लगाओ एवं उनसे सहायता की प्रार्थना तथा गुहार करो। यह माध्यम नहीं, यह तो उनकी पूजा है जो शिर्क है। अल्लाह तआला प्रत्येक मुसलमान को इससे सुरक्षित रखे। (आमीन)

[1]किताब से तात्पर्य 'सुरक्षित पुस्तक' (लौहे महफ़ूज़) है। अर्थ यह है कि अल्लाह तआला की ओर से यह बात निश्चित है, जो 'सुरक्षित पुस्तक' में लिखी हुई है कि हम काफ़िरों की प्रत्येक बस्ती को या तो मृत्यु द्वारा नष्ट कर देंगे तथा बस्ती से तात्पर्य नगरवासी हैं तथा विनाश का कारण उनका कुफ़्र तथा मूर्तिपूजन एवं अत्याचार तथा दुष्टता है। इसके अतिरिक्त यह विनाश क़ियामत से पूर्व घटित होगा, वरन् क़ियामत के दिन तो प्रत्येक बस्ती ही विलीन तथा विनाश का शिकार हो जायेगी।

[2]यह आयत उस समय अवतरित हुई जिस समय मक्का के काफ़िरों ने यह माँग की कि सफ़ा के पर्वत को स्वर्ण बना दिया जाये अथवा मक्का के पर्वत अपने स्थान से हटा दिये जायें ताकि वहाँ खेती की जा सके, जिस पर अल्लाह तआला ने जिब्रील के माध्यम से संदेश भेजा कि उनकी माँग हम पूरा करने को तैयार हैं, परन्तु यदि उसके पश्चात भी वह ईमान न लाये तो फिर उनका विनाश निश्चित है। फिर उन्हें अवसर नहीं दिया जायेगा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी इसी बात को उचित समझा कि इनकी माँगें पूरी न की जाये ताकि वह निश्चित विनाश से बच जायें। (मुसनद अहमद भाग १ पृष्ठ २५८) इस आयत में भी अल्लाह तआला ने यही विषय वर्णन किया है कि उनकी इच्छा अनुसार हमें निशानियाँ अवतरित करने में कोई कठिनाई नहीं है। परन्तु हम इससे इसलिए बच रहे हैं कि पूर्व के समुदायों ने भी अपनी इच्छा के अनुसार निशानियाँ माँगी थीं, जो उन्हें दिखायी गयीं, परन्तु उसके उपरान्त भी उन्होंने झुठलाया तथा ईमान न लाये, जिसके परिणाम स्वरूप वे नाश कर दिये गये।

The Ummah Technology Mission

وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيٰتِ إِلَّا تَخْوِيْفًا ﴿٥٩﴾

अत्याचार किया।[1] हम तो लोगों को केवल सतर्क करने के लिए प्रतीक भेजते हैं।

وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ ۗ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ أَرَيْنٰكَ إِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِي الْقُرْاٰنِ ۚ وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ﴿٦٠﴾

(६०) तथा याद करो जबकि हमने आप से कह दिया कि आपके प्रभु ने लोगों को घेर लिया है।[2] जो दर्शन आपको दिखायी थी, वह लोगों के लिए स्पष्ट परीक्षा ही थी तथा उसी प्रकार वह वृक्ष भी जिससे क़ुरआन में घृणा का प्रदर्शन किया गया है।[3] हम उन्हें सतर्क कर रहे हैं परन्तु यह उन्हें और अधिक दुष्टता में बढ़ा रहा है।[4]

---

[1]समूद के समुदाय को उदाहरण स्वरूप वर्णन किया क्योंकि इच्छानुसार पत्थर की चट्टान से ऊँटनी प्रगट की गयी थी परन्तु उन अत्याचारियों ने ईमान लाने के बजाय, उस ऊँटनी ही को मार डाला, जिसके कारण तीन दिन पश्चात प्रकोप आ गया।

[2]अर्थात लोग अल्लाह के प्रभाव एवं इच्छा के अधीन हैं, तथा जो अल्लाह चाहेगा वही होगा न कि वह जो वह चाहेंगे, अथवा तात्पर्य मक्कावासी हैं कि वे अल्लाह के आदेशाधीन हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निश्चिन्त रिसालत का प्रचार-प्रसार कीजिए, वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कुछ न बिगाड़ सकेंगे, हम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुरक्षा करेंगे। अथवा बद्र की युद्ध तथा मक्का विजय के अवसर पर जिस प्रकार अल्लाह ने मक्का के मूर्तिपूजकों को अपमानजनक पराजय से दो चार किया, उसको स्पष्ट किया जा रहा है।

[3]सहाबा तथा ताबईन ने इस रूया (दर्शन) की व्याख्या प्रत्यक्ष दर्शन से की है तथा तात्पर्य इससे मेराज की घटना है जो बहुत से क्षीण लोगों के लिए भटकावे का कारण बन गया तथा वे विधर्मी हो गये। तथा वृक्ष से तात्पर्य जक़्क़ूम (नरकीय) का वृक्ष है, जिसको नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेराज की रात नरक में देखा। الملعونة से तात्पर्य खाने वालों पर अर्थात नरकवासियों पर धिक्कार। जैसे अन्य स्थान पर है।

﴿ إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ * طَعَامُ الْأَثِيمِ ﴾

"नरकीय वृक्ष (ज़क़्क़ूम) पापियों का खाना है।" (सूर: दु॰खान-४३,४४)

[4]अर्थात काफ़िरों के दिलों में जो द्वेष तथा ईर्ष्या है, उसके कारण निशानियाँ देखकर ईमान लाने के बजाय उनकी उग्रता तथा व्याकुलता में अत्यधिक वृद्धि होती है।

The Ummah Technology Mission

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ قَالَ ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ﴿٦١﴾

(६१) तथा जब हमने फ़रिश्तों को आदेश दिया कि आदम को दण्डवत् (सजदा) करो तो इब्लीस के अतिरिक्त सब ने किया। उसने कहा कि क्या मैं उसे दण्डवत् करूँ जिसे तूने मिट्टी से बनाया है।

قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِيْ كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَئِنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٦٢﴾

(६२) अच्छा देख ले, उसे तूने मुझ पर श्रेष्ठता तो दी है, परन्तु यदि तूने मुझे क़ियामत तक अवसर दिया तो मैं इसकी संतान को अति अल्प लोगों के सिवाय अपने वश में कर लूँगा।[1]

قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ﴿٦٣﴾

(६३) आदेश हुआ कि जा, उनमें से जो भी तेरा अनुयायी हो जायेगा तो तुम सबका दण्ड नरक है, जो पूर्ण प्रतिकार है।

وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْاَمْوَالِ

(६४) उन में से तू जिसे भी अपनी बात से बहका सके बहका ले[2] तथा उन पर अपने सवार तथा पैदल चढ़ा ला,[3] तथा उनके माल तथा संतान में से अपना भी साझा लगा[4]

---

[1]अर्थात उस पर अधिकार प्राप्त कर लूँगा तथा उसे जिस प्रकार चाहूँगा विपथ कर लूँगा। परन्तु कुछ लोग मेरे छल तथा दाँव से बच जायेंगे। आदम तथा इब्लीस की यह कथा इससे पूर्व *सूरः अल-बक़रः*, *सूरः अल-आराफ़* तथा *सूरः अल-हिज्र* में आ चुकी है। यहाँ चौथी बार इसे वर्णन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त *सूरः अल-कहफ़*, *सूरः ताहा*, *सूरः* साद में भी इसका वर्णन आयेगा।

[2]ध्वनि से तात्पर्य आकर्षक नैवेद्य अथवा गीत-संगीत एवं आनन्द-मनोरंजन के यंत्र हैं जिनके द्वारा शैतान अधिकतर लोगों को भटका रहा है।

[3]उन सेनाओं से तात्पर्य मनुष्यों तथा जिन्नों की वे सवार तथा पैदल सेना है, जो शैतान के शिष्य तथा उसकी जाल के शिकार हैं एवं शैतान ही की भाँति मनुष्यों को भटकाते हैं अथवा तात्पर्य है प्रत्येक सम्भावित साधन जो शैतान भटकाने के लिए प्रयोग करता है।

[4]माल में शैतान की भागीदारी का अर्थ है अनुचित साधनों से धन उपार्जन तथा अपव्यय करना है तथा इसी प्रकार पशुओं को मूर्तियों के नाम पर दान करना, जैसे बहीरः तथा

The Ummah Technology Mission

وَالْأَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ۚ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴿٦٤﴾

तथा उन्हें (मिथ्या) वचन दे ले।[1] उनसे जितने भी वचन (वादे) शैतान के होते हैं, सब के सब पूर्णत: धोखा हैं।[2]

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ ۚ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ وَكِيلًا ﴿٦٥﴾

(६५) मेरे सत्य भक्तों पर तेरा कोई अधिकार तथा वश नहीं।[3] तथा तेरा पालनहार बड़ा कार्यक्षम पर्याप्त है।[4]

رَبُّكُمُ الَّذِي يُزْجِي لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ﴿٦٦﴾

(६६) तुम्हारा पालनहार वह है जो तुम्हारे लिये नदी में नौकायें चलाता है ताकि तुम उसके उपकार की खोज करो। वह तुम्हारे ऊपर अत्यधिक कृपालु है।[5]

सायेब: आदि। तथा संतान में भागीदारी का अर्थ है व्यभिचार, गुरूप्रसाद, कृष्णदास, आदि नाम रखना, इस्लामी नियमों के विपरीत उनको शिक्षा-दीक्षा देना कि वे दुर्व्यवहारी तथा कुचरित्र बनें, उनको निर्धनता के भय से जीवित गाड़ देना अथवा हत कर देना, गर्भपात कराना सतान को अंधविश्वासी, यहूदी तथा इसाई आदि बनाना तथा बिना सुन्नत से सिद्ध प्रार्थनाओं को पढ़े पत्नी से संभोग करना आदि है। इन सभी परिस्थितियों में शैतान की भागीदारी हो जाती है।

[1]कि कोई स्वर्ग-नरक नहीं है, अथवा मरने के पश्चात पुन: जीवित नहीं होंगे आदि।

[2]अभिमान (धोखा) का अर्थ होता है अनुचित कार्य को इस प्रकार अलंकृति किया जाये कि वह अच्छा तथा उचित लगे।

[3]भक्तों का स्वयं से सम्बन्धित करना, यह सम्मान तथा आदर स्वरूप है जिससे ज्ञात हुआ कि अल्लाह के विशेष भक्तों को शैतान भटकाने में असफल रहता है।

[4]अर्थात जो सही अर्थों में अल्लाह का भक्त बन जाता है, उसी पर भरोसा तथा विश्वास करता है तो अल्लाह भी उसका मित्र तथा कार्यक्षम बन जाता है।

[5]यह उसका उपकार तथा कृपा ही है कि उसने समुद्र को मनुष्य के नियन्त्रण में कर दिया है तथा वह उस पर नाव तथा जलयान चलाकर एक देश से दूसरे देश भ्रमण करते हैं तथा व्यापार करते हैं।

The Ummah Technology Mission

وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ إِلَّا إِيَّاهُ ۖ فَلَمَّا نَجَّاكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ ۚ وَكَانَ الْإِنسَانُ كَفُورًا ﴿٦٧﴾

(६७) तथा समुद्र में विपत्ति पहुँचते ही जिन्हें तुम पुकारते थे, सब भूल जाते हैं, केवल वही (अल्लाह) शेष रह जाता है। फिर जब वह तुम्हें थल की ओर सुरक्षित ले आता है, तो तुम मुख फेर लेते हो। मनुष्य अत्यधिक कृतघ्न है।[1]

أَفَأَمِنتُمْ أَن يَخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ وَكِيلًا ﴿٦٨﴾

(६८) तो क्या तुम इससे निर्भय हो गये कि तुम्हें थल के किसी भाग में (ले जाकर धरती में) धँसा दे अथवा तुम पर पथराव की आँधी भेज दे।[2] फिर तुम अपने लिए किसी साथी को न पा सको।

أَمْ أَمِنتُمْ أَن يُعِيدَكُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيحِ فَيُغْرِقَكُم بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ تَبِيعًا ﴿٦٩﴾

(६९) क्या तुम इस बात से निर्भय हो गये हो कि (अल्लाह तआला) पुनः तुम्हें नदी की यात्रा में ले आये तथा तुम पर प्रचण्ड वायु के झोंके भेज दे तथा तुम्हारे कुफ़्र के कारण तुम्हें डुबा दे। फिर तुम अपने लिए हम पर उसका दावा (पीछा) करने वाला किसी को न पाओगे।[3]

---

[1] यह विषय पूर्व में भी कई स्थानों पर गुज़र चुका है।

[2] अर्थात समुद्र से निकलने के पश्चात तुम जो अल्लाह को भूल जाते हो, तो क्या तुम जानते नहीं कि वह थल में भी तुम्हें पकड़ सकता है, तुम्हें वह धरती में धँसा सकता है अथवा पत्थरों की वर्षा करके तुम्हें ध्वस्त कर सकता है जिस प्रकार कुछ विगत् समुदायों को उसने इसी प्रकार ध्वस्त कर दिया।

[3] قَاصِفٌ ऐसी तीव्र एवं उग्र समुद्री वायु को कहते हैं जो नावों को तोड़ दे तथा उन्हें डुबो दे। تَبِيعًا प्रतिशोध लेने वाला पीछा करने वाला अर्थात तुम्हारे डूब जाने के पश्चात हम से पूछे कि तूने हमारे भक्तों को क्यों डुबाया ? अर्थ यह है कि एक बार समुद्र से निकलने के पश्चात क्या तुम्हें पुनः समुद्र में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी ? तथा वहाँ आपदा में नहीं डाल सकता ?

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ۝

(७०) तथा नि:संदेह हमने आदम की सन्तान को बड़ा सम्मान दिया [1] तथा उन्हें थल एवं जल की सवारियाँ दीं। [2] तथा उन्हें पवित्र वस्तुओं से जीविका प्रदान कीं [3] तथा अपनी बहुत सी सृष्टि पर उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की।[4]

يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۢ بِاِمَامِهِمْ ۚ

(७१) जिस दिन हम प्रत्येक समुदाय को उसके अगुवा के सहित बुलायेंगे।[5] फिर जिनका भी

---

[1]यह मान तथा सम्मान मनुष्य के रूप में सभी को प्राप्त है चाहे ईमान वाला हो अथवा काफ़िर क्योंकि यह सम्मान अन्य सृष्टि जीव तथा जड़ पदार्थ एवं बनस्पति आदि के सापेक्ष है। तथा यह सम्मान विभिन्न रूप से है। जिस प्रकार रंग-रूप, शरीर, स्वरूप एवं आकार- प्रकार अल्लाह तआला ने मनुष्य को प्रदान किया है वह किसी अन्य सृष्टि को प्राप्त नहीं। जो बुद्धि मनुष्य को प्रदान की पशु आदि उससे वंचित हैं। इसके अतिरिक्त वह इसी बुद्धि से उचित, अनुचित, लाभकारी, हानिकारक, सुन्दर तथा कुरूप में निर्णय करने का सामर्थ्य रखता है। इसी बुद्धि द्वारा वह अल्लाह की अन्य सृष्टि से लाभ उठाता है तथा उन्हें अपने अधीन रखता है। इसी बुद्धि तथा समझ से वह ऐसे भवनों का निर्माण करता है, ऐसे वस्त्रों की खोज करता है तथा ऐसी वस्तुओं का उत्पादन करता है, जो उसे गर्मी के वायु के ताप से तथा सर्दी की शीत से तथा ऋतुओं की अन्य कठिनाइयों से सुरक्षित रखती हैं। इसके अतिरिक्त सृष्टि की सभी वस्तुओं को अल्लाह तआला ने मनुष्य की सेवा पर लगा रखा है। चन्द्रमा, सूर्य, वायु, जल तथा अन्य अनगिनत वस्तुयें हैं जिनसे मनुष्य लाभान्वित हो रहा है।

[2]थल में वह घोड़ों, खच्चरों, गधों, ऊँटों तथा अपनी निर्मित सवारियों (रेलगाड़ी, बसों, वायुयान, साइकिल, मोटर आदि) पर सवार होता है तथा इसी प्रकार समुद्र में नाव एवं जहाज़ हैं जिन पर वह सवार होता तथा सामान लाता ले जाता है।

[3]मनुष्य के खाने के लिए जो अनाज, मेवे तथा फल उसने उपजाये हैं उनमें जो जो स्वाद तथा शक्ति रखी हैं। विभिन्न प्रकार तथा जाति के यह भोजन, यह स्वाद तथा स्वादिष्ट फल तथा शक्तिप्रद तथा हर्षवर्धक मिश्रित तथा पेय एवं माजून तथा खमीरें मनुष्यों के अतिरिक्त किस अन्य सृष्टि को प्राप्त हैं ?

[4]पूर्वोक्त विवरण से मनुष्य की बहुत-सी सृष्टि पर श्रेष्ठता एवं उच्चता स्पष्ट होती है।

[5]इमाम का अर्थ मुखिया, नेता तथा प्रतिनिधि है, यहाँ इससे क्या तात्पर्य है ? इसमें मतभेद है। कुछ विद्वान कहते हैं कि इससे तात्पर्य पैग़म्बर हैं अर्थात प्रत्येक समुदाय को

The Ummah Technology Mission

فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧١﴾

कर्मपत्र दाहिने हाथ में दे दिया गया, वह तो (प्रसन्नता से) अपना कर्मपत्र पढ़ने लगेंगे। तथा धागे के समान (कण बराबर) भी अत्याचार न किये जायेंगे।[1]

وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٧٢﴾

(७२) तथा जो कोई इस लोक में अंधा रहा, वह परलोक (आख़िरत) में भी अंधा तथा मार्ग से बहुत ही भटका हुआ रहेगा।[2]

وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ﴿٧٣﴾

(७३) तथा ये लोग आपको उस प्रकाशना (वह्यी) से, जो हमने आप पर उतारी है, बहका देना चाह रहे थे कि आप इसके अतिरिक्त कुछ अन्य बातें ही हमारे नाम से बना लें, तब तो आप को ये लोग अपना संरक्षक तथा मित्र बना लेते।

وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ﴿٧٤﴾

(७४) तथा यदि हम आपको स्थिर (अडिग) न रखते तो अधिक सम्भव था कि उनकी ओर

उसके पैग़म्बर के नाम से पुकारा जायेगा। कुछ कहते हैं कि इस से आकाशीय पुस्तकें तात्पर्य हैं जो नबियों के साथ अवतरित होती रहीं अर्थात हे तौरात वालो ! हे इंजील वालो तथा हे क़ुरआन वालो आदि कह के पुकारा जायेगा कुछ कहते हैं कि यहाँ 'इमाम' से तात्पर्य कर्मपत्र हैं अर्थात प्रत्येक व्यक्ति को जब बुलाया जायेगा। तो उसका कर्मपत्र उसके हाथ में होगा तथा उसके अनुसार उसका निर्णय किया जायेगा। इसी विचार को इमाम शौकानी तथा इमाम इब्ने कसीर ने वरीयता दिया है।

[1] فتيلٌ उस झिल्ली अथवा धागे को कहते हैं, जो खजूर की गुठली में होता है अर्थात कण बराबर भी अत्याचार न होगा।

[2] أعمى (अंधा) से तात्पर्य हृदय का अंधा है अर्थात जो दुनिया में सत्य देखने तथा समझने एवं उसे स्वीकार करने से वंचित रहा, वह आख़िरत में अंधा और प्रभु की विशेष कृपा तथा उपकार से वंचित रहेगा।

The Ummah Technology Mission

कुछ न कुछ झुक ही जाते।[1]

إِذًا لَّأَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾

(७५) फिर तो हम भी आपको दुगनी यातना संसार की देते तथा दुगनी ही मृत्यु की[2] फिर आप तो अपने लिए हमारे आगे किसी को भी सहायक न पाते।

وَإِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْأَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَإِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ إِلَّا قَلِيْلًا ﴿٧٦﴾

(७६) तथा ये तो आप के पग इस धरती से उखाड़ने ही लगे थे कि आपको इससे निकाल दें,[3] फिर ये भी आपके पश्चात बहुत कम ठहर पाते।[4]

سُنَّةَ مَنْ قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ﴿٧٧﴾

(७७) ऐसा ही नियम उनका था, जो आपसे पूर्व रसूल (संदेशवाहक) हमने भेजे।[5] तथा आप

---

[1]इसमें उस पवित्रता (निष्पाप) का वर्णन है जो अल्लाह की ओर से नबियों को प्राप्त होती है। इससे यह ज्ञात हुआ कि मूर्तिपूजक यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी ओर आकर्षित करना चाहते थे परन्तु अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बचाया तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तनिक भी उनकी ओर नहीं झुके।

[2]इससे ज्ञात हुआ कि दण्ड पद एवं गरिमा के अनुसार होती है।

[3]यह उस षड़यंत्र की ओर संकेत है, जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्का से निष्कासित करने के लिए मक्का के कुरैश ने तैयार किया था, जिससे अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बचा लिया।

[4]अर्थात यदि अपनी योजना अनुसार ये आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्का से निकाल देते तो ये भी उसके पश्चात अधिक देर न रहते अर्थात अल्लाह के प्रकोप की पकड़ में आ जाते।

[5]अर्थात यह प्राचीन नियम चला आ रहा है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूर्व के रसूलों के लिये भी बर्ता जाता रहा है कि जब उनके समुदाय ने उन्हें अपने देश से निकाल दिया अथवा उन्हें निकलने के लिए बाध्य कर दिया तो फिर वे समुदाय भी अल्लाह के प्रकोप से सुरक्षित नहीं रहे।

The Ummah Technology Mission

हमारे नियमों में कभी परिवर्तन न पायेंगे।[1]

أَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ إِلٰى غَسَقِ
الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۭ إِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ
كَانَ مَشْهُوْدًا ﴿٧٨﴾

(७८) नमाज़ स्थापित करें सूर्य ढलने से लेकर रात के अँधेरे तक[2] तथा प्रात: (फ़ज्र) का क़ुरआन पढ़ना भी। नि:संदेह प्रात: (फ़ज्र) के समय का क़ुरआन पढ़ना उपस्थित किया गया है।[3]

وَ مِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ

(७९) तथा रात्रि के कुछ भाग में तहज्जुद (की नमाज़ में क़ुरआन) पढ़ा करें,[4] यह अधिकता

---

[1]अत: मक्कावासियों को भी यही हुआ कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिजरत के डेढ़ वर्ष पश्चात ही उन्हें बद्र के मैदान में अपमानजनक पराजय का मुख देखना पड़ा तथा छ: वर्ष पश्चात ८ हिजरी में मक्का ही विजय हो गया तथा इस अपमान तथा अनादर के पश्चात सिर उठाने योग्य न रहे।

[2] دلوك का अर्थ ढलना तथा غسق का अर्थ अंधकार है। सूर्य ढलने के पश्चात ज़ोहर तथा अस्र की नमाज़ तथा रात्रि के अंधकार तक से तात्पर्य मग़रिब तथा इशा की नमाज़ें हैं तथा क़ुरआन अल-फ़ज्र से तात्पर्य फ़ज्र की नमाज़ है। क़ुरआन नमाज़ के अर्थ में है। इसको क़ुरआन की उपमा इसलिए दी गयी है कि फ़ज्र में क़ुरआन की आयतों का पाठ लम्बा होता है। इस प्रकार इस आयत में पाँचों अनिवार्य नमाज़ों का वर्णन आ जाता है जिसका विस्तृत वर्णन हदीसों में मिलता है तथा जो मुसलमानों के कर्म से भी सिद्ध है।

[3]अर्थात उस समय फ़रिश्ते उपस्थित होते हैं, बल्कि दिन के फ़रिश्तों तथा रात्रि के फ़रिश्तों का मिलन होता है, जैसाकि हदीस में है (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: बनी इस्राईल) एक अन्य हदीस में है कि रात्रि वाले फ़रिश्ते जब अल्लाह के पास जाते हैं, तो अल्लाह तआला उनसे पूछता है, यद्यपि वह स्वयं भली-भाँति जानता है, तुम ने मेरे भक्तों को किस अवस्था में छोड़ा? फ़रिश्ते उत्तर देते हैं कि जब हम उनके पास गये थे उस समय भी वह नमाज़ पढ़ रहे थे जब हम उनके पास से आये हैं तो उन्हें नमाज़ पढ़ते हुए छोड़कर आये हैं। (सहीह बुख़ारी किताबुल मवाक़ीत बाब फ़ज़ले सलातील अस्रे व मुस्लिम बाबो सलाति स्सुब्हे वल अस्रे वल मुहाफ़ज़ते अलैहिमा)

[4]कुछ विद्वान कहते हैं तहज्जुद के दो प्रतिकूल अर्थ हैं, निद्रा तथा जाग्रण यहाँ इसी दूसरे अर्थ में है कि रात्रि को सोकर उठें और ऐच्छिक नमाज़ पढ़ें, कुछ कहते हैं कि हजूद का मूल अर्थ तो रात्रि के सोने के ही हैं किन्तु तफ़अउल में जाने से इसमें बचने के अर्थ उत्पन्न हो गये। जैसे تأثم का अर्थ है, वह पाप से बचा अथवा विलग रहा। इसी प्रकार

The Ummah Technology Mission

عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿٧٩﴾

आपके लिए है,[1] शीघ्र ही आपका प्रभु आपको महमूद नाम के स्थान पर खड़ा करेगा।[2]

وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ﴿٨٠﴾

(८०) तथा विनय किया करें कि हे मेरे प्रभु ! मुझे जहाँ ले जा अच्छी प्रकार से ले जा तथा जहाँ से निकाल अच्छी प्रकार निकाल तथा मेरे लिए अपने पास से प्रभाव तथा सहायता निर्धारित कर दे।[3]

तहज्जुद का अर्थ होगा सोने (निद्रा) से बचना। तथा متهجد वह होगा जो रात्रि की निद्रा से बचा तथा नमाज़ पढ़ी। अतः तहज्जुद का भावार्थ रात्रि के अन्तिम भाग में उठकर ऐच्छिक नमाज़ पढ़ना है। सारी रात्रि नमाज़ पढ़ना सुन्नत के विरूद्ध है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात्रि के प्रथम भाग में सोते तथा अन्तिम भाग में उठकर तहज्जुद पढ़ते। यही विधि सुन्नत है।

[1]कुछ ने इसके अर्थ किये हैं, यह एक अतिरिक्त कर्तव्य है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए विशेष है, इस प्रकार वह कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तहज्जुद भी उसी प्रकार अनिवार्य थी, जिस प्रकार पाँच नमाज़ें अनिवार्य थीं। परन्तु मुसलमानों के लिए तहज्जुद की नमाज़ अनिवार्य नहीं। कुछ विद्वान कहते हैं कि نافلة अतिरिक्त का अर्थ यह है कि यह तहज्जुद की नमाज आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पदोन्नति के लिए अतिरिक्त चीज़ है, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो निष्पाप हैं, जबकि मुसलमानों के लिए यह तथा अन्य पुण्य के कार्य बुराईयों का प्रायश्चित हैं। तथा कुछ विद्वान कहते हैं कि نافلة नफिलः (ऐच्छिक) ही है अर्थात न आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अनिवार्य थी न मुसलमानों पर, यह एक अतिरिक्त इबादत है जिसकी महिमा निःसंदेह अधिक है तथा उस समय अल्लाह अपनी इबादत से अति प्रसन्न होता है। परन्तु यह नमाज़ अनिवार्य तथा आवश्यक न नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हुई थी न आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायियों पर ही अनिवार्य है।

[2]यह वह स्थान है जो क़ियामत के दिन अल्लाह तआला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रदान करेगा तथा उस स्थान पर ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वह महा अभिस्तावना (सिफ़ारिश) करेंगे जिसके पश्चात लोगों का हिसाब-किताब होगा।

[3]कुछ विद्वान कहते हैं कि यह हिजरत के अवसर पर अवतरित हुई जबकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदीने में प्रवेश करने तथा मक्का से निकलने की समस्या थी, कुछ कहते हैं कि इसका अर्थ है मुझे सत्य के साथ मृत्यु देना तथा सत्य के साथ

The Ummah Technology Mission

(८१) तथा घोषणा कर दी कि सत्य आ गया तथा असत्य विध्वस्त हो गया । नि:संदेह असत्य था भी विलय होने योग्य ।[1]

وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۭ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ۝۸۱

(८२) तथा यह क़ुरआन जो हम उतार रहे हैं ईमानवालों के लिए अत्यन्त स्वास्थ्य एवं कृपा है । हाँ, अत्याचारियों को क्षति के सिवा कोई अधिकता नहीं होती ।[2]

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَاۗءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ۝۸۲

(८३) तथा मानव पर जब भी हम अपना पुरस्कार करते हैं, तो वह मुख मोड़ लेता है तथा करवट बदल लेता है तथा जब भी उसे दुख होता है तो वह हताश हो जाता है ।[3]

وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَي الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا ۝۸۳

(८४) कह दीजिए कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी विधि अनुसार कार्यरत है, जो पूर्ण मार्गदर्शन

قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰي شَاكِلَتِهٖ ۭ فَرَبُّكُمْ

क़ियामत के दिन उठाना । कुछ कहते हैं कि मुझे क़ब्र में सत्य के साथ प्रवेश देना तथा क़ियामत के दिन जब क़ब्र से उठाये तो सत्य के साथ क़ब्र से निकालना आदि । इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि चूँकि यह प्रार्थना है इसलिए इसके सामान्य अर्थ में वह सब बाते आ जाती हैं ।

[1]हदीस में आता है कि मक्का विजय के पश्चात जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने "*खानए-काबा*" में प्रवेश किया, तो वहाँ तीन सौ साठ मूर्तियाँ थीं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ में छड़ी थी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम छड़ी की नोक से उन मूर्तियों को मारते जाते तथा ﴿جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ﴾ तथा ﴿جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ﴾ पढ़ते जाते (सहीह बुख़ारी तफ़सीर बनी इस्राईल किताबुल मज़ालिम तथा मुस्लिम बाबु इज़ालतिल असनामे मिन हौलिल कअब:)

[2]इस भावार्थ की आयत सूर: यूनुस-५७ में गुज़र चुकी है, उसकी व्याख्या देखिये ।

[3]इसमें मनुष्य की उस अवस्था एवं दशा का वर्णन है जिसमें साधारणत: सुख के तथा दुख के समय घिरता है । सुख में वह अल्लाह को भूल जाता है तथा दुख में निराश हो जाता है । परन्तु ईमान वालों की दशा दोनों परस्थितियों में इससे भिन्न है । देखिये सूर: हूद की आयत ९ से ११ तक की व्याख्या ।

The Ummah Technology Mission

اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ﴿٨٤﴾

पर हैं उन्हें तुम्हारा प्रभु ही भली-भाँति जानता है।[1]

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ؕ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ وَمَاۤ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٥﴾

(८५) तथा ये लोग आप से आत्मा के विषय में प्रश्न करते हैं, (आप) उत्तर दीजिए कि आत्मा मेरे प्रभु के आदेश से है तथा तुम्हें जो ज्ञान दिया गया है वह बहुत ही अल्प है।[2]

وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيْۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا ﴿٨٦﴾

(८६) तथा यदि हम चाहें तो जो प्रकाशना (वह्यी) आप की ओर हमने उतारी है सब ले लें,[3] फिर आप को उसके लिए हमारे समक्ष कोई भी पक्षधर न मिल सकेगा।[4]

---

[1]इसमें मूर्तिपूजकों के लिए धमकी तथा चेतावनी है तथा इसका वही भावार्थ है जो सूरः हूद की आयत १२१ तथा १२२ का है شَاكِلَة का अर्थ विचार, धर्म, विधि तथा व्यवहार एवं स्वभाव के हैं। कुछ विद्वान कहते हैं कि इसमें काफ़िर के लिए निन्दा तथा ईमानवालों के लिए प्रशंसा का पक्ष है क्योंकि इसका अर्थ है कि प्रत्येक मनुष्य ऐसा कर्म करता है, जो उसके उस व्यवहार तथा चरित्र पर आधारित होता है जो उसका स्वभाव एवं रीति होता है।

[2]प्राण (आत्मा) वह सुक्ष्म वस्तु है जो किसी को दिखायी नहीं देती परन्तु प्रत्येक जीवधारी की शक्ति तथा बल उसी आत्मा में निहित है। इसकी यर्थाता तथा तथ्य क्या है ? यह कोई नहीं जानता। यहूदियों ने एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसके विषय में पूछा तो यह आयत अवतरित हुई (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः *बनी इस्राईल* तथा सहीह मुस्लिम किताब सिफ़तिल कियामः वल जन्नः वन नार, बाबु सोवालिल यहूदिन् नबीय सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अनिर रूह) आयत का अर्थ यह है कि तुम्हारा ज्ञान अल्लाह के ज्ञान के सापेक्ष तुच्छ है, तथा यह आत्मा जिसके विषय में तुम पूछ रहे हो, इसका ज्ञान तो अल्लाह ने नबियों सहित किसी को भी नहीं दिया। बस इतना समझो कि यह मेरे प्रभु का आदेश है अथवा मेरे प्रभु की महिमा में से है जिसकी वास्तविकता केवल वही जानता है।

[3]अर्थात प्रकाशना (वह्यी) के द्वारा जो थोड़ा-सा ज्ञान दिया गया है यदि अल्लाह तआला चाहे तो उससे भी छीन ले अर्थात दिल से मिटा दे अथवा किताब से ही मिटा दे।

[4]जो पुनः उसी प्रकाशना (वह्यी) को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर लौटा दे।

The Ummah Technology Mission

إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۚ إِنَّ فَضْلَهُ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا ﴿٨٧﴾

(८७) अतिरिक्त आप के प्रभु की दया के।[1] नि:संदेह आप पर उसका अति उपकार है।

قُل لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَىٰ أَن يَأْتُوا بِمِثْلِ هَٰذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا ﴿٨٨﴾

(८८) कह दीजिए कि यदि सभी मानव तथा दानव मिलकर इस क़ुरआन के समान लाना चाहें तो उन सबसे इसके समतुल्य लाना असम्भव है, यद्यपि वे आपस में एक-दूसरे के सहायक भी बन जायें।[2]

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِن كُلِّ مَثَلٍ ۖ فَأَبَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ﴿٨٩﴾

(८९) तथा हमने तो इस क़ुरआन में लोगों के समझने के लिए प्रत्येक रूप से सभी उदाहरण वर्णन कर दिये हैं, परन्तु अधिकतर लोग कृतघ्नता से नहीं रूकते।[3]

وَقَالُوا لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ يَنبُوعًا ﴿٩٠﴾

(९०) तथा उन्होंने कहा[4] कि हम आप पर कदापि ईमान लाने के नहीं, जब तक कि आप हमारे लिए धरती से जलस्रोत न निकाल दें।

أَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِّن نَّخِيلٍ وَعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْأَنْهَارَ خِلَالَهَا تَفْجِيرًا ﴿٩١﴾

(९१) अथवा स्वयं आपके लिए कोई बाग हो खजूरों तथा अंगूरों का एवं उसके मध्य आप बहुत-सी नहरें बहती हुई निकाल कर दिखायें।

أَوْ تُسْقِطَ السَّمَاءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا

(९२) अथवा आप आकाश को हम पर खंड-खंड करके गिरा दें जैसाकि आपका विचार

---

[1]कि उसने अवतरित की हुई प्रकाशना (वह्यी) को नहीं मिटाया अथवा अल्लाह की प्रकाशना (वह्यी) से आपको सम्मानित किया।

[2]पवित्र क़ुरआन मजीद से सम्बन्धित यह (चुनौती) पहले भी कई स्थानों पर गुज़र चुकी है। यह चैलेंज (चुनौती) अभी तक उत्तर की खोज में है।

[3]यह आयत इसी सूरः के प्रारम्भ में भी गुज़र चुकी है।

[4]ईमान लाने के लिए मक्का के कुरैशियों ने यह माँगें प्रस्तुत कीं।

The Ummah Technology Mission

كِسَفًا اَوْ تَاْتِیَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ قَبِیْلًا ﴿۹۲﴾

है, अथवा आप स्वयं अल्लाह (तआला) को तथा फ़रिश्तों को हमारे समक्ष ला खड़ा करें।[1]

اَوْ یَكُوْنَ لَكَ بَیْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰی فِی السَّمَآءِ ؕ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِیِّكَ حَتّٰی تُنَزِّلَ عَلَیْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ؕ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّیْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿۹۳﴾

(९३) अथवा आप के अपने लिए कोई स्वर्ण का घर[2] हो जाये अथवा आप आकाश पर चढ़ जायें तथा हम तो आपके चढ़ जाने का भी उस समय तक विश्वास नहीं करेंगे जब तक कि आप हम पर कोई किताब न उतार लायें, जिसे हम स्वयं पढ़ लें[3] आप उत्तर दें कि मेरा पालनहार पवित्र है, मैं तो एक मानव पुरूष हूँ जो रसूल (संदेशवाहक) बनाया गया हूँ।[4]

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ یُّؤْمِنُوْٓا

(९४) तथा लोगों के पास मार्गदर्शन पहुँच चुकने के पश्चात ईमान से रोकने वाली केवल

---

[1]अर्थात हमारे सम्मुख आकर खड़े हो जायें तथा हम उन्हें अपनी आँखों से देखें।

[2] زخـــرف का वास्तविक अर्थ शोभा है। مزخرفٌ शोभित वस्तु को कहते हैं। परन्तु यहाँ इसका अर्थ स्वर्ण है।

[3]अर्थात हममें से प्रत्येक व्यक्ति उसे साफ-साफ स्वयं पढ़ सकता हो।

[4]अर्थ यह है कि मेरे प्रभु के अन्दर तो हर प्रकार की शक्ति है, वह चाहे तो तुम्हारी माँगें क्षण भर में कुन كن शब्द से ही पूरी कर दे। परन्तु जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैं तो (तुम्हारी तरह) एक मनुष्य हूँ। क्या कोई मनुष्य इन वस्तुओं का सामर्थ्य रखता है कि मुझ से इन की माँग करते हो ? हाँ, मैं इसके साथ अल्लाह का रसूल भी हूँ। परन्तु रसूल का कार्य केवल अल्लाह का संदेश पहुँचाना है,तो वह मैंने पहुँचा दिया तथा पहुँचा रहा हूँ। लोगों की माँग पर चमत्कार दिखाना यह रिसालत का भाग नहीं है। यदि अल्लाह चाहे तो रिसालत की सत्यता के लिए एक-आध चमत्कार दिखा दिया जाता है, परन्तु यदि लोगों की इच्छा पर चमत्कार दिखाना प्रारम्भ कर दिया जाये तो यह श्रृंखला कभी नहीं समाप्त होगी, प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार नया चमत्कार देखने की कामना करेगा तथा रसूल केवल इसी काम पर लगा रह जायेगा, धर्म की शिक्षा एवं आमन्त्रण देने का मूल कार्य ठप हो जायेगा। इसलिए चमत्कार का घटित होना केवल अल्लाह की इच्छा पर निर्भर है, जिसका ज्ञान उसके अतिरिक्त किसी को नहीं। मैं भी उसकी इच्छा में हस्तक्षेप करने का अधिकारी नहीं।

The Ummah Technology Mission

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَسُولًا ﴿٩٤﴾

यही वस्तु रही कि उन्होनें कहा, क्या अल्लाह ने एक मानव पुरूष को ही रसूल (अवतार) बनाकर भेजा ?[1]

قُلْ لَوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةٌ يَمْشُونَ مُطْمَئِنِّينَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ مَلَكًا رَسُولًا ﴿٩٥﴾

(९५) (आप) कह दें कि यदि धरती पर फ़रिश्ते चलते-फिरते तथा निवास करते होते, तो हम भी उनके पास किसी आकाशीय फ़रिश्ते को ही रसूल बनाकर भेजते।[2]

قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٩٦﴾

(९६) कह दीजिए कि मेरे तथा तुम्हारे मध्य अल्लाह का गवाह होना बस है।[3] वह अपने भक्तों से भली-भाँति परिचित एवं भली प्रकार देखने वाला है।

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۖ وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِهِ ۖ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عُمْيًا وَبُكْمًا وَصُمًّا ۖ مَأْوَاهُمْ

(९७) तथा अल्लाह जिसका मार्गदर्शन कर दे वह मार्गदर्शन-प्राप्त है तथा जिसे वह मार्ग से भटका दे असम्भव है कि तू उसका मित्र उस के अतिरिक्त अन्य को पा ले।[4] ऐसे लोगों को हम क़ियामत वाले दिन औंधे मुँह एकत्रित

---

[1]अर्थात किसी मनुष्य का रसूल होना काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों के लिए अत्यन्त आश्चर्य की बात थी, वह यह बात मान नहीं रहे थे कि हमारे जैसा व्यक्ति, जो हमारी तरह चलता-फिरता है, हमारी तरह खाता-पीता है, हमारी तरह व्यक्तिगत सम्बन्धों से सम्बन्धित है, वह रसूल बन जाये। यह आश्चर्य उनके ईमान लाने में रूकावट था।

[2]अल्लाह तआला ने फ़रमाया जब धरती पर मनुष्य बसते हैं, तो उनके मार्गदर्शन के लिए रसूल भी मनुष्य ही होंगे। अमानुष रसूल, मनुष्य के मार्गदर्शन का कर्तव्य पूरा नहीं कर सकता। हाँ यदि धरती पर फ़रिश्ते बसते होते तोउनके लिए रसूल भी अवश्य फ़रिश्ते होते।

[3]अर्थात मेरे ऊपर जो धर्म का आदेश पहुँचाने का भार था वह मैंने पहुँचा दिया, इस विषय में मेरे तुम्हारे मध्य अल्लाह का साक्षी होना पर्याप्त है, क्योंकि हर चीज़ का निर्णय उसी के हाथ में है।

[4]मेरे सतर्क करने तथा निर्देश देने से कौन ईमान लाता है, कौन नहीं, यह भी अल्लाह के अधिकार में है, मेरा कार्य केवल संदेश पहुँचाना है।

The Ummah Technology Mission

جَهَنَّمُ ؕ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ﴿٩٧﴾

करेंगे।[1] जबकि वे अंधे, गूँगे तथा बहरे होंगे।[2] उनका ठिकाना नरक होगा। जब कभी वह हल्की होने लगेगी, हम उन पर उसे और भड़का देंगे।

ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٩٨﴾

(९८) ये सब हमारी निशानियों से इंकार करने तथा यह कहने का परिणाम है कि क्या जब हम अस्थियाँ तथा कण-कण हो जायेंगे फिर हम नवजात करके उठा खड़े किये जायेंगे।[3]

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا

(९९) क्या उन्होंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि जिस अल्लाह ने आकाश तथा धरती को पैदा किया वह उन जैसों को पैदा करने का पूर्ण सामर्थ्य रखता है।[4] उसी ने उनके

---

[1]हदीस में आता है कि सहाबा कराम (नबी के सहचर) ने आश्चर्य का प्रदर्शन किया कि औंधे मुख किस प्रकार का हश्र होगा? नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "जिस अल्लाह ने उनको पैरों से चलने की शक्ति प्रदान की है, वह इस बात का भी सामर्थ्य रखता है कि वह उनको मुख के बल चला दे।" (सहीह बुख़ारी सूरः *अल-फ़ुरक़ान* तथा सहीह मुस्लिम सिफ़तुल क़ियामः वल जन्नः वल नार बाब युहशरूल काफ़िरो अला-वज्हेही)

[2]अर्थात जिस प्रकार वह संसार में सत्य के विषय में अंधे, बहरे तथा गूँगे बने रहे, प्रलय (क़ियामत) के दिन दण्ड स्वरूप अंधे, बहरे तथा गूँगे होंगे।

[3]अर्थात नरक का यह दण्ड उन्हें इसलिए दिया जायेगा कि उन्होंने हमारी उतारी हुई आयतों को नहीं माना तथा सृष्टि में फैली हुई निशानियों पर विचार नहीं किया, जिसके कारण उन्होंने क़ियामत तथा मृत्यु के पश्चात जीवित किये जाने पर आश्चर्य व्यक्त किया तथा कहा कि हड्डियों तथा कण-कण हो जाने के पश्चात हमें एक नया जीवन कैसे मिल सकता है।

[4]अल्लाह तआला ने उनका उत्तर दिया कि जो अल्लाह आकाश तथा धरती का स्रष्टा है, वह उन जैसों को पैदा करने अथवा पुनः उन्हें जीवन देने का सामर्थ्य रखता है, क्योंकि यह आकाश तथा धरती की उत्पत्ति से अधिक सरल है।

The Ummah Technology Mission

لَا رَيْبَ فِيهِ ۖ فَأَبَى الظَّالِمُونَ إِلَّا كُفُورًا ﴿٩٩﴾

लिए एक ऐसा समय निर्धारित कर रखा है, ज़ो शंका तथा संदेह से पूर्णत: शून्य है,[1] परन्तु अन्यायी लोग कृतघ्न बने बिना रहते नहीं।

قُل لَّوْ أَنتُمْ تَمْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذًا لَّأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنفَاقِ ۚ وَكَانَ الْإِنسَانُ قَتُورًا ﴿١٠٠﴾

(१००) कह दीजिए कि (यदि मान लिया जाये) यदि तुम मेरे प्रभु की कृपाओं के कोष के स्वामी बन जाते तो तुम उस समय भी उसके व्यय हो जाने के भय से[2] उसमें कंजूसी करते तथा मनुष्य है ही संकीर्ण हृदय।

﴿ لَخَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ ﴾

"आकाश तथा धरती की उत्पत्ति मनुष्यों की उत्पत्ति से अधिक कठिन कार्य है।" (सूरः *अल-मोमिन*-५७)

इसी विषय को अल्लाह तआला ने सूरः *अल-अहक़ाफ़*-३३ में तथा सूरः *यासीन*-८१ तथा ८२ में भी वर्णन किया है।

[1]इस निर्धारित समय से तात्पर्य मृत्यु अथवा क़ियामत है। यहाँ पूर्व वाक्य के अनुसार क़ियामत तात्पर्य लेना अधिक उचित है, अर्थात हमने उन्हें पुनः जीवित करके क़ब्रों से उठाने के लिए एक समय निर्धारित कर रखा है।

﴿ وَمَا نُؤَخِّرُهُ إِلَّا لِأَجَلٍ مَّعْدُودٍ ﴾

"हम उनके मामले को एक निर्धारित समय तक के लिए टाल रहे हैं।" (सूरः *हूद*-१०४)

[2] خشية الإ نفاق का अर्थ है خشية أن ينفقوا فيفتقروا "इस भय से कि व्यय करके समाप्त कर डालेंगे, उसके पश्चात निर्धन हो जायेंगे।" यद्यपि यह अल्लाह का कोष है जो समाप्त होने वाला नहीं। परन्तु चूँकि मनुष्य संकीर्ण हृदय का सिद्ध हुआ है, इसलिए कंजूसी से काम लेता है। अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَإِذًا لَّا يُؤْتُونَ النَّاسَ نَقِيرًا ﴾

"उनको यदि अल्लाह के राज्य में से कुछ भाग मिल जाये तो यह लोगों को कुछ न दें।" (सूरः *अल-निसा*- ५३)

نقير खजूर की गुठली में जो गढ़ा होता उसको कहते हैं, अर्थात तिल बराबर भी किसी को न दें। यह तो अल्लाह की कृपा है तथा उसका उपकार एवं दया है कि उसने अपने

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِذْ جَآءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّيْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ﴿١٠١﴾

(१०१) तथा हमने मूसा को नौ चमत्कार[1] अत्यन्त स्पष्ट प्रदान किये, तू स्वयं इस्राईल की संतान से पूछ ले कि जब वे उनके पास पहुँचे तो फ़िरऔन बोला कि हे मूसा ! मेरे विचार से तेरे ऊपर जादू कर दिया गया है।

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَآئِرَ ۚ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّكَ يٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ﴿١٠٢﴾

(१०२) (मूसा ने) उत्तर दिया कि यह तो तुझे ज्ञात हो चुका है कि आकाशों तथा धरती के प्रभु ही ने ये चमत्कार दिखाने तथा समझाने के लिए उतारे हैं, हे फ़िरऔन ! मैं तो समझ रहा हूँ कि तू निश्चय नाश कर दिया गया है।

فَاَرَادَ اَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ

(१०३) (अन्त में) फ़िरऔन ने दृढ़ निश्चय कर लिया कि उन्हें धरती से ही उखाड़ दे तो

भण्डारों के मुख लोगों के लिए खोल रखे हैं। जिस प्रकार हदीस में आता है, "अल्लाह के हाथ भरे हुए हैं। वह रात-दिन ख़र्च करता है, परन्तु उसमें कोई कमी नहीं आती। तनिक देखो तो, जब से आकाश तथा धरती उसने उत्पन्न किये हैं कितना ख़र्च किया होगा। परन्तु उसके हाथ में जो कुछ है उसमें कमी नहीं। (वह भरे हुए हैं)" (सहीह बुख़ारी, किताबुत तौहीद बाबु व कान अर्शोहु अलल्माए तथा सहीह मुस्लिम किताबुल ज़क़ात बाबुल हस्से अलल् नफ़क: व तबशीरूल मुनफ़िक़ बिल ख़लफ़)

[1]वे नौ चमत्कार हाथ का ज्योर्तिमय होना, लाठी का विभिन्न रूप से प्रयोग, अकाल, फलों की कमी, तूफ़ान, टिड्डी दल का आक्रमण, खटमल तथा जूँ की अधिकता होना, मेंढक तथा रक्त। इमाम हसन बसरी कहते हैं कि अकाल तथा फलों की कमी एक ही बात है तथा नवाँ चमत्कार लाठी का जादूगरों के जादू को अजगर बनकर निगल जाना है। आदरणीय मूसा को इनके अतिरिक्त भी चमत्कार प्रदानं किये गये थे, जैसे लाठी का पत्थर पर मारना जिससे बारह पानी के स्रोत निकल गये थे बादलों की छाया करना, मन्न एवं सलवा आदि, परन्तु यहाँ नौ निशानियों से तात्पर्य वही नौ चमत्कार हैं जिन का प्रदर्शन फ़िरऔन तथा उसके अनुयायियों ने भी किया। इसीलिए आदरणीय इब्ने अब्बास ने समुद्र फटकर मार्ग बन जाना को भी चमत्कार में सम्मिलित किया है तथा अकाल एवं फलों के कम उत्पादन को एक ही चमत्कार माना है। तिर्मिजी के एक कथन में नौ चमत्कारों का विस्तृत वर्णन इससे भिन्न किया गया है। परन्तु प्रमाण से वह कथन क्षीण है, इसलिए नौ चमत्कार से तात्पर्य यही वर्णित चमत्कार हैं।

The Ummah Technology Mission

فَاَغۡرَقۡنٰهُ وَمَنۡ مَّعَهٗ جَمِيۡعًا ﴿۱۰۳﴾

हमने स्वयं उसे तथा उसके कुल साथियों को डुबो दिया।

وَّقُلۡنَا مِنۡۢ بَعۡدِهٖ لِبَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ اسۡكُنُوا الۡاَرۡضَ فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ الۡاٰخِرَةِ جِئۡنَا بِكُمۡ لَفِيۡفًا ﴿۱۰۴﴾

(१०४) तथा उसके पश्चात हम ने इस्राईल के पुत्रों से कह दिया कि उस धरती[1] पर तुम रहो सहो। हाँ, जब आख़िरत का वादा आयेगा, हम तुम सब को समेट तथा लपेट कर ले आयेंगे।

وَبِالۡحَـقِّ اَنۡزَلۡنٰهُ وَبِالۡحَـقِّ نَزَلَ ؕ وَمَاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيۡرًا ﴿۱۰۵﴾

(१०५) तथा हमने इस (क़ुरआन) को सत्यता के साथ उतारा[2] तथा यह भी सत्य के साथ उतरा। तथा हमने आपको केवल शुभसूचना देने वाला तथा सतर्क करने वाला बनाकर भेजा है।[3]

وَقُرۡاٰنًا فَرَقۡنٰهُ لِتَقۡرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ

(१०६) तथा क़ुरआन को हमने थोड़ा-थोड़ा करके इसलिए उतारा है[4] कि आप इसे समय

---

[1]जैसाकि विदित होता है, इस धरती से तात्पर्य मिस्र है जिससे फ़िरऔन ने मूसा तथा उनके अनुयायियों को निकालने का विचार किया था। परन्तु इस्राईल की संतान का इतिहास साक्षी है कि वह मिस्र से निकलने के पश्चात पुन: मिस्र नहीं गये, बल्कि चालीस वर्ष "*तीह*" के मैदान में व्यतीत कर फ़िलस्तीन में प्रवेश किया। इसका प्रमाण सूर: *अल-आराफ़* आदि में क़ुरआन के वर्णन से भी मिलता है। इसलिए उचित यही है कि इससे तात्पर्य फ़िलस्तीन की धरती है।

[2]अर्थात सुरक्षित आप तक पहुँच गया, इसमें मार्ग में कोई कमी-अधिकता तथा कोई परिवर्तन एवं मिश्रण नहीं किया गया। क्योंकि इसका लाने वाला फ़रिश्ता शक्तिशाली, ईमानदार तथा दृढ़ फ़रिश्ता माना गया है। यह वे गुण हैं जो आदरणीय जिब्रील के सम्बन्ध में क़ुरआन में वर्णित किये गये हैं।

[3] مبشر (शुभसूचक) ईमान वालों के लिए तथा نذير (त्रासक) अवज्ञाकारियों के लिए।

[4] فرقناه का एक अन्य अर्थ بيناه तथा أو ضحناه (हमने उसे खोल कर अथवा स्पष्ट रूप से वर्णित कर दिया है) भी किये गये हैं।

The Ummah Technology Mission

عَلٰى مُكۡثٖ وَّنَزَّلۡنٰهُ تَنۡزِيۡلًا ﴿١٠٦﴾

पाकर लोगों को सुनायें तथा हमने स्वयं भी इसे थोड़ा-थोड़ा करके उतारा।

قُلۡ اٰمِنُوۡا بِهٖۤ اَوۡ لَا تُؤۡمِنُوۡا ؕ اِنَّ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ مِنۡ قَبۡلِهٖۤ اِذَا يُتۡلٰى عَلَيۡهِمۡ يَخِرُّوۡنَ لِلۡاَذۡقَانِ سُجَّدًا ﴿١٠٧﴾

(१०७) कह दीजिए तुम इस पर ईमान लाओ अथवा न लाओ, जिन्हें इससे पूर्व ज्ञान प्रदान किया गया है उनके पास तो जब भी इसको पढ़ा जाता है, तो वे ठुड्डियों के बल दण्डवत् (सजदा) करने लगते हैं।[1]

وَّيَقُوۡلُوۡنَ سُبۡحٰنَ رَبِّنَاۤ اِنۡ كَانَ وَعۡدُ رَبِّنَا لَمَفۡعُوۡلًا ﴿١٠٨﴾

(१०८) तथा कहते हैं कि हमारा प्रभु पवित्र है, हमारे प्रभु का वचन नि:संदेह पूर्ण होकर रहने वाला ही है।[2]

وَيَخِرُّوۡنَ لِلۡاَذۡقَانِ يَبۡكُوۡنَ وَيَزِيۡدُهُمۡ خُشُوۡعًا ﴿١٠٩﴾ السجدة

(१०९) तथा वे ठुड्डियों के बल रोते हुए दण्डवत् (सजदा) स्थिति में गिर पड़ते हैं तथा यह क़ुरआन उनकी विनम्रता तथा विनय और बढ़ा देता है।[3]

---

[1]अर्थात वे विद्वान जिन्होंने क़ुरआन के अवतरित होने से पूर्व प्राचीन पुस्तकें पढ़ी हैं तथा वे प्रकाशना (वह्यी) की वास्तविकता तथा रिसालत के लक्षण से परिचित हैं वह नतमस्तक होते हैं इस बात पर अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कि उन्हें अन्तिम रसूल की पहचान की सन्मति दी तथा क़ुरआन एवं रिसालत पर ईमान लाने का सौभाग्य प्रदान किया।

[2]अर्थ यह है कि यह मक्का के काफ़िर जो प्रत्येक बात से अपरिचित हैं, यदि ये ईमान नहीं लाते तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चिन्ता न करें इसलिए कि जो ज्ञानी हैं तथा प्रकाशना (वह्यी) तथा रिसालत की वास्तविकता से भली प्रकार परिचित हैं वे इस पर ईमान ले आये हैं, बल्कि क़ुरआन सुनकर अल्लाह के सदन में नत्मस्तक हो गये हैं तथा उसकी पवित्रता का वर्णन क्रते हैं तथा प्रभु के वचन पर विश्वास रखते हैं।

[3]ठुड्डियों के बल सजदे में गिर पड़ने की पुनरावृत्ति है, क्योंकि प्रथम दण्डवत् अल्लाह की महिमा तथा सम्मान के लिए कृतज्ञता के रूप में था तथा क़ुरआन सुनकर उन पर जो भय तथा भाव जागृत हुए तथा उसके प्रभाव एवं मान से जिस सीमा तक प्रभावित हुएं उसने दूसरी बार उन्हे दण्डवत् (सजदः) करने पर बाध्य कर दिया।

The Ummah Technology Mission

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿۱۱۰﴾

(११०) कह दीजिए कि अल्लाह को अल्लाह कहकर पुकारो अथवा रहमान (कृपालु) कह कर। जिस नाम से भी पुकारो, सभी अच्छे नाम उसी के हैं।[1] न तो तू अपनी नमाज़ बहुत उच्च स्वर से पढ़ तथा न बिल्कुल छिपाकर, बल्कि उसके मध्य का मार्ग खोज ले।[2]

---

[1]जिस प्रकार पूर्व में गुज़र चुका है कि मक्का के मूर्तिपूजकों के लिये अल्लाह के गुणवाचक नाम 'रहमान (दयालु), अथवा 'रहीम (कृपालु) अपरिचित थे तथा कुछ कथनों में आता है कि कुछ मूर्तिपूजकों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र मुख से 'या *रहमान व रहीम'* (हे दयालु तथा कृपालु) के शब्द सुने तो कहा कि हमें तो यह कहता है कि केवल एक अल्लाह को पुकारो तथा स्वयं दो देवताओं को पुकार रहा है। जिस पर यह आयत अवतरित हुई। (इब्ने कसीर)

[2]इसके अवतरित होने के विषय में आदरणीय इब्ने अब्बास वर्णन करते हैं कि मक्का में रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम छुपकर रहते थे, जब अपने साथियों को नमाज़ पढ़ाते तो आवाज़ थोड़ी बढ़ा लेते, मूर्तिपूजक क़ुरआन को सुनकर क़ुरआन को तथा अल्लाह को अपशब्द कहते, अल्लाह तआला ने फ़रमाया : अपनी आवाज़ को इतना उच्च न करो कि मूर्तिपूजक सुन कर क़ुरआन को अपशब्द कहें तथा अपनी आवाज़ न इतनी धीमी कर लो कि सहाबा भी न सुन सकें। (सहीह बुख़ारी किताबुत तौहीद बाब क़ौल अल्लाह तआला अन्जलहु बिइल्मेही वल मलायेकतु यशहदून तथा सहीह मुस्लिम किताबुस सलातु बाबुत तवस्सुत फ़िल क़िरअत) स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की घटना है कि एक रात्रि को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक़ (رضي الله عنه) की ओर से हुआ तो देखा कि वह धीमी आवाज़ से नमाज़ पढ़ रहे हैं। फिर आदरणीय उमर फ़ारूक़ (رضي الله عنه) को भी देखने का अवसर हुआ तो वह ऊँची आवाज़ से नमाज़ पढ़ रहे थे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोनों से पूछा तो आदरणीय अबू बक्र ने उत्तर दिया कि मैं जिसकी महिमा का वर्णन करने में लीन था, वह मेरी आवाज़ सुन रहा था, आदरणीय उमर ने उत्तर दिया कि मेरा उद्देश्य सोतों को जगाना तथा शैतान को भगाना था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक (رضي الله عنه) से फ़रमाया कि अपनी आवाज़ थोड़ी बढ़ा लो तथा आदरणीय उमर (رضي الله عنه) से कहा अपनी आवाज़ कुछ कम रखो। (मिश्कात बाब सलातुल लैल, ससंदर्भ अबू दाऊद, तिर्मिज़ी) आदरणीया आयशा (رضي الله عنها) फ़रमाती हैं कि यह आयत दुआ के विषय में अवतरित हुई। (बुख़ारी तथा मुस्लिम ससंदर्भ फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿١١١﴾

(१११) तथा कह दीजिए कि सभी प्रशंसायें अल्लाह के लिए ही हैं, जो न संतान रखता है तथा न अपने राज्य में किसी को भागीदार रखता है, न वह ऐसा तुच्छ है कि उसका कोई सहायक हो तथा तू उसकी पूरी-पूरी महिमा का वर्णन करता रह।

سُوْرَةُ الْكَهْفِ

सूरतुल कहफ़-१८

सूर: कहफ़* मक्के में उतरी तथा इसमें एक सौ दस आयतें एवं बारह रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह कृपालु दया करने वाले के नाम से प्रारम्भ करता हूँ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ؕ ﴿١﴾

(१) सभी प्रशंसायें उसी अल्लाह के लिए ही योग्य हैं, जिसने अपने भक्त पर यह क़ुरआन उतारा तथा उसमें कोई कमी शेष नहीं छोड़ी।[1]

---

*कहफ़ का अर्थ है गुफ़ा। इसमें गुफ़ा वालों का वर्णन है, इसलिए इसे सूर: कहफ़ कहा जाता है। इसके प्रारम्भिक दस आयतों तथा अन्तिम दस आयतों के महत्व का हदीस में वर्णन है, जो इनको याद करे तथा पढ़ेगा, वह दज्जाल के उपद्रव से सुरक्षित रहेगा (सहीह मुस्लिम फ़ज़ल सूर: अल-कहफ़) जो इसका पाठ शुक्रवार के दिन करेगा अगले शुक्रवार तक उसके लिए एक विशेष प्रकार की ज्योति का प्रकाश रहेगा (मुस्तद्रक हाकिम २\३६८ तथा अलबानी ने इसे सहीह जामे सग़ीर संख्या ६४७० में सहीह कहा है)। इसके पढ़ने से घर में शान्ति तथा उन्नति होती है। एक बार एक सहाबी ने सूर: कहफ़ पढ़ी। घर में एक पशु भी था वह बिदकना शुरू हो गया, उन्होंने ध्यान से देखा कि क्या बात है ? तो उन्हें एक बादल दिखायी दिया, जिसने उन्हें ढाँप रखा था, सहाबी ने इस घटना का वर्णन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इसे पढ़ा करो। क़ुरआन पढ़ते समय शान्ति उतरती है। (सहीह बुख़ारी संख्या ४७२४, मुस्लिम संख्या ७९५)

[1]अथवा कोई कमी तथा संतुलित मार्ग से विचलन इसमें नहीं रखी गयी है, अपितु इसे सीधा मार्ग रखा गया है अथवा قيم का अर्थ भक्तों के धार्मिक सांसारिक हित का ध्यान तथा रक्षा करने वाली किताब।

The Ummah Technology Mission

قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَأْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۙ﴿۲﴾

(२) अपितु सभी कुछ ठीक-ठाक रखा ताकि अपने पास[1] की कड़ी यातना से सतर्क कर दे तथा ईमान लाने वाले एवं पुण्य कार्य करने वालों को शुभसूचना सुना दे कि उनके लिए उत्तम बदले हैं।

مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۙ﴿۳﴾

(३) जिसमें वे स्थाई रूप से सदैव निवास करेंगे।

وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ؕ﴿۴﴾

(४) तथा उन लोगों को भी डरा दे जो कहते हैं कि अल्लाह (तआला) सन्तान रखता है।[2]

مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ؕ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ۝﴿۵﴾

(५) वास्तव में न तो स्वयं उन्हें इसका ज्ञान है न उनके पूर्वजों को। यह आक्षेप[3] बड़ा बुरा है जो उनके मुख से निकल रहा है, वह केवल झूठ बक रहे हैं।

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَسَفًا ۝﴿۶﴾

(६) फिर यदि ये लोग इस बात पर[4] ईमान न लायें, तो क्या आप उनके पीछे इसी दुख में अपने प्राण की हत्या कर डालेंगे।

اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً

(७) धरती पर जो कुछ[5] है हमने उसे धरती की शोभा के लिए बनाया है कि हम उनकी

---

[1] مِن لَّدُنه जो उस अल्लाह की ओर से उद्गम अथवा अवतरित होने वाला है।

[2] जैसे यहूदियों, इसाईयों तथा कुछ मूर्तिपूजकों (फ़रिश्ते अल्लाह की पुत्रियाँ हैं) का विश्वास है।

[3] इस वाक्य से तात्पर्य यही है कि 'अल्लाह की संतान है, जो पूर्ण रूप से असत्य है।

[4] هـذا الحديـث (इस बात) से तात्पर्य क़ुरआन करीम है। काफिरों के ईमान लाने की जितनी तीव्र इच्छा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को थी तथा उनके मुख मोड़ने तथा अस्वीकार से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो अत्यधिक दुख होता था, इसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इसी अवस्था तथा भाव का वर्णन है।

[5] धरती पर जो कुछ है, पशु, जीव, जड़, बनस्पति, खनिज एवं अन्य गड़े कोष, यह सब साँसारिक शोभा तथा उसकी सुन्दरता हैं।

The Ummah Technology Mission

لَهَا لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ⑦

परीक्षा ले लें कि उनमें से कौन पुण्य के कार्यों को करने वाला है।

وَإِنَّا لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ⑧

(८) तथा इस पर जो कुछ है, हम उसे एक समतल मैदान कर डालने वाले हैं।[1]

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ⑨

(९) क्या तू अपने विचार में गुफ़ा तथा शिलालेख वालों को हमारी निशानियों में से कोई अति विचित्र निशानी समझ रहा है ?[2]

إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ⑩

(१०) उन नवयुवकों ने जब गुफ़ा में शरण ली तो प्रार्थना की कि हे हमारे प्रभु ! हमें अपने पास से कृपा प्रदान कर तथा हमारे कार्य में हमारे लिए मार्ग को सरल कर दे।[3]

---

[1] صعيدا साफ मैदान तथा جرزا बिल्कुल समतल, जिसमें कोई वृक्ष इत्यादि न हो। अर्थात एक समय आयेगा कि यह संसार इन सभी शोभा सहित नष्ट हो जायेगा तथा धरती एक समतल मैदान की भाँति हो जायेगी, इसके पश्चात हम पाप व पुण्य के कर्मों के आधार पर निर्णय देंगे।

[2] अर्थात यह एक मात्र बड़ी विचित्र निशानी नहीं है, बल्कि हमारी प्रत्येक निशानी विचित्र है। यह आकाश व धरती की सृष्टि तथा उसका प्रबन्ध, सूर्य तथा चन्द्रमा एवं तारामण्डल का नियन्त्रण, रात्रि-दिन का आना-जाना तथा अन्य बहुत सी निशानियाँ, क्या कम विचित्र हैं। كهف उस गुफ़ा को कहते हैं जो पर्वत में होती है। رقيم कुछ विद्वानों के निकट उस आबादी को कहते हैं जहाँ से ये नवयुवक गये थे, कुछ कहते हैं उस पर्वत का नाम है जिसमें यह गुफ़ा स्थित है। कुछ कहते हैं رقيم का प्रयोग مرقوم के अर्थ में किया गया है तथा यह एक तख़्ती है लोहे की अथवा सीसे की, जिस पर कहफ़ में सो रहे व्यक्तियों के नाम लिखे हैं। इसे رقيم इसीलिए कहा गया है कि इस पर नाम लिखे हैं। आधुनिक रिसर्च से ज्ञात हुआ कि प्रथम बात अधिक उचित है। जिस पर्वत में यह गुफ़ा स्थित है उसके निकट ही एक आबादी है जिसे अब الرقيب (अल-रक़ीब) कहा जाता है जो युग के परिवर्तन के कारण الرقيم (अल-रक़ीम) का परिवर्तित रूप है।

[3] ये वही नवयुवक हैं जिन्हें कहफ़ वाले कहा गया है (विस्तृत वर्णन आगे आयेगा) उन्होनें जब अपने धर्म की सुरक्षा के लिए गुफ़ा में शरण ली तो यह प्रार्थना की। कहफ़ वालों की इस कथा में नवयुवकों के लिए बड़ी शिक्षा है, आजकल के नवयुवकों का अधिकतर

The Ummah Technology Mission

فَضَرَبْنَا عَلَىٰٓ اٰذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ﴿١١﴾

(११) फिर हमने उनके कानों पर गणना के कई वर्षों तक उसी गुफ़ा में पर्दे डाल दिये।[1]

ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَيُّ الْحِزْبَيْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْٓا اَمَدًا ﴿١٢﴾

(१२) फिर हमने उन्हें उठा खड़ा कर दिया कि हम यह जान लें कि दोनों गुटों में से इस दीर्घकाल को जो उन्होंने व्यतीत किये किसने अधिक याद रखा है ?[2]

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ۭ اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ

(१३) हम उनकी सत्य कथा तेरे समक्ष वर्णन कर रहे हैं। ये कुछ नवयुवक[3] अपने प्रभु पर

समय व्यर्थ में नष्ट होता है तथा अल्लाह की ओर तनिक भी ध्यान नहीं। काश ! आज का मुसलमान नवयुवक अपने यौवन के समय में क्षमा माँग कर पैग़म्बरों का अनुकरण करता तथा अपनी पूर्ण शक्ति एवं सामर्थ्य को अल्लाह की इबादत में लगा देता।

[1]अर्थात कानों पर पर्दा डालकर उनके कानों को बन्द कर दिया ताकि बाहर की आवाज़ से उनकी निद्रा में व्यवधान न पड़े। अर्थ यह है कि हमने उन्हें गहरी निद्रा में सुला दिया।

[2]उन दो गुटों का अर्थ विरोध करने वाले लोग हैं। यह या तो उसी समय के लोग थे जिनके मध्य उनके विषय में मतभेद हुआ, अथवा रिसालत के समय के काफ़िर तथा ईमान वाले तात्पर्य हैं तथा कुछ कहते हैं कि ये कहफ़ वाले ही हैं उनके दो गुट बन गये थे। एक कहता था कि हम इतने समय तक सोये रहे। दूसरा उसको नकारता तथा प्रथम गुट से कम व अधिक समय बताता।

[3]अब साराँश के पश्चात विस्तृत वर्णन किया जा रहा है। ये नवयुवक कुछ विद्वान कहते हैं कि इसाई धर्म के अनुयायी थे तथा कुछ कहते हैं कि उनका समय आदरणीय ईसा से पूर्व का है। हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने इसी कथन को प्राथमिकता दी है। कहते हैं कि एक राजा था दक़्क़ियानूस, जो लोगों को मूर्तिपूजा करने तथा उनके नाम पर भोग-प्रसाद चढ़ाने की शिक्षा देता था। अल्लाह तआला ने इन कुछ नवयुवकों के हृदय में यह बात डाल दी कि इबादत के योग्य तो एक मात्र अल्लाह ही है, जो आकाश तथा धरती का स्रष्टा है तथा अखिल जगत का प्रभु है। فتية अल्पवाचक बहुवचन है, जिससे ज्ञात होता है कि इनकी संख्या नौ अथवा उससे भी कम थी। यह अलग होकर एक स्थान पर अल्लाह अकेले की इबादत करते थे। धीरे-धीरे लोगों में उनके एकेश्वरवाद के विश्वास की चर्चा होने लगी, तो राजा तक बात पहुँची तथा उसने उन लोगों को अपने दरबार में बुलाकर उनसे पूछा, तो वहाँ उन्होंने निर्भीक अल्लाह के एकेश्वरवाद का वर्णन किया। अन्त में राजा तथा अपने समुदाय के मूर्तिपूजकों के भय से अपने धर्म की सुरक्षा के लिए आबादी

The Ummah Technology Mission

ईमान लाये थे तथा हमने उनके मार्गदर्शन में उन्नति प्रदान की थी।

وَّزِدْنٰهُمْ هُدًى ﴿١٣﴾

(१४) तथा हमने उनके हृदय सुदृढ़ कर दिये थे,[1] जबकि ये उठ खड़े हुए[2] तथा कहने लगे कि हमारा प्रभु तो वही है, जो आकाशों तथा धरती का पालनहार है, असम्भव है कि हम उसके अतिरिक्त किसी अन्य देवता को पुकारें। यदि ऐसा किया तो, हमने अत्यधिक अनुचित[3] बात कही।

وَرَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاۡ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَاۤ اِذًا شَطَطًا ﴿١٤﴾

(१५) यह है हमारा समुदाय जिसने उसके अतिरिक्त अन्य देवता बना रखे हैं। उनके प्रभुत्व का कोई स्पष्ट प्रमाण क्यों नहीं प्रस्तुत करते? अल्लाह पर झूठ बात बाँधने वाले से अधिक अत्याचारी कौन है?

هٰٓؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ لَوْلَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۢ بَيِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ﴿١٥﴾

(१६) तथा जबकि तुम उनसे तथा अल्लाह के अतिरिक्त उनके अन्य देवताओं से अलग हो

وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا

से दूर एक पर्वत की गुफ़ा में छिप गये, जहाँ अल्लाह तआला ने उन्हें गहरी निद्रा में सुला दिया तथा वे तीन सौ नौ वर्ष वहाँ सोते रहे।

[1]अर्थात हिजरत के कारण अपने प्रिय तथा सम्बन्धियों के बिछड़ने तथा सुख-सुविधापूर्ण जीवन से वंचित होने का जो दुख उन्हें उठाना पड़ा हमने उनके हृदय को दृढ़ कर दिया ताकि वे इन दुखों को सहन कर सकें। इसके अतिरिक्त सत्य वचन का कर्तव्य साहस के साथ अदा कर सकें।

[2]इस قيام (खड़े होने) से तात्पर्य अधिकतर व्याख्याकारों के निकट वह बुलावा है जो उनका राजा के सदन में हुआ तथा राजा के समक्ष खड़े होकर उन्होंने एकेश्वरवाद पर यह भाषण दिया, कुछ कहते हैं कि नगर के बाहर आपस में ही खड़े होकर एक-दूसरे को एकेश्वरवाद की वह बात बतायी जो व्यक्तिगत रूप से अल्लाह की ओर से उनके दिलों में डाल दी गयी तथा इस प्रकार एकेश्वरवादी आपस में एकत्रित हो गये।

[3] شططًا का अर्थ झूठ अथवा सीमा उल्लंघन करना है।

The Ummah Technology Mission

اللَّهَ فَأْوُوا إِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِنْ أَمْرِكُمْ مِرْفَقًا ﴿١٦﴾

गये हो, तो अब किसी गुफ़ा मे[1] जा बैठो, तुम्हारा प्रभु तुम पर अपनी दया करेगा तथा तुम्हारे कार्य में सुविधा उपलब्ध कर देगा।

وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَت تَّزَاوَرُ عَن كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَت تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِّنْهُ ۚ ذَٰلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ ۗ مَن يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۖ وَمَن يُضْلِلْ فَلَن تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾

(१७) तथा आप देखेंगे कि सूर्य उदय होने के समय उनकी गुफ़ा के दायीं ओर झुक जाता है तथा सूर्यास्त के समय उनकी बायीं ओर कतरा जाता है तथा वे उस गुफ़ा के विस्तृत स्थान में हैं।[2] यह अल्लाह की निशानियों में से है।[3] अल्लाह (तआला) जिसका मार्गदर्शन करे वे सत्यमार्ग पर है तथा जिसे वह भटका दे असम्भव है कि आप उसका कोई कार्यक्षम तथा मार्गदर्शक पा सकें।[4]

---

[1]अर्थात जब तुमने अपने समुदाय के देवताओं से अलगाव कर लिया है तो अब शारीरिक रूप से भी उनसे अलगाव कर लो। यह कहफ़ वालों ने आपस में कहा। अत: इसके पश्चात वे एक गुफ़ा में जा छुपे, जब उनके खो जाने का समाचार फैला तो खोज की गई परन्तु वे उसी प्रकार असफल रहे जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खोज में मक्का के काफ़िर सौर गुफ़ा तक पहुँच जाने के उपरान्त भी जिस में आप आदरणीय अबू बक्र (رضي الله عنه) के साथ उपस्थित थे, असफल रहे थे।

[2]अर्थात सूर्य उदय के समय दायीं दिशा को तथा अस्त के समय बायीं दिशा को कतराकर निकल जाता तथा इस प्रकार दोनों समय में उन पर धूप न पड़ती यद्यपि वह गुफ़ा में विस्तृत स्थान पर विश्राम कर रहे थे। فجوة का अर्थ है विस्तृत स्थान।

[3]अर्थात सूर्य का इस प्रकार निकल जाना कि खुला स्थान के होने के उपरान्त वहाँ धूप न पड़े, अल्लाह की निशानियों में से है।

[4]जैसे दक़्क़ियानूस राजा तथा उसके अनुयायी मार्गदर्शन से वंचित रहे तो कोई उन्हें मार्ग दर्शन न दे सका।

The Ummah Technology Mission

وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۚ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَ ذَاتَ الشِّمَالِ ۚ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ۭ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ⑱

(१८) तथा आप विचार करेंगे कि वे जाग रहे हैं, यद्यपि वे सो रहे थे।[1] तथा स्वयं हम उनको दाहिने-बायें करवटें दिलाया करते थे।[2] उनका कुत्ता भी चौखट पर अपने हाथ फैलाये हुए था। यदि आप झाँक कर देखना चाहते तो अवश्य उल्टे पाँव भाग खड़े होते तथा उनके भय तथा त्रास से आप भर दिये जाते।[3]

وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَاۗءَلُوْا بَيْنَهُمْ ۭ قَالَ قَاۗىِٕلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ۭ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۭ قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ۭ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ اِلَى الْمَدِيْنَةِ

(१९) तथा उसी प्रकार हमने उन्हें जगाकर उठाया[4] कि आपस में पूछताछ कर लें। उन में से एक कहने वाले ने पूछा कि तुम कितनी देर ठहरे रहे? उन्होनें उत्तर दिया एक दिन अथवा एक दिन से भी कम।[5] कहने लगे कि तुम्हारे ठहरे रहने का पूरा ज्ञान अल्लाह

---

[1] أيقاظ बहुवचन है يقظ का तथा رُقود बहुवचन है راقد का, वे जागते हुए इसलिए प्रतीत होते थे कि उनकी आँखें खुली हुई थीं, जिस प्रकार से जागे हुए व्यक्ति की होती है, कुछ विद्वान कहते हैं कि अधिक करवटें बदलने के कारण वे जगे हुए दिखायी देते थे।

[2] ताकि उनके शरीर को मिट्टी न खा जाये।

[3] यह उनकी सुरक्षा के लिए अल्लाह तआला की ओर से प्रबन्ध था ताकि कोई उनके निकट न जा सके।

[4] अर्थात जिस प्रकार हमने उनको अपनी शक्ति से सुला दिया था, उसी प्रकार तीन सौ नौ वर्ष बाद उनको हमने उठा दिया तथा इस प्रकार उठाया कि उनके शरीर उसी प्रकार सुरक्षित थे जिस प्रकार तीन सौ नौ वर्ष पूर्व सोते समय थे। इसीलिए आपस में एक-दूसरे से उन्होंने प्रश्न किये।

[5] अर्थात जिस समय वे गुफ़ा में गये, प्रात: काल का प्रथम चरण था तथा जिस समय जगे उस समय दिन का अन्तिम पहर था, इस आधार पर वे समझे कि शायद एक दिन अथवा उससे भी कम दिन के कुछ भाग में सोते रहे।

The Ummah Technology Mission

(तआला) को ही है।[1] अब तो तुम अपने में से किसी को अपनी ये चाँदी देकर नगर भेजो वह ठीक प्रकार से देखभाल ले कि नगर का कौन-सा भोजन शुद्ध है।[2] फिर उसी में से तुम्हारे भोजन के लिए ले आये, तथा वह अति सतर्कता एवं कोमल व्यवहार करे तथा किसी को तुम्हारी सूचना न होने दे।[3]

فَلْيَنْظُرْ أَيُّهَا أَزْكَىٰ طَعَامًا فَلْيَأْتِكُم بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ﴿١٩﴾

(२०) यदि ये (काफ़िर) तुम पर अधिकार पालेंगे तो तुम्हें पत्थरों से मार डालेंगे अथवा पुनः तुम्हें अपने धर्म में लौटा लेंगे, तो फिर तुम कदापि सफलता नहीं पा सकोगे।[4]

إِنَّهُمْ إِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ فِي مِلَّتِهِمْ وَلَن تُفْلِحُوا إِذًا أَبَدًا ﴿٢٠﴾

(२१) तथा हमने इस प्रकार लोगों को उनकी अवस्था से अवगत कर दिया[5] कि वे जान लें

وَكَذَٰلِكَ أَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ

---

[1]परन्तु अधिक सोने के कारण वे बड़े असमंजस्य में थे। अन्त में विषय अल्लाह को समर्पित कर दिया गया कि वह सही अवधि जानता है।

[2]जागने के पश्चात भोजन जो मनुष्य की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है, उसकी व्यवस्था करने की चिन्ता हुई।

[3]सावधानी तथा विनम्रता पर बल इस संभावना के कारण दिया, जिसके कारण वे नगर से निकलकर निर्जन स्थान पर आये थे। उसे सावधानी रखने के लिए कहा कि कहीं उसके व्यवहार से नगरवासियों को हमारा पता न लग जाये तथा हम पर कोई नई आपत्ति न घटित हो, जैसाकि अगली आयत में है।

[4]अर्थात आख़िरत कि जिस सफलता के लिए हमने यह दुख तथा संकट सहन किया, स्पष्ट बात है कि यदि नगरवासियों ने हमें बाध्य करके फिर पूर्वजों के धर्म की ओर लौटा दिया, तो हमारा मूल उद्देश्य ही खो जायेगा। हमारी मेहनत भी व्यर्थ जायेगी तथा हम न धर्म के होंगे न संसार के।

[5]अर्थात जिस प्रकार हमने उन्हें सुलाया तथा जगाया, उसी प्रकार हमने लोगों को उनके बारे में परिचित कर दिया। यह परिचय इस प्रकार हुआ कि जिस समय कहफ़ वालों का एक साथी चाँदी का वह सिक्का लेकर नगर में गया जो तीन सौ नौ वर्ष के राजा

The Ummah Technology Mission

وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ۭ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ۭ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ۝۲۱

कि अल्लाह का वचन पूर्णत: सत्य है तथा क़ियामत में कोई संदेह व शंका नहीं, [1] जबकि वे अपनी बात में आपस में मतभेद कर रहे थे |[2] कहने लगे इनकी गुफ़ा पर एक भवन निर्माण कर लो |[3] उनका प्रभु ही उन की दशा का अधिक ज्ञानी है |[4] जिन लोगों ने उनके विषय में प्रभाव प्राप्त किया, वे कहने

दक़्यानूस के काल का था तथा वह सिक्का एक दूकानदार को दिया, तो वह आश्चर्य-चकित रह गया, उसने पास के दुकान वाले को दिखाया, वह भी देखकर चकित रह गया, जबकि कहफ़ वालों का साथी कहता रहा कि मैं इसी नगर का वासी हूँ तथा कल ही यहाँ से गया हूँ, परन्तु इस 'कल' को तीन शताब्दियाँ व्यतीत हो चुकी थीं, लोग किस प्रकार उसकी बात को मान लेते ? लोगों को यह संदेह हुआ कि कहीं इस व्यक्ति को गड़ा हुआ धन तो नहीं प्राप्त हुआ | धीरे-धीरे यह बात राजा अथवा उसके अधिकारी तक पहुँची तथा उस साथी की सहायता से वह गुफ़ा तक पहुँचा तथा कहफ़ वालों से मिला | उसके पश्चात अल्लाह तआला ने उन्हें फिर मृत्यु दे दिया | (इब्ने कसीर)

[1]अर्थात कहफ़ वालों की इस घटना से विदित होता है कि क़ियामत के घटित होने तथा मृत्यु के पश्चात खड़े किये जाने का अल्लाह का वचन सत्य है | अस्वीकार करने वालों के लिए घटना में अल्लाह की शक्ति का एक नमूना विद्यमान है |

[2] إذ या तो समय सूचक है أعثرنا का अर्थात हमने उन्हें उस समय उनके हाल से परिचित कराया, जब वे मृत्यु के पश्चात खड़े किये जाने अथवा क़ियामत के घटित होने के विषय में आपस में झगड़ रहे थे अथवा यहाँ اذكر लुप्त है अर्थात वह समय याद करो जब वह आपस में झगड़ रहे थे |

[3]ये कहने वाले कौन थे ? कुछ विद्वान कहते हैं कि उस समय के ईमान वाले थे, कुछ कहते हैं कि राजा तथा उसके साथी थे, जब आकर उन्होंने मुलाकात की तथा उसके पश्चात अल्लाह ने उन्हें फिर सुला दिया, तो राजा तथा उसके साथियों ने कहा कि इनकी सुरक्षा के लिए एक भवन बना दिया जाये |

[4]झगड़ा करने वालों को अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उनके विषय में सत्य ज्ञान अल्लाह ही को है |

The Ummah Technology Mission

लगे कि हम तो उनके आस-पास मस्जिद बना लेंगे।[1]

(२२) कुछ लोग कहेंगे कि गुफ़ा के लोग तीन थे तथा चौथा उन का कुत्ता था। कुछ कहेंगे कि पाँच थे छठाँ उन का कुत्ता था,[2] परोक्ष के विषय में (निशाना देखे बिना) अनुमान से पत्थर चला देना,[3] कुछ कहेंगे कि वे सात हैं तथा आठवाँ उनका कुत्ता[4] है। (आप) कह दीजिए

سَيَقُولُونَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًۢا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ۭ قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ

---

[1]यह प्रभाव प्राप्त करने वाले ईमान वाले थे अथवा काफ़िर तथा मूर्तिपूजक ? शौकानी ने प्रथम विचार को मान्यता दी है तथा इब्ने कसीर ने दूसरे विचार को। क्योंकि पुण्यकारी लोगों की क़ब्रों पर मस्जिदों का निर्माण अल्लाह को प्रिय नहीं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«لَعَنَ اللهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَاءِهِمْ وَصَالِحِيهِمْ مَسَاجِدَ» .

"अल्लाह तआला यहूदियों तथा इसाईयों पर धिक्कार करे जिन्होंने अपने पैग़म्बरों तथा महात्माओं की क़ब्रों को मस्जिद बना लिया।" (सहीह बुख़ारी किताबुल जनायेज़ बाब मायकरह मिन इत्तेखाज़िल मस्जिदे अलल क़बूरे तथा सहीह मुस्लिम किताबुल मसाजिद वत्तेख़ाज़ि स्सोवरे फ़ीहा)

आदरणीय उमर (رضي الله عنه) की ख़िलाफ़त (शासन काल) में ईराक में आदरणीय दानियाल की क़ब्र ज्ञात हुई तो आप ने आदेश दिया कि इसे छिपाकर सामान्य क़ब्रो जैसी कर दिया जाये ताकि लोगों के ज्ञान में न आये कि अमुक क़ब्र अमुक पैग़म्बर की है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[2]यह कहने वाले तथा उनकी विभिन्न संख्या बताने वाले रिसालत के युग के ईमान वाले तथा काफ़िर थे। विशेष रूप से अहले किताब जो आकाशीय पुस्तकों से सूचित होने तथा ज्ञान का दावा करते थे।

[3]अर्थात ज्ञान उनमें से किसी के पास नहीं है, जिस प्रकार बिना देखे कोई पत्थर मारे, यह भी उसी प्रकार आंकलन कर रहे हैं।

[4]अल्लाह तआला ने केवल तीन कथनों का वर्णन किया है, प्रथम दो कथनों को رجمًا بالغيب (आंकलन) कहकर उनका खण्डन कर दिया तथा इस तीसरे कथन का वर्णन बाद में

The Ummah Technology Mission

إِلَّا قَلِيلٌ ۖ فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَاءً ظَاهِرًا ۖ وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِمْ مِنْهُمْ أَحَدًا ﴿٢٢﴾

कि मेरा प्रभु उनकी संख्या भली प्रकार जानने वाला है, उन्हें बहुत कम लोग जानते हैं,[1] फिर आप भी उन लोगों के विषय में केवल संक्षिप्त वार्ता ही करें।[2] तथा उन में से किसी से उनके विषय में पूछताछ भी न करें।[3]

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَايْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾

(२३) तथा कदापि किसी कार्य पर इस प्रकार न कहें कि मैं इसे कल करूँगा।

إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ ۚ وَاذْكُر رَّبَّكَ

(२४) परन्तु साथ ही इंशा अल्लाह (अल्लाह ने चाहा तो) कह लें,[4] तथा जब भी भूलें

किया जिससे कुछ व्याख्याकारों ने यह भावार्थ निकाला है कि यह शैली इस कथन के सही होने का प्रमाण है तथा वास्तव में उनकी इतनी ही संख्या थी। (इब्ने कसीर)

[1]कुछ सहाबा से सम्बन्धित कथन है कि वे कहते थे मैं भी उन कम लोगों में से हूँ जो यह जानते हैं कि कहफ़ वालों की संख्या कितनी थी ? वह केवल सात थे जैसा कि तीसरे कथन में बताया गया है। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात केवल इन्ही बातों पर बस करें जिनकी सूचना आपको प्रकाशना (वह्यी) द्वारा दी गयी है। अथवा संख्या के निर्धारण पर वाद-विवाद न करें, केवल यह कह दें कि इस निर्धारण का कोई प्रमाण नहीं है।

[3]अर्थात विवादकारियों से उनके विषय में कुछ न पूछें, इसलिए कि जिससे पूछा जाये, उसको पूछने वाले से अधिक ज्ञान होना चाहिए, जबकि यहाँ परिस्थिति इसके विपरीत है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तो फिर भी विश्वस्त ज्ञान का एक माध्यम प्रकाशना (वह्यी) मौजूद है जबकि अन्यों के पास आंकलन तथा अनुमान के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।

[4]व्याख्याकार कहते हैं कि यहूदियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तीन बातें पूछीं थीं, आत्मा की वास्तविकता क्या है तथा कहफ़ वाले तथा ज़ुल्क़रनैन कौन थे ? कहते हैं कि यही प्रश्न इस सूरः के अवतरित होने के कारण बने। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं तुम्हें कल उत्तर दूंगा, परन्तु उसके पश्चात पन्द्रह दिन तक जिब्रील प्रकाशना (वह्यी) लेकर नहीं आये। फिर जब आये तो अल्लाह तआला ने إن شاء الله कहने का आदेश दिया। आयत में غد (कल) से तात्पर्य आगामी दिवस है अर्थात जब भी निकट भविष्य अथवा देर से कोई कार्य करने का विचार करो तो إن شاء الله अवश्य कहा

The Ummah Technology Mission

إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسَىٰ أَن يَهْدِيَنِ رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هَٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾

अपने प्रभु को याद कर लिया करें[1] तथा कहते रहें कि मुझे पूरी आशा है कि मेरा प्रभु इससे भी अधिक मार्गदर्शन के निकट की बात का मार्गदर्शन करेगा।[2]

وَلَبِثُوا فِي كَهْفِهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِينَ وَازْدَادُوا تِسْعًا ﴿٢٥﴾

(२५) तथा वे लोग अपनी गुफ़ा में तीन सौ वर्ष तक रहे तथा नौ वर्ष और अधिक व्यतीत किये।[3]

قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا ۖ لَهُ غَيْبُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ أَبْصِرْ بِهِ وَأَسْمِعْ ۚ مَا لَهُم مِّن دُونِهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا يُشْرِكُ

(२६) आप कह दीजिए कि अल्लाह ही को उनके ठहरे रहने के समय का भली-भाँति ज्ञान है, आकाशों तथा धरती का अन्तर्ज्ञान मात्र उसी को है, वह क्या ही अच्छा देखने सुनने वाला है।[4] अतिरिक्त अल्लाह के उनकी

करो। क्योंकि मनुष्य को तो पता नहीं कि वह जिस विचार को व्यक्त कर रहा है, उसको पूर्ण करने का सौभाग्य भी उसे अल्लाह की ओर से मिलना है अथवा नहीं ?

[1]अर्थात यदि बातचीत तथा वादा करते समय إن شاء الله कहना भूल जाओ, तो जिस समय याद आ जाये إن شاء الله कह लो अथवा फिर प्रभु को याद करने का अर्थ उसकी महिमा तथा प्रशंसा एवं उससे क्षमादान की प्रार्थना है।

[2]अर्थात मैं जिसका संकल्प कर रहा हूँ, संभव है अल्लाह तआला उससे श्रेष्ठ तथा लाभकारी कार्य की ओर मेरा मार्गदर्शन करे।

[3]अधिकतर व्याख्याकारों ने इसको अल्लाह का कथन कहा है। सूर्य की गणना से ३०० तथा चन्द्रमा की गणना से ३०९ वर्ष होते हैं। कुछ ज्ञानियों का विचार है कि यह उन लोगों का कथन है जो उनकी विभिन्न संख्या बताते थे जिसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है "अल्लाह ही को उनके ठहरे रहने का उचित ज्ञान है।" जिसके अर्थ से वे वर्णित अवधि को नकारात्मक रूप में लेते हैं। परन्तु अधिकतर की व्याख्या के अनुसार इसका भावार्थ यह है कि अहले किताब अथवा कोई अन्य इस बतायी हुई अवधि से मतभेद करें तो आप उनसे कह दें कि तुम अधिक जानते हो अथवा अल्लाह। जब उसने तीन सौ नौ वर्ष की अवधि बतायी है, तो यही ठीक है क्योंकि वही जानता है कि वह कितनी अवधि तक गुफ़ा में रहे।

[4]यह अल्लाह के ज्ञान तथा सूचना गुण का अधिक स्पष्टीकरण है।

The Ummah Technology Mission

فِيْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾

कोई सहायता करने वाला नहीं, और अल्लाह तआला अपने आदेश में किसी को सम्मिलित नहीं करता।

وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۭ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾

(२७) तथा तेरी ओर जो तेरे प्रभु की किताब प्रकाशना (वह्यी) की गयी है उसे पढ़ता रह।[1] उसकी बातों को कोई बदलने वाला नहीं, तू उसके अतिरिक्त कदापि-कदापि कोई शरण न पायेगा।[2]

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ۚ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ

(२८) तथा अपने आपको उन्हीं के साथ रखा कर, जो अपने प्रभु को प्रातः तथा सायं पुकारते हैं तथा उसी के मुख (अनुग्रह) की चाहना करते हैं। सावधान! तेरी आँखें उनसे न हटने पायें[3] कि सांसारिक जीवन के वैभव के प्रयत्न

---

[1]वैसे तो यह सामान्य आदेश है कि जिस बात की भी प्रकाशना (वह्यी) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर की जाये, उसका पाठ करें तथा लोगों को इसकी शिक्षा दें। परन्तु कहफ़ वालों की कथा के अन्त में इस आदेश का तात्पर्य यह भी हो सकता है कि कहफ़ वालों के विषय में लोग जो चाहें कहते फिरें, परन्तु अल्लाह तआला ने इसके विषय में अपनी पुस्तक में जो कुछ तथा जितना कुछ वर्णन कर दिया है, वही ठीक है, वही लोगों को पढ़कर सुना दीजिए, इसके अतिरिक्त अन्य बातों पर ध्यान न दीजिए।

[2]अर्थात यदि इसके वर्णन करने में आनाकानी तथा विमुखता की, इसके वाक्यों में परिवर्तन का प्रयत्न किया, तो अल्लाह से आपको बचाने वाला कोई नहीं होगा। सम्बोधन यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को है, परन्तु मूल सम्बोधन मुसलमानों को है।

[3]यह वही आदेश है जो इससे पूर्व *सूरः अनआम* की आयत ५२ में गुज़र चुका है। तात्पर्य इनसे वे सहाबा केराम हैं जो निर्धन एवं कमज़ोर थे जिनके साथ बैठना कुरैश के धनवानों को स्वीकार न था। आदरणीय सआद बिन अबी वक़्क़ास कहते हैं कि हम छः आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे, मेरे अतिरिक्त वे बिलाल, इब्ने मसऊद, एक हुज़ली तथा दो अन्य सहाबा थे। मक्का के कुरैश ने इच्छा प्रकट की कि उन लोगों को अपने पास से हटा दें ताकि हम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित होकर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात सुनें। नबी सल्लल्लाहु

The Ummah Technology Mission

الدُّنْيَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ وَكَانَ أَمْرُهُ فُرُطًا ﴿٢٨﴾

में लग जाओ ।[1] (देखो) उसका कहना न मानना जिसके दिल को हमने अपने स्मरण से विचलित कर दिया है, तथा जो अपनी मनोकामना के पीछे पड़ा हुआ है। तथा जिसका कर्म असीम हो चुका है ।[2]

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ ۖ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ وَمَنْ شَاءَ فَلْيَكْفُرْ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۚ وَإِنْ يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ ۚ بِئْسَ الشَّرَابُ ۖ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾

(२९) तथा घोषणा कर दे कि यह निरा सत्य (क़ुरआन) तुम्हारे प्रभु की ओर से है। अब जो चाहे ईमान लाये तथा जो चाहे कुफ़्र करे। अत्याचारियों के लिए हमने वह आग तैयार कर रखी है जिसकी परिधि उन्हें घेर लेंगी। यदि वे आर्तनाद करेंगे तो उनकी सहायता उस पानी से की जायेगी जो तेलछट जैसा होगा जो चेहरे भून देगा, बड़ा ही बुरा पानी है, तथा बड़ा बुरा विश्राम स्थल (नरक) है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ﴿٣٠﴾

(३०) नि:संदेह जो लोग ईमान लायें तथा पुण्य का कार्य करें, तो हम किसी पुण्य करने वाले के प्रतिफल को ध्वस्त नहीं करते ।[3]

अलैहि वसल्लम के दिल में आया कि चलो शायद मेरी बात सुनने से उनके दिलों की दुनियाँ बदल जाये । परन्तु अल्लाह तआला ने कठोरता से ऐसा करने से रोक दिया। (सहीह मुस्लिम फ़ज़ायलुस सहाबा बाब फ़ज़ले सआद बिन अबी वक़्क़ास)

[1]अर्थात इनको दूर करके आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समाज में सम्मानित व्यक्तियों एवं धनवानों को अपने निकट करना चाहते हैं ?

[2] فرطا यदि إفراط से हो तो अर्थ होगा सीमा से पार तथा यदि تفريط से हो तो अर्थ होंगे कि इनके कार्य का फल हानि तथा विनाश है।

[3]क़ुरआन के वर्णन शैली के अनुसार नरकवासियों के वर्णन के पश्चात स्वर्ग में जाने वालों का वर्णन है ताकि लोगों के अन्दर स्वर्ग प्राप्त करने की इच्छा तथा उत्सुकता उत्पन्न हो।

The Ummah Technology Mission

أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمُ الْأَنْهَٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٔينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَآئِكِ ۚ نِعْمَ الثَّوَابُ ۖ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾

(३१) उनके लिए स्थाई स्वर्ग हैं, उनके नीचे नदियाँ प्रवाहित होंगी, वहाँ ये स्वर्ण के कड़े पहनाये जायेंगे [1] तथा हरे रंग के कोमल एवं महीन तथा मोटे रेशम के वस्त्र पहनेंगे।[2] वहाँ सिंहासन पर तकिये लगाये होंगे। क्या ही उत्तम बदला है तथा कितना उत्तम विश्रामगृह है।

وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَٰهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾

(३२) तथा उन्हें उन दो व्यक्तियों का उदाहरण भी सुना दे [3] जिनमें से एक को हमने दो बाग़ अंगूरों के दे रखे थे, जिन्हें खजूरों के वृक्षों से हमने घेर रखा था।[4] तथा दोनों के मध्य खेती पैदा कर दी थी।[5]

---

[1] क़ुरआन के अवतरित होने के समय में तथा उससे पूर्व रिवाज था कि राजा, धनवान तथा क़बीलों के मुखिया अपने हाथों में स्वर्ण के कड़े पहनते थे जिससे उनकी प्रतिष्ठा प्रदर्शित होती थी। स्वर्ग में जाने वालों को भी स्वर्ग में यह कड़े पहनायें जायेंगे।

[2] سُـــندُس बारीक रेशम إستبرق मोटा रेशम। दुनियाँ में पुरूषों के लिए स्वर्ण तथा रेशमी वस्त्र निषेध हैं, जो लोग इस आदेशानुसार कर्म करेंगे, दुनियाँ में इन निषेधित वस्तुओं के प्रयोग से बचेंगे, उन्हें स्वर्ग में यह सारी वस्तुएँ प्राप्त होंगी, वहाँ कोई वस्तु निषेध नहीं होगी बल्कि स्वर्ग वाले जिस वस्तु की इच्छा करेंगे वह उपस्थित होगी।

[3] व्याख्याकारों का इसमें मतभेद है कि वे दो व्यक्ति कौन थे ? अल्लाह तआला ने समझाने के लिए उदाहरण स्वरूप उनका वर्णन किया है अथवा वास्तव में दो व्यक्ति ऐसे थे ? यदि थे तो इस्राईल के वंश में गुज़रे हैं अथवा मक्कावासी थे, इनमें से एक ईमानवाला (निष्ठ) तथा दूसरा काफ़िर (अनिष्ठ) था।

[4] जिस प्रकार चारदीवारी से सुरक्षा की जाती है, उसी प्रकार इन बाग़ों के चारों ओर खजूर के वृक्ष थे जो बाड़े तथा चारदीवारी का काम देते थे।

[5] अर्थात दोनों बाग़ों के मध्य खेती होती थी जिनसे अनाजों की फ़सलें प्राप्त होती थीं। इस प्रकार दोनो बाग अनाज तथा फ़लों का संयोग था।

The Ummah Technology Mission

كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ﴿٣٣﴾

(३३) दोनों बाग़ अपने फल अत्यधिक लाये, और उसमें कोई कमी न की।[1] तथा हमने उन बाग़ों के मध्य नहर प्रवाहित कर रखी थी।[2]

وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾

(३४) तथा (इस प्रकार) उसके पास फल थे, एक दिन उसने बातों ही बातों में अपने साथी[3] से कहा कि मैं तुझसे अधिक धनवान हूँ तथा जत्थे[4] में भी अधिक सम्मान वाला हूँ।

وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَاۤ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖۤ اَبَدًا ﴿٣٥﴾

(३५) तथा यह अपने बाग़ में गया और था अपने प्राण पर अत्याचार करने वाला, कहने लगा कि मैं विचार नहीं कर सकता कि किसी समय भी यह ध्वस्त हो जाये।

وَّمَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾

(३६) तथा न मैं क़ियामत की स्थापना को मानता हूँ तथा यदि मान भी लूँ कि मैं अपने प्रभु की ओर लौटाया भी गया तो नि:संदेह मैं (उस लौटने के स्थान को) इससे भी अधिक उत्तम पाऊँगा।[5]

---

[1]अर्थात अपनी पैदावार में कोई कमी नहीं करते थे, बल्कि भरपूर पैदावार देते थे।

[2]ताकि बाग़ों की सिंचाई करनें में कोई बाधा न हो, अथवा वर्षा वाले क्षेत्रों की भाँति वर्षा पर आश्रित न रहें।

[3]अर्थात बाग़ों के मालिक ने जो काफ़िर था, अपने साथी से कहा जो ईमान वाला था।

[4] نفر (जत्थे) से तात्पर्य सन्तान तथा नौकर एवं कर्मचारी हैं।

[5]अर्थात वह काफ़िर अभिमान एवं गर्व में ही लिप्त नही हुआ अपितु उसकी उन्मत्तता एवं भविष्य की सुन्दर एवं लम्बी आशाओं ने उसे अल्लाह की पकड़ तथा प्रतिकार से बिल्कुल बेसुध कर दिया। इसके अतिरिक्त उसने क़ियामत को ही नकार दिया। फिर दुराग्रह का प्रदर्शन करते हुए कहा कि यदि क़ियामत हुई भी तो वहाँ भी शुभ परिणाम मेरा भाग्य होगा। जिनकी अनिष्ठता तथा दुष्टता सीमा रहित हो जाती है, वह अभिमान के नशे में

The Ummah Technology Mission

قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَكَفَرْتَ بِالَّذِيْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾

(३७) उसके साथी ने उससे बातें करते हुए कहा कि क्या तू उस (पूज्य) को नहीं मानता है जिस ने तुझे मिट्टी से पैदा किया। फिर वीर्य से फिर तुझे पूरा इंसान (पुरूष) बना दिया।[1]

धुत होकर ऐसे ही अहंकार का दावा करते हैं। जैसे अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَلَئِن رُّجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّيٓ إِنَّ لِي عِندَهُۥ لَلْحُسْنَىٰ﴾

"यदि मुझे प्रभु की ओर लौटाया गया तो वहाँ भी मेरे लिए अच्छाईयाँ ही हैं।"(सूरः *हा॰मीम॰ सजदः*-५०)

﴿أَفَرَءَيْتَ ٱلَّذِى كَفَرَ بِـَٔايَـٰتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا﴾

"क्या आप ने उस व्यक्ति को देखा जिसने हमारी आयतों का इंकार किया तथा दावा किया कि आख़िरत में भी मुझे माल तथा सन्तान से सम्मानित किया जायेगा।" (सूरः *मरियम*-७७)

[1]उसकी यह बातें सुनकर उसके ईमान वाले साथी ने उसको शिक्षा एवं उपदेश के रूप में समझाया कि तू अपने रचयिता के साथ कुफ़्र कर रहा है जिसने तुझे मिट्टी तथा पानी (वीर्य) से उत्पन्न किया। मनुष्यों के पूर्वज आदरणीय आदम चूँकि मिट्टी से बनाये गये थे, इसलिए मनुष्यों का मूल मिट्टी ही हुई। फिर निकटवर्ती कारण वह वीर्य बना जो पिता की पीठ से निकल कर माता के गर्भाशय में गया, वहाँ नौ महीने रहा, नौ माह उसकी सेवा की। फिर उसे पूरा मानव बनाकर माता के गर्भाशय से निकाला। कुछ के निकट मिट्टी से पैदा होने का अर्थ है कि मनुष्य जो भोजन खाता है वे सभी धरती से अर्थात मिट्टी से ही प्राप्त होता है, इसी भोजन से वह वीर्य बनता है जो स्त्री के गर्भाशय में जाकर मनुष्य के जन्म का माध्यम बनता है। इस प्रकार भी प्रत्येक मनुष्य का मूल मिट्टी ही है। कृतघ्न मनुष्य को उसका मूल याद दिला कर उसे उसके स्रष्टा की ओर आकर्षित किया जा रहा है कि तू अपनी यथार्तता पर विचार कर, तथा फिर प्रभु के उपकार को देख कि तुझे उसने क्या कुछ बना दिया तथा उसकी रचना में कोई उसका साझीदार तथा सहायक नहीं है, यह सब कुछ करने वाला केवल तथा मात्र वह अल्लाह तआला ही है जिसको मानने के लिए तू तैयार नहीं है। आह, यह इन्सान कितना कृतघ्न है।

The Ummah Technology Mission

لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَلَاۤ اُشْرِكُ بِرَبِّيْۤ اَحَدًا ﴿٣٨﴾

(३८) परन्तु मैं (तो आस्था रखता हूँ कि) वही अल्लाह मेरा प्रभु है, मैं अपने प्रभु के साथ किसी को भी साझीदार न बनाऊँगा।[1]

وَلَوْلَاۤ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٣٩﴾

(३९) तथा तूने अपने बाग़ में जाते समय क्यों नहीं कहा कि अल्लाह का चाहा होने वाला है, कोई शक्ति नहीं किन्तु अल्लाह की सहायता से,[2] यद्यपि तू मुझे धन तथा संतान में कम देख रहा है।

فَعَسٰى رَبِّيْۤ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ﴿٤٠﴾

(४०) परन्तु अति सम्भव है कि मेरा प्रभु मुझे तेरे इस बाग़ से भी उत्तम प्रदान कर दे[3] तथा इस पर आकाशीय आपत्ति भेज दे तो यह चौरसा तथा फिसलने वाला मैदान बन जाये।[4]

---

[1]अर्थात मैं तेरी तरह की बात नहीं करूँगा, बल्कि मैं तो अल्लाह के प्रभुत्ता तथा उसकी एकता को स्वीकार करता हूँ। इससे भी ज्ञात होता है कि दूसरा साथी मिश्रणवादी था।

[2]अल्लाह के उपकारों की कृतज्ञता व्यक्त करने की विधि बताते हुए कहा कि बाग़ में प्रवेश करते समय गर्व तथा घमण्ड का प्रदर्शन करने के बजाय यह कहा होता ما شاء الله لا قوة إلا بالله अर्थात जो कुछ होता है अल्लाह की इच्छा से होता है, वह चाहे तो उसे शेष रखे तथा चाहे तो नाश कर दे। इसीलिए हदीस में आता है कि जिस को किसी का धन, संतान अथवा दशा अच्छी लगे तो उसे ما شاء الله لا قوة إلا بالله पढ़ना चाहिए। (तफ़सीर इब्ने कसीर ससंदर्भ मुसनद अबु यअला)

[3]दुनिया में अथवा आख़िरत में अथवा दुनियाँ तथा आख़िरत दोनों स्थानों में।

[4] حسبان ، غفران के समरूप हिसाब से है। अर्थात ऐसा प्रकोप जो किसी के कर्मों के कारण आये। अर्थात आकाशीय प्रकोप द्वारा वह हिसाब ले। तथा यह स्थान जहाँ इस समय हरा भरा बाग़ है चिकना मैदान बन जाये।

The Ummah Technology Mission

أَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَن تَسْتَطِيعَ لَهُۥ طَلَبًا ﴿٤١﴾

(४१) अथवा इसका पानी नीचे उतर जाये तथा तेरे वश में न रहे कि तू उसे ढूँढ लाये।[1]

وَأُحِيطَ بِثَمَرِهِۦ فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَىٰ مَآ أَنفَقَ فِيهَا وَهِىَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ يَٰلَيْتَنِى لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّىٓ أَحَدًا ﴿٤٢﴾

(४२) तथा इसके (सारे) फल घेर लिये गये[2] फिर वह अपने इस ख़र्च पर जो उसने उस पर किया था अपने हाथ मलने लगा[3] तथा वह बाग़ छप्परा सहित ध्वस्त पड़ा था।[4] तथा (वह व्यक्ति) कह रहा था कि हाय! मैं अपने प्रभु के साथ किसी को भी साझी न बनाता।[5]

وَلَمْ تَكُن لَّهُۥ فِئَةٌ يَنصُرُونَهُۥ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ﴿٤٣﴾

(४३) उसके पक्ष में कोई भी जत्था[6] न उठा कि अल्लाह से कोई उसका बचाव करता तथा न वह स्वयं ही बदला लेने वाला बन सका।

---

[1]अथवा मध्य में जो नदी है, जो बाग़ की हरियाली तथा उपज का कारण है इसके पानी को इतनी गहराई में कर दे कि इससे पानी निकालना ही असम्भव हो जाये। तथा जहाँ पानी अधिक गहराई में चला जाये तो फिर वहाँ बड़ी-बड़ी अश्व शक्ति मोटरें तथा मशीनें भी पानी ऊपर खींच लाने में असफल रहती हैं।

[2]यह संकेत है सत्यानाश ध्वस्त होने से अर्थात उसका सारा बाग़ नाश कर डाला गया।

[3]अर्थात बाग़ के निर्माण तथा सुधार एवं खेती के ख़र्च पर हाथ मलने लगा, जो संकेत है उसके पश्चाताप का।

[4]अर्थात जिन छतों तथा छप्परों पर अंगूरों की लतायें थीं, वे सभी धरती पर आ रही तथा अंगूरों की पूरी फ़सल नष्ट हो गई।

[5]अब उसे आभास हुआ कि अल्लाह के साथ किसी को साझीदार ठहराना, उसके उपकार से लाभान्वित होकर उसके आदेश की अवहेलना करना तथा उसके समक्ष गर्व तथा घमण्ड करना किसी भी प्रकार एक मनुष्य को शोभा नहीं देता, परन्तु अब लज्जा एवं खेद का कोई लाभ नहीं था, अब पछताये क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत।

[6]जिस जत्थे पर उसे गर्व था, वह भी उसके काम न आया न वह स्वयं ही अल्लाह की यातना से बचने का कोई प्रबन्ध कर सका।

The Ummah Technology Mission

هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ؕ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾

(४४) यहीं से (सिद्ध है) कि अधिकार [1] उसी अल्लाह (तआला) सत्य के लिए है, वह प्रतिफल प्रदान करने तथा परिणाम के अनुसार अति उत्तम है।[2]

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾

(४५) तथा उनके लिए साँसारिक जीवन का उदाहरण भी वर्णन कर, जैसे पानी जिसे हम आकाश से उतारते हैं, उससे धरती की उपज मिली-जुली होती है, फिर अन्त में वह चूर हो जाती है जिसे हवायें उड़ाये लिए फिरती हैं। और अल्लाह (तआला) हर वस्तु पर सामर्थ्य रखता है।[3]

---

[1] ولايـة का अर्थ है संरक्षण, अधिकार तथा सहायता, अर्थात उस स्थान पर प्रत्येक ईमान वाले तथा काफ़िर को ज्ञात हो जाता है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई किसी का सहायक तथा उसकी यातना से बचाने का सामर्थ्य नहीं रखता है, यही कारण है कि फिर इस अवसर पर बड़े-बड़े दुष्ट तथा शक्तिशाली भी ईमान के प्रदर्शन पर बाध्य हो जाते हैं यद्यपि उस समय का ईमान लाभकारी तथा अंगीकार नहीं। जिस प्रकार क़ुरआन में फ़िरऔन के विषय में लिखा है कि जब वह डूबने लगा तो कहने लगा।

﴿ءَامَنتُ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱلَّذِىٓ ءَامَنَتْ بِهِۦ بَنُوٓا۟ إِسْرَٰٓءِيلَ وَأَنَا۠ مِنَ ٱلْمُسْلِمِينَ﴾

"मैं उस अल्लाह पर ईमान लाया जिस पर इस्राईल के पुत्र ईमान रखते हैं तथा मैं मुसलमानों में से हूँ।" (सूरः यूनुस-९०)

दूसरे काफ़िरों के विषय में कहा गया जब उन्होंने प्रकोप देखा तो कहा।

"हम एक अल्लाह पर ईमान लाये तथा जिनको हम अल्लाह का साझीदार बनाते थे, उनको अस्वीकार करते हैं।" (सूरः अल-मोमिन-८४)

यदि ولايـة में و (वाव अक्षर) के नीचे ज़ेर हो तो उसका अर्थ आदेश तथा अधिकार है, जैसाकि अनुवाद में यही अर्थ प्रयोग किया गया है (इब्ने कसीर)

[2] अर्थात वही अपने मित्रों को श्रेष्ठ बदला देने वाला तथा सुन्दर सुफल से सम्मानित करने वाला है।

[3] इस आयत में दुनिया की परिवर्तनशीलता तथा अस्थिरता को खेती के एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया गया है कि खेती में लगे हुए पौधों तथा पेड़ पर जब आकाश से वर्षा

The Ummah Technology Mission

اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ﴿٤٦﴾

(४६) धन तथा सन्तान तो साँसारिक जीवन की शोभा है, [1] परन्तु शेष रहने वाले पुण्य[2] तेरे पालनहार के समीप प्रतिफल के लिए तथा (भविष्य की) अच्छी आशा के लिए अति उत्तम हैं।

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ

(४७) तथा जिस दिन हम पर्वतों को चलायेंगे [3] तथा धरती को तू साफ़ खुली हुई देखेगा तथा

होती है तो पानी पाकर खेती लहलहा जाती है तथा पौधे एवं वृक्ष नवजीवन से प्रफुल्लित हो जाते हैं, परन्तु फिर एक समय आता है कि खेती सूख जाती है पानी न मिलने के कारण अथवा फसल पक जाने के कारण। तो फिर हवायें उसको उड़ाये फिरती हैं। हवा का एक झोंका कभी दायीं ओर कभी बायीं ओर झुका देता है। दुनियाँ का जीवन भी हवा के एक झोंके अथवा पानी के बुलबुले अथवा खेती की तरह है, जो अपनी कुछ दिन की बहार दिखाकर विनाश के घाट उतर जाती है। तथा यह सारे कार्य उसी के हाथों से होता है, जो एक है तथा प्रत्येक वस्तु उसके अधीन है। अल्लाह तआला ने दुनिया का यह उदाहरण क़ुरआन मजीद में विभिन्न स्थानों पर वर्णन किया है। जैसे *सूरः यूनुस*-२५, *सूरः-ज़ुमर*-२१ तथा *सूरः हदीद*-५० तथा अन्य आयतें।

[1]इसमें दुनिया के उन लोभियों का खण्डन है जो दुनिया के माल तथा सामग्री, क़बीला, परिवार एवं संतान पर गर्व करते हैं, अल्लाह तआला ने फ़रमाया की नश्वर संसार की ये वस्तुएँ सामयिक शोभा हैं आख़िरत में यह वस्तयें कुछ काम नहीं आयेंगी। इसीलिए इस से आगे फ़रमाया कि आख़िरत में काम आने वाले कर्म तो वह हैं जो शेष रहने वाले हैं।

[2] باقيات صالحات (शेष रहने वाले पुण्य) कौन से अथवा कौन-कौन सी बातें हैं ? किसी ने नमाज़ को, किसी ने अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा कों, किसी ने कुछ अन्य सत्कर्मों को इसका चरितार्थ माना है। परन्तु उचित यह है कि यह सामान्य है तथा सभी पुण्यों को सम्मिलित है । सभी अनिवार्य, आवश्यक, सुन्नत एवं ऐच्छिक पुण्य कर्म स्थाई एवं नित्य हैं बल्कि निषेधित कार्यों से बचना भी एक सत्कर्म है, जिस पर अल्लाह की ओर से बदले तथा पुण्य की आशा है।

[3]यह क़ियामत की भयानकता तथा बड़ी-बड़ी घटनाओं का वर्णन है। पर्वतों को चलायेंगे का अर्थ है पर्वत अपने स्थान से हट जायेंगे तथा धुनी हुई रूई की भाँति उड़ जायेंगे। ﴿وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنفُوشِ﴾ [القارعة: ٥] अन्य स्थानों पर देखिये *सूरः तूर*-९ तथा १०, *सूरः नम्ल*-८८ तथा *सूरः ताहा*-१०५ से १०७ तक। धरती से जब पर्वत

The Ummah Technology Mission

مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿٤٧﴾

सभी लोगों को हम एकत्रित करेंगे, उनमें से किसी को शेष न छोड़ेंगे।[1]

وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۭ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾

(४८) तथा सब के सब तेरे प्रभु के समक्ष पंक्तियों में उपस्थित किये जायेंगे।[2] नि:संदेह तुम हमारे समक्ष उसी प्रकार आये जिस प्रकार हमने तुम्हें प्रथम बार पैदा किया था परन्तु तुम तो इसी भ्रम में रहे कि हम कदापि तुम्हारे लिए कोई वचन का दिन निर्धारित नहीं करेंगे।

وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿٤٩﴾

(४९) तथा कर्मपत्र आगे में रख दिये जायेंगे। फिर तू देखेगा की पापी उसके लेख से भयभीत हो रहे होंगे तथा कह रहे होंगे की हाय, हमारा नाश यह कैसा लेख है जिसने कोई छोटा-बड़ा बिना घेरे नहीं छोड़ा तथा जो कुछ उन्होंने किया था सब कुछ उपस्थित पायेंगे तथा तेरा प्रभु किसी पर अत्याचार तथा अन्याय न करेगा।

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا

(५०) तथा जब हमने फ़रिश्तों को आदेश दिया कि आदम के समक्ष दण्डवत् (सजदा)

जैसी चीज़ निरस्त हो जायेगी तो भवन, वृक्ष तथा इसी प्रकार की अन्य वस्तुएं किस प्रकार अपना अस्तित्व शेष रख सकेंगी ? इसीलिए आगे कहा गया, "तू धरती को स्वच्छ खुली हुई देखेगा।"

[1]अर्थात आदि-अन्त के छोटे-बड़े, काफ़िर, मुसलमान सभी को एकत्रित करेंगे, कोई धरती की तह में पड़ा नहीं रह जायेगा तथा न क़ब्र से निकलकर किसी अन्य स्थान पर छिप सकेगा।

[2]इसका अर्थ है कि एक ही पंक्ति में अल्लाह के समक्ष खड़े होंगे अथवा पंक्तिबद्ध होकर अल्लाह के सदन में उपस्थित होंगे।

The Ummah Technology Mission

لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ
مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ
اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ
مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ
بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ۝٥٠

करो, तो इब्लीस के अतिरिक्त सबने दण्डवत् किया, यह जिन्नों में से था [1] उस ने अपने प्रभु के आदेशों की अवहेलना की। [2] क्या फिर भी तुम उसे तथा उसकी संतान को मुझे छोड़ कर अपना मित्र बना रहे हो? यद्यपि वह तुम सबका शत्रु है।[3] ऐसे अत्याचारियों का कितना बुरा बदला है।[4]

---

[1]क़ुरआन का यह स्पष्ट वर्णन है कि शैतान फ़रिश्ता नहीं था, फ़रिश्ता होता तो अल्लाह तआला के आदेशों की अवहेलना करने का साहस ही न होता, क्योंकि फ़रिश्तों का गुण अल्लाह तआला ने वर्णन किया है।

﴿لَّا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ﴾

"वह अल्लाह के आदेश की अवहेलना नहीं करते तथा वही करते हैं जिसका उन्हें आदेश दिया जाता है।" (सूरः *अल-तहरीम*-६)

इस स्थिति में यह संदेह रहता है, यदि वह फ़रिश्ता नहीं था तो फिर वह अल्लाह के आदेश से सम्बोधित ही नहीं था क्योंकि इसके सम्बोधित तो फ़रिश्ते थे, उन्हीं को नत्मस्तक होने का आदेश दिया गया था। 'रूहुल मआनी' के लेखक ने कहा है कि वह फ़रिश्ता अवश्य नहीं था, परन्तु वह फ़रिश्तों के साथ रहता था तथा उन्ही में गणना होती थी, इसलिए वह भी اسجدوا لآدم के आदेश से सम्बोधित था तथा आदम के समक्ष नत्मस्तक के आदेश के साथ उसको सम्बोधित किया जाना निश्चित है। अल्लाह का आदेश है : "जब मैंने तुझे आदेश दिया तो फिर तूने सजदा क्यों. न किया।" (सूरः *अल-आराफ़*-१२)

[2] فِسق का अर्थ होता है निकलना, चूहा जब अपने बिल से निकलता है तो उसे अरबी भाषा में कहते है. «فَسَقَتِ الْفَأْرَةُ مِنْ جُحْرِهَا» शैतान भी सम्मान तथा आदर सूचक दण्डवत (सजदा) के आदेश की अवहेलना करके प्रभु के आज्ञापालन से निकल गया।

[3]अर्थात क्या तुम्हारे लिए यह उचित है कि तुम ऐसे व्यक्ति को तथा उसके परिवार वालों को मित्र बनाओ, जो तुम्हारे पितामह आदम का शत्रु, तुम्हारा शत्रु है तथा तुम्हारे प्रभु का शत्रु है तथा अल्लाह को छोड़कर उस शैतान का अनुकरण करो?

[4]एक अन्य अनुवाद इसका यह किया गया है "अत्याचारियों ने क्या बुरा बदला अपना लिया है।" अल्लाह के आदेशों का पालन तथा मित्रता छोड़कर शैतान का अनुसरण एवं उससे मित्रता की है जो अत्यधिक बुरा बदला है जिसे उन अत्याचारियों ने अपनाया है।

The Ummah Technology Mission

مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۖ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿٥١﴾

(५१) मैंने उन्हें आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति के समय उपस्थित नहीं रखा था तथा न स्वयं उन की अपनी उत्पत्ति में।[1] तथा मैं भटकाने वालों को अपना बाहु बल बनाने वाला भी नहीं।[2]

وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾

(५२) तथा जिस दिन वह कहेगा कि तुम्हारे विचार से जो मेरे साझीदार थे, उन्हें पुकारो। ये पुकारेंगे परन्तु उनमें से कोई उत्तर न देगा। तथा हम उनके मध्य विनाश का साधन बना देंगे।[3]

وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾

(५३) तथा पापी नरक को देखकर समझ लेंगे कि वे इसी में जाने वाले हैं, परन्तु उससे बचने का स्थान न पायेंगे।[4]

---

[1]अर्थात आकाश तथा धरती की उत्पत्ति तथा उसके उपाय, बल्कि स्वयं इन शैतानों की उत्पत्ति में मैंने उन से अथवा उन में से किसी एक से कोई सहायता नहीं ली, यह तो उस समय उपस्थित नहीं थे। फिर तुम उस शैतान तथा उसके परिवार के लोगों की पूजा अथवा अनुगमन क्यों करते हो ? जबकि यह रचित है तथा मैं उन सबका रचयिता हूँ।

[2]मान लो, यदि मैं उनको सहायक बनाता भी तो कैसे बनाता जबकि यह मेरे भक्तों को भटकाकर मेरे स्वर्ग तथा मेरे अनुग्रह से रोकते हैं।

[3] مَوْبِقٌ का एक अर्थ पर्दे तथा आड़ के किये गये हैं। अर्थात उनके मध्य आड़ तथा दूरी कर दी जायेगी, क्योंकि उनके मध्य आपस में बैर होगा। इसके अतिरिक्त इसलिए कि हश्र की अवधि में एक-दूसरे से न मिल सकें। कुछ विद्वान कहते हैं कि यह नरक में रक्त तथा पीव की विशेष घाटी है। तथा कुछ ने इसका अनुवाद विनाश किया है जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है अर्थात ये मूर्तिपूजक तथा उनके मनगढ़न्त देवता, यह एक-दूसरे को मिल ही न सकेंगे क्योंकि उनके मध्य विनाश का साधन तथा भयानक वस्तुएं होंगी।

[4]जिस प्रकार कुछ कथनों में है कि काफ़िर अभी चालीस वर्ष की दूरी पर होगा कि विश्वास कर लेगा कि नरक उसका ठिकाना है। (मुसनद अहमद भाग ३, पृष्ठ ७५)

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾

(५४) तथा हमने इस क़ुरआन में हर-हर प्रकार से सभी उदाहरण लोगों के लिए वर्णन कर दिये हैं, परन्तु सभी वस्तुओं से अधिक झगड़ालू (कलह प्रिय) मानव है।[1]

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾

(५५) लोगों के पास मार्गदर्शन आ जाने के पश्चात उन्हें ईमान लाने तथा अपने प्रभु से क्षमा-याचना करने से केवल इसी बात ने रोका कि पूर्वजों का सा व्यवहार उनके साथ भी हो[2] अथवा उनके सामने प्रत्यक्ष प्रकोप आ जाये।[3]

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ

(५६) तथा हम तो अपने रसूलों को केवल इसलिए भेजते हैं कि वे शुभसूचना सुना दें तथा सावधान कर दें। काफ़िर लोग अनृत को प्रमाण बनाकर झगड़े चाहते हैं कि इससे सत्य को लड़खड़ा दें, वह मेरी आयतों (मंत्रों)

---

[1]अर्थात हमने मनुष्यों को सत्यमार्ग समझाने के लिए क़ुरआन में प्रत्येक विधि का प्रयोग किया है, भाषण तथा वर्णन, उदाहरण तथा घटनाएं तथा प्रमाण एवं निशानियाँ, इसके अतिरिक्त उन्हें बार-बार विभिन्न प्रकार से वर्णन किया है, परन्तु मनुष्य अत्यधिक झगड़ालू है, इसलिए शिक्षा एवं उपदेश का उस पर न प्रभाव होता है तथा न प्रमाण एवं निशानियाँ उसके लिए प्रभावकर।

[2]अर्थात झुठलाने की अवस्था में उन पर भी प्रकोप उसी प्रकार आये जिस प्रकार इनसे पूर्व के समुदायों पर आया।

[3]अर्थात यह मक्कावासी ईमान लाने के लिए इन दो बातों में से किसी एक की प्रतीक्षा में हैं। परन्तु इन मूर्खों को यह समझ में नहीं आता कि उसके पश्चात ईमान लाने का कोई लाभ नहीं अथवा उसके पश्चात उनको ईमान लाने का अवसर ही कब मिलेगा ?

The Ummah Technology Mission

وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿٥٦﴾

तथा जिस वस्तु से डराया जाये उसे उपहास में उड़ाते हैं।[1]

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٥٧﴾

(५७) तथा उससे बढ़कर अत्याचारी कौन है जिसे उसके प्रभु की आयतों द्वारा शिक्षा दी जाये वह फिर भी मुख मोड़े रहे, तथा जो कुछ उसके हाथों ने आगे भेज रखा है उसे भूल जाये ? नि:संदेह हमने उनके दिलों पर उसकी समझ से पर्दे डाल रखे हैं तथा उनके कानों में बोझ है, यद्यपि तू उन्हें संमार्ग की ओर बुलाता रहे, परन्तु यह कभी भी मार्गदर्शन नहीं पायेंगे।[2]

وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ؕ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ

(५८) तेरा पालनहार अति क्षमावान एवं कृपानिधि है, वह यदि उनके कर्मों के दण्ड में पकड़े तो नि:संदेह उन्हें शीघ्र ही यातना करे, अपितु उनके लिए एक वायदे का समय

---

[1]तथा अल्लाह की आयतों का उपहास उड़ाना, यह झुठलाने की निम्न कोटि है। इसी प्रकार कुरीति कुचाल से सत्य को असत्य सिद्ध करने का प्रयत्न करना भी अति निन्दनीय है। कुरीति द्वारा झगड़ने का एक रूप यह है जो काफ़िर रसूलों को यह कहकर उनकी रिसालत को अस्वीकार करते रहे कि तुम तो हमारे जैसे मनुष्य ही हो। ما أنتم إلا بشر مثلنا (सूर: *यासीन*-१५) हम तुम्हें किस प्रकार रसूल मान लें ? دَحَض का मूल अर्थ फिसलने के हैं। अरबी भाषा में कहा जाता है دحضت رجله (उसका पैर फिसल गया) यहाँ से यह किसी वस्तु के पतन (टलने) तथा بطلان के अर्थ में प्रयोग होने लगा। कहते हैं «دَحَضَتْ حُجَّتُهُ دُحُوضًا» أي : بَطَلَتْ (उसका तर्क असत्य सिद्ध हो गया) इस आधार पर أدحض يدحض का अर्थ होगा असत्य करना। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात उनके इस अत्यधिक घोर अत्याचार के कारण उन्होंने प्रभु की आयतों से मुँह फेर लिया तथा अपने करतूत को भूले रहे, उनके दिलों पर ऐसे आवरण तथा उनके कानों पर ऐसे बोझ डाल दिये गये जिससे क़ुरआन का समझना, सुनना तथा उससे मार्गदर्शन प्राप्त करना उनके लिए असम्भव हो गया। उनको कितना भी सत्य की ओर बुला लो यह कभी भी सत्य का मार्ग अपनाने के लिए तैयार नहीं होंगे।

The Ummah Technology Mission

لَّن يَجِدُوا مِن دُونِهِ مَوْئِلًا ﴿٥٨﴾

निर्धारित है जिससे वह भागने का कदापि स्थान नहीं पायेंगे।[1]

وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِم مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾

(५९) तथा ये हैं वह बस्तियाँ जिन्हें हमने उन के अत्याचार के कारण ध्वस्त कर दिया तथा उनके विनाश का एक समय हमने निर्धारित कर रखा था।[2]

---

[1]अर्थात यह तो क्षमावान पालनहार की कृपा है कि वह पाप पर तुरन्त पकड़ नहीं करता अपितु अवसर प्रदान करता है, यदि ऐसा न होता तो अपने कर्मों के कारण प्रत्येक व्यक्ति ही अल्लाह की यातनाओं के पंजों में जकड़ा रहता। परन्तु यह अवश्य है कि जब यह अवसर की अवधि समाप्त हो जाती है तथा विनाश का वह समय आ जाता है जो अल्लाह ने निर्धारित किया होता है तो भागने का कोई मार्ग तथा बचाओ की कोई विधि उनके लिए शेष नहीं रहती। مَوْئِلٌ का अर्थ है शरणागर, भागने का मार्ग।

[2]इससे तात्पर्य आद, समूद, आदरणीय शुऐब तथा आदरणीय लूत आदि के समुदाय हैं, जो हिजाज के क्षेत्र के निकट तथा उनके मार्गों में आबाद थे। उन्हें भी यद्यपि उनके अत्याचार के कारण ही नाश किया गया परन्तु विनाश से पूर्व उन्हें भी पूर्ण अवसर प्रदान किया गया तथा जब यह बात सिद्ध हो गयी कि अत्याचार तथा क्रूरता इस चरम सीमा को पहुँच गये, जहाँ से मार्गदर्शन असम्भव हो जाते हैं तथा उनसे पुण्य तथा भलाई की आशा शेष नहीं रही तो फिर उनके कर्म करने का अवसर समाप्त तथा विनाश का समय प्रारम्भ हो गया। फिर उन्हें सदैव के लिए मिटा दिया गया कि जैसे उनका अस्तित्व ही न रहा हो। अथवा दुनिया वालों के लिए शिक्षा प्राप्त करने का नमूना बना दिया गया। यह वास्तव में मक्कावासियों को समझाया जा रहा हैं कि तुम हमारे अन्तिम नबी सर्वश्रेष्ठ रसूल आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठला रहे हो, तुम यह न समझना कि तुम्हें यह जो अवसर मिल रहा है तो इसका यह अर्थ है कि तुम्हें कोई पूछने वाला नहीं है। बल्कि यह अवसर अल्लाह का नियम है, जो एक निर्धारित समय तक प्रत्येक व्यक्ति, गुट तथा समुदाय को वह प्रदान करता है। जब यह अवधि समाप्त हो जायेगी तथा तुम अपने कुफ्र तथा विरोध से नहीं रूकोगे तो फिर तुम्हारा अन्त भी उससे भिन्न नहीं होगा जो तुम से पूर्व के समुदायों का हो चुका है।

The Ummah Technology Mission

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَاۤ اَبْرَحُ حَتّٰۤى اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِىَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾

(६०) तथा जब मूसा ने अपने नवयुवक से कहा[1] कि मैं तो चलता ही रहूँगा, यहाँ तक कि दो नदियों के संगम[2] के स्थान पर पहुँचूँगा, चाहे मुझे वर्षों चलना पड़े।[3]

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾

(६१) जब वे दोनों वहाँ पहुँचे जहाँ दोनों नदियों के संगम का स्थान था, वहाँ अपनी मछली भूल गये जिसने नदी में सुरंग जैसा अपना मार्ग बना लिया।

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا

(६२) जब दोनों वहाँ से आगे बढ़े तो मूसा ने अपने नवयुवक से कहा कि हमारा अल्पाहार

---

[1]नवयुवक से तात्पर्य आदरणीय यूशअ बिन नून हैं जो मूसा की मृत्यु के पश्चात उनके उत्तराधिकारी बने।

[2]इस स्थान का निर्धारण किसी निश्चित प्रमाण से नहीं हो सका है फिर भी निकटता के आधार पर इससे तात्पर्य सीनाई के मरूस्थल का दक्षिणी किनारा है जहाँ अक़बा की खाड़ी तथा स्वेस की खाड़ी दोनों आकर मिलती तथा लाल सागर में जाकर विलीन हो जाती हैं। दूसरे स्थान जिनका वर्णन व्याख्याकारों ने किया है उन पर किसी प्रकार से दो सागरों के संगम का कथन सिद्ध ही नहीं होता।

[3] حقبٌ का एक अर्थ ७० अथवा ८० वर्ष तथा दूसरा अर्थ अनिश्चित काल की अवधि है। यहाँ यही दूसरा अर्थ तात्पर्य है। अर्थात जब तक दो सागरों के संगम तक नहीं पहुँच जाऊँगा, चलता रहूँगा तथा यात्रा निरन्तर जारी रखूँगा, चाहे कितना भी समय लग जाये। आदरणीय मूसा को इस यात्रा की आवश्यकता इसलिए हुई कि उन्होंने एक अवसर पर एक प्रश्नकर्ता के उत्तर में कह दिया कि इस समय मुझसे बड़ा ज्ञानी कोई नहीं। अल्लाह तआला को उनका यह कथन पसन्द नहीं आया तथा प्रकाशना (वह्यी) के द्वारा उन्हें बताया गया कि हमारा एक भक्त (ख़िज़्र) है जो तुझसे भी अधिक ज्ञानी है। आदरणीय मूसा ने पूछा कि हे अल्लाह! उससे मुलाक़ात किस प्रकार हो सकती है? अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जहाँ दो समुद्र मिलते हैं, वहीं हमारा वह भक्त होगा। इसके अतिरिक्त फ़रमाया कि मछली साथ ले जाओ, जहाँ मछली तुम्हारी टोकरी से निकलकर खो जाये तो समझ लेना कि यही स्थान है (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः अल-कहफ़)। अतः इस आदेश के अनुसार उन्होंने एक मछली ली तथा यात्रा प्रारम्भ कर दी।

The Ummah Technology Mission

هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾

दे, हमें तो अपनी इस यात्रा से अत्यधिक कठिनाई उठानी पड़ी।

قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّىْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ ز وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ ۖ عَجَبًا ﴿٦٣﴾

(६३) (उसने) उत्तर दिया कि क्या आप ने देखा भी ? जब हम पत्थर से टेक लगाकर विश्राम कर रहे थे, वहीं मैं मछली भूल गया था, वास्तव में शैतान ने मुझे भुला दिया कि मैं आप से इसकी चर्चा करूँ। उस मछली ने एक विचित्र रूप से नदी[1] में अपना मार्ग बना लिया।

قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ۙ ﴿٦٤﴾

(६४) (मूसा ने) कहा यही था जिसकी खोज में हम थे, तो वहीं से अपने पदचिन्हों को ढूँढते हुए वापस लौटे।[2]

فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ

(६५) फिर हमारे भक्तों में से एक भक्त[3] को पाया, जिसे हमने अपने पास से विशेष

---

[1]अर्थात मछली जीवित होकर समुद्र में चली गयी तथ उसके लिए अल्लाह तआला ने समुद्र में सुरंग की भाँति मार्ग बना दिया। आदरणीय यूशअ ने मछली को समुद्र में जाते और मार्ग बनते हुए देखा, परन्तु आदरणीय मूसा को बताना भूल गये। यहाँ तक कि विश्राम करके वहाँ से फिर यात्रा प्रारम्भ की, उस दिन तथा उसके पश्चात रात्रि की यात्रा करके, जब दूसरे दिन आदरणीय मूसा को थकान तथा भूख का संवेदन हुआ तथा अपने नवयुवक साथी से कहा कि लाओ अल्पाहार कर लें। उसने उत्तर दिया, मछली तो जहाँ हमने पत्थर से टेक लगाकर विश्राम किया था, वहाँ जीवित होकर समुद्र में चली गयी थी तथा वहाँ विचित्र रूप से उसने अपना मार्ग बना लिया था, जिसकी मैं आपसे चर्चा करना भूल गया। तथा शैतान ने मुझे भुला दिया।

[2]आदरणीय मूसा ने कहा "अल्लाह के भक्त ! जहाँ मछली को जीवित होकर गायब होना था वहीं तो हमारा लक्ष्य था, जिसकी खोज में हम यात्रा कर रहे हैं।" अत: अब पद चिन्ह देखते हुए वापस लौटे तथा उसी दो साग़रों के संगम के स्थान पर वापस आ गये। قصصاً का अर्थ है पीछे लगना, पीछे-पीछे चलना अर्थात पद चिन्ह देखते हुए उनके पीछे-पीछे चलते रहे।

[3]उस भक्त से तात्पर्य आदरणीय ख़िज़्र हैं जैसाकि सहीह हदीसों में स्पष्टीकरण है। ख़िज़्र का अर्थ हरियाली है, यह एक बार धरती पर बैठे तो वह धरती का टुकड़ा नीचे से

The Ummah Technology Mission

مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾

कृपा[1] प्रदान कर रखी थी तथा उसे अपने पास से विशेष[2] ज्ञान सिखा रखा था।

قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾

(६६) उससे मूसा ने कहा कि मैं आप का पालन करूँ कि आप मुझे उस सत्य ज्ञान को सिखा दें, जो आपको सिखाया गया है ?

قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾

(६७) उसने कहा आप हमारे साथ कदापि धैर्य नहीं रख सकते।

وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾

(६८) तथा जिस वस्तु को आप ने अपने ज्ञान में[3] न लिया हो उस पर धैर्य रख भी कैसे सकते हैं ?

हरियाली बनकर लहलहाने लगा, इसी कारण उनका नाम ख़िज़्र पड़ गया। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः *अल-कहफ़*)

[1]कृपा से कुछ व्याख्याकारों ने वे विशेष उपहार तात्पर्य लिये हैं, जो अल्लाह ने अपने उस विशेष भक्त को प्रदान किये तथा अधिकतर व्याख्याकारों ने इससे तात्पर्य नबूअत (ईशदूत्व) लिया है।

[2]उससे नबूअत के ज्ञान के अतिरिक्त जिससे आदरणीय मूसा भी परिचित थे, कुछ उत्पत्ति से सम्बन्धित बातों का ज्ञान है जिसे अल्लाह तआला ने केवल आदरणीय ख़िज़्र को प्रदान किया था, आदरणीय मूसा के पास वह ज्ञान नहीं था। इससे भावार्थ निकालते हुए कुछ सूफ़ी (योगी) दावा करते हैं कि अल्लाह तआला कुछ लोगों को, जो नबी नहीं होते علم لدن से सुशोभित करता है, जो बिना गुरू के मात्र अल्लाह की कृपा से प्राप्त होता है तथा यह आध्यात्मिक ज्ञान धार्मिक नियमों के भिन्न एवं विरूद्ध होता है। परन्तु यह भावार्थ इसलिए उचित नहीं कि आदरणीय ख़िज़्र के विषय में तो अल्लाह तआला ने स्वयं उनको विशेष ज्ञान प्रदान करने का स्पष्टीकरण कर दिया है, जबकि किसी अन्य के लिए ऐसा स्पष्टीकरण कहीं नहीं, यदि इसको सामान्य कर दिया जाये तो फिर प्रत्येक जादूगर इस प्रकार का दावा कर सकता है, इस सम्प्रदाय में यह दावे सामान्य हैं। इसलिए ऐसे दावों का कोई औचित्य नहीं।

[3]अर्थात जिसका पूर्ण ज्ञान न हो।

The Ummah Technology Mission

قَالَ سَتَجِدُنِيٓ إِن شَآءَ ٱللَّهُ صَابِرًا وَلَآ أَعۡصِي لَكَ أَمۡرٗا ٦٩

(६९) मूसा ने उत्तर दिया कि अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे धैर्यवान पायेंगे तथा किसी बात में आपकी अवज्ञा नहीं करूँगा।

قَالَ فَإِنِ ٱتَّبَعۡتَنِي فَلَا تَسۡـَٔلۡنِي عَن شَيۡءٍ حَتَّىٰٓ أُحۡدِثَ لَكَ مِنۡهُ ذِكۡرٗا ٧٠

(७०) (उसने) कहा कि यदि आप मेरे साथ ही चलने की पुनराग्रह करते हैं, तो ध्यान रहे कि किसी वस्तु के सम्बन्ध में मुझ से कुछ न पूछना जब तक मैं स्वयं उसके सम्बन्ध में न बताऊँ।

فَٱنطَلَقَا حَتَّىٰٓ إِذَا رَكِبَا فِي ٱلسَّفِينَةِ خَرَقَهَاۖ قَالَ أَخَرَقۡتَهَا لِتُغۡرِقَ أَهۡلَهَا لَقَدۡ جِئۡتَ شَيۡـًٔا إِمۡرٗا ٧١

(७१) फिर वे दोनों चले यहाँ तक कि एक नाव में सवार हुए, (ख़िज़्र ने) उसके पटरे तोड़ दिये। (मूसा ने) कहा क्या आप उसे तोड़ रहे हैं कि नाव वालों को डूबा दें, आप ने तो बड़ा अनुचित[1] काम किया।

قَالَ أَلَمۡ أَقُلۡ إِنَّكَ لَن تَسۡتَطِيعَ مَعِيَ صَبۡرٗا ٧٢

(७२) (ख़िज़्र ने) उत्तर दिया कि मैंने तो पहले ही तुझसे कह दिया था कि तू मेरे साथ कदापि धैर्य न रख सकेगा।

قَالَ لَا تُؤَاخِذۡنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرۡهِقۡنِي مِنۡ أَمۡرِي عُسۡرٗا ٧٣

(७३) (मूसा ने) उत्तर दिया कि मेरी भूल पर मुझे न पकड़िये तथा मुझे मेरे विषय में कठिनाई में न डालिये।[2]

---

[1]आदरणीय मूसा को चूँकि इस विशेष ज्ञान की सूचना नहीं थी जिसके आधार पर ख़िज़्र ने नाव के पटरे तोड़ दिये थे, इसलिए धैर्य न रख सके तथा अपने ज्ञान तथा बुद्धि के आधार पर इसे अत्यन्त भयानक कार्य बताया। إمرا का अर्थ है الداهية العظيمة "अत्यन्त भयानक कार्य।"

[2]अर्थात मेरे साथ कोमल व्यवहार करें, कठोरता का नहीं।

The Ummah Technology Mission

فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ؕ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿۷۴﴾

(७४) फिर दोनों चले, यहाँ तक कि एक बालक [1] को पाया, (ख़िज़्र ने) उसे मार डाला, (मूसा ने) कहा कि क्या आप ने एक पवित्र आत्मा को बिना किसी प्रतिहत्या के मार डाला ? नि:संदेह आप ने तो बड़ी बुरी बात की |[2]

The Ummah Technology Mission

[1] ग़ुलाम से तात्पर्य वयस्क नवयुवक भी हो सकता है तथा अल्पवयस्क बच्चा भी |

[2] نُكراً ، فظيعا منكرا لا يعرف في الشرع ऐसा बड़ा बुरा कार्य जिसका धार्मिक नियम में स्थान नहीं | कुछ ने कहा कि इसका अर्थ أنكر من الأمر الأول प्रथम कार्य (नाव के पटरे तोड़ने) से अधिक बुरा कार्य | इसलिए कि हत्या ऐसा कार्य है जिसकी क्षतिपूर्ति तथा समापन करना असम्भव है | जबकि नाव के पटरे उखाड़ देना, ऐसा कार्य है जिसकी पूर्ति तथा समापन का साधन है | कुछ ने इसके अर्थ किये हैं, प्रथम कार्य से कम, इसलिए कि एक प्राण की हत्या करना पूरी नाव में सवार यात्रियो को डुबो देने से कम है (फ़तहुल क़दीर) | परन्तु प्रथम भावार्थ ही उचित है क्योंकि आदरणीय मूसा को जिन धार्मिक नियमों का ज्ञान प्राप्त था, उसके आधार पर आदरणीय ख़िज़्र का यह कार्य किसी भी प्रकार से नियम के विरूद्ध था, जिसके आधार पर उन्होंने विरोध किया तथा उसे अत्यधिक बुरा कार्य बताया |

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾

(७५) वह कहने लगे मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ रह कर कदापि धैर्य नहीं रख सकते।

قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِيْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّيْ عُذْرًا ﴿٧٦﴾

(७६) (मूसा ने) उत्तर दिया यदि अब इसके पश्चात मैं आप से किसी वस्तु के विषय में प्रश्न करूँ तो नि:संदेह आप मुझे अपने साथ न रखना, नि:संदेह मेरी ओर से[1] आप कारण को पहुँच चुके।

فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَآ اَتَيَآ اَهْلَ قَرْيَةِ ِۨاسْتَطْعَمَآ اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ۭ قَالَ

(७७) फिर दोनों चले, एक गाँववासियों के पास आकर उनसे भोजन माँगा, उन्होंने उनके अतिथि सत्कार से इंकार कर दिया,[2] दोनों ने वहाँ एक दीवार पायी जो गिरन. चाहती थी, उसने उसे सीधी कर दिया[3] (मूसा)

---

[1]अर्थात यदि अब प्रश्न करूँ तो अपने साथ रखने के सौभाग्य से मुझे वंचित कर दें, मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी, इसलिए कि आपके पास उचित कारण होगा।

[2]अर्थात यह कंजूसों तथा नीच लोगों की बस्ती थी कि अतिथियों के सत्कार ही को अस्वीकार कर दिया, जबकि वास्तव में यात्रियों को खाना खिलाना तथा अतिथि सत्कार करना प्रत्येक धर्म विधान के नैतिक शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग रहा है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी अतिथि सत्कार तथा अतिथियों के सम्मान को ईमान की माँग बताया है। फ़रमाया :

«مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَومِ الآخِرِ، فَلْيُكْرِمْ ضَيفَه»

"जो अल्लाह तथा आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, उसे चाहिए कि अतिथि का आदर तथा सत्कार करे।" (फ़ैज़ुल क़दीर शर: अल-जामे अस्सग़ीर)

[3]आदरणीय ख़िज़्र ने उस दीवार को हाथ लगाया तथा चमत्कारिक रूप से वह सीधी हो गयी जैसाकि सहीह बुख़ारी के कथन से स्पष्ट है।

The Ummah Technology Mission

لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا ﴿٧٧﴾

कहने लगे यदि आप चाहते तो इस पर मज़दूरी ले लेते।[1]

قَالَ هَٰذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ ۚ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِع عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٧٨﴾

(७८) उसने कहा बस यह जुदाई है मेरे तथा तेरे मध्य[2], अब मैं तुझे इन बातों की वास्तविकता भी बताऊँगा, जिस पर तुझे धैर्य न रखा जा सका।[3]

---

[1]आदरणीय मूसा जो बस्ती वालों के व्यवहार से पहले ही क्षुब्ध थे, आदरणीय ख़िज़्र के बिना मज़दूरी उपकार पर मौन न रह सके तथा बोल पड़े कि जब इन बस्ती वालों ने हमारी यात्रा, आवश्यकता तथा आदर तथा सत्कार किसी बात पर भी ध्यान नहीं दिया तो कब यह लोग इस योग्य हैं कि इनके ऊपर उपकार किया जाये।

[2]आदरणीय ख़िज़्र ने कहा कि मूसा, यह तीसरा अवसर है कि तुम सहन नहीं कर सके तथा अब स्वयं तेरे कहने के अनुसार मैं तुझे साथ रखने में विवश हूँ।

[3]परन्तु बिछड़ने से पूर्व आदरणीय ख़िज़्र ने तीनों घटनाओं की वास्तविकता से उन्हें अवगत तथा सूचित करना आवश्यक समझा, ताकि मूसा किसी शंका के शिकार न हो जायें तथा वह यह समझ लें कि नबूअत का ज्ञान अन्य है, जिससे उन्हें सुशोभित किया गया है तथा कुछ उत्पत्ति के विषय का ज्ञान अन्य है, जो अल्लाह की इच्छा एवं ज्ञान के अधीन है जिसका ज्ञान, आदरणीय ख़िज़्र को दिया गया है तथा उसी के अनुसार उन्होंने ऐसे काम किये जो धार्मिक नियमानुसार उचित नहीं थे तथा इसीलिए आदरणीय मूसा उचित रूप से उन पर मौन नहीं रह सके थे। इन्हीं प्राकृतिक नियमों को पूर्ण करने के परिणाम स्वरूप कुछ ज्ञानियों का विचार है कि आदरणीय ख़िज़्र मनुष्यों में से नहीं थे तथा इसलिए वह उनकी नबूअत, रिसालत, अथवा विलायत के विवाद में नहीं पड़ते क्योंकि ये सारे पद तो मनुष्यों के साथ ही विशेष रूप से रहे हैं। वे कहते हैं कि वह फ़रिश्ता थे परन्तु यदि अल्लाह तआला अपने किसी नबी को कुछ उत्पत्ति के नियमों से अवगत करके उनके द्वारा यह कार्य करवा ले तो यह भी कोई असम्भव बात नहीं है। जब वह प्रकाशना प्राप्तकर्ता स्वयं इस बात का स्पष्टीकरण कर दे कि मैंने ये कार्य अल्लाह के आदेश से ही किये हैं, तो यद्यिप प्रत्यक्ष रूप से धार्मिक नियमों के विरूद्ध दिखते हैं, परन्तु जब उनका सम्बन्ध प्राकृतिक नियमों से है तो वहाँ मान्य तथा अमान्य पर कोई विवाद आवश्यक नहीं। जैसे प्राकृतिक नियमों के अन्तर्गत कोई रोगी होता है, कोई मरता है, किसी का व्यापार नाश हो जाता है, समुदायों पर प्रकोप आता है। इनमें से कुछ कार्य कई बार अल्लाह की आज्ञानुसार फ़रिश्ते ही करते हैं, तो जिस प्रकार यह बातें किसी को आज

The Ummah Technology Mission

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِينَ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدْتُ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ﴿٧٩﴾

(७९) नाव तो कुछ निर्धनों की थी, जो नदी में कार्य करते थे। मैंने उसमें कुछ तोड़-फोड़ करने का विचार कर लिया क्योंकि उनके आगे एक राजा था, जो प्रत्येक अच्छी नाव को ज़बरदस्ती ले लेता था।

وَأَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ أَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِينَآ أَنْ يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ﴿٨٠﴾

(८०) तथा उस नवयुवक के माता-पिता ईमानदार थे। हमें यह भय हुआ कि कहीं यह उन्हें अपनी दुष्टता तथा अधर्म से विवश तथा व्याकुल न कर दे।

فَأَرَدْنَآ أَنْ يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَأَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾

(८१) इसलिए हमने चाहा कि उन्हें उनका प्रभु उस के बदले इस से उत्तम पवित्र तथा उससे अधिक प्रिय एवं प्रेमी बालक प्रदान कर दे।

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنزٌ لَّهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا ۚ فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَآ أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ۚ ذٰلِكَ تَأْوِيلُ

(८२) तथा दीवार की कथा यह है कि उस नगर में दो अनाथ बालक हैं, जिनका कोष उनकी इस दीवार के नीचे गड़ा है, उनके पिता अत्यधिक पुनीत व्यक्ति थे, तो तेरा प्रभु चाहता था कि ये दोनों अनाथ अपने यौवन की आयु में जाकर अपना यह कोष तेरे प्रभु की कृपा तथा दया से निकाल लें, मैंने अपने विचार

तक धार्मिक नियमों के विरूद्ध नहीं दिखीं उसी प्रकार आदरणीय ख़िज़्र के द्वारा घटित होने वाली घटनाओं का सम्बन्ध भी प्राकृति के नियमों से है इसलिए इसे भी धार्मिक नियमों के तराज़ू में तौलना ही उचित नहीं है। परन्तु अब प्रकाशना तथा नबूअत की श्रृंखला समाप्त हो जाने के पश्चात किसी व्यक्ति का इस प्रकार का दावा कदापि उचित तथा स्वीकार्य नहीं होगा जैसाकि आदरणीय ख़िज़्र से सम्बन्धित है क्योंकि आदरणीय ख़िज़्र का मामला तो क़ुरआन की आयतों से सिद्ध है, इसलिए नकारा नहीं जा सकता, परन्तु अब जो भी इस प्रकार का दावा अथवा कार्य करेगा, उसको अस्वीकार करना अनिवार्य तथा आवश्यक है क्योंकि अब वह निश्चित ज्ञान के साधन नहीं हैं जिससे उसके दावे तथा कार्य की वास्तविकता स्पष्ट हो सके।

The Ummah Technology Mission

مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾

(तथा अधिकार) से कोई कार्य नहीं किया,[1] यह यर्थाथता थी उन घटनाओं की जिन पर आप धैर्य न रख सके।

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِى الْقَرْنَيْنِ ۭ قُلْ

(८३) तथा आप से ज़ुल्क़रनैन की घटना के विषय में यह लोग पूछ रहे हैं।[2] (आप) कह

---

[1]आदरणीय ख़िज़्र की नबूअत के पक्षधारी का यह दूसरा तर्क है जिससे वे आदरणीय ख़िज़्र की नुबूअत (ऋषित्व) को सिद्ध करते हैं। क्योंकि किसी ग़ैर नबी के पास इस प्रकार की प्रकाशना नहीं आती कि वह इतने विशेष कार्य किसी दैवी संकेत पर कर दे, न किसी ग़ैर नबी का ऐसा दैवी संकेत कार्य करने योग्य ही है। आदरणीय ख़िज़्र की नबूअत की तरह आदरणीय ख़िज़्र का जीवन भी एक क्षेत्र में मतभेद का विषय है तथा जो ख़िज़्र को जीवित मानते हैं बहुत से लोगों की उनसे भेंट सिद्ध करते हैं तथा फिर इससे उनके अब तक जीवित होने को प्रमाणित करते हैं, परन्तु जिस प्रकार आदरणीय ख़िज़्र के जीवन पर कोई धार्मिक सूत्र लिखित रूप से नहीं है, इसी विधि से लोगों के अर्न्तज्ञान अथवा जागृत अवस्था अथवा सोने की स्थिति में आदरणीय ख़िज़्र से मिलने का दावा भी स्वीकार्य नहीं। जब उनकी रूप रेखा ही प्रमाणित साधनों से प्राप्त नहीं है तो उनकी पहचान किस प्रकार सम्भव है ? तथा किस प्रकार उस पर विश्वास किया जा सकता है कि जिन महानुभावों ने मिलने के दावे किये हैं, वास्तव में उनकी भेंट मूसा के ख़िज़्र से हुई है, ख़िज़्र के नाम से उन्हें किसी ने धोखे तथा छल में लिप्त नहीं किया।

[2]यह मूर्तिपूजकों के तीसरे प्रश्न का उत्तर है जो यहूदियों के कहने पर उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किये थे। ذوالقرنين का शाब्दिक अर्थ है दो सींघ वाला। यह नाम इसलिए पड़ा कि वास्तव में उसके सिर पर दो सींघ थी अथवा इसलिए कि उसने दुनिया के पूर्वी तथा पश्चिमी किनारे पर पहुँच कर सूर्य की किरणों अर्थात उसकी प्रकाश रेखा का दर्शन किया, कुछ कहते हैं कि उसके सिर पर बालों की दो लटें (जटायें) थीं, قرن बालों की चोटी को भी कहते हैं अर्थात दो चोटियों वाला। प्राचीन व्याख्याकारों ने विना किसी मतभेद के इसका चरितार्थ सिकन्दर रूमी को बताया है जिसकी विजय का क्षेत्र पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ था। परन्तु आधुनिक व्याख्याकारों ने आधुनिक ऐतिहासिक ज्ञान के आधार पर इससे सहमत नहीं किया हैं। विशेष रूप से मौलाना अबुल कलम आज़ाद ने इस पर जो शोध कार्य किया है तथा उस व्यक्ति की खोज में जो मेहनत की है, वह अत्यन्त सम्माननीय है। उनके शोध का सारांश यह है कि उस ज़ुल्क़रनैन के विषय में क़ुरआन ने वर्णन किया है कि वह ऐसा राजा था (१) जिसको अल्लाह ने साधन तथा माध्यम अधिक मात्रा में प्रदान किया था, (२) वह पूर्वी तथा पश्चिमी देशों को विजय करता हुआ एक ऐसी पर्वतीय घाटी में पहुँचा जिसकी दूसरी

The Ummah Technology Mission

سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾

दीजिए कि मैं उन का थोड़ा-सा हाल तुम्हें पढ़ कर सुनाता हूँ।

اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِي الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾

(८४) हमने धरती पर उसे शक्ति प्रदान की थी तथा उसे हर वस्तु[1] के साधन भी प्रदान कर दिये थे।

فَاَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾

(८५) वह एक मार्ग के पीछे लगा।[2]

حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِيْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ

(८६) यहाँ तक कि सूर्यास्त के स्थान तक पहुँच गया तथा उसे एक दलदल के स्रोत में डूबते हुए पाया[3] तथा उस स्रोत के स्थान पर

ओर याजूज तथा माजूज थे, (३) उसने वहाँ याजूज तथा माजूज को रोकने के लिए एक अत्यधिक सुदृढ़ बाँध निर्मित कराया, (४) वह न्याय प्रिय था, (५) अल्लाह को मानने वाला तथा आख़िरत पर ईमान रखने वाला था, (६) वह अहंकारी तथा धन का लोभी नहीं था। मौलाना मरहूम फ़रमाते हैं कि इन विशेषताओं से परिपूर्ण फ़ारस का वह महाराजा है जिसे यूनानी साईरस, हिब्रू भाषा में ख़ोरिस तथा अरब में खुसरू के नाम से पुकारते हैं। उसका राज्य काल ५३९ ई॰ पू॰ है। इसके अतिरिक्त फ़रमाते हैं कि १८३८ ई॰ में साईरस की एक मूर्ति निकली थी जिसमें साईरस के शरीर को इस प्रकार दिखाया गया था कि उसके दोनों ओर बाज़ की भाँति पंख निकले हुए हैं तथा सिर पर भेड़ की तरह दो सींघ हैं (विस्तृत जानकारी के लिए देखें तफ़सीर तर्जुमानुल क़ुरआन, भाग १, पृ॰ ३९९ से ४३० तक पुराना संस्करण)

[1] سبب का मूल अर्थ रस्सी है, इसका प्रयोग ऐसे साधन तथा माध्यम के लिये होता है जो लक्ष्य प्राप्ति के लिये प्रयोग किया जाता है, इस आधार पर سببا का अर्थ है कि हमने उसे ऐसे साधन तथा माध्यम उपलब्ध किये, जिनसे काम लेकर उसने विजय प्राप्त की, शत्रुओं का गर्व मिट्टी में मिलाया, अत्याचारी प्रशासको को नाश किया।

[2] दूसरे سبب का अर्थ मार्ग लिया गया है अथवा यह अर्थ है कि अल्लाह के दिये हुए साधनों से अन्य साधन तैयार किये, जिस प्रकार अल्लाह के उपलब्ध कराये लोहे से विभिन्न प्रकार के हथियार तथा इसी प्रकार के अन्य मूल द्रव्य से बहुत-सी चीज़ें तैयार की जाती हैं।

[3] عين से तात्पर्य स्रोत अथवा समुद्र है। حمئة कीचड़, दलदल, وجد (पाया) अर्थात देखा अथवा आभास किया। अर्थ यह है कि ज़ुल्करनैन जब पश्चिमी दिशा की ओर देश पर देश विजय करता हुआ उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ अन्तिम आबादी थी वहाँ गंदे पानी का

The Ummah Technology Mission

عِنْدَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ
اِمَّآ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّآ اَنْ تَتَّخِذَ
فِيْهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾

एक समुदाय को भी पाया, हमने कह दिया[1] हे ज़ुल्करनैन ! तू उन्हें दुख पहुँचाये अथवा उनके विषय में तू कोई उचित मार्ग निकाले।[2]

قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ
ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا
نُّكْرًا ﴿٨٧﴾

(८७) उसने कहा कि जो अत्याचार करेगा उसे तो हम भी अब दण्ड देंगे।[3] फिर वह अपने प्रभु की ओर लौटाया जायेगा तथा वह उसे कड़ी यातना देगा।

وَاَمَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ
جَزَآءَ ۨ الْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ
اَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾

(८८) परन्तु जो ईमान लाये तथा सत्कर्म करे उसके लिए बदले में भलाई है तथा हम उसे अपने कार्य में भी सरलता का आदेश देंगे।

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾

(८९) फिर वह अन्य मार्ग[4] की ओर लगा।

حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ
وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ

(९०) यहाँ तक कि जब सूर्योदय के स्थान पर पहुँचा तो उसे एक ऐसे समुदाय पर उदय होता

स्रोत अथवा समुद्र था जो नीचे से काला दिखायी पड़ता था, उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो सूर्य इस स्रोत में डूब रहा है। समुद्र के किनारे से अथवा दूर से जिसके आगे की सीमा तक कुछ न हो, सूर्यास्त का दृश्य देखने वालों को ऐसा ही प्रतीत होता है कि सूर्य समुद्र में अथवा धरती में डूब रहा है, यद्यपि वह अपने स्थान पर ही आकाश में रहता है।

[1] قُلْنَا (हमने कहा) प्रकाशना के द्वारा, इसीलिए कुछ धर्मगुरूओं ने इसी से उनकी नबूअत का तर्क दिया है। तथा जो उनकी नबूअत (ऋषित्व) के पक्ष में नहीं हैं, कहते हैं कि उस समय के पैग़म्बर के माध्यम से हमने उससे कहा।

[2]अर्थात हम ने उस समुदाय पर प्रभुत्व देकर अधिकार दे दिया कि चाहे तो उसे हत करे तथा बन्दी बना ले अथवा कर लेकर उपकार स्वरूप छोड़ दे।

[3]अर्थात जो कुफ़्र तथा मूर्तिपूजा पर अडिग रहेगा, उसे हम दण्ड देंगे अर्थात पिछली त्रुटियों पर पकड़ नहीं होगी।

[4]अर्थात अब पश्चिम से पूर्व की ओर यात्रा प्रारम्भ की।

The Ummah Technology Mission

لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾

पाया कि उनके लिए हमने उससे अन्य कोई पर्दा तथा आड़ नहीं बनायी।[1]

كَذٰلِكَ ۭ وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾

(९१) घटना ऐसी ही है। हमने उसके आस-पास के कुल समाचारों को घेर रखा है।[2]

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾

(९२) वह फिर एक अन्य मार्ग की ओर लगा।[3]

حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾

(९३) यहाँ तक कि जब दो दीवारों के मध्य[4] पहुँचा उन दोनों के उस ओर एक ऐसा समुदाय पाया जो बात समझने के निकट भी न थी।[5]

قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ

(९४) (उन्होंने) कहा हे ज़ुल्करनैन![6] याजूज

---

[1]अर्थात ऐसे स्थान पर पहुँच गया जो पूर्व दिशा की अन्तिम आबादी थी, जहाँ उसने ऐसा समुदाय देखा जो मकानों में निवास करने के बजाय मैदानों तथा मरूस्थलों में निवास किये हुए, निर्वस्त्र था। यह अर्थ है उनके तथा सूर्य के बीच पर्दा नहीं था। सूर्य उनके नंगे शरीरों पर उदय होता था।

[2]अर्थात ज़ुल्करनैन के विषय में हमने जो वर्णन किया है, वह इसी प्रकार है कि पहले वह पश्चिम की अन्तिम सीमा तक फिर पूर्व की अन्तिम सीमा तक पहुँचा तथा हमें उसकी सब अर्हताओं, संसाधनों एवं अन्य बातों का पूरा ज्ञान है।

[3]अर्थात अब उसका ध्यान किसी अन्य ओर हो गया।

[4]इससे तात्पर्य दो पर्वत हैं जो एक-दूसरे के सम्मुख थे, उनके मध्य घाटी थी, जिससे याजूज तथा माजूज इधर आबादी में आ जाते तथा उपद्रव मचाते तथा हत्या का बाज़ार गर्म करते।

[5]अर्थात अपनी भाषा के अतिरिक्त किसी अन्य की भाषा नहीं समझते थे।

[6]ज़ुल्करनैन से यह सम्बोधन या तो किसी अनुवादक के द्वारा हुआ होगा अथवा अल्लाह तआला ने ज़ुल्करनैन को जो विशेष माध्यम तथा साधन प्राप्त कराये थे उन्हीं में विभिन्न भाषाओं का ज्ञान भी हो सकता है तथा इस प्रकार यह सम्बोधन सीधे भी हो सकता है।

The Ummah Technology Mission

مُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾

तथा माजूज इस देश में बड़े उपद्रवी हैं।[1] तो क्या हम आपके लिए कुछ धन एकत्रित कर दें ? (इस शर्त पर कि) आप हमारे तथा उनके बीच कोई दीवार बना दें।

قَالَ مَا مَكَّنِّيْ فِيْهِ رَبِّيْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِيْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾

(९५) उसने उत्तर दिया कि मेरे वश में मेरे प्रभु ने जो प्रदान कर रखा है वही उत्तम है, तुम केवल अपनी शक्ति तथा बल से मेरी सहायता करो तुम्हारे तथा उनके मध्य मैं सुदृढ़ दीवार बना देता हूँ।[2]

اٰتُوْنِيْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ۭ حَتّٰٓى اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِيْٓ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾

(९६) मुझे लोहे की चादरें ला दो। यहाँ तक कि जब उन दो पर्वतों के मध्य दीवार तैयार कर दी[3] तो आदेश दिया कि फूँको (अर्थात तेज़ आग जलाओ) उस समय तक कि लोहे की इन चादरों को बिल्कुल आग कर दिया, तो कहा मेरे पास लाओ इस पर पिघला हुआ ताँबा डाल दूँ।[4]

---

[1] याजूज तथा माजूज दो सम्प्रदाय हैं तथा सहीह हदीस के आधार पर मानव जाति से ही हैं तथा उनकी संख्या अन्य मानव जाति के सापेक्ष अधिक होगी तथा उन्हीं से नरक अधिक भरेगा। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरअल हज्ज वल रिक़ाक़ बाबु इन्न ज़लज़लतुस्साअते शैउन अज़ीम, तथा सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान बाब कौलिहि यक़ूलुल्लाहु ले-आदम, अखरिज बअसलनार)

[2] शक्ति से तात्पर्य अर्थात तुम मुझे निर्माण सामग्री तथा कर्मयोगी उपलब्ध कराओ।

[3] بين الصدفين अर्थात दोनों पर्वतों के किनारों के मध्य जो खुला था, उसे लोहे की छोटी-छोटी चादरों से भर दिया।

[4] قطرا पिघला हुआ सीसा अथवा लोहा अथवा ताँबा। अर्थात लोहे की चादरों को खूब गर्म कराके उनके ऊपर पिघला हुआ लोहा, ताँबा अथवा सीसा डालने से वह पहाड़ी घाटी अथवा मार्ग इतना मज़बूत हो गया कि उसे पार करके अथवा तोड़कर याजूज तथा माजूज का इधर दूसरे मनुष्यों की आबादी में आना असम्भव हो गया।

The Ummah Technology Mission

فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾

(९७) फिर न तो उनमें उस दीवार पर चढ़ने की शक्ति थी तथा न उसमें कोई छेद कर सकते थे।

قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا ﴿٩٨﴾

(९८) कहा कि यह केवल मेरे प्रभु की कृपा है, परन्तु जब मेरे प्रभु का वादा आयेगा, तो उसे धराशायी कर देगा।[1] नि:संदेह मेरे प्रभु का वादा सत्य है।

---

[1]अर्थात यह दीवार यद्यपि बड़ी दृढ़ बना दी गयी जिसके ऊपर चढ़कर अथवा उसमें छिद्र करके याजूज तथा माजूज का इस ओर आना सम्भव नहीं है, परन्तु जब मेरे प्रभु का वादा आ जायेगा, तो वह उसे कण-कण करके धरती के बराबर कर देगा। इस वादे से तात्पर्य क़ियामत के निकट याजूज तथा माजूज का प्रकट होना है, जैसाकि हदीसों में है। जैसे एक हदीस में है नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस दीवार में थोड़े से छिद्र होने को उपद्रव के निकट होने के समान बताया है (सहीह बुख़ारी संख्या ३३४६, तथा सहीह मुस्लिम संख्या २२०८)। एक अन्य हदीस में आता है कि वे प्रत्येक दिन उस दीवार को खोदते हैं तथा फिर कल पर छोड़ देते हैं, परन्तु जब अल्लाह की इच्छा उनके प्रकट होने की होगी तो वे कहेंगे कि कल إن شاء الله उसको खोदेंगे तथा फिर दूसरे दिन वे उससे निकलने में सफल हो जायेंगे। धरती पर उपद्रव मचायेंगे यहाँ तक कि लोग घर में बन्द हो जायेंगे, ये आकाश की ओर तीर फेंकेगे जो रक्त रंजित होकर लौटेंगे। अन्त में अल्लाह तआला उनकी गुद्दियों में ऐसे कीड़े पैदा कर देगा जो उनके विनाश का कारण बनेंगे। (मुसनद अहमद १२\५११ जामेअ तिर्मिज़ी संख्या ३१५३, वल अहादीसुस्सहीह: लिल अलबानी संख्या १७३५) सहीह मुस्लिम में नव्वास बिन समआन के कथन से स्पष्ट है कि याजूज तथा माजूज का प्रकटन आदरणीय ईसा के अवतरित होने के पश्चात उनकी उपस्थिति में होगा। (किताबुल फ़ेतन व अशरातुस्साअते; बाबु ज़िक्ररिद दज्जाल) जिससे उन लोगों का खण्डन होता है जो कहते हैं कि तातारियों का मुसलमानो पर हमला अथवा मंगोल तुर्क जिनमें से चंगेज़ खाँ भी था अथवा रूसी अथवा चीनी जातियाँ यही याजूज तथा माजूज हैं, जिनका प्रकटन हो चुका। अथवा पश्चात्य जातियाँ उनके अनुरूप हैं कि पूरी दुनियाँ में उनका प्रभाव है। यह सभी बातें ग़लत हैं क्योंकि उनके प्रभाव से राजनैतिक प्रभाव तात्पर्य नहीं हैं, बल्कि रक्तपात, उपद्रव, आतंक का वह अस्थाई प्रभाव है जिसका सामना करने की शक्ति मुसलमानों में न होगी, तब भी दैवी आपदा के कारण सबके सब क्षण भर में काल के मुख में चले जायेंगे।

The Ummah Technology Mission

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾

(९९) तथा उस दिन हम उन्हें आपस में एक-दूसरे में गुडमुड होते हुए छोड़ देंगे तथा नर्सिंघा फूँक दिया जायेगा, फिर सब को एक साथ हम एकत्रित कर लेंगे।

وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكَافِرِينَ عَرْضًا ﴿١٠٠﴾

(१००) तथा उस दिन हम नरक को (भी) काफ़िरों के समक्ष ला खड़ा कर देंगे।

الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَن ذِكْرِي وَكَانُوا لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾

(१०१) जिनकी आँखें मेरी याद से पर्दे में थीं तथा (सत्य बात) सुन भी नहीं सकते थे।

أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِن دُونِي أَوْلِيَاءَ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾

(१०२) क्या काफ़िर यह सोचे बैठे हैं कि मेरे अतिरिक्त वे मेरे दासों को अपना पक्षधर बना लेंगे ? (सुनो) हमने तो उन अधर्मियों के अतिथि सत्कार के लिए नरक को तैयार कर रखा है।[1]

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُم بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾

(१०३) कह दीजिए कि यदि (तुम कहो तो) मैं तुम्हें बता दूँ कि अपने कर्मों के कारण सबसे अधिक हानि में कौन है ?

---

[1] حسب का अर्थ ظن के अर्थ में है तथा عبادي (मेरे भक्त) से तात्पर्य फ़रिश्ते, मसीह अलैहिस्सलाम तथा अन्य महात्मा हैं, जिनको कार्यक्षम तथा कष्ट निवारक समझा जाता है, उसी प्रकार शैतान तथा जिन्नात हैं जिनकी पूजा अर्चना की जाती है। तथा प्रश्न धमकी तथा फटकार के लिए है। अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त अन्यों के पुजारी क्या यह समझते हैं कि वे मुझे छोड़कर मेरे भक्तों की पूजा करके उनके पक्ष से मेरी यातना से बच जायेंगे ? यह असम्भव है, हमने उन काफ़िरों के लिए नरक तैयार कर रखा है, जिसमें जाने से वे भक्त न रोक सकेंगे जिनकी ये पूजा करते हैं तथा उनको अपना पक्षधर समझते हैं।

The Ummah Technology Mission

اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾

(१०४) वे हैं कि जिनके सांसारिक जीवन के सभी प्रयत्न बेकार हो गये तथा वे इसी भ्रम में रहे कि वे बहुत अच्छे कार्य कर रहे हैं।[1]

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾

(१०५) यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने प्रभु की आयतों से तथा उससे मिलने से इंकार किया।[2] अत: उनके सारे कर्म व्यर्थ हो गये, फिर क़ियामत के दिन हम उनका कोई भार निर्धारित न करेंगे।[3]

ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿١٠٦﴾

(१०६) वास्तविकता यह है कि उनका बदला नरक है, क्योंकि उन्होनें कुफ़्र किया तथा मेरी आयतों तथा मेरे रसूलों का उपहास उड़ाया।

---

[1]अर्थात कर्म उनके ऐसे हैं जो अल्लाह के सदन में अप्रिय हैं, परन्तु अपने विचार के कारण समझते हैं कि ये बहुत अच्छे कर्म कर रहे हैं। इससे तात्पर्य कौन हैं ? कुछ विद्वान कहते हैं कि यहूदी तथा इसाई हैं, कुछ कहते हैं अधर्मी तथा अन्य लोग जिन्होंने धर्म में मिश्रण किया है, कुछ कहते हैं मूर्तिपूजक हैं। सही बात यह है कि यह आयत साधारण है जिसमें प्रत्येक वह व्यक्ति तथा गुट सम्मिलित है जिसके अन्दर उपरोक्त दोष पाये जायेंगे। आगे ऐसे ही लोगों के विषय में कुछ अन्य चेतावनियों का वर्णन है।

[2]प्रभु की निशानियों से तात्पर्य एकेश्वरवाद के वह तर्क हैं जो समस्त जगत में फैले हुए हैं तथा वह धार्मिक निशानियाँ हैं जो उसने अपनी किताबों में अवतरित कीं तथा पैग़म्बरों ने उसका प्रचार-प्रसार किया। तथा प्रभु की भेट से इंकार का अर्थ आख़िरत का जीवन तथा पुन: जीवित हो उठने को अस्वीकार करना है।

[3]अर्थात हमारे यहाँ इनका कोई महत्व नहीं होगा अथवा यह अर्थ है कि हम उनके लिए तराज़ू का प्रबन्ध ही नहीं करेंगे कि जिसमें उनके कर्म तौले जायेंगे, इसलिए कि कर्म तो उन एकेश्वरवादियों के तौले जायेंगे जिनके कर्मपत्र में पाप तथा पुण्य दोनों होंगे, जबकि इनके कर्मपत्र पुण्य के कार्यों से शून्य होंगे। जिस प्रकार हदीस में आता है "क़ियामत वाले दिन हृष्ट पुष्ट व्यक्ति आयेगा, अल्लाह के सदन में उसका इतना भी भार नहीं होगा जितना मच्छर के पंख का होता है, फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इसी आयत का पाठ किया।" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः *अल-कहफ़*)

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾

(१०७) जो लोग ईमान लाये तथा उन्होंने अच्छे कार्य भी किये, नि:संदेह उनके लिए फ़िरदौस (स्वर्ग का सर्वोच्च स्थान)[1] के बाग़ों मे स्वागत है।

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾

(१०८) जहाँ वे सदैव रहेंगे, जिस स्थान को बदलने का कभी भी उनका विचार ही न होगा।[2]

قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِكَلِمَاتِ رَبِّي لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَدَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾

(१०९) कह दीजिए कि यदि मेरे प्रभु की बातों को लिखने[3] के लिए समुद्र स्याही बन जाये तो वह भी मेरे प्रभु की बातों के समाप्त होने से पूर्व ही समाप्त हो जायेगा, चाहे हम उसी जैसा अन्य भी उसकी सहायता के लिए ले आयें।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ فَمَنْ كَانَ

(११०) आप कह दीजिए कि मैं तो तुम जैसा ही एक मानव पुरूष हूँ।[4] (हाँ) मेरी ओर प्रकाशना (वह्यी) की जाती है कि सबका

---

[1] جنت الفردوس स्वर्ग की सर्वोच्च श्रेणी है। इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि, जब भी तुम अल्लाह से स्वर्ग का प्रश्न करो तो अल-फ़िरदौस (सर्वोच्च) का प्रश्न करो, इसलिए कि वह स्वर्ग का सर्वोच्च भाग है तथा वहीं से स्वर्ग की नदियों का उदगम है। (सहीह बुख़ारी किताबुत तौहीद बाबु व कान अर्शुहू अलल माए)

[2] अर्थात स्वर्ग के रहने वाले, स्वर्ग तथा उसकी सुख-सुविधाओं से कभी नहीं उकतायेंगे कि वह इसके अतिरिक्त किसी अन्य स्थान पर स्थानान्तरित होने की इच्छा व्यक्त करें।

[3] كلمات से तात्पर्य अल्लाह तआला का आच्छादित ज्ञान तथा उसके गुण एवं तर्क तथा युक्तियाँ हैं, जो उसके एक होने के प्रमाण हैं। मानव बुद्धि उन सभी को घेर नहीं सकती तथा संसार भर के वृक्षों के कलम बन जायें तथा सारे समुद्र बल्कि उनकी भाँति अन्य समुद्र भी हों, वह सभी स्याही (रौशनाई) में बदल जायें, क़लम घिस जायेंगे स्याही समाप्त हो जायेगी, परन्तु प्रभु के वाक्य तथा उसके गुण को लिखा नहीं जा सकता।

[4] इसलिए मैं भी प्रभु की बातों का घेरा नहीं कर सकता।

The Ummah Technology Mission

يَرْجُوا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿١١٠﴾

पूज्य मात्र एक ही पूज्य है।[1] तो जिसे भी अपने प्रभु से मिलने की कामना हो, उसे चाहिए कि पुण्य के कार्य करे तथा अपने प्रभु की आराधना (इबादत) में[2] किसी को भी सम्मिलित न करे।

सूरतु मरियम-१९

سُوْرَةُ مَرْيَمَ

सूरः मरियम* मक्के में उतरी तथा इसमें अट्ठानवे आयतें हैं तथा छः रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु तथा अत्यन्त दयालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

(१) काफ़ • हा • या • ऐन • स्वाद •

كٓهٰيٰعٓصٓ ﴿١﴾

---

[1]परन्तु मुझे यह श्रेष्ठता प्राप्त है कि मुझ पर अल्लाह की प्रकाशना अवतरित होती है। उसी प्रकाशना के कारण मैं ने कहफ़ वालों तथा ज़ुल्करनैन के सम्बन्ध में अल्लाह की ओर से अवतरित बातें वर्णन की हैं, जिन पर युग की मोटी तह पड़ी हुई थी अथवा उनकी वास्तविकता कल्पित कथाओं में खो गयी थी। इसके अतिरिक्त इस प्रकाशना में यह महत्वपूर्ण आदेश दिया गया है कि तुम सब का अराध्य एक है।

[2]सत्कर्म वह है जो सुन्नत के अनुसार हो अर्थात जो अपने प्रभु से भेंट का विश्वास रखता हो, उसे चाहिए कि प्रत्येक कर्म नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चरित्रानुसार करे। तथा दूसरे यह कि अल्लाह की उपासना (इबादत) में किसी अन्य को साझीदार न ठहराये, इसलिए कि धर्म में नई बातें मिलाना तथा मूर्तिपूजा दोनों ही कर्मों के व्यर्थ होने का कारण हैं। अल्लाह तआला इन दोनों से प्रत्येक मुसलमान को सुरक्षित रखे।

*हब्शा की हिजरत की कथा में बताया गया है कि इथोपिया (हब्शा) के राजा नजाशी तथा उसके सदस्य एवं मंत्रीगण के समक्ष जब सूरः मरियम के प्रारम्भिक भाग आदरणीय जाफ़र विन अबी तालिब ने सुनाया तो उसे सुनकर उन सभी की दाढ़ियाँ आसूँओं से भीग गयीं तथा नजाशी ने कहा कि यह क़ुरआन तथा आदरणीय ईसा जो ले आये, सब एक ही ज्योति की किरणें हैं। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهُ زَكَرِيَّا ﴿٢﴾

(२) यह है तेरे प्रभु की उस कृपा का वर्णन, जो उसने अपने भक्त ज़करिया[1] पर की थी।

إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ نِدَاءً خَفِيًّا ﴿٣﴾

(३) जबकि उसने अपने प्रभु से गुप्त रूप से प्रार्थना की थी।[2]

قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَعَلَ الرَّأْسُ شَيْبًا وَلَمْ أَكُنْ بِدُعَائِكَ رَبِّ شَقِيًّا ﴿٤﴾

(४) कहा कि हे मेरे प्रभु! मेरी अस्थियाँ निर्बल हो गयी हैं तथा सिर बुढ़ापे के कारण भड़क उठा है।[3] परन्तु मैं कभी भी तुझ से प्रार्थना करके वंचित नहीं रहा।[4]

وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِن وَرَائِي وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا فَهَبْ لِي مِن لَّدُنكَ وَلِيًّا ﴿٥﴾

(५) तथा मुझे अपने (मरने के) पश्चात अपने निकट सम्बन्धियों का भय है,[5] मेरी पत्नी भी बाँझ है, परन्तु तू मुझे अपनी ओर से[6] उत्तराधिकारी प्रदान कर।

---

[1]आदरणीय ज़करिया इस्राईल के वंश में से नबी हैं। यह बढ़ई थे तथा यही व्यवसाय उनके आय का साधन था। (सहीह मुस्लिम बाबु मिन फ़ज़ाएले ज़करिया)

[2]गुप्त रूप से प्रार्थनायें इसलिए कीं कि एक तो यह अल्लाह को अधिक प्रिय हैं क्योंकि इसमें गिड़गिड़ाना, ध्यान, विनय तथा नम्रता अधिक होती है। दूसरे इसलिए कि भ्रष्ट बुद्धि वाले न कहें कि यह बूढ़ा अब बुढ़ापे में सन्तान माँग रहा है, जबकि संतान के सभी प्रत्यक्ष सम्भावनायें समाप्त हो चुके हैं।

[3]अर्थात जिस प्रकार लकड़ी आग से भड़क उठती है, उसी प्रकार मेरा सिर बालों की सफ़ेदी के कारण भड़क उठा है तात्पर्य निर्बलता तथा बुढ़ापे का प्रदर्शन है।

[4]तथा इसलिए प्रत्यक्ष साधन का अभाव होते हुए तुझसे सन्तान माँग रहा हूँ।

[5]इस भय से तात्पर्य यह है कि यदि मेरा कोई उत्तराधिकारी मेरी शिक्षा-दीक्षा का पद नहीं संभालेगा, तो मेरे सम्बन्धियों में तो कोई इस पद के योग्य नहीं है। परिणाम स्वरूप मेरे सम्बन्ध भी तेरे मार्ग से मुख न मोड़ लें।

[6]"अपने पास से" का अर्थ यही है कि यदि प्रत्यक्ष साधन इसके समाप्त हो गये हैं, परन्तु तू अपनी विशेष कृपा से मुझे सन्तान प्रदान कर।

The Ummah Technology Mission

يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۝٦

(६) जो मेरा भी उत्तराधिकारी हो तथा याक़ूब के वंश का भी उत्तराधिकारी तथा हे मेरे प्रभु ! तू उसे स्वीकृत भक्त बना ले।

يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ِۨاسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝٧

(७) हे ज़करिया ! हम तुझे एक बालक की शुभसूचना देते हैं, जिसका नाम यहया है, हमने उससे पूर्व इसका सनाम भी किसी को नहीं किया।[1]

قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝٨

(८) (ज़करिया) कहने लगे मेरे प्रभु ! मेरे यहाँ बालक कैसे होगा, मेरी पत्नी बाँझ तथा मैं स्वयं बुढ़ापे की अति निर्बल अवस्था को पहुँच चुका हूँ।[2]

قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ

(९) आदेश हुआ कि (वचन) इसी प्रकार हो चुका, तेरे प्रभु ने कह दिया है कि मुझ पर तो

---

[1]अल्लाह तआला ने न केवल प्रार्थना ही स्वीकार की अपितु उस बालक का नामकरण भी कर दिया।

[2] عاقر उस स्त्री को भी कहते हैं, जो अपने बुढ़ापे के कारण जनने की योग्यता से वंचित हो चुकी हो तथा प्रारम्भ से ही बाँझ को भी कहते हैं। यहाँ यह दूसरे ही अर्थ में है। जो लकड़ी सूख जाये, उसे عتيا कहते हैं। तात्पर्य बुढ़ापे का अन्तिम चरण है, जिसमें हड्डियाँ अकड़ जाती हैं। अर्थ यह है कि मेरी पत्नी तो युवावस्था से ही बाँझ है तथा मैं बुढ़ापे के अन्तिम चरण में पहुँच चुका हूँ, अब सन्तान कैसे सम्भव है ? कहा जाता है कि आदरणीय ज़करिया की पत्नी का नाम अशाअ बिन्ते फ़ाकूद बिन मील था तथा यह आदरणीया हना (मरियम की माता) की बहन हैं। परन्तु अधिक उचित कथन लगता है कि आदरणीया अशाअ भी आदरणीय इमरान की पुत्री हैं जो आदरणीय मरियम के भी पिता थे। इस प्रकार आदरणीय यहया तथा ईशदूत ईसा आपस में मौसेरे भाई हैं। हदीस सहीह से भी इसकी पुष्टि होती है। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ⑨

यह बिल्कुल सरल है तथा तू स्वयं जबकि कुछ न था मैं तुझे पैदा कर चुका हूँ।[1]

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ⑩

(१०) कहने लगे हे मेरे प्रभु ! मेरे लिए कोई लक्षण बना दे, आदेश हुआ कि तेरे लिए लक्षण यह है कि स्वस्थ होने के उपरान्त भी तू तीन रातों तक किसी व्यकित से बोल न सकेगा।[2]

فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ⑪

(११) अब ज़करिया अपने कमरे (हुजरे)[3] से निकल कर अपने समुदाय के पास आकर उन्हें संकेत करते हैं कि तुम प्रातः तथा सायं अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करो।[4]

---

[1]फ़रिश्तों ने आदरणीय ज़करिया का विस्मय दूर करने के लिए कहा कि अल्लाह तआला ने तुझे पुत्र देने का निर्णय कर लिया है, जिसके अनुसार तुझे अवश्य पुत्र मिलेगा, तथा यह अल्लाह के लिए कदापि कठिन नहीं है क्योंकि जब वह तुझे न से हाँ कर सकता है, तो तुझे प्रत्यक्ष साधन से हटकर पुत्र भी प्रदान कर सकता है।

[2]रातों से तात्पर्य दिन तथा रात हैं سويا का अर्थ है बिल्कुल ठीक-ठीक, स्वस्थ अर्थात ऐसा कोई रोग न होगा जो तुझे बोलने से रोक दे। परन्तु इसके उपरान्त तेरे मुख से वार्तालाप न हो सके तो समझ लेना शुभसूचना के दिन निकट आ गये।

[3] محراب से तात्पर्य वह कमरा जिसमें अल्लाह की आराधना (इबादत) करते थे। यह حرب शब्द से बना है, حرب का अर्थ है युद्ध। अर्थात उपासना स्थल (इबादतगाह) में रहकर अल्लाह की उपासना (इबादत) करना ऐसा है कि जैसे शैतान से लड़ रहा है।

[4]प्रातः तथा सायं अल्लाह की प्रशंसा से तात्पर्य फ़ज्र तथा अस्र की नमाज है। अथवा यह अर्थ है कि इन दो समय में अल्लाह की प्रशंसा, महिमा तथा पवित्रता के वर्णन का विशेष प्रयोजन करो।

The Ummah Technology Mission

يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ؕ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ﴿١٢﴾

(१२) हे यहया ! (मेरी) किताब [1] को दृढ़ता से थाम ले तथा हमने उसे बाल्यकाल ही से ज्ञान प्रदान किया ।[2]

وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ؕ وَكَانَ تَقِيًّا ﴿١٣﴾

(१३) तथा अपने पास से दया तथा पवित्रता भी[3] वह परहेज़गार (संत) व्यक्ति था ।

وَّبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ﴿١٤﴾

(१४) तथा अपने माता-पिता के साथ सुशील था, वह क्रूर तथा पापी न था ।[4]

وَالسَّلٰمُ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ﴿١٥﴾

(१५) उस पर शान्ति है जिस दिन उसने जन्म लिया तथा जिस दिन वह मरे, तथा जिस दिन वह जीवित करके उठाया जायेगा ।[5]

---

[1]अर्थात अल्लाह तआला ने आदरणीय ज़करिया को यहया प्रदान किया, तथा जब वह कुछ बड़े हुए, यद्यपि अभी बालक थे, उन्हें अल्लाह ने किताब को दृढ़ता से पकड़ने अर्थात उसके आदेशानुसार कर्म करने का आदेश दिया । किताब से तात्पर्य तौरात है अथवा उन पर विशेष रूप से अवतरित कोई पुस्तक है, जिसका अब हमें कोई ज्ञान नहीं ।

[2] حكم से तात्पर्य बुद्धिमानी, समझ, बोध, किताब में लिखित धार्मिक आदेशों की समझ, ज्ञान तथा कर्म का समिश्रण अथवा नबूअत तात्पर्य है । इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि इस बात में कोई रूकावट नहीं है कि حكم में यह सारी ही बातें सम्मिलित हैं ।

[3] حنانا प्रेम तथा दया, अर्थात हमने उसको माता-पिता तथा सम्बन्धियों से प्रेम तथा दया करने का भाव तथा उसे मन के मैल तथा पापों से शुद्धता एवं पवित्रता भी प्रदान की ।

[4]अर्थात अपने माता-पिता की अथवा अपने प्रभु की अवहेलना करने वालों में से नहीं था । इसका अर्थ यह है कि यदि किसी के दिल में माता-पिता के प्रेम तथा आदर एवं उनके आज्ञापालन तथा सेवा एवं सद्व्यवहार की भावना अल्लाह तआला उत्पन्न कर दे तो यह उसकी विशेष कृपा एवं दया है तथा इसके विपरीत भावना अथवा व्यवहार अल्लाह तआला की विशेष कृपा से वंचित होने का परिणाम है ।

[5]तीन अवसर मनुष्य के लिए अत्यन्त भयावह होते हैं १- जब मनुष्य माता के गर्भ से बाहर आता है, २- जब मृत्यु का पंजा उसे अपनी पकड़ में लेता है, ३- जब उसे क़ब्र से जीवित करके उठाया जायेगा, तो वह अपने को मैदान हश्र की भयानकता में घिरा हुआ पायेगा । अल्लाह तआला ने फ़रमाया इन तीनों स्थानों पर उसके लिये हमारी ओर से

The Ummah Technology Mission

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿١٦﴾

(१६) इस किताब में मरियम की कथा भी वर्णन कर जबकि वह अपने परिवार के लोगों से अलग होकर पूर्वी ओर आयीं।

فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۖ فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿١٧﴾

(१७) तथा उन लोगों की ओर से पर्दा कर लिया,[1] फिर हमने उसके पास अपनी आत्मा (जिब्रील अलैहिस्सलाम) को भेजा, तो वह उसके समक्ष पूरा मनुष्य बनकर प्रकट हुआ।[2]

सुरक्षा तथा शान्ति है। कुछ लोग जो धर्म में नई बातें बनाते हैं इस आयत से जन्म दिन पर ईद मिलाद का अर्थ निकालते हैं। परन्तु कोई उनसे पूछे तो कि फिर मृत्यु वाले दिन 'ईद वफ़ात' (मृत्यु बर्सी) भी मनाना आवश्यक होगी क्योंकि जिस प्रकार जन्म दिन के लिए 'सलाम' है मृत्यु के दिन के लिए भी सलाम है। यदि मात्र शब्द 'सलाम' से 'ईद मिलाद' की पुष्टि सम्भव है, तो फिर इसी शब्द से 'ईद वफ़ात' की भी पुष्टि होती है। परन्तु यहाँ मृत्यु की ईद तो दूर, प्रारम्भ से मृत्यु ही का इंकार है। अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु को अस्वीकार करके क़ुरआन के शब्दों को अस्वीकार तो करते ही हैं, स्वयं अपने भावार्थ के आधार पर एक भाग को मानते हैं, तथा उसी आयत के दूसरे भाग को, उन्हीं के भावार्थ के आधार पर जो सिद्ध होता है, अस्वीकार करते हैं।

﴿ أَفَتُؤْمِنُونَ بِبَعْضِ الْكِتَٰبِ وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ ﴾

"क्या किताब के कुछ भाग पर विश्वास रखते हो तथा कुछ का इंकार करते हो।"
(सूरः अल-बक़रः-८५)

[1]यह अलगाव तथा पर्दा अल्लाह की इबादत के उद्देश्य से था ताकि उन्हें कोई न देखे तथा एकाग्रता रहे अथवा मासिक धर्म की पवित्रता के लिए। तथा पूर्वी स्थान से तात्पर्य बैतुल मोक़द्दिस का पूर्वी भाग है।

[2] روح से तात्पर्य आदरणीय जिब्रील हैं, जिन्हें पूर्ण मनुष्य के रूप में आदरणीया मरियम के पास भेजा गया, जब आदरणीया मरियम ने देखा कि एक व्यक्ति बिना किसी रूकावट के अन्दर प्रवेश कर आया है, तो डर गईं कि यह कुविचार से न आया हो। आदरणीय जिब्रील ने कहा मैं वह नहीं हूँ जो तुम समझ रही हो, अपितु तेरे प्रभु का संदेशवाहक हूँ तथा यह शुभसूचना देने आया हूँ कि तुझे अल्लाह तआला एक पुत्र प्रदान करेगा, प्रत्यक्ष कारणों के आधार पर आदरणीय जिब्रील ने उनके कुर्ते के गले पर फूँक मारी थी, जिससे

The Ummah Technology Mission

قَالَتْ إِنِّيٓ أَعُوذُ بِٱلرَّحْمَٰنِ مِنكَ إِن كُنتَ تَقِيًّا ﴿١٨﴾

(१८) यह कहने लगीं मैं तुझसे दयालु (रहमान) की शरण माँगती हूँ यदि तू कुछ भी अल्लाह से डरने वाला है।

قَالَ إِنَّمَآ أَنَا۠ رَسُولُ رَبِّكِ لِأَهَبَ لَكِ غُلَٰمًا زَكِيًّا ﴿١٩﴾

(१९) (उसने) कहा कि मैं अल्लाह का भेजा हुआ संदेशवाहक हूँ, तुझे एक पवित्र बालक देने आया हूँ।

قَالَتْ أَنَّىٰ يَكُونُ لِى غُلَٰمٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِى بَشَرٌ وَلَمْ أَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾

(२०) कहने लगीं कि भला मेरे यहाँ बालक कैसे हो सकता है ? मुझे तो किसी पुरूष का हाथ तक स्पर्श नहीं हुआ तथा न मैं व्यभचारी हूँ।

قَالَ كَذَٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ وَلِنَجْعَلَهُۥٓ ءَايَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا

(२१) उसने कहा बात तो यही है,[1] (परन्तु) तेरे प्रभु का आदेश है कि वह मुझ पर अति सरल है, हम तो उसे लोगों के लिए एक प्रतीक बना देंगे[2]

अल्लाह के आदेशानुसार गर्भ धारण हो गया। इसलिए प्रदान को अपने से सम्बन्धित किया।

[1]अर्थात यह बात तो सत्य है कि तुझे किसी पुरूष ने स्पर्श नहीं किया, उचित रूप से अथवा अनुचित रूप से जबकि गर्भ धारण के लिए स्वाभाविक रूप से यह आवश्यक है।

[2]अर्थात मैं सामान्य साधनों के लिए बाध्य नहीं हूँ। मेरे लिए यह बिल्कुल सरल है तथा हम उसे अपने सामर्थ्य की एक निशानी बनाना चाहते हैं। इससे पूर्व हमने तुम्हारे पिता आदम को बिना स्त्री अथवा पुरूष के पैदा किया, तथा तुम्हारी माता हव्वा को बिना स्त्री के केवल पुरूष से तथा सभी सृष्टि के जीवधारियों को स्त्री तथा पुरूष के योग से जन्म दिया, तथा अब ईसा को जन्म देकर चौथी अवस्था में भी पैदा करके अपने सामर्थ्य का प्रदर्शन करना चाहते हैं तथा वह है केवल स्त्री के गर्भ से बिना पुरूष के पैदा कर देना। हम उत्पत्ति की चारों रूपों पर सामर्थ्य रखते हैं।

The Ummah Technology Mission

وَكَانَ أَمْرًا مَّقْضِيًّا ﴿٢١﴾

तथा अपनी विशेष कृपा,[1] यह तो एक निर्धारित बात है।[2]

فَحَمَلَتْهُ فَانتَبَذَتْ بِهِ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿٢٢﴾

(२२) फिर वह गर्भवती हो गयीं तथा इसी कारण वह एकाग्र होकर एक दूर स्थान पर चली गयीं।

فَأَجَاءَهَا الْمَخَاضُ إِلَىٰ جِذْعِ النَّخْلَةِ قَالَتْ يَا لَيْتَنِي مِتُّ قَبْلَ هَٰذَا وَكُنتُ نَسْيًا مَّنسِيًّا ﴿٢٣﴾

(२३) फिर उसे प्रसव पीड़ा एक खजूर के वृक्ष के तने के नीचे ले आयी तथा सहसा मुख से निकल गया कि हाय, मैं इससे पूर्व मर गयी होती तथा लोगों की याद से भूली बिसरी हो जाती।[3]

فَنَادَاهَا مِن تَحْتِهَا أَلَّا تَحْزَنِي قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾

(२४) इतने में उसे नीचे से ही आवाज दी कि निराश न हो, तेरे प्रभु ने तेरे पाँव के नीचे एक जल स्रोत प्रवाहित कर दिया है।

---

[1]इससे तात्पर्य नबूअत है, जो अल्लाह की विशेष कृपा है तथा उनके लिए भी जो इस नबूअत पर ईमान लायेंगे।

[2]यह उसी कथन का परिशिष्ट है जो जिब्रील ने अल्लाह की ओर से वर्णन किया है। अर्थात यह चमत्कारिक उत्पत्ति तो अल्लाह के ज्ञान तथा उसकी चाहत एवं सामर्थ्य में निर्धारित है।

[3]मृत्यु की कामना इस भय से की कि मैं बालक की समस्या पर लोगों को किस प्रकार शान्त कर सकूँगी जबकि मेरी बात मानने को कोई तैयार ही नहीं होगा। तथा यह विचार भी स्वभाविक था कि कहाँ मेरी प्रसिद्धि एक इबादत करने वाली तथा पवित्र के रूप में है तथा उसके पश्चात मैं लोगों की दृष्टि में व्यभिचारणी ठहरूँगी।

The Ummah Technology Mission

وَهُزِّيْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿٢٥﴾

(२५) तथा उस खजूर के तने को अपनी ओर हिला, यह तेरे समक्ष ताज़ा पकी खजूरें गिरा देगा।[1]

فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِيْٓ اِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ﴿٢٦﴾

(२६) अब निश्चित होकर खा पी तथा आँखें ठंडी रख,[2] यदि तुझे कोई मनुष्य दिखायी दे तो कह देना[3] कि मैंने अल्लाह कृपालु के नाम का व्रत रखा है। मैं आज किसी व्यक्ति से बात न करूँगी।

فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ۭ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـــًٔا فَرِيًّا ﴿٢٧﴾

(२७) अब (आदरणीय ईसा) को लिए हुए वह अपने समुदाय में आयीं। सबने कहा कि मरियम तूने बहुत कुकर्म किया।

يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ﴿٢٨﴾

(२८) हे हारून की बहन![4] न तो तेरा पिता बुरा आदमी था न तेरी माता व्यभिचारिणी थी।

---

[1] سريا छोटी नदी अथवा पानी के स्रोत को कहते हैं। अर्थात चमत्कार स्वरूप तथा अस्वभाविक रूप से अल्लाह तआला ने आदरणीय मरियम के चरणों के तले, पीने का पानी तथा खाने के लिए सूखे हुए वृक्ष से पकी हुई ताज़ा खजूरों का प्रबन्ध कर दिया। आवाज़ देने वाले आदरणीय जिब्रील थे जिन्होंने घाटी के नीचे से आवाज़ दी तथा कहा जाता है कि سري सरदार के अर्थों में है तथा इससे तात्पर्य ईसा अलैहिस्सलाम हैं, उन्होंने ही आदरणीया मरियम को नीचे से आवाज़ दी थी।

[2] अर्थात खजूरें खा, स्रोत का पानी पी तथा बालक को देखकर आँखें ठंडी कर।

[3] यह कहना भी संकेत से था मुख से नहीं। इसके अतिरिक्त उनके यहाँ व्रत का अर्थ ही खाने तथा बोलने से परहेज़ था।

[4] हारून से तात्पर्य सम्भव है उनका कोई भाई हो, यह भी सम्भव है कि हारून से तात्पर्य हारून रसूल (मूसा के भाई) ही हों तथा अरबों की भाँति उनका सम्बन्ध हारून की ओर कर दिया। जैसा कहा जाता है يا أخا تميم، يا أخا العرب आदि अथवा अल्लाह के भय,

The Ummah Technology Mission

فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ؕ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿٢٩﴾

(२९) (मरियम ने) अपने बच्चे की ओर संकेत किया। सब कहने लगे कि लो भला हम गोद के बालक से बातें कैसे करें ?

قَالَ اِنِّيْ عَبْدُ اللّٰهِ ؕ اٰتٰنِيَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِيْ نَبِيًّا ﴿٣٠﴾

(३०) (बालक) बोल उठा कि मैं अल्लाह तआला का भक्त हूँ। उसने मुझे किताब प्रदान की है तथा मुझे अपना दूत (पैग़म्बर) बनाया है।[1]

وَجَعَلَنِيْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۪ وَاَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ﴿٣١﴾

(३१) तथा उसने मुझे शुभ बनाया है[2] जहाँ भी मैं रहूँ तथा उसने मुझे नमाज़ तथा ज़कात का आदेश दिया है, जब तक भी मैं जीवित रहूँ।

وَبَرًّا بِوَالِدَتِيْ ۫ وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا شَقِيًّا ﴿٣٢﴾

(३२) तथा उसने मुझे अपनी माता का सेवक बनाया है[3] तथा मुझे क्रूर तथा हतभाग नहीं किया।[4]

पवित्रता तथा इबादत में आदरणीय हारून की तरह उन्हें समझते हुए उन्हें उपमा तथा समानता के आधार पर हारून की बहन कहा गया हो, इसके उदाहरण क़ुरआन करीम में भी विद्यमान हैं। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[1]अर्थात निश्चित ज्ञान में ही अल्लाह ने मेरे लिए निर्णय कर दिया है कि वह मुझे किताब तथा नबूअ़त से सुशोभित करेगा।

[2]अल्लाह के धर्म में दृढ़ता, अथवा प्रत्येक वस्तु में अधिकता, उच्चता एवं सफलता मेरे सौभाग्य में है अथवा लोगों के लिए लाभकारी, शुभचिन्तक़ अथवा मान्य बातों का आदेश देने वाला तथा बुराई से रोकने वाला। (फतहुल क़दीर)

[3]केवल माता के साथ सद्व्यवहार के वर्णन से भी स्पष्ट है कि आदरणीय ईसा का जन्म बिना पिता के एक चमत्कारिक प्रतिष्ठा का द्योतक है वरन् आदरणीय ईसा भी, आदरणीय यहया की तरह برا بوالديه (माता-पिता के साथ सद्व्यवहार करने वाला) कहते, यह न कहते कि माता के साथ सद्व्यवहार करने वाला हूँ।

[4]इसका अर्थ यह है कि जो माता-पिता की सेवा करने वाला तथा आज्ञा पालन करने वाला नहीं होता, उसकी प्रकृति में क्रूरता तथा भाग्य में दुर्भाग्य लिखा है। आदरणीय ईसा

The Ummah Technology Mission

وَالسَّلٰمُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ﴿٣٣﴾

(३३) तथा मुझ पर मेरे जन्म के दिन तथा मेरी मृत्यु के दिन तथा जिस दिन कि मैं पुन: जीवित खड़ा किया जाऊँगा सलाम ही सलाम है।

ذٰلِكَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِيْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٣٤﴾

(३४) यह है सत्य कथा ईसा पुत्र मरियम की, यही है वह सत्य बातें जिसमें लोग शंका तथा संदेह में लिप्त हैं।[1]

مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ اِذَا قَضٰۤى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٣٥﴾

(३५) अल्लाह के लिए संतान का होना उचित नहीं, वह तो अत्यन्त शुद्ध है, वह तो किसी कार्य के करने का विचार करता है तो उसे कहता है कि हो जा, वह उसी समय हो जाता है।[2]

وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٣٦﴾

(३६) मेरा तथा तुम सबका प्रभु अल्लाह तआला ही है। तुम सब उसी की उपासना (इबादत) करो, यही सीधा मार्ग है।

ने सभी बातों को भूतकाल में किया है, जबकि उनका सम्बन्ध भविष्यकाल से था, क्योंकि अभी तो वह नवजात शिशु ही थे। यह इसलिए कि ये अल्लाह के द्वारा लिखे हुए भाग्य के ऐसे अटल निर्णय थे कि यद्यपि यह प्रदर्शित नहीं हुए थे, परन्तु उनका प्रदर्शित होना उसी प्रकार निश्चित था जिस प्रकार भूतकाल में घटित घटनायें शंका व संदेह से परे होती हैं।

[1]अर्थात ये हैं वे गुण जिनसे आदरणीय ईसा सुशोभित किये गये थे न कि उन गुणों से युक्त थे जो इसाईयों ने अतिश्योक्ति का प्रयोग करके उनके विषय में मनवायीं तथा न ऐसे जो यहूदियों ने कमियों तथा त्रुटियों से कार्य लेते हुए उनके विषय में कहा तथा यही बात सत्य है, जिसमें लोग बेकार संदेह करते हैं।

[2]जिस अल्लाह की यह महिमा तथा सामर्थ्य हो, उसे भला सन्तान की क्या आवश्यकता ? तथा उसके लिए बिना पिता के जन्म दे देना कौन-सा कठिन कार्य है ? अर्थात जो अल्लाह के लिए सन्तान सिद्ध करते हैं अथवा आदरणीय ईसा के चमत्कारी जन्म को अस्वीकार करते हैं, वे वास्तव में अल्लाह के सामर्थ्य तथा शक्ति को अस्वीकार करते हैं।

The Ummah Technology Mission

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِن مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٣٧﴾

(३७) फिर (ये) गुट आपस में मतभेद करने लगे।[1] परन्तु काफ़िरों के लिए (विनाश) दुख है एक बड़े दिन के आ जाने से।[2]

أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا لَٰكِنِ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾

(३८) क्या खूब देखने सुनने वाले होंगे उस दिन जबकि हमारे समक्ष उपस्थित होंगे[3] परन्तु आज तो ये अत्याचारी लोग खुली गुमराही में पड़े हुए हैं।

وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ

(३९) तथा तू उन्हे इस दुख एवं निराशा के दिन का डर[4] सुना दे जबकि कार्य अन्त को पहुँचा

---

[1]यहाँ الأحزاب से तात्पर्य अहले किताब के गुट तथा स्वयं ईसाइयों के गुट हैं जिन्होंने आदरणीय ईसा के विषय में आपस में मतभेद किया। यहूदियों ने कहा कि वह जादूगर तथा व्यभिचार से जन्मा पुत्र है अर्थात यूसुफ़ बढ़ई के पुत्र हैं, इसाईयों के प्रोटेस्टेन्ट गुट ने कहा कि वह अल्लाह के पुत्र हैं, कैथोलिक गुट ने कहा वह तीन भगवानों में से तीसरे हैं तथा तीसरे आर्थोडिक्स गुट ने कहा, वह भगवान हैं। इस प्रकार यहूदियों ने निन्दा तथा त्रुटि किया तथा ईसाइयों ने अत्यधिक अतिश्योक्ति से काम लिया। (ऐसरूत्तफासीर तथा फ़तहुल क़दीर)

[2]उन काफ़िरों के लिए जिन्होंने ईसा के विषय में इस प्रकार मतभेद तथा अतिश्योकित एवं विरोध का कार्य किया, क़ियामत वाले दिन जब वहाँ उपस्थिति होंगे, विनाश है।

[3]यह विस्मय के भाव में है अर्थात दुनिया में तो सत्य को देखने तथा सुनने से अंधे तथा बहरे रहे, परन्तु आख़िरत में यह क्या भली-भाँति देखने तथा सुनने वाले होंगे ? परन्तु वहाँ यह देखना तथा सुनना किस काम का ?

[4]क़ियामत के दिन को पश्चाताप का दिन कहा, इसलिए कि उस दिन सभी पश्चाताप करेंगे। कुकर्मी शोक करेंगे कि यदि उन्होंने बुराईयाँ न की होती, तथा सत्कर्मी यह अनुताप करेंगे कि उन्होंने और पुण्य क्यों नहीं कमाया ?

The Ummah Technology Mission

الْاَمْرُ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٩﴾

दिया[1] जायेगा तथा ये लोग अचेत तथा बेईमानी में ही रह जायेंगे।

اِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْاَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٤٠﴾

(४०) नि:संदेह धरती के तथा धरतीवासियों के संरक्षक हम ही होंगे तथा सब लोग हमारी ओर लौटाकर लाये जायेंगे।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ۘ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٤١﴾

(४१) इस किताब में इब्राहीम (की कथा) का वर्णन कर, नि:संदेह वह अति सत्यवादी पैग़म्बर (ईशदूत) थे।[2]

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْـًٔا ﴿٤٢﴾

(४२) जबकि उसने अपने पिता से कहा के हे पिता ! आप उनकी पूजा क्यों कर रहे हैं जो न सुन सकें न देखें न आपको कुछ लाभ पहुँचा सकें ?

---

[1]अर्थात हिसाब-किताब करके पोथियाँ लपेट दी जायेंगी तथा स्वर्ग में जाने वाले स्वर्ग में तथा नरक में जाने वाले नरक में चले जायेंगे। हदीस में आता है कि उसके पश्चात मृत्यु को भेड़ के रूप में लाया जायेगा तथा स्वर्ग तथा नरक के मध्य खड़ा कर दिया जायेगा, स्वर्गवालों तथा नरकवालों दोनों से पूछा जायेगा, इसे पहचानते हो, यह क्या है ? वे कहेंगे हाँ, यह मृत्यु है फिर उनके समक्ष उसे वध कर दिया जायेगा तथा घोषणा कर दी जायेगी, हे स्वर्ग में रहने वालो ! तुम्हारे लिए स्वर्ग का जीवन सदैव के लिए है, अब मृत्यु नहीं आयेगी। नरक वालों से कहा जायेगा, हे नरकवालो ! तुम्हारे लिए नरक की यातना स्थाई है, अव मृत्यु नहीं आयेगी। (सहीह बुख़ारी, *तफ़सीर सूर: मरियम* तथा सहीह मुस्लिम किताबुल जन्न: बाबुन नार, यदख़ुलुहा अल-जब्बारून)

[2] صِدِّيْق (सिद्दीक) صِدْق (सत्यता) से अतिश्योक्ति का रूप है अर्थात बड़ा सत्यवादी। صديقيت का यह स्थान, नबूअत के पश्चात सर्वश्रेष्ठ है प्रत्येक नबी तथा रसूल अपने समय का सव से बड़ा सत्यभाषी तथा सदाचारी होता है, इसलिए वह (सिद्दीक) भी होता है। फिर भी प्रत्येक सत्यावादी नबी नहीं होता। क़ुरआन करीम में आदरणीया मरियम को صِدِّيْقَة (सिद्दीका) कहा गया है, जिसका अर्थ यह है कि वह अल्लाह के भय, पवित्रता तथा सत्यवादी में अति उच्च पद पर आसीन थीं, फिर भी नबिया नहीं थीं। मुसलमानों में आदरणीय अबू वक्र सिद्दीकीन में से हैं जो नबियों के पश्चात मुसलमानों में पुरूषोत्तम माने गये हैं।

The Ummah Technology Mission

يَٰٓأَبَتِ إِنِّي قَدْ جَآءَنِي مِنَ ٱلْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَٱتَّبِعْنِيٓ أَهْدِكَ صِرَٰطًا سَوِيًّا ﴿٤٣﴾

(४३) हे (मेरे प्रिय) पिता ! (आप देखिए) मेरे पास वह ज्ञान आया है, जो आपके पास आया ही नहीं,[1] तो आप मेरी ही मान लीजिए मैं बिल्कुल सीधे मार्ग की ओर आप का पथ-प्रर्दशन करूँगा।[2]

يَٰٓأَبَتِ لَا تَعْبُدِ ٱلشَّيْطَٰنَ ۖ إِنَّ ٱلشَّيْطَٰنَ كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ عَصِيًّا ﴿٤٤﴾

(४४) मेरे पिता ! आप शैतान की पूजा करने से रूक जायें, शैतान तो कृपा तथा दया करने वाले अल्लाह की अत्यधिक अवहेलना करने वाला है।[3]

يَٰٓأَبَتِ إِنِّيٓ أَخَافُ أَن يَمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ ٱلرَّحْمَٰنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَٰنِ وَلِيًّا ﴿٤٥﴾

(४५) हे पिता ! मुझे भय लग रहा है कि कहीं आप पर अल्लाह का कोई प्रकोप न आ पड़े कि आप शैतान के मित्र बन जायें।[4]

---

[1]जिससे मुझे आत्मज्ञान तथा अल्लाह का विश्वास प्राप्त हुआ, पुनर्जीवन तथा अल्लाह के अतिरिक्त अन्यों के पुजारियों के लिए स्थाई यातना का ज्ञान हुआ।

[2]जो आपको स्थाई सौभाग्य तथा मोक्ष प्राप्त करा देगी।

[3]अर्थात शैतान के भ्रमजाल तथा उसके भटकावे से आप जो ऐसी मूर्तियों की पूजा करते हैं, जो न सुनने-देखने की शक्ति रखती है न लाभ-हानि पहुँचाने का सामर्थ्य, तो यह वास्तव में शैतान की पूजा है, जो अल्लाह का अवज्ञाकारी है तथा अन्यों को भी अल्लाह का अवज्ञाकारी बनाकर उनको अपने जैसा बनाने में लगा रहता है।

[4]यदि आप अपने कुफ्र तथा शिर्क पर अडिग रहे तथा इसी अवस्था में आपकी मृत्यु हो गयी, तो अल्लाह की यातना से आपको कोई भी नहीं बचा सकता। अथवा दुनिया में ही अल्लाह की यातना का शिकार न हो जायें। आदरणीय इब्राहीम ने पिता के सम्मान तथा आदर के सभी नियमों को पूर्णरूप से सुरक्षित रखते हुए अत्यधिक नम्रता एवं प्रेम के शब्दों में एकेश्वरवाद का भाषण सुनाया। परन्तु एकेश्वरवाद का यह पाठ कितने ही कोमल एवं मधुर भाव से वर्णन किया जाये मूर्तिपूजक के लिए असहनीय होता ही है। अतः मूर्तिपूजक पिता ने इस कोमलता तथा प्रेम के उत्तर में अति कटुता तथा कठोरता के साथ एकेश्वरवादी पुत्र को कहा कि यदि तू मेरे देवताओं से मुख मोड़ने से न रूका तो मैं तुझे पत्थरों से मारकर मार डालूँगा।

The Ummah Technology Mission

قَالَ أَرَاغِبٌ أَنْتَ عَنْ آلِهَتِي يَا إِبْرَاهِيمُ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ لَأَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِي مَلِيًّا ﴿٤٦﴾

(४६) (उसने) उत्तर दिया कि हे इब्राहीम ! क्या तू हमारे देवताओं से मुख फेर रहा है, (सुन) यदि तू न रूका तो मैं तुझे पत्थरों से मार डालूँगा। जा एक लम्बी अवधि तक मुझ से[1] अलग रह।

قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكَ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا ﴿٤٧﴾

(४७) कहा अच्छा तुम पर सलाम हो,[2] मैं तो अपने प्रभु से तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना करता रहूँगा।[3] वह मुझ पर असीम कृपा कर रहा है।

وَأَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَأَدْعُو رَبِّي عَسَىٰ أَلَّا أَكُونَ بِدُعَاءِ رَبِّي شَقِيًّا ﴿٤٨﴾

(४८) तथा मैं तो तुम्हें भी तथा जिन-जिन को तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो, उन्हें भी (सबको) छोड़ रहा हूँ केवल अपने प्रभु को पुकारता रहूँगा, मुझे विश्वास है कि मैं अपने प्रभु से प्रार्थना करने में असफल नहीं हूँगा।

---

[1] مليا लम्बी अवधि, एक काल। दूसरा अर्थ इसका सुरक्षित किया गया है। अर्थात मुझे मेरी अवस्था पर छोड़ दे कहीं मुझसे अपने हाथ पैर न तोड़वा लेना।

[2]यह सलाम अभिवादन के रूप में नहीं है जो एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को करता है, बल्कि यह सम्बोधन समाप्त करने का प्रदर्शन है। जैसे

﴿ وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ﴾

"जब मूर्ख लोग उनसे बातें करते हैं तो वह कह देते हैं कि सलाम है।" (सूरः *अल-फ़ुरकान*-६३)

में ईमान वालों तथा अल्लाह के भक्तों का आचरण बताया गया है।

[3]यह उस समय कहा था जब आदरणीय इब्राहीम को मूर्तिपूजक के लिए मोक्ष की प्रार्थना करने के निषेधित होने का ज्ञान नहीं था, जब यह ज्ञात हुआ तो आपने यह प्रार्थना करने का क्रम समाप्त कर दिया। (सूरः *अल-तौबा*-११४)

The Ummah Technology Mission

فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۙ وَهَبْنَا لَهُ إِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ ۖ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾

(४९) जब (इब्राहीम) उन सबको तथा अल्लाह के अतिरिक्त उनके सब देवताओं को छोड़ चुके तो हमने उन्हें इसहाक़, तथा याक़ूब प्रदान किये[1] तथा प्रत्येक को नबी बना दिया।

وَوَهَبْنَا لَهُم مِّن رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿٥٠﴾

(५०) तथा उन सबको हमने अपनी बहुत-सी कृपा प्रदान की[2] तथा हमने उनकी शुभचर्चा को सर्वोच्च कर दिया।[3]

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَٰبِ مُوسَىٰ ۚ إِنَّهُ كَانَ مُخْلَصًا وَكَانَ رَسُولًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾

(५१) इस किताब में मूसा का भी वर्णन कर, जो निर्वाचित[4] तथा रसूल एवं नबी था।

---

[1] يعقوب (याक़ूब) आदरणीय इसहाक़ के पुत्र अर्थात आदरणीय इब्राहीम के पौत्र थे। अल्लाह तआला ने उनका भी वर्णन पुत्र के साथ तथा पुत्र की ही तरह किया है। अर्थ यह है कि जब इब्राहीम अल्लाह के एकेश्वरवाद के विषय में पिता को, घर को तथा अपने प्रिय देश को छोड़कर क़ुदस के क्षेत्र की ओर प्रस्थान कर गये, तो हमने उन्हें इसहाक़ तथा याक़ूब प्रदान किये ताकि उनका प्रेम, पिता के बिछड़ने का शोक भुला दे।

[2] अर्थात दूतत्व (नबूअत) के अतिरिक्त अन्य बहुत-सी अनुकम्पायें उन्हें प्रदान कीं। जैसे धन, सन्तान तथा फिर उसके वंश में अधिक समय तक नबूअत प्रदान करने का क्रम निरन्तर रखना। यह सबसे बड़ी कृपा थी, जो उन पर हुई। इसीलिए आदरणीय इब्राहीम नबियों के पिता अथवा नबियों के पूर्वज कहलाते हैं।

[3] لسان صدق सत्य वचन से तात्पर्य उत्तम प्रशंसा तथा शुभ बातें हैं। लिसान (जिह्वा) का सम्बन्ध सिद्क से किया फिर उसकी उच्चता के गुण का वर्णन किया, जिससे उस ओर संकेत किया कि भक्तों के मुख पर जो उनका उत्तम वर्णन रहता है, तो वास्तव में वह उसके पात्र हैं। अत: देख लीजिए कि सभी आकाशीय धर्मों के अनुयायी बल्कि मूर्तिपूजक भी आदरणीय इब्राहीम तथा उनकी सन्तान का वर्णन बड़े अच्छे शब्दों में तथा अत्यधिक आदर एवं सम्मान से करते हैं। यह नबूअत तथा सन्तान के पश्चात एक अन्य प्रदान है जो अल्लाह के मार्ग में स्थानान्तरण के कारण प्राप्त हुआ।

[4] مخلص، مصطفى، مجتبى तथा مختار चारों शब्दों समार्थ हैं। अर्थात रिसालत तथा पैग़म्बरी के लिए चुना हुआ, प्रिय व्यक्ति, रसूल, संदेशवाहक के अर्थ में है (भेजा हुआ) तथा नबी का अर्थ है अल्लाह का संदेश लोगों को सुनाने वाला, अथवा अल्लाह की प्रकाशना की सूचना देनेवाला, फिर भी दोनों का अर्थ एक ही है कि अल्लाह जिस भक्त

The Ummah Technology Mission

وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ﴿٥٢﴾

(५२) हमने उसे तूर पर्वत के दायें किनारे से आकाशवाणी दी तथा गुप्त मंत्रण करते हुए उसे समीप कर लिया।

وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ﴿٥٣﴾

(५३) तथा अपनी विशेष कृपा से उसके भाई हारून को नबी बना कर प्रदान किया।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۚ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥٤﴾

(५४) तथा इस किताब में इस्माईल (की कथा) भी स्मरण कर, वह बड़ा ही वचन का पक्का था तथा था भी रसूल एवं नबी।

وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۪ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿٥٥﴾

(५५) तथा वह अपने परिवार वालों को निरन्तर नमाज़ तथा ज़कात (धर्मदान) का आदेश देता था तथा था भी अपने प्रभु के सदन में प्रिय तथा स्वीकृत।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٥٦﴾

(५६) तथा इस किताब में इदरीस को भी स्मरण करो वह भी सत्यवादी ईशदूत (पैग़म्बर) था।

وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿٥٧﴾

(५७) हमने उसे उच्च स्थान पर उठा लिया।[1]

को लोगों के मार्गदर्शन देने तथा सचेत करने के लिए चुन लेता है तथा उसे अपनी प्रकाशना से सुसज्जित करता है, उसे रसूल तथा नबी कहा जाता है। प्राचीन काल से विद्वानों में यह मतभेद चला आ रहा है कि इन दोनों में अन्तर है कि नहीं ? यदि है तो वह क्या है ? अन्तर बताने वाले सामान्य रूप से कहते हैं कि धार्मिक नियमों अथवा जिनको आकाशीय पुस्तक प्रदान की गयी है, उन्हें रसूल तथा नबी कहते हैं तथा जो संदेशवाहक अपने पूर्व के संदेशवाहक की किताब अथवा धार्मिक नियमों के अनुसार ही लोगों को अल्लाह का संदेश पहुँचाता है, वह केवल नबी है रसूल नहीं, परन्तु कुरआन करीम में इनका प्रयोग एक-दूसरे पर भी हुआ है तथा कुछ स्थानों पर एक-दूसरे के प्रतिकूल भी आये हैं। जैसे सूरः अल हज्ज आयत ५२ में।

[1]आदरणीय इदरीस, कहते हैं कि आदरणीय आदम के पश्चात प्रथम नबी थे तथा आदरणीय नूह के अथवा उनके पिता के दादा थे, उन्होंने सर्वप्रथम वस्त्र सीना शुरू किया। مكانا عليا (उच्च स्थान) से क्या तात्पर्य है ? कुछ व्याख्याकारों ने इसकी व्याख्या رُفع إلى السماء

The Ummah Technology Mission

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ مِنْ ذُرِّيَّةِ آدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ وَمِنْ ذُرِّيَّةِ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْرَائِيلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ۚ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُ الرَّحْمَٰنِ خَرُّوا سُجَّدًا وَبُكِيًّا ﴿٥٨﴾

(५८) यही वे नबी हैं जिन पर अल्लाह तआला ने दया तथा कृपा की, जो आदम की संतान में से हैं तथा उन लोगों के वंश से हैं, जिन्हें हमने नूह के साथ नाव पर चढ़ा लिया था तथा इब्राहीम तथा याक़ूब की सन्तान से तथा हमारी ओर से मार्गदर्शन प्राप्त एवं हमारे प्रिय लोगों में से। इनके समक्ष जब अल्लाह कृपालु की आयतें पढ़ी जाती थीं, ये दण्डवत (सजदा) करते तथा रोते गिड़गिड़ाते गिर पड़ते थे।[1]

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوَاتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾

(५९) फिर उनके पश्चात ऐसे कपूत पैदा हुए कि उन्होंने नमाज़ बर्बाद कर दी तथा मनोकांक्षा के पीछे पड़ गये। अतः उनकी हानि उनके समक्ष आयेगी।[2]

समझा है कि आदरणीय ईसा की भाँति उन्हें भी आकाश पर उठा लिया गया। परन्तु क़ुरआन के शब्द इस भावार्थ के लिए प्रष्ट नहीं हैं तथा किसी सहीह हदीस में भी इसका वर्णन नहीं हुआ। परन्तु इस्राईली कथाओं में उनको आकाश पर उठाने का वर्णन मिलता है, जो इस भावार्थ की पुष्टि के लिए पर्याप्त नहीं है। इसलिए अधिक उचित बात यही प्रतीत होती है कि उससे तात्पर्य सम्मान तथा पदवी की वह उच्चता है जो नबूअत से सुशोभित करके उन्हें प्रदान की गई।

[1]अर्थात अल्लाह की आयतों को सुनकर मन की नम्रता तथा रोने के भाव का उत्पन्न हो जाना तथा अल्लाह की महिमा के आगे दण्डवत (सजदे) में हो जाना, अल्लाह के भक्तों का विशेष लक्षण हैं। सजदे के पाठ के लिए सुन्नत से सिद्ध प्रार्थना (दुआ) यह है।

«سَجَدَ وَجْهِيَ لِلَّذِي خَلَقَهُ، وَصَوَّرَهُ، وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ، بِحَوْلِهِ وَقُوَّتِهِ».

(अबूदाऊद, तिर्मिज़ी तथा नसाई ससंदर्भ मिशकात, बाब सुजूदेल क़ुरआन) कुछ कथनों में अधिकता है فتبارك الله أحسن الخالقين (औनुल माबूद भाग १, पृष्ठ ५३३)

[2]अल्लाह के पुरस्कृत भक्तों का वर्णन करने के पश्चात उन लोगों का वर्णन किया जा रहा है जो उन के विपरीत अल्लाह के आदेशों का पालन करने में आलस्य तथा विमुखता करते

The Ummah Technology Mission

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْئًا ﴿٦٠﴾

(६०) सिवाय उनके जो क्षमा माँग लें तथा ईमान ले आयें, तथा पुण्य के कार्य करें। ऐसे लोग स्वर्ग में जायेंगे तथा उनके अधिकारों का तनिक भी हनन न किया जायेगा।[1]

جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ عِبَادَهُ بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًّا ﴿٦١﴾

(६१) स्थाई रूप से रहने वाले स्वर्गों में जिन का परोक्ष वचन[2] अल्लाह दयालु ने अपने भक्तों को दिया है। नि:संदेह उसका वचन पूर्ण होने वाला ही है।

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا سَلَامًا ۖ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ﴿٦٢﴾

(६२) वे लोग वहाँ कोई व्यर्थ बात न सुनेंगे केवल सलाम ही सलाम सुनेंगे,[3] उनके लिए वहाँ प्रात: तथा सायं उनकी जीविका होगी।[4]

हैं। नमाज़ को व्यर्थ करने से तात्पर्य या तो पूर्ण रूप से से नमाज़ छोड़ देना है, जो कुफ़्र है अथवा उनके संमय को व्यर्थ करना है अर्थात समय से नमाज़ न पढ़ना है, जब मन में आया पढ़ ली अथवा बिना किसी कारण के एकत्रित पढ़ना अथवा कभी दो कभी चार, कभी एक तथा कभी-कभी पाँचों नमाज़ें। यह भी सभी अवस्थायें नमाज़ को व्यर्थ करने की हैं, जिसका कर्ता बहुत बड़ा पापी है तथा आयत में चेतावनी के अनुसार दण्ड का भोगी हो सकता है। غيا का अर्थ विनाश, दुष्परिणाम है अथवा नरक की एक घाटी का नाम है।

[1]अर्थात जो क्षमा माँगकर नमाज़ के छोड़ने तथा मनमानी करने से रूक जायें एवं सुधार कर लें तथा ईमान एवं सदाचार की मांगों को पूरा करें तो ऐसे लोग उपरोक्त दुष्परिणाम से सुरक्षित तथा स्वर्ग के अधिकारी होंगे।

[2]अर्थात यह उनके ईमान तथा विश्वास की दृढ़ता है कि उन्होंने स्वर्ग को देखा भी नहीं, केवल अल्लाह के परोक्ष रूप से किये वचन पर ही उसकी प्राप्ति के लिए ईमान तथा अल्लाह के भय का मार्ग अपनाया।

[3]अर्थात फ़रिश्ते भी उन्हें हर प्रकार से सलाम करेंगे तथा स्वर्ग में रहने वाले आपस में अधिकाधिक सलाम करेंगे।

[4]इमाम अहमद ने इसकी व्याख्या में कहा है कि स्वर्ग में रात्रि तथा दिन नहीं होंगे, केवल प्रकाश ही प्रकाश होगा। हदीस में है, स्वर्ग में जाने वालों के प्रथम गुट के मुख चौदहवीं

The Ummah Technology Mission

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾

(६३) यह है वह स्वर्ग जिसका उत्तराधिकारी हम अपने भक्तों में से उन्हें बनाते हैं जो अल्लाह से डरते हों।

وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۖ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾

(६४) हम तेरे प्रभु के आदेश के बिना उतर ही नहीं सकते,[1] हमारे आगे-पीछे तथा उनके मध्य की सभी वस्तुयें उसी के स्वामित्व में हैं, तेरा प्रभु भूलने वाला नहीं।

رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ ۚ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾

(६५) आकाशों का तथा धरती का एवं जो कुछ उनके मध्य है सबका प्रभु वही है, तू उसी की उपासना कर तथा उसकी आराधना (इबादत) पर अड़िग हो जा। क्या तेरे ज्ञान में उसका समनाम (तथा समान) कोई अन्य भी है।[2]

وَيَقُولُ الْإِنسَانُ أَإِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ أُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾

(६६) तथा मनुष्य कहता है[3] कि जब मैं मर जाऊँगा, तो क्या फिर जीवित करके निकाला

के चाँद की तरह प्रकाशमान होंगे, वहाँ उन्हें थूक आयेगा न नाक बहेगी तथा न मूत्र होगा एवं न मल त्याग ही होगा। उनके बर्तन तथा कंघियाँ स्वर्ण के होंगे, उनका शरीर सुगन्धित तथा उनका पसीना कस्तूरी (की भाँति) सुगन्धित होगा। प्रत्येक स्वर्ग में जाने वाले की दो पत्नियाँ होंगी, उनकी पिंडलियों का गूदा उनके मांस के पीछे से दिखायी देगा उनकी सुन्दरता तथा आकर्षण के कारण। उनमें आपस में द्वेष तथा बैर नहीं होगी, प्रातः तथा सायंकाल अल्लाह की प्रशंसा करेंगे। (सहीह बुखारी बदऊल ख़लक़ बाब माजाअ फ़ी सिफ़तिल जन्नः व इन्नहा मख़लूकतुन तथा सहीह मुस्लिम किताबुल जन्नः बाब फ़ी सिफ़ातिल जन्नः व अहलेहा)

[1]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार जिब्रील से अधिक तथा शीघ्र-शीघ्र भेंट करने की इच्छा व्यक्त की जिस पर यह आयत अवतरित हुई। (सहीह बुखारी तफ़सीर सूरः मरियम)

[2]अर्थात नहीं है, जब उसके समतुल्य कोई अन्य नहीं तो फिर पूजा भी किसी अन्य की मान्य नहीं।

[3]मनुष्य से तात्पर्य यहाँ साधारण काफ़िर हैं, जो क़ियामत के घटित होने तथा मरने के पश्चात जीवित होने में विश्वास नहीं करते।

The Ummah Technology Mission

जाऊँगा ?[1]

أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِن قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ﴿٦٧﴾

(६७) क्या यह मनुष्य इतना भी याद नहीं रखता कि हमने उसे इससे पूर्व पैदा किया, हालाँकि वह कुछ भी न था।[2]

فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿٦٨﴾

(६८) तेरे प्रभु की सौगन्ध ! हम उन्हें तथा शैतानों को एकत्रित करके अवश्य ही नरक के चारों ओर घुटनों के बल गिरे हुए उपस्थिति कर देंगे।[3]

---

[1]प्रश्न इंकार के लिए है। अर्थात जब मैं सड़कर मिट्टी में मिल जाऊँगा, तो मुझे पुनः किस प्रकार नया रूप प्रदान किया जायेगा ? अर्थात ऐसा सम्भव नहीं।

[2]अल्लाह तआला ने उत्तर दिया कि जब प्रथम बार बिना किसी नमूने के हमने मनुष्य को पैदा किया, तो पुनः पैदा करना हमारे लिए क्यों कठिन होगा ? प्रथम बार पैदा करना कठिन है अथवा पुनः उसे पैदा करना ? मनुष्य कितना नासमझ तथा स्वयं को भूल जाने वाला है ? इसी स्वयं को भूल जाने ने उसे अल्लाह से भुला दिया है।

[3] جِثِيّ बहुवचन है جاث का, जो جثا يجثو से बना है। جاث घुटने के बल गिरने वाले को कहते हैं तथा यह स्थिति वाचक है। अर्थात हम पुनः उन्हीं को नहीं अपितु उन शैतानों को भी जीवित करेंगे, जिन्होंने उन्हें भटकाया था अथवा जिन की वे पूजा करते थे। फिर हम उन सबको इस अवस्था में नरक के निकट एकत्रित करेंगे कि यह महशर (एकत्रि होने का स्थान) की भयानकता हिसाब-किताब के भय से घुटनों के बल बैठे होंगे। हदीस कुदसी में है। अल्लाह तआला फ़रमाता है, "आदम की सन्तान मुझे झुठलाती है यद्यपि यह इसके योग्य नहीं। आदम की सन्तान मुझे दुख पहुँचाती है यद्यपि यह उसको शोभा नहीं देता। उसका मुझे झुठलाना यह है कि वह मेरे विषय मे यह कहता है कि अल्लाह कदापि इस प्रकार हमें पुनः जीवित नहीं करेगा जिस प्रकार उन्हें पहली बार पैदा किया यद्यपि मेरे लिए प्रथम बार पैदा करना दूसरी बार पैदा करने से अधिक सरल नहीं है (अर्थात कठिन यदि है तो प्रथम बार पैदा करना है, न कि दूसरी बार) तथा उसका मुझे दुख पहुँचाना यह है कि वह कहता है कि मेरी सन्तान है, यद्यपि मैं मात्र अकेला हूँ, मेरा कोई साथी नहीं, न मैंने किसी को जना न मुझको किसी ने जन्म दिया तथा मेरा कोई साझीदार नहीं है।" (सहीह बुखारी तफ़सीर *सूरः इख़्लास*)

The Ummah Technology Mission

(६९) हम फिर प्रत्येक समूह से उन्हें पृथक निकाल खड़ा करेंगे, जो अल्लाह दयालु से बहुत अकड़े-अकड़े से फिरते थे।[1]

ثُمَّ لَنَنزِعَنَّ مِن كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَٰنِ عِتِيًّا ﴿٦٩﴾

(७०) फिर हम उन्हें भी भली-भाँति जानते हैं, जो नरक में प्रवेश के अधिक योग्य हैं।[2]

ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا ﴿٧٠﴾

(७१) तथा तुम में से प्रत्येक वहाँ अवश्य उपस्थिति होने वाला है, यह तेरे प्रभु के ज़िम्मे निश्चित निर्णय है।

وَإِن مِّنكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾

(७२) फिर हम परहेज़गारों को बचा लेंगे तथा अवज्ञा करने वालों को उसी में घुटनों के बल गिरा हुआ छोड़ देंगे।[3]

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوا وَّنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾

---

[1] عتا يعتو भी عتيا से عات का बहुवचन है। इसका अर्थ है अत्यधिक दुष्ट तथा अत्याचारी। अर्थ यह है कि प्रत्येक भटके हुए गुट के प्रमुख उद्दण्डियों एवं नेताओं को हम अलग कर लेंगे तथा उन्हें एकत्रित करके नरक में झोंक देंगे। क्योंकि ये नेता अन्य नरक में जाने वालों की तुलना में दण्ड तथा यातना के अधिक अधिकारी हैं जैसाकि अगली आयत में है।

[2] صليا सुना हुआ धातु है صلى तथा يصلي का, अर्थ प्रवेश करना है। अर्थात नरक में प्रवेश करने तथा उसमें भस्म होने के कौन सबसे अधिक अधिकारी हैं, हम उन्हें भलीभाँति जानते हैं।

[3] इसकी व्याख्या सहीह हदीसों में इस प्रकार वर्णित है कि नरक के ऊपर एक पुल बनाया जायेगा, जिस पर से प्रत्येक ईमानवाले तथा काफ़िर को गुज़रना होगा। ईमान वाले अपने-अपने कर्मों के अनुसार शीघ्र तथा देर से गुज़र जायेंगे, कुछ तो पलक झपकते, कुछ बिजली तथा वायु की भाँति, कुछ पक्षियों की भाँति तथा कुछ अच्छे घोड़ों तथा सवारियों की भाँति गुज़र जायेंगे, इसी प्रकार कुछ पूर्ण सुरक्षित, कुछ घायल परन्तु पुल पार कर लेंगे, कुछ नरक में गिर पड़ेंगे जिन्हें बाद में सिफ़ारिश के द्वारा निकाला जायेगा। परन्तु काफ़िर उस पुल को पार करने में सफल नहीं होंगे तथा नरक में गिर जायेंगे। इसका समर्थन उस हदीस से भी होता है जिसमें आता है कि "जिसकी तीन सन्तानें बाल्य अवस्था में मरी होंगी उसे अग्नि नही छुयेगी, परन्तु प्रतिज्ञा की प्राप्ति के लिये"

The Ummah Technology Mission

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَقَامًا وَأَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾

(७३) तथा जब उनके समक्ष हमारी ज्योर्तिमय आयतें पढ़ी जाती हैं तो काफ़िर मुसलमानों से कहते हैं (बताओ) हम तुम दोनों समूहों में किसका मान अधिक है तथा किस की बैठक (सभा) शोभनीय है ?[1]

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثَاثًا وَرِئْيًا ﴿٧٤﴾

(७४) तथा हम तो उनसे पूर्व बहुत से समुदायों को ध्वस्त कर चुके हैं, जो संसाधन तथा नाम सम्मान में[2] इनसे कहीं अधिक थे।

قُلْ مَن كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمَٰنُ مَدًّا ۚ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ ۚ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ

(७५) कह दीजिए कि जो भटकावे में होता है, अल्लाह दयालु उसको अत्यधिक लम्बा अवसर देता है, यहाँ तक कि वे उन वस्तुओं को देख लें जिनका वादा किये जाते हैं, अर्थात प्रकोप अथवा क़ियामत को, उस समय उन्हें

(सहीह बुख़ारी किताबुल जनायेज़ तथा सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्रे) यह प्रतिज्ञा वही है जिसे इस आयत में حتما مقضيا (निश्चित निर्णय) कहा गया है। अर्थात इसका घटित होना नरक में पुल पर से गुज़रने तक ही सीमित होगा। (विस्तृत जानकारी के लिए देखें इब्ने कसीर तथा ऐसरूत्तफ़ासीर)

[1]अर्थात क़ुरआन के आमन्त्रण की तुलना यह मक्का के काफिर, निर्धन मुसलमानों तथा कुरैश के धनवानों तथा उनकी सभाओं एवं घरों से करते हैं कि मुसलमानों में अम्मार बिन यासिर, बिलाल, सुहैब जैसे निर्धन लोग हैं। उनका परामर्श गृह अर्कम (सहाबा के नाम) के घर ही रहे। जबकि काफ़िरों में अबूजहल, नदर बिन हारिस उतबा, शैबा जैसे धनवान हैं तथा उनका भव्य भवन एवं घर हैं, उनकी सभा का स्थान दारून्नदवह अत्यधिक भव्य है।

[2]अल्लाह तआला ने फ़रमाया, दुनिया की यह चीज़ें ऐसी नहीं हैं कि उन पर गर्व किया जाये, अथवा उनको देखकर सत्य तथा असत्य के मध्य निर्णय किया जाये। यह वस्तुयें तुम से पूर्व के समुदाय के पास थीं, परन्तु सत्य को झुठलाने के कारण उनको नाश कर दिया गया। दुनिया के ये धन तथा साधन उन्हें अल्लाह के प्रकोप से नहीं बचा सके।

The Ummah Technology Mission

ठीक प्रकार से ज्ञात हो जायेगा कि कौन बुरे पद वाला है तथा किसका जत्था कमज़ोर है।[1]

شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضْعَفُ جُنْدًا ﴿٧٥﴾

(७६) तथा मार्गदर्शन प्राप्त किये हुए लोगों को मार्गदर्शन में अल्लाह और बढ़ाता है।[2] तथा शेष रहने वाले पुण्य तेरे प्रभु के निकट प्रतिफल के अनुरूप तथा परिणाम के अनुरूप अति उत्तम हैं।[3]

وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ؕ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٦﴾

(७७) क्या तूने उसे भी देखा जिसने हमारी आयतों में अविश्वास किया तथा कहा कि मुझे तो धन तथा सन्तान तो अवश्य दी जायेगी।

اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٧٧﴾

(७८) क्या वह परोक्ष का ज्ञान रखता है अथवा अल्लाह से कोई वचन ले चुका है ?

اَطَّلَعَ الْغَيْبَ اَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾

(७९) कदापि नहीं, यह जो कुछ कह रहा है, हम उसे अवश्य लिख लेंगे, तथा उसके लिए यातना बढ़ाते चले जायेंगे।

كَلَّا ؕ سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَهٗ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾

---

[1]इसके अतिरिक्त ये वस्तुयें कुमार्गों तथा काफ़िरों (अधर्मियों) को अवसर प्रदान करने के लिए भी प्राप्त होती हैं, इसलिए इसकी कोई प्रमाणिकता नहीं है। मूल रूप से अच्छे तथा बुरे का पता उस समय चलेगा जब कर्म करने का अवसर समाप्त हो जायेगा तथा अल्लाह का प्रकोप उन्हें आ घेरेगा अथवा क़ियामत आ जायेगी। परन्तु उस समय का ज्ञान, कोई लाभ नहीं देगा क्योंकि वहाँ क्षति-पूर्ति तथा सुधार करने का कोई मार्ग न होगा।

[2]इसमें एक अन्य नियम का वर्णन है कि जिस प्रकार से क़ुरआन से, जिनके दिलों में कुफ़्र तथा मिश्रणवाद का रोग है, उनके दुर्भाग्य तथा कुमार्गता में अधिकता होती है, उसी प्रकार ईमान वालों के दिलों में ईमान तथा मार्गदर्शन में दृढ़ता आती है।

[3]इसमें निर्धन मुसलमानों को सांत्वना दी जा रही है कि काफ़िर तथा मूर्तिपूजक जिन धन तथा साधन पर गर्व करते हैं, वे सभी विनाश के घाट उतर जाने वाले हैं तथा तुम जो पुण्य के कार्य करते हो, वह सदैव स्थाई रहने वाले हैं, जिनका पुण्य तथा प्रतिफल तुम्हें अपने प्रभु के सदन में मिलेगा तथा उसका उत्तम बदला तथा लाभ तुम्हारी ओर लौटेगा।

The Ummah Technology Mission

وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾

(८०) तथा यह जिन वस्तुओं के विषय में कह रहा है, उसे हम उसके पश्चात ले लेंगे। तथा यह अकेला ही हमारे समक्ष उपस्थिति होगा।[1]

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾

(८१) उन्होंने अल्लाह के अतिरिक्त अन्य देवता बना रखें हैं। कि वे उनके लिए सम्मान का कारण हों।

كَلَّا ؕ سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾

(८२) परन्तु ऐसा कदापि होगा नहीं, वे तो इनकी पूजा से मुकर जायेंगे, तथा उल्टे इनके शत्रु बन जायेंगे।[2]

---

[1]इन आयतों के अवतरित होने के कारण में बताया गया है कि आदरणीय अम्र बिन अल-आस का पिता आस बिन वायल, जो इस्लाम का घोर शत्रु था। उसके ऊपर आदरणीय ख़ुबाब बिन अरत का ऋण था, जो लोहार का कार्य करते थे। आदरणीय ख़बाब ने उस से अपने धन की माँग की तो उसने कहा कि जब तक तू मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ कुफ़्र नहीं करेगा, मैं तुझे तेरा धन नहीं दूँगा। उन्होनें कहा कि यह कार्य तो तू मरकर पुनः जीवित हो जाये तब भी नहीं करूँगा। उसने कहा फिर ऐसे ही सही, जब मुझे मरने के पश्चात पुनः उठाया जायेगा तथा वहाँ भी मुझे धन तथा सन्तान प्रदान किया जायेगा तो मैं वहाँ यह धन अदा कर दूँगा। (सहीह बुख़ारी, किताबुल बुयूअ, बाब ज़िक्रुल कैने वल हद्दाद, व तफ़सीर सूरः मरियम, सहीह मुस्लिम सिफ़तुल क़ियामः, बाब सोवालिल यहूद अनिर् रूह) अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यह जो दावा कर रहा है, क्या उसके पास परोक्ष का ज्ञान है कि वहाँ भी इसके पास धन तथा सन्तान होगी? अथवा अल्लाह से उसकी कोई संधि है? ऐसा कदापि नहीं है। ऐसा केवल मनगढ़न्त तथा अल्लाह का उपहास करना है, यह जिस धन तथा सन्तान की बात कर रहा है, उसके स्वामी तो हम हैं अर्थात मरने के उपरान्त ही उनसे उसका सम्बन्ध समाप्त हो जायेगा तथा हमारे सदन में यह अकेला आयेगा, न धन साथ होगा न सन्तान एवं न कोई अन्य जत्था। परन्तु यातना होगी, जो उसके लिए तथा उन जैसे अन्य लोगों के लिए हम बढ़ाते रहेंगे।

[2] عزا का अर्थ है यह देवता उनके लिए सम्मान का कारण तथा सहायक होंगे तथा ضدا का अर्थ है, शत्रु, झुठलाने वाले तथा उनके विरूद्ध अन्यों की सहायता करने वाले। अर्थात

The Ummah Technology Mission

(८३) क्या तूने नहीं देखा कि हम काफ़िरों के पास शैतानों को भेजते हैं, जो उन्हें ख़ूब उकसाते हैं।[1]

اَلَمْ تَرَ اَنَّاۤ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿٨٣﴾

(८४) तू उनके विषय में शीघ्रता न कर, हम तो स्वयं ही इनके समय की गणना कर रहे हैं।[2]

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾

(८५) जिस दिन हम जितेन्द्रियों (परहेज़गारों) को अल्लाह दयालु के अतिथि बनाकर एकत्रित करेंगे।

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾

(८६) तथा पापियों को (अत्यधिक प्यास की अवस्था में) नरक की ओर हाँक ले जायेंगे।[3]

وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾

(८७) किसी को सिफ़ारिश (अभिस्तावना)का अधिकार न होगा अतिरिक्त उनके जिन्होंने

لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ

यह देवता उनके विचार के विपरीत उनके पक्षधर होने के बजाय उनके शत्रु, उनको झुठलाने वाले तथा उनके विरूद्ध होंगे।

[1]अर्थात भटकाते तथा अवज्ञा की ओर खींचकर ले जाते हैं।

[2]तथा जब वह अवसर समाप्त हो जायेगा, तो अल्लाह के प्रकोप के भोगी बन जायेंगे। आपको शीघ्रता करने की आवश्यकता नहीं है।

[3] وفد बहुवचन है وافد का, जैसे ركب बहुवचन है راكب का अर्थ यह है कि उन्हें ऊँटों, घोड़ों पर सवार कराके अति सम्मान तथा आदर से स्वर्ग की ओर ले जाया जायेगा। ورد का अर्थ है प्यासे। इनके विपरीत अपराधियों को भूखा-प्यासा नरक में हाँक दिया जायेगा।

The Ummah Technology Mission

عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾

अल्लाह तआला की ओर से कोई वचन ले लिया है।[1]

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾

(८८) तथा उनका कथन तो यह है कि अल्लाह दयालु ने भी सन्तान बना रखी है।

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ﴿٨٩﴾

(८९) नि:संदेह तुम बहुत (बुरी तथा) भारी वस्तु लाये हो।

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾

(९०) निकट है कि इस कथन के कारण आकाश फट जायें तथा धरती में दरार हो जाये तथा पर्वत कण-कण हो जायें।

أَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾

(९१) कि वे दयालु की सन्तान सिद्ध करने बैठे हैं।[2]

وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمٰنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾

(९२) तथा दयालु की यह शोभा नहीं कि वह सन्तान रखे।

إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا آتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾

(९३) आकाशों तथा धरती में जो भी हैं सब अल्लाह के दास बनकर ही आने वाले हैं।[3]

لَقَدْ أَحْصٰهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾

(९४) उन सब को उसने घेर रखा है तथा सब

---

[1] वचन एवं कथन (संधि) का अर्थ ईमान तथा अल्लाह का भय है। अर्थात ईमान वाले तथा अल्लाह के भय रखने वालों में से जिनको अल्लाह सिफ़ारिश करने की आज्ञा देगा, वही सिफ़ारिश करेंगे, उनके अतिरिक्त किसी को सिफ़ारिश करने की आज्ञा भी नहीं होगी।

[2] إِدًّا का अर्थ भयानक बात तथा داهية (भारी वस्तु तथा बड़ी कठिनाई) के हैं। यह विषय पहले भी गुज़र चुका है कि अल्लाह की सन्तान कहना इतना बड़ा अपराध है कि इससे आकाश तथा धरती फट सकते हैं तथा पर्वत कण-कण हो सकते हैं।

[3] जब सब अल्लाह के दास तथा उसके भक्त हैं तो फिर उसे सन्तान की क्या आवश्यकता है ? तथा यह उस के योग्य भी नहीं है।

The Ummah Technology Mission

की पूर्णत: गणना भी कर रखा है।[1]

(९५) ये सारे के सारे क़ियामत के दिन अकेले उसके समक्ष उपस्थिति होने वाले हैं।[2]

وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾

(९६) नि:संदेह जो ईमान लाये हैं तथा जिन्होंने सदाचार किये हैं, उनके लिए अल्लाह दयालु प्रेम उत्पन्न कर देगा।[3]

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ﴿٩٦﴾

(९७) हम ने (क़ुरआन को) तेरी भाषा में अति सरल कर दिया है[4] कि तू उस के द्वारा

فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ

---

[1]अर्थात आदम से लेकर क़ियामत की प्रात: तक जितने भी मानव तथा दानव हैं, सभी की उसने गणना कर रखी है, सभी उसके बस तथा पकड़ में हैं, कोई उससे छुप कर रह ही नहीं सकता।

[2]अर्थात कोई किसी का सहायक नहीं होगा, न धन ही वहाँ कुछ काम आयेगा।

﴿يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ﴾

"उस दिन न धन लाभ देगा, न पुत्र।" (सूर: अल-शुअरा-८८)

प्रत्येक व्यक्ति को अकेले अपना-अपना हिसाब देना होगा तथा जिनके विषय में मनुष्य दुनिया में यह समझता है कि यह मेरे पक्षधर तथा सहायक होंगे, वहाँ सब खो जायेंगे। कोई किसी की सहायता के लिए उपस्थित न होगा।

[3]अर्थात संसार में लोगों के दिलों में उसके पुण्य तथा पवित्रता के कारण प्रेम उत्पन्न कर देगा। जैसा कि हदीस में आता है "जब अल्लाह तआला किसी (पुण्य करने वाले) भक्त को अपना प्रिय बना लेता है तो अल्लाह जिब्रील को कहता है, मैं अमुक भक्त से प्रेम करता हूँ, तू भी उससे प्रेम रख, तो जिब्रील भी उससे प्रेम रखना प्रारम्भ कर देते हैं। फिर जिब्रील आकाश पर उदघोषणा करते हैं कि अल्लाह तआला अमुक व्यक्ति से प्रेम करता है, तो सभी आकाश वाले भी इससे प्रेम करने लगते हैं, फिर धरती पर उसके लिए सम्मान तथा आदर रख दिया जाता है।" (सहीह बुख़ारी किताबुल अदब बाबुल मक़ित मिनल्लाह तआला)

[4]क़ुरआन को सरल करने का अर्थ उस भाषा में उतारना जिसको पैग़म्बर जानता था अर्थात अरबी भाषा में। फिर इसके विषय का खुला हुआ, स्पष्ट एवं साफ होना है।

The Ummah Technology Mission

الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾

परहेज़गारों (सदाचारियों) को शुभ सूचना दे तथा झगड़ालू लोगों को[1] सतर्क कर दे।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ؕ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾

(९८) तथा हमने इससे पूर्व बहुत से समूह ध्वस्त कर दिये हैं, क्या उनमें से एक की भी आहट तू पाता है अथवा उनकी आवाज़ की भनक भी तेरे कान में पड़ती है।[2]

سُوْرَةُ طٰهٰ

सूरतु ताहा-२०

सूरः ताहा* मक्के में उतरी तथा इसकी एक सौ पैंतीस आयतें हैं तथा आठ रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु तथा अत्यन्त कृपालु है।

طٰهٰ ﴿١﴾

(१) ता॰ हा॰

مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ﴿٢﴾

(२) हमने यह क़ुरआन तुझ पर इसलिए नहीं उतारा कि तू कठिनाई में पड़ जा।[3]

---

[1] لد बहुवचन है لدّ का जिसका अर्थ झगड़ालू है तात्पर्य काफ़िर तथा मूर्तिपूजक हैं।

[2] संवेदन का अर्थ है الإدراك بالحس ज्ञानेन्द्रियों द्वारा ज्ञान करना। अर्थात क्या तू उनको आँखों से देख सकता अथवा हाथों से छू सकता है? प्रश्न इंकार के लिए है। अर्थात उनका अस्तित्व ही संसार में नहीं है कि तू उन्हें देख अथवा छू सके। ركز धीमे स्वर को कहते हैं अथवा उनकी धीमी ध्वनि ही तुझे कहीं से सुनाई दे सके।

*आदरणीय उमर के इस्लाम धर्म स्वीकार करने के विभिन्न कारण वर्णन किये गये हैं। कुछ ऐतिहासिक कथनों में अपनी बहन तथा बहनोई के घर में सूरः ताहा का सुनना तथा उससे प्रभावित होना भी वर्णित है। (फतहुल क़दीर)

[3] इसका अर्थ यह है कि हमने क़ुरआन को इसलिए अवतरित नहीं किया कि तू उनके कुफ़्र (अविश्वास) पर एवं उनके ईमान न लाने पर चिन्तित होकर अपने आपको दुख में डाल ले, बल्कि हमने तो क़ुरआन को शिक्षा तथा चेतावनी के लिए उतारा है ताकि प्रत्येक

The Ummah Technology Mission

إِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ﴿٣﴾

(३) बल्कि उसकी शिक्षा के लिए जो अल्लाह से डरता है।

تَنزِيلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمَاوَاتِ الْعُلَىٰ ﴿٤﴾

(४) इसका उतारना उसकी ओर से है जिसने धरती को तथा उच्च आकाशों को पैदा किया है।

الرَّحْمَٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَىٰ ﴿٥﴾

(५) जो दयालु है, अर्श पर स्थिर है।[1]

لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَىٰ ﴿٦﴾

(६) जिसका स्वामित्व आकाशों तथा धरती एवं इनके मध्य तथा धरती की सतह से नीचे प्रत्येक वस्तु पर है।[2]

وَإِن تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى ﴿٧﴾

(७) यदि तू उच्च बात कहे तो वह प्रत्येक गुप्त, अपितु गुप्त से गुप्त वस्तु को भली-भाँति जानता है।[3]

اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ

(८) वही अल्लाह है, जिस के अतिरिक्त कोई

मनुष्य के दिल में हमारे एकेश्वरवाद की जो भावना छिपी हुई है, स्पष्ट तथा प्रकट हो जाये। अत: यहाँ شقاء खेद एवं थकान के अर्थ में है अर्थात दुख एवं थकावट।

[1]बिना किसी सीमा निर्धारण तथा अवस्था के वर्णन के, जिस प्रकार उसकी महिमा के योग्य है अर्थात अल्लाह तआला अर्श पर स्थिर है, परन्तु किस प्रकार तथा कैसे ? इसे कोई नहीं जानता।

[2] الثرى का अर्थ धरती की सबसे निचली तह अर्थात पाताल।

[3]अर्थात अल्लाह का स्मरण अथवा उससे प्रार्थना उच्च स्वर में करने की आवश्यकता नहीं है, इसलिए कि वह तो छिपी क्या अत्यन्त छिपी हुई बात को भी जानता है अथवा أخفى का अर्थ है कि अल्लाह तो उन बातों को भी जानता है जिनको उसने भाग्य में लिख दिया है, परन्तु अभी तक लोगों से छुपा रखा है। अर्थात क़ियामत तक घटित होने वाली घटनाओं का उसे ज्ञान है।

The Ummah Technology Mission

لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ﴿٨﴾

सत्य पूज्य नहीं, उत्तम नाम उसी के हैं।[1]

وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَىٰ ﴿٩﴾

(९) तुझे मूसा की घटना भी ज्ञात है ?

إِذْ رَأَىٰ نَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّي آتِيكُم مِّنْهَا بِقَبَسٍ أَوْ أَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ﴿١٠﴾

(१०) जबकि उसने आग देखकर अपने परिवार वालों से कहा कि थोड़ी देर ठहर जाओ मुझे आग दिखाई दे रही है। अधिक सम्भव है कि मैं उसका अँगारा तुम्हारे पास लाऊँ अथवा आग के पास से मार्ग की सूचना पाऊँ।[2]

فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ يَا مُوسَىٰ ﴿١١﴾

(११) जब वह वहाँ पहुँचे तो आकाशवाणी हुई[3] कि हे मूसा !

إِنِّي أَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۖ إِنَّكَ

(१२) नि:संदेह मैं ही तेरा प्रभु हूँ, तू अपने जूते

---

[1]अर्थात पूज्य भी वही है जो उपरोक्त गुणों से सुशोभित है तथा उत्तम नाम भी उसी के हैं जिनसे वह पुकारा जाता है। न आराध्य उसके अतिरिक्त कोई और है तथा न उसके जैसे उत्तम नाम ही किसी के हैं। अत: उसी की आज्ञा का पालन किया जाये ताकि मनुष्य जब उसके दरबार में वापस जाये तो वहाँ लज्जित न हो, बल्कि उसकी कृपा से प्रसन्न तथा प्रफुल्लित हो तथा उसकी प्रसन्नता से सफल हो।

[2]यह उस समय की घटना है जब मूसा मदयन से अपनी पत्नी को लेकर (जो एक कथन के अनुसार आदरणीय शुऐब की सुपुत्री थीं) अपनी माता की ओर वापस जा रहे थे, अंधेरी रात थी तथा मार्ग भी अज्ञात था। तथा कुछ व्याख्याकारों के अनुसार उनकी पत्नी के प्रसव का समय निकट था तथा उन्हें गर्मी की आवश्यकता थी अथवा शीत के कारण गर्मी की आवश्यकता पड़ी हो। इतने में उन्हें दूर से आग के शोले उठते हुए दिखायी दिये। घरवालों से अर्थात पत्नी से (अथवा कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि सेवक तथा बालक भी था इसलिए बहुवचन शब्द का प्रयोग किया) कहा तुम यहीं ठहरो ! शायद मैं आग का कोई शोला वहाँ से साथ ले आऊँ अथवा कम से कम वहाँ से मार्ग का संकेत मिल जाये।

[3]मूसा जब अग्नि वाले स्थान पर पहुँचे तो वहाँ एक वृक्ष से (जैसाकि सूरः कसस-३० में विस्तार से है) आवाज आयी।

The Ummah Technology Mission

بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٢﴾

उतार दे[1] क्योंकि तू पवित्र मैदान '*तोवा*'[2] में है।

وَأَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحَىٰ ﴿١٣﴾

(१३) तथा मैंने तुझे चयन कर लिया है,[3] अब जो प्रकाशना (वह्यी) की जायेगी उसे ध्यान-पूर्वक सुन।

إِنَّنِي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي ﴿١٤﴾

(१४) नि:संदेह मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे अतिरिक्त इबादत (पूजा) के योग्य अन्य कोई नहीं, इसलिए तू मेरी ही इबादत कर[4] तथा मेरी याद के लिए नमाज़ की स्थापना कर।[5]

---

[1]जूते उतारने का आदेश इसलिए दिया कि इसमें विनम्रता का प्रदर्शन तथा आदर एवं सम्मान का पक्ष अधिक है, कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि वे ऐसे गधे की खाल के बने हुए थे, जो रंगी नहीं थी। क्योंकि जानवर की खाल रंगने के पश्चात ही पवित्र होती है, परन्तु यह कथन सत्य प्रतीत नहीं होता। रंगाई के बिना जूते किस प्रकार बन सकते हैं? अथवा घाटी की पवित्रता उसका कारण था, जैसाकि क़ुरआन के शब्दों से स्पष्ट है। फिर भी इसके दो पक्ष हैं। यह आदेश घाटी के सम्मान के लिए था अथवा इसलिए कि घाटी की पवित्रता का प्रभाव नंगे पैर होने की अवस्था में मूसा के अन्दर अधिक संचित हो।

[2] طوى घाटी का नाम है, (फ़तहुल क़दीर)

[3]अर्थात नबूअत एवं रिसालत तथा परस्पर बात करने के लिए।

[4]अर्थात धार्मिक दायित्व में यह सर्वप्रथम तथा सबसे महत्वपूर्ण आदेश है जिसका दायित्व प्रत्येक मनुष्य पर है। इसके अतिरिक्त जब पूज्य होने का अधिकारी भी वही है तो आराधना (इबादत) का अधिकार भी केवल उसी का है।

[5]इबादत के पश्चात नमाज़ का विशेष रूप से आदेश दिया। यद्यपि इबादत में नमाज़ भी सम्मिलित थी, ताकि उसका वह महत्व स्पष्ट हो जाये जैसाकि उसका है। لذكري का एक अर्थ यह है कि तू मुझे याद कर, इसलिए कि याद करने की विधि इबादत है और इबादतों में नमाज़ को विशेष महत्व तथा श्रेष्ठता प्राप्त है। दूसरा भावार्थ यह है कि जब भी मैं तुझे याद आ जाऊँ नमाज़ पढ़ अर्थात यदि किसी समय आलस्य, भूल अथवा निद्रा के प्रभाव के कारण ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो तो उससे निकलते ही तथा मेरी याद आते ही नमाज़ पढ़। जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया :

The Ummah Technology Mission

إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ ﴿١٥﴾

(१५) क़ियामत अवश्य आने वाली है, जिसे मैं गुप्त रखना चाहता हूँ ताकि प्रत्येक व्यक्ति का वह बदला दिया जाये, जो उसने प्रयत्न किया हो।

فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَن لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ فَتَرْدَىٰ ﴿١٦﴾

(१६) तो अब इसके विश्वास से तुझे ऐसा व्यक्ति रोक न दे, जो इस पर ईमान (विश्वास) न रखता हो तथा अपनी इच्छाओं के पीछे पड़ा हो, वरन तू नाश हो जायेगा।[1]

وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يَا مُوسَىٰ ﴿١٧﴾

(१७) हे मूसा ! तेरे दाहिने हाथ में क्या है।

قَالَ هِيَ عَصَايَ أَتَوَكَّأُ عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلَىٰ غَنَمِي وَلِيَ فِيهَا مَآرِبُ أُخْرَىٰ ﴿١٨﴾

(१८) उत्तर दिया कि यह मेरी लाठी है, जिस पर मैं टेक लगाता हूँ तथा जिससे मैं अपनी बक़रियों के लिए पत्ते झाड़ लिया करता हूँ। अन्य भी इसमें मुझे अत्यधिक लाभ हैं।

قَالَ أَلْقِهَا يَا مُوسَىٰ ﴿١٩﴾

(१९) कहा कि हे मूसा ! उसे (हाथ से) नीचे डाल दे।

فَأَلْقَاهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَىٰ ﴿٢٠﴾

(२०) डालते ही सर्प बन कर दौड़ने लगी।

قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۖ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولَىٰ ﴿٢١﴾

(२१) कहा कि निर्भय होकर उसे पकड़ ले, हम उसे उसी पूर्ववत रूप में पुनः ला देंगे।[2]

"जो नमाज़ से सो जाये, अथवा भूल जाये तो उसका प्रायश्चित यही है कि जब भी उसे याद आये पढ़ ले।" (सहीह बुख़ारी किताबुल मवाक़ीत, बाब मन नसेय सलातन फल योसल्ले एज़ा ज़करहा तथा सहीह मुस्लिम किताबुल मसाजिद बाब क़जायिस्सलातिल फ़ाएता)

[1]इसलिए कि आख़िरत पर विश्वास करने से अथवा उसके स्मरण एवं ध्यान से मुख मोड़ना दोनों ही बातें विनाश का कारण हैं।

[2]यह आदरणीय मूसा को चमत्कार प्रदान किया गया जो 'मूसा की छड़ी' के नाम से प्रसिद्ध है।

The Ummah Technology Mission

وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلَىٰ جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ آيَةً أُخْرَىٰ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा अपना हाथ अपनी काँख (बगल) में डाल ले, तो वह सफेद प्रकाशमान होता हुआ निकलेगा। परन्तु बिना किसी दोष तथा रोग के[1] यह दूसरा चमत्कार है।

لِنُرِيَكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى ﴿٢٣﴾

(२३) यह इसलिए कि हम तुझे अपनी बड़ी-बड़ी निशानियाँ दिखाना चाहते हैं।

اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿٢٤﴾

(२४) अब तू फ़िरऔन की ओर जा, उसने बड़ा विद्रोह मचा रखा है।[2]

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ﴿٢٥﴾

(२५) (मूसा ने) कहा कि हे मेरे प्रभु! मेरा सीना मेरे लिए खोल दे।

وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ﴿٢٦﴾

(२६) तथा मेरे काम को मुझ पर सरल कर दे।

وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي ﴿٢٧﴾

(२७) तथा मेरी जीभ की गाँठ खोल दे।

يَفْقَهُوا قَوْلِي ﴿٢٨﴾

(२८) ताकि लोग मेरी बात भली-भाँति समझ सकें।

وَاجْعَلْ لِي وَزِيرًا مِنْ أَهْلِي ﴿٢٩﴾

(२९) तथा मेरा मंत्री मेरे परिवार में से बना दे।

---

[1]बिना दोष तथा रोग के का अर्थ यह है कि हाथ का इस प्रकार श्वेत एवं चमकदार होकर निकलना, किसी रोग के कारण नहीं है जैसाकि कुष्ठ के रोगी की खाल सफेद हो जाती है। बल्कि यह दूसरा चमत्कार है, जो हम तुझे प्रदान कर रहे हैं। जिस प्रकार अन्य स्थान पर है।

﴿ فَذَٰنِكَ بُرْهَانَانِ مِنْ رَبِّكَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَإِيهِ ﴾

"तो यह दो निशानियाँ हैं तेरे प्रभु की ओर से, फ़िरऔन तथा उसके प्रमुखों के लिए।" (सूरः क़सस-३२)

[2]फ़िरऔन की चर्चा इसलिए की कि उसने आदरणीय मूसा के समुदाय इस्राईल की सन्तान को दास बना रखा था तथा उस पर नाना प्रकार के अत्याचार करता था। इसके अतिरिक्त उसकी क्रूरता एवं अत्याचार अत्यधिक बढ़ गया था। यहाँ तक कि वह दावा करने लगा था ﴿ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ ﴾ "मैं तुम्हारा उच्चतम प्रभु हूँ।"

The Ummah Technology Mission

(३०) (अर्थात) मेरे भाई हारून को। هٰرُوْنَ اَخِیْ ﴿۲۹﴾

(३१) तू उससे मेरी कमर कस दे। اشْدُدْ بِهٖۤ اَزْرِیْ ﴿۳۰﴾

(३२) तथा उसको मेरा सहायक नियुक्त कर दे।[1] وَ اَشْرِكْهُ فِیْۤ اَمْرِیْ ﴿۳۱﴾

(३३) ताकि हम दोनों अत्यधिक तेरी प्रशंसा का वर्णन करें। كَیْ نُسَبِّحَكَ كَثِیْرًا ﴿۳۲﴾

(३४) तथा अत्यधिक तेरी याद करें।[2] وَّ نَذْكُرَكَ كَثِیْرًا ﴿۳۳﴾

(३५) नि:संदेह तू हमें भली प्रकार से देखने- اِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِیْرًا ﴿۳۴﴾

---

[1]कहते हैं कि मूसा का जब फ़िरऔन के राजभवन में पालन हो रहा था, तो खजूर अथवा मोतियों के बजाय आग का अंगारा मुख में रख लिया था, जिससे उनकी जीभ जल गयी थी तथा उसमें कुछ तुतलापन हो गया था। (इब्ने कसीर) जब अल्लाह तआला का आदेश हुआ कि फ़िरऔन के पास जाकर मेरा संदेश पहुँचाओ, तो आदरणीय मूसा के दिल में दो बातें आयीं, एक तो यह कि वह बड़ा उग्र एवं घमण्डी राजा है, बल्कि प्रभु होने का दावा करता है। दूसरे यह कि मूसा के हाथों उसके समुदाय के एक आदमी की हत्या हो गयी थी जिसके कारण मूसा अलैहिस्सलाम को अपने प्राण रक्षा के लिए वहाँ से भागना पड़ा था। अर्थात एक तो फ़िरऔन के बड़ाई तथा बलवंत होने का भय तथा दूसरे अपने हाथों होने वाली घटना का भय तथा तीसरी अन्य बात अपनी जीभ में तुतलापन की। आदरणीय मूसा ने प्रार्थना की कि हे अल्लाह ! मेरा हृदय खोल दे ताकि मैं रिसालत का बोझ उठा सकूँ, मेरे कार्य को सरल बना दे अर्थात जो कार्य मुझे दिया गया है उसमें मेरी सहायता कर तथा मेरी जीभ की गाँठ खोल दे, जिससे मैं फ़िरऔन के समक्ष पूर्ण स्पष्टीकरण के साथ तेरा संदेश पहुँचा सकूँ। उसके साथ यह प्रार्थना भी की कि मेरे भाई हारून को (कहते हैं आयु में मूसा से बड़े थे) सहायक के रूप में मेरा मंत्री तथा सहयोगी बना दे। وزیر शब्द موازر के अर्थों में है अर्थात बोझ उठाने वाला। जिस प्रकार एक मंत्री राजा का प्रभारी होता है तथा राज्य के संचालन में उसका सलाहकार होता है उसी प्रकार हारून मेरा सलाहकार एवं साथी हो।

[2]यह प्रार्थनाओं का कारण बताया कि इस प्रकार हम संदेश पहुँचाने के साथ-साथ तेरी पवित्रता एवं तेरा सुमिरन भी अधिक कर सकें।

The Imran Technology Mission

भालने वाला है।[1]

قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يَا مُوسَىٰ ﴿٣٦﴾

(३६) (अल्लाह तआला ने) कहा हे मूसा ! तेरे सभी प्रश्न पूरे कर दिये गये।[2]

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَىٰ ﴿٣٧﴾

(३७) हमने तो तुझ पर एक बार और भी इससे भी बड़ा उपकार किया है।[3]

إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ مَا يُوحَىٰ ﴿٣٨﴾

(३८) जबकि हमने तेरी माता की अन्तरात्मा में वह उतारा, जिसका वर्णन अब किया जा रहा है।

أَنِ اقْذِفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَاقْذِفِيهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ

(३९) कि तू इसे संदूक में बंद करके नदी में छोड़ दे, फिर नदी इसको तट पर ले जायेगी तथा मेरा एवं स्वयं उसका शत्रु उसे ले लेगा।[4]

---

[1]अर्थात तुझे हर बात का ज्ञान है तथा बाल्यकाल में जिस प्रकार तूने हम पर उपकार किया, अब भी अपने उपकार से हमें वंचित न कर।

[2]इससे ज्ञात होता है कि अल्लाह तआला ने उनकी जीभ के तुतलेपन को भी समाप्त कर दिया होगा। इसलिए यह कहना उचित नहीं होगा कि मूसा ने पूरा तुतलापन दूर करने के लिए प्रार्थना नहीं की थी, इसलिए कुछ शेष रह गयी थी। शेष रहा फ़िरऔन का यह कहना।

﴿وَلَا يَكَادُ يُبِينُ﴾

"यह तो स्पष्ट बोल भी नहीं सकता।" (सूरः अल-ज़ुख़रूफ़-५२)

यह उनके अवहेलना तथा भूत की अवस्था के आधार पर है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[3]प्रार्थना को स्वीकार करने की शुभसूचना के साथ, अधिक सांत्वना तथा साहस के लिए अल्लाह तआला बाल्यकाल के उस उपकार का वर्णन कर रहा है जब मूसा की माता ने हत्या के भय से अल्लाह के आदेश से (अर्थात दिव्य वाक्य) से उन्हें जब वह नवजात शिशु थे, संदूक में रख कर नदी में डाल दिया था।

[4]तात्पर्य फ़िरऔन है जो अल्लाह का भी शत्रु तथा आदरणीय मूसा का भी शत्रु था। अर्थात लकड़ी का वह संदूक तैरता हुआ जब राजभवन के किनारे पहुँचा तो उसे बाहर निकाल

The Ummah Technology Mission

يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّي وَعَدُوٌّ لَّهُ ۚ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّي ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلَىٰ عَيْنِي ﴿٣٩﴾

तथा मैंने अपनी ओर का विशेष प्रेम एवं स्वीकृति तुझ पर डाल दिया।[1] ताकि तेरा पालन-पोषण मेरी आँखों के समक्ष किया जाये।[2]

إِذْ تَمْشِي أُخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَن يَكْفُلُهُ ۖ فَرَجَعْنَاكَ إِلَىٰ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنَّاكَ فُتُونًا ۚ فَلَبِثْتَ سِنِينَ

(४०) (याद कर) जबकि तेरी बहन चल रही थी तथा कह रही थी कि यदि तुम कहो तो मैं उसे बता दूँ जो उसका संरक्षक बन सके,[3] इस प्रकार से हमने तुझे पुनः तेरी माता के पास पहुँचाया कि उसकी आँखें ठंडी रहे। तथा वह दुखी न हो, तथा तूने एक व्यक्ति की हत्या[4] कर दी थी, उस पर भी हमने तुझे

कर देखा गया तो उसमें एक निर्दोष बालक था, जिसे फ़िरऔन ने अपनी पत्नी की इच्छा पर पालन-पोषण के लिए राजभवन में रख लिया।

[1]अर्थात फ़िरऔन के हृदय में डाल दिया अथवा जन सामान्य के हृदय में तेरा प्रेम डाल दिया।

[2]अतः अल्लाह के सामर्थ्य तथा उसकी सुरक्षा एवं संरक्षण का कमाल तथा चमत्कार देखिये कि जिस बालक के कारण फ़िरऔन अनगिनत शिशुओं का वध करवा चुका है, ताकि वह बच्चा जीवित न रहे उसी बच्चे को अल्लाह तआला उसकी गोद में पालन करवा रहा है। तथा माता अपने बालक को दूध पिला रही है, परन्तु उसकी मज़दूरी भी उसी मूसा के शत्रु से प्राप्त कर रही है।

[3]यह उस समय हुआ, जब माता ने सन्दूक नदी में डाल दिया तो पुत्री से कहा कि, तनिक देखती रहना कि यह कहाँ किनारे लगता है तथा इसके साथ क्या मामला होता है ? जब अल्लाह की इच्छा से मूसा फ़िरऔन के भवन में पहुँच गये, नवजात शिशु थे, अतः दूध पिलाने वाली स्त्रियों तथा आयाओं को बुलाया गया। परन्तु मूसा किसी का दूध न पीते। मूसा की बहन शान्तपूर्वक सारा दृश्य देख रही थी, अन्त में उसने कहा मैं तुम्हें ऐसी स्त्री बताती हूँ, जो तुम्हारी यह कठिनाई दूर कर देगी, उन्होंने कहा ठीक है, अतः वह अपनी माता को, जो मूसा की भी माता थीं बुला लाई। जब माता ने पुत्र को छाती से लगाया, तो मूसा ने अल्लाह की इच्छा तथा उपाय के अनुसार गटगट दूध पीना प्रारम्भ कर दिया।

[4]यह एक दूसरे उपकार का वर्णन है, जब मूसा से अकस्मात एक फ़िरऔनी केवल घूँसा मारने से मर गया जिसका वर्णन सूरः *क़सस* में आयेगा।

The Ummah Technology Mission

فِيْۤ اَهْلِ مَدْيَنَ ۙ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ يّٰمُوْسٰى ﴿۴۰﴾

चिन्ता से बचा लिया, अर्थात हमने तेरी भली-भाँति परीक्षण कर लिया।[1] फिर तू कई वर्ष तक मदयन के लोगों में ठहरा रहा।[2] फिर अल्लाह के लिखे हुए भाग्य के अनुसार[3] हे मूसा ! तू आया।

وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِيْ ﴿۴۱﴾

(४१) तथा मैंने तुझे विशेषरूप से अपने लिए निर्वाचित कर लिया।

اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِيْ وَلَا تَنِيَا فِيْ ذِكْرِيْ ﴿۴۲﴾

(४२) अब तू अपने भाई सहित मेरी निशानियाँ साथ ले जा, सावधान ! मेरे सुमिरन में आलस्य न करना।[4]

اِذْهَبَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿۴۳﴾

(४३) तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ, उसने बड़ी धूर्तता की है।

---

[1] فتـــون यह دخول तथा خروج के समरूप धातु है अर्थात ابتلیناك ابتلاء अर्थात हमने तुझे भली-भाँति जाँचा अथवा यह बहुवचन है فتنة की। जैसे حجرة का حجور तथा بدرة का بدور बहुवचन है। अर्थात हमने तुझे कई बार अथवा निरन्तर परीक्षाओं में डाला अथवा कठिनाईयों से निकाला। जैसे जो वर्ष बच्चों की हत्या का था, तुझे पैदा किया, तेरी माता ने तुझे नदी की धाराओं को सौंप दिया, सभी आयाओं का दूध तुझ पर निषेध कर दिया, तूने फ़िरऔन की दाढ़ी पकड़ ली थी जिस पर उसने तेरी हत्या का संकल्प कर लिया था, तेरे हाथों किब्ती की हत्या हो गयी, आदि इन सभी परीक्षा की घड़ी में हम ही तेरी सहायता एवं सुरक्षा करते रहे।

[2]अर्थात फ़िरऔनी की अकस्मात हत्या के पश्चात तू यहाँ से निकलकर मदयन चला गया तथा वहाँ कई वर्ष रहा।

[3]अर्थात ऐसे समय पर तू आया, जो समय मैंने अपने निर्णय तथा भाग्य में तुझसे वार्ता तथा नबूअत प्रदान करने के लिए लिखा था। अथवा قدر से तात्पर्य आयु है अर्थात आयु की उस अवस्था में आया जो नबूअत के लिए उचित है अर्थात चालीस वर्ष की आयु में।

[4]इसमें अल्लाह की ओर आमन्त्रित करने वालों के लिए बड़ी शिक्षा है कि उन्हें अधिकतर अल्लाह का सुमिरन करना चाहिए।

The Ummah Technology Mission

فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ﴿٤٤﴾

(४४) उसे कोमलता से[1] समझाओ, शायद वह समझ ले अथवा डर जाये।

قَالَا رَبَّنَاۤ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَاۤ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ﴿٤٥﴾

(४५) दोनों ने कहा, हे हमारे प्रभु ! हमें भय है कि कहीं फिरऔन हम पर कोई अत्याचार न करे अथवा अपनी धूर्तता में बढ़ न जाये।

قَالَ لَا تَخَافَاۤ اِنَّنِيْ مَعَكُمَاۤ اَسْمَعُ وَاَرٰى ﴿٤٦﴾

(४६) उत्तर मिला कि तुम दोनों कदापि भय न करो, मैं तुम्हारे साथ हूँ तथा सुनता-देखता रहूँगा।[2]

فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَاۤ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۫ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ﴿٤٧﴾

(४७) तुम उसके पास जाकर कहो कि हम तेरे प्रभु के ईशदूत (पैग़म्बर) हैं, तू हमारे साथ इस्राईल की सन्तान को भेज दे। उनके दण्ड समाप्त कर। हम तो तेरे पास तेरे प्रभु की ओर से निशानियाँ लेकर आये हैं, शान्ति उसी के लिए है जो मार्गदर्शन को दृढ़ता[3] से अपनाये।

---

[1]यह योग्यता भी अल्लाह की ओर आमन्त्रित करने वालों के लिए अति आवश्यक है। क्योंकि कठोरता से लोग भागते हैं तथा सरलता एवं कोमलता से निकट आते तथा प्रभावित होते हैं यदि वे मार्गदर्शन प्राप्त करने वाले होते हैं।

[2]तुम फ़िरऔन से जाकर जो कहोगे तथा उसका उत्तर वह देगा, मैं वह सुनता तथा तुम्हारे तथा उसकी प्रतिक्रिया को देखता रहूँगा। उसके अनुसार मैं तुम्हारी सहायता तथा उसके षड़यन्त्रों को निष्फल करूँगा, इसलिए उसके पास जाओ, संकोच की कोई आवश्यकता नहीं।

[3]यह सलाम सम्मान के लिए नहीं, बल्कि शान्ति तथा सुरक्षा की ओर आमन्त्रण है। जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोम के राजा हरकूलस के नाम पत्र लिखा था। «اَسْلِمْ تَسْلَمْ» (इस्लाम धर्म स्वीकार कर ले, सुरक्षा में रहेगा) इसी प्रकार पत्र के प्रारम्भ में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ﴿وَالسَّلَامُ عَلَىٰ مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ﴾ भी लिखा (इब्ने कसीर) इसका अर्थ यह है कि किसी ग़ैर मुस्लिम को पत्र अथवा सभा में सम्बोधित करना हो तो उसे इन्हीं शब्दों में सलाम किया जाये जो अनुबन्धित है मार्गदर्शन के अपनाने के साथ।

The Ummah Technology Mission

إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٤٨﴾

(४८) हमारी ओर प्रकाशना (वह्यी) की गयी है कि जो झुठलाये तथा मुख फेरे उसके लिए यातनायें हैं।

قَالَ فَمَن رَّبُّكُمَا يَا مُوسَىٰ ﴿٤٩﴾

(४९) (फ़िरऔन ने) पूछा कि हे मूसा ! तुम दोनों का प्रभु कौन है।

قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَىٰ ﴿٥٠﴾

(५०) उत्तर दिया कि हमारा प्रभु वह है, जिसने प्रत्येक को उसका विशेष रूप प्रदान किया, फिर मार्गदर्शन भी दिया।[1]

قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ ﴿٥١﴾

(५१) उसने कहा (अच्छा यह तो बताओ) पूर्वकाल के लोगों की क्या दशा होनी है ?[2]

قَالَ عِلْمُهَا عِندَ رَبِّي فِي كِتَابٍ ۖ لَّا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنسَى ﴿٥٢﴾

(५२) उत्तर दिया कि उनका ज्ञान मेरे प्रभु के पास किताब में (उपस्थिति) है, न तो मेरा प्रभु त्रुटि करता है न भूलता है।[3]

---

[1]जैसे जो रूप रेखा मनुष्य के लिए उचित थी, वह उसे, जो पशुओं के योग्य थी वह पशुओं को प्रदान किया। मार्ग दिखाया का अर्थ प्रत्येक जीवधारी को उसकी प्राकृतिक आवश्यकताओं के अनुसार रहन-सहन खाने-पीने तथा आवास-निवास की विधि समझा दी, उसी के अनुसार प्रत्येक जीवधारी अपनी जीवन सामग्री एकत्रित करता है तथा जीवन के ये दिन व्यतीत करता है।

[2]फ़िरऔन ने बात की दिशा बदलने के लिए यह प्रश्न किया, अर्थात पूर्वकाल में जो लोग अल्लाह के अतिरिक्त अन्यों की पूजा करते दुनिया से चले गये, उनका परिणाम क्या होगा ?

[3]आदरणीय मूसा ने उत्तर दिया, उनका ज्ञान न तुझे है तथा न मुझे। परन्तु उनका ज्ञान मेरे प्रभु को है जो उसके पास किताब में विद्यमान है। वह उसके अनुसार उन्हें बदला तथा दण्ड देगा, फिर उसका ज्ञान इसी प्रकार प्रत्येक वस्तु को अपनी ज्ञान की परिधि में लिए हुए है कि उसकी दृष्टि से कोई छोटी बड़ी वस्तु ओझल नहीं हो सकती, न उसे कोई बात भूलती है। जबकि जीवधारियों के अन्दर दोनों बातों का समावेश है। एक तो उनका

The Ummah Technology Mission

الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِیْهَا سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ؕ فَاَخْرَجْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى ﴿۵۳﴾

(५३) उसी ने तुम्हारे लिए धरती को बिस्तर बनाया है तथा उसमें तुम्हारे चलने के लिए मार्ग बनाये हैं तथा आकाश से वर्षा भी वही करता है, फिर उस वर्षा के कारण विभिन्न प्रकार की पैदावार भी हम ही पैदा करते हैं।

كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی النُّهٰى ﴿۵۴﴾

(५४) तुम स्वयं खाओ तथा अपने पशुओं को भी चराओ।[1] नि:संदेह इसमें बुद्धिमानों के लिए[2] बहुत-सी निशानियाँ हैं।

مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَ فِیْهَا نُعِیْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ﴿۵۵﴾

(५५) उसी धरती में से हमने तुम्हें पैदा किया तथा उसी में फिर वापस लौटायेंगे तथा उसी से पुन: तुम सबको[3] निकाल खड़ा करेंगे।

ज्ञान सम्पूर्ण नहीं, बल्कि कम है। दूसरे ज्ञान होने के पश्चात वह भूल भी सकते हैं। मेरा प्रभु इन दोनों त्रुटियों से पवित्र है। आगे, प्रभु के अन्य गुणों का वर्णन हो रहा है।

[1]अर्थात इस विभिन्न प्रकार की पैदावार में कुछ वस्तुयें तुम्हारे भोजन, स्वाद तथा स्फूर्ति की सामग्री हैं तथा कुछ तुम्हारे चौपाये तथा पशुओं के लिए हैं।

[2] نهى बहुवचन है نهية का, जिसका अर्थ बुद्धि है اُولوا النهى बुद्धिवाले, बुद्धि को نهية तथा बुद्धिमान को ذو نهية इसलिए कहा जाता है कि अन्त में उन्हीं की राय पर मामले का अन्त होता है अथवा इसलिए कि यह मन को बुराई से रोकते हैं। ينهون النفس عن القبائح (फ़तहुल क़दीर)

[3]कुछ कथनों के अनुसार गाड़ने के पश्चात तीन लप मिट्टी डालते समय इस आयत का पाठ करना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रमाणित है। परन्तु प्रमाणानुसार यह कथन क्षीण है। परन्तु आयत बिना तीन उंजुली डालने वाला कथन जो इब्ने माजा में है, सही है, इसलिए गाड़ने के पश्चात दोनों हाथों की उंजुली से तीन-तीन बार मिट्टी डालने को धर्मगुरूओं ने उचित कहा है। देखिये किताबुल जनायेज़ पृष्ठ १५२ तथा इरवाउल गलील संख्या २५१ भाग ३ पृष्ठ २००

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ﴿٥٦﴾

(५६) तथा हमने उसे अपनी सभी निशानियाँ दिखा दीं, परन्तु उसने फिर भी झुठलाया तथा अस्वीकार कर दिया।

قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٥٧﴾

(५७) कहने लगा हे मूसा! क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि हमें अपने जादू की शक्ति से हमारे देश से निकाल दे।[1]

فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَاۤ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾

(५८) ठीक है, हम भी तेरा सामना करने के लिए इसी जैसा जादू अवश्य लायेंगे। बस तू हमारे तथा अपने मध्य वायदा का समय निर्धारित कर ले[2] कि न हम उसके विरूद्ध करें तथा न तू। खुले मैदान[3] में मुक़ाबिला (प्रतियोगिता) हो।

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾

(५९) (मूसा ने) उत्तर दिया कि शोभा तथा समारोह के दिन[4] का वचन है तथा यह कि लोग दिन चढ़े ही एकत्रित हो जायें।

---

[1] जब फ़िरऔन को स्पष्ट प्रमाण के साथ चमत्कार भी दिखाये गये जो छड़ी तथा हाथ के सफेद चमकदार होने के रूप में आदरणीय मूसा को प्रदान किये गये थे, तो फ़िरऔन ने उसे जादू का करतब समझा तथा कहने लगा, ठीक है, तू हमें इस जादू की शक्ति से हमारी धरती से निकालना चाहता है।

[2] موعد धातु है अथवा यदि समय तथा स्थान वाचक है तो काल तथा स्थान दोनों तात्पर्य हो सकते हैं कि कोई स्थान तथा दिन निर्धारित कर ले।

[3] مكانا سوى साफ समतल स्थान, जहाँ होने वाले मुक़ाबिले को सभी लोग सरलता से देख सकें अथवा ऐसा समतल स्थान जहाँ दोनों पक्ष सुविधापूर्वक पहुँच सकें।

[4] इससे तात्पर्य नौरोज़ अथवा कोई अन्य वार्षिक उत्सव अथवा मेले का दिन है, जिसे वे ईद के रूप में मनाते थे।

The Ummah Technology Mission

فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ﴿٦٠﴾

(६०) फिर फ़िरऔन लौट गया तथा उसने अपने हथकंडे एकत्रित किये, फिर आ गया।[1]

قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ﴿٦١﴾

(६१) मूसा ने उनसे कहा कि तुम्हारा विनाश हो, अल्लाह (तआला) पर झूठ तथा आरोप न लगाओ कि वह तुम्हें यातनाओं से नाश कर दे। याद रखो! वह कभी सफल न होगा जिसने झूठी बात गढ़ी।[2]

فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ﴿٦٢﴾

(६२) फिर ये लोग आपस में विचार-विमर्श में विभिन्न मत हो गये तथा छुपकर गुप्त मंत्रणा करने लगे।[3]

قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ﴿٦٣﴾

(६३) कहने लगे ये दोनों मात्र जादूगर हैं तथा इनका दृढ़ संकल्प है कि अपने जादू की शक्ति से तुम्हें तुम्हारे देश से निष्कासित कर दें तथा तुम्हारे सर्वोच्च धर्म को नाश कर दें।[4]

---

[1]अर्थात विभिन्न नगरों से दक्ष जादूगरों को एकत्रित करके सभा-स्थल में आ गया।

[2]जब फ़िरऔन सभा-स्थल पर जादूगरों को मुक़ाबिले के लिए उत्साहित कर रहा था तथा उपहार तथा अपनी विशेष निकटता प्रदान करने की बात कर रहा था, तो आदरणीय मूसा ने भी मुक़ाबिले के पूर्व उन्हें सम्बोधित किया तथा उनके वर्तमान व्यवहार पर उन्हें अल्लाह के प्रकोप से डराया।

[3]आदरणीय मूसा के सम्बोधन से उनमें आपस में कुछ मतभेद हुआ तथा कुछ लोग चुपके-चुपके कहने लगे कि यह वास्तव में अल्लाह का नबी न हो? उसकी वार्ता जादूगरों वाली नहीं पैग़म्बरों जैसी लगती है। कुछ ने इसके विपरीत विचार व्यक्त किया।

[4] مثلى विशेषण है طريقة का। यह أمثل का स्त्रीलिंग है, श्रेष्ठ के अर्थ में है। अर्थ यह कि यदि यह दोनों भाई अपने "जादू" की शक्ति से प्रभावशाली हो गये, तो सरदार, मुखिया, धनवान एवं सम्मानित व्यक्ति उसकी ओर आकर्षित हो जायेंगे जिससे हमारा राज्य ख़तरे में है तथा उनके राज का मार्ग प्रशस्त हो जायेगा। इसके अतिरिक्त हमारा अति उत्तम मार्ग अथवा धर्म, उसे भी समाप्त कर देंगे। अर्थात अपने मूर्तिपूजक धर्म को 'अति उत्तम'

The Ummah Technology Mission

فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ﴿٦٤﴾

(६४) तो तुम भी अपना कोई दाँव उठा न रखो, फिर पंक्तिबद्ध होकर आ जाओ। जो आज विजय हो गया वही सफलता ले गया।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿٦٥﴾

(६५) वे कहने लगे कि हे मूसा! या तो तू पहले डाल अथवा हम पहले डालने वाले बन जायें।

قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٦﴾

(६६) उत्तर दिया, नहीं तुम ही पहले डालो,[1] अब तो मूसा को यह भ्रम होने लगा कि उन की रस्सियाँ तथा लकड़ियाँ उनके जादू की शक्ति से दौड़ भाग रही हैं।[2]

فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ﴿٦٧﴾

(६७) इससे मूसा अपने मन ही मन में डरने लगे।

बना दिया। जैसाकि आज भी झूठे धर्म तथा गुटों के अनुयायी इसी निराधार भ्रम में पड़े हैं। सत्य कहा अल्लाह तआला ने।

﴿كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ﴾

"प्रत्येक गुट जो उसके पास है, उस पर रीझ रहा है।" (सूरः अल-रूम-३२)

[1]आदरणीय मूसा ने प्रथम उनको अपना खेल दिखाने को कहा ताकि उन पर यह स्पष्ट हो जाये कि वह जादूगरों की इतनी बड़ी संख्या से, जो फ़िरऔन एकत्रित करके लाया है, तथा उसी प्रकार उनके जादू के खेल से कदापि भयभीत नहीं हैं। दूसरे उनके जादू के खेल-तमाशे, जब अल्लाह के चमत्कार से पलक झपकते समाप्त एवं निरस्त हो जायेंगे तो इसका अति उत्तम प्रभाव पड़ेगा तथा जादूगर यह विचार करने पर बाध्य हो जायेंगे कि यह जादू नहीं है, वास्तव में इसको अल्लाह का पक्ष प्राप्त है कि एक क्षण में इसकी एक लाठी हमारे सारे खेल तमाशे निगल गयी।

[2]क़ुरआन के इन शब्दों से ज्ञात होता है कि रस्सियाँ तथा लाठियाँ वास्तव में सर्प नहीं बनी थीं, बल्कि जादू की शक्ति से ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे नज़रबन्द कर दी जाती है। इसका प्रभाव यह होता है कि अस्थाई तथा क्षणिक रूप से देखने वालों पर भय आच्छादित हो जाता है, यद्यपि वस्तु की वास्तविकता परिवर्तित न हो। दूसरी बात यह ज्ञात हुई कि जादू चाहे कितना बड़ा हो, वह वस्तु की वास्तविकता नहीं बदल सकता।

The Ummah Technology Mission

قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَىٰ ﴿٦٨﴾

(६८) हमने कहा कि कुछ भय न कर, नि:संदेह तू ही प्रभावशाली तथा सम्मानित होगा।[1]

وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا ۖ إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدُ سَاحِرٍ ۖ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ ﴿٦٩﴾

(६९) तथा तेरे दाहिने हाथ में जो है उसे डाल दे कि उनकी सारी कारीगरी को यह निगल जाये, उन्होंने जो कुछ बनाया है, यह केवल जादूगरों के करतब हैं तथा जादूगर कहीं से भी आये सफल नहीं होता।

---

[1]इस भयंकर दृश्य को देखकर यदि आदरणीय मूसा ने भय का आभास किया तो यह एक स्वाभाविक बात थी, जो न तो नबूअत के विरूद्ध है न शुद्धता के। क्योंकि नबी भी मनुष्य होता है तथा मानवी स्वाभाविक माँगों से न तो उच्च होता है न हो सकता है। इससे ज्ञात होता है कि जिस प्रकार नबियों को अन्य मानवीय कठिनाईयाँ होती हैं अथवा हो सकती हैं, इसी प्रकार वह जादू से भी प्रभावित हो सकते हैं जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यहूदियों ने जादू किया था जिसके प्रभाव का आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम संवेदन करते थे, इससे भी नबूअत के पद पर कोई दोष नहीं आता क्योंकि इससे नबूअत के कार्य प्रभावित नहीं होते, अल्लाह तअला नबी की सुरक्षा करता है तथा जादू से प्रकाशना अथवा रिसालत के कर्त्तव्यों को प्रभावित होने नहीं देता। तथा सम्भव है कि यह भय इसलिए हुआ हो कि मेरी लाठी डालने से पूर्व ही लोग उनके जादू के खेल तथा तमाशों को देखकर प्रभावित न हो जायें, परन्तु संभाव्य बात यह है कि यह भय इसलिए हुआ कि इन जादूगरों ने भी जो खेल तमाशे दिखाये वह लाठियों के द्वारा ही दिखाया, जबकि मूसा के पास भी लाठी थी, जिसे उन्हें धरती पर फेंकना था, मूसा के दिल में विचार आया कि देखने वाले इससे शंका तथा संदेह में न पड़ जायें तथा वे यह न समझ लें कि दोनों ने एक ही प्रकार से जादू प्रस्तुत किया, इसलिए यह निर्णय कैसे किया जाये कि कौन सा जादू है तथा कौन-सा चमत्कार ? कौन विजयी है तथा कौन पराजित ? अर्थात जादू तथा चमत्कार का जो अन्तर बताने का उद्देश्य है, वह वर्णित शंका के कारण प्राप्त न हो सकेगा, इसलिए यह ज्ञात हुआ कि नबियों को कभी-कभी यह भी ज्ञात नहीं होता कि उनके हाथ से कौन-सा चमत्कार घटित होने वाला है। स्वयं चमत्कार दिखाने का सामर्थ्य तो दूर की बात है। यह तो मात्र अल्लाह का कार्य है कि वह नबियों के हाथ से चमत्कार दिखाये, इस प्रकार मूसा अलैहिस्सलाम की इस शंका तथा भय को दूर करते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मूसा किसी भी प्रकार से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है, तू ही विजयी रहेगा, इस वाक्य से स्वाभाविक भय तथा अन्य शंकाओं, सभी को समाप्त कर दिया। अत: ऐसा ही हुआ, जैसाकि अगली आयत में है।

The Ummah Technology Mission

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ وَمُوْسٰى ﴿٧٠﴾

(७०) अब तो सारे जादूगर दण्डवत (सजदा) हो गये तथा पुकार उठे कि हम तो हारून तथा मूसा के प्रभु पर ईमान लाये।

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۭ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ جُذُوْعِ النَّخْلِ ۡ وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبْقٰى ﴿٧١﴾

(७१) (फ़िरऔन) कहने लगा कि क्या मेरी आज्ञा के पूर्व ही तुम उस पर ईमान ले आये? नि:संदेह यही तुम्हारा वह बड़ा (गुरू) है जिसने तुम सबको जादू सिखाया है, (सुन लो) मैं तुम्हारे हाथ-पाँव उल्टे सीधे [1] कटवाकर तुम सबको खजूर के तनों में फाँसी पर लटकवा दूँगा तथा तुम्हें पूर्णरूप से ज्ञात हो जायेगा कि हम में से किस की मार अधिक कठोर तथा स्थाई है।

قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰي مَا جَاۗءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ۭ اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٧٢﴾

(७२) (उन्होंने) उत्तर दिया कि असम्भव है कि हम तुम्हें प्रधानता दें उन तर्कों पर जो हमारे समक्ष आ चुके तथा उस अल्लाह पर जिसने हमें पैदा किया, [2] अब तो तू जो कुछ करना चाहे, कर ले, तू जो कुछ आदेश चला सकता है वह इसी सांसारिक जीवन[3] में ही है।

---

[1] من خلاف (उल्टे-सीधे) का अर्थ है कि दहिना हाथ तो बायाँ पैर अथवा बायाँ हाथ तो दाहिना पैर।

[2] यह अनुवाद उस स्थिति में है जब والذي فطرنا का सम्बन्ध ماجاءنا से हो। तथा यह भी उचित है। परन्तु कुछ व्याख्याकारों ने इसे शपथ बताया है। अर्थात सौगन्ध है उस शक्ति की जिसने हमें पैदा किया, तुझे इन तर्कों पर प्रधानता न देंगे, जो हमारे समक्ष आ चुके।

[3] अर्थात तेरे वश में जो कुछ है, कर ले, हम जानते हैं कि तेरा वश मात्र इस दुनिया तक चल सकता है, जबकि हम जिस प्रभु पर ईमान लाये हैं, उसका राज्य तो लोक-परलोक दोनों स्थानों पर है। मरने के बाद तो हम तेरे अत्याचार तथा क्रूरता से तो बच जायेंगे

The Ummah Technology Mission

إِنَّآ ءَامَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطَٰيَٰنَا وَمَآ أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ ٱلسِّحْرِ ۗ وَٱللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰٓ ﴿٧٣﴾

(७३) हम (इस आशा से) अपने प्रभु पर ईमान लाये कि वह हमारी त्रुटियाँ क्षमा कर दे तथा (विशेषकर) जादूगरी (का पाप) जो कुछ तूने हम से बाध्य करके कराया [1] है, अल्लाह ही सर्वश्रेष्ठ तथा अनन्त है।[2]

إِنَّهُۥ مَن يَأْتِ رَبَّهُۥ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُۥ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ﴿٧٤﴾

(७४) बात यही है कि जो भी पापी बनकर अल्लाह (तआला) के यहाँ जायेगा, उसके लिए नरक है, जहाँ न मृत्यु होगी तथा न जीवन।[3]

क्योंकि शरीर से प्राण निकल जाने के पश्चात तेरा वश समाप्त हो जायेगा परन्तु यदि हम अपने प्रभु के अवज्ञाकारी रहे, तो मरने के पश्चात भी प्रभु के वश से नहीं निकल सकते, वह हमें घोर यातना देने का सामर्थ्य रखता है। प्रभु पर ईमान लाने के पश्चात एक ईमान लाने वाले के जीवन में जो महान परिवर्तन आना, दुनिया से अलगाव तथा आख़िरत के स्थाई जीवन पर जिस प्रकार विश्वास होना चाहिए तथा फिर इस विश्वास एवं ईमान पर जो दुख आयें, उन्हें जिस साहस तथा धैर्य एवं दृढ़ता से सहन करना चाहिए जादूगरों ने उसका एक उत्तम आदर्श प्रस्तुत किया कि ईमान लाने के पूर्व वे किस प्रकार फ़िरऔन से उपहार तथा साँसारिक पद तथा मर्यादा के आकाँक्षी थे, परन्तु ईमान लाने के पश्चात उन्हें कोई प्रलोभन तथा लालच विचलित नहीं कर पायी, न दण्ड तथा यातना की धमकियाँ उन्हें ईमान से मुख मोड़ने में सफल हो सकीं।

[1]दूसरा अनुवाद इसका यह है कि "हमारी वह त्रुटियाँ भी क्षमा कर दे जो मूसा के मुक़ाबिले में तेरे बाध्य करने पर हमने जादू के रूप में की।" इस अवस्था मे ما أكرهتنا का सम्बन्ध خطايانا से होगा।

[2]ये फ़िरऔन के शब्द " ﴿وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَآ أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَىٰ﴾ " का उत्तर है कि हे फ़िरऔन ! तू जो हमें कड़ी यातना की धमकी दे रहा है, अल्लाह तआला के दरबार में जो प्रतिफल तथा प्रत्युप्कार मिलेगा, वह इससे कहीं अत्यधिक श्रेष्ठ तथा स्थाई है।

[3]अर्थात यातना से तंग आकर मृत्यु की कामना करेंगे, परन्तु मृत्यु नहीं आयेगी तथा रात-दिन यातना में घिरे रहना, खाने-पीने के लिए ज़क़्क़ूम जैसे कड़ुवे स्वाद वाला वृक्ष तथा नरक वालों के शरीर से निकले हुए रक्त एवं मवाद मिलना, यह कोई जीवन होगा ? اللهم أجرنا من عذاب جهنم (हे अल्लाह हमें नरक की यातना से बचा)

The Ummah Technology Mission

وَمَنْ يَّاْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ﴿٧٥﴾

(७५) तथा जो भी उसके पास ईमान वाला होकर आयेगा तथा उसने सदाचार भी किये होंगे उसके लिए उच्च तथा उत्तम पद (श्रेणियाँ) हैं।

جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ﴿٧٦﴾

(७६) स्थाई स्वर्ग जिनके नीचे नदियाँ बह रही होंगी, जहाँ वे सदैव रहेंगे। यही पारितोषिक है प्रत्येक उस व्यक्ति का जो पवित्र है।[1]

وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ﴿٧٧﴾

(७७) तथा हमने मूसा की ओर प्रकाशना (वह्यी) उतारी कि तू रातों-रात मेरे भक्तों को ले चल[2] तथा उनके लिए समुद्र में सूखा मार्ग बना ले,[3] फिर न तुझे किसी के आ पकड़ने का भय होगा न डर।[4]

---

[1]नरकवासियों के विपरीत ईमानवालों को स्वर्ग का सुखद जीवन मिलेगा, इसका वर्णन किया तथा स्पष्ट कर दिया कि इसके पात्र वे लोग होंगे, जो ईमान लाने के पश्चात उसकी माँग को भी पूरा करेंगे अर्थात पुण्य का कार्य करेंगे तथा अपने आपको पाप के प्रदूषण से पवित्र रखेंगे। इसलिए कि ईमान मुख से कुछ शब्द कह देने का नाम नहीं है अपितु विश्वास तथा कर्म के योग का नाम है।

[2]जब फ़िरऔन ईमान भी नहीं लाया तथा इस्राईल की सन्तान को स्वतन्त्र करने को भी तैयार नहीं हुआ, तो अल्लाह तआला ने मूसा को यह आदेश दिया।

[3]इसका विस्तृत वर्णन *सूरः अल शुअरा* में आयेगा कि मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के आदेश से समुद्र में लाठी मारी, जिससे समुद्र में गुज़रने के लिए सूखा मार्ग बन गया।

[4]ख़तरा फ़िरऔन तथा उसकी सेना का तथा समुद्र में डूबने का।

The Ummah Technology Mission

فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِۦ فَغَشِيَهُم مِّنَ ٱلْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ﴿٧٨﴾

(७८) फ़िरऔन ने अपनी सेना सहित उनका पीछा किया, फिर तो समुद्र उन सब पर छा गया जैसा कुछ छा जाने वाला था।[1]

وَأَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُۥ وَمَا هَدَىٰ ﴿٧٩﴾

(७९) तथा फ़िरऔन ने अपने समुदाय को भटकावे में डाल दिया तथा सीधा मार्ग न दिखाया।[2]

يَٰبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ قَدْ أَنجَيْنَٰكُم مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوَٰعَدْنَٰكُمْ جَانِبَ ٱلطُّورِ ٱلْأَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ ٱلْمَنَّ وَٱلسَّلْوَىٰ ﴿٨٠﴾

(८०) हे इस्राईल के पुत्रो ! (देखो) हमने तुम्हें तुम्हारे शत्रु से मुक्त कर दिया तथा तुम को तूर पर्वत के दाहिने ओर का वचन[3] दिया तथा तुम पर 'मन्न' तथा 'सलवा' उतारा।[4]

كُلُوا۟ مِن طَيِّبَٰتِ مَا رَزَقْنَٰكُمْ

(८१) तुम हमारी प्रदान की हुई पवित्र जीविकायें खाओ, तथा उसमें सीमा का उल्लंघन न

---

[1]अर्थात उस सूखे मार्ग पर जब फ़िरऔन तथा उसकी सेना चलने लगी, तो अल्लाह तआला ने समुद्र को आदेश दिया कि पूर्ववत स्थिति में आ जा, अत: वह सूखा मार्ग पलक झपकते ही पानी की धाराओं में परिवर्तित हो गया तथा फ़िरऔन सहित पूरी सेना डूब गई, غشيهم का अर्थ है علاهم و أصابهم समुद्र का पानी उन पर आच्छादित हो गया। ما غشيهم यह पुनरावृत्ति भयानकता के वर्णन के लिए है, अथवा इसके अर्थ है, "जो प्रसिद्ध तथा परिचित है।"

[2]इसलिए कि समुद्र में जलमग्न होना उनका दुर्भाग्य था।

[3] واعدناكم , में सर्वनाम बहुवचन में होकर सम्बोधित है, इसका अर्थ यह है कि मूसा तूर नामक पर्वत पर तुम्हें अर्थात तुम्हारे प्रतिनिधि भी साथ लेकर आयें ताकि तुम्हारे समक्ष हम मूसा से वार्ता करें अथवा सर्वनाम बहुवचन इसलिए लाया गया कि मूसा को तूर नामक पर्वत पर बुलाना इस्राईल की सन्तान ही के लिए तथा उन्हें मार्गदर्शन तथा प्रकाश प्रदान करने के लिए था।

[4]'मन्न' तथा 'सलवा' के उतरने का वर्णन सूर: अल-बक़र: के प्रारम्भ में गुज़र चुका है। 'मन्न' कोई स्वादिष्ट मीठी वस्तु थी जो आकाश से अवतरित होती थी तथा 'सलवा' से तात्पर्य बटेर पक्षी है जो अधिक संख्या में उनके पास आते थे और वे आवश्यकता अनुसार उन्हें पकड़ कर पकाते तथा खा लेते।

The Ummah Technology Mission

وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى ﴿٨١﴾

करो |[1] अन्यथा तुम पर मेरा प्रकोप उतरेगा, तथा जिस पर मेरा प्रकोप उतर जायेगा, वह नि:संदेह नाश हुआ |[2]

وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ﴿٨٢﴾

(८२) तथा नि:संदेह मैं उन्हें क्षमा कर देने वाला हूँ, जो क्षमा माँगें, ईमान लायें, पुण्य के कार्य करें तथा उचित मार्ग पर भी रहें |[3]

وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٨٣﴾

(८३) तथा हे मूसा ! तुझे अपने समुदाय से (निश्चिन्त करके) कौन-सी बात शीघ्र ले आयी ?

قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِيْ وَعَجِلْتُ اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى ﴿٨٤﴾

(८४) कहा वह लोग भी मेरे पीछे ही पीछे हैं, तथा मैंने हे प्रभु तेरी ओर शीघ्रता इसलिए की कि तू प्रसन्न हो जाये |[4]

---

[1] طغيان का अर्थ है 'उल्लंघन करना' | अर्थात उचित तथा हलाल वस्तुओं को छोड़कर हराम तथा निषेध वस्तुओं की ओर उल्लंघन मत करो | अथवा अल्लाह के उपकारों का इंकार करके अथवा उस पर अविश्वास करके अथवा कृतघ्नता करके सीमा का उल्लंघन न करो, इन सभी भावार्थों पर طغيان का शब्द चरितार्थ होता है तथा कुछ विद्वानों का कहना है कि طغيان का भावार्थ आवश्यकता से अधिक पक्षी पकड़ना अर्थात आवश्यकतानुसार पक्षी पकड़ो तथा उस में अति न करो |

[2] दूसरा अर्थ यह वर्णन किया गया है कि वह हाविया अर्थात नरक में गिरा | हाविया नरक का निचला भाग है अर्थात नरक के निचले भाग का अधिकारी हो गया |

[3] अर्थात अल्लाह की क्षमा का अधिकारी होने के लिए चार बातें आवश्यक हैं | अविश्वास तथा विमुखता से पश्चाताप, ईमान, पुण्य का कार्य एवं सत्यमार्ग पर चलते रहना अर्थात सीधे मार्ग पर चलते हुए उसे मृत्यु आये, अन्यथा स्पष्ट बात है कि क्षमा माँगने तथा ईमान के पश्चात यदि उसने फिर शिर्क तथा कुफ़्र का मार्ग अपनाया, यहाँ तक कि उसकी मृत्यु हो गयी तथा वह अनिष्ठा तथा मिश्रणवाद ही पर रहा, तो अल्लाह की क्षमा के बजाय यातना का अधिकारी होगा |

[4] समुद्र पार करने के पश्चात मूसा अलैहिस्सलाम इस्राईल के सम्मानित व्यक्तियों को अपने साथ लेकर तूर पर्वत की ओर चले, परन्तु प्रभु से मिलन की उत्सुकता में साथियों को पीछे छोड़कर तूर पर्वत पर अकेले ही पहुँच गये | प्रश्न करने पर उत्तर दिया, मुझे

The Ummah Technology Mission

قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْ بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ﴿٨٥﴾

(८५) कहा हमने तेरे समुदाय को तेरे पीछे परीक्षण में डाल दिया तथा उन्हें 'सामरी' ने भटका (कुमार्ग कर) दिया।[1]

فَرَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ أَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ أَمْ أَرَدْتُمْ أَنْ يَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِنْ رَبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُمْ مَوْعِدِي ﴿٨٦﴾

(८६) तो मूसा अत्यधिक क्रोधित तथा शोकग्रस्त होकर वापस लौटे, तथा कहने लगे कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! क्या तुम से तुम्हारे प्रभु ने अच्छा वादा नहीं किया था ?[2] क्या उसकी अवधि तुम्हें लम्बी प्रतीत हुई ?[3] अथवा तुम्हारा विचार ही यह है कि तुम पर तुम्हारे प्रभु का प्रकोप उतरे। अत: तुमने मेरे वचन को भंग किया।[4]

तो तेरी प्रसन्नता की चाह तथा उसकी शीघ्रता थी। वे लोग तो मेरे पीछे-पीछे ही आ रहे हैं। कुछ विद्वानों के निकट इसका अर्थ यह नहीं कि मेरे पीछे आ रहे हैं, बल्कि यह है कि वे मेरे पीछे तूर पर्वत के निकट ही हैं तथा वहाँ मेरी वापसी की प्रतीक्षा में है।

[1]आदरणीय मूसा के पश्चात 'सामरी' नामक व्यक्ति ने इस्राईल की सन्तान को बछड़ा पूजने पर लगा दिया जिसकी सूचना अल्लाह तआला ने तूर पर ही मूसा को दी कि 'सामरी' ने तेरे अनुयायियों को भटका दिया। परीक्षा में डालने को अल्लाह ने अपने से सम्बन्धित किया है इसलिए की उत्पत्तिकार वही है अन्यथा भटकाने का कारण तो 'सामरी' ही था जैसाकि أضلهم السامري से स्पष्ट है।

[2]इससे तात्पर्य स्वर्ग अथवा विजय का वचन है यदि वे धर्म पर स्थित रहे अथवा तौरात प्रदान करने का वचन है, जिसके लिए उन्हें तूर पर्वत पर बुलाया गया था।

[3]क्या उस प्रतिज्ञा की अवधि बहुत दीर्घ हो चुकी थी कि तुम भूल गये तथा बछड़े की पूजा प्रारम्भ कर दी।

[4]समुदाय ने मूसा से प्रतिज्ञा की थी कि उनके तूर पर्वत से वापसी तक वे अल्लाह की इबादत तथा आज्ञा पालन पर स्थिर रहेंगे अथवा यह प्रतिज्ञा थी कि हम भी तूर पर्वत पर आप के पीछे-पीछे आ रहे हैं। परन्तु मार्ग में ही रूक कर उन्होंने बछड़े की पूजा प्रारम्भ कर दी।

The Ummah Technology Mission

قَالُوا مَآ اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَآ اَوْزَارًا مِّنْ زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلْقَى السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾

(८७) (उन्होंने) उत्तर दिया कि हमने अपने अधिकार से आपके साथ वचन भंग नहीं किया[1] अपितु हम पर जो आभूषण समुदाय के लाद दिये गये थे, उन्हें हमने डाल दिया, तथा उसी प्रकार 'सामरी' ने भी डाल दिये।

فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوْا هٰذَآ اِلٰهُكُمْ وَاِلٰهُ مُوْسٰى ۙ فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾

(८८) फिर उसने लोगों के लिए एक बछड़ा निकाला अर्थात बछड़े की मूर्ति जिसकी गाय जैसी आवाज़ थी, फिर कहने लगे कि यही तुम्हारा भी पूज्य है,[2] तथा मूसा का भी, परन्तु मूसा भूल गया है।

اَفَلَا يَرَوْنَ اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا ۙ وَّلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾

(८९) क्या ये भटके हुए लोग यह भी नहीं देखते कि वह तो उनकी बात का उत्तर भी नहीं दे सकता तथा न उनके किसी बुरे-भले का अधिकार रखता है ?[3]

---

[1]अर्थात हमने अधिकार से यह कार्य नहीं किया बल्कि यह दोष हम से विवशता में हो गया। आगे इसका कारण वर्णन किया।

[2] زينة से आभूषण तथा القوم से फ़िरऔन के अनुयायी तात्पर्य हैं। कहते हैं कि यह आभूषण उन्होंने फ़िरऔनियों से उधार लिये थे इसीलिए उन्हें وزر- أوزار(बोझ) का बहुवचन कहा गया है, क्योंकि ये उनके लिये उचित नहीं थे, अत: उन्हें एकत्रित करके एक गडढ़े में डाल दिया गया, 'सामरी' ने भी (जो मुसलमानों में कुछ भटके हुए गुटों की तरह) भटका हुआ था, कुछ डाला (यह वह मिट्टी थी जिसका स्पष्टीकरण आगे है) फिर उसने सभी आभूषणों को भस्म करके एक प्रकार का बछड़ा बनाया कि जिसमें हवा अन्दर बाहर आने-जाने से एक प्रकार की ध्वनि उत्पन्न होती थी। इस ध्वनि से उसने इस्राईल की सन्तान को भटकाया कि मूसा तो भटक गये हैं कि वह अल्लाह से मिलने के लिए तूर पर्वत पर गये हैं, जबकि तुम्हारा तथा मूसा का पूज्य यह है।

[3]अल्लाह तआला ने उनकी मूर्खता तथा कुबुद्धि का स्पष्टीकरण करते हुए फ़रमाया कि इन बुद्धि के अंधों को इतना भी पता नहीं चला कि यह बछड़ा कोई उत्तर दे सकता है, न लाभ-हानि पहुँचाने का सामर्थ्य रखता है। जबकि देवता तो वही हो सकता है जो

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَاِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِيْ وَاَطِيْعُوْٓا اَمْرِيْ ﴿٩٠﴾

(९०) तथा हारून ने इससे पूर्व ही उनसे कह दिया था कि हे मेरी समुदाय के लोगो ! इस बछड़े से तो तुम्हारा परीक्षण किया गया है, तुम्हारा वास्तविक प्रभु तो अल्लाह दयालु ही है तो तुम सब मेरा अनुकरण करो तथा मेरी बात मानते चले जाओ।[1]

قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى ﴿٩١﴾

(९१) (उन्होंने) उत्तर दिया कि मूसा के आने तक हम तो इसी के पुरोहित रहेंगे।[2]

قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا ﴿٩٢﴾

(९२) (मूसा) कहने लगे हे हारून ! इन्हें भटकता देखते हुए तुम्हें किस बात ने रोक रखा था ?

اَلَّا تَتَّبِعَنِ ؕ اَفَعَصَيْتَ اَمْرِيْ ﴿٩٣﴾

(९३) कि तू मेरे पीछे न आया, क्या तू भी मेरी आज्ञा का अवज्ञाकारी बन बैठा।

قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ ۚ اِنِّيْ خَشِيْتُ اَنْ تَقُوْلَ

(९४) (हारून ने) कहा हे मेरे माँ जाये भाई ! मेरी दाढ़ी न पकड़ तथा सिर के बाल न खींच, मुझे तो केवल यह विचार हुआ कि[3] कहीं

प्रत्येक व्यक्ति की विनती सुनने, लाभ-हानि पहुँचाने तथा आवश्यकता की पूर्ति का सामर्थ्य रखता हो।

[1]आदरणीय हारून ने यह उस समय कहा जब यह समुदाय सामरी के पीछे लगकर बछड़े की पूजा करने में लग गया।

[2]इस्राईलियों को यह गौशाला इतना रूचिकर लगा कि आदरणीय हारून अलैहिस्सलाम की बात की भी चिन्ता नहीं की तथा उसका सम्मान तथा पूजा छोड़ने से इंकार कर दिया।

[3]आदरणीय मूसा समुदाय को मूर्तिपूजा करते देखकर अत्यधिक क्रोधित थे तथा समझते थे कि इसमें उनके भाई हारून के, जिनको अपना प्रतिनिधि बनाकर गये थे ढीलापन का भी हस्तक्षेप है, इसलिए तीव्र क्रोध में हारून की दाढ़ी तथा सिर के बाल पकड़कर उन्हें झिझोंड़ना तथा पूछना प्रारम्भ किया, जिस पर आदरणीय हारून ने उन्हें इतना कठोर व्यवहार करने से रोका।

The Ummah Technology Mission

فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي ﴿٩٤﴾

आप यह न कहें कि तूने इस्राईल की सन्तान में मतभेद उत्पन्न कर दिया तथा मेरी बात की प्रतीक्षा न की।[1]

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يَٰسَٰمِرِيُّ ﴿٩٥﴾

(९५) (मूसा ने) पूछा, 'सामरी' तेरा क्या समाचार है ?

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا۟ بِهِۦ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ أَثَرِ ٱلرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَٰلِكَ سَوَّلَتْ لِي نَفْسِي ﴿٩٦﴾

(९६) (उसने) उत्तर दिया कि मुझे वह वस्तु दिखायी दी, जो उन्हें न दिखायी दी, तो मैंने अल्लाह के भेजे हुए के पदचिन्हों से एक मुट्ठी भर ली, उसे उसमें डाल दिया।[2] इसी प्रकार मेरे हृदय ने मेरे लिए यह बात बना दी।

---

[1] सूरः *आराफ़* में आदरणीय हारून का यह उत्तर उद्धृत है कि समुदाय ने मुझे निर्बल समझा तथा मेरी हत्या के पीछे पड़ गये। (आयत-१४२) जिसका अर्थ यह है कि आदरणीय हारून ने अपना कर्तव्य पूर्णरूप से निभाया तथा बछड़े की पूजा रोकने में शिथिलता तथा आलस्य से काम नहीं लिया। परन्तु परस्थितियों को उस सीमा तक नहीं जाने दिया जिससे गृहयुद्ध छिड़ जाये क्योंकि हारून की हत्या का अर्थ फिर उनके अनुयायियों तथा विरोधियों में आपस में अत्यधिक रक्तपात होता तथा इस्राईल की वंश स्पष्ट रूप से दो गुटों में विभाजित हो जाती, जो एक-दूसरे के प्राणों के प्यासे होते। आदरणीय मूसा चूँकि वहाँ स्वयं उपस्थिति नहीं थे, इसलिए इस परिस्थित से अनजान थे, इसी कारण आदरणीय हारून को उन्होंने कटु वचन कहे। परन्तु फिर स्पष्टीकरण पर मूल अपराधी की ओर मुड़े। इसलिए यह भावार्थ ठीक नहीं (जो कुछ लोग करते हैं) कि मुसलमानों की एकता तथा अखन्डता के लिए मूर्तिपूजन तथा असत्य बातों को भी सहन कर लेना चाहिए। क्योंकि आदरणीय हारून ने न ऐसा किया है, न उनके कथन का यह अर्थ है।

[2] अधिकांश व्याख्याकारों ने الرسول से तात्पर्य जिब्रील लिए हैं तथा अर्थ यह वर्णन किया है कि जिब्रील के घोड़े को गुज़रते हुए सामरी ने देखा तथा उसके पद चिन्हों के नीचे की मिट्टी उसने सम्भाल कर रख ली जिसमें अप्राकृतिक प्रभाव थे। इस मिट्टी को उसने पिघले हुए आभूषणों अथवा बछड़े में डाली तो उसमें से एक प्रकार की ध्वनि निकलनी प्रारम्भ हो गई जो उनको भटकाने का कारण बनी।

The Ummah Technology Mission

قَالَ فَاذْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ
أَنْ تَقُوْلَ لَا مِسَاسَ ۖ وَإِنَّ لَكَ
مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ ۚ وَانْظُرْ إِلٰٓى
إِلٰهِكَ الَّذِيْ ظَلْتَ عَلَيْهِ
عَاكِفًا ۖ لَّنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ
فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٧﴾

(९७) कहा, ठीक है, जा साँसारिक जीवन में तेरा दण्ड यही है कि तू कहता रहे "मुझे न छूना"[1] तथा एक अन्य भी वचन तेरे साथ है, जो तुझ से कदापि न टलेगा, [2] तथा अब तू अपने इस देवता को भी देख लेना, जिस पर पुरोहित बना हुआ था। हम इसे जला देंगे फिर उसे नदी में कण-कण उड़ा देंगे।[3]

إِنَّمَآ إِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ
وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾

(९८) नि:संदेह तुम सबका सत्य पूज्य केवल अल्लाह ही है, उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। उसका ज्ञान सभी चीज़ों पर प्रसारित है।

---

[1]अर्थात आजीवन तू यही कहता रहेगा कि मुझसे दूर रहो, मुझे न छुओ, इसलिए कि उसे स्पर्श करते ही स्पर्श करने वाला भी तथा यह सामरी भी ज्वर से ग्रसित हो जाते। इसलिए जब किसी मनुष्य को देखता तो तुरन्त चीख उठता कि لا مساس। कहा जाता है कि फिर यह मनुष्यों की आबादी से निकलकर वन में चला गया, जहाँ पशुओं के साथ उसका जीवन व्यतीत हुआ तथा इस प्रकार वह शिक्षा का नमूना बना रहा अर्थात लोगों को भटकाने के लिए जो व्यक्ति जितना अधिक प्रयत्न, छल तथा कपट अपनायेगा, दुनिया तथा आख़िरत में उसका दण्ड भी उसी हिसाब से तीव्र तथा अत्यन्त भयानक होगा।

[2]अर्थात आख़िरत की यातना इसके अतिरिक्त है जो हर हाल में भुगतना पड़ेगी।

[3]इससे ज्ञात हुआ कि मूर्तिपूजा के चिन्ह समाप्त करना बल्कि उनके अस्तित्व के चिन्ह मिटा डालना, चाहे उनका सम्बन्ध कितने ही पवित्र व्यक्ति से हो, अपमान नहीं, जैसाकि अहले बिदअत, समाधि पूजक, तथा ताज़िया पूजक बताते हैं, बल्कि यह तो एकेश्वरवाद का उद्देश्य तथा धार्मिक सम्मान की बात है। जैसे इस घटना में उस اثر الرسول को नहीं देखा गया जिससे प्रगट हुए आध्यात्मिक प्रकाश का दर्शन भी किया गया, उसके उपरान्त भी उसकी चिन्ता नहीं की गयी इसलिए कि वह मूर्तिपूजन का साधन बन गया था।

The Ummah Technology Mission

كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ﴿٩٩﴾

(९९) इसी प्रकार हम तेरे[1] समक्ष पूर्व की विगत घटनाओं का वर्णन करते हैं तथा नि:संदेह हम तुझे अपने पास से निर्देश प्रदान कर चुके हैं।[2]

مَنْ اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهٗ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾

(१००) इससे जो मुख फेरेगा,[3] वह नि:संदेह क़ियामत (प्रलय) के दिन अपना भारी बोझ लादे हुए होगा।[4]

خٰلِدِيْنَ فِيْهِ ۭ وَسَاۗءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾

(१०१) जिसमें सदैव ही रहेगा,[5] तथा उनके लिए क़ियामत के दिन (बड़ा) बुरा भार है।

يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ

(१०२) जिस दिन सुर (नरसिंघा)[6] फूँका जायेगा तथा पापियों को हम उस दिन (भय

---

[1]अर्थात जिस प्रकार हमने फ़िरऔन तथा मूसा की कथा का वर्णन किया है, उसी प्रकार पूर्व के नबियों की घटनायें हम आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को वर्णन कर रहे हैं ताकि आप उनसे सूचित रहें, तथा उनमें जो शिक्षा प्राप्त करने के पक्ष हैं, उन्हें लोगों के समक्ष प्रकट करें ताकि लोग उसके प्रकाश में उचित व्यवहार अपना सकें।

[2] ذكر (स्मृति) से तात्पर्य क़ुरआन करीम है जिससे भक्त अपने प्रभु को याद करता, मार्गदर्शन प्राप्त करता तथा मोक्ष तथा आज्ञापालन का मार्ग अपनाता है।

[3]अर्थात इस पर ईमान नहीं लायेगा तथा इसमें जो कुछ लिखित है, उसके अनुसार कर्म नहीं करेगा।

[4]अर्थात महापाप इसलिए कि उसका कर्मपत्र पुण्य से शून्य तथा बुराईयों से भरा हुआ होगा।

[5]जिससे वे बच न सकेगा, न भाग ही सकेगा।

[6] صور से तात्पर्य वह قرن (नरसिंघा) है जिसमें इस्राफ़ील अल्लाह के आदेश से फूँक मारेंगे तो क़ियामत आ जायेगी (मुसनद अहमद-२\१९१) एक अन्य हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "इस्राफ़ील नरसिंघा मुख से लगाये खड़े हैं, माथा झुकाया अथवा मोड़ा हुआ है, प्रभु के आदेश की प्रतीक्षा में हैं कि कब उन्हें आदेश दिया जाये तथा वह फूँक मार दें।" (तिर्मिज़ी अबवाब सिफ़तिल क़ियाम:, बाबु मा जाअ फिस्सूर) आदरणीय इस्राफ़ील की पहली फूँक से सब लोग मर जायेंगे, दूसरी फूँक पर अल्लाह के

The Ummah Technology Mission

الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾

के कारण) नीली-पीली आँखों के साथ घेर लायेंगे।

يَتَخَافَتُونَ بَيْنَهُمْ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٣﴾

(१०३) वे आपस में चुपके-चुपके कह रहे होंगे[1] कि हम तो (संसार में) केवल दस दिन ही रहे।

نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾

(१०४) जो कुछ वे कह रहे हैं, उसकी वास्तविकता की सूचना हमें है, उनमें सब से अति उत्तम मार्ग[2] वाला कह रहा होगा कि तुम केवल एक ही दिन रहे।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ﴿١٠٥﴾

(१०५) वे आप से पर्वतों के सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं तो (आप) कह दें कि उन्हें मेरा प्रभु कण-कण करके उड़ा देगा।

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾

(१०६) तथा धरती को समतल चटियल मैदान करके छोड़ेगा।

आदेश से सभी लोग पुनः जीवित होकर हश्र के मैदान में एकत्रित होंगे। आयत में यही दूसरी फूँक तात्पर्य है।

[1]भय की तीव्रता तथा डर के कारण एक-दूसरे से चुपके-चुपके बातें करेंगे।

[2]अर्थात सबसे अधिक बुद्धिमान तथा चतुर। अर्थात संसार का जीवन उन्हें कुछ दिन बल्कि क्षण दो क्षण का प्रतीत होगा जिस प्रकार अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ مَا لَبِثُوا غَيْرَ سَاعَةٍ﴾

"जिस दिन क़ियामत घटित होगी, काफ़िर सौगन्ध खाकर कहेंगे वह (संसार में) एक क्षण से अधिक नहीं रहे।" (सूरः *अल-रूम*-५५)

यही विषय अन्य विभिन्न स्थानों पर वर्णन किया गया है। जैसे सूरः *फ़ातिर*-३७, *अल-मोमिनून*-११२ से ११४ तक, सूरः *अल-नाज़िआत* आदि। अर्थ यह है कि आख़िरत के स्थाई तथा अनन्त जीवन की अपेक्षा दुनिया को अनन्त प्रधानता न दिया जाये।

The Ummah Technology Mission

لَا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا ﴿١٠٧﴾

(१०७) जिसमें न तो कहीं मोड़ देखेगा, न उँच-नीच।

يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾

(१०८) जिस दिन लोग पुकारने वाले के पीछे चलेंगे,[1] जिसमें कोई त्रुटि न होगी[2] तथा अल्लाह दयालु के समक्ष सभी आवाज़ें धीमी हो जायेंगी, अतिरिक्त खुसर-फुसर के तुझे कुछ भी न सुनाई देगा।[3]

يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ لَهٗ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾

(१०९) उस दिन सिफ़ारिश कुछ काम न आयेगी, परन्तु जिसे रहमान (दयालु) आदेश दे तथा उसकी बात को पसन्द करे।[4]

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا ﴿١١٠﴾

(११०) जो कुछ उनके आगे तथा पीछे है, उसे (अल्लाह ही) जानता है, सृष्टि का ज्ञान उसे घेर

---

[1]अर्थात जिस दिन उँचे-नीचे पर्वत, घाटियाँ, गगनचुम्बी भवन, सब समाप्त हो जायेंगे, समुद्र तथा नदी सूख जायेगी तथा सारी धरती समतल मैदान बन जायेगी। फिर एक आवाज़ आयेगी, जिसके पीछे सभी लोग लग जायेंगे अर्थात जिस ओर वह बुलाने वाला बुलायेगा, जायेंगे।

[2]अर्थात इस बुलाने वाले से इधर-उधर नहीं होंगे।

[3]अर्थात पूर्ण शान्ति होगी केवल पदचाप तथा खुसर फुसुर के कुछ नहीं सुनाई देगा।

[4]अर्थात उस दिन किसी की सिफ़ारिश किसी को कोई लाभ नहीं पहुँचायेगी, अतिरिक्त उनके जिनकी सिफ़ारिश के लिए दयालु आज्ञा देगा तथा वह भी प्रत्येक की सिफ़ारिश नहीं करेंगे, बल्कि केवल उनकी सिफ़ारिश करेंगे जिनकी सिफ़ारिश अल्लाह पसन्द करेगा। तथा यह कौन लोग होंगे ? केवल एकेश्वरवाद के अनुयायी, जिनके लिए सिफ़ारिश करने की अल्लाह तआला आज्ञा देगा। यह विषय क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर वर्णन किया गया है। जैसे सूरः *नज्म*-२६, सूरः *अम्बिया*-२८, सूरः *सबा*-२३, सूरः *अन-नबा*-३८ तथा *आयतुल कुर्सी*।

The Ummah Technology Mission

नहीं सकता ।[1]

وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾

(१११) तथा सभी मुख उस चिरंजीवी (अनादि-नित्य) तथा चिरस्थाई अल्लाह के समक्ष विनम्रता-पूर्वक झुके होंगे, नि:संदेह वह असफल हो गया जिसने अत्याचार लाद लिया ।[2]

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَافُ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾

(११२) तथा जो पुण्य के कार्य करे एवं ईमानदार भी हो तो न उसे अन्याय का भय होगा, न अधिकार हनन का ।[3]

---

[1]इससे पूर्व की आयत में सिफ़ारिश के जो नियम बताये गये हैं, इसमें उसका कारण तथा लक्षण वर्णन कर दिया गया है कि चूँकि अल्लाह के अतिरिक्त किसी को भी किसी बात का पूरा ज्ञान नहीं है कि कौन कितना बड़ा अपराधी है ? तथा वह इस बात का अधिकारी है भी अथवा नहीं कि उसकी सिफ़ारिश की जा सके ? इसलिए इस बात का निर्णय भी अल्लाह तआला ही करेगा कि कौन-कौन लोग नबियों तथा महात्माओं की सिफ़ारिश के अधिकारी हैं। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के अपराध की स्थिति तथा प्रकार को अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता तथा न जान ही सकता है ।

[2]इसलिए कि उस दिन अल्लाह तआला पूर्णत: न्याय करेगा तथा प्रत्येक अधिकार वाले को उसका अधिकार दिलायेगा। यहाँ तक कि एक सींग वाली बकरी ने बिना सींग वाली बकरी पर अत्याचार किया होगा, तो उसका भी बदला दिलायेगा। (सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्रे, मुसनद अहमद भाग २, पृष्ठ २३५) इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसी हदीस में यह फ़रमाया है «لَتُؤَدَّنَّ الْحُقُوقَ إِلَىٰ أَهْلِهَا». "प्रत्येक अधिकार वाले को उसका अधिकार दे दो वरन क़ियामत के दिन देना पड़ेगा ।" एक अन्य हदीस में फ़रमाया : «إِيَّاكُمْ وَالظُّلْمَ؛ فَإِنَّ الظُّلْمَ ظُلُمَاتٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ». "अत्याचार से बचो इसलिए कि अत्याचार क़ियामत के दिन अंधकार का कारण होगा ।" (सहीह मुस्लिम उपरोक्त किताब, बाब तहरीमुज़्ज़ुल्म) सबसे असफल वह व्यक्ति होगा जिसने मूर्तिपूजा का बोझ भी अपने ऊपर लाद रखा होगा, इसलिए की अनेकेश्वरवाद महा अत्याचार भी है तथा क्षमा के योग्य भी नहीं है ।

[3]अन्याय यह है कि उस पर दूसरे के पापों का बोझ भी डाल दिया जाये तथा अधिकार हनन यह है कि पुण्य का बदला कम दिया जाये। यह दोनों बातें वहाँ नहीं होंगी ।

The Ummah Technology Mission

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾

(११३) तथा इसी प्रकार हमने तुझ पर अरबी (भाषा में) क़ुरआन उतारा है तथा विभिन्न प्रकार से उसमें भय का वर्णन किया है ताकि लोग परहेज़गार बन जायें[1] अथवा उनके दिलों में सोच-विचार उत्पन्न करे।[2]

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰۤى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۡ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾

(११४) इस प्रकार अल्लाह (तआला) सर्वश्रेष्ठ सत्य एवं वास्तविक स्वामी है।[3] तू क़ुरआन पढ़ने में शीघ्रता न कर इससे पूर्व कि तेरी ओर जो प्रकाशना (वह्यी) की जाती है वह पूर्ण की जाये।[4] तथा यह कह कि प्रभु! मेरा ज्ञान बढ़ा।[5]

---

[1]अर्थात पाप, निषेधित तथा कुकर्म करने से रूक जायें।

[2]अर्थात आज्ञा पालन तथा सामिप्य प्राप्त करने की रूचि अथवा विगत समुदायों की दुर्दशा तथा घटनाओं से शिक्षा प्राप्त करने की भावना उनमें उत्पन्न कर दे।

[3]जिसका वचन तथा चेतावनी सत्य है, स्वर्ग-नरक सत्य है, तथा उसकी प्रत्येक बात सत्य है।

[4]जिब्रील जब प्रकाशना लेकर आते तथा सुनाते तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी जल्दी-जल्दी साथ ही साथ पढ़ते जाते कि कहीं कुछ भाग भूल न जायें, अल्लाह तआला ने उससे मना किया तथा कहा कि ध्यान से पहले प्रकाशना को सुनें, उसके बाद याद कराना तथा दिल में बिठाना हमारा कार्य है, जैसाकि *सूरः क़ियामः* में आयेगा।

[5]अर्थात अल्लाह तआला से ज्ञान की अधिकता के लिए प्रार्थना करते रहिये, इसमें धर्मगुरूओं के लिए भी शिक्षा है कि धार्मिक निर्णय में पूरे शोध तथा विचार से कार्य करें, शीघ्रता से बचें तथा ज्ञान के अधिकता के साधनों को अपनाने में कमी न करें। इसके अतिरिक्त ज्ञान से तात्पर्य क़ुरआन तथा हदीस का ज्ञान है। क़ुरआन में इसी को ज्ञान कहा गया है तथा उनके जानकार को विद्वान (आलिम)। अन्य चीज़ों का ज्ञान, जो मनुष्य जीवन यापन के लिए प्राप्त करता है, वह सभी कला हैं, शिल्प हैं तथा उद्योग हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस ज्ञान के लिए प्रार्थना करते थे, वह प्रकाशना

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ عَهِدْنَآ إِلَىٰٓ ءَادَمَ مِن قَبْلُ فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ لَهُۥ عَزْمًا ﴿١١٥﴾

(११५) तथा हमने आदम को प्रथम ही बलपूर्वक आदेश दे दिया था, परन्तु वह भूल गया तथा हमने उसमें कोई निश्चय नहीं पाया।[1]

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ ٱسْجُدُوا۟

(११६) तथा जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को दण्डवत (सजदा) करो, तो इब्लीस

तथा रिसालत का ही ज्ञान है जो क़ुरआन तथा हदीस में सुरक्षित है जिसके द्वारा मनुष्य का सम्बन्ध अल्लाह तआला से स्थापित होता है, उसके व्यवहार तथा चरित्र में सुधार आता है तथा अल्लाह की प्रसन्नता तथा अप्रसन्नता का पता चलता है। ऐसी दुआवों में एक दुआ यह भी है जो आप पढ़ा करते थे।

«اللَّهُمَّ انْفَعْنِي بِمَا عَلَّمْتَنِي، وَعَلِّمْنِي مَا يَنْفَعُنِي، وَزِدْنِي عِلْماً، وَالْحَمْدُ لِلهِ عَلَىٰ كُلِّ حَالٍ».

(इब्ने माजा बाबुल इनतेफ़ाअ बिल इल्म वल अमल)

[1] نسيان (भूल जाना) प्रत्येक व्यक्ति की प्रकृति में सम्मिलित है तथा विचार में क्षीणता अर्थात साहस की कमी यह भी मनुष्य की प्रकृति में सामान्य रूप से पाया जाता है। यह दोनों क्षीणता ही शैतान की उत्पन्न की हुई शंकाओं में फँस जाने का कारण होती हैं, यदि इन कमज़ोरियों में अल्लाह के आदेशों से विद्रोह का विचार तथा अल्लाह की अवहेलना की भावना सम्मिलित न हो, तो भूल तथा विचारों की दृढ़ता में कमज़ोरी से उत्पन्न होने वाली त्रुटियाँ नबूअत की पदवी तथा गरिमा के विरूद्ध नहीं क्योंकि इसके उपरान्त मनुष्य तुरन्त लज्जित होकर अल्लाह के सदन में झुक जाता है तथा क्षमा-याचना में लीन हो जाता है, (जैसाकि आदरणीय आदम ने भी किया)। आदरणीय आदम को अल्लाह तआला ने समझाया था कि शैतान तेरा तथा तेरी पत्नी का शत्रु है, यह तुम्हें स्वर्ग से न निकलवा दे। यही बात है जिसे प्रतिज्ञा के शब्द से वर्णन किया गया है। आदम इस प्रतिज्ञा को भूल गये तथा अल्लाह तआला ने एक वृक्ष के निकट जाने अर्थात उससे कुछ खाने से मना किया था। आदरणीय आदम के दिल में यह बात थी कि वह उस वृक्ष के निकट नहीं जायेंगे। परन्तु जब शैतान ने अल्लाह की सौगन्ध खाकर यह बात कही कि इस वृक्ष के फल में यह गुण है कि जो इसे खा लेता है, उसे स्थाई जीवन तथा राज्य प्राप्त हो जाता है तो ध्येय पर अटल न रह सके तथा इस ध्येय में दृढ़ता न होने के कारण शैतानी चाल के शिकार हो गये।

The Ummah Technology Mission

لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿١١٦﴾

के अतिरिक्त सबने किया, उसने साफ इंकार कर दिया।

فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ﴿١١٧﴾

(११७) तो हमने कहा हे आदम ! यह तेरा तथा तेरी पत्नी का शत्रु है, (ध्यान रहे) ऐसा न हो कि वह तुम दोनों को स्वर्ग से निकालवा दे कि तू संकट में पड़ जाये।[1]

اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿١١٨﴾

(११८) यहाँ तो तुझे यह सुविधा है कि न तू भूखा होता है, न नग्न।

وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿١١٩﴾

(११९) तथा न तू यहाँ प्यासा होता है न धूप से कष्ट उठाता है।

فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿١٢٠﴾

(१२०) परन्तु शैतान ने उसे शंका में डाला, कहने लगा कि हे आदम ! क्या मैं तुझे स्थाई जीवन का वृक्ष तथा वह स्वामित्व बतलाऊँ जो कभी पुराना न हो।

---

[1]यहाँ شقا मेहनत तथा परिश्रम के अर्थ में है, अर्थात स्वर्ग में जो खाने-पीने, वस्त्र तथा रहने की सुविधा बिना किसी परिश्रम के प्राप्त हैं स्वर्ग से निकल जाने के उपरान्त इन चारों वस्तुओं की प्राप्ति के लिए मेहनत तथा परिश्रम करना पड़ेगा, जिस प्रकार प्रत्येक मनुष्य को इन मूल आवश्यकताओं की प्राप्ति के लिए परिश्रम करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त मात्र आदम से कहा गया कि तू मेहनत तथा परिश्रम में पड़ जायेगा। दोनों को नहीं कहा गया, यद्यपि वृक्ष का फल आदम तथा हव्वा दोनों ने ही खाये थे। इसलिए कि मुख्य सम्बोधन आदम को ही था। इसके अतिरिक्त मूल आवश्यकताओं की पूर्ति का भार पुरूष ही पर होता है, स्त्री पर नहीं। अल्लाह तआला ने स्त्री को इस मेहनत तथा परिश्रम से सुरक्षित रख कर घर की रानी का पद प्रदान किया है। परन्तु आज स्त्री को "अल्लाह की दया" "दासता की जंजीर" प्रतीत होती है जिससे स्वतन्त्र होने के लिए वह व्याकुल तथा आन्दोलन में व्यस्त है। अफसोस ! शैतानी चाल भी कितनी प्रभावशाली तथा उसका जाल भी कितना लुभावना तथा मनभावी है।

The Ummah Technology Mission

فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۛ وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ﴿١٢١﴾

(१२१) अतः उन दोनों ने उस वृक्ष से कुछ खा लिया फिर उनके गुप्ताँग खुल गये तथा स्वर्ग के पत्ते अपने ऊपर चिपकाने लगे। आदम ने अपने प्रभु की अवज्ञा की तथा बहक गया।[1]

ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿١٢٢﴾

(१२२) फिर उसके प्रभु ने उसे सुसज्जित किया, उसकी क्षमा को स्वीकार किया तथा उसका मार्गदर्शन किया।[2]

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ﴿١٢٣﴾

(१२३) कहा, तुम दोनों यहाँ से उतर जाओ, तुम आपस में एक-दूसरे के शत्रु हो, अब तुम्हारे पास जब कभी भी मेरी ओर से निर्देश पहुँचे, तो जो मेरे निर्देश का पालन करेगा, न वह बहकेगा, न कठिनाई में पड़ेगा।

---

[1]अर्थात वृक्ष का फल खाकर अवज्ञा की, जिसका कुफल यह हुआ कि वह उद्देश्य अथवा सत्यमार्ग से बहक गया।

[2]इससे कुछ लोग भावार्थ निकालते हुए कहते हैं कि आदरणीय आदम से उक्त भूल नबूअत से पूर्व हुई, तथा नबूअत से आपको उसके पश्चात सुशोभित किया गया। परन्तु हमने पिछले पृष्ठ पर इस 'भूल' की जो वास्तविकता वर्णन की है, वह निर्दोषता के प्रतिकूल नहीं रहती। क्योंकि ऐसी भूल तथा त्रुटि जिसका सम्बन्ध आमन्त्रण तथा अल्लाह का संदेश पहुँचाने तथा धर्म विधान से नहीं, अपितु व्यक्तिगत कर्म से हो तथा उसमें भी उसका कारण निश्चय की शिथिलता हो, तो यह वास्तव में वह पाप ही नहीं है जिसके कारण मनुष्य अल्लाह के क्रोध का पात्र बने। इस पर जो पाप शब्द बोला गया है वह मात्र उसकी गरिमा तथा उच्च पद के कारण कि बड़ों की छोटी-सी त्रुटि भी बड़ी समझ ली जाती है, इसलिए आयत का यह अर्थ नहीं कि हमने उसके पश्चात उसे नबूअत के लिए चुन लिया, बल्कि अर्थ यह है कि लज्जा तथा क्षमा-याचना के पश्चात हमने फिर उसे उच्च पद पर आसीन कर दिया, जो पहले उन्हें प्राप्त था। उनको धरती पर उतारने का निर्णय, हमारी इच्छा, ज्ञान तथा राहस्य पर आधारित था। इससे यह न समझ लिया जाये कि यह हमारा क्रोध है, जो आदम पर अवतरित हुआ।

The Ummah Technology Mission

وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ﴿١٢٤﴾

(१२४) तथा जो मेरी याद से मुख फेरेगा, उसका जीवन तंग रहेगा[1] तथा हम क़ियामत के दिन उसे अंधा करके उठायेंगे।[2]

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿١٢٥﴾

(१२५) (वह) कहेगा प्रभु ! मुझे तूने अंधा बनाकर क्यों उठाया ? यद्यपि मैं देखता भालता था।

قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٢٦﴾

(१२६) उत्तर मिलेगा कि इसी प्रकार होना चाहिए था, तूने मेरी आयी हुई आयतों को भुला दिया। इसी प्रकार आज तू भी भुला दिया जाता है।

وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ۭ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿١٢٧﴾

(१२७) तथा हम ऐसा ही बदला प्रत्येक व्यक्ति को दिया करते हैं, जो सीमा उल्लंघन करे तथा अपने प्रभु की आयतों पर ईमान न लाये, तथा नि:संदेह परलोक (आख़िरत) की यातना अत्यधिक कड़ी तथा स्थाई है।

اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿١٢٨﴾

(१२८) क्या उनका मार्गदर्शन इस बात ने भी न किया कि हमने उनसे पूर्व बहुत-सी बस्तियाँ ध्वस्त कर दी हैं, जिनके वासियों के स्थान पर ये चल फिर रहे हैं। नि:संदेह इसमें बुद्धिमानों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं।

---

[1]इस तंगी से कुछ विद्वानों ने क़ब्र की यातना तथा कुछ ने वह चिन्ता, बेचैनी तथा व्याकुलता तात्पर्य ली है जिस में अल्लाह की याद से निश्चिन्त बड़े-बड़े धनवान फँसे रहते हैं।

[2]इससे तात्पर्य वास्तव में आँख से अंधा होना है, अथवा सूझबूझ से अन्धा होना है अर्थात उसे वहाँ कोई ऐसा तर्क नहीं सूझेगा जिसे प्रस्तुत करके वह अग्नि दण्ड से मुक्त हो जाये।

The Ummah Technology Mission

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّ اَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٢٩﴾

(१२९) तथा यदि तेरे प्रभु की बात पूर्वत: निर्धारित तथा समय निर्धारण न होता, तो इसी समय यातना आ चिमटती।[1]

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَ سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَ قَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَ مِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَ اَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿١٣٠﴾

(१३०) तो उनकी बातों पर धैर्य रख तथा अपने प्रभु की पवित्रता एवं महिमा का वर्णन करता रह, सूर्योदय से पूर्व तथा उसके अस्त होने से पूर्व तथा रात्रि के विभिन्न समय में भी तथा दिन के भागों में भी महिमागान करता रह।[2] अति सम्भव है कि तू प्रसन्न

---

[1]अर्थात ये झूठे तथा मक्का के मूर्तिपूजक देखते नहीं कि उनसे पूर्व कई समुदाय गुज़र चुके हैं, जिनके ये उत्तराधिकारी हैं तथा उनके निवासों की ओर से इनका यातायात है, उन्हें हम इसी झुठलाने के कारण नष्ट कर चुके हैं, जिनके भयानक परिणाम में बुद्धिमानों तथा विद्वानों के लिए निशानियाँ हैं। परन्तु ये मक्कावासी अपनी आँखें बन्द किये हुए उन्हीं का अनुकरण कर रहे हैं। यदि अल्लाह तआला ने पूर्व से ही यह निर्णय न किया होता कि वह बिना किसी तर्क पूर्ण किये तथा उस अवधि के पूर्ण होने से पूर्व, जो वह अवसर के लिए किसी समुदाय को प्रदान करता है, किसी को नाश नहीं करता तो तुरन्त अल्लाह का प्रकोप उन्हें आकर चिमटता तथा ये विनाश का स्वाद चख चुके होते। अर्थ यह है कि रिसालत को झुठलाने के उपरान्त यदि उन पर अब तक प्रकोप नहीं आया, तो यह न समझें कि भविष्य में भी नहीं आयेगा, बल्कि अभी उनको अल्लाह की ओर से अवसर प्राप्त है, जैसाकि वह प्रत्येक समुदाय को देता है। कर्म के अवसर की अवधि समाप्त होते ही उनको अल्लाह के प्रकोप से बचाने वाला कोई नहीं होगा।

[2]कुछ व्याख्याकारों के निकट महिमागान से तात्पर्य नमाज़ है तथा वह इससे पाँच नमाज़ें समझते हैं। सूर्योदय से पूर्व फ़ज्र, सूर्यास्त से पूर्व अस्र, रात्रि के क्षण मग़रिब तथा ईशा तथा दिन के किनारों से ज़ोहर की नमाज़ का तात्पर्य है क्योंकि ज़ोहर का समय यह दिन के प्रथम पक्ष का अन्तिम तथा दिन के अन्तिम पक्ष का प्रथम भाग है। तथा कुछ के निकट इन समयों में वैसे ही अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा की जाती है जिसमें नमाज़, क़ुरआन का पाठ, वर्णन तथा प्रार्थना तथा ऐच्छिक इबादत सब सम्मिलित हैं। अर्थ यह है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इन मूर्तिपूजकों के झुठलाने से हताश न हों। अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा करते रहें। अल्लाह तआला जब चाहेगा, उनको दबोच लेगा।

The Ummah Technology Mission

हो जाये।[1]

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ﴿١٣١﴾

(१३१) तथा अपनी दृष्टि कदापि उन वस्तुओं की ओर न दौड़ाना, जो हमने उनमें से विभिन्न लोगों को सांसारिक शोभा के लिये दे रखी हैं ताकि इसमें उनकी परीक्षा कर लें।[2] तेरे प्रभु का प्रदान किया हुआ ही (अति श्रेष्ठ तथा स्थाई है।[3]

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ

(१३२) तथा अपने परिवार के लोगों पर नमाज़ के लिए बल दे तथा स्वयं भी उस पर

---

[1]यह فسبح से सम्बन्धित है। अर्थात इन समय में महिमा का वर्णन करें, यह आशा रखते हुए कि अल्लाह के यहाँ आपको वह स्थान तथा पद प्राप्त हो जायेगा जिससे आप प्रसन्न हो जायेंगे।

[2]यह वही विषय है जो इससे पूर्व *सूरः आले-इमरान*-१९६ तथा १९७, *सूरः अल-हिज्र*-८७ तथा ८८ तथा *अल-कहफ़*-७ आदि में वर्णित हुआ है।

[3]इससे तात्पर्य आख़िरत का बदला तथा पुण्य है, जो दुनिया के सुख-सुविधा से श्रेष्ठ है तथा इसके सापेक्ष स्थाई भी। हदीस में आता है कि आदरणीय उमर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए देखा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बिना बिस्तर की चटाई पर लेटे हुए हैं, तथा घर की सामग्री की यह स्थिति है कि घर में चमड़े की दो वस्तुओं के अतिरिक्त कुछ नहीं। आदरणीय उमर की आँखों से अश्रु प्रवाहित हो गये। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, उमर! क्या बात है, रोते क्यों हो? उत्तर दिया, हे रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! कैसर (रोम का राजा) तथा किसरा (ईरान का राजा) किस प्रकार सुख-सुविधा से पूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का, इस बात के उपरान्त कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ हैं, यह स्थिति है? फ़रमाया, उमर! "क्या तुम अब तक संदेह में हो? यह वे लोग हैं जिनको सुख-सुविधा की वस्तुयें संसार में ही दे दी गयी हैं।" अर्थात आख़िरत में उनके लिए कुछ नहीं होगा। (सहीह बुख़ारी सूरतुत-तहरीम तथा सहीह मुस्लिम बाबुल ईला)

The Ummah Technology Mission

عَلَيْهَا ؕ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ﴿١٣٢﴾

दृढ़ रह,[1] हम तुझसे जीविका नहीं माँगते, अपितु हम स्वयं तुझे जीविका प्रदान करते हैं। अन्त में सर्व सम्मान सदाचारियों का ही होता है।

وَقَالُوْا لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِي الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٣٣﴾

(१३३) तथा (उन्होंने) कहा कि यह (नबी) हमारे लिए अपने प्रभु की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं लाया ?[2] क्या उनके पास पूर्व की किताबों की स्पष्ट निशानियाँ नहीं पहुँचीं ?[3]

وَلَوْ اَنَّاۤ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْلَاۤ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ﴿١٣٤﴾

(१३४) तथा यदि हम इससे पूर्व ही[4] उन्हें प्रकोप से ध्वस्त कर देते, तो अवश्य यह कह उठते कि हे हमारे प्रभु ! तूने हमारे पास अपना रसूल (ईशदूत) क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों का पालन करते, इससे पूर्व कि

---

[1]इस सम्बोधन में पूरा मुस्लिम समुदाय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायी है। अर्थात प्रत्येक मुसलमान के लिए अनिवार्य है कि वह स्वयं भी नमाज़ नियमित रूप से पढ़े तथा अपने परिवार वालों को भी नमाज पढ़ने पर बल दे।

[2]अर्थात उनकी इच्छानुसार निशानी, जैसे समूद के लिए ऊँटनी प्रकट की गयी थी।

[3]इनसे तात्पर्य तौरात, इंजील तथा ज़बूर आदि है। अर्थात क्या उनमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुणों को प्रदर्शित नहीं किया गया है, जिनसे उनकी नबूअत की पुष्टि होती है। अथवा यह अर्थ है कि क्या उनके पास पिछले समुदायों के यह हालात नहीं पहुँचे कि उन्होंने जब अपनी इच्छानुसार चमत्कार की माँग की तथा वह उनको दिखा दिया गया, परन्तु उसके उपरान्त वे ईमान नहीं लाये तो उन्हें नाश कर दिया गया।

[4]तात्पर्य दुनिया के अन्तिम पैग़म्बर आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।

The Ummah Technology Mission

हम अपमानित होते तथा धिक्कारे जाते।

قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ﴿١٣٥﴾

(१३५) कह दीजिए कि प्रत्येक परिणाम की प्रतीक्षा में है,[1] तो तुम भी प्रतीक्षा में रहो। अभी-अभी पूर्णत: जान लोगे कि सीधे मार्ग वाले कौन हैं तथा कौन मार्ग प्राप्त किये हुए हैं ?[2]

The Ummah Technology Mission

[1]अर्थात मुसलमान तथा काफ़िर दोनों इसकी प्रतीक्षा में हैं कि कुफ़्र विजयी होता है अथवा इस्लाम विजयी होता है ?

[2]इस का ज्ञान तुम्हें इस से हो जायेगा कि अल्लाह की सहायता से सफल तथा सम्मानित कौन होता है ? अन्तत: यह सफलता मुसलमानों के पक्ष में आयी, जिस से यह स्पष्ट हो गया कि इस्लाम ही सीधा मार्ग है तथा उसके अनुयायी ही मार्गदर्शन प्राप्त हैं।

سُوْرَةُ الْأَنْبِيَآءِ

सूरतुल अम्बिया-२१

सूर: ाफ़ज्मीद-ाज मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें एक सौ बारह आयतें तथा सात रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ, जो अत्यन्त कृपालु तथा अत्यन्त दयालु है।

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ①

(१) लोगों के हिसाब का समय निकट आ गया है,[1] फिर भी वे अचेत (अवस्था में) मुख फेरे हुए हैं।[2]

مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ②

(२) उनके पास उनके प्रभु की ओर से जो भी नई-नई शिक्षायें आती हैं, उसे वे खेलकूद में ही सुनते हैं।[3]

لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ

(३) उनके हृदय पूर्णत: निश्चेत हैं तथा उन अत्याचारियों ने चुपके-चुपके काना-फूसीयाँ कीं कि वह तुम ही जैसा मानव पुरूष है,

---

[1]हिसाब के समय का अर्थ प्रलय है, जो प्रत्येक क्षण निकट हो रहा है, तथा प्रत्येक वह वस्तु जो आने वाली है निकट है, प्रत्येक व्यक्ति की मृत्यु स्वयं उसके लिए प्रलय है। इसके अतिरिक्त व्यतीत हुए समय की अपेक्षा प्रलय निकट है क्योंकि जितना समय व्यतीत हो चुका, शेष रहने वाला समय उससे कम है।

[2]अर्थात उसकी तैयारी से निश्चिन्त, माया-मोह में लिप्त तथा ईमान की अभियाचनाओं से अचेत हैं।

[3]अर्थात क़ुरआन जो समय-समय पर स्थितियों तथा आवश्यकताओं के अनुरूप नया-नया अवतरित होता रहता है, वह यद्यपि उन्हीं की शिक्षा के लिए अवतरित होता है, परन्तु वे उसे इस प्रकार सुनते हैं, मानो वह उससे उपहास एवं खेल कर रहे हों, अर्थात उसमें चिन्तन, ध्यान तथा विचार नहीं करते।

The Ummah Technology Mission

مِّثْلُكُمْ ۚ أَفَتَأْتُونَ السِّحْرَ وَأَنتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٣﴾

फिर क्या कारण है जो तुम आँखों देखे जादू में फँस जाते हो।[1]

قَالَ رَبِّي يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٤﴾

(४) (पैग़म्बर ने) कहा, मेरा प्रभु प्रत्येक बात को जो आकाश एवं धरती में है, भली प्रकार से जानता है, वह अति सुनने वाला तथा जानने वाला है।[2]

بَلْ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ بَلِ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۖ فَلْيَأْتِنَا بِآيَةٍ كَمَا أُرْسِلَ الْأَوَّلُونَ ﴿٥﴾

(५) (इतना ही नहीं) बल्कि यह तो कहते हैं कि यह क़ुरआन काल्पनिक स्वप्नों का संग्रह है, बल्कि उसने स्वयं इसे गढ़ लिया है, बल्कि यह कवि है,[3] वरन हमारे समक्ष यह कोई ऐसी निशानी लाते जैसे कि पूर्व कालिक पैग़म्बर भेज गये थे।[4]

---

[1]अर्थात नबी का मानव पुरूष होना वे स्वीकार नहीं कर सकते, फिर भी यह कहते हैं कि तुम देख नहीं रहे कि यह जादूगर है, तुम उसके जादू को देखते-भालते क्यों फँसते हो ?

[2]वह प्रत्येक भक्त की बातें सुनता है तथा सभी के कर्मों को भली प्रकार से जानता है, तुम जो झूठ बकते हो उसे सुन रहा है तथा मेरी सत्यता को एवं जो संदेश तुम्हें दे रहा हूँ, उसकी यर्थाता से भली प्रकार परिचित है।

[3]इन कानाफूसी करने वाले अत्याचारियों ने इसी पर बस नहीं किया, अपितु यह भी कहा कि यह क़ुरआन तो उलझे स्वप्नों की तरह गंदे विचारों का संग्रह है, बल्कि उसकी अपनी कृति है, बल्कि यह कवि है, तथा क़ुरआन मार्गदर्शक किताब नहीं, कविता है। अर्थात उनको किसी एक बात पर संतोष नहीं है। प्रतिदिन एक नयी चाल चलते तथा नये-नये आक्षेप लगाते हैं।

[4]अर्थात जिस प्रकार समूद के लिए ऊँटनी, मूसा के लिए छड़ी तथा उनका उज्जवल प्रकाशित हाथ आदि।

The Ummah Technology Mission

مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝٦

(६) इनसे पूर्व जितनी बस्तियाँ हमने ध्वस्त कीं ईमान से वंचित थीं, तो क्या अब यह ईमान लायेंगे ?[1]

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٧

(७) तुमसे पूर्व भी जितने पैग़म्बर हमने भेजे सभी मानव पुरूष थे, [2] जिन की ओर हम प्रकाशना (वह्यी) अवतरित करते थे, तो तुम ज्ञान[3] वालों से पूछ लो यदि स्वयं तुम्हें ज्ञान न हो।

---

[1]अर्थात उन से पूर्व हम ने जितनी बस्तियाँ नाश कीं यह नहीं हुआ कि उन्होंने अपनी इच्छानुसार चमत्कार देखने के पश्चात ईमान ले आयी हों, बल्कि चमत्कार देख लेने के पश्चात भी ईमान नहीं लायीं जिसके कारण उनका विनाश उनका भाग्य बन गया। तो क्या मक्का वासियों को उनकी इच्छानुसार कोई चमत्कार दिखा दिया जाये तो वे ईमान ले आयेंगे ? कदापि नहीं, यह फिर भी अविश्वास एवं विरोधी मार्ग पर उसी प्रकार अग्रसर रहेंगे।

[2]अर्थात सभी नबी पुरूष थे, न कोई मानव जाति के अतिरिक्त कोई नबी आया, तथा न कोई पुरूष के अतिरिक्त, अर्थात नबूअत मनुष्यों के साथ तथा मनुष्यों में पुरूषों के साथ विशेष रूप से रही है। इससे ज्ञात हुआ कि कोई महिला नबी नहीं हुई, इसलिए कि नबूअत भी उन कर्तव्यों में से है, जो महिला के भौतिक तथा प्राकृतिक कर्मों की परिधि से बाहर है।

[3]अहले ज़िक्र (ज्ञानी लोग) से तात्पर्य किताब वाले लोग हैं, जो पूर्व की आकाशीय पुस्तकों का ज्ञान रखते थे, उनसे पूछ लो कि पूर्व कालिक नबियों में जो गुज़र चुके हैं, वह मनुष्य थे अथवा अन्य ? वे तुम्हें बतायेंगे कि सभी मनुष्य थे। इससे कुछ लोग "अनुकरण (तक़लीद)" का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं, जो उचित नहीं। "अनुकरणवाद" में क्या होता है ? केवल एक विशेष व्यक्ति तथा उससे सम्बन्धित एक निर्धारित चिन्तन को मूल बनाया जाये तथा उसी के अनुसार कार्य किया जाये। दूसरा यह कि बिना किसी प्रमाण के उसकी बात को स्वीकार कर लिया जाये। जबकि आयत में "अहले ज़िक्र" से अर्थ कोई विशेष व्यक्ति नहीं है, बल्कि प्रत्येक ज्ञानी है, जो तौरात तथा इंजील (बाईबिल) का ज्ञान रखता था। इससे व्यक्तिगत अनुकरण का खन्डन होता है ? इसमें तो ज्ञानियों से पूछने को कहा गया है, जो सर्वसाधारण के लिए अनिवार्य है, जिससे किसी को इंकार नहीं हो सकता, न किसी एक व्यक्ति के दामन को पकड़ लेने का आदेश। इसके अतिरिक्त तौरात तथा इंजील आकाशीय पुस्तकें थीं अथवा किसी

The Ummah Technology Mission

وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝٨

(८) तथा हमने उन्हें ऐसे शरीर न बनाये कि वे भोजन न करें तथा न वह सदा जीवित रहने वाले थे।[1]

ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ۝٩

(९) फिर हमने उनसे किये हुए सभी वचन सत्य कर दिखाये, उन्हें तथा जिन-जिन को हमने चाहा मुक्ति प्रदान की तथा सीमा उल्लंघन करने वालों का विनाश कर दिया।[2]

لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝١٠

(१०) नि:संदेह हम ने तुम्हारी ओर किताब अवतरित की है, जिसमें तुम्हारे लिए शिक्षा है। क्या फिर भी तुम बुद्धि का प्रयोग नहीं करते ?

وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝١١

(११) तथा बहुत सी बस्तियाँ हमने ध्वस्त कर दीं,[3] जो अत्याचारी थीं तथा उनके पश्चात हम ने अन्य समुदाय पैदा किये।

व्यक्ति के अपने विचार? यदि तौरात तथा इंजील आकाशीय पुस्तकें थीं, तो अर्थ यह हुआ कि ज्ञानियों के द्वारा आकाशीय पुस्तकों के नियम ज्ञात करें, जो आयत का उचित अर्थ है। तथा यदि वह किसी एक विशेष व्यक्ति, गुरू, तथा उसके शिष्यों के उपदेश की संग्रह थी तो फिर अवश्य वैचारिक (फ़िक़ही) अनुकरणवाद (तक़लीद) का भावार्थ इस आयत से निकल आता है, परन्तु क्या आकाशीय पुस्तकें तथा मनुष्यों द्वारा रचित वैचारिक पुस्तकें, दोनों एक ही स्थान ग्रहण करने के योग्य हैं ?

[1]बल्कि वे भोजन भी करते थे तथा मृत्यु का स्वाद चख कर चिरस्थायी लोक को भी गये। ये नबियों के मनुष्य होने के प्रमाण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

[2]अर्थात वचन के अनुसार नबियों को तथा ईमान वालों को मोक्ष प्रदान की तथा सीमा उल्लंघन करने वाले नास्तिकों (काफ़िरों) तथा मूर्तिपूजकों को हमने नाश कर दिया।

[3] قَصَمْ का अर्थ है तोड़-फोड़ कर रख देना तथा كَمْ अधिकता वाची रूप है, अर्थात बहुत सी बस्तियों को हमने ध्वस्त कर दिया, तोड़-फोड़ कर रख दिया, जिस प्रकार अन्य स्थान पर कहा गया है कि "नूह के समुदाय के पश्चात कितनी ही बस्तियों को हमने नाश कर दिया।" (सूरः *बनी-इस्राईल*-१७)

The Ummah Technology Mission

فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ﴿١٢﴾

(१२) जब उन लोगों ने हमारे प्रकोप का संवेदन कर लिया, तो उससे (प्रकोप से) भागने लगे।[1]

لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿١٣﴾

(१३) भाग-दौड़ न करो[2] तथा जहाँ तुम्हें सुख प्रदान किया गया था, वहीं वापस लौटो तथा अपने घरों की ओर जाओ,[3] ताकि तुमसे प्रश्न तो कर लिया जाये।[4]

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤﴾

(१४) वे कहने लगे हमारा बुरा हो वस्तुतः हम अत्याचारी थे।

فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى

(१५) फिर तो उनका यही कथन रहा,[5] यहाँ तक कि हमने उन्हें जड़ से कटी हुई खेती तथा

---

[1]संवेदन का अर्थ ज्ञान इन्द्रियों से जानना। अर्थात जब उन्होंने प्रकोप अथवा उसके लक्षणों को आते हुए आँखों से देख लिया, अथवा कड़क, गर्जन सुनकर ज्ञात कर लिया, तो उससे बचने के लिए भागने का मार्ग ढूँढ़ने लगे। ركض का अर्थ है आदमी का घोड़े आदि पर बैठ कर उसको दौड़ाने के लिए ऐड़ लगाना। यहीं से ये भागने के अर्थ में प्रयोग होने लगा।

[2]यह फ़रिश्तों ने आकाशवाणी की अथवा ईमानवालों ने हँसकर कहा।

[3]अर्थात जो सुख तथा सुविधायें तुम्हें प्राप्त थीं, जो तुम्हारे अविश्वास एवं अत्याचार का कारण थीं तथा वे घर जिन में तुम रहते थे, जिन की सुन्दरता एवं सुदृढ़ता पर तुम्हें गर्व था उनकी ओर पल्टो।

[4]तथा प्रकोप के पश्चात तुम्हारा समाचार तो पूछ लिया जाये कि तुम पर यह क्या बीती ? किस प्रकार बीती तथा क्यों बीती ? यह प्रश्न उपहास स्वरूप पूछे गये हैं, वरन विनाश के शिकंजे में कसे जाने के पश्चात वह उत्तर देने के योग्य ही कब रहते थे ?

[5]अर्थात जब तक जीवन के लक्षण उनके अन्दर रहे, वे अपने अत्याचार को स्वीकार करते रहे।

The Ummah Technology Mission

جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ﴿١٥﴾

बुझी पड़ी अग्नि (की भाँति) कर दिया।[1]

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿١٦﴾

(१६) हमने आकाश तथा धरती एवं उनके मध्य की वस्तुओं को कुछ आमोद-प्रमोद के लिए नहीं बनाया।[2]

لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٧﴾

(१७) यदि हम इसी प्रकार क्रीड़ा खेल चाहते तो उसे अपने पास से ही बना लेते,[3] यदि हम ऐसा करने वाले ही होते।[4]

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۭ وَلَكُمُ

(१८) अपितु हम सत्य को झूठ पर फेंक मारते हैं, तो सत्य, असत्य का सिर तोड़ देता है तथा वह उसी समय ध्वस्त हो जाता है।[5] तुम

---

[1] حَصِيْدٌ कटी हुई खेती तथा خُمُودٌ अग्नि के बुझ जाने को कहते हैं। अन्ततः वे कटी हुई खेती की भाँति हो गये तथा बुझी हुई अग्नि की भाँति राख का ढेर हो गये, कोई शक्ति, बल तथा संवेदन उनके अन्दर न रही।

[2] बल्कि उसके कई उद्देश्य तथा कारण है, जैसे भक्त मेरी महिमा का वर्णन तथा कृतज्ञता करें, पुण्य कार्य करने वालों को उनकी भलाईयों का बदला तथा बुरों को बुराई का दण्ड दिया जाये आदि।

[3] अर्थात अपने पास ही कुछ चीजें खेल के लिए बना लेते और अपनी अभिलाषा पूरी कर लेते। इतने विशाल विश्व ब्रह्माण्ड को बनाकर और फिर उसमें सुधी-बुद्धि रखने वाले प्राणी को बनाने की क्या आवश्यकता थी ?

[4] इसके दूसरे अनुवाद "हम करने वाले ही नहीं" से "यदि हम करने वाले ही होते" अरबी भाषा के अनुसार अधिक उपयुक्त है।

[5] अर्थात दुनिया को बनाने के उद्देश्यों में से एक महत्वपूर्ण विशेष उद्देश्य यह है कि सत्य और असत्य के बीच जो द्वन्द है और भलाई और बुराई के बीच जो लड़ाई है, उसमें सत्य और भलाई को विजय प्राप्त कराकर असत्य और बुराई पर काबू रखें। अर्थात हम सत्य को असत्य पर और अच्छाई को बुराई पर मारते हैं, जिससे असत्य और बुराई समाप्त हो जाये। دَمْغٌ सिर की ऐसी चोट को कहते हैं, जो दिमाग तक पहुँच जाये। زَهْقٌ के अर्थ हैं समाप्त, नष्ट अथवा मर जाना।

The Ummah Technology Mission

الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾

जो बातें बनाते हो, वे तुम्हारे लिए विनाशकारी है।[1]

وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ﴿١٩﴾

(१९) तथा आकाशों एवं धरती में जो कुछ है, उसी (अल्लाह) का है।[2] तथा जो उसके पास हैं[3] वे उसकी इबादत से न अहंकार करते तथा न थकते हैं।

يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿٢٠﴾

(२०) वे दिन-रात उसकी पवित्रता का वर्णन करते हैं, तथा तनिक भी आलस्य नहीं करते।

اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ﴿٢١﴾

(२१) उन लोगों ने धरती (की सृष्टि में) से जिन्हें पूज्य बना रखा है, क्या वह जीवित कर देते हैं ?[4]

---

[1]अर्थात प्रभु की ओर जो इस प्रकार की बे सिर-पैर की बातें सम्बन्धित करते हो अथवा उसके विषय में उत्पन्न करते हो (उदाहरत: यह जीवन एक खेल है, एक खिलाड़ी का बेकार शौक है, आदि), यह तुम्हारे विनाश का कारण है, क्योंकि खेल-तमाशा समझने के कारण तुम सत्य से दूर चले गये और असत्य को अपनाने में कोई चिन्ता और डर का आभास भी नहीं करते जिसका अन्तिम परिणाम तुम्हारा विनाश एवं बरबादी ही है।

[2]सब उसी के अधीन और उसी के दास हैं। जब तुम किसी दास को अपना पुत्र और किसी दासी को अपनी पत्नी बनाने के लिए तैयार नहीं होते, फिर अल्लाह तआला अपने अधीनस्थ और दासों में से कुछ को पुत्र और कुछ को पत्नी किस प्रकार बना सकता है ?

[3]इससे अभिप्राय फ़रिश्ते हैं, वे भी अल्लाह के दास और भक्त हैं। इन शब्दों से उनकी प्रतिष्ठा तथा सम्मान प्रदर्शित होती है कि वे अल्लाह के समीपस्थ हैं। उसकी (अल्लाह की) पुत्रियाँ नहीं हैं, जैसाकि मुशरिक लोगों का विश्वास (अक़ीदा) था।

[4] استفهام (प्रश्न) इंकार के लिए है, अर्थात नहीं कर सकते, फिर वह उनको जो किसी प्रकार की शक्ति नहीं रखते, अल्लाह का साझी क्यों बनाते हैं, और उनकी इबादत (आराधना) क्यों करते हैं ?

The Ummah Technology Mission

لَوْ كَانَ فِيهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٢٢﴾

(२२) यदि आकाश तथा धरती में अल्लाह के अतिरिक्त अन्य भी पूज्य होते तो यह दोनों उलट-पलट हो जाते।[1] बस अल्लाह अर्श का प्रभु प्रत्येक उस गुण से शुद्ध है, जो ये मूर्तिपूजक वर्णन करते हैं।

لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ﴿٢٣﴾

(२३) वह अपने कार्यों के लिए (किसी के समक्ष) उत्तरदायी नहीं तथा सभी (उसके समक्ष) उत्तरदायी हैं।

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٤﴾

(२४) क्या उन लोगों ने अल्लाह के अतिरिक्त अन्य आराध्य बना रखे हैं उनसे कह दो, लाओ अपना प्रमाण प्रस्तुत करो। यह है मेरे साथ वालों की पुस्तक तथा मुझसे पूर्व वालों का प्रमाण।[2] बात यह है कि उनमें अधिकाँश सत्यता से अनभिज्ञ हैं, इसी कारण विमुख हैं।

---

[1] अर्थात यदि वास्तव में आकाश और धरती के दो ईश्वर होते तो इस विश्व के अधिकारी दो शक्तियाँ होतीं, दो का विचार, बुद्धि तथा इच्छा कार्य करती और जब दो की इच्छा और निर्णय विश्व में चलता तो यह विश्व की व्यवस्था रह ही नहीं सकती थी, जो आदि से विना बाधा के चला आ रहा है। क्योंकि दोनों की इच्छा में परस्पर टकराव होता तथा दोनों की चाहत एक-दूसरे के विपरीत दिशा में प्रयोग होती, जिसका परिणाम बिखराव और विनाश के रूप में उत्पन्न होता, और अब तक ऐसा नहीं हुआ, तो इसका साफ अर्थ यह है कि विश्व में केवल एक ही शक्ति है, जिसकी इच्छा और आदेश चलता है, जो कुछ भी होता है, सिर्फ उसी के आदेश पर होता है। उसके दिये हुए को कोई रोक नहीं सकता और जिससे वह अपनी दया रोक ले, उसको देने वाला कोई नहीं।

[2] ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ से क़ुरआन और दूसरे ذِكْرُ से पहले की आसमानी किताबें तात्पर्य हैं। अर्थात क़ुरआन और उससे पहले की अन्य आसमानी किताबों में, केवल एक प्रभु के पूज्य एवं पालनहार होने का वर्णन मिलता है, परन्तु यह मुशरिक लोग इस सत्य को नहीं स्वीकार करते और यथापूर्वक इस एकेश्वरवाद से मुहँ मोड़े हुए हैं।

The Ummah Technology Mission

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿٢٥﴾

(२५) और हमने तुम से पहले जो रसूल (संदेशवाहक) भी भेजा उसकी ओर यही वह्यी (ईशवाणी) अवतरित (नाज़िल) की कि मेरे अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं, तो तुम सब मेरी ही इबादत (उपासना) करो।[1]

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٢٦﴾

(२६) और (मिश्रणवादी) कहते हैं रहमान (कृपालु) की औलादें हैं (ग़लत है) वह पवित्र है। वरन वे (जिन्हें ये पुत्र समझ रहे हैं) उसके सम्मानित भक्त हैं।

لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

(२७) उसके (अल्लाह के) समक्ष बढ़कर नहीं बोलते, और उसके आदेशों पर कार्यरत हैं।[2]

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿٢٨﴾

(२८) वह उनके पूर्व तथा पश्चात की सभी स्थितियों से अवगत है, और वे किसी की भी सिफ़ारिश नहीं करते सिवाय उसके जिससे वह (अल्लाह) प्रसन्न हो।[3] वे तो स्वयं कंपित तथा भयभीत रहते हैं।

وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ؕ

(२९) और उन में से कोई कह दे कि अल्लाह के अतिरिक्त मैं इलाह (पूजनीय) हूँ, तो हम

---

[1]अर्थात सभी पैग़म्बर यही अल्लाह के एक होने का संदेश लेकर आये।

[2]इसमें मुशरिकों के विचारों का खण्डन होता है, जो फ़रिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ कहा करते थे, वह पुत्रियाँ नहीं हैं, उसके सम्मानित बन्दे (फ़रिश्ते) और उसके आज्ञाकारी हैं।

[3]इससे विदित हुआ कि नबियों और पुनीत लोगों (स्वालेह लोग) के अतिरिक्त फ़रिश्ते भी सिफ़ारिश करेंगे। सही हदीस से भी इसका समर्थन मिलता है। परन्तु यह सिफ़ारिशें उन्हीं के प्रति होंगी जिनके लिए अल्लाह तआला चाहेगा। तथा प्रत्यक्ष बात है कि अल्लाह तआला यह सिफ़ारिश अपने अवज्ञाकारी भक्तों के लिए नहीं, अपितु केवल पापी परन्तु आज्ञाकारी लोगों अर्थात ईमान वालों व एकेश्वरवादियों के लिए पसन्द फ़रमायेगा।

The Ummah Technology Mission

كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾

उसे नरक का दण्ड दें।[1] हम अत्याचारियों को इसी प्रकार दण्ड देते हैं।

اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ۭ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاۗءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۭ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٠﴾

(३०) क्या काफ़िरों ने यह नहीं देखा[2] कि (ये) आकाश और धरती (सब के सब) आपस में मिले हुए थे, फिर हमने उन्हें अलग-अलग किया।[3] और हर जीवित को हमने पानी से पैदा किया।[4] क्या यह लोग फिर भी विश्वास नहीं करते ?

---

[1]अर्थात इन फ़रिश्तों में से भी कोई ईलाह (पूजनीय) होने का दावा करे, तो उसको भी नरक में फेंक देंगे। यह प्रतिबंधित वाक्य है, जिसका होना आवश्यक नहीं। इससे तात्पर्य शिर्क को नकारना और तौहीद का समर्थन है। जैसे

﴿ قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَاَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ ﴾

"(हे नबी) कहो, यदि रहमान (कृपाशील) की कोई औलाद हो, तो सबसे पहले मैं उपासना (इबादत) करने वाला हूँगा।" (सूरः ज़ुख़ुरफ़-८१)

﴿ لَىِٕنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ ﴾

"(हे नबी) ! यदि तुम ने भी शिर्क किया, तो तेरे सारे कर्म बेकार बरबाद हो जायेंगे।" (सूरः अल-ज़ुमर-६५)

यह सभी बातें प्रतिबंधित हैं जिनका होना अनावश्यक है।

[2]इसका अर्थ आँख से देखना नहीं, अपितु दिल की आँखों से देखना है। अर्थात क्या उन्होंने सोच-विचार नहीं किया अथवा उन्होंने जाना नहीं ?

[3] رَتْقٌ के अर्थ है बन्द और فتقٌ का अर्थ है फाड़ना, खोलना अलग-अलग करना। अर्थात आकाश और धरती आदिकाल में आपस में एक-दूसरे से एक साथ मिले हुए थे। हमने उनको एक-दूसरे से अलग किया। आकाश को ऊपर कर दिया, जिससे वर्षा होती है, और धरती को अपनी जगह पर रहने दिया, और वह पैदावार के योग्य हो गयी।

[4]इसका अर्थ वर्षा और स्रोतों के पानी है। तब भी स्पष्ट रहे कि इससे तरावट होती है और हर जीवित को नवजीवन देता है और यदि इसका अर्थ वीर्य है, तो इसमें भी कोई कठिनाई नहीं, क्योंकि हर जीवित के अस्तित्व का कारण वह पानी की बूँदें है, जो पुरुष की पीठ से निकलता है और स्त्री के गर्भाशय में जाकर एक नये प्राणी को जन्म देने का कारण बनता है।

The Ummah Technology Mission

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣١﴾

(३१) और हम ने धरती पर पर्वत बना दिये, ताकि वह सृष्टि को हिला न सके।[1] और हमने इसमें उनके बीच विस्तृत मार्ग बना दिये[2] ताकि वह मार्ग प्राप्त कर सकें।

وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ﴿٣٢﴾

(३२) और आकाश को हमने एक सुरक्षित छत बनाया है।[3] परन्तु वह लोग उसकी निशानियों पर ध्यान नहीं देते।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ

(३३) और वही (अल्लाह) है जिसने रात और दिन एवं सूर्य और चाँद को बनाया।[4] उनमें

---

[1]अर्थात यदि धरती पर यह बड़े-बड़े पहाड़ न होते, धरती सदैव हिलती-डुलती रहती, जिसके कारण सभी जीव-जन्तु के लिए इस धरती पर घर और रास्ते न बन सकते। हमने धरती पर पहाड़ों की माला रखकर इसे कम्पन से रोक दिया।

[2]इसका अर्थ धरती अथवा पहाड़ है। अर्थात धरती पर चौड़े-चौड़े रास्ते बना दिये अथवा पर्वतमाला के बीच घाटी बनाकर धरती के दूसरे भाग में जाने के लिए मार्ग बनाये। يهتدون का एक दूसरा भावार्थ यह भी हो सकता है कि वह इन मार्गों से यात्रा करके अपने जीवनयापन व्यवस्था अथवा आवश्यकतायें पूरी कर सकें।

[3] سقفا محفوظاً धरती के लिए सुरक्षित छत जिस प्रकार से टेन्ट और कुब्बे की छत होती है। अथवा इन अर्थों में सुरक्षित कि उसको धरती पर गिरने से रोक रखा है, वरन यदि आकाश धरती पर गिर जाये, तो धरती का सारा नियम अस्त-व्यस्त हो सकता है। अथवा शैतानों से सुरक्षित। जैसाकि सूरः *अल-हिज्र* की आयत संख्या १७ में फ़रमाया :

﴿وَحَفِظْنَاهَا مِن كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ﴾

"तथा उसे हमने प्रत्येक धिक्कारे शैतान से सुरक्षित किया।"

[4]अर्थात रात को आराम और दिन को काम के लिए बनाया, सूरज को दिन की निशानी और चाँद को रात की निशानी बनाया, ताकि महीनों और सालों का हिसाब लगाया जा सके, जो मनुष्य के लिए विशेष आवश्यकता है।

The Ummah Technology Mission

كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٣٣﴾

से सभी अपने-अपने कक्ष में तैर रहे हैं।[1]

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّن قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۖ أَفَإِن مِّتَّ فَهُمُ الْخَالِدُونَ ﴿٣٤﴾

(३४) और आपसे पहले हमने किसी भी व्यक्ति को नित्यता, नहीं दी। फिर क्या यदि आप मर गये, तो यह सदा के लिए रह जायेंगे ?[2]

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَنَبْلُوكُم بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) हर जीव को मौत का स्वाद चखना है। और हम परीक्षा के लिए तुम्हें बुराई-भलाई में डालते हैं।[3] और तुम सब हमारी तरफ पलटकर आओगे।[4]

وَإِذَا رَآكَ الَّذِينَ كَفَرُوا

(३६) और जिन लोगों ने कुफ़्र (अविश्वास) किया, वे जब तुमको देखते हैं, तो बस

---

[1]जिस प्रकार से तैरने वाला जल के तल पर तैरता है, उसी प्रकार से चाँद और सूरज अपने कक्ष में अपनी निर्धारित गति से गतिमान हैं।

[2]यह काफ़िरों के उत्तर में है जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बारे में कहते थे कि एक दिन आप को मर ही जाना है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मृत्यु तो हर व्यक्ति को आनी ही है और इसके अनुसार अवश्य मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी इस नियम से अलग नहीं। क्योंकि वह भी इंसान ही हैं, और हमने किसी मनुष्य को सदैव के लिए इस धरती पर जीवित रहने के लिए नहीं छोड़ दिया है। इसका अर्थ यह तो नहीं कि क्या यह बात कहने वाले इस धरती पर जीवित रहेंगे ? इससे मूर्तिपूजकों और क़ब्र पूजने वालों का भी खण्डन हो गया, जो देवताओं, नबियों, महापुरूषों के सदैव जीवित रहने का भ्रम रखते हैं, इसी आधार पर उनको अपना दुखहारी, संकटमोचन समझते हैं। इस त्रुटिपूर्ण भ्रम से हम अल्लाह की शरण चाहते हैं।

[3]अर्थात कभी दुख-दर्द में घेरकर, कभी साँसारिक सुविधा से, कभी स्वास्थ तथा वैभव से, कभी तंगी, बीमारी से, कभी धन-दौलत देकर, कभी भूख-प्यास देकर, हम परीक्षा लेते हैं कि हम देखें कि कौन फिर भी कृतज्ञ है और कौन नाशुकरा (कृतघ्न) ? कौन धैर्य रखता है और कौन सहन नहीं करता ? धन्य और धैर्य (शुक्र व सब्र) प्रभु (इलाही) को प्रसन्न करने वाले हैं और कृतघ्नता और अधैर्य उस प्रभु के प्रकोप का कारण है।

[4]वहाँ पर तुम्हारे कर्मों के अनुसार अच्छा या बुरा फल प्राप्त होगा, उपरोक्त लोगों के लिए भलाई और शेष के लिए बुराई है।

The Ummah Technology Mission

إِنْ يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا ط
أَهَٰذَا الَّذِي يَذْكُرُ آلِهَتَكُمْ ج وَهُمْ
بِذِكْرِ الرَّحْمَٰنِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿٣٦﴾

तुम्हारी हँसी उड़ाते हैं, (कहते हैं) कि क्या यही वह है जो तुम्हारे देवताओं (पूज्यों) की चर्चा बुराई से करता है ? और वह स्वयं ही रहमान (कृपालु) की महिमा (स्मरण) करने से इंकार करते हैं।[1]

خُلِقَ الْإِنسَانُ مِنْ عَجَلٍ ط
سَأُورِيكُمْ آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ﴿٣٧﴾

(३७) मनुष्य जन्मजात उतावला है। मैं तुम्हें अपनी निशानियाँ (लक्षण) जल्द ही दिखाऊँगा, तुम मुझसे जल्दी न करो।[2]

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن
كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾

(३८) और कहते हैं कि यदि सच्चे हो तो बताओ कि वह वादा (यातना) कब पूरा होगा।

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ
لَا يَكُفُّونَ عَن وُجُوهِهِمُ النَّارَ

(३९) यदि ये काफ़िर जानते कि उस समय न तो ये आग को अपने चेहरों से हटा सकेंगे

---

[1]इसके बाद भी ये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हँसी मज़ाक उड़ाते हैं जिस प्रकार दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَإِذَا رَأَوْكَ إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا أَهَٰذَا الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا﴾

"जब (हे पैग़म्बर !) ये कुफ़्फ़ारे मक्का तुझे देखते हैं, तो तेरा मज़ाक उड़ाने लग जाते हैं, कहते हैं कि यही है वह व्यक्ति जिसे अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है।" (सूरः *अल-फ़ुरक़ान*-४१)

[2]यह काफ़िरों की प्रकोप माँग के उत्तर में है क्योंकि मनुष्य प्राकृतिक रूप से उतावला है और उतावलेपन में वह पैग़म्बर से भी शीघ्र माँग कर बैठते हैं कि अपने अल्लाह से कहकर तुरन्त प्रकोप करवा दो। अल्लाह ने फ़रमाया : "जल्दी मत करो, मैं शीघ्र ही अपनी निशानियाँ दिखाऊँगा। इन निशानियों का अर्थ प्रकोप भी हो सकता है और रसूल की सत्यता के प्रमाण भी।"

The Ummah Technology Mission

وَلَا عَن ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٣٩﴾

और न अपनी पीठों से, और न इन्हें सहायता की जायेगी।[1]

بَلْ تَأْتِيهِم بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٤٠﴾

(४०) हाँ, अवश्य ही वादा की घड़ी (क़ियामत का दिन) उनके पास अचानक (अकस्मात्) आ जायेगी और उन्हें वह आश्चर्यचकित कर देगी।[2] फिर न तो यह लोग उसे टाल सकेंगे और न ही उन्हें तनिक भी समय दिया जायेगा।[3]

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٤١﴾

(४१) और तुमसे पहले रसूलों का भी उपहास किया गया तो जिन्होंने उपहास किया उन्हें ही उस वस्तु ने आ घेरा जिसका वे उपहास करते थे।[4]

---

[1]इसके अन्दर उत्तर लुप्त है, अर्थात यदि ये जान लेते तो प्रकोप की माँग न करते अथवा अवश्य जान लेते कि प्रलय (क़ियामत) आने वाली है या कुफ़्र पर अड़े न रहते और ईमान ले आते।

[2]अर्थात उन्हें कुछ समझ में न आयेगा कि वे क्या करें।

[3]कि वह तौबा (पश्चाताप) इस्तग़फ़ार (क्षमा-याचना) करें।

[4]रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली दी जा रही है कि मुश्रेकीन के हँसी-मज़ाक से हताश न हों, यह कोई नई बात नहीं है। तुझसे पहले आने वाले पैग़म्बरों के साथ भी ऐसा ही हुआ है। अन्ततः वही प्रकोप उन पर पलट पड़ा अर्थात उन्हें घेर लिया, जिसका वे मज़ाक उड़ाते थे और जिसका आना उनके विचार से असम्भव था। जिस प्रकार से दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ فَصَبَرُوا عَلَىٰ مَا كُذِّبُوا وَأُوذُوا حَتَّىٰ أَتَاهُمْ نَصْرُنَا ﴾

"तुझसे पहले भी रसूल झुठलाये गये, परन्तु उन्होंने मज़ाक पर और उन सभी कष्टों पर जो उन्हें दिये गये धैर्य धारण किया, यहाँ तक कि उनके पास हमारी मदद (सहायता) आ गयी।" (सूरः *अल-अनआम*-३४)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तसल्ली के साथ काफ़िरों के लिए सावधानी एवं चेतावनी भी है।

The Ummah Technology Mission

قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٢﴾

(४२) उनसे पूछिये कि रहमान (कृपालू) से रात और दिन तुम्हारी रक्षा कौन कर सकता है ?[1] वरन् यह अपने प्रभु की महिमा (ज़िक्र) सुमिरन करने से विमुख हैं।

اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿٤٣﴾

(४३) क्या हमारे सिवाय उनके कोई और इलाह (पूजनीय) हैं, जो उन्हें आपदा से बचाते हों ? कोई भी स्वयं अपनी सहायता करने की शक्ति नहीं रखता, और न कोई हमारी ओर से साथ दिया जाता है।[2]

بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ؕ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ

(४४) बल्कि हमने इन्हें और इनके पूर्वजों को जीवन सामग्री दी, यहाँ तक कि उनकी आयु की सीमा समाप्त हो गयी।[3] क्या वह नहीं देखते कि हम भूमि को उसके किनारों

---

[1]अर्थात तुम्हारे कर्म ऐसे हैं कि दिन या रात किसी भी समय तुम पर प्रकोप आ सकता है। इस प्रकोप से तुम्हारी दिन-रात कौन रक्षा करता है ? क्या अल्लाह के अतिरिक्त भी कोई और है, जो उसके प्रकोप से तुम्हारी रक्षा कर सके ?

[2]इसका अर्थ है ولاهم يجارون من عذابنا "न वह हमारे प्रकोप से ही सुरक्षित हैं।" अर्थात वह स्वयं अपनी सहायता पर तथा अल्लाह के प्रकोप से बचने की शक्ति नहीं रखते, और फिर उन्हीं की तरह उनकी सहायता क्या होनी है और वह उन्हें प्रकोप से किस प्रकार से बचा सकते हैं ?

[3]अर्थात उनका अथवा उनके पूर्वजों का जीवन सुख-शान्ति से व्यतीत हुआ, तो क्या वह यह समझते हैं कि वह सही रास्ते पर थे और भविष्य में भी उन्हें कुछ नहीं होगा ? नहीं, बल्कि यह क्षणिक जीवन तो हमारे अवसर देने के नियम का एक भाग है, उससे किसी को धोखे में नहीं रहना चाहिए।

The Ummah Technology Mission

से घटाते चले आ रहे हैं ? [1] तो अब क्या वही विजयी हैं ?[2]

أَفَهُمُ الْغَٰلِبُونَ ﴿٤٤﴾

(४५) कह दो कि मैं तो केवल तुम्हें अल्लाह की वह्यी के द्वारा सचेत करता हूँ परन्तु बधिर व्यक्ति पुकार को नहीं सुनते, जबकि उन्हे सचेत किया जा रहा हो |[3]

قُلْ إِنَّمَآ أُنذِرُكُم بِٱلْوَحْىِ ۖ وَلَا يَسْمَعُ ٱلصُّمُّ ٱلدُّعَآءَ إِذَا مَا يُنذَرُونَ ﴿٤٥﴾

(४६) और यदि उन्हें तेरे प्रभु के प्रकोप की भाप भी लग जाये तो पुकार उठे कि हाय हमारा विनाश ! नि:संदेह हम पापी थे |[4]

وَلَئِن مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ يَٰوَيْلَنَآ إِنَّا كُنَّا ظَٰلِمِينَ ﴿٤٦﴾

(४७) और हम प्रलय के दिन उनके मध्य स्वच्छ तौल की तराजू ला रखेंगे, फिर किसी पर किसी प्रकार का अत्याचार न किया जायेगा, और यदि एक सरसों के दाने के बराबर भी

وَنَضَعُ ٱلْمَوَٰزِينَ ٱلْقِسْطَ لِيَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ۖ وَإِن كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ

---

[1]अर्थात कुफ़्र के पैरों तले से धरती खिसक रही है और इस्लाम विजेता के रूप में अग्रसर है और मुसलमान इलाक़े पर इलाक़ा जीतते जा रहे हैं |

[2]अर्थात कुफ़्र को सिमटता और इस्लाम को बढ़ता हुआ देखकर भी, क्या वह काफ़िर यह समझते हैं कि वह विजयी हैं ? इसका उत्तर नकारात्मक ही है | विजयी नहीं पराजित हैं, आदरणीय नहीं अनादर, अनिष्ठ अपमान उनका भाग्य है |

[3]अर्थात क़ुरआन सुनाकर उनको शिक्षा-दीक्षा दे रहा हूँ | और यही मेरी ज़िम्मेदारी और पद है | लेकिन जिनके कानों को अल्लाह ने सत्य सुनने से बहरे कर दिया है, उनकी आँखों पर पर्दा डाल दिया गया है, और दिलों पर मुहर लगा दी गयी है | उन पर इस क़ुरआन की शिक्षा-दीक्षा का तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ता |

[4]अर्थात प्रकोप का एक तनिक सा झटका अथवा थोड़ा सा भाग भी पहुँचेगा, तो पुकार उठेंगे और अपने पापों को स्वयं स्वीकार करने लगेंगे |

The Ummah Technology Mission

(कर्म) होगा, उसे हम सामने लायेंगे। और हम हिसाब करने के लिए काफी हैं।[1]

آتَيْنَا بِهَا ۗ وَكَفَىٰ بِنَا حَاسِبِينَ ﴿٤٧﴾

(४८) और यह पूर्णरूप से सत्य है कि हमने मूसा और हारून को निर्णयकारी ज्योर्तिमय तथा सदाचारियों के लिए शिक्षाप्रद किताब प्रदान की है।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ وَهَارُونَ الْفُرْقَانَ وَضِيَاءً وَذِكْرًا لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٨﴾

(४९) वह लोग जो बिन देखे अपने प्रभु से डरते हैं और जो प्रलय के (विचार) से काँपते रहते हैं।

الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَهُم مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ ﴿٤٩﴾

---

[1] میزان – موازین (तराज़ू) का बहुवचन है। कर्मों को तौलने के लिए क़ियामत के दिन या तो कई तराज़ू होंगी अथवा तराज़ू एक ही होगी, परन्तु उसकी विशेष महत्ता के लिए या कर्मों की संख्या के अनुसार इसे बहुवचन के रूप में प्रयोग किया गया है। मनुष्य के कर्म तो भौतिक नहीं अर्थात इनका प्रत्यक्ष रूप से कोई आकार तो नहीं है, फिर उसको तौला किस प्रकार से जायेगा? यह प्रश्न आज से पहले तक तो शायद कोई विशेषता रखता था। परन्तु आज के वैज्ञानिक अविष्कार ने इसे सम्भव बना दिया है। अब इन अविष्कारों के द्वारा निराकार और बिना भार की वस्तुओं को भी नापा तौला जाने लगा है। जब मनुष्य यह सामर्थ्य रखता है, तो अल्लाह तआला के लिए उन कर्मों को, जो निराकार गुण हैं, तौलना कौन सा कठिन कार्य है। उसकी तो महिमा ही अपार علی کل شیئ قدیر है। इसके अतिरिक्त यह भी हो सकता है कि वह इन निराकार गुणों को मनुष्य को दिखाने के लिए साकार बना दे और फिर तौले। जैसा कि कुछ हदीसों में कुछ कर्मों के साकार रूप होने के प्रमाण मिलते हैं। उदाहरणत: क़ुरआन को कण्ठस्थ करने वालों के लिए क़ुरआन एक सुन्दर युवक के रूप में आयेगा, वह व्यक्ति प्रश्न करेगा कि तू कौन है? वह कहेगा कि मैं क़ुरआन हूँ, जिसे तू रातों (रातों को नमाज़ों में) को जागकर और दिन को प्यासा रहकर पढ़ा करता था। (मुसनद अहमद ५\३५२, इब्ने माजा, किताबुल अदब, भाग क़ुरआन के पुण्य) इसी प्रकार मोमिन की क़ब्र (समाधि) में अच्छे कर्म एक अच्छे रंग और सुगन्धित युवक के रूप में आयेगा और काफ़िर, मुनाफ़िक़ के पास इसके विपरीत रूप में। (मुसनद अहमद ५\२८७) इसकी अन्य व्याख्या के लिए *सूरः आराफ़*-७ की टिप्पणी देखें। القسط धातु तथा الموازین की विशेषता है। अर्थ है न्याय करने वाली तराज़ू अथवा तराज़ूयें।

The Ummah Technology Mission

وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ۝٥٠

(५०) और यह शिक्षाप्रद शुभकारक क़ुरआन हमने ही उतारा है, फिर भी तुम क्या इससे इंकार करते हो ?[1]

وَلَقَدْ اٰتَيْنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ۝٥١

(५१) और अवश्य ही हमने इससे पहले इब्राहीम को प्रबोध प्रदान किया था,[2] और उसकी स्थिति से भली-भाँति परिचित थे |[3]

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْۤ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ۝٥٢

(५२) जब उसने अपने पिता और अपनी जाति वालों से कहा कि यह मूर्तियाँ, जिनके तुम पुजारी बने बैठे हो, ये क्या हैं ?[4]

---

[1]यह क़ुरआन, जो सावधान होने वालों के लिए स्मृति एवं शिक्षा है और भलाई एवं उन्नति प्रद है, उसे भी हमने ही अवतरित किया है, तुम उसके مُنزّل من الله "अल्लाह की तरफ से अवतरित" होने से क्यों इंकार करते हो, जबकि तुम्हें स्वीकार है कि तौरात अल्लाह की तरफ से ही अवतरित किताब है |

[2] من قبل का अर्थ या तो यह है कि हज़रत इब्राहीम को ज्ञान (शिक्षा एवं बुद्धि) देने का किस्सा हज़रत मूसा को तौरात देने से पहले का है | अथवा यह अर्थ है कि हज़रत इब्राहीम को नबी होने से पहले ही ज्ञान प्रदान कर दिया गया था |

[3]अर्थात हम जानते थे कि वह इस ज्ञान का अधिकारी है और वह इसका उचित प्रयोग करेगा |

[4] تماثيل ، تمثال का बहुवचन है | यह वास्तव में किसी वस्तु की प्रतिमा को कहते हैं | जैसे पत्थर की मूर्ति अथवा काग़ज़ और दीवार आदि पर किसी का चित्र | यहाँ तात्पर्य वह मूर्तियां हैं जो हज़रत इब्राहीम की जाति ने अपने पूज्यों की बना रखी थीं और जिनकी वे पूजा करते थे | عاكف - عكوف से कारक का रूप है, जिसका अर्थ आवश्यक रूप से पकड़ लेना और उस पर जम कर बैठ रहने के हैं, इसी से اعتكاف है, जिसमें मनुष्य अल्लाह की इबादत के लिए एकाग्रता के साथ, पूर्णरूप से जमकर बैठ जाता है | यहाँ पर इसका अर्थ मूर्तियों का आदर व पूजा तथा उनके स्थानों पर पुजारी बनकर बैठना है | यह प्रतिमायें (मूर्तियाँ और चित्र) क़ब्र पूजकों एवं विशिष्ट व्यक्ति के भक्तों पर भी आजकल लागू होती है और उनको बड़े आदर-सत्कार के साथ घर और दूकानों में शुभ के लिये लटकाया जाता है | अल्लाह तआला उन्हें सन्मति दे |

The Ummah Technology Mission

قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ﴿٥٣﴾

(५३) उन्होंने कहा, हमने अपने पूर्वजों को इनकी पूजा करते पाया है।[1]

قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٤﴾

(५४) आपने कहा फिर तो तुम और तुम्हारे पूर्वज निश्चय खुली गुमराही में थे।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿٥٥﴾

(५५) उन्होंने कहा कि क्या आप वास्तव में सत्य लाये हैं अथवा यूँ ही मज़ाक़ कर रहे हैं।[2]

قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٦﴾

(५६) आप ने कहा (नहीं,) बल्कि वास्तव में तुम्हारा पोषक आकाशों और धरती का पालन-हार है, जिसने उन्हे पैदा किया है, और मैं तो इसी बात का साक्षी (और मानता) हूँ।[3]

وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾

(५७) और अल्लाह की सौगन्ध मैं तुम्हारी मूर्तियों का उपचार अवश्य करूँगा जब तुम पीठ फेर कर चल दोगे।[4]

---

[1]जिस प्रकार आज भी मुर्खता और मिथ्यावाद में फँसे हुए मुसलमानों को बिदअत (इस्लाम धर्म में नयी बात पैदा करना, जिसका इस्लाम धर्म के नियमों से कोई सम्बन्ध या प्रमाण न मिलता हो) और व्यर्थ की परम्पराओं से रोका जाता है, तो उत्तर देते हैं कि हम इन्हें किस प्रकार छोड़ दें, जबकि हमारे पूर्वजों को भी यही करते देखा है। और यही उत्तर वह लोग भी देते हैं, जो किताब व सुन्नत के आदेशों को छोड़कर ज्ञानियों और उनकी ओार सम्बन्धित फ़िक़्ह (धर्मबोध) से सम्बन्धित रहने को ही आवश्यक समझते हैं।

[2]यह इसलिए कहा कि उन्होंने इससे पहले एक ईश्वर की उपासना (तौहीद) के विषय में नहीं सुना था, उन्होंने सोचा कि शायद इब्राहीम हमारे साथ मज़ाक तो नहीं कर रहा है।

[3]अर्थात मैं उपहास नहीं कर रहा हूँ, अपितु ऐसी चीज़ प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिसका ज्ञान एवं निश्चय (दर्शन) मुझे प्राप्त है और वह यह कि तुम्हारा प्रभु ये मूर्तियाँ नहीं, वरन वह है जो आकाशों और धरती का मालिक और उनका पैदा करने वाला है।

[4]यह आदरणीय इब्राहीम ने अपने हृदय में निश्चय किया, अन्य कहते हैं कि धीरे से कहा, जिसका तात्पर्य कुछ लोगों को सुनाना था, (अल्लाह बेहतर जानने वाला है) كَيْد

The Ummah Technology Mission

فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٨﴾

(५८) अतएव उसने उन सब के खंड-खंड कर दिये, बस केवल बड़ी मूर्ति को छोड़ दिया, यह भी इसलिए कि उनकी ओर पलटें।[1]

قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٩﴾

(५९) वे कहने लगे कि हमारे देवताओं की यह दुर्गत किसने की, ऐसा व्यक्ति अवश्य पापी होगा।[2]

قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٠﴾

(६०) बोले कि हमने एक नवयुवक को इनके विषय में बात करते हुए सुना था, जिसे इब्राहीम कहा जाता है।[3]

قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ﴿٦١﴾

(६१) उन्होंने कहा, तो उसे सब की आँखों के सामने ले आओ ताकि सब देखें।[4]

قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٢﴾

(६२) कहने लगे, हे इब्राहीम! क्या तूने ही हमारे देवताओं की यह दुर्गत बनाई है?

(उपचार) का अर्थ यहाँ वह कर्म है, जिसके द्वारा वह जो मौखिक और भाषण के उपरान्त अपने कर्मों से क्रियान्वित करना चाहते थे, अर्थात मूर्तियों की तोड़-फोड़।

[1]अतएव जिस दिन अपनी ईद अथवा कोई पर्व मनाने के लिए सारी जाति के लोग बाहर चले गये और हज़रत इब्राहीम ने अच्छा समय जानकर मूर्तियों को तोड़-फोड़ डाला, केवल एक बड़ी मूर्ति रहने दी, कुछ ज्ञानी कहते हैं कि उन्होंने कुल्हाड़ी उस बड़ी मूर्ति के हाथ में फँसा दी, ताकि उस मूर्ति से पूछें।

[2]अर्थात जब समारोह से वापस लौटे, तो देखा कि उनके देवताओं की मूर्तियाँ टूटी पड़ी हैं, तो कहने लगे कि यह कोई महापापी व्यक्ति है, जिसने यह घोर कर्म किया है।

[3]उनमें से कुछ ने कहा कि वह नवयुवक इब्राहीम है ना, वह हमारी मूर्तियों के विरोध में बोलता है, लगता है कि यह उसी का काम है।

[4]अर्थात उसको दण्डित होते हुए देखें, ताकि फिर कोई और यह काम न करे। अथवा यह अर्थ है कि लोग इस बात की गवाही दें कि उन्होंने इब्राहीम को मूर्तियाँ तोड़ते हुए देखा या उन मूर्तियों के विरोध में बातें करते हुए सुना है।

The Ummah Technology Mission

قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٣﴾

(६३) आपने उत्तर दिया, बल्कि यह काम तो उनके बड़े देवता ने किया है, तुम अपने देवताओं से पूछ लो, यदि वह बोलते हों।[1]

---

[1]अर्थात आदरणीय इब्राहीम को जनसमूह में लाया गया और उनसे पूछा गया। आदरणीय इब्राहीम ने उत्तर दिया कि यह काम तो उस बड़ी मूर्ति का है, यदि ये (टूटी-फूटी मूर्तियाँ) बोलकर बतला सकें तो तनिक उन मूर्तियों से पूछो तो। यह बातें उन्होंने उनकी हँसी उड़ाने और मूर्खता का मज़ाक उड़ाने के लिए कही थी, ताकि वे लोग यह बात जान लें कि, जो स्वयं न बोल सकता हो, और न किसी चीज़ का पहले से ज्ञान रखने की शक्ति रखता हो, वह देवता नहीं हो सकता है, और न उसे पूज्य कहना सही है। एक हदीस सही में आदरणीय इब्राहीम के इस कथन بل فعله كبيرهم को मिथ्या कथन कहा गया है। कि आदरणीय इब्राहीम ने तीन झूठ बोले, दो अल्लाह के लिए, एक إني سقيم और दूसरा यही और तीसरा आदरणीया सारह अपनी पत्नी को बहन कहना। (सहीह बुख़ारी अध्याय अंबिया) वर्तमान युग के कुछ व्याख्याकारों ने इस हदीस को क़ुरआन के विरूद्ध मान कर इस का इंकार कर दिया है, और इसे सही मानने को अतिश्योक्ति और हदीस पर अंधविश्वास कहा है। परन्तु उनका यह विचार उचित नहीं। नि:सन्देह वास्तविकता के आधार पर उनको मिथ्या नहीं कहा जा सकता, परन्तु प्रत्यक्ष रूप से उनको झूठ से अलग भी नहीं किया जा सकता। यद्यपि ये झूठ अल्लाह के यहाँ पकड़ योग्य नहीं है, क्योंकि वह अल्लाह के लिए बोला गया, जबकि कोई पाप कर्म अल्लाह के लिए नहीं हो सकता और यह तब ही हो सकता है जब प्रत्यक्ष रूप से झूठ होते हुए भी यह वास्तव में झूठ न हो जैसे आदरणीय आदम के विषय में غوى तथा عصى (अवज्ञा की) (विपथ हो गये) का शब्द प्रयोग किया गया है। जबकि क़ुरआन स्वयं इस को अर्थात वृक्ष से खाने को भूल तथा निश्चय की कमी का परिणाम बताता है। जिससे प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध है कि फिर काम के दो पक्ष होते हैं एक पक्ष से वह अच्छा तथा प्रत्यक्ष रूप में बुरा होता है, अत: इब्राहीम का यह कथन प्रत्यक्ष रूप से झूठ ही है इसलिए कि यर्थाथता के विपरीत था तथा मूर्तियों को उन्होंने स्वयं तोड़ा किन्तु इसे बड़ी मूर्ति से सम्बन्धित किया, किन्तु उनका लक्ष्य दूसरी ओर संकेत करना तथा एकेश्वरवाद को प्रमाणित करना था इसलिए हम झूठ की जगह तर्क देने तथा मूर्ति पूजकों की मूर्खता को सिद्ध करने का एक रूप समझेंगे इसके सिवाय इन तीन झूठ की चर्चा जिस संदर्भ में आया है वह भी विचारणीय है और वह है अल्लाह के सामने सिफ़ारिश के लिए महशर में जाने से कतराना कि संसार में उनसे तीन अवसरों पर चूक हुई है जबकि वह चूक नहीं है किन्तु वह अल्लाह के प्रताप से इतने भयभीत होंगे कि यह बातें झूठ के साथ प्रत्यक्ष समानता के कारण पकड़ के योग्य दिख पड़ेंगी अत:

The Ummah Technology Mission

فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾

(६४) अत: उन्होंने अपने मन में मान लिया और (मन ही में) कहने लगे कि वास्तव में तुम स्वयं पापी हो।[1]

ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٥﴾

(६५) फिर औंधे सिर डालकर (कुछ सोच-समझ कर, यद्यपि वे स्वीकार कर चुके थे फिर भी वे बोले) कि यह तुम जानते हो कि यह नहीं बोलते।[2]

قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾

(६६) (इब्राहीम ने) उसी समय कहा : हाय ! क्या तुम उनकी पूजा करते हो, जो न तुम्हें कुछ भी लाभ पहुँचा सकते हैं और न हानि।

اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾

(६७) थू है तुम पर और उन पर जिनकी तुम अल्लाह के अतिरिक्त पूजा करते हो। क्या तुम्हें इतनी भी बुद्धि नहीं ?[3]

हदीस का उद्देश्य इब्राहीम को झूठा बनाना कदापि नहीं वरन उस स्थिति का दिखाना है जो प्रलय के दिन अल्लाह के भय से उन पर आच्छादित होगी।

[1]आदरणीय इब्राहीम के इस उत्तर को सुनकर वे लोग सोच में पड़ गये और एक-दूसरे को उत्तरहीन होकर कहने लगे, वास्तव में पापी तो तुम ही हो, जो अपनी जान न बचा सके और क्षति पहुँचाने वाले का हाथ पकड़ने की शक्ति न रखता हो, वह पूजा के योग्य कैसे हो सकता है ? कुछ ने कहा कि देवता की बिल्कुल रक्षा का प्रबन्ध न करने पर एक-दूसरे को बुरा कहा और रक्षा हीन छोड़ने पर एक-दूसरे को पापी कहा।

[2]फिर हे इब्राहीम ! तू हमसे यह क्यों कह रहा है कि इनसे पूछो क्या यह बोल सकते हैं ? जबकि तू भली-भाँति जानता है कि यह बोलने की शक्ति नहीं रखते।

[3]अर्थात जब वे लोग स्वयं उनकी विवशता को मानने पर बाध्य हो गये तो फिर उनकी मूर्खता पर अफ़सोस करते हुए कहा कि अल्लाह को छोड़कर ऐसे शक्तिहीन, नि:सहाय की तुम पूजा करते हो ?

The Ummah Technology Mission

قَالُوا حَرِّقُوهُ وَانصُرُوا آلِهَتَكُمْ إِن كُنتُمْ فَاعِلِينَ ﴿٦٨﴾

(६८) उन्होने कहा कि इसे जला दो और अपने देवताओं की सहायता करो, यदि तुम्हें कुछ करना है तो।[1]

قُلْنَا يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ﴿٦٩﴾

(६९) हमने कहा, हे आग ! तू ठंडी हो जा और इब्राहीम के लिए सलामती [(शान्ति) और सुखदायी] बन जा।

وَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَخْسَرِينَ ﴿٧٠﴾

(७०) यद्यपि उन्होंने उस (इब्राहीम) का बुरा चाहा, परन्तु हमने उन्हें ही हानि ग्रस्त (असफल) कर दिया।

وَنَجَّيْنَاهُ وَلُوطًا إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَارَكْنَا فِيهَا لِلْعَالَمِينَ ﴿٧١﴾

(७१) और हम (इब्राहीम) और लूत को बचाकर उस भूमि की ओर ले गये, जिसमें हम ने समस्त जगत के लिये विभूतियाँ रखी थीं।[2]

---

[1]आदरणीय इब्राहीम ने जब अपना तर्क प्रस्तुत कर दिया और उनकी विपथा (गुमराही) और मूर्खता को इस प्रकार से व्यक्त किया कि उनके पास कोई उत्तर न रहा। चूँकि वे संमार्ग विहीन थे और कुफ़्र और शिर्क ने उनके हृदय में अंधकार कर दिया था। इसलिए वजाय शिर्क छोड़ने के उलटे आदरणीय इब्राहीम के विरोध में और कड़े हो गये। और अपने देवताओं की दुहाई देकर उनको आग में डालने की तैयारी करने लगे। अत: उन्होंने आग का एक बड़ा सा अलाव तैयार किया, और कहा जाता है कि आदरणीय इब्राहीम को डोल में रखकर फेंका गया, लेकिन अल्लाह तआला ने आग को आदेश दिया कि इब्राहीम के लिए तू इतनी ठंडी हो जा कि उसे कष्ट न हो। ज्ञानियों का कथन है कि यदि अल्लाह तआला शीतल के साथ सलामत शब्द न कहता तो इब्राहीम के लिए उसकी ठंडक कष्टदायक एवं असहनीय होती। कुछ भी हो यह एक वहुत वड़ा चमत्कार है, जो आसमान से बातें करती हुई आग की लौ का फूलों की सेज के रूप में आदरणीय इब्राहीम के लिए अल्लाह तआला के आदेश से प्रदर्शित हुआ। इस प्रकार अल्लाह तआला ने अपने उपासक को उसके शत्रुओं की चाल से सुरक्षित कर लिया।

[2]इससे तात्पर्य वहुत से टीकाकार ने सीरिया देश लिया है, जिसको हरियाली, फलों तथा नहरों की अधिकता और नबियों का निवास स्थल होने के कारण मंगलमय (बरकत) कहा गया है।

The Ummah Technology Mission

وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ ؕ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ﴿۷۲﴾

(७२) और हमने उसे इसहाक़ प्रदान किया, और उस पर अधिक याक़ूब, तथा प्रत्येक को सत्कर्मी बनाया।[1]

وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَاۤ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿۷۳﴾

(७३) और हमने उन्हें प्रमुख बना दिया कि हमारे आदेश से लोगों का मार्गदर्शन करें और हमने उनकी ओर सत्कर्मों के करने और नमाज़ स्थापित करने और जक़ात देने की प्रकाशना (वह्यी) की और वे सब के सब हमारे उपासक थे।

وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ﴿۷۴﴾

(७४) और हम ने लूत को भी विद्वता तथा ज्ञान प्रदान किया, और उसे उस बस्ती से मुक्ति दिया जहाँ के लोग गन्दे कर्मों में लिप्त थे, और वास्तव में वे महापापी थे।

وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۷۵﴾

(७५) और हमने उसको (लूत को) अपनी कृपा में सम्मिलित कर लिया। निःसंदेह वह सत्कर्मियों में से था।[2]

---

[1] نافلة अधिक को कहते हैं। आदरणीय इब्राहीम ने तो केवल पुत्र की कामना की थी, उनकी कामना के अतिरिक्त पौत्र भी प्रदान किया।

[2] आदरणीय लूत आदरणीय इब्राहीम के भाई के पुत्र (भतीजे) थे, और आदरणीय इब्राहीम पर ईमान लाये थे और उन के साथ ईराक से यात्रा करके सीरिया जाने वालों में से थे। अल्लाह ने उनको भी ज्ञान व तत्वज्ञान अर्थात नबूअत प्रदान की थी। वह जिस क्षेत्र के लिए नबी बनाकर भेजे गये थे, उसे अमूर: और सदूम कहा जाता है। यह फ़िलिस्तीन के मृत सागर से लगा हुआ जार्डन की ओर उपजाऊ क्षेत्र था, जिसका बड़ा भाग अब मृत सागर का एक भाग है। उनकी जाति वाले गुदा मैथुन जैसे कुकर्मों, रास्तों पर बैठकर राहियों पर आवाज़ें कसने और उन्हें तंग करने, कंकरिया मारने में कुख्यात थे, जिसे अल्लाह तआला ने कुकर्म (ख़बाएस) कहा है। अन्ततः आदरणीय लूत तथा उसके अनुयायियों को अपनी कृपा में प्रवेशित करके अर्थात उनको बचाकर समुदाय का सत्यानाश कर दिया।

The Ummah Technology Mission

وَنُوحًا إِذْ نَادَىٰ مِن قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ﴿٧٦﴾

(७६) और नूह के उस समय को (याद करो) जब उसने इससे पहले दुआ (विनय) की हमने उसकी दुआ (विनय) स्वीकार की, और हमने उसको और उसके परिवार को बड़ी पीड़ा से मुक्त कर दिया।

وَنَصَرْنَاهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٧٧﴾

(७७) और उस जाति के मुक़ाबले में उसकी सहायता की जिसने हमारी आयतों को झुठलाया था। वास्तव में वे बुरे लोग थे, तो हमने उन सबको डुबो दिया।

وَدَاوُودَ وَسُلَيْمَانَ إِذْ يَحْكُمَانِ فِي الْحَرْثِ إِذْ نَفَشَتْ فِيهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۖ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شَاهِدِينَ ﴿٧٨﴾

(७८) और दाऊद एवं सुलैमान को (याद कीजिए,) जबकि वे खेत के विषय में फैसला (निर्णय) कर रहे थे कि कुछ लोगों की बकरियाँ रात्रि को उसमें चर गयी थीं और उनके फैसले (निर्णय) में हम विद्यमान थे।

فَفَهَّمْنَاهَا سُلَيْمَانَ ۚ وَكُلًّا آتَيْنَا

(७९) हम ने उसका उचित फैसला सुलैमान को समझा दिया।[1] अवश्य हमने प्रत्येक को

---

[1]टीकाकारों ने यह कथा इस प्रकार वर्णित किया है कि एक व्यक्ति की बकरियाँ रात को दूसरे व्यक्ति के खेत में चली गयीं और खेत को चर गयीं। आदरणीय दाऊद जो पैग़म्बर (ईशदूत) के साथ-साथ राज्याधिकारी भी थे। उन्होंने फैसला दिया कि बकरियाँ खेत वाला ले ले, ताकि उसकी क्षति पूर्ति हो सके। आदरणीय सुलैमान ने इस न्याय का विरोध किया और फैसला किया कि कुछ समय के लिए बकरियाँ खेत के मालिक को दे दी जायें ताकि वह इनका लाभ उठाए, और खेती बकरी वाले को दे दी जाये ताकि वह खेतों की सिंचाई और देखभाल करके उसे सुधारे, जब वह खेत उस दशा में आ जाये जो बकरियों के चरने से पहले था, तो खेत, खेत के मालिक को और बकरियाँ, बकरियों के मालिक को वापस कर दी जायें। पहले न्याय की तुलना में दूसरा फैसला इस दृष्टि से उचित था कि किसी को अपनी चीज़ से हाथ नहीं धोना पड़ा, जबकि पहले फैसले में बकरी वाले को बकरियों से हाथ धोना पड़ा था। फिर भी अल्लाह ने आदरणीय दाऊद की प्रशंसा की कि हमने प्रत्येक को (अर्थात दाऊद और सुलैमान को) ज्ञान एवं विवेक प्रदान किया था। इस कथा से कुछ लोग यह तर्क देते हैं कि प्रत्येक मुजतहिद उचित

The Ummah Technology Mission

حُكْمًا وَّعِلْمًا ۚ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ۭ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝۷۹

हिकमत (विद्वता) और ज्ञान दे रखा था, और दाऊद के अधीन हमने पूर्वत कर दिये थे, जो महिमा (तस्बीह) करते थे,[1] और पक्षियों को भी।[2] ऐसा हम करने वाले ही थे।[3]

وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ۝۸۰

(८०) और हमने उसे तुम्हारे लिये वस्त्र (कवच) बनाना सिखाया, ताकि युद्ध (की हानि) से तुम्हारा बचाव कर सके।[4] फिर क्या तुम अब भी कृतज्ञता व्यक्त करोगे ?

न्याय करने वाला होता है। इमाम शौकानी इस तर्क को उचित नहीं मानते। किसी एक मामले में दो अलग-अलग (विपरीत) न्याय करने वाले दो न्यायाधीश, एक ही समय में उचित न्याय करने वाले (मुसय्यिब) नहीं हो सकते, उनमें से अवश्य एक (मुसय्यिब) उचित न्याय करने वाला और दूसरा अनुचित न्याय करने वाला (मुख्ती) होगा। यद्यपि यह अलग बात है कि न्यायाधीश जिसका न्याय अनुचित है अल्लाह की दृष्टि में पापी नहीं होगा, बल्कि उसे एक पुण्य मिलेगा। कमा फ़िल हदीस (फ़तहुल क़दीर)

[1]इसका अर्थ कदापि नहीं कि पर्वत उनकी तस्बीह (प्रशंसागान) की ध्वनि से गूँज उठते थे (क्योंकि इसमें कोई चमत्कार की बात ही बाकी नहीं होती) प्रत्येक छोटे-बड़े रूह की उच्च आवाज़ से गूँज पैदा हो सकती है (प्रतिध्वनि के रूप में)। अपितु अर्थ आदरणीय दाऊद के साथ पर्वतों का भी तस्बीह पढ़ना है। यह कहने की बात नहीं थी वास्तव में था।

[2]पक्षी भी दाऊद की करूणा भरी आवाज़ को सुनकर अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करते थे अथवा पक्षी भी उनके अधीन कर दिये गये थे।

[3]अर्थात यह समझाना, निर्णय का ज्ञान देना तथा अधीन करना हमारा काम था। अतः इस पर किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए न इंकार करना चाहिए। इसलिए कि हम जो चाहें कर सकते हैं।

[4]अर्थात हमने दाऊद के लिए लोहे को कोमल बना दिया था जिससे वह लड़ाई के लिये वस्त्र तथा कवचें बनाते थे जो रण क्षेत्र में तुम्हारी सुरक्षा का साधन हैं। नबी के सहचर कतादह का कहना है कि ईशदूत दाऊद से पहले भी कवचें बनती थीं किन्तु वह सादी थीं उनमें कड़ियां नहीं होती थीं। ईशदूत दाऊद प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने कड़ियों और कुन्डे वाली कवचें तैयार कीं। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿٨١﴾

(८१) और हमने सुलैमान के अधीन तीव्र प्रचण्ड वायु कर दी [1] जो उसके आदेश पर उस धरती की ओर चलती थी, जिसमें हमने विभूतियाँ रखी थीं। और हम सर्वज्ञ हैं।

وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٨٢﴾

(८२) और (इसी प्रकार) बहुत से शैतानों को भी (उसका अधीनस्थ बनाया था,) जो उसके आदेश पर डुबकी लगाते थे और इसके अतिरिक्त बहुत से कार्य करते थे।[2] और उनकी रक्षा करने वाले हम ही थे।[3]

وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۚ ﴿٨٣﴾

(८३) और अय्यूब (की उस स्थिति को याद करो,) जबकि उसने अपने प्रभु को पुकारा कि मुझे यह रोग लग गया है, और तू सब दयावानों से अधिक दयानिधि है।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ ۫ وَاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ

(८४) तो हमने उसकी (पुकार) सुन ली और जो दुख उन्हें था उसे दूर कर दिया, और उसे उसका परिवार प्रदान किया, बल्कि उसे अपनी

---

[1]जिस प्रकार पर्वत और पक्षी आदरणीय दाऊद के अधीन कर दिये गये थे, उसी प्रकार वायु आदरणीय सुलैमान के अधीन कर दी गयी थी। वह अपने राज्य के अधिकारियों समेत तख़्त पर आसीन हो जाते और जहाँ चाहते महीनों की यात्रा क्षणों एवं पलों में तय करके वहाँ पहुँच जाते, हवा उनके तख़्त को उड़ाकर ले जाती। उपजाऊ धरती का अर्थ सीरिया का क्षेत्र है।

[2]जिन्नात भी आदरणीय सुलैमान के अधीन थे, जो उनके आदेश से समुद्र में डुबकी लगाते और उनके लिए मोती-जवाहरात निकाल लाते, इसी प्रकार अन्य कार्य, जो आप चाहते करते थे।

[3]अर्थात जिन्नों में जो उद्दण्डता और आतंक का मिश्रण है, उससे हमने सुलैमान की रक्षा की और वे उनके सामने सिर नहीं उठा सकते थे।

The Ummah Technology Mission

مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿٨٤﴾

विशेष कृपा से[1] उनके साथ वैसे ही और दिये, ताकि उपासकों के लिए शिक्षाप्रद (स्मरणीय) हो।

وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٨٥﴾

(८५) और इस्माईल और इदरीस, और ज़ुलकिफ्ल[2] ये सब धैर्यवान थे।

وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٦﴾

(८६) हमने उन्हें अपनी दया (अनुकम्पा) में प्रवेश दिया। ये सब पुनीत लोग थे।

وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا

(८७) तथा मछली वाले[3] (यूनुस अलैहिस्सलाम) को (याद करो)! जबकि वह क्रोधित होकर

---

[1]क़ुरआन मजीद में आदरणीय अय्यूब को धैर्यवान कहा गया है। (सूरः साद) इसका अर्थ यह है कि उनकी परीक्षा ली गयी, जिसमें उन्होंने कृतज्ञता और धैर्य (सब्र और शुक्र) का दामन हाथ से नहीं छोड़ा। वे परीक्षायें और कष्ट क्या थे, इसका कोई प्रमाणित वर्णन नहीं मिलता। फिर भी क़ुरआन के वर्णन अनुसार प्रतीत होता है कि अल्लाह तआला ने उन्हें धन-धान्य और पुत्र प्रदान कर रखे थे, परीक्षा के लिए अल्लाह तआला ने यह सभी छीन लिये थे, यहाँ तक कि शारीरिक शक्ति भी क्षीण कर दी थी, अतएव रोगों से पीड़ित थे। अन्ततः कहा जाता है कि १८ वर्ष की परीक्षा के बाद प्रभु के समक्ष प्रार्थना की, अल्लाह ने प्रार्थना स्वीकार की और स्वास्थ के साथ-साथ धन-धान्य और पुत्र पहले से दोगुने प्रदान किये। इसका कुछ वर्णन सहीह इब्ने हिब्बान के एक बयान में मिलता है (भाग ४, पृष्ठ २४४, मजमउज्जवायद ८/२०८) किसी प्रकार की शिकायत और रोना-धोना सब्र (धैर्य) के विपरीत है, जिसका प्रदर्शन आदरणीय अय्यूब ने नहीं किया, और प्रार्थना सब्र के विपरीत नहीं है, इसीलिए अल्लाह तआला ने उसके लिए (प्रार्थना के लिए) "हमने स्वीकार कर ली" का शब्द प्रयोग किये हैं।

[2]ज़ुलकिफ़्ल के विषय में मतभेद है कि वह नबी थे या नहीं? कुछ उनकी नबूअत और कुछ विलायत के पक्ष में हैं। इमाम इब्ने जरीर इनके विषय में मौन हैं, इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं: "क़ुरआन में नबियों के साथ उनका भी वर्णन उनके नबी होने को व्यक्त करता है।" अल्लाह भली-भाँति जानता है।

[3]मछली वाले से तात्पर्य आदरणीय यूनुस हैं जो अपनी क़ौम से नाराज़ होकर अल्लाह के प्रकोप की धमकी देकर, अल्लाह के आदेश के बिना ही वहाँ से चल दिये थे, जिस पर अल्लाह तआला ने पकड़ा और उन्हें मछली का भोजन (कौर) बना दिया, इसका कुछ वर्णन सूरः *यूनुस* में हो चुका है और कुछ सूरः *साफ़्फ़ात* में आयेगा।

The Ummah Technology Mission

فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِى الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

चल दिया और समझता था कि हम उसे न पकड़ेंगे। अन्ततः उसने अँधेरों[1] में से पुकारा कि इलाही (पूजनीय) तेरे अतिरिक्त कोई पूजनीय नहीं है, तू पवित्र है। निःसंदेह मैं ही अत्याचारियों में से हूँ।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ۭ وَكَذٰلِكَ نُـْۨجِى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾

(८८) तो हमने उसकी पुकार सुन ली और उसे दुखों से मुक्त किया। और हम इसी प्रकार ईमान वालों को बचा लिया करते हैं।[2]

وَزَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِىْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٨٩﴾

(८९) और ज़करिया को (याद करो,) जब उस ने अपने प्रभु से प्रार्थना की कि हे मेरे प्रभु! मुझे अकेला न छोड़, तू सबसे अच्छा उत्तराधिकारी है।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۡ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ

(९०) तो हमने उसकी प्रार्थना अंगिकार कर ली और उसे यह्या प्रदान किया।[3] और उनकी पत्नी को उनके लिए सुधार दिया।[4] यह पुनीत लोग सत्कर्मों की ओर जल्दी दौड़ते थे, और

---

[1] ظُلمةٌ, ظُلمات का बहुवचन है, जिसका अर्थ अंधेरा होता है। आदरणीय यूनुस अंधेरों में घिरे हुए थे। रात का अंधेरा, समुद्र का अंधेरा और मछली के पेट का अंधेरा।

[2] हमने यूनुस की प्रार्थना स्वीकार की और अंधेरा और मछली के पेट से छुटकारा दिया। जो भी मोमिन हमें इस प्रकार के कष्टों और दुखों में पुकारेगा हम उसे छुटकारा देंगे। हदीस में भी आता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "जिस मुसलमान ने भी इस दुआ के साथ किसी भी विषय के लिए दुआ माँगी तो अल्लाह ने उसे स्वीकार किया।" (जामे तिर्मिज़ी संख्या ३५०५ तथा हदीस के विशेषज्ञ अलबानी ने इसे सही कहा है)

[3] आदरणीय ज़करिया का बुढ़ापे में पुत्र के लिए दुआ करना और अल्लाह की ओर से प्रदान किया जाना, इसका आवश्यक वर्णन *सूरः आले-इमरान* और *सूरः ताहा* में हो चुका है। यहाँ भी इस ओर इशारा (संकेत) इन शब्दों में किया गया है।

[4] अर्थात वह बाँझ तथा किसी बच्चे के जन्म देने योग्य नहीं थी, हमने उसके इस दोष को दूर करके उसे एक नेक पुत्र प्रदान किया।

The Ummah Technology Mission

وَيَدْعُونَنَا رَغَبًا وَرَهَبًا ۖ وَكَانُوا لَنَا خَاشِعِينَ ﴿٩٠﴾

हमें मोह और भय के साथ पुकारते थे, और हमारे सामने विनम्र रहते थे।[1]

وَالَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهَا مِن رُّوحِنَا وَجَعَلْنَاهَا وَابْنَهَا آيَةً لِّلْعَالَمِينَ ﴿٩١﴾

(९१) और वह (सती महिला) जिसने अपने सतीत्व की रक्षा की, हमने उसके अन्दर अपनी आत्मा फूँकी और स्वयं उसको और उसके पुत्र को सम्पूर्ण जगत के लिए निशानी (लक्षण) बना दिया।[2]

إِنَّ هَٰذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ﴿٩٢﴾

(९२) यह तुम्हारा गिरोह है जो वास्तव में एक ही गिरोह है, और मैं तुम सबका प्रभु हूँ। अत: तुम सब मेरी ही इबादत (उपासना) करो।[3]

وَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ ۖ كُلٌّ إِلَيْنَا رَاجِعُونَ ﴿٩٣﴾

(९३) परन्तु लोगों ने परस्पर अपने धर्म में गुट बना लिये। सबको हमारी ओर पलटकर आना है।[4]

---

[1]अर्थात प्रार्थना के स्वीकार होने के लिए यह आवश्यक है कि इन बातों को ध्यान में विशेष रूप से रखना चाहिए जिनका वर्णन यहाँ पर विशेष रूप से किया गया है। उदाहरण स्वरूप, रोने-धोने के साथ अल्लाह के समक्ष दुआ (प्रार्थना) और मुनाजात (विनय), अच्छे कर्मों में आगे बढ़ाना, डर और मोह के मिले जुले भाव के साथ प्रभु को पुकारना और उसके सामने विशेषत: विनम्रता तथा विनय के भाव से ध्यानमग्न होना।

[2]यह आदरणीया मरियम और आदरणीय ईसा का वर्णन है, जो पहले गुज़र चुका है।

[3]उम्म: (गिरोह) का भावार्थ यहाँ धर्म अथवा धार्मिक समुदाय है, अर्थात तुम्हारा धर्म और गिरोह एक ही है और वह धर्म तौहीद का धर्म है, जिसका आमन्त्रण सभी नबियों ने दिया और गिरोह, इस्लाम का गिरोह है जो सभी नबियों का गिरोह रहा है। जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "हम नबियों का समूह अल्लाती संतान (जिन का पिता एक और मातायें कई हों) हैं, हमारा धर्म एक ही है।" (इब्ने कसीर)

[4]अर्थात तौहीद (अद्वैत) और प्रभु की इबादत (उपासना) छोड़कर कई सम्प्रदायों और गिरोहों में बट गये। एक गिरोह मुशरिकों (मूर्तिपूजक आदि) और काफ़िरों का हो गया। और नबियों और रसूलों को मानने वाले भी पीढ़ियाँ बन गये, कोई यहूदी हो गया, कोई इसाई, और कोई कुछ ---- और दुर्भाग्य से मुसलमानों में स्वयं भी गिरोह

The Ummah Technology Mission

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿٩٤﴾

(९४) फिर जो भी सत्कर्म करे, और वह मोमिन (एकेश्वरवादी) भी हो, तो उसके प्रयत्न की कोई अपेक्षा नहीं होगी। हम तो उसके लिखने वाले हैं।

وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٥﴾

(९५) और जिस बस्ती को हमने विनष्ट कर दिया। उसके लिए अनिवार्य है कि वहाँ के लोग पलटकर नहीं आयेंगे।[1]

حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾

(९६) यहाँ तक कि याजूज और माजूज खोल दिये जायेंगे और वे प्रत्येक ढलवान से दौड़ते आयेंगे।[2]

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

(९७) तथा सत्य वचन निकट आ लगेगा उस समय काफ़िरों की आँखें फटी की फटी रह

वन्दी पैदा हो गयी, और यह भी बिसियों गिरोह में बंट गये। इन सब का न्याय जब ये प्रभु के समक्ष प्रस्तुत होंगे तब वहीं होगा।

[1] حرامٌ निषेध (अवश्यक) के अर्थ में है, जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है, या फिर لا يَرْجِعُون में لا अधिक है अर्थात जिस बस्ती को हमने ध्वस्त कर दिया उसका संसार में पलटकर आना असम्भव है (आ ही नहीं सकते)

[2] याजूज और माजूज का आवश्यक विवरण सूरः कहफ़ के अन्त में गुज़र चुका है। आदरणीय ईसा की उपस्थिति में प्रलय के निकट वे प्रदर्शित होंगे और इतनी वेग गति से यह हर ओर फैल जायेंगे कि प्रत्येक ऊँची जगह से ये दौड़ते हुए प्रतीत होंगे। उनके आतंक और कुकर्मों से ईमान वाले तंग आ जायेंगे। फिर आदरणीय ईसा के शाप से यह नष्ट हो जायेंगे। उनके शवों की दुर्गन्ध हर ओर फैलेगी, यहाँ तक कि अल्लाह तआला पक्षियों को भेजेगा, जो उनके शवों को उठाकर समुद्र में फेंकेंगे। फिर एक बहुत तेज़ वर्षा करेगा, जिससे सारी धरती स्वच्छ हो जायेगी। (यह पूरा विवरण सहीह हदीस में वर्णित है, विस्तार के लिए व्याख्या इब्ने कसीर देखें)

The Ummah Technology Mission

يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٧﴾

जायेंगी[1] कि हाय अफ़सोस ! हम इस दुर्दशा से निश्चिन्त थे, बल्कि वास्तव में हम अपराधी थे।

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ؕ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿٩٨﴾

(९८) तुम तथा अल्लाह के सिवाय जिन-जिन की तुम पूजा करते हो, सब नरक के ईंधन बनोगे, तुम सब उस (नरक) में जाने वाले हो।[2]

لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ؕ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٩٩﴾

(९९) यदि वे (सच्चे) देवता होते तो नरक में प्रवेश नहीं करते तथा सब के सब उसी में सदैव रहने वाले हैं।[3]

لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّهُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾

(१००) वे वहाँ चिल्ला रहे होंगे तथा वहाँ कुछ भी न सुन सकेंगे।[4]

---

[1]अर्थात याजूज तथा माजूज के प्रकट होने के पश्चात क़ियामत का जो वादा है, वह सत्य है, अत्यन्त निकट आ जायेगा तथा जब यह क़ियामत घटित होगी तो काफ़िरों की आँखें फटी की फटी रह जायेंगी।

[2]यह आयत मक्का के मूर्तिपूजकों के विषय में अवतरित हुई, जो लात, मनात, उज़्ज़ा तथा हुबल की पूजा करते थे। ये सभी पत्थर की मूर्तियाँ थीं। जो जड़ अर्थात निर्जीव थीं, इसीलिए आयत में ما تعبدون का शब्द है तथा अरबी भाषा में ما निर्बोध के लिए आता है। अर्थात कहा जा रहा है कि तुम भी तथा तुम्हारे देवता भी जिन-जिन की मूर्तियाँ बनाकर तुमने पूजा के लिए रखी हैं सभी नरक की अग्नि के ईंधन हैं। पत्थर (पाषाण) की मूर्तियाँ का यद्यपि कोई अपराध नहीं है क्योंकि वह निर्जीव तथा निर्बोध हैं। परन्तु उन्हें पुजारियों के साथ नरक में केवल मूर्तिपूजकों को अत्यधिक अपमानित करने के लिए डाला जायेगा कि जिन देवताओं को तुम अपना सहारा समझते थे, वे भी तुम्हारे साथ नरक में नरक का ईंधन हैं।

[3]अर्थात यदि वास्तव में यह पूज्य होते तो साधिकार होते तथा तुम्हें नरक में जाने से रोक लेते। परन्तु वे तो स्वयं नरक में शिक्षा स्वरूप जा रहे हैं। तुम्हें जाने से किस प्रकार रोक सकते हैं। परिणाम स्वरूप देवता तथा पुजारी दोनों सदैव नरक में रहेंगे।

[4]अर्थात सारे के सारे अत्यन्त दुख एवं शोक के कारण चीख-चिल्ला रहे होंगे जिसके कारण वे एक-दूसरे की आवाज़ भी न सुन सकेंगे।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُم مِّنَّا الْحُسْنَىٰ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴿١٠١﴾

(१०१) परन्तु जिनके लिए हमारी ओर से पूर्व में ही पुण्य निर्धारित है। वे सब नरक से दूर ही रखे जायेंगे।[1]

لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنفُسُهُمْ خَالِدُونَ ﴿١٠٢﴾

(१०२) वे तो नरक की आहट तक न सुन सकेंगे तथा अपनी इच्छित वस्तुओं के संग सदैव रहने वाले होंगे।

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ هَٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ﴿١٠٣﴾

(१०३) वह अति घबराहट भी[2] उन्हें उदासीन न कर सकेगी तथा फ़रिश्ते उन्हें हाथों-हाथ ले लेंगे कि यही तुम्हारा वह दिन है जिसका तुमको वचन दिया जाता रहा।

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ

(१०४) जिस दिन हम आकाश को इस प्रकार लपेट देंगे जिस प्रकार रोल के कागज़ (पंजिका) लपेट दिये जाते हैं,[3] जैसे हमने प्रथम

---

[1]कुछ लोगों के मन में यह सन्देह उत्पन्न हो सकता था अथवा मूर्तिपूजकों की ओर से उत्पन्न कराया जा सकता था, जैसाकि वास्तव में हो रहा है कि इबादत (उपासना) तो आदरणीय ईसा, उज़ैर, फ़रिश्तों तथा बहुत से पुण्य आत्माओं की की जाती है। तो क्या यह भी अपने पुजारियों के साथ नरक में डाले जायेंगे ? इस आयत में उसका भी निवारण कर दिया गया है कि यह लोग तो अल्लाह के श्रेष्ठ भक्त थे जिनके पुण्य के कारण अल्लाह की ओर से पुण्य अर्थात स्थाई सुख अथवा स्वर्ग की शुभसूचना निश्चित कर दी गयी है। यह नरक से दूर ही रखे जायेंगे। इन्हीं शब्दों से यह भावार्थ भी निकलता है कि दुनिया में जो लोग यह इच्छा रखते होंगे कि उनकी क़ब्रों पर गुम्बद बनें तथा लोग उन्हें कष्ट निवारक संकट मोचन समझकर भोग-प्रसाद चढ़ायें तथा उनकी पूजा करें, यह भी पत्थर की मूर्तियों की भाँति नरक का ईंधन बनेंगे, क्योंकि अल्लाह के सिवाय किसी की इबादत करने के प्रचारक سبقت لهم منا الحسنى की परिधि में नि:संदेह नहीं आते।

[2]बड़ी व्यग्रता से तात्पर्य मृत्यु अथवा इस्राफ़ील का नरसिंघा है अथवा वह क्षण जब स्वर्ग-नरक के मध्य मृत्यु को वध कर दिया जायेगा। दूसरी बात अर्थात इस्राफ़ील का नरसिंघा तथा क़ियामत का आना अधिक उचित है।

[3]अर्थात जिस प्रकार लिपिक लिखने के पश्चात पन्नों अथवा लेख-पुस्तिका को लपेट कर रख देता है। जैसे अन्य स्थान पर फ़रमाया :

The Ummah Technology Mission

نُعِيْدُهٗ ؕ وَعْدًا عَلَيْنَا ؕ اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿۱۰۴﴾

बार पैदा किया था उसी प्रकार पुन: करेंगे, यह हमारा संकल्पित वचन है तथा यह हम अवश्य करके ही रहेंगे।

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿۱۰۵﴾

(१०५) तथा हम ज़बूर में चेतावनी तथा शिक्षा के पश्चात यह लिख चुके हैं कि धरती के उत्तराधिकारी मेरे सत्कर्मी भक्त ही होंगे।[1]

اِنَّ فِيْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ﴿۱۰۶﴾ؕ

(१०६) उपासक भक्तों के लिए तो इसमें एक बड़ी सूचना है।[2]

﴿وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ﴾

"आकाश उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे।" (सूरः अल-ज़ुमर-६७)

سِجِلّ का अर्थ पत्रावली अथवा पंजिका है। لِلْكُتُبِ का अर्थ है على الكتاب بمعنى المكتوب (तफ़सीर इब्ने कसीर) अर्थ यह है कि लेखक के लिए लिखे हुए पत्रों को लपेट लेना जिस प्रकार सरल है, उसी प्रकार अल्लाह तआला के लिए विस्तृत आकाश को अपने हाथ में लपेट लेना कोई कठिन नहीं है।

[1]ज़बूर से तात्पर्य या तो ज़बूर ही है तथा ذكر से तात्पर्य शिक्षा-दीक्षा, जैसाकि अनुवाद में है अथवा फिर ज़बूर से तात्पर्य सभी प्राचीन आकाशीय पुस्तकें तथा ذكر से तात्पर्य सुरक्षित पुस्तक (लौह महफ़ूज़) है। अर्थात प्रथम तो 'सुरक्षित पुस्तक' में यह लिखित है तथा उसके पश्चात आकाशीय पुस्तकों में भी यह बात लिखी जाती रही है कि धरती के उत्तराधिकारी पुनीत लोग होंगे। धरती से तात्पर्य कुछ व्याख्याकारों के निकट स्वर्ग है तथा कुछ के निकट काफ़िरों की धरती अर्थात अल्लाह के पुनीत भक्त धरती में अधिपति होंगे तथा इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं कि मुसलमान जब तक अल्लाह के पुनीत भक्त बने रहे, वे संसार में प्रभावशाली तथा सफल रहे तथा भविष्य में भी जब कभी वह इन गुणों से युक्त होंगे अल्लाह के इस वचनानुसार धरती का अधिपत्य (राज्य) उनके पास ही होगा। इसलिए मुसलमानों के राज्य से वंचित होने की आधुनिक परस्थिति से किसी प्रकार की शंका अथवा संदेह नहीं होना चाहिए। यह वचन भक्तों के सदाचार से प्रतिबन्धित है। तथा إذا فات الشرط فات المشروط के अनुसार जब मुसलमान इस विशेषता से वंचित हो गये, तो राज्य से भी वंचित कर दिये गये। अर्थात इसमें राज्य प्राप्त करने का मार्ग बताया गया है तथा वह है अच्छे कर्म, अर्थात अल्लाह तथा रसूल के आदेशों के अनुसार जीवनयापन करना तथा उसकी सीमाओं तथा नियमों के अनुसार कार्यरत रहना।

[2] فِي هٰذَا से तात्पर्य वह भाषण तथा चेतावनी है जो इस सूरः में विभिन्न प्रकार से वर्णन की गयी है। بلاغ से तात्पर्य अधिक पर्याप्त तथा लाभ है, अर्थात वह पर्याप्त एवं लाभकारी

The Ummah Technology Mission

وَمَآ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۱۰۷﴾

(१०७) तथा हमने आपको पूरे विश्व के लिए दया बनाकर ही भेजा है।[1]

قُلۡ اِنَّمَا يُوۡحٰٓى اِلَىَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمۡ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ‌ۚ فَهَلۡ اَنۡتُمۡ مُّسۡلِمُوۡنَ ﴿۱۰۸﴾

(१०८) कह दीजिए कि मेरी ओर तो बस प्रकाशना की जाती है कि तुम सब का पूज्य एक ही है, तो क्या तुम भी उसको मानने वाले हो ?[2]

है। अथवा इससे तात्पर्य क़ुरआन मजीद है जिसमें मुसलमानों के लिए लाभ एवं पर्याप्ती है। भक्त से तात्पर्य विनम्रता तथा विनय से अल्लाह की इबादत करने वाले, तथा शैतान एवं मन की इच्छाओं पर अल्लाह की आज्ञाकारिता को वरीयता देने वाले हैं।

[1]इसका अर्थ यह है कि जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान ले आयेगा, उसने मानों इस दया को स्वीकार कर लिया तथा अल्लाह के इन वरदानों की कृतज्ञता की। परिणाम स्वरूप लोक-परलोक के सुखों को प्राप्त करेगा, तथा चूँकि आपकी रिसालत पूर्ण विश्व के लिए है अतः आप पूर्ण विश्व के लिए कृपा बनकर अर्थात अपनी शिक्षाओं द्वारा लोक तथा परलोक के सुखों का भागी बनाने के लिए आये हैं। कुछ लोगों ने इस आधार पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अखिल जगत के लिए कृपा सिद्ध किया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कारण यह मानव जाति पूर्णरूप से विनाश तथा ध्वस्त होने से सुरक्षित कर दी गयी, जैसाकि विगत् समुदायों को अशुद्ध शब्दों के भाँति मिटा दिया गया, उम्मते मोहम्मदिया (जो इस आधार पर पूरी मानव जाति पर आधारित है कि इसमें वह भी हैं जिन्होंने आप को मान लिया तथा वह भी जिनके लिए आप उपदेशक बनाकर भेजे गये) पर सर्वनाशी प्रकोप नहीं आएगा अन्तिम ईशदूत के कथनों (अहादीस) से विदित होता है कि मुशरिकों मिश्रणवादियों के लिए अभिशाप न देना भी आप की दया का एक भाग था, (सहीह मुस्लिम संख्या २००६) इसी प्रकार क्रोध में किसी मुसलमान को धिक्कार या अपशब्द कहने को प्रलय के दिन दया का कारण बताना आप की दया का अंश है। (मुसनद अहमद क्रम संख्या ५\४३७, अबू दाऊद संख्या ४६५९ तथा अलबानी की अहादीसे सहीहा १७५८) इसी कारण आपने कहा कि «رَحْمَةٌ مُهْدَاةٌ» (सहीहुल जामे अस्सग़ीर संख्या २३४५) "में साक्षात दया बनकर आया हूँ जो अल्लाह की ओर से जगत वासियों के लिए एक उपहार है।"

[2]इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि मूल दया एकेश्वरवाद को ग्रहण करना तथा शिर्क से बचना है।

The Ummah Technology Mission

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ آذَنْتُكُمْ عَلَىٰ سَوَآءٍ ۖ وَإِنْ أَدْرِي أَقَرِيبٌ أَمْ بَعِيدٌ مَّا تُوعَدُونَ ﴿١٠٩﴾

(१०९) फिर यदि वह विमुख हो जायें तो कह दीजिए कि मैंने तुम्हें समान रूप से सतर्क कर दिया है।[1] मुझे ज्ञान नहीं है कि जिसका वादा तुमसे किया जा रहा है वह निकट है अथवा दूर है।[2]

إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ﴿١١٠﴾

(११०) नि:संदेह (अल्लाह तआला) तो तुम्हारी खुली बातों को जानता है तथा जिसे तुम छुपाते हो उसे भी जानता है।

وَإِنْ أَدْرِي لَعَلَّهُ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿١١١﴾

(१११) तथा मुझे इसका भी ज्ञान नहीं, सम्भव है कि यह तुम्हारी परीक्षा हो तथा एक निर्धारित समय तक का लाभ हो।[3]

قَالَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ۗ وَرَبُّنَا الرَّحْمَٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١١٢﴾

(११२) (नबी ने) स्वयं कहा, हे पालनहार! न्याय के साथ निर्णय कर दे तथा हमारा प्रभु अत्यन्त दयालु है जिससे सहायता माँगी जाती है उन बातों पर जो तुम वर्णन कर रहे हो।[4]

---

[1]अर्थात जिस प्रकार मैं जानता हूँ कि तुम एकेश्वरवाद के तथा इस्लाम के आमन्त्रण से विमुख होकर मेरे शत्रु हो, उसी प्रकार तुम्हें भी यह विदित होना चाहिए कि मैं तुम्हारा शत्रु हूँ तथा हमारा-तुम्हारा आपस में स्पष्ट विरोध है।

[2]इस वादे से तात्पर्य क़ियामत है अथवा इस्लाम तथा मुसलमानों की विजय का वादा अथवा वह वचन जब अल्लाह की ओर से तुम्हारे विरूद्ध युद्ध करने का मुझे आज्ञा प्रदान की जायेगी।

[3]अर्थात उस अल्लाह के वादे में देरी, मैं नहीं जानता कि तुम्हारी परीक्षा के लिए है अथवा एक विशेष समय तक लाभ उठाने का अवसर प्रदान करना है।

[4]अर्थात मेरे विषय में जो तुम विभिन्न प्रकार की बातें करते रहते हो, अथवा अल्लाह के लिए सन्तान ठहराते हो, उन सभी बातों के सापेक्ष, वह प्रभु ही दया करने वाला तथा सहायता करने वाला है।

The Ummah Technology Mission

सूरतुल हज्ज-२२

سُوْرَةُ الْحَجِّ

सूरतुल हज्ज* मदीने में अवतरित हुई तथा इसकी अठहत्तर आयतें तथा दस रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु तथा अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

(१) लोगो ! अपने प्रभु से डरो ! नि:संदेह क़ियामत (प्रलय) का भूकम्प घोर महान विषय है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ ①

(२) जिस दिन तुम उसे देख लोगे, प्रत्येक दूध पिलाने वाली माता अपने दूध पीते शिशु को भूल जायेगी तथा सभी गर्भवतियों के गर्भ गिर जायेंगे तथा तू देखेगा कि लोग मतवाले दिखायी देंगे, यद्यपि वे वास्तव में मतवाले नहीं होंगे, परन्तु अल्लाह का प्रकोप अत्यन्त कठोर है।[1]

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ②

---

*इसके मक्का तथा मदीना में अवतरित होने में मतभेद है। उचित बात यही है इसका कुछ भाग मक्का में तथा कुछ भाग मदीने में अवतरित हुआ। यह क़ुर्तुबी का कथन है। (फ़तहुल क़दीर) यह क़ुरआन करीम की एक ही सूर: है जिसमें दो सज्दे हैं।

[1]उपरोक्त आयत में जिस भूकम्प का वर्णन है, उसके परिणाम दूसरी आयतों में वर्णित किये गये हैं, जिस का अर्थ लोगों पर अत्यधिक भय, डर तथा घबराहट का होना है, यह क़ियामत से पूर्व होगा तथा उसके साथ ही दुनिया का विनाश हो जायेगा। अथवा यह क़ियामत के पश्चात उस समय होगा, जब लोग क़ब्रों से उठकर हश्र के मैदान में एकत्रित होंगे। अधिकतर व्याख्याकार प्रथम विचार से सहमत हैं जबकि कुछ व्याख्याकार द्वितीय विचार के पक्ष में हैं। तथा उसके पक्ष में वह हदीसें प्रस्तुत करते हैं जैसे अल्लाह तआला आदम को आदेश देगा कि अपनी सन्तान में एक हज़ार में से ९९९ को नरक के लिए निकाल दे। यह सुनकर गर्भवतियों के गर्भ गिर जायेंगे, बालक बूढ़े हो जायेंगे तथा लोग अचेत दिखायी देने लगेंगे, यद्यपि वे अचेत नहीं होंगे, केवल यातना की कठोरता होगी। यह बात सहाबा को अत्यधिक भारी लगी, उनके मुख का रंग बदल

The Ummah Technology Mission

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ۙ﴿۳﴾

(३) तथा कुछ लोग अल्लाह के विषय में बातें बनाते हैं वह भी अज्ञानता के साथ तथा प्रत्येक उद्दण्ड शैतान का अनुसरण करते हैं।[1]

كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿۴﴾

(४) जिस पर अल्लाह का निर्णय लिख दिया गया है[2] कि जो कोई भी उस की मित्रता करेगा वह उसे भटका देगा तथा उसे अग्नि की यातना की ओर ले जायेगा।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ

(५) हे लोगो ! यदि तुम्हें मरने के पश्चात जीवित होने में संदेह है, तो सोचो, हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर रक्त के थक्के से, फिर माँस के लोथड़े से जो रूप दिया गया था तथा बिना चित्र था।[3] यह

गया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह देखकर फ़रमाया (घबराओ नहीं) ये ९९९ याजूज तथा माजूज में से होंगे तथा तुम में से केवल एक होगा, तुम्हारी (संख्या) लोगों में इस प्रकार होगी जैसे सफेद रंग के बैल के बगल में काले बाल अथवा काले रंग के बैल के बगल में सफेद रंग के बाल हों। तथा मुझे आशा है कि स्वर्गवासियों में तुम चौथाई अथवा तिहाई अथवा आधे होगे। जिसे सुनकर सहाबा ने हर्षोल्लास में अल्लाह अकबर का नारा उदघोषित किया। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः *अल-हज*) प्रथम विचार भी अनुचित नहीं है। कुछ क्षीण हदीसों से उनकी भी पुष्टि होती है। इसलिए भूकम्प तथा उसके रूप से तात्पर्य यदि व्यग्रता तथा भायनकता की तीव्रता है (तथा प्रत्यक्ष यही है) तो तीव्र घबराहट तथा भयानकता का यह रूप दोनों अवसरों पर होगा। इसलिए दोनों ही विचार उचित हो सकते हैं, क्योंकि दोनों अवसरों पर लोगों की अवस्था इसी प्रकार होगी जैसी इस आयत में तथा सहीह बुख़ारी में वर्णन की गयी है।

[1]जैसे यह कि अल्लाह तआला पुनः पैदा करने का सामर्थ्य नहीं रखता, अथवा उसकी संतान है आदि।

[2]अर्थात शैतान के विषय में अल्लाह के भाग्य लेख में यह अंकित है।

[3]अर्थात वीर्य से चालीस दिन पश्चात गाढ़ा रक्त (अलक़:) तथा अलक: से माँस का लोथड़ा (मुदग:) बन जाता है, مُخَلَّقَةٍ से तात्पर्य वह शिशु है जिसका जन्म स्पष्ट तथा आकार एवं रूप प्रकट हो जाता है, ऐसे शिशु में प्राण डाल दिये जाते हैं तथा पूर्ण होने

The Ummah Technology Mission

وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۚ وَنُقِرُّ فِي الْأَرْحَامِ مَا نَشَاءُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشُدَّكُمْ ۚ وَمِنكُم مَّن يُتَوَفَّىٰ وَمِنكُم مَّن يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِن بَعْدِ عِلْمٍ شَيْئًا ۚ وَتَرَى الْأَرْضَ هَامِدَةً فَإِذَا أَنزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ

हम तुम पर स्पष्ट कर देते है [1] तथा हम जिसे चाहें एक निर्धारित समय तक माता के गर्भ में रखते हैं[2] फिर तुम्हें शिशु के रूप में संसार में लाते हैं, फिर ताकि तुम अपने पूर्ण यौवन को पहुँचो, तुम में से कुछ वे हैं जो मर जाते है[3] तथा कुछ जीर्ण आयु की ओर फिर से लौटा दिये जाते हैं कि वह एक वस्तु से परिचित होने के पश्चात पुनः अपरिचित हो जाये ।[4] तू देखता है कि धरती बंजर तथा सूखी है, फिर जब हम उस पर वर्षा करते हैं, तो

के पश्चात उसका जन्म होता है तथा غير مخلقة इसके विपरीत जिसका आकार तथा रूप प्रकट न हुआ हो, न उसमें प्राण फूंके जायें तथा समय से पूर्व ही वह गिर जायें। सहीह हदीसों में भी माता के गर्भाशय का वर्णन किया गया है। जैसे एक हदीस में है कि वीर्य चालीस दिन के पश्चात गाढ़ा रक्त (अलक़:) बन जाता है, फिर चालीस दिन के पश्चात लोथड़ा अथवा मांस का टुकड़ा (मुदग:) का रूप ले लेता है। फिर अल्लाह तआला की ओर से एक फ़रिश्ता आता है, जो उसमें प्राण फूंकता है, अर्थात चार महीने के पश्चात प्राण फूंके जाते हैं तथा शिशु एक स्पष्ट रूप का आकार ले लेता है, (सहीह बुख़ारी, किताब अल-अंबिया व किताबुल क़दर, मुस्लिम किताबुल क़दर बाब कैफ़ियतुल ख़लक़िल आदमी)

[1]अर्थात इस प्रकार हम अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य तथा सृष्टि की उत्पत्ति तुम्हारे लिए वर्णन करते हैं।

[2]अर्थात जिसको नष्ट नहीं करना होता।

[3]अर्थात पूर्ण युवावस्था से पूर्व ही। पूर्ण युवावस्था से तात्पर्य व्यस्कता अथवा बुद्धिमता एवं शक्तिशाली तथा समझने की आयु है जो ३० वर्ष से ४० वर्ष तक के मध्य की आयु है।

[4]इससे तात्पर्य वृद्धावस्था में मनुष्य की शक्ति क्षीण होने के साथ बुद्धि एवं याद रखने की भी शक्ति क्षीण हो जाती है तथा याद रखने, बुद्धि एवं समझ में बालक के समान हो जाता है, जिसे सूरः *यासीन* में ﴿وَمَن نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ﴾ तथा सूरः *तीन* में ﴿ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ﴾ से सम्बोधित किया गया है।

The Ummah Technology Mission

وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِيْجٍ ۝٥

वह उभरती है तथा फूलती है तथा हर प्रकार की सुन्दर वनस्पति उगाती है।[1]

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٦

(६) यह इसलिए कि अल्लाह ही सत्य है तथा वही मृतकों को जीवित करता है तथा वह प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्य रखने वाला है।

وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ ۝٧

(७) तथा यह कि क़ियामत निश्चय ही आने वाली है जिसमें कोई शंका अथवा संदेह नहीं तथा नि:संदेह अल्लाह (तआला) क़ब्र वालों को पुन: जीवित करेगा।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى

(८) तथा कुछ लोग अल्लाह के विषय में बिना ज्ञान के तथा बिना मार्गदर्शन के तथा बिना

---

[1]यह मृतक को जीवित करने पर अल्लाह तआला के सामर्थ्यवान होने का दूसरा तर्क है। प्रथम तर्क जो वर्णित हुआ, यह था जो शक्ति एक तुच्छ वीर्य की बूंद से इस प्रकार एक मनुष्य का रूप ढाल देती है तथा एक आकर्षक रूप प्रदान कर देती है, उसके अतिरिक्त विभिन्न अवस्थाओं से गुज़ारते हुए वृद्धावस्था की ऐसी अवस्था में ले जाती है, जहाँ उसके शरीर से लेकर उसका बौद्धिक एवं मस्तिष्क की शक्ति तक सभी क्षीणता, त्रुटियों एवं कमियों का शिकार हो जाती हैं। क्या उसके लिए पुन: जीवित करने में कठिनाई है ? नि:संदेह जो शक्ति मनुष्य को इन अवस्थाओं से गुज़ार सकती है, वही शक्ति मरने के पश्चात भी, उसे पुन: एक नया जीवन तथा रूप प्रदान कर सकती है। दूसरा तर्क यह दिया गया कि देखो धरती बंजर तथा मृतरूप में होती है, परन्तु वर्षा के पश्चात किस प्रकार जीवित तथा प्रफुल्लित तथा विभिन्न प्रकार एवं रूप के अनाज मेवे तथा रंग-बिरंगे फूलों से भर जाती है। उसी प्रकार अल्लाह तआला क़ियामत वाले दिन मनुष्यों को उनकी क़ब्रों से उठा खड़ा करेगा। जिस प्रकार हदीस में है कि एक सहावी ने पूछा अल्लाह तआला जिस प्रकार मनुष्यों को पैदा करेगा, उसकी कोई निशानी सृष्टि में से वर्णन कीज़िए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "क्यों तुम ऐसी घाटी से गुज़रे हो जो सूखी तथा बंजर हो, फिर पुन: उसे लहलहाते देखा हो ? उसने कहा "हाँ" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, बस उसी प्रकार मनुष्यों का पुन: जीवित होना होगा।" (मुसनद अहमद भाग ४, पृष्ठ ११, इब्ने माजा अल-मोक़द्दमा हदीस संख्या १८०)

The Ummah Technology Mission

وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝٨

किसी (दिव्य) प्रकाश वाली पुस्तक के झगड़ते हैं।

ثَانِيَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝٩

(९) अपनी पहलू मोड़ने वाला बनकर[1] इसलिए कि अल्लाह के मार्ग से भटका (विपथ कर) दे। वह दुनियाँ में भी अपमानित होगा तथा क़ियामत (प्रलय) के दिन भी हम उसे नरक में जलने का प्रकोप चखायेंगे।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝١٠

(१०) यह उन कर्मों के कारण जो तेरे हाथों ने आगे भेज रखे थे। विश्वास करो कि अल्लाह (तआला) अपने भक्तों पर अत्याचार करने वाला नहीं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ِۨ اطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ِۨ انْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ

(११) तथा कुछ लोग ऐसे भी हैं कि एक तट पर होकर अल्लाह की इबादत (उपासना) करते हैं। यदि कोई लाभ प्राप्त हो जाये तो आकर्षित होते हैं तथा यदि कोई दुख आ गया तो उसी समय विमुख हो जाते हैं।[2] उन्होंने

---

[1] ثاني कर्ता का रूप है, मोड़ने वाला। عطف का अर्थ 'पहलू' है يجادلُ से 'हाल' है। इसमें उस व्यक्ति की स्थिति वर्णन की गयी है जो बिना बौद्धिक तथा प्रमाणित तर्क के अल्लाह के विषय में झगड़ता है कि वह अभिमानी तथा विमुख होकर अपनी गर्दन मोड़ते हुए फिरता है, जैसे अन्य स्थान पर उसकी स्थिति को इन शब्दों में वर्णन किया गया है ﴿وَلَّىٰ مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا﴾ (सूरः लुकमान-७) ﴿لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ﴾ (सूरः अल-मुनाफ़िक़ून - ५) ﴿أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ﴾ (सूरः बनी इसराईल-८३)

[2] حرف का अर्थ है तट। इन तटों पर खड़ा होने वाला स्थिर नहीं होता अर्थात उसे शान्ति एवं स्थायित्व नहीं होता। उसी प्रकार जो व्यक्ति धर्म के विषय में संशय एवं संदेह का शिकार रहता है, उसकी भी स्थिति इसी प्रकार होती है, उसे धर्म पर स्थिरता नहीं मिलती, उसका उद्देश्य केवल सांसारिक लाभ्य होता है यदि मिलते रहें तो ठीक है, अन्यथा वह पुनः अपने पैतृक धर्म अर्थात कुफ़्र तथा शिर्क की ओर लौट जाता है। इसके विपरीत जो सच्चे मुसलमान होते हैं तथा ईमान तथा विश्वास से भरपूर होते हैं, वे عسر و يسر देखे बिना धर्म पर दृढ़ रहते हैं, यदि अनुकम्पायें प्राप्त हों तो कृतज्ञता

The Ummah Technology Mission

الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ⑪

दोनों लोक की हानि उठा लिया। वास्तव में यह स्पष्ट हानि है।

يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ⑫

(१२) वह अल्लाह के अतिरिक्त उन्हें पुकारते हैं जो न हानि पहुँचा सकें न लाभ। यही तो दूरस्थ का भटकाव है।

يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗۤ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ؕ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ⑬

(१३) उसे पुकारते हैं जिसकी हानि उसके लाभ से निकट है, नि:संदेह बुरे संरक्षक हैं तथा बुरे मित्र।[1]

व्यक्त करते हैं तथा यदि कष्टों से पीड़ित होते हैं तो धैर्य एवं सहन करते हैं। इसके अवतरित होने के कारण में एक सशंकित व्यक्ति की घटना भी इसी प्रकार वर्णन की गयी है। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरतुल हज्ज) कि एक व्यक्ति मदीने आता, यदि उसके घर बच्चे होते एवं उसी प्रकार जानवरों में अधिकता होती तो कहता, यह धर्म अच्छा है, यदि ऐसा न होता तो कहता, यह धर्म बुरा है। कुछ कथनों में यह गुण नये ग्रामीण मुसलमानों का वर्णन किया गया है। (फ़तहुल बारी)

[1]कुछ व्याख्याकारों के निकट يدعو कहेंगे के अर्थ में है। अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की पूजा करने वाले क़ियामत के दिन कहेंगे कि जिसकी हानि, उसके लाभ से निकटतम है, वह संरक्षक तथा मित्र नि:संदेह बुरा है अर्थात अपने देवताओं के विषय में यह कहेगा क्योंकि वहाँ उसकी आशाओं के महल ढह जायेंगे तथा ये देवता जिनके विषय में उसका विचार था कि वे अल्लाह की यातना से उसे बचा लेंगे, उसकी सिफ़ारिश करेंगे, वहाँ स्वयं वह देवता भी उसके साथ नरक के ईंधन होंगे। مولى का अर्थ स्वामी तथा सहायता करने वाला तथा عشير का अर्थ साथ रहनेवाला, साथी तथा निकटवर्ती है। सहायता करने वाला तथा साथी वह होता है जो दुख के अवसर पर काम आये, परन्तु ये देवता स्वयं यातना की पकड़ में होंगे, यह किसी के क्या काम आयेंगे ? इसलिए इन्हें बुरा संरक्षक तथा बुरा साथी कहा गया है। इनकी पूजा हानि ही हानि है, लाभ का तो इसमें कोई अंश ही नहीं है, फिर यह जो कहा गया है कि उनकी हानि, उनके लाभ से निकटतम है, तो यह इस प्रकार है जैसे अन्य स्थान पर कहा गया है।

﴿وَإِنَّآ أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلَىٰ هُدًى أَوْ فِي ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ﴾

"नि:संदेह हम (अर्थात अल्लाह के मानने वाले) अथवा तुम (उसको अस्वीकार करने वाले) सत्यमार्ग पर हैं अथवा खुले भटकावे में।" (सूरः *सबा*-२४)

The Ummah Technology Mission

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿١٤﴾

(१४) नि:संदेह ईमान तथा सत्कर्म करने वालों को अल्लाह (तआला) लहरें लेती हुई नहरों वाले स्वर्ग में ले जायेगा। अल्लाह जो निश्चय करे उसे करके रहता है।

مَن كَانَ يَظُنُّ أَن لَّن يَنصُرَهُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى السَّمَاءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهُ مَا يَغِيظُ ﴿١٥﴾

(१५) जिसका यह विचार हो कि अल्लाह (तआला) अपने रसूल की सहायता दोनों लोकों में न करेगा, वह ऊँचाई पर एक रस्सा बाँधकर (अपने गले में फंदा फाँस ले) और गला घूँट ले फिर देख ले कि उसकी चतुरता से वह बात हट जाती है, जो उसे तड़पा रही है।[1]

وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَاهُ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يُرِيدُ ﴿١٦﴾

(१६) तथा हमने इसी प्रकार इस क़ुरआन को खुली आयतों में अवतरित किया है। तथा जिसे अल्लाह चाहे मार्गदर्शन प्रदान करता है।

स्पष्ट बात है कि सत्यमार्ग पर वही हैं जो अल्लाह के मानने वाले हैं। परन्तु उसे स्पष्ट शब्दों में कहने के बजाय संकेत तथा प्रश्नात्मक वाक्यों में वर्णन किया गया है, जो सुनने वाले को अधिक प्रभावी तथा शैलीदार लगता है। अथवा इसका सम्बन्ध संसार से है तथा अर्थ यह होगा कि अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को पुकारने से तुरन्त हानि यह हुई कि ईमान से हाथ धो बैठा, यह निकटतम हानि है। तथा आख़िरत में तो उसकी हानि निश्चित ही है।

[1]इसके एक अर्थ तो यह किये गये हैं कि ऐसा व्यक्ति जो यह चाहता है कि अल्लाह तआला अपने पैग़म्बरों की सहायता न करे, क्योंकि उसके प्रभाव तथा विजय से उसको हार्दिक दुख होता है, तो वह अपने घर की छत पर रस्सी लटका कर तथा अपने गले में उसका फंदा लेकर गला घोंट कर आत्महत्या कर ले, शायद यह आत्महत्या उसे क्रोध से बचा ले, जो वह मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बढ़ते हुए प्रभाव क्षेत्र को देखकर अपने दिल में पाता है। इस स्थिति में سماء घर की छत होगी। अन्य अर्थ यह है कि वह एक रस्सा लेकर आकाश पर चढ़ जाये तथा आकाशों से जो प्रकाशना तथा सहायता आती हो, उसका क्रम समाप्त कर दे (यदि वह कर सकता है) तथा देखे कि क्या उसके हृदय को शान्ति प्राप्त हुई ? इमाम इब्ने कसीर ने प्रथम भावार्थ को तथा इमाम शौकानी ने द्वितीय भावार्थ को अधिक प्रिय समझा है तथा वाक्य क्रम से यह द्वितीय भावार्थ अधिक निकट लगता है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ وَالنَّصَارَىٰ وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١٧﴾

(१७) ईमानवाले, तथा यहूदी एवं विधर्मी तथा इसाई एवं अग्निपूजक[1] तथा मूर्तिपूजक[2] उन सबके मध्य क़ियामत के दिन अल्लाह (तआला) स्वयं निर्णय कर देगा [3] अल्लाह (तआला) प्रत्येक वस्तु का गवाह है।[4]

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ

(१८) क्या तू नहीं देख रहा है कि अल्लाह के समक्ष नत्मस्तक हैं सभी आकाशों वाले तथा धरती वाले एवं सूर्य तथा चन्द्रमा एवं सितारे तथा पर्वत एवं वृक्ष तथा जीव[5] तथा बहुत से

---

[1] مجوس से तात्पर्य ईरान के अग्निपूजक हैं जो दो देवताओं में विश्वास रखते हैं। एक अंधकार उत्पन्न करने वाला है, दूसरा प्रकाश का जिसे वे अहरमन एवं यज़दाँ कहते हैं।

[2] इनमें वर्णित भटके हुए सम्प्रदायों के अतिरिक्त जितने भी अल्लाह के साझीदार बनाने का पाप करने वाले हैं, सभी आ गये।

[3] इनमें से सत्य पर कौन है, असत्य पर कौन ? यह तो उन प्रमाणों से सिद्ध हो जाता है जो अल्लाह ने अपने क़ुरआन में अवतरित किये हैं तथा अपने अन्तिम पैग़म्बर को भी इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए भेजा था ﴿لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ﴾ (सूरः *अल-फ़तह*-२८) यहाँ निर्णय से तात्पर्य वह दण्ड है जो अल्लाह तआला क़ियामत वाले दिन असत्य के पुजारियों को देगा, इस दण्ड से भी स्पष्ट हो जायेगा कि संसार में सत्य पर कौन था तथा असत्य पर कौन ?

[4] यह निर्णय मात्र निर्णायक अधिकार की शक्ति के कारण नहीं होगा बल्कि न्याय के आधार पर होगा, क्योंकि वह सभी कुछ भली-भाँति जानता है, उसे प्रत्येक वस्तु का ज्ञान है।

[5] कुछ व्याख्याकारों ने इस सजदे से उन सभी वस्तुओं को अल्लाह के आदेशों के अधीन होना अर्थ लिया है, किसी में शक्ति नहीं कि वह अल्लाह के आदेशों की अवहेलना कर सके। उनके निकट सजदा यहाँ उपासना एवं इबादत (वंदना) के अर्थ में नहीं जो केवल बुद्धिवाले जीवितों के लिए विशेष है। जबकि कुछ व्याख्याकारों ने इसे काल्पनिक के बजाये वास्तविक अर्थ में लिया है कि प्रत्येक सृष्टि अपने-अपने रूप से अल्लाह के समक्ष सजदा कर रही है। जैसे من في السماوات से तात्पर्य फ़रिश्ते हैं و من في الارض से प्रत्येक प्रकार के जीवधारी, मनुष्य, जिन्नात, पशु तथा पक्षी एवं अन्य वस्तुयें हैं। ये सभी अपने-अपने अन्दाज़ (शैली) में सजदा एवं अल्लाह की तस्बीह (स्तुति) करते हैं। ﴿وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ﴾ (सूरः *बनी इस्राईल*-४४) सूर्य, चन्द्रमा तथा सितारों का विशेष रूप से इसलिए वर्णन

The Ummah Technology Mission

وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَآبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ؕ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ؕ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿۱۸﴾ هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ۫

मनुष्य भी।[1] हाँ बहुत से वे भी हैं जिन पर यातना सिद्ध हो चुकी है,[2] तथा जिसे प्रभु अपमानित कर दे उसे कोई सम्मान देने वाला नहीं,[3] अल्लाह जो चाहता है करता है।

(१९) ये दोनों अपने प्रभु के विषय में मतभेद रखने वाले हैं,[4] तो काफ़िरों के लिए अग्नि के

किया गया है कि मूर्तिपूजक इनकी पूजा करते रहे हैं। अल्लाह तआला ने वर्णन किया है, तुम उनको माथा टेकते हो, ये तो अल्लाह के समक्ष सजदा करने वाले तथा उसके अधीन हैं, इसलिए तुम उनको सजदा न करो, उस शक्ति को सजदा करो जो उनका स्रष्टा है। (*हा॰मीम॰सजदा-३७*) सहीह हदीस में है, आदरणीय अबूज़र का कथन है मुझसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, जानते हो सूर्य कहाँ जाता है? मैंने कहा अल्लाह तथा उसके रसूल उचित रूप से जानते हैं। फ़रमाया सूर्य जाता है तथा अर्श के नीचे नत्मस्तक हो जाता है, फिर उसे (उदय होने का) आदेश दिया जाता है। एक समय आयेगा कि उसे कहा जायेगा, वापस लौट जा अर्थात जहाँ से आया है वहीं चला जा (सहीह बुख़ारी बदउल ख़ल्क़ बाब सिफ़तिश्शम्स वल क़मरे बेहुसबान तथा मुस्लिम किताबुल ईमान, बाब बयानुज़्ज़मनि अल्लज़ी ला युक़बल फ़ीहिल ईमान) इसी प्रकार एक सहाबी की घटना का वर्णन हदीस में है कि उन्होंने स्वप्न में अपने साथ वृक्ष को सजदा करते देखा। (तिर्मिज़ी अबवाबुस्सफ़रे, बाब माजाअ मायक़ूल फ़ी सजूदिल क़ुरआन तोहफ़तुल अहवज़ी भाग १, पृष्ठ ४०२, इब्ने माजा संख्या १०५३) तथा पर्वतों एवं वृक्षों के सजदा में उनकी छाया का दायें-बायें फिरना अथवा झुकना भी सम्मिलित है, जिस की ओर संकेत *सूरः रअ्द-१५* तथा *सूरः अल-नहल-४८* तथा ४९ में भी किया गया है।

[1]यह सजदा अधीनता एवं इबादत ही है जिसको मनुष्यों की एक बहुत बड़ी संख्या करती है तथा अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने का अधिकारी बनती है।

[2]यह वह हैं जो अधीनता के सजदा अस्वीकार करके कुफ़्र का मार्ग अपनाते हैं वरन प्राकृतिक नियमों अर्थात प्राधीनता वाले सजदे में तो उन्हें भी इंकार की शक्ति ही नहीं कि अस्वीकार करें।

[3]कुफ़्र को धारण करने का परिणाम अपमान तथा अनादर तथा आख़िरत में स्थाई यातना है, जिससे बचा कर काफ़िरों को मान देने वाला कोई नहीं होगा।

[4] ﴿ هٰذٰنِ خَصْمٰنِ ﴾ ये दोनों द्विवचन हैं। कुछ ने इससे तात्पर्य उपरोक्त पथभ्रष्ट सम्प्रदाय तथा उसके विपक्ष दूसरा सम्प्रदाय मुस्लिम लिया है। ये दोनों अपने प्रभु के विषय में झगड़ते

The Ummah Technology Mission

فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ؕ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ۚ﴿۱۹﴾ يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ؕ﴿۲۰﴾ وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ﴿۲۱﴾

वस्त्र नाप कर काटे जायेंगे तथा उनके सिरों के ऊपर से गर्म पानी की धारा बहायी जायेगी।

(२०) जिससे उनके पेट की सब वस्तुयें तथा खालें गला दी जायेंगी।

(२१) तथा उनके दण्ड के लिए लोहे के हथौड़े हैं।

كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ۫ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿۲۲﴾

(२२) यह जब भी वहाँ के दुख से निकल भागने की चेष्टा करेंगे, वहीं लौटा दिये जायेंगे तथा (कहा जायेगा) जलने की यातना का स्वाद चखो।[1]

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّ لُؤْلُؤًا ؕ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿۲۳﴾

(२३) नि:संदेह ईमानवालों तथा सत्कर्म करने वालों को अल्लाह (तआला) उन स्वर्ग में ले जायेगा जिनके नीचे से नहरें लहरें ले रही हैं, जहाँ उन्हें स्वर्ण के कंगन पहनाये जायेंगे तथा सच्चे मोती भी। वहाँ उनका वस्त्र शुद्ध रेशम का होगा।[2]

हैं, मुसलमान तो उसके एक होने तथा उसके पुन: जीवित करने के सामर्थ्य के पक्ष में हैं, जबकि अन्य अल्लाह के विषय में विभिन्न भटकावे में पड़े हुए हैं। इस सम्बन्ध में बद्र के युद्ध में लड़ने वाले मुसलमान तथा काफ़िर भी आ जाते हैं जिसमें एक ओर आदरणीय हमज़ा, आदरणीय अली तथा आदरणीय उबैदा थे तथा दूसरी ओर उनके विपक्षी काफ़िरों में से उत्बा, शैबा तथा वलीद बिन उत्बा थे। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरतिल हज्ज) इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि ये दोनों ही भावार्थ ठीक एवं आयत के अनुसार हैं।

[1]इसमें नरक में जाने वालों की यातना का कुछ विस्तृत वर्णन किया गया है, जो उन्हें भुगतना होगा।

[2]नरकवासियों की अपेक्षा में यह स्वर्गवासियों का तथा उन सुखों का वर्णन है जो ईमानवालों को उपलब्ध कराये जायेंगे।

The Ummah Technology Mission

وَهُدُوْٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَهُدُوْٓا اِلٰى صِرَاطِ الْحَمِيْدِ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा उन्हें पवित्र वचन का मार्ग दिखा दिया गया [1] तथा अति प्रशंसित (अल्लाह के) मार्गदर्शन दिया गया।[2]

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَاۗءَ ۨ الْعَاكِفُ فِيْهِ وَالْبَادِ ۭ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍۢ بِظُلْمٍ

(२५) जिन लोगों ने कुफ़्र किया तथा अल्लाह के मार्ग से रोकने लगे तथा वह सम्मानित मस्जिद से भी[3] जिसे हमने सभी लोगों के लिए समान कर दिया है, वहीं के वासी हों अथवा बाहर के हों[4] जो भी अत्याचार के साथ वहाँ

---

[1]अर्थात स्वर्ग ऐसा स्थान है जहाँ पवित्र बातें ही होंगी, वहाँ व्यर्थ एवं पाप की बातें नहीं होंगी।

[2]अर्थात ऐसे स्थान की ओर जहाँ अल्लाह की प्रशंसा तथा महिमा की ध्वनि गूँज रही होगी। यदि इसका सम्बन्ध संसार से है तो अर्थ क़ुरआन तथा इस्लाम की ओर मार्गदर्शन है जो ईमानवालों के भाग में आती है।

[3]रोकने वालों से तात्पर्य मक्का के काफ़िर हैं, जिन्होनें ६ हिजरी में मुसलमानों को मक्का जाकर "उमरह" करने से रोक दिया था। मुसलमानों को हुदैबिया नामक स्थान से वापस आना पड़ा था।

[4]इसमें मतभेद है कि मस्जिदे-हराम (सम्मानवाली मस्जिद) से तात्पर्य विशेषरूप से मस्जिद (ख़ानये काअबा) ही है अथवा सम्पूर्ण हरम मक्का। क्योंकि क़ुरआन में कुछ स्थान पर सम्पूर्ण हरमे मक्का के लिए भी मस्जिदे हराम का शब्द प्रयुक्त हुआ है, अर्थात अंश बोलकर कुल का अर्थ लिया गया है। जहाँ तक विशेष मस्जिदे हराम का सम्बन्ध है, उसके विषय में तो इस बात पर सहमती है कि इसमें निवासी स्वदेशी अथवा विदेशी सबका भाग समान है अर्थात बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक व्यक्ति रात-दिन के किसी भाग में इबादत कर सकता है, किसी के लिए भी किसी मुसलमान को इबादत से रोकने की आज्ञा नहीं है। परन्तु जिन धर्मगुरूओं ने मस्जिदे हराम से तात्पर्य सम्पूर्ण हरम लिया है उनके एक गुट का विचार यह है कि मक्का का पूरा हरम सभी मुसलमानों के लिए समान है तथा उसके मकानों तथा धरती का कोई स्वामी नहीं इसलिए उनके निकट उनका क्रय-विक्रय अथवा किराये पर देना उचित नहीं। जो व्यक्ति भी किसी स्थान से हज अथवा उमरह के लिए मक्का जाये तो उसे यह अधिकार है कि वह जहाँ चाहे ठहरे, वहाँ रहने वालों का कर्तव्य है कि वह उन्हें अपने घरों में ठहरने से किसी को न रोकें। दूसरा विचार यह है कि मकान तथा धरती

TheUmmah Technology Mission

نُذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٥﴾

विपथ होने का का विचार करेगा[1] हम उसे कष्टदायी यातना का स्वाद चखायेंगे।[2]

وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ أَنْ لَا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا

(२६) तथा जब कि हम ने इब्राहीम के लिए कआबा घर का स्थान निर्धारण कर दिया[3] (इस प्रतिबन्ध के साथ) कि मेरे साथ किसी को

किसी विशेष व्यक्ति के स्वामित्व की वस्तु हो सकते हैं तथा उनके स्वामित्व का अधिकार अर्थात क्रय-विक्रय तथा किराये पर देना उचित है। परन्तु वह स्थान जिनका सम्बन्ध हज के कार्यक्रम पूरा करने से है जैसे मिना, मुजदलिफ़ा, अरफ़ात का मैदान यह जनसामान्य के लिए दान हैं। इनमें किसी का स्वामित्व मान्य नहीं। यह समस्या प्राचीन धर्मगुरूओं के मध्य अत्यधिक मतभेद का कारण बनी रही है। परन्तु आजकल लगभग सभी धर्मगुरू विशेष स्वामित्व के पक्ष में हो गये हैं। तथा इसमें कोई मतभेद नहीं रह गया है। मौलाना मुफ़्ती मोहम्मद शफ़ी मरहूम ने भी इमाम अबू हनीफ़ा तथा धर्माचारियों को इसी का पक्षधर बताया है। (देखिये मआरिफ़ुल क़ुरआन भाग ६, पृष्ठ २५३)

[1] إِلْحَادٌ का शाब्दिक अर्थ तो विपथ होना है। यहाँ यह सामान्य है कुफ़्र तथा शिर्क से लेकर हर प्रकार के पाप के लिए। यहाँ तक कि कुछ धर्मगुरू क़ुरआनी शब्दों के आधार पर इस बात का विश्वास करते हैं कि हरम में यदि किसी प्रकार के पाप की योजना बना लेगा (चाहे उस कार्यान्वयन करे अथवा न करे) तो वह भी इस चेतावनी में सम्मिलित है। कुछ कहते हैं कि मात्र विचार के कारण पकड़ नहीं होगी, जैसाकि अन्य क़ुरआन के शब्दों से ज्ञात होता है। परन्तु यदि निश्चय कर लिया हो तो पकड़ हो सकती है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] यह बदला है उनका जो उपरोक्त पापों को करेंगे।

[3] अर्थात बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) का स्थान बता दिया तथा वहाँ इब्राहीम की सन्तान को बसा दिया। इससे ज्ञात होता है कि तूफ़ान नूह के विनाश के पश्चात ख़ानये काबा का निर्माण सर्वप्रथम आदरणीय इब्राहीम के हाथों हुआ। जैसाकि सहीह हदीस से यह बात सिद्ध है, जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "सर्वप्रथम जो मस्जिद धरती पर बनायी गयी, मस्जिदे हराम है तथा उसके चालीस वर्ष पश्चात मस्जिदे अक्सा का निर्माण हुआ।" (मुसनद अहमद भाग ५ पृष्ठ १५० तथा १६६ से १६७ तक तथा सहीह मुस्लिम किताबुल मसाजिद)

The Ummah Technology Mission

وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾

सम्मिलित न करना [1] तथा मेरे घर को परिक्रमा करने, खड़े होने, झुकने (रूकूअ) तथा सजदा करने वालों के लिए शुद्ध एवं पवित्र रखना।[2]

وَاَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा लोगों में हज की घोषणा कर दे, लोग तेरे पास पैदल भी आयेंगे तथा दुबले-पतले ऊँटों पर भी[3] दूरस्थ के सभी मार्गों से आयेंगे।[4]

لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ

(२८) अपना लाभ प्राप्त करने के लिए आ जाये[5] तथा उन निर्धारित दिनों में अल्लाह के नाम को याद करें उन चौपायों पर जो पालतू

---

[1]यह ख़ानये काबा के निर्माण का उद्देश्य वर्णन किया गया है कि इसमें केवल मेरी इबादत की जाये, इससे यह बताने का उद्देश्य है कि मूर्तिपूजकों ने इसमें जो मूर्तियाँ सजा रखी हैं, जिनकी वह यहाँ आकर पूजा करते हैं यह खुला अत्याचार है कि जहाँ केवल अल्लाह की इबादत की जानी चाहिए थी, वहाँ मूर्तियों की पूजा की जाती है।

[2]कुफ़्र, मूर्तिपूजा तथा अन्य अशुद्धताओं एवं अपवित्रताओं से। वर्णन केवल नमाज़ पढ़ने वालों तथा परिक्रमा करने वालों का किया है, क्योंकि ये दोनों इबादतें ख़ानये काबा के लिए विशेष रूप से हैं, नमाज़ में मुख उसी ओर होता है तथा परिक्रमा केवल उसी के चारों ओर की जाती है परन्तु बिदअती लोगों ने अब बहुत सी क़ब्रों की परिक्रमा भी खोज ली है तथा कुछ नमाज़ों के लिए भी क़िबला कोई अन्य।

[3]जो चारे की कमी तथा यात्रा की दूरी तथा थकावट से बोझिल तथा क्षीण हो जायेंगे।

[4]यह अल्लाह तआला की शक्ति है कि मक्का के पर्वत की चोटी से गुँजने वाली यह क्षीण सी उदघोषणा दुनिया के कोने-कोने तक पहुँच गयी, जिसका दर्शन हज तथा उमरह में प्रत्येक हाजी तथा उमरह करने वाला करता है।

[5]यह धार्मिक लाभ हैं कि नमाज़, परिक्रमा तथा हज तथा उमरह के कर्मों द्वारा अल्लाह की क्षमा तथा प्रसन्नता प्राप्त की जाये। तथा सांसारिक व्यापार तथा धन्धा भी करके धन-सामग्री भी प्राप्त की जाये।

The Ummah Technology Mission

الْأَنْعَامِ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْبَائِسَ الْفَقِيرَ ﴿٢٨﴾

हैं,[1] तो तुम आप भी खाओ तथा भूखे भिक्षुकों को भी खिलाओ।

ثُمَّ لْيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٢٩﴾

(२९) फिर वे अपना मैल-कुचैल दूर करें[2] तथा अपनी मन्नत पूरी करें[3] तथा अल्लाह के प्राचीन घर की परिक्रमा करें।[4]

ذَٰلِكَ وَمَن يُعَظِّمْ حُرُمَاتِ

(३०) यह है तथा जो कोई अल्लाह के निषेधाज्ञा

---

[1] بهيمة الأنعام (पालतू पशु) से तात्पर्य ऊँट, गाय तथा बकरी (एवं भेड़ तथा दुम्बे) हैं। उन पर अल्लाह का नाम लेने से अर्थ है उनका वध करना, जो अल्लाह का नाम लेकर ही किया जाता है। तथा ایام معلومات से तात्पर्य बलि दिवस أيام تشريق हैं जो १० ज़िलहिज्जा तथा तीन दिन उसके पश्चात अर्थात ११,१२ तथा १३ ज़िलहिज्जा तक क़ुर्बानी (बलि) दी जा सकती है। सामान्य रूप से ایام معلومات से तात्पर्य ज़िलहिज्जा के दस दिन तथा أيام معدودات से ११,१२ तथा १३ ज़िलहिज्जा लिये जाते हैं। फिर भी यहाँ معلومات जिन अर्थों में आया है, उस से यही ज्ञात होता है कि यहाँ १०-१३ ज़िलहिज्जा तात्पर्य हैं। و الله أعلم

[2] अर्थात १० ज़िलहिज्जा को बड़े जमरः को कंकरियाँ मारने के पश्चात पूरे बाल कटवा कर अथवा छोटे करा कर एहराम खोल दिया जाता है तथा पत्नी से सहवास करने के अतिरिक्त वे सभी कार्य उसके लिए उचित हो जाते हैं जो एहराम की अवस्था में निषेधित थे। मैल-कुचैल दूर करने का अर्थ यही है कि वह बालों तथा नाख़ूनों आदि को साफ कर लें, तेल सुगन्ध प्रयोग कर लें तथा सिले हुए वस्त्र धारण कर लें आदि।

[3] यदि कोई मनौती हुई हो, जैसे कि लोग मान लेते हैं कि यदि अल्लाह ने उस पवित्र घर के दर्शन का शुभ अवसर दिया तो अमुक पुण्य का कार्य करेंगे।

[4] अतीक का अर्थ है प्राचीन, तात्पर्य ख़ानये काबा है कि पूरा बाल मुँडवाने अथवा छोटे कराने के पश्चात طواف إفاضه (ख़ानये काबा की परिक्रमा करें) जिसे "दर्शन की परिक्रमा" भी कहते हैं, तथा यह हज का स्तम्भ है, जो अरफ़ात में तथा मुज़दलिफ़ा में ठहर कर जमरः कुब्रा (बड़े शैतान) के स्थान पर कंकरियाँ मारने के पश्चात किया जाता है। जबकि आगमन परिक्रमा कुछ के निकट वाजिब (आवश्यक) तथा कुछ के निकट सुन्नत है तथा विदाई परिक्रमा अनिवार्य सुन्नत (अथवा आवश्यक) है, जो अधिकतर ज्ञानियों के निकट किसी कारणवश समाप्त हो जाती है, जैसा कि मासिक धर्मवाली स्त्री के लिए समाप्त हो जाती है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

The Ummah Technology Mission

اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ وَ اُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ۙ﴿۳۰﴾

का आदर करे[1] उसके अपने लिए उसके प्रभु के पास अच्छाई है, तथा तुम्हारे लिए चौपाये पशु हलाल (मान्य) कर दिये गये सिवाय उनके जो तुम्हारे समक्ष[2] वर्णन किये गये हैं, तो तुम्हें मूर्तियों की गन्दगी से बचते रहना चाहिए[3] तथा असत्य बातों से भी परहेज करना चाहिये।[4]

حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا

(३१) अल्लाह की तौहीद (एकेश्वरवाद) को स्वीकार करते हुए[5] उसके साथ किसी को न

---

[1]इन निषेधाज्ञा से तात्पर्य हज की वह रीतियाँ हैं जिनका विवरण अभी गुज़रा है। उनके सम्मान का अर्थ उन्हें इस प्रकार अदा करना है, जिस प्रकार बताया गया है। अर्थात उनका विरोध करके इन निषेधाज्ञा की अवहेलना न करे।

[2]"जो वर्णन किये गये हैं" का अर्थ है जिनका निषेध होना वर्णन किया जा चुका है। जैसे आयत حرمت عليكم الميتة والدم में विवरण है।

[3] رِجسٌ का अर्थ अपवित्रता तथा मलीनता है। यहाँ इससे तात्पर्य लकड़ी, लोहा अथवा अन्य किसी वस्तु की बनी हुई मूर्तियाँ हैं। अर्थ यह है कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की पूजा करना अपवित्रता है तथा अल्लाह के क्रोध तथा अप्रसन्नता का कारण है, इससे बचें।

[4]असत्य बात में मिथ्या कथन के अतिरिक्त असत्य सौगन्ध खाना भी है (जिसको हदीस में शिर्क तथा माता-पिता की अवज्ञा के पश्चात तृतीय स्थान के महापाप में रखा गया है) तथा सबसे बड़ा झूठ यह है कि अल्लाह जिन वस्तुओं से पवित्र है, वह उससे सम्बन्धित की जायें, जैसे अल्लाह की सन्तान है, अमुक महात्मा अल्लाह के अधिकार में सम्मिलित हैं, अथवा अमुक कार्य पर अल्लाह तआला को किस प्रकार सामर्थ्य होगा? जैसे काफ़िर मरने के पश्चात पुनः उठाए जाने को आश्चर्यजनक समझते हैं। अथवा अपनी ओर से अल्लाह की उचित की गयी वस्तु को निषेध तथा वर्जित को मान्य कर लेना। जैसे मूर्तिपूजक जानवरों को अपने लिए निषेध कर लेते थे। ये सब झूठ हैं। इनसे बचना अनिवार्य है।

[5] حنفآء बहुवचन है حنيف का। जिसका शाब्दिक अर्थ है आकर्षित होना, एक ओर होना। एक पक्षीय होना। अर्थात शिर्क (मूर्तिपूजा) से एकेश्वरवाद (तौहीद) की ओर और कुफ़्र

The Ummah Technology Mission

خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ أَوْ تَهْوِي بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِيقٍ ﴿٣١﴾

साझी बनाते हुए । (सुनो !) अल्लाह का साझी बनाने वाला जैसे आकाश से गिर पड़ा, अब या तो उसे पक्षी उचक ले जायेंगी अथवा हवा किसी दूरस्थ स्थान पर फेंक देगी ।[1]

ذَٰلِكَ وَمَن يُعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِن تَقْوَى الْقُلُوبِ ﴿٣٢﴾

(३२) यह सुन लिया, (और सुनो,) अल्लाह की निशानियों (प्रतीकों) का जो सम्मान तथा आदर करे, तो उसके दिल की परहेज़गारी के कारण यह है ।[2]

तथा असत्य से इस्लाम तथा सत्य धर्म की ओर आकर्षित होते हुए। अथवा एक पक्षीय होकर शुद्ध रूप से अल्लाह की इबादत (उपासना) करते हुए।

[1]अर्थात जिस प्रकार बड़े पक्षी, छोटे जीव को अति तीव्रता से झपटकर नोच खाते हैं अथवा हवायें किसी को दूरस्थ स्थानों पर ले जाकर फेंक दें तथा किसी को उसकी सूचना न मिले। दोनों परस्थितियों में विनाश उसके भाग्य में है। उसी प्रकार वह व्यक्ति जो एक अल्लाह की इबादत करता है, वह सही स्वभाव एवं आत्मिक पवित्रता के अनुसार पवित्रता एवं स्वच्छता के शिखर पर आसीन होता है तथा जैसे ही वह शिर्क का कार्य करता है, तो जैसे कि अपने आपको उच्च स्थान से नीचे तथा सफाई से गन्दगी तथा कीचड़ में गिरा लेता है।

[2] شَعَـائِر बहुवचन है شَعِيرَة का, जिसका अर्थ संकेत तथा निशानी है, जैसे युद्ध में एक संकेत (विशेष शब्द लक्षण एवं संकेत के रूप में) प्रयोग कर लिया जाता है, जिससे वे आपस में एक-दूसरे को पहचान लेते हैं। इस आधार पर अल्लाह की निशानियाँ वे हैं जो धार्मिक संकेत अर्थात इस्लाम का स्पष्ट अनुकरणीय आदेश हैं, जिससे एक मुसलमान का अस्तित्व एवं व्यक्तित्व स्थापित होता है तथा अन्य धर्म के अनुयायिओं से अलग पहचान लिया जाता है। सफ़ा तथा मरवह पर्वतों को भी इसीलिए अल्लाह की निशानियाँ कहा गया है कि मुसलमान हज तथा उमरह में इनके मध्य सई करते (दौड़ते) हैं। यहाँ हज की अन्य रीतियों विशेष रूप से क़ुर्बानी (बलि) के पशुओं को अल्लाह की निशानी कहा गया है। उनके आदर का अर्थ उनका अच्छा तथा मोटा करना है अर्थात स्वस्थ एवं मोटे जानवर की बलि देना। इस सम्मान को अल्लाह का हार्दिक भय कहा गया है अर्थात यह हृदय के उन कर्मों में से है जिनका आधार (संयम) अल्लाह का भय है।

The Ummah Technology Mission

لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَا إِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٣٣﴾

(३३) उनमें तुम्हारे लिए एक निर्धारित समय तक के लिए लाभ है[1] फिर उनके बलि चढ़ाने का स्थान (वेदी) ख़ानये काबा है।[2]

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّن بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۗ فَإِلَٰهُكُمْ

(३४) तथा प्रत्येक सम्प्रदाय के लिए हमने बलि की विधि निर्धारित किया है ताकि वे उन चौपाये पशुओं पर अल्लाह का नाम लें, जो अल्लाह ने उन्हें दे रखा है।[3] (समझ लो)

---

[1]वह लाभ सवारी, दूध, जन्तु की अधिकता तथा ऊन (रोम) आदि की प्राप्ति है। निर्धारित समय से तात्पर्य बलि देने का दिन है अर्थात बलि देने के समय तक तुम्हें उक्त लाभ होते हैं, इससे ज्ञात हुआ कि बलि के पशु से जब तक वह बलि न चढ़ा दिया जाये, लाभ उठाना मान्य है। सहीह हदीस से भी इसकी पुष्टि होती है। एक व्यक्ति अपने साथ एक बलि का पशु हाँके लिए जा रहा था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उससे फ़रमाया : इस पर सवार हो जा, उसने कहा कि यह हज की बलि के लिए है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इस पर सवार हो जा। (सहीह बुख़ारी किताबुल हज्ज बाब रूकूबिलबुदन)

[2]हलाल (उचित) होने से तात्पर्य जहाँ इनकी बलि करना (उचित) है। अर्थात यह पशु हज के कार्यक्रम पूरे करने के पश्चात, बैतुल्लाह तथा मक्का की हरम की सीमा में पहुँचते हैं तथा वहाँ अल्लाह के नाम पर बलि दे दिये जाते हैं, तो उपरोक्त लाभ क्रम भी समाप्त हो जाता है। तथा यदि वे वैसे ही हरम के लिए बलि होते हैं तो हरम पहुँचते ही बलि चढ़ा दिये जाते हैं तथा मक्का के निर्धनों में उनका माँस विभाजित कर दिया जाता है।

[3] نسك ينسك ، منسك का उदगम है, अर्थ है अल्लाह की समीपता के लिए बलि देना। ذبيحة (ज़बीहा) (बलि दिये पशु) को भी نسيكة कहा जाता है, जिसका बहुवचन نُسُك है। इसका अर्थ आज्ञापालन तथा इबादत (आराधना) के भी है। क्योंकि अल्लाह की प्रसन्नता के लिए पशुओं की बलि भी इबादत है। इसीलिए अल्लाह के अतिरिक्त अन्य के नाम पर अथवा उनकी प्रसन्नता के लिए पशु की बलि अल्लाह के अतिरिक्त उस अन्य की इबादत है। अथवा مَنْسك (सीन अरबी अक्षर पर अरबी वर्णमाला के स्वर में 'अ' की मात्रा अथवा 'इ' की मात्रा के साथ) स्थान सूचक रूप है। अर्थात बलिस्थल अथवा इबादत करने का स्थान। उसी से हज की रीतियाँ हैं अर्थात वे स्थान, जहाँ हज के कर्मकांड अदा किये जाते हैं जैसे अरफ़ात, मुज़्दलिफ़ा, मिना तथा मक्का। हज के साधारण कर्मकान्ड को भी रीति कह लिया जाता है। आयत का प्रयोजन है कि हम पूर्व में भी प्रत्येक धर्मावलम्बियों के लिए बलि चढ़ाने का अथवा इबादत करने की विधि

The Ummah Technology Mission

إِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗۤ اَسْلِمُوْا ؕ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ﴿۳۴﴾

तुम सब का सत्य पूज्य मात्र एक ही है, तुम उसी के अधीन तथा आज्ञाकारी बन जाओ। विनम्रता करने वालों को शुभसूचना दे दीजिए।

الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَاۤ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِى الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۳۵﴾

(३५) उन्हें कि जब अल्लाह का वर्णन किया जाये उनके हृदय काँप जाते हैं, उन्हें जो विपदा पहुँचे उस पर धैर्य रखते हैं, नमाज़ स्थापित करने वाले हैं तथा जो कुछ हमने उन्हें दे रखा है, वे उसमें से भी देते रहते हैं।

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا

(३६) बलि के ऊँट को [1] हम ने तुम्हारे लिए अल्लाह (तआला) के चिन्ह निर्धारित कर दिये हैं उनमें तुम्हें लाभ है। तो उन्हें खड़ा कर के उन पर अल्लाह का नाम पढ़ो।[2] फिर जब उनके पहलु (पार्श्व) धरती से लग जायें[3] तो उसे

निर्धारित करते रहे हैं ताकि वह उसके द्वारा अल्लाह की निकटता प्राप्त करते रहें। तथा उसमें रहस्य यह है कि वे हमारा नाम लें, अर्थात "बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर" कहकर बलि दें अथवा हमें याद रखें।

[1] بُدْنٌ बहुवचन है بَدَنَةٌ का। यह जानवर सामान्यत: मोटा-ताज़ा होता है इसलिए بدنة कहा जाता है। मोटा-ताज़ा जानवर, भाषाविदों ने इसे केवल ऊँटों के साथ विशेष रूप से प्रयोग किया है, परन्तु हदीस के अनुसार गाय के लिए भी بدنة शब्द का प्रयोग उचित है। अर्थ यह है कि ऊँट तथा गाय जो बलि चढ़ाने के लिये ले जायें। वह भी अल्लाह की निशानी है, अर्थात अल्लाह के उन आदेशों में से है जो मुसलमानों के लिए विशेष तथा उनके लक्षण हैं।

[2] صَوَافَّ، مصفوفةً (पंक्तिबद्ध अर्थात खड़े हुए) के अर्थ में है। ऊँट को इसी प्रकार खड़े-खड़े वध किया जाता है कि बायाँ हाथ पैर उसका बँधा हुआ हो तथा तीन पैर पर वह खड़ा होता है।

[3] अर्थात सारा रक्त निकल जाये तथा वह निष्प्राण होकर धरती पर गिर जाये तब उसे काटना प्रारम्भ करो। क्योंकि जीवित जानवर का माँस काट कर खाना निषेध है।

«مَا قُطِعَ مِنَ الْبَهِيمَةِ وَهِيَ حَيَّةٌ، فَهُوَ مَيْتَةٌ».

The Ummah Technology Mission

وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ

स्वयं भी खाओ[1] तथा निर्धन भिखारी तथा जो भिखारी न हो उसे भी खिलाओ,[2] इसी प्रकार

"जिस जानवर से उस अवस्था में माँस काटा जाये कि वह जीवित हो तो वह (काटा हुआ माँस) मृत (तथा निषेध) है।" (अबूदाऊद किताबुल सैद, तिर्मिज़ी अबवाबुस्सैद, बाब माजाअ मा कुतिअ मिनल हय्ये फ़हुवा मय्येतुन, इब्ने माजा)

[1]कुछ आलिमों के निकट यह आदेश आवश्यक है अर्थात बलि का माँस खाना, क़ुर्बानी करने वाले के लिए आवश्यक (वाजिब) है तथा अधिकतर आलिमों के निकट यह आदेश अच्छाई के लिए है अथवा औचित्य है अर्थात यदि खा लिया जाये तो उचित अथवा प्रिय है तथा कोई न खाये बल्कि पूरा का पूरा विभाजित कर दे तो कोई पाप नहीं।

[2] قانع का एक अर्थ भिखारी (याचक) के तथा दूसरा अर्थ संतोष करने वाले के किये गये हैं अर्थात वह प्रश्न न करे तथा مُعْتَرّ का अर्थ कुछ ने बिना याचना के समक्ष आने वाले के किये हैं। तथा कुछ ने قانع का अर्थ माँगने वाले तथा مُعْتَر का अर्थ दर्शक अर्थात मिलने वाले के किये हैं। इस आयत से भावार्थ निकालते हुए कहा जाता है कि बलि के माँस के तीन भाग किये जायें। एक अपने लिए, दूसरा मिलने वालों के लिए तथा सम्बन्धियों के लिए तथा तीसरा भाग भिक्षुकों, प्रश्नकर्ताओं तथा समाज के आवश्यकता वाले लोगों के लिए। जिसकी पुष्टि में यह हदीस प्रस्तुत की जाती है जिसमें रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "मैंने तुम्हें (प्रथम में) तीन दिन से अधिक बलि के माँस भण्डार करके रखने के लिए मना किया था, परन्तु अब आज्ञा है कि खाओ तथा जो उचित समझो भण्डार करो।" "दूसरे कथन के शब्द हैं, तो खाओ, भण्डार करो तथा दान करो।" एक अन्य कथन के शब्द इस प्रकार हैं, "तो खाओ, खिलाओ एवं दान करो।" (अलबुख़ारी किताबुल अदाही, मुस्लिम किताबुल अदाही, बाबु व्याने मा कान मिनल नहये अन अकलिल लहूमिल अदाही बाद सलास ... वससुनन) कुछ आलिम दो भाग करने के पक्ष में हैं। आधा अपने लिए आधा दान के लिए, वह इससे विगत आयत ﴿فَكُلُوا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ﴾ से भावार्थ निकालते हैं। परन्तु वास्तव में किसी भी हदीस से इस प्रकार दो अथवा तीन भागों में विभाजित करने का आदेश नहीं निकलता, अपितु उनमें समान्यत: खाने-खिलाने का आदेश है। अत: इस साधारणता को अपने स्थान पर स्थाई रहना चाहिए तथा किसी विभाजन के लिए बाध्य नहीं बनाना चाहिए। परन्तु बलि के पशुओं की खालों के विषय में एकमत हैं कि इसे या तो अपने प्रयोग में लाओ अथवा दान करो, इसे विक्रय करने की आज्ञा नहीं है। जैसाकि हदीस में है (मुसनद अहमद भाग ४\१५) परन्तु कुछ आलिमों ने चर्म को स्वयं विक्रय करके उसका मूल्य निर्धनों को बाँट देने की आज्ञा दी है। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

हमने चौपाये को तुम्हारे अधीन कर दिया है कि तुम कृतज्ञता व्यक्त करो।

لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٣٦﴾

(३७) अल्लाह (तआला) को बलि के माँस नहीं पहुँचते, न उनके रक्त बल्कि उसे तो तुम्हारी हार्दिक परहेज़गारी पहुँचती है। उसी प्रकार अल्लाह ने उन पशुओं को तुम्हारा आज्ञाकारी कर दिया है कि तुम उसके मार्गदर्शन (की कृतज्ञता) में उसकी महिमा का वर्णन करो

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٧﴾

एक आवश्यक स्पष्टीकरण : बलि चढ़ाने का यह वर्णन हज की समस्या के साथ आया है, जिससे हदीस को अस्वीकार करने वाले यह अर्थ निकालते हैं कि बलि चढ़ाना मात्र हाजियों के लिए ही है अन्य मुसलमानों के लिए कोई आवश्यक नहीं। परन्तु यह बात उचित नहीं। क़ुर्बानी करने के सम्बन्ध में सामान्य आदेश भी अन्य स्थान पर है।

﴿ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ﴾

"अपने पभ्रु के लिए नमाज़ पढ़ तथा क़ुर्बानी कर।" (सूरः *अल-कौसर*)

इसका स्पष्टीकरण तथा व्याख्या (व्यवहारिक) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस प्रकार फ़रमाया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं मदीने में प्रत्येक वर्ष १० ज़िलहिज्जा को बलि करते रहे तथा मुसलमानों को भी क़ुर्बानी (बलि) करने के लिए बल देते रहे। अतः सहाबा भी करते रहे। इसके अतिरिक्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बलि देने के सम्बन्ध में अन्य बहुत से निर्देश दिये। वहाँ यह भी फ़रमाया कि १० ज़िलहिज्जा को हम सर्वप्रथम (ईद) की नमाज़ पढ़ें तथा उसके पश्चात जाकर जानवर की बलि दें, फ़रमाया : जिसने नमाज़ (ईद) से पूर्व अपनी बलि दे दी, उसने माँस खाने में शीघ्रता की, उसकी बलि नहीं हुई। (सहीह बुख़ारी किताबुल ईदैन बाबुल तवकीर इलल ईद, तथा मुस्लिम किताबुल अदाही) इससे भी स्पष्ट है कि बलि चढ़ाने का आदेश प्रत्येक मुसलमान के लिए है, वह जहाँ भी हो। क्योंकि हाजी तो ईदुल अदहा की नमाज़ ही नहीं पढ़ते जिससे यह स्पष्टरूप से प्रलक्षित होता है कि यह आदेश हाजियों के अतिरिक्त के लिए ही है। फिर भी यह आवश्यक नहीं है सुन्नत मोअक्किदा है। इसी प्रकार दिखलावे के विचार से की गयी कई-कई बलि करने की रीति भी सुन्नत के विरूद्ध है। हदीस के अनुसार घर के प्रत्येक व्यक्ति की ओर से एक जानवर की बलि पर्याप्त है। सहाबा का कर्म इसी के अनुसार था। (तिर्मिज़ी अबवाबुल अदाही, बाब माजाअ अन्नश्शातल वाहिदति तुज्ज़ी, अन अहलिल बैत, व इब्ने माजा)

The Ummah Technology Mission

तथा पुण्य कार्य करने वालों को शुभसूचना सुना दीजिए।

إِنَّ اللَّهَ يُدَافِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُورٍ ﴿٣٨﴾

(३८) (सुन रखो !) नि:संदेह सच्चे ईमानवालों के शत्रुओं को अल्लाह (तआला) स्वयं हटा देता है।[1] कोई विश्वासघाती कृतघ्न अल्लाह (तआला) को प्रिय नहीं।

أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقَاتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ﴿٣٩﴾

(३९) जिन (मुसलमानों) से (काफ़िर) युद्ध कर रहे हैं उन्हें भी लड़ने की आज्ञा प्रदान की जाती है क्योंकि वे पीड़ित हैं,[2] नि:संदेह उनकी सहायता के लिए अल्लाह पूर्ण सामर्थ्य रखता है।

الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِم بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَن يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ

(४०) ये वे हैं जिन्हें अकारण अपने घरों से निकाला गया, केवल उनके इस कथन पर कि हमारा प्रभु केवल अल्लाह है। यदि अल्लाह

---

[1]जिस प्रकार ६ हिजरी में काफ़िरों ने अपने प्रभाव के कारण मुसलमानों को मक्का जाकर उमरह नहीं करने दिया, अल्लाह तआला ने दो वर्ष के पश्चात ही काफ़िरों के इस प्रभाव को समाप्त कर मुसलमानों से उनके शत्रु को हटा दिया तथा मुसलमानों को उन पर प्रभावशाली बना दिया।

[2]अधिकतर पूर्व धर्मावलम्बियों का कथन है कि इस आयत से सर्वप्रथम धर्मयुद्ध का आदेश दिया गया है, जिस के दो उद्देश्य वर्णन किये गये हैं, नृशंसता का निवारण तथा अल्लाह के आदेश का प्रभुत्व। इसलिए कि नृशंसित की सहायता तथा उनका समर्थन न किया जाये, तो फिर दुनिया में शक्तिशाली शक्तिहीन को तथा साधन प्राप्त लोग साधनहीन को जीवित ही न रहने देंगे, जिससे धरती आतंक एवं उपद्रव से भर जायेगी। इसी प्रकार अल्लाह के आदेशों को उच्च करने के लिए प्रयत्न न किया जाये तथा असत्य का सिर न कुचला जाये तो असत्य के प्रभाव से भी दुनिया की शान्ति व्यवस्था तथा अल्लाह के नाम लेने वालों के लिए कोई इबादत का स्थान शेष न रहेगा। (अधिक व्याख्या के लिए देखिये सूरः बक़रः आयत २५१ की व्याख्या)। صوامع (صومعة का बहुवचन) से छोटे गिरजाघर तथा بيع (بيعة का बहुवचन) से बड़े गिरजाघर, صلوات से यहूदियों के पूजास्थल तथा مساجد से मुसलमानों की इबादत के स्थान तात्पर्य हैं।

The Ummah Technology Mission

بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ؕ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿۴۰﴾

(तआला) लोगों को आपस में एक-दूसरे से न हटाता रहता तो इबादत के स्थान तथा गिरजाघर, तथा मस्जिदें, तथा यहूदियों की पूजा स्थली तथा वे मस्जिदें भी ध्वस्त कर दी जातीं, जहाँ अल्लाह का नाम अधिकता से लिया जाता है। जो अल्लाह की सहायता करेगा अल्लाह भी उसकी अवश्य सहायता करेगा, नि:संदेह अल्लाह (तआला) अत्यन्त शक्तिशाली, एवं प्रभावशाली है।

اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ

(४१) ये वे लोग हैं कि यदि हम इनके पैर धरती पर दृढ़ कर दें तो यह नियमित रूप से नमाज़ अदा करेंगे तथा ज़कात देंगे तथा अच्छे कार्यों का आदेश देंगे तथा बुरे कर्मों से मना करेंगे[1]

---

[1]इस आयत में इस्लामी राज्य के आधारभूत लक्ष्य तथा उद्देश्य वर्णन किये गये हैं, जिन्हें ख़िलाफ़त राशिदा तथा प्रथम काल के अन्य इस्लामी राज्यों में लागू किया गया तथा उन्होंने अपने प्राविधान में इनको प्राथमिकता दी। जिसके कारण उन के राज्यों में शान्ति थी, प्रेम भावना एवं खुशहाली भी रही तथा मुसलमानों के सिर ऊँचे तथा सम्मानित भी थे। आज भी सऊदी अरब की सरकार इन बातों का प्रबन्ध करती है, तो उसके कारण वह अब भी शान्ति व्यवस्था में संसार के सभी देशों के लिए एक अनुपम सरकार है। आजकल इस्लामी देशों में कल्याणकारी सरकार की स्थापना का बड़ा प्रचार है तथा प्रत्येक आने वाला शासक इसका दावा करता है। परन्तु प्रत्येक इस्लामी देश में अशान्ति, उपद्रव, हत्या तथा पतन प्रतिदिन का कार्य है। इसका कारण यह है कि सभी अल्लाह के बताये हुए मार्ग को अपनाये बिना पाश्चात्य देशों के गणतन्त्र एवं धर्मनिरपेक्षता के नियमों के आधार पर उत्थान तथा सफलता की आशा करते हैं, जो आकाश में तारे तोड़ने तथा वायु को मुट्ठी में बन्द कर लेने के समान है। जब तक इस्लामी राज्य क़ुरआन के बताये गये नियमों के अनुसार नमाज़ की स्थापना तथा ज़कात के भुगतान के साथ-साथ अच्छाई का आदेश देना तथा बुराई से रोकने का कार्य नहीं करेंगे तथा अपने वरीयता क्रम में इनको प्रमुखता नहीं देंगे, वे कल्याणकारी सरकार के गठन में सफल नहीं होंगे।

The Ummah Technology Mission

وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿۴۱﴾

और सभी कार्यों का परिणाम अल्लाह के अधिकार में है।[1]

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ﴿۴۲﴾

(४२) तथा यदि ये लोग आपको झुठलायें (तो आश्चर्य की बात नहीं) तो इनसे पूर्व नूह के समुदाय तथा आद एवं समूद।

وَقَوْمُ اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ﴿۴۳﴾

(४३) तथा इब्राहीम के समुदाय तथा लूत के समुदाय।

وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۴۴﴾

(४४) तथा मदयन वाले भी अपने-अपने नबियों को झुठला चुके हैं। मूसा भी झुठलाये जा चुके हैं, तो मैंने काफ़िरों को थोड़ा सा अवसर दिया फिर धर पकड़ा।[2] फिर मेरा प्रकोप कैसा हुआ ?[3]

---

[1]अर्थात प्रत्येक बात का केन्द्र अल्लाह का आदेश तथा उसका प्रबन्ध ही है। उसके आदेश के बिना अखिल जगत में एक पत्ता भी हिल नहीं सकता। क्योंकर कोई अल्लाह के आदेशों तथा नियमों से मुख फेर कर वास्तविक कल्याण तथा सार्थकता प्राप्त कर सकता है।

[2]इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी जा रही है कि यह मक्का के काफ़िर यदि आपको झुठला रहे हैं तो यह कोई नई बात नहीं है। प्राचीन काल के समुदाय भी अपने पैग़म्बरों के साथ ऐसा ही व्यवहार करते रहे हैं तथा मैं भी उन्हें अवसर देता रहा तथा जब उनके अवसर का समय समाप्त हो गया, तो उन्हें सत्यानाश कर दिया गया। इसमें मक्का के काफ़िरों के लिए चेतावनी एवं संकेत है कि झुठलाने के उपरान्त अभी तक तुम अल्लाह की पकड़ से सुरक्षित बचे हुए हो,तो यह समझ न लेना कि तुम्हें कोई पकड़ने तथा पूछने वाला नहीं। अपितु यह अल्लाह की ओर से अवसर है, जो प्रत्येक समुदाय को दिया जाता है। परन्तु वह इस अवसर से लाभ उठा कर आज्ञा- पालन तथा आज्ञाकारिता का मार्ग नहीं अपनाते तो फिर उसे बर्बाद अथवा मुसलमानों के द्वारा पराजित कर उन्हें अपमानित तथा निरादर कर दिया जाता है।

[3]अर्थात किस प्रकार मैंने उन्हें अपने उपकारों से वंचित करके प्रकोप तथा विनाश के द्वार पर पहुँचा दिया।

The Ummah Technology Mission

فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿٤٥﴾

(४५) बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें हमने ध्वस्त कर दिया, इसलिए के वे अत्याचारी थे, तो वे अपनी छतों के बल औंधी पड़ी हैं। तथा बहुत से आबाद कुऐं बेकार पड़े हैं तथा बहुत से पक्के तथा ऊँचे दुर्ग निर्जन (सुनसान) पड़े हैं।

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ ﴿٤٦﴾

(४६) क्या उन्होंने धरती में भ्रमण करके नहीं देखा, जो उनके दिल इन बातों के समझते अथवा कानों से ही इन (घटनाओं) को सुन लेते, बात यह है कि केवल आँखें ही अंधी नहीं होतीं, अपितु वे दिल अंधे हो जाते हैं, जो सीनों में हैं।[1]

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ۭ وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा वे यातना की आपसे शीघ्र माँग कर रहे हैं, अल्लाह (तआला) कदापि अपना वचन नहीं टालेगा, हाँ निश्चय ही आपके प्रभु के निकट एक दिन आप की गणना के अनुसार एक हज़ार वर्ष का है।[2]

---

[1]तथा जब कोई समुदाय गुमराही के इस स्थान पर पहुँच जाये कि शिक्षा ग्रहण करने की योग्यता भी खो बैठे तो मार्गदर्शन के बजाय विगत् समुदायों की भाँति अपमान तथा विनाश उनका भाग्य हो जाता है। आयत में क्रिया تعقل को हृदय का कार्य कहा गया है, जिससे यह अर्थ निकाला गया है कि बुद्धि का स्थान हृदय है तथा कुछ कहते हैं कि बोध का स्थान मस्तिष्क है। कुछ कहते हैं कि इन दोनों बातों में कोई प्रतिकूलता नहीं है, इसलिए कि समझ तथा विचार के लिए हृदय तथा मस्तिष्क दोनों का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है। (फ़तहुल क़दीर, ऐसरूत्तफ़ासीर)

[2]इसलिए कि ये लोग अपनी गणना के अनुसार शीघ्रता कर रहे हैं। परन्तु अल्लाह तआला की गणना के अनुसार एक दिन भी हज़ार वर्ष का है। इस आधार से वह यदि किसी को एक दिन (२४ घण्टे) का अवसर दे तो हज़ार वर्ष, आधे दिन का अवसर दे तो पाँच सौ वर्ष, ६ घंटे (जो चौबीस घंटे का चौथाई है) अवसर दे तो ढाई सौ वर्ष की अवधि यातना के लिए आवश्यक है। وهلم جرا इस प्रकार अल्लाह की ओर से किसी को एक घंटे का अवसर मिल जाने का अर्थ लगभग चालीस वर्ष का अवसर है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

The Ummah Technology Mission

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَاِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा बहुत से अन्याय करने वाली बस्तियों को हमने ढील दी, फिर अन्त में उन्हें पकड़ लिया, तथा मेरी ही ओर लौटकर आना है।[1]

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَآ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٩﴾

(४९) घोषणा कर दो कि हे लोगो ! मैं तुम्हें खुल्लम-खुल्ला सचेत करने वाला हूँ।[2]

فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٥٠﴾

(५०) तो जो ईमान लाये हैं तथा सत्कर्म किये हैं उन्हीं के लिए मोक्ष है तथा सम्मानित जीविका।

وَالَّذِيْنَ سَعَوْ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٥١﴾

(५१) तथा जो लोग हमारी आयतों को नीचा देखाने में लगे हैं,[3] वही नरकवासी हैं।

एक अन्य अर्थ यह है कि अल्लाह के सामर्थ्य में एक दिन तथा हज़ार वर्ष समान है। इस लिए पूर्व तथा विलम्ब में कोई अन्तर नहीं पड़ता, यह शीघ्र माँगते हैं, वह देर करता है, परन्तु यह बात तो निश्चित है कि वह अपना वादा अवश्य पूरा करके रहेगा। तथा कुछ ने इसे आख़िरत की ओर संकेत माना है कि अत्यधिक भयानकता के कारण क़ियामत का एक दिन हज़ार वर्ष बल्कि किसी-किसी को पचास हज़ार वर्ष का लगेगा। तथा कुछ ने कहा कि आख़िरत (प्रलय) का दिन वास्तव में हज़ार वर्ष का होगा।

[1]इसलिए यहाँ अवसर देने के नियम का पुन: वर्णन किया है कि मेरी ओर से यातना में चाहे जितनी देर हो, परन्तु मेरी पकड़ से कोई बच नहीं सकता, न कहीं भाग सकता है, उसे लौटकर अन्त में मेरे ही पास आना है।

[2]यह काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों की यातना की माँग पर कहा जा रहा है कि मेरा कार्य तो सतर्क करना तथा शुभसूचना पहुँचाना है। यातना देना अल्लाह का कार्य है, वह शीघ्र पकड़ कर ले अथवा देरी करे, वह अपनी इच्छा तथा योजना के अनुसार यह कार्य करता है जिसका ज्ञान भी अल्लाह के अतिरिक्त किसी को नहीं है। इस सम्बोधन से सम्बोधित मूलत: मक्का के मूर्तिपूजक हैं, परन्तु चूँकि आप समस्त मानव जगत के लिए मार्गदर्शक तथा रसूल (संदेशवाहक) बनकर आये थे, इसलिए सम्बोधन يا أيها الناس (हे लोगों) के शब्दों से किया गया है, इसमें क़ियामत तक आने वाले वे समस्त काफ़िर तथा मूर्तिपूजक आ गये जो मक्का के काफ़िरों की भाँति रीति अपनायेंगे।

[3] معجزين का अर्थ है यह विचार करते हुए कि हमें विवश कर देंगे, थका देंगे तथा हम उनकी पकड़ करने का सामर्थ्य नहीं रखेंगे। इसलिए कि वह मृत्यु के पश्चात खड़े किये जाने तथा हिसाब-किताब को नहीं मानते थे।

The Ummah Technology Mission

وَمَآ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ مِنۡ رَّسُوۡلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّاۤ اِذَا تَمَنّٰٓى اَلۡقَى الشَّيۡطٰنُ فِىۡۤ اُمۡنِيَّتِهٖ‌ۚ فَيَنۡسَخُ اللّٰهُ مَا يُلۡقِى الشَّيۡطٰنُ ثُمَّ يُحۡكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ‌ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ۝

(५२) तथा हमने आपसे पूर्व जिस रसूल तथा नबी को भेजा (उसके साथ यह हुआ कि) जब वह अपने हृदय में कोई कामना करने लगा, शैतान ने उसकी कामना में कुछ मिला दिया, तो शैतान की मिलावट को अल्लाह (तआला) दूर कर देता है, फिर अपनी बातें दृढ़ कर देता है।[1] अल्लाह (तआला) ज्ञानी तथा गुणज्ञ है।

لِّيَجۡعَلَ مَا يُلۡقِى الشَّيۡطٰنُ فِتۡنَةً لِّلَّذِيۡنَ فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ مَّرَضٌ وَّالۡقَاسِيَةِ قُلُوۡبُهُمۡ‌ؕ

(५३) यह इसलिए कि शैतानी मिलावट को अल्लाह (तआला) उन लोगों की परीक्षा का साधन बना दे, जिनके दिलों में रोग है तथा

---

[1] تَمَنّٰى का एक अर्थ कामना की अथवा मन में सोचा। दूसरा अर्थ है पढ़ा अथवा पाठ किया। इसी आधार पर اُمنية का अनुवाद कामना, विचार अथवा पाठ होगा। प्रथम अर्थ के आधार पर भावार्थ होगा, उसकी कामना में शैतान ने बाधायें डाली ताकि वे पूरी न हों। तथा रसूल एवं नबी की कामना यही होती है कि लोग अधिक से अधिक संख्या में ईमान लायें। शैतान बाधायें डालकर अधिक से अधिक लोगों को ईमान से दूर रखता है। द्वितीय अर्थ के आधार पर भावार्थ होगा कि जब भी अल्लाह का रसूल अथवा नबी प्रकाशना द्वारा प्राप्त कथन को पढ़ता तथा उसका पाठ करता है, तो शैतान उसके पाठ में अपनी बातें मिलाने का प्रयत्न करता है। अथवा उसके सम्बन्ध में लोगों के हृदय में शंका तथा संदेह उत्पन्न करता तथा त्रुटियाँ निकालने का प्रयत्न करता है। अल्लाह तआला शैतान की बाधाओं को दूर करके अथवा पाठ में मिलावट करने के प्रयत्न को असफल करके अथवा शैतान द्वारा उत्पन्न किये गये संदेह का निवारण करके अपनी बात की अथवा अपनी आयतों को दृढ़ता प्रदान करता है। इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी जा रही है कि शैतान का यह कार्य केवल आपके साथ नहीं है। आपसे पूर्व जो भी नबी अथवा रसूल आये सभी के साथ यही कुछ करता रहा है। तो आप घबरायें नहीं, शैतान की इन उद्दण्डता तथा षड़यन्त्रों से जिस प्रकार आपसे पूर्व के नबियों को हम सुरक्षित रखते रहे हैं, नि:संदेह आप को भी सुरक्षित रखेंगे तथा शैतान की कामना के विपरीत अपनी बात पक्की करके रहेंगे। यहाँ पर कुछ व्याख्याकारों ने غرانيق على की कथाओं का वर्णन किया है जो शोधकर्ताओं के निकट सिद्ध ही नहीं है। इसलिए उसे यहाँ प्रस्तुत करने की कोई आवश्यकता नहीं समझी गयी है।

The Ummah Technology Mission

وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾

जिनके हृदय कठोर हैं।[1] नि:संदेह पापी लोग घोर विरोध में हैं।

وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٤﴾

(५४) तथा इसलिए भी कि जिन्हें ज्ञान प्रदान किया गया है, वे विश्वास कर लें कि यह आपके प्रभु ही की ओर से पूर्ण सत्य है, फिर वे उस पर ईमान लायें तथा उनके दिल उसकी ओर झुक जायें।[2] नि:संदेह अल्लाह (तआला) ईमानवालों को सत्यमार्ग की ओर मार्गदर्शन करने वाला ही है।[3]

وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ

(५५) तथा काफ़िर उस अल्लाह की प्रकाशना में सदैव संदेह तथा शंका ही करते रहेंगे यहाँ तक कि सहसा उनके सिर पर क़ियामत (प्रलय)

---

[1]अर्थात शैतान की यह गतिविधियाँ इसलिए हैं कि लोगों को भटकाये तथा उसके जाल में वे लोग फँस जाते हैं, जिनके दिलों में कुफ़्र (अविश्वास) तथा द्वयवाद का रोग होता है अथवा पाप करके उनके हृदय कठोर हो चुके होते हैं।

[2]अर्थात यह शैतानी वाक्य जो वास्तव में शैतानी अपहरण है, यदि यह द्वयवादी एवं संदेह करने वाले लोग तथा काफ़िर एवं मूर्तिपूजक लोग के पक्ष में उपद्रव का साधन है तो दूसरी ओर जो ज्ञानी एवं तत्वज्ञ हैं, उनके ईमान तथा विश्वास में वृद्धि हो जाती है तथा वे समझ जाते हैं कि अल्लाह की उतारी बात अर्थात क़ुरआन सत्य है, जिससे उनके दिल अल्लाह के समक्ष झुक जाते हैं।

[3]दुनिया में भी तथा आख़िरत में भी। दुनिया में इस प्रकार कि उनका मार्गदर्शन सत्य की ओर कर देता है तथा उसको स्वीकार करने तथा पालन करने का सौभाग्य प्रदान करता है। असत्य की समझ भी उनको प्रदान कर देता है तथा उससे उन्हें बचा लेता है तथा आख़िरत का सीधा मार्ग दर्शा देने का अर्थ यह है कि नरक की दुखद यातनाओं से बचाकर स्वर्ग में प्रवेश देता है तथा वहाँ अपने उपकार तथा साक्षात दर्शन भी प्रदान करेगा।

The Ummah Technology Mission

السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيمٍ ﴿٥٥﴾

आ जाये अथवा उनके निकट उस दिन का प्रकोप आ जाये जो भलाई से शून्य है।[1]

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ ۖ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٥٦﴾

(५६) उस दिन केवल अल्लाह ही का राज होगा,[2] वही उनके बीच निर्णय करेगा। ईमान तथा सत्कर्मी तो सुखों से भरपूर स्वर्ग में होंगे।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٥٧﴾

(५७) तथा जिन लोगों ने कुफ़्र किया तथा हमारी आयतों को झुठलाया, उनके लिए अपमानकारी यातनायें हैं।

---

[1] يوم عقيم (बाँझ दिन) से तात्पर्य क़ियामत का दिन है। इसे बाँझ इसलिए कहा गया है कि इस दिन के पश्चात कोई दिन नहीं होगा, जिस प्रकार बाँझ उसको कहा जाता जिसके कोई सन्तान न हो। अथवा इसलिए कि काफ़िरों के लिए उस दिन कोई दया नहीं होगी, अर्थात उनके लिए भलाई से शून्य होगा। जिस प्रकार तीव्र गति की हवाओं को जो प्रकोप के रूप में आती रही हैं 'बाँझ वायु' कहा गया है।

﴿إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ﴾

"जब हमने उन पर बाँझ हवा भेजी।" (सूरः *अज़्ज़ारियात*-४१)

अर्थात ऐसी हवा जिसमें न कोई भलाई थी न वर्षा की शुभसूचना।

[2] अर्थात दुनिया में तो अस्थाई रूप से उपहार स्वरूप अथवा परीक्षार्थ लोगों को भी शासन तथा अधिकार तथा अधिपत्य प्राप्त हो जाता है। परन्तु आख़िरत में किसी के पास कोई राज्य तथा अधिकार नहीं होगा, केवल एक अल्लाह का राज्य तथा उसका शासन होगा, उसी का पूर्ण अधिकार प्रभुत्व होगा।

﴿الْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ لِلرَّحْمَٰنِ ۚ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكَافِرِينَ عَسِيرًا﴾

"राज्य उस दिन सिद्ध है दयालु के लिए तथा यह दिन काफ़िरों के लिए अत्यधिक भारी होगा।" (सूरः *अल-फ़ुरकान*-२६)

﴿لِّمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ﴾

(अल्लाह तआला पूछेगा) "आज किस का राज्य है ?"

(फिर स्वयं उत्तर देगा) "एक अल्लाह प्रभावी का।"(सूरः *अल-मोमिन*-१६)

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝۵۸

(५८) तथा जिन्होंने अल्लाह के मार्ग में देश छोड़ा फिर वे शहीद कर दिये गये अथवा अपनी मृत्यु से मर गये[1] अल्लाह (तआला) उन्हें उत्तम जीविका प्रदान करेगा[2] तथा अवश्य अल्लाह (तआला) सर्वोत्तम जीविका प्रदान करने वाला है।[3]

لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ۝۵۹

(५९) उन्हें अल्लाह (तआला) ऐसे स्थान पर पहुँचायेगा कि वे उससे प्रसन्न हो जायेंगे।[4] नि:संदेह अल्लाह (तआला) जानने वाला तथा धैर्यवान है।[5]

ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ

(६०) बात यही है,[6] तथा जिसने बदला लिया उसी के समान जो उसके साथ किया गया था फिर यदि उसके साथ अति की जाये तो

---

[1]अर्थात उसी हिजरत की परस्थिति में मृत्यु हो गयी अथवा शहीद हो गये।

[2]अर्थात स्वर्ग के सुख जो न समाप्त होंगे न नष्ट।

[3]क्योंकि वह बिना हिसाब के, बिना अधिकार मांगे तथा बिना प्रश्न किये प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त मनुष्य जो एक-दूसरे को देते हैं, तो वह उसी के दिये हुए में से देते हैं, इसलिए मूल जीविका प्रदान करने वाला वही है।

[4]क्योंकि स्वर्ग के सुख ऐसे होंगे "مَالَا عَيْنٌ رَأَتْ، وَلَا أُذُنٌ سَمِعَتْ، وَلَا خَطَرَ عَلَىٰ قَلْبِ بَشَرٍ" "जिन्हें आज तक किसी आँख ने न देखा, न किसी कान ने सुना। तथा देखना सुनना तो दूर की बात, किसी व्यक्ति के मन में उनका विचार तक नही आया।" भला ऐसे सुखों से भरपूर स्वर्ग को प्राप्त करके कौन प्रसन्न नहीं होगा ?

[5]عَلِيْمٌ वह पुण्य के कार्य करने वालों के पद तथा उनकी श्रेणियों को भली प्रकार से जानता है। कुफ्र तथा शिर्क करने वालों के अपराधों तथा अवहेलना को देखता है, परन्तु उनको तुरन्त नहीं पकड़ता।

[6]अर्थात यह कि महाजिरों को विशेष रूप से शहादत अथवा प्राकृतिक मृत्यु पर हमने जो वादा किया है, वह अवश्य पूरा होगा।

The Ummah Technology Mission

لَيَنْصُرَنَّهُ اللَّهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ ﴿٦٠﴾

नि:संदेह अल्लाह (तआला) स्वयं उसकी सहायता करेगा ।[1] नि:संदेह अल्लाह (तआला) छोड़ देने वाला तथा क्षमा करने वाला है ।[2]

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٦١﴾

(६१) यह इसलिए कि अल्लाह रात को दिन में प्रवेश कराता है तथा दिन को रात में ले जाता है ।[3] तथा नि:संदेह अल्लाह (तआला) सुनने वाला देखने वाला है ।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِ

(६२) यह सब इसलिए कि अल्लाह ही सत्य है[4] तथा उसके अतिरिक्त जिसे भी यह पुकारते

---

[1] عقوبت उस दण्ड अथवा बदले को कहते हैं, जो किसी कर्म का बदला हो । अर्थ यह है कि किसी ने किसी के साथ ज़्यादती की हो तो जिससे ज़्यादती की गयी है, उसे ज़्यादती के समान बदला लेने का अधिकार है परन्तु बदला लेने के पश्चात, जबिक अत्याचारी तथा नृशंसित दोनों समान हो चुके हों, अत्याचारी नृशंसित पर पुन: अत्याचार करे तो अल्लाह तआला उस पीड़ित की अवश्य सहायता करेगा । अर्थात यह संदेह न हो कि पीड़ित ने क्षमा करने के बजाय बदला लेकर त्रुटि पूर्ण कार्य किया है, नहीं, बल्कि उसकी भी आज्ञा अल्लाह ने दी है, इसलिए भविष्य में भी वह अल्लाह की सहायता का अधिकारी रहेगा ।

[2] इसमें क्षमा कर देने की पुन: शिक्षा दी गयी है कि अल्लाह क्षमा करने वाला है, तुम भी क्षमा से काम लो । एक दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि बदला लेने में जितना अत्याचारी का अत्याचार होगा उतना अत्याचार किया जायेगा, इसकी आज्ञा चूँकि अल्लाह की ओर से है, इसलिए इस पर पकड़ नहीं होगी, बल्कि वह क्षम्य है । वरन इसे अत्याचार तथा बुराई उसके समरूप होने के कारण कहा जाता है । वरन् प्रतिशोध अथवा बदला मूलत: अत्याचार अथवा त्रुटि है ही नहीं ।

[3] अर्थात जो अल्लाह इस प्रकार कार्य करने का सामर्थ्य रखता है, वह इस बात का भी सामर्थ्य रखता है कि उसके जिन भक्तों पर अत्याचार किया जाये उनका बदला वह अत्याचारियों से ले ।

[4] इसलिए कि उसका धर्म सत्य है, उसकी इबादत सत्य है, उसका वचन सत्य है, उसका अपने मित्रों की उनके शत्रुओं के अपेक्षा सहायता करना सत्य है, वह अल्लाह महिमावान स्वयं में, अपने गुणों में, तथा अपने कर्मों में सत्य है ।

The Ummah Technology Mission

هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٦٢﴾

हैं वे असत्य हैं तथा नि:संदेह अल्लाह (तआला) सर्वोच्च महिमा वाला है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ز فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ط اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿٦٣﴾

(६३) क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) आकाश से पानी बरसाता है, तो धरती हरी-भरी हो जाती है। वस्तुत: अल्लाह (तआला) कल्याणकारी तथा जानने वाला है।[1]

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ط وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٦٤﴾

(६४) आकाशों तथा धरती में जो कुछ है उसी का है[2] तथा नि:संदेह अल्लाह वही है निस्पृह प्रशंसाओं वाला।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ط وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا

(६५) क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह ही ने धरती की सभी वस्तुएँ तुम्हारे वश में कर दी हैं।[3] तथा उसके आदेश से समुद्र में चलती हुई नावें भी। वही आकाश को थामे हुए है कि धरती पर उसके आदेश के बिना गिर न पड़े,[4]

---

[1] لطيف (सूक्ष्मदर्शी) है, उसका ज्ञान प्रत्येक छोटी-बड़ी वस्तु को अपने परिधि में घेरे हुए है, अथवा दया करने वाला है अर्थात अपने भक्तों को जीविका पहुँचाने में दया तथा कृपा से काम लेता है। خبير वह उन बातों से सूचित है जिनमें उसके भक्तों का हित तथा सुधार है अथवा उनकी आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं से अवगत है।

[2] जन्म के आधार पर भी, राज्य के आधार पर भी एवं अधिकार में भी। इसलिए सम्पूर्ण सृष्टि उसके अधीन है, वह किसी के अधीन नहीं। क्योंकि वह प्रत्येक से निस्पृह है अर्थात उसे किसी भी वस्तु अथवा अन्य की आवश्यकता नहीं है। तथा जो शक्ति सभी गुणों से युक्त तथा अधिकारों का स्रोत हो, प्रत्येक परस्थिति में प्रशंसा के योग्य भी वही है।

[3] उदाहरणत: पशु, नदियाँ, वृक्ष तथा अनगिनत वस्तुयें, जिनके लाभ मनुष्य प्राप्त कर रहा तथा स्वाद ले रहा है।

[4] अर्थात यदि वह चाहे तो आकाश धरती पर गिर पड़े, जिससे धरती पर उपस्थित प्रत्येक वस्तु ध्वस्त हो जाये। हाँ, क़ियामत के दिन उसकी इच्छानुसार आकाश भी टूट-फूट का शिकार हो जायेगा।

The Ummah Technology Mission

بِإِذْنِهِۦ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ بِٱلنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٥﴾

नि:संदेह अल्लाह (तआला) लोगों पर विनम्र तथा दयालु है।[1]

وَهُوَ ٱلَّذِىٓ أَحْيَٰكُمْ ۖ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۗ إِنَّ ٱلْإِنسَٰنَ لَكَفُورٌ ﴿٦٦﴾

(६६) तथा उसी ने तुम्हें जीवित किया है, फिर वही तुम्हें मारेगा, फिर वही तुम्हें जीवित करेगा, नि:संदेह मनुष्य वस्तुत: कृतघ्न है।[2]

لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ فَلَا يُنَٰزِعُنَّكَ فِى ٱلْأَمْرِ وَٱدْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ ۖ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُّسْتَقِيمٍ ﴿٦٧﴾

(६७) प्रत्येक सम्प्रदाय के लिए हमने इबादत की एक विधि निर्धारित कर दी है, जिसका वह पालन करने वाले हैं,[3] तो उन्हें आप से इस सम्बन्ध में विवाद नहीं करना चाहिए।[4] आप अपने प्रभु की ओर लोगों को बुलायें, नि:संदेह आप सीधे सत्यमार्ग पर ही हैं।[5]

---

[1]इसीलिए उसने वर्णित वस्तुओं को मनुष्य के अधीन कर दिया है तथा आकाश को भी उन पर गिरने नहीं देता। अधीन करने का अर्थ है कि उन सभी वस्तुओं से लाभ उसके लिए सम्भव अथवा सरल कर दिया गया है।

[2]यह जातिवाचक संज्ञा के रूप में है। कुछ लोगों का इस कृतघ्नता से निकल जाना इसके प्रतिकूल नहीं। क्योंकि अधिकतम मानव जाति में यह कुफ़्र तथा पाप पाया जाता है।

[3]अर्थात प्रत्येक युग में हमने लोगों के लिए धार्मिक नियम निर्धारित किये जो कुछ बातों में एक-दूसरे से भिन्न भी होते, जिस प्रकार तौरात मूसा के सम्प्रदाय के लिए, इंजील ईसा के सम्प्रदाय के लिए धार्मिक विधान था, तथा अब क़ुरआन मुसलमानों के लिए धर्म विधान तथा जीवन विधान है।

[4]अर्थात अल्लाह ने जो आप को धर्म तथा धार्मिक नियम प्रदान किया है, वह भी वर्णित नियमों के आधार पर है, उन प्राचीन धार्मिक नियम वालों को चाहिए कि अब आपके धार्मिक नियमों पर ईमान ले आयें, न कि इस मामले में आप से झगड़ें।

[5]अर्थात आप उनके झगड़ों की चिन्ता न करें, बल्कि उनको अपने प्रभु की ओर आमन्त्रित करते रहें, क्योंकि अब सीधे मार्ग पर आप ही अग्रसर हैं। अर्थात सभी प्राचीन धार्मिक विधान निरस्त कर दिये गये।

The Ummah Technology Mission

وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٨﴾

(६८) तथा फिर भी यदि ये लोग आप से उलझने लगें तो आप कह दें कि तुम्हारे कर्मों से अल्लाह भली-भाँति अवगत है।

اَللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٦٩﴾

(६९) तुम्हारे सभी के मतभेद का निर्णय क़ियामत के दिन अल्लाह (तआला) स्वयं करेगा।[1]

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿٧٠﴾

(७०) क्या आपने नहीं जाना कि आकाश तथा धरती की प्रत्येक वस्तु अल्लाह के ज्ञान में है। यह सब लिखी हुई किताब में सुरक्षित है। अल्लाह (तआला) के लिए यह कार्य अत्यन्त सरल है।[2]

---

[1]अर्थात वर्णन तथा तर्कों के प्रकट होने के पश्चात भी, यदि ये विरोध तथा विवाद से न रूकें तो इनका मामला अल्लाह के हवाले कर दें तथा कह दें कि अल्लाह तआला ही तुम्हारे मतभेद का निर्णय क़ियामत के दिन कर देगा, तो उस दिन स्पष्ट हो जायेगा कि सत्य क्या है तथा असत्य क्या है ? क्योंकि वह उसके अनुसार सभी को बदला देगा।

[2]इसमें अल्लाह तआला ने अपने सम्पूर्ण ज्ञान तथा सृष्टि को घेर रखने का वर्णन किया है। अर्थात उसकी सृष्टि को जो कुछ करना था, उसको इसका ज्ञान पूर्व से ही था, वह उनको जानता था। अत: उसने अपने ज्ञान से यह बातें पूर्व ही से लिख दीं। तथा लोगों को यह बात चाहे कितनी ही कठिन लगे, अल्लाह के लिए यह अत्यन्त सरल है। यह वही भाग्य की समस्या है जिस पर ईमान रखना आवश्यक है। जिसे हदीस में इस प्रकार वर्णन किया गया है, "अल्लाह तआला ने आकाश तथा धरती की उत्पत्ति से पचास हज़ार वर्ष पूर्व, जबकि उसका अर्श पानी पर था, सृष्टि के भाग्य लिख दिये थे।" (सहीह मुस्लिम किताबुल क़द्र, बाब हिजाज आदम व मूसा) तथा सुनन के कथन में हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "अल्लाह तआला ने सर्वप्रथम क़लम पैदा किया, तथा उससे कहा लिख , उसने कहा क्या लिखूँ ? अल्लाह तआला ने कहा जो कुछ होने वाला है, सब लिख दे। अत: उसने अल्लाह के आदेश से क़ियामत तक जो कुछ होने वाला था, सब लिख दिया।" (अबू दाऊद किताबुस सुन्न: बाबुन फ़िल क़द्र, तिर्मिज़ी अबवाबुल क़द्र तफ़सीर सूर: नून, मुसनद अहमद भाग ५\३१७)

The Ummah Technology Mission

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٧١﴾

(७१) तथा ये अल्लाह (तआला) के सिवाय उन्हें पूज रहे हैं जिसका कोई दैवी प्रमाण नहीं तथा न वे स्वयं ही इसका कोई ज्ञान रखते हैं, अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ؕ يَكَادُوْنَ يَسْطُوْنَ بِالَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ؕ قُلْ اَفَاُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ اَلنَّارُ ؕ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٧٢﴾

(७२) तथा जब उनके समक्ष हमारे कथन की खुली आयतों का पाठ किया जाता है, तो आप काफ़िरों के मुख पर अप्रसन्नता के भाव स्पष्ट पहचान लेते हैं। वे तो निकट होते हैं कि हमारी आयतों के सुनाने वाले पर आक्रामण कर बैठें।[1] कह दीजिए क्या मैं तुम्हें इससे भी अधिक अशुभ सूचना दूँ। वह अग्नि है, जिसका वादा अल्लाह ने काफ़िरों से कर रखा है,[2] तथा वह अत्यन्त बुरा स्थान है।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ اجْتَمَعُوْا لَهٗ ؕ

(७३) हे लोगो! एक उदाहरण दिया जा रहा है, तनिक ध्यान से सुनो। अल्लाह के अतिरिक्त तुम जिन-जिन को पुकारते रहे हो, वे एक मक्खी तो पैदा नहीं कर सकते यदि सारे के

---

[1]अपने हाथों से हस्तक्षेप कर के अथवा अपशब्द से। अर्थात मूर्तिपूजक अथवा विपथ लोगों के लिए अल्लाह की एकता तथा रिसालत एवं क़ियामत का वर्णन असहनीय होता है, जिसका प्रदर्शन उनके चेहरे से तथा कई बार हाथ तथा मुख से भी होता है। यही हाल आजकल के धर्म में नई बात सुनाने वाले तथा भटके हुए गुटों का है, जब उनकी गुमराही क़ुरआन तथा हदीस के तर्क द्वारा प्रकट की जाती है, तो उनका भी व्यवहार क़ुरआन की आयतों तथा हदीस के तर्कों के समक्ष ऐसा ही होता है जिसका स्पष्टीकरण इस आयत में किया गया है। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात अभी तो अल्लाह की आयतें को सुनकर तुम्हारे मुख का रंग बदल जाता है। परन्तु एक समय आयेगा कि यदि तुमने अपने इस व्यवहार से क्षमा नहीं माँगी तो इससे कहीं अधिक बुरी अवस्था में तुम्हें जाना पड़ेगा, तथा वह है नरक की अग्नि में जलना, जिसका वादा अल्लाह ने काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों से कर रखा है।

The Ummah Technology Mission

وَإِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ مِنْهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوْبُ ۝

सारे एकत्रित हो जायें [1] बल्कि यदि मक्खी उन से कोई वस्तु ले भागे, तो यह तो उसे भी उससे छीन नहीं सकते, [2] अत्यन्त निर्बल है माँगने वाला तथा अत्यन्त क्षीण है जिससे माँगा जा रहा है।[3]

مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ

(७४) उन्होंने अल्लाह की महिमा के अनुसार उस का महत्व जाना ही नहीं,[4] नि:संदेह

---

[1]अर्थात ये असत्य देवता जिनको तुम अल्लाह के अतिरिक्त सहायता के लिए पुकारते हो, ये सारे के सारे एकत्रित होकर एक तुच्छ सा जीव मक्खी बनाना चाहें तो नहीं बना सकते। तो इसके उपरान्त भी तुम उनको अपना कष्ट निवारक समझो, तो तुम्हारी बुद्धि पर शोक है। इससे यह ज्ञात हुआ कि अल्लाह के अतिरिक्त जिनकी इबादत की जाती रही है, वह पत्थर की निर्जीव मूर्तियाँ ही नहीं होती थीं (जैसाकि आजकल क़ब्र पूजा का औचित्य बताने वाले लोग सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं) बल्कि ये बुद्धि एवं समझ रखने वाली वस्तुयें भी थीं। अर्थात अल्लाह के पुण्य कार्य करने वाले भक्त भी थे, जिनकी मृत्यु के पश्चात लोगों ने उनको अल्लाह का साझीदार बना लिया, इसीलिए अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि ये सभी सम्मिलित भी हो जायें, तो एक तुच्छ सी वस्तु मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते मात्र पत्थर की मूर्तियों को यह चैलेंज नहीं दिया जा सकता।

[2]यह उनकी विवशता तथा लाचारी का अधिक प्रदर्शन है कि पैदा करना तो दूर की बात, यह तो मक्खी को पकड़कर उसके मुख से वह वस्तु भी नहीं ले सकते जो वह उनसे छीन कर ले जाये।

[3]प्रार्थी (इच्छुक) से तात्पर्य स्वकृत देवता तथा वाँछित से तात्पर्य मक्खी अथवा कुछ के निकट प्रार्थी से पुजारी तथा वांछित से उसके देवता तात्पर्य हैं। हदीस कुदसी में असत्य देवताओं की शक्तिहीनता का वर्णन इन शब्दों में है। अल्लाह तआला फ़रमाता है : "उससे अधिक अत्याचारी कौन हो जो मेरी तरह पैदा करना चाहता है ? यदि किसी में वास्तव में सामर्थ्य है, तो वह एक कण अथवा एक जूँ ही पैदा करके दिखा दे।" (सहीह बुख़ारी किताबुल लिबास बाब ला तदख़ोलुल मलायेका बैतन फ़ीहे कलबुन वला सूरतुन)

[4]यही कारण है कि लोग उसके निस्सहाय सृष्टि को उसका समतुल्य एवं साझीदार बना लेते हैं। यदि उनको अल्लाह तआला की महिमा, उच्चता, सामर्थ्य तथा शक्ति एवं उसकी असीमता का ठीक-ठीक अनुमान तथा ज्ञान हो तो वह कभी उसके प्रभुत्व में किसी को सम्मिलित न करें।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٧٤﴾

अल्लाह (तआला) अत्यन्त शक्तिशाली तथा प्रभावशाली है।

اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٧٥﴾

(७५) फ़रिश्तों में से तथा मनुष्यों में से रसूल को अल्लाह ही चयन कर लेता है।[1] नि:संदेह अल्लाह (तआला) सुनने वाला देखने वाला है।[2]

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٧٦﴾

(७६) वह भली-भाँति जानता है जो कुछ उनके आगे है तथा जो कुछ उनके पीछे है, तथा अल्लाह ही की ओर सब काम लौटाये जाते हैं।[3]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا

(७७) हे ईमानवालो ! रूकूअ, सजदा करते

---

[1] رُسُلٌ रसूल (अवतरित, भेजा हुआ संदेशवाहक) का बहुवचन है। अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों से भी वाहन का अर्थात संदेशवाहन का काम लिया है जैसे आदरणीय जिब्रील को अपनी प्रकाशना के लिए चुना कि वे रसूलों के पास प्रकाशना पहुँचायें। अथवा प्रकोप लेकर समुदायों के पास जायें तथा मनुष्यों में से जिन्हें चाहा रिसालत के लिए चुन लिया तथा उन्हें लोगों के मार्गदर्शन तथा शिक्षा देने के लिए नियुक्त किया। सभी अल्लाह के भक्त थे, यद्यपि चुने हुए थे, परन्तु किस लिए ? प्रभुत्व के अधिकार में साझीदार बनाने के लिए ? जिस प्रकार कुछ लोगों ने उनको अल्लाह का साझी बना लिया है। नहीं, बल्कि केवल अल्लाह का संदेश पहुँचाने के लिए।

[2] वह भक्तों के कथन सुनने वाला है तथा देखने वाला है अर्थात यह जानता है कि रिसालत के योग्य कौन है ? जैसे अन्य स्थान पर फरमाया :

﴿ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ ﴾

"उस स्थान को तो अल्लाह ही अधिक जानता है कि कहाँ वह अपना दूतत्व रखे।"
(सूर: अल-अनआम-१२४)

[3] जब सभी बातों का केन्द्र बिन्दु अल्लाह ही है, तो मनुष्य उसकी अवहेलना करके कहाँ जा सकता है तथा उसकी यातना से किस प्रकार बच सकता है ? क्या उसके लिए यह लाभकारी नहीं कि वह उसकी अधीनता तथा आज्ञापालन का मार्ग अपना कर उसकी प्रसन्नता प्राप्त करे ? अत: अगली आयत में उसका स्पष्टीकरण हो रहा है।

The Ummah Technology Mission

وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٧٧﴾ ۩

रहो,[1] तथा अपने प्रभु की इबादत में लगे रहो तथा पुण्य के कार्य करते रहो ताकि तुम सफल हो जाओ।[2]

وَجَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ؕ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ؕ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ اِبْرٰهِيْمَ ؕ هُوَ سَمّٰىكُمُ

(७८) तथा अल्लाह के मार्ग में वैसा ही धर्मयुद्ध करो जैसा धर्मयुद्ध का औचित्य है,[3] उसी ने तुम्हें निर्वाचित किया है तथा तुम पर धर्म के विषय में कोई कमी नहीं की,[4] धर्म अपने पिता[5] इब्राहीम का (स्थापित रखो)।

---

[1]अर्थात उस नमाज़ के प्रतिबद्ध रहो जो धार्मिक नियम में निर्धारित की गयी है। आगे इबादत का आदेश आ रहा है जिसमें नमाज़ सम्मिलित थी, परन्तु इसकी विशेषता तथा महत्व के कारण इसका विशेष रूप से आदेश दिया।

[2]अर्थात सफलता अल्लाह की इबादत तथा आज्ञा पालन में अर्थात सत्कर्म में ही है, न कि अल्लाह की इबादत तथा आज्ञापालन से प्राण छुड़ाकर मात्र भौतिक साधन एवं वस्तुओं की प्राप्ति तथा बाहुल्य में, जैसाकि अधिकतर लोग समझते हैं।

[3]इस धर्मयुद्ध से तात्पर्य कुछ ने वह महा धर्मयुद्ध लिया है जो अल्लाह के नाम के प्रसार के लिए काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों से किया जाता है तथा कुछ ने अल्लाह के आदेशों के पालन को कहा है क्योंकि इसमें इंद्रियों तथा शैतान का सामना करना पड़ता है। तथा कुछ ने प्रत्येक वह प्रयत्न लिया है जो सत्य एवं सत्यता को प्रभावशाली बनाने, असत्य को दमन करने के लिए करना पड़ता है।

[4]अर्थात ऐसा आदेश नहीं दिया जिसे मानव प्राण सहन न कर सके (वरन् थोड़ी बहुत कठिनाई तो प्रत्येक कार्य में उठानी पड़ती है) बल्कि पूर्व के धार्मिक नियमों के कुछ कठोर आदेश निरस्त कर दिये। इसके अतिरिक्त मुसलमानों के लिए बहुत सी छूट प्रदान कीं, जो पूर्व के धार्मिक नियमों में नहीं थीं।

[5]अरब इस्माईल की सन्तान में से थे, इस आधार पर आदरणीय इब्राहीम अरबों के पिता थे तथा गैर अरब भी आदरणीय इब्राहीम की एक महान व्यक्ति के रूप में आदर करते थे, जिस प्रकार पुत्र पिता का करते हैं, इसलिए वह सभी लोगों के पिता थे, इसके अतिरिक्त मुसलमानों के पैग़म्बर के (अरब होने के नाते) आदरणीय इब्राहीम पिता थे, इसलिए मुसलमानों के भी पिता हुए। इसलिए कहा गया कि यह धर्म इस्लाम जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए निर्वाचित किया है, तुम्हारे पिता इब्राहीम का धर्म है, उसी का अनुसरण करो।

The Quran Technology Mission

الْمُسْلِمِيْنَ ۙ مِنْ قَبْلُ وَفِيْ هٰذَا لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ۚ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ؕ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿۷۸﴾

उसी (अल्लाह)[1] ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है। इस (क़ुरआन) से पूर्व तथा इसमें भी ताकि पैग़म्बर तुम पर साक्षी हो जाये तथा तुम सभी लोगों के साक्षी बन जाओ,[2] तो तुम्हें चाहिए कि नमाज़ें स्थापित करो तथा ज़कात (धर्मदान) अदा करते रहो तथा अल्लाह को दृढ़ता से पकड़ लो, वही तुम्हारा संरक्षक तथा स्वामी है। तथा कितना श्रेष्ठ स्वामी तथा कितना उत्तम सहायता करने वाला है।

[1] ﻫُ सर्वनाम को कुछ ने इब्राहीम की ओर फेरा है अर्थात क़ुरआन के अवतरण से पूर्व तुम्हारा नाम मुस्लिम भी आदरणीय इब्राहीम ने ही रखा था तथा कुछ ने अल्लाह की ओर फेरा है अर्थात उसने तुम्हारा नाम मुस्लिम रखा है।

[2] यह गवाही क़ियामत के दिन होगी जैसाकि हदीस में है। (देखिये सूरः बक़रः आयत १४३ की व्याख्या)

The Ummah Technology Mission

سُوْرَةُ الْمُؤْمِنُوْنَ

सूरतुल मोमिनून-२३

सूर: मोमीनून मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें एक सौ अ ठारह आयतें तथा छ: रूकूअ हैं।

अल्लाह दयालु एवं कृपालु के नाम से प्रारम्भ करता हूँ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

(१) नि:संदेह ईमानवालों ने सफलता प्राप्त कर लिया।[1]

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١

(२) जो अपनी नमाज़ में विनम्रता करते हैं।[2]

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۝٢

(३) जो बेकार बातों से मुँह मोड़ लेते हैं।[3]

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۝٣

---

[1] فلاح का शाब्दिक अर्थ है चीरना, काटना, कृषक (किसान) को भी فلاح कहा जाता है कि वह धरती को चीर-फाड़कर उसमें बीज बोता है। مُفلِح (सफल) भी वह होता है जो दुखों को काटता हुआ लक्ष्य तक पहुँच जाता है, अथवा सफलता का मार्ग उसके लिए खुल जाता है, उस पर बन्द नहीं होता। धर्म की दृष्टि से सफल वह है, जो दुनिया में रहकर अपने प्रभु को प्रसन्न कर ले तथा उसके बदले में आख़िरत में अल्लाह की दया तथा कृपा का अधिकारी बन जाये। इसके साथ दुनिया की सुख-सुविधा भी उपलब्ध हो जाये तो अल्लाह की महिमा है वरन् मूल सफलता तो आख़िरत की ही सफलता है चाहे दुनिया वाले इसके विपरीत सांसारिक सुख-सुविधाओं से सम्पन्नता को ही सफलता समझते हैं। आयत में उन ईमानवालों को सफलता की शुभसूचना दी गयी है जिनमें लिखित गुण होंगे। जैसे अगली आयत देखिये।

[2] خشوع से तात्पर्य हृदय तथा अंगों की एकाग्रता तथा लीनता है। हार्दिक एकाग्रता यह है कि नमाज़ की स्थिति में जानबूझकर विचारों तथा शंकाओं से हृदय को सुरक्षित रखे तथा अल्लाह की महिमा तथा महानता का चित्र अपने हृदय में बिठाने का प्रयत्न करे। अंग तथा तन की एकाग्रता यह है कि इधर-उधर न देखे, खेल-कूद न करे, बालों-वस्त्रों को संवारने में न लगा रहे। बल्कि भय, विनम्रता, तथा चिन्तन की ऐसी अवस्था हो, जैसी साधारणतया राजा अथवा किसी बड़े आदमी के समक्ष होती है।

[3] لغو प्रत्येक वह कार्य तथा प्रत्येक वह बात है जिसका कोई लाभ न हो अथवा उसमें सांसारिक अथवा धार्मिक हानियाँ हों। इनसे बचने का अर्थ है कि उनकी ओर ध्यान भी न दिया जाये न कि उन्हें अपनायें अथवा उनको किया जाये।

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۝٤

(४) जो ज़कात (धर्मदान) अदा करने वाले हैं।[1]

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝٥

(५) जो अपने गुप्ताँगों की रक्षा करने वाले हैं।

اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝٦

(६) सिवाय अपनी पत्नियों तथा स्वामित्व की दासियों के, नि:संदेह यह निन्दा किये जाने वालों में से नहीं हैं।

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝٧

(७) इसके अतिरिक्त जो अन्य ढूँढें वही सीमा उलंघन कर जाने वाले हैं।[2]

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۝٨

(८) जो अपनी धरोहर तथा वचन की रक्षा करने वाले हैं।[3]

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝٩

(९) जो अपनी नमाज़ों की सुरक्षा करते हैं।[4]

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۝١٠

(१०) यही उत्तराधिकारी हैं।

---

[1]इससे तात्पर्य कुछ के निकट अनिवार्य ज़कात है (जिसका विवरण अर्थात उसकी मात्रा तथा ज़कात की दर यद्यपि मदीने में बतायी गयी फिर भी) इसका आदेश मक्के में ही दे दिया गया था तथा कुछ के निकट ऐसे कर्मों को अपनाना है जिससे मन की शुद्धि तथा व्यवहार एवं चरित्र की स्वच्छता हो।

[2]इससे ज्ञात हुआ कि متعة (मुतआ) की इस्लाम में कदापि आज्ञा नहीं है। तथा कामवासना की तृप्ति के लिए केवल दो ही उचित विधि हैं। पत्नी से सहवास करके अथवा दासियों से कामवासना की तृप्ति करके, बल्कि अब केवल पत्नी इस कार्य के लिए रह गयी है क्योंकि परिभाषित दासी का अस्तित्व अभी समाप्त है, यद्यिप जब कभी भी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं तो पत्नी ही की तरह उससे सहवास मान्य होगा।

[3] أمانات से तात्पर्य निर्धारित डियुटी को पूरा करना, गुप्त बातों तथा माल की सुरक्षा है तथा वचनों के पालन में अल्लाह से किये हुए वचन तथा मनुष्यों से किये वचन एवं सन्धि दोनों सम्मिलित हैं।

[4]अन्त में पुन: नमाज़ों की सुरक्षा को सफलता के लिए आवश्यक कहा है, जिससे नमाज़ की विशेषता तथा महत्व स्पष्ट होती है। परन्तु आज मुसलमान के निकट अन्य पुण्य कर्मों की तरह इसका कोई महत्व विशेष नहीं रह गया है।

The Ummah Technology Mission

الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۱﴾

(११) जो फ़िरदौस (स्वर्ग की सर्वोच्च श्रेणी) के उत्तराधिकारी होंगे, जहाँ वे सदैव रहेंगे।[1]

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ﴿۱۲﴾

(१२) तथा नि:संदेह हमने मनुष्य को खनखनाती मिट्टी के सार से उत्पन्न किया।[2]

ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿۱۳﴾

(१३) फिर उसे वीर्य बनाकर सुरक्षित स्थान में रख दिया।[3]

ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ

(१४) फिर वीर्य को हमने जमा हुआ रक्त बना दिया, फिर उस रक्त के लोथड़े को माँस का टुकड़ा बना दिया। फिर माँस के टुकड़े में अस्थियाँ बनायीं, फिर अस्थियों को माँस पहना दिया।[4] फिर एक अन्य रूप में उसे

---

[1]इन वर्णित गुणों से युक्त ईमानवाले ही सफल होंगे जो स्वर्ग के उत्तराधिकारी अर्थात अधिकारी होंगे। स्वर्ग भी "जन्नतुल फ़िरदौस", जो स्वर्ग का सर्वोच्च स्थान है जहाँ से स्वर्ग की नदियाँ निकलती हैं (सहीह बुख़ारी किताबुल जिहाद बाबु दरजातिल मुजाहिदीन फ़ी सबीलिल्लाहे व किताबुत तौहीद बाब वकान अर्शुहू अलल माअे)

[2]मिट्टी से पैदा करने का अर्थ आदि पुरूष आदम की मिट्टी से उत्पत्ति है अथवा मनुष्य जो भोजन भी खाता है वह सब मिट्टी ही से पैदा होता है, इस आधार पर उस वीर्य का मूलतत्व जो मनुष्य की उत्पत्ति का कारण बनता है, मिट्टी ही है।

[3]सुरक्षित स्थान से तात्पर्य माता का गर्भाशय है, जहाँ नौ महीने बच्चा बड़ा सुरक्षित रहता तथा पलता है।

[4]इसका कुछ विवरण सूरः हज में गुज़र चुका है। यहाँ उसे पुनः वर्णन किया गया है। फिर भी वहाँ عَلَقَة का जो वर्णन था, यहाँ उसकी व्याख्या مُضْغَة को अस्थियों में परिवर्तित करने तथा अस्थियों को माँस पहनाने से कर दी है। مُضْغَة माँस को अस्थियों में परिवर्तित करने से उद्देश्य मानव के ढाँचे को सुदृढ़ आधार पर खड़ा करना है। क्योंकि मात्र माँस में कोई दृढ़ता तथा कठोरता नहीं होती। परन्तु यदि उसे मात्र अस्थियों का ढाँचा ही बनाया जाता तो मनुष्य में वह सुन्दरता एवं आकर्षण न होता जो प्रत्येक मानव के अन्दर विद्यमान है। इसलिए उन अस्थियों में एक विशेष अनुपात तथा मात्रा में माँस चढ़ा दिया गया है कहीं पर अधिक तथा कहीं पर कम, ताकि उसके आकार प्रकार में असंतुलन एवं भद्दापन न उत्पन्न हो। बल्कि वह सुन्दरता तथा आकर्षण का नमूना तथा

The Ummah Technology Mission

أَحْسَنُ الْخَٰلِقِينَ ﴿١٤﴾

उत्पन्न कर दिया।[1] मंगलमय है वह अल्लाह जो सबसे अच्छी उत्पत्ति करने वाला है।[2]

ثُمَّ إِنَّكُم بَعْدَ ذَٰلِكَ لَمَيِّتُونَ ﴿١٥﴾

(१५) इसके पश्चात फिर तुम सब अवश्य मर जाने वाले हो।

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ تُبْعَثُونَ ﴿١٦﴾

(१६) फिर क़ियामत के दिन नि:संदेह तुम सब उठाये जाओगे।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ ۖ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَٰفِلِينَ ﴿١٧﴾

(१७) तथा हमने तुम्हारे ऊपर सात आकाश बना दिये हैं,[3] तथा हम सृष्टि से अचेत नहीं हैं।[4]

सृष्टि का उत्कृष्ट नमूना हो। इसी बात को क़ुरआन में अन्य स्थान पर इस प्रकार से वर्णन किया गया है।

﴿لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَٰنَ فِىٓ أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ﴾

"हमने मनुष्य को सुन्दर रूप अर्थात अत्यधिक अच्छे योग अथवा बहुत अच्छे ढाँचे में बनाया।" (सूरः *अत्तीन*-४)

[1]इससे तात्पर्य वह शिशु है जो नौ महीने के पश्चात एक विशेष रूप लेकर माता के गर्भ से जन्म लेता है तथा चलने-फिरने की शक्ति के साथ सुनने तथा देखने एवं बोध की शक्तियाँ भी उसके साथ होती हैं।

[2] خالقين यहाँ उन صانعين के अर्थों में है, जो विशेष मात्रा में द्रव्यों को जोड़कर कोई एक वस्तु तैयार करता है। अर्थात इन सभी शिल्पकारों में अल्लाह जैसा भी कोई शिल्पी है, जो इस प्रकार शिल्पकारी का नमूना प्रस्तुत कर सके जो अल्लाह तआला ने मानव के रूप में प्रस्तुत किया है ? परन्तु सबसे अधिक शुभ तथा मंगलमय वह अल्लाह ही है जो सभी शिल्पकारों से बड़ा तथा सबसे अच्छा कारीगर है।

[3] طرائق बहुवचन है طريقة का, तात्पर्य आकाश है। अरब ऊपर-नीचे वस्तु को भी طريقة कहते हैं। आकाश भी ऊपर-नीचे है इसलिए उन्हें طرائق कहा। अथवा طريقة का अर्थ मार्ग है, आकाश फ़रिश्तों के आने-जाने अथवा सितारों के घूमने का मार्ग है, इसलिए उन्हें طرائق कहा गया।

[4] خَلْق से तात्पर्य مخلوق है। अर्थात आकाशों को पैदा करके हम अपनी धरती की सृष्टि से अचेत नहीं हो गये अपितु हमने आकाशों को धरती पर गिरने से सुरक्षित रखा है ताकि सृष्टि का नाश न हो। अथवा अर्थ यह है कि हम सृष्टि की समस्याओं तथा उनके जीवन उपयोगी आवश्यकताओं से अचेत नहीं हो गये, बल्कि हम उनका प्रबन्ध करते हैं

The Ummah Technology Mission

وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنَّاهُ فِي الْأَرْضِ ۖ وَإِنَّا عَلَىٰ ذَهَابٍ بِهِ لَقَادِرُونَ ﴿١٨﴾

(१८) तथा हम एक उचित मात्रा में आकाश से पानी बरसाते हैं, [1] फिर उसे धरती के ऊपर रोक देते हैं,[2] तथा हम उसके ले जाने पर निश्चयत: सामर्थवान है।[3]

فَأَنْشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّاتٍ مِنْ نَخِيلٍ وَأَعْنَابٍ لَكُمْ فِيهَا فَوَاكِهُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿١٩﴾

(१९) इसी पानी के द्वारा हम तुम्हारे लिए खजूरों तथा अंगूरों के बाग़ उपजा देते हैं कि तुम्हारे लिए उनमें बहुत से मेवे (फल) होते हैं, उन्हीं में से तुम खाते भी हो।[4]

(फ़तहुल क़दीर)। तथा कुछ ने यह भावार्थ वर्णन किये हैं कि धरती से जो कुछ निकलता अथवा प्रवेश करता है, उसी प्रकार आकाश से जो उतरता तथा चढ़ता है, सब उसके ज्ञान में है तथा प्रत्येक वस्तु पर वह दृष्टि रखता है तथा प्रत्येक स्थान पर वह अपने ज्ञान के आधार पर तुम्हारे साथ होता है। (इब्ने कसीर)

[1]अर्थात न अधिक कि जिससे विनाश फैल जाये तथा न इतना कम कि पैदावार तथा अन्य आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त न हो।

[2]अर्थात यह प्रबन्ध भी किया कि सारा पानी बरस कर बह न जाये बल्कि हमने स्रोतों, नहरों, नदियों तथा तालाबों एवं कुओं के रूप में उसे सुरक्षित भी किया है, (क्योंकि उन सबका उद्गम भी आकाशीय वर्षा ही है) ताकि उन दिनों में जब वर्षा न हो अथवा ऐसे क्षेत्रों में जहाँ वर्षा कम होती हो तथा पानी की आवश्यकता अधिक हो, उनसे पानी प्राप्त कर लिया जाये।

[3]अर्थात जिस प्रकार हमने अपनी दया तथा कृपा से पानी का ऐसा विस्तृत प्रबन्ध किया है, वहीं हमें यह भी सामर्थ्य है कि पानी का तल इतना नीचा कर दें कि तुम्हारे लिए उनको प्राप्त करना असम्भव हो जाये।

[4]अर्थात उन बागों में अंगूर तथा खजूर के अतिरिक्त अन्य बहुत से फल होते हैं जिनके स्वाद से तुम आनन्द प्राप्त करते हो तथा कुछ खाते हो।

The Ummah Technology Mission

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُورِ سَيْنَاءَ تَنْبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْآكِلِينَ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा वह वृक्ष जो सैना नामक पर्वत पर उगता है जो तेल निकालता है तथा खाने वाले के लिए सालन है।[1]

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۖ نُّسْقِيكُم مِّمَّا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٢١﴾

(२१) तुम्हारे लिए चौपाये पशुओं में भी बहुत बड़ी शिक्षा है। उनके पेटों से हम तुम्हें (दूध) पिलाते है तथा अन्य भी बहुत से लाभ तुम्हारे लिए उनमें हैं, उनमें से कुछ को तुम खाते भी हो।

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा उन पर एवं नावों पर तुम सवार कराये जाते हो।[2]

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) नि:संदेह हमने नूह को उसके समुदाय की ओर (रसूल बनाकर) भेजा। उसने कहा हे मेरी जाति के लोगो ! अल्लाह की इबादत करो तथा उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं, क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते ?

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ مَا هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُرِيدُ

(२४) उसके समाज के काफ़िर प्रमुखों ने स्पष्ट कह दिया कि यह तो तुम जैसा ही मनुष्य है, यह तुम पर श्रेष्ठता (तथा सम्मान) प्राप्त

---

[1]इससे ज़ैतून का वृक्ष तात्पर्य है, जिसका रस तेल के रूप में, फल व्यन्जन (सालन) के रूप में प्रयोग होता है। (सालन) को صبغ (रंग) कहा है क्योंकि रोटी रस में डूबो कर रंगी जाती है। तूर सीना (पर्वत) तथा उसका निकटवर्ती क्षेत्र विशेषरूप से इसकी उत्तम पैदावार का क्षेत्र है।

[2]अर्थात प्रभु के इन उपहारों से तुम लाभान्वित होते हो, क्या वह इस योग्य नहीं कि उसकी कृतज्ञता व्यक्त करो तथा केवल उसी एक की इबादत (आराधना) तथा आज्ञापालन करो ?

The Ummah Technology Mission

करना चाहता है।[1] यदि अल्लाह ही को स्वीकार होता तो किसी फ़रिश्ते को उतारता,[2] हमने तो इसे अपने पूर्वजों के समय में सुना ही नहीं।[3]

أَن يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنزَلَ مَلَائِكَةً ۖ مَّا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ﴿٢٤﴾

(२५) नि:संदेह इस व्यक्ति को उन्माद है, तो तुम उसे एक निर्धारित समय तक ढील दो।[4]

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوا بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٢٥﴾

(२६) नूह ने प्रार्थना की हे मेरे पालनहार ! इनके झुठलाने पर तू मेरी सहायता कर।[5]

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ﴿٢٦﴾

---

[1]अर्थात यह तो तुम्हारे जैसा ही मनुष्य है, यह किस प्रकार नबी तथा रसूल हो सकता है ? तथा यदि यह नबूअत तथा रिसालत का दावा कर रहा है, तो इसका मूल उद्देश्य इससे तुम पर श्रेष्ठता तथा उच्चता प्राप्त करना है।

[2]तथा यदि वास्तव में अल्लाह अपने रसूल के द्वारा हमें यह समझाना चाहता कि इबादत के योग्य केवल वही है तो वह किसी फ़रिश्ते को रसूल (संदेशवाहक) बनाकर भेजता न कि किसी मनुष्य को, वह आकर हमें एकेश्वरवाद की परिभाषा समझाता।

[3]अर्थात इस का एकेश्वरवाद का आमन्त्रण एक निराला आमन्त्रण है, इस से पूर्व हम ने अपने पूर्वजों के समय में तो यह सुना ही नहीं।

[4]यह हमें तथा हमारे पूर्वजों को मूर्तियों की पूजा करने के कारण मूर्ख तथा निर्बोध समझ रहा है तथा कहता है। लगता है कि यह स्वयं ही दीवाना है, इसे एक समय तक ढील दो, मृत्यु के साथ ही इसका आमन्त्रण भी समाप्त हो जायेगा। अथवा सम्भव है कि इसकी दीवानगी समाप्त हो जाये तथा इस आमन्त्रण को छोड़ दे।

[5]साढ़े नौ सौ वर्ष तक सतर्क करने तथा आमन्त्रण देने के पश्चात अन्त में प्रभु से प्रार्थना की :

﴿ فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانتَصِرْ ﴾

"(नूह ने) प्रभु से प्रार्थना की, मैं पराजित तथा कमज़ोर हूँ मेरी सहायता कर।"
(सूरः अल-क़मर-१०)

अल्लाह तआला ने प्रार्थना स्वीकार की तथा आदेश दिया कि मेरी संरक्षता तथा निर्देश के अनुसार नाव बनाओ।

The Ummah Technology Mission

فَأَوْحَيْنَآ إِلَيْهِ أَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَإِذَا جَآءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ فَاسْلُكْ فِيهَا مِن كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۖ وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ إِنَّهُم مُّغْرَقُونَ ﴿٢٧﴾

(२७) तो हम ने उनकी ओर प्रकाशना भेजी कि तू हमारी आँखों के समक्ष हमारी प्रकाशना के अनुसार एक नाव बना। जब हमारा आदेश आ जाये[1] तथा तन्दूर उबल पड़े[2] तो तू हर प्रकार के एक-एक जोड़े उस में रख ले[3] तथा अपने परिवार को भी, अतिरिक्त उनके जिनके विषय में हमारी बात पूर्व गुज़र चुकी है।[4] सावधान! जिन लोगों ने अत्याचार किया है उनके विषय में मुझसे कोई बात न करना, वे तो सब डुबोये जायेंगे।[5]

فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنتَ وَمَن مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّانَا مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٢٨﴾

(२८) जब तू तथा तेरे साथी नाव में भली प्रकार बैठ जाना तो कहना कि सभी प्रशंसायें अल्लाह के लिए ही हैं जिसने हम लोगों को अत्याचारियों से छुटकारा दिलाया।

---

[1]अर्थात उनके विनाश का आदेश आ जाये।

[2]तन्दूर पर व्याख्या सूरः हूद में गुज़र चुकी है कि उचित बात यह है कि इससे तात्पर्य हमारे समाज का परिचित तन्दूर नहीं जिसमें रोटी पकाई जाती है, बल्कि धरती तात्पर्य है कि सारी धरती ही स्रोतों में परिवर्तित हो गयी। नीचे धरती से पानी स्रोतों के समान उबल पड़ा। नूह को निर्देश दिया जा रहा है कि जब पानी धरती से उबल पड़े ---

[3]अर्थात जीव, वनस्पति तथा फल प्रत्येक में से एक-एक जोड़ा (नर तथा मादा) नाव में रख ले ताकि सभी का वंश शेष रहे।

[4]अर्थात जिनके विनाश का निर्णय उनके कुफ्र तथा क्रूरता के कारण हो चुका है, जैसे नूह की पत्नी तथा उनका पुत्र।

[5]अर्थात जब प्रकोप प्रारम्भ हो जाये तो इन अत्याचारियों में से किसी पर दया करने की आवश्यकता नहीं कि तू किसी की सिफ़ारिश करना प्रारम्भ कर दे, क्योंकि उनको जलमग्न करने का अन्तिम निर्णय हो चुका है।

The Ummah Technology Mission

وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِیْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَیْرُ الْمُنْزِلِیْنَ ﴿۲۹﴾

(२९) तथा कहना हे मेरे प्रभु ![1] मुझे सुरक्षित उतारना तथा तू ही उत्तम रूप से उतारने वाला है ।[2]

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِیْنَ ﴿۳۰﴾

(३०) निसंदेह इस में बड़ी-बड़ी निशानियाँ हैं,[3] तथा हम नि:संदेह परीक्षा लेने वाले हैं ।[4]

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِیْنَ ﴿۳۱﴾

(३१) फिर उनके पश्चात हमने अन्य समुदाय भी पैदा किये ।[5]

---

[1]नाव मे बैठकर अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करना कि उसने अत्याचारियों को अन्त में जलमग्न करके उनसे छुटकारा प्रदान किया तथा नाव को सुरक्षित किनारे पर लगने की दुआ करना ।

[2]इसके साथ वह भी दुआ पढ़ ली जाये जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सवारी पर बैठते समय पढ़ते थे । (सूरः अल-ज़ुखरूफ़-१३ तथा १४)

[3]अर्थात नूह के इस वृतान्त में कि ईमान वालों को मोक्ष तथा काफिरों को नाश कर दिया गया, निशानियाँ हैं इस बात पर कि नबी जो कुछ अल्लाह की ओर से लेकर आते हैं, उनमें वे सच्चे हैं । इसके अतिरिक्त यह कि अल्लाह तआला का सामर्थ्य प्रत्येक वस्तु पर है तथा सत्य तथा असत्य के संघर्ष में प्रत्येक बात से वह परिचित है तथा समय आने पर उस पर नोटिस (सूचना) लेता है तथा झूठे लोगों की इस प्रकार पकड़ करता है कि उसकी पकड़ से कोई निकल नहीं पाता ।

[4]तथा हम नबियों तथा रसूलों के द्वारा यह परीक्षा लेते रहे हैं ।

[5]अधिकतर व्याख्याकारों के निकट नूह के समुदाय के पश्चात अल्लाह तआला ने जिस समुदाय को पैदा किया तथा उनमें रसूल भेजा वह 'आद' का समुदाय है क्योंकि अधिकतर स्थान पर नूह के समुदाय के उत्तराधिकारी के रूप में 'आद' के समुदाय का ही वर्णन आया है । कुछ के निकट यह 'समूद' का समुदाय है क्योंकि आगे चलकर उनके विनाश के विषय में वर्णन किया गया है कि صيحة (ज़ोरदार चीख़) ने उनको पकड़ लिया तथा यह प्रकोप समूद के समुदाय पर आया था । कुछ के निकट यह आदरणीय शुऐब का समुदाय 'मदयन' के निवासी हैं कि उनका भी विनाश चीख़ के कारण हुआ ।

The Ummah Technology Mission

فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣٢﴾

(३२) फिर उनमें स्वयं उनमें से ही रसूल भी भेजा [1] कि तुम सब अल्लाह की इबादत करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं,[2] तुम क्यों नहीं डरते ?

وَقَالَ الْمَلَأُ مِن قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِلِقَاءِ الْآخِرَةِ وَأَتْرَفْنَاهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا مَا هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يَأْكُلُ مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ ﴿٣٣﴾

(३३) तथा जाति के प्रमुखों [3] ने उत्तर दिया जो कुफ़्र करते थे तथा आख़िरत की मुलाकात को झुठलाते थे तथा हमने उन्हें साँसारिक जीवन में सुखी रखा था[4] कि यह तो तुम जैसा मुनष्य है, तुम्हारा ही खाद्य पदार्थ खाता है तथा तुम्हारे पीने का पानी ही यह भी पीता है।[5]

---

[1]यह रसूल भी हमने उन्हीं में से भेजा जिसका पालन-पोषण उन्हीं के बीच हुआ था, जिसको वे भली-भाँति पहचानते थे, उसके परिवार, घर तथा जन्म प्रत्येक बात से परिचित थे।

[2]उसने आकर सर्वप्रथम वही एकेश्वरवाद का आमन्त्रण दिया जो प्रत्येक नबी के आमन्त्रण तथा सतर्क करने का मूल बिन्दु रहा है।

[3]यह समाज के मुखिया ही प्रत्येक युग में नबियों तथा रसूलों एवं सत्यवादियों को झुठलाने में बढ़-चढ़ कर भाग लेते रहे हैं, जिसके कारण समाज का बहुमत ईमान लाने से वंचित रहता क्योंकि ये अत्यधिक प्रभावशाली लोग होते थे, समाज उन्हीं के पीछे चलने वाला होता था।

[4]अर्थात आख़िरत पर ईमान न होना तथा साँसारिक सुख-सुविधा का वैभव, ये दो मूल कारण थे अपने रसूल पर ईमान न लाने के। आज भी झूठे लोग इन्हीं कारणों के आधार पर सत्यवादियों का विरोध करते तथा सत्य के आमन्त्रण से मुख मोड़ते हैं।

[5]अत: उन्होंने यह कहकर इंकार कर दिया कि यह तो हमारी ही तरह खाता-पीता है, यह अल्लाह का रसूल किस प्रकार हो सकता है ? जैसे आज भी इस्लाम के बहुत से दावेदारों के लिए रसूल का मानव रूप स्वीकार करना अत्यन्त कठिन है।

The Ummah Technology Mission

وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा यदि तुमने अपने जैसे ही मनुष्य की अधीनता स्वीकार कर ली तो नि:संदेह तुम क्षतिग्रस्त हो।[1]

اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) क्या यह तुम्हें इस बात का वचन देता है कि जब तुम मर कर केवल मिट्टी तथा अस्थि रह जाओगे, तो तुम फिर जीवित किये जाओगे ?

هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٦﴾

(३६) नहीं नहीं, दूर तथा बहुत दूर है वह जिस का तुम वचन दिये जाते हो।[2]

اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٣٧﴾

(३७) जीवन तो केवल साँसारिक जीवन है जिसमें हम मरते-जीते रहते हैं, यह नहीं कि हम फिर उठाये जायेंगे।

اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٨﴾

(३८) यह तो बस वह व्यक्ति है जिस ने अल्लाह पर झूठ गढ़ लिया है,[3] हम तो इस पर विश्वास लाने वाले नहीं हैं।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٣٩﴾

(३९) नबी ने प्रार्थना की कि प्रभु इनके झुठलाने

---

[1]वह हानि ही है कि अपने ही जैसे मनुष्य को रसूल मानकर तुम उसका महत्व एवं सर्वोच्चता स्वीकार कर लोगे, क्योंकि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से श्रेष्ठ किस प्रकार हो सकता है ? यही वह शंका है जो रसूल के मनुष्य होने को अस्वीकार करने वालों के मस्तिष्क में रही है। यद्यपि अल्लाह तआला जिस मनुष्य को रिसालत के लिए चुन लेता है, तो वह उस रिसालत तथा प्रकाशना के कारण अन्य सभी नबी के अतिरिक्त मनुष्यों से महत्व तथा श्रेष्ठता में अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सर्वोच्च हो जाता है।

[2] هيهات जिसका अर्थ 'दूर' है, दो बार बल देने के लिए है।

[3]अर्थात पुन: जीवित होने का वादा, यह एक मनगढ़न्त झूठ है जो यह व्यक्ति अल्लाह पर बाँध रहा है।

The Ummah Technology Mission

पर तू मेरी सहायता कर।[1]

قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ﴿٤٠﴾

(४०) उत्तर मिला कि यह बहुत ही शीघ्र अपने किये पर पछताने लगेंगे।[2]

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾

(४१) अन्त में न्याय के नियमानुसार चीख[3] ने उन्हें पकड़ लिया तथा हमने उन्हें कूड़ा करकट कर डाला,[4] तो अत्याचारियों के लिए दूरी हो।

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٤٢﴾

(४२) फिर उन के पश्चात हम ने अन्य भी सम्प्रदाय पैदा किये।[5]

مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا

(४३) न तो कोई समुदाय अपने समय से

---

[1] अन्त में आदरणीय नूह की तरह इस ईशदूत (पैग़म्बर) ने भी अल्लाह के सदन में सहायता के लिए दुआ के हाथ प्रसार दिये।

[2] عَمَّا में ما अधिक है जो विभक्ति तथा संज्ञा के मध्य काल की कमी पर बल देने के लिए प्रयोग हुआ है। जैसे ﴿فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ﴾ सूरः *आले-इमरान*-१५९ में ما अधिक है अर्थात अतिशीघ्र प्रकोप आने वाला है जिस पर यह पछतायेंगे। परन्तु उस समय पछताने से कोई लाभ न होगा।

[3] यह "चीख" कहते हैं कि आदरणीय जिब्रील की थी, कुछ विद्वान कहते हैं कि वैसे ही कड़ी चीख थी जिसके साथ प्रचन्ड आँधियाँ थीं। दोनों ने मिलकर उनको पल भर में विनाश के घाट उतार दिया।

[4] غُثَاء उस कूड़े करकट को कहते हैं जो बाढ़ के पानी के साथ होता है, जिसमें वृक्षों के खोखले, सूखे तने, तिनके तथा इसी प्रकार अन्य वस्तुएँ होती हैं। जब बाढ़ का ज़ोर कम होता है तो यह भी बेकार पड़े हुए होते हैं। यही दशा उन झुठलाने वालों तथा घमण्डियों की थी।

[5] इससे तात्पर्य आदरणीय स्वालेह, आदरणीय लूत तथा आदरणीय शुऐब के समुदाय हैं। क्योंकि सूरः *अल-आराफ़* तथा सूरः *हूद* में इसी क्रम में इन घटनाओं का वर्णन है। कुछ के निकट इस्राईल की सन्तान तात्पर्य है। قرون बहुवचन है قرن का तथा यह समुदाय के अर्थ में प्रयोग हुआ है।

The Ummah Technology Mission

وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٤٣﴾

आगे बढ़ा तथा न पीछे रहा।[1]

ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ؕ كُلَّمَا جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٤٤﴾

(४४) फिर हमने निरन्तर रसूल भेजे,[2] जिस समुदाय के पास जब-जब उसका रसूल आया उसने झुठलाया, तो हमने एक को दूसरे के पीछे लगा दिया[3] तथा उन्हें कहानी बना दिया,[4] उन लोगों के लिए दूरी हो जो ईमान स्वीकार नहीं करते।

ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۙ ﴿٤٥﴾

(४५) फिर हमने मूसा को तथा उसके भाई हारून को अपनी निशानियाँ तथा स्पष्ट तर्क[5] के साथ भेजा।

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا عَالِيْنَ ۚ ﴿٤٦﴾

(४६) फ़िरऔन तथा उस की सेना की ओर, परन्तु उन्होंने गर्व किया तथा थे ही वे अभिमानी लोग।[6]

---

[1]अर्थात यह सभी समुदाय भी नूह के समुदाय तथा 'आद' की भाँति जब इनके विनाश का निर्धारित समय आ गया तो ध्वस्त हो गयीं। एक क्षण आगे-पीछे न हुआ। जैसे फ़रमाया : ﴿إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ﴾

[2]تترا का अर्थ है एक के पश्चात दूसरा, निरन्तर तथा क्रमबद्ध।

[3]बर्बादी तथा विनाश में। अर्थात जिस प्रकार निरन्तर रसूल आये, उसी प्रकार रिसालत को झुठलाने पर यह समुदाय एक के पश्चात दूसरे प्रकोप से ग्रसित होते रहे तथा विनाश के घाट उतरते रहे।

[4]जिस प्रकार أعاجيب बहुवचन है أعجوبة का (विस्मयकारी वस्तु अथवा आश्चर्यजनक बात) उसी प्रकार أحاديث बहुवचन है أحدوثة का, अर्थ है मुखों से सुनी घटनायें तथा कथायें।

[5]आयत से तात्पर्य वे नौ आयात (निशानियाँ) हैं जिनका वर्णन *सूरः आराफ़* में है, जिनकी व्याख्या गुज़र चुकी है तथा سلطان مبين से तात्पर्य खुला प्रमाण तथा तर्क एवं निशानियाँ (प्रतीक) हैं जिसका कोई उत्तर फ़िरऔन एवं उसके दरबारियों से न बन पड़ा।

[6]गर्व तथा अपने को बड़ा समझना, इसका आधारभूत कारण भी वही आख़िरत पर विश्वास करने से इंकार तथा सांसारिक सुख-सुविधा की बहुतायत ही थी, जिसका वर्णन पूर्व के समुदायों की घटनाओं में गुज़र चुका है।

The Ummah Technology Mission

فَقَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) कहने लगे, क्या हम अपने जैसे दो व्यक्तियों पर ईमान लायें ? जबकि स्वयं उनका समुदाय हमारे आधीन है |[1]

فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ﴿٤٨﴾

(४८) तो उन्होंने उन दोनों को झुठलाया, अन्त में वे लोग भी विनाश प्राप्त लोगों में सम्मिलित हो गये |

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾

(४९) तथा हमने तो मूसा को किताब भी दी कि लोग सीधे मार्ग पर आ जायें |[2]

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ﴿٥٠﴾

(५०) तथा हमने मरियम के पुत्र तथा उसकी माता को एक निशानी बनाया,[3] तथा उन दोनों को उच्च स्वच्छ स्थिरता वाले तथा प्रवाहित पानी[4] वाले स्थान में शरण दी |

---

[1]यहाँ भी इंकार का तर्क उन्होंने आदरणीय मूसा तथा हारून का 'मानव' होना ही प्रस्तुत किया तथा उसी मनुष्य होने पर बल देने के लिए उन्होंने कहा कि यह दोनों उसी समुदाय के व्यक्ति हैं जो हमारे दास हैं |

[2]इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि आदरणीय मूसा को तौरात फ़िरऔन तथा उसके अनुयायियों को जलमग्न करने के पश्चात प्रदान की गयी तथा तौरात के अवतरित होने के पश्चात अल्लाह तआला ने किसी समुदाय को सामूहिक रूप से प्रकोप के द्वारा नाश नहीं किया बल्कि मुसलमानों को यह आदेश दिया जाता रहा कि वह काफ़िरों से धर्मयुद्ध करें |

[3]क्योंकि आदरणीय ईसा का जन्म बिना पिता के हुआ जो प्रभु की शक्ति का प्रतीक है, जिस प्रकार आदम को बिना माता-पिता तथा हव्वा को बिना मादा के आदरणीय आदम से तथा अन्य सभी मनुष्यों को माता-पिता के समागम से पैदा करना उसकी निशानियों में से है |

[4] رَبْوَة (उच्च स्थान) से बैतुल मोकद्दस तथा مَعِين (प्रवाहित स्रोत) से वह स्रोत तात्पर्य है जो एक कथन के आधार पर ईसा के जन्म के समय अल्लाह ने अप्राकृतिक रूप से आदरणीय मरियम के पैरों तले से प्रवाहित किया था जैसा कि सूरः *मरियम* में गुज़रा |

The Ummah Technology Mission

يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ۭ اِنِّىْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝

(५१) हे पैग़म्बरो ! हलाल (वैध) वस्तुयें खाओ तथा पुण्य के कार्य करो।[1] तुम जो कुछ कर रहे हो उससे मैं भली-भाँति अवगत हूँ।

---

[1] طيبات से तात्पर्य पवित्र एवं स्वादिष्ट वस्तुयें हैं, कुछ ने इसका अनुवाद (उचित) वस्तुयें किया है। दोनों ही अपने स्थान पर उचित हैं क्योंकि प्रत्येक पवित्र वस्तु अल्लाह ने उचित (हलाल) की हैं तथा प्रत्येक उचित (हलाल) वस्तु पवित्र एवं स्वादिष्ट हैं। अपवित्र को अल्लाह तआला ने निषेध (हराम) किया है कि वे प्रभाव तथा परिणाम के आधार पर पवित्र नहीं है चाहे अपवित्र भोजन करने वाले को समाज में अपने सामाजिक रीति तथा व्यवहार के कारण उनमें एक प्रकार स्वाद ही प्रतीत होता हो। पुण्य कार्य वह है जो क़ुरआन तथा हदीस में वर्णित धार्मिक नियमों के आधार पर किया जाये, न कि वह जो लोगों को अच्छा प्रतीत हों क्योंकि लोगों को तो धार्मिक नियमों में नई बातों का मिश्रण भी अच्छा लगता है। बल्कि धर्म में परिवर्तन कर नई बातों का मिश्रण करने वालों के यहाँ नवीनता का जितना महत्व है उतना तो धार्मिक रूप से अनिवार्य तथा सुन्नत द्वारा प्रमाणित कार्यों का भी नहीं है। हलाल खाने के साथ पुण्य कार्यों के करने से ज्ञात होता है कि इनका आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है तथा यह एक-दूसरे के पूरक हैं। हलाल खाने से पुण्य के कार्य करने में सरलता तथा पुण्य कार्य करने वाले व्यक्ति को हलाल खाने के लिए बाध्य होना पड़ता है। तथा उसी पर सन्तोष करने का पाठ पढ़ाता है। इसीलिए अल्लाह ने सभी पैगम्बरों को इन दोनों बातों का आदेश दिया है। अत: सभी पैग़म्बर परिश्रम करके हलाल धन कमाने तथा खाने का प्रबन्ध करते रहे, जिस प्रकार आदरणीय दाऊद के विषय में आता है «كَانَ يَأْكُلُ مِنْ كَسْبِ يَدِهِ» (सहीह बुखारी अल-बोयू बाब कस्वुर रजुले व अमलिहि बेयदेही) अपने हाथों की कमाई से खाते थे। तथा नबी सल्लल्लाहु इजार:, वसल्लम ने फ़रमाया : "प्रत्येक नबी ने बकरियाँ चराई हैं, मैंने भी मक्कावासियों की बकरियाँ कुछ किरातों पारिश्रमिक पर चराता रहा हूँ।" (सहीह बुखारी किताबुल इजारत, बाबु राअयिल गनमें अला करारीत) आजकल ब्लैक मेलरों, स्मगलरों, रिश्वत तथा ब्याज खाने वालों एवं अन्य हराम खाने वालों ने मेहनत मज़दूरी करके हलाल धन कमाने वालों को तुच्छ तथा निम्न श्रेणी का बनाकर रख दियाहै, जबकि वास्तविक रूप से धर्म में इसके विपरीत है। एक इस्लामी समाज में हराम खाने वालों के लिए मान-सम्मान का कोई स्थान नहीं है चाहे वे विश्व के कितने भी बड़े कोष के स्वामी क्यों न हों। आदर तथा सम्मान के अधिकारी केवल वे व्यक्ति हैं जो श्रम करके हलाल धन खाते हैं, चाहे वह रूखी-सूखी ही हो। इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस पर बड़ा बल दिया है तथा फ़रमाया है कि अल्लाह तआला हराम कमाई वाले का दान स्वीकार नहीं करता तथा उसकी दुआ भी स्वीकार नहीं करता है। (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात बाबु क़बूलिस्सदकते मिनल कसबित्तैयेबे)

The Ummah Technology Mission

وَاِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿٥٢﴾

(५२) नि:संदेह तुम्हारा यह धर्म एक ही धर्म है[1] तथा मैं ही तुम सब का प्रभु हूँ, तो तुम मुझसे डरते रहो।

فَتَقَطَّعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿٥٣﴾

(५३) फिर उन्होंने स्वयं (ही) अपनी बात (धर्म) के आपस में टुकड़े-टुकड़े कर लिए, प्रत्येक सम्प्रदाय उसके पास जो कुछ है उसी पर गर्व कर रहा है।

فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٥٤﴾

(५४) तो आप भी उन्हें उनकी अचेतन अवस्था में कुछ समय पड़ा रहने दें।[2]

اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ﴿٥٥﴾

(५५) क्या ये (इस प्रकार) समझ बैठे हैं कि हम जो कुछ भी उनका धन तथा सन्तान बढ़ा रहे हैं।

نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرٰتِ ؕ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٦﴾

(५६) वे उनके लिए भलाईयों में शीघ्रता कर रहे हैं ? नहीं, नहीं, बल्कि ये समझते ही नहीं।

اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿٥٧﴾

(५७) नि:संदेह जो लोग अपने प्रभु के भय से डरते हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٨﴾

(५८) तथा जो अपने प्रभु की आयतों पर ईमान रखते हैं।

---

[1] اُمَّةٌ से तात्पर्य धर्म है, तथा एक होने का अर्थ यह है कि सभी नबियों ने एक अल्लाह की इबादत का आमन्त्रण दिया है परन्तु लोग ऐकश्वरवाद को छोड़कर अलग-अलग गुटों तथा सम्प्रदायों में बट गये हैं। तथा प्रत्येक गुट अपने विश्वास तथा कर्म पर प्रसन्न है चाहे वह सत्य से कितना ही दूर हो।

[2] غَمْرَةٌ अधिक जल की मात्रा को कहते हैं जो धरती को ढक लेती है। भटकावे के मार्ग भी इतने अंधकारमय होते हैं कि उसमें घिरे मनुष्य की दृष्टि से सत्य ओझल ही रहता है। غَمْرَة से तात्पर्य आश्चर्य, विस्मय, अचेत तथा अपमान है, आयत में धमकी के आधार पर इनको छोड़ने का आदेश है, उद्देश्य, भाषण तथा शिक्षा से रोकना नहीं है।

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾

(५९) तथा जो अपने प्रभु के साथ किसी को साझी नहीं बनाते।

وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴿٦٠﴾

(६०) तथा जो लोग देते हैं जो कुछ देते हैं तथा उनके दिल काँपते हैं कि वे अपने प्रभु की ओर लौटने वाले हैं।[1]

اُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ﴿٦١﴾

(६१) यही हैं जो शीघ्र-शीघ्र पुण्य प्राप्त कर रहे हैं तथा यही हैं जो उनकी ओर दौड़ जाने वाले हैं।

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾

(६२) हम किसी प्राणी को उसकी शक्ति से अधिक भार नहीं देते,[2] हमारे पास एक किताब है जो सत्य ही बोलती है, उनके ऊपर तनिक भी अत्याचार न होगा।

بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِىْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ﴿٦٣﴾

(६३) बल्कि उनके दिल उस ओर से अचेत हैं तथा उनके लिए इसके अतिरिक्त भी बहुत से कर्म हैं[3] जिन्हें वे करने वाले हैं।

---

[1]अर्थात अल्लाह के मार्ग में व्यय करते हैं परन्तु अल्लाह से डरते भी रहते हैं कि किसी आलस्य अथवा त्रुटि के कारण हमारा कर्म अथवा दान अस्वीकार न हो जाये। हदीस में आता है, आदरणीय आयशा ने पूछा, "डरने वाले कौन हैं ? वे जो शराब पीते, कुकर्म करते तथा चोरियाँ करते हैं ?" नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं, बल्कि यह वे लोग हैं जो नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़ा (व्रत) रखते हैं तथा दान पुण्य करते हैं, परन्तु डरते रहते हैं कि कहीं यह अस्वीकार न हो जायें। (तिर्मिज़ी तफ़सीर सूर: अल-मोमिनून तथा मुसनद अहमद ६\१६० तथा १९५)

[2]ऐसी ही आयत सूर: अल-बक़र: के अन्त में गुज़र चुकी है।

[3]अर्थात शिर्क (मूर्तिपूजा तथा अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की इबादत करना) के अतिरिक्त अन्य महापाप अथवा वे कर्म तात्पर्य हैं जो ईमानवालों के कर्म (अल्लाह के भय तथा ऐकेश्वरवाद पर ईमान आदि) के विपरीत हैं। फिर भी भावार्थ दोनों का एक ही है।

The Ummah Technology Mission

حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْـَٔرُوْنَ ﴿٦٤﴾

(६४) यहाँ तक कि जब हमने उनके सम्पन्न लोगों को यातना में जकड़ लिया[1] तो वे बिलबिलाने लगे।

لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ ۖ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٥﴾

(६५) आज मत बिलबिलाओ, नि:संदेह तुम हमारे समक्ष सहायता न किये जाओगे।[2]

قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾

(६६) मेरी आयतें तो तुम्हारे समक्ष पढ़ी जाती थीं,[3] फिर भी तुम अपनी ऐड़ियों के बल उल्टे भागते थे।[4]

---

[1] مُترفين से तात्पर्य सुख-सुविधा प्राप्त (सम्पन्न) लोग हैं। प्रकोप तो धनवान तथा निर्धन दोनों पर होता है परन्तु धनवानों का नाम विशेष रूप से इसलिए लिया गया है कि समाज का नेतृत्व साधारणतया इन्हीं के हाथ में होता है, वह जिस ओर चाहें, समाज का मुख फेर सकते हैं। यदि वे अल्लाह के आदेशों की अवहेलना का मार्ग अपनायें तथा उस पर दृढ़ता से डटे रहें तो उन्हीं की देखा-देखी समाज के लोग भी टस से मस नहीं होते तथा क्षमा एवं खेद व्यक्त करने की ओर नहीं आते। यहाँ مُترفين से तात्पर्य वे काफ़िर हैं जिनको धन-दौलत से परिपूर्ण तथा सन्तान एवं सेवक प्रदान करके अवसर दिया गया। जिस प्रकार कि कुछ आयतों के पूर्व उनका वर्णन किया गया है। अथवा तात्पर्य चौधरी तथा नेता प्रकार के लोग हैं। तथा प्रकोप से तात्पर्य यदि साँसारिक है तो बद्र के युद्ध में जो मक्का के काफ़िर मारे गये बल्कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शाप के परिणाम स्वरूप भूख तथा अकाल का प्रकोप आ पड़ा था वह तात्पर्य है अथवा फिर आख़िरत की यातना है। परन्तु यह पूर्व के वाक्य क्रम से दूर है।

[2] अर्थात संसार में अल्लाह की यातना भुगतने के पश्चात कोई चीख पुकार, तथा करूणा दया की विनती उन्हें अल्लाह की पकड़ से छुड़ा नहीं सकती। इसी प्रकार आख़ेरत की यातना से छुड़ाने वाला अथवा सहायता करने वाला कोई नहीं होगा।

[3] अर्थात क़ुरआन मजीद अथवा अल्लाह के आदेश जिन में पैग़म्बर की कथनी करनी भी सम्मिलित हैं।

[4] نُكوص का अर्थ है رجعت قهقرى (उल्टे पैर लौटना) परन्तु रूपक के रूप में मुख मोड़ना तथा पलट जाने के अर्थ तथा भावार्थ में प्रयोग होता है। अर्थात अल्लाह के आदेश सुनकर तुम मुख मोड़ लेते थे तथा उनसे भागते थे।

The Ummah Technology Mission

مُسْتَكْبِرِيْنَ ۖ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾

(६७) अकड़ते ऐंठते,[1] कथा बनाते उसे छोड़ देते थे।[2]

اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾

(६८) क्या इन्होंने इस बात पर चिन्तन तथा विचार नहीं किया ?[3] बल्कि इन के पास वह आया जो इनके पूर्वजों के पास नहीं आया था ?[4]

اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾

(६९) अथवा इन्होंने अपने पैग़म्बर को पहचाना नहीं कि उसके इंकार करने वाले हो रहे हैं।[5]

اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ۭ بَلْ جَآءَهُمْ

(७०) अथवा यह कहते हैं कि इसका माथा

---

[1] بِهٖ में सर्वनाम को अधिकांश व्याख्याकारों ने البيت العتيق (ख़ानए-कआबा अथवा हरम) की ओर फेरा है। अर्थात उन्हें अपने को कआबा के पुजारी तथा उसके सेवक एवं रक्षक होने का जो गर्व था, उस आधार पर अल्लाह की आयतों का इंकार किया तथा कुछ ने पवित्र क़ुरआन की ओर फेरा है तथा अर्थ यह है कि क़ुरआन सुनकर उनके हृदय में अभिमान अहंकार उत्पन्न होता है, जो उन्हें क़ुरआन पर ईमान लाने से रोक देता है।

[2] سمر का अर्थ है रातों में बातें करना। यहाँ इसका अर्थ विशेष रूप से उन बातों के हैं जो क़ुरआन करीम तथा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में वे करते थे तथा उसके कारण सत्य की बातें सुनने तथा स्वीकार करने से इंकार कर देते अर्थात छोड़ देते। तथा कुछ ने هجر का अर्थ बकवास तथा कुछ ने अश्लील बातें की हैं। अर्थात रातों की वार्तालाप में तुम क़ुरआन के महत्व पर बकवास करते हो अथवा असभ्य तथा अश्लील बातें करते हो। जिनमें कोई भलाई नहीं (फ़तहुल क़दीर, ऐसरूत्तफ़ासीर)

[3] बात से तात्पर्य क़ुरआन करीम है। अर्थात इस पर विचार कर लेते तो उन्हें इस पर ईमान लाने का सौभाग्य प्राप्त हो जाता।

[4] यह أم विच्छेद (منقطعة) अथवा बात बदलने अर्थात انتقالية (वरन्) के अर्थ में है। अर्थात इनके पास वह धर्म तथा धार्मिक नियम आये हैं जिससे इनके पूर्वज अज्ञान काल में वंचित रहे। जिस पर इन्हें अल्लाह की कतज्ञता करनी चाहिए तथा इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेना चाहिए था।

[5] यह चेतावनी के रूप में है क्योंकि वह पैग़म्बर के वंश, जाति तथा इसी प्रकार उसकी सत्यवादिता, अमानत, सच्चाई तथा व्यवहार एवं चरित्र की महानता को जानते थे तथा इसको स्वीकार करते थे।

The Ummah Technology Mission

بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾

फिर गया है ? [1] बल्कि वह तो उन के पास सत्य लेकर आया है। हाँ, इनमें से अधिकतर सत्य से चिढ़ने वाले हैं।[2]

وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾

(७१) यदि सत्य ही उनकी इच्छाओं का अनुयायी हो जाये, तो धरती तथा आकाश एवं उनके मध्य जितनी वस्तुयें हैं सब अस्त-व्यस्त हो जायें।[3] सत्य तो यह है कि हमने उन्हें उनकी शिक्षा पहुँचा दी है, परन्तु वे अपनी शिक्षा से मुख मोड़ने वाले हैं।

اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾

(७२) क्या आप उनसे कोई पारिश्रमिक चाहते हैं ? याद रखिये, आपके प्रभु का पारिश्रमिक अति श्रेष्ठ है, तथा वह सर्वश्रेष्ठ जीविका पहुँचाने वाला है।

وَاِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾

(७३) नि:संदेह आप तो उन्हें सीधे मार्ग की ओर बुला रहे हैं।

---

[1]यह भी धमकी तथा चेतावनी के रूप में ही है अर्थात इस पैग़म्बर ने ऐसा क़ुरआन प्रस्तुत किया है जिसका समतुल्य प्रस्तुत करने से दुनिया विवश है, इसी प्रकार इसकी शिक्षायें मनुष्य जाति के लिए कृपा तथा शान्ति एवं स्थिरता का कारण है। क्या ऐसा क़ुरआन तथा ऐसी शिक्षायें ऐसा व्यक्ति प्रस्तुत कर सकता है जो दीवाना तथा पागल हो ?

[2]अर्थात उनके मुख फेरने तथा अहंकार का मूल कारण सत्यता से उनकी घृणा है, जो दीर्घकाल से असत्य के मार्ग पर चलने के कारण उनके अंदर उत्पन्न हो गयी है।

[3]सत्य से तात्पर्य धर्म तथा धार्मिक नियम हैं। अर्थात यदि धर्म उनकी इच्छानुसार अवतरित हो तो स्पष्ट बात है कि धरती तथा आकाश का सारा प्रबन्ध ही छिन्न-भिन्न हो जाये। जैसे वह चाहते हैं कि एक देवता के बजाय बहुत से देवता हों, यदि ऐसा वास्तव में हो तो क्या सृष्टि की व्यवस्था ठीक रह सकती है ? तथा इसी प्रकार की अन्य उनकी इच्छायें हैं।

The Ummah Technology Mission

وَ اِنَّ الَّذِیۡنَ لَا یُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَۃِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰکِبُوۡنَ ﴿۷۴﴾

(७४) तथा नि:संदेह जो लोग आख़िरत पर विश्वास नहीं रखते वे सीधे मार्ग से मुड़ जाने वाले हैं।[1]

وَ لَوۡ رَحِمۡنٰہُمۡ وَ کَشَفۡنَا مَا بِہِمۡ مِّنۡ ضُرٍّ لَّلَجُّوۡا فِیۡ طُغۡیَانِہِمۡ یَعۡمَہُوۡنَ ﴿۷۵﴾

(७५) तथा यदि हम उन पर कृपा करें तथा उनकी कठिनाई दूर कर दें तो यह तो अपनी-अपनी दुष्टता पर अधिक दृढ़ रहकर अधिक भटकने लगेंगे।[2]

وَ لَقَدۡ اَخَذۡنٰہُمۡ بِالۡعَذَابِ فَمَا اسۡتَکَانُوۡا لِرَبِّہِمۡ وَ مَا یَتَضَرَّعُوۡنَ ﴿۷۶﴾

(७६) तथा हमने उन्हें यातना में भी जकड़ा, फिर भी ये लोग न तो अपने प्रभु के समक्ष झुके तथा न विनती का मार्ग अपनाया।[3]

---

[1]अर्थात सीधे मार्ग से उनका मुख मोड़ना आख़िरत पर ईमान न होना है।

[2] इस्लाम के विरूद्ध उनके दिलों में जो द्वेष तथा घृणा थी तथा कुफ़्र तथा शिर्क के दलदल में जिस प्रकार वे फँसे हुए थे इसमें उनका वर्णन है।

[3]प्रकोप से तात्पर्य यहाँ वह पराजय है जो बद्र के युद्ध में मक्का के काफ़िरों की हुई, जिसमें उनके सत्तर आदमी मारे गये थे अथवा वह अकाल का प्रकोप है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शाप के परिणाम स्वरूप आया था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ की थी «اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَيهِمْ بِسَبْعٍ كَسَبْعِ يُوسُفَ» (सहीह बुख़ारी क़िताबुद दआवात, बाबुद दुआ अलल मुशरीकीन तथा सहीह मुस्लिम किताबुल मसाजिद वाव इस्तहबाबिल क़ुनूत फ़ी जमी इस्सलात इज़ा नज़लत बिलमुस्लिमीन नाज़िला:) "हे अल्लाह ! जिस प्रकार आदरणीय यूसुफ़ के समय में सात वर्ष अकाल रहा, उसी प्रकार अकाल से इनको पीड़ित करके उनके समक्ष मेरी सहायता कर।" अत: मक्का के काफ़िर इस अकाल से पीड़ित किये गये, जिस पर आदरणीय अबू सुफियान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये तथा उन्हें अल्लाह का तथा सम्बन्ध का वास्ता देकर कहा कि अब तो हम पशुओं के चर्म तथा रक्त तक खाने पर विवश हो गये हैं जिस पर आयत अवतरित हुई। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

حَتّٰٓى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٧﴾

(७७) यहाँ तक कि जब हमने उन पर कड़े प्रकोप का द्वार खोल दिया तो उसी समय तुरन्त निराश हो गये।[1]

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾

(७८) वही (अल्लाह) है जिसने तुम्हारे लिए कान, आँखें तथा दिल बनाया, परन्तु तुम बहुत कम कृतज्ञता व्यक्त करते हो।[2]

وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِى الْاَرْضِ وَ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٩﴾

(७९) तथा वही है जिसने तुम्हें (पैदा करके) धरती पर फैला दिया तथा उसी की ओर तुम एकत्रित किये जाओगे।[3]

وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٨٠﴾

(८०) तथा यह वही है जो जिलाता तथा मारता है तथा रात्रि-दिन के फेरबदल[4] करने का मालिक भी वही है, क्या तुमको समझ बूझ नहीं ?[5]

بَلْ قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٨١﴾

(८१) बल्कि उन लोगों ने भी वही बात कही जो पूर्व के लोग कहते चले आये हैं।

---

[1]इससे सांसारिक यातना भी तात्पर्य हो सकती है तथा आख़िरत की भी, जहाँ वे सभी सुख तथा पुण्य से निराश तथा वंचित होंगे तथा सभी आशायें टूट जायेंगी।

[2]अर्थात बुद्धि तथा समझ एवं सुनने की ये शक्तियाँ प्रदान कीं ताकि उनके द्वारा वह सत्य को पहचानें, सुनें तथा उसे स्वीकार करें। यही इन उपहारों की कृतज्ञता है। परन्तु यह कृतज्ञता व्यक्त करने वाले अर्थात सत्य को अपनाने वाले कम ही हैं।

[3]इसमें अल्लाह की महिमा का वर्णन है कि जिस प्रकार तुम्हें पैदा करके विभिन्न क्षेत्रों में फैला दिया है, तुम्हारे रंग भी एक-दूसरे से भिन्न हैं, भाषायें भी भिन्न तथा व्यवहार एवं संस्कृति भी भिन्न। फिर एक समय आयेगा कि तुम सबको जीवित करके वह अपने दरबार में एकत्रित करेगा।

[4]अर्थात रात्रि के पश्चात दिन तथा दिन के पश्चात रात्रि का आना, फिर रात-दिन का छोटा बड़ा होना।

[5]जिससे तुम यह समझ सको कि यह सभी कुछ उस एक अल्लाह की ओर से है, जो प्रत्येक वस्तु पर प्रभावशाली है तथा उसके समक्ष प्रत्येक वस्तु झुकी हुई है।

The Ummah Technology Mission

قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٨٢﴾

(८२) कहा कि जब हम मर कर मिट्टी तथा अस्थि हो जायेंगे, क्या फिर भी हम अवश्य खड़े किये जायेंगे ?

لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨٣﴾

(८३) हमसे तथा हमारे पूर्वजों से पहले ही से यह वादा होता चला आया है, कुछ नहीं, यह तो केवल अगले लोगों के ढकोसले हैं।[1]

قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٤﴾

(८४) पूछिये तो कि धरती तथा उसकी कुल वस्तुयें किसकी हैं ? बताओ यदि जानते हो।

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۭ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٥﴾

(८५) वे तुरन्त उत्तर देंगे कि अल्लाह की, कह दीजिए तो फिर तुम शिक्षा ग्रहण क्यों नहीं करते।

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٨٦﴾

(८६) पूछिये, सातों आकाशों का तथा अति सम्मानित अर्श का प्रभु कौन है ?

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۭ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٨٧﴾

(८७) वे लोग उत्तर देंगे कि अल्लाह ही है। कह दीजिए कि फिर तुम क्यों नहीं डरते ?[2]

قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ

(८८) पूछिये कि सभी वस्तुओं का अधिकार किस के हाथ में है जो शरण देता है[3] तथा

---

[1] أساطير बहुवचन है أسطورة का अर्थात مسطرة مكتوبة लिखी हुई बातें, कथायें। अर्थात पुनः जीवित होकर उठने का वादा कब से होता चला आ रहा है हमारे पूर्वजों से ! परन्तु अभी तक तो कार्यान्वित नहीं हुआ, जिसका स्पष्ट अर्थ यह है कि यह कथायें हैं जो पूर्वकालिक लोगों ने अपनी किताबों में लिख दी हैं जो नकल पर नकल होती चली आ रही हैं, जिनकी कोई वास्तविकता नहीं।

[2] अर्थात जब तुम्हें स्वीकार है कि धरती का तथा उसमें स्थित प्रत्येक वस्तु का स्रष्टा केवल एक मात्र अल्लाह ही है तथा आकाश एवं महान अर्श का स्वामी भी वही है तो भी तुम्हें यह स्वीकार करने में क्यों दुविधा है कि इबादत के योग्य भी वही एक अल्लाह है, फिर तुम उसके एक होने को स्वीकार करके उसके प्रकोप से बचने का प्रयत्न क्यों नहीं करते ?

[3] अर्थात जिसकी वह रक्षा करना चाहे तथा अपने शरण में ले ले, क्या उसे कोई हानि पहुँचा सकता है ?

The Ummah Technology Mission

جिसकी तुलना में कोई शरण नहीं दिया जाता,[1] यदि तुम जानते हो तो बता दो ?

تُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٨﴾

(८९) यही उत्तर देंगे कि अल्लाह ही है, कह दीजिए फिर तुम पर किधर से जादू हो जाता है ?[2]

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ فَأَنَّىٰ تُسْحَرُونَ ﴿٨٩﴾

---

[1]अर्थात जिसको वह हानि पहुँचाना चाहे तो क्या सम्पूर्ण सृष्टि में अल्लाह के अतिरिक्त ऐसी शक्ति है कि वह उसे हानि से सुरक्षित कर ले तथा अल्लाह के समक्ष अपनी शरण में ले ले ?

[2]अर्थात फिर तुम्हारी बुद्धि को क्या हो गया है कि इसे स्वीकार करने के उपरान्त तुम दूसरों को उसकी इबादत में सम्मिलित करते हो ? क़ुरआन करीम का यह स्पष्ट वर्णन है कि मक्का के मूर्तिपूजकों को अल्लाह तआला के प्रभु, उसके स्रष्टा, स्वामी तथा पोषक होने का इंकार नहीं था, बल्कि वह यह सभी बातें स्वीकार करते थे, उन्हें केवल एक अल्लाह की पूजा से इंकार था। अर्थात इबादत केवल एक अल्लाह की नहीं करते थे, बल्कि उसमें अन्यों को भी सम्मिलित करते थे। इसलिए नहीं कि आकाश तथा धरती की सृष्टि अथवा उसके प्रबन्ध में कोई अन्य भी उसका साझीदार है, बल्कि मात्र इस भ्रम के आधार पर कि यह भी अल्लाह के निकटवर्ती भक्त थे, उनको भी अल्लाह ने कुछ अधिकार दे रखे हैं तथा हम उनके द्वारा अल्लाह की निकटता प्राप्त करते हैं। यही भ्रम आजकल मृत-पूजक अहले बिदअत (इस्लाम धर्म में नवीन विचार धारा का समावेश करने वाले) को है जिसके आधार पर वह मृत लोगों को सहायता के लिए पुकारते हैं, उनके नाम का भोग-प्रसाद चढ़ाते हैं तथा उनको अल्लाह की इबादत में सम्मिलित बताते हैं। यद्यपि अल्लाह ने कहीं भी यह नहीं कहा कि मैंने किसी मृत महात्मा, महापुरूष अथवा नबी को अधिकार दे रखे हैं, तुम उनके द्वारा मेरी निकटता प्राप्त करो, अथवा उन्हें सहायता के लिए पुकारो अथवा उनके नाम का भोग-प्रसाद चढ़ाओ। इसीलिए अल्लाह ने आगे फ़रमाया कि हमने सत्य पहुँचा दिया। अर्थात यह भली प्रकार से स्पष्ट कर दिया कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजने योग्य नहीं, तथा यदि यह अल्लाह की इबादत में अन्यों को सम्मिलित कर रहे हैं तो इसलिए नहीं कि उनके पास इसका कोई प्रमाण है, नहीं, अपितु मात्र एक-दूसरे की देखा-देखी तथा पूर्वजों के अनुकरण के कारण शिर्क का कार्य कर रहे हैं। वरन् वास्तव में यह पूर्णरूप से झूठे हैं। न उसकी कोई सन्तान है न उसका कोई साझीदार, यदि ऐसा होता तो प्रत्येक साझीदार अपने भाग की सृष्टि का प्रबन्ध अपनी इच्छा अनुसार करता तथा प्रत्येक साझीदार अन्य पर प्रभावशाली होने का प्रयत्न करता। तथा जब ऐसा नहीं है तथा सृष्टि के प्रबन्ध में ऐसी कोई खींचा तानी नहीं है तो नि:संदेह अल्लाह तआला इन सभी बातों से पवित्र तथा उच्चतम है, जो मूर्तिपूजक उसके सम्बन्ध में बताते हैं।

The Ummah Technology Mission

بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٩٠﴾

(९०) सत्य यह है कि हमने उन्हें सत्य पहुँचा दिया है तथा ये नि:संदेह झूठे हैं।

مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٩١﴾

(९१) न तो अल्लाह ने किसी को पुत्र बनाया तथा न उसके साथ अन्य कोई देवता है, वरन् प्रत्येक देवता अपनी सृष्टि को लिए-लिए फिरता तथा प्रत्येक एक-दूसरे पर उच्च होने का प्रयत्न करते। जो गुण यह बताते हैं अल्लाह उन से पवित्र है।

عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٩٢﴾

(९२) वह छिपी-प्रकट का जानने वाला है तथा जो शिर्क यह करते हैं उससे सर्वोपरि है।

قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ﴿٩٣﴾

(९३) (आप) दुआ (प्रार्थना) करें कि हे मेरे प्रभु! यदि तू मुझे वह दिखाये जिस का वचन इन्हें दिया जा रहा है।

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٤﴾

(९४) तो हे मेरे प्रभु! तू मुझे इन अत्याचारियों के गुट में न करना।[1]

وَاِنَّا عَلٰٓى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ﴿٩٥﴾

(९५) तथा हम जो कुछ वचन उन्हें दे रहे हैं सब आपको दिखा देने का सामर्थ्य रखते हैं।

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ﴿٩٦﴾

(९६) बुराई को इस प्रकार से दूर करें जो पूर्णत: भलाई वाला हो,[2] जो कुछ ये वर्णन करते हैं, उससे हम भली-भाँति परिचित हैं।

---

[1] अत: हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुआ करते थे।

«وإِذَا أَرَدتَ بِقَومٍ فِتنَةً فَتَوَفَّنِي إِلَيكَ غَيرَ مَفتُونٍ» .

"हे अल्लाह! जब तू किसी समुदाय पर परीक्षा अथवा यातना भेजने का निर्णय कर ले तो उससे पूर्व ही मुझे दुनिया से उठा ले।" (तिर्मिज़ी तफ़सीर सूर: साद तथा मुसनद अहमद भाग ५ पृष्ठ २४३)

[2] जिस प्रकार से अन्य स्थान पर फ़रमाया,

theUmmah Technology Mission

(९७) तथा दुआ करें कि हे मेरे प्रभु ! मैं शैतानों की शंकाओं से तेरी शरण चाहता हूँ ।[1]

وَ قُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾

(९८) तथा हे मेरे प्रभु ! मैं तेरी शरण चाहता हूँ कि वे मेरे पास आ जायें ।[2]

وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾

(९९) यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मृत्यु आने लगती है तो कहता है कि हे मेरे प्रभु ! मुझे वापस लौटा दे ।

حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿٩٩﴾

(१००) कि अपनी छोड़ी हुई दुनिया में जाकर पुण्य का कार्य करूँ ।[3] कदापि ऐसा नहीं

لَعَلِّيْۤ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ

"बुराई इस ढंग से दूर करो जो अच्छा हो, इसका परिणाम यह होगा कि तुम्हारा शत्रु भी तुम्हारा घनिष्ठ मित्र बन जायेगा ।" (*हा॰मीम॰ सजदा*-३४,३५)

[1]अत: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शैतान से इस प्रकार शरण माँगते أعوذ بالله السميع العليم من الشيطان الرجيم من همزه و نفخه و نفثه (अबू दाऊद, किताबुस सलात, बाबु मा युस्तफ़्तहु बिही सलात मिनद दुआ तिर्मिज़ी बाब मा यक़ूलो इन्द इफ़्तेताहिस्सलाते)

[2]इसीलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बलपूर्वक कहा कि प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य का प्रारम्भ अल्लाह के नाम से करो अर्थात बिस्मिल्लाह पढ़कर । क्योंकि अल्लाह की याद शैतान से दूर करने वाली है । इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह दुआ माँगते थे «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَرَمِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَدْمِ، وَمِنَ الْغَرَقِ، وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ يَتَخَبَّطَنِيَ الشَّيْطَانُ عِنْدَ الْمَوْتِ» (अबू दाऊद किताबुल वित्र बाब फ़िल् इस्तेआज:) रात को घबराहट में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह दुआ पढ़ते थे । «بِاسْمِ اللهِ، أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهِ، وَعِقَابِهِ، وَمِنْ شَرِّ عِبَادِهِ، وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَأَنْ يَحْضُرُونِ» (मुसनद अहमद भाग २ पृष्ठ १८१, अबू दाऊद किताबुत तिब्ब, बाब कैफ़रोंका तिर्मिज़ी अबवाबुल दअवात)

[3]यह कामना प्रत्येक काफ़िर मृत्यु के समय पुन: उठाये जाने के समय, अल्लाह के सदन में खड़े होते समय तथा नरक में ढकेले जाने के समय करता है तथा करेगा, परन्तु इसका कोई लाभ नहीं होगा । क़ुरआन करीम में इस विषय को विभिन्न स्थानों पर वर्णन किया गया है । जैसे सूर: *मुनाफ़ीकून*-१० तथा ११, सूर: *इब्राहीम*-४४, सूर: *आराफ़*-५३, *अलिफ़॰लाम॰मीम॰ सजदा*-१२, सूर: *अनआम* २७ तथा २८, सूर: *अश्शूरा*-२४, सूर: *अल-मोमिन*-११ तथा १२, सूर: *फ़ातिर*-३७ तथा इसी प्रकार अन्य आयतें ।

The Ummah Technology Mission

كَلَّآ إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ۖ وَمِن وَرَآئِهِم بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٠٠﴾

होने का [1] यह केवल एक कथन है जिस का यह कहने वाला है।[2] उन के पीठ के पीछे तो एक पट है, उन के पुनः जीवित होने वाले दिन तक।[3]

---

[1] كَلَّا डाँट-डपट के लिए है अर्थात ऐसा कभी नहीं हो सकता कि उन्हें पुनः दुनिया में भेज दिया जाये।

[2]इसका एक अर्थ तो यह है कि ऐसी बात है कि जो प्रत्येक काफ़िर प्राण निकलते समय कहता है। दूसरा अर्थ है कि केवल बात ही बात है, कर्म नहीं। यदि उन्हें पुनः भी दुनिया में भेज दिया जाये तो उनकी यह कथनी केवल कथनी ही रहेगी, पुण्य का कार्य करने का सौभाग्य फिर भी नहीं होगा। जैसे अन्य स्थान पर कहा।

﴿وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ﴾

"यदि उन्हें दुनिया में पुनः लौटा दिया जाये, तो फिर वही कार्य करेंगे जिनसे उन्हें रोका गया था।" (सूरः अल-अनआम-२८)

आदरणीय कतादः फ़रमाते हैं, काफ़िर की इस कामना में हमारे लिए बड़ा पाठ है, काफ़िर दुनिया में अपने परिवार तथा क़बीले के पास जाने की कामना नहीं करेगा, बल्कि पुण्य के कार्य करने के लिए दुनिया में आने की कामना करेगा। इसलिए दुनिया के जीवन को लाभकारी क्षण जानते हुए अधिक से अधिक पुण्य के कार्य कर लिये जायें ताकि कल क़ियामत को यह कामना करने की आवश्यकता न हो। (इब्ने कसीर)

[3]दो वस्तु के मध्य पट तथा आड़ को برزخ कहा जाता है। दुनिया के जीवन तथा आख़िरत के जीवन के मध्य की जो अवधि है, उसे यहाँ برزخ कहा गया है। क्योंकि मरने के पश्चात मनुष्य का सम्बन्ध दुनिया से समाप्त हो जाता है तथा आख़िरत के जीवन का प्रारम्भ उस समय होगा जब सभी लोगों को पुनः जीवित किया जायेगा। यह मध्य का जीवन जो क़ब्र में अथवा पक्षी के पेट में अथवा जला देने की अवस्था में मिट्टी के कणों में गुज़रती है, बर्ज़ख़ का जीवन है। इंसान का यह अस्तित्व जहाँ भी तथा जिस रूप में भी होगा स्पष्टरूप से वह मिट्टी बन चुका होगा, अथवा राख बनाकर हवाओं में उड़ा दिया गया अथवा नदियों में बहा दिया गया होगा अथवा किसी पशु का भोजन बन गया होगा, परन्तु अल्लाह तआला सभी को एक नया रूप प्रदान कर हश्र के मैदान में एकत्रित करेगा।

The Ummah Technology Mission

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿١٠١﴾

(१०१) तो जब नरसिंघा में फूँक मार दी जायेगी, उस दिन न तो आपस के सम्बन्ध ही रहेंगे, न आपस की पूछताछ ।[1]

فَمَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٢﴾

(१०२) जिनकी तराज़ू का पलड़ा भारी हो गया वे तो मोक्ष प्राप्त करने वाले हो गये ।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ﴿١٠٣﴾

(१०३) तथा जिनकी तराज़ू का पलड़ा हल्का रह गया ये हैं वे जिन्होंने अपनी हानि स्वयं कर ली, जो सदैव के लिए नरक में चले गये ।

تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ ﴿١٠٤﴾

(१०४) उनके मुख को आग झुलसाती रहेगी,[2] वे वहाँ कुरूप बने हुए होंगे ।[3]

أَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿١٠٥﴾

(१०५) क्या मेरी आयतों का पाठ तुम्हारे समक्ष नहीं होता था ? फिर भी तुम उन को झुठलाते थे ।

قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ﴿١٠٦﴾

(१०६) वे कहेंगे कि हे मेरे प्रभु ! हमारा दुर्भाग्य हम पर प्रभावशाली हो गया,[4] वास्तव में हम भटके हुए थे ।

---

[1] हश्र की भयानकता के कारण प्रारम्भ में ऐसा होगा, बाद में वह एक-दूसरे से पूछेंगे भी ।

[2] मुख का वर्णन इस लिए किया गया है कि मनुष्य के अस्तित्व का सबसे महत्वपूर्ण एवं उत्तम अंग है, वरन् नरक की अग्नि तो पूरे शरीर को ही घेरे हुए होगी ।

[3] كَلِحُونَ का अर्थ है होंठ सिकुड़ कर दाँत निकल आयें । होंठ दाँतों के वस्त्र के रूप में हैं, जब यह नरक की अग्नि से सिकुड़ तथा सिमट जायेंगे तो दाँत दिखायी देने लगेंगे, जिससे मनुष्य का रूप कुरूप तथा डरावना हो जायेगा ।

[4] स्वाद तथा आकांक्षा को जो मनुष्य पर प्रभावशाली रहते हैं, यहाँ दुर्भाग्य कहा गया है, क्योंकि इनका परिणाम स्थाई रूप से दुर्भाग्य पूर्ण होता है ।

The Ummah Technology Mission

رَبَّنَآ اَخۡرِجۡنَا مِنۡهَا فَاِنۡ عُدۡنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوۡنَ ﴿۱۰۷﴾

(१०७) हे मेरे प्रभु ! हमको यहाँ से निकाल दे, यदि अब हम ऐसा करें तो नि:संदेह हम अत्याचारी हैं।

قَالَ اخۡسَـُٔوۡا فِيۡهَا وَلَا تُكَلِّمُوۡنِ ﴿۱۰۸﴾

(१०८) (अल्लाह तआला) फ़रमायेगा धिक्कार है तुम पर यहीं पड़े रहो तथा मुझसे बात न करो।

اِنَّهٗ كَانَ فَرِيۡقٌ مِّنۡ عِبَادِىۡ يَقُوۡلُوۡنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغۡفِرۡ لَنَا وَارۡحَمۡنَا وَاَنۡتَ خَيۡرُ الرّٰحِمِيۡنَ ﴿۱۰۹﴾

(१०९) मेरे भक्तों का एक गुट था जो निरन्तर यही कहता रहा कि हे मेरे प्रभु ! हम ईमान ला चुके हैं, तू हमें क्षमा कर दे तथा हम पर कृपा कर तू सभी कृपालुओं से अधिक कृपालु है।

فَاتَّخَذۡتُمُوۡهُمۡ سِخۡرِيًّا حَتّٰٓى اَنۡسَوۡكُمۡ ذِكۡرِىۡ وَكُنۡتُمۡ مِّنۡهُمۡ تَضۡحَكُوۡنَ ﴿۱۱۰﴾

(११०) (परन्तु) तुम उनका उपहास ही उड़ाते रहे यहाँ तक कि (उनके पीछे) तुम मेरी याद भुला बैठे तथा तुम उनकी हँसी ही उड़ाते रहे।

اِنِّىۡ جَزَيۡتُهُمُ الۡيَوۡمَ بِمَا صَبَرُوۡۤا اَنَّهُمۡ هُمُ الۡفَآئِزُوۡنَ ﴿۱۱۱﴾

(१११) मैंने आज उनके धैर्य (तथा संयम) का बदला दे दिया है, कि वे अपनी इच्छित आकाँक्षा को पहुँच चुके हैं।[1]

---

[1]संसार में ईमानवालों के लिए धैर्य एवं संयम की परीक्षा की एक घड़ी यह भी होती है कि जब वे धर्म तथा ईमान की बातों के अनुसार कर्म करने का प्रयत्न करते हैं तो धर्म से अनजान तथा ईमान से अनभिज्ञ लोग उनके उपहास तथा निन्दा का लक्ष्य बना लेते हैं। कितने ही कमज़ोर ईमान वाले हैं कि वह इन निन्दाओं के भय से अल्लाह के बहुत से आदेशों के अनुसार कर्म करने से बचते हैं। जैसे दाढ़ी है, स्त्रियों के पर्दे की बात है, विवाह में हिन्दू धर्म की रीति-रिवाजों से बचना है इत्यादि। सौभाग्यशाली हैं वह लोग जो किसी उपहास तथा धिक्कार की चिन्ता किये बिना अल्लाह तथा रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों का पालन करने से किसी अवसर पर भी मुख नहीं मोड़ते। ﴿وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ﴾ अल्लाह तआला क़ियामत में इसका श्रेष्ठतम बदला प्रदान करेगा तथा उन्हें सफलता प्रदान करेगा जैसाकि इस आयत से स्पष्ट है। اللهم اجعلنا منهم हे अल्लाह ! हमें उन्हीं में कर दे।

The Ummah Technology Mission

قُلْ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ ﴿١١٢﴾

(११२) (अल्लाह तआला) पूछेगा कि तुम धरती पर वर्षों की गिनती से कितने रहे ?

قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَاسْأَلِ الْعَادِّينَ ﴿١١٣﴾

(११३) (वे) कहेंगे एक दिन अथवा एक दिन से भी कम, गणना करने वालों से भी पूछ लीजिए।[1]

قُلْ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا لَّوْ أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١٤﴾

(११४) (अल्लाह तआला) फ़रमायेगा वास्तविकता यह है कि तुम वहाँ बहुत कम रहे हो, काश ! इसको तुम पहले ही से जान लेते।[2]

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾

(११५) क्या तुम यह समझ बैठे हो कि हमने तुम्हें व्यर्थ ही पैदा किया है, तथा यह कि तुम हमारी ओर लौटाये ही नहीं जाओगे ?

فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ﴿١١٦﴾

(११६) अल्लाह तआला सच्चा बादशाह है, वह सर्वोच्च है,[3] उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, वही महिमावान अर्श का प्रभु है।[4]

---

[1]इससे तात्पर्य फ़रिश्ते हैं,जो मनुष्य के कर्म तथा आयु लिखने पर नियुक्त हैं अथवा वह मनुष्य तात्पर्य है जो हिसाब-किताब में दक्षता रखते हैं। क़ियामत की भयानकता उनके मस्तिष्क से दुनिया की सुख-सुविधा को मिटा देगी तथा दुनिया का जीवन उन्हें ऐसा लगेगा जैसे दिन अथवा आधा दिन। इसलिए वह कहेंगे कि हम तो एक दिन अथवा उससे भी कम समय दुनिया में रहे। नि:संदेह तू फ़रिश्तों से अथवा गणितज्ञों से पूछ ले।

[2]इसका अर्थ है कि आख़िरत के स्थाई जीवन की तुलना में निश्चित रूप से दुनिया का जीवन अति लघु है। परन्तु इस बिन्दु को दुनिया में तुमने नहीं जाना। काश, तुम दुनिया की इस वास्तविकता से तथा दुनिया के अस्थाईत्व से सतर्क हो जाते तो आज तुम भी ईमानवालों की तरह सफल एवं सम्मानित होते।

[3]अर्थात वह इससे सर्वोपरि है कि वह तुम्हें निरूद्देश्य रूप से खेल के रूप में पैदा करे तथा तुम जो चाहो करो, तुमसे उसकी कोई पूछताछ न हो। बल्कि उसने तुम्हें एक विशेष उद्देश्य के लिए पैदा किया है तथा वह है उसकी इबादत करना। इसीलिए आगे फ़रमाया कि वही पूजने योग्य है, उसके अतिरिक्त कोई पूजने योग्य नहीं।

[4]अर्श का विशेषण कृपा बताया क्योंकि वहाँ से कृपा तथा विभूतियों का अवतरण होता है।

the Ummah Technology Mission

وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱۱۷﴾

(११७) तथा जो व्यक्ति अल्लाह के साथ किसी अन्य देवता को पुकारे जिसका उसके पास कोई प्रमाण नहीं तो उसका हिसाब उसके प्रभु के ऊपर ही है। नि:संदेह काफ़िर लोग मोक्ष से वंचित हैं।[1]

وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۱۱۸﴾

(११८) तथा कहो कि हे मेरे प्रभु ! तू क्षमा कर तथा कृपा कर तथा तू सभी कृपालुओं से उत्तम कृपा करने वाला है।

سُوْرَةُ النُّوْرِ

सूरतुन नूर-२४

सूर: नूर* मदीने में अवतरित हुई तथा इसकी चौंसठ आयतें तथा नौ रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह अति कृपालु अति दयालु के नाम से प्रारम्भ करता हूँ।

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَاۤ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۱﴾

(१) यह है वह सूर: जो हमने अवतरित की है[2] तथा निर्धारित कर दी है तथा जिसमें हमने खुले आदेश उतारे हैं ताकि तुम याद रखो।

---

[1]इससे ज्ञात हुआ कि भलाई तथा सफलता आख़िरत में अल्लाह की यातना से बच जाना है, मात्र दुनिया के धन तथा सुविधाओं की अधिकता सफलता नहीं, यह तो दुनिया में काफ़िरों को भी प्राप्त है, परन्तु अल्लाह तआला उनसे भलाई को नकार रहा है, जिसका स्पष्ट अर्थ है कि मूलरूप से भलाई आख़िरत की भलाई है, जो ईमानवालों के भाग में आयेगी, न सांसारिक धन तथा साधन की अधिकता जो कि बिना भेद के ईमानवालों तथा काफ़िर सबको ही प्राप्त होती है।

*सूर: *नूर, सूर: अहज़ाब* तथा *सूर: निसा* यह तीनों सूर: ऐसी हैं जिनमें स्त्रियों की विशेष समस्यायें तथा समाजिक जीवन के विषय में महत्वपूर्ण विस्तृत जानकारियों का वर्णन है।

[2]क़ुरआन करीम की सभी सूरतें अल्लाह की उतारी हुई हैं, परन्तु इस सूर: के विषय में जो यह कहा तो इससे इस सूर: में वर्णित आदेशों के महत्व को उजागर करना है।

The Ummah Technology Mission

اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۖ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ

(२) व्यभिचार करने वाले स्त्री-पुरूष में से प्रत्येक को सौ कोड़े लगाओ।[1] उन पर अल्लाह के नियमों के अनुरूप दण्ड देते हुए तुम्हें कदापि तरस नहीं खानी चाहिए यदि तुम्हें अल्लाह पर तथा क़ियामत के दिन पर ईमान

[1]व्यभिचार का प्रारम्भिक दण्ड जो इस्लाम में अस्थाई रूप से बताया गया था, वह सूरः *निसा* की आयत संख्या १५ में गुज़र चुका है, उसमें कहा गया था कि जब तक इसके लिए कोई स्थाई दण्ड निर्धारति न कर लिया जाये, उन व्यभिचारी स्त्रियों को घरों में बन्द रखो। फिर जब सूरः नूर की यह आयत अवतरित हुई तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह ने जो वादा किया था, उसके अनुसार व्यभिचारी पुरूष-स्त्री का स्थाई दण्ड निर्धारित कर दिया गया है वह तुम मुझसे सीख लो, तथा वह है कि अविवाहित पुरूष-स्त्री के लिए प्रत्येक को सौ-सौ कोड़े तथा विवाहित पुरूष-स्त्री को सौ-सौ कोड़े तथा पत्थरों से मारकर मार डालना। (सहीह मुस्लिम किताबुल हूदुद बाब हद्दि अज़्ज़िना, वस्सुनन) फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने विवाहित पुरूष-स्त्री को व्यावहारिक रूप से पत्थरों से मार डालने का दण्ड दिया तथा सौ कोड़े (जो छोटा दण्ड है) बड़े दण्ड में सम्मिलित कर दिया तथा अब विवाहित स्त्री-पुरूष का दण्ड केवल पत्थरों से मारकर मार डालना ही है। रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात ख़ुल्फ़ाये राशदीन (महामहिम उत्तराधिकारी रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तथा सहाबा (रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जो लोग ईमान के मार्ग पर रहे तथा अन्त भी ईमान पर हुआ हो ऐसे मुसलमानों को कहा जाता है) के समय में भी यही दण्ड दिया गया। तथा उनके पश्चात उम्मत के सभी ज्ञानी और फ़ुक़हा भी इसी को मानने वाले थे और आज तक हैं, केवल ख़वारिज ने इस दण्ड को अस्वीकार किया है तथा उप-महाद्वीप में भी कुछ ऐसे लोग हैं जो इस दण्ड को अस्वीकार करते हैं। तथा हदीस को अस्वीकार करने वालों ने भी इसे अस्वीकार किया है। इस अस्वीकृति का मूल आधार ही हदीस की अस्वीकृति पर है। क्योंकि पत्थरों से मारकर मार डालने का दण्ड अत्यन्त युक्तियुक्त हदीसों से सिद्ध है तथा उसको वर्णित करने वालों की संख्या भी इतनी अधिक है कि आलिमों ने इसे निरन्तर हदीस की श्रेणी में रखा है। इसलिए हदीस के प्रमाण तथा धर्म में उसका धार्मिक नियमों का श्रोत होने को जो व्यक्ति स्वीकार करता है वह पत्थरों से मार डालने को अस्वीकार नहीं कर सकता।

The Ummah Technology Mission

وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢

हो |[1] उनके दण्ड के समय मुसलमानों का एक गुट उपस्थित होना चाहिए |[2]

اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۙ وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٣

(३) व्यभिचारी पुरूष सिवाय व्यभिचारिणी स्त्री अथवा मूर्तिपूजक स्त्री के अन्य से विवाह नहीं करता तथा व्यभिचारिणी स्त्री भी सिवाय व्यभिचारी पुरूष अथवा मूर्तिपूजक पुरूष के अतिरिक्त अन्य से विवाह नहीं करती | तथा ईमानवालों को यह निषेध (हराम) कर दिया गया |[3]

---

[1]इसका अर्थ यह है कि दयाभाव के कारण दण्ड देने से न रूक जाओ, वरन् प्राकृतिक रूप से दयाभाव का उत्पन्न होना ईमान के विपरीत नहीं, साराँशत: यह तो मनुष्य की प्राकृति में से है |

[2]ताकि दण्ड का मूल उद्देश्य जो यह है कि लोग उससे शिक्षा ग्रहण करें, अत्याधिक विस्तृत रूप से लोग शिक्षा प्राप्त कर सकें | दुर्भाग्य से आजकल जनसमूह के समक्ष दण्ड देना मानवाधिकार के विरूद्ध कहा जा रहा है | यह पूर्ण रूप से मूर्खता, अल्लाह के आदेशों की अवहेलना तथा दूसरे शब्दों में अल्लाह से भी अधिक मनुष्यों के साथ सहानुभूति रखने वाला शुभचिन्तक बनना है | जबकि वास्तविकता यह है कि अल्लाह से अधिक सहानुभूति तथा दया किसी में नहीं है |

[3]इसके भावार्थ में व्याख्याकारों में मतभेद है | कुछ कहते हैं कि यहाँ विवाह से तात्पर्य प्रचलित विवाह नहीं है बल्कि व्यभिचार के अर्थ में है तथा उद्देश्य व्यभिचार के दुष्परिणाम तथा दुष्कर्म को वर्णन करना है | अर्थ यह है कि कुकर्मी पुरूष अपनी इंद्रियों को अनुचित रूप से शान्ति करने के लिए व्यभिचारी स्त्री की ओर तथा उसी प्रकार कुकर्मी स्त्री कुकर्मी पुरूष की ओर आकर्षित होती है, ईमानवालों के लिए ऐसा करना अर्थात व्यभिचार निषेध (हराम) है | तथा मूर्तिपूजक स्त्री-पुरूष का वर्णन इसलिए कर दिया गया कि व्यभिचार भी मूर्तिपूजा के समतुल्य पाप है, जिस प्रकार मूर्तिपूजक अल्लाह को छोड़कर अन्य के निकट शीश नवाता है, उसी प्रकार व्यभिचारी पुरूष पत्नी को छोड़कर अथवा पत्नी अपने पति को छोड़कर अन्य लोगों से अपना मुँह काला कराती है | इस प्रकार मूर्तिपूजक तथा व्यभिचारी के मध्य एक विचित्र आन्तरिक समानता होती है | कुछ कहते हैं कि यह साधारण रीति के कारण है तथा अर्थ यह है कि साधारणतया कुकर्मी लोग विवाह के लिए अपने ही जैसे लोगों की ओर आकर्षित होते हैं | अत: व्यभिचारियों

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۙ﴿۴﴾

(४) तथा जो लोग पवित्र स्त्री पर व्यभिचार का आक्षेप लगायें, फिर चार गवाह (साक्षी) प्रस्तुत न कर सकें तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ तथा कभी भी उनका साक्षी स्वीकार न करो। ये दुराचारी लोग हैं।[1]

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۵﴾

(५) हाँ, जो लोग इसके पश्चात क्षमा माँग कर सुधार कर लें[2] तो अल्लाह (तआला) क्षमा करने वाला तथा दया करने वाला है।

की अधिकतर संख्या व्यभिचारियों के साथ विवाह करना पसन्द करती है तथा इसका उद्देश्य ईमानवालों को सतर्क करना है कि जिस प्रकार व्यभिचार अत्यन्त कुरूप तथा महापाप है, उसी प्रकार व्यभिचारियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करना भी मना तथा निषेध (हराम) है। इमाम शौकानी ने इस भावार्थ को अति उत्तम बताया है तथा हदीसों में इसके अवतरित होने के जो भी कारण वर्णित है उससे भी इसकी पुष्टि होती है कि कुछ सहाबा ने व्यभिचारी स्त्रियों से विवाह करने की आज्ञा चाही तो उस पर यह आयत अवतरित हुई, अर्थात उन्हें ऐसा करने से रोक दिया गया। इसी से भाव निकलते हुए आलिमों ने कहा है कि एक पुरूष ने जिस स्त्री से अथवा स्त्री ने जिस पुरूष से कुकर्म किया हो उनका आपस में विवाह मान्य नहीं। यदि वे शुद्ध हृदय से क्षमा माँग लें तो फिर उनके मध्य विवाह मान्य है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[1]इसमें قـــذف (आक्षेप लगाने) का दण्ड वर्णित किया गया है कि जो व्यक्ति किसी पवित्र स्त्री अथवा पुरूष पर व्यभिचार का आक्षेप लगाये (उसी प्रकार जो स्त्री किसी पवित्र पुरूष अथवा स्त्री पर व्यभिचार का आक्षेप लगाये) तथा प्रमाण स्वरूप चार साक्षी प्रस्तुत न कर सके, तो उनके लिए तीन आदेश वर्णित किये गये हैं (१) उन्हे अस्सी कोड़े लगाये जायें, (२) उनकी गवाही कभी स्वीकार न की जाये तथा (३) वह अल्लाह के समक्ष तथा लोगों के समक्ष दुराचारी हैं।

[2]क्षमा माँग लेने से तो कोड़ों के दण्ड से छूट नहीं मिलेगी, वह पश्चाताप कर लें अथवा विनती करें, यह दण्ड तो भुगतना ही पड़ेगा। परन्तु दूसरी दो बातें, गवाही से वंचित तथा दुराचारी होना उसमें मतभेद है। कुछ आलिम उसको दुराचारी होने से छूट देते हैं अर्थात क्षमा माँग लेने के पश्चात वह दुराचारी नहीं रहेगा। तथा कुछ व्याख्याकार दोनों वाक्यों को इसमें सम्मिलित मानते हैं। अर्थात क्षमा माँगने के पश्चात वह गवाही देने योग्य हो जायेगा तथा दुराचारी भी न होगा। इमाम शौकानी ने इसी दूसरे मत को

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۢ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٦

(६) तथा जो लोग अपनी पत्नियों पर व्यभिचार का आरोप लगायें तथा उनका साक्षी सिवाय उनके अन्य कोई न हो तो ऐसे लोगों में से प्रत्येक का प्रमाण यह है कि चार बार अल्लाह की सौगन्ध खा कर कहें कि वह सत्यवादियों में से हैं।

وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٧

(७) तथा पाँचवी बार यह की उस पर अल्लाह की धिक्कार हो यदि वह झूठों में से हो।[1]

وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۢ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٨

(८) तथा उस (स्त्री) से दण्ड इस प्रकार समाप्त किया जा सकता है कि वह चार बार अल्लाह की सौगन्ध खा कर कहे कि निःसंदेह उसका पति झूठ बोलने वालों में से है।

وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ

(९) तथा पाँचवी बार कहे कि उस पर अल्लाह का क्रोध (धिक्कार) हो यदि उसका

अधिमान दिया तथा اِذًا का अर्थ वर्णन किया है कि ما دام قاذفًا अर्थात जब तक वह आक्षेप लगाने पर स्थिर रहेगा। जिस प्रकार कहा जाता है कि काफ़िर की गवाही कभी स्वीकृत नहीं, तो यहाँ कभी का अर्थ यही होगा कि जब तक वह काफ़िर है।

[1]इसमें لعان की समस्या का वर्णन है जिसका अर्थ यह है कि किसी पति ने अपनी पत्नी को अपनी आँखों से किसी अन्य के साथ कुकर्म करते हुए देखा, जिसका वह तो प्रत्यक्षदर्शी है, परन्तु चूँकि व्यभिचार के नियम को सत्यापित करने के लिए चार गवाहों की आवश्यकता है। इसलिए जब तक वह अपने साथ अन्य तीन गवाह न प्रस्तुत करे; उसकी पत्नी पर व्यभिचार का नियम लागू नहीं हो सकता। परन्तु अपनी आँखों से देख लेने के पश्चात ऐसी दुष्चरित्र पत्नी को सहन करना भी असम्भव है। धार्मिक नियम ने इसका यह हल (समाधान) प्रस्तुत किया है कि यह व्यक्ति न्यायालय में अथवा न्यायालय के अधिकारी के समक्ष चार बार अल्लाह की सौगन्ध खाकर यह कहेगा कि वह अपनी पत्नी पर व्यभिचार का आरोप लगाने में सच्चा है अथवा यह बालक अथवा गर्भ उसका नहीं है। तथा पाँचवी बार कहेगा कि यदि वह झूठा है तो उस पर अल्लाह की धिक्कार।

The Ummah Technology Mission

पति सत्यवादियों में से हो।[1]

إِن كَانَ مِنَ الصَّٰدِقِينَ ۝٩

(१०) तथा यदि अल्लाह (तआला) की कृपा तथा दया तुम पर न होती[2] (तो तुम पर दुख उतरते) तथा अल्लाह (तआला) क्षमा को स्वीकार करने वाला ज्ञानी है।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ ۝١٠

(११) जो लोग यह बहुत बड़ा आक्षेप खड़ा कर लाये हैं।[3] यह भी तुम में से एक गुट

إِنَّ الَّذِينَ جَاءُو بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ

---

[1]अर्थात यदि पति के उत्तर में पत्नी चार बार सौगन्ध खाकर यह कह दे कि वह झूठा है तथा पाँचवीं बार कहे कि यदि उसका पति सच्चा है (तथा मैं झूठी हूँ) तो मुझ पर अल्लाह का प्रकोप हो। तो इस अवस्था में वह व्यभिचार के दण्ड से बच जायेगी। उसके पश्चात उन दोनों के मध्य सदा के लिए वियोग (जुदाई) हो जायेगी। इसे لعان इसलिए कहते हैं कि इसमें दोनों ही अपने आप को झूठे होने की अवस्था में धिक्कार का पात्र स्वीकार करते हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में ऐसी कुछ घटनायें घटित हुईं जिनका वर्णन हदीसों में विद्यमान है, वही घटनायें इस आयत के अवतरित होने का कारण बनीं।

[2]इसका उत्तर लुप्त है, तो तुम में से झूठे पर तुरन्त अल्लाह का प्रकोप अवतरित हो जाता, परन्तु चूँकि वह क्षमाशील तथा दूरदर्शी भी है, इसलिए एक तो उसने पर्दा डाल दिया ताकि कोई उसके पश्चात शुद्ध हृदय से क्षमा माँग ले तो वह उसे अपने दया की छाया में लगा लेगा तथा दूरदर्शी भी है कि उसने لعان जैसी समस्या का वर्णन करके स्वाभिमानी पतियों के लिए अति उचित तथा सरल नियम प्रस्तुत कर दिया है।

[3] إفك से तात्पर्य वह आरोप की घटना है जिसमें द्वयवादियों ने आदरणीय आयशा (رضي الله عنها) के सतीत्व एवं सम्मान को कलंकित करना चाहा था। परन्तु अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में आदरणीय आयशा (رضي الله عنها) के ऊपर लगे आक्षेप का खण्डन करने के लिए आयत अवतरित कर के उनके पवित्र सतीत्व तथा सम्मान को और अधिक स्पष्ट कर दिया। संक्षेप में यह घटना इस प्रकार है, पर्दे के आदेश के पश्चात बनी मुस्तलीक़ के युद्ध (मरीसीअ) से वापसी पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा सहाबा ने मदीने के निकट एक स्थान पर विश्राम (पड़ाव) किया, प्रात: काल जब वहाँ से प्रस्थान किया तो आदरणीय आयशा की डोली भी जो खाली थी, यात्रियों ने यह समझकर ऊँट पर रख दी कि उम्मुल मोमनीन (मुसलमानों की माता) उसके अन्दर ही होंगी, तथा वहाँ से प्रस्थान कर दिया जबकि आदरणीय आयेशा अपनी माला की खोज में बाहर गई थीं, जब वापस आयीं तो देखा कि यात्री तो चले गये। फिर यह सोंचकर वहीं

The Ummah Technology Mission

مِّنكُمْ ۚ لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَّكُم ۖ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُم مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ ۚ وَالَّذِي تَوَلَّىٰ

है[1] तुम उसे अपने लिए बुरा न समझो, बल्कि यह तो तुम्हारे पक्ष में श्रेष्ठ है।[2] हाँ, उनमें से प्रत्येक पर उतना पाप है, जितना उसने कमाया है, तथा उनमें से जिसने उसके बहुत

लेटी रहीं कि जब उन्हें मेरी अनुपस्थिति का ज्ञान होगा तो मेरी खोज में वापस आयेंगे। थोड़ी देर में सफ़वान बिन मोअत्तल सुलमी आ गये, जिनका कार्य यही था कि यात्रियों की रह जाने वाली वस्तुयें संभाल लें, उन्होंने आदरणीया आयशा को पर्दे के आदेश से पूर्व देखा था उन्हें देखते ही إنا لله و إنا إليه راجعون पढ़ा तथा समझ गये कि यात्री त्रुटि से अथवा अज्ञानवश आदरणीया माता को यहीं छोड़कर आगे चले गये। अतः उन्होंने उन्हें अपने ऊँट पर बैठाया तथा स्वयं ऊँट की नकेल पकड़कर पैदल चलकर यात्रियों से जा मिले। द्वयवादियों ने जब आदरणीया आयशा को इस प्रकार बाद में अकेले आदरणीय सफ़वान के साथ आते देखा तो उस अवसर को अति उचित जाना तथा द्वयवादियों के मुखिया अब्दुल्लाह बिन उबैय ने कहा कि यह एकान्त तथा अलगाव अकारण ही नहीं तथा इस प्रकार उन्होंने आदरणीय आयशा को आदरणीय सफ़वान के साथ कलंकित कर दिया जबकि दोनों ही इस बात से बिल्कुल (सर्वथा) अनभिज्ञ (अनजान) थे। कुछ शुद्ध मुसलमान भी षड़यन्त्रकारियों के बहकावे में आ गये। जैसे आदरणीय हस्सान, मिस्तह बिन असासा तथा हमना बिनत जहश (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) (इस घटना का पूर्ण विवरण हदीस में आया है) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूरे एक महीने जब तक अल्लाह तआला की ओर से निर्दोषता (सफाई नहीं उतरी) अत्यन्त व्याकुल रहे तथा आदरणीया आयशा अज्ञान में अपने स्थान पर व्याकुल। इन आयतों में अल्लाह तआला ने इसी घटना को संक्षेप में परन्तु व्यापक रूप से वर्णन किया है। إفك का अर्थ है किसी वस्तु को उल्टा देना। इस घटना में भी मुनाफ़िकों (मौखिक मुसलमानों) ने मामले को उल्टा दिया था अर्थात आदरणीय आयशा (رضي الله عنها) तो प्रशंसा की पात्रा थीं, उच्च वंशीय, तथा स्वच्छ चरित्र की स्वामिनी थी न कि कलंकित करने की। परन्तु अत्याचारियों ने इस महा चरित्रवान (साकार सतीत्व) को इसके विपरीत आक्षेप तथा आरोप का लक्ष्य बनाया।

[1]एक गुट अथवा समूह को عُصبة कहा जाता है क्योंकि वे एक-दूसरे की शक्ति तथा सहायता का कारण होते हैं।

[2]क्योंकि इससे एक तो तुम्हें दुख तथा कठिनाईयों के कारण महा प्रत्युपकार प्राप्त होगा दूसरे यह कि आकाश से आदरणीय आयशा के पक्ष में आयत अवतरित होने से उनकी महानता तथा उनके परिवार का सम्मान तथा महत्व स्पष्ट हो गया। इसके अतिरिक्त ईमानवालों के लिए इसमें शिक्षा ग्रहण करने के अन्य पक्ष हैं।

The Dimah Technology Mission

كِبْرَهٗ مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١١﴾

बड़े भाग को पूरा किया है. उसके लिए यातना भी बहुत बड़ी है।[1]

لَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا هٰذَآ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٢﴾

(१२) उसे सुनते ही मुसलमान पुरूषों तथा स्त्रियों ने अपने पक्ष में अच्छा विचार क्यों नहीं किया तथा क्यों न कह दिया यह तो खुला आरोप है।[2]

لَوْلَا جَآءُوْ عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٣﴾

(१३) वह इस पर चार साक्षी क्यो नहीं लाये ? तथा जब साक्षी नहीं लाये तो यह आक्षेप लगाने वाले लोग नि:संदेह अल्लाह के निकट केवल झूठे हैं।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِىْ مَآ اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٤﴾

(१४) तथा यदि तुम पर अल्लाह (तआला) की कृपा तथा दया दुनिया तथा आखिरत में न होती तो नि:संदेह तुमने जिस बात के चर्चे प्रारम्भ कर रखे थे उस विषय में तुम्हें बहुत बड़ा प्रकोप पहुँचता।

اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ هَيِّنًا ۖ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾

(१५) जबकि तुम अपने मुख से इसकी चर्चा परस्पर करने लगे तथा अपने मुख से वह बात निकालने लगे जिसकी तुम को कदापि सूचना नहीं थी, यद्यपि तुम उसे सरल बात समझाते रहे, परन्तु अल्लाह के निकट वह बहुत बड़ी बात थी।

---

[1] इससे तात्पर्य अब्दुल्लाह बिन उबैय मुनाफ़िकों का सरदार है जो इस षड़यन्त्र का मुखिया था।

[2] यहाँ से प्रशिक्षण का वह पक्ष प्रकट हो रहा है जो इस घटना में लुप्त है। इनमें सर्वप्रथम बात यह है कि ईमानवाले एक प्राण की भाँति हैं, जब आदरणीया आयशा पर आरोप लगाया गया तो तुमने अपने ऊपर समझकर इसका खण्डन क्यों नहीं किया तथा उसे खुला आक्षेप क्यों नहीं कह दिया ?

The Ummah Technology Mission

وَلَوْلَآ إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُم مَّا يَكُونُ لَنَآ أَن نَّتَكَلَّمَ بِهَٰذَا سُبْحَٰنَكَ هَٰذَا بُهْتَٰنٌ عَظِيمٌ ﴿١٦﴾

(१६) तथा तुमने बात सुनते ही क्यों न कह दिया कि हमें ऐसी बात मुख से निकालनी भी शोभा नहीं देती ? हे अल्लाह ! तू पवित्र है, यह तो बहुत बड़ा आक्षेप है ।[1]

---

[1]दूसरी बात अल्लाह तआला ने ईमानवालों को यह बतायी कि इस आक्षेप पर उन्होंने एक भी गवाह प्रस्तुत नहीं किया जबकि इसके लिए चार गवाहों की आवश्यकता थी। इसके उपरान्त तुमने उन दोषारोपण करने वालों को झूठा नहीं कहा। यही कारण है कि इन आयतों के अवतरित होने के पश्चात आदरणीय हस्सान, मिस्तह, तथा हमना बिन्ते जहश को मिथ्यारोपण का दण्ड दिया गया (मुसनद अहमद भाग ६, पृष्ठ ३०, तिर्मिज़ी संख्या ३१८१, अबू दाऊद संख्या ४४७४, इब्ने माजा संख्या २५६७) अब्दुल्लाह बिन उबैय को इसलिए दण्ड नहीं दिया गया कि उसके लिए आख़िरत की घोर यातना को ही पर्याप्त समझ लिया गया तथा ईमानवालों को दण्ड देकर संसार ही में पवित्र कर दिया गया । दूसरे उसके पीछे एक पूरा जत्था था, उसको दण्ड देने में ऐसे ख़तरे थे कि जिनसे निपटना उस समय मुसलमानों के लिए कठिन था, इसलिए कारणवश उसे दण्ड नहीं दिया गया। (फ़तहुल क़दीर)

तीसरी बात यह बतायी गयी है कि अल्लाह की कृपा तथा उपकार तुम पर न होता, तो तुम्हारा यह व्यवहार कि बिना खोज किये अफ़वाह (किव्दन्ती) को आगे फैलाने लगे महा-प्रकोप का कारण था, इसका अर्थ यह है कि अफ़वाह उत्पन्न करना तथा उसका प्रचार-प्रसार करना भी महा अपराध है, जिसके कारण मानव अति कठोर यातना का अधिकारी हो सकता है।

चौथी बात यह की सीधे मामला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नी तथा उनके मान-मर्यादा का था, परन्तु तुमने उसको कोई महत्व नहीं दिया, तथा उसे तुच्छ समझा । इससे यह समझाने का उद्देश्य है कि मात्र सतीत्वहनन ही बड़ा अपराध नहीं है जिसका दण्ड सौ कोड़े अथवा पत्थरों से मारकर हत कर डालना है, बल्कि किसी के चरित्र तथा मान-सम्मान पर आक्रामण करना तथा किसी सम्मानित परिवार के अपमान तथा उपहास का प्रबन्ध करना भी अल्लाह के निकट महापाप है। इसे तुच्छ न समझो। इसीलिए आगे फिर विशेष बल देते हुए कहा कि तुमने सुनते ही क्यों न कहा कि हमें ऐसी बातें मुख से निकालने योग्य भी नहीं। यह नि:संदेह महा लाँछन है। इसीलिए इमाम मालिक फ़रमाते हैं कि जो नाम के मुसलमान आदरणीया आयशा पर आक्षेप आरोपित करे वह काफ़िर है क्योंकि वह अल्लाह तथा क़ुरआन को झुठलाता है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

The Ummah Technology Mission

يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧﴾

(१७) अल्लाह (तआला) तुम्हें चेतावनी देता है कि फिर कभी ऐसा काम न करना, यदि तुम सच्चे ईमानवाले हो।

وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٨﴾

(१८) तथा अल्लाह (तआला) तुम्हारे समक्ष अपनी आयतें वर्णन कर रहा है, तथा अल्लाह (तआला) ज्ञाता तथा हिक्मत वाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾

(१९) जो लोग मुसलमानों में बुराई फैलाने की कामना रखते हैं, उनके लिए दुनियाँ तथा आख़िरत में दुखदायी यातनायें हैं, [1] तथा अल्लाह (तआला) सब कुछ जानता है तथा तुम कुछ नहीं जानते।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ

(२०) तथा यदि तुम पर अल्लाह (तआला) की दया तथा कृपा न होती, तथा यह भी कि

---

[1] فاحشة का अर्थ है निर्लज्जा तथा क़ुरआन ने व्यभिचार को निर्लज्जा कहा है (बनी इस्राईल) तथा यहाँ व्यभिचार के एक झूठे समाचार के प्रचार को भी अल्लाह तआला ने निर्लज्जा कहा है तथा इसे दुनिया तथा आख़िरत के दुखदायी यातनाओं का कारण बताया है जिससे असभ्यता के विषय में इस्लाम की प्रकृति तथा अल्लाह तआला की इच्छा का अनुमान होता है कि मात्र असभ्यता की झूठी ख़बर का प्रकाशन अल्लाह के समक्ष कितना बड़ा अपराध है, तो जो लोग रात-दिन एक इस्लामी समाज में समाचार पत्रों, रेडियो, टी॰वी॰ तथा फ़िल्मी ड्रामों द्वारा असभ्यता का प्रचार कर रहे हैं तथा घर-घर उसे पहुँचा रहे हैं अल्लाह के यहाँ ये लोग कितने बड़े अपराधी होंगे ? तथा उन कार्यालयों में कार्य करने वाले कर्मचारी किस प्रकार असभ्यता के प्रचार के अपराध से छुटकारा पायेंगे ? इसी प्रकार अपने घर में टी॰वी॰ लाकर रखने वाले, जिससे उनकी आगामी पीढ़ी में असभ्यता फैला रही है, वह भी असभ्यता के प्रचार के अपराधी क्यों नहीं होंगे ? तथा यही मामला निर्लज्ज दैनिक समाचार पत्रों का है कि उनका भी घरों के अन्दर आना असभ्यता के प्रचार का कारण है, यह भी अल्लाह के समक्ष अपराध हो सकता है। काश, मुसलमान अपने इन कर्तव्यों का आभास करें तथा इस असभ्यता के तूफ़ान (प्रचन्डता) को रोकने के लिए अपनी शक्ति भर प्रयत्न करें।

The Ummah Technology Mission

وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾

अल्लाह (तआला) अति प्रेम करने वाला दयालु है (तो तुम पर प्रकोप आ जाता)।[1]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَاۗءِ وَالْمُنْكَرِ ۭ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢١﴾

(२१) हे ईमानवालो ! शैतान के पदचिन्हों पर न चलो। जो व्यक्ति शैतान के पदचिन्हों पर चले, तो वह असभ्य तथा बुरे कार्यों का ही आदेश देगा। तथा यदि अल्लाह (तआला) की दया एवं कृपा तुम पर न होती, तो तुममें से कोई भी कभी पवित्र एवं शुद्ध न होता। परन्तु अल्लाह (तआला) जिसे पवित्र करना चाहे कर देता है।[2] तथा अल्लाह (तआला) सब सुनने वाला तथा सब जानने वाला है।

وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ اَنْ يُّؤْتُوْٓا اُولِي الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۡ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ۭ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ۭ

(२२) तथा तुममें से जो भी महान तथा उदार हैं, उन्हें अपने निकट सम्बन्धियों तथा निर्धनों एवं शरणार्थियों को अल्लाह के मार्ग में देने से सौगन्ध न खा लेनी चाहिए, बल्कि क्षमा कर देना चाहिए तथा जाने देना चाहिए। क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह (तआला) तुम्हारी

---

[1]उत्तर लोप है, तो फिर अल्लाह का प्रकोप तुम्हें अपनी पकड़ में ले लेता। यह मात्र उसकी कृपा तथा उसका प्रेमभाव एवं दया है कि उसने तुम्हारे इस महापाप को क्षमा कर दिया।

[2]इस स्थान पर शैतान के अनुसरण से रोकने के पश्चात फ़रमाया कि यदि उसकी कृपा तथा दया न होती तो तुममें से कोई भी पवित्र एवं स्वच्छ न होता, इसका अभिप्राय यह जान पड़ता है कि जो लोग उक्त घटना आरोप लगाने में सम्मिलित होने से बच गये, यह मात्र अल्लाह की कृपा तथा दया है जो उन पर हुई, वरन् वे भी इसी धारा में बह जाते जिसमें कुछ मुसलमान वह गये थे। इसलिए शैतान के छल तथा कपट से बचने के लिए एक तो हर समय अल्लाह से सहायता माँगते तथा उसकी ओर आकर्षित होते रहो तथा दूसरे जो लोग अपनी इंद्रियों की कमज़ोरी के कारण शैतान के छल तथा कपट का शिकार हो गये हैं उनको अधिक धिक्कार का लक्ष्य न बनाओ। बल्कि शुभचिन्तक के रूप में उनके सुधार का प्रयास करो।

The Ummah Technology Mission

त्रुटियों को क्षमा कर दे ?[1] अल्लाह (तआला) त्रुटियों को क्षमा करने वाला कृपालु है।

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢﴾

(२३) जो लोग सत्वन्ति भोली-भाली ईमान-वाली स्त्रियों पर आरोप लगाते हैं वे दुनिया तथा आख़िरत में धिक्कारे जाने वाले लोग हैं तथा उनके लिए अत्यन्त कठोर यातना है।[2]

اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۠ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾

---

[1]आदरणीय मिस्तह जो आक्षेप की घटना में लिप्त थे निर्धन मुहाजरीन में से थे, सम्बन्ध में आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक के मौसेरे भाई थे, इसलिए अबू बक्र उनके संरक्षक तथा जीवनयापन के उत्तरदायी थे, जब यह भी आदरणीया आयशा के विरूद्ध षड़यन्त्र में सम्मिलित हो गये, तो अबू बक्र सिद्दीक़ को अत्यन्त दुख पहुँचा, जो एक प्राकृतिक बात थी। अत: सफाई की आयत अवतरित होने के पश्चात क्रोध में उन्होंने सौगन्ध खा ली कि वह भविष्य में मिस्तह को कोई लाभ नहीं पहुँचायेंगे। अबू बक्र की यह सौगन्ध जो यद्यपि मानव प्रकृति के अनुकूल ही थी, परन्तु सिद्दीक़ आचरण उससे उच्च होने की माँग कर रहा था, अल्लाह तआला को अच्छा नहीं लगा तथा यह आयत अवतरित की, जिसमें अत्यन्त प्रेम से उनके इस त्वरित मानवीय प्रगति पर उन्हें चेतावनी दी कि तुम से भी त्रुटियाँ होती रहती हैं तथा तुम चाहते रहते हो कि अल्लाह तआला उसे क्षमा करता रहे। तो फिर तुम भी दूसरों के साथ उसी प्रकार क्षमा तथा टालने का मामला क्यों नहीं करते ? क्या तुमको प्रिय नहीं कि अल्लाह तआला तुम्हारी त्रुटियों को क्षमा कर दे ? यह वर्णन की विधि इतनी प्रभावशाली थी कि उसे सुनते ही अबू बक्र सिद्दीक़ सहसा पुकार उठे "क्यों नहीं हे हमारे प्रभु ! हम अवश्य यह चाहते हैं कि तू हमें क्षमा कर दे।" उसके पश्चात उन्होंने अपनी सौगन्ध का प्रायश्चित अदा करके पूर्ववत: मिस्तह की धन से सहायता करनी प्रारम्भ कर दी। (फ़तहुल क़दीर, इब्ने कसीर)

[2]कुछ व्याख्याकारों ने इस आयत को आदरणीया आयशा तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अन्य पवित्र पत्नियों (رضي الله عنهن) के साथ विशेष रूप से सम्बन्धित कहा है कि इस आयत में विशेषरूप से उन पर आक्षेप लगाने के दण्ड का वर्णन किया गया है तथा वह यह है कि उनके लिए क्षमा नहीं है। तथा कुछ व्याख्याकारों ने इसे जनसामान्य के लिए ही रखा है तथा उस में वही आरोप लगाने का दण्ड वर्णन किया गया है जो पहले गुज़र चुका है। यदि आक्षेप लगाने वाला मुसलमान है तो धिक्कार का अर्थ होगा कि वह दण्ड के योग्य है तथा मुसलमानों के लिए घृणा तथा अलगाव का अधिकारी है। तथा यदि काफ़िर है तो भाव स्पष्ट ही है कि वह दुनिया तथा आख़िरत में धिक्कारा जाने वाला अर्थात अल्लाह की कृपा से वंचित है।

The Ummah Technology Mission

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾

(२४) जबकि उनके समक्ष उनकी जीभ तथा उनके हाथ-पैर उनके कर्मों की गवाही देंगे।[1]

يَوْمَئِذٍ يُّوَفِّيْهِمُ اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ﴿٢٥﴾

(२५) उस दिन अल्लाह (तआला) उन्हें पूरा-पूरा बदला सत्य एवं न्याय के साथ प्रदान करेगा तथा वे जान लेंगे कि अल्लाह (तआला) ही सत्य है, वही प्रकट करने वाला है।

اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٦﴾

(२६) कुकर्मी स्त्रियाँ कुकर्मी पुरूषों के योग्य हैं तथा कुकर्मी पुरूष कुकर्मी स्त्रियों के योग्य हैं तथा पवित्र स्त्रियाँ पवित्र पुरूषों के योग्य हैं [2] तथा पवित्र पुरूष पवित्र स्त्रियों के योग्य हैं। ऐसे पवित्र लोगों के विषय में जो कुछ बकवास ये (आक्षेप धरने वाले) कर रहे हैं वह उनसे निर्दोष हैं, उनके लिए मोक्ष है तथा सम्मान पूर्वक जीविका है।[3]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا

(२७) हे ईमानवालो ! अपने घरों के अतिरिक्त अन्य घरों में न जाओ जब तक कि आज्ञा न

---

[1] जैसाकि क़ुरआन करीम में अन्य स्थानों पर भी तथा हदीसों में भी यह विषय वर्णन किया गया है।

[2] इसका एक भावार्थ तो यही वर्णन किया गया है जो अनुवाद से स्पष्ट है। इस स्थिति में यह ﴿اَلزَّانِ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً﴾ के समानार्थी आयत होगी, कुकर्मी स्त्री तथा कुकर्मी पुरूष से व्यभिचारी स्त्री तथा व्याभिचारी पुरूष तथा طيبات तथा طيبون से तात्पर्य पवित्र स्त्रियाँ तथा पवित्र पुरूष होंगे। दूसरे अर्थों में अभद्र बातें अभद्र पुरूषों के लिए तथा अभद्र पुरूष अभद्र बातों के लिए हैं तथा पवित्र बातें पवित्र पुरूषों के लिए तथा पवित्र पुरूष पवित्र बातों के लिए हैं तथा अभिप्राय यह होगा कि अभद्र बातें वही पुरूष-महिलायें करती हैं जो अभद्र होती हैं तथा पवित्र बातें करना पवित्र पुरूषों तथा महिलाओं का व्यवहार है। इसमें संकेत इस बात की ओर है कि आदरणीया आयशा (رضي الله عنها) पर आक्षेप आरोपित करने वाले अपवित्र तथा अभद्र तथा उनसे उसको निर्दोष मानने वाले पवित्र हैं।

[3] इससे तात्पर्य स्वर्ग की वह सुख-सुविधा है जो ईमानवालों को प्राप्त होगी।

The Ummah Technology Mission

ले लो, तथा वहाँ के निवासियों को सलाम न कर लो[1] यही तुम्हारे लिए श्रेष्ठतम है ताकि तुम शिक्षा प्राप्त करो।[2]

غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّىٰ تَسْتَأْنِسُوا وَتُسَلِّمُوا عَلَىٰ أَهْلِهَا ۖ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾

(२८) यदि वहाँ तुम्हें कोई न मिल सके तो फिर आज्ञा मिले बिना अन्दर न जाओ। तथा

فَإِن لَّمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا

---

[1]पूर्व की आयतों में व्यभिचार तथा उनके दण्डों का वर्णन हुआ, अब अल्लाह तआला गृह प्रवेश के नियमों का वर्णन कर रहा है ताकि स्त्री-पुरुष मिश्रण न हो जो प्राय: व्यभिचार तथा आरोप का कारण बनता है استيناس का अर्थ है, जानकारी करना, अर्थात जब तक तुम्हें यह जानकारी न हो जाये कि अन्दर कौन है तथा उसने तुम्हें अन्दर प्रवेश करने की अनुमति दे दी है, उस समय तक प्रवेश न करो। कुछ व्याख्याकारों ने تستأنسوا का अर्थ تستأذنوا किया है जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है। आयत में प्रवेश की आज्ञा माँगने का वर्णन पहले तत्पश्चात सलाम करने का वर्णन है। परन्तु हदीस से विदित होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहले सलाम करते फिर अन्दर प्रवेश करने की आज्ञा माँगते। इसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का व्यवहार था कि तीन बार आज्ञा माँगते यदि कोई उत्तर न मिलता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वापस लौट आते तथा यह भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का व्यवहार था कि आज्ञा माँगते समय आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम द्वार के दायीं अथवा बायीं ओर खड़े होते, ताकि एकदम सामना न हो जिससे बेपर्दगी होने की सम्भावना रहती है। (देखिये सहीह बुख़ारी किताबुल इस्तीज़ान, बाबुल तस्लीम वल इस्तीज़ान सलासन, मुसनद अहमद भाग ३ पृष्ठ १३८, अबू दाऊद किताबुल अदब, बाब कम मर्रतन योसल्लिमु रजुलो फ़िल इस्तीज़ाने) इसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने द्वार पर खड़े होकर अन्दर की ओर झाँकने से भी कड़ाई से मना किया है, यहाँ तक कि यदि कोई व्यक्ति झाँकने वाले की आँख भी फोड़ दे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उस पर कोई पाप नहीं। (अल बुख़ारी किताबुल दियात बाब मन इत्तलअ फ़ी बैते कौमिन फ़फ़क़उ ऐनहु फला दियत लहू, मुस्लिम किताबुल आदाब, बाब तहरीमिन नज़र फी बैत ग़ैरिही) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस बात को भी अप्रिय कहा कि जब अन्दर से गृह स्वामी पूछे कौन है ? तो उसके उत्तर में "मैं-मैं" कहा जाये। इसका अर्थ यह है कि नाम लेकर अपना परिचय कराये। (सहीह बुख़ारी किताबुल इस्तीज़ान बाबुन इज़ाक़ाल मन ज़ा ? क़ाल अना, तथा मुस्लिम किताबुल आदाब बाब कराहियत कौलिल मुस्ताजिने अना इज़ाक़ील मन हाज़ा ? तथा अबू दाऊद किताबुल अदब)

[2]अर्थात कर्म करो। अर्थ यह है कि आज्ञा प्राप्त करो तथा सलाम करने के पश्चात गृह में प्रवेश करो, दोनों के लिए सहसा प्रवेश करने से उत्तम है।

The Ummah Technology Mission

فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝۲۸

यदि तुम से लौट जाने को कहा जाये, तो तुम लौट ही जाओ, यही बात तुम्हारे लिए सुथराई है, जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह (तआला) भली-भाँति जानता है।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ۝۲۹

(२९) हाँ, जिनमें लोग न रहते हों ऐसे घरों में जहाँ तुम्हारा कोई लाभ अथवा सामान हो, जाने में कोई पाप नहीं,[1] तुम जो कुछ भी प्रकट करते हो तथा जो छुपाते हो अल्लाह (तआला) सब कुछ जानता है।[2]

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ۭ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝۳۰

(३०) मुसलमान पुरूषों से कहो कि अपनी दृष्टि नीची रखें,[3] तथा अपने गुप्ताँग की सुरक्षा रखें।[4] यही उनके लिए पवित्रता है, लोग जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह (तआला) सबसे अवगत है।

---

[1]इससे तात्पर्य कौन से घर हैं, जिनमें बिना आज्ञा प्राप्त किये प्रवेश करने की आज्ञा प्रदान की जा रही है। कुछ विद्वान कहते हैं कि इससे तात्पर्य वे घर हैं जो विशेषरूप से अतिथियों के लिए अलग तैयार किये गये हों, उनमें गृह स्वामी से प्रथम बार आज्ञा लेना ही पर्याप्त है। कुछ कहते हैं कि इससे तात्पर्य सराय (धर्मशाला) है, जो यात्रियों के लिए होता है अथवा व्यापारिक घर हैं مَتَاعٌ का अर्थ है लाभकारी, अर्थात जिनमें तुम्हारा लाभ हो।

[2]इसमें उन लोगों के लिए चेतावनी है जो अन्य लोगों के घरों में प्रवेश करते समय वर्णित नियमों का पालन करने पर ध्यान नहीं देते।

[3]जब किसी के घर में प्रवेश करने के लिए आज्ञा लेने को आवश्यक बताया गया, तो उसके साथ ही आँखों को झुकी रखने अथवा बन्द रखने का आदेश दे दिया, ताकि आज्ञा माँगने वाला भी विशेष रूप से अपने नेत्रों पर नियन्त्रण रखे।

[4]अर्थात अनुचित प्रयोग से इसे बचायें अथवा इन्हें इस प्रकार छिपाकर रखें कि इन पर किसी की दृष्टि न पड़े, उसके ये दोनों भावार्थ ठीक हैं क्योंकि दोनों ही अभिप्राय हैं। इसके अतिरिक्त दृष्टि की सुरक्षा का प्रथम वर्णन है क्योंकि इसमें असावधानी ही गुप्ताँग से असावधानी का कारण बनता है।

The Ummah Technology Mission

وَقُل لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ
اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ
وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا
ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى
جُيُوْبِهِنَّ ۖ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ

(३१) तथा मुसलमान स्त्रियों से कहो कि वे भी अपनी दृष्टि नीची रखें तथा अपने सतीत्व की रक्षा करें।[1] तथा अपनी शोभा का प्रदर्शन न करें[2] सिवाय उस के जो प्रकट है।[3] तथा अपने गरेबान पर अपनी ओढ़नियों को पूर्णरूप से फैलाये रहें[4] तथा अपनी शोभा का

---

[1]महिलायें भी यद्यपि आँखें नीची रखने तथा गुप्ताँगों की सुरक्षा के प्रथम आदेश में सम्मिलित थीं जो सभी ईमानवालों को दिया गया है तथा ईमानवालों में ईमानवाली महिलायें भी सामान्य रूप से सम्मिलित होती हैं। परन्तु इस समस्या के महत्व के अनुरूप इसे विशेष रूप से महिलाओं के लिए भी पुनः वही आदेश दिया जा रहा है जिसका उद्देश्य बलपूर्वक कहना है, कुछ आलिमों ने इससे भावार्थ निकालते हुए कहा है कि जिस प्रकार से पुरूषों के लिए महिलाओं को देखना निषेध है उसी प्रकार महिलाओं के लिए भी पुरूषों को देखना कदापि निषेध है। तथा कुछ ने उस हदीस से भावार्थ निकालते हुए जिसमें आदरणीया आयशा का ईथोपियनस का खेल देखने का वर्णन है (सहीह बुख़ारी किताबुस सलात, बाबु असहाबिल हेराब फ़िल मस्जिद) बिना काम भावना के पुरूषों की ओर महिलाओं को देखने की आज्ञा दी है।

[2]शोभा से तात्पर्य वस्त्र तथा आभूषण है जो महिलायें अपनी सुन्दरता एवं सौन्दर्य में निखार लाने के लिए धारण करती हैं जिसको अपने पति के लिए करने पर बल दिया गया है। जब वस्त्र तथा आभूषण का प्रदर्शन अन्य पुरूषों के समक्ष महिलाओं के लिए निषेध है तो शरीर नग्न तथा प्रदर्शित करने की आज्ञा इस्लाम में कब हो सकती है ? यह तो अत्यधिक हराम तथा निषेध होगा।

[3]इससे तात्पर्य वह शोभा तथा शरीर का अंग है जिसका छिपाना तथा पर्दा करना असम्भव हो, जैसे किसी को कोई वस्तु पकड़ाते अथवा उससे लेते समय हथेलियों का अथवा देखते समय आँखों का प्रदर्शित हो जाना। इस सम्बन्ध में हाथ में जो अँगूठी पहने हुए अथवा मेंहदी लगी हुई, आँखों में सुर्मा अथवा काजल हो अथवा वस्त्र तथा शोभा को छिपाने के लिए जो नक़ाब अथवा चादर ली जाती है वह भी एक शोभा ही है। फिर भी यह शोभायें ऐसी हैं जिनका प्रदर्शन आवश्यकता के समय अथवा आवश्यकता के कारण उपयुक्त है।

[4]ताकि सिर, गर्दन तथा छाती का पर्दा हो जाये क्योंकि उन्हें भी नग्न करने की आज्ञा नहीं है।

The Ummah Technology Mission

إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ آبَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَائِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ

प्रदर्शन किसी के समक्ष न करें[1] सिवाय अपने पतियो के [2] अथवा अपने पिता के अथवा अपने ससुर के अथवा अपने पुत्रों के अथवा अपने पति के पुत्रों के अथवा अपने भाईयों के अथवा भतीजों के अथवा अपने भाँजों के [3] अथवा अपनी सखियों के[4] अथवा दासों

---

[1]यह वही शोभा (सौन्दर्य प्रसाधन) अथवा सौन्दर्य है जिसे प्रदर्शित करना इससे पूर्व निषेध किया गया था। अर्थात वस्त्र तथा आभूषण जो चादर अथवा नकाब के नीचे होते हैं। यहाँ उनका वर्णन अतिरिक्त के विषय में आया है। अर्थात अमुक-अमुक व्यक्तियों के समक्ष इनका प्रदर्शन उचित है।

[2]इनमें सूची क्रम में सर्वोपरि पति है। इसीलिए पति को सर्वोपरि भी किया गया है क्योंकि पत्नी की सारी शोभा पति के लिए होती है तथा पति के लिए पत्नी का सम्पूर्ण शरीर उचित है। इसके अतिरिक्त जिन समीपवर्त्तियों तथा अन्य व्यक्तियों का घर में आना-जाना लगा रहता है तथा निकट सम्बन्धी होने के कारण अथवा अन्य कारणों से प्राकृतिक रूप से उनकी ओर काम भावना भी नहीं होती, जिससे बुराई की सम्भावना हो तो धार्मिक नियम से ऐसे व्यक्तियों के समक्ष जिनसे कोई भय न हो तथा सभी वे व्यक्ति जिनसे विवाह अमान्य है के समक्ष शोभा के प्रदर्शन की आज्ञा प्रदान की है। इस स्थान पर मामा तथा चाचा का वर्णन नहीं किया गया है। अधिकाँश आलिमों के निकट यह भी वे व्यक्ति हैं जिनसे विवाह अमान्य है जिनके समक्ष शोभा के प्रदर्शन की आज्ञा दी गई है तथा कुछ के निकट ऐसा नहीं है। (फ़तहुल क़दीर)

[3]पिता में दादा, पितामह, नाना तथा नाना के पिता तथा उससे ऊपर सभी सम्मिलित हैं। इसी प्रकार ससुर में ससुर का पिता, दादा, पितामह ऊपर तक। पुत्रों में पौत्र, परपौत्र, नाती, परनाती नीचे तक। पति के पुत्रों में पौत्रों तथा परपौत्र नीचे तक, भाईयों में तीनों प्रकार के भाई (सगे, पिता की ओर से, माता की ओर से) तथा उनके पुत्र, पौत्र, परपौत्र, नाती, नीचे तक। भतीजों में उनके बेटे नीचे तक तथा भाँजों में तीनों प्रकार की बहनों की सन्तान सम्मिलित हैं।

[4]इनसे तात्पर्य मुसलमान महिलायें हैं जिनको इस बात से रोक दिया गया है कि वह किसी स्त्री की शोभा, सुन्दरता, तथा सौन्दर्य एवं शारीरिक बनावट का अपने पति के समक्ष वर्णन करें। कुछ ने इससे वे विशेष स्त्रियाँ तात्पर्य लिया है जो सेवा आदि के लिए हर समय साथ रहती हैं जिनमें दासियाँ भी सम्मिलित हैं।

The Ummah Technology Mission

أَوِ التَّٰبِعِينَ غَيْرِ أُولِي الْإِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَىٰ عَوْرَٰتِ النِّسَاءِ ۖ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِن زِينَتِهِنَّ ۚ وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣١﴾

के[1] अथवा नौकरों में ऐसे पुरूषों के जिनको कामुकता न हो[2] अथवा ऐसे बच्चों के जो स्त्रियों के पर्दे की बातों के विषय में न जानते हों[3] तथा इस प्रकार से ज़ोर-ज़ोर से पैर मार कर न चलें कि उनके छुपे सिंगार का पता लग जाये।[4] तथा हे मुसलमानो ! तुम सब के सब अल्लाह के दरबार में क्षमा माँगो ताकि तुम मोक्ष पाओ।[5]

---

[1]कुछ ने इससे तात्पर्य दासियाँ तथा कुछ ने दास लिये हैं तथा कुछ ने दोनों ही। हदीस में है कि दास से पर्दे की आवश्यकता नहीं है। (अबू दाऊद किताबुल लिबास बाब फ़िल अब्द यनज़ुरू इला शआरे मौलातेही) इसी प्रकार कुछ ने सामान्य ही रखा है जिसमें ईमानवाले तथा काफ़िर दोनों दास सम्मिलित हैं।

[2]कुछ ने इनसे केवल वही व्यक्ति तात्पर्य लिये हैं जिनका घर में रहने, खाने-पीने के अतिरिक्त कोई अन्य उद्देश्य नहीं। कुछ ने मूर्ख, कुछ ने नपुंसक तथा हिजड़े तथा कुछ ने अत्याधिक वृद्ध अर्थ लिये हैं। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि जिनके अन्दर क़ुरआन में वर्णित गुण पाये जायें, वे सभी इसमें सम्मिलित हैं तथा अन्य अलग होंगे।

[3]उनसे ऐसे बालक अलग होंगे जो वयस्क हों अथवा वयस्क अवस्था के निकट हों क्योंकि वे स्त्रियों के गुप्तांग से परिचित होते हैं।

[4]ताकि पैरों के आभूषणों की झंकार से पुरूषों का ध्यान उसकी ओर आकर्षित न हो। इसमें ऊँची ऐड़ी की वह सैंडिल भी आ जाती है जिन्हें महिलायें पहनकर चलती हैं, तो टक-टक की ध्वनि होती है, जो आभूषणों की ध्वनि से कम नहीं होती। इसी प्रकार हदीस में आता है कि स्त्री के लिए सुगन्ध लगाकर घर से बाहर निकलना उचित नहीं, जो महिला ऐसा करती है, वह व्यभिचारिणी है। (तिर्मिज़ी अबवाबुल इस्तीज़ान, अबू दाऊद किताबुल तर्रज्जुल)

[5]यहाँ पर्दे के आदेशों में क्षमा माँगने का आदेश देने में यह दूरदर्शिता प्रतीत होती है कि अज्ञानकाल में इन आदेशों की जो अवहेलना भी तुम करते रहे हो, चूँकि वे इस्लाम के पूर्व की बातें थीं, यदि तुमने शुद्ध हृदय से क्षमा माँग ली तथा इन वर्णित आदेशों के अनुरूप पर्दे का प्रबन्ध किया तो भलाई तथा सफलता तथा दुनिया एवं आख़िरत की भलाई तुम्हारे भाग्य है।

The Ummah Technology Mission

وَأَنكِحُوا الْأَيَامَىٰ مِنكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ ۚ إِن يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُغْنِهِمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा तुम में से जो पुरूष-स्त्री यौवन को पहुँच गये हों उनका विवाह कर दो[1] तथा अपने सदाचारी दास-दासियों का भी,[2] यदि वे निर्धन भी होंगे तो अल्लाह (तआला) अपनी कृपा से धनवान बना देगा।[3] अल्लाह (तआला) उदार तथा ज्ञान वाला है।

وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا

(३३) तथा उन लोगों को पवित्र रहना चाहिए जो अपना विवाह करने का सामर्थ्य नहीं

---

[1] أيامى बहुवचन है أيم का। أيم ऐसी स्त्री को कहा जाता है जिसका पति न हो, जिसमें कुँवारी, विधवा तथा तलाक प्राप्त तीनों सम्मिलित हैं तथा ऐसे पुरूष को भी أيم कहते हैं जिसकी पत्नी न हो। आयत में संरक्षकों से सम्बोधन है कि विवाह कर दो, यह नहीं कहा कि विवाह कर लो। इससे ज्ञात हुआ कि स्त्री संरक्षक की आज्ञा तथा प्रसन्नता के बिना विवाह नहीं कर सकती जिसकी पुष्टि हदीसों से भी होती है। इसी प्रकार आज्ञा वाचक के आधार पर कुछ ने यह अर्थ निकाला है कि विवाह करना आवश्यक (अनिवार्य) है, जबकि कुछ ने इसे अनुमत (मुबाह) तथा कुछ ने उत्तम (मुस्तहब) कहा है परन्तु शक्ति रखने वाले के लिए सुन्नत मुअक्किदः (बलपूर्वक सुन्नत) तथा कभी आवश्यक है तथा इससे मुख मोड़ना कड़ी चेतावनी का कारण है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है و من رغب عن سنتي فليس مني "जिसने मेरी सुन्नत से मुख मोड़ा वह मुझसे नहीं।" (अल-बुख़ारी संख्या ५०६३ तथा मुस्लिम संख्या १०२०)

[2] यहाँ صالحيت से तात्पर्य ईमान है। इसमें मतभेद है कि स्वामी अपने दास-दासियों को विवाह करने के लिए बाध्य कर सकते हैं अथवा नहीं ? कुछ बाध्य करने के पक्ष में हैं, कुछ नहीं। परन्तु हानि की सम्भावना हो तो धार्मिक नियमों के अनुसार बाध्य करना उचित है। अन्य परस्थिति में अवैध (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[3] अर्थात मात्र निर्धनता तथा धन की कमी विवाह में बाधक नहीं होनी चाहिए। सम्भव है कि विवाह के पश्चात अल्लाह उनकी निर्धनता को अपनी कृपा तथा दया से सुख-सम्पन्नता में परिवर्तित कर दे। हदीस में आता है तीन व्यक्ति हैं जिनकी अल्लाह अवश्य सहायता करता है एक विवाह करने वाले की जो सदाचार की भावना से विवाह करता है, दूसरे स्वाधीनता-पत्र प्राप्त दास, जो धन अदा करने का विचार रखता है, तीसरा अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध करने वाला। (तिर्मिज़ी अबवाब फ़ज़ायेलिल जिहाद, बाब माजाअ फ़िल मुजाहिद वल मुकातिब वल निकाह)

The Ummah Technology Mission

حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ۖ وَّاٰتُوْهُمْ مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اٰتٰىكُمْ ؕ وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ الْحَيٰوةِ

रखते |[1] यहाँ तक कि अल्लाह (तआला) अपनी कृपा से उन्हें धनवान बना दे | तुम्हारे दासों में से जो कोई तुम्हें कुछ देकर स्वाधीनता-लेख कराना चाहे तो तुम उन्हें ऐसा लेख दे दिया करो यदि तुमको उनमें कोई भलाई दिखती हो |[2] तथा अल्लाह ने जो माल तुम्हें दे रखा है, उसमें से उन्हें भी दो |[3] तुम्हारी दासियाँ जो पवित्र रहना चाहती हैं, उन्हें साँसारिक जीवन के लाभ के कारण

---

[1]हदीस में पवित्रता के लिए, जब तक विवाह का सामर्थ्य न हो जाये, ऐच्छिक व्रत (नफ़ली रोज़े) रखने पर बल दिया गया है, फ़रमाया : हे नवयुवकों के गुटो ! तुम में से जो विवाह की शक्ति रखता है उसे (अपने समय पर) विवाह कर लेना चाहिए, इसलिए कि इससे नेत्रों की तथा योनियों की रक्षा होती है तथा जो विवाह की शक्ति नहीं रखता, उसे चाहिए कि वह (अधिकतर ऐच्छिक) व्रत रखे, व्रत उसकी काम भावना को नियन्त्रण में रखेंगे | (अल-बुख़ारी किताबुस सौम, बाब अस्सौम लेमन खाफ़ अला नफ़्सेही अज़ूब:, मुस्लिम अव्वल किताबुल निकाह)

[2] مكاتب उस दास को कहा जाता है जो अपने स्वामी से संधि कर लेता है कि मैं इतनी राशि एकत्रित करके भुगतान कर दूँगा तो स्वतन्त्रता का अधिकारी हूँगा | भलाई देखने का अर्थ है उसकी सत्यता तथा निक्षेप पर तुम्हें विश्वास हो अथवा किसी व्यवसाय तथा उद्योग की वह जानकारी रखता हो ताकि वह परिश्रम करके धनोपार्जन करे तथा धन की राशि का भुगतान कर दे | इस्लाम ने चूँकि अधिक से अधिक दासता के विरूद्ध नीति अपनायी थी | इसलिए यहाँ भी स्वामियों को बलपूर्वक कहा गया कि स्वाधीनता लेख इच्छुक दासों से संधि करने में आलस्य न करो, जबकि तुम्हें उनके अंदर ऐसे गुण का ज्ञान हो जिससे तुम्हारी राशि का भुगतान होने की सम्भावना हो | कुछ आलिमों के निकट यह आदेश का पालन अनिवार्य तथा कुछ के निकट उत्तम है |

[3]इसका अर्थ है कि दास्ता से मुक्ति के लिए उसने जो संधि की है तथा अब धन राशि की उसे आवश्यकता है ताकि संधि के अनुसार वह राशि का भुगतान कर दे, तो तुम भी उसके साथ आर्थिक सहायता करो, यदि अल्लाह ने तुम्हें इस योग्य बनाया हो | अत: अल्लाह ने ज़कात की राशि के प्रयोग करने के जो आठ प्रकार (सूर: *अल-तौबा*-६०) में वर्णन किये हैं, उनमें से एक وفي الرقاب भी है | जिसका अर्थ है, गर्दन मुक्त कराने में | अर्थात दासों की स्वाधीनता पर भी ज़कात (धर्मदान) की राशि व्यय की जा सकती है |

The Ummah Technology Mission

الدُّنْيَا ۚ وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْۢ بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٣﴾

कुकर्म पर बाध्य न करो।[1] तथा जो उन्हें बाध्य कर दे तो अल्लाह (तआला) उनके विवश किये जाने के पश्चात क्षमा कर देने वाला तथा कृपा करने वाला है।[2]

وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ وَّمَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा हमने तुम्हारी ओर खुली तथा ज्योर्तिमय आयतें उतारी हैं तथा उन लोगों की कहावतें जो तुम लोगों से पूर्व गुज़र चुके हैं तथा परहेज़गारों के लिए शिक्षा।

اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ

(३५) अल्लाह दिव्य ज्योति है आकाशों की तथा धरती की[3] उसकी ज्योति की तुलना एक

---

[1]अज्ञान काल में लोग मात्र सांसारिक धन अर्जित करने के लिए अपनी दासियों को व्यभिचार पर बाध्य करते थे। चाहे न चाहे उसे यह अपमान का कलंक सहन करना पड़ता था। अल्लाह तआला ने मुसलमानों को ऐसा करने से रोका है। إِنْ أَرَدْنَ संभावित परस्थितियों के आधार पर है। वरन् उद्देश्य यह नहीं है कि यदि वह व्यभिचार को प्रिय समझे तो फिर तुम उनसे यह कार्य करवा लिया करो। बल्कि यह आदेश देना उद्देश्य है कि दासियों से संसार के थोड़े से धन के लिए, यह कुकर्म न करवाओ, क्योंकि इस प्रकार का धन आर्जन ही निषेध है।

[2]अर्थात जिन दासियों से बलपूर्वक व्यभिचार करवाया जायेगा तो पापी स्वामी होगा अर्थात बाध्य करने वाला, न कि दासी जो अबला है। हदीस में आता है, मेरे सम्प्रदाय से त्रुटि, भूल तथा ऐसे कार्य जो बलपूर्वक कराये गये हों, क्षमा हैं। (इब्ने माजा किताबुत तलाक़ वाब तलाक़िल मुकरहे वन्नासी)

[3]अर्थात यदि अल्लाह न होता तो न आकाश में प्रकाश होता न धरती में, न आकाश तथा धरती में किसी को संमार्ग सुलभ होता। अत: वह अल्लाह (तआला) ही आकाश तथा धरती को प्रकाश प्रदान करने वाला है। उसकी किताब दिव्य ज्योति है, उसका रसूल (अपने गुणों के आधार पर) दिव्य ज्योति है। अर्थात इन दोनों के माध्यम से जीवन के अंधकार में मार्गदर्शन तथा प्रकाश प्राप्त होता है, जिस प्रकार दीप अथवा बल्ब से मनुष्य प्रकाश प्राप्त करता है। हदीस से भी अल्लाह का दिव्य ज्योति होना सिद्ध है। «وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ نُورُ السَّمٰوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ». (अल-बुख़ारी बाबुत तहज्जुदे विल्लैल तथा मुस्लिम किताबु सलातिल मुसाफ़िरीन बाबुद्दुआ फ़ी सलातिल लैल) अत: अल्लाह स्वयं साक्षात दिव्य ज्योति है, उसका पर्दा दिव्य ज्योति है तथा प्रत्येक भौतिक

The Ummah Technology Mission

نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ فِيْ زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ يَهْدِي اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٣٥﴾

ताखा की है जिस पर दीप है तथा दीप शीशे की झाड़ में हो तथा शीशा चमकते हुए प्रकाशमान सितारे की भाँति हो तथा वह दीप पवित्र वृक्ष ज़ैतून के तेल से जलाया जाता हो, जो वृक्ष न पूर्वी है न पश्चिमी स्वयं वह तेल ही समीप (सम्भव) है कि प्रकाश देने लगे, यद्यपि उसको कदापि आग न छुई हो, ज्योति पर ज्योति है,[1] अल्लाह (तआला) अपने दिव्य ज्योति की ओर मार्गदर्शन करता है जिसे चाहे।[2] लोगों को समझाने के लिए ये उदाहरण अल्लाह (तआला) दे रहा है।[3] तथा अल्लाह (तआला)

तथा आत्मिक दिव्य ज्योति का स्रष्टा तथा प्रदान करने वाला एवं उसकी ओर मार्गदर्शन करने वाला केवल एक अल्लाह है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[1]अर्थात जिस प्रकार एक ताखा पर ऐसा दीप हो जो काँच के झाड़ में हो उसमें एक शुभ वृक्ष का ऐसा शुद्ध तेल डाला गया हो कि वह अग्नि (माचिस) दिखाये बिना ही स्वयं प्रकाशित हो जाने के निकट हो। इस प्रकार ये सारे प्रकाश एक ताखा में एकत्रित हो गये तथा वह सर्वथा दिव्य प्रकाश बन गया। इसी प्रकार अल्लाह के हर तर्क तथा युक्तियों की दशा है कि वह स्पष्ट भी हैं तथा एक से एक बढ़कर भी दिव्य ज्योति पर ज्योति हैं। जो पूर्वी है न पश्चिमी का अर्थ है, वह वृक्ष ऐसे खुले मैदान तथा मरूस्थल में है कि उस पर धूप केवल सूर्य चढ़ने के समय अथवा अस्त होने के समय ही नहीं पड़ती, अपितु सारा दिन धूप में रहता है तथा ऐसे वृक्ष का फल अति स्वादिष्ट होता है तथा तात्पर्य इससे ज़ैतून का वृक्ष है जिसका फल तथा तेल भोजन के रूप में भी प्रयोग होता है तथा दीप में तेल के रूप में प्रयोग होता है।

[2]दिव्य ज्योति से तात्पर्य ईमान तथा इस्लाम है, अर्थात अल्लाह तआला जिनके अन्तरात्मा में प्रेम तथा उसके प्राप्त करने की रूचि देखता है, उनका इस दिव्य ज्योति की ओर मार्गदर्शन करता है जिससे धर्म तथा संसार की सफलताओं के द्वार उनके लिए खुल जाते हैं।

[3]जिस प्रकार से अल्लाह तआला ने यह उदाहरण दिया जिसमें उसने ईमान को तथा अपने ईमान वाले भक्तों के दिलो में इसके संचित होने तथा भक्तों के दिलों की स्थिति से अवगत होने को स्पष्ट किया कि कौन मार्गदर्शन का पात्र है तथा कौन नहीं।

The Ummah Technology Mission

प्रत्येक वस्तु की स्थिति से भली-भाँति परिचित है।

فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۙ

(३६) उन घरों में जिनके उच्च करने का तथा वहाँ अपना नाम लिये जाने का अल्लाह ने आदेश दिया है,[1] वहाँ प्रातः तथा सायंकाल अल्लाह (तआला) की महिमा का वर्णन करते हैं।[2]

---

[1]जब अल्लाह तआला ने ईमानवालों के दिल को तथा उसमें जो ईमान तथा मार्गदर्शन तथा ज्ञान है, उसका ऐसे दीप से तुलना की है जो काँच के झाड़ में हो तथा जो स्वच्छ शुद्ध तेल से प्रकाशित हो तो अब उसका स्थान वर्णन किया जा रहा है कि यह झाड़ ऐसे घरों में है जिन के विषय में आदेश दिया गया है कि उन्हें उच्च किया जाये तथा उनमें अल्लाह का वर्णन किया जाये। तात्पर्य मस्जिदें हैं, जो अल्लाह को धरती पर अत्यधिक प्रिय हैं। उच्च का तात्पर्य मात्र पत्थरों तथा ईटों की उच्चता नहीं है बल्कि इसमें मस्जिदों को मालीनता, बकवास तथा अनुचित बातों एवं कर्मों से पवित्र रखना भी सम्मिलित है। वरन् मात्र मस्जिदों को ऊँचा एवं भव्य बना देना सब कुछ नहीं है बल्कि हदीस में मस्जिदों को अधिक अलंकृत करने से रोका गया है। तथा एक हदीस में तो इसे क़ियामत के निकट होने के लक्षणों में से एक लक्षण बताया गया है। (अबू दाऊद किताबुस्सलात वाबुन फ़ी बिनाइल मसाजिद) इसके अतिरिक्त जिस प्रकार मस्जिदों में व्यापार तथा व्यवसाय एवं शोर करना निषेध है क्योंकि यह मस्जिद के मूल उद्देश्य के विपरीत है। उसी प्रकार अल्लाह का स्मरण करने में यह बात भी सम्मिलित है कि केवल एक अल्लाह का वर्णन किया जाये उसी की इबादत की जाये, केवल उसी को सहायता के लिए पुकारा जाये।

﴿ وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ﴾

"मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं, अतः अल्लाह के साथ किसी को न पुकारो।" (सूरः जिन्न-१८)

[2]'तस्बीह' से तात्पर्य नमाज़ है। آصَال बहुवचन है أَصِيل का, अर्थ है संध्या। अर्थात ईमानवाले, जिन के दिल ईमान तथा मार्गदर्शन से प्रकाशित होते हैं, प्रातः-सायं मस्जिदों में अल्लाह की प्रसन्नता के लिए नमाज़ पढ़ते तथा उसकी इबादत (उपासना) करते हैं।

The Ummah Technology Mission

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَن ذِكْرِ اللَّهِ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ ۖ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ ﴿٣٧﴾

(३७) ऐसे लोग[1] जिन्हें व्यापार तथा क्रय-विक्रय अल्लाह के वर्णन से तथा नमाज़ स्थापित करने तथा ज़कात अदा करने से अचेत नहीं करते, उस दिन से डरते हैं जिस दिन बहुत से दिल तथा बहुत सी आँखें उलट-पलट हो जायेंगी।[2]

لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَن يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾

(३८) इस उद्देश्य से कि अल्लाह तआला उन्हें उनके कर्म का श्रेष्ठतम बदला दे तथा अपनी कृपा से कुछ अधिक ही प्रदान करे। तथा अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अनगिनत वृत्तियाँ (जीविका) देता है।[3]

وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيعَةٍ يَحْسَبُهُ الظَّمْآنُ مَاءً حَتَّىٰ

(३९) तथा काफ़िरों के कर्म उस चमकती रेत की भाँति हैं, जो खुले मैदान में हो जिसे प्यासा व्यक्ति दूर से पानी समझता है, परन्तु

---

[1]इससे अर्थ निकाला गया है कि यद्यपि महिलायें मस्जिदों में जाकर नमाज़ पढ़ सकती हैं, किन्तु सादे वस्त्रों में, बिना सुगन्ध लगाये तथा पर्दे के साथ हों तो जायें, जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रिसालत के काल में महिलायें मस्जिदे नबवी में नमाज़ के लिए उपस्थिति हुआ करती थीं परन्तु उनके लिए घर में नमाज़ पढ़ना अति उत्तम एवं श्रेष्ठ है। हदीस में भी इस बात का वर्णन किया गया है। (अबू दाऊद, किताबुस्सलात, बाबुल तश्दीद फ़ी ज़ालिक, मुसनद अहमद भाग ६, पृष्ठ २९७ तथा ३०१)

[2]अर्थात अति घबराहट के कारण। जिस प्रकार अन्य स्थान पर है।

﴿ وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاظِمِينَ ﴾

"उनको क़ियामत वाले दिन से डराओ, जिस दिन दिल गले तक आ जायेंगे शोक से भरे हुए।" (सूरः अल-मोमिन-१८)

प्रारम्भ में दिलों की स्थिति यह सभी की होगी, ईमानवालों की तथा काफ़िरों की भी।

[3]क़ियामत के दिन ईमानवालों को उनके पुण्य का बदला اضعافا مضاعفة (कई-कई गुना) के रूप में प्रदान किया जायेगा तथा अधिकतर को बिना हिसाब ही स्वर्ग दिया जायेगा तथा वहाँ जीविका की जो अधिकता तथा उसमें जो नवीनता एवं स्वाद होगा, उसका तो अनुमान ही नहीं किया जा सकता।

The Ummah Technology Mission

إِذَا جَآءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَوَجَدَ اللَّهَ عِندَهُ فَوَفَّىٰهُ حِسَابَهُ ۗ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٣٩﴾

जब उसके निकट पहुँचता है तो उसे कुछ भी नहीं पाता। हाँ, अल्लाह को अपने निकट पाता है जो उसका हिसाब पूरा-पूरा चुका देता है।[1] अल्लाह (तआला) अतिशीघ्र हिसाब कर देने वाला है।

أَوْ كَظُلُمَٰتٍ فِى بَحْرٍ لُّجِّىٍّ يَغْشَىٰهُ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِۦ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِۦ سَحَابٌ ۚ ظُلُمَٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۚ إِذَآ أَخْرَجَ يَدَهُۥ لَمْ يَكَدْ يَرَىٰهَا ۗ وَمَن لَّمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُۥ نُورًا فَمَا لَهُۥ مِن نُّورٍ ﴿٤٠﴾

(४०) अथवा उन अंधकार के समान है जो अति गहरे समुद्र में हों जिसे ऊपर-नीचे की धाराओं ने ढक लिया हो, फिर ऊपर से बादल छाये हों। अर्थात अंधकार हैं जो ऊपर-नीचे एक के ऊपर एक हों। जब अपना हाथ निकाले तो उसे भी सम्भवत: न देख सके,[2] और (बात यह है कि) जिसे अल्लाह (तआला) ही

---

[1] أعمالٌ (कर्म) से तात्पर्य वे कर्म हैं जिन्हें काफिर तथा मूर्तिपूजक पुण्य समझ कर करते हैं, जैसे दान-दक्षिणा, सबन्धियों के साथ स्वभाव, अल्लाह के घर का निर्माण, तथा हाजियों की सेवा आदि। سَرَابٌ (मृगतृष्णा) उस चमकती हुई रेत को कहते हैं, जो दूर से सूर्य की किरणों के कारण पानी दिखायी पड़ती हैं سَراب का अर्थ चलने के भी हैं। वह रेत चलते हुए पानी की तरह दिखायी देती है। قِيعة बहुवचन है قاع का, जिसका अर्थ है धरती का निचला भाग, जिसमें पानी ठहर जाता है अथवा समतल मैदान। यह काफ़िरों के कर्मों की उपमा है कि जिस प्रकार मृगतृष्णा दूर से पानी दिखायी देती है, जबकि वह रेत ही होती है। इसी प्रकार काफ़िर के कर्म ईमान न होने के कारण अल्लाह के समक्ष बिल्कुल भार विहीन होंगे, उनका कोई भी फल उन्हें प्राप्त नहीं होगा। परन्तु जब वह अल्लाह के पास जायेगा तो वह उसके कर्मों का पूरा-पूरा हिसाब चुका लेगा।

[2] यह दूसरी उपमा है कि उनके कर्म अंधकार के समान हैं, अर्थात उन्हें मृगतृष्णा से उपमा दे लो अथवा अंधकार से। अथवा पूर्व की उपमा काफ़िरों के कर्मों की थी तथा यह उसके कुफ़्र की उपमा है, जिसमें काफ़िर अपने पूरे जीवन में घिरा रहता है, कुफ़्र तथा मार्ग के अंधकार, बुरे कर्म तथा मिथ्यावादी विश्वास के अंधकार तथा प्रभु से तथा उसकी आख़िरत की यातना से एकदम अज्ञानता का अंधकार। यह अंधकार उसे मार्गदर्शन की ओर आने नहीं देते जिस प्रकार अंधकार में मनुष्य को अपना हाथ दिखायी नहीं देता।

The Ummah Technology Mission

प्रकाश न दे, उसके पास कोई प्रकाश नहीं होता।[1]

(४१) क्या आपने नहीं देखा कि आकाश तथा धरती की सभी सृष्टि तथा पंख फैलाये उड़ने वाले सभी पक्षी[2] अल्लाह की महिमागान में लीन हैं। प्रत्येक की नमाज़ तथा महिमागान उसे ज्ञात है।[3] तथा लोग जो कुछ करें उससे अल्लाह भली-भाँति अवगत है।[4]

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُسَبِّحُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرُ صَافَّاتٍ ۖ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٤١﴾

---

[1]अर्थात संसार में ईमान तथा इस्लाम का प्रकाश सुलभ नहीं होता तथा आख़िरत में भी ईमान वालों को मिलने वाली दिव्य ज्योति से वह वंचित रहेंगे।

[2] صافات का अर्थ है باسطات तथा इसका कर्म कारक أجنحتها लोप है। अपने पंख फैलाये हुए। من في السماوات والأرض में पक्षी भी सम्मिलित थे। परन्तु यहाँ उनका अलग से वर्णन किया, इसलिए कि पक्षी सभी जीवधारी पशुओं में एक महत्वपूर्ण सृष्टि हैं जो अल्लाह के पूर्ण शक्ति से आकाश तथा धरती के मध्य वायुमण्डल में उड़ते हुए अल्लाह की महिमा का वर्णन करती हैं। यह सृष्टि उड़ने की भी शक्ति रखती है जिससे अन्य जीवधारी वंचित हैं तथा धरती पर चलने-फिरने की शक्ति भी रखती है।

[3]अर्थात अल्लाह ने प्रत्येक सृष्टि के मन में यह ज्ञान डाल दिया है कि वह अल्लाह की महिमा का वर्णन किस प्रकार करे। जिसका अर्थ यह है कि यह भाग्य अथवा संयोग की बात नहीं बल्कि आकाश तथा धरती की प्रत्येक वस्तु का अल्लाह की प्रशंसा करना तथा नमाज़ अदा करना यह भी अल्लाह के सामर्थ्य का एक द्योतक है, जिस प्रकार उनकी सृष्टि अल्लाह की एक विचित्र कलाकारी है, जिस पर अल्लाह के अतिरिक्त किसी का सामर्थ्य नहीं।

[4]अर्थात धरती वाले तथा आकाश वाले जिस प्रकार अल्लाह के आदेशों का पालन तथा उसकी प्रंशसा करते हैं, सब उसके ज्ञान में है, यह जैसाकि मनुष्यों तथा जिन्नों को चेतावनी है कि तुम्हें अल्लाह ने बुद्धि तथा विचार की स्वतन्त्रता प्रदान की है, तो तुम्हें अन्य सृष्टि की अपेक्षा अधिक प्रशंसा तथा महिमा का वर्णन तथा उसका आज्ञा पालन करना चाहिए। परन्तु वास्तविकता इसके विपरीत है। अन्य सृष्टि तो अल्लाह की प्रशंसा में संलग्न हैं। परन्तु बुद्धि तथा समझ से सुशोभित सृष्टि इसमें आलस्य कर रही है, जिस पर नि:संदेह वे अल्लाह की पकड़ के अधिकारी होंगे।

The Ummah Technology Mission

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٤٢﴾

(४२) धरती तथा आकाश का राज्य अल्लाह ही का है तथा अल्लाह (तआला) ही की ओर लौटकर जाना है।[1]

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِىْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ۭ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ﴿٤٣﴾

(४३) क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) बादलों को चलाता है, फिर उन्हें मिलाता है, फिर उन्हें तह पर तह कर देता है। फिर आप देखते हैं कि उनके मध्य से वर्षा होती है। वही आकाश की ओर से ओलों के पर्वत से ओले बरसाता है,[2] फिर जिन्हें चाहे उन्हें उनके पास बरसाये तथा जिनसे चाहे उनसे उन्हें हटा दे।[3] बादलों से ही निकलने वाली तड़ित की चमक ऐसी होती है कि जैसे अब आँखों की दृष्टि ले चली।[4]

---

[1]अत: वही मूल स्वामी है जिसके आदेश का कोई पीछा करने वाला नहीं तथा वही सत्य पूज्य है जिसके अतिरिक्त किसी की भी इबादत मान्य नहीं। उसी की ओर सभी को लौटकर जाना है, जहाँ वह प्रत्येक का न्यायपूर्वक निर्णय देगा।

[2]इसका एक अर्थ तो यही है जो अनुवाद में प्रयोग किया गया है कि आकाश में ओलों के पर्वत हैं जिनसे वह ओलों की वर्षा करता है। (इब्ने कसीर) दूसरा अर्थ यह वर्णन किया गया है कि جِبَال "ऊँचाई" के अर्थ में है तथा جِبَال का अर्थ है, बड़े-बड़े टुकड़े पर्वतों जैसे अर्थात अल्लाह तआला आकाश से वर्षा ही नहीं करता बल्कि ऊपर से जब चाहता है तो वर्फ के वड़े-बड़े टुकड़े भी बरसाता है (फ़तहुल क़दीर) अथवा पर्वत जैसे बड़े-बड़े वादलों से ओले वरसाता है।

[3]अर्थात वह ओले तथा वर्षा कृपास्वरूप जिन्हें चाहता है, पहुँचाता है तथा जिन्हें चाहता है उनसे वंचित रखता है। अथवा यह अर्थ है कि ओले की वर्षा के प्रकोप से जिसे चाहता है पीड़ित करता है, जिससे उसकी फसलें नाश तथा खेती बरबाद हो जाती हैं तथा जिन पर अपनी कृपा करना चाहता है उनको उससे बचा लेता है।

[4]अर्थात वादलों में चमकने वाली तड़ित, जो सामान्यत: वर्षा की शुभसूचक होती है उसमें इतनी तीव्र चमक होती है कि वह नेत्रों की दृष्टि समाप्त कर देने के निकट होती हैं। यह भी उसकी कारीगरी का नमूना है।

The Ummah Technology Mission

يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيۡلَ وَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِیۡ ذٰلِكَ لَعِبۡرَةً لِّاُولِی الۡاَبۡصَارِ ﴿۴۴﴾

(४४) अल्लाह तआला ही दिन-रात का उलट-फेर करता रहता है।[1] आँखों वालों के लिए नि:संदेह इसमें बड़ी-बड़ी शिक्षायें हैं।

وَ اللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنۡ مَّآءٍ ۚ فَمِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّمۡشِیۡ عَلٰی بَطۡنِهٖ ۚ وَ مِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّمۡشِیۡ عَلٰی رِجۡلَيۡنِ ۚ وَ مِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّمۡشِیۡ عَلٰۤی اَرۡبَعٍ ؕ يَخۡلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰی كُلِّ شَیۡءٍ قَدِيۡرٌ ﴿۴۵﴾

(४५) सभी के सभी चलने-फिरने वाले जीवधारी को अल्लाह (तआला) ने पानी से पैदा किया है। उनमें से कुछ अपने पेट के बल चलते हैं,[2] कुछ दो पैर के बल चलते है,[3] कुछ चार पैरों पर चलते हैं।[4] अल्लाह (तआला) जो चाहता है पैदा करता है।[5] नि:संदेह अल्लाह (तआला) प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्य रखता है।

لَقَدۡ اَنۡزَلۡنَاۤ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ؕ وَ اللّٰهُ يَهۡدِیۡ مَنۡ يَّشَآءُ اِلٰی صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿۴۶﴾

(४६) नि:संदेह हमने प्रकाशमय तथा खुली आयतें अवतरित की हैं। अल्लाह (तआला) जिसे चाहे सीधा मार्ग दिखा देता है।[6]

---

[1] अर्थात कभी दिन बड़े, रातें छोटी तथा कभी इसके विपरीत अथवा कभी दिन के प्रकाश को बादलों के अंधकार से तथा रात्रि के अंधेरों को चन्द्रमा के प्रकाश से बदल देता है।

[2] जिस प्रकार साँप, मछली तथा अन्य धरती पर चलने वाले कीड़े मकोड़े हैं।

[3] जैसे मनुष्य तथा पक्षी हैं।

[4] जैसे सभी चौपाये तथा अन्य जीव हैं।

[5] यह संकेत इस बात की ओर है कि कुछ जीव ऐसे भी हैं जो चार से भी अधिक पैर रखते हैं, जैसे केकड़े, मकड़ी, खंखजूरा तथा बहुत से धरती के कीड़े।

[6] آيات مبينات से तात्पर्य क़ुरआन करीम है, जिसमें प्रत्येक उस वस्तु का वर्णन है जिसका सम्बन्ध मनुष्य के धर्म तथा व्यवहार से है जिस पर उसकी भलाई तथा सफलता आधारित है।

﴿ مَّا فَرَّطۡنَا فِی الۡكِتٰبِ مِنۡ شَیۡءٍ ﴾

"हमने किताब में किसी चीज़ के वर्णन में कमी नहीं की।" (सूरः *अल-अनआम*-३८)

The Ummah Technology Mission

وَيَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَاۤ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा कहते हैं कि हम अल्लाह (तआला) तथा रसूल पर ईमान लाये तथा आज्ञाकारी हुए, फिर उनमें से एक गुट उसके पश्चात भी मुख मोड़ लेता है। ये ईमानवाले हैं ही नहीं।[1]

وَاِذَا دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा जब ये इस बात की ओर बुलाये जाते हैं कि अल्लाह तथा उसका रसूल (उनके झगड़ों) का निर्णय कर दे, तो भी उनका एक गुट मुख मोड़ने वाला बन जाता है।

وَاِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ يَاْتُوْۤا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ﴿٤٩﴾

(४९) तथा यदि उन्हीं को अधिकार पहुँचता हो तो आज्ञाकारी होकर उसकी ओर चले आते हैं।[2]

اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَمِ ارْتَابُوْۤا اَمْ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ ؕ بَلْ اُولٰٓئِكَ

(५०) क्या उनके दिलों में रोग है ? अथवा ये शंका तथा संदेह में पड़े हुए हैं ? अथवा उन्हें इस बात का भय है कि अल्लाह (तआला) तथा उसका रसूल उनके अधिकारों का हनन न

जिसे मार्गदर्शन सुलभ होता है, अल्लाह तआला उसे उचित दृष्टि तथा सत्य हृदय प्रदान करता है, जिससे उसके मार्गदर्शन का मार्ग खुल जाता है। صراط مستقيم से तात्पर्य यही मार्गदर्शन है जिसमें कोई त्रुटि नहीं, उसे अपना कर मनुष्य अपने लक्ष्य स्वर्ग तक पहुँच जाता है।

[1]यह द्वयवादियों (मुनाफ़िकों) का वर्णन है, जो मुख से इस्लाम का प्रदर्शन करते थे परन्तु हृदय में कुफ़्र तथा ईर्ष्या रखते थे अर्थात 'सत्य विश्वास' से वंचित थे। इसलिए मुख से ईमान के प्रदर्शन के उपरान्त उनके ईमान का इंकार किया गया है।

[2]क्योंकि उन्हें विश्वास होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के न्यायालय से जो निर्णय होगा, उसमें किसी प्रकार. का पक्षपात नहीं होगा, इसलिए वहाँ अपना वाद ले जाने से ही बचते हैं। हाँ, यदि वे जानते हैं कि वे सत्य पर हैं तथा उन्हीं के पक्ष में न्याय होने का पूर्ण विश्वास है, तो फिर प्रसन्नता से वहाँ आते हैं। إذعان का अर्थ होता है स्वीकार तथा आज्ञापालन एवं अधीनता।

The Ummah Technology Mission

कर दें ? बात यह है कि ये लोग स्वयं ही बड़े ज़ालिम हैं।[1]

هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٥٠

(५१) ईमानवालों का कथन तो यह है कि जब उन्हें इसलिए बुलाया जाता है कि अल्लाह तथा उसका रसूल उनमें निर्णय कर दे तो वह कहते हैं कि हमने सुना तथा मान लिया।[2] यही लोग सफल होने वाले हैं।

اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٥١

(५२) तथा जो भी अल्लाह (तआला) तथा उसके रसूल की आज्ञा का पालन करें, अल्लाह का भय रखें तथा (उसकी यातना से) डरते रहें, वही लोग मोक्ष प्राप्त करने वाले हैं।[3]

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ۝٥٢

---

[1]जब निर्णय उनके विरूद्ध होने की संम्भावना होती है तो उससे मुख मोड़ने व बचने का कारण वर्णन किया जा रहा है कि या तो उनके दिलों में कुफ़्र तथा भेद का रोग है अथवा उन्हें मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूअत में संदेह है अथवा उन्हें इस बात की सम्भावना है कि उन पर अल्लाह तथा उनका रसूल अत्याचार करेगा, यद्यपि उनकी ओर से अत्याचार की कोई संभावना ही नहीं। बल्कि वास्तविकता यह है कि वे स्वयं अत्याचारी हैं। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि जब न्याय तथा निर्णय के लिए ऐसे अधिकारी अथवा न्यायाधीश की ओर बुलाया जाये, जो न्याय तथा क़ुरआन एवं सुन्नत का ज्ञानी हो, तो उसके पास जाना अनिवार्य है। परन्तु यदि वह न्यायाधीश किताब एवं सुन्नत के ज्ञान तथा उनके तर्कों से अनभिज्ञ हो तो उसके पास निर्णय के लिए जाना आवश्यक नहीं।

[2]यह काफ़िर तथा द्वयवादी के सापेक्ष ईमान वालों के व्यवहार तथा कर्मों का वर्णन है।

[3]अर्थात भलाई एवं सफलता के अधिकारी केवल वह लोग होंगे जो अपनी सभी समस्याओं में अल्लाह तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निर्णय को प्रसन्न हृदय से स्वीकार करते तथा उन्हीं का अनुपालन करते हैं तथा संयम तथा अल्लाह के डर से युक्त हैं, न कि अन्य लोग जो इन गुणों से वंचित हैं।

The Ummah Technology Mission

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۖ قُلْ لَا تُقْسِمُوا ۖ طَاعَةٌ مَعْرُوفَةٌ ۖ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٥٣﴾

(५३) तथा वे अति दृढ़ता के साथ अल्लाह (तआला) की सौगन्ध खा-खाकर कहते हैं[1] कि आप का आदेश होते ही निकल खड़े होंगे। कह दीजिए कि बस सौगन्ध न खाओ, तुम्हारे आज्ञापालन (की वास्तविकता) विदित है।[2] जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह (तआला) उससे परिचित है।[3]

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۖ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَا حُمِّلْتُمْ ۖ وَإِنْ تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ۚ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٥٤﴾

(५४) कह दीजिए कि अल्लाह (तआला) के आदेश का पालन करो, रसूल का अनुकरण करो, फिर भी यदि तुमने मुख मोड़ा तो रसूल का कर्तव्य तो केवल वही है, जो उस पर अनिवार्य कर दिया गया है।[4] तथा तुम पर उस का उत्तरदायित्व है जो तुम पर रखा गया

---

[1] جهد أيمانهم में جهد लुप्त क्रिया का धातु है, जो बल देने के लिए है अथवा यह दशावाची है इसलिए उसे के ऊपर 'अ' की मात्रा है अर्थात مجتهدين في أيمانهم। अर्थ यह है कि अपनी शक्ति भर सौगन्ध खाकर कहते हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[2] तथा वह यह है कि जिस प्रकार की तुम झूठी सौगन्ध खाते हो तुम्हारा आज्ञापालन भी द्वयवादिता पर आधारित है। कुछ ने यह अर्थ किये हैं कि तुम्हारा मामला तो आज्ञापालन होना चाहिए। अर्थात सत्कर्म में बिना किसी प्रकार की सौगन्ध के आज्ञाकारिता जिस प्रकार से मुसलमान करते हैं, अतः तुम भी उनके समान हो जाओ। (इब्ने कसीर)

[3] अर्थात वह तुम्हारे सब की स्थितियों से परिचित है। कौन आज्ञाकारी है तथा कौन अवज्ञाकारी ? अतः सौगन्ध खाकर आज्ञाकारिता का प्रदर्शन करने से, जबकि तुम्हारे दिल में उसके विरूद्ध लक्ष्य हो, तुम अल्लाह को धोखा नहीं दे सकते, इसलिए कि वह गुप्त से गुप्त वात को भी जानता है तथा वह तुम्हारे दिलों में पलने वाली गुप्त बातों से भी परिचित है, चाहे तुम अपने मुख से उसके विरूद्ध प्रदर्शन करो।

[4] अर्थात आदेश पहुँचाने तथा धर्म के आमन्त्रण का कर्तव्य जो वह अदा कर रहा है।

The Ummah Technology Mission

है,[1] मार्गदर्शन तो तुम्हें उसी समय मिलेगा जब रसूल की आधीनता स्वीकार करोगे,[2] (सुनो,) रसूल का कर्तव्य केवल साफ-साफ पहुँचा देना है।[3]

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ

(५५) तुम में से जो ईमान लाये हैं तथा पुण्य का कार्य किया है अल्लाह (तआला) वादा कर चुका है कि उन्हें राज्य (धरती) का अधिकारी बनायेगा, जैसाकि उन लोगों को अधिकारी बनाया था जो उनसे पूर्व थे तथा नि:संदेह उनके लिए उनके इस धर्म को सुदृढ़ता के साथ स्थापित कर देगा जिसे उनके लिए वह पसन्द कर चुका है तथा उनके इस डर एवं भय को शान्ति व अमन में परिवर्तित कर देगा,[4] वे मेरी

---

[1]अर्थात उसके आमन्त्रण को स्वीकार करके अल्लाह तथा उसके रसूल पर ईमान लाना तथा उनका पालन करना।

[2]इसलिए कि वह सीधे मार्ग की ओर आमन्त्रण देता है।

[3]कोई उसके आमन्त्रण को स्वीकार करे या न करे, जिस प्रकार अन्य स्थान पर फ़रमाया,

﴿ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴾

"हे पैग़म्बर ! तेरा कार्य केवल (हमारे आदेश) पहुँचा देना है (कोई स्वीकार करे अथवा न करे) यह हिसाब हमारा काम है।" (सूरः अल्-रअ्द-४०)

[4]कुछ ने इस अल्लाह के वादे को सहाबा कराम के साथ अथवा ख़ुलफ़ाये राशदीन के साथ विशेष रूप से सम्बन्धित किया है, परन्तु इसकी इस विशेषता का कोई प्रमाण नहीं है। क़ुरआन के शब्द सामान्य हैं तथा ईमान तथा पुण्य कार्य के साथ प्रतिबन्धित हैं। परन्तु यह बात अवश्य है कि ख़िलाफते राशिदा के काल में तथा पुण्य काल में, यह अल्लाह का वादा प्रकट हुआ, अल्लाह तआला ने मुसलमानों को धरती पर प्रभावशाली बनाया, अपने प्रिय धर्म इस्लाम को उन्नति प्रदान की तथा मुसलमानों के भय को शान्ति में परिवर्तित कर दिया। पहले मुसलमान अरब के काफ़िरों से भयभीत होते थे, फिर उसके विपरीत मामला हो गया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी जो भविष्यवाणी

The Ummah Technology Mission

بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝

इबादत करेंगे, मेरे साथ किसी को सम्मिलित नहीं करेंगे।[1] उस के पश्चात भी जो लोग कृतघ्नता करें तथा कुफ्र करें तो वे नि:संदेह अवज्ञाकारी हैं।[2]

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ

(५६) तथा नमाज़ स्थापित करो, ज़कात अदा करो तथा अल्लाह (तआला) के रसूल के

की थी, वे भी इसी काल में पूरी हो गयीं। जैसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि हिर:(यमन में एक स्थान) नामक स्थान से एक स्त्री अकेली चलेगी तथा '*बैतुल्लाह*' की आकर परिक्रमा करेगी, उसे कोई भय अथवा ख़तरा नहीं होगा। किसरा के कोष तुम्हारे चरणों में ढेर हो जायेंगे। अत: ऐसा ही हुआ। (सहीह बुख़ारी किताबुल मनाक़िब बाबु अलामाति नबुअते फ़िल इस्लाम) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भी फरमाया :

«إِنَّ اللهَ زَوَى لِيَ الأَرْضَ، فَرَأَيتُ مَشَارِقَهَا وَمَغَارِبَهَا، وإِنَّ أُمَّتِي سَيَبْلُغُ مُلْكُهَا مَا زَوَىٰ لِي مِنْهَا».

"अल्लाह तआला ने धरती को मेरे लिए संकुचित कर दिया, अन्तत: मैंने उसके पूर्वी तथा पश्चिमी क्षेत्र देखे, निकट ही मेरे अनुयायी का प्रभाव-क्षेत्र वहाँ तक पहुँचेगा, जहाँ तक धरती मेरे लिए संकुचित की गयी।"(सहीह मुस्लिम किताबुल फ़ेतन व अशराति स्साअते बाब हलाके हाज़िहिल उम्मते बआज़हुम बिबाअज़िन)

राज्य की यह विशालता भी मुसलमानों के भाग में आयी तथा ईरान, सीरिया, मिस्र, अफ़्रीका तथा अन्य दूरस्थ देश विजित हुये तथा कुफ्र तथा मूर्तिपूजा के स्थान पर एकेश्वरवाद तथा सुन्नत के दीप प्रकाशित हुए। तथा इस्लामी संस्कृति का झंडा दुनिया के कोने-कोने में फ़हराने लगा। परन्तु यह वादा प्रतिबन्धित था, जब मुसलमान ईमान में क्षीण तथा पुण्य के कार्य करने में आलस्य करने लगे, तो अल्लाह ने उनके सम्मान को अपमान में, उनके विजय को पराजय तथा उनके प्रभुत्व को दासता में तथा उनकी शान्ति तथा स्थिरता को भय तथा आतंक में परिवर्तित कर दिया।

[1]यह भी ईमान तथा पुण्य के कर्म करने के साथ एक अन्य आधार भूत अनुबन्ध है जिसके कारण मुसलमान अल्लाह की सहायता के अधिकारी तथा एकेश्वरवाद के गुण से शून्य होने के पश्चात वह अल्लाह की सहायता से वंचित हो जायेंगे।

[2]इस कुफ्र से तात्पर्य वही ईमान, पुण्य के कर्म तथा एकेश्वरवाद से वंचित होना है, जिसके पश्चात एक मनुष्य अल्लाह की आज्ञाकारिता से निकल जाता तथा कुफ्र एवम् भ्रष्टाचार में प्रवेश कर जाता है।

The Ummah Technology Mission

وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٥٦﴾

अनुसरण में लगे रहो ताकि तुम पर दया की जाये।[1]

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ وَلَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٥٧﴾ ع

(५७) यह विचार आप कदापि न करना कि अवज्ञाकारी लोग धरती पर (इधर-उधर फैल कर) हमें पराजित कर देनें वाले हैं[2] उनका मूल ठिकाना तो नरक है, जो नि:संदेह बहुत बुरा ठिकाना है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ۭ مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَمِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَاۗءِ ۭ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ۭ

(५८) हे ईमानवालो ! तुमसे तुम्हारे स्वामित्व के दासों को तथा उन्हें भी जो तुम में से वयस्क अवस्था को न पहुँचें हों (अपने आने के) तीन समयों में आज्ञा प्राप्त करना आवश्यक है। फ़ज्र की नमाज़ से पूर्व तथा ज़ोहर (मध्यान्ह) के समय जब तुम अपने वस्त्र उतारे रखते हो तथा एशा (रात्रि) की नमाज़ के पश्चात[3] ये तीनो समय तुम्हारे (एकान्त) एवं पर्दे के हैं।[4]

---

[1]यह जैसाकि मुसलमानों को बल देकर कहा गया कि अल्लाह की कृपा तथा सहायता प्राप्त करने का साधन यही है जिस पर चलकर सहाबा कराम को यह कृपा तथा सहायता प्राप्त हुई।

[2]अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरोधी तथा झूठे लोग अल्लाह को बाध्य नहीं कर सकते, बल्कि अल्लाह तआला उनकी पकड़ करने का पूर्ण सामर्थ्य रखता है।

[3]दासों से तात्पर्य दास-दासियाँ दोनों हैं। ثلاث مرات का अर्थ तीन समय हैं। यह तीन समय ऐसे हैं कि मनुष्य अपनी पत्नी के साथ घर में विशेष रूप से रहता अथवा ऐसे वस्त्र में हो सकता है कि जिसमें किसी अन्य का देखना उचित नहीं। इसलिए इन तीन समयों में घर के सेवकों को इस बात की आज्ञा नहीं है कि वह बिना आज्ञा प्राप्त किये घर में प्रवेश करें।

[4] عورات बहुवचन है عورة का, जिसका वास्तविक अर्थ विघ्न तथा दोष के हैं। फिर इसका प्रयोग ऐसी वस्तु पर किया जाने लगा जिसका प्रदर्शित करना तथा देखना प्रिय न हो। स्त्री को भी इसी लिए औरत कहा जाता है कि उसका प्रदर्शन तथा नग्न होना तथा देखना धार्मिक नियमानुसार अप्रिय है। यहाँ वर्णित तीन समयों को औरात कहा गया है

The Ummah Technology Mission

لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَهُنَّ ۚ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۚ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٨﴾

इन समयों के अतिरिक्त न तो तुम पर कोई पाप है न उन पर।[1] तुम सब आपस में अधिकतर एक-दूसरे के पास आने-जाने वाले हो (ही,)[2] अल्लाह इस प्रकार खोल-खोलकर अपने आदेश तुम से वर्णन कर रहा है। और अल्लाह (तआला) ज्ञानी तथा गुणज्ञ है।

وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا كَمَا اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٩﴾

(५९) तथा तुम में से जो बच्चे वयस्क अवस्था को पहुँच जायें तो जिस प्रकार उनसे पूर्व के (बड़े) लोग आज्ञा माँगते हैं, उन्हें भी आज्ञा माँग कर आना चाहिए।[3] अल्लाह (तआला) तुमसे इसी प्रकार अपनी आयतों का वर्णन करता है। अल्लाह (तआला) ही ज्ञानी तथा मर्मज्ञ है।

अर्थात ये तुम्हारे पर्दे तथा एकान्त के समय हैं, जिनमें तुम अपने विशेष वस्त्रों तथा शारीरिक प्रदर्शन को प्रिय नहीं समझते हो।

[1]अर्थात इन वर्णित तीन समयों के अतिरिक्त घर के सेवकों को आज्ञा है कि वह आज्ञा प्राप्त किये बिना घर के अन्दर आ-जा सकते हैं।

[2]यह वही कारण है जो हदीस में बिल्ली के पवित्र होने की बताई गई है। «إِنَّهَا لَيْسَتْ بِنَجَسٍ؛ إِنَّهَا مِنَ الطَّوَّافِينَ عَلَيْكُمْ - أَوِ الطَّوَّافَاتِ -». "बिल्ली अपवित्र नहीं है इसलिए कि वह अधिकतर तुम्हारे निकट (घर के अन्दर) आने जाने वाली है।"(अबू दाऊद किताबुत तहारत बाब सूरूल हिर्र: तिर्मिज़ी किताब व बाँब मज़ूकर वग़ैरह) सेवक तथा स्वामी को भी हर समय मिलने की आवश्यकता रहती है, इसी सामान्य आवश्यकता के कारण अल्लाह तआला ने यह आज्ञा प्रदान की, क्योंकि वह सभी बातें जानने वाला है, लोगों की आवश्यकताओं एवं कष्टों को जानता है तथा गुणज्ञ है, उसके प्रत्येक आदेश में भक्तों के लिए लाभ तथा हित हैं।

[3]इन बालकों से तात्पर्य स्वतन्त्र बालक हैं, वयस्कता के पश्चात आज्ञा लेनें में वह साधारण पुरूषों जैसा है, इसलिए उनके लिए आवश्यक है कि जब भी किसी के घर में प्रवेश करें तो प्रथम आज्ञा प्राप्त करें।

The Ummah Technology Mission

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍۭ بِزِيْنَةٍ ؕ وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٦٠﴾

(६०) तथा बड़ी बूढ़ी स्त्रियाँ जिन्हें विवाह की आशा (तथा इच्छा) ही न रही हो वह यदि अपने वस्त्र (पर्दे के लिए प्रयोग किये गये) उतार रखें तो उन पर कोई दोष नहीं, यदि वह अपनी शोभा दिखाने वाली न हों।[1] परन्तु उन से भी बची रहें तो उनके लिए अति श्रेष्ठ है।[2] और अल्लाह (तआला) सुनता तथा जानता है।

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ وَّلَا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَنْ تَاْكُلُوْا مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآئِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اُمَّهٰتِكُمْ

(६१) अंधे पर, लंगड़े पर, रोगी पर तथा स्वयं तुम पर कदापि कोई विघ्न नहीं कि तुम अपने घरों से खालो अथवा अपने पिताओं के घरों से अथवा अपनी माताओं के घरों से, अथवा अपने भाईयों के घरों से, अथवा अपनी बहनों के घरों से, अथवा अपने चाचाओं के घरों से,[3] अथवा अपनी बुआओं के घरों से,

---

[1]इनसे तात्पर्य बूढ़ी स्त्रियाँ तथा बाँझ स्त्रियाँ हैं जिनका मासिक धर्म आना बन्द हो गया हो तथा सन्तानोत्पत्ति के योग्य न रह गयी हों। इस आयु में साधारणत: स्त्री के अन्दर पुरूष की ओर कामभावना की प्राकृतिक इच्छा समाप्त हो चुकी होती है, न वह किसी पुरूष से विवाह की इच्छा रखती है तथा न ही कोई पुरूष इस भावना से उनकी ओर आकर्षित होता है। ऐसी स्त्रियों को पर्दे में कमी के लिए आज्ञा दे दी गयी है "वस्त्र उतारे दें" से वह वस्त्र अभिप्राय है जो शलवार कमीज़ के ऊपर स्त्री पर्दे के लिए बड़ी चादर अथवा नक़ाब आदि के रूप में प्रयोग करती हैं, यदि उनका उद्देश्य अपना सौन्दर्य प्रसाधन तथा आभूषणों का प्रदर्शन न हो। इसका अर्थ यह है कि कोई भी स्त्री अपनी कामभावना के समाप्त हो जाने के उपरान्त यदि बनाओ सिंगार के द्वारा अपनी कामवासना प्रदर्शित करने की रोगी हो, तो वह इस पर्दे की कमी के आदेश से वंचित है तथा उसके लिए पूर्ण पर्दा करना आवश्यक है।

[2]अर्थात वर्णित बूढ़ी स्त्रियाँ भी पर्दे में कमी न करें, बल्कि नियमित रूप से बड़ी चादर अथवा नक़ाब भी प्रयोग करती रहें, तो यह उनके लिए श्रेष्ठ है।

[3]इसका एक अर्थ यह वर्णित किया गया है कि धर्मयुद्ध में जाते समय सहाबा कराम आयत में वर्णित लाचारों को अपने घरों की चाबियाँ दे जाते थे तथा उन्हें घर की

The Ummah Technology Mission

أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَّاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخْوَالِكُمْ أَوْ بُيُوتِ خَالَاتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَفَاتِحَهُ أَوْ صَدِيقِكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا

अथवा अपने मामाओं के घरों से अथवा अपनी मौसियों के घरों से अथवा उन घरों से जिन की चाभियों के स्वामी तुम हो अथवा अपने मित्रों[1] के घरों से। तुम पर इसमें भी कोई पाप नहीं कि तुम सब साथ बैठकर खाना खाओ अथवा अलग-अलग।[2] पर जब तुम

सामग्री खाने-पीने की आज्ञा देकर जाते थे। परन्तु यह लाचार सहाबा इसके उपरान्त स्वामियों की अनुपस्थिति में, वहाँ से खाना-पीना उचित नहीं समझते थे, अल्लाह ने फ़रमाया कि उपरोक्त लोगों के लिए अपने सगे सम्बन्धियों के घरों से अथवा जिन घरों की चाबियाँ उनके पास हैं, उनसे खाने-पीने में कोई बाधा (पाप) नहीं है। तथा कुछ ने इसका अर्थ यह वर्णन किया है कि स्वस्थ सहाबा लाचार सहाबा के साथ इसलिए खाना प्रिय नहीं समझते थे कि वे लाचारी के कारण कम खायेंगे तथा ये अधिक खा लेंगे, इसलिए खाने में उनके साथ अत्याचार न हो जाये। इसी प्रकार स्वयं लाचार सहाबा भी स्वस्थ सहाबा के साथ भोजन करना प्रिय नहीं समझते थे कि लोग उनके साथ भोजन करने में घृणा का आभास न करें। अल्लाह तआला ने दोनों के लिए स्पष्टीकरण कर दिया कि इसमें कोई पाप वाली बात नहीं है।

[1]जैसाकि कुछ आलिमों ने (धर्मज्ञों) ने स्पष्ट रूप से वर्णन किया है कि इससे वह सामान्य प्रकार का भोजन तात्पर्य है जिनके खाने से किसी को बोझ का आभास नहीं होता। परन्तु ऐसी स्वादिष्ट वस्तुएं जो स्वामियों ने विशेष रूप से अलग छिपाकर रखी हो, ताकि उसपर किसी की दृष्टि न पड़े, इसी प्रकार भण्डार की हुई वस्तुयें, इनका खाना तथा इनका प्रयोग में लाना उचित नहीं। (ऐसरूत्तफ़ासीर) इसी प्रकार यहाँ पुत्रों के घरों का वर्णन नहीं किया गया, इसका कारण यह है कि पुत्रों के घर उस व्यक्ति के अपने ही घर हैं, जिस प्रकार हदीस में है «أَنْتَ وَمَالُكَ لأَبِيكَ». (इब्ने माजा संख्या २२९१, मुसनद अहमद भाग २, पृष्ठ १७९, २०४ तथा २१४) "तू तथा तेरा धन तेरे पिता का है।" अन्य हदीस में है। ولد الرجل من كسبه (इब्ने माजा संख्या २१३७, अबू दाऊद संख्या ३५२८ तथा अलबानी ने इसे सही कहा है) "मनुष्य की सन्तान, उसकी कमाई में से है।"

[2]इसमें एक अन्य संकीर्णता का निवारण किया गया है। कुछ लोग अकेले भोजन करना प्रिय नहीं समझते थे तथा किसी को साथ बिठाकर भोजन करना आवश्यक समझते थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, एकत्रित होकर खा लो अथवा अलग-अलग दोनों प्रकार से मान्य है, पाप किसी में नहीं। परन्तु एकत्रित होकर खाना अधिक शुभ का कारण है, जैसाकि कुछ हदीसों से विदित होता है। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا ۚ فَإِذَا دَخَلْتُم بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِندِ اللَّهِ مُبَارَكَةً طَيِّبَةً ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٦١﴾

घरों में जाने लगो तो अपने घर वालों को सलाम कर लिया करो, [1] शुभकामना है जो मंगलमय तथा पवित्र अल्लाह की ओर से अवतरित है, इसी प्रकार अल्लाह (तआला) खोल-खोल कर अपने आदेशों का वर्णन कर रहा है ताकि तुम समझ लो।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَن لِّمَن شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٢﴾

(६२) ईमानवाले लोग तो वही हैं जो अल्लाह (तआला) पर तथा उसके रसूल पर विश्वास करते हैं तथा जब ऐसी समस्या में जिसमें लोगों के एकत्रित होने की आवश्यकता होती है नबी के साथ होते हैं, तो जब तक आपसे आज्ञा न प्राप्त कर लें कहीं नहीं जाते। जो लोग (ऐसे अवसर पर) आप से आज्ञा ले लेते हैं, वास्तव में वह यही हैं जो अल्लाह (तआला) पर तथा उसके रसूल पर ईमान ला चुके हैं।[2] तो ऐसे लोग जब आप से अपने किसी कार्य के लिए आज्ञा माँगें, तो आप उनमें से जिसे चाहें आज्ञा दें तथा उनके लिए अल्लाह से मोक्ष की

---

[1] इसमें अपने घरों में प्रवेश करने के शिष्टाचार का वर्णन है तथा वह यह है कि प्रवेश करते समय घर वालों को सलाम (अभिवादन) करो, मनुष्य के लिए अपनी पत्नी तथा सन्तान को सलाम करने में सामान्यतया कठिनाई प्रतीत होती है। परन्तु ईमान वालों के लिए आवश्यक है कि वे अल्लाह के आदेश के अनुसार ऐसा करें। अपनी पत्नी तथा सन्तान को सुरक्षा की दुआ से क्यों वंचित रखा जाये।

[2] अर्थात शुक्रवार अथवा ईदों (ईदुल फित्र तथा ईदुल अज़हा) के सम्मेलन में अथवा आन्तरिक तथा बाह्य समस्या पर विचार करने के लिए बुलायी गयी सभा में ईमानवाले तो उपस्थिति होते हैं, इसी प्रकार यदि वे सम्मिलित होने योग्य नहीं होते हैं तो आज्ञा प्राप्त करते हैं। जिसका अर्थ दूसरे शब्दों में यह हुआ कि द्वयवादी ऐसे सम्मेलन में सम्मिलित होने से तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अनुमति लेने से बचते हैं।

The Ummah Technology Mission

प्रार्थना करें, नि:संदेह अल्लाह (तआला) क्षमा करने वाला कृपालु है।

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ؕ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖۤ اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾

(६३) तुम (अल्लाह के) नबी के बुलावे को ऐसा साधारण बुलावा न समझो जैसा आपस में एक का दूसरे को होता है।[1] तुम में से उन्हें अल्लाह भली-भाँति जानता है जो आँख बचा कर चुपके से निकल जाते हैं।[2] (सुनो,) जो लोग रसूल के आदेश का विरोध करते हैं उन्हें डरते रहना चाहिए कि कहीं उन पर कोई अत्यन्त घोर दुर्घटना न आ पड़े[3] अथवा उन्हें कोई दुख की मार न पड़े।

---

[1]इसका एक अर्थ तो यह है कि जिस प्रकार तुम एक-दूसरे को नाम लेकर पुकारते हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उस प्रकार मत पुकारो। जैसे हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नहीं बल्कि हे रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हे नबी अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आदि कहो (यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन काल के लिए था, जब सहाबा कराम को आवश्यकता होती थी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ध्यान आकर्षित करें)। अन्य अर्थ यह हैं कि रसूल के शाप को अन्यों की शाप की भाँति न समझो, इसलिए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ स्वीकार होती है। इसलिए नबी का शाप न लो, तुम नाश हो जाओगे।

[2]यह द्वयवादियों का व्यवहार होता था कि विचार समिति से चुपके से खिसक जाते थे।

[3]इस आपदा से तात्पर्य दिलों का वह टेढ़ापन है, जो मनुष्य को ईमान से वंचित करता है। यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों की अवहेलना तथा उनके विरोध का परिणाम है। तथा ईमान से वंचित होकर कुफ़्र पर अंत, नरक की स्थाई यातना का कारण बनता है, जैसाकि आयत के अगले वाक्य में फ़रमाया। अत: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आचरण तथा सुन्नत (चरित्र) को हर समय सामने रखना चाहिए। इसलिए जो कथनी तथा करनी उसके अनुसार होगी वही अल्लाह के दरबार में स्वीकार तथा शेष सभी अस्वीकार होंगी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है «مَنْ عَمِلَ عَمَلًا لَيْسَ عَلَيْهِ أَمْرُنَا، فَهُوَ رَدٌّ» "जिसने ऐसा कार्य किया जो हमारे आदेश अनुरूप नहीं है, वह बेकार है।" (अल-बुख़ारी किताबुस्सुलह बाँब इज़ा स्तलहू अला सुलहे जौरिन तथा मुस्लिम किताबुल अकज़िया बाब नक़ज़िल अहकामिल बातिल: व रद्दि मुहदसातिल उमूर वस्सुनन)

The Ummah Technology Mission

(६४) सतर्क हो जाओ कि आकाश तथा धरती पर जो कुछ है सब अल्लाह (तआला) का ही है,[1] जिस मार्ग पर तुम लोग हो वह उसे भली-भाँति जानता है[2] तथा जिस दिन यह सब उसी की ओर लौटाये जायेंगे, उस दिन उनको उनके किये हुए से वह अवगत करा देगा। तथा अल्लाह (तआला) सब कुछ जानने वाला है।

أَلَآ إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ ۖ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٤﴾

सूरतुल फ़ुरक़ान-२५

سُورَةُ الْفُرْقَانِ

सूरः फ़ुरक़ान मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें सतहत्तर आयतें तथा छः रूकूअ हैं।

अल्लाह अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु के नाम से प्रारम्भ करता हूँ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

(१) अत्यन्त शुभ है वह (अल्लाह तआला) जिस ने अपने भक्त पर फ़ुरक़ान[3] अवतरित

تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَىٰ

---

[1]उत्पत्ति के आधार पर भी, स्वामित्व के आधार पर भी, तथा अधीनता के आधार पर भी। वह जिस प्रकार चाहे प्रयोग में लाये तथा जिस वस्तु को चाहे आदेश दे। अतः उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मामले में अल्लाह से डरते रहना चाहिए, जिसकी माँग यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के किसी भी आदेश की अवहेलना नहीं करनी चाहिए तथा जिससे उसने रोक दिया है, उसे नहीं करना चाहिए। इसलिए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अवतरण किये जाने का उद्देश्य ही यह है कि उसका आज्ञापालन किया जाये।

[2]यह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरोधियों को चेतावनी है कि जो कुछ तुम कर रहे हो, यह न समझो कि वह अल्लाह से छिपा रह सकता है। उसके ज्ञान में सभी कुछ है तथा वह उसके अनुसार क़ियामत के दिन प्रतिफल तथा दण्ड देगा।

[3]फ़ुरक़ान का अर्थ है सत्य तथा असत्य, एकेश्वरवाद-अनेकेश्वरवाद एवं न्याय-अन्याय के मध्य अन्तर करने वाला, इस क़ुरआन ने खोलकर इन बातों को स्पष्ट कर दिया है, इसलिए इसे *फ़ुरक़ान* कहा गया है।

The Ummah Technology Mission

عَبْدِهِۦ لِيَكُونَ لِلْعَٰلَمِينَ نَذِيرًا ۝١

किया ताकि वह सभी लोगों के लिए[1] सतर्क करने वाला बन जाये।

ٱلَّذِى لَهُۥ مُلْكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُن لَّهُۥ شَرِيكٌ فِى ٱلْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَىْءٍ

(२) उसी अल्लाह का अधिपत्य है आकाशों तथा धरती पर,[2] तथा वह कोई सन्तान नहीं रखता,[3] न उसके राज्य में उसका कोई साझीदार है,[4] तथा प्रत्येक वस्तु को उसने पैदा करके एक

---

[1]इससे भी विदित हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूअत विश्वव्यापी है तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सभी मानव तथा दानव के लिए पथप्रदर्शक तथा मार्गदर्शन बनाकर भेजे गये जिस प्रकार अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ قُلْ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنِّى رَسُولُ ٱللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا ﴾

"आप कह दें कि ऐ लोगो, मैं तुम सभी की ओर अल्लाह का संदेशवाहक हूँ।" *(सूरः अल-आराफ़-१५८)*

और एक हदीस में भी फ़रमाया :

بُعثت إلى الأحمر و الأسود

"मुझे लालवर्ण तथा काले वर्ण सभी की ओर नबी बनाकर भेजा गया।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद)

«كَانَ النَّبِيُّ يُبْعَثُ إِلَىٰ قَوْمِهِ خَاصَّةً، وَبُعِثْتُ إِلَى النَّاسِ عَامَّةً».

"पूर्व में नबी किसी एक समुदाय की ओर भेजे जाते थे तथा मैं सभी लोगों की ओर नबी बनाकर भेजा गया हूँ।" (सहीह बुख़ारी किताबुत तयम्मुम तथा मुस्लिम किताबुल मसाजिद)

रिसालत तथा नबूअत के पश्चात, एकेश्वरवाद का वर्णन किया जा रहा है। यहाँ अल्लाह के चार गुणों का वर्णन है।

[2]यह पहला गुण है अर्थात सृष्टि में अधिकृत मात्र वही है, कोई अन्य नहीं।

[3]इसमें इसाई, यहूदी तथा कुछ उन अरब जातियों का खण्डन है जो फ़रिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ कहते थे।

[4]इसमें मूर्तिपूजक, मिश्रणवादियों तथा दो देवताओं (भलाई-बुराई, अंधकार तथा प्रकाश के स्रष्टा) में विश्वास रखनेवालों का खण्डन है।

The Ummah Technology Mission

निर्धारित रूप दे दिया है।[1]

فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ۝٢

(३) तथा उन लोगों ने अल्लाह के अतिरिक्त जिन्हें अपने देवता (पूज्य) बना रखे हैं, वे किसी वस्तु को पैदा नहीं कर सकते बल्कि वे स्वयं (किसी के द्वारा) रचित किये जाते हैं, यह स्वयं अपने लाभ-हानि का अधिकार नहीं रखते तथा न जीवन-मृत्यु का। तथा न पुनः जी उठने के वे अधिकारी हैं।[2]

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ۝٣

(४) तथा काफ़िरों ने कहा यह तो मात्र उसका स्वयं बनाया झूठ है, जिस पर अन्य लोगों ने भी उसकी सहायता की है,[3] वास्तव में यह काफ़िर बड़े ही अत्याचार तथा निरे झूठ के कर्ता हुए हैं।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ ِۨافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚ فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ۚ ۝٤

---

[1]प्रत्येक वस्तु का स्रष्टा केवल वही है तथा अपनी नीति तथा इच्छानुसार उसने अपनी सृष्टि को प्रत्येक वह वस्तु भी सुलभ की है, जो उसके लिए उचित है अथवा प्रत्येक वस्तु की मृत्यु तथा जीविका उसने प्रारम्भ से ही निर्धारित कर दी है।

[2]परन्तु अत्याचारियों ने ऐसे गुणों से सुशोभित प्रभु को छोड़ कर ऐसे लोगों को पूज्य बना लिया है, जो अपने विषय में भी किसी भलाई की शक्ति नहीं रखते, कहाँ यह कि दूसरों के लिए कुछ कर सकने की शक्ति रखते हों। इसके पश्चात नबूअत को अस्वीकार करने वालों के संदेह का खण्डन किया जा रहा है।

[3]मूर्तिपूजक कहते थे कि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यह किताब गढ़ने में यहूदियों अथवा उनके कुछ स्वतन्त्र किये हुए दास (जैसे अबू फकिहा यसार, अदांस तथा जबर आदि) से सहायता ली है। जैसाकि सूरः *अन-नहल*-१०३ में इसका आवश्यक विवरण गुज़र चुका है। यहाँ क़ुरआन ने इस आरोप को अत्याचार तथा झूठा बताया है। भला एक अनपढ़ व्यक्ति दूसरों की सहायता से ऐसी किताब प्रस्तुत कर सकता है जो स्वच्छता तथा भाषा शैली एवं चमत्कारी वाक्य रचना में अनुपम हो। वास्तविकता तथा आत्मज्ञान के वर्णन में भी अद्वितीय, मनुष्य के जीवन के लिए आवश्यक आदेश एवं नियम के विस्तृत वर्णन में भी निरूत्तर हो तथा भूत की सूचनाएं तथा भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का पता देने तथा वर्णन करने में भी उसकी सत्यता निर्विवाद हो।

The Ummah Technology Mission

وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝٥

(५) तथा यह भी कहा कि यह तो पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं जो उसने लिख रखी हैं, बस वही प्रात: संध्या उसके समक्ष पढ़ी जाती हैं।

قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٦

(६) कह दीजिए कि इसे तो उस अल्लाह ने अवतरित किया है जो आकाश तथा धरती की सभी गुप्त बातों को जानता है।[1] नि:संदेह वह अत्यन्त क्षमाशील तथा दयालु है।[2]

وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ ۭ لَوْلَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ۝٧

(७) तथा उन्होंने कहा कि यह कैसा रसूल है कि भोजन करता है, तथा बाज़ारों में चलता फिरता है[3] उसके पास, कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेजा जाता कि वह भी उसके साथ होकर डराने वाला बन जाता ?[4]

---

[1]यह उनके झूठ तथा आक्षेप के उत्तर में कहा कि क़ुरआन को तो देखो, इसमें क्या है ? क्या इसमें त्रुटि की असत्य बात है ? नि:संदेह नहीं है। अपितु प्रत्येक बात सही तथा सत्य है, इसलिए कि इसको उतारने वाला वह है जो धरती तथा आकाश की प्रत्येक गुप्त बात को जानता है।

[2]इसलिए वह क्षमा तथा अनदेखी से काम लेता है। वरन् उनका क़ुरआन बनाने का आरोप अत्यन्त गंभीर है, जिसके कारण तुरन्त ही अल्लाह के प्रकोप की पकड़ में आ सकते हैं।

[3]क़ुरआन पर आरोप के पश्चात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आरोप लगाया जा रहा है तथा यह आरोप रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मानव प्रकृति पर है। क्योंकि उनके विचार से मानव प्रकृति रिसालत की महानता के योग्य नहीं। इसलिए उन्होंने कहा कि यह तो खाता-पीता तथा बाज़ारों में आता-जाता है तथा हमारे जैसे ही मानव है, जबकि रसूल को मनुष्य नहीं होना चाहिए।

[4]उपरोक्त वर्णित आपत्ति से नीचे उतर कर कहा जा रहा है कि चलो कुछ और नहीं तो एक फ़रिश्ता ही उसके साथ हो जो उसका सहायक तथा पुष्टि करने वाला हो।

The Ummah Technology Mission

أَوْ يُلْقَىٰٓ إِلَيْهِ كَنزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُۥ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا ۚ وَقَالَ الظَّٰلِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ﴿٨﴾

(८) अथवा उसके पास कोई कोष ही डाल दिया जाता[1] अथवा उसका कोई बाग़ ही होता जिसमें से यह खाता।[2] तथा उन अत्याचारियों ने कहा कि तुम तो ऐसे मनुष्य के पीछे हो लिये जिस पर जादू कर दिया गया है।[3]

ٱنظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا۟ لَكَ ٱلْأَمْثَالَ فَضَلُّوا۟ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٩﴾

(९) तनिक सोचिए तो ! ये लोग आपसे सम्बन्धित कैसी-कैसी बाते करते हैं, कि जिससे स्वयं ही विचलित हो रहे हैं तथा किसी प्रकार से भी मार्ग पर नहीं आ सकते।[4]

تَبَارَكَ ٱلَّذِىٓ إِن شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّن ذَٰلِكَ جَنَّٰتٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ وَيَجْعَل لَّكَ قُصُورًۢا ﴿١٠﴾

(१०) अल्लाह (तआला) तो ऐसा शुभकारी है कि चाहे तो आपको बहुत से ऐसे बाग़ प्रदान कर दे, जो उनके कहे हुए बाग़ों से अति उत्तम हों, जिनके नीचे नदियाँ लहरें मार रही हों तथा आपको बहुत से पक्के महल भी प्रदान कर दे।[5]

---

[1]ताकि जीवन साधन की आवश्यकताओं से निश्चिन्त होता।

[2]ताकि उसका महत्व हमसे कुछ श्रेष्ठ हो जाता।

[3]अर्थात जिसकी बुद्धि तथा समझ जादू से प्रभावित तथा विकृत है।

[4]अर्थात हे पैग़म्बर ! आप के सम्बन्ध में यह इस प्रकार की बातें तथा आक्षेप आरोपित करते हैं, कभी जादूगर कहते हैं, कभी जादू से पीड़ित तथा पागल तथा कभी झूठा एवं कवि कहते हैं। परन्तु ये सारी बातें असत्य हैं तथा जिनके पास तनिक भी बुद्धि एवं समझ है, वह इनका झूठा होना जानते हैं। अत: यह ऐसी बातें करके स्वयं ही मार्गदर्शन के पथ से दूर हो जाते हैं, उन्हें मार्गदर्शन किस प्रकार प्राप्त हो सकता है ?

[5]अर्थात यह आप के लिए जो माँग करते हैं, अल्लाह का उनको कर देना कोई कठिन नहीं है, वह चाहे तो उनसे उत्तम बाग़ तथा भवन दुनिया में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रदान कर सकता है जो उनके विचार में हैं। परन्तु उनकी माँगें तो झुठलाने तथा द्वेष के कारण हैं न कि मार्गदर्शन को प्राप्त करने के लिए तथा मोक्ष की खोज के लिए।

The Ummah Technology Mission

بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۫ وَاَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ﴿١١﴾

(११) बात यह है कि लोग क़ियामत को झूठ समझते हैं।[1] तथा क़ियामत को झुठलाने वालों के लिए हमने भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है।

اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيْرًا ﴿١٢﴾

(१२) जब वह इन्हें दूर से देखेगी तो यह उसका क्रोध से विफरना तथा चिंघाड़ना सुनेंगे।[2]

وَاِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ﴿١٣﴾

(१३) तथा जब यह नरक के किसी संकुचित स्थान में बाँध कर फेंक दिये जायेंगे, तो वहाँ अपने लिए मृत्यु ही मृत्यु पुकारेंगे।

لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا وَّاحِدًا وَّادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا ﴿١٤﴾

(१४) (उनसे कहा जायेगा) आज एक ही मृत्यु को न पुकारो अपितु बहुत-सी मृत्युओं को पुकारो।[3]

---

[1]क़ियामत का यह झुठलाना ही रिसालत को झुठलाने का कारण है।

[2]अर्थात नरक उन काफ़िरों को दूर से ही हश्र के मैदान में देखकर क्रोध से खौल उठेगा तथा उनको अपनी भयानक यातना से पीड़ित करने के लिए चिल्लायेगा तथा झुंझलायेगा, जिस प्रकार अन्य स्थान पर फ़रमाया।

﴿ إِذَآ أُلْقُوا۟ فِيهَا سَمِعُوا۟ لَهَا شَهِيقًا وَهِىَ تَفُورُ ۞ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ ٱلْغَيْظِ ﴾

"जब नरक में जाने वाले नरक में डाले जायेंगे तो उसका गर्जन सुनेंगे तथा वह (क्रोधवश) उछलता होगा, ऐसा लगेगा कि वह क्रोध से फट पड़ेगा।" (सूरः अल-मुल्क-७,८)

नरक का देखना तथा चिल्लाना एक वास्तविकता है, कल्पना नहीं। अल्लाह के लिए उसके अन्दर आभास तथा बोध की शक्ति उत्पन्न कर देना कठिन नहीं है, वह जो चाहे कर सकता है। बोलने की शक्ति भी तो अल्लाह तआला उसे प्रदान करेगा तथा वह ﴿ هَلْ مِن مَّزِيدٍ ﴾ की आवाज़ उठायेगा। (सूरः क़ाफ़-३०)

[3]अर्थात नरकवासी जब नरक की यातना से घबरा कर कामना करेंगें कि उन्हें मृत्यु आ जाये, वे विनाश के घाट उतर जायें। तो उनसे कहा जायेगा कि अब एक मृत्यु को नहीं कई मृत्युओं को पुकारो। अर्थ यह है कि अब तुम्हारे भाग्य में विभिन्न प्रकार की यातनायें हैं। अर्थात मृत्यु ही मृत्यु है, तुम कहाँ तक मृत्यु की माँग करोगे!

The Ummah Technology Mission

قُلْ أَذٰلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۚ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمَصِيرًا ﴿١٥﴾

(१५) आप कह दीजिए क्या यह अच्छा है[1] अथवा वह स्थाई स्वर्ग जिसका वचन परहेज़गारों (सदाचारियों) को दिया गया है, जो उनका प्रतिफल है तथा उनके लौटने का मूल स्थान है।

لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْئُولًا ﴿١٦﴾

(१६) वे जो चाहेंगे उनके लिए वहाँ उपस्थिति होगा, सदावासी। यह तो आपके प्रभु का वचन है जिसकी माँग की जानी चाहिए।[2]

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ أَأَنتُمْ أَضْلَلْتُمْ عِبَادِي هَٰؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ﴿١٧﴾

(१७) तथा जिस दिन अल्लाह (तआला) उन्हें तथा अल्लाह के सिवाय जिन्हें ये पूजते रहे उन्हें एकत्रित करके पूछेगा क्या मेरे इन भक्तों को तुमने भटकाया अथवा यह स्वयं भटक गये।[3]

---

[1]"यह" संकेत है नरक की वर्णित यातनाओं की ओर, जिनमें नरकवासी जकड़े हुए होंगे कि यह अच्छा है जो कुफ़्र तथा मूर्तिपूजा का प्रतिकार है अथवा वह स्वर्ग, जिसका वचन अल्लाह से भय खाने वालों को उनके अल्लाह से भय तथा अल्लाह के आदेशों का पालन करने पर दिया गया है। यह प्रश्न नरक में किया जायेगा, परन्तु उसे यहाँ इसलिए वर्णित किया गया है कि शायद नरकवासियों के इस परिणाम से शिक्षा प्राप्त करके लोग अल्लाह का भय तथा उसके आदेशों के पालन का मार्ग अपना लें तथा इस दुष्परिणाम से बच जायें जिसका चित्रण यहाँ किया गया है।

[2]अर्थात ऐसा वादा जो अवश्य पूरा होकर रहेगा। जैसे ऋण की माँग की जाती है उसी प्रकार अल्लाह ने अपने ऊपर यह वादा निश्चित कर लिया है जिसकी ईमान वाले उससे माँग कर सकते हैं। यह केवल उसकी दया तथा कृपा है कि उसने ईमानवालों के लिए इस उत्तम बदले को अपने लिए निश्चित कर लिया है।

[3]दुनिया में अल्लाह के अतिरिक्त जिनकी पूजा की जाती रही है तथा की जाती रहेगी, उनमें खनिज पदार्थ (पत्थर, लकड़ी तथा अन्य धातुओं की मूर्तियाँ) भी हैं, जो निर्जीव हैं तथा अल्लाह के पुण्यकारी भक्त भी हैं जो सजीव हैं। जैसे आदरणीय उज़ैर तथा आदरणीय मसीह तथा अन्य महात्मा। इसी प्रकार फ़रिश्तों तथा जिन्नातों के पुजारी भी होंगे। अल्लाह तआला निर्जीव पदार्थों को भी बुद्धि तथा समझ एवं बोलने की शक्ति

The Ummah Technology Mission

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْۢبَغِيْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوْا قَوْمًۢا بُوْرًا ﴿١٨﴾

(१८) वे उत्तर देंगे तू पवित्र है स्वयं हमें यह शोभनीय नही था कि तेरे अतिरिक्त अन्यों को अपना कार्यक्षम बनाते, [1] वास्तविकता यह है कि तूने इन्हें तथा इनके पूर्वजों को सम्पन्नता प्रदान की, यहाँ तक कि यह शिक्षायें भुला बैठे, यह लोग थे ही विनाश के योग्य |[2]

فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ﴿١٩﴾

(१९) तो उन्होंने तो तुम्हें तुम्हारी सारी बातों में झुठलाया | अब न तो तुम में अपनी यातना को फेरने की शक्ति है, न सहायता करने की, [3] तुममें से जिस-जिसने अत्याचार किया है[4] हम उसे घोर यातना का स्वाद चखायेंगे |

प्रदान करेगा | तथा उन सभी देवताओं से पूछेगा कि बताओ मेरे भक्तों को तुमने अपनी पूजा का आदेश दिया था अथवा ये अपनी इच्छा से तुम्हारी पूजा करके भटके थे ?

[1]अर्थात जब हम स्वयं तेरे अतिरिक्त किसी को कार्यक्षम नहीं समझते थे, तो फिर हम अपने विषय में किस प्रकार लोगों को कह सकते थे कि तुम अल्लाह के सिवाय हमें अपना रक्षक एवं कार्यक्षम समझो |

[2]यह शिर्क का कारण है कि साँसारिक धन तथा साधन की बहुतायत ने उन्हें तेरी याद से निश्चिन्त कर दिया तथा विनाश उनका दुर्भाग्य बन गया |

[3]यह अल्लाह तआला का कथन है जो मूर्तिपूजकों को सम्बोधित करके अल्लाह तआला कहेगा कि तुम जिनको अपना देवता समझते थे, उन्होंने तो तुम्हें तुम्हारी बातों में झूठा कह दिया है तथा तुमने देख लिया कि उन्होंने तुमसे अलग होने की घोषणा कर दी है | अर्थात जिनको तुम अपना समझते थे, वे सहायक सिद्ध नहीं हुए | अब क्या तुम्हारे अन्दर यह शक्ति है कि तुम मेरी यातना को अपने ऊपर से टाल सको तथा अपनी सहायता कर सको ?

[4]अत्याचार से तात्पर्य वही शिर्क (मिश्रणवाद) है, जैसाकि पूर्व कथन से स्पष्ट है | तथा क़ुरआन में अन्य स्थान पर शिर्क (अल्लाह से अन्य की पूजा को) महा अत्याचार कहा गया है | ﴿إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾ (वास्तव में शिर्क घोर अत्याचार है) | (सूरः लुकमान-१३)

The Ummah Technology Mission

وَمَآ اَرۡسَلۡنَا قَبۡلَكَ مِنَ
الۡمُرۡسَلِيۡنَ اِلَّاۤ اِنَّهُمۡ
لَيَاۡكُلُوۡنَ الطَّعَامَ
وَ يَمۡشُوۡنَ فِى الۡاَسۡوَاقِ ؕ
وَجَعَلۡنَا بَعۡضَكُمۡ لِبَعۡضٍ فِتۡنَةً ؕ
اَتَصۡبِرُوۡنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيۡرًا ﴿۲۰﴾

(२०) तथा हमने आपसे पूर्व जितने भी रसूल भेजे सब के सब भोजन भी करते थे[1] तथा बाज़ारों में भी चलते-फिरते थे।[2] तथा हम ने तुममें से प्रत्येक को अन्य की परीक्षा का साधन बना दिया।[3] क्या तुम धैर्य रखोगे ? तथा तेरा प्रभु सब कुछ देखने वाला है।[4]

---

[1]अर्थात वह मनुष्य थे तथा भोजन के स्पृही (अभिलाषी)।

[2]अर्थात मान्य जीविका उपार्जन के लिए श्रम तथा व्यापार भी करते थे। अर्थ इससे यह है कि यह बातें नबूअत की गरिमा के अनुरूप हैं, विपरीत नहीं, जिस प्रकार कुछ लोग समझते हैं।

[3]अर्थात हमने उन नबियों की तथा उनके द्वारा उन पर ईमान लाने वालों की परीक्षा ली, ताकि खरे-खोटे में भेद स्पष्ट हो जाये, जिन्होंने परीक्षा में धैर्य धारण किया वे सफल तथा अन्य असफल रहे। इसीलिए आगे फ़रमाया : "क्या तुम धैर्य रखोगे ?"

[4]अर्थात वह जानता है कि प्रकाशना (वहयी) तथा रिसालत के योग्य कौन है तथा कौन नहीं ﴿اَللّٰهُ اَعۡلَمُ حَيۡثُ يَجۡعَلُ رِسَالَتَهٗ﴾ हदीस में भी आता है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे अधिकार दिया कि राजा नबी बनूँ अथवा दास रसूल ? मैंने दास रसूल बनना स्वीकार किया। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ
اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى
رَبَّنَا ؕ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ
وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ﴿٢١﴾

(२१) तथा जिन्हें हमसे मिलने की आशा नहीं उन्होंने कहा कि हम पर फ़रिश्ते क्यों नहीं उतारे जाते ?[1] अथवा हम (अपनी आँखों से) अपने प्रभु को देख लेते ?[2] उन लोगों ने स्वयं अपने को ही बहुत बड़ा समझ रखा है तथा अत्यधिक अवज्ञा कर ली है।[3]

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى
يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَيَقُوْلُوْنَ

(२२) जिस दिन ये फ़रिश्तों को देख लेंगे उस दिन इन पापियों को कोई प्रसन्नता नहीं होगी[4] तथा कहेंगे कि ये वंचित ही वंचित

---

[1]अर्थात किसी मनुष्य को रसूल बनाने के बजाय किसी फ़रिश्ते को रसूल बनाकर भेजा जाता। अथवा यह अर्थ है कि पैग़म्बर के साथ फ़रिश्ते भी अवतरित होते। जिन्हें हम अपनी आँखों से देखते तथा वह इस मानव रसूल कि पुष्टि करते।

[2]अर्थात प्रभु आकर हमें कहता कि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मेरा रसूल है तथा उस पर ईमान लाना तुम्हारे लिए आवश्यक है।

[3]उसी अहंकार तथा उदण्डता का परिणाम है कि वह इस प्रकार की माँग कर रहे हैं, जो अल्लाह तआला की इच्छा के विपरीत है। अल्लाह तआला तो परोक्ष पर ईमान के द्वारा लोगों की परीक्षा लेता है। यदि वह फ़रिश्तों को उनकी आँखों के समक्ष उतार दे अथवा वह स्वयं धरती पर उतर आये तो उसके पश्चात उनकी परीक्षा का प्रश्न ही समाप्त हो गया, इसलिए अल्लाह तआला ऐसा कार्य क्यों करे, जो उसकी सृष्टि की उत्पत्ति की नीति तथा इच्छा के विपरीत है ?

[4]उस दिन से तात्पर्य मृत्यु का दिन है अर्थात यह काफ़िर फ़रिश्तों को देखने की इच्छा करते हैं, परन्तु मृत्यु के समय फ़रिश्तों को देखेंगे, तो उनके लिए कोई प्रसन्नता एवं शुभ नहीं होगा, इसलिए कि फ़रिश्ते उन्हें उस समय नरक की यातना की धमकी की सूचना देते हैं तथा कहते हैं कि हे कुकर्मी आत्मा, कुकर्मी शरीर से निकल, जिससे आत्मा दौड़ती-भागती है, जिस पर फ़रिश्ते उसे मारते तथा कूटते हैं, जैसाकि सूरः *अल-अंफ़ाल-५०* तथा *अल-अनआम-९३* में है। इसके विपरीत ईमान वाले की स्थिति प्राण निकलते समय यह होती है कि फ़रिश्ते उसे स्वर्ग तथा उसके सुखों की शुभसूचना सुनाते हैं। जैसाकि सूरः *हा॰मीम॰अस्सजदः* ३० से ३२ में है तथा हदीस में भी आता है

The Ummah Technology Mission

किये गये।[1]

حِجْرًا مَّحْجُورًا ﴿٢٢﴾

(२३) तथा उन्होंने जो-जो कर्म किये थे हमने उनकी ओर आकर्षित होकर उन्हें कणों की भाँति अस्त-व्यस्त कर दिया।[2]

وَقَدِمْنَآ إِلَىٰ مَا عَمِلُوا۟ مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَٰهُ هَبَآءً مَّنثُورًا ﴿٢٣﴾

कि "फ़रिश्ते ईमानवालों की आत्मा से कहते हैं, हे पवित्र आत्मा, जो पवित्र शरीर में थी, निकल ! तथा ऐसे स्थान पर चल जहाँ अल्लाह के उपहार हैं तथा वह प्रभु है, जो तुझसे प्रसन्न है।" (विस्तृत जानकारी के लिए देखें मुसनद अहमद भाग २, पृष्ठ ३६४ तथा ३६५ इब्ने माजा किताबुज ज़ोहद बाब जिक़रूल मौत) कुछ कहते हैं कि इससे तात्पर्य क़ियामत का दिन है। इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि दोनों ही कथन ठीक हैं इसलिए कि दोनों ही दिन ऐसे हैं कि फ़रिश्ते ईमानवालों तथा काफ़िर दोनों के समक्ष प्रकट होते हैं। ईमानवालों के लिए कृपा तथा अल्लाह के उपहारों की शुभसूचना तथा काफ़िरों के विनाश तथा हानि की सूचना देते हैं।

[1] حِجْرٌ का मूल अर्थ है मना करना, रोक देना। जिस प्रकार न्यायाधीश किसी को उसकी मूर्खता अथवा बाल्यावस्था के कारण उसके अपने माल में से व्यय करने से रोक दे तो कहते हैं حَجَرَ القاضي على فلان न्यायाधीश की ओर से अमुक को व्यय करने से रोक दिया है। इस भावार्थ के आधार पर ख़ानये काबा के उस भाग (हतीम) को حجر कहा जाता है जिसे मक्का के कुरैश ने ख़ानये काबा में सम्मिलित नहीं किया था। इसलिए परिक्रमा करने वालों के लिए उसके अन्दर से परिक्रमा करना मना है। परिक्रमा करते समय उसके बाहरी भाग से गुज़रना चाहिए जिससे दीवार से अलग कर दिया गया है। तथा बुद्धि को भी حجر कहा जाता है, इसलिए कि बुद्धि भी मनुष्य को ऐसे कार्यों से रोकती है, जो मनुष्य के योग्य नहीं हैं। अर्थ यह है कि फ़रिश्ते काफ़िरों से कहते हैं कि तुम उन वस्तुओं से वंचित हो जिनकी शुभसूचना अल्लाह से डरने वालों को दी जाती है। अर्थात यह حرامًا محرمًا عليكم के अर्थों में है। आज जन्नतुल फ़िरदौस (स्वर्ग का सर्वोच्च स्थान) तथा उसके सुख तुम पर हराम (निषेध) हैं, इसके अधिकारी केवल ईमानवाले तथा अल्लाह से डरने वाले होंगे।

[2] هَبَاءً उन सूक्ष्म कणों को कहते हैं, जो किसी छिद्र से घर के अन्दर प्रवेश होने वाली सूर्य की किरणों में दिखायी देते हैं, परन्तु यदि कोई उन्हें हाथ से पकड़ना चाहे तो यह सम्भव नहीं है। काफ़िरों के कर्म भी क़ियामत वाले दिन इन्हीं कणों की भाँति बेकार होंगे, क्योंकि वह ईमान तथा पवित्रता से शून्य होंगे तथा धार्मिक नियमों की अनुकूलता में भी ख़ाली होंगे। जबकि अल्लाह के समक्ष स्वीकृति के लिए इन दोनों बातों का होना आवश्यक है। ईमान तथा शुद्धता भी तथा इस्लामी धार्मिक नियमों के अनुरूप भी। यहाँ काफ़िर के कर्मों को बेकार कणों के समतुल्य कहा गया है। उसी प्रकार अन्य स्थानों

The Ummah Technology Mission

أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّأَحْسَنُ مَقِيْلًا ﴿٢٤﴾

(२४) (परन्तु) उस दिन स्वर्गवासियों का स्थान श्रेष्ठतम होगा तथा स्वप्न गृह भी सुखद होगा।[1]

وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ﴿٢٥﴾

(२५) तथा जिस दिन आकाश बादल सहित फट जायेगा[2] तथा फ़रिश्ते निरन्तर उतारे जायेंगे।

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ِالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ﴿٢٦﴾

(२६) उस दिन उचित रूप से राज्य केवल दयालु का ही होगा तथा यह दिन काफ़िरों पर बड़ा भारी होगा।

وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿٢٧﴾

(२७) तथा उस दिन अत्याचारी अपने हाथों को चबा-चबाकर कर कहेगा कि हाय! अच्छा होता यदि मैंने रसूल का मार्ग अपनाया होता।

يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِيْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿٢٨﴾

(२८) हाय! अफ़सोस, यदि मैंने अमुक को मित्र न बनाया होता।[3]

पर कहीं राख से, कहीं मृगतृष्णा से तथा कहीं सफाचट पत्थर से तुलना की गयी है। यह सारी उपमायें पूर्व में गुज़र चुकी हैं। (देखिये सूरः *अल-बकरः*-२६४, सूरः *इब्राहीम*-१८ तथा सूरः *अन्नूर*-२)

[1]कुछ ने इससे यह अर्थ निकाला है कि ईमानवालों के लिए क़ियामत का यह भयानक दिन इतना क्षीण तथा उनका हिसाब इतना सरल होगा कि मध्यान्ह तक यह स्वतन्त्र हो जायेंगे तथा स्वर्ग में यह अपने परिवार वालों तथा हूरों के साथ मध्यान्ह में विश्राम कर रहे होंगे जिस प्रकार हदीस में है कि ईमानवालों के लिए वह दिन इतना सहज होगा कि जितने में दुनिया में एक अनिवार्य नमाज़ अदा कर लेना। (मुसनद अहमद भाग ४, पृष्ठ ७५)

[2]इसका अर्थ यह है कि आकाश फट जायेगा तथा बादल छाया बन जायेंगे, अल्लाह तआला फ़रिश्तों के मध्य, हश्र के मैदान में, जहाँ सारी सृष्टि एकत्रित होगी, हिसाब-किताब के लिए साक्षात् दर्शन देगा, जैसाकि सूरः *अल-बक़रः* आयत २१० से भी स्पष्ट है।

[3]इससे ज्ञात हुआ कि अल्लाह के अवज्ञाकारियों से सम्बन्ध एवं मित्रता नहीं रखनी चाहिए, इसलिए की सज्जन व्यक्ति की संगत से मनुष्य सज्जन तथा दुर्जन व्यक्ति की संगत मनुष्य को बुरा बनाती है। अधिकतर लोगों के भटकने का कारण ग़लत मित्रों

The Ummah Technology Mission

لَقَدْ اَضَلَّنِیْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِیْ ؕ وَكَانَ الشَّیْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿۲۹﴾

(२९) उस ने तो मुझे उसके पश्चात भटका दिया कि शिक्षा मेरे पास आ पहुँची थी तथा शैतान तो मनुष्य को (समय पर) धोखा देने वाला है।

وَقَالَ الرَّسُوْلُ یٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِی اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿۳۰﴾

(३०) तथा रसूल कहेगा कि हे मेरे प्रभु! नि:संदेह मेरे समुदाय ने इस क़ुरआन को छोड़ रखा था।[1]

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِیٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِیْنَ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِیًا وَّنَصِیْرًا ﴿۳۱﴾

(३१) तथा इस प्रकार हमने प्रत्येक नबी के शत्रु कुछ पापियों को बना दिया है,[2] तथा तेरा प्रभु ही मार्गदर्शन देने वाला तथा सहायता करने वाला पर्याप्त है।[3]

का चयन तथा बुरों की संगत को अपनाना ही है। इसीलिए हदीस में भी पुण्य कार्य करने वाले लोगों की संगत पर बल दिया गया है तथा बुरी संगत से बचने को एक अति उत्तम उदाहरण से समझाया गया है। (देखिये सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्र वस्सिल:,बाब इस्तेहबाब मजालिसि स्वालेहीन)

[1]मूर्तिपूजक क़ुरआन पढ़े जाने के समय बहुत शोर करते ताकि क़ुरआन न सुना जा सके, यह भी त्याग देना है इस पर ईमान न लाना तथा कर्म न करना, भी त्याग देना है। इस पर विचार एवं ध्यान न देना तथा इसके आदेशों के अनुसार कर्म न करना तथा निषेधित से न बचना भी त्याग देना है। इसी प्रकार इसको छोड़कर किसी अन्य किताब को वरीयता देना, यह भी त्याग देना है अर्थात क़ुरआन को अलग करना, उसको छोड़ देना है, जिसके विरूद्ध क़ियामत वाले दिन अल्लाह के पैग़म्बर अल्लाह के समक्ष वाद प्रस्तुत करेंगे।

[2]अर्थात जिस प्रकार हे मोहम्मद! (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तेरे समुदाय में से वे लोग तेरे शत्रु हैं जिन्होंने क़ुरआन छोड़ दिया, इसी प्रकार पूर्वकालिक सम्प्रदाय में भी था अर्थात प्रत्येक नबी के शत्रु वे लोग होते थे, जो पापी थे, ये लोगों को भटकाने के मार्ग की ओर बुलाते थे। *सूरः अल-अनाम*, आयत संख्या ११२ में भी यह विषय वर्णन किया गया है।

[3]अर्थात ये काफिर यद्यपि लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं, परन्तु तेरा प्रभु जिसे प्रकाश दे, उसको प्रकाश से कौन रोक सकता है, वास्तव में पथ पदर्शक एवं सहायक तो तेरा पालनहार ही है।

The Ummah Technology Mission

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً وَاحِدَةً ۚ كَذَٰلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهِ فُؤَادَكَ ۖ وَرَتَّلْنَاهُ تَرْتِيلًا ﴿٣٢﴾

(३२) तथा काफ़िरों ने कहा कि उस पर पूरा क़ुरआन एक साथ ही क्यों न उतारा गया ?[1] इसी प्रकार (हमने थोड़ा-थोड़ा करके उतारा) ताकि इस से हम आप के दिल को दृढ़ता प्रदान करें, तथा हमने उसे ठहर-ठहर कर ही पढ़ सुनाया है।[2]

وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ وَأَحْسَنَ تَفْسِيرًا ﴿٣٣﴾

(३३) तथा ये आपके पास जो कोई भी उदाहरण लेकर आयेंगे हम उस का सत्य उत्तर तथा उचित व्याख्या बता देंगे।[3]

الَّذِينَ يُحْشَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٣٤﴾

(३४) जो लोग अपने मुँह के बल नरक की ओर एकत्रित किये जायेंगे। वही बुरे स्थान वाले तथा भटके हुए मार्ग वाले हैं।

---

[1]जिस प्रकार तौरात, इंजील एवं ज़बूर आदि किताबें एक ही बार में अवतरित हुईं।

[2]अल्लाह तआला ने उत्तर दिया कि हमने समय तथा आवश्यकतानुसार इस क़ुरआन को लगभग २३ वर्ष में थोड़ा-थोड़ा करके अवतरित किया ताकि हे पैग़म्बर ! तेरा तथा ईमानवालों का हृदय दृढ़ हो तथा उनको भली-भाँति याद हो जाये। जिस प्रकार से अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَقُرْءَانًا فَرَقْنَٰهُ لِتَقْرَأَهُۥ عَلَى ٱلنَّاسِ عَلَىٰ مُكْثٍ وَنَزَّلْنَٰهُ تَنزِيلًا ﴾

"तथा क़ुरआन, इसको हमने अलग-अलग किया, ताकि तू इसे लोगों पर रूक-रूक कर पढ़े तथा हमने इसको अंतराल से अवतरित किया।" (सूरः *बनी इस्राईल*-१०६)

इस क़ुरआन की तुलना वर्षा के समान है। वर्षा जब भी होती हो, मृत धरती में जीवन की लहर दौड़ जाती है तथा यह लाभ सामान्यतया उस समय होता है, जब वर्षा समय-समय पर हो न कि एक ही बार में सारी वर्षा हो जाये।

[3]यह क़ुरआन को अंतराल से उतारे जाने की नीति तथा कारण वर्णन किया जा रहा है कि ये मूर्तिपूजक जब भी कोई उदाहरण अथवा आपत्ति एवं संदेह प्रस्तुत करेंगे, तो क़ुरआन के द्वारा हम उसका उत्तर अथवा स्पष्टीकरण प्रस्तुत करेंगे तथा इस प्रकार उन्हें लोगों को भटकाने का अवसर नहीं मिलेगा।

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗۤ اَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ﴿٣٥﴾

(३५) तथा निःसंदेह हमने मूसा को किताब प्रदान की तथा उनके साथ उनके भाई हारून को उनका सहायक बनाया।

فَقُلْنَا اذْهَبَاۤ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ﴿٣٦﴾

(३६) तथा कह दिया कि तुम दोनों उन लोगों की ओर जाओ जो हमारी निशानियों को झुठला रहे हैं। फिर हमने उन्हें बिल्कुल ही ध्वस्त कर दिया।

وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣٧﴾

(३७) तथा नूह के समुदाय ने भी जब रसूलों को झूठा कहा तो हमने उन्हें डुबो दिया तथा लोगों के लिए उन्हें शिक्षा प्राप्त करने का प्रतीक बना दिया तथा हम ने अत्याचारियों के लिए दुखदायी यातनायें तैयार कर रखी हैं।

وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ﴿٣٨﴾

(३८) तथा 'आद' जाति तथा 'समूद' जाति एवं कुयें वालों को [1] तथा उनके मध्य के बहुत से सम्प्रदाय को[2] (नाश कर दिया)।

وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ۫ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ﴿٣٩﴾

(३९) तथा हमने प्रत्येक के समक्ष उदाहरणों को वर्णन किया,[3] फिर प्रत्येक को पूर्ण रूप से नाश कर दिया।[4]

---

[1] رس का अर्थ है कुआँ, أصحاب الرّسّ का अर्थ हुआ कुएँ वाले। इसके निर्धारण में व्याख्याकारों में मतभेद है, इमाम इब्ने जरीर तबरी ने कहा है, इससे तात्पर्य खाई वाले हैं, जिनका वर्णन *सूरः अल-बुरूज* में है। (इब्ने कसीर)

[2] قَرْن का उचित अर्थ है समकालिक लोगों का एक गुट। जब एक वंश के लोग समाप्त हो जायें तो दूसरी जाति दूसरा क़र्न कहलायेगा। (इब्ने कसीर) इस अर्थ के द्वारा प्रत्येक नबी का समुदाय भी एक क़र्न हो सकता है।

[3] अर्थात प्रमाण के आधार पर हमने सत्यता सिद्ध कर दी।

[4] अर्थात सत्यता प्रमाणित होने के पश्चात।

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ۭ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ۝٤٠

(४०) तथा ये लोग उस बस्ती के पास से भी आते-जाते हैं, जिन पर बुरे प्रकार की वर्षा की गयी।[1] क्या यह फिर भी उसे देखते नहीं ? वास्तविकता यह है कि उन्हें मरकर पुनः जीवित होकर खड़े होने पर विश्वास ही नहीं।[2]

وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۭ اَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ۝٤١

(४१) तथा तुम्हें जब कभी देखते हैं तो तुम से उपहास करने लगते हैं। कि क्या यही वह व्यक्ति हैं जिन्हें अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है।[3]

اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ اَنْ

(४२) (वह तो कहिए) कि हम डटे रहे अन्यथा इन्होंने तो हमें हमारे देवताओं से

---

[1]बस्ती से लूत के समुदाय की बस्तियाँ सदुम तथा अमूरा आदि तात्पर्य हैं तथा बुरी वर्षा से पत्थरों की वर्षा तात्पर्य है। इन बस्तियों को उलट दिया गया था, उस के पश्चात उन के ऊपर कंकड़-पत्थर की वर्षा की गई थी, जैसाकि सूरः हूद-८२ में वर्णन किया गया है। ये बस्तियाँ सीरिया तथा फ़िलिस्तीन के मार्ग में पड़ती हैं, जिन से गुज़र कर मक्कावासी आते-जाते थे।

[2]इसलिए इन ध्वस्त की गयी बस्तियों तथा उनके खण्डहरों को देखने के उपरान्त शिक्षा ग्रहण नहीं करते। तथा अल्लाह की आयतों तथा अल्लाह के रसूल को झुठलाने से नहीं रूकते।

[3]अन्य स्थान पर इस प्रकार फ़रमाया :

﴿اَهٰذَا الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ﴾

"क्या यह वही व्यक्ति है, जो तुम्हारे देवताओं की बुराई करता है ?" (सूरः *अल-अंबिया-३६*)

अर्थात उनके विषय में कहता है कि वे कुछ अधिकार नहीं रखते। इस वास्तविकता का प्रदर्शन ही मूर्तिपूजकों के निकट उनके देवताओं का अपमान था, जैसे आज भी क़ब्र पूजने वालों से कहा जाये कि क़ब्रों में गड़े हुए महात्मा सृष्टि में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं रखते। तो कहते हैं कि यह अल्लाह के मित्रों के सम्मान को अपमानित कर रहे हैं।

The Ummah Technology Mission

صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۚ وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٢﴾

भटका देने में कोई कमी नहीं छोड़ी थी।[1] तथा जब ये यातनाओं को देखेंगे तो उन्हें स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जायेगा कि पूर्णरूप से मार्ग से भटका हुआ कौन था ?[2]

أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ ۖ أَفَأَنْتَ تَكُونُ عَلَيْهِ وَكِيلًا ﴿٤٣﴾

(४३) क्या आप ने उसे भी देखा जो अपनी मनोकाँक्षाओं को अपना देवता बनाये हुए है, क्या आप उसके उत्तरदायी हो सकते हैं।[3]

---

[1]अर्थात हम ही अपने पूर्वजों का अनुकरण तथा प्रचलित धर्म से सम्बन्ध रखने के कारण अल्लाह के अतिरिक्त अन्यों की इबादत से न रूके, वरन् इस पैग़म्बर ने हमें भटकाने में कोई कमी नहीं छोड़ी। अल्लाह तआला ने मूर्तिपूजकों का यह कथन बयान किया है कि वे किस प्रकार मूर्तिपूजा पर अड़े हैं कि उस पर गर्व कर रहे हैं।

[2]अर्थात इस लोक में तो मूर्तिपूजकों तथा अल्लाह के अतिरिक्त अन्यों के पुजारियों को एकेश्वरवाद के अनुयायी भटके हुए दिखायी पड़ते हैं, परन्तु जब यह अल्लाह के दरबार में पहुँचेंगे तथा वहाँ उन्हें मूर्तिपूजा के कारण अल्लाह की यातना को भुगतना पड़ेगा तब पता चलेगा कि भटका हुआ कौन था ? एक अल्लाह की इबादत करने वाले अथवा द्वार-द्वार अपने शीश झुकाने वाले ?

[3]अर्थात जो वस्तु उसके मन को अच्छी लगी, उसको अपना धर्म एवं नियम बना लिया, क्या ऐसे लोगों को तू मार्ग पर ला सकता है अथवा अल्लाह की यातना से छुड़ा सकेगा ? इसको अन्य स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया गया है।

> "क्या वह व्यक्ति जिसके लिए उसका कुकर्म शोभनीय बना दिया गया है, तो वह उसे अच्छा समझता है, अत: अल्लाह तआला जिसे चाहता है भटकाता है तथा जिसे चाहता है मार्ग दिखा देता है। अत: तू उस पर लज्जित तथा दुखी न हो।" (सूरः *फातिर-८*)

आदरणीय इब्ने अब्बास इसकी व्याख्या इस प्रकार करते हैं। अज्ञान काल में व्यक्ति एक लम्बी अवधि तक सफेद पत्थर की पूजा करता रहता, जब उसे उससे अच्छा पत्थर दिख जाता तो वह प्रथम पत्थर को छोड़कर दूसरे पत्थर की पूजा प्रारम्भ कर देता। (इब्ने कसीर) अर्थ यह है कि ऐसे व्यक्ति, जो बुद्धि एवं समझ से इस प्रकार शून्य तथा मात्र अपने मन की इच्छा को अपना देवता बनाये हुए हैं। हे पैग़म्बर ! क्या तू उनको प्रकाश के मार्ग पर लगा सकता है ? अर्थात नहीं लगा सकता।

Ummah Technology Mission

أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ ۚ إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ ۖ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٤﴾

(४४) क्या आप इसी सोंच में हैं कि उनमें से अधिकतर सुनते अथवा समझते हैं। वह तो निरे पशु की भाँति हैं, बल्कि उनसे भी अधिक भटके हुए।[1]

أَلَمْ تَرَ إِلَىٰ رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۖ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ﴿٤٥﴾

(४५) क्या आपने नहीं देखा कि आपके प्रभु ने छाया को किस प्रकार विस्तृत कर दिया है ?[2] यदि चाहता तो उसे स्थिर ही कर देता,[3] फिर हमने सूर्य को उसका पथ प्रदर्शक बनाया।[4]

ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا ﴿٤٦﴾

(४६) फिर हमने उसे धीर-धीरे अपनी ओर खींच लिया।[5]

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِبَاسًا

(४७) तथा वही है जिस ने रात को तुम्हारे

---

[1]अर्थात ये चौपाये जिस उद्देश्य के लिए पैदा किये गये हैं, उसे वे समझते हैं। परन्तु मनुष्य जिसे एक अल्लाह की इबादत के लिए पैदा किया गया था, वह रसूलों के सतर्क कर देने के उपरान्त अल्लाह के साथ शिर्क करता है तथा दर-दर पर अपना माथा टेकता फिरता है। इस आधार पर ये नि:संदेह चौपाये से भी अधिक बुरे तथा भटके हुए हैं।

[2]यहाँ से पुन: एकेश्वरवाद के तर्कों का प्रारम्भ होता है। देखो, अल्लाह तआला ने जगत में किस प्रकार छाया फैलायी है, जो प्रात:काल के पश्चात से सूर्योदय होने तक रहती है। अर्थात उस समय धूप नहीं होती धूप के साथ यह सिमटना तथा सिकुड़ना प्रारम्भ हो जाता है।

[3]अर्थात सदैव छाया ही रहती, सूर्य की धूप छाया को समाप्त ही न करती।

[4]अर्थात धूप से ही छाया का पता चलता है कि प्रत्येक वस्तु अपने विपरीत से पहचानी जाती है यदि धूप न होती तो लोग छाया से परिचित न होते।

[5]अर्थात वह छाया धीरे-धीरे हम अपनी ओर खींच लेते हैं तथा उसके स्थान पर रात्रि का गंभीर अंधकार छा जाता है।

The Ummah Technology Mission

وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ﴿٤٧﴾

लिए वस्त्र बनाया[1] तथा निंद्रा सुखमय बनायी[2] तथा दिन को उठ खड़े होने का समय।[3]

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ﴿٤٨﴾

(४८) तथा वही है जो रहमत (कृपा) की वर्षा से पूर्व शुभ सूचना देने वाली वायु को भेजता है तथा हम आकाश से पवित्र पानी बरसाते हैं।[4]

لِّنُحْيِيَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ كَثِيْرًا ﴿٤٩﴾

(४९) ताकि उसके द्वारा मरे हुए नगर को जीवित कर दें तथा उसे हम अपनी सृष्टि में से बहुत से पशुओं तथा मनुष्यों को पिलाते हैं।

وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ

(५०) तथा निःसंदेह हमने इसे उनके मध्य

---

[1] अर्थात वस्त्र, जिस प्रकार वस्त्र मनुष्य के शरीर को छिपा लेता है, उसी प्रकार रात्रि तुम्हें अपने अंधकार में छिपा लेती है।

[2] سُبَات का अर्थ काटना है। निंद्रा मनुष्य के शरीर को कर्म से काट देती है, जिससे उसे सुख प्राप्त होता है। कुछ के निकट سُبَات का अर्थ फैलने के हैं। निंद्रा में भी मनुष्य लम्बा हो जाता है, इसलिए उसे सुबात कहा। (ऐसरूत्तफ़ासीर तथा फ़तहुल क़दीर)

[3] अर्थात निंद्रा जो मृत्यु की बहन है, दिन में मनुष्य निंद्रा से जागकर तथा व्यवसाय के लिए खड़ा हो जाता है। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रातः उठते समय यह दुआ पढ़ते। الحمد لله الذي أحيانا بعد ما أماتنا وإليه النشور "सारी प्रशंसायें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने हमें मारने के पश्चात जीवित किया तथा उसकी ओर एकत्रित होना है।" (बुख़ारी, मिशकात किताबुद-दावात)

[4] طَهُور (अरबी भाषा के मात्राओं में से एक मात्रा फ़तह कहलाती है जो अक्षर 'तआ' पर है) 'फ़ऊल' शब्द के भार पर है अर्थात ऐसी वस्तु जिससे पवित्रता अथवा शुद्धता प्राप्त की जाती है। जैसे वुज़ू के पानी को وَضُوء तथा ईधन को وَقُود कहा जाता है, इस अर्थ में पानी पवित्र स्वयं भी पवित्र। तथा दूसरों को भी पवित्र करने वाला है। हदीस में भी है। إنّ الماء طَهُورٌ لا ينجسه شيء "पानी पवित्र है, उसे कोई वस्तु भी अपवित्र नहीं कर सकती।" (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी संख्या ६६ निसाई व इब्ने माजा) परन्तु यदि उसके रंग, गंध तथा स्वाद में परिवर्तन हो जाये, तो ऐसा पानी अपवित्र है। كما في الحديث

The Ummah Technology Mission

فَأَبَىٰٓ أَكْثَرُ ٱلنَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ﴿٥٠﴾

विभिन्न प्रकार से वर्णन किया ताकि [1] वह शिक्षा प्राप्त करें, परन्तु फिर भी अधिकतर लोगों ने कृतघ्नता के अतिरिक्त माना नहीं।[2]

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِى كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيرًا ﴿٥١﴾

(५१) तथा यदि हम चाहते तो प्रत्येक बस्ती में एक डराने वाला भेज देते।[3]

فَلَا تُطِعِ ٱلْكَٰفِرِينَ وَجَٰهِدْهُم بِهِۦ جِهَادًا كَبِيرًا ﴿٥٢﴾

(५२) तो आप काफ़िरों का कहना न करें तथा क़ुरआन के द्वारा उनसे पूर्ण शक्ति से महा धर्मयुद्ध करें।[4]

وَهُوَ ٱلَّذِى مَرَجَ ٱلْبَحْرَيْنِ هَٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَهَٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ وَجَعَلَ

(५३) तथा वही है जिसने दो समुद्रों को आपस में मिला रखा है यह है मीठा स्वादिष्ट

---

[1]अर्थात क़ुरआन करीम को। तथा कुछ ने صرّفناه में अन्तिम सर्वनाम को वर्षा की ओर फेरा है जिसका अर्थ यह होगा कि वर्षा को हम बदल-बदल कर बरसाते हैं अर्थात कभी एक क्षेत्र में कभी अन्य क्षेत्र में। यहाँ तक कि कई बार ऐसा होता है कि कभी एक नगर के एक भाग में वर्षा होती है तथा अन्य भागों में नहीं होती तथा कभी अन्य भागों में होती है प्रथम भाग में नहीं होती यह अल्लाह का ज्ञान तथा विवेक है वह जिस प्रकार चाहता है, कहीं वर्षा करता है तथा कहीं नहीं तथा कभी किसी क्षेत्र में एवं कभी किसी क्षेत्र में।

[2]तथा एक कुफ़्र एवं कृतघ्नता यह भी है कि वर्षा को अल्लाह की कारीगरी के बजाय नक्षत्रों की चाल का परिणाम कहा जाये, जैसे अशिक्षित लोग कहा करते थे।

[3]परन्तु हमने ऐसा नहीं किया तथा केवल आपको ही सभी बस्तियों बल्कि समस्त मनुष्य जाति के लिए डराने वाला बनाकर भेजा।

[4] جَٰهِدْهُم بِهِۦ में अक्षर ه का संकेत क़ुरआन है अर्थात इस क़ुरआन के द्वारा धर्मयुद्ध करें, यह आयत मक्का में अवतरित हुई है, अभी धर्मयुद्ध का आदेश नहीं मिला था। इसलिए अर्थ यह हुआ कि क़ुरआन के आदेश तथा निषेध को खोल खोल-कर वर्णन करें तथा काफ़िरों के लिए जो डाँट फटकार तथा धमकियाँ आयी हैं, वह स्पष्ट करें।

The Ummah Technology Mission

तथा यह है खारी कड़ुवा, [1] तथा इन दोनों के मध्य एक पर्दा एवं सुदृढ़ ओट कर दी।[2]

بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٥٣﴾

(५४) तथा वह है वही जिसने पानी से मनुष्य को पैदा किया, फिर उसे वंश वाला तथा ससुराली सम्बन्धों वाला कर दिया।[3]

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ؕ وَكَانَ رَبُّكَ

---

[1] मीठे पानी को فُرات कहते हैं, فُرات का अर्थ है काट देना, तोड़ देना, मीठा पानी प्यास को काटता है अर्थात समाप्त कर देता है। اُجَاج अत्यन्त खारी अथवा कड़ुवा पानी।

[2] जो एक दूसरे को मिलने नहीं देती। कुछ व्याख्याकारों ने ﴿حِجْرًا مَّحْجُوْرًا﴾ का अर्थ लिया है حرامًا محرمًا इन पर हराम कर दिया गया कि मीठा पानी खारी अथवा खारी पानी मीठा हो जाये तथा कुछ व्याख्याकारों ने مرج البحرين का अनुवाद किया है خلق الماءين कि दो पानी बनाये, एक मीठा, दूसरा खारी। मीठा पानी वह है जो नदियों, स्रोतों तथा कुँओं के रूप मे आबादियों के मध्य पाया जाता है, जिसको मनुष्य अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करता है तथा खारी पानी वह है जो पूर्व से पश्चिम तक फैले हुए समुद्र में है, जो कहते हैं कि वह धरती का तीन चौथाई भाग है तथा एक चौथाई भाग थल है, जिस पर मनुष्य तथा जीवों का निवास है। यह समुद्र स्थिर हैं। जबकि उनमें ज्वार भाटा आता रहता है तथा तीव्र एवं उच्च धारायें हैं। समुद्री पानी को खारी रखने में अल्लाह तआला की एक सुनीति है। मीठा पानी अधिक देर स्थिर रहने से ख़राब हो जाता है, उसके स्वाद, रंग तथा गंध में परिवर्तन आ जाता है खारी पानी ख़राब नहीं होता, न उसका स्वाद बदलता है, न रंग तथा गंध। यदि इन स्थिर समुद्रों का पानी भी मीठा होता, तो उसमें दुर्गन्ध उत्पन्न हो जाती। जिससे मनुष्य तथा पशुओं का धरती पर रहना कठिन हो जाता। उसमें मरने वाले जानवर की दुर्गन्ध उसको और बढ़ा देती। अल्लाह की सुनीति तो यह है कि हज़ारों वर्षों से यह समुद्र विद्यमान हैं, तथा इनमें हज़ारों जानवर मरते हैं तथा उन्हीं मे सड़-गल जाते हैं। परन्तु अल्लाह ने उसमें इतना नमक रख दिया है कि वह उसके पानी में तनिक भी दुर्गन्ध उत्पन्न नहीं होने देता। उनसे उठने वाली वायु भी ठीक होती हैं तथा उनका पानी भी पवित्र है, यहाँ तक कि उनके अंदर के मरे जानवर भी हलाल (मान्य) हैं। كما في الحديث (मुअत्ता इमाम मालिक, इब्ने माजा, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी किताबुल तहारत, नसाई किताबुल माअ) (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[3] वंश से तात्पर्य वे सम्बन्ध हैं, जो माता-पिता की ओर से हो, तथा صهر से तात्पर्य वह निकट सम्बन्ध हैं जो विवाह के उपरान्त पत्नी की ओर से हो, जिसको हमारे समाज में ससुराली सम्बन्ध कहा जाता है। इन दोनों सम्बन्धों का विवरण आयत حرمت عليكم

The Ummah Technology Mission

قَدِيرًا ﴿٥٤﴾

नि:संदेह आपका प्रभु प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्य है।

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ ظَهِيرًا ﴿٥٥﴾

(५५) तथा यह अल्लाह को छोड़कर उनकी पूजा करते हैं, जो न तो उन्हें कोई लाभ पहुँचा सकें न कोई हानि पहुँचा सकें, काफ़िर तो है ही अपने प्रभु के विरूद्ध (शैतान) की सहायता करने वाला।

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٥٦﴾

(५६) तथा हमने तो आपको शुभसूचना तथा डर (त्रासिक) सुनाने वाला (नबी) बनाकर भेजा है।

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَن شَاءَ أَن يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿٥٧﴾

(५७) कह दीजिए कि मैं (क़ुरआन के पहुँचाने पर) तुम से कोई परिश्रामिक नहीं चाहता परन्तु जो व्यक्ति अपने प्रभु की ओर मार्ग पकड़ना चाहे।[1]

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ ۚ وَكَفَىٰ بِهِ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا ﴿٥٨﴾

(५८) तथा उस अनन्त अल्लाह (तआला) पर पूर्ण विश्वास करें जिसे कभी मृत्यु नहीं तथा उसकी प्रशंसा के साथ पवित्रता का वर्णन करते रहें, वह अपने भक्तों के पापों से भली-भाँति परिचित है।

الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ

(५९) वही है जिसने आकाशों तथा धरती एवं उनके मध्य की वस्तुओं को छ: दिन में पैदा

(सूरः अल-निसा-२३) तथा ﴿وَلَا تَنكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُم﴾ (सूरः अल-निसा-२२) में वर्णन किया गया है। तथा एक ही स्त्री से दो के दूध पीने से जो सम्बन्ध होता है, हदीस के अनुसार वह वंशीय सम्बन्धों में सम्मिलित है। जैसाकि फ़रमाया يحرم من الرضاع ما يحرم من النسب (अल-बुख़ारी संख्या २६४५ तथा मुस्लिम संख्या १०७०)

[1]अर्थात यही मेरा पारिश्रमिक है कि प्रभु का मार्ग अपना लूँ।

The Ummah Technology Mission

عَلَى الْعَرْشِ ۚ الرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ بِهٖ خَبِيْرًا ﴿٥٩﴾

कर दिया, फिर अर्श पर उच्चय हुआ, वह कृपालु है, आप उसके विषय में किसी जानकार से पूछ लें।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا ﴿٦٠﴾ ۩

(६०) तथा उनसे जब भी कहा जाता है कि दयालु को सजदा करो, तो वे कहते हैं कि कृपालु है क्या ? क्या हम उसको सजदा करें जिसका तू हमें आदेश दे रहा है तथा (इस आमन्त्रण से) उनकी बुराई ही बढ़ती है।[1]

تَبٰرَكَ الَّذِيْ جَعَلَ فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ﴿٦١﴾

(६१) अत्यन्त शुभ है वह जिसने आकाश में बुर्ज बनाये[2] तथा उस में सूर्य बनाया, तथा प्रकाशित चन्द्रमा भी।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً

(६२) तथा उसी ने रात्रि तथा दिन को एक-

---

[1] رحمان - رحيم अल्लाह की विशेषता तथा शुभ नामों में से हैं, परन्तु अशिक्षित लोग अल्लाह को उन नामों से नहीं जानते थे जैसाकि हुदैबिया की संधि के समय जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने संधि का प्रारम्भ بسم الله الرحمن الرحيم से लिखवाया तो मक्के के मूर्तिपूजकों ने कहा, हम रहमान तथा रहीम को नहीं जानते। باسمك اللهم लिखो। (सीरत इब्ने हिशाम भाग २ पृष्ठ ३१७ अधिक जानकारी के लिए देखिये सूरः *बनी इस्राईल*-११० तथा सूरः *अल-राद*-३०) यहाँ भी उनका रहमान के नाम से भड़कना तथा सजदा करने से मुख मोड़ने का वर्णन है।

[2] بُروج बहुवचन है بُرج का सलफ़ की व्याख्या में بُروج से तात्पर्य बड़े-बड़े ग्रह (सितारे) लिए गये हैं तथा इसी तात्पर्य से कथन का स्पष्ट अर्थ समझ में आता है महिमावान है वह शक्ति जिसने आकाश में बड़े-बड़े ग्रह बनाये तथा सूर्य एवं चन्द्रमा बनाया। बाद के व्याख्याकारों ने ज्योतिषयों के राशियाँ तात्पर्य लिये हैं। तथा यह बारह राशि हैं मेष, वृष, कुम्भ, कर्क, मकर, मिथुन, सिंह, तुला, मीन, धन, वृश्चिक तथा कन्या तथा सात बड़े ग्रहों के निवास हैं। जिनके नाम हैं मंगल, शुक्र, बुद्ध, चन्द्र, सूर्य, बृहस्पति तथा शनि। यह ग्रहों उन बुर्जों में इस प्रकार उतरते हैं, जैसे ये इनके लिए भव्य महल हैं। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

The Ummah Technology Mission

لِّمَنْ أَرَادَ أَنْ يَّذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُوْرًا ﴿٦٢﴾

दूसरे के पीछे आने जाने वाला बनाया[1] उस व्यक्ति की शिक्षा के लिए जो शिक्षा ग्रहण करने अथवा कृतज्ञता व्यक्त करने का विचार रखता हो।

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا وَّإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿٦٣﴾

(६३) तथा रहमान (दयालु) के सत्य भक्त वह हैं, जो धरती पर नम्रता से चलते हैं तथा जब अशिक्षित लोग उनसे बातें करने लगते हैं, तो वह कह देते हैं कि सलाम है।[2]

وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ﴿٦٤﴾

(६४) तथा जो अपने प्रभु के समक्ष सजदा करते तथा खड़े होकर रात्रि व्यतीत करते हैं।

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦٥﴾

(६५) तथा जो ये दुआयें (विनय) करते हैं कि हे हमारे प्रभु !हमसे नरक की यातना दूर ही रख क्योंकि उसकी यातना चिमट जाने वाली है।[3]

---

[1]अर्थात रात्रि जाती है, तो दिन आता है तथा दिन आता है तो रात्रि चली जाती है। दोनों एक ही समय में एकत्रित नहीं होते, इसके लाभ तथा कारण समझाने की आवश्यकता नहीं। कुछ ने [illegible] का अर्थ एक-दूसरे के विरोधी किया है अर्थात रात्रि अंधकारमयी है तथा दिन प्रकाश से परिपूर्ण।

[2]सलाम से तात्पर्य यहाँ मुख मोड़ना तथा विवाद को छोड़ देना है। अर्थात ईमानवाले अशिक्षित लोगों तथा कटबहस करने वालों से उलझते नहीं, बल्कि ऐसे अवसर पर टाल जाते हैं तथा उनसे बचने का प्रयत्न करते हैं तथा बिना लाभ के तर्क-वितर्क नहीं करते।

[3]इससे ज्ञात हुआ कि दयालु अल्लाह के भक्त वह हैं जो एक ओर रातों को जागकर अल्लाह की इबादत करते हैं तथा दूसरी ओर डरते भी हैं कि कहीं किसी त्रुटि अथवा आलस्य के कारण अल्लाह की पकड़ में न आ जायें इसीलिए वे नरक की यातना से छुटकारा माँगते हैं। अर्थात अल्लाह की इबादत तथा आज्ञाकारिता पर किसी प्रकार का गर्व तथा घमण्ड नहीं होना चाहिए। इसी भाव को अन्य स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया गया है।

Tehmah Technology Mission

إِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿٦٦﴾

(६६) वह स्थाई स्थान तथा रहने दोनों रूप से बुरा स्थान है।

وَالَّذِينَ إِذَآ أَنفَقُوا۟ لَمْ يُسْرِفُوا۟ وَلَمْ يَقْتُرُوا۟ وَكَانَ بَيْنَ ذَٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾

(६७) तथा जो व्यय करते समय भी न तो अपव्यय करते हैं, न कंजूसी (कृपण) बल्कि इन दोनों के मध्य का मध्यम मार्ग होता है।[1]

وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ ٱللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ ٱلنَّفْسَ ٱلَّتِى حَرَّمَ ٱللَّهُ إِلَّا بِٱلْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ﴿٦٨﴾

(६८) तथा जो अल्लाह के साथ किसी अन्य देवता को नहीं पुकारते तथा किसी ऐसे व्यक्ति को जिसकी हत्या करना अल्लाह तआला ने निषेद्ध किया हो, सिवाय सत्य के वह हत्या नहीं करते[2] न वह व्यभिचारी होते

﴿ وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوا وَّقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ﴾

"तथा वह लोग कि देते हैं, जो कुछ देते हैं तथा उनके हृदय भयभीत हैं कि वे अपने प्रभु की ओर लौटने वाले हैं।" (सूरः *अल-मोमिनून*-६०)

भय इसी बात का नहीं कि उन्हें अल्लाह के दरबार में उपस्थिति होना है, बल्कि उसके साथ इसका भी है कि उनका दान-पुण्य स्वीकार होता है अथवा नहीं ? हदीस में आयत की व्याख्या में आता है कि आदरणीय आयशा ने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस आयत के विषय में पूछा कि क्या इससे तात्पर्य वे लोग हैं, जो शराब पीते तथा चोरी करते हैं ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "नहीं हे अबू बक्र की पुत्री ! बल्कि यह वे लोग हैं जो व्रत (रोज़े) रखते, नमाज़ पढ़ते तथा दान करते हैं, परन्तु उसके उपरान्त डरते हैं कि कहीं उनके यह कर्म अस्वीकृत न हो जायें।" (जामेअ तिर्मिज़ी किताबुल तफ़सीर सूरः *अल-मोमिनून*)

[1]अल्लाह की अवज्ञा में व्यय करना, अपव्यय तथा अल्लाह के आज्ञापालन पर न व्यय करना कंजूसी तथा अल्लाह के आदेश एवं निर्देश के अनुसार व्यय करना अल्लाह के मार्ग में संतुलन है। (फ़तहुल क़दीर) इसी प्रकार आवश्यक व्यय एवं अनिश्चित में मध्यम सीमा से बढ़ना भी अपव्यय में आ सकता है, इसलिए वहाँ भी सावधानी एवं मध्य मार्ग अपनाना अति आवश्यक है।

[2]तथा हक़ के साथ हत्या करने की तीन अवस्थायें हैं। इस्लाम के पश्चात कोई पुनः कुफ़्र पर चले, जिसे 'इर्तेदाद' कहते हैं, अथवा विवाहित होकर व्यभिचार करे अथवा किसी की हत्या कर दे। इन तीनों परिस्थितियों में हत्या कर दी जायेगी।

The Ummah Technology Mission

हैं,[1] तथा जो कोई यह कर्म करे वह अपने ऊपर कड़ी यातना लेगा।

يُضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿٦٩﴾

(६९) उसे क़ियामत के दिन दुगुनी यातना दी जायेगी तथा वह अपमान तथा अनादर के साथ सदैव वहीं रहेगा।

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٠﴾

(७०) उन लोगों के अतिरिक्त जो क्षमा माँग लें तथा ईमान लायें तथा सत्कर्म करें[2] ऐसे लोगों के पापों को अल्लाह (तआला) पुण्य में बदल देता है।[3] अल्लाह तआला अत्यन्त क्षमाशील दयालु है।

---

[1]हदीस में रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रश्न किया गया, कौन सा पाप सबसे बड़ा है ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, यह कि तू अल्लाह के साथ किसी को सम्मिलित करे, जबकि वास्तव में उसने तुझे पैदा किया। उसने पूछा कि उसके पश्चात कौन सा बड़ा पाप है ? फ़रमाया अपनी संतान की इस भय से हत्या करना कि वह तेरे साथ खायेगी। उसने पूछा फिर कौन सा ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह कि तू अपने पड़ोसी की पत्नी से व्यभिचार करे। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इन बातों की पुष्टि इस आयत से होती है। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसी आयत का पाठ किया। (अल-बुख़ारी तफ़सीर सूरः अल-बकरः, मुस्लिम किताबुल ईमान, बाबु कौनिश-शिर्के अकबहुज़ जूनूब)

[2]इससे ज्ञात हुआ कि दुनिया में शुद्ध मन से क्षमा माँगने से प्रत्येक पाप से क्षमा मिल सकती है, चाहे वह कितना बड़ा हो। तथा सूरः निसा की आयत १३ में जो ईमानवाले की हत्या का दण्ड नरक बताया गया है, तो वह इस परिस्थिति में मिलेगा जब हत्यारे ने शुद्ध मन से क्षमा न माँगी होगी तथा बिना क्षमा माँगे ही मृत्यु हो गई हो। वरन् हदीस में आता है कि सौ आदमियों के हत्यारे ने भी क्षमा माँगी तो अल्लाह ने उसे भी क्षमा कर दिया। (सहीह मुस्लिम किताबुत तौबा)

[3]इसका एक अर्थ तो यह है कि अल्लाह तआला उसकी अवस्था बदल देता है, इस्लाम धर्म स्वीकार करने के पूर्व वह बुराईयाँ करता था, अब केवल एक ईष्ट अल्लाह की इबादत करता है, पहले काफ़िरों के साथ सम्मिलित होकर मुसलमानों से लड़ता था, अब मुसलमानों की ओर से काफ़िरों से लड़ता है, इत्यादि। दूसरा अर्थ है कि उसकी

The Ummah Technology Mission

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾

(७१) तथा जो व्यक्ति क्षमा माँग ले तथा पुण्य के कार्य करे तो वह वास्तव में अल्लाह (तआला) की ओर सत्य प्रवृति (झुकाव) रखता है।[1]

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ مَرُّوا كِرَامًا ﴿٧٢﴾

(७२) तथा जो लोग झूठी गवाही नहीं देते,[2] तथा जब वे किसी व्यर्थ के निकट से गुज़रते हैं,तो श्रेष्ठता से गुज़र जाते हैं।[3]

बुराईयों को पुण्य में बदल देता है। इसकी पुष्टि हदीस से भी होती है। रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मैं उस व्यक्ति को जानता हूँ जो सबसे अन्त में स्वर्ग में प्रवेश करने वाला तथा सबसे अन्त में नरक से निकलने वाला होगा। यह वह व्यक्ति होगा कि क़यामत के दिन उसके छोटे-छोटे पाप प्रस्तुत किये जायेंगे तथा बड़े-बड़े पाप एक ओर रख दिये जायेंगे। उससे कहा जायेगा कि तूने अमुक-अमुक दिन अमुक-अमुक कार्य किया था? वह सकारात्मक उत्तर देगा, अस्वीकार करने की उस में शक्ति नहीं होगी। इसके अतिरिक्त वह इस बात से भी भयभीत होगा कि अभी तो बड़े पाप भी प्रस्तुत किये जायेंगे। कि इतने में उससे कहा जायेगा, कि जा तेरे लिए प्रत्येक बुराई के बदले में एक पुण्य है। अल्लाह की दया देखकर वह कहेगा, कि अभी तो मेरे बहुत से कर्म ऐसे हैं कि मैं उन्हें यहाँ नहीं देख रहा, यह वर्णन करके, रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हँस पड़े, यहाँ तक आपके दाँत प्रकट हो गये।" (सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान, बाब अदना अहलिल जन्नते मंज़िलतुन फ़ीहा)

[1]पहली क्षमा का सम्बन्ध कुफ़्र तथा शिर्क (मूर्तिपूजा) से है। इस क्षमा का सम्बन्ध अन्य बुराईयों एवं त्रुटियों से है।

[2] زور (ज़ूर) का अर्थ है झूठ। प्रत्येक असत्य वस्तु भी झूठ है, इसीलिए झूठी गवाही से लेकर कुफ़्र तथा शिर्क एवं हर प्रकार की ग़लत बातें जैसे खेल-कूद, गाना तथा अन्य व्यर्थ मूर्खता पूर्ण रीति-रिवाज इसी में सम्मिलित है तथा अल्लाह की इबादत करने वालों की यह भी विशेषता है कि वे किसी भी झूठ में तथा झूठे संघ में उपस्थिति नहीं होते।

[3]बेकार (व्यर्थ) प्रत्येक वह बात तथा कार्य है जिसमें धर्मानुसार कोई लाभ न हो। अर्थात ऐसे कार्यों एवं बातों में भी वह भाग नहीं लेते बल्कि शान्ति के साथ सम्मान सहित निकल जाते हैं।

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾

(७३) तथा जब उन्हें उनके प्रभु (के कथन और प्रवचन) की आयतें सुनाई जाती हैं, तो वे अंधे-बहरे होकर उन पर नहीं गिरते।[1]

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿٧٤﴾

(७४) तथा वह यह दुआ (विनय) करते हैं कि हे हमारे प्रभु! तू हमें हमारी पत्नियों तथा सन्तानों से आँखों को ठंडक प्रदान कर[2] तथा हमें सदाचारियों का अगुवा बना दे।[3]

اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ﴿٧٥﴾

(७५) यही वे लोग हैं जिन्हें उनके धैर्य (सहन) के बदले (स्वर्ग की उच्च) अटारियाँ प्रदान की जायेंगी, जहाँ उन्हें आर्शीवाद तथा सलाम पहुँचाया जायेगा।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٧٦﴾

(७६) इसमें वे सदैव रहेंगे, वह बहुत ही अच्छा स्थान एवं सुखद स्थान है।

قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ﴿٧٧﴾

(७७) कह दीजिए! यदि तुम्हारी विनम्र प्रार्थना न होती तो मेरा प्रभु तुम्हारी कदापि चिन्ता न करता।[4] तुम तो झुठला चुके अब

---

[1]अर्थात वह इनसे मुख नहीं मोड़ते तथा विमुखता नहीं बरतते, जैसे वे बहरे हों कि सुनें ही नहीं अथवा अंधे हों कि देखें ही नहीं। बल्कि वे ध्यान लगाकर सुनते तथा कान की शोभा तथा प्राण यन्त्र बना लेते हैं।

[2]अर्थात उन्हें अपना आज्ञाकारी बना तथा हमारा भी आज्ञा पालक, जिससे हमारी आँखें ठंडी हों।

[3]अर्थात ऐसा अच्छा नमूना कि पुण्य में वह हमारे अनुगामी हों।

[4]दुआ तथा विनती का अर्थ अल्लाह को पुकारना तथा उसकी इबादत (उपासना) करना है तथा अर्थ यह है कि तुम्हारी उत्पत्ति का उद्देश्य अल्लाह की इबादत है। यदि यह न हो तो अल्लाह को तुम्हारी कोई चिन्ता नहीं होगी, अर्थात अल्लाह के सदन में मनुष्य का मान-सम्मान उसके अल्लाह पर ईमान लाने तथा उसकी इबादत करने के कारण ही है।

The Ummah Technology Mission

शीघ्र ही मैं उसका दण्ड तुम्हें चिमट जाने वाला होगा।[1]

सूरतुश्शुअरा-२६

سُوْرَةُ الشُّعَرَاءِ

सूरः शुअरा मक्का में अवतरित हुई तथा इस में दो सौ सत्ताईस आयतें तथा ग्यारह रूकूअ है।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु तथा अत्यन्त दयालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

(१) ता॰सीन॰मीम॰

طٰسٓمٓ ①

(२) ये आयतें ज्योर्तिमय किताब की हैं।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ②

(३) उनके ईमान न लाने पर शायद आप तो अपना प्राण त्याग देंगे।[2]

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ③

(४) यदि हम चाहते तो उन पर आकाश से कोई ऐसा प्रतीक उतारते कि जिसके समक्ष उनकी गर्दनें झुक जातीं।[3]

اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ④

---

[1]इसमें काफिरों को सम्बोधन है कि तुमने अल्लाह को झुठलाया है, तो अब उसका दण्ड भी अवश्य तुम्हें भोगना है। अतः दुनिया में यह दण्ड बद्र में पराजय के रूप में उन्हें मिली तथा परलोक के नरक में स्थाई यातना भी उन्हें भोगनी होगी।

[2]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मानवता से जो सहानुभूति और जो शुभचिन्ता तथा उनके मार्गदर्शन के लिए जो तड़प थी, इसमें उसका प्रदर्शन है।

[3]अर्थात जिसे मानें तथा जिस पर ईमान लाये बिना चारा न होता। परन्तु इस प्रकार दबाव का पक्ष सम्मिलित हो जाता, जबकि हमने मनुष्य को इच्छा तथा मानने न मानने की स्वाधीनता प्रदान कर रखी है। ताकि उसकी परीक्षा ली जा सके। इसलिए हमने ऐसी निशानी भी नहीं उतारी कि जिससे हमारा कानून प्रभावित हो। तथा केवल नबी, तथा रसूल भेजने एवं किताबें (धर्मशास्त्र) उतारने पर ही बस किया।

The Ummah Technology Mission

وَمَا يَأْتِيهِم مِّن ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمَٰنِ مُحْدَثٍ إِلَّا كَانُوا عَنْهُ مُعْرِضِينَ ﴿٥﴾

(५) तथा उनके पास दयालु की ओर से जो भी नई शिक्षायें आयी यह उससे मुख फेरने वाले बन गये।

فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَأْتِيهِمْ أَنبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٦﴾

(६) उन लोगों ने झुठलाया है अब उनके पास शीघ्र ही उसकी सूचनायें आ जायेंगी, जिसके साथ वे उपहास कर रहे हैं।[1]

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمْ أَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ﴿٧﴾

(७) क्या उन्होंने धरती की ओर नहीं देखा? कि हमने उसमें हर प्रकार के सुन्दर जोड़े कितने उगाये हैं।[2]

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٨﴾

(८) नि:संदेह उसमें अवश्य प्रतीक है,[3] तथा उनमें के अधिकतर लोग ईमान (विश्वास) वाले नहीं हैं।[4]

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٩﴾

(९) तथा तेरा प्रभु नि:संदेह वही प्रभावशाली

---

[1]अर्थात झुठलाने के परिणाम स्वरूप हमारा प्रकोप निकट भविष्य में उन्हें अपनी पकड़ में ले लेगा, जिसे वे असम्भव समझकर उपहास करते हैं। यह प्रकोप दुनिया में भी सम्भव है जैसे कि कई समुदाय नाश हुए, अन्य अवस्था में आख़िरत में तो उससे किसी अवस्था में छुटकारा नहीं होगा। ما كانوا عنه معرضين नहीं कहा बल्कि ما كانوا به يَسْتَهْزِؤُن कहा। क्योंकि उपहास एक तो मुख मोड़ने एवं झुठलाने में अवश्य होता है। दूसरे यह मुख मोड़ने तथा झुठलाने से भी अधिक बड़ा अपराध है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] زَوْج का दूसरा अर्थ यहाँ भेद तथा प्रकार किये गये हैं। अर्थात प्रत्येक प्रकार की वस्तुयें पैदा कीं जो उत्तम हैं अर्थात मनुष्य के लिए लाभकारी हैं अथवा अधिक मात्रा में हैं जिस प्रकार अन्न, फल, शुष्क मेवे तथा जीव जन्तु आदि हैं।

[3]अर्थात जब अल्लाह तआला मृत धरती से ये वस्तुयें पैदा कर सकता है, तो क्या वह मनुष्यों को पुन: जीवित नहीं कर सकता।

[4]अर्थात उसके महान सामर्थ्य को देखने के उपरान्त अधिकतर लोग अल्लाह तथा रसूल को झुठलाते ही हैं, ईमान नहीं लाते।

The Ummah Technology Mission

तथा कृपालु है।[1]

(१०) तथा जब आपके प्रभु ने मूसा को पुकारा कि तू अत्याचारी लोगों के पास जा।[2]

وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ مُوسَىٰ أَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠﴾

(११) फ़िरऔन के समुदाय के पास, क्या वह सदाचार न करेंगे।

قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۚ أَلَا يَتَّقُونَ ﴿١١﴾

(१२) मूसा ने कहा मेरे प्रभु! मुझे तो भय है कि कहीं वह मुझे झुठला (न) दें।

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَن يُكَذِّبُونِ ﴿١٢﴾

(१३) तथा मेरा सीना (हृदय) संकुचित हो रहा है,[3] मेरी जीभ चल नहीं रही,[4] अतः तू हारून की ओर भी प्रकाशना (वह्यी) भेज।[5]

وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ إِلَىٰ هَارُونَ ﴿١٣﴾

---

[1]अर्थात प्रत्येक वस्तु पर उसका प्रभुत्व तथा बदला लेने पर प्रत्येक प्रकार का सामर्थ्य है, परन्तु चूँकि वह दयालु भी है इसलिए तुरन्त पकड़ नहीं करता बल्कि पूरा अवसर देता है तथा उसके पश्चात पकड़ करता है।

[2]यह प्रभु की उस समय की पुकार है जब आदरणीय मूसा मदयन से अपनी पत्नी के साथ वापस आ रहे थे, मार्ग में उन्हें तापने के लिए अग्नि की आवश्यकता प्रतीत हुई, तो आग की खोज में तूर पर्वत तक पहुँच गये, जहाँ से आकाशवाणी ने उनका स्वागत किया तथा उन्हें नबूअत के पद से सुशोभित किया गया तथा अत्याचारियों तक अल्लाह का संदेश पहुँचाने का कर्तव्य उनको सौंपा गया।

[3]इस भय से कि वह अत्यन्त क्रूर है, मुझे झुठलायेगा। इससे ज्ञात हुआ कि प्राकृतिक भय नबियों को भी हो सकता है।

[4]यह संकेत है इस बात की ओर कि आदरणीय मूसा अधिक धारा प्रवाह में बात नहीं करते थे। अथवा उस ओर कि जीभ पर अंगारा रखने के कारण उच्चारण में त्रुटि उत्पन्न हो गई थी, जिसे व्याख्याकार वर्णित करते हैं।

[5]अर्थात उनकी ओर जिब्रील को प्रकाशना (वह्यी) लेकर भेज तथा उन्हें भी प्रकाशना (वह्यी) तथा नबूअत से सुशोभित कर मेरा सहायक बना।

The Ummah Technology Mission

وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْۢبٌ فَأَخَافُ أَن يَقْتُلُونِ ﴿١٤﴾

(१४) तथा उनका मुझ पर मेरी एक त्रुटि का (दावा) भी है, मुझे डर है कि कहीं वह मुझे मार न डालें।[1]

قَالَ كَلَّا ۖ فَاذْهَبَا بِآيَاتِنَا ۖ إِنَّا مَعَكُم مُّسْتَمِعُونَ ﴿١٥﴾

(१५) (महाशक्तिशाली ने) कहा कि कदापि ऐसा न होगा, तुम दोनों हमारी निशानियाँ लेकर जाओ,[2] हम स्वयं सुनने वाले तुम्हारे साथ हैं।[3]

فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾

(१६) तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाकर कहो कि नि:संदेह हम विश्व के पालनहार के भेजे हुए हैं।

---

[1]यह संकेत है उस हत्या की ओर जो आदरणीय मूसा से अनजाने में हो गयी थी तथा मृतक 'क़िबती' अर्थात फ़िरऔन की जाति का था, इसलिए फ़िरऔन उसके बदले में आदरणीय मूसा की हत्या कर देना चाहता था, जिसकी सूचना पाकर आदरणीय मूसा मिस्र से मदयन चले गये थे। इस घटना को यद्यपि कई वर्ष व्यतीत हो गये थे, परन्तु फ़िरऔन के पास जाने पर वास्तव में इसकी संभावना थी कि फ़िरऔन उनको पकड़कर इस अपराध के कारण हत्या का दण्ड देने का प्रयत्न करे। इसलिए यह भय भी निराधार नहीं था।

[2]अल्लाह तआला ने सांत्वना दी कि तुम दोनों जाओ, मेरा संदेश उसको पहुँचाओ, तुम्हें जिस संभावना का भय है उससे हम तुम्हारी रक्षा करेंगे। आयात से तात्पर्य तर्क एवं स्पष्ट निशानियाँ हैं जिनसे प्रत्येक पैग़म्बर को परिचित करा दिया जाता है अथवा वे चमत्कार हैं जो आदरणीय मूसा को दिये गये थे, जैसे हाथ का ज्योंर्तिमय होना तथा छड़ी।

[3]अर्थात तुम जो कुछ कहोगे तथा उत्तर में वह जो कुछ कहेगा, हम सुन रहे होंगे। इसलिए घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। हम तुम्हें रिसालत का दायित्व देकर निश्चिन्त नहीं हो जायेंगे। बल्कि हमारी सहायता तुम्हारे साथ है। साथ होने का अर्थ सहायता एवं समर्थन देना है।

The Ummah Technology Mission

أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٧﴾

(१७) कि तू हमारे साथ इस्राईल की सन्तान को भेज दे।[1]

قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ فِينَا وَلِيدًا وَلَبِثْتَ فِينَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِينَ ﴿١٨﴾

(१८) (फ़िरऔन ने) कहा कि क्या हमने तुझे तेरी बाल्यावस्था में अपने यहाँ पोषण नहीं किया था ?[2] तथा तूने अपनी आयु के बहुत से वर्ष हममें व्यतीत नहीं किये ?[3]

وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِي فَعَلْتَ وَأَنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾

(१९) तथा फिर तू अपना वह कार्य कर गया जो कर गया तथा तू अकृतज्ञों में से है।[4]

قَالَ فَعَلْتُهَا إِذًا وَأَنَا مِنَ الضَّالِّينَ ﴿٢٠﴾

(२०) (आदरणीय मूसा ने) उत्तर दिया कि मैंने इस कार्य को उस समय किया था, जबकि मैं मार्ग भूले हुए लोगों में से था।[5]

---

[1]अर्थात एक बात यह कहो कि हम अपनी इच्छा से तेरे पास नहीं आये हैं, बल्कि सर्वलोक के प्रभु के प्रतिनिधि तथा उसके रसूल के रूप में आये हैं तथा दूसरी बात यह कि तूने (चार सौ वर्ष से) इस्राईल की सन्तान को दास बना रखा है, उनको स्वतन्त्र कर दे, ताकि मैं उन्हें सीरिया की धरती पर ले जाऊँ जिसका अल्लाह ने उनसे वादा किया है।

[2]फ़िरऔन ने आदरणीय मूसा के आमन्त्रण एवं माँग पर विचार करने के बजाय, उनका अपमान तथा अनादर करना प्रारम्भ कर दिया तथा कहा कि क्या तू वही है जो हमारी गोद में तथा हमारे घर में पला, जबकि हम इस्राईल की सन्तान के बालकों की हत्या कर देते थे।

[3]कुछ कहते हैं कि १८ वर्ष फ़िरऔन के भवन में व्यतीत किये, कुछ के निकट ३० तथा कुछ के निकट ४० वर्ष। अर्थात इतनी आयु व्यतीत करने के पश्चात, कुछ वर्ष इधर-उधर रहकर अब तू नबूअत का दावा करने लगा है ?

[4]फिर हमारा ही खाकर हमारे ही जाति के एक व्यक्ति की हत्या करके हमारी कृतघ्नता व्यक्त किया।

[5]अर्थात यह हत्या का प्रयास नहीं था बल्कि एक घूँसा ही था, जो उसे मारा था, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। इसके अतिरिक्त यह घटना भी नबूअत से पूर्व की है, जबकि मुझे ज्ञान का यह प्रकाश नहीं दिया गया था।

The Ummah Technology Mission

فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِي رَبِّي حُكْمًا وَّجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢١﴾

(२१) फिर तुम से भय खाकर मैं तुमसे भाग गया फिर मुझे मेरे प्रभु ने आदेश तथा ज्ञान प्रदान किया तथा मुझे अपने पैग़म्बरों में से कर दिया।[1]

وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ أَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيٓ إِسْرَآءِيْلَ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा मुझ पर क्या तेरा यही वह उपकार है? जिसे तू प्रदर्शित कर रहा है कि तूने इस्राईल की सन्तान को दास बना रखा है।[2]

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٣﴾

(२३) फ़िरऔन ने कहा समस्त विश्व का प्रभु क्या है?[3]

قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٢٤﴾

(२४) (आदरणीय मूसा ने) कहा वह आकाशों तथा धरती एवं उनके मध्य की सभी वस्तुओं का प्रभु है, यदि तुम विश्वास रखने वाले हो।

قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗٓ أَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ﴿٢٥﴾

(२५) (फ़िरऔन ने) अपने निकटवर्तियों से

---

[1]अर्थात पहले जो कुछ हुआ, अपने स्थान पर, परन्तु अब मैं अल्लाह का रसूल हूँ, यदि मेरा अनुकरण करेगा तो बच जायेगा अन्य परिस्थितियों में विनाश तेरे भाग्य में लिख दिया गया है।

[2]अर्थात यह अच्छा उपकार है जो तू मुझे जता रहा है कि मुझे नि:संदेह दास नहीं बनाया तथा स्वतन्त्र छोड़े रखा, परन्तु मेरे पूरे सम्प्रदाय को दास बनाये रखा है। इस महा अत्याचार के सापेक्ष इस उपकार का क्या महत्व है?

[3]यह उसने प्रश्न नहीं पूछा है, बल्कि गर्व का प्रदर्शन तथा अस्वीकृत रूप में कहा क्योंकि उस का दावा तो यह था।

﴿مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرِيْ﴾

"मैं अपने अतिरिक्त तुम्हारे लिए कोई अन्य देवता जानता ही नहीं।" (सूरः अल-क़सस-३८)

The Ummah Technology Mission

कहा कि क्या तुम सुन नहीं रहे ?[1]

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٦﴾

(२६) (आदरणीय मूसा ने) कहा वह तुम्हारा तथा तुम्हारे पूर्वजों का प्रभु है।

قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْٓ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٢٧﴾

(२७) (फ़िरऔन ने) कहा (लोगो) ! तुम्हारा यह रसूल जो तुम्हारी ओर भेजा गया है, यह तो निश्चित ही दीवाना है।

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾

(२८) (आदरणीय मूसा ने) कहा वही पूर्व तथा पश्चिम का तथा उनके मध्य की सभी वस्तुओं का प्रभु है,[2] यदि तुम बुद्धि रखते हो।

قَالَ لَىِٕنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ﴿٢٩﴾

(२९) (फ़िरऔन) कहने लगा (सुन ले) यदि तूने मेरे अतिरिक्त किसी को देवता बनाया तो मैं तुझे बन्दियों में डाल दूँगा।[3]

قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾

(३०) (मूसा ने) कहा चाहे मैं तेरे पास कोई प्रत्यक्ष वस्तु ले आऊँ ?[4]

---

[1]अर्थात क्या तुम इसकी बात पर आश्चर्य चकित नहीं होते कि मेरे अतिरिक्त भी कोई अन्य पूज्य है।

[2]अर्थात जिसने पूर्व को पूर्व बनाया, जिससे सितारे उदय होते हैं तथा पश्चिम को पश्चिम बनाया जिसमें सितारे अस्त होते हैं। इस प्रकार उनके मध्य जो कुछ है, उनका प्रभु तथा उनका प्रबन्ध करने वाला भी वही है।

[3]फ़िरऔन ने जब देखा कि मूसा अलैहिस्सलाम विभिन्न प्रकार से सर्वलोक के प्रभु के पूर्ण प्रभुत्व का स्पष्टीकरण कर रहे हैं जिसका कोई उचित उत्तर उससे नहीं बन पा रहा है। तो उसने तर्कों को छोड़ कर धमकी देना प्रारम्भ कर दिया तथा मूसा को जेल में डालने के लिए डराया।

[4]अर्थात ऐसी कोई वस्तु अथवा चमत्कार जिससे यह स्पष्ट हो जाये कि मैं सच्चा तथा वास्तविक रूप से अल्लाह का रसूल हूँ तब भी तू मेरी सत्यता को स्वीकार न करेगा ?

The Ummah Technology Mission

قَالَ فَأْتِ بِهٖٓ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾

(३१) (फ़िरऔन ने) कहा यदि तू सत्यवादियों में से है तो उसे प्रस्तुत कर।

فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿٣٢﴾

(३२) आप ने (उसी समय) अपनी छड़ी डाल दी जो अचानक खुल्लम-खुला (बहुत बड़ा) अजगर बन गई।[1]

وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿٣٣﴾

(३३) तथा अपना हाथ खींच निकाला तो वह भी उसी समय प्रत्येक देखने वाले को उज्जवल प्रकाश वाला दिखायी देने लगा।[2]

قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗٓ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾

(३४) (फ़िरऔन) अपने निकटवर्ती सरदारों से कहने लगा कि यह तो कोई बहुत बड़ा दक्ष जादूगर है।[3]

يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ۖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) यह तो चाहता है कि अपने जादू के बल से तुम्हें तुम्हारी धरती से निकाल दे, बताओ अब तुम क्या राय देते हो ?[4]

---

[1]कई स्थान पर ثُعبانٌ (सर्प) को حَيَّةٌ (नाग) तथा कई स्थान पर جَانٌّ कहा गया है। ثُعبانٌ वह सर्प होता है जो बड़ा हो तथा جَانٌّ छोटे साँप को कहते हैं तथा حَيَّة छोटे-बड़े दोनों प्रकार के सर्प को बोला जाता है। (फ़तहुल क़दीर) अर्थात यह चमत्कार देते समय लाठी ने पहले छोटे सर्प का रूप धारण किया फिर देखते ही देखते अजगर बन गया। والله أعلم

[2]अर्थात जेब से हाथ निकाला तो वह चन्द्रमा के टुकड़े की भाँति चमकता था। यह दूसरा चमत्कार मूसा ने प्रस्तुत किया।

[3]फ़िरऔन बजाय इसके कि इन चमत्कारों को देखकर, आदरणीय मूसा की पुष्टि करता तथा ईमान लाता, उसने झुठलाने तथा द्वेष का मार्ग अपनाया तथा आदरणीय मूसा के विषय में कहा कि यह कोई दक्ष जादूगर है।

[4]फिर अपने सम्प्रदाय को और अधिक भड़काने के लिए कहा कि वह इन जादू के द्वारा तुम्हें यहाँ से निकाल करके स्वयं इस पर अधिकार करना चाहता है। अब बताओ ! तुम्हारा क्या विचार है ? अर्थात इसके साथ क्या व्यवहार किया जाये।

The Ummah Technology Mission

(३६) उन सबने कहा आप इसे तथा इसके भाई को स्थगित कीजिए तथा सभी नगरों में एकत्रित करने वालों को भेज दीजिए।

قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَآىِٕنِ حٰشِرِيْنَ ۙ﴿۳۶﴾

(३७) जो आपके पास दक्ष जादूगरों को हो ले आयें।[1]

يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ﴿۳۷﴾

(३८) फिर एक निर्धारित दिन के निश्चय पर सभी जादूगर एकत्रित किये गये।[2]

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۙ﴿۳۸﴾

(३९) तथा जनसामान्य से भी कह दिया गया

وَّقِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ

---

[1]अर्थात इन दोनों को अभी तो इनके हाल पर छोड़ दो, तथा सभी नगरों से जादूगर एकत्रित करके उनमें प्रतियोगिता करायी जाये ताकि इनके जादू का उत्तर तथा तेरा समर्थन एवं विजय हो जाये। तथा यह अल्लाह ही की ओर से अपनी योजना थी ताकि लोग एक ही स्थान पर एकत्रित हो जायें तथा इन निशानियों तथा चमत्कारों का प्रत्यक्ष स्वयं दर्शन करें जो अल्लाह तआला ने आदरणीय मूसा को प्रदान किया था।

[2]अत: जादूगरों की एक बड़ी संख्या मिस्र तथा उसके निकटवर्ती क्षेत्रों से एकत्रित कर ली गयी, उनकी संख्या १२ हज़ार, १७ हज़ार, १९ हज़ार, ३० हज़ार, तथा ८० हज़ार (विभिन्न कथनानुसार) बतायी जाती है। वास्तविक संख्या अल्लाह ही उचित रूप से जानता है। क्योंकि किसी प्रमाणित कथन में संख्या का वर्णन नहीं है। इसका विस्तृत वर्णन *सूरः आराफ़, सूरः ताहा* में भी गुज़र चुका है। अर्थात फ़िरऔन के सम्प्रदाय किब्त, ने तो अल्लाह की दिव्य ज्योति को अपने मुख से बुझाना चाहा था, परन्तु अल्लाह तआला अपने दिव्य ज्योति को पूर्ण करना चाहता था। अत: कुफ़्र तथा ईमान के संघर्ष में सदैव ऐसा ही होता आया है कि जब भी कुफ़्र जाँघ ठोंक कर ईमान के मुक़ाबिले में आता है तो ईमान को अल्लाह तआला सम्मानित तथा प्रभावशाली करता है। जिस प्रकार फ़रमाया :

﴿ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ ﴾

"बल्कि हम सत्य को असत्य पर खींच मारते हैं, अत: वह उसका सिर फोड़ देता है तथा असत्य उसी समय समाप्त हो जाता है।" (*सूरः अल-अंबिया-१८*)

The Ummah Technology Mission

مُّجْتَمِعُونَ ﴿٣٩﴾

कि तुम भी एकत्रित हो जाओगे।[1]

لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ إِن كَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ﴿٤٠﴾

(४०) ताकि यदि जादूगर प्रभावशाली हो जायें तो हम उन्हीं का अनुकरण करेंगे।

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ أَئِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿٤١﴾

(४१) जादूगर आकर फ़िरऔन से कहने लगे कि यदि हम विजयी हुए तो हमें कुछ उपहार भी मिलेगा।

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٢﴾

(४२) (फ़िरऔन ने) कहा हाँ ! (अत्यन्त प्रसन्नता से) बल्कि ऐसी परिस्थिति में तुम मेरे विशेष दरबारी बन जाओगे।

قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنتُم مُّلْقُونَ ﴿٤٣﴾

(४३) (आदरणीय) मूसा ने जादूगरों से कहा जो कुछ तुम्हें डालना है डाल दो।[2]

فَأَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ﴿٤٤﴾

(४४) उन्होंने अपनी रस्सियाँ तथा डन्डे डाल दिये तथा कहने लगे फ़िरऔन के सम्मान की सौगन्ध हम अवश्य विजयी होंगे।[3]

---

[1]अर्थात जनता को भी सावधान किया जा रहा है कि तुम्हें भी यह प्रतियोगिता देखने के लिए अवश्य उपस्थिति होना है।

[2]आदरणीय मूसा की ओर से जादूगरों को प्रथम अपने खेल दिखाने के लिए कहने में यह विशेषता ज्ञात होती है कि प्रथम तो उन पर यह स्पष्ट हो जाये कि अल्लाह का पैग़म्बर इनकी इतनी बड़ी संख्या तथा उनके जादुई खेलों से तनिक भी भयभीत नहीं है। द्वितीय यह उद्देश्य भी हो सकता है कि जब बाद में अल्लाह के आदेश से ये सारे जादुई खेल एक क्षण में समाप्त हो जायेंगे तो दर्शकों पर अच्छे प्रभाव पड़ेंगे तथा शायद इस प्रकार अधिक लोग अल्लाह पर ईमान ले आयेंगे। अत: ऐसा ही हुआ, बल्कि जादूगर ही सर्वप्रथम ईमान ले आये। जैसाकि आगे आ रहा है।

[3]जैसाकि *सूरः अल-आराफ़* तथा *सूरः ताहा* में गुज़र चुका है कि उन जादूगरों ने अपने विचार से बहुत बड़ा जादू प्रस्तुत किया था। ﴿سَحَرُوا أَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَاءُو بِسِحْرٍ عَظِيمٍ﴾ (सूरः आराफ़-११६)

The Ummah Technology Mission

فَأَلْقَىٰ مُوسَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿٤٥﴾

(४५) अब (आदरणीय) मूसा ने भी अपनी छड़ी डाल दी, जिसने उसी क्षण उनके झूट के बनाये खेल को निगलना प्रारम्भ कर दिया।

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ ﴿٤٦﴾

(४६) यह देखते ही जादूगर सजदा (नतमस्तक) में गिर गये।

قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा उन्होंने स्पष्ट रूप से कह दिया कि हम तो समस्त लोक के प्रभु पर ईमान ले आये।

رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿٤٨﴾

(४८) अर्थात मूसा तथा हारून के प्रभु पर।

قَالَ آمَنتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۚ لَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم مِّنْ

(४९) (फ़िरऔन ने) कहा कि मेरी आज्ञा से पूर्व तुम उस पर ईमान ले आये। नि:संदेह यही तुम्हारा प्रमुख (बड़ा गुरू) है जिसने तुम सब को जादू सिखाया है,[1] तो तुम्हें अभी-अभी ज्ञात हो जायेगा, सौगन्ध है, मैं भी

यहाँ तक कि आदरणीय मूसा ने भी अपने हृदय में भय का आभास किया ﴿فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّوسَىٰ﴾ (सूरः *ताहा*-६७) अर्थात उन जादूगरों को अपनी सफलता तथा श्रेष्ठता पर अति विश्वास था, जैसाकि यहाँ इन शब्दों से स्पष्ट है परन्तु अल्लाह तआला ने आदरणीय मूसा को साँत्वना दी, कि भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। ज़रा अपनी लाठी धरती पर फेंकों फिर देखो। अतः लाठी का धरती पर फेंकना था कि उसने एक भयानक अजगर का रूप धारण कर लिया तथा एक-एक करके उनके सारे जादुई खेलों को वह निगल गया। जैसाकि अगली आयत में है।

[1]फ़िरऔन के लिए यह घटना विचित्र एवं अत्यन्त आश्चर्यजनक थी कि जिन जादूगरों के द्वारा वह विजय एवं सफलता की आशा लगाये बैठा था, वही न केवल पराजित हो गये, बल्कि उसी समय वे उस प्रभु पर ईमान ले आये जिसने आदरणीय मूसा तथा हारून को प्रमाण तथा चमत्कार देकर भेजा था, परन्तु बजाय इसके कि फ़िरऔन भी विचार तथा चिन्तन करके ईमान ले आता, उसने गर्व तथा घमण्ड का मार्ग अपनाया तथा जादूगरों को डराना धमकाना प्रारम्भ कर दिया तथा कहा कि तुम सबके सब इसके शिष्य (चेले) हो। तुम्हारा उद्देश्य समझ में आता है कि इस षड़यन्त्र के द्वारा तुम हमें यहाँ से निष्कासित कर दो। ﴿إِنَّ هَٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوهُ فِي الْمَدِينَةِ لِتُخْرِجُوا مِنْهَا أَهْلَهَا﴾ (सूरः *अल-आराफ़*-१२३)

The Ummah Technology Mission

خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٩﴾

तुम्हारे हाथ-पैर उल्टे रूप से काट दूँगा तथा तुम सबको फाँसी पर लटका दूँगा।[1]

قَالُوا لَا ضَيْرَ ۖ إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنقَلِبُونَ ﴿٥٠﴾

(५०) उन्होंने कहा कि कोई चिन्ता नहीं[2] हम तो अपने प्रभु की ओर लौटकर जाने वाले ही हैं।

إِنَّا نَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطَايَانَا أَن كُنَّا أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥١﴾

(५१) इस आधार पर कि हम सर्वप्रथम ईमान वाले बने हैं,[3] हमें आशा होती है कि हमारा प्रभु हमारी सभी त्रुटियाँ क्षमा कर देगा।

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي إِنَّكُم مُّتَّبَعُونَ ﴿٥٢﴾

(५२) तथा हमने मूसा को प्रकाशना (वह्यी) की कि रातों-रात मेरे भक्तों को निकाल ले जा, तुम सब पीछा किये जाओगे।[4]

فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿٥٣﴾

(५३) फ़िरऔन ने नगरों में एकत्रित करने वालों को भेज दिया।

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيلُونَ ﴿٥٤﴾

(५४) कि नि:संदेह यह गुट बहुत ही अल्प

---

[1]उल्टे हाथ-पैर काटने का अर्थ, दाहिना हाथ बायाँ पैर अथवा बायाँ हाथ तथा दाहिना पैर है इसके ऊपर फाँसी पर चढ़ाना अलग। अर्थात हाथ-पैर काटने से भी उसके क्रोध की अग्नि ठंडी न हुई, तो उसने फाँसी पर लटकाने की घोषणा तक की।

[2] ضَيْرَ لا कोई बात नहीं अथवा हमें कोई चिन्ता नहीं। अर्थात अब जो दण्ड चाहे दे, ईमान से नहीं फिर सकते।

[3]प्रथम ईमानवाले इस लिये कहा कि फ़िरऔन के समुदाय वाले मुसलमान नहीं हुए तथा उन्होंने ईमान स्वीकार करनें में प्राथमिकता की।

[4]जब मिस्र देश में आदरणीय मूसा का निवास अधिक समय तक हो गया तथा हर प्रकार से उन्होंने फ़िरऔन तथा उसके दरबारियों पर प्रमाणित कर दिया, परन्तु उसके उपरान्त वे ईमान लाने के लिए तैयार नहीं हुए, तो अब इसके अतिरिक्त कोई मार्ग शेष नहीं रह गया था कि उन्हें यातना तथा प्रकोप से पीड़ित किया जाये। अत: अल्लाह तआला ने मूसा को आदेश दिया कि रातों-रात इस्राईल की सन्तान को लेकर यहाँ से निकल जायें, तथा कहा कि फ़िरऔन तुम्हारे पीछे आयेगा, घबराना नहीं।

The Ummah Technology Mission

संख्या में है।[1]

(५५) तथा उस पर ये हमें अत्यन्त क्रोधित कर रहे हैं।[2]

وَإِنَّهُمْ لَنَا لَغَائِظُونَ ﴿٥٥﴾

(५६) तथा नि:संदेह हम बहुसंख्यक हैं, उनसे सावधान रहने वाले।[3]

وَإِنَّا لَجَمِيعٌ حَاذِرُونَ ﴿٥٦﴾

(५७) अन्ततः हमने उन्हें बाग़ों तथा स्रोतों से निकाल बाहर किया।

فَأَخْرَجْنَاهُم مِّن جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٧﴾

(५८) तथा कोषों से और अच्छे-अच्छे स्थानों से।[4]

وَكُنُوزٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٥٨﴾

(५९) इसी प्रकार हुआ, तथा हमने उन (सभी वस्तुओं) का उत्तराधिकारी इस्राईल की संतान को बना दिया।[5]

كَذَٰلِكَ وَأَوْرَثْنَاهَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٥٩﴾

---

[1]यह अपमानित करने के लिए कहा, वरन् उनकी संख्या छः लाख बतायी जाती है।

[2]अर्थात मेरी आज्ञा के बिना उनका यहाँ से भाग जाना हमारे लिए क्रोध का कारण है।

[3]इसलिए उनके इस षड़यन्त्र को असफल करने के लिए तत्पर (तैयार) रहने की आवश्यकता है।

[4]अर्थात फ़िरऔन तथा उसकी सेना इस्राईल की सन्तान का पीछा करने के लिए क्या निकली ? कि पुनः पलटकर अपने घरों तथा बाग़ों में आने का सौभाग्य ही नहीं हुआ। इस प्रकार अल्लाह तआला ने अपनी दूरदर्शिता एवं योजना के अनुसार उन्हें सभी सुख-सुविधाओं से वंचित करके उनका उत्तराधिकारी दूसरों को बना दिया।

[5]अर्थात जो राज्य तथा अधिपत्य फ़िरऔन को प्राप्त थी, वह उससे छीनकर हमने इस्राईल की संतान को दे दिया। कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि इससे तात्पर्य मिस्र की भाँति राज्य तथा सांसारिक सुख हमने इस्राईल की सन्तान को भी प्रदान किया। परन्तु इस्राईल की सन्तान मिस्र से निकल जाने के पश्चात पुनः मिस्र वापस नहीं आयी। इसके अतिरिक्त सूरः दुःखान में फ़रमाया गया है ﴿وَأَوْرَثْنَاهَا قَوْمًا آخَرِينَ﴾ "हमने उसका उत्तराधिकारी किसी अन्य को बनाया।" (ऐसरूत्तफ़ासीर) प्रथम वर्णन के विषय में ज्ञान वाले कहते हैं कि قوماً آخرين में قوم शब्द यद्यपि सामान्य रूप से प्रयोग हुआ है परन्तु

The Ummah Technology Mission

فَأَتْبَعُوهُم مُّشْرِقِينَ ﴿٦٠﴾

(६०) अत: फ़िरऔन के अनुयायी सूर्योदय से ही उनका पीछा करने में निकल पड़े।[1]

فَلَمَّا تَرَاءَى الْجَمْعَانِ قَالَ أَصْحَابُ مُوسَىٰ إِنَّا لَمُدْرَكُونَ ﴿٦١﴾

(६१) अत: जब दोनों ने एक-दूसरे को देख लिया, तो मूसा के साथियों ने कहा, हम तो नि:संदेह पकड़ लिये गये।[2]

قَالَ كَلَّا ۖ إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٦٢﴾

(६२) (मूसा ने) कहा कदापि नहीं। विश्वास करो, मेरा प्रभु मेरे साथ है, जो अवश्य मुझे मार्ग दिखायेगा।[3]

فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنِ اضْرِب

(६३) हमने मूसा की ओर प्रकाशना (वह्यी) भेजी कि समुद्र के पानी पर अपनी छड़ी

यहाँ सूर: *अल-शुअरा* में जब इस्राईल की सन्तान को उत्तराधिकारी बनाने के विषय में स्पष्ट शब्दों में आ गया, तो इससे तात्पर्य इस्राईल की सन्तान का समुदाय ही होगा। परन्तु स्वयं क़ुरआन में स्पष्ट शब्दों में होने के अनुसार मिस्र से निकलने के पश्चात इस्राईल की संतान को 'पवित्र धरती' में प्रवेश का आदेश हुआ। तथा उनके अस्वीकार करने पर चालीस वर्षों तक के लिए प्रवेश में देरी कर के 'तीह' नामक मैदान में भटकाया गया। उसके पश्चात वे 'पवित्र धरती' में प्रवेश कर पाये। अत: आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र सहीह हदीस के अनुसार "*बैतुल मोक़द्दस*" के निकट ही है। इसलिए ठीक अर्थ यह है कि जैसी सुख-सुविधा फ़िरऔन को मिस्र में प्राप्त थी, वैसी ही सुख-सुविधायें अब इस्राईल की सन्तान को प्रदान की गयीं। परन्तु मिस्र में नहीं फ़िलिस्तीन में।

[1]अर्थात जब भोर हुआ तथा फ़िरऔन को पता लगा कि इस्राईल की सन्तान रातों-रात यहाँ से निकल गई है, तो उसके राज्याधिकार को बड़ी ठेस पहुँची। तथा सूर्योदय होते ही उनकी खोज में निकल पड़ा।

[2]अर्थात फ़िरऔन की सेना को देखते ही वे घबरा गये कि आगे समुद्र है तथा पीछे फ़िरऔन की सेना अब सुरक्षा किस प्रकार संभव है ? अब पुन: फिर वही फ़िरऔन तथा उसकी दासता होगी।

[3]आदरणीय मूसा ने सांत्वना दी कि तुम्हारा अनुमान ठीक नहीं, अब पुन: फ़िरऔन की पकड़ में नहीं जाओगे। मेरा प्रभु अवश्य सुरक्षित मार्ग की ओर संकेत करेगा।

The Ummah Technology Mission

मार,[1] तो उसी समय समुद्र फट गया तथा प्रत्येक भाग पानी का बड़े पर्वत के समान हो गया।[2]

بِعَصَاكَ الْبَحْرَ ۖ فَانفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيمِ ﴿٦٣﴾

(६४) तथा हमने उसी स्थान पर अन्यों को निकट ला खड़ा कर दिया।[3]

وَأَزْلَفْنَا ثَمَّ الْآخَرِينَ ﴿٦٤﴾

(६५) तथा मूसा को और उसके सभी साथियों को मुक्ति प्रदान कर दी।

وَأَنجَيْنَا مُوسَىٰ وَمَن مَّعَهُ أَجْمَعِينَ ﴿٦٥﴾

(६६) फिर अन्य सभी को डिबो दिया।[4]

ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ﴿٦٦﴾

(६७) नि:संदेह इसमें बड़ी शिक्षा है, तथा उन में के अधिकतर लोग ईमान वाले नहीं।[5]

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٦٧﴾

(६८) तथा नि:संदेह आप का प्रभु अत्यन्त प्रभावशाली एवं दयालु है।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٦٨﴾

---

[1]अत: अल्लाह ने यह मार्गदर्शन तथा संकेत दिया कि अपनी लाठी समुद्र के पानी पर मारो, जिससे दायीं ओर का पानी दायीं तथा बायीं ओर का पानी बायीं ओर रूक गया तथा दोनों के मध्य मार्ग बन गया। कहा जाता है कि बारह क़बीलों के लिए बारह मार्ग बन गये थे।

[2] فِرق का अर्थ है समुद्र का भाग, طود का अर्थ है पर्वत। अर्थात पानी का प्रत्येक भाग बड़े पर्वत के रूप में खड़ा हो गया। यह अल्लाह तआला की ओर से चमत्कार का प्रदर्शन था ताकि मूसा तथा उनका समुदाय फ़िरऔन से छुटकारा पा ले, अल्लाह के इस समर्थन के बिना फ़िरऔन से छुटकारा सम्भव नहीं था।

[3]इससे तात्पर्य फ़िरऔन तथा उसकी सेना है अर्थात हमने दूसरों को समुद्र के निकट कर दिया।

[4]मूसा तथा उन पर ईमान लाने वालों को हमने छुटकारा दिलवाया तथा फ़िरऔन एवं उसकी सेना जब उन्हीं मार्गों से गुज़रने लगी, तो हमने समुद्र को पूर्वत स्थिति में प्रवाहित कर दिया, जिससे फ़िरऔन अपनी सेना सहित डूब गया।

[5]अर्थात यद्यपि इस घटना में जो अल्लाह की सर्वशक्तिमान होने का द्योतक है, बड़ी निशानी है, परन्तु उसके उपरान्त अधिकतर लोग ईमान लाने वाले नहीं।

The Ummah Technology Mission

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ إِبْرٰهِيمَ ﴿٦٩﴾

(६९) तथा उन्हें इब्राहीम की घटना भी सुना दो।

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ﴿٧٠﴾

(७०) जबकि उन्होंने अपने पिता तथा अपने समुदाय से फ़रमाया कि तुम किसकी इबादत करते हो।

قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِينَ ﴿٧١﴾

(७१) उन्होंने उत्तर दिया कि हम 'मूर्तियों की' इबादत करते हैं, हम तो निरन्तर उनके पुजारी बने बैठे हैं।[1]

قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ﴿٧٢﴾

(७२) आप (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि जब तुम उन्हें पुकारते हो तो क्या वह सुनते भी हैं ?

أَوْ يَنفَعُونَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ ﴿٧٣﴾

(७३) अथवा तुम्हें लाभ-हानि भी पहुँचा सकते हैं।[2]

قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٧٤﴾

(७४) उन्होंने कहा यह (हम कुछ नहीं जानते) हमने तो अपने पूर्वजों को इस प्रकार करते पाया।[3]

قَالَ أَفَرَءَيْتُم مَّا كُنتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٧٥﴾

(७५) (आप ने) कहा कुछ जानते भी हो,[4] जिन्हें तुम पूज रहे हो।

---

[1]अर्थात रात-दिन उनकी पूजा करते हैं।

[2]अर्थात तुम उनकी पूजा छोड़ दो, तो क्या वे तुम्हें हानि पहुँचाते हैं ?

[3]जब वे आदरणीय इब्राहीम के प्रश्न का कोई उचित उत्तर नहीं दे सके तो यह कह कर छुटकारा प्राप्त कर लिया। जैसे आज भी लोगों को क़ुरआन तथा हदीस की बात बतायी जाये तो यही तर्क प्रस्तुत करते हैं कि हमारे परिवार में हमारे पूर्वजों के समय से यही कुछ होता आ रहा है, हम उसे नहीं छोड़ सकते।

[4] أَفَرَءَيْتُم का अर्थ है यहाँ देखना, चिन्तन तथा विचार करने के अर्थ में है।

The Ummah Technology Mission

(७६) तुम तथा तुम्हारे पूर्व पिता,

(७७) वे सभी मेरे शत्रु हैं[1] सिवाय सत्य अल्लाह (तआला) के जो सब लोकों का पालनहार है।[2]

(७८) जिसने मुझे पैदा किया है तथा वही मेरा मार्गदर्शन करता है।[3]

(७९) वही है जो मुझे खिलाता-पिलाता है।[4]

(८०) तथा जब मैं रोगी हो जाऊँ तो मुझे निरोग करता है।[5]

(८१) तथा वही मुझे मार डालेगा, फिर जीवित कर देगा।[6]

---

[1]इसलिए कि तुम सब अल्लाह को छोड़कर अन्यों की पूजा करने वाले हो। कुछ व्याख्याकारों ने इसका अर्थ यह वर्णन किया है कि जिनकी तुम तथा तुम्हारे पूर्वज पूजा करते रहे हैं, वे सारे देवता मेरे शत्रु हैं अर्थात मैं उनसे अत्यन्त विमुख हूँ।

[2]अर्थात वह शत्रु नहीं, बल्कि वह तो इस लोक तथा परलोक में मेरा संरक्षक एवं मित्र है।

[3]अर्थात सांसारिक एवं धार्मिक हितों एवं लाभ की ओर।

[4]अर्थात विभिन्न प्रकार की जीविका पैदा करने वाला, तथा जो पानी हम पीते हैं, उसे उपलब्ध करने वाला भी वही अल्लाह है।

[5]रोग को दूर करके स्वास्थ प्रदान करने वाला भी वही है। अर्थात औषधियों में स्वास्थ प्रदान की शक्ति प्रदान करने का आदेश भी वही देता है। वरन् औषधियाँ भी अप्रभावी सिद्ध होती हैं। रोग भी अल्लाह के आदेश एवं इच्छा से आते हैं। परन्तु इस का सम्बन्ध अल्लाह से नहीं स्थापित किया जा सकता, बल्कि अपनी ओर किया। यह माना अल्लाह के वर्णन में उसके आदर तथा सम्मान का पक्ष सुरक्षित रखा।

[6]अर्थात क़ियामत के दिन, जब वह सारे लोगों को पुनः जीवित करके एकत्रित करेगा, मुझे भी जीवित करेगा।

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِيٓ أَطۡمَعُ أَن يَغۡفِرَ لِي خَطِيٓـَٔتِي يَوۡمَ ٱلدِّينِ ٨٢

(८२) तथा जिससे आशा बंधी हुई हैं कि वह बदला देने वाले दिन मेरे पाप को क्षमा कर देगा।[1]

رَبِّ هَبۡ لِي حُكۡمٗا وَأَلۡحِقۡنِي بِٱلصَّٰلِحِينَ ٨٣

(८३) हे मेरे प्रभु! मुझे प्रबोध प्रदान कर[2] तथा मुझे पवित्र लोगों में मिला दे।

وَٱجۡعَل لِّي لِسَانَ صِدۡقٖ فِي ٱلۡأٓخِرِينَ ٨٤

(८४) तथा मेरी पवित्र याद आगामी लोगों में भी शेष रख।[3]

وَٱجۡعَلۡنِي مِن وَرَثَةِ جَنَّةِ ٱلنَّعِيمِ ٨٥

(८५) तथा मुझे सुखों वाला स्वर्ग के उत्तराधिकारियों में से बना दे।

وَٱغۡفِرۡ لِأَبِيٓ إِنَّهُۥ كَانَ مِنَ ٱلضَّآلِّينَ ٨٦

(८६) तथा मेरे पिता को क्षमा कर दे, निःसंदेह वह भटकने वालों मे से था।[4]

---

[1]यहाँ आशा, विश्वास के अर्थ में है। क्योंकि किसी महानशक्ति से आशा, विश्वास के समकक्ष होती है, तथा अल्लाह तो पूरे विश्व की सर्व महान शक्ति है, उससे सम्बन्धित आशा विश्वास क्यों न होगी? इसीलिए व्याख्याकार कहते हैं कि क़ुरआन में जहाँ भी अल्लाह के लिए शब्द طمع प्रयोग हुआ है, वह विश्वास के अर्थ में ही है। خَطِيٓـَٔتِي शब्द में خَطِيٓـَٔة एक वचन है परन्तु خطايا (बहुवचन) के अर्थ में है। अंबिया अलैहिस्सलाम यद्यपि निष्पाप होते हैं। इसलिए उनसे किसी महापाप का घटित होना संभव नहीं। परन्तु फिर भी अपने कुछ कर्मों को आलस्य समझकर अल्लाह के सदन में क्षमा याचना करेंगे।

[2]आदेश तथा विज्ञान से तात्पर्य ज्ञान तथा समझ अथवा नबूअत तथा रिसालत अथवा अल्लाह की आज्ञा तथा विधान की जानकारी है।

[3]अर्थात जो लोग मेरे पश्चात क़ियामत तक आयेंगे, वे मेरा स्मरण अच्छे शब्दों में करते रहें। इससे ज्ञात हुआ कि पुण्यों का बदला अल्लाह तआला संसार में अच्छे शब्दों तथा उत्तम प्रशंसा के रूप में प्रदान करता है। जैसे आदरणीय इब्राहीम का स्मरण अच्छे शब्दों में सभी धर्मों के लोग करते हैं, किसी को भी उनके मान-सम्मान से इंकार नहीं।

[4]यह दुआ उस समय की थी, जब उनको ज्ञात नहीं था कि मुशरिक (अल्लाह का शत्रु) के लिए मोक्ष की प्रार्थना (दुआ) करना निषेध है, जब अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट कर दिया तो उन्होंने अपने पिता से भी अलगाव का प्रदर्शन कर दिया। (सूरः अत-तौबा-११४)

The Ummah Technology Mission

وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ﴿٨٧﴾

(८७) तथा जिस दिन कि लोग पुनः जीवित किये जायें मुझे अपमानित न कर।[1]

يَوْمَ لَا يَنفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ﴿٨٨﴾

(८८) जिस दिन कि धन तथा पुत्र कुछ काम न आयेगा।

إِلَّا مَنْ أَتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿٨٩﴾

(८९) परन्तु (लाभप्रद वही होगा,) जो अल्लाह तआला के समक्ष निर्दोष दिल लेकर जाये।[2]

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٩٠﴾

(९०) तथा सदाचारियों (परहेज़गारों) के लिए स्वर्ग अत्यन्त निकट ला दी जायेगी।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِلْغَاوِينَ ﴿٩١﴾

(९१) तथा भटके हुए लोगों के लिए नरक प्रत्यक्ष कर दिया जायेगा।[3]

وَقِيلَ لَهُمْ أَيْنَمَا كُنتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٩٢﴾

(९२) तथा उनसे पूछा जायेगा कि तुम जिनकी पूजा करते रहे वह कहाँ हैं।

---

[1]अर्थात सभी सृष्टि के समक्ष मेरी पकड़ करके अथवा यातना दे कर। हदीस में आता है कि क़ियामत के दिन जब आदरणीय इब्राहीम अपने पिता का बुरा हाल देखेंगे, तो एक बार फिर अल्लाह के समक्ष उनके लिए प्रार्थना करेंगे, हे अल्लाह ! इससे अधिक मेरे लिए अपमान क्या होगा ? अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि मैं ने स्वर्ग काफ़िरों के लिए निषेध (हराम) कर दी है। फिर उनके पिता को गंदगी में लिपटे हुए बिज्जू की भाँति उन्हें नरक में डाल दिया जायेगा। (सहीह बुख़ारी सूरः *अल-शूअरा*, किताबुल अंविया, बाब कौलिल्लाह वत्तख़जल्लाहु इब्राहीम ख़लीला)

[2]स्वच्छ हृदय अथवा निर्दोष हृदय से तात्पर्य वह हृदय जो शिर्क से शुद्ध हो। अर्थात ईमानवाला हृदय। इसलिए कि काफ़िर तथा द्वयवादी का हृदय रोगी होता है। कुछ कहते हैं : बिदअत से शून्य तथा सुन्नत से संतोष हृदय, कुछ के निकट माया-मोह से शुद्ध हृदय तथा कुछ के निकट मूर्खता के अंधकार तथा नैतिक पतन से स्वच्छ हृदय। यह सभी भावार्थ ठीक हो सकते हैं। क्योंकि ईमानवाले का हृदय वर्णित सभी बुराईयों से शुद्ध होता है।

[3]अर्थ यह है कि स्वर्ग अथवा नरक में प्रवेश में पूर्व उसे उनके समक्ष प्रस्तुत कर दिया जायेगा। जिससे काफ़िरों के दुख में तथा ईमानवालों की प्रसन्नता में और अधिकता हो जायेगी।

The Ummah Technology Mission

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿۹۳﴾

(९३) जो अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त थे, क्या वह तुम्हारी सहायता करते हैं ? अथवा कोई बदला ले सकते हैं ।[1]

فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ﴿۹۴﴾

(९४) अत: वह सभी तथा कुल भटके हुए लोग नरक में ऊपर-नीचे डाल दिये जायेंगे ।[2]

وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ﴿۹۵﴾

(९५) तथा इब्लीस की सभी की सभी सेना भी ।[3]

قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ﴿۹۶﴾

(९६) वहाँ वे आपस में लड़ते-झगड़ते हुए कहेंगे ।

تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۹۷﴾

(९७) अल्लाह की सौगन्ध ! नि:सदेंह हम तो खुली त्रुटि पर थे ।

اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۸﴾

(९८) जबकि तुम्हें सबलोक के प्रभु के समान समझ बैठे थे ।[4]

وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۹۹﴾

(९९) तथा हमें तो सिवाय कुकर्मियों के किसी अन्य ने पथभ्रष्ट नहीं किया था ।[5]

---

[1]अर्थात तुमसे यातना टाल दें अथवा स्वयं अपने आपको उससे बचा लें ।

[2]अर्थात देवताओं एवं पूजारियों सबको माल के गाँठो की तरह एक-दूसरे के ऊपर डाल दिया जायेगा ।

[3]इससे तात्पर्य वह सेना है जो लोगों को भटकाती थी ।

[4]संसार में वस्तुकला के आधार पर कटा हुआ पत्थर तथा क़ब्र पर बना हुआ आकर्षित गुम्बद, मुशरिकों को दैवी शक्ति प्राप्त प्रतीत होता है । परन्तु क़ियामत वाले दिन पता चलेगा कि यह तो स्पष्ट भटकावा था कि वे उन्हें प्रभु के समान समझते थे ।

[5]अर्थात वहाँ जाकर पता चलेगा कि हमें दूसरे अपराधियों ने भटकाया । संसार में उन्हें सर्तक किया जाता रहा कि अमुक-अमुक कार्य भटकावा है धर्म के नाम पर अधर्म है, शिर्क है तो नहीं मानते, न सोंच विचार करते हैं कि सत्य तथा असत्य उन पर खुल सके ।

The Ummah Technology Mission

فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِينَ ﴿١٠٠﴾

(१००) अब तो हमारी कोई सिफ़ारिश करने वाला भी नहीं।

وَلَا صَدِيقٍ حَمِيمٍ ﴿١٠١﴾

(१०१) तथा न कोई (सच्चा) शुभचिन्तक मित्र।[1]

فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٢﴾

(१०२) यदि हमें एक बार पुनः जाने को मिलता तो हम पक्के सच्चे ईमान वाले बन जाते।[2]

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾

(१०३) यह बात निःसंदेह एक अत्यन्त बड़ी निशानी है।[3] उनमें के अधिकतर लोग ईमान लाने वाले नहीं।[4]

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾

(१०४) तथा निःसंदेह आपका प्रभु ही प्रभावशाली दयालु है।

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾

(१०५) नूह के सम्प्रदाय ने भी नबियों को झुठलाया।[5]

---

[1]पापी मुसलमानों की सिफ़ारिश तो अल्लाह की आज्ञा के पश्चात अंबिया, पुण्यात्मा लोग विशेष रूप से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम करेंगे। परन्तु काफ़िर तथा मुश्रिक की सिफ़ारिश करने की आज्ञा किसी को भी न होगी, न साहस, तथा न वहाँ मित्रता ही काम आयेगी।

[2]काफ़िर तथा मुश्रिक क़ियामत के दिन पुनः दुनिया में आने की कामना करेंगे ताकि वे अल्लाह की आज्ञा का पालन करके अल्लाह को प्रसन्न कर लें। परन्तु अल्लाह तआला ने अन्य स्थान पर फ़रमाया है कि यदि इन्हें पुनः दुनिया में भेज भी दिया जाये तो वही कुछ करेंगे जो पूर्व में करते रहे थे।

[3]अर्थात आदरणीय इब्राहीम का मूर्ति के विषय में अपने समुदाय से विवाद तथा तर्क-वितर्क एवं अल्लाह के एक होने के प्रमाण यह इस बात की स्पष्ट निशानी है कि अल्लाह के सिवाय कोई पूज्य नहीं।

[4]कुछ ने इसका सम्बन्ध मक्का के मूर्तिपूजक अर्थात कुरैश से बताया है अर्थात उनका बहुमत ईमान लाने वाला नहीं।

[5]नूह के समुदाय ने यद्यपि केवल अपने पैग़म्बर आदरणीय नूह को झुठलाया था। परन्तु चूँकि एक नबी को झुठलाना सभी नबियों को झुठलाने के समान तथा सूचक है। इसलिए फ़रमाया कि नूह के समुदाय ने पैग़म्बरों को झुठलाया।

The Ummah Technology Mission

(१०६) जबकि उनके भाई नूह[1] ने कहा कि क्या तुम्हें अल्लाह का भय नहीं ?

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٠٦﴾

(१०७) (सुनों,) मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का न्यासिक रसूल हूँ।[2]

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٠٧﴾

(१०८) अत: तुम्हें अल्लाह से डरना चाहिए तथा मेरी बात माननी चाहिए।[3]

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٠٨﴾

(१०९) तथा मैं तुमसे उस पर कोई बदला नहीं चाहता, मेरा बदला तो केवल सर्वलोक के प्रभु के पास है।[4]

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٩﴾

(११०) अत: तुम अल्लाह का भय रखो तथा मेरा अनुपालन करो।[5]

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١١٠﴾

(१११) (समुदाय ने) उत्तर दिया कि क्या हम तुम पर ईमान लायें ! तेरा अनुकरण करने वाले तो पतित लोग हैं।[6]

قَالُوا أَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْأَرْذَلُونَ ﴿١١١﴾

---

[1]भाई इसलिए कहा कि आदरणीय नूह उन्हीं के वंश के एक व्यक्ति थे।

[2]अर्थात अल्लाह ने जो संदेश मुझे देकर भेजा है, वह बिना कम तथा अधिक किये तुम तक पहुँचाने वाला हूँ, इसमें कमी-वृद्धि नहीं करता।

[3]अर्थात मैं तुम्हें जो अल्लाह पर ईमान लाने तथा शिर्क न करने का आमन्त्रण दे रहा हूँ, उसमें मेरी बात मानों।

[4]मैं तुम्हें जो सावधान कर रहा हूँ, उसका कोई परिश्रामिक मैं तुमसे नहीं माँगता, वल्कि उसका परिश्रामिक समस्त जगत के प्रभु के ऊपर है, जो क़ियामत के दिन वह प्रदान करेगा।

[5]यह वल देने स्वरूप है तथा अलग-अलग कारणों के आधार पर भी, प्रथम अनुकरण का आमन्त्रण, ईमानदारी के आधार पर थी, अब अनुकरण का आमन्त्रण किसी लालच के विना है।

[6] الأرذلون वहुवचन है أرذل का। धन-वैभव न रखने वाले, तथा उसके कारण समाज में हीन समझे जाने वाले। तथा उन्हीं में वे लोग भी आते हैं जो हीन समझने वाले व्यवसाय से सम्बन्धित हैं।

The Ummah Technology Mission

قَالَ وَمَا عِلْمِي بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾

(११२) आपने फ़रमाया, मुझे क्या पता कि वह पहले क्या करते रहे ?[1]

إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾

(११३) उनका हिसाब तो मेरे प्रभु के ऊपर है[2] यदि तुम्हें प्रबोध हो तो।

وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٤﴾

(११४) तथा मैं ईमानदारों को धक्के देने वाला नहीं।[3]

إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿١١٥﴾

(११५) मैं तो स्वच्छ रूप से डरा देने वाला हूँ।[4]

قَالُوا لَئِن لَّمْ تَنتَهِ يَا نُوحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾

(११६) उन्होंने कहा कि हे नूह ! यदि तू न रूका तो अवश्य तुझे पत्थरों से मारकर मार दिया जायेगा।

قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ﴿١١٧﴾

(११७) (आप ने) कहा हे मेरे प्रभु ! मेरे समुदाय ने मुझे झुठला दिया।

فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَنَجِّنِي وَمَن مَّعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾

(११८) अत: तू मुझमें तथा उनमें कोई निश्चित निर्णय कर दे तथा मुझे तथा मेरे ईमानवाले साथियों को मुक्ति प्रदान कर दे।

---

[1]अर्थात मुझे इस बात का प्रभारी नहीं बनाया गया है कि मैं लोगों के वंश तथा जाति, धनवान तथा निर्धन तथा उनके व्यवसाय की खोज करूँ, बल्कि मेरा कर्तव्य तो केवल इतना है कि मैं ईमान का आमन्त्रण दूँ तथा जो उसको स्वीकार कर ले, वह चाहे जिस व्यवसाय से सम्बन्धित हो, उसे अपने गुट में सम्मिलित कर लूँ।

[2]अर्थात उनके अन्त:करण तथा कर्म की खोज करना यह अल्लाह का कार्य है।

[3]यह उनकी इस इच्छा का उत्तर है कि हीन वर्ग के लोगों को अपने से दूर कर दे, फिर हम तेरे समूह में सम्मिलित हो जायेंगे।

[4]अत: जो अल्लाह से डर का मेरा अनुकरण करेगा, वह मेरा है तथा मैं उसका हूँ, चाहे दुनिया की दृष्टि में वह सम्मानित हो अथवा अपमानित, श्रेष्ठ हो अथवा हीन।

The Ummah Technology Mission

فَأَنجَيْنَٰهُ وَمَن مَّعَهُۥ فِى ٱلْفُلْكِ ٱلْمَشْحُونِ ﴿١١٩﴾

(११९) अत: हमने उसे तथा उसके साथियों को भरी हुई नाव में (सवार करके) स्वाधीनता प्रदान की।

ثُمَّ أَغْرَقْنَا بَعْدُ ٱلْبَٰقِينَ ﴿١٢٠﴾

(१२०) फिर उसके पश्चात शेष सभी लोगों को हमने डुबो दिया।[1]

إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٢١﴾

(१२१) नि:संदेह इसमें बहुत बड़ी शिक्षा है। तथा उनमें के अधिकतर लोग ईमान लाने वाले थे भी नहीं।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلرَّحِيمُ ﴿١٢٢﴾

(१२२) तथा नि:संदेह आपका प्रभु अवश्य वही है अत्यन्त दया करने वाला।

كَذَّبَتْ عَادٌ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾

(१२३) 'आद' (सम्प्रदाय) ने भी रसूलों को झुठलाया।[2]

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٢٤﴾

(१२४) जबकि उन से उनके भाई हूद[3] ने कहा कि क्या तुम डरते नहीं ?

---

[1]यही विवरण कुछ पूर्व भी गुज़र चुके हैं तथा कुछ आगे भी आयेंगे कि आदरणीय नूह के साढ़े नौ सौ वर्ष के धर्म प्रचार के पश्चात भी उनके समुदाय के लोग दुर्व्यवहार तथा मुख मोड़े ही रहे अन्त में आदरणीय नूह ने शाप दिया, अल्लाह तआला ने नाव बनाने तथा उसमें ईमानवालों, पशुओं और आवश्यक सामानों को रखने का आदेश दिया और इस प्रकार ईमानवालों को बचा लिया गया तथा शेष सभी लोगों को, यहाँ तक कि पत्नी तथा पुत्र को भी जो ईमान नहीं लाये थे, डुबो दिया।

[2]'आद' उनके परम पूर्वज का नाम था, जिनके नाम पर उनके समुदाय का नाम पड़ा। यहाँ आद को क़बीला मानकर كَذَّبَتْ (स्त्रीलिंग रूप) लाया गया है।

[3]हूद को भी आद का भाई इसलिए कहा गया है कि प्रत्येक नबी उस समुदाय का व्यक्ति होता था तथा उसी आधार पर उन्हें उस समुदाय का भाई कहा गया है, जैसाकि आगे भी आयेगा तथा नबियों तथा रसूलों का यह मानवीय रूप भी उनके ईमान लाने में बाधक रहा है। उनका विचार था कि नबी मनुष्य नहीं, मनुष्य से उच्च होना चाहिए। आज भी इस पूर्ण सत्य से अपरिचित लोग इस्लाम के पैग़म्बर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि

The Ummah Technology Mission

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٢٥﴾

(१२५) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर (संदेश-वाहक) हूँ।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٢٦﴾

(१२६) अतः अल्लाह से डरो तथा मेरा कहना मानो।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢٧﴾

(१२७) तथा मैं उस पर तुमसे कोई परिश्रामिक नहीं माँगता, मेरी मज़दूरी समस्त लोक के प्रभु के पास ही है।

أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آيَةً تَعْبَثُونَ ﴿١٢٨﴾

(१२८) क्या तुम एक-एक टीले पर खेल (क्रीडा) के रूप तमाशा का प्रतीक (चिन्ह) बना रहे हो।[1]

وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ ﴿١٢٩﴾

(१२९) तथा बड़ी उद्योग वाले (सुदृढ़ भवन निर्माण) कर रहे हो, जैसाकि तुम नित्य यहीं रहोगे।[2]

وَإِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِينَ ﴿١٣٠﴾

(१३०) तथा जब किसी पर हाथ डालते हो तो कड़ाई एवं क्रूरता से पकड़ते हों।[3]

वसल्लम को मनुष्य से उच्च सिद्ध करने पर तुले हैं। यद्यपि वह भी कुरैश वंश के एक व्यक्ति थे, जिनकी ओर प्रथम उनको पैग़म्बर बनाकर भेजा गया था।

[1] رِيعٍ बहुवचन है رِيعة का। टीले, उच्च स्थान, पर्वत, दर्रा अथवा घाटी, यह उन मार्ग पर कोई भवन निर्मित करते तो आकर्षण तथा सुन्दरता में अद्वितीय अर्थात श्रेष्ठतम होता। परन्तु इसका उद्देश्य उसमें रहना नहीं होता, बल्कि केवल खेल-कूद होता था। आदरणीय हूद ने इसको मना किया कि यह तुम ऐसा कार्य करते हो, जिसमें समय तथा साधन की हानि है तथा उसका उद्देश्य भी ऐसा है जिससे धार्मिक तथा सांसारिक कोई लाभ सम्बन्धित नहीं है। बल्कि उसके व्यर्थ तथा हानि होने में कोई संदेह नहीं।

[2] इसी प्रकार वह बड़े सुदृढ़ तथा भव्य भवन निर्मित करते थे, जैसे वे सदैव उन्हीं भवनों में रहेंगे।

[3] यह उनके अत्याचार क्रूरता तथा शक्ति एवं साधन की ओर संकेत है।

The Ummah Technology Mission

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْنِ ﴿۱۳۱﴾

(१३१) अल्लाह से डरो तथा मेरी बात मानो।[1]

وَ اتَّقُوا الَّذِيْۤ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾

(१३२) तथा उससे डरो जिसने उन वस्तुओं से तुम्हारी सहायता की जिन्हें तुम जानते हो।

اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّ بَنِيْنَ ﴿۱۳۳﴾

(१३३) उसने तुम्हारी सहायता की धन तथा सन्तान से।

وَ جَنّٰتٍ وَّ عُيُوْنٍ ﴿۱۳۴﴾

(१३४) तथा बाग़ों से एवं स्रोतों से।

اِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۳۵﴾

(१३५) मुझे तो तुम्हारे ऊपर बड़े दिन की यातना का भय है।[2]

قَالُوْا سَوَآءٌ عَلَيْنَاۤ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ﴿۱۳۶﴾

(१३६) (उन्होंने) कहा कि आप भाषण दें अथवा भाषण करने वालों में न हों हम पर समान है।

اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۳۷﴾

(१३७) यह तो प्राचीन काल के लोगों का धर्म है।[3]

وَ مَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿۱۳۸﴾

(१३८) तथा हम कदापि यातना ग्रस्त न होंगे।[4]

---

[1]जब उनके दुर्गुणों का वर्णन किया जो उनका संसार में क्रूरता तथा अत्याचार एवं अन्याय का द्योतक थे, तो पुनः उन्हें अल्लाह का भय करने तथा अपना अनुकरण करने का आमन्त्रण दिया।

[2]अर्थात यदि तुमने अपने कुफ़्र पर दुराग्रह किया तथा अल्लाह ने जो तुमको यह सुख प्रदान किये हैं, उन पर कृतज्ञता व्यक्त नहीं की, तो तुम अल्लाह की यातना के अधिकारी हो जाओगे। यह प्रकोप दुनिया में भी आ सकता है। परलोक तो है ही यातना एवं पुण्य के लिए। वहाँ यातना से छुटकारा पाना संभव ही नहीं होगा।

[3]अर्थात वही बातें हैं जो प्राचीन काल में भी लोग करते चले आये हैं अथवा यह अर्थ है कि हम जिस धर्म तथा रीति-रिवाज पर दृढ़ हैं, वे वही हैं जो हमारे पूर्वज करते चले आ रहे हैं दोनों का अर्थ यही है कि हम अपने पैतृक धर्म को नहीं छोड़ सकते।

[4]जब उन्होंने इस बात को व्यक्त किया कि हम अपने पैतृक धर्म को नहीं त्याग सकते और इसमें आख़िरत पर विश्वास को अस्वीकार करना भी था। इसलिए उन्होंने प्रकोप

The Ummah Technology Mission

فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَٰهُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَءَايَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾

(१३९) चूँकि 'आद' के समुदाय ने (आदरणीय) हूद को झुठलाया, इसलिए हमने उन्हें ध्वस्त कर दिया, [1] नि:संदेह उसमें निशानी है, तथा उनमें के अधिकतर ईमान वाले न थे।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلرَّحِيمُ ﴿١٤٠﴾

(१४०) तथा नि:संदेह आपका प्रभु वही प्रभावशाली दयालु है।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿١٤١﴾

(१४१) 'समूद' के समुदाय वालों ने[2] भी पैग़म्बर को झुठलाया।

से पीड़ित होने की संभावना को भी अस्वीकार किया। क्योंकि अल्लाह के प्रकोप की संभावना उसे होती है, जो अल्लाह को मानता हो तथा निर्णायक दिन को स्वीकार करता हो।

[1]आद का समुदाय संसार का अत्यन्त सुदृढ़ एवं अत्यन्त शक्तिशाली समुदाय था, जिसके विषय में अल्लाह ने फ़रमाया :

﴿ٱلَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي ٱلْبِلَٰدِ﴾

"उस जैसा समुदाय पैदा ही नहीं किया गया।" (सूर: अल-फ़ज्र-८)

अर्थात जो शक्ति एवं अत्यन्त बल तथा स्फूर्ति में उस जैसा हो। इसीलिए वे कहा करते थे

﴿مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً﴾

"कौन शक्ति में हमसे अधिक है ?" (सूर: हा॰मीम॰ अस्सजदः-१५)

परन्तु जब उस समुदाय ने भी कुफ़्र का मार्ग त्याग कर ईमान तथा अल्लाह के भय का मार्ग नहीं अपनाया ? तो अल्लाह तआला ने प्रचण्ड हवाओं के रूप में उन पर प्रकोप उतारा, जो उन पर पूरे सात रातें तथा आठ दिन तक निरन्तर आच्छादित रहा। तीव्रगति की हवा आती तथा आदमी को उड़ाकर ऊपर ले जाती फिर सिर के बल धरती पर पटख देती। जिससे उनका सिर फट जाता, तथा बिना सिर की उनकी लाशें ऐसी पड़ी हुई थीं जैसे धरती पर खजूर के खोखले तने पड़े हों। उन्होंने पर्वतों, गुफ़ाओं तथा घाटियों में बड़े सुदृढ़ भवन बना रखे थे, पीने के लिए पानी के गहरे कुएँ खोद रखे थे, बाग़ अधिक संख्या में थे। परन्तु जब अल्लाह का प्रकोप आया तो कोई वस्तु उनके काम न आयी तथा उनको सदैव के लिए धरती से मिटा दिया गया।

[2]समूद का निवास स्थान 'हिज्र' का क्षेत्र था जो हिजाज़ की उत्तर दिशा में है। आजकल उसे 'मदायन स्वालेह' कहते हैं। (ऐसरूत्तफ़ासीर) यह अरब थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि

The Ummah Technology Mission

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَٰلِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٤٢﴾

(१४२) जब उनके भाई 'स्वालेह' ने उनसे कहा कि क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते ?

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٤٣﴾

(१४३) मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का अमानत-दार पैग़म्बर हूँ।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٤٤﴾

(१४४) तो तुम अल्लाह से डरो तथा मेरा कहा करो।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَٰلَمِينَ ﴿١٤٥﴾

(१४५) तथा मैं उस पर तुमसे कोई परिश्रामिक नहीं माँगता, मेरा परिश्रामिक तो सर्वलोक के प्रभु के ऊपर ही है।

أَتُتْرَكُونَ فِي مَا هَٰهُنَا آمِنِينَ ﴿١٤٦﴾

(१४६) क्या उन वस्तुओं में जो यहाँ हैं तुम शान्ति के साथ छोड़ दिये जाओगे ?[1]

فِي جَنَّٰتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٤٧﴾

(१४७) (अर्थात) उन बाग़ों एवं उन स्रोतों में।

وَزُرُوعٍ وَنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيمٌ ﴿١٤٨﴾

(१४८) तथा उन खेतों एवं उन खजूरों के बाग़ों में जिनके गुच्छे (बोझ के कारण) टूटे पड़ते हैं।[2]

वसल्लम तबूक जाते समय उन बस्तियों के बीच से गये थे, जैसाकि पहले वर्णन हो चुका है।

[1]अर्थात ये सुख क्या तुम्हें सदैव प्राप्त रहेंगे, न तुम्हारी मृत्यु होगी, न यातना ? प्रश्न नाकरात्मक तथा चेतावनी के लिए है। अर्थात ऐसा नहीं होगा, बल्कि प्रकोप अथवा मृत्यु के द्वारा, जब अल्लाह चाहेगा, तुम इन सुखों से वंचित हो जाओगे। इसमें शिक्षा है कि अल्लाह के द्वारा प्रदान किये सुखों की कृतज्ञता व्यक्त करो तथा उस पर ईमान लाओ तथा चेतावनी है कि यदि ईमान तथा कृतज्ञता व्यक्त करने का मार्ग न अपनाया, तो विनाश तुम्हारे भाग्य में है।

[2]यह उन सुखों का वर्णन है, जो उनको प्राप्त थे, طَلْع खजूर के उन गुच्छों को कहते हैं जो प्रथम फसल में निकलता है अर्थात विकसित होता है उसके पश्चात खजूर का फल بَلَح फिर بُسْر फिर رُطَب तथा उसके पश्चात تَمْر कहलाता है। (ऐसरूत्तफ़ासीर) बाग़ों में अन्य फलों के साथ खजूर का फल भी आ जाता है। परन्तु अरबों में चूंकि खजूर का

The Ummah Technology Mission

وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا فٰرِهِيْنَ ﴿١٤٩﴾

(१४९) तथा तुम पर्वतों को काट-काट कर (सुन्दर) आकर्षक भवनों का निर्माण कर रहे हो।[1]

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٥٠﴾

(१५०) अत: अल्लाह से डरो तथा मेरा अनुकरण करो।

وَلَا تُطِيْعُوْٓا اَمْرَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٥١﴾

(१५१) तथा सीमा उल्लंघन करने वालों के[2] अनुकरण से रूक जाओ।

الَّذِيْنَ يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿١٥٢﴾

(१५२) जो धरती में उपद्रव फैला रहे हैं तथा सुधार नहीं करते।

قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٥٣﴾

(१५३) (वे) बोले कि तू तो बस उनमें से है जिन पर जादू कर दिया गया है।

مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٥٤﴾

(१५४) तू तो हम जैसा ही मुनष्य है। यदि तू सच्चों में से है तो कोई चमत्कार ले आ।

قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿١٥٥﴾

(१५५) (आप ने) कहा यह है ऊँटनी। पानी पीने की एक बारी इसकी तथा एक निर्धारित दिन को पानी पीने की बारी तुम्हारी।[3]

बड़ा महत्व है इसलिए इसका विशेषरूप से भी वर्णन किया गया। هَضِيم के अन्य भी कई अर्थ वर्णन किये गये हैं। जैसे सुन्दर, तथा कोमल, तह पर तह आदि।

[1] فَارِهِين अर्थात आवश्यकता से अधिक बनावटी, कारीगरी तथा कलात्मक प्रदर्शन करते हुए अथवा घमण्ड, तथा गर्व करते हुए। जैसे आजकल लोगों का हाल है। आज भी भवनों पर अनावश्यक कलाकृतियों का अत्यधिक प्रदर्शन हो रहा है तथा उसके द्वारा एक-दूसरे पर श्रेष्ठता तथा गर्व एवं घमण्ड का प्रदर्शन भी।

[2] مُسْرِفِين से तात्पर्य है वे धनवान तथा मुखिया जो कुफ्र तथा शिर्क का प्रचार-प्रसार करने तथा सत्य का विरोध करने में अग्रणीय थे।

[3] यह वही ऊँटनी थी, जो उनकी माँग पर पत्थर की चट्टान से चमत्कार के रूप में निकली थी। एक दिन ऊँटनी के लिए तथा एक दिन उनके लिए पानी निर्धारित कर दिया गया था, तथा उनसे कह दिया गया था कि जो दिन तुम्हारा पानी लेने का होगा

The Ummah Technology Mission

وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوٓءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥٦﴾

(१५६) (तथा सावधान !) इसे बुराई से हाथ न लगाना, वरन् एक बड़े दिन का प्रकोप तुम्हें पकड़ लेगा।[1]

فَعَقَرُوهَا فَأَصْبَحُوا نَٰدِمِينَ ﴿١٥٧﴾

(१५७) फिर भी उन्होंने उसके हाथ-पैर काट डाले,[2] फिर वह पछताने वाले हो गये।[3]

فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَءَايَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٥٨﴾

(१५८) तथा प्रकोप ने उन्हें आ दबोचा।[4] नि:संदेह इसमें शिक्षा है। तथा उनमें से अधिकतर लोग ईमानवाले न थे।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٥٩﴾

(१५९) तथा नि:संदेह आपका प्रभु अत्यन्त शक्तिशाली एवं दयालु है।

उस दिन ऊँटनी घाट पर नहीं आयेगी तथा जो दिन ऊँटनी के पानी पीने का होगा, तुम्हें घाट पर आने की आज्ञा नहीं है।

[1]दूसरी बात उनसे यह कही गयी कि कोई भी ऊँटनी को कुविचार से हाथ न लगाये, न उसे हानि पहुँचाये, अत: यह ऊँटनी इस प्रकार उनके मध्य रही। घाट से पानी पीती तथा घास-चारा खाकर निर्वाह करती तथा कहा जाता है कि समूद के समुदाय वाले उसका दूध दूहते तथा उससे लाभ उठाते। परन्तु कुछ समय व्यतीत होने के पश्चात उन्होंने उसको मारने की योजना बनायी।

[2]अर्थात इस बात के उपरान्त कि वह ऊँटनी अल्लाह के सामर्थ्य का एक प्रतीक एवं पैग़म्बर की सत्यता का प्रमाण थी, समूद के समुदाय वाले ईमान नहीं लाये तथा कुफ़्र एवं शिर्क के मार्ग पर अग्रसर रहे तथा उनकी अवहेलना यहाँ तक बढ़ी कि अल्लाह के जीवित प्रतीक 'ऊँटनी' के हाथ-पैर घायल कर दिये, जिसके कारण वह बैठ गयी तथा फिर उसे मार दिया।

[3]यह उस समय हुआ जब ऊँटनी की हत्या के पश्चात आदरणीय स्वालेह ने कहा कि अब तुम्हें केवल तीन दिन का अवसर है, चौथे दिन तुम्हें सत्यानाश कर दिया जायेगा। उसके पश्चात जब वास्तव में प्रकोप के लक्षण प्रकट होने लगे, तो फिर उनकी ओर से भी खेद का प्रदर्शन होने लगा। परन्तु प्रकोप के लक्षण देख लेने के पश्चात खेद प्रकट करने तथा क्षमा माँगने का कोई लाभ नहीं।

[4]यह प्रकोप धरती से भूकम्प तथा ऊपर से अतितीव्र चिंघाड़ के रूप में आया, जिससे सब मर गये।

The Ummah Technology Mission

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطِ ِۨ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٦٠﴾

(१६०) लूत के समुदाय [1] ने भी नबियों को झुठलाया।

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٦١﴾

(१६१) जब उनसे उनके भाई लूत ने कहा कि तुम अल्लाह से भय नहीं रखते ?

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٦٢﴾

(१६२) मैं तुम्हारी ओर अमानतदार रसूल हूँ।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٦٣﴾

(१६३) अत: तुम अल्लाह (तआला) से डरो तथा मेरा अनुसरण करो

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٤﴾

(१६४) तथा मैं तुमसे उसका कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो केवल सब लोक के पालनहार पर है।

اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٥﴾

(१६५) क्या तुम दुनिया वालों में से पुरूषों के पास गमन करते हो।

وَ تَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿١٦٦﴾

(१६६) तथा तुम्हारी जिन स्त्रियों को अल्लाह (तआला) ने तुम्हारी पत्नी बनाया है, उनको छोड़ देते हो, [2] बात यह है कि तुम हो ही सीमा

---

[1] आदरणीय लूत, आदरणीय इब्राहीम के भाई हारान बिन आज़र के पुत्र थे। उनको आदरणीय इब्राहीम के जीवनकाल में ही नबी बना कर भेजा गया था। उनका समुदाय 'सदूम' तथा 'अमुरया' में निवास करता था। यह बस्तियाँ सीरिया के क्षेत्र में थीं।

[2] यह लूत के समुदाय वालों की अत्यन्त बुरी आदत थी, जिसका प्रारम्भ इसी समुदाय से हुआ था, इसलिए इस कुकर्म को अरबी भाषा में لواطت (लवातत) कहा जाता है अर्थात वह कुकर्म जिसका प्रारम्भ लूत के समुदाय से हुआ। परन्तु अब यह कुकर्म सम्पूर्ण दुनिया में सामान्य रूप से व्याप्त है, बल्कि यूरोपीय देशों में इसे वैधानिक मान्यता प्राप्त है अर्थात उनके यहाँ अब यह पाप नहीं रहा। जिस समाज का व्यवहार इतना बिगड़ गया हो कि स्त्री-पुरूष के अनुचित शारीरिक सम्बन्ध (जबकि वह दोनों के आपसी प्रसन्नता से हो) उनके निकट अपराध न हो तो दो पुरूषों का आपसी कुकर्म करना किस प्रकार से पाप तथा अमान्य हो सकता है ?

The Ummah Technology Mission

लाँघने वाले ।[1]

قَالُوا لَئِن لَّمْ تَنتَهِ يَا لُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ ﴿١٦٧﴾

(१६७) (उन्होंने) उत्तर दिया कि हे लूत ! यदि तू न रूका तो अवश्य निकाल दिया जायेगा ।[2]

قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُم مِّنَ الْقَالِينَ ﴿١٦٨﴾

(१६८) (आप ने) कहा कि मैं तुम्हारे कर्म से अत्यधिक खिन्न हूँ ।[3]

رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٦٩﴾

(१६९) मेरे प्रभु ! मुझे तथा मेरे परिवार को इस (दुष्कर्म) से बचा ले, जो यह करते हैं ।

فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٧٠﴾

(१७०) अत: हमने उसे तथा उसके सम्बन्धियों को सभी को बचा लिया ।

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ﴿١٧١﴾

(१७१) सिवाय एक बुढ़िया के कि वह पीछे रह जाने वालों में हो गयी ।[4]

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ﴿١٧٢﴾

(१७२) फिर हमने (शेष) अन्य सभी को नाश कर दिया ।

---

[1] عَادُونَ बहुवचन है عاد का अरबी भाषा में عاد का अर्थ है सीमा का उल्लंघन कर जाने वाला । अर्थात सत्य को छोड़कर असत्य तथा उचित (हलाल) को छोड़कर अनुचित (हराम) को अपनाने वाला । अल्लाह तआला ने धार्मिक विधान से किये गये विवाह के द्वारा स्त्री की भोग से अपनी काम इच्छा की तृप्ति करने को औचित्य (हलाल) प्रदान किया है तथा इसके लिए पुरूष के गुदाद्वार को निषेध (हराम) । लूत के समुदाय ने स्त्रियों का भोग छोड़कर पुरूष के गुदाद्वार को इस काम के लिए प्रयोग किया और इस प्रकार सीमा उल्लघंन किया ।

[2] अर्थात आदरणीय लूत के भाषण तथा शिक्षाओं के उत्तर में उसने कहा तू बड़ा पवित्र बना फिरता है । याद रख ! यदि तू अपने इस कार्य से नहीं रूका तो हम तुझे बस्ती में नहीं रहने देंगे । आज भी कुकर्मियों का इतना प्रभाव है कि सत्कर्म मुख छिपाये फिरता है । तथा सत्कर्मियों के लिए जीवन व्यतीत करना कष्टदायक बना दिया गया है ।

[3] अर्थात मैं इसे प्रिय नहीं समझता तथा इससे अत्यन्त दुखी हूँ ।

[4] इससे तात्पर्य आदरणीय लूत की बूढ़ी पत्नी है, जो मुसलमान नहीं हुई थी, अत: वह भी अपने समुदाय के साथ ध्वस्त कर दी गयी ।

The Ummah Technology Mission

وَ اَمۡطَرۡنَا عَلَيۡهِمۡ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الۡمُنۡذَرِيۡنَ ﴿۱۷۳﴾

(१७३) तथा हमने उनके ऊपर एक विशेष प्रकार की वर्षा की, वह अत्यन्त बुरी वर्षा थी जो डराये गये लोगों पर बरसी।[1]

اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكۡثَرُهُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۷۴﴾

(१७४) अवश्य इसमें भी सर्वथा शिक्षाप्रद है। उनमें से भी अधिकतर मुसलमान नहीं थे।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الرَّحِيۡمُ ﴿۱۷۵﴾ ع

(१७५) नि:संदेह तेरा प्रभु वही है प्रभाव वाला कृपालु।

كَذَّبَ اَصۡحٰبُ لۡـَٔيۡكَةِ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ﴿۱۷۶﴾ ۚ

(१७६) एयका वालों[2] ने भी रसूलों को झुठलाया।

اِذۡ قَالَ لَهُمۡ شُعَيۡبٌ اَلَا تَتَّقُوۡنَ ﴿۱۷۷﴾ ۚ

(१७७) जबकि उनसे शुऐब ने कहा कि क्या तुम्हें (अल्लाह का) डर तथा भय नहीं ?

---

[1]अर्थात चिन्हित कंकड़-पत्थरों की वर्षा से हमने उन्हे नाश कर दिया और उनकी बस्तियों को उन पर उलट दिया गया, जैसाकि सूरः हूद-८२ तथा ८३ में वर्णन हुआ।

[2] أيكة वन तथा जंगल को कहते हैं। इससे आदरणीय शुऐब का समुदाय एवं बस्ती मदयन के निकटवर्ती क्षेत्र के निवासियों से तात्पर्य है। तथा कहा जाता है कि أيكة का अर्थ है घना वृक्ष तथा ऐसा एक वृक्ष मदयन के निकटवर्ती क्षेत्र की आबादी में था। जिसकी पूजा-पाठ होती थी। वहाँ के रहने वालों को أصحاب الأيكة कहा गया है।इस आधार पर ऐका वाले तथा मदयन के निवासियों के पैग़म्बर एक ही हैं अर्थात आदरणीय शुऐब तथा यह एक ही पैग़म्बर का समुदाय था। أيكة चूँकि समुदाय नहीं, बल्कि वृक्ष था इसलिए भाई के सम्बन्ध में आदरणीय शुऐब का नाम नहीं लिया गया है, जिस प्रकार अन्य अंबिया के विषय में है, परन्तु जहाँ मदयन के साथ आदरणीय शुऐब का नाम लिया गया है वहाँ उनका सम्बन्ध भाई के रूप में व्यक्त किया गया मिलता है, क्योंकि मदयन समुदाय का नाम है। ﴿وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا﴾ (सूरः अल-आराफ़-८५) कुछ व्याख्याकारों ने ऐका वालों तथा मदयन को अलग-अलग बस्तियाँ बताकर कहा है कि ये दो भिन्न समुदाय हैं, जिनकी ओर क्रमशः आदरणीय शुऐब को भेजा गया। एक बार मदयन की ओर तथा दूसरी बार ऐका वालों की ओर। (परन्तु इमाम इब्ने कसीर ने कहा है कि उचित बात यही है कि यह एक ही सम्प्रदाय है أوفوا الكيل و الميزان का जो भाषण मदयन के निवासियों को दिया गया, यही भाषण यहाँ ऐका वालों को किया जा रहा है, जिससे साफ स्पष्ट है कि यह एक ही सम्प्रदाय है दो नहीं।

The Ummah Technology Mission

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٧٨﴾

(१७८) मैं तुम्हारी ओर अमानतदार रसूल हूँ।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٧٩﴾

(१७९) तो तुम अल्लाह से डरो तथा मेरी आज्ञा का पालन करो।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٨٠﴾

(१८०) तथा मैं उस पर तुम से कोई परिश्रामिक नहीं माँगता, मेरा परिश्रामिक समस्त लोक के प्रभु पर है।

أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ﴿١٨١﴾

(१८१) नाप-तौल पूरा करो और कम देने वालों में सम्मिलित न हो।[1]

وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ﴿١٨٢﴾

(१८२) तथा सीधे (सही) तराज़ू से तौला करो।[2]

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿١٨٣﴾

(१८३) तथा लोगों को उनकी वस्तुयें कमी से न दो, [3] और (निभर्य होकर) धरती पर उपद्रव मचाते न फिरो।[4]

وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ

(१८४) तथा उस (अल्लाह) का भय रखो जिसने

---

[1]अर्थात तुम जब लोगों को नाप कर दो तो उसी प्रकार पूरा दो, जिस प्रकार लेते समय तुम पूरा नाप कर लेते हो। लेने-देने के दो पैमानें न रखो कि देते समय कम दो तथा लेते समय पूरा लो।

[2]इसी प्रकार तौल में डंडी न मारो, बल्कि पूरा सही तौलकर दो।

[3]अर्थात लोगों को नाप अथवा तौल में कमी मत करो।

[4]अर्थात अल्लाह तआला की अवज्ञा मत करो, इससे धरती पर उपद्रव फैलता है। कुछ ने इससे तात्पर्य वह डकैती ली है, जिसे यह समुदाय करता था, जैसाकि अन्य स्थान पर है।

﴿ وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ ﴾

"मार्गों पर लोगों को भयभीत करने के लिए न बैठो।" (सूरः अल-आराफ़-८६) (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

الْأَوَّلِينَ ﴿١٨٤﴾

स्वयं तुम्हें तथा पूर्व सृष्टि को[1] पैदा किया।

قَالُوا إِنَّمَا أَنتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿١٨٥﴾

(१८५) (उन्होंने) कहा तू तो उनमें से है जिन पर जादू कर दिया जाता है।

وَمَا أَنتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَإِن نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿١٨٦﴾

(१८६) तथा तू तो हम ही जैसा एक मनुष्य है तथा हम तो तुझे झूठ बोलने वालों में से ही समझते हैं।[2]

فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَاءِ إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٨٧﴾

(१८७) यदि तुम सच्चे लोगों में से हो तो हम पर आकाश का कोई टुकड़ा गिरा दो।[3]

قَالَ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨٨﴾

(१८८) (उन्होंने) कहा कि मेरा प्रभु भली प्रकार से जानने वाला है जो कुछ तुम कर रहे हो।[4]

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ

(१८९) अतः उन्होंने उसे झुठलाया तो उन्हें

---

[1] جِبِلَّة तथा جِبِلٌّ सृष्टि के अर्थ में है, जिस प्रकार अन्य स्थान पर शैतान के विषय में फ़रमाया :

﴿ وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا ﴾

इसने अत्यधिक सृष्टि को भटकाया। *(सूरः यासीन-६२)*

इसका प्रयोग बड़े गुट के लिए होता है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] अर्थात तू जो दावा करता है कि मुझे अल्लाह ने प्रकाशना (वह्यी) तथा रिसालत से सुशोभित किया है हम तुझे इस दावे में झूठा समझते हैं, क्योंकि तू भी हम जैसा मनुष्य है। फिर तू यह श्रेष्ठता किस प्रकार प्राप्त कर सकता है ?

[3] यह आदरणीय शुऐब की शिक्षाओं के उत्तर में उन्होंने कहा कि यदि तू वास्तव में सच्चा है, तो जा हम तुझे नहीं मानते, हम पर आकाश का टुकड़ा गिराकर दिखा।

[4] अर्थात तुम जो कुफ़्र तथा शिर्क कर रहे हो, सब अल्लाह के ज्ञान में है तथा वही इसका बदला तुम्हें देगा, यदि चाहेगा तो दुनिया में भी दे देगा, यह यातना तथा दण्ड उसी के अधिकार में है।

The Ummah Technology Mission

يَوْمِ الظُّلَّةِ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٨٩﴾

छाया वाले दिन के प्रकोप ने पकड़ लिया,[1] वह बड़े भारी दिन का प्रकोप था।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٩٠﴾

(१९०) नि:संदेह उसमें बड़ी निशानी है तथा उनमें के अधिकतर मुसलमान नहीं थे।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٩١﴾

(१९१) तथा नि:संदेह तेरा प्रभु वही प्रभाव वाला दया वाला है।

وَإِنَّهُ لَتَنزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٩٢﴾

(१९२) तथा नि:संदेह यह (क़ुरआन) पूरे विश्व के पोषक का अवतरित किया हुआ है।

نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ﴿١٩٣﴾

(१९३) इसे अमानतदार फ़रिश्ता लेकर आया है।[2]

---

[1]उन्होंने भी मक्का के मूर्तिपूजकों की भाँति आकाश से प्रकोप माँगा था, अल्लाह ने उसके अनुसार उन पर प्रकोप ढाया तथा वह इस प्रकार के कुछ कथनों के अनुसार सात दिन तक उन पर निरन्तर कड़ी गर्मी तथा धूप रही, उसके पश्चात बादलों की एक छाया आयी तथा ये सभी गर्मी की व्याकुलता से बचने के लिए उसके नीचे एकत्रित हो गये, तथा कुछ सुख की साँस ली परन्तु कुछ ही क्षणों पश्चात आग के शोले आकाश से बरसने लगे, धरती भूकम्प से काँपने लगी तथा एक तीव्र चींघाड़ ने उन्हें सदा के लिए मृत्यु की नींद सुला दिया। इस प्रकार उन पर तीन प्रकार का प्रकोप आया तथा यह उस दिन आया जिस दिन बादल छा गया, इसलिए कहा कि छाया वाले दिन के प्रकोप ने उन्हें पकड़ लिया।

इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने तीन स्थान पर शुऐब के समुदाय के विनाश का वर्णन किया है। सूरः *अल-आराफ़*-८८ में भूकम्प का वर्णन, सूरः हूद-९४ में चिंघाड़ का तथा यहाँ शूअरा में आकाश से टुकड़े गिरने का। अर्थात तीन प्रकार का प्रकोप इस समुदाय पर आया।

[2]मक्का के मूर्तिपूजकों ने क़ुरआन के अल्लाह की प्रकाशना तथा अल्लाह की ओर से अवतरित होने को अस्वीकार किया तथा इसी आधार पर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (दूतत्व) तथा आमन्त्रण को भी अस्वीकार कर दिया। अल्लाह तआला ने नबियों की कथाओं का वर्णन करके यह स्पष्ट कर दिया कि यह क़ुरआन वास्तव में अल्लाह की प्रकाशना है तथा मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के सच्चे रसूल हैं क्योंकि यदि ऐसा न होता तो यह पैग़म्बर जो न पढ़ सकता है तथा

The Ummah Technology Mission

عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿١٩٤﴾

(१९४) आपके दिल पर (अवतरित हुआ है,)[1] कि आप सतर्क कर देने वालों में से हो जायें।[2]

بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ ﴿١٩٥﴾

(१९५) स्वच्छ अरबी भाषा में है।

وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٩٦﴾

(१९६) तथा अगले नबियों की किताबों में भी इस (क़ुरआन) की चर्चा है।[3]

اَوَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٩٧﴾

(१९७) क्या उन्हें यह निशानी प्रर्याप्त नहीं कि (क़ुरआन की सत्यता को) तो इस्राईल की सन्तान के विद्वान भी जानते हैं।[4]

وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ﴿١٩٨﴾

(१९८) तथा यदि हम इसे किसी (अरबी भाषी के सिवाय) किसी अजमी पर अवतरित करते।

न लिख सकता है पूर्वकालिक नबियों की घटनायें किस प्रकार वर्णन कर सकता था? इसलिए यह क़ुरआन निश्चित रूप से सम्पूर्ण जगत के प्रभु की ही ओर से अवतरित है। जिसे एक अमानतदार फ़रिश्ता अर्थात जिब्रील लेकर आये।

[1]दिल का विशेषरूप से इसलिए वर्णन किया गया कि शारीरिक अंग में दिल ही सबसे अधिक संवेदन एवं स्मरण करने की शक्ति रखता है।

[2]यह क़ुरआन के अवतरित होने का कारण है।

[3]अर्थात जिस प्रकार संसार के अन्तिम पैग़म्बर (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आने तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहगुणों का वर्णन अन्य ग्रन्थों में है, उसी प्रकार इस क़ुरआन के अवतरित होने की शुभसूचना उन किताबों में दी गयी थी। एक अन्य अर्थ यह किया गया है कि यह क़ुरआन मजीद उन आदेशों के अनुसार जिन पर सभी धर्म विधानों में एकता रही है। आदि ग्रन्थों मे भी विद्यमान रहा है।

[4]क्योंकि इन किताबों में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तथा क़ुरआन की चर्चा विद्यमान है। यह मक्का के मूर्तिपूजक धार्मिक समस्याओं में यहूदियों से विचार-विमर्श करते थे। इस आधार पर फ़रमाया कि क्या उनका यह जानना तथा बताना इस बात का प्रमाण नहीं है कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के सच्चे रसूल हैं तथा यह क़ुरआन अल्लाह की ओर से अवतरित किया हुआ है। फिर यह यहूदियों की इस बात को स्वीकार करते हुए पैग़म्बर पर ईमान क्यों नहीं लाते?

The Ummah Technology Mission

فَقَرَاَهٗ عَلَيۡهِمۡ مَّا كَانُوۡا بِهٖ مُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۹۹﴾

(१९९) तो वह उनके समक्ष उसका पाठ करता तो यह उसे नहीं मानते।[1]

كَذٰلِكَ سَلَكۡنٰهُ فِىۡ قُلُوۡبِ الۡمُجۡرِمِيۡنَ ﴿۲۰۰﴾

(२००) इसी प्रकार हमने पापियों के दिलों में (इंकार) को संचित कर दिया है।[2]

لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الۡعَذَابَ الۡاَلِيۡمَ ﴿۲۰۱﴾

(२०१) वे जब तक दुखदायी यातना का दर्शन न कर लेंगे ईमान न लायेंगे।

فَيَاۡتِيَهُمۡ بَغۡتَةً وَّهُمۡ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿۲۰۲﴾

(२०२) अत: वह (यातना) सहसा आ जायेगी और उन्हें उसका अनुमान भी न होगा।

فَيَقُوۡلُوۡا هَلۡ نَحۡنُ مُنۡظَرُوۡنَ ﴿۲۰۳﴾

(२०३) उस समय कहेंगे कि क्या हमें कुछ अवसर प्रदान किया जायेगा ?[3]

اَفَبِعَذَابِنَا يَسۡتَعۡجِلُوۡنَ ﴿۲۰۴﴾

(२०४) तो क्या ये हमारे प्रकोप की शीघ्रता मचा रहे हैं ?[4]

اَفَرَءَيۡتَ اِنۡ مَّتَّعۡنٰهُمۡ سِنِيۡنَ ﴿۲۰۵﴾

(२०५) अच्छा यह भी बताओ, कि यदि हमने उन्हें वर्षों लाभ उठाने दिया।

ثُمَّ جَآءَهُمۡ مَّا كَانُوۡا يُوۡعَدُوۡنَ ﴿۲۰۶﴾

(२०६) फिर उन्हें वह (प्रकोप) आ लगा जिस से उन्हें डराया जाता था।

---

[1]अर्थात किसी अरबी भाषा के सिवाय अन्य भाषा में अवतरित करते तो यह कहते कि यह तो हमारी समझ में नहीं आता। जैसे सूरः *हा॰मीम॰अस्सजदा*-४४ में है।

[2]अर्थात سَلَكۡنٰهُ में सर्वनाम कुफ़्र तथा झुठलाने एवं इंकार तथा परिधि की ओर इंगित करता है।

[3]परन्तु प्रकोप के दर्शन के पश्चात अवसर नहीं प्रदान किया जाता, न उस समय की क्षमा-याचना ही स्वीकार की जाती है। ﴿فَلَمۡ يَكُ يَنۡفَعُهُمۡ اِيۡمَانُهُمۡ لَمَّا رَاَوۡا بَاۡسَنَا﴾ (सूरः *अल-मोमिन*-८५)

[4]यह संकेत है उनकी माँग की ओर जो अपने पैग़म्बर से करते रहे हैं कि यदि तू सच्चा है तो प्रकोप ले आ।

The Ummah Technology Mission

مَآ اَغۡنٰى عَنۡهُمۡ مَّا كَانُوۡا يُمَتَّعُوۡنَ ﴿۲۰۷﴾

(२०७) तो जो कुछ भी यह लाभ दिये जाते रहे उसमें से कुछ भी उन्हें काम न दे सकेगा।[1]

وَمَآ اَهۡلَكۡنَا مِنۡ قَرۡيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنۡذِرُوۡنَ ﴿۲۰۸﴾

(२०८) तथा हमने किसी बस्ती को ध्वस्त नहीं किया है, परन्तु उसी अवस्था में कि उसके लिए डराने वाले थे।

ذِكۡرٰى ۛ وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيۡنَ ﴿۲۰۹﴾

(२०९) शिक्षा के रूप में। और हम अत्याचार करने वाले नहीं हैं।[2]

وَمَا تَنَزَّلَتۡ بِهِ الشَّيٰطِيۡنُ ﴿۲۱۰﴾

(२१०) तथा इस (क़ुरआन) को शैतान नहीं लाये।

وَمَا يَنۡۢبَغِىۡ لَهُمۡ وَمَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ ﴿۲۱۱﴾

(२११) तथा न वह इस योग्य हैं, न उन्हें इसकी शक्ति है।

اِنَّهُمۡ عَنِ السَّمۡعِ لَمَعۡزُوۡلُوۡنَ ﴿۲۱۲﴾

(२१२) बल्कि वे तो सुनने से भी वंचित कर दिये गये हैं।[3]

---

[1]अर्थात यदि हम उन्हें अवसर दे दें फिर उन्हें अपनी यातना की पकड़ में लें तो क्या दुनिया का धन उनके कुछ काम आयेगा, अर्थात उन्हें प्रकोप से बचा सकेगा ? निश्चय नहीं !

﴿وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهِۦ مِنَ ٱلْعَذَابِ أَن يُعَمَّرَ﴾

"उनकी हज़ार वर्ष की आयु उनसे यातना को दूर नहीं कर सकती।" (सूरः *अल-बक़रः*-९६)

﴿وَمَا يُغْنِى عَنْهُ مَالُهُۥٓ إِذَا تَرَدَّىٰٓ﴾

"जब वह ध्वंस हो जायेगी तो उसका धन उसके काम नहीं आयेगी।" (सूरः *अल-लैल*-११)

[2]अर्थात रसूल के भेजे तथा सावधान किये बिना यदि हम किसी बस्ती को ध्वंस करते तो यह अत्याचार होता, हमने ऐसा अत्याचार नहीं किया, बल्कि न्याय के नियमानुसार प्रथम उन्हें डराया तथा उसके पश्चात जब उन्होंने पैग़म्बर की बात नहीं मानी, तो हमने उन्हें नाश कर दिया। यही विषय सूरः *बनी इसाईल*-१५ तथा सूरः *अल-क़सस*-५९ आदि में भी वर्णन किया गया है।

[3]इन आयतों में क़ुरआन में, शैतानी हस्तक्षेप से सुरक्षित होने का वर्णन है। एक तो इसलिए कि शैतानों का क़ुरआन लेकर उतरना, उनके योग्य ही नहीं है। क्योंकि उनका

The Ummah Technology Mission

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَكُونَ مِنَ الْمُعَذَّبِينَ ﴿٢١٣﴾

(२१३) अत: तू अल्लाह के साथ किसी अन्य देवता को न पुकार कि तू भी दण्ड पाने वालों में से हो जाये।

وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ﴿٢١٤﴾

(२१४) तथा अपने निकटवर्ती सम्बन्धियों को डरा दे।[1]

उद्देश्य उपद्रव, आतंक तथा बुराईयों का प्रचार-प्रसार करना है, जबकि क़ुरआन का उद्देश्य पुण्य के आदेश तथा प्रचार तथा बुराईयों से बचाव की विधियों का प्रचार है। अर्थात दोनों एक-दूसरे के विलोम तथा परस्पर विरोधी हैं। दूसरा यह कि शैतान इसकी शक्ति नहीं रखते, तीसरे यह कि क़ुरआन के अवतरित होते समय शैतानों को इसके सुनने से दूर तथा वंचित रखा गया। आकाशों पर सितारों को चौकीदार बना दिया गया था तथा जो भी शैतान ऊपर जाता यह सितारे उस पर बिजली बन कर गिरते तथा भस्म कर देते। इस प्रकार अल्लाह तआला ने क़ुरआन को सुरक्षित रखने का विशेष प्रबन्ध किया।

[1]पैग़म्बरों का आमन्त्रण केवल सम्बन्धियों तक सीमित नहीं, अपितु पूरे समुदाय के लिए होता है तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो पूरी मानव जाति के लिए मार्गदर्शक एवं निर्देशक बन कर आये थे। निकटवर्ती सम्बन्धियों को ईमान का आमन्त्रण जनसामान्य को आमन्त्रण देने के विपरीत नहीं, बल्कि उसका एक अंग अथवा उसका एक वरीयता प्राप्त पक्ष है। जिस प्रकार आदरणीय इब्राहीम ने सर्वप्रथम एकेश्वरवाद का आमन्त्रण अपने पिता आज़र को दिया था। इस आदेश के पश्चात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम *सफ़ा* पर्वत पर चढ़ गये तथा «يَا صَبَاحَاهْ!» कहकर आवाज़ दी। यह शब्द उस समय बोला जाता है, जब शत्रु सहसा आक्रमण कर दे, इसके द्वारा समुदाय वालों को सर्तक किया जाता है। यह शब्द सुनकर लोग एकत्रित हो गये, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरैश के प्रत्येक क़बीले के नाम ले लेकर फ़रमाया, "बताओ ! यदि मैं तुम्हें यह कहूँ कि इस पर्वत के पीछे शत्रु की सेना उपस्थिति है, जो तुम पर आक्रमण करने जा रहा है, तो क्या तुम मानोगे ?" सभी ने उत्तर दिया, "हाँ, अवश्य हम मान लेंगे।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, कि मुझे अल्लाह ने डराने वाला बनाकर भेजा है, मैं तुम्हें एक अत्यन्त कड़ी यातना से सावधान करता हूँ, इस पर अबूलहब ने कहा "تَبًّا لك ألما دعوتنا إلا لهـذا" "तेरा नाश है, क्या तूने हमें इसीलिए बुलाया था ?" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: *मसद*)

इस पर सूर: तब्बत यदा अवतरित हुई आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी पुत्री फ़ातिमा, तथा अपनी बुआ आदरणीय सफ़िया को भी सम्बोधित किया, तुम अल्लाह के यहाँ बचाव का प्रबन्ध कर लो, मैं वहाँ तुम्हारे काम नहीं आ सकूँगा। (सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान बाब व अंज़िर अशीरतकल अक़्रबीन)

The Ummah Technology Mission

(२१५) तथा उसके साथ नम्रता से पेश आ, जो भी ईमान लाने वाला होकर तेरे आधीन जो जाये।

وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٥﴾

(२१६) यदि ये लोग तेरी अवज्ञा करें तो तू घोषणा कर दे कि मैं इन कार्यों से अलग हूँ जो तुम कर हे हो।

فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢١٦﴾

(२१७) तथा अपना पूर्ण विश्वास प्रभावशाली कृपालु अल्लाह पर रख।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿٢١٧﴾

(२१८) जो तुझे देखता रहता है, जबकि तू खड़ा होता है।

الَّذِي يَرَاكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٢١٨﴾

(२१९) तथा सजदा (नमन) करने वालों के मध्य तेरा घूमना-फिरना भी।[1]

وَتَقَلُّبَكَ فِي السَّاجِدِينَ ﴿٢١٩﴾

(२२०) नि:सन्देह वह अत्यन्त सुनने वाला तथा अत्यन्त जानने वाला है।

إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٢٢٠﴾

(२२१) क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतरते हैं।

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ﴿٢٢١﴾

(२२२) वह प्रत्येक झूठे पापी पर उतरते हैं।[2]

تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٢٢٢﴾

(२२३) वे (उचटती हुई) सुनी सुनाई पहुँचा

يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَاذِبُونَ ﴿٢٢٣﴾

---

[1]अर्थात जब तू अकेला होता है, जब भी अल्लाह देखता है तथा जब लोगों के मध्य होता है तब भी।

[2]अर्थात इस क़ुरआन के अवतरित होने में शैतान का कोई हाथ नहीं है, क्योंकि शैतान तो झूठे तथा पापियों (अर्थात भविष्यवक्ता एवं ज्योतिषयों आदि) पर उतरते हैं न कि नबियों एवं पुण्य कार्य करने वालों पर।

The Ummah Technology Mission

देते हैं तथा उनमें के अधिकतर झूठे हैं।[1]

وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ﴿٢٢٤﴾

(२२४) तथा कवियों का अनुकरण वही करते हैं जो बहके हुए हों।

اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِيْ كُلِّ وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ ﴿٢٢٥﴾

(२२५) क्या आप ने नहीं देखा कि कवि एक-एक वन में सिर टकराते फिरते हैं।[2]

وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٢٢٦﴾

(२२६) तथा वह कहते हैं जो करते नहीं।[3]

---

[1]अर्थात एक-आध बात जो किसी प्रकार वे सुनने में सफल हो जाते हैं, उन भविष्य वत्ताओं को बता देते हैं, जिनके साथ वे सौ झूठी बातें अलग से सम्मिलित करते हैं। (जैसाकि हदीस में है, देखिए सहीह बुख़ारी किताबुत तौहीद, सहीह मुस्लिम किताबु-स्सलाम बाब तहरीमुल कहान: व इतयानुल कह्हान) يلقون السمع शैतान आकाश पर सुनी हुई कुछ बातें भविष्यवत्ताओं को पहुँचा देते हैं, इस स्थिति में سمع का अर्थ مسموع का होगा, परन्तु यदि इसका अर्थ कान से सुनना है, तो अर्थ होगा कि शैतान आकाशों पर जाकर कान लगाकर चोरी-छिपे कुछ बातें सुन आते हैं, तथा फिर उन्हें भविष्य वत्ताओं तक पहुँचा देते हैं।

[2]अधिकाँश कवि ऐसे होते हैं जो प्रशंसा एवं भर्त्सना में नियम का पालन करने के बजाये मनमाने विचारों का प्रदर्शन करते हैं। इसके अतिरिक्त उसमें अतिश्योकित का प्रयोग करते हैं तथा कविता की कल्पना में इधर-उधर भटकते हैं, इसलिए फ़रमाया कि इनके पीछे लगने वाले भी भटके हुए हैं। इस प्रकार के कवियों के लिए हदीस में फ़रमाया गया कि 'पेट को रक्त तथा पीप से भर लेना, जो उसे ख़राब कर दे कविता से भर लेने से उत्तम है।' (तिर्मिज़ी अबवाबुल आदाब, मुस्लिम आदि) यहाँ इस के वर्णन का अर्थ यह है कि हमारा पैग़म्बर भविष्यवेत्ता अथवा कवि नहीं है इसलिए कि ये दोनों झूठे हैं। अत: अन्य स्थान पर भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कवि होने का खण्डन किया गया है। जैसे *सूरः यासीन*-६९ तथा *सूरः अलहाक़्क:*-४०-४३)

[3]इससे उन कवियों को अलग कर दिया गया है, जिनकी कविता सत्य तथा सत्यता पर आधारित है। तथा ऐसे शब्दों से अलगाव किया है जिनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि ईमानदार, पुण्यकारी तथा अल्लाह को अधिकतर याद करने वाला कवि अनुचित कविता जिसमें झूठ तथा अतिश्योक्ति का मिश्रण हो ही नहीं सकता। यह उन ही लोगों का कार्य है जो ईमान का गुण विशेष से खाली हो।

The Ummah Testimony Mission

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانْتَصَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا ظُلِمُوا ۗ وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ ﴿٢٢٧﴾

(२२७) अतिरिक्त उनके जो ईमान लाये तथा पुण्य के कर्म किये तथा अधिक मात्रा में अल्लाह तआला की प्रशंसा का वर्णन किया तथा अपनी निस्सहायता के पश्चात भी प्रतिशोध लिया।[1] तथा जिन्होंने अत्याचार किया है वह भी अभी जान लेंगे कि किस करवट उलटते हैं।[2]

सूरतुन नमल-२७

سُورَةُ النَّمْلِ

सूर: नमल* मक्का में उतरी तथा इसकी तिरानवे आयतें तथा सात रूकुऊ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु तथा अत्यन्त दयालु है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

---

[1]अर्थात ऐसे ईमानवाले कवि उन काफ़िर कवियों को उत्तर देते हैं जिसमें उन्होंने मुसलमानों की बुराई की हो। जिस प्रकार आदरणीय हस्सान बिन साबित काफ़िरों कि आक्षेपित कविता का उत्तर दिया करते थे तथा स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे कहते कि "इन (काफ़िरों) की भर्त्सना करो जिब्रील भी तुम्हारे साथ हैं।" (सहीह बुख़ारी किताबु बदइल ख़लक़, बाबु ज़िक्रील मलायक: मुस्लिम फ़ज़ाएल अस्सहाब: बाबु फ़ज़ायल हस्सान बिन साबित) इससे ज्ञात हुआ कि ऐसी कविता उचित एवं मान्य है जिसमें झूठ तथा अतिश्योक्ति न हो तथा जिसके द्वारा मूर्तिपूजकों, काफ़िरों झूठे लोगों को उत्तर दिया जाये तथा सत्य पक्ष एवं एकेश्वरवाद तथा सुन्नत का प्रचार-प्रसार किया जाये।

[2]अर्थात أَيَّ مَرْجِعٍ يَرْجِعُونَ अर्थात कौन से घाट उतरते हैं ? तथा वह नरक है। इसमें अत्याचारियों के लिए कड़ी चेतावनी है। जिस प्रकार हदीस में भी फ़रमाया गया है "तुम अत्याचार से बचो। इसलिए कि अत्याचार क़ियामत के दिन अंधकार का कारण होगा।" (सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्र, बाब तहरिमिज़ ज़ुल्म)

*नमल अरबी भाषा में चींटी को कहते हैं। इस सूर: में चीटियों की घटना का वर्णन है जिसके कारण इसको सूर: नमल कहते हैं।

The Ummah Technology Mission

طٰسٓ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۙ﴿١﴾

(१) ता॰सीन॰, ये आयतें हैं क़ुरआन की (अर्थात स्पष्ट) एवं दिव्य ज्योति वाली किताब की।

هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ﴿٢﴾

(२) मार्गदर्शक तथा शुभसूचना ईमानवालों के लिए।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٣﴾

(३) जो नमाज़ स्थापित करते हैं तथा ज़कात अदा करते हैं तथा आख़िरत पर विश्वास रखते हैं।[1]

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ؕ﴿٤﴾

(४) जो लोग क़ियामत पर ईमान नहीं लाते हमने उनके लिए उनके कुकर्मों को शोभनीय कर दिखाया[2] है, अत: वे भटकते-फिरते हैं।[3]

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿٥﴾

(५) यही वह लोग हैं जिनके लिए बुरी यातना है तथा आख़िरत में भी वह अत्यधिक हानि ग्रस्त हैं।

---

[1]यह विषय विभिन्न स्थानों पर वर्णित है कि क़ुरआन करीम वैसे तो पूरी मानव जाति के मार्गदर्शन के लिए अवतरित किया गया है, परन्तु इससे वास्तव में मार्गदर्शन उन्हीं को मिलेगा जो मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहेंगे, जो लोग अपने दिल तथा मन की खिड़कियों को सत्य देखने तथा सुनने से बन्द अथवा अपने दिलों को पाप के अंधकारों से बिगाड़ लेंगे, क़ुरआन उन्हें किस प्रकार मार्ग पर लगा सकता है ? उनका उदाहरण अंधों की तरह है, जो सूर्य के प्रकाश से लाभान्वित नहीं हो सकते जबकि सूर्य का प्रकाश सम्पूर्ण जगत को प्रकाशित करता है।

[2]यह पापों का परिणाम तथा बदला है कि बुराईयाँ उनको प्रिय लगने लगती हैं तथा आख़िरत पर ईमान से वंचित होना इसका आधारभूत कारण है। इसका सम्बन्ध अल्लाह की ओर इसलिए किया गया है कि प्रत्येक कार्य उसकी इच्छा तथा आदेश से होता है, तथा इसमें भी उसका वही नियम लागू है, कि पुण्य कारियों के लिए पुण्य का मार्ग तथा बुरों के लिए बुराई का मार्ग सरल कर दिया जाता है। परन्तु इन दोनों मार्गों में से किसी एक का निर्वाचन करना यह मनुष्य की अपनी इच्छा पर आधारित है।

[3]अर्थात भटकाव के जिस मार्ग पर वे चल रहे होते हैं, उसकी वास्तविकता से वे परिचित नहीं होते तथा सत्य मार्ग की ओर नहीं पाते।

The Ummah Technology Mission

وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ۝٦

(६) तथा नि:संदेह आपको क़ुरआन सिखाया जा रहा है अल्लाह विवेकी तथा सर्वज्ञ की ओर से।

اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖٓ اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ؕ سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝٧

(७) (याद होगा,) जबकि मूसा ने अपने परिवार वालों से कहा कि मैंने आग देखी है, मैं वहाँ से या तो कोई सूचना लेकर अथवा आग का कोई जलता हुआ अंगारा लेकर अभी तुम्हारे पास आ जाऊँगा, ताकि तुम सेंक-ताप कर लो।[1]

فَلَمَّا جَآءَهَا نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٨

(८) जब वहाँ पहुँचे तो आवाज़ दी गयी कि शुभ हो वह जो उस दिव्य ज्योति में है तथा मंगलमय है वह जो उस के आस-पास है,[2] तथा पवित्र है अल्लाह जो सर्वलोक का प्रभु है।[3]

---

[1]यह उस समय की घटना है जब आदरणीय मूसा मदयन से अपनी पत्नी को साथ लेकर वापस लौट रहे थे, रात्रि के अंधेरे में मार्ग का ज्ञान नहीं था तथा सर्दी से बचाव के लिए आग की आवश्यकता थी।

[2]दूर से जहाँ आग के शोले दिखायी दिये, वहाँ पहुँचे अर्थात तूर पर्वत पर, तो देखा कि एक हरे भरे वृक्ष से शोले निकल रहे हैं। यह वास्तव में आग नहीं थी, अल्लाह की दिव्य ज्योति थी, जो अग्नि की भाँति प्रतीत हो रही थी। مَن في النار में مَنْ से तात्पर्य अल्लाह तआला अर्थात उसका दिव्य प्रकाश है तथा من حولها (उसके समीप) से तात्पर्य मूसा एवं फ़रिश्ते। हदीस में अल्लाह तआला के पर्दे को प्रकाश तथा एक कथन में अग्नि कहा गया है "कि यदि अपने आप को साक्षात प्रकट कर दे तो उसका प्रताप सम्पूर्ण सृष्टि को जलाकर भस्म कर दे।" (सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान बाब इन्नल्लाह ला यनामु-फ़तावा इब्न तैमिय: ५:४६४)

[3]यहाँ अल्लाह की महिमा एवं पवित्रता का अर्थ यह है कि इस आकाशवाणी से यह न समझ लिया जाये कि इस अग्नि अथवा वृक्षों में अल्लाह ने प्रवेश किया हुआ है, जिस प्रकार बहुत से मूर्तिपूजक समझते हैं, यह सत्य प्रदर्शन का एक प्रकार है जिससे नबूअत के प्रारम्भ में नबियों को सामान्यता सुशोभित किया जाता है। कभी फ़रिश्ते के

The Ummah Technology Mission

يٰمُوْسٰۤى اِنَّهٗۤ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٩

(९) मूसा ! (सुन,) बात यह है कि मैं ही अल्लाह हूँ[1] प्रभावशाली तथा गुणज्ञ।

وَاَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰى لَا تَخَفْ ۫ اِنِّىْ لَا يَخَافُ لَدَىَّ الْمُرْسَلُوْنَ ۝١٠

(१०) तथा तू अपनी छड़ी डाल दे, (मूसा ने) जब उसे हिलता-डुलता देखा, इस प्रकार कि जैसे सर्प है, तो मुँह मोड़कर पीठ फेरकर भागे तथा पलटकर भी न देखा, हे मूसा ! भयभीत न हो,[2] मेरे समक्ष पैग़म्बर डरा नहीं करते।

اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًۢا بَعْدَ سُوْٓءٍ فَاِنِّىْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١١

(११) परन्तु जो लोग अत्याचार करें,[3] फिर उसके बदले पुण्य करें उस बुराई के पीछे तो मैं भी क्षमा करने वाला दयालु हूँ।[4]

وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِىْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ؕ فِىْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ ؕ اِنَّهُمْ

(१२) तथा अपना हाथ अपनी जेब में डाल वह उज्जवल (तथा प्रकाश वाला) होकर निकलेगा बिना किसी रोग के।[5] (तू) नौ निशानियाँ लेकर फ़िरऔन तथा उसके

द्वारा, तथा कभी स्वयं अल्लाह तआला अपने दिव्य प्रकाश एवं स्वयं वार्ता से, जैसाकि मूसा के साथ घटित हुआ।

[1]वृक्ष से आकाशवाणी होना आदरणीय मूसा के लिए आश्चर्यजनक था। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "मूसा ! आश्चर्य न करो, मैं ही अल्लाह हूँ।"

[2]इससे ज्ञात हुआ कि पैग़म्बर को गुप्त बातों का ज्ञान नहीं होता, वरन् मूसा अपने हाथ की लाठी से न डरते दूसरी बात यह कि पैग़म्बर को भी प्राकृतिक भय हो सकता है क्योंकि वह भी तो एक मनुष्य ही होते हैं।

[3]अर्थात अत्याचारी को तो भय होना ही चाहिए कि अल्लाह तआला उसकी पकड़ न कर ले।

[4]अर्थात अत्याचारी की क्षमा भी स्वीकार करता हूँ।

[5]अर्थात बिना कुष्ठ अथवा किसी प्रकार के चर्म रोग आदि के। यह लाठी के साथ दूसरा चमत्कार उन्हें प्रदान किया गया।

The Ummah Technology Mission

كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿١٢﴾

अनुयायियों के पास (जा,) [1] नि:संदेह वह कुकर्मियों का गुट है।

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٣﴾

(१३) अत: जब उनके पास आँखें खोल देने वाले [2] हमारे चमत्कार पहुँचे तो वह कहने लगे कि यह तो साफ (निरा) जादू है।

وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤﴾

(१४) तथा उन्होंने अस्वीकार कर दिया, यद्यपि उनके दिल विश्वास कर चुके थे केवल अत्याचार एवं घमण्ड के कारण। [3] अत: देख लीजिए उन उपद्रवियों का परिणाम क्या कुछ हुआ।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ

(१५) तथा हमने नि:संदेह दाऊद एवं सुलेमान को ज्ञान दे रखा था[4] तथा दोनों ने

---

[1] فی تسع آیات (नौ चमत्कार) अर्थात ये दो चमत्कार उन नौ निशानियों में से हैं जिनके द्वारा मैंने तेरी सहायता की है, उन्हें लेकर फ़िरऔन तथा उसके अनुयायियों के पास जा। इन नौ निशानियों की विस्तृत जानकारी के लिए देखिए *सूर: बनी इसाईल* आयत १०१ की व्याख्या।

[2] مُبصرة स्पष्ट तथा प्रकाशमयी अथवा यह संज्ञा कर्ता कारक के अर्थ में है।

[3] अर्थात ज्ञान होने के उपरान्त जो उन्होंने अस्वीकार किया तो उसका कारण उनका अत्याचार एवं घमण्ड था।

[4] सूर: के प्रारम्भ में फ़रमाया गया था कि यह क़ुरआन अल्लाह की ओर से सिखाया जाता है, इसके प्रमाण के लिए तूर पर आदरणीय मूसा की घटना का संक्षिप्त वर्णन किया तथा अब दूसरा प्रमाण आदरणीय दाऊद तथा सुलेमान की यह घटना है। नबियों के इन घटनाओं का वर्णन इस बात का प्रमाण है कि परम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। ज्ञान से तात्पर्य नबूअत के ज्ञान के अतिरिक्त वह ज्ञान है जिनसे आदरणीय दाऊद तथा सुलेमान को विशेषरूप से अलंकृत किया गया था जैसे आदरणीय दाऊद को इस्पात उद्योग का ज्ञान, तथा आदरणीय सुलेमान को पशु-पक्षियों की बोली का ज्ञान प्रदान किया गया था। इन दोनों पिता-पुत्र को अन्य भी बहुत कुछ प्रदान किया गया था, परन्तु यहाँ केवल ज्ञान का वर्णन है जिससे स्पष्ट होता है कि ज्ञान अल्लाह का सर्वोत्तम उपहार है।

The Ummah Technology Mission

فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥﴾

कहा, सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है, जिसने हमें अपने बहुत से ईमानवाले भक्तों पर श्रेष्ठता प्रदान की है।

وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۭ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾

(१६) तथा दाऊद के उत्तराधिकारी सुलेमान हुए, [1] और कहने लगे हे लोगो ! हमें पक्षियों की बोली सिखायी गयी है।[2] तथा हम सब कुछ में से दिये गये हैं।[3] नि:संदेह यह अत्यन्त खुला हुआ (अल्लाह का) उपकार है।

وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٧﴾

(१७) तथा सुलेमान के समक्ष उनकी सभी सेना जिन्नात, तथा मनुष्य, एवं पक्षी एकत्रित किये गये,[4] (प्रत्येक प्रकार को) अलग-अलग

---

[1]इससे तात्पर्य नबूअत तथा राज्य का उत्तराधिकार है, जिसके उत्तराधिकारी केवल सुलेमान ही हुए। वरन् आदरणीय दाऊद के अन्य पुत्र भी थे, जो इस उत्तराधिकार से वंचित रहे। वैसे भी नबियों का उत्तराधिकार ज्ञान में ही होता है, जो धन-सम्पत्ति वे छोड़ जाते हैं वह दान होता है, जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। (अल-बुख़ारी किताबुल फ़रायेज़, तथा मुस्लिम किताबुल जिहाद)

[2]बोलियाँ तो सभी पशु-पक्षियों की सिखायी गयी थीं, परन्तु पक्षियों का वर्णन विशेष रूप से इसलिए किया है कि पक्षी छाया के लिए हर समय साथ रहते थे। तथा कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि केवल पक्षियों की बोलियाँ सिखायी गयी थीं तथा चीटियों को भी पंख निकल आते हैं इसलिए वे भी पक्षियों में सम्मिलित हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[3]जिसकी उनको आवश्यकता थी, जैसे ज्ञान, नबूअत, नीति, धन, जिन्नात तथा मनुष्य एवं पशु-पक्षियों के ऊपर प्रभुत्व आदि।

[4]इसमें आदरणीय सुलेमान की व्यक्तिगत विशेषता तथा महत्व का वर्णन है, जिसमें वह सम्पूर्ण मानव इतिहास में सर्वश्रेष्ठ हैं, कि उनका राज्य केवल मनुष्यों पर ही नहीं था, बल्कि जिन्नातों, पशुओं एवं पक्षियों यहाँ तक कि हवा को भी उनके अधीन कर दिया गया था, इसमें कहा गया है कि सुलेमान की पूरी सेना अर्थात जिन्नों, मनुष्यों, तथा पक्षियों को एकत्रित किया गया। अर्थात कहीं प्रस्थान करने के लिए यह सेना एकत्रित की गयी।

The Ummah Technology Mission

खड़ा कर दिया गया।[1]

حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰۤاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۸﴾

(१८) जब वे चीटियों के मैदान में पहुँचे तो एक चींटी ने कहा, हे चीटियों ! अपने-अपने घरों में घुस जाओ, (ऐसा न हो कि) असावधानी के कारण सुलेमान तथा उनकी सेना तुम्हें रौंद डाले।[2]

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْۤ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ

(१९) उसकी इस बात पर (आदरणीय सुलेमान) मुस्करा कर हँस दिये तथा दुआ करने लगे कि हे प्रभु ! तू मुझे सौभाग्य प्रदान कर कि मैं तेरे इन उपकारों की कृतज्ञता व्यक्त

---

[1]यह अनुवाद को विभाजन के अर्थ में लेकर किया गया है। अर्थात सभी को अलग-अलग गुटों में विभाजित (श्रेणी के रूप में) कर दिया जाता था। जैसे मनुष्यों, जिन्नों का गुट पक्षियों एवं पशुओं का गुट आदि-आदि। इसका अन्य अर्थ है "अत: वे रोके जाया करते थे।" अर्थात यह सेना इतनी बड़ी संख्या में होती थी कि मार्ग में रोक-रोककर उन्हें ठीक किया जाता था कि राज्य की सेना असंगठित एवं विभाजन का शिकार न हो जाये। यह وَزَعَ يَزِعُ से है जिसका अर्थ रोकने का है। इस शब्द में नकारात्मक हम्ज़ा लगाकर तो أَوْزِعْنِي बनाया है जो आयत संख्या १९ में आ रहा है अर्थात ऐसी वस्तुयें मुझसे दूर कर दे, जो मुझे तेरे उपकारों की कृतज्ञनता व्यक्त करने से रोकती हैं।

[2]इससे यह ज्ञात हुआ कि जीवों में भी एक विशेष प्रकार का संवेदन विद्यमान है। यद्यपि वह मनुष्य से बहुत कम तथा भिन्न है। दूसरा यह कि आदरणीय सुलेमान इतने महान तथा महत्वपूर्ण व्यक्ति होने के पश्चात भी उन्हें परोक्ष का ज्ञान नहीं था, इसीलिए चीटियों को आभास हुआ कि अनजाने में वह उनको रौंद न डालें। तीसरा यह कि जीव भी इस सत्य विश्वास से परिचित थे तथा हैं कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी अप्रत्यक्ष का ज्ञान नहीं रखता। जैसाकि आगे आने वाली हुदहुद की घटना से और पुष्टि होती है। चौथे यह कि आदरणीय सुलेमान पक्षियों के अतिरिक्त अन्य जीवों की बोलियाँ भी समझते थे। यह ज्ञान अल्लाह तआला ने उन्हें प्रदान किया था, जिस प्रकार जिन्नात आदि की आधीन चमत्कारिक प्रतिष्ठा भी चमत्कार के रूप में।

The Ummah Technology Mission

وَ اَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَ اَدْخِلْنِیْ بِرَحْمَتِكَ فِیْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿۱۹﴾

करूँ,[1] जो तूने मुझ पर उपकार किये हैं। तथा मेरे माता-पिता पर तथा मैं ऐसे पुण्य के कार्य करता रहूँ जिससे तू प्रसन्न रहे, तथा मुझे अपनी कृपा से अपने पुण्यकारी भक्तों में सम्मिलित कर ले।[2]

وَ تَفَقَّدَ الطَّیْرَ فَقَالَ مَا لِیَ لَاۤ اَرَى الْهُدْهُدَ ۫ اَمْ كَانَ مِنَ الْغَآىِٕبِیْنَ ﴿۲۰﴾

(२०) तथा आप ने पक्षियों का निरीक्षण किया और कहने लगे यह क्या बात है कि मैं हुद हुद को नहीं देख रहा हूँ? क्या वास्तव में वह अनुपस्थिति है?[3]

لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِیْدًا اَوْ لَاَاْذْبَحَنَّهٗۤ اَوْ لَیَاْتِیَنِّیْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِیْنٍ ﴿۲۱﴾

(२१) नि:संदेह मैं उसे कड़ा दण्ड दूँगा, अथवा उसे वधकर डालूँगा अथवा मेरे समक्ष कोई उचित कारण बताये।

فَمَكَثَ غَیْرَ بَعِیْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَ جِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍ بِنَبَاٍ

(२२) कुछ अधिक समय नहीं बीता था कि (आकर) उसने कहा मैं ऐसी वस्तु की सूचना लाया हूँ कि तुझे उसकी सूचना ही नहीं।[4]

---

[1]चीटियों जैसे तुच्छ जीव की बात सुनकर समझ लेने से आदरणीय सुलेमान के दिल में कृतज्ञता व्यक्त करने की भावना उत्पन्न हुई कि अल्लाह ने मुझ पर कितना उपकार किया है।

[2]इससे ज्ञात हुआ कि स्वर्ग जो ईमानवालों ही का घर है, इसमें कोई भी अल्लाह की कृपा के बिना प्रवेश नहीं कर सकेगा। इसीलिए हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : सीधे-सीधे तथा सत्य के निकट रहो तथा यह बात जान लो कि कोई व्यक्ति भी केवल अपने कर्मों से स्वर्ग में नहीं जायेगा। सहाबा ने पूछा, हे रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) भी? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया : "हाँ, मैं भी उस समय तक स्वर्ग में नहीं जाऊँगा, जब तक अल्लाह की दया मुझे अपनी छाया में नहीं छिपा लेगी।" (सहीह बुख़ारी संख्या ६४६७ तथा मुस्लिम संख्या २८१६)

[3]अर्थात उपस्थिति तो है, मुझे दिखाई नहीं दे रहा है अथवा यहाँ उपस्थिति ही नहीं है।

[4] إحاطة का अर्थ है किसी वस्तु के विषय में पूर्ण ज्ञान तथा परिचय प्राप्त करना।

The Ummah Technology Mission

मैं 'सबा'[1] की एक सच्ची सूचना तेरे पास लाया हूँ।

يَقِينٍ ﴿٢٢﴾

(२३) मैंने देखा कि उनकी बादशाहत एक महिला कर रही है,[2] जिसे हर प्रकार की वस्तु से कुछ न कुछ प्रदान किया गया है तथा उसका सिंहासन भी बड़ा भव्य है।[3]

إِنِّي وَجَدْتُ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ مِن كُلِّ شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾

(२४) मैंने उसे तथा उसके समुदाय को अल्लाह को छोड़कर सूर्य को सजदा करते हुए पाया, शैतान ने उनके कार्य उन्हें भले करके दिखाकर सत्य मार्ग से रोक दिया है।[4] अतः वे मार्गदर्शन पर नहीं आते।

وَجَدْتُهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِن دُونِ اللَّهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٢٤﴾

---

[1]सबा एक व्यक्ति के नाम पर एक समुदाय का नाम भी था एवं एक नगर का भी। यहाँ नगर से तात्पर्य है। यह सनआ (यमन) से तीन दिन की यात्रा की दूरी पर है तथा मआरिब यमन के नाम से प्रसिद्ध है। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात हुदहुद के लिए भी यह बात आश्चर्यजनक थी कि सबा में एक स्त्री राज्य कर रही है। परन्तु आजकल कहा जाता है कि स्त्रियाँ भी हर बात में पुरूषों के समान हैं। यदि पुरूष राज्य कर सकता है तो महिला क्यों नहीं कर सकती? जब कि यह दृष्टिकोण इस्लामी शिक्षाओं के विपरीत है। कुछ लोग महारानी सबा (बिलक़ीस) के इस वाक्य से अर्थ निकालते हुए कहते हैं कि महिला का नेतृत्व मान्य है। यद्यपि क़ुरआन ने एक घटना के रूप में इसका वर्णन किया है, इससे इसकी मान्यता अथवा अमान्यता का कोई सम्बन्ध ही नहीं है। महिला नेतृत्व की अमान्यता पर क़ुरआन तथा हदीस में स्पष्ट प्रमाण विद्यमान है।

[3]कहा जाता है कि उसकी लम्बाई ८० हाथ, चौड़ाई ४० हाथ तथा ऊँचाई ३० हाथ थी तथा उसमें मोती, लाल, नीलम, पन्ना, पुखराज, फ़िरोज़ा, मणि आदि जड़े हुए थे। واللہ أعلم (फ़तहुल क़दीर) वैसे यह कथन अतिश्योक्ति से शून्य नहीं प्रतीत होता। यमन में बिलक़ीस का जो महल खण्डहर के रूप में विद्यमान है उसमें इतने बड़े सिंहासन की संभावना नहीं।

[4]इसका अर्थ यह है जिस प्रकार पक्षियों को यह आभास है कि नबियों को अप्रत्यक्ष का ज्ञान नहीं होता, जैसाकि हुदहुद ने आदरणीय सुलेमान को कहा कि ऐसा समाचार लाया

The Ummah Technology Mission

أَلَّا يَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿٢٥﴾

(२५) कि मात्र उसी अल्लाह को सजदा करें,[1] जो आकाशों तथा धरती की गुप्त वस्तुओं को बाहर निकालता है।[2] तथा जो कुछ तुम गुप्त रखते हो तथा प्रकट करते हो वह सभी कुछ जानता है।

اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٢٦﴾ السجدة

(२६) (अर्थात) अल्लाह ! उसके अतिरिक्त कोई पूजने योग्य नहीं वही विशाल अर्श का प्रभु है।[3]

قَالَ سَنَنظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنتَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾

(२७) (सुलेमान ने) कहा कि अब हम देखेंगे कि तूने सत्य कहा अथवा तू झूठा है।

हूँ जिससे आप भी अनजान हैं, उसी प्रकार वह अल्लाह के एक होने का प्रवधि एवं समझ भी रखते हैं। इसीलिए हुदहुद ने आश्चर्य एवं विस्मय के रूप में कहा कि यह महारानी तथा उसका समुदाय अल्लाह के अतिरिक्त सूर्य के पुजारी हैं तथा शैतान का अनुकरण कर रहे हैं, जिसने उनके लिए सूर्य की पूजा को अलंकृत करके दिखाया है।

[1] ألا يسجدوا उसका सम्बन्ध भी زيّن के साथ है। अर्थात शैतान ने यह भी उनके लिए आकर्षक कर दिया है कि वह अल्लाह को सजदा न करें। अथवा यह لا يهتدون का कारक है तथा لا अधिक है। अर्थात उनकी बुद्धि में यह बात नहीं आती कि सजदा तो केवल अल्लाह को करें। (फ़तहुल क़दीर)

[2] अर्थात आकाश से वर्षा करता है तथा धरती से उसके योग्य बनस्पति खनिज एवं अन्य धरती के कोष प्रकट करता तथा निकालता है।

[3] अल्लाह तो सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी है, परन्तु केवल महान अर्श का वर्णन किया, एक तो इस लिए कि अल्लाह का सिंहासन (अर्श) सृष्टि की सबसे बड़ी चीज़ तथा सर्वश्रेष्ठ है। दूसरे यह स्पष्ट करने के लिए कि महारानी सबा का राजसिंहासन यद्यपि बहुत बड़ा है, परन्तु उसके महान सिंहासन से कोई तुलना ही नहीं है। जिस प्रकार अल्लाह तआला अपनी महिमा के अनुसार आसीन है। हुदहुद ने चूँकि एकेश्वरवाद का पक्ष तथा शिर्क का खण्डन किया है, तथा अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा का वर्णन किया है, इसलिए हदीस में आता है "चार जीवों की हत्या न करो चींटी, मधुमक्खी, हुदहुद तथा लटूरा।" (मुसनद अहमद भाग १ पृष्ठ ३३२, अबू दाऊद किताबुल अदब, इब्ने माजा किताबु स्सैयद, बाब मा युन्हा अन क़त्लेही) लटूरा, इसका सिर बड़ा, पेट सफेद तथा पीठ हरी होती है, यह छोटे-छोटे पक्षियों का शिकार करता है। (व्याख्या इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾

(२८) मेरे इस पत्र को ले जाकर उन्हें दे दे, फिर उनके पास से हट आ तथा देख कि वे क्या उत्तर देते हैं।[1]

قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْٓ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾

(२९) वह कहने लगी हे प्रमुखो ! मेरी ओर एक अत्यन्त पत्र डाला गया है।

اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾

(३०) जो सुलेमान की ओर से है तथा जो दया करने वाले अत्यन्त कृपालु अल्लाह के नाम से प्रारम्भ है।

اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾

(३१) यह कि तुम मेरे समक्ष उद्दण्डता मत करो तथा मुसलमान बनकर मेरे पास आ जाओ।[2]

قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْٓ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾

(३२) उसने कहा हे मेरे प्रमुखो ! तुम मेरी इस समस्या में मुझे परामर्श दो। मैं किसी बात का अंतिम निर्णय जब तक तुम्हारी उपस्थिति एवं राय न हो नहीं किया करती।

قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ

(३३) उन सभी ने उत्तर दिया कि हम शक्तिशाली एवं शक्ति वाले अत्यधिक लड़ने-भिड़ने वाले हैं।[3] आगे आप को अधिकार है

---

[1] अर्थात एक ओर हटकर छिप जा तथा देख कि वे आपस में क्या वार्तालाप करते हैं।

[2] जिस प्रकार नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी राजाओं को पत्र लिखे थे। जिनमें उन्हें इस्लाम धर्म स्वीकार करने का आमन्त्रण दिया था। उसी प्रकार आदरणीय सुलेमान ने भी उसे पत्र द्वारा इस्लाम धर्म स्वीकार करने का आमन्त्रण दिया।आजकल जिसको पत्र लिखा जाता है उसका नाम पहले लिखा जाता है। परन्तु प्राचीन काल की विधि यह थी, जो आदरणीय सुलेमान ने अपनाया था कि पहले अपना लिखा।

[3] अर्थात हमारे पास शक्ति तथा शस्त्र भी हैं तथा युद्ध के समय वीरता से लड़ने वाले भी हैं, इसलिए झुकने तथा दबने की आवश्यकता नहीं है।

The Ummah Technology Mission

مَاذَا تَأْمُرِيْنَ ﴿٣٣﴾

आप स्वयं ही विचार कीजिए कि आप हमें क्या आदेश देती हैं।[1]

قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَ جَعَلُوْٓا اَعِزَّةَ اَهْلِهَآ اَذِلَّةً ۚ وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٤﴾

(३४) उसने कहा कि बादशाह जब किसी बस्ती में प्रवेश करते हैं,[2] तो उसे उजाड़ देते हैं तथा वहाँ के सम्मानित लोगों को अपमानित करते हैं।[3] तथा ये लोग भी ऐसा ही करेंगे।[4]

وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) तथा मैं उन्हें एक उपहार भेजने वाली हूँ, फिर देख लूँगी कि राजदूत क्या उत्तर लेकर लौटते हैं।[5]

فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ ۫ فَمَآ اٰتٰىنِيَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّآ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ

(३६) अत: (राजदूत) जब (आदरणीय) सुलेमान के पास पहुँचा तो आप ने कहा, क्या तुम धन से मुझे मदद देना चाहते हो,[6] मुझे तो मेरे प्रभु ने इस से अत्यधिक प्रदान कर रखा

---

[1]इसलिए कि हम तो आपके आदेश के आधीन हैं, जोआपका आदेश होगा, पालन करेंगे।

[2]अर्थात शक्ति के द्वारा विजय प्राप्त करते हुए।

[3]अर्थात हत्या तथा लूटपाट करके बन्दी बनाकर।

[4]कुछ व्याख्याकारों के निकट यह अल्लाह का कथन है जो महारानी सबा के पक्ष में है तथा कुछ के निकट यह बिलक़ीस का ही कथन है तथा इसका विशिष्ट रूप है एवं यही पूर्व वाक्य में अधिक निकट है।

[5]इससे अनुमान हो जायेगा कि सुलेमान कोई सांसारिक राजा हैं अथवा अल्लाह के भेजे हुए नबी हैं, जिसका उद्देश्य अल्लाह के धर्म का प्रभुत्व स्थापित करना है। यदि उपहार स्वीकार नहीं किया, तो नि:संदेह उसका उद्देश्य धर्म का प्रचार-प्रसार है, फिर हमें भी अनुकरण किये बिना कोई उपाय नहीं होगा।

[6]अर्थात तुम देख नहीं रहे हो, कि अल्लाह ने मुझे हर वस्तु प्रदान की है। फिर तुम अपने उपहार से मेरे धन-सम्पत्ति में क्या बढ़ा सकते हो ? यह प्रश्न नकारात्मक है। अर्थात कोई बढ़ोत्तरी नहीं कर सकते।

The Ummah Technology Mission

है, जो उसने तुम्हें दिया है, अत: तुम ही अपने उपहार से प्रसन्न रहो।[1]

تَفْرَحُونَ ﴿٣٦﴾

(३७) जा उनकी ओर लौट जा[2] हम उनके पास ऐसी सेना लायेंगे जिसके सम्मुख आने की उनमें शक्ति नहीं तथा हम उन्हें अपमानित एवं पराजित करके वहाँ से निकाल बाहर करेंगे।[3]

ارْجِعْ إِلَيْهِمْ فَلَنَأْتِيَنَّهُمْ بِجُنُودٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُم مِّنْهَا أَذِلَّةً وَهُمْ صَاغِرُونَ ﴿٣٧﴾

(३८) (आप ने) कहा हे सरदारो ! तुममें से कोई है जो उनके मुसलमान होकर पहुँचने से पहले ही उसका सिंहासन मुझे लाकर दे।[4]

قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلَؤُا أَيُّكُمْ يَأْتِينِي بِعَرْشِهَا قَبْلَ أَن يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٣٨﴾

---

[1]यह चेतावनी के रूप में है कि तुम ही इस उपहार पर गर्व करो तथा प्रसन्न हो, मैं तो इससे प्रसन्न होने वाला नहीं, इसलिए कि एक तो सांसारिक लाभ मेरा उद्देश्य नहीं है। दूसरे यह कि अल्लाह ने मुझे वह कुछ प्रदान किया है जो सम्पूर्ण संसार में किसी को प्रदान नहीं किया। तीसरे, मुझे नबूअत से भी सुशोभित किया गया है।

[2]यहाँ एक वचन से सम्बोधित किया, जबकि इससे पूर्व बहुवचन से सम्बोधित किया था। क्योंकि सम्बोधन में सम्पूर्ण पार्टी को ध्यान में रखा गया है कभी सरदार को।

[3]आदरणीय सुलेमान केवल राज्य से सम्बन्धित नहीं थे, अल्लाह के पैग़म्बर भी थे। इसलिए उनकी ओर से लोगों को अपमानित करना संभव नहीं था, परन्तु लड़ाई का परिणाम यही होता है क्योंकि युद्ध नाम ही रक्तपात तथा बन्दी बनने बनाने का है तथा अपमान और अनादर से तात्पर्य यही है, वरन् अल्लाह के पैग़म्बर लोगों को अनायास लज्जित तथा अपमानित नहीं करते। जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का व्यवहार एवं उत्तम आचार युद्ध के अवसर पर रहा।

[4]आदरणीय सुलेमान के इस उत्तर से महारानी ने यह अनुमान लगाया कि वह सुलेमान का सामना नहीं कर सकेंगी। अत: उन्होंने अधीन एवं अनुयायी बनकर आने की तैयारी प्रारम्भ कर दी। आदरणीय सुलेमान को भी उनके आगमन की सूचना मिल गयी, तो आप ने उन्हें अपने अधिक चमत्कारिक प्रतिष्ठा दिखाने के लिए योजना बनायी तथा उनके पहुँचने से पूर्व ही उसका राजसिंहासन अपने पास मंगवाने का प्रबन्ध किया।

The Ummah Technology Mission

قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ﴿٣٩﴾

(३९) एक शक्तिशाली जिन्न कहने लगा, आप के अपने इस स्थान से[1] उठने से पूर्व ही मैं उसे आप के पास ला देता हूँ।[2] विश्वास कीजिए मैं इसका सामर्थ्य रखता हूँ तथा हूँ भी अमानतदार।[3]

قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ

(४०) जिसके पास किताब का ज्ञान था वह बोल उठा कि आप पलक झपकायें उससे भी पूर्व मैं उसे आपके पास पहुँचा सकता हूँ।[4]

---

[1]इससे वह सभा तात्पर्य है जो वाद-विवाद की सुनवायी के लिए आदरणीय सुलेमान प्रात: काल से मध्यान्ह तक आयोजित करते थे।

[2]इससे ज्ञात हुआ कि वह अवश्य एक जिन्न था, जिन्हें अल्लाह ने मनुष्यों से अप्रत्याशित शक्तियों से युक्त किया है। क्योंकि किसी मनुष्य के लिए, चाहे वह कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो, यह संभव ही नहीं है कि बैतुल मोकद्दस से मारिब यमन (सबा) जाये तथा फिर वहाँ से राजसिंहासन उठा लाये। तथा डेढ़ हज़ार मील की यह दूरी जिसे दोनों ओर की गणना की जाये तो तीन हज़ार मील बनता है। तीन-चार घंटे में तय कर ले। एक शक्तिशाली से शक्तिशाली मनुष्य भी प्रथम तो इतने बड़े सिंहासन को उठा ही नहीं सकता तथा यदि वह अन्य लोगों से अथवा वस्तुओं की सहायता से उठा भी ले तो इतनी अल्पकालिक अवधि में इतनी यात्रा किस प्रकार सम्भव है कि तय कर ले।

[3]अर्थात मैं उसे उठा कर ला भी सकता हूँ तथा उसकी किसी वस्तु में परिवर्तन भी नहीं करूँगा।

[4]यह कौन व्यक्ति था जिसने यह कहा ? यह किताब कौन सी थी ? तथा यह ज्ञान क्या था जिसकी शक्ति पर यह दावा किया गया ? इसमें व्याख्याकारों के विभिन्न कथन हैं। इन तीनों की पूर्ण वास्तविकता तो अल्लाह तआला ही जानता है। यहाँ क़ुरआन करीम के शब्दों से जो ज्ञात होता है, वह इतना ही है कि वह कोई मनुष्य ही था, जिसके पास अल्लाह की किताब का ज्ञान था, अल्लाह तआला ने चमत्कार एवं अप्राकृतिक रूप से उसे यह शक्ति प्रदान की कि पलक झपकते ही वह सिंहासन ले आया। आचरण तथा चमत्कार नाम ही ऐसे कार्यों का है, जो उपस्थिति साधन तथा सामान्य बातों से एकदम विपरीत हो। तथा वह अल्लाह तआला के सामर्थ्य एवं इच्छा से ही प्रकट होते हैं। इसलिए न व्यक्तिगत शक्ति आश्चर्यजनक है तथा न उस ज्ञान के खोज की आवश्यकता

The Ummah Technology Mission

طَرْفُكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّیْ ۫ لِیَبْلُوَنِیْۤ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ؕ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا یَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّیْ غَنِیٌّ كَرِیْمٌ ﴿۴۰﴾

जब आपने उसे अपने निकट उपस्थिति पाया, तो कहने लगे यही मेरे प्रभु का उपकार है, ताकि वह मुझे परखे कि मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ अथवा कृतघ्न । कृतज्ञता व्यक्त करने वाला अपने लाभ के लिए ही कृतज्ञता व्यक्त करता है तथा जो अकृज्ञता व्यक्त करे, तो मेरा प्रभु निस्पृह तथा महान है ।

قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِیْۤ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِیْنَ لَا یَهْتَدُوْنَ ﴿۴۱﴾

(४१) आदेश दिया कि उसके सिंहासन में कुछ परिवर्तन कर दो, [1] हम देखेंगे कि यह मार्ग पा लेती है अथवा उनमें से होती है जो मार्ग नहीं पाते ।[2]

فَلَمَّا جَآءَتْ قِیْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ؕ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَ اُوْتِیْنَا الْعِلْمَ

(४२) फिर जब वह आ गयी तो उससे पूछा गया कि ऐसा ही तेरा सिंहासन है ? उसने उत्तर दिया कि यह जैसाकि वही है ।[3] हमें इस

है, जिसका वर्णन यहाँ है । क्योंकि यह उस शक्ति का परिचय है, जिसके द्वारा यह कार्य पल भर में पूरा हुआ । अन्यथा वास्तव में तो यह अल्लाह की चाहत ही की कार्यवाही थी जो पल भर में जो चाहे कर सकती है । आदरणीय सुलेमान भी इस वास्तविकता से परिचित थे, इसलिए जब उन्होंने देखा कि सिंहासन प्रस्तुत है, तो उसे अपने प्रभु की कृपा ही कहा ।

[1]अर्थात उसके रंगरूप अथवा आकार में परिवर्तन कर दो ।

[2]अर्थात वह उस बात से परिचित होती है कि यह सिंहासन उसी का है अथवा उसको समझ नहीं पाती ? दूसरा अर्थ यह है कि वह मार्गदर्शन पाती है अथवा नहीं ? अर्थात इतना बड़ा चमत्कार देख कर भी उस पर सत्यमार्ग खुलता है अथवा नहीं ।

[3]परिवर्तन के कारण चूँकि उसके आकार में कुछ परिवर्तन आ गया था, इसलिए उसने स्पष्ट शब्दों में उसका अपना होना स्वीकार भी नहीं किया तथा परिवर्तन उपरान्त मनुष्य फिर भी अपनी वस्तु को पहचान लेता है, इसलिए अपना होने को नकारा भी नहीं तथा यह कहा कि "जैसाकि वही है ।" इसमें स्वीकार है न अस्वीकार । अपितु अत्यन्त सतर्कता पूर्ण उत्तर है ।

The Ummah Technology Mission

مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ﴿٤٢﴾

से पूर्व ही ज्ञान दिया गया था तथा हम मुसलमान थे।[1]

وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَعْبُدُ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كَافِرِينَ ﴿٤٣﴾

(४३) तथा उसे उन्होंने रोक रखा था जिनकी वह अल्लाह के अतिरिक्त पूजा करती रही थी। नि:संदेह वह काफ़िर लोगों में से थी।[2]

قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۖ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ صَرْحٌ مُمَرَّدٌ مِنْ قَوَارِيرَ ۗ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي

(४४) उससे कहा गया कि महल में चली चलो जिसे देखकर यह समझकर कि जलाशय है उसने अपनी पिंडलियाँ खोल दीं,[3] फ़रमाया यह तो शीशे से निर्मित भवन है, कहने लगी मेरे प्रभु ! मैंने अपने प्राण पर अत्याचार किया।

---

[1]अर्थात यहाँ आने से पूर्व ही हम समझ गये थे कि आप अल्लाह के नबी हैं तथा आपके अधीन एवं अनुयायी हो गये थे। परन्तु इमाम इब्ने कसीर तथा शौकानी आदि ने इसे आदरणीय सुलेमान का कथन कहा है कि हमें पूर्व ही यह ज्ञान दे दिया गया था कि महारानी सबा आज्ञाकारिणी होकर सेवा में उपस्थिति होगी।

[2]यह अल्लाह तआला का कथन है तथा صَدَّهَا का कर्ता مَا كانت تعبد है। अर्थात उसे अल्लाह की इबादत से जिस वस्तु ने रोक रखा था, वह अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की पूजा थी, तथा इसका कारण यह था कि उसका सम्बन्ध एक काफ़िर समुदाय से था, इसलिए एकेश्वरवाद की वास्तविकता से अनजान रही, कुछ ने صَدَّهَا का कर्ता अल्लाह को तथा कुछ ने सुलेमान को बताया है। अर्थात अल्लाह अथवा अल्लाह के आदेश से सुलेमान ने उसे अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की पूजा से रोक दिया। परन्तु प्रथम कथन अधिक उचित है। (फ़तहुल क़दीर)

[3]यह महल शीशे से निर्मित था जिसका आँगन तथा फ़र्श भी शीशे का था। لُجَّةٌ गहरे पानी अथवा जलाशय को कहते हैं। आदरणीय सुलेमान ने अपनी नबूअत के लिए सम्मान सूचक चमत्कार दिखाने के पश्चात उचित समझा कि उसे अपनी सांसारिक वैभव एवं शोभा की एक झलक दिखायी जाये, जिसमें अल्लाह ने मानव इतिहास में उन्हें विशेषता दी थी। अत: उसे महल में प्रवेश करने का आदेश दिया, जब वह प्रवेश करने लगी, तो उसने अपने पाइंचे चढ़ा लिए। शीशे का फ़र्श उसे पानी प्रतीत हुआ, जिससे अपने वस्त्रों को बचाने के लिए उसने अपने पाइंचे चढ़ा लिए।

The Ummah Technology Mission

ظَلَمْتُ نَفْسِي وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٤﴾

अब मैं सुलेमान के साथ अल्लाह सर्वलोक के नाथ की आज्ञाकारिणी बनती हूँ।[1]

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقَانِ يَخْتَصِمُونَ ﴿٤٥﴾

(४५) तथा निःसंदेह हमने 'समूद' की ओर उनके भाई 'स्वालेह' को भेजा कि तुम सब अल्लाह की इबादत करो, फिर भी वे दो गुट बनकर आपस में लड़ने लग गये।[2]

قَالَ يَا قَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۖ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٤٦﴾

(४६) (आपने) कहा हे मेरे समुदाय के लोगो! तुम भलाई से पहले बुराई की शीघ्रता क्यों मचा रहे हो?[3] तुम अल्लाह (तआला) से क्षमा क्यों नहीं माँगते? ताकि तुम पर दया की जाये।

---

[1]अर्थात जब वह फ़र्श की वास्तविकता को समझ गई तो अपनी त्रुटि का भी संवेदन हो गया तथा अपना अपराध स्वीकार करते हुए मुसलमान होने की घोषणा कर दी। साफ चिकने गढ़े हुए पत्थरों को مُمَرَّد कहा जाता है। इसी से أمرد है जो उस सुन्दर बालक को कहा जाता है, जिसके मुख पर अभी दाढ़ी मूँछ न हो। जिस वृक्ष पर पत्ते न हों उसे مُرْد कहा जाता है। (फ़तहुल क़दीर) परन्तु यहाँ यह निर्माण अथवा जड़ाव के अर्थ में है। अर्थात शीशों से निर्मित अथवा जड़ा हुआ महल।

नोट : महारानी सबा (बिलक़ीस) के मुसलमान होने के पश्चात क्या हुआ? क़ुरआन में अथवा किसी सहीह हदीस में इसकी विस्तृत जानकारी नहीं मिलती। व्याख्यात्मक कथनों में अवश्य मिलता है कि उनका आपस में विवाह हो गया था, परन्तु जब क़ुरआन तथा हदीस इस विषय में मौन हैं तो इस संदर्भ में मौन साधना ही उत्तम है।

[2]इनसे तात्पर्य काफ़िर तथा ईमानवाले हैं, झगड़ने का अर्थ प्रत्येक सम्प्रदाय का यह दावा है कि वह सत्य पर है।

[3]अर्थात ईमान स्वीकार करने के बजाय तुम कुफ़्र पर क्यों हट कर रहे हो, जो यातना का कारण है। इसके अतिरिक्त अपने विरोध एवं अवहेलना के कारण कहते भी थे कि हम पर प्रकोप ले आ। जिसके उत्तर में आदरणीय स्वालेह ने यह कहा।

The Ummah Technology Mission

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ؕ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) (वे) कहने लगे कि हम तो तुझसे तथा तेरे साथियों से अपशगुन ले रहे हैं,[1] (आपने) उत्तर दिया कि तुम्हारा अपशगुन अल्लाह के पास है,[2] बल्कि तुम तो परीक्षा में पड़े हुए लोग हो।[3]

وَكَانَ فِي الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿٤٨﴾

(४८) इस नगर में नौ (मुखिया) व्यक्ति थे जो धरती में उपद्रव फैला रहे थे तथा सुधार नहीं करते थे।

قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٤٩﴾

(४९) उन्होंने आपस में अल्लाह की सौगन्ध खाकर प्रतिज्ञा किया कि रात ही को 'स्वालेह' तथा उसके परिवार वालों पर हम छापा मारेंगे।[4] तथा उसके उत्तराधिकारी से कह देंगे कि हम उसके परिवार की हत्या के

---

[1] اطَّيَّرْنَا वास्तव में تطيَّرنا है। इसका धातू طَيْر (उड़ना) है। अरब जब किसी कार्य का अथवा यात्रा का विचार करते तो पक्षी उड़ाते, यदि वह दाहिनी ओर उड़ता तो उसे शुभ समझते तथा वह कार्य कर डालते अथवा यात्रा पर निकल पड़ते तथा यदि बायीं ओर उड़ता तो उसे अपशगुन समझते तथा उस कार्य अथवा यात्रा से रूक जाते। (फ़तहुल क़दीर) इस्लाम में यह शुभ-अशुभ निषेध है परन्तु तफ़ाउल उचित है। अर्थात अच्छे शब्द अथवा नाम सुनकर शुभ समझना।

[2] अर्थात ईमानवाले अपशगुन का कारण नहीं है, जैसाकि तुम समझ रहे हो बल्कि इसका मूल कारण अल्लाह ही के पास है क्योंकि अदृष्ट तथा भाग्य उसी के अधिकार में है। अर्थ यह है कि तुम्हें जो अशुभ (अकाल आदि) पहुँचा है। वह अल्लाह की ओर से है तथा उसका कारण तुम्हारा कुफ़्र है। (फ़तहुल क़दीर)

[3] अथवा भटकावे में ढील देकर तुम्हारी परीक्षा ली जा रही है।

[4] अर्थात स्वालेह की तथा उसके परिवार वालों की हत्या कर देंगे, यह सौगन्ध उस समय खायी, जब ऊँटनी की हत्या करने के पश्चात आदरणीय स्वालेह ने कहा कि तीन दिन पश्चात तुम पर प्रकोप आयेगा। उन्होंने कहा कि प्रकोप से पूर्व ही हम स्वालेह तथा उसके परिवार वालों की हत्या कर देंगे।

The Ummah Technology Mission

समय उपस्थिति न थे[1] तथा हम सच बोल रहे हैं।

وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٠﴾

(५०) तथा उन्होंने चाल चली[2] तथा हम ने भी[3] तथा वह उसे समझते ही न थे।[4]

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥١﴾

(५१) अब देख लो कि उनके षड़यन्त्र का परिणाम क्या हुआ? हमने उनको तथा उनके समुदाय को सभी को ध्वस्त कर दिया।[5]

فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةً ۢ بِمَا ظَلَمُوْا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٥٢﴾

(५२) यह हैं उनके घर जो उनके अत्याचार के कारण उजड़े पड़े हैं, जो लोग ज्ञान रखते हैं, उनके लिए उसमें बड़ी निशानी है।

وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٣﴾

(५३) तथा हमने उनको जो ईमान लाये थे। और सत्कर्म करते थे बाल-बाल बचा लिया।

---

[1]अर्थात हत्या के समय हम वहाँ उपस्थिति नहीं थे तथा न हमें यह जानकारी है कि कौन उनकी हत्या कर गया है।

[2]उनका षड़यन्त्र यही था कि उन्होंने आपस में सौगन्ध खायी थी कि रात्रि के अंधेरे में इस हत्या की योजना के अनुसार कार्य करेंगे तथा तीन दिन पूर्व ही हम स्वालेह तथा उसके परिवार की हत्या कर डालेंगे।

[3]अर्थात हमने उनके इस षड़यन्त्र का बदला दिया तथा उन्हें ध्वस्त कर दिया। यहाँ भी مكرنا مكرًا से उसके रूप के अन्तर्गत वर्णन किया गया है।

[4]अल्लाह की उपाय को समझते ही न थे।

[5]अर्थात हमने उपरोक्त नौ सरदारों को ही नहीं, अपितु उनके सम्पूर्ण समुदाय को ध्वस्त कर दिया। क्योंकि वह समुदाय विनाश के मूल कारण कुफ्र तथा अत्याचार में पूर्ण रूप से उनके साथ था, यद्यपि क्रियात्मक रूप से उनकी हत्या की योजना में शरीक नहीं हो सका था। क्योंकि यह योजना गुप्त थी। परन्तु उनकी हार्दिक इच्छा के अनुरूप थी, जो ९ लोगों ने आदरणीय स्वालेह तथा उनके परिवार वालों के विरूद्ध योजना तैयार की थी। इसलिए सम्पूर्ण समुदाय ही विनाश योग्य पायी गयी।

The Ummah Technology Mission

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِۦٓ أَتَأْتُونَ الْفَٰحِشَةَ وَأَنتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٥٤﴾

(५४) तथा लूत की (चर्चा कर,) [1] जबकि उसने अपने समुदाय से कहा कि देखने-भालने के उपरान्त भी तुम कुकर्म कर रहे हो ?[2]

أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّن دُونِ النِّسَآءِ ۚ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿٥٥﴾

(५५) यह क्या बात है ? कि तुम स्त्रियों को छोड़कर पुरूषों के पास काम वासना से आते हो ?[3] सत्य यह है कि तुम अत्यन्त मूर्खता कर रहे हो ।[4]

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِۦٓ إِلَّآ أَن قَالُوٓا أَخْرِجُوٓا ءَالَ لُوطٍ مِّن قَرْيَتِكُمْ ۖ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ﴿٥٦﴾

(५६) उनके समुदाय का उत्तर इस कहने के उपरान्त अन्य कुछ न था कि लूत के परिवार वालों को अपने नगर से निकाल दो, यह लोग तो बड़ी पवित्रता दिखा रहे हैं ।[5]

فَأَنجَيْنَٰهُ وَأَهْلَهُۥٓ إِلَّا ٱمْرَأَتَهُۥ

(५७) अत: हमने उसे तथा उसके परिवार को, उसकी पत्नी के सिवाय, सबको बचा

---

[1]अर्थात लूत की घटना याद करो जब लूत ने कहा । यह समुदाय अमूरिया तथा सदूम की बस्तियों में निवास करता था ।

[2]अर्थात यह जानने के उपरान्त कि यह निर्लज्जता का कर्म है । यहाँ देखने का अर्थ दिल की आँखों से देखना है, तथा यदि उपरी आँख से देखना तात्पर्य हो तो अर्थ यह होगा कि सबके सामने यह कुकर्म करते हो ? अर्थात तुम्हारी दुष्टता इतनी बढ़ गई है कि छुपने का भी प्रयत्न नहीं करते ।

[3]यह पुनरावृत्ति फटकार के लिए है कि यह निर्लज्जता वही समलैंगिता है, जो स्त्रियों को छोड़कर पुरूषों के साथ अप्राकृतिक काम वासना के रूप में करते हो ।

[4]अथवा उसके निषेधाज्ञा (हुरमत) से अथवा इस कुकर्म के दण्ड से तुम अनजान हो । वरन् शायद यह कुकर्म न करते ।

[5]यह कटाक्ष तथा उपहास के रूप में है ।

The Ummah Technology Mission

قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾

लिया, इसका अनुमान तो शेष रह जाने वालों में हम लगा चुके थे।[1]

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٥٨﴾

(५८) तथा उनके ऊपर एक (विशेष प्रकार की) वर्षा कर दी,[2] अतः उन डराये गये लोगों पर बुरी वर्षा हुई।[3]

قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ؕ آٰللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾

(५९) तो आप कह दें कि सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है तथा उसके स्वच्छंद भक्तों पर सलाम है[4] क्या अल्लाह (तआला) श्रेष्ठ है अथवा वह जिन्हें ये लोग साझीदार बना रहे हैं।[5]

---

[1]अर्थात पहले ही उसके विषय में यह अनुमान अर्थात अल्लाह के द्वारा लिखे भाग्य में था कि वह उन्ही पीछे रह जाने वालों में से होगी, जिन पर प्रकोप आयेगा।

[2]उन पर जो प्रकोप आया, उसका विवरण पहले गुज़र चुका है कि उन बस्तियों को उन पर पलट दिया गया तथा उसके पश्चात उन पर तह पर तह कंकड़-पत्थरों की वर्षा हुई।

[3]अर्थात जिन्हें पैग़म्बरों के द्वारा डराया गया तथा उन पर प्रमाण स्थापित कर दिया गया। परन्तु वे झुठलाने तथा इंकार से नहीं रूके।

[4]जिनको अल्लाह ने रिसालत तथा भक्तों के मार्गदर्शन के लिए चयन किया, ताकि लोग केवल एक अल्लाह की इबादत करें।

[5]यह प्रश्न नकारात्मक हैं। अर्थात अल्लाह ही की इबादत सर्वोत्तम है क्योंकि जब स्रष्टा, पालक एवं स्वामी वही है, तो इबादत के योग्य कोई अन्य क्यों हो सकता है जो न किसी वस्तु का स्रष्टा है, न पालक तथा स्वामी خير सर्वोत्तम के अर्थ में प्रयोग होता है, परन्तु यहाँ इस अर्थ में नहीं मात्र उत्तम के अर्थ में है क्योंकि मिथ्या पूज्य में तो सिरे से कोई अच्छाई है ही नहीं।

The Ummah Technology Mission

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَأَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ۗ أَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۗ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ۝٦٠

(६०) (भला बताओ तो) आकाशों को तथा धरती को किसने पैदा किया ? किसने आकाश से वर्षा की, फिर उससे हरे-भरे भव्य बाग़ उगाये ? इन बाग़ों के वृक्षों को तुम कदापि नहीं उगा सकते,[1] क्या अल्लाह के अतिरिक्त अन्य कोई पूजने योग्य भी है ?[2] बल्कि ये लोग हट जाते हैं (सीधे मार्ग) ।[3]

أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ

(६१) क्या वह जिसने धरती को निवास स्थली बनाया,[4] उसके मध्य नदियाँ प्रवाहित कर दीं,

---

[1]यहाँ से पिछले वाक्य की व्याख्या तथा उसके तर्क प्रस्तुत किये जा रहे हैं कि वही अल्लाह पैदा करने, जीविका प्रदान करने तथा व्यवस्था करने में अकेला है । उसका कोई साझी नहीं है । कहा, आकाशों को इतनी उँचाई पर तथा इतना सुन्दर बनाने वाला, उनमें आकर्षक तारामण्डल, प्रकाशवाले तारे एवं चलने वाले ग्रह बनाने वाला, उसी प्रकार धरती तथा उस पर पर्वत, नदियाँ, स्रोत, समुद्र, झरने, खेतियाँ तथा विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षी आदि पैदा करने वाला तथा आकाश से वर्षा करके उसके द्वारा सुन्दर बाग़ उगाने वाला कौन है ? क्या तुम में से कोई ऐसा है जो धरती से वृक्ष ही उगाकर दिखा दे ? इन सबके उत्तर में मूर्तिपूजक कहते तथा स्वीकार करते थे कि यह सब कुछ करने वाला अल्लाह तआला है, जैसाकि क़ुरआन में अन्य स्थान पर है । उदाहरणार्थ, (सूरः अल-अनकबूत-६३)

[2]अर्थात इन सभी वास्तविकताओं के उपरान्त क्या अल्लाह के सिवाय कोई अन्य भी शक्ति ऐसी है जो पूजा के योग्य हो ? अथवा जिसने इनमें से किसी वस्तु की रचना की हो ? अर्थात कोई ऐसा नहीं जिसने कुछ बनाया हो अथवा पूजा के योग्य हो । أَمَّن का इन आयतों में भावार्थ यह है कि क्या वह शक्ति जो इन सभी वस्तुओं का बनाने वाला है, उस व्यक्ति की तरह है जो इनमें से किसी वस्तु के उत्पन्न करने का सामर्थ्य नहीं रखता ? (इब्ने कसीर)

[3]इसका दूसरा अनुवाद है कि वे लोग उसके समान तथा समतुल्य मानते हैं ।

[4]अर्थात स्थिर तथा अचल, न हिलती है न डोलती है । यदि ऐसा होता तो धरती पर रहना ही असम्भव हो जाता । धरती पर बड़े-बड़े पर्वत बनाने का उद्देश्य भी धरती को हिलने-डुलने से रोकना ही है ।

The Ummah Technology Mission

خِلٰلَهَآ اَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾

उसके लिये पर्वत बनाये एवं दो समुद्रों के मध्य रोक बना दी,[1] क्या अल्लाह के साथ कोई अन्य पूजने योग्य भी है ? बल्कि उनमें से अधिकतर कुछ जानते ही नहीं।

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾

(६२) असहाय की पुकार को जबकि वह पुकारे कौन स्वीकार करके संकट को दूर कर देता है[2] तथा तुम्हें धरती का उत्तराधिकारी बनाता है ?[3] क्या अल्लाह (तआला) के साथ अन्य कोई पूज्य है ? तुम बहुत कम शिक्षा ग्रहण करते हो।

اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ

(६३) कौन है वह जो तुम को थल तथा जल के अंधकारों में मार्ग दिखाता है[4] तथा जो अपनी कृपा से पहले ही शुभसूचना देने वाली वायु चलाता है ?[5] क्या अल्लाह के साथ कोई

---

[1]इसकी व्याख्या के लिए देखें सूरः *अल- फ़ुरक़ान*-५३ की व्याख्या।

[2]अर्थात वही अल्लाह है जिसे संकट के समय पुकारा जाता है तथा दुखों के समय जिससे आशायें लगायी जाती हैं। مُضْطَرّ (असहाय) उसकी ओर आकर्षित होता तथा बुराई को वही दूर करता है। और देखिए सूरः *अल-इस्रा*-६७ तथा सूरः *अल-नमल*-५३

[3]अर्थात एक सम्प्रदाय के पश्चात दूसरा सम्प्रदाय, एक समुदाय के पश्चात दूसरा समुदाय तथा एक जाति के पश्चात दूसरी जाति पैदा करता है। वरन् यदि वह सबको एक ही समय में पैदा करता तो धरती भी तंगी की शिकायत करती, व्यवसाय में भी कठिनाई होती तथा ये सब एक-दूसरे की टाँग खींचने में ही व्यस्त रहते। अर्थात एक के पश्चात दूसरे मनुष्यों को पैदा करना तथा एक को दूसरे का उत्तराधिकारी बनाना, यह भी उसकी अति कृपा है।

[4]अर्थात आकाशों पर तारों को प्रकाश प्रदान करने वाला कौन है जिनसे तुम अंधकार में मार्ग पाते हो ? पर्वतों तथा घटियों का बनाना वाला कौन है ? जो एक-दूसरे के लिये सीमाओं का भी कार्य करते हैं तथा मार्गों के संकेत का भी।

[5]अर्थात वर्षा से पूर्व ठंडी हवायें जो वर्षा की सूचक ही नहीं होतीं हैं बल्कि उनसे सूखा के मारे हुए लोगों में खुशी की लहर भी दौड़ जाती है।

The Ummah Technology Mission

رَحْمَتِهٖ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٣﴾

अन्य देवता भी है ? जिन्हें ये साझी बनाते हैं, उन सबसे अल्लाह (तआला) श्रेष्ठ है।

اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦٤﴾

(६४) कौन है वह जो सृष्टि की प्रथम बार रचना करता है फिर उसे लौटायेगा[1] तथा जो तुम्हें आकाश तथा धरती से जीविका प्रदान कर रहा है,[2] क्या अल्लाह के साथ अन्य कोई देवता भी है ? कह दीजिए कि यदि सच्चे हो तो अपना प्रमाण लाओ।

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ

(६५) कह दीजिए कि आकाश वालों में से एवं धरती वालों में से अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी परोक्ष (की बातें) नहीं जानता।[3] उन्हें तो

---

[1]अर्थात क़ियामत के दिन तुम्हें पुन: जीवन प्रदान करेगा।

[2]अर्थात आकाश से वर्षा उतार कर धरती से उसके छिपे कोष (अनाज तथा मेवे) पैदा करता है तथा इस प्रकार आकाश तथा धरती की विभूतियों के द्वार खोल देता है।

[3]अर्थात जिस प्रकार उपरोक्त विषयों में अल्लाह तआला अकेला (अद्वितीय) है, उसका कोई साझी नहीं उसी प्रकार परोक्ष के ज्ञान में भी वह अकेला है। उसके अतिरिक्त किसी को भी परोक्ष का ज्ञान नहीं। नबियों तथा रसूलों को भी उतना ही ज्ञान होता है जितना अल्लाह तआला प्रकाशना तथा ईश्वरीय प्रेरणा द्वारा उनको बता देता है तथा जो ज्ञान किसी के बताने से प्राप्त हो उसके ज्ञाता को परोक्षज्ञ नहीं कहा जाता। परोक्षज्ञ तो वह है जो बिना किसी माध्यम के स्वयं प्रत्येक वस्तु का ज्ञान रखे, प्रत्येक वास्तविकता से परिचित हो तथा गुप्त से गुप्त वस्तु भी उसके ज्ञान की परिधि से बाहर न हो। यह विशेषता केवल तथा मात्र अल्लाह ही की है, इसलिए केवल वही गुप्त बातों (परोक्ष) का ज्ञाता है। उसके अतिरिक्त पूरे जगत में कोई भी गुप्त बातों (परोक्ष) का ज्ञाता नहीं है। आदरणीया आयशा (رضي الله عنها) फ़रमाती हैं कि जो व्यक्ति यह विचार रखता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का ज्ञान रखते हैं, उसने अल्लाह पर बहुत बड़ा आक्षेप लगाया, इसलिए कि वह फ़रमा रहा है कि "आकाश तथा धरती में परोक्ष (गुप्त बातों) का ज्ञान केवल अल्लाह को है।" (सहीह बुख़ारी संख्या ४८५५, सहीह मुस्लिम संख्या २८७, तथा अल-तिर्मिज़ी संख्या ३०६८) आदरणीय क़तादः फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने तारों को तीन उद्देश्य से उत्पन्न किया : आकाश की शोभा, मार्ग बताने का साधन तथा शैतानों को मारने के लिए। परन्तु अल्लाह के आदेशों

The Ummah Technology Mission

وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٦٥﴾

यह भी ज्ञात नहीं कि वे कब पुनर्जीवित किये जायेंगे।

بَلِ ادَّارَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْآخِرَةِ ۖ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِّنْهَا ۖ بَلْ هُم مِّنْهَا عَمُونَ ﴿٦٦﴾

(६६) बल्कि आख़िरत के विषय में उनका ज्ञान समाप्त हो चुका हैं।[1] बल्कि यह उसकी ओर से संदेह में हैं। बल्कि यह उससे अंधे हैं।[2]

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَإِذَا كُنَّا تُرَابًا وَآبَاؤُنَا أَئِنَّا لَمُخْرَجُونَ ﴿٦٧﴾

(६७) काफ़िरों ने कहा कि क्या जब हम मिट्टी हो जायेंगे तथा हमारे पूर्वज भी क्या हम फिर निकाले जायेंगे।

से अनभिज्ञ लोगों ने उनसे गुप्त बातों (परोक्ष) का ज्ञान प्राप्त करने (ज्योतिष) का ढ़ोंग रच लिया है। जैसे कहते हैं, जो अमुक-अमुक ग्रह के समय विवाह करेगा तो यह होगा, अमुक-अमुक ग्रह के समय यात्रा करेगा तो ऐसा-ऐसा होगा, अमुक-अमुक ग्रह में जन्म लेगा तो ऐसा-ऐसा होगा इत्यादि-इत्यादि, यह सब ढ़ोंग हैं। उनके अनुमान के विरूद्ध अधिकतर होता रहता है। ग्रहों, पक्षियों तथा पशुओं से गुप्त बातों (परोक्ष) का ज्ञान किस प्रकार प्राप्त हो सकता है जबकि अल्लाह का निर्णय तो यह है कि आकाशों तथा धरती में अल्लाह के अतिरिक्त कोई गुप्त बातों को नहीं जानता ? (इब्ने कसीर)

[1]अर्थात उनका ज्ञान आख़िरत के घटित होने का समय जानने में असमर्थ है। अथवा उन का ज्ञान आख़िरत के विषय में समान है, जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय जिब्रील के पूछने पर कहा था "क़ियामत के विषय में मैं प्रश्न किया जाने वाला (नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) भी प्रश्नकर्ता (आदरणीय जिब्रील) से अधिक ज्ञान नहीं रखता।" अथवा यह अर्थ है कि उनका ज्ञान पूर्ण हो गया, इसलिए कि उन्होंने क़ियामत के विषय में किये गये वचनों को अपनी आँखों से देख लिया, अर्थात यह ज्ञान अब उनके लिए लाभदायक नहीं है, क्योंकि दुनिया में वे इसे झुठलाते रहे थे। जैसे फ़रमाया :

﴿ أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا لَٰكِنِ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴾

"क्या खूब देखने सुनने वाले होंगे उस दिन जबकि हमारे समक्ष उपस्थित होंगे, किन्तु आज तो ये अत्याचारी लोग स्पष्ट गुमराही में पड़े हुए हैं।" (सूरः मरियम-३८)

[2]अर्थात दुनिया में आख़िरत के विषय में संदेह में हैं बल्कि अंधे हैं कि भ्रष्ट बुद्धि तथा भ्रष्ट ज्ञान के कारण आख़िरत पर विश्वास से वंचित हैं।

The Ummah Technology Mission

لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾

(६८) हमें तथा हमारे पूर्वजों को बहुत पहले से ये वचन दिये जाते रहे हैं। कुछ नहीं, यह तो मात्र पूर्वजों की काल्पनिक कथायें हैं।[1]

قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٦٩﴾

(६९) कह दीजिए कि धरती में तनिक चल-फिर कर देखो तो सही कि पापियों का कैसा परिणाम हुआ ?[2]

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِىْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

(७०) तथा आप उनके विषय में चिन्तित न हों तथा उनके षड़यन्त्रों से संकुचित हृदय न हों।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٧١﴾

(७१) तथा कहते हैं कि यह वचन कब है यदि सच्चे हो तो बतला दो।

قُلْ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِىْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٧٢﴾

(७२) उत्तर दीजिए कि शायद कुछ वे वस्तुयें जिनकी तुम शीघ्रता मचा रहे हो, तुम से अत्यन्त निकट हो गई हों।[3]

وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾

(७३) तथा नि:संदेह आपका प्रभु सभी लोगों पर अत्यन्त कृपा वाला है, परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता व्यक्त नहीं करते हैं।[4]

---

[1]अर्थात इसमें वास्तविकता कोई नहीं, बस एक-दूसरे की सुनकर ये कहते चले आ रहे हैं।

[2]यह उन काफ़िरों के कथन का उत्तर है कि प्राचीन समुदायों को देखो कि क्या उन पर अल्लाह का प्रकोप नहीं आया, जो पैग़म्बरों की सत्यता का प्रमाण है। इसी प्रकार क़ियामत तथा उसके जीवन के विषय में भी हमारे रसूल जो कहते हैं, नि:संदेह सत्य है।

[3]इससे तात्पर्य बद्र के युद्ध की वह यातना है, जो हत्या तथा बन्दी किये जाने के रूप में काफ़िरों को पहुँचा अथवा क़ब्र की यातना है। رَدِفَ निकट के अर्थ में है, जैसे सवारी की पिछली सीट पर बैठने वाले को رَدِيف कहा जाता है।

[4]अर्थात यातना में देरी, यह भी अल्लाह की दया तथा कृपा का एक भाग है, परन्तु फिर भी लोग उससे मुख मोड़ कर कृतघ्नता व्यक्त करते हैं।

The Ummah Technology Mission

وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٤﴾

(७४) तथा नि:संदेह आपका प्रभु उन बातों को भी जानता है जिन्हें वे अपने हृदय में छिपा रहे हैं तथा जिन्हें प्रकट कर रहे हैं।

وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٧٥﴾

(७५) आकाश एवं धरती की कोई गुप्त वस्तु भी ऐसी नहीं है जो प्रकाशमय खुली किताब में न हो।[1]

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَقُصُّ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٧٦﴾

(७६) नि:संदेह यह क़ुरआन इस्राईल की सन्तान के समक्ष उन अधिकतर बातों का वर्णन कर रहा है जिनमें ये मतभेद करते हैं।[2]

وَإِنَّهُ لَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾

(७७) तथा यह (क़ुरआन) ईमानवालों के लिए नि:संदेह मार्गदर्शन एवं कृपा है।[3]

إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُم بِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٧٨﴾

(७८) आपका प्रभु उनके मध्य अपने आदेश से (सभी) निर्णय कर देगा,[4] वह अत्यन्त प्रभावशाली एवं जानने वाला है।

---

[1]इससे तात्पर्य 'लौहे महफ़ूज़' (सुरक्षित पुस्तक) है। उन ही गुप्त वस्तुओं में उस प्रकोप का ज्ञान भी है जिसके लिए यह काफ़िर लोग शीघ्रता मचाते हैं। परन्तु उसका समय भी अल्लाह ने 'सुरक्षित पुस्तक' में लिख रखा है, जिसे केवल वही जानता है तथा जब वह समय आ जाता है जो उसने किसी समुदाय के विनाश के लिए लिख रखा है तो फिर उसे नाश कर दिया जाता है। यह निर्धारित समय के आने से पूर्व शीघ्रता क्यों करते हैं ?

[2]अहले किताव अर्थात यहूदी तथा इसाई विभिन्न सम्प्रदायों तथा गुटों में बट गये थे। उनके विश्वास भी एक-दूसरे से भिन्न थे। यहूदी आदरणीय ईसा का निरादर तथा अपमान करते थे तथा इसाई उनके सम्मान में अतिश्योक्ति, यहाँ तक कि उन्हें अल्लाह अथवा अल्लाह का पुत्र बना दिया। क़ुरआन करीम ने उन्हीं के सन्दर्भ से ऐसी बातें वर्णन की हैं, जिन से सत्य स्पष्ट हो जाता है तथा यदि वे क़ुरआन के वर्णन की हुई सत्यता को स्वीकार कर लें तो उनकी आस्था से सम्बन्धित विरोध का समापन तथा उनके मतभेद एवं भिन्नता में कमी हो जाये।

[3]ईमानवालों को विशेष करना इसलिए कि वही क़ुरआन से लाभान्वित होते हैं। उन्हीं में वे इस्राईल की सन्तानें भी थीं जो ईमान ले आई थीं।

[4]अर्थात क़ियामत के दिन उनके आपसी मतभेद का निर्णय करके सत्य को असत्य से अलग कर देगा तथा उसके अनुसार बदला तथा दण्ड देने का प्रबन्ध करेगा, अथवा

The Ummah Technology Mission

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۖ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ﴿٧٩﴾

(७९) अत: आप अल्लाह पर ही भरोसा रखें, नि:संदेह आप सत्य एवं खुले धर्म पर हैं।[1]

إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٨٠﴾

(८०) नि:संदेह आप न मृतकों को सुना सकते हैं तथा न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हैं[2] जब कि वे पीठ फेर कर मुख मोड़े जा रहे हों।[3]

उन्होंने अपनी किताबों में जो परिवर्तन किये हैं दुनिया ही में उनका पर्दा फाड़ करके उनके मध्य निर्णय कर देगा।

[1]अर्थात अपनी समस्या उसी को समर्पित कर दें तथा उसी पर भरोसा करें, वही आपकी सहायता करने वाला है। एक तो इसलिए कि आप सत्य धर्म पर हैं, दूसरा कारण आगे आ रहा है।

[2]यह उन काफ़िरों की चिन्ता न करने तथा केवल अल्लाह पर भरोसा रखने का दूसरा कारण है कि ये लोग मृत हैं, जो किसी की बात को सुनकर लाभ नहीं उठा सकते अथवा बहरे हैं, जो न सुनते हैं न समझते हैं तथा न मार्ग पाने वाले हैं। अर्थात काफ़िरों की उपमा मरे हुए व्यक्ति से दी जिन में संवेदन नहीं होता है न बोध तथा बहरों से, जो भाषण तथा शिक्षा सुनते हैं न अल्लाह की ओर आमन्त्रण को स्वीकार करते हैं।

[3]अर्थात वे सत्य से पूर्णत: भागते एवं घृणा करते हैं, क्योंकि बहरा व्यक्ति अपने सामने भी कोई बात सुन नहीं पाता तो उस समय क्या सुन पायेगा जब मुख मोड़े तथा पीठ फेरे हुए हो। क़ुरआन करीम की इस आयत से यह भी ज्ञात हुआ कि 'मृतक के सुनने' का विश्वास क़ुरआन के विरूद्ध है। मरे हुए किसी की बात नहीं सुन सकते। हाँ, इससे केवल वह अवस्थायें अलग हैं। जहाँ सुनने का स्पष्टीकरण किसी कथन से सिद्ध होगा। जैसे हदीस में आता है कि मुर्दे को जब गाड़ करके लोग वापस जाते हैं तो वह उनके जूतों की आहट सुनता है। (सहीह बुख़ारी संख्या ३३८, सहीह मुस्लिम संख्या २२०१) अथवा बद्र के युद्ध में मरे हुए काफ़िरों को जो बद्र के गढ़े में फेंक दिये गये थे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सम्बोधित किया, जिस पर सहाबा ने कहा कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) निर्जीव शरीरों से बात कर रहे हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ये तुम से अधिक मेरी बातें सुन रहे हैं। अर्थात चमत्कारिक रूप से अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात मृत काफ़िरों को सुनवा दी। (सहीह बुख़ारी संख्या १३०७)

The Ummah Technology Mission

وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِى الْعُمْىِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾

(८१) तथा न आप अंधों को उनकी पथभ्रष्टता से हटाकर मार्गदर्शन दे सकते हैं।[1] आप तो केवल उन्हें सुना सकते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाये हैं फिर वे आज्ञाकारी हो जाते हैं।

وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٨٢﴾

(८२) तथा जब उनके उपर प्रकोप का वचन सिद्ध हो जायेगा,[2] हम धरती से उनके लिए एक पशु निकालेंगे जो उनसे बातें करता होगा[3] कि लोग हमारी आयतों पर विश्वास नहीं करते थे।[4]

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا

(८३) तथा जिस दिन हम प्रत्येक सम्प्रदाय में से उन लोगों के गुटों को जो हमारी आयतों

---

[1]अर्थात जिनको अल्लाह तआला सत्य देखने से अंधा कर दे, उनका आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस प्रकार मार्गदर्शन नहीं कर सकते जो उन्हें अभीष्ट स्थान अथवा ईमान तक पहुँचा दे।

[2]अर्थात जब पुण्य का आदेश देने वाला तथा बुराई से रोकने वाला नहीं रह जायेगा।

[3]यह दाब्बः (विचित्र पशु) वही है जो क़ियामत के निकट होने के लक्षणों में से है, जैसाकि हदीस में है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "क़ियामत उस समय तक नहीं होगी जब तक तुम दस लक्षण न देख लो उनमें एक जानवर का निकलना है" (सहीह मुस्लिम किताबुल फ़ेतन, बाबु फ़ी आयातिल-लती तकूनु क़ब्लस्साअह) दूसरा कथन है, "सर्वप्रथम जो लक्षण प्रकट होगा वह है सूर्य का पूर्व के बजाय पश्चिम से उदय होना तथा पूर्वान्ह से पहले जानवर का निकलना।" इन दोनों में से जो पहले प्रकट होगा दूसरा उसके शीघ्र पश्चात ही प्रकट हो जायेगा। (सहीह मुस्लिम)

[4]यह जानवर के निकलने का कारण है। अर्थात अल्लाह तआला अपनी यह निशानी इसलिए दिखायेगा कि लोग अल्लाह की निशानियों अथवा आयतों (आदेशों) पर विश्वास नहीं करते। कुछ कहते हैं कि यह वाक्य वह जानवर अपने मुख से कहेगा। फिर भी उस जानवर के मनुष्यों से बात करने में कोई संदेह नहीं क्योंकि क़ुरआन ने इसको स्पष्ट रूप से कहा है।

The Ummah Technology Mission

مِّمَّن يُكَذِّبُ بِـَٔايَٰتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿٨٣﴾

को झुठलाते थे घेर-घार कर लायेंगे, फिर वे सबके सब अलग कर दिये जायेंगे।[1]

حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءُو قَالَ أَكَذَّبْتُم بِـَٔايَٰتِى وَلَمْ تُحِيطُوا بِهَا عِلْمًا أَمَّاذَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾

(८४) जब सबके सब आ पहुँचेंगे तो अल्लाह (तआला) फ़रमायेगा कि तुमने मेरी आयतों को इसके उपरान्त कि तुम्हें उनका पूर्ण ज्ञान न था, क्यों झुठलाया ?[2] तथा यह भी बताओ कि तुम क्या कुछ करते रहे ?[3]

وَوَقَعَ ٱلْقَوْلُ عَلَيْهِم بِمَا ظَلَمُوا۟ فَهُمْ لَا يَنطِقُونَ ﴿٨٥﴾

(८५) तथा इस के कारण कि उन्होंने अत्याचार किया था, उन पर बात सिद्ध हो जायेगी तथा वे कुछ न बोल सकेंगे।[4]

أَلَمْ يَرَوْا۟ أَنَّا جَعَلْنَا ٱلَّيْلَ لِيَسْكُنُوا۟ فِيهِ وَٱلنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَـَٔايَٰتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٨٦﴾

(८६) क्या वे देख नहीं रहे हैं कि हमने रात्रि को इसलिए बनाया है कि वे इसमें विश्राम कर सकें तथा दिन को हम ने दिखलाने वाला बनाया है,[5] नि:सन्देह इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ (लक्षण) हैं, जो ईमान (तथा विश्वास) रखते हैं।

---

[1]अथवा विभिन्न गुटों में बाँट दिये जायेंगे अर्थात व्यभिचारियों का गुट, शराबियों का गुट आदि। अथवा यह अर्थ है कि उनको रोका जायेगा अर्थात उनको इधर-उधर तथा आगे-पीछे होने से रोका जायेगा तथा सब को क्रम से लाकर नरक में फेंक दिया जायेगा।

[2]अर्थात तुमने मेरे एकेश्वरवाद तथा आमन्त्रण के तर्क को समझने का प्रयत्न ही नहीं किया तथा उसके विना ही मेरी आयतों को झुठलाते रहे।

[3]कि जिसके कारण तुम्हें मेरी बातों पर विचार करने का अवसर ही नहीं मिला।

[4]अर्थात उनके पास कोई बहाना न होगा कि जिसे वे प्रस्तुत कर सकें। अथवा क़ियामत की भयानकता के कारण बोलने की शक्ति से ही वंचित होंगे। कुछ के निकट यह उस समय की अवस्था का वर्णन है जब उनके मुख पर मोहर (मुद्रा) लगा दी जायेगी।

[5]ताकि वे उसमें जीविका अर्जन के लिए दौड़-धूप कर सकें।

The Ummah Technology Mission

وَيَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ فَفَزِعَ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَن شَاءَ اللَّهُ ۚ وَكُلٌّ أَتَوْهُ دَاخِرِينَ ﴿٨٧﴾

(८७) तथा जिस दिन नरसिंघा फूँका जायेगा तो सबके सब आकाशों वाले तथा धरती वाले घबरा उठेंगे[1] परन्तु जिसे अल्लाह चाहे।[2] तथा सारे के सारे विनीत (एवं विवश) होकर उसके समक्ष उपस्थित होंगे।

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ۚ صُنْعَ اللَّهِ الَّذِي أَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ﴿٨٨﴾

(८८) तथा आप पर्वतों को अपने स्थान पर स्थिर समझते हैं परन्तु वे भी बादल (मेघ) की भाँति उड़ते फिरेंगे।[3] यह है रचना अल्लाह की जिसने प्रत्येक वस्तु को सुदृढ़ बनाया है,[4] जो कुछ तुम करते हो उससे वह भली-भाँति परिचित है।

مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِّنْهَا ۖ وَهُم مِّن فَزَعٍ يَوْمَئِذٍ آمِنُونَ ﴿٨٩﴾

(८९) जो व्यक्ति पुण्य के कर्म लायेगा उसे उससे भी उत्तम बदला मिलेगा, तथा वह उस दिन की व्यग्रता से निर्भय होंगे।[5]

---

[1] صور से तात्पर्य वही नरसिंघा है जिसमें इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम अल्लाह के आदेश से फूँक मारेंगे। यह फूँक दो अथवा दो से अधिक होंगी। प्रथम फूँक में सम्पूर्ण जगत घबराकर मूर्छित हो जायेगा, दूसरी फूँक में मर जायेगा तथा तीसरी फूँक में सभी लोग क़ब्रों से जीवित होकर खड़े हो जायेंगे तथा कुछ के निकट चौथी फूँक होगी जिससे सभी लोग हश्र के मैदान में एकत्रित हो जायेंगे। यहाँ कौन सी फूँक तात्पर्य है? इमाम इब्ने कसीर के निकट यह प्रथम फूँक तथा इमाम शौकानी के निकट तीसरी फूँक है जब लोग क़ब्रों से उठेंगे।

[2] यह छूट प्राप्त लोग कौन होंगे? कुछ के निकट नबी तथा शहीद, कुछ के निकट फ़रिश्ते तथा कुछ के निकट सभी ईमानवाले हैं। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि सम्भवतः सभी वर्णित लोग इसमें सम्मिलित हों क्योंकि ईमानवाले वास्तविक घबराहट से सुरक्षित होंगे। (जैसाकि आ रहा है)

[3] यह क़ियामत वाले दिन होगा कि पर्वत अपने स्थान पर नहीं रहेंगे बल्कि बादलों की तरह चलेंगे तथा उड़ेंगे।

[4] अर्थात यह अल्लाह के महान सामर्थ्य से होगा जिसने प्रत्येक वस्तु को सुदृढ़ बनाया है। परन्तु वह इन सुदृढ़ वस्तुओं को भी रूई की भाँति कर देने का सामर्थ्य रखता है।

[5] अर्थात वास्तविक तथा बड़ी घबराहट से वे सुरक्षित होंगे। ﴿لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ﴾ (सूरः अल-अंबिया-१०३)

The Ummah Technology Mission

وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ؕ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٠﴾

(९०) तथा जो बुराई लेकर आयेंगे वे औंधे मुख आग में झोंक दिये जायेंगे। केवल वही बदला दिये जाओगे जो तुम करते रहे।

اِنَّمَاۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ ۫ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩١﴾ۙ

(९१) मुझे तो केवल यही आदेश दिया गया है कि मैं इस नगर के प्रभु की इबादत करता रहूँ जिसने इसे आदर (पवित्रता) वाला बनाया है।[1] जिसका स्वामित्व प्रत्येक वस्तु है तथा मुझे यह भी आदेश दिया गया है कि मैं आज्ञाकारियों में हो जाऊँ।

وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿٩٢﴾

(९२) तथा मैं कुरआन का पाठ करता रहूँ, तो जो संमार्ग पर आ जाये वह अपने लाभ के लिए संमार्ग पर आयेगा, तथा जो भटक जाये तो कह दीजिए कि मैं तो केवल सतर्क करने वालों में से हूँ।[2]

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ

(९३) तथा कह दीजिए कि सारी प्रशंसायें अल्लाह ही के लिए हैं।[3] वह तुम्हें निकट भविष्य में ही अपनी निशानियाँ दिखायेगा

---

[1]इससे तात्पर्य मक्का नगर है। इसका विशेष रूप से वर्णन इसलिए किया गया है कि इसमें ख़ानये काबा है तथा यही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी अत्यधिक प्रिय था। "पवित्रता वाला" का अर्थ है कि इसमें रक्तपात करना, अत्याचार करना, शिकार करना, वृक्ष काटना, यहाँ तक कि काँटा तोड़ना भी निषेध है। (बुख़ारी किताबुल जनायेज़, मुस्लिम किताबुल हज बाबु तहरीमे मक्का व सैदहा, व अलसुनन)

[2]अर्थात मेरा कार्य केवल सतर्क कर देना है। मेरे सतर्क करने से जो मुसलमान हो जायेगा उसमें उसी का लाभ है कि अल्लाह की यातना से बच जायेगा, तथा जो मेरे आमन्त्रण को नहीं स्वीकार करेगा तो मेरा क्या ? अल्लाह तआला स्वयं ही उससे हिसाब ले लेगा तथा नरक की यातना का स्वाद चखा देगा।

[3]कि जो किसी को उस समय तक यातना नहीं देता जब तक प्रमाण (तर्क) स्थापित न कर देता।

The Ummah Technology Mission

जिन्हें तुम स्वयं पहचान लोगे।[1] तथा जो कुछ तुम कर रहे हो उस से आपका प्रभु अचेत नहीं।[2] عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٦٣﴾

सूरतुल क़सस-२८ سُورَةُ القَصَصِ

सूरः क़सस मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें अट्ठासी आयतें तथा नौ रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ, जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है। بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ○

(१) ता॰सीन॰मीम॰ طسٓمٓ ﴿١﴾

(२) ये आयतें हैं दिव्य प्रकाश वाली किताब की। تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ﴿٢﴾

(३) हम आपके समक्ष मूसा तथा फ़िरऔन की सत्य घटना वर्णन करते हैं उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं।[3] نَتْلُوا عَلَيْكَ مِن نَّبَإِ مُوسَىٰ وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣﴾

---

[1]अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ سَنُرِيهِمْ آيَاتِنَا فِي الْآفَاقِ وَفِي أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ ﴾

"हम उन्हें बाहर जगत तथा उनके अन्दर अपनी निशानियाँ दिखायेंगे ताकि उन पर सत्य प्रकट हो जाये।" (सूरः हा॰मीम॰ सजदा-५३)

यदि जीवन में यह निशानियाँ देखकर ईमान नहीं लाते तो मृत्यु के समय तो इन निशानियों को देखकर अवश्य पहचान लेते हैं। परन्तु उस समय की पहचान कोई लाभ नहीं पहुँचाती, इसलिए कि उस समय का ईमान स्वीकार्य नहीं।

[2]बल्कि प्रत्येक वस्तु को वह देख रहा है। इसमें काफ़िरों के लिए अत्यधिक चेतावनी तथा बड़ी धमकी है।

सूरः अल-क़सस की व्याख्या :

[3]यह घटना इस बात का प्रमाण है कि आप अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर हैं क्योंकि अल्लाह की प्रकाशना के बिना शताब्दियों पूर्व की घटनाओं को ठीक उसी प्रकार से वर्णन कर देना जिस प्रकार घटित हुईं, असम्भव है। फिर भी उसके उपरान्त इससे लाभ केवल ईमानवालों ही को होगा, क्योंकि वही आपकी बातों को मानेंगे।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْأَرْضِ وَجَعَلَ أَهْلَهَا شِيَعًا يَسْتَضْعِفُ طَائِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ أَبْنَاءَهُمْ وَيَسْتَحْيِي نِسَاءَهُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ﴿٤﴾

(४) नि:संदेह फ़िरऔन ने धरती पर उपद्रव मचा रखा था,[1] तथा वहाँ के लोगों को गुट बना रखा था,[2] उनके एक गुट को हीन (दुर्बल) बना रखा था,[3] उनके बालकों को तो मार डालता था[4] तथा बालिकाओं को जीवित छोड़ देता था। नि:संदेह वह था ही उपद्रवियों में से।

وَنُرِيدُ أَن نَّمُنَّ عَلَى الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا فِي الْأَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ أَئِمَّةً وَنَجْعَلَهُمُ الْوَارِثِينَ ﴿٥﴾

(५) तथा फिर हमने चाहा कि उन पर दया करें जिन्हें धरती पर अत्यन्त हीन (दुर्बल) कर दिया गया था तथा हम उन्हें ही प्रमुख एवं (धरती) का उत्तराधिकारी बनायें।[5]

---

[1]अर्थात अत्याचार तथा क्रूरता का बाज़ार गर्म कर रखा था तथा अपने को महादेव कहलाता था।

[2]जिनके ऊपर भिन्न-भिन्न कार्य तथा सेवायें थीं।

[3]इससे तात्पर्य इस्राईल की सन्तान है जो उस समय की सर्वोत्तम समुदाय थी, परन्तु परीक्षा के रूप में फ़िरऔन की दासता तथा उसके अत्याचार एवं क्रूरता का लक्ष्य बनी हुई थी।

[4]जिसका कारण कुछ ज्योतिष शास्त्रियों की भविष्यवाणी थी कि इस्राईल के वंश में जन्म लेने वाले एक बालक के हाथों फ़िरऔन का विनाश होगा तथा उसके राज्य का पतन होगा, जिसका समाधान उसने यह निकाला कि प्रत्येक जन्म लेने वाले इस्राईली शिशु को मौत के घाट उतार दिया जाय। परन्तु उस मूर्ख ने यह नहीं सोचा कि यदि ज्योतिष शास्त्री सत्य कहते हैं तो ऐसा अवश्य होकर रहेगा चाहे वह अबोध शिशुओं की निर्मम हत्या करता रहे तथा यदि वे झूठे हैं तो हत्या करवाने की आवश्यकता नहीं थी। (फ़तहुल क़दीर) कुछ लोगों का कहना है कि आदरणीय इब्राहीम से यह शुभ सूचना चली आ रही थी कि उनके वंश में एक बालक होगा, जिसके हाथों मिस्र राज्य का पतन होगा। किब्तियों ने यह शुभ सूचना इस्राईल की सन्तान से सुनी तथा फ़िरऔन को इससे अवगत करा दिया, जिस पर उसने इस्राईल की सन्तान के शिशुओं की निर्मम हत्या करानी प्रारम्भ कर दी। (इब्ने कसीर)

[5]अत: ऐसा ही हुआ तथा अल्लाह तआला ने इस पतित तथा दास समुदाय को पूर्व-पश्चिम का उत्तराधिकारी (स्वामी तथा राज्याधिकारी) बना दिया। (सूरः अल-आराफ़-१३७) इसके अतिरिक्त उन्हें धर्म का नेतृत्व करने वाला तथा अगुवा भी बना दिया।

The Ummah Technology Mission

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا مِنْهُم مَّا كَانُوا يَحْذَرُونَ ۝٦

(६) तथा यह भी कि उन्हें धरती पर शक्ति एवं अधिकार प्रदान करें[1] तथा फ़िरऔन एवं हामान तथा उनकी सेनाओं को वह दिखायें जिससे वे डर रहे हैं।[2]

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ أَنْ أَرْضِعِيهِ ۖ فَإِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَأَلْقِيهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِي وَلَا تَحْزَنِي ۖ إِنَّا رَادُّوهُ إِلَيْكِ وَجَاعِلُوهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝٧

(७) तथा हमने मूसा की माता को प्रकाशना (वह्यी) की[3] कि उसे दूध पिलाती रह तथा जब तुझे उसके सम्बन्ध में कोई भय प्रतीत हो तो उसे नदी में बहा देना तथा कोई भय, शोक एवं दुख न करना।[4] हम नि:संदेह उसे तेरी ओर लौटाने वाले हैं[5] तथा उसे अपने पैग़म्बरों में से बनाने वाले हैं।

---

[1]यहाँ धरती से तात्पर्य सीरिया की धरती है, जहाँ वे कनआनियों की धरती के उत्तराधिकारी बने क्योंकि मिस्र से निकलने के पश्चात इस्राईल की सन्तान मिस्र वापस नहीं गयी। والله أعلم

[2]अर्थात उन्हें जो भय था कि एक इस्राईली के हाथों फ़िरऔन तथा उसके देश एवं सेना का पतन होगा उनके इस भय को हमने वास्तविक रूप में दिखा दिया।

[3]प्रकाशना से तात्पर्य यहाँ हृदय में बात डालना है, वह प्रकाशना नहीं है जो नबियों पर फ़रिश्ते के द्वारा अवतरित की जाती थी, तथा यदि फ़रिश्ते के द्वारा भी आयी हो तब भी मूसा की माता का नबी होना सिद्ध नहीं होता, क्योंकि फ़रिश्ते कई बार जनसामान्य के पास भी आते हैं। जैसे हदीस में गंजे, कोढ़ी तथा अंधे के पास फ़रिश्तों का आना सिद्ध है। (सर्वसम्मत हदीस सहीह बुख़ारी किताबु अहादीसिल अंबिया)

[4]अर्थात नदी में डूब जाने अथवा मर जाने से न भयभीत होना तथा उसके बिछड़ने का दुख न करना।

[5]अर्थात ऐसी विधि से कि जिससे उसका छुटकारा निश्चित हो। कहते हैं कि जब शिशु वध का यह क्रम अधिक हुआ तो फ़िरऔन के समुदाय को भय हुआ कि कहीं इस्राईल का वंश न समाप्त हो जाये तथा फिर मेहनत वाले कार्य हमें न करने पड़े। इस भय का उन्होंने फ़िरऔन से वर्णन किया, जिस पर नया आदेश जारी कर दिया गया कि एक वर्ष बच्चे वध किये जायें तथा एक वर्ष न किये जायें। आदरणीय हारून उस वर्ष पैदा हुए जिस वर्ष बच्चों का वध नहीं होता था, जबकि मूसा वध किये जाने वाले वर्ष में पैदा हुए।

The Ummah Technology Mission

فَالْتَقَطَهٗٓ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ۭ اِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِـِٕيْنَ ۝

(८) अन्त में फ़िरऔन के कर्मचारियों ने उस बालक को उठा लिया[1] कि अन्ततः यही बालक उनका शत्रु हुआ तथा उनके दुखों का कारण बना, [2] कोई सन्देह नहीं कि फ़िरऔन तथा हामान एवं उनकी सेना थे ही अपराधी।[3]

وَقَالَتِ امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ ۭ لَا تَقْتُلُوْهُ ۡ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا

(९) तथा फ़िरऔन की पत्नी ने कहा कि यह तो मेरी तथा तेरी आँखों की ठंडक है, इसकी हत्या न करो, [4] अधिक सम्भव है कि यह हमें कोई लाभ पहुँचाये अथवा हम इसे अपना ही

परन्तु अल्लाह तआला ने उनकी सुरक्षा के साधन का प्रबन्ध इस प्रकार किया कि प्रथम तो उनकी माता के गर्भ को इस प्रकार प्रकट नहीं किया जिस प्रकार सामान्य गर्भवती का होता है कि जिससे फ़िरऔन की छोड़ी हुई दाईयों की दृष्टि में आ सके। इस प्रकार जन्म की समस्या तो सरलता से हल हो गई तथा यह घटना सरकार के परिवार नियोजन अधिकारियों के ज्ञान में नहीं आई। परन्तु जन्म के पश्चात वध का भय शेष था, जिसका हल स्वयं अल्लाह तआला ने हृदय में डाली गई बात द्वारा मूसा की माता को समझा दिया, अतः उन्होंने उसे एक संदूक में लिटाकर नील नदी में डाल दिया। (इब्ने कसीर)

[1]यह सन्दूक बहता-बहता फ़िरऔन के राजभवन तक पहुँच गया, जो नदी के तट ही पर था तथा वहाँ फ़िरऔन के कर्मचारियों ने पकड़ कर बाहर निकाला।

[2]यह لام परिणामवाची है अर्थात उन्होंने तो उसे अपना बच्चा तथा आँखों की ठंडक बनाकर रख लिया था न कि शत्रु समझकर। परन्तु परिणाम उनके इस कर्म का यह हुआ कि वह उनका शत्रु तथा शोक एवं दुख का कारण सिद्ध हुआ।

[3]यह पूर्वोक्त का कारण है कि मूसा उनके लिए शत्रु क्यों सिद्ध हुए ? इसलिए कि वे सभी अल्लाह के अवज्ञाकारी तथा पापी थे। अल्लाह ने दण्ड स्वरूप उसके पालन-पोषण किये को ही उनके विनाश का साधन बना दिया।

[4]यह उस समय कहा जब उन्होंने सन्दूक में सुन्दर आकर्षक शिशु देखा। कुछ कहते हैं कि यह उस समय का कथन है जब मूसा ने फ़िरऔन की दाढ़ी के बाल नोच लिये थे तो फ़िरऔन ने उनको वध करने का आदेश दे दिया था। (ऐसरूत्तफ़ासीर) बहुवचन का शब्द या तो अकेले फ़िरऔन के लिए सम्मान स्वरूप कहा गया है अथवा सम्भव है कि वहाँ उसके कुछ दरबारी उपस्थित रहे हों।

The Ummah Technology Mission

وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٩

पुत्र बना लें[1] तथा यह लोग बुद्धि ही नहीं रखते थे।[2]

وَ اَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ؕ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْلَاۤ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٠

(१०) तथा मूसा (अलैहिस्सलाम) की माता का हृदय व्याकुल हो गया,[3] निकट था कि इस (वास्तविकता) को बिल्कुल स्पष्ट कर देतीं यदि हम उनके हृदय को ढारस न देते, यह इस लिए कि वह विश्वास करने वालों में रहे।[4]

وَ قَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ۫ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝١١

(११) मूसा (अलैहिस्सलाम) की माता ने उसकी बहन[5] से कहा कि तू इसके पीछे-पीछे जा, तो वह उसे दूर ही दूर से देखती रही[6] तथा फ़िरऔनियों को इसका आभास भी न हुआ।

وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ

(१२) तथा उसके पहुँचने से पूर्व हमने मूसा पर दाईयों का दूध निषेध (हराम) कर दिया था,[7] यह

---

[1]क्योंकि फ़िरऔन को संतान नहीं थी।

[2]कि यह बालक, जिसे वे अपना बालक बना रहे हैं, यह तो वही बालक है जिसे मारने के लिए सैकड़ों बालकों को मौत की नींद सुला दिया गया है।

[3]अर्थात उनका दिल प्रत्येक वस्तु एवं चिन्ता से शून्य हो गया तथा एक ही चिन्ता अर्थात मूसा अलैहिस्सलाम का दुख दिल में समा गया, जिसे हिन्दी में व्याकुलता कहा जाता है।

[4]अर्थात अत्यधिक दुख के कारण यह प्रकट कर देतीं कि यह उनका पुत्र है परन्तु अल्लाह ने उनके हृदय को दृढ़ कर दिया, जिस पर उन्होंने धैर्य रखा तथा विश्वास कर लिया कि अल्लाह ने इस मूसा को सकुशल वापस लौटाने का जो वचन दिया है, वह पूर्ण होगा।

[5]मूसा की बहन का नाम मरियम बिन्ते इमरान था जिस प्रकार आदरणीय ईसा की माता का नाम मरियम बिन्ते इमरान था। नाम तथा पिता के नाम दोनों में समता थी।

[6]अत: वह नदी के किनारे-किनारे देखती रही यहाँ तक कि उसने देख लिया कि उसका भाई फ़िरऔन के महल में चला गया है।

[7]अर्थात हमने अपने सामर्थ्य तथा उत्पत्यादेश द्वारा मूसा को अपनी माता के अतिरिक्त किसी अन्य दाया का दूध पीने से रोक दिया, अत: अत्यन्त प्रयत्न के उपरान्त कोई दाया उन्हें दूध पिलाने तथा शान्त करने में सफल नहीं हो सकी।

The Ummah Technology Mission

فَقَالَتْ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ وَهُمْ لَهُ نَاصِحُونَ ﴿١٢﴾

कहने लगी कि क्या मैं तुम्हें[1] ऐसा परिवार बताऊँ जो इस बालक का पालन-पोषण तुम्हारे लिए करें तथा हों भी इस बालक के शुभचिन्तक।

فَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أُمِّهِ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾

(१३) तो हमने उसे उसकी माता की ओर वापस पहुँचा दिया[2] ताकि उसकी आँखें ठंडी रहें तथा दुखी न हो तथा जान ले कि अल्लाह का वचन सत्य है[3] परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।[4]

---

[1]यह सारा दृश्य उनकी बहन शान्तिपूर्वक देख रही थीं अन्त में बोल पड़ीं कि मैं तुम्हें ऐसा परिवार बताऊँ जो इस बच्चे का तुम्हारे लिए पालन-पोषण करे।

[2]अत: उन्होंने मूसा की बहन से कहा कि जा उस महिला को ले आ। अत: वह दौड़ी-दौड़ी गयीं तथा अपनी माता को, जो मूसा की भी माता थीं, साथ ले आयीं।

[3]जब आदरणीय मूसा ने अपनी माता का दूध पी लिया तो फ़िरऔन ने मूसा की माता से महल में निवास करने की प्रार्थना की ताकि बालक का उचित पालन-पोषण हो सके। परन्तु उन्होंने कहा कि मैं अपने पति तथा बच्चों को छोड़कर यहाँ नहीं रह सकती। अन्त में यह तय हुआ कि वह अपने साथ बच्चे को अपने घर ले जायें तथा वहीं इसका पालन-पोषण करें तथा इसका पारिश्रामिक उन्हें राज्य कोष से दिया जायेगा। अल्लाह की ही सारी प्रशंसायें हैं ! अल्लाह के सामर्थ्य का क्या कहना, दूध अपने पुत्र को पिलायें तथा वेतन फ़िरऔन से प्राप्त करें। प्रभु ने मूसा को वापस लौटाने का वचन किस सुन्दर विधि से पूर्ण कर दिखाया। ﴿فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ﴾ एक वर्णन में हैं, "उस कारीगर की तुलना, जो अपनी बनायी हुई वस्तुओं में पुण्य तथा शुभ का विचार भी रखता है मूसा की माता के समान है, जो अपने ही पुत्र को दूध पिलाती हैं तथा उसका मूल्य भी प्राप्त करती हैं।" (अबू दाऊद)

[4]अर्थात बहुत से कार्य ऐसे होते हैं जिनके परिणाम की वास्तविकता से अधिकतर लोग अनभिज्ञ होते हैं परन्तु अल्लाह को उसके अच्छे परिणाम का ज्ञान होता है। इसीलिए अल्लाह ने फ़रमाया (हो सकता है जिस वस्तु को तुम बुरा समझो उसमें तुम्हारे लिए भलाई हो तथा जिसको तुम प्रिय समझो उसमें तुम्हारे लिए बुराई का पक्ष हो) (सूरः *अल-बक़रः*-२१६) अन्य स्थान पर फ़रमाया (हो सकता है तुम किसी वस्तु को बुरा समझो, तथा अल्लाह उसमें तुम्हारे लिए अत्यधिक भलाई उत्पन्न कर दे) (सूरः *अल-निसा*-१९)

The Ummah Technology Mission

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰۤى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۴﴾

(१४) तथा जब मूसा (अलैहिस्सलाम) अपनी युवावस्था को पहुँच गये तथा पूरे सबल हो गये, हमने उन्हें हिक्मत (बुद्धि) तथा ज्ञान प्रदान किया,[1] पुण्य करने वालों को हम इसी प्रकार का बदला दिया करते हैं।

وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۚ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِىْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِىْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۫ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۵﴾

(१५) तथा (मूसा) एक ऐसे समय में नगर में आये जबकि नगर के लोग निंद्रा में थे।[2] यहाँ दो व्यक्तियों को लड़ते हुए पाया, यह एक तो उसके गुटों में से था तथा यह दूसरा उसके शत्रुओं में से,[3] उसके सम्प्रदाय वाले ने उसके विरूद्ध जो उसके शत्रुओं में से था, उससे सहायता माँगी, जिस पर मूसा ने उसे घूँसा मारा जिससे वह मर गया, मूसा कहने लगे कि यह तो शैतानी कार्य है।[4] निःसंदेह शैतान शत्रु तथा खुले रूप से बहकाने वाला है।[5]

इसलिए मनुष्य की भलाई इसी में है कि वह अपने प्रिय तथा अप्रिय को अलग करते हुए प्रत्येक मामले में अल्लाह तथा रसूल के आदेशों का पालन करे कि इसी में उसके लिए भलाई तथा शुभ परिणाम है।

[1]हिक्मत तथा ज्ञान से तात्पर्य यदि नबूअत है तो उस स्थान तक किस प्रकार पहुँचे, इसका विवरण अगली आयत में है। कुछ व्याख्याकारों के निकट इससे तात्पर्य नुबूवत नहीं बल्कि समझ-बूझ तथा वह ज्ञान है जो उन्होंने पारिवारिक वातावरण में रह कर सीखा।

[2]इससे कुछ ने मग़रिब (संध्याकाल) तथा ईशा (रात्रि) के मध्य का समय तथा कुछ ने मध्यान्ह तात्पर्य लिया है जब लोग विश्राम कर रहे होते हैं।

[3]अर्थात फ़िरऔन के सम्प्रदाय क़िब्त में से था।

[4]इसे शैतानी (दानव का) कर्म इसलिए कहा गया है कि हत्या एक महा अपराध है, तथा आदरणीय मूसा का उद्देश्य कदापि हत्या करने का नहीं था।

[5]जिसकी मानव से शत्रुता भी प्रकट होती है तथा मनुष्य को भटकाने के लिए जो-जो प्रयत्न करता है, वह गुप्त नहीं है।

The Ummah Technology Mission

قَالَ رَبِّ اِنِّیۡ ظَلَمۡتُ نَفۡسِیۡ فَاغۡفِرۡ لِیۡ فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡغَفُوۡرُ الرَّحِیۡمُ ﴿۱۶﴾

(१६) फिर वह प्रार्थना करने लगे कि हे प्रभु ! मैंने तो स्वयं अपने ऊपर अत्याचार किया, तू मुझे क्षमा कर दे।[1] अल्लाह (तआला) ने उसे क्षमा कर दिया, नि:सन्देह वह क्षमा करने वाला तथा अत्यन्त दयालु है।

قَالَ رَبِّ بِمَاۤ اَنۡعَمۡتَ عَلَیَّ فَلَنۡ اَکُوۡنَ ظَهِیۡرًا لِّلۡمُجۡرِمِیۡنَ ﴿۱۷﴾

(१७) कहने लगे हे मेरे प्रभु ! जैसे तूने मुझ पर यह दया की मैं भी अब किसी पापी का सहयोगी न बनूँगा।[2]

فَاَصۡبَحَ فِی الۡمَدِیۡنَةِ خَآئِفًا یَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِی اسۡتَنۡصَرَهٗ بِالۡاَمۡسِ یَسۡتَصۡرِخُهٗ ؕ قَالَ لَهٗ مُوۡسٰۤی اِنَّكَ لَغَوِیٌّ مُّبِیۡنٌ ﴿۱۸﴾

(१८) फिर सुबह ही सुबह डरते हुए[3] समाचार लेने को नगर में गये कि सहसा वही व्यक्ति जिसने कल उनसे सहायता माँगी थी, उनसे विनती कर रहा है। मूसा ने उससे कहा कि इस में संदेह नहीं कि तू तो स्पष्ट रूप से पथभ्रष्ट है।[4]

فَلَمَّاۤ اَنۡ اَرَادَ اَنۡ یَّبۡطِشَ بِالَّذِیۡ

(१९) फिर जब अपने तथा उस के शत्रु को पकड़ना चाहा[5] वह प्रार्थी कहने

---

[1]यह अकस्मात हत्या यद्यपि महापाप नहीं थी, क्योंकि महापाप से अल्लाह तआला अपने पैग़म्बर को सुरक्षित रखता है। फिर भी यह ऐसा पाप प्रत्येक रूप से था जिसके लिये अत्यधिक क्षमा-याचना उन्होंने आवश्यक समझा। दूसरे उन्हें भय था कि यदि फ़िरऔन को इसकी सूचना मिली तो इसके बदले उनका वध न कर दे।

[2]अर्थात जो काफ़िर तथा तेरे आदेशों का विरोधी होगा, तूने मुझ पर जो उपकार किया है, उसके कारण मैं उसकी सहायता नहीं करूँगा। कुछ ने इस उपकार से तात्पर्य उस पाप की क्षमा को लिया है जो अनैच्छिक रूप से क़िब्ती की हत्या के रूप में उनसे हो गया था।

[3] خَائِفًا का अर्थ डरते हुए يَتَرَقَّبُ इधर-उधर झाँकते तथा अपने विषय में भयभीत।

[4]अर्थात आदरणीय मूसा ने डाँटा कि तू कल भी लड़ता हुआ पाया गया था तथा आज पुन: दूसरे से लड़ रहा है, तू तो स्पष्ट रूप से मार्ग पर नहीं अर्थात झगड़ालू है।

[5]अर्थात आदरणीय मूसा ने चाहा कि क़िब्ती को पकड़ लें, क्योंकि वही आदरणीय मूसा तथा इस्राईल की सन्तान का शत्रु था, ताकि लड़ाई आगे न बढ़े।

The Ummah Technology Mission

هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۖ قَالَ يٰمُوسٰٓى اَتُرِيْدُ
اَنْ تَقْتُلَنِىْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا
بِالْاَمْسِ ۖ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ
جَبَّارًا فِى الْاَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ
اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٩﴾

लगा[1] कि हे मूसा ! क्या जिस प्रकार तूने कल एक व्यक्ति की हत्या कर दी है मुझे भी मार डालना चाहता है, तू तो देश में अत्याचारी एवं उपद्रवी बनना ही चाहता है तथा तेरा यह विचार ही नहीं कि संधि करने वालों में से हो।

وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ
يَسْعٰى ۖ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ يَاْتَمِرُوْنَ
بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ ۖ اِنِّىْ لَكَ
مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢٠﴾

(२०) और नगर के दूर के किनारे से दौड़ता हुआ एक व्यक्ति आया[2] तथा कहने लगा कि हे मूसा ! यहाँ के मुखिया तेरी हत्या का परामर्श कर रहे हैं, अत: तू (अति शीघ्र) चला जा, मुझे अपना शुभचिन्तक मान।

فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۖ قَالَ رَبِّ نَجِّنِىْ
مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢١﴾ ع

(२१) अत: मूसा वहाँ से भयभीत होकर बचते-बचाते निकल भागे,[3] कहने लगे हे प्रभु ! मुझे अत्याचारियों के गुट से बचा ले।[4]

---

[1]वादी (इस्राईली) ने समझा कि मूसा शायद उसे पकड़ने लगे हैं, तो वह बोल उठा कि हे मूसा ! أَتُرِيدُ أَن تَقْتُلَنِي क्या तू मुझे मारना चाहता है ? जिससे क़िब्त को ज्ञात हो गया कि कल जो हत्या हुई थी उसका हत्यारा मूसा है। उसने जाकर फ़िरऔन को सूचित कर दिया, जिस पर फ़िरऔन ने उसके बदले में मूसा का वध करने का निश्चय कर लिया।

[2]यह आदमी कौन था ? कुछ के निकट यह फ़िरऔन के वंश से था, जो गुप्त रूप से आदरणीय मूसा का शुभचिन्तक था। तथा स्पष्ट बात है कि सरदारों के विचारों की सूचना ऐसे ही आदमी से आना अधिक अनुमानित बात है। कुछ के निकट यह आदरणीय मूसा का सम्बन्धी तथा इस्राईली था। दूर के किनारे से तात्पर्य मुन्फ़ है जहाँ फ़िरऔन का भवन तथा राजधानी थी तथा यह नगर के अन्तिम सिरे पर था।

[3]जब आदरणीय मूसा को यह ज्ञात हुआ तो वह वहाँ से निकल खड़े हुए ताकि फ़िरऔन की पकड़ में न आ सकें।

[4]अर्थात फ़िरऔन तथा उसके दरबारियों से, जिन्होंने आपसी विचार-विमर्श से आदरणीय मूसा की हत्या का परामर्श दिया था। कहते हैं कि आदरणीय मूसा को कोई ज्ञान न था कि कहाँ जाना है ? क्योंकि मिस्र छोड़ने की यह दुर्घटना आकस्मिक हुई थी। पहले से

The Ummah Technology Mission

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा जब 'मदयन' की ओर जाने लगे तो कहने लगे कि मुझे विश्वास है कि मेरा प्रभु मुझे सीधा मार्ग ले चलेगा।[1]

وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۖ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۖ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ۖ وَاَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿٢٣﴾

(२३) 'मदयन' के पानी पर जब आप पहुँचे तो देखा कि लोगों का एक समूह वहाँ पानी पिला रहा है[2] तथा दो महिलायें अलग खड़ी (अपने पशुओं को) रोकती हुई दिखाई दीं, पूछा कि तुम्हारी क्या समस्या है,[3] वे बोलीं कि जब तक ये चरवाहे वापस न लौट जायें हम पानी नहीं पिलाते[4] तथा हमारे पिता बहुत बूढ़े हैं।[5]

فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّيْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ

(२४) अत: आपने स्वयं उन (पशुओं) को पानी पिला दिया फिर छाया की ओर हट आये

कोई विचार अथवा योजना नहीं थी, अत: अल्लाह ने घोड़े पर एक फ़रिश्ता भेज दिया, जिसने उन्हें मार्ग बताया। واللہ اعلم (इब्ने कसीर)

[1]अत: अल्लाह ने उनकी यह प्रार्थना स्वीकार की तथा ऐसे सीधे मार्ग की ओर उनका मार्गदर्शन किया जिससे उनकी दुनिया भी सुधर गयी तथा आख़िरत भी अर्थात वह मार्गदर्शक भी बन गये तथा मार्ग पाने वाले भी, स्वयं भी मार्गदर्शित तथा अन्यों को मार्ग बताने वाले।

[2]अर्थात जब मदयन पहुँचे तो देखा कि उसके घाट (कुएँ) पर लोगों की भीड़ है, जो अपने पशुओं को पानी पिला रहे हैं। मदयन यह क़बीले (प्रजाति) का नाम था तथा आदरणीय इब्राहीम की सन्तान में से था, जब कि आदरणीय मूसा याक़ूब के वंश से थे जो आदरणीय इब्राहीम के पौत्र (आदरणीय इसहाक़ के पुत्र) थे। इस प्रकार मदयनवासियों तथा मूसा के मध्य वंशीय सम्बन्ध भी था। (ऐसरूत्तफ़ासीर) तथा यही आदरणीय शुऐब का निवास स्थान एवं नबूअत (दूतत्व) का क्षेत्र भी था।

[3]दो स्त्रियों को अपने पशुओं को रोके खड़ी देखकर आदरणीय मूसा के हृदय में दया आ गयी तथा उनसे पूछा कि क्या बात है तुम अपने पशुओं को पानी नहीं पिलातीं ?

[4]ताकि पुरूषों से हमारा मिश्रण न हो। رُعَاءٌ शब्द راعٍ (चरवाहे) का बहुवचन है।

[5]इसलिए वे स्वयं घाट पर पानी पिलाने के लिए नहीं आ सकते।

The Ummah Technology Mission

مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ﴿٢٤﴾

तथा कहने लगे हे प्रभु ! तू जो कुछ भलाई मेरी ओर उतारे मैं उसका आकाँक्षी हूँ।[1]

فَجَآءَتْهُ إِحْدَىٰهُمَا تَمْشِي عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۖ قَالَتْ إِنَّ أَبِي يَدْعُوكَ لِيَجْزِيَكَ أَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ قَالَ لَا تَخَفْ ۖ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٢٥﴾

(२५) इतने में उन दोनों महिलाओं में से एक उनकी ओर लज्जा के साथ चलती हुई आयी[2] तथा कहने लगी कि मेरे पिता आपको बुला रहे हैं ताकि आप ने जो हमारे (पशुओं) को पानी पिलाया है उसका पारिश्रमिक दें,[3] जब (आदरणीय मूसा) उनके पास पहुँचे तथा उनसे अपनी सारी कथा सुनाई तो वह कहने लगे

---

[1]आदरणीय मूसा इतनी लम्बी यात्रा करके मिस्र से मदयन पहुँचे थे, खाने के लिए कुछ नही था जबकि यात्रा की थकान तथा भूख से निढाल थे। अत: पशुओं को पानी पिलाकर एक वृक्ष की छाया में आकार प्रार्थना करने लगे। خير कई बातों के लिए प्रयोग किया जाता है, खाने के लिये, अच्छे कार्यों के लिये, इबादत के लिये, शक्ति, बल तथा धन के लिये। (ऐसरूत्तफ़ासीर) यहाँ इसका प्रयोग खाने के लिये हुआ है। अर्थात मुझे इस समय भोजन की आवश्यकता है।

[2]अल्लाह ने आदरणीय मूसा की प्रार्थना स्वीकार की तथा दोनों में से एक लड़की उन्हें बुलाने आ गयी। लड़की की लज्जा का क़ुरआन में विशेष रूप से वर्णन है कि यह स्त्री का मूल आभूषण है। पुरूषों की भाँति लज्जा तथा पर्दे से निश्चिन्तता तथा निर्लज्जता स्त्री के लिए धार्मिक नियमों के अनुसार प्रिय नहीं है।

[3]लड़कियों का पिता कौन था ? क़ुरआन करीम ने स्पष्टरूप से नाम नहीं लिया है। व्याख्याकारों के बहुमत ने इससे तात्पर्य आदरणीय शुऐब अलैहिस्सलाम को लिया है जो मदयन वासियों के लिए नबी (ईशदूत) भेजे गये थे। इमाम शौकानी ने भी इसी कथन को मान्यता दिया है। परन्तु इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि आदरणीय शुऐब के नबूवत का समय आदरणीय मूसा से बहुत पूर्व का है। इसलिए यहाँ आदरणीय शुऐब का कोई सम्बन्धी अथवा शुऐब के समुदाय का व्यक्ति तात्पर्य है والله أعلم। अत: आदरणीय मूसा ने लड़कियों के साथ जो दया भाव तथा उपकार किया था वह लड़कियों ने वृद्ध पिता से कहा, जिससे पिता के हृदय में भी वह भावना उत्पन्न हुई कि उपकार का बदला उपकार के साथ दिया जाये अथवा उसके परिश्रम का पारिश्रमिक ही अदा कर दिया जाये।

The Ummah Technology Mission

कि अब न डर, तूने अत्याचारी समुदाय से छुटकारा पा लिया।[1]

قَالَتْ إِحْدَاهُمَا يَا أَبَتِ اسْتَأْجِرْهُ ۖ إِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَأْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْأَمِينُ ﴿٢٦﴾

(२६) उन दोनों में से एक ने कहा कि हे पिताजी ! आप इन्हें मज़दूरी पर रख लीजिए क्योंकि जिन्हें आप पारिश्रमिक पर रखें उनमें से सबसे उत्तम वह है जो बलवान एवं ईमानदार हो।[2]

قَالَ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ أُنكِحَكَ إِحْدَى ابْنَتَيَّ هَاتَيْنِ عَلَىٰ أَنْ تَأْجُرَنِي ثَمَانِيَ

(२७) उस (बूढ़े) ने कहा कि मैं अपनी इन दो पुत्रियों में से एक को आपके विवाह में देना चाहता हूँ[3] इस [महर (स्त्रीधन)] पर कि आप

---

[1]अर्थात अपने मिस्र की घटना तथा फ़िरऔन के अत्याचार एवं क्रूरता की कथा सविस्तार सुनायी, जिस पर उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र फ़िरऔन की राज्य सीमा से बाहर है। इस लिए भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। अल्लाह ने अत्याचारियों से मुक्ति प्रदान कर दी है।

[2]कुछ व्याख्याकारों ने लिखा है कि पिता ने पुत्रियों से पूछा कि तुम्हें किस प्रकार ज्ञात है कि यह शक्तिशाली भी है तथा ईमानदार भी। जिस पर पुत्रियों ने बताया कि जिस कुएं से पानी पिलाया उस पर इतना भारी पत्थर रखा हुआ था कि उसे उठाने के लिए दस मनुष्यों की आवश्यकता होती है, परन्तु हमने देखा कि उस व्यक्ति ने अकेले ही उठा लिया तथा बाद में रख दिया। उसी प्रकार जब मैं उसे बुलाकर अपने साथ ला रही थी, तो चूंकि मार्ग का ज्ञान मुझे ही था, मैं आगे-आगे चल रही थी तथा यह पीछे-पीछे, परन्तु हवा के कारण मेरी चादर उड़ जाती थी तो इस व्यक्ति ने कहा कि तू पीछे चल मैं आगे-आगे चलता हूँ ताकि मेरी दृष्टि तेरे शरीर के किसी अंग पर न पड़े। मार्ग के संकेत के लिए पीछे से पत्थर, कंकरी आदि मार दिया कर। وَاللهُ أعلم بحال صحته (इब्ने कसीर)

[3]हमारे देश में किसी लड़की वाले की ओर से विवाह की इच्छा व्यक्त करना अप्रिय समझा जाता है। परन्तु अल्लाह के धार्मिक नियमों में यह घृणित कार्य नहीं है। अच्छे गुणों से सुशोभित लड़का यदि मिल जाये तो उससे अथवा उसके घर वालों से अपनी पुत्री के विवाह की बात करना अनुचित नहीं है, अपितु अच्छा तथा प्रिय कार्य है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा सहाबा कराम (رضوان الله عليهم أجمعين) के काल में भी यही नियम था।

The Ummah Technology Mission

حِجَجٍ ۚ فَإِنْ أَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَا أُرِيدُ أَنْ أَشُقَّ عَلَيْكَ ۖ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٢٧﴾

आठ वर्ष तक मेरा काम-काज करें।[1] हाँ यदि आप दस वर्ष तक करें तो यह आपकी ओर से उपकार स्वरूप है, मैं कदापि यह नहीं चाहता कि आप पर किसी प्रकार का कष्ट डालूँ।[2] अल्लाह को स्वीकार हुआ तो आगे चलकर आप मुझे भला व्यक्ति पायेंगे।[3]

قَالَ ذَٰلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ ۖ أَيَّمَا الْأَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٢٨﴾

(२८) (मूसा अलैहिस्सलाम ने) कहा कि ठीक है यह बात तो मेरे तथा आपके मध्य निर्धारित हो गयी, मैं इन दोनों अवधियों में से जिसे पूरा कर लूँ मुझ पर अत्याचार न हो।[4] हम यह जो कुछ कह रहे हैं उस पर अल्लाह (गवाह एवं) कार्यक्षम है।[5]

فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى الْأَجَلَ وَسَارَ

(२९) जब (आदरणीय) मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अवधि पूर्ण कर ली[6] तथा अपने परिवार

---

[1]इसे धर्मगुरूओं ने पारिश्रमिक (मज़दूरी पर काम कराने) के औचित्य का प्रमाण बनाया है अर्थात किराया तथा पारिश्रमिक पर पुरूष सेवा प्राप्त करना उचित है।

[2]अर्थात दो अतिरिक्त वर्ष की सेवा में कठिनाई तथा कष्ट हो तो आठ वर्ष के बाद जाने की आज्ञा होगी।

[3]न झगड़ा करूँगा,न दुख दूँगा, न कड़ाई से काम लूँगा।

[4]अर्थात आठ वर्ष के पश्चात अथवा दस वर्ष के पश्चात जाना चाहूँ तो मुझ से अधिक रहने की माँग न की जाये।

[5]यह कुछ के निकट शुऐव अथवा शुऐब अलैहिस्सलाम के भतीजे का कथन है तथा कुछ के निकट आदरणीय मूसा का। सम्भव है दोनों की ओर से हो, क्योंकि बहुवचन प्रयोग हुआ है अर्थात दोनों ने इस बात में अल्लाह को साक्षी ठहराया। तथा उसके साथ ही उनकी पुत्री तथा आदरणीय मूसा में वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हो गया। शेष विवरण का अल्लाह तआला ने वर्णन नहीं किया है। वैसे इस्लाम धर्म में दोनों पक्षों की सहमति के साथ विवाह सम्बन्ध के लिए दो साक्षी भी आवश्यक हैं।

[6]आदरणीय इब्ने अब्बास رضي الله عنهما ने इस अवधि से दस वर्ष की अवधि तात्पर्य लिया है, क्योंकि यही पूर्ण तथा शुद्ध (अर्थात मूसा के ससुर के लिए प्रिय एवं इच्छित) थी तथा

The Ummah Technology Mission

بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ
نَارًا ؕ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّیْۤ
اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّیْۤ اٰتِیْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ
اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ
لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿۲۹﴾

वालों को लेकर चले[1] तो 'तूर' नामक पर्वत की ओर अग्नि देखी, अपनी पत्नी से कहने लगे, ठहरो ! मैंने अग्नि देखी है अधिक सम्भव है कि मैं वहाँ से कोई समाचार लाऊँ अथवा अग्नि का कोई अँगारा लाऊँ ताकि तुम ताप लो।

فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِیَ مِنْ شَاطِیِٕ الْوَادِ
الْاَیْمَنِ فِی الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ
الشَّجَرَةِ اَنْ یّٰمُوْسٰۤی اِنِّیْۤ اَنَا اللّٰهُ
رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۳۰﴾

(३०) अतः जब वहाँ पहुँचे तो उस शुभ धरती के मैदान के दायें किनारे के वृक्ष में से आवाज़ दी गयी[2] कि हे मूसा ! निःसंदेह मैं ही अल्लाह हूँ सर्वलोक का प्रभु।[3]

وَ اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا
تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰی مُدْبِرًا
وَّلَمْ یُعَقِّبْ ؕ یٰمُوْسٰۤی اَقْبِلْ
وَلَا تَخَفْ ۫ اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِیْنَ ﴿۳۱﴾

(३१) तथा यह (भी आवाज़ आयी) कि अपनी छड़ी डाल दे। फिर जब उसे देखा कि वह सर्प की भाँति फनफना रही है, तो पीठ फेर कर वापस हो लिये तथा मुड़कर मुख भी नहीं किया, हमने कहा कि हे मूसा ! आगे आ भयभीत न हो, निःसंदेह तू हर प्रकार से शान्तिवाला (सुरक्षित) है।[4]

आदरणीय मूसा के दया भाव के कारण अपने बूढ़े ससुर की हार्दिक इच्छा के विपरीत करना अच्छा नहीं समझा। (फ़तहुल बारी, किताबुल शहादत, बाबु मन उमेर बे इंजाजिल वअदे)

[1]इससे ज्ञात हुआ कि पति अपनी पत्नी को जहाँ चाहे ले जा सकता है।

[2]अर्थात आवाज़ घाटी के एक छोर से आ रही थी, जो पश्चिम की ओर पर्वत के दाहिनी ओर था। यहाँ वृक्ष से अग्नि के शोले उठ रहे थे जो वास्तव में प्रभु की दिव्य ज्योति का प्रकाश था।

[3]अर्थात हे मूसा ! तुझ से जो इस समय सम्बोधन एवं वार्ता कर रहा है, वह मैं अल्लाह हूँ सर्वलोक का पालनहार।

[4]यह मूसा अलैहिस्सलाम का वह चमत्कार है जो तूर पर्वत पर नबूअत से सुशोभित किये जाने के पश्चात उन्हें प्राप्त हुआ। चूँकि चमत्कार व्यवहार के प्रतिकूल मामले को कहा जाता है अर्थात जो सामान्य व्यवहार एवं प्रत्यक्ष साधनों के विपरीत हो। ऐसी बात चूँकि अल्लाह के आदेश तथा इच्छानुसार व्यक्त होती है किसी मनुष्य की शक्ति से नहीं चाहे

The Ummah Technology Mission

اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۟ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٣٢﴾

(३२) अपने हाथ को अपनी जेब में डाल वह बिना किसी प्रकार के दाग़ के पूर्णत: उज्जवल चमकता हुआ निकलेगा,[1] तथा भय से बचने के लिए अपनी बाँह अपनी ओर मिला ले।[2] बस ये दोनों चमत्कार तेरे प्रभु की ओर से हैं फ़िरऔन तथा उसके गुट की ओर, वस्तुत: वे सब के सब अवहेलना करने वाले अवज्ञाकारी लोग हैं।[3]

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿٣٣﴾

(३३) (मूसा अलैहिस्सलाम ने) कहा कि प्रभु ! मैंने उनका एक आदमी मार दिया था। अब मुझे संभावना है कि वे मुझे भी मार डालेंगे।[4]

वह महात्मा पैग़म्बर तथा निकटवर्ती नबी ही क्यों न हो। इसलिए जब मूसा के अपने हाथ की लाठी धरती पर फेंकने से चलती, दौड़ती तथा फूंकारती सर्प बन गई तो आदरणीय मूसा भी डर गये। जब अल्लाह ने बताया तथा सांत्वना दी तो आदरणीय मूसा का भय समाप्त हुआ तथा यह स्पष्ट हुआ कि अल्लाह तआला ने सत्यता के प्रमाण स्वरूप यह चमत्कार उन्हें प्रदान किया है।

[1]यह उज्जवल तथा प्रकाशित हाथ दूसरा चमत्कार था जो उन्हें प्रदान किया गया।

[2]लाठी के विशाल सर्प बन जाने से जो भय आदरणीय मूसा को उत्पन्न होता था, उसका निवारण बता दिया गया कि अपनी भुजा अपनी ओर मिला लिया कर अर्थात अपनी बगल में दबा लिया कर, जिससे भय जाता रहेगा। कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि यह सामान्य है कि जब भी किसी से कोई भय प्रतीत हो तो इस प्रकार करने से भय समाप्त हो जायेगा। इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि आदरणीय मूसा के अनुसरण में जो कोई भी घबराहट के समय अपने दिल पर हाथ रखेगा तो उसके हृदय से भय जाता रहेगा अथवा कम से कम हल्का हो जायेगा। إن شاء الله (यदि अल्लाह ने चाहा)

[3]अर्थात फ़िरऔन तथा उसके गुट के समक्ष ये दोनों चमत्कार अपनी सत्यता प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करो। ये लोग अल्लाह की आज्ञाकारिता से निकल चुके हैं तथा अल्लाह के धर्म के विरोधी हैं।

[4]यह वह भय था जो वास्तव में आदरणीय मूसा के प्राण को था, क्योंकि उनके हाथों एक क़िब्ती की हत्या हो गयी थी।

The Ummah Technology Mission

وَاَخِیْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّیْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِیَ رِدْاً یُّصَدِّقُنِیْٓ اِنِّیْٓ اَخَافُ اَنْ یُّكَذِّبُوْنِ ﴿۳۴﴾

(३४) तथा मेरा भाई हारून मुझसे अत्यधिक स्वच्छ भाषी है, तू उसे भी मेरा सहायक बनाकर मेरे साथ भेज[1] कि वह मुझे सच्चा माने, मुझे तो भय है कि वे सब मुझे झुठला देंगे।

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِاَخِیْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا یَصِلُوْنَ اِلَیْكُمَا ۚ بِاٰیٰتِنَآ ۚ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ﴿۳۵﴾

(३५) (अल्लाह तआला ने) कहा कि हम तेरे भाई द्वारा तुझे बाहुबल प्रदान करेंगे[2] तथा तुम दोनों को प्रभावशाली करेंगे तो फ़िरऔनी तुम तक पहुँच ही न सकेंगे।[3] हमारी निशानियों के कारण, तुम दोनों तथा तुम्हारे अनुयायी ही विजयी रहेंगे।[4]

فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰی بِاٰیٰتِنَا بَیِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًی

(३६) अत: जब उनके पास मूसा (अलैहिस्सलाम) हमारे दिये हुए खुले चमत्कार लेकर पहुँचे तो वे कहने लगे कि यह तो केवल गढ़ा-

---

[1]इस्राईली कथाओं के आधार पर आदरणीय मूसा की जीभ में तुतलापन था, जिसका कारण यह बताया गया कि आदरणीय मूसा के समक्ष अग्नि के अंगारे तथा खजूर अथवा मोती रखे गये तो आपने अंगारा उठाकर अपने मुँह में रख लिया था जिससे आपकी जीभ जल गयी थी। यह कारण सही है अथवा नहीं। फिर भी क़ुरआन करीम के शब्दों से यह सिद्ध है कि आदरणीय मूसा की तुलना में आदरणीय हारून स्पष्ट उच्चारण वाले थे तथा आदरणीय मूसा की जीभ में गाँठ थी, जिसके खोलने की प्रार्थना उन्होंने नबूअत से अलंकृत होने के पश्चात की। رِدْءاً (रिद्अ) का अर्थ है सहायक सहयोगी, तथा बल पहुँचाने वाला अर्थात हारून अपने स्पष्ट उच्चारण से मेरी सहायता करके मुझे बल पहुँचायेगें।

[2]अर्थात आदरणीय मूसा की प्रार्थना स्वीकार कर ली गई तथा उनकी सिफ़ारिश पर आदरणीय हारून को भी नबूअत प्रदान करके उनका साथी तथा सहायक बना दिया गया।

[3]अर्थात हम तुम्हारी रक्षा करेंगे, फ़िरऔन तथा उसके चेले तुम्हारा कुछ बिगाड़ न सकेंगे।

[4]यह वही विषय है जो क़ुरआन करीम में विभिन्न स्थानों पर वर्णित है, जैसे सूरः *अल-मायदा-६७, सूरः अल-अहज़ाब-३९, सूरः अल-मुजादिला-२१, सूरः अलमोमिन-५१* तथा ५२)

The Ummah Technology Mission

وَمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٦﴾

गढ़ाया जादू है हमने अपने पूर्वजों के काल में कभी यह नहीं सुना।[1]

وَقَالَ مُوْسٰى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾

(३७) तथा (आदरणीय) मूसा कहने लगे मेरा प्रभु उसे भलीभाँति जानता है, जो उसके पास का प्रकाश लेकर आता है[2] तथा जिसके लिए आख़िरत का उत्तम परिणाम होता है।[3] नि:संदेह अन्यायियों का भला न होगा।[4]

---

[1]अर्थात यह आमन्त्रण कि सृष्टि में केवल एक ही अल्लाह इस योग्य है कि उसकी इबादत की जाये, हमारे लिए बिल्कुल नई है। यह न हमने सुना है तथा न हमारे पूर्वज इस एकेश्वरवाद से परिचित थे। मक्का के मूर्तिपूजकों ने भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में कहा था।

﴿اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ﴾

"इसने तो सारे देवताओं को (समाप्त कर) एक ही देवता बना दिया है। यह तो बड़ी विचित्र बात है।" (सूरः साद-५)

[2]अर्थात मुझसे तथा तुमसे अधिक संमार्ग का जानने वाला अल्लाह है इसलिए जो बात अल्लाह की ओर से आयेगी, वह उचित होगी अथवा तुम्हारे तथा तुम्हारे पूर्वजों की -- ?

[3]उत्तम परिणाम से तात्पर्य आख़िरत में अल्लाह की प्रसन्नता तथा उसकी क्षमा एवं दया के पात्र घोषित हो जाना है, तथा यह सौभाग्य केवल एकेश्वरवादियों के भाग में आयेगा।

[4]अत्याचारी से तात्पर्य मिश्रणवादी तथा काफ़िर हैं क्योंकि अत्याचार का अर्थ है وَضْعُ الشَّيْءِ فِي غَيْرِ مَحَلِّهِ किसी वस्तु को उसके मूल स्थान से स्थानान्तरित करके किसी अन्य स्थान पर रख देना। मूर्तिपूजक भी चूँकि उपासना के स्थान पर ऐसे व्यक्तियों को बैठा देते हैं जो उसके योग्य नहीं होते। इसी प्रकार काफ़िर भी प्रभु के मूल स्थान से अनभिज्ञ रहते हैं। इसलिए ये लोग अत्यधिक अत्याचारी हैं तथा यह सफलता से अर्थात आख़िरत में अल्लाह की दया तथा क्षमा से वंचित रहेंगे। इस आयत से यह भी ज्ञात हुआ कि वास्तविक सफलता आख़िरत की सफलता है। संसार में सुख तथा धन एवं साधन का बाहुल्य वास्तविक सफलता नहीं है इसलिए कि यह अस्थाई सफलता नास्तिक एवं मिश्रणवादी को भी संसार में मिल जाती है। किन्तु अल्लाह महान उनसे सफलता को नकार रहा है जिसका स्पष्ट अर्थ यह है कि वास्तविक सफलता आख़िरत (परलोक) ही की सफलता है न कि संसार के कुछ दिनों के लिए अस्थाई सुख-समृद्धि का बाहुल्य।

The Ummah Technology Mission

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ فَاَوْقِدْ لِيْ يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٣٨﴾

(३८) तथा फ़िरऔन कहने लगा कि हे दरबारियो ! मैं तो अपने अतिरिक्त किसी को तुम्हारा देवता नहीं जानता। सुन, हे हामान ! तू मेरे लिए मिट्टी को आग में पकवा[1] फिर मेरे लिए एक महल निर्मित कर तो मैं मूसा के पूज्य (देवता) को झाँक लूँ,[2] उसे मैं तो मिथ्यावादियों में से ही समझ रहा हूँ।[3]

وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٣٩﴾

(३९) उसने तथा उसकी सेना ने अनुचित रूप से देश में घमण्ड किया[4] तथा समझ लिया कि हमारी ओर लौटाये ही नहीं जायेंगे।

فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾

(४०) अन्त में हमने उसे तथा उसकी सेना को पकड़ लिया तथा समुद्र में डूबो दिया,[5] अब देख ले कि उन पापियों का अन्त कैसा कुछ हुआ ?

---

[1]अर्थात मिट्टी को अग्नि में तपा कर ईंटें बना। हामान, फ़िरऔन का मन्त्री एवं परामर्श दाता एवं उसके शासन का प्रबन्धक था।

[2]अर्थात एक ऊँचा तथा सुदृढ़ भवन निर्मित कर, जिस पर चढ़कर मैं आकाश पर यह देख सकूँ कि वहाँ मेरे अतिरिक्त कोई अन्य प्रभु है ?

[3]अर्थात मूसा (अलैहिस्सलाम) जो यह दावा करता है कि आकाशों पर प्रभु है जो अखिल जगत का पालनहार है, मैं तो उसे झूठा समझता हूँ।

[4]धरती से तात्पर्य मिस्र की धरती है जहाँ फ़िरऔन राज्य करता था तथा अहंकार का अर्थ विना अधिकार के अपने को उच्च समझना है। अर्थात उनके पास कोई प्रमाण ऐसा न था जो मूसा के प्रमाण एवं चमत्कारों का खण्डन कर सकता परन्तु अहंकार अपितु शत्रुता का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने हठधर्मी एवं इंकार का मार्ग अपनाया।

[5]अर्थात जब उनका कुफ़्र तथा अहंकार असीम हो गया तथा वे किसी प्रकार से भी ईमान लाने को तैयार नहीं हुए तो अन्त में एक दिन प्रातः काल हमने उन्हें नदी में डूबो दिया। (इसका विवरण *सूरः अल-शुअरा* में गुज़र चुका है)

The Ummah Technology Mission

وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾

(४१) तथा हमने उन्हें ऐसे अगुवा बना दिये कि लोगों को नरक की ओर बुलायें[1] तथा क़ियामत के दिन कदापि सहायता न किये जायें।

وَاَتْبَعْنٰهُمْ فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ﴿٤٢﴾

(४२) तथा हमने इस दुनिया में भी उनके पीछे अपनी धिक्कार लगा दिया, तथा क़ियामत के दिन भी वह बुरी दुर्दशा वाले लोगों में से होंगे।[2]

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٣﴾

(४३) तथा उन पूर्वकालीन लोगों को विध्वस्त करने के पश्चात हमने मूसा को ऐसी किताब प्रदान की[3] जो लोगों के लिए प्रमाण तथा प्रकाश एवं कृपा होकर आयी थी[4] ताकि वे शिक्षा ग्रहण कर लें।[5]

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَآ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٤٤﴾

(४४) तथा तूर की पश्चिमी दिशा की ओर जब कि हमने मूसा को आदेश की प्रकाशना (वह्यी) पहुँचायी थी, न तो तू उपस्थित था न तू दर्शकों में से था।[6]

---

[1]अर्थात जो भी उनके पश्चात ऐसे लोग होंगे जो अल्लाह के एक होने अथवा उसके अस्तित्व को अस्वीकार करेंगे तो उनके प्रमुख तथा अगुवा फ़िरऔन ही समझे जायेंगे, जो नरक की ओर बुलाने वाले हैं।

[2]अर्थात संसार में भी अपमान एवं अनादर उनका भाग्य बना तथा आख़िरत में भी वे दुर्दशा में होंगे अर्थात मुख काले तथा नयन पीले। जैसाकि नरकवासियों के वर्णन में आता है।

[3]अर्थात फ़िरऔन तथा उसके सम्प्रदाय अथवा नूह के समुदाय तथा आद एवं समूद के समुदाय आदि के विनाश के पश्चात मूसा को किताब (तौरात) प्रदान की गई।

[4]जिससे वे सत्य को पहचान लें तथा उसे अपना लें तथा अल्लाह की कृपा के पात्र हो जायें।

[5]अर्थात अल्लाह के उपकारों की कृतज्ञता व्यक्त करें तथा अल्लाह पर ईमान लायें तथा उसके पैग़म्बरों का अनुसरण करें, जो उन्हें भलाई, सन्मार्ग एवं वास्तविक सफलता की ओर बुलाते हैं।

[6]अर्थात तूर पर्वत पर जब हमने मूसा से वार्तालाप किया तथा उसे प्रकाशना एवं रिसालत से अलंकृत किया, हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), तू न वहाँ उपस्थित

TheUmmahTechnology Mission

وَلٰكِنَّآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٤٥﴾

(४५) परन्तु हमने बहुत से वंशों को पैदा किया [1] जिन पर लम्बी अवधि व्यतीत हो गयी[2] तथा न तू मदयन का निवासी था[3] कि उनके समक्ष हमारी आयतों का पाठ करता, बल्कि हम ही रसूलों को भेजने वाले रहे।[4]

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ

(४६) तथा न तू तूर की ओर था जबकि हमने आवाज़ दी [5] बल्कि यह तेरे प्रभु की ओर से एक कृपा है,[6] इसलिए की तू उन लोगों को

था तथा न इस दृश्य के दर्शकों में से था। बल्कि यह परोक्ष की वे बातें हैं जिसे हम प्रकाशना के द्वारा तुझे बता रहे हैं, जो इस बात का प्रमाण है कि तू अल्लाह का सच्चा पैग़म्बर है, क्योंकि न तो ये बातें तूने किसी से सीखी है तथा न स्वयं ही उनका दर्शन ही किया है। यह विषय अन्य स्थानों पर भी वर्णित है, जैसे *सूरः आले इमरान-४४, सूरः हूद-४९* तथा १००, *सूरः यूसुफ़* १०२ *सूरः ताहा-९९* आदि आयतें।

[1] قُرُوْنٌ (कुरून) बहुवचन है قَرْنٌ (कर्न) का, जिसका अर्थ है युग। परन्तु यहाँ सम्प्रदायों के अर्थ में है, अर्थात हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आपके तथा मूसा के मध्य जो कालान्तर है उसमें हमने कई सम्प्रदाय पैदा किये।

[2]अर्थात समय के परिवर्तन से धर्म विधान तथा धर्मादेश भी बदल गये तथा लोग भी धर्म को भूल गये, जिसके कारण उन्होंने अल्लाह के आदेशों को पीठ के पीछे डाल दिया तथा उसके वचन को भूल बैठे तथा इस प्रकार इसकी आवश्यकता उत्पन्न हुई कि एक नये नवी को अवतरित किया जाये अथवा यह अर्थ है कि लम्बी अवधि के कारण अरब के लोग नबूअत तथा रिसालत को बिल्कुल भुला बैठे, इसलिए आपकी नबूअत पर उन्हें आश्चर्य हो रहा है तथा उसे स्वीकार करने को तैयार नहीं।

[3]जिस से आप स्वयं इस घटना के विवरण से परिचित हो जाते।

[4]तथा इसी नियम के अनुसार हमने आपको रसूल बनाकर भेजा है तथा पिछली घटनाओं एवं कथाओं से आपको परिचित कर रहे हैं।

[5]अर्थात यदि आप सच्चे रसूल न होते तो मूसा की इस घटना का ज्ञान भी आपको न होता।

[6]अर्थात आपका यह ज्ञान, अवलोकन तथा दर्शन का परिणाम नहीं है बल्कि आपके प्रभु की कृपा है कि उसने आपको नबी बनाया तथा प्रकाशना से अलंकृत किया।

The Ummah Technology Mission

قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٦﴾

सतर्क कर दे जिनके पास तुझ से पूर्व कोई डराने वाला नहीं पहुँचा,[1] क्या आश्चर्य कि वह शिक्षा ग्रहण कर लें।

وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा यदि ये बात न होती कि उन्हें उनके अपने हाथों आगे भेजे हुए कर्मों के कारण कोई विपत्ति पहुँचती तो यह कह उठते कि हे हमारे प्रभु ! तूने हमारी ओर कोई रसूल क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों का पालन करते तथा ईमान वालों में हो जाते।[2]

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا

(४८) फिर जब उनके पास हमारी ओर से सत्य आ पहुँचा, तो कहते हैं कि यह वह

---

[1]इससे तात्पर्य मक्कावासी तथा अरब हैं जिनकी ओर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूर्व कोई नबी नहीं आया, क्योंकि आदरणीय इब्राहीम के पश्चात नबूवत का क्रम इब्राहीम के परिवार ही में रहा तथा उनका अवतरण इस्राईल की सन्तान की ओर ही होता रहा। इस्माईल की सन्तान अर्थात अरबों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रथम नबी थे तथा नबूअत के क्रम को पूरा करने वाले थे। उनकी ओर नबी (संदेष्टा) भेजने की आवश्यकता इसलिए नहीं समझी गयी होगी कि अन्य नबियों का संदेश तथा उनका आमन्त्रण उनको पहुँचता रहा होगा। क्योंकि इसके बिना उनके लिए कुफ़्र तथा मिश्रणवाद पर दृढ़ रहने के लिए उनके पास बहाना रह जायेगा तथा यह बहाना अल्लाह तआला ने किसी के लिए शेष नहीं छोड़ा है।

[2]अर्थात उनके इसी बहाने को समाप्त करने के लिए हमने आपको उनकी ओर नबी बनाकर भेजा है। क्योंकि लम्बी अवधि के कारण भूतपूर्व नबियों की शिक्षाओं में परिवर्तन हो चुका है तथा उनका आमन्त्रण भुलाया जा चुका है, तथा ऐसे ही समय पर किसी नये नबी की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि अल्लाह तआला ने अन्तिम पैग़म्बर परम आदरणीय मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षायें (क़ुरआन तथा हदीस) को परिवर्तित होने एवं हेर-फेर से सुरक्षित रखा है तथा ऐसा प्राकृतिक प्रबन्ध कर दिया है कि जिससे आपका आमन्त्रण संसार के कोने-कोने में पहुँच गया है तथा निरन्तर पहुँच रहा है ताकि किसी नये नबी की आवश्यकता ही शेष न रहे। तथा जो व्यक्ति इस 'आवश्यकता' का दावा करके नबूअत का ढोंग रचता है, वह झूठा तथा दज्जाल है।

The Ummah Technology Mission

لَوْلَآ أُوْتِيَ مِثْلَ مَآ أُوْتِيَ مُوسَىٰ ۚ أَوَلَمْ يَكْفُرُوا۟ بِمَآ أُوْتِيَ مُوسَىٰ مِن قَبْلُ ۖ قَالُوا۟ سِحْرَانِ تَظَٰهَرَا ۖ وَقَالُوٓا۟ إِنَّا بِكُلٍّ كَٰفِرُونَ ﴿٤٨﴾

क्यों नहीं दिया गया जैसे दिये गये थे मूसा।[1] अच्छा, तो क्या मूसा को इससे पूर्व जो कुछ दिया गया था उसके साथ लोगों ने कुफ़्र (इंकार) नहीं किया था ?[2] (खुलकर) कहा था कि ये दोनों जादूगर हैं, जो एक-दूसरे के सहायक हैं तथा हम तो उन सबको अस्वीकार करने वाले हैं।[3]

قُلْ فَأْتُوا۟ بِكِتَٰبٍ مِّنْ عِندِ ٱللَّهِ هُوَ أَهْدَىٰ مِنْهُمَآ أَتَّبِعْهُ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٤٩﴾

(४९) कह दीजिए कि यदि सच्चे हो तो तुम भी अल्लाह के पास से कोई ऐसी किताब ले आओ जो इन दोनों से अधिक पथ प्रदर्शन वाली हो, मैं उसी का अनुसरण करूँगा।[4]

فَإِن لَّمْ يَسْتَجِيبُوا۟ لَكَ فَٱعْلَمْ

(५०) फिर यदि ये तेरी न मानें[5] तो तू विश्वास कर ले कि यह केवल अपनी इच्छाओं का

---

[1]अर्थात आदरणीय मूसा जैसे चमत्कार, जैसे लाठी का सर्प बन जाना तथा हाथ का चमकना आदि।

[2]अर्थात माँग के अनुसार चमत्कार दिखा भी दिये जायें तो क्या लाभ ? जिन्हें ईमान नहीं लाना है, वह हर प्रकार की निशानियों के देख लेने के पश्चात ईमान से वंचित ही रहेंगे। क्या मूसा के चमत्कार के पश्चात फ़िरऔन तथा उसके अनुयायी मुसलमान हो गये थे, उन्होंने कुफ़्र नहीं किया ? अथवा يَكْفُرُوا का सर्वनाम मक्का के क़ुरैश के लिए प्रयोग हुआ है अर्थात क्या उन्होंने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूअत से पूर्व मूसा के साथ कुफ़्र नहीं किया ?

[3]प्रथम भावार्थ के आधार पर दोनों से तात्पर्य आदरणीय मूसा तथा हारून होंगे तथा سِحْرَان (दो जादू) का अर्थ سَاحِرَان (दो जादूगर) होगा। तथा द्वितीय भावार्थ में इससे क़ुरआन तथा तौरात तात्पर्य होंगे अर्थात दोनों जादू हैं, जो एक-दूसरे के सहायक हैं तथा हम सबके अर्थात मूसा तथा मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के न मानने वाले हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[4]अर्थात यदि तुम इस दावे में सच्चे हो कि क़ुरआन मजीद तथा तौरात दोनों जादू हैं तो तुम कोई अन्य अल्लाह की पुस्तक प्रस्तुत करो जो उनसे अधिक मार्गदर्शक हो, मैं उसका अनुसरण कर लूंगा क्योंकि मैं तो मार्गदर्शन का इच्छुक तथा अनुयायी हूँ।

[5]अर्थात क़ुरआन तथा तौरात से अधिक मार्गदर्शन प्रदान करने वाली किताब प्रस्तुत न कर सके तथा नि:संदेह नहीं कर सकेंगे।

The Ummah Technology Mission

اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ؕ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥٠

अनुसरण कर रहे हैं तथा उससे अधिक भटका हुआ कौन है ? जो अपनी इच्छाओं के पीछे पड़ा हुआ हो[1] बिना अल्लाह के मार्गदर्शन के, नि:संदेह अल्लाह तआला अत्याचारी लोगों को मार्गदर्शन नहीं देता।[2]

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝٥١

(५१) तथा हम निरन्तर लोगों के लिए अपनी वाणी भेजते रहे[3] ताकि वे शिक्षा ग्रहण कर लें।[4]

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝٥٢

(५२) जिसको हमने इससे पूर्व किताब प्रदान की वह तो इस पर ईमान रखते हैं।[5]

وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ

(५३) तथा जब (उसकी आयतें) उनके समक्ष पढ़ी जाती हैं तो वे यह कह देते हैं कि इसके

---

[1]अर्थात अल्लाह की ओर से अवतरित मार्गदर्शन को छोड़कर इन्द्रियों का अनुकरण करना सबसे बड़ा भटकावा है तथा इस आधार पर मक्का के ये कुरैश सबसे अधिक भटके हुए हैं, जो इसी बात का कार्यान्वयन कर रहे हैं।

[2]इसमें अल्लाह के उसी विधि का वर्णन है, जो अत्याचारियों के लिए उसके यहाँ निर्धारित है कि वे मार्गदर्शन प्राप्त करने से वंचित रहते हैं। इसलिए कि नबियों को झुठलाना, अल्लाह की आयतों से मुख मोड़ना तथा निरन्तर कुफ़्र, द्वेष एवं अहंकार ऐसे अपराध हैं कि जिससे सत्य को स्वीकार करने एवं प्रभावित होने की योग्यता समाप्त हो जाती है। उसके पश्चात मनुष्य अत्याचार, पाप, कुफ़्र एवं शिर्क के अंधकार में ही भटकता रहता है, उसे ईमान का प्रकाश प्राप्त नहीं होता।

[3]अर्थात एक रसूल के पश्चात दूसरा रसूल, एक किताब के पश्चात दूसरी किताब हम भेजते रहे तथा इस प्रकार निरन्तर हम अपनी बात लोगों तक पहुँचाते रहे।

[4]उद्देश्य इससे यह था कि लोग पिछले लोगों के परिणाम से डरकर तथा हमारी बातों से शिक्षा ग्रहण करके ईमान ले आयें।

[5]इससे तात्पर्य वे यहूदी हैं जो मुसलमान हो गये थे, जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम आदि, अथवा वे इसाई हैं जो इथोपिया से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में आये थे तथा आपके पवित्र मुख से क़ुरआन करीम सुनकर मुसलमान हो गये थे। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

إِنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّنَا إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ﴿٥٣﴾

हमारे प्रभु की ओर से सत्य होने पर हमारा ईमान (विश्वास) है, हम तो इससे पूर्व ही मुसलमान हैं।[1]

أُولَٰئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُم مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٥٤﴾

(५४) यह अपने किये हुए धैर्य के बदले में दो-दो गुने बदले प्रदान किये जायेंगे।[2] यह पुण्य से पाप को दूर कर देते हैं[3] तथा हमने जो इन्हें दे रखा है उसमें से देते रहते हैं।

وَإِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ وَقَالُوا لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ

(५५) तथा जब व्यर्थ बात[4] कान में पड़ती है तो उससे अलग हो लेते हैं तथा कहते हैं कि हमारे कर्म हमारे लिए तथा तुम्हारे कर्म

---

[1]यह उसी वास्तविकता की ओर संकेत है जिसे क़ुरआन करीम में विभिन्न स्थानों पर वर्णित किया गया है कि प्रत्येक काल में अल्लाह के पैग़म्बरों ने जिस धर्म का प्रचार किया है, वह इस्लाम ही था तथा उन नबियों के आमन्त्रण पर ईमान लाने वाले मुसलमान ही कहलाते थे। यहूदी अथवा इसाई आदि के पारिभाषिक शब्द लोगों के अपने गढ़े हुए हैं जिनका अविष्कार बाद में हुआ। इसी आधार पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने वाले अहले किताब (यहूद अथवा इसाईयों) ने कहा कि हम तो पहले से ही मुसलमान चले आ रहे हैं अर्थात पूर्व के नबियों के अनुयायी तथा उन पर ईमान रखने वाले हैं।

[2]धैर्य से तात्पर्य हर प्रकार की परस्थितियों में नबियों तथा अल्लाह की किताब पर ईमान तथा उस पर दृढ़ता से स्थिर रहना है। प्रथम किताब आयी तो उस पर, उसके पश्चात दूसरी पर ईमान रखा। पहले नबी पर ईमान लाये, उसके पश्चात दूसरा नबी आ गया तो उस पर ईमान लाये। उनके लिए दुगुना बदला है हदीस में भी उनके इस महत्व का वर्णन किया गया है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "तीन व्यक्तियों के लिए दोगुना बदला है, उनमें से एक वह अहले किताब है जो अपने नबी पर ईमान रखता था तथा फिर मुझ पर ईमान ले आया -----)" (सहीह बुख़ारी किताबुल इल्म, मुस्लिम किताबुल ईमान, बाब वजूबिल ईमान बेरिसालते नबीयेना)

[3]अर्थात अपकार का उत्तर अपकार से नहीं देते अपितु क्षमा कर देते तथा अनदेखी से काम लेते हैं।

[4]यहाँ लग्व से तात्पर्य वह अपशब्द तथा धर्म के साथ उपहास है जो मूर्तिपूजक करते थे।

The Ummah Technology Mission

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۖ لَا نَبْتَغِي الْجٰهِلِيْنَ ﴿٥٥﴾

तुम्हारे लिए, तुम पर सलाम हो,[1] हम अशिक्षितों से (उलझना) नहीं चाहते।

اِنَّكَ لَا تَهْدِيْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾

(५६) आप जिसे चाहें मार्गदर्शन नहीं दे सकते, बल्कि अल्लाह तआला ही जिसे चाहे मार्गदर्शन प्रदान करता है। मार्गदर्शन प्राप्त लोगों से वही भली-भाँति परिचित है।[2]

وَقَالُوْٓا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ اَرْضِنَا ۭ اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰٓى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ

(५७) तथा कहने लगे कि यदि हम आपके साथ होकर मार्गदर्शन के अनुपालक बन जायें तो हम अपने देश से उचक लिये जायें,[3] क्या हमने उन्हें शान्त एवं सुरक्षित एवं शान्ति

---

[1]यह सलाम अभिवादन वाला सलाम नहीं है बल्कि पीछा छुड़ाने वाला सलाम है अर्थात हम तुम जैसे अशिक्षित असभ्य व्यक्तियों से तर्क-वितर्क वार्तालाप करने को तैयार ही नहीं। जैसे हिन्दी में कहते हैं, "अशिक्षितों को दूर से सलाम", स्पष्ट है सलाम से तात्पर्य सम्बोधन को टालना ही है।

[2]यह आयत उस समय अवतरित हुई जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शुभचिन्तक तथा दुख के साथी चाचा अबू तालिब की मृत्यु का समय आ गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्रयत्न किया कि चाचा अपने मुख से एक बार لا إله إلا الله कह दें ताकि क़ियामत के दिन मैं अल्लाह से उनकी क्षमा के लिए सिफ़ारिश कर सकूँ। परन्तु वहाँ कुरैश के अन्य प्रमुखों की उपस्थिति के कारण अबू तालिब ईमान स्वीकार करने से वंचित रहे तथा कुफ़्र की अवस्था में उनका अन्त हो गया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस बात का अत्यन्त दुख था। उस समय अल्लाह तआला ने यह आयत अवतरित करके नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर स्पष्ट किया कि आपका कार्य केवल तर्क करना तथा संदेश पहुँचाना एवं मार्गदर्शन है। परन्तु प्रकाश के मार्ग पर चला देना, यह हमारा कार्य है। मार्गदर्शन उसी को प्राप्त होगा जिसे हम सन्मार्ग प्रदान करना चाहें, न कि वह जिसे आप मार्ग पर देखना प्रिय समझें। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः अल-क़सस, मुस्लिम किताबुल ईमान, बाब अव्वलुल ईमान क़ौलो ला इलाह इल्लल्लाह)

[3]अर्थात हम जहाँ हैं वहाँ हमें रहने न दिया जायेगा तथा हमें दुखों से अथवा विरोधियों से लड़ाई का सामना करना पड़ेगा। यह कुछ काफ़िरों ने ईमान न लाने का कारण प्रस्तुत किया, अल्लाह ने उत्तर दिया।

The Ummah Technology Mission

كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّن لَّدُنَّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٧﴾

सम्मान वाले 'हरम' में स्थान नहीं दिया, [1] जहाँ हर प्रकार के फल खिंचे चले आते हैं जो हमारे पास से जीविका के रूप में हैं ? [2] परन्तु उनमें से अधिकतर कुछ नहीं जानते।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍۭ بَطِرَتْ مَعِيشَتَهَا ۖ فَتِلْكَ مَسَٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَن مِّنۢ بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا ۖ وَكُنَّا نَحْنُ الْوَٰرِثِينَ ﴿٥٨﴾

(५८) तथा हमने बहुत सी वे बस्तियाँ ध्वस्त कर दीं जो अपनी सुख-सुविधा में इतराने लगी थीं। यह हैं उनके निवास स्थान जो उनके पश्चात बहुत ही कम आबाद किये गये।[3] तथा हम ही हैं अन्ततः सब कुछ के उत्तराधिकारी।[4]

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِىٓ أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُوا عَلَيْهِمْ ءَايَٰتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِى

(५९) तथा तेरा प्रभु किसी एक बस्ती को भी उस समय तक ध्वस्त नहीं करता, जब तक कि उनकी किसी बड़ी बस्ती में अपना कोई पैग़म्बर न भेज दे जो उन्हें हमारी आयतें

---

[1]अर्थात उनका यह तर्क अनुचित है, इसलिए कि अल्लाह तआला ने उस नगर को जिसमें रहते हैं, शान्ति वाला बनाया है। जब यह नगर उनके कुफ़्र तथा शिर्क की अवस्था में शान्ति का स्थान था तो क्या इस्लाम धर्म धारण कर लेने के पश्चात उनके लिए शान्ति स्थान नहीं रहेगा ?

[2]यह मक्का नगर की वह विशेषता है जिसका प्रत्येक वर्ष लाखों हाजी तथा उमरह करने वाले प्रत्यक्ष दर्शन करते हैं कि मक्का नगर में पैदावार न होने के उपरान्त अत्यधिक मात्रा में हर प्रकार के फल बल्कि दुनिया भर के सामान सुलभ होते हैं।

[3]यह मक्कावासियों को डराया जा रहा है कि तुम देखते नहीं कि अल्लाह के उपकार से लाभान्वित होकर अल्लाह की कृतघ्नता तथा अवहेलना करने वालों का परिणाम क्या हुआ ? आज उनकी अधिकतर आबादी खण्डहर बनी पड़ी है अथवा केवल इतिहास के पृष्ठों पर नाम रह गया है। तथा अब आते-जाते यात्री ही कुछ क्षण के लिए विश्राम कर लें तो कर लें, उनके दुर्भाग्य तथा अशुभ होने के कारण कोई भी उनमें स्थाई रूप से रहना प्रिय नहीं समझता।

[4]अर्थात उनमें से तो कोई भी शेष नहीं रहा जो उनके मकानों, धन तथा धरती का उत्तराधिकारी होता।

The Ummah Technology Mission

الْقُرٰٓى اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ﴿٥٩﴾

पढ़कर सुना दे,[1] तथा हम बस्तियों को उस समय ध्वस्त करते हैं जब कि वहाँ के रहने वाले अत्याचार एवं क्रूरता पर कटीबद्ध हो जायें।[2]

وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٠﴾

(६०) तथा तुम्हें जो कुछ दिया गया है वह केवल सांसारिक जीवन का सामान है तथा उसकी शोभा है, हाँ, अल्लाह के पास जो है वह सर्वश्रेष्ठ तथा स्थाई है। क्या तुम नहीं समझते ?[3]

اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٦١﴾

(६१) क्या वह व्यक्ति जिसे हमने पुण्य वचन दिया है जिसको वह निश्चित रूप से पाने वाला है, उस व्यक्ति के समान हो सकता है जिसे हमने सांसारिक जीवन के कुछ सुख यूँ ही प्रदान कर दिये, पुनः अंत में वह क़ियामत के दिन (पकड़ा बाँधा) उपस्थित किया जायेगा ?[4]

---

[1]अर्थात तर्कों को पूर्ण किये बिना किसी को नाश नहीं करता। اُمِّهَا (बड़ी बस्ती) के शब्द से यह भी ज्ञात होता है कि प्रत्येक छोटे-बड़े क्षेत्र में नबी नहीं आये, बल्कि केन्द्रीय स्थानों पर नबी आते रहे तथा छोटे क्षेत्र उनके अधीन आ जाते थे।

[2]अर्थात नबी भेजने के पश्चात वे बस्ती वाले ईमान न लाते तथा कुफ़्र एवं शिर्क पर दृढ़ रहते तो फिर उन्हें ध्वंस कर दिया जाता। यही विषय सूरः हूद-११७ में भी वर्णन किया गया है।

[3]अर्थात क्या इस वास्तविकता से भी तुम अनभिज्ञ हो कि यह धरती तथा इसकी शोभा अस्थाई भी है तथा तुच्छ भी, जबकि अल्लाह तआला ने ईमानवालों के लिए अपने पास जो उपहार एवं सुख-सुविधायें तैयार कर रखी हैं, वे स्थाई भी हैं तथा उत्तम भी। हदीस में हैं, अल्लाह की सौगन्ध, आख़िरत (परलोक) की अपेक्षा ऐसी है जैसे तुम में से कोई व्यक्ति अपनी उँगली समुद्र में डूबा कर निकाल ले, फिर देखे कि समुद्र की तुलना में उसकी उँगली में कितना पानी होगा। (सहीह मुस्लिम किताबुल जन्नते, बाबु फ़नाईद दुनिया व बयानिल हश्र)

[4]अर्थात दण्ड तथा यातना का अधिकारी होगा। तात्पर्य यह है कि ईमानवाले अल्लाह के वचन के अनुसार वरदानों से लाभान्वित तथा अवज्ञाकारी यातनाग्रस्त होंगे। क्या ये दोनों समान हो सकते हैं ?

The Ummah Technology Mission

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَاءِيَ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٦٢﴾

(६२) तथा जिस दिन अल्लाह (तआला) उन्हें पुकार कर कहेगा कि तुम जिन्हें अपनी समझ से मेरा साझीदार ठहरा रहे थे कहाँ हैं ?[1]

قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَغْوَيْنَا ۚ أَغْوَيْنَاهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۖ تَبَرَّأْنَا إِلَيْكَ ۖ مَا كَانُوا إِيَّانَا يَعْبُدُونَ ﴿٦٣﴾

(६३) जिन पर बात आ चुकी वे उत्तर देंगे [2] कि हे हमारे प्रभु ! यही वे हैं जिन्हें हमने बहका रखा था,[3] हमने उन्हें इसी प्रकार भटकाया जिस प्रकार हम भटके थे,[4] हम तेरी सेवा में अपने आपको इनसे अलग करते हैं,[5] यह हमारी पूजा नहीं करते थे।[6]

---

[1]अर्थात वे देवी-देवता (मूर्तियाँ) अथवा व्यक्ति, जिनको तुम दुनिया में मेरी पूजा में सम्मिलित करते थे, उन्हें सहायता के लिए पुकारते थे तथा उनके नाम के भोग-प्रसाद चढ़ाते थे, आज कहाँ हैं ? क्या वे तुम्हारी सहायता कर सकते तथा मेरी यातना से बचा सकते हैं ? यह निन्दित करने तथा फटकारने के लिए अल्लाह तआला उनसे कहेगा, वरन् वहाँ किस की शक्ति होगी कि अल्लाह के समक्ष मुख खोले ? यही विषय अल्लाह तआला ने सूरः *अल-अनआम* आयत ९४ तथा अन्य बहुत से स्थानों पर वर्णन किया है।

[2]अर्थात जो अल्लाह की यातना के अधिकारी घोषित हो चुके हैं, जैसे बड़े-बड़े शैतान (राक्षस) तथा कुफ़्र और शिर्क के प्रचारक, वह कहेंगे।

[3]यह उन अशिक्षित जनसमूह की ओर संकेत है जिनको कुफ़्र तथा पथभ्रष्टता के प्रचारकों तथा शैतानों ने भटका दिया था।

[4]अर्थात हम तो भटके हुए थे ही तथा इनको भी अपने साथ भटकाये रखा था। अर्थ यह है कि हमने उन पर कोई दबाव नहीं डाला था, बस हमारे तनिक संकेत पर हमारी तरह ही उन्होंने भी पथभ्रष्टता का मार्ग अपना लिया।

[5]अर्थात हम उनसे दुखी तथा अलग हैं, हमारा उनसे कोई सम्बन्ध नहीं है। अर्थ यह है कि सेवक तथा स्वामी, गुरू तथा शिष्य एक-दूसरे के शत्रु होंगे।

[6]बल्कि वास्तव में वे अपनी इच्छाओं का अनुकरण करते थे। अर्थात वे देवता जिन की लोग दुनिया में पूजा करते थे, इस बात से ही इंकार कर देंगे कि लोग उनकी पूजा करते थे। इस विषय को क़ुरआन करीम में विभिन्न स्थानों पर वर्णित किया गया है, जैसे सूरः *अल-अनआम-४९*, सूरः *मरियम-८१* तथा ८२, सूरः *अल-अहक़ाफ़-५* तथा ६ *अल-अनकबूत-२५*, *अल-बक़रः-१६६* तथा १६७ आदि इसी प्रकार की आयतें।

The Ummah Technology Mission

وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ ﴿٦٤﴾

(६४) तथा कहा जायेगा कि अपने साझीदारों को बुलाओ[1] तो वे बुलायेंगे परन्तु वे उन्हें उत्तर तक नहीं देंगे तथा सब यातना देख लेंगे,[2] काश ये लोग मार्गदर्शन पा लेते ![3]

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ﴿٦٥﴾

(६५) तथा उस दिन उन्हें बुलाकर पूछेगा कि तुमने नबियों को क्या उत्तर दिया था ?[4]

فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنبَاءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿٦٦﴾

(६६) फिर तो उस दिन उनके सारे समाचार अंधे हो जायेंगे तथा एक-दूसरे से प्रश्न तक न करेंगे ![5]

---

[1]अर्थात उनसे सहायता माँगो जिस प्रकार दुनिया में माँगते थे। क्या वे तुम्हारी सहायता करते हैं ? तो वे पुकारेंगे। परन्तु वहाँ किस में साहस होगा कि जो यह कहे कि हाँ हम तुम्हारी सहायता करते हैं ?

[2]अर्थात विश्वास कर लेंगे कि हम सब नरक का ईंधन बनने वाले हैं।

[3]अर्थात यातना देख लेने के पश्चात कामना करेंगे कि काश दुनिया में प्रकाश का मार्ग अपना लेते तो आज वे इस परिणाम से बच जाते। सूरः *अल-कहफ़*-५२ तथा ५३ में भी इस विषय का वर्णन है।

[4]इससे पूर्व की आयतों (मंत्रों) में एकेश्वरवाद से सम्बन्धित प्रश्न था। यह दूसरी घोषणा रिसालत के विषय में है अर्थात तुम्हारी ओर हमने रसूल भेजे थे, तुमने उनके साथ क्या व्यवहार किया, उनका आमन्त्रण स्वीकार किया था ? जिस प्रकार क़ब्र में प्रश्न होता है कि तेरा पैग़म्बर कौन है तथा तेरा धर्म कौन सा है ? ईमान वाले तो ठीक उत्तर दे देते हैं परन्तु काफ़िर कहता है هَاه هَاه لا أدري (हाय ! मुझे तो कुछ ज्ञात नहीं)। उसी प्रकार क़ियामत के दिन भी उन्हें इस प्रश्न का उत्तर समझ में न आयेगा। इसीलिए आगे फ़रमाया उन पर सभी सूचनायें अंधी हो जायेंगी अर्थात कोई तर्क उनकी समझ में न आयेगा जिसे वे प्रस्तुत कर सकें। यहाँ तर्कों को सूचनाओं से तुलना करके इस ओर संकेत किया गया है कि उनके झूठे विश्वास के लिए वास्तव में उनके पास कोई तर्क है ही नहीं, केवल कथायें तथा कहावतें हैं। जैसे आज भी क़ब्र पूजकों के पास मनगढ़न्त चमत्कारों की कथाओं के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।

[5]क्योंकि उन्हे विश्वास हो चुका होगा कि सब नरक में प्रवेश पाने वाले हैं।

The Ummah Technology Mission

فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ﴿٦٧﴾

(६७) हाँ, जो व्यक्ति क्षमा माँग कर ईमान ले आये तथा पुण्य के कार्य करे विश्वास है कि वह मोक्ष प्राप्त करने वालों में से हो जायेगा।

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٨﴾

(६८) तथा आप का प्रभु जो चाहता है पैदा करता है तथा जिसे चाहता है, उनमें से किसी को कोई अधिकार नहीं,[1] अल्लाह के लिए ही पवित्रता है, वह उच्च है प्रत्येक उस वस्तु से जिसे लोग साझा करते हैं।

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٦٩﴾

(६९) तथा आपका प्रभु सब कुछ जानता है जो कुछ वे अपने सीने में छिपाते हैं तथा जो कुछ व्यक्त करते हैं।

وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولَىٰ وَالْآخِرَةِ ۖ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٧٠﴾

(७०) तथा वही अल्लाह है उसके अतिरिक्त पूजने योग्य कोई अन्य नहीं, लोक तथा परलोक में उसी की प्रशंसा है। उसी के लिए शासन है तथा उसी की ओर तुम सब लौटाये जाओगे।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِضِيَاءٍ ۖ أَفَلَا تَسْمَعُونَ ﴿٧١﴾

(७१) कह दीजिए कि देखो तो सही, यदि अल्लाह तआला रात ही रात क़ियामत तक निरन्तर कर दे तो सिवाय अल्लाह के कौन देवता है जो तुम्हारे पास दिन का प्रकाश लाये ? क्या तुम सुनते नहीं हो ?

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ

(७२) पूछिये कि यह भी बता दो कि यदि अल्लाह (तआला) तुम पर निरन्तर क़ियामत तक दिन ही दिन रखे तो भी सिवाय अल्लाह (तआला) के कोई देवता है जो तुम्हारे पास रात्रि लाये,

[1]अर्थात अल्लाह तआला सर्वशक्तिमान है। उसके समक्ष किसी को मूलतः कोई अधिकार ही नहीं, तो फिर कोई अन्य सर्वशक्तिमान कैसे हो सकता है।

The Ummah Technology Mission

يَأْتِيكُم بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٧٢﴾

जिसमें तुम विश्राम कर सको, क्या तुम देख नहीं रहे हो ?

وَمِن رَّحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾

(७३) तथा उसी ने तो तुम्हारे लिए अपनी कृपा एवं दया से दिन-रात निर्धारित कर दिये हैं कि रात्रि को तुम विश्राम कर सको तथा दिन में उसकी (भेजी हुई) जीविका की खोज करो।[1] यह इसलिए कि तुम कृतज्ञता व्यक्त करो।[2]

---

[1]दिन तथा रात, यह दोनों अल्लाह के बहुत बड़े वरदान हैं। रात्रि को अंधकारमय बनाकर लोगों के लिए विश्राम का समय प्रदान किया। इस अंधकार के कारण सम्पूर्ण सृष्टि सोने तथा विश्राम करने के लिए बाध्य है। वरना, यदि विश्राम करने तथा सोने के अपने-अपने समय होते तो कोई भी पूर्णरूप से सोने का अवसर न पाता, जबकि व्यवसाय तथा व्यवपार को सुचारू रूप से चलाने के लिए निद्रा का पूर्ण होना अत्यन्त आवश्यक है। इसके बिना स्फूर्ति प्राप्त नहीं होती। यदि कुछ लोग सो रहे होते तथा कुछ लोग व्यवसाय में व्यस्त होते तो सोने वालों की निद्रा में व्यवधान पड़ता, इसके अतिरिक्त लोग एक-दूसरे के सहयोग से वंचित रहते, जबकि दुनिया का प्रबन्ध एक-दूसरे की सहायता एवं सहयोग पर आधारित है, इसलिए अल्लाह ने रात को अंधकार प्रदान किया। इसी प्रकार दिन को प्रकाशमय बनाया ताकि प्रकाश के कारण मनुष्य अपने व्यवसाय तथा व्यवपार सुचारू रूप से कर सके। दिन का यह प्रकाश न होता तो मनुष्य को जिन कठिनाईयों का सामना करना पड़ता उसे प्रत्येक व्यक्ति सरलता से समझता तथा उसका ज्ञान रखता है।

अल्लाह तआला ने अपने इन वरदानों के माध्यम से अपने एक (अकेले) होने को प्रमाणित किया है कि बताओ यदि अल्लाह तआला दिन तथा रात्रि की इस व्यवस्था को समाप्त करके सदैव के लिए तुम पर रात्रि थोप दे तो क्या अल्लाह के अतिरिक्त कोई देवता ऐसा है जो तुम्हें दिन का प्रकाश प्रदान कर दे ? अथवा यदि वह सदैव के लिए दिन ही दिन रखे तो क्या तुम्हें रात्रि का अंधकार उपलब्ध करा सकता है जिसमें तुम विश्राम कर सको ? नहीं, कदापि नहीं। यह केवल अल्लाह की अत्यन्त दया एवं कृपा है कि उसने दिन और रात्रि का ऐसा नियन्त्रित नियम बनाया है कि रात्रि आती है तो दिन का प्रकाश समाप्त हो जाता है तथा सम्पूर्ण सृष्टि विश्राम कर लेती है तथा रात्रि जाती है तो दिन के प्रकाश से समस्त संसार की सभी वस्तुयें स्पष्ट हो जाती हैं तथा मनुष्य परिश्रम तथा कमाई द्वारा अल्लाह की कृपा (जीविका) की खोज करता है।

[2]अर्थात अल्लाह की प्रशंसा एवं महिमा का भी वर्णन करो (यह मौखिक कृतज्ञता है) तथा अल्लाह के प्रदान किये हुए धन, शक्ति एवं योग्यता को उसके आदेशों एवं निर्देशों के अनुसार प्रयोग करो (यह व्यवहारिक कृतज्ञता है)

The Imran Technology Mission

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَاءِيَ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٧٤﴾

(७४) तथा जिस दिन उन्हें पुकार कर अल्लाह (तआला) कहेगा कि जिन्हें तुम मेरा साझीदार समझते थे वे कहाँ हैं ?

وَنَزَعْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٧٥﴾

(७५) तथा हम प्रत्येक सम्प्रदाय से एक गवाह अलग कर लेंगे[1] तथा कह देंगे कि अपने तर्क प्रस्तुत करो।[2] तो उस समय जान लेंगे कि सत्य अल्लाह की ओर है[3] तथा जो कुछ झूठ वे गढ़ रहे थे सब उनके पास से खो जायेंगे।[4]

إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِن قَوْمِ مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ ۖ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوءُ بِالْعُصْبَةِ أُولِي الْقُوَّةِ

(७६) क़ारून था तो मूसा के समुदाय से परन्तु उन पर अत्याचार करने लगा था,[5] हमने उसे इतना अधिक कोष दे रखा था कि कई-कई शक्तिशाली लोग कठिनाई से उसकी चाभियाँ उठा सकते थे।[6] एक बार उसके समुदाय ने

---

[1]इस गवाह से तात्पर्य पैग़म्बर हैं। अर्थात प्रत्येक सम्प्रदाय के पैग़म्बर को उस सम्प्रदाय से अलग खड़ा कर देंगे।

[2]अर्थात दुनिया में मेरे पैग़म्बरों के एकेश्वरवाद के आमन्त्रण के उपरान्त तुम जो मेरे साझीदार बनाते थे तथा मेरे साथ उनकी भी पूजा करते थे, उसका तर्क प्रस्तुत करो।

[3]अर्थात वे परेशान एवं स्तब्ध खड़े होंगे, कोई उत्तर तथा तर्क उन्हें नहीं सूझेगा।

[4]अर्थात उनके काम नहीं आयेगा।

[5]अपने समुदाय इस्राईल की सन्तान पर उसका अत्याचार यह था कि अपने धन-सम्पत्ति के बाहुल्य के कारण उन की अवहेलना (शोषण) करता था। कुछ कहते हैं कि फ़िरऔन की ओर से ये अपने समुदाय इस्राईल की सन्तान पर कर्मचारी नियुक्त था तथा उन पर अत्याचार करता था।

[6]تَنُوءُ का अर्थ है تَمِيلُ (झुकना), अर्थात जिस प्रकार कोई व्यक्ति भारी बोझ उठाता है तो बोझ के कारण इधर-उधर लड़खड़ाता है, उसकी चाभियों का बोझ इतना अधिक था कि एक समूह भी उसे उठाते समय कठिनाई तथा कष्ट का अनुभव करता था।

The Ummah Technology Mission

إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ﴿٧٦﴾

उससे कहा कि इतरा मत,[1] अल्लाह (तआला) इतराने वालों से प्रेम नहीं करता।[2]

وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٧٧﴾

(७७) तथा जो कुछ अल्लाह (तआला) ने तुझे प्रदान कर रखा है उसमें से आख़िरत के घर की खोज भी रख[3] तथा अपने साँसारिक भाग को भी न भूल[4] तथा जैसाकि अल्लाह ने तेरे ऊपर उपकार किया है तू भी सद्व्यवहार कर[5] तथा देश में उपद्रव की इच्छा न कर,[6] विश्वास कर कि अल्लाह तआला उपद्रवियों को प्रिय नही रखता है।

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ

(७८) क़ारून ने कहा कि यह सब कुछ मुझे मेरे अपने ज्ञान के कारण दिया गया है,[7] क्या

---

[1]अर्थात धन-सम्पति पर गर्व एवं घमण्ड मत कर कुछ ने कंजूसी अर्थ लगाया है, अर्थात कंजूसी न कर।

[2]अर्थात गर्व तथा अहंकार करने वालों को अथवा कंजूसी करने वालों को प्रिय नहीं समझता।

[3]अर्थात अपने धन को ऐसे स्थानों तथा मार्गों पर व्यय करो जो अल्लाह तआला को प्रिय हों। इस प्रकार आख़िरत बनेगी तथा वहाँ उसका तुझे प्रतिकार एवं प्रतिफल मिलेगा।

[4]अर्थात दुनिया के उचित वस्तुओं में भी संतुलन के साथ व्यय कर। दुनिया की उचित वस्तुयें क्या हैं ? खाद्य, वस्त्र, घर एवं विवाह आदि। अर्थ यह है कि जिस प्रकार तुझ पर तेरे प्रभु का अधिकार है उसी प्रकार तेरे अपने प्राण, पत्नी, बच्चों एवं अतिथियों आदि का भी अधिकार है। प्रत्येक अधिकारी को उसका अधिकार दे।

[5]अल्लाह ने तुझे धन प्रदान करके तुझ पर उपकार किया है, तू जीवों पर व्यय करके उनपर उपकार कर।

[6]अर्थात तेरा उद्देश्य धरती पर आतंक (उपद्रव) फैलाना न हो। उसी प्रकार जीवों के साथ सदव्यवहार की जगह दुर्व्यवहार न कर, न पाप कर कि इन सभी बातों से आतंक फैलता है।

[7]इन शिक्षाओं के उत्तर में उसने यह कहा। उसका प्रयोजन यह है कि मुझे धनार्जन तथा व्यापार की जो दक्षता है, यह धन तो उसका परिणाम एवं फल है, अल्लाह की कृपा तथा दया का इससे क्या सम्बन्ध है ? दूसरा अनुवाद यह किया गया है कि अल्लाह ने

The Ummah Technology Mission

عِنْدِيْ ؕ اَوَلَمْ يَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ
قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ
مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً
وَّاَكْثَرُ جَمْعًا ؕ وَلَا يُسْـَٔلُ
عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٧٨﴾

अब तक उसे यह नहीं ज्ञात हुआ कि अल्लाह (तआला) ने उससे पूर्व बहुत सी बस्ती वालों को विध्वस्त कर दिया,जो उससे अत्यधिक शक्तिशाली तथा अत्यधिक धनवान थे,[1] तथा पापियों से उनके पापों की पूछताछ ऐसे समय नहीं की जाती।[2]

मुझे यह धन प्रदान किया है तो उसने अपने ज्ञान के कारण दिया है कि मैं योग्य हूँ तथा मेरे लिए उसने यह पसन्द किया है। जैसे अन्य स्थान पर मनुष्यों का एक अन्य कथन अल्लाह तआला ने वर्णन किया है : "जब मनुष्य को दुख पहुँचता है तो हमें पुकारता है, फिर जब हम उसे अपनी अनुकम्पा प्रदान कर देते हैं तो कहता है,"

﴿إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ﴾

"मुझे यह वरदान इसलिए प्राप्त हुआ कि अल्लाह के ज्ञान में मैं इसके योग्य था।" (सूरः *अल-क़सस-७८*)

एक अन्य स्थान पर फ़रमाया : "जब हम मनुष्यों पर दुख के पश्चात अपनी दया करते हैं तो कहता है।"

﴿هذا لي﴾ أي هذا أستحقه

"यह तो मेरा अधिकार है।" (सूरः *हा॰मीम॰अस्सजदः-५०*) (इब्ने कसीर)

कुछ कहते हैं कि क़ारून को कीमया (स्वर्ण बनाने) का ज्ञान आता था, यही तात्पर्य है, इसी ज्ञान के आधार पर उसने इतना धन कमाया था। परन्तु इमाम इब्ने कसीर इस ज्ञान को सर्वथा झूठ तथा धोखा कहते हैं। कोई व्यक्ति इस बात की शक्ति नहीं रखता कि वह किसी वस्तु की वास्तविकता को परिवर्तित कर दे। इसलिए क़ारून के लिए भी यह सम्भव नहीं था कि वह दूसरी धातुओं को परिवर्तित करके स्वर्ण बना लिया करता तथा इस प्रकार धन का ढेर एकत्रित कर लेता।

[1]अर्थात बल तथा धन की अधिकता यह श्रेष्ठता का कारण नहीं। यदि ऐसा होता तो पूर्वकालीन समुदाय नष्ट न होते। इसलिए क़ारून का अपने धन पर घमण्ड करने तथा उसे अपनी श्रेष्ठता का कारण बताने का कोई औचित्य नहीं।

[2]अर्थात जब पाप इतनी अधिक संख्या में हो कि उनके कारण वह यातना का पात्र घोषित हो जाये तो उनसे पूछताछ नहीं की जाती बस सहसा उनको पकड़ लिया जाता है।

The Ummah Technology Mission

فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ فِيْ زِيْنَتِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَاۤ اُوْتِيَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ۝٧٩

(७९) अत: (क़ारून) पूरी शोभा के साथ [1] अपने समुदाय के जमघट में निकला, [2] तो सांसारिक जीवन के मतवालों ने कहा कि काश हमें किसी प्रकार वह मिल जाता जो क़ारून को दिया गया है, यह तो बड़ा ही सौभाग्यशाली है।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ وَلَا يُلَقّٰىهَاۤ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ۝٨٠

(८०) तथा ज्ञानी लोग उन्हें समझाने लगे कि खेद की बात है, उत्तम वस्तु तो वह है जो पुण्य के रूप में उन्हें मिलेगी जो अल्लाह पर ईमान लायें तथा पुण्य के कर्म करें।[3] यह बात उन्ही[4] के दिल में डाली जाती है जो धैर्यवान तथा सहनशील हों।

فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ ۫ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ

(८१) (अन्तत:) हमने उसे उसके महल सहित धरती में धंसा दिया,[5] तथा अल्लाह के अतिरिक्त

---

[1]अर्थात शोभा एवं श्रृंगार तथा सेवकों एवं कर्मचारियों के संग।

[2]ये कहने वाले कौन थे? कुछ के निकट ईमानवाले ही थे जो उसके धन तथा अलंकार के प्रदर्शन से प्रभावित हो गये थे तथा कुछ के निकट काफ़िर थे।

[3]अर्थात जिनके पास धर्म का ज्ञान था तथा दुनिया एवं उसके प्रदर्शन की मूल वास्तविकता से परिचित थे, उन्होंने कहा कि यह क्या है, कुछ भी नहीं। अल्लाह ने ईमानवालों तथा सत्कर्मियों के लिए जो बदला तथा पुण्य रखा है, वह इससे कहीं अधिक उत्तम है। जैसे हदीस क़ुदसी में है, अल्लाह तआला फ़रमाता है : "मैंने अपने पुण्यकर्मी भक्तों के लिए ऐसी-ऐसी वस्तुयें तैयार कर रखी हैं जिन्हें किसी आँख ने नहीं देखा, किसी कान ने नहीं सुना तथा न किसी के विचार में आया।" (अल-बुख़ारी किताबुत तौहीद, मुस्लिम किताबुल ईमान, बाब अदना अहलिल जन्न: मंजिलतन)

[4]अर्थात يُلَقّٰىهَا में ها सर्वनाम कथन की ओर फिरता है तथा यह कथन अल्लाह का है। यदि उसे ज्ञानियों ही के कथनापूरक मान लिया जाये तो ها का संकेत स्वर्ग की ओर होगा अर्थात स्वर्ग के अधिकारी वे धैर्यवान ही होंगे जो सांसारिक मायामोह से अलग तथा आख़िरत के जीवन में रूचि रखने वाले होंगे।

[5]अर्थात क़ारून को उसके घमण्ड के कारण उसके महल तथा कोष सहित धरती में धंसा दिया। हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "एक व्यक्ति

The Ummah Technology Mission

يَنْصُرُونَهُۥ مِن دُونِ اللَّهِ ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنتَصِرِينَ ﴿٨١﴾

कोई गिरोह उसकी सहायता के लिए तैयार नहीं हुआ न वह स्वयं अपने को बचाने वालो में से हो सका।

وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَنَّوْا مَكَانَهُۥ بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ وَيْكَأَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِۦ وَيَقْدِرُ ۖ لَوْلَا أَن مَّنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ۖ وَيْكَأَنَّهُۥ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٢﴾

(८२) तथा जो लोग कल तक उसके पद तक पहुँचने की आशा कर रहे थे, वे आज कहने लगे कि क्या तुम नहीं देखते[1] कि अल्लाह (तआला) ही अपने भक्तों में से जिसके लिए चाहे जीविका अधिक कर देता है तथा कम भी, यदि अल्लाह (तआला) हम पर उपकार न करता तो हमें भी धंसा देता, [2] क्या देखते नहीं हो कि कृतघ्नों को कभी सफलता नहीं प्राप्त होती।[3]

تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا

(८३) परलोक का यह (रमणीय) घर हम उन्हीं के लिए निर्धारित कर देते हैं जो धरती पर अंहकार एवं गर्व नहीं करते, न उपद्रव

अपनी लुँगी (धोती) धरती पर लटकाये जा रहा था (अल्लाह को उसका यह अहंकार पसन्द नहीं आया) तथा उसे धरती में धँसा दिया गया। वह क़ियामत तक धरती में धँसता चला जायेगा।" (अल-बुख़ारी किताबुल लिबास)

[1] وَيْكَأَنَّ से तात्पर्य वह सांसारिक मान-मर्यादा है जो संसार में किसी को सामयिक रूप से मिलता है, जैसे क़ारून को मिला था। अर्थ यह है कि क़ारून का सा धन तथा वैभव के अभिलाषियों ने जब क़ारून का शिक्षाप्रद परिणाम देख लिया तो कहाकि धन-सम्पत्ति इस बात का प्रमाण नहीं है कि अल्लाह तआला उस धनवान से प्रसन्न भी है। क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह तआला किसी को धन अधिक दे देता है तथा किसी को कम। इसका सम्बन्ध उसके इच्छा, विवेक तथा नीति से है, जिसे उसके अतिरिक्त कोई नहीं जानता। धन की बाहुल्यता उस की प्रसन्नता का तथा धन की कमी उसकी अप्रसन्नता का प्रमाण नहीं है, न यह श्रेष्ठता का माप ही है।

[2] अर्थात हम भी उस दुष्परिणाम को पहुँचते जिस को क़ारून पहुँचा।

[3] अर्थात क़ारून ने धन पाकर कृतज्ञता के बजाय कृतघ्नता तथा अवज्ञा का मार्ग अपनाया तो देख लो उसका दुष्परिणाम भी कैसा हुआ ?

The Ummah Technology Mission

فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا ۚ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٨٣﴾

की इच्छा रखते हैं। और परहेज़गारों (संयमियों) के लिए अत्यन्त उत्तम प्रतिफल है।[1]

مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِّنْهَا ۖ وَمَن جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾

(८४) जो व्यक्ति पुण्य लायेगा उसे उससे उत्तम मिलेगा[2] तथा जो बुराई लेकर आयेगा तो ऐसे कुकर्म करने वालों को उनके उसी कर्म का बदला प्रदान किया जायेगा जो वे करते थे।[3]

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ ۚ قُل رَّبِّي

(८५) जिस (अल्लाह) ने आप पर क़ुरआन अवतरित किया है[4] वह आप को पुन: प्रथम स्थान पर लाने वाला है।[5] कह दीजिए कि

---

[1] عُلُوّ का अर्थ है अत्याचार तथा अति, लोगों से अपने को श्रेष्ठ तथा उच्च समझना तथा कहलवाना, गर्व, अहंकार तथा घमण्ड करना तथा فساد का अर्थ है अनर्थ लोगों का माल हथियाना अथवा अवज्ञा करना कि इन दो बातों से धरती में उपद्रव फैलता है। फ़रमाया कि अल्लाह से भय खाने वालों के कर्म तथा आचरण इन त्रुटियों एवं बुराईयों से शुद्ध होते हैं तथा अभिमान के बजाय उनके अन्दर विनम्रता, अवहेलना के बजाय आज्ञाकारिता होती है तथा आख़िरत का घर (स्वर्ग) तथा सुपरिणाम उन्हीं के पक्ष में आयेगा।

[2] अर्थात कम से कम प्रत्येक भलाई का बदला दस गुना अवश्य मिलेगा, तथा जिसके लिए अल्लाह चाहेगा इससे भी अधिक और अधिक प्रदान करेगा।

[3] अर्थात भलाई का बदला तो बढ़ा-चढ़ाकर दिया जायेगा परन्तु बुराई का बदला बुराई के समान ही मिलेगा। अर्थात भलाई के बदले में अल्लाह की दया तथा कृपा का तथा बुराई के बदले मे उसके न्याय का प्रदर्शन होगा।

[4] अर्थात इसका पाठ तथा इसका प्रचार-प्रसार आप का कर्तव्य है।

[5] अर्थात आपकी जन्मस्थली मक्का, जहाँ से आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को निकलने के लिए बाध्य कर दिया गया था। आदरणीय इब्ने अब्बास से सहीह बुख़ारी में इसकी यही व्याख्या प्राप्त होती है। अत: हिजरत के आठ वर्ष पश्चात अल्लाह का यह वचन पूरा हुआ तथा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ८ हिजरी में विजयी रूप से मक्का नगर में प्रवेश किया। कुछ ने معاد से तात्पर्य क़ियामत लिया है। अर्थात क़यामत के दिन आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अपनी ओर लौटायेगा तथा रिसालत के प्रचार के विषय में पूछेगा।

The Ummah Technology Mission

أَعْلَمُ مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى وَمَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٧﴾

मेरा प्रभु उसे भी भली-भाँति जानता है जो मार्गदर्शन लाया है तथा उसे भी जो खुले भटकावे में है।[1]

وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْٓا اَنْ يُّلْقٰٓى اِلَيْكَ الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٨﴾

(८६) तथा आपने तो कभी यह सोचा भी न था कि आपकी ओर किताब अवतरित की जायेगी[2] परन्तु यह आपके प्रभु की कृपा से (अवतरित हुआ)।[3] अब आपको कदापि काफ़िरों का सहायक न होना चाहिए।[4]

وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ

(८७) (ध्यान रहे कि) ये काफ़िर आपको अल्लाह तआला की आयतों के प्रचार करने से रोक न दें[5] उसके पश्चात कि यह आप

---

[1]यह मूर्तिपूजकों के उस उत्तर में है जो वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनके पैतृक एवं प्रचलित धर्म से विमुख होने के कारण पथभ्रष्ट समझते थे। फ़रमाया, "मेरा प्रभु भली-भाँति जानता है कि पथभ्रष्ट मैं हूँ जो अल्लाह की ओर से प्रकाश लेकर आया हूँ अथवा तुम हो जो अल्लाह की ओर से आये हुए प्रकाश को स्वीकार नहीं कर रहे हो ?"

[2]अर्थात नबूअत से पूर्व आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विचार में भी नहीं था कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को रिसालत के लिए चुना जायेगा तथा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर अल्लाह की किताब अवतरित होगी।

[3]अर्थात यह नबूअत तथा किताब से सुशोभित करना अल्लाह की विशेष कृपा का फल है, जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर हुई। इससे ज्ञात हुआ कि नबूअत कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे परिश्रम, प्रयत्न तथा प्रयास से प्राप्त किया जा सकता रहा हो। अपितु यह सवर्था अल्लाह की एक वरदान थी। अल्लाह तआला जिसे चाहता रहा अपने भक्तों में से नबूअत तथा रिसालत से सुशोभित करता रहा। यहाँ तक कि परम आदरणीय मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस स्वर्णिम ऋंखला की अंतिम कड़ी घोषित कर इसे समाप्त कर दिया गया।

[4]अब इस अनुग्रह तथा अल्लाह की कृपा की कृतज्ञता आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इस प्रकार व्यक्त करें कि काफ़िरों की सहायता तथा पक्षधर न बनें।

[5]अर्थात उन काफ़िरों की बातें, उनकी यातनायें तथा उनकी ओर से धर्म प्रचार-प्रसार में विघ्न करना आपको क़ुरआन के पाठ तथा उसके प्रचार-प्रसार से न रोक दें। बल्कि

The Ummah Technology Mission

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٨٧﴾

की ओर अवतरित की गयीं, तो अपने प्रभु की ओर बुलाते रहें तथा शिर्क करने वालों (मिश्रण वादियों) में से न हों।

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ۭ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٨﴾

(८८) तथा अल्लाह (तआला) के साथ किसी अन्य देवता को न पुकारना,[1] सिवाय अल्लाह (तआला) के कोई अन्य पूजने योग्य नहीं, प्रत्येक वस्तु नाशवान है परन्तु उसी का मुख[2] उसी का शासन है[3] तथा तुम उसी की ओर लौटाये जाओगे।[4]

आप (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पूरी एकाग्रता से प्रभु की ओर बुलाने का कार्य करते रहें।

[1]अर्थात किसी अन्य की इबादत न करना, न प्रार्थना के द्वारा, न भोग-प्रसाद से, न बलि के द्वारा कि ये सभी इबादतें हैं, जो केवल एक अल्लाह के लिए विशेष हैं। क़ुरआन करीम में विभिन्न स्थानों पर अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की इबादत को पुकारना कहा गया है, जिसका उद्देश्य इसी बिन्दु को स्पष्ट करना है कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को माध्यमों से परे मानकर पुकारना, उनसे सहायता माँगना, विनय तथा प्राथनायें करना यह उनकी इबादत ही है जिससे मनुष्य मुशरिक (अनेकेश्वरवादी) बन जाता है।

[2]وَجْهَهٗ (उसका मुख) से तात्पर्य अल्लाह की ज़ात है। अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु नश्वर है।

﴿ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝ وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴾

"धरती पर जो हैं सब समाप्त होने वाले हैं। मात्र तेरे प्रभु का मुख जो महानता एवं सम्मान वाला है, शेष रह जायेगा।" (सूरः अर्रहमान-२६,२७)

[3]अर्थात उसी का निर्णय, जो वह चाहे, लागू होता है तथा उसी का आदेश, जिसकी वह इच्छा करे, चलता है।

[4]ताकि वह सत्कर्मियों को उनकी भलाई का बदला तथा कुकर्मियों को उनके कुकर्म का दण्ड दे।

The Ummah Technology Mission

सूरतुल अनकबूत-२९

سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ

सूर: अनकबूत मक्का में अवतरित हुई तथा इसकी उनहत्तर आयतें तथा सात रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ, जो अति दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

الٓمّٓ ①

(१) अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰

اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ②

(२) क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि उनके केवल इस कथन पर कि हम ईमान लाये हैं वे बिना परीक्षा लिये हुए ही छोड़ दिये जायेंगे ?[1]

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا

(३) उनसे पूर्व के लोगों को भी हमने भली-भाँति जाँचा,[2] नि:संदेह अल्लाह (तआला) उन्हें

सूर: अल-अनकबूत की व्याख्या :

[1]अर्थात यह विचार कि केवल मुख से ईमान ले आने के पश्चात बिना परीक्षा लिए उन्हें छोड़ दिया जायेगा, सही नहीं। बल्कि उन्हें प्राण एवं धन के दुख तथा अन्य परीक्षाओं द्वारा जाँचा परखा जायेगा ताकि खरे खोटे का, सत्य असत्य का, ईमानवाले तथा द्वयवादी का पता चल जाये।

[2]अर्थात यह अल्लाह का नियम है जो आदि से चला आ रहा है। इसलिए वह इस सम्प्रदाय के ईमानवालों की भी परीक्षा लेगा जिस प्रकार पूर्व के समुदायों की परीक्षा ली गयी। इन आयतों के अवतरित होने की विशेषता के कथन में आता है कि सहाबा केराम (नबी के सहचर) ने उस अत्याचार तथा क्रूरता की शिकायत की जिस का लक्ष्य मक्का के काफ़िरों की ओर से वे बने हुए थे तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दुआ करने की प्रार्थना की ताकि अल्लाह उनकी सहायता करे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह आतंक तथा यातना तो ईमानवालों के इतिहास का भाग है। तुम से पूर्व कुछ ईमानवालों का यह हाल किया गया कि उन्हें एक गड्ढा खोदकर उसमें खड़ा करके उनके सिरों पर आरा चला दिया गया जिससे उनके शरीर दो भागों में विभाजित हो गये इसी प्रकार लोहे की कंघियाँ उनके माँस में अस्थियों तक फेरी गयीं परन्तु ये यातनायें उन्हें सत्य धर्म से विचलित करने में सफल नहीं हुईं। (सहीह बुख़ारी किताब अहादिसिल अंबिया) आदरणीय अम्मार, उनकी माता आदरणीया सुमय्या तथा पिता आदरणीय यासिर, आदरणीय सुहैब, आदरणीय बिलाल तथा आदरणीय मिक़दाद

The Ummah Technology Mission

وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٣﴾

भी जान लेगा जो सत्य कहते हैं तथा उन्हें भी जान लेगा, जो झूठे हैं।

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٤﴾

(४) क्या जो लोग कुकर्म कर रहे हैं, उन्होंने यह समझ रखा है कि वे हमारे नियन्त्रण से बाहर हो जायेंगे ?[1] यह लोग कैसा बुरा विचार कर रहे हैं।[2]

مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٥﴾

(५) जिसे अल्लाह से मिलने की आशा हो, तो अल्लाह का निर्धारित किया हुआ समय निश्चित आने वाला है,[3] वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।[4]

وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ

(६) तथा प्रत्येक प्रयत्न करने वाला अपने ही भले के लिए प्रयत्न करता है। निःसंदेह

आदि (رضي الله عنهم) पर इस्लाम के प्रारम्भिक काल में जो अत्याचार तथा कष्ट के पहाड़ तोड़े गये, वे इतिहास के पृष्ठों में सुरक्षित हैं। ये घटनायें ही इन आयतों के अवतरित होने का कारण बनी। फिर भी शब्दों की सामान्यता के आधार पर कियामत तक के ईमानवाले इसमें सम्मिलित हैं।

[1]अर्थात हम से भाग जायेंगे तथा हमारी पकड़ में न आ सकेंगे, ऐसा नहीं होगा।

[2]अर्थात अल्लाह के विषय में ये किस भ्रम में लिप्त हैं, जबकि वह सभी वस्तुओं पर सामर्थ्यवान है तथा प्रत्येक बात से अवगत भी। फिर उसकी अवहेलना करके उसकी पकड़ तथा यातना से किस प्रकार भाग सकेंगे ?

[3]अर्थात जिसे आख़िरत पर विश्वास है तथा वह बदले एवं पुण्य की आशा से सत्कर्म करता है अल्लाह तआला उसकी आशायें पूर्ण करेगा तथा उसे उसके कर्मों का पूरा बदला प्रदान करेगा, क्योंकि कियामत निश्चित रूप से होकर रहेगी तथा अल्लाह के न्यायालय की स्थापना अवश्य होगी।

[4]वह भक्तों की बातों एवं प्रार्थनाओं का सुनने वाला तथा उनके गुप्त तथा प्रकट सभी कर्मों का जानने वाला है। उसके अनुसार वह फल तथा दण्ड भी अवश्य देगा।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ⑥

अल्लाह (तआला) सभी जगत वालों से निस्पृह है।[1]

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑦

(७) तथा जिन लोगों ने विश्वास किया तथा (सुन्नत के अनुरूप) अच्छे कर्म किये, हम उनके सभी पापों को उनसे दूर कर देंगे तथा उनके सत्कर्मों का उत्तम प्रतिफल देंगे।[2]

وَوَصَّيْنَا الْإِنسَانَ بِوَالِدَيْهِ

(८) हमने प्रत्येक मनुष्य को अपने माता-पिता से सद्व्यवहार करने की शिक्षा दी है,[3]

---

[1]इसका अर्थ वही है जो ﴿مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ﴾ (सूरः *जासिया*-१५) का है, अर्थात 'जो सत्कर्म करेगा उसका लाभ उसी को होगा।' वरन् अल्लाह तआला को तो भक्तों के कर्मों की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि सम्पूर्ण धरती के लोग अल्लाह से भय खाने वाले (संयमी) हो जायें तो उसके राज्य में शक्ति एवं विस्तार न होगा तथा सभी अवहेलना करने वाले हो जायें तो उसके राज्य में तनिक भी कमी नहीं आयेगी। शब्दों के आधार पर इनमें काफ़िरों से धर्मयुद्ध करने का भी आदेश सम्मिलित है कि वह भी एक प्रकार का सत्कर्म ही है।

[2]अर्थात इस बात के उपरान्त कि अल्लाह तआला सम्पूर्ण सृष्टि से निस्पृह है, वह केवल अपनी कृपा तथा दया से ईमानवालों को उनके कर्मानुसार बदला प्रदान करेगा तथा एक-एक सत्कर्म पर कई-कई गुना प्रतिकार एवं पुण्य प्रदान करेगा।।

[3]क़ुरआन करीम के विभिन्न स्थानों पर अल्लाह तआला ने अपनी एकता तथा इबादत का आदेश देने के साथ ही साथ माता-पिता के साथ सद्व्यवहार करने पर बल दिया है, जिससे इस बात का स्पष्टीकरण होता है कि एकेश्वरवाद की माँगों को उचित रूप से वही समझ सकता तथा उन्हें निभा सकता है जो माता-पिता के आज्ञा पालन तथा सेवा माँगों को समझता है तथा निभाता है। जो व्यक्ति यह बात समझने में असमर्थ है कि दुनिया में उसका अस्तित्व माता-पिता के संयोग का परिणाम तथा उसका पालन-पोषण उनकी असीमित कृपा एवं प्रेम का फल है इसलिए मुझे उनकी सेवा में कोई कमी तथा आज्ञा पालन में उद्दण्ता नहीं करनी चाहिए, वह अवश्य सृष्टि के स्रष्टा को समझने तथा उसके एकेश्वरवाद तथा इबादत के नियमों को निभाने में भी असमर्थ रहेगा। इसीलिए हदीसों में भी माता-पिता के साथ सद्व्यवहार करने पर बड़ा बल दिया गया है एक हदीस में माता-पिता की प्रसन्नता तथा उनकी अप्रसन्नता को प्रभु की प्रसन्नता तथा अप्रसन्नता का कारण बताया गया है।

The Ummah Technology Mission

حُسْنًا ؕ وَاِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِیْ مَا لَیْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ اِلَیَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝۸

परन्तु यदि वे यह प्रयत्न करें कि तुम मेरे साथ उसे सम्मिलित कर लो जिसका तुमको ज्ञान नहीं तो उनका कहना न मानो,[1] तुम सबको लौटकर मेरी ही ओर आना है, फिर मैं प्रत्येक उस बात से जो तुम करते थे, तुम्हें अवगत कराऊँगा।

وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِی الصّٰلِحِیْنَ ۝۹

(९) तथा जिन लोगों ने ईमान स्वीकार किया तथा पुण्य के कार्य किये, उन्हें हम अपने पुण्यात्मा भक्तों में सम्मिलित कर लेंगे।[2]

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ یَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَاۤ اُوْذِیَ فِی اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ وَلَىِٕنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَیَقُوْلُنَّ

(१०) तथा कुछ लोग ऐसे भी हैं जो (मुख से) कहते हैं कि हम ईमान लाये हैं परन्तु जब अल्लाह के मार्ग में कोई दुख आ पड़ता है तो लोगों के कष्ट देने को अल्लाह तआला की यातना के समान बना लेते हैं,[3] परन्तु यदि

---

[1]अर्थात माता-पिता यदि शिर्क का आदेश दें (तथा उसी में अन्य पापों का आदेश भी सम्मिलित है) तथा उसके लिए विशेष प्रयत्न भी करें (जैसाकि جاهدة के शब्द से स्पष्ट है) तो उनके आदेशों का पालन नहीं करना चाहिए, क्योंकि «لَا طَاعَةَ لِأَحَدٍ فِي مَعْصِيَةِ اللهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى» (मुसनद अहमद भाग ५ पृष्ठ ६६ तथा अल-सहीह: लिल-अलबानी संख्या १७९) "अल्लाह की अवहेलना में किसी की आज्ञा का पालन नहीं।" इस आयत के अवतरित होने की विशेषता में आदरणीय सअ्द बिन अबी वक़्क़ास की घटना आती है कि उनके मुसलमान होने पर उनकी माता ने कहा कि मैं भोजन करूँगी न पानी पिऊँगी यहाँ तक कि मर जाऊँगी अथवा तू मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूअत को अस्वीकार कर दे अन्त में यह अपनी माता का मुख बलपूर्वक खोल कर खिलाते, जिस पर यह आयत अवतरित हुई। (सहीह मुस्लिम, तिर्मिज़ी सूर: अल-अनकबूत की व्याख्या)

[2]अर्थात यदि किसी के माता-पिता मूर्तिपूजक होंगे तो ईमानवाला पुत्र पुण्य करने वालों के साथ होगा, माता-पिता के साथ नहीं। इसलिए चाहे माता-पिता दुनिया में उसके अत्यन्त निकट होंगे परन्तु उसका धार्मिक प्रेम ईमान वालों के ही साथ था, जिसके कारण المرء مع من أحبّ के अधीन वह सत्कर्मियों के समूह में होगा।

[3]इसमें अवसरवादी अथवा क्षीण ईमानवालों की अवस्था का वर्णन किया है कि ईमान के कारण उन्हें कष्ट पहुँचता है, तो अल्लाह की यातना की भाँति वह उनके लिए असहनीय

The Ummah Technology Mission

إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۖ أَوَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ الْعَالَمِينَ ⑩

अल्लाह की सहायता आ जाये[1] तो पुकार उठते हैं कि हम तो तुम्हारे साथी ही हैं, [2] क्या सभी संसार (व्यक्तियों) के दिलों में जो कुछ है उससे अल्लाह तआला परिचित नहीं है ?[3]

وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنَافِقِينَ ⑪

(११) तथा जो लोग ईमान लाये अल्लाह उन्हें भी जानकर (प्रकट करके) रहेगा तथा द्वयवादियों को भी जानकर (प्रकट करके) रहेगा ।[4]

होता है । परिणाम स्वरूप वे ईमान से मुख फेर लेते हैं तथा सर्वधारण का धर्म धारण कर लेते हैं ।

[1]अर्थात मुसलमानों को विजय तथा प्रभुत्व प्राप्त हो जाये ।

[2]अर्थात तुम्हारे धार्मिक भाई हैं । यह वही विषय है जो अन्य स्थान पर इस प्रकार वर्णित किया गया है कि वे लोग तुम्हें देखते रहते हैं, यदि तुम्हें अल्लाह की ओर से विजय प्राप्त होती है तो कहते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे, तथा यदि परिस्थितियाँ काफ़िरों के पक्ष में होती हैं तो (काफ़िरों से जाकर कहते हैं) कि क्या हमने तुम को घेर नहीं लिया था तथा मुसलमानों से तुम्हें नहीं बचाया था । (सूरः *अल-निसा*-१४१)

[3]अर्थात क्या अल्लाह उन बातों को नहीं जानता जो तुम्हारे दिलों में हैं तथा तुम्हारे अन्तःकरणों में छिपी हैं यद्यपि मुख से मुसलमानों का साथी होने की बातें करते हो ।

[4]इसका अर्थ है कि अल्लाह तआला सुख तथा कष्ट देकर परीक्षा लेगा ताकि अवसरवादियों एवं ईमानवालों में अन्तर स्पष्ट हो जाये । जो दोनों परिस्थितियों में अल्लाह की आज्ञा का पालन करेगा, वह ईमान वाला है तथा जो केवल प्रसन्नता तथा सुख में आज्ञापालन करेगा तो इसका अर्थ यह है कि वह केवल अपनी स्वार्थ की सिद्धि का अधीन है, अल्लाह का नहीं । जिस प्रकार से अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِينَ مِنكُمْ وَالصَّابِرِينَ وَنَبْلُوَ أَخْبَارَكُمْ ﴾

"हम तुम्हारी अवश्य परीक्षा लेंगे ताकि हम जान लें कि तुम में से सहनशील धर्मयोद्धा एवं धैर्यवान कौन है तथा तुम्हारी अन्य परिस्थितियाँ भी जाँचेंगे"। (सूरः *मोहम्मद*-३१)

ओहुद के युद्ध के पश्चात जिसमें मुसलमान जाँच तथा परीक्षा की भट्टी से गुज़ारे गये थे, फ़रमाया :

The Ummah Technology Mission

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۲﴾

(१२) तथा काफ़िरों ने ईमानवालों से कहा कि तुम हमारे मार्ग का अनुसरण करो तुम्हारे पाप हम उठा लेंगे,[1] जबकि वह उनके पापों में से कुछ भी नहीं उठाने वाले, यह तो केवल झूठे हैं।[2]

وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ۫ وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۫ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۳﴾

(१३) हाँ, ये अपने बोझ ढो लेंगे तथा अपने बोझों के साथ अन्य बोझ भी,[3] तथा जो कुछ

﴿ مَا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ يَمِيزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ ﴾

"नहीं है अल्लाह तआला कि छोड़ दे ईमान वालों को उस अवस्था में जिसमें तुम हो, यहाँ तक कि वह अपवित्र को पवित्र से अलग कर दे।" (सूरः *आले-इमरान*-१७९)

[1]अर्थात तुम उसी पूर्वजों के धर्म की ओर लौट जाओ जिस पर हम अभी तक दृढ़ हैं, इसलिए कि वही धर्म सत्य है। यदि इस प्रचलित धर्म के अनुसार कर्म करने से तुम पापी होगे तो हम उसके उत्तरदायी हैं, वह बोझ हम अपनी गर्दनों पर उठायेंगे।

[2]अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि ये झूठे हैं। क़ियामत का दिन तो ऐसा होगा कि वहाँ कोई किसी का बोझ नहीं उठायेगा। ﴿ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ﴾ वहाँ तो एक मित्र दूसरे मित्र को नहीं पूछेगा चाहे उनके मध्य अत्यन्त घनिष्ठता हो क्यों न हो।

﴿ وَلَا يَسْأَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا ﴾

"यहाँ तक कि सगे-सम्बन्धी भी एक-दूसरे का बोझ नहीं उठायेंगे।" (सूरः *अल-मआरिज*-१०)

﴿ وَإِن تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ﴾ (सूरः *फ़ातिर*-१८)

[3]अर्थात यह कुफ़्र के अगुवा तथा अधर्म के प्रचारक अपना ही बोझ नहीं उठायेंगे, अपितु उन लोगों के पापों का बोझ भी उन पर होगा जो उनके प्रयत्नों के कारण पथभ्रष्ट हुए थे। यह विषय सूरः *अल-नहल*-२५ में भी गुज़र चुका है। हदीस में है, जो मार्गदर्शन की ओर आमन्त्रित करता है, उसके लिए अपने पुण्यों के अतिरिक्त उन लोगों के पुण्य का भी बदला प्राप्त होगा जो उसके कारण क़ियामत तक सन्मार्ग का अनुसरण करेंगे, बिना इसके कि उनके प्रतिकार में कोई कमी हो, तथा जो पथभ्रष्टता का प्रचारक होगा, उसके लिए अपने पापों के अतिरिक्त उन लोगों के पापों का भी बोझ होगा जो क़ियामत तक उसके कारण पथभ्रष्टता का मार्ग अपनाने वाले होंगे, बिना इसके कि उनके पापों में कमी हो। (अबू दाऊद किताबुल सुन्नः बाबु लुज़ुमिस सुन्नः, इब्ने माजा अल-मोकद्दमः बाबु मन् सन्न सुन्नतन हसनतन औ सय्येअतन) इसी नियम के आधार पर क़ियामत तक

The Ummah Technology Mission

عَمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣﴾

झूठ गढ़ रहे हैं उन सब के लिए उनसे पूछताछ होगी।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا ۖ فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٤﴾

(१४) तथा हमने नूह (अलैहिस्सलाम) को उनके समुदाय की ओर भेजा, वे उनके मध्य साढ़े नौ सौ वर्ष तक रहे।[1] फिर तो उन्हें तूफ़ान ने धर पकड़ा तथा वे थे भी अत्याचारी।

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٥﴾

(१५) फिर हमने उन्हें तथा नाव वालों को मुक्ति दी तथा हमने इस घटना को सम्पूर्ण संसार के लिये शिक्षा का संकेत बना दिया।

وَإِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ۖ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٦﴾

(१६) तथा इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने भी अपने समुदाय से कहा कि अल्लाह (तआला) की इबादत करो तथा उससे डरते रहो, यदि तुम में बुद्धि है तो यही तुम्हारे लिए उत्तम है।

إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ

(१७) तुम तो अल्लाह तआला के अतिरिक्त मूर्तियों की पूजा पाठ कर रहे हो, तथा झूठी बातें मन से गढ़ लेते हो।[2] (सुनो !) जिन-

---

अत्याचार से हत्या किये जाने वालों के रक्त का पाप आदम के प्रथम पुत्र (क़ाबील) पर होगा, इसलिए कि सर्वप्रथम उसी ने अनर्थ हत्या की थी। (मुसनद अहमद भाग १ पृष्ठ ३८३ वक़द अख़रजहुल जमाअ: सवा अबी दाऊद मिनतुरुक)

[1] क़ुरआन के शब्दों से ज्ञात होता है कि यह उनके आमन्त्रण तथा प्रचार-प्रसार की आयु है। उनकी पूरी आयु कितनी थी, इसको स्पष्ट नहीं किया गया। कुछ कहते हैं कि ४० वर्ष नबूअत से पूर्व तथा साठ वर्ष तूफ़ान के पश्चात इसमें सम्मिलित कर लिये जायें। अन्य भी कई कथन हैं। والله أعلم بالصواب

[2] أوثان बहुवचन है وَثَنٌ का, जिस प्रकार أصنام बहुवचन है صَنَم का। दोनों का अर्थ मूर्ति है। कुछ कहते हैं, صنم (सनम) सोने, चाँदी, पीतल तथा पत्थर की मूर्ति को तथा وثن मूर्ति को भी तथा चूने के पत्थर आदि के बने हुए थानों को भी कहते हैं। تَخْلُقُونَ إِفْكًا का एक अर्थ है تكذبون كِذْبًا जैसाकि मूल पंक्ति के अनुवाद से स्पष्ट है। दूसरा अर्थ है و تعملونها تنحتونها لِلإفك झूठे उद्देश्य के लिए उन्हें निर्मित करते तथा गढ़ते हो। भावार्थ के अनुसार दोनों ही अर्थ ठीक हैं। अर्थात अल्लाह को छोड़कर तुम जिन मूर्तियों की पूजा करते हो,

The Ummah Technology Mission

تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۷﴾

जिनकी तुम अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त पूजा-पाठ कर रहे हो, वे तो तुम्हारी जीविका के स्वामी नहीं, अत: तुम्हें चाहिए कि अल्लाह तआला से ही जीविका माँगो तथा उसी की इबादत करो एवं उसी की कृतज्ञता व्यक्त करो,[1] तथा उसी की ओर तुम लौटाये जाओगे।[2]

وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۸﴾

(१८) तथा यदि तुम झुठलाओ तो तुम से पूर्व के समुदायों ने भी झुठलाया है,[3] और रसूल का कर्तव्य तो मात्र साफ-साफ प्रकार से पहुँचा देना ही है।[4]

वे पत्थर की बनी हुई हैं, वे सुन भी नहीं सकती हैं न देख सकती हैं, न हानि पहुँचा सकती हैं न लाभ। अपने मन से ही तुमने गढ़ लिया है, कोई प्रमाण तो उन की सत्यता का तुम्हारे पास नहीं है। अथवा ये मूर्तियाँ तो वे हैं जिन्हें तुम अपने हाथों से गढ़ते हो तथा जब उनमें विशेष रूप तथा आकार आ जाता है तो तुम समझते हो कि इनमें ईश्वरीय अधिकार आ गये हैं तथा उनसे तुम आशायें बाँध कर उन्हें कष्ट निवारक तथा संकटमोचन बताते हो।

[1]अर्थात जब यह मूर्तियाँ तुम्हारी जीविका उपार्जन के साधनों में से किसी की भी स्वामी नहीं हैं, न वर्षा कर सकती हैं, न धरती पर वृक्ष उगा सकती हैं तथा न सूर्य का ताप प्रदान कर सकती हैं तथा न तुम्हें वह शक्ति प्रदान कर सकती हैं कि जिन्हें तुम प्रयोग करके प्रकृति की इन वस्तुओं से लाभान्वित होते हो, तो फिर तुम जीविका अल्लाह ही से माँगो, उसी की इबादत तथा उसी की कृतज्ञता व्यक्त करो।

[2]अर्थात मर कर तथा पुन: जीवित होकर जब उसी की ओर लौटना है, उसी के सदन में उपस्थित होना है तो उसे छोड़कर तुम अन्यों के द्वार पर अपने मस्तक क्यों झुकाते हो ? उसके अतिरिक्त अन्यों की इबादत क्यों करते हो दूसरों को आवश्यकता पूर्ति करने वाला तथा कष्ट निवारक क्यों समझते हो ?

[3]यह आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम का भी कथन हो सकता है, जो उन्होंने अपने समुदाय से कहा था। अथवा अल्लाह तआला का कथन है, जिसमें मक्कावासियों को सम्बोधन है तथा इस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी जा रही है कि यदि मक्का के काफ़िर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठला रहे हैं तो इससे घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है। पैग़म्बरों के साथ यही होता चला आया है। पूर्व के सम्प्रदाय भी रसूल को झुठलाते तथा उसका परिणाम भी विनाश एवं विध्वंस के रूप में भुगतते रहे हैं।

[4]इसलिए आप भी प्रचार-प्रसार का कार्य करते रहें। इससे कोई मार्ग पाता है अथवा नहीं,

The Ummah Technology Mission

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١٩﴾

(१९) क्या उन्होंने नहीं देखा कि सृष्टि की उत्पत्ति किस प्रकार अल्लाह ने की फिर अल्लाह उसको लौटायेगा,[1] यह तो अल्लाह के लिए अत्यन्त सरल है।[2]

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُنْشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾

(२०) कह दीजिए कि धरती पर चल-फिर कर देखो तो[3] कि किस प्रकार से अल्लाह (तआला) ने प्रथमत: सृष्टि की उत्पत्ति की फिर अल्लाह तआला ही दूसरी नई उत्पत्ति करेगा। अल्लाह तआला हर वस्तु पर सामर्थ्य रखने वाला है।

يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ﴿٢١﴾

(२१) जिसे चाहे यातना दे, जिस पर चाहे दया करे, सब उसी की ओर लौटाये जाओगे।[4]

इसके उत्तरदायी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नहीं हैं, न आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसके विषय में पूछा ही जायेगा, क्योंकि सन्मार्ग प्रदान करना अथवा न करना यह अल्लाह के अधिकार में है, जो अपने नियमानुसार जिसमें प्रकाश प्राप्त करने की सच्ची माँग देखता है, उसको मार्गदर्शन प्रदान करता है, दूसरों को पथभ्रष्टता के अंधकार में भटकता हुआ छोड़ देता है।

[1]एकेश्वरवाद तथा रिसालत के पक्ष को सिद्ध करने के पश्चात यहाँ से आख़िरत के विषय में वर्णन किया जा रहा है, जिसको काफ़िर अस्वीकार करते थे। फ़रमाया कि प्रथम बार जन्म देने वाला भी वही है जब तुम्हारा मूल से अस्तित्व ही नहीं था, फिर तुम देखने, सुनने तथा समझने वाले बन गये। फिर जब मरकर मिट्टी में मिल जाओगे, देखने में तुम्हारा नाम व चिन्ह तक नहीं रहेगा, अल्लाह तआला तुम्हें पुन: जीवित करेगा।

[2]अर्थात यह बात चाहे तुम्हें कितनी ही कठिन लगे अल्लाह के लिए अत्यन्त सरल है।

[3]अर्थात विश्व में फैली हुई अल्लाह की निशानियाँ देखो धरती पर ध्यान दो, किस प्रकार उसे बिछाया, उसमें पर्वत, घाटियाँ, नदियाँ तथा समुद्र बनाये। उसी से विभिन्न प्रकार की जीविका व फल उत्पन्न किये। क्या यह सब वस्तुयें इस बात का प्रमाण नहीं है कि उन्हें उत्पन्न किया गया है तथा उनका कोई बनाने वाला है ?

[4]अर्थात वही मूल स्वामी तथा अधिकार वाला है, उससे कोई पूछ नहीं सकता। फिर भी उसकी यातना अथवा कृपा यों ही अलस्य नहीं होगी अपितु उन नियमों के आधार पर होगी जो उसने उसके लिए निर्धारित कर रखे हैं।

The Ummah Technology Mission

وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٢٢﴾

(२२) तुम न तो धरती पर अल्लाह (तआला) को विवश कर सकते हो न आकाश में, अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त तुम्हारा कोई संरक्षक है न सहयोगी।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ أُولَٰئِكَ يَئِسُوا مِن رَّحْمَتِي وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٣﴾

(२३) जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों तथा उसकी मुलाकात को झुठलाते हैं, वे मेरी दया से निराश हो जायें[1] तथा उनके लिए दुखदायी यातना है।

---

[1]अल्लाह तआला की दया दुनिया में जनसामान्य के लिए है, जिससे काफ़िर तथा ईमानवाले, छली तथा निष्छली, अच्छे तथा बुरे सभी समान रूप से लाभान्वित हो रहे हैं। अल्लाह तआला सभी को दुनिया के सुख तथा धन-धान्य प्रदान कर रहा है। यह अल्लाह तआला की दया का वह विस्तार है जिसे अल्लाह तआला ने अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ﴾

"मेरी दया ने प्रत्येक वस्तु को घेर लिया है।" (सूरः *अल-आराफ़*-१५६)

परन्तु आख़िरत चूँकि बदला देने का स्थान है, मनुष्य ने दुनिया की खेती में जो कुछ बोया होगा उसकी फसल उसे वहाँ काटनी होगी, जैसे कर्म किये होंगे उसका फल उसे वहाँ मिलेगा। अल्लाह के दरबार में निष्पक्ष निर्णय होंगे। दुनिया की भाँति यदि आख़िरत में भी बुरे-भले के साथ समान व्यवहार हुआ तथा ईमानवाले तथा काफ़िर दोनों ही अल्लाह की दया के पात्र बन जायें तो उससे एक तो अल्लाह तआला के न्याय के गुण पर आक्षेप आता है, दूसरे क़ियामत का उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है। क़ियामत का दिन अल्लाह ने रखा ही इसी कार्य के लिए है कि वहाँ अच्छों को उनके सत्कर्मों के बदले में स्वर्ग तथा बुरों को उनकी बुराईयों के बदले में नरक दिया जाये। इसीलिए क़ियामत के दिन अल्लाह की दया ईमानवालों के लिए विशेष होगी, जिसे यहाँ भी वर्णन किया गया है कि जो लोग आख़िरत तथा क़ियामत को ही स्वीकार नहीं करते होंगे, वे मेरी दया से निराश होंगे अर्थात उनके भाग में अल्लाह की दया नहीं आयेगी, सूरः अल-आराफ़ में इसको इन शब्दों में वर्णन किया गया है।

﴿ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُم بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ﴾

"मैं यह दया (आख़िरत में) उन लोगों के लिए लिखूँगा जो अल्लाह से भय खाने वाले, ज़कात (धर्मदान) अदा करने वाले तथा हमारी आयतों पर ईमान रखने वाले होंगे।" (सूरः *अल-आराफ़*-१५६)

The Ummah Technology Mission

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۲۴﴾

(२४) उनके समुदाय का उत्तर इसके अतिरिक्त कुछ न था कि कहने लगे कि इसे मार डालो अथवा इसे जला दो।[1] अन्ततः अल्लाह (तआला) ने उन्हें आग से बचा लिया,[2] इसमें ईमानवालों के लिए तो बहुत-सी निशानियाँ हैं।

وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۡ وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۲۵﴾

(२५) (आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने) कहा कि तुमने जिन मूर्तियों (देवताओं) की पूजा अल्लाह के अतिरिक्त की है, उन्हें तुमने अपनी सांसारिक मित्रता का कारण बना लिया है।[3] तुम सब क़ियामत के दिन एक-दूसरे से इंकार करने लगोगे एवं एक-दूसरे को धिक्कारने लगोगे,[4] तथा तुम सबका ठिकाना नरक में होगा तथा तुम्हारी कोई सहायता करने वाला न होगा।

---

[1]इन आयतों से पूर्व आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कथा का वर्णन हो रहा था। अब पुनः उसका शेष भाग वर्णन किया जा रहा है, मध्य में प्रसांगिक रूप में अल्लाह के एक होने तथा उसके सामर्थ्य एवं शक्ति को वर्णित किया गया है। कुछ कहते हैं कि यह सभी आदरणीय इब्राहीम के भाषण का भाग है, जिसमें उन्होंने एकेश्वरवाद तथा परलोक को सिद्ध करने हेतु तर्क प्रस्तुत किये हैं, जिनका कोई उत्तर जब उनके समुदाय वालों से नहीं बना तो उन्होंने इसका उत्तर अत्याचार तथा आतंकवादी गतिविधियों से दिया, जिसका वर्णन इस आयत में है कि इसका वध करो अथवा जला डालो। अतः उन्होंने आग का एक बहुत बड़ा अलाव तैयार करके आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बड़े-बड़े पत्थर फेंकने वाले यन्त्र के द्वारा उसमें फेंक दिया।

[2]अर्थात अल्लाह ने उस आग को फुलवारी के रूप में परिवर्तित करके अपने भक्त इब्राहीम को बचा लिया, जैसाकि सूरः अंबिया में गुज़रा।

[3]अर्थात ये तुम्हारी सामुदायिक मूर्तियाँ हैं जो तुम्हारी एकता तथा आपस की मित्रता का आधार हैं। यदि तुम इनकी पूजा छोड़ दो तो तुम्हारे समाज तथा मित्रता की ऋंखला बिखर जायेगी।

[4]अर्थात क़ियामत के दिन तुम एक-दूसरे का खण्डन तथा मित्रता के बजाय एक-दूसरे को धिक्कारोगे। भक्त, देवता को धिक्कारेगा तथा देवता, भक्त से नफ़रत का प्रदर्शन करेगा।

The Ummah Technology Mission

فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّیْ مُهَاجِرٌ اِلٰی رَبِّیْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۲۶﴾

(२६) तो उस (आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर) (आदरणीय) लूत (अलैहिस्सलाम) ईमान लाये,[1] तथा कहने लगे कि मैं अपने प्रभु की ओर स्थानान्तरण करने वाला हूँ।[2] वह अत्यन्त प्रभावशाली एवं दूरदर्शी है।

وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَیَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِیْ ذُرِّیَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَیْنٰهُ اَجْرَهٗ فِی الدُّنْیَا ۚ وَاِنَّهٗ فِی الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿۲۷﴾

(२७) तथा हमने उसे (इब्राहीम को) इसहाक़ तथा याक़ूब प्रदान किये तथा हमने नबूअत तथा किताब उनकी सन्तान में ही कर दी[3] तथा हमने दुनिया में भी उसे पुण्य (प्रतिफल) दिया,[4] तथा परलोक में तो वह सदाचारियों में से हैं।[5]

---

[1]आदरणीय लूत, आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भाई के पुत्र थे, यह आदरणीय इब्राहीम पर ईमान लाये। तत्पश्चात उनको भी 'सदूम' के क्षेत्र में नबी बनाकर भेजा गया।

[2]यह आदरणीय इब्राहीम ने कहा तथा कुछ के निकट आदरणीय लूत ने तथा कुछ कहते हैं कि दोनों ने ही हिजरत की। अर्थात जब इब्राहीम तथा उन पर ईमान लाने वाले लूत के लिए अपने क्षेत्र 'कोसा' में जो 'हर्रान' की ओर जाते हुए 'कूफ़े' की एक बस्ती थी, अल्लाह की इबादत करना कठिन हो गया तो वहाँ से हिजरत करके सीरिया के क्षेत्र में चले गये। तीसरे, उनके साथ आदरणीय इब्राहीम की पत्नी 'सारह' थीं।

[3]अर्थात आदरणीय इसहाक़ से याक़ूब हुए, जिनसे इस्राईल की सन्तान का वंश चला तथा उन्हीं में सारे नबी हुए तथा किताबें आयीं। अन्त में परम आदरणीय नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आदरणीय इब्राहीम के दूसरे (बड़े) पुत्र आदरणीय इस्माईल के वंश में नबी हुए तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर क़ुरआन अवतरित हुआ।

[4]इस बदले से तात्पर्य सांसारिक जीविका भी है तथा शुभ चर्चा (प्रशंसा)। अर्थात दुनिया में प्रत्येक धर्म के लोग (इसाई, यहूदी आदि यहाँ तक कि मूर्तिपूजक भी) आदरणीय इब्राहीम का आदर तथा सम्मान करते हैं तथा मुसलमान तो हैं ही इब्राहीमी धर्म के अनुयायी, उनके यहाँ वे आदरणीय क्यों न होंगे ?

[5]अर्थात आख़िरत में भी वे उच्च पदों पर आसीन तथा सदाचारी व्यक्तियों के समूह में होंगे। इसी विषय को अन्य स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया गया है :

﴿ وَاٰتَیْنٰهُ فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً ۚ وَاِنَّهٗ فِی الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴾

"हमने उसे लोक में भी अच्छाई दी थी तथा निःसन्देह वह परलोक में भी सदाचारियों में से है।" (सूरः अल-नहल-१२२)

The Ummah Technology Mission

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ۡ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۸﴾

(२८) तथा (आदरणीय) लूत (अलैहिस्सलाम) की भी (चर्चा करो) जबकि उन्होंने अपने समुदाय से कहा कि तुम तो उस कुकर्म पर उतर आये हो[1] जिसे तुमसे पूर्व संसार भर में से किसी ने भी नहीं किया।

اَىِٕنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ السَّبِيْلَ ۙ وَتَاْتُوْنَ فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ؕ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ

(२९) क्या तुम पुरूषों के पास (कुकर्म के लिए) आते हो[2] तथा मार्ग बन्द करते हो[3] तथा अपनी आम सभाओं में निर्लज्जता का कार्य करते हो ?[4] तो उसके उत्तर में उसके समुदाय

---

[1]उस कुकर्म से तात्पर्य वही पुरूष सम्लिन है जिसको लूत के समुदाय वालों ने सर्वप्रथम किया, जैसाकि क़ुरआन ने स्पष्ट किया है।

[2]अर्थात तुम्हारी कामवासना इस सीमा को पहुँच गयी है कि उसके लिए प्राकृतिक विधियाँ तुम्हारे लिये अपर्याप्त हो गयी हैं तथा तुमने अप्राकृतिक विधि अपना ली है। काम-इच्छा की तृप्ति के लिए प्राकृतिक रूप में अल्लाह तआला ने पत्नियों से संभोग करने की अनुमति दी है। उसे छोड़कर इस कार्य के लिए पुरूषों के गुदा का प्रयोग करना अप्राकृतिक तथा अस्वाभाविक रीति है।

[3]इसका एक अर्थ तो यह किया गया है कि आने जाने वाले यात्रियों, आगन्तुकों तथा गुज़रने वालों को बलपूर्वक रोककर तुम उनसे असभ्य कार्य करते हो, जिससे लोगों को मार्ग से गुज़रना कठिन हो गया है तथा लोग घरों में बैठा रहना ही सुरक्षित समझते हैं। दूसरा अर्थ यह है कि तुम आने-जाने वालों को लूटते हो तथा हत्या कर देते हो अथवा उद्दण्डता से उन्हें कंकरियाँ मारते हो। तीसरा अर्थ किया गया है कि मार्ग पर ही आभद्र व्यवहार करते हो जिससे वहाँ से गुज़रने वालों को लज्जा होती है। इन सभी परिस्थितियों में मार्ग बन्द हो जाते हैं। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि किसी एक कारण का निर्धारण तो कठिन है, फिर भी वे कोई ऐसा कार्य अवश्य करते थे जिससे क्रियात्मक रूप से मार्ग अवरूद्ध हो जाता था। मार्ग अवरूद्ध करने का एक अर्थ वंश का अवरोध भी किया गया है। अर्थात स्त्रियों के गुप्तांग (योनि) के प्रयोग के बजाय पुरूषों के गुदा का प्रयोग करके तुम अपने वंश को अवरूद्ध करने में लगे हो। (फ़तहुल क़दीर)

[4]यह असभ्यता (निर्लज्जता) क्या थी, इसमें भी विभिन्न कथन हैं, जैसे लोगों को कंकरियाँ मारना, आगन्तुक यात्री का उपहास तथा अवहेलना करना, सभाओं में वायु निकालना, एक-दूसरे के समक्ष बाल संभोग करना, शतरंज आदि प्रकार की बुराईयाँ, रंगीन वस्त्र

The Ummah Technology Mission

إِلَّآ أَن قَالُوا ٱئْتِنَا بِعَذَابِ ٱللَّهِ إِن كُنتَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿٢٩﴾

ने इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कहा [1] कि बस जा, यदि सच्चा है तो हमारे पास अल्लाह का प्रकोप ले आ।

قَالَ رَبِّ ٱنصُرْنِى عَلَى ٱلْقَوْمِ ٱلْمُفْسِدِينَ ﴿٣٠﴾

(३०) (आदरणीय) लूत (अलैहिस्सलाम) ने प्रार्थना की[2] कि प्रभू ! इस उपद्रवी समुदाय पर मेरी सहायता कर।

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَآ إِبْرَٰهِيمَ بِٱلْبُشْرَىٰ قَالُوٓا إِنَّا مُهْلِكُوٓا أَهْلِ هَٰذِهِ ٱلْقَرْيَةِ إِنَّ أَهْلَهَا كَانُوا۟ ظَٰلِمِينَ ﴿٣١﴾

(३१) तथा जब हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते (आदरणीय) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के पास शुभ सूचना लेकर पहुँचे, कहने लगे कि हम इस बस्ती वालों को नाश करने वाले हैं।[3] नि:सन्देह यहाँ के निवासी पापी हैं।

قَالَ إِنَّ فِيهَا لُوطًا ۚ قَالُوا۟ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَن فِيهَا ۖ لَنُنَجِّيَنَّهُۥ وَأَهْلَهُۥٓ إِلَّا ٱمْرَأَتَهُۥ

(३२) (आदरणीय इब्राहीम ने) कहा कि उसमें तो लूत (अलैहिस्सलाम) हैं, फ़रिश्तों ने कहा कि यहाँ जो हैं हम उन्हें भली-भाँति जानते हैं,[4] लूत तथा उसके परिवार को अतिरिक्त उसकी

धारण करना आदि। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं, "कोई दूर नहीं कि वे ये सारी बुराईयाँ करते रहे हों।"

[1]आदरणीय लूत अलैहिस्सलाम ने जब उन्हें इन निषेधित कर्मों से रोका तो उसके उत्तर में कहा -----।

[2]अर्थात जब आदरणीय लूत अलैहिस्सलाम समुदाय की सुधार से निराश हो गये तो अल्लाह से सहायता की दुआ (प्रार्थना) की -----।

[3]अर्थात आदरणीय लूत की दुआ स्वीकार हुई तथा अल्लाह ने फ़रिश्तों को विनाश करने के लिए भेज दिया। वे फ़रिश्ते पहले आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास गये तथा उन्हें इसहाक़ अलैहिस्सलाम तथा याकूब अलैहिस्सलाम की शुभसूचना दी तथा साथ ही बताया कि हम लूत अलैहिस्सलाम की बस्ती को नाश करने आये हैं।

[4]अर्थात हमें ज्ञात है कि भले एवं ईमान वाले कौन हैं तथा उपद्रवी कौन ?

The Ummah Technology Mission

كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٣﴾

पत्नी के हम बचा लेंगे, अवश्य वह स्त्री पीछे रह जाने वालों में से है।[1]

وَلَمَّآ اَنْ جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوْا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۫ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ اِلَّا امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٣﴾

(३३) तथा फिर जब हमारे संदेशवाहक लूत (अलैहिस्सलाम) के पास पहुँचे तो वह उनके कारण दुखी हुए तथा दिल में शोक करने लगे।[2] संदेशवाहकों ने कहा कि आप भयभीत न हों न दुखी हों हम आपको आपके सम्बन्धियों सहित सुरक्षित कर लेंगे, परन्तु आपकी पत्नी[3] कि वह यातना के लिए शेष रह जाने वालों में से होगी।

---

[1]अर्थात उन पीछे रह जाने वालों में से जिनको प्रकोप के द्वारा नाश करना है। वह चूँकि ईमानवाली नहीं थी अपितु अपने समुदाय की पक्षधर थी, इसलिए उसे भी नाश कर दिया गया।

[2] سِيْٓءَ بِهِمْ का अर्थ है "उनके पास ऐसी वस्तु आयी जो उन्हें बुरी लगी तथा उससे भयभीत हो गये।" इसलिए कि लूत अलैहिस्सलाम ने उन फ़रिश्तों को जो मनुष्य के रूप में आये थे, मनुष्य ही समझा। भयभीत हुए अपने समुदाय के दुर्व्यवहार तथा उद्दण्डता के कारण कि इन सुन्दर अतिथियों के आगमन का ज्ञान यदि उसे हो गया तो वह उनसे बलपूर्वक अभद्र व्यवहार करेंगे, जिससे मेरा अपमान होगा। ضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا यह संकेत है असमर्थता से। जैसे ضَاقَتْ يَدُهُ (हाथ का तंग होना) संकेत है निर्धनता से। अर्थात इन सुन्दर आकर्षक अतिथियों को कुकर्मी सुमदाय से बचाने का कोई साधन उन्हें समझ में नहीं आ रहा था, जिससे वह दुखी तथा दिल ही दिल में शोकग्रस्त थे।

[3]फ़रिश्तों ने आदरणीय लूत की यह चिन्ता तथा शोक एवं दुख देखा तो उन्हें सांत्वना दी तथा कहा कि आप किसी प्रकार से दुखी अथवा भयभीत न हों, हम अल्लाह की ओर से भेजे गये फ़रिश्ते हैं। हमारा उद्देश्य आपको तथा आपके परिवार वालों को अपकी पत्नी के सिवाय सुरक्षा दिलाना है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّا مُنزِلُونَ عَلَىٰٓ أَهْلِ هَٰذِهِ ٱلْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ ٱلسَّمَآءِ بِمَا كَانُوا۟ يَفْسُقُونَ ﴿٣٤﴾

(३४) हम इस बस्ती वालों पर आकाशीय प्रकोप ढाने वाले हैं[1] इस कारण से कि ये उलंघनकारी हो रहे हैं।

وَلَقَد تَّرَكْنَا مِنْهَآ ءَايَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) तथा हमने इस बस्ती को खुली शिक्षा ग्रहण करने के लिए निशानी (लक्षण) बना दिया[2] उन लोगों के लिए जो बुद्धि रखते हैं।[3]

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يَٰقَوْمِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ وَٱرْجُوا۟

(३६) तथा मदयन की[4] ओर (हमने) उनके भाई शुऐब (अलैहिस्सलाम) को (भेजा) उन्होंने कहा कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! अल्लाह की

---

[1]इस आकाशीय प्रकोप से तात्पर्य वही प्रकोप है जिसके द्वारा लूत के समुदाय को ध्वंस किया गया। कहा जाता है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम उनकी बस्तियों को धरती से उखाड़कर आकाश की ऊँचाई तक ले गये फिर उनको उन ही पर उलटा दिया गया। उसके पश्चात कंकड़-पत्थर की वर्षा की गयी तथा उस स्थान को अति दुर्गन्धित झील में परिवर्तित कर दिया गया। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात पत्थरों के वे अवशेष जिनकी वर्षा उन पर की गयी, काला दुर्गन्धित पानीं तथा उल्टी हुई बस्तियाँ, ये सभी शिक्षा ग्रहण करने की निशानियाँ हैं। परन्तु किन के लिए ? बुद्धिमानों के लिए।

[3]इसलिए कि वही बातों पर विचार करते हैं, कारणों तथा कारकों का विश्लेषण करते हैं तथा परिणाम एवं लक्षण को देखते हैं, परन्तु जो लोग बुद्धि एवं समझ से वंचित होते हैं, उन्हें इन वस्तुओं से क्या सम्बन्ध ? वे तो उन पशुओं के समान हैं जिन्हें वध के लिए वधशाला ले जाया जाता है परन्तु उन्हें आभास तक नहीं होता। इसमें मक्का के मूर्तिपूजकों के लिए भी चेतावनी है कि वे भी झुठलाने तथा विरोध का मार्ग अपनाकर उसी मूर्खता एवं असतर्कता का प्रदर्शन कर रहे हैं, जो बुद्धि एवं समझ से वंचित लोगों का व्यवहार है।

[4]मदयन आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पुत्र का नाम था, कुछ के निकट यह उनके पौत्र का नाम है, पुत्र का नाम मदयान था। उन ही के नाम पर उस क़बीले (गोत्त) का नाम पड़ गया, जो उन ही के वंश पर सम्मिलित था। इसी मदयन क़बीले की ओर आदरणीय शुऐब अलैहिस्सलाम को नबी बनाकर भेजा गया। कुछ कहते हैं कि मदयन नगर का नाम था यह क़बीला अथवा नगर लूत अलैहिस्सलाम की बस्ती के निकट ही था।

The Ummah Technology Mission

الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٣٦﴾

इबादत (वंदना) करो, क़ियामत (प्रलय) के दिन की आशा रखो[1] तथा धरती में उपद्रव न फैलाते फिरो।[2]

فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٣٧﴾

(३७) फिर भी उन्होंने उन्हें झुठलाया, अन्त में उन्हें भूकम्प ने पकड़ लिया तथा वे अपने घरों में बैठे के बैठे मृत होकर रह गये।[3]

وَعَادًا وَّثَمُوْدَا۠ وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۫ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ﴿٣٨﴾

(३८) तथा हमने 'आद वालों' तथा 'समूद वालों' को भी (ध्वस्त किया) जिनके कुछ खण्डहर तुम्हारे समक्ष विद्यमान हैं,[4] तथा शैतान ने उनके कुकर्मों को सुसज्जित करके दिखाया था तथा उन्हें मार्ग से रोक दिया था इसके उपरान्त कि यह आँखों वाले तथा चतुर थे।[5]

---

[1]अल्लाह की इबादत के पश्चात उन्हें आख़िरत की याद दिलायी गयी या तो इसलिए कि वे आख़िरत (परलोक) पर विश्वास नहीं करते थे, अथवा इसलिए कि वे उसे भूल गये थे तथा पापों में लीन थे तथा जो समाज आख़िरत को भूल जाये वह पाप में निर्भीक हो जाता है, जैसे आजकल मुसलमानों के बहुमत का हाल है।

[2]नाप-तौल में कमी तथा लोगों को कम देना, यह रोग सामान्य रूप से व्याप्त था तथा पाप करने में भी उन्हें भय नहीं था, जिससे धरती पर आतंक व्याप्त हो गया था।

[3]आदरणीय शुऐब अलैहिस्सलाम की बातों एवं भाषण का उन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। अन्त में बादलों की छाया वाले दिन जिब्रील की एक तीव्र चीख़ से धरती में कम्पन उत्पन्न हुआ, जिससे उनके दिल उछलकर आँखों में आ गये तथा उनकी मृत्यु हो गयी और वे घुटनों के बल बैठे के बैठे रह गये।

[4]आद के समुदाय की बस्ती अहक़ाफ़, हद्रमूत (यमन के लाल सागर का तटीय भाग) के निकट तथा समूद की बस्ती हिज्र जिसे आजकल मदायन स्वालेह कहते हैं, हिजाज़ के उत्तर में है। इन क्षेत्रों से अरबों की व्यवपारिक यात्रायें हुआ करती थीं, इसलिए ये बस्तियाँ उनके लिए अपरिचित नहीं बल्कि परिचित थीं।

[5]अर्थात थे वे बुद्धिमान एवं चतुर। परन्तु धर्म के विषय में उन्होंने अपनी बुद्धि एवं समझ का प्रयोग नहीं किया। इसलिए यह बुद्धि एवं समझ उनके काम न आयी।

The Ummah Technology Mission

وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ ۫ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا سٰبِقِيْنَ ۚ﴿۳۹﴾

(३९) तथा क़ारून, फ़िरऔन तथा हामान को भी, उनके पास (आदरणीय) मूसा खुले-खुले चमत्कार लेकर आये थे,[1] फिर भी उन्होंने धरती पर घमण्ड किया परन्तु हमसे आगे बढ़ने वाले न हो सके।[2]

فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَمِنْهُمْ

(४०) फिर तो हमने प्रत्येक को उसके पाप की आपदा में धर लिया,[3] उनमें से कुछ पर हमने पत्थरों की वर्षा की,[4] उनमें से कुछ को तीव्र ध्वनि ने दबोच लिया,[5] उनमें से कुछ को हमने धरती में धंसा दिया[6] तथा

---

[1]अर्थात प्रमाण एवं चमत्कार का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा तथा निरन्तर अहंकारी बने रहे, अर्थात ईमान तथा अल्लाह के भय के मार्ग को अपनाने से विमुख हुए।

[2]अर्थात हमारी पकड़ से बचकर नहीं जा सके तथा हमारी यातना की पकड़ में आकर ही रहे। एक अन्य अनुवाद है "यह कुफ़्र में बढ़ने वाले नहीं थे" बल्कि उनसे पूर्व भी बहुत से समुदाय गुज़र चुके हैं, जिन्होंने उसी प्रकार कुफ़्र तथा अहंकार का मार्ग अपनाये रखा।

[3]अर्थात इन वर्णित में से प्रत्येक की, उनके पापों के कारण हमने पकड़ की।

[4]यह आद का समुदाय था, जिस पर अति तीव्र हवाओं का प्रकोप आया। ये हवायें धरती से कंकरियाँ उड़ाकर उन पर बरसातीं। अन्त में उनकी तीव्रता इतनी बढ़ी कि उन्हें उड़ाकर आकाश तक ले जातीं तथा उन्हें सिर के बल दे मारतीं, जिससे उनके सिर अलग तथा धड़ अलग हो जाते जैसेकि वे खजूर के खोखले तने हैं। (इब्ने कसीर) कुछ व्याख्याकारों ने حاصبا का चरितार्थ लूत के समुदाय को बताया है। परन्तु इमाम इब्ने कसीर ने इसे सही नहीं माना है तथा आदरणीय इब्ने अब्बास की ओर सम्बन्धित कथन को क्रमान्तर बताया है।

[5]यह आदरणीय स्वालेह का समुदाय समूद है, जिन्हें उनके कहने पर पत्थर की एक चट्टान से ऊँटनी निकाल कर दिखायी गयी। परन्तु उन अत्याचारियों ने ईमान लाने के बजाये उस ऊँटनी को ही मार डाला, जिसके तीन दिन के पश्चात उन पर तीव्र चिंघाड़ का प्रकोप आया, जिसने उनकी आवाज़ तथा चाल को शान्त कर दिया।

[6]यह क़ारून है जिसे धन-द्रव्य के कोष प्रदान किये गये थे। परन्तु यह इस गर्व में लिप्त हो गया कि वह धन-धान्य इस बात का प्रमाण है कि मैं अल्लाह के यहाँ सम्मानित तथा

The Ummah Technology Mission

مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٠﴾

उनमें से कुछ को हमने पानी में डुबो दिया,[1] अल्लाह तआला ऐसा नहीं कि उन पर अत्याचार करे बल्कि वही लोग अपने प्राणों पर अत्याचार करते थे।[2]

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ۭ وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾

(४१) जिन लोगों ने अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त अन्य को कार्यक्षम (देवता) निर्धारित कर रखा है, उनका उदाहरण मकड़ी के समान है कि वह भी एक घर बनाती है, यद्यपि सभी घरों से अधिक कमज़ोर घर मकड़ी का घर ही है[3] काश, कि वे जान लेते।

اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ۭ

(४२) अल्लाह (तआला) उन सभी वस्तुओं को जानता है जिन्हें वह उसके अतिरिक्त

आदरणीय हूँ, मुझे मूसा की बात को स्वीकार करने की क्या आवश्यकता है ? अत: उसे उसके कोषों तथा महलों सहित धरती में धंसा दिया गया।

[1]यह फ़िरऔन है जो मिस्र देश का राजा था, परन्तु सीमा उल्लंघन करके अपने आपको भगवान (उपास्य) घोषित कर दिया आदरणीय मूसा पर ईमान लाने से तथा उनके समुदाय इस्राईल की सन्तान को, जिसको उसने दास बना रखा था, स्वतन्त्र करने से इंकार कर दिया। अन्त में एक प्रात: उसको उसकी सम्पूर्ण सेना सहित लाल सागर (कुल्जुम) में डुबो दिया गया।

[2]अर्थात अल्लाह का गुण नहीं कि वह अत्याचार करे। इसलिए पूर्वकालीन समुदाय, जिन पर प्रकोप आया, मात्र इसलिए ध्वंस हुए कि कुफ़्र एवं शिर्क तथा झुठलाने एवं पाप जैसे कर्म करके उन्होंने स्वयं ही अपने प्राणों पर अत्याचार किया था।

[3]अर्थात जिस प्रकार मकड़ी का जाला (घर) अत्यन्त क्षीण तथा अस्थाई होता है, हाथ के तनिक संकेत से वह नष्ट हो जाता है, अल्लाह के अतिरिक्त अन्यों को अपना कार्यक्षम तथा कष्टनिवारक, समझना भी बिल्कुल उसी के समान है, अर्थात सर्वथा व्यर्थ है, क्योंकि वे भी किसी के काम नहीं आ सकते। इसलिए अल्लाह के अतिरिक्त अन्य के सहारे भी मकड़ी के जाले के समान सर्वथा अस्थाई हैं। यदि यह सुदृढ़ तथा लाभप्रद होते तो यह देवता पूर्वकालीन समुदायों को बचा लेते परन्तु दुनिया ने देख लिया कि वे उन्हें नहीं बचा सके।

The Ummah Technology Mission

وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤٢﴾

पुकार रहे हैं, तथा वह अत्यन्त प्रभावशाली एवं तत्वज्ञ है।

وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾

(४३) तथा हम इन उदाहरणों को लोगों के लिए वर्णन कर रहे हैं,[1] तथा इन्हें केवल ज्ञान वाले ही समझते हैं।[2]

خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٤﴾

(४४) अल्लाह तआला ने आकाशों तथा धरती को हित तथा सत्य के साथ पैदा किया है,[3] ईमानवालों के लिए तो इसमें बड़ी भारी निशानी (प्रमाण) है।[4]

The Ummah Technology Mission

---

[1]अर्थात उन्हें असतर्कता के स्वप्न से जागृत करने, शिर्क की वास्तविकता से सचेत करने तथा मार्गदर्शन सुझाने के लिए।

[2]इस ज्ञान से तात्पर्य अल्लाह का, उसके धार्मिक विधानों का तथा उन आयतों एवं तर्कों का ज्ञान है जिन पर विचार तथा चिन्तन-मनन करने से मनुष्य को अल्लाह का ज्ञान प्राप्त होती है तथा प्रकाश का मार्ग प्रशस्त होता है।

[3]अर्थात व्यर्थ तथा बिना उद्देश्य के नहीं।

[4]अर्थात अल्लाह के अस्तित्व, उसके सामर्थ्य तथा ज्ञान एवं नीति की। तथा फिर उसी प्रमाण से वह इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि सृष्टि में उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, कोई आवश्यकता पूर्ति करने वाला तथा संकटहारी नहीं।

اُتْلُ مَآ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ وَاللّٰهُ یَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ﴿۴۵﴾

(४५) जो किताब आपकी ओर प्रकाशना (वहयी) की गयी है उसे पढ़िये [1] तथा नमाज स्थापित कीजिए (निश्चित रूप से पढ़िये)। [2] नि:संदेह नमाज निर्लज्जा तथा दुराचार से रोकती है,[3] नि:संदेह अल्लाह का स्मरण बहुत

---

[1]क़ुरआन करीम के पाठ के अनेक उद्देश्य हैं। मात्र प्रतिकार तथा पुण्य के लिए, उसके अर्थ एवं भावार्थ पर विचार एवं चिन्तन के लिए, शिक्षा-दीक्षा के लिए तथा भाषण एवं व्याख्या के लिए, पाठ के आदेश में ये सभी प्रकार सम्मिलित हैं।

[2]क्योंकि नमाज से (यदि नमाज हो) मनुष्य का विशेषरूप से सम्बन्ध अल्लाह से हो जाता है, जिससे मनुष्य को अल्लाह तआला की सहायता प्राप्त होती है, जो जीवन के प्रत्येक मोड़ पर उसकी दृढ़ता एवं स्थिरता का कारण तथा मार्गदर्शन का साधन सिद्ध होती है। इसीलिए क़ुरआन करीम में कहा गया है,

﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱسْتَعِينُواْ بِٱلصَّبْرِ وَٱلصَّلَوٰةِ ﴾

"हे ईमानवालो ! धैर्य एवं नमाज से सहायता प्राप्त करो।" (सूरः अल-बक़रः-१५३)

नमाज तथा धैर्य कोई भौतिक (दृश्य) वस्तु तोनहीं कि मनुष्य उसे पकड़कर सहायता प्राप्त करे। यह तो अगोचर वस्तु है। इसका अर्थ यह है कि मनुष्य का इनके द्वारा अपने प्रभु से विशेष सम्बन्ध एवं लगाव हो जाता है। वह पग-पग पर उसकी सहायता एवं मार्गदर्शन करता है, इसीलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रात्रि के एकान्त में तहज्जुद की नमाज पढ़ने पर बल दिया गया, क्योंकि आपके ऊपर जो महान कार्य सौंपा गया था, उसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह की सहायता की अत्यधिक आवश्यकता थी। यही कारण है कि स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी जब कोई महत्वपूर्ण समस्या का सामना होता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज का प्रयोजन करते। «إِذَا حَزَبَهُ أَمْرٌ فَزِعَ إِلَى الصَّلٰوةِ »(मुसनद अहमद तथा अबू दाऊद)

[3]अर्थात असभ्यता एवं बुराई को रोकने का साधन बनती है, जिस प्रकार औषधियों के विभिन्न प्रभाव हैं तथा कहा जाता है कि अमुक औषधि अमुक रोग को रोकती है तथा वास्तव में ऐसा होता है, परन्तु कब ? जब दो बातों को ध्यान में रखा जाये। एक तो औषधि को नियमित रूप से उस नियम तथा प्रतिबंध के साथ प्रयोग किया जाये, जो वैद्य, हकीम अथवा डाक्टर ने बताया है। दूसरा परहेज अर्थात ऐसी वस्तुओं का प्रयोग न किया जाये जो उस औषधि के प्रभाव को कम करे अथवा समाप्त कर दे। इसी प्रकार नमाज में भी अल्लाह तआला ने ऐसा अध्यात्मिक प्रभाव रखा है कि यह मनुष्य को असभ्यता तथा बुराई से रोकती है, परन्तु उसी समय जब नमाज सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि

The Ummah Technology Mission

बड़ी बात है ।[1] तुम जो कुछ कर रहे हो उससे अल्लाह (तआला) अवगत है ।

وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۖ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ

(४६) तथा अहले किताब के साथ अत्यन्त सभ्यतापूर्ण विधि से वाद-विवाद करो,[2] परन्तु उनके साथ जो उनमें अन्यायी हैं ।[3] तथा स्पष्ट घोषणा कर दो कि हमारा तो उस किताब पर भी ईमान है, जो हम पर

वसल्लम के अनुसार उन विधियों तथा प्रतिबंधों के साथ पढ़ी जाये जो उसकी शुद्धता एवं मान्यता के लिए अनिवार्य हैं । जैसे, उसके लिए प्रथम वस्तु नि:स्वार्थता है, द्वितीय हृदय की पवित्रता अर्थात नमाज़ में अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की ओर ध्यान न हो, तृतीय सामूहिक रूप में एकत्रित होकर निर्धारित समय पर पढ़ी जाये, चतुर्थ नमाज़ के आधार (क़ुरआन का पाठ, रूकूअ (झुकना), बैठक (क़ौम:), नत्मस्तक होना (सजदा) आदि में संतुलन एवं शान्ति, पूर्ण एकाग्रता, ख़ुशूअ-ख़ुदूअ (तल्लीनता एवं रूंधित) अवस्था, नियमित रूप से उसका प्रबन्ध, और वैध एवं पवित्र जीविका का प्रयोग । हमारी नमाज़ें इन प्रतिबन्धों एवं नियमों से शून्य हैं, इसी कारण उसके प्रभाव भी हमारे जीवन में प्रदर्शित नहीं हो रहे हैं जो क़ुरआन करीम में बताये गये हैं । कुछ ने इसके अर्थ आदेश के किये हैं अर्थात नमाज़ पढ़ने वाले को चाहिए कि वह असभ्य कार्यों एवं बुराई से रूक जाये ।

[1]अर्थात निर्लज्जता तथा दुराचार से रोकने में अल्लाह का वर्णन नमाज़ की स्थापना से भी अधिक प्रभावशाली है इसलिए कि मनुष्य जब तक नमाज़ पढ़ता है बुराई से रूका रहता है, परन्तु बाद में उसका प्रभाव क्षीण हो जाता है । इसके विपरीत हर समय अल्लाह का स्मरण उसके लिए हर समय बुराई में बाधक रहता है ।

[2]इसलिए कि वे ज्ञानी एवं बुद्धिमान हैं, बात को समझने की योग्यता एवं क्षमता रखते हैं । इस कारण उनसे विवाद एवं वार्ता में कटुता एवं तीव्रता उचित नहीं ।

[3]अर्थात जो वाद-विवाद में अति से काम लें तो तुम्हें भी कड़ी बात तथा भाषा प्रयोग करने की अनुमति है । कुछ ने प्रथम गुट से तात्पर्य वे अहले किताब लिए हैं जो मुसलमान हो गये थे तथा दूसरे गुट से वे लोग जो मुसलमान नहीं हुए, बल्कि यहूदी एवं इसाई ही रहे तथा कुछ ने ظَلَمُوا مِنهُم का अभिप्राय उन अहले किताब को लिया है जो मुसलमानों के विरूद्ध हिंसक विचार रखते थे तथा लड़ते-भिड़ते थे । उनसे तुम भी लड़ा करो, यहाँ तक कि वे मुसलमान हो जायें अथवा सुरक्षा कर (जिज़या) दें ।

The Ummah Technology Mission

وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٤٦﴾

अवतरित की गयी है तथा उस पर भी जो तुम पर अवतरित की गयी।[1] हमारा-तुम्हारा प्रभु एक ही है, हम सब उसी के आदेशाधीन हैं।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰٓؤُلَآءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा हमने उसी प्रकार आपकी ओर अपनी किताब अवतरित की है। अत: जिन्हें हमने किताब प्रदान की है, वे उस पर ईमान लाते हैं[2] तथा उनमें से कुछ उस पर ईमान रखते हैं,[3] तथा हमारी आयतों को अस्वीकार केवल काफ़िर ही करते हैं।

وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा इससे पूर्व तो आप कोई किताब पढ़ते न थे,[4] तथा न किसी किताब को अपने हाथ से लिखते थे[5] कि यह असत्य के पुजारी लोग शंका एवम् सन्देह में पड़ते।[6]

---

[1]अर्थात तौरात तथा इंजील पर। अर्थात ये भी अल्लाह की ओर से अवतरित की गयी हैं तथा यह कि इस्लाम के धर्मविधान आने तथा मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी उदघोषित होने से पूर्व यही अल्लाह का धर्म विधान था।

[2]इससे तात्पर्य अब्दुल्लाह बिन सलाम आदि हैं। किताब प्रदान से तात्पर्य है उसके अनुसार कर्म करना। जैसाकि उसके अनुसार जो कर्म नहीं करते, उन्हें यह किताब प्रदान ही नहीं की गयी।

[3]इनसे तात्पर्य मक्कावासी हैं, जिनमें से कुछ ईमान ले आये थे।

[4]इसलिए कि अनपढ़ थे।

[5]इसलिए कि लिखने के लिए भी शिक्षा आवश्यक है, जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी से प्राप्त नहीं की थी।

[6]अर्थात यदि आप कुछ पढ़े-लिखे होते अथवा किसी गुरू से शिक्षा प्राप्त किये होते, तो कहते कि यह क़ुरआन अमुक व्यक्ति की सहायता अथवा उससे शिक्षा प्राप्त करने का परिणाम है।

The Ummah Technology Mission

بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَاۤ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ۝٤٩

(४९) वरन् यह (क़ुरआन) तो प्रकाशमय आयतें (सूत्र) हैं जो ज्ञानियों के हृदय में सुरक्षित हैं।[1] हमारी आयतों को अस्वीकार करने वाला सिवाय अत्याचारियों के कोई अन्य नहीं।

وَقَالُوْا لَوْلَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاِنَّمَاۤ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٥٠

(५०) तथा उन्होंने कहा कि इस पर कुछ निशानियाँ (चमत्कार) इसके प्रभु की ओर से क्यों नहीं उतारी गयीं। (आप) कह दीजिए निशानियाँ तो सभी अल्लाह के पास हैं[2] मेरी स्थिति तो केवल स्पष्टरूप से सचेत कर देने वाले की है।

اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٥١ ع

(५१) क्या उन्हें यह पर्याप्त नहीं कि हमने आप पर अपनी किताब अवतरित कर दी जो उन पर पढ़ी जा रही है।[3] इसमें कृपा (भी) है तथा शिक्षा (भी) है, उन लोगों के लिए जो ईमान वाले हैं।[4]

---

[1]अर्थात क़ुरआन मजीद के हाफ़िज़ों (कण्ठस्थ करने वालों) के हृदय में, यह क़ुरआन का चमत्कार है कि क़ुरआन मजीद अक्षरश: हृदय में सुरक्षित हो जाता है।

[2]अर्थात ये चिन्ह उसकी चाहत एवं योजना जिन भक्तों पर उतारने की माँग करती है, वहाँ वह अवतरित करता है, इसमें अल्लाह के अतिरिक्त किसी का अधिकार नहीं है।

[3]अर्थात वे लक्षणों की माँग करते हैं। क्या उनके लिये लक्षण स्वरूप यह क़ुरआन पर्याप्त नहीं है जो हमने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर अवतरित किया है तथा जिसके विषय में उन्हें चैलेंज किया गया है कि इस जैसा क़ुरआन लाकर दिखाओ अथवा कोई एक अध्याय ही बनाकर प्रस्तुत करो। जब क़ुरआन के इस चमत्कार-प्रदर्शन के उपरान्त भी ये क़ुरआन पर ईमान नहीं ला रहे हैं तो आदरणीय मूसा तथा ईसा अलैहिस्सलाम की भाँति इन्हें चमत्कार दिखा भी दिये जायें, तो उस पर यह कौन-सा ईमान ले आयेंगे ?

[4]अर्थात उन लोगों के लिए जो इस बात की पुष्टि करते हैं कि यह क़ुरआन अल्लाह की ओर से आया है, क्योंकि वही इससे लाभ उठाते हैं।

The Ummah Technology Mission

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝۵۲

(५२) कह दीजिए कि मुझमें तथा तुममें अल्लाह तआला का साक्षी होना पर्याप्त है,[1] वह आकाश तथा धरती की प्रत्येक वस्तुओं का जानने वाला है, जो लोग असत्य को मानने वाले हैं तथा अल्लाह (तआला) से कुफ़्र करने वाले हैं,[2] वे अत्यधिक हानि में हैं[3]।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۭ وَلَوْلَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَاۗءَهُمُ الْعَذَابُ ۭ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝۵۳

(५३) तथा ये लोग आप से प्रकोप की शीघ्रता मचा रहे हैं,[4] यदि मेरी ओर से निर्धारित समय न होता, तो अभी तक उनके पास प्रकोप आ चुका होता, [5] यह निश्चित बात है कि सहसा उनके अनजाने में उनके पास प्रकोप आ पहुँचेगा।[6]

---

[1]इस बात पर कि मैं अल्लाह का नबी हूँ तथा जो किताब अवतरित हुई है निश्चित रूप से अल्लाह की ओर से है।

[2]अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को पूज्य ठहराते हैं तथा जो वास्तव में इबादत के योग्य है अर्थात अल्लाह तआला, उसका इंकार करते हैं।

[3]क्योंकि यही लोग बौद्धिक उपद्रव एवं बुरे विचारों में लिप्त हैं, इसलिए उन्होंने जो सौदा किया है कि ईमान के बदले कुफ़्र तथा मार्गदर्शन के बदले भटकावे को ख़रीदा है, उसमें ये हानि उठाने वाले हैं।

[4]अर्थात संदेष्टा की बात मानने के बजाय कहते हैं कि यदि तू सच्चा है तो हम पर प्रकोप उतरवा दे।

[5]अर्थात उनके कथन एवं कर्म अवश्य इस योग्य हैं कि उन्हें तुरन्त धरती से समाप्त कर दिया जाय। परन्तु हमारा नियम है कि प्रत्येक समुदाय को एक निश्चित समय तक अवसर देते हैं, जब कर्म करने की अवधि समाप्त हो जाती है तो हमारा प्रकोप आ जाता है।

[6]अर्थात प्रकोप का जब निर्धारित समय आ जायेगा तो इस प्रकार अचानक आयेगा कि उन्हें पता भी न चलेगा। यह निर्धारित समय वह है जो मक्कावासियों के लिए उसने

The Ummah Technology Mission

يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿۵۴﴾

(५४) ये प्रकोप की शीघ्रता मचा रहे हैं तथा (शान्ति रखें) नरक काफ़िरों को घेर लेने वाला है।[1]

يَوْمَ يَغْشٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۵۵﴾

(५५) उस दिन उनके ऊपर-नीचे से उन्हें प्रकोप ढाँक रहा होगा[2] तथा अल्लाह महान कहेगा कि अब अपने कुकर्मों का स्वाद चखो।

يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ﴿۵۶﴾

(५६) हे मेरे ईमान वाले भक्तो! मेरी धरती अति विस्तृत है, तो तुम मेरी ही इबादत करो।[3]

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۵۷﴾

(५७) प्रत्येक प्राणी को मृत्यु का स्वाद चखना है तथा तुम सब हमारी ही ओर लौटाये जाओगे।[4]

लिख रखा था, अर्थात बद्र के युद्ध में हत्या एवं बन्दी बनाया जाना अथवा फिर क़ियामत का आना है, जिसके पश्चात काफ़िरों के लिए यातना ही यातना है।

[1]प्रथम يستعجلونك सूचना (विधेय) के रूप में था तथा यह द्वितीय आश्चर्य के रूप में है अर्थात यह बात आश्चर्यजनक है कि यातना के स्थान (नरक) उनको अपने घेरे में लिये हुआ है। फिर भी ये प्रकोप के लिए शीघ्रता मचा रहे हैं! यद्यपि प्रत्येक आने वाली वस्तु निकट ही होती है, उसे दूर क्यों समझते हैं? अथवा यह पुनरावृत्ति बल देने के लिए है।

[2] يَقُوْلُ का कर्त्ता अल्लाह है अथवा फ़रिश्ते, अर्थात चारों ओर से जब उन पर यातना हो रही होगी तो कहा जायेगा।

[3]उसमें ऐसे स्थान से, जहाँ अल्लाह की इबादत करना कठिन हो तथा धर्म पर स्थित रहना कष्टदायी हो जाये तो स्थानान्तरण का आदेश है, जिस प्रकार मुसलमानों ने पहले इथोपिया तथा तत्पश्चात मदीना की ओर प्रस्थान किया।

[4]अर्थात मृत्यु का कड़ुवा घूंट तो अन्ततः सभी को पीना है, स्थानान्तरण करोगे तब भी तथा न करोगे तब भी, इसलिए तुम्हारे लिए देश तथा सम्बन्धियों एवं मित्रों को छोड़ना कठिन नहीं होना चाहिए। मृत्यु तो तुम जहाँ भी होगे आ जायेगी। परन्तु यदि अल्लाह की इबादत करते हुए मृत्यु आ जायेगी तो तुम परलोक के सुखभोगी होगे, इसलिए कि मरकर तो अल्लाह ही के पास जाना है।

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿۵۸﴾

(५८) तथा जो लोग ईमान लाये तथा पुण्य के कार्य भी किये उन्हें हम निश्चित रूप से स्वर्ग के, उन उच्च मकानों में स्थान देंगे जिनके नीचे से नदियाँ बह रही हैं [1] जहाँ वे सदैव रहेंगे। [2] कार्य करने वालों का क्या ही सुन्दर परिणाम है।

الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿۵۹﴾

(५९) वे जिन्होंने धैर्य रखा,[3] तथा अपने प्रभु पर भरोसा रखते हैं।[4]

وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۶۰﴾

(६०) तथा बहुत से[5] पशु हैं जो अपनी जीविका लादे नहीं फिरते[6] उन सबको तथा तुम्हें भी अल्लाह तआला ही जीविका प्रदान

---

[1]अर्थात स्वर्गवासियों के घर ऊँचे होंगे, जिनके नीचे सरितायें प्रवाहित होंगी। ये सरितायें शीतल जल, मदिरा, मधु तथा दूध की होंगी, इसके अतिरिक्त उनकी धारायें जिस ओर फेरना चाहेंगे, फिर जायेंगी।

[2]उनके क्षय (अन्त) का भय होगा न उन्हें मृत्यु का भय, न किसी अन्य स्थान कि ओर फिर जाने का भय।

[3]अर्थात धर्म पर अटल से स्थायी रहे, स्थानान्तरण के कष्ट सहन किये, परिवार वाले निकट सम्बन्धी एवं मित्रों की दूरी को मात्र अल्लाह की प्रसन्नता के लिए सहन किये।

[4]धार्मिक तथा सांसारिक प्रत्येक विषय एवं परिस्थिति में।

[5] كَاَيِّنْ में काफ़ (ك) उपमा का है तथा अर्थ है कितने ही अथवा बहुत से।

[6]क्योंकि उठाकर ले जाने का उनमें साहस ही नहीं होता, उसी प्रकार वे भण्डार भी नहीं कर सकते। अर्थ यह है कि जीविका किसी विशेष स्थान से सम्बन्धित नहीं होती, अपितु अल्लाह की जीविका अपनी समस्त सृष्टि के लिए सामान्य रूप से है, वह जो भी हो, तथा जहाँ भी हो बल्कि अल्लाह तआला ने हिजरत (स्थानान्तरण) कर जाने वाले सहाबा को पूर्व से कहीं अधिक तथा पवित्र जीविका प्रदान की, इसके अतिरिक्त अल्प अवधि में ही उन्हें अरब के विभिन्न क्षेत्रों का शासन प्रदान कर दिया। رضي الله عنهم اجمعين

The Ummah Technology Mission

करता है।[1] वह अत्यधिक सुनने जानने वाला है।[2]

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٦١﴾

(६१) तथा यदि आप उनसे पूछें कि धरती तथा आकाश का स्रष्टा तथा सूर्य एवं चन्द्रमा को कार्य में लगाने वाला कौन है तो उनका उत्तर यही होगा कि अल्लाह तआला,[3] तो फिर किधर उल्टे जा रहे हैं।[4]

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ

(६२) अल्लाह तआला अपने भक्तों में से जिसे चाहे अत्याधिक जीविका प्रदान करता है तथा जिसे चाहे कम,[5] नि:संदेह अल्लाह

---

[1]अर्थात कोई कमज़ोर है अथवा शक्तिशाली, संसाधन से परिपूर्ण है अथवा शून्य, स्वदेश में है अथवा शरणार्थी एवं परदेसी, सबकी जीविका चलाने वाला वही अल्लाह है, जो चीटियों को धरती के कोने में, पक्षियों को हवाओं में, मछलियों तथा अन्य जलीय जीवों को समुद्र की गहराईयों में जीविका पहुँचाता है। इस अवसर पर अर्थ यह है कि निर्धनता एवं भुखमरी का भय हिजरत में बाधक न बने, इसलिए कि अल्लाह तआला तुम्हारी तथा समस्त सृष्टि की जीविका उपलब्ध कराने का उत्तरदायी है।

[2]वह जानने वाला है तुम्हारे कर्म तथा करनी का तथा तुम्हारे गुप्त तथा प्रकट का। इसलिए केवल उसी से डरो, उसी की आज्ञा पालन में सफलता एवं लाभ है तथा उसकी अवज्ञा में दुर्भाग्य एवं हानि।

[3]अर्थात ये मूर्तिपूजक मुसलमानों को मात्र एकेश्वरवाद में विश्वास करने के कारण यातनायें पहुँचा रहे हैं, उनसे यदि पूछा जाये कि आकाश एवं धरती को नास्ति से उत्पन्न करने वाला तथा सूर्य एवं चन्द्रमा को अपनी परिधि में परिक्रमा कराने वाला कौन है, तो वहाँ यह स्वीकार करने के लिए बाध्य हैं कि ये सब कुछ करने वाला अल्लाह है।

[4]अर्थात तर्कों एवं स्वीकार के उपरान्त सत्य से यह विमुख होना आश्चर्य जनक है।

[5]यह मूर्तिपूजकों की आपत्ति का उत्तर है, जो वे मुसलमान से करते थे कि यदि तुम सत्य पर हो तो निर्धन एवं निर्बल क्यों हो ? अल्लाह ने कहा कि जीविका में विस्तार एवं कमी अल्लाह के अधिकार में है, वह अपने इच्छा एवं नीति के अनुसार जिसको चाहता है कम अथवा अधिक प्रदान करता है। इसका सम्बन्ध उसकी प्रसन्नता एवं क्रोध से नहीं है।

The Ummah Technology Mission

بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٢﴾

तआला प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है।[1]

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّن نَّزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِن بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٣﴾

(६३) तथा यदि आप उनसे प्रश्न करें कि आकाश से पानी बरसा कर धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवित करने वाला कौन है, तो नि:संदेह उनका उत्तर यही होगा कि अल्लाह तआला। आप कह दें कि सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, बल्कि उनमें अधिकांश लोग निर्बोध हैं।[2]

وَمَا هَٰذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهْوٌ وَلَعِبٌ ۚ وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٦٤﴾

(६४) तथा दुनिया का यह जीवन तो मात्र मनोरंजन तथा क्रीडा है,[3] हाँ सत्य जीवन तो परलोक का घर है,[4] यदि ये जानते होते![5]

فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا

(६५) जब यह लोग नाव में सवार होते हैं तो अल्लाह (तआला) को ही पुकारते हैं उसके लिए इबादत को विशषे करके, फिर जब वह

---

[1]इसको भी वही जानता है कि अधिक जीविका किसके लिए लाभकारी है तथा किसके लिए नहीं।

[2]क्योंकि बुद्धि होती तो अपने प्रभु के साथ पत्थरों को, मृतकों को प्रभु न बनाते, न उनके अन्दर यह प्रतिकूलता होती कि अल्लाह तआला को स्रष्टा एवं रचयिता तथा पालनहार मानते हुए भी बुतों (मूर्तियों) को संकटहारी तथा पूज्य समझ रहे हैं।

[3]अर्थात जिस संसार ने उन्हें परलोक से अँधा तथा उसके लिए यात्रा साधन एकत्र करने से अचेत कर रखा है, वह एक खेल-कूद से अधिक महत्व नहीं रखता। काफ़िर सांसारिक व्यापार में लीन रहता है, उसके लिए रात-दिन परिश्रम करता है, परन्तु जब मरता है तो ख़ाली हाथ होता है। जिस प्रकार बच्चे सारे दिन मिट्टी के घरौंदों से खेलते हैं, फिर ख़ाली हाथ घरों को लौट जाते हैं, थकान के सिवाय उन्हें कुछ प्राप्त नहीं होता।

[4]इसलिए ऐसे पुण्य कार्य करने चाहिये जिनसे परलोक का घर अलंकृत हो जाये।

[5]क्योंकि यदि वे यह बात जान लेते तो परलोक से निश्चिन्त होकर संसार में लीन न हो जाते। इसलिए उनका उपचार ज्ञान है, धार्मिक ज्ञान।

The Ummah Technology Mission

نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٥﴾

उन्हें थल की ओर सुरक्षित ले आता है तो उसी समय शिर्क करने लगते हैं।[1]

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ وَلِيَتَمَتَّعُوْا ۟ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾

(६६) ताकि हमारे प्रदान किये हुए उपकारों से मुकरते रहें तथा लाभान्वित होते रहें।[2] अभी-अभी उन्हें पता चल जायेगा।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ

(६७) क्या ये नहीं देखते कि हमने हरम को शान्तिमय बना दिया, जब कि उनके निकटवर्ती क्षेत्र से लोग अपहृत कर लिये जाते हैं,[3] क्या ये असत्य पर तो विश्वास

---

[1]मूर्तिपूजकों के इस विपरीतता को भी क़ुरआन करीम में विभिन्न स्थानों पर वर्णन किया गया है। इस प्रतिकूलता को आदरणीय इकरमः समझ गये थे, जिसके कारण उन्हें इस्लाम धर्म धारण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके सम्बन्ध में यह आया है कि मक्का की विजय के पश्चात यह मक्का से भाग गये ताकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पकड़ से बच जायें। यह इथोपिया जाने के लिए नाव में बैठे कि नाव भंवर में फंस गयी, तो नाव में सवार लोगों ने कहा कि एकाग्रता एवं शुद्ध हृदय से प्रभु से प्रार्थना करो, इसलिए कि यहाँ उसके अतिरिक्त कोई बचाने वाला नहीं है। आदरणीय इकरमः ने यह सुनकर कहा कि यदि यहाँ समुद्र में उसके अतिरिक्त कोई नहीं बचा सकता तो धरती पर भी कोई उसके अतिरिक्त नहीं बचा सकता। तथा उसी समय यह निश्चय कर लिया कि यदि मैं किनारे पर सुरक्षित पहुँच गया तो मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ पर इस्लाम धर्म स्वीकार कर लूंगा। अतः यहाँ से सुरक्षित लौटकर इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। رضي الله عنه (इब्ने कसीर, उद्धघृत सीरत मोहम्मद विन इसहाक)

[2]यह لام अक्षर كَـــي का है, जो कारण बताने के लिए है अर्थात बच जाने के पश्चात अल्लाह का साझीदार बनाना इसलिए है कि वे कुफ़्र का कार्य करते रहें तथा सांसारिक स्वाद से लाभान्वित होते रहें। क्योंकि यदि वे कृतज्ञता व्यक्त करते तो एकेश्वरवाद पर दृढ़ रहते तथा एक मात्र अल्लाह ही को सदैव पुकारते। कुछ के निकट ये لام परिणामवाचक है, अर्थात यद्यपि उन का विचार कुफ़्र करने का नहीं है, परन्तु पुनः शिर्क करने का परिणाम अन्ततः कुफ़्र ही है।

[3]अल्लाह तआला उस उपकार का वर्णन कर रहा है जो मक्कावासियों पर उसने किया है कि हमने उनके हरम को शान्तिवाला बनाया है, जिसके निवासी हत्या एवं अपहरण,

The Ummah Technology Mission

يَكْفُرُوْنَ ﴿٦٧﴾

रखते हैं तथा अल्लाह (तआला) के उपकारों पर कृतघ्नता करते हैं।[1]

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِىْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾

(६८) तथा उससे बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह (तआला) पर मिथ्यारोपण करे[2] अथवा जब सत्य उसके पास आ जाये, वह उसे असत्य बताये,[3] क्या ऐसे काफ़िरों का ठिकाना नरक में न होगा ?

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٦٩﴾ ع

(६९) तथा जो लोग हमारे मार्ग में दुख सहन करते हैं,[4] हम उन्हें अपने मार्ग अवश्य दिखा देंगे।[5] नि:संदेह अल्लाह (तआला) सदाचारियों का साथी है।[6]

लूटमार आदि से सुरक्षित हैं, जबकि अरब के अन्य क्षेत्र इस प्रकार की शान्ति सुरक्षा से वंचित हैं। लूट एवं हत्या उनके यहाँ सामान्य तथा प्रत्येक दिन का व्यवसाय है।

[1]अर्थात क्या इस महान उपहार की कृतज्ञता यही है कि वे अल्लाह के साथ शिर्क करें, तथा झूठे देवताओं एवं मूर्तियों की पूजा करें। इस उपकार की माँग तो यह थी कि वह मात्र एक अल्लाह की इबादत करते तथा उसके सन्देष्टा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मानते।

[2]अर्थात दावा करे कि मुझ पर अल्लाह की ओर से प्रकाशना आती है, जबकि ऐसा न हो अथवा कोई यह कहे कि मैं भी वह वस्तु अवतरित कर सकता हूँ जो अल्लाह ने अवतरित की है। यह गढ़ा हुआ झूठ है तथा दावेदार झूठा।

[3]यह झुठलाना है तथा उसका करने वाला झूठा। झूठ गढ़ना तथा झुठलाना दोनों कुफ़्र है, जिसका दण्ड नरक है।

[4]अर्थात धर्मादेशों के अनुसार कर्म करने में जो कठिनाईयाँ, परीक्षायें तथा कष्ट आते हैं।

[5]इससे तात्पर्य संसार तथा परलोक के वे मार्ग हैं जिन पर चलकर मनुष्य को अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होती है।

[6]सदाचार से तात्पर्य अल्लाह को सर्वव्यापी मानकर प्रत्येक पुण्य के कार्य पवित्र हृदय के साथ करना, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत के अनुसार करना, बुराई के

The Ummah Technology Mission

सूरतु रूम-३०

سُوْرَةُ الرُّوْمِ

सूरः रूम मक्का में अवतरित हुई, इसमें साठ आयतें तथा ६ रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है।

الٓمّٓ ①

(१) अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰

غُلِبَتِ الرُّوْمُ ②

(२) रोमन पराजित हो गये।

فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ③

(३) निकटवर्ती धरती पर तथा वह पराजित होने के पश्चात निकट भविष्य में विजयी हो जायेंगे।

فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۭ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ۭ وَيَوْمَىِٕذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ④

(४) कुछ वर्षों में ही, इससे पूर्व तथा इसके पश्चात भी अधिकार अल्लाह (तआला) ही का है। तथा उस दिन मुसलमान प्रसन्न होंगे।

بِنَصْرِ اللّٰهِ ۭ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ⑤

(५) अल्लाह (तआला) की सहायता से,[1] वह जिसकी चाहता है सहायता करता है। तथा

वदले उपकार करना, अपना अधिकार त्याग कर दूसरों को उनके अधिकार से अधिक देना। यह सब सदाचार के परिधि में सम्मिलित हैं।

[1]रिसालत काल में दो बड़ी शक्तियाँ थीं। एक फारस (ईरान) की तथा दूसरी रोम की। प्रथम वर्णित राज्य अग्नि पूजक तथा दूसरा ईसाई अर्थात अहले किताब था। मक्का के मूर्तिपूजकों की सहानुभूतियाँ ईरान के साथ थीं क्योंकि दोनों अल्लाह के अतिरिक्त अन्य के पुजारी थे, जबकि मुसलमानों की सहानुभूतियाँ रोम के इसाई राज्य के साथ थीं, इस लिए कि इसाई भी मुसलमानों की भाँति अहले किताब थे तथा प्रकाशना एवं संदेष्टा पर विश्वास करते थे। उनकी आपस में ठनी रहती थी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूअत की घोषणा के कुछ समय पश्चात ऐसा हुआ कि ईरान का राज्य रोम के इसाई राज्य के ऊपर विजयी हो गया, जिस पर मूर्तिपूजकों को प्रसन्नता हुई तथा मुसलमानों को दुख हुआ, उस अवसर पर क़ुरआन की ये आयतें अवतरित हुईं, जिन में ये भविष्यवाणी की गयी कि بِضْعِ سِنِيْنَ (कुछ वर्ष) के अन्दर रूमी पुनः विजयी हो जायेंगे

The Ummah Technology Mission

मूल विजयी एवं प्रभावशाली तथा कृपालु वही है।

وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٦

(६) अल्लाह का वचन है,[1] अल्लाह (तआला) अपने वचन भंग नहीं करता परन्तु अधिकाँश लोग नहीं जानते।

يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ۝٧

(७) वह तो (केवल) सांसारिक जीवन के प्रत्यक्ष को (ही) जानते हैं, तथा आख़रित से तो सर्वथा ही निश्चिन्त हैं।[2]

तथा विजयी पराजित एवं पराजित विजयी हो जायेंगे। प्रत्यक्ष संसाधनों से यह भविष्य-वाणी असंभव प्रतीत होती थी फिर भी मुसलमानों को अल्लाह के इस आदेश के कारण विश्वास था कि ऐसा अवश्य होकर रहेगा। इसीलिये आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक (رضی اللہ عنہ) ने अबू जहल से यह शर्त लगा ली कि रूमी पाँच वर्ष के अन्दर पुन: विजयी होंगे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज्ञान में जब यह बात आयी तो फ़रमाया कि بِضْعٌ का शब्द तीन से दस वर्ष तक के अंक के लिए प्रयोग होता है, तुमने पाँच वर्ष की अवधि कम रखी है, इसे बढ़ा लो। अत: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निर्देश पर आदरणीय अबू बक्र ने अवधि बढ़वा ली। तथा फिर ऐसा ही हुआ कि रोमी ९ वर्ष की अवधि के भीतर अर्थात सातवें वर्ष पुन: ईरान पर विजयी हुए, जिससे निश्चित रूप से मुसलमानों को बड़ी प्रसन्नता हुई (तिर्मिज़ी तफ़सीर सूर: अर्रूम)। कुछ कहते हैं कि रोमियों को यह विजय उस समय हुई जब बद्र में मुसलमानों को काफ़िरों पर विजय प्राप्त हुई, तथा मुसलमान अपनी विजय पर प्रसन्न थे। रोमियों की यह विजय क़ुरआन करीम की सत्यता का बहुत बड़ा प्रमाण है। निकटवर्ती धरती से तात्पर्य अरब की धरती के निकट के क्षेत्र हैं, अर्थात सीरिया तथा फ़िलिस्तीन आदि जहाँ इसाईयों का राज्य था।

[1]अर्थात हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! हम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो सूचना दे रहे हैं कि निकट भविष्य में रूमी ईरानियों पर पुन: विजयी होंगे, यह अल्लाह का सत्य वचन है जो निर्धारित अवधि में निश्चित रूप से पूरा होकर रहेगा।

[2]अर्थात अधिकतर लोगों को सांसारिक बातों का अधिक ज्ञान है। अत: वे उनमें तो अपनी चतुराई एवं योग्यता का प्रदर्शन करते हैं, जिनका लाभ अस्थाई एवं क्षणिक है, परन्तु परलोक के विषय से ये अचेत हैं जिनका लाभ स्थाई एवं दृढ़ है। अर्थात सांसारिक बातों को भली प्रकार पहचानते हैं तथा धर्म से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं।

The Ummah Technology Mission

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِم ۗ مَّا خَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ لَكَافِرُونَ ﴿٨﴾

(८) क्या उन लोगों ने अपने हृदय में यह विचार नहीं किया कि अल्लाह (तआला) ने आकाशों को तथा धरती एवं उनके मध्य जो कुछ है सबको अत्योत्तम अनुमान से[1] निर्धारित समय तक के लिए (ही) उत्पन्न किया है, हाँ अधिकाँश लोग नि:संदेह अपने प्रभु की मुलाकात का इंकार करते हैं।[2]

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا

(९) क्या उन्होंने धरती पर भ्रमण करके नहीं देखा[3] कि उनसे पूर्व के लोगों का परिणाम कैसा (बुरा) हुआ ?[4] वे उनसे अत्यधिक शक्तिशाली (एवं बलवान) थे,[5] तथा उन्होंने भी धरती

---

[1]अथवा एक उद्देश्य एवं सत्य के साथ पैदा किया है, व्यर्थ नहीं। तथा वह उद्देश्य यह है कि सदाचारियों को सदाचार का बदला तथा दुराचारियों को उनके दुराचार का दण्ड दिया जाये। अर्थात क्या वे अपने अस्तित्व पर विचार नहीं करते कि किस प्रकार उसे तुच्छ से उच्च किया तथा पानी की एक तुच्छ बूँद से उनकी सृष्टि की। फिर आकाश एवं धरती को एक विशेष उद्देश्य के लिए विस्तृत क्रम प्रदान किया, इसके अतिरिक्त उन सब के लिए एक समय निर्धारित किया अर्थात प्रलय (क़ियामत) का दिन जिस दिन ये सब कुछ समाप्त हो जायेगा। अर्थ यह है कि यदि वे इन सब बातों पर विचार करते तो निश्चित रूप से अल्लाह के अस्तित्व, उसके प्रभू तथा पूज्य होने एवं उसके सामर्थ्य का उन्हें संवेदन एवं ज्ञान हो जाता तथा उस पर ईमान ले आते।

[2]तथा इसका कारण वही सृष्टि में विचार एवं चिन्तन का न होना है, वरन् क़ियामत के अस्वीकार करने का कोई उचित आधार नहीं है।

[3]ये पुरातत्व, खण्डहर तथा शिक्षा ग्रहण करने के प्रतीक पर विचार एवं चिन्तन न करने पर फटकार की जा रही है। अर्थ यह है कि भ्रमण करके वे देख चुके हैं।

[4]अर्थात उन काफ़िरों का, जिनको अल्लाह ने उनके कुफ़्र, सत्य के इंकार तथा सन्देष्टाओं के झुठलाने के कारण नाश कर दिया।

[5]अर्थात कुरैश एवं मक्कावासियों से अधिक।

The Ummah Technology Mission

أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٩﴾

जोती-बोयी थी[1] तथा उनसे अधिक जनसंख्या बनाई थी[2] तथा उनके पास उनके रसूल चमत्कार लेकर आये थे,[3] यह तो असम्भव था कि अल्लाह (तआला) उन पर अत्याचार करता[4] परन्तु (वास्तव में) वे स्वयं अपने प्राणों पर अत्याचार करते थे।[5]

ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِينَ أَسَاءُوا السُّوأَىٰ أَن كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِئُونَ ﴿١٠﴾

(१०) फिर अन्त में दुष्कर्मियों का दुष्परिणाम हुआ,[6] इसलिए कि वे अल्लाह की आयतों को झुठलाते थे तथा उनका उपहास उड़ाते थे।

اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١١﴾

(११) अल्लाह (तआला) ही सृष्टि की उत्पत्ति करता है, फिर वही उन्हें पुनः पैदा करेगा[7]

---

[1]अर्थात मक्कावासी तो कृषि से अनजान हैं, परन्तु प्राचीन समुदाय उनसे इस गुण में भी बढ़कर थे।

[2]इसलिए कि उनकी आयु भी अधिक थी, शारीरिक शक्ति में भी अधिक थे, जीविकोपार्जन के साधन भी उनको अधिक प्राप्त थे, तो उन्होंने भवन भी अधिक निर्माण किये, कृषि भी की तथा जीविकोपार्जन के साधन से अधिक जुटाये।

[3]परन्तु वे उन पर ईमान नहीं लाये। परिणाम यह हुआ कि समस्त शक्ति, उन्नति, सुख तथा समृद्धि के उपरान्त भी विनाश उनका भाग्य बन गया।

[4]कि उन्हें बिना पाप के यातना में घेर लेता।

[5]अर्थात अल्लाह का इंकार करके एवं संदेष्टाओं को झुठला करके।

[6] سُوأَى यह سُوءٌ से أَسْوَأُ का स्त्रीलिंग है, जैसे حُسنَى यह أَحسَنُ का स्त्रीलिंग है अर्थात उनका जो परिणाम हुआ अत्यन्त दुष्परिणाम था।

[7]जिस प्रकार अल्लाह तआला प्रथम बार पैदा करने का सामर्थ्य रखता है, उसी प्रकार मरणोपरान्त पुनः जीवित करने का सामर्थ्य रखता है, इसलिए कि पुनः जीवित करना प्रथम बार पैदा करने से अधिक कठिन नहीं।

The Ummah Technology Mission

फिर तुम सब उसी की ओर लौटाये जाओगे।[1]

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٢﴾

(१२) तथा जिस दिन क़ियामत स्थापित होगी तो पापी आश्चर्यचकित रह जायेंगे।[2]

وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَكَانُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٣﴾

(१३) तथा उनके सभी साझीदारों में से एक भी उनकी सिफ़ारिश (अभिस्तावना) नहीं करेगा[3] तथा स्वयं ये भी अपने देवताओं को अस्वीकार करेंगे।[4]

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ﴿١٤﴾

(१४) तथा जिस दिन क़ियामत स्थापित होगी, उस दिन (सभी गुट) विभाजित हो जायेंगे।[5]

---

[1]अर्थात हश्र के मैदान में तथा हिसाब के स्थान पर, जहाँ वह निर्णय एवं न्याय का प्रबन्ध करेगा।

[2] إبْلاسٌ का अर्थ है अपने पक्ष की पुष्टि के लिए कोई तर्क प्रस्तुत न कर सकना तथा चकित होकर चुप खड़े रहना तथा مُبْلِس वह होगा जो निराश होकर चुप खड़ा हो तथा उसे कोई तर्क समझ में न आ रहा हो। क़ियामत के दिन काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों की यही स्थिति होगी, अर्थात यातना के देख लेने के पश्चात वे प्रत्येक सूचना से निराश एवं तर्क-वितर्क प्रस्तुत कर सकने से विवश होंगे। अपराधियों से तात्पर्य काफ़िर तथा मूर्तिपूजक हैं, जैसाकि अगली आयत से स्पष्ट है।

[3]साझीदारों से तात्पर्य वे झूठे देवता हैं, जिन्हें मूर्तिपूजक यह समझकर पूजते थे कि यह अल्लाह के यहाँ उनकी सिफ़ारिश करेंगे तथा उन्हें अल्लाह की यातना से बचा लेंगे। परन्तु यहाँ अल्लाह ने स्पष्ट कर दिया कि अल्लाह के साथ साझीदार बनाने वालों के लिए अल्लाह के यहाँ कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं होगा।

[4]अर्थात वहाँ उनके देवता होने को नकार देंगे क्योंकि वे देख लेंगे कि ये तो यहाँ किसी को कोई लाभ पहुँचाने में सामर्थ्य नहीं हैं (फ़तहुल क़दीर)। दूसरा अर्थ यह है कि ये देवता इस बात को नकार देंगे कि ये लोग उन्हें अल्लाह का साझीदार बनाकर पूजते थे, क्योंकि वे तो उनकी पूजा से ही अनजान थे।

[5]इससे तात्पर्य प्रत्येक व्यक्ति का प्रत्येक व्यक्ति से अलग होना नहीं है बल्कि अर्थ ईमानवालों का काफ़िरों से अलग होना है। ईमानवाले स्वर्ग में तथा काफ़िर एवं मूर्तिपूजक नरक में चले जायेंगे तथा उनके मध्य स्थाई अलगाव हो जायेगी और ये दोनों

The Ummah Technology Mission

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ﴿١٥﴾

(१५) फिर जो ईमान लाकर सत्कर्म करते रहे, वे तो स्वर्ग में प्रसन्न कर दिये जायेंगे।[1]

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ﴿١٦﴾

(१६) तथा जिन्होंने कुफ़्र किया था तथा हमारी आयतों को तथा आख़िरत के मिलन को झूठा ठहराया था, वे सब यातना में पकड़ कर उपस्थित किये जायेंगे।[2]

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿١٧﴾

(१७) तो अल्लाह (तआला) की प्रशंसा किया करो, जबकि तुम शाम करो तथा जब सुबह करो।

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿١٨﴾

(१८) तथा सभी प्रशंसाओं के योग्य आकाश तथा धरती में वही है, अपरान्ह तथा मध्यान्ह के समय भी उसकी पवित्रता का वर्णन करो।[3]

पुनः कभी भी एकत्रित न होंगे। यह हिसाब के पश्चात होगा। इस अलगाव का स्पष्टीकरण अगली आयत में आ रहा है।

[1]अर्थात उन्हें स्वर्ग में आदर एवं पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा, जिनसे वे और अधिक प्रसन्न होंगे।

[2]अर्थात सदैव अल्लाह की यातना में घिरे रहेंगे।

[3]यह अल्लाह तआला की ओर से स्वयं अपनी पवित्र शक्ति के लिए महिमा एवं प्रशंसा है, जिसका उद्देश्य अपने भक्तों का मार्गदर्शन है कि उन समय में जो एक-दूसरे के पीछे आते हैं तथा जो उसकी शक्ति एवं महानता का प्रदर्शन करते हैं, उसकी महिमा एवं प्रशंसा किया करो। संध्या का समय, रात्रि के अंधकार का उद्गम तथा प्रातः की सफेदी दिन के प्रकाश की द्योतक है। ईशा, घंघोर अंधकार का तथा ज़ोहर अत्यन्त प्रकाश का समय है। तो वह महान शक्ति है जो इन सभी का स्रष्टा है तथा जिसने उन समस्त समयों में विभिन्न लाभ रखे हैं। कुछ कहते हैं, प्रशंसा से तात्पर्य नमाज़ है तथा दोनों आयतों में वर्णित समय पाँच नमाज़ों के समय हैं। تُمسُونَ में मग़रिब तथा ईशा, تُصبِحُون में फ़ज्र की नमाज़, عَشِيًا (अपरान्ह) में अस्र तथा تُظهِرون में ज़ोहर की नमाज़ आ जाती है (फ़तहुल क़दीर)। एक क्षीण हदीस में इन दोनों आयतों में प्रातः-सायं पढ़ने को महत्व दिया गया है कि इससे रात्रि-दिन की त्रुटियों का निराकरण हो जाता है। (अबू दाऊद किताबुल अदब, बाब मा यक़ूल इज़ा अस्बह)

The Ummah Technology Mission

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ وَكَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ ﴿١٩﴾

(१९) वही जीवित को मृत से निकालता है[1] तथा मृत से जीवित को निकालता है तथा वही धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवित करता है, इसी प्रकार तुम (भी) निकाले जाओगे।[2]

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ إِذَا أَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُونَ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा अल्लाह की निशानियों में से है कि तुम्हें मिट्टी से जन्म दिया कि फिर अब मनुष्य बनकर (चलते फिरते) फैल रहे हो।[3]

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً ۚ

(२१) तथा उसकी निशानियों में से है कि तुम्हारी ही जाति से पत्नियाँ पैदा कीं।[4] ताकि तुम उनसे सुख पाओ,[5] उसने तुम्हारे मध्य

---

[1]जैसे मुर्गी को अंडे से, अंडे को मुर्गी से, मनुष्य को वीर्य से, वीर्य को मनुष्य से तथा ईमान वाले को काफ़िर से, काफ़िर को ईमानवालों से पैदा करता है।

[2]अर्थात क़ब्रों से जीवित करके।

[3]إِذَا अकस्मातवाची है। तात्पर्य इससे उन अवस्थाओं की ओर इंगित करना है जिनसे गुज़र कर बालक पूर्ण मनुष्य बनता है, जिसका विस्तृत वर्णन क़ुरआन में अन्य स्थानों पर किया गया है। تَنْتَشِرُونَ से तात्पर्य मनुष्य का जीविकापार्जन करना तथा अन्य आवश्यकताओं के लिए घूमना-फिरना है।

[4]अर्थात तुम्हारे ही लिंग (जाति) से स्त्रियाँ पैदा कीं ताकि वे तुम्हारी पत्नियाँ हों और तुम जोड़ा-जोड़ा हो जाओ। زَوْجٌ अरबी भाषा में जोड़ा को कहते हैं। इस आधार पर पुरूष, स्त्री के लिए तथा स्त्री, पुरूष के लिए जोड़ा है। स्त्रियों के मानव लिंग होने का अर्थ है कि संसार की प्रथम महिला आदरणीया हव्वा को आदरणीय आदम की बायें पाशव से पैदा किया गया। फिर उन दोनों से मानव का वंशानुक्रम चला।

[5]अर्थ यह है कि यदि पुरूष तथा महिला की जाति एक-दूसरे से भिन्न होती, उदाहरण स्वरूप, महिलायें जिन्नात अथवा पशुओं में से होतीं तो उनसे वह शान्ति कभी प्राप्त न होती, जो इस समय दोनों के एक ही जाति होने के कारण प्राप्त है। बल्कि एक-दूसरे से घृणा एवं भय होता। यह अल्लाह तआला की कृपा ही है कि मनुष्य की पत्नियाँ मनुष्यों में से ही बनायीं।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١﴾

प्रेम तथा दया भाव उत्पन्न कर दिये, [1] नि:संदेह चिन्तन एवं विचार करने वालों के लिए इसमें बहुत-सी निशानियाँ (लक्षण) हैं।

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافُ أَلْسِنَتِكُمْ وَأَلْوَانِكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْعَالِمِينَ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा उसके (सामर्थ्य) की निशानियों में से आकाशों एवं धरती की उत्पत्ति तथा तुम्हारी भाषाएं एवं रंगो की विभिन्नता (भी) है,[2] बुद्धिमानों के लिए अवश्य उसमें बड़े लक्षण हैं।

---

[1] مَوَدَّةً यह है कि पति, पत्नी से अपार प्रेम करता है तथा ऐसे ही पत्नी, पति से। जैसाकि सामान्य रूप से देखने में आया है। ऐसा प्रेम जो पति-पत्नी में होता है, संसार में किसी दो व्यक्तियों के मध्य नहीं होता। तथा कृपा यह है कि पति, पत्नी को हर प्रकार की सुख-सुविधा उपलब्ध कराता है, जिसका प्रभारी उसे अल्लाह तआला ने बनाया है तथा ऐसे ही पत्नी भी अपनी शक्ति एवं अधिकार की परिधि में। फिर भी मनुष्य को यह शान्ति तथा पारस्परिक प्रेम उन्हीं जोड़ों से प्राप्त होता है, जो धार्मिक नियमों के अनुसार वैवाहिक बंधन से स्थापित हों तथा इस्लाम धर्म उन्हीं को जोड़ा की मान्यता देता है। अवैधानिक जोड़ों को वह जोड़ा ही नहीं मानता, बल्कि उन्हें व्यभिचारी एवं बलात्कारी मानता है तथा उनके लिए कठोर दण्ड निर्धारित करता है। आजकल पाश्चात्य सभ्यता के प्रचारक शैतान के भाई इस प्रयत्न में लिप्त हैं कि पाश्चात्य सभ्यता की भाँति इस्लामिक राष्ट्रों में भी विवाह को अनावश्यक घोषित करके व्यभिचारी पुरूष-महिला का युगल की मान्यता दे दी जाये तथा उनको दण्ड की जगह वे अधिकार प्राप्त हो जायें जो एक वैधानिक जोड़ों को प्राप्त होते हैं।

[2] संसार में इतनी भाषाओं की उत्पत्ति भी अल्लाह तआला के सामर्थ्य का एक बहुत बड़ा प्रतीक है : अरबी है, तुर्की है, अंग्रेज़ी है, उर्दू है, हिन्दी है, पश्तो, फ़ारसी, सिन्धी, बलूची, तमिल, तेलगू एवं बंगला आदि हैं। फिर एक-एक भाषा के विभिन्न स्वर तथा शैलियाँ हैं। एक मनुष्य अपनी भाषा तथा उच्चारण के कारण लाखों की भीड़ में पहचान लिया जाता है कि अमुक देश के अमुक क्षेत्र का निवासी है। केवल भाषा ही उसका पूर्ण परिचय करा देती है। इसी प्रकार एक ही माता-पिता (आदम तथा हव्वा) से होने के उपरान्त भी रंग एक-दूसरे से भिन्न हैं। कोई काला है, कोई गोरा है तो कोई गेहुँआ रंग का। फिर काले तथा गोरे रंग में भी इतनी श्रेणियाँ हैं कि अधिकतर आबादी दो रंगों में विभक्त होने के उपरान्त भी उनके विभिन्न प्रकार हैं, तथा एक-दूसरे से पूर्णरूप से भिन्न तथा अलग। फिर उनके मुख की बनावट, शारीरिक रचना तथा आकार में ऐसा अन्तर रख दिया गया

The Ummah Technology Mission

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٢٣﴾

(२३) तथा (अन्य भी) उसके (सामर्थ्य) की निशानियाँ तुम्हारी रात्रि एवं दिन की निंद्रा में है तथा उसका उपकार (अर्थात जीविका) को तुम्हारा खोजना (भी) है ।[1] जो लोग कान लगाकर सुनने वाले हैं उनके लिए इसमें बड़ी निशानियाँ हैं ।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा उसकी निशानियों में से एक निशानी यह भी है कि वह तुम्हें डराने तथा आशावान बनाने के लिए तड़ित (बिजलियाँ) दिखाता है,[2] तथा आकाश से वर्षा करता है, तथा उससे मृत धरती जीवित करता है, इसमें (भी) बुद्धिमानों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं ।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ؕ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ

(२५) तथा उसकी एक निशानी यह भी है कि आकाश तथा धरती उसके आदेश से स्थापित हैं, फिर वह जब तुम्हें आवाज़ देगा, केवल

है कि एक-एक देश का व्यक्ति अलग से पहचान लिया जाता है । अर्थात इस बात के उपरान्त कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से नहीं मिलता, यहाँ तक कि एक भाई दूसरे भाई से भिन्न है परन्तु अल्लाह के सामर्थ्य का चमत्कार है कि फिर भी किसी एक ही देश के निवासी दूसरे देश के निवासी से भिन्न होते हैं ।

[1]निद्रा का, सुख एवं शान्ति का कारण होना चाहे, वह रात्रि को हो अथवा दिन के विश्राम के समय हो, तथा दिन को व्यापार एवं कार्य के द्वारा अल्लाह की कृपा की खोज करना, यह विषय कई स्थान पर गुज़र चुका है ।

[2]अर्थात आकाश में विजली की चमक तथा मेघों की गर्जन से तो तुम भयभीत भी होते हो कि कहीं विजली न गिर जाये अथवा अधिक वर्षा न हो कि खेतियाँ क्षतिग्रस्त हो जायें तथा आशायें भी रखते हो कि वर्षा होगी तो उपज अच्छी होगी ।

The Ummah Technology Mission

دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنتُمْ تَخْرُجُونَ ﴿٢٥﴾

एक बार की आवाज़ से ही तुम सब धरती से निकल आओगे।[1]

وَلَهُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ كُلٌّ لَّهُ قَانِتُونَ ﴿٢٦﴾

(२६) तथा आकाश एवं धरती की समस्त वस्तुओं का वही स्वामी है तथा प्रत्येक उसके आदेश के अधीन हैं।[2]

وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ ۚ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा वही है जो प्रथम बार सृष्टि को उत्पन्न करता है, वही फिर से पुनः पैदा करेगा तथा यह तो उस पर अत्यन्त सरल है। उसी की उत्तम तथा उच्च विशेषता है[3] आकाशों में तथा धरती में भी, वही प्रभावशाली सर्व-ज्ञानी है।

ضَرَبَ لَكُم مَّثَلًا مِّنْ أَنفُسِكُمْ ۖ هَل لَّكُم مِّن مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُم مِّن شُرَكَاءَ فِي مَا رَزَقْنَاكُمْ فَأَنتُمْ فِيهِ سَوَاءٌ تَخَافُونَهُمْ كَخِيفَتِكُمْ

(२८) अल्लाह तआला ने एक उदाहरण स्वयं तुम्हारा ही वर्णन किया, जो कुछ हमने तुम्हें प्रदान कर रखा है क्या उसमें तुम्हारे दासों में से कोई तुम्हारा साझीदार है कि तुम तथा वह इसमें समान पद के हो ?[4] तथा तुम

---

[1]अर्थात प्रलय जब व्याप्त होगी तो आकाश एवं धरती का सारा प्रबन्ध, जो इस समय उसके आदेश से स्थापित है, छिन्न-भिन्न हो जायेगा तथा समस्त मनुष्य क़ब्रों से जीवित होकर बाहर निकल आयेंगे।

[2]अर्थात उसके सृजन आदेश के समक्ष सब असहाय तथा विवश हैं, जैसे जीवन-मृत्यु, स्वास्थ्य एवं रोग, मान-अपमान आदि में।

[3]अर्थात इतने गुणों एवं महान सामर्थ्य का स्वामी, समस्त तुलनाओं से महान एवं उच्च है।

لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ

"उसकी कोई तुलना नहीं।" (सूरः शूरा-११)

[4]अर्थात जब तुमको यह प्रिय नहीं कि तुम्हारे दास एवं कर्मचारी गण, जो तुम्हारे ही समान मनुष्य हैं, वे तुम्हारे धन-दौलत के साझीदार तथा तुम्हारे समान हो जायें तो फिर

The Ummah Technology Mission

أَنفُسِكُمْ ۖ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٢٨﴾

उनका भय इस प्रकार रखते हो जैसे कि स्वयं अपनों का,[1] हम बुद्धिमानों के लिए इसी प्रकार स्पष्ट रूप से आयतें वर्णन करते हैं।[2]

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَهْوَاءَهُم بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَن يَهْدِي مَنْ

(२९) वास्तविक बात यह है कि ये अत्याचारी बिना ज्ञान के[3] इंन्द्रियों के वशीभूत हैं, उसे कौन मार्ग दिखाये जिसे अल्लाह मार्ग से हटा

यह किस प्रकार हो सकता है कि अल्लाह के दास (भक्त), चाहे वे फ़रिश्ते हों, संदेष्टा हों, महात्मा, महापुरूष हों अथवा वृक्ष एवं पत्थर के बनाये हुए देवता, वे अल्लाह के साझीदार हो जायें, जबकि वे भी अल्लाह के दास हैं तथा उसकी सृष्टि हैं। अर्थात जिस प्रकार प्रथम बात नहीं हो सकती दूसरी भी नहीं हो सकती। इसलिए अल्लाह के साथ दूसरों की भी पूजा करना तथा उन्हें भी कष्टनिवारक तथा संकट- मोचन समझना सर्वथा ग़लत है।

[1]अर्थात क्या तुम अपने दासों से इस प्रकार भयभीत होते हो, जिस प्रकार तुम (स्वतन्त्र लोग) आपस में एक-दूसरे से भयभीत होते हो। अर्थात जिस प्रकार साझे के व्यापार में अथवा सम्पत्ति में से ख़र्च करते समय भय प्रतीत होता है कि अन्य साझीदार पूछेंगे क्या तुम अपने दास से उसी प्रकार भयभीत होते हो ? अर्थात भयभीत नहीं होते क्योंकि तुम उन्हें धन-दौलत में साझीदार बनाकर अपने समान बना ही नहीं सकते, तो उनसे भय भी कैसा ?

[2]क्योंकि वे अपनी बुद्धि का प्रयोग करके तथा चिन्तन-मनन करके अवतरित तथा उत्पत्ति की आयतों से लाभ उठाते हैं तथा जो ऐसा नहीं करते उनकी समझ में एकेश्वरवाद की बात भी नहीं आती, जो अत्यन्त स्वच्छ एवं अत्यन्त स्पष्ट है।

[3]अर्थात इस वास्तविकता का उन्हें बोध भी नहीं है कि वे ज्ञान से शून्य तथा पथभ्रष्टता के शिकार हैं तथा इसी अज्ञानता तथा पथभ्रष्टता में पड़कर वे अपनी बुद्धि का प्रयोग करने की क्षमता भी नहीं रखते तथा अपनी इन्द्रियों की इच्छाओं एवं भ्रष्ट विचारों के अनुयायी हैं।

The Ummah Technology Mission

اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمۡ مِّنۡ نّٰصِرِيۡنَ ﴿۲۹﴾

दे ?[1] उनकी एक भी सहायता करने वाला नहीं |[2]

فَاَقِمۡ وَجۡهَكَ لِلدِّيۡنِ حَنِيۡفًا ؕ فِطۡرَتَ اللّٰهِ الَّتِىۡ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيۡهَا ؕ لَا تَبۡدِيۡلَ لِخَلۡقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّيۡنُ الۡقَيِّمُ ۙ وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۳۰﴾

(३०) तो आप एकाग्र होकर अपना मुख धर्म की ओर केन्द्रित कर दें |[3] अल्लाह (तआला) की वह प्राकृति जिस पर उसने लोगों को पैदा किया है |[4] अल्लाह तआला के बनाये को बदलना नहीं,[5] यही सत्य धर्म है,[6] परन्तु अधिकतर लोग नहीं समझते |[7]

---

[1]क्योंकि अल्लाह की ओर से मार्गदर्शन उसे ही प्राप्त होता है, जिसके अन्दर सन्मार्ग प्राप्त करने की इच्छा तथा कामना होती है, जो इस सत्य इच्छा से वंन्चित होते हैं उन्हें पथभ्रष्टता में भटकते छोड़ दिया जाता है |

[2]अर्थात इन कुमार्ग लोगों की कोई सहायता करने वाला नहीं जो इन्हें सत्यमार्ग का दर्शन करा सके अथवा उनसे यातना को दूर कर दे |

[3]अर्थात अल्लाह की एकता तथा उसकी इबादत में दृढ़ रहें एवं झूठे कल्पित धर्मों की ओर आकर्षित न हों |

[4]فِطۡرَت का वास्तविक अर्थ सृजन (जन्म) है | यहाँ तात्पर्य इस्लाम धर्म (एवं एकेश्वरवाद) है | अर्थ यह है कि सब का जन्म धर्मी एवं विधर्मी के भेद के बिना इस्लाम एवं एकेश्वरवाद पर होता है, इसलिए एकेश्वरवाद उनकी प्राकृति एवं संस्कार में सम्मिलित है, जैसाकि اَلَسۡتُ के वचन से स्पष्ट है | तत्पश्चात बहुतों को वातावरण अथवा अन्य कारण, प्राकृति की इस पुकार की ओर नहीं आने देते, जिसके कारण वे कुफ़्र पर ही शेष रहते हैं, जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस (कथन) है, प्रत्येक शिशु प्राकृति पर जन्म लेता है, परन्तु फिर उसके माता-पिता उसको यहूदी, इसाई एवं अग्निपूजक आदि बना देते हैं | (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः रूम, मुस्लिम किताबुल क़द्र, बाब कुल्लो मौलूदिन यूलदु अलल फ़ितरते)

[5]अर्थात अल्लाह की सृष्टि (प्रकृति) को परिवर्तित न करो, अपितु उचित शिक्षा के द्वारा उस का पालन-पोषण करो ताकि ईमान एवं एकेश्वरवाद बालकों के मन-मस्तिष्क में सुदृढ़ हो जाये | यह विधेय (आदेश) माँग के अर्थ में है अर्थात नकारात्मक रोकने के अर्थ में है |

[6]अर्थात वह धर्म जिसकी ओर एकाग्रता एवं आकर्षित होने का आदेश है, अथवा जो प्राकृति की माँग है, वही यही सीधा सत्य धर्म है |

[7]इसी कारण वे इस्लाम तथा एकेश्वरवाद से अनभिज्ञ रहते हैं |

The Ummah Technology Mission

مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٣١﴾

(३१) (लोगो), अल्लाह (तआला) की ओर आक़र्षित होकर उससे डरते रहो तथा नमाज़ को स्थापित रखो तथा मूर्तिपूजकों में से न हो जाओ।[1]

مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿٣٢﴾

(३२) उन लोगों में से जिन्होंने अपने धर्म को छिन्न-भिन्न कर दिया तथा स्वयं भी गुटों में बँट गये,[2] प्रत्येक गुट उस वस्तु पर जो उसके पास है मगन है।[3]

وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَاۤ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾

(३३) तथा लोगों को जब कोई दुख पहुँचता है, तो अपने प्रभु की ओर (पूर्ण) एकाग्रता से दुआयें करते हैं तथा जब वह अपनी ओर से दया का स्वाद चखा देता है, तो उनमें का एक गुट अपने प्रभु के साथ शिर्क करने लगता है।

لِيَكْفُرُوْا بِمَاۤ اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ

(३४) ताकि वे उस वस्तु की कृतघ्नता व्यक्त करें जो हमने उन्हें प्रदान की है,[4] अच्छा,

---

[1]अर्थात ईमान तथा अल्लाह के भय एवं नमाज़ स्थापित करने से इंकार करके मूर्तिपूजकों में से न हो जाओ।

[2]अर्थात मूल धर्म को छोड़कर अथवा उसमें ऐच्छिक परिवर्तन करके विभिन्न गुटों में बँट गये, जैसे कोई यहूदी, कोई इसाई, कोई मूर्तिपूजक आदि हो गया।

[3]अर्थात प्रत्येक गुट एवं गिरोह यह समझता है कि वह सत्य पर है तथा अन्य झूठे, तथा जो सहारे उन्होंने खोज रखे हैं, जिनको वे तर्क एवं प्रमाण कहते हैं उन पर प्रसन्न तथा निश्चिन्त हैं। दुर्भाग्य से इस्लामी समुदाय का भी यही हाल हुआ के वह भी विभिन्न गुटों में बँट गया तथा उनका भी प्रत्येक गुट इसी असत्य विश्वास पर दृढ़ है कि वह सत्य पर है, जबकि सत्य पर केवल एक ही गुट है जिसकी पहचान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बतायी है कि मेरे तथा मेरे सहाबा के मार्ग पर चलने वाला होगा।

[4]यह वही विषय है जो *सूरः अनकबूत* के अन्त में गुज़र चुका है।

The Ummah Technology Mission

فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾

तुम लाभ उठा लो, अति शीघ्र तुम्हें ज्ञात हो जायेगा।

اَمْ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) क्या हमने उन पर कोई प्रमाण अवतरित किया है, जो उसे वर्णन करता है जिसे ये अल्लाह के साथ साझीदार बना रहे हैं।[1]

وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा जब हम लोगों को दया का स्वाद चखाते हैं, तो वे अति प्रसन्न हो जाते हैं तथा यदि उन्हें अपने हाथों के करतूत के कारण कोई दुख पहुँचे, तो सहसा वे निराश हो जाते हैं।[2]

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

(३७) क्या उन्होंने यह नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) जिसे चाहे असीम जीविका प्रदान करता है तथा जिसे चाहे कम,[3] इसमें भी उन

---

[1]यह प्रश्न इंकार के लिए है। अर्थात ये जिनको अल्लाह का साझीदार बताते हैं तथा उनकी पूजा करते हैं, यह अप्रमाणित है। अल्लाह ने इसका कोई प्रमाण अवतरित नहीं किया है। भला अल्लाह तआला मूर्तिपूजा एवं शिर्क के पक्ष में तर्क किस प्रकार अवतरित कर सकता था, जबकि उसने सभी सन्देष्टा इसी कारण भेजे थे कि वे शिर्क का खण्डन तथा एकेश्वरवाद का प्रचार करें। अत: प्रत्येक संदेष्टा ने सर्वप्रथम अपने समुदाय को एकेश्वरवाद का संदेश सुनाया। तथा आज एकेश्वरवाद में आस्था रखने वालों को नाम के मुसलमानों में एकेश्वरवाद एवं सुन्नत का उपदेश करना पड़ रहा है क्योंकि मुसलमान समुदाय के बहुसंख्यक शिर्क एवं बिदअत में लिप्त हैं।

[2]यह वही विषय है जो सूरः हूद में गुज़र चुका है तथा जो मनुष्यों की बहुसंख्यक की करनी है कि सुख में वे गर्व एवं अहंकार में डूबे रहते हैं तथा दुख में निराश हो जाते हैं। परन्तु ईमानवाले इससे अलग हैं, क्योंकि वे दुख में संयम तथा सुख में अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करते हैं अर्थात पुण्य का कार्य करते हैं। इस प्रकार दोनों स्थिति में उन्हें पुण्य एवं उत्तम बदला प्राप्त होता है।

[3]अर्थात अपनी योजना एवं ज्ञान से वह किसी को धन अधिक तथा किसी को कम देता है। यहाँ तक कि कई बार बुद्धि एवं समझ में एवम् प्रत्यक्ष कारणों तथा साधनों में दो मनुष्य एक जैसे ही प्रतीत होते हैं, एक ही जैसा व्यापार भी प्रारम्भ करते हैं। परन्तु एक का

The Ummah Technology Mission

لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾

लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं, निशानियाँ हैं।

فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٣٨﴾

(३८) तो निकट सम्बन्धी को, निर्धन को, यात्री को, प्रत्येक को उसका अधिकार दो,[1] यह उनके लिए श्रेष्ठ है, जो अल्लाह (तआला) के मुख का दर्शन करना चाहते हों,[2] ऐसे ही लोग मोक्ष प्राप्त करने वाले हैं।

وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَا۟ فِيْٓ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ

(३९) तथा तुम जो ब्याज पर देते हो कि लोगों के माल में बढ़ता रहे, वह अल्लाह (तआला) के यहाँ नहीं बढ़ता,[3] तथा जो कुछ

व्यापार अधिक उन्नति करता है तथा उसको अत्याधिक लाभ होता है, जबकि दूसरे का व्यापार सीमित ही रहता है तथा उसको उन्नति नहीं मिलती। आख़िर यह कौन सी शक्ति है, जिसके पास समस्त अधिकार हैं तथा वह इस प्रकार के कार्य करता है। इसके अतिरिक्त वह कभी धनवान को निर्धन तथा निर्धन को धनवान बना देता है। यह सब उसी एक अल्लाह के हाथ में है, जिसका कोई साझीदार नहीं।

[1]जब जीविका के समस्त साधन अल्लाह के ही अधिकार में हैं तथा वह जिस पर चाहे उसके द्वार खोल देता है, तो धनवानों को चाहिए कि वह अल्लाह के दिये हुए माल में से उसका वह अधिकार अदा करते रहें, जो उनके माल में उनके अधिकारी निकट सम्बन्धियों, निर्धनों तथा यात्रियों का रखा गया है। निकट सम्बन्धियों का अधिकार इसलिए प्रथम रखा गया है कि उसका महत्व अधिक है। हदीस में आता है कि निर्धन सम्बन्धी के साथ उपकार करना दुगुने पुण्य का कारण है, एक दान का पुण्य तथा दूसरा सम्बन्ध जोड़ने का। इसके अतिरिक्त उसे अधिकार यहाँ कहकर इसकी ओर संकेत किया गया है कि उनकी सहायता करके तुम उपकार नहीं करोगे, अपितु एक अधिकार की ही पूर्ति करोगे।

[2]अर्थात स्वर्ग में उसके साक्षात दर्शन का सौभाग्य प्राप्त करना।

[3]अर्थात ब्याज से प्रत्यक्ष रूप से वृद्धि तो दिखायी देती है परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं होता, अपितु उसका दुर्भाग्य अन्त में इस लोक तथा परलोक में विनाश का कारण है। आदरणीय इब्ने अब्बास एवं विभिन्न सहाबा तथा ताबईन ने इस आयत में رِبًا से तात्पर्य ब्याज नहीं, अपितु वह उपहार लिया है जो कोई निर्धन किसी धनवान को अथवा जनता का कोई व्यक्ति राजा अथवा राजा के अधिकारी को अथवा एक सेवक अपने स्वामी को

The Ummah Technology Mission

وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٣٩﴾

(दान एवं) ज़कात तुम अल्लाह (तआला) के मुख के दर्शन के लिए दो, तो ऐसे ही लोग हैं अपना बढ़ाने वाले।[1]

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٠﴾

(४०) अल्लाह (तआला) वह है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर जीविका प्रदान की, फिर मार डालेगा, पुन: जीवित कर देगा, बताओ, तुम्हारे साझीदारों में से कोई भी ऐसा है जो इनमें से कुछ भी कर सकता हो। अल्लाह (तआला) के लिए पवित्रता एवं श्रेष्ठता है प्रत्येक उस साझीदार से जो यह लोग गढ़ते हैं।

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤١﴾

(४१) जल-थल में लोगों के कुकर्मों के कारण उपद्रव फैल गया, इसलिए कि उन्हें उनके कुछ करतूतों का फल अल्लाह (तआला) चखा दे, (अति) सम्भव है कि वह रूक जायें।[2]

इस विचार से देता है कि वह उसके बदले में उससे अधिक देगा। उसे ربا इसलिए कहा गया है कि देते समय अधिकता का ध्यान होता है। यह यद्यपि उचित है फिर भी अल्लाह के यहाँ इसका बदला नहीं मिलेगा, "فَلَا يَرْبُو عِنْدَ اللّٰهِ" से उसी पारलौकिक बदले का खण्डन होता है। इस आधार पर अनुवाद होगा "जो तुम उपहार दो इस विचार से कि वापसी की स्थिति में अधिक मिले, तो अल्लाह के यहाँ उसका पुण्य नहीं।" (इब्ने कसीर, ऐसरूत्तफासीर)

[1]ज़कात एवं दान से एक तो आध्यात्मिक एवं अन्त: वृद्धि होती है अर्थात शेष माल में अल्लाह की ओर से विभूति डाल दी जाती है। दूसरे, क़ियामत (प्रलय) वाले दिन इसका बदला एवं पुण्य कई-कई गुना मिलेगा, जिस प्रकार हदीस में है कि हलाल (सर्वधार्मिक) कमाई से एक खजूर के बराबर दान बढ़कर ओहुद पर्वत के समान हो जायेगा। (सहीह मुस्लिम किताबुज़ ज़कात)

[2]थल से तात्पर्य मानव आबादियाँ तथा जल से तात्पर्य समुद्र एवं समुद्रिक मार्ग तथा समुद्र के किनारों की आबादियाँ हैं। उपद्रव से तात्पर्य प्रत्येक वह विवाद है जिससे मनुष्य के समाज एवं बस्तियों में शान्ति-व्यवस्था अस्त-व्यस्त तथा उनके सुख-चैन में रूकावट उत्पन्न हो। इसलिए इसका लागू होना पाप एवं बुराईयों पर भी उचित है कि मनुष्य

The Ummah Technology Mission

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلُ ۚ كَانَ أَكْثَرُهُم مُّشْرِكِينَ ﴿٤٢﴾

(४२) आप कह दीजिए, धरती में चल-फिर कर देखो तो सही कि पूर्व कालिक लोगों का परिणाम क्या हुआ जिनमें अधिकतर लोग मूर्तिपूजक थे।[1]

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَيِّمِ مِن قَبْلِ

(४३) तो आप अपना मुख उस सीधे एवं सत्य धर्म की ओर ही रखें, पूर्व इसके कि वह दिन

एक-दूसरे पर अत्याचार कर रहे हैं, अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमाओं का उल्लंघन कर रहे हैं तथा सामाजिक नियमों को तोड़ रहे हैं तथा हत्या एवं लूटमार अधिक हो गयी है तथा उन आकाश एवं धरती के प्रकोप पर भी यह उचित रूप से लागू हो सकता है, जो अल्लाह की ओर से दण्ड एवं सचेत करने के लिए होता है जैसे अकाल, मृत्यु की अधिकता, भय एवं बाढ़ आदि। अर्थ यह है कि जब मनुष्य अल्लाह के आदेशों की अवज्ञा को अपना ध्येय बना ले तो फिर कर्मों के बदले में अल्लाह तआला की ओर से मनुष्यों के कर्म एवं क्रियाकलाप का मुख बुराईयों की ओर फिर जाता है तथा धरती पर उपद्रव फैल जाता है। शान्ति-व्यवस्था भंग हो जाती है और उस के स्थान पर भय एवं आतंक, चोरी, डकैती, हत्या एवं लूटमार सामान्य हो जाती है तथा इसके साथ ही साथ कई बार आकाश एवं धरती से सम्बन्धित प्रकोप भी आ जाता है। उद्देश्य यही होता है कि इस सामान्य बिगाड़ अथवा दैवी प्रकोप को देखकर शायद लोग पापों से रूक जायें क्षमा माँग लें तथा उनका ध्यान अल्लाह की ओर हो जाये।

इसके विपरीत जिस समाज की व्यवस्था अल्लाह के आदेशों के अनुरूप हो तथा अल्लाह के नियम लागू होते हों, अन्याय के स्थान पर न्याय का प्रचलन हो, वहाँ शान्ति-व्यवस्था तथा अल्लाह की ओर से सुख-सुविधा की बहुतायत होती है। जिस प्रकार एक हदीस में आता है, "धरती पर अल्लाह के एक नियम को लागू करना वहाँ के लोगों के लिए चालीस दिन की वर्षा से श्रेष्ठतम है।" (अल- नसाई, किताबु कतअे यदिस्सारिक बाबुत तरग़ीव फ़ी एकामतिल हद्द व इब्ने माजा) इसी प्रकार यह हदीस है "जब एक कुकर्मी (फ़ाजिर) मनुष्य की मृत्यु हो जाती है तो मनुष्य ही उससे सुख की अनुभूति नहीं करते, नगर भी तथा वृक्ष एवं पशु भी सुख प्राप्त करते हैं।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल रिक़ाक़, मुस्लिम किताबुल जनायेज़)

[1]शिर्क का विशेषरूप से वर्णन किया गया है कि यह सबसे बड़ा पाप है। इसके अतिरिक्त इसमें अन्य पाप एवं त्रुटियाँ भी आ जाती हैं क्योंकि इनका प्रयोजन भी मनुष्य अपनी इन्द्रियों की दासता को स्वीकार करके ही करता है। इसीलिए कुछ लोग इसे क्रियात्मक शिर्क कहते हैं।

The Ummah Technology Mission

أَنْ يَّأْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ ﴿٤٣﴾

आ जाये जिसकी वापसी अल्लाह (तआला) की ओर से है ही नहीं,[1] उस दिन सब अलग-अलग हो जायेंगे।[2]

مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ﴿٤٤﴾

(४४) कुफ़्र करने वालों पर उनका कुफ़्र होगा तथा सत्कर्म करने वाले अपने ही विश्राम गृह को सुन्दर बना रहे हैं।[3]

لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٥﴾

(४५) ताकि अल्लाह (तआला) अपनी कृपा से उन्हें फल दे, जो ईमान लाये तथा सत्कर्म किये,[4] वह काफ़िरों को मित्र नहीं रखता है।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ يُّرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا

(४६) तथा उसकी निशानियों में शुभसूचना देने वाली[5] हवाओं को चलाना भी है, इसलिए कि तुम्हें अपनी दया का स्वाद चखाये,[6] तथा इसलिए कि उसके आदेश से नावें चलें[7]

---

[1]अर्थात उस दिन के आने को कोई रोक नहीं सकता। इसलिए उस दिन (क़ियामत) के आने से पूर्व अल्लाह के आज्ञापालन का मार्ग अपना लें तथा पुण्य से अपना दामन भर लें।

[2]अर्थात दो गुटों में विभाजित हो जायेंगे, एक ईमानवालों का तथा दूसरा काफ़िरों का।

[3] مَهْدٌ का अर्थ है मार्ग प्रशस्त करना, फ़र्श बिछाना अर्थात यह सदाचार के द्वारा स्वर्ग में जाने तथा वहाँ उच्च स्थान प्राप्त करने के लिए मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

[4]अर्थात मात्र पुण्य स्वर्ग में प्रवेश के लिए पर्याप्त नहीं होंगे जब तक उनके साथ अल्लाह की कृपा एवं दया भी सम्मिलित न होगी। वह तो अपनी कृपा से एक-एक पुण्य का बदला दस से सात सौ गुना तक बल्कि उससे भी अधिक देगा।

[5]अर्थात यह हवायें वर्षा की सूचक होती हैं।

[6]अर्थात वर्षा से मनुष्य भी स्वाद एवं सुख का अनुभव करता है तथा फसलें भी लहलहा उठती हैं।

[7]अर्थात हवाओं के द्वारा नावें भी चलती हैं, तात्पर्य हवा से चलने वाली नावें हैं। अब मनुष्य ने अल्लाह की प्रदान की हुई बौद्धिक शक्ति का पूरा प्रयोग करके अन्य नावें तथा

The Ummah Technology Mission

مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٤٦﴾

तथा इसलिए कि उसकी कृपा को तुम खोजो[1] तथा इसलिए कि तुम कृतज्ञता व्यक्त करो।[2]

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ؕ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा हमने आप से पूर्व भी (अपने) रसूलों को उनके समुदाय की ओर भेजा वे उनके पास प्रमाण लाये। फिर हमने पापियों से बदला लिया। हम पर ईमानवालों की सहायता अनिवार्य है।[3]

जहाज़ों का अविष्कार कर लिए हैं, जो मशीनों के द्वारा चलते हैं। फिर भी उनके लिए भी अनुकूल एवं उचित हवाओं की आवश्यकता है, वरन् अल्लाह तआला उन्हें भी तूफ़ानी जल धाराओं के द्वारा डुबो देने का सामर्थ्य रखता है।

[1]अर्थात उनके द्वारा विभिन्न देशों की यात्रा करके व्यवपार करते हैं।

[2]उन प्रकट एवं गुप्त उपहारों पर जिनकी कोई गणना ही नहीं। अर्थात यह सारी सुविधायें अल्लाह तआला तुम्हें इसलिए उपलब्ध कराता है कि तुम अपने जीवन में उनसे लाभ उठा सको तथा अल्लाह की भक्ति एवं आज्ञापालन भी करो।

[3]अर्थात हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), जिस प्रकार हमने आपको सन्देष्टा वना कर आपके समुदाय की ओर भेजा है, उसी प्रकार आप से पूर्व भी सन्देष्टा उनके समुदायों की ओर भेजे, उनके साथ तर्क, निशानियाँ एवं चमत्कार भी थे, परन्तु उन समुदायों ने उनको झुठलाया, उन पर ईमान नहीं लाये। अन्त में उनके इस झुठलाने के अपराध तथा पाप करने के कारण हमने उन्हें अपने दण्ड एवं प्रकोप का निशाना बनाया तथा ईमानवालों को सहायता एवं सहयोग दिया जो हम पर अनिवार्य है। यह जैसेकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा उन पर ईमान लाने वाले मुसलमानों को सांत्वना दी जा रही है कि काफ़िरों एवं मूर्तिपूजकों के झुठलाने के आचरण से घबराने की आवश्यकता नहीं है। यह कोई नई बात नहीं है। प्रत्येक नबी के साथ उसके समुदाय ने यही व्यवहार किया है। इसके अतिरिक्त काफ़िरों को यह चेतावनी है कि ये ईमान न लाये तो उनका परिणाम भी वही होगा जो पूर्वकालिक समुदायों का हो चुका है। क्योंकि अल्लाह की सहायता अन्ततः ईमानवालों को ही प्राप्त होगी, जिसमें संदेष्टा एवं उस पर ईमान लाने वाले सभी सम्मिलित हैं। حَقًّا كَانَ का सूचक है, जो पहले आ गया है نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ उसकी संज्ञा है।

The Ummah Technology Mission

اَللّٰهُ الَّذِیْ یُرْسِلُ الرِّیٰحَ فَتُثِیْرُ سَحَابًا فَیَبْسُطُهٗ فِی السَّمَآءِ كَیْفَ یَشَآءُ وَیَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ یَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَاۤ اَصَابَ بِهٖ مَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اِذَا هُمْ یَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۴۸﴾

(४८) वह अल्लाह (तआला) है जो हवायें चलाता है, वे बादलों को उठाती हैं[1] फिर अल्लाह (तआला) अपनी इच्छानुसार उसे आकाश में फैला देता है[2] तथा उसके टुकड़े-टुकड़े कर देता है[3] फिर आप देखते हैं कि उसके अंदर से बूँदें निकलती हैं,[4] तथा जिन्हें अल्लाह चाहता है उन भक्तों पर वह वर्षा करता है तो वे प्रसन्न हो जाते हैं।

وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ یُّنَزَّلَ عَلَیْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِیْنَ ﴿۴۹﴾

(४९) तथा विश्वास करना कि वर्षा उन पर बरसने से पूर्व तो वे निराश हो रहे थे।

فَانْظُرْ اِلٰۤى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَیْفَ یُحْیِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْیِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۵۰﴾

(५०) तो आप अल्लाह की कृपा के लक्षण देखें कि धरती की मृत्यु के पश्चात किस प्रकार अल्लाह तआला उसे जीवित कर देता है। नि:संदेह वही मृतकों को जीवित करने वाला है,[5] तथा वह प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्यवान है।

---

[1]अर्थात वे बादल जहाँ भी होते हैं, वहाँ से हवायें उनको उठाकर ले जाती हैं।

[2]कभी चलाकर, कभी ठहराकर, कभी तह पर तह करके, कभी दूर तक। यह आकाश में बादलों की विभिन्न अवस्थायें हैं।

[3]अर्थात उनको आकाश में फैलाने के पश्चात कभी उनको विभिन्न टुकड़ों में विभक्त कर देता है।

[4] وَدْق का अर्थ वर्षा है। अर्थात उन बादलों से अल्लाह यदि चाहता है तो वर्षा हो जाती है, जिस से वर्षा के इच्छुक प्रसन्न हो जाते हैं।

[5] آثار رحمت से तात्पर्य वे अनाज एवं पैदावार तथा मेवे हैं जो वर्षा से पैदा होते हैं तथा सुख-सुविधा एवं प्रसन्नता के कारण होते हैं। देखने से तात्पर्य शिक्षा ग्रहण करने की दृष्टि से देखना है ताकि मनुष्य अल्लाह की शक्ति एवं सामर्थ्य तथा इस बात को स्वीकार कर ले कि वह क़ियामत के दिन उसी प्रकार मृतकों को जीवित करेगा।

The Ummah Technology Mission

وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوا مِنْ بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ﴿٥١﴾

(५१) तथा यदि हम तीव्र हवा चला दें तथा ये लोग उन्हीं खेतियों को (मुरझायी हुई) पीली पड़ी देख लें, तो फिर उसके पश्चात कृतघ्नता व्यक्त करने लगें।[1]

فَإِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٥٢﴾

(५२) नि:संदेह आप मृतकों को नहीं सुना सकते[2] तथा न बधिरों को (अपनी) आवाज सुना सकते हैं,[3] जबकि वे पीठ फेरकर मुड़ गये हों।[4]

وَمَا أَنْتَ بِهَادِ الْعُمْيِ عَن ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِن تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا

(५३) तथा न आप अंधों को उनकी पथभ्रष्टता से मार्गदर्शन देने वाले हैं।[5] आप तो केवल उन्हीं लोगों को सुनाते हैं जो हमारी आयतों

---

[1]अर्थात उन्ही खेतों को जिनको हमने वर्षा के द्वारा हरा-भरा किया था, यदि अत्यन्त (गर्मी अथवा शीतल) हवायें चलाकर उनकी हरियाली को पीली कर दें अर्थात तैयार फसल का विनाश कर दें तो यही वर्षा से प्रसन्न होने वाले अल्लाह की कृतघ्नता पर उतर आयेंगे। अर्थ यह है कि अल्लाह के न मानने वाले धैर्य एवं साहस से भी वंचित होते हैं। तनिक-सी बात पर प्रसन्नता से फूले नहीं समाते तथा तनिक-सी परीक्षा से निराश हो जाते हैं। ईमानवालों का व्यवहार दोनों अवस्थाओं में भिन्न होता है जैसाकि विस्तृत वर्णन गुज़र चुका है।

[2]अर्थात जिस प्रकार मृत व्यक्ति समझ एवं प्रबोध से शून्य होते हैं, उसी प्रकार ये आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आमन्त्रण को समझने तथा उसे स्वीकार करने में असमर्थ हैं।

[3]अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा एवं उपदेश उनके लिए व्यर्थ है, जिस प्रकार कोई वहरा हो, उसे आप अपनी वात नहीं सुना सकते।

[4]यह उनके कतराने एवं विमुख होने का अधिक स्पष्टीकरण है कि वह मृतक एवं बहरे होने के साथ ही साथ पीठ फेर कर जाने वाले हैं। सत्य की बातें उनके कानों में किस प्रकार पड़ सकती हैं तथा क्योंकर उनके हृदय एवं मस्तिष्क में समा सकती हैं ?

[5]इसलिए कि ये आँखों से जो लाभ प्राप्त होता है प्राप्त नहीं करते अथवा दृष्टि (हृदय दृष्टि) से वंचित हैं। यह भटकावे के जिस दलदल में फंसे हुए हैं, उससे किस प्रकार निकलें ?

The Ummah Technology Mission

فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٥٣﴾

पर ईमान रखते है[1] तथा हैं भी वे आज्ञा-कारी।[2]

اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا

(५४) अल्लाह (तआला) वह है, जिसने तुम्हें शक्तिहीन अवस्था में पैदा किया,[3] फिर उस निर्बलता के पश्चात बल प्रदान किया,[4] फिर उस शक्ति के पश्चात क्षीणता तथा वृद्धावस्था कर दी[5]

---

[1]अर्थात यही सुनकर ईमान लाने वाले हैं, इसलिए कि यह बुद्धिमान एवं मनन-चिन्तन वाले हैं तथा प्रकृति के प्रतीक से वास्तविक प्रभावी ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं।

[2]अर्थात सत्य के समक्ष शीश झुकाने वाले तथा उसके अनुयायी हैं।

[3]यहाँ से अल्लाह (तआला) अपने सामर्थ्य का एक अन्य चमत्कार वर्णन कर रहा है तथा वह है विभिन्न विधियों से मनुष्य की सृष्टि। निर्बल (क्षीणता की अवस्था) से तात्पर्य वीर्य अर्थात पानी की बूँद है अथवा बाल्यकाल।

[4]अर्थात यौवनकाल, जिसमें मानसिक शारीरिक शक्ति पूर्णरूप से विकसित हो जाती है।

[5]क्षीणता से तात्पर्य आयु की वह अवस्था है जब मानसिक तथा शारीरिक क्षीणता का प्रारम्भ होता है तथा बुढ़ापे से तात्पर्य आयु की वह अवधि है जिसमें दुर्बलता बढ़ जाती है। साहस का अभाव, हाथ-पैरों की गति एवं पकड़ कम, बाल सफेद तथा समस्त आन्तरिक एवं वाह्य शक्तियाँ क्षीण हो जातीहैं। क़ुरआन ने मनुष्य की आयु की ये चार अवस्थाएँ वर्णन की हैं। कुछ आलिमों (धर्मगुरूओं) ने अन्य अल्प अवस्थाओं का भी वर्णन किया है, जो क़ुरआन के संक्षेप की व्याख्या एवं चमत्कारिक शैली का स्पष्टीकरण है, जैसे इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि मनुष्य एक के बाद दूसरी उन परिस्थितियों एवं अवस्थाओं से गुज़रता है। इसका मूल तत्व मिट्टी है अर्थात उसके पिता आदम की उत्पत्ति मिट्टी से हुई थी। अथवा मनुष्य जो कुछ खाता है, जिससे वह मनि (वीर्य) उत्पन्न होती है जो माता के गर्भ में जाकर उसकी सृष्टि का कारण बनती है, वह सब मिट्टी ही की पैदावार है फिर वह वीर्य से रक्त का लोथड़ा, फिर माँस का लोथड़ा, फिर अस्थियाँ, जिन्हें माँस का वस्त्र पहनाया जाता है फिर उसमें आत्मा फूँकी जाती है। फिर माता के गर्भ से इस अवस्था में निकलता है कि अत्यन्त क्षीण, कोमल तथा निर्बल होता है। फिर उसके पश्चात समयानुसार कृमश: बढ़ता हुआ बाल्यकाल, किशोरकाल, तथा यौवनकाल को पहुँचता है तथा तदुपरान्त पुन: क्षीणता की अवस्था की ओर लौटता है, बुढ़ापा तथा पुन: वयोवृद्धावस्था यहाँ तक कि मृत्यु उसे अपनी गोद में ले लेती है।

The Quran Technology Mission

وَّ شَيْبَةً ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ وَ هُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ﴿٥٤﴾

जो चाहता है पैदा करता है,[1] वह सभी से भली-भाँति परिचित तथा सभी पर पूर्ण सामर्थ्यवान है।

وَ يَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۙ مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ ؕ كَذٰلِكَ كَانُوْا يُؤْفَكُوْنَ ﴿٥٥﴾

(५५) तथा जिस दिन क़ियामत व्यापत हो जायेगी[2] पापी लोग सौगन्ध खायेंगे कि (संसार में) एक क्षण के अतिरिक्त नहीं ठहरे,[3] इसी प्रकार ये बहके हुए ही रहे।[4]

وَ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَ الْاِيْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ ۚ فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ

(५६) तथा जिन लोगों को ज्ञान तथा ईमान प्रदान किया गया वे उत्तर देंगे[5] कि तुम तो जैसाकि अल्लाह की किताब में है[6] क़ियामत के दिन तक ठहरे रहे।[7] आज का यह दिन

---

[1]उन्हीं वस्तुओं में दुर्बलता एवं बल भी है, जिससे मनुष्य गुज़रता है जैसाकि अभी विस्तृत वर्णन गुज़र चुका है।

[2]साअत का अर्थ है घड़ी, क्षण, तात्पर्य क़ियामत है। उसको क्षण इसलिए कहा गया है कि उसका घटित होना जब अल्लाह चाहेगा एक क्षण में हो जायेगा। अथवा इसलिए कि यह उस क्षण में होगी जो संसार का अंतिम क्षण होगा।

[3]संसार में अथवा क़ब्रों में। यह अपने स्वभाव के अनुसार झूठी सौगन्ध खायेंगे, इसलिए कि दुनिया में वे जितने समय रहे होंगे उनके ज्ञान में ही होगा तथा यदि तात्पर्य क़ब्र का जीवन है तो उनकी सौगन्ध अज्ञानता के कारण होगी क्योंकि वे क़ब्र की अवधि को नहीं जानते होंगे। कुछ कहते हैं कि क़ियामत की कठोरता एवं भयानकता की तुलना में संसार का जीवन उन्हें क्षणिक ही प्रतीत होगा

[4]أَفَكَ الرَّجُلُ का अर्थ है सत्य से विमुख हो गया। अर्थ होगा, उसी विमुखता के समान वह संसार में विमुख रहे अथवा भटके रहे।

[5]जिस प्रकार ये विद्वान संसार में भी समझाते रहे थे।

[6]अल्लाह की किताब से तात्पर्य अल्लाह का ज्ञान तथा उसका निर्णय है अर्थात लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तक)।

[7]अर्थात जन्म के दिन से क़ियामत के दिन तक।

The Ummah Technology Mission

وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٧﴾

क़ियामत का ही दिन है, परन्तु तुम तो विश्वास ही नहीं करते थे।[1]

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٥٧﴾

(५७) तो उस दिन अत्याचारियों को उनका तर्क कुछ काम न आयेगा तथा न उनसे क्षमा मँगवायी जायेगी न कर्म मांगा जायेगा।[2]

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ﴿٥٨﴾

(५८) तथा नि:संदेह हमने इस क़ुरआन में लोगों के समक्ष सब उदाहरण वर्णन किये हैं।[3] आप उनके पास कोई भी लक्षण लायें,[4] ये काफ़िर तो यही कहेंगे कि तुम (बकवासी) झूठे हो।[5]

كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٩﴾

(५९) अल्लाह (तआला) उनके दिलों पर जो समझ नहीं रखते, इसी प्रकार मोहर लगा देता है।

---

[1]कि वह आयेगी अपितु उपहास एवं मिथ्यारोपण के रूप में उसकी तुम माँग करते थे।

[2]अर्थात उन्हें दुनिया में भेजकर यह अवसर नहीं दिया जायेगा कि वहाँ क्षमा एवं आज्ञापालन के द्वारा अल्लाह के प्रकोप का निराकरण कर लो।

[3]जिनसे अल्लाह की एकता प्रमाणित एवं संदेष्टाओं की सत्यता सावित होती है तथा उसी प्रकार शिर्क का खण्डन तथा उसकी असत्यता प्रदर्शित होती है।

[4]वह क़ुरआन का प्रस्तुत किया हुआ कोई प्रमाण हो अथवा उनकी इच्छानुसार कोई चमत्कार आदि।

[5]अर्थात जादू आदि के अनुयायी। अर्थ यह है कि वड़ी से वड़ी निशानी, तथा स्पष्ट से स्पष्ट तर्क एवं निशानियाँ भी ये देख लें तव भी ईमान ये नहीं लायेंगे, क्यों ? इसका कारण आगे वर्णन कर दिया गया है कि अल्लाह ने उनके दिलों पर मोहर लगा दी है, जो इस वात का लक्षण होती है कि उनका कुफ़्र एवं सीमा उल्लंघन उस अन्तिम सीमा तक पहुँच गया है जिसके पश्चात सत्य की ओर वापसी का समस्त मार्ग उनके लिए वन्द हैं।

The Ummah Technology Mission

(६०) तो आप धैर्य रखें,[1] नि:संदेह अल्लाह का वचन सत्य है। आपको वे लोग हल्का (अधीर) न करें,[2] जो विश्वास नहीं करते।

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ ﴿٦٠﴾

सूरतु लुक़मान-३१

سُورَةُ لُقْمَانَ

सूर: लुक़मान मक्का में अवतरित हुई, इसमें चौंतीस आयतें तथा चार रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

(१) अलिफ़॰लाम॰मीम॰[3]

الٓمٓ ﴿١﴾

(२) यह हिक्मत (दिव्यज्ञान) वाली किताब की आयतें हैं।

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾

---

[1]अर्थात उनके विरोध एवं द्वेष पर तथा उनकी कष्टदायक बातों पर, इसलिए कि अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सहायता का जो वचन दिया है वह निश्चित रूप से सत्य है, जो प्रत्येक परिस्थिति में पूरा होगा।

[2]अर्थात आपको क्रोधित करके धैर्य एवं संयम छोड़ने अथवा प्रशंसा करने पर वाध्य न कर दें, वल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने ध्येय पर अड़िग रहें तथा उससे तनिक भी विमुख न हों।

[3]इसके प्रारम्भ में भी यह विच्छेदित अक्षर हैं, जिनके अर्थ तथा प्रयोजन का ज्ञान केवल अल्लाह ही को है। फिर भी व्याख्याकारों ने इसके दो महत्वपूर्ण लाभ बताये हैं। एक यह कि यह क़ुरआन इसी प्रकार के विच्छेदित अक्षरों के योग तथा अनुक्रम से रचित है, जिसके समतुल्य संकलन प्रस्तुत करने से अरबी भाषी विवश हो गये। यह इस बात का प्रमाण है कि यह क़ुरआन अल्लाह ही का अवतरित किया हुआ है तथा वह सच्चा संदेष्टा है जिस पर वह अवतरित हुआ है, जो वह धार्मिक नियम लेकर आया है मनुष्य को उसकी आवश्यकता है तथा उसका सुधार एवं सौभाग्य की परिपूर्णता इसी धार्मिक नियम से सम्भव है। दूसरा यह कि मूर्तिपूजक अपने साथियों को इस क़ुरआन को सुनने से रोकते थे कि कहीं वे इससे प्रभावित होकर मुसलमान न हो जायें। अल्लाह तआला ने विभिन्न सूरतों का प्रारम्भ इसी प्रकार के विभिन्न विच्छेदित अक्षरों से किया ताकि वे इसको सुनने के लिए वाध्य हो जायें क्योंकि वर्णन की यह विधि नई तथा अछूती थी (ऐसरूत्तफ़ासीर)।

The Ummah Technology Mission

هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ۙ﴿٣﴾

(३) जो सदाचारियों के लिए[1] मार्गदर्शन एवं (सर्वथा) कृपा है।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾

(४) जो लोग नियमित रूप से नमाज़ पढ़ते हैं तथा ज़कात (धर्मदान) देते हैं तथा आख़िरत पर (पूरा) विश्वास करते हैं।[2]

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥﴾

(५) यही लोग हैं जो अपने प्रभु की ओर से मार्गदर्शन पर हैं तथा यही लोग मोक्ष प्राप्त करने वाले हैं।[3]

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

(६) तथा कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अनायास बातों को मोल लेते हैं[4] कि अज्ञानता के साथ

---

[1] مُحسِن (मुहसिन) का वहुवचन مُحسنين (मुहसिनीन) है। इसका एक अर्थ तो है उपकार करने वाला, माता-पिता के साथ, सगे सम्वन्धियों के साथ, अधिकार वालों एवं दरिद्र लोगों के साथ। दूसरा अर्थ है पुण्य करने वाला, अर्थात बुराईयों से दूर रहने वाला सदाचारी। तीसरा अर्थ है अल्लाह की इबादत नि:स्वार्थता एवं एकाग्रता तथा ध्यान के साथ करने वाला। जिस प्रकार जिब्रील के कथन में है .... «أَنْ تَعْبُدَ اللهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ» (अल्लाह की उपासना ऐसे करो मानों तुम उसे देख रहे हो) क़ुरआन वैसे तो समस्त जगत के लिए मार्गदर्शक है तथा दया का साधन है परन्तु इसका मूल लाभ चूँकि परोपकारी, सदाचारी तथा अल्लाह से भय खाने वाले ही उठाते हैं। इसलिए यहाँ इस प्रकार वर्णन किया है।

[2] नमाज़, ज़कात तथा परलोक (आख़िरत) पर विश्वास। ये तीनों अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इसलिए इनका विशेषरूप से वर्णन किया वरन् परोपकारी, सदाचारी एवं अल्लाह से डरने वाले समस्त अनिवार्य आदेश तथा सुन्नत वल्कि उत्तम कर्मों तक निरन्तर दृढ़ता पूर्वक पालन करते हैं।

[3] فلاح (फ़लाह) का भावार्थ के लिए देखिए सूर: वक़र: तथा मोमिनून का प्रारम्भिक अंश।

[4] भाग्यवान लोग जो अल्लाह की किताव से मार्ग प्राप्त तथा उसे सुन कर लाभान्वित होते हैं, उनके वर्णन के पश्चात उन हतभागी लोगों का वर्णन हो रहा है, जो अल्लाह के कथन को सुनने से तो विमुख होते हैं, परन्तु संगीत एवं गीत, नाच-गाना आदि अत्यन्त रूचि से सुनते हैं तथा उसमें सम्मिलित होते हैं। ख़रीदने से तात्पर्य यही है कि संगीत के यन्त्रों को अपने घरों में लाते हैं तथा फिर उनसे आनन्दित होते हैं। لهو الحديث से तात्पर्य गाना-वजाना, उसका यंत्र, संगीत तथा प्रत्येक वह वस्तु है जो मनुष्य को पुण्य एवं

The Ummah Technology Mission

بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝٦

लोगों को अल्लाह के मार्ग से भटकायें तथा उसे उपहास बनायें, [1] यही वे लोग हैं जिनके लिए अपमानित करने वाली यातना है।[2]

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا وَلَّىٰ مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا كَأَنَّ فِي أُذُنَيْهِ وَقْرًا ۖ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝٧

(७) तथा जब उसके समक्ष हमारी आयतों का पाठ किया जाता है, तो अहंकार के साथ इस प्रकार मुँह फेर लेता है कि जैसे उसने सुना ही नहीं, जैसे कि उसके दोनों कानों में डाट हैं।[3] आप उसे कष्टदायी यातना की सूचना दीजिए।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

(८) नि:संदेह जिन लोगों ने ईमान स्वीकार कर लिया तथा काम भी नेक (धर्म परायणता

सत्कर्म से अचेत कर दे। इसमें किस्से, कहानियाँ, कथायें, गल्प रचनायें, काम सम्बन्धी एवं आश्चर्यजनक साहित्य तथा असभ्यता के प्रचारक समाचार पत्र सभी आ जाते हैं तथा आधुनिक अविष्कारों में रेडियो, टी॰वी॰, वी॰सी॰आर॰ तथा फ़िल्में आदि भी। सन्देष्टा के युग में कुछ लोगों ने गाने बजाने वाली दासियाँ भी इसी उद्देश्य के लिए ख़रीदी थीं कि वह लोगों के दिल गाने सुनाकर बहलाती रहें ताकि क़ुरआन तथा इस्लाम से वे दूर रहें। इस आधार पर इसमें गायिकायें भी आ जाती हैं, जो आजकल कलाकार, फ़िल्मी सितारे तथा सांस्कृतिक दूत तथा पता नहीं कैसे-कैसे सभ्य, आकर्षक एवं हृदयस्पर्शी नामों से पुकारी जाती हैं।

[1]इन समस्त वस्तुओं से निश्चित रूप से मनुष्य अल्लाह के रास्ते से भटक जाते हैं तथा धर्म को उपहास एवं हँसी का निशाना भी बनाते हैं।

[2]इनकी संरक्षकता करने एवं साहस बढ़ाने वाले राज्य नेता, संस्थायें, समाचार पत्रों के स्वामी, लेखक और संवाद लेखक भी इसी घोर यातना के अधिकारी होंगे।

[3]यह उस व्यक्ति की दशा है जो उपरोक्त मनोरंजन के साधनों में मग्न रहता है, वह क़ुरआन की आयतों (सूत्रों) तथा अल्लाह के संदेष्टा की बातों को सुनकर बहरा बन जाता है जबकि वह बहरा नहीं होता तथा इस प्रकार मुख फेर लेता है जैसे उसने सुना ही नहीं, क्योंकि उसके सुनने से वह कष्ट अनुभव करता है, इसलिए उसे इससे कोई लाभ नहीं होता। وَقْرًا का अर्थ है कानों में ऐसा बोझ जो उसे सुनने से वंचित कर दे।

The Ummah Technology Mission

لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ۝٨

के अनुसार) किया उनके लिए सुखों वाले स्वर्ग हैं।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٩

(९) जहाँ वे सदैव रहेंगे, अल्लाह का सत्य वचन है,[1] वह अत्यन्त महिमा वाला तथा पूर्ण दिव्य ज्ञान वाला है।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ؕ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَنْۢبَتْنَا

(१०) उसी ने आकाशों को बिना स्तम्भ के बनाया है, तुम उन्हें देख रहे हो,[2] तथा उसने धरती पर पर्वतों को डाल दिया ताकि वे तुम्हें कंपित न कर सकें,[3] तथा हर प्रकार के जीवधारी धरती में फैला दिये।[4] और उसने

---

[1] अर्थात यह अवश्य पूरा होगा, इसलिए कि यह अल्लाह की ओर से है। وَاللّٰهُ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ "तथा अल्लाह अपना वचन भंग नहीं करता।"

[2] تَرَوْنَهَا यदि عَمَدٍ का विशेषण हो तो अर्थ होगा ऐसे स्तम्भ के बिना जो तुम देख सको, अर्थात आकाश के स्तम्भ हैं परन्तु ऐसे कि तुम नहीं देख सकते।

[3] رَاسِيَةٌ का बहुवचन رَوَاسِيَ है जिसका अर्थ ثَابِتَةٌ है। अर्थात पर्वतों को धरती पर इस प्रकार भारी बोझ बनाकर रख दिया है कि जिनसे धरती स्थिर रहे अर्थात कंपित न हो। इसीलिए आगे फ़रमाया أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ (تَمِيلَ) كَرَاهَةَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ أَوْ لِئَلَّا تَمِيدَ अर्थात इस बात की अप्रियता से कि धरती तुम्हारे साथ इधर-उधर डोले, अथवा इसलिए कि धरती इधर-उधर न डोले। जिस प्रकार समुद्र तट पर खड़े जहाज़ों में बड़े-बड़े लंगर डाल दिये जाते हैं ताकि जहाज़ न डोले। धरती के लिए पर्वतों की भी यही स्थिति है।

[4] अर्थात विभिन्न प्रकार के पशु धरती पर प्रत्येक ओर फैला दिये जिन्हें मनुष्य खाता भी है, सवारी एवं माल ढोने के लिए भी प्रयोग करता है तथा शोभा एवं सौन्दर्य हेतु भी अपने पास रखता है।

The Ummah Technology Mission

فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ﴿١٠﴾

आकाश से वर्षा करके धरती से हर प्रकार के सुन्दर जोड़े उपजा दिये।[1]

هَٰذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِن دُونِهِ ۚ بَلِ الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿١١﴾

(११) यह है अल्लाह की सृष्टि[2] अब तुम मुझे इसके सिवाय अन्य किसी की कोई सृष्टि तो दिखाओ[3] (कुछ नहीं), यह अत्याचारी खुली विपथा में हैं।

وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنِ اشْكُرْ لِلَّهِ ۚ وَمَن يَشْكُرْ

(१२) तथा हमने निःसंदेह लुक़मान को तत्वज्ञान दिया[4] कि तू अल्लाह (तआला) की

---

[1] زَوْج यहाँ प्रकार के अर्थ में है अर्थात हर प्रकार के अनाज तथा मेवे (फल) पैदा किये। इनका विशपेण करीम, इनके रंग की सुन्दरता एवं अधिक लाभ की ओर संकेत करता है।

[2] هٰذَا (यह) संकेत है अल्लाह की उन पैदा की हुई वस्तुओं की ओर जिनका पूर्व की आयतों में वर्णन हुआ।

[3] अर्थात जिनकी तुम पूजा करते हो तथा उन्हें सहायता के लिए पुकारते हो, उन्होंने आकाश तथा धरती की कौन सी वस्तु बनायी है ? कोई एक वस्तु तो बताओ। अर्थ यह है कि जब प्रत्येक वस्तु का स्रष्टा केवल तथा मात्र अल्लाह ही है तो इबादत के योग्य भी केवल वही है। उसके अतिरिक्त सृष्टि में कोई भी इस योग्य नहीं कि उसकी इबादत की जाये तथा उसे सहायता के लिए पुकारा जाये।

[4] आदरणीय लुकमान अल्लाह के सदाचारी भक्त थे जिन्हें अल्लाह तआला ने बुद्धि एवं विवेक तथा धार्मिक दिव्य ज्ञान में उच्च स्थान प्रदान किया था। उनसे किसी ने पूछा कि तुम्हें यह ज्ञान एवं बोध किस प्रकार प्राप्त हुआ। उन्होंने फ़रमाया, सीधे मार्ग पर रहने, ईमानदारी को अपनाने तथा अलाभकारी बातों से बचने से एवं शान्त रहने के कारण। यह दास थे। उनके स्वामी ने कहा कि बकरी काट करके उसके सर्वश्रेष्ठ दो भाग लाओ अन्ततः वह जीभ तथा दिल निकालकर ले गये। एक अन्य अवसर पर स्वामी ने उनसे कहा कि बकरी काट करके उसके सबसे बुरे दो भाग लाओ। वह फिर वही जीभ तथा दिल लेकर चले गये। पूछने पर उन्होंने बताया कि जीभ तथा दिल यदि ठीक हों तो यह सर्वोत्तम हैं तथा यदि बिगड़ जायें तो उनसे बुरी कोई वस्तु नहीं। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِۦ ۖ وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَنِىٌّ حَمِيدٌ ﴿١٢﴾

कृतज्ञता व्यक्त कर,[1] प्रत्येक कृतज्ञ अपने ही लाभ के लिए कृतज्ञता व्यक्त करता है, जो भी कृतघ्नता व्यक्त करे वह जान ले कि अल्लाह (तआला) निस्पृह प्रशंसित है।

وَإِذْ قَالَ لُقْمَٰنُ لِٱبْنِهِۦ وَهُوَ يَعِظُهُۥ يَٰبُنَىَّ لَا تُشْرِكْ بِٱللَّهِ ۖ إِنَّ ٱلشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ﴿١٣﴾

(१३) तथा जब लुक़मान ने उपदेश देते हुए अपने पुत्र से कहा कि हे मेरे प्रिय पुत्र! अल्लाह (तआला) के साथ साझीदार न बनाना,[2] नि:सन्देह अल्लाह का साझीदार बनाना घोर अत्याचार है।[3]

وَوَصَّيْنَا ٱلْإِنسَٰنَ بِوَٰلِدَيْهِ ۖ حَمَلَتْهُ أُمُّهُۥ وَهْنًا عَلَىٰ وَهْنٍ وَفِصَٰلُهُۥ

(१४) हमने मनुष्य को उसके माता-पिता के सम्बन्ध में शिक्षा दी है,[4] उसकी माता ने कष्टों पर कष्ट उठाकर[5] उसे गर्भ में रखा तथा

---

[1]कृतज्ञता का अर्थ है अल्लाह के वरदानों पर उसकी प्रशंसा तथा उसके आदेशों का पालन।

[2]अल्लाह तआला ने आदरणीय लुक़मान का सर्वप्रथम यह सदुपदेश ब्यान किया है कि उन्होंने अपने पुत्र को शिर्क से रोका, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि माता-पिता के लिए आवश्यक है कि वह अपनी सन्तान को शिर्क से बचाने के लिए सर्वाधिक प्रयत्न करें।

[3]यह कुछ के निकट आदरणीय लुक़मान ही का कथन है तथा कुछ ने इसे अल्लाह का कथन कहा है तथा उसके समर्थन के लिए यह हदीस प्रस्तुत की है जो ﴿ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَلَمْ يَلْبِسُوٓا۟ إِيمَٰنَهُم بِظُلْمٍ﴾ के अवतरित होने के सम्बन्ध में आयी है जिसमें आप *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया था कि यहाँ अत्याचार से तात्पर्य महा अत्याचार है तथा आयत ﴿إِنَّ ٱلشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾ का हवाला दिया (सहीह बुख़ारी संख्या ४७७६)। परन्तु वास्तव में इससे अल्लाह का कथन होने का न तो समर्थन होता है न खण्डन।

[4]एकेश्वरवाद तथा अल्लाह की इबादत के साथ ही माता-पिता के साथ सदव्यवहार करने पर बल दिया गया है। इससे इस शिक्षा की महत्ता परिलक्षित होती है।

[5]इसका अर्थ यह है कि माता के गर्भ में बालक जिस प्रकार बढ़ता है माता पर बोझ बढ़ता जाता है, जिससे माता कमज़ोर होती चली जाती है। माता के इन कष्टों के वर्णन से उस ओर भी संकेत मिलता है कि माता-पिता के साथ सदव्यवहार करते समय माता को प्राथमिकता दी जाये जैसाकि हदीस में भी है।

The Ummah Technology Mission

فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ؕ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿١٤﴾

उसकी दूध छुड़ायी दो वर्ष में है [1] कि तू मेरी तथा अपने माता-पिता की कृतज्ञता व्यक्त कर, मेरी ही ओर लौटकर आना है।

وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰۤى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ۪ وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾

(१५) तथा यदि वे दोनों तुझ पर इस बात का दबाव डालें कि तू मेरे साथ साझीदार बना जिसका तुझे ज्ञान न हो, तो तू उनका कहना न मानना, परन्तु संसार में उनके साथ सुचारू रूप से निर्वाह करना तथा उसके मार्ग पर चलना जो मेरी ओर झुका हुआ हो।[2] तुम्हारा सब का लौटना मेरी ही ओर है, तुम जो कुछ करते हो उससे फिर मैं तुम्हें सूचित कर दूँगा।[3]

---

[1]इससे ज्ञात हुआ कि माता के स्तन से दूध पिलाने की अवधि दो वर्ष है, इससे अधिक नहीं।

[2]अर्थात ईमानवालों का मार्ग।

[3]अर्थात मेरी ओर ध्यान लगाने वाले (ईमानवालों) का अनुसरण इसलिए करो कि अन्त में तुम लोगों को मेरे ही समक्ष प्रस्तुत होना है, तथा मेरी ही ओर से प्रत्येक को उसके (अच्छे अथवा बुरे) कर्मों का बदला (प्रतिफल) मिलना है। यदि तुम मेरे मार्ग का अनुसरण करोगे तथा मुझे याद करते हुए जीवन व्यतीत करोगे तो आशा है कि क़ियामत के दिन मेरे न्यायालय में सफल होगे अन्यथा इसके विपरीत परिस्थिति में मेरी यातनाओं से पीड़ित होगे। यह वाक्य आदरणीय लुक़मान की वसीयत से सम्बन्धित था। अब आगे पुनः उन्हीं वसीयतों का वर्णन है, जो लुक़मान ने अपने पुत्र को की थीं। मध्य की दो आयतों में अल्लाह तआला ने वाक्य प्रसंग के रूप में माता-पिता के साथ सदव्यवहार करने पर बल दिया, जिसका एक कारण तो यह वर्णन किया गया है कि लुक़मान ने यह सदुपदेश अपने पुत्र को नहीं दिया था क्योंकि इसमें स्वयं उनका अपना लाभ भी था। दूसरा, यह स्पष्ट हो जाये कि अल्लाह की एकता एवं भक्ति के पश्चात माता-पिता की सेवा तथा आज्ञापालन आवश्यक है। तीसरा यह कि शिर्क इतना बड़ा पाप है कि यदि उसका आदेश माता-पिता भी दें तो उनकी बात नहीं माननी है।

The Ummah Technology Mission

يٰبُنَيَّ اِنَّهَآ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ⑯

(१६) प्रिय पुत्र ! यदि कोई वस्तु राई के दाने के समान हो,[1] फिर वह भी यदि किसी पत्थर के नीचे हो अथवा आकाशों में हो अथवा धरती में हो, उसे अल्लाह (तआला) अवश्य लायेगा, अल्लाह (तआला) अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी तथा जानने वाला है।

يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰي مَآ اَصَابَكَ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ⑰

(१७) हे मेरे प्रिय पुत्र ! तू नमाज़ स्थापित रखना, अच्छे कार्यों के लिए आदेश देना तथा बुरे कार्यों से रोकना, यदि तुम पर संकट आये तो धैर्य रखना,[2] (विश्वास करो) कि यह बड़े साहसिक कार्यों में से है।[3]

---

[1] إِنْ تَكُ का संकेत خطيئة हो तो अर्थ पाप तथा अल्लाह की अवज्ञा का कार्य है तथा उसका संकेत حَصْلَة हो तो अर्थ अच्छा अथवा बुरा आचरण होगा। अर्थ यह है कि मनुष्य अच्छा अथवा बुरा कार्य चाहे जितना छिपकर करे, अल्लाह से नहीं छिप सकता, क़यामत के दिन अल्लाह उसे प्रस्तुत करेगा अर्थात उसका बदला देगा। अच्छे कर्म का बदला पुण्य तथा कुकर्मों का बदला दण्ड। राई के दाने का उदाहरण इसलिए दिया कि वह इतना छोटा होता है कि जिसके भार का आभास नहीं होता है न तौल में तुला को झुका सकता है। इसी प्रकार चट्टान (आबादी से दूर जंगल, पर्वत में) छिपने का सुरक्षित स्थान है। यह विषय हदीस में भी वर्णन किया गया है। फ़रमाया, यदि तुम से कोई व्यक्ति बिना छिद्र के पत्थर में भी कर्म करेगा, जिसका न कोई द्वार हो न खिड़की, अल्लाह तआला लोगों पर वह प्रकट कर देगा, चाहे वह कैसा ही कर्म हो (मुसनद अहमद ३\२८)। इसलिए कि वह सूक्ष्मदर्शी है, उसका ज्ञान अत्याधिक गुप्त बातों तक है तथा خبير (जानने वाला) है, अंधेरी रात्रि में चलने वाली चींटी के आवागमन से भी वह भलीभाँति परिचित है।

[2] सत्कर्म का आदेश, दुष्कर्म से रोकने एवं नमाज़ की स्थापना तथा दुखों पर धैर्य की इसलिए चर्चा की है कि ये तीनों अत्याधिक महत्वपूर्ण इबादतें तथा पुण्य के कार्यों की आधारशिला हैं।

[3] अर्थात उपरोक्त बातें उन कार्यों में से हैं जिन पर अल्लाह तआला ने बल दिया है तथा भक्तों पर अनिवार्य किया है। अथवा ये प्रलोभन है साहस तथा उत्साह उत्पन्न करने का क्योंकि साहस एवं उत्साह के विना आज्ञापालन संभव नहीं। कुछ व्याख्याकारों के निकट

The Ummah Technology Mission

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿١٨﴾

(१८) तथा लोगों के समक्ष अपने गाल न फुला,[1] तथा धरती पर अकड़कर अंहकार से न चल,[2] किसी अहंकारी घमंडी व्यक्ति को अल्लाह (तआला) पसन्द नहीं करता।

وَاقْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَاغْضُضْ

(१९) तथा अपनी चाल में मध्यमता रख, [3] तथा

ذٰلِكَ का संकेत धैर्य है। इससे पूर्व सत्कर्म का आदेश एवं बुराई पर रोक का उपदेश है तथा इस मार्ग में कठिनाई, कष्ट, दुख, धिक्कार एवं निन्दा आवश्यक है। इसलिए इसके तुरन्त पश्चात धैर्य की शिक्षा दी गयी तथा यह स्पष्ट कर दिया कि धैर्य का दामन थामे रखना कि यह साहस तथा उत्साह के कार्यों में से है तथा साहसी एवं उत्साही का एक बड़ा शस्त्र। इसके बिना आमन्त्रण का कर्तव्य पालन असम्भव है।

[1]अर्थात गर्व न करो कि लोगों को तुच्छ समझो तथा जब वे तुझसे बात करना चाहें तो तुम उनसे मुख फेर लो अथवा वार्तालाप करते समय उनसे मुख फेरे रखो। صعر एक रोग है, जो ऊँट के सिर अथवा गर्दन में होता है जिससे उसकी गर्दन मुड़ जाती है। यहाँ अहंकार के रूप में मुख फेर लेने के अर्थ में प्रयोग हुआ है।

[2]अर्थात ऐसा आचरण अथवा व्यवहार जिससे माल व धन अथवा मान एवं मर्यादा अथवा शक्ति के कारण गर्व तथा अहंकार का प्रदर्शन होता हो, यह अल्लाह को अप्रिय है, इसलिए कि मनुष्य एक तुच्छ विवश भक्त है। अल्लाह तआला को यही प्रिय है कि अपनी स्थिति के अनुसार नम्रता तथा कोमलता ही धारण करे, इसका उल्लंघन करके बड़प्पन का प्रदर्शन न करे क्योंकि बड़प्पन तो केवल अल्लाह ही के लिए है जो समस्त अधिकारों का स्वामी है तथा समस्त गुणों का स्रोत है। इसीलिए हदीस में फ़रमाया गया है "वह व्यक्ति स्वर्ग में नहीं जायेगा, जिसके दिल में सरसों के दाने के समान भी अहंकार होगा।" (मुसनद अहमद १/४१२, तिर्मिज़ी अबवाबुल बिर्रे, माजअ फ़िल क़िब्र) जो अहंकार के कारण कपड़े को खींचते (घसीटते) हुए चलेगा, अल्लाह उसकी ओर (क़ियामत के दिन) (कृपादृष्टि) से नहीं देखेगा (मुसनद अहमद ५/९,१० तथा देखिये अलबुख़ारी किताबुल लिबास)। फिर भी गर्व का प्रदर्शन किये बिना अल्लाह के प्रदानों का वर्णन अथवा अच्छे वस्त्र तथा भोजन आदि का प्रयोग उचित है।

[3]अर्थात चाल इतनी धीमी न हो कि जैसे कोई रोगी हो तथा न इतनी तीव्र गति से हो कि मान-सम्मान के विरूद्ध हो। इसी को अन्य स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया गया है,

﴿يَمْشُونَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا﴾

"अल्लाह के भक्त धरती पर मान एवं शान्ति के साथ चलते हैं।" (सूरः अल-फ़ुरक़ान-६३)

The Ummah Technology Mission

مِنْ صَوْتِكَ ۖ إِنَّ أَنكَرَ
الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ ﴿١٩﴾

अपना स्वर धीमा रख,[1] नि:संदेह अत्यधिक बुरी ध्वनि गधे की ध्वनि है।

أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُم
مَّا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً
وَبَاطِنَةً ۗ وَمِنَ النَّاسِ
مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ
وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّنِيرٍ ﴿٢٠﴾

(२०) क्या तू नहीं देखता कि अल्लाह (तआला) ने धरती तथा आकाश की प्रत्येक वस्तु को हमारी सेवा में लगा रखा है[2] तथा तुम्हें अपनी प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष उपकार पूर्णतया प्रदान कर रखी हैं।[3] तथा कुछ लोग अल्लाह के विषय में बिना ज्ञान, बिना निर्देश तथा बिना दिव्य शास्त्र के झगड़ा करते हैं।[4]

---

[1]अर्थात चीख-चिल्लाकर बात न कर, इसलिए कि यदि उच्च ध्वनि में बात करना प्रिय होता तो गधे की आवाज़ सबसे अच्छी समझी जाती, परन्तु ऐसा नहीं है, बल्कि गधे की आवाज़ सबसे बुरी तथा घृणित है। इसलिए हदीस में आता है कि गधे की आवाज़ सुनों तो शैतान से सुरक्षा माँगो (बुख़ारी किताब बदयिल ख़लक़ि तथा मुस्लिम आदि)

[2]अधीनकरण का अर्थ है लाभ उठाना, जिसको यहाँ "सेवा में लगा दिया" से व्यक्त किया गया है। जैसे आकाश की सृष्टि चन्द्रमा, सूर्य, सितारे आदि हैं। उन्हें अल्लाह तआला ने उन नियमों के अधीन कर दिया है कि ये मनुष्यों के लिए कार्य कर रहे हैं तथा मनुष्य उनसे लाभान्वित हो रहा है। तथा दूसरा अर्थ अधीन करने का आज्ञाकारी बना देना है। अत: बहुत सी धरती की सृष्टि को मनुष्य का अधीन बना दिया जिन्हें मनुष्य इच्छानुसार प्रयोग करता है। जैसे धरती (भूमि) तथा पशु आदि हैं। मानों अधीन करने का अर्थ यह हुआ कि आकाश तथा धरती की समस्त वस्तुयें मनुष्य के लाभ के लिए कार्य से लगी हुई हैं। चाहे वे मनुष्य के आधीन तथा उसके अन्तर्गत प्रयोग में हों अथवा उसके प्रयोग तथा आधीनता से परे हों। (फ़तहुल क़दीर)

[3]प्रत्यक्ष से वे सुख-सुविधायें हैं, जिनका ज्ञान बुद्धि एवं इंद्रियों आदि से सम्भव हो तथा गुप्त उपहारों से तात्पर्य वे जिनका संवेदन तथा अनुभव मनुष्य को नहीं। ये दोनों प्रकार के सुख-सुविधायें इतने हैं कि मनुष्य उनकी गणना भी नहीं कर सकता।

[4]अर्थात इसके उपरान्त भी लोग अल्लाह के विषय में झगड़ते हैं, कोई उसके अस्तित्व के विषय में कोई उसका साझीदार बनाने में तथा कोई उसके आदेश तथा नियमों के विषय में।

The Ummah Technology Mission

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۗ أَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿٢١﴾

(२१) तथा जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह (तआला) की अवतरित की हुई प्रकाशना (वह्यी) का पालन करो, तो कहते हैं कि हमने तो जिस मार्ग पर[1] अपने पूर्वजों को पाया है उसी का अनुसरण करेंगे, चाहे शैतान उनके पूर्वजों को नरक की यातना की ओर बुलाता हो।

وَمَن يُسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ ۗ وَإِلَى اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा जो व्यक्ति अपने चेहरा को (स्वयं को) अल्लाह के प्रति समर्पित कर दे[2] तथा वह है भी सदाचारी, [3] तो वस्तुतः उसने सुदृढ़ कड़ा थाम लिया,[4] सभी कर्मों का परिणाम अल्लाह की ओर है।

وَمَن كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ كُفْرُهُ ۚ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٢٣﴾

(२३) तथा काफ़िरों के कुफ़्र से आप दुखी न हों[5] अन्त में उन सभी का लौटना हमारी ओर ही है, उस समय उनके किये को हम उन्हें बता देंगे[6] निःसन्देह अल्लाह दिलों कि भेदों तक से अवगत है।[7]

---

[1]अर्थात आश्चर्य यह है कि उनके पास न तो कोई बौद्धिक तर्क है न किसी मार्गदर्शक का मार्गदर्शन तथा न किसी आकाशीय पुस्तक से कोई प्रमाण। जैसे कि लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं।

[2]अर्थात केवल अल्लाह की प्रसन्नता के लिए कर्म करें, उसके आदेशों का पालन तथा उसके धर्म विधान आदिष्ट का अनुसरण करें।

[3]अर्थात आदेश दी गई वस्तुओं का पालन तथा मना की गयी बातों को त्याग देने वाला।

[4]अर्थात अल्लाह से उसने पक्का वचन ले लिया कि वह उसको यातना नहीं देगा।

[5]इसलिए कि ईमान का सौभाग्य ही उनके भाग्य में नहीं है। आपका अपना प्रयत्न अपने स्थान पर उचित है तथा आपकी इच्छा भी प्रशंसा योग्य है, परन्तु अल्लाह का भाग्य लेख तथा इच्छा सर्वोपरि है।

[6]अर्थात उनके कर्मों का बदला देगा।

[7]तो उससे कोई बात गुप्त नहीं रह सकती।

The Ummah Technology Mission

نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٢٤﴾

(२४) हम उन्हें कुछ यूँ ही लाभ पहुँचा देते हैं, परन्तु अन्ततः हम उन्हें अत्यन्त विवशता की स्थिति में घोर यातनाओं की ओर हाँक ले जायेंगे।[1]

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۭ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा यदि आप उनसे पूछें कि आकाश तथा धरती का विधाता कौन है? तो ये अवश्य उत्तर देंगे अल्लाह,[2] तो कह दीजिए की समस्त प्रशंसाओं के योग्य अल्लाह ही है,[3] परन्तु उनमें से अधिकतर लोग अनजान हैं।

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۭ إِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٦﴾

(२६) आकाशों में तथा धरती में जो कुछ है वह सब अल्लाह ही का है,[4] निश्चय ही अल्लाह (तआला) अत्यन्त निस्पृह[5] एवं महिमा एवं प्रशंसा के योग्य है।[6]

وَلَوْ أَنَّ مَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِنْ بَعْدِهٖ

(२७) तथा समस्त धरती के वृक्षों की यदि क़लमें हो जायें तथा समस्त समुद्रों की स्याही हो तथा उनके पश्चात सात समुद्र अन्य हों

---

[1]अर्थात संसार में कब तक रहेंगे तथा उसके स्वाद एवं सुख-सुविधाओं से कहाँ तक आनन्दित होंगे? यह संसार तथा सुख-सुविधायें तो कुछ दिन के लिये हैं, उसके पश्चात उनके लिए घोर यातनायें ही यातनायें हैं।

[2]अर्थात उनको यह स्वीकार है कि आकाश तथा धरती का स्रष्टा अल्लाह ही है, न कि वे देवता जिनकी वे पूजा करते हैं।

[3]इसलिए उनके इस स्वीकार से उन पर स्थापित हो गया।

[4]अर्थात उनका स्रष्टा भी वही है, स्वामी भी वही तथा पालनहार एवं समस्त जगत का व्यवस्था करने वाला भी वही।

[5]निस्पृह है अपने सिवाय से अर्थात प्रत्येक वस्तु उसकी स्पृही है तथा वह निस्पृह है।

[6]अपनी समस्त पैदा की हुई वस्तुओं में। तो उसने जो कुछ पैदा किया तथा जो आदेश अवतरित किये, उस पर आकाश तथा धरती में समस्त प्रशंसा एवं गुणगान, योग्य मात्र वही है।

The Ummah Technology Mission

سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٧﴾

फिर भी अल्लाह की प्रशंसा समाप्त नहीं हो सकती।[1] नि:संदेह अल्लाह (तआला) प्रभाव-शाली तथा प्रज्ञ है।

مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٨﴾

(२८) तुम सब की उत्पत्ति तथा मरणोपरान्त जीवित करना ऐसा ही है, जैसे एक प्राण का,[2] नि:संदेह अल्लाह (तआला) सुनने देखने वाला है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۙ كُلٌّ يَّجْرِىْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى

(२९) क्या आप नहीं देखते कि अल्लाह (तआला) रात को दिन में तथा दिन को रात में खपा देता है।[3] सूर्य तथा चन्द्रमा को उसी ने आज्ञाकारी बना रखा है कि प्रत्येक एक

---

[1]इसमें अल्लाह तआला की महिमा, महानता प्रताप उसके सर्वोत्तम नामों तथा सर्वोत्तम गुणों तथा उसके वे शब्द जो उसकी महिमा से अवगत कराते हैं उनका बयान हैं, वे इतने हैं कि किसी के लिए उनका घेरना अथवा उनकी जानकारी अथवा उनके तथ्य एवं वास्तविकता तक पहुँच पाना संभव नहीं है। यदि कोई इसकी गणना करना तथा लिखित रूप में लाना चाहे तो संसार के समस्त वृक्ष के कलम बना लिये जायें तथा समस्त समुद्र के पानी की स्याही बनाकर लिखना चाहें तथा वे समाप्त हो जायें, परन्तु अल्लाह के ज्ञान, उसकी सृष्टि एवं कलाकृति की विचित्रता एवं उसकी महिमा तथा प्रताप के प्रतीकों की गणना नहीं की जा सकती। सात समुद्र अतिश्योक्ति के रूप में है, परिधि में लेने का उद्देश्य नहीं है। इसीलिए कि अल्लाह की आयतों एवं शब्दों को सीमित कर लेना संभव ही नहीं है। (इब्ने कसीर) इस भावार्थ की आयत *सूरः कहफ़* के अन्त में गुज़र चुकी है।

[2]अर्थात उसकी शक्ति इतनी अपरम्पार है कि तुम सबका पैदा करना अथवा प्रलय के दिन जीवित करना, एक प्राणी को पैदा करने अथवा जीवित करने के समान है। इसलिए कि वह जो कुछ चाहता है शब्द كُنْ (कुन) से तत्क्षण उत्पन्न अस्तित्व में आ जाता है।

[3]अर्थात रात्रि का कुछ भाग लेकर दिन में सम्मिलित करता है, जिससे दिन बड़ा तथा रात्रि छोटी हो जाती है। जैसे ग्रीष्म ऋतु में होता है। फिर दिन का कुछ भाग लेकर रात्रि में सम्मिलित कर देता है जिससे दिन छोटे तथा रात्रि बड़ी हो जाती है। जैसे शीत ऋतु में होता है।

The Ummah Technology Mission

وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٩﴾

निर्धारित समय तक चलता रहे,[1] अल्लाह (तआला) प्रत्येक उस कर्म से जो तुम करते हो अवगत है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٣٠﴾

(३०) यह सब (प्रबन्ध) इस कारण है कि अल्लाह (तआला) सत्य है तथा उसके अतिरिक्त जिन जिन को लोग पुकारते हैं सब असत्य हैं,[2] तथा नि:संदेह अल्लाह (तआला)

---

[1]"निर्धारित समय तक" से तात्पर्य क़ियामत (प्रलय) तक है अर्थात सूर्य एवं चन्द्रमा के उदय एवं अस्त की यह व्यवस्था जिसको अल्लाह ने उनको आवद्धि कर रखा है, क़ियामत तक इसी प्रकार निरन्तर रहेगा। दूसरा अर्थ है एक "निर्धारित लक्ष्य तक" अर्थात अल्लाह ने उनकी परिक्रमा के लिए एक लक्ष्य तथा एक परिधि निर्धारित किया हुआ है। जहाँ उनकी यात्रा समाप्त होती है तथा दूसरे दिन फिर वहाँ से प्रारम्भ होकर प्रथम लक्ष्य तक आकर ठहर जाता है। एक हदीस में भी इस तथ्य की पुष्टि होती है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय अबू ज़र (رضي الله عنه) से फ़रमाया जानते हो, कि यह सूर्य कहाँ जाता (अस्त होता) है ? अबू ज़र कहते हैं कि मैंने कहा, "अल्लाह तथा उसके रसूल भली प्रकार जानते हैं।" फ़रमाया : उसका अन्तिम स्थान अर्श इलाही है, यह वहाँ जाता है तथा अर्श के नीचे सजदा करता है, फिर (वहाँ से निकलने की) अपने प्रभु से आज्ञा माँगता है। एक समय आयेगा कि उस को कहा जायेगा «ارْجِعِي مِنْ حَيْثُ جِئْتِ» "तू जहाँ से आया है वहीं लौट जा।" तो वह पूर्व से उदय होने के स्थान पर पश्चिम से उदय होगा। जैसाकि क़ियामत के निकट आने के लक्षण में आता है। (सहीह बुख़ारी किताबुत तौहीद तथा मुस्लिम किताबुल ईमान बाब बयान अज़्ज़मनि अल्लज़ी ला युक़बल फीहि अल ईमान) आदरणीय इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) फ़रमाते हैं, सूर्य रहट की भाँति है, दिन को आकाशों की परिधि पर चलता रहता है, जब अस्त हो जाता है तो रात्रि को धरती के नीचे अपने पथ पर चलता रहता है यहाँ तक कि पूर्व से उदय हो जाता है। इसी प्रकार चन्द्रमा की व्यवस्था है। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात यह प्रबन्ध तथा निशानियाँ अल्लाह तआला तुम्हारे लिए प्रकट करता है ताकि तुम समझ लो कि समस्त जगत का प्रबन्ध चलाने वाला केवल एक अल्लाह है, जिसके आदेश एवं इच्छानुसार यह सभी कुछ हो रहा है, तथा उसके अतिरिक्त सब झूठ है अर्थात किसी का कोई अधिकार नहीं है, बल्कि सब उसी के आधीन हैं क्योंकि सब उसी की सृष्टि हैं तथा उसके आधीन हैं, उनमें से कोई भी एक कण को भी हिलाने की शक्ति नहीं रखते।

The Ummah Technology Mission

अत्यन्त उच्च एवं अत्यन्त महान है।[1]

اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿۳۱﴾

(३१) क्या तुम इस पर विचार नहीं करते कि जल में नवकायें अल्लाह के अनुग्रह से चल रही हैं इसलिए कि वह तुम्हें अपने चिन्ह देखा दे,[2] नि:संदेह इसमें प्रत्येक धैर्यवान एवं कृतज्ञ[3] के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं।

وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ

(३२) तथा जब उन पर धारायें उन छत्रों की तरह छा जाती हैं, तो वे (अत्यन्त) विश्वास करके अल्लाह (तआला) ही को पुकारते हैं[4] तथा जब अल्लाह (तआला) उन्हें छुटकारा दिलाकर थल की ओर पहुँचाता है, तो कुछ उनमें से संतुलित रहते हैं,[5] तथा हमारी

---

[1]उससे उत्तम महिमावान कोई है न उससे बड़ा कोई। उसकी अपरमपार महिमा, सर्वोत्तम पद तथा प्रशंसा के समक्ष हर वस्तु तुच्छ एवं पतित है।

[2]यह समुद्र में नावों का चलना, यह भी उसकी अनुग्रह एवं दया का प्रदर्शन है तथा उसको आधीन बनाने के सामर्थ्य का एक नमूना है। उसने वायु एवं जल दोनों को ऐसे उचित ढंग से रखा कि समुद्र की सतह पर नवकायें चल सकें, वरन् वह चाहे तो वायु की तीव्रता तथा धाराओं के उछाल से नावों का चलना असम्भव हो जाये।

[3]विपत में धैर्य रखने वाले, सुख-शान्ति में अल्लाह की कृतज्ञता करने वाले।

[4]अर्थात जब इनकी नवकायें ऐसी तूफ़ानी धाराओं में घिर जाती हैं, जो बादलों एवं पर्वतों की भाँति होती हैं तथा मौत की भुजायें उन्हें अपनी पकड़ में लेने प्रतीत होने लगती हैं, तो फिर सारे सांसारिक देवता उनकी मस्तिष्क से निकल जाते हैं तथा केवल आकाशीय परमपूज्य को पुकारते हैं, जो वास्तव में सत्य पूज्य है।

[5]कुछ ने مُقْتَصِد का अर्थ बताया है कि वचन को निभानेवाला, अर्थात कुछ ईमान, एकेश्वरवाद तथा आज्ञापालन के उस वचन पर दृढ़ रहते हैं, जो तूफ़ानी पकड़ में उन्होंने किया था। इनके निकट इस वाक्य में लोप है, वास्तविक कथन इस प्रकार होगा فمنهم مُقْتَصِد و منهم كافر तो कुछ उनमें से ईमान वाले तथा कुछ काफ़िर होते हैं। (फ़तहुल क़दीर) दूसरे व्याख्याकारों के निकट इसका अर्थ है मध्यम मार्ग पर रहने वाला तथा यह भी नकारात्मक के अध्याय में होगा। अर्थात इतने भयानक परिस्थिति एवं फिर वहाँ अपने

The Ummah Technology Mission

خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ﴿٣٢﴾

आयतों को अस्वीकार वही करते हैं, जो वचन तोड़ने वाले तथा कृतघ्न हों।[1]

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۫ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿٣٣﴾

(३३) लोगो ! अपने प्रभु का भय रखो तथा उस दिन का भय करो, जिस दिन पिता अपने पुत्र को कोई लाभ न पहुँचा सकेगा तथा न पुत्र अपने पिता को तनिक भी लाभ पहुँचाने वाला होगा,[2] याद रखो ! अल्लाह का वचन सत्य है, देखो ! तुम्हें साँसारिक जीवन धोखे में डाले तथा न धोखेबाज़ (शैतान) तुम्हें धोखे में डाल दे।

اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ؕ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ؕ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌۢ بِاَيِّ اَرْضٍ

(३४) नि:सन्देह अल्लाह (तआला) ही के पास क़ियामत का ज्ञान है। वही वर्षा करता है तथा माता के गर्भ में जो है उसे जानता है। कोई (भी) नहीं जानता कि कल क्या कुछ कमायेगा ? न किसी को यह ज्ञात है कि किस धरती पर मरेगा।[3] याद रखो ! अल्लाह

प्रभु की इतनी महान निशानी का दर्शन करने तथा अल्लाह के उपकार के उपरान्त कि उसने वहाँ से उसको मुक्ति प्रदान की, मनुष्य अब भी अल्लाह की पूर्ण इबादत एवं आज्ञापालन नहीं करता ? तथा मध्यम मार्ग अपनाता है, जबकि वह परिस्थति, जिनसे गुज़र कर आया है, पूर्णभक्ति के योग्य है, न कि मध्यम मार्ग के। (इब्ने कसीर) परन्तु प्रथम भावार्थ पूर्व वाक्य के अनुसार अधिक निकट है।

[1] ختار द्रोही के अर्थ में है। वचन भंग करने वाला, كفور कृतघ्न।

[2] جاز कर्ता संज्ञा है جزى يجزي से। बदला देना। अर्थ यह है कि यदि पिता चाहे कि पुत्र को बचाने के लिए अपने प्राणों का बदला अथवा पुत्र पिता के लिए प्राणों को बदले के रूप में प्रस्तुत कर दे, तो वहाँ यह संभव न होगा। प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों का दण्ड भोगना पड़ेगा। जब पिता-पुत्र एक-दूसरे के काम न आ सकेंगे तो अन्य सम्बन्धियों का क्या स्थान होगा ? तथा वे किस प्रकार एक दूसरे को लाभ पहुँचा सकेंगे ?

[3] हदीस में आता है कि पाँच वस्तुयें अप्रत्यक्ष की कुंजियाँ हैं, जिन्हें अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: लुक़मान तथा किताबुल इस्तिस्क़ा)

The Ummah Technology Mission

(तआला) ही पूर्ण ज्ञानवाला तथा सत्य जानने वाला है। تَمُوتُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿٣٤﴾

सूरतुस्सजदः-३२ سُورَةُ السَّجْدَةِ

सूरः सजदा मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें तीस आयतें तथा तीन रूकुऊ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है। بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ○

---

(१) क़ियामत के समीपस्थ होने के लक्षण तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वर्णन किये हैं। परन्तु क़ियामत के आने का निश्चित ज्ञान अल्लाह के अतिरिक्त किसी को नहीं, किसी फ़रिश्ते को नहीं किसी भेजे गये संदेष्टा को नहीं। (२) वर्षा की समस्या ऐसी ही है। लक्षण एवं संकेत से अनुमान तो लगाया जा सकता है परन्तु यह बात प्रत्येक व्यक्ति के अनुभव एवं दर्शन में है कि यह अनुमान कभी सही होते हैं कभी ग़लत। यहाँ तक मौसम विभाग की घोषणा भी ठीक नहीं होती। जिससे ज्ञात होता है कि वर्षा का भी निश्चित ज्ञान अल्लाह के अतिरिक्त किसी को नहीं। (३) माता के गर्भ में यान्त्रिक साधन के द्वारा लिंग का अधूरा अनुमान तो शायद संभव है कि लड़का है अथवा लड़की ? परन्तु माता के गर्भ में पलने वाला यह शिशु शौभाग्यशाली है अथवा हतभागी एवं पूरा है या अधूरा, सुन्दर होगा अथवा कुरूप, काला होगा अथवा गोरा आदि बातों का ज्ञान अल्लाह के अतिरिक्त किसी को नहीं। (४) मनुष्य कल क्या करेगा ? वे धार्मिक काम होगा अथवा सांसारिक ? किसी को आगामी कल के संदर्भ में ज्ञान नहीं है कि वह उसके जीवन में आयेगा भी अथवा नहीं ? तथा यदि आया भी तो वह उसमें क्या कुछ करेगा ? (५) मृत्यु कहाँ आयेगी ? घर में अथवा घर से बाहर अपने देश में अथवा परदेश में, जवानी में आयेगी अथवा बुढ़ापे में। अपनी मंशा कामना की पूर्ति के पश्चात अथवा पूर्व ? किसी को ज्ञात नहीं

सूरः अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰ अस्सजदः : हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुमे (शुक्रवार) के दिन फ़ज्र (भोर) की नमाज़ में *अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰ अस्सजदः* (तथा दूसरी रकआत में) *सूरः दहर* पढ़ा करते थे। (सहीह बुख़ारी तथा मुस्लिम किताबुल जुमआ) उसी प्रकार यह भी उचित प्रमाण से सिद्ध है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को सोने से पूर्व *सूरः अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰ अस्सजदा* तथा *सूरः मुल्क* पढ़ा करते थे। (तिर्मिज़ी संख्या ८९२ तथा मुसनद अहमद ३/३४०)

The Ummah Technology Mission

الٓمّٓ ①

(१) अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ②

(२) नि:संदेह इस किताब का अवतरित करना समस्त जगत के प्रभु की ओर से है।[1]

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ③

(३) क्या यह कहते हैं कि इसने उसे गढ़ लिया है ?[2] नहीं-नहीं, बल्कि यह तेरे प्रभु की ओर से सत्य है, ताकि आप उन्हें डरायें, जिनके पास आपसे पूर्व कोई डराने वाला नहीं[3] आया, सम्भव है कि वे सत्य मार्ग पर आ जायें।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ؕ

(४) अल्लाह (तआला) वह है जिसने आकाशों तथा धरती को तथा जो कुछ उनके मध्य है, सब कुछ छः दिन में उत्पन्न किया फिर अर्श पर उच्चय हुआ[4] तुम्हारे लिए उसके सिवाय कोई सहायता करने वाला, अभिस्तावक नहीं।[5]

---

[1]अर्थ यह है कि यह असत्य, जादू, ज्योंतिष एवं वालीत कथा-कहानियों की किताब नहीं है, अपितु अखिल जगत के प्रभु की ओर से मार्गदर्शिका है।

[2]यह फटकार के रूप में है कि क्या अखिल जगत के प्रभु की अवतरित की हुई इस प्रभावी वाक्य (ग्रन्थ) के विषय में कहते हैं कि इसे स्वयं (मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने गढ़ लिया है।

[3]यह क़ुरआन के अवतरित होने का कारण है। उससे भी ज्ञात हुआ (जैसाकि पहले भी स्पष्टीकरण गुज़र चुका है) कि अरबों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रथम नबी थे। कुछ लोगों ने आदरणीय शुऐब को भी अरबों में भेजा हुआ माना है। इस आधार पर समुदाय का तात्पर्य फिर विशेष रूप से कुरैश होंगे जिनकी ओर कोई नबी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूर्व नहीं आया।

[4]इसके लिए देखिये *सूरः आराफ़*-५४ की व्याख्या। यहाँ उस विषय की पुनरावृत्ति करने से यह उद्देश्य प्रतीत होता है कि अल्लाह तआला की अपार शक्ति एवं विचित्र सृष्टि के वर्णन से शायद वे क़ुरआन सुनें तथा उस पर विचार करें।

[5]अर्थात वहाँ कोई ऐसा मित्र नहीं होगा जो तुम्हारी सहायता कर सके तथा तुम उसके द्वारा अल्लाह की यातना को टाल सको, न वहाँ कोई सिफ़ारिश करने वाला ही ऐसा होगा जो तुम्हारी सिफ़ारिश कर सके।

The Ummah Technology Mission

क्या फिर भी तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते ?[1] اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝٤

(५) वह आकाश से धरती तक कार्यों का साधन करता है।[2] फिर (वह कार्य) एक ऐसे दिन में उसकी ओर चढ़ जाता है, जिसका अनुमान तुम्हारी गणना के एक हज़ार वर्ष के समान है।[3] يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۝٥

(६) यही है प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष का जानने वाला प्रभावशाली अत्यन्त कृपालु। ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝٦

---

[1]अर्थात हे अल्लाह के अतिरिक्त अन्य के पुजारियो तथा अन्यों पर विश्वास करने वालो ! क्या फिर भी तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते ?

[2]आकाश से जहाँ अल्लाह का अर्श (सिहांसन) तथा सुरक्षित पुस्तक (लौह महफ़ूज़) है, अल्लाह तआला धरती पर अपने आदेश अवतरित करता है अर्थात उपाय करता है तथा धरती पर उसका पालन होता है। जैसे जीवन मरण स्वास्थ व रोग, प्रदान तथा अवयध, धन तथा दरिद्रता युद्ध एवं संधि मान तथा अपमान आदि। अल्लाह तआला अर्श पर से अपने लिखे हुए भाग्य के अनुसार यह प्रबन्ध एवं अधिपत्य करता है।

[3]अर्थात फिर उसका यह उपाय अथवा आदेश उसकी ओर वापस लौटता है, एक ही दिन में, जिसे फ़रिश्ते लेकर जाते हैं तथा चढ़ने की अथवा आने-जाने की दूरी इतनी है कि फ़रिश्तों के अतिरिक्त अन्य हज़ार वर्षों में तय करे। अथवा इससे क़ियामत के दिन तात्पर्य हैं कि उस दिन मनुष्यों के जो कर्म अल्लाह के सदन में प्रस्तुत होंगे। उस दिन के निर्धारण एवं व्याख्या में टीकाकारों के मध्य अत्याधिक मतभेद है। इमाम शौकानी ने १५,१६ कथन इस विषय में उदधृत किये हैं। इसलिए आदरणीय इब्ने अब्बास ने इस सम्बन्ध में मौन धारण करने को उचित समझा है तथा इसकी वास्तविकता को अल्लाह पर छोड़ दिया है। ऐसारूत्तफ़ासीर के रचयिता कहते हैं कि क़ुरआन में यह तीन स्थान पर आया है तथा तीनों स्थानों पर भिन्न-भिन्न दिन तात्पर्य हैं। सूरः *हज* आयत ४७ में 'योम' (يوم) शब्द से तात्पर्य वह काल अथवा अवधि है कि जो अल्लाह के पास है तथा सूरः *मआरिज* में जहाँ 'योम' की मात्रा पचास हज़ार वर्ष बतायी गयी है, हिसाब का दिन तात्पर्य है तथा इस स्थान पर 'योम' से तात्पर्य दुनिया का अन्तिम दिन है, जब दुनिया के अन्त के साथ ही व्यवस्था तथा उपाय का भी अन्त हो जायेगा।

The Ummah Technology Mission

الَّذِيْٓ اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ۝٧

(७) जिसने अत्यन्त सुन्दर बनाई जो वस्तु भी बनायी[1] तथा मनुष्य की उत्पत्ति मिट्टी से प्रारम्भ की।[2]

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۝٨

(८) फिर उसका वंश एक तुच्छ पानी के सारतत्व से बनाया।[3]

ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝٩

(९) जिसे ठीक-ठाक करके उसमें अपना प्राण फूँका,[4] तथा उसी ने तुम्हारे कान, आँखें तथा दिल बनाये[5] (उस पर भी) तुम बहुत ही थोड़ी कृतज्ञता करते हो।[6]

---

[1]अर्थात जो वस्तु भी अल्लाह ने बनायी है, वह चूंकि उसकी तत्व दर्शिता एवं हितकारिता की माँग से (अभिप्राय) है, इसलिए उसमें अपनी एक सुन्दरता एवं आकर्षण है। यूँ तो उसकी बनायी हुई प्रत्येक वस्तु सुन्दर एवं आकर्षक है तथा कुछ ने أحسن का अर्थ أتقن و أحكم के किये हैं अर्थात प्रत्येक वस्तु सुदृढ़ एवं पक्की बनायी। कुछ ने इसे ألهم के भावार्थ में लिया है, अर्थात प्रत्येक सृष्टि को उन चीज़ों का पता बता दिया, जिसकी उन्हें आवश्यकता है।

[2]अर्थात प्रथम मनुष्य आदम को मिट्टी से बनाया, जिनसे मनुष्यों का आरम्भ हुआ तथा उनकी पत्नी आदरणीया हौवा को आदम की बायीं पसली से पैदा किया, जैसाकि हदीस से ज्ञात होता है।

[3]अर्थात वीर्य की बूँद से। अर्थ यह है कि एक मनुष्य का जोड़ा बनाने के पश्चात, उसके वंशज के लिए यह विधि निर्धारित की कि स्त्री-पुरूष आपस में विवाह करें, उनके संगम से जो पानी की बूँद, स्त्री के गर्भाशय में जायेगी, उससे हम एक मनुष्य का शरीर बनाकर बाहर भेजते रहेंगे।

[4]अर्थात उस शिशु की, माता के पेट में पालन पोषण करते हैं, उसके अंग बनाते तथा संवारते हैं तथा फिर उसमें आत्मा फूँकते हैं।

[5]अर्थात ये सारी वस्तुयें पैदा कीं ताकि वह अपनी सृष्टि को परिपूर्ण कर दे, तो तुम प्रत्येक सुनने वाली बात को सुन सको, देखने वाली वस्तु को देख सको, तथा प्रत्येक मस्तक एवं बुद्धि में आने वाली बात को समझ सको।

[6]अर्थात इतने अनुग्रह के उपरान्त मनुष्य इतना कृतघ्न है कि अल्लाह की बहुत ही कम कृतज्ञता व्यक्त करता है अथवा कृतज्ञता व्यक्त करने वाले लोग ही अल्प संख्या में हैं।

The Ummah Technology Mission

وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۭ بَلْ هُمْ بِلِقَاۗئِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ۝١٠

(१०) तथा उन्होंने कहा कि क्या हम जब धरती में खो जायेंगे[1] क्या फिर नये जीवन में आ जायेंगे ? बल्कि (बात यह है) कि उन लोगों को अपने प्रभु के मिलन का विश्वास ही नहीं।

قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝١١ ع

(११) कह दीजिए ! कि तुम्हें यमदूत मारेगा जो तुम पर नियुक्त किया गया है।[2] फिर तुम सब अपने प्रभु की ओर लौटाये जाओगे।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ۝١٢

(१२) तथा काश कि आप देखते जब कि पापी लोग अपने प्रभु के समक्ष सिर झुकाये हुए होंगे,[3] कहेंगे कि हे हमारे प्रभु ! हमने देख लिया तथा सुन लिया,[4] अब तू हमें वापस लौटा दे तो पुण्य के कार्य करेंगे, हम विश्वास वाले हैं।[5]

وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّيْ

(१३) तथा यदि हम चाहते तो प्रत्येक व्यक्ति को मार्गदर्शन प्राप्त कर देते,[6] परन्तु मेरी यह

---

[1]जब किसी वस्तु पर कोई अन्य वस्तु प्रभावी हो जाये तथा प्रथम के समस्त प्रभाव समाप्त हो जायें, तो उसको ضَلَالت (खो जाने) से कहते हैं। ضَللنا في الأرض के अर्थ होंगे कि जब मिट्टी में मिलकर हमारा अस्तित्व खो जायेगा।

[2]अर्थात उसका कार्य ही यही है कि जब तुम्हारी मृत्यु का समय आ जायेगा, तो आकर प्राण निकाल लेगा।

[3]अर्थात अपने कुफ्र व शिर्क एवं पाप के कारण अथवा अपमान के कारण।

[4]अर्थात जिसको झुठलाते थे, उसे देख लिया, जिसको अस्वीकार करते थे, उसे सुन लिया। अथवा तेरी निषेधाज्ञा की सत्यता को देख लिया तथा संदेष्टाओं की पुष्टि को सुन लिया, परन्तु उस समय का देखना-सुनना उनके कुछ काम नहीं आयेगा।

[5]परन्तु अब विश्वास किया तो क्या लाभ ? अब तो अल्लाह की यातना उन पर सिद्ध हो चुकी है, जिसे भुगतना होगा।

[6]अर्थात दुनिया में यदि यह मार्गदर्शन दबाव से होता, जिसमें परीक्षा का अवसर न होता।

The Ummah Technology Mission

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١٣﴾

बात पूर्णता: सत्य हो चुकी है कि मैं अवश्य नरक को मनुष्यों तथा जिन्नों से भर दूँगा।[1]

فَذُوقُوا بِمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۖ إِنَّا نَسِينَاكُمْ ۖ وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾

(१४) अब तुम अपने उस दिन के मिलन को भूल जाने का स्वाद चखो, हमने भी तुम्हें भुला दिया[2] अपने किये हुए कर्मों के (दुष्परिणाम) से स्थाई यातना का आनन्द लो।

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿١٥﴾ السجدة

(१५) हमारी आयतों पर वही ईमान लाते हैं,[3] जिन्हें जब कभी उनको शिक्षा दी जाती है, तो सजदे में गिर पड़ते हैं,[4] तथा अपने प्रभु की प्रशंसा के साथ उसकी महिमागान करते हैं।[5] तथा अहंकार से अलग रहते हैं।[6]

---

[1]अर्थात मनुष्यों के दो प्रकार में से जो नरक में जाने वाले हैं, उनसे नरक को भरने वाली मेरी बात सत्य सिद्ध हो गयी।

[2]अर्थात जिस प्रकार तुम हमें दुनिया में भुलाये रहे, आज हम भी तुमसे ऐसा ही व्यवहार करेंगे, वरन् स्पष्ट बात है कि अल्लाह तो भूलने वाला नहीं है।

[3]अर्थात मानते तथा उनसे लाभ उठाते हैं।

[4]अर्थात अल्लाह की आयतों का आदर तथा उसकी पकड़ एवं यातनाओं से डरते हुए।

[5]अर्थात प्रभु को इन समस्त बातों से पवित्र मानते हैं, जो उसकी महिमा के योग्य ही नहीं हैं तथा उसके उपकार पर उसकी महिमा एवं प्रशंसा करते हैं, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण एवं भरपूर अनुग्रह, ईमान की ओर मार्गदर्शन की है। अर्थात वह अपने सजदों में «سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ» अथवा سبحان ربّي العظيم आदि शब्द पढ़ते हैं।

[6]अर्थात आज्ञापालन एवं आत्म समर्पण का मार्ग अपनाते हैं। अज्ञानियों एवं काफ़िरों की भाँति नहीं करते। इसलिए कि अल्लाह की इबादत से अहंकार करना नरक में जाने का साधन है।

﴿إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ﴾

"नि:सन्देह जो लोग हमारी इबादत से अहंकार करते हैं वे नरक में अपमानित होकर प्रवेश करेंगे।" (सूर: अल-मोमिन-६०)

The Ummah Technology Mission

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۫ وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿١٦﴾

(१६) उनकी करवटें अपने बिस्तरों से अलग रहती हैं, [1] अपने प्रभु को भय तथा आशा के साथ पुकारते हैं।[2] तथा जो कुछ हमने उन्हें दे रखा है, वह ख़र्च करते हैं।[3]

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٧﴾

(१७) कोई प्राणी नहीं जानता जो कुछ हमने उनकी आँखों की ठंडक उनके लिए छिपा रखी है,[4] जो कुछ करते थे यह उसका बदला है।[5]

इसलिए ईमानवालों का आचरण उनके विपरीत होता है, वह अल्लाह के समक्ष प्रत्येक क्षण नम्रता, तुच्छता एवं दरिद्रता तथा एकाग्रता एवं विनम्रता का प्रदर्शन करते हैं।

[1]अर्थात रातों को उठकर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ते हैं, क्षण-याचना, आराधना-उपासना, महिमा एवं प्रशंसा तथा प्रार्थना एवं विनती करते हैं।

[2]अर्थात उसकी दया एवं कृपा के साथ उसके उपकार एवं अनुकम्पा की आशा भी रखते हैं तथा उसके क्रोध एवं प्रकोप तथा पकड़ एवं यातना से डरते भी हैं। मात्र आशा ही आशा नहीं रखते हैं, कि कर्म से निश्चिन्त हो जायें (जैसाकि बे अमल एवं कुकर्मियों का कार्य है) तथा न यातना का इतना भय ही रखते हैं कि उसकी दया एवं कृपा से निराश हो जायें क्योंकि यह निराशा भी कुफ़्र एवं कुमार्गता की सूचक है।

[3]व्यय में आवश्यक दान (ज़कात) सामान्य दान (सत्कार) पुण्य दोनों सम्मिलित हैं। ईमानवाले दोनों का अपनी शक्तिभर प्रयोजन करते हैं।

[4] نَفْسٌ जाति वाचक संज्ञा है जो सर्वसाधारण के अर्थ में है अर्थात उसको अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता। उन उपहारों को जो उक्त ईमानवाले के लिए छिपा रखी हैं, जिनसे उनकी आँखें ठंडी हो जायेंगी। इसकी व्याख्या में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह हदीस कुदसी वर्णन की है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैंने अपने सदाचारी भक्तों के लिए वे वस्तुयें तैयार कर रखी हैं जो किसी आँख ने देखी तथा न किसी कान ने सुनी, न किसी मनुष्य के ध्यान में आयी (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः सजदः)

[5]इससे ज्ञात हुआ कि अल्लाह की कृपा-दया के योग्य बनने के लिए पुण्य के कार्य करना आवश्यक है।

The Ummah Technology Mission

أَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ۚ لَا يَسْتَوُونَ ﴿١٨﴾

(१८) क्या वह जो ईमानवाला हो उसके समतुल्य है जो भ्रष्टाचारी हो ?[1] ये समान नहीं हो सकते।

أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

(१९) जिन लोगों ने ईमान स्वीकार किया तथा पुण्य के कार्य किये, उनके लिए स्थाई स्वर्ग है, अतिथि सत्कार है, उनके कर्मों के बदले जो वह करते थे।

وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा परन्तु जिन्होंने आदेशों की अवहेलना की उनका ठिकाना नरक है, जब कभी भी उससे निकलना चाहेंगे उसी में लौटा दिये जायेंगे।[2] तथा कह दिया जायेगा[3] कि अपने झुठलाने के बदले अग्नि का स्वाद चखो।

وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ

(२१) तथा वस्तुतः हम उन्हें निकट की छोटी सी कुछ यातनाओं को[4] उस बड़ी यातना के

---

[1]यह प्रश्न नकारात्मक है अर्थात अल्लाह के समक्ष ईमानवाले तथा काफ़िर समान नहीं हो सकते हैं, अपितु उनके मध्य बहुत अन्तर एवं दूरी होगी। ईमानवाले अल्लाह के अतिथि होंगे तथा मान-सम्मान के अधिकारी होंगे। तथा अवहेलना करने वाले काफ़िर कष्ट तथा दुखों की बेड़ियों में जकड़े हुए नरक की अग्नि में झुलसेंगे। इस विषय को अन्य स्थान पर भी वर्णन किया गया है। जैसे *सूरः अल-जासिया-२१, सूरः साद-२८, सूरः अल-हश्र-२०* आदि।

[2]अर्थात नरक की यातना की कड़ाई तथा भयानकता से घबरा कर बाहर निकलना चाहेंगे, तो फ़रिश्ते पुनः उन्हें नरक की गहराईयों में ढकेल देंगे।

[3]यह फ़रिश्ते कहेंगे अथवा अल्लाह की ओर से आकाशवाणी होगी, कुछ भी हो इसमें उन झुठलाने वालों के अपमान तथा अनादर की जो सामग्री है, वह छिपी नहीं।

[4]निकट यातना (निकट की कुछ यातनाओं) से सांसारिक यातनायें अथवा सांसारिक दुख एवं रोग आदि का तात्पर्य है। कुछ के निकट वे हत्यायें इससे तात्पर्य हैं, जिससे बद्र के युद्ध में काफ़िर पीड़ित हुए। अथवा वह अकाल है, जो मक्कावासियों पर पड़ा था। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं ये समस्त अवस्थायें एवं परिस्थितियाँ इसमें सम्मिलित हो सकती हैं।

The Ummah Technology Mission

لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾

अतिरिक्त चखायेंगे ताकि वह लौट आयें।[1]

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنْتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा उससे बढ़कर अत्याचारी कौन है जिसे अल्लाह तआला की आयतों से भाषण दिया गया फिर भी उसने उनसे मुख फेर लिया,[2] निश्चय हम भी पापियों से बदला लेने वाले हैं।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ مِنْ لِقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٣﴾

(२३) तथा वास्तव में हमने मूसा को किताब (ग्रन्थ) प्रदान की, तो आपको कदापि उसके मिलन में शंका नहीं करनी चाहिए।[3] तथा हमने उसे[4] इस्राईल की सन्तान के मार्गदर्शन का साधन बनाया।

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا ۖ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा हमने उनमें से चूँकि उन लोगों ने धैर्य धारण किया, ऐसे अगुवा बनाये, जो हमारे आदेश से लोगों का मार्गदर्शन करते थे तथा हमारी आयतों पर विश्वास रखते थे।[5]

---

[1]यह आख़िरत के महाप्रकोप से पूर्व छोटे प्रकोप भेजने के कारण हैं कि शायद वे कुफ़्र तथा शिर्क के पाप के मार्ग को छोड़ दें।

[2]अर्थात अल्लाह की आयतें सुनकर जो ईमान व आज्ञापालन का हेतु हैं, जो व्यक्ति इससे विमुख होता है, उससे बड़ा अत्याचारी कौन है ? अर्थात यही सबसे बड़ा अत्याचारी है।

[3]कहा जाता है कि यह संकेत उस मिलन की ओर है जो मेराज की रात्रि (आकाश यात्रा की रात्रि) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदरणीय मूसा से हुई, जिसमें आदरणीय मुसा ने नमाज़ों में कमी कराने की सलाह दी थी।

[4]'उसे' से तात्पर्य किताब (तौरात) है अथवा स्वयं आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम।

[5]इस आयत से धैर्य का महत्व प्रकट होता है। धैर्य एवं संयम का अर्थ है कि अल्लाह के आदेशों का पालन करने तथा पाप को छोड़ने में तथा अल्लाह के संदेष्टाओं की पुष्टि एवं उनके अनुसरण में जो कष्ट सहन करने पड़े, उन्हें प्रसन्नता पूर्ण सहन करना। अल्लाह ने फ़रमाया : उनके धैर्य रखने तथा अल्लाह की आयतों पर विश्वास करने के कारण

The Ummah Technology Mission

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٥﴾

(२५) आपका प्रभु उन सबके मध्य इन समस्त बातों का निर्णय क़ियामत के दिन करेगा, जिनमें वे मतभेद कर रहे हैं।[1]

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسٰكِنِهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيَاتٍ ۖ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٦﴾

(२६) क्या इस बात ने भी उन्हें मार्गदर्शन प्रदान न किया कि हमने उनसे पूर्व के बहुत से सम्प्रदायों को ध्वस्त कर दिया, जिनके आवासों में ये चल फिर रहे हैं।[2] उसमें तो बड़ी-बड़ी शिक्षायें हैं। क्या फिर भी यह नहीं सुनते।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنفُسُهُمْ ۖ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿٢٧﴾

(२७) क्या यह नहीं देखते कि हम पानी को उसर (निर्जन) धरती की ओर बहाकर ले जाते हैं फिर उससे हम खेतियाँ उपजाते हैं जिसे उनके पशु एवं वे स्वयं खाते हैं[3] क्या फिर भी यह नहीं देखते ?

हमने उन्हें धार्मिक अगुवाई एवं प्रतिनिधित्व के स्थान पर नियुक्त कर दिया, परन्तु जब उन्होंने उसके विपरीत परिवर्तन एवं संशोधन का कार्य प्रारम्भ कर दिया, तो उनसे यह पद छीन लिये गये। अतः उसके पश्चात उनके दिल कड़े हो गये, फिर न उनका कर्म सदाचारी रहा न उनका विश्वास ठीक।

[1]इससे वह मतभेद तात्पर्य है जो अहले किताब में आपस में व्यापत था, इसके अन्तर्गत वह मतभेद भी आ जाते हैं, जो ईमानवालों तथा काफ़िरों, सत्यवादियों एवं अज्ञानियों तथा एकेश्वरवादियों एवं बहुदेववादियों के मध्य संसार में रहे, तथा हैं। चूँकि संसार में प्रत्येक गुट अपने तर्क के आधार पर संतुष्ट तथा अपने मार्ग पर दृढ़ रहता है। इसलिए इन मतभेदों का निर्णय क़ियामत के दिन अल्लाह तआला कर देगा, जिसका अर्थ यह है कि सत्यवादियों को स्वर्ग में तथा काफ़िरों एवं अंधकार में भटकने वालों को नरक में डाल देगा।

[2]अर्थात विगत समुदाय, जो झुठलाने एवं ईमान से शून्य होने के कारण नाश हुए, क्या ये नहीं देखते कि आज संसार में उनका अस्तित्व शेष नहीं रहा, परन्तु उनके घर हैं, जिनके ये उत्तराधिकारी बने हुए हैं। अर्थ इसका मक्कावासियों को चेतावनी है कि तुम्हारा भी परिणाम ऐसा ही हो सकता है, यदि ईमान न लाये।

[3]पानी से तात्पर्य आकाशीय वर्षा तथा श्रोतों, नाले एवं घाटियों का पानी है। जिसे अल्लाह तआला बंजर तथा निर्जन स्थान की ओर बहाकर ले जाता है तथा उससे पैदावार

The Ummah Technology Mission

(२८) तथा कहते हैं कि यह निर्णय कब होगा ? यदि तुम सच्चे हो तो बतलाओ ?[1]

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْفَتْحُ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٢٨﴾

(२९) उत्तर दे दो कि निर्णय के दिन ईमान लाना बेईमानों को कुछ काम न आयेगा। तथा न उन्हें ढील दी जायेगी।[2]

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوٓا إِيمَٰنُهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٢٩﴾

(३०) अब आप इनका विचार भी छोड़ दीजिए[3]

فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانتَظِرْ

होती है, जो मुनष्य खाता है, तथा जो भूसा एवं चारा होता है, वह पशु खा लेते हैं। इससे तात्पर्य कोई विशेष क्षेत्र अथवा धरती एवं भूमि नहीं है, अपितु सामान्य है, जो प्रत्येक निर्जन, बंजर समतल भूमि को सम्मिलित करता है।

[1]इस निर्णय (विजय) से तात्पर्य अल्लाह तआला का वह प्रकोप है जो मक्का के काफ़िर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से माँगा करते थे तथा कहा करते थे कि ऐ मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तेरे अल्लाह की सहायता तेरे लिए कब आयेगी, जिससे तू हमें डराता रहता है। अभी तोहम यही देख रहे हैं कि तुझ पर ईमान लाने वाले छुपे फिरते हैं।

[2]इस विजय दिवस से तात्पर्य आख़िरत के निर्णय का दिन है, जहाँ ईमान स्वीकार किया जायेगा तथा न अवसर प्रदान किया जायेगा। मक्का विजय का दिन नहीं है क्योंकि उस दिन طُلقاء का इस्लाम स्वीकार कर लिया गया था, जिनकी संख्या लगभग दो हज़ार थी। (इब्ने कसीर) طُلقاء से अभिप्राय, वह मक्कावासी हैं जिनको नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का की विजय के दिन दण्ड एवं संज्ञा देने के बजाय क्षमा कर दिया तथा यह कहकर स्वतन्त्र कर दिया था कि आज तुम्हारी पूर्व कालिक क्रूरता एवं अत्याचार का बदला नहीं लिया जायेगा। अतः उनका बहुमत मुसलमान हो गया था।

[3]अर्थात इन मूर्तिपूजकों से विमुख हो जायें तथा उपदेश एवं आमंत्रण का कार्य अपने ढ़ग से करते रहें, जो प्रकाशना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर की गयी है उसका अनुकरण करें। जिस प्रकार अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿اتَّبِعْ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ﴾

"आप स्वयं उस मार्ग पर चलिये। जिसकी प्रकाशना आपके प्रभु की ओर से आपके पास आई है। अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं और बहूदेववादियों का विचार न कीजिए।" (सूरः अल-अनआम-१०६)

The Ummah Technology Mission

إِنَّهُم مُّنتَظِرُونَ ﴿٢٠﴾

तथा प्रतीक्षा में रहें[1] यह भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।[2]

سُورَةُ الأَحْزَابِ

सूरतुल अहज़ाब-३३

सूर: अहज़ाब मदीने में अवतरित हुई तथा इसमें तिहत्तर आयतें तथा नौ रूकुऊ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١﴾

(१) हे नबी ! अल्लाह तआला से डरते रहना[3] तथा काफ़िर एवं मुनाफ़िकों की बातों में न आ जाना, अल्लाह तआला असीम ज्ञान वाला अत्यधिक हिक्मत वाला है।[4]

---

[1]अर्थात अल्लाह के वचन को कि वह कब पूरा होता है तथा तेरे विरोधियों पर तुझे कब प्रभुत्व प्रदान करता है ? वह अवश्य पूरा होकर रहेगा।

[2]अर्थात ये काफ़िर प्रतीक्षा में है कि शायद यह रसूल ही कालचक्र का शिकार हो जाये तथा उसका आमन्त्रण समाप्त हो जाये। परन्तु दुनिया ने देख लिया कि अल्लाह ने अपने नबी के साथ दिये हुए सभी वचनों को पूरा किया तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कालचक्र से ग्रसित होने की प्रतीक्षा करने वाले को लज्जित एवं अपमानित किया अथवा उन्हें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दास बना दिया।

[3]आयत में संयम पर नित्यता तथा धर्म के प्रचार-प्रसार में दृढ़ता का आदेश है। तलक बिन हबीब कहते हैं संयम का अर्थ है कि अल्लाह की आज्ञापालन अल्लाह के प्रदान किये हुए प्रकाश के अनुसार करें तथा अल्लाह से पुण्य की आशा रखे तथा अल्लाह की अवैज्ञा अल्लाह के प्रदान किये हुए प्रकाश के आधार पर छोड़ दें, अल्लाह के प्रकोप से डरते हुए। (इब्ने कसीर)

[4]तो वही इस बात का अधिकारी है कि उसकी आज्ञापालन की जाय इसलिए कि परलोक को वही जानता है तथा अपने कथन तथा वचन एवं कार्यों में वह निपुण है।

The Ummah Technology Mission

وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿٢﴾

(२) तथा जो कुछ आप की ओर आपके प्रभु की ओर से प्रकाशना (वह्यी) की जाती है[1] उसका पालन करें (विश्वास करो) कि अल्लाह तुम्हारे प्रत्येक कर्म से परिचित है।[2]

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿٣﴾

(३) तथा आप अल्लाह ही पर भरोसा रखें[3] अल्लाह काम बनाने के लिए काफ़ी है।[4]

مَّا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِّن قَلْبَيْنِ

(४) किसी व्यक्ति की छाती (वक्ष) में अल्लाह तआला ने दो दिल नहीं रखे[5] तथा

---

[1]अर्थात क़ुरआन की तथा हदीसों की भी, इसलिए कि हदीसों के शब्द यद्यपि *नबी* सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र मुख से मुखरित हुए हैं, परन्तु उसके अर्थ एवं व्याख्या अल्लाह की ओर से ही हैं। इसीलिए उनको गुप्त प्रकाशना अथवा पाठ न की जाने वाली (अपाठ्य) प्रकाशना कहा जाता है।

[2]तो उससे तुम्हारी कोई बात गुप्त नहीं रह सकती।

[3]अपनी समस्त समस्याओं एवं परिस्थितयों में।

[4]उन लोगों के लिए जो उस पर भरोसा रखते, तथा उसकी ओर आकर्षित होते हैं।

[5]कुछ कथनों से यह बात ज्ञात होती है कि एक मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) यह दावा करता था कि उसके दो दिल हैं एक दिल मुसलमानों के साथ है तथा दूसरा कुफ़्र एवं काफ़िरों के साथ है। (मुसनद अहमद१/२६७) ये आयत उसके खण्डन में अवतरित हुई। अभिप्राय यह है कि यह संभव ही नहीं है कि एक दिल में अल्लाह का प्रेम तथा उसके शत्रुओं का प्रेम, एकत्रित हो जाये। कुछ कहते हैं कि मक्का के मूर्तिपूजकों में एक व्यक्ति जमील विन मामर फ़हरी था, जो बड़ा चतुर, पाखण्डी तथा अत्यन्त वाक्पटु था, उसका दावा था कि मेरे तो दो दिल हैं, जिनसे मैं सोचता हूँ, जबकि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के एक ही दिल है। यह आयत उसके खण्डन में अवतरित हुई। (ऐसरूत्तफ़ासीर) कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि आगे दो समस्याओं का वर्णन हो रहा है, यह उनका प्रस्तावना है। अर्थात जिस प्रकार एक व्यक्ति के दो दिल नहीं हो सकते उसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी से 'ज़ेहार' कर ले अर्थात यह कह दे कि तेरी पीठ मेरे लिए ऐसी ही है जैसे मेरे माँ की पीठ। तो इस प्रकार कहने से उसकी पत्नी उसकी माता नहीं बन जायेगी। जिस प्रकार उसकी दो मातायें नहीं हो सकतीं। इसी प्रकार कोई व्यक्ति किसी

The Ummah Technology Mission

فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ
الّٰٓـِٔيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ
وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ
اَبْنَآءَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ
بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ
وَهُوَ يَهْدِى السَّبِيْلَ ۝

अपनी जिन पत्नियों को तुम माता कह बैठते हो, उन्हें अल्लाह ने तुम्हारी (सचमुच) मातायें नहीं बनाया [1] तथा न तुम्हारे गोद लिये हुए बालकों को (वास्तव में) तुम्हारे पुत्र बनाये हैं। [2] यह तो तुम्हारे अपने मुख की बातें हैं। [3] अल्लाह (तआला) सत्य बात कहता है। [4] तथा वही (सीधी) राह सुझाता है।

اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ
عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْٓا

(५) लेपालकों को उनके (वास्तविक) पिताओं की ओर सम्बन्धित करके बुलाओ। अल्लाह के निकट पूर्ण न्याय यही है। [5] फिर यदि

को अपना पुत्र (गोद ले) बना ले तो उसका वास्तविक पुत्र नहीं बन जायेगा, बल्कि वह पुत्र तो अपने पिता ही का रहेगा, उसके दो पिता नहीं हो सकते। (इब्ने कसीर)

[1]यह समस्या जिहार कहलाती है, उसका विवरण सूरः *मुजादिला* में आयेगा।

[2]इसका विवरण इसी सूरः में आगे चलकर आयेगा। دعيٌ का बहुवचन اَدْعِيَاء है। मुँह बोला पुत्र।

[3]अर्थात किसी को माता कह देने से वह माता नहीं बन जायेगी, न पुत्र कहने से पुत्र बन जायेगा, अर्थात उन पर मातृत्व तथा पुत्रत्व का धार्मिक विधान लागू नहीं होंगे।

[4]इसलिए उसका अनुकरण करो तथा मुख बोली स्त्री को माता तथा गोद लिए बालक को पुत्र न कहो, ध्यान रहे कि किसी को प्यार-मोहब्बत में पुत्र कहना अलग बात है तथा गोद लिये बालक को वास्तविक पुत्र मान कर पुत्र कहना अन्य बात है। प्रथम बात मान्य है, यहाँ उद्देश्य दूसरी बात का निषेध करना है।

[5]इस आदेश से उस प्रथा को निषेध कर दिया गया, जो अज्ञान काल से चली आ रही थी तथा इस्लाम के प्रारम्भिक काल में विद्यमान थी कि गोद लिये हुए बालक को वास्तविक पुत्र समझा जाता था। सहाबा केराम का कथन है कि हम ज़ैद बिन हारिसा को जिन्हें रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वतन्त्र करके पुत्र बना लिया था। ज़ैद बिन मोहम्मद कहकर पुकारा करते थे, यहाँ तक कि क़ुरआन की आयत اُدعوهم لآبائهم अवतरित हो गयी। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः अहज़ाब) इस आयत के अवतरित होने के पश्चात आदरणीय अबू हुज़ैफ़ा के घर में समस्या उठ खड़ी हुई, जिन्होंने सालिम को पुत्र बनाया हुआ था, जब मुख बोले पुत्र को वास्तविक पुत्र समझने को रोक दिया गया,

The Ummah Technology Mission

اٰبَآءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِى الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ؕ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَاۤ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ ۙ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٥

तुम्हें उनके (वास्तविक) पिता का ज्ञान ही न हो, तो वे तुम्हारे धर्मबन्धु एवं मित्र हैं।[1] तुम से भूल चूक से जो कुछ हो जाये उसमें तुम पर कोई पाप नहीं,[2] परन्तु पाप वह है जिसका तुम निश्चय करो तथा निश्चय दिल से करो।[3] अल्लाह (तआला) अत्यन्त क्षमा करने वाला दयालु है।

اَلنَّبِىُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ

(६) पैग़म्बर ईमानवालों पर स्वयं उनसे भी अधिक अधिकार रखने वाले हैं।[4] तथा

तो उससे पर्दा करना भी आवश्यक हो गया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू हुज़ैफ़ा की पत्नी से कहा कि उसे दूध पिलाकर उसे दूध का साझीदार पुत्र बना लो क्योंकि तुम उस पर हराम हो जाओगी। अत: उन्होंने ऐसा ही किया। (सहीह मुस्लिम किताबुर्रेदाअ, बाब रदाअतिल कबीर, अबू दाऊद किताबुन्निकाह बाब फ़ीमन हर्रमा बेही)

[1]अर्थात जिनके वास्तविक पिताओं का ज्ञान है। अब अन्य सम्बन्ध समाप्त करके उन्हीं से उनको सम्बन्धित करो। परन्तु जिनके पिताओं का ज्ञान न हो सके, तो तुम उन्हें अपना भाई तथा मित्र समझो, पुत्र न समझो।

[2]इसलिए कि भूल चूक माफ़ है, जैसाकि हदीस में भी व्याख्या है।

[3]अर्थात जो जान बूझकर ग़लत सम्बन्धित करेगा, वह माहपापी होगा। हदीस में आता है, "जिसने जानते बूझते अन्य पिता से सम्बन्धित किया, उसने कुफ़्र का कार्य किया।" (सहीह बुख़ारी किताबुल मनाक़िब)

[4]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने समुदाय के जितने हितैषी एवं शुभचिन्तक थे, स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं। अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस प्रेम एवं शुभचिन्ता को देखकर इस आयत में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ईमानवालों के अपने प्राणों से भी अधिक प्रेम करने योग्य, तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रेम अन्य समस्त प्रेम से उच्चतम तथा आपका आदेश अपनी समस्त इच्छाओं से उत्तम बताया है। इसलिए मुसलमानों के लिए आवश्यक है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस माल की माँग अल्लाह के लिए करें। वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर निछावर कर दें, चाहे उन्हें स्वयं कितनी ही आवश्यकता हो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने प्राण से भी अधिक प्रेम करें। (जैसे

The Ummah Technology Mission

وَأَزْوَاجُهُۥٓ أُمَّهَٰتُهُمْ ۗ وَأُو۟لُوا۟ ٱلْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِى كِتَٰبِ ٱللَّهِ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ وَٱلْمُهَٰجِرِينَ إِلَّآ أَن تَفْعَلُوٓا۟ إِلَىٰٓ أَوْلِيَآئِكُم مَّعْرُوفًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِى ٱلْكِتَٰبِ مَسْطُورًا ۝٦

पैग़म्बर की पत्नियाँ ईमानवालों की मातायें हैं[1] तथा सम्बन्धी अल्लाह की किताब के आधार पर अन्य ईमानवालों तथा मुहाजिरों के अपेक्षा अधिक अधिकारी हैं।[2] (हाँ) तुम्हें अपने मित्रों के साथ सदव्यवहार करने की आज्ञा है।[3] यह आदेश 'सुरक्षित पुस्तक' (लौहे महफ़ूज़) में लिखा हुआ है।[4]

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ ٱلنَّبِيِّۦنَ مِيثَٰقَهُمْ وَمِنكَ وَمِن نُّوحٍ وَإِبْرَٰهِيمَ

(७) तथा जबकि हमने समस्त नबियों से वचन लिया (विशेषरूप से) आप से तथा नूह से तथा इब्राहीम से तथा मूसा से तथा

आदरणीय उमर की घटना है) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदेश सर्वोपरि तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञापालन को महत्वपूर्ण समझें।

जब तक यह आत्म समर्पण नहीं होगा فلا و ربك لا يؤمنون (सूरः *अल-निसा*-६५) के अनुसार मनुष्य मुसलमान नहीं होगा। इसी प्रकार जब तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रेम समस्त प्रेम पर प्रभावशाली नहीं होगा।[2] "لا يؤمن أحدكم حتى أكون" (अलहदीस) के आधार पर मुसलमान नहीं। ठीक उसी प्रकार सन्देष्टा की आज्ञापालन में आलस्य भी "لا يؤمن أحدكم حتى يكون هواه تبعا لما جئت" के अनुरूप होंगे।

[1]अर्थात आदर व सम्मान के करने में तथा उनसे विवाह न करने में मुसलमान पुरूष तथा मुसलमान महिलाओं की मातायें भी हैं।

[2]अर्थात अव देश त्याग, भाईचारे एवं संधि के कारण, उत्तराधिकार न होगा। अब उत्तराधिकार वंशज समीप सम्बन्ध के कारण मिलेगा।

[3]परन्तु तुम अन्य लोगों के साथ परोपकार तथा सहायता देने का कार्य कर सकते हो। इसके अतिरिक्त अपने एक तिहाई माल में से वसीयत (उत्तरदान) कर सकते हो।

[4]अर्थात सुरक्षित पुस्तक में मूल आदेश यही है, यद्यपि अस्थाई रूप से समयानुसार अन्यों को भी उत्तराधिकारी बना दिया गया था, परन्तु अल्लाह के ज्ञान में था कि यह निरस्त कर दिया जायेगा। अतः उसे निरस्त करके पूर्वादेश को लागू कर दिया गया।

The Ummah Technology Mission

وَمُوسٰى وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۖ وَأَخَذْنَا مِنْهُم مِّيثَاقًا غَلِيظًا ﴿٧﴾

मरियम के पुत्र ईसा से और हमने उनसे वचन भी पक्का एवं सुदृढ़ लिया।[1]

لِّيَسْأَلَ الصَّادِقِينَ عَن صِدْقِهِمْ ۚ وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٨﴾

(८) ताकि अल्लाह तआला सच्चों से उनकी सच्चाई के विषय में पूछे,[2] तथा न मानने वालों के लिए हमने दुखद यातनायें तैयार कर रखी हैं।

---

[1]इस वचन से क्या अभिप्राय है? कुछ के निकट यह वह वचन है जो एक-दूसरे की सहायता एवं पुष्टि का सन्देष्टाओं से लिया गया था जैसाकि *सूरः आले इमरान* की आयत संख्या ८१ में है। कुछ के निकट यह वह वचन है जिसका वर्णन *सूरः शूरा* की आयत संख्या १३ में है कि धर्म को स्थापित करना तथा उसमें भेद न डालना। यह वचन यद्यपि समस्त सन्देष्टाओं से लिया गया था, परन्तु यहाँ पर विशेष रूप से पाँच सन्देष्टाओं का नाम है, जिनसे उनके महत्व एवं विशेषता का परिलक्षण होता है तथा उनमें भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वर्णन सर्वप्रथम है, जबकि संदेष्टा के आधार पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अन्तिम हैं, इससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मान तथा सम्मान का जिस प्रकार स्पष्टीकरण हो रहा है, उसकी व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है।

[2]अर्थात यह वचन इसलिए लिया गया ताकि अल्लाह सच्चे सन्देष्टाओं से पूछे कि उन्होने अल्लाह का संदेश अपने समुदाय तक उसी प्रकार से पहुँचा दिया था? अथवा दूसरा अर्थ यह है कि वह सन्देष्टाओं से पूछे कि तुम्हारे समुदाय ने तुम्हारे आमन्त्रण का उत्तर किस प्रकार दिया? सकारात्मक अथवा नकारात्मक? जिस प्रकार अन्य स्थान पर है,

﴿ فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِينَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِينَ ﴾

"हम उनसे भी पूछेंगे जिनकी ओर सन्देष्टा भेजे गये तथा सन्देष्टाओं से भी पूछेंगे।" *(सूरः अल-आराफ़-६)*

इसमें सत्य की ओर आमन्त्रित करने वालों को भी चेतावनी है कि वह सत्य के उपदेश का दायित्व पूर्ण सतर्कता तथा निःस्वार्थ रूप से निभायें ताकि अल्लाह के समक्ष सम्मानित हो सकें तथा उन लोगों के लिए भी चेतावनी है जिनको सत्य का उपदेश दिया गया हो कि वे उसे स्वीकार न करेंगे तो अल्लाह के समक्ष अपराधी तथा दण्ड के भोगी समझे जायेंगे।

The Ummah Technology Mission

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱذۡكُرُواْ نِعۡمَةَ ٱللَّهِ عَلَيۡكُمۡ إِذۡ جَآءَتۡكُمۡ جُنُودٞ فَأَرۡسَلۡنَا عَلَيۡهِمۡ رِيحٗا وَجُنُودٗا لَّمۡ تَرَوۡهَاۚ وَكَانَ ٱللَّهُ بِمَا تَعۡمَلُونَ بَصِيرًا ٩

(९) हे ईमानवालो ! अल्लाह तआला ने जो उपकार तुम पर किया, उसे याद करो जबकि तुम्हारा सामना करने के लिए सेनाओं पर सेनायें आयीं फिर हमने उन पर तीव्रगति वाली आँधी तथा ऐसी सेना भेजी जिन्हें तुमने देखा ही नहीं,[1] तथा जो कुछ तुम करते हो अल्लाह (तआला) सबको देखता है।

---

[1]इस आयत में अहज़ाब के युद्ध की संक्षिप्त जानकारी है जो ५ हिजरी में घटित हुआ। इसे अहज़ाब इसलिए कहते हैं कि इस अवसर पर समस्त इस्लाम के शत्रु एकत्रित होकर मुसलमानों के केन्द्र मदीने पर आक्रमण करने के लिए आये। अहज़ाब अरबी भाषा में हिज़ब (गिरोह) का बहुवचन है। इसे ख़न्दक़ का युद्ध भी कहते हैं, इसलिए कि मुसलमानों ने मदीने के बचाओ के लिए मदीने की ओर ख़न्दक़ (खाई) खोद दी थी, ताकि शत्रु मदीने के अन्दर न आ सकें। इसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि यहूदियों के क़बीले बनु नदीर, जिसको रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके निरन्तर वचन तोड़ने के कारण मदीने से निष्कासित कर दिया था, यह क़बीला ख़ैबर में जाकर आबाद हुआ, उसने मक्का के काफ़िरों को मुसलमानों पर आक्रमण करने के लिए उकसाया, इसी प्रकार ग़त्फ़ान आदि नजद् के क़बीलों को भी सहायता का विश्वास दिलाकर युद्ध के लिए तैयार किया तथा इस प्रकार यह यहूदी इस्लाम तथा मुसलमानों के सभी शत्रुओं को एकत्रित करके मदीने पर आक्रमणकारी होने में सफल हो गये। मक्का के मूर्तिपूजकों का नेतृत्व अबू सुफ़ियान के हाथ में था, उनमें से उन्होंने ओहद के आस-पास पड़ाव डालकर मदीने की नाकाबन्दी कर दी। उनकी कुल संख्या लगभग १० हज़ार थी। जबकि मुसलमान तीन हज़ार थे। इसके अतिरिक्त दक्षिण की ओर यहूदियों का तीसरा क़बीला बनू कुरैज़ा आबाद था, जिससे अभी तक मुसलमानों की संधि थी तथा वे मुसलमानों की सहायता करने के लिए बाध्य थे। परन्तु उसे भी बनू नदीर के यहूदी नेता हुयय बिन अख़्तब ने भड़का कर मुसलमानों पर घातक प्रहार के लिए अपने साथ मिला लिया। इस प्रकार मुसलमान चारों ओर से शत्रुओं के घेरे में फँस गये थे। इस अवसर पर आदरणीय सुलेमान फ़ारसी की सलाह पर ख़न्दक खोदी गयी, जिसके कारण शत्रुओं की सेनायें मदीने में न आ सकीं तथा मदीने के बाहर ही डेरा डालें रहीं। फिर भी इस नाकेबन्दी तथा शत्रुओं के संयुक्त आक्रमण से मुसलमान अत्याधिक भयभीत थे। लगभग एक महीने तक यह नाकाबन्दी रही तथा मुसलमान अत्याधिक भयभीत एवं कठिनाई की परिस्थिति में थे। अन्त में अल्लाह तआला ने दैवी सहायता मुसलमानों को प्रदान की। इन आयतों में उन्हीं भयावाह एवं व्याकुलता की परिस्थितयों में दैवी सहायता का वर्णन

The Ummah Technology Mission

إِذْ جَآءُوكُم مِّن فَوْقِكُمْ وَمِنْ
أَسْفَلَ مِنكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ
وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ
بِاللَّهِ الظُّنُونَا ⑩

(१०) जबकि (शत्रु) तुम्हारे ऊपर से तथा नीचे से आ गये [1] तथा जबकि आँखें पथरा गयीं तथा कलेजा मुँह को आने लगा। तथा तुम अल्लाह के सम्बन्ध में विभिन्न विचार करने लगे।[2]

هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا
زِلْزَالًا شَدِيدًا ⑪

(११) यहीं ईमानवालों की परीक्षा ली गयी तथा पूर्णरूप से वे झिझोड़ दिये गये।[3]

وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ
فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا
اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ⑫

(१२) तथा उस समय बहुमुखी (मिथ्याचारी) एवं रोगी हृदय वाले कहने लगे कि अल्लाह (तआला) तथा उसके रसूल ने हमसे मात्र छल तथा कपट के ही वादे किये थे।

وَإِذْ قَالَت طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يَا أَهْلَ

(१३) तथा उन ही के एक गुट ने आवाज़ लगायी कि हे यथरिब वालो !।[4] तुम्हारे

है। प्रथम جنود से तात्पर्य काफ़िरों की सेना है, जो एकत्रित होकर आयी थीं। तीव्रगति की वायु से तात्पर्य वह हवा हो जो तीव्र तूफ़ान के रूप में आयी थी, जिसने शत्रुओं के ख़ेमों को उखाड़ फेंका था, जानवर रस्सियाँ तुड़ाकर भाग खड़े हुए थे, हाँडियाँ उलट गयीं थी तथा सब भागने को बाध्य हो गये। यह वही हवा है जिसके विषय में हदीस में आता है। «نُصِرْتُ بِالصَّبَا، وَأُهْلِكَتْ عَادٌ بِالدَّبُورِ». (सहीह बुख़ारी किताबु इस्तिसक़ा, मुस्लिम वाब फ़ी रीहिस्सबा वददबूर) मेरी सहायता सबा (पूर्वायी) से की गयी तथा 'आद' दबूर (पछुवा) हवा से नाश किये गये। وجنودًا لم تروها से तात्पर्य फ़रिश्ते हैं जो मुसलमानों की सहायता के लिए आये। उन्होंने शत्रओं के हृदय में ऐसा भय तथा डर डाल दिया कि उन्होंने वहाँ से शीघ्र भाग जाने में ही अपनी सुरक्षा समझी।

[1]इससे तात्पर्य यह है कि प्रत्येक ओर से शत्रु आ गये अथवा ऊपर से तात्पर्य गत्फ़ान हवाज़िन तथा अन्य नजद के मूर्तिपूजक हैं और नीचे के ओर से क़ुरैश तथा उनके साथी एवं सहयोगी।

[2]यह मुसलमानों की उस अवस्था का वर्णन है जिससे वे उस समय पीड़ित थे।

[3]अर्थात मुसलमानों को भय, हत्या, भूख एवं नाकेबन्दी से पीड़ित करके उनकी परीक्षा ली गयी ताकि द्वयवादी अलग हो जायें।

[4]यथरिब उस सम्पूर्ण क्षेत्र का नाम था, मदीना उसी का एक भाग था, जिसे यहाँ यथरिब का नाम दिया गया है। कहा जाता है कि इसका नाम यथरिब इसलिए पड़ा कि किसी

The Ummah Technology Mission

يَٰٓأَهۡلَ يَثۡرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمۡ فَٱرۡجِعُواْۚ وَيَسۡتَـٔۡذِنُ فَرِيقٞ مِّنۡهُمُ ٱلنَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوۡرَةٞ وَمَا هِيَ بِعَوۡرَةٍۖ إِن يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارٗا ١٣

ठहरने का (यह) स्थान नहीं चलो लौट चलो।[1] तथा उनका एक अन्य गुट यह आज्ञा नबी से माँगने लगा कि हमारे घर ख़ाली तथा असुरक्षित हैं। [2] वास्तव में वे (खुले हुए) असुरक्षित न थे, (परन्तु) उनका दृढ़ निश्चय भाग खड़े होने का हो चुका था।[3]

وَلَوۡ دُخِلَتۡ عَلَيۡهِم مِّنۡ أَقۡطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُواْ ٱلۡفِتۡنَةَ لَأٓتَوۡهَا وَمَا تَلَبَّثُواْ بِهَآ إِلَّا يَسِيرٗا ١٤

(१४) तथा यदि मदीने की चारों ओर से उन पर (सेनायें) प्रवेश करायी जातीं। फिर उन से उपद्रव की माँग की जाती तो ये अवश्य उपद्रव मचा देते तथा कुछ लड़ते भी तो थोड़ी सी।[4]

समय अमालिका में से किसी ने यहाँ पड़ाव डाला था जिसका नाम यथरिब बिन अमील था। (फ़तहुल क़दीर)

[1]अर्थात मुसलमानों की सेना में रहना अत्यधिक भयावह है, अपने-अपने घरों को वापस लौट जाओ।

[2]अर्थात बनू कुरैज़ा की ओर से आक्रमण का भय है। इस प्रकार घर वालों के प्राणों एवं माल तथा सम्मान को ख़तरा है।

[3]अर्थात जो भय वे व्यक्त कर रहे हैं, वह नहीं है, बल्कि वे इसके द्वारा भागने का मार्ग खोज रहे हैं। عَوۡرَةٌ के शाब्दिक अर्थ के लिए देखिए सूरः नूर की आयत संख्या ५८ की व्याख्या।

[4]अर्थात मदीने अथवा उनके घरों में चारो ओर से शत्रु घुस जायें तथा उनसे माँग करें कि तुम पुनः कुफ़्र तथा शिर्क एवं मूर्तिपूजा की ओर लौट आओ, तो ये तनिक देर न करेंगे तथा उस समय घरों को असुरक्षित होने का तर्क भी प्रस्तुत न करेंगे बल्कि तुरन्त मूर्तिपूजा की माँग की ओर झुक जायेंगे। अभिप्राय यह है कि कुफ़्र तथा शिर्क उनको प्रिय है तथा उसकी ओर ये लपकते हैं।

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ كَانُوا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ ؕ وَكَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْـُٔوْلًا ﴿١٥﴾

(१५) तथा इससे पूर्व तो उन्होंने अल्लाह से वादा किया था कि पीठ न फेरेंगे [1] तथा अल्लाह (तआला) से किये गये वादे की पूछताछ अवश्य है।[2]

قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَاِذًا لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٦﴾

(१६) कह दीजिए कि यदि तुम मृत्यु अथवा हत्या के भय से भागो तो यह भागना तुम्हें कुछ काम न आयेगा तथा उस समय तुम अत्यन्त कम लाभान्वित किये जाओगे।[3]

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ؕ وَلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧﴾

(१७) पूछिये तो कि यदि अल्लाह (तआला) तुम्हें कोई बुराई पहुँचाना चाहे अथवा तुम पर कोई कृपा करना चाहे तो कौन है जो तुम्हें बचा सके (अथवा तुमसे रोक सके)?[4] अपने लिए अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त न कोई पक्षधर पायेगा न सहायता करने वाला।

---

[1]बताया जाता है कि ये बहुमुखी (मुनाफ़िक) बद्र के युद्ध तक मुसलमान नहीं हुए थे परन्तु जब मुसलमान विजयी होकर विजय सामग्री लेकर मदीने वापस लौटे तो उन्होंने न तो केवल यह कि इस्लाम धर्म धारण करने का प्रदर्शन किया, बल्कि यह भी वचन दिया कि यदि पुनः काफ़िरों से युद्ध का अवसर आया तो वे मुसलमानों के साथ मिलकर युद्ध अवश्य करेंगे यहाँ उनको वही वचन याद दिलाया जा रहा है।

[2]अर्थात उसे पूरा करने की उनसे माँग की जायेगी तथा वचन तोड़ने की स्थिति में दण्ड के भोगी होंगे।

[3]अर्थात मृत्यु से तो किसी स्थिति में भी भाग नहीं सकते। यदि रणभूमि से भाग कर भी तुम आ जाओगे, तो क्या लाभ? कुछ समय पश्चात मृत्यु का प्याला तो तुम्हें पीना ही पड़ेगा।

[4]अर्थात तुम्हें मारना, रोगी बनाना अथवा व्यवसाय में हानि पहुँचाना अथवा अकाल से पीड़ित करना चाहे तो कौन है जो तुम्हें उससे बचा सके? अथवा अपनी दया एवं उपकार करना चाहे तो वह रोक सके?

The Ummah Technology Mission

قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ وَلَا يَاْتُوْنَ الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٨﴾

(१८) अल्लाह (तआला) तुम में से (भली-भाँति) जानता है जो दूसरों को रोकते हैं तथा अपने भाई बन्धुओं से कहते हैं कि हमारे पास चले आओ।[1] तथा कभी-कभी ही लड़ाई में आ जाते हैं।[2]

اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۚ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا

(१९) तुम्हारी सहायता में (पूरे) कंजूस हैं,[3] फिर जब डर, भय का अवसर आ जाये तो आप उन्हें देखेंगे कि वह आपकी ओर दृष्टि जमा देते हैं तथा उनकी आँखें इस प्रकार घूमती हैं, जैसे उस व्यक्ति की जिस पर मृत्यु की बेहोशी हो।[4] फिर जब भय जाता रहता है, तो तुम पर अपनी तेज़ ज़बान से बड़ी बातें बनाते हैं।[5] माल के बड़े लोभी हैं,[6] यह

---

[1]यह कहने वाले मिथ्याचारी थे, जो अपने दूसरे साथियों को भी मुसलमानों के साथ मिलकर युद्ध करने से रोकते थे।

[2]क्योंकि वह मृत्यु के भय से पीछे ही रहते थे।

[3]अर्थात तुम्हारे साथ ख़न्दक (खाई) खोदकर तुमको साथ देने में अथवा अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने में अथवा तुम्हारे साथ मिलकर युद्ध करने में कंजूस हैं।

[4]यह उनकी कायरता तथा दुस्साहस की स्थिति का वर्णन है।

[5]अर्थात अपनी वहादुरी एवं वीरता के विषय में डींगें मारते हैं, जो सर्वथा से झूठ पर आधारित होती है अथवा विजय में प्राप्त सामान के विभाजन के समय अपनी वाकपटुता के कारण लोगों को प्रभावित करके अधिक से अधिक माल प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। आदरणीय कतादह का कथन है, "विजय में प्राप्त सामग्री के विभाजन के समय यह अत्याधिक कृपण एवं अत्याधिक बुरा भाग लेने वाले तथा युद्ध के समय सबसे अधिक कायर तथा साथियों को निस्सहाय छोड़कर भाग जाने वाले हैं।"

[6]अथवा दूसरा अर्थ यह है कि पुण्य का विचार भी उनके अन्दर नहीं है। अर्थात पूर्वोक्त दोषों एवं त्रुटियों के साथ पुण्य एवं भलाई से भी वे वंचित हैं।

The Ummah Technology Mission

فَاَحْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٩﴾

लोग ईमान लाये ही नहीं हैं।[1] अल्लाह (तआला) ने उनके सम्पूर्ण कर्म अनर्थ कर दिये हैं।[2] तथा अल्लाह (तआला) पर यह अत्यन्त सरल है।[3]

يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنَّهُمْ بَادُوْنَ فِى الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ؕ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا قٰتَلُوْۤا اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢٠﴾

(२०) समझते हैं कि अब तक सेनायें चली नहीं गयीं।[4] तथा यदि सेनायें आ जायें तो ये कामना करते हैं कि काश कि वह वनवासियों में बंजारों के साथ होते कि तुम्हारे समाचार प्राप्त करते रहते,[5] यदि वे तुम में उपस्थिति होते (तब भी क्या)? यूँ ही बात रखने के लिए तनिक लड़ लेते।[6]

---

[1]अर्थात हृदय से बल्कि ये भ्रष्टाचारी हैं, क्योंकि उनके हृदय कुफ़्र एवं बैर से भरे हुए हैं।

[2]इसलिए कि वे मूर्तिपूजक एवं नास्तिक ही हैं तथा नास्तिक एवं मूर्तिपूजक के कर्म व्यर्थ हैं, जिन पर कोई बदला अथवा पुण्य नहीं। अथवा أظهر ، أحبط के अर्थ में है, अर्थात उनके कर्मों की व्यर्थता को व्यक्त कर दिया, इसलिए कि उनके कर्म ऐसे हैं ही नहीं कि वे पुण्य के योग्य हों तथा अल्लाह उन्हें अयोग्य कर दे। (फ़तहुल क़दीर)

[3]उनके कर्मों को अनर्थ कर देना अथवा उनका मिथ्यावाद।

[4]अर्थात इन मिथ्याचारियों की कायरता, साहस की कमी, भय तथा आतंक की यह दशा है कि काफ़िरों के गिरोह यद्यपि असफल हो कर वापस जा चुके हैं। ये अब भी समझते हैं कि वे अभी तक मोर्चा तथा खेमों में उपस्थिति हैं।

[5]अर्थात यदि मान भी लिया कि यदि वे काफ़िरों के गिरोह पुनः युद्ध के विचार से वापस आ जायें त भ्रष्टाचारी की इच्छा यही होगी कि वे मदीना नगर में आने के बजाय, बाहर रेगिस्तान में बद्दुओं के साथ हों तथा वहाँ लोगों से तुम्हारे विषय में पूछते रहें कि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तथा उसके साथी नाश हुए अथवा नहीं? अथवा काफ़िरों की सेना सफल रही अथवा असफल।

[6]मात्र अपमान के भय से अथवा स्वदेशी के पक्ष के कारण से। इसमें उन लोगों के लिए घोर चेतावनी है जो धर्मयुद्ध से पीठ मोड़ते हैं अथवा उससे पीछे हटते रहते हैं।

The Ummah Technology Mission

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ﴿٢١﴾

(२१) अवश्य तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह में उत्तम आदर्श हैं।[1] प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह (तआला) की तथा क़यामत के दिन की संभावना रखता है तथा अत्याधिकता अल्लाह को स्मरण करता है।[2]

وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۫

(२२) तथा जब ईमानवालों ने (काफ़िरों की) सेनाओं को देखा तो (सहसा) कह उठे कि इन्हीं का वचन हमें अल्लाह तआला ने तथा उसके रसूल ने दिया था तथा अल्लाह (तआला)

---

[1]अर्थात हे मुसलमानों एवं मुनाफ़िकों ! तुम सबके लिए रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में आदर्श है, तो तुम धर्मयुद्ध में तथा धैर्य एवं संयम में उसका अनुसरण करो। हमारा संदेष्टा धर्मयुद्ध के समय भूखा रहा यहाँ तक कि पेट पर पत्थर बाँधने पड़े, उसका मुख आहत हो गया उसका दाँत टूट गया, खंदक अपने हाथों से खोदी तथा लगभग एक महीने शत्रु के सामने डटा रहा। यह आयत यद्यपि अहज़ाब के युद्ध के विषय में अवतरित हुई है, जिसमें युद्ध के अवसर पर विशेषरूप से रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के व्यक्तिगत आचरण को समक्ष रखने तथा अनुकरण करने का आदेश दिया गया है। परन्तु यह आदेश सामान्य है अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समस्त कथनी, करनी एवं अवस्था में मुसलमानों के लिए अनुकरण अनिवार्य है चाहे उसका सम्बन्ध इबादत से हो अथवा सामाजिक, अर्थव्यवस्था से अथवा राजनीति से, जीवन के प्रत्येक कोण में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मार्गदर्शन का अनुकरण अनिवार्य है। ----- ﴿وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ﴾ (सूर: अल-हश्र) तथा ﴿إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ﴾ (सूरे आले इमरान-३१) का अर्थ भी यही है।

[2]इससे यह स्पष्ट हो गया कि संदेष्टा के आचरण का अनुकरण वही करेगा जो आख़िरत में अल्लाह के मिलन पर विश्वास रखता तथा अत्याधिक अल्लाह का वर्णन तथा स्मरण करता है। आज मुसलमान भी सामान्य रूप से इन दोनों गुणों से वंचित हैं। इसलिए रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आचरण का भी कोई महत्व उनके दिलों में नहीं है। उनमें जो धार्मिक लोग हैं उनके नेता, मुखिया, महात्मा, गुरू तथा ज्ञानी हैं तथा जो सांसारिक लोग तथा राजनैतिक लोग हैं उनके गुरू तथा नेता पाश्चात्य देश के स्वामी हैं। रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम के मौखिक दावे बड़े हैं, परन्तु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुखिया तथा गुरू मानने के लिए उनमें से कोई तैयार नहीं है। فإلى الله المُشتكى

The Ummah Technology Mission

وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا ﴿٢٢﴾

तथा उसके रसूल सत्य हैं।[1] और उस (वस्तु) ने उनके ईमान में तथा आज्ञापालन में और भी बढ़ोत्तरी कर दी।[2]

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ ۖ فَمِنْهُمْ مَنْ قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ ۖ

(२३) ईमानवालों में (ऐसे) लोग भी हैं जिन्होंने जो प्रतिज्ञा अल्लाह (तआला) से की थी, उन्हें सच्चा कर दिखाया[3] कुछ ने तो अपना वचन पूरा कर दिया[4] तथा कुछ

---

[1]अर्थात मिथ्याचारियों ने तो शत्रुओं की अधिक संख्या तथा घोर परिस्थितियों को देखकर कहा था कि अल्लाह और रसूल के वचन धोखा थे, उनके विपरीत ईमानवालों ने कहा कि अल्लाह तथा रसूल ने जो वादा किया है कि दुख एवं परीक्षा की घड़ी से गुज़ार कर तुम्हें विजय एवं सफलता प्रदान की जायेगी, वह सत्य है।

[2]अर्थात परिस्थितियों की कठिनाई एवं भयानकता ने उनके ईमान को डगमग नहीं किया, अपितु उनके ईमान में तथा आज्ञाकारिता एवं स्वीकृति तथा प्रसन्नता की भावना को और बढ़ा दिया। इसमें इस बात का प्रमाण है कि लोगों तथा उसकी विभिन्न परिस्थितियों के आधार पर ईमान तथा उसकी शक्ति में कमी एवं वृद्धि होती है, जैसाकि मुहद्दसीन (हदीस के विशेषज्ञों) का मत है।

[3]यह आयत उन कुछ सहावा के विषय में अवतरित हुई है, जिन्होंने इस अवसर पर अपने प्राणों की आहुति देने के विचित्र एवं आश्चर्यजनक करतब दिखाये थे तथा उन्हीं में वे सहावा भी सम्मिलित थे जो बद्र के रण में सम्मिलित न हो सके थे, परन्तु उन्होंने यह प्रतिज्ञा कर रखी थी कि यदि अब पुन: कोई अवसर आया तो धर्मयुद्ध में भरपूर भाग लेंगे, जैसे नज़र बिन अनस आदि जो अन्त में लड़ते हुए ओहद के युद्ध में शहीद हुए। उनके शरीर पर तलवार, भाले तथा तीरों के ८० से ऊपर घाव थे, शहादत के पश्चात उनकी वहन ने उन्हें उनकी ऊँगली के पोर से पहचाना (मुसनद अहमद भाग ४ पृष्ठ संख्या १९३)

[4] نَحْب के अर्थ वचन, मनौती (मन्नत) तथा मृत्यु किये गये हैं। अभिप्राय यह है कि उन सत्यवादियों में से कुछ ने अपना वचन अथवा मन्नत पूरी करते हुए शहीद हो गये।

The Ummah Technology Mission

وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ﴿٢٣﴾

(अवसर की) प्रतीक्षा में हैं तथा उन्होंने कोई परिवर्तन नहीं किया।[1]

لِّيَجْزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٢٤﴾

(२४) ताकि अल्लाह (तआला) सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे दे तथा यदि चाहे तो द्वयवादियों को दण्ड दे अथवा उन की भी क्षमा-याचना स्वीकार करे,[2] अल्लाह (तआला) अत्यन्त क्षमाशील एवं अत्यन्त दयालु है।

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ؕ وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿٢٥﴾

(२५) तथा अल्लाह (तआला) ने काफ़िरों को क्रोध में भरे हुए ही (असफल) लौटा दिया कि उनकी कोई कामना पूरी न हुई।[3] तथा उस युद्ध में अल्लाह (तआला) स्वयं ही ईमानवालों को काफ़ी हो गया।[4] अल्लाह (तआला) अत्यन्त शक्तिशाली एवं प्रभावशाली है।

---

[1]तथा अन्य भी हैं जो शहीद नहीं हो सके, जबकि उसकी चेष्टा में धर्मयुद्ध में भाग लेते हैं तथा शहादत का सौभाग्य प्राप्त करने की कामना रखते हैं।

[2]अर्थात उन्हें इस्लाम धर्म धारण करने का सौभाग्य प्रदान कर दे।

[3]अर्थात मूर्तिपूजक जो विभिन्न क्षेत्र से एकत्रित होकर आये थे ताकि मुसलमानों का अस्तित्व ही समाप्त कर दें। अल्लाह ने उन्हें अपने क्रोध तथा बुरे विचार के साथ वापस लौटा दिया न तो सांसारिक धन दौलत उनके हाथ लगी तथा न आख़िरत में प्रतिफल अथवा पुण्य प्राप्त करने के अधिकारी होंगे, किसी भी प्रकार का पुण्य उन्हें प्राप्त न होगा।

[4]अर्थात मुसलमानों को उनसे लड़ने की आवश्यकता ही नहीं हुई, बल्कि अल्लाह तआला ने अपने ईमानदार भक्तों को वायु तथा फ़रिश्तों के द्वारा सहायता पहुँचायी इसीलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया «لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ، صَدَقَ وَعْدَهُ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ، وَأَعَزَّ جُنْدَهُ، وَهَزَمَ الأَحْزَابَ وَحْدَهُ، فَلَا شَيْءَ بَعْدَهُ» (सहीह बुख़ारी किताबुल उमरा) "एक अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्यनीय नहीं, उसने अपना वचन सत्य कर दिखाया, अपने दास को सहायता की, अपनी सेना को सफल किया तथा समस्त गिरोहों को अकेले उसने पराजित

The Ummah Technology Mission

وَأَنزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوهُم مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِن صَيَاصِيهِمْ وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيقًا تَقْتُلُونَ وَتَأْسِرُونَ فَرِيقًا ﴿٢٦﴾

(२६) तथा जिन अहले किताब ने उनके साथ साँठ गाँठ कर ली थी उन्हें (भी) अल्लाह तआला ने दुर्गों से निकाल दिया तथा उनके दिलों में (भी) भय डाल दिया कि तुम उनके एक गुट को हत कर रहे हो तथा एक गुट को बंदी बना रहे हो।

وَأَوْرَثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَّمْ تَطَئُوهَا

(२७) तथा उसने तुम्हें उनकी भूमि का तथा उनके घरों का तथा धन-सम्पत्ति का स्वामी बना दिया[1] तथा उस भूमि का भी जिस पर

किया, उसके पश्चात कोई शक्ति नहीं।" यह प्रार्थना हज, उमरह, धर्मयुद्ध तथा यात्रा से वापसी पर भी पढ़नी चाहिए।

[1]इसमें बनी कुरैज़ा के युद्ध का वर्णन है। जैसाकि पहले व्यतीत हो चुका है कि उसने संधि को तोड़कर अहज़ाब के युद्ध के समय मूर्तिपूजकों तथा अन्य यहूदियों का साथ दिया था। अत: अहज़ाब के युद्ध से वापस जाकर रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अभी स्नान ही कर पाये थे कि आदरणीय जिबरील आ गये तथा कहा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हथियार रख दिये ? हम फ़रिश्तों ने तो नहीं रखा है। चलिए अब बनू कुरैज़ा से निपटना है। मुझे अल्लाह ने इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेजा है। अत: आपने मुसलमानों में घोषणा करा दी बल्कि उनको विशेषरूप से कह दिया कि अस्र की नमाज़ वहाँ जाकर पढ़नी है। यह आबादी मदीने से कुछ मील की दूरी पर थी। ये अपने दुर्गों में बंद हो गये। बाहर से मुसलमानों ने घेराबन्दी कर ली, जो लगभग पच्चीस दिन निरन्तर रही। अन्त में उन्होंने साद बिन मुआज़ को अपना मध्यस्थ मान लिया कि वह जो निर्णय देंगे हमें स्वीकार होगा। अत: उन्होंने निर्णय दिया कि उनमें से लड़ने वालों की हत्या कर दी जाये तथा बच्चे बूढ़े तथा स्त्रियों को बन्दी बना लिया जाये तथा उनका धन मुसलमानों में विभाजित कर दिया जाये। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह निर्णय सुनकर फ़रमाया कि यही निर्णय आकाश पर अल्लाह तआला का है इसके अनुसार उनके लड़ाकूओं की गर्दने उड़ा दी गयी। तथा मदीने को उनके अपवित्र अस्तित्व से प्रतिपकार दिया गया। (देखिये सहीह बुख़ारी बाब गज़्वतिल खंदक) أنزل दुर्गों से नीचे उतार दिया, ظاهروهم काफ़िरों की उन्होंने सहायता की।

The Ummah Technology Mission

وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢٧﴾

तुम्हारे पग ही नहीं गये।[1] अल्लाह तआला सब कुछ कर सकने का सामर्थ्य रखता है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِىُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٢٨﴾

(२८) हे नबी ! अपनी पत्नियों से कह दो कि यदि तुम्हारी इच्छा सांसारिक जीवन तथा सांसारिक शोभा की है, तो आओ मैं तुम्हें कुछ दे दिला दूँ तथा तुम्हें अच्छाई के साथ छोड़ दूँ।

وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾

(२९) तथा यदि तुम्हारी इच्छा अल्लाह तथा उसका रसूल एवं आख़िरत का घर है तो (विश्वास करो कि) तुममें से पुण्य कार्य करने वालियों के लिए अल्लाह (तआला) ने अत्यन्त उत्तम बदला रख छोड़े हैं।[2]

---

[1]कुछ ने इससे ख़ैबर की भूमि का अर्थ लिया है क्योंकि उसके पश्चात ही हुदैबिया संधि के पश्चात मुसलमानों ने ख़ैबर पर विजय प्राप्त की है। कुछ ने कहा कि मक्का की भूमि है तथा कुछ ने फारस तथा रोम की भूमि को इसका अभिप्राय बताया है तथा कुछ ने उन समस्त धरती को बताया जो मुसलमान क़यामत तक विजय द्वारा प्राप्त करेंगे। (फ़तहुल क़दीर)

[2]विजय प्राप्त होने के परिणाम स्वरूप जब मुसलमानों की स्थिति पहले की अपेक्षा कुछ सुधर गयी थी तो अंसार तथा मुहाजिरों की महिलाओं को देखकर पवित्र पत्नियों ने भी अपने पोषण ख़र्च को बढ़ाने की माँग की। चूँकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सरलता प्रिय थे, इसीलिए पवित्र पत्नियों की इस माँग पर अत्यन्त दुखी हुए तथा पत्नियों से अलग रहने लगे, जो एक महीने तक निरन्तर रहा अन्त में अल्लाह तआला ने यह आयत अवतरित की। इसके पश्चात आपने सर्वप्रथम आदरणीय आयशा को यह आयत सुनाकर उन्हें अधिकार दिया फिर भी उन्हें कहा कि स्वयं निर्णय करने के बजाय अपने माता-पिता से परामर्श के पश्चात ही कोई निर्णय लेना। आदरणीय आयशा ने कहा कि यह कैसे हो सकता है कि मैं आपके विषय में परामर्श करूँ, बल्कि मैंने अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को छोड़कर सांसारिक सुख-सुविधा को अधिमान नहीं दिया। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: अहज़ाब) उस समय आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विवाहित सम्बन्ध मैं नौ पत्नियाँ थीं, पाँच कुरैश में से थीं आदरणीया आयशा, हफ़सा, उम्मे हबीबा, सौदह एवं उम्मे सलमा तथा चार उनके अतिरिक्त अर्थात

The Ummah Technology Mission

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝٣٠

(३०) हे नबी की पत्नियो ! तुममें से जो भी अश्लील कर्म करेगी उसे दुगुनी यातना दी जायेगी[1] अल्लाह तआला ने निकट यह अत्यन्त सरल बात है।

आदरणीया सफ़िया, मैमूना, ज़ैनब तथा जवैरिया थीं। رضي الله عنهن कुछ लोग पुरूष की ओर से अलग होने को तलाक़ (विवाह-विच्छेद) कहते हैं। परन्तु यह बात उचित नहीं है। उचित बात यह है कि अलग होने का अधिकार देने के पश्चात स्त्री अलगाव पसन्द नहीं करती तो फिर तलाक़ न होगी, जैसे कि पवित्र पत्नियों ने अलगाव के बजाय रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विवाह के बन्धन में रहना ही पसन्द किया, तो अधिकार देने को तलाक नहीं माना गया। (सहीह बुख़ारी किताबुत तलाक़)

[1]क़ुरआन में الفاحشة (लाम अक्षर के साथ) को व्याभिचार के अर्थ में प्रयोग किया गया है परन्तु فاحشة (जातिवाचक संज्ञा) को बुराई के लिए। यहाँ इसका अर्थ दुराचार तथा असभ्य व्यवहार के हैं। क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ दुराचार उनको दुख पहुँचाना है, जिसका करना कुफ़्र है। इसके अतिरिक्त पवित्र पत्नियाँ स्वयं भी उच्च पद पर थीं। तथा सर्वोच्च पद पर आसीन लोगों की साधारण त्रुटि भी बड़ी त्रुटियों में गणित होती है। इसलिए उन्हें दोगुने यातना के दण्ड की चेतावनी दी गयी है।

The Ummah Technology Mission

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾

(३१) तथा तुम में से जो कोई भी अल्लाह का तथा उसके रसूल का आज्ञापालन करेगी तथा सत्कर्म करेगी हम उसे दोगुना बदला देंगे,[1] तथा उसके लिए हमने अति उत्तम जीविका तैयार कर रखी है।

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ

(३२) हे नबी की पत्नियो ! तुम साधारण स्त्रियों के समान नहीं हो,[2] यदि तुम संयम बरतो तो कोमल भाव से बात न करो कि जिसके दिल में रोग हो वह कोई कुविचार करे,[3] परन्तु

---

[1]अर्थात जिस प्रकार पाप का दण्ड दोगुना होगा पुण्य का बदला भी दुगुना होगा। जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ إِذًا لَّأَذَقْنَاكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ﴾

"फिर तो हम भी आपको दुगुनी यातना दुनिया की चखाते तथा दुगुनी ही मृत्यु की।" (सूर: बनी इस्राईल-७५)

[2]अर्थात तुम्हारी स्थिति एवं पद साधारण महिलाओं की तरह नहीं हैं बल्कि अल्लाह ने तुम्हें रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नी होने का जो सौभाग्य प्रदान किया है, उसके कारण तुम्हें विशेष स्थान प्राप्त है तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भाँति तुम्हें भी मुसलमानों के लिए आदर्श बनना है। अत: उन्हें उनके स्थान एवं पद से सचेत करके उन्हें कुछ निर्देश दिये जा रहे हैं। इससे सम्बोधित यद्यपि पवित्र पत्नियाँ हैं, जिन्हें ईमानवालों की माताऐं कहा गया है परन्तु वाक्य शैली के अनुसार साफ स्पष्ट है कि उद्देश्य समस्त मुसलमानों की महिलाओं को समझाना तथा चेतावनी देना है। इसलिए यह निर्देश सभी मुसलमान महिलाओं के लिए है।

[3]अल्लाह तआला ने जिस प्रकार महिलाओं के अस्तित्व के अन्दर पुरूषों के लिए काम आकर्षण रखा है। (जिसकी सुरक्षा के लिए विशेष निर्देश दिये गये हैं ताकि महिला पुरूष के लिए भ्रष्टाचार का कारण न बने) उसी प्रकार अल्लाह तआला ने महिलाओं की आवाज़ में भी प्राकृतिक रूप से आकर्षण, सरलता एवं कोमलता रखी है, जो पुरूष को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। इसलिए इस आवाज़ के लिए भी यह निर्देश दिया गया कि पुरूषों से बातचीत करते समय विशेष रूप से ऐसी भाषा शैली का प्रयोग करो कि कोमलता एवं सरलता के स्थान पर कुछ कड़ाई एवं निरसता हो, ताकि कोई बुरा हृदय बात के अंदाज़ से तुम्हारी ओर आकर्षित न हो तथा उनके दिल में कुविचार न उत्पन्न हो।

Free Ummah Technology Mission

قَوْلًا مَّعْرُوفًا ﴿٣٢﴾

नियमानुसार बात करो ।[1]

وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ وَآتِينَ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا ﴿٣٣﴾

(३३) तथा अपने घरों में स्थायी रूप से रहो,[2] तथा प्राचीन अज्ञानकाल की भाँति अपने श्रृंगार (सौंदर्य) का प्रदर्शन न करो, [3] तथा नमाज़ स्थापित करती रहो एवं ज़कात देती रहो तथा अल्लाह एवं उसके रसूल का आज्ञा पालन करो[4] अल्लाह (तआला) यही चाहता है कि हे नबी की घरवालियो [5] तुमसे वह हर

---

[1]अर्थात यह नीरसता केवल भाषा शैली में ही हो, मुख से ऐसे शब्द न निकालो जो सामान्य नियम तथा स्वभाव के विपरीत हो । इनको إِنِ اتَّقَيْتُنَّ कहकर संकेत कर दिया कि यह बात तथा अन्य निर्देश जो आगे हैं संयमी महिलाओं के लिए है, क्योंकि उन्हें ही यह चिन्ताशून्य वंचित हैं, उन्हें इन निर्देशों से क्या सम्बन्ध तथा वह कब इन निर्देशों की चिन्ता करती हैं ?

[2]अर्थात टिक कर रहो तथा अनावश्यक घर से बाहर न निकलो । इसमें स्पष्ट कर दिया कि स्त्री का कार्य क्षेत्र राजनीति एवं शासन नहीं, आर्थिक झमेले भी नहीं बल्कि घर के अन्दर रहकर गृहस्थी के कार्य पूरा करना है ।

[3]इसमें घर से बाहर निकलने के शिष्टाचार बता दिये कि यदि बाहर जाने की आवश्यकता हो तो बनाव-श्रंगार करके अथवा ऐसे ढंग से जिससे तुम्हारा बनाव-श्रृंगार प्रकट हो रहा हो, न निकलो जैसे बेपर्दा होकर जिससे तुम्हारा सिर, मुख, बाँह तथा छाती आदि लोगों को दर्शन का आमन्त्रण दे । बल्कि बिना सुगन्ध लगाये सादे वस्त्र में पर्दे से निकलो । تَبَرُّجٌ बेपर्दा तथा सज धज के प्रदर्शन को कहते हैं । क़ुरआन ने स्पष्टकर दिया है कि यह تَبَرُّجَ अज्ञानता है जो इस्लाम से पूर्व थी तथा भविष्य में भी जब कभी इसे धारण किया जायेगा, यह अज्ञानता ही होगी, इस्लाम से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है, चाहे इसका नाम कितना ही आर्कषक एवं सुन्दर रख लिया जाये ।

[4]पिछले निर्देश बुराई से बचने के संदर्भ में थे, यह निर्देश पुण्य धारण करने से सम्बन्धित हैं ।

[5]अहले बैत से तात्पर्य कौन हैं ? इसके निर्धारण में कुछ मतभेद है । कुछ ने पवित्र पत्नियाँ तात्पर्य लिया है, जैसाकि यहाँ क़ुरआन करीम के शब्दों से स्पष्ट हो रहा है । क़ुरआन ने यहाँ पवित्र पत्नियों को ही अहले बैत कहा है । क़ुरआन के अन्य स्थान पर भी पत्नी को अहले बैत कहा है, जैसे सूरः हूद आयत संख्या ७३ में । इसलिए पवित्र पत्नियों

The Ummah Technology Mission

(प्रकार की) अशुद्धता को दूर कर दे तथा तुम्हें अत्यन्त पवित्र कर दे।

وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلَىٰ فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ وَالْحِكْمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا ﴿٣٤﴾

(३४) तथा तुम्हारे घरों में अल्लाह (तआला) की जो आयतें तथा रसूल की हदीसें पढ़ी जाती हैं, उनको याद करती रहो,[1] निश्चय अल्लाह (तआला) सुक्ष्मदर्शी सूचित हैं।

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ

(३५) नि:संदेह मुसलमान पुरूष एवं मुसलमान महिलायें,[2] ईमानदार पुरूष एवं ईमानदार

का अहले बैत होना क़ुरआन के शब्दों से स्पष्ट है। कुछ लोग, कुछ कथनों के आधार पर अहले बैत का सम्बन्ध केवल आदरणीय अली, आदरणीया फ़ातिमा तथा आदरणीय हसन एवं हुसैन से मानते हैं तथा पवित्र पत्नियों को इससे अलग समझते हैं जबकि प्रथम लोग इन चार सहचरों को इससे निष्कासित समझते हैं जबकि मध्यम मार्ग तथा संतुलित बात यह है कि दोनों ही अहले बैत हैं। पवित्र पत्नियाँ तो पवित्र क़ुरआन के इन शब्दों के कारण तथा दामाद एवं सन्तान उन कथनों के आधार पर जो सहीह हदीस से सिद्ध हैं, जिनमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको अपनी चादर में लेकर फ़रमाया कि हे अल्लाह ! ये मेरे अहले बैत हैं, जिसका अर्थ यह होगा कि यह भी मेरे अहले बैत से हैं अथवा यह प्रार्थना है कि हे अल्लाह इन्हें भी पवित्र पत्नियों की भाँति मेरे अहले बैत में सम्मिलित कर ले। इस प्रकार सभी तर्कों एवं प्रमाणों में सामन्जस्य हो जाता है। (अन्य जानकारी के लिए देखो फ़तहुल क़दीर शौकानी)

[1]अर्थात इनके अनुसार कर्म करो। हिक्म: से तात्पर्य हदीस हैं। इस आयत से तर्क देते हुए ज्ञानियों ने कहा है कि हदीस भी क़ुरआन की भाँति पुण्य के विचार से पाठ की जा सकती है। इसके अतिरिक्त यह आयत पवित्र पत्नियों के अहले बैत होने को प्रमाणित करती है, इसलिए कि प्रकाशना का अवतरण जिसकी चर्चा इस आयत में है पवित्र पत्नियों के घरों में ही होता था, विशेष रूप से आदरणीय आएशा के घर में, जैसाकि हदीस में है।

[2]आदरणीया उम्मे सलमा तथा कुछ अन्य सहाबियात (अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ईमान के साथ दर्शन करने वाली वे महिलायें जिनका निधन भी ईमान पर हुआ) ने कहा कि क्या बात है कि अल्लाह तआला प्रत्येक स्थान पर पुरूषों को ही सम्बोधित करता है, महिलाओं से नहीं। इस पर यह आयत अवतरित हुई। (मुसनद अहमद ६\३०१\ तिर्मिज़ी संख्या ३२११) इसमें महिलाओं के सांत्वना का प्रबन्ध कर दिया गया है, वरन् समस्त आदेशों में पुरूषों के साथ महिलायें भी सम्मिलित हैं सिवाय उन विशेष आदेशों के जो केवल महिलाओं के लिए हैं। इस आयत से तथा अन्य आयतों से

The Ummah Technology Mission

وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ
وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ
وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ
وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ
وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ
وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ
فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ
كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ
مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٣٥﴾

महिलायें, आज्ञापालन करने वाले पुरूष एवं आज्ञापालन करने वाली महिलायें, सत्यवादी पुरूष एवं सत्यवादी महिलायें, धैर्य वाले पुरूष एवं धैर्य रखने वाली महिलायें, विनती करने वाले पुरूष एवं विनती करने वाली महिलायें, दान करने वाले पुरूष एवं दान करने वाली महिलायें, व्रत (रोज़े) रखने वाले पुरूष एवं व्रत (रोज़े) रखने वाली महिलायें, अपनी इंद्रियों की रक्षा करने वाले पुरूष एवं अपनी इन्द्रियों की रक्षा करनेवाली महिलायें तथा अत्याधिक अल्लाह का स्मरण करने वाले तथा करने वालियाँ, इन सबके लिए अल्लाह (तआला) ने विस्तृत मोक्ष एवं महान पुण्य तैयार कर रखा है।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ
اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ
لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ

(३६) तथा (देखो) किसी मुसलमान पुरूष तथा महिला को अल्लाह तथा उसके रसूल के निर्णय के पश्चात अपनी किसी बात का कोई अधिकार शेष नहीं रह जाता।[1] (याद रखो !)

स्पष्ट है कि इबादत एवं अल्लाह के आज्ञापालन तथा आख़िरत के पद एवं प्रतिष्ठा में पुरूष एवं स्त्री के मध्य कोई अन्तर नहीं है। दोनों के लिए समान रूप से ये मैदान खुला है तथा दोनों समान रूप से पुण्य एवं प्रतिफल कमा सकते हैं। लिंग के आधार पर उनमें कमी अथवा अधिकता नहीं की जायेगी। इसके अतिरिक्त मुसलमान तथा ईमानवालों के अलग-अलग वर्णन से यह स्पष्ट हो गया है कि इन दोनों में अन्तर है। ईमान की श्रेणी इस्लाम से उच्च है, जैसाकि क़ुरआन तथा हदीस के अन्य प्रमाण भी इसकी पुष्टि करते हैं।

[1]यह आयत आदरणीया ज़ैनब के विवाह के विषय में अवतरित हुई थी। आदरणीय ज़ैद बिन हारिसा मूल रूप से अरब थे, परन्तु किसी ने उन्हें बाल्यावस्था में ही पकड़ कर दास बनाकर बेच दिया था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आदरणीया ख़दीजा के विवाह के पश्चात आदरणीया ख़दीजा ने उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उपहार स्वरूप भेंट किया था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें स्वाधीन करके अपना पुत्र बना लिया था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके विवाह का

The Ummah Technology Mission

وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿٣٦﴾

अल्लाह (तआला) तथा उसके रसूल की जो भी अवज्ञा करेगा वह खुली पथभ्रष्टता में पड़ेगा।

وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ ؕ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ

(३७) तथा (याद करो) जबकि तू उस व्यक्ति से कह रहा था जिस पर अल्लाह ने भी उपकार किया तथा तूने भी कि तू अपनी पत्नी को अपने पास रख तथा अल्लाह से डर, तथा तू अपने दिल में वह बात छिपाये हुए था जिसे अल्लाह प्रकट करने वाला था तथा तू लोगों से भय खाता था हालाँकि अल्लाह (तआला) इसका अधिक अधिकारी था कि तू उससे डरे,[1] तो जबकि ज़ैद ने उस

प्रस्ताव अपनी फूफी की पुत्री आदरणीया ज़ैनब के साथ रखा था, जिस पर उन्हें तथा उनके भाई को अपने पारिवारिक सम्मान के आधार पर संकोच हुआ कि ज़ैद एक स्वतन्त्र किये हुए दास हैं तथा उनका सम्बन्ध एक उच्च सम्मानित परिवार से है। इस पर यह आयत अवतरित हुई जिसका अर्थ यह है कि अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निर्णय के पश्चात किसी ईमानवाले पुरूष एवं स्त्री को यह अधिकार नहीं कि वह अपने अधिकार का प्रयोग करे बल्कि उसके लिये यह है कि वह अपनी स्वीकृति दे दे। अतः इस आयत को सुनने के पश्चात आदरणीया ज़ैनब आदि ने अपने विचारों पर हठ नहीं किया तथा उनका विवाह हो गया।

[1]परन्तु उनके स्वभाव में अन्तर था, पत्नी के स्वभाव में पारिवारिक मान एवं सम्मान रचा-वसा था जबकि ज़ैद (रज़ि अल्लाहु अन्ह) के दामन पर ग़ुलामी का धब्बा था, उनकी आपस में अनबन रहती थी जिसकी चर्चा आदरणीय ज़ैद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से करते रहते थे तथा तलाक का संकेत भी दिया करते थे। परन्तु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनको तलाक देने से रोकते तथा निर्वाह करने के लिए कहते। इसके अतिरिक्त अल्लाह ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को यह सचेत भी कर दिया था कि ज़ैद की ओर से तलाक़ होकर ही रहेगी, उसके पश्चात ज़ैनब का विवाह आपके साथ कर दिया जायेगा ताकि अज्ञानकाल की उस रीति का खण्डन कर दिया जाये कि मुख बोला पुत्र, धार्मिक विधान में वास्तविक पुत्र के समान नहीं होता तथा उसके द्वारा तलाक़ दी हुई महिला से विवाह मान्य है। आयत में इन्हीं बातों की ओर संकेत है। आदरणीय ज़ैद पर अल्लाह का यह उपहार था कि उसने इस्लाम धर्म धारण करने का सौभाग्य दिया तथा दासता से मुक्ति दिलाई। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का

The Ummah Technology Mission

عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ
أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ۚ
وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿٣٧﴾

स्त्री से अपनी आवश्यकता पूरी कर ली।[1] हमने उसे तेरे विवाह में दे दिया[2] ताकि मुसलमानों पर अपने लेपालकों की पत्नियों के विषय में किसी प्रकार का संकोच न रहे, जबकि वह अपनी आवश्यकता उनसे पूरी कर लें[3] अल्लाह का (यह) आदेश होकर ही रहने वाला था।[4]

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ
فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ ۖ سُنَّةَ اللَّهِ

(३८) जो वस्तुयें अल्लाह (तआला) ने अपने नबी के लिए उचित (मान्य) की हैं, उनमें नबी पर कोई आपत्ति नहीं।[5] (यही) अल्लाह

उपकार उन पर यह था कि उनको धार्मिक शिक्षा दी, उनको स्वतन्त्र करके अपना पुत्र बना लिया तथा अपनी फूफी उमैमा: बिन्त अब्दुल मुत्तलिब की पुत्री से उनका विवाह करा दिया। दिल में छिपाने वाली बात यही थी जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आदरणीया ज़ैनब से विवाह के विषय में प्रकाशना द्वारा बतायी गयी थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम डरते इस बात से थे कि लोग कहेंगे कि अपनी बहू से विवाह कर लिया। जबकि अल्लाह को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा इस रीति को समाप्त करना था तो लोगों से डरने की आवश्यकता नहीं थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह भय यद्यपि स्वाभाविक था जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सचेत किया गया। प्रकट करने से यही तात्पर्य है कि यह विवाह होगा जिससे यह बात सब के ज्ञान में आ जायेगी।

[1]अर्थात विवाह के पश्चात तलाक़ दी तथा आदरणीया ज़ैनब ने इद्दत के दिन पूरे किये।

[2]यह विवाह प्रचलन के विरूद्ध केवल अल्लाह के आदेश से सम्पन्न हो गया, विवाह मंत्र के पाठ, अभिभावक, वकील, गवाह तथा महर के बिना ही।

[3]यह आदरणीया ज़ैनब से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विवाह का कारण है कि भविष्य में कोई मुसलमान इस विषय में संकोच का आभास न करे तथा आवश्यकतानुसार गोद लिये पुत्र की तलाक़ दी हुई पत्नी से विवाह किया जा सके।

[4]अर्थात पूर्व से ही अल्लाह के ज्ञान में जो था वह हर दशा में पूरा होना था।

[5]यह उसी ज़ैनब के विवाह की घटना की ओर संकेत है, चूंकि यह विवाह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए उचित (वैध) था। इसलिए इसमें कोई पाप तथा संकीर्णता की बात नहीं है।

The Ummah Technology Mission

فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرَا ﴿۳۸﴾

का नियम उनमें भी रहा जो पहले हुए [1] तथा अल्लाह (तआला) के कार्य अटल रूप से निर्धारित किये हुए हैं।[2]

الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿۳۹﴾

(३९) ये सब ऐसे थे कि अल्लाह (तआला) के आदेश पहुँचाया करते थे एवं अल्लाह ही से डरते थे तथा अल्लाह के अतिरिक्त किसी से भी नहीं डरते थे,[3] तथा अल्लाह (तआला) हिसाब लेने के लिए पर्याप्त है।[4]

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ

(४०) (लोगो), तुम्हारे पुरूषों में से किसी के पिता मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नहीं,[5] परन्तु आप अल्लाह (तआला) के रसूल

---

[1]अर्थात विगत अम्बिया भी इस प्रकार का कार्य करने में कोई संकोच नहीं करते थे, जो अल्लाह की ओर से उन पर अनिवार्य किये जाते थे, चाहे सामुदायिक तथा सामाजिक रीति-रिवाज उनके विपरीत ही होते।

[2]अर्थात विशेष कारण एवं सुनीति पर आधारित होते हैं, साँसारिक शासकों की भाँति सामयिक एवं क्षणिक आवश्यकता पर आधारित नहीं होते। इसी प्रकार उनका समय भी निर्धारित होता है, जिसके अनुसार घटित होते हैं।

[3]इसलिए न कोई भय अथवा प्रभाव उन्हें अल्लाह का संदेश पहुँचाने में रूकावट बनता था न अपमान एवं धिक्कार की उन्हें चिन्ता होती थी।

[4]अर्थात प्रत्येक स्थान पर वह अपने ज्ञान एवं शक्ति के अनुसार व्याप्त है, इसलिए वह अपने भक्तों की सहायता के लिए पर्याप्त है तथा अल्लाह के धर्म के प्रचार-प्रसार में उन्हें जो कठिनाईयाँ हैं, उनमें वह उनकी सहायता करता है तथा शत्रुओं के बुरे उद्देश्यों तथा षड़यन्त्रों से उन्हें बचाता है।

[5]इसलिए वह ज़ैद बिन हारिसा के भी पिता नहीं हैं, जिस पर उन्हें निन्दा का लक्ष्य बनाया जा सके कि उन्होंने अपनी बहू से विवाह क्यों कर लिया ? बल्कि एक ज़ैद ही क्या वह किसी भी पुरूष के पिता नहीं हैं, क्योंकि ज़ैद तो हारिसा के पुत्र थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तो उन्हें मुँह बोला पुत्र बना रखा था तथा अज्ञानी नियमों के अनुसार उन्हें ज़ैद बिन मोहम्मद कहा जाता था। वास्तव में वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सगे पुत्र नहीं थे। इसीलिए ﴿اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ﴾ के अवतरित होने के पश्चात उन्हें ज़ैद पुत्र

The Ummah Technology Mission

وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٤٠﴾

हैं तथा समस्त नबियों में अन्तिम हैं,[1] तथा अल्लाह (तआला) प्रत्येक वस्तु को भली-भाँति जानने वाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ﴿٤١﴾

(४१) हे मुसलमानो ! अल्लाह तआला का स्मरण अत्याधिक करो।

وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٤٢﴾

(४२) तथा सुबह-शाम उसकी पवित्रता का वर्णन करो।

هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ﴿٤٣﴾

(४३) वही है जो तुम पर अपनी दया भेजता है तथा उसके फ़रिश्ते (तुम्हारे लिए दया की प्रार्थना करते हैं) ताकि वह तुम्हें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाये। और अल्लाह (तआला) मुसलमानों पर अत्यन्त दयालु है।

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚ

(४४) जिस दिन ये अल्लाह (तआला) से मिलेंगे उनका स्वागत सलाम से होगा,[2] उनके

हारिसा ही कहा जाता था। इसके अतिरिक्त आदरणीया ख़दीजा (رضي الله عنها) से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तीन पुत्र क़ासिम, ताहिर तथा तैयब हुए तथा एक इब्राहीम मारिया क़िब्तिया के गर्भ से हुआ। परन्तु ये सभी बाल्यावस्था में ही मर गये, उनमें से कोई भी पूर्ण व्यस्क आयु को नहीं पहुँचा। इस आधार पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अपनी संतान में कोई भी पुरूष नहीं रहा जिसके आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पिता हों। (इब्ने कसीर)

[1] خَاتَمٌ अरबी भाषा में मोहर (मुद्रा) को कहते हैं तथा मोहर अन्तिम क्रिया को कहा जाता है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नुबूअत एवं रिसालत का अन्त हो गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात जो भी नबूअत अथवा रिसालत का दावा करेगा वह झूठा तथा दज्जाल होगा। हदीसों में इस विषय को विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है तथा इस पर सम्पूर्ण सम्प्रदाय सहमत है। क़ियामत के निकट आदरणीय ईसा धरती पर आयेंगे जो सहीह तथा निरन्तर कथन से सिद्ध है। वह नबी के रूप में नहीं आयेंगे बल्कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायी बनकर आयेंगे। इसलिए उनका धरती पर आना नबूअत के अन्त के विरूद्ध नहीं है।

[2] अर्थात स्वर्ग में फ़रिश्ते ईमानवालों को अथवा ईमानवाले एक-दूसरे को सलाम करेंगे।

The Ummah Technology Mission

وَاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ﴿٤٤﴾

लिए अल्लाह (तआला) ने सम्मानित बदला तैयार कर रखा है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٤٥﴾

(४५) हे नबी ! वास्तव में हमने ही आपको (रसूल) साक्षी, शुभसूचक तथा सचेत करने वाला बनाकर भेजा है।[1]

وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ﴿٤٦﴾

(४६) तथा अल्लाह के आदेश से उसकी ओर बुलाने वाला तथा प्रकाशमान दीप।[2]

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ﴿٤٧﴾

(४७) तथा आप ईमानवालों को शुभसूचना सुना दीजिए कि उनके लिए अल्लाह (तआला) की ओर से बहुत बड़ा अनुग्रह है।

وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٤٨﴾

(४८) तथा काफ़िरों एवं मुनाफ़िकों का कहना न मानिए ! तथा जो दुख (उनकी ओर से) पहुँचे उसकी चिन्ता न कीजिए, अल्लाह पर भरोसा रखिये, अल्लाह काम बनाने के लिए पर्याप्त है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا

(४९) हे मुसलमानो ! जब तुम मुसलमान महिलाओं से विवाह करो फिर उन्हें हाथ लगाने

---

[1]कुछ लोग شـــاهدٌ (शाहिद) का अर्थ साक्षात विद्यमान करते हैं जो क़ुरआन के अर्थ में परिवर्तन है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने समुदाय की गवाही देंगे, उनकी भी जो आप पर ईमान लाये तथा उनकी भी जो आपको झुठलाते रहे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईमानवालों को उनके वज़ू के अंगों से पहचान लेंगे जो चमकते होंगे। इसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अन्य नबियों (सन्देष्टाओं) की गवाही देंगे कि उन्होंने अपने-अपने समुदाय को अल्लाह का उपदेश पहुँचा दिया था तथा यह गवाही अल्लाह के प्रदान किये हुए निश्चित ज्ञान के आधार पर होगी इसलिए नहीं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समस्त सन्देष्टाओं को अपनी दृष्टि से देखते रहे हैं। यह विश्वास तो क़ुरआन के सूत्रों के विरूद्ध है।

[2]जिस प्रकार दीप से अंधकार दूर हो जाता है, उसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा कुफ़्र तथा शिर्क (मूर्तिपूजा) के अंधकार दूर हुए। इसके अतिरिक्त इस दिव्य दीप से प्रकाश प्राप्त करके जो सम्मान व आदर प्राप्त करना चाहे कर सकता है, इसलिए कि यह दीप क़ियामत तक प्रकाशित है।

The Ummah Technology Mission

إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمَسُّوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّونَهَا ۚ فَمَتِّعُوهُنَّ وَسَرِّحُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ﴿٤٩﴾

से पूर्व तलाक़ दे दो तो उन पर तुम्हारा कोई (अधिकार) इद्दत (तलाक़ के पश्चात निर्धारित समय तक की प्रतिबन्धित अवधि) का नहीं जिसकी तुम गणना करो।[1] तो तुम उन्हें कुछ न कुछ दे दो।[2] तथा भली-भाँति उन्हें विदा कर दो।[3]

يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّآ أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ

(५०) हे नबी! हमने तेरे लिए तेरी वे पत्नियाँ उचित (वैध) कर दी हैं, जिन्हें तू उनकी महर

---

[1]विवाह के पश्चात जिन स्त्रियों से सहवास किया जा चुका हो और वह अभी युवती हो, ऐसी स्त्रियों को यदि तलाक़ मिल जाये तो उनकी "इद्दत" तीन मासिक धर्म है। (*अल-बकर:*-२२८) यहाँ उन स्त्रियों का नियम बताया जा रहा है जिनका विवाह हुआ हो किन्तु पति-पत्नी के मध्य सहवास सम्बन्ध नहीं हुआ उनको यदि तलाक़ मिल जाये तो कोई इद्दत नहीं है। अर्थात ऐसी बिना संभोग तलाक़ प्राप्त स्त्री बिना इद्दत गुज़ारे तुरन्त कहीं विवाह करना चाहे तो कर सकती है। हाँ, यदि सहवास से पहले पति का निधन हो जाये तो फिर उसे चार महीने दस दिन इद्दत गुज़ारनी पड़ेगी। (फ़तहुल क़दीर, इब्ने कसीर) स्पर्श करना अथवा हाथ लगाना इंगित है सहवास (संभोग) से, निकाह का विशेष शब्द सहवास तथा विवाह के बंधन दोनों के लिए प्रयोग होता है। यहाँ विवाह के अर्थ में है। इसी आयत से तर्क निकालते हुए यह भी कहा गया है कि विवाह से पहले तलाक़ (सम्बन्ध-विच्छेद) नहीं क्योंकि यहाँ विवाह के पश्चात तलाक़ की चर्चा है। अत: जो धर्मविद (फ़ुकहा) यह कहते हैं कि कोई यह कहे कि यदि मैंने अमुक स्त्री से विवाह किया तो उसे तलाक़, तो उनके मत के अनुसार उस स्त्री से विवाह होते ही तलाक़ हो जायेगी ऐसे ही कुछ जो यह कहते हैं कि यदि वह यह कहे कि मैंने किसी भी स्त्री से विवाह किया तो उसको तलाक़, तो जिस स्त्री से भी विवाह करेगा तलाक़ (विवाह-विच्छेद) हो जायेगा। यह बात सही नहीं है। हदीस में भी साफ है «لَا طَلَاقَ قَبْلَ نِكَاحٍ» (इब्ने माजा) «لَا طَلَاقَ لابن آدَمَ فِيمَا لَا يَمْلِكُ» (अबू दाऊद बाबुन फ़ित्तलाक़े क़बलन निकाहे, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा एवं मुसनद अहमद २\१८९), इससे स्पष्ट है कि विवाह से पहले विवाह-विच्छेद (तलाक़) एक अनर्थ कर्म है जिसका धर्म-विधान में कोई औचित्य नहीं।

[2]यह (मुतआ), यदि महर (स्त्रीधन) निर्धारित हो तो आधी महर है अन्यथा शक्ति के अनुसार कुछ दे दिया जाये।

[3]अर्थात उन्हें आदर व सम्मान से बिना कोई दुख पहुँचाये अलग कर दिया जाये।

The Ummah Technology Mission

الّٰتِيْٓ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ
يَمِيْنُكَ مِمَّآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ
وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ
وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ز
وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا
لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ق
خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ط
قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ
فِيْٓ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ

(स्त्री-दान) दे चुका है [1] तथा वे दासियाँ भी जो अल्लाह (तआला) ने युद्ध में तुझे प्रदान की हैं[2] तथा तेरे चाचा की पुत्रियाँ, फूफी की पुत्रियाँ, तेरे मामा की पुत्रियाँ तथा तेरे मौसी की पुत्रियाँ भी जिन्होंने तेरे साथ हिजरत की हैं,[3] तथा वह ईमानवाली महिला जो स्वयं को नबी को दान कर दे यह उस अवस्था में कि स्वयं यदि नबी भी उससे विवाह करना चाहे, [4] यह विशेष रूप से तेरे लिए ही है तथा अन्य मुसलमानों के लिए नहीं। [5] हम उसे भली-भाँति

---

[1]कुछ धार्मिक नियमों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को विशेषता प्राप्त थी, जिन्हें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विशेषता कहा जाता है। जैसे ज्ञानियों के एक गुट के मतानुसार रात्रि की नमाज़ (तहज्जुद) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अनिवार्य थी, सदका (दान) अपने लिए लेना निषेध था। इसी प्रकार कुछ विशेषताओं का वर्णन इस स्थान पर किया गया है जिनका सम्बन्ध विवाह से है। १- जिन स्त्रियों को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने महर दिया है, वे वैध हैं चाहे संख्या में वे कितनी ही हों तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीया सफ़िया तथा जुवैरिया का महर उनकी स्वतन्त्रता को माना था। उनके अतिरिक्त नक़द के रूप में सब का महर अदा किया था। केवल उम्मे हबीबा का महर नजाशी ने अपनी ओर से दिया था।

[2]अत: आदरणीया सफ़िया तथा जुवैरिया दासी के रूप में आयीं जिन्हें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वतन्त्र करके विवाह कर लिया तथा रेहाना एवं मारिया क़िब्तिया दासी के रूप में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास रहीं।

[3]इसका अर्थ है जिस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हिजरत की, उसी प्रकार उन्होंने भी मक्के से मदीने हिजरत की, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ किसी भी महिला ने हिजरत नहीं की थी।

[4]अर्थात अपने आप को दान करने वाली महिला, यदि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उससे विवाह करना चाहें तो बिना महर के आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए उसे अपने विवाह में लेना उचित है।

[5]यह अनुमति केवल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए है, अन्य मुसलमानों को अनिवार्य है कि वे महर के अधिकार अदा करें तब विवाह वैध होगा।

The Ummah Technology Mission

لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٥٠

जानते हैं जो हमने उन पर उनकी पत्नियों एवं दासियों के विषय में (आदेश) निर्धारित कर रखे हैं,[1] यह इसलिए कि तुझ पर कोई आपत्ति उत्पन्न न हो।[2] अल्लाह (तआला) अत्यन्त क्षमाशील एवं अत्यन्त दया करने वाला है।

تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيْۤ اِلَيْكَ مَنْ تَشَآءُ ؕ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَاۤ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ

(५१) उनमें से जिसे तू चाहे दूर रख दे तथा जिसे चाहे पास रख ले,[3] तथा यदि तू उनमें से भी किसी को अपने पास बुला ले जिन्हें तूने अलग कर रखा था तो तुझ पर कोई आपत्ति नहीं,[4] इसमें इस बात की अधिक आशा है कि इन (स्त्रियों) की आँखें ठंडी रहें तथा वे दुखी न हों तथा जो कुछ भी तू उन्हें दे दे उससे वे सब प्रसन्न रहें,[5] तुम्हारे दिलों में

---

[1]अर्थात विवाह के जो प्रतिबंध एवं अधिकार हैं जो हमने अनिवार्य किये हैं, जैसे चार से अधिक पत्नियाँ एक ही समय में कोई व्यक्ति नहीं रख सकता। विवाह के लिए संरक्षक, गवाह तथा महर आवश्यक है। परन्तु दासियाँ जितनी भी कोई चाहे रख सकता है, किन्तु दासियों का प्रचलन अब समाप्त हो गया।

[2]इसका सम्बन्ध لِكَيْلَا يَكُوْنَ से है अर्थात उक्त समस्त महिलाओं को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए इसलिए उचित किया गया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को संकोच प्रतीत न हो तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी के साथ विवाह में पाप न समझें।

[3]इसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक अन्य विशेषता का वर्णन है। वह यह कि पत्नियों के मध्य क्रम निर्धारित करने का अधिकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दे दिया गया था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिसका क्रम चाहें स्थागित कर दें, अर्थात उसे साथ में रखते हुए उससे सहवास न करें तथा जिससे चाहें यह सम्बन्ध स्थापित रखें।

[4]अर्थात जिन पत्नियों का क्रम स्थगित कर दिया था। यदि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चाहें कि उससे सहवास किया जाये तो यह आज्ञा भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्राप्त थी।

[5]अर्थात क्रम स्थगित होने तथा एक को दूसरी पर प्राथमिकता देने के उपरान्त भी वे प्रसन्न होंगी, दुखी नहीं होंगी तथा जितना कुछ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर

The Ummah Technology Mission

وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ﴿٥١﴾

जो कुछ है उसे अल्लाह (तआला भली-भाँति) जानता है |[1] अल्लाह (तआला) अधिक ज्ञान वाला सहनशील है |

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْۢ بَعْدُ وَلَآ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ

(५२) इसके पश्चात अन्य स्त्रियाँ आपके लिए वैध (हलाल) नहीं तथा न यह (उचित है) कि उन्हें छोड़कर अन्य स्त्रियों से (विवाह करें)

से मिल जाये उस पर संतुष्ट रहेंगी | क्यों ? इसलिए कि उन्हें ज्ञात है कि संदेष्टा यह सब कुछ अल्लाह के आदेश एवं आज्ञानुसार कर रहे हैं तथा ये पवित्र पत्नियाँ अल्लाह के निर्णय पर प्रसन्न एवं सन्तुष्ट हैं | कुछ कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह अनुमति प्राप्त होने के उपरान्त भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसे प्रयोग नहीं किया तथा सिवाय आदरणीया सौदह के (कि उन्होंने अपनी बारी अपनी इच्छा से आदरणीया आयशा को प्रदान कर दिया था) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने समस्त पवित्र पत्नियों के क्रम बराबर-बराबर निर्धारित कर दिये थे | इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अन्तिम समय में पवित्र पत्नियों से आज्ञा लेकर रोग की अवधि आदरणीया आयशा के पास व्यतीत किये | ﴿اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ﴾ का सम्बन्ध आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इसी व्यवहार से है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर क्रम निर्धारण (अन्य लोगों की भाँति) यद्यपि आवश्यक नहीं था इसके उपरान्त भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क्रम विभाजन को अपनाया ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों की आँखें ठंडी हो जायें, तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस सदव्यवहार एवं न्याय से प्रसन्न हो जायें कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस विशेषाधिकार का प्रयोग नहीं किया अपितु उनकी सांत्वना एवं प्रसन्नता का प्रयोजन किया |

[1]अर्थात तुम्हारे हृदय में जो कुछ है उनमें यह बात भी निश्चित रूप से है कि सब पत्नियों का प्रेम दिल में समान नहीं है, क्योंकि दिल पर किसी का अधिकार नहीं है | इसलिए पत्नियों के मध्य क्रम में, पालन-पोषण तथा अन्य जीवन हेतु तथा सुविधाओं में समानता आवश्यक है, जिसका प्रबन्ध मनुष्य कर सकता है | दिलों के झुकाव में समता चूँकि अधिकार ही में नहीं है | इसलिए अल्लाह तआला उस पर पकड़ भी नहीं करेगा यदि हार्दिक प्रेम किसी एक पत्नी से उसके साथ विशेष व्यवहार का कारण न हो | इसीलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे "हे अल्लाह ! यह जो मेरा विभाजन है जो मेरे अधिकार में है, परन्तु जिस पर तेरा अधिकार है मैं उस पर अधिकार नहीं रखता, उसमें मुझे लज्जित न करना |" (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसाई, इब्ने माजा तथा मुसनद अहमद ६\१४४)

The Ummah Technology Mission

اَعۡجَبَكَ حُسۡنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتۡ يَمِيۡنُكَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ رَّقِيۡبًا ﴿۵۲﴾

यद्यपि उनका रूप अच्छा भी लगता हो[1] परन्तु जो तेरी दासियाँ हों, [2] अल्लाह (तआला) प्रत्येक वस्तु का (पूर्ण) रक्षक है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَدۡخُلُوۡا بُيُوۡتَ النَّبِىِّ اِلَّاۤ اَنۡ يُّؤۡذَنَ لَـكُمۡ اِلٰى طَعَامٍ غَيۡرَ نٰظِرِيۡنَ اِنٰٮهُ وَلٰـكِنۡ اِذَا دُعِيۡتُمۡ فَادۡخُلُوۡا فَاِذَا طَعِمۡتُمۡ فَانۡتَشِرُوۡا وَلَا مُسۡتَاۡنِسِيۡنَ لِحَدِيۡثٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكُمۡ كَانَ يُؤۡذِى النَّبِىَّ فَيَسۡتَحۡىٖ مِنۡكُمۡ ۖ وَاللّٰهُ لَا يَسۡتَحۡىٖ مِنَ الۡحَـقِّ ؕ وَاِذَا سَاَلۡتُمُوۡهُنَّ مَتَاعًا فَسۡـَٔلُوۡهُنَّ

(५३) हे मुसलमानो ! जब तक तुम्हें आज्ञा न प्रदान की जाये तुम नबी के घरों में न जाया करो खाने के लिए ऐसे समय में कि खाना पकने की प्रतीक्षा करते रहे, अपितु जब बुलाया जाये तो जाओ तथा जब खा चुको तो निकल खड़े हो, वहीं बातों में लीन न हो जाओ। नबी को तुम्हारे इस व्यवहार से कष्ट होता है। परन्तु वह तुम्हारा आदर कर जाते हैं तथा अल्लाह (तआला) सत्य का वर्णन करने में किसी की चिन्ता नहीं करता। [3] तथा जब

---

[1]अधिकार की आयत के अवतरित होने के पश्चात पवित्र पत्नियों ने सांसारिक सुख-सुविधा के साधनों को त्यागकर कठिनाई से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहना पसन्द किया था। इसका बदला अल्लाह ने यह दिया कि उन पवित्र पत्नियों के अतिरिक्त (जिनकी संख्या उस समय नौ थी) अन्य स्त्रियों के साथ विवाह करने अथवा उनमें से किसी को तलाक़ दे कर उसके स्थान पर किसी अन्य से विवाह करने से रोक दिया। कुछ कहते हैं कि बाद में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह अधिकार दे दिया गया था, परन्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई विवाह नहीं किया। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात दासियाँ रखने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं, कुछ धर्म विशेषज्ञों ने इससे यह भाव निकाला है कि काफ़िर दासी भी रखने की आपको अनुमति थी और कुछ ने ﴿وَلَا تُمۡسِكُوۡا بِعِصَمِ الۡكَوَافِرِ﴾ (*अल-मुम्तहिना*-१०) के अनुसार इसे आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिये उचित (वैध) नहीं समझा (फ़तहुल क़दीर)

[3]इस आयत के अवतरित होने का कारण यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निमन्त्रण पर सहावा केराम उपस्थित हुए, जिनमें से कुछ खाने के पश्चात भी बैठे हुए बातें करते रहे जिससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को विशेष कष्ट हुआ परन्तु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शिष्टाचार एवं व्यवहार के कारण उन्हें जाने के लिए नहीं कहा। (सहीह बुख़ारी व्याख्या सूरतुल अहज़ाब) अत: इस आयत में भोज के शिष्टाचार सिखाये गये कि प्रथम तो तब जाओ जब भोजन तैयार हो जाये, पहले ही से धरना देकर

The Ummah Technology Mission

مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ ؕ ذٰلِكُمْ
اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَقُلُوْبِهِنَّ ؕ وَمَا كَانَ
لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ
وَلَاۤ اَنْ تَنْكِحُوْۤا اَزْوَاجَهٗ
مِنْۢ بَعْدِهٖۤ اَبَدًا ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ
كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ۝٥٣

तुम नबी की पत्नियों से कोई वस्तु माँगो तो पर्दे के पीछे से माँगो।[1] तुम्हारे तथा उनके दिलों के लिए पूर्ण पवित्रता यही है।[2] न तुम्हें उचित है कि तुम अल्लाह के रसूल को कष्ट दो[3] तथा न तुम्हें यह वैध (उचित) है कि आपके पश्चात किसी समय भी आपकी पत्नियों से विवाह करो। (याद रखो) अल्लाह के निकट यह बहुत बड़ा (पाप) है।[4]

न बैठे रहो। द्वितीय भोजन समाप्त करने के तुरन्त बाद घरों को चले जाओ, वहाँ बैठे हुए बातें न करो। भोजन का वर्णन तो अवतरित होने के कारण किया गया है वरन् अर्थ तो यह है कि जब भी तुम्हें बुलाया जाये चाहे खाने के लिए अथवा किसी अन्य कार्य के लिये आज्ञा के बिना घर में प्रवेश न करो।

[1]यह आदेश आदरणीय उमर की इच्छा के अनुरूप अवतरित हुआ। आदरणीय उमर ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ! आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास अच्छे बुरे बहुत से लोग आते हैं, काश आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पवित्र पत्नियों को पर्दे का आदेश दें तो क्या अच्छा हो। इस प्रकार यह आदेश अल्लाह ने अवतरित किया (सहीह बुख़ारी किताबुस्सलात व तफ़सीर सूरः *अल-बक़रः*, मुस्लिम बाबु फ़ज़ाईले उमर बिन ख़त्ताब)

[2]यह पर्दे का रहस्य एवं कारण है कि इससे स्त्री-पुरूष दोनों के दिल संशय एवं शंका से तथा परस्पर उपद्रव में पड़ने से सुरक्षित रहेंगे।

[3]चाहे वह किसी भी रूप में हो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर में बिना आज्ञा प्रवेश करना, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इच्छा के बिना घर में बैठे रहना तथा बिना पर्दा पवित्र पत्नियों से बातचीत करना, ये कार्य भी कष्टदायक हैं, इनसे भी बचो।

[4]यह आदेश उन पवित्र पत्नियों के विषय में है जो मृत्यु के समय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विवाह बन्धन में थीं। फिर भी जिनको आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहवास के पश्चात जीवनकाल में ही तलाक़ दे कर अपने से अलग कर दिया था, वह इसमें सम्मिलित हैं अथवा नहीं ? इसमें दो मत हैं। कुछ उनको भी सम्मिलित मानते हैं तथा कुछ नहीं मानते। परन्तु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऐसी कोई पत्नी ही नहीं थी। इसलिए यह केवल एक अनुमान है। इसके अतिरिक्त तीसरा प्रकार उन स्त्रियों का है जिनसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विवाह हुआ परन्तु सहवास से पूर्व ही

The Ummah Technology Mission

إِن تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٥٤﴾

(५४) यदि तुम किसी वस्तु को प्रकट करो अथवा छिपाये रखो तो अल्लाह प्रत्येक वस्तु का भली-भाँति ज्ञान रखने वाला है।

لَّا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِي آبَائِهِنَّ وَلَا أَبْنَائِهِنَّ وَلَا إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءِ إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءِ أَخَوَاتِهِنَّ وَلَا نِسَائِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ وَاتَّقِينَ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ﴿٥٥﴾

(५५) उन महिलाओं पर कोई पाप नहीं कि वह अपने पिताओं, अपने पुत्रों एवं भाईयों, अपने भतीजों, भाँजों एवं अपनी (मेल-जोल की) महिलाओं तथा स्वामित्व के अधीनस्थ (दासी, दास) के सामने हों।[1] (महिलाओ !) अल्लाह से डरती रहो। अल्लाह तआला नि:संदेह प्रत्येक वस्तु पर गवाह है।[2]

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٥٦﴾

(५६) अल्लाह (तआला) तथा उसके फ़रिश्ते इस नबी पर दरूद भेजते हैं। हे ईमानवालो ! तुम (भी) इन पर दरूद भेजो तथा अधिक सलाम (भी) भेजते रहा करो।[3]

उनको आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तलाक़ दे दी। उनसे अन्य लोगों का विवाह करने में कोई मतभेद ज्ञात नहीं है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[1]जब महिलाओं के लिए पर्दे का आदेश अवतरित हुआ, तो फिर घर में उपस्थित निकट अथवा हर समय आने-जाने वाले सम्बन्धियों के विषय में प्रश्न हुआ कि उनसे पर्दा किया जाये अथवा नहीं। इस आयत में उन सम्बन्धियों का वर्णन है जिनसे पर्दे की आवश्यकता नहीं है। इसका विस्तृत वर्णन सूरः नूर की आयत ३१﴿وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ﴾ में भी गुज़र चुका है, उसे देख लीजिए।

[2]इस स्थान पर महिलाओं को अल्लाह के भय का आदेश देकर यह स्पष्ट कर दिया कि यदि दिलों में अल्लाह का भय होगा तो पर्दे का जो मूल उद्देश्य हृदय एवं दृष्टि की पवित्रता तथा सम्मान की रक्षा है वह अवश्य तुम्हें प्राप्त होगा, वरन् ऊपरी पर्दों का प्रतिबंध तुम्हें पाप में लीन होने से नहीं बचा सकेगा।

[3]इस आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस पद एवं गरिमा का वर्णन है, जो आकाशों में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्राप्त है तथा वह यह है कि अल्लाह (तआला) फ़रिश्तों में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रशंसा एवं बड़ाई करता और शांति भेजता है तथा फ़रिश्ते भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए उच्च स्थान

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿٥٧﴾

(५७) जो लोग अल्लाह तथा उसके रसूल को कष्ट देते हैं उन पर दुनिया एवं आख़िरत में अल्लाह की धिक्कार है तथा उनके लिए अत्यन्त अपमानित करने वाली यातना है।[1]

की प्रार्थना करते हैं। साथ ही साथ अल्लाह तआला ने धरती वालों को आदेश दिया कि वह भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सलात व सलाम भेजें ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रशंसा में धरती एवं आकाश दोनों लोक सम्मिलित हो जायें। हदीस में है कि सहाबा केराम ने निवेदन किया, हे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! सलाम की विधि तो हम जानते हैं। (अर्थात तहीयात में السّلام عليك أيها النبي पढ़ते हैं) हम लोग दरूद किस प्रकार पढ़ें, इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वह दरूद इब्राहीमी बताया जो नमाज़ में पढ़ा जाता है। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः अहज़ाब) इसके अतिरिक्त हदीस में दरूद के अन्य रूप भी आते हैं, जो पढ़े जा सकते हैं, इसके अतिरिक्त संक्षिप्त में 'सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' भी पढ़ा जा सकता है फिर भी 'अस्सलातो वस्सलामो अलैक या रसूलुल्लाह' पढ़ना इस कारण ठीक नहीं है कि इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सम्बोधन है और ऐसे शब्दों के साथ सामान्य दरूद आप से साबित नहीं। बस केवल तहीयात में साबित है। इसलिए उसी समय उसे पढ़ना चाहिए तथा उसका पढ़ने वाला इस भ्रमपूर्ण विश्वास से पढ़ता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सीधे स्वयं सुनते हैं। यह विश्वास क़ुरआन एवं हदीस के विरूद्ध है, जो पुण्य नहीं, पाप है। हदीसों में दरूद का विशेष महत्व आया है। नमाज़ में इसका पढ़ना आवश्यक अथवा सुन्नत है? ज्ञानियों का बहुमत सुन्नत होने के पक्ष में है तथा इमाम शाफ़ई एवं बहुत से ज्ञानी आवश्यक होने के पक्ष में हैं। परन्तु हदीसों से इसके आवश्यक ही होने की पुष्टि होती है। इसी प्रकार हदीस से यह भी ज्ञात होता है कि जिस प्रकार अन्तिम तशहहुद में दरूद पढ़ना आवश्यक है प्रथम तशहहुद में भी दरूद पढ़ने का वही स्थान है। इसलिए नमाज़ के दोनों तशहहुद में दरूद पढ़ना आवश्यक है।

[1]अल्लाह को कष्ट देने का अर्थ उन समस्त कार्यों का करना है जिसको उसने अप्रिय कहा है, अन्यथा अल्लाह को कष्ट देने का कौन सामर्थ्य रखता है? जैसे मूर्तिपूजक, यहूदी तथा ईसाई आदि अल्लाह के लिए सन्तान सिद्ध करते हैं। अथवा जिस प्रकार हदीस क़ुदसी में है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है, "आदम की संतान मुझे कष्ट देती हैं, युग को गाली देती है जबकि मैं ही युग हूँ, उसके दिन तथा रात्रि का चक्र मेरे ही आदेश से चलता है।" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः अल-जासिया, मुस्लिम किताबुल अलफ़ाज़ मिनल अदब, बाब अन्नही मिन सब्बिद्दहरे) अर्थात यह कहना कि काल या आकाश के इस चक्र ने ऐसा कर दिया यह उचित नहीं, इसलिए कि कार्य अल्लाह के हैं काल अथवा

The Quran Technology Mission

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٨﴾

(५८) तथा जो लोग ईमानवाले पुरूषों एवं ईमानवाली महिलाओं को कष्ट दें बिना किसी अपराध के जो उनसे हुआ हो, वह (अत्यन्त) आक्षेप तथा खुले पाप का बोझ उठाते हैं।[1]

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ يُّعْرَفْنَ

(५९) हे नबी ! अपनी पत्नियों से तथा अपनी पुत्रियों से तथा मुसलमानों की महिलाओं से कह दो कि वह अपने ऊपर अपनी चादरें लटका लिया करें,[2] इससे तुरन्त उनकी

आकाश के नहीं। अल्लाह के रसूल को कष्ट पहुँचाना, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठलाना, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कवि, झूठा, जादूगर आदि कहना है। इसके अतिरिक्त कुछ हदीसों से सहाबा केराम को दुख पहुँचाने तथा उनके अपमान एवं अवहेलना को भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कष्ट बताया है। धिक्कार का अर्थ अल्लाह की दया से दूरी एवं वंचित होना है।

[1]अर्थात उनको बदनाम करने के लिए उन पर आरोप लगाना, उनका अनुचित रूप से निरादर एवं अपमान करना, जैसे कुछ गुमराह लोग सुबह-शाम सहाबा केराम को गालियाँ देते हैं तथा उनसे ऐसी बातें सम्बन्धित करते हैं जिनको उन्होंने किया ही नहीं। इमाम इब्ने कसीर कहते हैं 'वक्र हृदय राफ़ज़ी प्रशंसित लोगों की भर्त्सना करते तथा भ्रष्ट लोगों की प्रशंसा करते हैं।'

[2] جَلَابِيب बहुवचन है جِلْبَاب का जो ऐसी बड़ी चादर को कहते हैं जिससे पूरा शरीर छिप जाये। अपने ऊपर चादर लटकाने से तात्पर्य यह है कि अपने मुख पर इस प्रकार घूँघट निकाला जाये कि जिससे मुख का अधिकतर भाग छिप जाये तथा आँखें झुकाकर चलने पर उसे मार्ग भी दिखायी दे। भारत, पकिस्तान तथा अन्य इस्लामिक देशों में जिस नक़ाब का प्रचलन है यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में नहीं था, फिर तत्पश्चात इसमें वह सादगी नहीं रही जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, सहावा केराम एवं ताबेईन के समय में थी, महिलायें अत्यन्त सादा वस्त्र पहनती थीं, बनाओ-श्रृंगार तथा वस्त्रों के प्रदर्शन का ध्यान नहीं था। इसलिए एक बड़ी चादर से भी पर्दे के उद्देश्य पूरे हो जाते थे। परन्तु बाद में यह सादगी नहीं रही। उसका स्थान शोभा एवं श्रृंगार ने ले लिया तथा महिलाओं में चमकदार वस्त्र तथा आभूषण का प्रदर्शन सामान्य हो गया, चादर से पर्दा करना कठिन हो गया तथा उसके स्थान पर विभिन्न प्रकार के नक़ाबों का चलन हो गया। यद्यपि इससे महिला को कई बार, विशेषरूप से अत्याधिक गर्मी में कुछ परेशानी भी होती है परन्तु यह तनिक सी पीड़ा धार्मिक नियमों

The Ummah Technology Mission

فَلَا يُؤْذَيْنَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٥٩﴾

पहचान हो जाया करेगी फिर न कष्ट पहुँचायी जायेंगी, [1] तथा अल्लाह (तआला) अत्यन्त क्षमा-शील एवं दयालु है।

لَئِن لَّمْ يَنتَهِ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَالْمُرْجِفُونَ

(६०) यदि (अब भी) ये मुनाफ़िक़ (मिथ्याचारी) तथा वे जिनके दिलों में रोग है तथा मदीना के वे वासी जो ग़लत अफ़वाहें उड़ाने वाले हैं, [2]

की माँग के समक्ष कोई महत्व नहीं रखती। फिर भी जो महिलायें नक़ाब के स्थान पर बड़ी चादर का प्रयोग करती हैं तथा पूरे शरीर को ढाँकती तथा मुख पर उचित अर्थों में घूँघट निकालती हैं, वह निश्चित रूप से पर्दे के आदेश का पालन करती हैं, क्योंकि नक़ाब ऐसी अनिवार्य वस्तु नहीं हैं जिसे धार्मिक नियमों ने पर्दे के लिए अनिवार्य किया हो परन्तु आजकल महिलाओं ने चादर को बेपर्दा होने का साधन बना रखा है। पहले नक़ाब के स्थान पर वे चादर ओढ़ना प्रारम्भ करती हैं फिर चादर भी गायब हो जाती है, केवल दोपट्टा रह जाता है। कुछ महिलाओं को इसका भी प्रयोग कठिन प्रतीत होता है। इस परिस्थिति को देखते हुए कहना पड़ता है कि अब नक़ाब का प्रयोग ही उचित है क्योंकि जबसे नक़ाब का स्थान चादर ने ले ली है बेपर्दगी सामान्य रूप से व्याप्त हो गयी है, बल्कि महिलायें अर्धनग्नता पर गर्व करने लगी हैं। इस आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों एवं पुत्रियों तथा सामान्यत: ईमानवाली महिलाओं को घर से निकलते समय पर्दे का आदेश दिया गया है, जिससे यह स्पष्ट है कि पर्दे का आदेश आलिमों की उत्पत्ति नहीं हैं (जैसाकि आज कल कुछ लोग कहते हैं) अथवा उसको विशेष महत्व नहीं देते, बल्कि यह अल्लाह का आदेश है जो क़ुरआन करीम के सूत्रों से सिद्ध है। इससे विमुखता, अस्वीकृति तथा बेपर्दगी की हठ कुफ़्र तक पहुँचा सकता है। दूसरी बात इससे यह ज्ञात हुई कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक पुत्री नहीं थी जैसाकि शियों का विश्वास है बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक से अधिक पुत्रियाँ थीं। जैसाकि क़ुरआन के शब्दों से विदित होता है तथा ये चार थीं, जैसा कि इतिहास तथा संदेष्टा जीवनी एवं हदीस से सिद्ध है।

[1]यह पर्दे के रहस्य तथा उसके लाभ का वर्णन है कि इससे एक सम्मानित तथा सभ्य महिला एवं असभ्य तथा कुकर्मी महिला के मध्य पहचान होगी। पर्दे से ज्ञात होगा कि यह सम्मानित परिवार की महिला है जिससे छेड़छाड़ का किसी को साहस नहीं होगा, इसके विपरीत, बेपर्दा महिलायें असभ्य पुरूषों की दृष्टि का केन्द्र तथा उनकी कामवासना का निशाना बनेंगी।

[2]मुसलमानों का साहस कम करने के लिए मुनाफ़िक अफ़वाहें उड़ाया करते थे कि मुसलमान अमुक क्षेत्र में पराजित हो गये, अथवा शत्रुओं की बड़ी संख्या वाली सेना आक्रामण के लिए आ रही है आदि आदि।

The Ummah Technology Mission

فِي الْمَدِينَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا ﴿٦٠﴾

रूक न जायें तो हम आपको उनके (विनाश) पर लगा देंगे फिर तो वे कुछ ही दिन आपके साथ इस (नगर) में रह सकेंगे।

مَلْعُونِينَ ۖ أَيْنَمَا ثُقِفُوا أُخِذُوا وَقُتِّلُوا تَقْتِيلًا ﴿٦١﴾

(६१) उन पर धिक्कार बरसायी गयी, जहाँ भी मिल जायें पकड़े जायें तथा ख़ूब टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायें।[1]

سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ﴿٦٢﴾

(६२) उनसे पूर्व के लोगों में भी अल्लाह का यही नियम लागू रहा। तथा तू अल्लाह के नियम में कभी भी परिवर्तन नहीं पायेगा।

يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۖ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ﴿٦٣﴾

(६३) लोग आप से क़यामत के विषय में प्रश्न करते हैं। (आप) कह दीजिए कि इसका ज्ञान तो अल्लाह ही को है, आपको क्या पता अति संभव है कि क़यामत अत्यन्त निकट हो।

إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ﴿٦٤﴾

(६४) अल्लाह (तआला) ने काफ़िरों पर धिक्कार भेजी है तथा उनके लिए भड़कती हुई अग्नि तैयार कर रखी है।

خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿٦٥﴾

(६५) जिसमें वे सदैव रहेंगे, वह कोई पक्षधर एवं सहायता करने वाला न पायेंगे।

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَا لَيْتَنَا أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَا ﴿٦٦﴾

(६६) उस दिन उनके मुख आग में उलटे-पलटे जायेंगे। (पश्चाताप तथा खेद से) कहेंगे कि काश हम अल्लाह (तआला) तथा रसूल की आज्ञा पालन करते।

---

[1]यह आदेश नहीं है कि उनको पकड़-पकड़ कर मार डाला जाये अपितु यह शाप है कि वे अपने भ्रष्ट आचरण तथा इन गतिविधियों से न रूके तो उनका अत्यन्त शिक्षाप्रद दुष्परिणाम होगा। कुछ कहते हैं कि यह आदेश है। परन्तु ये द्वयवादी आयत के अवतरित होने के पश्चात रूक गये थे, इसलिए उनके विरूद्ध यह कार्यवाही नहीं की गयी जिसका आदेश इस आयत में दिया गया था। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

وَقَالُوْا رَبَّنَآ اِنَّآ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ﴿٦٧﴾

(६७) तथा वे कहेंगे, हे हमारे प्रभु ! हमने अपने प्रमुखों एवं बड़ों की मानी जिन्होंने हमें सत्य मार्ग से भटका दिया।[1]

رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا ﴿٦٨﴾

(६८) हे हमारे प्रभु ! तू उन्हें दोगुना यातना दे तथा उन पर अत्यन्त बड़ा धिक्कार भेज।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ۭ وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿٦٩﴾

(६९) हे ईमानवालो ! उन लोगों जैसे न बन जाओ जिन्होंने मूसा को कष्ट दिया, तो जो बात उन्होंने कही थी अल्लाह ने उन्हें उससे मुक्त कर दिया,[2] तथा वह अल्लाह के समक्ष सम्मानित थे।

---

[1]अर्थात हमने तेरे संदेष्टाओं तथा धर्म प्रचारकों के बजाय अपने उन बड़ों एवं पूर्वजों का अनुकरण किया, परन्तु आज हमें ज्ञात हुआ कि उन्होंने हमें तेरे संदेष्टाओं से दूर रखकर सीधे मार्ग से भटकाये रखा। पूर्वजों का अनुसरण एवं महानुभावों के अनुकरण आज भी लोगों में भटकावे का कारण है। काश, मुसलमान अल्लाह की आयतों पर विचार करके इन पगडंडियों से निकलें तथा क़ुरआन व हदीस के सीधे मार्ग को अपना लें कि मोक्ष केवल अल्लाह तथा अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण में ही है न कि धर्मगुरूओं तथा बड़ों के अनुसरण में अथवा पूर्वजों की प्राचीन रीति-रिवाजों को अपनाने में।

[2]इसकी व्याख्या हदीस में इस प्रकार आयी है कि आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम अति लज्जाशील थे, अत: अपना शरीर कभी उन्होंने किसी के समक्ष नग्न नहीं किया। इस्राईली वंश के लोग कहने लगे कि शायद मूसा के शरीर पर सफेद दाग़ अथवा अन्य इसी प्रकार का रोग है, इसलिए हर समय वस्त्र पहनकर ढका-छिपा रहता है। एक बार एकान्त में आदरणीय मूसा स्नान करने लगे, कपड़े उतार कर एक पत्थर पर रख दिये। पत्थर (अल्लाह के आदेश से) वस्त्र लेकर भाग खड़ा हुआ। आदरणीय मूसा उसके पीछे-पीछे दौड़े यहाँ तक कि इस्राईलियों की एक सभा में पहुँच गये उन्होंने आदरणीय मूसा को नग्नवस्था में देखा तो उनके समस्त संदेह दूर हो गये। मूसा अत्यन्त सुन्दर, आकर्षक तथा हर प्रकार के दाग़ से शुद्ध थे। इस प्रकार अल्लाह तआला ने चमत्कारिक रूप से पत्थर के द्वारा उनके इस आक्षेप एवं शंका को दूर कर दिया जो इस्राईल की सन्तान की ओर से उन पर लगाया जाता था। (सहीह बुख़ारी किताबुल अम्बिया) आदरणीय मूसा के द्वारा ईमानवालों को समझाया जा रहा है कि तुम हमारे अन्तिम संदेष्टा परम आदरणीय

The Ummah Technology Mission

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿٧٠﴾

(७०) हे ईमानवालो ! अल्लाह (तआला) से डरो तथा सीधी-सीधी (सत्य) बातें किया करो।[1]

يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۭ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧١﴾

(७१) ताकि अल्लाह (तआला) तुम्हारे कार्य सुधार दे तथा तुम्हारे पाप क्षमा कर दे,[2] तथा जो भी अल्लाह तथा उसके रसूल के आदेशों का पालन करेगा उसने बड़ी सफलता प्राप्त कर ली।

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَ الْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا

(७२) हमने अपनी अमानत को आकाशों पर तथा धरती पर एवं पर्वतों पर प्रस्तुत किया (परन्तु) सभी ने उसके उठाने से इंकार कर दिया तथा उससे डर गये, (परन्तु) मनुष्य ने

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस्राईलियों की भाँति कष्ट मत पहुँचाओ तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में ऐसी बात न करो जिसे सुनकर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पीड़ा एवं दुख का संवदेन करें, जैसे एक अवसर पर युद्ध में प्राप्त परिहार के विभाजन के समय एक व्यक्ति ने कहा था कि इसमें न्याय से काम नहीं लिया गया। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक ये शब्द पहुँचे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क्रोध आया, यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुख लाल हो गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मूसा पर अल्लाह की दया हो, उन्हें इससे कहीं अधिक पीड़ा पहुँचायी गयी परन्तु उन्होंने धैर्य रखा।" (बुख़ारी किताबुल अम्बिया, मुस्लिम किताबुज़्ज़कात बाबु ऐताईल मुअल्लाफति क़ुलूबोहुम अलल् इस्लाम)

[1]अर्थात ऐसी बात जिसमें त्रुटि एवं टेढ़ापन हो न धोखा हो, बल्कि सत्य हो। سَدِيْدٌ शब्द تَسْدِيْدُ السَّهم से है, अर्थात जिस प्रकार तीर को सीधा किया जाता है ताकि सही निशाने पर लगे, उसी प्रकार तुम्हारे मुख से निकली हुई बात तथा तुम्हारा व्यवहार एवं आचरण सीधे मार्ग पर आधारित हो, सत्य एवं सत्यता से तनिक भी विचलित न हो।

[2]यह अल्लाह से भय तथा सत्य वचन का परिणाम है कि तुम्हारे कर्मों में सुधार होगा तथा अन्य पुण्यकर्मों से सुशोभित किये जाओगे तथा कुछ कमी अथवा आलस्यता रह जायेगा तो उसे अल्लाह तआला क्षमा कर देगा।

The Ummah Technology Mission

وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ ۖ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٧٢﴾

उसे उठा लिया,[1] वह अत्यन्त अत्याचारी मूर्ख है।[2]

لِّيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٧٣﴾

(७३) (यह इसीलिए) कि अल्लाह (तआला) मिथ्याचारी पुरूषों एवं मिथ्याचारी महिलाओं तथा मूर्तिपूजक पुरूषों एवं मूर्तिपूजक महिलाओं को दण्ड दे तथा ईमान वाले पुरूष एवं ईमानवाली महिलाओं की क्षमा-याचना स्वीकार कर ले,[3]

---

[1]जब अल्लाह तआला ने आज्ञाकारियों के प्रतिफल एवं प्रत्युपकार तथा अवज्ञाकारियों के लिए दण्ड एवं यातना का वर्णन कर दिया तो अब धार्मिक आदेश तथा उसकी कठिनाई की चर्चा कर रहा है। अमानत से वह धार्मिक नियम तथा अनिवार्य तथा आवश्यक कर्म तात्पर्य हैं जिनके करने पर पुण्य तथा न करने और विमुखता पर यातना होगी। जब यह धार्मिक भार आकाश तथा धरती एवं पर्वतों पर डाले गये तो वे उन्हें उठाने से भयभीत हो गये, परन्तु जब मनुष्य के समक्ष प्रस्तुत की गयी तो वह अल्लाह के आज्ञापालन (अमानत) के बदले एवं प्रतिफल तथा महत्व को देखकर इस भार को उठाने के लिए तैयार हो गया। धर्म विधान को अमानत कह कर इस ओर संकेत किया गया कि उनकी अदायगी इन्सानों पर उसी प्रकार अनिवार्य है जिस प्रकार अमानत की अदायेगी अनिवार्य होती है। प्रस्तुत करने का अर्थ क्या है ? तथा आकाश, धरती एवं पर्वतों ने इसका उत्तर किस प्रकार दिया तथा मनुष्य ने उसे किस समय स्वीकार किया ? इसका पूर्ण वृतान्त न हम जान सकते हैं न हम उसे वर्णन कर सकते हैं। हमें यह पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि अल्लाह ने अपनी प्रत्येक सृष्टि में एक विशेष प्रकार का संवेदन एवं प्रबोध रखा है यद्यपि हम इस वास्तविकता से परिचित नहीं हैं परन्तु अल्लाह तआला तो उसको समझने का सामर्थ्य रखता है। उसने अवश्य इस अमानत को उनके समक्ष प्रस्तुत किया होगा जिसे स्वीकार करने से उन्होंने इंकार कर दिया। यह इंकार उन्होंने उद्दण्डता तथा विद्रोह के विचार से नहीं किया अपितु उसमें यह भय संचित था कि यदि इस अमानत की माँगों को पूरे न कर सके तो हमें कठोर दंड भोगना पड़ेगा। मनुष्य चूँकि उतावला है, उसने यातना एवं दण्ड के पक्ष पर अधिक विचार नहीं किया तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने की अभिलाषा में इस दायित्व को स्वीकार कर लिया।

[2]अर्थात इस भार को उठाकर उसने अपने ऊपर अत्याचार का कार्य तथा उसकी माँगों से विमुखता अथवा उसके मूल्य एवं सम्मान से बे परवाई करके अज्ञानता का प्रदर्शन किया।

[3]इसका सम्बन्ध حَمَلَهَا से है अर्थात मनुष्य को इस अमानत का ज़िम्मेदार बनाने का उद्देश्य यह है कि द्वयवादियों तथा मूर्तिपूजकों का द्वयवाद एवं मिश्रणवाद तथा ईमानवालों

The Ummah Technology Mission

तथा अल्लाह तआला अत्यन्त क्षमाशील एवं दयालु है।

सूरतु सबा-३४

سُوْرَةُ سَبَإٍ

सूरः सबा मक्का में अवतरित हुई इसमें चौवन आयतें एवं छः रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْاٰخِرَةِ ۭ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝١

(१) समस्त प्रशंसायें अल्लाह ही के लिए योग्य हैं जिसके (स्वामित्व में) वह सब कुछ है जो आकाशों तथा धरती में है [1] तथा आख़िरत में भी प्रशंसा उसी के लिये है, [2] वह (अत्यन्त) हिक्मत वाला एवं (पूर्ण) सूचना रखने वाला है।

يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاۗءِ وَمَا

(२) जो धरती में जाये[3] तथा जो उससे निकले, जो आकाश से उतरे[4] तथा जो चढ़कर उसमें

का ईमान प्रत्यक्ष हो जाये तथा फिर उसके अनुसार उन्हें प्रत्युपकार एवं दण्ड प्रदान किया जाये।

[1]अर्थात उसी के स्वामित्व एवं अधिकार में हैं, उसी की इच्छा तथा निर्णय उसमें लागू होता है। इन्सान को जो भी वरदान प्राप्त होता है उसी की रचना एवं उसी का उपकार है। इसीलिये आकाश तथा धरती की प्रत्येक वस्तु की प्रशंसा वास्तव में उन उपकारों पर अल्लाह ही की प्रशंसा है जिनसे उसने अपनी सृष्टि को सम्मानित किया है।

[2]यह प्रशंसा प्रलय के दिन ईमानवाले करेंगे, जैसे ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰىنَا لِهٰذَا﴾ (अल-आराफ़-४३) ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ﴾ (अज़-ज़ुमर-७४) ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ﴾ (फ़ातिर-३४) इत्यादि आयतें। फिर भी संसार में अल्लाह की स्तुति एवं प्रशंसा इबादत (वंदना) है जिसका उत्तरदायी मानव को बनाया गया है, तथा आख़िरत (परलोक) में यह ईमानवालों का आत्मिक आहार होगा, जिससे उन्हें स्वाद एवं स्फुर्ति का आभास हुआ करेगा, (फ़तहुल क़दीर)

[3]जैसे वर्षा, कोष, निधि आदि।

[4]वर्षा, ओले, गरज, विद्युत तथा ईश्वरीय विभूतियाँ आदि, अपितु फ़रिश्तों एवं आकाशीय ग्रन्थों का अवतरण।

The Ummah Technology Mission

يَعْرُجُ فِيهَا ۖ وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ ﴿٢﴾

जाये[1] वह सबसे सूचित है। तथा वह दयालु अत्यन्त क्षमा करने वाला है।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ ۖ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ ۙ عَالِمِ الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِن ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٣﴾

(३) तथा काफ़िर कहते हैं कि हम पर क़यामत व्याप्त नहीं होगी। आप कह दीजिए कि मुझे मेरे प्रभु की सौगन्ध जो परोक्ष का जानने वाला है कि वह नि:संदेह तुम पर व्याप्त होगी,[2] अल्लाह (तआला) से एक कण के समान की वस्तु भी गुप्त नहीं[3] न आकाशों में तथा न धरती में बल्कि उससे भी छोटी तथा बड़ी सभी वस्तु खुली किताब में अंकित है।[4]

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٤﴾

(४) ताकि वह ईमानवालों तथा सत्कर्मियों को अच्छा प्रतिकार प्रदान करे,[5] यही लोग हैं जिनके लिए मोक्ष तथा सम्मानित जीविका है।

وَالَّذِينَ سَعَوْ فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ

(५) तथा हमारी आयतों को नीचा दिखाने में जिन्होंने प्रयत्न किये हैं[6] ये वे लोग हैं जिनके

---

[1]फ़रिश्तों तथा भक्तों का कर्म।

[2]शपथ भी ली तथा शब्द भी बल का और इस के अतिरिक्त बल का लाम अक्षर, अर्थात क़यामत क्यूँ नहीं आयेगी ? वह तो किसी भी रूप में आनी है।

[3]अनुपस्थित एवं गुप्त तथा दूर नहीं अर्थात जब आकाश तथा धरती का कोई कण उससे अनुपस्थित तथा छिपी नहीं तो फिर विभिन्न अंशों को जो धूल में मिल गये होंगे, एकत्र करके पुन: तुम्हें जीवित कर देना क्यों असम्भव होगा ?

[4]अर्थात लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तक) में विद्यमान एवं अंकित है।

[5]यह प्रलय होने का कारण है। अर्थात क़यामत इसलिए व्यापत होगी तथा सभी इन्सानों को अल्लाह इसलिये पुन: जीवित करेगा कि उनके पुण्यों का प्रतिफल प्रदान करे, क्योंकि प्रतिकार ही के लिए उसने यह दिन रखा है यदि यह प्रतिकार दिवस न हो तो फिर इसका अर्थ यह होगा कि सत्कर्मी तथा पापी समान हैं, और यह बात न्याय के अत्यन्त विपरीत है और भक्तों विशेष रूप से पुनीतों पर अत्याचार होगा। وما ربك بظلام للعبيد

[6]अर्थात हमारी आयतों का खंडन किया तथा मिथ्या कहा जो हमने अपने संदेष्टाओं पर अवतरित कीं। مُعَاجِزِينَ यह समझते हुए कि हम उसे पकड़ने से विवश होंगे, क्योंकि

The Ummah Technology Mission

لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رِّجْزٍ أَلِيمٌ ۝٥

लिए अत्यन्त बुरे प्रकार की कठोर यातना है।

وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَيَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ۝٦

(६) तथा जिन्हें ज्ञान है वे देख लेंगे कि जो कुछ आप की ओर आपके प्रभु की ओर से अवतरित हुआ है वह (साक्षात) सत्य है,[1] तथा अल्लाह प्रभावशाली प्रशंसा वाले के मार्ग का मार्गदर्शन करता है।[2]

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ يُنَبِّئُكُمْ إِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝٧

(७) तथा काफ़िरों ने कहा,[3] आओ, हम तुम्हें एक ऐसा व्यक्ति बतायें[4] जो तुम्हें यह सूचनायें पहुँचा रहा है[5] कि जब तुम पूर्णरूप से कण-कण हो जाओगे तो तुम फिर से एक नये जीवन में आओगे।[6]

उनका विश्वास था कि मरने के पश्चात जब हम मिट्टी में मिल जायेंगे तो हम किस प्रकार पुनः जीवित होकर किसी के सामने अपने किये धरे के उत्तरदायी होंगे ? उनका यह विचार मानों इस बात की घोषणा थी कि अल्लाह हमें पकड़ने पर सामर्थ्यवान ही नहीं होगा, इसलिए प्रलय का भय हमें क्यों हो ?

[1]यहाँ देखने से तात्पर्य दिल से देखना अर्थात निश्चित ज्ञान है, मात्र आँख से देखना नहीं ज्ञानियों से तात्पर्य सहाबा (नबी के सहचर) अथवा दूसरे ग्रन्थ वाले ईमानदार अथवा सभी मुसलमान हैं, अर्थात ईमानवाले इस बात को जानते एवं इस पर विश्वास करते हैं।

[2]यह "हक़" (सत्य) का संयोजक है, अर्थात वह यह भी जानते हैं कि यह पवित्र क़ुरआन उस मार्ग की ओर मार्ग दर्शाता है जो उस अल्लाह का मार्ग है जो विश्व में सब पर प्रभावशाली तथा अपनी सृष्टि में प्रशंसनीय है तथा वह मार्ग क्या है ? एकेश्वरवाद (अद्वैत) का मार्ग जिसकी ओर सभी ईशदूत अपने अपने समुदाय को बुलाते रहे।

[3]यह ईमानवालों के प्रति आख़िरत (परलोक) के इंकार करने वालों का कथन है जो उन्होंने परस्पर एक-दूसरे से कहा।

[4]इससे तात्पर्य आदरणीय मोहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं जो उनकी ओर अल्लाह के नबी बनकर आये।

[5]अर्थात विचित्र सूचना दुर्बोध सूचना।

[6]अर्थात मरने के पश्चात जब तुम मिट्टी में मिलकर कण-कण हो जाओगे, तुम्हारा प्रत्यक्ष अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। तुम्हें समाधियों (क़ब्रों) से पुनः जीवित किया जायेगा

The Ummah Technology Mission

أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَم بِهِ جِنَّةٌ ۗ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ الْبَعِيدِ ﴿٨﴾

(८) (हम नहीं कहते) कि स्वयं उसने ही अल्लाह पर झूठ गढ़ लिया है अथवा उसे उन्माद हो गया है [1] बल्कि (वास्तविकता यह है) कि आख़िरत पर विश्वास न रखने वाले ही यातना में तथा दूर के भटकावे में हैं।[2]

أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُم مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِن نَّشَأْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَاءِ ۚ

(९) तो क्या वे अपने आगे-पीछे आकाश तथा धरती को देख नहीं रहे हैं ?[3] यदि हम चाहें तो उन्हें धरती में धँसा दें अथवा उन पर आकाश के टुकड़े गिरा दें,[4] निश्चय

तथा पुनः वही रूप-रेखा तुम्हें प्रदान कर दी जायेगी जिसमें तुम पहले थे। यह वार्तालाप उन्होंने परस्पर उपहास में किया।

[1]अर्थात दो बातों में से एक तो अवश्य है कि यह मिथ्यालाप कर रहा है तथा अल्लाह की ओर से प्रकाशना (वह्यी) एवं दूतत्व (रिसालत) का दावा, यह उसका अल्लाह पर मिथ्यारोपण है, अथवा इसकी मत मारी गई है तथा उन्माद में ऐसी बातें कर रहा है जो अनुचित हैं।

[2]अल्लाह ने फ़रमाया, बात ऐसी नहीं जिस प्रकार यह सोच रहे हैं, अपितु तथ्य यह है कि समझ-बूझ एवं वास्तविकता के ज्ञान से यही लोग विवश हैं जिसके कारण यह परलोक पर विश्वास (ईमान) लाने के बजाये उसे नकार रहे हैं, जिसका परिणाम परलोक की स्थाई यातना है तथा यह आज ऐसी गुमराही में लिप्त हैं जो सत्य से अति दूर है।

[3]अर्थात इस पर विचार नहीं करते ? अल्लाह उनको डाँटते फटकारते हुए कह रहा है कि आख़िरत का यह इंकार आकाश तथा धरती की रचना में चिन्तन न करने का परिणाम है, अन्यथा जो शक्ति आकाश जैसी वस्तु, जिसकी ऊँचाई तथा विस्तार अवर्णनीय है तथा धरती जैसी वस्तु जिसकी लम्बाई एवं चौड़ाई दुर्बोध है, पैदा कर सकता है उसके लिए अपनी ही रचित वस्तु की पुनः रचना तथा उसे पुनः उसी स्थिति में लाना जिसमें पहले थी, क्योंकर असम्भव है ?

[4]अर्थात यह आयत दो बातों पर आधारित है, एक अल्लाह के पूर्ण सामर्थ्य की चर्चा पर जिसका अभी वर्णन हुआ। दूसरी, कुफ्फ़ार के लिए चेतावनी तथा धमकी पर कि जो अल्लाह आकाश एवं धरती की रचना पर इस प्रकार सामर्थ्यवान है कि उन पर तथा उनके बीच प्रत्येक वस्तु पर उसका अधिकार एवं प्रभुत्व है, वह जब चाहे उन पर अपना प्रकोप भेजकर उनको नष्ट कर सकता है। धरती में धँसाकर भी जैसे क़ारून को धँसाया अथवा आकाश के खन्ड गिराकर, जैसे ऐका वालों को नाश कर दिया गया।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ﴿٩﴾

इसमें पूरा प्रमाण है प्रत्येक उस भक्त के लिए जो (दिल से) ध्यानमग्न हो।

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُودَ مِنَّا فَضْلًا ۖ يَا جِبَالُ أَوِّبِي مَعَهُ وَالطَّيْرَ ۚ وَأَلَنَّا لَهُ الْحَدِيدَ ﴿١٠﴾

(१०) तथा हमने दाऊद पर अपनी कृपा की,[1] हे पर्वतो, उसके साथ सरूचि महिमागान किया करो तथा पक्षियों को भी[2] (यही आदेश है) तथा हमने उसके लिए लोहा को कोमल कर दिया।[3]

أَنِ اعْمَلْ سَابِغَاتٍ وَقَدِّرْ فِي السَّرْدِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۖ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١﴾

(११) कि तू पूरी-पूरी कवचें बना[4] तथा जोड़ों में अनुमित रख[5] तथा तुम सब पुण्य के कार्य करो,[6] (विश्वास करो) मैं तुम्हारे कर्म देख रहा हूँ।

---

[1]अर्थात नबूअत के साथ राज्य एवं अन्य कई विशेष गुणों से सम्मानित किया।

[2]उनमें एक मधुर स्वर का वरदान था, जब वह अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करते थे तो पत्थर के ठोस पर्वत भी तस्बीह पढ़ने (अल्लाह की पवित्रता गान) में लग जाते थे, उड़ते पक्षी रूक जाते तथा गान करने लग जाते أَوِّبِي (अव्वेबी) का अर्थ है पवित्रता गान दुहराओ, अर्थात हमने पर्वतों एवं पक्षियों को कहा, अत: यह भी दाऊद के साथ पवित्रता गान (तस्बीह) में लीन हो जाते والطَّيْرَ का संयोजक يا جبالُ के स्थान पर है, क्योंकि جبالُ वास्तव में कर्म कारक 'अ' अक्षर की मात्रा के साथ लोप है मूल वाक्य इस प्रकार है نادينا الجبال والطير (हमने पर्वतों तथा पक्षियों को पुकारा) अथवा इसका संयोजक فضلاً है, तथा अर्थ यह होंगे कि हमने पक्षियों को उनके आधीन कर दिया। (फ़तहुल क़दीर)

[3]अर्थात लोहे को अग्नि में तपाये तथा हथौड़े से कूटे बिना उसे मोम, गूँधे हुए आटे, तथा गीली मिट्टी के समान जैसे चाहते मोड़ लेते, बट लेते तथा जो चाहते बना लेते।

[4] سابغات लुप्त विशेष्य का विशेषण है अर्थात पूरी लम्बी कवचें जो योद्धा के शरीर को उचित प्रकार से ढाँक लें तथा उसे शत्रुओं के आघात से सुरक्षित रखें।

[5]ताकि छोटी बड़ी न हों, अथवा कड़ी अथवा नरम न हो, अर्थात कड़ियों को जोड़ने में कील इतने सूक्ष्म न हों कि जोड़ हिलते रहें तथा उनमें स्थिरता एवं दृढ़ता न आये और न इतने मोटे हों कि उसे तोड़ ही डालें अथवा कड़ी तंग हो जाये तथा उसे पहना न जा सके यह कवच बनाने के उद्योग के विषय में आदरणीय दाऊद को निर्देश दिये गये।

[6]अर्थात इन वरदानों के बदले में सत्कर्मों का प्रयोजन करो ताकि मेरी व्यवहारिक कृतज्ञता भी व्यक्त होती रहे। इससे विदित हुआ कि जिसको अल्लाह सांसारिक उपकारों

The Ummah Technology Mission

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ؕ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ؕ وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿۱۲﴾

(१२) तथा हमने सुलैमान के लिए वायु को (वश में कर दिया) कि प्रात: का गंतव्य स्थान उसका एक महीने का होता था तथा संध्या का गंतव्य स्थान भी,[1] तथा हमने उनके लिए ताँबे का स्रोत प्रवाहित कर दिया,[2] तथा उसके प्रभु के आदेश से कुछ जिन्नात भी उसके अधीन उसके समक्ष कार्य करते थे, तथा उनमें से जो भी हमारे आदेशों की अवहेलना करे हम उसे भड़कती हुई अग्नि की यातना का स्वाद चखायेंगे।[3]

يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ؕ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ؕ

(१३) जो कुछ सुलैमान चाहते वह (जिन्नात) तैयार कर देते, जैसे दुर्ग, चित्र (स्मारक), तालाब के समान लगन (तगाड़) तथा चूल्हों पर स्थापित सुदृढ़ देंगे (बड़े पतीले)।[4] हे

से सुशोभित करे उसे उसी अनुपात में उसकी कृतज्ञता भी व्यक्त करनी चाहिए तथा कृतज्ञता में मूल वस्तु यही है कि उपकार करने वाले को प्रसन्न रखने का भरपूर प्रयत्न किया जाये अर्थात उसका आज्ञा पालन किया जाये, तथा अवज्ञा से बचा जाये।

[1]अर्थात आदरणीय सुलैमान राज्य के प्रमुखों एवं सेना सहित सिंहासन पर आसीन हो जाते और जिधर आपका आदेश होता वायु उसे इतनी तीव्र गति से ले जाती कि एक महीने की दूरी प्रात: से दोपहर तक तथा इसी प्रकार एक महीने की दूरी दोपहर से रात तक पूरी कर ली जाती। इस प्रकार एक दिन में दो महीनों की यात्रा पूरी हो जाती।

[2]अर्थात हमने जैसे दाऊद के लिए लोहा नर्म कर दिया था आदरणीय सुलैमान के लिए ताँबे का स्रोत प्रवाहित कर दिया ताकि ताँबे की धातु से जो चाहें बनायें।

[3]अधिकतर भाष्यकारों के विचार से यह यातना प्रलय के दिन दी जायेगी परन्तु कुछ के समीप यह सांसारिक दण्ड है। वह कहते हैं कि अल्लाह ने एक फ़रिश्ता नियुक्त कर दिया था जिसके हाथ में अग्नि का सोंटा होता था। जो जिन्न आदरणीय सुलैमान की आदेश से विमुखता करता फ़रिश्ता वह सोंटा उसे मारता जिससे वह जलकर भस्म हो जाता।

[4] مَحَارِيبَ बहुवचन है مِحْرَابٌ का, उच्च स्थान अथवा सुन्दर भवन। अभिप्राय यह है उच्च भवन, भव्य गृह अथवा मस्जिदें तथा पूजा गृह تَمَاثِيل बहुवचन है تِمثال का, अर्थात चित्र यह चित्र निर्जीव वस्तुओं के होते थे। कुछ कहते हैं कि सन्देष्टाओं एवं धर्मात्माओं

The Ummah Technology Mission

وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿١٣﴾

दाऊद की सन्तान ! उसकी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए सत्कर्म करो, मेरे भक्तों में से कृतज्ञ भक्त कम ही होते हैं।

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰى مَوْتِهٖۤ اِلَّا دَآبَّةُ الْاَرْضِ تَاْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِي الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿١٤﴾ؕ

(१४) फिर जब हमने उन पर मरण का आदेश भेज दिया तो उनकी सूचना (जिन्नात को) किसी ने न दी सिवाय घुन के कीड़े के जो उनकी लकड़ी को खा रहा था। तो जब (सुलैमान) गिर पड़े उस समय जिन्नों ने जान लिया कि यदि वे परोक्ष का ज्ञान रखते तो इस अपमान के प्रकोप में न फंसे रहते।[1]

لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ

(१५) सबा के समुदाय के लिए अपनी बस्तियों में (अल्लाह के सामर्थ्य की) निशानी थी,[2]

के चित्र मस्जिदों में बनाये जाते थे ताकि उन्हें देखकर लोग भी इबादत (वंदना) करें। यह अर्थ उस स्थिति में सही है जब माना जाये कि आदरणीय सुलैमान के धर्मविधान में चित्रकारी की अनुमति थी, जो सही नहीं। फिर भी इस्लाम में तो अति कड़ाई के साथ इसको निषेध किया गया है। جِفَانٌ बहुवचन है جَفْنَة का अर्थात लगन جَوَاب बहुवचन है جَابِيَةٌ का, जलाशय, जिसमें जल एकत्र किया जाता है, अर्थात जलाशय जितने बड़े-बड़े लगन, قُدُورٌ देगें, رَاسِيَاتٌ स्थित। कहा जाता है कि यह देगें पर्वत काट कर बनाई जाती थीं जिन्हें इधर-उधर नहीं ले जाया जा सकता था। इसमें एक समय में हजारों व्यक्तियों का खाना पक जाता था। यह सभी कार्य जिन्नात करते थे।

[1]आदरणीय सुलैमान के युग में जिन्नात के संदर्भ में यह प्रसिद्ध हो गया था कि यह परोक्ष की बातें जानते हैं। अल्लाह ने माननीय सुलैमान के निधन द्वारा इस भ्रम की त्रुटि को प्रकट कर दिया।

[2]सबा वही समुदाय है जिस सबा की रानी विख्यात है, जो माननीय सुलैमान के युग में मुसलमान हो गई थी। समुदाय ही के नाम पर देश का नाम भी सबा था, इस समय यह क्षेत्र यमन के नाम से प्रसिद्ध है। यह बड़ा सम्पन्न देश था, यह देश थलीय तथा समुद्री व्यवसाय में भी प्रमुख था तथा कृषि एवं उद्यान में प्रसिद्ध। यह दोनों ही वस्तुयें किसी देश एवं समुदाय की सम्पन्नता का कारण होती हैं। इसी धन-सम्पत्ति के प्रचुरता को यहाँ अल्लाह के सामर्थ्य का लक्षण कहा गया है।

The Ummah Technology Mission

جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّشِمَالٍ ؕ كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَّرَبٌّ غَفُوْرٌ ﴿١٥﴾

उनके दायें-बायें दो बाग़ थे।[1] (हमने उनको आदेश दिया था कि) अपने प्रभु की प्रदान की हुई जीविका को खाओ[2] तथा उसकी कृतज्ञता व्यक्त करो[3] यह स्वच्छ नगर[4] तथा क्षमा करने वाला प्रभु है।[5]

فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّاَثْلٍ وَّشَيْءٍ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ﴿١٦﴾

(१६) परन्तु उन्होंने मुख फेरा तो हमने उन पर तीव्र बाढ़ का (पानी) भेज दिया तथा उनके (हरे-भरे) बाग़ों के बदले दो (ऐसे) बाग़ दिये जो स्वाद में कड़वे-कसेले तथा अधिकतर झाऊ एवं कुछ बेरी के वृक्षों वाले थे।[6]

---

[1]कहते हैं कि नगर के दोनों ओर पर्वत थे जिनसे स्रोतों का जल प्रवाहित होकर नगर में आता था। उनके शासकों ने पर्वतों के बीच पुश्ते बनवाये तथा उनके साथ उद्यान लगा दिये गये जिससे जल की दिशा भी निर्धारित हो गई तथा बाग़ों की सिंचाई का एक प्राकृतिक साधन सुलभ हो गया। इन्हीं बाग़ों को दायें, बायें दो बाग़ कहा गया है। कुछ का विचार है कि جَنَّتَيْنِ से दो बाग़ नहीं अपितु दायें बायें की दो दिशायें अभिप्राय हैं तथा अभिप्राय बाग़ों की अधिकता है कि जिधर आँख उठाकर देखें बाग़, हरियाली एवं ताज़गी ही दिखाई पड़ती थी। (फ़तहुल क़दीर)

[2]यह उनके पैग़म्बरों (संदेष्टाओं) द्वारा कहलवाया गया अथवा अभिप्राय उन उपहारों का वर्णन है जिनसे उन्हें सम्मानित किया गया था।

[3]परोपकारी तथा दयावान का आज्ञापालन करो तथा उसकी अवज्ञा से बचो।

[4]अर्थात बाग़ों की अधिकता एवं फलों की प्रचुरता के कारण यह नगर उत्तम है। कहते हैं कि वातावरण की स्वच्छता के कारण यह नगर मक्खी, मक्षर एवं इस प्रकार के दुखदायी जन्तुओं से भी पवित्र था। والله أعلم

[5]अर्थात यदि तुम पालनहार की कृतज्ञता व्यक्त करते रहोगे तो वह तुम्हारे पाप भी क्षमा कर देगा। इसका भावार्थ यह हुआ कि यदि मनुष्य क्षमा-याचना करते रहें तो फिर पाप सर्वविनाश तथा पुरस्कारों के छिन जाने का कारण भी नहीं बनते अपितु अल्लाह क्षमा से काम लेता है।

[6]अर्थात उन्होंने पर्वतों के बीच पुश्ते तथा बाँध निर्माण करके पानी को जो रोका था और उसे कृषि तथा उद्यान के काम में लाते थे, हमने तीव्र जल पलावन के द्वारा उन

The Ummah Technology Mission

ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ۭ وَهَلْ نُجٰزِيْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ ۝١٧

(१७) हमने उनकी कृतघ्नता का यह बदला उन्हें दिया, हम (ऐसे कड़े) दण्ड बड़े-बड़े कृतघ्नों को ही देते हैं।

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ ۭ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ۝١٨

(१८) तथा हमने उनके तथा उन बस्तियों के मध्य जिनमें हमने विभूति (सुख-सुविधा) प्रदान कर रखी थी कुछ बस्तियाँ अन्य रखी थीं जो मार्ग पर दिखायी देती थीं[1] तथा उनमें चलने के स्थान निर्धारित कर दिये थे,[2] उनमें रातों तथा दिनों में शान्ति-सुरक्षा से चलते-फिरते रहो।[3]

बाँधों तथा पुश्तों को तोड़ डाला तथा हरे एवं फलदार बागों को ऐसे बागों में बदल दिया जिनमें मात्र प्राकृतिक झाड़-झंकार होते हैं, जिनमें प्रथम तो कोई फल लगता ही नहीं और किसी में लगता भी है तो अति कड़वा, कसैला, कटुस्वाद जिन्हें कोई खा ही नहीं सकता। हाँ, कुछ बैरी के वृक्ष थे, जिनमें भी काँटे अधिक तथा बैर कम थे। عَرِمٌ बहुवचन है عَرِمَةٌ का, पुश्ता अथवा बाँध अर्थात इतना तीव्र पानी भेजा जिसने बाँध में दराड़ डाल दिया और पानी नगर में भी आ गया जिससे उनके घर जलमग्न हो गये तथा बाग़ों को भी उजाड़कर नाश कर दिया। यह बाँध "*सद्दे मआरिब*" के नाम से प्रसिद्ध है।

[1]विभूतियों वाली बस्तियों से तात्पर्य शाम (सीरिया) की बस्तियाँ हैं। अर्थात हमने सबा देश (यमन) तथा शाम के मध्य सड़क के किनारे बस्तियाँ आबाद की थीं। कुछ ने ظاهِرة के अर्थ مُتواصِلةٌ परस्पर मिली एवं निरन्तर किये हैं। भाष्यकारों ने इन बस्तियों की संख्या ४ हज़ार ७ सौ बतलायी है। यह उनका व्यवसायिक मार्ग था जो निरन्तर आबाद था, जिसके कारण एक तो उनके खान-पान तथा विश्राम के लिये मार्ग-व्यय साथ लेने की आवश्यकता न थी। दूसरे, निर्जन होने के कारण जो लूट-मार तथा हत्या का भय होता है, वह नहीं होता था।

[2]अर्थात एक आबादी से दूसरी आबादी की दूरी निश्चित एवं ज्ञात थी और उसके हिसाब से वह सरलता से अपनी यात्रा पूरी कर लेते थे। जैसे प्रातः यात्रा आरम्भ करते तो दोपहर तक किसी आबादी एवं गाँव में पहुँच जाते, वहाँ खा पीकर विश्राम करते तथा फिर यात्रा आरम्भ कर देते तो रात को किसी आबादी में जा पहुँचते।

[3]यह प्रत्येक भय से सुरक्षित तथा मार्ग-व्यय के भार से निश्चित होने का वर्णन है कि रात-दिन की जिस घड़ी में तुम यात्रा करना चाहो करो, न जान एवं धन का भय, न मार्ग-व्यय साथ लेने की आवश्यकता।

The Ummah Technology Mission

فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝۱۹

(१९) परन्तु उन्होंने पुनः प्रार्थना की कि हे हमारे प्रभु ! हमारी यात्रायें दूर तक कर दे,[1] और चूँकि स्वयं उन्होंने अपने हाथों अपना बुरा किया इसलिए हमने उन्हें (प्राचीन) कथाओं के रूप में कर दिया[2] तथा उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिये,[3] निःसन्देह प्रत्येक धैर्य एवं कृतज्ञता व्यक्त करने वाले के लिए इस (घटना) में बहुत सी शिक्षायें हैं।

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝۲۰

(२०) तथा शैतान ने उनके विषय में अपना विचार (अनुमान) सत्य कर दिखाया, ये लोग (सब के सब) उसके अनुयायी बन गये अतिरिक्त ईमानवालों के एक गुट के।

وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ۭ وَرَبُّكَ

(२१) तथा शैतान का उन पर कोई दबाव (एवं बल) न था परन्तु इसलिए कि हम उन लोगों को जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं उन लोगों में (उत्तम प्रकार से) प्रकट कर दें

---

[1]अर्थात जिस प्रकार लोग यात्रा की तकलीफों एवं जोखिम तथा ऋतु की उग्रता की चर्चा करते हैं हमारी यात्रा भी उसी प्रकार दूर-दूर कर दे, निरन्तर आबादियों की जगह मध्य से सुनसान निर्जन वनों तथा जंगलों से हमें गुज़रना पड़े, गर्मियों में धूप की तीव्रता तथा सर्दियों में वर्फीली वायु हमें व्याकुल करें तथा मौसम की उग्रता से बचने के लिए हमें मार्ग-व्यय की भी व्यवस्था करनी पड़े। उनकी यह प्रार्थना उसी प्रकार की है जैसे इस्राईलियों ने 'मन्न' तथा 'सलवा' एवं अन्य सुविधाओं के विपरीत दालों, तरकारियों आदि की माँग की थी अथवा पुनः उनकी स्थिति से विदित हो रहा था कि उनकी यह प्रार्थना है।

[2]अर्थात इनको इस तरह उन्मूल किया कि इनकी विनाश की कथा हर ज़ुबान पर हो गयी और बैठकों एवं सभाओं में चर्चा का विषय बन गया।

[3]अर्थात उन्हें विभाजित एवं छिन्न-भिन्न कर दिया, जैसाकि सबा की प्रसिद्ध जातियाँ विभिन्न स्थानों पर जा आबाद हुईं, कोई यसरिब तथा मक्का आ गया कोई सीरिया के क्षेत्रों में चला गया, कोई कहीं, कोई कहीं।

The Ummah Technology Mission

عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٢١﴾

जो उससे शंका में हैं । तथा आपका प्रभु प्रत्येक वस्तु का रक्षक है ।

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ﴿٢٢﴾

(२२) कह दीजिए कि अल्लाह के अतिरिक्त जिन-जिन का तुम्हें भ्रम है (सबको) पुकार लो,[1] न उनमें से किसी को आकाशों तथा धरती में से एक कण का अधिकार है,[2] न उनका उनमें कोई भाग है[3] तथा न उनमें से कोई अल्लाह का सहयोगी है ।[4]

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فُزِّعَ عَنْ

(२३) तथा सिफ़ारिश (की प्रार्थना) भी उसके समक्ष कोई लाभ नहीं देती सिवाय उनके जिनके लिए आज्ञा हो जाये ।[5] यहाँ तक कि

---

[1]अर्थात पूज्य होने का, यहाँ زَعمتم के दो कर्म लुप्त हैं, زَعمتموهم آلهةً अर्थात जिन जिनको तुम पूज्य समझ रहे हो ।

[2]अर्थात न उन्हें भलाई पर कोई अधिकार है न बुराई पर, किसी को लाभ पहुँचाने का सामर्थ्य है न क्षति से बचाने का, आकाश एवं धरती की चर्चा सामान्यता के लिए है, क्योंकि सभी वाह्य वस्तुओं के लिये यही स्थान हैं ।

[3]न उत्पत्ति में, न स्वामित्व में तथा न अधिकार में ।

[4]जो किसी विषय में अल्लाह की सहायता करता हो, अपितु अल्लाह अन्य के साझे के बिना सभी अधिकारों का स्वामी है तथा किसी की सहायता बिना ही सभी काम करता है ।

[5]'जिनको आज्ञा मिल जाये' का अभिप्राय है संदेष्टा तथा फ़रिश्ते आदि, अर्थात यही सिफ़ारिश करेंगे, कोई अन्य नहीं, इसलिए कि किसी और की सिफ़ारिश लाभप्रद न होगी न उन्हें अनुमति ही होगी । दूसरा अभिप्राय है, सिफ़ारिश के पात्र, अर्थात संदेष्टाओं, फ़रिश्तों तथा पुण्यात्माओं की सिफ़ारिश उन्हीं के लिए होंगी जो सिफ़ारिश के पात्र होंगे क्योंकि अल्लाह की ओर से उन्हीं को सिफ़ारिश करने की अनुमति होगी, किसी अन्य के लिए नहीं । (फ़तहुल क़दीर) अभिप्राय यह हुआ कि संदेष्टाओं, फ़रिश्तों तथा सदाचारियों के सिवाय कोई सिफ़ारिश नहीं कर सकेगा, तथा यह भी ईमानवाले पापियों के लिए ही कर सकेंगे, अधर्मी (काफ़िर) मुशरिक (अनेकेश्वरवादी) तथा अल्लाह के विद्रोहियों के लिए नहीं । पवित्र ईशवाणी क़ुरआन ने इन दोनों बिन्दुओं का स्पष्टीकरण दूसरे स्थान पर

The Ummah Technology Mission

قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٢٣﴾

जब उनके दिलों से घबराहट दूर कर दी जाती है तो पूछते हैं तुम्हारे प्रभु ने क्या कहा ? उत्तर देते हैं कि सत्य कहा[1] तथा वह अत्यन्त सर्वोच्च एवं अत्यन्त महान है।

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّاۤ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾

(२४) पूछिये कि तुम्हें आकाशों एवं धरती से जीविका कौन पहुँचाता है ? (स्वयं) उत्तर दीजिए कि अल्लाह (महान)। (सुनो), हम अथवा तुम या तो अवश्य संमार्ग पर हैं अथवा खुली पथभ्रष्टता में है।[2]

قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّاۤ اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْـَٔلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٥﴾

(२५) कह दीजिए कि हमारे किये हुए पापों के विषय में तुमसे कुछ न पूछा जायेगा तथा न तुम्हारे कर्मों की पूछताछ हमसे होगी।

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ؕ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ﴿٢٦﴾

(२६) (उन्हें) सूचित कर दीजिए कि हम सबको हमारा प्रभु एकत्रित करके फिर हममें सत्य निर्णय कर देगा,[3] तथा वह निर्णय करने वाला सब कुछ जानने वाला है।

कर दिया है। ﴿مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ﴾ (अल-बक़रः-२५५) ﴿وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى﴾ (सूरः अम्बिया-२८)

[1]इसके अनेक भाष्य वर्णन किये गये हैं। इब्ने जरीर तथा इब्ने कसीर आदि ने अन्तिम ईशदूत के कथन के प्रकाश में इसकी यह व्याख्या की है कि जब अल्लाह किसी विषय के सम्बन्ध में वहय (प्रकाशना) करता है तो आकाश पर उपस्थित फ़रिश्ते भय एवं डर से काँपने लगते हैं तथा उन पर बेहोशी की सी अवस्था आच्छादित हो जाती है। होश आने पर वह प्रश्न करते हैं तो अर्श उठाने वाले फ़रिश्ते दूसरे फ़रिश्तों को, और वह नीचे वाले फ़रिश्तों को बतलाते हैं तथा इस प्रकार सूचना पहले आकाश के फ़रिश्तों तक पहुँच जाती है। (इब्ने कसीर)

[2]स्पष्ट बात है कि पथभ्रष्ट वही होगा जो ऐसी वस्तुओं को अराध्य समझता है जिनका आकाश तथा धरती से जीविका पहुँचाने में कोई भाग नहीं, न वह वर्षा कर सकते हैं न कुछ उगा सकते हैं। अतः सत्य पर वास्तव में एकेश्वरवादी ही हैं, न कि दोनों।

[3]अर्थात उसके हिसाब से फल देगा, अच्छों को स्वर्ग में और बुरों को नरक में प्रवेश करेगा।

The Ummah Technology Mission

قُلْ أَرُونِيَ الَّذِينَ أَلْحَقْتُم بِهِ شُرَكَاءَ كَلَّا ۚ بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٧﴾

(२७) कह दीजिए कि अच्छा मुझे भी उन्हें दिखा दो जिन्हें तुम अल्लाह का साझीदार बनाकर उसके साथ सम्मिलित कर रहे हो, ऐसा कदापि नहीं,[1] बल्कि वही अल्लाह है प्रभावशाली एवं हिक्मत वाला।

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾

(२८) तथा हमने आपको सभी लोगों के लिए शुभसूचनायें सुनाने वाला तथा सर्तक करने वाला बनाकर भेजा है। परन्तु (यह सत्य है कि) लोगों में अधिकतर अज्ञानी हैं।[2]

---

[1]अर्थात उसके समान कोई नहीं है, न उसका साथी है बल्कि वह हर वस्तु पर प्रभावशाली है और उसके हर बात और कार्य में हिकमत है।

[2]इस आयत में अल्लाह ने एक तो नबी (मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सर्वसामान्य रिसालत का वर्णन किया है कि आप को पूरी मानव जाति का पथ-पदर्शक तथा निर्देशक बनाकर भेजा गया है, दूसरा यह वर्णन किया गया कि आपकी इच्छा एवं प्रयास के बावजूद भी अधिकतर लोग ईमान (आस्था) से वंचित रहेंगे। इन दोनों बातों की व्याख्या और भी अन्य स्थानों पर की है, जैसे आप की रिसालत के विषय में फ़रमाया: ﴿قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا﴾ (*अल-आराफ़*-१५८) ﴿تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَىٰ عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا﴾ (*अल-फ़ुरक़ान*-१) अपने एक कथन में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया : मुझे पाँच चीज़ें ऐसी दी गई हैं जो मुझसे पूर्व किसी नबी को नहीं दी गई, १- महीने की दूरी तक शत्रु के दिल में मेरी धाक बिठाकर मेरी सहायता की गई २- पूरा भूभाग मेरे लिए मस्जिद तथा पवित्र है, जहाँ भी नमाज़ का समय आ जाये मेरे अनुयायी नमाज़ पढ़े ३- लड़ाई में प्राप्त माल मेरे लिए वैध कर दिया गया जो मुझ से पहले किसी के लिए उचित नहीं था ४- मुझे सिफ़ारिश का अधिकार दिया गया, ५- पहले नबी मात्र अपने समुदाय के लिए भेजा जाता था, मुझे सृष्टि के सम्पूर्ण मानवजाति के लिए नबी बनाकर भेजा गया है। (सहीह बुख़ारी किताबुत्तयम्मुम, सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद) एक अन्य हदीस में फ़रमाया بعثت إلى الأحمر و الأسود (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद) أحمر و أسود (लाल, काले) से तात्पर्य कुछ ने जिन्न तथा इन्सान तथा कुछ ने अरबवासी एवं अन्य देशवासी लिये हैं। इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि दोनों ही अर्थ सही हैं, इसी प्रकार बहुसंख्यक की अज्ञानता तथा पथभ्रष्टता का स्पष्टीकरण किया। ﴿وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ﴾ (सूरः *यूसुफ़*-१०३) "आपकी आकांक्षा के उपरान्त अधिकतर लोग ईमान नहीं लायेंगे"

The Ummah Technology Mission

وَيَقُولُونَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾

(२९) तथा पूछते हैं कि वह वादा है कब ? यदि सत्य हो तो बता दो।[1]

قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٠﴾

(३०) उत्तर दीजिए कि वादे का दिन ठीक निर्धारित है जिससे एक क्षण न तुम पीछे हट सकते हो न आगे बढ़ सकते हो।[2]

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖۚ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ ِۨالْقَوْلَ ۚ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَاۤ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣١﴾

(३१) तथा काफ़िरों ने कहा कि हम न तो इस क़ुरआन को मानें न इससे पूर्व की किताबों को,[3] तथा हे देखने वाले, काश कि तू इन अत्याचारियों को उस समय देखता जबकि ये अपने प्रभु के समक्ष खड़े हुए एक-दूसरे पर दोषारोपण कर रहे होंगे,[4] नीची श्रेणी के लोग उच्च श्रेणी के लोगों से कहेंगे[5] कि यदि तुम न होते तो हम ईमान वाले होते।[6]

﴿وَإِن تُطِعْ أَكْثَرَ مَن فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ﴾ (*अल-अनआम*-११६) "यदि आप धरतीवासियों की बहुसंख्या के पीछे चलेंगे तो वह आपको पथभ्रष्ट कर देंगे," जिसका अभिप्राय यही हुआ कि अधिक संख्या पथभ्रष्टों की है।

[1]यह उपहास स्वरूप पूछते थे, क्योंकि इसका होना उनके विचार में दूर एवं असंभव था।

[2]अर्थात अल्लाह ने प्रलय का एक दिन निश्चित कर रखा है जिसका ज्ञान मात्र उसी को है। फिर भी जब वचन दिया गया समय आ जायेगा तो एक क्षण आगे पीछे नहीं होगा। ﴿إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ﴾ (नूह-४)

[3]जैसे धर्मग्रन्थ तौरात, ज़बूर तथा इंजील आदि। कुछ ने इससे तात्पर्य परलोक गृह लिया है। इसमें काफ़िरों के विरोध एवं उपद्रव का वर्णन है कि वह सभी युक्तियों के उपरान्त भी पवित्र क़ुरआन तथा परलोक के प्रति ईमान लाने से भाग रहे हैं।

[4]अर्थात संसार में यह कुफ़्र तथा शिर्क में परस्पर साथी एवं इस नाते परस्पर प्रेमी थे, किन्तु परलोक में परस्पर शत्रु तथा एक-दूसरे को दोष देंगे।

[5]अर्थात संसार में यह लोग जो बिना सोंचे समझे साधारण रीति पर चलते हैं अपने उन नेताओं से कहेंगे जिनके वे संसार में अनुगामी बने रहे।

[6]अर्थात तुम्हीं ने हमें ईशदूतों तथा सत्य के प्रचारकों के अनुगमन से रोके रखा था यदि तुम ऐसा न करते तो हम निश्चय ईमान वाले होते।

The Ummah Technology Mission

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْٓا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾

(३२) ये उच्च लोग उन दुर्बल लोगों को उत्तर देंगे कि क्या तुम्हारे पास मार्गदर्शन आ चुकने के पश्चात हमने तुम्हें उससे रोका था। (नहीं) बल्कि तुम (स्वयं) अपराधी थे।[1]

وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِذْ تَاْمُرُوْنَنَآ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ؕ وَجَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ فِيْٓ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٣﴾

(३३) (तथा इसके उत्तर में) यह दुर्बल लोग उन अहंकारियों से कहेंगे, (नहीं, नहीं) बल्कि दिन-रात छल-कपट से हमें अल्लाह के साथ कुफ़्र करने तथा उसके साथ साझीदार निर्धारित करने का तुम्हारा आदेश देना हमारी बेईमानी का कारण हुआ,[2] तथा यातना को देखते ही सब के सब दिल ही दिल में लज्जित हो रहे होंगे,[3] तथा काफ़िरों की गर्दनों में हम तौक़ डाल देंगे।[4] उन्हें केवल उनके किये हुए कर्मों का बदला दिया जायेगा।[5]

---

[1]अर्थात हमारे पास कौन-सा बल था कि हम तुम्हें सत्य मार्ग से रोकते, तुमने स्वयं उस पर ध्यान नहीं दिया तथा अपने मन के कारण उसे स्वीकार करने से भागते रहे तथा आज अपराधी हमें बना रहे हो, जबकि सब कुछ तुमने अपने मन ही से किया। अत: अपराधी तो तुम स्वयं हो न कि हम।

[2]अर्थात हम अपराधी तो उस समय होते जब अपने मन से पैग़म्बरों का इंकार करते, जबकि यथार्थ यह है कि तुम रात-दिन हमें पथभ्रष्ट करने तथा अल्लाह का इंकार करने तथा उसका साझी बनाने पर तैयार करते रहे जिससे अन्तत: हम तुम्हारे अनुयायी बनकर ईमान (आस्था) से वंचित रहे।

[3]अर्थात परस्पर दोषारोपण तो करेंगे किन्तु दिल में दोनों ही गुट अपने कुफ़्र (अविश्वास) पर पछतायेंगे परन्तु शत्रुओं के अशुभ के भय से व्यक्त नहीं करेंगे।

[4]अर्थात ऐसी जंजीरें जो उनके हाथों को उनकी गर्दनों के साथ बाँधेंगी।

[5]अर्थात दोनों को उनके कर्मों का दण्ड मिलेगा, प्रमुखों को उनके अनुसार तथा उनके अनुगामियों को उनके अनुसार, जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया : ﴿لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ﴾ (अल-आराफ़-३८) अर्थात प्रत्येक को दुगुना दण्ड मिलेगा।

The Ummah Technology Mission

وَمَآ اَرۡسَلۡنَا فِىۡ قَرۡيَةٍ مِّنۡ نَّذِيۡرٍ اِلَّا قَالَ مُتۡرَفُوۡهَآ ۙ اِنَّا بِمَآ اُرۡسِلۡتُمۡ بِهٖ كٰفِرُوۡنَ ﴿۳۴﴾

(३४) तथा हमने तो जिस बस्ती में जो भी सचेत करने वाला भेजा वहाँ के सम्पन्न लोगों ने यही कहा कि जिस वस्तु के साथ तुम भेजे गये हो हम उसके साथ कुफ़्र करने वाले हैं।[1]

وَقَالُوۡا نَحۡنُ اَكۡثَرُ اَمۡوَالًا وَّاَوۡلَادًا ۙ وَّمَا نَحۡنُ بِمُعَذَّبِيۡنَ ﴿۳۵﴾

(३५) तथा कहा कि हम धन तथा सन्तान में अधिक हैं, यह नहीं हो सकता कि हमें यातना दी जाये।[2]

قُلۡ اِنَّ رَبِّىۡ يَبۡسُطُ الرِّزۡقَ لِمَنۡ يَّشَآءُ وَيَقۡدِرُ وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ

(३६) कह दीजिए कि मेरा प्रभु जिसके लिए चाहता है जीविका को विस्तृत कर देता है तथा तंग भी कर देता है,[3] परन्तु अधिकतर

---

[1]यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी जा रही है कि मक्का के धनवान तथा प्रमुख आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर विश्वास नहीं कर रहे हैं तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुख पहुँचा रहे हैं तो यह कोई नई बात नहीं है प्रत्येक युग के सम्पन्न लोगों ने पैग़म्बरों को नकारा ही है तथा प्रत्येक पैग़म्बर पर ईमान लाने वाले सर्वप्रथम समाज के दरिद्र एवं निर्धन वर्ग के लोग ही होते थे। जैसे आदरणीय नूह के समुदाय ने अपने संदेष्टा से कहा, ﴿أَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْأَرْذَلُونَ﴾ "क्या हम तुझ पर ईमान (विश्वास) लायें जबकि तेरे अनुयायी नीच लोग हैं ?" (*अल-शोअरा,१११*) दूसरे संदेष्टाओं से भी उनके समुदायों ने यही कहा, देखिये *सूरह आराफ़-७५ अल-अनआम-५३,१३३* तथा सूरः *बनी इस्राईल-१६* आदि। مُتْرَفُونَ का अर्थ है धनी तथा प्रमुख लोग।

[2]अर्थात जब अल्लाह ने संसार ही में हमें धन, सन्तान के प्राचुर्य से सम्मानित किया है तो प्रलय भी यदि होगी तो हमें यातना नहीं होगी। मानो उन्होंने परलोक को भी संसार पर आँक लिया कि जिस प्रकार इस लोक में काफ़िर तथा ईमानवाले पर अल्लाह की दया हो रही है परलोक में भी इसी प्रकार होगी जबकि परलोक तो प्रतिकार गृह है। वहाँ तो इस लोक में किये गये कर्मों का बदला मिलना है, अच्छे कर्मों का अच्छा, बुरे कर्मों का बुरा, तथा संसार परीक्षा गृह है। यहाँ अल्लाह तआला प्रत्येक को परीक्षार्थ संसारिक सुख-सुविधा प्रदान करता है। अथवा उन्होंने सांसारिक धन, साधन की प्रचुरता को अल्लाह की प्रसन्नता का लक्षण समझा जबकि ऐसा नहीं है। यदि ऐसा होता तो अल्लाह अपने आज्ञाकारी भक्तों को सबसे अधिक धन, संतान प्रदान करता।

[3]इसमें काफ़िरों के भ्रम तथा शंका का निवारण किया जा रहा है कि जीविका का विस्तार तथा संकुचन अल्लाह की प्रसन्नता अथवा अप्रसन्नता का द्योतक नहीं, अपितु इस का सम्बन्ध अल्लाह की हिक्मत एवं इच्छा से है। इसलिए वह धन उसे भी देता है जिसे

The Ummah Technology Mission

لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾

लोग नहीं जानते।

وَمَآ أَمْوَٰلُكُمْ وَلَآ أَوْلَٰدُكُم بِٱلَّتِى تُقَرِّبُكُمْ عِندَنَا زُلْفَىٰٓ إِلَّا مَنْ ءَامَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحًا فَأُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمْ جَزَآءُ ٱلضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوا۟ وَهُمْ فِى ٱلْغُرُفَٰتِ ءَامِنُونَ ﴿٣٧﴾

(३७) तथा तुम्हारे धन एवं सन्तान ऐसे नहीं कि तुम्हें हमारे पास (पदों से) निकट कर दें [1] परन्तु जो ईमान लायें तथा पुण्य के कर्म करें[2] तो उनके लिए उनके कर्मों का दुगुना बदला है[3] तथा वे निर्भय एवं निश्चिन्त होकर उच्च भवनों में रहेंगे।

وَٱلَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِىٓ ءَايَٰتِنَا مُعَٰجِزِينَ أُو۟لَٰٓئِكَ فِى ٱلْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ﴿٣٨﴾

(३८) तथा जो लोग हमारी आयतों को नीचा दिखाने की दौड़-धूप में लगे रहते हैं, यही हैं जो यातना में (पकड़कर) उपस्थित किये जायेंगे।

قُلْ إِنَّ رَبِّى يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦ وَيَقْدِرُ لَهُۥ ۚ وَمَآ أَنفَقْتُم مِّن شَىْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُۥ ۖ

(३९) कह दीजिए कि मेरा प्रभु अपने बन्दों में जिसके लिए चाहे जीविका विस्तृत करता है तथा जिसके लिए चाहे नाप (तंग) कर देता है, [4] तथा तुम जो कुछ भी अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करोगे

पसन्द करता है तथा उसे भी जिसे नापसन्द करता है तथा जिसे चाहता है धनी करता है और जिसे चाहता है दरिद्र रखता है।

[1]अर्थात यह धन इस बात का प्रमाण नहीं कि हमें तुमसे प्रेम है और हमारे दरबार में तुम्हें विशेष स्थान प्राप्त है।

[2]अर्थात हमारा प्रेम तथा निकटता प्राप्त करने का साधन तो मात्र ईमान तथा सत्कर्म है, जैसे हदीस में फ़रमाया गया, "अल्लाह तुम्हारी रूप रेखा तथा तुम्हारे धन-सम्पत्ति नहीं देखता वह तो तुम्हारे दिलों एवं कर्मों को देखता है।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्रे, वाव तहरीमे जुल्मिल मुस्लिम)

[3]अपितु कई-कई गुना, एक पुण्य का बदला कम से कम दस पुण्य, अधिक सात सौ गुना तक अपितु उससे भी अधिक तक।

[4]अत: वह काफ़िर को भी ख़ूब धन देता है, किन्तु किसलिये ? ढील देने के लिए तथा कभी ईमानदार को निर्धन रखता है, किसलिये ? उसके पुण्य एवं प्रतिफल को बढ़ाने के लिए। इसलिए केवल धन की अधिकता उसकी प्रसन्नता का, तथा कमी उसकी अप्रसन्नता का प्रमाण नहीं हैं। यह पुनरावृत्ति मात्र बल देने के लिये है।

The Ummah Technology Mission

وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٣٩﴾

अल्लाह उसका (पूरा-पूरा) बदला देगा [1] तथा वह सर्वोत्तम जीविका प्रदान करने वाला है।[2]

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٤٠﴾

(४०) तथा उन सब को अल्लाह उस दिन एकत्रित करके फ़रिश्तों से पूछेगा कि क्या ये लोग तुम्हारी इबादत करते थे।[3]

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا

(४१) वे कहेंगे कि तू महिमावान है एवं हमारा संरक्षक तो तू है न कि ये।[4] ये लोग

---

[1] إخلاف का अर्थ है, प्रतिकार तथा बदला देना। यह प्रतिफल संसार में भी संभव है तथा आख़िरत (परलोक) में तो निश्चित है। हदीस क़ुदसी में आता है, अल्लाह तआला फ़रमाता है, «أَنْفِقْ أُنْفِقْ عَلَيْكَ» "तू ख़र्च कर मैं तुझ पर ख़र्च करूँगा (अर्थात बदला दूँगा)।" (सहीह बुख़ारी सूरः हूद) दो फ़रिश्ते प्रत्येक दिन घोषणा करते हैं, एक कहता है, «اللَّهُمَّ أَعْطِ مُمْسِكًا تَلَفًا» (हे अल्लाह, न ख़र्च करने वाले के धन को नाश कर दे)। दूसरा कहता है, «اللَّهُمَّ أَعْطِ مُنْفِقًا خَلَفًا» (हे अल्लाह, ख़र्च करने वालों को बदला प्रदान कर)। (अल-बुख़ारी, किताबुज़ ज़कात)

[2] क्योंकि एक व्यक्ति यदि किसी को कुछ देता है तो उसका यह देना अल्लाह की संमति तथा इच्छा एवं उसके भाग लेख से ही है। वास्तव में देने वाला उसकी जीविका प्रदान करने वाला नहीं है जिस प्रकार पिता बच्चों का अथवा राजा अपनी सेना का पोषक (संरक्षक) कहलाता है। जबकि राजा तथा प्रजा, बच्चे तथा बड़े सब को जीविका वास्तव में अल्लाह ही देता है जो सब का रचयिता है। अतः जो भी अल्लाह के दिये माल में से किसी को कुछ देता है तो वह ऐसे माल का प्रयोग करता है जो अल्लाह ही ने दिया है। तो वास्तव में अन्नदाता भी अल्लाह ही हुआ। तथापि यह उसकी विशेष दया एवं उपकार है कि उसके दिये माल में से उसकी प्रसन्नता के अनुसार व्यय (ख़र्च) करने पर वह पुण्य एवं प्रतिफल भी प्रदान करता है।

[3] यह बहुदेववादियों को अपमानित करने के लिए अल्लाह फ़रिश्तों से प्रश्न करेगा, जैसे ईशदूत ईसा के विषय में आता है कि अल्लाह उनसे भी प्रश्न करेगा, "क्या तूने लोगों से कहा था कि मुझे तथा मेरी माँ (मरियम) को अल्लाह के सिवाय अराध्य बना लेना?" (अल-मायदा-११६) आदरणीय ईसा उत्तर देंगे, हे अल्लाह तू पवित्र है, जिसका मुझे अधिकार नहीं था वह बात मैं क्योंकर कह सकता था? जैसे कि सूरः अल-फ़ुरक़ान-१७ में भी वर्णन हुआ, कि क्या यह तुम्हारे कहने पर तुम्हारी वंदना करते थे?

[4] अर्थात फ़रिश्ते भी आदरणीय ईसा की भाँति अल्लाह तआला की पवित्रता का वर्णन

The Ummah Technology Mission

يَعْبُدُونَ الْجِنَّ ۖ أَكْثَرُهُم بِهِم مُّؤْمِنُونَ ﴿٤١﴾

जिन्नों की इबादत करते थे, [1] इनमें से अधिकतर को उन्हीं पर ईमान था।

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَلَا ضَرًّا ۚ وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿٤٢﴾

(४२) तो आज तुममें से कोई (भी) किसी के लिए (भी किसी प्रकार के) लाभ-हानि का स्वामी न होगा।[2] तथा हम अत्याचारियों [3] से कह देंगे कि उस अग्नि की यातना चखो जिसे तुम झुठलाते रहे।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَن يَصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُكُمْ ۚ وَقَالُوا

(४३) तथा जब उनके समक्ष हमारी साफ़-साफ़ आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं कि यह ऐसा व्यक्ति[4] है जो तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों के देवताओं से रोक देना चाहता है (इसके

करके अपनी निर्दोषता प्रकट करेंगे तथा कहेंगे कि हम तो तेरे दास हैं और तू हमारा स्वामी है, हमारा इनसे क्या सम्बन्ध ?

[1]जिन्न से तात्पर्य शैतान हैं, अर्थात यह वस्तुत: शैतानों के पुजारी हैं क्योंकि वही उनको मूर्तिपूजा पर लगाते तथा उन्हें पथभ्रष्ट करते थे, जैसे अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿إِن يَدْعُونَ مِن دُونِهِ إِلَّا إِنَٰثًا وَإِن يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَٰنًا مَّرِيدًا﴾

"अर्थात 'ये तो अल्लाह को छोड़कर केवल स्त्रियों को पुकारते हैं, तथा वास्तव में ये मात्र दुष्ट शैतान को पूजते हैं।" (अन्-निसा-११७)

[2]अर्थात संसार में तुम इस भ्रम में उनकी इबादत करते थे कि यह तुम्हें लाभ पहुँचायेंगे, तुम्हारी सिफ़ारिश करेंगे तथा अल्लाह के दण्ड से तुम्हें मुक्ति दिलवायेंगे, जैसे आज भी पीरों के तथा समाधियों (क़ब्रों) के पुजारियों की दशा है, किन्तु देख लो कि आज यह किसी बात पर समर्थ नहीं हैं।

[3]अत्याचारियों से अभिप्राय अल्लाह के सिवाय अन्य के पुजारी हैं, क्योंकि शिर्क (द्वैत) महा अत्याचार है एवं मुश्रिक (मिश्रणवादी) सब से बड़े अत्याचारी।

[4]व्यक्ति से तात्पर्य अन्तिम ईशदूत आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, बाप, दादा का धर्म उनके निकट सही था, इसलिए उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपराध यह बताया कि यह तुम्हें उन पूज्यों से रोकना चाहता है जिनकी तुम्हारे पिता उपासना करते रहे।

The Ummah Technology Mission

مَا هَٰذَآ إِلَّآ إِفْكٌ مُّفْتَرًى ۚ وَقَالَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ إِنْ هَٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٤٣﴾

अतिरिक्त कोई बात नहीं) तथा कहते हैं कि यह तो गढ़ा हुआ आक्षेप है,[1] तथा सत्य उनके पास आ चुका फिर भी काफ़िर यही कहते रहे कि यह तो खुला हुआ जादू है।[2]

وَمَآ ءَاتَيْنَٰهُم مِّن كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا وَمَآ أَرْسَلْنَآ إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِن نَّذِيرٍ ﴿٤٤﴾

(४४) तथा इन (मक्कावासियों को) न तो हमने किताबें प्रदान कर रखी हैं जिन्हें ये पढ़ते हों तथा न उनके पास आप से पूर्व कोई सतर्क करने वाला आया।[3]

وَكَذَّبَ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوا۟ مِعْشَارَ مَآ ءَاتَيْنَٰهُمْ فَكَذَّبُوا۟ رُسُلِى ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٥﴾

(४५) तथा इनसे पूर्व के लोगों ने भी हमारी बातों को झूठ लाया था तथा उन्हें हमने जो दे रखा था ये तो उसके दसवें भाग को भी नहीं पहुँचे, तो उन्होंने मेरे दूतों को झुठलाया, (फिर देख) कि मेरी यातना की क्या (कठोर) अवस्था हुई।[4]

---

[1]दूसरे هٰذا का संकेत पवित्र ईशवाणी क़ुरआन की ओर है, जिसे उन्होंने गढ़ा हुआ आक्षेप एवं झूठ घोषित किया।

[2]पवित्र क़ुरआन को प्रथम गढ़ा हुआ झूठ कहा और यहाँ प्रत्यक्ष जादू। प्रथम का सम्बन्ध क़ुरआन के भावार्थ एवं अर्थ से है, दूसरे का सम्बन्ध क़ुरआन के चमत्कारिक वाक्यक्रम तथा भाषा शैली, चमत्कार एवं अलंकार से। (फ़तहुल क़दीर)

[3]इसलिए कि वे कामना करते थे कि उनके पास भी कोई ईशदूत आये तथा कोई आकाशीय ग्रन्थ अवतरित हो, किन्तु जब यह वस्तुयें आयीं तो नकार दिया।

[4]यह मक्का के मूर्तिपूजकों को सावधान किया जा रहा है कि तुमने झुठलाने तथा इंकार का जो मार्ग अपनाया है वह अति हनिकारक है। तुमसे पूर्व के समुदाय भी इसी मार्ग पर चलकर ध्वस्त एवं नाश हुए हैं, जबकि यह समुदाय धन, सम्पत्ति, शक्ति एवं बल तथा आयु में तुमसे बढ़कर थे, तुम तो उनके दसवें भाग को भी नहीं पहुँचते। इसके उपरान्त वह अल्लाह के प्रकोप से नहीं बच सके। इसी विषय को सूरः *अहक़ाफ़* की आयत २६ में वर्णित किया गया है।

The Ummah Technology Mission

قُلْ إِنَّمَا أَعِظُكُم بِوَاحِدَةٍ ۖ أَن تَقُومُوا لِلَّهِ مَثْنَىٰ وَفُرَادَىٰ ثُمَّ تَتَفَكَّرُوا ۚ مَا بِصَاحِبِكُم مِّن جِنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَّكُم بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ﴿٤٦﴾

(४६) कह दीजिए कि मैं तुम्हें केवल एक ही बात की शिक्षा देता हूँ कि तुम अल्लाह के लिए (स्वच्छ भाव से दुराग्रह को त्यागकर) दो-दो मिलकर अथवा अकेले-अकेले खड़े होकर विचार तो करो, तुम्हारे इस साथी को कोई उन्माद नहीं।[1] वह तो तुम्हें एक अत्यन्त (कड़ी) यातना के आने से पूर्व सर्तक करने वाला है।[2]

قُلْ مَا سَأَلْتُكُم مِّنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ اللَّهِ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٤٧﴾

(४७) कह दीजिए कि जो बदला मैं तुम से माँगू वह तुम्हारे लिये है।[3] मेरा बदला तो अल्लाह पर है, वह प्रत्येक वस्तु को भली-भाँति जानता है।

---

[1]अर्थात मैं तुम्हें तुम्हारे वर्तमान व्यवहार से डराता तथा एक ही बात की शिक्षा देता हूँ, तथा वह यह कि तुम दुराग्रह एवं अहंकार छोड़कर मात्र अल्लाह के लिए एक-एक, दो-दो होकर मेरे विषय में विचार करो कि मेरा जीवन तुम्हारे बीच गुज़रा है और अब भी जो आमन्त्रण मैं तुम्हें दे रहा हूँ क्या उसमें कोई ऐसी बात है जिससे यह बात लग रही हो कि मेरे अन्दर उन्माद है। यदि तुम जातीय पक्षपात तथा मनमानी से उच्च होकर सोचोगे तो अवश्य तुम समझ जाओगे कि तुम्हारे साथी में कोई उन्माद नहीं है।

[2]अर्थात वह तो मात्र तुम्हारे मार्ग दर्शाने के लिए आया है ताकि तुम उस घोर यातना से बच जाओ जो संमार्ग न अपनाने के कारण तुम्हें भुगतनी पड़ेगी। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दिन सफ़ा पर्वत पर चढ़ गये तथा फ़रमाया : يا صباحاه जिसे सुनकर कुरैश एकत्र हो गये। आप ने फ़रमाया बताओ यदि मैं तुम्हें सूचना दूँ कि शत्रु तुम पर प्रात: अथवा संध्या को प्रहार करने वाला है तो क्या तुम मुझे सच्चा मानोगे ? उन्होंने कहा, क्यों नहीं ? आपने फ़रमाया, सुन लो कि मैं तुम्हें कड़ी यातना के आगमन से पहले सावधान करता हूँ। यह सुनकर अबू लहब ने कहा «تَبًّا لَكَ! أَلِهَذَا جَمَعْتَنَا؟». तेरा नाश हो, क्या इसलिए तूने हमें एकत्र किया था ? जिस पर अल्लाह ने सूरः ﴿تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ﴾ अवतरित की (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः सबा)

[3]इसमें अपनी नि:स्वार्थता तथा सांसारिक धन-साधन से अरूचि को व्यक्त किया है ताकि उनके दिलों में यदि यह शंका पैदा हो कि इस नबूअत के दावे से इसका आशय कहीं माया-मोह (संसार कामना) तो नहीं, तो वह दूर हो जाये।

The Ummah Technology Mission

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿٤٨﴾

(४८) कह दीजिए कि मेरा प्रभु सत्य (सच्ची प्रकाशना) अवतरित करता है,[1] वह प्रत्येक गुप्त बात (परोक्ष) का जानने वाला है।

قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ﴿٤٩﴾

(४९) कह दीजिए, सत्य आ चुका असत्य न तो प्रथम बार उभरा न पुन: उभर सकेगा।[2]

قُلْ إِنْ ضَلَلْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَىٰ نَفْسِي ۖ وَإِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوحِي إِلَيَّ رَبِّي ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ﴿٥٠﴾

(५०) कह दीजिए कि यदि मैं भटक जाऊँ तो मेरे भटकने (का भार) मुझ पर ही है तथा यदि मैं सत्यमार्ग पर हूँ तो उस प्रकाशना के कारण जो मेरा प्रभु मुझ पर करता है।[3] वह

---

[1] قَذَفَ का अर्थ तीर एवं पत्थर चलाना भी है तथा बात करना भी। यहाँ दूसरे अर्थ में है, अर्थात वह सत्य के साथ वार्तालाप करता है, अपने रसूलों पर प्रकाशना (वह्यी) भेजता है तथा उनके द्वारा लोगों के लिए सत्य स्पष्ट करता है। जैसे अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ﴾

"अपने भक्तों में से जिसे चाहता है फ़रिश्तों द्वारा अपनी प्रकाशना (वह्यी) से सुशोभित करता है।" (*अल-मोमिन*-१५)

[2] हक़ से तात्पर्य क़ुरआन तथा बातिल (अनृत) से तात्पर्य कुफ़्र (अविश्वास) तथा शिर्क (अनेकेश्वरवाद) है। भावार्थ है अल्लाह की ओर से अल्लाह का धर्म एवं उसका धर्मशास्त्र क़ुरआन आ गया है, जिससे अनृत (असत्य) संकुचित एवं समाप्त हो गया है। अब वह सर उठाने योग्य नहीं रहा, जैसे फ़रमाया : ﴿ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ ﴾ (अल-अम्विया-१८) हदीस में आता है कि जिस दिन मक्का विजय हुआ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काबा में प्रवेश किया। चारों ओर मूर्तियाँ स्थापित थीं, आप धनुष (कमान) की नोंक से उन मूर्तियों को मारते जाते थे तथा यह आयत एवं सूर: बनी इस्राईल की आयत ﴿ وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ﴾ पढ़ते जाते थे। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाबु इज़ालतिल अस्नाम मिन हौलिल काब:)

[3] अर्थात भलाई सब अल्लाह की ओर से है, तथा अल्लाह ने जो प्रकाशना तथा प्रत्यक्ष सत्य अवतरित फ़रमाया है उसमें संमार्ग तथा निर्देश है, संमार्ग लोगों को उसी से मिलता है। फिर जो भटकता है तो उसमें उसकी अपनी ही सुस्ती तथा मनोकांक्षा का हस्तक्षेप होता है। अत: उसका भार भी उसी पर होगा। आदरणीय अबदुल्लाह बिन मसऊद जब किसी प्रश्नकर्ता के उत्तर में अपनी ओर से कुछ कहते तो फ़रमाते :

The Ummah Technology Mission

अत्यन्त सुनने वाला अत्यन्त निकट है।[1]

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ وَاُخِذُوْا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٥١﴾

(५१) तथा यदि आप (वह समय) देखें जबकि ये काफ़िर घबराये फिरेंगे, फिर निकल भागने की कोई परिस्थिति न होगी[2] तथा निकट के स्थान से पकड़ लिये जायेंगे।

وَّقَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖ ۚ وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٥٢﴾

(५२) तथा उस समय कहेंगे कि हम इस (क़ुरआन) पर ईमान लाये परन्तु इतने दूर स्थान से (अभीष्ट वस्तु) कैसे हाथ आ सकती है।[3]

وَقَدْ كَفَرُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۚ وَيَقْذِفُوْنَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾

(५३) तथा इससे पूर्व तो उन्होंने इससे कुफ़्र किया था तथा दूर-दूर से बिना देखे ही फेंकते रहे।[4]

«أَقُولُ فِيهَا بِرَأْيِي؛ فَإِنْ يَكُنْ صَوَابًا فَمِنَ اللهِ، وإِنْ يَكُنْ خَطَأً فَمِنِّي وَمِنَ الشَّيطَانِ، واللهُ وَرَسُولُهُ بَرِيئَانِ مِنْهُ» .

"मैं इसमें अपने विचार से कह रहा हूँ यदि सही हो तो अल्लाह की ओर से और यदि ग़लत हो तो मेरी तथा शैतान की ओर से है, एवं अल्लाह तथा उसका रसूल इससे अलग हैं।" (इब्ने कसीर)

[1]जैसे हदीस में फ़रमाया,

«إِنَّكُمْ لا تَدْعُونَ أَصَمَّ وَلَا غَائِبًا، إِنَّمَا تَدْعُونَ سَمِيعًا قَرِيبًا مُجِيبًا».

'तुम बहरे, अनुपस्थित को नहीं पुकारते हो अपितु उसे पुकार रहे हो जो सुनने वाला, समीप तथा स्वीकार करने वाला है।" (बुख़ारी, किताबुद्दुआ, बाबुद दुआ इज़ा अला अक़बः)

[2] فَلَا فَوْتَ कहीं भाग नहीं सकेंगे, क्योंकि वह अल्लाह की पकड़ में होंगे। यह महशर के मैदान का वर्णन है।

[3] تَنَاوُشٌ का अर्थ पकड़ना है, अर्थात अब परलोक में उन्हें ईमान किस प्रकार प्राप्त हो सकता है जबकि संसार में उससे भागते रहे। मानो आख़िरत (परलोक) ईमान के लिए दुनिया के सापेक्ष दुरस्थ है, जैसे दूर की वस्तु को पकड़ना संभव नहीं, आख़िरत में ईमान लाने का अवसर नहीं।

[4]अर्थात अपने अनुमान से कहते रहे कि क़यामत (प्रलय) तथा हिसाब आदि नहीं, या क़ुरआन के विषय में कहते रहे कि यह जादू, गढ़ा हुआ झूठ तथा पूर्वजों की कथा है, अथवा मोहम्मद

The Ummah Technology Mission

وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِم مِّن قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُّرِيبٍ ﴿٥٤﴾

(५४) तथा उनकी इच्छाओं एवं उनके मध्य पर्दा डाल दिया गया[1] जैसेकि इससे पूर्व भी इन जैसों के साथ किया गया, [2] वे भी (इन्ही की भाँति) संदेह एवं दुविधा में (पड़े हुए) थे |[3]

सूरतु फ़ातिर-३५

سُورَةُ فَاطِرٍ

सूर: फ़ातिर मक्का में अवतरित हुई, इसमें पैंतालीस आयतें तथा पाँच रूकूअ हैं |

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है |

الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا أُولِي أَجْنِحَةٍ مَّثْنَىٰ وَثُلَاثَ وَرُبَاعَ ۚ يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ

(१) उस अल्लाह के लिए समस्त प्रशंसायें हैं जो (सर्वप्रथम) आकाशों एवं धरती का उत्पन्न करने वाला[4] तथा दो-दो, तीन-तीन तथा चार-चार परों वाले फ़रिश्तों को अपना दूत बनाने

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संदर्भ में कहते रहे कि यह तांत्रिक है, भविष्यवेत्ता है; कवि है अथवा उन्मादग्रस्त है, जबकि किसी बात का कोई प्रमाण (युक्ति) इनके पास नहीं थी |

[1]अर्थात आख़िरत (परलोक) में वह चाहेंगे कि उनका ईमान स्वीकार कर लिया जाये, यातना से उनकी मुक्ति हो जाये, किन्तु उनके तथा उनकी आकांक्षा के बीच पर्दा डाल दिया जायेगा अर्थात उनकी आकांक्षा अस्वीकार कर दी जायेगी |

[2]अर्थात पिछले समुदायों का ईमान भी उस समय स्वीकार नहीं किया गया जब वह प्रकोप के दर्शन के पश्चात ईमान लाये |

[3]अत: अब प्रकोप के दर्शन के पश्चात इनका ईमान भी कैसे स्वीकार्य हो सकता है ? आदरणीय कतादह फ़रमाते हैं, "शंका एवं संदेह से बचो, जो शंका की स्थिति में मरेगा उसी स्थिति में उठेगा तथा जो विश्वास पर मरेगा प्रलय के दिन विश्वास पर ही उठेगा |" (इब्ने कसीर)

[4]فَاطِر (फ़ातिर) का अर्थ है अविष्कारक, प्रारम्भ में अविष्कार करने वाला | यह अल्लाह के सामर्थ्य की ओर संकेत है कि उसने आकाश तथा धरती सर्वप्रथम बिना नमूने के बनाये, तो उसके लिये पुन: इन्सानों को पैदा करना कौन सा कठिन है ?

The Ummah Technology Mission

مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٢

(२) अल्लाह (तआला) जो दया लोगों के लिए खोल दे तो उसका कोई बन्द करने वाला नहीं तथा जिसको बन्द कर दे उसके पश्चात उसको कोई प्रारम्भ करने वाला नहीं[3] तथा वही प्रभावशाली तत्वज्ञ है।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝٣

(३) हे लोगो ! तुम पर जो उपहार अल्लाह (तआला) ने किये हैं उन्हें याद करो। क्या अल्लाह के अतिरिक्त कोई अन्य भी स्रष्टा है जो तुम्हें आकाश तथा धरती से जीविका पहुँचाये ? उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं तो तुम कहाँ उल्टे जाते हो ?[4]

---

[1]तात्पर्य जिब्रील, मीकाईल, इस्राफ़ील एवं इज़्राईल फ़रिश्ते हैं जिनको अल्लाह संदेश-वाहकों (अम्बिया) की ओर अथवा विभिन्न महत्वपूर्ण कार्यों के लिए दूत बनाकर भेजता है। इनमें से किसी के दो, किसी के तीन तथा किसी के चार पंख हैं जिनके द्वारा वह धरती पर आते तथा धरती से आकाश पर जाते हैं।

[2]अर्थात कुछ फ़रिश्तों के इससे भी अधिक पंख हैं। जैसे कि हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मैंने मेराज की रात जिब्रील को उनके वास्तविक रूप में देखा, उनके छः सौ पर थे (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरः नजम, बाबु फकान क़ाब कौसैने औ अदना) कुछ ने इसे सामान्य रखा है, जिसमें आँख, मुख, नाक तथा रूप सबका सौन्दर्य सम्मिलित है।

[3]इन्हीं उपहारों में रसूलों का भेजना तथा धर्मशास्त्र अवतरित करना भी है। अर्थात प्रत्येक वस्तु का दाता भी वही है तथा वापस लेने एवं रोकने वाला भी वही। उसके सिवाय न कोई दाता है न उपकारी तथा न रोकने वाला है न संकुचित करने वाला।

[4]अर्थात इस वर्णन एवं स्पष्टीकरण के पश्चात भी तुम अल्लाह के सिवाय किसी अन्य की इबादत करते हो ? تُؤفَكُونَ यदि أَفَكَ से हो तो अर्थ होगा 'फिरना' तथा यदि إِفْكٌ से हो तो अर्थ है झूठ, जो सच से फिरने का नाम है। अभिप्राय यह है कि तुममें एकेश्वरवाद तथा आख़िरत का इंकार कहाँ से आ गया जबकि तुम मानते हो कि तुम्हारी जीविका देने वाला तथा उत्पत्तिकर्ता अल्लाह है। (फतहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٤﴾

(४) तथा यदि वे आपको झुठलायें तो आपसे पूर्व के (समस्त) रसूल भी झुठलाये जा चुके हैं | समस्त कार्य अल्लाह ही की ओर लौटाये जाते हैं |[1]

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِاللَّهِ الْغَرُورُ ﴿٥﴾

(५) हे लोगो ! अल्लाह (तआला) का वायदा सत्य है [2] तुम्हें साँसारिक जीवन धोखे में न डाले,[3] तथा न धोखेबाज (छली शैतान) तुम्हें निश्चिन्तता में लिप्त करे |[4]

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ إِنَّمَا يَدْعُو حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ﴿٦﴾

(६) (याद रखो) ! शैतान तुम्हारा शत्रु है तुम उसे शत्रु जानो, [5] वह तो अपने गिरोह को केवल इस लिए बुलाता है कि वे सब नरक में जाने वाले हो जायें |

---

[1]इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना है कि आप को झुठलाकर यह कहाँ जायेंगे ? अन्ततः सभी विषयों का निर्णय तो हमें ही करना है | जैसे पिछले समुदायों ने अपने पैग़म्बरों को झुठलाया तो उन्हें सिवाय विनाश के क्या मिला ? अतः यह भी यदि न रूके तो इन्हें नाश करना हमारे लिए कठिन नहीं है |

[2]कि प्रलय की स्थापना होगी तथा अच्छे, बुरे कर्मों का प्रतिकार दिया जायेगा |

[3]अर्थात परलोक के उन उपहारों से निश्चिन्त न कर दे जो अल्लाह तआला अपने भक्तों तथा रसूलों के अनुयाईयों के लिये तैयार कर रखे हैं | तो इस संसार के सामयिक आनन्द में खोकर परलोक के स्थाई सुखों की अनदेखी न करो |

[4]उसके दाव तथा छल से बचकर रहो, इसलिए कि वह बड़ा धोखेबाज़ है, तथा उसका उद्देश्य ही तुम्हें धोखे में रखकर स्वर्ग से वंचित करना है, यही शब्द सूरः *लुकमान* ३३ में भी गुज़र चुके हैं |

[5]अर्थात उससे कड़ा बैर रखो, उसकी धोखा-धड़ी से बचो जैसे शत्रु से बचाव के लिए मनुष्य करता है | दूसरे स्थान पर इसी विषय का वर्णन इस प्रकार किया गया है :

﴿أَفَتَتَّخِذُونَهُ وَذُرِّيَّتَهُ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِي وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ۚ بِئْسَ لِلظَّالِمِينَ بَدَلًا﴾

"क्या तुम उस शैतान तथा उसकी सन्तान को मुझे त्यागकर अपना मित्र बनाते हो, हालाँकि वह तुम्हारे शत्रु हैं अत्याचारियों के लिए बुरा बदला है |" *(अल-कहफ़-५०)*

The Ummah Technology Mission

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝٧

(७) जो लोग काफ़िर हुए उनके लिए कठोर दण्ड है तथा जो लोग ईमान लाये एवं सत्कर्म किये उनके लिए क्षमा तथा (अति) उत्तम बदला है।[1]

اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۖ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝٨

(८) क्या वह व्यक्ति जिसके लिए उसके कुकर्म सुशोभित कर दिये गये हैं तो वह उन्हें अच्छा समझता है, (क्या वह संमार्ग प्राप्त व्यक्ति जैसा है ?)[2] (विश्वास करो) अल्लाह जिसे चाहे भटका देता है तथा जिसे चाहे मार्गदर्शन देता है,[3] तो आपको उन पर दुखी होकर अपने प्राण को कष्ट में न डालना चाहिये[4] ये जो कुछ कर रहे हैं उससे नि:संदेह अल्लाह भली-भाँति अवगत है।[5]

وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ

(९) तथा अल्लाह ही हवायें चलाता है जो बादलों को उठाती हैं, फिर हम बादलों को

---

[1]अल्लाह तआला ने अन्य स्थानों की भाँति यहाँ भी ईमान के साथ सत्कर्मों की चर्चा करके उस का महत्व स्पष्ट किया है ताकि ईमानवाले सत्कर्म से किसी क्षण निश्चिन्त न रहें, क्योंकि बड़े प्रतिफल का वायदा उस ईमान पर ही है जिसके साथ सत्कर्म होगा।

[2]जिस प्रकार काफ़िर तथा दुराचारी हैं,वह कुफ़्र, शिर्क, कुकर्म एवं दुराचार करते हैं और समझते यह हैं कि वह अच्छा कर रहे हैं। क्या फिर ऐसा व्यक्ति जिसे अल्लाह ने पथभ्रष्ट कर दिया हो, उसके बचाव के लिए आप के पास कोई उपाय है ? अथवा यह उसके बराबर है जिसे अल्लाह ने संमार्ग प्रदान किया है ? उत्तर नकारात्मक ही है, नहीं कदापि नहीं।

[3]अल्लाह तआला अपने न्याय के अनूरूप अपनी विधि के अनुसार उसको पथभ्रष्ट करता है जो निरन्तर अपनी करतूतों से स्वयं उसका पात्र होता है, तथा संमार्ग उसे देता है जो उसका अभिलाषी होता है।

[4]क्योंकि अल्लाह तआला का प्रत्येक काम हिक्मत तथा पूरे ज्ञान पर आधारित है। अत: किसी की पथभ्रष्टता पर इतना शोक न करें कि अपने प्राण ख़तरे में डाल लें।

[5]अर्थात उनका कोई कर्म अथवा कथन उससे छिपा नहीं है, अभिप्राय यह है कि उनके साथ अल्लाह का व्यवहार एक सर्वज्ञ, सर्वसूचित तथा तत्वदर्शी का है, साधारण राजाओं का नहीं जो अपने अधिकार का अललटप प्रयोग करते हैं। कभी सलाम करने से खिन्न हो जाते हैं तथा कभी अपशब्द पर ही पुरस्कार से सम्मानित करते हैं।

The Ummah Technology Mission

سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ۝٩

सूखी धरती की ओर ले जाते हैं तथा उससे उस धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवित कर देते हैं। इसी प्रकार पुनः जीवित होकर उठना (भी) है।[1]

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ؕ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ؕ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ

(१०) जो व्यक्ति सम्मान प्राप्त करना चाहता हो तो अल्लाह (तआला) के लिये ही समस्त सम्मान है।[2] समस्त पवित्र वाक्य उसी की ओर चढ़ते हैं,[3] तथा सत्कर्म उनको उच्च करता है,[4] और जो लोग बुराई के दाँव-घात में लगे रहते

---

[1]अर्थात जिस प्रकार वर्षा करके हम सूखी धरती को हरी कर देते हैं, इसी प्रकार प्रलय के दिन तमाम मृत इन्सानों को भी हम जीवित कर देंगे। हदीस में आता है कि मनुष्य का पूरा शरीर गल जाता है मात्र रीढ़ की अस्थि का एक सूक्ष्म अंश सुरक्षित रहता है, इसी से उसकी पुनः उत्पत्ति तथा रचना होगी। (सहीह बुख़ारी)

[2]अर्थात जो चाहता है कि लोक-परलोक में उसे सम्मान मिले तो वह अल्लाह की आज्ञा पालन करे उससे यह उद्देश्य प्राप्त हो जायेगा। इसलिए की लोक-परलोक का स्वामी अल्लाह ही है, सब सम्मान उसी के पास हैं वह जिसे सम्मान दे वही सम्मानित होगा, जिसको वह अपमानित कर दे संसार की कोई शक्ति उसे सम्मान नहीं दे सकती। दूसरे स्थान पर फ़रमाया : ﴿ الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ﴾ (अन्-निसा -१३९)

[3]الكَلِم बहुवचन है كَلِمة का। स्वच्छ (पवित्र) शब्दों से अभिप्राय अल्लाह की पवित्रता, प्रशंसा, क़ुरआन पढ़ना, अच्छाई का आदेश देना तथा बुराई से रोकना है। चढ़ते हैं का अर्थ अंगीकार करना है अथवा फ़रिश्तों का उन्हें लेकर आकाश पर चढ़ना है, ताकि अल्लाह उनका प्रतिफल प्रदान करे।

[4] يَرفعُه में सर्वनाम किसकी ओर फिरता है ? कुछ कहते हैं कि الكَلِم الطَّيب की ओर, अर्थात पुण्य कर्म स्वच्छ शब्द को ऊपर अल्लाह की ओर ले जाते हैं। अर्थात मात्र मुख से अल्लाह का स्मरण (पवित्रता तथा प्रशंसा) कुछ नहीं जब तक उसके साथ सत्कर्म अर्थात आदेशों तथा अनिवार्य कर्मों का पालन न हो। कुछ कहते हैं कि يَرفعُه में सर्वनाम कर्ता अल्लाह की ओर फिरता है। अर्थ यह है कि अल्लाह तआला सत्कर्म को पवित्र शब्दों से उच्च करता है, क्योंकि सत्कर्म से ही इस बात का प्रमाण मिलता है कि इसका करने वाला वस्तुतः अल्लाह की पवित्रता एवं प्रशंसा करने में शुद्ध है। (फ़तहुल क़दीर) मानो कथन, कर्म के बिना अल्लाह के समक्ष अमान्य है।

The Ummah Technology Mission

لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ وَمَكْرُ أُولَٰئِكَ هُوَ يَبُورُ ﴿١٠﴾

हैं[1] उनके लिए अत्यन्त कठोर यातनायें हैं तथा उनका यह पाखण्ड नाश हो जायेगा।[2]

وَاللَّهُ خَلَقَكُم مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا ۚ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَمَا يُعَمَّرُ مِن مُّعَمَّرٍ وَلَا يُنقَصُ مِنْ عُمُرِهِ إِلَّا فِي كِتَابٍ ۚ

(११) (लोगो,) अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से फिर वीर्य से पैदा किया[3] फिर तुम्हें जोड़े-जोड़े (नर-नारी) बना दिया है। नारियों का गर्भ धारण करना तथा शिशु का जन्म लेना सभी उसके ज्ञान में है,[4] तथा जो दीर्घ आयु वाला आयु दी जाये तथा जिस किसी की आयु घटे[5]

---

[1]गुप्त रूप से किसी को क्षति पहुँचाने के उपाय को मक्र कहते हैं, कुफ़ तथा शिर्क करना भी मक्र है कि इस प्रकार से अल्लाह के मार्ग को क्षति पहुँचाई जाती है नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हत्या की जो योजना मक्का के काफ़िर करते रहे वह भी मक्र है, पाखंड (दिखावा) भी मक्र है यह शब्द सामान्य है, मक्र के सभी रूपों को सम्मिलित है।

[2]अर्थात उनका मक्र (कपट) भी नाश होगा तथा उस का भार भी उन्हीं पर पड़ेगा, जैसे फ़रमाया : ﴿وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِ﴾ (फ़ातिर-४३)

[3]अर्थात तुम्हारे पिता आदम को मिट्टी से फिर तत्पश्चात तुम्हारी जाति (वंशधारा) को स्थापित रखने के लिए इन्सान की उत्पत्ति को वीर्य से सम्बन्धित कर दिया जो पुरूष की पीठ से निकल कर स्त्री के गर्भाशय में जाता है।

[4]अर्थात उससे कोई वस्तु छिपी हुई नहीं, यहाँ तक कि धरती पर गिरने वाले पत्तों को तथा धरती के भीतर अन्धकारों में पलने वाली बीज को भी जानता है। (अल-अनआम-५९)

[5]इसका अभिप्राय यह है कि लघु आयु तथा अल्प आयु अल्लाह के लेख तथा निर्णय से है। इसके अतिरिक्त आयु लम्बी अथवा छोटी होने के कारण भी हैं। लघुता के कारण में सम्बन्धियों के साथ सदव्यवहार आदि है जैसाकि हदीस में है, तथा अल्पता के कारणों में अधिक पाप (अवज्ञा) का करना है, जैसे किसी की आयु ७० वर्ष है तो अधिकता के कारणों से कभी अल्लाह उसे बढ़ा देता है। तथा कभी उसमें कमी कर देता है जब वे कमी के कारणों को अपनाता है। तथा यह सब कुछ उसने लौह महफ़ूज में अंकित किया हुआ है। अतः आयु में यह कमी तथा अधिकता ﴿فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ﴾ के विपरीत नहीं है। इसका समर्थन अल्लाह के इस वचन से भी होता है ﴿يَمْحُو اللَّهُ مَا يَشَاءُ وَيُثْبِتُ ۖ وَعِندَهُ أُمُّ الْكِتَابِ﴾ (अर्रा'द-३९) अल्लाह जो चाहता मिटाता तथा लिखता है तथा उस के पास लौहे महफ़ूज (सुरक्षित पुस्तक) है, (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

إِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيرٌ ⑪

वह सब पुस्तक में अंकित है। अल्लाह (महान) पर यह बात अत्यन्त सरल है।

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّ تَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ⑫

(१२) तथा बराबर नहीं दो समुद्र। यह मीठा है प्यास बुझाता है पीने में अच्छा। तथा वह दूसरा खारी है कड़ुवा, तुम इन दोनों से ताज़ा माँस खाते हो तथा वह आभूषण निकालते हो जिन्हें तुम पहनते हो, तथा तुम देखते हो कि बड़ी-बड़ी नवकायें जल को चीरने-फाड़ने वाली[1] उन समुद्रों में हैं ताकि तुम उसकी कृपा (अनुग्रह) की खोज करो और ताकि तुम उसकी कृतज्ञता व्यक्त करो।

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۙ وَ سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ⑬

(१३) वह रात को दिन में तथा दिन को रात में प्रवेश कराता है तथा सूर्य एवं चन्द्रमा को उसी ने कार्य में लगा दिया है। प्रत्येक एक निर्धारित अवधि तक चल रहे हैं। यही है अल्लाह[2] तुम सबका पालनहार इसी का राज्य है। तथा जिन्हें तुम उसके अतिरिक्त पुकार रहे हो वह तो खजूर की गुठली के छिलके के भी स्वामी नहीं।[3]

اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ۚ

(१४) यदि तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार सुनते ही नहीं[4] तथा यदि (मान लिया

---

[1] مواخر (मवाख़िर) वह नवकायें जो आते-जाते पानी को चीरते गुज़रती हैं। आयत में वर्णित अन्य विषयों का भाष्य सूरः अल-फ़ुरक़ान में गुज़र चुका है।

[2] अर्थात उक्त सभी कार्यों का कर्ता।

[3] अर्थात इतनी हीन वस्तु के भी स्वामी नहीं, न उसे पैदा करने पर सामर्थ्य हैं। قِطْمِيْر (क़ितमीर) उस झिल्ली को कहते हैं जो खजूर तथा उसके बीज के मध्य होती है, यह पतला सा छिलका गुठली पर लिफ़ाफ़ा (वेष्टन) की भाँति चढ़ा रहता है।

[4] अर्थात यदि तुम उन्हें कठिनाईयों में पुकारो तो वह तुम्हारी गुहार सुनते ही नहीं हैं,

The Ummah Technology Mission

وَلَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ؕ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ؕ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ ﴿۱۴﴾

कि) सुन भी लें तो स्वीकार नहीं करेंगे, [1] बल्कि क़यामत के दिन तुम्हारे शिर्क को स्पष्टत: नकार देंगे। [2] आपको कोई भी (अल्लाह तआला) जैसा जानकार सूचनायें न देगा।[3]

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۱۵﴾

(१५) हे लोगो! तुम अल्लाह के भिखारी हो[4] तथा अल्लाह ही निस्पृह[5] गुणवान है।[6]

اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿۱۶﴾

(१६) यदि वह चाहे तो तुमको नष्ट कर दे तथा एक नयी सृष्टि उत्पन्न कर दे।[7]

क्योंकि वह जड़ हैं अथवा मनों मिट्टी के नीचे गड़े हुए।

[1]अर्थात यदि मान लिया जाये कि वह सुन भी लें तो व्यर्थ, इसलिए की वह तुम्हारी विनय के अनुसार तुम्हारा कुछ नहीं कर सकते।

[2]तथा कहेंगे ما كنتم إيانا تعبدون "तुम हमारी उपासना नहीं करते थे" (यूनुस-२८) ﴿إن كنا عن عبادتكم لغافلين﴾ "हम तो तुम्हारी उपासना से बेख़बर थे।" (यूनुस-२९) इस आयत से यह भी ज्ञात होता है कि अल्लाह के सिवाय जिन की इबादत की जाती है वह सब पत्थर की मूर्तियाँ ही नहीं होंगी, वरन् उनमें चेतनशील (फ़रिश्ते, जिन्न, शैतान तथा धर्मात्मा) भी होंगे। तब ही तो वे इंकार करेंगे, तथा यह भी ज्ञात हुआ कि उन्हें आवश्यकता पूर्ति के लिए पुकारना शिर्क है।

[3]इसलिए कि उसकी भाँति भरपूर ज्ञान किसी के पास भी नहीं है। वही सभी विषय की वास्तविकता एवं तथ्य से पूर्णत: अवगत है, जिसमें इन पुकारे जाने वालों की विवशता, पुकार को न सुनना तथा प्रलय के दिन इसका इंकार करना भी सम्मिलित है।

[4]ناس शब्द सर्वसाधारण के लिए है जिसमें अम्बिया, धर्मात्मा सभी आ जाते हैं। अल्लाह के द्वार के सभी भिखारी हैं किन्तु अल्लाह को किसी की आवश्यकता नहीं।

[5]वह इतना निस्पृह है कि सब लोग यदि उसकी अवज्ञा करने वाले बन जायें तो इससे उसके राज्य में कोई कमी, तथा सब उसके आज्ञाकारी बन जायें तो इससे उसकी शक्ति में कोई अधिकता नहीं होगी। अपितु अवज्ञा से अपनी ही हानि होगी तथा उसकी वन्दना एवं आज्ञापालन से मानव का अपना ही लाभ है।

[6]प्रशंसित है अपने अनुग्रहों के कारण, क्योंकि प्रत्येक उपकार जो उसने अपने बन्दों के साथ किये हैं उस पर वह प्रशंसा एवं कृतज्ञता का अधिकारी है।

[7]यह भी उसकी निस्पृहता की मर्यादा का एक उदाहरण है कि यदि वह चाहे तो तुम्हें नष्ट

TheUmmahTechnology Mission

وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा न अंधकार एवं प्रकाश।[1]

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ﴿٢١﴾

(२१) तथा न छाया एवं न धूप।[2]

وَمَا يَسْتَوِي الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُوْرِ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा जीवित एवं मृत समान नहीं हो सकते,[3] तथा अल्लाह (तआला) जिसको चाहता है सुनवा देता है[4] तथा आप उन लोगों को नहीं सुना सकते जो क़ब्रों में हैं।[5]

اِنْ اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ ﴿٢٣﴾

(२३) आप तो केवल डराने वाले हैं।[6]

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ؕ وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ﴿٢٤﴾

(२४) हमने ही आपको सत्य देकर शुभसूचना सुनाने वाला तथा डराने वाला बनाकर भेजा है, तथा कोई समुदाय ऐसा नहीं हुआ जिसमें कोई डराने वाला न गुज़रा हो।

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ

(२५) तथा यदि ये लोग आपको झुठला दें तो जो लोग इनसे पूर्व गुज़रे हैं उन्होंने भी

---

[1]अन्धें से अभिप्राय काफ़िर तथा आँखवाले से ईमानवाला, अन्धेरों से अनृत तथा प्रकाश से सत्य तात्पर्य है। असत्य (अनृत) के बहुत प्रकार हैं, इसलिए उसके लिए बहुवचन का तथा सत्य अनेक नहीं, इसलिए उसके लिए एक वचन का रूप प्रयोग किया।

[2]यह पुण्य तथा यातना अथवा स्वर्ग तथा नरक की मिसाल है।

[3]जीवित से ईमानवाला तथा मृत से काफ़िर अथवा ज्ञानी तथा मूर्ख अथवा समझदार एवं नासमझ अभिप्राय है।

[4]अर्थात जिसे अल्लाह संमार्ग दिखाने वाला होता है तथा स्वर्ग उसके भाग्य में होती है उसे तर्क एवं प्रमाण सुनने तथा फिर उसे स्वीकार करने की संमति प्रदान कर देता है।

[5]अर्थात जिस प्रकार समाधियों (क़ब्रों) में मृत लोगों को कोई बात सुनाई नहीं जा सकती, इसी प्रकार जिनके दिलों को कुफ़्र ने मृत कर दिया है, हे संदेशवाहक (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तू उन्हें सत्य की बात नहीं सुना सकता। भावार्थ यह हुआ कि जिस प्रकार मरने और गड़ने के पश्चात मृत कोई लाभ नहीं उठा सकता, इसी प्रकार काफ़िर तथा मुशरिक जिनके भाग्य में दुर्भाग्य अंकित है, निमन्त्रण तथा सत्य भाषण से उन्हें लाभ नहीं होता।

[6]अर्थात आपका काम मात्र धर्म का प्रचार-प्रसार करना है, सत्य मार्ग दिखाना अथवा पथभ्रष्ट बनाना अल्लाह के अधिकार में है।

The Ummah Technology Mission

مِن قَبْلِهِمْ ۚ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿٢٥﴾

झुठलाया था, उनके पास भी उनके पैग़म्बर चमत्कार, ग्रन्थ एवं स्पष्ट किताबें लेकर आये थे।[1]

ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٢٦﴾

(२६) फिर मैंने उन काफ़िरों को पकड़ लिया तो मेरा प्रकोप कैसा हुआ।[2]

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا ۚ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بِيضٌ وَحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَغَرَابِيبُ سُودٌ ﴿٢٧﴾

(२७) क्या आपने इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया कि अल्लाह (तआला) ने आकाश से पानी उतारा फिर हमने उसके द्वारा विभिन्न रंगों के फल निकाले[3] तथा पर्वतों के विभिन्न भाग हैं, सफेद एवं लाल कि उनके भी रंग विभिन्न हैं तथा अति गहरे काले।[4]

وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَابِّ وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذَٰلِكَ ۗ إِنَّمَا

(२८) तथा इसी प्रकार मनुष्यों तथा जानवरों एवं चौपायों में भी कुछ ऐसे हैं कि उनके रंग भिन्न हैं।[5] अल्लाह से उसके वही भक्त डरते

---

[1]ताकि कोई समुदाय यह न कह सके कि हमें तो कुफ़्र तथा ईमान का पता ही नहीं। इसी कारण से अल्लाह ने प्रत्येक समुदाय में नबी भेजा, जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया : ﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا﴾ (अन-नहल-३६)

[2]कितने घोर प्रकोप ने उन्हें धर लिया तथा उन्हें ध्वस्त तथा नाश कर दिया।

[3]अर्थात जिस प्रकार ईमानदार तथा काफ़िर, सदाचारी एवं दुराचारी दोनों प्रकार के लोग हैं, इसी प्रकार अन्य सृष्टि में भी भेद तथा विभिन्नता है। उदाहणार्थ, फलों के रंग भी विभिन्न हैं, स्वाद एवं सुगन्ध में भी परस्पर भिन्न, यहाँ तक कि एक ही फल के भी कई-कई रंग तथा स्वाद हैं, जैसे खजूर है, अंगूर है, सेब है तथा अन्य कुछ फल हैं।

[4]इसी प्रकार पर्वत तथा उसके भाग अथवा मार्ग तथा धारियाँ विभिन्न रंगों के हैं, सफेद, लाल तथा अति घोर काले। جُدَدٌ बहुवचन है جدّةٌ का, मार्ग अथवा लकीरें। غَرابيبَ बहुवचन है غِرْبِيب का, तथा سُودٌ - أسود (काला) का बहुवचन है। जब काले रंग की गंभीरता को व्यक्त करना हो तो أسود के साथ غربيب का शब्द प्रयोग किया जाता है। أسود غربيب का अर्थ होता है, अति घोर काले।

[5]अर्थात मानव तथा पशु भी सफेद, काले तथा पीले वर्ण के होते हैं।

The Ummah Technology Mission

يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ﴿٢٨﴾

हैं जो ज्ञान रखते हैं।[1] वास्तव में अल्लाह (तआला) अत्यन्त महान क्षमा करने वाला है।[2]

إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَٰبَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَوٰةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَٰهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَٰرَةً لَّن تَبُورَ ﴿٢٩﴾

(२९) जो लोग अल्लाह की किताब का पाठ करते हैं[3] तथा नमाज़ नियमित रूप से पढ़ते हैं[4] तथा जो कुछ हमने उन्हें प्रदान किया है उसमें से गुप्त तथा स्पष्ट रूप से ख़र्च करते हैं,[5] वे ऐसे व्यवपार के उम्मीदवार हैं जो कभी भी हानि में न होगा।[6]

---

[1]अर्थात अल्लाह के इन सामर्थ्यों तथा रचनात्मक गुण को वही जान एवं समझ सकतें हैं जो ज्ञानी हैं, इससे तात्पर्य किताब (पवित्र क़ुरआन), हदीस तथा दैवी भेदों का ज्ञान है तथा जितना उन्हें प्रभु का आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त होता है उतना ही वह प्रभु से डरते हैं मानो जिनमें अल्लाह का डर नहीं है समझ लो कि सही ज्ञान से भी वह वंचित हैं। सुफ़यान सौरी फ़रमाते हैं कि ज्ञानियों के तीन प्रकार हैं। अल्लाह का ज्ञानी तथा अल्लाह के आदेश का ज्ञानी, यह वह है जो अल्लाह से डरता तथा उसके आदेशों तथा सीमाओं को जानता है। दूसरा मात्र अल्लाह का ज्ञानी, जो अल्लाह से तो डरता है किन्तु उसकी सीमाओं तथा उसके आदशों को नहीं जानता। तीसरा मात्र अल्लाह के आदेशों का ज्ञानी, जो उसके निर्धारित सीमाओं एवं आदेशों से अवगत है किन्तु अल्लाह के भय से शून्य है। (इब्ने कसीर)

[2]यह प्रभु से भय रखने का कारण है कि वह इस बात पर सामर्थ्यवान है कि अवज्ञाकारी को दण्ड दे तथा क्षमा-याचना करने वाले के दोष क्षमा कर दे।

[3]अल्लाह की किताब से तात्पर्य पवित्र ईशवाणी क़ुरआन है, 'तिलावत (पाठ) करते हैं' अर्थात नित्य उसकी व्यवस्था करते हैं।

[4]नमाज़ की स्थापना का अभिप्राय होता है नमाज़ उस ढंग से पढ़ना जो अभीष्ट (उसका उद्देश्य) है, अर्थात निर्धारित समय तथा उसके अनिवार्य कर्मों में संतुलन तथा विनम्रता एवं विनय के प्रयोजन के साथ पढ़ना।

[5]अर्थात रात और दिन खुले तथा छिपे दोनों ढंग से आवश्यकतानुसार ख़र्च करते हैं। कुछ के निकट छिपे से ऐच्छिक दान तथा खुले से अनिवार्य दान (ज़कात) अभिप्राय है।

[6]अर्थात ऐसे लोगों का फल अल्लाह के यहाँ निश्चित है जिसमें मंदे अथवा कमी की संभावना नहीं।

The Ummah Technology Mission

لِيُوَفِّيَهُمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٠﴾

(३०) ताकि उनके पारिश्रमिक पूर्णरूप से उनको दे तथा उनको अपनी कृपा से और अधिक प्रदान करे।[1] नि:संदेह वह अत्यन्त क्षमाशील गुणग्राही है।[2]

وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿٣١﴾

(३१) तथा यह किताब जो हमने आपके पास प्रकाशना के द्वारा भेजी है यह पूर्णरूप से सत्य है[3] जो अपने से पूर्व की किताबों की भी पुष्टि करती है।[4] नि:संदेह अल्लाह (तआला) अपने भक्तों की पूर्ण जानकारी रखने वाला भली-भाँति देखने वाला है।[5]

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا

(३२) फिर (इस) किताब[6] का उत्तराधिकारी

---

[1] لِيُوَفِّيَهُم सम्बन्धित है لن تَبور से, अर्थात यह व्यवपार मंदे से इसलिए सुरक्षित है कि अल्लाह पुण्य के कर्मों पर पूरा फल प्रदान करेगा, अथवा लुप्त क्रिया से सम्बन्धित है कि वह पुण्य के कर्म इसलिए करते हैं अथवा अल्लाह ने इसकी ओर मार्ग दिखाया ताकि उन्हें प्रतिफल दे।

[2] यह توفية तथा अधिकता का कारण है, कि वह अपने ईमानवाले भक्तों को क्षमा करने वाला है इस प्रतिबन्ध के साथ कि वह स्वच्छ मन से क्षमा माँगें, उनकी आज्ञाकारिता एवं पुण्य के कर्मों का गुणग्राही है इसीलिए वह केवल प्रतिफल ही नहीं देगा अपितु अपनी दया तथा अनुग्रह से और अधिक भी प्रदान करेगा।

[3] अर्थात जिस पर तेरे लिये तथा तेरे समुदाय के लिये कार्यरत होना अनिवार्य है।

[4] आदिग्रन्थ तौरात तथा इंजील आदि की, यह इस बात का प्रमाण है कि पवित्र क़ुरआन उस अल्लाह का अवतरित किया है जिसने पूर्व के धर्मग्रन्थ अवतरित किये थे, जब ही तो दोनों एक-दूसरे का समर्थन एवं पुष्टि करते हैं।

[5] यह उसके ज्ञान तथा जानकारी ही का परिणाम है कि उसने नवीन धर्मग्रन्थ अवतरित कर दिया क्योंकि वह जानता है कि आदिग्रन्थ हेर-फेर तथा परिवर्तन से ग्रस्त हो गये हैं और वह मार्गदर्शन के योग्य नहीं।

[6] किताब से अभिप्राय पवित्र क़ुरआन तथा निर्वाचित बन्दों से मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का समुदाय है, अर्थात हमने इस क़ुरआन का उत्तराधिकारी मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायियों को बनाया है, यह लगभग वही भावार्थ है जो आयत ﴿وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِّتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ﴾ (अल-बक़र:-१४३) का है।

The Ummah Technology Mission

مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ؕ ﴿۳۲﴾

हमने उन लोगों को बनाया जिनको हमने अपने बन्दों में से चुन लिया। फिर कुछ तो अपने प्राणों पर अत्याचार करने वाले हैं [1] तथा कुछ मध्यम श्रेणी के हैं[2] तथा कुछ उनमें से अल्लाह की सन्मति से पुण्य में उन्नति करते चले जाते हैं।[3] यह बड़ी कृपा है।[4]

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿۳۳﴾

(३३) सदैव रहने के वे बाग़ हैं जिनमें ये लोग प्रवेश करेंगे,[5] उसमें वे स्वर्ण के कंगन तथा मोती पहनाये जायेंगे तथा वस्त्र वहाँ उनके रेशम के होंगे।[6]

---

[1]मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायियों के तीन प्रकार बताये हैं, यह प्रथम प्रकार है जिससे अभिप्राय ऐसे लोग हैं जो कुछ अनिवार्य कर्तव्यों में आलस्य तथा कुछ निषेधित कर्म कर लेते हैं, अथवा कुछ के यहाँ तात्पर्य वे हैं जो छोटी-छोटी त्रुटियाँ कर जाते हैं। उन्हें अपने ऊपर अत्याचार करने वाला इसलिए कहा कि वह अपने कुछ आलस्य के कारण स्वयं को उस उच्च पद से वंचित कर लेंगे जो शेष दो प्रकारों को प्राप्त होंगे।

[2]यह दूसरा प्रकार है अर्थात जो मिले-जुले कर्म करते हैं, अथवा कुछ के निकट वह हैं जो कर्तव्य का पालन तो करते हैं, निषेधों के त्यागी हैं किन्तु कभी उत्तम का त्याग तथा कुछ अवैध कर्म भी उनसे हो जाता है, अथवा वह हैं जो पुनीत तो हैं किन्तु उसमें आगे-आगे नहीं हैं।

[3]यह वे हैं जो धर्म के विषय में पिछले दोनों से अग्रगामी हैं।

[4]अर्थात किताब (धर्मशास्त्र) का उत्तराधिकारी करना तथा प्रतिष्ठा एवं अनुग्रह में श्रेष्ठ (निर्वाचित) करना।

[5]कुछ कहते हैं कि स्वर्ग में केवल अग्रगामी जायेंगे किन्तु यह सही नहीं क़ुरआन का पूर्व वाक्यक्रम इस बात का अभियाची है कि तीनों प्रकार स्वर्गवासी हैं। यह अलग बात है कि अग्रगामी बिना हिसाब के तथा मध्यवर्ती सरल हिसाब के पश्चात एवं अत्याचारी सिफ़ारिश से अथवा दण्ड भुगतने के पश्चात स्वर्ग में जायेंगे जैसाकि अहादीस से स्पष्ट है। मोहम्मद बिन हनफ़िया का कथन है कि यह दया के पात्र गिरोह है। अत्याचारी अर्थात पापी को क्षमा मिल जायेगी, मध्यम अल्लाह के यहाँ स्वर्ग में होगा तथा पुण्य में अग्रसर होने वाला उच्च श्रेणी में होगा। (फ़तहुल क़दीर)

[6]हदीस में आता है कि रेशम तथा दीबाज संसार में न पहनो, इसलिए कि जो इसे संसार

The Ummah Technology Mission

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۭ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُۨ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा कहेंगे कि अल्लाह का लाख-लाख धन्य है जिसने हमसे शोक दूर किया। नि:संदेह हमारा प्रभु अत्यन्त क्षमाशील एवं क़दर करने वाला है।

الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ﴿٣٥﴾

(३५) जिसने हमें अपनी कृपा (अनुग्रह) से सदैव रहने वाले स्थान में ला उतारा, जहाँ न हमको कोई कठिनाई पहुँचेगी तथा न हमको कोई थकान पहुँचेगी।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा जो लोग काफ़िर हैं उनके लिए नरक की अग्नि है, न तोउनकी मौत ही आयेगी कि मर ही जायें तथा न नरक की यातना ही उनसे कम की जायेगी। हम प्रत्येक काफ़िर को ऐसी ही यातना देते हैं।

وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ۭ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَاۗءَكُمُ النَّذِيْرُ ۭ

(३७) तथा वे लोग उसमें चिल्लायेंगे कि हमारे प्रभु ! हमको निकाल ले हम अच्छे कर्म करेंगे उन कर्मों के विपरीत जो किया करते थे।[1] (अल्लाह तआला कहेगा) कि क्या हमने तुम्हें इतनी आयु नहीं दी थी कि जिसको समझना होता [2] वह समझ सकता तथा तुम्हारे पास

में पहनेगा वह उसे आख़िरत (परलोक) में नहीं पहनेगा। (सहीह बुख़ारी तथा सहीह मुस्लिम, किताबुल लिबास)

[1]अर्थात दूसरों की इबादत की जगह तेरी इबादत तथा अवज्ञा के स्थान पर आज्ञा का पालन करेंगे।

[2]इससे अभिप्राय कितनी आयु है ? भाष्यकारों ने विभिन्न आयु का वर्णन किया है। कुछ ने कुछ हदीसों से तर्क देते हुए कहा है कि ६० वर्ष की आयु तात्पर्य है। (इब्ने कसीर) किन्तु हमारे विचार से आयु का निर्धारण सही नहीं है, इसलिए कि आयु विभिन्न होती है, कोई युवा अवस्था में, कोई अधेड़ आयु में तथा कोई बुढ़ापे में मरता है, फिर यह समय भी व्यतीत क्षण की भाँति कम नहीं होते अपितु प्रत्येक अवधि विशेषत: लम्बी होती है।

The Usman Technology Mission

فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٣٧﴾

डराने वाला भी पहुँचा था[1] तो स्वाद चखो कि (ऐसे) अत्याचारियों का कोई सहायता करने वाला नहीं है।

اِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٣٨﴾

(३८) वस्तुत: अल्लाह (तआला) जानने वाला है आकाशों तथा धरती की गुप्त वस्तुओं का,[2] नि:संदेह वही जानने वाला है सीनों की बातों का।[3]

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ ؕ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ؕ

(३९) वही ऐसा है जिसने तुम्हें धरती पर बसाया, तो जो व्यक्ति कुफ्र (इंकार) करेगा उसके कुफ्र का बोझ उसी पर पड़ेगा। तथा

उदाहणार्थ, यौवनकाल व्यस्क होने से अधेड़ होने तक तथा अधेड़ होने का समय बुढ़ापे तक तथा बुढ़ापे का मौत तक रहता है। किसी को सोच-विचार, शिक्षा ग्रहण करने तथा प्रभावित होने के लिए कुछ वर्ष, किसी को उससे अधिक तथा किसी को इससे भी अधिक समय मिलता है, तथा सबसे यह प्रश्न करना सही होगा कि हमने तुझे इतनी आयु दी फिर तूने सत्य को समझने तथा उसे ग्रहण करने का प्रयास क्यों नहीं किया ?

[1]इससे अभिप्राय अन्तिम ईशदूत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, अर्थात स्मरण कराने तथा शिक्षा देने के लिए ईशदूत तथा उनके धर्ममंच के उत्तराधिकारी ज्ञानी जन तथा प्रचारक तेरे पास आये किन्तु तूने समझ-बूझ से काम नहीं लिया न सत्य के प्रचारकों की बातों की ओर ध्यान दिया।

[2]यहाँ इसकी चर्चा से यह भी उद्देश्य हो सकता है कि तुम पुन: संसार में जाने की कामना कर रहे हो तथा दावा कर रहे हो कि अब अवहेलना की जगह आज्ञापालन तथा शिर्क (द्वैत) की जगह तौहीद (अद्वैत) को अपनाओगे, किन्तु हमें ज्ञान है कि तुम ऐसा न करोगे। तुम्हें यदि संसार में फिर भेज दिया जाये तो तुम वही कुछ करोगे जो पहले करते रहे हो, जैसे अन्य स्थान पर फ़रमाया : ﴿وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ﴾ (अल-अनआम-२८) "यदि उन्हें पुन: जगत में भेज दिया जाये तो वह वही कर्म करेंगे जिनसे उन्हें रोका गया था।"

[3]यह पिछली बात का कारण है, अर्थात परमेश्वर (अल्लाह तआला) को आकाश तथा धरती की गुप्त बातों का ज्ञान क्यों न हो जबकि वह अन्तर्यामी (मन की बातों तथा भेदों से) अवगत है।

The Ummah Technology Mission

وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾

काफ़िरों के लिए उनका कुफ़्र उनके प्रभु के निकट क्रोध ही बढ़ने का कारण बनता है तथा काफ़िरों के लिए उनका कुफ़्र हानि ही को बढ़ाने का कारण होता है।[1]

قُلْ اَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٤٠﴾

(४०) (आप) कहिए कि तुम अपने (निर्धारित किये हुए) साझीदारों का हाल तो बताओ जिनको तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारा करते हो। अर्थात मुझको यह बताओ कि उन्होंने धरती का कौन-सा (भाग) बनाया है अथवा उनका आकाश में कुछ साझा है, अथवा हमने उनको कोई किताब प्रदान की है कि यह उसके प्रमाण पर दृढ़ हों,[2] बल्कि यह अत्याचारी एक-दूसरे से केवल धोखे की बातों का वादा करते आते हैं।[3]

اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

(४१) निश्चित बात है कि अल्लाह (तआला) आकाशों एवं धरती को थामे हुए है कि वह

---

[1]अर्थात अल्लाह के समक्ष कुफ़्र कोई लाभ नहीं पहुँचायेगा अपितु इससे अल्लाह के क्रोध तथा अप्रसन्नता में भी अधिकता होगी तथा मनुष्य की अपनी क्षति भी अधिक।

[2]अर्थात हमने उन पर कोई किताब (धर्मशास्त्र) अवतरित किया हो, जिसमें यह अंकित हो कि मेरे भी साझी हैं, जो आकाश तथा धरती की रचना में भागीदार तथा साझीदार हैं।

[3]अर्थात इनमें से कोई बात भी नहीं है, अपितु यह परस्पर एक-दूसरे को पथभ्रष्ट करते आये हैं। इनके अगुवा तथा पीर कहते थे कि यह पूज्य (देवी, देवता एवं समाधिस्थल) उन्हें लाभ पहुँचायेंगे तथा उन्हें अल्लाह के समीप कर देंगे तथा उनकी सिफ़ारिश (अभिस्तावना) करेंगे। अथवा यह बातें शैतान मुशरिकों (अनेकेश्वरवादियों) से कहते थे, अथवा इससे तात्पर्य वह वादा है जिसे वह एक-दूसरे के सामने करते थे, कि वह मुसलमानों पर विजय पायेंगे, जिससे उनको अपने कुफ़्र (इंकार) पर अडिग रहने का प्रोत्साहन मिलता था।

The Ummah Technology Mission

أَن تَزُولَا ۚ وَلَئِن زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّن بَعْدِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤١﴾

टल न जायें[1] तथा यदि वह टल जायें तो फिर अल्लाह के अतिरिक्त कोई उनको थाम भी नहीं सकता।[2] वह अत्यन्त सहनशील क्षमा करने वाला है।[3]

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِن جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ إِحْدَى الْأُمَمِ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ

(४२) तथा इन काफ़िरों ने बड़ी पक्की सौगन्ध खायी थी कि यदि उनके पास कोई डराने वाला आया तो वह प्रत्येक समुदाय से अधिक मार्गदर्शन प्राप्त करने वाले बनेंगे।[4] फिर

---

[1] كَرَاهَةَ أَنْ تَزُولَا अथवा لِئَلَّا تَزُولَا यह अल्लाह के पूर्ण सामर्थ्य तथा कारीगरी का वर्णन है। कुछ ने कहा कि अभिप्राय यह है कि उनके शिर्क की माँग तो यह है कि आकाश तथा धरती अपनी स्थिति पर स्थिर न रहें अपितु टूट-फूट का शिकार हो जायें, जैसे आयत ﴿تَكَادُ السَّمَاوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا * أَن دَعَوْا لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدًا﴾ (मरियम-९०-९१) का भावार्थ है।

[2] यह अल्लाह के पूर्ण सामर्थ्य के साथ उसकी पूर्ण दया है कि वह आकाश तथा धरती को थामे हुए है और उन्हें अपने स्थान से हिलने-डोलने नहीं देता अन्यथा पलक झपकते विश्व की व्यवस्था तितर-बितर हो जाती, क्योंकि यदि वह उन्हें थामे न रखे तथा अपने स्थान से फेर दे तो अल्लाह के सिवाय कोई नहीं है जो उनको थाम ले إِنْ أَمْسَكَهُمَا में 'नहीं' के अर्थ में है अल्लाह ने अपने इस अनुग्रह तथा लक्षण की चर्चा दूसरे स्थान पर भी की है, जैसे ﴿وَيُمْسِكُ السَّمَاءَ أَن تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ﴾ "वही आकाश को धरती पर गिरने से रोके हुए है, किन्तु जब उसका आदेश होगा।" (अल-हज्ज-६५) तथा ﴿وَمِنْ آيَاتِهِ أَن تَقُومَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ بِأَمْرِهِ﴾ "उसके चिन्हों में से है कि आकाश तथा धरती उसके आदेश से स्थापित हैं।" (अर-रूम-२५)

[3] इतने सामर्थ्यों के पश्चात वह सहनशील है, अपने बन्दों को देखता है कि वह कुफ्र तथा शिर्क एवं अवज्ञा कर रहे हैं फिर भी उनकी पकड़ में शीघ्रता नहीं करता अपितु ढील देता है, तथा क्षमाशील भी है, कोई क्षमा माँगता है और उसके सदन में झुक जाता है, पश्चाताप तथा क्षमा-याचना एवं लज्जा दिखाता है तो वह क्षमा कर देता है।

[4] इसमें अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी बनाकर भेजे जाने से पहले यह मूर्तियों के पुजारी कसमें खा खाकर कह रहे थे कि यदि हमारी ओर कोई ईशदूत आया तो हम उसका स्वागत करेंगे तथा उस पर ईमान लाने में एक आदर्श कर्म प्रस्तुत करेंगे। यह विषय अन्य स्थानों पर भी वर्णित है, जैसे सूरः

The Ummah Technology Mission

نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا ﴿٤٢﴾

जब उनके पास एक पैग़म्बर आ पहुँचे [1] तो उनकी घृणा में ही प्रगति हुई।

اسْتِكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۚ وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِ ۚ فَهَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ ۚ فَلَن تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۖ وَلَن تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَحْوِيلًا ﴿٤٣﴾

(४३) संसार में अपने को बड़ा समझने के कारण [2] तथा उनके बुरे प्रयत्नों के कारण [3] तथा बुरे प्रयत्न करने वालों का दण्ड उन प्रयत्न करने वालों को ही भुगतना पड़ता है,[4] तो क्या ये उसी नीति की प्रतीक्षा में हैं जो पूर्व के लोगों के साथ होती रही है।[5] तो आप अल्लाह की रीति में कभी परिवर्तन नहीं पायेंगे,[6] तथा आप अल्लाह की रीति को कभी स्थानान्तरित होती हुई न पायेंगे।[7]

अनआम-१५६,१५७ तथा सूरः *अस्साफ़्फ़ात*-१६७-१७०)

[1]अर्थात मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनकी ओर नबी बनकर आ गये जिनके लिये वह कामना कर रहे थे।

[2]अर्थात आपकी नबूअत (दूतत्व) पर ईमान लाने (विश्वास करने) के स्थान पर इंकार एवं विरोध का मार्ग केवल अहंकार एवं दुष्टता के कारण अपना लिया।

[3]तथा बुरा उपाय अर्थात धोखा-धड़ी एवं बुरे कर्म के कारण किया।

[4]अर्थात यह धोखा-धड़ी करते हैं, किन्तु यह नहीं जानते कि बुरे उपाय का परिणाम बुरा होता है, तथा उसका अन्ततः धोखेबाज़ों पर ही पड़ता है।

[5]अर्थात क्या यह अपने कुफ़्र, शिर्क तथा रसूल के विरोध एवं मुसलमानों को दुख पहुँचाने पर अड़े रहकर इस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन्हें भी उसी प्रकार नाश किया जाये जिस प्रकार पिछले समुदायों को ध्वस्त कर दिया गया ?

[6]अपितु यह इसी प्रकार प्रचलित है तथा प्रत्येक झुठलाने वाले का भाग्य विनाश है, अथवा बदलने से तात्पर्य यह है कि कोई अल्लाह की यातना को दया से बदलने पर सामर्थ्यवान नहीं।

[7]अर्थात कोई अल्लाह के प्रकोप को दूर करने वाला अथवा उसकी दिशा फेरने वाला नहीं है, अर्थात जिस समुदाय को अल्लाह प्रकोप से ध्वस्त करना चाहे कोई उसका मुख किसी

The Ummah Technology Mission

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِن شَيْءٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ﴿٤٤﴾

(४४) क्या ये लोग धरती में चले-फिरे नहीं जिसमें वह देखते-भालते कि जो लोग उनसे पूर्व गुज़रे हैं उनका परिणाम क्या हुआ, यद्यपि शक्ति में वे लोग इनसे अधिक थे, तथा अल्लाह ऐसा नहीं है कि कोई वस्तु उसे हरा दे न आकाशों में तथा न धरती में। वह अत्यन्त ज्ञान वाला सामर्थ्यवान है।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَىٰ ظَهْرِهَا مِن دَابَّةٍ وَلَٰكِن يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا ﴿٤٥﴾

(४५) तथा यदि अल्लाह (तआला) लोगों को उनके कर्मों के कारण तुरन्त पकड़ने लगता तो समस्त धरती पर एक प्राणी भी न छोड़ता,[1] परन्तु अल्लाह (तआला) उनको एक नियमित समय तक अवसर प्रदान कर रहा है,[2] तो जब उनका समय आ पहुँचेगा तो अल्लाह (तआला) अपने बन्दों को स्वयं देख लेगा।[3]

अन्य समुदाय की ओर फेर दे, किसी में यह शक्ति नहीं। इस रीति के वर्णन से अभिप्राय अरब के मूर्तिपूजकों को डराना है कि अभी समय है, वह कुफ़्र (इंकार) तथा शिर्क (मूर्तिपूजा) को त्याग करके ईमान लायें अन्यथा वह अल्लाह की इस रीति से बच नहीं सकते देर-सवेर उसके चक्र में पड़कर रहेंगे। कोई इस ईश्वरीय विधान को बदलने पर सामर्थ्यवान है न फेरने पर।

[1]इन्सानों को तो उनके पापों के बदले तथा जानवरों को इन्सानों के अशुभ के कारण। अथवा भावार्थ यह है कि समस्त जगतवासियों को नाश कर देता, इन्सानों को भी तथा जिन जानवरों तथा आजीविकाओं के वे स्वामी हैं, उनको भी। अथवा अभिप्राय यह है कि आकाश से वर्षा का क्रम बन्द कर देता जिससे धरती पर चलने वाले सभी जीवधारी मर जाते।

[2]यह नियमित अवधि संसार में भी सम्भव है तथा प्रलय का दिन तो है ही।

[3]अर्थात उस दिन उनका लेखा-जोखा लेगा तथा प्रत्येक को उसके कर्मों का पूरा प्रतिकार देगा। ईमानदार तथा आज्ञाकारी को पुण्य तथा शुभफल तथा काफ़िर एवं अवज्ञाकारी को यातना तथा कुफल। इसमें ईमान वालों के लिये सांत्वना तथा काफ़िरों के लिये चेतावनी एवं धमकी है।

The Ummah Technology Mission

सूरतु यासीन-३६

سُوْرَةُ يٰسٓ

सूर: यासीन* मक्का में अवतरित हुई, इसमें तिरासी आयतें एवं पाँच रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ अल्लाह तआला के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं कृपालु है।

يٰسٓ ① (१) यासीन।[1]

وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ② (२) सौगन्ध है आदर्श (एवं सुदृढ़) क़ुरआन की।[2]

اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ③ (३) कि निश्चय आप पैग़म्बरों में से हैं।[3]

عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ④ (४) सीधे मार्ग पर हैं।[4]

---

*सूर: *यासीन* की विशेषता में बहुत सी रवायतें प्रसिद्ध (प्रचलित) हैं। इन्हीं में जैसे, यह क़ुरआन का दिल है, इसे उस पर पढ़ो जो मौत के निकट हो, इत्यादि। किन्तु वर्णन क्रम (सनद) के आधार पर कोई सही नहीं, कुछ पूर्णत: बनावटी हैं अथवा कुछ क्षीण हैं। "क़ुरआन के हृदय" वाली रवायत (वर्णन) को हदीस के विशेषज्ञ अलबानी ने बनावटी (गढ़ी हुई) कहा है (अद-दईफ़ा हदीस नम्बर १६९)

[1]कुछ ने इसका अर्थ 'हे मनुष्य' अथवा हे मानव किया है, कुछ ने इसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शुभनाम तथा कुछ ने उसे अल्लाह के शुभ नामों में से बताया है, किन्तु यह सभी कथन तर्कहीन (अप्रमाणित) हैं। यह भी उन हरूफ़े मुक़त्तआत (विभिन्न अक्षरों) में ही से है जिसका अर्थ तथा भावार्थ अल्लाह के सिवाय कोई नहीं जानता।

[2]अथवा सुदृढ़ क़ुरआन की जो वाक्य क्रम तथा अर्थ में सुदृढ़ है, वाव (व) अक्षर सौगन्ध के लिये है। आगे शपथ का उत्तर है।

[3]मुशरेकीन (मूर्तिपूजक) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (आपके ईशदूत होने) को इंकार करते थे तथा कहते थे कि لَسْتَ مُرْسَلًا (अर्रअ्द-४३) "तू तो अल्लाह की ओर से संदेशवाहक ही नहीं है" अल्लाह ने उनके उत्तर में पवित्र क़ुरआन की शपथ लेकर फ़रमाया, "आप निश्चय उसके पैग़म्बरों में से हैं।" इसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रतिष्ठा एवं महानता का प्रदर्शन है। यह भी आप के गुणों एवं विशषताओं में से है कि अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत को प्रमाणित करने के लिए शपथ ग्रहण की। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

[4]यह اِنَّكَ की दूसरी 'ख़बर' (विधेय) है, अर्थात आप उन पैग़म्बरों के पथ पर हैं जो आपसे

The Ummah Technology Mission

تَنْزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿٥﴾

(५) (यह क़ुरआन अल्लाह) प्रभुत्वशाली अत्यन्त दयालु की ओर से अवतरित किया गया है।[1]

لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أُنذِرَ آبَاؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ ﴿٦﴾

(६) ताकि आप ऐसे लोगों को सावधान करें जिनके पूर्वज नहीं डराये गये थे, तो (उसी कारण से) ये लोग अनभिज्ञ हैं।[2]

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٧﴾

(७) उनमें से अधिकतर लोगों पर (यह) बात सिद्ध हो चुकी है, अत: ये लोग ईमान नहीं लायेंगे।[3]

पहले गुज़र चुके हैं, अथवा ऐसे मार्ग पर हैं जो सीधा एवं लक्ष्य (स्वर्ग) तक पहुँचाने वाला है।

[1]अर्थात उस अल्लाह की ओर से अवतरित की हुई है जो प्रभुत्वशाली है, अर्थात उसका इंकार तथा उसके रसूल को झुठलाने वाले से बदला लेने पर सामर्थ्य रखता है। رحيم है अर्थात जो उस पर ईमान लायेगा तथा उसका भक्त बनकर रहेगा उसके लिये अत्यन्त दयालु है।

[2]अर्थात आपको रसूल इसलिए बनाया है तथा यह किताब (पवित्र क़ुरआन) इसलिये उतारा है कि आप उस समुदाय को सावधान करें जिनमें आपसे पहले कोई सावधान करने वाला नहीं आया, इसलिए एक समय से यह सत्य धर्म से अनभिज्ञ हैं। यह विषय पहले भी कई स्थानों पर गुज़र चुका है कि अरबों में आदरणीय इस्माईल के पश्चात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले सीधे कोई नबी नहीं आया, यहाँ भी उसी विषय का वर्णन किया गया है।

[3]जैसे अबू जहल, अबू लहब, उतबा तथा शैबा आदि। बात सिद्ध होने का अभिप्राय अल्लाह तआला का यह वचन है कि "मैं नरक को जिन्नों तथा इन्सानों से भर दूँगा।" (*अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰अस्सजदा-१३*) शैतान को भी सम्बोधित करते हुए अल्लाह ने फ़रमाया था, "मैं नरक को तुझसे तथा तेरे अनुगामियों से भर दूँगा।" (*साद-८४*) अर्थात इन लोगों ने शैतान के पीछे लगकर स्वयं को नरक का पात्र बना लिया। अल्लाह ने तो उन्हें इच्छा का अधिकार एवं स्वाधीनता प्रदान किया था। किन्तु उन्होंने इस का ग़लत प्रयोग किया तथा यूँ नरक का ईंधन बन गये यह नहीं कि अल्लाह ने बलपूर्वक उनको ईमान से वंचित रखा क्योंकि विवश करने की दशा में तो वह दण्ड के अधिकारी ही न हो पाते।

The Ummah Technology Mission

إِنَّا جَعَلْنَا فِيٓ أَعْنَٰقِهِمْ أَغْلَٰلًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُم مُّقْمَحُونَ ﴿٨﴾

(८) हमने उनकी गर्दनों में तौक डाल दिये हैं फिर वह ठुड्डियों तक हैं जिससे उनके सिर ऊपर की ओर उलट गये हैं।[1]

وَجَعَلْنَا مِنۢ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿٩﴾

(९) तथा हमने एक आड़ उनके सम्मुख कर दी तथा एक आड़ उनके पीछे कर दी,[2] जिससे हमने उनको ढाँक दिया[3] तो वे नहीं देख सकते।

وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠﴾

(१०) तथा उनके विषय में आपका डराना अथवा न डराना दोनों समान हैं, ये ईमान नहीं लायेंगे।[4]

إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ ٱتَّبَعَ ٱلذِّكْرَ وَخَشِيَ ٱلرَّحْمَٰنَ بِٱلْغَيْبِ ۖ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ﴿١١﴾

(११) बस आप तो केवल ऐसे व्यक्ति को डरा सकते हैं[5] जो शिक्षा के अनुरूप चले तथा रहमान (अल्लाह) से बिन देखे डरे, तो आप

---

[1]जिसके कारण इधर-उधर देख सकते हैं न सिर झुका सकते हैं अपितु वह सिर ऊपर किये हुए एवं आँखें नीची किये हुए हैं। यह उनके सत्य को स्वीकार न करने तथा व्यय न करने की उपमा है। यह भी सम्भव है कि यह उनकी नरक की यातना की स्थिति का वर्णन हो। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[2]अर्थात सांसारिक जीवन उनके लिए सुशोभित कर दिया गया, यह जैसे उनके सामने की आड़ है जिसके कारण वह सांसारिक स्वार्थ के सिवाय कुछ नहीं देखते तथा यही वस्तु उनके तथा उनके ईमान के बीच आड़ हैं। आख़िरत का ध्यान उन के मन में आना असम्भव हो गया, यह मानो उनके पीछे की आड़ है जिसके कारण वह क्षमा माँगते हैं न शिक्षा ग्रहण करते हैं क्योंकि परलोक का कोई भय ही उनके अन्त:करण में नहीं है।

[3]अथवा उनकी आँखों को ढाँक दिया, अर्थात रसूल से बैर तथा उसके सत्योपदेश से घृणा ने उनकी आँखों पर पट्टी बाँध दी अथवा उन्हें अंधा कर दिया है जिससे वह देख नहीं सकते। यह उनकी दशा की दूसरी उपमा है।

[4]जो अपनी करतूतों के कारण पथभ्रष्टता के उस स्थान पर पहुँच जायें, उनको सावधान करना व्यर्थ होता है।

[5]अर्थात सावधान करने से केवल उसको लाभ पहुँचता है।

The Ummah Technology Mission

उसको क्षमा एवं उत्तम प्रतिदान की शुभसूचना सुना दीजिए।

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ

(१२) नि:संदेह हम मुर्दों को जीवित करेंगे,[1] तथा हम लिखते जाते हैं वे कर्म भी जिनको लोग आगे भेजते हैं[2] तथा उनके वह कर्म

---

[1]अर्थात क़यामत के दिन। यहाँ मुर्दों को जीवित करने की चर्चा से यह संकेत करना उद्देश्य है कि अल्लाह तआला काफ़िरों में जिस का दिल चाहता है जीवित कर देता है जो कुफ़्र तथा कुमार्ग होने के कारण मृत हो चुके होते हैं, फिर वह संमार्ग तथा ईमान को अपना लेते हैं।

[2] مَا قَدَّمُوا से वह कर्म अभिप्राय है जो मनुष्य अपने जीवन में करता है तथा آثَارَهُم से वह कर्म जिनके व्यवहारिक नमूने (अच्छे व बुरे) वह जगत में छोड़ जाता है तथा उसके निधन के पश्चात उसके अनुसरण में लोग वे कर्म करते हैं। जैसे हदीस में है, "जिसने इस्लाम में कोई पुनीत तरीका जारी किया उसके लिए उसका प्रतिकार भी है तथा उसका भी जो तत्पश्चात उस पर कार्यरत होगा बिना इसके कि उनमें से किसी के प्रतिकार में कमी हो, तथा जिसने बुरी रीति निकाली उस पर उसके अपने पाप का भी बोझ होगा और उसका भी जो तत्पश्चात कर्म करेगा बिना इसके कि उनमें से किसी के भार में कमी हो। (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात) इसी प्रकार यह हदीस है कि जब इन्सान मर जात है तो उसके कर्म का क्रम समाप्त हो जाता है अतिरिक्त तीन वस्तुओं के। एक ज्ञान, जिससे लोग लाभ प्राप्त करें, दूसरा नेक सन्तान, जो मृत के लिये प्रार्थना करे, तीसरा संचालित दान (सदक़: जारियह) जिससे उसके मरने के बाद भी लोग लाभ प्राप्त करते रहें। (सहीह मुस्लिम, किताबुल वसीयत, बाबु मा यलहकुल इन्सान मिनस स्वाबे बाद वफ़ातिहि) दूसरा अभिप्राय آثَارَهُم का पद-चिन्ह है अर्थात इन्सान अच्छाई व बुराई के लिये जो यात्रा करता है तथा एक स्थान से दूसरे स्थान को जाता है तो पगों के यह चिन्ह भी लिखे जाते हैं। जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में मस्जिदे नबवी के पास कुछ ख़ाली जगह थी तो बनू सलमा ने वहाँ स्थानान्तरण करना चाहा। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज्ञान में यह बात आई तो आपने मस्जिद के समीप उन्हें स्थानान्तरित होने से रोक दिया तथा कहा. «دِيَارَكُمْ تُكْتَبْ آثَارُكُمْ» (दो बार फ़रमाया) अर्थात तुम्हारे घर यद्यपि दूर हैं किन्तु वहीं रहो, जितने पग चलकर आते हो वह लिखे जाते हैं। (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाबु कसरतिल खुता इलल मसाजिद) इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं यह दोनों अर्थ अपनी जगह सही हैं, इनमें प्रतिकूलता नहीं है, वरन् इसके दूसरे अर्थ में कड़ी चेतावनी है इसलिए कि जब पद चिन्ह तक लिख जाते हैं तो इन्सान जो अच्छा-बुरा नमूना छोड़ जाये जिसका लोग अनुसरण करें तो वह समुचित

The Ummah Technology Mission

فِيْٓ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٢﴾

भी जिनको पीछे छोड़ जाते हैं, तथा प्रत्येक बात को हमने एक खुली किताब में संकलन कर रखा है।[1]

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿١٣﴾

(१३) तथा आप उनके समक्ष एक उदाहरण (अर्थात एक) बस्ती वालों की कथा (उस समय की) वर्णन कीजिए, जबकि उस बस्ती में कई रसूल आये।[2]

اِذْ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا اِنَّآ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ﴿١٤﴾

(१४) जबकि हमने उनके पास दो को भेजा, तो उन लोगों ने (प्रथम) उन दोनों को झुठलाया फिर हमने तीसरे से समर्थन दिया तो उन तीनों ने कहा कि हम तुम्हारे पास भेजे गये हैं।[3]

قَالُوْا مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ ۙ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ﴿١٥﴾

(१५) उन लोगों ने कहा कि तुम तो हमारी तरह साधारण मनुष्य हो तथा दयालु ने कोई वस्तु अवतरित नहीं की, तुम तो केवल झूठ बोलते हो।

قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّآ اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ﴿١٦﴾

(१६) उन रसूलों ने कहा कि हमारा प्रभु जानता है कि वस्तुतः हम तुम्हारी ओर भेजे गये हैं।

रूप से लिखे जायेंगे।

[1]इससे अभिप्राय लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तक) है तथा कुछ ने कर्मपत्र तात्पर्य लिये हैं।

[2]ताकि मक्कावासी समझ लें की आप कोई अद्भुत ईशदूत (नबी) नहीं हैं अपितु यह ईशदूतों का क्रम आदि से चला आ रहा है।

[3]यह तीन रसूल कौन थे भाष्यकारों ने उनके विभिन्न नाम वर्णन किये हैं किन्तु नाम प्रमाणित माध्यम से सिद्ध नहीं हैं। कुछ व्याख्याकारों का विचार है कि यह ईशदूत ईसा के भेजे हुए दूत थे जो उन्होंने अल्लाह के आदेश से एक बस्ती में धर्म के प्रचार एवं प्रसार के लिए भेजे थे। वस्ती का नाम अंताकिया था।

The Ummah Technology Mission

وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٧﴾

(१७) तथा हमारा कर्तव्य तो केवल स्पष्ट रूप से पहुँचा देना है।

قَالُوْٓا اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٨﴾

(१८) उन्होंने कहा कि हम तो तुम्हें अशुभ समझते हैं।[1] यदि तुम न रूके तो हम तुम्हें पत्थरों से मारकर तुम्हारा कार्य समाप्त कर देंगे तथा तुमको हमारी ओर से कड़ा कष्ट पहुँचेगा।

قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ۭ اَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿١٩﴾

(१९) उन (रसूलों) ने कहा कि तुम्हारा अशुभ तो तुम्हारे साथ ही लगा हुआ है,[2] क्या उसको (अशुभ समझते हो) कि तुमको शिक्षा दी जाये, बल्कि तुम तो सीमा उल्लंघन करने वाले हो।

وَجَاۗءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा एक व्यक्ति उस नगर के अन्तिम छोर से दौड़ता हुआ आया, कहने लगा कि हे मेरे समुदाय के लोगो इन रसूलों (संदेष्टाओं) के मार्ग पर चलो।[3]

اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢١﴾

(२१) ऐसे लोगों के मार्ग पर चलो जो तुमसे कोई पारिश्रमिक नहीं माँगते तथा वे सत्य-मार्ग पर हैं।

---

[1]संभव है कि कुछ लोग ईमान लाये हों, जिनको उन्होंने نعوذ بالله रसूलों का अशुभ कहा, अथवा वर्षा का क्रम स्थगित हो गया हो तो वह समझे हों कि यह इन रसूलों का अशुभ है, نعوذ بالله من ذلك जैसे आज भी दुरात्मा तथा धर्म एवं धर्मविधान से वंचित लोग ईमानदार तथा सदाचारी लोगों ही को अशुभ समझते हैं।

[2]अर्थात वह तो तुम्हारे कुकर्मों का परिणाम है जो तुम्हारे साथ ही है न कि हमारे साथ।

[3]यह व्यक्ति मुसलमान था, जब उसे पता चला कि जाति पैग़म्बरों के निमन्त्रण को नहीं अपना रही है तो उसने आकर रसूलों का पक्ष लिया तथा उनके अनुसरण पर प्रोत्साहित किया।

The Ummah Technology Mission

وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा मुझे क्या हो गया है कि मैं उसकी इबादत न करूँ, जिसने मुझे पैदा किया तथा तुम सब उसी की ओर लौटाये जाओगे।[1]

أَأَتَّخِذُ مِن دُونِهِ آلِهَةً إِن يُرِدْنِ الرَّحْمَٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنقِذُونِ ﴿٢٣﴾

(२३) क्या मैं उसे छोड़ ऐसों को उपास्य बना लूँ कि यदि (अल्लाह) दयालु मुझे कोई हानि पहुँचाना चाहे, तो उनकी सिफ़ारिश मुझे कुछ भी लाभ न पहुँचा सके तथा न वह मुझे बचा सकें।[2]

إِنِّي إِذًا لَّفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٤﴾

(२४) फिर तो मैं निश्चय खुली गुमराही में हूँ।[3]

إِنِّي آمَنتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ ﴿٢٥﴾

(२५) मेरी सुनो ! मैं तो (स्वच्छ हृदय से) तुम सबके प्रभु पर ईमान ला चुका।[4]

---

[1]अपने धर्म तौहीद (एकेश्वरवाद) को स्पष्ट किया जिसका उद्देश्य अपनी जाति का हित तथा उनका सही मार्गदर्शन था। यह भी संभव है कि उसकी जाति ने उस से कहा हो कि क्या तू भी उस पूज्य की उपासना करता है जिसकी ओर यह रसूल हमें बुला रहे हैं, तथा हमारे उपास्यों को तू भी छोड़ बैठा है ? जिसके उत्तर में उसने यह कहा। भाष्यकारों ने उसका नाम हबीब नज्जार बताया है।

[2]यह उन झूठे उपास्यों की विवशता का स्पष्टीकरण है, जिनकी पूजा उसकी जाति करती थी तथा शिर्क की इस पथभ्रष्टता से निकालने के लिए रसूल उनकी ओर भेजे गये थे। "न बचा सकें" का अभिप्राय है कि यदि अल्लाह मुझे हानिग्रस्त करना चाहे तो यह बचा नहीं सकते।

[3]अर्थात यदि मैं भी तुम्हारे समान अल्लाह को छोड़कर ऐसे लाचार एवम् विवश उपास्यों की वन्दना आरम्भ कर दूँ तो मैं भी पथभ्रष्टता में जा गिरूँगा। अथवा ضلال (पथभ्रष्टता) यहाँ خسران (क्षति) के अर्थ में है, अर्थात यह तो खुली हानि का सौदा है।

[4]उसके तौहीद (अद्वैतवाद) एवं तौहीद के इक़रार के कारण जाति ने उसकी हत्या करनी चाही, तो उसने पैग़म्बरों को संबोधित करते हुए कहा, अभिप्राय अपने ईमान पर इन सन्देश वाहकों को गवाह (साक्षी) बनाना था, अथवा अपनी जाति को सम्बोधित करके कहा, जिससे तात्पर्य सत्यधर्म पर अपनी दृढ़ता एवं स्थिरता दिखानी थी कि तुम जो चाहो

The Ummah Technology Mission

قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ؕ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِيْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾

(२६) (उससे) कहा गया कि स्वर्ग में चला जा, कहने लगा, काश कि मेरी जाति को भी ज्ञान हो जाता।

بِمَا غَفَرَ لِيْ رَبِّيْ وَجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٧﴾

(२७) कि मुझे मेरे प्रभु ने क्षमा कर दिया तथा मुझे सम्मानित व्यक्तियों में से कर दिया।[1]

وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى قَوْمِهٖ مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ ﴿٢٨﴾

(२८) तथा उसके पश्चात हमने उसकी जाति पर आकाश से कोई सेना नहीं अवतरित की।[2] तथा न इस प्रकार हम अवतरित करते हैं।[3]

اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ ﴿٢٩﴾

(२९) वह तो केवल एक ज़ोरदार चीख़ थी कि सहसा वह सब के सब बुझ-बुझा गये।[4]

कर लो किन्तु सुन लो कि मेरा ईमान (विश्वास) उसी पालनहार पर है जो तुम्हारा भी पोषक है। कहते हैं कि उसे उन्होंने मार डाला तथा किसी ने उनको इससे नहीं रोका رحمه الله تعالى (उस पर अल्लाह तआला की दया हो)।

[1]अर्थात जिस ईमान एवं तौहीद के कारण मुझे प्रभु ने क्षमा कर दिया, काश मेरी जाति इस बात को जान ले ताकि वे भी ईमान तथा तौहीद (अद्वैतवाद) को अपनाकर अल्लाह की क्षमा एवं उसके प्रदानों के पात्र हो जाये। इस प्रकार वह मरने के पश्चात भी अपनी जाति का हितैषी रहा। एक सच्चे मोमिन को ऐसा ही होना चाहिए कि वह प्रत्येक क्षण लोगों का भला करे अपकार न करे, उनको सही निर्देश दे पथभ्रष्ट न करे, लोग उसे जो चाहें कहें तथा जैसा व्यवहार चाहें करें यहाँ तक कि उसे मार डालें।

[2]अर्थात हबीब नज्जार की हत्या होने के पश्चात उनके विनाश के लिए आकाश से फ़रिश्तों की कोई सेना नहीं उतारी। यह इस जाति की हीनता की ओर संकेत है।

[3]अर्थात जिस समुदाय का विनाश किसी दूसरी रीति से लिखी होती है तो वहाँ हम फ़रिश्ते उतारते भी नहीं।

[4]कहते हैं कि जिब्रील (फ़रिश्ते) ने एक चीख़ मारी, जिससे सबके प्राणों ने शरीर त्याग दिया तथा बुझी अग्नि के समान हो गये। मानों जीवन प्रज्वलित अग्नि है तथा मौत उसका बुझा कर राख हो जाना।

The Ummah Technology Mission

يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَأْتِيهِمْ مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٣٠﴾

(३०) (ऐसे) बन्दों पर अफ़सोस[1] ! कभी भी कोई रसूल उनके पास नहीं आया जिसका उपहास उन्होंने न उड़ाया हो।

أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٣١﴾

(३१) क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पूर्व बहुत से समुदायों को हमने ध्वस्त कर दिया कि वे उनकी ओर[2] नहीं लौटेंगे।

وَإِن كُلٌّ لَّمَّا جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा नहीं है कोई समूह परन्तु यह कि वह एकत्रित होकर हमारे समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा।[3]

وَآيَةٌ لَّهُمُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ ۖ أَحْيَيْنَاهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ ﴿٣٣﴾

(३३) तथा उनके लिए एक निशानी[4] (सूखी) मृत धरती है जिसको हमने जीवित कर दिया तथा उससे अन्न निकाल दिया जिसमें से वे खाते हैं।

وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِّن نَّخِيلٍ

(३४) तथा हम ने उसमें खजूरों के तथा अंगूरों के बाग़ात उत्पन्न कर दिये,[5] तथा

---

[1]खेद एवं पश्चाताप का प्रदर्शन स्वयं अपने ऊपर, क़ियामत (प्रलय) के दिन यातना देखने के बाद करेंगे कि काश उन्होंने अल्लाह के बारे में आलस्य न किया होता, अथवा अल्लाह बन्दों पर खेद व्यक्त कर रहा है कि जब भी उनके पास कोई रसूल आया तो उन्होंने उसके साथ उपहास ही किया।

[2]इसमें मक्का के निवासियों के लिये चेतावनी है कि रिसालत को झुठलाने के कारण पिछली जातियों का विनाश हुआ, यह भी नाश हो सकते हैं।

[3]इसमें لَا "नहीं" के अर्थ में है तथा لَمَّا अर्थ में है إِلَّا के, अभिप्राय यह है कि सभी लोग विगत भी तथा आगामी भी अल्लाह के सदन में उपस्थित होंगे जहाँ उनका लेखा-जोखा होगा।

[4]अर्थात अल्लाह के अस्तित्व, उसके पूर्ण सामर्थ्य तथा मुर्दों को पुनः जीवित करने पर चिन्ह।

[5]अर्थात निर्जीव धरती को जीवित करके हमने खाने के लिये केवल अन्न ही नहीं उगाये अपितु स्वाद के लिए विभिन्न प्रकार के फल भी प्रचुर्ता से पैदा करते हैं। यहाँ मात्र दो फलों की चर्चा इसलिए की गई कि यह बहुत लाभदायक हैं तथा अरबों को रूचिकर भी,

The Ummah Technology Mission

وَّ اَعۡنَابٍ وَّ فَجَّرۡنَا فِیۡهَا مِنَ الۡعُیُوۡنِ ﴿۳۴﴾

जिनमें हम ने जलस्रोत भी प्रवाहित कर दिये हैं।

لِیَاۡكُلُوۡا مِنۡ ثَمَرِهٖ ۙ وَ مَا عَمِلَتۡهُ اَیۡدِیۡهِمۡ ؕ اَفَلَا یَشۡكُرُوۡنَ ﴿۳۵﴾

(३५) ताकि (लोग) इसके फल खायें,[1] तथा उन के हाथों ने उसको नहीं बनाया।[2] फिर क्यों कृतज्ञता व्यक्त नहीं करते।

سُبۡحٰنَ الَّذِیۡ خَلَقَ الۡاَزۡوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنۡۢبِتُ الۡاَرۡضُ وَ مِنۡ اَنۡفُسِهِمۡ وَ مِمَّا لَا یَعۡلَمُوۡنَ ﴿۳۶﴾

(३६) वह पवित्र शक्ति है जिसने प्रत्येक वस्तु के जोड़े पैदा किये, चाहे वह धरती से उगायी हुई वस्तुयें हों, चाहे स्वयं उनकी अपनी जाति (अस्तित्व) हो, चाहे वे (वस्तुयें) हों जिन्हें ये जानते भी नहीं।[3]

तथा इनकी उपज भी अरब में अधिक है। फिर अन्न की चर्चा पहले की क्योंकि उसकी उपज भी अधिक है तथा खाद्यान्न होने के कारण उसका महत्व भी निर्विवाद। जब तक इन्सान रोटी, चावल आदि खाद्यान्न से अपना पेट नहीं भरता मात्र फल से उसकी खाने की आवश्यकता पूरी नहीं होती।

[1]अर्थात कुछ स्थान पर स्रोत भी प्रवाहित करते हैं जिसके जल से पैदा होने वाले फल लोग खायें।

[2]इमाम इब्ने जरीर के विचार में यहाँ ـه नकारात्मक है, अर्थात अन्न तथा फलों की पैदावार अल्लाह तआला की विशेष दया है जो वह अपने बन्दों पर करता है। इसमें उनके प्रयास एवं परिश्रम, तथा अधिकार का हस्तक्षेप नहीं। फिर भी इन उपकारों पर उसकी कृतज्ञता क्यों नहीं दिखाते ? कुछ के निकट ـه वह है, जो الّذی के अर्थ में है, अर्थात ताकि उसका फल खायें और जिनको उनके हाथों ने बनाया। हाथों का कर्म है धरती को समतल करके बीज बोना। ऐसे ही फलों के खाने की विभिन्न विधि हैं, उन्हें निचोड़कर उनका रस पीना, अनेक फलों के योग से चाट बनाना इत्यादि।

[3]अर्थात इन्सानों के समान धरती की प्रत्येक उपज में हमने नर-मादा दोनों बनाया है। इनके सिवाय आकाशों में तथा धरती की गहराईयों में भी जो वस्तुयें तुमसे गुप्त हैं, जिनका ज्ञान तुम नहीं रखते, उनमें भी जोड़ा (नर-मादा) की यह व्यवस्था हमने रखी है। अत: सभी उत्पत्ति जोड़ा-जोड़ा है, वनस्पति में भी नर-मादे की व्यवस्था है यहाँ तक कि आलौकिक जीवन परलोक के जीवन के लिये जोड़ा स्वरूप है तथा यह परलोक के जीवन

The Ummah Technology Mission

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيۡلُ ۚ نَسۡلَخُ مِنۡهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمۡ مُّظۡلِمُوۡنَ ﴿۳۷﴾

(३७) तथा उनके लिए एक निशानी रात्रि है, जिससे हम दिन को खींच देते हैं तो सहसा वे अंधकार में रह जाते हैं।[1]

وَالشَّمۡسُ تَجۡرِىۡ لِمُسۡتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ تَقۡدِيۡرُ الۡعَزِيۡزِ الۡعَلِيۡمِ ﴿۳۸﴾

(३८) तथा सूर्य के लिए जो निर्धारित मार्ग है वह उसी पर चलता रहता है।[2] यह है निर्धारित किया हुआ प्रभावशाली सर्वज्ञ (अल्लाह तआला) का।

وَالۡقَمَرَ قَدَّرۡنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى

(३९) तथा चन्द्रमा की हमने मंज़िलें निर्धारित कर रखी हैं[3] यहाँ तक कि वह घूम फिर कर

के लिए एक बौद्धिक युक्ति भी है। मात्र एक अल्लाह है जो उत्पत्ति की इस विशेषता तथा अन्य सभी कमियों से पवित्र है, वह वित्र (विषम) है जोड़ा नहीं।

[1]अर्थात अल्लाह के सामर्थ्य का एक तर्क यह भी है कि वह दिन को रात्रि से अलग कर देता है जिससे तुरन्त अंधेरा हो जाता है। سلخ (सलख) का अर्थ होता है जानवर की खाल उसके शरीर से अलग करना, जिससे उसका माँस प्रकट हो जाता है। इसी प्रकार अल्लाह दिन को रात से अलग कर देता है। أظلم (अज़लम) का अर्थ है अंधकार में प्रवेश कर जाना, जैसे أصبح तथा أمسى (अस्वह एवं अम्सा) तथा أظهر (अजहर) के अर्थ हैं प्रातः, संध्या तथा दोपहर के समय में प्रवेश करना।

[2]अर्थात अपनी धुरी (आकाश) पर चलता रहता है जो अल्लाह ने उसके लिए निर्धारित किया है, इसी से अपनी यात्रा आरम्भ करता तथा वहीं समाप्त करता है, इससे इधर-उधर नहीं होता कि किसी ग्रह से टकरा जाये दूसरा अर्थ है अपने ठहरने की जगह तक, और उसका यह स्थान अर्श के नीचे है जो सूरः अल-हज आयत संख्या १८ की व्याख्या में गुज़र चुका है, कि सूर्य प्रत्येक दिन डूबने के पश्चात अर्श के नीचे सजदा करता है और फिर वहाँ से उदय होने की अनुमति माँगता हैं (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरः यासीन) दोनों भावार्थ के आधार पर لمستقر में अक्षर 'लाम' कारण बताने के लिये है। أي-لأجل مستقرّلها कुछ का कहना है कि लाम لام (इला 'तक') के अर्थ में है, फिर مُستقرّ प्रलय दिवस होगा। अर्थात सूर्य का यह चलना प्रलय के दिन तक है, क़ियामत (प्रलय) के दिन उसकी गति समाप्त हो जायेगी। यह तीनों भावार्थ अपने-अपने स्थान पर सही हैं।

[3]चन्द्रमा की २८ मंजिलें हैं, नित्य दिन एक मंज़िल पार करता है फिर दो रात लुप्त रहकर तीसरी रात उदय हो जाता है।

The Ummah Technology Mission

عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ﴿٣٩﴾

पुरानी टेहनी के समान हो जाता है।[1]

لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۭ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿٤٠﴾

(४०) न सूर्य के वश में है कि चन्द्रमा को पकड़े[2] तथा न रात्रि दिन से आगे बढ़ जाने वाली है,[3] तथा सबके सब आकाश में तैरते फिरते हैं।[4]

وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿٤١﴾

(४१) तथा उनके लिए एक निशानी (यह भी) है कि हमने उनकी सन्तान को भरी हुई नाव में सवार किया।[5]

وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ﴿٤٢﴾

(४२) तथा इनके लिए उसी जैसी अन्य वस्तुयें पैदा कीं जिन पर ये सवार होते हैं।[6]

---

[1]अर्थात जब अन्तिम मंजिल पर पहुँचता है तो अति पतला तथा छोटा हो जाता है जैसे खजूर की पुरानी टहनी हो जो सूख कर टेढ़ी हो जाती है। चाँद के इसी चक्र से धरती के निवासी अपने दिनों, महीनों तथा वर्षों का हिसाब तथा अपनी उपासना का समय निश्चित करते हैं।

[2]अर्थात सूर्य के लिये यह संभव नहीं कि वह चाँद को जा पकड़े जिससे उसका प्रकाश समाप्त हो जाये अपितु दोनों का अलग अलग मार्ग तथा पृथक-पृथक सीमा है। सूर्य दिन ही को तथा चाँद रात्रि ही को उदय होता है इसके विपरीत कभी नहीं हुआ, जो सृष्टि के एक व्यवस्थापक के होने की एक बहुत बड़ी युक्ति है।

[3]अपितु यह भी एक व्यवस्था क्रम से बँधे हुए हैं तथा एक-दूसरे के पश्चात आते हैं।

[4] كُلٌّ (प्रत्येक) से तात्पर्य सूर्य, चाँद अथवा उसके साथ अन्य ग्रहें हैं, सब अपने अपने अक्ष पर फिरते हैं, उनका परस्पर टकराव नहीं होता।

[5]इसमें अल्लाह तआला अपने उस अनुग्रह की चर्चा कर रहा है कि उसने तुम्हारे लिये समुद्र में नवका का चलना सरल कर दिया यहाँ तक कि तुम अपने साथ भरी हुई नवकाओं में अपने बच्चों को भी ले जाते हो दूसरा अर्थ यह किया गया है कि ذُرِّيَّة से तात्पर्य ذُرِّيَّة के पितागण हैं तथा नवका से अभिप्राय नूह की नवका है, अर्थात नूह की नवका में उन लोगों को सवार किया जिनसे बाद में मानव वंश चला। मानो मानव जाति के पिता इसी में सवार थे।

[6]इससे अभिप्राय ऐसी सवारियाँ हैं जो नवका की भाँति मानव तथा व्यवसायिक सामान को एक जगह से दूसरी जगह ले जाती हैं इसमें क़ियामत (प्रलय) तक पैदा होने वाली वस्तुयें आ गईं, जैसे वायुयान, जलयान, रेलें, बसें, कारें तथा अन्य परिवाहन के साधन।

The Ummah Technology Mission

وَإِنْ نَّشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنقَذُونَ ﴿٤٣﴾

(४३) तथा यदि हम चाहते तो उन्हें डुबा देते फिर न कोई उनका सहायता करने वाला होता तथा न बचाये जाते।

إِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ﴿٤٤﴾

(४४) परन्तु हम अपनी ओर से दया करते हैं तथा एक अवधि तक के लिए उन्हें लाभ दे रहे हैं।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٤٥﴾

(४५) तथा उनसे जब (कभी) कहा जाता है कि अगले-पिछले (पापों) से बचो ताकि तुम पर दया की जाये।

وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٤٦﴾

(४६) तथा उनके पास उनके प्रभु की ओर से कोई निशानी ऐसी नहीं आती जिससे ये मुख न फेरते हों।[1]

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَنفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنُطْعِمُ مَن لَّوْ يَشَاءُ اللَّهُ أَطْعَمَهُ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा उनसे जब कहा जाता है कि अल्लाह (तआला) के दिये हुए में से कुछ ख़र्च करो[2] तो ये काफ़िर ईमानवालों को उत्तर देते हैं कि हम उन्हें क्यों खिलायें जिन्हें यदि अल्लाह (तआला) चाहता तो स्वयं खिला-पिला देता?[3] तुम तो हो ही खुली पथभ्रष्टता में।[4]

---

[1]अर्थात तौहीद (अद्वैत) तथा रसूल की सत्यता की जो भी निशानी उनके सामने आती है उस पर ध्यान ही नहीं देते कि जिनसे उनको लाभ हो। प्रत्येक निशानी से मुँह फेरना उनका आचरण है।

[2]अर्थात निर्धनों, दरिद्रों एवं ज़रूरतमंदों को।

[3]अर्थात अल्लाह चाहता तो इनको निर्धन ही न बनाता, हम इनको देकर अल्लाह की इच्छा के विपरीत क्यों करे।

[4]अर्थात यह कहकर कि दरिद्रों की सहायता करो, खुली त्रुटि का प्रदर्शन कर रहे हो। यह बात तो सही थी कि निर्धनता एवं दरिद्रता अल्लाह की चाहत ही थी, किन्तु इसको

The Ummah Technology Mission

وَيَقُولُونَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा वह कहते हैं कि यह वादा (क़यामत की धमकी) कब आयेगा, सच्चे हो तो बताओ।

مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ﴿٤٩﴾

(४९) उन्हें केवल एक ज़ोरदार चीख़ की प्रतीक्षा है जो उन्हें आ पकड़ेगी तथा ये आपसी लड़ाई-झगड़े में ही होंगे।[1]

فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَّلَا إِلٰى أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٠﴾

(५०) उस समय ये न तो वसीयत कर सकेंगे तथा न अपने परिवार की ओर लौट सकेंगे।

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَإِذَا هُمْ مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُونَ ﴿٥١﴾

(५१) तथा नरसिंघा के फूँके जाते ही[2] सब के सब अपनी क़ब्रों से अपने प्रभु की ओर (तीव्रगति) से चलने लगेंगे।

قَالُوا يٰوَيْلَنَا مَنْ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ

(५२) कहेंगे कि हाय-हाय हमें हमारे शयनकक्षों से किसने उठा दिया,[3] यही है

अल्लाह के आदेश से मुख मोड़ने का औचित्य बना लेना अनुचित (ग़लत) था, आख़िर उनकी सहायता का आदेश देने वाला भी तो अल्लाह ही था, इसलिए उसकी प्रसन्नता तो इसी में है कि निर्धनों एवं दरिद्रों की सहायता की जाये। इसलिए चाहत और चीज़ है तथा प्रसन्नता और चीज़। चाहत का सम्बन्ध उत्पत्ति विषय से है जिसके अधीन जो कुछ भी होता है, उसकी नीति तथा भेद को अल्लाह के सिवाय कोई नहीं जानता तथा प्रसन्नता का सम्बन्ध धार्मिक विषयों से होता है, जिन्हें पूरा करने का हमें आदेश दिया गया है ताकि हमें उसकी प्रसन्नता प्राप्त हो।

[1]अर्थात लोग बाज़ारों में क्रय-विक्रय तथा वाद-विवाद में व्यस्त होंगे कि सहसा नरसिंघा फूँक दिया जायेगा एवं क़ियामत व्याप्त हो जायेगी। यह प्रथम फूँक होगी, इसको نفخة فزع (घबराहट की फूँक) भी कहते हैं। कहा जाता है कि कि इसके बाद दूसरी फूँक होगी। नफ़ख़तुस्साक (बेहोशी की फूँक) जिससे अल्लाह तआला के सिवाय सब मौत की गोद में चले जायेंगे।

[2]प्रथम कथन के आधार पर यह نفخة ثانية (दूसरी फूँक) तथा दूसरे कथानुसार यह نفخة ثالثة (तीसरी फूँक) होगी जिसे نفخة البعث والنشور (जीवित होने एवं उठने का फूँक) कहते हैं, इससे लोग क़ब्रों से जीवित उठ खड़े होंगे (इब्ने कसीर)

[3]क़ब्र को शयनकक्ष कहने से तात्पर्य यह नहीं कि क़ब्र में उनको दण्ड नहीं होगा वरन् तत्पश्चात जो भयानक दृश्य तथा यातना की कठोरता को देखेंगे उसकी तुलना में उन्हें क़ब्र का जीवन एक स्वप्न ही प्रतीत होगा।

The Ummah Technology Mission

هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٢﴾

जिसका वचन दयालु ने दिया था तथा रसूलों ने सच-सच कह दिया था।

اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٥٣﴾

(५३) यह नहीं है परन्तु एक तीव्र ध्वनि कि सहसा सारे के सारे एकत्रित होकर हमारे समक्ष उपस्थित कर दिये जायेंगे।

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّلَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٤﴾

(५४) तो आज किसी व्यक्ति पर तनिक भी अत्याचार न किया जायेगा तथा तुम्हें नहीं बदला दिया जायेगा किन्तु उन्हीं कार्यों का जो तुम किया करते थे।

اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ﴿٥٥﴾

(५५) नि:सन्देह स्वर्ग वाले लोग आज के दिन अपने (मनोरंजन) कार्यों में व्यस्त प्रफुल्लित एवं आनन्दित हैं।[1]

هُمْ وَاَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى الْاَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ﴿٥٦﴾

(५६) वह तथा उनकी पत्नियाँ छाओं में मसहरियों पर तकिया लगाये बैठे होंगे।

لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ﴿٥٧﴾

(५७) उनके लिए स्वर्ग में हर प्रकार के मेवे होंगे तथा अन्य भी जो कुछ वे माँगेंगे।

سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿٥٨﴾

(५८) कृपालु प्रभु की ओर से उनको 'सलाम' कहा जायेगा।[2]

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٩﴾

(५९) तथा हे पापियो ! आज तुम अलग हो जाओ।[3]

---

[1] فَاكِهُوْنَ का अर्थ فَرِحُوْن है अर्थात प्रफुल्लित, आनन्दित।

[2] अल्लाह का यह सलाम फ़रिश्ते स्वर्गवासियों को पहुँचायेंगे, कुछ कहते हैं कि अल्लाह तआला (परमेश्वर) स्वयं सलाम कहेगा।

[3] अर्थात ईमानवालों से अलग खड़े हो। अर्थात मैदाने महशर (एकत्रित होने के क्षेत्र) में ईमानदार तथा आज्ञाकारी, नास्तिक एवं अवज्ञाकारी अलग-अलग कर दिये जायेंगे। जैसे

The Ummah Technology Mission

اَلَمۡ اَعۡهَدۡ اِلَيۡكُمۡ يٰبَنِىۡۤ اٰدَمَ اَنۡ لَّا تَعۡبُدُوا الشَّيۡطٰنَ ۚ اِنَّهٗ لَكُمۡ عَدُوٌّ مُّبِيۡنٌ ۙ﴿۶۰﴾

(६०) हे आदम की सन्तान ! क्या मैंने तुमसे वचन नहीं लिया था कि तुम शैतान की उपासना न करना,[1] वह तो तुम्हारा खुला शत्रु है।[2]

وَّاَنِ اعۡبُدُوۡنِىۡ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسۡتَقِيۡمٌ ۙ﴿۶۱﴾

(६१) तथा मेरी ही इबादत (उपासना) करना,[3] सीधा मार्ग यही है।[4]

وَلَقَدۡ اَضَلَّ مِنۡكُمۡ جِبِلًّا كَثِيۡرًا ؕ اَفَلَمۡ تَكُوۡنُوۡا تَعۡقِلُوۡنَ ۙ﴿۶۲﴾

(६२) तथा शैतान ने तो तुममें से अधिकतर गिरोहों को बहका दिया, क्या तुम बुद्धि नहीं रखते।[5]

दूसरे स्थान पर फ़रमाया ﴿وَيَوۡمَ تَقُوۡمُ السَّاعَةُ يَوۡمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوۡنَ﴾ (अर्रूम-१४) ﴿يَوۡمَئِذٍ يَّصَّدَّعُوۡنَ﴾ (अर्रूम-४३) أي يصيرون صدعين فرقتين "उस दिन लोग दो समुदायों में विभाजित हो जायेंगे" दूसरा अभिप्राय यह है कि अपराधियों ही को विभिन्न समूहों में अलग-अलग कर दिया जायेगा, जैसे यहूदियों का समूह, इसाईयों का समूह, साबियों का समूह, अग्नि पूजकों का समूह, व्यभिचारियों तथा मदिरा पान करने वालों का गिरोह इत्यादि।

[1]इससे तात्पर्य عهدألست है, जो वचन आदम की पीठ से निकालने के समय लिया गया अथवा वह वसीयत है जो पैग़म्बरों के मुख से लोगों को की जाती रही। तथा कुछके यहाँ वह बौद्धिक तर्क है जो आकाश तथा धरती में अल्लाह ने स्थापित किये हैं (फ़तहुल क़दीर)।

[2]यह उसका कारण है कि तुम्हें शैतान की वंदना तथा उसका शंसय मानने से इसलिए रोका गया था कि वह तुम्हारा खुला शत्रु है, तथा उसने तुम्हें पथभ्रष्ट करने की शपथ ले रखी है।

[3]अर्थात यह भी वचन लिया था कि मात्र मेरी ही वंदना करना, मेरी वंदना में किसी को साझी न बनाना।

[4]अर्थात मात्र एक अल्लाह की आराधना करना, यही वह सीधा मार्ग है जिसकी ओर सभी अम्बिया बुलाते रहे तथा यही अभीष्ट स्थान अर्थात स्वर्ग तक पहुँचने वाला है।

[5]अर्थात इतनी भी बुद्धि तुममें नहीं कि शैतान तुम्हारा शत्रु है, उसकी बात नहीं माननी चाहिए, तथा मैं तुम्हारा प्रभु हूँ, मैं ही तुम्हें जीविका प्रदान करता हूँ तथा मैं ही तुम्हारी रात-दिन रक्षा करता हूँ। अत: तुम्हें मेरी आज्ञा माननी चाहिए तुम शैतान की शत्रुता

The Ummah Technology Mission

هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِیْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿۶۳﴾

(६३) यही वह नरक है जिसका तुम्हें वचन दिया जाता था।

اِصْلَوْهَا الْیَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۶۴﴾

(६४) अपने कुफ़्र का बदला प्राप्त करने के लिए आज उसमें प्रवेश कर जाओ।[1]

اَلْیَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰۤى اَفْوَاهِهِمْ وَ تُكَلِّمُنَاۤ اَیْدِیْهِمْ وَ تَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿۶۵﴾

(६५) हम आज के दिन उनके मुख पर मुद्रायें (मोहरें) लगा देंगे तथा उनके हाथ हमसे बात करेंगे तथा उनके पैर गवाही देंगे उनके कार्यों की जो वे करते थे।[2]

وَ لَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰۤى اَعْیُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى یُبْصِرُوْنَ ﴿۶۶﴾

(६६) तथा यदि हम चाहते तो उनकी आँखें अंधी कर देते, फिर ये मार्ग की ओर दौड़ते भागते परन्तु उन्हें कैसे दिखाई देता ?[3]

तथा मेरी वन्दना के अधिकार को न समझ कर अति निर्बोध तथा मूर्खता का प्रदर्शन कर रहे हो।

[1]अर्थात अब उस मूर्खता का फल भोगो तथा अपने कुफ़्र (इंकार) के कारण नरक की कड़ी यातना का स्वाद चखो।

[2]यह मुद्रा (मोहर) लगाने की आवश्यकता इसलिए होगी कि आरम्भ में मुश्रेकीन (द्वैतवादी) प्रलय के दिन भी झूठ बोलेंगे, तथा कहेंगे।

﴿وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِیْنَ﴾

"अल्लाह की क़सम जो हमारा प्रभु है, हम मिश्रणवादी (मुशरिक) नहीं थे।" (*अल-अनआम*-२३)

तो अल्लाह उनके मुखों पर मोहर लगा देगा जिससे वह तो स्वयं बोलने की शक्ति से वंचित हो जायेंगे। हाँ, अल्लाह तआला (परमेश्वर) मानवीय अंगों को वाक शक्ति प्रदान करेगा। हाथ बोलेंगे कि हमसे इसने अमुक-अमुक काम लिया था तथा पग गवाही देंगे। यूँ मानो इक़रार तथा गवाही दोनों समस्याओं का समाधान हो जायेगा। इसके सिवाय बोलने वाले के विपरीत अनबोल वस्तुओं का गवाही देना युक्ति एवं तर्क में अधिक प्रभावी है कि इसमें एक चमत्कारी दशा पायी जाती है (फतहुल क़दीर)। इस विषय का अहादीस में भी वर्णन किया गया है। (देखिये सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद)

[3]अर्थात दृष्टि से वंचित होने के पश्चात उन्हें मार्ग किस प्रकार दिखायी देता ? किन्तु यह तो हमारी सहनशीलता एवं दया है कि हमने ऐसा नहीं किया।

The Ummah Technology Mission

وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٧﴾

(६७) तथा यदि हम चाहते तो उनके स्थान ही पर उनके मुख विकृत कर देते, फिर न वे चल-फिर सकते तथा न लौट सकते।[1]

وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِى الْخَلْقِ ؕ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٨﴾

(६८) तथा जिसे हम बूढ़ा करते हैं उसे जन्म के समय की अवस्था की ओर पुनः लौटा देते हैं,[2] क्या फिर भी वह नहीं समझते ?[3]

وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِىْ لَهٗ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿٦٩﴾ۙ

(६९) तथा न तो हमने इस पैग़म्बर को काव्य सिखाया तथा न यह इसके योग्य है। यह तो केवल शिक्षा तथा स्पष्ट क़ुरआन है।[4]

---

[1]अर्थात न आगे जा सकते न पीछे लौट सकते अपितु पत्थर के समान एक स्थान पर पड़े रहते। مَسْخ (मस्ख) पैदाईश में परिवर्तन के हैं, अर्थात मानव से पत्थर अथवा पशु के रूप में बदल देना।

[2]अर्थात हम जिसको दीर्घ आयु देते हैं उसकी पैदाईश को बदलकर विपरीत स्थिति में कर देते हैं। अर्थात जब वह बच्चा होता है तो बढ़ता रहता है तथा उसकी मांसिक एवं शारीरिक शक्ति में प्रगति होती रहती है। यहाँ तक कि वह युवा एवं अधेड़ आयु को पहुँच जाता है। उसके पश्चात उसके विपरीत मानसिक तथा शारीरिक शक्ति में दुर्बलता एवं पतन का कार्य आरम्भ हो जाता है यहाँ तक कि वह एक बच्चे के समान हो जाता है।

[3]कि जो अल्लाह इस तरह कर सकता है क्या वह पुनः इन्सानों को जीवित करने पर समर्थ नहीं ?

[4]मक्का के मूर्तिपूजक नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में विभिन्न बातें कहते रहते थे। उनमें एक बात यह भी थी कि आप कवि हैं तथा यह पवित्र क़ुरआन आपकी कविता की तुकबन्दी है। अल्लाह ने उसका खण्डन किया कि आप कवि हैं न पवित्र क़ुरआन कविता का संग्रह है, अपितु यह मात्र नसीहत एवं शिक्षा है। कविता में साधारणतः अतिश्योक्ति तथा मात्र कल्पनाओं की विचित्रता होती है। यूँ मानो वह झूठ पर आधारित होती है। इसके सिवा कवि मात्र बात के वीर होते हैं कर्म के नहीं। इसलिए अल्लाह तआला (परमेश्वर) ने फ़रमाया कि हमने अपने पैग़म्बर को काव्य नहीं सिखाये न कविता की उसकी ओर प्रकाशना (वह्यी) की, अपितु उसका स्वभाव एवं

The Ummah Technology Mission

لِّيُنذِرَ مَن كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٧٠﴾

(७०) ताकि वह हर उस व्यक्ति को सावधान कर दे जो जीवित है[1] तथा काफ़िरों पर सत्य (तर्क) सिद्ध हो जाये।[2]

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُم مِّمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا

(७१) क्या वह नहीं देखते कि हमने अपने हाथों बनायी[3] हुई वस्तुओं में से उनके लिए चौपाये (पशु[4] भी) पैदा कर दिये, जिनके ये

प्राकृति ऐसी बनाई कि उसको काव्य से कोई लगाव ही नहीं। यही कारण है कि जब आप किसी की कविता पढ़ते तो अधिकांश सही नहीं पढ़ते तथा उसका संतुलन टूट जाता, जिसके उदाहरण अहादीस में विद्यमान हैं। यह सावधानी इस कारण से की गई कि इन्कार करने वालों पर तर्क पूरा कर दिया जाये तथा उनकी शंकाओं का निवारण कर दिया जाये तथा वह यह न कह सकें कि यह क़ुरआन इसकी कविता तुकबन्दी का परिणाम है। जैसे आप की अनभिज्ञता भी शंका निवारण के लिए है ताकि लोग इस संदर्भ में यह न कह सकें कि यह तो उसने अमुक से सीख पढ़कर इसका संकलन कर लिया है। हाँ, कुछ अवसरों पर आपके पवित्र मुखार से ऐसे शब्दों का निकल जाना जो काव्य के दो चरणों के सदृश होते तथा कविता वजन एवं छन्दों के भी अनुरूप होते, आप के कवि होने का प्रमाण नहीं बन सकते, क्योंकि ऐसा आपके इरादे तथा संकल्प के बिना हुआ तथा इनका कविता के साँचे में ढल जाना एक संयोग था, जैसे हुनैन के दिन आप के मुख से अकस्मात यह एक छन्द जारी हो गया।

أَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِبَ - أَنَا ابْنُ عَبْدِالْمُطَّلِبْ

तथा एक और अवसर पर आपकी उँगली घायल हो गई तो आपने फ़रमाया :

هَلْ أَنْتِ إِلَّا إِصْبَعٌ دَمِيتِ - وَفِي سَبِيلِ اللهِ مَا لَقِيتِ. (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद)

[1]अर्थात जिस का दिल स्वच्छ हो सत्य को स्वीकार करता है तथा असत्य को नकारता है।

[2]अर्थात जो कुफ़्र पर दुराग्रही हो, उस पर यातना का कथन सिद्ध हो जाये। لِيُنذِرَ में सर्वनाम पवित्र क़ुरआन की ओर फिरता है।

[3]इससे अन्यों की साझेदारी को नकारा है उनको हमने अपने हाथों से बनाया है किसी और का इनके बनाने में साझा नहीं है।

[4] أنعامٌ बहुवचन है نَعَمٌ का। इससे अभिप्राय चौपाये हैं, अर्थात ऊँट, गाये, बकरी (भेड़ तथा दुंबा)।

The Ummah Technology Mission

स्वामी हो गये हैं।[1]

فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿٧١﴾

(७२) तथा उन (पशुओं) को हमने उनके वश में कर दिया है[2] जिनमें से कुछ तो उनकी सवारियाँ हैं तथा कुछ का माँस खाते हैं।

وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَمِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ﴿٧٢﴾

(७३) तथा उन्हें उनसे अन्य भी बहुत से लाभ हैं[3] एवं पेय वस्तुएं। क्या फिर (भी) ये कृतज्ञता व्यक्त नहीं करते ?

وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾

(७४) तथा वह अल्लाह के सिवाय दूसरों को उपास्य बनाते हैं कि उनकी सहायता की जाये।[4]

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٧٤﴾

(७५) (यद्यपि) उनमें उनकी सहायता की शक्ति नहीं फिर भी (मूर्तिपूजक) उनकी उपस्थित सेना हैं।[5]

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ ۙ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ﴿٧٥﴾

---

[1]अर्थात जैसे चाहते हैं उनसे काम लेते हैं। हम यदि उनमें जंगलीपन रख देते (जैसाकि कुछ पशुओं में है) वह उनसे दूर भागते तथा उनके स्वामित्व एवं अधिकार में न आते।

[2]अर्थात इन जानवरों से वह जैसा चाहते हैं लाभ प्राप्त करते हैं वे इंकार नहीं करते, यहाँ तक की उन्हें वध कर देते हैं तथा छोटे बच्चे भी उन्हें खींचते फिरते हैं।

[3]अर्थात सवारी तथा खाने के अतिरिक्त भी बहुत से लाभ प्राप्त किये जाते हैं, जैसे उनके ऊन तथा बालों से कई चीज़ें बनती हैं। उनकी चर्बी (वसा) से तेल प्राप्त होता है तथा यह भारवाहन एवं खेती-बाड़ी के भी काम आते हैं।

[4]यह उनकी कृतघ्नता का वर्णन है कि उपरोक्त अनुकम्पायें, जिनसे यह लाभान्वित होते हैं, सभी अल्लाह की पैदा की हुई हैं। किन्तु यह अल्लाह की इन अनुकम्पाओं पर उसकी कृतज्ञता की जगह अर्थात वंदना तथा आज्ञाकारिता के बजाय यह दूसरों से आसरा बाँधते हैं तथा उन्हें आराध्य बनाते हैं।

[5] جُنْدٌ से अभिप्राय मूर्तियों के पक्षधर उनके रक्षक हैं, مُحْضَرُوْن जगत में उनके पास उपस्थित रहने वाला। अभिप्राय यह है कि यह जिन मूर्तियों को पूज्य समझते हैं वह उनकी सहायता क्या करेंगे ? वह तो स्वयं अपनी सहायता करने से विवश हैं। उन्हें कोई

The Ummah Technology Mission

فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٦﴾

(७६) अत: आप को उनकी बात शोकग्रस्त न करे, हम उनके गुप्त तथा प्रकट सभी बातों को (भली-भाँति) जानते हैं।

أَوَلَمْ يَرَ الْإِنسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِن نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ﴿٧٧﴾

(७७) क्या इन्सान को इतना भी ज्ञान नहीं कि हमने उसे वीर्य से पैदा किया है ? फिर भी यह खुला झगड़ालू बन बैठा।

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَن يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ﴿٧٨﴾

(७८) तथा उसने हमारे लिये उदाहरण वर्णन किया तथा अपनी (मूल) उत्पत्ति को भूल गया, कहने लगा कि इन सड़ी-गली अस्थियों को कौन जीवित कर सकता है।

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ﴿٧٩﴾

(७९) कह दीजिए कि उन्हें वह जीवित करेगा जिसने उन्हें प्रथम बार पैदा किया,[1] जो सब प्रकार की पैदाईश को भली-भाँति जानने वाला है।

الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنتُم مِّنْهُ تُوقِدُونَ ﴿٨٠﴾

(८०) वही है जिसने तुम्हारे लिए हरे पेड़ से अग्नि पैदा कर दी जिससे तुम आग सुलगाते हो।[2]

बुरा कहे, उनकी भर्त्सना करे तो यही उन के पक्ष तथा रक्षा में संलग्न होते हैं न कि स्वयं उनके उपास्य।

[1]अर्थात जो अल्लाह एक हीन वीर्य से इन्सान को पैदा करता है, वह उसे पुर्नजीवित करने पर समर्थ नहीं है ? उसके मुर्दों को जीवित करने की एक कथा हदीस में वर्णित है कि एक व्यक्ति ने निधन के समय यह वसीयत की कि मरने के बाद उसे जलाकर आधी राख समुद्र में तथा आधी राख प्रचन्ड वायु के दिन थल में उड़ा दी जाये। अल्लाह ने सभी राख एकत्र करके उसे जीवन प्रदान किया तथा उससे पूछा कि तूने ऐसा क्यों किया ? उसने कहा तेरे भय से, अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया)

[2]कहते हैं कि अरब में दो वृक्ष हैं, मर्ख तथा अफार। इनकी दो लकड़ियाँ परस्पर रगड़ी जायें तो आग पैदा होती है। हरे वृक्ष से आग पैदा करने के हवाले से इसी की ओर संकेत अभिप्राय है।

The Ummah Technology Mission

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُم ۚ بَلَىٰ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ﴿٨١﴾

(८१) जिसने आकाशों तथा धरती को पैदा किया है क्या वह इन जैसों के[1] पैदा करने पर सामर्थ नहीं ? निश्चय सामर्थ है तथा वही तो रचयिता ज्ञाता है।

إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَن يَقُولَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿٨٢﴾

(८२) जब वह किसी वस्तु का इरादा करता है उसे इतना कह देना (बस) है कि हो जा, वह तत्क्षण हो जाती है।

فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾

(८३) तो पवित्र है[2] वह अल्लाह जिसके हाथ में प्रत्येक वस्तु का राज्य है तथा जिसकी ओर[3] तुम सब लौटाये जाओगे।[4]

---

[1]अर्थात इन्सानों जैसे। अभिप्राय इन्सानों को पुनः जीवित करना है जैसे प्रथम बार पैदा किया आकाशों तथा धरती की पैदाईश से इन्सानों को पुनः जीवन प्रदान करने का प्रमाण दिया है जैसे दूसरे स्थान पर कहा :

﴿ لَخَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ ﴾

"आकाशों तथा धरती की रचना मानव रचना से अधिक कठिन कार्य है।" (*अल-मोमिन-५७*)

सूरः अहक़ाफ़ में भी इस विषय का वर्णन है।

[2]अर्थात उसकी महिमा तो यह है, फिर उसके लिए सब इन्सानों का जीवित कर देना कौन सा कठिन विषय है ?

[3] مُلك तथा ملكوت दोनों समानार्थक हैं अर्थात राज्य, जैसे رحمة तथा رحموتٌ، رهبة तथा رهبوت، جبرٌ तथा جبروت आदि (इब्ने कसीर)। कुछ इसे अतिश्योक्ति का रूप मानते हैं (फ़तहुल क़दीर)। अर्थात ملكوت अतिश्योक्ति है مُلك की।

[4]अर्थात यह नहीं होगा कि मिट्टी में घुल-मिलकर तुम्हारा अस्तित्व सदा के लिये समाप्त हो जाये। नहीं, अपितु फिर जीवन प्रदान किया जायेगा, यह भी नहीं होगा कि तुम भाग कर किसी अन्य के पास शरण लो। तुम्हें प्रत्येक स्थिति में अल्लाह ही के सदन में उपस्थित होना होगा, जहाँ वह कर्मों के अनुसार अच्छा-बुरा बदला प्रदान करेगा।

The Ummah Technology Mission

سُوْرَةُ الصَّافَّاتِ

सूरतुस्साफ़्फ़ात-३७

सूर: साफ़्फ़ात मक्का में अवतरित हुई, इसमें एक सौ बयासी आयतें तथा पाँच रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۝١

(१) सौगन्ध है पंक्तिबद्ध होने वाले (फ़रिश्तों) की।

فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۝٢

(२) फिर पूर्ण रूप से डाँटने वालों की।

فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۝٣

(३) फिर अल्लाह का पाठ करने वालों की।

اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۝٤

(४) वस्तुत: तुम सब का पूज्य एक ही है।[1]

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝٥

(५) आकाशों तथा धरती एवं उनके मध्य की समस्त वस्तुओं तथा समस्त पूर्वी दिशाओं का वही प्रभु है।[2]

---

[1] صافات ، زاجرات ، تاليات फ़रिश्तों के गुण हैं आकाशों पर अल्लाह की इबादत के लिए पंक्तिबद्ध होने वाले अथवा अल्लाह के आदेश की प्रतीक्षा में पंक्तिबद्ध, शिक्षा-दीक्षा द्वारा लोगों को डाँटने वाले अथवा मेघों को जहाँ अल्लाह का आदेश हो वहाँ हाँक कर ले जाने वाले। अल्लाह के स्मरण अथवा पवित्र क़ुरआन का पाठ करने वाले। इन फ़रिश्तों की शपथ लेकर अल्लाह ने इस विषय का वर्णन किया है कि समस्त मानव जाति का उपास्य एक ही है अनेक नहीं, जैसाकि मूर्तिपूजकों ने बना लिये है। साधारण परिभाषा में शपथ, बल देने तथा शंका निवारण के लिए ग्रहण की जाती है। अल्लाह तआला ने यहाँ शपथ उसी शंका के निवारण के लिए ली है जो मूर्तिपूजक उसकी एकता एव उपास्य होने के विषय में फैलाते हैं। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक वस्तु अल्लाह की रचित एवं उसके स्वामित्व में है, अत: वह जिस वस्तु को भी साक्षी बनाकर उसकी कसम खाये उस के लिए उचित है। परन्तु मनुष्य के लिए अल्लाह के सिवाय किसी की कसम खाना पूर्णत: अनुचित तथा निषेध है, क्योंकि कसमें जिस वस्तु की खाई जाती है उसे गवाह बनाना उद्देश्य होता है, तथा गवाह अल्लाह के सिवाय कोई नहीं बन सकता, क्योंकि परोक्ष का जानकार केवल वही है उसके सिवाय परोक्ष का जानकार कोई नहीं

[2] अभिप्राय है पश्चिम तथा पूर्व दिशाओं का प्रभु। बहुवचन का शब्द इस कारण से प्रयोग किया गया कि कुछ कहते हैं कि वर्ष के दिनों की संख्या के बराबर पूर्व एवं पश्चिम हैं।

The Ummah Technology Mission

إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةٍ الْكَوَاكِبِ ۝٦

(६) हमने संसार के (निकट) आकाश को सितारों से सुशोभित एवं अलंकृत किया है।

وَحِفْظًا مِّن كُلِّ شَيْطَانٍ مَّارِدٍ ۝٧

(७) तथा (हमने ही उसकी) सुरक्षा की है प्रत्येक उद्दण्ड शैतान से।[1]

لَا يَسَّمَّعُونَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ وَيُقْذَفُونَ مِن كُلِّ جَانِبٍ ۝٨

(८) उच्च संसार (परलोक) के फ़रिश्तों (की बातों) को सुनने के लिए वे कान भी नहीं लगा सकते बल्कि चारों ओर से वे मारे जाते हैं।

دُحُورًا وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۝٩

(९) भगाने के लिए तथा उनके लिए स्थाई यातना है।

إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝١٠

(१०) परन्तु जो एक-आध बात उचक ले भागे तो (तुरन्त ही) उसके पीछे दहकता हुआ शोला लग जाता है।

فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَم مَّنْ

(११) इन काफ़िरों से पूछो तो कि उनका पैदा करना अधिक कठिन है अथवा जिन्हें

ऐसे ही दो पूर्व एवं पश्चिम से तात्पर्य वह दो पूर्व तथा पश्चिम हैं जिनसे सूर्य गर्मी तथा सर्दी में उदय एवं अस्त होता है, अर्थात एक अत्यन्त अन्तिम पूर्व तथा पश्चिम, दूसरे संक्षिप्त वा निकटतम पूर्व तथा पश्चिम। तथा जहाँ पूर्व तथा पश्चिम को एक वचन वर्णन किया गया है उससे अभिप्राय वह दिशा है जिससे सूर्य निकलता अथवा डूबता है (फ़तहुल क़दीर)।

[1]अर्थात दुनिया के आकाश पर, शोभा के अतिरिक्त तारों का दूसरा उद्देश्य यह है कि उदण्ड शैतानों से सुरक्षा हो। तो जब शैतान आकाश पर कोई बात सुनने के लिए जाते हैं, तो तारे उन पर टूट कर गिरते हैं, जिससे साधारणत: शैतान जल जाते हैं जैसाकि आगामी आयत तथा हदीसों से स्पष्ट है। तारों का एक तीसरा उद्देश्य रात्रि के अंधकार में मार्ग दर्शाना भी है, जैसाकि क़ुरआन में दूसरे स्थान पर वर्णन किया गया है। इन तीनों उद्देश्यों के अतिरिक्त तारों का कोई और उद्देश्य नहीं बताया गया है।

The Ummah Technology Mission

خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ﴿١١﴾

हमने पैदा किया है ?[1] हमने तो मनुष्यों को लस्सेदार मिट्टी से पैदा किया है।[2]

بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ﴿١٢﴾

(१२) बल्कि तू आश्चर्य कर रहा है तथा ये उपहास कर रहे हैं।[3]

وَاِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ﴿١٣﴾

(१३) तथा जब उन्हें शिक्षा दी जाती है तो ये नहीं मानते।

وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ﴿١٤﴾

(१४) तथा जब किसी चमत्कार को देखते हैं तो उपहास उड़ाते हैं।

وَقَالُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾

(१५) तथा कहते हैं कि यह तो पूर्ण रूप से प्रत्यक्ष जादू ही है।[4]

ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿١٦﴾

(१६) क्या जब हम मर जायेंगे तथा मिट्टी एवं हड्डी हो जायेंगे फिर क्या (वास्तव में) हम जीवित किये जायेंगे ?

---

[1]अर्थात हमने जो धरती, फ़रिश्ते तथा आकाश जैसी वस्तुयें बनाई हैं जो अपनी स्थूलता एवं विस्तार में अति विचित्र हैं, क्या इन लोगों को पैदा करना एवं पुनः पैदा करना उन वस्तुओं के पैदा करने से अधिक कठिन है ? निश्चय नहीं।

[2]अर्थात उनके बाबा आदम को तो हमने मिट्टी से पैदा किया है। अभिप्राय यह है कि यह मानवजाति परलोक के जीवन को इतना असम्भव क्यों समझती हैं हालांकि उसकी पैदाईश एक अति तुच्छ एवं कमज़ोर वस्तु से हुई है, जबकि पैदाइश में उससे अधिक शक्तिशाली एवं महान तथा पूर्ण वस्तुओं की पैदाइश का उनको इंकार नहीं है (फ़तहुल क़दीर)।

[3]अर्थात आपको आख़िरत (परलोक) के इंकार करने वालों पर आश्चर्य हो रहा है कि उसकी संभावना बल्कि अनिवार्यता के इतने प्रत्यक्ष प्रमाण के उपरान्त उसे मान क्यों नहीं रहे हैं तथा वे आपके क़ियामत के दावे का उपहास कर रहे हैं कि यह क्योंकर सम्भव है।

[4]अर्थात यह उनकी रीति है कि शिक्षा ग्रहण करते नहीं, तथा कोई स्पष्ट युक्ति अथवा चमत्कार प्रस्तुत किया जाये तो हँसी उड़ाते हैं तथा उसे जादू बताते हैं।

The Ummah Technology Mission

أَوَآبَآؤُنَا ٱلْأَوَّلُونَ ﴿١٧﴾

(१७) अथवा हम से पहले के हमारे पूर्वज भी ?

قُلْ نَعَمْ وَأَنتُمْ دَاخِرُونَ ﴿١٨﴾

(१८) (आप) उत्तर दीजिए कि हाँ, तथा तुम अपमानित (भी) होगे ।[1]

فَإِنَّمَا هِىَ زَجْرَةٌ وَٰحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنظُرُونَ ﴿١٩﴾

(१९) वह तो केवल एक ज़ोरदार डाँट होगी[2] कि सहसा ये देखने लगेंगे ।[3]

وَقَالُوا۟ يَٰوَيْلَنَا هَٰذَا يَوْمُ ٱلدِّينِ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा कहेंगे कि हाय रे हमारा विनाश, यही बदले का दिन है ।

هَٰذَا يَوْمُ ٱلْفَصْلِ ٱلَّذِى كُنتُم بِهِۦ تُكَذِّبُونَ ﴿٢١﴾

(२१) यही निर्णय का दिन है जिसे तुम झुठलाते रहे ।[4]

---

[1]जैसे दूसरे स्थान पर भी फ़रमाया :

﴿ وَكُلٌّ أَتَوْهُ دَاخِرِينَ ﴾

"सब उसके सदन में निरादर होकर जायेंगे "(*अन्नमल-८७*)

﴿ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِى سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ﴾

"जो लोग मेरी उपासना से इंकार करते हैं शीघ्र ही वे नरक में अपमानित होकर प्रवेश करेंगे ।" (*अल-मोमिन-६०*)

[2]अर्थात वह अल्लाह के एक ही आदेश तथा इस्राफ़ील की एक ही फूँक (दूसरी फूँक) से क़ब्रों से निकलकर जीवित खड़े होंगे ।

[3]अर्थात उनके सामने क़ियामत के भयानक दृश्य तथा मैदान महशर की कठिनाईयाँ होंगी जिसे वह देखेंगे । फूँक अथवा चीख़ को زجرة (डाँट) कहा है, क्योंकि उससे उद्देश्य डाँट ही है ।

[4] وَيْل (वैल) शब्द विनाश के अवसर पर बोला जाता है, अर्थात यातना के दर्शन के पश्चात उन्हें अपना विनाश प्रत्यक्ष रूप से दिख रहा होगा, तथा इससे अभिप्राय लज्जा का प्रदर्शन तथा अपने दोषों का इक़रार (स्वीकार) है । किन्तु इस समय लज्जा एवं स्वीकार का कोई लाभ न होगा अत: इसके उत्तर में फ़रिश्ते तथा ईमानवाले कहेंगे कि

The Ummah Technology Mission

اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٢٢﴾

(२२) अत्याचारियों को [1] तथा उनके साथियों को[2] तथा जिन-जिन की वे (अल्लाह के अतिरिक्त पूजा करते थे।[3]

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ﴿٢٣﴾

(२३) (उन सबको) एकत्रित करके उन्हें नरक का मार्ग दिखा दो।

وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْئُوْلُوْنَ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा उन्हें ठहरा लो[4] (इसलिए) कि उनसे आवश्यक प्रश्न किये जाने वाले हैं।

مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ﴿٢٥﴾

(२५) क्या कारण है कि (इस समय) तुम एक-दूसरे की सहायता नहीं करते।

بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ﴿٢٦﴾

(२६) बल्कि वे (सबके सब) आज आज्ञाकारी बन गये।

यह वही निर्णय का दिन है जिसे तुम मानते नहीं थे। यह भी सम्भव है कि परस्पर एक-दूसरे से कहेंगे।

[1]अर्थात जिन्होंने कुफ़्र एवं शिर्क तथा आज्ञा उलंघन किया। यह अल्लाह की ओर से आदेश होगा।

[2]इससे अभिप्राय कुफ़्र एवं शिर्क तथा रसूलों को झुठलाने के साथी अथवा कुछ के निकट जिन्न तथा शैतान हैं, तथा कुछ कहते हैं कि वह पत्नियाँ हैं जो कुफ़्र तथा शिर्क में उनसे सहमत थीं।

[3] مَا (मा) सभी पूज्यों के लिये है चाहे वह मूर्तियाँ हों अथवा अल्लाह के पुनीत भक्त, सबको उनको अपमानित के लिए एकत्र किया जायेगा। फिर भी सदाचारियों को तो अल्लाह महान नरक से दूर ही रखेगा। तथा अन्य उपास्यों को नरक में उनके साथ ही झोंक दिया जायेगा ताकि वह देख लें कि यह किसी को लाभ-हानि पहुँचाने पर समर्थ नहीं हैं।

[4]यह आदेश नरक में ले जाने से पूर्व होगा क्योंकि वह हिसाब के पश्चात ही नरक में जायेंगे।

The Ummah Technology Mission

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٧﴾

(२७) वे एक-दूसरे को सम्बोधित करके प्रश्नोत्तर करने लगेंगे।

قَالُوا إِنَّكُمْ كُنتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ﴿٢٨﴾

(२८) कहेंगे कि तुम तो हमारे पास हमारी दायीं ओर से आते थे।[1]

قَالُوا بَل لَّمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٢٩﴾

(२९) वह उत्तर देंगे कि नहीं, बल्कि तुम ही ईमान वाले न थे।[2]

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُم مِّن سُلْطَانٍ ۚ بَلْ كُنتُمْ قَوْمًا طَاغِينَ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा कुछ हमारा ज़ोर तुम पर था (ही) नहीं। बल्कि तुम लोग (स्वयं) उद्दण्ड लोग थे।[3]

فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۖ إِنَّا لَذَائِقُونَ ﴿٣١﴾

(३१) अब तो हम (सब) पर हमारे प्रभु की यह बात सिद्ध हो चुकी कि हम (यातना का) स्वाद चखने वाले हैं।

فَأَغْوَيْنَاكُمْ إِنَّا كُنَّا غَاوِينَ ﴿٣٢﴾

(३२) तो हमने तुम्हें पथभ्रष्ट किया हम तो स्वयं भी पथभ्रष्ट ही थे।[4]

---

[1]इसका अभिप्राय है कि धर्म तथा सत्य के नाम से आते थे अर्थात विश्वास दिलाते थे कि यही मूल एवं सत्य धर्म है। तथा कुछ के निकट अभिप्राय यह है कि प्रत्येक दिशा से आते थे, والشمال (तथा बायें से) लुप्त है। जिस प्रकार शैतान ने कहा था। "मैं उनके आगे-पीछे, दायें-बायें हर ओर से उनके पास आऊँगा तथा उन्हें बहकाऊँगा।" (*अल-आराफ़*-१७)

[2]अगुवा कहेंगे कि ईमान तुम अपनी इच्छा से नहीं लाये तथा आज दोष हमें दे रहे हो ?

[3]अगुवा तथा अनुगामियों का यह परस्पर विवाद पवित्र क़ुरआन के कई स्थानों में चर्चित है। उनकी परस्पर निन्दा महशर के मैदान में होगी तथा नरक में जाने के बाद नरक में भी। देखो *अल-मोमिन*-४७,४८, *सूरः सबा*-३१,३२, *अल-आराफ़*-३८,३९ आदि आयतें।

[4]अर्थात जिस बात को पहले नकारा कि हमारा तुम पर कौन सा ज़ोर था कि तुम्हें पथभ्रष्ट करते अब उसका यहाँ स्वीकार है कि वस्तुतः हमने तुम्हें बहकाया था। किन्तु यह स्वीकार इस चेतावनी के साथ किया कि इस प्रकरण में हमारी निन्दा न करो। इसलिए कि हम स्वयं बहके हुए थे। हमने तुम्हें अपने समान बनाना चाहा तथा तुमने सरलता से हमारा मार्ग अपना लिया, जैसे शैतान भी उस दिन कहेगा :

The Ummah Technology Mission

فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٣﴾

(३३) तो अब आज के दिन (सबके सब) यातना में हिस्सेदार हैं।[1]

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٤﴾

(३४) हम पापियों के साथ इसी प्रकार किया करते हैं।[2]

إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) ये वे (लोग) हैं कि जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, तो यह अहंकार करते थे।[3]

وَيَقُولُونَ أَئِنَّا لَتَارِكُو آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُونٍ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा कहते थे कि क्या हम अपने देवताओं को एक दीवाने कवि की बात पर छोड़ दें।[4]

﴿ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُم مِّن سُلْطَانٍ إِلَّا أَن دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي فَلَا تَلُومُونِي وَلُومُوا أَنفُسَكُم ﴾

(इब्राहीम-२२)

[1]इसलिए कि उनका अपराध भी एक जैसा मिला हुआ है, शिर्क, अवज्ञा तथा आतंक एवं उपद्रव इन सबका व्यवहार था।

[2]अर्थात प्रत्येक प्रकार के पापियों के साथ हमारा यही व्यवहार है और अब वह सब हमारे दण्ड भुगतेंगे।

[3]अर्थात दुनिया में जब उनसे कहा जाता था कि जिस प्रकार मुसलमानों ने यह धर्म सूत्र لا إله إلا الله محمد رسول الله (ला एलाहा इल्लल्लाहु मोहम्मदुर्रसलुल्लाह) पढ़कर शिर्क तथा अवज्ञा से क्षमा माँग ली, तुम भी पढ़ लो ताकि तुम संसार में भी मुसलमानों के क्रोध तथा गुस्से से बच जाओ तथा आख़िरत में भी अल्लाह की यातना से तुम्हारा सामना न हो, तो वह अभिमान तथा अहंकार करते एवं इंकार करते। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वचन है :

«أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا: لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، فَمَنْ قَالَ: (لا إله إلا الله) فَقَدْ عَصَمَ مِنِّي مَالَهُ وَنَفْسَهُ».

"मुझे इस बात का आदेश दिया गया है कि मैं उस समय तक लोगों से संघर्ष करूँ जब तक वह لا إله إلا الله को स्वीकार न कर लें। जिसने यह अंगीकार कर लिया उसने अपने प्राण तथा माल की रक्षा कर ली।" (मुत्तफक अलैह-किताबुल ईमान)

[4]अर्थात उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कवि तथा दीवाना कहा तथा आप के आमन्त्रण को दीवानगी तथा पवित्र क़ुरआन को काव्य कहा तथा कहा कि हम एक

The Ummah Technology Mission

بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٧﴾

(३७) (नहीं,नहीं) बल्कि नबी तो हक़ (सत्य धर्म) लाये हैं तथा समस्त रसूलों को सत्य जानते हैं।[1]

إِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ﴿٣٨﴾

(३८) नि:संदेह तुम कष्टदायी यातनाओं (के स्वाद) चखने वाले हो।

وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٩﴾

(३९) तथा तुम्हें उसी का बदला दिया जायेगा जो तुम करते थे।[2]

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾

(४०) परन्तु अल्लाह (तआला) के शुद्ध निर्वाचित भक्त।[3]

أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ﴿٤١﴾

(४१) उन्हीं के लिए निर्धारित जीविका है।

فَوَاكِهُ وَهُم مُّكْرَمُونَ ﴿٤٢﴾

(४२) (हर प्रकार के) मेवे तथा वह सम्मानित तथा आदरणीय होंगे।

فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٤٣﴾

(४३) सुखों वाले स्वर्गों में।

दीवाने के उन्माद पर अपने पूज्यों का त्याग क्यों करें। हालाँकि यह उन्माद नहीं चेतना थी, कविता नहीं यथार्थता थी तथा इस आमन्त्रण को मान लेने में उनका विनाश नहीं मुक्ति थी।

[1]अर्थात तुम हमारे पैग़म्बर को कवि तथा दीवाना कहते हो, जब कि वास्तविकता यह है कि वह जो कुछ लाया तथा प्रस्तुत कर रहा है वह सत्य है, तथा वही चीज़ है जो उससे पहले सभी अम्बिया प्रस्तुत करते रहे हैं। क्या यह काम किसी दीवाना अथवा किसी कवि की कल्पना का परिणाम हो सकता है ?

[2]यह नरकवासियों से उस समय कहा जायेगा जब वह खड़े परस्पर प्रश्न कर रहे होंगे तथा साथ ही स्पष्ट कर दिया जायेगा कि यह अत्याचार नहीं सर्वथा न्याय है क्योंकि सब तुम्हारे अपने करतूतों का बदला है।

[3]अर्थात यातना से सुरक्षित होंगे, उनके आलस्य को भी क्षमा कर दिया जायेगा यदि कुछ होगा। तथा एक-एक पुण्य का बदला कई-कई गुना दिया जायेगा।

The Ummah Technology Mission

عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٤٤﴾

(४४) आसनों पर एक-दूसरे के सम्मुख आसीन होंगे।

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿٤٥﴾

(४५) प्रवाहित मदिरा के प्यालों का उन पर दौर चल रहा होगा।[1]

بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٤٦﴾

(४६) जो साफ़ सफेद तथा पीने में स्वादिष्ट होंगी।[2]

لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) न उससे सिर दर्द होगा तथा न उसके पीने से बहकें।[3]

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा उनके निकट नीची एवं बड़ी-बड़ी आँखों वाली (हूरें)[4] होंगी।

كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٤٩﴾

(४९) ऐसी जैसे छिपाये हुए अण्डे।[5]

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٥٠﴾

(५०) (स्वर्ग वाले) एक-दूसरे की ओर मुख करके पूछेंगे।[6]

---

[1] كَأْس (कास) मदिरा भरे प्याले को तथा قدح (कदह) ख़ाली प्याले को कहते हैं। مَعِين का अर्थ है प्रवाहित स्रोत, अभिप्राय यह है कि प्रवाहित स्रोत की भाँति स्वर्ग में मदिरा प्रत्येक समय सुलभ रहेगी।

[2] संसार में मदिरा साधारणत: कुरंग होती है, स्वर्ग में वह जैसे स्वादिष्ट होगी अच्छे रंग की भी होगी।

[3] अर्थात संसार की मदिरा की तरह इसमें उल्टी, मस्तिष्क पीड़ा, उन्माद तथा बहकने का भय न होगा।

[4] बड़ी आँखें सौदर्न्य का लक्षण है, अर्थात सुन्दर आँखें होंगी।

[5] अर्थात शुर्तुमुर्ग़ के पंखों के नीचे छुपाये हुए हों, जिसके कारण वह वायु एवं गर्द व गुबार से सुरक्षित हों। कहते हैं कि शुर्तुमुर्ग़ के अंडे बड़े सुन्दर रंग के होते हैं, जो पीले श्वेत होते हैं तथा ऐसा रंग सौंदर्य तथा सुन्दरता के संसार में सबसे उत्तम माना जाता है। इस आधार पर यह उपमा केवल सफेदी में नहीं है अपितु सुन्दर रंग एवं रूप तथा दृश्य में है।

[6] स्वर्गवासी स्वर्ग में एक-दूसरे के साथ बैठे हुए दुनिया की घटनायें याद करेंगे तथा परस्पर सुनायेंगे।

The Ummah Technology Mission

قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ﴿٥١﴾

(५१) उनमें से एक कहने वाला कहेगा कि मेरा एक निकट (साथी) था।

يَقُولُ أَئِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِينَ ﴿٥٢﴾

(५२) जो (मुझसे) कहा करता था कि क्या तू (क़ियामत के आने का) विश्वास करने वालों में से है।[1]

أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَدِينُونَ ﴿٥٣﴾

(५३) क्या जब कि हम मरकर मिट्टी एवं अस्थि हो जायेंगे क्या उस समय हम प्रतिफल दिये जाने वाले हैं ?[2]

قَالَ هَلْ أَنتُم مُّطَّلِعُونَ ﴿٥٤﴾

(५४) कहेगा, तुम चाहते हो कि झाँककर देख लो ?[3]

فَاطَّلَعَ فَرَآهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿٥٥﴾

(५५) झाँकते ही उसे बीचों-बीच नरक में (जलता हुआ) देखेगा।

قَالَ تَاللَّهِ إِن كِدتَّ لَتُرْدِينِ ﴿٥٦﴾

(५६) कहेगा : अल्लाह की सौगन्ध ! निकट था कि तू मुझे भी नष्ट कर दे।

وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ﴿٥٧﴾

(५७) तथा यदि मेरे प्रभु का अनुग्रह न होता तो मैं भी नरक में उपस्थित किये जाने वालों में होता।[4]

---

[1]अर्थात यह बात वह उपहास तथा परिहास के रूप में करता था। अभिप्राय यह था कि यह तो असम्भव है क्या ऐसी अनहोनी बात पर तू विश्वास रखता है ?

[2]अर्थात हमें जीवन प्रदान करके हमारा हिसाब लिया जायेगा फिर तदानुसार प्रतिफल दिया जायेगा।

[3]अर्थात वह स्वर्गवासी अपने स्वर्ग के साथियों से कहेगा कि क्या तुम पसंद करते हो कि तनिक नरक में झाँक कर देखें, संभवत: मुझसे यह बात करने वाला वहाँ दिख पड़े तो तुम्हें बतलाऊँ कि यह व्यक्ति था जो यह बातें करता था।

[4]अर्थात झाँकने पर उसे नरक के बीच में वह व्यक्ति दिखाई देगा तथा उससे यह स्वर्गवासी कहेगा कि मुझे भी तू पथभ्रष्ट करके बर्बाद करने लगा था, यह तो मुझ पर अल्लाह की दया हुई अन्यथा आज मैं भी तेरे संग नरक में होता।

The Ummah Technology Mission

أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ﴿٥٨﴾

(५८) क्या (यह सही है कि) हम मरने वाले ही नहीं ?[1]

إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿٥٩﴾

(५९) सिवाय प्रथम एक मृत्यु के,[2] तथा न हम यातना किये जाने वाले हैं।

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٠﴾

(६०) फिर तो (स्पष्ट बात है कि) यह बड़ी सफलता है।[3]

لِمِثْلِ هَٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ ﴿٦١﴾

(६१) ऐसी (सफलता) के लिए कर्म करने वालों को कर्म करना चाहिए।[4]

أَذَٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ ﴿٦٢﴾

(६२) क्या यह अतिथि सत्कार अच्छा है अथवा ज़क़्क़ूम (सेंढे) का वृक्ष ?[5]

---

[1]नरकवासियों की दशा देखकर स्वर्गवासी के मन में विशेष प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न हो जायेगी तथा कहेगा कि हमें जो स्वर्ग का जीवन तथा उसके वरदान मिले हैं, क्या यह स्थायी नहीं तथा अब हमें मौत नहीं आनी है। यह सकरात्मक प्रश्न है, अर्थात अब यह जीवन स्थायी है, स्वर्गवासी सदा स्वर्ग में तथा नरकवासी नरक में रहेंगे न उन्हें मौत आयेगी कि नरक की यातना से मुक्त हो जायें न हमें कि स्वर्ग के प्रदानों से वंचित हो जायें। जिस प्रकार हदीस में आता है कि मौत को एक भेड़ के रूप में लाकर वध कर दिया जायेगा कि अब किसी को मौत नहीं आयेगी।

[2]जो दुनिया आ चुकी। अब न हमारे लिए मौत है न यातना।

[3]इसलिए कि नरक से बच जाने तथा स्वर्ग के सुखों का पात्र बनने से बढ़कर और क्या सफलता होगी ?

[4]अर्थात इस जैसे सुख तथा इतनी महान दया ही के लिए श्रम करने वालों को परिश्रम करना चाहिए, इसलिए कि यही सर्वाधिक लाभप्रद व्यापार है न कि जगत के लिए जो सामयिक है तथा हानि का सौदा है।

[5]زَقُّوم यह تَزَقُّم से बना है, जिसका अर्थ दुर्गन्धित तथा घृणित वस्तु निगलने के हैं। इस वृक्ष का फल खाना भी नरकवासियों के लिए अति अप्रिय होगा क्योंकि यह अति दुर्गन्धित, कड़ुवा तथा अत्यन्त घृणित होगा। कुछ कहते हैं कि यह सांसारिक वृक्षों में से है, कुछ कहते हैं कि यह सांसारिक वृक्ष नहीं तथा जगतवासियों के लिए अपरिचित है (फ़तहुल

The Ummah Technology Mission

إِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِينَ ﴿٦٣﴾

(६३) जिसे हमने अत्याचारियों के लिए कठोर परीक्षा बना रखी है।[1]

إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيٓ أَصْلِ الْجَحِيمِ ﴿٦٤﴾

(६४) नि:सन्देह वह वृक्ष नरक की जड़ से निकलता है।[2]

طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيٰطِينِ ﴿٦٥﴾

(६५) जिसके गुच्छे शैतानों के सिरों जैसे होते हैं।[3]

فَإِنَّهُمْ لَأٓكِلُونَ مِنْهَا فَمَالِـُٔونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ﴿٦٦﴾

(६६) नरकवासी इसी वृक्ष को खायेंगे तथा इसी से पेट भरेंगे।[4]

ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ ﴿٦٧﴾

(६७) फिर उस पर खौलता पानी पीना पड़ेगा।[5]

ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَإِلَى الْجَحِيمِ ﴿٦٨﴾

(६८) फिर उन सबका लौटना नरक की (अग्नि के ढेर की) ओर होगा।[6]

क़दीर) । किन्तु प्रथम कथन अधिक सही है, तथा यह वही वृक्ष है जिसे उर्दू भाषा में सेंध अथवा थोहर कहते हैं।

[1]परीक्षा इस कारण कि उसका फल खाना स्वयं एक बहुत बड़ी परीक्षा है। कुछ ने इस कारण से परीक्षा कहा कि वह इस के होने को नकार रहे थे कि नरक में हर तरफ आग ही आग होगी तो वहाँ पेड़ किस प्रकार रह सकता है। यहाँ ظالمين (अत्याचारियों) से अभिप्राय वे नरकवासी हैं जिनके लिए नरक अनिवार्य होगी।

[2]अर्थात उसकी जड़ नरक की गहराई में होगी, हाँ, उसकी शाखायें सभी ओर फैली होंगी।

[3]उसे बुराई एवं अशुभ में शैतान के सरों से उपमा दी। जैसे अच्छी वस्तु के विषय में कहते हैं कि मानो वह फ़रिश्ता है।

[4]यह उन्हें बड़े घिन के साथ खाना पड़ेगा जिससे स्पष्ट है कि पोट बोझल होंगे।

[5]अर्थात खाने के पश्चात उन्हें पानी की इच्छा होगी तो खौलता गरम पानी उन्हें दिया जायेगा जिसके पीने से उनकी अंतड़ियाँ कट जायेंगी। (सूर: *मोहम्मद*-१५)

[6]अर्थात ज़क़्क़ूम खाने तथा खौलता पानी पीने के बाद उन्हें फिर से नरक में फेंक दिया जायेगा।

The Ummah Technology Mission

إِنَّهُمْ أَلْفَوْا آبَاءَهُمْ ضَالِّينَ ﴿٦٩﴾

(६९) विश्वास करो कि उन्होंने अपने पूर्वजों को बहका हुआ पाया।

فَهُمْ عَلَىٰ آثَارِهِمْ يُهْرَعُونَ ﴿٧٠﴾

(७०) तथा यह उन्हीं के पद-चिन्हों पर दौड़ते चलते रहे।[1]

وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٧١﴾

(७१) तथा उनसे पूर्व भी बहुत से अगले लोग बहक चुके हैं।[2]

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِم مُّنذِرِينَ ﴿٧٢﴾

(७२) तथा जिनमें हमने सावधान करने वाले (रसूल) भेजे थे।[3]

فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنذَرِينَ ﴿٧٣﴾

(७३) अब तू देख ले कि जिन्हें धमकाया गया था उनका परिणाम कैसा हुआ।

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٧٤﴾

(७४) अतिरिक्त अल्लाह के निर्वाचित भक्तों के।[4]

---

[1]यह नरक की उपरोक्त यातनाओं का कारण है, कि अपने बाप-दादा को गुमराही पर पाकर भी उनके पद-चिन्हों पर चलते रहे तथा युक्ति एवं तर्क की तुलना में अनुकरण को अपनाये रखा। إهراع यह إسراعٌ का पर्यायवाची है, अर्थात दौड़ना तथा अति आग्रह से एवं लपककर किसी वस्तु को पकड़ना तथा अपनाना।

[2]अर्थात यही गुमराह नहीं हुए, इनसे पहले के लोग भी अधिकतर गुमराही के मार्ग पर चलने वाले थे।

[3]अर्थात इनसे पहले के लोगों में, उन्होंने सत्य का संदेश पहुँचाया तथा स्वीकार न करने की दशा में उन्हें अल्लाह के प्रकोप से डराया किन्तु उन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। परिणाम स्वरूप, उन्हें नाश कर दिया गया जैसाकि आगामी आयत में उनके शिक्षाप्रद परिणाम की ओर संकेत किया है।

[4]अर्थात शिक्षाप्रद परिणाम से मात्र वह सुरक्षित रहे जिनको अल्लाह ने ईमान एवं तौहीद (अद्वैत) का सौभाग्य प्रदान किया। مُخلِصين (वह लोग जो दण्ड से सुरक्षित रहे), منذَرين (विनाश होने वाले समुदाय) के संक्षिप्त वर्णन के पश्चात कुछ مُنذِرين (संदेष्टाओं) का वर्णन किया जा रहा है।

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ﴿٧٥﴾

(७५) हमें नूह ने पुकारा तो देख लो कि हम कैसे अच्छे प्रार्थना स्वीकार करने वाले हैं।[1]

وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾

(७६) तथा हमने उसे तथा उसके घर वालों को[2] उस घोर संकट से बचा लिया।

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ﴿٧٧﴾

(७७) तथा उसकी सन्तान को हमने शेष रहने वाली बना दी।[3]

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿٧٨﴾

(७८) तथा हमने उसकी (प्रशंसा एवं सराहना) पिछलों में शेष रखा।[4]

سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٩﴾

(७९) नूह (अलैहिस्सलाम) पर सभी जगत में सलाम (सुरक्षा) हो !

---

[1]साढ़े नौ सौ वर्ष के धर्म प्रचार के उपरान्त भी जब समुदाय के अधिकांश लोगों ने उन्हें झुठलाया ही तथा उन्होंने अनुभव कर लिया कि ईमान लाने की कोई आशा नहीं है तो अपने प्रभु को पुकारा, ﴿ فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ﴾ (अल-क़मर-१०) "अल्लाह मैं परास्त हूँ मेरी सहायता कर" तो हमने नूह की विनय स्वीकार की तथा उनकी जाति को तूफ़ान भेजकर नाश कर दिया।

[2](अह्ल) أَهْـل से अभिप्राय नूह पर ईमान लाने वाले हैं जिनमें उनके परिवार के मोमिन (ईमानदार) सदस्य भी थे। कुछ भाष्यकारों के निकट उनकी संख्या ८० थी जिनमें उनकी पत्नी तथा एक पुत्र सम्मिलित नहीं, जो ईमानवाले नहीं थे। वह भी तूफ़ान में डूब गये। كرب عظيم घोर संकट से तात्पर्य वही भारी बाढ़ है जिसमें यह जाति डूब गई।

[3]अधिकतर भाष्यकारों के कथानुसार आदरणीय नूह के तीन पुत्र थे। हाम, साम तथा याफिस। इन्हीं से बाद का मानव वंश चला। इसी कारण नूह को दूसरा आदम भी कहा जाता है, अर्थात आदम के समान उनके पश्चात यह मानवजाति के द्वितीय परमपिता हैं। हाम के वंश से सूडान (पूर्व से पश्चिम तक) अर्थात सिन्ध, भारत, नौब, जंज, हबशा, किब्त तथा बर्बर आदि हैं तथा यासिफ के वंश से सक़ालिबा, तुर्क, खज़र तथा याजूज एवं माजूज आदि हैं। साम के वंश से अरब, फ़ारस, रूम तथा यहूद एवं इसाई हैं (फ़तहुल क़दीर)। وَاللهُ أَعْلَمُ

[4]अर्थात क़ियामत (प्रलय) तक आने वाले ईमानवालों में हमने नूह की प्रशंसा एवं सराहना को शेष रखा। वे सभी ईशदूत नूह पर सलाम भेजते हैं तथा भेजते रहेंगे।

The Ummah Technology Mission

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٠﴾

(८०) हम पुण्य करने वालों को इसी प्रकार बदला देते हैं।

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨١﴾

(८१) वह हमारे ईमानदार भक्तों में से था।[1]

ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ﴿٨٢﴾

(८२) फिर हमने अन्य लोगों को डुबो दिया।

وَإِنَّ مِنْ شِيعَتِهِ لَإِبْرَاهِيمَ ﴿٨٣﴾

(८३) तथा उस (नूह) के अनुयायियों में से ही इब्राहीम भी थे।[2]

إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿٨٤﴾

(८४) जबकि अपने प्रभु के पास स्वच्छ (निर्दोष) हृदय लाये।

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ ﴿٨٥﴾

(८५) उन्होंने अपने पिता तथा अपने समुदाय से कहा कि तुम क्या पूज रहे हो।

أَئِفْكًا آلِهَةً دُونَ اللَّهِ تُرِيدُونَ ﴿٨٦﴾

(८६) क्या तुम अल्लाह के अतिरिक्त गढ़े हुए पूज्य चाहते हो ?[3]

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٧﴾

(८७) तो यह (बताओ कि) तुमने समस्त जगत के प्रभु को क्या समझ रखा है ?[4]

---

[1]जिस प्रकार नूह की विनय स्वीकार करके उनकी सन्तान को शेष रखा तथा पिछलों में उनकी सराहना शेष रखके हमने सम्मान एवं आदर प्रदान किया, इसी प्रकार जो भी अपने कर्म तथा कथन में सदाचारी तथा इस विषय में सुदृढ़ एवं प्रसिद्ध होगा उसके साथ भी हम ऐसा व्यवहार करेंगे।

[2] شِيعَةٌ (शीअः) का अर्थ गरोह तथा अनुयायी है अर्थात इब्राहीम भी धर्मात्माओं तथा एकेश्वरवादियों के इसी गरोह से हैं, जिनको आदरणीय नूह ही की भाँति अल्लाह ने अपनी ओर ध्यानमग्न होने का विशेष सौभाग्य प्रदान किया।

[3]अपनी ओर से ही झूठ गढ़ के कि यह अराध्य हैं, तुम अल्लाह को छोड़कर उनकी उपासना करते हो हालाँकि यह पत्थर तथा मूर्तियाँ हैं।

[4]अर्थात इतने दुराचार के उपरान्त क्या अल्लाह तुमसे क्रोधित नहीं होगा तथा तुम्हें दण्ड नहीं देगा ?

The Ummah Technology Mission

فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ﴿٨٨﴾

(८८) अब (इब्राहीम ने) एक दृष्टि तारों की ओर उठाई।

فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ﴿٨٩﴾

(८९) तथा कहा कि मैं तो रोगी हूँ।[1]

فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ﴿٩٠﴾

(९०) इस पर सब उससे मुख मोड़े हुए वापस चले गये।

فَرَاغَ إِلَىٰ آلِهَتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٩١﴾

(९१) आप (चुपके) उनके पूज्यों के निकट गये तथा कहने लगे तुम खाते क्यो नहीं ?[2]

مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ ﴿٩٢﴾

(९२) तुम्हें क्या हो गया कि बात तक नहीं करते हो ?

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ﴿٩٣﴾

(९३) फिर तो (पूरी शक्ति के साथ) दायें हाथ से उन्हें मारने पर पिल पड़े।[3]

---

[1]आकाश की ओर चिन्तन-मनन के लिए देखा जैसाकि कुछ लोग ऐसा करते हैं, अथवा अपनी जाति के लोगों को भ्रम में डालने हेतु ऐसा किया जो ग्रहों की गति को जगत की घटनाओं में प्रभावी मानते थे। यह घटना उस समय की है जब उनकी जाति का वह दिन आया जिसे वह बाहर जाकर ईद तथा जातिय उत्सव के रूप में मनाया करती थी। जाति ने माननीय इब्राहीम को भी साथ चलने की दावत दी। किन्तु इब्राहीम एकान्त तथा अवसर की खोज में थे ताकि उनकी प्रतिमाओं का तिया-पाँचा किया जा सके। अत: इस अवसर को शुभ समझा कि कल पूरी जाति मेले में चली जायेगी तो मैं अपनी योजना पूरी करूंगा, तथा कह दिया कि मैं रोगी हूँ अथवा आकाशों की गति बतलाती है कि मैं बीमार होने वाला हूँ। यह बात पूर्णत: मिथ्या तो नहीं थी, प्रत्येक मनुष्य कुछ न कुछ रोगी होता ही है। इसके अतिरिक्त जाति का शिर्क इब्राहीम के दिल का एक स्थायी रोग था जिसे देखकर वह कुढ़ते रहते थे। यूँ आदरणीय इब्राहीम ने अप्रत्यक्षता तथा संकेत का प्रदर्शन किया जो यद्यपि मिथ्या नहीं होता किन्तु संबोधित उसके मनोंगत अर्थ से भ्रम में पड़ जाता है। अत: حديث ثلاث كذبات के अन्तर्गत इसे मिथ्या कहा गया, जैसाकि इसका आवश्यक विवरण *सूरः अम्बिया* में गुज़र चुका है।

[2]अर्थात जो प्रसाद वहाँ पड़े हुए थे वह उन्हें खाने के लिए प्रस्तुत किया जो स्पष्ट बात है कि उन्होंने न खाया था न खाया, अपितु वह उत्तर देने पर भी समर्थ नहीं थीं अत: उत्तर भी नहीं दिया।

[3] رَاغَ का अर्थ है مَالَ (झुक पड़ा) ذَهَبَ، اَقبَلَ यह सभी लगभग एक से हैं, उनकी ओर रूख किया।

The Ummah Technology Mission

فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ﴿٩٤﴾

(९४) वे (मूर्तिपूजक) दौड़े-भागे आपकी ओर आये।[1]

قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ ﴿٩٥﴾

(९५) तो आपने कहा कि तुम उन्हें पूजते हो जिन्हें तुम स्वयं बनाते हो।

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾

(९६) यद्यपि तुम्हें तथा तुम्हारी बनाई हुई वस्तुओं को अल्लाह ही ने पैदा किया है।[2]

قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا فَاَلْقُوْهُ فِى الْجَحِيْمِ ﴿٩٧﴾

(९७) वे कहने लगे कि इसके लिए एक मकान (अग्निकुण्ड) बनाओ तथा उस (दहकती) अग्नि में इसे डाल दो।

فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٩٨﴾

(९८) उन्होंने तो (इब्राहीम) के साथ चाल चलना चाहा परन्तु हमने उन्हीं को नीच कर दिया।[3]

وَقَالَ اِنِّىْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٩٩﴾

(९९) तथा (इब्राहीम ने) कहा कि मैं तो (हिजरत करके) अपने प्रभु की ओर जाने वाला हूँ[4] वह अवश्य मेरा मार्गदर्शन करेगा।

---

[1] يَزِفُّوْنَ यह يُسرعون के अर्थ में है, दौड़ते हुए आये। अर्थात जब मेले से आये तो देखा कि उनके देवता छिन्न-भिन्न पड़े हैं। तुरन्त उनका विचार इब्राहीम की ओर गया। अत: उन्हें पकड़कर जनता के न्यायालय में लाये। वहाँ आदरणीय इब्राहीम को यह अवसर मिल गया कि वह उन पर उनकी मूर्खता तथा उनके देवतागण की विवशता को स्पष्ट कर दें।

[2] अर्थात वह मूर्तियाँ तथा चित्र भी जिन्हें तुम अपने हाथों से बनाते हो तथा उन्हें अराध्य समझते हो अथवा तुम्हारा साधारण कर्म जो भी तुम करते हो, उनका उत्पत्ति करने वाला भी अल्लाह है जैसाकि अहले सुन्नत की आस्था है।

[3] अर्थात अग्नि को उद्यान बनाकर उनकी चालों को असफल बना दिया। अत: पवित्र है वह अल्लाह जो अपने वन्दों का काम बनाता है तथा परीक्षा को प्रतिफल एवं बुराई को भलाई में बदल देता है।

[4] ईशदूत इब्राहीम की यह घटना बाबिल (इराक) में घटी। अन्तत: यहाँ से हिजरत (स्थानान्तरण) की तथा शाम (सीरिया) चले गये तथा वहाँ जाकर पुत्र के लिए प्रार्थना की। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

رَبِّ هَبْ لِيْ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠٠﴾

(१००) हे मेरे प्रभु ! मुझे सदाचारी पुत्र प्रदान कर।

فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ﴿١٠١﴾

(१०१) तो हमने उसको एक सहनशील पुत्र की शुभसूचना दी।[1]

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ اِنِّيْٓ اَرٰى فِي الْمَنَامِ اَنِّيْٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ؕ قَالَ يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۫ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾

(१०२) फिर जब (बालक) इस आयु को पहुँचा कि उसके साथ चले-फिरे[2] तो उस (इब्राहीम) ने कहा मेरे प्रिय पुत्र ! मैं स्वप्न में अपने आप को तेरी बलि करते हुए देख रहा हूँ। अब तू बता कि तेरा क्या विचार है ?[3] पुत्र ने उत्तर दिया कि पिताजी ! जो आदेश दिया जा रहा है उसका पालन कीजिए। अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे धैर्य रखने वालों में पायेंगे।

فَلَمَّآ اَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ﴿١٠٣﴾

(१०३) अर्थात जब दोनों ने पालन (स्वीकार) कर लिया तथा उस (पिता) ने उस (पुत्र) को[4] माथे के बल गिरा दिया।

---

[1] حَلِيم (धैर्यवान) कहकर संकेत कर दिया कि शिशु बड़ा होकर सहनशील होगा।

[2] अर्थात दौड़धूप के योग्य हो गया अथवा युवा अवस्था के समीप हो गया। कुछ कहते हैं कि उस समय यह बालक १३ वर्ष का था।

[3] पैग़म्बर (ईशदूत) का स्वप्न, अल्लाह की प्रकाशना तथा आदेश होता है, जिस के अनुसार कर्म करना आवश्यक होता है, पुत्र से विचार-विमर्श का उद्देश्य यह जानना था कि पुत्र भी अल्लाह का आदेश पूरा करने के लिए कितना तैयार है।

[4] प्रत्येक मनुष्य के मुख (चेहरे) पर दो भवें दायें-बायें होती हैं, तथा मध्य में ललाट अत: جَبِيْن, इसलिए لِلْجَبِين का अधिक उचित अनुवाद (कर्वट पर) लिटाया, जिस प्रकार पशु को वध करते समय क़िब्ला रूख लिटाया जाता है, मस्तक अथवा मुख के बल, लिटाने का अर्थ इस कारण किया जाता है कि प्रसिद्ध है कि आदरणीय इस्माईल ने वसीयत की कि

The Ummah Technology Mission

وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰۤاِبْرٰهِيْمُ ﴿۱۰۴﴾

(१०४) तो हमने आवाज दी कि हे इब्राहीम !

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۰۵﴾

(१०५) नि:संदेह तूने स्वप्न को सत्य कर दिखाया,[1] नि:सन्देह हम पुण्यकारियों को इसी प्रकार बदला देते हैं।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ﴿۱۰۶﴾

(१०६) वास्तव में यह स्पष्ट परीक्षा थी।[2]

وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۰۷﴾

(१०७) तथा हमने एक महान बलि उसके मुक्ति प्रदान के रूप मे दे दिया था।[3]

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿۱۰۸﴾

(१०८) तथा हमने उनकी शुभ चर्चा पिछलों में शेष रखा।

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿۱۰۹﴾

(१०९) इब्राहीम पर सलाम हो।

كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۱۰﴾

(११०) हम पुण्य कार्य करने वालों को इसी प्रकार बदला देते हैं।

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۱﴾

(१११) निश्चय ही वह हमारे ईमानदार भक्तों में से था।

उन्हें इस प्रकार लिटाया जाये कि मुख सामने न रहे जिससे प्रेम तथा करूणा के भाव के ईश्वरीय आदेश पर प्रभावी होने की संभावना न रहे।

[1]दिल के पूरे यत्न से पुत्र वध करने के लिए धरती पर लिटा देने ही से तूने अपना स्वप्न सच कर दिखाया क्योंकि इससे स्पष्ट हो गया कि अल्लाह के आदेश के आगे तुझे कोई वस्तु भी अधिक प्रिय नहीं यहाँ तक कि इकलौता पुत्र भी नहीं।

[2]अर्थात लाडले पुत्र को बलि देने का आदेश, यह एक बड़ी परीक्षा थी जिसमें तू सफल रहा।

[3]यह बड़ी क़ुरबानी एक मेंढा था जो अल्लाह ने स्वर्ग से आदरणीय जिब्रील के द्वारा भेजा, (इब्ने कसीर) जो इस्माईल के स्थान पर ज़िब्हा किया गया। तथा फिर इस इब्राहीमी सुन्नत (चरित्र) को प्रलय तक अल्लाह की समीपता का एक साधन तथा ईदे अज़हा का प्रियवर कर्म बना दिया गया।

The Ummah Technology Mission

وَبَشَّرْنٰهُ بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٢﴾

(११२) तथा हमने उसे इसहाक़ नबी की शुभ-सूचना दी जो सदाचारी लोगों में से होगा।[1]

وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ؕ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ﴿١١٣﴾

(११३) तथा हमने इब्राहीम तथा इसहाक़ पर बरकतें (विभूतियाँ) अवतरित किया[2] तथा इन दोनों की संतान में कुछ तो सौभाग्यशाली हैं तथा कुछ अपने प्राणों पर खुला अत्याचार करते हैं।[3]

---

[1]आदरणीय इब्राहीम की उक्त कथा के पश्चात अब एक पुत्र इसहाक़ की तथा उसके नबी होने की शुभ सूचना देने से विदित होता है कि इससे पहले जिस पुत्र को बलि देने का आदेश किया गया था वह इस्माईल थे जो उस समय इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के इकलौते पुत्र थे। इसहाक़ की पैदाईश उसके पश्चात हुई। भाष्याकारों के मध्य इस विषय में मतभेद है कि ज़बीह (बलि) कौन है, इस्माईल अथवा इसहाक़ ? इमाम इब्ने जरीर ने आदरणीय इसहाक़ को तथा इब्ने कसीर तथा अधिकतर टीकाकारों ने आदरणीय इस्माईल को ज़बीह (बलि) माना है तथा यही बात सही है। इमाम शौकानी ने इसमें मौन धारण किया है। (विवरण के लिए देखिये तफ़सीर इब्ने कसीर तथा तफ़सीर फ़तहुल क़दीर)।

[2]अर्थात इन दोनों की संतान को बहुत फैलाया। तथा अम्बिया (ईशदूतों) एवं रसूलों (सन्देष्टाओं) की अधिक संख्या उन्हीं के वंश से हुई। आदरणीय इसहाक़ के पुत्र याक़ूब हुए जिनके बारह पुत्रों से इस्राईल की सन्तान के १२ समुदाय बने तथा उनसे इस्राईल की संतान बढ़ी एवं फैली। अधिकांश अम्बिया उन्हीं में हुए। आदरणीय इब्राहीम के अन्य पुत्र इस्माईल से अरबों का वंश चला तथा उनमें अन्तिम ईशदूत महामान्य मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हुए।

[3]शिर्क, (मिश्रणवाद) अवज्ञा तथा अत्याचार, उपद्रव एवं अत्याचार करके। इब्राहीम वंश में बरकत (विभूति) के उपरान्त अच्छे-बुरे की चर्चा से इस ओर संकेत कर दिया कि परिवार एवं पूर्वजों का सम्बन्ध अल्लाह के यहाँ कोई महत्व नहीं रखता, वहाँ तो ईमान तथा सत्कर्म का महत्व है। यहूदी तथा इसाई यद्यपि आदरणीय इसहाक़ की संतान में हैं, इसी प्रकार अरब के मूर्तिपूजक आदरणीय इस्माईल की संतान में हैं, किन्तु उनके जो करतूत हैं वह खुली पथभ्रष्टता अथवा शिर्क एवं अवज्ञा पर आधारित हैं। अतः यह उच्च सम्बन्ध उनके लिये सत्कर्म का बदल नहीं हो सकतीं।

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١١٤﴾

(११४) तथा निश्चय हमने मूसा तथा हारून पर बड़ा उपकार किया।[1]

وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿١١٥﴾

(११५) तथा उन्हें एवं उनके समुदाय को बहुत बड़े दुख-दर्द से मुक्ति प्रदान कर दी।[2]

وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٦﴾

(११६) तथा उनकी सहायता की तो वही प्रभावशाली (विजयी) रहे।

وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿١١٧﴾

(११७) तथा हमने उन्हें (स्पष्ट एवं) प्रकाशमय किताब प्रदान की।

وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١١٨﴾

(११८) तथा उन दोनों को सीधे मार्ग पर स्थिर रखा।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١١٩﴾

(११९) तथा हमने उन दोनों के लिए पीछे आने वालों में यह बात शेष रखी।

سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٠﴾

(१२०) कि मूसा तथा हारून पर सलाम हो।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢١﴾

(१२१) नि:सन्देह हम पुण्य कार्य करने वालों को इसी प्रकार बदला दिया करते हैं।

اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٢﴾

(१२२) नि:संदेह ये दोनों हमारे ईमानदार भक्तों में से थे।

وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾

(१२३) तथा नि:सन्देह इलियास भी पैग़म्बरों में से थे।[3]

---

[1]अर्थात उन्हें नबूअत (दूतत्व) तथा अन्य उपकारों से सम्मानित किया।

[2]अर्थात फ़िरऔन की दासता तथा उसके अत्याचार एवं क्रूरता से।

[3]यह आदरणीय हारून की संतान में से इस्राईली नबी थे, यह जिस क्षेत्र में भेजे गये उसका नाम बअ्लबक था। कुछ कहते हैं कि उस स्थान का नाम सामरह है जो फ़िलस्तीन का पश्चिमी मध्य क्षेत्र है। यहाँ के लोग बअ्ल नामी मूर्ति (देवता) के पुजारी थे। कुछ कहते हैं कि यह देवी का नाम था।

The Ummah Technology Mission

إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِۦٓ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٢٤﴾

(१२४) जबकि उन्होंने अपने समुदाय से कहा कि तुम अल्लाह से डरते नहीं हो।[1]

أَتَدْعُونَ بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَٰلِقِينَ ﴿١٢٥﴾

(१२५) क्या तुम 'बअ्ल' नामक मूर्ति से प्रार्थनायें करते हो तथा सर्वश्रेष्ठ स्रष्टा को छोड़ देते हो ?

ٱللَّهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ ءَابَآئِكُمُ ٱلْأَوَّلِينَ ﴿١٢٦﴾

(१२६) अल्लाह जो तुम्हारा तथा तुम्हारे पूर्व के सभी पूर्वजों का प्रभु है।[2]

فَكَذَّبُوهُ فَإِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٢٧﴾

(१२७) परन्तु समुदाय ने उन्हें झुठलाया, तो वे अवश्य (यातनाओं में) उपस्थित रखे जायेंगे।[3]

إِلَّا عِبَادَ ٱللَّهِ ٱلْمُخْلَصِينَ ﴿١٢٨﴾

(१२८) अतिरिक्त अल्लाह (तआला) के नि:स्वार्थ भक्तों के।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى ٱلْءَاخِرِينَ ﴿١٢٩﴾

(१२९) तथा हमने (इलियास की) शुभ चर्चा पिछले लोगों में शेष रखा।

سَلَٰمٌ عَلَىٰٓ إِلْ يَاسِينَ ﴿١٣٠﴾

(१३०) कि इलियास पर सलाम हो।[4]

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِى ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿١٣١﴾

(१३१) हम पुण्य कार्य करने वालों को इसी प्रकार बदला देते हैं।

---

[1]अर्थात उसके प्रकोप तथा पकड़ से कि उसे छोड़कर तुम अल्लाह के अन्य की उपासना करते हो।

[2]अर्थात उसकी उपासना करते हो, उसके नाम के चढ़ावे चढ़ाते तथा उसे कार्यक्षम समझते हो जो पत्थर की मूर्ति है, तथा जो सब वस्तु का विधाता एवं अगलों-पिछलों का पालनहार है, उसको तुमने भुला रखा है।

[3]अर्थात तौहीद (एकेश्वरवाद) तथा ईमान (आस्था) से इंकार के दुष्परिणाम स्वरूप नरक का दण्ड भुगतेंगे।

[4]इल्यासीन, इलियास ही का एक उच्चारण है, जैसे तूरे सीना को तूरे सीनीन भी कहते है। आदरणीय इलियास को दूसरे धर्मग्रन्थों में *'इलिया'* भी कहा गया है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّهُۥ مِنْ عِبَادِنَا ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾

(१३२) निश्चय ही वह हमारे ईमानदार भक्तों में से थे।[1]

وَإِنَّ لُوطًا لَّمِنَ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٣﴾

(१३३) नि:सन्देह लूत (अलैहिस्सलाम) भी पैग़म्बरों में से थे।

إِذْ نَجَّيْنَٰهُ وَأَهْلَهُۥٓ أَجْمَعِينَ ﴿١٣٤﴾

(१३४) हमने उनको तथा उनके घर वालों को सबको मुक्ति प्रदान की।

إِلَّا عَجُوزًا فِى ٱلْغَٰبِرِينَ ﴿١٣٥﴾

(१३५) सिवाय उस बुढ़िया के जो पीछे रह जाने वालों में रह गयी।[2]

ثُمَّ دَمَّرْنَا ٱلْءَاخَرِينَ ﴿١٣٦﴾

(१३६) फिर हमने अन्यों को तहस-नहस कर दिया।

وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِم مُّصْبِحِينَ ﴿١٣٧﴾

(१३७) तथा तुम तो प्रात: होने पर उनकी बस्तियों से गुज़रते हो।

وَبِٱلَّيْلِ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٣٨﴾

(१३८) तथा रात्रि को भी, क्या फिर भी नहीं समझते ?[3]

---

[1]अन्तिम पवित्र ईशवाणी क़ुरआन ने नबियों एवं रसूलों की चर्चा करके उनके लिए अधिकतर स्थान पर यह शब्द प्रयोग किये हैं कि वह हमारे मोमिन (ईमानवाले) बन्दों में से थे। जिसके दो आशय हैं, एक उनके चरित्र तथा कर्म की श्रेष्ठता का प्रदर्शन जो ईमान का आवश्यक अंश है, ताकि उन लोगों का खण्डन हो जाये जो बहुत से पैग़म्बरों के बारे में नैतिक कमज़ोरियों को प्रमाणित करते हैं। जैसे तौरात तथा इंजील के वर्तमान संस्करणों में अनेक पैग़म्बरों के विषय में ऐसी मन गढ़न्त कथायें अंकित (दर्ज) हैं। दूसरा उद्देश्य उन लोगों का खण्डन है जो कुछ अम्बिया के बारे में अति (ग़ोलू) करके उनमें ईश्वरीय गुण तथा अधिकार सिद्ध करते हैं। अर्थात वह ईशदूत (पैग़म्बर) अवश्य थे किन्तु थे फिर भी अल्लाह के बन्दे (दास) न कि स्वयं अल्लाह अथवा उसके अंश अथवा साझी।

[2]इससे अभिप्राय आदरणीय लूत की पत्नी है जो काफ़िर थी। यह ईमानवालों के संग उस नगरी से बाहर नहीं गई थी क्योंकि उसे अपनी जाति के साथ विनाश होना था। अत: वह भी नाश हो गई।

[3]यह मक्कावासियों से संबोधन है जो व्यापारिक यात्रा में इन ध्वस्त क्षेत्रों से गुज़रते थे। इनसे कहा जा रहा है कि तुम प्रात: तथा रात्रि के समय भी इन बस्तियों से गुज़रते हो

The Ummah Technology Mission

وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٩﴾

(१३९) तथा निश्चय ही यूनुस नबियों में से थे।

إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿١٤٠﴾

(१४०) जब वह भागकर पहुँचे भरी नवका पर।

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ﴿١٤١﴾

(१४१) फिर नाम निकाला गया तो यह पराजित हो गये।

فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿١٤٢﴾

(१४२) तो फिर उन्हें मछली ने निगल लिया तथा वह स्वयं अपने आपको धिक्कारने लग गये।[1]

فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ﴿١٤٣﴾

(१४३) तो यदि वह पवित्रता गान करने वालों में से न होते।

जहाँ अब मृत सागर है, जो देखने में अति घृणित है एवं बड़ा दुर्गन्धित और बदबूदार। क्या तुम उन्हें देखकर यह बात नहीं समझते कि रसूलों को झुठलाने के कारण उनका यह दुष्परिणाम हुआ तो तुम्हारे दुराचार का परिणाम इससे भिन्न क्यों होगा ? जब तुम भी वही काम कर रहे हो जो उन्होंने किया तो फिर तुम अल्लाह के प्रकोप से क्योंकर सुरक्षित रहोगे ?

[1]आदरणीय यूनुस नैनवा (वर्तमान मौसिल) में नबी बनाकर भेजे गये थे। यह आशूरियों की राजधानी थी, उन्होंने एक लाख इस्राईलियों को बंदी बनाया था। इसलिए उनके मार्गदर्शन एवं निर्देश के लिए अल्लाह तआला ने उनकी ओर आदरणीय यूनुस को भेजा किन्तु यह जाति आप पर ईमान नहीं लाई। अन्ततः उस जाति को डराया कि शीघ्र ही तुम अल्लाह के प्रकोप की पकड़ में आ जाओगे। प्रकोप में देर हुई तो अल्लाह की आज्ञा के बिना स्वयं ही वहाँ से निकल गये तथा समुद्र पर जाकर एक नवका में सवार हो गये। अपने नगर से निकल जाने को ऐसे शब्द से वर्णन किया जिस प्रकार एक दास अपने स्वामी से भागकर चला जाता है, क्योंकि आप भी अल्लाह की आज्ञा के बिना अपनी जाति को छोड़कर चले गये थे। नवका सवारों तथा सामानों से भरी हुई थी, नवका समुद्र की लहरों में घिर गई तथा खड़ी हो गई। इसलिए उसका बोझ कम करने के लिए एक-आध व्यक्ति को नवका से समुद्र में फेंकने का प्रस्ताव सामने आया ताकि नवका के सवार अन्य यात्रियों के प्राणों की रक्षा हो। किन्तु इसके लिए कोई तैयार न था, इसलिए गोटी डालनी पड़ी (ऐसरुत्तफ़ासीर)। जिसमें आदरणीय यूनुस का नाम आया। वह पराजितों में हो गये अर्थात उन्हें अपने को भागे हुए दास के समान विवश होकर समुद्र की लहरों को समर्पित करना पड़ा। उधर अल्लाह ने मछली को आदेश किया कि वह उन्हें पूरा निगल ले तथा इस प्रकार आदरणीय यूनुस अल्लाह के आदेशानुसार मछली के पेट में चले गये।

The Ummah Technology Mission

لَلَبِثَ فِي بَطْنِهٖٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤٤﴾

(१४४) तो लोगों के उठाये जाने के दिन तक मछली के पेट में रहते।[1]

فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ سَقِيْمٌ ﴿١٤٥﴾

(१४५) तो हमने उसे समतल मैदान में डाल दिया तथा वह उस समय रोगी था।[2]

وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ﴿١٤٦﴾

(१४६) तथा उसके ऊपर छाया करने वाला एक लता वाला वृक्ष हमने उगा दिया।[3]

وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ﴿١٤٧﴾

(१४७) तथा हमने उन्हें एक लाख बल्कि उससे भी अधिक जनसमूह की ओर भेजा।

فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١٤٨﴾

(१४८) तो वे ईमान लाये[4] तथा हमने एक अवधि तक उन्हें सुख-सुविधा प्रदान की।

فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ﴿١٤٩﴾

(१४९) उनसे पूछिये कि क्या आपके प्रभु की तो पुत्रियाँ हैं तथा उनके पुत्र हैं?

اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ شٰهِدُوْنَ ﴿١٥٠﴾

(१५०) अथवा ये उस समय उपस्थित थे जब हमने फ़रिश्तों को नारियाँ पैदा किया।[5]

اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٥١﴾

(१५१) सावधान रहो कि ये लोग अपनी मनगढ़न्त से कह रहे हैं।

---

[1]अर्थात क्षमा-याचना तथा अल्लाह की पवित्रतागान न करते, जैसाकि उन्होंने ﴿لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ﴾ (अल-अम्बिया-८७) कहा, तो वह क़ियामत (प्रलय) तक मछली के पेट ही में रहते।

[2]जैसे पैदाइश के समय शिशु अथवा जानवर का चूज़ा होता है क्षीण, निर्बल एवं अशक्त।

[3] يَقْطِيْن (यक़तीन) प्रत्येक उस लता को कहते हैं जो अपने तने पर खड़ी नहीं होती, जैसे लौकी, कद्दू की लता। अर्थात उस चटियल भूमि में जहाँ वृक्ष था न भवन, एक छायादार लता उगाकर उनकी रक्षा की।

[4]उनके ईमान लाने की स्थिति का वर्णन *सूरः यूनुस* में गुज़र चुका है।

[5]अर्थात फ़रिश्तों को जो यह अल्लाह की बेटियाँ कहते हैं, तो क्या जब हमने फ़रिश्ते पैदा किये थे यह उस समय वहाँ उपस्थित थे और उन्होंने फ़रिश्तों में नारियों की विशेषताओं का अवलोकन किया था?

The Ummah Technology Mission

وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٥٢﴾

(१५२) कि अल्लाह की सन्तान हैं, वस्तुत: ये केवल झूठे हैं।

اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ﴿١٥٣﴾

(१५३) क्या अल्लाह (तआला) ने अपने लिए पुत्रियों को पुत्र पर प्राथमिकता दी ?[1]

مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿١٥٤﴾

(१५४) तुम्हें क्या हो गया है, कैसे आदेश लगाते फिरते हो ?

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٥﴾

(१५५) क्या तुम इतना भी नहीं समझते ?[2]

اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥٦﴾

(१५६) अथवा तुम्हारे पास (उसका) कोई स्पष्ट प्रमाण है ?

فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٥٧﴾

(१५७) तो जाओ यदि सच्चे हो तो अपनी ही किताब ले आओ।[3]

وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ؕ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾

(१५८) तथा उन लोगों ने तो अल्लाह के तथा जिन्नात के मध्य भी नाता स्थापित किया है,[4] तथा जबकि जिन्नात स्वयं ज्ञान रखते हैं कि वे (इस आस्था के लोग यातना के समक्ष) प्रस्तुत किये जायेंगे।[5]

---

[1]जब कि यह स्वयं अपने लिये बेटियाँ नहीं बेटे पसन्द करते हैं।

[2]यदि अल्लाह की संतान होती तो नर होती जिसको तुम भी पसन्द करते तथा उत्तम समझते हो न कि पुत्रियाँ जो तुम्हारी दृष्टि में हीन तथा तुच्छ हैं।

[3]अर्थात बुद्धि तो इस आस्था को औचित्य स्वीकार नहीं करती कि अल्लाह के संतान हैं तथा वह भी स्त्री, चलो कोई प्रमाण किसी ईश्वरीय धर्मग्रन्थ ही से दिखा दो, कोई धर्मशास्त्र जो अल्लाह ने अवतरित किया हो उसमें अल्लाह की संतान का इक़रार तथा संदर्भ हो ?

[4]यह संकेत है मूर्तिपूजकों की इस आस्था की ओर कि अल्लाह ने जिन्नों के साथ विवाह का नाता स्थापित किया जिससे पुत्रियाँ पैदा हुईं। यही अल्लाह की पुत्रियाँ फ़रिश्ते हैं। इस प्रकार अल्लाह तआला (परमेश्वर) तथा जिन्नों के बीच ससुराली नाता स्थापित हो गया।

[5]जबकि यह बात कैसे सही हो सकती है ? यदि ऐसा होता तो अल्लाह जिन्नों को यातना में क्यों डालता ? क्या वह अपने नातेदारी पर ध्यान न देता ? तथा यदि ऐसा नहीं है, अपितु

The Ummah Technology Mission

سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٥٩﴾

(१५९) जो कुछ ये(अल्लाह के विषय में) वर्णन कर रहे हैं उससे अल्लाह (तआला) पवित्र है।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٠﴾

(१६०) सिवाय अल्लाह (तआला) के शुद्ध भक्तों के ।[1]

فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ﴿١٦١﴾

(१६१) विश्वास करो कि तुम सब तथा तुम्हारे (झूठे) देवता।

مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ﴿١٦٢﴾

(१६२) किसी एक को भी बहका नहीं सकते।

اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ ﴿١٦٣﴾

(१६३) सिवाय उनके जो नरक में जाने वाले ही हैं ।[2]

وَمَا مِنَّآ اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿١٦٤﴾

(१६४) (फ़रिश्तों का कथन है) कि हममें से प्रत्येक का स्थान नियमित है ।[3]

وَّاِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ ﴿١٦٥﴾

(१६५) तथा हम (अल्लाह की आज्ञापालन में) पंक्तिबद्ध खड़े हुए हैं।

وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ﴿١٦٦﴾

(१६६) तथा उसकी तस्बीह (पवित्रता का गान) कर रहे हैं ।[4]

स्वयं जिन्न भी जानते है कि उन्हें अल्लाह का दण्ड एवं सज़ा भुगतने के लिए अवश्य नरक में जाना होगा तो फिर अल्लाह तथा जिन्नों के बीच नाता किस प्रकार हो सकता है ?

[1]अर्थात ये अल्लाह के संबन्ध में ऐसी बातें नहीं कहते जिनसे वह पवित्र है यह मूर्तिपूजकों का ही व्यवहार है। अथवा यह अभिप्राय है कि नरक में जिन्न एवं मिश्रणवादी उपस्थित किये जायेंगे अल्लाह के मुख़लिस (चुने हुए) बंदे नहीं। उनके लिये तो अल्लाह ने स्वर्ग तैयार कर रखा है। इस अवस्था में यह لَمُحْضَرُوْنَ से अलग किया गया है, तथा تسبيح (तस्वीह) अलग प्रसंग वाक्य है।

[2]अर्थात तुम तथा तुम्हारे झूठे पूज्य किसी को गुमराह करने पर समर्थ नहीं हैं सिवाय उनके जो अल्लाह के ज्ञान में पहले ही से नरक के पात्र हैं तथा इसी कारण वह शिर्क तथा कुफ़्र पर अड़िग हैं।

[3]अर्थात अल्लाह की उपासना के लिए, यह फ़रिश्तों का कथन है।

[4]अभिप्राय यह है कि फ़रिश्ते भी अल्लाह की सृष्टि एवं उसके विशेष दास हैं जो हर समय उसकी वंदना तथा उसकी तस्बीह एवं तक़दीस (पवित्रतागान) में लीन रहते हैं, न कि वह

The Ummah Technology Mission

وَإِن كَانُوا لَيَقُولُونَ ﴿١٦٧﴾

(१६७) तथा काफ़िर तो कहा करते थे।

لَوْ أَنَّ عِندَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٦٨﴾

(१६८) कि यदि हमारे पास अगले लोगों का ज़िक्र (स्मृति) होता।

لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٩﴾

(१६९) तो हम भी अल्लाह के चुने हुए बन्दे हो जाते।[1]

فَكَفَرُوا بِهِ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿١٧٠﴾

(१७०) परन्तु फिर इस (क़ुरआन) से कुफ़्र (इंकार) कर गये[2] तो शीघ्र ही जान लेंगे।[3]

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧١﴾

(१७१) तथा निश्चय हमारा वचन पूर्व में ही अपने रसूलों के लिए लागू हो चुका है।

إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنصُورُونَ ﴿١٧٢﴾

(१७२) कि नि:सन्देह वे लोग ही सहायता किये जायेंगे।

وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿١٧٣﴾

(१७३) तथा हमारी सेना प्रभावशाली (एवं श्रेष्ठतम) रहेगी।[4]

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٤﴾

(१७४) अब आप कुछ दिनों तक इनसे मुख फेर लीजिए।[5]

अल्लाह की पुत्रियाँ हैं जैसाकि मिश्रणवादी (मुशरेकीन) कहते हैं।

[1] ذكر (स्मृति) से अभिप्राय कोई अल्लाह की किताब अथवा पैग़म्बर है। अर्थात मूर्तिपूजक पवित्र क़ुरआन के अवतरित होने से पहले कहा करते थे कि हमारे पास भी कोई आकाशीय ग्रन्थ होता जिस प्रकार पहले लोगों पर धर्मग्रन्थ तौरात आदि अवतरित हुए। या कोई मार्गदर्शक अथवा सचेत करने वाला हमें शिक्षा देने वाला होता तो हम भी अल्लाह के विशुद्ध भक्त बन जाते।

[2] अर्थात उनकी कामनानुसार जब अन्तिम ईशदूत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आ गये तथा पवित्र क़ुरआन अवतरित कर दिया गया तो उन पर ईमान न लाकर उनका इंकार किया।

[3] यह चेतावनी तथा धमकी है कि इस झुठलाने का दुष्परिणाम शीघ्र उनको मालूम हो जायेगा।

[4] जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया : ﴿كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي﴾ (अल-मुजादिलः -२१)

[5] अर्थात उनकी बातों तथा यातनाओं पर धैर्य कीजिए।

The Ummah Technology Mission

وَأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿١٧٥﴾

(१७५) तथा उन्हें देखते रहिए[1] तथा ये भी आगे चलकर देख लेंगे।

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿١٧٦﴾

(१७६) क्या ये हमारी यातनाओं की शीघ्रता मचा रहे हैं ?

فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنذَرِينَ ﴿١٧٧﴾

(१७७) (सुनो !) जब हमारा प्रकोप उनके मैदानों में उतर आयेगा उस समय उनकी जिनको सावधान कर दिया गया था,[2] बड़ी बुरी सुबह होगी।

وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٨﴾

(१७८) तथा आप कुछ समय तक उनका ध्यान छोड़ दीजिए।

وَأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿١٧٩﴾

(१७९) तथा देखते रहिए यह भी अभी-अभी देख लेंगे।[3]

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٨٠﴾

(१८०) पवित्र है आपका प्रभु जो अति सम्मान वाला है, प्रत्येक उस बात से जो (मूर्तिपूजक) कहा करते हैं।[4]

---

[1]कि कब उन पर अल्लाह का प्रकोप आयेगा ?

[2]जब मुसलमान ख़ैबर विजय करने गये तो यहूदी उन्हें देखकर घबरा गये, जिस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी الله اكبر अल्लाहु अकबर, (अल्लाह महान है) कह कर फ़रमाया : خربت خيبر ، إنا إذا نزلنا بساحة قوم فساء صباح المنذرين (सहीह बुख़ारी किताबुस्सलात, बाब मा युज़करू फ़िल फ़खिज़े

[3]यह बल देने के लिए दुहराया है, अथवा पहले वाक्य से अभिप्राय संसार की वह यातना (प्रकोप) है, जो मक्कावासियों पर बद्र तथा ओहद इत्यादि युद्धों में मुसलमानों के हाथों काफ़िरों की हत्या एवं लूट-पाट स्वरूप सामने आया तथा दूसरे वाक्य में उस दण्ड की चर्चा है जिससे यह काफ़िर तथा मुशरिक परलोक में भुगतेंगे।

[4]इसमें उन दोषों तथा अवगुणों से अल्लाह के पवित्र होने की चर्चा है जो बहुदेववादी अल्लाह के लिए वर्णन करते हैं, जैसे उसकी संतान अथवा उसका कोई साझी है। यह दोष बन्दों में है तथा संतान एवं साझीदारों की आवश्यकता भी उन्हीं को है। अल्लाह

The Ummah Technology Mission

وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٨١﴾

(१८१) पैग़म्बरों पर सलाम है।[1]

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٢﴾

(१८२) तथा सभी प्रशंसायें अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिए हैं।[2]

सूरतु साद-३८

سُوْرَةُ صٓ

सूरः स्साद मक्का में अवतरित हुई, इसमें अठासी आयतें तथा पाँच रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह तआला के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु अत्यन्त कृपालु है।

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِي الذِّكْرِ ﴿١﴾

(१) साद, इस शिक्षाप्रद क़ुरआन की सौगन्ध।[3]

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ﴿٢﴾

(२) बल्कि काफ़िर अहंकार एवं विरोध में पड़े हुए हैं।[4]

इन सब बातों से अति महान तथा उच्च है, क्योंकि वह निस्पृह है, उसे किसी संतान व साझी की आवश्यकता नहीं।

[1]कि उन्होंने अल्लाह का संदेश जगतवासियों की ओर पहुँचाया जिस पर निश्चय वह सलाम तथा बधाई के पात्र हैं।

[2]यह वन्दों को समझाया जा रहा है कि अल्लाह ने तुम पर उपकार किया है, संदेष्टा भेजे, धर्मशास्त्र अवतरित किये तथा पैग़म्बरों ने तुम्हें अल्लाह का पैग़ाम सुनाया। अतः तुम अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करो। कुछ कहते हैं कि काफ़िरों का सत्यानाश करके ईमानवालों तथा रसूलों को बचाया। उस पर अल्लाह के आभारी बनो। حمد (हम्द) का अर्थ है महिमा के इरादे से प्रशंसा, गुणगान तथा महानता का वर्णन करना।

व्याख्या सूरः साद :

[3]जिसमें तुम्हारे लिये प्रत्येक प्रकार की शिक्षा है तथा ऐसी बातें हैं जिनसे लोक भी संवर जाये तथा परलोक भी। कुछ ने ذي الذكر का अनुवाद प्रतिष्ठावान तथा उच्चतम किया है। इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि दोनों अर्थ सही हैं, क्योंकि क़ुरआन प्रतिष्ठावान भी है तथा ईमानवालों के लिए शिक्षा भी। इस सौगन्ध का उत्तर लुप्त है कि बात ऐसी नहीं जैसे मक्का के नास्तिक कहते हैं कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जादूगर, कवि अथवा झूठे हैं, अपितु आप अल्लाह के रसूल हैं जिन पर यह क़ुरआन अवतरित हुआ।

[4]अर्थात यह क़ुरआन तो निश्चय ही शंका से पवित्र तथा उनके लिए शिक्षाप्रद है जो शिक्षा प्राप्त करें, हाँ काफ़िरों को इस से लाभ इसलिए नहीं पहुँच सकता कि उनके मस्तिष्क में

The Ummah Technology Mission

كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ۝٣

(३) हमने इनसे पूर्व भी बहुत से सम्प्रदायों को नाश कर डाला,[1] उन्होंने हर प्रकार की चीख़-पुकार की परन्तु वह समय छुटकारे का न था।[2]

وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ ۫ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۝٤

(४) तथा काफ़िरों को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि उन्ही में से एक डराने वाला आ गया[3] तथा कहने लगे कि यह जादूगर तथा झूठा है।

اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ۝٥

(५) क्या इसने इतने सारे देवताओं को एक ही देवता कर दिया, वास्तव में यह अत्यन्त विचित्र बात है।[4]

وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ يُّرَادُ ۝٦

(६) उनके प्रमुख यह कहते हुए चले कि जाओ अपने देवताओं पर दृढ़ रहो,[5] नि:संदेह इस बात में कोई उद्देश्य (स्वार्थ) है।[6]

अहंकार तथा घमंड भरा हुआ है तथा दिलों में विरोध तथा शत्रुता। عزّت (इज़्ज़त) का अर्थ होता है सत्य के विरोध में अकड़ना।

[1]जो उनसे अधिक बलवान एवं शक्तिशाली थे, किन्तु कुफ़्र तथा झुठलाने के कारण दुष्परिणाम के भोगी हुए।

[2]उन्होंने प्रकोप देखकर सहायता के लिए पुकारा तथा क्षमा-याचना का प्रदर्शन किया किन्तु वह समय क्षमा करने का था न पलायन (भागने) का। इसलिए न उनका ईमान लाभप्रद हुआ न वह भाग कर प्रकोप से बच सके। لاتَ शब्द لا ही है जिसमें ت (त) अधिक है, जैसे ثُمَّ को ثَمَّ भी बोलते हैं। مناص धातु है نَاصَ يَنُوصُ का जिसका अर्थ भागना पीछे हटना है।

[3]अर्थात उन्हीं जैसा एक मानव पुरूष रसूल किस प्रकार बन गया।

[4]अर्थात एक ही अल्लाह पूरे विश्व का व्यवस्थापक है, उसका कोई साझी नहीं। इसी प्रकार इबादत (वंदना) तथा चढ़ावे का अधिकारी मात्र वही एक है। यह उनके लिए विचित्र बात थी।

[5]अर्थात अपने धर्म पर अडिग रहो तथा मूर्तियों की पूजा करते रहो, मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बात पर कान न धरो।

[6]अर्थात यह हमें अपने देवताओं से अलग कर वस्तुत: हमें अपना अनुयायी बनाना तथा अपना नेतृत्व एवं बड़ाई मनवाना चाहता है।

The Ummah Technology Mission

مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۚ اِنْ هٰذَآ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ۝٧

(७) हमने तो यह बात प्राचीन धर्मों में भी नहीं सुनी,[1] कुछ नहीं, यह तो केवल मनगढ़न्त है।[2]

ءَاُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْۢ بَيْنِنَا ۭ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِيْ ۚ بَلْ لَّمَّا يَذُوْقُوْا عَذَابِ ۝٨

(८) क्या हम सभी में से उसी पर (अल्लाह की) वार्ता अवतरित की गई है ?[3] वास्तव में यह लोग मेरी प्रकाशना (वह्यी) की ओर से संदेह में हैं,[4] बल्कि (ठीक यह है कि) उन्होंने मेरी यातना का स्वाद अभी चखा ही नहीं।[5]

اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَاۗىِٕنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ۝٩

(९) अथवा क्या उनके पास तेरे प्रभुत्वशाली दानी प्रभु की कृपा के कोष हैं।[6]

---

[1]पिछले धर्म से अभिप्राय या तो कुरैश ही का अपना धर्म है या फिर इसाई धर्म। अर्थात यह जिस तौहीद (एकेश्वरवाद) का आमंत्रण दे रहा है उसके विषय में तो हमने किसी धर्म में नहीं सुना।

[2]अर्थात यह तौहीद मात्र उसकी अपनी मनगढ़त है, अन्यथा इसाई धर्म में भी अल्लाह के साथ दूसरों को उपासना में साझी माना गया है।

[3]अर्थात मक्का में बड़े-बड़े चौधरी तथा धनपति हैं। यदि अल्लाह किसी को नबी बनाना ही चाहता तो उनमें से बनाता। इन सबको छोड़कर प्रकाशना (वह्यी) एवं दूतत्व (रिसालत) के लिये मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का चयन भी विचित्र है ? यह जैसे उन्होंने अल्लाह के निर्वाचन में कीड़ (दोष) निकाले। सच है "खूवे बदरा बहानये बिस्यार" (दुराचारी के लिए बहुत से बहाने हैं)। दूसरे स्थान पर भी यह विषय वर्णित है। उदाहरणार्थ सूरः *अहज़ाब*-३१,३२

[4]अर्थात उनका इंकार इस कारण नहीं है कि उन्हें मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सत्यता का ज्ञान नहीं, अथवा आपके सुबोध से उन्हें इंकार है अपितु यह उस प्रकाशना (वह्यी) के संदर्भ में ही शंका तथा शंसय में ग्रस्त हैं जो आप पर अवतरित हुई, जिसमें सब से प्रत्यक्ष तौहीद (अद्वैत) का आमन्त्रण है।

[5]क्योंकि प्रकोप का स्वाद चख लेते तो इतनी खुली चीज़ को न झुठलाते तथा जब इस झुठलाने का वास्तविक स्वाद चखेंगे तो वह समय ऐसा होगा कि फिर न मानना काम आयेगा न ईमान ही लाभदायक होगा।

[6]कि यह जिसे चाहें दें तथा जिसे चाहे न दें। इन्हीं कोषों में नबूअत (दूतत्व) भी है। तथा यदि ऐसा नहीं है, अपितु प्रभु के कोषों का स्वामी वही दाता है, तो फिर उन्हें नबूअत मोहम्मदी से इंकार क्यों है जिसे परमदाता प्रभु ने अपनी विशेष दया से प्रदान किया है।

The Ummah Technology Mission

أَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ فَلْيَرْتَقُوا فِي الْأَسْبَابِ ﴿١٠﴾

(१०) अथवा क्या आकाश एवं धरती तथा उनके मध्य की प्रत्येक वस्तु का राज्य उन्ही का है, तो फिर ये रस्सियाँ तानकर चढ़ जायें।[1]

جُندٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ مِّنَ الْأَحْزَابِ ﴿١١﴾

(११) यह भी (विशाल) सेनाओं में से पराजित (छोटी सी) सेना है।[2]

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ﴿١٢﴾

(१२) उनसे पूर्व नूह के समुदाय तथा आद एवं कीलों वाले फ़िरऔन[3] ने झुठलाया था।

وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ ۖ أُولٰٓئِكَ الْأَحْزَابُ ﴿١٣﴾

(१३) तथा समूदियों एवं लूत के समुदाय ने तथा वन के रहने वालों[4] ने भी, यही (विशाल) सेनायें थीं।

---

[1]अर्थात आकाश पर चढ़कर उस प्रकाशना का क्रम काट दें जो मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अवतरित होती है। أسباب (अस्बाब) बहुवचन है سبب (सबब) का इसका शाब्दिक अर्थ है, जिसके द्वारा लक्ष्य तक पहुँचा जाये चाहे वह कोई भी वस्तु हो। इसलिए इनके विभिन्न अर्थ किये गये हैं। एक अनुवाद द्वार भी किया गया है जिससे फ़रिश्ते धरती पर उतरते हैं अर्थात सिढ़ियों द्वारा आकाश के द्वार तक पहुँच जायें तथा प्रकाशना (वह्यी) बन्द कर दें। (फ़तहुल क़दीर)

[2] جُندٌ विधेय है जिसका विषय लुप्त है। ما बड़ाई तथा हीनता पर बल देने के लिए है। यह अल्लाह तआला (परमेश्वर) की ओर से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सहायता तथा काफ़िरों की पराजय का वचन है। अर्थात काफ़िरों की यह सेना जो बातिल (अनृत) की सेनाओं में से एक सेना है, बड़ी है अथवा हीन, इसकी कदापि परवाह न करें पराजय उनका भाग्य है। هُنَالِكَ में दूर स्थान की ओर संकेत है जो बद्र एवं मक्का विजय के दिन की ओर भी हो सकता है। जहाँ काफ़िर शिक्षाप्रद पराजय से दो-चार हुए।

[3]फ़िरऔन को खूँटों वाला इसलिए कहा कि वह निर्दयी जब किसी पर क्रोधित होता तो उसके हाथों, पैरों तथा सर में कीलें गाड़ देता, अथवा इसका उद्देश्य व्यंजना स्वरूप उसके बल, शक्ति एवं दृढ़ राज्य को दिखाना है। अर्थात कीलों से जिस प्रकार किसी वस्तु को दृढ़ कर दिया जाता है उसी प्रकार उसकी भारी सेना तथा उसके अनुगामी भी उसके राज्य शक्ति एवं दृढ़ता का कारण थे।

[4]أصحاب الأيكة के लिये सूरः शुअरा १७६ का भाष्य देखें।

The Ummah Technology Mission

إِنْ كُلٌّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ﴿١٤﴾

(१४) इनमें से एक भी ऐसा न था जिसने रसूलों को झुठलाया न हो, तो मेरा प्रकोप उन पर सिद्ध हो गया।

وَمَا يَنظُرُ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً مَّا لَهَا مِن فَوَاقٍ ﴿١٥﴾

(१५) तथा उन्हें केवल एक तीव्र ध्वनि की प्रतीक्षा है,[1] जिसमें कोई विघ्न (तथा ढील) नहीं है।[2]

وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّل لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ﴿١٦﴾

(१६) तथा (उन्होंने) कहा कि हे हमारे प्रभु! हमारा लेखा-जोखा तू हमें हिसाब के दिन से पूर्व ही प्रदान कर दे।[3]

اصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُودَ ذَا الْأَيْدِ ۖ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿١٧﴾

(१७) आप उनकी बातों पर धैर्य रखें तथा हमारे भक्त दाऊद को याद करें जो अत्यन्त शक्ति-शाली था,[4] नि:संदेह वह बहुत ध्यानमग्न था।

---

[1]अर्थात नरसिंघा फूँकने का जिस से प्रलय व्याप्त हो जायेगी।

[2]दूध दुहने वाला एक बार कुछ दूध दुहकर बच्चे को ऊँटनी अथवा गाय, भैंस के पास छोड़ देता है ताकि उसके दूध पीने से थनों में दूध उतर आये। फिर थोड़े समय बाद बच्चे को बलपूर्वक पीछे हटाकर स्वयं दूध दूहना आरम्भ कर देता है। यह दो बार दूध दूहने के मध्य जो अन्तर है यह فواق (फ़वाक़) कहलाता है। अर्थात नरसिंघा फूँकने के पश्चात इतना भी अवसर नहीं मिलेगा अपितु सूर (नरसिंघा) फूँकने की देर होगी कि प्रलय का भूकम्प व्याप्त हो जायेगा।

[3] قِطٌّ (क़ित्त) का अर्थ है, हिस्सा, अभिप्राय यहाँ कर्मपत्र अथवा लेखा-जोखा है अर्थात हमारे कमपर्त्रानुसार हमारे भाग में अच्छी व बुरी सज़ा जो भी हो हिसाब का दिन आने से पहले हमें संसार ही में दे दो यह يَستعجلونَك بالعَذاب वाली बात ही है। यह क़ियामत (प्रलय) के होने को असंभव समझते हुए परिहास तथा उपहास स्वरूप उन्होंने कहा।

[4]यह أَيْدٌ - يَدٌ का बहुवचन नहीं है, अपितु यह اَدَ يَئِيدُ का धातु है اَيِدٌ बल तथा दृढ़ता। इसी से تَأْيِيد समर्थन देने के अर्थ में है। इससे अभिप्राय धार्मिक बल एवं दृढ़ता है। जैसे हदीस में आता है कि अल्लाह को प्रिय नमाज़ दाऊद की नमाज़ तथा प्रिय रोज़े (व्रत) दाऊद के रोज़े हैं, वह आधी रात सोते फिर उठकर रात्रि का तिहाई भाग क़याम (प्रार्थना) करते तथा फिर छठें भाग में सो जाते। एक दिन रोज़ा रखते तथा एक दिन नाग़ा (अन्तर) करते तथा रणभूमि से नहीं भागते (सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया, तथा मुस्लिम, किताबुस सेयाम, बाबुन्नहिये अन सौमिद्दहरे)

The Quran Technology Mission

إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ﴿١٨﴾

(१८) हमने पर्वतों को उसके अधीन कर दिया था कि उसके साथ संध्या तथा प्रात:को महिमागान करें।

وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً ۖ كُلٌّ لَّهُ أَوَّابٌ ﴿١٩﴾

(१९) तथा (उड़ते) पक्षियों को भी एकत्रित होकर, सबके सब उसके अधीन होते।[1]

وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَآتَيْنَاهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा हमने उसके राज्य को सुदृढ़ कर दिया था[2] तथा उसे तत्वज्ञान (हिक्मत) प्रदान किया था[3] तथा बात का निर्णय (सुझा दिया था)।[4]

وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿٢١﴾

(२१) तथा क्या तुझे झगड़ा करने वालों की सूचना मिली जबकि वे दीवार फाँदकर मेहराब में (इबादत के स्थान पर) आ गये?[5]

إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُودَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ ۖ قَالُوا

(२२) जब ये दाऊद के पास पहुँचे तो ये उनसे डर गये,[6] (उन्होंने) कहा भयभीत न

---

[1]अर्थात पौ फटने के समय तथा आखिर दिन को पर्वत भी दाऊद के संग तस्बीह में लीन होते तथा उड़ते पक्षी भी ज़बूर का पाठ सुनकर वायु में ही एकत्र हो जाते एवं उनके साथ तस्बीह (पवित्रतागान) करते مَحْشُورَة (महशूर:) का अर्थ एकत्रित है।

[2]प्रत्येक प्रकार के भौतिक तथा आध्यात्मिक साधनों द्वारा।

[3]अर्थात नबूअत (दूतत्व), सही राये, सीधी बात तथा सीधा काम।

[4]अर्थात विवाद का निर्णय करने की योग्यता, सूझबूझ, धर्मबोध एवं तर्क निकालने तथा वर्णन करने की शक्ति।

[5] مِحْرَاب (मेहराव) से अभिप्राय वह कक्ष है जिसमें सबसे अलग होकर एकाग्रता के साथ अल्लाह की उपासना करते थे, द्वार पर द्वारपाल होते ताकि कोई भीतर जाकर उपासना में बाधक न हो। झगड़ा करने वाले पीछे से दीवार फाँद कर भीतर आ गये।

[6]भय का कारण स्पष्ट है कि एक तो वह द्वार से नहीं पीछे से दीवार पर चढ़कर भीतर आये, दूसरे उन्होंने इतना बड़ा कार्य करते हुए समय के राजा का कोई भय नही प्रतीत किया। प्रत्यक्ष कारणों के अनुसार भय वाली वस्तु से भय खाना मानव की एक प्राकृतिक माँग है। यह नबूअत एवं पद के विपरीत है न तौहीद के प्रतिकूल। तौहीद के विपरीत अल्लाह के सिवाय का वह भय है जो अकारण हो।

The Ummah Technology Mission

لَا تَخَفْ ۖ خَصْمٰنِ بَغٰى بَعْضُنَا
عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ
وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَآ اِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾

होइए, हमारा आपसी झगड़ा है, हममें से एक ने दूसरे पर अत्याचार किया है, तो आप हमारे मध्य न्यायपूर्वक निर्णय कर दीजिए तथा अन्याय न कीजिए तथा हमें सीधा मार्ग बता दीजिए।[1]

اِنَّ هٰذَآ اَخِىْ ۖ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً
وَّلِىَ نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ ۖ فَقَالَ
اَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِىْ فِى الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾

(२३) (सुनिये !) यह मेरा भाई है,[2] इसके पास निन्नानवे भेड़ें हैं तथा मेरे पास एक ही है, परन्तु यह मुझसे कह रहा है कि अपनी यह एक भी मुझे दे दे[3] तथा मुझ पर बात में बड़ा कटु व्यवहार करता है।[4]

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ
اِلٰى نِعَاجِهٖ ۖ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ
لَيَبْغِىْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ ۗ
وَظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ

(२४) (आपने) कहा, उसका अपनी भेड़ों के साथ तेरी एक भेड़ सम्मिलित करने का प्रश्न अवश्य तेरे ऊपर एक अत्याचार है तथा अधिकतर भागीदार एवं साझीदार (ऐसे ही होते हैं कि) एक-दूसरे पर अन्याय एवं अत्याचार करते हैं[5] सिवाय उनके जो ईमान लाये तथा जिन्होंने पुण्य के कार्य किये तथा

---

[1]आने वालों ने सांत्वना दी कि घबराने की आवश्यकता नहीं है, हमारे बीच एक झगड़ा है, हम आप से निर्णय कराने आये हैं। आप सत्यतापूर्वक निर्णय कर दें तथा सीधे मार्ग का हमें निर्देश भी कर दें।

[2]भाई से अभिप्राय यहाँ धार्मिक भाई अथवा व्यवसाय का साझी है या मित्र है, सबको भाई कहना सही है।

[3]अर्थात यह एक भेड़ भी मेरी भेड़ों में मिला दे ताकि मैं ही उसका भी स्वामी एवं मालिक हो जाऊँ।

[4]दूसरा अनुवाद है, "तथा यह वार्तालाप में मुझ पर प्रभावी हो गया" अर्थात् जैसे उसके पास माल अधिक है वैसे ही बोलने में भी मुझसे निपुण है, जिसके कारण लोगों से अपनी बात मनवा लेता है।

[5]अर्थात इन्सानों में यह दोष सामान्य है कि एक साझीदार दूसरे पर ज्यादती करता है तथा प्रयास करता है कि दूसरे का भाग भी स्वयं हड़प कर जाये।

The Ummah Technology Mission

وَخَرَّ رَاكِعًا وَّاَنَابَ ۝٢٤ السجدة

ऐसे लोग बहुत ही कम हैं,[1] तथा दाऊद (अलैहिस्सलाम) जान गये कि हमने उनकी परीक्षा ली है फिर तोअपने प्रभु से क्षमा-याचना करने लगे तथा विनम्रता के साथ गिर पड़े[2] तथा (पूर्णरूप से) ध्यानमग्न हो गये।

فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ؕ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝٢٥

(२५) तो हमने भी उनका यह (दोष) क्षमा कर दिया,[3] नि:संदेह वह हमारे निकट अत्यन्त उच्च पद एवं सर्वोत्तम ठिकाने वाले हैं।

---

[1]हाँ, इस नैतिक दोष से ईमानवाले सुरक्षित रहते हैं, क्योंकि उनके दिलों में अल्लाह का भय होता है तथा वह सत्कर्म पर स्थायी होते हैं। अतएव वह दूसरों पर अत्याचार तथा दूसरों के माल को हड़पने का प्रयत्न नहीं करते। परन्तु इस स्वभाव के लोग कम ही होते हैं।

[2] وَخَرَّ رَاكِعًا का अभिप्राय यहाँ सजदे में गिर पड़ना है।

[3]ईशदूत दाऊद का वह क्या दोष था जिस पर खेद एवं लज्जा का संवेदन किया तथा अल्लाह ने उन्हें क्षमा कर दिया। पवित्र क़ुरआन में इस का विवरण नहीं है, न किसी प्रमाणित हदीस ही में इस विषय की कोई व्याख्या है। अत: कुछ भाष्यकारों ने तो यहूदी कथाओं को आधार बनाकर ऐसी बातें लिख दी हैं जो एक नबी की मर्यादा से नीची हैं। कुछ भाष्यकारों जैसे इब्ने कसीर ने कहा कि जब क़ुरआन तथा हदीस इस विषय में मौन हैं तो हमें उनके विवरण के कुरेद में पड़ने की आवश्यकता नहीं है। भाष्यकारों का एक तीसरा गिरोह है जो इस घटना का विवरण बताता है ताकि क़ुरआन के संक्षेप की कुछ व्याख्या हो जाये। फिर भी यह किसी एक बात पर सहमत नहीं है। कुछ कहते हैं कि आदरणीय दाऊद ने एक सैनिक को आदेश दिया था कि वह अपनी पत्नी को तलाक़ दे दे, तथा यह उस युग के प्रचलन में कोई दोष की बात नहीं थी। आदरणीय दाऊद को उसके गुणों तथा निपुणता का ज्ञान हुआ था, जिसके कारण उनमें यह आकांक्षा हुई कि उस स्त्री को तो रानी होना चाहिए न कि एक साधारण नारी, ताकि उसके गुणों एवं निपुणता से पूरा देश लाभन्वित हो। यह आकांक्षा कितनी भी शुभ भावना के आधार पर हो किन्तु एक तो अनेक पत्नियों की उपस्थिति में अनुचित सी बात लगती है, दूसरे राजा की ओर से इसे व्यक्त करने में दबाव का पक्ष भी सम्मिलित हो जाता है। इसलिए आदरणीय दाऊद को एक उसी जैसी घटना द्वारा इसके अनुचित होने का आभास कराया गया तथा उन्हें वास्तव में इस पर सचेतता आ गई। कुछ कहते हैं कि यह आने वाले दो व्यक्ति

The Ummah Technology Mission

يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً
فِى الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ
وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ
بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ۝٢٦

(२६) हे दाऊद ! हमने तुम्हें धरती का उत्तराधिकारी बना दिया तो तुम लोगों के मध्य न्यायपूर्ण निर्णय करो तथा अपने मन की इच्छाओं का अनुसरण न करो वरन् वह तुम्हें अल्लाह के मार्ग से हटा देगी। नि:संदेह जो लोग अल्लाह के मार्ग से भटक जाते हैं उनके लिए कठोर यातनायें हैं इसलिए कि उन्होंने हिसाब के दिन को भुला दिया है।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ
وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ؕ ذٰلِكَ
ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ۝٢٧

(२७) तथा हमने आकाश एवं धरती तथा उनके मध्य की वस्तुओं को व्यर्थ (एवं अकारण) पैदा नहीं किया।[1] यह शंका तो नास्तिकों की है, तो काफ़िरों के लिए अग्नि की ख़राबी है।

फ़रिश्ते थे जो एक बनावटी विवाद को लेकर उपस्थित हुए। आदरणीय दाऊद से यह चूक हुई कि वादी की बात सुनकर ही अपना विचार व्यक्त कर दिया तथा प्रतिवादी की बातें सुनने की आवश्यकता ही नहीं समझी। अल्लाह ने पदोन्नति के लिए इस परीक्षा में उन्हें डाला। इस त्रुटि का आभास होते ही वह समझ गये कि यह अल्लाह की ओर से परीक्षा थी जो उन पर आई, तथा अल्लाह के सदन में झुक गये। कुछ कहते हैं कि आने वाले फ़रिश्ते नहीं इन्सान ही थे, तथा यह काल्पनिक घटना नहीं एक वास्तविक विवाद था जिसके निर्णय के लिए वह आये थे। इस प्रकार उनके धैर्य एवं सहन की परीक्षा ली गई, क्योंकि इस घटना में अप्रियता तथा स्वाभाविक उत्तेजना के कई पक्ष थे। एक तो बिना अनुमति दीवार फाँद कर आये, दूसरे इबादत के विशेष समय में आकर बाध्य होना, तीसरे उनकी बात करने की शैली भी आपकी राजकीय मर्यादा से न्यून था (कि अन्याय न करना आदि)। किन्तु अल्लाह ने दया की कि आप उत्तेजित नहीं हुए तथा पूर्ण धैर्य एवं सहनशीलता का प्रदर्शन किया। मन में अप्रियता का तनिक संवेदन भी उत्पन्न हुआ उसको भी अपना दोष मान गये। अर्थात यह अल्लाह की ओर से परीक्षा थी, इसलिए यह स्वाभाविक संकोच भी नहीं होनी चाहिए थी जिस पर उन्होंने तौबा एवं क्षमा-याचना की।

[1]अपितु एक विशेष उद्देश्य के लिए पैदा किया है तथा वह यह कि मेरे बन्दे मेरी उपासना करें। जो ऐसा करेगा उसे उत्तम प्रतिफल प्रदान करूंगा तथा जो मेरी उपासना तथा आज्ञापालन से मुँह फेरेगा उसके लिये नरक की यातना है।

The Ummah Technology Mission

أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ أَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ﴿٢٨﴾

(२८) क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाये तथा पुण्य के कार्य किये, उनके समान कर देंगे जो (नित्य) धरती पर उपद्रव मचाते रहे, अथवा सदाचारियों को कुर्कमियों जैसा कर देंगे ?

كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ لِيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٢٩﴾

(२९) यह मंगलमय पुस्तक है जिसे हमने आपकी ओर इसलिए अवतरित किया है कि लोग इसकी आयतों पर ध्यान दें तथा विचार करें तथा बुद्धिमान इससे शिक्षा ग्रहण करें।

وَوَهَبْنَا لِدَاوُودَ سُلَيْمَانَ ۚ نِعْمَ الْعَبْدُ ۖ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा हमने दाऊद को सुलैमान (नामक पुत्र) प्रदान किया जो अति उत्तम भक्त था तथा अत्यधिक ध्यान लगाने वाला था।

إِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصَّافِنَاتُ الْجِيَادُ ﴿٣١﴾

(३१) जब उनके सामने संध्या के समय तेज़ चलने वाले विशेष घोड़े प्रस्तुत किये गये।[1]

فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي ۖ حَتَّىٰ تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٢﴾

(३२) तो कहने लगे कि मैंने अपने प्रभु की याद पर इन घोड़ों के प्रेम को प्राथमिकता दी यहाँ तक कि सूर्यास्त हो गया।

رُدُّوهَا عَلَيَّ ۖ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ وَالْأَعْنَاقِ ﴿٣٣﴾

(३३) इन घोड़ों को पुनः मेरे सामने लाओ, फिर पिंडलियों तथा गरदनों पर हाथ फेरने लगे।[2]

---

[1] صافنات यह صافِنٌ अथवा صافِنَةٌ का बहुवचन है अर्थात वह घोड़े जो तीन टाँगों पर खड़े हों। جِيَادٌ - جَوَادٌ का बहुवचन है जो तीव्रगामी घोड़ों को कहते हैं। अर्थात आदरणीय सुलैमान ने जिहाद (धर्मयुद्ध) के लिए जो घोड़े पाले हुए थे वह उत्तम, कुलीन एवं वेगगामी घोड़े सुलैमान के पास निरीक्षण के लिए लाये गये। عَشِيٌّ जोहर अथवा अस्र से दिन के अंत तक के समय को कहते हैं जिसे हम संध्या कहते हैं।

[2] इस अनुवाद के आधार पर أَحْبَبْتُ यह آثرتُ (महत्व देना) के अर्थ में है। عَنْ शब्द على के अर्थ में है, तथा تَوَارَتْ में सर्वनाम सूर्य की ओर फिरता है जो आयत में पहले वर्णित नहीं है किन्तु वाक्य क्रम उसे बता रहा है। इस व्याख्या के अनुसार आगामी आयत में

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा हमने सुलैमान की परीक्षा ली तथा उनके सिंहासन पर एक धड़ डाल दिया, [1] फिर वह ध्यानमग्न हो गये।

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ

(३५) कहा कि हे मेरे प्रभु मुझे क्षमा कर तथा मुझे ऐसा राज्य प्रदान कर जो मेरे

مسحًا بالسُّوق و الأعناق का अनुवाद भी वध करना होगा अर्थात مسحًا بالسَّيف (तलवार मारने) का अर्थ। अभिप्राय यह होगा कि घोड़ों के निरीक्षण (देखने) में अस्र की नमाज़ अथवा विशेष जाप रह गया जो उस समय वह करते थे। इस पर उन्हें घोर दुख हुआ तथा कहने लगे कि मैं घोड़ों के प्यार में इतना बेसुध खो गया कि सूर्यास्त हो गया तथा अल्लाह के स्मरण एवं नमाज़ अथवा जाप से अचेत रहा। अत: क्षतिपूर्ति के लिये उन्होंने सभी घड़े अल्लाह के लिए वध कर दिये। इमाम शौकानी तथा इब्ने कसीर आदि ने इसी भाष्य को प्राथमिकता दिया है। अन्य कुछ व्याख्याकारों ने इसकी दूसरी व्याख्या की है इसके आधार पर عَنْ अर्थ में है لِأَجْلِ के। अथवा لِأَجْلِ ذِكْرِ رَبِّي (अपने पालनहार के स्मरण के कारण) मैं इन घोड़ों से प्रेम करता हूँ अर्थात इनके द्वारा अल्लाह के मार्ग में जिहाद होता है। फिर इन घोड़ों को दौड़ाया यहाँ तक कि जब वे आँखों से ओझल हो गये, उन्हें फिर वापस मँगाया तथा प्यार एवं प्रेम से उनकी पिंड़लियों तथा गरदनों पर हाथ फेरना आरम्भ किया। خَيْرٌ क़ुरआन में माल के अर्थ में प्रयोग हुआ है, यहाँ यह शब्द घोड़ों के लिये आया है। इमाम इब्ने जरीर तबरी ने इस दूसरी व्याख्या को प्राथमिकता दी है तथा यही व्याख्या अनेक कारणों से सही लगती है।

[1]यह परीक्षा क्या थी, कुर्सी पर डाला गया धड़ किस चीज़ का था तथा इसका अभिप्राय क्या है? इसका भी कोई विवरण क़ुरआन व हदीस में नहीं मिलता। हाँ, कुछ भाष्यकारों ने सहीह हदीस से सिद्ध एक कथा से इस को सम्बन्धित किया है, जो यह है कि आदरणीय सुलैमान ने एक बार कहा कि मैं आज रात अपनी सभी पत्नियों से (जिन की संख्या ७० अथवा ९० थी) संभोग करूँगा ताकि उनसे वीर घुड़सवार पैदा हों जो अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध (जिहाद) करें। तथा इस पर إن شاء الله (यदि अल्लाह ने चाहा) नहीं कहा (अर्थात केवल अपनी युक्ति पर पूरा भरोसा कर लिया)। परिणाम यह हुआ कि सिवाय एक के कोई पत्नी गर्भवती नहीं हुई तथा गर्भवती पत्नी ने भी जो बच्चा जना वह भी अपूर्ण अर्थात आधा था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा, यदि सुलैमान إن شاء الله कह लेते तो सब योद्धा पैदा होते (सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया, सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाबुल इस्तिसना)। इन व्याख्याकारों के विचार में शायद إن شاء الله न कहना अथवा केवल अपने उपाय पर निर्भर होना, यही परीक्षा हो जिसमें आदरणीय सुलैमान ग्रस्त हुए तथा कुर्सी पर डाला जाने वाला बच्चा यही अपूर्ण अर्धांग शिशु हो। والله أعلم

The Ummah Technology Mission

إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٥﴾

अतिरिक्त किसी (व्यक्ति) के योग्य न हो,[1] तू बड़ा ही दाता है।

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُخَاءً حَيْثُ أَصَابَ ﴿٣٦﴾

(३६) तो हमने वायु को उनके वश में कर दिया, वह आपके आदेश से जहाँ आप चाहते कोमलता से पहुँचा दिया करती थी।[2]

وَالشَّيَاطِينَ كُلَّ بَنَّاءٍ وَغَوَّاصٍ ﴿٣٧﴾

(३७) तथा (शक्तिशाली) जिन्नात को भी (उनके अधीन कर दिया) तथा प्रत्येक भवन बनाने वाले को एवं डुबकी लगाने वाले को।

وَآخَرِينَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ﴿٣٨﴾

(३८) तथा अन्य (जिन्नात) को भी जो जंजीरों में जकड़े रहते।[3]

هَٰذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٩﴾

(३९) यह है हमारा वरदान अब तू उपकार कर अथवा रोक रख कुछ हिसाब नहीं।[4]

وَإِنَّ لَهُ عِندَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآبٍ ﴿٤٠﴾

(४०) तथा उनके लिए हमारे पास बड़ी निकटता है तथा बहुत अच्छा ठिकाना है।[5]

---

[1]अर्थात घुड़सवारों की सेना पैदा होने की कामना तेरे उपाय एवं चाहत से पूरी नहीं हुई, किन्तु मुझे ऐसा साधिकार राज्य प्रदान कर दे कि वैसा राज्य मेरे सिवाय किसी के पास न हो, तो फिर संतान की आवश्यकता ही नहीं रहेगी यह दुआ भी अल्लाह के धर्म के प्रभुत्व के लिये ही थी।

[2]अर्थात हमने सुलैमान की यह प्रार्थना सुन ली तथा ऐसा राज्य प्रदान किया कि वायु भी उनके अधीन थी। यहाँ वायु को कोमलता (धीमीगति) से चलती बताया, जबकि सूरः अम्बिया आयत संख्या ८१ में उसे तीव्र तथा तेज कहा। इसका अभिप्राय यह है कि वायु की स्वाभाविक गति तीव्र है किन्तु सुलैमान के लिए उसे धीमी कर दिया गया अथवा आवश्यकतानुसार वह कभी तेज होती कभी धीमी जैसे सुलैमान चाहते। (फतहुल क़दीर)

[3]जिन्नों में जो उद्दंड तथा काफ़िर होते उन्हें बेड़ियों में जकड़ दिया जाता ताकि वह अपनी उद्दण्डता तथा कुफ्र के कारण अवज्ञा न कर सकें।

[4]अर्थात तेरी विनयानुसार हम ने तुझे महान राज्य प्रदान कर दिया। अब इन्सानों में से जिसे तू चाहे दे जिसे न चाहे न दे, तुझसे हम हिसाब भी नहीं लेंगे।

[5]अर्थात सांसारिक मान-मर्यादा प्रदान करने के उपरान्त परलोक में भी आदरणीय सुलैमान को विशेष निकटता एवं विशेष स्थान प्राप्त होगा।

The Ummah Technology Mission

وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ۝٤١

(४१) तथा हमारे बन्दे अय्यूब की (भी) चर्चा कर जबकि उसने अपने प्रभु को पुकारा कि मुझे शैतान ने कष्ट एवं दुख पहुँचाया है।[1]

اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ۝٤٢

(४२) अपना पैर मारो, यह स्नान का शीतल एवं पीने का पानी है।[2]

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ۝٤٣

(४३) तथा हमने उसे उसका पूरा परिवार प्रदान किया बल्कि उतना ही और भी उसी के साथ अपनी विशेष कृपा से[3] तथा बुद्धिमानों की शिक्षा के लिए।[4]

---

[1]आदरणीय अय्यूब (अलैहिस्सलाम) का रोग तथा उसमें उनका धैर्य विख्यात है, जिसके अनुसार अल्लाह तआला ने परिवार तथा माल का विनाश किया एवं रोग द्वारा उनकी परीक्षा ली जिसमें वह कई वर्ष ग्रस्त रहे, यहाँ तक कि मात्र एक पत्नी साथ रह गई जो प्रात: एवं संध्या उनकी सेवा भी करती तथा कहीं काम काज करके आवश्यकता भर उनकी जीविका (आहार) का प्रबन्ध भी करती। यहाँ पर अनेक व्याख्याओं का वर्णन मिलता है किन्तु इसमें से कितना कुछ सहीह है तथा कितना नहीं, उसके जानने का कोई विश्वस्त सूत्र नहीं। نُصْب से शारीरिक दुख तथा عذاب से आर्थिक परीक्षा अभिप्राय है। इसको शैतान से सम्बन्धित किया जबकि सब कुछ करने वाला अल्लाह ही है, क्योंकि संभव है कि शैतान के शंसय ही किसी ऐसे कर्म का कारण बने हों, जिस पर यह परीक्षा आई अथवा फिर आदर स्वरूप भलाई को अल्लाह की ओर तथा बुराई को शैतान से सम्बन्धित किया जाता है।

[2]अल्लाह तआला ने अय्यूब की प्रार्थना स्वीकार की तथा उनसे कहा कि भूमि पर पाँव मारो, जिससे एक जलस्रोत प्रवाहित हो गया। इसका जल पीने से आन्तिक रोग तथा स्नान करने से वाह्य रोग दूर हो गये। कुछ कहते हैं कि दो जल स्रोत थे, एक से स्नान किया तथा दूसरे से जल पिया। किन्तु क़ुरआन के शब्द से प्रथम कथन का समर्थन होता है, अर्थात एक ही जलस्रोत था।

[3]कुछ कहते हैं कि पहला परिवार जो परीक्षा के स्वरूप नष्ट कर दिया गया था, उसे ज़िन्दा कर दिया गया और उसके समतुल्य एवं अधिक परिवार प्रदान कर दिया गया। लेकिन ये बात किसी मुसतनद ज़रिये (प्रमाणिक सूत्रों) से साबित नहीं है। ज्यादा सहीह बात यही मालूम होती है कि अल्लाह महान ने पहले से अधिक सम्पति एव सन्तान से उन्हें पुरस्कृत किया जो पहले से दोगुना था।

[4]अर्थात हमने अय्यूब को यह सब कुछ फिर से दिया तो अपनी विशेष दया का प्रदर्शन करने के सिवाय इसका दूसरा उद्देश्य यह था कि बुद्धिमान लोग इससे शिक्षा लें तथा वे

The Ummah Technology Mission

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۴۴﴾

(४४) तथा अपने हाथ में तीलियों की एक झाड़ लेकर मार दे तथा सौगन्ध भंग न कर,[1] सत्य तो यह है कि हमने उसे अत्यन्त धैर्यवान भक्त पाया, वह अत्यन्त सदाचारी भक्त था, तथा बड़ा ही ध्यान करने वाला।

وَاذْكُرْ عِبٰدَنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِى الْاَيْدِىْ وَالْاَبْصَارِ ﴿۴۵﴾

(४५) तथा हमारे भक्तों इब्राहीम, इसहाक़ एवं याक़ूब का भी (लोगों से) वर्णन करो जो हाथों एवं आँखों वाले थे।[2]

اِنَّاۤ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ﴿۴۶﴾

(४६) हमने उन्हें एक विशेष बात अर्थात आख़िरत की याद के साथ विशेषरूप से सम्बन्धित कर दिया था।[3]

भी परीक्षा एवं दुखों में इसी प्रकार धैर्य धारण करें, जिस प्रकार अय्यूब (अलैहिस्सलाम) ने किया।

[1]रोग के दिनों में सेविका पत्नी से किसी बात पर खिन्न होकर आदरणीय अय्यूब ने उसे सौ कोड़े मारने की क़सम खाली थी। स्वस्थ होने के बाद अल्लाह तआला (परमेश्वर) ने कहा कि सौ तिंकों के झाड़ू से एक बार उसे मार दे, तेरी कसम पूरी हो जायेगी। इस विषय में धर्मज्ञानियों का मतभेद है कि यह सुविधा मात्र अय्यूब के लिये विशेष है अथवा कोई अन्य व्यक्ति भी इसी प्रकार सौ कोड़ों की जगह सौ तिन्कों की झाड़ू मारकर कसम भंग करने से बच सकता है ? कुछ प्रथम मत को मानते हैं तथा कुछ कहते हैं कि यदि कड़ी मार मारने की प्रतिज्ञा न की हो तो इस प्रकार किया जा सकता है (फ़तहुल क़दीर)। एक हदीस से ज्ञात होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी एक लाचार निर्बल व्याभिचारी को सौ कोड़ों की जगह सौ तिनकों की झाड़ू मारकर दण्ड दिया। (मुसनद अहमद ५\२२२, इब्ने माजा, बाबुल कबीर वल मरीज़ यजिबु अलैहिल हद्द, इसे अलबानी ने सहीह कहा) जिससे विशेष अवस्था में इसका औचित्य सिद्ध होता है।

[2]अर्थात अल्लाह की वंदना एवम् धर्म के समर्थन में बड़े बलवान एवं धर्म तथा ज्ञान बोध में प्रमुख थे। कुछ लोग कहते हैं कि यह اَيْدِى ، نِعَمٌ के अर्थ में है, अर्थात यह वह लोग जिन पर अल्लाह का विशेष अनुग्रह तथा उपकार हुआ अथवा यह लोगों पर उपकार करने वाले थे।

[3]अर्थात हमने उनको आख़िरत की याद के लिये चुन लिया था, अर्थात आख़िरत हर समय उनके ध्यान में रहती थी जो अल्लाह की एक विशाल कृपा तथा संयम एवं सदाचार का आधार है।

The Ummah Technology Mission

وَإِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْأَخْيَارِ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा यह सभी हमारे निकट चुने हुए एवं सर्वोत्तम लोगों में थे।

وَاذْكُرْ إِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ۖ وَكُلٌّ مِّنَ الْأَخْيَارِ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा इस्माईल, यसअ एवं ज़ुलकिफ़्ल का भी वर्णन कीजिए, यह सब श्रेष्ठतम लोग थे।[1]

هَٰذَا ذِكْرٌ ۚ وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَآبٍ ﴿٤٩﴾

(४९) यह शिक्षा है, तथा विश्वास करो कि सदाचारियों के लिए सर्वोत्तम स्थान है।

جَنَّاتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْأَبْوَابُ ﴿٥٠﴾

(५०) अर्थात स्थाई स्वर्ग जिनके द्वार उनके लिए खुले हुए हैं।

مُتَّكِئِينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ﴿٥١﴾

(५१) जिनमें (चैन से) तकिया लगाये बैठे हुए नाना प्रकार के मेवे (फल) तथा विभिन्न प्रकार के पेय पदार्थों की माँग कर रहे हैं।

وَعِندَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ أَتْرَابٌ ﴿٥٢﴾

(५२) तथा उनके पास नीची निगाहों वाली समान आयु वाली हूरें होंगी।[2]

هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٣﴾

(५३) यह है जिसका वचन तुमसे हिसाब के दिन के लिए किया जाता था।

إِنَّ هَٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِن نَّفَادٍ ﴿٥٤﴾

(५४) निश्चय ही यह जीविकायें हमारा (विशेष) उपहार हैं जिनका कभी अन्त ही नहीं।[3]

---

[1]यसअ आदरणीय इलियास के जानशीन (उत्तराधिकारी) थे। ال व्यक्तिवाचक है तथा यह अजमी नाम है अरबी नहीं हैं। जुलकिफ़्ल के लिए सूर: अम्बिया आयत नम्बर ८५ का भाष्य देखिये। أخيار यह خَيِّرٌ خَيِّرٌ का बहुवचन है जैसे مَيِّتٌ का बहुवचन أموات है।

[2]अर्थात जिनकी निगाहें अपने पति से आगे नहीं जायेंगी। أتراب यह تِرْب का बहुवचन है। समायु अथवा निरन्तर शोभा एवं सौन्दर्य से सुशोभित (फ़तहुल क़दीर)।

[3] رزق (जीविका) का अर्थ वरदान है, तथा هذا (यह) से प्रत्येक प्रकार की उपरोक्त अनुकम्पायें तथा वह मान-सम्मान अभिप्राय है जिनके स्वर्गवासी आन्नदित होंगे। نفاذ का अर्थ अन्त तथा अवरोध है। यह अनुकम्पायें भी अनन्त तथा आदर सम्मान भी स्थाई।

The Ummah Technology Mission

هٰذَا ۙ وَاِنَّ لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ﴿٥٥﴾

(५५) यह तो हुआ बदला, [1] (याद रखो कि) उद्दण्डों के लिए अत्यन्त बुरा स्थान है।[2]

جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٥٦﴾

(५६) नरक है जिसमें वे जायेंगे, (आह !) कैसा बुरा बिस्तर है।

هٰذَا ۙ فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ ﴿٥٧﴾

(५७) यह है, तो उसे चखें, गर्म पानी तथा पीप।[3]

وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖۤ اَزْوَاجٌ ﴿٥٨﴾

(५८) तथा कुछ अन्य प्रकार की विभिन्न यातनायें।[4]

هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ

(५९) यह एक समुदाय है जो तुम्हारे संग (अग्नि में) जाने वाला है,[5] उनके लिए कोई

---

[1] هـذا (यह) लुप्त विषय का विधेय है, अर्थात الأمر هذا अथवा هذا का विधेय लुप्त है, अर्थात هـذا كما ذُكِر अर्थात उपरोक्त सत्कारियों का मामला हुआ। इसके पश्चात दुराचारियों के दुष्परिणाम की चर्चा की जा रही है।

[2] طَاغِين जिन्होंने अल्लाह के आदेशों की अवहेलना की तथा रसूलों को झुठलाया। يَصْلَون का अर्थ है يَدْخُلون अर्थात प्रवेश करेंगे।

[3] هذا حميمٌ و غَسّاقٌ यह هذا (यह) विधेय है, अर्थात هذا حميمٌ و غَسّاقَ فَلْيذوقوه यह है गर्म पानी तथा पीव तो इसे चखो। حميمٌ गर्म, खौलता हुआ जल। जो उनकी आँतों को काट डालेगा। غَسّاقٌ नरकवासियों की खालों से जो पीव तथा घृणित खून निकलेगा, अथवा अति शीतल जल जिसका पीना अत्यन्त कठिन होगा।

[4] شكلِه उस जैसे, أزواجٌ भिन्न प्रकार के अर्थात حميم و غساق के सदृश और भी बहुत प्रकार की यातनायें होंगी।

[5] नरक के द्वारों पर खड़े फ़रिश्ते कुफ़्र के प्रमुखों एवं कुमार्ग के प्रधानों से कहेंगे जब अनुयायी प्रकार के लोग नरक में जायेंगे, अथवा कुफ़्र एवं पथभ्रष्टता के प्रमुख परस्पर यह बात अनुयायियों की ओर संकेत करके कहेंगे।

The Ummah Technology Mission

لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ۖ إِنَّهُمْ صَالُو النَّارِ ﴿٥٩﴾

स्वागत नहीं।[1] यही तो नरक में जाने वाले हैं।[2]

قَالُوا بَلْ أَنتُمْ ۖ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ۖ أَنتُمْ قَدَّمْتُمُوهُ لَنَا ۖ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٦٠﴾

(६०) (वे) कहेंगे कि बल्कि तुम ही हो जिनके लिए कोई स्वागत नहीं, तुम ही ने तो इसे पूर्व ही से हमारे समक्ष ला रखा था,[3] तो रहने का बड़ा बुरा स्थान है।

قَالُوا رَبَّنَا مَن قَدَّمَ لَنَا هَٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ﴿٦١﴾

(६१) (वे) कहेंगे कि हे हमारे प्रभु जिसने उसे (कुफ़्र की रीति) हमारे लिए सर्वप्रथम निकाली हो।[4] उसके पक्ष में नरक का दोगुना दण्ड कर दे।[5]

وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَىٰ رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُم مِّنَ الْأَشْرَارِ ﴿٦٢﴾

(६२) तथा (नरकवासी) कहेंगे कि क्या बात है कि वह लोग हमें दिखाई नहीं देते, जिनकी गणना हम बुरे लोगों में करते थे।[6]

---

[1]यह अगुवा नरक में जाने वाले काफ़िरों के लिए फ़रिश्तों के उत्तर में परस्पर कहेंगे। رَحْبٌ का अर्थ विस्तार एवं फैलाव के हैं। مَرْحَبًا यह स्वागत का शब्द है जो आगन्तुक के लिए अभिनन्दन के समय कहे जाते हैं। لَا مَرْحَبًا इसके विपरीत है।

[2]यह उनका स्वागत न करने का कारण है। अर्थात उनके तथा हमारे बीच अन्तर का कोई कारण नहीं है। यह भी हमारी तरह नरक में प्रवेश कर रहे हैं, तथा जिस प्रकार हम दण्ड के पात्र बने हैं यह भी नरक की यातना के अधिकारी हुए हैं।

[3]अर्थात तुम ही कुफ़्र एवं पथभ्रष्टता का मार्ग हमारे आगे सुशोभित करके प्रस्तुत करते थे, यूँ तुम ही तो नरक की यातना के अनुगामी हो यह अनुगामी अपने प्रमुखों को कहेंगे।

[4]अर्थात जिन्होंने हमें कुफ़्र का आमंत्रण दिया तथा उसे सत्य एवं सही बताया अथवा जिन्होंने हमें कुफ़्र की ओर बुलाकर यह दण्ड हमारे लिए आगे भेजा।

[5]यह वही बात है जिसे अन्य कई स्थानों पर वर्णन किया गया है, जैसे सूरः अल-आराफ़-३८, अल-अहज़ाब-६८ में।

[6] أَشْرَار (दुष्टों) से अभिप्राय दरिद्र मुसलमान हैं, जैसे अम्मार, खब्बाब, सुहैब, बिलाल, सलमान (رضي الله عنهم) इत्यादि। उन्हें मक्का के प्रमुख दुष्टता से 'बुरे लोग' कहते थे।

The Ummah Technology Mission

اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ﴿٦٣﴾

(६३) क्या हमने ही उनका उपहास बना रखा था[1] अथवा हमारी आँखे उनसे बहक गई हैं।[2]

اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾

(६४) विश्वास करो कि नरकवासियों का यह झगड़ा अवश्य ही होगा।[3]

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾

(६५) कह दीजिए कि मैं तो केवल सावधान कर देने वाला हूँ[4] तथा सिवाय एक अल्लाह प्रभावशाली के अन्य कोई इबादत (उपासना) के योग्य नहीं।

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾

(६६) जो प्रभु है आकाशों का तथा धरती का तथा जो कुछ उनके मध्य है, वह प्रभुत्वशाली (महान) एवं बड़ा क्षमा करने वाला है।

قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ ﴿٦٧﴾

(६७) (आप) कह दीजिए कि यह बहुत बड़ी सूचना है।[5]

اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ﴿٦٨﴾

(६८) जिससे तुम मुँह फेर रहे हो।

अब भी दुराचारी सत्यवादियों एवं सदाचारियों को कट्टरपंथी, आतंकवादी एवं उग्रवादी जैसे उप नाम देते हैं।

[1]अर्थात जगत में जहाँ हम त्रुटि पर थे।

[2]अथवा वे भी हमारे साथ यहीं कहीं हैं, हमारी आँखें उन्हें देख नहीं पा रही हैं ?

[3]अर्थात आपस में इनकी तकरार और एक-दूसरे की कटु आलोचना करना एक ऐसा सत्य है जिसमें विवाद नहीं होगा।

[4]अर्थात तुम जो अनुमान करते हो वह मैं नहीं हूँ अपितु तुम्हें अल्लाह की यातना तथा प्रकोप से सावधान करने वाला हूँ।

[5]अर्थात मैं तुम्हें परलोक की जिस यातना से सावधान कर रहा हूँ तथा तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत दे रहा हूँ यह बड़ी सूचना है। इससे विमुखता तथा निश्चिन्तता न करो अपितु इस पर ध्यान देने तथा गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है।

The Ummah Technology Mission

مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿٦٩﴾

(६९) मुझे उन उच्च पद वाले फ़रिश्तों (की वार्तालाप) का तनिक भी ज्ञान ही नहीं जबकि वे वाद-विवाद कर रहे थे।[1]

إِن يُوحَىٰ إِلَيَّ إِلَّا أَنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٧٠﴾

(७०) मेरी ओर मात्र यही प्रकाशना की जाती है कि मैं तो स्पष्टरूप से सावधान कर देने वाला हूँ।[2]

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن طِينٍ ﴿٧١﴾

(७१) जबकि आपके प्रभु ने फ़रिश्तों से कहा[3] कि मैं मिट्टी से मनुष्य को बनाने वाला हूँ।[4]

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي

(७२) तो जब मैं उसे ठीक-ठाक कर लूँ[5] तथा उसमें अपनी आत्मा फूँक दूँ[6] तो तुम

---

[1] مَلَأ اعْلَى से अभिप्राय फ़रिश्ते हैं, अर्थात वे किस बात पर वाद-विवाद कर रहे हैं मैं नहीं जानता ? संभव है इस वाद-विवाद से अभिप्राय वह वार्तालाप है जो आदम की सृजना के समय हुई जैसा कि आगे इसकी चर्चा आ रही है।

[2]अर्थात मेरा दायित्व यही है कि मैं वह अनिवार्य एवं उचित कर्म तुम्हें बता दूँ जिनके अपनाने से तुम अल्लाह के प्रकोप से बच जाओगे, तथा उन अवैध एवं पाप के कर्मों का स्पष्टीकरण कर दूँ जिनसे बचकर तुम अल्लाह की प्रसन्नता के अन्यथा उसके क्रोध एवं प्रकोप के पात्र बनोगे। यही वह चेतावनी है जिसकी प्रकाशना (वह्यी) मेरी ओर की जाती है।

[3]यह कथा इससे पूर्व *सूरः बक़रः*, *सूरः आराफ़*, *सूरः हिज्र*, *सूरः बनी इस्राईल* तथा *सूरः कहफ़* में वर्णित हो चुकी है। अब यहाँ भी संक्षेप में वर्णन किया जा रहा है।

[4]अर्थात एक शरीर मानव जाति से बनाने जा रहा हूँ। मनुष्य को بَشَر (बशर) उसके धरती से संलग्न होने के कारण कहा। अर्थात धरती ही से उस सबका संबन्ध है तथा वह सब कुछ इसी धरती पर करता है, अथवा इस कारण कि उसकी त्वचा स्पष्ट है अर्थात उसका शरीर अथवा मुख स्पष्ट है।

[5]अर्थात उसे मानवीय रूप में ढाल लूँ तथा उसके सभी अंग सही एवं बराबर कर लूँ।

[6]अर्थात वह आत्मा जिसका मैं स्वामी हूँ, मेरे सिवाय इसका कोई अधिकार नहीं रखता तथा जिसके फूँकते ही यह माटी का पुतला जीवन गति एवं शक्ति से युक्त हो जायेगा

The Ummah Technology Mission

فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٧٣﴾

सब उसके समक्ष सजदे में गिर जाना।[1]

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٧٣﴾

(७३) तो सभी फ़रिश्तों ने सजदा किया।[2]

اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾

(७४) परन्तु इब्लीस ने (नहीं किया,) उसने अहंकार किया[3] तथा वह था काफ़िरों में से।[4]

قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ؕ اَسْتَكْبَرْتَ

(७५) (अल्लाह तआला ने) कहा कि हे इब्लीस तुझे उसको सजदा करने से किस वस्तु ने रोका जिसे मैंने अपने हाथों से

मानव जाति की श्रेष्ठता एवं प्रतिष्ठा के लिए यही बहुत है कि उसमें वह आत्मा फूंकी गई है जिसे अल्लाह ने अपनी आत्मा कहा है।

[1]यह सजदा (नत्मस्तक होना) धन्यवाद अथवा सम्मान का सजदा है उपासना का सजदा नहीं। यह सम्मान का सजदा पहले उचित था। इसीलिए अल्लाह ने आदम के लिए फ़रिश्तों को इसका आदेश किया। अब इस्लाम में सम्मान का सजदा भी किसी के लिए उचित नहीं। हदीस में आता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, यदि यह वैध होता तो मैं पत्नी को आदेश देता कि अपने पति को सजदा करे। (मिश्कात, किताबुन्निकाह, बाबु इशतिन्निसाए ससंदर्भ तिर्मिज़ी, अलबानी ने कहा कि अपने साक्षियों के कारण यह हदीस सही है)।

[2]यह मनुष्य की दूसरी प्रतिष्ठा है कि उसे फ़रिश्तों से सजदा कराया, अर्थात फ़रिश्तों जैसी पवित्र सृष्टि ने उसे सम्मान स्वरूप सजदा किया। كُلُّهم से विदित होता है कि एक भी फ़रिश्ता सजदा करने में पीछे नहीं रहा। उसके बाद أجمعون कहकर यह स्पष्ट कर दिया कि सजदा भी सबने एक ही साथ किया, विभिन्न समय में नहीं। कुछ कहते हैं कि यह बल पर बल सामान्यता में अतिश्योक्ति के लिए है।

[3]यदि इबलीस को फ़रिश्तों के गुणों से युक्त माना जाये तो यह अनिबंध निरन्तर होगा, अर्थात इबलीस सजदा के इस आदेश में सम्मिलित होगा, अन्य स्थिति में यह अनिबंध विच्छेद के लिए होगा अर्थात वह इस आदेश में सम्मिलित नहीं था। किन्तु आकाश पर रहने के कारण उसे भी आदेश दिया गया परन्तु उसने घमंड के कारण नकार दिया।

[4] كَانَ अर्थ में है صَارَ के, अर्थात अल्लाह के आदेश के विरोध तथा उसकी आज्ञापालन से अहंकार करने के कारण वह काफ़िर हो गया अथवा अल्लाह के ज्ञान में वह काफ़िर था।

The Ummah Technology Mission

أَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِينَ ﴿٧٥﴾

बनाया ।[1] क्या तू कुछ अहंकार में आ गया है अथवा तू उच्च पद वालों में से है ?

قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۖ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ ﴿٧٦﴾

(७६) (उसने) उत्तर दिया कि मैं इससे श्रेष्ठ हूँ, तूने मुझे अग्नि से बनाया तथा इसे मिट्टी से बनाया है ।[2]

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٧٧﴾

(७७) कहा कि तू यहाँ से निकल जा, तू तिरस्कृत हुआ ।

وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ﴿٧٨﴾

(७८) तथा तुझ पर क़ियामत के दिन तक मेरा धिक्कार एवं तिरस्कार है ।

قَالَ رَبِّ فَأَنظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٧٩﴾

(७९) कहने लगा कि हे मेरे प्रभु ! मुझे लोगों के उठ खड़े होने के दिन तक अवसर प्रदान कर ।

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿٨٠﴾

(८०) (अल्लाह तआला ने) कहा कि तू अवसर प्राप्त करने वालों में से है ।

إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٨١﴾

(८१) निर्धारित समय के दिन तक ।

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٨٢﴾

(८२) कहने लगा, फिर तो तेरी महिमा की सौगन्ध ! मैं इन सबको अवश्य भटकाऊँगा ।

---

[1]यह भी इंसान की प्रतिष्ठा तथा बड़ाई को व्यक्त करने ही के लिए फ़रमाया अन्यथा प्रत्येक वस्तु का विधाता अल्लाह ही है ।

[2]अर्थात शैतान ने अपने भ्रम में यह समझा कि आग का तत्व मिट्टी के तत्व से उत्तम है । हालांकि यह सभी तत्व समजातिय अथवा समीपवर्ती हैं, इनमें से किसी को दूसरे पर प्रधानता किसी अस्थायी (वाह्य कारण) से ही प्राप्त होता है तथा यह कारण आग के सापेक्ष मिट्टी के भाग में आया है, कि अल्लाह ने उसी से आदम को अपने हाथों से बनाया, फिर उसमें अपनी आत्मा फूंकी, इस कारण मिट्टी ही को आग की अपेक्षा प्रतिष्ठा एवं प्रधानता प्राप्त है । इसके सिवाय आग का काम जलाकर राख बना देना है जबकि मिट्टी उसके विपरीत अनेक प्रकार की उपज का उदगम है ।

The Ummah Technology Mission

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ﴿٨٣﴾

(८३) सिवाय तेरे उन भक्तों के जो चुने हुए [एवं प्रिय (शुद्ध)] हों।

قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ أَقُولُ ﴿٨٤﴾

(८४) कहा कि सत्य तो यह है, तथा मैं सत्य ही कहा करता हूँ।

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٨٥﴾

(८५) कि तुझसे तथा तेरे सभी अनुगामियों से मैं (भी) नरक को भर दूँगा।

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ﴿٨٦﴾

(८६) कह दीजिए कि मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता [1] तथा न मैं बनावट करने वालों में से हूँ।[2]

---

[1]अर्थात इस आमंत्रण तथा उपदेश से मेरा उद्देश्य मात्र अल्लाह की आज्ञा का पालन है, दुनिया कमाना नहीं।

[2]अर्थात अपनी ओर से गढ़कर अल्लाह से ऐसी बात संबन्धित कर दूँ जो उसने न कही हो अथवा मैं तुम्हें ऐसी बात का आमन्त्रण दूँ जिसका आदेश अल्लाह ने मुझे न दिया हो, अपितु कुछ कम-अधिक किये बिना मैं अल्लाह का आदेश तुम तक पहुँचा रहा हूँ। नबी के सहचर अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद कहते थे कि जिसको किसी बात का ज्ञान न हो, उसके विषय में कह देना चाहिए कि الله أعلم। यह कहना भी ज्ञान ही है, इसलिए कि अल्लाह ने अपने पैग़म्बर से कहा, कह दीजिए وما أنا من المتكلفين (इब्ने कसीर)। इसके सिवाय इससे साधारण जीवन व्यवहार में भी आडंबर तथा दिखावे से बचने का आदेश विदित होता है। जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया نهينا عن التكلف (सहीह बुख़ारी नम्बर ७२९३) "हमें आडंबर से रोक दिया गया है।" आदरणीय सलमान कहते हैं نهانا رسول الله صلى الله عليه وسلم أن نتكلف للضيف (सहीहुल जामेईस्सग़ीर लिल अलबानी ९८७१) "हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अतिथि के लिए आडंबर करने से रोक दिया।" इसी से विदित हुआ कि वस्त्र, आहार, आवास तथा अन्य विषयों में बनावट जो वर्तमान युग में जीवन स्तर ऊँचा करने के नाम पर धनवानों का आचरण तथा ढंग बन चुका है, इस्लामी शिक्षाओं के प्रतिकूल है। इस्लाम में सादगी तथा साधारणता अपनाने की शिक्षा का प्रोत्साहन है।

The Ummah Technology Mission

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَٰلَمِينَ ﴿٨٧﴾

(८७) यह तो सभी जगतवालों के लिए सर्वथा शिक्षाप्रद एवं सदुपदेश है।[1]

وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُۥ بَعْدَ حِينٍ ﴿٨٨﴾

(८८) वस्तुत: तुम इसकी वास्तविकता को कुछ ही समय के पश्चात (सही ढंग से) जान लोगे।[2]

سُورَةُ الزُّمَرِ

सूरतुज़्ज़ुमर-३९

सूर: ज़ुमर* मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें पचहत्तर आयतें एवं आठ रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह तआला के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है।

تَنزِيلُ الْكِتَٰبِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١﴾

(१) इस किताब का अवतरित करना अल्लाह (तआला) प्रभावशाली एवं हिक्मत वाले की ओर से है।

إِنَّآ أَنزَلْنَآ إِلَيْكَ الْكِتَٰبَ بِالْحَقِّ

(२) नि:सन्देह हमने इस किताब को सत्य के साथ आपकी ओर अवतरित किया है[3] तो

---

[1]अर्थात यह कुरआन अथवा प्रकाशना (वह्यी) अथवा वह आमंत्रण जो मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ, सर्वजगत के इंसानों तथा जिन्नों के लिए सदुपदेश है, प्रतिबंध यह है कि कोई इससे शिक्षा ग्रहण करने का प्रयत्न करे।

[2]अर्थात क़ुरआन ने जिन चीज़ों को वर्णन किया है, जो वादे तथा चेतावनी दिया है, उनका यथार्थ तथा सत्यता शीघ्र ही तुम्हारे आगे आ जायेगा। जैसाकि इसकी सत्यता बद्र के दिन सामने आयी, मक्का विजय के दिन आयी अथवा फिर मौत के समय तो सभी के आगे स्पष्ट जाती है।

*__व्याख्या सूर: अज़्ज़ुमर :__ हदीस में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर रात *सूर: बनी इस्राईल* तथा *सूर: ज़ुमर* का पाठ करते थे (सहीह तिर्मिज़ी में इसको अलबानी ने सहीह कहा है)।

[3]अर्थात इसमें तौहीद (अद्वैत) एवं रिसालत (दूतत्व), मआद (पुर्नजीवन) तथा आदेशों एवं अनिवार्य कर्तव्यों को जो साबित किया गया है, वह सब सत्य है तथा इन्हीं के मानने तथा पालन करने में मानव की मुक्ति है।

The Ummah Technology Mission

فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ۝

आप केवल अल्लाह ही की इबादत करें उसी के लिए धर्म को शुद्ध करते हुए।[1]

اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ؕ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَاۤ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ

(३) सावधान ! अल्लाह (तआला) ही के लिए विशुद्ध इबादत करना है,[2] तथा जिन लोगों ने उसके सिवाय संरक्षक बना रखें हैं (तथा कहते हैं) कि हम इनकी इबादत केवल इसलिए करते हैं कि यह (महात्मा) अल्लाह के समीप हमको पहुँचा दें,[3] ये लोग जिस

---

[1]दीन دين का अर्थ यहाँ इबादत (आराधना) तथा आज्ञापालन है तथा إخلاص का अभिप्राय मात्र अल्लाह की प्रसन्नता के लिए पुण्य का कर्म करना है। आयत नीयत (संकल्प) की अनिवार्यता तथा उसकी शुद्धता के लिए प्रमाण है। हदीस में भी संकल्प की विशुद्धता का महत्व यह कह कर स्पष्ट किया गया है कि «إِنَّمَا الأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ» "कर्मों की निर्भरता ईरादों पर है" अर्थात जो अच्छा कर्म अल्लाह की प्रसन्नता के लिये किया जाये। (प्रतिबंध यह है कि वह सुन्नत के अनुकूल हो) वह स्वीकार्य होगा तथा जिस कर्म में किसी अन्य भावना की मिलावट होगी वह अस्वीकार्य होगा।

[2]यह उसी इबादत की शुद्धता पर बल दिया गया है जिसका आदेश इसके पूर्व की आयत में है कि इबादत तथा अनुपालन एक मात्र अल्लाह ही का अधिकार है, न उसकी उपासना में किसी को साझी बनाना वैध (जायेज़) है, न अनुपालन ही का उसके सिवा कोई अधिकारी है। हाँ, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुपालन को स्वयं अल्लाह ही ने अपना अनुपालन कहा है, अतः रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आज्ञापालन अल्लाह ही का आज्ञापालन है किसी अन्य का नहीं। फिर भी इबादत में यह बात भी नहीं। अतः इबादत अल्लाह के सिवाय किसी बड़े से बड़े रसूल की भी वैध नहीं तो कहाँ साधारण व्यक्तियों की, जिनको लोगों ने मनमानी अल्लाह के अधिकारों का मालिक बना रखा है। ﴿مَّآ أَنزَلَ ٱللَّهُ بِهَا مِن سُلْطَٰنٍ﴾ "अल्लाह की ओर से इस पर कोई तर्क नहीं।"

[3]इससे स्पष्ट है कि मक्के के मूर्तिपूजक अल्लाह ही को विधाता, जीविका प्रदान करने वाला तथा विश्व का संचालक मानते थे, फिर दूसरों की इबादत क्यों करते थे ? इसका उत्तर वह यह देते थे जो क़ुरआन ने यहाँ नक़ल (उद्धृत) किया है कि संभवतः उनके द्वारा हमें अल्लाह का सामीप्य प्राप्त हो जाये अथवा अल्लाह के निकट हमारी अभिस्तावना कर दें, जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

The Ummah Technology Mission

مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ۝

विषय में मतभेद कर रहे हैं उसका (न्यायपूर्ण) निर्णय अल्लाह (तआला) स्वयं कर देगा।[1] झूठे तथा कृतघ्न (लोगों) को अल्लाह (तआला) मार्ग नहीं दिखाता।[2]

لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝

(४) यदि अल्लाह (तआला) का विचार सन्तान ही का होता तो अपनी सृष्टि में से जिसे चाहता चुन लेता (परन्तु) वह तो पवित्र है[3] वह वही अल्लाह है एक तथा सर्व-शक्तिमान।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ

(५) अत्यन्त उत्तम रूप से उसने आकाशों एवं धरती को बनाया, वह रात को दिन पर तथा दिन को रात पर लपेट देता है।[4] तथा

﴿ هَٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِندَ اللَّهِ ﴾

"अर्थात ये अल्लाह के निकट हमारे अभिस्तावक हैं।" (यूनुस-१८)

[1]क्योंकि दुनिया में कोई यह मानने को तैयार नहीं कि वह शिर्क कर रहा है अथवा वह सत्य पर नहीं है। क़ियामत (प्रलय) के दिन अल्लाह ही निर्णय करेगा तथा उसके अनुसार प्रतिकार अथवा दण्ड देगा।

[2]यह झूठ ही है कि इन मिथ्या पूज्यों के द्वारा इनकी पहुँच अल्लाह तक हो जायेगी अथवा यह उनकी सिफ़ारिश करेंगे। तथा अल्लाह को छोड़कर विवश लोगों को पूज्य समझना भी बहुत बड़ी कृतघ्नता है, ऐसे झूठों तथा कृतघ्नों को मार्ग दर्शन कैसे प्राप्त हो सकता है।

[3]फिर उसकी संतान लड़कियाँ ही क्यों होतीं जैसे कि मूर्तिपूजकों की आस्था थी ? अपितु वह अपनी सृष्टि में से जिसको चाहता वह उसकी संतान होती न कि वह जिनका यह विश्वास कराते हैं, किन्तु वह तो इस दोष से ही पवित्र है। (इब्ने कसीर)

[4] تَكْوِير (तकवीर) का अर्थ है, एक चीज़ को दूसरी चीज़ पर लपेटना, रात को दिन पर लपेटने का अर्थ है, रात का दिन को ढाँपना, यहाँ तक की उसका प्रकाश समाप्त हो जाये तथा दिन को रात पर लपेटने का अभिप्राय दिन का रात को ढाँपना है, यहाँ तक कि

The Ummah Technology Mission

النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ أَلَا هُوَ الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۝٥

उसने सूर्य तथा चन्द्रमा को कार्य पर लगा रखा है। प्रत्येक एक निर्धारित अवधि तक चल रहा है, विश्वास करो कि वही शक्तिशाली एवं पापों का क्षमा करने वाला है।

خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَأَنزَلَ لَكُم مِّنَ الْأَنْعَامِ ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ ۚ يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ خَلْقًا مِّن بَعْدِ خَلْقٍ فِي ظُلُمَاتٍ ثَلَاثٍ ۚ

(६) उसने तुम सबको एक ही प्राण से पैदा किया,[1] फिर उसी से उसका जोड़ा पैदा किया[2] तथा तुम्हारे लिए पशुओं में से आठ जोड़े (नर-मादा) उतारे।[3] वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भों में एक रूप के पश्चात दूसरे रूप में बनाता है।[4] तीन-तीन अंधेरों में,[5] यही

उसका अंधकार समाप्त हो जाये। यह वही अभिप्राय है जो يُغْشِي الَّيلَ النهار (*अल-आराफ़-५४*) का है।

[1]अर्थात आदरणीय आदम से जिनको अल्लाह ने अपने हाथ से बनाया था तथा अपनी ओर से उसमें आत्मा फूँकी थी।

[2]अर्थात आदरणीया हव्वा को आदम की बाईं पसली से पैदा किया। यह भी उसका पूर्ण सामर्थ्य है क्योंकि हव्वा के सिवा किसी नारी की पैदाइश किसी मानव की पसली से नहीं हुई। इस प्रकार यह पैदाईश स्वाभाविक रीति के विपरीत तथा अल्लाह के सामर्थ्य के लक्षणों में से है।

[3]यह वही चार प्रकार के पशुओं का वर्णन है, भेड़, बक़री, ऊँट, गाय जो नर-मादा मिलकर आठ हो जाते हैं, जिनकी चर्चा सूर: अनआम आयत १४३ व १४४ में गुज़र चुकी है। أنـــزل यह خَلَقَ के अर्थ में है। अथवा एक वर्णन के अनुसार अल्लान ने इन्हें सर्वप्रथम स्वर्ग में पैदा किया फिर उन्हें उतारा। अत: यह إنزال वास्तविक होगा। अथवा أنزلَ (उतारा) इसलिए कहा गया कि यह पशु चारे के बिना नहीं रह सकते तथा चारे की उपज के लिये पानी अनिवार्य है जो कि आकाश से वर्षा द्वारा उतरता है।

[4]अर्थात माता के गर्भाशय में विभिन्न रूपों से गुज़रता है। पहले वीर्य, फिर जमा रक्त, फिर माँस का टुकड़ा, फिर हड्डियों का ढाँचा, जिसके ऊपर माँस का वस्त्र इन सभी रूपों से गुज़रने के पश्चात पूर्ण मानव तैयार होता है।

[5]एक माँ के पेट का अँधेरा, दूसरे गर्भाशय का अंधेरा तथा तीसरा उस झिल्ली अथवा पर्दे का अँधेरा जिसमें बच्चा लिपटा हुआ होता है।

The Ummah Technology Mission

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝٦

अल्लाह (तआला) तुम्हारा प्रभु है, उसी के लिए राज्य है, उसके सिवाय कोई उपास्य नहीं, फिर तुम कहाँ भटक रहे हो ?[1]

اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۫ وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٧

(७) यदि तुम कृतघ्नता व्यक्त करो तो (याद रखो कि) अल्लाह (तआला) तुम (सबसे) निस्पृह है।[2] तथा वह अपने बन्दों की कृतघ्नता से प्रसन्न नहीं तथा यदि तुम कृतज्ञता व्यक्त करो तो वह उसे तुम्हारे लिए पसन्द करेगा[3] और कोई किसी का बोझ नहीं उठाता, फिर तुम सबका लौटना तुम्हारे प्रभु ही की ओर है। तुम्हें वह बतला देगा जो तुम करते थे, निश्चय वह दिलों तक की बातों से अवगत है।

وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْۤا اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ

(८) तथा मनुष्य को जब कभी दुख पहुँचता है तो वह ख़ूब ध्यानमग्न होकर अपने प्रभु को पुकारता है फिर जब अल्लाह (तआला) अपने पास से सुख प्रदान कर देता है तो वह उससे पूर्व जो प्रार्थना करता था उसे

---

[1]अथवा क्यों तुम सत्य से असत्य की ओर तथा संमार्ग से कुमार्ग की ओर फिर रहे हों ?

[2]इसकी व्याख्या के लिए देखिए *सूरः इब्राहीम* आयत-८ की टिप्पणी।

[3]अर्थात कुफ़्र यद्यपि इन्सान अल्लाह की चाहत ही से करता है। क्योंकि उसके चाहे बिना कुछ नहीं होता न हो ही सकता है फिर भी अल्लाह तआला कुफ़्र को पसंद नहीं करता उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने का मार्ग तो कृतज्ञता ही है न कि कृतघ्नता। अर्थात उसकी चाहत और चीज़ है तथा उसकी प्रसन्नता दूसरी चीज़ है, जैसा कि पहले भी इस विन्दु की व्याख्या कुछ स्थानों पर की जा चुकी है। देखिए सूरः बक़रः की आयत संख्या २५३ की व्याख्या।

The Ummah Technology Mission

أَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ﴿٨﴾

भूल जाता है।[1] तथा अल्लाह (तआला) के साझीदार निर्धारित करने लगता है, जिससे (अन्यों को भी) उसके मार्ग से भटकाये। (आप) कह दीजिए कि अपने कुफ़्र का लाभ कुछ दिन और उठा लो, (अन्त में) तू नरकवासियों में होने वाला है।

أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُو رَحْمَةَ رَبِّهِ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٩﴾

(९) भला वह व्यक्ति जो रातों के समय सजदा एवं खड़े होने की स्थिति में इबादत (उपासना) में व्यतीत करता हो, आख़िरत से डरता हो तथा अपने प्रभु की दया की आशा रखता हो,[2] (तथा जो उसके विपरीत हो समान हो सकते हैं), बताओ तो ज्ञानी तथा

---

[1]अर्थात उस दुख को भूल जाता है जिसे दूर करने के लिए वह दूसरों को छोड़कर अल्लाह से प्रार्थना करता था अथवा उस प्रभु को भूल जाता है जिसे वह पुकारता था तथा उसके सामने विनय करता था, तथा फिर शिर्क में लीन हो जाता है।

[2]अभिप्राय यह है कि एक यह काफ़िर एवं मुशरिक है जिसकी यह दशा है जो अभी वर्णित हुई तथा दूसरा वह है जो दुख-सुख में रात की घड़ियाँ अल्लाह के समक्ष विनम्रता एवं आज्ञाकारिता का प्रदर्शन करते हुए सजदों में तथा ध्यानपूर्वक खड़े रहकर गुज़ार देता है। आख़िरत (परलोक) का भय भी उसके दिल में है तथा प्रभु की दया की आशा भी है अर्थात भय तथा आशा दोनों भावनाओं से पूर्ण है, जो वास्तविक ईमान है। क्या यह दोनों बराबर हो सकते हैं ? नहीं, निश्चय नहीं। भय तथा आशा के विषय में हदीस है, आदरणीय अनस कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक व्यक्ति के पास गये जब कि उस पर मौत की दशा आच्छादित थी आपने उससे पूछा, तू स्वयं को कैसा पाता है ? उसने कहा, "मैं अल्लाह से आशा रखता हूँ तथा अपने दोषों के कारण डरता भी हूँ ?" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "इस अवसर पर जिसके दिल में यह दोनों बातें एकत्र हो जायें तो अल्लाह तआला उसे वह चीज़ प्रदान करता है जिसकी वह आशा रखता है तथा उससे उसे बचा लेता है जिसका वह भय रखता है।" (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब ज़िकरिल मौते वल इस्तेअदादे लहू)

The Ummah Technology Mission

अज्ञानी क्या समान हैं ?[1] नि:संदेह शिक्षा वही ग्रहण करते हैं जो बुद्धिमान हों।[2]

قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَاَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ ؕ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ

(१०) कह दो कि हे मेरे ईमानवाले भक्तों ! अपने प्रभु से डरते रहो,[3] जो इस लोक में पुण्य करते हैं उनके लिए उत्तम बदला है,[4] तथा अल्लाह (तआला) की धरती अत्यन्त विस्तृत है,[5] धैर्यवानों को ही उनका पूरा-पूरा

---

[1]अर्थात जो जानते हैं कि अल्लाह ने जो प्रतिफल एवं दण्ड का वचन दिया है वह सत्य है तथा जो इस बात को नहीं जानते, यह दोनों बराबर नहीं हो सकते, एक ज्ञानी है तथा एक अज्ञानी, जिस प्रकार ज्ञान तथा अज्ञान में अन्तर है उसी प्रकार ज्ञानी तथा मूर्ख बराबर नहीं। ज्ञानी तथा मूर्ख के उदाहरण से यह समझना उद्देश्य हो कि जिस प्रकार यह दोनों समान नहीं, अल्लाह का आज्ञाकारी तथा अवज्ञाकारी दोनों बराबर नहीं। कुछ ने इसका अभिप्राय यह बताया है कि ज्ञानी से तात्पर्य वह व्यक्ति है जो ज्ञानानुसार कर्म भी करता है क्योंकि वही ज्ञान से लाभ प्राप्त करता है तथा जो कर्म नहीं करता वह मानो ऐसे ही है जिसे ज्ञान ही नहीं। इस आधार पर यह कर्म कर्ता तथा अकर्मी का उदाहरण है कि दोनों बराबर नहीं।

[2]तथा यह ईमान वाले ही हैं न कि काफ़िर। यद्यपि वह स्वयं को बुद्धिमान एवं ज्ञानी ही समझते हों किन्तु जब वह अपनी नीति तथा बुद्धि का प्रयोग करके चिंतन-मनन ही नहीं करते तथा शिक्षा-दिक्षा नहीं ग्रहण करते तो वह पशु के समान बुद्धि एवं ज्ञान से वंचित हैं।

[3]उसकी आज्ञा पालन करके, अवज्ञा से बचकर तथा इबादत एवं अनुपालन को उसके लिए विशुद्ध करके।

[4]यह تقوى (संयम) के लाभ हैं। नेक बदले से अभिप्राय स्वर्ग तथा उस के अनन्त उपहार हैं। कुछ فِي هٰذِهِ الدُّنْيَا को حَسَنَةٌ से सम्बन्धित मानकर अनुवाद करते हैं "जो पुण्य करते हैं उनके लिए दुनिया में अच्छा बदला है" अर्थात अल्लाह उन्हें संसार में स्वास्थ एवं सुविधा, सफलता तथा धन-सम्पत्ति आदि प्रदान करता है। किन्तु प्रथम भावार्थ ही अधिक सही है।

[5]यह संकेत है उस बात की ओर कि यदि अपने देश में ईमान तथा संयम पर कर्म करना कठिन हो तो वहाँ रहना अच्छा नहीं अपितु वहाँ से हिजरत (स्थानान्तरण) करके ऐसे क्षेत्र में चला जाना चाहिए, जहाँ इन्सान अल्लाह के आदेशों के अनुसार जीवन निर्वाह कर सके तथा जहाँ ईमान एवं संयम के मार्ग में रूकावट न हो।

The Ummah Technology Mission

بِغَيْرِ حِسَابٍ ⑩

अनगिनत बदला दिया जाता है।[1]

قُلْ إِنِّيٓ أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّينَ ⑪

(११) (आप) कह दीजिए कि मुझे आदेश दिया गया है कि अल्लाह (तआला) की इस प्रकार इबादत करूँ कि उसी के लिए इबादत को विशुद्ध कर लूँ।

وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ ⑫

(१२) तथा मुझे आदेश हुआ है कि मैं प्रथम आज्ञाकारी बन जाऊँ।[2]

قُلْ إِنِّيٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ⑬

(१३) कह दीजिए कि मुझे तो अपने प्रभु की अवज्ञा करते हुए बड़े दिन की यातना का भय लगता है।

قُلِ اللَّهَ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهُ دِينِي ⑭

(१४) कह दीजिए कि मैं तो शुद्ध रूप से मात्र अल्लाह ही की इबादत करता हूँ।

فَاعْبُدُوا مَا شِئْتُم مِّن دُونِهِ ۗ

(१५) तुम उसके अतिरिक्त जिसकी चाहो पूजा करते रहो, कह दीजिए कि वास्तव में

---

[1]इसी प्रकार ईमान तथा संयम के मार्ग में कठिनाई भी अनिवार्य तथा मनोकांक्षाओ का त्याग भी आवश्यक है, जिसके लिए धैर्य की आवश्यकता है। इसलिए धैर्यवान का महत्व भी वर्णित किया गया है कि उनको उनके धैर्य के बदले इस प्रकार पूरा-पूरा प्रतिफल दिया जायेगा कि उसे हिसाब के माप से नापना संभव नहीं होगा। अर्थात उनका प्रतिफल असीम होगा, क्योंकि जिस चीज का हिसाब हो उसकी तो एक सीमा होती है तथा जिस की कोई सीमा तथा अन्त न हो वह वही होती है जिसकी गणना संभव न हो। धैर्य का यह बड़ा महत्व है जिसे प्रत्येक मुसलमान को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए, इसलिए कि रोने-धोने तथा अधैर्यता से आई विपदा टल नहीं जाती, जिस अच्छाई एवं लाभ से वंचित हो गया है वह प्राप्त नहीं होता तथा जो अप्रिय अवस्था आ चुकी होती है उसका निराकरण संभव नहीं। जब ऐसा है तो इन्सान धैर्य धारण करके वह महान प्रतिफल क्यों न प्राप्त करे जो धैर्यवानों के लिए अल्लाह ने रखा है।

[2]प्रथम इस अर्थ में कि पूर्वजों के धर्म का विरोध करके तौहीद (अद्वैत) का आमन्त्रण सर्वप्रथम आप ही ने प्रस्तुत किया।

The Ummah Technology Mission

قُلْ إِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١٥﴾

क्षतिग्रस्त वही है जो स्वयं अपने आप को तथा अपने परिवार को क़ियामत के दिन हानि में डाल देंगे। याद रखो कि खुला घाटा यही है।

لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ ؕ يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ﴿١٦﴾

(१६) उन्हें नीचे-ऊपर से अग्नि की लपटें छत की भाँति ढाँक रही होंगी।[1] यही यातना है जिनसे अल्लाह (तआला) अपने भक्तों को डरा रहा है।[2] हे मेरे बन्दो ! मुझसे डरते रहो।

وَالَّذِيْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ يَّعْبُدُوْهَا وَاَنَابُوْٓا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿١٧﴾

(१७) तथा जिन लोगों ने अल्लाह के अतिरिक्त तागूत (अन्यों) की इबादत से बचाव किया तथा तन-मन से अल्लाह (तआला) की ओर आकर्षित रहे, वे शुभ सूचना के अधिकारी हैं तो मेरे बन्दों को शुभ सूचना सुना दीजिए।

الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿١٨﴾

(१८) जो बात को कान लगा कर सुनते हैं फिर जो अति उत्तम बात हो[3] उसके अनुसार कार्य करते हैं, यही हैं जिनको अल्लाह (तआला) ने मार्गदर्शन दिया है तथा यही बुद्धिमान भी हैं।[4]

---

[1] ظُلَلٌ यह ظُلَّةٌ का बहुवचन है, छाया। यहाँ नरक की श्रेणियाँ अभिप्राय हैं अर्थात उनके ऊपर-नीचे आग की तहें होंगी जो उन पर भड़क रही होंगी। (फ़तहुल क़दीर)

[2] अर्थात यही उपरोक्त खुली क्षति एवं अग्नि जवाला की यातना है जिससे अल्लाह तआला अपने बंदों को डराता है ताकि वह अल्लाह की आज्ञाकारिता का मार्ग अपना कर इस दुष्परिणाम से सुरक्षित हो जायें।

[3] اَحْسَنَ (सर्वोत्तम) से सुदृढ़ तथा पक्की बात अभिप्राय है अथवा अनुमत बातों में सर्वोत्तम अथवा निश्चय तथा आज्ञा में से निश्चय, अथवा दण्ड की अपेक्षा क्षमा को पसंद करते हैं।

[4] क्योंकि उन्होंने अपनी बुद्धि से लाभ उठाया है जबकि दूसरों ने अपनी बुद्धियों से लाभ नहीं उठाया।

The Ummah Technology Mission

أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ط
أَفَأَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ ﴿١٩﴾

(१९) भला जिस व्यक्ति पर यातना की बात सिद्ध हो चुकी है,[1] तो क्या आप उसे जो नरक में है छुड़ा सकते हैं।[2]

لٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ
مِنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَعْدَ اللَّهِ ط
لَا يُخْلِفُ اللَّهُ الْمِيعَادَ ﴿٢٠﴾

(२०) हाँ, वे लोग जो अपने प्रभु का भय रखते रहे उनके लिए उच्च भवन हैं, जिनके ऊपर भी बनी अटारियाँ हैं[3] तथा उनके नीचे जल स्रोत प्रवाहित हो रहे हैं। प्रभु का वचन है,[4] तथा वह वचन भंग नहीं करता।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ

(२१) क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) आकाश से पानी उतारता है तथा उसे धरती के स्रोतों में पहुँचाता है[5] फिर

---

[1]अर्थात भाग्य तथा कर्मलेख के आधार पर उसकी यातना का अधिकार सिद्ध हो चुका है। इस प्रकार कि अत्याचार एवं कुफ़्र तथा अपराध एवं क्रूरता में अपनी अन्तिम सीमा को पहुँच गया जहाँ से उसकी वापसी संभव नहीं, जैसे अबूजहल तथा आस पुत्र वाएल आदि, तथा पापों ने उसको पूर्णतः घेर लिया तथा वह नरकवासी हो गया।

[2]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चूँकि इस बात की अति इच्छा थी कि मेरी जाति के सब लोग ईमान ले आयें। इसमें अल्लाह महान ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बतलाया कि आप की इच्छा अपनी जगह अत्यन्त सही तथा उचित है किन्तु उसका भाग्य प्रभावी हो गया तथा अल्लाह का वचन उस के विषय में सिद्ध हो गया। उसे आप नरक की अग्नि से बचाने पर समर्थ नहीं।

[3]इसका अभिप्राय यह है कि स्वर्ग में श्रेणियाँ होंगी एक के ऊपर एक। जैसे यहाँ बहुश्रेणी भवन हैं स्वर्ग में भी श्रेणियों के हिसाब से एक-दूसरे के ऊपर अटारियाँ होंगी, जिनके मध्य स्वर्गवासियों की इच्छानुसार दूध, मधु, मदिरा तथा जल की नहरें प्रवाहित रहेंगी।

[4]जो उसने अपने ईमान वाले बन्दों से किया है तथा जो निश्चय पूरा होगा कि अल्लाह का वचन भंग संभव नहीं।

[5] يَنَابِيعَ यह يَنْبُوع का बहुवचन है, जलस्रोत। अर्थात वर्षा द्वारा जल आकाश से उतरता है फिर वह धरती में संचित हो जाता है तथा फिर स्रोतों के रूप में निकलता है अथवा तालाबों तथा नहरों में एकत्र हो जाता है।

The Ummah Technology Mission

ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿٢١﴾

उसी के द्वारा विभिन्न प्रकार की खेतियाँ उगाता है[1] फिर वे सूख जाती हैं तथा आप उन्हें पीले रंग में देखते हैं फिर उन्हें चूरा-चूरा कर देता है।[2] इसमें बुद्धिमानों के लिए अत्यधिक शिक्षा है।[3]

اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ فَوَيْلٌ لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٢﴾

(२२) क्या वह व्यक्ति जिसका वक्ष अल्लाह (तआला) ने इस्लाम के लिए खोल दिया है तो वह अपने प्रभु की ओर से एक प्रकाश पर है,[4] तथा विनाश है उनके लिए जिनके दिल अल्लाह की याद से (प्रभाव नहीं लेते बल्कि) कठोर हो गये हैं। यह लोग पूर्णरूप से भटकावे में पड़े हुए हैं।

---

[1]अर्थात उस पानी से जो एकत्र होता है, अनेक प्रकार की वस्तुयें पैदा करता है जिनके रंग, स्वाद, सुगंध परस्पर भिन्न होते हैं।

[2]अर्थात हरियाली तथा ताज़गी के बाद वह खेतियाँ सूख जाती एवं पीली पड़ जाती हैं तथा फिर चूर-चूर हो जाती हैं, जैसे लकड़ी की डालियाँ सूखकर टूट-फूट जाती हैं।

[3]अर्थात बुद्धिमान इससे समझ लेते हैं कि दुनिया इसी के सदृश है, वह भी अति शीघ्र नाश तथा विलय हो जायेगी। इसकी शोभा एवं चमक, उसकी हरियाली तथा सौन्दर्य एवं उसके स्वाद तथा सुविधायें सामयिक हैं जिनसे इन्सान को दिल नहीं लगाना चाहिए अपितु मौत की तैयारी में लगे रहना चाहिए, जिसके पश्चात का जीवन स्थाई है, जिसे विनाश नहीं। कुछ कहते हैं कि यह क़ुरआन तथा ईमानवालों के दिलों का उदाहरण है। अभिप्राय यह है कि अल्लाह ने आकाश से क़ुरआन अवतरित किया जिसे वह ईमान वालों के दिलों में प्रविष्ट करता है फिर उसके द्वारा धर्म बाहर निकालता है जो एक-दूसरे से उत्तम होता है तो फिर ईमानदार तो ईमान तथा विश्वास में बढ़ जाता है तथा जिसके दिल में रोग होता है वह ऐसे सूख जाता है जैसे खेती सूख जाती है। (फ़तहुल क़दीर)

[4]अर्थात जिसको सत्य को मानने तथा भलाई का रास्ता अपनाने का सौभाग्य अल्लाह की ओर से मिल जाये तो वह इस सीना खोल दिये जाने के कारण प्रभु के प्रकाश पर हो, क्या वह उसके समान हो सकता है जिसका दिल इस्लाम के लिए कठोर तथा उस का वक्ष संकुचित हो तथा वह पथभ्रष्टता के अंधकारों में भटक रहा हो।

The Ummah Technology Mission

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ۗ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٢٣﴾

(२३) अल्लाह (तआला) ने सर्वोत्तम वाणी अवतरित की है, जो ऐसी किताब है कि आपस में मिलती-जुलती तथा बार-बार दोहराई हुई आयतों की है,[1] जिससे उन लोगों के शरीर काँप उठते हैं जो अपने प्रभु का भय रखते हैं,[2] अन्त में उनके शरीर एवं हृदय अल्लाह (तआला) के वर्णन की ओर (कोमल होकर) झुक जाते हैं।[3] यह है

---

[1] أحسنُ الحديث (उत्तमवाणी) से अभिप्राय ईशवाणी पवित्र क़ुरआन है। मिलती-जुलती का अभिप्राय उत्तम भाषा, चमत्कार एवं प्रभाव तथा सत्यार्थ आदि सदगुणों में उसके सारे अंश परस्पर मिलते हैं, अर्थात यह भी आकाशीय आदिग्रंथों से मिलता है अर्थात उनके सदृश है। مثاني जिसमें वाक्यों, घटनाओं, शिक्षाओं एवं आदेशों को दुहराया गया है।

[2] क्योंकि वह उन चेतावनियों डर एवं धमकियों को समझते हैं जो अवज्ञाकारियों के लिए है।

[3] अर्थात जब अल्लाह की दया तथा करूणा एवं कृपा की आशा उनके दिलों में जागती है तो उनमें तपन तथा नम्रता पैदा हो जाती है तथा वह अल्लाह के स्मरण में लीन हो जाते हैं। आदरणीय कतादह रज़ी अल्लाह अन्ह कहते हैं कि इसमें अल्लाह के मित्रों के गुणों का वर्णन किया गया है कि अल्लाह के भय से उनके दिल काँप जाते हैं। उनकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं तथा उनके दिलों को अल्लाह की याद से संतोष सुलभ होता है। यह नहीं होता कि वह बेसुध तथा मुग्ध हो जायें तथा बुद्धि एवं चेतना शेष न रहे, क्योंकि यह विदअतियों का स्वभाव है तथा इसमें शैतान का हस्तक्षेप होता है (इब्ने कसीर)। जैसे आज भी विदअतियों की कव्वालियों में इसी प्रकार की शैतानी गतिविधियाँ सामान्य हैं जिसे वह वज्द अथवा हाल (मस्ती में झूमना) कहते हैं। इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि ईमानवालों का आचरण इस विषय में काफ़िरों से कई कारणों से भिन्न होता है, एक यह कि इमानवालों का सुनना पवित्र क़ुरआन का पाठ होता है जबकि काफ़िरों का सुनना निर्लज्ज गायिकाओं के स्वरों में गाना-बजाना सुनना है (जैसे बिदअतियों का सुनना मुशरिकाना अतिश्योक्ति पर निर्भर कव्वालियाँ एवं नातें हैं), दूसरे यह कि ईमानवाले क़ुरआन सुनकर शिष्टाचार तथा भय से, आशा एवं प्रेम से तथा ज्ञान एवं बोध से रो पड़ते हैं तथा सजदे में गिर पड़ते हैं जब कि काफ़िर शोर करते तथा क्रीडा में संलग्न रहते हैं, तीसरे ईमानवाले क़ुरआन सुनने के समय शिष्टाचार तथा विनम्रता

The Ummah Technology Mission

अल्लाह (तआला) का मार्गदर्शन जिसके द्वारा जिसे चाहे सत्य मार्ग पर लगा देता है, तथा जिसे अल्लाह (तआला) ही मार्ग भुला दे उसका मार्गदर्शक कोई नहीं।

أَفَمَن يَتَّقِي بِوَجْهِهِ سُوءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٢٤﴾

(२४) भला जो व्यक्ति क़यामत के दिन की अत्याधिक बुरी यातनाओं की ढाल अपने मुख को बनायेगा (ऐसे) अत्याचारियों से कहा जायेगा कि अपने किये हुए कर्मों का (स्वाद) चखो।[1]

كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٥﴾

(२५) उनसे पूर्व वालों ने भी झुठलाया फिर उन पर वहाँ से प्रकोप आ पड़ा जहाँ से उनको अनुमान भी न था।[2]

فَأَذَاقَهُمُ اللَّهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾

(२६) तथा अल्लाह (तआला) ने उन्हें सांसारिक जीवन के अपमान का स्वाद चखाया,[3] तथा अभी आख़िरत की तो अति कठोर यातना है। काश! ये लोग समझ लें।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ

(२७) निश्चय ही हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर प्रकार के उदाहरण वर्णन कर

अपनाते हैं, जैसे नबी के सहचरों (सहाबा-केराम) का शुभ आचरण था, जिससे उनके रोंगटे खड़े हो जाते थे तथा उनके दिल अल्लाह की ओर झुक जाते थे (इब्ने कसीर)।

[1]अर्थात क्या यह व्यक्ति उस व्यक्ति के समान हो सकता है जो प्रलय के दिन अत्यन्त निर्भय तथा शांत होगा? अर्थात लुप्त वाक्य मिलाकर इसका यह भावार्थ होगा।

[2]तथा उन्हें इन यातनाओं से कोई नहीं बचा सका।

[3]यह मक्का के काफ़िरों को चेतावनी है कि विगत सम्प्रदायों ने पैगम्बरों को झुठलाया तो उनकी यह दुर्दशा हुई तथा तुम सर्वश्रेष्ठ रसूल तथा सर्वोत्तम व्यक्ति को झुठला रहे हो तो तुम्हें भी इस झुठलाने के दुष्परिणाम से डरना चाहिए।

The Ummah Technology Mission

مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾

दिये हैं हो सकता है कि वे शिक्षा ग्रहण कर लें।[1]

قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٢٨﴾

(२८) अरबी भाषा में क़ुरआन है जिसमें कोई टेढ़ापन नहीं, हो सकता है कि वह संयम धारण कर लें।[2]

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَاكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ۚ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٩﴾

(२९) अल्लाह (तआला) उदाहरण वर्णन कर रहा है कि एक वह व्यक्ति जिसमें बहुत से परस्पर भिन्नता रखने वाले साझीदार हैं तथा दूसरा वह व्यक्ति जो मात्र एक ही का (दास) है, क्या ये दोनों गुणों में एक समान हैं।[3] सारी प्रशंसायें अल्लाह (तआला) के लिए हैं।[4] बात यह है कि उनमें से अधिकतर लोग अज्ञानी हैं।[5]

---

[1]अर्थात लोगों को समझाने के लिए हर प्रकार के उदाहरण दिये ताकि लोगों की बुद्धि में बातें बैठ जायें तथा सदुपदेश ग्राहण करें।

[2]अर्थात पवित्र क़ुरआन स्वच्छ अरबी भाषा में है, जिसमें कोई टेढ़ापन, विमुखता एवं भ्रम नहीं ताकि लोग उसमें वर्णित चेतावनियों से डरें तथा उसमें वर्णित वचनों के पात्र बनने के लिए कर्म करें।

[3]इसमें मुशरिक (अल्लाह का साझी बनाने वाले) तथा मुख़लिस (मात्र अल्लाह के लिए इबादत करने वाले) का उदाहरण दिया गया है। अर्थात एक दास है जो कई व्यक्तियों के साझे का है जो आपस में झगड़ते रहते हैं तथा एक अन्य दास है जिसका स्वामी केवल एक ही व्यक्ति है तथा उसके स्वामित्व में उसका कोई साझी नहीं, क्या यह दोनों दास समान हो सकते हैं ? नहीं, वस्तुत: नहीं। इसी प्रकार वह मुशरिक जो अल्लाह के साथ अन्य पूज्यों की भी वंदना करता है तथा वह विशुद्ध ईमान वाला जो केवल एक अल्लाह की उपासना करता है तथा उसके साथ किसी को साझी नहीं बनाता, बराबर नहीं हो सकते।

[4]इस बात पर कि उसने तर्क स्थापित कर दिया।

[5]इसीलिए अल्लाह का साझी बनाते हैं।

The Ummah Technology Mission

إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُم مَّيِّتُونَ ﴿٣٠﴾

(३०) नि:संदेह स्वयं आपको भी मृत्यु आयेगी तथा ये सब भी मरने वाले हैं।

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِندَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ﴿٣١﴾

(३१) फिर तुम सबके सब क़ियामत के दिन अपने प्रभु के समक्ष झगड़ोगे।[1]

[1]अर्थात हे पैग़म्बर, आप भी तथा आपके विरोधी भी मरकर इस दुनिया से हमारे पास आख़िरत (परलोक) में आयेंगे। दुनिया में तो एकेश्वरवाद (तौहीद) तथा मिश्रणवाद (शिर्क) का निर्णय तुम्हारे बीच नहीं हो सका तथा तुम इसके विषय में झगड़ते ही रहे। किन्तु यहाँ मैं इसका निर्णय कर दूँगा तथा शुद्ध एकेश्वरवादियों को स्वर्ग में एवं नकारने वाले झूठे मिश्रणवादियों को नरक में प्रवेश कराउँगा। इस आयत से भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मौत का प्रमाण मिलता है। जिस प्रकार *सूरः आले-इमरान* की आयत १४४ से भी मिलता है तथा इन्हीं आयतों से भाव निकालकर आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मौत को सिद्ध किया था। अत: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में यह आस्था रखना कि आपको बरज़ख़ (मौत के पश्चात से प्रलय तक के बीच की अवधि) में उसी प्रकार जीवन प्राप्त है जिस प्रकार दुनिया में प्राप्त था, पवित्र क़ुरआन के विपरीत है। आप को भी अन्य मनुष्यों जैसे मौत हुई, इसलिए आप को गाड़ दिया गया। क़ब्र में आपको बर्ज़ख़ी (मध्य) का जीवन तो अवश्य प्राप्त है जिसकी दशा का हमें ज्ञान नहीं। परन्तु क़ब्र में आपको पुन: सांसारिक जीवन प्रदान नहीं किया गया।

The Ummah Technology Mission

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ﴿٣٢﴾

(३२) उससे अधिक अत्याचारी कौन है जो अल्लाह (तआला) पर झूठ बोले[1] तथा सत्य (धर्म) उसके पास आये तो उसे असत्य बताये ?[2] क्या ऐसे काफ़िरों का ठिकाना नरक नहीं है ?

وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿٣٣﴾

(३३) तथा जो लोग सत्य (धर्म) लाये[3] तथा जो उसे सत्य जाने[4] यही लोग संयमी हैं।

لَهُم مَّا يَشَاءُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٤﴾

(३४) उनके लिए उनके प्रभु के पास (प्रत्येक) वह वस्तु है जो ये चाहें,[5] सदाचारियों का यही बदला है।[6]

---

[1]अर्थात दावा करे कि अल्लाह की संतान है अथवा उसका साझी अथवा उसकी पत्नी है जबकि वह इन सभी से पवित्र है।

[2]जिसमें तौहीद (एकेश्वरवाद) है, ईश्वरादेश तथा अनिवार्य कर्म हैं, पुनर्जीवन का विश्वास, अवैध कर्मों से बचाव है तथा ईमानवालों के लिए शुभ-सूचना तथा काफ़िरों के लिए चेतावनियाँ हैं। यह धर्म तथा धर्मविधान जो महा आदरणीय मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लेकर आये उसे वह मिथ्या (झूठा) बताये।

[3]इससे अभिप्राय इस्लाम के संदेष्टा महा आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं जो सत्यधर्म लेकर आये। कुछ के निकट यह सामान्य है, तथा इससे प्रत्येक वह व्यक्ति अभिप्राय है जो तौहीद (एकेश्वरवाद) का आमन्त्रण देता तथा अल्लाह के धर्म-विधान की ओर लोगों का मार्गदर्शन करता है।

[4]कुछ ने इससे तात्पर्य आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक रज़ी अल्लाहु अन्हु लिया है जिन्होंने सबसे पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पुष्टि की तथा उन पर ईमान लाये। कुछ ने इसे भी सामान्य रखा है जिस में सभी ईमानवाले सम्मिलित हैं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (ईशदूत होने पर) विश्वास (ईमान) रखते हैं तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सच्चा मानते हैं।

[5]अर्थात अल्लाह तआला उनके पाप भी क्षमा कर देगा तथा उनके पद भी ऊँचे कर देगा क्योंकि प्रत्येक मुसलमान की अल्लाह से यही आकांक्षा होती है। इसके अतिरिक्त स्वर्ग में जाने के पश्चात प्रत्येक मनचाही वस्तु भी मिलेगी।

[6]مُحْسِنِين का एक अर्थ तो यह है जो पुण्यकारी हैं, दूसरा जो विशुद्धता के साथ इबादत

The Ummah Technology Mission

لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ عَمِلُوْا وَيَجْزِيَهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) ताकि अल्लाह (तआला) उनसे उनके बुरे कर्मों को मिटा दे तथा जो पुण्य कार्य उन्होंने किये हैं उनका उत्तम बदला प्रदान करे।

اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ؕ وَيُخَوِّفُوْنَكَ بِالَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٦﴾

(३६) क्या अल्लाह (तआला) अपने भक्तों के लिए पर्याप्त नहीं ?[1] ये लोग आपको अल्लाह के अतिरिक्त अन्यों से डरा रहे हैं, तथा जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट कर दे उसका मार्गदर्शन करने वाला कोई नहीं।[2]

وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِعَزِيْزٍ ذِى انْتِقَامٍ ﴿٣٧﴾

(३७) तथा जिसे अल्लाह मार्गदर्शन प्रदान कर दे उसे कोई कुमार्ग करने वाला नहीं।[3] क्या अल्लाह (तआला) प्रभावशाली एवं बदला लेने वाला नहीं है ?[4]

(वंदना) करते हैं। जैसे हदीस में إحسان (एहसान) की यह परिभाषा दी गयी है «أَنْ تَعْبُدَ اللهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ، فَإِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَإِنَّهُ يَرَاكَ» "तुम अल्लाह की इबादत ऐसे करो कि मानो तुम उसे देख रहे हो। यदि यह कल्पना संभव न हो तो मन में यह अवश्य रहे कि वह तुम्हें देख रहा है।" तीसरा, जो लोगों के साथ उपकार तथा सदव्यवहार करते हैं। चौथा, प्रत्येक पुण्य कर्म को भले ढंग से एकाग्रता एवं विनम्रता से तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत (आचरण) के अनुसार करते हैं। अधिकता की जगह उसकी 'श्रेष्ठता' का ध्यान रखते हैं।

[1]इससे अभिप्राय आदरणीय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। कुछ के विचार में यह सामान्य है। सभी अम्बिया (ईशदूत) तथा ईमानवाले इसमें सम्मिलित हैं। भावार्थ यह है कि आप को अल्लाह के अतिरिक्त अन्य से डराते हैं परन्तु जब अल्लाह आप का सहाय तथा पक्षधर है तो आपका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता। वह उन सबके मुक़ाबले में आप को पर्याप्त है।

[2]जो उस पथभ्रष्टता से निकालकर संमार्ग पर लगा दे।

[3]जो उसको संमार्ग से निकालकर कुमार्ग के गड्ढे में डाल दे अर्थात मार्गदर्शन तथा गुमराही अल्लाह के हाथ में है, जिसे चाहे विपथ कर दे तथा जिसको चाहे मार्गदर्शन प्रदान कर दे।

[4]क्यों नहीं, वास्तव में है, इसलिए कि यदि यह लोग कुफ़्र (इंकार) तथा विरोध से न रूके तो निश्चय ही वह अपने मित्रों के पक्ष में इनसे बदला लेगा तथा उन्हें शिक्षाप्रद दुष्परिणाम से दोचार करेगा।

The Ummah Technology Mission

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖۤ اَوْ اَرَادَنِيْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ؕ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ؕ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿۳۸﴾

(३८) यदि आप इनसे पूछें कि आकाश तथा धरती को किसने पैदा किया है तो नि:संदेह ये यही उत्तर देंगे कि अल्लाह ने। आप उनसे कहिए कि भला यह तो बताओ कि जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो यदि अल्लाह तआला मुझे हानि पहुँचाना चाहे तो क्या ये उसकी हानि को हटा सकते हैं अथवा अल्लाह तआला मुझ पर कृपा करना चाते हो क्या ये उसकी कृपा को रोक सकते हैं, (आप) कह दें कि अल्लाह (महान) मुझे पर्याप्त है।[1] भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं।[2]

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۹﴾

(३९) कह दीजिए कि हे मेरे समुदाय के लोगो, तुम अपने स्थान पर कर्म किये जाओ मैं भी कर्म कर रहा हूँ,[3] शीघ्र ही तुम जान लोगे।

مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ

(४०) कि किस पर अपमानित करने वाला प्रकोप आता है[4] तथा किस पर (स्थाई मार

---

[1]कुछ कहते हैं कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उपरोक्त प्रश्न उनके सामने पेश (प्रस्तुत) किया तो उन्होंने कहा कि वस्तुत: वह अल्लाह के कर्मलेख को टाल नहीं सकते। हाँ, वह सिफ़ारिश (अभिस्तावना) करेंगे, जिस पर यह टुकड़ा अवतरित हुआ कि मुझे तो मेरे विषय में अल्लाह ही पर्याप्त है।

[2]जब सब कुछ उसी के अधिकार में है तो फिर दूसरों पर भरोसा करने से क्या लाभ? अत: विश्वासी जन उसी पर भरोसा करते हैं, उसके सिवाय किसी पर उनका भरोसा नहीं।

[3]अर्थात यदि तुम मेरी तौहीद (अद्वैत) की दावत (आमन्त्रण) को स्वीकार नहीं करते जिस के साथ अल्लाह ने मुझे भेजा है तो ठीक है, तुम्हारी इच्छा, तुम अपनी स्थिति पर रहो जिस पर तुम हो, मैं उस स्थिति पर रहता हूँ जिस पर मुझे अल्लाह ने रखा है।

[4]जिससे स्पष्ट हो जायेगा कि सत्य पर कौन है तथा असत्य पर कौन? इससे तात्पर्य सांसारिक यातना है जैसा कि बद्र के रण में हुआ। काफ़िरों के सत्तर व्यक्ति हत तथा सत्तर ही बन्दी हुए यहाँ तक कि मक्का विजय के बाद प्रभुत्व एवं अधिपत्य भी मुसलमानों को प्राप्त हो गया जिसके पश्चात काफ़िरों के लिए अपमान तथा अवहेलना

The Ummah Technology Mission

عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٤٠﴾

एवं) स्थाई दण्ड होता है ?[1]

إِنَّا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۖ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِوَكِيلٍ ﴿٤١﴾

(४१) आप पर हमने सत्य के साथ यह किताब लोगों के लिए अवतरित की है, तो जो व्यक्ति सीधे मार्ग पर आ जाये उसके अपने लिए (लाभ) है तथा जो भटक जाये उसके भटकने का (भार) उसी पर है, आप उनके उत्तरदायी नहीं।[2]

اللَّهُ يَتَوَفَّى الْأَنفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَالَّتِي لَمْ تَمُتْ فِي مَنَامِهَا ۖ فَيُمْسِكُ

(४२) अल्लाह ही आत्माओं को उनकी मृत्यु के समय[3] तथा जिनकी मृत्यु नहीं आयी उन्हें उनकी नींद के समय हरण कर लेता है,[4]

के अतिरिक्त कुछ शेष नहीं रह गया।

[1]इससे तात्पर्य नरक का दण्ड है जिसमें काफ़िर सदा फंसे रहेंगे।

[2]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्कावासियों के कुफ़्र पर दुराग्रह बहुत भारी लगता था, इसमें आप को सांत्वना दी गई है कि आप का कर्तव्य मात्र किताब को वर्णन कर देना है जो हमने आप पर अवतरित की। आप पर उन्हें मार्ग पर लाने का दायित्व नहीं। यदि वह संमार्ग अपना लेंगे तो उसमें उन्हीं का लाभ है और यदि ऐसा न करेंगे तो स्वयं उन्हीं की हानि होगी। وكيل का अर्थ भारवाहक तथा उत्तरदायी है अर्थात आपके ऊपर उन्हें मार्ग दर्शा देने का भार नहीं है। आगामी आयत में अल्लाह अपने पूर्ण सामर्थ्य एवं विचित्र कारीगरी की चर्चा कर रहा है जिसका अवलोकन इन्सान नित्य दिन करता है। वह यह है कि जब वह सो जाता है तो उसकी आत्मा अल्लाह की आज्ञा से जैसे निकल जाती है उसके ज्ञान तथा संवेदन की शक्ति समाप्त हो जाती है तथा जब वह जागता है तो आत्मा उसमें पुनः भेज दी जाती है जिससे उसका संवेदन अपने स्थान पर आ जाता है। हाँ, जिसका जीवनकाल समाप्त हो चुका होता है। उसकी आत्मा वापस नहीं आती तथा वह मौत की गोद में चला जाता है। इसको कुछ व्याख्याकारों ने बड़ी मौत तथा छोटी मौत भी कहा है।

[3]यह महाकाल (बड़ी मृत्यु) है कि आत्मा निकाल ली जाती है फिर वापस नहीं आती।

[4]अर्थात जिनकी मौत का समय अभी नहीं आया है तो सोते समय उनकी आत्मा भी निकाल कर लघु मौत से दोचार कर दिया जाता है।

The Quran Technology Mission

الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰٓى اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝۴۲

फिर जिन पर मृत्यु का आदेश हो चुका है उन्हें तो रोक लेता है[1] तथा अन्य (आत्माओं) को एक निर्धारित समय तक के लिए छोड़ देता है,[2] चिन्तन करने वालों के लिए इसमें निश्चित रूप से बहुत-सी निशानियाँ हैं।[3]

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَاۗءَ ۭ قُلْ اَوَلَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـــًٔا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ ۝۴۳

(४३) क्या उन लोगों ने अल्लाह तआला के अतिरिक्त (अन्यों को) सिफ़ारिशी नियुक्त कर रखा है ? (आप) कह दीजिए कि चाहे वे कुछ भी अधिकार न रखते हों तथा न बुद्धि रखते हों।[4]

قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ۭ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝۴۴

(४४) कह दीजिए कि सभी सिफ़ारिशों का स्वामी अल्लाह ही है।[5] समस्त आकाशों एवं धरती का राज्य उसी के लिए है, तुम सब उसी की ओर लौटाये जाओगे।

---

[1]यह वही बड़ी मृत्यु है जिसकी चर्चा अभी की गई है कि उसमें आत्मा रोक ली जाती है।

[2]अर्थात जब तक उन का निर्धारित समय नहीं आता उस समय तक के लिए उनकी आत्मायें वापस होती रहती हैं। यह लघु मृत्यु है। यही विषय सूरः अनआम ६० तथा ६१ में वर्णित किया गया है। फिर भी वहाँ लघुकाल (छोटी मृत्यु) की चर्चा पहले तथा महाकाल की बाद में है जबकि यहाँ उसके विपरीत है।

[3]अर्थात यह आत्मा निकालना तथा वापस भेजना अर्थात मारना तथा जीवन प्रदान करना इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह महान प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्यवान है तथा वह प्रलय के दिन मुर्दों को भी जीवन अवश्य प्रदान करेगा।

[4]अर्थात सिफ़ारिश करना तो कहाँ, इन्हें तो सिफ़ारिश के अर्थ तथा भाव का भी पता नहीं क्योंकि वह पत्थर हैं अथवा निर्बोध।

[5]अर्थात सिफ़ारिश के सभी प्रकार का अधिकार मात्र अल्लाह को है। उसकी अनुमति के बिना कोई सिफ़ारिश नहीं कर सकेगा। फिर एक अल्लाह ही कि इबादत क्यों न की जाये ताकि वह प्रसन्न हो जाये तथा सिफ़ारिश के लिए कोई सहारा ढूँढने की आवश्यकता ही न रह जाये।

The Ummah Technology Mission

وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۖ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِن دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٤٥﴾

(४५) तथा जब अल्लाह अकेले का वर्णन किया जाये तो उन लोगों के हृदय घृणा करने लगते हैं [1] जो आख़िरत में आस्था नहीं रखते, तथा जब उसके अतिरिक्त (अन्यों) का वर्णन किया जाये तो उनके हृदय स्पष्टत: प्रफुल्लित हो जाते हैं।[2]

قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٤٦﴾

(४६) (आप) कह दीजिए कि हे अल्लाह आकाशों एवं धरती के पैदा करने वाले, गुप्त एवं प्रकट के जानने वाले, तू ही अपने भक्तों में उन बातों का निर्णय करेगा जिनमें वे उलझ रहे थे।[3]

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ

(४७) तथा यदि अत्याचारियों के पास वह सब कुछ हो जो धरती पर है तथा उसके साथ

---

[1]अथवा कुफ़्र तथा घमंड अथवा संकीर्णता का संवेदन (एहसास) करते हैं। अभिप्राय यह है कि मुश्रेकीन (मिश्रणवादियों) से जब यह कहा जाये कि पूज्य केवल एक ही है तो उनके दिल यह मानने को तैयार नहीं होते।

[2]हाँ, जब यह कहा जाता कि अमुक अमुक भी पूज्य हैं अथवा वह भी तो अल्लाह के पुनीत बन्दे हैं, वह भी तो कुछ अधिकार रखते हैं, वह भी संकटहारी हैं तथा आवश्यकता पूरी करते हैं तो यह मुश्रेकीन प्रफुल्ल हो जाते हैं। आस्थाभ्रष्टों की आज यही स्थिति है। जब उनसे कहा जाता है कि केवल "हे अल्लाह मदद" कहो, क्योंकि अल्लाह के सिवाय कोई सहायता करने वाला नहीं तो खिन्न हो जाते हैं, यह बात उन्हें बहुत बुरी लगती है। परन्तु जब "या अली मदद" अथवा "या रसूल मदद" कहा जाये, इसी प्रकार अन्य मृतों से सहायता माँगी तथा गुहार की जाये, जैसे "या शेख़ अब्दुल क़ादिर शैअन लिल्लाह" आदि तो फिर उनके दिल की कलियाँ खिल जाती हैं।

[3]हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को तहज्जुद की नमाज के प्रारम्भ में यह पढ़ा करते थे।

«اللَّهُمَّ! رَبَّ جبريلَ وَمِيكَائِيلَ وَإِسرَافِيلَ، فَاطِرَ السَّمٰوَاتِ والأَرْضِ، عَالِمَ الغَيبِ والشَّهَادَةِ، أَنتَ تَحكُمُ بَينَ عِبَادِكَ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَختَلِفُونَ، اهْدِنِي لِمَا اختُلِفَ فِيهِ مِنَ الحَقِّ بِإِذْنِكَ، إِنَّكَ تَهدِي مَن تَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُستَقِيمٍ»

(सहीह मुस्लिम किताबु सलातिल मुसाफ़िरीन)

The Ummah Technology Mission

جَمِيعًا وَمِثْلَهُۥ مَعَهُۥ لَافْتَدَوْا بِهِۦ مِن سُوٓءِ ٱلْعَذَابِ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ ۚ وَبَدَا لَهُم مِّنَ ٱللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا۟ يَحْتَسِبُونَ ﴿٤٧﴾

उतना ही और हो, तो भी बुरे दण्ड के बदले में क़यामत के दिन ये सब कुछ दे दें,[1] तथा उनके समक्ष अल्लाह की ओर से वह प्रकट होगा जिसका अनुमान भी उन्हें न था।[2]

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّـَٔاتُ مَا كَسَبُوا۟ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا۟ بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा जो कुछ उन्होंने किया था उसकी बुराईयाँ उन पर खुल जायेंगी[3] तथा जिसके साथ वे उपहास करते थे वह उन्हें आ घेरेगा।[4]

فَإِذَا مَسَّ ٱلْإِنسَٰنَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا خَوَّلْنَٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا قَالَ

(४९) मनुष्य को जब कोई कष्ट पहुँचता है तो हमें पुकारता है[5] फिर जब हम उसे अपनी ओर से कोई सुख प्रदान कर दें तो कहने लगता

---

[1]परन्तु फिर भी वह स्वीकार नहीं होगा जैसाकि दूसरे स्थान पर स्पष्ट है :

﴿فَلَن يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِم مِّلْءُ ٱلْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوِ ٱفْتَدَىٰ بِهِۦٓ﴾

"वह धरती भर सोना भी बदले में दे दें तो वह स्वीकार्य न होगा।" (*आले-इमरान*-९१)

इसलिए कि :

﴿وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ﴾

"वहाँ बदला अंगीकार नहीं किया जायेगा।" (*अल-बक़र*:-४८)

[2]अर्थात यातना की कठोरता तथा उसका भय एवं उसके प्रकार तथा रूप ऐसे होंगे कि कभी उनके ध्यान में न आये होंगे।

[3]अर्थात दुनिया में वे जिन निषेधों तथा पापों को करते थे उसका दण्ड उनके आगे आ जायेगा।

[4]वह यातना उन्हें घेर लेगी जिसे वह संसार में असंभव समझते थे, इसलिए उनकी हँसी उड़ाते थे।

[5]यह जाति के अनुसार मानव की चर्चा है। अर्थात इन्सानों की बहुसंख्यक की दशा यह है कि जब उनको रोग, भूक अथवा कोई अन्य दुख पहुँचता है तो उससे मुक्ति पाने के लिए अल्लाह से प्रार्थनायें करता है तथा उसके आगे गिड़गिड़ाता है।

The Umman Technology Mission

إِنَّمَآ أُوتِيتُهُۥ عَلَىٰ عِلْمٍۭ ۚ بَلْ هِىَ فِتْنَةٌ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٩﴾

है कि यह तो मैं मात्र अपनी बुद्धि के कारण प्रदान किया गया हूँ।[1] बल्कि यह परीक्षा है,[2] परन्तु उनमें से अधिकतर लोग अनजान हैं।[3]

قَدْ قَالَهَا ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَمَآ أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا۟ يَكْسِبُونَ ﴿٥٠﴾

(५०) इनसे पूर्व के लोग भी यही बात कह चुके हैं तो उनकी कार्यवाही उनके कुछ काम न आयी।[4]

فَأَصَابَهُمْ سَيِّـَٔاتُ مَا كَسَبُوا۟ ۚ وَٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ مِنْ هَٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّـَٔاتُ مَا كَسَبُوا۟ ۚ وَمَا هُم بِمُعْجِزِينَ ﴿٥١﴾

(५१) फिर उनके समस्त कुकर्म[5] उन पर आ पड़े, तथा इनमें से भी जो पापी हैं उनके किये हुए कुकर्म भी अब उन पर आ पड़ेंगे, ये (हमें) पराजित कर देने वाले नहीं।[6]

أَوَلَمْ يَعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَـَٔايَٰتٍ

(५२) क्या उन्हें यह ज्ञान नहीं कि अल्लाह (तआला) जिसके लिए चाहे जीविका बढ़ा

---

[1]अर्थात सुख मिलते ही उद्दण्डता एवं उग्रता का मार्ग अपना लेता है तथा कहता है कि इसमें अल्लाह का क्या अनुग्रह। यह तो मेरी चतुराई का परिणाम है या जो ज्ञान तथा गुण मेरे पास है उसके कारण यह सुख-सुविधायें प्राप्त हुई हैं अथवा मुझे यह जानकारी थी कि यह वस्तुयें मुझे मिलेंगी क्योंकि अल्लाह के निकट मेरा बहुत स्थान है।

[2]अर्थात बात वह नहीं है जो तू समझ रहा है अथवा बता रहा है, अपितु यह वरदान तेरी परीक्षा के लिए है कि तू कृतज्ञता दिखाता है अथवा कृतघ्नता।

[3]इस बात से कि यह अल्लाह की ओर से ढील तथा परीक्षा है।

[4]जिस प्रकार क़ारून ने भी कहा था परन्तु अन्ततः वह अपने कोषों सहित भूमि में धँसा दिया गया। أغنى में ما, प्रश्नवाची भी हो सकता है तथा नकारात्मक भी। दोनों प्रकार से सही है।

[5]कुकर्म से अभिप्राय उनकी बुराईयों का प्रतिकार (बदला) है। इनको बुराईयों के सदृश होने के कारण बुराईयाँ कहा गया है अन्यथा बुराई का बदला बुराई नहीं है। जैसे ﴿وَجَزَٰٓؤُا۟ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا﴾ में है (फतहुल क़दीर)

[6]यह मक्का के काफ़िरों को चेतावनी है। तथा ऐसा ही हुआ, यह भी विगत जातियों की भाँति अकाल, हत्या तथा क़ैद आदि से दोचार हुये। अल्लाह की ओर से आये इन प्रकोपों को वह रोक न सके।

The Ummah Technology Mission

لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾

देता है तथा तंग (भी)। ईमानवालों के लिए इसमें बड़ी-बड़ी निशानियाँ हैं।[1]

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِن رَّحْمَةِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٥٣﴾

(५३) (मेरी ओर से) कह दो कि हे मेरे बन्दो ! जिन्होंने अपने प्राणों पर अत्याचार किये हैं तुम अल्लाह की कृपा से निराश न हो जाओ, नि:सन्देह अल्लाह (तआला) समस्त पापों को क्षमा कर देता है। वास्तव में वह अत्यन्त क्षमाशील अत्यन्त कृपालु है।[2]

---

[1]अर्थात जीविका के विस्तार एवं संकुचन में भी अल्लाह की एकता के प्रमाण हैं अर्थात इससे विदित होता है कि सृष्टि में मात्र उसी का अधिकार तथा आदेश चलता है। उसकी योजना प्रभावी एवं लागू है। इसीलिए वह जिसको चाहता है सविस्तार जीविका प्रदान करता है तथा जिसको चाहता है कंगाल एवं गरीब बनाकर रखता है। उसके इस निर्णय में जो उसकी हिक्मत एवं इच्छा पर निर्भर है कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकता है न उसमें परिवर्तन कर सकता है। फिर भी यह निशानियाँ मात्र ईमानवालों ही के लिये हैं क्योंकि वही इस पर चिंतन-मनन करके उससे लाभ प्राप्त करते हैं।

[2]इस आयत में अल्लाह की क्षमा के विस्तार का वर्णन है। إسراف (इसराफ़) का अर्थ है पापों की अधिकता तथा उसमें अति। "अल्लाह की दया से निराश न हो" का अर्थ है कि ईमानलाने अथवा तौबा (क्षमा-याचना) से पहले जितने भी पाप किये हों इन्सान यह न समझे कि मैं तो बड़ा पापी हूँ, मुझे अल्लाह कैसे क्षमा करेगा ? बल्कि सच्चे दिल से यदि ईमान को स्वीकार करेगा अथवा शुद्ध क्षमा-याचना करेगा तो अल्लाह तआला (परमेश्वर) सब पापों को क्षमा कर देगा। आयत के अवतरण के कारण से यही भावार्थ सिद्ध होता है। कुछ काफ़िर तथा मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) थे जिन्होंने अधिकता से हत्या एवं व्यभिचार किया था। यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये और कहा कि आप का धर्म सही है परन्तु हम लोग बड़े पापी हैं। यदि हम ईमान लायें तो क्या वह सभी क्षमा कर दिये जायेंगे ? उस पर यह आयत अवतरित हुई। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरः ज़ुमर) इसका अभिप्राय यह नहीं कि दया तथा क्षमा की आशा में खूब पाप किये जाओ, उसके आदेशों तथा अनिवार्य आज्ञाओं की परवाह न करो तथा उसके नियमों तथा सीमाओं का निश्चिन्त होकर उल्लंघन करो। इस प्रकार उसके क्रोध तथा प्रतिशोध को दावत देकर उसकी दया एवं क्षमा की आशा रखना अति मूर्खता एवं कुविचार है। यह काँटा बोकर फल खाने की आशा रखने के सदृश है। ऐसे लोगों को यह याद रखना चाहिए कि वह जहाँ अपने बंदो के लिए क्षमाशील दयालु है वहाँ अवज्ञाकारियों के लिए عزيزٌ ذوانتقام भी है। जैसाकि पवित्र क़ुरआन के अनेक स्थानों पर इन दोनों बातों को साथ-साथ

The Ummah Technology Mission

وَأَنِيبُوٓاْ إِلَىٰ رَبِّكُمۡ وَأَسۡلِمُواْ لَهُۥ مِن قَبۡلِ أَن يَأۡتِيَكُمُ ٱلۡعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ﴿٥٤﴾

(५४) तथा तुम सब अपने प्रभु की ओर झुक पड़ो तथा उसका आज्ञापालन किये जाओ इससे पूर्व कि तुम्हारे पास प्रकोप आ जाये तथा फिर तुम्हारी सहायता न की जाये।

وَٱتَّبِعُوٓاْ أَحۡسَنَ مَآ أُنزِلَ إِلَيۡكُم مِّن رَّبِّكُم مِّن قَبۡلِ أَن يَأۡتِيَكُمُ ٱلۡعَذَابُ بَغۡتَةٗ وَأَنتُمۡ لَا تَشۡعُرُونَ ﴿٥٥﴾

(५५) तथा अनुसरण करो उस सर्वोत्तम वस्तु का जो तुम्हारी ओर तुम्हारे प्रभु की ओर से अवतरित की गयी है, इससे पूर्व कि तुम पर सहसा प्रकोप आ जाये तथा तुम्हें सूचना भी न हो।[1]

أَن تَقُولَ نَفۡسٞ يَٰحَسۡرَتَىٰ عَلَىٰ مَا فَرَّطتُّ فِي جَنۢبِ ٱللَّهِ وَإِن كُنتُ لَمِنَ ٱلسَّٰخِرِينَ ﴿٥٦﴾

(५६) (ऐसा न हो कि) कोई व्यक्ति कहे कि हाय अफ़सोस इस बात पर कि मैंने अल्लाह (तआला) के पक्ष में आलस्य किया[2] बल्कि मैं उपहास उड़ाने वालों में ही रहा।

أَوۡ تَقُولَ لَوۡ أَنَّ ٱللَّهَ هَدَىٰنِي لَكُنتُ مِنَ ٱلۡمُتَّقِينَ ﴿٥٧﴾

(५७) अथवा कहे कि यदि अल्लाह मुझे मार्गदर्शन प्रदान करता तो मैं भी संयमी लोगों में होता।[3]

वर्णन किया गया है, जैसे ﴿۞ نَبِّئۡ عِبَادِيٓ أَنِّيٓ أَنَا ٱلۡغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ * وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ ٱلۡعَذَابُ ٱلۡأَلِيمُ﴾ (अल-हिज्र-४९,५०) शायद यही कारण है कि यहाँ आयत का आरम्भ يَا عِبَادِي (हे मेरे बंदो) से फ़रमाया, जिससे यही विदित होता है कि जो ईमान लाकर अथवा सच्ची तौबा करके सही अर्थों में अल्लाह का बंदा बन जायेगा, उसके पाप यदि समुद्र की झाग (फेन) के बराबर भी हो तो वह क्षमा कर देगा। वह अपने बन्दों के लिए निश्चय غفور رحيم (क्षमाशील तथा दयालु) है। जैसे हदीस में सौ व्यक्तियों के हत्यारे की क्षमा की घटना है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अम्बिया, मुस्लिम किताबुत्तौबा)

[1]अर्थात प्रकोप आने से पूर्व क्षमा-याचना तथा पुण्य कर्म की व्यवस्था कर लो क्योंकि जब प्रकोप आयेगा तो उसका ज्ञान तथा बोध भी तुम्हें नहीं होगा। इससे अभिप्राय सांसारिक प्रकोप है।

[2] فِي جَنۢبِ ٱللَّهِ का भावार्थ अल्लाह का आज्ञापालन अर्थात पवित्र क़ुरआन तथा उसके अनुसार कर्म करने में आलस्य है। अथवा جَنۢبٌ का अर्थ निकट तथा पड़ोस है। अर्थात अल्लाह की समीपता एवं पड़ोस (अर्थात स्वर्ग) ढूँढने तथा चाहने में आलस्य किया।

[3]अर्थात यदि अल्लाह मुझे मार्गदर्शन दे देता तो मैं अवज्ञा, शिर्क तथा पापों से बच जाता।

The Ummah Technology Mission

أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً فَأَكُونَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٨﴾

(५८) अथवा यातनाओं को देखकर कहे, काश ! किसी प्रकार मेरा लौट जाना हो जाता तो मैं भी सदाचारियों में हो जाता।

بَلَىٰ قَدْ جَاءَتْكَ آيَاتِي فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٥٩﴾

(५९) हाँ (हाँ) नि:संदेह तुम्हारे पास मेरी आयतें पहुँच चुकी थीं जिन्हें तूने झुठलाया तथा अहंकार (एवं गर्व) किया तथा तू था ही काफ़िरों में।[1]

وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَى اللَّهِ وُجُوهُهُمْ مُسْوَدَّةٌ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِلْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٦٠﴾

(६०) तथा जिन लोगों ने अल्लाह पर मिथ्या-रोपण किया है तो आप देखेंगे कि क़यामत के दिन उनके मुख काले हो गये होंगे।[2] क्या अंहकार करने वालों का ठिकाना नरक में नहीं ?[3]

وَيُنَجِّي اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦١﴾

(६१) तथा जिन लोगों ने संयम किया उन्हे अल्लाह (तआला) उनकी सफ़लता के साथ बचा लेगा,[4] उन्हें कोई दुख स्पर्श भी न कर

यह उसी प्रकार है जैसे दूसरे स्थान पर मुशरीकीन (मिश्रणवादियों) का कथन नक़ल (उदघृत) किया गया है ﴿لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا﴾ "यदि अल्लाह चाहता तो हम शिर्क न करते" (अल-अनआम-१४८) इनका यह कथन كلمة حقّ أريد بها الباطل के समान है। (फ़तहुल क़दीर)

[1]ये अल्लाह तआला उन की इच्छा के उत्तर में फ़रमायेगा

[2]जिसका कारण यातना की भयानकता एवं अल्लाह के क्रोध का दर्शन होगा।

[3]हदीस में है «الْكِبْرُ بَطَرُ الحَقِّ وَغَمْطُ النَّاسِ» "सत्य का इंकार तथा लोगों को हीन समझना अहंकार है।" यह प्रश्न सकारात्मक है अर्थात अल्लाह के आज्ञापालन से अभिमान करने वालों का स्थान नरक है।

[4] مَفَازَةٌ धातु है मीम के साथ अर्थात فوزٌ (सफलता) बुराई से बच जाना तथा भलाई एवं सौभाग्य प्राप्त कर लेना। अभिप्राय यह है कि अल्लाह सदाचारियों को उस सफलता तथा सौभाग्य के कारण मुक्ति प्रदान करेगा जो अल्लाह के पास उनके लिए पहले ही से लिखित है।

The Ummah Technology Mission

सकेगा तथा वे न किसी प्रकार दुखी होंगे।[1]

اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۫ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿٦٢﴾

(६२) अल्लाह समस्त वस्तुओं का जन्मदाता है, तथा वही प्रत्येक वस्तु का संरक्षक है।[2]

لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٣﴾

(६३) आकाशों तथा धरती की चाभियों का स्वामी वही है।[3] जिन-जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों को अस्वीकार किया है वही हानि उठाने वाले हैं।[4]

قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ﴿٦٤﴾

(६४) (आप) कह दीजिए कि हे मूर्खो ! क्या तुम मुझसे अल्लाह के अतिरिक्त अन्यों की इबादत के लिए कहते हो।[5]

وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ

(६५) तथा नि:संदेह तेरी ओर भी तथा तुझसे पूर्व (के समस्त नबियों) की ओर भी प्रकाशना

---

[1]वह दुनिया में जो कुछ छोड़कर आये हैं उस पर उन्हें कोई शोक न होगा। वह चूँकि क़यामत की भयानकता से सुरक्षित रहेंगे इसलिए उन्हें किसी बात का दुख न होगा।

[2]अर्थात प्रत्येक वस्तु का विधाता वही है तथा स्वामी भी वही है। वह जैसे चाहे शासन तथा व्यवस्था करे। प्रत्येक चीज़ उसके अधीन एवं अधिकार में है। किसी को मुख फेरने का साहस नहीं।

وَكِيل (वकील) अर्थात संरक्षक एवं व्यवस्थापक। प्रत्येक चीज़ उसके सुपुर्द है। वह बिना किसी साझी के उनकी रक्षा तथा व्यवस्था कर रहा है।

[3] مَقَالِيد यह مِقْلِيد तथा مِقْلَادٌ (मिक़लाद) का बहुवचन है। (फ़तहुल क़दीर) जिसका अर्थ चाभियाँ हैं। कुछ ने 'कोष' किया है, भावार्थ दोनों प्रकार एक ही है कि सभी विषय की बागडोर उसी के हाथ में है।

[4]अर्थात पूरा घाटा, क्योंकि इस कुफ़्र के दुष्परिणाम में वह नरक में चले गये।

[5]यह काफ़िरों की उस दावत (आमन्त्रण) के उत्तर में है जो वे इस्लाम के उपदेशक महा आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिया करते थे कि अपने पूर्वजों का धर्म ग्रहण कर लें, जिसमें मूर्तियों की पूजा थी।

The Ummah Technology Mission

مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٦٥﴾

की गयी है कि यदि तूने शिर्क किया तो नि:संदेह तेरा कर्म नष्ट हो जायेगा तथा निश्चित रूप से तू हानि उठाने वालों में से हो जायेगा।[1]

بَلِ اللَّهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٦٦﴾

(६६) बल्कि तू अल्लाह ही की इबादत कर[2] तथा कृतज्ञता व्यक्त करने वालों में से हो जा।

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۖ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ ۚ

(६७) तथा उन लोगों ने जैसा सम्मान अल्लाह का करना चाहिए था नहीं किया,[3] सारी धरती क़यामत के दिन उसकी मुट्ठी में होगी तथा समस्त आकाश उसके दायें हाथ में

---

[1]"यदि तनू शिर्क किया" का अभिप्राय यह है कि यदि मौत शिर्क पर आई तथा उससे तौबा (क्षमा-याचना) न की। संबोधन यद्यपि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है जो शिर्क से पाक (पवित्र) भी थे तथा भविष्य के लिए सुरक्षित भी। क्योंकि पैग़म्बर अल्लाह की सुरक्षा एवं संरक्षण में होता है। उनसे शिर्क होने की कोई संभावना न थी किन्तु यह वास्तव में अनुयाईयों की ओर संकेत तथा उनको समझाना उद्देश्य था।

[2]यहाँ भी إِيَّاكَ نَعْبُدُ की भाँति कर्म कारक اللَّهَ (अल्लाह) को पहले लाकर सीमित करने का अर्थ लिया गया है कि मात्र एक अल्लाह की उपासना करो।

[3]क्योंकि उसकी बात भी नहीं मानी जो पैग़म्बरों द्वारा उन तक पहुँचाई थी तथा इबादत (आराधना) भी उसके लिए विशेष नहीं की बल्कि दूसरों को भी उसमें सम्मिलित (साझी) कर लिया। हदीस में आता है कि एक यहूदी विद्वान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया तथा कहा कि हम अल्लाह के विषय में (किताबों) में पाते हैं कि वह क़यामत (प्रलय) के दिन आकाशों को एक ऊँगली पर, भूमि को एक ऊँगली पर, पेड़ों को एक ऊँगली पर, जल तथा आर्दता को एक ऊँगली पर, तथा सभी उत्पत्ति को एक ऊँगली पर रख लेगा तथा फ़रमायेगा, मैं राजा हूँ। आप ने मुस्कुरा कर उसकी पुष्टि की तथा आयत وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ का पाठ किया (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरः ज़ूमर)। वर्तमान एवं पूर्वज मुस्लिम ज्ञानियों की आस्था है कि जिन सदगुणों का वर्णन पवित्र क़ुरआन तथा सही हदीसों में है (जैसे इस आयत में हाथ का तथा हदीस में अंगुलियों का प्रमाण है) उन पर बिना उपमा तथा बिना कष्ट कल्पना एवं बिना परिवर्तन के ईमान रखना अनिवार्य है। अतः यहाँ वर्णित तथ्यों को मात्र प्रभुत्व तथा शक्ति के भाव में लेना सही नहीं है।

The Quran Technology Mission

سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٧﴾

लपेटे हुए होंगे। वह पवित्र एवं सर्वोपरि है प्रत्येक उस वस्तु से जिसे लोग उसका साझीदार बनायें।[1]

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ﴿٦٨﴾

(६८) तथा सूर (नरसिंघा) फूँक दिया जायेगा तो आकाशों तथा धरती वाले सभी अचेत होकर गिर पड़ेंगे[2] परन्तु जिसे अल्लाह चाहे,[3] फिर पुनः सूर फूँका जायेगा तो वे सहसा खड़े होकर देखने लग जायेंगे।[4]

وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ

(६९) तथा धरती अपने प्रभु की दिव्य ज्योति से जगमगा उठेगी,[5] कर्मपत्र प्रस्तुत किये

---

[1]इस संदर्भ में भी हदीस में आता है कि फिर अल्लाह तआला फ़रमायेगा أنا المَلِكُ ، أين مُلوك الأرض "मैं राजा हूँ, धरती के राजे आज कहाँ हैं।" (उपरोक्त हवाला)

[2]कुछ के निकट نفخة فزع (घबराहट की फूँक) के बाद यह दूसरी फूँक अर्थात نفخة صعق (बेहोशी की फूँक) होगी जिस के बाद सभी मर जायेंगे। कुछ के यहाँ यह पहली ही फूँक है। इसी से पहले तो अति घबराहट हो जायेगी तथा फिर सब मर जायेंगे। कुछ ने इन नफ़खों (फूँकों) का अनुक्रम इस प्रकार वर्णित किया है। प्रथम नफ़खतुल फ़ना (विलय की फूँक), दूसरा नफ़खतुल बअस (जीवित होने की फूँक), तीसरा नफ़खतुस्सअक (बेहोशी की फूँक) तथा चौथा नफ़खतुल क़यामे ले रब्बिल आलमीन (अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिए खड़े होने की फूँक)। (ऐसरूत्तफ़ासीर) कुछ के निकट मात्र दो ही नफ़खे (फूँकें) हैं। नफ़खुतल मौत तथा नफ़खुतल बअस तथा कुछ के निकट तीन। والله أعلم

[3]अर्थात जिनको अल्लाह चाहेगा उन्हें मौत नहीं आयेगी, जैसे जिब्रील, मीकाईल तथा इस्राफ़ील फ़रिश्ते। कुछ कहते हैं कि रिज़वान फ़रिश्ता अर्थात अर्श को उठाने वाले फ़रिश्ते तथा स्वर्ग एवं नरक पर नियुक्त अधिकारी।

[4]चार नफ़खों (फूँकों) के मानने वालों के निकट यह चौथा, तीन मानने वालों के निकट तीसरा तथा दो मानने वालों के समीप यह दूसरा नफ़खा है। जो भी हो, इस फूँक से सब जीवित होकर मैदाने महशर में सर्वलोक के पालनहार के सदन में उपस्थित हो जायेंगे जहाँ हिसाब-किताब होगा।

[5]इस नूर (प्रकाश) से कुछ ने न्याय तथा कुछ ने आदेश अभिप्राय लिया है। परन्तु इसे वास्तविक अर्थ में लेने में कोई वस्तु रूकावट नहीं है, क्योंकि अल्लाह आकाशों तथा धरती का प्रकाश है। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

الْكِتٰبُ وَجِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ
وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٩﴾

जायेंगे, नबियों तथा साक्षियों को लाया जायेगा[1] तथा लोगों के मध्य न्यायपूर्ण निर्णय कर दिये जायेंगे और उन पर अत्याचार न किया जायेगा।[2]

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ
وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٠﴾

(७०) तथा जिस व्यक्ति ने जो कुछ किया है पूर्ण रूप से दे दिया जायेगा, और जो कुछ भी लोग कर रहे हैं, वह भली-भाँति जानने वाला है।[3]

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ؕ
حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا
وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ

(७१) तथा काफ़िरों के झुंड के झुंड नरक की ओर हाँके जायेंगे,[4] जब वे उसके निकट पहुँच जायेंगे उसके द्वार उनके लिए खोल दिये जायेंगे[5] तथा वहाँ के रक्षक उनसे पूछेंगे

---

[1]नबियों से प्रश्न किया जायेगा कि तुमने मेरा उपदेश पहुँचाया था, अथवा यह पूछा जायेगा कि तुम्हारे समुदायों ने तुम्हारे आमंत्रण का क्या उत्तर दिया, उसे स्वीकार किया या अस्वीकार ? मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत (सम्प्रदाय) को साक्षी के रूप में लाया जायेगा, जो इस बात की गवाही देंगे कि तेरे पैग़म्बरों (संदेशवाहकों) ने तेरा संदेश अपनी अपनी जातियों अथवा समुदाय को पहुँचा दिया था, जैसाकि तूने पवित्र क़ुरआन द्वारा इन बातों पर सूचित किया था।

[2]अर्थात किसी के प्रतिफल तथा पुण्य में कमी नहीं होगी तथा न किसी को उसके अपराध से अधिक दण्ड दिया जायेगा।

[3]अर्थात उसको किसी लेखक, मुन्शी तथा गवाह की आवश्यकता नहीं। यह कर्म-पत्र एवं गवाह मात्र तर्क के लिये तथा बहाने को दूर करने के लिए होंगे।

[4](ज़ुमर) زُمَرٌ यह زَمْرٌ (ज़म्र) से बना है जिसका अर्थ स्वर है। प्रत्येक गिरोह अथवा समूह में शोर तथा आवाज़ें अवश्य होती हैं। इसलिए यह गिरोह तथा समूह के लिए भी प्रयुक्त होता है। अभिप्राय यह है कि काफ़िरों को नरक की ओर समूहों में ले जाया जायेगा, एक के पीछे एक गिरोह। इसके अतिरिक्त, इन्हें मार-पीटकर जानवरों के रेवड़ के समान हंकाया जायेगा। जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया ﴿يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا﴾ (अत्तूर-१३) अर्थात "उन्हें नरक की ओर कठोरता से ढकेला जायेगा।"

[5]अर्थात उनके पहुँचते ही तुरन्त नरक के सातों द्वार खोल दिये जायेंगे ताकि यातना में विलम्ब न हो।

The Ummah Technology Mission

مِّنكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَلَٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٧١﴾

कि क्या तुम्हारे पास तुम में से रसूल (संदेशवाहक) नहीं आये थे ? जो तुम पर तुम्हारे प्रभु की आयतें पढ़ते थे तथा तुम्हें इस दिन की भेंट से सावधान करते थे, ये उत्तर देंगे कि हाँ, क्यों नहीं ! [1] परन्तु यातना का आदेश काफ़िरों पर सिद्ध हो गया ।[2]

قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٢﴾

(७२) कहा जायेगा कि अब नरक के द्वारों में प्रवेश कर जाओ जहाँ वे सदैव रहेंगे, बस अवज्ञाकारियों का ठिकाना अत्यन्त बुरा है ।

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ

(७३) तथा जो लोग अपने प्रभु से डरते थे उनके गुट के गुट स्वर्ग की ओर भेज दिये जायेंगे, [3] यहाँ तक कि जब उसके निकट आ जायेंगे तथा द्वार खोल दिये जायेंगे[4] तथा वहाँ

---

[1]अर्थात जिस प्रकार दुनिया में वाद-विवाद तथा तर्क-वितर्क करते थे वहाँ सब कुछ आँखों के आगे आ जायेगा । वाद-विवाद का अवसर ही नहीं रह जायेगा । अतएव स्वीकार किये विना कोई चारा नहीं होगा ।

[2]अर्थात हमने पैग़म्बरों को झुठलाया तथा उनका विरोध किया उस दुर्भाग्य के कारण जिसके हम पात्र थे, जब कि हमने सत्य से पलायन करके असत्य को अपनाया । इस विषय को सूरः *अल-मुल्क* ८ से १० तक में अधिक स्पष्टता से वर्णन किया गया है ।

[3]ईमानवाले तथा संयमी भी गिरोहों के रूप में स्वर्ग की ओर ले जाये जायेंगे । पहले मुक़र्रबीन (समीपस्थ) फिर अबरार (सदाचारी), इसी प्रकार क्रमानुसार प्रत्येक गिरोह समान श्रेणी के लोगों पर सम्मिलित होगा, जैसे अम्बिया अम्बिया के साथ, सिद्दीक़ीन (सत्यवादी) तथा शहीद अपने जैसों के साथ तथा विद्वान अपने जैसे विद्वानों के साथ, अर्थात प्रत्येक प्रकार अपने ही प्रकार अथवा समान के संग होगा । (इब्ने कसीर)

[4]हदीस में आता है कि स्वर्ग के आठ द्वार हैं । उनमें एक का नाम 'रय्यान' है जिससे केवल व्रत रखने वाले (रोज़ेदार) प्रवेश करेंगे (सहीह बुख़ारी न॰ २२५७, मुस्लिम न॰ ८०८) । इसी प्रकार अन्य द्वारों के भी नाम होंगे, जैसे नमाज़ का द्वार, दान का द्वार, जिहाद (धर्मयुद्ध) का द्वार आदि (सहीह बुखारी, किताबुस सेयाम, मुस्लिम-किताबुज ज़कात) । द्वार की चौड़ाई चालीस वर्ष की दूरी के बराबर होगी, फिर भी वे भरे हुए होंगे । (सहीह मुस्लिम किताबुज़ ज़ोहद) सबसे पहले स्वर्ग का दरवाज़ा खटखटाने वाले नबी सल्लल्लाहु

The Ummah Technology Mission

عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَٰلِدِينَ ﴿٧٣﴾

के रक्षक उनसे कहेंगे कि तुम पर सलाम हो, तुम प्रसन्न रहो ! बस तुम इनमें सदैव के लिए चले जाओ।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ ۖ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَٰمِلِينَ ﴿٧٤﴾

(७४) यह कहेंगे कि अल्लाह का धन्य है जिसने अपना वचन पूरा किया तथा हमें इस धरती का उत्तराधिकारी बना दिया कि स्वर्ग में जहाँ चाहें निवास करें, तो सत्कर्म करने वालों का क्या ही उत्तम बदला है !

وَتَرَى الْمَلَٰٓئِكَةَ حَآفِّينَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَٰلَمِينَ ﴿٧٥﴾

(७५) तथा तू फ़रिश्तों को अल्लाह के अर्श के चारों ओर चक्र बनाये हुए अपने प्रभु की प्रशंसा तथा तस्बीह करते हुए देखेगा,[1] तथा उनमें न्यायपूर्ण निर्णय किया जायेगा तथा कह दिया जायेगा कि समस्त प्रशंसायें अल्लाह ही के

अलैहि वसल्लम होंगे। (मुस्लिम किताबुल ईमान, बाबु अना अव्वलुन नासे यशफऊ) स्वर्ग में सर्वप्रथम प्रवेश करने वाले गिरोह के मुखड़े पूर्णिमा के चाँद के समान तथा दूसरे गिरोह के आकश में प्रकाशमान तारों में से अति प्रकाशमान तारों के समान चमकते होंगे। स्वर्ग में वह मल-मूत्र तथा थूक एवं कफ से पवित्र होंगे। उनकी कंघियाँ सोने की तथा पसीना कस्तूरी होगा। उनकी अंगेठियों में सुगंधित लकड़ी होगी। उनकी पत्नियाँ हूरे ईन (बड़ी आँखों वाली) होंगी। उनका आकार आदम के समान साठ हाथ का होगा। (सहीह बुख़ारी अव्वलो किताबिल अंबिया) सहीह बुख़ारी के एक वर्णन में है कि प्रत्येक ईमानवाले को दो पत्नियाँ मिलेंगी। उनकी शोभा एवं सौन्दर्य की यह स्थिति होगी कि उनकी पिंडली का गूदा माँस के पीछे से दिखाई पड़ेगा। (किताबु बदइल ख़ल्क बाबु मा जाअ फ़ी सिफ़तिल जन्नते) कुछ ने कहा है कि यह दो पत्नियाँ हूरों के अतिरिक्त दुनिया की नारियों में से होंगी। परन्तु ७२ हूरों वाला वर्णन प्रमाणानुसार सही नहीं, इसलिए प्रत्यक्षत: यही बात सही लगती है कि प्रत्येक स्वर्गवासी की हूरों समेत कम से कम दो पत्नियाँ होंगी। फिर भी وَلَهُم فِيهَا مَا يَشْتَهُونَ के अंर्तगत अधिक भी संभव हैं। واللہ أعلم (अधिक जानकारी के लिए देखिए फ़तहुल बारी उक्त अध्याय)

[1]अल्लाह के निर्णय के पश्चात जब ईमानवाले स्वर्ग में तथा काफ़िर एवं मुशरिक नरक में चले जायेंगे। आयत में उसके बाद का चित्रण किया गया है कि फ़रिश्ते अल्लाह के अर्श (आसन) को घेरे हुए अल्लाह की प्रशंसा एवं पवित्रतागान में लीन होंगे।

Ihe Ummah Technology Mission

लिए हैं जो सर्वलोक का पालनहार है।[1]

सूरतुल मोमिन-४०

سُوْرَةُ الْمُؤْمِن

सूर: मोमिन* मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें पच्चासी आयतें एवं नौ रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

حٰمٓ ①

(१) हा॰ मीम॰।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ②

(२) इस किताब का अवतरित करना[2] उस अल्लाह की ओर से है जो प्रभावशाली एवं सर्वज्ञाता है।[3]

غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ

(३) पापों को क्षमा करने वाला तथा क्षमा-याचना को स्वीकार करने वाला[4] घोर यातना वाला[5]

---

[1]यहाँ प्रशंसा को किसी एक वस्तु से सम्बंधित नहीं किया गया है जिससे विदित होता है कि प्रत्येक वस्तु (जो बोलती हो या बोलती न हो) के मुख पर अल्लाह की महिमा के गान होंगे।

*इस सूरह को सूरतुल ग़ाफ़िर तथा सूरतुत्तौल भी कहते हैं।

[2]या تنزيل अर्थ में है مُنَزَّل के, अर्थात अल्लाह की ओर से अवतरित है जिसमें झूठ नहीं।

[3]जो प्रभुत्वशाली है। उसकी शक्ति तथा प्रभुत्व के आगे कोई पंख नहीं मार सकता। عليم (ज्ञानी) है, उससे कोई कण तक गुप्त नहीं चाहे वह कितने ही स्थूल पर्दे में छिपा हो।

[4]पूर्व के पापों को क्षमा करने वाला तथा आगामी होने वाले आलस्य पर तोबा (क्षमा-याचना) स्वीकार करने वाला है। अथवा अपने मित्रों के पाप क्षमा करने वाला तथा काफ़िर एवं मुशरिक यदि क्षमा माँगें तो उनकी क्षमा स्वीकार करने वाला है।

[5]उनके लिये जो आख़िरत पर दुनिया को महत्व दें तथा दुष्टता एवं उद्दण्डता का मार्ग अपनायें। यह अल्लाह के इस कथन की भाँति ही है।

﴿ نَبِّئْ عِبَادِيْٓ أَنِّيْٓ أَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ وَأَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيْمُ ﴾

The Ummah Technology Mission

شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝٣

उपकार एवं सामर्थ्य वाला, [1] जिसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। उसी की ओर वापस लौटना है।

مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغُرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ۝٤

(४) अल्लाह (तआला) की आयतों में वही लोग झगड़ते हैं जो काफ़िर हैं [2] तो उन लोगों का नगरों में चलना-फिरना आपको धोखे में न डाल दे।[3]

"मेरे बन्दों को बता दो कि मैं क्षमाशील दयानिधि हूँ तथा मेरा दण्ड भी अति दुखदायी है।" (*अल-हिज्र*-४९,५०)

पवित्र क़ुरआन में अधिकांश स्थान पर यह दोनों गुण साथ-साथ वर्णित किये गये हैं ताकि इंसान भय तथा आशा के बीच रहे, क्योंकि मात्र भय इंसान को अल्लाह की दया एवं क्षमा से निराश कर सकता है तथा केवल आशा पापों पर उत्साहित कर देती है।

[1] طَوْلٌ का अर्थ वैभव तथा विस्तार है अर्थात वही वैभव एवं धन प्रदान करने वाला है। कुछ कहते हैं कि इसका अर्थ पुरस्कार तथा उपकार है, अर्थात अपने बंदों पर उपकार तथा उन्हें पुरस्कृत करने वाला है।

[2]इस झगड़े से अभिप्राय अनुचित तथा व्यर्थ का झगड़ा है जिसका उद्देश्य सत्य को झुठलाना तथा उसका खंडन है। अन्यथा जिस तर्क-वितर्क (बहस) का उद्देश्य सत्य का स्पष्टीकरण असत्य का खंडन तथा विरोधियों एवं आलोचना करने वालों की शंकाओ का निवारण हो, वह निन्दनीय नहीं अति प्रशंसनीय तथा उत्तम है। विद्वानों को तो इसके लिए बल दिया गया है,

﴿لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهُ﴾

"तुम लोगों के सामने इसका अवश्य वर्णन करो तथा इसे छिपाना नहीं।" (*आले-इमरान*-१८७)

अल्लाह की अवतरित की हुई किताब के तर्कों एवं प्रमाणों को छिपाना इतना घोर अपराध है कि उस पर विश्व की प्रत्येक वस्तु धिक्कार करती है। (*अल-बक़रः*-१५९)

[3]अर्थात यह काफ़िर एवं मुशरिक जो व्यवपार करते हैं तथा उसके लिए विभिन्न नगरों में आते जाते एवं भारी लाभ प्राप्त करते हैं, यह अपने कुफ़्र (अविश्वास) के कारण शीघ्र ही अल्लाह की पकड़ में आ जायेंगे। यह अवसर अवश्य दिये जा रहे हैं किन्तु उन्हें

The Imran Technology Mission

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَّالْاَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۖ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۢ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝٥

(५) उनसे पूर्व नूह के समुदाय ने तथा उनके पश्चात के दूसरे समुदायों ने भी झुठलाया था, तथा प्रत्येक समुदाय ने अपने रसूल को बन्दी बनाने का विचार किया [1] तथा असत्य के माध्यम से हठधर्मी की ताकि उनसे सत्य को नाश कर दें[2] बस मैंने उनको पकड़ लिया, तो मेरी ओर से कैसा दण्ड हुआ।[3]

وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝٦

(६) तथा इसी प्रकार आपके प्रभु का आदेश काफ़िरों पर सिद्ध हो गया कि वे नरकवासी हैं।[4]

اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا

(७) अर्श के उठाने वाले तथा उसके आस-पास के फ़रिश्ते अपने प्रभु की महिमागान प्रशंसा के साथ-साथ करते हैं तथा उस पर ईमान रखते हैं तथा ईमानवालों के लिए क्षमा-याचना करते हैं; (कहते हैं) कि हे हमारे प्रभु तूने प्रत्येक वस्तु को अपनी दया तथा ज्ञान से

वेकार नहीं छोड़ा जायेगा।

[1]ताकि उसे बंदी वा हत कर दें अथवा दण्ड दें।

[2]अर्थात अपने रसूलों से उन्होंने झगड़ा किया जिसका आशय सत्य में त्रुटि निकालना तथा उसे निर्बल करना था।

[3]तो मैंने इन अनृत के पक्षपातियों को अपने प्रकोप की पकड़ में ले लिया। फिर तुम देख लो कि उसके लिए मेरा प्रकोप किस प्रकार आया, कैसे उन्हें ग़लत अक्षर की भाँति मिटा दिया गया अथवा उन्हें शिक्षा का प्रतीक बना दिया गया।

[4]इससे उद्देश्य इस बात का स्पष्टीकरण करना है कि जैसे विगत समुदायों पर तेरे प्रभु का प्रकोप सिद्ध हुआ तथा नाश कर दिये गये, यदि यह मक्का के नागरिक भी तुझे झुठलाने तथा विरोध करने से न रूके तथा असत्य विवाद को न छोड़ा तो यह भी इसी प्रकार अल्लाह के प्रकोप में पकड़ लिये जायेंगे, फिर कोई उन्हें बचाने वाला न होगा।

The Ummah Technology Mission

فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝٧

घेर रखा है, तो तू उन्हें क्षमा कर दे जो क्षमा माँगें तथा तेरे मार्ग का अनुसरण करें तथा तू उन्हें नरक की यातना से भी सुरक्षित रख।[1]

رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ِالَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَ ذُرِّيّٰتِهِمْ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٨

(८) हे हमारे प्रभु ! तू उन्हें नित्य रहने वाले स्वर्ग में ले जा, जिनका तूने उनको वचन दिया है, तथा उनके पूर्वजों तथा पत्नियों एवं सन्तानों में से (भी) उन सबको जो सदाचारी हैं।[2] वस्तुत: तू प्रभावशाली एवं तत्वज्ञ है।

وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ۭ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ

(९) तथा उन्हें कुकर्मों से भी सुरक्षित रख,[3] (सत्य तो यह है कि) उस दिन तूने जिसे

---

[1]इसमें निकटता प्राप्त फ़रिश्तों के एक विशेष गिरोह की चर्चा है तथा वे जो कुछ करते हैं, उसका स्पष्टीकरण है। यह वह फ़रिश्ते हैं जो अर्श उठाने वाले हैं। तथा वह फ़रिश्ते हैं जो अर्श के चारों ओर हैं। उनका एक काम यह है कि वह अल्लाह की तस्बीह तथा पवित्रतागान करते हैं, अर्थात दोषों से उसकी स्वच्छता तथा उसके लिये गुणों एवं निपुणता की सिद्धि तथा उसके आगे विवशता तथा विनम्रता (ईमान) का प्रदर्शन करते हैं। दूसरा काम उनका यह है कि ईमानवालों के लिए क्षमा की प्रार्थना करते हैं। कहा जाता है कि अर्श उठाने वाले फ़रिश्ते चार हैं किन्तु प्रलय के दिन उनकी संख्या आठ होगी। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात इन सबको स्वर्ग में एकत्रित कर दे ताकि एक-दूसरे को देखकर वे प्रसन्न हों। इस विषय को दूसरे स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया गया है :

﴿ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَٱتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم بِإِيمَٰنٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ أَلَتْنَٰهُم مِّنْ عَمَلِهِم مِّن شَىْءٍ ﴾

"वह लोग जो ईमान लाये तथा उन्हीं का अनुगमन उनकी संतान ने ईमान के साथ किया। हमने उनके साथ उनकी संतान को मिला दिया तथा हमने उनके कर्मों में से कुछ कम नहीं किया।" (सूर: अत्तूर-२१)

अर्थात सबको स्वर्ग में इस प्रकार समान श्रेणी दे दिया कि नीच को भी ऊँचे का पद प्रदान कर दिया। यह नहीं किया कि उच्च पद में कमी करके उन्हें नीचे स्थान पर ले आये अपितु नीचे को उठाकर ऊँचा कर दिया तथा उसके कर्म की कमी को अपनी कृपा तथा दया से पूरा कर दिया।

[3]यहाँ سيئات से अभिप्राय यातनायें हैं, अथवा फिर उत्तर लुप्त है, अर्थात उन्हें आख़िरत (परलोक) की यातनाओं से अथवा बुराईयों के प्रतिकार से बचाना।

The Ummah Technology Mission

يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ ۚ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝٩

कुकर्मों (अशुभ) से बचा लिया उस पर तूने दया कर दी, तथा सबसे बड़ी सफलता तो यही है।[1]

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللَّهِ أَكْبَرُ مِن مَّقْتِكُمْ أَنفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ ۝١٠

(१०) नि:संदेह जिन्होंने कुफ़्र किया उन्हें यह आवाज़ दी जायेगी कि निश्चय अल्लाह का तुम पर क्रोधित होना उससे बहुत अधिक है, जो तुम क्रोधित होते थे अपने मन से जब तुम ईमान की ओर बुलाये जाते थे, फिर कुफ़्र करने लगते थे।[2]

قَالُوا رَبَّنَا أَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ

(११) (वे) कहेंगे कि हे हमारे प्रभु ! तूने हमें दोबारा मारा तथा दोबारा ही जीवित किया[3] अब हम अपने पापों को स्वीकार

---

[1]अर्थात आख़िरत (प्रलय) की यातना से बच जाना तथा स्वर्ग में प्रवेश पा जाना यही सबसे बड़ी सफलता है। क्योंकि इस जैसी सफलता कोई नहीं तथा इसके समतुल्य कोई मोक्ष नहीं। इन आयतों में ईमानवालों के लिए दो शुभ सूचनायें हैं, एक तो यह कि फ़रिश्ते उनके लिए परोक्ष रूप से प्रार्थना करते हैं जिसकी हदीस में प्रधानता आयी है। दूसरी यह कि ईमान वालों के परिवार स्वर्ग में एकत्रित हो जायेंगे। "अल्लाह हमें उनमें कर दे जिनको उनके पुनीत पूर्वजों के साथ मिलायेगा।"

[2]مَقْت (मक्त) घोर क्रोध को कहते हैं। नरकवासी स्वयं को नरक में झुलसते देखकर अति क्रोधित होंगे। उस समय उनसे कहा जायेगा कि संसार में जब तुम्हें ईमान का आमन्त्रण दिया जाता था तथा तुम इंकार करते थे तो अल्लाह तआला इससे कहीं अधिक तुम पर क्रोधित होता था जितने आज तुम स्वयं अपने ऊपर क्रोधित हो रहे हो। यह अल्लाह के उस क्रोध का ही परिणाम है कि आज तुम नरक में हो।

[3]बहुसंख्यक भाष्यकारों की व्याख्या के अनुसार दो मौतों में से प्रथम मौत तो वह वीर्य है जो पिता की पीठ में होता है अर्थात उसके स्तित्व से पूर्व उसके नास्तित्व को मौत कहा है, तथा दूसरी मौत वह है जब इन्सान जीवन बिताकर प्राप्त करता है जिसके बाद समाधि में गाड़ दिया जाता है। दो जीवनों में से प्रथम यह सांसारिक जीवन है जिसका आरम्भ जन्म से तथा अन्त निधन पर होता है। तथा दूसरा जीवन वह है जो प्रलय के दिन क़ब्रों से उठने के पश्चात प्राप्त होगा। इन्हीं दो मौतों तथा दो जीवनों की चर्चा ﴿وَكُنتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ﴾ (अल-बक़र:-२८) में की गई है।

The Ummah Technology Mission

إِلَىٰ خُرُوجٍ مِّن سَبِيلٍ ﴿١١﴾

करते हैं [1] तो क्या अब कोई मार्ग निकलने का भी है ?[2]

ذَٰلِكُم بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ ۖ وَإِن يُشْرَكْ بِهِ تُؤْمِنُوا ۚ فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ﴿١٢﴾

(१२) यह (यातना) तुम्हें इसलिए है कि जब केवल अकेले अल्लाह की ओर बुलाया जाता तो तुम अस्वीकार कर देते थे; तथा यदि उसके साथ किसी को सम्मिलित कर लिया जाता था तो तुम स्वीकार कर लेते थे।[3] तो अब निर्णय अल्लाह सर्वोपरि एवं महान का ही है।[4]

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُم مِّنَ السَّمَاءِ رِزْقًا ۚ وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَن يُنِيبُ ﴿١٣﴾

(१३) वही है जो तुम्हें अपनी निशानियाँ (चिन्ह) दिखाता है तथा तुम्हारे लिए आकाश से जीविका उतारता है।[5] शिक्षा तो वही ग्रहण करते हैं जो (अल्लाह की ओर) झुकते हैं।[6]

---

[1]अर्थात नरक में स्वीकार करेंगे, जहाँ स्वीकार का कोई लाभ न होगा तथा वहाँ लज्जित होंगे जहाँ पश्चाताप का कोई मूल्य न होगा।

[2]यह वही इच्छा है जिसकी चर्चा पवित्र क़ुरआन के अनेक स्थान पर की गई है कि हमें फिर संसार में भेज दिया जाये ताकि हम पुण्य के कर्म करके आयें।

[3]यह उनके नरक से न निकाले जाने का कारण बताया है कि तुम संसार में अल्लाह की तौहीद (एकता) का इंकार करते थे तथा शिर्क तुम्हें रूचिकर था। अत: अब नरक की स्थायी यातना के सिवाय तुम्हारे लिये कुछ नहीं।

[4]उसी एक अल्लाह का आदेश है कि अब तुम्हारे लिये नरक की यातना सदा के लिए है तथा उससे निकलने के लिये कोई मार्ग नहीं।

[5]अथार्त पानी जो तुम्हारी जीविका का माध्यम है। यहाँ अल्लाह तआला ने निशानियों के प्रकट करने को जीविका उतारने के साथ मिला दिया है। इसलिए कि सामर्थ्य के चिन्हों का दिखाना धर्मों का मूल है तथा अजीविकायें शरीरों की मूल हैं। इस प्रकार यहाँ दोनों आधारों को एकत्र कर दिया गया है। (फ़तहुल क़दीर)

[6]अल्लाह के आज्ञापालन की ओर जिससे उनके दिलों में आख़िरत (परलोक) का भय जागृत होता है तथा अल्लाह के आदेशों तथा अनिवार्य कर्तव्यों का पालन करते हैं।

The Ummah Technology Mission

فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾

(१४) तुम अल्लाह को पुकारते रहो उसके लिए धर्म को विशुद्ध करके यद्यपि काफ़िर बुरा मानें।[1]

رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ يُلْقِي الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿١٥﴾

(१५) उच्च पदों वाला अर्श का स्वामी; वह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है प्रकाशना अवतरित करता है[2] ताकि वह भेंट के दिन से डराये।

يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ۚ لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۭ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۭ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٦﴾

(१६) जिस दिन (सब) लोग प्रकट हो जायेंगे,[3] उनकी कोई चीज़ अल्लाह से छिपी न रहेगी। आज किस का राज्य है ?[4] मात्र अल्लाह एक एवं प्रभुत्वशाली का।[5]

اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ ۭ

(१७) आज प्रत्येक प्राण को उसकी करनी का फल दिया जायेगा, आज (किसी प्रकार का)

---

[1]अर्थात जब सब कुछ अल्लाह अकेला ही करने वाला है तो काफ़िरों को कितना ही बुरा लगे केवल उसी एक अल्लाह को पुकारो उसके लिए इबादत तथा आज्ञापालन को विशुद्ध करते हुए।

[2] رُوحٌ (आत्मा) से अभिप्राय प्रकाशना (वह्यी) है जो बन्दों ही में से किसी को रिसालत (ईशदूतत्व) के लिए चयन कर अवतरित करता है। प्रकाशना (वह्यी) को रूह (आत्मा) इसलिए कहा गया है कि जिस प्रकार रूह में मानव जीवन के स्तित्व एवं सुरक्षा का भेद छिपा है, उसी प्रकार वह्यी से भी उन इन्सानी दिलों में जीवन की लहर दौड़ जाती है जो पहले कुफ़्र तथा शिर्क के कारण मृत होते हैं।

[3]अर्थात जीवित होकर क़ब्रों से बाहर निकल खड़े होंगे।

[4]यह क़यामत के दिन अल्लाह तआला (परमेश्वर) पूछेगा जब सभी इन्सान उसके आगे महशर के मैदान (एकत्र होने के स्थान) में खड़े होंगे। अल्लाह तआला धरती को अपनी मुट्ठी तथा आकाश को अपने दायें हाथ में लपेट लेगा तथा कहेगा, "राजा मैं हूँ, धरती के राजा कहाँ हैं ?" (सहीह बुख़ारी, सूरः ज़ुमर)

[5]जब कोई नहीं बोलेगा तो यह उत्तर अल्लाह तआला स्वयं ही देगा। कुछ कहते हैं कि अल्लाह के आदेशानुसार एक फ़रिश्ता एलान करेगा जिसके साथ ही सभी काफ़िर तथा मुसलमान एक स्वर में यही उत्तर देंगे। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٧﴾

अत्याचार नहीं, नि:संदेह अल्लाह (तआला) अतिशीघ्र हिसाब करने वाला है।[1]

وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاظِمِينَ ۚ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ﴿١٨﴾

(१८) तथा उन्हें अति निकट आने वाली[2] (क़यामत) से सावधान कर दें जबकि दिल गले तक पहुँच जायेंगे तथा सब शान्त (चुप) होंगे।[3] अत्याचारियों का कोई संरक्षक मित्र होगा न सिफ़ारिश करने वाला कि जिसकी बात मानी जायेगी।

يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ﴿١٩﴾

(१९) वह आँखों की बेईमानी को तथा छाती की गुप्त बातों को (भली-भाँति) जानता है।[4]

وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ ۗ

(२०) तथा अल्लाह (तआला) ठीक-ठीक निर्णय कर देगा, और उसके अतिरिक्त जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे किसी बात का भी निर्णय

---

[1] इसलिए कि उसे बंदों की भाँति सोच-विचार की आवश्यकता न होगी।

[2] آزِفَةٌ (आज़िफ़:) का अर्थ है समीप आने वाली। यह क़यामत (प्रलय) का नाम है, इसलिए की वह भी समीप आने वाली है।

[3] अर्थात उस दिन भय के कारण दिल अपने स्थान से हट जायेंगे كَاظِمِينَ (काज़िमीन) अर्थात शोक से भरे हुए अथवा रोते हुए, या चुप, इसके यह तीनों अर्थ किये गये हैं।

[4] इसमें अल्लाह तआला के पूर्ण ज्ञान का वर्णन है कि उसे सभी वस्तुओं का ज्ञान है, छोटी हो अथवा बड़ी, सूक्ष्म हो अथवा स्थूल, उच्च श्रेणी की हो या निम्न श्रेणी की। इसलिए इन्सान को चाहिए कि उसके ज्ञान तथा सर्वज्ञता की यह स्थिति है तो उसकी अवज्ञा से बचे तथा सही अर्थों में उसका भय अपने भीतर पैदा करे। आँखों की बेईमानी चोरी से देखना है, जैसे रास्ता चलते किसी सुंदरी को कंखियों से देखना। सीनों की बातों में वे शंसय भी आ जाते हैं जो इन्सान के मन में पैदा होती रहती हैं। वह जब तक शंसय ही रहते हैं अर्थात एक क्षण के लिये आते-जाते रहते हैं तब तक तो वह पकड़ के योग्य नहीं होंगे किन्तु वह जब संकल्प का रूप धारण कर लें तो फिर उन पर पकड़ हो सकती है, चाहे उन्हें करने का अवसर इन्सान को मिले अथवा न मिले।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿٢٠﴾

नहीं कर सकते, [1] वस्तुत: अल्लाह तआला भली-भाँति सुनने वाला तथा भली-भाँति देखने वाला है।

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۖ وَمَا كَانَ لَهُم مِّنَ اللَّهِ مِن وَاقٍ ﴿٢١﴾

(२१) क्या यह लोग धरती पर चले-फिरे नहीं कि देखते कि जो लोग इनसे पूर्व थे उनका परिणाम कैसा कुछ हुआ ? वे शक्ति एवं बल तथा धरती पर अपनी स्मृतियों के आधार पर इनकी अपेक्षा अत्याधिक थे, फिर भी अल्लाह ने उन्हें उनके पापों के कारण पकड़ लिया, तथा कोई न हुआ जो उन्हें अल्लाह की यातनाओं से बचा लेता।[2]

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَت تَّأْتِيهِمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ ۖ

(२२) यह इस कारण कि उनके पास उनके पैग़म्बर चमत्कार ले-ले कर आते थे तो वे अस्वीकार कर देते थे, [3] तो अल्लाह उन्हें पकड़

---

[1]इसलिए कि न उन्हें किसी वस्तु का ज्ञान है न सामर्थ्य, वह निश्चेत भी हैं तथा असमर्थ भी, जबकि निर्णय के लिए ज्ञान तथा अधिकार दोनों की आवश्यकता है तथा यह दोनों गुण मात्र अल्लाह के पास हैं। अत: मात्र उसी को यह अधिकार पहुँचता है कि वह निर्णय करे तथा वह वस्तुत: सत्य के साथ निर्णय करेगा क्योंकि न उसे किसी का भय होगा न किसी से अभिलाषा तथा लालच।

[2]विगत आयतों में आख़िरत (परलोक) कि स्थितियों का वर्णन था। अब उन्हें संसार की स्थितियों से सावधान किया जा रहा है कि यह लोग तनिक धरती में चल-फिर कर उन जातियों का परिणाम देखें जो इनसे पहले इस अपराध में नाश की गईं, जबकि विगत जातियाँ शक्ति एवं स्मृतियों में इनसे कहीं बढ़ कर थीं। परन्तु जब उन पर अल्लाह का प्रकोप आया तो उन्हें कोई नहीं बचा सका। इसी प्रकार तुम पर भी प्रकोप आ सकता है तथा यदि यह आ गया तो फिर तुम्हारा कोई संरक्षक तथा सहायक न होगा।

[3]यह उनके विनाश के कारण का वर्णन है, जो है अल्लाह की आयतों का इंकार तथा पैग़म्बरों को झुठलाना। अब नबूअत तथा रिसालत (दूतत्व) का क्रम समाप्त हो गया है फिर भी विश्व एवं प्राणियों में अल्लाह की असंख्य निशानियाँ बिखरी पड़ी हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा-दिक्षा तथा आमन्त्रण एवं उपदेश द्वारा विद्वान एवं सत्य के प्रचारक

The Ummah Technology Mission

إِنَّهُۥ قَوِيٌّ شَدِيدُ ٱلْعِقَابِ ﴿٢٢﴾

लेता था । नि:संदेह वह अत्यन्त शक्तिशाली तथा कठोर यातनाओं वाला है ।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِـَٔايَٰتِنَا وَسُلْطَٰنٍ مُّبِينٍ ﴿٢٣﴾

(२३) तथा हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) को अपनी आयतों (चिन्हों) तथा स्पष्ट प्रमाणों के साथ भेजा ।[1]

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَٰمَٰنَ وَقَٰرُونَ فَقَالُوا۟ سَٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٢٤﴾

(२४) फ़िरऔन तथा हामान एवं क़ारून की ओर तो उन्होंने कहा कि (यह तो) जादूगर एवं झूठा है ।[2]

فَلَمَّا جَآءَهُم بِٱلْحَقِّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا۟

(२५) तो जब उनके पास मूसा (अलैहिस्सलाम) हमारी ओर से सत्य (धर्म) लेकर आये तो

उनके स्पष्टीकरण तथा चिन्ह बताने के लिए विद्यमान हैं । अत: आज भी जो अल्लाह की आयतों से मुँह फेरेगा तथा धर्म एवं धर्म-विधान से विमुख होगा उसका दुष्परिणाम रिसालत का इंकार करने तथा झुठलाने वालों से भिन्न नहीं होगा ।

[1]आयात से अभिप्राय वह नौ निशानियाँ हैं जिनका वर्णन पहले किया जा चुका है, अथवा लाठी तथा ज्योर्तिमय हाथ वाले दो बड़े खुले चमत्कार हैं । سُلطان مبين से अभिप्राय शक्तिशाली प्रमाण तथा खुली दलीलें (तर्क) हैं जिनका कोई उत्तर संभव नहीं था सिवाय ढीटाई तथा निर्लज्जा के ।

[2]फ़िरऔन मिश्र (इजिप्ट) के निवासी किब्त नामक जाति का राजा था, बड़ा क्रूर तथा निर्दयी तथा महा पालनहार होने का दावेदार । उसने आदरणीय मूसा की जाति को दास बना रखा था तथा उन पर अनेक प्रकार के अत्याचार करता था, जैसाकि क़ुरआन के अनेक स्थानों पर उसका विवरण है । हामान, फ़िरऔन का मंत्री और विशेष परामर्श देने वाला था तथा क़ारून समय का बड़ा धनी पुरूष था । उन सभों ने पहले लोगों की भाँति ईशदूत मूसा को झुठलाया तथा उन्हें जादूगर एवं मिथ्यावादी कहा । जैसे दूसरे स्थान पर कहा गया :

﴿ كَذَٰلِكَ مَآ أَتَى ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا قَالُوا۟ سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ * أَتَوَاصَوْا۟ بِهِۦ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴾

"अर्थात इसी प्रकार जो लोग उनसे पूर्व गुज़रे हैं, उन के पास जो भी संदेशवाहक आया उन्होंने कह दिया कि यह जादूगर है अथवा पागल है । क्या यह उस बात की एक-दूसरे को वसीयत करते गये हैं ? नहीं, बल्कि यह सभी सीमा उल्लंघन करने वाले हैं ।" (*अज़्ज़ारियात*-५२,५३)

The Ummah Technology Mission

اقْتُلُوْٓا اَبْنَآءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ وَاسْتَحْيُوْا نِسَآءَهُمْ ؕ وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿٢٥﴾

उन्होंने कहा कि इसके साथ जो ईमानवाले हैं उनके पुत्रों को तो मार डालो एवं पुत्रियों को जीवित रखो।[1] तथा काफ़िरों का जो बहाना है वह त्रुटि पर ही है।[2]

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِي الْاَرْضِ الْفَسَادَ ﴿٢٦﴾

(२६) तथा फ़िरऔन ने कहा कि मुझे छोड़ो कि मैं मूसा को मार डालूँ[3] तथा इसे चाहिए कि अपने प्रभु को पुकारे,[4] मुझे तो डर है कि यह कहीं तुम्हारा धर्म न बदल डाले अथवा देश में कोई बहुत बड़ा उपद्रव न उत्पन्न कर दे।[5]

---

[1]फ़िरऔन यह काम पहले ही कर रहा था ताकि वह शिशु पैदा ही न हो जो ज्योतिषियों की भविष्यवाणी के अनुसार उसके राज्य के लिए खतरा हो सकता था। यह दोबारा आदेश उसने आदरणीय मूसा के अपमान एवं अवहेलना के दिया तथा इसलिए भी कि मूसा की जाति, इस्राईल की संतान मूसा को अपने लिये विपदा एवं अशुभ समझे, जैसाकि वास्तव में उन्होंने कहा, ﴿أُوذِيْنَا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا﴾ "हे मूसा, तेरे आने से पूर्व भी हम यातना में रहे तथा तेरे बाद भी हमारी यही दशा है।" (*अल-आराफ़*-१२९)

[2]अर्थात उससे वह जो लक्ष्य प्राप्त करना चाहता था कि इस्राईल की संतान की शक्ति में अधिकता तथा उसके मान में कमी न हो, यह उसे प्राप्त नहीं हुआ अपितु अल्लाह ने फ़िरऔन तथा उसकी जाति ही को डूबो दिया तथा इस्राईल की संतान को शुभ भूमि का स्वामी बना दिया।

[3]यह संभवत: फ़िरऔन ने उन लोगों से कहा जो उसे मूसा अलैहिस्सलाम की हत्या से रोकते थे।

[4]यह फ़िरऔन की अकड़ का प्रदर्शन है कि मैं देखूँगा उसका प्रभु उसे कैसे बचाता है, उसे पुकार कर देख ले। अथवा प्रभु ही का इंकार है कि उसका कौन सा प्रभु है जो बचा लेगा, क्योंकि वह प्रभु तो स्वयं ही को कहता था।

[5]अर्थात अल्लाह के सिवाय अन्य की इबादत से हटाकर अल्लाह की इबादत में न लगा दे अथवा उसके कारण उपद्रव न उत्पन्न हो जाये। अभिप्राय यह था कि यदि उसकी बात मेरी जाति के कुछ लोगों ने मान ली तो जो नहीं मानते उनसे तर्क-वितर्क करेंगे, जिससे उनके बीच लड़ाई-झगड़ा होगा जो उपद्रव का कारण बनेगा। इस प्रकार तौहीद

The Ummah Technology Mission

وَقَالَ مُوسٰٓى اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा कि मैं अपने तथा तुम्हारे प्रभु की शरण में आता हूँ प्रत्येक उस अहंकारी व्यक्ति (की बुराई) से जो हिसाब (लेखा-जोखा) के दिन पर ईमान नहीं रखता।[1]

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ۭ وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾

(२८) तथा एक ईमानवाले व्यक्ति ने जो फ़िरऔन के परिवार में से था तथा अपना ईमान छिपाये हुए था, कहा कि क्या तुम एक व्यक्ति की मात्र इस बात पर हत्या करते हो कि वह कहता है कि मेरा प्रभु अल्लाह है तथा तुम्हारे प्रभु की ओर से स्पष्ट प्रमाण लेकर आया है,[2] यदि वह झूठा है तो उसका झूठ उसी पर है तथा यदि सच्चा है तो वह जिन (यातनाओं) का तुमको वचन दे रहा है उसमें से कोई न कोई तुम पर आ पड़ेगा।[3] अल्लाह (तआला)

(एकेश्वरवाद) के आमंत्रण को उस ने उपद्रव का कारण बताया जबकि उपद्रवी वह स्वयं था, क्योंकि अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की उपासना ही उपद्रव का मूल कारण है।

[1]ईशदूत मूसा अलैहिस्सलाम को जब यह पता लगा कि फ़िरऔन मुझे हत कर देना चाहता है तो उन्होंने उसकी बुराई से बचने के लिए अल्लाह से प्रार्थना की। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब शत्रु से भय होता तो यह दुआ (प्रार्थना) करते।

«اللَّهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِي نُحُورِهِمْ ونَعُوذُ بِكَ مِنْ شُرُورِهِمْ».

"हे अल्लाह ! हम तुझको उनके मुक़ाबिले में करते हैं तथा उनकी उद्दण्डता से तेरी शरण चाहते हैं।" (मुसनद अहमद ४\४१५)

[2]अर्थात यह अल्लाह के प्रभु होने पर यूँ ही ईमान नहीं रखता बल्कि उसके पास अपने इस सिद्धांत के स्पष्ट प्रमाण हैं।

[3]यह उसने न्यूनता के रूप में कहा कि यदि तुम उसके प्रमाणों से संतुष्ट नहीं हो तथा उसकी दावत (आमन्त्रण) तथा उसकी सच्चाई तुम पर स्पष्ट नहीं हुई तब भी समझ-बूझ तथा सतर्कता की बात यही है कि उसको उसकी अवस्था पर छोड़ दिया जाये तथा

The Ummah Technology Mission

उनको मार्गदर्शन नहीं करता जो सीमा उल्लंघन करने वाले तथा झूठे हों।[1]

يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ فِي الْاَرْضِ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ؕ قَالَ فِرْعَوْنُ مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى وَمَآ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿۲۹﴾

(२९) हे मेरे समुदाय के लोगो ! आज तो राज तुम्हारा है कि इस धरती पर तुम प्रभावशाली हो[2] परन्तु यदि अल्लाह (तआला) का प्रकोप हम पर आ गया, तो कौन हमारी सहायता करेगा ?[3] फ़िरऔन बोला कि मैं तो तुम्हें वही सलाह दे रहा हूँ जो स्वयं देख रहा हूँ तथा मैं तो तुम्हें भलाई का मार्ग ही बता रहा हूँ।[4]

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ

(३०) तथा उस ईमानवाले ने कहा कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! मुझे तो भय है कि तुम

उसे छेड़ा न जाये। यदि वह झूठा हो तो अल्लाह तआला स्वयं ही उसे इस झूठ का बदला संसार तथा परलोक में दे देगा। तथा यदि वह सच्चा है तथा तुमने उसे यातनायें दीं तो फिर निश्चय वह तुम्हें जिन प्रकोपों से डराता है, तुम पर उनमें से कोई प्रकोप आ सकता है।

[1]इसका अभिप्राय यह है कि यदि वह झूठा होता (जैसाकि तुम विश्वास दिलाते हो) तो अल्लाह उसे प्रमाणों तथा चमत्कारों से सुशोभित न करता, जबकि उसके पास यह चीजें मौजूद हैं। दूसरा अभिप्राय है कि यदि वह झूठा है तो अल्लाह तआला स्वयं ही उसे अपमानित तथा उसका सत्यनाश कर देगा। तुम्हें उसके विरोध में कुछ करने की आवश्यकता नहीं।

[2]अर्थात यह अल्लाह का तुम पर उपकार है कि तुमको धरती पर अधिपत्य प्रदान किया है। उसकी कृतज्ञता दिखाओ तथा उसके संदेष्टा को झुठला कर अल्लाह का क्रोध मोल न लो।

[3]यह सैनिक तथा फौजी तुम्हारे कुछ काम न आयेंगे, न अल्लाह के प्रकोप को ही टाल सकेंगे यदि वह आ गया। यहाँ तक उस ईमानवाले का कथन था जो ईमान छुपाये हुए था।

[4]फ़िरऔन ने अपने सांसारिक वैभव तथा प्रताप के कारण झूठ बोला तथा कहा कि मैं जो कुछ देख रहा हूँ वही तुम्हें बतला रहा हूँ तथा मेरा बताया हुआ मार्ग ही सही है, जबकि ऐसा नहीं था। ﴿وما أمرُ فرعونَ برَشيدٍ﴾ (हूद-९७)

The Ummah Technology Mission

عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْأَحْزَابِ ﴿٣٠﴾

पर भी वैसी ही दिन (यातना) न आये जो अन्य समुदायों पर आया।

مِثْلَ دَأْبِ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ مِن بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿٣١﴾

(३१) जैसे नूह के सम्प्रदाय तथा आद एवं समूद तथा उनके पश्चात वालों का (हाल हुआ)।[1] तथा अल्लाह अपने बंदों पर किसी प्रकार का अत्याचार करना नहीं चाहता।[2]

وَيَا قَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा हे मेरी जाति के लोगो ! मुझे तो तुम पर हाँक पुकार के दिन का भी भय है।[3]

يَوْمَ تُوَلُّونَ مُدْبِرِينَ ۖ مَا لَكُم مِّنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۗ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

(३३) जिस दिन तुम पीठ फेर कर लौटोगे,[4] तुम्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा; तथा जिसे अल्लाह भटका दे उसका मार्गदर्शक कोई नहीं।[5]

---

[1]यह बात उस ईमानवाले व्यक्ति ने समझाई तथा अपने समुदाय को पुनः डराया कि यदि अल्लाह के रसूल को झुठलाने पर हम अड़े रहे तो ख़तरा है कि विगत समुदायों की भाँति अल्लाह के प्रकोप की पकड़ में आ जायेंगे।

[2]अर्थात अल्लाह ने जिन्हें भी नाश किया उनके पापों के बदले में तथा रसूलों को झुठलाने तथा उनके विरोध के कारण ही किया। अन्यथा वह करूणाकारी दयालु प्रभु अपने बंदों पर अत्याचार का इरादा ही नहीं करता। सम्प्रदायों का विनाश प्रतिकार के नियम का अनिवार्य परिणाम है जिससे कोई समुदाय अथवा व्यक्ति अलग नहीं है।

[3]تَنَادِي (तनादी) का अर्थ एक-दूसरे को पुकारना है। क़यामत को يَوْمَ التناد (पुकारने का दिन) इसलिए कहा गया है कि उस दिन एक-दूसरे को पुकारेंगे। स्वर्गवासी नरकवासियों को तथा नरकवासी स्वर्गवासियों को पुकारेंगे। (*अल-आराफ़*-४८, ४९) कुछ कहते हैं कि मीज़ान (कर्मपत्र के तराज़ू) के पास एक फ़रिश्ता होगा। जिसकी नेकियों (पुण्य के कर्मों) का पलड़ा हलका होगा उसके दुर्भाग्य का वह फ़रिश्ता चीख़कर एलान करेगा। कुछ कहते हैं कि कर्मों के अनुसार लोगों को पुकारा जायेगा, जैसे स्वर्गवासियों को, हे स्वर्गवासियो ! तथा नरकवासियों को, हे नरकवासियो ! इब्ने कसीर कहते हैं कि इमाम बग़वी का यह कथन बहुत ही अच्छा है कि इन सभी बातों ही के कारण यह नाम रखा गया है।

[4]अर्थात موقف (मौक़फ़-मैदाने महशर) से नरक की ओर जाओगे अथवा हिसाब के बाद वहाँ से भागोगे।

[5]जो उसे सन्मार्ग दिखा सके अर्थात उस पर चला सके।

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ؕ حَتّٰۤى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ۖ ﴿۳۴﴾

(३४) तथा उससे पूर्व तुम्हारे पास यूसुफ़ निशानियाँ ले कर आये[1] फिर भी तुम उनकी लायी हुई निशानियों में शंका एवं सन्देह ही करते रहे,[2] यहाँ तक कि जब उनकी मृत्यु हो गयी[3] तो तुम कहने लगे कि इनके पश्चात तो अल्लाह किसी रसूल को भेजेगा ही नहीं, [4] इसी प्रकार अल्लाह भटकाता है प्रत्येक उस व्यक्ति को जो सीमा उल्लंघन करने वाला तथा शंका एवं संदेह करने वाला हो |[5]

الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ؕ كَبُرَ مَقْتًا

(३५) जो बिना किसी प्रमाण के जो उनके पास आया हो अल्लाह की आयतों के विषय में झगड़ते हैं, [6] अल्लाह के निकट एवं ईमानवालों के निकट

---

[1]अर्थात हे मिश्र के निवासियों ईशदूत मूसा से पहले इसी क्षेत्र में जिसमें तुम बस रहे हो, ईशदूत यूसुफ़ भी प्रमाणों तथा तर्कों के साथ आये थे जिसमें तुम्हारे पूर्वजों को ईमान की दावत दी गई थी | अर्थात جَآءَكُمْ (तुम्हारे पास आये) से तात्पर्य جاء إلى آبائكم (तुम्हारे पूर्वजों के पास आये) हैं |

[2]किन्तु तुम उस पर भी ईमान नहीं लाये तथा उनके आमंत्रण में शंका तथा सन्देह करते रहे |

[3]अर्थात ईशदूत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का निधन हो गया |

[4]तुम्हारी रीति प्रत्येक पैग़म्बर को झुठलाने तथा उनका विरोध करने की रही है | इसलिए समझते थे कि अब कोई रसूल नहीं आयेगा | भावार्थ यह है कि रसूल का आना अथवा न आना तुम्हारे लिए समान है | अथवा यह अभिप्राय है कि अब ऐसा पुरूषोत्तम कहाँ पैदा हो सकता है जो रिसालत (दूतत्व) से सम्मानित हो | मानो आदरणीय यूसुफ़ के निधन के बाद उनके महत्व का इक़रार था, तथा बहुत से लोग प्रत्येक महत्वपूर्ण इन्सान के निधन के पश्चात यही कहते हैं |

[5]अर्थात उस खुली पथभ्रष्टता के समान जिसमें तुम फंसे हो, अल्लाह तआला प्रत्येक उस व्यक्ति को भी कुमार्ग करता है जो बहुत अधिक पाप करता तथा अल्लाह के धर्म, उसकी तौहीद (एकता) तथा उसके वचनों एवं धमकियों में संदेह करता है |

[6]अल्लाह की ओर से अवतरित कोई प्रमाण उसके पास नहीं है | इसके उपरान्त भी अल्लाह की तौहीद एवं उसके आदेशों में झगड़ते हैं, जैसाकि प्रत्येक युग में अंधविश्वासियों का आचरण रहा है |

The Ummah Technology Mission

عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿٣٥﴾

यह तो अत्याधिक अप्रसन्नता की वस्तु है।[1] अल्लाह (तआला) इसी प्रकार प्रत्येक अहंकारी, अवज्ञा करने वाले व्यक्ति के दिल पर मोहर लगा देता है।[2]

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा फ़िरऔन ने कहा कि हे हामान, मेरे लिए एक उच्च अटारी बना[3] संभवत: मैं उन द्वारों तक पहुँच जाऊँ।

اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ؕ وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ﴿٣٧﴾

(३७) जो आकाश के द्वार हैं तथा मूसा के उपास्य (ईश्वर) को झाँक लूँ[4] तथा मुझको तो पूरा विश्वास है कि वह झूठा है,[5] तथा इसी प्रकार फ़िरऔन के कुकर्म उसे भले दिखाये गये[6] तथा मार्ग से रोक दिया गया,[7] तथा फ़िरऔन का (प्रत्येक) षड़यन्त्र विनाश में ही रहा।[8]

---

[1]अर्थात उनके दुराचार से अल्लाह तआला ही नाख़ुश नहीं होता अपितु ईमानवाले भी इसे अत्यन्त अप्रिय समझते हैं।

[2]अर्थात जिस प्रकार इन झगड़ालूओं के दिलों पर मुहर (मुद्रा) लगा दी गई है उसी प्रकार प्रत्येक उस व्यक्ति के दिल पर मोहर लगा दी जाती है जो अल्लाह की आयतों की तुलना में अभिमान तथा उद्दण्डता दिखाता है, जिसके पश्चात उन्हें कुकर्म, तथा बुराई दिखाई नहीं देती।

[3]यह फ़िरऔन की उद्दण्डता का वर्णन है। उसने अपने मंत्री हामान को एक ऊँचा भवन निर्माण करने का आदेश दिया ताकि उसके द्वारा वह आकाश के द्वारों तक पहुँच जाये। أسباب (अस्बाब) का अर्थ द्वार अथवा मार्ग है। विवरण के लिये देखिये (*अल-क़सस-२८*)

[4]अर्थात देखूँ कि आकाश पर वास्तव में कोई पूज्य है ?

[5]इस बात में कि आकाश पर अल्लाह है जो आकाशों तथा धरती का रचयिता तथा उनका व्यवस्थापक है अथवा इस बात में कि वह अल्लाह का रसूल है।

[6]अर्थात शैतान ने उसे इस प्रकार गुमराह (पथभ्रष्ट) किये रखा तथा उसके कुकर्म उसे अच्छे दिखाई देते रहे।

[7]अर्थात सत्य तथा सही मार्ग से उसे रोक दिया गया तथा वह पथभ्रष्टता की भूल-भूलैयों में भटकता रहा।

[8] تَبَابٍ (तबाब, क्षति, विनाश), अर्थात जो उपाय किया उसका परिणाम उसके पक्ष में

Free Ummah Technology Mission

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٣٨﴾

(३८) तथा उस ईमान वाले व्यक्ति ने कहा कि हे मेरे समुदाय (के लोगो) ! तुम (सब) मेरा अनुगमन करो, मैं पुण्य के मार्ग की ओर तुम्हारा मार्गदर्शन करूँगा ।[1]

يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۫ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾

(३९) हे मेरे गिरोह के लोगो ! यह साँसारिक जीवन नश्वर संसाधन है[2] (विश्वास करो कि शान्ति) एवं स्थाई घर तो आख़िरत ही है ।[3]

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾

(४०) जिसने पाप किया है, उसको तो बराबर का बदला ही है;[4] तथा जिसने पुण्य किया है चाहे वह पुरूष हो अथवा महिला तथा वह ईमानदार हो, तो ये लोग[5] स्वर्ग में जायेंगे तथा वहाँ असीम जीविका पायेंगे ।[6]

बुरा ही निकला तथा अन्ततः अपनी सेना समेत पानी में डूबा दिया गया ।

[1]फ़िरऔन की जाति में से ईमान लाने वाला फिर बोला तथा कहा कि दावा तो फ़िरऔन भी करता है कि मैं तुम्हें सीधे मार्ग पर चला रहा हूँ । किन्तु वास्तविकता यह है कि फ़िरऔन मार्ग से विचलित है । मैं जिस मार्ग के चिन्ह बता रहा हूँ वह सीधा मार्ग है, जिसकी ओर तुम्हें ईशदूत मूसा अलैहिस्सलाम आमन्त्रित कर रहे हैं ।

[2]जिसका जीवन कुछ दिन का है तथा वह भी आख़िरत (परलोक) की अपेक्षा प्रातः अथवा संध्या की एक घड़ी के बराबर है ।

[3]जिसका विलय तथा विनाश नहीं, न वहाँ से स्थानान्त्रण होगा । कोई नरक में जाये अथवा स्वर्ग में, सबका जीवन सदा के लिए होगा । एक सुख-सुविधा का जीवन, दूसरा दुर्भाग्य तथा यातना का जीवन । मृत्यु न नरकवासियों को आयेगी न स्वर्गवासियों को ।

[4]अर्थात बुराई के समान ही प्रतिकार होगा, अधिक नहीं तथा उसके अनुकूल ही यातना होगी जो न्याय तथा इंसाफ का दर्पण होगा ।

[5]अर्थात वह जो ईमानदार भी होंगे तथा अच्छे कर्मों के पालन करने वाले भी । उसका खुला अभिप्राय यह है कि सत्कर्म के बिना ईमान अथवा ईमान के बिना सत्कर्म का अल्लाह के निकट कोई मूल्य नहीं होगा । अल्लाह के पास सफलता के लिए ईमान के साथ सदाचार तथा सदाचार के साथ ईमान आवश्यक है ।

[6]अर्थात बिना अनुमान तथा हिसाब के अनुकम्पायें सुलभ होंगी जिनकी समाप्ति का भी

The Ummah Technology Mission

وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ﴿٤١﴾

(४१) तथा हे मेरी जाति के लोगो ! यह क्या बात है कि मैं तुम्हें मोक्ष की ओर बुला रहा हूँ,[1] तथा तुम मुझे नरक की ओर बुला रहे हो।[2]

تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ۡ وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ﴿٤٢﴾

(४२) तुम मुझे यह आमन्त्रण दे रहे हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ़्र करूँ तथा उसके साथ शिर्क करूँ जिसका कोई ज्ञान मुझे नहीं; तथा मैं तुम्हें प्रभावशाली, क्षमा करने वाले (उपास्य) की ओर आमन्त्रित कर रहा हूँ।[3]

لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا

(४३) यह निश्चित बात है[4] कि तुम मुझे जिसकी ओर आमन्त्रित कर रहे हो वह न तो संसार में पुकारने के योग्य है[5] तथा न

कोई भय नहीं होगा।

[1]तथा वह यह कि मात्र एक अल्लाह की उपासना करो जिसका कोई साझी नहीं तथा उसके रसूल को मानो जिसे उसने तुम्हारे मार्गदर्शन के लिए भेजा है।

[2]अर्थात तौहीद (एकेश्वरवाद) की जगह शिर्क (अनेकेश्वरवाद) का आमन्त्रण दे रहे हो जो मनुष्य को नरक में ले जाने वाला है जैसाकि आगामी आयत में स्पष्ट किया गया है।

[3] عَزِيْزٌ (प्रभुत्वशाली) जो काफ़िरों से बदला लेने तथा यातना देने पर समर्थ है। غَفَّارٌ (ग़फ़्फ़ार), अपने मानने वालों की ग़लतियों तथा भूल को क्षमा करने वाला तथा उन पर पर्दा डालने वाला। जबकि तुम जिनकी उपासना की ओर मुझको बुला रहे हो वह अति हीन तथा पतित हैं, न वे सुन सकते न उत्तर दे सकते हैं, किसी को लाभ पहुँचाने पर सामर्थ है न हानि पहुँचाने पर।

[4] حَرَمَ ل यह बात निश्चित है अथवा इसमें झूठ नहीं।

[5]अर्थात वह किसी की पुकार सुनने की योग्यता ही नहीं रखते कि किसी को लाभ पहुँचा सकें, अथवा ईश्वरतत्व (उपास्य) का अधिकार उन्हें प्राप्त हो। इस का लगभग वही भावार्थ है। जो इस आयत और इन जैसी अनेक आयात में वर्णन किया गया है।

﴿وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ﴾

(अल-अहक़ाफ़-५)

The Ummah Technology Mission

وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٤٣﴾

आख़िरत[1] में तथा यह (भी निश्चित बात है) कि हम सबका लौटना अल्लाह ही की ओर है[2] तथा सीमा से गुज़र जाने वाले नि:संदेह नरक वाले हैं।[3]

فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ۭ وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٤٤﴾

(४४) तो आगे चलकर तुम मेरी बातों को याद करोगे।[4] मैं अपना मामला अल्लाह को समर्पित करता हूँ।[5] नि:संदेह अल्लाह (तआला) भक्तों को देखने वाला है।[6]

﴿ إِن تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ ﴾

"यदि तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार सुनते ही नहीं और यदि (मान लो कि) सुन भी लें तो स्वीकार नहीं कर सकते।" (-फ़ातिर-१४)

[1]अर्थात आख़िरत में ही किसी की पुकार सुनकर किसी को मुक्त कराने अथवा सिफ़ारिश ही करने पर समर्थ हों ? यह भी संभव नहीं है। ऐसी चीज़ें भला इस योग्य हो सकती हैं कि वह पूज्य बनें तथा उनकी पूजा की जाये ?

[2]जहाँ प्रत्येक का हिसाब होगा तथा कर्मानुसार अच्छा बुरा बदला दिया जायेगा।

[3]अर्थात काफ़िर तथा मुश्रिक जो अल्लाह की अवज्ञा में सीमा उल्लंघन कर जाते हैं। इस प्रकार जो अत्याधिक पापी मुसलमान होंगे, जिनकी अवज्ञा अति की सीमा तक पहुँची होगी उन्हें भी कुछ समय नरक की यातना भुगतनी होगी। फिर बाद में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिफ़ारिश अथवा अल्लाह की इच्छा से उनको नरक से निकाल कर स्वर्ग में प्रवेश करा दिया जायेगा।

[4]शीघ्र वह समय आयेगा जब मेरी बातों की सच्चाई तथा जिन बातों से रोकता था उनकी बुराई, तुम पर स्पष्ट हो जायेगी। फिर तुम पश्चाताप करोगे किन्तु वह समय ऐसा होगा कि लज्जा भी कोई लाभ न देगी।

[5]अर्थात उसी पर भरोसा करता तथा उसी से प्रत्येक समय सहायता माँगता हूँ तथा तुमसे सम्बन्ध तोड़ने तथा अलग होने की घोषणा करता हूँ।

[6]अर्थात वह उन्हें देख रहा है। फिर वह संमार्ग के पात्र को मार्ग दिखाता है तथा पथभ्रष्टता के पात्र को कुमार्ग कर देता है। इन बातों में जो हिक्मत है उनको वही भली-भाँति जानता है।

The Ummah Technology Mission

فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ﴿٤٥﴾

(४५) तो उसे अल्लाह (तआला) ने समस्त बुराईयों से सुरक्षित रख लिया जो उन लोगों ने सोच रखा था[1] तथा फ़िरऔन के अनुयायियों पर बुरे प्रकार का प्रकोप टूट पड़ा।[2]

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۫ اَدْخِلُوْٓا

(४६) अग्नि है जिसके समक्ष ये प्रत्येक प्रात: एवं संध्या को लाये जाते हैं;[3] तथा जिस दिन क़ियामत स्थापित होगी (आदेश होगा कि)

---

[1]अर्थात उसकी जाति क़िब्त ने उस ईमानदार के सत्य के प्रदर्शन के कारण उसके विपरीत जो षड़यन्त्र किये तथा चालें चलीं थीं, उन सबको असफल बना दिया तथा उसे आदरणीय मूसा के साथ मुक्ति प्रदान कर दिया तथा परलोक में उसका घर स्वर्ग होगा।

[2]अर्थात दुनिया में उन्हें समुद्र में डूबा दिया गया तथा परलोक में उनके लिये नरक की घोर यातना है।

[3]इस आग पर "बर्ज़ख़" में अर्थात क़ब्रों में वे लोग नित्य प्रात: तथा संध्या पेश किये जाते हैं, जिससे क़ब्र की यातना सिद्धि होती है, जिसका कुछ लोग इंकार करते हैं। हदीसों में तो बड़े विस्तार से क़ब्र की यातना पर प्रकाश डाला गया है। जैसे आदरणीया आएशा (رضي الله عنها) के प्रश्नोत्तर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«نَعَمْ ! عَذَابُ القَبْرِ حَقٌّ».

"हाँ, क़ब्र की यातना सत्य है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल जनायज़, बाबु माजाअ फी अज़ाबिल क़ब्रे)

इसी प्रकार एक दूसरी हदीस में फ़रमाया गया,

"जब तुममें से कोई मरता है तो (क़ब्र में) प्रात:-संध्या उसका स्थान प्रस्तुत किया जाता है।" अर्थात यदि वह स्वर्ग का पात्र है तो स्वर्ग तथा नरक का पात्र हो तो नरक उसके समक्ष प्रस्तुत किया जाता है तथा कहा जाता है कि यह तेरा मूल स्थान है, जहाँ क़यामत के दिन अल्लाह तआला तुझे भेजेगा। (सहीह बुख़ारी, वावुल मय्यते युअ्रज़ु अलैहि मक़अदोहू बिल ग़दाते वल अशीये, मुस्लिम किताबुल जन्नते, वावु अर्ज़े मकअदिल मय्यते)

इसका अभिप्राय यह है कि जो क़ब्र की यातना का इंकार करते हैं, वह क़ुरआन तथा हदीस दोनों की व्याख्या को नहीं मानते।

The Ummah Technology Mission

اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿٤٦﴾

फ़िरऔन के अनुयायियों को अति कठोर यातना में डालो।[1]

وَ اِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा जबकि नरक में एक-दूसरे से झगड़ेंगे तो कमज़ोर लोग अंहकारियों से (जिनके ये अधीन थे) कहेंगे कि हम तो तुम्हारे अनुयायी थे तो क्या अब तुम हमसे इस अग्नि का कोई भाग हटा सकते हो ?

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿٤٨﴾

(४८) वे बड़े लोग उत्तर देंगे कि हम तो सभी इसी अग्नि में हैं, अल्लाह (तआला) अपने बंदों के मध्य निर्णय कर चुका है।

وَ قَالَ الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿٤٩﴾

(४९) तथा समस्त नरकवासी (एकत्रित होकर) नरक के रक्षकों से कहेंगे कि तुम ही अपने प्रभु से प्रार्थना करो कि वह किसी दिन भी हमारी यातना में कमी कर दे।

قَالُوْٓا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ قَالُوْا بَلٰى ؕ قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ

(५०) वे उत्तर देंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल चमत्कार लेकर नहीं आये थे, वे कहेंगे कि क्यों नहीं। वे कहेंगे कि फिर तुम

---

[1]इससे पूर्ण स्पष्ट है कि आग पर पेश किये जाने का मामला जो प्रात:-संध्या होता है, क़यामत के पहले वर्ज़ख़ व क़ब्र ही का जीवन है। प्रलय के दिन उनको क़ब्र से निकालकर कड़ी यातना अर्थात नरक में डाल दिया जायेगा। 'आले फ़िरऔन' से अभिप्राय स्वयं फ़िरऔन तथा उसकी जाति एवं उसके सभी अनुयायी हैं। यह कहना कि हमें तो क़ब्र में मृत आराम से पड़ा दिखाई देता है, उसे यदि यातना हो तो इस स्थिति में दिखाई न दे, बकवास है क्योंकि यातना के लिए यह आवश्यक नहीं कि हमें दिखाई भी पड़े। अल्लाह हर प्रकार से यातना देने पर समर्थ है। क्या हम देखते नहीं कि एक व्यक्ति स्वप्न में अति दुखद दृश्य देख कर बड़ी बेचैनी तथा दुख का संवेदन करता है, किन्तु देखने वाले को तनिक प्रतीत नहीं होता कि यह सोया व्यक्ति घोर दुख में है। इस के उपरान्त भी क़ब्र की यातना का इंकार मात्र हठधर्मी है। बल्कि जागृत अवस्था में भी इंसान को जो तकलीफ़ें होती हैं वह स्वयं प्रदर्शित नहीं होतीं बल्कि केवल इंसान का तड़पना तथा तिलमिलाना प्रकट होता है, और यह भी उस दशा में जब वह तड़पे तथा तिलमिलाये।

The Ummah Technology Mission

وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝

ही प्रार्थना करो[1] तथा काफ़िरों की प्रार्थना मात्र (अप्रभावी तथा) अकारथ है।[2]

اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ۝

(५१) निश्चय हम अपने रसूलों की तथा ईमान वालों की सांसारिक जीवन में भी सहायता करेंगे[3] तथा उस दिन भी जब गवाही देने वाले खड़े होंगे।[4]

---

[1]हम ऐसे लोगों के लिए क्योंकर कुछ कह सकते हैं जिनके पास अल्लाह के संदेशवाहक प्रमाण तथा चमत्कार लेकर आये परन्तु उन्होंने चिंता नहीं की।

[2]अंतत: वह अल्लाह से स्वयं ही गुहार करेंगे परन्तु उसकी वहाँ सुनवाई नहीं होगी, इसलिए कि संसार में उन पर तर्क पूरा किया जा चुका था। अब आख़िरत तो क्षमा-याचना, ईमान एवं कर्म की जगह नहीं, वह तो प्रतिकार गृह है। संसार में जो किया होगा उसका फल वहाँ भोगना होगा।

[3]अर्थात उनके शत्रुओं को अपमानित करेंगे तथा उन्हें प्रभुत्व प्रदान करेंगे। कुछ लोगों के मन में यह शंका उत्पन्न हो सकती है कि कुछ नबी हत कर दिये गये, जैसे आदरणीय यह्या एवं ज़करिया (अलैहिमुस्सलाम) आदि तथा कुछ प्रवास के लिए बाध्य हुए, जैसे इब्राहीम अलैहिस्सलाम तथा हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एवं आपके सहाबा (सहचर रिज़वानुल्लाहे अलैहिम अजमईन) सहायता के वचन के उपरान्त ऐसा क्यों हुआ? वास्तव में यह वादा साधारण स्थिति एवं अधिकता के आधार पर है। अत: कुछ स्थिति में तथा कुछ व्यक्तियों पर काफ़िरों का प्रभुत्व इसके प्रतिकूल नहीं। अथवा अभिप्राय यह है कि सामयिक रूप से कभी अल्लाह की हिक्मत एवं इच्छा के अधीन काफ़िरों को प्रभुत्व दे दिया जाता है किन्तु अन्तत: ईमानवाले ही प्रभावशाली तथा सफल होते हैं। जैसे आदरणीय ज़करिया तथा यह्या के हत्यारों पर बाद में अल्लाह तआला ने उनके शत्रुओं को नियुक्त कर दिया, जिन्होंने उनके रक्त से अपनी प्यास बुझाई तथा उन्हें अपमानित एवं निरादर किया। जिन यहूदियों ने ईशदूत ईसा को फाँसी देकर मारना चाहा, अल्लाह ने उन यहूदियों पर रोमियों को ऐसी विजय दी कि उन्होंने यहूदियों को अपमानजनक यातनायें चखाईं। इस्लाम के पैग़म्बर तथा आपके अनुयायी वस्तुत: प्रस्थान करने पर बाध्य हुए किन्तु बद्र, ओहुद, अहज़ाब तथा ख़ैबर फिर मक्का विजय के द्वारा अल्लाह ने जिस प्रकार मुसलमानों की सहायता की तथा अपने पैग़म्बर एवं ईमानवालों को जिस प्रकार प्रभुत्व प्रदान किया, उसके पश्चात अल्लाह की सहायता में क्या शंका रह जाती है? (इब्ने कसीर)

[4] أشهاد (अश्हाद) यह شهيد (शहीद) का बहुवचन है, जैसे شريف (शरीफ़) का बहुवचन أشراف (अशराफ़) है। क़यामत, (प्रलय) के दिन फ़रिश्ते तथा अम्बिया गवाही देंगे, अथवा फ़रिश्ते यह गवाही देंगे कि हे अल्लाह! पैग़म्बरों ने तेरा संदेश पहुँचा दिया था किन्तु

The Ummah Technology Mission

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾

(५२) जिस दिन अत्याचारियों की विवशता (बहाना) कुछ लाभ न देगी[1] एवं उनके लिए धिक्कार ही होगी तथा उनके लिए बुरा घर होगा।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ ﴿٥٣﴾

(५३) तथा हमने मूसा को मार्गदर्शिका प्रदान की[2] तथा इस्राईल की संतान को इस किताब का उत्तराधिकारी बनाया।[3]

هُدًى وَّذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿٥٤﴾

(५४) कि वह मार्गदर्शन एवं शिक्षा थी बुद्धिमानों के लिए।[4]

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ

(५५) तो (हे नबी !) तू धैर्य रख। अल्लाह का वचन (नि:संदेह) सत्य ही है, तू अपने पापों की क्षमा माँगता रह[5] तथा सुबह-

---

उनके समुदायों ने झुठला दिया। इसके अतिरिक्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा आपके अनुयायी भी गवाही देंगे जैसाकि पहले भी वर्णन किया जा चुका है। इसलिए क़यामत को गवाहों के खड़े होने का दिन कहा गया है। उस दिन ईमानवालों की सहायता करने का अभिप्राय है उनको उनके सत्कर्मों का प्रतिफल दिया जायेगा तथा उन्हें स्वर्ग में प्रवेश दिया जायेगा।

[1]अर्थात अल्लाह की दया से दूरी तथा फटकार तथा विवशता एवं सफाई देने का लाभ इसलिए नहीं होगा कि वह क्षमा-याचना का स्थान नहीं, अत: क्षमा-याचना व्यर्थ होगी।

[2]अर्थात नुबूवत (दूतत्व) तथा धर्मग्रन्थ तौरात प्रदान किया, जैसे फ़रमाया : ﴿ إِنَّآ أَنزَلْنَا ٱلتَّوْرَىٰةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ ﴾ (*अल-माएदा-४४*)

[3]अर्थात धर्मशास्त्र तौरात ईशदूत मूसा के पश्चात भी शेष रहा जिसके नस्ल दर नस्ल वह उत्तराधिकारी होते रहे। अथवा किताब से अभिप्राय वह सभी धर्मशास्त्र हैं जो इस्राईल वंश के अम्बिया पर अवतरित हुए, इन सभी धर्मशास्त्रों का उत्तराधिकारी इस्राईल की संतान को बनाया।

[4]هُـدًى (हूदा) तथा ذكرى (ज़िक्रा) धातु है। तथा अवस्थावाची के रूप में आये हैं। अत: उन पर 'अ' की मात्रा है अर्थात هَاد पथ-प्रदर्शक, तथा مُذكِّر सदुपदेशक। बुद्धिमानों से अभिप्राय स्वच्छ बुद्धि के मालिक हैं क्योंकि वही आकाशीय ग्रंथों से लाभ उठाते हैं तथा मार्गदर्शन एवं सदुपदेश प्राप्त करते हैं। दूसरे लोग तो गधों के समान हैं जिन पर ग्रंथों का भार तो लदा है किन्तु वह उससे बेसुध होते हैं कि उन ग्रंथों में क्या है।

[5]पाप से अभिप्राय वह तनिक-तनिक सी भूल-चूक है जो मानवीय प्रकृति के कारण हो जाती है, जिसका सुधार भी अल्लाह की ओर से कर दिया जाता है। अथवा इस्तिग़फ़ार (क्षमा माँगना) भी

The Ummah Technology Mission

وَالْاِبْكَارِ ﴿٥٥﴾

शाम[1] अपने प्रभु का पवित्रतागान एवं महिमा-गान करता रह।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿٥٦﴾

(५६) नि:संदेह जो लोग अपने पास किसी प्रमाण के न होने के उपरान्त अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं; उनके दिलों में बड़ाई के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं जो इस बड़ाई तक पहुँचने वाले नहीं,[2] तो तू अल्लाह की शरण माँगता रह, नि:संदेह वह पूर्णरूप से सुनने वाला तथा सबसे अधिक देखने वाला है।

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٧﴾

(५७) आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति नि:संदेह मनुष्य की उत्पत्ति से बहुत बड़ा कार्य है, परन्तु (यह अन्य बात है कि) अधिकतर लोग जानते नहीं हैं।[3]

وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيْۗءُ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾

(५८) तथा अंधा एवं दृष्टिवाला समान नहीं; न वे लोग जो ईमान लाये तथा भले कार्य किये कुकर्मियों के समान हैं)[4] तुम (बहुत) कम

एक उपासना ही है। पुण्य तथा प्रतिफल में अधिकता के लिए (क्षमा माँगने) का आदेश दिया गया है, अथवा अभिप्राय अनुयायियों को निर्देश देना है कि वह क्षमा-याचना से विमुख न हों।

[1] عَشِيٌّ (अशी) से दिन का अन्तिम तथा रात का आरम्भिक भाग तथा اِبْكَار (इबकार) से रात का अंतिम तथा दिन का आरम्भिक भाग अभिप्राय है।

[2]अर्थात जो आकाशीय प्रमाण के बिना विवाद तथा तर्क-वितर्क करते हैं वे केवल अहंकार के कारण ऐसा करते हैं। फिर भी उनसे जो उनका लक्ष्य है कि सत्य निर्बल तथा असत्य दृढ़ हो जाये, वह उन्हें प्राप्त न होगा।

[3]अर्थात फिर यह क्यों इस बात से इंकार कर रहे हैं कि अल्लाह इंसानों को पुन: जीवित नहीं कर सकता जब कि यह काम आकाशों तथा धरती के पैदा करने से अत्याधिक सरल है।

[4]अभिप्राय यह है कि जिस प्रकार अंधा तथा आँख वाला बराबर नहीं, उसी प्रकार ईमानदार तथा काफ़िर, सदाचारी तथा दुराचारी बराबर नहीं। बल्कि क़यामत के दिन उनके मध्य जो बड़ा अंतर होगा वह बिल्कुल खुलकर सामने आ जायेगा।

The Ummah Technology Mission

शिक्षा ग्रहण कर रहे हो।

إِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيهَا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٩﴾

(५९) क़यामत निश्चय तथा नि:संदेह आने वाली है, परन्तु (यह अन्य बात है कि) अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते।

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ﴿٦٠﴾

(६०) तथा तुम्हारे प्रभु का आदेश (लागू हो चुका) है कि मुझसे प्रार्थना करो मैं तुम्हारी प्रार्थनाओं को स्वीकार करूँगा।[1] विश्वास करो कि जो लोग मेरी इबादत से अहंकार करते हैं वे अतिशीघ्र अपमानित होकर नरक में पहुँच जायेंगे।[2]

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا

(६१) अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए रात्रि

---

[1]विगत आयत में जब अल्लाह ने क़यामत के घटित होने की चर्चा की तो इस आयत में ऐसा निर्देश दिया जा रहा है, जिसे अपनाकर इंसान परलोक का सौभाग्य प्राप्त कर सके। इस आयत में प्रार्थना से अधिकतर भाष्यकारों ने इबादत (उपासना) तात्पर्य लिया है। जैसा कि हदीस में भी दुआ (प्रार्थना) को इबादत अपितु इबादत का मूल तत्व कहा गया है, «الدُّعَاءُ هُوَ العِبَادَةُ» तथा «الدُّعاءُ مُخُّ العِبَادَة» (मुसनद अहमद-४\२७१, मिश्कात-किताबुद दावात)। इसके अतिरिक्त, इसके बाद ﴿يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي﴾ के शब्दों से भी स्पष्ट है कि अभिप्राय उपासना है, कुछ कहते हैं कि दुआ (प्रार्थना) से अभिप्राय प्रार्थना ही है, अर्थात अल्लाह से लाभ की प्राप्ति तथा हानि के निराकरण का प्रश्न करना। क्योंकि दुआ का धार्मिक तथा वास्तविक अर्थ 'माँगना' है। दूसरे अर्थ में उसका प्रयोग वास्तविक अर्थ में नहीं। इसके अतिरिक्त दुआ भी अपने शाब्दिक अर्थ के आधार पर तथा उपरोक्त हदीस के अनुसार भी इबादत (उपासना) ही है, क्योंकि बिना साधन कोई चीज़ किसी से माँगना तथा उससे प्रश्न करना, यह उसकी इबादत (आराधना) ही है। (फ़तहुल क़दीर) अभिप्राय दोनों स्थितियों में एक ही है कि अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे को आवश्यकता की माँग तथा सहायता के लिए पुकारना वैध (उचित) नहीं। क्योंकि इस प्रकार साधनों के बिना किसी को काम निकलाने के लिए पुकारना उसकी आराधना है तथा इबादत (आराधना) अल्लाह के अतिरिक्त किसी की वैध (उचित) नहीं।

[2]यह अल्लाह की उपासना से इंकार तथा विमुखता एवं उसमें दूसरों को भी साझी बनाने वालों का दुष्परिणाम है।

The Ummah Technology Mission

فِيْهِ وَ النَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦١﴾

बना दी है कि तुम उस में विश्राम कर सको [1] तथा दिन को दिखलाने वाला बना दिया।[2] नि:संदेह अल्लाह (तआला) लोगों पर उपकार एवं कृपा करने वाला है परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञता व्यक्त नहीं करते।[3]

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۖ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٦٢﴾

(६२) यही अल्लाह है तुम सबका पालनपोषण करने वाला, प्रत्येक वस्तु का स्रष्टा, उसके अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं; फिर किस ओर तुम फिरे जाते हो ?[4]

كَذٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِيْنَ كَانُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٦٣﴾

(६३) उसी प्रकार वे लोग भी फेरे जाते रहे जो अल्लाह की आयतों का इंकार करते थे।

اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّ صَوَّرَكُمْ

(६४) अल्लाह[5] ही है जिसने तुम्हारे लिए धरती को निवास स्थान[6] तथा आकाश को छत बना दिया,[7] और तुम्हारा रूप दिया तथा बहुत

---

[1]अर्थात रात को अंधेरी बनाया ताकि दैनिक कार्य निलम्बित हो जाये तथा लोग शान्ति से सो सकें।

[2]अर्थात प्रकाशमय बनाया ताकि व्यवसायिक श्रम तथा दौड़-धूप में बाध्यता न हो।

[3]अल्लाह के वरदानों का, न उनको स्वीकार ही करते हैं कुफ्र तथा इंकार के कारण जैसा कि काफिरों का आचरण है, अथवा उपकार करने वाले की कृतज्ञता को त्याग तथा उससे आलस्य के कारण जैसा कि मूर्खों की रीति है।

[4]अर्थात फिर तुम उसकी उपासना से क्यों बिदकते हो तथा उसकी तौहीद (एकता) से क्यों फिरते तथा अकड़ते हो।

[5]आगे अल्लाह के उपकारों के कुछ प्रकार वर्णन किये गये हैं ताकि अल्लाह का पूर्ण सामर्थ्य भी स्पष्ट हो तथा उसका अन्य के साझे बिना उपास्य होना भी।

[6]जिसमें तुम निवास करते, चलते-फिरते, व्यवपार करते तथा जीवन निर्वाह करते हो। फिर अंतत: मौत के मुख में जाकर क़यामत तक के लिए उसी में सोये रहते हो।

[7]अर्थात स्थिर एवं दृढ़ छत, यदि उसके गिरने का भय रहता तो कोई आराम से सो सकता था न किसी के लिए जीवन व्यतीत करना संभव होता।

The Ummah Technology Mission

فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٤﴾

अच्छा बनाया[1] तथा तुम्हें अति उत्तम वस्तुयें खाने के लिए प्रदान किया।[2] वही अल्लाह तुम्हारा प्रभु है; तो अति शुभ अल्लाह है समस्त जगत का प्रभु।

هُوَ الْحَیُّ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٥﴾

(६५) वह जीवित है जिसके अतिरिक्त कोई सच्चा उपास्य नहीं तो तुम विशुद्ध रूप से उसी की इबादत करते हुए उसे पुकारो,[3] सभी प्रंशसा अल्लाह ही के लिए है जो समस्त संसार का प्रभु है।

قُلْ اِنِّیْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِیَ الْبَيِّنٰتُ مِنْ رَّبِّیْ وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٦﴾

(६६) (आप) कह दीजिए कि मुझे उनकी पूजा करने से रोक दिया गया है जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकार रहे हो [4] इस आधार पर कि मेरे पास मेरे प्रभु के प्रमाण पहुँच चुके हैं। मुझे यह आदेश दिया गया है कि मैं सर्वलोक के प्रभु के आदेश के अधीन हो जाऊँ।[5]

---

[1]जितने भी भूमि पर प्राणी हैं उन सबमें तुम इन्सानों को सबसे सुन्दर तथा संतुलित अंगों का बनाया।

[2]विभिन्न प्रकार के खाने तुम्हारे लिए सुलभ कराये जो स्वादिष्ट भी हैं तथा बलवर्धक भी।

[3]अर्थात जब सब कुछ देने तथा करने वाला वही है, दूसरा कोई बनाने में साझी है न अधिकारों में तो फिर उपास्य भी मात्र एक अल्लाह ही है, दूसरा कोई उसमें साझी नहीं हो सकता। सहायता की माँग तथा गुहार भी उसी से करो कि वही सबकी गुहार तथा विनय सुनने पर समर्थ है। दूसरा कोई भी साधनों बिना किसी बात पर समर्थ नहीं। जब यह बात है तो दूसरे कैसे कष्ट निवारक तथा कार्यक्षम हो सकते हैं ?

[4]चाहे वह पत्थर की मूर्तियाँ हो, अम्बिया एवं धर्मात्मा हों तथा समाधियों में गड़े व्यक्ति हों, सहायता के लिए किसी को न पुकारो, उनके नामों के चढ़ावे न चढ़ाओ, उन का जप न करो, उनका भय न खाओ तथा न उनसे आशायें बाँधो, क्योंकि यह इबादत के भेद हैं जो मात्र एक अल्लाह का अधिकार है।

[5]यह वही धार्मिक तथा बौद्धिक तर्क हैं जिनसे अल्लाह के उपास्य तथा पालनहार होने का प्रमाण मिलता है, जिसकी पवित्र क़ुरआन में जगह-जगह चर्चा की गई है। इस्लाम का

The Ummah Technology Mission

هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ یُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُیُوْخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ یُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْۤا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۷﴾

(६७) वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से, फिर वीर्य से,[1] फिर रक्त के लोथड़े से उत्पन्न किया, फिर तुम्हें शिशु बनाकर निकालता है, फिर (तुम्हें बढ़ाता है कि) तुम अपनी पूर्णशक्ति को पहुँच जाओ, फिर बूढ़े बन जाओ।[2] और तुममें से कुछ की इससे पूर्व ही मृत्यु हो जाती है[3] (तथा वह तुम्हें छोड़ देता है) ताकि तुम निर्धारित आयु तक पहुँच जाओ[4] तथा ताकि तुम सोच समझ लो।[5]

अर्थ है आत्म-समर्पण तथा झुक जाना, शीश निवा देना। अर्थात अल्लाह के आदेशों के आगे झुक जाऊँ, उससे मुख न फेरूँ। आगे फिर तौहीद (अद्वैत) के कुछ प्रमाण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

[1]अर्थात तुम्हारे परमपिता आदम को मिट्टी से बनाया जो उनकी सभी संतान के मिट्टी से पैदा होने को अनिवार्य बनाता है। फिर तत्पश्चात मानव वंश-क्रम तथा उसके अस्तित्व की सुरक्षा के लिये उसे वीर्य से संबन्धित कर दिया। अब प्रत्येक मानव इसी वीर्य से पैदा होता है, जो पिता की पीठ से माता के गर्भाशय में जाकर स्थिर हो जाता है, ईशदूत ईसा के सिवाय कि उनका जन्म चमत्कारिक रूप से बिना पिता के हुआ, जैसा कि पवित्र ईशवाणी क़ुरआन के वर्णित विवरण से स्पष्ट है। तथा जिस पर पूरा मुसलमान समुदाय एकमत है।

[2]अर्थात इन सभी स्थितियों तथा अवस्थाओं से गुज़ारने वाला वही है जिसका कोई साझी नहीं।

[3]अर्थात माता के गर्भाशय में विभिन्न अवस्थाओं से गुज़र कर बाहर आने से पहले ही माँ के पेट में कुछ बाल्य अवस्थामें, कुछ युवा अवस्था में तथा कुछ बुढ़ापे से पहले अधेड़ आयु में मर जाते हैं।

[4]अर्थात अल्लाह तआला (परमेश्वर) यह इसलिए करता है ताकि जिसकी जितनी आयु अल्लाह ने लिख दी है, वह उसको पहुँच जाये तथा संसार में उतना जीवन निर्वाह कर ले।

[5]अर्थात जब तुम इन विभिन्न स्थितियों एवं अवस्थाओं पर विचार करोगे कि वीर्य से रक्त, फिर माँस का लोथड़ा, फिर शिशु, फिर युवा अवस्था, फिर अधेड़ तथा बुढ़ापा तो तुम जान लोगे कि तुम्हारा प्रभु भी एक ही है तथा तुम्हारा पूज्य भी एक। उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। इसके अलावा यह भी समझ लोगे कि जो अल्लाह यह सब करता है उसके लिये क़यामत (प्रलय) के दिन इंसानों को पुर्नजीवित करना भी कठिन नहीं है तथा वह निश्चय ही सबको जीवन प्रदान करेगा।

The Ummah Technology Mission

هُوَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰۤی اَمْرًا فَاِنَّمَا یَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ﴿۶۸﴾

(६८) वही है जो जीवन एवं मृत्यु प्रदान करता है,[1] फिर जब वह किसी कार्य के करने का निश्चय करता है तो उसे केवल यह कहता है कि 'हो जा' बस वह हो जाता है।[2]

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ یُجَادِلُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِ اللّٰهِ ؕ اَنّٰى یُصْرَفُوْنَ ﴿۶۹﴾

(६९) क्या तूने उन्हें नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं,[3] कि वे कहाँ फेर दिये जाते हैं![4]

الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَ بِمَاۤ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۚ فَسَوْفَ یَعْلَمُوْنَ ﴿۷۰﴾

(७०) जिन लोगों ने किताब को झुठलाया तथा उसे भी जो हमने अपने रसूलों के साथ भेजा, उन्हें शीघ्र अति शीघ्र वास्तविकता का ज्ञान हो जायेगा।

اِذِ الْاَغْلٰلُ فِیْۤ اَعْنَاقِهِمْ وَ السَّلٰسِلُ ؕ یُسْحَبُوْنَ ﴿۷۱﴾

(७१) जबकि उनकी गर्दनों में तौक होंगे तथा जंजीरें होंगी, घसीटे जायेंगे।[5]

فِی الْحَمِیْمِ ۙ ثُمَّ فِی النَّارِ یُسْجَرُوْنَ ﴿۷۲﴾

(७२) खौलते हुए पानी में, तथा फिर नरक की अग्नि में जलाये जायेंगे।[6]

---

[1]जीवन देना तथा मारना उसी के अधिकार में है। वह एक निर्जीव वीर्य को अनेक स्थितियों से गुज़ार कर एक जीवित मानव के रूप में ढाल देता है तथा फिर एक निर्धारित समय के पश्चात इंसान को मारकर मौत की वादियों में सुला देता है।

[2]उसके सामर्थ्य की यह दशा है कि उसके शब्द كُنْ (हो जा) से वह वस्तु अस्तित्व में आ जाती है जिसका वह इरादा करे।

[3]इंकार अथवा झुठलाने के लिए अथवा उसके खंडन के लिए।

[4]अर्थात प्रमाणों के प्रत्यक्ष तथा सत्य के स्पष्ट हो जाने के उपरान्त भी वह किस प्रकार सत्य को नहीं मानते। यह आश्चर्य व्यक्त करना है।

[5]यह वह चित्रण है जो नरक में इन झुठलाने वालों का होगा।

[6]मुजाहिद तथा मुकातिल का कथन है कि उनके द्वारा नरक की अग्नि भड़काई जायेगी, अर्थात वे लोग उसका ईंधन बनेंगे।

The Ummah Technology Mission

ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿٧٣﴾

(७३) फिर उनसे पूछा जायेगा कि जिन्हें तुम साझीदार ठहराते थे वे कहाँ हैं ?

مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَلْ لَمْ نَكُنْ نَدْعُو مِنْ قَبْلُ شَيْئًا ۖ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ﴿٧٤﴾

(७४) जो अल्लाह के अतिरिक्त थे,[1] वे कहेंगे कि वे हमसे खो गये[2] बल्कि हम तो इससे पूर्व किसी को भी पुकारते ही न थे।[3] अल्लाह (तआला) काफ़िरों को इसी प्रकार भटकाता है।[4]

ذَٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُونَ ﴿٧٥﴾

(७५) यह (बदला) है उस वस्तु का जो तुम धरती पर अनायास (अनुचित) फूले न समाते थे तथा (व्यर्थ) इतराते फिरते थे।[5]

ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٦﴾

(७६) (अब आओ) नरक में सदैव रहने के लिए (उसके) द्वारों में चले जाओ; क्या ही बुरा स्थान है अहंकार करने वालों के लिए।[6]

---

[1]क्या वह आज तुम्हारी सहायता कर सकते हैं ?

[2]अर्थात पता नहीं कहाँ चले गये हैं। वे हमारी क्या सहायता करेंगे ?

[3]स्वीकार के पश्चात फिर उनकी इबादत (वंदना) को नकार देंगे। जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया ﴿وَاللَّهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ﴾ "अल्लाह की सौगन्ध ! हम तो किसी को साझी बनाते ही न थे।" (*अल-अआम*-२३) कहते हैं कि यह मूर्तियों के होने तथा उनकी उपासना का इंकार नहीं। अपितु इस बात का स्वीकार है कि उनकी इबादत, उपासना अनृत थी क्योंकि वहाँ उन पर स्पष्ट हो जायेगा कि वह ऐसी चीज़ों की उपासना करते रहे जो सुन सकती थीं न देख सकती थीं तथा क्षति पहुँचा सकती थीं न लाभ। दूसरा स्पष्ट अर्थ यह है कि वे शिर्क का मूल से इंकार ही करेंगे। (फ़तहुल क़दीर)

[4]अर्थात इन झुठलाने वालों ही की भाँति अल्लाह काफ़िरों को भी कुमार्ग करता है। अभिप्राय यह है कि निरन्तर झुठलाना तथा कुफ़्र (इंकार), यह ऐसी चीज़ें हैं कि जिनसे इंसानों के दिल काले तथा मैले हो जाते हैं। फिर वे सदा के लिये सत्य को स्वीकार करने की योग्यता से वंचित हो जाते हैं।

[5]अर्थात तुम्हारी पथभ्रष्टता इस बात का दुष्य परिणाम है कि तुम कुफ़्र, झुठलाने तथा दुराचार एवं कुकर्म में इतना बढ़ गये थे कि उन पर प्रफुल्ल होते तथा इतराते थे। इतराने में अत्याधिक प्रसन्नता का प्रदर्शन है जो अहंकार का द्योतक है।

[6]यह नरक पर नियुक्त फ़रिश्ते नरकवासियों से हकेंगे।

The Ummah Technology Mission

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ فَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿٧٧﴾

(७७) तो आप धैर्य रखें। अल्लाह का वचन पूर्ण रूप से सत्य है।[1] उन्हें हमने जो वचन दे रखे हैं उनमें से कुछ हम आपको दिखायें।[2] अथवा उससे पूर्व आपको मृत्यु दें, उनका लौटाया जाना तो हमारी ही ओर है।[3]

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ مِنْهُم مَّن قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُم مَّن لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَن يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ ﴿٧٨﴾

(७८) नि:संदेह हम आपसे पूर्व भी बहुत से रसूल भेज चुके हैं, जिनमें से कुछ की (घटनायें) हम आपको सुना चुके हैं तथा उनमें से कुछ की कथायें तो हमने आपको सुनायी ही नहीं।[4] तथा किसी रसूल के (वश में यह) न था कि कोई चमत्कार अल्लाह की आज्ञा के बिना ला सके।[5] फिर जिस समय

---

[1]कि हम काफ़िरों से बदला लेंगे। यह वचन शीघ्र भी पूरा हो सकता है, अर्थात दुनिया ही में हम उनकी पकड़ कर लें अथवा अल्लाह की इच्छानुसार विलम्ब भी संभव है, अर्थात हम क़यामत के दिन उन्हें दण्ड दें। फिर भी यह बात निश्चित है कि यह अल्लाह की पकड़ से बचकर कहीं जा नहीं सकते।

[2]अर्थात आपके जीवन ही में उन्हें यातनाग्रस्त कर दें। तथा ऐसा ही हुआ कि अल्लाह ने काफ़िरों से बदला लेकर मुसलमानों को प्रसन्न किया। बद्र के रण में सत्तर काफ़िर मारे गये, ८ हिजरी में मक्का विजय हो गया तथा फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन में पूरे अरब द्वीप मुसलमानों के अधीन आ गया।

[3]अर्थात यदि नास्तिक सांसारिक पकड़ एवं यातना से सुरक्षित रह भी गये तो फिर जायेंगे कहाँ ? अन्त में मेरे पास ही आयेंगे जहाँ उनके लिये घोर यातना का प्रबन्ध है।

[4]तथा यह संख्या में उनसे अधिक हैं जिनका वर्णन किया गया है, इसलिए कि पवित्र क़ुरआन में मात्र २५ अम्बिया तथा रसूलों की चर्चा तथा उनकी जातियों की अवस्थायें वर्णित हैं।

[5] آيت (आयत) से अभिप्राय यहाँ चमत्कार तथा अद्भुत घटना है जो पैग़म्बर की सत्यता को प्रमाणित करे। काफ़िर ईशदूतों से माँग करते रहे कि हमें अमुक-अमुक वस्तु दिखाओ। जैसे स्वयं अन्तिम ईशदूत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से मक्का के काफ़िरों ने कई चीज़ों की माँग की, जिसका विवरण सूर: बनी इस्राईल ९० से ९३ तक में विद्यमान है। अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि किसी पैग़म्बर के अधिकार में यह नहीं

The Ummah Technology Mission

अल्लाह का आदेश आयेगा [1] सत्यता के साथ निर्णय कर दिया जायेगा[2] तथा उस स्थान पर असत्यवादी लोग हानि में रह जायेंगे।

اَللّٰهُ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَ مِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۷۹﴾

(७९) अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिए पशु पैदा किये[3] जिनमें से कुछ पर तुम सवार होते हो तथा कुछ को तुम खाते हो।[4]

था कि वह अपनी जातियों की माँग पर कोई चमत्कार बनाकर दिखा सके। यह मात्र हमारे अधिकार में था। कुछ नबियों को तो आरम्भ ही से चमत्कार दिये गये थे। कुछ समुदायों को उनकी माँग पर चमत्कार दिखाया गया, कुछ को उनकी माँग पर भी नहीं दिखाया गया। हमारी इच्छानुसार उनका निर्णय होता था। किसी नबी के वश में यह नहीं था कि वह जब चाहे चमत्कार दिखा दे। इससे उन लोगों का खुला खंडन होता है जो कुछ औलिया (धर्मात्मा) की ओर यह बातें संबन्धित करते हैं कि वह जब चाहते तथा जैसे चाहते अद्भुत बातें तथा चमत्कार दिखा देते थे। जैसे शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी के विषय में बताया जाता है। यह सब मनगढ़न्त किस्से, कहानियाँ हैं। जब अल्लाह ने पैगम्बरों को यह अधिकार नहीं दिया, जिनको अपनी सत्यता के प्रमाण हेतु इसकी आवश्यकता भी थी तो किसी वली (धर्मात्मा) को यह अधिकार क्योंकर मिल सकता है? विशेष रूप से जब कि वली को इसकी आवश्यकता भी नहीं है। चूँकि नबी की नबूअत (दूतत्व) के प्रति विश्वास करना (ईमान लाना) आवश्यक होता है, इसलिए चमत्कार उन की आवश्यकता थी। किन्तु अल्लाह की हिक्मत तथा इच्छा इसकी अभियाची न थी, इसलिए यह शक्ति किसी नबी को नहीं दी गई। वली के वली होने पर विश्वास रखना अनिवार्य नहीं। अत: उन्हें चमत्कार तथा विचित्र घटनाओं की जरूरत ही नहीं। अल्लाह तआला उन्हें यह अधिकार अनावश्यक क्यों दे सकता है?

[1]अर्थात लोक व परलोक में जब उनकी यातना का निर्धारित समय आ जायेगा।

[2]अर्थात उनके बीच न्यायपूर्वक निर्णय कर दिया जायेगा। सत्यवादियों को मोक्ष तथा मिथ्यावादियों को दण्ड।

[3]अल्लाह अपने असंख्य उपकारों में से कुछ की चर्चा कर रहा है। चौपाये (पशु) से अभिप्राय ऊँट, गाय, बकरी तथा भेड़ हैं। यह नर-मादा मिलकर आठ हैं, जैसा कि सूरः *अल-अन्आम* -१४३ तथा १४४ में है।

[4]यह सवारी के काम भी आते हैं। इनका दूध भी पिया जाता है, (जैसे बकरी, गायें तथा ऊँटनी का दूध)। इनका माँस इंसान का रूचिकार खाद्य है तथा बोझ लादने का काम भी उनसे लिया जाता है।

The Ummah Technology Mission

وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٨٠﴾

(८०) तथा अन्य भी तुम्हारे लिए उसमें बहुत से लाभ हैं[1] ताकि अपने हृदय में छिपी हुई आवश्यकताओं को उन्हीं पर सवारी करके तुम प्राप्त कर लो तथा इन पशुओं पर एवं नावों पर तुम सवार कराये जाते हो।[2]

وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَأَيَّ آيَاتِ اللَّهِ تُنكِرُونَ ﴿٨١﴾

(८१) तथा (अल्लाह) तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता जा रहा है,[3] तो तुम अल्लाह की किन-किन निशानियों को अस्वीकार करते रहोगे।[4]

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٢﴾

(८२) क्या उन्होंने धरती पर भ्रमण करके अपने से पूर्व के लोगों का परिणाम नहीं देखा,[5] जो इनसे संख्या में अधिक थे, शक्ति में कठोर तथा धरती में बहुत सारी यादगारें छोड़ी थीं।[6] (परन्तु) उनके किये कार्यों ने उन्हें तनिक भी लाभ नहीं पहुँचाया।[7]

---

[1]जैसे इन सबके ऊन तथा बालों एवं खालों से कई वस्तुयें बनाई जाती हैं। इनके दूधों से घी, मक्खन, पनीर आदि भी बनती हैं।

[2]इनसे अभिप्राय बच्चे तथा महिलायें हैं, जिन्हें हौदज सहित ऊँट आदि पर सवार कर दिया जाता था।

[3]जो उसके सामर्थ्य तथा एकता का बोध कराती हैं तथा यह लक्षण विश्व ही में नहीं तुम्हारे अन्दर भी विद्यमान हैं।

[4]यह इतनी स्पष्ट, साधारण तथा अधिक हैं जिनका कोई निवर्ती इंकार करने का सामर्थ्य नहीं रखता। यह प्रश्न नकारत्मक है।

[5]अर्थात जिन समुदायों ने अल्लाह की अवज्ञा की तथा उसके रसूलों को झुठलाया, यह उनकी बस्तियों के अवशेष तथा खंडरो को तो देखें जो इनके क्षेत्रों ही में हैं कि उनका क्या दुष्परिणाम हुआ।

[6]अर्थात भवनों, उद्योगों तथा खेतियों के रूप में उनके अवशेष स्पष्ट करते हैं कि वह कलागढ़ी के क्षेत्र में भी तुमसे बढ़कर थे।

[7] فَمَا أَغْنَىٰ में مَا प्रश्नवाची भी हो सकता है तथा नकारात्मक भी। नकारात्मक का भावार्थ तो अनुवाद से स्पष्ट है। प्रश्नवाची के आधार पर अभिप्राय यह होगा, उनको क्या

The Ummah Technology Mission

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨٣﴾

(८३) तो जब कभी उनके पास उनके रसूल स्पष्ट निशानियाँ लेकर आये तो यह अपने पास के ज्ञान पर इतराने लगे।[1] अन्त में जिस वस्तु को उपहास में उड़ा रहे थे वहीं उन पर उलट पड़ी।

فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ﴿٨٤﴾

(८४) फिर हमारी यातना देखते ही कहने लगे कि अल्लाह एक पर हम ईमान लाये तथा जिन-जिन को हम उसका साझीदार बना रहे थे, हमने उन सबसे इंकार किया।

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا ؕ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ عِبَادِهٖ ۚ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

(८५) परन्तु हमारी यातना को देख लेने के पश्चात उनके ईमान ने उन्हें लाभ न दिया। अल्लाह ने अपना यही नियम निर्धारित कर रखा है जो उसके भक्तों में निरन्तर चला आ रहा है;[2] तथा उस स्थान पर काफ़िर ख़राब (तथा कमज़ोर) हुए।[3]

लाभ पहुँचाया ? अभिप्राय वही है कि उनकी कमाई उनके कुछ काम नहीं आई।

[1] عِلْم (ज्ञान) से अभिप्राय उनके स्वयं कल्पित विचार, भ्रम तथा शंकायें एवं झूठे दावे हैं। उन्हें उपहास स्वरूप ज्ञान कहा गया है, क्योंकि वह उन्हें तर्क समझते थे। उनके विचारानुसार ऐसा कहा। अभिप्राय यह है कि अल्लाह तथा रसूल की बातों की तुलना में यह अपने काल्पनिक विचारों तथा भ्रमों पर इतराते तथा गर्व करते रहे। अथवा ज्ञान से अभिप्राय सांसारिक ज्ञान है। यह अल्लाह के आदेशों एवं अनिवार्यताओं के आगे इसी को महत्व देते हैं।

[2] अर्थात यह अल्लाह का नियम चला आ रहा है कि प्रकोप देखने के बाद तौबा (पश्चाताप) तथा ईमान स्वीकार नहीं। यह विषय क़ुरआन के अनेक स्थानों में वर्णित हुआ है।

[3] अर्थात प्रकोप दर्शन के पश्चात उन पर व्यक्त हो गया कि अब सिवाय दण्ड एवं विनाश के हमारे भाग्य में कुछ नहीं।

The Ummah Technology Mission

सूरतु हा॰मीम॰अस्सजदः-४१

سُورَةُ حٰمٓ السَّجۡدَةِ

सूरः हा॰मीम॰अस्सजदः* मक्का में अवतरित हुई तथा इनमें चौवन आयतें तथा छः रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

(१) हा॰मीम॰,

حٰمٓ ①

(२) अवतरित है अत्यन्त कृपालु अत्यन्त दयालु की ओर से।

تَنۡزِيۡلٌ مِّنَ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ②

---

*इस सूरः का दूसरा नाम "फ़ुस्सेलत" है। इसके अवतरित होने के विषय में बताया गया है कि एक बार कुरैश के प्रमुखों ने परस्पर परामर्श किया कि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अनुयायियों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। हमें उनको रोकने के लिए अवश्य कुछ करना चाहिए। उन्होंने सबसे अधिक भाषा शैली के व्यक्ति 'उतबा बिन रबीआ' का चुनाव किया ताकि वह आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से बात करे। वह आप की सेवा में गया तथा आप पर अरबों में फूट तथा बिखराव पैदा करने का आरोप लगाकर प्रस्ताव रखा कि यदि इस नये आमंत्रण से आप का उद्देश्य धन-सम्पति प्राप्त करना हो तो वे हम एकत्रित किये देते हैं, नेतृत्व तथा प्रमुखता मनवाना चाहते हो तो हम आपको अपना प्रमुख तथा अगुवा मान लेते हैं, किसी सुन्दरी से विवाह करना चाहते हैं तो एक नहीं ऐसी दस नारियों की व्यवस्था कर देते हैं तथा यदि आप पर भूत-प्रेत का प्रभाव है जिस के कारण आप हमारे देवताओं को बुरा कहते हैं, तो अपने व्यय (ख़र्च) पर आप का उपचार करा देते हैं। आपने उसकी सब बातें सुनकर इस सूरः का पाठ उसके सामने किया जिससे वह बड़ा प्रभावित हुआ। उसने वापस जाकर कुरैश के प्रमुखों को बतलाया कि जो बात वह पेश करता है वह जादू, ज्योतिष, काव्य एवं कविता नहीं। अभिप्राय आप के आमंत्रण पर कुरैश के प्रमुखों को चिन्तन तथा मनन का आमंत्रण देना था। किन्तु वह सोच-विचार क्या करते ? उल्टा उतबा पर आरोप लगा दिया कि तू भी उसके जादू के प्रभाव में आ गया। यह वर्णन विभिन्न प्रकार से इतिहासकारों तथा भाष्यकारों ने वर्णित किया है। इमाम इब्ने कसीर तथा इमाम शौकानी ने भी इन्हें अनुकृत किया है। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं, "यह वर्णन इस बात को बताते हैं कि कुरैश की सभा अवश्य हुई। उन्होंने उतबा को वार्तालाप के लिए भेजा। तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे इस सूरः का प्रारम्भिक भाग सुनाया।"

The Ummah Technology Mission

كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۙ﴿۳﴾

(३) (ऐसी) किताब है जिसकी आयतों (सूत्रों) की स्पष्ट व्याख्या की गयी है [1] (इस अवस्था में कि) क़ुरआन अरबी भाषा में है[2] उस समुदाय के लिए जो जानता है।[3]

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿۴﴾

(४) शुभसूचना सुनाने वाला तथा चेतावनी देने वाला है,[4] फिर भी उनके अधिकतर विमुख हो गये तथा वे सुनते ही नहीं।[5]

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ﴿۵﴾

(५) तथा उन्होंने कहा कि तू जिसकी ओर हमें बुला रहा है हमारे हृदय तो उससे पर्दे में हैं,[6] हमारे कानों में बोझ है (अथवा को सुनायी नहीं देता[7]) तथा हममें और तुझमें एक पर्दा (आड़) है। अच्छा, तू अब अपना कार्य किये जा हम भी निस्संदेह कार्य करने वाले हैं।[8]

---

[1]अर्थात क्या हलाल (वैध) है तथा क्या हराम (अवैध) ? अथवा आज्ञापालन क्या है तथा अवज्ञा क्या ? अथवा पुण्य के कर्म कौन हैं तथा यातना के कौन ?

[2]यह अवस्था वाचक है। अर्थात उसके शब्द अरबी हैं, जिनके अर्थ विस्तृत एवं स्पष्ट हैं।

[3]अर्थात जो अरबी भाषा के अर्थ और वाक्य शैली को समझते हैं।

[4]ईमानवाले तथा सत्कर्मियों को शुभसूचना सुनाने वाला तथा मुशरेकीन एवं मिथ्यारोपण करने वाले को नरक की यातना से डराने वाला।

[5]अर्थात सोच-विचार तथा चिन्तन एवं बोध के उद्देश्य से नहीं सुनते कि जिससे लाभ हो। यही कारण है कि उनमें अधिकांश संमार्ग से वंचित

[6]اَكِنَّة (अकिन्नह) كِنَان (किनान) का बहुवचन है, पर्दा। अर्थात हमारे दिल इस बात से पर्दों में हैं कि हम तेरी तौहीद (अद्वैत) तथा ईमान के आमन्त्रण को समझ सकें।

[7]وَقْر (वक़्र) का शाब्दिक अर्थ बोझ है। यहाँ अभिप्राय बहरापन है जो सत्य सुनने में बाधक था।

[8]अर्थात हमारे तथा तेरे बीच ऐसा पर्दा बाधक है कि तू जो कहता है वह सुन नहीं सकते तथा जो करता है उसे देख नहीं सकते। इसलिए तू हमें हमारी स्थिति पर छोड़ दे तथा हम तुझे तेरी अवस्था पर छोड़ दें। तू हमारे धर्म पर कर्म नहीं करता, हम तेरे धर्मानुसार कर्म नहीं कर सकते।

The Ummah Technology Mission

قُلْ إِنَّمَآ أَنَا۠ بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰٓ إِلَيَّ أَنَّمَآ إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَٰحِدٌ فَٱسْتَقِيمُوٓا۟ إِلَيْهِ وَٱسْتَغْفِرُوهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِينَ ۝٦

(६) (आप) कह दीजिए कि मैं तो तुम ही जैसा मनुष्य हूँ, मुझ पर प्रकाशना की जाती है कि तुम सबका पूज्य केवल एक अल्लाह ही है [1] तो तुम उसकी ओर ध्यान केन्द्रित कर लो तथा उससे पापों की क्षमा चाहो, तथा उन मूर्तिपूजकों के लिए (बड़ी ही) ख़राबी है।

ٱلَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ ٱلزَّكَوٰةَ وَهُم بِٱلْءَاخِرَةِ هُمْ كَٰفِرُونَ ۝٧

(७) जो ज़कात नहीं देते [2] तथा आख़िरत को भी अस्वीकार करने वाले ही रहते हैं।

إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝٨

(८) नि:संदेह जो लोग ईमान लायें तथा अच्छे कर्म करें उनके लिए अनन्त बदला है।[3]

قُلْ أَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُونَ بِٱلَّذِى خَلَقَ ٱلْأَرْضَ فِى يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُۥٓ أَندَادًا ۚ ذَٰلِكَ رَبُّ ٱلْعَٰلَمِينَ ۝٩

(९) (आप) कह दीजिए कि क्या तुम उस (अल्लाह) का इंकार करते हो तथा तुम उसके साझीदार निर्धारित करते हो जिसने दो दिन में धरती को पैदा किया।[4] सर्वलोक का प्रभु

---

[1] अर्थात मेरे तथा तुम्हारे बीच कोई अंतर नहीं सिवाय ईश्वरीय प्रकाशना के, फिर यह दूरी तथा पर्दा क्यूं ? इसके अतिरिक्त जो एकेश्वरवाद की दावत (आमन्त्रण) दे रहा हूँ, वह भी ऐसी नहीं कि समझ-बूझ में न आ सके, फिर उससे मुँह फेरना क्यों ?

[2] यह सूर: मक्का में अवतरित हुई। ज़कात (धर्मदान) हिजरत के दूसरे वर्ष अनिवार्य हुई। इसलिए इससे अभिप्राय या तो दान है जिसका आदेश मुसलमानों को मक्के में भी दिया जाता रहा, जिस प्रकार पहले मात्र प्रात: एवं संध्या की नमाज़ों का आदेश था, पुन: हिजरत से डेढ़ वर्ष पूर्व मेराज की रात्रि को पाँच अनिवार्य नमाज़ों का आदेश हुआ। अथवा ज़कात से यहाँ तात्पर्य कलमए शहादत है जिससे मानव मन शिर्क (मिश्रणवाद) की गन्दगियों से पवित्र हो जाता है। (इब्ने कसीर)

[3] أجرٌ غيرُ ممنون का वही भावार्थ है जो (عطاءً غيرَ مجذوذ -हूद, १०८) का है, अर्थात अन्त न होने वाला बदला।

[4] पवित्र क़ुरआन के अनेक स्थानों पर वर्णन किया गया है कि अल्लाह ने आसमानों तथा धरती को छ: दिन में पैदा किया। यहाँ उसका कुछ विवरण दिया गया है। फ़रमाया, 'धरती को दो दिन में बनाया' इससे अभिप्राय हैं يوم الأحد (रविवार) तथा يوم الاثنين (सोम)। सूर: *नाज़िआत* में कहा गया है ﴿وَٱلْأَرْضَ بَعْدَ ذَٰلِكَ دَحَىٰهَآ﴾ जिससे प्रत्यक्ष रूप से

वही है।

وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ مِن فَوْقِهَا وَبَارَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا أَقْوَاتَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ ۖ سَوَاءً لِّلسَّائِلِينَ ﴿١٠﴾

(१०) तथा उसने धरती में उसके ऊपर से ही पर्वत उत्पन्न कर दिये, [1] उसमें समृद्धि प्रदान कर दी[2] तथा उस में रहने वालों के आहार का भी निर्धारण उसी में कर दिया[3] केवल चार दिन में ही,[4] प्रश्न करने वालों के

ज्ञात होता है कि धरती को आकाश के बाद बनाया गया, जबकि यहाँ धरती की पैदाईश की चर्चा आसमान की पैदाईश से पहले की गई। आदरणीय इब्ने अब्बास ने इसकी व्याख्या इस प्रकार फ़रमायी है कि उत्पत्ति और वस्तु है तथा دَحْوٌ (बिछाना अथवा फैलाना) अलग चीज़ है जैसे कि पहले भी व्यान (वर्णन) किया गया है। तथा دحى (दहा) का अभिप्राय है कि धरती को आवास योग्य बनाने के लिए उसमें जल के भंडार रखे गये। उसे उपज की आवश्यकता का कोष बनाया गया। ﴿أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا﴾ उसमें पर्वत, टीले तथा पाषाण रखे गये। यह काम आकाश की रचना के बाद दूसरे दो दिनों में किया गया। इस प्रकार धरती तथा उससे संम्बन्धित चीज़ों की रचना चार दिनों में पूरी हुई। (सहीह बुख़ारी, व्याख्या *हा॰मीम॰ अस्सजदा*)

[1]अर्थात पर्वतों को धरती ही से पैदा करके उनके ऊपर गाड़ दिया ताकि धरती इधर-उधर न डोले।

[2]यह संकेत है पानी की अधिकता, अनेक प्रकार की जीविका, खनिज पदार्थ एवं अन्य इसी प्रकार की वस्तुओं की ओर। यह धरती की समृद्धि है भलाई की प्रचुरता का नाम ही समृद्धि (बरकत) है।

[3] أَقْوات (अक़्वात) قوتٌ कूत (आहार, खाद्य) का बहुवचन है। अर्थात धरती की सभी बसने वाली सृष्टि का आहार उसमें रख दिया अथवा उसकी व्यवस्था कर दी। अल्लाह की इस योजना तथा व्यवस्था का काम इतना विस्तृत है कि कोई ज़ुबान उसका वर्णन नहीं कर सकती, कोई कलम उसे लिख नहीं सकता कोई कलकूलेटर उसे गिन नहीं सकता। कुछ ने इसका अभिप्राय यह लिया है कि प्रत्येक भूभाग में ऐसी वस्तऐं पैदा कर दीं जो दूसरे भूभाग में नहीं उपज सकतीं ताकि प्रत्येक क्षेत्र की यह विशेष उपज उन क्षेत्रों का व्यवपार तथा जीविका का आधार बन जायें। यह भावार्थ भी अपने स्थान पर सही तथा बिल्कुल यथार्थ है।

[4]अर्थात उत्पत्ति के पूर्व दो दिन तथा धरती फैलाने के पश्चात दो दिन, यह सब मिला के चार दिन हुए जिनमें यह सभी कार्य पूरा हुआ।

The Ummah Technology Mission

लिये समान रूप से।[1]

ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَهِىَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ؕ قَالَتَآ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ﴿۱۱﴾

(११) फिर आकाश की ओर उच्चय हुआ तथा वह धुँआ (सा) था, तो उसे तथा धरती को आदेश दिया कि तुम दोनों आओ, चाहो यह न चाहो [2] दोनों ने निवेदन किया कि हम स्वेच्छा पूर्ण उपस्थित हैं।

فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِىْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِىْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ؕ وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿۱۲﴾

(१२) तोदो दिन में सात आकाश बना दिये, प्रत्येक आकाश में उसके अनुसार आदेश की प्रकाशना भेज दी[3] तथा हमने संसारीय आकाश को तारों से सुशोभित किया तथा रक्षा की।[4] यह योजना अल्लाह प्रभुत्वशाली सर्वज्ञाता की है।

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ ﴿۱۳﴾

(१३) अब भी ये विमुख हों तो कह दीजिए कि मैं तुम्हें उस तड़ित (आकाशीय प्रकोप) से डरा देता हूँ जो आद समुदाय एवं समूद समुदाय के तड़ित के समान होगा।[5]

---

[1] سَـــوَآء (सवाअ) का अर्थ है पूरे चार दिन में, अर्थात प्रश्न करने वालों को बता दो कि रचना तथा विस्तार का काम चार दिन में हुआ अथवा पूरा अथवा बराबर उत्तर है प्रश्न-कर्ताओं के लिए।

[2] यह आना किस प्रकार था इसकी स्थिति नहीं बताई जा सकती ? यह दोनों अल्लाह के पास आये जैसे उसने चाहा। कुछ ने इसका भावार्थ लिया है कि मेरे आदेश का पालन करो। उन्होंने कहा, ठीक है हम उपस्थित हैं। अल्लाह ने आकाश को आदेश किया कि सूर्य, चन्द्रमा तथा सितारे निकाल दे तथा पृथ्वी से कहा कि स्रोत प्रवाहित कर दे एवं फल उगा दे। (इब्ने कसीर) अथवा भावार्थ है कि तुम दोनों अस्तित्व में आ जाओ।

[3] अर्थात स्वयं आकाशों को अथवा उनमें आबाद फ़रिश्तों को विशेष कार्यों तथा स्मरण एवं महिमागान के लिए प्रतिबद्ध कर दिया।

[4] अर्थात शैतान से सुरक्षा, जैसाकि अन्य स्थान पर व्याख्या है। तारों का एक तीसरा उद्देश्य दूसरे स्थान पर اهتداء (रास्ते का पता लगाना) भी वर्णन किया गया है। (*अन्नहल-१६*)

[5] अर्थात चूँकि तुम हमारे ही समान मनुष्य हो, इसलिए हम तुम्हें ईशदूत (नबी) नहीं मान सकते। अल्लाह को नबी भेजना होता तो फ़रिश्तों को भेजता न कि मानव को।

The Ummah Technology Mission

إِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنۢ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا تَعْبُدُوٓا۟ إِلَّا ٱللَّهَ ۖ قَالُوا۟ لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَأَنزَلَ مَلَٰٓئِكَةً فَإِنَّا بِمَآ أُرْسِلْتُم بِهِۦ كَٰفِرُونَ ﴿١٤﴾

(१४) उनके पास जब उनके आगे-पीछे से पैग़म्बर आये कि तुम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की इबादत न करो, तो उन्होने उत्तर दिया कि यदि हमारा प्रभु चाहता तो फ़रिश्तों को भेजता; हम तो तेरी रिसालत को पूर्णरूप से अस्वीकार करते हैं।

فَأَمَّا عَادٌ فَٱسْتَكْبَرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ بِغَيْرِ ٱلْحَقِّ وَقَالُوا۟ مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۖ أَوَلَمْ يَرَوْا۟ أَنَّ ٱللَّهَ ٱلَّذِى خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۖ وَكَانُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿١٥﴾

(१५) तो जब आद ने अकारण धरती पर अहंकार प्रारम्भ कर दिया तथा कहने लगे कि हम से शक्तिशाली कौन है [1] क्या उन्हें यह नहीं दिखायी दिया कि जिसने उन्हें पैदा किया वह उनसे सर्वशक्तिशाली है।[2] वे (अन्त तक) हमारी आयतों[3] का इंकार ही करते रहे।

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِىٓ أَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيقَهُمْ

(१६) अन्त में हमने उन पर एक तीव्रगति वाली आँधी[4] अशुभ दिनों में[5] भेज दी कि उन्हें

---

[1]इस वाक्य खंड से उनका अभिप्राय यह था कि वह यातना रोक लेने पर समर्थ हैं क्योंकि वे लम्बे क़द तथा अति बलवान थे। यह उन्होंने उस समय कहा जब उनके पैग़म्बर आदरणीय हूद (अलैहिस्सलाम) ने उनको सावधानी तथा चेतावनी के लिये अल्लाह के प्रकोप से डराया।

[2]अर्थात क्या वह अल्लाह से भी अधिक बलवान हैं, जिसने उन्हें पैदा किया तथा उन्हें शक्ति तथा बल दिया ? क्या उनको रचने के पश्चात उसकी शक्ति तथा बल समाप्त हो गया ? यह प्रश्न इंकार तथा फटकार के लिये है।

[3]उन चमत्कारों का जो अम्बिया को हमने प्रदान किये थे, अथवा उन प्रमाणों का जो अम्बिया के साथ उतारे गये थे अथवा उन उत्पत्ति के लक्षणों का जो विश्व में फैले हुए हैं तथा बिखरे हुए हैं।

[4] صَرْصَر यह صَرَّةٌ से बना है जिसका अर्थ आवाज़ है, अर्थात ऐसी वायु जिसमें तीव्र ध्वनि थी। अर्थात अति तीव्र तथा प्रचंड वायु जिसमें ध्वनि भी होती है। कुछ कहते हैं कि यह صِـــر से है, जिसका अर्थ 'शीत' है। अर्थात ऐसी पालेवाली वायु जो अग्नि के समान जला डालती है। इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं وَ الحقّ أنّها مُتّصفـةٌ بِجميـع ذلك "सत्य यह है कि उस वायु में यह सभी गुण थे।"

[5] نَحِسَاتٌ का अनुवाद कुछ ने निरन्तर किया है क्योंकि यह वायु सात रातें तथा आठ दिन तक निरन्तर चलती रही। कुछ ने प्रचण्ड, कुछ ने धूल-धप्पड़ वाली तथा कुछ ने अशुभ

The Ummah Technology Mission

عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٦﴾

सांसारिक जीवन में अपमान वाले प्रकोप का स्वाद चखा दें। (विश्वास करो) कि आख़िरत की यातना इससे अत्याधिक अपमान वाली है तथा वे सहायता नहीं किये जायेंगे।

وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٧﴾

(१७) तथा रहे समूद, तो हमने उनका भी मार्गदर्शन किया[1] फिर भी उन्होंने मार्गदर्शन पर अंधेपन को महत्व दिया,[2] जिसके कारण उन्हें (पूर्णरूप से) अपमान की यातना की कड़क ने उनके कुकर्मों के कारण पकड़ लिया।[3]

وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿١٨﴾

(१८) तथा ईमानदार और संयमियों को हमने (बाल-बाल) बचा लिया।

وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٩﴾

(१९) तथा जिस दिन[4] अल्लाह के शत्रु नरक की ओर लाये जायेंगे तथा उन (सब) को एकत्रित कर दिया जायेगा।[5]

किया है। अन्तिम अनुवाद का अभिप्राय यह होगा कि यह दिन जिनमें उन पर कड़ी हवा की आँधी आयी, उनके लिए अति अशुभ सिद्ध हुए। यह नहीं कि दिन ही सामान्यतः अशुभ हैं।

[1]अर्थात उनको तौहीद (अद्वैत) की दावत दी, उसके तर्क उनके सामने स्पष्ट किये तथा उनके पैग़म्बर (संदेशवाहक) स्वालेह (अलैहिस्सलाम) द्वारा उन पर तर्क की पूर्ति की।

[2]अर्थात उन्होंने विरोध तथा झुठलाने का काम किया यहाँ तक कि उस ऊँटनी को बध कर डाला जो चमत्कार स्वरूप उनकी इच्छा पर चट्टान से प्रकट की गई थी तथा पैग़म्बर की सच्चाई का प्रमाण थी।

[3] صاعِقَةُ (साइक:) कठिन प्रकोप को कहते हैं। यह कड़ा प्रकोप उन पर चिंघाड़ तथा भूकम्प के रूप में आया, जिसने अपमान तथा हिनाई के साथ उन्हें सत्यानाश कर दिया।

[4]यहाँ اذكر लुप्त है। अर्थात वह समय याद करो जब अल्लाह के विरोधयों को फ़रिश्ते एकत्रित करेंगे अर्थात आदि से अन्त तक के विरोधियों का जमाव होगा।

[5] أي : يُحبَسُ أولهم على آخرهم لِيُلاحِقوا अर्थात "उनको रोक-रोककर उनके आदि तथा अन्त को परस्पर एकत्र किया जायेगा।" (फ़तहुल क़दीर) इस शब्द की अधिक व्याख्या के लिए देखिए *सूरः अन्नमल* आयत नं॰ १७ का भाष्य।

The Ummah Technology Mission

حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٠﴾

(२०) यहाँ तक कि जब नरक के अति निकट आ जायेंगे उन पर उनके कान तथा उनकी आँखें एवं उनकी खालें उनके कर्मों की गवाही देंगे।[1]

وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ؕ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِىْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَىْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢١﴾

(२१) तथा ये अपनी खालों से कहेंगे कि तुमने हमारे विरूद्ध गवाही क्यों दी।[2] वह उत्तर देंगे कि हमें उस अल्लाह ने बोलने की शक्ति दी जिसने प्रत्येक वस्तु को बोलने की शक्ति प्रदान की है, उसी नें प्रथम बार तुम्हें पैदा किया तथा उसी की ओर तुम सब लौटाये जाओगे।[3]

---

[1]अर्थात जब वह शिर्क करने को नकार देंगे तो अल्लाह उनके मुखों पर मुहर लगा देगा तथा उनके अंग गवाही देंगे कि यह अमुक-अमुक कार्य करते रहे। ﴿إِذَا مَا جَآءُوهَا﴾ में مَا अधिक है बल देने के लिए। इंसान के भीतर पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ हैं। उनमें से यहाँ दो का वर्णन है। तीसरी खाल है जो स्पर्श अथवा छूने का साधन है। इस प्रकार ज्ञानेन्द्रियों के तीन प्रकार हो गये। शेष दो ज्ञान इन्द्रियों की चर्चा नहीं की कि 'चखना' कई प्रकार से स्पर्श में सम्मिलित है, क्योंकि यह चखना उस समय तक संभव नहीं जब तक उस वस्तु को ज़बान पर न रखा जाये। इसी प्रकार 'सूँघना' उस समय तक संभव नहीं जब तक वह वस्तु नाक की त्वचा से स्पर्श न करे। इस प्रकार جلود (खालें) शब्द में तीन ज्ञान इंद्रियाँ आ जाती हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात जब मुशरेकीन और काफ़िर देखेंगे कि खुद उनके शरीर के समस्त अंग उनके विपरीत गवाही दे रहे हैं तो वे आश्चर्य से अथवा यातना के तौर पर और क्रोध में उनसे कहेंगे।

[3]कुछ के विचार में وَهُوَ से अल्लाह का कथन तात्पर्य है। इस आधार पर यह नया तथा अलग वाक्य है, तथा कुछ के विचार में इंसानी खालों का ही। इस आधार पर यह उन्ही के वाक्य का पूरक कथन है। क़यामत के दिन अंगों के गवाही देने का वर्णन गुज़र चुका है तथा सही हदीसों में भी इसे वर्णित किया गया है। उदाहरणार्थ जब अल्लाह की आज्ञा से मानवीय अंग बोलकर बतलायेंगे, तो बंदा कहेगा, «بُعْدًا لَكُنَّ وَسُحْقًا؛ فَعَنْكُنَّ كُنْتُ أُنَاضِلُ». "तुम्हारे लिये विनाश तथा दूरी हो। मैं तो तुम्हारे पक्ष ही में झगड़ रहा था तथा सुरक्षा कर रहा था।" (सहीह मुस्लिम, किताबुज़ ज़ुहद) इसी हदीस में यह भी वर्णन हुआ है कि बंदा

The Ummah Technology Mission

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَآ اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा तुम (अपने कुकर्म) इस कारण छिपा कर रखते ही न थे कि तुम पर तुम्हारे कान तथा तुम्हारी आँखें एवं तुम्हारी खालें गवाही देंगी[1] तथा तुम यह समझते रहे कि तुम जो कुछ भी कर रहे हो उसमें से बहुत से कर्मों से अल्लाह अंजान है।[2]

وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

(२३) तथा तुम्हारे इसी कुविचार ने जो तुमने अपने प्रभु के विषय में कर रखे थे, तुम्हें नाश कर दिया[3] तथा अन्त में तुम हानि उठाने वालों में से हो गये।

कहेगा कि मैं अपने मन के सिवा किसी की गवाही न मानूंगा। अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि क्या मैं तथा मेरे फ़रिश्ते कर्म-लेखक गवाही के लिए पर्याप्त नहीं। फिर उनके मुख पर मुहर लगा दी जायेगी तथा उनके अंगों को बोलने का आदेश दिया जायेगा।

[1]इसका अभिप्राय है कि तुम पाप का कर्म करते हुए तो लोगों से छुपने का प्रयास करते थे किन्तु तुम्हें इसका कोई भय नहीं था कि तुम्हारे विरूद्ध स्वयं तुम्हारे अंग भी गवाही देंगे कि जिनसे छुपने की आवश्यकता का आभास करते। इसका कारण उनका पुर्नजीवन से इंकार तथा अविश्वास था।

[2]इसलिए तुम अल्लाह की सीमा लाँघने तथा उसकी अवज्ञा में निर्भीक थे।

[3]अर्थात तुम्हारी इस दुरास्था एवं अनृत भ्रम ने कि अल्लाह को हमारे बहुत से कर्मों का ज्ञान नहीं होता, तुम्हें विनाश में डाल दिया, इसलिए कि इसके कारण तुम प्रत्येक प्रकार का पाप करने में बहादुर तथा निर्भीक हो गये थे। इसके अवतरण के कारण के संबंध में एक हदीस है। माननीय अब्दुल्लाह बिन मसऊद फ़रमाते हैं कि "*खानये काबा*" के पास दो कुरैशी तथा एक सक़फी अथवा दो सक़फी तथा एक कुरैशी एकत्र हुए, भारी शरीर एवं कम समझ वाले। इनमें से एक ने कहा, "क्या तुम समझते हो, हमारी बातें अल्लाह सुनता है ?" दूसरे ने कहा, हमारी खुली बातें सुनता है तथा गुप्त बातें नहीं सुनता। एक अन्य ने कहा, "यदि वह हमारी खुली बातें सुनता है तो हमारी गुप्त बातें भी अवश्य सुनता है" जिस पर अल्लाह ने आयत ﴿وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ﴾ अवतरित की (सहीह बुख़ारी, व्याख्या *सूरह हा॰मीम॰अस्सजदा*)

The Ummah Technology Mission

فَإِنْ يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۖ وَإِنْ يَسْتَعْتِبُوا فَمَا هُم مِّنَ الْمُعْتَبِينَ ﴿٢٤﴾

(२४) अब यदि ये धैर्य रखें तो भी उनका ठिकाना नरक ही है तथा यदि ये क्षमायाचना भी करना चाहें तो भी क्षमा नहीं किये जायेंगे।[1]

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُم مَّا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा हमने उनके कुछ सहभागी निर्धारित कर रखे थे जिन्होंने उनके अगले-पिछले कर्मों को उनकी दृष्टि में आकर्षक बना रखे थे।[2] तथा उनके पक्ष में भी अल्लाह का वचन उन सम्प्रदायों के साथ पूर्ण हुआ जो उनसे पूर्व जिन्नों तथा मनुष्यों के गुज़र चुके है। निःसंदेह वे हानि उठाने वाले सिद्ध हुए।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا لِهَٰذَا الْقُرْآنِ وَالْغَوْا فِيهِ

(२६) तथा काफ़िरों ने कहा कि इस क़ुरआन को सुनो ही मत[3] (उनके पाठ करने के समय) तथा बेहूदा बातें करो,[4] क्या विचित्र कि तुम

---

[1]एक अन्य अर्थ इसका यह किया गया है कि वह मनाना चाहेंगे (عُتبٰی प्रसन्नता की माँग करेंगे) ताकि वह स्वर्ग में चले जायें तो यह चीज़ उन्हें कभी सुलभ नहीं होगी (ऐसरूत्तफ़ासीर तथा फ़तहुल क़दीर) कुछ ने इसका अर्थ यह वर्णन किया है कि वह दुनिया में फिर भेजे जाने की कामना करेंगे जो अंगीकार नहीं की जायेगी। (इब्ने जरीर तबरी) अभिप्राय यह है कि उनका नित्य का आवास नरक होगा इस पर धैर्य करें (तब भी दया नहीं की जायेगी जैसाकि दुनिया में कभी धैर्यवानों पर तरस आ जाता है) अथवा किसी भी प्रकार वहाँ से निकलने का प्रयास करें उन्हें सफलता नहीं मिलेगी।

[2]इनसे तात्पर्य वह शैतान, मनुष्य एवं जिन्न हैं जो असत्य पर दुराग्रह करने वालों के संग लग जाते हैं, जो उन्हें कुफ़्र तथा पापों को शोभनीय बनाकर दिखाते हैं। तो वह इस कुपथ की दलदल में फंसे रहते हैं यहाँ तक कि उनकी मौत आ जाती है तथा वह सदा की क्षति के पात्र बन जाते हैं।

[3]यह उन्होंने परस्पर कहा। कुछ ने لا تسمعوا का अर्थ किया है कि उसका अनुसरण न करो।

[4]अर्थात शोर करो, तालियाँ, सीटियाँ बजाओ, चिल्ला-चिल्ला कर बातें करो ताकि उपस्थित लोगों के कानों में क़ुरआन की आवाज़ न जाये तथा उनके दिल क़ुरआन की शैली तथा गुणों से प्रभावित न हों।

The Ummah Technology Mission

لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ﴿٢٦﴾

प्रभावशाली हो जाओ।[1]

فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

(२७) तो निःसंदेह हम उन काफ़िरों को कठोर यातना का स्वाद चखायेंगे तथा उन्हें उन के अति बुरे कर्मों का बदला (अवश्य) देगें।[2]

ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ ۭ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿٢٨﴾

(२८) अल्लाह के शत्रुओं का बदला (दण्ड) यही नरक की अग्नि है, जिसमें उनका स्थाई निवास है, (यह) बदला है हमारी आयतों को अस्वीकार करने का।[3]

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ اَرِنَا الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٢٩﴾

(२९) तथा काफ़िर लोग कहेंगे कि हे हमारे प्रभु ! हमें जिन्नों तथा मनुष्यों के उन (दोनों पक्षों) को दिखा, जिन्होंने हमें भटकाया[4] (ताकि) हम उनको अपने पैरों के नीचे डाल

---

[1]अर्थात संभव है कि इस प्रकार शोर मचाने के कारण से मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) क़ुरआन का पाठ ही न करें जिसे सुनकर लोग प्रभावित होते हैं।

[2]अर्थात उनके कुछ सत्कर्मों का कोई मूल्य नहीं होगा, जैसे अतिथि-सत्कार, संबन्धियों के साथ सद्भाव इत्यादि क्योंकि वह ईमान के धन से वंचित रहे। हाँ, कुकर्मों का प्रतिकार उन्हें अवश्य मिलेगा जिनमें पवित्र क़ुरआन से रोकने का अपराध भी है।

[3]आयतों से तात्पर्य जैसाकि पहले भी वताया गया है कि वह खुले प्रमाण तथा तर्क हैं जो अल्लाह तआला अम्बिया (ईशदूतों) पर उतारता है, अथवा वह चमत्कार हैं जो उनको प्रदान किये जाते हैं, अथवा उत्पत्ति के वे प्रमाण हैं जो विश्व तथा प्राणियों में फैले हुए हैं। काफ़िर इन सब ही का इंकार करते हैं जिसके कारण वह ईमान से वंचित रहते हैं।

[4]इसका भावार्थ स्पष्ट है कि पथभ्रष्ट करने वाले शैतान ही नहीं होते, इंसानों की एक वड़ी संख्या भी शैतान के प्रभाव के अधीन लोगों को वहकाने में तत्पर रहती है। फिर भी कुछ ने जिन्न से इवलीस तथा इंसान से क़ावील तात्पर्य लिया है, जिसने इंसानों में सवसे पहले अपने भाई हावील को वध करके अत्याचार तथा महापाप किया तथा हदीसानुसार क़यामत तक होने वाले सभी अवैध संहारों के पाप का एक भाग उसको मिलता रहेगा। हमारे विचार से पहला भावार्थ अधिक सही है।

The Ummah Technology Mission

दें ताकि वे अत्यन्त नीचे (कठोर यातना में) हो जायें।[1]

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٣٠﴾

(३०) वास्तव में जिन लोगों ने कहा कि हमारा प्रभु अल्लाह है[2] फिर उसी पर दृढ़ रहे,[3] उनके पास फ़रिश्ते (यह कहते हुए) आते हैं[4] कि तुम कुछ भी भयभीत तथा दुखी न हो[5] (बल्कि) उस स्वर्ग की शुभसूचना सुन लो

---

[1]अर्थात अपने पगों से उन्हें रौंदें तथा इस प्रकार हम उन्हें भी अपमानित तथा निरादर करें। नरकवासियों को अपने नेताओं पर जो क्रोध होगा उसकी संतुष्टि के लिए वह कहेंगे। अन्यथा दोनों ही अपराधी हैं तथा दोनों ही एक जैसा नरक का दण्ड भोगेंगे। जैसे दूसरे स्थान पर अल्लाह ने फ़रमाया ﴿لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَلَٰكِن لَّا تَعْلَمُونَ﴾ (*अल-आराफ़*-३८) नरकवासियों की चर्चा के पश्चात अल्लाह तआला स्वर्गवासियों की चर्चा कर रहा है, जैसाकि साधारणतः क़ुरआन की शैली है ताकि चेतावनी के साथ प्रोत्साहन तथा प्रोत्साहन के साथ चेतावनी का भी प्रबन्ध रहे, मानो डराने के पश्चात शुभसूचना।

[2]अर्थात एक अल्लाह बिना साझी का, पालनहार भी वही तथा पूज्य भी वही। यह नहीं कि पालनहार होने का तो स्वीकार परन्तु उपास्य (पूज्य होनें में) दूसरों को भी साझी बनाया जा रहा है।

[3]अर्थात कठिन से कठिन स्थिति में भी ईमान पर स्थिर रहे, उससे फिरे नहीं। कुछ ने स्थिरता का अर्थ विशुद्धता लिया है, अर्थात मात्र एक अल्लाह ही की इबादत तथा आज्ञापालन किया। जिस प्रकार हदीस में आता है कि एक व्यक्ति ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा। "मुझे ऐसी बात बतला दें कि आप के पश्चात मुझे किसी से प्रश्न करने की आवश्यकता न हो।" आपने फ़रमाया,

«قُلْ آمَنْتُ بِاللهِ ثُمَّ اسْتَقِمْ».

"कह, मैं अल्लाह पर ईमान लाया, फिर इस पर अडिग रह।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाबु जामिअे औसाफिल इस्लाम)

[4]अर्थात मृत्यु के समय। कुछ कहते हैं कि फ़रिश्ते यह शुभसूचना तीन स्थानों पर देते हैं मृत्यु के समय, क़ब्र में तथा क़ब्र से पुनः उठने के समय।

[5]अर्थात परलोक में आगामी स्थितियों की चिन्ता तथा संसार में धन-संतान के त्याग का शोक न करो।

The Ummah Technology Mission

जिसका तुम्हें वचन दिया गया है।[1]

نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۖ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ﴿٣١﴾

(३१) तुम्हारे साँसारिक जीवन में भी हम तुम्हारे शुभचिन्तक थे तथा आख़िरत में भी रहेंगे, [2] जिस वस्तु को तुम्हारा मन चाहे तथा जो कुछ माँगो सब तुम्हारे लिये [स्वर्ग में विद्यमान (उपस्थित)] है।

نُزُلًا مِنْ غَفُورٍ رَحِيمٍ ﴿٣٢﴾

(३२) अत्यन्त क्षमा करने वाला अत्यन्त कृपालु की ओर से ये सब कुछ अतिथि सत्कार के रूप में है।

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٣﴾

(३३) तथा उससे अधिक अच्छी बात वाला कौन है जो अल्लाह की ओर बुलाये, पुण्य के कार्य करे तथा कहे कि मैं निश्चित रूप से मुसलमानों में से हूँ।[3]

وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ﴿٣٤﴾

(३४) पुण्य तथा पाप समान नहीं होते, [4] बुराई को भलाई से दूर करो, फिर वही जिसके और तुम्हारे बीच शत्रुता है ऐसा हो जायेगा जैसे हार्दिक मित्र।[5]

---

[1]अर्थात दुनिया में जिसका वचन तुम्हें दिया गया था।

[2]यह अधिक शुभसूचना है, यह अल्लाह तआला का कथन है। कुछ के विचार में यह फ़रिश्तों का कथन है। दोनों ही रूपों में यह ईमानदार के लिए महान शुभसूचना है।

[3]अर्थात लोगों को अल्लाह की ओर बुलाने के साथ-साथ स्वयं भी संमार्ग प्राप्त धर्म का अनुपालक तथा अल्लाह का आज्ञाकारी हो।

[4]बल्कि उनमें महान अंतर है।

[5]यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण नैतिक निर्देश है कि बुराई को अच्छाई के साथ टालो, अर्थात अपकार का बदला उपकार के साथ, अत्याचार का क्षमा से, क्रोध का धैर्य से तथा अप्रिय बातों का सहनशीलता से दिया जाये। इसका प्रभाव यह होगा कि तुम्हारा शत्रु

The Ummah Technology Mission

وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٣٥﴾

(३५) तथा यह बात उन्हीं के सौभाग्य में होती है जो धैर्य रखें;[1] तथा उसे अति सौभाग्यशाली के अतिरिक्त कोई नहीं प्राप्त कर सकता।[2]

وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा यदि शैतान की ओर से कोई शंका उत्पन्न हो जाये तो अल्लाह की शरण चाहो।[3] नि:संदेह वह अति सुनने वाला जानने वाला है।[4]

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۭ لَا تَسْجُدُوْا

(३७) तथा दिन-रात एवं सूर्य तथा चन्द्रमा भी उसी की निशानियों में से हैं,[5] तुम सूर्य

मित्र बन जायेगा, दूरस्थ समीपस्थ तथा रक्त का प्यासा तुम्हारे मोहित तथा जान निछावर करने वाला हो जायेगा।

[1]अर्थात बुराई को भलाई से टालने का गुण यद्यपि अति लाभप्रद तथा बड़ा सफल है, किन्तु इसके अनुसार कर्म वही कर सकेंगे जो धैर्यवान होंगे, क्रोध को पी जाने वाले तथा अप्रिय बातों को सहन करने वाले।

[2] حَظٍّ عَظِيْم (बड़ा सौभाग्य) से अभिप्राय स्वर्ग है, अर्थात उपरोक्त गुण उनको प्राप्त होते हैं जो बड़े भाग्यशाली होते हैं। अर्थात स्वर्गीय, जिनका स्वर्ग में जाना लिख दिया गया हो।

[3]अर्थात शैतान धर्म-विधान के कर्म से फेरना चाहे अथवा उत्तम ढ़ंग से बुराई के टालने में बाधा डाले तो उसकी बुराई से बचने के लिए अल्लाह की शरण माँगो।

[4]तथा जो ऐसा हो अर्थात प्रत्येक की सुनने तथा प्रत्येक बात को जानने वाला, वही शरण माँगने वालों को शरण दे सकता है। यह पूर्व का कारण बताया गया है। इस के पश्चात अब फिर कुछ निशानियों की चर्चा की जा रही है जो अल्लाह के पूर्ण सामर्थ्य, उसकी एकता (तौहीद) तथा उसकी आधिकारिक शक्ति को व्यक्त कर रही है।

[5]अर्थात रात को अंधेरी बनाना ताकि लोग उसमें विश्राम कर सकें। दिन को प्रकाशित बनाना ताकि जीविका उपार्जन में उलझन न हो। फिर एक के बाद दूसरे का आना-जाना तथा कभी रात का लम्बा तथा दिन का छोटा होना, कभी इसके विपरीत होना इसी प्रकार सूर्य तथा चाँद का अपने-अपने समय से निकलना एवं डूबना तथा अपने अक्ष पर अपनी मंजिलें तय करना इस बात का प्रमाण है कि उनका निश्चय कोई रचयिता तथा स्वामी है। तथा वह एक एवं केवल एक है तथा विश्व में उसी का अधिकार एवं आदेश

The Ummah Technology Mission

لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿٣٧﴾

तथा चन्द्रमा के समक्ष शीश न झुकाओ [1] बल्कि शीश उस अल्लाह के समक्ष झुकाओ जिसने उन सबको पैदा किया है [2] यदि तुम्हें उसी की इबादत करनी है।

فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُوْنَ ﴿٣٨﴾ السجدة

(३८) फिर भी यदि वे अहंकार करें तो वे (फ़रिश्ते) जो आपके प्रभु के निकट हैं, वे तो रात-दिन उसकी महिमा का वर्णन करते हैं तथा (किसी समय भी) नहीं थकते।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٩﴾

(३९) तथा उस (अल्लाह) की निशानियों में से (यह भी) है कि तू धरती को दबी दबायी (शुष्क) देखता है, [3] फिर जब हम उस पर वर्षा करते हैं तो वह तरो-ताज़ा होकर उभरने लगती है।[4] जिसने उसे जीवित कर दिया वही निश्चित रूप से मृत को भी जीवित करने

चलता है। यदि व्यवस्थापक तथा प्रबंधक एक से अधिक होते तो विश्व का यह संचालन ऐसे सुदृढ़ तथा लगे-बंधे ढंग से नहीं चल सकता था।

[1] इसलिए कि यह भी तुम्हारी भाँति अल्लाह की सृष्टि हैं, ईश्वरीय गुणों से युक्त अथवा उसमें साझी नहीं हैं।

[2] خَلَقَهُنَّ में सर्वनाम बहुवचन स्त्रीलिंग इसलिए आया है कि यह या तो خَلَقَ هٰذِهِ الأربعة المذكورة के भावार्थ में है, क्योंकि नपुंसक के बहुवचन का नियम स्त्रीलिंग बहुवचन ही का है, अथवा वह केवल شمس و قمر की ओर फिर रहा है। कुछ व्याकरण विशेषज्ञों के निकट द्विवचन भी बहुवचन है अथवा फिर अभिप्राय अल-आयात (الآيات) है जो स्त्रीलिंग बहुवचन है। (फ़तहुल क़दीर)

[3] خاشِعَةً का अभिप्राय शुष्क तथा अकालग्रस्त अर्थात मृत है।

[4] अर्थात विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट फल तथा अन्न उपजाती है।

The Ummah Technology Mission

वाला है ।[1] नि:संदेह वह प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्यवान है ।

إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ۗ أَفَمَن يُلْقَىٰ فِي النَّارِ خَيْرٌ أَم مَّن يَأْتِي آمِنًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤٠﴾

(४०) नि:संदेह जो लोग हमारी आयतों में टेढ़ापन करते हैं[2] वह (कुछ) हम से छिपे नहीं[3] (बताओ तो) जो अग्नि में डाला जाये वह अच्छा है अथवा वह जो शान्तिपूर्वक क़यामत के दिन आये ?[4] तुम जो चाहो करते जाओ; वह तुम्हारा सब किया कराया देख रहा है ।[5]

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ وَإِنَّهُ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ ﴿٤١﴾

(४१) जिन लोगों ने अपने पास पवित्र क़ुरआन पहुँच जाने के उपरान्त उससे कुफ़्र किया (वह भी हमसे छिपे नहीं),[6] यह अत्यन्त

---

[1]मृत भूमि को वर्षा द्वारा इस प्रकार जीवन प्रदान कर देना तथा उससे उपज के योग्य बनाना इस बात का प्रमाण है कि वह मुर्दों को भी निश्चय जीवित करेगा ।

[2]अर्थात उसको मानते नहीं बल्कि उससे मुख फेरते तथा झुठलाते हैं । आदरणीय इब्ने अब्बास ने إلحاد (इल्हाद) का अर्थ किया है وضع الكلام على غير مواضعه इस आधार पर इसमें वह असत्य गिरोह भी आ जाते हैं जो अपने असत्य विश्वास एवं सिद्धान्त की सिद्धि के लिए अल्लाह की आयतों के अर्थ में परिवर्तन करते तथा धोखे-धड़ी से काम लेते हैं ।

[3]यह नास्तिकों के लिए कड़ी चेतावनी है चाहे वह किसी प्रकार के हों ।

[4]अर्थात क्या यह दोनों बराबर हो सकते हैं ? नहीं, वस्तुत: नहीं । इसके अतिरिक्त इससे संकेत कर दिया कि (मुलहिदीन) नास्तिक आग में डाले जायेंगे तथा ईमान वाले क़यामत (प्रलय) के दिन निर्भय रहेंगे ।

[5]यह आदेश सूचक शब्द है, किन्तु यहाँ उससे अभिप्राय धमकी तथा चेतावनी देना है । कुफ़्र एवं शिर्क तथा पाप के लिये अनुमति तथा औचित्य नहीं ।

[6]कोष्ठ के शब्द إِنَّ (इन्न) के लुप्त विधेय अनुवाद है । कुछ कहते हैं कि कुछ और शब्द लुप्त हैं, उदाहरणार्थ يُجازون بكفرهم (उन्हें उनके कुफ़्र का दण्ड दिया जायेगा) अथवा هَالِكون (वह नाश होने वाले हैं) अथवा يُعَذَّبُونَ (वह यातना दिये जायेंगे) ।

The Ummah Technology Mission

महान (सम्मानित) किताब है।[1]

لَّا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِن بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ۖ تَنزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ﴿٤٢﴾

(४२) जिसके पास असत्य फटक भी नहीं सकता न उसके आगे से तथा न उसके पीछे से, यह है अवतरित की हुई (अल्लाह) हिक्मत वाले एवं गुणों वाले की ओर से।[2]

مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِن قَبْلِكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ﴿٤٣﴾

(४३) आप से वही कहा जाता है जो आपसे पूर्व के रसूलों से भी कहा गया है।[3] नि:संदेह आपका प्रभु क्षमा करने वाला[4] तथा दुखदायी

---

[1]अर्थात यह किताब जिससे मुख फेरा जा रहा है, अवरोध तथा आक्षेप लगाने वालों की निन्दा से अति उच्च तथा सभी दोषों से पवित्र है।

[2]अर्थात वह हर प्रकार से सुरक्षित है। आगे से का अभिप्राय है कमी तथा पीछे से का अभिप्राय है अधिकता, अर्थात असत्य आगे से आकर उसमें कमी तथा पीछे से आकर न अधिक कर सकता है तथा न कोई परिवर्तन, तथा न फेरबदल करने में सफल हो सकता है। क्योंकि यह उसकी ओर से अवतरित है जो अपने कर्म तथा कथन में तत्वदर्शी है तथा प्रशंसित है। अथवा वह जिन बातों का आदेश अथवा निषेध करता है परिणाम एवं अन्त में प्रशंसनीय होती है अर्थात अच्छी तथा लाभप्रद हैं। (इब्ने कसीर)

[3]अर्थात विगत समुदायों ने अपने पैग़म्बरों को झुठलाने में जो कुछ कहा कि यह जादूगर हैं, उन्माद ग्रस्त हैं, झूठे हैं, आदि-आदि, वही मक्का के काफ़िरों ने भी आपको कहा है। यह समझो जैसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी जा रही है कि आपको झुठलाना तथा आपको जादू, झूठ, उन्माद से संम्बन्धित करना नई बात नहीं है। प्रत्येक पैग़म्बर के साथ यही होता आया है। जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿ مَا أَتَى الَّذِينَ مِن قَبْلِهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ۝ أَتَوَاصَوْا بِهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴾

(अज़्ज़ारियात-५२,५३)

दूसरा अभिप्राय इसका यह है कि यह वहीं बातें हैं जो आपसे पहले रसूलों से कही गयी थीं। इसलिए कि सभी धर्म-विधान इन बातों पर एकमत रहे हैं, अपितु तौहीद (एकेश्वरवाद) एवं शुद्धता सबका सर्वप्रथम आमंत्रण रहा है। (फ़तहुल क़दीर)

[4]अर्थात उन ईमान तथा तौहीद वालों के लिए जो मोक्ष के पात्र हैं।

The Quran Technology Mission

यातना देने वाला है।[1]

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ؕ ءَاَعْجَمِيٌّ وَّعَرَبِيٌّ ؕ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ؕ وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ؕ اُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ ﴿۴۴﴾

(४४) तथा यदि हम उसे ग़ैर अरबी भाषा का क़ुरआन बनाते[2] तो कहते कि इसकी आयतें स्पष्ट रूप से वर्णन क्यों नहीं की गईं ?[3] यह क्या कि किताब ग़ैर अरबी तथा आप अरबी रसूल ?[4] (आप) कह दीजिए कि यह ईमानवालों के लिए मार्गदर्शन एवं स्वास्थ्यकर है, तथा जो ईमान नहीं लाते तो उनके कानों में (बहरापन) बोझ है तथा यह उन पर अंधापन है, ये वे लोग हैं जो किसी दूर स्थान से पुकारे जा रहे हैं।[5]

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ

(४५) तथा निःसंदेह हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब प्रदान की थी तो उसमें भी मतभेद किया गया तथा यदि (वह) बात न होती जो आपके प्रभु की ओर से पूर्व ही निर्धारित हो

---

[1]उनके लिए जो काफ़िर तथा अल्लाह के पैग़म्बरों के शत्रु हैं। यह आयत भी सूरः *हिज्र* की आयत ﴿نَبِّئْ عِبَادِيْٓ اَنِّيْٓ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۙ وَاَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ﴾ के समान है।

[2]अर्थात अरबी की जगह किसी अन्य भाषा में क़ुरआन अवतरित करते।

[3]अर्थात हमारी भाषा में क्यों नहीं कहा गया जिसे हम समझते, क्योंकि हम तो अरबी हैं, ग़ैर अरबी (विदेशी) भाषा नहीं समझते।

[4]यह भी काफ़िरों का ही कथन है कि वह आश्चर्य करते कि रसूल तो अरबी है तथा क़ुरआन उस पर ग़ैर अरबी भाषा में अवतरित हुआ है। अभिप्राय यह है कि क़ुरआन को अरबी भाषा में अवतरित करके उसके सर्वप्रथम संबोधित अरबों के लिए कोई तर्क शेष नहीं रहने दिया है। यदि यह अरबी के अतिरिक्त अन्य भाषा में होता तो वह बहाने कर सकते थे।

[5]अर्थात जिस प्रकार दूर का व्यक्ति दूरी के कारण पुकारने वाले की आवाज़ सुनने से विवश रहता है इसी प्रकार इन लोगों की बुद्धि तथा बोध में क़ुरआन नहीं आता।

The Ummah Technology Mission

لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿٤٥﴾

चुकी है [1] तो उनके मध्य (कभी का) निर्णय हो चुका होता [2] यह लोग तो उसके विषय में घोर व्याकुल करने वाली शंका में हैं।[3]

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۗ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٤٦﴾

(४६) जो व्यक्ति पुण्य के कार्य करेगा वह अपने लाभ के लिए तथा जो बुरा कार्य करेगा उसका भार भी उसी पर है तथा आपका प्रभु बन्दों पर अत्याचार करने वाला नहीं।[4]

The Ummah Technology Mission

---

[1]कि उनको दण्ड देने से पहले अवसर दिया जायेगा, ﴿وَلَٰكِن يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى﴾ (फ़ातिर-४५)

[2]अर्थात उनको तत्क्षण दण्ड देकर नाश कर दिया जाता।

[3]अर्थात उनका इंकार बुद्धि तथा ज्ञान के कारण नहीं वरन् केवल शंका के कारण है, जो उनको व्याकुल किये रखता है।

[4]इसलिए कि वह दण्ड मात्र उसी को देता है जो पापी होता है, न कि जिसे चाहे अकारण ही यातना में ग्रस्त कर दे।

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِن ثَمَرَاتٍ مِّنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي ۖ قَالُوا آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِن شَهِيدٍ ﴿٤٧﴾

(४७) क़यामत का ज्ञान अल्लाह ही की ओर लौटाया जाता है, [1] तथा जो-जो फल अपने गाभों में से निकलते हैं तथा जो मादा गर्भवती होती है एवम् जो शिशु वह जन्म देती है, सबका ज्ञान उसको है।[2] तथा जिस दिन अल्लाह (तआला) उन (मूर्तिपूजकों) को बुलाकर पूछेगा कि मेरे साझीदार कहाँ हैं; वे उत्तर देंगे कि हमने तो तुझसे कह दिया कि हममें से कोई उसका साक्षी नहीं।[3]

وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَدْعُونَ مِن قَبْلُ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा ये (जिन) जिनकी पूजा इससे पूर्व करते थे वे उनकी दृष्टि से ओझल हो गये।[4] तथा उन्होंने समझ लिया कि अब उनके लिए कोई बचाव (का मार्ग) नहीं।[5]

---

[1]अर्थात अल्लाह के सिवा उसके घटित होने का ज्ञान किसी को नहीं। इसीलिये जब माननीय जिब्रील ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से क़यामत के घटित होने के विषय में प्रश्न किया तो आपने फ़रमाया था «مَا الْمَسْئُولُ عَنْهَا بِأَعْلَمَ مِنَ السَّائِلِ». "इस संदर्भ में मुझे भी उतना ही ज्ञान है जितना आपको है, मैं आपसे अधिक नहीं जानता।" दूसरे स्थानों पर अल्लाह ने फ़रमाया : ﴿إِلَىٰ رَبِّكَ مُنتَهَاهَا﴾ (अन्नाजिआत-४४) ﴿لَا يُجَلِّيهَا لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ﴾ (अल-आराफ़-१८७)

[2]यह अल्लाह के पूर्ण तथा व्यापक ज्ञान का वर्णन है, तथा उसके इस ज्ञान गुण में कोई उसका साझी नहीं, यहाँ तक कि अम्बिया (अलैहिमुस्सलाम) भी नहीं। उन्हें भी इतना ही ज्ञान होता है जितना अल्लाह तआला (परमेश्वर) उन्हें प्रकाशना द्वारा प्रदान कर देता है तथा इस प्रकाशना द्वारा ज्ञान का संम्बन्ध भी नबूअत (दूतत्व) के पद तथा उसकी माँगों की पूर्ति से होता है, न कि अन्य कला एवं विषयों से सम्बन्धित। इसीलिए किसी भी नबी तथा रसूल को चाहे वह कितना ही मर्यादित हो 'माकान तथा मायकून (भूत एवं भविष्य) का ज्ञाता' कहना वैध (उचित) नहीं, क्योंकि यह मात्र एक अल्लाह की गरिमा एवं विशेषता है जिसमें किसी अन्य को साझी मानना शिर्क (मिश्रणवाद) होगा।

[3]अर्थात आज हममें से कोई यह मानने को तैयार नहीं कि तेरा कोई साझी है।

[4]अर्थात वे इधर-उधर हो गये तथा अनुमान के अनुसार उन्होंने किसी को लाभ नहीं पहुँचाया।

[5]यह अनुमान विश्वास के अर्थ में है। अर्थात वह क़यामत के दिन विश्वास करने पर

The Ummah Technology Mission

لَا يَسْـَٔمُ الْاِنْسَانُ مِنْ دُعَآءِ الْخَيْرِ ۫ وَاِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَـُٔوْسٌ قَنُوْطٌ ﴿٤٩﴾

(४९) भलाई माँगने से मनुष्य थकता नहीं [1] तथा यदि उसे कोई कष्ट पहुँच जाये तो हताश एवं निराश हो जाता है।[2]

وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَا لِيْ ۙ وَمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّجِعْتُ اِلٰى رَبِّيْٓ اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٥٠﴾

(५०) तथा जो कष्ट उसे पहुँच चुका है, उसके पश्चात यदि हम उसे किसी दया का स्वाद चखा दें तो वह कह उठता है कि मैं तो इसका अधिकारी ही था[3] तथा मैं तो विचार नहीं कर सकता कि क़यामत व्याप्त होगी तथा यदि मैं अपने प्रभु की ओर लौटाया गया, तो भी निःसंदेह उसके पास भी मेरे लिए भलाई होगी।[4] निःसंदेह हम उन

बाध्य होंगे कि उन्हें अल्लाह के दण्ड से बचाने वाला कोई नहीं। जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَرَءَا ٱلْمُجْرِمُونَ ٱلنَّارَ فَظَنُّوٓا۟ أَنَّهُم مُّوَٰقِعُوهَا وَلَمْ يَجِدُوا۟ عَنْهَا مَصْرِفًا ﴾

"तथा पापी नरक को देखकर समझ लेंगे कि वे उसी में झोंके जाने वाले हैं, किन्तु उससे बचाव का स्थान न पायेंगे।" (अल-कहफ़-५३)

[1]अर्थात सांसारिक धन-सम्पत्ति, स्वास्थ्य एवं बल, मान-मर्यादा तथा अन्य सांसारिक सुख-सुविधा की माँग करने से इंसान नहीं थकता अपितु माँगता ही रहता है। इंसान से तात्पर्य उनका प्रायतः बहुसंख्यक है।

[2]अर्थात आपदा पहुँचने पर तो तुरन्त निराश हो जाता है जबकि अल्लाह के निःस्वार्थी बन्दों की दशा इससे विभिन्न होती है। एक तो वह दुनिया के अभिलाषी नहीं होते। उनके समक्ष प्रत्येक क्षण आख़िरत ही होती है। दूसरे, दुख पहुँचने पर भी वे अल्लाह की दया एवं कृपा से निराश नहीं होते बल्कि परीक्षाओं को भी पापों का प्रायश्चित तथा पदोन्नति का कारण मानते हैं। मानो निराशा उनके समीप भी नहीं आती।

[3]अर्थात अल्लाह के निकट प्रिय मैं हूँ, वह मुझसे प्रसन्न है। इसलिए मुझे अपने अनुग्रह प्रदान कर रहा है। हालाँकि दुनिया की कमी-अधिकता उसके प्रेम अथवा प्रसन्नता का लक्षण (चिन्ह) नहीं है। अपितु अल्लाह केवल परीक्षा के लिए ऐसा करता है ताकि वह देखे कि सुख-सुविधाओं में उसका कृतज्ञ कौन है तथा दुखों में धैर्यवान कौन ?

[4]यह कहने वाला मुनाफ़िक़ (द्वयवादी) अथवा काफ़िर है। कोई ईमानवाला ऐसी बात नहीं

The Ummah Technology Mission

काफ़िरों को उनके कर्मों से अवगत करेंगे तथा उन्हें कठोर यातना का स्वाद चखायेंगे।

وَإِذَآ أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنسَٰنِ أَعْرَضَ وَنَـَٔا بِجَانِبِهِۦ ۖ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَآءٍ عَرِيضٍ ﴿٥١﴾

(५१) तथा जब हम मनुष्य पर अपना उपकार करते हैं तो वह विमुख हो जाता है तथा पहलू बदल लेता है;[1] तथा जब उस पर दुख आता है तो बड़ी लम्बी-चौड़ी प्रार्थनायें करने वाला बन जाता है।[2]

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ ٱللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُم بِهِۦ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِى شِقَاقٍۭ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾

(५२) (आप) कह दीजिए कि भला यह तो बताओ कि यदि यह (क़ुरआन) अल्लाह की ओर से आया हुआ हो फिर तुमने उसे न माना तो उससे बढ़कर बहका हुआ कौन होगा[3] जो (सत्य से) विरोध में दूर चला जाये।[4]

سَنُرِيهِمْ ءَايَٰتِنَا فِى ٱلْءَافَاقِ وَفِىٓ أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ ٱلْحَقُّ ۗ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُۥ

(५३) शीघ्र ही हम उन्हें अपनी निशानियाँ दुनिया के किनारों में भी दिखायेंगे तथा स्वयं उनके अपने अस्तित्व में भी, यहाँ तक कि उन पर

कह सकता। काफ़िर ही यह समझता है कि मेरी दुनिया सुख से गुज़र रही है तो आख़िरत भी मेरे लिए ऐसी ही होगी।

[1]अर्थात सत्य से मुँह फेर लेता तथा सत्य के पालन से अपना पहलू बदल लेता है तथा घमंड दिखाता है।

[2]अर्थात अल्लाह के सदन में रोता गिड़गिड़ाता है ताकि वह आपदा का निवारण कर दे अर्थात दुख में अल्लाह का स्मरण करता है, सुख में भूल जाता है। आपदा आने के समय गुहार करता है, सुविधा प्राप्ति के समय उसे वह याद नहीं रहता।

[3]अर्थात ऐसी दशा में तुमसे अधिक विपथ तथा तुमसे बड़ा शत्रु कौन होगा ?

[4] شِقاق का अर्थ है विरोध, वैर, प्रतिद्वंदता। بَعِيد मिलकर इसमें अतिश्योक्ति हो जाती है। अर्थात जो अत्याधिक विरोध तथा बैर से काम लेता है यहाँ तक कि अल्लाह के अवतरित किये क़ुरआन को भी झुठला देता है, इससे बढ़कर कुपथ तथा दुर्भाग्यशाली कौन हो सकता है ?

The Ummah Technology Mission

عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٥٣﴾

खुल जाये कि सत्य यही है। [1] क्या आपके प्रभु का प्रत्येक वस्तु से अवगत होना पर्याप्त नहीं।[2]

اَلَآ اِنَّهُمْ فِىْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ؕ اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَىْءٍ مُّحِيْطٌ ﴿٥٤﴾

(५४) विश्वास करो कि यह लोग अपने प्रभु के समक्ष प्रस्तुत होने में सशंकित हैं।[3] याद रखो कि अल्लाह तआला प्रत्येक वस्तु को घेरे हुए है।[4]

सूरतुश्शूरा -४२

سُوْرَةُ الشُّوْرٰى

सूर: शूरा मक्का में अवतरित हुई और इसमें त्रिपन आयतें तथा पाँच रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

---

[1]जिनसे क़ुरआन का सत्य तथा अल्लाह की ओर से होना स्पष्ट हो जायेगा अर्थात اَنَّهُ में सर्वनाम ۰ क़ुरआन की ओर संकेत है। कुछ ने उसे इस्लाम अथवा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर बताया है। सबका मूल एक ही है। اٰفَاق यह बहुवचन है اُفُقٌ का अर्थात किनारा। अभिप्राय यह है कि हम अपनी निशानियाँ बाहर किनारों में भी दिखायेंगे तथा स्वयं इंसानों के भीतर भी। अर्थात आकाशों तथा धरती के किनारों में भी अल्लाह के सामर्थ्य की बड़ी-बड़ी निशानियाँ हैं, जैसे सूर्य, चाँद, तारे, रात्रि, दिन, गरज, चमक, कड़क, वनस्पतियाँ, जड़, पेड़, पर्वत, नहरें तथा नदियाँ आदि। तथा आन्तरिक निशानियों में स्वयं इंसान का अस्तित्व जिन मिश्रणों, धातुओं एवं रचनाओं से युक्त है, वे अभिप्राय हैं, जिनका विवरण विज्ञान तथा आयुर्वेद का रोमांचक विषय है। कुछ कहते हैं कि आफ़ाक़ से अभिप्राय पश्चिम तथा पूर्व के वह दूरस्थ क्षेत्र हैं जिनकी विजय को अल्लाह ने मुसलमानों के लिये सरल कर दिया तथा اَنْفُس से अभिप्राय स्वयं अरब की धरती है जिसमें बद्र तथा मक्का विजय आदि रणों में मुसलमानों को सम्मान तथा सफलता दिया गया।

[2]प्रश्न सकारात्मक है कि अल्लाह अपने बंदों के कर्म एवम् कथन को देखने के लिये प्रर्याप्त है, तथा वही इस बात की गवाही दे रहा है कि क़ुरआन अल्लाह की वाणी है जो उसके सत्य दूत महा माननीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अवतरित हुई।

[3]इसलिए उसके संबंध में विचार नहीं करते, न उसके लिए कर्म करते हैं तथा न उस दिन का कोई भय उनके दिलों में है।

[4]इस आधार पर उसके लिए क़यामत (प्रलय) का घटित करना तनिक भी कठिन नहीं, क्योंकि सभी उत्पत्तियों पर उसी का प्रभुत्व एवं अधिकार है। वह जैसे चाहे उनमें अधिकार करे, करता है तथा कर सकता है। उसे कोई रोकने वाला नहीं।

The Ummah Technology Mission

حٰمٓ ①

(१) हा॰मीम॰ ।

عٓسٓقٓ ②

(२) ऐन॰सीन॰क़ाफ़ ।

كَذٰلِكَ يُوحِيٓ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكَ ۙ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ③

(३) अल्लाह तआला जो महान तथा हिक्मत-वाला है, इसी प्रकार तेरी ओर तथा तुझसे पूर्व के लोगों की ओर प्रकाशना भेजता रहा है ।[1]

لَهُۥ مَا فِي السَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ④

(४) आकाशों की (समस्त) वस्तुयें तथा जो कुछ धरती में है, सब उसी का है तथा वह सर्वोच्च एवं महान है ।

تَكَادُ السَّمَٰوَٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِن فَوْقِهِنَّ وَالْمَلَٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِمَن فِي الْأَرْضِ ۗ أَلَآ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ⑤

(५) निकट है कि आकाश अपने ऊपर से फट पड़ें[2] तथा समस्त फ़रिश्ते अपने प्रभु की पवित्रता महिमागान के साथ वर्णन कर रहे हैं तथा धरती वालों के लिए क्षमा-याचना कर रहे हैं ।[3] खूब समझ रखो कि अल्लाह (तआला) ही क्षमा करने वाला दया करने वाला है ।[4]

---

[1]अर्थात जिस प्रकार यह क़ुरआन तेरी ओर अवतरित किया गया उसी प्रकार तुझसे पहले अम्बिया पर ग्रन्थ तथा शास्त्र अवतरित किये गये । प्रकाशना (वह्यी) वह ईशवाणी है जो फ़रिश्तों द्वारा अल्लाह तआला अपने पैग़म्बरों (संदेशवाहकों) के पास भेजता रहा । एक सहावी (सहचर) ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रकाशना (वह्यी) की स्थिति पूछी तो आपने फ़रमाया कि कभी घंटी की ध्वनि के समान आती है तथा यह मुझ पर सबसे भारी होती है । जब यह समाप्त हो जाती है तो मुझे याद हो चुकी होती है । तथा कभी फ़रिश्ता इंसानी रूप में आता है एवं मुझसे बात करता है तथा वह जो कहता है मैं स्मरण कर लेता हूँ । आदरणीय आयशा رضي الله عنها कहती हैं कि मैंने कड़े जाड़े में देखा कि जब वह्यी की स्थिति समाप्त होती तो आप पसीने से भीग जाते तथा आप की ललाट से पसीने की बूँदें गिर रही होतीं । (सहीह बुख़ारी, बाबु बदइल वह्यी)

[2]अल्लाह की महानता तथा प्रताप के कारण ।

[3]यह विषय *सूरः मोमिन* की आयत संख्या ७ में भी वर्णित हुआ है ।

[4]अपने मित्रों तथा आज्ञाकारियों के लिए अथवा सभी बंदों के लिये, क्योंकि काफ़िरों तथा

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝٦

(६) तथा जिन लोगों ने उसके अतिरिक्त अन्यों को कार्यक्षम बना लिया है। अल्लाह (तआला) उन्हें भली-भाँति देख रहा है,[1] तथा आप उनके उत्तरदायी नहीं हैं।[2]

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ۝٧

(७) तथा उसी प्रकार हमने आपकी ओर अरबी क़ुरआन की प्रकाशना की है[3] ताकि आप मक्कावासियों को तथा उसके निकटवर्ती क्षेत्र के लोगों को सावधान कर दें[4] तथा एकत्रित होने के दिन से[5] जिसके आने में कोई संदेह नहीं, डरा दें। एक गुट स्वर्ग में होगा तथा एक गुट नरक में होगा।[6]

अवज्ञाकारियों की तुरन्त पकड़ न करना अपितु उन्हें एक निश्चित समय तक अवसर देना, यह भी उसकी दया तथा क्षमा ही का प्रकार है।

[1]अर्थात उनके कर्मों को सुरक्षित कर रहा है ताकि उनको उस पर प्रतिकार दे।

[2]अर्थात आप इस बात के उत्तरदायी नहीं कि उनको संमार्ग पर चला दें अथवा पापों पर उनकी पकड़ करें अपितु यह काम हमारे हैं। आपका कर्तव्य मात्र संदेश पहुँचा देना है।

[3]अर्थात हमने प्रत्येक रसूल को जैसे उसके समुदाय की भाषा में भेजा उसी प्रकार हमने आप पर अरबी भाषा में क़ुरआन अवतरित किया है, क्योंकि आप की जाति यही भाषा समझती तथा बोलती है।

[4] اُمَّ الْقُرٰى (उम्मुल क़ुरा) मक्के का नाम है। इसे 'बस्तियों की माँ' इसलिए कहा गया कि यह अरब की सबसे प्राचीन बस्ती है। जैसेकि यह सभी बस्तियों की माँ है जिन्होंने इसी से जन्म लिया है। तात्पर्य मक्का के निवासी हैं। وَمَنْ حَوْلَهَا में उसके पश्चिम तथा पूर्व के सभी क्षेत्र सम्मिलित हैं। अर्थात उन सब को डराये कि यदि वे कुफ़्र तथा शिर्क से न फिरे तो अल्लाह की यातना के पात्र होंगे।

[5]क़यामत के दिन को एकत्र होने का दिन इसलिए कहा कि उसमें अगले-पिछले सभी इंसान एकत्र होंगे। इसके अतिरिक्त, अत्याचारी एवं पीड़ित तथा ईमानदार एवं काफ़िर सब एकत्र होंगे तथा अपने-अपने कर्मानुसार प्रतिफल अथवा दण्ड पायेंगे।

[6]जो अल्लाह के आदेशों का पालन किया होगा तथा उसकी निषेधित एवं अवैध चीज़ों से

The Ummah Technology Mission

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِىْ رَحْمَتِهٖ ؕ وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝٨

(८) यदि अल्लाह (तआला) चाहता तो उन सबको एक ही सम्प्रदाय का बना देता [1] परन्तु वह जिसे चाहता है अपनी दया में सम्मिलित कर लेता है, तथा अत्याचारियों का पक्षधर तथा सहायक कोई नहीं।

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِىُّ وَهُوَ يُحْىِ الْمَوْتٰى ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝٩

(९) क्या उन लोगों ने अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त अन्य संरक्षक बना लिये हैं, (वास्तव में तो) अल्लाह (तआला) ही संरक्षक है, वही मृतकों को जीवित करेगा तथा वही प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्यवान है।[2]

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَىْءٍ فَحُكْمُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّىْ

(१०) तथा जिस-जिस बात में तुम्हारा मतभेद हो उसका निर्णय अल्लाह (तआला) ही की ओर है,[3] यही अल्लाह मेरा प्रभु है जिस पर मैंने

दूर रहा होगा वह स्वर्ग में, तथा उसकी अवज्ञा तथा निषेधित चीज़ों का करने वाला नरक में होगा। यही दो गिरोह होंगे, तीसरा गिरोह नहीं होगा।

[1]इस दशा में क़यामत (प्रलय) के दिन मात्र एक ही गिरोह होता अर्थात ईमानवालों तथा स्वर्गवासियों का, किन्तु अल्लाह की हिक्मत तथा इच्छा ने इस दबाव को पसंद नहीं किया बल्कि इंसानों की परीक्षा के लिए उसने इंसानों को इरादे तथा पसंद (छूट) की स्वाधीनता दी। जिसने इस स्वाधीनता का सही प्रयोग किया वह अल्लाह की दया का पात्र हो गया तथा जिसने इसका ग़लत प्रयोग किया उसने अत्याचार किया कि अल्लाह की प्रदान की हुई स्वतंत्रता एवं छूट को अल्लाह ही की अवज्ञा में प्रयोग किया। इसलिए ऐसे अत्याचारियों का क़यामत के दिन कोई सहायक नहीं होगा।

[2]जब यह बात है तो फिर अल्लाह तआला ही इस योग्य है कि उसे संरक्षक तथा कार्यक्षम माना जाये न कि उनको जिनके पास कोई अधिकार ही नहीं है, तथा जो सुनने एवं जवाब देने की शक्ति रखते हैं न हानि तथा लाभ पहुँचाने की क्षमता।

[3]इस मतभेद से अभिप्राय धर्म का मतभेद है। जैसे यहूदियत, ईसाईयत तथा इस्लाम आदि में परस्पर मतभेद है तथा प्रत्येक धर्म वाला लम्बा दावा करता है कि उसका धर्म सच्चा है, जबकि सभी धर्म एक समय में सही नहीं हो सकते। सत्यधर्म तो मात्र एक ही है तथा एक ही हो सकता है। दुनिया में सच्चे धर्म तथा संमार्ग की पहचान के लिए अल्लाह का

The Ummah Technology Mission

عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ﴿١٠﴾

भरोसा कर रखा है, तथा जिसकी ओर मैं झुकता हूँ।

فَاطِرُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَمِنَ الْأَنْعَامِ أَزْوَاجًا ۖ يَذْرَؤُكُمْ فِيهِ ۚ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿١١﴾

(११) वह आकाश तथा धरती को पैदा करने वाला है। उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी जाति के जोड़े बना दिये हैं[1] तथा चौपायों के जोड़े बनाये हैं;[2] तुम्हें वह उसमें फैला रहा है,[3] उस जैसी कोई वस्तु नहीं;[4] वह सुनने वाला देखने वाला है।

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ

(१२) आकाशों तथा धरती की चाभियाँ उसी की हैं,[5] जिसकी चाहे जीविका विस्तृत कर

कुरआन मौजूद है किन्तु संसार में लोग इस ईशवाणी को अपना निर्णायक तथा मध्यस्थ मानने को तैयार नहीं। अंतत: फिर क़यामत (प्रलय) का दिन ही रह जाता है जिसमें अल्लाह इस मतभेद का निर्णय करेगा तथा सच्चों को स्वर्ग में एवं दूसरों को नरक में प्रवेश करायेगा।

[1]अर्थात यह अल्लाह का अनुग्रह है कि तुम्हारी जाति ही से उसने तुम्हारे जोड़े बनाये अन्यथा यदि तुम्हारी पत्नियाँ इंसान के अलावा किसी अन्य जाति से बनाई जातीं तो तुम्हें यह शान्ति प्राप्त न होती जो अपनी सहजाति तथा समरूप पत्नी से प्राप्त होती है।

[2]अर्थात जोड़े बनाने (नर-मादा) का यही क्रम हमने चौपायों में भी रखा है। चौपाये से अभिप्राय वही नर-मादा आठ जानवर हैं जिनका वर्णन *सूरतुल अन्आम* में किया गया है।

[3] يَذْرَؤُكُم का अर्थ फैलाना अथवा पैदा करना है, अर्थात तुम्हें अधिकता से फैला रहा है अथवा संतान के बाद संतान पैदा कर रहा है, इंसानी वंश को भी तथा चौपायों के वंश को भी। فِيهِ का अर्थ है فِي ذالك الخلق على هذه الصِّفة अर्थात इस पैदाईश में इस रीति से वह तुम्हें आरम्भ से पैदा करता आ रहा है। अथवा 'माता के गर्भाशय में' अथवा 'पेट में' अभिप्राय है, अथवा فِيهِ यह بِهِ के अर्थ में है। अर्थात तुम्हारा जोड़ा बनाने के कारण से तुम्हें पैदा करता तथा फैलाता है क्योंकि यह जोड़ा होना ही संतान का कारण है। (फ़तहुल क़दीर तथा इब्ने कसीर)

[4]न अस्तित्व में न विशेष गुणों में। अत: वह अपना सदृश स्वयं ही है एक तथा निस्पृह।

[5] مَقَالِيدُ यह مِقْلَادٌ - مِقْلِيدٌ का बहुवचन है, कोष अथवा चाभियाँ।

The Ummah Technology Mission

إِنَّهُۥ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٢﴾

दे तथा संकुचित कर दे। नि:संदेह वह प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है।

شَرَعَ لَكُم مِّنَ ٱلدِّينِ مَا وَصَّىٰ بِهِۦ نُوحًا وَٱلَّذِىٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِۦٓ إِبْرَٰهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَىٰٓ ۖ أَنْ أَقِيمُوا۟ ٱلدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا۟ فِيهِ ۚ كَبُرَ عَلَى ٱلْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ

(१३) अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए वही धर्म निर्धारित कर दिया है जिसको स्थापित करने का उसने नूह (अलैहिस्सलाम) को आदेश दिया था, जो (प्रकाशना के द्वारा) हमने तेरी ओर भेज दिया है तथा जिसका विशेष आदेश हमने इब्राहीम तथा मूसा एवं ईसा (अलैहिमुस्सलाम) को दिया था।[1] कि इस धर्म को स्थापित रखना[2] तथा इसमें फूट न डालना।[3] जिस वस्तु

---

[1] شَرَعَ का अर्थ है वर्णन किया, स्पष्ट किया तथा निर्धारित किया, لَكُمْ तुम्हारे लिये। यह मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के समुदाय से संबोधन है। अभिप्राय है कि तुम्हारे लिये वही धर्म नियुक्त किया है जिसका आदेश इससे पूर्व सभी अंबिया को दिया जाता रहा है। इस संदर्भ में कुछ श्रेष्ठ अंबिया के नाम का वर्णन किया।

[2] الدّين (अद्दीन) से अभिप्राय अल्लाह के प्रति ईमान, तौहीद (अद्वैत), रसूल का अनुपालन तथा ईश्वरीय धर्म-विधान को मानना है। सभी अंबिया (ईशदूतों) का यही धर्म था जिसका आमन्त्रण वह अपनी जाति को देते रहे। यद्यपि प्रत्येक नबी के धर्म-विधान तथा तरीके में आंशिक मतभेद होते थे, जैसाकि फ़रमाया :

﴿لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا﴾

"तुममें से प्रत्येक के लिए हमने एक विधान तथा मार्ग निर्धारित कर दिया है।" (*अल-मायेदा-४८*)

किन्तु उपरोक्त नियम सबमें साझा थे। इसी बात को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन शब्दों में वर्णित किया कि हम अम्बिया का समूह एक पिता की संतान हैं, हमारा धर्म एक है। (सहीह बुख़ारी आदि) तथा यह एक धर्म वही तौहीद (अद्वैत) तथा रसूल का अनुपालन है। अर्थात इनका संबन्ध उन आंशिक समस्याओं से नहीं जिनमें प्रमाण परस्पर भिन्न तथा विपरीत होते हैं, क्योंकि उनमें प्रयत्न अथवा मतभेद की छूट होती है तथा यह विभिन्न होते हैं तथा हो सकते हैं। परन्तु तौहीद एवं अनुपालन आंशिक नहीं, मूल समस्या है जिस पर कुफ़्र तथा ईमान निर्भर हैं।

[3] मात्र एक अल्लाह की इबादत तथा उसी का आज्ञापालन (अथवा उसके रसूल का

The Ummah Technology Mission

إِلَيْهِ ۖ اللَّهُ يَجْتَبِي إِلَيْهِ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَن يُنِيبُ ﴿١٣﴾

की ओर आप उन्हें बुला रहे हैं वह तो (उन) मिश्रणवादियों पर भारी होती है।[1] अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपना चुना हुआ बनाता है[2] तथा जो भी उसकी ओर ध्यानमग्न होता है वह उनका उचित मार्गदर्शन करता है।[3]

وَمَا تَفَرَّقُوا إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ أُورِثُوا الْكِتَابَ مِن بَعْدِهِمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿١٤﴾

(१४) तथा उन लोगों ने अपने पास ज्ञान आ जाने के पश्चात मतभेद किया (तथा वह भी) आपसी हठधर्मी से,[4] तथा यदि आपके प्रभु की बात एक निश्चित समय तक के लिए पूर्व ही से निर्धारित की गयी हुई न होती तो नि:संदेह उनका निर्णय हो चुका होता,[5] तथा जिन लोगों को उनके पश्चात किताब प्रदान की गयी है वे भी उसकी ओर से संदेह तथा असमंजस्य में पड़े हुए हैं।[6]

अनुपालन जो वास्तव में अल्लाह ही का आज्ञापालन है) एकता तथा मेल-जोल का आधार है तथा उसकी उपासना एवं आज्ञापालन से भागना अथवा इनमें अन्यों को साझी बनाना फूट एवं विच्छिन्नता का कारण है, "जिससे फूट न डालना" कह कर रोका गया है।

[1]तथा वह वही तौहीद एवं अल्लाह व रसूल का आज्ञापालन है।

[2]अर्थात जिसे मार्गदर्शन का पात्र समझता है उसे मार्गदर्शन के लिये चयन कर लेता है।

[3]अर्थात अपना धर्म अपनाने तथा इबादत को अल्लाह के लिए विशुद्ध करने का सौभाग्य उसे देता है जो उसके आज्ञापालन तथा उपासना की ओर ध्यान करता है।

[4]अर्थात उन्होंने विरोध तथा फूट का मार्ग ज्ञान अर्थात मार्गदर्शन आ जाने तथा तर्क के पूरे हो जाने के पश्चात अपनाया जबकि फूट (विरोध) का कोई औचित्य शेष नही रह जाता किन्तु मात्र शत्रुता, हठधर्मी तथा ईर्ष्या के कारण ऐसा किया। इससे कुछ ने यहूद तथा कुछ मक्का के कुरैश तात्पर्य लिये हैं।

[5]अर्थात यदि उनके विषय में दण्ड में विलम्ब का निर्णय न होता तो तत्क्षण प्रकोप भेजकर उनका विनाश कर दिया जाता।

[6]इससे अभिप्राय यहूदी तथा ईसाई हैं जो अपने से पहले के यहूदियों तथा इसाईयों के

The Ummah Technology Mission

فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ
كَمَآ اُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ
وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَ اُمِرْتُ لِاَعْدِلَ
بَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ؕ
لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؕ
لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ
يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝١٥

(१५) तो आप लोगों को उसी ओर बुलाते रहें, तथा जो कुछ आप से कहा गया है उस पर दृढ़ता से रहें,[1] तथा उनकी इच्छाओं पर न चलें,[2] तथा कह दें कि अल्लाह तआला ने जितनी किताबें अवतरित की हैं मेरा उन पर ईमान है, तथा मुझे आदेश दिया गया है कि तुममें न्याय[3] करता रहूँ। हमारा तथा तुम सबका प्रभु अल्लाह ही है। हमारे कर्म हमारे लिए हैं तथा तुम्हारे कर्म तुम्हारे लिए हैं। हम तुममें कोई विवाद नहीं।[4] अल्लाह (तआला) हम सबको एकत्रित करेगा तथा उसी की ओर लौट कर जाना है।

وَالَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِى اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ
مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ
دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ

(१६) तथा जो लोग अल्लाह (तआला) की बातों में झगड़ा डालते हैं इसके बाद कि (सृष्टि) उसे मान चुकी[5] है, उनका विवाद

पश्चात किताब अर्थात धर्मशास्त्र तौरात तथा इंजील के उत्तराधिकारी बनाये गये। अथवा अरबवासी अभिप्राय हैं जिनमें अल्लाह तआला ने अपना पवित्र क़ुरआन अवतरित किया तथा उन्हें क़ुरआन का उत्तराधिकारी बनाया। पहले अर्थ के अनुसार الكتاب (अलकिताब) से अभिप्राय तौरात तथा इंजील एवं दूसरे भावार्थानुसार इससे तात्पर्य पवित्र क़ुरआन है।

[1]अर्थात इस फूट तथा शंका के कारण जिसकी चर्चा पहले हुई, उसका खण्डन करने के लिए आप उनको तौहीद की दावत (आमंत्रण) दें तथा उस पर अडिग रहें।

[2]अर्थात उन्होंने अपनी इच्छा से जो चीज़े गढ़ ली हैं, जैसे मूर्तियों की पूजा आदि, इसमें उनकी आकांक्षा के पीछे न चलें।

[3]अर्थात जब भी तुम अपना कोई विवाद (समस्या) मेरे पास लाओगे तो अल्लाह के आदेशों के अनुसार उसका न्याय के साथ निर्णय कर दूँगा।

[4]अर्थात कोई झगड़ा नहीं क्योंकि सत्य स्पष्ट हो चुका है।

[5]अर्थात यह मूर्तिपूजक मुसलमानों से लड़ते झगड़ते हैं, जिन्होंने अल्लाह तथा रसूल की बात मान ली है, ताकि उन्हें फिर संमार्ग से विचलित कर दें। अथवा अभिप्राय यहूदी

The Ummah Technology Mission

وَلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿١٦﴾

अल्लाह के निकट असत्य है।[1] तथा उन पर क्रोध है तथा उनके लिए कठोर यातनायें हैं।

اللَّهُ الَّذِي أَنزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَالْمِيزَانَ ۗ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيبٌ ﴿١٧﴾

(१७) अल्लाह (तआला) ने सत्य के साथ किताब अवतरित की है तथा तराज़ू भी (उतारी है)[2] तथा आपको क्या पता कि शायद क़यामत निकट ही हो।[3]

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا مُشْفِقُونَ

(१८) उसकी जल्दी उन्हें पड़ी है जो उस पर ईमान नहीं रखते[4] तथा जो उस पर विश्वास

तथा ईसाई हैं जो मुसलमानों से झगड़ते थे तथा कहते थे कि हमारा धर्म तुम्हारे धर्म से उत्तम है तथा हमारा नबी तुम्हारे नबी से पहले हुआ है, इसलिए हम तुमसे उत्तम हैं।

[1] داحِضَةٌ का अर्थ, कमज़ोर, बातिल के हैं जिसको टिकना नहीं।

[2] الكِتَاب (अलकिताब) से अभिप्राय जातिवाचक धर्मग्रन्थ है अर्थात सभी पैग़म्बरों पर जितनी भी किताबें अवतरित हुईं, वह सब सत्य थीं अथवा विशेष रूप से पवित्र क़ुरआन अभिप्राय है, तथा उसकी सत्यता को स्पष्ट किया जा रहा है। مِيزان (मीज़ान-तुला) से तात्पर्य इंसाफ़ तथा न्याय है। न्याय को तुला इसलिए बताया कि यह बराबरी तथा इंसाफ़ का यन्त्र (साधन) है। इसके समानार्थी यह आयात भी हैं।

﴿لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ﴾

"नि:सन्देह हम ने अपने संदेष्टाओं को स्पष्ट प्रमाण देकर भेजा तथा उनके साथ ग्रन्थ एवं न्याय अवतरित किया ताकि लोग न्याय पर स्थापित रहें।" (सूरः *अल-हदीद-२५*)

﴿وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ * أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ * وَأَقِيمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيزَانَ﴾

"उसी ने आकाश को उच्च किया तथा उसी ने तुला स्थापित किया ताकि तुम तौलने में कमी-बेशी न करो। न्याय के साथ वज़न को ठीक रखो तथा तौल में कमी न करो।" (सूरः *रहमान-७-९*)

[3] قريب पुरूषलिंग तथा स्त्रीलिंग दोनों के विशेषण के लिये आता है। ﴿إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ﴾ (फ़तहुल क़दीर)

[4] अर्थात परिहास स्वरूप यह समझते हुए कि इसको आना ही कहाँ है ? इसलिए कहते हैं

The Ummah Technology Mission

مِنْهَا ۙ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ؕ
اَلَآ اِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ
فِي السَّاعَةِ لَفِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ⑱

रखते हैं वे तो उससे डर [1] रहे हैं एवं उन्हें उसे सत्य होने का पूर्ण ज्ञान है। याद रखो, जो लोग क़यामत के विषय में लड़-झगड़ रहे हैं[2] वे दूर की गुमराही में पड़े हुए हैं।[3]

اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ
مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ⑲

(१९) अल्लाह (तआला) अपने भक्तों पर बड़ा ही कृपा करने वाला है, जिसे चाहता है अत्याधिक जीविका प्रदान करता है। तथा वह अति शक्तिशाली, अति प्रभावशाली है।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ
نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ
كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ

(२०) जिसका विचार आख़िरत की खेती का हो हम उसे उसकी खेती में और वृद्धि करेंगे,[4] तथा जो सांसारिक खेती की कामना करता हो

कि क़यामत शीघ्र आये।

[1] इसलिए कि एक तो उनको उसके होने का पूरा विश्वास है। दूसरे उनको भय है कि उस दिन निष्पक्ष हिसाब होगा, कहीं वह भी अल्लाह की पकड़ में न आ जायें। जैसे दूसरे स्थान पर आया है :

﴿ وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوا وَّقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ﴾

"तथा जो लोग देते हैं जो कुछ देते हैं, तथा उनके हृदय कंपित होते हैं कि वे अपने प्रभु की ओर लौटने वाले हैं।" (*अल-मोमिनून-६०*)

[2] يُمَارُونَ (युमारूना) مُمَارَاةٌ से बना है। जिसका अर्थ लड़ना-झगड़ना है। अथवा مِرْيَةٌ (मिर्यतुन) से है जिसका अर्थ शंका तथा संदेह है।

[3] इसलिए कि वह तर्कों पर चिंतन-मनन नहीं करते जो ईमान लाने के कारण बन सकते हैं जबकि यह प्रमाण रात-दिन उनके दर्शन में आते हैं, उनकी आँखों से गुज़रते हैं तथा उनकी बुद्धि एवं बोध में आ सकते हैं। अत: वे सत्य से बहुत दूर जा पड़े हैं।

[4] حَرْثٌ का अर्थ बीज बोना है। यहाँ रूपक के रूप में कर्मों के फल तथा लाभ पर बोला गया है। अभिप्राय यह है कि जो व्यक्ति संसार में अपने कर्म तथा श्रम के द्वारा परलोक के पुण्य तथा प्रतिफल का अभिलाषी है तो अल्लाह उसकी परलोक की खेती में इस प्रकार बढ़ायेगा कि एक सत्कर्म का पुण्य दस गुना से लेकर सात सौ गुना तक भी प्रदान करेगा।

The Ummah Technology Mission

مِنْهَا ۚ وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿٢٠﴾

हम उसे उसमें से ही कुछ दे देंगे।[1] ऐसे व्यक्ति का आख़िरत (परलोक) में कोई भाग नहीं है।[2]

اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢١﴾

(२१) क्या उन लोगों ने ऐसे (अल्लाह के) साझीदार (निर्धारित कर रखे) हैं जिन्होंने ऐसे धार्मिक आदेश निर्धारित कर दिये हैं, जो अल्लाह के कहे हुए नहीं हैं।[3] यदि निर्णय के दिन का वचन न होता तो (अभी ही) उनमें निर्णय कर दिया जाता। नि:संदेह (उन) अत्याचारियों के लिए ही कष्टदायी यातनायें हैं।

تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ

(२२) आप देखेंगे कि (ये) अत्याचारी अपने कर्मों से डर रहे होंगे[4] जो नि:संदेह उन पर घटित होने वाला है,[5] तथा जो लोग ईमान लाये तथा उन्होंने पुण्य के कार्य भी किये वे

---

[1]अर्थात दुनिया के अभिलाषी को दुनिया तो मिलती है किन्तु इतनी नहीं जितनी वह चाहता है, अपितु उतनी ही मिलती हो जितनी अल्लाह की इच्छा तथा भाग्य-लेख के अनुसार होती है।

[2]यह वही विषय है जो सूरः *बनी इस्राईल* १८ में भी वर्णित हुआ है। अभिप्राय यह है की दुनिया तो अल्लाह प्रत्येक को अवश्य देता है जितनी उसने लिख दी है, क्योंकि उसने सबकी जीविका का भार ले रखा है, दुनिया के इच्छुक का भी तथा परलोक के इच्छुक का भी। फिर भी जो परलोक का आर्जन एवं श्रम करेगा तो क़यामत के दिन परमेश्वर उसे कई गुना पुण्य तथा प्रतिफल प्रदान करेगा, जब कि दुनिया के अभिलाषी के लिए परलोक में नरक की यातना के अलावा कुछ नहीं होगा। अब यह इंसान को स्वयं सोच लेना चाहिए कि उसका लाभ माया-मोह में है अथवा परलोक का इच्छुक बनने में।

[3]अर्थात शिर्क तथा पाप, जिनकी आज्ञा अल्लाह ने नहीं दी है उनके बनाये साझीदारों ने इंसानों को इस मार्ग पर लगा दिया है।

[4]अर्थात क़यामत के दिन।

[5]हालांकि डरना व्यर्थ होगा क्योंकि अपने किये का दण्ड तो उन्हें प्रत्येक दशा में भुगतना होगा।

The Ummah Technology Mission

مَا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٢٢﴾

स्वर्ग के बाग़ों में होंगे, वे जो इच्छा करेंगे अपने प्रभु के पास उपस्थित पायेंगे, यही है महान अनुग्रह।

ذٰلِكَ الَّذِىْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ قُلْ لَّاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى ؕ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا

(२३) यही वह है जिसकी शुभसूचना अल्लाह (तआला) अपने उन भक्तों को दे रहा है, जो ईमान लाये तथा (सुन्नत के अनुसार) कर्म किये, तो कह दीजिए कि मैं उस पर तुमसे कोई बदला नहीं चाहता परन्तु नातेदारी का प्रेम,[1] और जो व्यक्ति पुण्य करे हम उसके

---

[1]कुरैश के गोत्र तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में नातेदारी का सम्बन्ध था। आयत का अभिप्राय पूर्णत: स्पष्ट है कि मैं धर्म के प्रचार-प्रसार तथा शिक्षा-दिक्षा पर कोई बदला नहीं चाहता। हाँ, एक वस्तु का प्रश्न अवश्य है कि मेरे तथा तुम्हारे बीच जो नातेदारी है, उस पर ध्यान दो। तुम मेरी बात नहीं मानते तो न मानो, तुम्हारी इच्छा किन्तु मुझे क्षति पहुँचाने से तो रूके रहो। तुम मेरे सहायक नहीं बन सकते तो संबंधी के नाते मुझे कष्ट न दो तथा मेरे मार्ग में रोड़ा तो न बनो कि मैं रिसालत (उपदेश पहुँचाने) का दायित्व पूरा कर सकूँ। आदरणीय इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा ने इसका अर्थ लिया है कि मेरे तथा तुम्हारे मध्य जो निकटता तथा संबंध है उसे स्थापित रखो। (सहीह बुख़ारी, *तफ़सीर सूरतिश्शूरा*) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का परिवार निश्चय वंश के आधार पर दुनिया का श्रेष्ठतम परिवार है जिससे प्रेम, उसका सम्मान तथा आदर ईमान का अंश है, इसलिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने कथनों (हदीसों) में उनके सम्मान तथा सुरक्षा पर बल दिया है। किन्तु इस आयत का कोई संबंध उस विषय से नहीं है जैसाकि शीआ लोग खींच-तानकर इस आयत को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के परिवार के प्रेम के साथ जोड़कर परिवार को भी सीमित करते हैं, फिर आपके परिवार को भी उन्होंने आदरणीय अली तथा फ़ातिमा एवं हसन-हुसैन तक सीमित कर दिया है। साथ ही प्रेम का अर्थ भी उनके निकट यह है कि उन्हें निष्पाप तथा ईश्वरीय अधिकारों से युक्त माना जाये। इसके सिवाय मक्का के काफ़िरों से अपने परिवार प्रेम की माँग आमन्त्रण के पारिश्रमिक (मज़दूरी) स्वरूप अति विचित्र वात है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उच्चतम मर्यादा से बहुत पतित है, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आमन्त्रण को स्वीकार न करने के बावजूद आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की माँग तो केवल निकटता एवं सम्बन्धी होने के आधार पर प्रेम स्थापित रखने की थी। फिर यह आयत तथा सूर: मक्की है जबकि आदरणीय अली (रज़ि अल्लाहु अन्हु) तथा फ़ातिमा (रज़ि अल्लाहु अन्हा) के बीच विवाह बन्धन भी

The Ummah Technology Mission

حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٢٣﴾

पुण्य में और अधिक बढ़ा देंगे।[1] निश्चय ही अल्लाह (तआला) अत्यन्त क्षमाशील तथा अत्याधिक गुणग्राही है।[2]

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٤﴾

(२४) क्या ये कहते हैं (कि पैग़म्बर ने) अल्लाह पर मिथ्यारोपण कर लिया है यदि अल्लाह (तआला) चाहे तो आपके दिल पर मुहर लगा दे[3] तथा अल्लाह (तआला) अपनी बातों से असत्य को मिटा देता है[4] तथा सत्य को सिद्ध रखता है। वह सीने की बातों का जानने वाला है।

وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ

(२५) तथा वही है जो अपने बन्दों की क्षमा-याचना को स्वीकार करता है[5] तथा पापों को

स्थापित नहीं हुआ था। अर्थात अभी वह घराना अस्तित्व में ही नहीं आया था जिसके स्वयं कृत प्रेम की सिद्धि इस आयत से की जाती है।

[1]अर्थात पुण्य एवं प्रतिफल बढ़ायेंगे। अथवा नेकी का बदला अत्याधिक नेकी करने की संमति स्वरूप प्रदान करेंगे जैसे बुराई का बदला अधिक बुराईयों का करना है।

[2]अत: वह पर्दा डालता तथा क्षमा कर देता है तथा अधिक से अधिक प्रतिफल प्रदान करता है।

[3]अर्थात इस आरोप में यदि सच्चाई होती तो हम आपके दिल पर मुहर लगा देते जिससे वह क़ुरआन ही मिट जाता, जिसके गढ़ने को आप से सम्बन्धित किया जाता है। अभिप्राय यह है कि हम आप को कड़ी यातना देते।

[4]यह क़ुरआन भी यदि असत्य होता (जैसाकि झुठलाने वालों का दावा है) तो निश्चय अल्लाह तआला उसको भी मिटा देता जैसाकि उसकी नीति है।

[5]तौबा का अभिप्राय है पाप पर पश्चाताप तथा लज्जित होना तथा भविष्य में उसको न करने का संकल्प। केवल मुख से तौबा-तौबा कर लेना अथवा उस पाप तथा अवज्ञा के कर्म को तो न छोड़ना तथा तौबा का प्रदर्शन करना तौबा नहीं है। यह उपहास तथा परिहास है। फिर भी शुद्ध तथा सच्ची तौबा अल्लाह अवश्य स्वीकार करता है।

The Ummah Technology Mission

وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٢٥﴾

क्षमा करता है, तथा जो कुछ तुम कर रहे हो सब जानता है।

وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿٢٦﴾

(२६) तथा ईमानवालों एवं सदाचारियों की सुनता है [1] तथा उन्हें अपनी कृपा से और अधिक प्रदान करता है, तथा काफ़िरों के लिए कठोर यातना है।

وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِي الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा यदि अल्लाह (तआला) अपने सब बन्दों की जीविका विस्तृत कर देता तो वे धरती पर उपद्रव मचा[2] दते, परन्तु वह अनुमान से जो कुछ चाहता है अवतरित करता है। वह अपने बंदों से भली-भाँति सूचित है तथा भली-भाँति देखने वाला है।

وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ

(२८) तथा वही है जो लोगों के निराश हो जाने के पश्चात वर्षा करता है[3] तथा अपनी

---

[1]अर्थात उनकी विनय सुनता तथा उनकी इच्छा एवं कामनायें पूरी करता है किन्तु आवश्यक है कि प्रार्थना के प्रतिबंधों तथा नियमों का पूरा पालन किया जाये। हदीसों में आता है कि अल्लाह अपने बन्दे की तौबा (क्षमा-याचना) से उस व्यक्ति से भी अधिक प्रसन्न होता है जिसकी सवारी खाने-पीने के सामान सहित वन में खो जाये तथा वह निराश होकर किसी पेड़ के नीचे सो जाये कि सहसा उसे अपनी सवारी मिल जाये और हर्षोल्लास में उसके मुख से निकल जाये कि हे अल्लाह तू मेरा बंदा तथा मैं तेरा प्रभु हूँ, अर्थात अति आनंद में वह गलती कर जाये। (सहीह मुस्लिम किताबुत्तौबा बाबुन फिल हद्दे अलत् तौबा वल फर्हे बिहा)

[2]अर्थात यदि अल्लाह प्रत्येक व्यक्ति को आवश्यकता तथा ज़रूरत से अधिक एक समान जीविका के साधन प्रदान कर देता तो उसका परिणाम यह होता कि कोई किसी की अधीनता स्वीकार न करता। प्रत्येक व्यक्ति उपद्रव तथा बुराई एवं अत्याचार सीमा उल्लंघन में एक से बढ़ कर एक होता तथा जगत उपद्रव से भर जाता।

[3]अर्थात जो जीविका की उपज में सबसे अधिक लाभदायक तथा महत्वपूर्ण है। यह वर्षा जब निराशा के पश्चात होती है तो इस अनुग्रह का संवेदन भी उसी समय होता है। अल्लाह तआला के ऐसा करने में हिक्मत भी यही है कि बन्दे अल्लाह के प्रदानों का सम्मान करें तथा उसकी कृतज्ञता दिखायें।

The Dimnah Technology Mission

وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٨﴾

कृपा को विस्तार कर देता है। वही है संरक्षक तथा प्रशंसा एवम् महिमा के योग्य।[1]

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ﴿٢٩﴾

(२९) तथा उसकी निशानियों में से आकाश तथा धरती का पैदा करना और उनमें जीवधारियों का फैलाना है। वह इस पर भी सामर्थ्यवान है कि जब चाहे उन्हें एकत्रित कर दे।[2]

وَمَاۤ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा जो कुछ भी कष्ट तुम्हें पहुँचते हैं वह तुम्हारे अपने हाथों के करतूत का (बदला) है, तथा वह बहुत-सी बातों को क्षमा कर देता है।[3]

---

[1]कार्यक्षम है, अपने नेक बन्दों के काम बनाता है। उन्हें लाभ पहुँचाता तथा बुराईयों एवं विनाश से उनकी रक्षा करता है। अपने इस अपार वरदानों तथा अनुग्रहों पर प्रशंसनीय है।

[2] دَآبَّةٍ (धरती पर चलने-फिरने वाला) का शब्द साधारण है, जिसमें जिन्न तथा इन्सान के अतिरिक्त सभी जीव सम्मिलित हैं जिनके रूप, रंग, बोलियाँ, स्वभाव तथा प्रकार एवं जाति एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं तथा वह धरती में फैले हुए हैं। इन सभी को अल्लाह तआला प्रलय के दिन एक ही मैदान में एकत्रित करेगा।

[3]यह संबोधन यदि ईमान वालों से हो तो अभिप्राय होगा कि तुम्हारे कुछ पापों का प्रायश्चित (क्षतिपूर्ति) वह आपदा बन जाती है जो तुम्हें पापों के बदले पहुँचती है तथा कुछ पाप वह हैं जो अल्लाह यूँ ही क्षमा कर देता है तथा अल्लाह बड़ा कृपाशील है, क्षमा करने के पश्चात आख़िरत में उस पर पकड़ नहीं करेगा। हदीस में भी आता है कि ईमान वाले को जो भी दुख, चिन्ता तथा शोक पहुँचता है यहाँ तक कि उसके पाँव में काँटा भी गड़ता है तो अल्लाह तआला उसके कारण से उसके पाप क्षमा कर देता है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मरज़ा, बाबु माजाअ फ़ी कफ्फारतिल मरज़े, मुस्लिम किताबुल बिर्रे, बाबु सवाबिल मोमिने फीमा युसीबुहू मिन मरज़िन) यदि संबोधन सामान्य हो तो अभिप्राय यह होगा कि तुम्हें जो दुख संसार में पहुँचते हैं यह तुम्हारे अपने पापों का परिणाम है जबकि अल्लाह तआला बहुत से पापों को क्षमा ही कर देता है, अर्थात या तो सदा के लिए क्षमा कर देता है अथवा उन पर तुरन्त दण्ड नहीं देता। (दण्ड एवं सज़ा में विलम्ब भी एक प्रकार से क्षमा ही है)। जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ﴾

"यदि अल्लाह तआला लोगों के करतूतों पर तुरन्त पकड़ना प्रारम्भ कर दे तो धरती पर कोई चलने वाला ही शेष न रहता।" (फ़ातिर-४५)

The Ummah Technology Mission

وَمَآ اَنۡتُمۡ بِمُعۡجِزِيۡنَ فِى الۡاَرۡضِ ۖ وَمَا لَـكُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مِنۡ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيۡرٍ ﴿۳۱﴾

(३१) तथा तुम हमें धरती पर विवश करने वाले नहीं हो,[1] तथा तुम्हारे लिए अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त कोई कार्यक्षम नहीं है तथा न सहायता करने वाला।

وَمِنۡ اٰيٰتِهِ الۡجَوَارِ فِى الۡبَحۡرِ كَالۡاَعۡلَامِ ﴿۳۲﴾

(३२) तथा समुद्र में चलने वाली पर्वतों जैसी नावें उसकी निशानियों में से हैं।[2]

اِنۡ يَّشَاۡ يُسۡكِنِ الرِّيۡحَ فَيَظۡلَلۡنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهۡرِهٖ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوۡرٍ ﴿۳۳﴾

(३३) यदि वह चाहे तो हवा बन्द कर दे तथा ये नवकायें समुद्र में रूकी रह जायें। नि:संदेह इसमें प्रत्येक धैर्य रखने वाले कृतज्ञ के लिए निशानियाँ हैं।

اَوۡ يُوۡبِقۡهُنَّ بِمَا كَسَبُوۡا وَيَعۡفُ عَنۡ كَثِيۡرٍ ﴿۳۴﴾

(३४) अथवा उन्हें उनके करतूतों के कारण नष्ट कर दे।[3] वह तो बहुत-सी त्रुटियों को क्षमा कर देता है।[4]

وَّيَعۡلَمَ الَّذِيۡنَ يُجَادِلُوۡنَ فِىۡۤ اٰيٰتِنَا ؕ

(३५) और ताकि जो लोग हमारी निशानियों में झगड़ते हैं[5] वे ज्ञात कर लें कि उनके लिए

इसी भावार्थ की आयत *अन्नहल* ६१ भी है।

[1]अर्थात तुम भागकर किसी ऐसी जगह नहीं जा सकते कि जहाँ तुम हमारी पकड़ में न आ सको अथवा जो विपदा हम तुम पर उतारना चाहें उससे बच सको।

[2] الجوار (अलजेवार) अथवा الجواري (अलजवारी) جَارِيَةٌ जारियह (चलने वाली) का बहुवचन है। अर्थ है नवकायें, जहाज़। यह अल्लाह के पूर्ण सामर्थ्य का प्रमाण है कि सागरों में पर्वतों के समान नवकायें तथा जहाज़ उसकी आज्ञा से चलते हैं अन्यथा वह आज्ञा दे तो यह सागरों में खड़े रह जायें।

[3]अर्थात समुद्र को आज्ञा दे तथा उसकी लहरों में बाढ़ आ जाये तथा यह उनमें डूब जायें।

[4]अन्यथा समुद्र में यात्रा करने वाला कोई सुरक्षित वापस न आ सके।

[5]अर्थात उनका इंकार करते हैं।

The Ummah Technology Mission

مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٥﴾

कोई छुटकारा नहीं।[1]

فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٣٦﴾

(३६) तो तुम्हें जो कुछ दिया गया है वह साँसारिक जीवन का कुछ थोड़ा-सा साधन है[2] तथा अल्लाह (तआला) के पास जो है वह उस से कई गुना श्रेष्ठ[3] तथा स्थाई है, वह उनके लिए है जो ईमान लाये तथा केवल अपने प्रभु पर ही भरोसा रखते हैं।

وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

(३७) तथा वे महापापों से और असभ्य बातों से बचते हैं तथा क्रोध के समय (भी) क्षमा कर देते हैं।[4]

وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۪ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى

(३८) तथा आपने प्रभु के आदेश को स्वीकार करते हैं,[5] तथा नमाज़ की नियमित रूप से स्थापना करते है[6] तथा उनका प्रत्येक कार्य

---

[1]अर्थात अल्लाह के प्रकोप से वे कहीं भागकर मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते।

[2]अर्थात साधारण तथा हीन है चाहे वह क़ारून का कोष ही क्यों न हो। इसलिए उसके धोखे में न आना, इसलिए कि यह सामयिक तथा नश्वर है।

[3]अर्थात अच्छे कर्मों का जो फल अल्लाह के पास मिलेगा वह दुनिया के सामानों से कहीं अधिक उत्तम है तथा स्थाई भी, क्योंकि उस का अन्त एवं विनाश नहीं। अभिप्राय यह है कि लोक को परलोक पर प्रधानता न दो, ऐसा करोगे तो पछताओगे।

[4]अर्थात लोगों को क्षमा करना उनके स्वभाव का एक अंश है न कि बदला लेना। जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में आता है «مَاانْتَقَمَ لِنَفْسِهِ قَطُّ إِلَّا أَنْ تُنْتَهَكَ حُرُمَاتِ اللهِ» "नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने स्वयं के लिए कभी बदला नहीं लिया। हाँ, अल्लाह के विधानों (निषेधाज्ञाओं) को तोड़ा जाये तो आपके लिए असहनीय था।" (बुख़ारी किताबुल अदब, बाबु यस्सेरू वला तुअस्सिरू मुस्लिम किताबुल फ़ज़ायल)

[5]अर्थात उसकी आज्ञा का पालन, उसके रसूल का अनुसरण तथा उसकी धमकियों से बचते हैं।

[6]नमाज़ की नियमितता और इक़ामत का विशेष करके वर्णन किया गया है कि उपासना

The Ummah Technology Mission

بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣٨﴾

आपसी विचार-विमर्श से होता है [1] तथा जो कुछ हमने उन्हें प्रदान कर रखा है, उसमें से (हमारे नाम पर) देते हैं।

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ

(३९) तथा जब उन पर अत्याचार (एवं क्रूरता)

(एबादात) में इसका सबसे अधिक महत्व है।

[1] شُـورٰى यह ذكرى तथा بُشرى के समान مفاعلة से धातु है। अर्थात ईमानवाले प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य परस्पर परामर्श से करते हैं। अपने ही विचार को अन्तिम निर्णय नहीं समझते। स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी अल्लाह ने आदेश दिया कि मुसलमानों से परामर्श करो (*आले इमरान*-१५९) अत: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम युद्ध के विषयों तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में परामर्श का प्रयोजन करते थे, जिससे मुसलमानों का भी उत्साह बढ़ता था तथा विषय के सभी भाग स्पष्ट हो जाते थे। आदरणीय उमर रज़ी अल्लाह अन्हु जब भाले की मार से घायल हो गये तथा जीवन की कोई आशा शेष न रही तो शासन के विषय में परामर्श के लिए छ: व्यक्ति नियुक्त किये। उस्मान, अली, तलहा, ज़ुबैर, साद तथा अब्दुर्रहमान पुत्र औफ़ (रज़ी अल्लाह अंहुम)। उन्होंने परस्पर परामर्श के बाद आदरणीय उस्मान रज़ी अल्लाहु अन्हु को शासन के लिए निर्वाचित कर लिया। कुछ लोग परामर्श के इस प्रबंध एवं आदेश से राजतन्त्र का खंडन तथा प्रजातंत्र को सिद्धि करते हैं, हालाँकि परामर्श का प्रबंध शाही शासन में भी होता है। राजा की भी सलाहकार समिति होती है जिसमें प्रत्येक महत्वपूर्ण काम पर सोच-विचार होता है। इसलिए इस आयत से राजतन्त्र का कदापि खंडन नहीं होता। इसके अतिरिक्त प्रजातंत्र को परामर्श का समानार्थ समझना सर्वथा ग़लत है। परामर्श प्रत्येक छोटे-बड़े से नहीं हो सकता, न उसकी आवश्यकता ही है। परामर्श का अर्थ उन लोगों से विचार-विमर्श करना है जो मामले की सूक्ष्मता तथा आवश्यकता को समझते हों, जसमें परामर्श की आवश्यकता होती है। जैसे भवन, सेतु आदि निर्माण करना हो तो तांगे वाले, दर्ज़ी अथवा रिक्शाचालक से नहीं, किसी इंजीनियर से परामर्श लिया जायेगा। किसी रोग के विषय में परामर्श की आवश्यकता होगी तो चिकित्सक वैद्य की आवश्यकता होगी, जबकि प्रजातंत्र में इसके विपरीत प्रत्येक व्यस्क को परामर्श का पात्र माना जाता है, चाहे वह कोरा मूर्ख, निर्बोध तथा राज्य के विषय में सूक्ष्मता से बिल्कुल अंजान हो। अत: परामर्श शब्द से प्रजातंत्र की सिद्धि अधिकार जमाने एवं धाँधली के सिवा कुछ नहीं, तथा जिस प्रकार सोशलिज़्म के साथ इस्लामी शब्द जोड़ने से सोशलिज़्म मुसलमान नहीं हो सकता, इसी प्रकार प्रजातंत्र में इस्लाम का पेवंद लगा देने से पश्चिमी प्रजातंत्र पर ख़िलाफ़त का वस्त्र सही नहीं आ सकता। पश्चिम का यह वृक्ष इस्लाम की भूमि पर नहीं पनप सकता।

The Ummah Technology Mission

هُمْ يَنْتَصِرُونَ ﴿٣٩﴾

हो तो वे केवल बदला ले लेते हैं।[1]

وَجَزَٰٓؤُا۟ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۖ فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُۥ عَلَى ٱللَّهِ ۚ إِنَّهُۥ لَا يُحِبُّ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٤٠﴾

(४०) तथा बुराई का बदला उसी जैसी बुराई है,[2] तथा जो क्षमा कर दे और सुधार कर ले तो उसका बदला अल्लाह के ऊपर है। वास्तव में अल्लाह (तआला) अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

وَلَمَنِ ٱنتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهِۦ فَأُو۟لَٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِم مِّن سَبِيلٍ ﴿٤١﴾

(४१) तथा जो व्यक्ति अपने नृशंसित होने के पश्चात (समान) बदला ले ले तो ऐसे व्यक्ति पर (निन्दा का) कोई मार्ग नहीं।

إِنَّمَا ٱلسَّبِيلُ عَلَى ٱلَّذِينَ يَظْلِمُونَ ٱلنَّاسَ وَيَبْغُونَ فِى ٱلْأَرْضِ بِغَيْرِ ٱلْحَقِّ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٢﴾

(४२) यह मार्ग केवल उन लोगों पर है जो स्वयं अन्यों पर अत्याचार करें तथा धरती पर अनायास उपद्रव मचाते फिरें। यही लोग हैं जिनके लिए कष्टदायी यातनायें हैं।

وَلَمَن صَبَرَ وَغَفَرَ إِنَّ ذَٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ ٱلْأُمُورِ ﴿٤٣﴾

(४३) तथा जो व्यक्ति धैर्य कर ले एवं क्षमा कर दे, तो नि:संदेह यह एक बड़े साहस के कार्यों में से (एक कार्य) है।

وَمَن يُضْلِلِ ٱللَّهُ فَمَا لَهُۥ مِن وَلِىٍّ مِّنۢ بَعْدِهِۦ ۗ وَتَرَى ٱلظَّٰلِمِينَ

(४४) तथा जिसे अल्लाह (तआला) भटका दे उसका उसके पश्चात कोई कार्यक्षम नहीं।

---

[1]अर्थात वदला लेने से वह विवश नहीं हैं। यदि बदला लेना चाहें तो ले सकते हैं, फिर भी सामर्थ्य होते हुए वह क्षमा को प्रधानता देते हैं। जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का विजय के दिन अपने ख़ून के प्यासों के लिए सामान्य क्षमा की घोषणा कर दी। हुदैविया में आपने ८० व्यक्तियों को क्षमा कर दिया जिन्होंने आप के विरोध में षड़यन्त्र रचा था। लवीद विन आसिम यहूदी से बदला नहीं लिया जिसने आप पर जादू किया था। उस यहूदी नारी को आप ने कुछ नहीं कहा जिसने आप के खाने में विष मिला दिया था, जिसकी पीड़ा आप आजीवन अनुभव करते रहे, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। (इब्ने कसीर)

[2]यह प्रतिकार (बदला) लेने की अनुमति है। बुराई का बदला यद्यपि बुराई नहीं है किन्तु समरूप होने के कारण बुराई ही कहा गया है।

The Ummah Technology Mission

لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى
مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿٤٤﴾

तथा तू देखेगा कि अत्याचारी लोग यातनाओं को देखकर कह रहे होंगे कि क्या वापस लौटने का कोई मार्ग है ?

وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ
مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ
خَفِيٍّ ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ
اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ
عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿٤٥﴾

(४५) तथा तू उन्हें देखेगा कि वे (नरक के) समक्ष ला खड़े किये जायेंगे, अपमान के कारण झुके जाते होंगे तथा कनखियों से देख रहे होंगे। ईमानवाले स्पष्ट रूप से कहेंगे कि वास्तव में हानि उठाने वाले वे हैं, जिन्होंने आज क़यामत के दिन अपने आप को तथा अपने परिवार को हानि में डाल दिया। याद रखो कि नि:संदेह अत्याचारी लोग स्थाई यातना में हैं।[1]

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ
يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ
وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ
مِنْ سَبِيْلٍ ﴿٤٦﴾

(४६) तथा उनकी कोई सहायता करने वाला नहीं, जो अल्लाह (तआला) से पृथक उनकी सहायता कर सकें, तथा जिसे अल्लाह भटका दे तो उसके लिए कोई मार्ग ही नहीं।

اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ
اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ
مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ

(४७) अपने प्रभु का आदेश मान लो इससे पूर्व कि अल्लाह की ओर से वह दिन आ जाये जिसका हट जाना असंभव है।[2] तुम्हें उस दिन न तो कोई शरण का स्थान मिलेगा तथा

---

[1]अर्थात दुनिया में यह काफ़िर हमें मूर्ख तथा सांसारिक क्षति में ग्रस्त समझते थे, जबकि दुनिया में हम केवल परलोक को प्रधानता देते थे तथा सांसारिक क्षति को कोई महत्व नहीं देते थे। आज देख लो कि वास्तविक क्षति ग्रस्त कौन है। वे जिन्होंने सांसारिक क्षणिक क्षति को अनदेख किये रखा तथा आज वह स्वर्ग का आनंद ले रहे हैं, अथवा वह जिन्होंने संसार ही को सब कुछ समझ रखा था तथा आज ऐसी यातना में ग्रस्त हैं, जिससे अब मुक्ति ही संभव नहीं।

[2]अर्थात जिसे दूर करने तथा हटाने की कोई शक्ति नहीं रखेगा।

The Ummah Technology Mission

न छिपकर अनजान वन जाने का।[1]

وَمَا لَكُم مِّن نَّكِيرٍ ﴿٤٨﴾

(४८) यदि ये विमुख हो जायें तो हमने आपको उन पर रक्षक वना कर नहीं भेजा। आपका दायित्व तो केवल संदेश पहुँचा देने का है[2] तथा जव हम मनुष्य को अपनी दया का स्वाद चखाते हैं,[3] तो वह उस पर इतराने लग जाता है,[4] तथा यदि उन्हें उनके कर्मों

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۖ إِنْ عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَإِنَّا إِذَا أَذَقْنَا الْإِنسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَإِنَّ الْإِنسَانَ

---

[1]अर्थात तुम्हारे लिए कोई ऐसा स्थान न होगा कि जिसमें तुम छुप कर अंजान वन जाओ तथा पहचाने न जाओ अथवा देखे न जा सको, जैसे फ़रमाया :

﴿يَقُولُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ۝ كَلَّا لَا وَزَرَ ۝ إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ﴾

"उस दिन इंसान कहेगा कि कहाँ भागने की जगह है। कदापि नहीं, कोई भागने का मार्ग नहीं। उस दिन तेरे प्रभु के पास ही ठिकाना होगा।" (*अल-क़ियामह*-१०-१२)

अथवा नकीर, नकार के अर्थ में है कि तुम अपने पापों को नकार न सकोगे, क्योंकि एक तो वह सव अंकित होंगे। दूसरे स्वयं इंसान के अंग भी गवाही देंगे। अथवा जो दण्ड तुम्हें तुम्हारे पापों के कारण दिया जायेगा तुम उस दण्ड का इंकार न कर सकोगे, क्योंकि पापों को स्वीकार किये विना तुम्हें कोई चारा (उपाय) न होगा।

[2]जैसे अन्य स्थान पर कहा ﴿لَّيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يَشَاءُ﴾ (*अल-वक़रः*-२७२), ﴿فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ﴾ (*अर्रअद*-४०) तथा ﴿فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنتَ مُذَكِّرٌ ۝ لَّسْتَ عَلَيْهِم بِمُصَيْطِرٍ﴾ (*अल-ग़ाशिया*-२१,२२) इन सवका भावार्थ यह है कि आपका दायित्व केवल तथा केवल यह है कि अल्लाह का संदेश लोगों तक पहुँचा दें। मानें न मानें, आपसे उसकी पूछ न होगी, क्योंकि मार्ग दर्शा देना आपके अधिकार ही में नहीं, यह मात्र अल्लाह के अधिकार में है।

[3]अर्थात जीविका के साधनों की वहुतायत, स्वास्थय एवं सुख, संतान की अधिकता, मान एवं पद आदि।

[4]अर्थात घमंड तथा अहंकार दिखाता है, अन्यथा अल्लाह के वरदानों पर प्रसन्न होना अथवा उसका प्रदर्शन अप्रिय नहीं है। किन्तु वह वरदानों को प्रत्यक्ष करने तथा कृतज्ञता के रूप में हो। अहंकार एवं दिखावा तथा घमण्ड स्वरूप न हो।

The Ummah Technology Mission

كَفُوْرٌ ﴿٤٨﴾

के कारण कोई कठिनाई आती है [1] तो निश्चय मनुष्य बड़ा कृतघ्न है।[2]

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿٤٩﴾

(४९) आकाशों तथा धरती का राज्य अल्लाह (तआला) ही के लिए है। वह जो चाहता है पैदा करता है, [3] जिसको चाहता है पुत्रियाँ देता है तथा जिसे चाहता है पुत्र देता है।

اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّ اِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾

(५०) अथवा उन्हें एकत्रित कर देता है [4] पुत्र भी तथा पुत्रियाँ भी, तथा जिसे चाहे बाँझ कर देता है, वह बड़े ज्ञान वाला तथा सर्वशक्तिमान है।

---

[1]धन की कमी, रोग, संतान से वंचित होना आदि।

[2]अर्थात तुरन्त अनुकम्पाओं को भूल जाता है तथा مُنْعِمٌ (उपकारी) को भी। यह अधिकांश इंसान के हिसाब से है जिसमें क्षीण ईमान के लोग भी सम्मिलित हैं। किन्तु अल्लाह के पुनीत बन्दों तथा पूर्ण ईमानवालों की यह दशा नहीं होती। वह दुखों को सहन करते हैं तथा अनुकम्पाओं पर कृतज्ञता। जैसाकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : «إِنْ أَصَابَتْهُ سَرَّاءُ شَكَرَ فَكَانَ خَيراً لَّهُ، وإِنْ أَصَابَتْهُ ضَرَّاءُ صَبَرَ فَكَانَ خَيراً لَّهُ، وَلَيْسَ ذٰلِكَ لأَحَدٍ إِلَّا لِلْمُؤْمِنِ». (सहीह मुस्लिम, किताबुज्जुहद, बाबुल मोमिने अमरूहू ख़ैरून कुल्लुहू)

[3]अर्थात विश्व (सृष्टि) में केवल अल्लाह ही की इच्छा तथा योजना चलती है। वह जो चाहता है होता है, जो नहीं चाहता नहीं होता। कोई दूसरा उसमें हस्तक्षेप का सामर्थ्य तथा अधिकार नहीं रखता।

[4]अर्थात जिसको चाहता है पुत्र-पुत्री दोनों देता है। इस स्थान पर अल्लाह ने लोगों की चार श्रेणियाँ वर्णन की हैं। एक वह जिनको केवल पुत्र देता है, दूसरे वह जिनको केवल पुत्रियाँ देता है, तीसरे वह जिनको पुत्र-पुत्रियाँ दोनों प्रदान करता है तथा चौथे वह जिनको पुत्र न पुत्री। लोगों में यह अंतर तथा भेद अल्लाह के सामर्थ्य के लक्षणों में से है। इस ईश्वरीय अंतर को दुनिया की कोई शक्ति बदल नहीं सकती। यह विभाजन संतान के हिसाब से है। पिता के हिसाब से भी इंसानों के चार प्रकार हैं। आदम अलैहिस्सलाम को केवल मिट्टी से रचा, उनके न पिता हैं न माता २- हव्वा को आदम अर्थात पुरूष से पैदा किया, उनकी माता नहीं, ३- आदरणीय ईसा को केवल स्त्री से पैदा किया, उनके पिता नहीं, ४- तथा शेष सभी इंसानों को नर-नारी दोनों के मिलान से, उनके पिता भी हैं तथा माता भी। فَسُبْحَانَ اللهِ العَلِيمِ القَدِيرِ (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿۵۱﴾

(५१) तथा असंभव है कि किसी बंदे से अल्लाह (तआला) वार्तालाप करे परन्तु प्रकाशना के रूप में अथवा पर्दे के पीछे से अथवा किसी फ़रिश्ते को भेजे तथा वह अल्लाह के आदेश से जो वह चाहे प्रकाशना करे।[1] नि:संदेह वह सर्वोच्च तथा तत्वदर्शी है।

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ؕ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ؕ وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْۤ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۵۲﴾

(५२) तथा इसी प्रकार हमने आपकी ओर अपने आदेश से रूह (आत्मा) को अवतरित किया है,[2] आप उससे पूर्व यह भी नहीं जानते थे कि किताब तथा ईमान क्या वस्तु है ?[3] परन्तु हमने उसे ज्योति बनाया, उसके द्वारा अपने भक्तों में से जिसे चाहते हैं, मार्गदर्शन देते हैं।[4] नि:संदेह

---

[1]इस आयत में ईश्वरीय प्रकाशना के तीन रूप बताये गये हैं। प्रथम यह कि दिल में कोई बात डाल देना अथवा स्वप्न में बतला देना इस विश्वास के साथ कि यह अल्लाह ही की ओर से है। दूसरा, पर्दे के पीछे से बात करना, जैसे ईशदूत मूसा से तूर पर्वत पर की गई। तीसरा, फ़रिश्ते द्वारा अपनी प्रकाशना भेजना। जैसे देवदूत जिब्रील अलैहिस्सलाम अल्लाह का उपदेश लेकर आते तथा तथा पैग़म्बरों को सुनाते थे।

[2] رُوحٌ से अभिप्राय ईशवाणी पवित्र क़ुरआन है। अर्थात जैसे आपसे पहले अन्य रसूलों पर हम प्रकाशना (वह्यी) करते रहे, वैसे ही हमने आप पर क़ुरआन की प्रकाशना किया है। पवित्र क़ुरआन को रूह (आत्मा) कहा गया है कि क़ुरआन से दिलों को जीवन प्राप्त होता है जैसे आत्मा में मानव-जीवन का भेद लुप्त है।

[3]किताव से तात्पर्य क़ुरआन है। अर्थात नबूवत से पहले क़ुरआन का भी ज्ञान आपको नहीं था। ऐसे ही ईमान के उन विवरण से भी अंजान थे जो धर्मविधान (शरीयत) में अभीष्ट हैं।

[4]अर्थात क़ुरआन को प्रकाश बनाया, उसके द्वारा हम अपने बंदों में से जिसे चाहते हैं संमार्ग से सम्मानित करते हैं। अभिप्राय यह है कि क़ुरआन से मार्गदर्शन तथा निर्देशन उन्हीं को मिलता है जिनमें ईमान की इच्छा तथा तड़प होती है वह उसे मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए पढ़ते-सुनते तथा चिन्तन-मनन करते हैं, तो अल्लाह उनकी सहायता करता है तथा उनके लिए संमार्ग का पथ समतल कर देता है। जिस पर वह चल पड़ते

The Ummah Technology Mission

आप सत्यमार्ग का दर्शन करा रहे हैं।

صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِلَی اللّٰهِ تَصِیْرُ الْاُمُوْرُ ﴿۵۳﴾

(५३) उस अल्लाह के मार्ग का[1] जिसके स्वामित्व में आकाशों एवं धरती की हर वस्तु है। सावधान रहो, सभी कार्य अल्लाह ही की ओर लौटते हैं।[2]

سُوْرَةُ الزُّخْرُفِ

सूरतुज़ ज़ुख़रुफ़-४३

सूरः ज़ुख़रुफ़ मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें नवासी आयतें तथा सात रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

حٰمٓ ﴿۱﴾

(१) हा॰मीम॰।

وَالْكِتٰبِ الْمُبِیْنِ ﴿۲﴾

(२) सौगन्ध है इस खुली किताब की।

اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِیًّا لَّعَلَّكُمْ

(३) हमने इसको अरबी भाषा का क़ुरआन

हैं। अन्यथा जो अपनी आँखें बन्द कर लें, कानों में रूई डाल लें तथा बोध एवं विवेक से काम नहीं लें तो उन्हें मार्गदर्शन कैसे मिल सकता है। जैसे फ़रमाया :

﴿قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ هُدًى وَشِفَآءٌ ۖ وَٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِىٓ ءَاذَانِهِمْ وَقْرٌ وَهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِن مَّكَانٍۭ بَعِيدٍ﴾

"आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कह दीजिए कि यह तो ईमानेवालों के लिए मार्गदर्शन एवं स्वास्थ्य सुधार है तथा जो ईमान नहीं लाते उनके कानों में तो (बहरापन एवं) भार है तथा उन पर अन्धापन है ये लोग दूर के स्थान से पुकारे जा रहे हैं।" (सूरः *हा॰ मीम॰ अस्सजदः*-४४)

[1]यह صراط مستقيم (सिराते मुस्तक़ीम) सीधा मार्ग इस्लाम है। उसे अल्लाह ने अपनी ओर संम्बन्धित किया है जिससे इस मार्ग की महानता तथा प्रतिष्ठा स्पष्ट होती है तथा उसके एक मात्र मोक्ष मार्ग होने की ओर संकेत भी है।

[2]अर्थात क़यामत के दिन सभी निर्णय अल्लाह ही के हाथ में होगा। इसमें कड़ी चेतावनी है जो प्रतिकार को आवश्यक बताती है।

The Ummah Technology Mission

تَعْقِلُوْنَ ۝٣

बनाया है[1] कि तुम समझ लो।

وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ۝٤

(४) तथा नि:संदेह यह सुरक्षित पुस्तक में है तथा हमारे निकट उच्च कोटि की हिक्मत से पूर्ण है।[2]

اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ۝٥

(५) क्या हम इस सदुपदेश को तुमसे इस आधार पर हटा लें कि तुम सीमा उल्लघंन करने वाले लोग हो।[3]

وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْاَوَّلِيْنَ ۝٦

(६) तथा हमने विगत जातियों में भी बहुत से नबी भेजे।

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ

(७) तथा जो नबी उनके पास आया उन्होंने

---

[1]जो संसार की सर्वोत्तम भाषा है। दूसरे, इससे सर्वप्रथम संबोधित भी अरब थे। उन्हीं की भाषा में क़ुरआन उतारा ताकि वह समझना चाहें तो सरलता से समझ जायें।

[2]इस में क़ुरआन की उस महानता तथा प्रधानता का वर्णन है जो उच्च लोक में उसे प्राप्त है, ताकि जगतवासी भी उसकी महानता तथा मर्यादा को ध्यान में रखते हुए उसे तदानुसार महत्व दें तथा उससे मार्गदर्शन का वह उद्देश्य प्राप्त करें जिसके लिए उसे संसार में उतारा गया है। اُمِّ الكِتَاب (मूलग्रंथ) से अभिप्राय लौहे महफ़ूज (सुरक्षित पट्टिका) है।

[3]इसके विभिन्न अर्थ किये हैं, जैसे १- तुम चूँकि पापों में अधिक लीन तथा उस पर अडिग हो। इसलिए क्या तुम यह सोचते हो कि हम तुम्हें शिक्षा-उपदेश देना त्याग देंगे ? २- अथवा तुम्हारे कुफ़्र तथा अति पर हम तुम्हें कुछ न कहेंगे तथा तुम्हें क्षमा कर देंगे। ३- अथवा हम तुम्हें विनाश कर दें तथा तुम्हें किसी चीज़ का आदेश दें रोक न सकें। ४- इसलिए कि तुम पवित्र क़ुरआन के प्रति विश्वास करने वाले नहीं हो। अत: हम क़ुरआन के उतारने का क्रम ही रोक दें। पहले भावार्थ को इमाम तबरी ने तथा अन्तिम को इमाम इब्ने कसीर ने अधिक पसन्द किया है तथा कहा है कि यह अल्लाह की दया तथा करूणा है कि उसने भलाई तथा क़ुरआन की ओर आमन्त्रण देने का क्रम स्थगित नहीं किया, यद्यपि वह मुख फेरने तथा इंकार करने में सीमा उल्लंघन कर रहे थे, ताकि जिसके भाग्य में संमार्ग है वह इसके द्वारा सीधा रास्ता अपना ले तथा जो हतभागी है उन पर प्रमाण स्थापित हो जाये।

The Ummah Technology Mission

يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٧

उसका उपहास उड़ाया।

فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٨

(८) तो हमने उनसे अधिक बलवानों को[1] नष्ट कर डाला तथा अगलों का उदाहरण गुज़र चुका है।[2]

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۝٩

(९) तथा यदि आप उनसे पूछें कि आकाशों तथा धरती को किसने पैदा किया तो नि:संदेह उनका उत्तर होगा कि उन्हें सर्वशक्तिमान एवं सर्वज्ञाता (अल्लाह ही) ने पैदा किया है।[3]

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝١٠

(१०) (वही है) जिसने तुम्हारे लिये धरती को फ़र्श (तथा बिछौना) बनाया[4] तथा उसमें तुम्हारे लिए मार्ग बना दिये ताकि तुम मार्ग पा लिया करो।[5]

---

[1]अर्थात मक्कावासियों से अधिक बलवान थे। जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया ﴿كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً﴾ "वह संख्या तथा बल में कहीं उनसे अधिक थे।" (*अलमोमिन-८२*)

[2]अर्थात पवित्र क़ुरआन में उन जातियों की चर्चा अथवा विशेषता अनेक बार गुज़र चुकी है। इसमें मक्कावासियों के लिये धमकी है कि पिछली जातियाँ रसूलों के झुठलाने के कारण नाश हुईं। यदि यह भी नबी (दूतत्व) को झुठलाने पर अड़िग रहे तो उनकी भाँति यह भी नष्ट कर दिये जायेंगे।

[3]किन्तु इस स्वीकार के उपरान्त इन्ही सृष्टियों में से बहुतों को इन मुर्खों ने अल्लाह का साझी बना लिया है। इससे उनके अपराध की बुराई का भी वर्णन है तथा उनके अज्ञानता एवं मूर्खता का प्रदर्शन भी।

[4]ऐसा विस्तर जिसमें स्थिरता तथा स्थायित्व हो। तुम इस पर चलते हो, खड़े होते हो तथा सोते हो, जहाँ चाहते चलते-फिरते हो, उसने उसको पहाड़ो द्वारा स्थिर कर दिया ताकि उसमें गति तथा कंपन न हो।

[5]अर्थात एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में तथा एक देश से दूसरे देश में जाने के लिए मार्ग बना दिये ताकि व्यवसायिक, व्यापारिक एवं अन्य उद्देश्य के लिए तुम यातायात कर सको।

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِیْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ ۚ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّیْتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿۱۱﴾

(११) तथा उसी ने आकाश से एक अनुमान [1] के अनुसार वर्षा की, तो हमने उससे मृत नगर को जीवित कर दिया। उसी प्रकार तुम निकाले जाओगे।[2]

وَالَّذِیْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ مَا تَرْكَبُوْنَ ﴿۱۲﴾

(१२) तथा जिसने समस्त वस्तुओं के जोड़े[3] बनाये तथा तुम्हारी (सवारी के) लिए नवकायें बनायीं तथा चौपाये पशु पैदा किये जिन पर तुम सवार होते हो।

لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَیْتُمْ عَلَیْهِ وَتَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ ﴿۱۳﴾

(१३) ताकि तुम उनकी पीठ पर जमकर सवार हुआ करो,[4] फिर अपने प्रभु के (प्रदान किये हुए) उपहारों को याद करो जब उस पर ठीक-ठाक बैठ जाओ तथा कहो कि पवित्र शक्ति है उसकी जिसने उसे हमारे वश में कर दिया, यद्यपि हमें उसे वश में करने की शक्ति नहीं थी।[5]

---

[1]जिससे तुम्हारी आवश्यकता पूरी हो सके, क्योंकि आवश्यकता से कम वर्षा होती तो तुम्हारे लिए लाभकारी न होती तथा अधिक होती तो वह तूफ़ान बन जाती जिसमें तुम्हारे डूबने एवं नष्ट होने का भय होता।

[2]अर्थात जैसे वर्षा से मृत धरती हरी हो जाती है ऐसे ही क़यामत (प्रलय) के दिन तुमको भी जीवित करके क़ब्रों से निकाल लिया जायेगा।

[3]प्रत्येक चीज़ को जोड़ा-जोड़ा बनाया, नर-मादा, वनस्पतियाँ-खेतियाँ, फल-फूल तथा प्राणी सबमें नर-मादा का क्रम है। कुछ कहते हैं कि इससे अभिप्राय एक-दूसरे की प्रतिकूल वस्तुयें हैं, जैसे प्रकाश तथा अंधकार, रोग तथा स्वास्थ्य, न्याय तथा अत्याचार, भलाई तथा बुराई, ईमान (विश्वास) तथा कुफ़्र (इंकार) नरमी एवं सखती इत्यादि। कुछ कहते हैं कि जोड़ा, प्रकार के अर्थ में है अर्थात सभी प्रकारों का रचयिता अल्लाह है।

[4] لِتَسْتَوٗا का अर्थ है لِتَسْتَقِرُّوا अथवा لِتَسْتَعْلُوا टिककर बैठ जाओ अथवा चढ़ जाओ। ظُهُوْرِهٖ में सर्वनाम एक वचन जातिवाचक संज्ञा के कारण है।

[5]अर्थात यदि इन पशुओं को हमारे अधीन तथा वश में न करता तो हम इन्हें अपने वश

The Ummah Technology Mission

وَإِنَّآ إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنقَلِبُونَ ﴿١٤﴾

(१४) तथा निश्चित रूप से हम अपने प्रभु की ओर लौटकर जाने वाले हैं।[1]

وَجَعَلُوا لَهُۥ مِنْ عِبَادِهِۦ جُزْءًا ۚ إِنَّ ٱلْإِنسَٰنَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾

(१५) तथा उन्होंने अल्लाह के कुछ बन्दों को उसका अंश बना दिया,[2] नि:संदेह मनुष्य स्पष्ट रूप से कृतघ्न है।

أَمِ ٱتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنَٰتٍ وَأَصْفَىٰكُم بِٱلْبَنِينَ ﴿١٦﴾

(१६) क्या अल्लाह (तआला) ने अपनी सृष्टि में से पुत्रियाँ तो स्वयं रख लीं तथा तुम्हें पुत्रों[3] से सुशोभित किया ?

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُۥ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿١٧﴾

(१७) (यद्यपि) उनमें से किसी को जब उस वस्तु की सूचना दी जाती है जिसका उदाहरण उसने अल्लाह दयालु के लिए वर्णन किया है, तो उसका मुख काला पड़ जाता है तथा वह शोकग्रस्त हो जाता है।

में रखकर उनको सवारी, भारवाहन तथा दूसरे लक्ष्य के लिये प्रयोग नहीं कर सकते थे। مُقْرِنِين का अर्थ مُطِيقِين है।

[1]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सवारी पर सवार होते तो तीन बार اللهُ أكبر (अल्लाहु अकबर) कहते तथा سبحان الذي से لَمُنقَلِبون तक आयत पढ़ते। इसके अतिरिक्त भलाई तथा कुशलता के लिए प्रार्थना करते जो दुआओं की पुस्तकों में देख ली जाये। (सहीह मुस्लिम किताबुल हज्ज, बाबु मायकूलु इज़ा रकिब .....)

[2] عِبَادٌ से तात्पर्य फ़रिश्ते तथा جُزْءٌ जुज (अंश) से अभिप्राय पुत्रियाँ अर्थात फ़रिश्ते हैं जिनको मूर्तिपूजकों ने अल्लाह की पुत्रियाँ बना कर उनकी पूजा आरम्भ कर दी थी। इस प्रकार वह अल्लाह के पैदा किये को उसका साझी तथा अंश मानते थे जबकि वह इन चीज़ों से परमपवित्र है। कुछ ने अंश से अभिप्राय यहाँ भोग-प्रसाद के रूप में निकाले जाने वाले वह पशु तात्पर्य लिये हैं जिनका एक भाग (अंश) मूर्तिपूजक अल्लाह के नाम पर तथा एक भाग मूर्तियों के नाम पर निकाला करते थे जिसकी चर्चा *सूरतुल अंआम* १३६ में है।

[3]इसमें उनकी उस मूर्खता तथा बुद्धिहीनता का वर्णन है जो उन्होंने अल्लाह के लिए संतान बना रखी है जिसे यह स्वयं अप्रिय समझते हैं। हालाँकि अल्लाह की संतान होती तो क्या ऐसा ही होता कि उसकी तो पुत्रियाँ होतीं तथा तुम्हें पुत्र से सम्मानित करता।

The Ummah Technology Mission

أَوَمَن يُنَشَّؤُا۟ فِى ٱلْحِلْيَةِ وَهُوَ فِى ٱلْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ﴿١٨﴾

(१८) अथवा क्या (अल्लाह की संतान पुत्रियाँ हैं) जो आभूषणों में पलें तथा झगड़े में (अपनी बात) स्पष्ट न कर सकें ?[1]

وَجَعَلُوا۟ ٱلْمَلَٰٓئِكَةَ ٱلَّذِينَ هُمْ عِبَٰدُ ٱلرَّحْمَٰنِ إِنَٰثًا ۚ أَشَهِدُوا۟ خَلْقَهُمْ ۚ سَتُكْتَبُ شَهَٰدَتُهُمْ وَيُسْـَٔلُونَ ﴿١٩﴾

(१९) तथा उन्होंने दयालु के इबादत करने वाले फ़रिश्तों को स्त्रियाँ बना लिया। क्या उनकी पैदाईश के समय वे उपस्थित थे ? उनकी यह गवाही लिख ली जायेगी तथा उनसे उसकी पूछताछ की जायेगी।[2]

وَقَالُوا۟ لَوْ شَآءَ ٱلرَّحْمَٰنُ مَا عَبَدْنَٰهُم ۗ مَّا لَهُم بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ

(२०) तथा कहते हैं कि अल्लाह (तआला) चाहता तो हम उनकी पूजा न करते। उन्हें उसका कुछ ज्ञान नहीं,[3] यह तो केवल अनुमानित

---

[1] يُنَشَّؤُا यह نَشْوٌ धातु से बना है, पालन-पोषण के अर्थ में। नारियों के दो गुणों का वर्णन यहाँ विशेष रूप से किया गया है। १- उनका पालन-पोषण आभूषणों तथा शोभा में होता है, अर्थात बोध की आँखें खुलते ही उनका ध्यान शोभा एवं सौन्दर्य की वस्तुओं की ओर हो जाता है। अभिप्राय इस वर्णन से यह है कि जिनकी दशा यह है, वे अपने व्यक्तिगत विषय का सुधार करने की भी योग्यता तथा क्षमता नहीं रखतीं। २- यदि किसी से वाद-विवाद हो तो वह अपनी बात भी सही ढंग से (प्राकृतिक लज्जा के कारण) स्पष्ट नहीं कर सकतीं, न अपने प्रतिद्वंदी के तर्क का तोड़ ही कर सकती हैं। यह नारी की वह दो प्राकृतिक कमज़ोरियाँ हैं जिनके कारण पुरूष स्त्री पर एक गुणा प्रधानता रखते हैं। वाक्य-क्रम से भी पुरूष की प्रधानता स्पष्ट है, क्योंकि बात इसी प्रकरण में अर्थात नर-नारी में जो स्वाभाविक अन्तर है, जिसके कारण बच्ची के मुक़ाबिले में बच्चे के जन्म को अधिक पसन्द किया जाता था, हो रही है।

[2] अर्थात प्रतिकार के लिये, क्योंकि फ़रिश्तों के अल्लाह की पुत्रियाँ होने का कोई प्रमाण उनके पास नहीं होगा।

[3] अर्थात स्वयं अपने से अल्लाह की इच्छा का सहारा, यह उनका एक बड़ा तर्क है, क्योंकि प्रत्यक्ष रूप से यह बात सही है कि अल्लाह की इच्छा के बिना कोई काम नहीं होता न हो सकता है। किन्तु ये इससे अनभिज्ञ हैं कि उसकी इच्छा, उसकी प्रसन्नता से अलग चीज़ है। सभी कार्य निश्चय उसकी इच्छा से ही होता है, किन्तु वह प्रसन्न उन्हीं कर्मों से होता है जिनका उसने आदेश दिया है, न कि प्रत्येक उस कर्म से जो इंसान अल्लाह की चाहत से करता है। इन्सान चूँकि चोरी, कुकर्म, अत्याचार तथा बड़े-बड़े पाप करता है।

The Ummah Technology Mission

إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٢٠﴾

(असत्य बातें) कहते हैं।

أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِّن قَبْلِهِ فَهُم بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ ﴿٢١﴾

(२१) क्या हमने इससे पूर्व उन्हें (अन्य) कोई किताब प्रदान की है, जिसे ये दृढ़ता से पकड़े हुए हैं ?[1]

بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَارِهِم مُّهْتَدُونَ ﴿٢٢﴾

(२२) (नहीं-नहीं) बल्कि ये तो कहते हैं कि हमने अपने पूर्वजों को एक धर्म पर पाया तथा हम उन्हीं के पद चिन्हों पर चल कर संमार्ग प्राप्त हैं।

وَكَذَٰلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَارِهِم مُّقْتَدُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) तथा इसी प्रकार आपसे पहले भी हमने जिस बस्ती में कोई डराने वाला भेजा, वहाँ के सम्पन्न लोगों ने यही उत्तर दिया कि हमने अपने पूर्वजों को (एक डगर पर एवं) एक धर्म पर पाया तथा हम तो उन्हीं के पद चिन्हों का अनुगमन करने वाले हैं।

قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكُم بِأَهْدَىٰ مِمَّا

(२४) (नबी ने) कहा भी कि यद्यपि मैं उससे अत्योत्तम (लक्ष्य तक पहुँचाने वाला) मार्ग

यदि अल्लाह चाहे तो किसी को यह पाप करने का सामर्थ्य ही न दे, तुरन्त उसका हाथ पकड़ ले, उसके पाँव को रोक दे, उसकी आँखें अंधी कर दे। किन्तु यह दबाव होगा, जबकि उसने मनुष्य को संकल्प तथा इच्छा की स्वाधीनता दी है ताकि उसकी परीक्षा ली जाये। अत: उसने दोनों प्रकार के कर्मों का स्पष्ट वर्णन कर दिया है, जिनसे प्रसन्न होता है उनकी भी तथा जिनसे अप्रसन्न होता है उनकी भी। इंसान दोनों प्रकार के कर्मों में से जो भी कर्म करेगा अल्लाह उसका हाथ नहीं पकड़ेगा, किन्तु यदि वह काम अपराध तथा पाप का होगा तो निश्चय वह उससे अप्रसन्न होगा कि उसने अल्लाह के दिये अधिकार का ग़लत प्रयोग किया। फिर भी अल्लाह यह अधिकार संसार में उससे वापस नहीं लेगा। हाँ, उसका दण्ड क़यामत के दिन देगा।

[1]अर्थात क़ुरआन से पहले कोई किताब, जिसमें उन्हें अल्लाह के सिवा किसी की उपासना (इबादत) करने का अधिकार दिया गया है, जिसे उन्होंने दृढ़ता से थाम रखा है ? अर्थात ऐसा नहीं है बल्कि पूर्वजों के अनुगमन के अतिरिक्त उनके पास कोई प्रमाण नहीं है।

The Ummah Technology Mission

وَجَدْتُمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ۭ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝٢٤

लेकर आया हूँ जिस पर तुमने अपने पूर्वजों को पाया तो उन्होंने उत्तर दिया कि हम उसे नहीं मानने वाले हैं जिसे देकर तुम्हें भेजा गया है।[1]

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۣ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝٢٥

(२५) तो हमने उनसे प्रतिशोध लिया तथा देख ले झुठलाने वालों का क्या परिणाम हुआ ?

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِيْ بَرَاۗءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ۝٢٦

(२६) तथा जबकि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपने पिता से तथा अपने समुदाय से कहा कि मैं इन बातों से अलग हूँ जिनकी तुम पूजा करते हो।

اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ۝٢٧

(२७) अतिरिक्त उस शक्ति के जिसने मुझे पैदा किया है तथा वही मेरा मार्गदर्शन भी करेगा।[2]

وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ

(२८) तथा इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) उसी को अपनी संतान में भी शेष रहने वाली बात[3]

---

[1]अर्थात अपने पूर्वजों के अनुगमन में इतने पक्के थे कि पैग़म्बर का स्पष्टीकरण तथा तर्क भी उन्हें फेर नहीं सका। यह आयत अन्धे अनुगमन के खंडन तथा उसकी निंदा पर बहुत बड़ा प्रमाण है। (देखिये शौकानी की फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात जिसने मुझे पैदा किया है, वह अपने धर्म की समझ भी मुझे देगा तथा उस पर स्थिर भी रखेगा। मैं मात्र उसी की उपासना करूँगा।

[3]अर्थात इस धर्म-सूत्र لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ (ला एलाह इल्लल्लाह) की वसीयत अपनी संतान को भी कर गये। जैसे फ़रमाया :

﴿ وَوَصَّىٰ بِهَآ إِبْرَٰهِـۧمُ بَنِيهِ وَيَعْقُوبُ ﴾،

"इब्राहीम तथा याक़ूब ने इसकी वसीयत अपनी संतान को की।" (अल-बक़रः-१३२)

कुछ ने جَعَلَهَا में कर्ता अल्लाह को माना है, अर्थात अल्लाह ने इस धर्म-सूत्र को इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पश्चात उनकी संतान में शेष रखा तथा वे केवल एक अल्लाह के उपासक रहे।

The Ummah Technology Mission

عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾

स्थापित कर गये ताकि लोग (मिश्रणवाद से) बचते रहें।[1]

بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ وَ اٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٩﴾

(२९) बल्कि मैंने उन लोगों को तथा उनके पूर्वजों को सामान (एवं साधन)[2] प्रदान किया यहाँ तक कि उनके पास सत्य एवं स्पष्ट रूप से सुनाने वाला रसूल आ गया।[3]

وَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा सत्य के पहुँचते ही ये बोल पड़े कि यह तो जादू है तथा हम इसको अस्वीकार करने वाले हैं।[4]

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿٣١﴾

(३१) तथा कहने लगे कि यह क़ुरआन इन दोनों बस्तियों में से किसी सम्पन्न व्यक्ति पर क्यों अवतरित नहीं किया गया।[5]

---

[1]अर्थात इब्राहीम की संतान में यह एकेश्वरवादी इसलिए पैदा किये ताकि उनके तौहीद (अद्वैत) के उपदेश से लोग शिर्क (मिश्रणवाद) से रूकते रहें। لَعَلَّهُم में सर्वनाम मक्कावासियों की ओर फिरता है। अर्थात संभवत: मक्कावासी इस धर्म की ओर लौट आयें जो ईशदूत माननीय इब्राहीम का धर्म था जो विशुद्ध तौहीद पर आधारित था न कि शिर्क (बहुदेववाद) पर।

[2]यहाँ से फिर उन वरदानों की चर्चा हो रही है जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान किये थे तथा वरदानों के पश्चात प्रकोप में शीघ्रता नहीं की, अपितु उन्हें पूरा अवसर दिया जिससे वह धोखे में पड़ गये तथा मन के बन्दे बन गये।

[3]सत्य से पवित्र क़ुरआन तथा दूत से आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अभिप्राय हैं। مُبِيْن रसूल का विशेषण (गुण) है, खोल-खोल कर वर्णन करने वाला अथवा जिसका ईशदूत होना स्पष्ट है। इसमें कोई शंका और गोपनीयता नहीं।

[4]क़ुरआन को जादू कहकर उसका इंकार कर दिया तथा अगले शब्दों में आदरणीय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपमान तथा निरादर किया।

[5]दोनों नगरों से तात्पर्य मक्का तथा ताएफ़ है तथा बड़े व्यक्तियों से अभिप्राय अधिकतर भाष्यकारों के निकट मक्का का वलीद पुत्र मुग़ीरह तथा ताएफ़ का उरवह पुत्र मसऊद सक़फ़ी है। कुछ ने और अन्य लोगों के नाम उल्लेख किये हैं। फिर भी उद्देश्य इससे एक

The Ummah Technology Mission

اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ؕ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٣٢﴾

(३२) क्या आपके प्रभु की दया को ये वितरण करते हैं ?[1] हमने ही उनके साँसारिक जीवन की जीविका उनमें वितरण की है तथा एक को दूसरे से श्रेष्ठ किया है ताकि एक-दूसरे को अधीन में कर ले।[2] और जिसे ये लोग एकत्रित करते फिरते हैं, उससे आपके प्रभु की दया अति उत्तम है।[3]

وَلَوْلَاۤ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً

(३३) तथा यदि यह बात नहीं होती कि सभी

ऐसे व्यक्ति का चुनाव है जो पहले ही से श्रेष्ठ पद वाला हो, धनवान एवं अपनी जाति में माना हुआ हो। अर्थात यदि क़ुरआन अवतरित होता, तो दोनों नगरों में से किसी ऐसे ही व्यक्ति पर अवतरित होता न कि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर जिनके पास दुनिया का धन नहीं, न अपनी जाति में नेतृत्व एवं प्रधानता के पद पर आसीन हैं।

[1] رحمت (रहमत) अनुग्रह के अर्थ में है, तथा यहाँ सबसे बड़ा अनुग्रह 'नबूअ़त' अभिप्राय है। प्रश्न नकारत्मक है। अर्थात यह काम उनका नहीं है कि प्रभु के वरदानों, विशेष रूप से नबूअ़त (दूतत्व) को अपनी इच्छा से वितरण करें। अपितु यह केवल प्रभु का काम है, क्योंकि वही सब बातों तथा प्रत्येक व्यक्ति की स्थिति से पूर्णत: अवगत है। वही समझता है कि इंसानों में नबूअत का ताज (मुकुट) किसके सिर पर रखना है तथा अपनी प्रकाशना (वह्यी) से किसे सम्मानित करना है।

[2] अर्थात धन-सम्पत्ति तथा मान-मर्यादा तथा बुद्धि एवं बोध में यह अंतर हमने इसलिये रखा है ताकि अधिक धनवाला कम धनवाले से, उच्च पद वाला नीचे के अधिकारियों से तथा बोध एवं विवेक में अधिक अपने से कम बुद्धि रखने वाले से काम ले सके। अल्लाह की इस पूर्ण हिक्मत से विश्व (सृष्टि) की व्यवस्था उत्तम रूप से चल रही है। यदि सब धन, पद, ज्ञान तथा बोध में तथा अन्य साँसारिक साधनों में समान होते तो कोई किसी का काम करने के लिए तैयार न होता। इसी प्रकार तुच्छ तथा हीन समझे जाने वाले काम को भी कोई न करता। यह इंसानी जरूरत है जो परमेश्वर ने अंतर तथा भिन्नता में रख दी है, जिसके कारण प्रत्येक इंसान दूसरे इंसान बल्कि इंसानों की ज़रूरत रखता है। सभी मानवीय आवश्यकतायें, कोई व्यक्ति चाहे वह अरबपति क्यों न हो, अन्य व्यक्तियों की सहायता के बिना पूरी नहीं कर सकता।

[3] इस رحمت दया से तात्पर्य आख़िरत के वह वरदान हैं जो अल्लाह ने अपने सदाचारी बंदों के लिए तैयार कर रखे हैं।

The Ummah Technology Mission

لَجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ﴿٣٣﴾

लोग एक ही तरीके पर हो जायेंगे [1] तो दयालु के साथ कुफ़्र करने वालों के घरों की छतों को हम चाँदी की बना देते तथा सीढ़ियों को भी जिन पर वे चढ़ा करते।

وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा उनके घरों के द्वार तथा तख्त (आसन) भी जिन पर वे तकिया लगा-लगा कर बैठते।

وَزُخْرُفًا ؕ وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) तथा स्वर्ण के भी,[2] तथा ये सब कुछ यूँही सा साँसारिक लाभ है तथा आख़िरत तो आपके प्रभु के निकट केवल सदाचारियों के लिए (ही) है।[3]

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा जो व्यक्ति अल्लाह की याद से आलस्य करे[4] हम उस पर एक शैतान निर्धारित कर देते हैं; वही उसका साथी रहता है।[5]

---

[1]अर्थात माया-मोह के कारण दुनिया के अभिलाषी हो जायेंगे तथा परलोक एवं अल्लाह की प्रसन्नता की खोज भूल जायेंगे।

[2]अर्थात कुछ चीज़ें चाँदी की तथा कुछ सोने की, क्योंकि विभिन्नता में शोभा अधिक होती है। अभिप्राय यह है कि दुनिया का धन हमारी दृष्टि में इतना तुच्छ है कि यदि उपरोक्त ख़तरा न होता तो अल्लाह के मुन्किरों को ख़ूब धन दिया जाता परन्तु उसमें भय यही था कि सब लोग माया-मोह में न पड़ जायें। दुनिया की हीनता उस हदीस से भी स्पष्ट होती है जिसमें फ़रमाया : "لو كانت الدنيا تزن عند الله جناح بعوضة ما سقى منها كافرا شربة ماء" "यदि दुनिया का मूल्य अल्लाह के निकट एक मच्छर के पंख के बराबर भी होता तो अल्लाह तआला काफ़िरों को एक घूंट पानी भी पीने को नहीं देता।" (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, किताबुज़ ज़ोहद)

[3]जो मिश्रणवाद एवं पापों से बचते तथा अल्लाह की आज्ञा पालन करते रहे, उनके लिए परलोक के सुख एवं वरदान हैं जिनका अन्त एवम् विनाश नहीं।

[4]عَشا يَعْشُو का अर्थ है आँखों का रोग रतौंधी अथवा उसके कारण जो अंधापन होता है, अर्थात जो अल्लाह की याद (स्मरण) से अंधा हो जाये।

[5]वह शैतान अल्लाह की याद की अपेक्षा करने वालों का साथी बन जाता है तथा प्रत्येक

The Ummah Technology Mission

وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٧﴾

(३७) तथा वह उन्हें मार्ग से रोकते हैं तथा यह उसी विचार में रहते हैं कि यह संमार्ग प्राप्त हैं।[1]

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِىْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ﴿٣٨﴾

(३८) यहाँ तक कि जब वह हमारे पास आयेगा तो कहेगा कि काश मेरे तथा तेरे मध्य पूर्व एवं पश्चिम की दूरी होती, तू बड़ा बुरा साथी है।[2]

وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِى الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٩﴾

(३९) तथा जबकि तुम अत्याचारी सिद्ध हो चुके तो तुम्हें आज कदापि तुम सबकी यातना में सहभागी होना कोई लाभकारी न होगा।

اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِى الْعُمْىَ وَمَنْ كَانَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٠﴾

(४०) तो क्या तू बहरे को सुना सकता है अथवा अंधे को मार्ग दिखा सकता है तथा उसे जो खुली गुमराही में हो।[3]

समय उनके संग रहता है। अथवा इंसान स्वयं उसी शैतान का साथी बन जाता है तथा उससे अलग नहीं होता अपितु सभी विषयों में उसका अनुगमन तथा सभी बहकावे में उसका अनुपालन करता है।

[1]अर्थात वह शैतान उसके तथा सत्यमार्ग के बीच आड़ बन जातें हैं तथा उससे उन्हें रोकते हैं तथा उन्हें बराबर समझाते रहते हैं कि तुम सत्य पर हो, यहाँ तक कि वह अपने बारे में इसी भ्रम में पड़ जाते हैं कि वह सत्य पर हैं। अथवा काफ़िर शैतानों के बारे में यह समझते हैं कि यह सही हैं तथा उनका अनुपालन करते रहते हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[2] مَشْرِقَيْن द्विवचन है। तात्पर्य पूर्व-पश्चिम हैं। فبئس القرين का विशेष्य लुप्त है। أنت أيها الشَّيْطَان शैतान तू बड़ा बुरा साथी है। यह काफ़िर क़यामत के दिन कहेगा किन्तु उस दिन इसे स्वीकार से क्या लाभ ?

[3]अर्थात जिसके लिए सदा का दुर्भाग्य लिख दिया गया है वह शिक्षा-दिक्षा से बहरा तथा अंधा है। तेरी शिक्षा तथा सदुपदेश से वह सीधी डगर पर नहीं आ सकता। यह प्रश्न नकारात्मक है। जैसे बहरा सुनने से तथा अंधा देखने से वंचित है इसी प्रकार खुली गुमराही में ग्रस्त व्यक्ति सत्य की ओर आने से वंचित है। यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना है ताकि ऐसे लोगों के कुफ़्र (इंकार) से आप अधिक व्याकुलता का संवेदन न करें।

The Ummah Technology Mission

فَإِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَإِنَّا مِنْهُم مُّنتَقِمُونَ ﴿٤١﴾

(४१) फिर यदि हम तुझे यहाँ से[1] ले भी जायें तो भी हम उनसे बदला लेने वाले हैं।[2]

أَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ فَإِنَّا عَلَيْهِم مُّقْتَدِرُونَ ﴿٤٢﴾

(४२) अथवा जो कुछ उनसे वादा किया है[3] वह तुझे दिखा दें; हम उन पर भी सामर्थ्य रखते हैं।[4]

فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِي أُوحِيَ إِلَيْكَ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٤٣﴾

(४३) तो जो प्रकाशना आपकी ओर की गयी है उसे दृढ़ता से थामे रहें।[5] वस्तुत: आप सीधे मार्ग पर हैं।[6]

وَإِنَّهُ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۖ

(४४) तथा नि:संदेह यह (स्वयं) आपके लिए तथा आपकी जाति[7] के लिए शिक्षा है तथा

---

[1]अर्थात तुझे मौत आ जाये इस से पहले कि उन पर प्रकोप आये अथवा तुझे मक्का से निकाल ले जायें।

[2]दुनिया ही में यदि हमारी इच्छा की मार्ग हुई। अन्य दशा में पारलौकिक यातना से तो वह किसी रूप में बच नहीं सकते।

[3]अर्थात तेरी मृत्यु से पूर्व अथवा मक्के ही में तेरे रहते हुए उन पर प्रकोप भेज दें।

[4]अर्थात हम जब चाहें उन पर प्रकोप उतार सकते हैं क्योंकि हम उन पर समर्थ हैं, जैसाकि आपके जीवन ही में बद्र के रण में काफ़िर शिक्षाप्रद पराजय तथा अपमान से दोचार हुए।

[5]अर्थात पवित्र क़ुरआन को चाहे कोई भी झुठलाता रहे।

[6]यह فَاسْتَمْسِكْ का कारण है।

[7]इसे विशेष करने का अभिप्राय यह नहीं कि दूसरों के लिए सदुपदेश नहीं बल्कि प्रथम संबोधित चूंकि कुरैश थे, इसलिए उनकी चर्चा की। अन्यथा क़ुरआन तो पूरे जगत के लिए सदुपदेश है। ﴿وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ﴾ (सूर: *अल-क़लम*-५२) जैसे आपको आदेश दिया गया कि ﴿وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ﴾ "अपने समीपवर्ती संबंधियों को ही डराइये।" (*अश्शुअरा*-२१४) इसका अभिप्राय यह नहीं है कि अल्लाह का उपदेश मात्र संबंधियों को पहुँचाना है। अपितु अर्थ यह है कि आमन्त्रण का आरम्भ अपने परिवार ही से करें। कुछ ने यहाँ ذِكْر (ज़िक्र) का अर्थ प्रतिष्ठा लिया है अर्थात यह क़ुरआन तेरे जाति के लिये

The Ummah Technology Mission

وَسَوْفَ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿٤٤﴾

निकट भविष्य में तुम लोग पूछे जाओगे।

وَسْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ ﴿٤٥﴾

(४५) तथा हमारे उन नबियों से मालूम करो जिन्हें हमने[1] आपसे पूर्व भेजा था कि क्या हमने दयालु के अतिरिक्त अन्य देवता निर्धारित किये थे जिनकी पूजा की जाये ?[2]

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَقَالَ اِنِّيْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٦﴾

(४६) तथा हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) को अपनी निशानियाँ देकर फ़िरऔन तथा उसके राज्य-प्रमुखों के पास भेजा तो(मूसा ने जाकर) कहा कि मैं सर्वलोक के प्रभु का रसूल (संदेशवाहक) हूँ।[3]

प्रतिष्ठा का हेतु है कि यह उनकी भाषा में उतरा। उसको वह सर्वाधिक समझने वाले हैं। इसके द्वारा वे पूरे विश्व पर प्रधानता प्राप्त कर सकते हैं इसलिए उनको चाहिए कि इसे अपनायें तथा उसकी माँग पर सर्वाधिक कर्म करें।

[1]पैग़म्बरों से यह प्रश्न या तो इस्रा तथा मेराज के अवसर पर बैतुल मोक़द्दस में हुआ अथवा आसमान पर किया गया, जहाँ अम्बिया (ईशदूतों) से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भेंट हुई। अथवा اَرْسَلْنَا का शब्द लुप्त है, अर्थात उनके अनुयायियों (अहले किताब-ग्रंथधारी यहूदियों एवं ईसाईयों) से पूछो, क्योंकि वे उनकी शिक्षाओं से परिचित हैं तथा उनके ऊपर अवतरित धर्मशास्त्र उनके पास मौजूद हैं।

[2]उत्तर अवश्य (नि:सन्देह) नकारात्मक है अल्लाह ने किसी भी नबी को यह आदेश नहीं किया। अपितु इसके विपरीत प्रत्येक नबी को तौहीद के प्रचार का ही आदेश दिया गया।

[3]मक्का के कुरैश ने कहा था कि यदि अल्लाह किसी को नबी बनाकर भेजता तो मक्का अथवा तायफ़ के किसी ऐसे व्यक्ति पर भेजता जो धनी तथा पदाधिकारी होता। जैसे फ़िरऔन ने भी माननीय मूसा के मुक़ाबिले में कहा था कि मैं मूसा से उत्तम हूँ तथा यह मुझसे हीन है, यह तो साफ बोल भी नहीं सकता, जैसाकि आगे आ रहा है। संभवत: इसी समान स्थिति के कारण यहाँ मूसा तथा फ़िरऔन का वाक्य दुहराया जा रहा है। इसके सिवा इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये सांत्वना का पक्ष भी है कि आदरणीय मूसा को भी बहुत सी परीक्षाओं से गुज़रना पड़ा, उन्होंने धैर्य तथा साहस से काम लिया। इसी प्रकार आप भी मक्का के काफ़िरों के कष्टों एवं अनुचित व्यवहारों से हताश न हों, धैर्य तथा साहस से काम लें। आदरणीय मूसा के समान ही अन्तत: विजय तथा सफलता

The Ummah Technology Mission

فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) तो जब वह हमारी निशानियाँ लेकर उनके पास आये तो वे सहसा उन पर हँसने लगे।[1]

وَمَا نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِيَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا وَاَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा हम जो निशानी उनको दिखाते थे, वे अन्य से बढ़ी-चढ़ी होती थी[2] तथा हमने उन्हें यातना में पकड़ा ताकि वे रूक जायें।[3]

وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾

(४९) तथा उन्होंने कहा कि हे जादूगर,[4] हमारे लिए अपने प्रभु से उसकी[5] प्रार्थना कर जिसका उसने तुझे वचन दे रखा है।[6] विश्वास

आप ही की है तथा यह मक्कावासी फ़िरऔन ही की भाँति असफल तथा पराजित होंगे।

[1]जब आदरणीय मूसा ने फ़िरऔन तथा उसके दरबारियों को तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत (आमन्त्रण) दिया तो उन्होंने उनके ईशदूत होने का प्रमाण माँगा जिस पर उन्होंने वह चमत्कार एवं प्रमाण प्रस्तुत किये, जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान किये थे, जिन्हें देखकर उन्होंने उपहास किया तथा कहा कि यह कौन-सी बड़ी चीज़ें हैं, यह तो जादू द्वारा हम भी प्रस्तुत (पेश) कर सकते हैं।

[2]इन निशानियों से वह निशानियाँ अभिप्राय हैं जो तूफ़ान, टिड्डी दल, जुयें, मेढक तथा रक्त आदि के रूप में दिखायी गयीं, जिनकी चर्चा सूरः आराफ़ आयत नं॰ १३३-१३५ में आ चुकी है। बाद की प्रत्येक निशानी पहली निशानी से बढ़कर होती, जिससे माननीय मूसा की सच्चाई स्पष्ट से स्पष्टतम हो जाती।

[3]उद्देश्य इन निशानियों अथवा प्रकोप से यह होता था कि शायद वह झुठलाने से रूक जायें।

[4]कहते हैं कि उस युग में जादू बुरी चीज़ न थी तथा विद्वानों को भी सम्मान स्वरूप जादूगर कहा जाता था। इसके अलावा, चमत्कारों तथा निशानियों के संबंध में भी उनका विचार था कि यह मूसा की जादू-कला का चमत्कार है। इसलिए उन्होंने मूसा अलैहिस्सलाम को तांत्रिक के शब्द से संबोधित किया।

[5]'अपने प्रभु से' के शब्द अपनी मिश्रणवादी (अनेकेश्वरवादी) मांसिकता के कारण कहा, क्योंकि अनेकेश्वरवादियों में अनेक पभु तथा पूज्य होते थे, मूसा अपने पभु से यह काम करा लो।

[6]अर्थात हमारे ईमान लाने पर प्रकोप टालने का वा दा।

The Ummah Technology Mission

कर कि हम मार्ग पर लग जायेंगे।[1]

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنْكُثُونَ ﴿٥٠﴾

(५०) फिर जब हमने उन पर से वह प्रकोप हटा लिया तो उन्होंने उसी समय अपना वचन तथा प्रतिज्ञा तोड़ दिया।

وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهَٰذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِن تَحْتِي ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٥١﴾

(५१) तथा फ़िरऔन ने अपने समुदाय में घोषणा करायी तथा कहा[2] कि हे मेरी जाति के लोगो, क्या मिस्र का देश मेरा नहीं तथा मेरे राजभवनों के नीचें जो ये नहरें बह रही हैं ?[3] क्या तुम देखते नहीं ?

أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ مَهِينٌ ۖ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ ﴿٥٢﴾

(५२) बल्कि मैं श्रेष्ठ हूँ इसकी अपेक्षा जो हीन है[4] तथा साफ बोल भी नहीं सकता।[5]

فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِّن ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلَائِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ﴿٥٣﴾

(५३) अच्छा, इस पर स्वर्ण के कंगन क्यों नहीं उतरे [6] अथवा उसके साथ झुण्ड एवं घटा बाँधकर

---

[1]यदि यह प्रकोप टल गया तो हम तुझे अल्लाह का सच्चा रसूल मान लेंगे तथा तेरे ही प्रभु की उपासना करेंगे, जैसाकि आगामी आयत में है तथा *सूरह आराफ़* में भी गुज़रा।

[2]जब माननीय मूसा ने ऐसी कई निशानियाँ प्रस्तुत कर दीं जो एक से बढ़कर एक थीं तो फ़िरऔन को यह भय हुआ कि कहीं मेरी जाति मूसा की ओर आकर्षित न हो जाये। इसलिए उसने अपनी पराजय का धब्बा छुपाने के लिए तथा समुदाय को निरन्तर धोखे में रखने के लिए यह नई चाल चली कि अपने शासन तथा अधिकार के हवाले से मूसा का निरादर तथा अपमान दिखाया जाये ताकि मेरी जाति मेरे राज्य तथा आधिपत्य से ही भयभीत रहे।

[3]इससे अभिप्राय नील नदी अथवा उसकी कुछ शाखायें हैं जो उसके राजभवन के नीचे से गुज़रती थीं।

[4]أَمْ इज़राव अर्थात एक विषय से बात को दूसरे विषय की ओर फेरने के लिए अर्थात بَلْ (बल्कि) के अर्थ में है। कुछ के विचार में प्रश्नवाची ही है।

[5]यह ईश्दूत मूसा अलैहिस्सलाम के तुतलेपन की ओर संकेत है जैसाकि *सूरः ताहा* में गुज़रा।

[6]उस युग में मिश्र तथा ईरान के राजा अपनी विशेषता दिखाने के लिए सोने के कंगन पहनते थे तथा गले में सोने का तौक़ तथा सिकड़ी डालते थे जो उनकी प्रधानता का प्रतीक समझा जाता था। इसी कारण फ़िरऔन ने आदरणीय मूसा के विषय में कहा कि

The Ummah Technology Mission

फ़रिश्ते ही आ जाते।[1]

فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ؕ
اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿۵۴﴾

(५४) तो उसने अपनी जाति के लोगों को प्रलोभन दिया तथा उन्होंने उसी की मान ली।[2] नि:संदेह वे सारे ही अवज्ञाकारी लोग थे।

فَلَمَّاۤ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ
فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۵۵﴾

(५५) फिर जब उन्होंने हमें क्रोधित किया तो हमने उनसे बदला लिया तथा सब को डुबो दिया।

فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّ مَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ ﴿۵۶﴾

(५६) और हमने उन्हें गया-गुज़रा कर दिया तथा बाद वालों के लिए नमूना बना दिया।[3]

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا
قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ﴿۵۷﴾

(५७) तथा जब मरियम के पुत्र का उदाहरण वर्णन किया गया तो उससे तेरा समुदाय (प्रसन्नता से) पुकार उठा।

وَقَالُوْۤاءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ؕ
مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ؕ
بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ﴿۵۸﴾

(५८) तथा उन्होंने कहा कि हमारे देवता अच्छे हैं अथवा वह? तुझसे उनका यह कहना मात्र झगड़े के उद्देश्य से है, बल्कि यह लोग हैं ही झगड़ालू।[4]

यदि उसकी कोई मर्यादा की विशेषता होती एवम् कोई स्थान होता तो उसके हाथ में सोने के कंगन होने चाहिये थे।

[1]जो इस बात की पुष्टि करते कि यह अल्लाह का रसूल (ईशदूत) है अथवा राजाओं के समान उसकी प्रतिष्ठा को प्रत्यक्ष करने के लिए उसके साथ होते।

[2]अर्थात उसने अपनी जाति की बुद्धि को हल्की समझा अथवा कर दिया तथा उन्हें अपनी मूर्खता एवं कुपथ पर अडिग रहने की ताकीद की, तथा जाति उसकी अनुगामी बन गई।

[3] آسَفُونا بمعنى أسخَطُونا अथवा أغضَبُونا के अर्थ में है अर्थात हमें क्रोधित कर दिया। سَلَفٌ यह سَالِفٌ का बहुवचन है। जैसे خَدَمٌ، خادمٌ का तथा حَرَسٌ حارسٌ का अर्थात बाद में आने वालों के लिये उनको शिक्षाप्रद तथा नमूना बना दिया कि वह इस प्रकार कुफ़्र एवं अत्याचार तथा बड़ाई एवं उपद्रव न करें। जैसे फ़िरऔन ने किया ताकि वह इस जैसे शिक्षाप्रद दुष्परिणाम से सुरक्षित रहें।

[4]शिर्क (अनेकेश्वरवाद) के खंडन तथा मिथ्या उपास्यों की हीनता को स्पष्ट करने के लिए

The Ummah Technology Mission

إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٥٩﴾

(५९) वह (ईसा अलैहिस्सलाम) भी केवल बंदा (भक्त) ही हैं, जिस पर हमने उपकार किया तथा उसे इस्राईल की सन्तान के लिए (अपने सामर्थ्य की) निशानी बनाया।[1]

जब मक्का के मूर्तिपूजकों से कहा जाता कि तुम्हारे संग तुम्हारे देवता भी नरक में जायेंगे तो इससे अभिप्राय वह पत्थर की मूर्तियाँ होती हैं जिनकी वह पूजा करते थे, न कि वह नेक लोग जो अपने जीवन में लोगों को तौहीद (अद्वैत) का आमंत्रण देते रहे किन्तु उनके निधन के पश्चात उनके प्रति श्रद्धालु लोगों ने उन्हें पूज्य समझना आरम्भ कर दिया। इसके संबंध में तो क़ुरआन करीम ने ही स्पष्ट कर दिया है कि यह नरक से दूर रहेंगे।

﴿إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُم مِّنَّا الْحُسْنَىٰ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ﴾

"निःसंदेह जिनके लिए हमारी ओर से पुण्य पूर्व ही में ठहर चुका है वे सब नरक से दूर ही रखे जायेंगे।" (*अल-अम्बिया*-१०१)

क्योंकि इसमें उनका कोई दोष नहीं था। इसलिए पवित्र क़ुरआन ने इसके लिए जो शब्द प्रयोग किया है, वह शब्द ما है जो निर्जीव के लिए प्रयुक्त होता है।

﴿إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ﴾

"तुम और अल्लाह के अतिरिक्त जिन-जिन की तुम पूजा करते हो, सब नरक के ईंधन (जलावन) बनोगे।" (*अल-अम्बिया*-९८)

इससे अम्बिया (अलैहिमुस्सलाम) तथा वह धर्मात्मा निकल गये जिनको लोगों ने अपने विचार से पूज्य बनाये रखा होगा। अर्थात यह तो संभव है कि अन्य मूर्तियों के साथ उनके समरूप बनाई हुई मूर्तियाँ भी अल्लाह तआला नरक में डाल दे किन्तु वह लोग तो प्रत्येक स्थिति में नरक से दूर ही रहेंगे। किन्तु मूर्तिपूजक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुख से ईशदूत ईसा की शुभ चर्चा सुनकर झगड़ते कि जब ईसा प्रशंसनीय हैं यद्यपि ईसाईयों ने उन्हें पूज्य बना रखा है तो फिर हमारे पूज्य क्यों बुरे, क्या वह अच्छे नहीं? अथवा यदि हमारे पूज्य नरक में जायेंगे तो आदरणीय ईसा तथा उज़ैर भी नरक में जायेंगे। अल्लाह ने यहाँ फ़रमाया: इनका खुशी से चिल्लाना केवल इनका झगड़ना है। جَدَل का अभिप्राय ही यह होता है कि झगड़ालू जानता है कि उसके पास कोई प्रमाण नहीं, परन्तु केवल अपनी बात के पक्ष में वाद-विवाद से नहीं रूकता।

[1]एक, इसलिए कि बिना पिता के उनका जन्म हुआ। दूसरे, स्वयं उन्हें चमत्कार दिये गये मृतों को जीवित करना आदि, इसलिए भी।

The Ummah Technology Mission

وَلَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَا مِنكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِى الْأَرْضِ يَخْلُفُوْنَ ﴿٦٠﴾

(६०) यदि हम चाहते तो तुम्हारे बदले फ़रिश्ते कर देते जो धरती पर एक-दूसरे की उत्तराधिकारी का काम करते।[1]

وَإِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوْنِ ۚ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦١﴾

(६१) तथा निःसंदेह वह (ईसा अलैहिस्सलाम) क़यामत के लक्षण हैं,[2] तो तुम क़यामत के विषय में संदेह न करो तथा मेरी बात मान लो, यही सीधा मार्ग है।

وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۚ إِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٦٢﴾

(६२) तथा शैतान तुम्हें रोक न दे, निश्चय वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

وَلَمَّا جَآءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِىْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ۚ

(६३) तथा जब ईसा (अलैहिस्सलाम) चमत्कार लाये तो कहा कि मैं तुम्हारे पास हिक्मत (ज्ञान) लाया हूँ तथा इस लिए आया हूँ कि जिन कुछ बातों में तुम मतभेद करते हो,

---

[1]अर्थात तुम्हारा अन्त करके तुम्हारी जगह धरती पर फ़रिश्तों को बसा देते, जो तुम्हारी ही भाँति एक-दूसरे के उत्तराधिकारी होते। अभिप्राय यह है कि फ़रिश्तों का आकाश पर रहना ऐसी श्रेष्ठता नहीं कि उन की उपासना की जाये, यह तो हमारी इच्छा एवं निर्णय है कि फ़रिश्तों को आकाश पर तथा इंसानों को धरती पर बसाया। हम चाहें तो फ़रिश्तों को धरती पर भी बसा सकते हैं।

[2] عِلْمٌ (इल्म) लक्षण तथा निशान के अर्थ में है। अधिकाँश व्याख्याकारों के निकट इसका अभिप्राय यह है कि क़यामत के निकट उनका आकाश से अवतरण होगा, जैसाकि विशुद्ध निरन्तर हदीसों से सिद्ध है। यह अवतरण इस बात का लक्षण होगा कि अब प्रलय निकट है। इसलिए कुछ ने अक्षर 'ऐन' तथा 'लाम' के ज़बर (दोनों पर 'अ' की मात्रा) के साथ عَلَمٌ पढ़ा है जिसका अर्थ ही लक्षण तथा चिन्ह है। कुछ के विचार में उनको प्रलय का लक्षण मानना उनके चमत्कारों तथा जन्म के आधार पर है। अर्थात जैसे अल्लाह ने उनको विना पिता के पैदा किया, उनका यह जन्म इस बात का प्रतीक है कि अल्लाह क़यामत (प्रलय) के दिन सभी इन्सानों को पुनः जीवन प्रदान करेगा। अतः अल्लाह के सामर्थ्य को देखते हुए क़यामत के होने में कोई संदेह नहीं है। إِنَّهٗ में सर्वनाम आदरणीय ईसा की ओर संकेत है।

The Ummah Technology Mission

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿٦٣﴾

उन्हें स्पष्ट कर दूँ,[1] तो तुम अल्लाह (तआला) से डरो तथा मेरा कहा मानो।

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦٤﴾

(६४) मेरा एवं तुम्हारा प्रभु मात्र अल्लाह (तआला) ही है तो तुम सब उसकी इबादत करो। सीधा मार्ग यही है।

فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿٦٥﴾

(६५) फिर (इस्राईल की संतान के) गुटों ने आपस में मतभेद किया,[2] तो अत्याचारियों के लिए ख़राबी है दुख वाले दिन की यातना से।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٦٦﴾

(६६) ये लोग मात्र क़यामत की प्रतीक्षा में हैं कि वह सहसा उन पर आ पड़े तथा उन्हें सूचना भी न हो।

اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَئِذٍۢ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٧﴾

(६७) उस दिन (घनिष्ठ) मित्र भी एक-दूसरे के शत्रु बन जायेंगे सिवाय सदाचारियों के।[3]

يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَآ اَنْتُمْ

(६८) हे मेरे बंदो ! आज तो तुम पर कोई भय

---

[1] इसके लिए देखिये आले इमरान आयत नं॰ ५ की व्याख्या।

[2] इससे तात्पर्य यहूदी तथा इसाई हैं। यहूदियों ने आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम की निन्दा की तथा उन्हें (अल्लाह की शरण) व्याभिचार का पुत्र कहा जबकि इसाईयों ने अतिश्योक्ति से काम लेकर उन्हें उपास्य बना लिया। अथवा अभिप्राय इसाईयों के विभिन्न गिरोह हैं जो आदरणीय ईसा के विषय में एक-दूसरे से कड़ा विरोध रखते हैं। एक उन्हें अल्लाह का पुत्र, दूसरा अल्लाह, तीसरा तीन उपास्यों का तीसरा कहता है तथा एक गिरोह मुसलमानों की तरह उन्हें अल्लाह का बन्दा (दास) तथा उसका पैग़म्बर मानता है।

[3] क्योंकि काफ़िरों की मित्रता कुफ़्र तथा अवज्ञा एवं उल्लंघन के आधार पर होती है तथा यही अवज्ञा उनके यातना का कारण होंगी, जिसकी वजह से वह एक-दूसरे को दोष देंगे तथा परस्पर शत्रु हो जायेगें। इसके विपरीत, चूँकि ईमानवालों तथा सदाचारियों की मित्रता अल्लाह की प्रसन्नता के आधार पर होती है तथा यही धर्म एवं ईमान सत्कर्म तथा पुण्य का कारण है। उनसे उनकी मित्रता में कोई कटाव नहीं होगा। वह इसी प्रकार स्थापित रहेगी जिस प्रकार जगत में थी।

The Ummah Technology Mission

تَحْزَنُونَ ﴿٦٨﴾

तथा डर है तथा न तुम शोकग्रस्त होगे।[1]

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ﴿٦٩﴾

(६९) जो हमारी आयतों पर ईमान लाये तथा थे भी वे (आज्ञाकारी) मुसलमान।

اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُوْنَ ﴿٧٠﴾

(७०) तुम तथा तुम्हारी पत्नियाँ आनंदित एवं प्रसन्न होकर स्वर्ग में चले जाओ।[2]

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ ۚ وَفِيْهَا مَا تَشْتَهِيْهِ الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْاَعْيُنُ ۚ وَاَنْتُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٧١﴾

(७१) उनके चारों ओर स्वर्ण के थालों तथा स्वर्ण के गिलासों का दौर चलाया जायेगा।[3] उनके मन जिस वस्तु को चाहें तथा जिससे उनकी आँखें आनंद प्राप्त करें, सब वहाँ होगा तथा तुम उसमें सदैव रहोगे।[4]

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْٓ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٢﴾

(७२) तथा यही वह स्वर्ग है कि तुम अपने कर्मों के बदले इसके उत्तराधिकारी बानये गये हो।

لَكُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ كَثِيْرَةٌ مِّنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٣﴾

(७३) यहाँ तुम्हारे लिए अत्याधिक मेवे हैं जिन्हें तुम खाते रहोगे।

---

[1]यह क़यामत के दिन उन सदाचारियों से कहा जायेगा जो संसार में मात्र अल्लाह की प्रसन्नता के लिए आपस में प्रेम रखते थे, जैसाकि हदीसों में भी उसकी महत्ता आयी है। बल्कि अल्लाह के लिए मित्रता तथा बैर को पूर्ण ईमान का आधार बताया गया है।

[2]ازواجكم से कुछ ने ईमानदार पत्नियाँ, कुछ ने ईमानदार साथी और कुछ ने स्वर्ग की हूरें भावार्थ लिया है। वे सब सहीह हैं क्योंकि स्वर्ग में यह सब कुछ ही होगा।

[3] صِحَافٌ यह صَحْفَةٌ का बहुवचन है, प्लेट, थाली। सबसे बड़े बर्तन को جَفْنَةٌ कहा जाता है। उससे छोटा قَصْعَةٌ जिससे दस व्यक्ति का पेट भर जाता है। फिर صَحْفَةٌ (قَصْعَةٌ का आधा) फिर مِكْيَلَةٌ है। अभिप्राय यह है कि स्वर्गवासियों को जो भोजन मिलेंगे वह सोने की थालियों में होंगे। (फ़तहुल क़दीर)

[4]अर्थात जैसे एक उत्तराधिकारी उत्तराधिकार का मालिक होता है, उसी प्रकार स्वर्ग भी एक उत्तराधिकार है जिसके उत्तराधिकारी वे होंगे जिन्होंने संसार में ईमान तथा सदाचार का जीवन निर्वाह किया होगा।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابِ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ﴿٧٤﴾

(७४) नि:संदेह पापी लोग नरक की यातना में सदैव रहेंगे।

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿٧٥﴾

(७५) यह (यातना) कभी भी उनसे हल्की न की जायेगी तथा वे उसी में निराश पड़े होंगे।[1]

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ﴿٧٦﴾

(७६) तथा हमने उन पर अत्याचार नहीं किया अपितु वे स्वयं ही अत्याचारी थे।

وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ إِنَّكُم مَّاكِثُونَ ﴿٧٧﴾

(७७) तथा वे पुकार-पुकार कर कहेगें कि हे मालिक,[2] तेरा प्रभु हमारा काम ही तमाम कर दे,[3] वह कहेगा कि तुम्हें तो (सदैव) रहना है।[4]

لَقَدْ جِئْنَاكُم بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُونَ ﴿٧٨﴾

(७८) हम तो तुम्हारे पास सत्य ले आये परन्तु तुम में से अधिकतर लोग सत्य से[5] घृणा करने वाले थे।

أَمْ أَبْرَمُوا أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ﴿٧٩﴾

(७९) क्या उन्होंने किसी कार्य का दृढ़ विचार कर लिया है ? तो विश्वास करो कि हम भी सुदृढ़ कार्य करने वाले हैं।[6]

---

[1]अर्थात मोक्ष से निराश।

[2]मालिक, नरक के दरोग़ा का नाम है।

[3]अर्थात हमें मौत ही दे दे। ताकि यातना से प्राण छूट जाये।

[4]अर्थात वहाँ मौत कहाँ? किन्तु यह यातना का जीवन मौत से भी बुरा होगा। फिर भी उसके विना कोई उपाय न होगी।

[5]यह अल्लाह का कथन है अथवा अल्लाह की ओर फ़रिश्तों का कथन है। जैसे कोई अधिकारी 'हम' का प्रयोग सरकार के अर्थ में प्रयोग करता है। अधिकाँश से तात्पर्य कुल है अर्थात सभी नरकवासी, अथवा फिर अधिकाँश से अभिप्राय प्रमुख तथा लीडर हैं। शेष नरकवासी उनके अनुयायी होने के कारण उसमें सम्मिलित होंगे। सत्य से तात्पर्य अल्लाह का वह धर्म तथा संदेश है जो वह पैग़म्बरों के द्वारा भेजता रहा। अन्तिम सत्य पवित्र ईशवाणी क़ुरआन तथा इस्लाम धर्म है।

[6]إبْـــرام का अर्थ है संकल्प लेना तथा पक्का करना। أَمْ (बल्कि) بَلْ के अर्थ में है। अर्थात

The Ummah Technology Mission

أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ ۚ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ﴿٨٠﴾

(८०) क्या उनका यह विचार है कि हम उनकी गुप्त बातों को तथा उनकी काना-फूसी को नहीं सुनते। (नि:संदेह हम निरन्तर सुन रहे हैं)[1] बल्कि हमारे भेजे हुए उनके पास ही लिख रहे हैं।[2]

قُلْ إِن كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدٌ ۖ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَابِدِينَ ﴿٨١﴾

(८१) (आप) कह दीजिए कि यदि मान लिया जाये कि दयालु की संतान हो तो मैं सर्वप्रथम इबादत करने वाला होता।[3]

سُبْحَانَ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٨٢﴾

(८२) आकाशों एवं धरती तथा अर्श का प्रभु, जो कुछ (ये) कहते हैं उससे (अत्यन्त) पवित्र है।[4]

नरक के पात्रों ने सत्य को अप्रिय ही नहीं समझा अपितु उसके विरोध में सुनियोजित उपायें तथा षडयंत्र रचते रहे, जिसके मुक़ाबिले में फिर हमने भी उपाय की तथा हमसे दृढ़ उपाय किसकी हो सकती है ? इसी अर्थ में यह आयत है।

﴿أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ﴾

"क्या ये लोग कोई छल करना चाहते हैं ? तो विश्वास कर लें कि धोखा खाये हुए काफ़िर ही हैं।" (सूरः अत्तूर-४२)

[1]अर्थात गुप्त बातें जो वह अपने मनों में छिपाये फिरते हैं अथवा एकांत में धीमे-धीमे करते हैं अथवा आपस में कानाफूसियाँ करते हैं, क्या वे समझते हैं कि हम वह नहीं सुनते ? अर्थ यह है कि हम सब सुनते तथा जानते हैं।

[2]निश्चय हम सुनते हैं। इसके अतिरिक्त, हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते अलग उनकी सारी बातें लिखते हैं।

[3]क्योंकि मैं अल्लाह का आज्ञाकारी हूँ। यदि वास्तव में उसकी संतान होती तो सर्वप्रथम उसका उपासक मैं होता। अभिप्राय मुशरिकों (अनेकेश्वरवादियों) के भ्रम का खंडन है जो अल्लाह की संतान सिद्ध करते हैं।

[4]यह अल्लाह का कथन है जिसमें उसने अपने शुभ तथा पवित्रता का वर्णन किया है, अथवा रसूल का कथन है तथा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने भी अल्लाह की आज्ञा से इन वस्तुओं से अल्लाह की स्वच्छता तथा पवित्रता का वर्णन किया है जिसे मुशरिक अल्लाह से संबंधित करते थे।

The Ummah Technology Mission

فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٨٣﴾

(८३) अब आप उन्हें इसी वाद-विवाद एवं खेल-कूद में छोड़ दीजिए [1] यहाँ तक कि उन्हें उस दिन से पाला पड़ जाये, जिनका ये वचन दिये जाते हैं।[2]

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَٰهٌ وَفِي الْأَرْضِ إِلَٰهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٨٤﴾

(८४) तथा वही आकाशों पर भी पूज्य है तथा धरती पर भी वही उपासना के योग्य है,[3] तथा वह बड़ा हिक्मत वाला एवं पूर्ण ज्ञाता है।

وَتَبَارَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ وَعِندَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٥﴾

(८५) तथा वह अति शुभ शक्ति है जिसके पास आकाशों तथा धरती एवं उनके मध्य का राज्य है,[4] तथा क़यामत का ज्ञान भी उसी के पास है[5] तथा उसी की ओर तुम सब लौटाये जाओगे।[6]

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ

(८६) तथा जिन्हें ये लोग अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हैं वे सिफ़ारिश करने का अधिकार

---

[1]अर्थात यदि यह संमार्ग नहीं अपनाते तो उन्हें अपनी दशा पर छोड़ दें तथा दुनिया के खेलकूद में लगे रहने दें। यह धमकी तथा चेतावनी है।

[2]उनकी आँखें उसी दिन खुलेंगी जब उनके इस आचरण का परिणाम उनके आगे आयेगा।

[3]यह नहीं कि आकाश का पूज्य कोई और हो तथा धरती का कोई और, अपितु जैसे इन दोनों का रचयिता एक है पूज्य भी एक ही है। इसी के समानार्थ यह आयत है।

﴿ وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمَاوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ ﴾

"तथा वही है सत्य उपास्य आकाशों में भी तथा धरती में भी, वह तुम्हारी गुप्त तथा प्रकट स्थितियों को भी जानता है तथा तुम जो कुछ कर्म करते हो उसको भी जानता है।" (*अल-अंआम*-३)

[4]ऐसा स्तित्व जिसके पास सभी अधिकार तथा धरती एवं आकाश की बादशाहत (राज्य) हो, उसे भला संतान की क्या आवश्यकता ?

[5]जिसे वह अपने समय पर व्यक्त करेगा।

[6]जहाँ वह प्रत्येक को उसके कर्मों के अनुसार प्रतिकार (पुण्य तथा दण्ड) देगा।

The Ummah Technology Mission

مِنْ دُوْنِهِ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾

नहीं रखते,[1] हाँ, (सिफ़ारिश के योग्य वे हैं) जो सत्य बात को स्वीकार करें तथा उन्हें ज्ञान भी हो।[2]

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٨٧﴾

(८७) तथा यदि आप उनसे पूछें कि उन्हें किसने पैदा किया है तो अवश्य यह उत्तर देंगे कि अल्लाह ने। फिर ये कहाँ उल्टे जाते हैं ?

وَقِيْلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾

(८८) तथा उनका (पैग़म्बरों का अधिकतर) यह कहना कि[3] हे मेरे प्रभु ! नि:संदेह यह वे लोग हैं जो ईमान नहीं लाते।

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ ؕ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾

(८९) तो आप उनसे मुख फेर लें तथा (विदाई का) सलाम कह दें।[4] उन्हें (स्वयं ही) शीघ्र ज्ञात हो जायेगा।

---

[1]अर्थात संसार में यह जिन मूर्तियों की पूजा करते हैं इस भ्रम में कि यह अल्लाह के समक्ष हमारी अभिस्तावना (सिफ़ारिश) करेंगे, उन उपास्यों को सिफ़ारिश का सर्वथा कोई अधिकार न होगा।

[2]सत्य बात से तात्पर्य धर्म-सूत्र 'ला एलाह इल्लल्लाह' है तथा यह स्वीकार सूझबूझ के आधार पर हो, केवल रीति-रिवाज एवं पूर्वजों की प्रथा के रूप में न हो, अर्थात मुख से कलमा तौहीद का उच्चारण करने वाले को पता हो कि इसमें केवल एक अल्लाह का स्वीकार तथा अन्य सभी उपास्यों का इंकार है, फिर तदानुसार कर्म हो। ऐसे लोगों के पक्ष में सिफ़ारिश करने वाले की सिफ़ारिश लाभदायक होगी। अथवा यह अभिप्राय है कि सिफ़ारिश करने का अधिकार मात्र ऐसे लोगों को मिलेगा जो सत्य को स्वीकार करने वाले होंगे, जैसे अम्बिया, धर्मात्मा तथा फ़रिश्ते, न कि झूठे उपास्यों को जिन्हें अनेकेश्वरवादी (मुशरिक) अपना सिफ़ारिशी समझते हैं।

[3]و قِيلِه का संबंध وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ से है अर्थात وَعِلْمُ قِيلِه अल्लाह के पास ही क़यामत (प्रलय) तथा अपने पैग़म्बर की शिकायत (उलाहना) का ज्ञान है।

[4]यह सलाम वियोगवाची है, जैसे (قَالُوا سَلٰمًا) *अल-फ़ुरक़ान*-६३) में है। अर्थात धर्म के मामले में मेरा तथा तुम्हारा मार्ग अलग-अलग है, यदि तुम नहीं रुकते तो अपना काम करते जाओ मैं अपना काम किये जा रहा हूँ, शीघ्र ही ज्ञात हो जायेगा कि सच्चा कौन है तथा झूठा कौन ?

Free Ummah Technology Mission

सूरतुद दुख़ान-४४

سُورَةُ الدُّخَانِ

सूरः दुख़ान मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें उनसठ आयतें एवं तीन रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

(१) हा॰मीम॰।

حٰمٓ ①

(२) सौगन्ध है इस खुली किताब की।

وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ②

(३) निश्चय हमने इसे शुभ रात्रि[1] में अवतरित किया है। नि:संदेह हम सावधान कर देने

إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُّبَارَكَةٍ

---

[1]शुभरात्रि से अभिप्राय लैलतुल क़द्र है, जैसाकि दूसरे स्थान पर वर्णित है ﴿إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ﴾ (सूरतुल क़द्र) "हमने यह क़ुरआन शबेक़द्र में अवतरित किया।" यह शुभरात्रि रमज़ान के अन्तिम दहे (दस रात्रि) की विषम रात्रियों में कोई एक रात होती है। यहाँ क़द्र (सम्मान) की इस रात को शुभ रात कहा गया है। इसके शुभ होने में क्या संदेह हो सकता है। एक तो इसमें क़ुरआन का अवतरण हुआ। दूसरे, इसमें फ़रिश्तों तथा जिब्रील का अवतरण होता है। तीसरे, इसमें पूरे वर्ष होने वाले विषय का निर्णय किया जाता है (जैसाकि आगे आ रहा है)। चौथे, इस रात की इबादत (उपासना) हज़ार महीने (अर्थात ८३ वर्ष ४ महीने) की उपासना से उत्तम है। शबेक़द्र अथवा "लैलये मुबारकह" में क़ुरआन के अवतरण का अभिप्राय यह है कि इस रात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर पवित्र क़ुरआन अवतरित होना प्रारम्भ हुआ। अथवा यह अभिप्राय है कि लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) से इसी रात बैतुल इज़्ज़त (सम्मान गृह) में अवतरित किया गया जो संसार के आकाश पर है। फिर वहाँ से आवश्यकतानुसार २३ वर्षों तक विभिन्न समय में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अवतरित होता रहा। कुछ ने लैलये मुवारकह से शाबान महीने की पंद्रहवीं रात तात्पर्य लिया है, किन्तु यह सही नहीं है। जब क़ुरआन के खुले शब्दों से क़ुरआन का शबेक़द्र में अवतरित होना सिद्ध है तो इससे "शबेबराअत" तात्पर्य लेना कदापि सही नहीं। इसके अतिरिक्त, "शबेबराअत" (शाबान महीने की पंद्रहवीं रात) के सम्बन्ध में जितनी रिवायतें (वर्णन) है जिनमें उसकी महत्ता का वर्णन है। अथवा उनमें उसे निर्णय की रात कहा गया है, यह सभी वर्णन प्रमाण के आधार पर क्षीण हैं। यह क़ुरआन के खुले शब्दों का मुक़ाबला किस प्रकार कर सकती हैं?

The Ummah Technology Mission

إِنَّا كُنَّا مُنذِرِينَ ﴿٣﴾

वाले हैं।[1]

فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ﴿٤﴾

(४) उसी रात्रि में प्रत्येक सुदृढ़ काम का निर्णय किया जाता है।[2]

أَمْرًا مِّنْ عِندِنَا ۚ إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ﴿٥﴾

(५) हमारे पास से आदेश होकर,[3] हम ही हैं रसूल बनाकर भेजने वाले।

رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦﴾

(६) आपके प्रभु की कृपा से।[4] वही है सुनने वाला तथा जानने वाला।

رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ إِن كُنتُم مُّوقِنِينَ ﴿٧﴾

(७) जो प्रभु है आकाशों का तथा धरती का एवं जो कुछ उनके मध्य है, यदि तुम विश्वास करने वाले हो।

لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٨﴾

(८) कोई पूजने योग्य नहीं उसके अतिरिक्त, वही जीवित करता है तथा मारता है, वही तुम्हारा प्रभु है तथा तुम्हारे पिछले पूर्वजों का।[5]

---

[1] क़ुरआन के अवतरण का उद्देश्य लोगों को धार्मिक लाभ तथा हानि से अवगत कराना हैं ताकि उन पर तर्क स्थापित हो जाये।

[2] يُفْرَقُ का अर्थ يُفَصَّلُ وَيُبَيَّنُ, निर्णय कर दिया जाता है तथा सम्बंधित फ़रिश्तों को सौंप दिया जाता है। حَكِيمٌ तत्वदर्शिता से पूर्ण कि अल्लाह का प्रत्येक काम हिक्मत से पूर्ण होता है, अथवा مُحْكَمٌ के अर्थ में (सुदृढ़ सुनियोजित) जिसमें फेर-बदल संभव नहीं। सहाबा तथा ताबेईन से इसकी व्याख्या में कहा गया है कि इस रात में आगामी वर्ष के संदर्भ में मृत्यु-जीवन तथा जीवन साधन के निर्णय लौहे महफ़ूज़ से उतार कर फ़रिश्तों के सुपुर्द कर दिये जाते हैं। (इब्ने कसीर)

[3] अर्थात सारे निर्णय हमारे आदेश एवं आज्ञा तथा हमारे भाग्य लेख एवं इच्छा से होते हैं।

[4] अर्थात धर्मशास्त्र अवतरित करने के साथ पैग़म्बरों को भेजना, यह भी हमारी दया ही का एक अंश है ताकि वह हमारी अवतरित की हुई किताबों की व्याख्या करें तथा हमारे आदेश लोगों तक पहुँचायें। इस प्रकार भौतिक आवश्यकतायें पूरी करने के साथ हमने अपनी दया से लोगों की आध्यात्मिक माँगों की पूर्ति का भी साधन उपलब्ध करा दिया।

[5] यह आयतें भी सूरः *आराफ़* की आयत १५८ के समान हैं।

The Ummah Technology Mission

بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ۝٩

(९) बल्कि वे संदेह में पड़े खेल रहे हैं।[1]

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ۝١٠

(१०) आप उस दिन की प्रतीक्षा में रहें जबकि आकाश प्रत्यक्ष धुआँ लायेगा।[2]

يَّغْشَى النَّاسَ ۭ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝١١

(११) जो लोगों को घेर लेगा, यह दुखदायी प्रकोप है।

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ۝١٢

(१२) (कहेंगे कि) हे हमारे प्रभु! यह प्रकोप हमसे दूर कर हम ईमान स्वीकार करते हैं।[3]

اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَاۗءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۝١٣

(१३) उनके लिए शिक्षा कहाँ है? स्पष्ट रूप से वर्णन करने वाले पैग़म्बर उनके पास आ चुके।

---

[1]अर्थात सत्य तथा उसके प्रमाण उसके सामने आ गये, किन्तु वह उस पर ईमान लाने के बजाय संदेह में ग्रस्त हैं तथा इस शंका के साथ खेलकूद तथा उपहास में पड़े हैं।

[2]यह उन काफ़िरों के लिए धमकी है कि अच्छा आप उस दिन की प्रतीक्षा करें जब आकाश पर धुआँ प्रकट होगा। इसके अवतरण के कारण क्रम में बताया गया है कि मक्कावासियों के विरोधी आचरण से तंग आकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके लिये अकाल का शाप दिया। जिसके कारण अकाल का प्रकोप आया यहाँ तक कि वे हड्डियाँ, खालें तथा मुर्दा तक खाने को बाध्य हो गये। आकाश की ओर देखते तो उन्हें भूख तथा दुर्बलता के कारण धुआँ दिखाई देता। अन्ततः वह व्याकुल होकर आपके पास आये तथा प्रकोप टालने पर ईमान लाने का वचन दिया, किन्तु उसके पश्चात फिर उनका कुफ़्र तथा विरोध उसी प्रकार लौट आया। फिर बद्र के रण में उनकी कड़ी पकड़ की गई। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़सीर) कुछ कहते हैं कि क़यामत के निकट के दस बड़े लक्षणों में एक धुआँ भी है जिसका प्रभाव काफ़िर पर अधिक तथा मोमिन पर बहुत कम होगा। आयत में उसी धुयें की चर्चा है। इस व्याख्या के अनुसार यह लक्षण क़यामत के निकट उत्पन्न होगा, जबकि प्रथम व्याख्या के अनुसार यह प्रकट हो चुका। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं, दोनों बातें अपने स्थान पर सही हैं। इसके अवतरण की विशेषता के अनुसार यह घटना घट चुकी है जो सही प्रमाण से सिद्ध है। फिर भी क़यामत के लक्षणों में इसकी चर्चा भी सही हदीसों में आयी है। इसलिए वह भी इसके विपरीत नहीं है, उस समय भी यह प्रकट होगा।

[3]प्रथम व्याख्या के अनुसार यह मक्का के काफ़िरों ने कहा तथा दूसरी व्याख्या के अनुसार क़यामत के निकट काफ़िर कहेंगे।

The Ummah Technology Mission

ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ﴿١٤﴾

(१४) फिर भी उन्होंने उनसे मुख फेरा तथा कह दिया कि यह सिखाया-पढ़ाया हुआ दीवाना है।

اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ ﴿١٥﴾

(१५) हम यातना को थोड़ी दूर कर देंगे तो तुम फिर अपनी उसी अवस्था में आ जाओगे।

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ﴿١٦﴾

(१६) जिस दिन हम अत्यन्त कड़ी पकड़ पकड़ेंगे।[1] निश्चित रूप से हम बदला लेने वाले हैं।

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ ﴿١٧﴾

(१७) तथा नि:संदेह हम इससे पूर्व फ़िरऔन की जाति की (भी) परीक्षा ले चुके हैं,[2] जिनके पास (अल्लाह का) सम्मानित रसूल आया।

اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ط اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٨﴾

(१८) कि अल्लाह (तआला) के बंदों को मुझे दे दो,[3] विश्वास करो कि मैं तुम्हारे लिए ईमानदार रसूल हूँ।[4]

وَاَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّيْٓ

(१९) तथा तुम अल्लाह तआला के समक्ष

---

[1]इससे तात्पर्य बद्र के रण की पकड़ है, जिसमें सत्तर काफ़िर मारे गये तथा सत्तर बंदी बना लिये गये। दूसरी व्याख्या के अनुसार यह कड़ी पकड़ क़यामत (प्रलय) के दिन होगी। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि यह उस पकड़ की विशेष चर्चा है जो बद्र के रण में हुई, क्योंकि कुरैश ही के प्रकरण में इसकी चर्चा है। यद्यपि क़यामत के दिन भी अल्लाह तआला कड़ी पकड़ करेगा, फिर भी वह पकड़ सामान्य होगी जिसमें प्रत्येक दुराचारी सम्मिलित होगा।

[2]परीक्षा लेने का अर्थ है कि हमने उन्हें सांसारिक सुख-सुविधा तथा सम्पन्नता दी तथा फिर अपना महामान्य पैग़म्बर भी उनकी ओर भेजा, किन्तु न उन्होंने प्रभु के वरदानों की कृतज्ञता व्यक्त की और न पैग़म्बर पर ईमान लाये।

[3] عِبَادَ اللّٰهِ (अल्लाह के बंदों) से अभिप्राय यहाँ मूसा अलैहिस्सलाम की जाति इस्राईल की संतान है, जिसे फ़िरऔन ने दास बना रखा था। आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी जाति की स्वाधीनता की माँग की।

[4]अल्लाह का आदेश (संदेश) पहुँचाने में अमानतदार हूँ।

The Ummah Technology Mission

اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٩﴾

उद्दण्डता न दिखाओ,[1] मैं तुम्हारे सामने खुला प्रमाण लाने वाला हूँ।[2]

وَاِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा मैं अपने एवं तुम्हारे प्रभु की शरण में आता हूँ इससे कि तुम मुझे पत्थरों से मार डालो।[3]

وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ ﴿٢١﴾

(२१) तथा यदि तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझसे अलग ही रहो।[4]

فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنَّ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٢٢﴾

(२२) फिर उन्होंने अपने प्रभु से प्रार्थना की कि ये सब पापी लोग हैं।[5]

فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٢٣﴾

(२३) (हमने कह दिया) कि रातों-रात तू मेरे बंदों को लेकर निकल, नि:संदेह तेरा[6] पीछा किया जायेगा।

وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ؕ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा तू सागर को स्थिर छोड़कर चला जा,[7] नि:संदेह यह सेना डूबो दी जायेगी।

---

[1]अर्थात उसके रसूल के आज्ञापालन का इंकार करके अल्लाह के सामने अपनी बड़ाई तथा उद्दण्डता का प्रदर्शन न करो।

[2]यह अपने पूर्व का कारण है कि मैं ऐसा खुला प्रमाण साथ लाया हूँ जिसके इंकार का अवसर ही नहीं है।

[3]इस आमंत्रण तथा धर्मप्रचार के उत्तर में फ़िरऔन ने मूसा अलैहिस्सलाम को हत्या कर देने की धमकी दी, जिस पर उन्होंने अपने प्रभु की शरण माँगी।

[4]यदि मुझ पर ईमान नहीं लाते तो न लाओ किन्तु मेरी हत्या करने अथवा दुख देने का प्रयास न करो।

[5]जब उन्होंने देखा कि आमंत्रण का प्रभाव स्वीकार करने की जगह उसका कुफ़्र (इंकार) तथा विरोध अधिक बढ़ गया तो अल्लाह के आगे प्रार्थना के लिए हाथ फैला दिये।

[6]अल्लाह ने प्रार्थना स्वीकार की तथा उन्हें आदेश दिया कि इस्राईल की संतान को लेकर यहाँ से रातों-रात निकल जाओ तथा देखो घबराना नहीं, तुम्हारा पीछा भी होगा।

[7] رَهْوًا स्थिर अथवा शुष्क। अभिप्राय यह है कि तेरी लाठी मारने से सागर चमत्कारिक

TheUmmahTechnology Mission

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٢٥﴾

(२५) वे बहुत से बाग़[1] तथा जलस्रोत छोड़ गये।

وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٢٦﴾

(२६) तथा खेतियाँ एवं आरामदायक आवास।

وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा वे सुखदायी वस्तुयें जिनमें सुख भोग रहे थे।

كَذٰلِكَ ۫ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿٢٨﴾

(२८) इसी प्रकार हो गया।[2] तथा हमने उन सब का उत्तराधिकारी अन्य समुदाय को बना दिया।[3]

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ﴿٢٩﴾

(२९) तो उन पर न तो आकाश एवं धरती रोये[4] तथा न उन्हें अवसर मिला।

وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा हमने (ही) इस्राईल की संतान को (अति) अपमानित दण्ड से मुक्ति दी।

مِنْ فِرْعَوْنَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾

(३१) (जो) फ़िरऔन की ओर से (हो रही) थी। वास्तव में वह उद्दण्ड एवं सीमा उल्लंघन करने वालों में से था।

रूप से स्थिर व शुष्क हो जायेगा तथा उसमें मार्ग बन जायेगा। तुम सागर पार करके उसे उसी स्थिति में छोड़ देना ताकि फ़िरऔन तथा उसकी सेना भी सागर पार करने के लिए सागर में प्रवेश कर जाये तथा हम उसे वहीं जलमग्न कर दें। अत: ऐसा ही हुआ जैसाकि वर्णन गुज़र चुका है।

[1] كَمْ विधेयवाची है जो अधिकता का लाभ (अर्थ) देता है। नील नदी के दोनों तरफ बागों तथा खेतों की अधिकता थी, भव्य भवन तथा सम्पन्नता के प्रतीक थे। सब कुछ यहीं संसार में रह गया तथा शिक्षा के लिए केवल फ़िरऔन तथा उसकी जाति का नाम रह गया।

[2] अर्थात यह मामला इसी प्रकार हुआ जैसे वर्णित किया गया है।

[3] कुछ के निकट इससे तात्पर्य इस्राईल की संतान हैं। किन्तु कुछ के विचार से इस्राईली वंश का पुन: मिश्र आना ऐतिहासिक रूप से सिद्ध नहीं। इसलिए मिश्र देश की उत्तराधिकारी कोई अन्य जाति बनी, इस्राईल की संतान नहीं।

[4] अर्थात इन फ़िरऔनियों के पुण्य कर्म थे ही नहीं जो आकाश पर चढ़ते तथा उनके क्रम के टूटने (विनाश होने) पर आकाश रोते। न धरती ही पर वह अल्लाह की इबादत करते थे कि उससे वंचित होने पर धरती रोती। अभिप्राय यह है कि आकाश तथा धरती में से कोई उनके विनाश पर रोने वाला नहीं था। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा हमने जान बूझकर इस्राईल की सन्तान को संसार वालों पर श्रेष्ठता प्रदान की।[1]

وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ ﴿٣٣﴾

(३३) तथा हमने उन्हें ऐसी निशानियाँ प्रदान कीं, जिनमें खुली परीक्षा थी।[2]

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿٣٤﴾

(३४) यह लोग तो यही[3] कहते हैं।

اِنْ هِيَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) कि (अन्तिम वस्तु) यही हमारा प्रथम बार (दुनिया से) मर जाना है तथा हम पुन:[4] उठाये नहीं जायेंगे।

فَاْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٦﴾

(३६) यदि तुम सच्चे हो तो हमारे पूर्वजों को ले आओ।[5]

---

[1]इस जगत से अभिप्राय इस्राईल की संतान के युग का जगत है। सामान्यत: सारा जगत नहीं है, क्योंकि पवित्र क़ुरआन में मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्प्रदाय को كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ की उपाधि से सम्मानित किया गया है। अर्थात इस्राईल की संतान अपने युग में जगतवासियों पर प्रधानता रखती थी। उनकी यह प्रधानता उस योग्यता के कारण थी जिसे अल्लाह ही जानता है।

[2]आयत से अभिप्राय वह चमत्कार हैं जो आदरणीय मूसा को प्रदान किये गये थे। उनमें परीक्षा का पक्ष यह था कि अल्लाह तआला देखे कि वह कैसे कर्म करते हैं? अथवा फिर आयात से अभिप्राय वह अनुग्रह हैं जो अल्लाह ने उन पर किये, जैसे फ़िरऔनियों को डुबा कर उनको मुक्त करना, उनके लिए सागर को फाड़कर मार्ग बनाना, बादलों की छाया तथा मन्न-सलवा उतारना आदि। इसमें परीक्षा यह है कि इन अनुग्रहों के बदले में यह जाति अल्लाह के आज्ञापालन का मार्ग अपनाती है अथवा उसकी कृतघ्नता करते हुए उपद्रव तथा उद्दण्डता का मार्ग अपनाती है।

[3]यह संकेत मक्का के काफ़िरों की ओर है, इसलिए कि वाक्यक्रम उन्हीं से सम्बंधित है। मध्य में फ़िरऔन की कथा उनकी चेतावनी स्वरूप वर्णन किया है कि फ़िरऔन ने भी उनकी भाँति कुफ़्र पर दुराग्रह किया था। यदि ये भी अपने कुफ़्र (इंकार) तथा शिर्क पर अड़े रहे तो उनका परिणाम भी फ़िरऔन तथा उसके अनुगामियों से भिन्न न होगा।

[4]अर्थात सांसारिक जीवन ही बस अन्तिम जीवन है। इसके पश्चात पुन: जीवित होना तथा हिसाब-किताब होना संभव नहीं है।

[5]यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तथा मुसलमानों को काफ़िरों की ओर से कहा जा रहा है कि तुम्हारा यह विश्वास वास्तव में सही है कि पुर्नजीवन है तो हमारे बाप-दादों को

The Ummah Technology Mission

أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۖ أَهْلَكْنَاهُمْ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾

(३७) क्या ये लोग श्रेष्ठ हैं अथवा तुब्बअ के समुदाय के लोग तथा जो उनसे भी पूर्व थे ? हमने उन सबको नष्ट कर दिया, नि:संदेह वे पापी थे।[1]

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَاعِبِينَ ﴿٣٨﴾

(३८) तथा हमने धरती तथा आकाशों एवं उनके मध्य की वस्तुओं को खेल के रूप में उत्पन्न नहीं किया।[2]

مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

(३९) बल्कि हमने उन्हें सही युक्ति के साथ ही पैदा किया है,[3] परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।[4]

जीवित करके दिखाओ। यह उनका विवाद तथा कटबहसी था, क्योंकि पुर्नजीवन का विश्वास प्रलय से संबंधित है, न कि क़यामत से पहले ही दुनिया में जीवित हो जाना अथवा कर देना।

[1]अर्थात यह मक्का के काफ़िर तुब्बअ तथा उनसे पहले की जातियाँ आद तथा समूद आदि से शक्तिशाली तथा उत्तम हैं। जब हमने उनको पापों के बदले में उनसे अधिक शक्ति तथा बल रखने पर भी नाश कर दिया तो यह क्या महत्व रखते हैं ? तुब्बअ से अभिप्राय सबा की जाति है। सबा में हिम्यर जाति थी। यह अपने राजा को तुब्बअ कहते थे। जैसे रूम के राजा को क़ैसर, ईरान के राजा को किसरा, मिश्र के राजा को फ़िरऔन तथा हब्शा के अधिपति को नजाशी कहा जाता था। इतिहासकारों की सहमति है कि कुछ तुब्बअ को बड़ी उन्नति प्राप्त हुई यहाँ तक कि कुछ इतिहासकारों ने कह दिया कि वह देशों को विजय करते हुए समरकन्द तक पहुँच गया। इसी प्रकार और भी कई बड़े राजा इस जाति में गुज़रे। यह अपने समय की एक श्रेष्ठतम जाति थी जो शक्ति, बल, सम्पन्नता तथा बड़ाई में विशेषता रखती थी, किन्तु जब उस जाति ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया तो उसे अस्त-व्यस्त कर दिया गया। (व्याख्या के लिए देखिए सूरह सबा की सम्बन्धित आयतें) हदीस में एक तुब्बअ के बारे में आता है कि वह मुसलमान हो गया था, उसे अपशब्द न कहो (मजमऊ ज्जवायेद ८६\८७, सहीहुल जामेअ लिल अलबानी १३१९) फिर भी उनमें से अधिकाँश अवज्ञाकारी ही रहे जिसके कारण विनाश उनका भाग्य बना।

[2]यही विषय इससे पहले *सूरः साद*-२७, *सूरः अल-मोमिनून*-११५,११६, *अल-हिज्र*-८५ आदि में वर्णित है।

[3]वह लक्ष्य तथा सही उपाय यही है कि लोगों की परीक्षा की जाये तथा पुण्यकर्मियों को उनकी नेकियों का फल तथा बुरों को उनकी बुराईयों का दण्ड दिया जाये।

[4]अर्थात वह इस उद्देश्य से निश्चिन्त तथा अचेत हैं। इसीलिए आख़िरत की तैयारी से

The Ummah Technology Mission

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٠﴾

(४०) नि:संदेह निर्णय का दिन उन सबका निश्चित समय है।[1]

يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَن مَّوْلًى شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾

(४१) उस दिन कोई मित्र किसी मित्र के कुछ भी काम न आयेगा। तथा न उनकी सहायता की जायेगी।[2]

إِلَّا مَن رَّحِمَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٤٢﴾

(४२) परन्तु जिस पर अल्लाह की दया हो जाये, वह अत्यन्त शक्तिशाली एवं दया करने वाला है।

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ﴿٤٣﴾

(४३) नि:संदेह ज़क़्कूम (थूहड़) का वृक्ष।

طَعَامُ الْأَثِيمِ ﴿٤٤﴾

(४४) पापी का भोजन है।

كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ﴿٤٥﴾

(४५) जो तलछट के समान[3] है तथा पेट में खौलता रहता है।

كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ﴿٤٦﴾

(४६) तेज़ गर्म पानी (के खौलने) के समान।[4]

خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿٤٧﴾

(४७) उसे पकड़ लो फिर घसीटते हुए नरक के मध्य तक पहुँचाओ।[5]

ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ﴿٤٨﴾

(४८) फिर उसके सिर पर अत्यन्त गर्म पानी की यातना बहाओ।

लापरवाह तथा सांसारिक माया-मोह में लीन हैं।

[1]अर्थात यही वह मूल उद्देश्य है जिसके लिये इंसानों को पैदा किया गया तथा आकाश एवं धरती को रचा गया है।

[2] अर्थात जैसे कहा ﴿وَلَا يَتَسَاءَلُ﴾ (अल-मोमिनून-१०१) ﴿فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنسَابَ بَيْنَهُمْ﴾ ﴿حَمِيمٌ حَمِيمًا﴾ (अल-मआरिज १०)

[3] مُهْل 'मुहल' पिघला हुआ तांबा, आग में पिघला पदार्थ अथवा तलछट तेल आदि के अंत में जो गदली-सी मिट्टी की तह रह जाती है।

[4]वह ज़क़्कूम (थूहड़) का खाद्य खौलते पानी के समान पेट में खौलेगा।

[5]यह नरक पर नियुक्त फ़रिश्तों से कहा जायेगा। سَوَاء (सवाअ) मध्य के अर्थ में है।

The Ummah Technology Mission

ذُقْ ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ﴿٤٩﴾

(४९) (उससे कहा जायेगा) चखता जा, तू तो बड़े आदर और सम्मान वाला था।[1]

إِنَّ هَٰذَا مَا كُنتُم بِهِ تَمْتَرُونَ ﴿٥٠﴾

(५०) यही वह वस्तु है जिसमें तुम संदेह किया करते थे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ﴿٥١﴾

(५१) नि:संदेह (अल्लाह से) डरने वाले शान्ति के स्थान में होंगे।

فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٢﴾

(५२) बागों तथा जल स्रोतों में।

يَلْبَسُونَ مِن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٥٣﴾

(५३) बारीक तथा कोमल रेशमी वस्त्र पहने हुए आमने-सामने बैठे होंगे।[2]

كَذَٰلِكَ ۖ وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ﴿٥٤﴾

(५४) यह उसी प्रकार है,[3] तथा हम बड़ी-बड़ी आँखों वाली अप्सराओं से उनका विवाह कर देंगे।[4]

يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿٥٥﴾

(५५) निश्चिन्तता से वहाँ हर प्रकार के मेवों की माँगें कर रहे होंगे।[5]

---

[1]संसार में तो अपने तौर पर बड़ा आदर तथा सम्मान के साथ फिरा करता था तथा ईमानवालों को अपमान की दृष्टि से देखता था।

[2]काफ़िरों तथा पापियों के मुक़ाबिले में ईमानवालों तथा सदाचारियों का स्थान बताया जा रहा है, जिन्होंने अपने दामन कुफ़्र, दुष्कर्म तथा पापों से बचाये रखा था। أمين (अमीन) का अर्थ है ऐसा स्थान जहाँ वह प्रत्येक प्रकार के भय तथा चिंता से सुरक्षित होंगे।

[3]अर्थात متقين (संयमियों) के साथ निश्चय ऐसा ही व्यवहार होगा।

[4]حُور यह حَوراء (हौराअ) का बहुवचन हैं, काली तथा श्वेत आँखें। حَوراء (हौराअ) इसलिये कहा जाता है कि आँखें उनकी सुंदरता तथा शोभा को देखकर चकित रह जायेंगी। عِين (ईन) बहुवचन है عَيناء (ऐनाअ) का, मृगनयनी, जैसे मृग की आँखें होती हैं। हम पहले ही बता आये हैं कि प्रत्येक स्वर्गवासी को कम से कम दो हूरें अवश्य मिलेंगी, जो सौन्दर्य में सूर्य एवं चन्द्र के समान होंगी। हाँ, तिर्मिज़ी की एक हदीस से विदित होता है जिसे सहीह कहा गया है कि शहीद (जो धर्म युद्ध में मारा गया हो) को विशेष रूप से ७२ हूरें मिलेंगी। (अबवाबु फ़ज़ायेलिल जिहाद, बाबु माजाअ अय्युन्नासि अफ़ज़ल)

[5] آمِنِين (निश्चिन्ततापूर्वक) का अभिप्राय है उनके समाप्त हो जाने का भय न होगा न

The Ummah Technology Mission

لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُوْلٰى ۚ وَوَقٰهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿٥٦﴾

(५६) वहाँ वे मृत्यु का स्वाद चखने वाले नहीं सिवाय प्रथम मृत्यु के (जो वे मर चुके)[1] उन्हें अल्लाह (तआला) ने नरक के दण्ड से बचा दिया।

فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٥٧﴾

(५७) यह केवल तेरे प्रभु की कृपा है।[2] यही है बड़ी सफलता।

فَإِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾

(५८) हमने इस (क़ुरआन) को तेरी भाषा में सरल कर दिया ताकि वे शिक्षा ग्रहण करें।

فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ﴿٥٩﴾

(५९) अब तू प्रतीक्षा कर ये भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।[3]

उनके खाने से रोग आदि का डर अथवा मृत्यु व थकान तथा शैतान का कोई भय न होगा।

[1]अर्थात संसार में उन्हें जो मौत आई थी उसके पश्चात उन्हें मृत्यु का स्वाद नहीं चखना पड़ेगा। जैसे हदीस (अन्तिम ईशदूत के कथन) में आता है कि मृत्यु को एक मेंढे के रूप में नरक तथा स्वर्ग के मध्य लाकर बध कर दिया जायेगा तथा घोषणा कर दी जायेगी, "हे स्वर्गवासियो ! तुम्हारे लिये स्वर्ग का जीवन स्थाई है, अब तुम्हारे लिये मृत्यु नहीं। तथा हे नरकवासियो ! तुम्हारे लिये नरक की यातना स्थाई है, मृत्यु नहीं" (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरः मरियम, मुस्लिम किताबुल जन्नह)। दूसरी हदीस में फ़रमाया : हे जन्नतियो ! तुम्हारा भाग्य अब स्वास्थ्य तथा बल है, तुम कभी रोगी नहीं होगे। तुम्हारे लिये अब जीवन ही जीवन है, मौत नहीं। तुम्हारे लिये वरदान ही वरदान है, इन में कमी नहीं होगी तथा सदा नवयुवक रहोगे, कभी बुढ़ापा नहीं आयेगा। (सहीह बुख़ारी किताबुर्रिक़ाक़, बाबुल कस्दे वल मुदावमति अलल अमले तथा मुस्लिम उपरोक्त किताब)

[2]जिस प्रकार हदीस में भी है। फ़रमाया : यह बात जान लो कि तुम में से किसी का कर्म उसे स्वर्ग में नहीं ले जायेगा। सहाबा (आपके सहचरों) ने प्रश्न किया, "अल्लाह के रसूल ! आपको भी ?" फ़रमाया, "हाँ मुझे भी, परन्तु यह कि अल्लाह मुझे अपनी दया तथा करूणा में ढाँप लेगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाबुल कस्दे वल मुदावमते अलल अमल तथा मुस्लिम उपरोक्त किताब)

[3]तू अल्लाह के प्रकोप की प्रतिक्षा कर यदि यह ईमान न लाये। यह प्रतीक्षा कर रहे हैं इस बात की कि इस्लाम के प्रभुत्व तथा लागू होने से पहले ही संभवत: आप का निधन हो जाये।

The Ummah Technology Mission

سُوْرَةُ الْجَاثِيَةِ

सूरतुल जासियः-४५

सूरः जासियः मक्के में अवतरित हुई, इसमें सैंतीस आयतें तथा चार रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

حٰمٓ ①

(१) हा॰मीम॰।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ②

(२) यह किताब अल्लाह प्रभावशाली हिक्मत वाले की ओर से अवतरित हुई है।

اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ③

(३) आकाशों तथा धरती में ईमानवालों के लिए निःसंदेह बहुत सी निशानियाँ हैं।

وَ فِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ④

(४) तथा स्वयं तुम्हारे जन्म में तथा पशुओं को फैलाने में विश्वास रखने वाले समुदाय के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं।

وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَ النَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ⑤

(५) तथा रात्रि-दिन के बदलने में तथा जो कुछ जीविका अल्लाह (तआला) आकाश से अवतरित करके धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवित कर देता है,[1] उसमें तथा हवाओं के बदलने में भी उन लोगों के लिए जो बुद्धि रखते हैं। निशानियाँ हैं।[2]

---

[1]आकाश तथा धरती, मानव जाति की रचना, रात-दिन की आवागमन एवं आकाशीय वर्षा के द्वारा सूखी धरती में जीवन की लहर का दौड़ जाना आदि, विश्व तथा प्राणों में असंख्य (निशानियाँ (चिन्ह) हैं जो अल्लाह की एकता तथा उसके प्रतिपालक होने पर प्रमाण हैं।

[2]कभी वायु का रूख उत्तर एवं दक्षिण को, कभी पूर्व एवं पश्चिम को होता है, कभी जलीय हवायें, कभी थलीय हवायें, कभी रात को, कभी दिन को, कुछ वर्षा वाली, कुछ लाभदायक, कुछ हवायें आत्मा का आहार तथा कुछ सब कुछ झुलसा देने वाली तथा केवल धूल धप्पड़ का तूफ़ान। वायु के इतनी प्रकार भी प्रमाणित करते हैं कि इस विश्व का कोई संचालक है जो मात्र एक है, दो अथवा अधिक नहीं। सभी अधिकार का स्वामी वही एक है, उनमें

The Ummah Technology Mission

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝٦

(६) यह हैं अल्लाह (तआला) की आयतें जिन्हें हम आपको सत्य रूप से सुना रहे हैं, तो अल्लाह (तआला) तथा उसकी आयतों के पश्चात ये किस बात पर ईमान लायेंगे।[1]

وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۝٧

(७) धिक्कार (एवं खेद है) प्रत्येक झूठे पापी पर।[2]

يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٨

(८) जो अल्लाह की आयतें अपने सामने पढ़ी जाती हुई सुने फिर भी गर्व करता हुआ इस प्रकार अड़ा रहे जैसेकि सुनी ही नहीं।[3] तो ऐसे लोगों को कष्टदायी यातना की सूचना (पहुँचा) दें।

وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْـًٔا اتَّخَذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٩

(९) तथा वह जब हमारी आयतों में से किसी आयत की सूचना पा लेता है तो उसका उपहास उड़ाता है,[4] यही लोग हैं जिनके लिए अपमान वाली यातना है।

कोई उसका साझी नहीं। प्रत्येक प्रकार का निज़ाम वही चलाता है, किसी और के पास तनिक भी अधिकार नहीं। इसी भावार्थ की आयत सूर: बक़र: की आयत नं॰ १६४ भी है।

[1]अर्थात अल्लाह का अवतरित किया हुआ क़ुरआन, जिसमें उसकी तौहीद के प्रमाण तथा युक्तियाँ हैं। यदि यह उसके प्रति भी विश्वास नहीं करते तो अल्लाह की बात के बाद किसकी बात है तथा उसकी निशानियों के पश्चात किसकी निशानियाँ हैं, जिनके प्रति वह विश्वास करेंगे ? بعدَ اللّٰه का अभिप्राय है, بعدَ حَديثِ اللّٰه و بعــدَ آياتِه यहाँ पवित्र क़ुरआन को हदीस कहा गया है। जैसे ﴿اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ﴾ (अज़्ज़ुमर २३) में है।

[2] اَفَّــاك (अफ़्फ़ाक़) كَذّاب के अर्थ में, اَثِيمٌ (महापापी)। وَيْلٌ विनाश अथवा नरक की एक वादी का नाम।

[3]अर्थात कुफ्र पर अड़ा रहता है तथा सत्य के आगे स्वयं को बड़ा समझता है तथा इसी अहंकार में सुनी अनसुनी कर देता है।

[4]अर्थात प्रथम तो वह क़ुरआन को ध्यान से सुनता ही नहीं तथा यदि कोई बात उसके कान में पड़ जाती है अथवा कोई बात उसके ज्ञान में आ जाती है तो उसे उपहास तथा परिहास का विषय बना लेता है। अपनी बुद्धिहीनता तथा निर्बोधता के कारण अथवा कुफ्र तथा अवज्ञा पर हठधर्मी तथा अहंकार के कारण।

The Ummah Technology Mission

مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ ۚ وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْـًٔا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١٠

(१०) उनके पीछे नरक है,[1] जो कुछ उन्होंने प्राप्त किया था वह उन्हें कुछ भी लाभ न देगा[2] तथा न वह (कुछ काम आयेंगे) जिनको उन्होंने अल्लाह के अतिरिक्त संरक्षक (एवं कार्यक्षम) बना रखा था।[3] उनके लिए तो अत्यन्त भारी यातना है।

هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ۝١١

(११) यह (सर्वथा) मार्गदर्शन है।[4] तथा जिन लोगों ने अपने प्रभु की आयतों को न माना उनके लिए अत्यन्त कष्टदायी यातनायें हैं।[5]

اَللّٰهُ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ

(१२) अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए समुद्र को अधीनस्थ बना दिया[6] ताकि उसके आदेश से उसमें नावें चलें[7] तथा तुम उसकी कृपा

---

[1]अर्थात ऐसे आचरण के लोगों के लिए प्रलय के दिन नरक है।

[2]अर्थात उन्होंने दुनिया में जो धन कमाया होगा, जिस संतान तथा जत्थे पर गर्व करते रहे होंगे, वह प्रलय के दिन उन्हें कोई लाभ नहीं दे सकेंगे।

[3]जिन्हें संसार में अपना मित्र एवं सहाय तथा पूज्य बना रखा था, वे उस दिन उसे दिखाई ही नहीं देंगे, सहायता तो क्या करेंगे ?

[4]अर्थात क़ुरआन, क्योंकि उसके अवतरण का उद्देश्य ही यह है कि लोगों को कुफ़्र तथा शिर्क के अंधेरों से निकालकर ईमान के प्रकाश में लाया जाये। इसलिए उसके सर्वथा मार्गदर्शन होने में तो कोई संदेह नहीं, किन्तु मार्गदर्शन मिलेगा तो उसे ही जो उसके लिए अपना वक्ष (सीना) खोल देगा।

[5] اَلِيْمٌ यह عذابٌ का विशेषण है। कुछ इसे رِجْزٍ का विशेषण बताते हैं। رِجْز का अर्थ हैं कड़ी यातना।

[6]अर्थात उसे ऐसा बना दिया कि तुम नवकाओं तथा जहाजों द्वारा उस पर यात्रा कर सको।

[7]अर्थात समुद्रों में नवकाओं तथा जहाजों का चलना, यह तुम्हारा कमाल तथा हुनर नहीं, यह अल्लाह की आज्ञा तथा इच्छा है। अन्यथा वह चाहता तो समुद्र की लहरों को इतनी उद्दण्ड बना देता कि कोई नवका व जलयान उसके आगे रूक ही नहीं सकता, जैसाकि कभी-कभी वह अपनी शक्ति दिखाने के लिए ऐसा करता है। यदि स्थाई रूप से लहरों की दशा यही रहती तो तुम कभी भी समुद्र में यात्रा करने योग्य न होते।

The Ummah Technology Mission

وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢﴾

ढूँढो[1] तथा ताकि तुम उसकी कृतज्ञता व्यक्त करो।[2]

وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِّنْهُ ۚ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٣﴾

(१३) तथा आकाश एवं धरती की प्रत्येक वस्तु को भी उसने अपनी ओर से तुम्हारे अधीनस्थ कर दिया है।[3] जो लोग विचार करें, नि:संदेह, वे इसमें बहुत सी निशानियाँ पायेंगे।

قُل لِّلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا لِلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ أَيَّامَ اللَّهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾

(१४) आप ईमानवालों से कह दें कि वह उन लोगों को क्षमा कर दिया करें जो अल्लाह के दिनों की आशा नहीं रखते[4] ताकि अल्लाह तआला एक समुदाय को उनके करतूतों का बदला दे।[5]

---

[1]अर्थात व्यापार द्वारा तथा उसमें गोता लगाकर मोती तथा अन्य पदार्थ निकाल कर तथा समुद्री जन्तु (मछली आदि) का शिकार करके।

[2]यह सब कुछ इसलिए किया कि तुम उसके उपहारों पर अल्लाह की कृतज्ञता दिखाओ जो इस समुद्र को वश में करने के कारण तुम्हें प्राप्त होता है।

[3]वश में करने का अभिप्राय यही है कि उनको तुम्हारी सेवा के लिए नियुक्त कर दिया है। तुम्हारे हित-लाभ तथा तुम्हारी जीविका सब इन्हीं से संबंधित है जैसे चाँद, सूर्य, प्रकाशमान तारे, वर्षा, मेघ एवं वायु आदि हैं। तथा अपनी ओर से का अभिप्राय अपनी विशेष दया तथा करूणा से।

[4]अर्थात जो इस बात का भय नहीं रखते कि अल्लाह अपने ईमानदार बंदों की सहायता करने तथा शत्रुओं का विनाश करने की शक्ति रखता है। तात्पर्य काफ़िर हैं। तथा أيام الله (अल्लाह के दिनों से) अभिप्राय घटनायें हैं, जैसे ﴿وَذَكِّرْهُم بِأَيَّامِ اللَّهِ﴾ (इब्राहीम-५) में है। अभिप्राय है कि उन काफ़िरों से क्षमा तथा अंदेखी से काम लो, जो अल्लाह के प्रकोप से निश्चिन्त तथा निर्भय हैं। यह प्रारम्भिक आदेश था जो मुसलमानों को पहले दिया जाता रहा था। बाद में जब मुसलमान मुक़ाबले के योग्य हो गये तो फिर कड़ाई तथा उनसे टकरा जाने (जिहाद) का आदेश दे दिया गया।

[5]अर्थात जब तुम उनकी ओर से दुखों को सहन तथा उनके अत्याचारों को क्षमा करोगे तो यह सभी पाप उनके ऊपर रहेंगे, जिनका दण्ड क़यामत के दिन हम उनको देंगे।

The Ummah Technology Mission

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ۫ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿١٥﴾

(१५) जो पुण्य करेगा वह अपने स्वयं के भले के लिए तथा जो बुराई करेगा उसका दुष्परिणाम उसी पर है;[1] फिर तुम सब अपने प्रभु की ओर लौटाये जाओगे।[2]

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۚ ﴿١٦﴾

(१६) तथा नि:संदेह हमने इस्राईल की संतान को किताब, राज्य[3] एवं नबूवत प्रदान किया था, तथा हमने उन्हें पवित्र (एवं उत्तम) जीविका प्रदान की थी।[4] तथा उन्हें दुनिया वालों पर श्रेष्ठता प्रदान की थी।[5]

وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا

(१७) तथा हमने उन्हें धर्म की खुली निशानियाँ (तर्क) प्रदान कीं,[6] फिर उन्होंने अपने पास ज्ञान के पहुँच जाने के पश्चात आपस के द्वेष-विवाद के कारण ही मतभेद उत्पन्न कर डाला।[7] ये जिन-जिन बातों में मतभेद कर

---

[1]अर्थात प्रत्येक गिरोह तथा काफ़िर का कर्म (अच्छा-बुरा), उसका लाभ अथवा हानि स्वयं कर्ता को ही पहुँचेगी, किसी अन्य को नहीं। इसमें नेकी का प्रलोभन भी है तथा बुराई से चेतावनी भी।

[2]अत: वह प्रत्येक को उसके कर्मानुसार फल देगा। सत्कर्मियों को अच्छा तथा दुष्कर्मियों को बुरा।

[3]किताब से तात्पर्य धर्मग्रंथ तौरात, حكم (हुक्म) से राज्य तथा शासन अथवा बोध एवं निर्णय की वह योग्यता है जो विवाद तथा लोगों के बीच निर्णय करने के लिए आवश्यक है।

[4]वह जीविकायें जो उनके लिए वैध (उचित) थीं, तथा उन्हीं में से 'मन्न' तथा 'सलवा' का अवतरण भी था।

[5]अर्थात उनके युग में।

[6]कि यह वैध (हलाल) हैं तथा यह अवैध (हराम), अथवा चमत्कार अभिप्राय है, अथवा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी बनाकर भेजे जाने का ज्ञान, आप की नबूअत (ईशदूत होने) के प्रमाण तथा आप के प्रवास स्थान का निर्धारण अभिप्राय है।

[7]بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ का अभिप्राय है परस्पर एक-दूसरे से ईर्ष्या एवं द्वेष का प्रदर्शन करते हुए अथवा

The Ummah Technology Mission

كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٧﴾

रहे हैं उनका निर्णय क़यामत के दिन उनके मध्य तेरा प्रभु (स्वयं) करेगा।[1]

ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨﴾

(१८) फिर हमने आपको धर्म के (स्पष्ट) मार्ग पर स्थापित कर दिया,[2] तो आप उसी पर लगे रहें तथा अज्ञानियों की इच्छाओं का अनुगमन न करें।[3]

اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩﴾

(१९) (याद रखें) कि ये लोग कदापि अल्लाह के समक्ष आप के कुछ काम नहीं आ सकते। (समझ लो कि) अत्याचारी लोग आपस में एक-दूसरे के साथी होते हैं तथा सदाचारियों का साथी (संरक्षक) अल्लाह (महान) है।

هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٢٠﴾

(२०) यह (क़ुरआन) लोगों के लिए सूझ की बातें[4] एवं मार्गदर्शन तथा कृपा है उस[5] गिरोह के लिए जो विश्वास रखता है।

मान-मर्यादा एवं पद की ख़ातिर। उन्होंने ज्ञान आ जाने के उपरान्त मतभेद अथवा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूअ़त (दूतत्व) से इंकार किया।

[1]अर्थात सत्यवादी को अच्छा बदला तथा मिथ्यावादी को बुरा बदला देगा।

[2]شريعت (शरीअत) का शाब्दिक अर्थ है मार्ग, संघ एवं रीति। विशाल मार्ग को भी शारेअ कहा जाता है कि वह उद्देश्य तथा लक्ष्य तक पहुँचाता है। अतः यहाँ शरीयत से तात्पर्य वह धर्म है जो अल्लाह ने अपने बंदों के लिए नियुक्त किया है ताकि लोग उस पर चल कर अल्लाह की प्रसन्नता का लक्ष्य प्राप्त कर लें। आयत का अभिप्राय है कि हमने आपको धर्म के एक स्पष्ट मार्ग अथवा रीति पर स्थित कर दिया है जो आपको सत्य तक पहुँचायेगा।

[3]जो अल्लाह की तौहीद (अद्वैत) तथा उसके धर्मविधान से अनभिज्ञ हैं। तात्पर्य मक्का के काफ़िर तथा उनके साथी हैं।

[4]अर्थात उन प्रमाणों का संग्रह है जो धर्म के आदेशों से संबन्धित हैं तथा जिनसे मानव जाति की आवश्यकतायें संलग्न हैं।

[5]अर्थात संसार में संमार्ग बताने वाला तथा आख़िरत में अल्लाह की दया का कारण है।

The Ummah Technology Mission

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ نَجْعَلَهُمْ كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَوَاءً مَحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ۚ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٢١﴾

(२१) क्या उन लोगों का जो बुरे कार्य करते हैं, यह विचार है कि हम उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे जो ईमान लाये तथा पुण्य के कार्य किये कि उनका मरना-जीना समान हो जाये,[1] बुरा निर्णय है वह जो वे कर रहे हैं।

وَخَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा आकाशों एवं धरती को अल्लाह ने बहुत ही न्याय के साथ पैदा किया है और ताकि प्रत्येक व्यक्ति को उसके किये हुए कार्य का पूरा बदला दिया जाये तथा वे अत्याचार न किये जायेंगे।[2]

أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ

(२३) क्या आपने उसे भी देखा जिसने अपनी मनोकांक्षा को अपना पूज्य बना रखा है,[3]

---

[1]अर्थात लोक-परलोक में दोनों के बीच कोई अंतर न करें। इस तरह कदापि नहीं हो सकता। अथवा अभिप्राय है कि जिस प्रकार वह दुनिया में समान थे आख़िरत में भी समान ही रहेंगे कि मरकर यह भी नास्ति वह भी नास्ति, न दुराचारी को दण्ड, न सदाचारी को पुरस्कार। ऐसा नहीं होगा। इसलिए आगे कहा कि उनका यह बुरा निर्णय है जो वह कर रहे हैं।

[2]तथा यही न्याय है कि क़यामत के दिन वेलाग निर्णय होगा तथा प्रत्येक को उसके कर्मों के अनुसार अच्छा अथवा बुरा प्रतिकार मिलेगा। यह नहीं होगा कि अच्छे बुरे दोनों के साथ सामान व्यवहार करे, जैसाकि काफ़िरों का भ्रम है, जिसका खंडन विगत कई आयतों में किया गया है। क्योंकि दोनों को बराबरी के स्तर पर रखना अन्याय तथा मान्यताओं से विमुखता भी। अतः जिस प्रकार काँटा बोकर अंगूर की उपज प्राप्त नहीं की जा सकती इसी प्रकार बुराई करके वह स्थान प्राप्त नहीं हो सकता जो अल्लाह ने ईमान वालों के लिए रखा है।

[3]अतः वह उसी को अच्छा समझता है जिसे उसका मन भला तथा उसी को बुरा समझता है जिसे उसका मन बुरा मानता है। अर्थात अल्लाह के रसूल के आदेशों की तुलना में अपनी मनमानी को प्रधानता देता है अथवा अपनी समझ (बुद्धि) को महत्व देता है, जबकि समझ भी वातावरण से प्रभावित अथवा स्वार्थ का शिकार होकर मनोइच्छा की भाँति ग़लत निर्णयकर सकती है। एक अर्थ उसका यह किया गया है कि जो अल्लाह की ओर से अवतरित मार्गदर्शन तथा प्रमाण के बिना अपने मन का धर्म अपनाता है। कुछ कहते हैं कि इससे तात्पर्य ऐसा व्यक्ति है जो पत्थर को पूजता था जब उसे अधिक सुन्दर पत्थर

The Ummah Technology Mission

وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٣﴾

तथा समझ-बूझ के उपरान्त भी अल्लाह ने उसे पथभ्रष्ट कर दिया है,[1] तथा उसके कान तथा हृदय पर मुहर लगा दी है[2] तथा उसकी आँख पर भी पर्दा डाल दिया है ?[3] अब ऐसे व्यक्ति को अल्लाह के पश्चात कौन मार्गदर्शन करा सकता है ।[4] क्या अब भी तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते ?[5]

وَقَالُوْا مَا هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَآ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ

(२४) उन्होंने कहा कि हमारा जीवन केवल सांसारिक जीवन ही है; हम मरते हैं तथा जीते हैं तथा हमें केवल काल (युग) ही मार डालता है ।[6] (वास्तव में) उन्हें उसका कुछ

मिल जाता तो पहले पत्थर को फेंक कर दूसरे को उपास्य बना लेता । (फ़तहुल क़दीर)

[1]अर्थात ज्ञान पहुँचने तथा प्रमाण की स्थापना के उपरांत वह कुमार्ग ही को अपनाता है । जैसे बहुत से ज्ञान के घमंड में ग्रस्त भ्रष्ट ज्ञानियों की दशा है । होते वह कुपथ हैं, सिद्धान्त उनका निराधार होता है । परन्तु 'हम जैसा कोई नहीं' के घमंड में वह अपने 'तर्कों' को ऐसा समझते हैं जैसे आकाश से तारे तोड़ लाये हों । और यूँ 'ज्ञान तथा समझ' रखते हुए वह भ्रष्ट ही नही होते, दूसरों को भी पथभ्रष्ट करने पर गर्व करते हैं । نعوذ بالله من هذا العلم الضال و الفهم السقيم و العقل الزائغ "हम गुमराही के ज्ञान तथा रोगी समझ एवं वक्र बुद्धि से अल्लाह की शरण माँगते हैं ।"

[2]जिससे उनके कान शिक्षा तथा सदुपदेश सुनने से तथा उनके दिल संमार्ग को समझने से वंचित हो गये ।

[3]अत: वह सत्य को देख भी नहीं पाता ।

[4]जैसे फ़रमाया :

﴿مَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُۥ وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَٰنِهِمْ يَعْمَهُونَ﴾

"जिसे अल्लाह कुपथ कर दे उसका कोई पथप्रदर्शक नहीं, उन्हें उनकी पथभ्रष्टता में भटकते छोड़ देता है ।" (*अल-आराफ़*-१८६)

[5]अर्थात चिंतन-मनन नहीं करते ताकि वास्तविकता तुम पर प्रकट एवं स्पष्ट हो जाये ।

[6]यह नास्तिक (भौतिकवादी) तथा उनसे सहमत मक्का के मुशरिकों का कथन है जो आख़िरत (परलोक) को नहीं मानते थे । वह कहते थे कि बस सांसारिक जीवन ही प्रथम

The Ummah Technology Mission

إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٢٤﴾

ज्ञान ही नहीं; ये तो केवल अनुमान एवं अटकल से ही काम ले रहे हैं।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ إِلَّا أَن قَالُوا ائْتُوا بِآبَائِنَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा जब उनके समक्ष हमारी स्पष्ट (एवं प्रकाशवाली) आयतों का पाठ किया जाता है तो उनके पास इस कथन के अतिरिक्त कोई तर्क नहीं होता कि यदि तुम सच्चे हो तो हमारे पूर्वजों को लाओ।[1]

قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾

(२६) (आप) कह दीजिए कि अल्लाह ही तुम्हें जीवित करता है फिर तुम्हें मार डालता है, फिर तुम्हें क़यामत के दिन एकत्रित करेगा जिसमें कोई संदेह नहीं, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَخْسَرُ الْمُبْطِلُونَ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा आकाशों एवं धरती का राज्य अल्लाह ही का है, तथा जिस दिन क़यामत व्याप्त होगी उस दिन असत्यवादी बड़ी हानि में पड़ेंगे।

तथा अंतिम जीवन है, उसके पश्चात कोई जीवन नहीं तथा मृत्यु एवं जीवन मात्र कालगति का परिणाम है। जैसे दार्शनिकों का एक गिरोह कहता है कि प्रत्येक छत्तीस हज़ार वर्ष के पश्चात प्रत्येक वस्तु अपनी दशा में लौट आती है तथा यह क्रम बिना किसी रचयिता तथा प्रबंधक के स्वत: चल रहा है तथा चलता रहेगा, न इसका आदि है न अंत यह गिरोह 'दौरियह' कहलाता है। (इब्ने कसीर) प्रत्यक्ष बात है कि इस सिद्धान्त को बुद्धि भी स्वीकार नहीं करती तथा धार्मिक युक्तियों के भी विपरीत है। हदीस कुदसी में है, अल्लाह तआला फ़रमाता है : "आदम का पुत्र मुझे दुख पहुँचाता है। वह युग को बुरा कहता है (अर्थात कार्यों को उससे संबंधित करके उसे बुरा कहता है) जबकि (युग स्वयं कुछ नहीं है) मैं स्वयं युग हूँ। मेरे ही हाथ में सब अधिकार हैं। रात-दिन भी मैं ही फेरता हूँ।" (अल-बुख़ारी तफ़सीर सूर: अल-जासिय:, मुस्लिम, किताबुल अलफ़ाज मिनल अदब, बाबुन नहय अन सब्बिद्दहर)

[1]यह उनका सबसे बड़ा तर्क है जो उनकी कटबहसी को स्पष्ट करता है।

The Ummah Technology Mission

وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۚ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾

(२८) तथा आप देखेंगे कि प्रत्येक समुदाय घुटनों के बल गिरा होगा।[1] प्रत्येक गिरोह अपने कर्मपत्र की ओर बुलाया जायेगा, आज तुम्हें अपने किये का बदला दिया जायेगा।

هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٩﴾

(२९) यह है हमारी किताब जो तुम्हारे विषय में सत्य-सत्य बोल रही है।[2] हम तुम्हारे कर्म लिखवाते जाते थे।[3]

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ

(३०) तो जो ईमान लाये तथा उन्होंने पुण्य के कार्य किये[4] तो उनको उनका प्रभु अपनी

---

[1]आयत से तो यही विदित होता है कि प्रत्येक गिरोह (चाहे वह अम्बिया के अनुयायियों का हो अथवा उनके विरोधियों का) भय तथा डर के मारे घुटनों के बल बैठा होगा (फ़तहुल क़दीर) यहाँ तक कि सबको हिसाब के लिये बुलाया जायेगा। जैसाकि आयत के आगामी अंश से प्रतिपादित है।

[2]इस किताब से अभिप्राय वह सभी पंजिकायें हैं जिनमें इंसान के सभी कर्म अंकित होंगे।

﴿ وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ ﴾

"कर्मपत्र सामने लाये जायेंगे, नबियों तथा गवाहों को गवाही के लिये प्रस्तुत किया जायेगा।" (*अज़्ज़ुमर-६९*)

यह कर्मपत्र इंसानी जीवन के ऐसे रिकार्ड होंगे जिनमें किसी प्रकार की कमी-बेशी नहीं होगी। इंसान उन्हें देख कर पुकार उठेगा।

﴿ مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا ﴾

"यह कैसा कर्मपत्र है जिसने किसी भी छोटी-बड़ी चीज़ को नहीं छोड़ा, सब कुछ ही तो इसमें अंकित है।" (*अल-कहफ़-४९*)

[3]अर्थात हमारे ज्ञान के अतिरिक्त फ़रिश्ते भी हमारे आदेश से तुम्हारी प्रत्येक चीज लिखते तथा सुरक्षित रखते थे।

[4]यहाँ भी ईमान के साथ पुण्य के कर्म की चर्चा करके उसका महत्व दिखा दिया तथा पुण्य के कार्य वह कर्म हैं जो सुन्नत के अनुकूल किये जायें, न कि प्रत्येक वह कर्म जिसे इंसान अपने मन से अच्छा समझ ले तथा उसे बड़ी व्यवस्था एवं रूचि से करे। जैसे बहुत सी बिदआत (नई बातें) धार्मिक गिरोहों में प्रचलित हैं तथा जो उनके निकट अनिवार्य तथा आवश्यक धार्मिक कर्मों से भी अधिक महत्व रखती हैं। इसलिए अनिवार्य कर्तव्य तथा सुन्नत का त्याग तो उनके यहाँ सामान्य है, किन्तु बिदअत ऐसी आवश्यक है

The Ummah Technology Mission

فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿٣٠﴾

कृपा की छत्रछाया में ले लेगा।[1] यही स्पष्ट सफलता है।

وَ اَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۫ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣١﴾

(३१) परन्तु जिन लोगों ने कुफ़्र किया तो (मैं उनसे कहूँगा) कि क्या मेरी आयतें तुम्हें सुनायी नहीं जाती थीं?[2] फिर भी तुम गर्व करते रहे तथा तुम थे ही पापी लोग।[3]

وَ اِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ السَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّ مَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा जब कभी कहा जाता कि अल्लाह का वादा निश्चित रूप से सत्य है तथा क़यामत के आने में कोई संदेह नहीं तो तुम उत्तर देते थे कि हम नहीं जानते कि क़यामत क्या (वस्तु) है? हमें कुछ यों ही सोच-विचार हो जाता है परन्तु हमें विश्वास नहीं।[4]

وَ بَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَ حَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٣﴾

(३३) तथा उन पर अपने कर्मों की बुराईयाँ खुल गयीं तथा जिसे वे उपहास में उड़ा रहे थे, उसने उन्हें घेर लिया।[5]

कि उनमें किसी प्रकार के आलस्य की कल्पना ही नहीं है, जब कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे सबसे अधिक बुरा काम बताया है।

[1] رحمت (रहमत) से अभिप्राय स्वर्ग है। अर्थात स्वर्ग में ले जायेगा, जैसे हदीस में है अल्लाह का आदेश होगा।

«أَنْتِ رَحْمَتِي أَرْحَمُ بِكِ مَنْ أَشَاءُ»

"तू मेरी रहमत है मैं तेरे द्वारा (अर्थात तुझमें प्रवेश देकर) मैं जिस पर चाहूँगा दया करूँगा।" (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरः क़ाफ़)

[2] यह फटकार के रूप में उनसे कहा जायेगा क्योंकि रसूल उनके पास आये थे, उन्होंने अल्लाह के आदेश उन्हें सुनाये थे किन्तु उन्होंने परवाह ही न की थी।

[3] अर्थात सत्य को स्वीकार करने से तुमने अहंकार किया तथा ईमान नहीं लाये, अपितु तुम थे ही पापी।

[4] अर्थात क़यामत का होना मात्र अनुमान तथा विचार है, हमें तो विश्वास नहीं कि यह वास्तव में होगी।

[5] अर्थात क़यामत की यातना, जिसे वह उपहास अर्थात अनहोनी समझते थे, उसमें ग्रस्त होंगे।

The Ummah Technology Mission

وَقِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा कह दिया गया कि आज हम तुम्हें भुला देंगे जैसाकि तुमने अपने इस दिन के मिलने को भुला दिया था,[1] तुम्हारा ठिकाना नरक है तथा तुम्हारी सहायता करने वाला कोई नहीं।

ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) यह इसलिए है कि तुमने अल्लाह (तआला) की आयतों का उपहास उड़ाया था तथा दुनिया के जीवन ने तुम्हें धोखे में डाल रखा था, तो आज के दिन न तो ये (नरक) से निकाले जायेंगे तथा न उनसे विवशता एवं बहाना स्वीकार किया जायेगा।[2]

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٦﴾

(३६) तो अल्लाह के लिए सब प्रंशसा है, जो आकाशों एवं धरती तथा सर्वलोक का पालनहार है।

وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣٧﴾

(३७) तथा समस्त (महिमा एवं) बड़ाई आकाशों एवं धरती में उसी की है,[3] तथा वही प्रभावशाली एवं हिम्मत वाला है।

---

[1]जैसे हदीस में आता है कि अल्लाह अपने कुछ बंदों से कहेगा : "क्या मैंने तुझे पत्नी नहीं दी थी, क्या मैंने तुझे सम्मान नहीं दिया था, क्या मैंने घोड़े तथा बैल इत्यादि तेरे अधीन में नहीं किये थे ? तू सरदारी भी करता तथा चुंगी भी लेता रहा।" वह कहेगा "हाँ यह ठीक है मेरे पालनहार !" अल्लाह तआला उससे प्रश्न करेगा, "क्या तुझे मुझसे मिलने का विश्वास था ?" वह कहेगा, "नहीं।" अल्लाह फ़रमायेगा «فَاليَومَ أَنسَاكَ كَمَا نَسِيتَنِي» (तो आज मैं तुझे नरक में डालकर भूल जाऊँगा जैसे तू मुझे भूला रहा) (सहीह मुस्लिम किताबुज़्ज़ुहद)

[2]अर्थात अल्लाह की निशानियों तथा आदेशों का उपहास तथा दुनिया के धोखे में लिप्त रहना, यह दो अपराध ऐसे हैं जिन्होंने तुम्हें नरक की यातना का पात्र बना दिया। अब उससे निकलने की संभावना नहीं तथा न इस बात की आशा कि किसी अवसर पर तुम्हें तौबा तथा क्षमा-याचना का अवसर प्रदान कर दिया जाये तथा तुम क्षमा माँगकर अल्लाह को मना लो।

[3]जैसे हदीस कुदसी में अल्लाह तआला फ़रमाता है : "العظمة إزاري والكبرياء ردائي فمن نازعني واحدًا منهما أسكنته ناري" (मुस्लिम किताबुल बिर्र, बाबु तहरीमिल किब्र)

The Ummah Technology Mission

سُوْرَةُ الْاَحْقَافِ

सूरतुल अहक़ाफ़-४६

सूर: अहकाफ़ मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें पैंतीस आयतें एवं चार रुकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु तथा अत्यन्त कृपालु है।

حٰمٓ ①

(१) हा॰मीम॰ ।[1]

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ②

(२) इस किताब का अवतरित होना अल्लाह शक्तिशाली हिक्मत वाले की ओर से है।

مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ③

(३) हमने आकाशों तथा धरती एवं उन दोनों के मध्य की समस्त वस्तुओं को सर्वोचित व्यवस्था के साथ ही एक निर्धारित समय के लिए बनाया है,[2] तथा काफ़िर लोग जिस वस्तु से डराये जाते हैं मुख मोड़ लेते हैं।[3]

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا

(४) (आप) कह दीजिए कि भला देखो तो जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो,

---

[1]यह सूरह के आरम्भिक अक्षर उन मुतशाबिहात (अनुरूपों) में से हैं जिनका ज्ञान मात्र अल्लाह को है इसलिए उनके अर्थ तथा भावार्थ में पड़ने की आवश्यकता नहीं। फिर भी उनके दो लाभ कुछ भाष्यकारों ने वर्णन किये है जिन्हें हम सूर: ३१ के आरम्भ में वर्णन कर चुके हैं।

[2]अर्थात आकाश एवं धरती की रचना का एक विशेष उद्देश्य भी है तथा वह है इंसान की परीक्षा। दूसरा, उसके लिए एक समय भी निश्चित है। जब वह वचन का समय आ जायेगा तो आकाश तथा धरती की यह सारी व्यवस्था बिखर जायेगी। न आकाश यह आकाश होगा, न धरती यह धरती होगी। ﴿يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ﴾ (सूर: इब्राहीम-४८)

[3]अर्थात ईमान न लाने की दशा में उन्हें पुर्नजीवन, हिसाब तथा प्रतिकार से जो डराया जाता है तो वे उस पर ध्यान ही नहीं देते, न उस पर विश्वास करते हैं, न परलोक की यातना से बचने की तैयारी करते हैं।

The Ummah Technology Mission

مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٤

मुझे भी तोदिखाओ कि उन्होंने धरती का कौन-सा भाग बनाया है अथवा आकाशों में कौन-सा उनका भाग है ?[1] यदि तुम सच्चे हो तो इस से पूर्व ही की कोई किताब अथवा कोई ज्ञान ही जो उद्धृत किया जाता हो, मेरे पास लाओ ।[2]

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ ۝٥

(५) तथा उससे बढ़कर अधिक पथभ्रष्ट अन्य कौन होगा जो अल्लाह के सिवा ऐसों को पुकारता है, जो क़यामत तक उसकी प्रार्थना न स्वीकार कर सकें बल्कि उनके पुकारने से केवल अनभिज्ञ हों ।[3]

وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝٦

(६) तथा जब लोगों को एकत्र किया जायेगा तो ये उनके शत्रु हो जायेंगे तथा उनकी पूजा से साफ़ इंकार कर देंगे ।[4]

---

[1] أَرَأَيْتُم का अर्थ أَخبِرُوني अथवा أَروني है अर्थात अल्लाह के सिवा जिन मूर्तियों अथवा व्यक्तियों की पूजा तुम करते हो मुझे दिखाओ अथवा बतलाओ कि उन्होंने धरती तथा आकाश की रचना में क्या भाग लिया है ? अभिप्राय यह है कि जब आकाश तथा धरती की रचना में उनका कोई भाग नहीं है । बल्कि पूर्ण रूप से उन सबका विधाता मात्र एक अल्लाह है तो फिर तुम उन असत्य पूज्यों को अल्लाह की पूजा में साझा क्यों बनाते हो ।

[2]किसी ईशदूत पर अवतरित किताब अथवा किसी धार्मिक उद्धरण में यह बात लिखी हो तो लाकर दिखाओ ताकि तुम्हारी सच्चाई सिद्ध हो सके । कुछ ने ﴿أَثَرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ﴾ का अर्थ ज्ञान पर आधारित खुला प्रमाण किया है । इस स्थिति में किताब से तात्पर्य धार्मिक प्रमाण तथा أَثَارة مِن عِلم से अभिप्राय बौद्धिक तर्क होगा । अर्थात कोई धार्मिक एवं बौद्धिक प्रमाण प्रस्तुत करो । उसका प्रथम अर्थ أَثَر (असर) से लिया गया है अथवा بَقِيَّةٍ مِنْ عِلْمٍ पहले अम्बिया की शिक्षाओं का शेष भाग जो विश्वासनीय सूत्रों से उद्धृत होता आया हो, उसमें यह बात हो ।

[3]अर्थात यही सबसे बड़े पथभ्रष्ट हैं जो पत्थर की मूर्तियों अथवा मृत व्यक्तियों को सहायतार्थ पुकारते हैं, जो क़यामत तक उत्तर देने में असमर्थ हैं तथा असमर्थ ही नहीं अपितु पूर्णरूपेण अनभिज्ञ हैं ।

[4]यह विषय पवित्र क़ुरआन में अनेक स्थानों पर वर्णित है, जैसे सूरः यूनुस-२९०, सूरः

The Ummah Technology Mission

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ هَٰذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝٧

(७) तथा उन्हें जब हमारी स्पष्ट आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो नास्तिक लोग सत्य बात [1] को जब कि उनके पास आ चुकी, कह देते हैं कि यह तो खुला जादू है।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ ۖ كَفَىٰ بِهِ

(८) क्या वे कहते हैं कि उसे तो उसने स्वयं बना लिया है। (आप) कह दीजिए कि यदि मैं ही उसे बना लाया हूँ तो तुम मेरे लिए अल्लाह की ओर से किसी वस्तु का अधिकार नहीं रखते।[2] तुम इस क़ुरआन के विषय में

मरियम-८१,८२, सूर: *अल-अनकबूत*-२५ आदि आयतें। संसार में इन उपास्यों के दो प्रकार हैं। एक तो निर्जीव पत्थर, पेड़-पौधे तथा सूर्य, चाँद आदि हैं। अल्लाह उनको जीवन तथा बोलने की शक्ति प्रदान करेगा तथा हमें यह वस्तुयें बोलकर बतलायेंगी कि हमें कदापि इसका ज्ञान नहीं कि यह हमारी इबादत करते तथा तेरे ईश्वरत्व में साझी बनाते थे। कुछ कहते हैं कि बोलकर नही उनकी स्थिति अपनी भावना व्यक्त करेगी واللہ اعلم। उपास्यों का दूसरा प्रकार वह है, जिसमें अम्बिया, फ़रिश्ते तथा धर्मात्मा हैं, जैसे माननीय ईसा तथा उज़ैर तथा अल्लाह के अन्य पुनीत बंदे। यह अल्लाह के सदन में उसी प्रकार उत्तर देंगे जैसे ईसा (अलैहिस्सलाम) का उत्तर क़ुरआन में उल्लेख है। इसके अलावा शैतान भी इंकार करेगा। जैसे क़ुरआन में उनका कथन उल्लेख किया गया है।

﴿تَبَرَّأْنَا إِلَيْكَ مَا كَانُوا إِيَّانَا يَعْبُدُونَ﴾

"हम तेरे समक्ष अपने पुजारियों से बिलगाव व्यक्त करते हैं, यह हमारी उपासना नहीं करते थे।" (*अल-क़सस*-६३)

[1]इस सत्य से अभिप्राय, जो उनके पास आया, पवित्र क़ुरआन है। इसके चमत्कार तथा प्रभावशक्ति को देखकर वह इसे जादू कहते। फिर उससे भी हटकर अथवा उससे भी बात न बनती तो कहते कि यह तो मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का अपना गढ़ा हुआ कथन है।

[2]अर्थात यदि तुम्हारी यह बात सही हो कि मैं अल्लाह का बनाया हुआ रसूल नहीं हूँ तथा यह कथन भी मेरा गढ़ा हुआ है, फिर तो वस्तुत: मैं बड़ा अपराधी हूँ। अल्लाह मुझे इतने बड़े झूठ पर पकड़े बिना नहीं छोड़ेगा। तथा यदि ऐसी कोई पकड़ हुई तो फिर समझ लेना कि मैं झूठा हूँ तथा मेरी कोई सहायता भी मत करना। बल्कि ऐसी दशा में मुझे अल्लाह की पकड़ से बचाने का तुम्हें कोई अधिकार ही नहीं होगा। इसी विषय को दूसरे

The Ummah Technology Mission

شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۖ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٨﴾

जो कुछ कह सुन रहे हो, उसे अल्लाह भली-भाँति जानता है।[1] मेरे एवं तुम्हारे मध्य साक्षी के लिए वही पर्याप्त है।[2] तथा वह क्षमा करने वाला अत्यन्त दयालु है।[3]

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي

(९) (आप) कह दीजिए कि मैं कोई पूर्णत: नया पैग़म्बर तो नहीं[4] तथा न मुझे यह ज्ञात है कि मेरे साथ तथा तुम्हारे साथ क्या किया जायेगा।[5]

स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया गया है।

﴿ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ ۝ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ۝ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ۝ فَمَا مِنكُم مِّنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ﴾

"तथा यदि यह हम पर कोई बात गढ़ लेता, तो अवश्य हम इसका दाहिना हाथ पकड़ लेते, फिर उसके हृदय की नस काट देते, फिर तुममें से कोई भी मुझे इससे रोकने वाला न होता।" (*अल-हाक्क:* ४४-४७)

[1]अर्थात जिस रूप से भी तुम क़ुरआन को झुठलाते हो, कभी उसे जादू, कभी ज्योतिष तथा कभी स्वयंकृत कहते हो, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है। अर्थात वह तुम्हारी इन निन्दनीय गतिविधियों का प्रतिकार (बदला) देगा।

[2]वह इस बात की गवाही के लिए पर्याप्त है कि यह पवित्र क़ुरआन उसी की ओर से अवतरित हुआ है तथा वही तुम्हारे झुठलाने तथा विरोध का भी साक्षी है। इस में भी इनके लिए कड़ी चेतावनी है।

[3]उसके लिए जो तौबा (क्षमा-याचना) कर ले, ईमान ले आये तथा क़ुरआन को सत्य ईशवाणी मान ले। अभिप्राय यह है कि अभी समय है कि तौबा करके अल्लाह की क्षमा तथा दया के पात्र बन जाओ।

[4]अर्थात प्रथम एवं अनोखा रसूल तो नहीं हूँ अपितु मुझसे पहले भी अनेक रसूल आ चुके हैं।

[5]अर्थात संसार में। मैं मक्का नगर ही में रहूँगा अथवा यहाँ से निकलने पर बाध्य होना पड़ेगा, मुझे स्वाभाविक मौत आयेगी अथवा तुम्हारे हाथों मेरी हत्या होगी, तुम जल्द ही दण्ड पाओगे अथवा तुम्हें लम्बा अवसर दिया जायेगा, इन सब बातों का ज्ञान केवल अल्लाह को है। मुझे पता नहीं कि कल मेरे साथ तथा तुम्हारे साथ क्या होगा? फिर भी आख़िरत (परलोक) के विषय में निश्चित ज्ञान है कि ईमानवाले स्वर्ग (जन्नत) में तथा काफ़िर नरक (जहन्नम) में जायेंगे। तथा हदीस में जो आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि

The Ummah Technology Mission

وَلَا بِكُمْ ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝٩

मैं तो केवल उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरी ओर प्रकाशना की जाती है तथा मैं तो केवल स्पष्ट रूप से सावधान कर देने वाला हूँ।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ اللَّهِ وَكَفَرْتُم بِهِ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ فَآمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝١٠

(१०) (आप) कह दीजिए कि यदि यह (क़ुरआन) अल्लाह ही की ओर से हो तथा तुमने उसे न माना हो तथा इस्राईल की संतान का एक गवाह उस जैसी की गवाही भी दे चुका हो तथा वह ईमान भी ला चुका हो और तुमने उद्दण्डता की हो।[1] तो निःसंदेह अल्लाह (तआला) अत्याचारी

वसल्लम ने किसी सहाबी के निधन पर जब उसके विषय में अच्छा विचार व्यक्त किया गया तो फ़रमाया,

«وَاللهِ مَا أَدْرِي - وَأَنَا رَسُولُ اللهِ - مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ».

"अल्लाह की सौगन्ध ! मुझे अल्लाह का रसूल होकर भी ज्ञान नहीं कि क़यामत को मेरे तथा तुम्हारे साथ क्या किया जायेगा ?" (सहीह बुख़ारी मनाकिबुल अंसार)

इससे एक निश्चित व्यक्ति के निश्चित परिणाम का इंकार है, परन्तु यह कि उसके विषय में भी धार्मिक सूत्र मौजूद हो, जैसे अशरह मुबश्शरह (दस सहाबी जिन्हें संसार में ही स्वर्ग की शुभसूचना नबी के द्वारा सुना दी गई) तथा बद्र के सहाबा आदि (जिन्होंने बद्र के रण में भाग लिया)

[1]इस इस्राईली संतान के गवाह से कौन तात्पर्य है ? कुछ कहते हैं कि यह सामान्य है। इस्राईल की संतान में से जो भी ईमान लाये वह इसका चरितार्थ है। कुछ कहते हैं कि मक्का का कोई इस्राईली निवासी अभिप्राय है, क्योंकि यह सूरः मक्का में अवतरित हुई। कुछ के निकट इससे अभिप्राय अब्दुल्लाह पुत्र सलाम हैं, तथा वह इस आयत को मदनी (मदीने में अवतरित) कहते हैं। सहीहैन की हदीस से भी इसे समर्थन प्राप्त होता है। (सहीह बुख़ारी, मनाक़िबिल अंसार, बाब मानकिबि अब्दुल्लाह बिन सलाम) इसीलिए इमाम शौकानी ने इसी विचार को अधिमान दिया है على مثله (इसी जैसी किताब की गवाही) का अर्थ है तौरात की गवाही, जो क़ुरआन के अल्लाह की ओर से अवतरित होने को अनिवार्य बनाती है, क्योंकि क़ुरआन भी एकेश्वरवाद एवं पुर्नजन्म के प्रमाण में तौरात ही के समान है। अभिप्राय यह है कि अहले किताब (ग्रन्थधारियों) की गवाही तथा उनके ईमान लाने के पश्चात इस क़ुरआन के अल्लाह की ओर से अवतरित होने में कोई संदेह नहीं रह जाता है। इसलिए अब तुम्हारे इंकार तथा अहंकार का कोई औचित्य नहीं है। तुम्हें अपने इस नीति (व्यवहार) का परिणाम सोच लेना चाहिए।

The Ummah Technology Mission

गुट को मार्ग नहीं दिखाता।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ ؕ وَاِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ هٰذَآ اِفْكٌ قَدِيْمٌ ⑪

(११) तथा काफ़िरों ने ईमानदारों के विषय में कहा कि यदि यह (धर्म) उत्तम होता तो यह लोग उसकी ओर हमसे पहल न कर पाते तथा चूँकि उन्होंने क़ुरआन से मागदर्शन नहीं पाया तो यह कह देंगे कि यह प्राचीन झूठ है।[1]

وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ؕ وَهٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ وَبُشْرٰى لِلْمُحْسِنِيْنَ ⑫

(१२) तथा इससे पूर्व मूसा की किताब मार्गदर्शिका एवं दया थी, तथा यह किताब है पुष्टि करने वाली अरबी भाषा में ताकि अत्याचारियों को डराये तथा सदाचारियों के लिए शुभ सूचना हो।

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ⑬

(१३) नि:संदेह जिन लोगो ने कहा कि हमारा प्रभु अल्लाह है फिर उस पर दृढ़ रहे तो उन पर न तो कोई भय होगा तथा न वे शोक ग्रस्त होंगे।

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ⑭

(१४) यह तो स्वर्ग में जाने वाले लोग हैं जो सदैव उसी में रहेंगे उन कर्मों के बदले जो वे किया करते थे।

---

[1]मक्का के काफ़िर बिलाल, अम्मार, सुहैब तथा ख़ब्बाब रज़िअल्लाहु अन्हुम जैसे निर्धन मुसलमानों को देखकर, जिन्हें इस्लाम में अग्रसर होने का सौभाग्य प्राप्त था, कहते थे कि यह धर्म अच्छा होता तो हम जैसे मान-मर्यादा के लोग इसे पहले स्वीकार करते न कि यह लोग, अर्थात उन्होंने स्वयं से यह मान लिया कि अल्लाह के हाँ उनका उच्च पद है। अत: यह धर्म यदि सच्चा होता तो अल्लाह इसे स्वीकार करने में हमें पीछे न छोड़ता, तथा हमने इसे नहीं माना तो फिर इसका अर्थ यह है कि यह पुराना झूठ है। अर्थात क़ुरआन को उन्होंने पुराना झूठ कहा जैसे वे इसे पूर्वजों की कल्पित कथा कहते थे, जब कि सांसारिक धन-सम्पति में अधिक होना अल्लाह के निकट प्रिय होने का प्रमाण नहीं (जैसे उन्हें भ्रम हुआ अथवा शैतान ने भ्रम में डाला) अल्लाह के निकट स्वीकार्य होने के लिए ईमान तथा शुद्धता की आवश्यकता है। तथा इस ईमान तथा शुद्धता की सम्पति जिसे चाहता है देता है। जैसे परीक्षा के लिए धन-सम्पत्ति जिसे चाहता है देता है।

The Ummah Technology Mission

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ
إِحْسَانًا ۖ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا
وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ
ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ
وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۙ قَالَ
رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي
أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ
أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي

(१५) तथा हमने मनुष्य को अपने माता-पिता के साथ सदव्यवहार करने का आदेश दिया है। उसकी माता ने उसे दुख झेलकर गर्भ में रखा तथा दुख सहन करके उसे जन्म दिया।[1] उसके गर्भ धारण तथा उसके दूध छुड़ाने की अवधि तीस महीने की है,[2] यहाँ तक कि जब वह अपनी पूरी व्यस्कता को तथा चालीस वर्ष की आयु को पहुँचा[3] तो कहने लगा, हे मेरे प्रभु ! मुझे संमति दे[4] कि मैं तेरे उस उपकार की

---

[1]इस दुख तथा कष्ट की चर्चा करके माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने पर विशेष बल दिया है। जिससे यह भी विदित होता है कि माता इस सदव्यवहार के आदेश में पिता से प्रथम है। क्योंकि नौ मास तक लगातार गर्भ की तकलीफ और फिर प्रसव का दुख मात्र माँ ही झेलती है। ऐसे ही दूध पिलाने की पीड़ा भी अकेले माँ ही सहन करती है, बाप इस में भाग नहीं लेता। इसीलिए हदीस में भी माँ के साथ अच्छे व्यवहार को प्रधानता दी गई है तथा बाप का पद उसके पश्चात बताया गया है। एक सहाबी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा, 'मेरे अच्छे व्यवहार का सर्वाधिक पात्र कौन है ?' आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : 'तुम्हारी माँ।' उसने फिर यही पूछा, 'आप ने यही उत्तर दिया।' तीसरी बार भी यही उत्तर दिया। चौथे चरण में प्रश्न करने पर आप ने फ़रमाया : 'तुम्हारा बाप।' (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्रे व स्सिला प्रथम अध्याय)

[2]فِصَال (फिसाल) का अर्थ दूध छुड़ाना है। इससे कुछ सहाबा ने यह प्रमाणित किया है कि कम से कम गर्भ की अवधि छः महीने है, अर्थात यदि छः महीने के पश्चात किसी औरत को बच्चा पैदा हो जाये तो वह बच्चा सही है, अवैध नहीं, इसलिए कि क़ुरआन ने दूध पिलाने की अवधि दो वर्ष (चौबीस महीने) बताई है (*सूरः लुकमान-१४, सूरः बक़रः* २३३) इस हिसाब से गर्भ की अवधि मात्र छः महीने ही शेष रह जाती है।

[3]पूरी व्यस्कता (أَشُدَّه) की आयु से अभिप्राय युवा अवस्था है। कुछ ने उसे १८ वर्ष से अर्थ लगाया है, यहाँ तक कि फिर बढ़ते-बढ़ते चालीस वर्ष की आयु को पहुँच गया। यह मानसिक शक्ति के पूर्ण होने की आयु है। अतः व्याख्याकारों का विचार है कि प्रत्येक नबी को चालीस वर्ष की आयु के पश्चात ही नबूअत (दूतत्व) से सम्मानित किया गया। (फ़तहुल क़दीर)

[4]أَوْزِعْنِي यह أَلْهِمْنِي के अर्थ में है, अर्थात मुझे सन्मति प्रदान कर। इससे तर्क देते हुए विद्वानों ने कहा है कि इस आयु के पश्चात इंसान को यह दुआ प्रायतः पढ़ते रहना

The Ummah Technology Mission

فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۚ اِنِّيْ تُبْتُ
اِلَيْكَ وَاِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٥﴾

कृतज्ञता व्यक्त कर सकूँ जो तूने मुझ पर तथा मेरे माता-पिता पर उपकार किया है तथा यह कि मैं ऐसे पुण्य के कार्य करूँ जिनसे तू प्रसन्न हो जाये तथा तू मेरी संतान भी सदाचारी बना। मैं तेरी ओर ध्यान करता हूँ तथा मैं मुसलमानों में से हूँ।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ
اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ
فِيْٓ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ۭ وَعْدَ الصِّدْقِ
الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿١٦﴾

(१६) यही वे लोग हैं जिनके पुण्य के कार्य हम स्वीकार कर लेते हैं तथा जिनके बुरे कार्यों को क्षमा कर देते हैं, (ये) स्वर्ग में जाने वाले लोगों में हैं। इस सत्य वचन के अनुसार जो उनसे किया जाता था।

وَالَّذِيْ قَالَ لِوَالِدَيْهِ اُفٍّ لَّكُمَآ
اَتَعِدٰنِنِيْٓ اَنْ اُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُوْنُ
مِنْ قَبْلِيْ ۚ وَهُمَا يَسْتَغِيْثٰنِ اللّٰهَ
وَيْلَكَ اٰمِنْ ڰ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ
فَيَقُوْلُ مَا هٰذَآ
اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٧﴾

(१७) तथा जिसने अपने माता-पिता से कहा कि उफ़ है तुम दोनों पर (तुमसे मैं तंग हो गया)[1] तुम मुझसे यही कहते रहोगे कि (मैं मरने के पश्चात पुनः) जीवित किया जाऊँगा, मुझसे पूर्व भी युग समुदाय गुज़र चुके हैं।[2] वह दोनों अल्लाह के दरबार में विनती करते हैं (तथा कहते हैं) कि तुझे ख़राबी हो, तू ईमानदार

चाहिए, अर्थात رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ से مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ तक।

[1]उपरोक्त आयत में नेक संतान (सपूत) की चर्चा की गई थी, जो माँ-बाप के साथ सद्व्यवहार करती है तथा उनके लिए भलाई की प्रार्थना भी। अब उनके विपरीत हतभागी एवम् अवज्ञाकारी संतान की चर्चा की जा रही है जो माता-पिता के साथ दुर्व्यवहार से पेश आती है। اُفٍّ لَّكُمَا धुत है तुम दोनों पर। 'उफ़्फ़' اُفٍّ शब्द घृणा व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त होता है। अर्थात अवज्ञाकारी संतान माँ-बाप के हितोपदेशों पर अथवा ईमान तथा सत्कर्म के आमंत्रण पर घृणा तथा कड़ा क्रोध दिखाती है, जिसकी संतान को कदापि अनुमति नहीं। यह आयत सामान्य है, सभी अवज्ञाकारी संतान इसकी चरितार्थ है।

[2]अभिप्राय यह है कि वह पुनः जीवित होकर जगत में नहीं आये, जबकि पुर्नजीवन का अभिप्राय क़यामत के दिन जीवित होना है जिसके पश्चात हिसाब होगा।

The Ummah Technology Mission

बन जा, नि:संदेह अल्लाह का वादा सत्य है। वह उत्तर देता है कि ये तो केवल पूर्वकालीन लोगों की कथायें हैं।[1]

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿١٨﴾

(१८) (यही) वह लोग हैं जिन पर अल्लाह (के प्रकोप) का वा दा सत्य हो गया [2] उन जिन्नों तथा मनुष्यों के गिरोहों के साथ जो उनसे पूर्व गुज़र चुके हैं।[3] यह निश्चित रूप से क्षतिग्रस्त थे।

وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِّمَّا عَمِلُوا ۚ وَلِيُوَفِّيَهُمْ أَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٩﴾

(१९) तथा प्रत्येक को अपने-अपने कर्मों के अनुसार पद मिलेंगे[4] ताकि उन्हें उनके कर्मों के पूर्ण बदले दे तथा वे अत्याचार न किये जायेंगे।[5]

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا

(२०) तथा जिस दिन काफ़िर नरक के किनारे लाये जायेंगे [6] (कहा जायेगा) कि तुमने अपने

---

[1]माँ-बाप मुसलमान हों तथा संतान काफ़िर तो वहाँ संतान तथा माँ-बाप के बीच इसी प्रकार वाद-विवाद होता है, जिसका एक उदाहरण आयत में दिया गया है।

[2]जो पहले ही अल्लाह के ज्ञान में था, अथवा शैतान के उत्तर में जो अल्लाह ने फ़रमाया था :

﴿لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنكَ وَمِمَّن تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ﴾

"मैं तुमसे तथा तुम्हारे सब अनुयायियों से नरक को भर दूँगा।" (सूरः *साद*-८५)

[3]अर्थात यह भी उन काफ़िरों में सम्मिलित हो गये जो जिन्नों तथा इंसानों में से क़यामत के दिन क्षतिग्रस्त होंगे।

[4]मोमिन तथा काफ़िर दोनों का उनके कर्मों के अनुसार अल्लाह के सदन में स्थान होगा। मोमिन उच्च पदों से सम्मानित होंगे तथा काफ़िर नरक की सबसे नीची श्रेणी में होंगे।

[5]पापी को उसके पाप से अधिक दण्ड नहीं दिया जायेगा तथा सदाचारियों के प्रत्युपकार में कमी नहीं होगी, वरन् प्रत्येक को भलाई अथवा बुराई में से वही मिलेगा जिसका वह पात्र होगा।

[6]अर्थात उस समय को याद करो जब काफ़िरों की आँखों के आवरण हटाये जायेंगे तथा वे नरक की अग्नि देख रहे होंगे अथवा उसके समीप होंगे। कुछ ने يُعْرَضُونَ का अर्थ

The Ummah Technology Mission

عَلَى النَّارِ أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۖ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ ﴿٢٠﴾

पुण्य संसार के जीवन में ही नष्ट कर दिये[1] तथा उनसे लाभ उठा चुके, तो आज तुम्हें अपमान की यातना का दण्ड दिया जायेगा इस कारण कि तुम धरती पर अहंकार करते थे तथा इस कारण भी कि तुम आज्ञा का पालन नहीं करते थे।[2]

وَاذْكُرْ أَخَا عَادٍ ۖ إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْ

(२१) तथा आद के भाई को याद करो जबकि उसने अपने समुदाय वालों को अहक़ाफ़ में (रेत के टीले पर) डराया[3] तथा नि:संदेह

يُعَذَّبُونَ (यातना दिये जायेंगे) किया है तथा कुछ कहते हैं कि वाक्य में परिवर्तन है। अभिप्राय है जब आग उन पर प्रस्तुत की जायेगी تُعْرَضُ النَّارُ عَلَيْهِمْ (फ़तहुल क़दीर)

[1] طَيِّبَاتٌ (तय्येबात) से अभिप्राय वह वरदान हैं जो इंसान रूचि से खाते पीते, प्रयोग करते तथा स्वाद एवं आनंद प्रतीत करते हैं। किन्तु परलोक के चिन्तन के साथ उनका प्रयोग हो तो बात और है, जैसे मोमिन (ईमानदार) करता है, वह उसके साथ अल्लाह की आज्ञा पालन करके अल्लाह की कृतज्ञता की भी व्यवस्था करता है। परन्तु परलोक के चिन्तन से अलग होकर उनका प्रयोग इंसान को उद्दण्ड तथा विद्रोही बना देता है, जैसे काफ़िर करता है तथा यूँ वह अल्लाह की अवज्ञा तथा कृतघ्नता करता है। अत: मोमिन को उसकी कृतज्ञता तथा अनुपालन के कारण यह वरदान बल्कि उनसे अति उत्तम वरदान परलोक में फिर मिल जायेंगे, जबकि काफ़िरों से वही कुछ कहा जायेगा जो आयत में चर्चित है। ﴿أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ﴾ का अन्य अनुवाद है 'दुनिया के जीवन में तुमने अपने आनंद ले लिए तथा खूब लाभ प्राप्त कर लिया।'

[2] उनकी यातना के दो कारण बताये हैं। एक अनृत अभिमान, जिसके आधार पर सत्य के अनुसरण से इंसान भागता है। दूसरा फ़िस्क, निर्भय होकर कुकर्म करना। यह दोनों बातें सभी काफ़िरों में साझा होती हैं। ईमानवालों को इन दोनों बातों से अपना दामन बचाना चाहिए।

टिप्पणी : कुछ सहाबा के बारे में आता है कि उनके सामने उत्तम आहार आदि आता तो यह आयत उन्हें याद आ जाती तथा वह इस भय से उसे त्याग देते कि कहीं आख़िरत में हमें भी यह न कह दिया जाये कि अपना आनंद तुमने संसार में ले लिया। यह उनकी वह स्थिति है जो अपार संयम तथा सदाचार को प्रदर्शित करती है। इसका यह अर्थ नहीं कि वे अच्छी चीज़ों के प्रयोग को उचित (वैध) नहीं समझते थे।

[3] أَحْقَافٌ (अहक़ाफ़) حِقْفٌ (हिक्फ़) का बहुवचन है अर्थात रेत का ऊँचा लम्बा टीला।

The Ummah Technology Mission

بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖٓ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا
اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ
يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٢١﴾

उससे पूर्व भी डराने वाले गुज़र चुके हैं तथा उसके पश्चात भी कि तुम अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त अन्य की इबादत न करो। नि:संदेह मैं तुम पर बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।[1]

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ
فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ
مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٢﴾

(२२) समुदाय ने उत्तर दिया कि क्या आप हमारे पास इसलिए आये हैं कि हमें अपने देवताओं (की पूजा) से रोक दें।[2] तो यदि आप सच्चे हैं तो जिन प्रकोपों का आप वादा करते हैं उन्हें हम पर ला डालें।

قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۖ
وَاُبَلِّغُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّيْٓ
اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٣﴾

(२३) (आदरणीय हूद ने) कहा कि (इसका) ज्ञान तो अल्लाह ही के पास है, मैं तो जो संदेश देकर भेजा गया था वह तुम्हें पहुँचा रहा हूँ[3] परन्तु मैं देख रहा हूँ कि तुम लोग मूर्खता कर रहे हो।[4]

कुछ ने इसका अर्थ पहाड़ तथा गुफ़ा किया है। यह ईशदूत हूद (अलैहिस्सलाम) कि जाति, प्रथम आद के क्षेत्र का नाम है जो हज़्रमूत (यमन) के निकट था। मक्का के काफ़िरों के झुठलाने के कारण नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सांत्वना के लिए विगत अम्बिया की घटनाओं की चर्चा की जा रही है।

[1] يوم عظيم (बड़े दिन) से अभिप्राय क़यामत का दिन है, जिसे उसकी भयानकता के कारण उचित रूप से बड़ा दिवस कहा गया है।

[2] لِتَصْرِفَنَا ، لِتَأْفِكَنَا अथवा لِتَمْنَعَنَا अथवा لِتَزِيلَنَا सभी पर्यायवाची हैं। ताकि तू हमारे उपास्यों की उपासना से रोक दे, फेर दे, हटा दे।

[3] अर्थात प्रकोप कब आयेगा ? अथवा संसार में नहीं आयेगा अपितु आख़िरत में तुम्हें दण्ड दिया जायेगा, उसका ज्ञान मात्र अल्लाह को है। वही अपनी इच्छानुसार निर्णय करता है। मेरा काम तो मात्र सन्देश पहुँचाना है।

[4] कि एक तो कुफ़्र पर दुराग्रह कर रहे हो। दूसरे, मुझसे ऐसी वस्तु की माँग कर रहे हो जो मेरे अधिकार में नहीं है।

The Ummah Technology Mission

فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ
أَوْدِيَتِهِمْ ۙ قَالُوا هَٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ۚ
بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُم بِهِ ۖ
رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٤﴾

(२४) फिर जब उन्होंने प्रकोप को मेघ के रूप में देखा अपने मैदानों की ओर आते हुए तो कहने लगे कि यह मेघ हम पर बरसने वाला है,[1] (नहीं) बल्कि वास्तव में यह मेघ वह (प्रकोप) है जिसकी तुम शीघ्रता मचा रहे थे,[2] वायु है जिसमें कष्टदायी यातनायें हैं।[3]

تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا
فَأَصْبَحُوا لَا يُرَىٰ إِلَّا مَسَاكِنُهُمْ ۚ

(२५) जो अपने प्रभु के आदेश से प्रत्येक वस्तु को ध्वस्त कर देगी, तो वे ऐसे हो गये कि उनके घरों के अतिरिक्त कुछ दिखाई न

---

[1]दीर्घकाल से उनके यहाँ वर्षा नहीं हुई थी। उमड़ते बादल देखकर वह प्रसन्न हुए कि अब वर्षा होगी। बादल को عَارِض (आरिज़) इसलिए कहते हैं कि बादल आकाश की चौड़ाई में प्रकट होता है।

[2]यह ईशदूत हूद अलैहिस्सलाम ने उनसे कहा कि यह केवल बादल नहीं है जैसे तुम समझ रहे हो। अपितु यह वह प्रकोप है जिसके शीघ्र लाने की तुम माँग कर रहे थे।

[3]अर्थात वह वायु जिससे उस जाति का विनाश हुआ, उन बादलों से ही उठी तथा निकली तथा अल्लाह की इच्छा से उनको और उनकी प्रत्येक वस्तु को ध्वस्त कर गई। इसीलिए हदीस में आता है, आदरणीया आएशा ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि लोग तो बादल देखकर प्रसन्न होते हैं कि वर्षा होगी, किन्तु इसके विपरीत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुख पर व्याकुलता के चिन्ह दिखाई देते हैं। आप ने फ़रमाया कि आएशा (रज़ी अल्लाह अन्हा) इस बात का क्या विश्वास कि इस बादल में प्रकोप नहीं होगा, जबकि एक जाति वायु के प्रकोप से ही ध्वस्त कर दी गई। उस जाति ने भी बादल को देखकर कहा था, "यह बादल है जो हम पर जल बरसायेगा"। (बुख़ारी तफ़सीर सूरतिल अहक़ाफ़, मुस्लिम-किताबु सलातिल इस्तिस्का) एक अन्य हदीस में है कि जब प्रचण्ड वायु चलती तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह दुआ पढ़ते।

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا، وَخَيْرَ مَا فِيهَا، وَخَيْرَ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا، وَشَرِّ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ».

तथा जब आकाश पर बादल घने हो जाते तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रंग बदल जाता तथा भय की एक अवस्था आप पर छा जाती, जिससे आप व्याकुल रहते, कभी बाहर निकलते, कभी भीतर जाते, कभी आगे होते, कभी पीछे। फिर जब वर्षा हो जाती तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चैन की साँस लेते। (सहीह मुस्लिम, उपरोक्त बाब)

The Ummah Technology Mission

كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٥﴾

देता था |[1] पापियों के गिरोह को हम इसी प्रकार दण्ड देते हैं |

وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيمَا إِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّأَبْصَارًا وَّأَفْـِٔدَةً فَمَآ أَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَآ أَبْصَارُهُمْ وَلَآ أَفْـِٔدَتُهُمْ مِّنْ شَيْءٍ إِذْ كَانُوا يَجْحَدُونَ بِـَٔايٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوا بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٢٦﴾

(२६) तथा निश्चित रूप से हमने (आद के समुदाय) को वह शक्ति प्रदान की थी जो तुम्हें दिया ही नहीं, तथा हमने उन्हें कान, आँखें एवं दिल भी प्रदान कर रखे थे | परन्तु उनके कानों, आँखों एवं दिलों ने उन्हें कुछ भी लाभ नहीं पहुँचाया [2] जबकि वह अल्लाह (तआला) की आयतों का इंकार करने लगे तथा जिस बात का वे उपहास उड़ाया करते थे, वही उन पर उलट पड़ी |[3]

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُم مِّنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا الْأٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा नि:संदेह हमने तुम्हारे निकटवर्ती (क्षेत्र की) बस्तियाँ ध्वस्त कर दीं [4] तथा (नाना प्रकार की) हमने निशानियाँ वर्णन कर दीं ताकि वे वापस आ जायें |[5]

---

[1]अर्थात مكين (घर वाले) सब ध्वस्त हो गये तथा मात्र घर शिक्षाप्रद चिन्ह के रूप में शेष रह गये |

[2]यह मक्कावासियों को संबोधित करके कहा जा रहा है कि तुम क्या हो ? तुमसे पहली जातियाँ जिन्हें हमने ध्वस्त किया, शक्ति एवं बल मान-मर्यादा में तुमसे कहीं अधिक थीं, किन्तु जब उन्होंने अल्लाह की प्रदान की गई योग्यताओं (कान, आँख तथा दिल) को सत्य सुनने, देखने तथा समझने के लिए प्रयोग नहीं किया तो अन्ततः हमने उन्हें ध्वस्त कर दिया तथा यह वस्तुयें उनके कुछ काम न आ सकीं |

[3]अर्थात जिस प्रकोप को वह अनहोनी समझ कर उपहास स्वरूप कह रहे थे कि लाओ अपना प्रकोप जिससे तुम हमको डराते हो | वह प्रकोप आया एवं उनको ऐसा घेरा कि फिर उससे निकल न सके |

[4]समीपवर्ती से आद, समूद तथा लूत की वह बस्तियाँ अभिप्राय हैं जो हिजाज़ के समीप ही थीं तथा यमन, शाम तथा फ़िलिस्तीन की ओर आते जाते उनसे उनका गुज़र होता था |

[5]अर्थात हमने विभिन्न ढंग से तथा विभिन्न प्रमाण उनके समक्ष प्रस्तुत किये कि हो सकता है वह क्षमा-याचना कर लें किन्तु वह टस से मस नहीं हुए |

The Ummah Technology Mission

فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ؕ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٨﴾

(२८) तो अल्लाह की निकटता प्राप्त करने के लिए उन्होंने जिन-जिनको देवता बना रखा था उन्होंने उनकी सहायता क्यों न की बल्कि वह तो उनसे खोये गये, (बल्कि वास्तव में) यह उनका मात्र झूठ तथा (पूर्णत:) आरोप था।[1]

وَاِذْ صَرَفْنَاۤ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْۤا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٢٩﴾

(२९) तथा याद करो, जबकि हमने जिनों के एक गिरोह को तुम्हारी ओर फेर दिया कि वे क़ुरआन सुनें, तो जब वे नबी के पास पहुँच गये तो (एक-दूसरे) से कहने लगे कि शान्त हो जाओ,[2] फिर जब पाठ पूरा हो

---

[1]अर्थात जिन उपास्यों को वह अल्लाह की निकटता का साधन समझते थे उन्होंने उनकी कोई सहायता नहीं की, अपितु इस अवसर पर वह आये ही नहीं तथा वह गुम रहे। इससे भी विदित हुआ कि मक्का के मुशरिकीन मूर्तियों को ईश्वर नहीं मानते थे, अपितु उन्हें अल्लाह के सदन में निकटता का माध्यम समझते थे। अल्लाह ने इस माध्यम को यहाँ झूठ तथा आरोप कहकर बता दिया कि यह अवैध तथा निषेधित (नाजायेज़ तथा हराम) है।

[2]सहीह मुस्लिम की हदीस से ज्ञात होता है कि यह घटना मक्का के समीप वादिये नख़ला में घटी, जहाँ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने साथियों को फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे। जिन्नों को यह खोज थी कि आकाश पर हम पर अत्याधिक कड़ाई कर दी गई है तथा अब वहाँ जाना लगभग असंभव हो गया है, कोई महत्वपूर्ण घटना अवश्य हुई है जिसके कारण ऐसा हुआ है। इसलिए पूर्व एवं पश्चिम की विभिन्न दिशाओं में जिन्नों की टोलियाँ कारण की खोज में फैल गईं। उनमें से एक गिरोह ने यह क़ुरआन सुना तथा समझ लिया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के भेजे जाने की घटना ही हम पर आकाश में प्रतिवंध का कारण है तथा जिन्नों का यह गिरोह आप पर ईमान लाया और जाकर अपने समुदाय को भी सूचित किया (मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाबुल जहरे बिल किराअते फिस्सुवहे वल किराअते अललजिन्न) सही बुख़ारी में भी कुछ बातों की चर्चा है किताबु मनाकिबिल अंसार बाबु ज़िक्रिल जिन्न) अन्य उदाहरणों से ज्ञात होता है कि तत्पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिन्नों के आमंत्रण पर उनके पास भी गये तथा जाकर उन्हें अल्लाह का उपदेश सुनाया, तथा अनेक बार जिन्नों का प्रतिनिधि मण्डल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में भी उपस्थित हुआ। (फतहुल बारी, तफ़सीर इब्ने कसीर आदि)

The Ummah Technology Mission

गया[1] तो अपने समुदाय को सावधान करने के लिए वापस लौट गये।

قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا
اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْٓ
اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٠﴾

(३०) कहने लगे, हे हमारे समुदाय के लोगो ! हमने निश्चित रूप से वह किताब सुनी है, जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के पश्चात अवतरित की गयी है, जो अपने से पूर्व की किताबों की पुष्टि करने वाली है, जो सत्य धर्म एवं सीधे मार्ग की ओर मार्गदर्शन करती है।

يٰقَوْمَنَآ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا
بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ
وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣١﴾

(३१) हे हमारे समुदाय के लोगो ! अल्लाह की ओर आमन्त्रित करने वाले का कहा मानो, उस पर ईमान लाओ[2] तो (अल्लाह) तुम्हारे कुछ पाप क्षमा कर देगा तथा तुम्हें दुखद यातना से शरण देगा।[3]

---

[1]अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से क़ुरआन का पाठ समाप्त हो गया।

[2]यह जिन्नों ने अपनी जाति को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (दूतत्व) पर ईमान लाने का आमंत्रण दिया। इससे पहले पवित्र क़ुरआन के संबंध में बतलाया कि यह तौरात के बाद एक और आकाशीय ग्रंथ है जो सत्य धर्म तथा संमार्ग की ओर मार्गदर्शन कराता है।

[3]यह ईमान लाने के वह लाभ बताये जो आख़िरत (परलोक) में उन्हें प्राप्त होंगे مِنْ ذُنُوبِكُمْ में مِن कुछ का अर्थ देने के लिए है, अर्थात कुछ पाप क्षमा कर देगा और यह वह पाप होंगे जिनका संबंध अल्लाह के अधिकार से होगा, क्योंकि बंदों के अधिकार क्षमा नहीं किये जायेंगे। यह आयत इस बात का प्रमाण है कि पुण्य एवं दण्ड तथा आदेशों एवं निषेधों में जिन्नों के लिये भी वही नियम हैं जो इंसानों के लिए हैं।

इस विषय में विद्वानों के बीच मतभेद है कि अल्लाह तआला ने जिन्नात में जिन्नों में से रसूल (संदेष्टा) भेजे अथवा नहीं। प्रत्यक्ष क़ुरआनी आयतों से यही ज्ञात होता है कि जिन्नात में कोई रसूल (ईशदूत) नहीं हुआ, सभी अम्बिया तथा रसूल इंसानों ही में हुए हैं।

﴿ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ﴾

"आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व भी बस्ती वालों में से हम पुरूषों को ही भेजते रहे जिनकी ओर प्रकाशना अवतरित करते थे।" (यूसुफ़-१०९)

The Ummah Technology Mission

وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा जो व्यक्ति अल्लाह की ओर आमन्त्रित करने वाले का कहा न मानेगा तो वह धरती पर कहीं (भागकर अल्लाह को) विवश नहीं सकता[1] तथा न अल्लाह के अतिरिक्त उसकी कोई सहायता करने वाला होगा,[2] यह लोग स्पष्ट पथभ्रष्टता में हैं।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾

(३३) क्या वह नहीं देखते कि जिस अल्लाह ने आकाशों तथा धरती को पैदा किया तथा उनके पैदा करने से वह न थका, वह नि:संदेह मृतकों को जीवित करने का सामर्थ्य रखता है ? क्यों न हो ? वह नि:संदेह प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्य रखता है।[3]

﴿وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِي الْاَسْوَاقِ﴾

"हमने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व जितने संदेष्टा भेजे सबके सब भोजन भी करते थे तथा बाज़ारों में भी चलते-फिरते थे।" (*अल-फ़ुरक़ान*-२०)

इन क़ुरआनी सूत्रों से स्पष्ट है कि जितने भी रसूल हुए वह मनुष्य थे। इसलिए के वे सब बस्ती के रहने वाले, बाज़ारों में चलने-फिरने वाले तथा सामान्य भोजन करने वाले थे जो मनुष्य की विशेषतायें हैं। इसलिए जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मानव के लिए रसूल थे तथा हैं, उसी प्रकार जिन्नों के रसूल भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही हैं तथा आपका उपदेश जिन्नों तक पहुँचाने का प्रबंध किया गया है, जैसाकि पवित्र क़ुरआन के इस स्थान से स्पष्ट है।

[1]अर्थात ऐसा नहीं हो सकता कि वह धरती के विस्तार में ऐसे गुम हो जाये कि अल्लाह की पकड़ में न आ सके।

[2]जो उसे अल्लाह की यातना से बचा लें। अर्थ यह हुआ कि न वह स्वयं अल्लाह की पकड़ से बचने पर समर्थ है न किसी दूसरे की सहायता से ऐसा संभव है।

[3]رؤيت (रूयत) से तात्पर्य मन की आँखों से देखना है। अर्थात क्या उन्होंने नहीं जाना ألم يعلموا अथवा ألم يتفكروا कि जो अल्लाह आकाश तथा धरती का रचयिता है, जिसके विस्तार तथा फैलाव की सीमा नहीं, तथा वह उनको बनाकर थका भी नहीं है क्या वह मृतकों को पुन: जीवन नहीं प्रदान कर सकता, निश्चय कर सकता है। इसलिए कि वह على كلّ شيئ قديرٌ के गुण से युक्त है।

The Ummah Technology Mission

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۴﴾

(३४) तथा वे लोग जिन्होंने कुफ़्र किया, जिस दिन नरक के समक्ष लाये जायेंगे (तथा उनसे कहा जायेगा) कि यह सत्य नहीं है ? तो उत्तर देंगे कि हाँ, क्यों नहीं ! सौगन्ध है हमारे प्रभु की ! (सत्य है) ।[1] (अल्लाह तआला) कहेगा कि अब अपने कुफ़्र के बदले यातना का स्वाद चखो ।[2]

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ؕ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۳۵﴾

(३५) तो (हे पैग़म्बर) तुम ऐसा धैर्य रखो, जैसा धैर्य साहसी रसूलों ने रखा तथा उनके लिए (यातना माँगने में) शीघ्रता न करो, [3] यह जिस रोज़ उस यातना को देख लेंगे जिसका वचन दिये जाते हैं तो (यह प्रतीत होने लगेगा कि) दिन की एक घड़ी ही (दुनिया में) ठहरे थे, [4] यह है संदेश पहुँचा देना, [5] कुकर्मियों के अतिरिक्त कोई नष्ट न किया जायेगा ।[6]

---

[1]वहाँ पाप स्वीकार ही नहीं करेंगे अपितु इस स्वीकार पर सौगंध खाकर बल देंगे । किन्तु उस समय का यह स्वीकार व्यर्थ के अलावा क्या हो सकता है ? आँखों से देख लेने पर स्वीकार नहीं तो क्या इंकार करेंगे ?

[2]इसलिए कि जब मानने का समय था तो माना नहीं । यह यातना उसी कुफ़्र तथा इंकार का बदला है जो अब तुम्हें भुगतना ही है ।

[3]यह मक्का के काफ़िरों के दुराचार के मुक़ाबले में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिलासा दी जा रही है तथा धैर्य रखने का उपदेश दिया जा रहा है ।

[4]क़यामत का भयानक दृश्य देखने के बाद उन्हें दुनिया का जीवन ऐसे ही प्रतीत होगा जैसे दिन की मात्र एक घड़ी यहाँ गुज़ारकर गये हैं ।

[5]यह लुप्त विषय का विधेय है, अर्थात هٰذَا الَّذِي وَعَظْتُهُم بِهِ بَلَاغٌ यह वह सदुपदेश अथवा शिक्षा है जिसे पहुँचाना तेरा काम है ।

[6]इस आयत में भी ईमानवालों के लिए शुभसूचना तथा प्रोत्साहन है कि परलौकिक विनाश मात्र उन लोगों का भाग है जोअल्लाह के अवज्ञाकारी तथा उसकी सीमा उलंघन करने वाले हैं ।

The Ummah Technology Mission

सूरतु मोहम्मद-४७

سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ

सूरः मुहम्मद* (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मदीने में अवतरित हुई इसमें अड़तीस आयतें एवं चार रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝١

(१) जिन लोगों ने कुफ़्र किया तथा अल्लाह के मार्ग से रोका[1] अल्लाह ने उनके कर्म व्यर्थ कर दिये।[2]

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝٢

(२) तथा जो लोग ईमान लाये एवं सत्कर्म किये तथा उस पर भी विश्वास किया जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर अवतरित की गयी है[3] तथा वास्तव में उनके प्रभु की ओर से सत्य (धर्म) भी वही है, अल्लाह

---

*इसका दूसरा नाम 'अलक़िताल' (युद्ध करना) भी है।

[1]कुछ ने इससे अभिप्राय कुरैश के काफ़िर लिये हैं तथा कुछ ने अहले किताब (यहूदियों एवं इसाईयों) को लिया है। किन्तु यह सामान्य है, इनके साथ सभी काफ़िर इसमें सम्मिलित हैं।

[2]इसका एक अभिप्राय तो यह है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरोध में जो षड़यंत्र रचे अल्लाह ने उसे विफल कर दिया तथा उन्हीं पर उसको उलट दिया। दूसरा अभिप्राय यह है कि उनमें जो कुछ नैतिक चरित्र पाये जाते थे, जैसे संबंधियों के साथ उपकार, बंदियों को स्वतंत्र करना, अतिथि-सत्कार आदि अथवा खानये काबा तथा हाजियों की सेवा। इनका कोई बदला उन्हें आख़िरत (परलोक) में नहीं मिलेगा, क्योंकि बिना ईमान कर्मों का प्रतिफल तथा पुण्य नहीं प्राप्त होता।

[3]ईमान में यद्यपि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रकाशना अर्थात क़ुरआन पाक पर ईमान लाना भी सम्मिलित है, किन्तु उसके महत्व तथा प्रधानता को अधिक प्रत्यक्ष तथा प्रकट करने के लिए उसकी अलग से भी चर्चा कर दी।

The Ummah Technology Mission

ने उनके पाप मिटा दिये[1] तथा उनकी अवस्था का सुधार कर दिया।[2]

ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ۝٣

(३) यह[3] इसलिए कि काफ़िरों ने असत्य का अनुकरण किया तथा ईमानवालों ने उस सत्य (धर्म) का अनुसरण किया, जो उनके रब की ओर से है। अल्लाह (तआला) लोगों को उनके हाल इसी प्रकार बताता है।[4]

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ

(४) तो जब काफ़िरों से तुम्हारी मुठभेड़ हो तो गर्दनों पर वार करो।[5] यहाँ तक कि जब उनको भलि-भाँति कुचल डालो तो अब अत्यन्त

---

[1]अर्थात ईमान लाने के पहले की त्रुटियों तथा आलस्य को क्षमा कर दिया। जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का भी कथन है कि इस्लाम पहले के सभी पापों को मिटा देता है। (सहीह जामे सग़ीर, अलबानी)

[2] بَالَهُم का अर्थ है حَالَهُم ، شَأنَهُم ، أمرَهُم सभी का अर्थ लगभग एक ही है। अभिप्राय यह है कि उन्हें पापों से बचाकर भलाई तथा अच्छाई के मार्ग पर लगा दिया, एक मोमिन की स्थिति के सुधार का यही सर्वोत्तम रूप है। यह अर्थ नहीं है कि धन सम्पत्ति के द्वारा उस की दशा सुधार दी, क्योंकि प्रत्येक ईमानदार को धन मिलता भी नहीं। इसके अलावा मात्र सांसारिक वैभव तथा धन, स्थिति सुधार का निश्चित साधन भी नहीं, अपितु इससे स्थिति के बिगाड़ की अधिक संभावना है। इसीलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने धन की अधिकता को पसंद नहीं किया।

[3] ذٰلِكَ यह (विषय) है अथवा इसकी ख़बर (विधेय) लुप्त है अर्थात बात ऐसी है। यह संकेत है उन धमकियों तथा वायदों की ओर जो काफ़िरों तथा मोमिनों के लिए वर्णित हुए।

[4]ताकि लोग उस दुषपरिणाम से बचें जो कफ़िरों का भाग्य है तथा संमार्ग अपनायें जिस पर चलकर ईमान वाले अनंत सफलता से अलिगिंत होंगे।

[5]जब दोनों गिरोहों की चर्चा कर दिया तो काफ़िरों तथा उन किताब वालों से जिनसे संधि न हो, जिहाद करने का आदेश दिया जा रहा है। हत्या करने की जगह गर्दन मारने का आदेश दिया कि इस अभियुक्त में काफ़िरों के साथ कड़ाई तथा कठोरता का अधिक प्रदर्शन है। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۙ فَإِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَإِمَّا فِدَاءً حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أَوْزَارَهَا ۚ ذَٰلِكَ ۖ وَلَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَانتَصَرَ مِنْهُمْ وَلَٰكِن لِّيَبْلُوَ بَعْضَكُم بِبَعْضٍ ۗ وَالَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَلَن يُضِلَّ أَعْمَالَهُمْ ﴿٤﴾

सुदृढ़ बन्दीगृह में कैद करो।[1] फिर (अधिकार है कि) उपकार करके स्वतन्त्र कर दो[2] अथवा कुछ अर्थदण्ड लेकर जब तक कि युद्ध (करने वाले) अपने हथियार रख दे।[3] यही आदेश है[4] तथा यदि अल्लाह चाहता तो स्वयं ही उनसे बदला ले लेता।[5] परन्तु (उसकी इच्छा यह है) कि तुम में से एक की परीक्षा दूसरे से ले ले।[6] और जो लोग अल्लाह के मार्ग में शहीद कर

---

[1]अर्थात भारी लड़ाई तथा उनको अत्याधिक हत करने के पश्चात जो उनके व्यक्ति हाथ लग जायें उन्हें बंदी बना लो तथा दृढ़ता से जकड़ कर रखो ताकि वह भाग न जायें।

[2] مَنٌّ (मन्न) का अभिप्राय है बिना अर्थदण्ड लिए उपकार स्वरूप मुक्त कर देना तथा فِداء (फ़िदाअ) का भावार्थ है कुछ बदला लेकर मुक्त करना। बंदियों के विषय में अधिकार दिया गया कि स्थिति को देखते हुए जो बात इस्लाम तथा मुसलमानों के लिए अधिक उत्तम हो वह अपनाई जाये।

[3]अर्थात काफ़िरों के साथ लड़ाई समाप्त होने पर, अथवा यह अभिप्राय है कि शत्रु पराजित होकर अथवा संधि करके हथियार रख दे अथवा इस्लाम प्रभावशाली हो जाये तथा कुफ़्र का अंत हो जाये। अभिप्राय यह है कि जब तक यह स्थिति न हो जाये काफ़िरों के साथ तुम्हारा युद्ध जारी रहेगा, जिसमें तुम उन्हें हत भी करोगे। बंदियों के संबंध में तुम्हें उक्त दोनों बातों का अधिकार है। कुछ कहते हैं कि यह आयत निरस्त है तथा सिवाय हत्या करने के कोई विकल्प शेष नहीं है, किन्तु सही बात यही है कि यह आयत निरस्त नहीं, लागू है तथा समय के इमाम (प्रमुख) को चारों बातों का अधिकार है, काफ़िरों को हत करे अथवा बंदी बनाये। बंदियों में से जिसे चाहे अथवा सबको चाहे उपकारस्वरूप मुक्त कर दे अथवा अर्थ दण्ड लेकर मुक्त कर दे। (फ़तहुल क़दीर)

[4]अथवा तुम इसी तरह करो, यह करो अथवा काफ़िरों के लिए नियम यही है।

[5]अर्थात काफ़िरों को विध्वस्त कर अथवा उन्हें यातना में डाल कर परीक्षा ले अर्थात तुम्हें उनसे युद्ध करने की आवश्यकता ही न होती।

[6]अर्थात तुम्हें एक-दूसरे के द्वारा परीक्षा ले ताकि वह जाने ले कि तुममें से उसकी राह में लड़ने वाले कौन हैं, ताकि उनको प्रतिफल एवं पुण्य प्रदान करे तथा उनके हाथों काफ़िरों को अपमानित तथा पराजित करे।

The Ummah Technology Mission

दिये जाते हैं अल्लाह उनके कर्म कदापि नष्ट नहीं करेगा।[1]

سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝٥

(५) उनका पथप्रदर्शन करेगा तथा उनकी अवस्था का सुधार कर देगा।[2]

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝٦

(६) तथा उन्हें उस स्वर्ग में ले जायेगा जिससे उन्हें परिचित कर दिया गया है।[3]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَنصُرُوا اللَّهَ يَنصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ۝٧

(७) हे ईमानवालो ! यदि तुम अल्लाह (के धर्म) की सहायता करोगे तो वह तुम्हारी सहायता करेगा[4] तथा तुम्हारे पग सुदृढ़ रखेगा।[5]

وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَأَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ۝٨

(८) तथा जो लोग काफ़िर हो गये उनका विनाश हो, अल्लाह ने उनके कर्मों को नष्ट कर दिया।

---

[1]अर्थात उनका प्रतिकार तथा पुण्य बर्बाद नहीं करेगा।

[2]अर्थात उनको ऐसे कर्मों का सौभाग्य देगा जिनसे उनके लिए स्वर्ग का मार्ग सरल हो जायेगा।

[3]अर्थात जिसे वह बिना मार्गदर्शन कराये पहचान लेंगे तथा जब वह स्वर्ग में प्रवेश करेंगे तो स्वयं ही अपने आवासों में चले जायेंगे। इसका समर्थन उस हदीस से भी होता है जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : सौगन्ध है उस शक्ति की जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं, एक स्वर्गीय (स्वर्ग के पात्र) को अपने स्वर्ग के आवास के रास्तों का उससे कहीं अधिक ज्ञान होगा जितना संसार में उसे अपने घर का था। (सहीह बुख़ारी, किताबुल रिक़ाक़, बाबुल किसासे यौमल क़यामः)

[4]अल्लाह की सहायता करने का अभिप्राय अल्लाह के धर्म की सहायता है, क्योंकि वह साधनों के अनुकूल अपने धर्म की सहायता मोमिन बंदों के द्वारा ही करता है। यह मोमिन बंदे अल्लाह के धर्म की रक्षा तथा उसका प्रचार-प्रसार करते हैं तो अल्लाह उनकी सहायता करता है अर्थात उन्हें काफ़िरों पर विजय तथा प्रभुत्व प्रदान करता है।

[5]युद्ध के समय تَثْبِيتُ أَقْدام (पगों को दृढ़ रखने) का अर्थ है रण क्षेत्रों में सहायता तथा सहयोग। कुछ कहते हैं कि इस्लाम अथवा पुल सिरात पर दृढ़ पग रखेगा।

The Ummah Technology Mission

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ۝٩

(९) यह इसलिए कि वह अल्लाह की अवतरित की हुई वस्तु से अप्रसन्न हुए,[1] तो अल्लाह (तआला) ने भी उनके कर्म नष्ट कर दिये।[2]

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۫ وَلِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ۝١٠

(१०) क्या उन लोगों ने धरती में चल-फिर कर इसका निरीक्षण नहीं किया कि उनसे पूर्व के लोगों का क्या परिणाम हुआ ?[3] अल्लाह ने उन्हें नष्ट कर दिया तथा कफ़िरों के लिए इसी प्रकार के दण्ड हैं।[4]

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ۝١١ ع

(११) वह इसलिए कि ईमानवालों का संरक्षक स्वयं अल्लाह (तआला) है तथा इसलिए कि काफ़िरों का कोई संरक्षक नहीं।[5]

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

(१२) जो लोग ईमान लाये तथा पुण्य के

---

[1]अर्थात क़ुरआन एवं ईमान को उन्होंने अप्रिय समझा।

[2]कर्मों से तात्पर्य वह कर्म हैं जो रूप में अच्छे कर्म हैं किन्तु ईमान न होने के कारण अल्लाह के सदन में उनका कोई फल तथा पुण्य नहीं मिलेगा।

[3]जिनके बहुत से अवशेष (निशान) उनके क्षेत्रों में विद्यमान हैं। क़ुरआन के अवतरण के समय कुछ विध्वस्त जातियों के खंडहर तथा अवशेष विद्यमान थे। अत: उन्हें चल-फिर कर उनके शिक्षाप्रद परिणाम को देखने के लिए ध्यान दिलाया गया कि उन्हें देखकर ही संभवत: ईमान लायें।

[4]यह मक्कावासियों को डराया जा रहा है कि तुम कुफ़्र से न रूके तो तुम्हें भी ऐसी ही यातना हो सकती है तथा विगत काफ़िर समुदायों की भाँति तुम्हें भी विध्वस्त किया जा सकता है।

[5]जैसेकि ओहुद के रण में काफ़िरों के नारों के उत्तर में मुसलमानों ने जो नारे लगाये, जैसे اُعْلُ هُبَلْ، اُعْلُ هُبَلْ (हुबल की जय) के उत्तर में اَللّٰهُ اَعْلٰى وَ اَجَلّ (अल्लाह ही सर्वोच्च तथा महान है)। काफ़िरों के इन्हीं नारों में से एक नारा لَنَا الْعُزّٰى وَلَا عُزّٰى لَكُمْ के उत्तर में मुसलमानों का नारा था اَللّٰهُ مَوْلَانَا وَلَا مَوْلٰى لَكُمْ "अल्लाह हमारा सहायक है, तुम्हारा कोई सहायक नहीं।" (सहीह बुख़ारी, ग़ज़वतु ओहुद)

The Ummah Technology Mission

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا یَتَمَتَّعُوْنَ وَیَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ﴿۱۲﴾

कार्य किये, उन्हें अल्लाह (तआला) निश्चित रूप से ऐसे बाग़ों में प्रवेश देगा जिनके नीचे नहरें प्रवाहित हैं तथा जो लोग काफ़िर हुए वह (साँसारिक ही) लाभ उठा रहे हैं तथा पशु के समान खा रहे हैं,[1] उनका (मूल) ठिकाना नरक है।

وَكَاَیِّنْ مِّنْ قَرْیَةٍ هِیَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْیَتِكَ الَّتِیْۤ اَخْرَجَتْكَ ۚ اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿۱۳﴾

(१३) तथा हमने कितनी बस्तियों को जो शक्ति में तेरी इस बस्ती से अधिक थीं, जिससे तुझे निकाला। हमने उन्हें नष्ट कर दिया है, जिनकी सहायता करने वाला कोई न उठा।

اَفَمَنْ كَانَ عَلٰی بَیِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُیِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوْۤا اَهْوَآءَهُمْ ﴿۱۴﴾

(१४) क्या तो वह व्यक्ति जो अपने प्रभु की ओर से प्रमाण पर हो उस व्यक्ति के समान हो सकता है, जिसके लिए उसके बुरे कार्य शोभनीय बना दिये गये हों तथा वह अपनी इच्छाओं का अनुसरण करता हो ?[2]

---

[1]अर्थात जैसे पशुओं को आहार तथा मैथुन की आवश्यकतायें पूरी करने के सिवा कोई काम नहीं होता, यही दशा काफ़िरों की है। उनके जीवन का उद्देश्य भी खाने-पीने के सिवा कुछ नहीं, आख़िरत (परलोक) से वह निश्चिन्त हैं। इससे प्रासंगिक संकेत मिलता है कि खड़े होकर खाना निषेध है जिसका आजकल भोजों में सामान्य रिवाज है, क्योंकि इस में भी पशुओं की सी समानता है जिसे काफ़िरों का आचरण बताया गया है। हदीसों में खड़े-खड़े पानी पीने से कड़े रूप से रोका गया है, जिससे खड़े-खड़े खाने की मनाही अत्यधिक सिद्ध होती है। अत: पशुओं के समान खड़े होकर खाने से बचना अनिवार्य है।

[2]बुरे कर्म से अभिप्राय शिर्क तथा पाप है। तात्पर्य वही है जो पहले अनेक स्थान पर गुज़र चुका है कि मोमिन, काफ़िर, मुशरिक, एकेश्वरवादी, सदाचारी एवं दुराचारी समान नहीं हो सकते। एक के लिये अल्लाह के सदन में अच्छा बदला तथा स्वर्ग के सुख हैं, जबकि दूसरे के लिए नरक का भयानक दण्ड है। आगामी आयत में दोनों का परिणाम बताया जा रहा है। पहले उस स्वर्ग की अच्छाईयाँ तथा विशेषतायें हैं जिनका वादा सदाचारियों से है।

The Ummah Technology Mission

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۖ فِيهَا أَنْهَارٌ مِّن مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ ۖ وَأَنْهَارٌ مِّن لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ ۚ وَأَنْهَارٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ ۖ وَأَنْهَارٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۖ وَلَهُمْ فِيهَا مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ

(१५) उस स्वर्ग की विशेषता जिसका वायदा सदाचारियों से किया गया है, यह है कि उसमें (शीतल) जल की सरितायें प्रवाहित हैं, जो दुर्गान्धित नहीं[1] तथा दूध की नदियाँ हैं जिनका स्वाद परिवर्तित नहीं हुआ[2] तथा मदिरा की नहरें हैं, जिनमें पीने वालों के लिए अत्याधिक स्वाद है[3] तथा अत्यन्त स्वच्छ मधु की नहरें हैं[4] तथा

---

[1] آسِن (आसिन) परिवर्तनशील। غير آسِن अर्थात अपरिवर्तनशील। अर्थात संसार में तो पानी एक स्थान पर कुछ देर पड़ा रह जाये तो उसका रंग बदल जाता है तथा उसकी गंध एवं स्वाद में परिवर्तन आ जाता है, जिससे वह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो जाता है। स्वर्ग के जल की यह विशेषता होगी कि उसमें कोई बदलाव नहीं होगा, अर्थात उसकी गंध तथा स्वाद में कोई परिवर्तन न होगा; जब पीओ ताज़ा, रूचिकर एवं स्वास्थ्य वर्धक। दुनिया का पानी जब ख़राब हो सकता है तो इसलिए धर्मविधान ने जल के विषय में कहा है कि यह उस समय तक पाक (पवित्र) है जब तक उसका रंग, स्वाद अथवा गंध न बदले, क्योंकि रंग या गंध बदलने की दशा में पानी अपवित्र (अशुद्ध) हो जायेगा।

[2] जिस प्रकार संसार में वह दूध कभी ख़राब हो जाता है जो गायों, भैंसों तथा बकरियों आदि के थनों से निकलता है, स्वर्ग का दूध चूँकि इस प्रकार जीवों के थनों से नहीं निकलेगा बल्कि उसकी नहरें होंगी, इसलिए जैसे वह अति स्वादिष्ट होगा ख़राब होने से भी सुरक्षित रहेगा।

[3] संसार में जो मदिरा मिलती है वह सामान्यत: कड़वी कटुस्वाद तथा दुर्गन्धित होती है। इसके अतिरिक्त, उसे पीकर इंसान साधारणत: भ्रांत मत हो जाता है, बकवाद करता है तथा अपने शरीर तक की सुध नहीं रखता। स्वर्ग की मदिरा देखने में सुन्दर, स्वाद में उत्तम तथा अत्यंत सुगंधित होगी, उसे पीकर कोई इंसान बहकेगा न किसी बोझ का संवेदन करेगा। बल्कि ऐसा स्वाद एवं आनन्द महसूस करेगा जिसकी कल्पना इस संसार में संभव नहीं। जैसे दूसरे स्थान पर कहा है :

﴿لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنزَفُونَ﴾

"न उसे चक्कर आयेगा न मत मारी जायेगी।" (*अस्साफ़्फ़ात*-४७)

[4] अर्थात मधु में जिन वस्तुओं के मिश्रण की संभावना होती है जिसे दुनिया में साधारणत: देखा जाता है, स्वर्ग में ऐसी कोई संभावना न होगी, अत्यन्त साफ एवं स्वच्छ होगा, क्योंकि यह दुनिया की भाँति मधुमक्खियों से प्राप्त नहीं होगा अपितु उसकी भी नहरें

The Ummah Technology Mission

وَمَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ ۖ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ﴿١٥﴾

उनके लिए वहाँ पर हर प्रकार के मेवे (फल) हैं और उनके प्रभु की ओर से क्षमा है, क्या ये उसके समतुल्य हैं जो सदैव अग्नि में रहने वाले हैं तथा जिन्हें गर्म उबलता हुआ पानी पिलाया जायेगा, जो उनकी आँतों को टुकड़े-टुकड़े कर देगा।[1]

وَمِنْهُم مَّن يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا مِنْ عِندِكَ قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ آنِفًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ﴿١٦﴾

(१६) तथा उनमें कुछ (ऐसे भी हैं कि) तेरी ओर कान लगाते हैं, यहाँ तक कि जब तेरे पास से जाते हैं तो ज्ञानवालों से (आलस्य एवं भोंदेपन के कारण) पूछते हैं कि उसने अभी क्या कहा था ?[2] यही लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मोहर लगा दी है तथा वे अपनी इच्छाओं का अनुगमन करते हैं।

وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى

(१७) तथा जो लोग सन्मार्ग प्राप्त हैं, अल्लाह

होंगी। इसी कारण हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जब तुम प्रार्थना करो तो "जन्नतुल फ़िरदौस" के लिए प्रार्थना करो, इसलिए कि यह स्वर्ग की मध्यम तथा सर्वोच्च श्रेणी है तथा वहीं से स्वर्ग की नहरें फूटती हैं तथा उसके ऊपर रहमान का आसन है। (सहीह बुख़ारी किताबुल जिहाद, बाबु दर्जातिल मुजाहिदीन फ़ी सबीलिल्लाह)

[1]अर्थात जिनको स्वर्ग वह में उच्चतम श्रेणी प्राप्त होगी जिनका वर्णन किया गया, क्या वह ऐसे नरकवासियों के समान हैं जिनकी यह दुर्दशा होगी ? स्पष्ट बात है कि ऐसा नहीं होगा। अपितु एक उच्च स्थान में होगा तथा दूसरा नरक की तहों में, एक सुखों में आनंदित होगा तथा दूसरा नरक की कड़ी यातना भुगत रहा होगा, एक अल्लाह का अतिथि होगा जहाँ विभिन्न प्रकार की सुख-सुविधायें उनके अतिथि-सत्कार के लिए होंगी तथा दूसरा बंदी, जहाँ उसको खाने के लिए थूहड़ जैसा कड़ुवा-कसैला खाना तथा पीने के लिए खौलता पानी मिलेगा।

[2]यह मुनाफ़क़ीन (द्वयवादियों) का वर्णन है। चूँकि उनका विचार सही नहीं होता था, इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बातें भी उन्हें समझ में नहीं आती थीं। वह सभा से बाहर आकर प्रश्न करते कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क्या फ़रमाया ?

The Ummah Technology Mission

وَاٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ﴿١٧﴾

(तआला) ने उन्हें संमार्ग में और बढ़ा दिया है तथा उन्हें उनका सदाचार प्रदान किया है।[1]

فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ﴿١٨﴾

(१८) तो क्या यह क़यामत की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वह उनके पास सहसा आ जाये। नि:संदेह उसके लक्षण तो आ चुके हैं,[2] फिर जब उनके पास क़यामत आ जाये उन्हें शिक्षा प्राप्त करना कहाँ होगा ?[3]

فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ

(१९) तो (हे नबी), आप विश्वास कर लें कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई (सच्चा) उपास्य नहीं[4] तथा अपने पापों की क्षमा माँगा करें तथा

---

[1]अर्थात जिनका मन संमार्ग प्राप्त करने का होता है तो अल्लाह उन्हें सन्मति भी प्रदान करता है तथा उनको उस पर अटल भी रखता है।

[2]अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का भेजा जाना स्वयं क़यामत के समीप होने का एक लक्षण है। जैसाकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी फ़रमाया :

«بُعِثْتُ أَنَا وَالسَّاعَةُ كَهَاتَيْنِ».

"मेरा आगमन तथा प्रलय इन दो अंगुलियों के समान हैं।" (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरः *नाज़िआत*)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इशारा करके स्पष्ट किया कि जिस प्रकार यह दोनों अंगुलियाँ परस्पर मिली हुई हैं, इसी प्रकार मेरे तथा क़यामत के मध्य दूरी नहीं है। अथवा यह कि जैसे एक अंगुली दूसरी अंगुली से तनिक-सा आगे है इसी प्रकार क़यामत मेरे थोड़ा-सा बाद है।

[3]अर्थात जब क़यामत सहसा आ जायेगी तो काफ़िर कैसे शिक्षा ग्रहण करेंगे ? तात्पर्य यह है कि उस समय वह यदि क्षमा भी माँगेंगे तो स्वीकार्य नहीं होगी। अत: यदि तौबा (क्षमा-याचना) करनी हो तो यही समय है, नहीं तो वह समय भी आ सकता है कि उनकी तौबा भी लाभप्रद न होगी।

[4]अर्थात इस विश्वास पर अडिग तथा स्थिर रहें, क्योंकि यही तौहीद तथा अल्लाह का आज्ञापालन भलाई का मूलाधार है तथा इससे हटना अर्थात शिर्क तथा अवज्ञा बुराई का मूलाधार है।

The Ummah Technology Mission

وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ﴿١٩﴾

ईमानवाले पुरूषों एवं ईमानवाली महिलाओं के पक्ष में भी।[1] अल्लाह (तआला) तुम्हारे आवागमन तथा निवास स्थान को भली-भाँति जानता है।[2]

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ
سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ
مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ
رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ
يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ
مِنَ الْمَوْتِ ؕ فَاَوْلٰى لَهُمْ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा जो लोग ईमान लाये वे कहते हैं कि कोई सूरः क्यों अवतरित नहीं की गई,[3] फिर जब कोई स्पष्ट अर्थ वाली सूरः[4] अवतरित की जाती है तथा उसमें धर्मयुद्ध का वर्णन किया जाता है, तो आप देखते हैं कि जिनके दिलों में रोग है, वे आपकी ओर इस प्रकार देखते हैं कि जैसे उस व्यक्ति की दृष्टि होती है जो मृत्यु से मूर्छित हो गया हो,[5] बस अति उत्तम था उनके लिये।

---

[1]इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क्षमा माँगने का आदेश दिया गया है अपने लिए भी तथा ईमानदारों के लिए भी। इस्तिग़फ़ार (क्षमा माँगने) का बड़ा महत्व तथा प्रधानता है। हदीसों में इस पर बड़ा बल दिया गया है। एक हदीस (कथन) में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया :

«يَاأَيُّهَا النَّاسُ! تُوبُوا إِلَى رَبِّكُمْ فَإِنِّي أَسْتَغْفِرُ اللهَ وأَتُوبُ إِلَيهِ فِي اليَومِ أَكْثَرَمِنْ سَبْعِينَ مَرَّةً» .

"लोगों, अल्लाह से तौबा एवं इस्तिग़फ़ार (क्षमा-याचना) किया करो, मैं भी अल्लाह से प्रतिदिन सत्तर बार से अधिक तौबा-इस्तिग़फ़ार करता हूँ।" (सहीह बुख़ारी, बाबु इस्तिग़फ़ारिन नबीये फिल यौमि वल लैलति)

[2]अर्थात दिन में तुम जहाँ फिरते तथा जो कुछ करते हो और रात में जहाँ विश्राम करते एवं स्थान ग्रहण करते हो, अल्लाह तआला (परमेश्वर) जानता है। अर्थ यह है कि रात-दिन की कोई गतिविधि अल्लाह से छिपी नहीं है।

[3]जब जिहाद (धर्मयुद्ध) का आदेश नहीं उतरा था तो जो मुसलमान जिहाद की भावना से पूर्ण थे, जिहाद में रूचि रखते थे तथा कहते थे कि इस विषय में कोई सूरः क्यों नहीं अवतरित की जाती ? अर्थात जिसमें जिहाद की अनुमति हो।

[4]अर्थात ऐसी सूरः जो निरस्त न हो।

[5]यह उन अवसरवादियों की चर्चा है जिनको जिहाद का आदेश बड़ा कठिन लगता था। उनमें कभी कम ईमान वाले भी सम्मिलित हो जाते थे। सूरः निसा आयत ७७ में भी यह विषय वर्णित है।

The Ummah Technology Mission

طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۚ فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۚ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿٢١﴾

(२१) आज्ञापालन करना तथा अच्छी बातें कहना,[1] फिर जब कार्य निर्धारित हो जाये,[2] तो यदि वे अल्लाह के साथ सच्चे रहें,[3] तो उनके लिए अच्छाई है।[4]

فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा तुमसे यह भी दूर (असंभव) नहीं कि यदि तुमको राज्य मिल जाये तो तुम धरती पर उपद्रव उत्पन्न कर दो[5] तथा रिश्ते-नाते तोड़ डालो।

---

[1]अर्थात जिहाद के आदेश से घबराने की जगह उनके लिए उत्तम था कि सुनने तथा मानने का प्रदर्शन करते तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संबंध में असभ्य की जगह अच्छी बात कहते। यह اَوْلٰى (औला) اَجْدَر (अजदर) के अर्थ में है जिसे इब्ने कसीर ने अपनाया है। कुछ ने اُولٰى (औला) को धमकी एवं चेतावनी का शब्द अर्थात अभिशाप माना है। अर्थ है उनका विनाश निकट है, अभिप्राय है उनकी कायरता तथा अवसरवाद उनके विनाश का कारण बनेगा। इस आधार पर طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ पूर्ववर्ती वाक्य होगा तथा उसका विधेय लुप्त होगा خَيْرٌ لَّكُمْ। (फ़तहुल क़दीर, ऐसरूत्तफ़ासीर)

[2]अर्थात जिहाद की तैयारी पूरी हो जाये तथा जिहाद का समय आ जाये।

[3]अर्थात अब भी अवसरवाद को त्याग कर अपने मन को अल्लाह के लिए शुद्ध कर लें, अथवा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जो लड़ने की प्रतिज्ञा करते हैं, उसमें अल्लाह के साथ सच्चे रहें।

[4]अर्थात अवसरवाद तथा विरोध के मुक़ाबिले में क्षमा याचना तथा विशुद्धता का प्रदर्शन उत्तम है।

[5]एक-दूसरे की हत्या करके, अर्थात अधिकार तथा आधिपत्य का ग़लत प्रयोग करो। इमाम इब्ने कसीर ने تَوَلَّيْتُمْ का अनुवाद किया है। "तुम जिहाद (धर्मयुद्ध) से फिर जाओ तथा उससे विमुख हो जाओ" अर्थात फिर तुम मूर्खता के युग की ओर लौट जाओ तथा परस्पर रक्तपात तथा सम्बन्ध-विच्छेद करो। इसमें धरती में उपद्रव का साधारणत: तथा नाता तोड़ने का विशेष रूप से निषेध है और धरती में सुधार एवं नाता जोड़ने पर बल दिया गया है, जिसका अभिप्राय है कि संबन्धियों के साथ वचन से, कर्म से तथा धन व्यय करके अच्छा व्यवहार करो। हदीसों में भी इस पर बहुत बल दिया गया है तथा इसकी बहुत प्रधानता आयी है।

The Ummah Technology Mission

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعْمَىٰ أَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾

(२३) यह वही लोग हैं जिन पर अल्लाह की धिक्कार है तथा (अल्लाह ने) जिनकी सुनने की शक्ति तथा आँखों की ज्योति छीन ली है।[1]

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾

(२४) क्या यह क़ुरआन में चिन्तन-मनन नहीं करते ? अथवा उनके दिलों पर उनके ताले लग गये हैं ?[2]

إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٥﴾

(२५) जो लोग अपनी पीठ के बल फिर गये इसके पश्चात कि उनके लिए मार्गदर्शन स्पष्ट हो चुका।[3] नि:संदेह शैतान ने उन के लिए (उन के कार्यों को) शोभनीय कर दिया है तथा उन्हें ढील दे रखी है।[4]

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ

(२६) यह इसलिए[5] कि उन्होंने उन लोगों से जिन्होंने अल्लाह की अवतरित की हुई (प्रकाशना) को बुरा समझा,[6] यह कहा कि हम भी निकट

---

[1]अर्थात ऐसे लोगों के कानों को (सत्य सुनने से) बहरा तथा आँखों को (सत्य देखने से) अंधा कर दिया है, यह परिणाम है उनके उपरोक्त कुकर्मों का।

[2]जिसके कारण क़ुरआन के अर्थ तथा भावार्थ उनके दिलों के भीतर नहीं जाते।

[3]इससे अभिप्राय मुनाफ़िक़ीन (द्वयवादी) ही हैं, जिन्होंने जिहाद (धर्मयुद्ध) से भाग कर अपने कुफ़्र तथा धर्म परिवर्तन को व्यक्त कर दिया।

[4]इस क्रिया का कर्ता भी शैतान है। अर्थात مَدَّلَهُمْ فِي الأَمَلِ و وَعَدَهُمْ طُولَ العُمُرِ अर्थात उन्हें लम्बी कामनाओं तथा इस धोखे में डाल दिया कि अभी तो तुम्हारी लम्बी आयु है, क्यों लड़ाई में अपने प्राण गँवाते हो ? अथवा कर्ता अल्लाह है, अल्लाह ने उन्हें ढील दी अर्थात तुरन्त उन्हें नहीं पकड़ा।

[5]'ये' से तात्पर्य उनका इस्लाम धर्म से फिर जाना है।

[6]अर्थात अवसरवादियों ने मुश्रिकों से अथवा यहूदियों से कहा।

The Ummah Technology Mission

فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾

भविष्य में कुछ कार्यों में [1] तुम्हारा कहा मानेंगे, तथा अल्लाह उनकी गुप्त बातों को भली-भाँति जानता है।[2]

فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾

(२७) तो उनकी कैसी (दुर्गत) होगी, जब फ़रिश्ते उनके प्राण निकालते हुए उनके मुख तथा कमर पर मारेंगे।[3]

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾

(२८) यह इस कारण कि ये उस मार्ग पर चले जिससे (उन्होंने) अल्लाह (तआला) को क्रोधित कर दिया तथा उन्होंने उसकी प्रसन्नता को बुरा जाना तो अल्लाह ने उनके कर्मों को अकारत कर दिया।

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ اَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾

(२९) क्या उन लोगों ने जिनके दिलों में रोग है, यह समझ रखा है कि अल्लाह उनके कपट को प्रकट ही न करेगा।[4]

---

[1] अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा आप के लाये हुए धर्म के विरोध में।

[2] जैसे दूसरे स्थान पर कहा :

﴿وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ﴾

"अल्लाह उनकी रातों की बात-चीत लिख रहा है।" (अन-निसा-८१)

[3] यह काफ़िरों की उस समय की स्थिति वर्णन की गई है जब फ़रिश्ते (यमदूत) उनके प्राण निकालते हैं। प्राण फ़रिश्तों से बचने के लिए शरीर में छुपते तथा इधर-उधर भागते हैं, तो फ़रिश्ते कड़ाई से उसे पकड़ते, खींचते और मारते हैं। यह विषय इससे पहले *सूरः अनआम-९३* तथा *सूरः अंफाल-५०* में भी गुज़र चुका है।

[4] أَضْغَان (अज़्गान) ضِغْنٌ (जिग्न) का बहुवचन है। जिसका अर्थ द्वेष, कपट तथा बैर है। मुनाफ़िकों (अवसरवादियों) के दिलों में इस्लाम तथा मुसलमानों के विरोध में जो ईर्ष्या तथा द्वेष था, उसके हवाले से कहा जा रहा है कि क्या यह समझते हैं कि अल्लाह तआला उसे व्यक्त करने पर समर्थ नहीं है ?

The Ummah Technology Mission

وَلَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ؕ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ﴿۳۰﴾

(३०) तथा यदि हम चाहते तो उन सबको तुझे दिखा देते तो तू उनके मुख से ही उनको पहचान लेता,[1] तथा नि:संदेह तू उन्हें उनकी बात के ढंग से पहचान लेगा, [2] तुम्हारे सारे कार्य अल्लाह को ज्ञात हैं।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَاَخْبَارَكُمْ ﴿۳۱﴾

(३१) नि:संदेह हम तुम्हारी परीक्षा लेंगे ताकि तुममें से धर्मयुद्ध करने वालों तथा धैर्य रखने वालों को देख लें। तथा हम तुम्हारी अवस्थाओं का भी निरीक्षण कर लें।[3]

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى ۙ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ

(३२) नि:संदेह जिन लोगों ने कुफ़्र किया तथा अल्लाह के मार्ग से लोगों को रोको तथा रसूल का विरोध किया इसके पश्चात कि उनके लिए मार्गदर्शन स्पष्ट हो चुका, यह कदापि-कदापि अल्लाह की कोई हानि न

---

[1]अर्थात एक-एक व्यक्ति का चिन्ह प्रकार बता देते कि प्रत्येक मुनाफ़िक़ को देखकर स्पष्ट रूप से पहचान लिया जाता। किन्तु सभी मुनाफ़िक़ों (द्वयवादियों) के लिए अल्लाह ने ऐसा इसलिए नहीं किया कि यह अल्लाह के लिए दोषों पर पर्दा डालने के गुण के प्रतिकूल है। वह साधारणत: पर्दा डालता है, पर्दा फाश नहीं करता। दूसरे, उसने इंसानों को प्रत्यक्ष पर निर्णय करने का तथा अन्त:करण के मामला को अल्लाह के हवाले करने का आदेश दिया है।

[2]हाँ, उसकी शैली तथा बात करने का ढंग ही ऐसा होता है जो उनके अंत:करण का संकेत होता है, जिससे उसे पैग़म्बर तो अवश्य पहचान सकता है। यह साधारणत: देखा जाता है कि इंसान के मन में जो कुछ होता है, वह उसे लाख छुपाये किन्तु उसकी बात, चाल-चलन तथा कुछ विशेष स्थितियाँ उसके मन के भेद को व्यक्त कर देती हैं।

[3]अल्लाह तआला के ज्ञान में तो पहले ही से सब कुछ है। यहाँ ज्ञान से अभिप्राय उसका घटित एवं प्रकट होना है ताकि दूसरे भी जान लें तथा देख लें। इमाम इब्ने कसीर ने इस का भावार्थ वर्णन किया है حتّى نَعلَم وقُوعَه 'हम उसके होने को जान लें।' इब्ने अब्बास रज़ी अल्लाहु अन्हुमा इस प्रकार के शब्दों का अनुवाद करते थे لِنَرى 'ताकि हम देख लें' (इब्ने कसीर) और यही अर्थ अधिक शुद्ध है।

The Ummah Technology Mission

وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾

करेंगे |[1] शीघ्र ही उनके कर्म वह नष्ट कर देगा |[2]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْٓا اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾

(३३) हे ईमानवालो ! अल्लाह का आज्ञापालन करो तथा रसूल का कहा मानो तथा अपने कर्मों को नाश न करो |[3]

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾

(३४) नि:सन्देह जिन लोगों ने कुफ़्र किया तथा अल्लाह के मार्ग से (अन्यों को) रोका, फिर कुफ़्र की अवस्था में ही मर गये (विश्वास कर लो कि) अल्लाह उनको कदापि क्षमा न करेगा |

فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْٓا اِلَى السَّلْمِ ۖ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۗ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ

(३५) तो तुम क्षीण बन कर सन्धि की प्रार्थना पर न उतर आओ जबकि तुम ही (विजयी एवं) उच्च रहोगे |[4] तथा अल्लाह तुम्हारे साथ

---

[1]बल्कि अपना ही बेड़ा डूबा देंगे |

[2]क्योंकि ईमान के बिना अल्लाह के निकट किसी कर्म का कोई महत्व नहीं | ईमान तथा शुद्धता ही किसी भी अच्छे कर्म को इस योग्य बनाता है कि अल्लाह के पास उसका पुण्य मिले |

[3]अर्थात मुनाफ़िक़ों तथा धर्मभ्रष्टों की भाँति द्वयवाद तथा धर्मभ्रष्ट करके अपने कर्मों को नष्ट न करो | यह मानो इस्लाम पर स्थिर (अडिग) रहने का आदेश है | कुछ ने पाप तथा कुकर्म को भी कर्म के नष्ट होने का कारण बताया है | इसीलिए मोमिनों के गुणों में एक गुण यह भी वर्णन किया गया है कि वह पाप तथा कुकर्म से बचते हैं | (*अन्नज्म-३२*) इस आधार पर इसमें पाप तथा कुकर्म से बचने पर बल है | इस आयत से यह भी ज्ञात हुआ कि कोई कर्म कितना ही उत्तम क्यों न लगता हो यदि अल्लाह तथा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज्ञापालन की परिधि से बाहर हो तो व्यर्थ तथा अकारथ है |

[4]अभिप्राय यह है कि जब तुम संख्या तथा शक्ति में शत्रु पर प्रभुत्वशाली तथा उच्च हो तो ऐसी दशा में काफ़िरों के साथ संधि तथा निर्बलता का प्रदर्शन न करो, अपितु कुफ़्र पर ऐसी कड़ी मार लगाओ कि अल्लाह का धर्म ऊँचा हो जाये | प्रभुत्वशाली तथा भारी होते

The Ummah Technology Mission

وَلَن يَتِرَكُمْ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾

है ।[1] (अपने ज्ञान द्वारा) असंभव है कि वह तुम्हारे कर्म नष्ट कर दे ।[2]

إِنَّمَا الْحَيَوٰةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۖ وَإِن تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ أُجُورَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾

(३६) वास्तव में साँसारिक जीवन तो खेलकूद है,[3] तथा यदि तुम ईमान लाओगे और संयम अपनाओगे तो अल्लाह तुम्हें तुम्हारे कर्मफल देगा तथा वह तुमसे तुम्हारे धन नहीं माँगता ।[4]

إِن يَسْـَٔلْكُمُوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوا وَيُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾

(३७) यदि वह तुम से तुम्हारा धन माँगे तथा बल देकर माँगे तो तुम उससे कंजूसी करने लगोगे तथा वह तुम्हारे खोट को प्रकट

हुए कुफ्र के साथ संधि का अभिप्राय कुफ्र के प्रभाव को बढ़ाने में सहायता देना है। यह एक बड़ा अपराध है। इसका मतलब यह नहीं कि काफ़िरों के साथ संधि करने की अनुमति नहीं है। यह अनुमति निश्चित रूप से है किन्तु प्रत्येक समय नहीं, मात्र उस समय जब मुसलमान संख्या में कम तथा साधनों में नीचे हों। ऐसी अवस्था में लड़ाई की अपेक्षा संधि में अधिक लाभ है ताकि इस अवसर का लाभ प्राप्त कर मुसलमान भरपूर तैयारी कर लें, जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का के नास्तिकों से युद्ध न करने का दस वर्ष के लिए समझौता किया था।

[1]इसमें मुसलमानों के लिए काफ़िरों पर भारी विजय तथा सहायता की शुभ सूचना है। जिसके साथ अल्लाह हो उसे कौन पराजित कर सकता है ?

[2]अपितु वह उस पर पूरा फल देगा तथा उसमें कोई कमी नहीं करेगा।

[3]अर्थात एक धोखा है। उसकी किसी चीज़ का आधार है न उसको स्थिरता और न उसका विश्वास।

[4]अर्थात वह तुम्हारे धनों से निस्पृह है। इसलिए उसने ज़कात (धर्मदान) में तुमसे पूरे माल की माँग नहीं की। अपितु एक अति अल्पभाग का अर्थात केवल ढाई प्रतिशत की, वह भी एक वर्ष के पश्चात अपनी आवश्यकता से अधिक होने पर। इसके अतिरिक्त उसका उद्देश्य भी, अपने ही भाई-बन्धुओं की सहायता तथा हित है, न कि अल्लाह तुम्हारे माल से अपने राज्य का ख़र्च पूरा करता है।

The Ummah Technology Mission

कर देगा।[1]

هَاَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ۗ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا اَمْثَالَكُمْ ﴿٣٨﴾

(३८) सावधान ! तुम वह लोग हो कि अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने के लिए बुलाये जाते हो[2] तो तुम में से कुछ कंजूसी करने लगते हैं,[3] तथा जो कंजूसी करता है वह वस्तुत: अपने आप से कंजूसी करता है। अल्लाह (तआला) निस्पृह है तथा तुम मुहताज हो,[4] तथा यदि तुम विमुख हो जाओ[5] तो वह तुम्हारे बदले तुम्हारे अतिरिक्त अन्य लोगों को लायेगा जो फिर तुम जैसे न होंगे।[6]

---

[1]अर्थात यदि आवश्यकता से अधिक पूरे माल की माँग करे, वह भी दुराग्रह के साथ बल देकर तो यह इंसानी स्वभाव है कि तुम भी कंजूसी करोगे तथा इस्लाम के विरूद्ध अपनी शत्रुता एवं बैर का प्रदर्शन भी।

[2]अर्थात कुछ भाग ज़कात स्वरूप तथा कुछ अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करो।

[3]अर्थात स्वयं ही को अल्लाह की राह मे ख़र्च करने के पुण्य से वंचित रखता है।

[4]अर्थात अल्लाह तुम्हें ख़र्च करने का प्रलोभन (प्रोत्साहन) इसलिए नहीं देता कि उसे तुम्हारे माल की आवश्यकता है। नहीं, वह तो अपेक्षामुक्त है, निस्पृह है। वह तो तुम्हारे ही लाभ के लिए यह आज्ञा देता है कि एक तो तुम्हारे अपने मनों की शुद्धि हो। दूसरे, निर्धनों की आवश्यकता पूरी हो। तीसरे, तुम शत्रु पर प्रभावशाली तथा उच्च रहो। अत: अल्लाह की सहायता एवं दया की आवश्यकता तुमको है, न कि अल्लाह को।

[5]अर्थात इस्लाम से कुफ़्र की ओर फिर जाओ।

[6]अपितु तुमसे अधिक अल्लाह तथा रसूल के आज्ञापालक तथा अल्लाह की राह में ख़र्च करने वाले होंगे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उनके विषय में पूछा गया तो आप ने आदरणीय सलमान फ़ारसी रज़ी अल्लाहु अन्हु के कंधे पर हाथ रखकर फ़रमाया : "इससे अभिप्राय यह तथा इसकी जाति है। सौगंध है उसकी जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं, यदि ईमान सुरय्या (कृत्तिका) नक्षत्र (तारे) पर हो तो उसे फ़ारस के कुछ लोग प्राप्त कर लेंगे।" (तिर्मिज़ी, अलबानी ने अस्सहीहा में वर्णन किया ३\१४)

The Ummah Technology Mission

سُوْرَةُ الْفَتْحِ

सूरतुल फ़त्ह-४८

सूर: फ़त्ह * मदनी सूर: है। इसमें उन्तीस आयतें तथा चार रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ①

(१) नि:संदेह (हे नबी)! हमने आपको एक खुली विजय प्रदान की है।

لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ

(२) ताकि जो कुछ तेरे पाप पूर्व में हुए तथा

---

*६ हिज्री में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा लगभग एक हज़ार चार सौ सहाबा उमरे के लिए मक्का गये। किन्तु मक्का के निकट हुदैबिया के स्थान पर काफ़िरों ने आपको रोक दिया। तथा उमरा नहीं करने दिया। आपने आदरणीय उस्मान रज़ी अल्लाहु अन्हु को अपना प्रतिनिधि बनाकर मक्का भेजा ताकि वह कुरैश के प्रमुखों से बात कर के उन्हें मुसलमानों को उमरा करने की आज्ञा देने पर तैयार करें। किन्तु आदरणीय उस्मान रज़ी अल्लाहु अन्हु के मक्का जाने के पश्चात उनकी शहादत (हत्या) की अफवाह फैल गई, जिस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से आदरणीय उस्मान रज़ी अल्लाहु अन्हु का बदला लेने के लिए "बैअत" प्रतिज्ञा करायी। जो 'बैअते रिज़्वान' कहलाती है। यह अफ़वाह ग़लत सिद्ध हुई, फिर भी काफ़िरों ने अनुमति नहीं दी तथा मुसलमानों ने आगामी वर्ष के वचन पर वापसी का इरादा कर लिया। वहीं सिर भी मुंडा लिये तथा बलि भी कर लिया। उस के अतिरिक्त काफ़िरों से कुछ अन्य बातों पर समझौता हुआ जिन्हें सहाबा की बहुमत नापसन्द करती थी। किन्तु नबी की निगाह ने इसके दूरगामी प्रभाव का अनुमान लगाते हुए काफ़िरों की शर्तों पर ही समझौते को उत्तम समझा। हुदैबिया से मदीने की ओर वापस आते हुए मार्ग में यह सूर: अवतरित हुई, जिसमें संधि को खुली विजय कहा गया, क्योंकि यह संधि मक्का की विजय का आधार सिद्ध हुई तथा इसके दो वर्ष बाद ही मुसलमानों ने मक्का में विजेता के रूप में प्रवेश किया। इसी कारण कुछ सहाबा कहते थे कि तुम मक्का की विजय को विजय मानते हो तथा हम हुदैबिया के समझौते को विजय गिनते हैं। तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस सूर: के संबन्ध में फ़रमाया कि आज की रात मुझ पर वह सूरत अवतरित हुई है जो मुझे संसार तथा उसकी प्रत्येक वस्तु से अधिक प्रिय है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मगाज़ी, बाबु गज़्वतिल हुदैबिया व तफ़सीरे *सूरतिल फ़त्ह*)

The Ummah Technology Mission

مِنْ ذَنْۢبِكَ وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۙ﴿۲﴾

जो पीछे हुए सबको अल्लाह (तआला) क्षमा कर दे[1] तथा तुझ पर अपने उपकार पूर्ण कर दे[2] तथा तुझे सीधे मार्ग पर चलाये।[3]

وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ﴿۳﴾

(३) तथा आपको एक शक्तिशाली सहायता प्रदान करे।

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ؕ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ

(४) वही है जिसने मुसलमानों के हृदय में शान्ति (एवं आत्मविश्वास) डाल दिया, ताकि वे अपने ईमान के साथ ही साथ और भी ईमान में बढ़ जायें।[4] तथा आकाशों एवं धरती की (समस्त) सेनायें अल्लाह ही की हैं,[5] तथा

---

[1]इससे तात्पर्य प्रथम त्याग के विषय अथवा वह विषय हैं जो आपने अपनी समझ तथा अनुमान से किये किन्तु अल्लाह ने उन्हें पसन्द नहीं किया, जैसे अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम की घटना है, जिस पर सूरः 'अबस' उतरी। यह विषय तथा बातें यद्यपि गुनाह (पाप) तथा निर्दोषता के विपरीत नहीं, किन्तु आपकी मर्यादा (महानता) को देखते हुए उन्हें भी आलस्य मान लिया गया जिस पर क्षमा की घोषणा की जा रही है। لِيَغْفِرَ में लाम कारणवाची है, अर्थात यह खुली विजय उन तीन चीजों का कारण है जो आयत में वर्णित हैं। तथा यह पापों की क्षमा का कारण इसलिए है कि इस संधि के पश्चात इस्लाम धर्म स्वीकार करने वालों की संख्या बहुत बढ़ी, जिससे आप के भारी पुण्य में भी अधिकता हुई तथा पुण्य कर्म, कुकर्मों के लिए प्रायश्चित हैं।

[2]उस धर्म को प्रभुत्व देकर जिसका आमंत्रण तुम देते हो अथवा विजय तथा प्रभुत्व प्रदान करके, तथा कुछ कहते हैं कि क्षमा तथा संमार्ग पर दृढ़ता यही उपहार की पूर्ति है।

[3]अर्थात उस पर दृढ़ता सुलभ कराये। मार्गदर्शन की उत्तम श्रेणी से सम्मानित करे।

[4]अर्थात उस व्यग्रता के पश्चात, जो मुसलमानों को हुदैबिया की शर्तों के कारण हुई, अल्लाह ने उनके दिलों को शान्ति प्रदान की जिससे उनके दिलों को अधिक संतोष तथा ईमान प्राप्त हुआ। यह आयत भी प्रमाण है कि ईमान में कमी तथा अधिकता होती है।

[5]अर्थात यदि अल्लाह तआला चाहे तो अपनी किसी सेना (जैसे फ़रिश्तों) से काफ़िरों का विनाश करा दे, किन्तु उसने अपनी हिक्मत के कारण ऐसा नहीं किया तथा उसकी जगह मोमिनों को युद्ध तथा जिहाद का आदेश दिया। इसलिए आगे अपना गुण सर्वज्ञ عليم तत्वदर्शी حكيم बताया है। अथवा अभिप्राय है कि आकाश तथा धरती के फ़रिश्ते तथा इसी प्रकार अन्य शक्तिशाली सेना सब अल्लाह के अधीन हैं तथा उनसे जैसे चाहे काम

The Ummah Technology Mission

عَلِيمًا حَكِيمًا ۝٤

अल्लाह (तआला) सर्वज्ञ हिक्मत वाला है।

لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عِندَ اللَّهِ فَوْزًا عَظِيمًا ۝٥

(५) ताकि मुसलमान पुरूषों एवं महिलाओं को उन स्वर्गों में ले जाये, जिनके[1] नीचे जल स्रोत प्रवाहित हैं, जहाँ वे सदैव रहेंगे तथा उनसे उनके पाप को मिटा दे। तथा अल्लाह के निकट यह बहुत बड़ी सफलता है।

وَيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ الظَّانِّينَ بِاللَّهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۖ وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۝٦

(६) तथा ताकि उन मुनाफ़िक़ पुरूषों एवं मुनाफ़िक़ महिलाओं को तथा मूर्तिपूजक पुरूषों एवं मूर्तिपूजक महिलाओं को यातना दे, जो अल्लाह (तआला) के सम्बन्ध में कुविचार रखने वाले हैं।[2] (वास्तव में) उन्हीं पर बुराई का चक्र है।[3] अल्लाह उन पर क्रोधित हुआ तथा उन्हें धिक्कारा और उनके लिए नरक तैयार किया, तथा वह लौटने का (अत्यन्त) बुरा स्थान है।

وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝٧

(७) तथा अल्लाह ही के लिए आकाशों एवं धरती की सेनायें हैं तथा अल्लाह शक्तिशाली

लेता है। कई बार वह एक काफ़िर समूह को दूसरे काफ़िर समूह पर प्रभुत्व देकर मुसलमानों की सहायता का मार्ग पैदा कर देता है। आशय यह वर्णन करना है कि हे मुसलमानो ! अल्लाह को तुम्हारी ज़रूरत नहीं, वह अपने पैग़म्बर तथा धर्म की सहायता का काम किसी भी गिरोह तथा सेना से ले सकता है। (इब्ने कसीर तथा ऐसरूत्तफ़ासीर)

[1]हदीस में आता है कि जब मुसलमानों ने सूरः फ़त्ह का आरम्भिक भाग सुना لِيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ तो उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा आपको बधाई हो, हमारे लिए क्या है ? जिस पर अल्लाह ने आयत لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ अवतरित कर दी। (सहीह बुख़ारी, बाबु गज्वतिल हुदैबियह) कुछ कहते हैं कि यह لِيَزْدَادُوا अथवा يَنصُرَكَ से संबन्धित है।

[2]अर्थात अल्लाह के आदेशों पर आरोप लगाते हैं तथा सहाबा के संबन्ध में भ्रम रखते हैं कि यह पराजित अथवा हत हो जायेंगे तथा इस्लाम धर्म समाप्त हो जायेगा। (इब्ने कसीर)

[3]यह जिस चक्र, यातना अथवा विनाश की मुसलमानों के लिए प्रतिक्षा कर रहे हैं, वह तो उन्हीं का भाग्य बनने को है।

The Ummah Technology Mission

एवं हिम्मत वाला है।[1]

إِنَّآ أَرْسَلْنَٰكَ شَٰهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٨﴾

(८) नि:संदेह हमने तुझे साक्षी देने वाला तथा शुभ-सूचना सुनाने वाला एवं सचेत करने वाला बनाकर भेजा है।

لِّتُؤْمِنُوا بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ ۚ وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٩﴾

(९) ताकि (हे मुसलमानो !) तुम अल्लाह तथा उसके रसूल पर ईमान लाओ तथा उसकी सहायता करो और उसका आदर करो, तथा अल्लाह की पवित्रता का सुबह-शाम वर्णन करो।

إِنَّ ٱلَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ ٱللَّهَ ۚ يَدُ ٱللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ ۚ فَمَن نَّكَثَ فَإِنَّمَا يَنكُثُ عَلَىٰ نَفْسِهِۦ ۖ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِمَا عَٰهَدَ عَلَيْهُ ٱللَّهَ فَسَيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١٠﴾

(१०) जो लोग तुझसे बैअत (अल्लाह एवं उसके रसूल की आज्ञा तथा अनुसरण की वचन बद्धता प्रकट करना) करते हैं वह नि:संदेह अल्लाह ही से बैअत करते हैं।[2] उनके हाथों पर अल्लाह का हाथ है,[3] तो जो व्यक्ति वचन तोड़े वह अपने आप पर ही वचन तोड़ता है[4] तथा जो व्यक्ति उस वचन को

---

[1]यहाँ उसे मुनाफ़िक़ों तथा काफ़िरों के सन्दर्भ में पुन: वर्णन किया कि अल्लाह तआला अपने इन विरोधियों को हर प्रकार से विध्वस्त करने पर समर्थ है। यह अलग बात है कि वह अपनी हिक्मत के अधीन उनको जितना चाहे अवसर दे दे।

[2]यह बैअत वास्तव में अल्लाह ही की है, क्योंकि उसी ने जिहाद (धर्मयुद्ध) का आदेश दिया है। जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया कि यह अपने प्राणों तथा मालों का स्वर्ग के बदले अल्लाह से सौदा है। (*अत्तौबा*-१११) यह इसी प्रकार है, जैसे ﴿مَّن يُطِعِ ٱلرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ ٱللَّهَ﴾ (अन-निसा-८०)

[3]आयत से वही 'बैअते रिज्वान' अभिप्राय है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय उस्मान की शहादत (हत्या) की सूचना सुनकर उनका बदला लेने के लिए हुदैबियह में उपस्थित १४या १५ सौ मुसलमानों से ली थी।

[4] نَكَثَ (वचन भंग करने) से तात्पर्य यहाँ बैअत तोड़ देना अर्थात प्रतिज्ञानुसार युद्ध में भाग न लेना है। अर्थात जो व्यक्ति ऐसा करेगा तो उसका वबाल उसी पर पड़ेगा।

The Ummah Technology Mission

पूरा करे जो उसने अल्लाह के साथ किया है[1] तो उसे शीघ्र ही अल्लाह बहुत बड़ा बदला (पुण्य) देगा।

سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـــًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۭ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝

(११) देहातियों में से जो पीछे छोड़ दिये गये थे वे अब तुझसे कहेंगे कि हम अपने धन तथा संतान में लगे रह गये तो आप हमारे लिए क्षमा की प्रार्थना कीजिए,[2] ये लोग अपने मुखों से वह कहते हैं जो उनके हृदय में नहीं है।[3] आप उत्तर दे दीजिए कि तुम्हारे लिए अल्लाह की ओर से किसी बात का भी अधिकार कौन रखता है यदि वह तुम्हें हानि पहुँचाना चाहे,[4] अथवा तुम्हें कोई लाभ

---

[1]कि वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सहायता करेगा, उनके साथ होकर युद्ध करेगा यहाँ तक कि अल्लाह मुसलमानों को विजय तथा प्रभुत्व प्रदान करे।

[2]इससे मदीने के आसपास आबाद जातियाँ गिफ़ार, मुज़ैनह, जुहैनह, अस्लम तथा अन्य जातियाँ अभिप्राय हैं। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वप्न देखने के पश्चात (जिसका विवरण बाद में आयेगा) उमरे के लिए मक्का जाने की आम घोषणा करा दी। उक्त जातियों ने सोचा कि वर्तमान स्थिति तो मक्का जाने के लिए अनुकूल नहीं। वहाँ अभी काफ़िरों का प्रभुत्व है तथा मुसलमान निर्बल हैं, तथा मुसलमान उमरे के लिए शस्त्र धारण करके नहीं जा सकते। यदि ऐसे में काफ़िरों ने मुसलमानों से युद्ध करने का निर्णय ले लिया तो निहत्थे मुसलमान उनका मुक़ाबला कैसे करेंगे ? इस समय मक्का जाने का अर्थ स्वयं का विनाश करना है। इसलिए यह लोग आप के साथ उमरे के लिए नहीं गये। अल्लाह तआला उनके विषय में फ़रमा रहा है कि यह तुझ से कामों का बहाना करेंगे तथा क्षमा-याचना के लिए प्रार्थनायें करेंगे।

[3]अर्थात मुखों पर तो यह है कि हमारे पीछे हमारे घरों तथा बाल-बच्चों का संरक्षक कोई नहीं था। अत: हमें स्वयं ही रूकना पड़ा, किन्तु वास्तव में उनका पीछे रहना निफाक़ (अवसरवाद) तथा मृत्यु के भय के कारण था।

[4]अर्थात यदि अल्लाह तुम्हारे माल ध्वस्त करने तथा तुम्हारे परिवार को विनाश करने का निर्णय कर ले तो क्या तुममें से कोई ऐसा है जो उसे ऐसा न करने दे।

The Ummah Technology Mission

पहुँचाना चाहे।[1] बल्कि तुम जो कुछ कर रहे हो उससे अल्लाह (तआला) भली-भाँति परिचित है।[2]

بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّ زُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖ وَكُنْتُمْ قَوْمًۢا بُوْرًا ⑫

(१२) (नहीं) बल्कि तुमने तो यह समझ रखा था कि पैग़म्बर एवं मुसलमानों का अपने घरों की ओर लौट आना पूर्णतः असंभव है तथा यही विचार तुम्हारे दिलों में बस गया था; तुमने कुविचार कर रखा था।[3] (वास्तव में) तुम लोग हो भी नष्ट होने वाले।[4]

وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ⑬

(१३) तथा जो व्यक्ति अल्लाह पर तथा उसके रसूल पर ईमान न लाये तो हमने भी ऐसे काफ़िरों के लिए दहकती (प्रज्वलित) अग्नि तैयार कर रखी है।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ⑭

(१४) तथा आकाशों एवं धरती का राज्य अल्लाह ही के लिए है, जिसे चाहे क्षमा कर दे तथा जिसे चाहे यातना दे, तथा अल्लाह तआला अत्यन्त क्षमाशील कृपालु है।[5]

---

[1]अर्थात तुम्हें सहायता पहुँचाना तथा ग़नीमत प्रदान करना चाहे तो कोई रोक सकता है? यह वास्तव में उपरोक्त पीछे रह जाने वालों का खंडन है, जिन्होंने यह अनुमान कर लिया था कि यदि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नहीं गये तो हानि से सुरक्षित तथा लाभ से लाभान्वित होंगे, जबकि लाभ तथा हानि का सर्वाधिकार अल्लाह ही के हाथ में है।

[2]अर्थात तुम्हें तुम्हारे कर्मों का पूरा फल देगा।

[3]तथा वह यही था कि अल्लाह अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सहायता नहीं करेगा। यह वही प्रथम अनुमान है, यहाँ बल देने के लिए दुहराया गया है।

[4]بُوْر - بَائِر का बहुवचन है, नाशवान, अर्थात यह वह लोग हैं जिनका भाग्य विनाश है। यदि यह संसार में अल्लाह के प्रकोप से बच गये तो परलोक में बच कर नहीं जा सकते, वहाँ तो दण्ड अवश्य भुगतना है।

[5]इसमें पिछड़ने वालों के लिए क्षमा माँगने तथा अल्लाह की ओर ध्यान करने का

The Ummah Technology Mission

سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ؕ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝١٥

(१५) जब तुम (युद्ध में प्राप्त) परिहार लेने जाने लगोगे तो तुरन्त ये पीछे छोड़े हुए लोग कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने की आज्ञा दीजिए,[1] वे चाहते हैं कि अल्लाह (तआला) के कथन को बदल दें।[2] (आप) कह दें कि अल्लाह (तआला) पूर्व ही में कह चुका है कि तुम कदापि हमारा अनुगमन न करोगे।[3] तो वे उसका उत्तर देंगे (नहीं-नहीं) बल्कि तुम हमसे द्वेष रखते हो।[4] (वास्तविक बात यह है) कि वे लोग बहुत ही कम समझते है।[5]

प्रलोभन है कि यदि वह द्वयवाद से तौबा कर लें तो अल्लाह तआला उन्हें क्षमा कर देगा। वह अति क्षमावान दयानिधि है।

[1]इसमें ख़ैबर के युद्ध की चर्चा है, जिसकी विजय की शुभसूचना अल्लाह ने हुदैबियह में दी थी, तथा अल्लाह ने यह भी फ़रमाया था कि यहाँ से जितना भी धन प्राप्त होगा वह केवल हुदैबियह में सम्मिलित लोगों का भाग है। जैसाकि हुदैबियह से वापसी के पश्चात जब आप ने यहूदियों के निरन्तर वचन भंग करने के कारण ख़ैबर पर चढ़ाई की योजना बनाई तो उपरोक्त पिछड़ों ने भी मात्र युद्ध-धन प्राप्त करने के लिए साथ जाने का विचार प्रकट किया, जिसे स्वीकार नहीं किया गया। आयत में मग़ानिम से अभिप्राय ख़ैबर में प्राप्त माल ही है।

[2]अल्लाह के वचन से अभिप्राय अल्लाह का ख़ैबर से प्राप्त माल (ग़नीमत) को हुदैबियह वालों के लिए विशेष करने का वचन है। मुनाफ़िक़ीन (अवसरवादी) इसमें भाग लेकर अल्लाह के वचन को बदलना चाहते थे।

[3]यह नकार निषेधाज्ञा के अर्थ में है, अर्थात तुम्हें हमारे साथ चलने की अनुमति नहीं है। अल्लाह का आदेश भी यही है।

[4]अर्थात यह पिछड़े लोग कहेंगे कि तुम ईर्ष्या के कारण हमें साथ ले जाने से भाग रहे हो ताकि ग़नीमत के माल में हम तुम्हारे साझी न हों।

[5]अर्थात बात यह नहीं है जो वह समझ रहें, अपितु यह प्रतिबंध उनके पीछे रहने के दण्ड स्वरूप है। किन्तु वास्तविक बात उनकी समझ में नहीं आ रही है।

The Ummah Technology Mission

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٦﴾

(१६) (आप) पीछे छोड़े हुए देहातियों से कह दीजिए कि शीघ्र ही तुम एक अत्यन्त योद्धा समुदाय की ओर बलाये जाओगे कि तुम उनसे युद्ध करोगे अथवा वे मुसलमान हो जायेंगे।[1] तो यदि तुम आज्ञापालन करोगे[2] तो अल्लाह (तआला) तुम्हें अति उत्तम बदला देगा,[3] तथा यदि तुमने मुख फेर लिया जैसाकि तुम इससे पूर्व मुख फेर चुके हो, तो वह तुम्हें कष्टदायी यातना देगा।[4]

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

(१७) अन्धे पर कोई पाप नहीं, न लंगड़े पर कोई पाप है तथा न रोगी पर कोई पाप है।[5] और जो कोई अल्लाह तथा उसके रसूल की आज्ञा का पालन करे, उसे अल्लाह ऐसे स्वर्ग में प्रवेश देगा जिसके (वृक्षों के) नीचे से सरितायें

---

[1]इस योद्धा समुदाय के निश्चितता में मतभेद है। कुछ व्याख्याकारों ने इससे अरब ही की कुछ जातियाँ तात्पर्य ली हैं, जैसे हवाजिन अथवा सकीफ़, जिनसे हुनैन के स्थान पर मुसलमानों से युद्ध हुआ अथवा मुसैलमा कज्जाब की जाति बनू हनीफ़ा। कुछ ने फ़ारस तथा रोम के अग्निपूजक एवं इसाई तात्पर्य लिये हैं। उन पीछे रह जाने वाले देहातियों से कहा जा रहा है कि शीघ्र ही एक लड़ाकू जाति से युद्ध करने के लिए तुम्हें बुलाया जायेगा। यदि वे मुसलमान न हुए तो उनके तथा तुम्हारे बीच युद्ध होगा।

[2]अर्थात शुद्ध मन से मुसलमानों के साथ मिलकर लड़ोगे।

[3]दुनिया में ग़नीमत (परिहार) तथा आख़िरत में पापों की क्षमा एवं स्वर्ग।

[4]अर्थात जिस प्रकार हुदैबियह के अवसर पर मुसलमानों के साथ मक्का जाने से भागे थे, उसी प्रकार अब भी तुम जिहाद से भागोगे तो फिर अल्लाह की दुखद यातना तुम्हारे लिये तैयार है।

[5]अंधेपन तथा लंगड़ेपन के कारण चल फिर न सकना, यह दोनों तो अवश्य विवशता है। ऐसे विवश अथवा उनके समान अन्य लाचारों को जिहाद से अलग कर दिया गया। حرج (हरज) का अर्थ दोष है। इनके अलावा जो रोग हैं वह सामयिक विवशता हैं। जब तक वह वास्तव में रोगी हैं जिहाद में भाग लेने से अलग हैं। रोग दूर होते ही वह जिहाद में दूसरे मुसलमानों के साथ भाग लेंगे।

The Ummah Technology Mission

مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٧﴾

प्रवाहित हैं, तथा जो मुख फेर ले उसे कष्टदायी यातनायें देगा।

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿١٨﴾

(१८) नि:संदेह अल्लाह (तआला) ईमानवालों से प्रसन्न हो गया जब वे वृक्ष के नीचे तुझसे बैअत (प्रतिज्ञा) कर रहे थे।[1] उनके दिलों में जो कुछ था उसे उसने ज्ञात कर लिया[2] तथा उन पर शान्ति अवतरित किया[3] तथा उन्हें निकट की विजय प्रदान की।[4]

وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٩﴾

(१९) तथा बहुत से परिहार जिन्हें वे प्राप्त करेंगे,[5] तथा अल्लाह प्रभावशाली हिक्मत वाला है।

وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً

(२०) अल्लाह तआला ने तुमसे बहुत सारी

---

[1]यह उन बैअते रिज़्वान में सम्मिलित सहाबा के लिए अल्लाह की प्रसन्नता तथा उनके पक्के-सच्चे मोमिन होने का प्रमाण है, जिन्होंने हुदैबियह में एक पेड़ के नीचे इस बात पर बैअत (प्रतिज्ञा) की कि वह मक्का के कुरैश से लड़ेंगे तथा भागेंगे नहीं।

[2]अर्थात उनके दिलों में जो सच्चाई तथा सफ़ाई की भावनायें थीं, अल्लाह उनसे भी परिचित है। इससे सहाबा के उन शत्रुओं का खंडन हो गया जो कहते हैं कि उनका ईमान ऊपरी था, वह दिल से मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) थे।

[3]अर्थात वह निहत्थे थे, युद्ध के विचार से नहीं गये थे इसलिए अस्त्र-शस्त्र उचित मात्रा में नहीं थे। फिर भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय उस्मान का प्रतिशोध लेने के लिए उनसे जिहाद की बैअत (वचन) लिया तो बिना सोचे सब लड़ने को तैयार हो गये। अर्थात हमने मौत का डर उनके दिलों से निकाल दिया तथा उसके स्थान पर शान्ति तथा धैर्य उन पर उतार दिया, जिसके कारण उन्हें लड़ने का उत्साह हुआ।

[4]इससे अभिप्राय वही ख़ैबर की विजय है, जो यहूदियों का गढ़ था तथा हुदैबियह से वापसी पर मुसलमानों ने उसे विजय किया।

[5]यह वह ग़नीमतें (परिहार) हैं जो ख़ैबर में प्राप्त हुईं। यह अति उपजाऊ तराई का क्षेत्र था। इसी हिसाब से यहाँ से मुसलमानों को अत्याधिक माल ग़नीमत में प्राप्त हुआ, जिसे केवल हुदैबियह वालों में वितरण किया गया।

The Ummah Technology Mission

تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٢٠﴾

ग़नीमतों (परिहारों) का वायदा किया है[1] जिन्हें तुम प्राप्त करोगे, बस यह तो तुम्हें शीघ्र ही प्रदान कर दी[2] तथा लोगों के हाथ तुमसे रोक दिये[3] ताकि ईमानवालों के लिए यह एक निशानी हो जाये[4] तथा ताकि वह तुम्हें सीधे मार्ग पर चलाये।[5]

وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢١﴾

(२१) तथा तुम्हें अन्य (ग़नीमते परिहार) भी दे जिन पर अब तक तुमने नियन्त्रण नहीं पाया। अल्लाह (तआला) ने उन्हें अपने नियन्त्रण में रखा है,[6] तथा अल्लाह (तआला) प्रत्येक वस्तु पर समर्थ है।

---

[1]यह अन्य विजयों में प्राप्त ग़नीमतों की शुभसूचना है जो क़यामत तक के लिए मुसलमानों को प्राप्त होने वाली हैं।

[2]अर्थात ख़ैबर की विजय और हुदैबियह समझौता, क्योंकि यह दोनों तो शीघ्र रूप से मुसलमानों को प्राप्त हो गयीं।

[3]हुदैबियह में काफ़िरों के हाथ तथा ख़ैबर में यहूदियों के हाथ अल्लाह ने रोक दिये, अर्थात उन्हें निरूत्साह कर दिया तथा वे मुसलमानों से लड़ न सके।

[4]अर्थात लोग इस घटना के वर्णन का अध्ययन करके यह अनुमान लगा लेंगे कि अल्लाह तआला कम संख्या रहते हुए भी मुसलमानों का संरक्षक तथा उन्हें शत्रुओं पर विजय प्रदान करने वाला है, अथवा यह रोक लेना सभी वचन दी गयी बातों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सत्यता का लक्षण है।

[5]अर्थात संमार्ग पर दृढ़ता प्रदान करे अथवा इस प्रतीक से तुम्हें मार्गदर्शन में और अधिक करे।

[6]यह आगामी विजय तथा उनके द्वारा प्राप्त होने वाली ग़नीमतों की ओर सकेंत है। जिस प्रकार चार दिवारी करके किसी वस्तु को अपने नियन्त्रण में कर लिया जाता है और फिर उसके विषय में निश्चिन्तता हो जाती है, इसी प्रकार अल्लाह तआला ने इन विजयों को अपने अधिकार के घेरे में ले लिया है। अर्थात यद्यपि अभी तुम्हारी विजय की परिधि वहाँ तक विस्तृत नहीं हुई है किन्तु अल्लाह ने उसे तुम्हारे लिए अपने नियन्त्रण में कर रखा है, वह जब चाहेगा उस पर तुम्हें प्रभुत्व प्रदान करेगा, जिसमें कोई संदेह की बात नहीं, इसलिए कि वह प्रत्येक वस्तु पर समर्थ है। कुछ ने घेरने का अर्थ ज्ञान किया है अर्थात उसे ज्ञात है कि वह क्षेत्र भी तुम विजय करोगे।

The Ummah Technology Mission

هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ
عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ
مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ؕ وَلَوْلَا
رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ
لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَئُوْهُمْ
فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ اللّٰهُ
فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا
لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ
عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٢٥﴾

(२५) यही वे लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र किया तथा तुमको मस्जिदे हराम से रोका तथा बलि के लिए रूके हुए पशुओं को उसके स्थान तक पहँचने से (रोका), [1] तथा यदि ऐसे (बहुत-से) मुसलमान पुरूष तथा (बहुत-सी) मुसलमान महिलायें न होतीं, जिनकी तुमको सूचना न थी[2] कि तुम उनको रौंद दोगे जिस पर उनके कारण तुमको भी अनजाने में हानि पहुँचती[3] (तो तुम्हें लड़ने की आज्ञा दे दी जाती[4] परन्तु ऐसा नहीं किया गया)[5] ताकि अल्लाह (तआला) अपनी कृपा में जिसको चाहे सम्मिलित कर ले तथा यदि ये अलग-

---

[1] هَدْيٌ (हदी) उस पशु को कहा जाता है जिसे हज अथवा उमरा करने वाला अपने संग मक्का ले जाता है। مَحِلٌّ (महिल्ल) से अभिप्राय बलि का स्थान है जहाँ उनको ले जाकर वध किया जाता है। यह स्थान उमरा करने वालों के लिए अज्ञानता काल में 'मर्वह' पहाड़ी के पास तथा हाजियों के लिए 'मिना' था।इस्लाम में बलि का स्थान मक्का, मिना और पूर्ण हरम है। مَعْكُوْفًا (माकूफन) स्थिति-वाचक है, अर्थात यह पशु इस प्रतीक्षा में रूके थे कि मक्के में प्रवेश करें ताकि उन्हें वध किया जाये। तात्पर्य यह है कि इन काफ़िरों ने ही तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका था तथा जो पशु तुम्हारे साथ थे उन्हें भी बलि स्थल तक नहीं पहुँचने दिया।

[2]अर्थात मक्के में अपना ईमान छिपा कर रह रहे थे।

[3]काफ़िरों के साथ लड़ाई की दशा में संभव था कि यह भी मारे जाते तथा तुम्हें नुकसान पहुँचता। مَعَرَّةٌ का मूल अर्थ दोष है। यहाँ तात्पर्य प्रायश्चित तथा वह बुराई तथा लज्जा है जो काफ़िरों के कारण तुम्हें उठानी पड़ती। अर्थात एक तो ग़लती से हत्या की दियत (अर्थदण्ड) देना पड़ता, दूसरे काफ़िरों का यह व्यंग सुनना पड़ता कि यह अपने मुसलमान साथियों को भी मार डालते हैं।

[4]यह لَوْلَا (लौला, यदि) का लुप्त उत्तर है, अर्थात यदि यह बात न होती तो तुम्हें मक्का में प्रवेश करने तथा कुरैश से लड़ने की अनुमति दे दी जाती।

[5]बल्कि मक्कावासियों को अवसर दे दिया गया ताकि जिसे अल्लाह चाहे इस्लाम का सौभाग्य प्रदान कर दे।

The Quran Technology Mission

अलग होते तो उनमें जो काफ़िर थे, हम उनको कष्टदायी दण्ड देते।[1]

إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ

(२६) जबकि उन[2] काफ़िरों ने अपने दिलों में पक्षपात (भावना) को स्थान दिया तथा पक्षपात भी अज्ञानता का, तो अल्लाह (तआला) ने अपने रसूल पर तथा ईमान वालों पर अपनी ओर से शान्ति (संतोष) अवतरित किया[3] तथा

---

[1] تَزَيَّلُوا यह تَمَيَّزُوا के अर्थ में है। अभिप्राय यह है कि मक्का के निवासी मुसलमान यदि काफ़िरों से अलग रहते तो हम तुम्हें मक्कावासियों से लड़ने की अनुमति दे देते तथा तुम्हारे हाथों उन्हें वध कराते तथा इस प्रकार उन्हें दुखदायी यातना देते। عذاب أليم से तात्पर्य यहाँ हत्या, बंदी बनाना तथा प्रकोप एवं प्रभुत्व है।

[2] إِذْ का संबंध لَعَذَّبْنَا से है अथवा اُذْكُرُوا से, जो लुप्त है। अर्थात उस समय को याद करो जब इन काफ़िरों ने .....

[3] काफ़िरों की इस अज्ञानतापूर्ण भावना (अहंकार एवम् पक्षपात) से अभिप्राय मक्कावासियों का मुसलमानों को मक्का में प्रवेश से रोकना है। उन्होंने कहा कि इन्होंने हमारे पुत्रों तथा बापों की हत्या किया है। लात तथा उज़्ज़ा की सौगन्ध कि उन्हें हम कभी यहाँ प्रवेश नहीं करने देंगे, अर्थात उन्होंने इसको अपनी मर्यादा तथा सम्मान की समस्या बना लिया। इसी को अज्ञानता का पक्षपात कहा गया, क्योंकि काबा में उपासना के लिए आने से रोकने का किसी को अधिकार प्राप्त नहीं था। कुरैश की इस कटुता की नीति से यह भय था कि मुसलमानों की भावनायें भी भड़क जातीं तथा वह भी इसे अपनी मर्यादा की समस्या बनाकर मक्का जाने पर अड़ जाते, जिससे दोनों में लड़ाई छिड़ जाती तथा यह लड़ाई मुसलमानों के लिए बड़ी ख़तरनाक रहती (जैसाकि पहले संकेत दिया जा चुका है) इसलिए अल्लाह ने मुसलमानों के दिलों में शान्ति उतार दी अर्थात उनमें धैर्य तथा सहनशीलता पैदा कर दी तथा वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथनानुसार हुदैविया ही में रूके रहे। आवेश तथा जोश में आकर मक्का जाने का प्रयास नहीं किया। कुछ कहते हैं कि इस अज्ञानता के पक्षपात से अभिप्राय कुरैश का वह आचरण है जो उन्होंने समझौते के लिए तथा संधि के समय अपनाया। यह आचरण तथा संधि दोनों मुसलमानों के लिए प्रत्यक्ष रूप से असहनीय था। किन्तु परिणाम के आधार पर चूँकि इसमें इस्लाम तथा मुसलमानों का अत्योत्तम लाभ था, इसलिए अल्लाह ने मुसलमानों को अति अप्रियता तथा बोझ के उपरान्त भी उसे स्वीकारने का साहस दिया। इसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का के कुरैश

The Ummah Technology Mission

وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝٢٦

मुसलमानों को संयम की बात पर दृढ़ रखा[1] तथा वे इसके योग्य तथा अधिक पात्र थे तथा अल्लाह (तआला) प्रत्येक वस्तु को भली-भाँति जानता है।

के भेजे हुए प्रतिनिधियों की यह बात मान ली कि इस वर्ष मुसलमान उमरे के लिए मक्का नहीं जायेंगे तथा यहीं से वापस हो जायेंगे तो फिर आपने आदरणीय अली रज़ी अल्लाहु अन्हु को संधि पत्र लिखने का आदेश दिया। उन्होंने आपके आदेश से बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर रहीम लिखा। उन्होंने इस पर आलोचना की कि रहमान, रहीम (दयावान, कृपानिधि) को हम नहीं जानते। हमारे यहाँ जो नाम प्रयुक्त हो उसके साथ अर्थात बेइस्मिक अल्लाहुम्म (हे अल्लाह, तेरे नाम से) लिखो। आपने ऐसे ही लिखवाया। फिर आपने लिखवाया, "यह वह संधि पत्र है जिस पर मोहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) (ईशदूत) ने मक्कावासियों से समझौता किया है।" कुरैश के प्रतिनिधियों ने कहा कि मतभेद का आधार तो आपकी रिसालत (ईशदूत होना) ही है। यदि हम आपको अल्लाह का संदेशवाहक मान लें तो इसके पश्चात झगड़ा ही क्या रह जाता है? फिर हमें आपसे लड़ने तथा बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) से रोकने की आवश्यकता ही क्या है? यहाँ आप मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की जगह मोहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह लिखें। आपने आदरणीय अली को ऐसा ही लिखने का आदेश दिया। यह मुसलमानों के लिए अति उत्तेजना का विषय था। यदि अल्लाह मुसलमानों पर शान्ति न उतारता तो वह कभी सहन न कर सकते थे। आदरणीय अली रज़ी अल्लाहु अन्हु ने अपने हाथ से मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह के शब्द मिटाने तथा काटने से इंकार कर दिया, जिसे स्वयं आपने मिटाया तथा उस स्थान पर पवित्र हाथ से मोहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह लिखवाया। समझौते अथवा संधि में तीन बातें लिखी गयीं। १- मक्कावासी जो आपके पास मुसलमान होकर आयेगा उसे वापस कर दिया जायेगा। २- जो मुसलमान मक्कावासियों से जा मिलेगा वह उसे वापस करने पर बाध्य न होंगे। ३- मुसलमान आगामी वर्ष मक्का आयेंगे तथा यहाँ तीन दिन रह सकेंगे किन्तु शस्त्र साथ लाने की अनुमति न होगी। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाबु सुल्हिल हुदैबियह फिल हुदैबियह) तथा इसके साथ दो बातें और लिखी गयीं (१) दस (१०) वर्ष लड़ाई स्थगित रहेगी। (२) कबायेल में से जो चाहे मुसलमानों के साथ तथा जो चाहे कुरैश के साथ हो जाये।

[1]इससे अभिप्राय तौहीद तथा रिसालत का सूत्र "ला एलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसुलुल्लाह" है। जिसे हुदैबियह के दिन मुश्रेकीन (बहुदेववादियों) ने इंकार किया। (इब्ने कसीर) अथवा वह धैर्य तथा शान्ति (सम्मान) है जिसका प्रदर्शन उन्होंने हुदैबियह में किया, अथवा वह प्रतिज्ञा का पालन तथा उस पर दृढ़ता है, जो संयम का परिणाम है। (फतहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ؕ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿٢٧﴾

(२७) वास्तव में अल्लाह (तआला) ने अपने रसूल को स्वप्न सत्य दिखाया कि यदि अल्लाह ने चाहा तो तुम अवश्य पूर्ण शान्ति-सुरक्षा के साथ मस्जिदे हराम में प्रवेश करोगे, सिर मुंडवाते हुए तथा सिर के बाल कटवाते हुए (शान्ति के साथ) निर्भीक होकर,[1] वह उन बातों को जानता है जिन्हें तुम नहीं जानते,[2] तो उसने उससे पहले एक निकट की विजय तुम्हें प्रदान की।[3]

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ

(२८) वही है जिसने अपने रसूल को पथ-प्रदर्शन एवं सत्य धर्म के साथ भेजा ताकि उसे प्रत्येक धर्म पर प्रभावी[4] करे तथा अल्लाह (तआला)

---

[1]हुदैविया की घटना से पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को स्वप्न में मुसलमानों के साथ बैतुल्लाह (अल्लाह के घर काबा) में जाकर परिक्रमा तथा उमरह करते दिखाया गया। नबी का सपना प्रकाशना के बराबर होता है। फिर भी इस सपने में यह निश्चित नहीं था कि यह इसी वर्ष होगा, किन्तु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा मुसलमान इसे बड़ी शुभसूचना समझते हुए उमरे के लिए तुरन्त तैयार हो गये, इसके लिए जनसाधारण में घोषणा करा दी तथा चल पड़े, अन्त में हुदैबियह में वह समझौता हुआ, जिसका विवरण अभी गुज़रा जबकि अल्लाह के ज्ञान में यह स्वप्न आगामी वर्ष साकार होना था। जैसाकि आगामी वर्ष मुसलमानों ने अति शान्ति के साथ यह उमरह किया तथा अल्लाह ने अपने पैग़म्बर के सपने को सच कर दिया।

[2]अर्थात यदि हुदैबियह के स्थान पर संधि न होती तो मक्के में आबाद निर्बल मुसलमानों को हानि पहुँचती। संधि के इन लाभों को अल्लाह ही जानता था।

[3]इससे ख़ैबर तथा मक्का की विजय के अतिरिक्त संधि के परिणाम स्वरूप जो अधिकांश मुसलमान हुए वह भी तात्पर्य है, क्योंकि वह भी विजय का एक महान रूप है। हुदैबियह समझौते के अवसर पर मुसलमान डेढ़ हज़ार थे। इसके दो वर्ष बाद जब मुसलमान मक्के में विजेता स्वरूप प्रवेश किये तो उनकी संख्या दस हज़ार थी।

[4]इस्लाम का यह प्रभाव तो अन्य धर्मों पर प्रमाणों के आधार पर तो हर समय मान्य है। फिर भी सांसारिक तथा फ़ौजी आधार पर भी प्रथम युग में तथा उसके पश्चात जब तक मुसलमान अपने धर्म पर कार्यरत रहे उनका प्रभुत्व रहा, तथा आज भी यह भौतिक

The Ummah Technology Mission

كُلِّهٖ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٢٨﴾

पर्याप्त है साक्षी देने वाला।

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ
اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ
تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ
فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ۫ سِيْمَاهُمْ
فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ
ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۚۛ
وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ۚۛ كَزَرْعٍ
اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ
فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ
لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ
وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ

(२९) मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं तथा जो लोग उनके साथ हैं काफ़िरों पर कठोर हैं आपस में दयालु हैं, तू उन्हें देखेगा कि रूकूअ तथा सजदे कर रहे हैं, अल्लाह (तआला) की कृपा तथा प्रसन्नता की कामना में हैं। उनका निशान उनके मुख पर सजदों के प्रभाव से है, उनका यही गुण (उदाहरण) तौरात में है तथा उनका उदाहरण इंजील[1] में है उस खेती के समान जिसने अपना अंकुर निकाला,[2] फिर उसे मज़बूत किया तथा वह मोटा हो गया, फिर अपने तने पर सीधा खड़ा हो गया तथा किसानों को प्रसन्न करने लगा[3] ताकि उनके

प्रभुत्व संभव है जबकि मुसलमान, मुसलमान बन जायें।

﴿ وَأَنتُمُ ٱلْأَعْلَوْنَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴾

"तुम ही प्रभावशाली (एवं उच्च) रहोगे यदि तुम ईमानदार हो।" (*आल-इमरान-१३९*)

यह धर्म प्रभावी होने के लिए ही आया है, पराजित होने के लिए नहीं।

[1] إِنجِيل (इंजील) पर वक़्फ़ (रूकने) की दशा में यह अर्थ होगा कि उनके जो यह गुण क़ुरआन में वर्णित हैं, उनके यही गुण तौरात तथा इंजील में भी उल्लेख हैं। तथा आगे كَزَرْعٍ में इससे पहले هُمْ (हुम) लुप्त होगा, तथा कुछ فِي التَّوراة पर वक़्फ़ करते (रूकते) हैं अर्थात उनका उपरोक्त गुण तौरात में है तथा مَثَلُهُم فِي الإنجيل को كَزَرْعٍ के साथ मिलते हैं। अर्थात इंजील में उनका उदाहरण उस खेती के समान है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] شَطْـَٔهٗ पौधे का वह प्रथम प्रकटन है जो दाना फाड़ कर अल्लाह की शक्ति से (अल्लाह के सामर्थ्य से) बाहर निकलता है।

[3] यह सहाबा केराम का दृष्टान्त (मिसाल) वर्णन किया गया है। आरम्भ में वह कम थे, फिर अधिक तथा शक्तिशाली हो गये, जैसे खेती आरम्भ में क्षीण होती है, फिर दिन

The Ummah Technology Mission

مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾

कारण काफ़िरों को चिढ़ाये,[1] तथा ईमान-वालों तथा सत्कर्मियों से अल्लाह ने क्षमा का तथा बहुत बड़े पुण्य का वायदा किया है।[2]

सूरतुल हुजुरात-४९

سُوْرَةُ الْحُجُرٰتِ

सूरः हुजुरात* मदीने में अवतरित हुई, इसमें अट्ठारह आयतें तथा दो रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

(१) हे ईमान वालो ! अल्लाह तथा उसके रसूल से आगे न बढ़ो[3] तथा अल्लाह से डरते रहा

प्रतिदिन दृढ़ होती जाती है यहाँ तक कि दृढ़ तने पर खड़ी हो जाती है।

[1]अथवा काफ़िर क्रोध में ग्रस्त हों। अर्थात सहाबा केराम रज़ी अल्लाहु अन्हुम का बढ़ता प्रभाव तथा उनकी प्रतिदिन बढ़ती शक्ति एवं बल काफ़िरों के लिए क्रोध तथा रोष का कारण था, क्योंकि इससे इस्लाम का क्षेत्र बढ़ रहा था तथा कुफ़्र सीमित हो रहा था। इस आयत से तर्क देते हुए कुछ धर्मविद्वानों ने सहाबये केराम से ईर्ष्या तथा शत्रुता रखने वालों को काफ़िर सिद्ध किया है।

[2]इस पूरी आयत का एक-एक भाग सहाबा केराम की प्रतिष्ठा एवं प्रधानता, पारलौकिक मोक्ष तथा महान पुण्य को स्पष्ट कर रहा है। इसके बाद भी सहाबा (नबी के साथियों) के ईमान में संदेह करने वाला मुसलमान होने का दावा करे तो उसे मुसलमान होने के दावे में कैसे सच्चा समझा जा सकता है ?

*यह तिवाले मुफ़स्सल (विस्तृत) की प्रथम सूरह है, हुजोरात से नाज़िआत तक की सूरतें तिवाले मुफ़स्सल कहलाती हैं। कुछ ने सूरह 'काफ़' को प्रथम सूरह कहा है। (इब्ने कसीर, फ़तहुल क़दीर) इनका फ़ज्र (भोर) की नमाज़ में पढ़ना मस्नून तथा मुस्तहब (उत्तम) है। सूरह अवस से सूरहतुश्शम्स तक औसाते मुफ़स्सल (मध्यम) तथा सूरह ज़ुहा से अन्नास तक क़िसारे मुफ़स्सल (अल्प) हैं। ज़ोहर तथा ईशा में औसात तथा मग़रिब में क़िसार पढ़नी मुस्तहब (उत्तम) हैं। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[3]इसका अभिप्राय है कि धर्म के विषय में स्वयं कोई निर्णय न करो, न अपनी समझ तथा विचार को प्रधानता दो, अपितु अल्लाह तथा रसूल की आज्ञा का पालन करो। अपनी ओर से धर्म में अधिकता या विदआत (नई बातें) बनाना अल्लाह एवं रसूल से आगे बढ़ने

The Ummah Technology Mission

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ①
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا
اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ
وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ
بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ
اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ②
اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ
عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ
لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ③

करो । नि:संदेह अल्लाह (तआला) सुनने जानने वाला है ।

(२) हे ईमानवालो ! अपनी आवाज़ को नबी की आवाज से उच्च न करो तथा उनसे उच्च स्वर में बात न करो जैसे आपस में एक-दूसरे से करते हो । (कहीं ऐसा न हो) कि तुम्हारे कर्म व्यर्थ हो जायें तथा तुम्हें पता भी न हो ।[1]

(३) वास्तव में जो लोग रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के समक्ष अपनी आवाज़ धीमी रखते हैं, यही वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने सदाचार के लिए जाँच लिया है । उनके लिए क्षमा है तथा बड़ा पुण्य है ।[2]

का दुस्साहस है, जो किसी भी ईमान वाले के लिए योग्य नहीं । इसी प्रकार कोई फतवा (धर्माज्ञा) क़ुरआन तथा हदीस में विचार किये बिना न दिया जाये तथा देने के बाद यदि धार्मिक सूत्रों (क़ुरआन तथा हदीस) के विपरीत होना स्पष्ट हो जाये तो उस पर अड़े रहना भी इस आयत में दी गई आज्ञा के प्रतिकूल है । मुसलमान का आचरण तो अल्लाह एवं रसूल के आदेशों के आगे समर्पण तथा अनुपालन के लिए सिर झुका देना है, न कि उनके मुक़ाबले में अपनी बात अथवा किसी इमाम के विचार पर अड़े रहना ।

[1]इसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये आदर-सम्मान का वर्णन है, जिसकी प्रत्येक मुसलमान से माँग है । प्रथम सम्मान यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उपस्थिति में जब बात करो तो तुम्हारी आवाज़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आवाज़ से ऊँची न हो । दूसरा सम्मान है, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बात करो तो अति गंभीरता तथा शान्ति से करो । ऐसी ऊँची-ऊँची आवाज़ से न करो जैसे आपस में बेधड़क एक-दूसरे से करते हो । कुछ ने कहा कि हे मोहम्मद ! हे अहमद न कहो, अपितु आदर से 'हे अल्लाह के रसूल' कहकर सम्बोधित करो । यदि आदर तथा सम्मान की इन माँगों को ध्यान में न रखोगे तो निरादर की संभावना है, जिससे असावधानी में तुम्हारे कर्म अकारथ हो सकते हैं । इस आयत के अवतरण के कारण के लिए देखिए सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरतिल हुजुरात । फिर भी आदेशानुसार यह आयत सामान्य है ।

[2]इसमें उन लोगों की प्रशंसा है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मान-मर्यादा का ध्यान रखते हुए अपनी आवाज़ धीमी रखते थे ।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِن وَرَاءِ الْحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٤﴾

(४) नि:सन्देह जो लोग आप को कमरों के पीछे से पुकारते हैं उनमें से अधिकतर (पूर्णत:) बुद्धिहीन हैं।[1]

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّىٰ تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥﴾

(५) तथा यदि ये लोग यहाँ तक धैर्य रखते कि आप (स्वयं) उनके पास आ जाते तो यही उनके लिए श्रेष्ठकर होता,[2] तथा अल्लाह (तआला) क्षमावान दयावान है।[3]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوا أَن تُصِيبُوا

(६) हे ईमानवालो ! यदि तुम्हें कोई भ्रष्टाचारी सूचना दे तो तुम उसकी भली-भाँति छानबीन कर लिया करो,[4] (ऐसा न हो) कि अनभिज्ञता

---

[1]यह आयत क़बीला बनू तमीम के कुछ आराबियों (गँवार लोगों) के विषय में अवतरित हुई, जिन्होंने एक दिन दोपहर के समय जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विश्राम का समय था, कमरे से बाहर खड़े होकर जन-साधारण के अंदाज़ में हे मुहम्मद, हे मुहम्मद की आवाज़ लगायी, ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बाहर आयें। (मुसनद अहमद ३\४८८-६\३९४) अल्लाह ने फ़रमाया कि इनमें अधिकतर बुद्धिहीन हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रताप तथा आपकी मान-मर्यादा की माँगों का ध्यान न रखना मूर्खता है।

[2]अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकलने की प्रतीक्षा करते तथा आपको पुकारने में शीघ्रता न करते तो धर्म तथा संसार दोनों रूप से उत्तम होता।

[3]इसलिए पकड़ नहीं की अपितु भविष्य के लिए आदर एवं सम्मान करने पर बल दे दिया।

[4]यह आयत अधिकतर भाष्यकारों के विचार में आदरणीय वलीद बिन उक्बा के संबंध में अवतरित हुई है, जिन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बनू मुस्तलिक के सदके (धर्मदान) वसूल करने के लिए भेजा था। किन्तु उन्होंने आकर सूचना दी कि उन्होंने ज़कात देने से इंकार कर दिया है, जिस पर आपने उन पर आक्रमण करने का इरादा किया, फिर पता लग गया कि यह बात ग़लत थी तथा वलीद रज़ी अल्लाहु अन्हु वहाँ गये ही नहीं। किन्तु प्रमाण तथा घटना दोनों के आधार पर यह कथन सहीह नहीं। इसलिए इसे एक सहाबी पर थोपना सहीह नहीं है। फिर भी अवतरण के कारण की बहस से अलग होकर इसमें एक अति महत्वपूर्ण नियम वर्णन किया गया है, जिसका व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों सतहों पर बड़ा महत्व है। प्रत्येक व्यक्ति तथा प्रशासन का यह उत्तरदायित्व है कि उसके पास जो भी सूचना आये विशेष रूप से कुकर्मी, दुराचारी तथा उपद्रवी प्रकार के लोगों की ओर से तो पहले उसका पता लगाया जाये ताकि भ्रान्ति में

The Ummah Technology Mission

قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝٦

के कारण किसी समुदाय को हानि पहुँचा दो, फिर अपने किये पर पछतावो।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ؕ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۝٧

(७) तथा जान रखो कि तुम में अल्लाह के रसूल मौजूद हैं,[1] यदि वह बहुत-सी बातों में तुम्हारा कहा करते रहें तो तुम कठिनाई में पड़ जाओ, परन्तु अल्लाह (तआला) ने ईमान को तुम्हारे लिए प्रिय बना दिया है तथा उसे तुम्हारे हृदय में सुशोभित कर दिया है और कुफ़्र को एवं कुकर्मों को तथा अवज्ञाकारिता को तुम्हारी दृष्टि में अप्रिय बना दिया है। यही लोग मार्ग प्राप्त हैं।

فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٨

(८) अल्लाह के उपकार एवं अनुग्रह से,[2] तथा अल्लाह जानने वाला तथा हिक्मत वाला है।

وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ

(९) तथा यदि मुसलमानों के दो गुट आपस में लड़ पड़ें तो उनमें मेल-मिलाप करा दिया करो।[3] फिर यदि उनमें से एक-दूसरे पर

किसी के विपरीत कोई कार्यवाही न हो।

[1]जिसकी माँग यह है कि उनका आदर तथा अनुगमन करो, क्योंकि वह तुम्हारा हित अधिक जानते हैं, इसलिए कि उन पर प्रकाशना अवतरित होती है। अत: तुम उनका अनुगमन करो, उनको अपना अनुगामी बनाने का प्रयास न करो, क्योंकि यदि वह तुम्हारे पसन्द की बातें मानना आरम्भ कर दें तो तुम स्वयं ही विपदा में पड़ जाओगे। जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَلَوِ ٱتَّبَعَ ٱلْحَقُّ أَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ ٱلسَّمَٰوَٰتُ وَٱلْأَرْضُ وَمَن فِيهِنَّ ﴾

"यदि सत्य ही उनके स्वार्थों का अनुपालनकर्त्ता हो जाये तो धरती तथा आकाश एवं उनके मध्य की सभी चीज़ें अस्त-व्यस्त हो जायें।" (अल-मोमिनून-७१)

[2]यह आयत भी सहाबा रज़ी अल्लाहु अन्हुम की प्रतिष्ठा तथा उनके ईमान तथा सुधार एवं संमार्ग पर होने का खुला प्रमाण है।

[3]इस संधि (सुलह) का ढंग यह है कि उन्हें क़ुरआन तथा हदीस की ओर बुलाया जाये अर्थात उनके प्रकाश में उनके मतभेद का समाधान किया जाये।

The Ummah Technology Mission

فَإِنْ بَغَتْ إِحْدٰىهُمَا عَلَى الْأُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِي تَبْغِي حَتّٰى تَفِيءَ إِلٰى أَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَإِنْ فَاءَتْ فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا ۖ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝٩

अत्याचार करे तो तुम (सब) उस गुट से जो अत्याचार करता है लड़ो यहाँ तक कि वह अल्लाह के आदेश की ओर लौट आये।[1] यदि लौट आये तो न्याय के साथ उनके बीच संधि करा दो[2] तथा न्याय करो। नि:संदेह अल्लाह (तआला) न्याय करने वालों से प्रेम करता है।[3]

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝١٠

(१०) (याद रखो) समस्त मुसलमान भाई-भाई हैं, तो अपने दो भाईयों में मिलाप करा दिया करो।[4] तथा अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम पर कृपा की जाये।[5]

---

[1]अर्थात अल्लाह तथा रसूल के आदेशानुसार अपना मतभेद दूर करने को तैयार न हो तथा विद्रोह की नीति अपनाये तो दूसरे मुसलमानों का दायित्व है कि सब मिलकर विद्रोहियों से लड़ाई करें यहाँ तक कि वह अल्लाह के आदेश को मानने के लिए तैयार हो जाये।

[2]अर्थात विद्रोही गिरोह विद्रोह से रुक जाये तो फिर न्याय के साथ अर्थात क़ुरआन तथा हदीस के प्रकाश में दोनों गिरोहों के बीच सुलह करा दी जाये।

[3]तथा प्रत्येक विषय में न्याय करो, इसलिए कि अल्लाह न्याय करने वालों को पसंद करता है, तथा यह पसंद इस बात को आवश्यक बनाती है कि वह न्याय करने वालों को उत्तम फल प्रदान करेगा।

[4]यह पूर्व के आदेश पर ही बल दिया गया है। अर्थात जब मुसलमान आपस में भाई हैं तो सबका मूल ईमान हुआ। अत: मूल के महत्व की माँग है कि एक ही धर्म पर विश्वास रखने वाले आपस में न लड़ें वरन् परस्पर हितैषी, सहयोगी तथा शुभ-चिन्तक रहें। कभी ग़लती तथा भ्रम से उनमें दूरी एवं घृणा पैदा हो जाये तो उसे दूर करके आपस में पुन: जोड़ दिया जाये। (देखिए सूरह *तौबा आयत* न॰ ७१ की व्याख्या)

[5]तथा प्रत्येक मामले में अल्लाह से डरो, संभवत: उसके कारण तुम अल्लाह की दया के पात्र बन जाओ। (आशा की बात) संबोधित के आधार पर है। अन्यथा अल्लाह की दया तो ईमान वालों तथा सदाचारियों के लिए निश्चित है।

इस आयत में विद्रोही गिरोह से लड़ने का आदेश है जबकि हदीस में मुसलमान से युद्ध को कुफ़्र कहा गया है। तो यह कुफ़्र उस समय होगा जब मुसलमानों से अकारण युद्ध किया जाये। किन्तु इस युद्ध का आधार विद्रोह है तो यह युद्ध न केवल उचित है अपितु इसका आदेश दिया गया है, जो बल देने तथा उत्तम होने का संकेत है। इसी प्रकार

The Ummah Technology Mission

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ

(११) हे ईमानवालो ! पुरूष दूसरे पुरूषों का उपहास न करें, संभव है कि यह उनसे श्रेष्ठ हों[1] तथा न महिलायें महिलाओं का उपहास करें, संभव है कि ये उनसे श्रेष्ठ हों, तथा आपस में एक-दूसरे पर आक्षेप (त्रुटि) न लगाओ[2] तथा न किसी को बुरी उपाधि दो।[3] ईमान के पश्चात अपशब्द बुरा नाम है,[4] तथा

विद्रोही गिरोह को क़ुरआन ने मोमिन ही कहा, जिसका अभिप्राय यह है कि केवल विद्रोह के कारण जो महापाप है, वह ईमान से निकलेगा नहीं, जैसाकि ख़वारिज तथा कुछ मुअतज़िला का भ्रम है कि महापापी ईमान से निकल जाता है। अब कुछ अति महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षायें मुसलमानों को दी जा रही हैं।

[1]एक व्यक्ति दूसरे किसी व्यक्ति का परिहास अर्थात उपहास उस समय करता है जब वह अपने को उससे उत्तम तथा उसे हीन एवं पतित समझता है। हालाँकि अल्लाह के समक्ष कौन कर्म तथा ईमान में उत्तम है तथा कौन नहीं, इसको मात्र अल्लाह ही जानता है। अत: स्वयं को श्रेष्ठ तथा अन्य को पतित समझने का कोई औचित्य ही नहीं है। इस कारण से आयत में उससे रोका गया है। कहते हैं कि स्त्रियों में यह नैतिक रोग अधिक होता है। इसलिए स्त्रियों का अलग से वर्णन करके विशेष रूप से उन्हें भी उससे रोक दिया गया है। तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन में लोगों को हीन समझने को अहंकार बताया गया है। «اَلْكِبْرُ بَطَرُ الحَقِّ وَغَمْطُ النَّاسِ». (अबू दाऊद, किताबुल लिबास, बाबु मा जाअ फिल किब्रे) तथा घमंड अल्लाह को अत्यन्त अप्रिय है।

[2]अर्थात एक-दूसरे पर कटाक्ष मत करो, जैसे तू अमुक का पुत्र है, तेरी माँ ऐसी-वैसी है, तू अमुक वंश का है आदि।

[3]अर्थात अपनी ओर से उपहास तथा अपमानित करने के लिये ऐसे नाम रख लेना जो उन्हें अप्रिय हों। अथवा अच्छे-भले नामों को बिगाड़ कर बोलना यह تنابز بالألقاب है जिससे रोका गया है।

[4]अर्थात इस प्रकार नाम बिगाड़ कर, अथवा बुरे नाम रखकर बुलाना, अथवा इस्लाम लाने तथा तौबा कर लेने के बाद उसे पूर्व धर्म अथवा पाप से संबन्धित करके संबोधित करना, जैसे हे काफ़िर, हे व्यभिचारी, हे शराबी आदि, बुरा काम है। यहाँ الإسْمُ الذِّكْر के अर्थ में है, अर्थात بئس الاسم الذي يذكر بالفسق بعد دخولهم في الإيمان (फ़तहुल क़दीर) हाँ, कुछ वह नाम जो विशेष गुण के कारण हों, कुछ के निकट इससे अलग हैं जो किसी के लिए विख्यात हो जायें तथा वह इस पर अपने मन में दुखी न हों, जैसे लंगड़ा

The Ummah Technology Mission

يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿١١﴾

जो क्षमा न माँगे वही अत्याचारी लोग हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَب بَّعْضُكُم بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ

(१२) हे ईमानवालो ! अधिकांश बुरे अनुमानों (धारणाओं) से बचो; विश्वास करो कि कुछ बुरे अनुमान पाप हैं,[1] तथा भेद न टटोला करो[2] और न तुममें से कोई किसी की बुराई (पीठ पीछे) चुग़ली करे।[3] क्या तुममें से कोई

होने के कारण किसी का नाम लंगड़ा पड़ जाये, काला रंग होने के कारण कालिया अथवा कालू प्रख्यात हो जाये आदि। (कुर्तबी)

[1] ظَنٌّ (ज़न्न) का अर्थ है गुमान करना। अभिप्राय है कि सदाचारियों तथा सत्कर्मियों के विषय में ऐसे गुमान रखना जो निर्मूल हों तथा आरोप एवं आक्षेप के अंतर्गत आते हों, इसीलिए इसका अनुवाद बुरा अनुमान किया जाता है तथा इसे हदीस में «أَكْذَبُ الْحَدِيثِ» (सबसे बड़ा झूठ) कहकर इससे बचने पर बल दिया गया है। «إِيَّاكُمْ وَالظَّنَّ» (बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब يا أيُّها الّذين آمنوا اجتنبوا كثيراً مِن الظن) (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्रे बाबु तहरीमिज़्ज़न्ने वत् तजस्सुस) अन्यथा दुष्कर्मियों तथा दुराचारियों से उनके पापों के कारण तथा उनके पापों पर बदगुमानी (बुरी धारणा) रखना यह वह बदगुमानी नहीं जिसे यहाँ पाप कहा गया है तथा उससे बचने पर बल दिया गया है (إن الظَّنَّ الْقَبِيحَ بِمَنْ ظَاهِرُهُ الْخَيرُ لَا يَجُوزُ؛ وإنَّه لَا حَرَجَ فِي الظَّن الْقَبِيح بِمَنْ ظَاهِرُهُ القَبِيحُ). 'जो ऊपर से अच्छा हो उसके संबध में बदगुमानी बुरी है तथा जो ऊपर से बुरा हो उसके विषय में बदगुमानी बुरी नहीं।' (अल कुर्तबी)

[2] अर्थात इस खोज में रहना कि कोई दोष मिल जाय ताकि उसे बदनाम किया जाये, यह तजस्सुस है जिससे रोका गया है। हदीस में भी इससे रोका गया है, बल्कि कहा गया है कि यदि किसी का दोष अथवा त्रुटि तुम्हारे ज्ञान में आ जाये तो उसे छिपाओ, न कि लोगों से चर्चा करते फिरो। वर्तमान युग में स्वतंत्रता तथा स्वाधीनता की बहुत चर्चा है इस्लाम ने भी टटोलने से रोक कर मानव की स्वतन्त्रता एवं स्वाधीनता को स्वीकार किया है। परन्तु उस समय तक जब तक कि वह सामान्य रूप से निर्लज्जा का काम न करे अथवा जब तक दूसरों के लिए दुख का कारण न बने। पश्चिम ने खुली स्वाधीनता की शिक्षा देकर लोगों को साधारण बिगाड़ की अनुमति दे दी है जिससे सामाजिक शान्ति का विनाश हो गया है।

[3] غِيبَة (ग़ीबः) का अर्थ है दूसरे लोगों के समक्ष किसी की बुराईयों तथा दोषों की चर्चा की जाये, जिसे वह बुरा समझे। यदि उससे ऐसी बातें जोड़ी जायें जो उसमें हों ही नहीं तो वह आरोप (आक्षेप) है। अपनी-अपनी जगह दोनों ही घोर अपराध हैं।

The Ummah Technology Mission

مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲﴾

भी अपने मरे भाई का माँस खाना प्रिय समझता है ? तुम को उस से घृणा होगी।[1] तथा अल्लाह से डरते रहो नि:संदेह अल्लाह (तआला) क्षमा स्वीकार करने वाला कृपालु है।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ
مِّنْ ذَكَرٍ وَّ اُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ
شُعُوْبًا وَّ قَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ
اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿۱۳﴾

(१३) हे लोगो ! हमने तुम्हें एक (ही) पुरूष-स्त्री से जन्म दिया है[2] तथा इसलिए कि तुम आपस में एक-दूसरे को पहचानो जातियाँ तथा प्रजातियाँ बना दी हैं,[3] अल्लाह की दृष्टि में तुम सब में वह सम्मानित है जो सबसे अधिक डरने वाला है।[4] विश्वास करो कि अल्लाह जानने वाला भली-भाँति परिचित है।

---

[1]अर्थात किसी मुसलमान भाई की किसी के सामने बुराई करना ऐसे ही है जैसे मुर्दार भाई का माँस खाना। मृत भाई का माँस खाना तो कोई पसन्द नहीं करता किन्तु ग़ीबत लोगों का अति रूचिकर आहार है।

[2]अर्थात आदम तथा हव्वा (अलैहिमस्सलाम) से। अर्थात तुम सबका मूल एक ही है, एक ही माँ-बाप की संतान हो। अभिप्राय यह है कि किसी के मात्र जाति तथा वंश के आधार पर कोई गर्व करने का अधिकार नहीं, क्योंकि प्रत्येक का वंश-क्रम आदरणीय आदम ही से मिलता है।

[3]شُعُوْبٌ (शुऊब) شَعْبٌ (शाब) का बहुवचन है, जाति अथवा बड़ी उप जाति شعب (शाब) के बाद قبيلة (क़बीला) फिर عُمارة (उमारा) फिर بطن (बत्न) फिर فصيلة (फ़सीला) फिर عشيرة (अशीरा) है। (फ़तहुल क़दीर) अर्थ यह है कि अनेक जातियों, उपजातियों तथा परिवारों का विभाजन मात्र पहचान के लिये है ताकि आपस में नाते जोड़ो। इसका उद्देश्य परस्पर प्रधानता दिखाना नहीं, जैसाकि दुर्भाग्य से जाति तथा वंश को प्रतिष्ठा का कारण तथा आधार बना लिया गया है, जबकि इस्लाम ने आकर इसे मिटाया था तथा इसे मूर्खता कहा था।

[4]अर्थात अल्लाह के समक्ष प्रधानता का माप परिवार, जाति तथा वंशक्रम नहीं, जो किसी इंसान के अधिकार ही में नहीं है अपितु यह माप तक़वा (संयम) है, जिसे अपनाना इन्सान के इरादे तथा वश में है। यही आयत उन ज्ञानियों का तर्क है जो विवाह में जाति तथा वंश की बराबरी को आवश्यक नहीं समझते तथा मात्र धर्म (दीन) के आधार पर विवाह को पसंद करते हैं (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴﴾

(१४) ग्रामीण लोग कहते हैं कि हम ईमान लाये। (आप) कह दीजिए कि तुम ईमान नहीं लाये परन्तु तुम यों कहो कि हम इस्लाम लाये (विरोध छोड़कर आज्ञाकारी हो गये) हालाँकि अभी तक ईमान तुम्हारे हृदय में प्रवेश ही नहीं हुआ।[1] तुम यदि अल्लाह तथा उसके रसूल की आज्ञा का पालन करने लगोगे तो अल्लाह तुम्हारे कर्मों में से कुछ भी कम न करेगा। नि:संदेह अल्लाह (तआला) क्षमा करने वाला दयालु है।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿۱۵﴾

(१५) ईमानवाले तो वे हैं जो अल्लाह पर तथा उसके रसूल पर (दृढ़) ईमान लायें, फिर शंका-संदेह न करें तथा अपने धन से और अपने प्राण से अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध करते रहें। (अपने ईमान के दावे में) यही सच्चे (तथा सत्यवादी) हैं।[2]

قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

(१६) कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह को अपनी धार्मिकता से परिचित करा रहे हो ?[3]

---

[1] कुछ भाष्यकारों के विचार से इन أعراب (आराब) से अभिप्राय बनू असद तथा खुज़ैमा के अवसरवादी (मुनाफ़िक़) हैं जिन्होंने अकाल में सदक़ों (दानों) की प्राप्ति के लिए अथवा हत्या तथा बंदी होने के भय से मुख से इस्लाम व्यक्त किया था। उनके दिल ईमान, सत्य विश्वास एवं शुद्ध मन से शून्य थे। (फ़तहुल क़दीर) किन्तु इमाम इब्ने कसीर के निकट इससे वह गाँववासी अभिप्राय हैं जो नये मुसलमान हुए थे तथा ईमान अभी उनमें पूर्णत: दृढ़ नहीं हुआ था किन्तु दावा उन्होंने अपनी वास्तविकता से अधिक ईमान का किया था, जिस पर उन्हें यह शिक्षा दी गई कि प्रथम बार में ही ईमान का दावा सही नहीं, धीरे-धीरे उन्नति के बाद तुम ईमान के दर्जे तक पहुँचोगे।

[2] न कि वह जो केवल मुख से ईमान व्यक्त कर देते हैं तथा उपरोक्त कर्मों का मूल से कोई प्रयोजन ही नहीं करते।

[3] تعليم तालीम (शिक्षा) यहाँ सूचना तथा ख़बर देने के अर्थ में है। अर्थात اٰمَنَّا (हम ईमान लाये) कहकर तुम अपने धर्म तथा विश्वास से अल्लाह को सूचित कर रहे हो ? अथवा अपने हृदयों की स्थिति अल्लाह को बता रहे हो ?

The Ummah Technology Mission

وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٦﴾

अल्लाह प्रत्येक उस वस्तु से जो आकाशों में तथा धरती में है भली-भाँति अवगत है। तथा अल्लाह प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है।[1]

يَمُنُّونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا ۖ قُلْ لَا تَمُنُّوا عَلَيَّ إِسْلَامَكُمْ ۖ بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدَاكُمْ لِلْإِيمَانِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٧﴾

(१७) वे अपने मुसलमान होने का आप पर आभार जताते हैं, (आप) कह दीजिए कि अपने मुसलमान होने का आभार मुझ पर न रखो, अपितु अल्लाह का तुम पर उपकार है कि उसने तुम्हें ईमान की ओर मार्गदर्शन किया यदि तुम सत्यवादी हो।[2]

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾

(१८) विश्वास करो कि आकाशों एवं धरती की छिपी हुई बातें अल्लाह भली-भाँति जानता है, तथा जो कुछ तुम कर रहे हो उसे अल्लाह भली-भाँति देख रहा है।

सूरतु क़ाफ़-५०

سُورَةُ قٓ

सूरः क़ाफ़* मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें पैंतालीस आयतें एवं तीन रूकूअ हैं।

---

[1]तो क्या वह तुम्हारे दिलों की स्थिति अथवा तुम्हारे ईमान की हक़ीक़त से सूचित नहीं है ?

[2]यहीं गाँववासी (बद्दू) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहते थे कि देखिये हम मुसलमान हो गये तथा आप की सहायता की, जबकि दूसरे अरब आप से लड़ रहे हैं। अल्लाह ने उनका खण्डन करते हुए फ़रमाया कि तुम अल्लाह पर ईमान लाने का एहसान न जताओ क्योंकि यदि तुम विशुद्धता से मुसलमान हुए हो तो इसका लाभ तुम्हें ही मिलेगा, न कि अल्लाह को। इसलिए यह अल्लाह का तुम पर उपकार है कि उसने तुम्हें इस्लाम स्वीकार करने का सौभाग्य प्रदान कर दिया न कि तुम्हारे अल्लाह पर उपकार हैं।

*नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईद की नमाज़ में सूरह क़ाफ़ तथा इक़तरबतिस्साअ: पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम, बाबु मा युक़रअ बिहि फी सलातिल ईदैन) प्रत्येक जुमे के खुतबे (भाषण) में भी पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमुअ:, बाबु तख़फ़ीफ़िस्सलाते वल खुत्बा) इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि दोनों ईदों तथा जुमे में पढ़ने का अभिप्राय यह है कि बड़े जनसमूहों में आप यह सूरह पढ़ा करते थे, क्योंकि इसमें उत्पत्ति के आरम्भ, पुनर्जीवन, परलोक, हिसाब, स्वर्ग-नरक, पुण्य तथा दण्ड एवं प्रोत्साहन तथा चेतावनी का वर्णन है।

The Ummah Technology Mission

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु तथा अत्यन्त कृपालु है।

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ①

(१) क़ाफ़ ! अत्यन्त महान (गरिमा वाले) इस क़ुरआन की सौगन्ध है।[1]

بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ②

(२) बल्कि उन्हें आश्चर्य हुआ कि उनके पास उन्हीं में से एक सचेतक आया तो काफ़िरों ने कहा कि यह एक आश्चर्यजनक वस्तु है।[2]

ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيْدٌ ③

(३) क्या जब हम मर कर मिट्टी हो जायेंगे। फिर यह वापसी दूर की बात है।[3]

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ④

(४) धरती जो कुछ उनमें से घटाती है वह हमें ज्ञात है तथा हमारे पास सब याद रखने वाली किताब है।[4]

بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ⑤

(५) बल्कि उन्होंने सत्य बात को झूठ कहा, जबकि वह उनके पास पहुँच चुकी तो वे एक उलझन में पड़ गये हैं।[5]

---

[1]इसका उत्तर लुप्त है لَتُبْعَثُنَّ (तुम निश्चित क़यामत के दिन उठाये जाओगे)। कुछ कहते हैं कि इसका उत्तर बाद का विषय-वस्तु है जिस में नबूवत (दूतत्व) और पुनर्जन्म का प्रमाण है। (फ़तहुल क़दीर व इब्ने कसीर)

[2]हालाँकि इसमें कोई विचित्र बात नहीं थी। प्रत्येक नबी उसी जाति का एक व्यक्ति होता था जिसमें उसे भेजा जाता था। इसी हिसाब से मक्का के कुरैश को डराने के लिए उन ही में से एक व्यक्ति को संदेशवाहक (रसूल) चुन लिया गया।

[3]हालाँकि बौद्धिक आधार पर इसमें कोई असंभावना नहीं है। आगे इसका कुछ स्पष्टीकरण है।

[4]अर्थात धरती इंसान के मांस, आस्थि तथा बाल आदि को गलाकर खा जाती है अर्थात उसे खंडित कर देती है, वह न केवल हमारे ज्ञान में है बल्कि हमारे पास लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तक) में भी अंकित है। अतः इन सभी अंशों को एकत्र कर पुनः जीवन प्रदान कर देना हमारे लिए कुछ कठिन काम नहीं।

[5]हक़ (सत्य बात) से अभिप्राय पवित्र क़ुरआन, इस्लाम अथवा मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि

The Ummah Technology Mission

اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوْجٍ ۝٦

(६) क्या उन्होंने आकाश को अपने ऊपर नहीं देखा कि हमने उसे किस प्रकार बनाया है[1] तथा उसे शोभा प्रदान की है ?[2] उसमें कोई दरार नहीं ।[3]

وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۝٧

(७) तथा धरती को हमने बिछा दिया है तथा उस पर हमने पर्वत डाल दिये हैं तथा उसमें हमने नाना प्रकार की सुन्दर वस्तुयें उगा दी हैं ।[4]

تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۝٨

(८) ताकि प्रत्येक (अल्लाह की ओर) लौटने वाले भक्त के लिए दृष्टि एवं बुद्धि का साधन हो ।[5]

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِيْدِ ۝٩

(९) तथा हमने आकाश से शुभ पानी बरसाया तथा उससे बाग़ एवं कटने वाले खेत के अन्न पैदा किये ।[6]

वसल्लम की नबूवत (दूतत्व) है । भावार्थ सबका एक ही है । مَرِيجٍ (मरीज) का अर्थ उलझाव, असमंजस्य अथवा संदेह है, अर्थात ऐसा विषय जो उन पर उलझ गया है, जिससे वे उलझाव में हैं कभी उसे जादूगर कहते हैं, कभी कवि तथा कभी भविष्यवक्ता ।

[1]अर्थात बिना स्तम्भ के जिनका उसे कोई सहारा हो ।

[2]अर्थात तारों से उसे सुशोभित किया ।

[3]इसी प्रकार कोई अंतर तथा भिन्नता भी नहीं है । जैसे दूसरे स्थान पर कहा :

﴿ اَلَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۭ مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ۭ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ۝ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ﴾

"जिसने सात आकाश ऊपर-नीचे बनाये । (तू ऐ देखने वाले) अल्लाह दयालु की उत्पत्ति में कोई अनियमितता न देखेगा, पुनः (दृष्टि डालकर) देख ले क्या कोई चीर भी दिखाई दे रही है ।" (*अल-मुल्क-३, ४*)

[4]कुछ ने زوج (ज़ौज) का अर्थ जोड़ा किया है, अर्थात सभी प्रकार की वनस्पतियाँ तथा वस्तुयें जोड़ा-जोड़ा (नर-मादा) बनाईया है । بَهِيجٍ (बहीज) का अर्थ सुदृश्य, हरी-भरी तथा सुंदर ।

[5]अर्थात आकाश तथा धरती की रचना तथा अन्य वस्तुओं का दर्शन तथा उनका ज्ञान प्रत्येक उस व्यक्ति की आँख खोलने तथा समझने एवं शिक्षा ग्रहण करने हेतु है, जो अल्लाह की ओर ध्यान देने वाला है ।

[6]कटने वाले अन्न से अभिप्राय वह खेतियाँ हैं जिनसे गेहूँ, मकई, ज्वार, बाजरा, दालें तथा

The Ummah Technology Mission

وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ﴿١٠﴾

(१०) तथा खजूरों के ऊँचे-ऊँचे वृक्ष जिनके गुच्छे तह पर तह हैं ।[1]

رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ؕ كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ ﴿١١﴾

(११) भक्तों की जीविका के लिए, तथा हमने पानी से मृत नगर को जीवित कर दिया। इसी प्रकार (क़ब्रों से) निकलना है ।[2]

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ﴿١٢﴾

(१२) उनसे पूर्व नूह के समुदाय ने तथा 'रस्स' वालों ने[3] तथा समूदियों ने झुठलाया था।

وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ﴿١٣﴾

(१३) तथा आद ने एवं फ़िरऔन ने तथा लूत के भाईयों ने।

وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ؕ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾

(१४) तथा ऐका वालों[4] ने तथा तुब्बअ के समुदाय ने[5] (भी झुठलाया था)। सब ने पैग़म्बरों को झुठलाया[6] तो मेरी यातना का

चावल आदि उपजते हैं तथा फिर उनका भंडार कर लिया जाता है।

[1] باسِقَات (बासिकात) का अर्थ طِوالاً شاهِقَات अर्थात ऊँचे-लम्बे, طَلْعٌ (तलअ) खजूर का वह गदरा-गदरा फल जो पहले निकलता है। نَضِيدٌ (नज़ीद) का अर्थ तह पर तह। बागों में खजूर का फल भी आ जाता है किन्तु उसे अलग विशेष रूप से वर्णन किया गया है, जिससे खजूर का वह महत्व स्पष्ट है जो अरब में उसे प्राप्त है।

[2] अर्थात जैसे वर्षा से मृत धरती को जीवन प्रदान कर देते तथा हरी-भरी बना देते हैं, इसी प्रकार क़यामत के दिन हम क़ब्रों से मनुष्यों को जीवित करके निकालेंगे।

[3] रस्स के वासियों के निर्धारण के सम्बन्ध में भाष्यकारों में बड़ा मतभेद है। इमाम इब्ने जरीर तबरी ने इस कथन को अधिमान दिया है जिसमें उन्हें अस्हाबे उखदूद (खाइयों वाले) कहा गया है, जिनकी चर्चा सूरह बुरूज में है। (विवरण के लिये देखिए तफ़सीर इब्ने कसीर तथा फ़तहुल क़दीर, सूरह *अल-फ़ुरकान*-३८)।

[4] أَصْحابُ الايكَة (अस्हाबुल ऐका) के लिए देखिये सुरतुश्शुअरा आयत १७६ का तटलेख।

[5] तुब्बअ जाति के लिए देखिये सुरः अद्दुख़ान आयत ३७ का तटलेख।

[6] अर्थात उनमें से प्रत्येक ने अपने-अपने पैग़म्बर को झुठलाया। इसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए सांत्वना है। मानो आपको कहा जा रहा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने समुदाय के झुठलाने पर शोकग्रस्त न हों, इसलिए कि यह कोई नई

The Ummah Technology Mission

वा दा उन पर सत्य हो गया।

أَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٥﴾

(१५) क्या हम प्रथम बार पैदा करने से थक गये ?[1] बल्कि ये लोग नये जीवन की ओर से संदेह में हैं।[2]

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ ۖ وَنَحْنُ أَقْرَبُ

(१६) हमने मनुष्य को पैदा किया है तथा उसके हृदय में जो विचार उत्पन्न होते हैं हम उनसे परिचित हैं[3] तथा हम उसके प्राणनाड़ी से भी

बात नहीं है, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के साथ उनके समुदायों का यही आचरण रहा है। दूसरे, मक्कावासियों को चेतावनी है कि विगत समुदायों ने अम्बिया को झुठलाया तो देख लो कि उनका क्या दुष्परिणाम हुआ ? क्या तुम भी अपने लिए यही परिणाम पसंद करते हो ? यदि नहीं तो झुठलाने का मार्ग त्याग दो तथा ईशदूत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रति विश्वास कर लो।

[1]कि क़ियामत के दिन फिर से जीवन प्रदान करना हमारे लिए कठिन होगा। अर्थ यह है कि जब पहली बार पैदा करना हमारे लिए कठिन नहीं था तो दूसरी बार जीवित करना तो पहली बार पैदा करने से सरल है। जैसे अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَهُوَ الَّذِي يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ ﴾

"वही है जो प्रथम बार सृष्टि की उत्पत्ति करता है, पुनः दोबारा पैदा करेगा तथा यह तो उस पर अत्यन्त ही सहज है।" (*अर्रूम*-२७)

सूरः यासीन ७८,७९ में भी यह विषय वर्णन किया गया है तथा कुदसी हदीस में है, अल्लाह तआला फ़रमाता है : "आदम का पुत्र मुझे यह कहकर दुख देता है कि अल्लाह कदापि मुझे पुनः पैदा करने पर सामर्थ्यवान नहीं जैसे मुझे पहले पैदा किया। हालाँकि पहली बार पैदा करना दूसरी बार पैदा करने से अधिक सरल नहीं।" अर्थात यदि कठिन है तो पहली बार पैदा करना, न कि दूसरी बार पैदा करना। (बुख़ारी, तफ़सीर *सुरतील एख़्लास*)

[2]अर्थात यह अल्लाह के सामर्थ्य का इंकार नहीं करते, अपितु तथ्य यह है कि उन्हें प्रलय के होने तथा पुनर्जीवन में शंका है।

[3]अर्थात इंसान जो कुछ गुप्त रखता तथा मन में छिपा रखता है। वह सब हम जानते हैं। वस्वसा मनोगत विचारों को कहा जाता है जिसका ज्ञान उस मनुष्य के सिवा किसी को नहीं होता परन्तु अल्लाह इन विचारों को भी जानता है। इसीलिए कुदसी हदीस में आता है। "मेरे अनुगामियों के मनोगत विचारों को अल्लाह ने क्षमा कर दिया है, अर्थात उन पर पकड़ नहीं करेगा जब तक उसे मुख से व्यक्त न करे अथवा उसके अनुसार कर्म न

The Ummah Technology Mission

إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ﴿١٦﴾

अधिक उसके निकट हैं।[1]

إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ﴿١٧﴾

(१७) जिस समय दो लेने वाले जा लेते हैं, एक दायीं ओर तथा दूसरा बायीं ओर बैठा हुआ है।

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ﴿١٨﴾

(१८) (मनुष्य) मुख से कोई शब्द निकाल नहीं पाता परन्तु उसके निकट रक्षक (पहरेदार) तैयार है।[2]

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۖ ذَٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ﴿١٩﴾

(१९) तथा मृत्यु की बेहोशी सत्य लेकर आ पहुँची,[3] यही है जिससे तू कतराता फिरता था।[4]

करे" (अल-बुख़ारी किताबुल ईमान, बाबु इज़ा हनस नासियन फिलईमान, मुस्लिम बाबु तजावुज़िल्लाहे अन हदीसिन नफ्से वल ख्वातिरे बिल कल्बे इज़ा लम तस्तक़िर्र)

[1] وريد, शहेरग, अथवा प्राण नाड़ी को कहा जाता है जिसके कटने से मौत हो जाती है। यह रग (नाड़ी) गले के एक किनारे से इंसान के कंधे तक होती है। इस निकटता से तात्पर्य ज्ञान के आधार पर निकटता है। अर्थात ज्ञान से हम इंसान के इतने समीप हैं कि उसके मन की बातों को भी जानते हैं। इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि 'हम' से अभिप्राय फ़रिश्ते हैं, अर्थात हमारे फ़रिश्ते इंसान की प्राण नाड़ी से भी निकट हैं, क्योंकि इंसान के दायें-बायें दो फ़रिश्ते प्रत्येक क्षण मौजूद रहते हैं, वह इंसान की प्रत्येक बात तथा काम को लिखते हैं ﴿يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ﴾ का अर्थ है ग्रहण करते तथा लिखते हैं। इमाम शौकानी ने इसका भावार्थ लिया है कि हम इंसान की सभी स्थितियों को जानते हैं बिना इसके कि हम उन फ़रिश्तों के मुहताज हों जिनको हमने इंसान के कथनों तथा कर्मों के लिखने पर नियुक्त किया है। दो फ़रिश्तों से अभिप्राय कुछ के विचार में एक नेकी लिखने तथा दूसरा बुराई लिखने के लिये है। कुछ के निकट रात-दिन के फ़रिश्ते अभिप्राय हैं। रात के दो फ़रिश्ते अलग तथा दिन के दो फ़रिश्ते अलग। (फ़तहुल क़दीर)

[2] رقيب (रक़ीब) फ़रिश्ते निरीक्षक तथा इंसान के कथन तथा कर्म की प्रतीक्षा करने वाला। عتيد (अतीद) उपस्थित तथा तैयार।

[3] इसका दूसरा अर्थ 'मौत की कठिनाई सत्य के साथ आयेगी' है अर्थात मृत्यु के समय सत्य प्रकट तथा उन वचनों की सत्यता स्पष्ट हो जाती है जो क़यामत (प्रलय) तथा स्वर्ग एवं नरक के विषय में अम्बिया अलैहिमुस्सलाम करते रहे हैं।

[4] تَحِيدُ तू इस मौत से भड़कता तथा भागता था।

The Ummah Technology Mission

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ ۭ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा नरसिंघा फूँक दिया जायेगा। यातना के वादे का दिन यही है।

وَجَاۗءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَاۗىِٕقٌ وَّشَهِيْدٌ ﴿٢١﴾

(२१) तथा प्रत्येक व्यक्ति इस प्रकार आयेगा कि उसके साथ एक हाँक लाने वाला होगा तथा एक गवाही देने वाला।[1]

لَقَدْ كُنْتَ فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَاۗءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ﴿٢٢﴾

(२२) वस्तुतः तू इससे असावधान था, परन्तु हमने तेरे सामने से पर्दा हटा दिया तो आज तेरी दृष्टि अति तीव्र है।

وَقَالَ قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيْدٌ ﴿٢٣﴾

(२३) उसके साथ रहने वाले (फ़रिश्ते) कहेंगे यह उपस्थिति है, जो कि मेरे पास था।[2]

اَلْقِيَا فِيْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿٢٤﴾

(२४) दोनों डाल दो नरक में प्रत्येक काफ़िर उद्दण्ड को।

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبِۨ ﴿٢٥﴾

(२५) जो पुण्य कार्य से रोकने वाला, सीमा उलंघन करने वाला तथा संदेह करने वाला था।

الَّذِيْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ ﴿٢٦﴾

(२६) जिसने अल्लाह के साथ अन्य देवता बना लिया था, तो उसे कठोर यातना में डाल दो।[3]

قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٢٧﴾

(२७) उसका साथी (शैतान) कहेगा कि हे हमारे प्रभु! मैंने इसे मार्ग से भटकाया नहीं था, बल्कि यह स्वयं ही दूर के भटकावे में था।[4]

---

[1] سَائِقٌ (हाँकने वाला) तथा شَهِيدٌ (गवाह) के संबंध में मतभेद है। इमाम तबरी के विचार से यह दो फ़रिश्ते हैं, एक इंसान को महशर (एकत्रित किये जाने वाले स्थान) तक हाँकने वाला तथा दूसरा गवाही देने वाला।

[2] अर्थात फ़रिश्ता इंसान का पूरा रिकार्ड सामने रख देगा कि यह तेरा कर्मपत्र है जो कि मेरे पास था।

[3] अल्लाह तआला कर्मपत्र के अनुसार न्याय तथा निर्णय करेगा। اَلْقِيَا (अल्क़ेया) से الشَّدِيد (अश्शदीद) तक अल्लाह का कथन है।

[4] इसलिए उसने तुरन्त मेरी बात मान ली। यदि यह तेरा विशुद्ध भक्त होता तो मेरे

The Ummah Technology Mission

قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُمْ بِالْوَعِيدِ ﴿٢٨﴾

(२८) (अल्लाह तआला) कहेगा कि बस मेरे समक्ष झगड़े की बात न करो। मैं तो पूर्व ही में तुम्हारी ओर यातना का वादा भेज चुका था।[1]

مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٢٩﴾

(२९) मेरे पास बात बदलती नही[2] तथा न मैं अपने भक्तों पर तनिक भी अत्याचार करने वाला हूँ।[3]

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ ﴿٣٠﴾

(३०) जिस दिन हम नरक से पूछेंगे कि क्या तू भर चुकी ? वह उत्तर देगी कि क्या कुछ और अधिक भी है ?[4]

बहकावे में ही न आता। यहाँ قَرِينٌ (साथी से तात्पर्य शैतान है।

[1]अर्थात अल्लाह काफ़िरों तथा उनके साथी शैतानों से कहेगा कि यहाँ हिसाब के स्थान तथा न्यायालय में लड़ने-झगड़ने की आवश्यकता नहीं, न इसका कोई लाभ ही है। मैंने तो पहले ही ईशदूतों तथा धर्मशास्त्रों के द्वारा इन धमकियों से तुम्हें सूचित कर दिया था।

[2]अर्थात जो वचन मैं ने दिये थे उनके विपरीत नहीं होगा, बल्कि प्रत्येक दशा में पूरे होंगे तथा इसी नियमानुसार तुम्हारा निर्णय मेरी ओर से हुआ है, जिसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता।

[3]कि बिना अपराध के जो उन्होंने किया हो तथा निर्दोष जो उन्होंने किया हो, मैं उनको दण्ड दे दूँ ? अथवा वाकशैली (मुहावरा) के रूप में बोला गया है। जैसे साधारणत: कहा जाता है कि अमुक व्यक्ति अपने दासों पर अत्याचार करता है, अमुक बड़ा क्रूर है, इसका उद्देश्य अतिश्योक्ति नहीं है, अर्थात तात्पर्य है कि मैं अपने बन्दों पर तनिक भी अत्याचारी नहीं हूँ।

[4]अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ﴾

"मैं नरक को इंसानों तथा जिन्नों से भर दूँगा।" (*अलिफ़॰लाम॰मीम अस्सजदा-१३*)

यह वचन जब पूरा हो जायेगा तथा अल्लाह काफ़िर जिन्न तथा इंसान को नरक में डाल देगा, तो नरक से पूछेगा कि तू भर गया है या नहीं ? वह उत्तर देगा कि क्या कुछ और भी है ? अर्थात यद्यपि मैं भर गया हूँ परन्तु हे अल्लाह तेरे विरोधियों के लिये मुझमें अब

The Ummah Technology Mission

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ﴿٣١﴾

(३१) तथा स्वर्ग सदाचारियों के लिए पूर्ण निकट कर दी जायेगी, तनिक भी दूर न होगी।[1]

هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ﴿٣٢﴾

(३२) यह है जिसका वादा तुमसे किया जाता था प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो ध्यानमग्न तथा आबद्ध हो।[2]

مَّنْ خَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ﴿٣٣﴾

(३३) जो दयालु का गुप्त रूप से भय रखता हो तथा आकर्षित होने वाला दिल लाया हो।[3]

ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ۖ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ﴿٣٤﴾

(३४) तुम इस स्वर्ग में शान्ति के साथ प्रवेश कर जाओ। यह सदैव रहने का दिन है।

भी जगह है। नरक से अल्लाह की यह बात तथा नरक का उत्तर देना अल्लाह के सामर्थ्य से कदापि असंभव नहीं। हदीस में भी आता है कि आग में लोग डाले जायेंगे तथा नरक कहेगा هَلْ مِنْ مَّزِيدٍ क्या कुछ और भी है? यहाँ तक कि अल्लाह नरक में अपना पैर रख देगा जिससे नरक पुकार उठेगा, 'क़त, क़त' अर्थात बस, बस (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरह क़ाफ़)। जन्नत (स्वर्ग) के सम्बंध में आता है कि स्वर्ग में अभी जगह रह जायेगी तो अल्लाह उसके लिए नई सृष्टि पैदा करेगा जो वहाँ आबाद होगी। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्नः, बाबुन्नारे यदख़ुलुहा अल-जब्बाररून वल जन्नते यदख़ुलुहा अज़्ज़ुअफाऊ)

[1]तथा कुछ ने कहा है कि क़यामत के दिन जब स्वर्ग समीप कर दिया जायेगा दूर नहीं है, क्योंकि उसे अवश्य व्याप्त होना है तथा «كُلُّ مَا هُوَ آتٍ فَهُوَ قَرِيبٌ». जो भी आगामी वस्तु है वह समीप है, दूर नहीं। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात जब ईमान वाले स्वर्ग तथा उसकी सुख-सुविधाओं का समीप से दर्शन करेंगे तो कहा जायेगा कि यही वह स्वर्ग है जिसका वादा प्रत्येक अल्लाह में ध्यानमग्न तथा उसकी आज्ञा पालन करने वाले से किया गया था। أَوَّابٌ (अव्वाब) अल्लाह में ध्यान करने वाला अर्थात अधिक तौबा (क्षमा-याचना) करने वाला तथा अल्लाह की पवित्रता (तस्बीह) तथा स्मरण करने वाला, एकान्त में अपने पापों को याद करने वाला। حَفِيظٌ (हफ़ीज़) अपने पापों को याद करके उनसे क्षमा माँगने वाला, अथवा अल्लाह के अधिकार तथा उसके उपकारों को याद रखने वाला, अथवा अल्लाह की आज्ञा तथा निषेध को याद रखने वाला। (फ़तहुल क़दीर)

[3]مُّنِيبٍ (मुनीब) अल्लाह की ओर ध्यान करने वाला तथा उसका आज्ञाकारी दिल अथवा शिर्क तथा पाप के दोषों से पवित्र दिल।

The Ummah Technology Mission

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ﴿٣٥﴾

(३५) ये वहाँ जो कुछ चाहें उन्हें मिलेगा (बल्कि) हमारे पास और भी अधिक है।[1]

وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِى الْبِلَادِ ؕ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा उनसे पूर्व भी हम बहुत से समुदायों को नष्ट कर चुके हैं, जो उनसे शक्ति में अत्याधिक थे, वे नगरों में फिरते ही रह गये[2] कि कोई भागने का ठिकाना है ?

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ ﴿٣٧﴾

(३७) इसमें प्रत्येक उस व्यक्ति के लिये सदुपदेश है जिस के दिल[3] हो अथवा कान धरे[4] तथा वह उपस्थित हो।[5]

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ۖ وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ﴿٣٨﴾

(३८) नि:सन्देह हम ने आकाशों तथा धरती एवं दोनों के मध्य की जो कुछ वस्तुयें हैं सबको (मात्र) छ: दिन में पैदा कर दिया तथा हमें थकान ने स्पर्श तक नहीं किया।

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ

(३९) अत: आप उन बातों पर धैर्य धारण करें तथा अपने प्रभु का पवित्रतागान प्रशंसा के साथ सूर्य निकलने से पहले भी तथा

---

[1]इस से अभिप्राय अल्लाह का दर्शन है जो स्वर्गवासियों को प्राप्त होगा, जैसा कि ﴿لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ﴾ (यूनुस-२६) की तफ़सीर (व्याख्या) में गुज़रा।

[2] ﴿فَنَقَّبُوْا فِى الْبِلَادِ﴾ (नगरों में चले-फिरे) का एक और भावार्थ यह वर्णन किया गया है कि वह मक्कावासियों से अधिक व्यवपार तथा व्यवसाय के लिए विभिन्न नगरों में फिरते थे, परन्तु हमारा प्रकोप आया तो उन्हें कहीं शरण तथा भागने का मार्ग नहीं मिला।

[3]अर्थात जागृत हृदय जो सोच-विचार करके वास्तविकताओं का बोध कर लें।

[4]अर्थात ध्यान से वह अल्लाह की वाणी (प्रकाशना) सुने जिसमें विगत समुदायों की घटनाओं का वर्णन किया गया है।

[5]अर्थात मन तथा चेतना से उपस्थित हो, इसलिए कि जो बात ही न समझे वह उपस्थित होते हुए भी ऐसे है जैसे नहीं है।

The Ummah Technology Mission

وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ﴿٣٩﴾

डूबने[1] से पहले भी करें।

وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ﴿٤٠﴾

(४०) तथा रात के किसी समय[2] भी महिमा-गान करें तथा नमाज़ के बाद भी।[3]

وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٤١﴾

(४१) तथा सुन रखें[4] कि जिस दिन एक पुकारने[5] वाला समीप ही के स्थान से पुकारेगा।[6]

---

[1]अर्थात प्रात: एवं संध्या समय अल्लाह की तस्बीह (पवित्रतागान) करो अथवा अस्र तथा फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने पर बल दिया गया है।

[2] مِنْ कुछ का अर्थ देने के लिए है। अर्थात रात के कुछ भाग में भी अल्लाह की तस्बीह (महिमागान) करें अथवा रात की नमाज़ (तहज्जुद) पढ़ें, जैसे दूसरे स्थान पर कहा:

﴿ وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَّكَ ﴾

"रात जो उठकर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ें जो आप के लिये अधिक पुण्य का कारण है।" (*बनी इस्राईल*-७९)

कुछ कहते हैं कि मेराज से पहले मुसलमानों पर केवल फ़ज्र तथा अस्र की नमाज़ तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तहज्जुद की नमाज़ भी फ़र्ज़ (अनिवार्य) थीं। मेराज के अवसर पर पाँच नमाज़ें अनिवार्य कर दी गयीं। (इब्ने कसीर)

[3]अर्थात अल्लाह की तस्बीह करें। कुछ ने इससे वह तस्बीहें अभिप्राय ली हैं, जिनके पढ़ने पर फ़र्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ों के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बल दिया है जैसे سُبْحَانَ اللهِ (सुब्हानल्लाहे) ३३ बार, الْحَمْدُ للهِ (अल्हम्दो लिल्लाहे) ३३ बार, اللهُ أَكْبَر (अल्लाहो अकबर) ३४ बार आदि। (अल-बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाबुज़ ज़िक्रे बादस सलाति, मुस्लिम बाबु इस्तिहबाबिज्जिक्रे, बादस सलाति व बयानु सिफ़तिही) कुछ ने कहा है कि أدبار السجود से अभिप्राय मग़रिब की नमाज़ के बाद की दो रकअतें हैं। कुछ ने कहा कि उपरोक्त तस्बीहें आयत के उतरने के बहुत समय बाद बताई गई थीं।

[4]अर्थात क़यामत के जो समाचार (अहवाल) प्रकाशना (वह्यी) के माध्यम से वर्णन किये जा रहे हैं, इन्हें ध्यान से सुनें।

[5]यह पुकारने वाला इस्राफ़ील फ़रिश्ता होगा अथवा जिब्रील तथा यह वह पुकार होगी जिससे लोग मैदाने महशर में एकत्र हो जायेंगे, अर्थात दूसरी फूँक।

[6]इससे कुछ ने बैतुल मोक़द्दस के समीप का सख़र: (चट्टान) तात्पर्य लिया है। कहते हैं कि यह आकाश से निकटतम स्थान है। कुछ के निकट इसका अभिप्राय यह है कि प्रत्येक

The Ummah Technology Mission

يَوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ﴿٤٢﴾

(४२) जिस दिन उस कड़ी आवाज़ को सविश्वास सुनेंगे, यही निकलने का दिन होगा।[1]

اِنَّا نَحْنُ نُحْىٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ﴿٤٣﴾

(४३) हम ही जीवित करते तथा मारते हैं[2] तथा हमारी ओर ही फिर कर आना[3] है।

يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ؕ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ﴿٤٤﴾

(४४) जिस दिन धरती फट पड़ेगी तथा यह दौड़ते[4] हुए (निकल पड़ेंगे), यह एकत्रित कर लेना हम पर बहुत ही सरल है।

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۫ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ﴿٤٥﴾

(४५) हम भली-भाँति जानते हैं जो कुछ यह कह रहे हैं तथा आप उन्हें बलपूर्वक[5] मनवाने वाले नहीं, बस आप उन्हें क़ुरआन के द्वारा समझाते रहें जो मेरी धमकी से डरते हों।[6]

व्यक्ति यह आवाज़ इस प्रकार सुनेगा जैसे उसके समीप ही से आवाज़ आ रही है। (फ़तहुल क़दीर) तथा यही सही लगता है।

[1]यह चीख़ अर्थात यह क़यामत की फूँक निश्चय होगी, जिसमें वह जगत में शंका करते थे, तथा यही दिन क़ब्रों से निकलने का दिन होगा।

[2]अर्थात संसार में मौत की गोद में डाल देना तथा परलोक में जीवनदान हमारा ही काम है। इसमें कोई हमारा साझी नहीं।

[3]वहाँ हम प्रत्येक मनुष्य को उसके कर्मानुसार फल देंगे।

[4]अर्थात उस पुकारने वाले की ओर दौड़ेंगे जिसने पुकारा होगा। (फ़तहुल क़दीर) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जब धरती फटेगी तो सबसे पहले जीवित होकर मैं ही निकलूँगा, «أَنَا أَوَّلُ مَنْ تَنْشَقُّ عَنْهُ الأَرْضُ». (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ायेल, बाबु तफ़्ज़ीले नबियेना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अला जमीइल ख़्लायेक़)

[5]अर्थात आप पर इसका भार नहीं कि उनको ईमान लाने पर बाध्य कर दें, अपितु आप का कर्तव्य केवल उपदेश देना तथा आमंत्रण है, आप यह काम करते रहें।

[6]अर्थात आपकी दावत तथा सदुपदेश से वही शिक्षा ग्रहण करेगा जो अल्लाह तथा उसकी धमकियों से डरता तथा उसके वचन पर विश्वास रखता होगा। इसीलिए आदरणीय

The Ummah Technology Mission

सूरतुज़ ज़ारियात-५१

سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ

सूर: ज़ारियात मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें साठ आयतें एवं तीन रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु तथा अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

(१) सौगंध है उड़ाकर बिखेरने वालियों की,[1]

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ①

(२) फिर बोझ उठाने वालियों की,[2]

فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ②

(३) फिर धीमी गति से चलने वालियों की,[3]

فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ③

(४) फिर काम का विभाजन करने वालियों की।[4]

فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ④

कतादा यह दुआ किया करते थे।

«اللَّهُمَّ اجْعَلْنَا مِمَّنْ يَخَافُ وَعِيدَكَ، وَيَرْجُو مَوْعُودَكَ، يَا بَارُّ! يَا رَحِيمُ!».

हे अल्लाह हमें उनमें से कर जो तेरी धमकियों से डरते तथा तेरे वचनों से आशा रखते हैं। हे कल्याण करने वाले, हे दया करने वाले। (इब्ने कसीर)

[1]इससे अभिप्राय वायु है जो धूल उड़ाकर तितर-बितर कर देती है।

[2]وِقْرٌ (वक्र) अर्थात हर वह भार जिसे कोई प्राणी लेकर चले। अभिप्राय वह हवायें हैं जो बादलों को लादे हुए हैं अथवा वह बादल जो जल का बोझ लादे हुए हैं, जैसे पशु गर्भ का का बोझ उठाते हैं।

[3]جارِيات (जारियात) पानी में चलने वाली नवकायें, يُسْرًا (युस्रन) आसानी से सरलता से।

[4]مُقَسِّمات इससे अभिप्राय वह फ़रिश्ते हैं जो कार्यों को विभाजित कर लेते हैं, कोई दया का फ़रिश्ता है तो कोई प्रकोप का, कोई जल का, तो कोई अकाल का, कोई वायु का है, तो कोई मृत्यु एवं घटनाओं का। कुछ ने इन सबसे अभिप्राय हवायें ली हैं तथा इन सबको वायु का विशेषण बनाया है। जैसे अनुवादक विशेषज्ञ ने भी इसी के अनुसार अनुवाद किया है। परन्तु हमने इमाम इब्ने कसीर तथा इमाम शौकानी की व्याख्यानुसार व्याख्या की है। शपथ का आशय, जिसकी शपथ ली जाये, उसकी सत्यता का वर्णन करना होता है अथवा कभी-कभी केवल बल देना अभिप्राय होता है तथा कभी जिसकी शपथ ग्रहण की जाये, उसे प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत करना होता है, यहाँ शपथ की यही

The Ummah Technology Mission

إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَصَادِقٌ ﴿٥﴾

(५) विश्वास करो कि तुमसे जो वचन दिये जाते हैं (सब) सत्य हैं।

وَإِنَّ الدِّينَ لَوَاقِعٌ ﴿٦﴾

(६) तथा नि:संदेह न्याय होने वाला है।

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ﴿٧﴾

(७) सौगन्ध है मार्गों वाले आकाश की।[1]

إِنَّكُمْ لَفِي قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ﴿٨﴾

(८) निश्चित रूप से तुम विभिन्न बातों में पड़े हुए हो।[2]

يُؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ أُفِكَ ﴿٩﴾

(९) उससे वही फेरा (रोका) जाता है[3] जो फेर दिया गया हो।

قُتِلَ الْخَرَّاصُونَ ﴿١٠﴾

(१०) निर्मूल बातें करने वाले नाश कर दिये गये।

الَّذِينَ هُمْ فِي غَمْرَةٍ سَاهُونَ ﴿١١﴾

(११) जो अचेत हैं तथा भूले हुए हैं।

तीसरी क़िस्म है, आगे शपथ का उत्तर यह वर्णन किया गया है कि तुमको जो वचन दिये जाते हैं वह निश्चय सच्चे हैं तथा क़यामत (प्रलय) होकर रहेगी जिसमें न्याय किया जायेगा। यह हवाओं का चलना, बादलों का जल लादना, सागरों में नवकाओं का चलना तथा फ़रिश्तों का विभिन्न कार्य करना क़यामत के होने का प्रमाण है, क्योंकि जो अल्लाह यह सब कुछ करता है जो प्रत्यक्ष रूप से अत्यन्त कठिन तथा सामान्य साधनों के विपरीत हैं। वही क़यामत के दिन सभी मानव को पुन: जीवन भी प्रदान कर सकता है।

[1]दूसरा अनुवाद सुंदर तथा शोभामान किया गया है। चाँद, सूर्य, नक्षत्र एवं प्रकाशमान तारे उसकी ऊँचाई तथा विस्तार, यह सब आसमान की शोभा तथा सुंदरता का कारण हैं।

[2]अर्थात हे मक्कावासियो ! तुम किसी एक बात पर सहमत नहीं हो। हमारे पैग़म्बर को तुममें से कोई जादूगर कहता है, कोई कवि, कोई भविष्यवेत्ता तथा कोई झूठा कहता है। इसी प्रकार कोई क़यामत को नहीं मानता तथा कोई संदेह करता है। इसके सिवा एक ओर अल्लाह के विधाता तथा जीविका दाता होने को स्वीकार करते हो तथा दूसरी ओर दूसरों को भी पूज्य बना रखा है।

[3]अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने से अथवा सत्य से, अथवा पुनर्जीवन तथा तौहीद (एकेश्वरवाद) से, अथवा अभिप्राय है कि उपरोक्त मतभेद से वह व्यक्ति फेर दिया गया जिसे अल्लाह ने अपनी सन्मति से फेर दिया। प्रथम भाव में निंदा है, दूसरे में प्रशंसा।

The Ummah Technology Mission

يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٢﴾

(१२) पूछते हैं कि बदले का दिन कब होगा ?

يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ﴿١٣﴾

(१३) (हाँ) यह वह दिन है कि ये आग पर तपाये जायेंगे।[1]

ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ؕ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٤﴾

(१४) (कहा जायेगा) अपने उपद्रव का स्वाद चखो,[2] यही है जिसकी तुम जल्दी मचा रहे थे।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٥﴾

(१५) नि:संदेह अल्लाह से भय रखने वाले स्वर्गों एवं (शीतल) जल स्रोतों में होंगे।

اٰخِذِيْنَ مَاۤ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ﴿١٦﴾

(१६) उनके प्रभु ने जो कुछ उनको प्रदान किया है उसे ले रहे होंगे, वे तो उससे पूर्व ही सदाचारी थे।

كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ﴿١٧﴾

(१७) वे रात्रि को बहुत कम सोया करते थे।[3]

وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿١٨﴾

(१८) तथा वे रात्रि के अन्तिम पहर (भोर) में क्षमा-याचना किया करते थे।[4]

---

[1] يُفْتَنُوْنَ का अर्थ है يُحَرَّقُوْن وَ يُعَذَّبُوْن जिस प्रकार सोने को अग्नि में डालकर जाँचा परखा जाता है इसी प्रकार यह आग में डाले जायेंगे।

[2] فِتْنَةٌ (फ़ितन:) का अर्थ है यातना अथवा आग में जलना।

[3] هُجُوْع (हुजूअ) का अर्थ है रात में सोना। مَا يَهْجَعُوْنَ में ما बल के लिए है। वह रात में कम सोते थे। अर्थ है पूरी रात सोकर ग़फ़लत तथा आनंद में नहीं गुज़ार देते थे बल्कि रात का कुछ भाग अल्लाह की याद में तथा उसके सदन में रोते गिड़गिड़ाते गुज़ारते थे। जैसाकि हदीसों में भी क़्यामुल्लैल (रात की नमाज़) पर बल दिया गया है। जैसे एक हदीस में फ़रमाया, "लोगो ! लोगों को खाना खिलाओ, नाते जोड़ो, सलाम फैलाओ तथा रात में जागकर नमाज़ पढ़ो जबकि लोग सोये हों, तुम शान्ति के साथ स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे।" (मुसनद अहमद ५\४५१)

[4] भोर का समय प्रार्थना की स्वीकृति का अति उत्तम समय है। हदीस में आता है कि जब रात का तिहाई भाग शेष रह जाता है तो अल्लाह संसार के आकाश पर उतर आता है तथा आवाज़ देता है कि कोई प्रायश्चित करने वाला है कि उसका प्रायश्चित स्वीकार करूँ, कोई क्षमा माँगने वाला है कि मैं उसे क्षमा करूँ, कोई भिखारी है कि मैं उसकी माँग पूरी कर दूँ, यहाँ तक कि फ़ज्र (प्रभात) उदय हो जाती है। (सहीह मुस्लिम, किताबु

The Ummah Technology Mission

وَفِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿١٩﴾

(१९) तथा उनके माल में माँगने वालों का तथा प्रश्न करने से बचने वालों का अधिकार था।[1]

وَفِي الْاَرْضِ اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा विश्वास करने वालों के लिए तो धरती पर बहुत सी निशानियाँ हैं।

وَفِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ۭ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٢١﴾

(२१) तथा स्वयं तुम्हारे अस्तित्व में भी, तो क्या तुम नहीं देखते हो।

وَفِي السَّمَاۗءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा तुम्हारी जीविका तथा जो तुमको वचन दिया जाता है सब आकाश में है।[2]

فَوَرَبِّ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَآ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ﴿٢٣﴾

(२३) तो आकाश तथा धरती के प्रभु की सौगन्ध![3] यह पूर्णतः सत्य है ऐसा ही जैसे कि तुम बातें करते हो।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٤﴾

(२४) क्या तुझे इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के सम्मानित अतिथियों की सूचना भी पहुँची है?[4]

اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ۭ

(२५) वे जब उनके यहाँ आये तो सलाम किया, (इब्राहीम) ने सलाम का उत्तर दिया

सलातिल मुसाफिरीन बाबुत तरगीबे फिद दुआये वज ज़िक्रे फी आखिरिल लैले वल एजाबति फीहि)

[1] محروم (महरूम) से अभिप्राय वह है जो आवश्यकता होने पर भी नहीं माँगता, तो उसके योग्य होते हुए भी उसे लोग नहीं देते। अथवा वह व्यक्ति है जिसका सब कुछ आकाश तथा धरती की आपदा के कारण नाश हो जाये।

[2] अर्थात वर्षा भी आकाश से होती है जिससे तुम्हारी जीविका पैदा होती है तथा स्वर्ग-नरक तथा पुण्य एवं दण्ड भी आकाशों में है जिनका वादा किया जाता है।

[3] إِنَّهُ में सर्वनाम संकेत है उन विषयों तथा निशानियों की ओर जो वर्णित हुईं।

[4] هَلْ प्रश्नवाची शब्द है, जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चेतावनी (सूचना) है कि इस कथा का ज्ञान तुझे नहीं, अपितु हम तुझे प्रकाशना द्वारा सूचित कर रहे हैं।

The Ummah Technology Mission

قَالَ سَلٰمٌ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿٢٥﴾

(तथा कहा ये तो) अपरिचित लोग हैं।[1]

فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ﴿٢٦﴾

(२६) फिर (चुपचाप जल्दी-जल्दी) अपने परिवार वालों की ओर गये तथा एक मोटे बछड़े का (माँस) लाये।

فَقَرَّبَهٗٓ اِلَيْهِمْ قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा उसे उनके पास रखा और कहा आप खाते क्यों नहीं ?[2]

فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ ؕ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾

(२८) फिर दिल ही दिल में उनसे भयभीत हो गये,[3] उन्होंने कहा कि आप भयभीत न हों,[4] तथा उन्होंने (आदरणीय) इब्राहीम को एक ज्ञानी पुत्र के होने की शुभसूचना दी।

فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِىْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ ﴿٢٩﴾

(२९) तो उनकी पत्नी ने आश्चर्य में आकर[5] अपने मुख पर हाथ मार कर कहा कि मैं तो बुढ़िया हूँ, साथ ही बाँझ।

قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٠﴾

(३०) उन्होंने कहा कि हाँ तेरे प्रभु ने इसी प्रकार कहा है, नि:संदेह वह हिक्मत वाला एवं जानने वाला है।[6]

---

[1]यह अपने मन में कहा, उनको संबोधित करके नहीं कहा।

[2]अर्थात खाना सामने रखने पर भी उसकी ओर हाथ ही नहीं बढ़ाया तो पूछा।

[3]भय का संवेदन इसलिए किया कि आदरणीय इब्राहीम ने सोचा कि यह आने वाले किसी अच्छे विचार से नहीं आये हैं बल्कि बुरे इरादे से आये हैं।

[4]आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम के मुख पर भय के चिन्ह देखकर फ़रिश्तों ने कहा।

[5] صَرَّةٍ (सर्रतिन) का दूसरा अर्थ है चीख तथा पुकार अर्थात चीख़ते हुए कहा।

[6]अर्थात जैसे हमने तुझसे कहा है, यह हमने अपनी ओर से नहीं कहा है अपितु तेरे प्रभु ने इसी प्रकार कहा है, जिससे हम तुझे सूचित कर रहे हैं। इसलिए इसमें न आश्चर्य की आवश्यकता है न संदेह की, क्योंकि जो अल्लाह चाहता है अवश्य होकर रहता है।

The Ummah Technology Mission

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٣١﴾

(३१) (आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने) कहा कि अल्लाह के भेजे हुए (फ़रिश्तो!) तुम्हारा क्या उद्देश्य है ?[1]

قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾

(३२) उन्होंने उत्तर दिया कि हम पापी लोगों की ओर भेजे गये हैं ।[2]

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِنْ طِينٍ ﴿٣٣﴾

(३३) ताकि हम उन पर मिट्टी के कंकरियों की वर्षा करें ।[3]

مُسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ﴿٣٤﴾

(३४) जो तेरे प्रभु की ओर से नामांकित हो चुकी हैं उन सीमा उलंघन करने वालों के लिए ।[4]

فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٥﴾

(३५) तो जितने ईमान वाले वहाँ थे, हमने उन्हें निकाल दिया ।[5]

فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा हमने वहाँ मुसलमानों का मात्र एक ही घर पाया ।[6]

---

[1] خَطْبٌ कथा, अभियान । अर्थात इस शुभसूचना के अतिरिक्त तुम्हारा और क्या कार्य एवं उद्देश्य है जिसके लिए तुम्हें भेजा गया है ।

[2] इससे अभिप्राय लूत की जाति है जिसका सबसे बड़ा अपराध लिवातत (समलैंगिक मैथुन) था ।

[3] बरसायें का अभिप्राय है कि इन कंकड़ियों से मार डालें । यह कंकड़ियाँ विशुद्ध पत्थर की थीं, न कि आकाशीय ओले थे, अपितु मिट्टी से बनी हुई थीं ।

[4] مُسَوَّمَةً (मुसौव्वमः) नामांकित अथवा निशान लगी, उनका विशेष चिन्ह था अथवा वह प्रकोप के लिए विशेष थीं । कुछ कहते हैं कि जिस कंकड़ी से जिसकी मौत होनी थी, उस पर उसका नाम लिखा होता था । مُسْرِفِينَ जो शिर्क तथा पथभ्रष्टता में बहुत बढ़े हुए तथा दुराचार एवं पाप में सीमा पार करने वाले हैं ।

[5] अर्थात प्रकोप आने से पूर्व हमने वहाँ से उनको निकल जाने का आदेश दे दिया था ताकि वे प्रकोप से सुरक्षित रहें ।

[6] तथा यह अल्लाह के पैग़म्बर (संदेष्टा) आदरणीय लूत अलैहिस्सलाम का घर था जिसमें

The Ummah Technology Mission

وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِّلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٣٧﴾

(३७) तथा वहाँ हमने उनके लिए जो कष्टदायी यातना का भय रखते हैं, एक पूर्ण निशानी छोड़ी।[1]

وَفِي مُوسَىٰ إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾

(३८) तथा मूसा की कथा में (भी हमारी ओर से चेतावनी है) जबकि हमने उसे फ़िरऔन की ओर स्पष्ट प्रमाण देकर भेजा।

उनकी दो पुत्रियाँ तथा कुछ ईमान वाले थे। कहते हैं कि यह कुल तेरह थे। इनमें आदरणीय लूत की पत्नी सम्मिलित नहीं थी, अपितु वह अपनी जाति के साथ विनाश होने वालों में थी। (ऐसरूत्तफ़ासीर) इस्लाम का अर्थ है आज्ञापालन तथा समर्पण। अल्लाह के आदेशों के पालन पर सिर झुकाने वाला मुस्लिम है। इस आधार पर प्रत्येक मोमिन मुसलमान है। इसीलिए उनके लिए मोमिन शब्द प्रयोग किया तथा पुन: उन्ही के लिये मुस्लिम शब्द बोला गया है। इससे प्रमाणित किया गया है कि इनके चरितार्थ में कोई अंतर नहीं, जैसाकि कुछ लोग मोमिन तथा मुस्लिम के बीच करते हैं। क़ुरआन ने जो कहीं मोमिन तथा कहीं मुस्लिम शब्द का प्रयोग किया है तो वह उन अर्थों के अनुसार है जो अरबी शब्दार्थों के आधार पर उनके बीच है। अत: शाब्दिक प्रयोग के मुक़ाबले में धार्मिक तथ्यों को लेना अधिक अनिवार्य है धार्मिक तथ्यों के आधार पर उनके मध्य वही अन्तर है जो जिब्रील अलैहिस्सलाम की हदीस से सिद्ध है। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि इस्लाम क्या है ? तो आपने फ़रमाया : لا إله إلا الله (ला एलाह इल्लल्लाह) की गवाही, नमाज़ की स्थापना, ज़कात देना, हज तथा रमज़ान के महीने का रोज़ा (व्रत)। तथा जब ईमान के विषय में प्रश्न किया गया तो फ़रमाया : अल्लाह पर ईमान लाना, उसके फ़रिश्तों, किताबों, रसूलों, प्रलय का दिन तथा अच्छे एवं बुरे भाग्य के प्रति विश्वास रखना। अर्थात दिल से इन चीज़ों पर विश्वास रखना तथा आज्ञा एवं कर्तव्यों का पालन इस्लाम है। इस आधार पर प्रत्येक मोमिन मुसलमान तथा प्रत्येक मुसलमान मोमिन है। (फ़तहुल क़दीर) तथा जो लोग मोमिन तथा मुस्लिम के बीच अंतर करते हैं वे कहते हैं कि यह सही है कि यहाँ क़ुरआन ने एक ही गिरोह के लिए मोमिन तथा मुस्लिम के शब्द प्रयोग किये हैं, परन्तु इनके बीच जो अंतर है उसके आधार पर प्रत्येक मोमिन मुस्लिम भी है फिर भी प्रत्येक मुस्लिम का मोमिन होना आवश्यक नहीं। (इब्ने कसीर) जो भी हो यह ज्ञान संबंधी बहस है तथा दोनों गिरोहों के पास अपने-अपने तर्क हैं।

[1]यह आयत अथवा पूर्ण लक्षण वह प्रकोप के चिन्ह हैं जो इन विध्वस्त बस्तियों में एक युग तक शेष रहे। तथा यह संकेत भी उन्ही के लिए हैं जो ईश्वरीय प्रकोप का भय रखते हैं, क्योंकि शिक्षा तथा सदुपदेश का प्रभाव भी वही स्वीकार करते हैं तथा आयतों (निशानियों) में मनन-चिन्तन भी वही करते हैं।

The Ummah Technology Mission

فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٣٩﴾

(३९) तो उसने अपने बल बूते पर मुख मोड़ा[1] तथा कहने लगा कि यह जादूगर है अथवा दीवाना है।

فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿٤٠﴾

(४०) अन्ततः हमने उसे तथा उसकी सेना को अपनी यातना में पकड़ कर समुद्र में डाल दिया, वह था ही निंदनीय।[2]

وَفِىْ عَادٍ اِذْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ﴿٤١﴾

(४१) उसी प्रकार आदियों में भी[3] (हमारी ओर से चेतावनी है) जबकि हमने उन पर बाँझ (अशुभ) आँधी भेजी।[4]

مَا تَذَرُ مِنْ شَىْءٍ اَتَتْ عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ ﴿٤٢﴾

(४२) वह जिस-जिस वस्तु पर आती थी उसे जीर्ण अस्थियों की तरह चूर-चूर कर देती थी।[5]

وَفِىْ ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٤٣﴾

(४३) तथा समूद (की कथा) में भी (शिक्षा है) जब उनसे कहा गया कि तुम कुछ दिनों तक लाभ उठा लो।[6]

---

[1] दृढ़ पहलू को रुक्न कहते हैं। यहाँ अभिप्राय उसकी अपनी शक्ति तथा सेना है।

[2] अर्थात उसके काम ही ऐसे थे कि जिन पर वह निन्दा का पात्र था।

[3] أي : تَرَكْنا فِي قِصَّةِ عادٍ آيَةً आद की कथा में भी हमने निशानी छोड़ी।

[4] الرِّيحَ العَقِيمَ (बाँझ हवा) जिसमें शुभ-सम्पन्नता नहीं थी। वह हवा वृक्षों को फलदार करने वाली थी न वर्षा की संदेशवाहक, अपितु केवल विनाश एवं प्रकोप की वायु थी।

[5] यह उस हवा का प्रभाव था जो आद के समुदाय पर प्रकोप के रूप में भेजी गई। यह प्रचंड वायु सात रातें तथा आठ दिन निरन्तर चलती रही। (अल-हाक्क:७)

[6] अर्थात जब उन्होंने अपने ही माँग किये चमत्कार से प्रकट ऊँटनी को वध कर दिया तो उनसे कह दिया गया कि अब तीन दिन तुम और दुनिया का स्वाद ले लो। तीन दिन के बाद तुम ध्वस्त कर दिये जाओगे। यह इसी तरफ संकेत है। कुछ ने इसे सालेह अलैहिस्सलाम की नबूअत के आरम्भ का वचन माना है। शब्दों का यह अर्थ भी हो सकता है बल्कि पूर्व वाक्य-क्रम से यही अर्थ अधिक उचित है।

The Ummah Technology Mission

فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّٰعِقَةُ وَهُمْ يَنظُرُونَ ﴿٤٤﴾

(४४) परन्तु उन्होंने अपने प्रभु के आदेशों की अवहेलना की, जिस पर उन्हें उनके देखते-देखते (तीव्र) कड़क[1] ने नष्ट कर दिया।

فَمَا اسْتَطَاعُوا مِن قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُنتَصِرِينَ ﴿٤٥﴾

(४५) बस न तो वह खड़े हो सके[2] तथा न बदला ले सके।[3]

وَقَوْمَ نُوحٍ مِّن قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَٰسِقِينَ ﴿٤٦﴾

(४६) तथा नूह (अलैहिस्सलाम) के समुदाय का भी इससे पूर्व (यही हाल हो चुका था) वे भी बड़े अवज्ञाकारी लोग थे।[4]

وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा आकाश को हमने (अपने) हाथों से बनाया है[5] तथा नि:संदेह हम विस्तार करने वाले हैं।[6]

وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْمَٰهِدُونَ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा धरती को हमने फ़र्श बना दिया है,[7] तो हम बहुत अच्छे बिछाने वाले हैं।

---

[1]यह صَاعِقَةٌ (तीव्र कड़क) आकाशीय चीख़ थी तथा उसके साथ नीचे से رَجْفَةٌ (भूकम्प) था, जैसाकि सूरः आराफ़-७८ में है।

[2]कि वे भाग सकें।

[3]अर्थात अल्लाह के प्रकोप से अपने आपको नहीं बचा सके।

[4]नूह का समुदाय, आद, फ़िरऔन तथा समूद आदि समुदायों से बहुत पहले गुज़र चुका है। इसने भी अल्लाह की आज्ञापालन के बजाये विद्रोह का मार्ग अपनाया था। अन्ततः उसे जल पल्वन में डूबो दिया गया।

[5] السَّمَآءَ को ज़बर (अ की मात्रा) بَنَيْنَا के कारण है जो लुप्त है। بَنَيْنَا السَّمَآءَ بَنَيْنَاهَا

[6]अर्थात आकाश पहले ही बहुत विशाल है परन्तु हम उसको उससे भी अधिक विस्तृत बनाने का सामर्थ्य रखते हैं, अथवा आकाश से वर्षा करके जीविका विस्तृत करने का सामर्थ्य रखते हैं। अथवा مُوسِعُ को وُسْعٌ से माना जाये (शक्ति तथा सामर्थ्य रखने वाले) तो अर्थ होगा कि हमारे भीतर ऐसे और भी आकाश तथा धरती बनाने का सामर्थ्य तथा शक्ति मौजूद है। हम आकाश तथा धरती बनाकर थक नहीं गये हैं, बल्कि हमारी शक्ति तथा सामर्थ्य असीम है।

[7]अर्थात बिस्तर की भाँति उसे बिछा दिया।

The Ummah Technology Mission

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٤٩﴾

(४९) तथा प्रत्येक वस्तु को हमने जोड़ा-जोड़ा पैदा किया है[1] ताकि तुम शिक्षा प्राप्त करो।[2]

فَفِرُّوا إِلَى اللَّهِ ۖ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٥٠﴾

(५०) तो तुम अल्लाह की ओर दौड़-भाग (अर्थात ध्यान) करो।[3] नि:संदेह मैं तुम्हें उसकी ओर से स्पष्ट रूप से सचेत करने वाला हूँ।

وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۖ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٥١﴾

(५१) तथा अल्लाह के साथ किसी अन्य को देवता न बनाओ। नि:संदेह मैं तुम्हें उसकी ओर से स्पष्ट रूप से सचेत करने वाला हूँ।[4]

كَذَٰلِكَ مَا أَتَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٥٢﴾

(५२) इसी प्रकार जो लोग उनसे पूर्व गुज़रे हैं, उनके पास जो भी रसूल आया उन्होंने कह दिया कि या तो यह जादूगर है अथवा दीवाना है।

أَتَوَاصَوْا بِهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٥٣﴾

(५३) क्या ये इस बात की एक-दूसरे को वसीयत करते गये हैं,[5] नहीं बल्कि ये सभी उद्दण्ड हैं।[6]

---

[1]अर्थात प्रत्येक वस्तु को जोड़ा-जोड़ा नर तथा मादा अथवा उसके मुक़ाबिल तथा विलोम को भी पैदा किया है। जैसे प्रकाश-अंधकार, थल-जल, चाँद-सूर्य, मीठा-कड़ुवा, रात-दिन, भला-बुरा, जीवन-मृत्यु, ईमान-कुफ़्र, सौभाग्य-दुर्भाग्य, स्वर्ग-नरक, जिन्न-इंसान, आदि। यहाँ तक कि जीवधारी की तुलना में निर्जीव। अत: आवश्यक है कि संसार का भी जोड़ा हो अर्थात परलोक, दुनिया के मुक़ाबिले में अन्य जीवन।

[2]यह जान लो कि इन सबका रचयिता मात्र एक अल्लाह है, जिसका कोई शरीक (साझी) नहीं है।

[3]अर्थात कुफ़्र (अविश्वास) तथा अवज्ञा से तौबा तथा क्षमा माँग कर तुरन्त अल्लाह के सदन में झुक जाओ, इसमें देर न करो।

[4]अर्थात तुम्हें हमने खोल-खोल कर डराया तथा तुम्हारी भलाई कर रहा हूँ कि केवल एक अल्लाह की ओर झुको। उसी पर विश्वास तथा भरोसा करो तथा मात्र उसी एक की इबादत करो। उसके साथ अन्य उपास्यों को शरीक (साझी) न करो। ऐसा करोगे तो याद रखो कि स्वर्ग की सुविधाओं तथा सुखों से सदैव के लिये वंचित हो जाओगे।

[5]अर्थात प्रत्येक बाद में आने वाली जातियों ने इसी प्रकार अल्लाह के रसूलों का इंकार किया और उन्हें जादूगर तथा उन्मादग्रस्त कहा, जैसे पहले समुदाय आगामी समुदायों को वसीयत करके जाते रहे। एक के पश्चात एक प्रत्येक समुदाय ने यही मार्ग अपनाया।

[6]एक-दूसरे को वसीयत तो नहीं अपितु प्रत्येक समुदाय ही अपनी-अपनी जगह उद्दण्ड है।

The Ummah Technology Mission

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ﴿٥٤﴾

(५४) तो आप उनसे मुख फेर लें, आप पर कोई आरोप नहीं।

وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾

(५५) तथा शिक्षा देते रहें, नि:संदेह ये शिक्षा ईमानवालों को लाभ देगी।[1]

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾

(५६) मैंने जिन्नात एवं मनुष्यों को मात्र इसीलिए पैदा किया है कि वे केवल मेरी इबादत करें।[2]

مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِيْدُ اَنْ يُّطْعِمُوْنِ ﴿٥٧﴾

(५७) न मैं उनसे जीविका चाहता हूँ, न मेरी यह इच्छा है कि ये मुझे खिलायें।[3]

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ﴿٥٨﴾

(५८) अवश्य अल्लाह (तआला) तो स्वयं जीविका प्रदान करने वाला शक्तिशाली एवं बलवान है।

فَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ

(५९) तो जिन लोगों ने अत्याचार किया है उन्हें भी उनके साथियों के भाग के समान

इसलिए उन सबके दिल समान हैं तथा उनके चरित्र भी मिलते-जुलते हैं। इसलिए पिछलों ने वही कुछ कहा जो अगलों ने कहा तथा किया।

[1]इसलिए कि सदुपदेश से लाभ उन्हीं को पहुँचाता है। अथवा अभिप्राय यह है कि आप शिक्षा देते रहें, इससे वह अवश्य लाभ प्राप्त करेंगे जिनके संबंध में अल्लाह के ज्ञान में है कि वह ईमान लायेंगे।

[2]इसमें अल्लाह के उस इरादे (मशीयत) को व्यक्त किया गया जो धर्मविधान के अनुसार वह बंदों से चाहता है। कि सम्पूर्ण मानव और जिन्न मात्र एक अल्लाह की उपासना करें तथा आज्ञापालन भी उसी एक का करें। यदि इसका सम्बन्ध उत्पत्ति के इरादे से होता तो सब उसकी वन्दना तथा आज्ञापालन के लिए विवश होते तथा कोई उससे फिरने का सामर्थ्य न रखता। अर्थात इसमें इंसानों तथा जिन्नों को उनके जीवन का उद्देश्य स्मरण कराया गया है, जिसे यदि उन्होंने भूलाये रखा तो आख़िरत में कड़ी पूछ होगी तथा वह उस परीक्षा में विफल माने जायेंगे जिसमें अल्लाह ने उन्हें इरादे तथा पसंद की स्वाधीनता दे रखी है।

[3]अर्थात मेरी इबादत तथा आज्ञापालन से मेरा उद्देश्य यह नहीं है कि यह मुझे कमाकर खिलायें, जैसाकि दूसरे स्वामियों का होता है, अपितु जीविका के सभी कोष तो मेरे ही पास हैं, मेरी इबादत तथा आज्ञापालन से तो स्वयं उन्हीं का लाभ होगा।

The Ummah Technology Mission

اَصْطَبِرُوْا اَمْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ۚ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾

भाग मिलेगा[1] अत: वे मुझसे शीघ्र न माँगें।[2]

(६०) तो ख़राबी है नास्तिकों को उनके उस दिन की जिसका वह वचन दिये जाते हैं।

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ يَّوْمِهِمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٦٠﴾

सूरतु त्तूर-५२

سُوْرَةُ الطُّوْرِ

सूर: तूर मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें उन्चास आयते एवं दो रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(१) सौगन्ध है तूर की।[3]

وَالطُّوْرِ ﴿١﴾

(२) तथा लिखी हुई किताब की।[4]

وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ﴿٢﴾

(३) जो झिल्ली के खुले हुए पृष्ठों में है।[5]

فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ﴿٣﴾

(४) तथा आबाद घर की।[6]

وَالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ﴿٤﴾

---

[1] ذَنُوب (जनूब) का अर्थ भरा हुआ डोल है। कूयें से डोल में पानी निकाल कर बाँटा जाता है, इसीलिए यहाँ डोल को भाग के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। अभिप्राय यह है कि अत्याचारियों को यातना से भाग मिलेगा, जैसे इससे पहले कुफ़्र तथा शिर्क करने वालों को उनकी यातना का भाग मिला था।

[2] किन्तु यह यातना का भाग उन्हें कब पहुँचेगा, यह अल्लाह की इच्छा पर निर्भर है। इसलिए प्रकोप की माँग में शीघ्रता न करें।

[3] तूर वह पर्वत है जिस पर मूसा (अलैहिस्सलाम) से अल्लाह ने बात की। उसे तूर सीना भी कहा जाता है। अल्लाह ने उसके इसी महत्व के कारण उसकी शपथ ली है।

[4] مَسْطُور (मस्तूर) का अर्थ है लिखित वस्तु, इसके विभिन्न चरितार्थ वर्णन किये गये हैं। क़ुरआन मजीद, लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) सभी अवतरित किताबें अर्थात लोगों के कर्म जो फ़रिश्ते लिखते हैं।

[5] यह مَسْطُور से संबंधित है। رَقّ (रक्क़) वह पतली खाल जिस पर लिखा जाता था। مَنْشُور (मंशूर) का अर्थ है फैलाया तथा खुला हुआ।

[6] यह بيت معمور (बैते मअमूर) सातवें आकाश पर वह वंदना गृह है जिसमें फ़रिश्ते इबादत करते हैं। यह वन्दना गृह फ़रिश्तों से इस प्रकार भरा रहता है कि प्रतिदिन सत्तर

The Ummah Technology Mission

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ ﴿٥﴾ (५) तथा ऊँची छत की।[1]

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ﴿٦﴾ (६) तथा भड़काए हुए साग़र की।[2]

إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾ (७) नि:संदेह आपके प्रभु का प्रकोप होकर रहने वाला है।

مَّا لَهُ مِن دَافِعٍ ﴿٨﴾ (८) उसे कोई रोकने वाला नहीं।[3]

يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ﴿٩﴾ (९) जिस दिन आकाश थरथराने लगेगा।[4]

हज़ार फ़रिश्ते इबादत के लिए आते हैं, जिनकी फिर प्रलय तक दोबारा बारी नहीं आयेगी, जैसाकि मेराज की हदीसों में वर्णन किया गया है। कुछ ने बैते मअमूर से ख़ानये काबा अभिप्राय लिया है जो उपासना के लिए आने वाले मनुष्यों से प्रत्येक समय भरा रहता है। मअमूर का अर्थ है आबाद तथा भरा हुआ।

[1]इससे अभिप्राय आकाश है जो धरती के लिए छत के समान है। क़ुरआन ने उसे दूसरे स्थान पर 'सुरक्षित छत' कहा है। ﴿وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَّحْفُوظًا وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ﴾ (*अल-अम्बिया*-३२) कुछ ने इससे अर्श तात्पर्य लिया है जो सभी उत्पत्तियों के लिए छत है।

[2] مسجور (मस्जूर) का अर्थ है भड़का हुआ। कुछ कहते हैं कि इससे अभिप्राय वह पानी है जो अर्श के नीचे है जिससे क़यामत (प्रलय) के दिन वर्षा होगी। उससे मृत शरीर जीवित हो जायेंगे। कुछ कहते हैं कि इससे अभिप्राय सागर हैं, उनमें क़यामत के दिन आग भड़क उठेगी, जैसाकि फ़रमाया :

﴿وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ﴾

"तथा जब सागर भड़का दिये जायेंगे" (*अत्तकवीर*-६)

इमाम शौकानी ने इसी भावार्थ को उत्तम माना है। कुछ ने मस्जूर का अर्थ भरा हुआ लिया है। इमाम तबरी ने इसी कथन को लिया है। इसके और भी कई अर्थ वर्णन किये गये हैं। (देखिये तफ़सीर इब्ने कसीर)

[3]यह उपरोक्त सौगंधों का उत्तर है। अर्थात यह सभी वस्तुऐं अल्लाह की महाशक्ति का प्रदर्शन हैं, इस बात का प्रमाण हैं कि अल्लाह का वह प्रकोप भी निश्चय होकर रहेगा जिसका उसने वादा किया है। उसे टालने पर कोई समर्थ न होगा।

[4] مور (मौर) का अर्थ है गति तथा उथल-पुथल क़यामत के दिन आकाश के प्रबंध में जो उथल-पुथल तथा तारों की टूट-फूट के कारण जो बिखराव पैदा होगा, उसको इन शब्दों से व्यंजित किया गया है, तथा यह उपरोक्त यातना के लिए समय है। अर्थात यह प्रकोप उस दिन होगा जब आकाश थरथरायेगा तथा पर्वत अपने स्थान छोड़कर रूई के गालों के समान तथा रेत के कणों की भाँति उड़ जायेंगे।

The Ummah Technology Mission

وَ تَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ﴿١٠﴾

(१०) तथा पर्वत चलने-फिरने लगेंगे।

فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١١﴾

(११) उस दिन झुठलाने वालों की (पूर्ण) ख़राबी है।

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ﴿١٢﴾

(१२) जो अपनी अनायास बातों में उछल-कूद कर रहे हैं।[1]

يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ﴿١٣﴾

(१३) जिस दिन वे धक्के दे-देकर[2] नरक की आग की ओर लाये जायेंगे।

هٰذِهِ النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٤﴾

(१४) यही (नरक की) वह अग्नि है जिसे तुम झूठ कहते थे।[3]

اَفَسِحْرٌ هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ﴿١٥﴾

(१५) (अब बताओ) क्या यह जादू है?[4] अथवा तुम देखते ही नहीं हो।[5]

اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾

(१६) इसमें जाओ, (नरक में) अब तुम्हारा धैर्य रखना तथा न रखना तुम्हारे लिए समान है। तुम्हें केवल तुम्हारे कर्मों का बदला दिया जायेगा।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّ نَعِيْمٍ ﴿١٧﴾

(१७) नि:संदेह सदाचारी लोग स्वर्ग में तथा सुखों में हैं।[6]

---

[1]अर्थात अपने कुफ़्र तथा असत्य में लीन तथा सत्य को झुठलाने और उपहास में लगे हुए हैं।

[2]الدَّعُّ (अद्दअ) का अर्थ है बड़ी कड़ाई के साथ ढकेलना।

[3]यह नरक पर नियुक्त फ़रिश्ते (ज़बानिय:) उन्हें कहेंगे।

[4]जैसे तुम दुनिया में पैग़म्बरों को जादूगर कहा करते थे, बतलाओ क्या यह भी जादू का कोई काम है?

[5]अथवा जिस प्रकार तुम दुनिया में सत्य के दर्शन से अंधे थे, यह दण्ड भी तुम्हें नहीं सूझ रहा है? यह डाँट-फटकार के लिये उन्हें कहा जायेगा, अन्यथा प्रत्येक वस्तु उनके दर्शन में आ चुकी होगी।

[6]काफ़िरों तथा हतभागों के बाद ईमानवालों तथा भाग्यशालियों की चर्चा की जा रही है।

The Ummah Technology Mission

فَٰكِهِينَ بِمَآ ءَاتَىٰهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَوَقَىٰهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ ٱلْجَحِيمِ ﴿١٨﴾

(१८) उन्हें जो उनके प्रभु ने प्रदान कर रखी हैं, उस पर प्रसन्न हैं।[1] तथा उन्हें उनके प्रभु ने नरक की यातना से भी बचा लिया है।

كُلُوا۟ وَٱشْرَبُوا۟ هَنِيٓـًٔۢا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

(१९) तुम मज़े से ख़ाते-पीते रहो उन कर्मों के बदले जो तुम करते थे।[2]

مُتَّكِـِٔينَ عَلَىٰ سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ ۖ وَزَوَّجْنَٰهُم بِحُورٍ عِينٍ ﴿٢٠﴾

(२०) समतल बिछे हुए सुन्दर तख़्त पर तकिये लगाये हुए।[3] तथा हमने उनके विवाह बड़े-बड़े नयनों वाली हूरों से कर दिये हैं।

وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَٱتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم بِإِيمَٰنٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ أَلَتْنَٰهُم مِّنْ عَمَلِهِم مِّن شَىْءٍ ۚ كُلُّ ٱمْرِئٍۭ

(२१) तथा जो लोग ईमान लाये तथा उनकी संतान ने भी ईमान में उनका अनुगमन किया हम उनकी सन्तान को उन तक पहुँचा देंगे तथा उनके कर्मों से हम कुछ कम न करेंगे।[4]

---

[1]अर्थात स्वर्ग के घर, खाने, वस्त्र, सवारियाँ, सुंदर पत्नियाँ तथा अन्य सुखों, उन सब पर वह आनंदित होंगे, क्योंकि यह वरदान दुनिया के सुखों से अत्याधिक बढ़कर होंगे तथा مَالاَ عَيْنٌ رَأَتْ وَلاَ أُذُنٌ سَمِعَتْ وَلاَ خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ का चरितार्थ।

[2]दूसरे स्थान पर फ़रमाया : ﴿كُلُوا۟ وَٱشْرَبُوا۟ هَنِيٓـًٔۢا بِمَآ أَسْلَفْتُمْ فِى ٱلْأَيَّامِ ٱلْخَالِيَةِ﴾ (अल-हाक्क:-२४) इससे ज्ञात हुआ कि अल्लाह की दया प्राप्त करने के लिए ईमान के साथ सत्कर्म अति आवश्यक है।

[3]مَصْفُوفَةٍ (मस्फ़ूफ़:) एक-दूसरे से मिले हुए, जैसेकि वह पंक्तिबद्ध हैं। अथवा कुछ ने उसका भावार्थ वर्णन किया है कि वह परस्पर सम्मुख होंगे, जैसे रण क्षेत्र में सेनायें सम्मुख होती हैं। इस भाव को क़ुरआन के अन्य स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया गया है :

﴿عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَٰبِلِينَ﴾

"एक-दूसरे के सम्मुख आसनों पर आसीन होंगे।" (*अस्साफ़्फ़ात*-४४)

[4]अर्थात जिनके पिता अपनी स्वच्छता, सदाचार तथा सत्कर्म के कारण स्वर्ग की उच्च श्रेणियों में पदासीन होंगे, अल्लाह तआला उनकी ईमानदार संतान के भी पद उँचे करके उन्हें उनके पिताओं के साथ मिला देगा। यह नहीं करेगा कि उनके बापों के पद घटा कर उनकी संतान की नीची श्रेणियों में उनको लाये। अर्थात ईमानवालों पर दुहरा अनुग्रह फ़रमायेगा। एक तो यह कि पिता तथा पुत्रों का परस्पर मिलन करा देगा ताकि

The Ummah Technology Mission

بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ﴿٢١﴾

प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने कर्मों का गिरवी है।[1]

وَأَمْدَدْنَاهُم بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢٢﴾

(२२) हम उनके लिए मेवे तथा रूचिकर माँस का प्राचुर्य कर देंगे।[2]

يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَّا لَغْوٌ فِيهَا

(२३)(प्रसन्नता के साथ) वे एक-दूसरे से (शराब के) प्याले की छीना-झपटी करेंगे,[3] जिस शराब

उनके नयन ठण्डे हों, दूसरा यह कि नीचे पदों वालों को उठाकर उच्च पदों पर आसीन कर देगा। अन्यथा दोनों के मिलन का यह भी तरीका हो सकता है कि प्रथम श्रेणी वालों को द्वितीय श्रेणी प्रदान कर दे। यह बात चूँकि उसके कृपा तथा उपकार के विपरीत होगी, इसलिए वह ऐसा नहीं करेगा, अपितु द्वितीय श्रेणी वालों को प्रथम श्रेणी प्रदान करेगा। यह तो अल्लाह का वह उपकार है जो संतान पर पिताओं के सत्कर्मों की बरकत (शुभ) से होगा। हदीस में आता है कि संतान की दुआ तथा इस्तिग़फ़ार (प्रार्थना तथा क्षमा-याचना) से बापों के दर्जे भी बढ़ते हैं। जब एक व्यक्ति का पद स्वर्ग में ऊँचा होता है तो वह पूछता है कि हे अल्लाह इसका कारण क्या है ? अल्लाह फ़रमाता है, "इसका कारण तेरी संतान की तेरे लिए क्षमा-याचना की प्रार्थना है।" (मुसनद अहमद २\५०९) इसका समर्थन उस हदीस से भी होता है जिसमें आता है कि इंसान मर जाता है तो उसके कर्म का क्रम भी समाप्त हो जाता है, परन्तु तीन चीज़ों का पुण्य मृत्यु के पश्चात भी चालू रहता है, एक सदक़ये जारिया (जारी रहने वाला दान), दूसरा वह ज्ञान जिससे लोग लाभान्वित होते हैं, तीसरी नेक औलाद (सदाचारी संतान) जो उसके लिए प्रार्थना करती हो। (मुस्लिम, किताबुल वसीय:, बाबु मा यलहकुल इंसान मिनस सवाबे बाद वफ़ातेही)

[1] رَهِينٌ (रहीन) مَرْهُون (मर्हून) (बंधक) के अर्थ में है, प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म का बंधक होगा। यह मोमिन तथा काफ़िर दोनों के लिए सामान्य है तथा अर्थ यह है कि जो जैसा करेगा वैसा भरेगा। अथवा इससे अभिप्राय केवल काफ़िर हैं कि वह अपने दुष्कर्म में फंस जायेंगे। जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ * إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ﴾

"प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों में गिरफ्तार होगा सिवाय दायें हाथ वालों (ईमानवालों) के।" (*अल-मुद्दस्सिर-३८,३९*)

[2] أَمْدَدْنَاهُم यह زِدْنَاهُم के अर्थ में है, अर्थात अत्याधिक देंगे।

[3] يَتَنَازَعُونَ- يتعاطون و يتناولون एक-दूसरे से लेंगे। अथवा वह अर्थ है जो अनुवाद में है। كَأْس (कास) उस प्याले तथा जाम को कहते हैं जो मदिरा अथवा अन्य किसी पेय पदार्थ से भरा हुआ हो। ख़ाली वर्तन को कास नही कहते। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

وَلَا تَأْثِيمٌ ﴿٢٣﴾

के आनन्द में न अपशब्द निकलेंगे तथा न पाप होगा।[1]

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُونٌ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा उनके चारों ओर सेवा के लिए (सेवक) बालक चल-फिर रहे होंगे, जैसेकि वे मोती थे जो छिपाकर रखे थे।[2]

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा आपस में एक-दूसरे की ओर मुख करके प्रश्न करेंगे।[3]

قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿٢٦﴾

(२६) कहेंगे कि इससे पूर्व हम अपने घर वालों में बहुत डरा करते थे।[4]

فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَانَا عَذَابَ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾

(२७) तो अल्लाह (तआला) ने हम पर बड़ा उपकार किया तथा हमें तेज़ गर्म हवाओं के प्रकोप से बचा लिया।[5]

إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلُ نَدْعُوهُ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ﴿٢٨﴾

(२८) हम इसके पूर्व ही उसकी इबादत किया करते थे,[6] नि:संदेह वह अत्यन्त परोपकारी एवं अत्यन्त दयालु है।

---

[1]उस मदिरा में सांसारिक मदिरा का प्रभाव नहीं होगा। उसे पीकर न कोई बहकेगा कि अपशब्द कहे, न इतना बेसुध होगा कि पाप करे।

[2]अर्थात स्वर्गवासियों की सेवा के लिए उसे नवयुवक सेवक भी दिये जायेंगे जो उनकी सेवा के लिए फिर रहे होंगे। सुंदरता एवं शोभा तथा स्वच्छता एवं सफाई में वह ऐसे होंगे जैसे मोती, जिसे ढंक रखा गया हो ताकि हाथ लगने से उसकी चमक-दमक मांद न पड़े।

[3]एक-दूसरे से सांसारिक समाचार पूछेंगे कि संसार में किस दशा में जीवन यापन करते रहे तथा ईमान एवं कर्म की मांगें कैसे पूरी करते रहे।

[4]अर्थात अल्लाह की यातना से। इसलिए अल्लाह के उस दण्ड से बचने का प्रबंध भी करते रहे, इसलिए कि इंसान को जिस चीज का भय होता है उससे बचने के लिए वह दौड़ धूप भी करता है।

[5]سَمُوم (समूम) लू, झुलसाने वाली गर्म हवा को कहते हैं। नरक के नामों में से एक नाम भी है।

[6]अर्थात केवल उसी एक की वंदना (इबादत) करते थे, उसके साथ किसी को साझी नहीं करते थे। अथवा यह अर्थ है कि उसी से नरक की यातना से बचने की प्रार्थना करते थे।

The Ummah Technology Mission

فَذَكِّرْ فَمَآ أَنتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ﴿٢٩﴾

(२९) तो आप समझाते रहें, क्योंकि आप अपने प्रभु की कृपा से न तो काहिन (ज्योतिषी) हैं न दीवाना।[1]

أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهِۦ رَيْبَ ٱلْمَنُونِ ﴿٣٠﴾

(३०) क्या (काफ़िर) इस प्रकार कहते हैं कि यह कवि है, हम उस पर कालचक्र (अर्थात मृत्यु) की प्रतीक्षा कर रहे हैं।[2]

قُلْ تَرَبَّصُوا۟ فَإِنِّى مَعَكُم مِّنَ ٱلْمُتَرَبِّصِينَ ﴿٣١﴾

(३१) (आप) कह दीजिए कि तुम प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में हूँ।[3]

أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَٰمُهُم بِهَٰذَآ أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٣٢﴾

(३२) क्या उनकी बुद्धियाँ उन्हें यही सिखाती हैं ?[4] अथवा ये लोग ही उद्दण्ड हैं।[5]

أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُۥ ۚ بَل لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٣﴾

(३३) क्या ये कहते हैं कि इस (नबी) ने (क़ुरआन) स्वयं गढ़ लिया है, वास्तविकता यह है कि वे ईमान नहीं लाते।[6]

---

[1]इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी जा रही है कि आप शिक्षा-दिक्षा तथा उपदेश का काम करते रहें तथा यह आप के विषय में जो कुछ कहते रहते हैं, उसकी ओर कान न धरें, इसलिए कि आप अल्लाह की कृपा से न काहिन हैं न उन्मादी (जैसाकि यह कहते हैं) अपितु आप पर हमारी ओर से प्रकाशना आती है, जो काहिन पर नहीं आती, आप जो कथन सुनाते हैं वह बुद्धि एवं ज्ञान का दर्पण होता है, एक उन्मादी से ऐसी बातें क्योंकर संभव हैं ?

[2]رَيْبٌ (रैव) का अर्थ है कालचक्र, مَنُونٌ (मनून) मौत के नामों में से एक नाम है। अभिप्राय यह है कि मक्का के कुरैश इस प्रतीक्षा में हैं कि कालचक्र से संभवत: इस (मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मौत आ जाये तथा हमें चैन मिल जाये, जो इसकी तौहीद (अद्वैत) की निमन्त्रण ने हमसे छीन लिया है।

[3]अर्थात देखो कि मौत किसे पहले आती है तथा विनाश किसका भाग्य बनता है ?

[4]अर्थात आपके विषय में जो यह इस प्रकार अनाप-शनाप मिथ्या एवं अशुद्ध बातें करते रहते हैं, क्या उनकी बुद्धियाँ उन्हें यही समझाती हैं ?

[5]नहीं अपितु यह उद्दण्ड तथा पथभ्रष्ट लोग हैं, तथा यही उद्दण्डता एवं पथभ्रष्टता उन्हें इन बातों पर उभार रही हैं।

[6]अर्थात क़ुरआन गढ़ने के आरोप पर उकसाने वाला भी उनका कुफ़्र ही है।

The Ummah Technology Mission

فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِن كَانُوا صَادِقِينَ ﴿٣٤﴾

(३४) अच्छा, यदि यह सच्चे हैं तो भला इस जैसी एक (ही) बात यह (भी) तो ले आयें।[1]

أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) क्या ये बिना किसी (पैदा करने वाले) के स्वयं ही पैदा हो गये हैं ?[2] अथवा ये स्वयं पैदा करने वाले हैं ?[3]

أَمْ خَلَقُوا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ ۚ بَل لَّا يُوقِنُونَ ﴿٣٦﴾

(३६) क्या उन्होंने ने ही आकाशों तथा धरती को पैदा किया है ? बल्कि ये विश्वास न करने वाले लोग हैं।[4]

أَمْ عِندَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُونَ ﴿٣٧﴾

(३७) अथवा क्या इनके पास तेरे प्रभु के कोषागार हैं ?[5] अथवा (उन कोषागारों के) ये रक्षक हैं।[6]

---

[1]अर्थात यदि यह अपने दावे में सच्चे हैं कि यह क़ुरआन मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सवयं गढ़ लिया है तो फिर यह भी इस जैसी किताब बनाकर प्रस्तुत कर दें, जो वाक्य-क्रम, चमत्कार एवं प्रभाव, विचित्र भाषा-शैली, तथ्यों की नियति तथा समस्याओं के समाधान में इसका मुक़ाबला कर सके।

[2]अर्थात यदि वास्तव में ऐसा है तो फिर किसी को यह अधिकार नहीं कि उन्हें किसी बात का आदेश दे अथवा रोके। किन्तु जब ऐसा नहीं है, अपितु उन्हें एक स्रष्टा ने पैदा किया है, तो स्पष्ट है कि उसका उन्हें पैदा करने का एक विशेष उद्देश्य है, वह उन्हें पैदा करके यूँ ही कैसे छोड़ देगा ?

[3]अर्थात यह स्वयं भी अपने रचयिता नहीं हैं, बल्कि यह अल्लाह के रचयिता होने को स्वीकार करते हैं।

[4]बल्कि अल्लाह के धमकियों तथा वादों के बारे में संदेह में हैं।

[5]कि जिसे ये चाहें जीविका प्रदान करें तथा जिसे चाहें रोक दें, अथवा जिसे चाहें नुबूवत (ईशदूतत्व) प्रदान करें।

[6] مُصَيْطِرٌ अथवा مُسَيْطِرٌ (मुसैतिर), سَطْرٌ (सतर) से बना है, लेखक जो रक्षक तथा निरीक्षक हो। वह चूँकि पूरा विवरण लिखता है, इसलिए यह संरक्षक एवं निरीक्षक के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है। अर्थात क्या अल्लाह के कोषों अथवा उसकी कृपाओं पर उनका अधिकार है कि जिसे चाहें दें अथवा न दें।

The Ummah Technology Mission

أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ ۚ فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾

(३८)अथवा क्या इनके पास कोई सीढ़ी है, जिस पर चढ़कर सुनते हैं ?[1] (यदि ऐसा है) तो उनका सुनने वाला कोई स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करे।

أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ﴿٣٩﴾

(३९) क्या अल्लाह की तो सब पुत्रियाँ हैं तथा तुम्हारे लिए पुत्र हैं ?

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ﴿٤٠﴾

(४०) क्या तू इनसे कोई पारिश्रमिक माँगता है कि ये उसके बोझ से दबे जा रहे हैं ?[2]

أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤١﴾

(४१) क्या इनके पास परोक्ष का ज्ञान है जिसे ये लिख लेते हैं ?[3]

أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ﴿٤٢﴾

(४२) क्या ये लोग कोई छल करना चाहते हैं ?[4] तो (विश्वास कर लें) कि छल करने वाला गुट काफ़िरों का है।[5]

أَمْ لَهُمْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٣﴾

(४३) क्या अल्लाह के अतिरिक्त उनका कोई अन्य ईष्टदेव (उपास्य) है? (कदापि नहीं) अल्लाह (तआला) उनके शिर्क से (शुद्ध) एवं पवित्र है।

---

[1]अर्थात क्या यह उनका दावा है कि सीढ़ी द्वारा यह भी मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समान आकाशों पर जाकर फ़रिश्तों की बातें अथवा उनकी ओर जो प्रकाशना की जाती है, वह सुन आये हैं।

[2]अर्थात उसे अदा करना उनके लिए कठिन हो।

[3]कि अवश्य उनसे पहले मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ललम मर जायेंगे तथा उनकी मौत उसके बाद आयेगी।

[4]अर्थात हमारे पैग़म्बर के साथ, जिससे उसका विनाश हो जाये।

[5]अर्थात चाल उन्हीं पर पलट जायेगी तथा सब हानि उन्हीं को होगी, जैसे फ़रमाया :

﴿وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِ﴾

"तथा बुरी चालों का संकट उन चाल वालों ही पर पड़ता है।" (फ़ातिर-४३)

जैसाकि बद्र के रण में यह काफ़िर मारे गये तथा अन्य कई स्थानों पर अपमानित हुए।

The Ummah Technology Mission

وَإِن يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَّرْكُومٌ ﴿٤٤﴾

(४४) यदि ये लोग आकाश के किसी टुकड़े को गिरता हुआ देख लें, तब भी कह दें कि यह तह पर तह बादल है।[1]

فَذَرْهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ﴿٤٥﴾

(४५) तो आप उन्हें छोड़ दें यहाँ तक कि वे अपने उस दिन से मिल जायें जिसमें ये अचेत कर दिये जायेंगे।

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٦﴾

(४६) जिस दिन उन्हें उनकी चाल कुछ काम न आयेगी तथा न वे सहायता किये जायेंगे।

وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَٰلِكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

(४७) नि:संदेह अत्याचारियों के लिए इसके अतिरिक्त अन्य यातनायें भी हैं,[2] परन्तु उन लोगों में से अधिकतर लोग अंजान हैं।[3]

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٤٨﴾

(४८) तू अपने प्रभु के आदेश की प्रतीक्षा में धैर्य से काम ले, नि:संदेह तू हमारी आँखों के सामने है। प्रात:काल जब तू उठ[4] अपने प्रभु

---

[1]अभिप्राय यह है कि अपने कुफ़्र तथा उदण्डता से फिर भी नहीं रुकेंगे, अपितु ढीठाई का प्रदर्शन करते हुए कहेंगे कि यह प्रकोप नहीं बल्कि एक पर एक बादल चढ़ा आ रहा है। जैसाकि कुछ अवसरों पर ऐसा होता है।

[2]अर्थात संसार में, जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ﴾

"अवश्य हम उन्हें निकट की कुछ छोटी-सी यातना इस बड़ी यातना के अतिरिक्त चखायेंगे ताकि वे लौट आयें।" (*अलिफ़॰ लाम॰ मीम अस्सजदः*-२१)

[3]इस बात से कि यह सांसारिक प्रकोप तथा आपदा इसलिए हैं कि मानव अल्लाह की ओर ध्यान दें। यह बात वह नहीं समझते, इसलिए पापों से क्षमा नहीं माँगते। अपितु कई बार पहले से भी अधिक पापों में लीन हो जाते हैं। जैसे एक हदीस में फ़रमाया कि मुनाफ़िक़ जब रोगी होकर स्वस्थ हो जाता है तो उसकी मिसाल ऊँट की-सी होती है। वह नहीं जानता कि उसे रस्सियों से क्यूँ बाँधा गया तथा फिर क्यूँ खुला छोड़ा गया ? (सुनन अबू दाऊद, किताबुल जनायज़ न॰ ३०८९)

[4]इस खड़े होने से कौन-सा खड़ा होना अभिप्राय है ? कुछ कहते हैं कि जब नमाज़ के लिए खड़े हों, जैसाकि नमाज़ के आरम्भ में «سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ» पढ़ी

The Ummah Technology Mission

की पवित्रता तथा प्रशंसा का वर्णन कर।

وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ﴿٤٩﴾

(४९) तथा रात्रि को भी उसका जप[1] कर तथा तारों के डूबते समय भी।[2]

सूरतुन नज्म-५३

سُورَةُ النَّجْمِ

सूरः नज्म* मक्का में अवतरित हुई, इसमें बासठ आयतें एवं तीन रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

जाती है। कुछ कहते हैं कि जब जागकर खड़े हों। उस समय भी अल्लाह की तस्बीह महिमागान तथा प्रशंसा मस्नून (उचित) है। कुछ कहते हैं कि जब किसी बैठक (सभा) से खड़े हों जैसे हदीस में आता है। जो व्यक्ति किसी बैठक से उठते समय यह दुआ पढ़ लेगा तो उसके बैठक के पापों का प्रायश्चित हो जायेगा।

«سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ! وَبِحَمْدِكَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ»

(तिर्मिज़ी बाबु मा यक़ूलु इज़ा क़ाम मिन मज्लिसिही)

[1]इससे अभिप्राय क्यामुल्लैल, अर्थात तहज्जुद की नमाज़ है, जो आजीवन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नियम रहा।

[2] أي: وقت إدبارها من آخر الليل (रात के ढ़लने के समय रात के अन्तिम भाग में)। इससे अभिप्राय फ़ज्र की दो रकअत सुन्नतें हैं। ऐच्छिक नमाज़ों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसका अत्याधिक ध्यान रखते थे। तथा एक हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि फ़ज्र की दो (रकअत) सुन्नतें दुनिया तथा उसकी प्रत्येक चीज़ से उत्तम है (सहीह बुख़ारी, किताबुत तहज्जुद, बाबु तआहुदे रकअतयिल फ़ज्र व मन सम्माहुमा ततौउअन व मुस्लिम किताबुस् सलाति, बाबु इस्तिहबाबे रकअतयिल फ़ज्र)

*यह प्रथम सूरः है जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूरे काफ़िरों के जन-समूह में सुनाया। इस के पश्चात जितने लोग आप के पीछे थे सब ने सजदा किया सिवाये उमय्या विन सिलफ़ के, उस ने अपनी मुट्ठी में मिट्टी ले कर उस पर सजदा किया। अन्ततः वह कुफ़्र ही की दशा में मारा गया। (सहीह बुख़ारी, व्याख्या सूरः नज्म) आदरणीय ज़ैद विन साबित कहते हैं कि मैंने इस सूरह का पाठ आपके सामने किया तो आपने इसमें सजदा नहीं किया। (सहीह बुख़ारी, उपरोक्त बाब) इसका अभिप्राय यह हुआ कि सजदा करना मुस्तहब (अच्छा) है, अनिवार्य नहीं। कभी छोड़ भी दिया जाये तो जायज़ (उचित) है।

The Ummah Technology Mission

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوٰى ﴿١﴾

(१) सौगन्ध है सितारे की जब वे गिरे।[1]

مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ﴿٢﴾

(२) कि तुम्हारे साथी ने न मार्ग खोया है न वह टेढ़े मार्ग पर है।[2]

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ﴿٣﴾

(३) तथा न वह अपनी इच्छा से कोई बात कहते हैं।

إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحٰى ﴿٤﴾

(४) वह तो केवल प्रकाशना (आकाशवाणी) है जो अवतरित की जाती है।[3]

عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوٰى ﴿٥﴾

(५) उसे पूर्ण शक्ति वाले फ़रिश्ते ने सिखाया है।

ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوٰى ﴿٦﴾

(६) जो शक्तिशाली है,[4] फिर वह सीधा खड़ा हो गया।

---

[1]कुछ भाष्यकारों ने तारा से सुरय्या (कृतिका नक्षत्र) अभिप्राय लिया है तथा कुछ ने ज़ोहरा तारा लिया है, तथा कुछ ने साधारण तारा लिया है। هَوَى (हवा) ऊपर से नीचे गिरना, अर्थात जब रात्रि के अन्त में फ़ज्र के समय वह गिरता है, अथवा शैतानों को मारने के लिए गिरता है, अथवा कुछ के अनुसार प्रलय के दिन गिरेंगे।

[2]यह सौगन्ध का उत्तर है। صَاحِبُكُمْ (तुम्हारा साथी) कहकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सत्यता को स्पष्ट किया गया है कि नबूअत (दूतत्व) से पहले उसने चालीस वर्ष तुम्हारे बीच गुज़ारे हैं। उसके रात-दिन के सभी कर्म तुम्हारे सामने हैं। उसका स्वभाव तथा कर्म तुम्हारा जाना पहचाना है। सच्चाई तथा अमानतदारी के सिवा उसके आचरण में तुम ने कुछ और भी देखा है? अब चालीस वर्ष बाद जो वह नबूअत का दावा करता है तो तनिक सोचो कि वह किस प्रकार झूठ हो सकता है? वास्तव में न वह पथभ्रष्ट हुआ है न बहका है। अल्लाह ने दोनों प्रकार की गुमराहियों से अपने पैग़म्बर की पवित्रता वर्णन की है।

[3]वह कुमार्ग तथा बहक कैसे सकता है? वह तो अल्लाह की प्रकाशना के बिना मुँह ही नहीं खोलता, यहाँ तक कि हँसी, दिल्लगी के समय भी आप के मुख से सत्य के सिवा कुछ न निकलता था। (तिर्मिज़ी अबवाबुल बिर्र, बाबु माजाअ फ़िल मज़ाहे) इसी प्रकार क्रोध की स्थिति में भी आपको अपनी मनोभावना पर इतना नियंत्रण था कि आप के मुख से कोई बात यथार्थ के विपरीत न निकलती। (अबू दाऊद, किताबुल इल्म, बाबुन फ़ि किताबिल इल्मे)

[4]इससे अभिप्राय जिब्रील फ़रिश्ता है जो बलवान तथा अत्याधिक शक्तिशाली है। पैग़म्बर पर प्रकाशना लाने तथा उसे शिक्षा देने वाला यही फ़रिश्ता है।

The Ummah Technology Mission

وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ۝٧

(७) तथा वह उच्च आकाश के किनारों (क्षितिज) पर था।[1]

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ۝٨

(८) फिर निकट हुआ तथा उतर आया।[2]

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ۝٩

(९) तो वह दो कमान के बराबर दूरी पर रह गया, बल्कि उससे भी कम।[3]

فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى ۝١٠

(१०) तो उसने अल्लाह के भक्त को संदेश पहुँचाया[4] जो भी पहुँचाया।

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ۝١١

(११) हृदय ने झूठ नहीं कहा जिसे (संदेष्टा ने) देखा।[5]

---

[1]अर्थात जिब्रील अलैहिस्सलाम, अर्थात प्रकाशना (वह्यी) सिखाने के पश्चात आकाश के किनारों पर जा खड़े हुए।

[2]अर्थात फिर धरती पर उतरे तथा धीरे-धीरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समीप पहुँचे।

[3]कुछ ने अनुवाद किया है, दो हाथों के बराबर। यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा जिब्रील अलैहिस्सलाम की परस्पर समीपता का वर्णन है। अल्लाह तआला तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निकटता का वर्णन नहीं, जैसाकि कुछ लोग विश्वास दिलाते हैं। आयत के पूर्व क्रम से पूर्णरूप से स्पष्ट है कि इसमें मात्र जिब्रील तथा पैग़म्बर की चर्चा है। इसी निकटता के अवसर पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्रील को उनके मूल रूप में देखा। तथा यह नबी होने के आरम्भिक युग की घटना है जिसकी चर्चा इन आयतों में की गई। दूसरी बार मूल रूप में मेराज (आकाश-भ्रमण) की रात में देखा।

[4]अर्थात जिब्रील अलैहिस्सलाम अल्लाह के बंदे मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए जो प्रकाशना अथवा संदेश लेकर आये थे, वह उन्होंने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तक पहुँचाया।

[5]अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्रील को वास्तविक रूप में देखा कि उनके छः सौ पंख हैं। एक पंख पश्चिम तथा पूर्व के बीच दूरी के बराबर था इसको आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल ने झुठलाया नहीं, अपितु अल्लाह की इस महानशक्ति को स्वीकार किया।

The Ummah Technology Mission

أَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ﴿١٢﴾

(१२) क्या तुम झगड़ा करते हो उस पर जो (पैग़म्बर-संदेष्टा) देखते हैं।

وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ﴿١٣﴾

(१३) उसे तो एक बार और भी देखा था।

عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ﴿١٤﴾

(१४) सिदरतुल मुन्तहा के निकट।[1]

عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ﴿١٥﴾

(१५) उसी के निकट जन्नतुल मावा है।[2]

اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ﴿١٦﴾

(१६) जबकि सिदरह को छिपाये लेती थी वह वस्तु जो उस पर छा रही थी।[3]

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ﴿١٧﴾

(१७) न तो दृष्टि बहकी, न सीमा से बढ़ी।[4]

لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ﴿١٨﴾

(१८) निश्चय उसने पने प्रभु की बड़ी-बड़ी निशानियों में से कुछ निशानियाँ देख लीं।[5]

---

[1]यह मेराज की रात में जब जिब्रील को वास्तविक रूप में देखा, उसका वर्णन है। यह सिद्रतुल मुन्तहा एक बैरी का वृक्ष है, जो छठें या सातवें आकाश पर है तथा यह अंतिम सीमा है। उससे ऊपर कोई फ़रिश्ता नहीं जा सकता। फ़रिश्ते अल्लाह के आदेश भी यहीं से प्राप्त करते हैं।

[2]इसे "जन्नतुल मावा" इसलिए कहते हैं कि आदम अलैहिस्सलाम का आवास तथा निवास यही था। कुछ कहते हैं कि आत्मायें यहीं आकर एकत्र होती हैं।

[3]यह सिद्रतुल मुंतहा की उस स्थिति का वर्णन है जब मेराज की रात आपने उसे देखा। सोने के पतंगे उसके आसपास मँडला रहे थे फ़रिश्तों का प्रतिबिम्ब उस पर पड़ रहा था, तथा प्रभु के प्रतापों का प्रदर्शन भी वही था। (इब्ने कसीर आदि) इसी स्थान पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तीन वरदानों से सम्मानित किया गया। पाँच समय की नमाज़ें, सूरः बक़रः की अंतिम आयतें, तथा उस मुसलमान की क्षमा का वादा जो शिर्क के दोषों से पवित्र होगा। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाबु जिक्रे सिदरतिल मुंतहा)

[4]अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निगाहें दायें-बायें हुईं न उस सीमा से उच्च तथा पार हुईं जो आपके लिए निर्धारित की गई थी। (ऐसरूत्तफासीर)

[5]जिनमें जिब्रील अलैहिस्सलाम तथा सिद्रतुल मुंतहा का देखना तथा अन्य प्राकृति के प्रतीकों का दर्शन है जिसका कुछ विवरण मेराज की हदीसों में वर्णित है।

The Ummah Technology Mission

أَفَرَءَيْتُمُ اللَّٰتَ وَالْعُزَّىٰ ﴿١٩﴾

(१९) क्या तुम ने लात तथा उज्जा को देखा।

وَمَنَوٰةَ الثَّالِثَةَ الْأُخْرَىٰ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा तीसरे अन्तिम मनात को।[1]

---

[1]यह मुशरेकीन (बहुदेववादियों) को फटकारने के लिए कहा जा रहा है कि अल्लाह तो वह है जिसने जिब्रील अलैहिस्सलाम जैसे महान फ़रिश्तों को पैदा किया। मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जैसे उसके संदेशवाहक (रसूल) हैं, जिन्हें उसने आकाशों पर बुलाकर अपनी बड़ी-बड़ी निशानियों का दर्शन भी कराया तथा उन पर प्रकाशना भी उतारता है। क्या तुम जिन पूज्यों की उपासना करते हो उनमें भी यह अथवा इस प्रकार के गुण हैं ? इस संदर्भ में अरब के तीन मुख्य देवताओं के नाम उदाहरणार्थ लिये। 'लात' कुछ के निकट यह शब्द अल्लाह के नाम से लिया गया है। कुछ के विचार से 'लात' 'यलीत' से है, जिसका अर्थ मोड़ना है। पुजारी उसकी ओर अपनी गरदनें मोड़ते तथा उसकी परिक्रमा करते थे, इसलिए यह नाम पड़ गया। कुछ कहते हैं कि लात में 'त' अक्षर संयुक्त है। यह لَتَّ يَلُتُّ से कर्ता संज्ञा है अर्थात (सत्तू घोलने वाला)। यह एक सदाचारी व्यक्ति था, जो हाजियों को घोल-घोल कर सत्तू पिलाया करता था। जब यह मर गया तो लोगों ने उसकी समाधि को पूजास्थल बना लिया, फिर उसकी प्रतिमा तथा मूर्ति बन गई। यह तायेफ़ में बनू सक़ीफ का सबसे बड़ा देवता था। عُزّىٰ (उज्जा) कहते हैं कि यह अल्लाह के सगुण नाम عَزِيزٌ (अज़ीज़) से लिया गया है, तथा यह أَعَزُّ (अअज़्ज़) का स्त्रिलिंग है عَزِيزَة (अज़ीज़ह) के अर्थ में। कुछ कहते हैं कि यह गतफान में एक वृक्ष था, जिसकी पूजा की जाती थी। कुछ कहते हैं कि यह भूतनी थी जो कुछ वृक्षों में प्रकट होती थी। कुछ कहते हैं कि यह श्वेत पत्थर था जिसे पूजते थे। यह कुरैश तथा बनू कनाना का विशेष देवता था। مَنَاة (मनात) मना, यमनी से है जिसका अर्थ 'बहाना' है। इसकी निकटता प्राप्त करने के लिये लोग उसके पास पशुओं की अत्याधिक बलि दिया करते थे तथा उनका रक्त बहाते थे। यह मक्का तथा मदीना के मध्य एक बुत (देवता) था। (फ़तहुल क़दीर) यह कुदैद के सामने मुशल्लल की जगह में था। बनू खुजाआ का यह विशेष देवता था। अंधकार (अज्ञान) युग में औस तथा ख़ज़रज के लोग यहीं से एहराम बाँधते थे तथा इस देवता की परिक्रमा भी करते थे। (ऐसरूत्तफ़ासीर) इसके सिवा विभिन्न क्षेत्रों में मूर्तियाँ फैली हुई थीं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का विजय के पश्चात तथा अन्य अवसरों पर उन बुतों तथा अन्य बुतों (मूर्तियों) का विध्वस्त करा दिया। उन पर बने कलशों एवं भवनों को धराशायी करा दिया। उन वृक्षों को कटवा दिया जिनकी पूजा एवं सम्मान किया जाता था, तथा उन सभी अवशेषों तथा स्मारकों को मिटा दिया जो मूर्तिपूजा की यादगार थे। इस कार्य के लिए आपने आदरणीय ख़ालिद बिन वलीद, आदरणीय अली, आदरणीय अम्र बिन आस तथा जरीर पुत्र अब्दुल्लाह अलबजली आदि (अल्लाह इन सभी से प्रसन्न हो) को, जहाँ-जहाँ यह मूर्तियाँ थीं, भेजा तथा उन्होंने जाकर इन सबको ढाकर अरब द्वीप से शिर्क का नाम मिटा दिया। (इब्ने कसीर) इस्लाम के प्रथम युग के बहुत समय पश्चात एक बार

The Ummah Technology Mission

أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنثَىٰ ﴿٢١﴾

(२१) क्या तुम्हारे लिए पुत्र तथा उस (अल्लाह) के लिए पुत्रियाँ हैं ?[1]

تِلْكَ إِذًا قِسْمَةٌ ضِيزَىٰ ﴿٢٢﴾

(२२) यह तो अब अत्यन्त अन्याय का विभाजन है।[2]

إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوهَا أَنتُمْ وَآبَاؤُكُم مَّا أَنزَلَ اللَّهُ بِهَا مِن سُلْطَانٍ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنفُسُ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُم مِّن رَّبِّهِمُ الْهُدَىٰ ﴿٢٣﴾

(२३) वास्तव में ये केवल नाम हैं जो तुमने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने उनके रख लिये हैं, अल्लाह ने उनका कोई प्रमाण नहीं उतारा। ये लोग तो केवल अटकल तथा अपनी मनोकांक्षाओं के पीछे पड़े हुए हैं, तथा नि:संदेह उनके प्रभु की ओर से उनके पास मार्गदर्शन आ चुका है।

أَمْ لِلْإِنسَانِ مَا تَمَنَّىٰ ﴿٢٤﴾

(२४) क्या प्रत्येक व्यक्ति जो कामना करे उसे सुलभ है ?[3]

فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَىٰ ﴿٢٥﴾

(२५) अल्लाह ही के लिए है यह लोक तथा वह लोक।[4]

फिर अरब में यह शिर्क के प्रदर्शन सामान्य हो गये थे। जिसके लिये अल्लाह तआला ने शैख़ अब्दुल वहाब को यह प्रोत्साहन दिया कि उन्होंने दरईया के अधिकारी को मिलाकर इन शिर्क के प्रतीकों को निरस्त कर दिया, तथा इसी का नवीनकरण एक बार फिर नज्द तथा हिजाज के शासक सुलतान अब्दुल अज़ीज़ (वर्तमान सऊदी शासकों के पिता तथा इस राज्य के निर्माता) ने किया। सभी पक्की क़ब्रों तथा क़लशों को ढाकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत (विधान) को प्रचलित किया। तथा इस प्रकार (अल्लाह के अनुग्रह) से अब पूरे सऊदी अरब में इस्लामी विधानानुसार न कोई पक्की समाधि है, न क़ब्र और न कोई मज़ार।

[1]मुशरेकीन मक्का फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ कहते थे, जैसाकि यह विषय अनेक स्थान पर गुज़र चुका है।

[2]ضِيزَىٰ (ज़ीज़ा) सत्य तथा तथ्य से हटी हुई।

[3]अर्थात यह जो चाहते हैं कि उनके यह देवता उन्हें लाभ पहुँचायें तथा उनकी सिफ़ारिश (अभिस्तावना) करें यह संभव ही नहीं है।

[4]अर्थात वही होगा जो वह चाहेगा, क्योंकि सब अधिकार उसी के हाथ में है।

The Ummah Technology Mission

وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰٓى ﴿٢٦﴾

(२६) तथा बहुत से फ़रिश्ते आकाशों में हैं जिनकी सिफ़ारिश कोई लाभ नहीं दे सकती, परन्तु यह अन्य बात है कि अल्लाह (तआला) अपनी इच्छा से तथा अपनी प्रसन्नता से जिसे चाहे आज्ञा दे दे।[1]

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ﴿٢٧﴾

(२७) नि:संदेह जो लोग आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते, वे फ़रिश्तों को देवियों की संज्ञा देते हैं।

وَمَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ﴿٢٨﴾

(२८) यद्यपि उन्हें इसका कोई ज्ञान नहीं, वे केवल अपने अनुमान के पीछे पड़े हुए हैं तथा नि:संदेह आभास (एवं अनुमान) सत्य के सापेक्ष कुछ काम नहीं देता।

فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٢٩﴾

(२९) तो आप उससे मुख मोड़ लें जो हमारी याद से मुख मोड़े तथा जिनका उद्देश्य केवल साँसारिक जीवन के अन्य कुछ न हो।

ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۡ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ﴿٣٠﴾

(३०) यही उनके ज्ञान की सीमा है। आपका प्रभु उससे भली-भाँति परिचित है जो उसके मार्ग से भटक गया है तथा वही भली-भाँति परिचित है उससे भी जो संमार्ग प्राप्त है।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ

(३१) तथा अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है तथा जो कुछ धरती में है,

---

[1]अर्थात फ़रिश्ते जो अल्लाह की निकटतम सृष्टि हैं उनको भी सिफ़ारिश का अधिकार केवल उन्ही लोगों के लिये प्राप्त होगा जिनके लिये अल्लाह पसन्द करेगा। जब यह बात है तो फिर यह पत्थर की मूर्तियाँ कैसे सिफ़ारिश कर सकेंगी जिनसे तुम आशा लगाये बैठे हो? फिर अल्लाह मुशरिकों (मिश्रणवादियों) के लिए किसी को सिफ़ारिश करने का अधिकार ही कहाँ देगा जब कि शिर्क उसके यहाँ अक्षम्य है, जिसे वह कदापि क्षमा नहीं करेगा ?

The Ummah Technology Mission

لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ﴿٣١﴾

ताकि वह (अल्लाह तआला) कुकर्मियों को उनके कर्मों का बदला दे तथा सत्कर्मियों को अच्छा बदला प्रदान करे।[1]

اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ

(३२) उन लोगों को जो महापापो से बचते हैं तथा निर्लज्जा से भी[2] सिवाय किसी छोटे से पाप के।[3] नि:संदेह तेरा प्रभु उदार क्षमाशील

---

[1]अर्थात मार्गददर्शन तथा पथभ्रष्ट करना उसी के हाथ में है। वह जिसे चाहता है मार्ग-दर्शन देता है तथा जिसे चाहता है गुमराही के गडढे में डाल देता है, ताकि सदाचारियों को उनके सत्कर्मों का फल तथा दुराचारियों को उनके कुकर्मों का प्रतिकार दे। ﴿وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ﴾ यह मध्यवर्ती वाक्य है, तथा لِيَجْزِيَ का संबंध विगत कथन से है। (फ़तहुल क़दीर)

[2]كَبَائِر (कबायेर) كَبِيرَةٌ (कबीरह) का बहुवचन है। महापाप की परिभाषा में मतभेद है। अधिकतर धर्म ज्ञानियों के निकट प्रत्येक वह पाप महापाप है जिस पर नरक की चेतावनी है अथवा जिसके करने पर कड़ी निंदा क़ुरआन तथा हदीस में की गई है, तथा धर्मज्ञानी यह भी कहते हैं कि छोटे पाप भी बार-बार एवं स्थायी रूप से करने से महापाप बन जाते हैं। इसके अलावा इसके अर्थ तथा गुण में मतभेद के समान ही उसकी संख्या में भी बड़ा मतभेद है। कुछ विद्वानों ने उन्हें पुस्तकों में एकत्र कर दिया है, जैसे जहबी की "किताबुल क़बायेर" तथा "अज़्-ज़वाजिर" आदि। فَوَاحِشُ (फ़वाहिश) فَاحِشَةٌ का बहुवचन है, निर्लज्जा पर आधारित कर्म, जैसे व्याभिचार, बाल-मैथुन आदि। कुछ कहते हैं कि जिन पापों पर दण्ड निर्धारित है वह सब फ़वाहिश हैं। आजकल निर्लज्जा के प्रदर्शन बहुत सामान्य बन गये हैं इसलिए निर्लज्जा को सभ्यता समझ लिया गया है, यहाँ तक कि अब मुसलमानों ने भी इस लज्जाहीन सभ्यता को अपना लिया है। जैसाकि घरों में टी॰वी॰, वी॰सी॰आर आदि व्याप्त हैं। नारियों ने न केवल पर्दे को त्याग दिया हैं, बल्कि बन-संवर कर तथा सौन्दर्य एवं शोभा की विज्ञापन बनकर बाहर निकलने को अपना आचरण बना लिया है। मिश्रित शिक्षा, मिश्रित संस्थायें एवं सभायें तथा अन्य बहुत से अवसरों पर नर-नारी का बेधड़क मिश्रण तथा वार्तालाप नित्य दिन बढ़ता ही जा रहा है, जबकि यह सभी फ़वाहिश (निलर्ज्जता) के अन्तर्गत आते हैं। जिनके विषय में यहाँ बतलाया जा रहा है कि उन लोगों को मोक्ष प्राप्त होना है वे महापापों तथा फ़वाहिश से बचते हैं, न कि उनमें लीन होते हैं।

[3]لَمَّ (लमम) का शाब्दिक अर्थ है कम तथा छोटा होना। इसी से इसके प्रयोग हैं أَلَمَّ بِالْمَكَانِ (घर में थोड़ी देर ठहरा), أَلَمَّ بِالطَّعَامِ (तनिक-सा खाया) इसी प्रकार किसी चीज को स्पर्श कर लेना अथवा उसके समीप होना, अथवा कोई काम एक बार अथवा दो बार

The Ummah Technology Mission

وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۚ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ
اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ
اَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ
فَلَا تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۚ هُوَ اَعْلَمُ
بِمَنِ اتَّقٰى ﴿٣٢﴾

है, वह तुम्हें भली-भाँति जानता है जबकि उसने तुम्हें धरती से पैदा किया तथा जबकि तुम अपनी माताओं के गर्भ में भ्रूण थे,[1] तो तुम अपनी पवित्रता स्वयं वर्णन न करो।[2] वही सदाचारियों को भली-भाँति जानता है।

اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ تَوَلّٰى ﴿٣٣﴾

(३३) क्या आपने उसे देखा जिसने मुख मोड़ लिया।

وَاَعْطٰى قَلِيْلًا وَّاَكْدٰى ﴿٣٤﴾

(३४)तथा बहुत कम दिया एवं हाथ रोक लिया।[3]

اَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ﴿٣٥﴾

(३५) क्या उसे परोक्ष का ज्ञान है कि वह (सब कुछ) देख रहा है ?[4]

करना, उसे नित्य तथा निरन्तर न करना, अथवा केवल मनोगत होना, यह सभी रूप لَمَمٌ (लमम) कहलाते हैं। (फ़तहुल क़दीर) इसके इस अर्थ तथा प्रयोग के आधार पर इसका अर्थ छोटा पाप किया जाता है, जिसका अभिप्राय है महापाप के आरम्भिक कर्म करना, किन्तु महापाप से बचना अथवा कोई पाप एक-दो बार करना फिर सदा के लिए उसे त्याग देना, अथवा किसी पाप का मन में विचार करना किन्तु व्यवहीक रूप से उसके समीप न जाना, यह सभी छोटे पाप होंगे, जो अल्लाह तआला माहपापों से बचने के कारण क्षमा कर देगा।

[1] أَجِنَّة (अजिन्नह) جَنِين (जनीन) का बहुवचन है जो भ्रूण गर्भ के बचचे को कहा जाता है, इसलिए कि यह लोगों की आँखों से ओझल होता है।

[2] अर्थात जब उससे तुम्हारी कोई स्थिति तथा गतिविधि गुप्त नहीं, यहाँ तक कि जब तुम माता के गर्भ में थे जहाँ कोई तुम्हें देखने पर समर्थ नहीं था वहाँ भी वह तुम्हारी प्रत्येक अवस्था से अवगत था, तो स्वयं पवित्र बनने तथा अपने मुँह मियाँ-मिट्ठू बनने की क्या आवश्यकता है ? अभिप्राय यह है कि ऐसा काम न करो ताकि दिखावे से तुम बचो।

[3] अर्थात थोड़ा-सा देकर हाथ रोक लिया अथवा तनिक-सा आज्ञापालन किया, फिर पीछे हट गया। أَكْدٰى का मूल अर्थ है कि धरती खोदते-खोदते कड़ा पत्थर आ जाये तथा खुदाई संभव न हो, अंतत: वह खोदना छोड़ दे। अत: जो किसी को कुछ दे परन्तु पूरा न दे, कोई काम प्रारम्भ करे परन्तु उसे अंत तक न पहुँचाये।

[4] अर्थात क्या वह देख रहा है कि उसने अल्लाह के मार्ग में व्यय किया तो उसका माल समाप्त हो जायेगा ? नहीं, यह परोक्ष का ज्ञान उसके पास नहीं है। अपितु वह खर्च

The Ummah Technology Mission

أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَىٰ ﴿٣٦﴾

(३६) क्या उसे उस बात की सूचना नहीं दी गयी जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के ग्रन्थ में था,

وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰ ﴿٣٧﴾

(३७) तथा वफ़ादार इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के ग्रन्थ में था ?

أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ﴿٣٨﴾

(३८) कि कोई व्यक्ति किसी दूसरे का बोझ न उठायेगा।

وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ﴿٣٩﴾

(३९) तथा यह कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए केवल वही है जिसका प्रयत्न स्वयं उसने किया।[1]

करने से केवल कंजूसी, मायामोह तथा परलोक पर अविश्वास के कारण भाग रहा है तथा अल्लाह की आज्ञापालन न करने के भी यही कारण हैं।

[1]अर्थात जिस प्रकार कोई किसी अन्य के पाप का उत्तरदायी नहीं होगा, इसी प्रकार उसे आख़िरत में फल भी उसी चीज़ का मिलेगा, जिसमें उसने अपना परिश्रम किया होगा। (इस प्रतिकार का सम्बन्ध आख़िरत से है, संसार से नहीं, जैसाकि कुछ कम्युनिष्ट विद्वान इसका यह भावार्थ विश्वस्त कराकर तथा अनुपस्थित ज़मीनदारी तथा किरायादारी को अवैध बताते हैं)। हाँ, इस आयत से उन विद्वानों का तर्क देना सहीह है जो कहते हैं कि क़ुरआन के पाठ का पुण्य मृत व्यक्तियों को नहीं पहुँचता, इसलिए कि यह उस मृत का कर्म नहीं है, न उसका परिश्रम। इसीलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने अनुयायियों को मृतों के लिए क़ुरआन पढ़ने का कोई प्रोत्साहन दिया न कथन से अथवा संकेत से उसकी ओर मार्गदर्शन किया। ऐसे ही सहावा केराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम से भी यह काम सिद्ध नहीं। यदि यह कर्म पुण्य का कर्म होता तो सहावा केराम अवश्य उसे अपनाते। तथा इबादत एवं पुण्य कर्म होने के लिए स्पष्ट प्रमाण अनिवार्य है, इसमें विचार तथा अनुमान नहीं चल सकता। हाँ, दुआ-दान का पुण्य मुर्दों को अवश्य पहुँचता है। इस पर सभी विद्वान सहमत हैं, क्योंकि धर्म-विधान से यह प्रमाणित है, तथा जो हदीस मरणोपरान्त तीन कर्मों का क्रम जारी रहने के संदर्भ में आती है तो वह वास्तव में मनुष्य के अपने कर्म हैं, जो किसी न किसी प्रकार से शेष रहते हैं। संतान को स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इंसान की अपनी कमाई कहा है। (अन्नसाई, किताबुल बुयूअ, बाबुल हस्से अलल कसब) चालूदान, वक़्फ़ (स्थिरदान) के समान इंसान के अपने ही कर्म हैं।

﴿وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ﴾

"तथा हम लिखते जाते हैं वे कर्म भी जिनको लोग आगे भेजते हैं तथा उनके वे कर्म भी जिनको पीछे छोड़ जाते हैं।" (*यासीन*-१२)

The Ummah Technology Mission

وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَىٰ ﴿٤٠﴾

(४०) तथा यह कि नि:संदेह उसका प्रयत्न शीघ्र देखा जायेगा।[1]

ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءَ الْأَوْفَىٰ ﴿٤١﴾

(४१) फिर उसे पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा।

وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنتَهَىٰ ﴿٤٢﴾

(४२) तथा यह कि आपके प्रभू ही की ओर पहुँचना है।

وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ ﴿٤٣﴾

(४३) तथा यह कि वही हँसाता है तथा वही रुलाता है।

وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا ﴿٤٤﴾

(४४) तथा यह कि वही मारता है तथा वही जीवित करता है।

وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ﴿٤٥﴾

(४५) तथा यह कि उसी ने जोड़ा अर्थात नर-मादा पैदा किया है।

مِن نُّطْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ ﴿٤٦﴾

(४६) वीर्य से जबकि वह टपकाया जाता है।

وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْأُخْرَىٰ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा यह कि पुन: जीवित करना उसी का दायित्व है।

وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा यह कि वही धनवान बनाता है तथा धन देता है।[2]

इसी प्रकार वह ज्ञान जिसका उसने लोगों में प्रचार-प्रसार किया तथा लोगों ने उसका अनुगमन किया यह उसका प्रयास तथा कर्म है तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस «مَنْ دَعَا إِلَى هُدًى، كَانَ لَهُ مِنَ الأَجْرِ مِثْلَ أُجُورِ مَنْ تَبِعَهُ، من غَيرِ أَنْ يُنْقَصَ مِنْ أُجُورِهِمْ شَيْئًا.» (अबू दाऊद किताबुस्सुन्नह, बाबु लुजूमिस्सुन्नह) के अनुसार अनुगामियों का फल भी उसे पहुँचता रहेगा। अत: यह हदीस आयत के प्रतिकूल नहीं। (इब्ने कसीर)

[1]अर्थात उसने संसार में अच्छा या बुरा जो कुछ भी किया, गुप्त या प्रत्यक्ष रूप से किया, क़यामत के दिन आगे आ जायेगा तथा उस पर उसे पूरा प्रतिफल दिया जायेगा।

[2]अर्थात किसी को इतना धन देता है कि उसे किसी की आवश्यकता नहीं होती तथा उसकी सभी आवश्यकतायें पूरी हो जाती हैं। किसी को इतना धन दे देता है कि उसके पास आवश्यकता से अधिक बच जाता है तथा उसे एकत्र करके रखता है।

The Ummah Technology Mission

وَاَنَّهٗ هُوَ رَبُّ الشِّعۡرٰى ﴿۴۹﴾

(४९) तथा यह कि वही शेअ्रा (तारे) का प्रभु है।[1]

وَاَنَّهٗۤ اَهۡلَكَ عَادَا ۨ الۡاُوۡلٰى ﴿۵۰﴾

(५०) तथा यह कि उसी ने प्रथम आद को नष्ट किया है।[2]

وَثَمُوۡدَا فَمَاۤ اَبۡقٰى ﴿۵۱﴾

(५१) तथा समूद को भी (जिनमें से) एक को भी शेष न रखा।

وَقَوۡمَ نُوۡحٍ مِّنۡ قَبۡلُ ؕ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا هُمۡ اَظۡلَمَ وَاَطۡغٰى ﴿۵۲﴾

(५२) तथा उससे पूर्व नूह के समुदाय को, नि:संदेह वे अत्यन्त अत्याचारी एवं उद्दण्ड थे।

وَالۡمُؤۡتَفِكَةَ اَهۡوٰى ﴿۵۳﴾

(५३) तथा मूतफ़िका (नगर अथवा उल्टी हुई बस्तियों को) उसी ने उलट दिया।[3]

فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ﴿۵۴﴾

(५४) फिर उस पर छा दिया जो छा दिया।[4]

فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ﴿۵۵﴾

(५५) तो हे मनुष्य ! तू अपने प्रभु के किस-किस उपहार पर झगड़ेगा ?[5]

هٰذَا نَذِيۡرٌ مِّنَ النُّذُرِ الۡاُوۡلٰى ﴿۵۶﴾

(५६) यह (नबी) डराने वाले हैं पूर्व के डराने वालों में से।

---

[1]पालनहार तो वह प्रत्येक वस्तु का है। यहाँ इस तारे का नाम इसलिए लिया है कि अरब के कुछ क़बीले उसकी उपासना करते थे।

[2]आद जाति को اُولٰى (प्रथम) इसलिए कहा गया है कि यह समूद जाति से पहले हुई। अथवा इसलिए कि नूह की जाति के बाद सर्वप्रथम यह जाति नष्ट की गई। कुछ कहते हैं कि आद नाम की दो जातियाँ गुज़री हैं, यह प्रथम है जिसे प्रचंड वायु से विध्वस्त किया गया जबकि दूसरी काल चक्रों के साथ विभिन्न नामों से चलती तथा बिखरती शेष रही।

[3]इससे तात्पर्य आदरणीय लूत (अलैहिस्सलाम) की बस्तियाँ हैं, जिनको उनपर उलट दिया गया।

[4]अर्थात तत्पश्चात उन पर पत्थरों की वर्षा हुई।

[5]अथवा संदेह करेगा तथा उनको झुठलायेगा, जबकि वह इतना स्पष्ट तथा सामान्य है कि उनका इंकार संभव है न उनका छिपाना ही।

The Ummah Technology Mission

اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ﴿۵۷﴾

(५७) आने वाली घड़ी निकट आ गयी है।

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ﴿۵۸﴾

(५८) अल्लाह के अतिरिक्त उसका (निर्धारित समय पर खोल) दिखाने वाला अन्य कोई नहीं।

اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ﴿۵۹﴾

(५९) तो क्या तुम इस बात पर आश्चर्य करते हो ?[1]

وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ ﴿۶۰﴾

(६०) तथा हँस रहे हो ? रोते नहीं ?

وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ﴿۶۱﴾

(६१) (अपितु) तुम खेल रहे हो।

فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ﴿۶۲﴾ ۩

(६२) अब अल्लाह के समक्ष सज्दे करो (नत्-मस्तक हो जाओ) तथा (उसी की) इबादत करो।[2]

सूरतुल क़मर-५४

سُوْرَةُ الْقَمَرِ

सूरः क़मर* मक्का में अवतरित हुई, इसमें पचपन आयतें एवं तीन रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

---

[1]बात से तात्पर्य पवित्र क़ुरआन है, अर्थात तुम इससे आश्चर्य करते तथा इसका परिहास करते हो, जबकि इसमें आश्चर्य की बात है न परिहास एवं झुठलाने की।

[2]यह मुश्रिकों (बहुदेववादियों) तथा झुठलाने वालों की फटकार के लिए आदेश दिया। अर्थात जब उनकी दशा यह है कि वह पवित्र क़ुरआन को मानने की जगह उसकी अवहेलना तथा उपहास करते हैं तथा हमारे संदेशवाहक की शिक्षा तथा सदुपदेश का उन पर कोई प्रभाव नहीं हो रहा है तो हे मुसलमानो ! तुम अल्लाह के सदन में झुक कर तथा उसकी उपासना एवं अनुपालन का प्रदर्शन करके पवित्र क़ुरआन के आदर-सम्मान का प्रयोजन करो। अतः इस आज्ञा के अनुपालन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तथा सहावा ने सजदा किया यहाँ तक कि सभा में उपस्थित काफ़िरों ने भी सजदा किया, जैसाकि हदीस में है।

*यह भी उन सूरतों में से है जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईद की नमाज में पढ़ा करते थे, जैसाकि पहले वर्णन हो चुका।

The Ummah Technology Mission

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ①

(१) क़यामत निकट आ गई[1] तथा चन्द्रमा फट गया।[2]

وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ②

(२) ये यदि कोई चमत्कार देखते हैं तो मुख फेर लेते हैं तथा कह देते हैं कि ये पहले से चला आता हुआ जादू है।[3]

وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ۭ وَكُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ③

(३) उन्होंने झुठलाया तथा अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया तथा प्रत्येक कार्य निश्चित समय पर ही निर्धारित है।[4]

وَلَقَدْ جَاۗءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَاۗءِ

(४) नि:संदेह उनके पास वे सूचनायें आ चुकी

---

[1]एक तो उस समय के अनुसार जो व्यतीत हो गया, क्योंकि जो शेष है वह थोड़ा है दूसरे, प्रत्येक आगामी वस्तु समीप ही है। जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी अपने बारे में फ़रमाया कि मेरा अस्तित्व क़यामत से संलग्न है, अर्थात मेरे तथा प्रलय के बीच कोई ईशदूत नहीं आयेगा।

[2]यह वह चमत्कार है जो मक्कावासियों की माँग पर दिखाया गया। चाँद के दो भाग हो गये यहाँ तक कि लोगों ने हिरा पर्वत को उसके मध्य देखा, अर्थात उसका एक भाग पर्वत के उस तरफ़ तथा एक भाग इस तरफ हो गया। (सहीह बुख़ारी, मनाकिबुल अंसार, बाबु, इनशिक़ाकिल क़मर, मुस्लिम किताबु सिफतिल क़यामते, बाबु इन्शिक़ाकिल क़मर) सभी पहले तथा बाद के विद्वानों का यही मत है (फ़तहुल क़दीर) इमाम इब्ने कसीर लिखते हैं। "विद्वानों के निकट इस बात पर सहमति है कि चाँद के दो भाग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में हुए तथा यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्पष्ट चमत्कारों में से है, सही वर्णन-क्रम से प्रमाणित निरंतर हदीस इसको स्पष्ट करती है।"

[3]अर्थात क़ुरैश ईमान लाने के बजाय इसे जादू कहकर अपने इंकार के रास्ते पर अडिग रहे।

[4]यह मक्का के काफ़िरों के झुठलाने तथा मनोकांक्षा के अनुसरण का खण्डन करने के लिए फ़रमाया कि प्रत्येक काम की एक सीमा तथा अंत है, वह अच्छा हो अथवा बुरा। अर्थात अंतत: उसका परिणाम निकलेगा, अच्छे का अच्छा तथा बुरे का बुरा। यह परिणाम लोक में भी प्रकट हो सकता है यदि अल्लाह की इच्छा हो, अन्यथा परलोक में तो निश्चित है।

The Ummah Technology Mission

مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ﴿٤﴾

हैं[1] जिनमें डाँट-फटकार (वाली शिक्षा) है।[2]

حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ﴿٥﴾

(५) तथा पूर्ण हिक्मत की बात है,[3] परन्तु इन डरावनी बातों ने भी कोई लाभ न दिया।[4]

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ نُّكُرٍ ﴿٦﴾

(६) (तो हे नबी !) तुम उनसे मुख फेर लो जिस दिन एक पुकारने वाला अप्रिय वस्तु की ओर पुकारेगा।[5]

خُشَّعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنتَشِرٌ ﴿٧﴾

(७) ये झुकी आँखों से क़ब्रों से इस प्रकार उठ खड़े होंगे कि जैसे वह विस्तृत टिड्डी दल है।[6]

مُّهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ ۖ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ﴿٨﴾

(८) पुकारने वाले की ओर दौड़ते होंगे[7] तथा काफ़िर कहेंगे कि यह दिन तो अत्यन्त कठिन है।

---

[1]अर्थात विगत जातियों का विनाश किया जब उन्होंने झुठलाया।

[2]अर्थात इनमें शिक्षा-दीक्षा के पहलू हैं। कोई इनसे शिक्षा ग्रहण करके शिर्क तथा पाप से बचना चाहे तो बच सकता है। مُزْدَجَرٌ (मुज़्दजर) वास्तव में मुज़्तजर है زَجْرٌ ज़ज्र से यह मीम के साथ उद्गम (धातु) है।

[3]अर्थात ऐसी बात जो विनाश से फेर दे। अथवा यह क़ुरआन पूर्ण हिक्मत वाला है जिसमें कोई दोष एवं त्रुटि नहीं। अथवा अल्लाह तआला जिसे मार्गदर्शन दे तथा जिसको विपथ करे, उसमें बड़ी हिक्मत है जिसको वही जानता है।

[4]अर्थात अल्लाह ने जिसके लिए दुर्भाग्य लिख दिया है तथा उसके दिल पर मुद्रा लगा दी है, उसे पैग़म्बरों की चेतावनी क्या लाभ दे सकती है ? इसे तो डराना न डरना बराबर वाली बात है। लगभग इसी अर्थ की यह आयत है।

﴿قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۖ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ﴾ (अल-अंआम-१४९)

[5]يَوْمَ (यौम) से पहले اُذْكُرْ (उज़्कुर) लोप है, अर्थात उस दिन को याद करो। نُكُرٌ (नोकुर) अति भयावह तथा डरावना, अभिप्राय महशर का मैदान तथा हिसाब के स्थान की भयानकता तथा परीक्षायें हैं।

[6]अर्थात क़ब्रों से निकलकर वह ऐसे फैलेंगे तथा हिसाब स्थल की ओर इतनी तीव्रगति से जायेंगे कि जैसे टिड्डी दल हो जो तत्क्षण अंतरिक्ष में फैल जाता हैं।

[7]مُهْطِعِينَ، مُسْرِعِينَ दौड़ेंगे, पीछे नहीं रहेंगे।

The Ummah Technology Mission

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَّازْدُجِرَ ۝٩

(९) उनसे पूर्व नूह के समुदाय ने भी हमारे भक्त को झुठलाया था तथा पागल बताकर झिड़क दिया था।[1]

فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرْ ۝١٠

(१०) तो उसने अपने प्रभु से प्रार्थना की कि मैं असहाय हूँ तू मेरी सहायता कर।

فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝١١

(११) तो हमने आकाश के द्वारों को मूसलाधार वर्षा से खोल दिया।[2]

وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝١٢

(१२) तथा धरती से स्रोतों को प्रवाहित कर दिया तो उस कार्य के लिये जो भाग्य में लिख दिया गया था (दोनों) पानी एकत्रित हो गया।[3]

وَحَمَلْنَاهُ عَلَىٰ ذَاتِ أَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ۝١٣

(१३) तथा हमने उसे पटरों एवं कीलों वाली नाव पर सवार कर लिया।[4]

تَجْرِي بِأَعْيُنِنَا جَزَاءً لِّمَن كَانَ كُفِرَ ۝١٤

(१४) जो हमारी आँखों के समक्ष चल रही थी। बदला उसकी ओर से जिसका कुफ़्र किया गया था।

---

[1]अर्थात नूह की जाति ने नूह अलैहिस्सलाम को झुठलाया ही नहीं, अपितु झिड़का तथा डराया धमकाया भी। जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿ قَالُوا لَئِن لَّمْ تَنتَهِ يَا نُوحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴾

"उन्होंने कहा, हे नूह यदि तू नहीं रूका तो तुझे पत्थराव कर दिया जायेगा।" (अश्शुअरा-११६)

[2]مُنْهَمِرٍ अर्थात बहुत अधिक अथवा ज़ोरदार هَمْرٌ बहने के अर्थ में आता है। कहते हैं कि चालीस दिन तक निरंतर घोर वर्षा होती रही।

[3]अर्थात आकाश तथा धरती के पानी ने मिलकर वह काम पूरा कर दिया जो भाग्य में लिख दिया गया था, अर्थात तूफ़ान बनकर सबको जलमग्न कर दिया।

[4]دُسُرٍ (दुसुर) دِسَارٌ (दिसार) का बहुवचन है, वह रस्सियाँ जिनसे नवका के तख़्ते बाँधे गये अथवा वह कीलें तथा खूँटियाँ जिनसे नवका को जोड़ा गया।

The Ummah Technology Mission

وَلَقَد تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٥﴾

(१५) तथा नि:संदेह हमने इस घटना को निशानी बनाकर[1] शेष रखा, तो है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला ।[2]

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿١٦﴾

(१६) (बताओ) मेरा प्रकोप तथा मेरी डराने वाली बातें कैसी रहीं ?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٧﴾

(१७) तथा नि:संदेह हमने क़ुरआन को समझने के लिए सरल कर दिया है ।[3] तो क्या कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला है ?

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿١٨﴾

(१८) आद के समुदाय ने भी झुठलाया तो कैसा हुआ मेरा प्रकोप तथा मेरी डराने वाली बातें ।

اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ﴿١٩﴾

(१९) हमने उन पर तीव्र निरन्तर चलने वाली हवा एक निरन्तर अशुभ दिन में भेज दी ।[4]

---

[1] تَرَكْنٰهَا में सर्वनाम سَفِينَة सफ़ीना (नवका) है, अथवा فِعْلَة फेलह (कार्य) की ओर फिरता है । अर्थात تركنا هذه الفعلة التي فعلناها بهم عبرة و عظة "यह कार्य जो उनके साथ हमने किया उसे लोगों के लिए शिक्षा एवं सदुपदेश बनाकर छोड़ दिया ।" (फ़तहुल क़दीर)

[2] مُّدَّكِرٍ (मुद्दकिर) मूलत: مُذْتَكِر मुज़तकिर है । त को द से बदल दिया तथा ज़ाल को दाल (द) बनाकर दाल की दाल में संधि कर दिया । अर्थ है शिक्षा तथा सदुपदेश ग्रहण करने वाला । (फ़तहुल क़दीर)

[3] अर्थात उसके अर्थ तथा भावार्थ को समझना, उससे शिक्षा ग्रहण करना । उसे याद करना हमने सरल बना दिया है । वास्तविकता यह है कि पवित्र क़ुरआन अपने चमत्कार तथा प्रभाव एवं भाषाशैली के आधार पर अति उच्च शास्त्र होने के उपरान्त कोई व्यक्ति तनिक भी ध्यान दे तो वह अरबी व्याकरण तथा भाषाशैली की किताबें पढ़े बिना भी उसे सरलता से समझ लेता है । इसी प्रकार यह दुनिया की एक मात्र किताब है जो एक-एक शब्द याद कर ली जाती है, अन्यथा छोटी से छोटी किताब को भी इस प्रकार याद कर लेना तथा उसे याद रखना अत्यन्त कठिन है । यदि इंसान अपने मन तथा मस्तिष्क के द्वार खोलकर उसे शिक्षा की आँखों से पढ़े, सदुपदेश के कानों से सुने तथा समझने वाले दिल से उस पर विचार करे तो लोक-परलोक के सौभाग्य के द्वार उस पर खुल जाते हैं तथा यह उसके दिल की गहराईयों में उतरकर कुफ़्र तथा पाप की सभी मलीनताओं को साफ कर देता है ।

[4] कहते हैं कि यह बुधवार की सन्ध्या थी । जब उस प्रचंड, बरफीली तथा शाँ-शाँ करती

The Ummah Technology Mission

تَنْزِعُ النَّاسَ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ﴿٢٠﴾

(२०) जो लोगों को उठा-उठाकर पटक देती थी, जैसेकि वे जड़ से कटे खजूर के पेड़ हैं।[1]

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٢١﴾

(२१) तो कैसा रहा मेरा दण्ड एवं मेरा डराना ?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा नि:संदेह हमने क़ुरआन को शिक्षा के लिए सरल कर दिया है, तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला ?

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ﴿٢٣﴾

(२३) समूद के समुदाय ने (भी) डराने वालों को झुठलाया।

فَقَالُوا أَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهُ إِنَّا إِذًا لَّفِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा कहने लगे कि क्या हमीं में से एक व्यक्ति का हम अनुगमन करने लगें ? तब तो हम अवश्य दोष एवं पागलपन में पड़े हुए होंगे।[2]

أَأُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِن بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ ﴿٢٥﴾

(२५) क्या हमारे सब के मध्य मात्र उसी पर प्रकाशना अवतरित की गयी ? नहीं, बल्कि वह झूठा गर्व करने वाला है।[3]

हवा का आरम्भ हुआ, फिर निरन्तर सात रातें और आठ दिन चलती रही। यह हवा घरों तथा दुर्गों में बंद इंसानों को भी ऊपर ले जाती तथा इस प्रकार ज़ोर से उन्हें धरती पर पटकती कि उनके सिर उनके धड़ों से अलग हो जाते। यह दिन उनके लिए यातना के कारण अशुभ सिद्ध हुआ। इसका अभिप्राय यह नहीं कि बुधवार का दिन अशुभ है अथवा किसी अन्य दिन में अशुभ है, जैसाकि कुछ लोग समझते हैं। مُسْتَمِرٌّ(मुस्तमिर्र) का अभिप्राय यह है कि यह प्रकोप उस समय तक चालू रहा जब तक सब नष्ट नहीं हो गये।

[1]यह लम्बे आकार के साथ उनकी विवशता तथा दुर्बलता को भी दिखाना है कि अल्लाह की यातना के आगे वह कुछ न कर सके, जबकि अपनी शक्ति तथा बल पर उन्हें बड़ा घमंड था। أَعْجَازٌ (आजाज़) عَجْزٌ (अजज़) का बहुवचन है, जो किसी वस्तु के पिछले भाग को कहते हैं। مُنْقَعِرٌ (मुनक़अिर) अपने मूल से उखड़ जाने तथा कट जाने वाला अर्थात खजूर के उन तनों की भाँति जो अपने मूल से उखड़े एवं कटे हुए हों, उनके शव धरती पर पड़े हुए थे।

[2]अर्थात एक मानव-पुरूष को रसूल (ईशदूत) मान लेना उनके निकट गुमराही तथा दीवानगी थी। سُعُرٌ (सुअुर) سَعِيرٌ (सअीर) का बहुवचन है, आग की लपट। यहाँ इसको उन्माद तथा कड़ी यातना के अर्थ में प्रयोग किया गया है।

[3]أَشِرٌ (अशिर) का अर्थ अभिमानी तथा सीमा पार करने वाला, अर्थात उसने झूठ भी बोला

The Ummah Technology Mission

سَيَعْلَمُوْنَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْاَشِرُ ﴿٢٦﴾

(२६) अब सब जान लेंगे कल को कि कौन झूठा तथा अहंकारी था ?[1]

اِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾

(२७) नि:संदेह हम उनकी परीक्षा के लिए ऊँटनी भेजेंगे,[2] तो (हे स्वालेह !) तू उनकी प्रतीक्षा कर तथा धैर्य रख |[3]

وَنَبِّئْهُمْ اَنَّ الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ ۚ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾

(२८) तथा उन्हें सूचित कर दे कि पानी उनमें विभाजित है,[4] प्रत्येक अपने फेरे पर उपस्थित होगा |[5]

فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾

(२९) तो उन्होंने अपने साथी को पुकारा[6] जिसने (ऊँटनी पर) आक्रमण किया[7] तथा (उसकी) कोचें काट दीं |

है तो बहुत बड़ा कि मुझ पर प्रकाशना आती है, भला हममें से केवल उसी पर प्रकाशना आनी थी ? अथवा उसके द्वारा हम पर अपनी बड़ाई जताना उसका उद्देश्य है |

[1]यह स्वयं, पैग़म्बर पर आरोप लगाने वाले अथवा ईशदूत सालेह अलैहिस्सलाम, जिनको अल्लाह ने प्रकाशना (वह्यी) एवं नबूवत से सम्मानित किया | 'कल' से अभिप्राय क़यामत का दिन है | अथवा दुनिया में उनकी यातना के लिए निर्धारित दिन |

[2]कि यह ईमान लाते हैं या नहीं ? यह वही ऊँटनी है जो अल्लाह ने स्वयं उनके कहने पर पत्थर की एक चट्टान से निकाली थी |

[3]अर्थात देख कि यह ईमान का मार्ग अपनाते हैं अथवा नहीं ? तथा उनके कष्टों पर धैर्य कर |

[4]अर्थात एक दिन ऊँटनी के पानी पीने के लिए तथा एक दिन समुदाय के पानी पीने के लिये |

[5]तात्पर्य है कि प्रत्येक का भाग उस के साथ ही विशेष है जो अपनी-अपनी बारी पर उपस्थित होकर प्राप्त करे, दूसरा उस दिन न आये | شِرْبٌ (शिर्ब) पानी का भाग |

[6]अर्थात जिसको उन्होंने ऊँटनी को वध करने के लिये तैयार किया था, जिसका नाम कुदार पुत्र सालिफ़ बतलाया जाता है, उसे पुकारा कि अपना काम करे |

[7]अथवा तलवार या ऊँटनी को पकड़ा तथा उसकी टाँगें काट दीं, फिर उसे बध कर दिया | कुछ ने فَتَعاطَى का अर्थ فَجَسَرَ किया है, फिर उसने दुस्साहस किया |

The Ummah Technology Mission

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾

(३०) तो कैसा हुआ मेरा प्रकोप तथा मेरा डराना।

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾

(३१) हमने उन पर एक चीख़ (तीव्र ध्वनि) भेजी तो वे ऐसे हो गये जैसे बाड़ बनाने वाले की रौंदी हुई घास।[1]

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा हमने शिक्षा ग्रहण करने के लिए क़ुरआन को सरल कर दिया है, तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला ?

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾

(३३) लूत के समुदाय ने भी डराने वालों को झुठलाया।

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ ۖ نَجَّيْنَاهُم بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾

(३४) नि:संदेह हमने उन पर पत्थर की वर्षा करने वाली हवा भेजी[2] अतिरिक्त लूत (अलैहिस्सलाम) के परिवार वालों के, उन्हें प्रात:काल के समय[3] हमने सुरक्षा (मुक्ति) प्रदान कर दी।[4]

---

[1] حَظِيرَةٌ (हज़ीरह) مَحْظُورَةٌ (महज़ूरह) के अर्थ में है, अर्थात बाढ़ जो सूखी लकड़ियों तथा झाड़ियों से जानवरों के लिए बनाई जाती है। مُحْتَظِرٌ कर्ता संज्ञा है, صاحِبُ الحَظِيرَة، هَشِيمٌ (हशीम) सूखी घास अथवा कटी हुई सूखी खेती। अर्थात जैसे एक बाड़ बनाने वाले की सूखी लकड़ियाँ तथा झाड़ियाँ निरंतर रौंदे जाने से चूरा-चूरा हो जाती हैं ऐसे ही वह हमारे प्रकोप से चूर-चूर हो गये।

[2] अर्थात ऐसी हवा भेजी जो उन्हें कंकरियाँ मारती थी। अर्थात उनकी बस्तियों को उनके ऊपर ऐसा उलट-पलट दिया गया कि उनका ऊपरी भाग नीचे तथा नीचे का ऊपर हो गया, फिर उस पर कंकर-पत्थर की वर्षा हुई, जैसे कि सूरह हूद आदि में आ चुका है।

[3] आले लूत से अभिप्राय स्वयं ईशदूत लूत अलैहिस्सलाम तथा उन पर ईमान लाने वाले लोग हैं, जिनमें लूत की पत्नी सम्मिलित नहीं, क्योंकि वह ईमान नहीं लाई थी। हाँ, लूत की दो बेटियाँ उनके साथ थीं, जिनको मुक्ति दी गई। سحر (सहर) से अभिप्राय रात का अंतिम भाग है।

[4] अर्थात उनको प्रकोप से बचाना हमारी दया तथा अनुग्रह था जो उन पर हुआ।

The Ummah Technology Mission

نِّعْمَةً مِّنْ عِندِنَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي مَن شَكَرَ ﴿٣٥﴾

(३५) अपनी कृपा से ! प्रत्येक कृतज्ञ को हम इसी प्रकार बदला प्रदान करते हैं।

وَلَقَدْ أَنذَرَهُم بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ﴿٣٦﴾

(३६) नि:संदेह उस (लूत) ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया था,[1] परन्तु उन्होंने डराने वालों के विषय में संदेह एवं शंका तथा झगड़ा किया।[2]

وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَن ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٧﴾

(३७) तथा लूत (अलैहिस्सलाम) को उनके अतिथियों के विषय में बहलाना चाहा[3] तो हमने उनकी आँखे अंधी कर दीं,[4] (तथा कह दिया) मेरा प्रकोप तथा मेरा डराना चखो।

وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾

(३८) तथा निश्चित बात है कि उन्हें प्रात:काल ही एक स्थान पर पकड़ने वाले निर्धारित प्रकोप ने नष्ट कर दिया।[5]

---

[1]अर्थात प्रकोप आने से पहले हमारी कड़ी पकड़ से डराया था।

[2]परन्तु उन्होंने उसकी चिन्ता न की अपितु संदेह किया तथा चेतावनी देने वालों से झगड़ते रहे।

[3]अथवा बहलाया अथवा माँगा लूत से उनके अतिथियों को। अभिप्राय यह है कि जब लूत की जाति को पता लगा कि कुछ सुन्दर युवक लूत के यहाँ आये हैं (जो वास्तव में फ़रिश्ते थे, जो उन्हें दण्ड देने आये थे) तो उन्होंने लूत से कहा कि इन अतिथियों को हमारे सुपुर्द कर दें ताकि हम उनसे अपनी बिगड़ी अभिरूचि की तृप्ति करें।

[4]कहते हैं कि यह फ़रिश्ते जिब्रील, मीकाईल, इस्राफील अलैहिमुस्सलाम थे। जब उन्होंने व्यभिचार के लिए अतिथियों को लेने पर अधिक दुराग्रह किया तो जिब्रील ने अपने पंख का एक भाग उन्हें मारा, जिससे उनकी आँखों के ढेले ही बाहर निकल आये। कुछ कहते हैं कि मात्र आँखों की दृष्टि समाप्त हो गई। जो भी हो, साधारण प्रकोप से पहले यह विशेष यातना उन लोगों को पहुँची जो ईशदूत लूत के पास कुविचार से आये थे, तथा वे आँखों अथवा आँखों की दृष्टि से वंचित होकर घर पहुँचे तथा फिर प्रात: उस सार्वजनिक प्रकोप में नाश हो गये जो पूरे समुदाय के लिये आया। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[5]अर्थात सवेरे उनके पास निर्धारित प्रकोप आ गया। مُستَقِر का अर्थ उन पर घटित होने वाला, जो उन्हें नाश किये विना न छोड़े।

The Ummah Technology Mission

فَذُوْقُوْا عَذَابِيْ وَ نُذُرِ ﴿٣٩﴾

(३९) तो मेरे प्रकोप तथा मेरे डराने (चेतावनी) का स्वाद चखो।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٤٠﴾

(४०) तथा नि:संदेह हमने क़ुरआन को शिक्षा एवं सदुपदेश के लिए सरल कर दिया है,[1] तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला ?

وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿٤١﴾

(४१) तथा फ़िरऔनियों के पास भी डराने वाले आये।[2]

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾

(४२) उन्होंने हमारी समस्त निशानियों को झुठलाया,[3] तो हमने उन्हें अत्यन्त प्रभावी एवं शक्तिशाली पकड़ने वाले की भाँति पकड़ लिया।[4]

اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِي الزُّبُرِ ﴿٤٣﴾

(४३) (हे मक्का वालो !) क्या तुम्हारे काफ़िर उन काफ़िरों से कुछ श्रेष्ठ हैं ?[5] अथवा तुम्हारे लिए पूर्व की किताबों में छुटकारा लिखा हुआ है ?[6]

---

[1]इस सूरह में पवित्र क़ुरआन को सरल बनाने की चर्चा बार-बार करने से उद्देश्य यह है कि क़ुरआन को याद कर लेना तथा समझने को सहज कर देना अल्लाह का बड़ा अनुग्रह है। उसकी कृतज्ञता से इंसान को कभी विमुख नहीं होना चाहिए।

[2] نُذُرٌ (नुज़ुर) نَذِيرٌ नज़ीर (डराने वाला) का बहुवचन है, अथवा إِنْذَار (इन्ज़ार) के अर्थ में है। (फ़तहुल क़दीर)

[3]वह निशानियाँ जिनके द्वारा ईशदूत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़िरऔन तथा फ़िरऔनियों को डराया। यह नौ निशानियाँ थीं जिनकी चर्चा पहले गुज़र चुकी है।

[4]अर्थात उन्हें नष्ट कर दिया, क्योंकि वह यातना ऐसे प्रभुत्वशाली की पकड़ थी जो प्रतिकार करने पर समर्थ है, उसकी पकड़ के पश्चात कोई बच नहीं सकता।

[5]यह प्रश्न इंकार के लिए है अर्थात हे अरबवासियो ! तुम्हारे काफ़िर विगत काफ़िरों से उत्तम नहीं हैं। जब वह अपने कुफ़्र के कारण नाश कर दिये गये तो फिर तुम, जबकि तुम उनसे भी अधिक बुरे हो, प्रकोप से सुरक्षा की आशा क्यों रखते हो ?

[6]زُبُرٌ (ज़ुबुर) से अभिप्राय विगत अम्बिया (ईशदूतों) पर अवतरित किताबें (धर्मशास्त्र) हैं। अर्थात क्या तुम्हारे विषय में पहले की अवतरित किताबों में स्पष्ट कर दिया गया है कि यह अरब अथवा क़ुरैश जो इच्छा हो करते रहें, उन पर कोई प्रभावशाली नहीं होगा।

The Ummah Technology Mission

أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَصِرٌ ﴿٤٤﴾

(४४) अथवा यह कहते हैं कि हम प्रभावशाली होने वाले समूह हैं।[1]

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾

(४५) निकट ही यह समूह पराजित किया जायेगा तथा पीठ दिखाकर भागेगा।[2]

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَىٰ وَأَمَرُّ ﴿٤٦﴾

(४६) बल्कि क़ियामत (प्रलय) का क्षण उनके वचन का समय है तथा क़यामत अत्यन्त कठिन एवं अत्यन्त कटु वस्तु है।[3]

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ﴿٤٧﴾

(४७) नि:संदेह पापी भटकावे में तथा यातना में हैं।

يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾

(४८) जिस दिन वे अपने मुख के बल आग में घसीटे जायेंगे (तथा उनसे कहा जायेगा) नरक की आग लगने का स्वाद चखो।[4]

إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾

(४९) नि:संदेह हमने प्रत्येक वस्तु को एक

---

[1]संख्या की अधिकता तथा शक्ति साधनों के कारण किसी और के हम पर प्रभुत्वशाली होने की संभावना नहीं। अथवा अभिप्राय यह है कि हमारा मामला एकत्र है, हम शत्रु से वदला लेने पर समर्थ हैं।

[2]अल्लाह ने उनके भ्रम का खण्डन किया। समूह से अभिप्राय मक्का के काफ़िर हैं। जैसे उन्हें वद्र में पराजय हुई तथा वह पीठ फेरकर भागे तथा शिर्क के प्रमुख एवं कुफ़्र के प्रधान नष्ट कर दिये गये। वद्र के रण के अवसर पर जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अति विनम्रता से रो-रोकर अपने शिविर में प्रार्थना में लीन थे तो आदरणीय अवूवक्र रज़ी अल्लाहु अन्हु ने कहा कि أَلْحَحْتَ على ربك حسبك يا رسول الله! बस कीजिए अल्लाह के रसूल ! आपने अपने प्रभु के आगे वहुत रो लिया। फिर आप खेमे से बाहर आये तो आप के मुख पर यही आयत थी। (अल-बुख़ारी, तफ़सीर सूर: इक़तरवतिस साअ:)

[3]أدهى (अदहा) دَهَاءٌ (दहाअ) से वना है, घोर अपमानकारी। أَمَرُّ (अमर्र) مَرَارَةٌ (मरारह) से है, अति कड़ुवा, अर्थात यह संसार में जो हत किये गये, बंदी बनाये गये आदि उनकी अन्तिम यातना नहीं, वरन् और भी कड़ी यातनायें उन्हें क़यामत के दिन दी जायेंगी जिसका उनसे वादा किया जाता है।

[4]سَقَرَ (सक़र) भी नरक का नाम है अर्थात उसका ताप तथा यातना की कड़ाई का स्वाद चखो।

The Ummah Technology Mission

(निर्धारित) अनुमान पर पैदा किया है।[1]

وَمَآ اَمۡرُنَاۤ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمۡحٍۭ بِالۡبَصَرِ ﴿۵۰﴾

(५०) तथा हमारा आदेश केवल एक बार (का एक वाक्य) ही होता है, जैसे पलक का झपकना।

وَلَقَدۡ اَهۡلَكۡنَاۤ اَشۡيَاعَكُمۡ فَهَلۡ مِنۡ مُّدَّكِرٍ ﴿۵۱﴾

(५१) तथा हमने तुम जैसे बहुतों को नष्ट कर दिया है,[2] तो कोई है शिक्षा ग्रहण करने वाला।

وَكُلُّ شَىۡءٍ فَعَلُوۡهُ فِى الزُّبُرِ ﴿۵۲﴾

(५२) तथा जो कुछ उन्होंने (कर्म) किये हैं सब कर्मपत्र में लिखे हुए हैं।[3]

وَكُلُّ صَغِيۡرٍ وَّكَبِيۡرٍ مُّسۡتَطَرٌ ﴿۵۳﴾

(५३) (इसी प्रकार) प्रत्येक छोटी-बड़ी बात लिखी हुई है।[4]

اِنَّ الۡمُتَّقِيۡنَ فِىۡ جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ ﴿۵۴﴾

(५४) नि:संदेह सदाचारी लोग स्वर्ग एवं सरिताओं में होंगे।[5]

فِىۡ مَقۡعَدِ صِدۡقٍ عِنۡدَ مَلِيۡكٍ مُّقۡتَدِرٍ ﴿۵۵﴾

(५५) सत्य एवं सम्मान की बैठक में[6] सामर्थ्य वाले स्वामी के पास।[7]

---

[1]अइम्मये सुन्नत (इस्लामी धर्म के विशेषज्ञों) ने इस आयत तथा इस प्रकार की अन्य आयतों से अल्लाह के भाग्यलेख को प्रमाणित किया है, जिसका अभिप्राय यह है कि अल्लाह तआला की सृष्टि के पैदा करने से पहले ही सबका ज्ञान था तथा उसने सबका भाग्य लिख दिया है तथा क़द्रिया सम्प्रदाय का खण्डन किया है जो सहाबा के युग के अंत में प्रकट हुआ।

[2]अर्थात विगत समुदायों के काफ़िरों को जो कुफ़्र (इंकार) में तुम्हारे ही जैसे थे। (फ़तहुल क़दीर)

[3]अथवा दूसरा अर्थ है, लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) में अंकित हैं।

[4]अर्थात सृष्टि के सभी कथन तथा कर्म लिखे हुए हैं, छोटे हों अथवा बड़े, तुच्छ हों अथवा महान। हतभागों की चर्चा के पश्चात अब सौभागियों की चर्चा की जा रही है।

[5]अर्थात विभिन्न तथा अनेक प्रकार के बाग़ होंगे نَهَرٌ यह जातिवाचक के रूप में है, जिसमें स्वर्ग की सभी नहरें सम्मिलित हैं।

[6]مَقْعَدِ صِدْقٍ (मकअदे सिद्क) सत्य अथवा प्रतिष्ठा का आसन जिसमें पाप की बात होगी न बकवाद। अभिप्राय स्वर्ग है।

[7]مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ सामर्थ्यवान अधिपति अर्थात वह प्रत्येक प्रकार के सामर्थ्य से युक्त है, जो

The Ummah Technology Mission

सूरतुर्रहमान -५५

سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ

सूरः रहमान* मदीने में अवतरित हुई, इसमें अट्ठहत्तर आयतें एवं तीन रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है। بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

(१) दयालु ने। اَلرَّحْمٰنُ ①

(२) क़ुरआन सिखाया।[1] عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ②

(३) उसी ने मनुष्य को पैदा किया।[2] خَلَقَ الْاِنْسَانَ ③

(४) उसे बोलना सिखाया।[3] عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ④

चाहे कर सकता है, कोई उसे विवश नहीं कर सकता। عِنْدَ (पास) यह उस प्रतिष्ठा तथा सम्मान की ओर संकेत है जो ईमानवालों को अल्लाह के पास प्राप्त होगा।

*इस सूरः को लोगों ने मदनी (मदीने में अवतरित) माना है, परन्तु सही यही है कि यह मक्की (मक्के में अवतरित) है। (फ़तहुल क़दीर) इसकी पुष्टि उस हदीस से भी होती है जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क्या बात है कि तुम चुप रहते हो। तुम से तो अच्छे जिन्न हैं कि जब जिन्न वाली रात को मैंने यह सूरः उन पर पढ़ी तो जब भी मैं ﴿فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ﴾ पढ़ता तो वह उसके उत्तर में कहते «لَا بِشَيْءٍ مِنْ نِعَمِكَ رَبَّنَا نُكَذِّبُ فَلَكَ الْحَمْدُ». (तफ़सीर सूरतुर्रहमान, इसकी चर्चा अलबानी ने सहाह तिर्मिज़ी में की है)

[1]कहते हैं कि यह मक्कावासियों के उत्तर में है, जो कहते थे कि यह क़ुरआन मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कोई इंसान सिखाता है। कुछ कहते हैं कि उनके इस प्रश्न के उत्तर में है कि 'रहमान' क्या है? क़ुरआन सिखाने का अभिप्राय है उसे सहज कर दिया अथवा अल्लाह ने अपने पैग़म्बर को सिखाया तथा पैग़म्बर ने उम्मत (लोगों) को सिखाया। इस सूरह में अल्लाह ने अपने बहुत से वरदानों को गिनाया है। क्योंकि क़ुरआन की शिक्षा इनमें प्रतिष्ठा, सम्मान तथा महत्व एवं लाभ की दृष्टि से सबसे उत्तम एवं प्रत्यक्ष है, अतः सर्वप्रथम इस उपकार का वर्णन किया। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात यह बन्दर आदि जन्तु से उन्नति करते करते इंसान नहीं बन गये हैं, जैसाकि डारविन का जीव विकास सिद्धान्त है, अपितु इंसान को उसी रूप में अल्लाह ने पैदा किया है जो जानवरों से अलग एक सृष्टि है। इंसान शब्द जातिवाचक स्वरूप है।

[3]इस वर्णन से अभिप्राय प्रत्येक व्यक्ति की अपनी मातृ भाषा (बोली) है जो बिना सीखे

Iqra Ummah Technology Mission

اَلشَّمْسُ وَ الْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۝٥

(५) सूर्य तथा चन्द्रमा (निर्धारित) हिसाब से हैं।[1]

وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ۝٦

(६) तथा तारे एवं वृक्ष दोनों सजदा करते हैं।[2]

وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ۝٧

(७) उसी ने आकाश को ऊँचा किया तथा उसी ने तुला रखी।[3]

اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ۝٨

(८) ताकि तुम तौलने में सीमा पार (उलंघन) न करो।[4]

وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ۝٩

(९) तथा न्याय के साथ तौल सही रखो तथा तौल में कम न दो।

وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۝١٠

(१०) तथा उसी ने सृष्टि के लिए धरती बिछायी।

فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۝١١

(११) जिसमें मेवे हैं तथा गुच्छे वाले खजूर के वृक्ष हैं।[5]

स्वयं बोल लेता है तथा इसमें अपने मन की बातें व्यक्त कर लेता है, यहाँ तक कि वह छोटा बच्चा भी बोल लेता है जिसको किसी बात का ज्ञान तथा बोध नहीं होता। यह उस ईश्वरीय शिक्षा-दिक्षा का परिणाम है जिसकी चर्चा इस आयत में है।

[1]अर्थात अल्लाह के निर्धारित किये हिसाब से अपने-अपने स्थानों पर गतिशील हैं, उनका उलंघन नहीं करते।

[2]जैसे दूसरे स्थान पर कहा :

﴿ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَابُّ ﴾

"क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह के समक्ष नतमस्तक हैं सभी आकाशों वाले, सभी धरती वाले, सूर्य , चन्द्रमा, तारे, पर्वत, वृक्ष तथा पशु।" (*अल-हज्ज-१८*)

[3]अर्थात धरती में न्याय रखा, जिसका उसने लोगों को आदेश किया। जैसे कहा :

﴿ لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ﴾

"नि:सन्देह हमने अपने संदेष्टाओं को स्पष्ट निशानियाँ देकर भेजा तथा उनके साथ पुस्तक एवं मीज़ान (तुला) अवतरित किया ताकि लोग न्याय पर स्थित रहें।" (*अल-हदीद-२५*)

[4]अर्थात न्याय का उलंघन न करो।

[5] اَكْمَامٌ (अकमाम) كِمٌّ (किम्म) का बहुवचन है, खजूर पर चढ़ा हुआ आवरण।

The Ummah Technology Mission

وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ﴿١٢﴾

(१२) तथा भूसा वाला अनाज है[1] तथा सुगन्धित फूल हैं।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿١٣﴾

(१३) तो (हे मनुष्यो एवं जिन्नो !) तुम अपने प्रभु के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे।[2]

خَلَقَ الْإِنسَانَ مِن صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ﴿١٤﴾

(१४) उसने मनुष्य को खंखनाती मिट्टी से पैदा किया जो ठिकरी की तरह थी।[3]

وَخَلَقَ الْجَانَّ مِن مَّارِجٍ مِّن نَّارٍ ﴿١٥﴾

(१५) तथा जिन्नात को अग्नि की लपट से पैदा किया।[4]

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿١٦﴾

(१६) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे ?[5]

رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ﴿١٧﴾

(१७) वह प्रभु है दोनों पूर्वों एवं दोनों पश्चिमों का।[6]

---

[1] حَبّ हब्ब (दाना) से अभिप्राय प्रत्येक वह खाद्य पदार्थ है जो इंसान तथा जन्तु खाते हैं, सूखकर उसका पौधा भूसा बन जाता है जो जानवरों के काम आता है।

[2] यह मानव तथा दानव (जिन्न) दोनों से संबोधन है। अल्लाह अपने वरदानों को गिना कर उनसे प्रश्न कर रहा है। यह पुनरावृत्ति उस व्यक्ति के समान है जो किसी पर निरन्तर उपकार करे, किन्तु वह उसके उपकार का इंकार करता हो, जैसे कहे कि मैंने तेरा अमुक-अमुक काम किया, क्या तू इंकार करता है ? अमुक-अमुक वस्तु तुझे दी, क्या तुझे याद नहीं ? तुझ पर अमुक उपकार किया, क्या तुझे हमारा तनिक भी ध्यान नहीं ? (फ़तहुल क़दीर)

[3] صَلْصَال (सल्साल) सूखी मिट्टी जिसमें ध्वनि हो। فَخَّار (फ़ख़्ख़ार) आग में पकी मिट्टी, जिसे ठीकरी कहते हैं। उस इंसान से अभिप्राय आदरणीय आदम हैं, जिनका पहले मिट्टी से पुतला बनाया गया तथा फिर अल्लाह ने उसमें आत्मा फूंकी, फिर उनकी बायीं पसली से 'हव्वा' को पैदा किया, फिर इन दोनों से इंसानी वंश चला।

[4] इससे अभिप्राय सबसे पहला जिन्न है, जो जिन्नों का पितामह है अथवा जिन्न जातिवाचक स्वरूप है जैसाकि अनुवाद जातिवाचक के आधार पर किया गया है। مَارِج (मारिज) आग से उच्च होने वाली लपट (ज्वाला) को कहते हैं।

[5] अर्थात तुम्हारी यह पैदाईश तथा फिर तुमसे अधिक वंशों की पैदाईश तथा अधिकता भी अल्लाह के वरदानों में से है। क्या तुम इस उपकार का इंकार करोगे ?

[6] एक गर्मी का पूर्व तथा एक जाड़े का पूर्व, इसी प्रकार पश्चिम है। इसलिए दोनों को

The Ummah Technology Mission

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٨﴾

(१८) तो (हे जिन्नो एवं मनुष्यो !) तुम अपने प्रभु की किन-किन कृपाओं को झुठलाओगे ?

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ﴿١٩﴾

(१९) उसने दो दरिया प्रवाहित कर दिये जो एक-दूसरे से मिल जाते हैं।

بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ﴿٢٠﴾

(२०) उन दोनों के मध्य एक आड़ है कि उससे बढ़ नहीं सकते।[1]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢١﴾

(२१) तो तुम दोनों अपने प्रभु के कौन-कौन से उपहारों को झुठलाओगे ?

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾

(२२) उन दोनों में से मोती तथा मूँगे निकलते हैं।[2]

द्विवचन वर्णित किया है। ऋतुओं के अनुसार पूर्व तथा पश्चिम के भिन्न होने में भी इसमें जिन्नों तथा इंसानों के बहुत से हित हैं, इसलिए इसे भी उपकार कहा गया है।

[1] مَرَجَ، أَرْسَلَ के अर्थ में है, अर्थात प्रवाहित कर दिये। इसका सारांश यह है कि दो नदियों से अभिप्राय कुछ के विचार से उनके अलग-अलग अस्तित्व हैं, जैसे मीठे पानी की नदियाँ हैं जिनसे खेतियाँ सींची जाती हैं तथा इंसान उनका पानी अन्य आवश्यकताओं में भी प्रयोग करता है। दूसरा प्रकार सागरों का जल है जो खारा है, जिसके कुछ अन्य लाभ हैं। यह दोनों आपस में नहीं मिलते। कुछ ने इसका भावार्थ यह लिया है कि खारे सागरों ही में मीठे पानी की लहरें चलती हैं तथा यह दोनों लहरें आपस में नहीं मिलतीं, अपितु एक दूसरे से अलग रहती हैं। उसका एक रूप यह भी है कि अल्लाह तआला ने खारे सागरों की नीचली तह में ही कई स्थानों पर मीठे पानी की लहरें भी प्रवाहित कर दी हैं तथा वह खारे पानी से अलग ही रहती हैं। दूसरा रूप यह भी है कि ऊपर खारा पानी हो तथा उसकी तह में मीठे जल का स्रोत, जैसाकि वास्तव में कुछ स्थानों पर ऐसा है। तीसरी दशा यह है कि जिन स्थानों पर मीठे पानी की नदियों का पानी सागर में जाकर गिरता है वहाँ कई लोगों ने देखा है कि दोनों का पानी कोसों तक इसी प्रकार साथ-साथ चलता है कि एक ओर मीठा नदी का पानी तथा दूसरी ओर विस्तृत समुद्र का खारा पानी, उनके मध्य यद्यपि कोई आड़ नहीं, परन्तु यह परस्पर नहीं मिलते। दोनों के बीच यह वह वर्ज़ख़ (आड़) है जो अल्लाह ने रख दिया है, दोनों उससे आगे नहीं बढ़ते।

[2] مَرْجَانٌ से छोटे मोती अथवा मूँगे अभिप्राय हैं। कहते हैं कि आकाश से वर्षा होती हैं तथा सीपियाँ अपना मुख खोल देती हैं, जो बूँद उसके भीतर पड़ जाती है वह मोती बन जाती है। प्रसिद्ध यही है कि मोती आदि मीठे पानी की नदियों से नहीं बल्कि खारे पानी के समुद्रों ही से निकलते हैं, परन्तु पवित्र क़ुरआन ने द्विवचन सर्वनाम प्रयोग किया है जिससे

The Ummah Technology Mission

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٣﴾

(२३) तो फिर तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?[1]

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَـَٔاتُ فِی الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा अल्लाह ही के (स्वामित्व में) हैं वह (जहाज़) जो समुद्रों में पर्वत की भाँति उच्च (खड़े हुए) चल रहे हैं।[2]

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٥﴾

(२५) तो (हे मनुष्यो एवं जिन्नो !) तुम अपने प्रभु के किन-किन कृपाओं को झुठलाओगे ?[3]

كُلُّ مَنْ عَلَیْهَا فَانٍ ﴿٢٦﴾

(२६) धरती पर जो कुछ भी हैं सब नश्वर हैं।

وَّیَبْقٰی وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٢٧﴾

(२७) केवल तेरे प्रभु का मुख (अस्तित्व) जो महान एवं सम्मानित है, शेष रह जायेगा।

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٨﴾

(२८) तो फिर तुम दोनों अपने प्रभु के किन-

विदित होता है कि दोनों ही से मोती निकलते हैं। चूँकि मोती अधिकांशता समुद्रों ही से निकलते हैं, इसलिए उसकी प्रख्याति हो गई है। फिर भी मीठी नदियों से उसका इंकार संभव नहीं, बल्कि वर्तमान युग के प्रयोगों से सिद्ध हुआ है कि मीठी नदियों में भी मोती होते हैं। हाँ, उनके निरन्तर प्रवाहित रहने के कारण उनसे मोती निकालना कठिन बात है। कुछ ने कहा कि अभिप्राय योग है। इनमें से किसी एक से भी मोती निकल जायें तो उनपर द्विवचन बोलना सही है। कुछ ने कहा कि मीठी नदियाँ भी साधारणत: समुद्र में ही गिरती हैं, तथा वहीं से मोती निकाला जाता है, इसलिए यद्यपि उद्गम खारा समुद्र ही हुआ परन्तु दूसरी नदियों का अंश भी उनमें सम्मिलित है। किन्तु वर्तमान युग के प्रयोगों के पश्चात इन कल्पनाओं की आवश्यकता नहीं।

[1]यह रत्न तथा मोती सुन्दरता तथा श्रृंगार के साधन हैं, तथा धनी लोग उन्हें अपनी सुन्दरता की रूचि की तृप्ति के लिए तथा शोभा बढ़ाने के लिए प्रयोग करते हैं। अत: इनका अनुकम्पा होना भी स्पष्ट है।

[2]الجَوار (अलजवार) جَارِيَةٌ (जारियह) चलने वाली का बहुवचन है तथा लुप्त विशेष्य السُّفُن (नवकायें) का विशेषण है। مُنْشَاتٌ का अर्थ مرفوعات है, उच्च की हुई। अभिप्राय पाल है, जो वायु पोतों में झंडों के समान ऊपर तथा उच्च बनाई जाती हैं। कुछ ने इसका अर्थ निर्मित किया है, अर्थात अल्लाह की बनाई हुई जो समुद्रों में चलती हैं।

[3]इनके द्वारा भी यातायात तथा भारवाहन की जो सुविधायें प्राप्त हैं उसे बताने की आवश्यकता नहीं। अत: यह भी अल्लाह की महान अनुकम्पा है।

The Ummah Technology Mission

किन उपहारों को झुठलाओगे ।[1]

يَسْـَٔلُهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ ﴿۲۹﴾

(२९) सब आकाश एवं धरती वाले उसी से माँगते हैं ।[2] प्रत्येक दिन वह एक कार्य में है ।[3]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۰﴾

(३०) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपकारों को झुठला सकोगे ?[4]

سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ﴿۳۱﴾

(३१) (हे जिन्नों तथा मनुष्यों के समूहो !) शीघ्र ही हम तुम्हारी ओर पूर्णत: आकर्षित हो जायेंगे ।[5]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۳۲﴾

(३२) फिर तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ।

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ

(३३) (हे जिन्नों एवं मनुष्यों के गिरोह !) यदि तुममें आकाशों एवं धरती के किनारों से निकलने की शक्ति है तो निकल भागो ।[6] बिना प्रभुत्व

---

[1]संसार की समाप्ति के पश्चात प्रतिफल तथा दण्ड अर्थात न्याय का प्रबंध होगा, अत: यह भी महान उपकार है जिस पर अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करना अनिवार्य है ।

[2]अर्थात सब उस पर आश्रित एवं उसके द्वार के भिखारी हैं ।

[3]प्रतिदिन का अर्थ प्रत्येक क्षण । شَأن (शान) का अर्थ कार्य तथा विषय, अर्थात प्रत्येक समय वह कुछ न कुछ करता रहता है, किसी को रोगी बना रहा है तो किसी को स्वस्थ, किसी को धनी बना रहा है तो किसी धनी को निर्धन, किसी को रंक से राजा तो किसी को राजा से रंक, किसी को पदासीन कर रहा है तो किसी को नीचे गिरा रहा है तथा किसी को नास्ति एवं नास्ति को आस्ति कर रहा है आदि । संक्षेप में संसार में यह सब परिवर्तन उसी के आदेश तथा इच्छा से हो रहे हैं तथा रात दिन का कोई ऐसा क्षण नहीं जो उसकी क्रियाशीलता से शून्य हो ।

[4]तथा इतनी महान शक्ति का प्रत्येक समय बंदों के काम में लगा रहना कितनी बड़ी कृपा है ।

[5]इसका अर्थ यह नहीं कि अल्लाह को अवकाश नहीं, बल्कि यह मुहावरे के रूप में कहा गया है, जिसका उद्देश्य धमकी देना तथा फटकारना है । ثَقَلان सक़लान (जिन्न तथा इंसान को) इसलिए कहा गया है कि उन्हें धर्म-विधान के पालन का पाबंद किया गया है । इस प्रतिबन्ध तथा भार से अन्य सृष्टि अलग है ।

[6]यह धमकी भी उपकार है कि इससे दुराचारी दुराचारों से रूक जाये तथा सदाचारी अधिक पुण्य कमाये ।

The Ummah Technology Mission

إِلَّا بِسُلْطَٰنٍ ﴿٣٣﴾

(एवं शक्ति) के तुम नहीं निकल सकते।[1]

فَبِأَيِّ ءَالَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٤﴾

(३४) फिर तुम अपने प्रभु की किन-किन कृपाओं को झुठलाओगे ?

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّن نَّارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنتَصِرَانِ ﴿٣٥﴾

(३५) तुम पर अग्नि की ज्वाला तथा धुआँ छोड़ा जायेगा[2] फिर तुम मुक़ाबला न कर सकोगे।[3]

فَبِأَيِّ ءَالَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٦﴾

(३६) तो तुम अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे।

فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾

(३७) फिर जबकि आकाश फटकर लाल हो जायेगा, जैसाकि लाल (मुलायम) चमड़ा हो।[4]

فَبِأَيِّ ءَالَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٨﴾

(३८) तो फिर तुम अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْـَٔلُ عَن ذَنۢبِهِۦٓ إِنسٌ وَلَا جَآنٌّ ﴿٣٩﴾

(३९) उस दिन किसी मनुष्य तथा किसी जिन्न से उसके पापों की पूछताछ न की जायेगी।[5]

---

[1]अल्लाह के लिखे भाग्य तथा निर्णय से बचकर तुम कहीं भाग सकते हो तो चले जाओ, किन्तु यह शक्ति किस में है ? तथा भाग कर जायेगा कहाँ ? कोई स्थान ऐसा है जो अल्लाह के अधिकार से बाहर हो ? यह भी धमकी है जो उपरोक्त धमकी के समान उपकार है। कुछ ने कहा कि यह महशर के मैदान में कहा जायेगा जब फ़रिश्ते हर तरफ से लोगों को घेर रखे होंगे। दोनों ही भावार्थ अपने स्थान पर सही हैं।

[2]अभिप्राय यह है कि यदि तुम क़यामत के दिन कहीं भाग कर गये भी तो फ़रिश्ते तुम्हें अग्नि-ज्वाला तथा धुवाँ छोड़कर अथवा पिघला हुआ ताँबा तुम्हारे सिरों पर डालकर वापस लायेंगे। नुहास का दूसरा अर्थ पिघला हुआ ताँबा किया गया है।

[3]अर्थात अल्लाह के प्रकोप को टालने का तुम सामर्थ्य नहीं रखोगे।

[4]क़यामत (प्रलय) के दिन आकाश फट जायेगा। धरती पर फ़रिश्ते उतर आयेंगे उस दिन यह धरती नरक की अग्नि के कड़े ताप से पिघलकर लाल चमड़े के समान हो जायेगा। دِهَانٌ लाल चमड़ा।

[5]अर्थात जिस समय वे क़ब्रों से निकलेंगे, अन्यथा तत्पश्चात हिसाब-स्थल में उनसे पूछताछ की जायेगी। कुछ ने इसका भावार्थ यह किया है कि पापों के संदर्भ में नहीं पूछा जायेगा, क्योंकि उनका तो पूरा रेकार्ड ही फ़रिश्तों के पास होगा तथा अल्लाह के ज्ञान में

The Ummah Technology Mission

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٠﴾

(४०) फिर तुम अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَالْاَقْدَامِ ﴿٤١﴾

(४१) पापी केवल अपने हुलिया से ही पहचान लिये जायेंगे[1] तथा उनके माथों के बाल तथा पैर पकड़ लिए जायेंगे।[2]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٢﴾

(४२) फिर तुम अपने प्रभु के किस-किस उपहारों को झुठलाओगे ?

هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٤٣﴾

(४३) यह है वह नरक जिसे अपराधी असत्य मानते थे।

يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ﴿٤٤﴾

(४४) उसके तथा गर्म उबलते पानी के मध्य चक्कर खायेंगे।[3]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٥﴾

(४५) तो फिर तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿٤٦﴾

(४६) तथा उस व्यक्ति के लिए जो अपने प्रभु के समक्ष खड़ा होने से डरा, दो स्वर्ग हैं।[4]

भी। हाँ, यह पूछा जायेगा कि तुमने यह क्यों किया ? अथवा अभिप्राय यह है कि उनसे नहीं पूछा जायेगा अपितु मानव-अंग स्वयं ही बोल कर सब बात बतलायेंगे।

[1]अर्थात जिस प्रकार ईमानवालों का चिन्ह होगा कि उनके वज़ू के अंग चमकते होंगे, उसी प्रकार पापियों के मुख काले होंगे, आँखें नीली तथा वे भयभीत होंगे।

[2]फ़रिश्ते उनके मस्तक तथा उनके पैरों को साथ मिलाकर पकड़ेंगे तथा नरक में झोंक देंगे, अथवा कभी मस्तकों से तथा कभी पगों से उन्हें पकड़ेंगे।

[3]अर्थात कभी उन्हे नरक की यातना दी जायेगी, कभी खौलता पानी की। اٰن (आन) गरम अर्थात कड़ा खौलता हुआ गरम पानी, जो उनकी अंतड़ियों को काट देगा।

[4]हदीस में आता है कि दो बाग़ चाँदी के हैं जिनके बर्तन तथा सभी चीज़ें चाँदी की होंगी तथा दो बाग़ सोने के हैं तथा उसके बर्तन एवं सब वस्तुयें सोने ही की होंगी। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरः अर्रहमान) कुछ कथनों (हदीसों) में है कि सोने के बाग़ विशेष ईमानवालों (समीपवर्तियों) के लिए होंगे तथा चाँदी के बाग़ साधारण ईमानवालों के लिए होंगे। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٧﴾

(४७) तो फिर अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को तुम झुठलाओगे ?

ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾

(४८) दोनों स्वर्ग अत्याधिक डालियों (एवं शाखाओं) वाली हैं।[1]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٩﴾

(४९) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ﴿٥٠﴾

(५०) उन दोनों (स्वर्गों) में दो प्रवाहित जलस्रोत हैं।[2]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥١﴾

(५१) तो तुम अपने प्रभु के कौन-कौन से उपहारों को झुठलाओगे ?

فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ﴿٥٢﴾

(५२) उन दोनों (स्वर्गों) में हर प्रकार के मेवों के जोड़े (दो प्रकार) होंगे।[3]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٣﴾

(५३) फिर तुम अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۭ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾

(५४) स्वर्ग में रहने वाले ऐसे फ़र्शों पर तकिये लगाये हुए होंगे जिनके अस्तर सुन्दर आकर्षक रेशम के होंगे,[4] तथा उन दोनों स्वर्गों के मेवे अति निकट होंगे।[5]

---

[1]यह संकेत है कि उसमें छाया घनी तथा गहन होगी। साथ ही फलों की अधिकता होगी, क्योंकि कहते हैं कि प्रत्येक डाली तथा शाखा फलों से लदी होगी। (इब्ने कसीर)

[2]एक का नाम 'तस्नीम' तथा दूसरे का 'सल्सबील' है।

[3]अर्थात स्वाद में प्रत्येक फल दो प्रकार का होगा, यह विशेष कृपा का एक रूप है। कुछ ने कहा कि एक प्रकार शुष्क फल का तथा दूसरा ताज़े फल का होगा।

[4]अर्थात ऊपर का कपड़ा स्तर से सदा उत्तम तथा सुंदर होता है। यहाँ केवल स्तर का वर्णन है जिसका अभिप्राय यह है कि ऊपर का कपड़ा उससे कहीं अधिक उत्तम होगा।

[5]इतने समीप होंगे कि बैठे-लेटे भी तोड़ सकेंगे ﴿قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ﴾ (*अल-हाक़्क़:*-२३)

The Ummah Technology Mission

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾

(५५) फिर तुम दोनो अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٥٦﴾

(५६) वहाँ (शर्मीली) नीची दृष्टि वाली हूरें हैं,[1] जिन्हें उनसे पूर्व किसी जिन्न तथा मनुष्य ने हाथ न लगाया होगा।[2]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾

(५७) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾

(५८) वे (हूरें) मणि एवं मूँगे के समान होंगी।[3]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٩﴾

(५९) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ﴿٦٠﴾

(६०) उपकार का बदला उपकार (प्रतिफल) के अतिरिक्त क्या है।[4]

---

[1]अर्थात जिनकी निगाहें अपने पतियों के सिवा किसी पर नहीं पड़ेंगी तथा उन्हें अपने पति ही सबसे सुन्दर तथा अच्छे लगेंगे।

[2]अर्थात कुवाँरी होंगी। इससे पहले वह किसी के विवाह में नहीं रही होंगी। यह आयत तथा इससे पहले की कुछ आयतों से स्पष्ट रूप से विदित होता है कि जो जिन्न ईमानवाले होंगे वे भी ईमान वाले मनुष्यों की भाँति स्वर्ग में जायेंगे, तथा उनके लिए भी वही होगा जो अन्य ईमानवालों के लिए होगा।

[3]अर्थात सफ़ाई में पुलक तथा सफेदी और लालिमा में मोती अथवा मूँगे के सदृश होंगी। जैसे सहीह हदीसों में भी उनकी सुन्दरता तथा शोभा को इन शब्दों में वर्णन किया गया है। "يُرَىٰ مُخُّ سُوقِهِنَّ مِن وَرَاءِ الْعَظْمِ وَاللَّحْمِ" "उनकी शोभा तथा सौन्दर्य के कारण उनकी पिंडली का गूदा, माँस तथा हड्डी के बाहर से झलकता होगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबु बदइल ख़ल्क़े, बाबु माजाअ फी सिफ़तिल जन्नते, मुस्लिम, किताबुल जन्नते व सिफ़ते नईमिहा, बाबु अव्वले ज़ुमरतिन तदख़ुलुल जन्नः ...) एक दूसरी हदीस में फ़रमाया कि स्वर्गवासियों की पत्नियाँ इतनी सुन्दर होंगी कि यदि उनमें से एक नारी जगतवासियों की ओर झाँक दे तो आकाश तथा धरती के मध्य का सब भाग प्रकाशित हो जाये तथा सुगंध से भर जाये, तथा उसके सिर का दुपट्टा इतना मूल्यवान होगा कि वह जगत तथा उसमें जो कुछ है, उससे उत्तम है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाबुल हुरिल ईन)

[4]पहले एहसान से अभिप्राय पुण्यकर्म तथा अल्लाह की आज्ञा का पालन है तथा दूसरे एहसान से उसका प्रतिफल अर्थात स्वर्ग तथा उसकी सुख-सुविधायें हैं।

The Ummah Technology Mission

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦١﴾

(६१) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ﴿٦٢﴾

(६२) तथा उनके अतिरिक्त दो स्वर्ग और हैं ?[1]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٣﴾

(६३) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

مُدْهَامَّتٰنِ ﴿٦٤﴾

(६४) जो दोनों गाढ़े हरे रंग की कालिमा से परिपूर्ण हैं।[2]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٥﴾

(६५) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿٦٦﴾

(६६) उनमें दो (तीव्रगति से) उबलने वाले जलस्रोत हैं।[3]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٧﴾

(६७) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾

(६८) उन दोनों में मेवे तथा खजूर एवं अनार होंगे।[4]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٩﴾

(६९) तो क्या अब भी तुम दोनों अपने प्रभु के किसी उपहार को झुठलाओगे ?

فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ﴿٧٠﴾

(७०) उनमें सच्चरित्र सुन्दर स्त्रियाँ हैं।[5]

---

[1] دُوْنِهِمَا से यह अर्थ भी निकाला गया है कि यह दो बाग़ श्रेष्ठता तथा प्रधानता में पहले दो बाग़ों से, जिनकी चर्चा आयत न॰ ४६ में गुज़री, कमतर होंगे।

[2] सिंचाई की अधिकता तथा हरियाली के कारण कालिमा लिये होंगे।

[3] यह विशेषण تَجْرِيَانِ से हल्का है। الجَرْيُ أَقْوى مِنَ النَّفْخِ "प्रवाह सिंचाई से अधिक अच्छा होता है।" (इब्ने कसीर)

[4] जबकि पहले दो स्वर्गों (बाग़ों) की विशेषता का वर्णन किया गया है कि हर फल दो प्रकार का होगा। स्पष्ट है कि इसमें श्रेष्ठता एवं कृपा की अधिकता है, वह दूसरी बात में नहीं है।

[5] خَيْرَاتٌ से तात्पर्य आचरण तथा स्वभाव की अच्छाईयाँ हैं तथा حِسَانٌ का अर्थ सुन्दरता तथा शोभा में अद्वितीय।

The Ummah Technology Mission

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧١﴾

(७१) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾

(७२) (गोरे रंग की) हूरें (अप्सरायें) स्वर्ग के खेमों में रहने वाली हैं।[1]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٣﴾

(७३) तो (हे मनुष्यो एवं जिन्नो !) तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٧٤﴾

(७४) उन (हूरों) को कोई मनुष्य अथवा जिन्न ने इससे पहले हाथ नहीं लगाया (उनसे नहीं मिला)।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٥﴾

(७५) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?

مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾

(७६) हरे गद्दों तथा सुन्दर बिछौनों पर तकिये लगाये होंगे।[2]

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٧﴾

(७७) तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपहारों को झुठलाओगे ?[3]

---

[1]हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "स्वर्ग में मोतियों के खेमें होंगे, उनकी चौड़ाई साठ मील होगी। उसके प्रत्येक कोने में जन्नती के परिवार होंगे, जिनको दूसरे कोने वाले नहीं देख सकेंगे। ईमानवाला उसमें घूमे फिरेगा।" (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरः *रहमान* तथा किताबु बदइल ख़ल्क़, बाबु माजाअ फी सिफ़तिल जन्नते, सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्नते, बाबुन फ़ी सिफ़ते ख़ेयामिल जन्नते)

[2]رَفْرَف (रफ़रफ़) गद्दा, गालीचा अथवा इस प्रकार का उत्तम बिछौना, عَبْقَرِيّ (अबकरी) प्रत्येक उत्तम तथा मूल्यवान वस्तु को कहा जाता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह शब्द आदरणीय उमर के लिये प्रयोग किया। «فَلَمْ أَرَ عَبْقَرِيًّا يَفْرِي فَرْيَهُ». "मैंने कोई अबकरी (श्रेष्ठ) ऐसा नहीं देखा जो उमर की तरह काम करता हो।" (सहीह अल-बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाबु फ़ज़ले उमर तथा मुस्लिम, फ़ज़ायेलुस सहाबा, बाबुन मिन फ़ज़ाएले उमर) अभिप्राय यह है कि जन्नती ऐसे तख़्तों पर आसीन होंगे जिस पर हरे रंग के गद्दे, कालीनें तथा उच्च प्रकार के सुन्दर, कढ़ाई वाले बिछौने लगे होंगे।

[3]यह आयत इस सूरः में ३१ बार आई है। अल्लाह ने इस आयत में अपने विभिन्न प्रकार

The Ummah Technology Mission

تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلٰلِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

(७८) बड़ा शुभ है तेरे प्रतापवान[1] तथा उदार प्रभु का नाम।

सूरतुल वाक़िअ:-५६

سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ

सूर: वाक़िअ:* मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें छियानवे आयते एवं तीन रूकूअ हैं।

के उपहारों की चर्चा की है, तथा प्रत्येक अथवा कुछ उपहारों की चर्चा के पश्चात यह प्रश्न किया है, यहाँ तक कि महशर के मैदान की भयानकता तथा नरक की यातना के पश्चात भी यह प्रश्न किया है, जिसका अर्थ है कि परलोक की बातों को याद दिलाना भी एक बड़ी दया है ताकि बचने वाले उससे बचने का प्रयास कर लें। दूसरी बात यह ज्ञात हुई कि जिन्न भी इंसानों की भाँति एक सृष्टि है बल्कि इंसानों के बाद यह दूसरी सृष्टि है जिसे बुद्धि तथा बोध प्रदान किया गया है तथा उसके बदले उनसे केवल यह माँग की गई है कि वह मात्र एक अल्लाह की उपासना करें, उसके साथ किसी को साझी न बनायें। सृष्टि में यही दो हैं जो धार्मिक आदेशों तथा कर्तव्यों के उत्तरदायी हैं। इसलिए उन्हें इरादे तथा इच्छा की स्वाधीनता दी गई है ताकि उनकी परीक्षा हो सके। तीसरे, उपहारों के वर्णन से यह भी सिद्ध हुआ कि अल्लाह के उपहारों से लाभ प्राप्त करना उचित तथा अच्छा है। यह संयम तथा सदाचार के प्रतिकूल है न अल्लाह के साथ लगाव में बाधक, जैसाकि कुछ सूफिया (साधु) विश्वास दिलाते हैं। चौथे, बार-बार यह प्रश्न कि तुम अल्लाह की कौन-कौन सी अनुकम्पाओं को झुठलाओगे, यह धमकी तथा चेतावनी स्वरूप है, जिसका उद्देश्य उस अल्लाह की अवज्ञा से रोकना है जिसने यह सभी चीज़ें पैदा कीं तथा सुलभ कराये। इसीलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसके उत्तर में यह पढ़ना पसन्द फ़रमाया है, «لَا بِشَيْءٍ مِنْ نِعَمِكَ رَبَّنَا نُكَذِّبُ فَلَكَ الْحَمْدُ» "हे हमारे प्रभु, हम तेरे किसी उपहार को भी नहीं झुठलाते, तो सभी प्रशंसायें तेरे ही लिये हैं।"

[1] تَبَارَكَ (तबारक) बरकत से है, जिसका अर्थ नित्यता तथा स्थिरता है। अभिप्राय यह है कि उसका नाम सदा रहने वाला है अथवा उसके पास सदा भलाई के कोष हैं। कुछ ने इसका अर्थ ऊँचाई तथा महानता किया है, तथा जब उसका नाम इतना मंगलमय अर्थात भलाई तथा ऊँचाई वाला है तो फिर वह स्वयं कितना शुभ, बड़ाई तथा ऊँचाई वाला होगा ?

*इस सूर: के विषय में प्रख्यात है कि यह सूरतुल ग़िना (सम्पन्नता की सूर:) है तथा जो व्यक्ति इसे प्रत्येक रात को पढ़ेगा उसे कभी भूखमरी नहीं आयेगी। किन्तु वास्तव में इस सूर: के महत्व में कोई प्रमाणित हदीस नहीं है। प्रत्येक रात पढ़ने तथा बच्चों को सिखाने की हदीसें भी अप्रमाणित बल्कि बनावटी हैं। देखिये (अल-अहादीसुज़ ज़ईफ़ा, लिल अलबानी हदीस नं० २८९,२९० भाग १\४५७)

The Ummah Technology Mission

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है।

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝١

(१) जब क़यामत (प्रलय) स्थापित हो जायेगी।[1]

لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۝٢

(२) जिसके घटित होने में कोई झूठ नहीं।

خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۝٣

(३) वह ऊँच-नीच करने वाली होगी।[2]

إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ۝٤

(४) जबकि धरती भूकम्प के साथ हिला दी जायेगी।

وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۝٥

(५) तथा पर्वत पूर्णरूपण कण-कण कर दिये जायेंगे।[3]

فَكَانَتْ هَبَاءً مُّنْبَثًّا ۝٦

(६) फिर वह बिखरी धूल की भाँति हो जायेंगे।

وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ۝٧

(७) तथा तुम तीन गुटों में बँट जाओगे।[4]

فَأَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝٨

(८) तो दाहिने हाथ वाले कैसे अच्छे हैं, दाहिने हाथ वाले।[5]

مَا أَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝٨

وَأَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۝٩

(९) तथा बायें हाथ वाले, क्या हाल है बायें हाथ वालों का।[6]

مَا أَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۝٩

---

[1]वाक़ेआ भी क़यामत के नामों में से है। क्योंकि इसे व्याप्त होना ही आवश्यक है इसलिए इसका यह नाम भी है।

[2]ऊँच-नीच से अभिप्राय आदर तथा अपमान है। अर्थात अल्लाह के आज्ञाकारी बंदों को यह ऊँचा तथा अवज्ञाकारियों को नीचा करेगी, चाहे संसार में मामले इसके विपरीत हों। ईमानवाले वहाँ सम्मानित होंगे तथा काफ़िर एवं अवज्ञाकारी हीन तथा अपमानित।

[3]رَجًّا (रज्जा) का अर्थ गति तथा हलचल (भूकम्प) है, तथा بَسًّا (बस्सा) का अर्थ कण-कण हो जाना है।

[4]أَزْوَاجًا (अज़वाजा) أَصْنَافًا (असनाफ़ा) के अर्थ में है।

[5]इससे साधारण ईमानवाले तात्पर्य हैं जिनको उनके कर्मपत्र दायें हाथ में दिये जायेंगे, जो उनके सौभाग्य का परिचायक होगा।

[6]इससे अभिप्राय काफ़िर हैं, जिनको उनके कर्मपत्र बायें हाथ में दिये जायेंगे।

The Ummah Technology Mission

وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ﴿١٠﴾

(१०) तथा जो अग्रिम हैं वे तो अग्रिम ही हैं।[1]

اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿١١﴾

(११) वह पूर्ण निकटता प्राप्त किये हुए हैं।

فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿١٢﴾

(१२) सुख-सुविधाओं वाले स्वर्गों में हैं।

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾

(१३) (बहुत बड़ा) गुट तो पहले लोगों में से होगा।

وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٤﴾

(१४) तथा थोड़े से पिछले लोगों में से।[2]

عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ﴿١٥﴾

(१५) (ये लोग) स्वर्ण के तारों से बुने हुए तख़्तों पर।

---

[1]इनसे अभिप्राय विशेष ईमानवाले हैं। यह तीसरा प्रकार है, जो ईमान लाने में अग्रिम तथा पुण्य के कार्यों में बढ़ चढ़कर भाग लेने वाले हैं, अल्लाह उन्हें विशेष समीपता प्रदान करेगा। यह वाक्य ऐसा ही है जैसे बोलते हैं कि तू तू है तथा ज़ैद ज़ैद, इसमें जैसाकि ज़ैद का महत्व तथा उसकी प्रधानता का वर्णन है।

[2]ثُلَّةٌ (सुल्ल:) उस बड़े गिरोह को कहा जाता है जिसकी गणना असंभव हो। कहा जाता है कि पहले लोगों से अभिप्राय आदरणीय आदम से लेकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक के समुदाय के लोग हैं तथा पिछलों से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्प्रदाय के लोग। अभिप्राय यह है कि पहले के समुदायों में अग्रिम लोगों का एक बड़ा गिरोह है, क्योंकि उनका युग बहुत लम्बा है जिनमें पहले के हज़ारों अम्बिया सम्मिलित हैं। उनके मुक़ाबले में उम्मते मोहम्मदिया (मोहम्मदी समुदाय) का युग (क़यामत तक) थोड़ा है, अत: उनमें अग्रगामी भी विगत समुदायों के सापेक्ष थोड़े होंगे। तथा एक हदीस में जो आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे आशा है कि तुम जन्नतियों के आधे होगे। (सहीह मुस्लिम न॰ २००) तो यह उपरोक्त आयत के अर्थ के प्रतिकूल नहीं है, क्योंकि उम्मते मोहम्मदिया के अग्रगामियों तथा साधारण मोमिनों को मिलाकर शेष सभी समुदायों से स्वर्ग में जाने वालों का आधा हो जायेंगे। अत: केवल विगत समुदायों के अग्रगामियों की अधिकता से हदीस में वर्णित संख्या का इंकार नहीं होगा। किन्तु यह बात विचारणीय है तथा कुछ ने पहलों तथा पिछलों से इसी मोहम्मदी समुदाय के लोग तात्पर्य लिये हैं। अर्थात इसके पहले लोगों में आगे वालों की संख्या अधिक तथा पिछलों में कम होगी। इमाम इब्ने कसीर ने इसी दूसरे कथन को प्राथमिकता दी है तथा यही सही लगता है। यह मध्यवर्ती वाक्य है, فِي جَنّٰتِ النَّعِيْمِ तथा عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ के मध्य।

The Ummah Technology Mission

مُّتَّكِـِٔيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ﴿١٦﴾

(१६) एक-दूसरे के सामने तकिया लगाये बैठे होंगे।[1]

يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۙ﴿١٧﴾

(१७) उनके निकट ऐसे लड़के जो सदैव (लड़के ही) रहेंगे,[2] आवागमन करेंगे।

بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ ۙ وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۙ﴿١٨﴾

(१८) प्याले तथा सुराही लेकर तथा मदिरा का प्याला लेकर जो प्रवाहित मदिरा से भरा हो।

لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ۙ﴿١٩﴾

(१९) जिससे न सिर में चक्कर हो तथा न बुद्धि भ्रष्ट हो।[3]

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ۙ﴿٢٠﴾

(२०) तथा ऐसे मेवे लिए हुए जिसे वे पसन्द करें।

وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ؕ﴿٢١﴾

(२१) तथा पक्षियों के माँस जो उन्हें (अत्यन्त) रूचिकर हों।

وَحُوْرٌ عِيْنٌ ۙ﴿٢٢﴾

(२२) तथा बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरें।

كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ۚ﴿٢٣﴾

(२३) जो छिपे हुए मोतियों की भाँति हैं।[4]

جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾

(२४) यह बदला है उनके कर्मों का।

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ۙ﴿٢٥﴾

(२५) न (वे) वहाँ व्यर्थ की बात सुनेंगे तथा न पाप की बात।

---

[1] مَوْضُوْنَةٌ बुने तथा जड़े हुए, अर्थात उक्त जन्नती सोने के तारों से बुने तथा जवाहरों से जड़े हुए तख़्तों पर एक-दूसरे के सामने तकियों पर आसीन होंगे।

[2] अर्थात वह बड़े नहीं होंगे कि बूढ़े हो जायें, न उनके रूप-रेखा तथा आकार में कोई परिवर्तन होगा, बल्कि एक ही आयु तथा अवस्था में रहेंगे, जैसे नव आयु बालक होते हैं।

[3] صُدَاعٌ (सुदाअ) सिर की ऐसी पीड़ा को कहते हैं जो मदिरा के नशे के कारण हो। اِنْزَافٌ (इनज़ाफ़) का अर्थ वह बुद्धि का बिगाड़ है जो नशे के कारण हो। दुनिया की मदिरा से यह दोनों बातें होती हैं। परलोक की मदिरा में आनन्द तथा स्वाद तो अवश्य होगा किन्तु यह ख़राबियाँ नहीं होंगी। مَعِين (मअीन) प्रवाहित स्रोत जो सूखता न हो।

[4] مَكْنُوْن (मक्नून) जिसे छिपाकर रखा गया हो उसे किसी का हाथ न लगा हो, न धूल-धप्पड़ पहुँचा हो। ऐसी वस्तु पूर्णत: स्वच्छ तथा मूल स्थिति में रहती है।

The Ummah Technology Mission

إِلَّا قِيلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿٢٦﴾

(२६) केवल सलाम ही सलाम (शान्ति ही शान्ति) की ध्वनि होगी।[1]

وَأَصْحٰبُ الْيَمِينِ ۙ مَا أَصْحٰبُ الْيَمِينِ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा दाहिने हाथ वाले क्या ही अच्छे हैं, दाहिने हाथ वाले।[2]

فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ﴿٢٨﴾

(२८) वे बिना काँटों के बैर,

وَطَلْحٍ مَّنضُودٍ ﴿٢٩﴾

(२९) तथा तह पर तह क़िलों,

وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा लम्बी-लम्बी छाओं,[3]

وَمَآءٍ مَّسْكُوبٍ ﴿٣١﴾

(३१) तथा प्रवाहित जल,

وَفَٰكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा अत्याधिक फलों में,

لَّا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ﴿٣٣﴾

(३३) जो न समाप्त हों, न रोक लिये जायें,[4]

وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा ऊँचे-ऊँचे फ़र्शों पर होंगे।[5]

---

[1]अर्थात दुनिया में तो आपस में लड़ाई-झगड़े होते हैं, यहाँ तक कि बहन-भाई भी इससे सुरक्षित नहीं। इस मतभेद तथा झगड़े से दिलों में मैल तथा कटुता पैदा होती है, जो एक-दूसरे के विरूद्ध अपशब्द, गाली-गलोज पिशुनता तथा चुगली आदि पर इंसान को उकसाती है। स्वर्ग इन तमाम नैतिक गंदगियों एवं अशिष्टता से न केवल पवित्र होगी परन्तु वहाँ सलाम ही सलाम की ध्वनियाँ सुनने में आयेगी, फ़रिश्तों की ओर से भी तथा परस्पर जन्नतियों की ओर से भी। जिसका अर्थ यह है कि वहाँ सलाम तथा अभिवादन तो होगा किन्तु मन तथा कथन की वह ख़राबियाँ नहीं होंगी, जो संसार में सामान्य हैं यहाँ तक कि बड़े-बड़े धार्मिक पुरूष भी इनसे सुरक्षित नहीं।

[2]अब तक अग्रगामियों का वर्णन था। अब 'अस्हाबुल यमीन' से साधारण ईमानवालों का वर्णन हो रहा है।

[3]जैसे एक हदीस में है कि स्वर्ग के एक पेड़ की छाया के नीचे एक घुड़सवार सौ साल तक चलता रहेगा तब भी वह छाया समाप्त न होगी। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर *सूरतिल वाक़िअ:*, सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्नह, बाबुन इन्न फ़िल जन्नते शजरतुन)

[4]अर्थात यह फल सामयिक नहीं होंगे कि ऋतु गुज़रने पर यह फल भी आगामी ऋतु तक समाप्त हो जायें। यह फल इस प्रकार ऋतु से आबद्ध नहीं होंगे अपितु प्रत्येक ऋतु में उपलब्ध होंगे। इस प्रकार उनकी प्राप्ति में कोई रूकावट नहीं होगी।

[5]कुछ ने फ़र्शों से पत्नियाँ तथा 'मर्फ़ूआ' से उच्च पद का भाव तात्पर्य लिया है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّآ أَنشَأْنَٰهُنَّ إِنشَآءً ﴿٣٥﴾

(३५) हमने उन (की पत्नियों) को विशेष रूप से बनाया है।

فَجَعَلْنَٰهُنَّ أَبْكَارًا ﴿٣٦﴾

(३६) तथा हमने उन्हें कुँवारियाँ बना दिया है।[1]

عُرُبًا أَتْرَابًا ﴿٣٧﴾

(३७) प्रेम करने वालियाँ समान आयु की हैं।[2]

لِّأَصْحَٰبِ ٱلْيَمِينِ ﴿٣٨﴾

(३८) दाहिने हाथ वालों के लिए हैं।

ثُلَّةٌ مِّنَ ٱلْأَوَّلِينَ ﴿٣٩﴾

(३९)(बहुत) बड़ा समूह है अग्रणि लोगों में से।[3]

وَثُلَّةٌ مِّنَ ٱلْءَاخِرِينَ ﴿٤٠﴾

(४०) तथा (बहुत) बड़ा समूह है पिछलों में से।[4]

وَأَصْحَٰبُ ٱلشِّمَالِ ۙ مَآ أَصْحَٰبُ ٱلشِّمَالِ ﴿٤١﴾

(४१) तथा बायें हाथ वाले क्या हैं; बायें हाथ वाले।[5]

---

[1] أَنشَأْنَاهُنَّ में सर्वनाम के फिरने का स्थान यद्यपि समीप नहीं किन्तु वाक्य-क्रम उसे बता रहा है कि इससे अभिप्राय जन्नतियों को मिलने वाली पत्नियाँ तथा हूरें (अप्सरायें) हैं। हूरें जन्म के सामान्य विधि से पैदा नहीं होंगी बल्कि अल्लाह तआला उन्हें स्वर्ग में अपने विशेष सामर्थ्य से पैदा करेगा तथा जो सांसारिक नारियाँ होंगी वह भी हूरों के अतिरिक्त जन्नतियों को पत्नियों के रूप में मिलेंगी। इनमें बूढ़ी, काली, कुरूप जो भी होंगी अल्लाह उनको स्वर्ग में यौवन तथा सौन्दर्य एवं शोभा से अलंकृत कर देगा, न कोई बूढ़ी होगी न कूरूप, बल्कि सब युवती तथा कुँवारी के रूप में होंगी।

[2] عُرُبٌ, यह عَرُوبَةٌ का बहुवचन है, अर्थात ऐसी नारी जो अपनी सुंदरता, शोभा एवं अन्य गुणों के कारण अपने पति की अत्यन्त प्रिय हो। أَتْرَابٌ यह تِرْبٌ का बहुवचन है, समानायु। अर्थात जन्नतियों की पत्नियाँ सभी एक आयु की होंगी, जैसा कि हदीस में वर्णन किया गया है कि सब जन्नती ३३ वर्ष की आयु के होंगे। (तिर्मिज़ी, बाबु माजाअ फ़ी सिन्ने अहलिल जन्नते) यह भी अभिप्राय हो सकता है कि अपने पतियों की समानायु होंगी। दोनों का अभिप्राय एक ही है।

[3] अर्थात आदम अलैहिस्सलाम से लेकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक के लोगों में से अथवा स्वयं आपकी उम्मत के अगलों में से।

[4] अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत में से अथवा आप की उम्मत के पिछलों में से।

[5] इससे अभिप्राय नरकवासी हैं, जिनको उनके कर्मपत्र बायें हाथ में पकड़ाये जायेंगे, जो उनके लेख दुर्भाग्य का लक्षण होगा।

The Quran Technology Mission

فِيْ سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍ ﴿٤٢﴾

(४२) गरम वायु तथा गरम जल में (होंगे) |

وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ﴿٤٣﴾

(४३) तथा काले धुयें की छाया में |[1]

لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ﴿٤٤﴾

(४४) जो न शीतल है, न सुखद |[2]

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ﴿٤٥﴾

(४५) नि:संदेह ये लोग इससे पूर्व अत्यन्त सम्पन्नता में पले हुए थे |[3]

وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ﴿٤٦﴾

(४६) तथा महापापों पर दुराग्रह करते थे |

وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۩ اَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा कहते थे कि क्या जब हम मर जायेंगे तथा मिट्टी एवं हड्डी हो जायेंगे, तो क्या हम पुन: जीवित करके खड़े किये जायेंगे |

اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा क्या हमारे पूर्वज भी ?[4]

قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٩﴾

(४९) (आप) कह दीजिए कि नि:सन्देह सब अगले तथा पिछले |

---

[1] سَمُوم आग की तपन अथवा लू की तपन जो शरीर के क्षिद्रों में घुस जाये | حَمِيم (हमीम) खौलता पानी, يَحْمُوم (यहमूम) حِمَمَة (हिमम:) से है | अर्थात काला | अत्यधिक काला हो तो أَحَمّ कहा जाता है | अभिप्राय यह है कि नरक की यातना से व्याकुल होकर वह एक छाया की ओर दौड़ेंगे, किन्तु जब वहाँ पहुँचेंगे तो पता लगेगा कि यह छाया नहीं, यह नरक की अग्नि का काला धुवाँ है | कुछ कहते हैं कि यह حَمّ (हम्म) से है जो उस वसा (चर्बी) को कहते हैं जो अग्नि में जल-जल कर काली हो गई हो | कुछ कहते हैं कि यह حِمَمٌ (हेमम) से है, जो कोयले के अर्थ में है | इसीलिये इमाम जह्हाक़ फ़रमाते हैं : आग भी काली है तथा जहन्नमी भी काले मुँह होंगे तथा नरक में जो कुछ भी होगा काला ही होगा |

[2] अर्थात छाया शीतल होती है, परन्तु यह जिसको छाया समझ रहे होंगे वह छाया नहीं होगी जो शीतल हो, वह तो नरक का धुवाँ होगा | وَلَا كَرِيم जिसमें कोई सुदृश्य अथवा भलाई नहीं |

[3] अर्थात दुनिया में आख़िरत (परलोक) से विमुख होकर आनंद में डूबे हुए थे |

[4] इससे विदित हुआ कि परलोक के प्रतिं विश्वास का इंकार ही कुफ़्र, शिर्क तथा पापों में लीन रहने का मूल कारण है | यही बात है कि जब आख़िरत की कल्पना उसके मानने वालों के विचार में धुँधला जाती है तो उनमें दुराचार एवं कुकर्म व्याप्त हो जाता है, जैसे आजकल साधारणत: मुसलमानों की दशा है |

The Ummah Technology Mission

لَمَجْمُوعُونَ ۙ إِلَىٰ مِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٥٠﴾

(५०) अवश्य एकत्रित किये जायेंगे एक निर्धारित दिन के समय।

ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيُّهَا الضَّالُّونَ الْمُكَذِّبُونَ ﴿٥١﴾

(५१) फिर तुम हे भटके लोगो, झुठलाने वालो !

لَآكِلُونَ مِن شَجَرٍ مِّن زَقُّومٍ ﴿٥٢﴾

(५२) अवश्य खाने वाले हो ज़क़्क़ूम (थूहड़) का वृक्ष।

فَمَالِئُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ﴿٥٣﴾

(५३) तथा उसी से पेट भरने वाले हो।[1]

فَشَارِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ ﴿٥٤﴾

(५४) फिर उस पर गर्म उबलता हुआ पानी पीने वाले हो।

فَشَارِبُونَ شُرْبَ الْهِيمِ ﴿٥٥﴾

(५५) फिर पीने वाले भी प्यासे ऊँटों की तरह।[2]

هَٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ﴿٥٦﴾

(५६) क़यामत के दिन उनका अतिथि-सत्कार यही है।[3]

نَحْنُ خَلَقْنَاكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُونَ ﴿٥٧﴾

(५७) हमने ही तुम सबको पैदा किया है, फिर तुम क्यों नहीं मनाते ?[4]

---

[1]अर्थात उस कुदृश्य तथा अत्यन्त कुस्वाद एवं कड़वे वृक्ष का खाना तुम्हें यद्यपि अति अप्रिय होगा, परन्तु अति भूख के कारण तुम्हें उसी से अपना पेट भरना होगा।

[2]هِيم (हीम) أَهْيَم का बहुवचन है, उन प्यासे ऊँटों को कहा जाता है जो एक विशेष रोग के कारण पानी पर पानी पीते जाते हैं किन्तु उनकी प्यास नहीं जाती। अभिप्राय यह है कि ज़क़्क़ूम खाकर पानी भी वैसे ही नहीं पियोगे जो साधारण ढंग से होता है, अपितु एक तो यातना के रूप में तुम्हें पीने के लिए खौलता पानी मिलेगा, दूसरे तुम उसे प्यासे ऊँट के समान पीते ही चले जाओगे किन्तु तुम्हारी प्यास दूर नहीं होगी।

[3]यह उपहास स्वरूप फ़रमाया : अन्यथा अतिथि-सत्कार तो वह होता है जो अतिथि के आदर-भाव के लिये किया जाता है। जैसे कुछ स्थानों पर फ़रमाया :

﴿ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴾

"उनको दुखदायी यातना की शुभसूचना सुना दो।" (*आले इमरान*-२१)

[4]अर्थात तुम जानते हो कि तुम्हारा स्रष्टा अल्लाह ही है, फिर तुम उसको मानते क्यों नहीं अथवा पुन: जीवन प्रदान करने पर विश्वास क्यों नहीं करते ?

The Ummah Technology Mission

أَفَرَءَيْتُم مَّا تُمْنُونَ ﴿٥٨﴾

(५८) अच्छा फिर यह तो बताओ कि जो वीर्य तुम टपकाते हो।

ءَأَنتُمْ تَخْلُقُونَهُۥٓ أَمْ نَحْنُ ٱلْخَٰلِقُونَ ﴿٥٩﴾

(५९) क्या उससे (मनुष्य) तुम बनाते हो अथवा स्रष्टा हम ही हैं ?[1]

نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ ٱلْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ﴿٦٠﴾

(६०) हम ही ने तुममें मृत्यु को निर्धारित कर दिया है[2] तथा हम उससे हारे हुए नहीं हैं।[3]

عَلَىٰٓ أَن نُّبَدِّلَ أَمْثَٰلَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ فِى مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾

(६१) कि तुम्हारे स्थान पर तुम जैसे अन्य पैदा कर दें तथा तुम्हें नये रूप से (उस संसार में) पैदा करें जिससे तुम (सर्वथा) अनजान हो।[4]

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ ٱلنَّشْأَةَ ٱلْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾

(६२) तथा तुम्हें निश्चित रूप से प्रथम जन्म का ज्ञान भी है, फिर शिक्षा क्यों नहीं ग्रहण करते ?[5]

أَفَرَءَيْتُم مَّا تَحْرُثُونَ ﴿٦٣﴾

(६३) अच्छा फिर यह भी बताओ कि तुम जो कुछ बोते हो।

ءَأَنتُمْ تَزْرَعُونَهُۥٓ أَمْ نَحْنُ ٱلزَّٰرِعُونَ ﴿٦٤﴾

(६४) उसे तुम ही उगाते हो अथवा हम उगाने वाले हैं।[6]

---

[1]अर्थात तुम्हारी पत्नियों से संभोग के परिणामस्वरूप तुम्हारे वीर्य की जो बूँदे स्त्रियों के गर्भाशय में जाती हैं, उनसे इंसानी रूप रेखा बनाने वाले हम हैं या तुम ?

[2]अर्थात प्रत्येक व्यक्ति की मृत्यु का समय निश्चित कर दिया है जिससे कोई आगे नहीं बढ़ सकता जैसे कोई बाल्यकाल में, कोई युवावस्था में तथा कोई बुढ़ापे में मरता है।

[3]अथवा विवश नहीं, अपितु सामर्थ्यवान हैं।

[4]अर्थात तुम्हारे रूप बदलकर तुम्हें बन्दर तथा सूअर बना दें तथा तुम्हारी जगह तुम्हारी रूप-रेखा की कोई अन्य सृष्टि पैदा कर दें।

[5]अर्थात क्यों नहीं समझते कि उसने जिस प्रकार पहली बार पैदा किया (जिसे तुम जानते हो), वह पुन: भी पैदा कर सकता है।

[6]अर्थात भूमि में तुम जो बीज बोते हो वह एक पौधा बनकर उगता है। अन्न के एक निर्जीव दाने को फाड़कर तथा धरती की छाती को चीरकर इस प्रकार वृक्ष उपजाने वाला कौन है ? यह भी वीर्य की बूंद से इंसान बना देने की भाँति हमारे ही सामर्थ्य की कलाकारी है अथवा तुम्हारी किसी शिल्पकारी अथवा छू मंत्र का परिणाम है ?

The Ummah Technology Mission

لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿٦٥﴾

(६५) यदि हम चाहें तो उसे कण-कण कर दें तथा तुम आश्चर्य के साथ बातें बनाते ही रह जाओ।[1]

اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿٦٦﴾

(६६) कि हम पर तो दण्ड ही पड़ गया।[2]

بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٦٧﴾

(६७) बल्कि हम तो पूर्णरूप से वंचित ही रह गये।

اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِىْ تَشْرَبُوْنَ ﴿٦٨﴾

(६८) अच्छा यह बताओ कि जिस पानी को तुम पीते हो।

ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿٦٩﴾

(६९) उसे बादलों से भी तुम ही ने उतारा है अथवा हम वर्षा करते हैं।

لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

(७०) यदि हमारी इच्छा हो तो हम उसे कड़ुवा (विष) कर दें फिर तुम हमारी कृतज्ञता क्यों नहीं व्यक्त करते ?[3]

---

[1]अर्थात खेती को हरी-भरी करने के बाद जब वह पकने के क़रीब हो जाये तो यदि हम चाहें तो उसे सुखाकर चुरा-चुरा कर दें तथा तुम आश्चर्य से मुँह तकते ही रह जाओ। تَفَكُّهٌ के दोनों अर्थ हैं, सुख-आनन्द भी तथा दुख एवं निराशा भी। यहाँ दूसरा अर्थ लिया गया है। इसके अनेक अर्थ किये गये हैं। बातें बनाते रह जाओगे, शोक करोगे, लज्जित होगे, आश्चर्य करोगे, एक-दूसरे को दोष दोगे तथा दुखी होगे आदि। ظَلْتُم वास्तव में صِرْتُم (हो जाओगे) के अर्थ में है।

[2]अर्थात पहले हमने भूमि पर हल चलाकर उसे बराबर किया, फिर बीज डाला, फिर उसे पानी देते रहे। किन्तु जब फ़सल पकने का समय आया तो वह सूख गई तथा हमें कुछ भी नहीं मिला। अर्थात यह सब व्यय तथा श्रम एक दण्ड ही हुआ जो हमें सहन करना पड़ा। दण्ड का अर्थ यही होता है कि मनुष्य को उसके माल अथवा परिश्रम का लाभ न मिले, अपितु वह ऐसे ही व्यर्थ हो जाये, अथवा उससे बलपूर्वक कुछ ले लिया जाये तथा उसके बदले उसे कुछ न दिया जाये।

[3]अर्थात इस अनुग्रह पर हमारी आज्ञा का पालन करके हमारी व्यवहारिक कृतज्ञता क्यों व्यक्त नहीं करते ?

The Ummah Technology Mission

أَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ﴿٧١﴾

(७१) अच्छा यह भी बताओ कि जो आग तुम सुलगाते हो।

ءَأَنتُمْ أَنشَأْتُمْ شَجَرَتَهَآ أَمْ نَحْنُ الْمُنشِـُٔونَ ﴿٧٢﴾

(७२) उसके वृक्ष को तुमने पैदा किया है अथवा हम उसके पैदा करने वाले हैं ?[1]

نَحْنُ جَعَلْنَٰهَا تَذْكِرَةً وَمَتَٰعًا لِّلْمُقْوِينَ ﴿٧٣﴾

(७३) हमने उसे शिक्षा प्राप्त करने का साधन[2] तथा यात्रियों के लाभ की वस्तु बनाया है।[3]

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾

(७४) तो अपने महान प्रभु के नाम का जाप किया करो।

فَلَآ أُقْسِمُ بِمَوَٰقِعِ النُّجُومِ ﴿٧٥﴾

(७५) तो मैं सौगन्ध खाता हूँ सितारों के गिरने की।[4]

---

[1]कहते हैं कि अरब में दो वृक्ष हैं, मर्ख तथा अफ़ार। उन दोनों की डालियाँ लेकर उन्हें आपस में रगड़ने से आग की चिंगारियाँ निकलती हैं।

[2]कि इसके प्रभाव एवं लाभ विचित्र हैं तथा संसार की असंख्य वस्तुओं की तैयारी के लिए उसे रीढ़ की अस्थि का स्थान प्राप्त है, जो हमारे महा सामर्थ्य का प्रतीक है। हमने दुनिया में जैसे यह आग पैदा की है आख़िरत में भी पैदा करने पर समर्थ हैं, जो इससे ६९ गुना तपन में अधिक होगी। (जैसेकि हदीस में है)

[3]مُقْوِين यह مُقْوِي (मुक्वी) का बहुवचन है। قَوَآء (क्वाअ) शून्य वन में प्रवेश करने वाला, अभिप्राय यात्री है। अर्थात यात्री मरूभूमियों तथा जंगलों में इन वृक्षों से लाभ उठाते हैं, इनसे गर्मी, प्रकाश तथा जलावन प्राप्त करते हैं। कुछ ने मुक़्वी से अभिप्राय वह दरिद्र लिये हैं जो भूख के कारण खाली पेट हों। कुछ ने उसका अर्थ लाभ प्राप्त करने वाले किये हैं। इसमें धनी, निर्धन और यात्री सब ही आ जाते हैं तथा सब ही आग से लाभ प्राप्त करते हैं। इसीलिए हदीस में जिन तीन चीज़ों को सार्वजनिक रखने का आदेश दिया गया है, उनमें पानी तथा घास के अतिरिक्त आग भी है। (अबू दाऊद, किताबुल बुयूअ, व इब्ने माजा, किताबुर रुहून, बाबु अल मुस्लिमून शुरकाअ फ़ी सलासिन)

[4]فَلَا أُقْسِمُ में 'ला' अधिक है, जो बल देने के लिये है, अथवा यह अधिक नहीं है बल्कि पूर्व की किसी चीज़ को नकारने के लिए है। अर्थात यह क़ुरआन ज्योतिष अथवा कविता नहीं, वरन मैं तारों के गिरने की शपथ लेकर कहता हूँ कि यह क़ुरआन सम्मान वाला है। مواقع النجوم से अभिप्राय तारों के उदय तथा अस्त होने के स्थान एवं ध्रुव हैं। कुछ ने

The Ummah Technology Mission

وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ﴿٧٦﴾

(७६) तथा यदि तुम्हें ज्ञान हो तो यह बहुत बड़ी सौगन्ध है।

إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ﴿٧٧﴾

(७७) कि नि:संदेह यह क़ुरआन अत्यन्त सम्मान वाला है।[1]

فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ﴿٧٨﴾

(७८) जो एक सुरक्षित पुस्तक में (लिखित) है।[2]

لَّا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ ﴿٧٩﴾

(७९) जिसे केवल पवित्र लोग ही स्पर्श कर सकते हैं।[3]

تَنزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٠﴾

(८०) यह अखिल जगत के प्रभु की ओर से अवतरित किया गया है।

أَفَبِهَٰذَا الْحَدِيثِ أَنتُم مُّدْهِنُونَ ﴿٨١﴾

(८१) तो क्या तुम ऐसी बात को साधारण (एवं तुच्छ) समझ रहे हो ?[4]

अनुवाद किया है, शपथ ग्रहण करता हूँ आयतों के उतरने की पैग़म्बर के दिलों में (मुज़िहुल क़ुरआन) अर्थात नुजूम (तारे) क़ुरआन की आयतें तथा मवाकिअ (उतरने का स्थान) अम्बिया के दिल हैं। कुछ ने इसका अर्थ क़ुरआन का समय-समय से उतरना अभिप्राय लिया है तथा कुछ ने क़यामत के दिन तारों का झड़ना तात्पर्य लिया है। (इब्ने कसीर)

[1]यह शपथ का उत्तर है।

[2]अर्थात लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) में।

[3]يَمَسُّهُ ५ में सर्वनाम लौहे महफ़ूज़ की ओर फिरता है। पवित्रजनों से तात्पर्य फ़रिश्ते हैं। कुछ ने उसको क़ुरआन की ओर फिराया है अर्थात उसे फ़रिश्ते ही छूते हैं, अर्थात आकाश पर फ़रिश्तों के सिवा किसी की भी पहुँच क़ुरआन तक नहीं होती। अभिप्राय मुश्रेक़ीन का खंडन है जो कहते थे कि क़ुरआन शैतान लेकर उतरते हैं। अल्लाह ने फ़रमाया यह कैसे संभव है। यह क़ुरआन शैतानी प्रभाव से सर्वथा सुरक्षित है।

[4]حديث (हदीस) से अभिप्राय क़ुरआन है। مُدَاهَنَةٌ (मुदाहनत) वह आलस्य जो कुफ़्र तथा शिर्क के मुक़ाबले अपनाई जाये, जबकि उन के मुक़ाबिले में कड़ी नीति की आवश्यकता है। अर्थात इस क़ुरआन को अपनाने के मामले में सभी काफ़िरों को प्रसन्न करने के लिए नम्रता तथा विमुखता का मार्ग अपना रहे हो, जबकि यह क़ुरआन जो उपरोक्त गुणों से युक्त है, इस योग्य है कि उसे अधिक खुशी से अपनाया जाये।

The Ummah Technology Mission

وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ تُكَذِّبُونَ ﴿٨٢﴾

(८२) तथा अपने हिस्से में यही लेते हो कि झुठलाते फिरो।

فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُومَ ﴿٨٣﴾

(८३) तो जब कि (प्राण) गले तक पहुँच जाये।

وَأَنتُمْ حِينَئِذٍ تَنظُرُونَ ﴿٨٤﴾

(८४) तथा तुम उस समय (आँखों से) देखते रहो।[1]

وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنكُمْ وَلَٰكِن لَّا تُبْصِرُونَ ﴿٨٥﴾

(८५) तथा हम उस व्यक्ति से तुम्हारे अपेक्षा अत्याधिक निकट होते हैं,[2] परन्तु तुम नहीं देख सकते।[3]

فَلَوْلَا إِن كُنتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ﴿٨٦﴾

(८६) तो यदि तुम किसी की आज्ञा के अधीन नहीं।

تَرْجِعُونَهَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٨٧﴾

(८७) तथा उस कथन में सत्य हो तो तनिक उस प्राण को तो लौटाओ।[4]

---

[1]अर्थात प्राण निकलते हुए देखते हो किन्तु उसे टाल सकने अथवा उससे कोई लाभ पहुँचाने का सामर्थ्य नहीं रखते।

[2]अर्थात मरने वाले के हम तुम से भी अधिक समीप होते हैं अपने ज्ञान, सामर्थ्य तथा दर्शन के आधार पर, अथवा हमसे अभिप्राय अल्लाह के कार्यकर्त्ता अर्थात मौत के फ़रिश्ते हैं जो उसका प्राण निकालते हैं।

[3]अर्थात अपनी अज्ञानता के कारण तुम्हें इस बात का ज्ञान नहीं कि अल्लाह तो तुम्हारी प्राण रग से भी अधिक समीप है अथवा यमदूतों को तुम देख नहीं सकते।

[4]دَانَ يَدِينُ का अर्थ है अधीन होना, दूसरा अर्थ है बदला देना। अर्थात यदि तुम इस बात में सच्चे हो कि तुम्हारा कोई मालिक तथा स्वामी नहीं जिसके तुम अधीन हो अथवा प्रतिकार का कोई दिन नहीं आयेगा, तो उस निकाले हुए प्राण को अपनी जगह वापस कर के दिखा दो। यदि तुम ऐसा नहीं कर सकते तो स्पष्ट है कि तुम्हारा भ्रम बेकार है। निश्चय तुम्हारा एक स्वामी है तथा नि:संदेह एक दिन आयेगा जिसमें वह मालिक प्रत्येक को उसका कर्मफल देगा।

The Ummah Technology Mission

فَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٨٨﴾

(८८) तो जो कोई भी (अल्लाह के दरबार में) निकटतम होगा।[1]

فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿٨٩﴾

(८९) उसे तो सुख है एवं भोजन हैं तथा सुखदायी स्वर्ग है।

وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩٠﴾

(९०) तथा जो व्यक्ति दाहिने हाथ वालों में से है।[2]

فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩١﴾

(९१) तो भी शान्ति है तेरे लिए कि तू दाहिने वालों में से है।

وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٩٢﴾

(९२) परन्तु यदि कोई झुठलाने वाले पथभ्रष्टों में से है।[3]

فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٩٣﴾

(९३) तो खौलते हुए पानी से सत्कार है।

وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ ﴿٩٤﴾

(९४) तथा नरक में जाना है।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٩٥﴾

(९५) यह (सूचना) सर्वथा सत्य तथा पूर्णतया निश्चित है।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٩٦﴾

(९६) तो तू अपने (अत्यन्त महिमावान) प्रभु के नाम की पवित्रता वर्णन कर।[4]

---

[1]सूर: के आरम्भ में कर्मों के अनुसार इंसानों के जो तीन भेद वर्णन किये गये थे, उनका पुन: वर्णन किया जा रहा है। यह उनका प्रथम प्रकार है जिन्हें मुक़र्रबीन के सिवा साबिक़ीन (अग्रणि) भी कहा जाता है, क्योंकि वह पुण्य के प्रत्येक कार्य में आगे होते हैं, ईमान लाने में भी दूसरों से आगे होते हैं तथा अपने इन्हीं गुणों के कारण वह अल्लाह के सदन के समीपवर्तियों में होते हैं।

[2]यह दूसरी श्रेणी है, साधारण ईमानवाले। यह भी नरक से बचकर स्वर्ग में जायेंगे परन्तु पदों में साबिक़ीन (अग्रणि लोगों) से कमतर होंगे। मौत के समय उनको भी फ़रिश्ते शान्ति की शुभ-सूचना देते हैं।

[3]यह तीसरी श्रेणी है जिन्हें सूरह के आरम्भ में أَصْحَابُ الْمَشْئَمَةِ "असहाबुल मश्अम:" कहा गया था, वायें हाथ वाले अथवा अशुभ वाले। यह अपने कुफ़्र तथा पाखंड का दण्ड अथवा उसका अशुभ, नरक की यातना के रूप में भुगतेंगे।

[4]हदीस में आता है कि दो शब्द अल्लाह को अति प्रिय हैं, बोलने में हल्के तथा तौल में

The Ummah Technology Mission

सूरतुल हदीद-५७

سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ

सूर: हदीद मदीने में अवतरित हुई तथा इसमें उन्तीस आयतें तथा चार रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ①

(१) आकाशों तथा धरती में जो कुछ है (सभी) अल्लाह की तस्बीह (महिमागान) कर रहे हैं,[1] और वह शक्तिशाली हिक्मत वाला है।

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ②

(२) आकाशों तथा धरती का राज्य उसी का है,[2] वही जीवन देता है तथा मृत्यु भी तथा वह सभी वस्तु पर सामर्थ्यवान है।

هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ

(३) वही आदि है तथा वही अन्त, वही प्रत्यक्ष है तथा वही अप्रत्यक्ष,[3] तथा वह प्रत्येक वस्तु

भारी हैं। سبحان الله و بحمده سبحان الله العظيم (सहीह बुख़ारी, अन्तिम हदीस तथा सहीह मुस्लिम किताबुज़ ज़िक्र, बाबु फ़ज़लित तहलील वत्तस्बीह वद्दुआ)

[1]यह महिमागान अपनी अवस्था से नहीं बल्कि अपने कथन से करते हैं। इसलिए फ़रमाया :

﴿وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ﴾

"किन्तु तुम उनकी तस्बीह (महिमागान) को नहीं समझ सकते।" (*बनी इस्राईल*-४४)

ईशदूत दाऊद अलैहिस्सलाम के बारे में आता है कि उनके साथ पर्वत भी तस्बीह (महिमागान) करते थे। (*अल-अम्बिया*-७९) यदि यह तस्बीह अवस्था अथवा संकेत की तस्बीह होती तो ईशदूत दाऊद के साथ उसको विशेष करने की आवश्यकता न होती।

[2]इसलिए वह उनमें जैसे चाहता है अधिकार करता है, उसके सिवा किसी का आदेश तथा अधिकार नहीं चलता। अथवा अभिप्राय है कि वर्षा, वनस्पति तथा जीविका के सभी कोष उसी के स्वामित्व में हैं।

[3]वही आदि है अर्थात उससे पहले कुछ न था, वही अन्त है, जिसके बाद कोई चीज नहीं

The Ummah Technology Mission

को भली-भाँति जानने वाला है।

عَلِيْمٌ ۝٤

(४) वही है जिसने आकाशों एवं धरती को छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर उच्च हुआ,[1] वह (भलीभाँति) जानता है उस वस्तु को जो धरती में जाये[2] तथा जो उससे निकले[3]

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ؕ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا

होगी। वही व्याप्त है अर्थात सब पर प्रभुत्वशाली है, उस पर कोई प्रभुत्व नहीं रखता। वही अंर्तयामी है, अर्थात अन्तःकरण की सभी बातें केवल वही जानता है अथवा लोगों की आँखों तथा बुद्धियों से लुप्त है। (फ़तहुल क़दीर) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी पुत्री फ़ातिमा रज़ी अल्लाहु अन्हा को यह दुआ पढ़ने पर बल दिया था।

«اللَّهُمَّ! رَبَّ السَّمٰوَاتِ السَّبْعِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ، فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوٰى، وَمُنْزِلَ التَّوْرَاةِ وَالإِنْجِيلِ وَالْفُرْقَانِ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْءٍ أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهِ، اللَّهُمَّ! أَنْتَ الأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ، وَأَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُونَكَ شَيْءٌ، اقْضِ عَنَّا الدَّيْنَ وَأَغْنِنَا مِنَ الْفَقْرِ».

(सहीह मुस्लिम कितावुज़् ज़िक्रे वदुआये) इस दुआ में जो ऋण अदा करने के लिये मस्नून है, प्रथम एवं अंत तथा व्याप्त (गोचर) एवं गुप्त (अगोचर) का अर्थ वर्णन कर दिया गया है।

[1]इसी अर्थ की आयतें *सूरह आराफ़-५४, सूरह यूनुस-३, सूरह अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰ सजदा-४* आदि आयतों में गुज़र चुकी हैं। उनके भाष्य देख लिये जायें।

[2]अर्थात धरती में वर्षा की जो बूँदें तथा अन्न एवं फलों के जो बीज प्रवेश करते हैं, उनकी अवस्था तथा मात्रा को वह जानता है।

[3]जो पेड़ चाहे वह फलों के हों, अथवा अनाजों के, अथवा शोभा एवं सुगन्ध वाले फूलों के, यह जितने भी तथा जैसे भी विकसित होते हैं, सभी अल्लाह के ज्ञान में है। जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَعِندَهُۥ مَفَاتِحُ ٱلْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ إِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِى ٱلْبَرِّ وَٱلْبَحْرِ ۚ وَمَا تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِى ظُلُمَٰتِ ٱلْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِى كِتَٰبٍ مُّبِينٍ ﴾

"तथा अल्लाह ही के पास हैं परोक्ष की चाबियाँ (कोषागार), उनको अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता, तथा वह सभी वस्तुओं को जानता है जो कुछ थल में हैं तथा जो कुछ समुद्रों में हैं, तथा कोई पत्ता नहीं गिरता परन्तु वह उसको भी जानता है तथा कोई दाना धरती के अंधेरे भागों में नहीं पड़ता तथा न कोई भीगी

The Ummah Technology Mission

وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ؕ وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٤

तथा जो आकाश से नीचे आये[1] तथा जो कुछ चढ़कर उसमें जाये[2] तथा जहाँ कहीं तुम हो वह तुम्हारे साथ है[3] तथा जो कुछ तुम कर रहे हो, अल्लाह देख रहा है।

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝٥

(५) आकाशों तथा धरती का राज्य उसी का है, तथा समस्त कार्य उसी की ओर लौटाये जाते हैं।

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ ؕ وَهُوَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٦

(६) वही रात्रि को दिन में प्रवेश कराता है तथा वही दिन को रात्रि में प्रवेश कराता है,[4] तथा सीनों में छिपी हुई बातों का वह पूर्ण ज्ञान रखने वाला है।

اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ؕ

(७) अल्लाह पर तथा उसके रसूल (सन्देष्टा) पर ईमान ले आओ तथा उस धन में से ख़र्च करो जिसमें अल्लाह ने तुम्हें (अन्यों का)

एवं सूखी वस्तु गिरती है किन्तु ये सभी स्पष्ट पुस्तक में हैं।" (*अल-अंआम-५९*)

[1]वर्षा, ओले, बर्फ़, भाग्य तथा वह आदेश जो फ़रिश्ते लेकर उतरते हैं।

[2]फ़रिश्ते इंसानों के जो कर्म लेकर चढ़ते हैं, जैसे हदीस में आता है कि अल्लाह की ओर रात के कर्म दिन से पहले तथा दिन के कर्म रात से पहले चढ़ते हैं। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाबुन इन्नल्लाह ला यनामु)

[3]अर्थात तुम जल में हो अथवा थल में, रात हो अथवा दिन, घरों में हो अथवा वनों में, प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक समय वह अपने ज्ञान तथा दर्शन शक्ति के आधार पर तुम्हारे साथ है अर्थात तुम्हारे एक-एक कर्म को देखता है, तुम्हारी एक-एक बात जानता तथा सुनता है। यही विषय *सूरः हूद-३, सूरः रअ्द-१०* तथा अन्य आयतों में भी वर्णन किया गया है।

[4]अर्थात सब चीज़ों का स्वामी वही है, वह जैसे चाहता है उनमें अधिकार करता है, उसकी आज्ञा एवं आदेश से कभी रात लम्बी, दिन छोटा तथा कभी इसके विपरीत दिन बड़ा तथा रात छोटी हो जाती है तथा कभी दोनों बराबर। इसी प्रकार कभी गर्मी तथा कभी जाड़ा, कभी वसन्त तथा पतझड़। ऋतु का परिवर्तन भी उसी की इच्छा तथा आदेश से होता है।

The Ummah Technology Mission

فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝٧

उत्तराधिकारी बनाया है।[1] तो तुममें से जो ईमान लायें तथा दान करें उन्हें बहुत बड़ा पुण्य मिलेगा।

وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٨

(८) तुम अल्लाह पर ईमान क्यों नहीं लाते ? जबकि स्वयं रसूल तुम्हें अपने प्रभु पर ईमान लाने का आमन्त्रण दे रहा है तथा यदि तुम ईमानवाले हो तो वह तुम से दृढ़ वचन भी ले चुका है।[2]

هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖٓ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٩

(९) वह (अल्लाह) ही है जो अपने भक्त पर स्पष्ट आयतें अवतरित करता है ताकि वह तुम्हें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाये। नि:संदेह अल्लाह (तआला) तुम पर विनम्र दया करने वाला है।

---

[1]अर्थात यह माल इससे पहले किसी दूसरे के पास था। इसमें इस बात की ओर संकेत है कि तुम्हारे पास भी यह धन नहीं रहेगा, दूसरे उसके उत्तराधिकारी बनेंगे। यदि तुमने उसे अल्लाह के मार्ग में ख़र्च नहीं किया तो बाद में इसके उत्तराधिकारी उसे अल्लाह के मार्ग में व्यय करके तुमसे अधिक सौभाग्य प्राप्त कर सकते हैं तथा यदि वह अवज्ञा में ख़र्च करेंगे तो तुम भी सहायता करने के अपराध में पकड़े जाओगे। (इब्ने कसीर) हदीस में आता है कि मनुष्य कहता है कि मेरा धन, मेरा माल, हालाँकि तेरा एक माल तो वह है जो तूने खा-पीकर समाप्त कर दिया। दूसरा वह है जिसे पहन कर पुराना कर दिया तथा तीसरा वह है जो अल्लाह की राह में ख़र्च करके आख़िरत के लिए सुरक्षित कर लिया। इसके सिवा जो कुछ है वह सब दूसरे लोगों के हिस्से में आयेगा। (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, मुसनद अहमद ४\२४)

[2]इब्ने कसीर ने اَخَذَ का कर्त्ता الرسول को बनाया है तथा अभिप्राय वह बैअत (वचन) लिया है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा केराम से लेते थे कि सुख एवं दुख प्रत्येक दशा में सुनना तथा अनुपालन करना है। इमाम इब्ने जरीर के निकट इसका कर्त्ता अल्लाह है तथा अभिप्राय वह प्रतिज्ञा है जो अल्लाह तआला ने सभी मनुष्यों से उस समय लिया था जब उन्हें आदम अलैहिस्सलाम की पीठ से निकाला था, जो 'अहदे अलस्तु' कहलाता है, जिसका वर्णन *सूरह आराफ़*-१७२ में है।

The Ummah Technology Mission

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝١٠

(१०) तथा तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के मार्ग में ख़र्च नहीं करते ? वास्तव में आकाशों तथा धरती के (समस्त) उत्तराधिकार (वस्तुओं) का स्वामी (अकेला) अल्लाह ही है। तुममें से जिन लोगों ने विजय से पूर्व अल्लाह के मार्ग में दिया है तथा धर्मयुद्ध किया है वह (दूसरों के) समतुल्य नहीं,[1] अपितु उनसे अत्यन्त उच्च पद के हैं जिन्होंने विजय के पश्चात दान किया तथा धर्मयुद्ध किया।[2] हाँ, भलाई का वचन तो अल्लाह तआला का उन सबसे है,[3] और जो कुछ तुम (लोग) कर रहे

---

[1]फ़तह (विजय) से अभिप्राय अधिकांश व्याख्याकारों के निकट मक्का की विजय है। कुछ ने हुदैबिया की संधि को खुली विजय (फ़त्हे मोबीन) मानकर उसे ही तात्पर्य लिया है। जो भी हो, हुदैबिया संधि अथवा मक्का की विजय से पहले मुसलमान संख्या तथा शक्ति में कम थे तथा मुसलमानों की आर्थिक दशा भी बहुत कमज़ोर थी। इन स्थितियों में अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करना तथा जिहाद में भाग लेना अत्यन्त कठिन तथा बड़े साहस का काम था, जबकि मक्का विजय के पश्चात यह दशा बदल गई। मुसलमान बल तथा संख्या में भी बढ़ते चले गये तथा उनकी आर्थिक दशा भी पहले से कहीं अच्छी हो गई। इसमें अल्लाह तआला ने दोनों युगों के मुसलमानों के संदर्भ में फ़रमाया कि यह पुण्य में समान नहीं हो सकते।

[2]क्योंकि पहलों का व्यय करना तथा जिहाद दोनों काम अति कठिन स्थिति में हुए। इससे विदित हुआ कि सत्कर्मियों तथा साहसियों को अन्य लोगों पर प्रधानता देनी चाहिए। इसलिए अहले सुन्नत के निकट प्रतिष्ठा एवं प्रधानता में अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहु अन्हु सर्वोत्तम हैं, क्योंकि प्रथम ईमानवाले भी वही हैं तथा पहले ख़र्च करने वाले एवं प्रथम मुजाहिद (धर्मयोद्धा) भी वही हैं। इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय सिद्दीक़ अकबर रज़ी अल्लाहु अन्हु को अपने जीवन तथा उपस्थिति में नमाज़ के लिए आगे किया तथा इसी कारण मुसलमानों (सहाबा) ने उन्हें ख़िलाफ़त के अधिकार में प्रथम रखा। (رضي الله عنهم و رضوا عنه)

[3]इसमें स्पष्ट कर दिया कि आदरणीय सहावा रज़ी अल्लाहु अन्हुम के मध्य प्रतिष्ठा एवं प्रधानता में अंतर अवश्य है, किन्तु श्रेणियों में अंतर का अर्थ यह नहीं कि बाद के मुसलमान होने वाले सहाबा रज़ी अल्लाहु अन्हुम ईमान तथा नैतिकता में गये गुज़रे थे,

The Ummah Technology Mission

हो उससे अल्लाह अवगत है।

مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَیُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗۤ اَجْرٌ كَرِیْمٌ ﴿۱۱﴾

(११) कौन है ? जो अल्लाह (तआला) को भली प्रकार से ऋण दे, फिर अल्लाह (तआला) उसके लिए उसको बढ़ाता चला जाये तथा उसका प्रिय बदला सिद्ध हो जाये।[1]

یَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِیْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ یَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَ بِاَیْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْیَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ﴿۱۲﴾

(१२) [क़यामत (प्रलय) के] दिन तू देखेगा कि ईमानवाले पुरूषों एवं महिलाओं का प्रकाश उनके आगे-आगे तथा उनके दायें दौड़ रहा होगा।[2] आज तुम्हें उन स्वर्गों की शुभसूचना है, जिनके नीचे (शीतल जल) की सरितायें प्रवाहित हैं, जिनमें सदैव का निवास है। यह है महान सफलता।[3]

जैसाकि कुछ लोग आदरणीय मुआविया रज़ी अल्लाहु अन्हु तथा उनके पिता एवं अन्य ऐसे ही प्रतिष्ठावान सहाबा के संबंध में अपशब्द अथवा उन्हें 'तुलका' कहकर उनकी अवहेलना तथा अपमान करते हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सभी सहाबा के सम्बन्ध में फ़रमाया : لا تَسُبُّوا أصحابي "मेरे सहाबा को अपशब्द न कहो। सौगंध है उस शक्ति की जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं, यदि तुममें से कोई ओहुद पर्वत जितना सोना भी अल्लाह की राह में ख़र्च कर दे तो वह मेरे सहाबा के एक मुद्द बल्कि आधे मुद्द (वज़न) के बराबर भी नहीं।" (सहीह बुख़ारी तथा मुस्लिम किताबु फ़जाएलिस् सहाबा)

[1]अल्लाह को अच्छा ऋण देने का अभिप्राय यह है कि अल्लाह के मार्ग में दान तथा पुण्य करना। यह धन जो इंसान अल्लाह के मार्ग में व्यय करता है, अल्लाह ही का दिया हुआ है। फिर भी उसे ऋण कहना, यह अल्लाह का अनुग्रह तथा दया है कि वह इस ख़र्च पर वैसे ही पुण्य प्रदान करेगा जैसे ऋण का भुगतान अनिवार्य होता है।

[2]यह प्रलय में पुल सिरात पर होगा, यह प्रकाश उनके ईमान तथा पुण्य के कर्मों का प्रतिफल होगा, जिसके प्रकाश में वह स्वर्ग का मार्ग सरलता से तय कर लेंगे। इमाम इब्ने कसीर तथा इमाम इब्ने जरीर आदि ने وَ بِاَیْمَانِهِمْ का यह अर्थ लिया है कि उनके दायें हाथों में उनके कर्मपत्र होंगे।

[3]यह वह फ़रिश्ते कहेंगे जो उनके स्वागत तथा अगुवाई के लिए वहाँ होंगे।

The Ummah Technology Mission

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ۭ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ۭ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۝۱۳

(१३) उस दिन द्वयवादी (मुनाफ़िक़) पुरूष एवं महिलायें ईमानवालों से कहेंगे कि हमारी प्रतीक्षा तो करो कि हम भी तुम्हारी दिव्य ज्योति से कुछ प्रकाश प्राप्त कर लें[1] उत्तर दिया जायेगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ[2] तथा प्रकाश की खोज करो। फिर उनके तथा उनके मध्य[3] एक दीवार स्थापित कर दी जायेगी, जिसमें द्वार भी होगा। उसके भीतरी भाग में कृपा होगी[4] तथा वाह्य भाग में यातना होगी।[5]

يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۭ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ

(१४) ये चिल्ला-चिल्ला कर उनसे कहेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे ?[6] वे कहेंगे कि हाँ, थे तो अवश्य, परन्तु तुमने अपने आपको भटकावे में डाल रखा था, [7] तथा प्रतीक्षा में ही

---

[1]यह अवसरवादी कुछ दूर ईमानवालों के साथ उनके प्रकाश में चलेंगे, फिर अल्लाह तआला मुनाफ़िक़ों (द्वयवादियों) पर अंधकार आच्छादित कर देगा, उस समय वे ईमानवालों से यह कहेंगे।

[2]इसका अभिप्राय यह है कि संसार में जाकर उसी प्रकार ईमान तथा सत्कर्म की पूँजी लाओ जैसे हम लाये हैं। अथवा उपहास स्वरूप ईमानवाले कहेंगे कि पीछे जहाँ से हम प्रकाश लाये थे वहीं जाकर उसको ढूँढो।

[3]अर्थात ईमानवालों तथा मुनाफ़िक़ों (द्वयवादियों) के बीच।

[4]इससे अभिप्राय स्वर्ग है जिसमें ईमानवाले प्रवेश कर चुके होंगे।

[5]यह वह भाग है जिसमें नरक होगा।

[6]अर्थात दीवार की आड़ हो जाने पर मुनाफ़िक़, मुसलमानों से कहेंगे कि हम दुनिया में तुम्हारे साथ नमाज़ें नहीं पढ़ते थे, जिहाद आदि में भाग नहीं लेते थे ?

[7]कि तुमने अपने दिलों में कुफ़्र (इंकार) तथा निफ़ाक़ (अवसरवाद) छिपा रखा था।

The Ummah Technology Mission

الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿١٤﴾

रहे[1] और शंका एवं संदेह करते रहे[2] तथा तुम्हें तुम्हारी (व्यर्थ) आकांक्षाओं ने धोखे में ही रखा,[3] यहाँ तक कि अल्लाह का आदेश आ पहुँचा[4] तथा तुम्हें अल्लाह के विषय में धोखा देने वाले ने धोखे में ही रखा।[5]

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ هِيَ مَوْلٰىكُمْ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٥﴾

(१५) तो आज न तुमसे आर्थिक दण्ड (तथा न बदला) स्वीकार किया जायेगा तथा न काफ़िरों से, तुम सबका ठिकाना नरक है। वही तुम्हारा साथी है[6] तथा वह बुरा ठिकाना है।

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا

(१६) क्या अब तक ईमानवालों के लिए समय नहीं आया कि उनके हृदय अल्लाह की याद से तथा जो सत्य अवतरित हो चुका है, उससे कोमल हो जायें[7] तथा उन लोगों

---

[1]कि संभवत: मुसलमान किसी आपदा का शिकार हो जायें।

[2]धर्म के विषय में, इसीलिए न क़ुरआन को माना न प्रमाणों एवं चमत्कारों को।

[3]जिसमें शैतान ने तुम्हें फंसाये रखा।

[4]अर्थात तुम्हें मौत आ गई, अथवा अंत में मुसलमान विजयी हो गये तथा तुम्हारी अभिलाषाओं पर पानी फिर गया।

[5]अर्थात अल्लाह की सहनशीलता तथा उसके अवसर देने के नियम के कारण तुम्हें शैतान ने धोखे में डाले रखा।

[6]مَولىٰ उसको कहते हैं जो किसी के काम का संरक्षक अर्थात उत्तरदायी बने, मानो अब नरक ही इस बात का उत्तरदायी है कि उन्हें कड़ी से कड़ी यातना का स्वाद चखाये। कुछ कहते हैं कि सदा संग रहने वाले को भी मौला कह लेते हैं, अर्थात अब नरक की अग्नि ही नित्य के लिए उनकी साथी तथा संगी होगी। कुछ कहते हैं कि अल्लाह नरक को भी बुद्धि तथा समझ प्रदान करेगा तथा वह काफ़िरों के विरूद्ध क्रोध एवं रोष दिखायेगा। अर्थात उनका साथी बनेगा तथा उन्हें दुखदायी यातना से दोचार करेगा।

[7]संबोधन ईमानवालों को है तथा उद्देश्य उनको अल्लाह के स्मरण की ओर अधिक ध्यान दिलाना तथा पवित्र क़ुरआन से पथ प्रदर्शन ग्रहण करने का उपदेश देना है। خشوع

The Ummah Technology Mission

كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿١٦﴾

की तरह न हो जायें जिन्हें इनसे पूर्व किताब प्रदान की गयी थी,[1] फिर जब उन पर एक लम्बी अवधि व्यतीत हो गई तो उनके हृदय कठोर हो गये,[2] तथा उनमें अधिकाँश फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) हैं।[3]

اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١٧﴾

(१७) विश्वास करो कि अल्लाह ही धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवित कर देता है। हमने तो तुम्हारे लिए अपनी निशानियाँ वर्णित कर दीं ताकि तुम समझो।

اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ

(१८) नि:संदेह दान देने वाले पुरूष एवं महिलायें तथा जो अल्लाह को प्रेम (शुद्धता) के साथ ऋण दे रहे हैं, उनके लिए यह बढ़ाया

(खुशूअ) का अर्थ दिलों का कोमल होकर अल्लाह की ओर झुक जाना, حق हक़ (सत्य) से तात्पर्य पवित्र (ईशवाणी) क़ुरआन है।

[1]जैसे यहूदी तथा इसाई हैं, अर्थात तुम उन जैसे न हो जाना।

[2]जैसे उन्होंने ईश्वरीय धर्मशास्त्र में परिवर्तन तथा फेर-बदल कर दिया उस के बदले संसार का तुच्छ मूल्य प्राप्त करने को उन्होंने आचरण बना लिया, उसके आदेशों का उलंघन किया, अल्लाह के धर्म में लोगों के अनुगामी (मुकल्लिद) बन गये तथा उनको अपना प्रभु बना लिया। मुसलमानों को सावधान किया जा रहा है कि तुम यह काम मत करना अन्यथा तुम्हारे दिल भी कठोर हो जायेंगे तथा फिर यही कर्म जो उनके लिये अल्लाह की धिक्कार का कारण बने, तुम्हें भी अच्छे लगेंगे।

[3]अर्थात उनके दिल बिगड़े एवं कर्म व्यर्थ हैं। दूसरे स्थान पर अल्लाह ने फ़रमाया :

﴿ فَبِمَا نَقْضِهِم مِّيثَاقَهُمْ لَعَنَّاهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَاسِيَةً يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَن مَّوَاضِعِهِ وَنَسُوا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوا بِهِ ﴾

"फिर उनके वचन भंग के कारण हमने उन पर धिक्कार उतार दी तथा उनके हृदय कठोर कर दिये कि वह वाणी को उसके स्थान से परिवर्तित कर डालते हैं तथा जो कुछ उपदेश उन्हें किया गया था उसका बहुत बड़ा अंश भूला बैठे।" (अल-मायेदः -१३)

The Ummah Technology Mission

لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿١٨﴾

जायेगा ।[1] तथा उनके लिए अच्छा (प्रतिफल एवं) पुण्य है ।[2]

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١٩﴾

(१९) अल्लाह एवं उसके रसूल (संदेष्टा) पर जो ईमान रखते हैं, वही लोग अपने प्रभु के निकट सत्यवादी[3] तथा शहीद हैं। उनके लिए उनका बदला तथा उनकी दिव्य ज्योति है, तथा जो कुफ़्र करते हैं और हमारी निशानियों को झुठलाते हैं, वे नरकवासी हैं।

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ

(२०) ज्ञात रखो कि साँसारिक जीवन केवल खेल तथा मनोरंजन और शोभा तथा आपस

---

[1]अर्थात एक के बदले कम से कम दस गुना तथा उससे अधिक सात सौ गुना, अपितु उससे भी अधिक। यह अधिकता मन की शुद्धता तथा आवश्यकता एवं स्थान तथा समयानुसार हो सकती है। जैसे पहले वर्णन हुआ कि जिन लोगों ने मक्का विजय से पहले ख़र्च किया वह पुण्य तथा प्रतिफल में उनसे अधिक होंगे जिन्होंने उसके बाद ख़र्च किया।

[2]अर्थात स्वर्ग तथा उसकी सुख-सुविधायें जिनका कभी विनाश तथा अन्त नहीं। आयत में مُصَدِّقِين वास्तव में مُتَصَدِّقِين है, त को स से बदलकर स में संयुक्त कर दिया गया।

[3]कुछ व्याख्याकारों ने यहाँ वक़्फ़ (विराम) किया है तथा आगे وَالشُّهَدَآءُ को अलग वाक्य माना है। صديقيت (सिद्दिक़ियत) पूर्ण विश्वास तथा पूर्ण सच्चाई एवम शुद्धता का नाम है। हदीस में आता है कि मनुष्य सदा सच बोलता है तथा सच ही की खोज में तथा प्रयत्न में लगा रहता है यहाँ तक कि अल्लाह के सदन में सिद्दीक़ लिख दिया जाता है। (मुत्तफ़क़ अलैहि, मिश्कात किताबुल आदाब, बाबु हिफ़्ज़िल लेसान) एक और हदीस में सिद्दीक़ों (सत्यवादियों) का वह स्थान बताया गया है जो स्वर्ग में उन्हें प्राप्त होगा। फ़रमाया, "जन्नती अपने ऊपर की अटारी वालों को ऐसे देखेंगे जैसे तुम चमकते हुए पश्चिमी अथवा पूर्वी सितारे को क्षितिज में देखते हो।" अर्थात उनके बीच पदों का इतना अंतर होगा। सहाबा (नबी के सहचरों) ने पूछा कि यह अम्बिया की श्रेणियाँ होंगी जिसे दूसरे प्राप्त नहीं कर सकेंगे ? आपने फ़रमाया, हाँ, सौगन्ध है उस प्रभु की जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं ! यह वह लोग हैं जिन्होंने अल्लाह के प्रति विश्वास किया तथा ईशदूतों को सच्चा माना। (सहीह बुख़ारी, किताबु बदइल ख़ल्क़, बाबु माजाअ फ़ी सिफ़तिल जन्नते व अन्नहा मख़लूक़तुन) अर्थात ईमान तथा पुष्टिकरण की माँग पूरी किया। (फ़तहुल बारी)

The Ummah Technology Mission

وَلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ؕ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝٢٠

में गर्व (एवं अहंकार) तथा धन एवं संतान में एक-दूसरे से अपने आप को अधिक बतलाना है, जैसे वर्षा तथा उसकी उपज किसानों[1] को अच्छी लगती है, फिर जब वह सूख जाती है तो पीले रंग में उसको तुम देखते हो, फिर वह पूर्णत: चूरा-चूरा हो जाती है।[2] तथा आख़िरत (परलोक) में कठोर यातनायें[3] तथा अल्लाह की क्षमा एवं प्रसन्नता है,[4] तथा साँसारिक जीवन केवल धोखे के साधन के अतिरिक्त कुछ भी तो नहीं।[5]

سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ

(२१) (आओ) दौड़ो अपने प्रभु की क्षमा की ओर[6] तथा उस स्वर्ग की ओर जिसका

---

[1]'कुफ़्फ़ार' किसानों को कहा गया है, इसलिए कि इसका शाब्दिक अर्थ है छिपाने वाला। काफ़िरों के दिलों में अल्लाह तथा परलोक का इंकार छिपा होता है, इस कारण से उसे काफ़िर कहा जाता है। किसानों के लिए यह शब्द इस कारण से प्रयोग किया गया है कि वह भी धरती में बीज बोते अर्थात उन्हें छिपा देते हैं।

[2]यहाँ साँसारिक जीवन के शीघ्र समाप्त हो जाने को खेती से उपमा दी गई है कि जिस प्रकार खेती हरी होती है तो भली लगती है जिसे देखकर किसान अति प्रसन्न होते हैं, परन्तु वह शीघ्र ही सूखी तथा पीली होकर चूर-चूर हो जाती है। इसी प्रकार दुनिया की शोभा एवं सुन्दरता, धन तथा संतान एवं अन्य वस्तुयें मनुष्य का मन लुभाती हैं, किन्तु यह जीवन कुछ दिन ही का है, इसे भी स्थायित्व एवं स्थिरता नहीं।

[3]अर्थात काफ़िरों तथा अवज्ञाकारियों के लिए जो दुनिया के खेलकूद में मग्न हैं तथा उसे ही उन्होंने जीवन का लक्ष्य समझा।

[4]अर्थात ईमानवालों तथा आज्ञाकारियों के लिए, जिन्होंने संसार ही को सब कुछ नहीं समझा, अपितु इसे सामयिक तथा नाशवान एवं परीक्षा गृह समझते हुए अल्लाह की आज्ञा के अनुसार जीवन निर्वाह किया।

[5]किन्तु उसके लिए जो इस के धोखे में फंसा रहा तथा परलोक के लिए कुछ नहीं किया। परन्तु जिसने इस संसार को परलोक की खोज के लिये प्रयोग किया तो उसके लिये यही दुनिया उससे उत्तम जीवन प्राप्त करने का साधन सिद्ध होगी।

[6]अर्थात सदाचार एवं स्वच्छ मन से क्षमा-याचना की क्योंकि यही चीज़ें प्रभु के क्षमादान

The Ummah Technology Mission

وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢١﴾

विस्तार आकाश एवं धरती के विस्तार के बराबर है ।[1] यह उनके लिए बनायी गयी है जो अल्लाह पर तथा उसके रसूलों (सन्देष्टाओं) पर ईमान रखते हैं । यह अल्लाह की कृपा है जिसे चाहे प्रदान करे,[2] तथा अल्लाह अत्यन्त कृपालु है ।[3]

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِىْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ

(२२) न कोई कठिनाई (संकट) संसार में आती है[4] न विशेष तुम्हारे प्राणों पर[5] परन्तु इससे पूर्व कि हम उसको उत्पन्न करें वह एक विशेष किताब में लिखी हुई है ।[6] नि:संदेह

का साधन हैं ।

[1]तथा जिसका विस्तार इतना हो उसकी लम्बाई कितनी होगी ? क्योंकि लम्बाई चौड़ाई से अधिक ही होती है ।

[2]खुली बात है कि उसकी इच्छा उसी के लिये होती है जो कुफ़्र तथा दुराचार से क्षमा मांग कर ईमान तथा सदाचार का जीवन अपना लेता है, इसीलिए वह ऐसे लोगों को ईमान तथा पुण्य के कर्मों का सौभाग्य भी प्रदान करता है ।

[3]वह जिस पर चाहता है अपनी दया करता है । जिसे वह कुछ दे कोई रोक नहीं सकता तथा जिससे रोक दे कोई दे नहीं सकता । सभी भलाई उसी के हाथ में है, वही पूर्ण दयानिधि तथा वास्तविक दाता है, जिसके यहाँ कंजूसी की कोई कल्पना नहीं ।

[4] जैसे अकाल, बाढ़ तथा अन्य धरती तथा आकाश की विपदायें ।

[5]जैसे रोग, थकान, दरिद्रता आदि ।

[6]अर्थात अल्लाह ने अपने ज्ञानानुसार पूरी सृष्टि को पैदा करने से पहले ही यह सब बातें लिख दीं । जैसे हदीस में है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«قَدَّرَ اللهُ الْمَقَادِيرَ قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَ السَّمٰوَاتِ وَالأَرْضَ بِخَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ».

"अल्लाह ने आकाश तथा धरती के पैदा करने से पचास हज़ार वर्ष पहले ही सभी भाग्य लिख दिये थे ।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़द्र, बाबु हिजाजे आदम व मूसा अलैहिमुस्सलाम)

The Ummah Technology Mission

عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿٢٢﴾

यह कार्य अल्लाह (तआला) पर (अत्यन्त) सरल है।

لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ۙ﴿٢٣﴾

(२३) ताकि तुम अपने से छिन जाने वाली वस्तु पर दुखी न हो जाया करो तथा न प्रदान की हुई वस्तु पर गर्व करने लगो,[1] तथा गर्व करने वाले अहंकारियों से अल्लाह प्रेम नहीं करता।

الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٤﴾

(२४) जो (स्वयं भी) कंजूसी करें तथा दूसरों को (भी) कंजूसी की शिक्षा दें। (सुनो !) जो भी विमुख हो,[2] अल्लाह निस्पृह तथा प्रशंसा के योग्य है।

لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ

(२५) नि:संदेह हमने अपने संदेष्टाओं को खुली निशानियाँ प्रदान करके भेजा तथा उनके साथ किताब तथा न्याय (तुला) अवतरित किया[3] ताकि लोग न्याय पर स्थित रहें तथा हमने लोहे को भी अवतरित किया[4] जिसमें अत्यन्त

---

[1]यहाँ जिस शोक तथा प्रसन्नता से रोका गया है, यह वह शोक तथा प्रसन्नता है जो इंसानों को अवैध कामों तक पहुँचाती है। अन्यथा दुख पर शोक तथा सुख पर प्रसन्नता एक स्वाभाविक कर्म है, किन्तु मोमिन दुख पर धैर्य धारण करता है कि अल्लाह की इच्छा तथा भाग्य-लेख है, रोने-चिल्लाने से बदल नहीं सकता, तथा सुख पर इतराता नहीं। अल्लाह का कृतज्ञ होता है कि यह मात्र उसके प्रयास का फल नहीं बल्कि अल्लाह की दया एवं उसका उपकार है।

[2]अर्थात अल्लाह की राह में ख़र्च करने से, क्योंकि वास्तविक कृपणता (कंजूसी) यही है।

[3]میزان मीज़ान (तुला) से अभिप्राय न्याय है तथा प्रयोजन यह है कि हमने लोगों को न्याय करने का आदेश दिया है। कुछ ने इसका अनुवाद तुला किया है। तराज़ू उतारने से अभिप्राय है कि हमने तराज़ू की ओर लोगों को मार्ग दर्शाया कि उसके द्वारा लोगों को तौलकर उनका पूरा-पूरा अधिकार दो।

[4]यहाँ भी उतारा का अर्थ है पैदा करना तथा उसकी कला सिखाना। लोहे से असंख्य वस्तुयें बनती हैं। यह सब अल्लाह के उस निर्देश तथा दिव्य प्रकाशना का परिणाम है जो

The Ummah Technology Mission

شَدِيْدٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢٥﴾

(भयानकता एवं) शक्ति है[1] तथा लोगों के लिए अन्य भी बहुत से लाभ हैं,[2] तथा इसलिए भी कि अल्लाह जान ले कि उसकी तथा सन्देष्टाओं की सहायता बिना देखे कौन करता है।[3] नि:संदेह अल्लाह (तआला) शक्तिशाली एवं सामर्थ्यवान है।[4]

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّ اِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٦﴾

(२६) नि:संदेह हमने नूह एवं इब्राहीम (अलैहिमुस्सलाम) को (सन्देष्टा बनाकर) भेजा तथा हमने उन दोनों की सन्तान में पैग़म्बरी (दूतत्व) तथा किताब जारी रखी, तो उनमें से कुछ मार्ग पर आये तथा उनमें से बहुत अधिक अवज्ञाकारी रहे।

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا

(२७) उनके पश्चात फिर भी हम निरन्तर अपने सन्देष्टाओं को भेजते रहे तथा उनके

उसने मनुष्य को किया है।

[1]अर्थात लोहे से अस्त्र-शस्त्र बनते हैं, जैसे तलवार, बंदूक तथा अब प्रमाणु बम, तोपें, युद्ध तोप, पनडुब्बियाँ, राकेट, टैंक आदि असंख्य वस्तुयें, जिनसे शत्रु पर आक्रमण किये जाते हैं तथा अपनी रक्षा भी।

[2]अस्त्र-शस्त्र के अतिरिक्त लोहे से और भी बहुत से सामान बनते हैं जो घरों तथा विभिन्न उद्योगो में काम आते हैं, जैसे छुरी, चाक़ू, कैंची, हथौड़ा, सुई, खेती, बढ़ई तथा निर्माण आदि के सामान तथा छोटी बड़ी अनगिनत मशीनें तथा सामग्रियाँ।

[3]यह لِيَقُوْمَ का संयोजक है, अर्थात रसूलों को इसलिए भेजा ताकि वह जान ले कि उसके रसूलों पर अल्लाह को देखे बिना कौन विश्वास करता तथा उनकी सहायता करता है।

[4]उसको इसकी ज़रूरत नहीं कि लोग उसके धर्म की तथा उसके रसूलों की सहायता करें, बल्कि वह चाहे तो इसके बिना ही उनको प्रभुत्व प्रदान कर दे। लोगों को तो उनकी सहायता करने का आदेश उनकी अपनी ही भलाई के लिये दिया गया है ताकि वह इस ढंग से अपने प्रभु को प्रसन्न करके उसकी दया तथा क्षमा के पात्र बन जायें।

The Ummah Technology Mission

وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَآتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ ۙ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً ۖ وَرَهْبَانِيَّةً ۟ ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۖ فَآتَيْنَا

पश्चात हमने ईसा पुत्र मरियम को भेजा तथा उन्हें इंजील प्रदान की तथा उनके अनुयायिओं के हृदय में प्रेम तथा दया का भाव रख दिया।[1] हाँ बैराग तो उन्होंने स्वयं खोज लिया था[2] हमने उन पर आवश्यक नहीं किया था,[3] सिवाय अल्लाह की प्रसन्नता की खोज के।[4] तो उन्होंने उसका पूर्ण पालन न

---

[1] رَأْفَة (राफ़:) का अर्थ है कोमलता तथा रहमत का अर्थ है दया। अनुयायियों से अभिप्राय ईसा अलैहिस्सलाम के साथी हवारी हैं। अर्थात उनके दिलों में एक-दूसरे के लिए प्रेम तथा प्यार का भाव उत्पन्न कर दिया, जैसे सहाबा केराम रज़ी अल्लाहु अन्हुम परस्पर प्रेम तथा दयाभाव करने वाले थे। رُحَمَاءُ بَيْنَهُم, यहूदी इस प्रकार आपस में प्रेमभाव नहीं रखते थे जैसे आदरणीय ईसा के अनुयायी थे।

[2] رَهْبَانِيَّة (रहबानियत) رَهْبٌ रहब (भय) से बना है अथवा رُهْبَانٌ रूहबान (फ़क़ीर) से संबन्धित है। इसे رهبنة से माना जाये तो इसका धातु رَهِبَت (रहिबियत) है, इसमें 'नून' बढ़ाकर रहबानियत बनाया गया है। (ऐसरूत्तफ़ासीर) रहबानियत का अर्थ बैराग है, अर्थात दुनिया से संबंध त्याग कर वन में जाकर अल्लाह की उपासना करना। इसकी पृष्ठभूमि यह है कि ईशदूत ईसा के पश्चात ऐसे राजा हुए जिन्होंने तौरात तथा इंजील में परिवर्तन कर दिया जिसको एक गिरोह ने नहीं माना तथा राजा के भय से पर्वतों एवं गुफ़ा में शरण लिया। यह उसका आरम्भ था, जिसका आधार विवशता थी। किन्तु बाद के लोगों ने अपने बड़ों के अंधे अनुसरण में इस नगर त्याग को उपासना का एक नया ढंग बना लिया तथा स्वयं को गिरजाघरों तथा पूजा स्थलों में बंद कर लिया तथा उसके लिये संसार के त्याग एवं बैराग को अनिवार्य कर लिया। उसी को अल्लाह ने ابتداع (स्वयं गढ़ना) कहा है।

[3] यह पिछली बात ही की पुष्टि है कि यह बैराग उनका स्वयं बनाया हुआ था, अल्लाह ने उसकी आज्ञा नहीं दी।

[4] अर्थात हमने तो उन पर अनिवार्य किया था कि हमारी प्रसन्नता की खोज करें। दूसरा अनुवाद यह किया गया है कि उन्होंने यह काम अल्लाह को खुश करने के लिए किया था, किन्तु अल्लाह ने स्पष्ट कर दिया कि अल्लाह की प्रसन्नता धर्म में अपनी ओर से नई बातें बनाने से प्राप्त नहीं हो सकती, चाहे वह कितनी ही मनोरम क्यों न हों। अल्लाह की प्रसन्नता तो उसके अनुपालन ही से प्राप्त होती है।

The Ummah Technology Mission

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٦﴾

किया,[1] फिर भी हमने उनमें से जो ईमान लाये थे उन्हें उनका बदला दिया,[2] तथा उनमें अधिकतर लोग अवज्ञाकारी हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٨﴾

(२८) हे लोगो जो ईमान लाये हो, अल्लाह से डरते रहा करो तथा उसके संदेष्टा पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हें अपनी दया का दुगुना भाग प्रदान करेगा[3] तथा तुम्हें दिव्य ज्योति प्रदान करेगा, जिसके प्रकाश में तुम चलो-फिरोगे तथा (तुम्हारे पाप भी) क्षमा कर देगा, अल्लाह क्षमा करने वाला दयावान है।

لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰي شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾

(२९) यह इसलिए कि अहले किताब[4] (ग्रन्थ वाले) जान लें कि अल्लाह की कृपा के किसी अंश पर भी उन्हें अधिकार नहीं तथा यह कि समस्त कृपा अल्लाह के हाथ में ही है, वह जिसे चाहे प्रदान करे तथा अल्लाह ही अत्यन्त कृपालु है।

---

[1]अर्थात उन्होंने उद्देश्य अल्लाह की प्रसन्नता की खोज बताया, किन्तु उन्होंने पूरा पालन नहीं किया, अन्यथा वह नई बात बनाने की जगह अनुसरण का मार्ग अपनाते।

[2]यह वह लोग हैं जो ईसा के धर्म पर अटल रह गये थे।

[3]यह दुगुना प्रतिफल उन ईमानवालों को मिलेगा जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले के नबी पर ईमान रखते थे फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर भी ईमान लाये, जैसाकि हदीस में वर्णित है। (सहीह-अल-बुखारी, किताबुल इल्म, सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाबु वजूबिल ईमान बिरिसालति नबिय्येना) एक दूसरी व्याख्या के अनुसार जब अहले किताब ने इस बात पर गर्व का प्रदर्शन किया कि उन्हें दुगुना पुण्य मिलेगा तो अल्लाह ने मुसलमानों के पक्ष में यह आयत उतारी। (विस्तार के लिये तफ़सीर इब्ने कसीर देखिये)

[4]لِئَلَا में لا अधिक है तथा अर्थ है ليعلم أهل الكتاب أنهم لا يقدرون على أن ينالوا شيئا من فضل الله (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

सूरतुल मुजादिल:-५८

سُوْرَةُ الْمُجَادِلَةِ

सूर: मुजादिल: मदीना में अवतरित हुई तथा इसमें बाईस आयतें एवं तीन रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْٓ إِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۚ إِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ①

(१) निश्चय अल्लाह (तआला) ने उस स्त्री की बात सुनी जो तुझसे अपने पति के विषय में विवाद कर रही थी तथा अल्लाह के समक्ष शिकायत कर रही थी, अल्लाह (तआला) तुम दोनों की बात चीत (वाद-विवाद) सुन रहा था,[1] नि:संदेह अल्लाह (तआला) सुनने देखने वाला है।

اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآئِهِمْ

(२) तुममें से जो लोग अपनी पत्नियों से ज़िहार करते हैं (अर्थात उन्हें माँ कह बैठते

---

[1]यह संकेत है आदरणीया खौल: पुत्री मालिक पुत्र सालबा रज़ि अल्लाहु अन्हा की घटना की ओर, जिनके पति आदरणीय औस पुत्र सामित ने उनसे जिहार कर लिया था। जिहार का अर्थ है, अपनी पत्नी से कह देना (أَنْتِ عَلَيَّ كَظَهْرِ أُمِّي)(तू मुझ पर मेरी माँ की पीठ के समान है) अज्ञान युगं में ज़िहार को तलाक़ (विवाह-विच्छेद) समझा जाता था। आदरणीया खौल: अति व्याकुल हुईं। उस समय तक इस विषय में कोई आदेश नहीं उतरा था। इसलिए वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आयीं तो आप भी कुछ रूके रहे। वह आप से विवाद तथा तक़रार करती रहीं जिस पर यह आयतें उतरीं, जिनमें ज़िहार की समस्या तथा उसका आदेश एवं प्रायश्चित का वर्णन कर दिया गया। (अबू दाऊद किताबुत्तलाक़, बाबुन फिज़् ज़िहार) आयशा (رضي الله عنها) कहती हैं कि अल्लाह तआला किस तरह लोगों की बातें सुन लेता है कि यह स्त्री घर के एक कोने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तक़रार करती तथा अपने पति की निंदा कर रही थी, मैं उसकी बातें नहीं सुनती थी, परन्तु अल्लाह ने आकाशों के ऊपर से उसकी बात सुन ली। (इब्ने माजा, अलमुक़द्दमा, बाबुन फीमा अंकरतिल जहमियतु) बुखारी में भी तालीक के रूप में इसका संक्षिप्त वर्णन है। किताबुत तौहीद, बाबु कौलिल्लाहे तआला व कानल्लाहु समीअन बसीरा)

The Ummah Technology Mission

مَا هُنَّ أُمَّهَٰتِهِمْ ۖ إِنْ أُمَّهَٰتُهُمْ إِلَّا
اللَّائِي وَلَدْنَهُمْ ۗ وَإِنَّهُمْ لَيَقُولُونَ
مُنكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُورًا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ
لَعَفُوٌّ غَفُورٌ ﴿٢﴾

हैं) वह वास्तव में उनकी मातायें नहीं हैं, उनकी मातायें तो वही हैं जिनके गर्भ से उन्होंने जन्म लिया है,[1] नि:संदेह ये लोग एक अनुचित एवं असत्य बात कहते हैं। नि:संदेह अल्लाह (तआला) क्षमाशील एवं माफ़ करने वाला है।[2]

وَالَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِن نِّسَائِهِمْ
ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا قَالُوا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ
مِّن قَبْلِ أَن يَتَمَاسَّا ۚ ذَٰلِكُمْ

(३) तथा जो लोग अपनी पत्नियों से ज़िहार करें फिर अपनी कही हुई बात वापस लें,[3] तो उनके ऊपर आपस में एक-दूसरे को हाथ लगाने से पूर्व[4] एक दास को मुक्त करना है

---

[1]यह ज़िहार का आदेश बताया कि तुम्हारे कह देने से तुम्हारी पत्नी तुम्हारी माँ नहीं बन जायेगी। यदि कोई अपनी बेटी अथवा बहन की पीठ के समान अपनी पत्नी को कह दे तो यह ज़िहार है अथवा नहीं? इमाम मालिक तथा इमाम अबू हनीफ़ा इसे भी ज़िहार मानते हैं, जबकि अन्य धर्मविद उसे ज़िहार नहीं मानते (प्रथम कथन ही सही लगता है)। इसी प्रकार इसमें भी मतभेद है कि यदि कोई पीठ की जगह यह कहे कि तू मेरी माँ के समान है, पीठ का नाम न ले, तो विद्वान कहते हैं कि यदि वह ज़िहार के विचार से उक्त शब्द कहेगा तो ज़िहार होगा अन्यथा नहीं। इमाम अबू हनीफ़ा कहते हैं कि यदि ऐसे अंग से उपमा देगा जिसका देखना वैध (जायज़) है तो यह ज़िहार नहीं होगा। इमाम शाफ़ई भी कहते हैं कि ज़िहार केवल पीठ के समान कहने ही से होगा। (फ़तहुल क़दीर)

[2]इसीलिए उसने प्रायश्चित को इस अप्रिय तथा झूठ बात की क्षमा का साधन बना दिया।

[3]अब उस आदेश का विवरण बताया जा रहा है। बात वापस लेने का अर्थ है, पत्नी से संभोग करना चाहें।

[4]अर्थात संभोग से पहले वे प्रायश्चित अदा करें। १- एक दास मुक्त करना २- इस की शक्ति न होने पर निरन्तर बिना टूट दो महीने के व्रत। यदि बीच में बिना धार्मिक कारण के व्रत छोड़ दिया तो शुरू से रोज़े रखने होंगे। धार्मिक कारण से अभिप्राय रोग अथवा यात्रा है। इमाम अबू हनीफ़ा कहते हैं कि रोग आदि के कारण से भी व्रत छोड़ेगा तो फिर से व्रत रखने होंगे। ३- यदि निरन्तर दो महीने रोज़े रखने की शक्ति न हो तो साठ निर्धनों को खाना खिलाये। कुछ कहते हैं कि प्रत्येक गरीब को दो मुद्द (आधा साअ अर्थात सवा किलो), कुछ कहते हैं कि एक मुद्द प्रर्याप्त है। किन्तु क़ुरआन के शब्दों से लगता है कि भोजन ऐसे कराया जाये कि उनका पेट भर जाये अथवा इतनी ही मात्रा में

The Ummah Technology Mission

تُوعَظُونَ بِهِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٣﴾

इसके द्वारा तुम उपदेश दिये जाते हो। तथा अल्लाह (तआला) तुम्हारे सभी कर्मों से परिचित है।

فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِن قَبْلِ أَن يَتَمَاسَّا ۖ فَمَن لَّمْ يَسْتَطِعْ فَإِطْعَامُ سِتِّينَ مِسْكِينًا ۚ ذَٰلِكَ لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۗ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤﴾

(४) हाँ, जो व्यक्ति न पाये उसके ऊपर दो महीने का निरन्तर व्रत हैं इससे पूर्व कि एक-दूसरे को हाथ लगायें, तथा जिस व्यक्ति की यह भी शक्ति न हो, उस पर साठ निर्धनों को भोजन कराना है। यह इसलिए कि तुम अल्लाह पर तथा उसके सन्देष्टा पर ईमान लाओ। यह अल्लाह (तआला) की निर्धारित की हुई सीमायें हैं तथा काफ़िरों के लिए ही दुखदायी यातना है।

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كُبِتُوا كَمَا كُبِتَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَقَدْ أَنزَلْنَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۚ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٥﴾

(५) नि:संदेह जो लोग अल्लाह तथा उसके संदेष्टा का विरोध करते हैं वे अपमानित किये जायेंगे[1] जैसे उनसे पूर्व के लोग अपमानित किये गये[2] तथा नि:संदेह हम खुली आयतें अवतरित कर चुके हैं, तथा काफ़िरों के लिए अपमानकारी यातना है।

उन्हें खाना दिया जाये। एक ही बार सबको खिलाना भी ज़रूरी नहीं, बल्कि कई बार में यह संख्या पूरी की जा सकती है। (फ़तहुल क़दीर) फिर भी यह आवश्यक है कि जब तक यह संख्या पूरी न हो जाये उस समय तक पत्नी से संभोग उचित नहीं।

[1] كُبِتُوا यह भूतकाल कर्मवाच्य का रूप है, किन्तु इससे भविष्य में होने वाली घटनाओं को बताकर यह स्पष्ट कर दिया कि इसका होना ऐसे ही निश्चित है जैसे कि वह हो चुका है, हुआ भी ऐसा ही कि बद्र के दिन यह मक्का के मूर्तिपूजक अपमानित किये गये, कुछ मारे गये, कुछ बंदी बनाये गये तथा मुसलमान उन पर प्रभुत्वशाली रहे। मुसलमानों की विजय भी उनके लिए बड़ा अपमान थी।

[2] इससे अभिप्राय विगत समुदाय हैं जो इसी विरोध के कारण नाश हो गये।

The Ummah Technology Mission

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝٦

(६) जिस दिन अल्लाह (तआला) उन सबको उठायेगा, फिर उन्हें उनके किए हुए कर्मों से अवगत करायेगा, (जिसे) अल्लाह ने गिन रखा है तथा जिसे ये भूल गये थे।[1] तथा अल्लाह (तआला) प्रत्येक वस्तु से अवगत है।[2]

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَاۤ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٧

(७) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह आकाशों एवं धरती की प्रत्येक वस्तु से अवगत है। तीन व्यक्तियों की कानाफूसी नहीं होती, किन्तु अल्लाह उनका चौथा होता है तथा न पाँच की किन्तु वह उनका छठा होता है तथा न उससे कम की तथा न अधिक की किन्तु वह उनके साथ ही होता है[3] जहाँ भी वे हों[4] फिर क़यामत (प्रलय) के दिन उन्हें उनके कर्मों से सूचित करायेगा,[5] नि:संदेह अल्लाह (तआला) प्रत्येक वस्तु का जानकार है।

---

[1]यह मनोगत संदेहों का उत्तर है कि पापों की इतनी अधिकता तथा इतने रूप हैं कि उनकी गणना प्रत्यक्ष रूप से असंभव है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम्हारे लिए वस्तुत: असंभव है, बल्कि तुम्हें तो अपने किये सब कर्म भी याद नहीं होंगे, परन्तु यह अल्लाह के लिए कोई कठिन नहीं, उसने एक-एक का कर्म सुरक्षित कर रखा है।

[2]उस से कोई चीज़ छिपी नहीं है। आगे इस बात पर अधिक बल दिया गया है कि वह प्रत्येक चीज़ को जानता है।

[3]उपरोक्त संख्या की विशेष रूप से चर्चा का अर्थ यह नहीं है कि वह इससे कम अथवा अधिक संख्या के बीच होने वाले वार्तालाप से अंजान रहता है, अपितु यह संख्या उदाहरण स्वरूप है। उद्देश्य यह बतलाना है कि संख्या कम हो या अधिक वह अपने गुण द्वारा प्रत्येक के साथ है तथा प्रत्येक खुली तथा गुप्त बात को जानता है।

[4]एकान्त में हों अथवा लोगों के बीच, नगरों में हों अथवा वनों में, आबादियों में हों अथवा निर्जन पर्वतों, वनों तथा गुफाओं में, जहाँ भी हों उससे छिपे नहीं रह सकते।

[5]अर्थात तदानुसार प्रत्येक को प्रतिकार देगा, सदाचारियों को उसके सदाचार का पुण्य तथा बुरे को उसके दुष्कर्मों का दण्ड।

The Ummah Technology Mission

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ۖ وَاِذَا جَآءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَيَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ۭ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝

(८) क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें कानाफूसी से रोक दिया गया था ? वे फिर भी उस निषेध किये हुए कार्य को पुन: करते हैं[1] तथा आपस में पाप की तथा अन्याय की एवं सन्देष्टा की अवज्ञा की कानाफूसियाँ करते हैं,[2] तथा जब तेरे पास आते हैं तो मुझे उन शब्दों में सलाम करते हैं, जिन शब्दों में अल्लाह (तआला) ने नहीं कहा[3] तथा अपने हृदय में कहते हैं कि अल्लाह (तआला) हमें हमारे इस कहने पर दण्ड क्यों नहीं देता ?[4]

---

[1]इससे मदीने के यहूदी तथा मुनाफिक़ अभिप्राय हैं। जब मुसलमान उनके पास से गुज़रते तो यह परस्पर सिर जोड़ कर ऐसे कानाफूसी करते कि मुसलमान समझते कि सम्भवत: उनके विरूद्ध कोई षड़यंत्र रच रहे हैं, अथवा मुसलमानों की किसी सेना पर आक्रमण करके शत्रु ने क्षति पहुँचाई है, जिसकी सूचना उन्हें मिल गई है। मुसलमान इन बातों से भयभीत हो जाते। इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस प्रकार की कानाफूसियों से रोक दिया। परन्तु कुछ ही समय पश्चात उन्होंने फिर यह निंदित क्रम आरम्भ कर दिया। आयत में उनके इसी आचरण की चर्चा की जा रही है।

[2]अर्थात उनकी यह कानाफूसियाँ पुण्य तथा संयम की बातों में नहीं होतीं वरन् पाप, अत्याचार एवं रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अवज्ञा पर आधारित होती हैं, जैसे ग़ीबत (पिशुनता) आक्षेप लगाना, अपशब्द, परस्पर रसूल की अवज्ञा पर उकसाना आदि।

[3]अर्थात अल्लाह ने तो सलाम का ढंग यह बतलाया कि तुम اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ कहो, परन्तु यह यहूदी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित होते तो उसकी जगह कहते اَلسَّـــامُ عَلَيْكُـــم (तुम पर मौत हो)। इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके उत्तर में केवल यह कहते عَلَيْكُم अथवा عَلَيْك (तथा तुम पर ही हो), तथा आपने मुसलमानों को भी ताकीद की कि जब कोई यहूदी-इसाई सलाम करे तो उत्तर में عَلَيْـــك कहा करो, अर्थात عَلَيْكَ مَا قُلْتَ (तूने जो कहा वह तुझ पर ही पड़े) (सहीह बुख़ारी तथा मुस्लिम, किताबुल अदब, बाब लम यकुनिन्नबीयो सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ाहिशन वला मुतफहिहशन)

[4]अर्थात वह परस्पर अथवा अपने मन में कहते कि यदि यह सच्चा नबी होता तो अल्लाह अवश्य हमारे दुष्कर्म पर हमारी पकड़ करता।

The Ummah Technology Mission

उनके लिए नरक पर्याप्त (दण्ड) है, जिसमें ये जायेंगे[1] तो वह कितना बुरा ठिकाना है।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝۹

(९) हे ईमान वालो ! तुम जब कानाफूसी करो तो ये कानाफूसी पाप, उद्दण्डता एवं रसूल की अवज्ञा की न हो,[2] अपितु हित एवं सदाचार की बातों पर कानाफूसी करो,[3] तथा उस अल्लाह से डरते रहो जिसके पास तुम सब एकत्र किये जाओगे।

اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَاۗرِّهِمْ شَيْـــًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَعَلَي اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝۱۰

(१०) (बुरी) कानाफूसी शैतान का कार्य है, जिससे ईमानवालों को दुख हो,[4] यद्यपि अल्लाह तआला की इच्छा के बिना वह उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचा सकता। तथा ईमानवालों को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा रखें।[5]

---

[1]अल्लाह ने फ़रमाया कि यदि अल्लाह ने अपनी इच्छा तथा हिक्मत के कारण दुनिया में तुरन्त पकड़ नहीं की तो क्या वह परलोक में भी नरक की यातना से बच जायेंगे ? नहीं, निश्चय नहीं, नरक उनकी प्रतीक्षा में है जिसमें वह प्रवेश करेंगे।

[2]जैसे यहूद तथा मुनाफ़िक़ों का आचरण है। यह मानों मुसलमानों की शिक्षा एवं आचरण निर्माण के लिए कहा जा रहा है, कि यदि तुम अपने ईमान के दावे में सच्चे हो तो तुम्हारी कानाफूसियाँ यहूद तथा मुनाफ़िक़ों की भाँति पाप तथा उद्दण्डता पर नहीं होनी चाहिए।

[3]अर्थात जिसमें भलाई ही भलाई हो तथा जो अल्लाह एवं रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज्ञापालन पर आधारित हो क्योंकि यही पुण्य कर्म एवं सदाचार है।

[4]पाप, अवज्ञा तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अवहेलना पर आधारित कानाफूसियाँ शैतानी कार्य हैं, क्योंकि शैतान ही इन पर उकसाता है ताकि वह इसके द्वारा मोमिनों को दुखी तथा शोकग्रस्त कर दे।

[5]किन्तु यह कानाफूसियाँ तथा शैतानी गतिविधियाँ मोमिनों को कोई क्षति नहीं पहुँचा सकतीं किन्तु यह कि अल्लाह की इच्छा हो। इसलिए तुम अपने शत्रु की ओछी गतिविधियों से व्याकुल न हुआ करो। अपितु अल्लाह पर भरोसा करो, इसलिए कि सभी विषयों का अधिकार उसी के हाथ में है तथा वही प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्यवान है, न कि

The Ummah Technology Mission

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِى الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ⑪

(११) हे ईमानवालो ! जब तुम से कहा जाये कि सभाओं में तनिक खुल कर बैठो, तो तुम स्थान विस्तृत कर दो[1] अल्लाह (तआला) तुम्हें विस्तार प्रदान करेगा,[2] तथा जब कहा जाये कि उठकर खड़े हो जाओ,[3] तो तुम उठकर खड़े हो जाओ, अल्लाह (तआला) तुम में से उन लोगों के जो ईमान लाये हैं तथा जो ज्ञान

यहूद एवं मुनाफ़िक़ जो तुम्हें नाश करना चाहते हैं। एकांत की बातों के विषय में ही मुसलमानों को एक नैतिक निर्देश दिया गया है कि जब तुम तीन व्यक्ति एकत्र रहो तो उनमें एक को छोड़कर दो आपस में कानाफूसी न करें, क्योंकि यह ढंग उस एक व्यक्ति को दुखी कर देगा। (सहीह बुख़ारी, किताबुल इस्तीज़ान, मुस्लिम, किताबुस सलाम) हाँ, उसकी अनुमति एवं प्रसन्नता से ऐसा करना वैध (जायज) है, क्योंकि इस दशा में दो व्यक्तियों का कानाफूसी करना किसी के लिए व्याकुलता का कारण नहीं होगा।

[1]इसमें मुसलमानों को सभा के शिष्टाचार बताये जा रहे हैं। मजलिस शब्द सामान्य है, जो प्रत्येक उस मजलिस को सम्मिलित है जिसमें मुसलमान भलाई तथा पुण्य की प्राप्ति के लिए एकत्रित हों, शिक्षा-दिक्षा के लिये मजलिस हो या जुमा की हो। (तफ़सीर अल कुर्तबी) "खुल कर बैठो" का अभिप्राय है कि सभा की परिधि विस्तृत रखो ताकि बाद में आने वालों के लिये भी स्थान मिले। परिधि तंग न रखो कि जो बाद में आये खड़ा रहे अथवा दूसरे को हटाकर अपना स्थान बनाये। यह दोनों बातें असभ्य हैं। जैसे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कोई व्यक्ति दूसरे को हटाकर उस स्थान पर न बैठे। अत: मजलिस का दायेरा विस्तृत कर लो (सहीह बुख़ारी, किताबुल जुमुअ:, मुस्लिम, किताबुस सलाम)

[2]अर्थात इसके बदले अल्लाह तुम्हें स्वर्ग में विस्तार तथा फैलाव प्रदान करेगा अथवा जहाँ भी तुम विस्तार एवं फैलाव चाहोगे, जैसे घर में, जीविका में, क़ब्र में, प्रत्येक जगह फैलाव प्रदान करेगा।

[3]अर्थात जिहाद के लिए, नमाज़ के लिए अथवा किसी भी भले काम के लिए अथवा अभिप्राय यह है कि जब मजलिस से उठकर जाने को कहा जाये तो तुरन्त चले जाओ। मुसलमानों को यह आदेश इसलिए दिया गया कि सहाबये केराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मजलिस से उठकर जाना नहीं चाहते थे, किन्तु ऐसे कभी उन लोगों को दुख होता था जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एकांत में बात करना चाहते थे।

The Ummah Technology Mission

दिये गये हैं पद ऊँचे कर देगा।[1] तथा अल्लाह (तआला) (प्रत्येक उस कार्य से) जो तुम कर रहे हो (भली-भाँति) परिचित है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ۭ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۱۲

(१२) हे मुसलमानो ! जब तुम रसूल से एकांत में बात करना चाहो, तो अपनी इस एकांत में बात करने से पूर्व कुछ दान कर दिया करो,[2] यह तुम्हारे पक्ष में उत्तम तथा पवित्रतम है,[3] हाँ, यदि न पाओ तो नि:संदेह अल्लाह (तआला) क्षमाशील दायलु है।

ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ۭ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ

(१३) क्या तुम अपनी एकांत की बातों (काना-फूसी) से पूर्व दान करने से डर गये ? तो जब तुमने यह न किया तथा अल्लाह (तआला) ने भी तुम्हें क्षमा कर दिया[4] तो अब (उचित रूप से) नमाज़ों को स्थापित रखो, ज़कात देते रहा करो तथा अल्लाह (तआला)

---

[1]अर्थात ईमान वालों के दर्जे ईमान न लाने वालों पर तथा ज्ञानियों के दर्जे अज्ञानियों पर ऊँचा करेगा। जिसका अभिप्राय यह हुआ कि ईमान के साथ धार्मिक ज्ञान की जानकारी पद की अधिक उच्चता का कारण है।

[2]प्रत्येक मुसलमान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से गुप्त बातें तथा एकांत में बातें करने की इच्छा रखता था, जिससे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बड़ा दुख होता था। कुछ कहते हैं कि मुनाफ़िक़ यूँ ही अकारण नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कानाफूसी करते थे, जिससे मुसलमानों को दुख होता था इसलिए अल्लाह ने यह आदेश उतारा ताकि आपसे बातचीत करने की साधारण भावना को रोका जाये।

[3]उत्तम इसलिए कि दान से तुम्हारे दूसरे दरिद्र मुसलमान भाइयों को लाभ पहुँचेगा तथा पवित्र इसलिए है कि यह एक पुण्य का कर्म तथा अल्लाह के आदेश का पालन है, जिससे मानव के मनों की शुद्धि होती है। इससे यह भी ज्ञात हुआ कि यह आदेश औचित्य के लिये था, अनिवार्य नहीं।

[4]यह आदेश यद्यपि अच्छाई के लिये था, फिर भी मुसलमानों के लिए भारी था। अत: अल्लाह ने शीघ्र ही उसे निरस्त कर दिया।

The Ummah Technology Mission

بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٣﴾

की तथा उसके संदेष्टा की आज्ञा का पालन करते रहो।[1] और तुम जो कुछ भी करते रहो उन सबसे अल्लाह (भली-भाँति) परिचित है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤﴾

(१४) क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने उस समुदाय से मित्रता की जिन पर अल्लाह क्रोधित हो चुका है।[2] न ये (भ्रष्टाचारी) तुम्हारे ही हैं, न उनके हैं।[3] तथा ज्ञान होने के उपरान्त भी झूठ पर सौगन्धें खा रहे हैं।[4]

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾

(१५) अल्लाह (तआला) ने उनके लिए कठोर यातना तैयार कर रखी है।[5] निश्चित रूप से जो कुछ ये कर रहे हैं बुरा कर रहे हैं।

اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ

(१६) इन लोगों ने तो अपनी सौगन्धों को ढाल बना रखा है[6] तथा लोगों को अल्लाह के

---

[1]अर्थात अनिवार्य कर्तव्यों तथा आदेशों का निरंतर पालन उस दान का बदला बन जायेगा, जिसे अल्लाह ने तुम्हारी कठिनाई के लिए क्षमा कर दिया है।

[2]जिन पर अल्लाह का क्रोध उतरा, वे पवित्र क़ुरआन की व्याख्यानुसार यहूद हैं तथा उनसे मित्रता करने वाले मुनाफ़िक़ लोग हैं। यह आयतें उस समय उतरीं जब मदीने में मुनाफ़िक़ों का ज़ोर था तथा यहूदियों का षड़यंत्र भी उन्नति पर था। अभी यहूदियों को देश निकाला नहीं दिया गया था।

[3]अर्थात यह मुनाफ़िक़ (द्वयवादी) न मुसलमान हैं, न धर्म के अनुसार यहूदी ही हैं। फिर यह क्यों यहूदियों से मित्रता करते हैं? मात्र इसलिए कि इनके तथा यहूद के बीच नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा इस्लाम की शत्रुता का भाव समान है।

[4]अर्थात सौगंध खाकर मुसलमानों को विश्वास दिलाते हैं कि हम भी तुम्हारे जैसे ही मुसलमान हैं अथवा यहूदियों से हमारे संबन्ध नहीं हैं।

[5]अर्थात यहूदियों से मैत्री संम्बन्ध रखने तथा मिथ्या सौगंधें खाने के कारण।

[6]أَيْمَانٌ (ऐमान) يَمِينٌ (यमीन) का बहुवचन है, अर्थ है सौगंध। अर्थात जैसे ढाल से शत्रु के आक्रमण को रोक कर अपना बचाव कर लिया जाता है, इसी तरह उन्होंने अपनी सौगन्धों को मुसलमानों की तलवार से बचने के लिए ढाल बना रखा है।

The Ummah Technology Mission

عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿١٦﴾

मार्ग से रोकते हैं,[1] तो उनके लिए अपमानकारी यातना है।

لَن تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُم مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٧﴾

(१७) उनका धन एवं उनकी संतान अल्लाह के समक्ष कुछ काम न आयेगा। यह तो नरक में जाने वाले हैं, सदैव ही उसमें रहेंगे।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٨﴾

(१८) जिस दिन अल्लाह (तआला) उन सबको उठा खड़ा करेगा तो यह जिस प्रकार तुम्हारे समक्ष सौगन्ध खाते हैं, अल्लाह (तआला) के समक्ष भी सौगन्ध खाने लगेंगे[2] तथा समझेंगे कि वे भी किसी (तर्क) पर हैं,[3] विश्वास करो कि नि:संदेह वही झूठे हैं।

اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنسَاهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ ۚ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٩﴾

(१९) उन पर शैतान ने प्रभाव प्राप्त कर लिया है[4] तथा उन्हें अल्लाह की याद भुला दिया है,[5] ये शैतान की सेना है। सुनो! शैतान की सेना ही हानि उठाने वाली है।[6]

---

[1]अर्थात मिथ्या सौगन्धें खाकर यह स्वयं को मुसलमान दिखाते हैं, जिसके कारण बहुत लोगों को उनके सम्बन्ध में वास्तविकता का ज्ञान नहीं होता तथा वह उनके धोखे में आकर इस्लाम धर्म स्वीकार करने से वंचित रहते हैं। इस प्रकार यह अल्लाह के मार्ग से लोगों को रोकने का अपराध भी करते हैं।

[2]अर्थात उनके दुर्भाग्य तथा कठोर हृदय होने की चरम सीमा है कि क़यामत के दिन जहाँ कोई चीज़ गुप्त नहीं रहेगी, वहाँ भी यह अल्लाह के आगे मिथ्या सौगंधें खाने का दुस्साहस करेंगे।

[3]अर्थात जैसे संसार में मिथ्या सौगंधें खाकर कुछ अधिक लाभ प्राप्त कर लेते थे, वहाँ भी समझेंगे कि यह झूठी सौगंधें उनके लिए लाभदायक होंगी।

[4]اسْتَحْوَذَ का अर्थ 'घेर लिया', 'एकत्र कर लिया' है। इसलिए उसका अनवाद 'प्रभुत्व प्राप्त कर लिया' किया जाता है, क्योंकि प्रभुत्व में यह सभी भावार्थ आ जाते हैं।

[5]अर्थात उसने जिन चीज़ों के करने का आदेश दिया है उनसे शैतान ने उनको विमुख कर दिया है तथा जिन चीज़ों से उन्हें मना किया है उन्हें उनसे कराता है, उन्हें सुन्दर दिखा कर, या भ्रम में डालकर, अथवा कामनाओं एवं अभिलाषाओं में फँसा कर।

[6]अर्थात पूर्ण घाटा उन्हीं के भाग में आयेगा। मानो दूसरे उनके सापेक्ष घाटे ही में नहीं

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَٰئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ﴿٢٠﴾

(२०) नि:संदेह अल्लाह (तआला) का तथा उसके सन्देष्टा का जो लोग विरोध करते हैं[1] वही लोग सर्वाधिक अपमानितों में हैं।[2]

كَتَبَ اللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢١﴾

(२१) अल्लाह (तआला) लिख चुका है[3] कि नि:संदेह मैं तथा मेरे संदेष्टा प्रभावशाली (विजयी) रहेंगे। नि:संदेह अल्लाह तआला शक्तिशाली एवं प्रभावशाली है।[4]

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ

(२२) अल्लाह (तआला) पर तथा क़यामत (प्रलय) के दिन पर ईमान रखने वालों को आप अल्लाह तथा उसके संदेष्टा के विरोधियों से प्रेम करते हुए कदापि न पायेंगे,[5] चाहे वे

हैं, इसलिए कि उन्होंने स्वर्ग का सौदा गुमराही से कर लिया, अल्लाह पर झूठ बोला तथा लोक-परलोक में मिथ्या सौगन्धें खाते रहे।

[1] مُحَادَّة (मुहाद्द:) ऐसे कड़े विरोध, शत्रुता तथा झगड़े को कहते हैं कि दोनों पक्षों का मेल अति मुश्किल हो। मानो दोनों दो किनारों (सीमा) पर हैं जो परस्पर प्रतिकूल हैं। इसी से यह 'रोकने' के अर्थ में प्रयोग होता है तथा इसीलिए द्वारपाल तथा पहरेदार को भी 'हद्दाद' कहा जाता है।

[2] जैसे विगत् जातियों में से अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरोधियों को अपमानित तथा विध्वंस्त किया गया, इनकी गणना भी उन्हीं अपमानितों में होगी। तथा उनके भाग में लोक तथा परलोक की विफलता एवं अपमान के सिवा कुछ हाथ न आयेगा।

[3] अर्थात भाग्य तथा लौहे महफ़ूज (सुरक्षित पुस्तक) में जिसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। यह विषय सूरह मोमिन ५१,५२ में भी वर्णन किया गया है।

[4] जब इस बात का लेखक सब पर प्रभुत्वशाली एवं अति शक्तिमान है तो फिर दूसरा कौन है जो इस निर्णय को बदल सके ? अर्थ यह है कि यह निर्णय अटल भाग्य तथा पक्का आदेश है।

[5] इस आयत में अल्लाह तआला ने स्पष्ट किया है कि जो अल्लाह के प्रति आस्था तथा परलोक के प्रति विश्वास में पूर्ण होते हैं, वह अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शत्रुओं से प्रेम तथा हार्दिक लगाव नहीं रखते। मानो ईमान तथा अल्लाह

The Ummah Technology Mission

أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ ۚ أُولَٰئِكَ كَتَبَ
فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم
بِرُوحٍ مِّنْهُ ۖ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي
مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ
أُولَٰئِكَ حِزْبُ اللَّهِ ۚ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ
هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٢٢﴾

उनके पिता अथवा उनके पुत्र अथवा उनके भाई अथवा उनके (परिवार के निकट) सम्बन्धी ही क्यों न हों।[1] यही लोग हैं जिनके हृदय में अल्लाह (तआला) ने ईमान लिख दिया है[2] तथा जिनकी पुष्टि अपनी आत्मा से की है[3] तथा जिनको उन स्वर्गों में प्रवेश देगा जिनके नीचे (शीतल) जल की सरितायें प्रवाहित हैं, जहाँ ये सदैव रहेंगे, अल्लाह उनसे प्रसन्न है तथा ये अल्लाह से प्रसन्न हैं,[4] यह अल्लाह की

एवं रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शत्रुओं से प्रेम तथा समर्थन एक दिल में एकत्रित नहीं हो सकते। यह विषय पवित्र क़ुरआन के अन्य भी कई स्थानों पर वर्णन किया गया है, जैसे *आले-इमरान*-२८, *सूरः तौबा*-२४, आदि।

[1]इसलिए कि उनका ईमान उनको उनके प्रेम से रोकता है तथा ईमान का पक्ष पिता, पुत्र, भाई तथा वंश एवं परिवार के प्रेम और पक्ष से अधिक आवश्यक होता है, जैसाकि सहावये केराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम ने यह करके दिखाया। एक मुसलमान सहाबी ने अपने पिता, अपने पुत्र, अपने भाई, अपने चचा तथा मामा एवं अन्य सम्बन्धियों को हत करने में संकोच नहीं किया यदि वह कुफ़्र के समर्थन में काफ़िरों के साथ लड़ने वालों में सम्मिलित होते। सीरत तथा इतिहास की किताबों में यह उदाहरण अंकित हैं। इस प्रकरण में बद्र के रण की यह घटना स्मरणीय है जब बद्र के बंदियों के विषय में परामर्श हुआ कि उनसे अर्थ दण्ड लेकर मुक्त कर दिया जाये अथवा हत कर दिया जाये, तो आदरणीय उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु ने यह विचार व्यक्त किया था कि प्रत्येक बंदी को उसके संबंधी को दे दिया जाये जिसे वह स्वयं अपने हाथों से वध करे। तथा अल्लाह को उमर का यही विचार पसन्द आया (विवरण के लिए देखिये *सूरह अंफाल* -६७ की व्याख्या)

[2]अर्थात पक्का एवं दृढ़ कर दिया है।

[3]आत्मा से अभिप्राय अपनी विशेष सहायता अथवा ईमान का प्रकाश है जो उन्हें उनके उपरोक्त गुणों के कारण प्राप्त हुआ।

[4]अर्थात जब प्रथम मुसलमान, सहाबये केराम ईमान के आधार पर अपने संबन्धियों तथा समीपवर्त्तियों पर खिन्न हो गये। यहाँ तक कि उन्हें अपने हाथों हत करने में भी संकोच नहीं किया तो उसके बदले अल्लाह ने उन्हें अपनी प्रसन्नता प्रदान कर दी तथा उन पर इस प्रकार अपने अनुग्रह की वर्षा की कि वह अल्लाह से प्रसन्न हो गये। अत: आयत में

The Ummah Technology Mission

सेना है, जान लो कि नि:संदेह अल्लाह के गिरोह वाले ही सफल लोग हैं।[1]

सूरतुल हश्र-५९

سُوْرَةُ الْحَشْرِ

सूर: हश्र* मदीने में अवतरित हुई, इसमें चौबीस आयतें तथा तीन रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ① (१) आकाशों एवं धरती की प्रत्येक वस्तु अल्लाह तआला की पवित्रता का वर्णन करती है, तथा वह प्रभावशाली हिक्मत वाला है।

هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ (२) वही है जिसने अहले किताब में से काफ़िरों

वर्णित सम्मान رضي الله عنهم و رضوا عنه यद्यपि विशेष रूप से सहाबा के बारे में अवतरित नहीं हुआ है, फिर भी वे इसका प्रथम चरितार्थ तथा पूर्ण चरितार्थ हैं। इसीलिए इसके शाब्दिक अर्थ को सामने रखते हुए उपरोक्त गुणों से युक्त प्रत्येक मुसलमान رضي الله عنه का पात्र बन सकता है, जैसे शाब्दिक भावार्थ के आधार पर प्रत्येक मुसलमान पर عليه الصلوٰة و السلام को (प्रार्थना वाक्य के रूप में) बोला जा सकता है। परन्तु अहले सुन्नत ने इनके शाब्दिक अर्थ से हटकर इनको आदरणीय सहाबा तथा अम्बिया के अतिरिक्त किसी और के लिये बोलना तथा लिखना उचित नहीं माना है। यह मानो प्रतीक है, رضي الله عنهم सहाबा के लिए तथा عليهم الصلوٰة والسلام अम्बियाए केराम के लिये। यह ऐसे ही है, जैसे رحمة الله عليه या رحمه الله (अल्लाह की दया उस पर हो अथवा अल्लाह उस पर दया करे) को शाब्दिक अर्थानुसार जीवित तथा मृत दोनों के लिए बोला जा सकता है, क्योंकि यह एक प्रार्थना वाक्य है जिसकी आवश्यकता जीवित तथा मृत दोनों को है, किन्तु इनका प्रयोग मृतों के लिए विशेष हो चुका है। इसलिए इसे जीवित के लिए प्रयोग नहीं किया जाता।

[1]अर्थात मोमिनों का यही गिरोह सफल होगा। दूसरे उनकी अपेक्षा ऐसे ही होंगे जैसे वह सफलता से पूर्णत: वंचित हैं, जैसाकि वस्तुत: परलोक में वह सफलता से वंचित होंगे।

*यह सूरह यहूद के एक क़बीले बनू नज़ीर के बारे में अवतरित हुई है। इसलिए इसको *सूरतुन्नज़ीर* भी कहते हैं। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर *सूरतिल हश्र*)

The Ummah Technology Mission

اَهۡلِ الۡكِتٰبِ مِنۡ دِيَارِهِمۡ لِاَوَّلِ الۡحَشۡرِ ؕ مَا ظَنَنۡتُمۡ اَنۡ يَّخۡرُجُوۡا وَظَنُّوۡۤا اَنَّهُمۡ مَّانِعَتُهُمۡ حُصُوۡنُهُمۡ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنۡ حَيۡثُ لَمۡ يَحۡتَسِبُوۡا ۟ وَقَذَفَ فِىۡ قُلُوۡبِهِمُ الرُّعۡبَ يُخۡرِبُوۡنَ بُيُوۡتَهُمۡ بِاَيۡدِيۡهِمۡ وَاَيۡدِى الۡمُؤۡمِنِيۡنَ فَاعۡتَبِرُوۡا يٰۤاُولِى الۡاَبۡصَارِ ۝٢

को उनके घरों से प्रथम हश्र (जमाव) के समय निकाला,[1] तुम्हारा अनुमान (भी) न था कि वे निकलेंगे तथा वह स्वयं (भी) समझ रहे थे कि उनके (सुदृढ़) दुर्ग उन्हें अल्लाह (के प्रकोप) से वचा लेंगें,[2] तो उन पर अल्लाह (का प्रकोप) ऐसे स्थान से आ पड़ा कि उन्हें अनुमान भी न था[3] तथा उनके हृदयों में अल्लाह (तआला) ने भय डाल दिया,[4] वे अपने

---

[1]मदीने के आसपास यहूदियों के तीन क़बीले आवाद थे, वनू नज़ीर, वनू कुरैज़ा तथा वनू कैनुकाअ । मदीना आने के वाद नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे संधि भी किया था, परन्तु यह लोग आन्तरिक रूप से षड़यन्त्र करते रहे तथा मक्का के काफ़िरों से भी मुसलमानों के विरूद्ध सम्पर्क रखा, यहाँ तक कि एक अवसर पर जव आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके पास गये हुए थे। वनू नज़ीर ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ऊपर से एक भारी पत्थर फेंक कर आपको मार डालने की योजना वनाई, जिससे प्रकाशना (वह्यी) द्वारा समय पर आपको सूचित कर दिया गया तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वहाँ से वापस गये। उनके इस संधि-भंग के कारण आपने उन पर आक्रमण किया। यह कुछ दिन अपने गढ़ों में वंद रहे। अन्ततः उन्होंने प्राण क्षमा के रूप में देश निकाला को स्वीकार किया, जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मान लिया। इसे अव्वले हश्र (पहली वार जमाव) से व्यंजित किया, क्योंकि यह उनका प्रथम देश निकाला था जो मदीने से हुआ। यहाँ से यह ख़ैवर में जाकर आवाद हो गये । वहाँ से आदरणीय उमर ने उन्हें फिर देश निकाला दिया तथा शाम (राज्य) की ओर ढकेल दिया, जहाँ कहते हैं कि सभी मनुष्यों का अंतिम जमाव होगा।

[2]इसलिए कि उन्होंने अति सुदृढ़ गढ़ वनाये थे जिस पर उन्हें गर्व था तथा मुसलमान भी समझते थे कि इतनी सरलता से यह गढ़ विजय नहीं हो सकेंगे।

[3]तथा वह यही था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें घेर लिया था जो उनके अनुमान तथा विचार में भी नहीं था।

[4]इस भय के कारण ही वह देश त्याग पर तैयार हो गये, अन्यथा अब्दुल्लाह बिन उबैय (मुनाफ़िक़ों के प्रमुख) तथा अन्य लोगों ने उन्हें संदेश भेजे थे कि तुम मुसलमानों के आगे झुकना नहीं, हम तुम्हारे साथ हैं। इसके अतिरिक्त, अल्लाह ने नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह विशेष गुण प्रदान किया था कि शत्रु एक महीने की दूरी पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भयभीत हो जाता था। इसलिए उन पर अत्यन्त भय तथा

The Ummah Technology Mission

घरों को अपने ही हाथों उजाड़ रहे थे[1] तथा मुसलमानों के हाथों (नष्ट करवा रहे थे)[2] तो हे आँखों वालो ! शिक्षा ग्रहण करो।[3]

وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۭ وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ۝

(३) तथा यदि अल्लाह (तआला) ने उन पर देश निकाला न लिख दिया होता तो निश्चित रूप से उन्हें संसार में ही यातना देता,[4] तथा परलोक में (तो) उनके लिए अग्नि की यातना है ही।

डर छा गया तथा सभी संसाधनों के उपरान्त उन्होंने हथियार डाल दिये, तथा केवल यह शर्त मुसलमानों से मनवाई कि जितना सामान वह लाद कर ले जा सकते हैं उन्हें ले जाने की अनुमति हो। अत: इस अनुमति के कारण उन्होंने अपने घरों के द्वार तथा शहतीर तक उखाड़ डाले ताकि साथ ले जायें।

[1]अर्थात जब उन्हें विश्वास हो गया कि अब देश निकलना अनिवार्य है तो उन्होंने घेराव के बीच ही अपने घरों को ध्वस्त करना आरम्भ कर दिया ताकि वह मुसलमानों के काम के न रहें। या यह अभिप्राय है कि सामान ले जाने की अनुमति का पूरा लाभ प्राप्त करने के लिए वह अपने-अपने ऊँटों पर जितना सामान लाद कर ले जा सकते थे, अपने घर उजाड़-उजाड़ कर वह सामान उन्होंने ऊँटों पर लाद लिया।

[2]बाहर से मुसलमान उनके घरों को ध्वस्त करते रहे ताकि उन्हें पकड़ना सहज हो, अथवा यह अभिप्राय है कि उनके उधेड़े घरों से शेष सामान निकालने के लिए मुसलमानों को अधिक ध्वंस से काम करना पड़ा।

[3]कि कैसे अल्लाह ने उनके दिलों में मुसलमानों का भय डाला जबकि वह एक शक्ति-शाली तथा संसाधन पूर्ण क़बीला था। किन्तु जब अल्लाह की ओर से कार्य का अवसर समाप्त हो गया तथा अल्लाह ने अपनी पकड़ में लाने का निर्णय कर लिया तो फिर उनकी शक्ति तथा साधन उनके काम नहीं आये, न अन्य सहायक तथा सहयोगी उनकी कुछ सहायता कर सके।

[4]अर्थात अल्लाह के लेख में इसी प्रकार उनका देश निकाला पहले से अंकित न होता तो उनको इस संसार ही में घोर यातना दे दी जाती, जैसाकि उनके भाई यहूद के एक दूसरे क़बीले (कुरैज़ा) को ऐसी ही यातना में डाला गया कि उनके युवकों को वध कर दिया गया तथा दूसरों को बंदी बना लिया गया तथा उनका माल मुसलमानों के लिये ग़नीमत बना दिया गया।

The Ummah Technology Mission

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٤

(४) यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह (तआला) तथा उसके सन्देष्टा का विरोध किया, तथा जो भी अल्लाह का विरोध करेगा तो अल्लाह (तआला) भी कठोर यातना देने वाला है।

مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥

(५) तुमने खजूरों के जो वृक्ष काट डाले तथा जिन्हें तुमने उनकी जड़ों पर शेष रहने दिया, यह सब अल्लाह (तआला) के आदेश से था तथा इसलिए भी कि कुकर्मियों को अल्लाह (तआला) अपमानित करे।[1]

وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى

(६) तथा उनका जो माल अल्लाह (तआला) ने अपने संदेष्टा के हाथ लगाया है जिस पर तुमने न घोड़े दौड़ाये हैं तथा न ऊँट, अपितु अल्लाह (तआला) अपने संदेष्टा को जिस पर चाहे प्रभावशाली कर देता है।[2] तथा अल्लाह

---

[1] لِيْنَةٍ (लीन:) खजूर की एक प्रकार है, जैसे अज्वा, वर्नी आदि खजूरों की किस्में हैं। घेराव के समय मुसलमानों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशानुसार बनू नज़ीर के खजूरों के वृक्षों को आग लगा दी, कुछ काट दिये तथा कुछ छोड़ दिये, जिसका लक्ष्य शत्रु की अड़ को समाप्त करना तथा यह स्पष्ट करना था कि अब मुसलमान तुम पर प्रभुत्वशाली हैं, वह तुम्हारे धन-सम्पत्ति में कुछ भी उपभोग करने का सामर्थ्य रखते हैं। अल्लाह ने भी मुसलमानों की इस नीति को उचित ठहराया तथा इसे यहूद के अपमान का कारण बताया।

[2] बनू नज़ीर का यह क्षेत्र जो मुसलमानों के अधिकार में आया, मदीने से तीन-चार मील की दूरी पर था। अर्थात मुसलमानों को इसके लिए लम्बी यात्रा की आवश्यकता नहीं हुई, अर्थात मुसलमानों को ऊँट, घोड़े नहीं दौड़ाने पड़े। ऐसे ही लड़ना भी नहीं पड़ा तथा संधि द्वारा यह क्षेत्र विजय हो गया। अर्थात अल्लाह ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बिना लड़े उन पर प्रभुत्व प्रदान कर दिया। इसलिए यहाँ से प्राप्त माल को 'फै' माना गया जिसका आदेश ग़नीमत (परिहार) से भिन्न है। मानो वह माल 'फै' है, जो शत्रु बिना लड़े छोड़ कर भाग जाये अथवा समझौता से प्राप्त हो। तथा जो धन ग़नीमत रूप से लड़ाई तथा प्रभुत्व प्राप्त करने से मिले, वह 'ग़नीमत' है। 'ग़नीमत' का नियम यह है कि उसके पाँच भाग किये जायें, चार भाग मुजाहिदों में विभाजित होंगे तथा पाँचवाँ भाग अल्लाह के रसूल के लिए अर्थात मुसलमानों के बैतुलमाल (कोष गृह) के

The Ummah Technology Mission

तआला प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्यवान है।

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝٦

(७) बस्तियों वालों का जो (धन) अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे युद्ध किये बिना ही अपने संदेष्टा के हाथ लगाया, वह अल्लाह का है तथा रसूल का, निकट सम्बन्धियों का, अनाथों का, निर्धनों का एवं यात्रियों का है[1] ताकि तुम्हारे धनवानों के हाथों में ही यह धन चक्कर लगाता न रह जाये,[2] तथा तुम्हें जो कुछ रसूल दें तो ले लो और जिससे रोकें रुक जाओ[3] तथा अल्लाह (तआला) से डरते

مَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ كَيْ لَا يَكُونَ دُولَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنكُمْ ۚ وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانتَهُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝٧

लिए हैं। परन्तु फ़ै का माल मुजाहिदों में बाँटा नहीं जायेगा। सभी माल अल्लाह के रसूल का है, अर्थात मुसलमानों के बैतुलमाल में रखा जायेगा।

[1]यह पुनरावृत्ति बल देने के लिए है। किन्तु इस आयत में फ़ै के माल का नियम भी वर्णन किया गया है। यहाँ यह स्पष्ट कर दिया कि यह आदेश केवल बनू नज़ीर के मालों के लिए नहीं है, अपितु जब भी जहाँ भी ऐसी स्थिति होगी यही आदेश होगा। अल्लाह का नाम शुभ के लिये है। उद्देश्य रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा आप के नातेदारों की चर्चा है, जिससे बनू हाशिम तथा बनू मुत्तलिब अभिप्राय है। जैसाकि हदीस में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसमें से अपनी पवित्र पत्नियों का पूरे वर्ष का ख़र्च वसूल करते थे तथा शेष माल हथियारों की ख़रीदारी तथा जिहाद की तैयारी में लगा देते। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर *सूरतिल हश्र*)

[2]دُولَةً (दूलह) उस चीज़ को कहते हैं जो कुछ लोगों के बीच फिरती रहे, उनसे बाहर न निकले। यह माले फ़ै के उपभोग का कारण बताया है। उसे मुजाहिदीन में विभाजित करने की जगह बैतुल माल का हिस्सा इसलिए क़रार दिया है कि यह धन धनवानों के बीच ही न फिरता रहे। अपितु समाज के योग्य लोग भी उससे लाभ प्राप्त करें।

[3]यहाँ पर आदेश यद्यपि फ़ै के माल के सम्बन्ध में आया है जिसका लक्ष्य मुसलमानों के दिलों में रसूल के अनुपालन का महत्व उजागर करना है कि जो माल वह तुम्हें दें वह स्वीकार कर लो, जिससे रोक दें रुक जाओ। इस पर अपने दिलों में कोई तंगी किसी संकोच का संवेद न करो, किन्तु आदेश साधारण है। रसूल जो भी आदेश दें उसे पूरा करो तथा जिस काम से रोक दें उसके समीप न जाओ, क्योंकि अल्लाह ने जो भी धार्मिक आदेश (निषेधाज्ञा) दिये हैं वह रसूल ही के द्वारा दिये हैं। अत: रसूल का अनुपालन किये

The Ummah Technology Mission

रहा करो, नि:संदेह अल्लाह (तआला) कठोर यातना वाला है।

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ
أُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ
يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا
وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ
أُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۚ﴿٨﴾

(८) (फ़ै का धन) उन निर्धन मुहाजिरों के लिए है जो अपने घरों से तथा अपने धनों से निकाल दिये गये हैं। वे अल्लाह की कृपा तथा प्रसन्नता के इच्छुक हैं तथा अल्लाह (तआला) की और उसके संदेष्टा की सहायता करते हैं, यही सत्यवादी लोग हैं।[1]

وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْإِيْمَانَ
مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ

(९) तथा (उनके लिए) जिन्होंने इस घर में (अर्थात मदीने में) तथा ईमान में उनसे पूर्व स्थान बना लिया है[2] तथा अपनी ओर

बिना धर्मविधान के अनुसार कर्म संभव ही नहीं है। सहीह हदीस में आता है कि अब्दुल्लाह पुत्र मसऊद ने एक बार कहा कि अल्लाह उन स्त्रियों पर धिक्कार करता है जो गोदना गोदवाये तथा जो गोदे, जो अपनी ललाट के बाल नोचे तथा जो शोभा के लिए अपने आगे के दाँतों को दूर-दूर करे। एक औरत को पता लगा तो मसऊद के पुत्र के पास आई तथा कहा कि मैंने सुना है कि आप ने अमुक-अमुक महिलाओं पर धिक्कार की है। उन्होंने कहा कि हाँ, सही है। जिन पर अल्लाह के रसूल ने धिक्कार भेजी है तथा जो अल्लाह की किताब में है, मैं उस पर धिक्कार क्यों न भेजूँ। उस महिला ने कहा कि मुझे तो पूरे क़ुरआन में यह धिक्कार नहीं दिखाई दी। आपने फ़रमाया : यदि तू क़ुरआन समझ कर पढ़ती तो निश्चय इस बात को उस में पा लेती। क्या तूने यह आयत नहीं पढ़ी ? ﴿وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا﴾ महिला ने कहा कि हाँ, यह आयत तो है। आप ने फ़रमाया कि बस अल्लाह के रसूल ने इन चीज़ों से रोका है जो महिलायें करती हैं। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर *सूरतिल हश्र*) अर्थात इब्ने मसऊद ने रसूल की आज्ञा को स्वयं अल्लाह का आदेश बताया।

[1]इसमें फ़ै के माल का एक सही व्यय बताया गया है तथा साथ ही मुहाजिरीन की श्रेष्ठता तथा विशुद्धता एवं उनकी सत्यवादिता का स्पष्टीकरण है, जिसके बाद उनके ईमान में सन्देह करना मानो क़ुरआन का इंकार करना है।

[2]इससे अभिप्राय मदीना के अंसार हैं जो मुहाजिरीन के मदीने आने से पहले मदीने में आबाद थे तथा मुहाजिरीन के हिजरत करके आने से पहले ईमान भी उनके दिलों में रच-बस गया था। यह अभिप्राय नहीं है कि मुहाजिरीन के ईमान लाने से पहले यह

The Ummah Technology Mission

وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۭ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

स्थानान्तरण करके आने वालों से प्रेम करते हैं तथा मुहाजिरों को जो कुछ दे दिया जाये, उससे वे अपने सीनों में कोई संकोच नहीं करते,[1] अपितु स्वयं अपने ऊपर उनको प्राथमिकता देते हैं चाहे स्वयं उनको कितनी ही अधिक आवश्यकता हो,[2] (बात यह है) कि जो भी अपनी मनोकांक्षा की कंजूसी से बचाया गया वही सफल (एवं लक्ष्य प्राप्त) है।[3]

अंसार ईमान ला चुके थे, क्योंकि उनकी अधिक संख्या मुहाजिरीन के ईमान लाने के पश्चात ईमान लाई है। अर्थात مِنْ قَبْلِهِم का अर्थ مِنْ قَبْلِ هَجرتِهِم है तथा دارٌ (दार) से अभिप्राय دَارُالهِجْرَة अर्थात मदीना है।

[1]अर्थात मुहाजिरीन को अल्लाह का रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो कुछ दें उस पर ईर्ष्या तथा संकोच महसूस नहीं करते, जैसे फ़ै के माल का प्रथम अधिकारी भी उन्हीं को बनाया गया, किन्तु अंसार ने इसको बुरा नहीं माना।

[2]अर्थात अपने मुक़ाबले में मुहाजिरीन की आवश्यकता को प्राथमिकता देते हैं, स्वयं भूखे रहते हैं, परन्तु मुहाजिरीन को खिला देते हैं। जैसे हदीस में एक वाक़या आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक अतिथि आया, परन्तु आप के घर में कुछ न था। एक अंसारी उसे अपने घर ले गया। घर जाकर बतलाया तो पत्नी ने कहा कि घर में तो केवल बच्चों का खाना है। उन्होंने परस्पर परामर्श किया कि बच्चों को भूखा सुला दिया जाये तथा हम भी ऐसे ही कुछ खाये बिना रह जायें। हाँ, अतिथि को खिलाते समय दीप बुझा देना ताकि उसे हमारे विषय में ज्ञान न हो कि हम उसके साथ खाना नहीं खा रहे हैं। सवेरे जब वह सहाबी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तो आपने उनसे फ़रमाया कि अल्लाह तआला (परमेश्वर) ने तुम दोनों पति-पत्नी के सम्बंध में यह आयत उतारी है وَ يُؤثِرُونَ على انفُسهم। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर *सूरतिल हश्र*) उनके त्याग का यह भी एक विचित्र आदर्श है कि एक अंसारी के पास दो पत्नियाँ थीं तो उसने एक पत्नी को तलाक़ देने का प्रस्ताव रखा कि इद्दत (अवधि) के बाद उससे उसका दूसरा मुहाजिर भाई विवाह कर ले। (बुख़ारी, किताबुन निकाह)

[3]हदीस में है कि मनोकांक्षा से बचो, क्योंकि इस मनोकांक्षा ने ही पहले लोगों का विनाश किया। उसी ने उन्हें रक्तपात पर तैयार किया तथा उन्होंने निषेधित (हराम) को वैध (उचित) बना लिया। (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र, बाबु तहरीमिज़् ज़ुल्मे)

The Ummah Technology Mission

وَ الَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَ لِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَ لَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَاۤ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝١٠

(१०) तथा (उनके लिए) जो उनके पश्चात आयें, जो कहेंगे कि हे हमारे प्रभु ! हमें क्षमा कर दे तथा हमारे उन भाईयों को भी जो हमसे पूर्व ईमान ला चुके हैं तथा ईमानवालों की ओर से हमारे हृदय में कपट (एवं शत्रुता) न डाल,[1] हे हमारे प्रभु ! नि:संदेह तू प्रेम एवं दया करने वाला है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَ لَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ

(११) क्या तूने अवसरवादियों को नहीं देखा जो अपने अहले किताब काफ़िर भाईयों से कहते हैं कि यदि तुम देश से निकाल दिये गये, तो हम भी अवश्य तुम्हारे साथ देश छोड़ देंगे तथा तुम्हारे विषय में हम कभी भी

---

[1]यह फ़ै धन के पात्रों की तीसरा प्रकार है, अर्थात सहाबा के पश्चात आने वाले तथा उनके अनुगामी। इसमें ताबईन तबये ताबईन तथा क़यामत तक होने वाले सभी ईमानवाले तथा सदाचारी आ गये। किन्तु प्रतिबन्ध यही है कि वह अंसार तथा मुहाजिरीन को मोमिन मानें तथा उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करते हों, न कि उनके ईमान में संदेह करते हों तथा उन्हें अपशब्द कहते तथा उनके विरोध में अपने दिल में कपट तथा शत्रुता की भावना रखते हों। इमाम मालिक ने इस आयत से अर्थ निकालते हुए यही बात कही है।

«إِنَّ الرَّافِضِيَّ الَّذِي يَسُبُّ الصَّحَابَةَ، لَيسَ لَهُ فِي مَالِ الْفَيءِ نَصِيبٌ؛ لِعَدَمِ اتِّصَافِهِ بِمَا مَدَحَ اللهُ بِهِ هٰؤُلَاءِ فِي قَولِهِمْ».

"अर्थात राफ़ज़ी को, जो सहाबये केराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम को अपशब्द कहते हैं, फ़ै के धन से भाग नहीं मिलेगा, क्योंकि अल्लाह तआला ने सहाबये केराम की प्रशंसा की है तथा राफ़ेज़ी उनकी निन्दा करते हैं।" (इब्ने कसीर)

तथा आदरणीय आयशा रज़ि अल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं :

«أُمِرْتُمْ بِالِاسْتِغْفَارِ لِأَصْحَابِ مُحَمَّدٍ ﷺ فَسَبَبْتُمُوهُمْ! سَمِعْتُ نَبِيَّكُمْ يَقُولُ: «لَا تَذْهَبُ هٰذِهِ الْأُمَّةُ حَتَّى يَلْعَنَ آخِرُهَا أَوَّلَهَا».

"तुम लोगों को मुहम्मद के सहचरों के लिए क्षमा-याचना का आदेश दिया गया, किन्तु तुमने उन्हें अपशब्द कहा। मैंने तुम्हारे नबी को कहते हुए सुना कि यह सम्प्रदाय उस समय तक समाप्त नहीं होगी जब तक कि उसके बाद वाले पहले वाले लोगों को अपशब्द न कहें।" (इब्ने कसीर, रवाहुल बग़वी)

The Ummah Technology Mission

أَحَدًا أَبَدًا ۙ وَإِنْ قُوتِلْتُمْ
لَنَنْصُرَنَّكُمْ ۖ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ
لَكَاذِبُونَ ﴿١١﴾

किसी की बात स्वीकार न करेंगे तथा यदि तुम से युद्ध किया जायेगा तो अवश्य हम तुम्हारी सहायता करेंगे,[1] परन्तु अल्लाह (तआला) गवाही देता है कि ये सर्वथा झूठे हैं।[2]

لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ ۖ
وَلَئِنْ قُوتِلُوا لَا يَنْصُرُونَهُمْ ۖ
وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْأَدْبَارَ ثُمَّ
لَا يُنْصَرُونَ ﴿١٢﴾

(१२) यदि वे देश से निकाल दिये गये, तो ये उनके साथ न जायेंगे तथा यदि उन से युद्ध छिड़ गया तो ये उनकी सहायता (भी) नहीं करेंगे,[3] तथा यदि यह (मान भी लिया जाये कि) सहायता पर आ भी गये[4] तो पीठ दिखाकर (भाग खड़े) होंगे,[5] फिर सहायता न किये जायेंगे।[6]

لَأَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ
مِنَ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ
لَا يَفْقَهُونَ ﴿١٣﴾

(१३) (मुसलमानो ! विश्वास करो) कि तुम्हारा भय उनके सीनों में[7] अल्लाह के भय की तुलना में बहुत अधिक है, यह इसलिए कि ये समझते नहीं।[8]

---

[1]जैसे पहले गुज़र चुका कि बनू नज़ीर को मुनाफ़िक़ों ने यह संदेश भेजा था।

[2]जैसाकि उनका झूठ खुल कर रहा। बनू नज़ीर देश निकाला दे दिये गये, किन्तु ये उनकी सहायता को पहुँचे न उनके समर्थन में मदीना छोड़ने पर तैयार हुए।

[3]यह अवतरवादी (मुनाफ़िक़ों) के विगत् मिथ्या वचनों का अधिक विवरण है। तथा ऐसा ही हुआ, बनू नज़ीर देश निकाला दे दिये गये तथा बनू कुरैज़ा हत किये गये तथा बंदी बनाये गये, परन्तु मुनाफ़िक़ उनकी सहायता के लिए नहीं पहुँचे।

[4]यह काल्पनिक बात की जा रही है, अन्यथा जिस चीज़ को अल्लाह नकार दे उसका अस्तित्व क्योंकर संभव है। अभिप्राय यह है कि यदि यह यहूद की सहायता करने का विचार करें।

[5]अर्थात पराजित होकर।

[6]अभिप्राय यहूदी हैं। अर्थात जब उनके सहयोगी मुनाफ़िक़ ही पराजित होकर भाग खड़े होंगे तो यहूद कैसे विजयी तथा सफल होंगे ? कुछ ने इससे अभिप्राय मुनाफ़िक़ लिये हैं कि वह सहायता नहीं किये जायेंगे। बल्कि अल्लाह उन्हें अपमानित करेगा तथा उनका निफ़ाक़ (द्वयवाद) उनके लिए लाभप्रद नहीं होगा।

[7]यहूद के या मुनफ़िक़ों के अथवा सभी के दिलों में।

[8]अर्थात तुम्हारा यह भय उनके दिलों में उनकी नासमझी के कारण है। अन्यथा यदि वह

The Ummah Technology Mission

لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى
مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ وَّرَآءِ جُدُرٍ ؕ
بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ؕ تَحْسَبُهُمْ
جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ؕ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۴﴾

(१४) ये सब मिलकर भी तुमसे लड़ नहीं सकते, परन्तु यह अलग बात है कि गढ़ से घिरे स्थानों में हों अथवा दीवारों की ओट में हों,[1] उनकी लड़ाई तो आपस में ही अत्यन्त कठोर है,[2] यद्यपि आप उनको एकमत समझ रहे हैं किन्तु वास्तव में उनके हृदय आपस में भिन्न हैं,[3] यह इसलिए कि ये बुद्धिहीन लोग हैं।[4]

كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا
ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۵﴾

(१५) उन लोगों की भाँति जो उनसे कुछ ही पूर्व गुज़रे हैं, जिन्होंने अपने पापों का स्वाद चख लिया[5] तथा जिनके लिए दुखदायी यातना (तैयार) है।[6]

समझ रखेते तो समझ जाते कि मुसलमानों का प्रभुत्व तथा विजय अल्लाह की ओर से है, इसलिए डरना अल्लाह ही से चाहिए, न कि मुसलमानों से।

[1]अर्थात यह यहूद तथा मुनाफ़िक़ मिलकर भी खुले मैदान में तुमसे लड़ने का साहस नहीं रखते। हाँ, दुर्गों में बंद होकर अथवा दीवार के पीछे छिपकर तुम पर आक्रमण कर सकते हैं, जिससे स्पष्ट है कि यह अत्यन्त कायर हैं तथा तुम्हारे भय से कंपित तथा भयभीत हैं।

[2]यह परस्पर घोर विरोधी हैं। इसलिए उनमें परस्पर तू तुकार तथा थुक्का अपमान सामान्य है।

[3]यह मुनाफ़िक़ों के आपस में दिलों की स्थिति है, अथवा यहूद तथा मुनाफ़िक़ों के, अथवा मुशरिकों एवं अहले किताब के। अभिप्राय यह है कि यह सत्य के विरोध में एक दिखाई देते हैं, किन्तु उनके दिल एक नहीं हैं। वह परस्पर विरोधी हैं तथा एक-दूसरे के विपरीत रोष तथा शत्रुता से भरे हुए हैं।

[4]अर्थात यह मतभेद तथा बिखराव उनकी नासमझी के कारण है। यदि उनके पास समझ-बूझ होती तो यह सत्य को पहचान लेते तथा उसे अपना लेते।

[5]इससे कुछ ने मक्का के बहुदेववादी (मुशरेकीन) तात्पर्य लिये हैं, जिन्हें बनू नज़ीर के युद्ध से कुछ पहले बद्र के युद्ध में शिक्षाप्रद पराजय हुई थी। अर्थात यह भी अपमान तथा पराजय में मुशरिकों ही के सदृश हैं जिनका समय निकट ही है। कुछ ने यहूद का दूसरा क़बीला बनू क़ैनुक़ाअ अभिप्राय लिया है, जिन्हें बनू नज़ीर से पहले देश निकाला दिया जा चुका था, जो समय तथा स्थान दोनों के अनुसार उनके समीप थे। (इब्ने कसीर)

[6]अर्थात यह दण्ड जो उन्होंने चखा यह तो सांसारिक दंड है। आख़िरत का दण्ड इसके अतिरिक्त है जो अति दुखद होगा।

The Ummah Technology Mission

كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾

(१६) शैतान की भाँति कि उसने मनुष्य से कहा, कुफ़्र कर, जब वह कुफ़्र कर चुका तो कहने लगा कि मैं तो तुझसे अलग हूँ।[1] मैं तो अखिल जगत के प्रभु से डरता हूँ।[2]

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ جَزٰۗؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٧﴾

(१७) तो दोनों का परिणाम यह हुआ कि (नरक की) अग्नि में सदा के लिए गये तथा अत्याचारियों का यही दण्ड है।[3]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾

(१८) हे ईमानवालो ! अल्लाह से डरते रहो[4] तथा प्रत्येक व्यक्ति देख-भाल ले कि कल (क़यामत अर्थात प्रलय) के लिए उसने कर्मों का क्या (भण्डार) भेजा है।[5] तथा (प्रत्येक समय) अल्लाह से डरते रहो। अल्लाह तुम्हारे सारे कर्मों से परिचित है।[6]

---

[1]यह यहूद तथा मुनाफ़िक़ों का एक और उदाहरण दिया है कि मुनाफ़िक़ों ने यहूदियों को ऐसे ही असहाय छोड़ दिया जैसे शैतान इंसान के साथ व्यवहार करता है, पहले वह इंसान को पथभ्रष्ट करता है तथा जब इंसान शैतान का अनुसरण करके कुफ़्र कर लेता है तो शैतान उससे अपनी निर्दोषता दिखाने लगता है।

[2]शैतान अपने इस कथन में सच्चा नहीं है। उद्देश्य केवल उस कुफ़्र से अलगाव तथा निर्दोषता दिखाना है, जो इंसान शैतान के गुमराह करने से करता है।

[3]अर्थात नरक की स्थायी यातना।

[4]ईमानवालों को संबोधित करके उन्हें सदुपदेश दिया जा रहा है। अल्लाह से डरने का अर्थ है उसने जिन चीज़ों का आदेश दिया है उन्हें पूरा करो, जिनसे रोका है उनसे रुक जाओ। आयत में यह बल देने के लिए दो बार फ़रमाया है, क्योंकि यह 'तक़वा' (अल्लाह का भय) ही इंसान को सत्कर्म करने तथा बुराई से रुकने पर तैयार करता है।

[5]कल से अभिप्राय क़यामत (प्रलय) है। उसे कल से व्यंजित करके इस ओर भी संकेत कर दिया कि उसका होना बहुत दूर नहीं, समीप ही है।

[6]जैसाकि वह प्रत्येक को उसके कर्म का फल देगा, अच्छे को अच्छा तथा बुरे को बुरा।

The Ummah Technology Mission

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنسَاهُمْ أَنفُسَهُمْ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿١٩﴾

(१९) तथा तुम उन लोगों की भाँति न हो जाना जिन लोगों ने अल्लाह (के आदेशों) को भुला दिया, तो अल्लाह ने उन्हें अपने आप से भुला दिया। ऐसे ही लोग अवज्ञाकारी (दुराचारी) होते हैं।[1]

لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۚ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٢٠﴾

(२०) नरक वाले तथा स्वर्ग वाले, (आपस में) समान नहीं,[2] जो स्वर्ग वाले हैं वही सफल हैं।[3]

لَوْ أَنزَلْنَا هَٰذَا الْقُرْآنَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَّرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ

(२१) यदि हम इस क़ुरआन को किसी पर्वत पर अवतरित करते,[4] तो तू देखता कि अल्लाह

---

[1]अर्थात अल्लाह ने प्रतिकार स्वरूप उन्हें ऐसा कर दिया कि वे ऐसे कर्मों से निश्चिन्त हो गये जिनमें उनका लाभ था तथा जिन के द्वारा स्वयं को अल्लाह की यातना से बचा सकते थे। इस प्रकार इंसान अल्लाह को भूल कर स्वयं को भूल जाता है। उसकी मत उसे सही निर्देश नहीं देती, आँखें उसे सत्य का मार्ग नहीं दिखातीं तथा उसके कान सत्य सुनने से बहरे हो जाते हैं। फलस्वरूप उससे ऐसे कर्म होते हैं जिनमें उसका अपना विनाश होता है।

[2]जिन्होंने अल्लाह को भुलाकर यह बात भी भुलाये रखी कि इस प्रकार वह स्वयं अपने ही प्राणों पर अत्याचार कर रहे हैं तथा एक दिन आयेगा कि इसके फलस्वरूप उनके यह शरीर, जिनके लिए वह संसार में बड़े-बड़े पापड़ बेलते थे, नरक की अग्नि का ईंधन बनेंगे, तथा उनके मुक़ाबले में दूसरे वह लोग थे जिन्होंने अल्लाह को याद रखा। उसके आदेशानुसार जीवन निर्वाह किया। एक समय आयेगा कि अल्लाह तआला उन्हें उसका उत्तम प्रत्युप्कार प्रदान करेगा तथा अपने स्वर्ग में उन्हें प्रविष्ट करेगा, जहाँ उनके आराम के लिए हर प्रकार की सुख-सुविधायें होंगी। यह दोनों गिरोह अर्थात नरक वाले तथा स्वर्ग वाले समान नहीं होंगे। भला यह बराबर हो भी कैसे सकते हैं ? एक ने अपने अंत (परिणाम) को याद रखा तथा उसके लिए तैयारी करता रहा। दूसरा अपने अंत से निश्चिन्त रहा इसलिए उसके लिए तैयारी में भी अपराधपूर्ण विमुखता अपनायी।

[3]जैसे परीक्षा की तैयारी करने वाला सफल तथा अन्य असफल होता है। इसी प्रकार ईमानवाले तथा संयमी स्वर्ग प्राप्त करने में सफल हो जायेंगे, क्योंकि वह संसार में इस के लिए सत्कर्म करके तैयारी करते रहे। संसार कर्मगृह तथा परीक्षा घर जैसा है, जिसने इस तथ्य को समझ लिया तथा वह परिणाम से निश्चिन्त होकर जीवन निर्वाह नहीं किया वह सफल रहा तथा जो संसार की वास्तविकता को समझने से विवश तथा परिणाम से विमुख अवज्ञा एवं दुराचार में लीन रहा वह क्षतिग्रस्त तथा असफल होगा।

[4]और पर्वतों में समझ एवं ज्ञान की वह क्षमता पैदा कर देते जो हमने मनुष्य के अंदर रखी है।

The Ummah Technology Mission

خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَ تِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

के भय से वह झुक कर कण-कण हो जाता।[1] हम इन उदाहरणों को लोगों के समक्ष वर्णन करते हैं ताकि वे चिन्तन-मनन करें।[2]

هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَ الشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ﴿٢٢﴾

(२२) वही अल्लाह है जिसके अतिरिक्त कोई (सच्चा) पूज्य नहीं, गुप्त[3] एवं प्रकट का जानने वाला, वही क्षमा तथा दया करने वाला।

هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَیْمِنُ الْعَزِیْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾

(२३) वही अल्लाह है जिसके अतिरिक्त कोई (सच्चा) पूज्य नहीं, स्वामी, अत्यन्त पवित्र, सभी दोषों से मुक्त, शान्ति प्रदान करने वाला, रक्षक, प्रभावशाली, शक्तिशाली, महान, पवित्र है अल्लाह उन वस्तुओं से जिन्हें ये उसका साझीदार बनाते हैं।

---

[1]अर्थात हमने पवित्र क़ुरआन में जो प्रभाव, स्वच्छता, शक्ति एवं तर्क तथा शिक्षा एवं उपदेश के ऐसे पक्ष वर्णन किये हैं कि उन्हें सुनकर पर्वत भी इतनी कड़ाई, विस्तार एवं ऊँचाई के उपरान्त अल्लाह के भय से कण-कण हो जाते। यह इंसान को बतलाया तथा समझाया जा रहा है कि तुझे समझ-बूझ की योग्यता दी गई है, किन्तु यदि क़ुरआन सुनकर तेरे दिल पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता तो तेरा परिणाम अच्छा नहीं होगा।

[2]ताकि वह क़ुरआन के उपदेशों से शिक्षा ग्रहण करें तथा धमकियों को सुनकर अवज्ञाओं से बचें। कुछ कहते हैं कि इस आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को संबोधित किया गया है कि हमने आप पर यह पवित्र क़ुरआन उतारा जो ऐसा प्रतिष्ठावान है कि यदि हम किसी पर्वत पर उतारते तो वह कण-कण हो जाता। किन्तु आप पर हमारा यह अनुग्रह है कि हमने आपको इतना दृढ़ एवं बलवान कर दिया कि आपने उस चीज़ को सहन कर लिया, जिसे सहन करने की शक्ति पर्वत में भी नहीं है। (फ़तहुल क़दीर) उसके बाद अल्लाह तआला अपने गुणों का वर्णन कर रहा है, जिसका उद्देश्य तौहीद को प्रमाणित करना तथा शिर्क (अनेकेश्वरवाद) का खंडन है।

[3]परोक्ष सृष्टि के एतबार से है। अन्यथा अल्लाह के लिए कोई वस्तु अप्रत्यक्ष नहीं। अभिप्राय यह है कि वह सृष्टि की प्रत्येक वस्तु को जानता है, चाहे वह सामने हो अथवा हमसे ओझल, यहाँ तक कि वह अंधेरों में रेंगती चींटी को भी जानता है।

The Ummah Technology Mission

هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾

(२४) वही अल्लाह है पैदा करने वाला, बनाने वाला,[1] रूप देने वाला, उसी के लिए (अत्यन्त) शुभ नाम हैं।[2] प्रत्येक वस्तु चाहे आकाशों में हों अथवा धरती में हो उसकी पवित्रता का वर्णन करती हैं,[3] तथा वही प्रभावशाली एवं हिक्मत वाला हैं।[4]

سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَةِ

सूरतुल मुम्तहिन:-६०

सूर: मुम्तहिन: मदीने में अवतरित हुई तथा इसमें तेरह आयतें तथा दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا

(१) हे वे लोगो जो ईमान लाये हो! मेरे तथा अपने शत्रुओं को अपना मित्र न बनाओ,[5] तुम

---

[1]कहते हैं कि خلق (ख़ल्क़) का अभिप्राय अपनी इच्छा तथा इरादे के अनुसार अनुमान लगाना है तथा برأ (बर्अ) का अर्थ है उसे पैदा करना, गढ़ना, अस्तित्व में लाना।

[2]أسماء حسنى (अल्लाह के शुभ नामों की चर्चा) सूर: आराफ़ १८० में हो चुकी है।

[3]स्थिति से तथा मुख से भी जैसाकि पहले वर्णित हुआ।

[4]जिस चीज़ का निर्णय करता है वह हिक्मत से ख़ाली नहीं होता।

[5]मक्का के काफ़िरों तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बीच हुदैबिया में जो समझौता हुआ था मक्का वालों ने उसका उल्लंघन किया। इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी गुप्त रूप से मुसलमानों को लड़ाई की तैयारी का आदेश दे दिया। आदरणीय हातिब पुत्र अबू बल्तआ एक बद्री मुहाजिर सहाबी थे जिनको कुरैश के साथ कोई नाता नहीं था, परन्तु उनकी पत्नी तथा बच्चे मक्का ही में थे। उन्होंने सोचा कि मैं मक्का के कुरैश को आपकी तैयारी से सूचित कर दूँ ताकि इस उपकार के वदले वह मेरे बाल-बच्चों का ध्यान रखें। उन्होंने यह संदेश एक नारी के माध्यम से लिखित रूप में मक्कावासियों की ओर भेज दिया, जिसकी सूचना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रकाशना द्वारा दे दी गई। आपने आदरणीय अली, मिकदाद तथा ज़ुवैर से फ़रमाया कि जाओ, रौज़ये खाख (एक स्थान का नाम) पर एक महिला होगी जो मक्का जा रही होगी, उसके पास एक पत्र है, वह ले आओ। यह लोग

The Ummah Technology Mission

عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ
اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا
جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ
الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ
اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ۭ اِنْ كُنْتُمْ
خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ وَابْتِغَآءَ
مَرْضَاتِيْ ۚ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۚ
وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَآ اَخْفَيْتُمْ وَمَآ اَعْلَنْتُمْ ۭ
وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ
سَوَآءَ السَّبِيْلِ ①

तो मित्रता से उनकी ओर संदेश भेजते हो,[1] और वे उस सत्य का जो तुम्हारे पास आ चुका है इंकार करते हैं, संदेष्टा को तथा स्वयं तुमको भी मात्र इस कारण से निष्कासित करते हैं कि तुम अपने प्रभु पर ईमान रखते हो।[2] यदि तुम मेरे मार्ग में धर्मयुद्ध के लिए तथा मेरी प्रसन्नता की खोज में निकले हो (तो उनसे मित्रता न करो)[3] तुम उनके पास प्रेम का संदेश छिपा-छिपा कर भेजते हो तथा मुझे भली-भाँति ज्ञात है जो तुमने छिपाया तथा वह भी जो तुमने प्रकट किया, तुममें से जो भी इस कार्य को करेगा वह निःसंदेह सीधे मार्ग से भटक जायेगा।[4]

गये एवं उससे वह पत्र ले आये, जो उसने सिर के बालों में छिपा रखा था। आप ने आदरणीय हातिब से पूछा कि यह तुमने क्या किया। उन्होंने कहा कि यह काम मैंने कुफ़्र तथा इस्लाम धर्म से फिर जाने के लिए नहीं किया। बल्कि इसका कारण केवल यह है कि अन्य मुहाजिरों के संबन्धी मक्का में हैं जो उनके बाल-बच्चों की रक्षा करते हैं। मेरा वहाँ कोई सम्बम्धी नहीं हैं तो मैंने सोचा कि मक्का वालों को सूचित कर दूँ, ताकि वह मेरे आभारी रहें तथा मेरे बच्चों की रक्षा करें। आपने उनकी सच्चाई के कारण उन्हें कुछ नहीं कहा। फिर भी अल्लाह ने चेतावनी के रूप में यह आयतें उतारीं ताकि भविष्य में कोई मुसलमान किसी काफ़िर के साथ ऐसा मैत्री सम्बन्ध स्थापित न करे। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर *सूरतिल मुम्तहिन:*, मुस्लिम किताबु फ़ज़ायेलिस सहाबा)

[1]अर्थ यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सूचना उन तक पहुँचाकर उनसे मैत्री सम्बन्ध स्थापित करना चाहते हो ?

[2]जब उनका तुम्हारे साथ तथा सत्य के साथ यह व्यवहार है तो तुम्हारे लिये क्या यह उचित है कि तुम उनसे प्रेम तथा सहानुभूति का व्यवहार करो ?

[3]यह शर्त के लुप्त उत्तर का अनुवाद है।

[4]अर्थात मेरे और अपने शत्रुओं से प्रेम का नाता जोड़ना और उन्हें गुप्त रूप से पत्र एवं संदेश भेजना पथभ्रष्टता का मार्ग है, जो किसी भी मुसलमान की मर्यादा के अनुरूप नहीं।

The Ummah Technology Mission

إِن يَثْقَفُوكُمْ يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَيَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَلْسِنَتَهُم بِالسُّوءِ وَوَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ ﴿٢﴾

(२) यदि वे तुम पर कहीं क़ाबू पा लें तो वे तुम्हारे (खुले) शत्रु हो जायें तथा बुराई के साथ तुम पर हाथ उठाने लगें तथा अपशब्द कहने लगें तथा (दिल से) चाहने लगें कि तुम भी कुफ़्र करने लगो।[1]

لَن تَنفَعَكُمْ أَرْحَامُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٣﴾

(३) तुम्हारी नातेदारियाँ (एवं सम्बन्ध) तथा संतान तुम्हें क़यामत (प्रलय) के दिन काम न आयेंगे[2] अल्लाह (तआला) तुम्हारे मध्य निर्णय कर देगा[3] तथा तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अल्लाह भली-भाँति देख रहा है।

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ ۚ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَآءُ

(४) (मुसलमानो !) तुम्हारे लिए (आदरणीय) इब्राहीम में तथा उनके साथियों में अति उत्तम नमूना है,[4] जबकि उन सबने अपने समुदाय से स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि हम

---

[1]अर्थात तुम्हारे विरोध में उनके दिलों में तो इस प्रकार बैर है और तुम हो कि उनके साथ प्रेम की पींगें बढ़ा रहे हो।

[2]अर्थात जिस संतान के लिए तुम काफ़िरों के साथ प्रेम दिखाते हो, यह तुम्हारे कुछ काम नहीं आयेगी, फिर उसके कारण तुम काफ़िरों से मित्रता करके क्यों अल्लाह को अप्रसन्न करते हो ? क़यामत के दिन जो चीज़ काम आयेगी वह तो अल्लाह तथा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आज्ञापालन है, इसका प्रबन्ध करो।

[3]दूसरा अर्थ है तुम्हारे बीच जुदाई डाल देगा, अर्थात आज्ञाकारियों को स्वर्ग में तथा अवज्ञाकारियों को नरक में ले जायेगा। कुछ कहते हैं कि आपस में अलगाव का अभिप्राय है कि एक-दूसरे से भागेंगे, जैसे फ़रमाया :

﴿يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ﴾

"उस दिन आदमी भाई-भाई से भागेंगे।" (सूरः *अबस*-३४)

[4]अर्थात काफ़िरों से मैत्री सम्बन्ध न रखने के विषय के स्पष्टीकरण में आदरणीय इब्राहीम का उदाहरण दिया जा रहा है। أُسْوَةٌ (उस्वा) का अर्थ है ऐसा 'आदर्श' जिसका अनुसरण किया जाये।

The Ummah Technology Mission

مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ز كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا
بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ
وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ
وَحْدَهٗٓ اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ
لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَآ
اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ط
رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا
وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝

तुमसे तथा जिन-जिनकी तुम अल्लाह के अतिरिक्त पूजा करते हो, उन सबसे पूर्णरूप से विमुख हैं ।[1] हम तुम्हारे (विश्वास को) अस्वीकार करते हैं, और जब तक तुम अल्लाह के एक होने पर ईमान न लाओ हममें तुममें हमेशा के लिए कपट एवं बैर उत्पन्न हो गया,[2] परन्तु इब्राहीम की इतनी बात तो अपने पिता से हुई थी कि[3] मैं तुम्हारे लिए क्षमा-याचना अवश्य करूँगा तथा तुम्हारे लिए मुझे अल्लाह के समक्ष कोई अधिकार भी नहीं । हे हमारे प्रभु ! तुझ पर ही हमने भरोसा किया है[4] तथा तेरी ही ओर हम आकर्षित

---

[1]अर्थात शिर्क के कारण से हमारा तथा तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं । अल्लाह के पुजारियों का अल्लाह के अन्य के उपासकों से क्या लगाव ?

[2]अर्थात यह बिलगाव तथा विमुखता उस समय तक रहेगी जब तक तुम कुफ़्र एवं शिर्क को त्याग कर तौहीद (अद्वैत) को न अपना लो । हाँ, जब तुम एक अल्लाह को मानने लगोगे तो फिर यह बैर प्रेम से बदल जायेगा तथा शत्रुता प्रेम भाव में ।

[3]यह एक अनुबन्ध है जो فِي إبراهيم में लुप्त सम्बन्ध से है । अभिप्राय यह है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम का पूरा जीवन एक अनुसरण योग्य नमूना है । हाँ, उनका अपने पिता के लिए क्षमा की प्रार्थना एक ऐसा कर्म है जिसमें उनका अनुसरण नहीं करना चाहिए, क्योंकि उनका यह कर्म उस समय का है जब उनको अपने पिता के विषय में ज्ञान नहीं था, परन्तु जब उन पर स्पष्ट हो गया कि वह (पिता) अल्लाह का शत्रु है तो उन्होंने अपने पिता से भी विमुखता व्यक्त कर दी, जैसाकि *सूरः बराअत* ११४ में है । (*सूरः बराअत, सूरह तौबा* को कहा जाता है)

[4]توكل (भरोसा) का अर्थ है, यथासंभव प्रत्यक्ष संसाधनों को अपनाने के पश्चात मामला अल्लाह को समर्पित कर दिया जाये । यह अर्थ नहीं कि संसाधनों को अपनाये बिना ही अल्लाह पर भरोसा दिखाया जाये । इससे हमको रोका गया है । एक व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ तथा ऊँट को बाहर खड़ा करके भीतर आ गया । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा तो कहा कि मैं ऊँट अल्लाह को समर्पित करके आया हूँ । आपने फ़रमाया कि यह भरोसा नहीं । اعْقِلْ وَ تَوَكَّلْ "पहले

The Ummah Technology Mission

होते हैं तथा तेरी ही ओर फिर आना है।

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٥

(५) हे हमारे प्रभु ! तू हमें काफ़िरों की परीक्षा में न डाल[1] तथा हे हमारे प्रभु ! हमारी त्रुटियों को क्षमा कर, नि:संदेह तू ही प्रभावशाली एवं हिक्मत वाला है।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝٦ ع

(६) नि:संदेह तुम्हारे लिए उनमें[2] उत्तम आदर्श (तथा श्रेष्ठ अनुसरण है विशेषकर) प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह तथा क़यामत (प्रलय) के दिन की मुलाक़ात पर विश्वास रखता हो,[3] तथा यदि कोई विमुख हो जाये[4] तो अल्लाह (तआला) पूर्ण रूप से निस्पृह है तथा बड़ाई एवं प्रशंसा के योग्य है।

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ۭ

(७) क्या आश्चर्य कि निकट ही अल्लाह (तआला) तुममें तथा तुम्हारे शत्रुओं में प्रेम उत्पन्न कर दे,[5] अल्लाह (तआला) को सभी

उसे बाँध फिर अल्लाह पर भरोसा कर।" (तिर्मिज़ी) إنابة (इनाबः) का अर्थ है अल्लाह की ओर ध्यान करना।

[1]अर्थात काफ़िरों को हम पर प्रभुत्व तथा अधिपत्य प्रदान न कर, ऐसे वह सोचेंगे कि वह सत्य पर हैं तथा इस प्रकार हम उनके लिए परीक्षा बन जायेंगे। अथवा अभिप्राय यह है कि उनके हाथों या अपनी ओर से हमें कोई यातना न दें, ऐसे भी हमारा अस्तित्व उनके लिए परीक्षा बन जायेगा। वह कहेंगे कि यदि यह सत्य पर होते तो उनको यह दुख क्यों पहुँचता ?

[2]अर्थात इब्राहीम अलैहिस्सलाम तथा उनके ईमान वाले साथियों में। यह पुनरावृत्ति बल देने के लिये है।

[3]क्योंकि ऐसे ही लोग अल्लाह तथा अख़िरत की यातना से डरते हैं। यही लोग स्थितियों तथा घटनाओं से शिक्षा ग्रहण करते हैं।

[4]अर्थात आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम के आदर्श को अपनाने से भागे।

[5]अर्थात उन्हें मुसलमान बनाकर तुम्हारा भाई तथा साथी बना दे, जिससे तुम्हारे बीच की

The Ummah Technology Mission

وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

सामर्थ्य हैं तथा अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील अत्यन्त दयालु है।

لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝

(८) जिन लोगों ने तुमसे धर्म के विषय में युद्ध नहीं किया[1] तथा तुम्हें देश से नहीं निकाला,[2] उनके साथ उत्तम व्यवहार एवं उपकार करने तथा न्याय पूर्ण व्यवहार करने से अल्लाह (तआला) तुम्हें नहीं रोकता।[3] (अपितु) नि:सन्देह अल्लाह (तआला) तो न्याय करने वालों से प्रेम करता है।[4]

शत्रुता मैत्री तथा प्रेम में बदल जायेगी। तथा ऐसा ही हुआ, मक्का विजय के बाद लोग गिरोहों में मुसलमान होना आरम्भ हो गये तथा उनके मुसलमान होते ही घृणायें प्रेम में बदल गईं, जो मुसलमानों के रक्त के प्यासे थे वह हाथ पाँव बन गये।

[1]यह उन काफ़िरों के संबन्ध में निर्देश दिये जा रहे हैं, जो मुसलमानों से केवल इस्लाम धर्म के कारण रोष तथा शत्रुता नहीं रखते तथा इस आधार पर मुसलमानों से नहीं लड़ते, यह पहली शर्त है।

[2]अर्थात तुम्हारे साथ ऐसी नीति भी नहीं अपनाई कि तुम हिजरत (प्रवास) पर बाध्य हो जाओ। यह दूसरी शर्त है। एक तीसरी शर्त यह है जो अगली आयत से स्पष्ट होती है कि वे मुसलमानों के विरूद्ध दूसरे काफ़िरों को किसी प्रकार की सहायता न पहुँचायें, विचार-विमर्श से और न हथियारों आदि से।

[3]अर्थात ऐसे काफ़िरों से उपकार तथा न्याय का व्यवहार निषेध नहीं है जैसे आदरणीया अस्मा पुत्री अबू बक्र सिद्दीक़ ने अपनी मुशरिक माँ के संदर्भ में नाता जोड़ने अर्थात सदव्यवहार करने के बारे में पूछा तो आपने फ़रमाया صِلِي أُمَّكِ "अपनी माँ के साथ उपकार करो।" (सहीह मुस्लिम, किताबुज़ ज़कात, बाबु फ़ज़लिन नफ़क़ते वस् सदक़ते अलल अकरबीन तथा बुख़ारी, किताबुल अदब, बाबु सिलतिल वालेदिल मुशरिक)

[4]इसमें न्याय करने का प्रलोभन (प्रोत्साहन) है यहाँ तक कि काफ़िरों के साथ भी। हदीस में न्याय करने वालों की प्रतिष्ठा इस प्रकार वर्णन की गई है।

«إِنَّ الْمُقْسِطِينَ عِنْدَ اللهِ، عَلَىٰ مَنَابِرَ مِنْ نُورٍ، عَنْ يَمِينِ الرَّحْمٰنِ عَزَّ وَجَلَّ - وَكِلْتَا يَدَيهِ يَمِينٌ - الَّذِينَ يَعْدِلُونَ فِي حُكْمِهِمْ وَأَهْلِيهِمْ، وَمَا وَلُوا».

"न्यायकारी प्रकाश के मंच पर होंगे जो रहमान (दयानिधि) के दायीं ओर होंगे, तथा रहमान के दोनों हाथ दायें हैं, जो अपने निर्णय में, अपने परिवाद में तथा

The Quran Technology Mission

إِنَّمَا يَنْهٰكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا عَلٰٓى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٩

(९) अल्लाह (तआला) तुम्हें केवल उन लोगों से प्रेम करने से रोकता है, जिन्होंने तुमसे धर्म के विषय में युद्ध किया तथा तुम्हें देश से निकाला एवं देश से निष्कासित करने वालों की सहायता की, जो लोग ऐसे काफ़िरों से प्रेम करें[1] वही (निश्चित रूप से) अत्याचारी हैं।[2]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ؕ

(१०) हे ईमानवालो ! जब तुम्हारे पास मुसलमान महिलायें स्थानान्तरण करके आयें तो तुम उनकी परीक्षा ले लिया करो।[3] वास्तव

अपनी प्रजा में न्याय का प्रबन्ध करते हैं।" (सही मुस्लिम, किताबुल इमार:, बाबु फ़ज़ीलतिल इमामिल आदिल)

[1]अर्थात अल्लाह के निर्देश एवं प्रभु के आदेश से मुँह फेर कर।

[2]क्योंकि उन्होंने ऐसे लोगों से प्रेम किया है जो प्रेम के योग्य नहीं थे, तथा यूँ उन्होंने अपने प्राणों पर अत्याचार किया कि उन्हें अल्लाह के प्रकोप के लिए प्रस्तुत कर दिया। दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿ لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ أَوْلِيَاءَ ۘ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴾

"तुम यहूदी एवं इसाई को मित्र न बनाओ ये तो परस्पर ही एक-दूसरे के मित्र हैं। तुम में जो भी उनमें से किसी से मित्रता करे वह नि:सन्देह उन्ही में से है। अत्याचारियों को अल्लाह तआला कदापि सन्मार्ग नहीं दिखाता।" (अल-मायेद:-५१)

[3]हुदैविया संधि का एक खंड यह था कि मक्का से कोई मुसलमानों के पास चला जायेगा तो उसे वापस करना पड़ेगा, किन्तु उसमें स्त्री-पुरूष का स्पष्टीकरण नहीं था। प्रत्यक्ष रूप से أَحَدٌ (कोई) में दोनों सम्मिलित थे। कुछ महिलायें बाद में मक्का से प्रस्थान करके मदीने आ गयीं तो काफ़िरों ने उनकी वापसी की माँग की, जिस पर अल्लाह ने यह आयत मुसलमानों के निर्देशन के लिए उतारी तथा यह आदेश दिया। परीक्षा लेने का अभिप्राय है इस बात की खोज करो कि हिजरत करके जो महिलायें आई हैं तथा ईमान व्यक्त कर रही हैं, अपने काफ़िर पति से अप्रसन्न होकर अथवा किसी मुसलमान के प्रेम में अथवा कसी अन्य उद्देश्य से तो नहीं आई हैं तथा केवल यहाँ शरण लेने के लिए तो ईमान का दावा नहीं कर रही हैं।

The Ummah Technology Mission

اللّٰهُ اَعۡلَمُ بِاِيۡمَانِهِنَّ ۚ فَاِنۡ عَلِمۡتُمُوۡهُنَّ
مُؤۡمِنٰتٍ فَلَا تَرۡجِعُوۡهُنَّ اِلَى الۡكُفَّارِ ؕ
لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمۡ وَلَا هُمۡ يَحِلُّوۡنَ
لَهُنَّ ؕ وَاٰتُوۡهُمۡ مَّاۤ اَنۡفَقُوۡا ؕ
وَلَا جُنَاحَ عَلَيۡكُمۡ اَنۡ تَنۡكِحُوۡهُنَّ
اِذَاۤ اٰتَيۡتُمُوۡهُنَّ اُجُوۡرَهُنَّ ؕ
وَلَا تُمۡسِكُوۡا بِعِصَمِ الۡكَوَافِرِ وَسۡـَٔلُوۡا
مَاۤ اَنۡفَقۡتُمۡ وَلۡيَسۡـَٔلُوۡا مَاۤ اَنۡفَقُوۡا ؕ
ذٰلِكُمۡ حُكۡمُ اللّٰهِ ؕ يَحۡكُمُ بَيۡنَكُمۡ ؕ
وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ۝١٠

में उनके ईमान को भली-भाँति जानने वाला तो अल्लाह ही है, परन्तु यदि वे तुम्हें ईमानवाली प्रतीत हों[1] तो अब तुम उन्हें काफ़िरों की ओर वापस न करो, यह उनके लिए हलाल (वैध) नहीं तथा न वे इनके लिए हलाल (वैध) हैं,[2] तथा जो ख़र्च उन काफ़िरों का हुआ हो वह उन्हें अदा कर दो,[3] उन महिलाओं को उनकी महर देकर उनसे विवाह कर लेने में तुम पर कोई पाप नहीं,[4] तथा काफ़िर महिलाओं के विवाह बन्धन को अपने अधीन में न रखो[5] तथा जो कुछ तुमने

---

[1]अर्थात तुम अपनी खोज से इस परिणाम तक पहुँचो तथा तुम्हें अनुमान हो जाये कि यह वास्तव में ईमान रखती हैं।

[2]यह उन्हें उनके काफ़िर पतियों के पास वापस न भेजने का कारण है कि अब कोई मुसलमान महिला किसी काफ़िर के लिए वैध नहीं, जैसाकि इस्लाम के आरम्भ में यह वैध न था, जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पुत्री आदरणीय ज़ैनब का विवाह अबुल आस बिन रबीअ के साथ हुआ था, जबकि वह मुसलमान नहीं थे। किन्तु इस आयत ने भविष्य में ऐसा करने से रोक दिया। इसलिए यहाँ कहा गया कि एक-दूसरे के लिए वैध नहीं, इसलिए उन्हें काफ़िरों को वापस न करो। हाँ, यदि पति भी मुसलमान हो जाये तो विवाह यथावत रह जायेगा, चाहे पति हिजरत करके पत्नी के बाद आये।

[3]अर्थात उनके काफ़िर पतियों ने जो महर (स्त्रीधन) उन्हें दिया है वह तुम उनको दे दो।

[4]यह मुसलमानों से कहा जा रहा है कि यह महिलायें जो ईमान के लिए अपने पतियों को छोड़कर तुम्हारे पास आ गई हैं, तुम उनसे विवाह कर सकते हो, प्रतिबंध यह है कि उनकी महर उन्हें दे दो, किन्तु यह विवाह सुन्नत के अनुसार ही होगा, अर्थात एक तो इद्दत पूरी हो जाने (गर्भाशय की स्वच्छता) के बाद होगा, दूसरे उसमें वली (संरक्षक) की अनुमति तथा दो न्यायी गवाहों की उपस्थिति भी अनिवार्य है। हाँ, यदि स्त्री से पति ने सहवास नहीं किया है तो फिर बिना अवधि तुरन्त विवाह भी वैध है।

[5]عِصَم (एसम) عِصْمَة (इस्मत) का बहुवचन है। यहाँ इससे अभिप्राय विवाह बंधन है। अर्थ यह है कि यदि पति मुसलमान हो जाये तथा पत्नी यथावत काफ़िर एवं मुशरिक रहे तो

The Ummah Technology Mission

ख़र्च किया हो[1] माँग लो, तथा जो कुछ उन काफ़िरों ने ख़र्च किया हो, वह भी माग लें,[2] यह अल्लाह का निर्णय है जो तुम्हारे मध्य कर रहा है,[3] और अल्लाह (तआला) सर्वज्ञ (एवं) हिक्मत वाला है।

وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَآتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُم مِّثْلَ

(११) तथा यदि तुम्हारी कोई पत्नी तुम्हारे हाथ से निकल जाये तथा काफ़िरों के पास चली जाये, फिर तुम्हें बदले का समय मिल जाये[4] तो जिनकी पत्नियाँ चली गयी हैं उन्हें

पत्नी को अपने विवाह में रखना वैध नहीं है। उसे तुरन्त तलाक़ देकर अपने से अलग कर दिया जाये। तथा इस आदेश के पश्चात आदरणीय उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अपनी दो मुश्रिक पत्नियों को तथा आदरणीय तलहा पुत्र उबैदुल्लाह ने अपनी पत्नी को तलाक़ दे दिया। (इब्ने कसीर) हाँ, यदि पत्नी किताबिया (यहूदी और ईसाई) हो तो उसे तलाक़ देना आवश्यक नहीं है, क्योंकि उनसे विवाह उचित (वैध) है। इसलिए यदि वह पहले ही से पत्नी के रूप में तुम्हारे पास है तो इस्लाम स्वीकार करने के बाद उसे अलग करने की आवश्यकता नहीं है।

[1]अर्थात उन महिलाओं पर जो कुफ़्र पर स्थिर रहने के कारण काफ़िरों के पास चली गई हैं।

[2]अर्थात उन महिलाओं पर जो मुसलमान होकर हिजरत करके मदीने आ गयी हैं।

[3]अर्थात यह उपरोक्त आदेश कि दोनों एक-दूसरे की महर का धन अदा करें बल्कि माँग कर लें, अल्लाह का आदेश है। इमाम कुर्तुबी फ़रमाते हैं कि यह आदेश उस युग के साथ ही विशेष था। इस पर मुसलमानों का इज़्माअ (सहमति) है। (फ़तहुल क़दीर) इसका कारण वह समझौता है जो दोनों पक्षों के बीच हुआ था। इस प्रकार का समझौता होने की दशा में भविष्य में भी तदानुसार काम करना अनिवार्य होगा, अन्यथा नहीं।

[4]فَعَاقَبْتُمْ (तो तुम यातना दो अथवा बदला दो) का एक भावार्थ यह है कि मुसलमान होकर आने वाली महिलाओं के महर का अधिकार, जो तुम्हें उनके काफ़िर पतियों को अदा करने थे, वह तुम उन मुसलमानों को दे दो जिनकी पत्नियाँ काफ़िर होने के कारण काफ़िरों के पास चली गयी हैं तथा उन्होंने मुसलमानों को महर अदा नहीं किया। (अर्थात यह भी दण्ड का एक रूप है) दूसरा भावार्थ यह है कि तुम काफ़िरों से जिहाद करो तथा ग़नीमत (परिहार) का माल प्राप्त हो उसमें विभाजन से पहले उन मुसलमानों

The Ummah Technology Mission

مَآ اَنْفَقُوْا ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝١١

उनके ख़र्च के समान अदा कर दो, तथा उस अल्लाह से डरते रहो जिस पर तुम ईमान रखते हो।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ وَلَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ؕ

(१२) हे रसूल (संदेष्टा) ! जब मुसलमान महिलायें आप से इन बातों पर वचन देने आयें कि वह अल्लाह के साथ किसी को साझीदार नहीं बनायेंगी, चोरी न करेंगी, व्यभिचार न करेंगी, अपनी सन्तान को न मार डालेंगी तथा न कोई ऐसा आक्षेप लगायेंगी जो स्वयं अपने हाथों-पैरों के सामने गढ़ लें तथा किसी पुण्य कार्य में तेरी अवज्ञा न करेंगी, तो आप उनसे वचन ले लिया करें[1]

को दो, जिनकी पत्नियाँ काफ़िर देश (दारूल कुफ़्र) में चली गयी हैं उनके ख़र्च की मात्रा में अदा कर दो। मानो ग़नीमत के माल से मुसलमानों की क्षतिपूर्ति भी दण्ड है। (ऐसरूत्तफ़ासीर तथा इब्ने कसीर) यदि ग़नीमत के माल से भी क्षतिपूर्ति न हो तो बैतुल माल से सहायता की जाये।

[1]यह बैअत (प्रतिज्ञा) उसी समय लेते जब महिलायें हिजरत करके आतीं, जैसाकि सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरह मुम्तहिना में है। इसके अलावा मक्का विजय के दिन भी अपने कुरैश की महिलाओं से बैअत ली बैअत (प्रतिज्ञा) लेते समय आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम केवल मौखिक वचन लेते। किसी महिला के हाथ को स्पर्श नहीं करते। आदरणीया आयशा फ़रमाती हैं कि अल्लाह की सौगन्ध, बैअत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी किसी महिला का हाथ नहीं छुआ। बैअत लेते समय केवल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुख से यह फ़रमाते कि मैंने इन बातों पर तुझ से वचन ले लिया। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर *सूरह मुम्तहिना*) बैअत में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम महिलाओं स यह वचन भी लेते कि वह विलाप नहीं करेंगी, कपड़े फाड़कर नहीं रोयेंगी, सिर के बाल नहीं नोचेंगी, अज्ञानकाल की भाँति शोकालाप नहीं करेंगी। (सहीह बुख़ारी तथा मुस्लिम आदि) इस बैअत में नमाज, रोज़ा (व्रत), हज, ज़कात (अनिवार्य दान) आदि की चर्चा नहीं है, क्योंकि यह धर्म के स्तम्भ तथा इस्लाम के प्रतीक हैं। इसलिए इनके स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं। आपने विशेष रूप से उन बातों की प्रतिज्ञा महिलाओं से ली जो साधारणत: महिलाओं में पाई जाती हैं, ताकि वह धार्मिक कर्तव्यों के पालन के साथ इन चीज़ों से भी बचें। इस से यह भी विदित हुआ कि विद्वानों,

The Ummah Technology Mission

إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢﴾

तथा उनके लिए अल्लाह से क्षमा माँगे, नि:संदेह अल्लाह (तआला) क्षमाशील दयालु है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوا مِنَ الْآخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ﴿١٣﴾

(१३) हे मुसलमानो ! तुम उस समुदाय से मित्रता न रखो, जिन पर अल्लाह का प्रकोप आ चुका है[1] जो आख़िरत से इस प्रकार निराश हो चुके हैं जैसेकि मृत क़ब्र वालों से काफ़िर निराश हैं।[2]

سُورَةُ الصَّفِّ

सूरतुस-सफ़्फ़:-६१

सूर: सफ़्फ़* मदीने में अवतरित हुई, इसमें चौदह आयतें एवं दो रूकुऊ हैं।

उपदेशकों तथा भाषण कर्ताओं को अपना पूरा बल धार्मिक कर्तव्यों पर ही नहीं लगाना चाहिए जो पहले ही से स्पष्ट हैं, अपितु उन रिवाजों तथा परम्पराओं का भी प्रभावशाली ढंग से खण्डन करना चाहिए जो समाज में साधारणत: प्रचलित हैं तथा नमाज़, रोज़ा के पाबंद लोग भी इनसे नहीं बचते।

[1]इससे कुछ ने यहूद, कुछ ने अवसरवादी (मुनाफ़िक़) तथा कुछ ने काफ़िर तात्पर्य लिया है। यह अंतिम बात ही अधिक सही है, क्योंकि इसमें यहूद तथा द्वयवादी भी आ जाते हैं। इसके सिवा सभी काफ़िर ही अल्लाह के प्रकोप के अधिकारी हैं। अत: अभिप्राय यह होगा कि किसी भी काफ़िर से मैत्री सम्बन्ध न रखो, जैसाकि यह विषय क़ुरआन के अनेक स्थानों पर वर्णन किया गया है।

[2]आख़िरत से निराश होने का अर्थ क़यामत की स्थापना से इंकार है। أصحابُ القبور (क़ब्रों में गड़े लोगों) से निराश होने का अभिप्राय यही है कि परलोक में पुन: जीवित नहीं किये जायेंगे। एक दूसरा अर्थ इसका यह किया गया है कि क़ब्रों (समाधियों) में गड़े काफ़िर प्रत्येक भलाई से निराश हो गये, क्योंकि मर कर उन्होंने अपने कुफ़्र का परिणाम देख लिया। अब वह भलाई की क्या आशा कर सकते हैं। (इब्ने जरीर तबरी)

*इस सूर: के अवतरण के कारण में आता है कि कुछ सहाबा (नबी के सहचर) आपस में बातें कर रहे थे कि अल्लाह को जो कर्म सर्वाधिक प्रिय हैं, वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछने चाहिए ताकि तदानुसार कर्म किया जाये, किन्तु आपके पास जाकर पूछने का साहस कोई नहीं कर रहा था। इस पर अल्लाह ने यह सूरह उतारी। (मुसनद अहमद ५\४५२, तिर्मिज़ी तफ़सीर सुरतिस्सफ़्फ़)

The Ummah Technology Mission

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ①

(१) आकाशों एवं धरती की प्रत्येक वस्तु अल्लाह (तआला) की पवित्रता का वर्णन करती है तथा वही प्रभावशाली एवं हिक्मत वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ②

(२) हे ईमानवालो![1] तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं?

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ③

(३) तुम जो करते नहीं, उसका कहना अल्लाह (तआला) को अत्यन्त अप्रिय है।[2]

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ④

(४) नि:संदेह अल्लाह (तआला) उन लोगों को प्रिय रखता है जो उसके मार्ग में पंक्तिबद्ध होकर जिहाद करते हैं, जैसेकि वे सीसा पिलाया हुआ भवन हैं।[3]

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ؕ فَلَمَّا زَاغُوْٓا

(५) तथा (याद करो) जब मूसा ने अपने समुदाय से कहा कि हे मेरे समुदाय के लोगो! तुम मुझे क्यों पीड़ित कर रहे हो जबकि तुम्हें भली-भाँति ज्ञात है कि मैं तुम्हारी ओर

---

[1]यहाँ पुकार यद्यपि सामान्य है किन्तु वास्तव में संबोधन उन मुसलमानों से है जो कह रहे थे कि हमें أَحَبُّ الأَعْمَال (सर्वाधिक प्रिय कर्म) का ज्ञान हो जाये तो उन्हें करें, किन्तु जब उन्हें कुछ प्रिय कर्म बताये गये तो वह शिथिल हो गये। इसमें ऐसे लोगों को फटकारा जा रहा है कि भलाई की बातें जो कहते हो करते क्यों नहीं हो? जो बात मुख से निकालते हो उसे पूरी क्यों नहीं करते? जो मुख से बोलते हो उसका पालन क्यों नहीं करते?

[2]यह इसी पर अधिक बल दिया गया है कि अल्लाह ऐसे लोगों पर अत्याधिक अप्रसन्न होता है।

[3]यह जिहाद का एक अत्यन्त पुण्य कार्य बतलाया गया जो अल्लाह को प्रियकर है।

The Ummah Technology Mission

اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝

अल्लाह का संदेष्टा हूँ,[1] तो जब वे लोग टेढ़े ही रहे तो अल्लाह ने उनके दिलों को और टेढ़ा कर दिया,[2] तथा अल्लाह (तआला) अवज्ञाकारी समुदाय को मार्गदर्शन नहीं देता।

وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَىَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِىْ

(६) तथा जब मरियम के पुत्र ईसा ने कहा कि हे (मेरे समुदाय) इस्राईल की संतान ! मैं तुम सब की ओर अल्लाह का संदेष्टा हूँ, मुझसे पूर्व की पुस्तक तौरात की पुष्टि करने वाला हूँ[3] तथा अपने पश्चात आने वाले एक

---

[1]यह जानते हुए भी कि आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। इस्राईल की संतान उन्हें अपने मुख (बात) से कष्ट देती थी, यहाँ तक कि कुछ शारीरिक दोष उनसे संबन्धित करती थी जबकि वह रोग उनमें नहीं था।

[2]अर्थात ज्ञान होते हुए सत्य से मुँह फेरा तथा सत्य की तुलना में असत्य को, भलाई की तुलना में बुराई को तथा ईमान की तुलना में कुफ़्र को अपनाया, तो अल्लाह ने उसके दण्डस्वरूप उनके दिलों को स्थायी रूप से संमार्ग से फेर दिया, क्योंकि यही अल्लाह की रीति चली आ रही है। कुफ़्र तथा कुमार्ग पर नियमितता एवं निरन्तरता ही दिलों पर मुहर लगने का कारण होती है। फिर अवज्ञा, कुफ़्र तथा अत्याचार उसका स्वभाव एवं आचरण बन जाता है, जिसे कोई बदल नहीं सकता। इसलिए आगे फ़रमाया : "अल्लाह अवज्ञाकारियों को मार्गदर्शन नहीं देता। क्योंकि अल्लाह तआला ऐसे लोगों को अपने नियमानुसार गुमराह कर चुका होता है। अब कौन उसे सत्य मार्ग दिखा सकता है जिसे इस प्रकार अल्लाह ने गुमराह किया हो ?"

[3]ईशदूत ईसा अलैहिस्सलाम की कथा का वर्णन इसलिए किया कि इस्राईल की संतान ने जैसे ईशदूत मूसा अलैहिस्सलाम की अवहेलना की, वैसे ही उन्होंने आदरणीय ईसा का भी इंकार किया। इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिलासा दी जा रही है कि यह यहूद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही के साथ ऐसा नहीं कर रहे हैं, अपितु इनका तो पूरा इतिहास ही ईशदूतों को झुठलाने से पूर्ण है। तौरात की पुष्टि का अभिप्राय यह है कि मैं जो निमन्त्रण दे रहा हूँ वह वही है जो तौरात का भी निमंत्रण है, जो इस बात का प्रमाण है कि जो पैग़म्बर मुझसे पहले तौरात लेकर आये और अब मैं इंजील (ग्रन्थ) लेकर आया हूँ हम दोनों का मूल उद्गम एक ही है। इसलिए तुम जिस प्रकार मूसा, हारून, दाऊद एवं सुलैमान पर ईमान लाये मुझ पर भी ईमान लाओ, इसलिए कि मैं तौरात (ग्रन्थ) की पुष्टि कर रहा हूँ, न कि उसका खंडन।

The Ummah Technology Mission

مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٦

संदेष्टा की शुभसूचना सुनाने वाला हूँ जिनका नाम अहमद है।[1] फिर जब वह उनके समक्ष स्पष्ट निशानियाँ लाये तो वे कहने लगे कि यह तो खुला जादू है।[2]

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰۤى اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٧

(७) तथा उस व्यक्ति से अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह (तआला) पर झूठ गढ़े ?[3] जबकि वह इस्लाम की ओर बुलाया जाता है।[4] तथा अल्लाह ऐसे अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

---

[1]यह आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने पश्चात आने वाले अंतिम ईशदूत आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शुभ सूचना सुनाई। जैसेकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«أَنَا دَعْوَةُ أَبِي إِبْرَاهِيمَ وَبَشَارَةُ عِيسَى - عليه السلام - »

"मैं अपने पिता इब्राहीम की प्रार्थना तथा ईसा की शुभसूचना का चरितार्थ हूँ।" (ऐसरूत्तफ़ासीर)

'अहमद' यह कर्ता से यदि अतिश्योक्ति का रूप हो तो अर्थ होगा अन्य दूसरे लोगों से अल्लाह की अधिक प्रशंसा करने वाला, तथा यदि कर्म कारक से हो तो अर्थ होगा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुणों तथा निपुणताओं के कारण जितनी प्रशंसा आपकी की गई, इतनी किसी की भी नहीं की गई। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात आदरणीय ईसा के प्रस्तुत किये चमत्कारों को जादू कहा, जैसे विगत जातियाँ भी अपने पैग़म्बरों को इसी प्रकार कहती रहीं। कुछ ने इससे तात्पर्य मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लिया है तथा قَالُوا का कर्ता मक्का के काफ़िरों को बनाया है।

[3]अर्थात अल्लाह की संतान बनाये अथवा जो पशु उसने निषेध (हराम) नहीं किये उन्हें निषेध (हराम) किये।

[4]जो सभी धर्मों में उत्तम तथा उच्चतम है, अत: जो ऐसा हो उसे कब यह शोभा देता है कि वह किसी अन्य पर मिथ्यारोपण करे कहाँ कि अल्लाह पर आरोप लगाये ?

The Ummah Technology Mission

يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٨

(८) वे चाहते हैं कि अल्लाह की दिव्य ज्योति को अपनी फूँक से बुझा दें,[1] तथा अल्लाह अपनी दिव्य ज्योति को उच्च पदों तक ले जाने वाला है,[2] चाहे काफ़िर बुरा मानें।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝٩

(९) वही है जिसने अपने रसूल (संदेष्टा) को मार्गदर्शन तथा सत्य धर्म प्रदान करके भेजा ताकि उसे अन्य सभी धर्मों पर प्रभावशाली कर दे,[3] चाहे मूर्तिपूजक अप्रसन्न हों।[4]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝١٠

(१०) हे ईमानवालो ! क्या मैं तुम्हें वह व्यापार बताऊँ[5] जो तुम्हें कष्टदायी यातना से बचा ले ?

تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

(११) अल्लाह (तआला) पर तथा उसके संदेष्टा पर ईमान लाओ तथा अल्लाह के मार्ग में

---

[1]प्रकाश (ज्योति) से अभिप्राय पवित्र क़ुरआन, इस्लाम, मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, तर्क तथा प्रमाण हैं। 'मुँह से बुझा दें का अर्थ वह व्यंग तथा कटाक्ष हैं जो उनके मुखों से निकलते थे।

[2]अर्थात उसे विश्व में प्रसारित करने वाला तथा अन्य धर्मों पर प्रभुत्व प्रदान करने वाला है। तर्कों के आधार पर अथवा भौतिक प्रभुत्व के आधार पर अथवा दोनों प्रकार से।

[3]यह उपरोक्त बात ही पर बल दिया गया है। उसके महत्व के कारण उसे फिर दुहराया गया है।

[4]फिर भी यह निश्चय होकर रहेगा।

[5]इस कर्म (अर्थात ईमान तथा जिहाद) को व्यापार से व्यंजित किया। इसलिए कि इसमें भी इन्हें व्यापार की भाँति लाभ होगा, तथा वह लाभ क्या है ? स्वर्ग में प्रवेश तथा नरक से मुक्ति। इससे बड़ा लाभ और क्या होगा ? इस बात को दूसरे स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया है।

﴿ ۞ إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُم بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ﴾

"अल्लाह ने मोमिनों से उनके प्राणों तथा मालों का सौदा स्वर्ग के बदले में कर लिया है।" (अत्तौबा-१११)

The Ummah Technology Mission

بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١﴾

अपने तन-मन-धन से धर्मयुद्ध करो, यह तुम्हारे लिए सर्वोत्तम है यदि तुममें ज्ञान हो।

يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٢﴾

(१२) (अल्लाह तआला) तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा तथा तुम्हें उन स्वर्गों में पहुँचायेगा जिनके नीचे सरितायें प्रवाहित होंगी तथा (शुद्ध) स्वच्छ घरों में जो "अदन" के स्वर्ग में होंगे, यह बहुत बड़ी सफलता है।

وَأُخْرَىٰ تُحِبُّونَهَا ۖ نَصْرٌ مِّنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ قَرِيبٌ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾

(१३) तथा तुम्हें एक अन्य (उपहार) भी देगा जिसे तुम चाहते हो, वह अल्लाह की सहायता तथा शीघ्र विजय है,[1] और ईमानवालों को शुभ-सूचना दे दो।[2]

---

[1]अर्थात जब तुम उसके मार्ग में लड़ोगे तथा उसके धर्म की सहायता करोगे तो वह भी तुम्हें विजय तथा सहायता प्रदान करेगा।

﴿ إِن تَنصُرُوا اللَّهَ يَنصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ﴾

"अगर तुम अल्लाह (के धर्म) की सहायता करोगे तो वह तुम्हारी सहायता करेगा तथा तुम्हें अटल रखेगा।" (*सूरह मोहम्मद-७*)

﴿ وَلَيَنصُرَنَّ اللَّهُ مَن يَنصُرُهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴾

"जो अल्लाह की सहायता करेगा अल्लाह भी अवश्य उसकी सहायता करेगा। नि:संदेह अल्लाह तआला बड़ा शक्तिशाली एवं प्रभावशाली है।" (*अल-हज्ज-४०*)

आख़िरत (परलोक) के वरदानों की तुलना में उसे समीप की विजय कहा। तथा इससे अभिप्राय मक्का की विजय है, तथा कुछ ने ईरान तथा रोम के महान राज्यों पर मुसलमानों के प्रभुत्व को इसका चरितार्थ माना है, जो ख़िलाफ़ते राशिदा (ख़लीफ़ा काल) में मुसलमानों को प्राप्त हुआ।

[2]स्वर्ग की भी मरने के पश्चात तथा विजय एवं सहायता की भी संसार में। प्रतिबंध यह है कि ईमान वाले ईमान की अभियाचना पूरी करते रहें।

﴿ وَأَنتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴾

"तथा तुम लोग ही प्रभावशाली रहोगे यदि तुम ईमान वाले रहे।" (*आले इमरान-१३९*)

The Ummah Technology Mission

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ﴿١٤﴾

(१४) हे ईमानवालो ! तुम अल्लाह (तआला) की सहायता करने वाले बन जाओ,[1] जिस प्रकार (आदरणीया) मरियम के पुत्र (आदरणीय) ईसा ने हवारियों (मित्रों) से कहा कि कौन है जो अल्लाह के मार्ग में मेरा सहयोगी बने। (उनके) मित्रों ने कहा कि हम अल्लाह के मार्ग में सहायक हैं,[2] तो इस्राईल की संतान में से एक गुट तो ईमान लाया तथा एक गुट ने कुफ़्र किया[3] तो हमने ईमानवालों की उनके

---

[1]सभी स्थितियों में अपने वचनों तथा कर्मों के द्वारा भी तथा धन एवं प्राण के द्वारा भी। जब भी, जिस समय भी तथा जिस स्थिति में भी अल्लाह तथा उसका रसूल अपने धर्म की सहायता के लिए पुकारे तुम तुरन्त उनकी पुकार पर कहो कि हम उपस्थित हैं, जैसे हवारियों ने ईसा की पुकार पर कहा।

[2]अर्थात हम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस धर्म के आमन्त्रण तथा प्रचार में सहायक हैं, जिसके प्रचार-प्रसार का आदेश अल्लाह ने आपको दिया है। इसी प्रकार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज के दिनों में फ़रमाते कि "कौन है जो मुझे शरण दे ताकि मैं लोगों तक अल्लाह का संदेश पहुँचा सकूँ। इसलिए कि कुरैश मुझे संदेश पहुँचाने का दायित्व पूरा करने नहीं देते" यहाँ तक कि मदीने के औस तथा ख़ज़रज क़बीलों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पुकार सुन ली। आपके हाथ पर उन्होंने बैअत की तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सहायता का वचन दिया। आप से यह भी कहा कि यदि आप हिजरत (स्थानान्तरण) करके मदीना आ जायें तो हम आप की रक्षा का दायित्व स्वीकार करते हैं। अत: जब आप हिजरत करके मदीना गये तो वचनानुसार उन्होंने आपकी तथा आप के साथियों की भरपूर सहायता की, यहाँ तक कि अल्लाह तथा उसके रसूल ने उनका नाम ही "अंसार" (सहायक) रख दिया, तथा अब यह उनका विशेष नाम हो गया है। رضي الله عنهم و أرضاهم (इब्ने कसीर)

[3]यह यहूदी थे जिन्होंने ईसा अलैहिस्सलाम की नबूअत (दूतत्व) का इंकार ही नहीं किया अपितु उन पर तथा उनकी माँ पर लांक्षन (आक्षेप) भी लगाया। कुछ कहते हैं कि यह मतभेद तथा बिखराव उस समय हुआ जब आदरणीय ईसा को आसमान पर उठा लिया गया। एक ने कहा कि ईसा के रूप में अल्लाह (प्रभु) ही धरती पर प्रकट हुआ था (जैसे सनातन धर्म में ईशदूतों को अवतार मानते हैं) अब वह फिर आकाश पर चला गया। यह सम्प्रदाय "याक़ूबिया" कहलाता है। नस्तूरिया सम्प्रदाय ने कहा कि वह अल्लाह के पुत्र थे, पिता ने पुत्र को आकाश पर बुला लिया। तीसरे ने कहा कि वह अल्लाह के भक्त

The Ummah Technology Mission

शत्रुओं की तुलना में सहायता की, तो वे विजयी हो गये।[1]

सूरतुल-जुमुअ:-६२

سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ

सूर: जुमअ:* मदीने में अवतरित हुई, इसमें ग्यारह आयतें तथा दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ①

(१) आकाशों एवं धरती की सभी वस्तु अल्लाह (तआला) की पवित्रता का वर्णन करती हैं, जो अधिपति अत्यन्त पवित्र (है) प्रभावशाली (एवं) हिक्मत वाला है।

هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ

(२) वही है जिसने अशिक्षित लोगों में[2] उन ही में से एक संदेष्टा भेजा, जो उन्हें उसकी आयतें

तथा उसके संदेष्टा थे। यही सम्प्रदाय सही था।

[1]अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेज कर हमने इसी अन्तिम गिरोह की अन्य अनृत गिरोहों के मुक़ाबले में सहायता की। यही सही आस्था वाला समूह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर भी ईमान लाया तथा हमने यूँ उनको प्रमाणों के आधार पर भी सब काफ़िरों पर प्रभुत्व प्रदान किया तथा शक्ति एवं राज्य के आधार पर भी। इस प्रभुत्व का अन्तिम प्रकटन फिर उस समय होगा जब प्रलय के निकट आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम फिर उतरेंगे, जैसाकि इस प्रभुत्व एवं अवतरण का स्पष्टीकरण सहीह हदीसों में निरन्तरता के साथ उद्धृत है।

*नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुमुअ: की नमाज़ में सूर: जुमुअ: तथा मुनाफ़िक़ून पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमुअ:, बाबु मा युकरउ फ़ी सलातिल जुमुअ:) फिर भी इन का जुमुअ: की रात को एशा की नमाज़ में पढ़ना सहीह रिवायत से सिद्ध नहीं। हाँ, एक क्षीण रिवायत में ऐसा आता है। (लिसानुल मीज़ान ले इब्ने हजर तर्जुमा सईद विन सम्माक वि हरब)

[2]اُمِّيّٖنَ (उम्मीईन) से अभिप्राय अरववासी हैं। जिनका बहुसंख्यक अनपढ़ था, उनकी विशेष चर्चा का यह अर्थ नहीं कि आप की रिसालत (संदेश) दूसरों के लिए नहीं थी, क्योंकि प्रथम संबोधित वही थे, अत: अल्लाह का उन पर अधिक अनुग्रह था।

The Ummah Technology Mission

وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۙ﴿٢﴾

पढ़कर सुनाता है तथा उनको शुद्ध करता है और उन्हें किताब एवं ज्ञान सिखाता है। नि:संदेह ये उससे पूर्व स्पष्ट भटकावे में थे।

وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣﴾

(३) तथा अन्यों के लिए भी उन्हीं में से जो अब तक उनसे नहीं मिले,[1] तथा वही प्रभावशाली (एवं) हिक्मत वाला है।

ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٤﴾

(४) यह अल्लाह की कृपा है[2] जिसे चाहे अपनी कृपा प्रदान करे तथा अल्लाह (तआला) अत्यन्त कृपालु है।

مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ؕ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ

(५) जिन लोगों को तौरात के (अनुसार) कार्य करने का आदेश दिया गया फिर उन्होंने उस पर कार्य नहीं किया, उनका उदाहरण उस गधे जैसा है जो बहुत सी किताब लादे हो।[3]

---

[1]यह उम्मीईन का संयोजक है अर्थात بَعَثَ فِي آخَرِينَ مِنْهُم में यह दूसरे से ईरानी तथा अरब के अलावा अन्य देशों के लोग हैं जो प्रलय तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लायेंगे। इसलिए इसमें ईरानी, रोमी, बरबर, सुडानी, तुर्क, मंगोल, चीनी तथा भारतीय आदि सब आ जाते हैं। अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब के नबी (संदेष्टा) हैं तथा सभी आप पर ईमान लाये और इस्लाम लाने के पश्चात यह भी مِنهُم का चरितार्थ अर्थात प्रथम इस्लाम लाने वाले उम्मीयों में हो गये, क्योंकि समस्त मुसलमान उम्मते वाहिदा (एक समूह) हैं। इसी सर्वनाम के कारण कुछ कहते हैं कि आख़रीन (अन्यों) से अभिप्राय वाद में होने वाले अरबवासी हैं, क्योंकि مِنهُم में सर्वनाम उम्मीईन की ओर फिर रहा है। (फ़तहुल क़दीर)

[2]यह संकेत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुअ़त (ईशदूत होने) की ओर भी हो सकता है तथा उस पर ईमान लाने वालों की ओर भी।

[3]أَسْفَار (अस्फार) سِفْرٌ (सिफ़र) का वहुवचन है। अर्थ है महाग्रंथ। किताब जब पढ़ी जाती है तो इंसान उसके अर्थों में यात्रा करता है। अत: किताब को भी सफ़र (यात्रा) कहा जाता है। (फ़तहुल क़दीर) यह निष्कर्म यहूदियों का उदाहरण दिया गया है कि जिस प्रकार गधे को ज्ञान नहीं होता कि उसके ऊपर जो पुस्तकें लदी हुई हैं उनमें क्या लिखा है ? या उस पर पुस्तकें लदी हैं अथवा कूड़ा-करकट। इसी प्रकार यह यहूदी हैं। यह तौरात तो लिये फिरते हैं, उसे पढ़ने तथा याद करने की वातें भी करते हैं, लेकिन उसे

The Ummah Technology Mission

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥

अल्लाह की बातों को झुठलाने वालों का बहुत बुरा उदाहरण है। तथा अल्लाह ऐसे अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْۤا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٦

(६) कह दीजिए कि ऐ यहूदियो ! यदि तुम्हारा दावा है कि तुम अल्लाह के मित्र हो अन्य लोगों के अतिरिक्त,[1] तो तुम मृत्यु की कामना करो[2] यदि तुम सच्चे हो।[3]

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗۤ اَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٧

(७) यह मृत्यु की कामना कदापि नहीं करेंगे उन कर्मों के कारण जो अपने हाथों अपने पूर्व भेज रखे हैं।[4] तथा अल्लाह (तआला)

समझते हैं न उसके आदेशानुसार कर्म करते हैं, अपितु उसमें फेर-बदल तथा कष्ट कल्पना से काम लेते हैं। इसीलिए वास्तव में यह गधे से भी बुरे हैं, क्योंकि गधा तो पैदाईश से ही समझ-बूझ से खाली होता है, जबकि उनके भीतर समझ-बूझ तो है परन्तु वह उचित रूप से उसका प्रयोग नहीं करते। इसलिए अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ﴾

"यह चौपाये के समान हैं वरन् उनसे भी अधिक विपथ।" (*अल-आराफ़*-१७९)

यही मिसाल उन मुसलमानों की विशेष रूप से विद्वानों की है जो क़ुरआन पढ़ते तथा याद करते हैं तथा उसके अर्थ एवं भावार्थ को समझते हैं, किन्तु उसकी अभियाचना (माँग) पूरी नहीं करते।

[1]जैसे वह कहा करते थे, "हम अल्लाह के पुत्र एवं उसके चहीते हैं" (*अल-मायेदः*-१८) तथा दावा करते थे, "स्वर्ग में केवल वही जायेगा जो यहूदी व इसाई होगा।" (*अल-बक़रः*-१११)

[2]ताकि तुम्हें वह मान-मर्यादा प्राप्त हो जो तुम्हारी कल्पनानुसार तुम्हें प्राप्त होना चाहिए।

[3]क्योंकि जिसे ज्ञान हो कि मरने के पश्चात उसके लिए स्वर्ग है, वह तो वहाँ शीघ्र पहुँचने का इच्छुक होता है। हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने इसकी व्याख्या "दावते मुबाहला" से की है। अर्थात इसमें उनसे कहा गया है कि यदि तुम मोहम्मद के ईशदूत (नबी) होने का इंकार करते हो तथा अल्लाह के प्रिय एवं मित्र होने के अपने दावे में सच्चे हो तो मुसलमानों के साथ मिल कर अल्लाह से प्रार्थना कर लो कि जो हम में झूठा हो उस पर अल्लाह की धिक्कार हो अथवा जो हम दोनों में झूठा हो अल्लाह उसे मौत दे दे। (देखिये *सूरह बक़रः*-९४ की व्याख्या)

[4]अर्थात कुफ़्र एवं अवज्ञा तथा अल्लाह की किताब में जो हेर-फेर तथा परिवर्तन ये करते

The Ummah Technology Mission

अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है।

قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ مُلَاقِيكُمْ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨﴾

(८) कह दीजिए कि जिस मृत्यु से तुम भाग रहे हो वह तो तुम तक अवश्य पहुँचेगी, फिर तुम सब गुप्त तथा स्पष्ट बातों के जानने वाले (अल्लाह) की ओर लौटाये जाओगे तथा फिर वह तुम्हें तुम्हारे किये हुए समस्त कर्मों को बता देगा।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِن يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٩﴾

(९) हे वह लोगो जो ईमान लाये हो ! जुमअ: के दिन (शुक्रवार को) नमाज़ की अज़ान दी जाये तो तुम अल्लाह की याद की ओर शीघ्र आ जाया करो तथा क्रय-विक्रय छोड़ दो।[1] यह तुम्हारे पक्ष में अति उत्तम है यदि तुम जानते हो।

रहे हैं, उनके कारण कभी भी यह मौत की कामना नहीं करेंगे।

[1]यह "अज़ान" कैसे दी जाये तथा इसके शब्द क्या हों ? यह क़ुरआन में कहीं नहीं है। हाँ, हदीस में है, जिससे ज्ञात हुआ कि क़ुरआन बिना हदीस के समझना संभव है न उस पर कार्यरत होना ही। जुमअ: को जुमअ: इसलिए कहते हैं कि उस दिन अल्लाह प्रत्येक सृष्टि को पैदा करके सृजन कार्य से सावकाश हो गया था। ऐसे मानो उस दिन पूरी सृष्टि एकत्र हो गई, अथवा नमाज़ के लिये लोग एकत्र होते हैं। इसी आधार पर कहते हैं। (फ़तहुल क़दीर) فَاسْعَوْا का अर्थ यह नहीं कि दौड़कर आओ, अपितु यह है कि आज़ान के बाद तुरन्त आ जाओ तथा कारोबार बंद कर दो, क्योंकि नमाज़ के लिए दौड़कर आना निषेध है। शान्ति तथा मर्यादा के साथ आने पर बल दिया गया है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान तथा मुस्लिम, किताबुल मसाजिद) अज़ान से दूसरी अज़ान तात्पर्य है, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में केवल एक ही अज़ान होती थी जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिम्बर पर आते थे। (फ़तहुल क़दीर) इसलिए एक अज़ान पर ही बस करना उत्तम है। कुछ लोगों ने ذَرُوا الْبَيْعَ (क्रय-विक्रय छोड़ दो) से यह तर्क निकाला है कि जुमअ: मात्र नगरों में फ़र्ज़ (अनिवार्य) है, देहातियों पर जुमअ: नहीं, क्योंकि व्यापार तथा क्रय-विक्रय नगरों ही में होता है, देहातों में नहीं। जबकि संसार का कोई गाँव ऐसा नहीं जहाँ क्रय-विक्रय न होता हो। अत: यह दावा ही तथ्य के प्रतिकूल है। दूसरे, क्रय-विक्रय तथा व्यापार का अर्थ सांसारिक कारोबार हैं, वह जैसे भी हों, जिस प्रकार के भी हों। अज़ान के पश्चात उन्हें छोड़ दिया जाये। क्या देहातियों के सांसारिक कार्य नहीं होते ? क्या खेती-बाड़ी, व्यवसाय तथा सांसारिक कार्यों से भिन्न चीज़ है ?

The Ummah Technology Mission

فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَوٰةُ فَانتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِن فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٠﴾

(१०) फिर जब नमाज़ हो जाये तो धरती पर फैल जाओ तथा अल्लाह की कृपा को खोजो,[1] तथा अल्लाह का अत्याधिक वर्णन करो ताकि तुम सफलता प्राप्त कर लो।

وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انفَضُّوا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ قَائِمًا ۚ قُلْ مَا عِندَ اللَّهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۚ وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿١١﴾

(११) तथा जब कोई सौदा बिकता देखें अथवा कोई तमाशा दिखायी पड़ जाये तो उसकी ओर दौड़ जाते हैं तथा आपको खड़ा ही छोड़ देते हैं।[2] (आप) कह दीजिए कि अल्लाह के पास जो कुछ है[3] वह खेल एवं व्यापार से उत्तम है,[4] तथा अल्लाह (तआला) सर्वोत्तम जीविका प्रदान करने वाला है।[5]

---

[1]इससे तात्पर्य कारोबार तथा व्यापार है। अर्थात जुमअ: की नमाज़ पढ़कर फिर अपने काम-धंधे में लग जाओ। उद्देश्य यह बताना है कि जुमअ: के दिन कारोबार बंद रखने की आवश्यकता नहीं। मात्र नमाज़ के समय ऐसा करना आवश्यक है।

[2]एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुमअ: का ख़ुतबा (भाषण) वर्णन कर रहे थे कि एक काफ़िला आ गया, लोगों को पता चला तो ख़ुतबा छोड़कर बाहर क्रय-विक्रय के लिए चले गये कि कहीं विक्रय करने वाली वस्तुयें समाप्त न हो जायें। केवल १२ आदमी मस्जिद में रह गये, जिस पर यह आयत अवतरित हुई (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: जुमअ:, मुस्लिम, किताबुल जुमुअ:) انفضاض का अर्थ है, प्रवृत होना और ध्यान देना, दौड़कर बिखर जाना। यहाँ केवल सर्वनाम व्यापार का वर्णन किया, इसलिए कि जब व्यापार भी वैध और ज़रूरी होने के बावजूद ख़ुतबा के मध्य अमान्य है तो खेल आदि के अमान्य होने में क्या शंका हो सकता है? इसके अतिरिक्त (क़ायेमन) से ज्ञात हुआ कि ख़ुतबये जुमअ: खड़े होकर देना सुन्नत है। जैसाकि हदीस में भी आता है कि आप के दो ख़ुतबे होते थे, जिनके मध्य आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैठते थे क़ुरआन पढ़ते और लोगों को शिक्षा एवं उपदेश (वाज़ो नसीहत) फ़रमाते। (मुस्लिम, किताबुल जुमुअ:)

[3]अर्थात अल्लाह तथा रसूल के अहकाम (आदेश) का पालन किया जाये जो महान पुण्य है।

[4]जिसकी ओर तुम दौड़कर गये और मस्जिद से निकल गये और ख़ुतबये जुमअ: को सुना भी नहीं।

[5]बस उसी से रोज़ी (जीविका) माँगो और आज्ञापालन के द्वारा से उसी की ओर वसीला (माध्यम) पकड़ो। उसकी आज्ञाकारिता (अताअत) और उसकी तरफ़ ध्यान, जीविका प्राप्ति का बहुत बड़ा साधन है।

The Ummah Technology Mission

सूरतुल-मुनाफ़िक़ून-६३

سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ

सूरः मुनाफ़िक़ून मदीने में अवतरित हुई, इसमें ग्यारह आयतें तथा दो रूकऊ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

إِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۝١

(१) तेरे पास जब मुनाफ़िक़ आते हैं तो कहते हैं कि हम इस बात के साक्षी हैं कि नि:संदेह आप अल्लाह के सन्देष्टा हैं,[1] तथा अल्लाह (तआला) जानता है कि आप अवश्य उसके संदेष्टा हैं,[2] तथा अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ निश्चित रूप से झूठे हैं।[3]

اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ إِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٢

(२) उन्होंने अपनी सौगन्धों को ढाल बना रखा है[4] तो अल्लाह के मार्ग से रुक गये।[5] नि:संदेह बुरा है वह कार्य जिसे ये कर रहे हैं।

---

[1]मुनाफ़िक़ून से अभिप्राय अब्दुल्लाह बिन उबैय तथा उसके साथी हैं। ये जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित होते तो कसमें खा-खाकर कहते कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

[2]यह मध्यवर्ती वाक्य है जो पहले के विषय पर बल देने के लिये है, जिसे मुनाफ़िक़ (द्वयवादी) द्वयवाद (निफ़ाक़) स्वरूप व्यक्त करते थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया : यह तो वैसे ही मुख से बोलते हैं, इनके दिल विश्वास से रिक्त (ख़ाली) हैं,परन्तु हम जानते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वास्तव में अल्लाह के रसूल (संदेष्टा) हैं।

[3]इस बात में कि वह दिल से आपकी रिसालत (दूतत्व) की गवाही देते हैं। अर्थात दिल से गवाही नहीं देते। मात्र ज़ुबान से धोखा देने के लिए कहते हैं।

[4]अर्थात वह सौगंध खाकर जो कहते हैं कि वह तुम्हारी भाँति मुसलमान हैं तथा यह कि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के संदेशवाहक हैं, उन्होंने अपनी इस सौगन्ध को ढाल बना रखा है, जिसके द्वारा वह तुमसे बचे रहते हैं तथा काफ़िरों की भाँति यह तुम्हारी तलवारों की मार पर नहीं आते।

[5]दूसरा अनुवाद यह है कि इन्होंने शंका तथा संदेह पैदा करके अल्लाह के मार्ग से रोका।

The Ummah Technology Mission

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝٣

(३) यह इस कारण से है कि ये ईमान लाकर पुनः काफ़िर हो गये,[1] तो उनके दिलों पर मोहर लगा दी गई। अब ये नहीं समझते।

وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ؕ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ؕ كَاَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ؕ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ؕ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝٤

(४) तथा जब आप उन्हें देख लें तो उनके शरीर आप को आकर्षक प्रतीत हों,[2] और जब ये बातें करने लगें तो उनकी बातों पर आप (अपना) कान लगायें,[3] जैसाकि ये लकड़ियाँ हैं दीवार के सहारे से लगायी हुई,[4] (वे) प्रत्येक (उच्च) ध्वनि को अपने विरूद्ध समझते हैं।[5] वही वास्तविक शत्रु हैं, उनसे बचो। अल्लाह उन्हें नाश करे! कहाँ फिरे जाते हैं।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَرَاَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ۝٥

(५) तथा जब उनसे कहा जाता है कि आओ तुम्हारे लिए अल्लाह के सन्देष्टा क्षमा-याचना करें तो अपने सिर फिरा लेते हैं,[6] तथा आप उन्हें देखेंगे कि वे गर्व करते हुए रूक जाते हैं।[7]

---

[1]इससे ज्ञात हुआ कि अवसरवादी (मुनाफ़िक़) भी स्पष्ट काफ़िर हैं।

[2]अर्थात उनके सौन्दर्य तथा शोभा एवं मनोहरता के कारण।

[3]अर्थात भाषा की स्वच्छता तथा प्रभाव के कारण।

[4]अर्थात अपने आकार-प्रकार तथा शोभा, मनोहरता, निर्बोधता तथा भलाई की कमी में ऐसे हैं जैसे दीवार पर लगाई लकड़ियाँ हों, जो देखने में तो भली लगती हैं किन्तु किसी को लाभ नहीं पहुँचा सकतीं। अथवा यह विधेय है तथा इसका विषय लुप्त है और अभिप्राय यह है कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सभा में ऐसे बैठते हैं जैसे दीवार से लगी लकड़ियाँ हैं, जो कोई बात समझती हैं न जानती हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[5]अर्थात ऐसे कायर हैं कि कोई उच्च स्वर सुन लें तो समझते हैं कि हम पर कोई आपदा उतर गई है अथवा घबरा उठते हैं कि हमारे विरूद्ध कोई कार्यवाही तो नहीं आरम्भ हो रही है, जैसे चोर तथा विश्वासघाती (बद्दयानत) का दिल भीतर से धक-धक करता है।

[6]अर्थात क्षमा माँगने से मुँह फेरते हुए अपने सिरों को घूमा लेते हैं।

[7]अर्थात कहने वाले की बात से मुँह मोड़ लेंगे अथवा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

The Ummah Technology Mission

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٦

(६) उनके पक्ष में आपका क्षमा की प्रार्थना करना तथा न करना दोनों समान है,[1] अल्लाह (तआला) उनको कदापि क्षमा न करेगा।[2] नि:संदेह अल्लाह (तआला ऐसे) अवज्ञाकारियों को मार्ग नहीं दिखाता।

هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ؕ وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ

(७) यही वे हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के संदेष्टा के पास हैं, उन पर कुछ ख़र्च न करो, यहाँ तक कि वे इधर-उधर हो जायें,[3] और आकाशों तथा धरती के समस्त कोष अल्लाह ही का स्वामित्व है[4] परन्तु ये

वसल्लम से मुँह फेर लेंगे।

[1]अपने निफ़ाक़ (अवसरवाद) पर दुराग्रह तथा कुफ़्र पर निरन्तरता के कारण वह ऐसे स्थान पर पहुँच गये हैं जहाँ उनके लिए क्षमा-याचना करना तथा न करना दोनों बराबर है।

[2]यदि इसी निफ़ाक़ की दशा में मर गये तो उनके लिए क्षमा नहीं। हाँ, यदि वह जीवन में कुफ़्र तथा निफ़ाक़ से तौबा (प्रायश्चित) कर लें तो और बात है, फिर उनके लिए क्षमा संभव है।

[3]एक ग़ज़वे (युद्ध) में जिसे इतिहासकारों ने मरीसीअ अथवा बनुल मुस्तलिक कहा है) एक मुहाजिर तथा एक अंसार के बीच झगड़ा हो गया। दोनों ने अपनी-अपनी सहायता के लिए अंसार तथा मुहाजिरीन को पुकारा, जिस पर अब्दुल्लाह बिन उबैय (मुनाफ़िक़) ने अंसार से कहा कि तुमने मुहाजिरों की सहायता की तथा उनको अपने साथ रखा, अब देख लो कि इसका परिणाम आगे आ रहा है, अर्थात अब यह तुम्हारा खाकर तुम पर गुर्रा रहे हैं। उनका उपचार तो यह है कि उन पर ख़र्च करना बंद कर दो, यह अपने-आप तितर-बितर हो जायेंगे। उसने यह भी कहा कि हम (जो सम्मानित हैं) इन अपमानितों (मुहाजिरों) को मदीने से निकाल देंगे। आदरणीय ज़ैद पुत्र अरकम रज़ि अल्लाहु अन्हु ने यह अपशब्द सुन लिये तथा उन्होंने आकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बतलाया। आपने अब्दुल्लाह बिन उबैय को बुलाकर पूछा तो उसने साफ इंकार कर दिया जिस पर ज़ैद बिन अरक़म को बड़ा दुख हुआ। अल्लाह ने ज़ैद बिन अरक़म की सच्चाई को व्यक्त करने हेतु "सूरह मुनाफ़िक़ून" उतार दी जिसमें अब्दुल्लाह बिन उबैय के दुष्कर्म को पूर्णत: उछाला गया। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरह *मुनाफ़िक़ून*)

[4]अर्थ यह है कि मुहाजिरीन का अन्नदाता परमेश्वर है, इसलिए कि जीविका के कोष उसी के पास हैं। वह जिसे जितना चाहे दे तथा जिससे चाहे रोक ले।

The Ummah Technology Mission

لَا يَفْقَهُوْنَ ۝٧

मुनाफ़िक़ समझते नहीं।[1]

يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٨

(८) ये कहते हैं कि यदि हम अब लौटकर मदीने जायेंगे तो सम्मान वाला वहाँ से अपमान वाले को निकाल देगा।[2] (सुनो !) सम्मान तो केवल अल्लाह (तआला) के लिए तथा उसके संदेष्टा के लिए एवं ईमानवालों के लिए है[3] परन्तु ये द्वयवादी (मुनाफ़िक़ीन) जानते नहीं।[4]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ

(९) हे ईमानवालो ! तुम्हारा धन तथा तुम्हारी सन्तान तुम्हें अल्लाह की याद से निश्चिन्त न कर दें।[5] तथा जो ऐसा करें वे बड़े ही हानि

---

[1]मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) इस तथ्य को नहीं जानते, इसलिए वह समझते हैं कि अंसार यदि मुहाजिरीन की ओर सहायतार्थ हाथ न बढ़ायें तो वह भूखे मर जायेंगे।

[2]इसका कहने वाला मुनाफ़िक़ों का प्रमुख अब्दुल्लाह बिन उबैय था। सम्मानित से उसका प्रयोजन था वह स्वयं तथा उसके साथी तथा अपमानित से (अल्लाह की शरण !) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा मुसलमान।

[3]अर्थात सम्मान तथा प्रभुत्व केवल अल्लाह के लिए है, वह अपनी ओर से जिसको चाहे सम्मान तथा प्रभुत्व प्रदान कर दे। जैसे कि वह अपने रसूलों तथा उन पर ईमान लाने वालों को सम्मान तथा सफलतायें प्रदान करता है, न कि उन को जो अवज्ञाकारी हों। यह मुनाफ़िक़ों के कथन का खंडन किया है कि सम्मानों का स्वामी केवल अल्लाह तआला है तथा सम्मानित भी वही है जिसे वह सम्मानित समझे, न कि वह जो स्वयं को सम्मानित अथवा जिसे जगतवासी सम्मानित समझें। अल्लाह के निकट सम्मानित मात्र तथा मात्र ईमानवाले होंगे, काफ़िर तथा मुनाफ़िक़ नहीं।

[4]इसलिए ऐसे कर्म नहीं करते जो उनके लिये लाभप्रद हैं, न उन चीज़ों से बचते हैं जो उनके लिए हानिकारक हैं।

[5]अर्थात माल तथा संतान का प्रेम तुम पर इतना प्रभावी न हो जाये कि तुम अल्लाह के बतलाये हुए आदेशों तथा कर्तव्यों से निश्चिन्त हो जाओ तथा अल्लाह की निर्धारित की हुई हलाल (वैध) तथा हराम (अवैध) की सीमाओं की चिन्ता न करो। मुनाफ़िक़ों की चर्चा के पश्चात तुरन्त इस चेतावनी का आशय यह है कि यह मुनाफ़िक़ों का आचरण है, जो मनुष्य को क्षति में डालने वाला है। ईमानवालों का आचरण इसके विपरीत होता है तथा वह यह है कि वह प्रत्येक क्षण अल्लाह को याद रखते हैं, अर्थात उसके आदेशों

The Ummah Technology Mission

उठाने वाले लोग हैं।

فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ⑨

(१०) तथा जो कुछ हमने तुम्हें प्रदान कर रखा है, उसमें से (हमारे मार्ग में) उससे पूर्व ख़र्च करो[1] कि तुम में से किसी को मृत्यु आ जाये, तो कहने लगे कि हे मेरे प्रभु ! मुझे तू थोड़ी देर की छूट क्यों नहीं देता ?[2] कि मैं दान दूँ तथा सदाचारी लोगों में से हो जाऊँ।

وَأَنفِقُوا مِن مَّا رَزَقْنَاكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ فَأَصَّدَّقَ وَأَكُن مِّنَ الصَّالِحِينَ ⑩

(११) तथा जब किसी का निर्धारित समय आ जाता है फिर उसे अल्लाह (तआला) कदापि अवसर नहीं देता, तथा जो कुछ तुम करते हो, उससे अल्लाह (तआला) भली-भाँति अवगत है।

وَلَن يُؤَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ⑪

सूरतुत-तग़ाबुन-६४

سُورَةُ التَّغَابُنِ

सूर: तग़ाबुन मदीने में अवतरित हुई तथा इसमें अट्ठारह आयतें एवं दो रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

(१) आकाशों एवं धरती की प्रत्येक वस्तु अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करती हैं,[3] उसी

يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ لَهُ الْمُلْكُ

एवं अनिवार्यताओं का पालन तथा वैध एवं अवैध में अन्तर करते हैं।

[1]ख़र्च करने का अभिप्राय ज़कात देने तथा अन्य अच्छे कार्यों में ख़र्च करना है।

[2]इससे ज्ञात हुआ कि ज़कात (धर्मदान) देने तथा अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने तथा इसी प्रकार यदि हज करने का सामर्थ्य हो तो उसे अदा करने में देर नहीं करनी चाहिए, इसलिए की मौत पता नहीं कब आ जाये तथा यह अनिवार्य कर्तव्य उस के ऊपर रह जायें। मृत्यु के समय कामना करने का कोई लाभ नहीं होगा।

[3]अर्थात आकाश एवं धरती की प्रत्येक वस्तु सभी दोष तथा कमी से अल्लाह की पवित्रता एवं शुद्धता का वर्णन करती है, अपनी स्थिति से भी तथा कथन से भी, जैसाकि पहले गुज़र चुका है।

The Ummah Technology Mission

وَلَهُ الْحَمْدُ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

का राज्य है तथा उसी की प्रशंसा है[1] तथा वह प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्यवान है।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنكُمْ كَافِرٌ وَمِنكُم مُّؤْمِنٌ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ②

(२) उसी ने तुम्हें पैदा किया है, तो तुम में से कुछ तो काफ़िर हैं तथा कुछ ईमानवाले हैं, तथा जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह (तआला) भली-भाँति देख रहा है।[2]

خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۖ

(३) उसी ने आकाशों को तथा धरती को न्याय (औचित्य तथा हिक्मत) से उत्पन्न किया,[3] उसी ने तुम्हारे रूप बनाये[4] और अति

---

[1]अर्थात यह दोनों गुण उसी के साथ विशेष हैं। यदि किसी को कुछ अधिकार प्राप्त है तो वह उसी का प्रदान किया हुआ है, जो सामयिक है, किसी के पास सुन्दरता अथवा निपुणता है तो उसी दया के स्रोत की कृपा का परिणाम है। अत: वास्तविक प्रशंसा का अधिकारी भी केवल वही है।

[2]अर्थात इंसान के लिए पुण्य, पाप, भलाई, बुराई तथा कुफ़्र एवं ईमान के मार्गों को स्पष्ट करने के पश्चात अल्लाह ने इंसान को इच्छा तथा पसन्द का अधिकार दिया, जिसके अनुसार किसी ने कुफ़्र तथा किसी ने ईमान का मार्ग अपनाया है, उसने किसी पर दबाव नहीं डाला। यदि वह दबाव डालता तो कोई कुफ़्र तथा पाप का मार्ग अपनाने पर समर्थ ही नहीं होता। परन्तु इस प्रकार से इंसान की परीक्षा संभव नहीं थी, जबकि अल्लाह की इच्छा इंसान की परीक्षा लेनी थी।

﴿ الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ﴾

"जिसने मृत्यु तथा जीवन को इसलिए पैदा किया कि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में से सत्कर्म कौन करता है।" (*सुरतुल मुल्क*-२)

इस आधार पर जैसे काफ़िर का रचयिता अल्लाह है कुफ़्र भी उसी की रचना है, किन्तु यह कुफ़्र उस काफ़िर का कर्म तथा कमाई है जिसने अपनी इच्छा से उसे अपनाया है, इसी प्रकार मोमिन तथा ईमान का स्रष्टा भी अल्लाह है, परन्तु ईमान उस मोमिन की कमाई तथा कर्म है जिसने उसे अपनाया है। इस कमाई तथा कर्म पर दोनों को उनके कर्मों के अनुसार बदला मिलेगा, क्योंकि वह सबके कर्म देख रहा है।

[3]तथा वह न्याय एवं हिक्मत यही है कि उपकारी को उसका प्रत्युपकार तथा अपकारी को उसका प्रत्यापकार दे, जैसाकि इस न्याय का पूर्ण प्रबंध वह क़यामत के दिन करेगा।

[4]तुम्हारा रूप, आकार-प्रकार तथा आकृति अति सुंदर बनाया जिससे अल्लाह की दूसरी

The Ummah Technology Mission

وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ۝

सुन्दर बनाये तथा उसी की ओर लौटना है।[1]

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

(४) वह आकाशों एवं धरती की समस्त वस्तुओं का ज्ञान रखता है तथा जो कुछ तुम गुप्त रखो तथा जो प्रकट करो वह (सबको) जानता है। अल्लाह तो सीनों तक की बातों को जानने वाला है।[2]

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَبْلُ فَذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

(५) क्या तुम्हारे पास इससे पूर्व के काफ़िरों की सूचना नहीं पहुँची, जिन्होंने अपने कर्मों के परिणाम का स्वाद चख लिया[3] तथा जिनके लिए कष्टदायी यातना है?[4]

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُ كَانَت تَّأْتِيهِمْ

(६) यह इसलिए कि उनके[5] पास उनके संदेष्टा

सृष्टि वंचित है, जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿ يَا أَيُّهَا الْإِنسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ * الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ * فِي أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ﴾

"हे मनुष्यो ! तुझे अपने कृपाशील प्रभु से किस वस्तु ने बहकाया ? जिस प्रभु ने तुझे जन्म दिया, फिर ठीक-ठाक किया, फिर (सन्तुलित एवं) बराबर बनाया, जिस रूप में चाहा तुझे जोड़ दिया।" (*सूरतुल इंफितार*-६-८)

﴿ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ ﴾

"तथा तुम्हारे रूप बनाये और बहुत सुन्दर बनाये तथा तुम्हें उत्तम (एवं पवित्र) वस्तयें खाने को प्रदान कीं।" (*सूरतुल मोमिन*-६४)

[1]किसी और की ओर नहीं, कि अल्लाह के हिसाब तथा पकड़ से बचाव हो जाये।

[2]अर्थात उसका ज्ञान पृथ्वी तथा आकाश की सृष्टि सभी चीज़ों पर आच्छादित है, अपितु वह अन्तर्यामी है। इससे पहले जो वादे तथा धमकियाँ वर्णित हुई हैं यह उन्हीं पर बल दिया गया है।

[3]यह मक्कावासियों से विशेष रूप से तथा अरब के काफ़िरों से सामान्यत: संबोधन है। पहले काफ़िरों से अभिप्राय नूह की जाति, आद जाति तथा समूद जाति आदि हैं, जिन्हें दुनिया में उनके कुफ़्र तथा अवज्ञा के कारण प्रकोप में डालकर नष्ट-ध्वस्त कर दिया गया।

[4]अर्थात सांसारिक यातना के अतिरिक्त परलोक में।

[5]ذٰلِكَ यह संकेत है उस यातना की ओर जो संसार में उन्हें मिली तथा आख़िरत (परलोक) में भी मिलेगी।

The Ummah Technology Mission

رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ز فَكَفَرُوْا وَ تَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ط وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝٦

स्पष्ट प्रमाण (चमत्कार) लेकर आये तो उन्होंने कह दिया कि क्या मनुष्य हमारा पथप्रदर्शन करेगा ?[1] तो इंकार कर दिया[2] तथा मुख फेर लिया[3] तथा अल्लाह ने भी निश्चिन्तता की,[4] तथा अल्लाह तो है ही अत्याधिक निस्पृह[5] समस्त गुणों वाला।[6]

زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ط قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ط

(७) उन काफ़िरों ने भ्रम किया है कि पुन: जीवित न किये जायेंगे,[7] आप कह दीजिए कि क्यों नहीं, अल्लाह की सौगन्ध ! तुम अवश्य फिर से जीवित किये जाओगे,[8] फिर जो कुछ

---

[1]यह उनके कुफ़्र का कारण है कि उन्होंने यह कुफ़्र, जो दोनों लोक में उनकी यातना का कारण बना इसलिए अपनाया कि उन्होंने एक मानव पुरूष को अपना मार्गदर्शक मानने से इंकार कर दिया। अर्थात एक इंसान का संदेष्टा बनकर लोगों के मार्गदर्शन तथा पथप्रदर्शन के लिए आना उनके लिए अस्वीकार्य था जैसाकि आज भी बिदअतियों के लिये रसूल को मानव पुरूष मानना अति भारी एवं कठिन है। هَداهُم الله تعالى

[2]जैसाकि इसी आधार पर उन्होंने रसूलों को रसूल मानने तथा उन पर ईमान लाने से इंकार कर दिया।

[3]अर्थात उनसे मुँह फेर लिया तथा जो निमन्त्रण वह देते थे उस पर उन्होंने चिन्तन-मनन ही नहीं किया।

[4]अर्थात उनके ईमान तथा उनकी इबादत (वंदना) से।

[5]उसको किसी की इबादत से क्या लाभ तथा उसकी इबादत से इंकार करने से क्या हानि ?

[6]अथवा महमूद है (प्रशंसित) सभी सृष्टि की ओर से, अर्थात प्रत्येक सृष्टि अपनी स्थिति तथा कथन की ज़ुबान से उसकी प्रशसा में मग्न है।

[7]अर्थात यह आस्था कि क़यामत के दिन पुन: जीवित नहीं किये जायेंगे, यह काफ़िरों का केवल भ्रम है, जिसका कोई प्रमाण नहीं। भ्रम झूठ के लिए भी प्रयुक्त होता है।

[8]पवित्र क़ुरआन के तीन स्थान पर अल्लाह ने अपने रसूल को यह आदेश दिया है कि अल्लाह की शपथ लेकर यह घोषणा करो कि अल्लाह अवश्य पुन: जीवन प्रदान करेगा। उनमें से एक यह स्थान है तथा इससे पहले एक स्थान *सूरह यूनुस* आयत ५३ एवं दूसरा *सूरह सवा* आयत ३ है।

The Ummah Technology Mission

وَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝٧

तुमने किया है उसकी सूचना दिये जाओगे।[1] तथा अल्लाह के लिए यह बहुत ही सरल है।[2]

فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ اَنْزَلْنَا ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝٨

(८) तो तुम अल्लाह पर तथा उसके संदेष्टा पर[3] तथा उस ज्योति पर जिसे हमने अवतरित किया है ईमान लाओ,[4] तथा अल्लाह तआला तुम्हारे हर कर्म से अवगत है।

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ

(९) जिस दिन तुम सबको उस एकत्रित होने के दिन[5] एकत्रित करेगा, वही दिन है पराजय

---

[1]यह क़यामत के होने का रहस्य है कि अन्ततः अल्लाह क्यों सभी इंसानों को पुनः जीवन प्रदान करेगा ? इसलिए ताकि प्रत्येक को उसके कर्म का पूरा प्रतिकार (बदला) दिया जाये, क्योंकि संसार में हम देखते हैं कि यह प्रतिफल साधारणतः पूर्णरूप से नहीं मिलता, अच्छे को न बुरे को। अब यदि क़यामत के दिन भी पूर्ण बदले की व्यवस्था न हो तो संसार एक खेलाड़ी का खेल तथा व्यर्थ कर्म ही माना जायेगा, जबकि अल्लाह ऐसी बातों से अति उच्च (महान) है। उसका कोई कार्य व्यर्थ नहीं कहा कि जिन्नों तथा इंसानों की उत्पत्ति को एक क्रीड़ा समझ लिया जाये।

[2]यह पुनः जीवन इंसानों को कितना ही कठिन लगे, किन्तु अल्लाह के लिए अत्यन्त सरल है।

[3]فَاٰمِنُوْا में 'फ़ा' विवरण (स्पष्ट करने) के लिए है जो लुप्त शर्त का संकेत देती है, अर्थात إذا كان الأمر هكذا فصدقوا بالله अर्थात "जब मामला ऐसा है जो वर्णित हुआ, तो अल्लाह पर तथा उसके रसूल पर ईमान लाओ, उसकी पुष्टि करो।"

[4]आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अवतरित यह क़ुरआन ही प्रकाश है, जिससे गुमराही के अंधकार छटते हैं तथा ईमान का प्रकाश फैलता है।

[5]क़यामत को यौमुल जमअ (एकत्रित होने का दिन) इसलिए कहा कि उस दिन आदि, अंत के सभी लोग एक ही मैदान में एकत्र होंगे। फ़रिश्ता पुकारेगा तो सब उसकी पुकार सुनेंगे। प्रत्येक की दृष्टि अंत तक पहुँच जायेगी, क्योंकि बीच में कोई वस्तु आड़ न बनेगी। जैसे अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ۝ لَمَجْمُوعُونَ إِلَىٰ مِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴾

"आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कह दीजिए कि निःसंदेह सभी अगले तथा पिछले अवश्य एकत्र किये जायेंगे, एक निर्धारित दिन के समय।" (*अल-वाक़िअः* ४९,५०)

The Ummah Technology Mission

يَوْمُ التَّغَابُنِ ۗ وَمَنْ يُّؤْمِنْ
بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ
عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ
ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝٩

तथा विजय का।[1] तथा जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान लाकर सत्कर्म करे अल्लाह उससे उसकी बुराईयाँ दूर कर देगा तथा उसे स्वर्गों में ले जायेगा जिनके नीचे सरितायें प्रवाहित हैं, जिसमें वे हमेशा रहेंगे। यही बहुत बड़ी सफलता है।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝١٠

(१०) तथा जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया वे सभी नरक में जाने वाले हैं, जिसमें वे सदैव रहेंगे, वह बहुत बुरा स्थान है।

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ
اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ
يَهْدِ قَلْبَهٗ ۗ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝١١

(११) कोई आपदा अल्लाह की आज्ञा के बिना नहीं पहुँच सकती।[2] तथा जो अल्लाह पर ईमान लाये अल्लाह उसके हृदय को मार्गदर्शन प्रदान करता है[3] तथा अल्लाह प्रत्येक वस्तु

---

[1]अर्थात एक गिरोह जीत जायेगा तथा एक हार जायेगा। सबसे बड़ी विजय ईमानवालों को यह प्राप्त होगी कि वह स्वर्ग में प्रवेश कर जायेंगे तथा वहाँ उन घरों के भी अधिकारी बन जायेंगे जो नरकवासियों के लिए थे। यदि वह नरक में जाने का कर्म न करते। तथा सबसे बड़ी हार नरकवासियों के भाग में आयेगी जो नरक में जायेंगे, जिन्होंने भले को बुरे से, उत्तम को तुच्छ से एवं वरदानों को यातनाओं से बदल लिया। 'गबन' का अर्थ हानि तथा क्षति भी है अर्थात घाटे का दिन। उस दिन काफ़िरों को तो घाटे का संवेदन होगा ही। ईमानवालों को भी इस आधार पर घाटा अनुभव होगा कि उन्होंने और अधिक पुण्य के कर्म करके अधिक पद क्यों न प्राप्त किये।

[2]अर्थात उसके भाग्य-लेख तथा इच्छा से ही इसकी उत्पत्ति होती है। कुछ कहते हैं कि इसके अवतरित होने का कारण काफ़िरों का यह कथन है कि यदि मुसलमान सत्य पर होते तो उन्हें सांसारिक आपदायें न पहुँचतीं। (फ़तहुल क़दीर)

[3]अर्थात वह जान लेता है कि जो कुछ उसे पहुँचता है अल्लाह के चाहने ही से पहुँचता है, अतः वह धैर्य तथा भाग्य पर प्रसन्नता व्यक्त करता है। इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि उसके दिल में पक्का विश्वास कर देता है जिससे वह जान लेता है कि उसको पहुँचने वाली चीज़ उससे चूक नहीं सकती तथा जो चूक जाने वाली है उसे पहुँच नहीं सकती। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

को भली-भाँति जानने वाला है।

وَ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۲﴾

(१२) (लोगो !) अल्लाह के आदेश का पालन करो तथा संदेष्टा के आदेश का पालन करो। फिर यदि तुम विमुख हुए तो हमारे संदेष्टा का दायित्व केवल स्पष्ट रूप से पहुँचा देना है।[1]

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۳﴾

(१३) अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं तथा ईमानवालो को केवल अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।[2]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَ اَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَ اِنْ تَعْفُوْا وَ تَصْفَحُوْا وَ تَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴﴾

(१४) हे ईमानवालो ! तुम्हारी कुछ पत्नियाँ तथा कुछ सन्तानें तुम्हारे शत्रु हैं।[3] तो उनसे सतर्क रहना[4] तथा यदि तुम क्षमा कर दो तथा छोड़ दो और क्षमा कर दो तो अल्लाह (तआला) क्षमा करने वाला कृपालु है।[5]

---

[1]अर्थात हमारे रसूल का इससे कुछ नही बिगड़ेगा, क्योंकि उसका काम संदेश पहुँचा देना है। इमाम ज़ुहरी फ़रमाते हैं कि अल्लाह का काम रसूल भेजना है, रसूल का काम संदेश पहुँचा देना तथा लोगों का काम स्वीकार करना है। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात सभी विषय अल्लाह को समर्पित करें, उसी पर विश्वास करें तथा केवल उसी से विनय करें, क्योंकि उसके सिवा कोई कार्यक्षम एवं संकटहारी नहीं है।

[3]अर्थात जो तुम्हें पुण्य के कामों तथा अल्लाह के आज्ञापालन से रोके, समझ लो कि वह तुम्हारे हितकारी नहीं, शत्रु हैं।

[4]अर्थात उनके पीछे लगने से बचो, अपितु उन्हें अपना अनुगामी बनाओ ताकि वह भी अल्लाह की आज्ञाकारिता अपनायें, न कि तुम उसके पीछे लगकर अपनी आख़िरत बर्बाद कर लो।

[5]इसके अवतरित होने का कारण यह बताया गया है कि मक्का में मुसलमान होने वाले कुछ मुसलमानों ने मक्का छोड़कर मदीना आने का विचार किया, जैसाकि उस समय हिजरत का आदेश बलपूर्वक दिया गया था, किन्तु उनकी पत्नियाँ तथा बच्चे बाधा बन गये तथा उन्होंने उन्हें हिजरत नहीं करने दिया। फिर जब बाद में वह रसूलुल्लाह

The Ummah Technology Mission

إِنَّمَآ أَمْوَٰلُكُمْ وَأَوْلَٰدُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَٱللَّهُ عِندَهُۥٓ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٥﴾

(१५) तुम्हारे धन तथा तुम्हारी सन्तान (तो सर्वथा) तुम्हारी परीक्षा हैं,[1] तथा बहुत बड़ा बदला अल्लाह के पास है।[2]

فَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ مَا ٱسْتَطَعْتُمْ وَٱسْمَعُوا۟ وَأَطِيعُوا۟ وَأَنفِقُوا۟ خَيْرًا لِّأَنفُسِكُمْ ۗ وَمَن يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِۦ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ﴿١٦﴾

(१६) तो जहाँ तक तुमसे हो सके अल्लाह से डरते रहो तथा सुनते एवं आज्ञापालन करते चलो[3] तथा (अल्लाह के मार्ग में) दान करते रहो जो तुम्हारे लिए उत्तम है,[4] तथा जो लोग अपनी मनोकांक्षा से सुरक्षित रखे गये वही सफल हैं।

إِن تُقْرِضُوا۟ ٱللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ

(१७) यदि तुम अल्लाह को उत्तम ऋण दोगे (अर्थात उसके मार्ग में ख़र्च करोगे)[5] तो वह उसे तुम्हारे लिए बढ़ाता जायेगा तथा तुम्हारे

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आ गये तो देखा कि उनसे पहले आने वालों ने धर्म में अत्याधिक समझ प्राप्त कर ली है तो उन्हें अपनी पत्नियों तथा बच्चों पर क्रोध आया, जिन्होंने उन्हें हिजरत से रोका था, अत: उन्हें दण्ड देने की सोची। अल्लाह ने इसमें उन्हें क्षमा कर देने तथा छोड़ देने का आदेश दिया। (तिर्मिज़ी, तफ़सीर *सूरह तग़ाबुन*)

[1]जो तुम्हें निषेधित धन आर्जन पर उभारते हैं तथा अल्लाह का अधिकार पूरा करने से रोकते हैं, तो इस परीक्षा में तुम उसी समय सफल हो सकते हो जब तुम अल्लाह की अवज्ञा में उनका अनुसरण न करो। अभिप्राय यह हुआ कि धन तथा संतान जहाँ अल्लाह के वरदान हैं, वहीं यह इंसान की परीक्षा के साधन भी हैं। इस ढंग से अल्लाह देखता है कि मेरा आज्ञाकारी कौन है तथा अवज्ञाकारी कौन ?

[2]अर्थात उस व्यक्ति के लिए जो धन तथा संतान के प्रेम के मुक़ाबले में अल्लाह की आज्ञाकारिता को प्रधानता देता है तथा उसकी अवज्ञा से बचता है।

[3]अर्थात अल्लाह तथा रसूल की बातों को ध्यान से सुनो तथा उसके अनुसार कर्म करो, क्योंकि मात्र सुन लेना व्यर्थ है जब तक कि उनका पालन न हो।

[4]خَيْرًا अर्थात إِنْفَاقًا خَيْرًا अथवा يَكُنِ الإِنْفَاقُ خَيْرًا। ख़र्च साधारण है, अनिवार्य दान तथा ऐच्छिक दान दोनों को सम्मिलित है।

[5]अर्थात शुद्ध विचार तथा साफ़ मन से अल्लाह के मार्ग में खर्च करोगे।

The Ummah Technology Mission

وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٧﴾

पाप भी क्षमा कर देगा और अल्लाह बड़ा गुणग्राहक तथा सहनशील है।[1]

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾

(१८) वह गुप्त एवं प्रकट का जानने वाला। शक्तिमान एवं हिक्मत वाला है।[2]

سُوْرَةُ الطَّلَاقِ

सूरतुत्तलाक़-६५

सूर: तलाक़ मदीने में अवतरित हुई, इसमें बारह आयतें एवं दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ

(१) हे नबी ! (अपने अनुयाईयों से कहो) जब तुम अपनी पत्नियों को तलाक़ देना चाहो[3] तो उनकी इद्दत (अवधि के आरम्भ) में उन्हें तलाक़ दो[4] तथा इद्दत की गणना

---

[1]अर्थात कई-कई गुना बढ़ाने के साथ वह तुम्हारे पाप भी क्षमा कर देगा।

[2]वह अपने आज्ञा पालकों को कई-कई गुना पुण्य तथा प्रतिफल प्रदान करता है। तथा अवज्ञाकारियों को तुरन्त नहीं पकड़ता।

[3]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से संबोधन आपकी श्रेष्ठता तथा प्रतिष्ठा के कारण है। अन्यथा आदेश तो अनुयाईयों को दिया जा रहा है। अथवा आप ही को विशेष रूप से संबोधित किया गया है तथा वहुवचन का रूप प्रतिष्ठा के कारण है तथा अनुयाईयों के लिए आपका आदर्श ही पर्याप्त है। طَلَّقتم का अर्थ है जब तलाक़ देने का पक्का इरादा कर लो।

[4]इसमें तलाक़ देने की विधि तथा समय वताया है। لِعِدَّتِهِنَّ में 'लाम' समय निर्धारण के लिए अर्थात لاستقبال عِدَّتِهِنَّ (इद्दत के आरम्भ में) तलाक़ दो। अर्थात जब स्त्री मासिक धर्म से पवित्र हो जाये तो उससे संभोग किये बिना तलाक़ दो। पवित्रता की अवस्था उसकी इद्दत (अवधि) का आरम्भ है। इसका अभिप्राय यह है कि मासिक धर्म की अवस्था में अथवा पवित्रता की अवस्था में संभोग के वाद तलाक़ देना ग़लत है। इसे धर्मविदों ने तलाक़े विदई (विधि के प्रतिकूल) तलाक़ से तथा पहले (सहीह) तरीक़े को सुन्नतानुसार तलाक़ से व्यंजित किया है। इसका समर्थन उस हदीस से होता है जिसमें आता है कि

The Ummah Technology Mission

لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ؕ وَ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ①

रखो,[1] तथा अल्लाह से जो तुम्हारा प्रभु है डरते रहो, न तुम उन्हें उनके घरों से निकालो[2] तथा न वे (स्वयं) निकलें,[3] हाँ, यह अन्य बात है कि वह खुली बुराई कर बैठें।[4] यह अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमायें हैं, और जो व्यक्ति अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करे, उसने निश्चित रूप से अपने ऊपर अत्याचार किया,[5] तुम नहीं जानते कि शायद उसके पश्चात अल्लाह (तआला) कोई

आदरणीय इब्ने उमर ने मासिक धर्म की अवस्था में अपनी पत्नी को तलाक़ दे दिया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्रोधित हो गये तथा उन्हें उसे वापस लेने के साथ आदेश दिया कि पवित्रता की अवस्था में तलाक़ देना, तथा उसके लिए आपने इस आयत को प्रमाण बनाया। (सहीह बुखारी, किताबुत तलाक़) यद्यपि मासिक धर्म की अवस्था में दी गई तलाक़ भी विदई होने के बावजूद पड़ जायेगी। मुहद्देसीन तथा सभी विद्वान इसे मानते हैं। हाँ, इब्ने तैमिया तथा इब्ने क़य्यिम तलाक़ विदई के पड़ने को नहीं मानते। (विवरण के लिए देखिए नैलुलऔतार, किताबुत तलाक़, बाबुन नह्ये अनित तलाकि फ़िल हैज़े व फित् तुहरे तथा अन्य हदीसों की व्याख्या)

[1]अर्थात उसके आरम्भ तथा अंत का ध्यान रखो, ताकि स्त्री उसके पश्चात दूसरा विवाह कर सके, अथवा यदि तुम ही फिर रखना चाहो (पहली तथा दूसरी तलाक़ की दशा में) तो इद्दत (अवधि) के भीतर फिर रख सको।

[2]अर्थात तलाक़ देते ही स्त्री को अपने घर से न निकालो, बल्कि इद्दत तक उसे घर ही में रहने दो, तथा उस समय तक रहने तथा खाने एवं कपड़े का ख़र्च तुम्हारा दायित्व है।

[3]अर्थात इद्दत (अवधि) के भीतर स्त्री स्वयं भी बाहर निकलने से बचाव करे, परन्तु यह कि कोई अति आवश्यक समस्या हो।

[4]अर्थात व्याभिचार कर जाये अथवा अपशब्द तथा असभ्य स्वभाव का प्रदर्शन करे, जिससे घर वालों को दुख हो। दोनों स्थितियों में उसे निकालना उचित (जायेज़) होगा।

[5]अर्थात उपरोक्त आदेश अल्लाह की सीमायें हैं जिनका उल्लंघन स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करना है, क्योंकि उसकी धार्मिक तथा सांसारिक हानि स्वयं उल्लंघनकारी को ही भुगतनी पड़ेगी।

The Ummah Technology Mission

नई बात उत्पन्न कर दे।[1]

(२) तो जब ये (महिलायें) अपनी अवधि पूरी करने के निकट पहुँच जायें तो उन्हें नियमानुसार अपने विवाह में रहने दो अथवा नियमानुसार

فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ

---

[1]अर्थात पति के मन में तलाक़ दी हुई स्त्री की रूचि पैदा कर दे तथा वह फिर से रखने पर तैयार हो जाये, जैसाकि पहली तथा दूसरी तलाक़ के बाद पति को अवधि के भीतर फिर से रखने का अधिकार है। इसलिए कुछ भाष्यकारों का विचार है कि अल्लाह ने इस आयत में मात्र एक तलाक़ देने की शिक्षा दी है तथा एक समय में तीन तलाक़ देने से रोका है, क्योंकि यदि वह एक ही समय में तीन तलाक़ दे डाले (तथा धर्म-विधान उसे वैध करके लागू भी कर दे) तो फिर यह कहना व्यर्थ है कि संभवत: अल्लाह तआला कोई नई बात पैदा कर दे। (फ़तहुल क़दीर) इसी से इमाम अहमद तथा अन्य विद्वानों ने यह तर्क निकाला है कि आवास तथा ख़र्च देने पर जो बल दिया गया है वह उन स्त्रियों के लिए है जिन्हें पति ने पहली अथवा दूसरी तलाक़ दी हो, क्योंकि उनमें पति को फिर से रखने का अधिकार रहता है। तथा जिस स्त्री को विभिन्न समयों में दो तलाक़ मिल चुकी हो तो तीसरी तलाक़ उसके लिए बत्ता अथवा बायेना (बिलगाव) है। उसका आवास तथा ख़र्च पति पर नहीं है। उसे तुरन्त पति के घर से दूसरी जगह कर दिया जायेगा, क्योंकि अब पति उसे फिर से रखकर अपना घर आबाद नहीं कर सकता حتى تنكح زوجا غيره इसलिए अब उसे पति के पास रहने तथा उससे ख़र्च लेने का अधिकार नहीं। इसका समर्थन फ़ातिमा बिन्ते कैस की इस घटना से होता है कि जब उसको उसके पति ने तीसरी तलाक़ भी दे दी तथा उसे पति के घर से निकलने को कहा गया तो वह तैयार नहीं हुई। अंतत: विवाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यही निर्णय किया कि उसके लिए आवास तथा ख़र्च नहीं है, उसे तुरन्त दूसरी जगह चली जाना चाहिए। कुछ रिवायत (उद्धरणों) में स्पष्टीकरण भी है। «إِنَّمَا النَّفَقَةُ وَالسُّكْنَى لِلْمَرْأَةِ؛ إِذَا كَانَ لِزَوجِهَا عَلَيْهَا الرَّجْعَةُ» (रवाहु अहमद वन नसाई) हाँ, कुछ रिवायत में गर्भवती के लिए भी आवास तथा ख़र्च का स्पष्टीकरण है (देखिये नैलुल औतार, बाबु माजाअ फी नफक़तिल मबतूतते) कुछ लोग इन हदीसों को क़ुरआन के उपरोक्त आदेश لا تُخْرِجُوهُنَّ مِنْ بيوتهِنَّ के विपरीत मान कर इनको नहीं मानते जो सहीह नहीं है, क्योंकि क़ुरआन का आदेश अपने आगे तथा पीछे के संकेतों को देखते हुए मुतल्लक़ा रजईया (जिसे तलाक़ के बाद फिर रखा जा सकता हो) के लिए है। यदि उसे साधारण भी मान लिया जाये तो यह हदीसें उसको विशेष करने के लिए हैं, अर्थात क़ुरआन के सामान्य आदेश को इन रिवायतों ने मुतल्लक़ा रजईया के लिए विशेष कर दिया तथा मुतल्लक़ा बायेना को इस साधारण नियम से निकाल दिया।

The Ummah Technology Mission

وَّاَشْهِدُوْا ذَوَىْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ﴿۲﴾

उन्हें अलग कर दो[1] तथा आपस में से दो न्याय करने वाले व्यक्तियों को साक्षी बना लो,[2] तथा अल्लाह की प्रसन्नता के लिए ठीक-ठाक गवाही दो।[3] यही है वह जिसकी शिक्षा उन्हें दी जाती है, जो अल्लाह पर तथा क़यामत (प्रलय) के दिन पर ईमान रखता हो, तथा जो व्यक्ति अल्लाह से डरता है अल्लाह उसके लिए छुटकारे का मार्ग निकाल देता है।[4]

وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَىْءٍ قَدْرًا ۚ﴿۳﴾

(३) तथा उसे ऐसे स्थान से जीविका उपलब्ध कराता है जिसका उसे अनुमान भी न हो, तथा जो व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा करेगा, अल्लाह उसके लिए पर्याप्त होगा। अल्लाह (तआला) अपना कार्य पूरा करके ही रहेगा,[5] अल्लाह (तआला) ने प्रत्येक वस्तु का एक अनुमान निर्धारित कर रखा है।[6]

---

[1]मुतल्लक़ा मदख़ूला (जिस स्त्री से पति ने संभोग किया हो यदि उसे तलाक़ दिया है तो) उसकी अवधि (इद्दत) तीन मासिक धर्म है। यदि उसे फिर से रख लेने का विचार हो तो इद्दत (अवधि) पूरी होने से पहले-पहले रुजूअ कर लो, अन्यथा उन्हें नियमानुसार अपने से अलग कर दो।

[2]इस रजअत (पत्नी को फिर से रख लेने) पर तथा कुछ के निकट तलाक़ पर साक्षी (गवाह) बना लो। यह आदेश अनिवार्यता के लिए नहीं, ऐसा करना उत्तम है, अर्थात गवाह बना लेना उत्तम है, आवश्यक नहीं।

[3]यह गवाहों को कहा गया है कि बिना पक्षपात तथा बिना लालच के सही-सही गवाही दें।

[4]कठिनाईयों तथा परीक्षाओं से निकलने का रास्ता पैदा कर देता है।

[5]अर्थात वह जो चाहे कोई उसको रोकने वाला नहीं।

[6]तंगियों के लिए भी तथा सुविधाओं के लिए भी। यह दोनों अपने समय पर समाप्त हो जाते हैं। कुछ ने इसका अभिप्राय मासिक धर्म तथा इद्दत (अवधि) लिया है।

The Ummah Technology Mission

وَالّٰٓـِٔيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ
مِنْ نِّسَآىِٕكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ
ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ ۙ وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ؕ
وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ
اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ؕ
وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ
مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ۝٤

(४) तुम्हारी स्त्रियों में से जो स्त्रियाँ मासिक धर्म से निराश हो गयी हों, यदि तुम्हें शंका हो तो उनकी अवधि तीन माह है तथा उनकी भी जिन्हें अभी मासिक धर्म प्रारम्भ ही न हुआ हो।[1] तथा गर्भवती महिलाओं की इद्दत (अवधि) उनका शिशु को जन्म देना है[2] तथा जो व्यक्ति अल्लाह तआला से डरेगा, अल्लाह उसके (प्रत्येक) कार्य में सुविधा उत्पन्न कर देगा।

ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗۤ اِلَيْكُمْ ؕ
وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ
سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗۤ اَجْرًا ۝٥

(५) यह अल्लाह का आदेश है जो उसने तुम्हारी ओर उतारा है तथा जो व्यक्ति अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके पाप मिटा देगा तथा उसे बहुत भारी बदला देगा।

اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ
مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ

(६) तुम अपनी शक्ति के अनुसार जहाँ रहते हो वहाँ उन (तलाक़ वाली) महिलाओं को रखो[3] तथा उन्हें बाध्य करने के लिए कष्ट न

---

[1]यह उनकी इद्दत (अवधि) है जिनका मासिक धर्म अधिक आयु के कारण रूक गया अथवा जिन्हें मासिक धर्म आना प्रारम्भ ही नहीं हुआ। ज्ञातव्य है कि ऐसा कभी-कभी होता है कि स्त्री बड़ी होकर पति के साथ रहती है परन्तु उसे मासिक धर्म नहीं आता।

[2]मुतल्लक़ा (तलाक़ प्राप्त स्त्री) यदि गर्भवती हो तो उसकी अवधि प्रसव है, चाहे दूसरे दिन ही प्रसव हो जाये। इसके सिवा आयत से प्रत्यक्ष यही है कि प्रत्येक गर्भवती की यही इद्दत है चाहे वह तलाक़ प्राप्त हो अथवा उसके पति का निधन हो गया हो, हदीसों से भी इसे समर्थन मिलता है (देखिए सहीह बुख़ारी, मुस्लिम तथा दूसरी सुनन, किताबुत तलाक़) अन्य स्त्रियाँ जिनके पति मर जायें उनकी अवधि ४ महीना १० दिन है। (*सूरह बक़रः*-२३४)

[3]मुतल्लक़ा रजइया को (अर्थात दो तलाक़ तक जिसमें पत्नी को अवधि के भीतर फिर से रख सकता है) इसलिए कि जो बायेन: है (पूरी तीन तलाक़ विभिन्न अवसर पर दे दिया है) उसके लिए आवास तथा ख़र्च आवश्यक ही नहीं है, जैसाकि विगत पृष्ठों में वर्णन किया गया। अपनी शक्ति के अनुसार रखने का अभिप्राय यह है कि यदि घर बड़ा हो तथा उसमें अनेक कमरे हों तो एक कमरा उसके लिए विशेष कर दिया जाये। अन्यथा

The Ummah Technology Mission

لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ ۚ وَإِنْ كُنَّ أُولَاتِ حَمْلٍ فَأَنْفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّىٰ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۚ وَأْتَمِرُوا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوفٍ ۖ وَإِنْ تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ

दो[1] तथा यदि वे गर्भवती हों तो जब तक शिशु जन्म ले ले उन्हें ख़र्च देते रहा करो।[2] फिर यदि तुम्हारे कहने से वही दूध पिलायें तो तुम उन्हें उनका पारिश्रमिक दे दो[3] तथा आपस में उचित रूप से विचार-विमर्श कर लिया करो[4] तथा यदि तुम आपस में तनाव

अपना कमरा उसके लिए ख़ाली कर दें। इसमें हिक्मत यही है कि समीप रह कर अवधि (इद्दत) पूरी करेगी तो हो सकता है कि पति को तरस आ जाये तथा उसे फिर से रखने की रूचि मन में उत्पन्न हो जाये। विशेष रूप से यदि बच्चे भी हों तो फिर चाहत तथा फिर से रख लेने की अधिक संभावना है। परन्तु खेद का विषय है कि मुसलमान इस निर्देश के अनुसार काम नहीं करते जिसके कारण इस आदेश के लाभ तथा ख़ूबी से भी वह वंचित हैं। हमारे समाज में तलाक़ (विवाह-विच्छेद) के साथ ही जिस प्रकार स्त्री को तुरन्त अछूत बनाकर घर से निकाल दिया जाता है अथवा कई बार लड़की वाले उसे अपने घर ले जाते हैं, यह रिवाज क़ुरआन करीम की खुली शिक्षा के प्रतिकूल है।

[1]अर्थात भरण-पोषण अथवा आवास में उसे तंग अथवा अपमानित करना ताकि वह घर छोड़ने पर बाध्य हो जाये। इद्दत (अवधि) के बीच ऐसा ढंग न अपनाया जाये। कुछ ने इस का भावार्थ यह वर्णन किया है कि इद्दत (अवधि) समाप्त होने के समीप हो तो फिर से रख ले तथा बार-बार ऐसा करे जैसाकि अज्ञान काल में किया जाता था, जिसे रोकने के लिए धर्म ने तलाक़ (विवाह-विच्छेद) के पश्चात पत्नी को पुन: रख लेने की सीमा निर्धारित कर दी है ताकि भविष्य में कोई व्यक्ति स्त्री को इस प्रकार तंग न करे। अब एक इन्सान दो बार ऐसा कर सकता है अर्थात तलाक़ के पश्चात इद्दत (अवधि) के अंत होने से पूर्व वापस लौटा ले, किन्तु तीसरी बार जब तलाक़ देगा तो उसके पश्चात उसे वापस लौटाने का अधिकार भी समाप्त हो जायेगा।

[2]अर्थात तलाक़ प्राप्त बायेन: (विलग) ही क्यों न हो, यदि गर्भवती है तो उसके भरण-पोषण का ख़र्च तथा आवास आवश्यक है, जैसाकि पहले भी वर्णन किया गया है।

[3]अर्थात तलाक़ देने के पश्चात यदि वह तुम्हारे बच्चे को दूध पिलाये तो उसका पारिश्रमिक तुम्हारे ऊपर है।

[4]अर्थात आपस के परामर्श से पारिश्रमिक तथा अन्य मामले निपटा लिये जायें, जैसे बच्चे का पिता रीति के अनुसार पारिश्रमिक दे, तथा माता, पिता की शक्ति के अनुसार पारिश्रमिक की माँग करे, आदि।

The Ummah Technology Mission

لَهَآ أُخۡرَىٰ ۝٦

रखो तो उसके कहने से कोई अन्य दूध पिलायेगी।[1]

لِيُنفِقۡ ذُو سَعَةٖ مِّن سَعَتِهِۦۖ وَمَن قُدِرَ عَلَيۡهِ رِزۡقُهُۥ فَلۡيُنفِقۡ مِمَّآ ءَاتَىٰهُ ٱللَّهُۚ لَا يُكَلِّفُ ٱللَّهُ نَفۡسًا إِلَّا مَآ ءَاتَىٰهَاۚ سَيَجۡعَلُ ٱللَّهُ بَعۡدَ عُسۡرٖ يُسۡرٗا ۝٧

(७) धन वाले को अपने धन के अनुसार ख़र्च करना चाहिए[2] तथा जिसकी जीविका उसके लिए कम की गयी हो[3] तो उसको चाहिए कि जो कुछ अल्लाह (तआला) ने उसे प्रदान कर रखा है, उसी में से (अपनी शक्ति के अनुसार) दे, किसी व्यक्ति पर अल्लाह बोझ नहीं रखता परन्तु इतना ही जितनी शक्ति उसे दे रखी है।[4] अल्लाह (तआला) निर्धनता के पश्चात धन भी प्रदान करेगा।[5]

---

[1]अर्थात परस्पर पारिश्रमिक आदि का निर्णय न हो सके तो किसी अन्य दूध पिलाने वाली के साथ मामला कर ले जो उसके बच्चे को दूध पिलाये।

[2]अर्थात दूध पिलाने वाली स्त्रियों को पारिश्रमिक अपनी शक्ति के अनुसार दी जाये। यदि अल्लाह ने अधिक धन-सम्पति प्रदान की है तो इसी विस्तार के साथ दूध पिलाने वाली की सेवा आवश्यक है।

[3]अर्थात वह धन में कमज़ोर हो।

[4]अत: वह निर्धन तथा दरिद्र को यह आदेश नहीं देता कि वह दूध पिलाने वाली को अधिक ही पारिश्रमिक दे। अभिप्राय इन निर्देशों का यह है कि बच्चे की माँ तथा उसका बाप ऐसा उचित ढंग अपनायें कि एक-दूसरे को कष्ट न पहुँचे तथा बच्चे को दूध पिलाने का मामला खटाई में न पड़े। जैसे अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ لَا تُضَآرَّ وَٰلِدَةُۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوۡلُودٞ لَّهُۥ بِوَلَدِهِۦ ﴾

"न माँ को बच्चे के कारण दुख पहुँचाया जाये तथा न बाप को।" (*अल-बक़र:-* २३३)

[5]अत: जो अल्लाह पर विश्वास एवं भरोसा करते हैं, अल्लाह उनके लिए सुविधा एवं विस्तार भी प्रदान करता है।

The Ummah Technology Mission

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ۝٨

(८) तथा बहुत सी बस्ती (वालों) ने अपने प्रभु के आदेश से तथा उसके संदेष्टाओं की अवहेलना की[1] तो हमने भी उनसे कड़ा हिसाब लिया तथा अनदेखा (कठोर) प्रकोप उन पर डाल दिया।[2]

فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ۝٩

(९) तो उन्होंने अपने करतूतों का स्वाद चख लिया तथा परिणाम स्वरूप उनकी हानि ही हुई।

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ۚ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛ قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۝١٠

(१०) उनके लिए अल्लाह तआला ने घोर यातनायें तैयार कर रखी हैं, तो अल्लाह से डरो हे बुद्धिमान, ईमानवालो ! निश्चित रूप से अल्लाह ने तुम्हारी ओर शिक्षा भेज दी है।

رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ

(११) (अर्थात) संदेष्टा[3] जो तुम्हें अल्लाह के स्पष्ट आदेश पढ़कर सुनाता है ताकि उन लोगों को जो ईमान लायें तथा सत्कर्म करें वह अंधकार से प्रकाश की ओर ले आये,[4]

---

[1] عَتَتْ ، أي: تمردت و طغت و استكبرت عن اتباع أمر الله و متابعة رسله अर्थात अवज्ञा, उद्दण्डता तथा उल्लंघन तथा अल्लाह के आदेशों एवं उसके रसूलों की बात मानने से अहंकार तथा घमंड किया।

[2] مُنكراً فَظِيعاً-نُكْرا हिसाब तथा यातना, दोनों का अभिप्राय सांसारिक पकड़ तथा यातना है, अथवा फिर कुछ के कथनानुसार वाक्य-क्रम में आगे-पीछे कर दिया गया है। عذابًا نُكْرا वह यातना है जो संसार में अकाल, धरती में धँसा देना तथा रूप परिवर्तन के रूप में उन्हें पहुँचा, तथा حِساباً شديداً वह है जो परलोक में होगा। (फ़तहुल क़दीर)

[3] रसूल यह ज़िक्र से बदल है। अतिशय स्वरूप रसूल को ज़िक्र कहा गया है जैसे कहते है, वह तो न्याय की मूर्ति है, अथवा ज़िक्र (स्मृति) से अभिप्राय पवित्र क़ुरआन है तथा رسولاً से पहले أرسلنا लुप्त है, अर्थात ज़िक्र (क़ुरआन) को उतारा तथा रसूल (संदेष्टा) को भेजा।

[4] यह रसूल का दायित्व तथा पद वर्णन किया गया है कि वह क़ुरआन के द्वारा लोगों को

The Ummah Technology Mission

إِلَى النُّورِ ۚ وَمَن يُؤْمِنۢ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ﴿١١﴾

तथा जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान लाये तथा सत्कर्म करे[1] अल्लाह उसे ऐसे स्वर्ग में प्रवेश देगा जिसके नीचे नहरें प्रवाहित हैं, जिसमें वे सदैव-सदैव रहेंगे। नि:संदेह अल्लाह ने उसे सर्वोत्तम जीविका प्रदान कर रखी है।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۖ

(१२) अल्लाह वह है जिसने सात आकाश बनाये तथा उसी के समान धरती भी।[2] उसका

नैतिक पतन तथा शिर्क (बहुदेववाद) एवं गुमराही के अंधकारों से निकाल कर ईमान तथा सत्कर्म के प्रकाश की ओर लाता है। यहाँ رسول रसूल (संदेष्टा) से तात्पर्य الرسول अर्थात मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।

[1]सत्कर्म में दोनों बातें सम्मिलित हैं, आदेशों तथा कर्तव्यों का पालन तथा अवज्ञा एवं पापों से बचना। प्रयोजन यह है कि स्वर्ग में ईमानवाले प्रवेश पायेंगे, जिन्होंने केवल मुख ही से ईमान व्यक्त नहीं किया था, अपितु उन्होंने ईमान की माँगों के अनुसार कर्तव्यों का पालन किया था तथा अवज्ञाओं से बचे थे।

[2]أي خَلَقَ مِن الأَرْضِ مثلَهُنَّ अर्थात सात आकाशों की भाँति अल्लाह ने सात धरतियाँ भी पैदा की हैं। कुछ ने इससे सात महाद्वीप तात्पर्य लिया है, परन्तु यह सही नहीं। वरन् जिस प्रकार ऊपर तले सात आकाश हैं उसी प्रकार सात धरतियाँ हैं, जिनके मध्य अंतर तथा दूरी है तथा प्रत्येक धरती में अल्लाह की सृष्टि आबाद है (अल कुर्तुबी)। हदीसों से भी इसका समर्थन होता है। जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«مَنْ أَخَذَ شِبْراً مِنَ الأَرْضِ ظُلْمًا، فَإِنَّهُ يُطَوَّقُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ سَبْعِ أَرَضِينَ» .

"जिस ने किसी की बित्ता बराबर भूमि भी हथिया ली तो क़यामत के दिन उस भूमि का उतना भाग सातों धरतियों से तौक बना कर उस के गले में डाल दिया जायेगा।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल बुयूअ, बाबू तहरिमिज़ ज़ुल्मे)

बुख़ारी के शब्द हैं خسف به إلى سبع أرضين "उसे सातों धरतियों तक धँसा दिया जायेगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल मज़ालिम, बाबु इस्मे मन ज़लम शैअन मिनल अर्ज़े) कुछ कहते हैं कि प्रत्येक धरती में उसी प्रकार का पैग़म्बर (संदेष्टा) है जैसा पैग़म्बर तुम्हारी धरती पर आया, जैसे आदम आदम के समान, नूह नूह के समान, इब्राहीम इब्राहीम के समान, ईसा ईसा (अलैहिमुस्सलाम) के समान, परन्तु यह बात किसी सहीह रिवायत (हदीस) से प्रमाणित नहीं।

The Ummah Technology Mission

يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوٓا أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۙ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿١٢﴾

आदेश उनके मध्य अवतरित होता है[1] ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर वस्तु पर सामर्थ्यवान है । तथा अल्लाह (तआला) ने प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान की परिधि में घेर रखा है ।[2]

सूरतुत्तहरीम-६६

سُورَةُ التَّحْرِيمِ

सूरः तहरीम मदीने में अवतरित हुई, इसमें बारह आयतें एवं दो रूकूअ हैं ।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु तथा अत्यन्त कृपालु है ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يَٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ ۖ

(१) हे नबी ! जिस वस्तु को अल्लाह ने आपके लिए वैध कर दिया है, उसे आप अवैध क्यों करते हैं ?[3] (क्या) आप अपनी

---

[1]अर्थात जैसे प्रत्येक आकाश पर अल्लाह का आदेश लागू तथा प्रभावी है, इसी प्रकार प्रत्येक धरती पर उसका आदेश चलता है, आकाशों की भाँति वह सभी धरतियों की भी व्यवस्था करता है ।

[2]तो उसके ज्ञान से कोई वस्तु बाहर नहीं चाहे वह कैसी ही हो ।

[3]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिस वस्तु को अपने लिये अवैध कर लिया था वह क्या थी ? जिस पर अल्लाह ने अपनी अप्रियता व्यक्त की । इस संदर्भ में एक तो वह प्रसिद्ध घटना है जो बुख़ारी तथा सहीह मुस्लिम आदि में उद्धृत हुई है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आदरणीया ज़ैनब बिन्ते जहश के पास कुछ देर रूकते, तथा वहाँ मधु पीते । आदरणीय हफ़सा तथा आयेशा (रज़ी अल्लाहु अन्हुमा) दोनों ने वहाँ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अधिक देर तक ठहरने से रोकने के लिए यह योजना बनाई कि उनमें से जिसके पास भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जायें तो वह उनसे यह कहे कि आप के मुँख से मग़ाफीर (एक प्रकार का फूल जिसमें अप्रिय गंध होती है) की गंध आ रही है, तथा उन्होंने ऐसा ही किया । आपने फ़रमाया कि मैंने तो ज़ैनब के घर केवल मधु पिया है । अब मैं सौगन्ध खाता हूँ कि यह नहीं पिऊंगा, किन्तु यह बात तुम किसी को बतलाना नहीं । (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर *सूरतित तहरीम*) सुनन

The Ummah Technology Mission

تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ①

पत्नियों की प्रसन्नता प्राप्त करना चाहते हैं तथा अल्लाह क्षमा करने वाला अत्यन्त दयालु है।

قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ

(२) नि:संदेह अल्लाह (तआला) ने आपके लिए सौगन्धों से निकलने की विधि नियमित कर दिया है[1] तथा अल्लाह आपका कार्यक्षम

नसाई में वर्णन किया गया है कि वह एक दासी थी जिसको आपने अपने ऊपर अवैध कर लिया था। (शेख अलबानी ने इसको सहीह कहा है, सुनन नसाई ३\८३ परन्तु अन्य कुछ विद्वानों ने इसे क्षीण कहा है) कुछ ने वर्णन किया है कि यह दासी मारिया किबतिया थी, जिनसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पुत्र इब्राहीम पैदा हुए थे। यह एक बार आदरणीया हफ़सा के घर आ गयी थीं जबकि आदरणीया हफसा मौजूद न थी। संयोग से उनकी उपस्थिति में आदरणीय हफ़सा आ गईं। उन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अपने घर में एकांत में देखना अप्रिय लगा, जिसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी भाँप लिया, जिस पर आदरणीया हफ़सा को प्रसन्न करने के लिए आप ने मारिया को अपने ऊपर निषेध कर लिया तथा हफ़सा को ताकीद की कि यह बात किसी को न बताये। इमाम इब्ने हजर एक तो यह फ़रमाते हैं कि यह घटना विभिन्न वर्णन-क्रम से आया है जो एक-दूसरे को बल पहुँचाते हैं। दूसरी बात वह यह फ़रमाते हैं कि संभव है कि दोनों घटनायें ही एक साथ इस आयत के अवतरण का कारण बनी हों। (फ़तहुल बारी, तफ़सीर *सुरतित तहरीम*) इमाम शौकानी ने भी यही विचार व्यक्त किया है तथा दोनों कथाओं को सहीह कहा है। इससे यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि अल्लाह की वैध चीज़ों को अवैध करने का अधिकार किसी को भी नहीं, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी यह अधिकार नहीं रखते।

[1]अर्थात प्रायश्चित (कफ़्फ़ारा) देकर उस काम को करने की, जिसे न करने की शपथ ग्रहण की हो, अनुमति दे दी। सौगन्ध का यह प्रायश्चित *सूरः मायेदः* ८९ में वर्णन किया गया है, तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी प्रायश्चित अदा किया। (फ़तहुल क़दीर) इस विषय में विद्वानों में मतभेद है कि यदि कोई अपने ऊपर कोई चीज़ अवैध कर ले तो उसका क्या आदेश है ? सामान्य विद्वानों के विचार से पत्नी के सिवा किसी वस्तु को हराम (अवैध) करने से वह अवैध होगी न उस पर प्रायश्चित (दण्ड) है। यदि पत्नी को अपने ऊपर हराम (अवैध) करेगा तो यदि उसका आशय तलाक़ (सम्बन्ध-विच्छेद) है तो तलाक़ हो जायेगी तथा यदि तलाक़ का विचार नहीं तो मान्य कथन यह है कि यह सौगन्ध है, इस के लिए सौगन्ध का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) अदा करना आवश्यक है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

The Ummah Technology Mission

وَ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝٢

है तथा वही (पूर्ण) ज्ञान वाला एवं हिक्मत वाला है।

وَ اِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَ اَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَ اَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ؕ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝٣

(३) तथा (याद करो) जब नबी ने अपनी कुछ पत्नियों से एक बात चुपके से कही [1] तो जब उसने उस बात को सूचित कर दिया[2] तथा अल्लाह ने अपने नबी को उस पर अवगत कर दिया तो नबी ने कुछ बात तो बता दी तथा कुछ टाल गये, फिर[3] जब नबी ने अपनी उस पत्नी को यह बात बता दी तो वह कहने लगी कि इसकी सूचना आपको किसने दी।[4] कहा कि सब कुछ जानने वाले पूर्ण सूचना रखने वाले अल्लाह ने मुझे बता दिया है।[5]

اِنْ تَتُوْبَاۤ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ

(४) (हे नबी की दोनों पत्नियो !) यदि तुम अल्लाह से क्षमा माँग लो (तो अति उत्तम

---

[1]वह गुप्त बात मधु (शहद) अथवा दासी मारिया को हराम करने वाली बात थी, जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीया हफ़सा से की थी।

[2]अर्थात हफ़सा ने वह बात आयेशा रज़ि अल्लाहु अन्हा को बता दी।

[3]अर्थात हफ़सा को यह बतला दिया कि तुमने मेरा भेद खोल दिया है, फिर भी अपने मान-सम्मान को देखते हुए सभी बातें नहीं बतायीं।

[4]जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीया हफ़सा को बतलाया कि तुमने मेरा भेद खोल दिया है तो वह चकित हुईं, क्योंकि उन्होंने आदरणीया आयेशा के सिवा किसी को यह बात नहीं बतलाई थी तथा आयेशा से उन्हें आशा न थी कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बतला देंगी, क्योंकि वह मामले में साझी थीं।

[5]इससे ज्ञात हुआ कि क़ुरआन के अतिरिक्त भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर प्रकाशना (वह्यी) का अवतरण होता था।

The Ummah Technology Mission

قُلُوبُكُمَا ۚ وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَٰلِكَ ظَهِيرٌ ﴿٤﴾

है)[1] नि:संदेह तुम्हारे दिल झुक गये हैं।[2] तथा यदि तुम संदेष्टा के विरूद्ध एक-दूसरे की सहायता करोगी तो नि:संदेह उसका संरक्षक अल्लाह है एवं जिब्रील हैं तथा सदाचारी ईमानवाले और उनके अतिरिक्त फ़रिश्ते भी सहायता करने वाले हैं।[3]

عَسَىٰ رَبُّهُ إِنْ طَلَّقَكُنَّ أَنْ يُبْدِلَهُ أَزْوَاجًا خَيْرًا مِنْكُنَّ مُسْلِمَاتٍ مُؤْمِنَاتٍ قَانِتَاتٍ تَائِبَاتٍ عَابِدَاتٍ سَائِحَاتٍ ثَيِّبَاتٍ وَأَبْكَارًا ﴿٥﴾

(५) यदि वह (संदेष्टा) तुम्हें तलाक़ (विवाह-विच्छेद) दे दें तो अति शीघ्र उन्हें उनका प्रभु तुम्हारे बदले तुमसे उत्तम पत्नियाँ प्रदान करेगा,[4] जो इस्लाम वालियाँ, ईमान वालियाँ, अल्लाह के समक्ष झुकने वालियाँ, क्षमा माँगने वालियाँ, इबादत करने वालियाँ, व्रत (रोज़े) रखने वालियाँ होंगी विधवायें तथा कुँवारियाँ।[5]

---

[1]अथवा तुम्हारी क्षमा स्वीकार कर ली जायेगी, यह शर्त(إن تتوبا) का लुप्त उत्तर है।

[2]अर्थात सत्य से हट गये तथा वह उनका ऐसी चीज़ को प्रिय रखना है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अप्रिय थी। (फ़तहुल क़दीर)

[3]अर्थात नबी के मुक़ाबिले तुम जत्था बंदी करोगी तो नबी का कुछ न बिगाड़ सकोगी, इसलिए कि नबी का सहायक तो अल्लाह भी है तथा सभी मोमिन एवं फ़रिश्ते भी।

[4]यह चेतावनी के लिए सदेष्टा की पवित्र पत्नियों से कहा जा रहा है कि अल्लाह अपने पैग़म्बर को तुमसे भी अच्छी पत्नियाँ प्रदान कर सकता है।

[5]ثَيِّبَات (सैयेबात) ثَيِّبٌ (सय्यिब) का बहुवचन है (लौट आने वाली) विधवा नारी को सय्यिब इसलिए कहा जाता है कि वह पति से वापस लौट आती है। फिर इसी प्रकार विना पति के रह जाती है जैसे पहले थी। أَبْكَارٌ (अबकार) بِكْرٌ (बिक्र) का बहुवचन है कुँवारी स्त्री को बिक्र (नई) इसलिए कहते हैं कि यह अभी अपनी प्रथम स्थिति पर होती है जिस पर पैदा हुई है। (फ़तहुल क़दीर) कुछ रिवायतों में आता है कि सय्यिब से अभिप्राय आदरणीय आसिया (फ़िरऔन की पत्नी) तथा बिक्र से ईशदूत ईसा की माँ मरियम तात्पर्य हैं। अर्थात स्वर्ग में इन दोनों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियाँ बना दिया

The Ummah Technology Mission

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝٦

(६) हे ईमानवालो ! तुम स्वयं अपने को तथा अपने परिवार वालों को उस अग्नि से बचाओ[1] जिसका ईधन मनुष्य हैं तथा पत्थर, जिस पर कठोर हृदय वाले शक्तिशाली फ़रिश्ते नियुक्त हैं, जिन्हें जो आदेश अल्लाह (तआला) देता है उसकी अवहेलना नहीं करते अपितु जो आदेश दिया जाये उसका पालन करते हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ۭ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٧ۧ

(७) हे काफ़िरो ! आज तुम (विवशता एवं) बहाना मत व्यक्त करो। तुम्हें केवल तुम्हारे कुकर्मों का बदला दिया जा रहा है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ

(८) हे ईमानवालो ! तुम अल्लाह के आगे (सत्य एवं) शुद्ध क्षमा माँगो।[2] संभव है कि

जायेगा। संभव है कि ऐसा हो, किन्तु इन रिवायतों (उद्धरण) के आधार पर ऐसा विचार रखना तथा ब्यान करना सहीह नहीं है, क्योंकि वर्णन-कम्र के अनुसार यह रिवायतें (हदीस) अमान्य हैं।

[1]इसमें ईमान वालों को उनके एक अति महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व की ओर ध्यान दिलाया गया है तथा वह यह है कि अपने साथ अपने घर वालों का भी सुधार तथा उनकी इस्लामी शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था करें, ताकि यह सब नरक का ईधन बनने से बच जायें। इसीलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जब बच्चा सात वर्ष का हो जाये तो उसे नमाज़ का आदेश दो तथा दस वर्ष की आयु में नमाज़ में आलस्य देखो तो उन्हें मारो। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, किताबुस सलात) धर्मविदों ने कहा है कि इसी प्रकार रोज़े (व्रत) भी उनसे रखवाये जायें तथा अन्य धार्मिक आदेशों के पालन का निर्देश दिया जाये ताकि जब वह बोध की आयु को पहुँचें तो उनमें धार्मिक बोध भी प्राप्त हो चुका हो। (इब्ने कसीर)

[2]विशुद्ध क्षमा-याचना यह है : १- जिस पाप से क्षमा माँग रहा है उसे त्याग दे, २- उस पर अल्लाह के सामने लज्जित हो, ३- भविष्य में उसे न करने का दृढ़ संकल्प करे ४- यदि उसका संबन्ध बंदों के अधिकार से है तो जिसका हक़ मारा है तो उसकी क्षतिपूर्ति करे, जिसके साथ अत्याचार किया है उससे क्षमा माँगे। केवल मुख से तौबा-तौबा कर

The Ummah Technology Mission

تَوْبَةً نَّصُوحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٨

तुम्हारा प्रभु तुम्हारे पाप मिटा दे तथा तुम्हें ऐसे स्वर्ग में प्रवेश दे जिनके नीचे नहरें प्रवाहित हैं, जिस दिन अल्लाह (तआला) नबी (संदेष्टा) को तथा ईमानवालों को जो उनके साथ हैं अपमानित न करेगा। उनकी ज्योति उनके आगे तथा उनके दायें दौड़ रही होगी। ये दुआयें करते होंगे कि हे हमारे प्रभु ! हमें पूर्ण प्रकाश प्रदान कर[1] तथा हमें क्षमा कर दे, नि:संदेह तू हर वस्तु पर सामर्थ्य रखने वाला है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٩

(९) हे नबी ! काफ़िरों तथा मुनाफ़िक़ों से धर्मयुद्ध करें,[2] तथा उन पर कड़ाई करें,[3] उन का ठिकाना नरक है,[4] और वह अति बुरा स्थान है।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا

(१०) अल्लाह (तआला) ने काफ़िरों के लिए

लेना कोई अर्थ नहीं रखता।

[1]यह प्रार्थना ईमानवाले उस समय करेंगे जब मुनाफ़िक़ों का प्रकाश बुझा दिया जायेगा, जैसाकि सूरह हदीद में विवरण गुज़रा। ईमानवाले कहेंगे कि स्वर्ग में जाने तक हमारा यह प्रकाश शेष रख तथा इसे पूर्ण कर दे।

[2]काफ़िरों के साथ जिहाद तथा लड़ाई लड़कर एवं मुनाफ़िक़ों से उन पर अल्लाह का दण्ड नियम लागू करके, जब वह ऐसे काम करें जो दण्डनीय हों।

[3]अर्थात धर्म के प्रचार-प्रसार में कड़ाई करें तथा धर्म-विधानों में दृढ़ता अपनायें, क्योंकि यह लातों के भूत बातों से नहीं मानेंगे। इसका अभिप्राय यह है कि धर्म के प्रचार में कभी नम्रता तथा कभी कड़ाई की आवश्यकता होती है, प्रत्येक स्थान पर नम्रता भी उचित नहीं, न प्रत्येक स्थान पर कड़ाई लाभप्रद है। धर्म के प्रचार-प्रसार में स्थितियों तथा समय एवं व्यक्तियों के अनुसार कभी कोमलता अथवा कड़ाई करने की आवश्यकता है।

[4]अर्थात काफ़िरों तथा मुनाफ़िक़ों दोनों का स्थान नरक है।

The Ummah Technology Mission

امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّ امْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝١٠

नूह की तथा लूत की पत्नियों का उदाहरण दिया है।[1] ये दोनों हमारे भक्तों में से दो सदाचारी भक्तों के परिवार में थीं, फिर उन्होंने उनके साथ विश्वासघात किया[2] तो वे दोनों (भक्त) उनसे अल्लाह की (किसी यातना को) न रोक सके[3] तथा आदेश दे दिया गया कि (महिलाओ !) नरक में जाने वालों के साथ तुम दोनों भी चली जाओ।[4]

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا

(११) तथा अल्लाह (तआला) ने ईमानवालों

---

[1] مَثَل का अर्थ है ऐसी स्थिति का वर्णन जिसमें विचित्रता तथा अनोखापन हो ताकि उसके द्वारा एक दूसरी स्थिति का परिचय हो जाये जो विचित्र तथा अनोखी होने में उसके समान हो। अभिप्राय यह हुआ कि इन काफ़िरों की दशा के लिए अल्लाह ने एक उदाहरण दिया है जो नूह तथा लूत की पत्नी के हैं।

[2] यहाँ विश्वासघात से अभिप्राय सतीत्व में विश्वासघात नहीं, क्योंकि इस बात पर 'इजमाअ' (सहमति) है कि किसी नबी की पत्नी व्यभिचारणी नहीं होती। (फ़तहुल क़दीर) विश्वासघात का अर्थ यह है कि यह अपने पतियों पर ईमान नहीं लायीं, निफ़ाक़ (दुविधा) में ग्रस्त रहीं तथा उनकी सहानुभूतियाँ अपनी कफ़िर जाति के साथ रहीं, जैसाकि नूह की पत्नी आदरणीय नूह अलैहिस्सलाम के विषय में लोगों से कहती कि यह उन्मादग्रस्त (दीवाना) है तथा लूत की पत्नी अपने सम्प्रदाय को घर में आने वाले आगंतुकों की सूचना पहुँचाती थी। कुछ लोग कहते हैं कि यह दोनों अपनी जाति के लोगों में अपने पतियों की चुगलियाँ खाती थीं।

[3] अर्थात नूह तथा लूत दोनों अल्लाह के पैग़म्बर (संदेष्टा) थे, जो अल्लाह के समीपस्थ बंदे होते हैं, फिर भी अपनी पत्नियों को अल्लाह की यातना से नहीं बचा सके।

[4] यह उनसे प्रलय के दिन कहा जायेगा अथवा मौत के समय उन्हें कहा गया। काफ़िरों की मिसाल यहाँ विशेष रूप से वर्णन करने का अभिप्राय पवित्र पत्नियों को यह चेतावनी देनी है कि वह नि:संदेह उस रसूल के घर की शोभा हैं, जो पूरी सृष्टि में सर्वोत्तम हैं। परन्तु उन्हें याद रखना चाहिए कि यदि उन्होंने रसूल का विरोध किया अथवा उन्हें दुख पहुँचाया तो वह भी अल्लाह की पकड़ में आ सकती हैं, तथा यदि ऐसा हो गया तो कोई उनको बचाने वाला नहीं होगा।

The Ummah Technology Mission

امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١١﴾

के लिए फ़िरऔन की पत्नी का उदाहरण वर्णन किया[1] जबकि उसने प्रार्थना की हे मेरे प्रभु ! मेरे लिए अपने पास स्वर्ग में घर बना तथा मुझे फ़िरऔन से तथा उसके कर्म से बचा और मुझे अत्याचारियों से मुक्ति प्रदान कर।

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ﴿١٢﴾

(१२) तथा (उदाहरण वर्णन किया) मरियम पुत्री इमरान का[2] जिसने अपने सतीत्व की सुरक्षा की, फिर हमने अपनी ओर से उसमें प्राण फूँके तथा (मरियम) ने अपने प्रभु की बातों[3] तथा उसकी किताबों की पुष्टि की तथा इबादत करने वालियों में से थी।[4]

---

[1]अर्थात उनके प्रोत्साहन, अडिग रहने तथा धर्म पर दृढ़ता एवं आपदा में धैर्य के लिए, तथा यह भी बताने के लिए कि कुफ़्र का वैभव तथा आतंक मुसलमानों का कुछ बिगाड़ नहीं सकता, जैसे फ़िरऔन की पत्नी है जो अपने समय के सबसे बड़े काफ़िर के अधीन थी, किन्तु वह अपनी पत्नी को ईमान से नहीं रोक सका।

[2]आदरणीया मरियम की चर्चा से उद्देश्य यह वर्णन करना है कि यद्यपि वह एक बिगड़ी जाति के बीच रहती थीं, किन्तु अल्लाह ने उन्हें लोक तथा परलोक की प्रतिष्ठा एवं चमत्कार से सम्मानित किया तथा पूरे विश्व की महिलाओं पर उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की।

[3]प्रभु के शब्दों से अभिप्राय अल्लाह के धर्म-विधान हैं।

[4]अर्थात ऐसे लोगों अथवा परिवार में से थीं जो आज्ञाकारी, उपासक तथा सुधार एव आज्ञापालन में प्रसिद्ध था। हदीस में है कि जन्नती महिलाओं में सर्वश्रेष्ठ हज़रत ख़दीजा, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत मरियम तथा फ़िरऔन की पत्नी आदरणीया आसिया रज़ि अल्लाहु अन्हुन्न हैं। (मुसनद अहमद १\२९३, मजमउज़्ज़वायेद ९\ २२३, अस्सहीह लिल अलबानी नं॰ १५०८) एक दूसरी हदीस में है कि पुरूषों में तो परिपूर्ण बहुत हुए हैं, किन्तु महिलाओं में पूर्ण मात्र फ़िरऔन की पत्नी आसिया, मरियम पुत्री इमरान तथा ख़दीजा पुत्री ख़ुवैलिद हैं, तथा आयेशा रज़ि अल्लाहु अन्हा की प्रधानता नारियों पर ऐसे है जैसे सरीद (खाने) को तमाम खानों पर प्रधानता प्राप्त है। (बुख़ारी, किताबु बदइल ख़ल्क, तथा मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, बाबु फ़ज़ाइलि ख़दीजा)

The Ummah Technology Mission

سُوْرَةُ الْمُلْكِ

सूरतुल मुल्क-६७

सूरः मुल्क* मक्का में अवतरित हुई, इसमें तीस आयतें तथा दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ۡ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ۙ ①

(१) अति शुभ है वह (अल्लाह) जिसके हाथ में राज्य है[1] तथा जो प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्य रखने वाला है।

الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۭ

(२) जिसने जीवन तथा मृत्यु को इसलिए पैदा किया कि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममें

---

*इसकी प्रधानता में अनेक हदीसें आयी हैं, जिनमें से कुछ सहीह अथवा हसन हैं। एक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "अल्लाह की किताब में एक सूरह है जिसमें मात्र ३० आयतें हैं। यह इंसान की सिफ़ारिश करेगी यहाँ तक कि उसे क्षमा कर दिया जायेगा।" (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा तथा मुसनद अहमद २\२९९,३२१) दूसरी रिवायत में है। "क़ुरआन पाक की एक सूरत है, जो अपने पढ़ने वाले की ओर से लड़ेगी यहाँ तक कि उसे स्वर्ग में प्रवेश दिलायेगी।" (मजमउज़ ज़वायेद ७\१७२, ज़करहुल अलबानी फ़िल जामेइस सग़ीर न० ३६४४) तिर्मिज़ी की एक रिवायत में यह भी वर्णन किया गया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात में सोने से पहले सूरह अलिफ़०लाम०मीम० अस-सजदा, तथा सूरः मुल्क अवश्य पढ़ते थे। (अबवाबु फ़ज़ायेलिल क़ुरआन) एक रिवायत अल्लामा अलबानी ने अस-सहीहा में उद्धृत की है سُوْرَةُ تَبَارَكَ هِيَ الْمَانِعَةُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ "सूरह मुल्क क़ब्र की यातना से रोकने वाली है" (न० ११४० भाग ३ पृष्ठ १३१) अर्थात जो उसे पढ़ता रहेगा आशा है कि क़ब्र की यातना से सुरक्षित रहेगा, प्रतिबंध यह है कि वह इस्लाम के आदेशों एवं अनिवार्यताओं का पालन करता रहे।

[1] تَبَارَكَ तबारक بَرَكَةٌ से है النَّمَاءُ وَالزِّيَادَةُ बढ़ने तथा अधिक होने के अर्थ में है। कुछ ने अर्थ किया है सृष्टि के गुणों से सर्वोच्च तथा महान تفاعل का रूप अतिशय के लिए है। "उसी के हाथ में राज्य है" अर्थात प्रत्येक प्रकार का सामर्थ्य तथा प्रभुत्व उसी को प्राप्त है, वह सृष्टि में जैसे चाहे, जो चाहे करे, कोई उसे रोक नहीं सकता। वह राजा को रंक तथा रंक को राजा बना दे, निर्धन को धनी तथा धनी को निर्धन कर दे, कोई उसकी हिक्मत तथा इच्छा में हस्तक्षेप नहीं कर सकता।

The Ummah Technology Mission

وَهُوَ الْعَزِيزُ الْغَفُورُ ﴿٢﴾

से अच्छे कर्म कौन करता है,[1] तथा वह प्रभाव-शाली एवं क्षमा करने वाला है।

الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا ۖ مَّا تَرَىٰ فِي خَلْقِ الرَّحْمَٰنِ مِن تَفَاوُتٍ ۖ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرَىٰ مِن فُطُورٍ ﴿٣﴾

(३) जिसने सात आकाश ऊपर-नीचे पैदा किये (तो हे देखने वाले ! अल्लाह) दयावान की उत्पत्ति में कोई असंगति न देखेगा,[2] पुनः पलटकर देख ले कि कि क्या कोई चीर भी दिखाई दे रही है।[3]

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ﴿٤﴾

(४) फिर दोहरा कर दो-दो बार देख ले, तेरी दृष्टि तेरी ओर हीन (तथा विवश) होकर थकी हुई लौट आयेगी।[4]

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِّلشَّيَاطِينِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيرِ ﴿٥﴾

(५) और निःसंदेह हमने आकाशीय संसार को दीपों (तारों) से सुशोभित किया तथा उन्हें शैतानों को मारने का साधन बना दिया[5] और शैतानों के लिए हमने (नरक में जलाने वाली) यातना तैयार कर दिया।

---

[1]आत्मा एक ऐसी अदृश्य वस्तु है कि जिस शरीर से उसका सम्बन्ध तथा लगाव हो जाये वह जीवित कहलाता है तथा जिस शरीर से उसका सम्बन्ध टूट जाये वह मौत से मिल जाता है। अल्लाह ने यह सामयिक जीवन-क्रम इसलिए स्थापित किया है ताकि वह परीक्षा ले कि इस जीवन का सही प्रयोग कौन करता है ? जो उसे ईमान तथा आज्ञा-पालन के लिए प्रयोग करेगा उसके लिए उत्तम फल है तथा दूसरों के लिए यातना।

[2]अर्थात कोई विपरीतता, कोई टेढ़ापन तथा कोई कमी नहीं, अपितु वह पुर्णतः सीधे एवं सामान्य हैं, जो इसका संकेत देते हैं कि इन सबका रचयिता केवल एक है, अनेक नहीं।

[3]कई बार देखने से कुछ कमी तथा दोष निकल आता है। अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि बार-बार देखो, क्या तुम्हें कोई दरार दिखाई देती है ?

[4]यह अधिक बल देने के लिये है जिसका आशय अपने विशाल सामर्थ्य तथा एकता को अधिक स्पष्ट करना है।

[5]यहाँ तारों के दो लक्ष्य बताये गये हैं, एक आकाशों की शोभा क्योंकि वह दीपों के समान जलते दिखाई देते हैं। दूसरे, यदि शैतान आकाशों की ओर जाने का प्रयास करते हैं तो यह आग बनकर उन पर गिरते हैं। तीसरे, उनका यह उद्देश्य है जिसे दूसरे स्थान पर वर्णन किया गया है कि उनसे जल-थल में मार्ग का संकेत मिलता है।

The Ummah Technology Mission

وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٦﴾

(६) तथा अपने प्रभु के साथ कुफ़्र करने वालों के लिए नरक की यातना है, तथा वह क्या ही बुरा स्थान है।

إِذَا أُلْقُوا فِيهَا سَمِعُوا لَهَا شَهِيقًا وَهِيَ تَفُورُ ﴿٧﴾

(७) जब उसमें ये डाले जायेंगे तो उसकी बड़े ज़ोर की आवाज़ सुनेंगे तथा वह उबाल खा रहा होगा।[1]

تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۖ كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ﴿٨﴾

(८) (प्रतीत होगा कि अभी) क्रोध के मारे फट पड़ेगी,[2] जब कभी उसमें कोई गिरोह डाला जायेगा उससे नरक के दरोग़ा पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था ?[3]

قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ﴿٩﴾

(९) वे उत्तर देंगे कि नि:संदेह आया तो था, परन्तु हमने उसे झुठलाया तथा कहा कि अल्लाह (तआला) ने कुछ भी अवतरित नहीं किया। तुम बहुत बड़े कुपथ में ही हो।[4]

وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ﴿١٠﴾

(१०) तथा कहेंगे कि यदि हम सुनते होते अथवा समझते होते तो नरकवासियों में

---

[1] شَهِيق उस ध्वनि को कहते हैं जो गधा प्रथम वार निकालता है, यह अत्यन्त बुरी ध्वनि होती है। नरक भी गधे की भाँति चीख चिल्ला रहा तथा आग पर रखी हाँडी के समान खौल रहा होगा।

[2] अर्थात क्रोध तथा रोष के मारे उसके एक भाग एक-दूसरे से अलग हो जायेंगे। यह नरक काफ़िरों को देखकर क्रोधित हो जायेगा। जिसकी समझ अल्लाह तआला उसके भीतर पैदा कर देगा। अल्लाह तआला के लिए नरक के भीतर बोध तथा संवेदन पैदा कर देना कोई कठिन नहीं है।

[3] जिसके कारण आज तुम्हें नरक की यातना का स्वाद चखना पड़ा है।

[4] अर्थात हमने पैग़म्बरों को मानने की जगह उनका इंकार कर दिया, आसमानी किताबों को नहीं माना, यहाँ तक कि अल्लाह के पैग़म्बरों से हमने कहा कि तुम बड़ी गुमराही में लिप्त हो।

The Ummah Technology Mission

(सम्मिलित) न होते।[1]

فَاعْتَرَفُوا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّأَصْحَٰبِ ٱلسَّعِيرِ ﴿١١﴾

(११) तो उन्होंने अपने अपराध को स्वीकार कर लिया।[2] अब ये नरकवासी हट जायें (दूर हों)।[3]

إِنَّ ٱلَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِٱلْغَيْبِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿١٢﴾

(१२) नि:संदेह जो लोग अपने प्रभु से बिने देखे ही डरते रहते हैं, उनके लिए क्षमा है तथा बड़ा बदला है।[4]

وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ أَوِ ٱجْهَرُوا بِهِۦ ۖ إِنَّهُۥ عَلِيمٌۢ بِذَاتِ ٱلصُّدُورِ ﴿١٣﴾

(१३) तथा तुम अपनी बातों को चुपके से कहो अथवा ऊँचे स्वर में,[5] वह तो सीनों में (छिपी हुई) बातों को भी भली-भाँति जानता है।[6]

---

[1]अर्थात ध्यान से सुनते तथा उनकी बातों एवं उपदेशों को मानते, इसी प्रकार अल्लाह की प्रदान की हुई बुद्धि से भी सोचने समझने का काम लेते तो आज हम नरकवासियों में सम्मिलित न होते।

[2]जिसके कारण यातना के पात्र बने, तथा वह है कुफ़्र (अविश्वास) तथा अम्बिया अलैहिमुस्सलाम (ईशदूतों) को झुठलाना।

[3]अर्थात अब उनके लिए अल्लाह तथा उसकी दयालुता से दूरी ही दूरी है। कुछ कहते हैं कि سُحْقٌ (सुहक) नरक की एक वादी का नाम है।

[4]यह काफ़िरों तथा झुठलाने वालों के मुक़ाबले में ईमानवालों का तथा उन वरदानों का वर्णन है जो उन्हें क़यामत (प्रलय) के दिन अल्लाह के पास प्राप्त होगा। بِالْغَيْبِ का एक भावार्थ यह है कि उन्होंने अल्लाह को देखा तो नहीं, किन्तु पैग़म्बरों को मानते हुए वह अल्लाह की यातना से डरते रहे। दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि लोगों की निगाहों से ओझल, अर्थात एकांत में अल्लाह से डरते रहे।

[5]यह काफ़िरों से फिर संबोधन है। अभिप्राय यह है कि तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में छुपकर बातें करो अथवा खुलकर, सब अल्लाह के ज्ञान में है, उससे कोई बात छिपी नहीं।

[6]यह चुपके एवं स्वर से की जाने वाली बात को जानने का कारण बताया जा रहा है कि वह तो मनोगत विचारों तक से अवगत है, तो तुम्हारी बातें किस प्रकार उससे छिपी रह सकती हैं? प्रश्न इंकार के लिए है अर्थात नहीं रह सकतीं।

The Ummah Technology Mission

أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ۗ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ﴿١٤﴾

(१४) क्या वही न जाने जिसने पैदा किया ?[1] फिर वह सूक्ष्मदर्शी एवं जानने वाला भी हो ।[2]

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِنْ رِزْقِهِ ۖ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ﴿١٥﴾

(१५) वह वही है जिसने तुम्हारे लिए धरती को अधीन (एवं वशीभूत) बनाया[3] ताकि तुम उसके मार्गों पर आवागमन करते रहो[4] तथा उस की प्रदान की हुई जीविका को खाओ-पिओ,[5] उसी की ओर (तुम्हें) जीकर उठ खड़ा होना है ।

أَأَمِنتُم مَّن فِي السَّمَاءِ أَن يَخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ﴿١٦﴾

(१६) क्या तुम इस बात से निर्भय हो गये हो कि आकाशों वाला तुम्हें धरती में धंसा दे तथा सहसा धरती कंपित हो उठे ।[6]

---

[1]अर्थात सीनों एवं हृदय में पैदा होने वाले विचार का पैदा करने वाला अल्लाह तआला ही है, तो किया वह अपनी सृष्टि से अज्ञान रह सकता है, प्रश्न इंकार के लिए है अर्थात नहीं रह सकता ।

[2]لَطِيف का अर्थ है सूक्ष्मदर्शी, "अर्थात जिसका ज्ञान इतना सूक्ष्म है कि मनोगत बातों को भी वह जानता है ।" (फतहुल क़दीर)

[3]ذَلُول का अर्थ है अधीन, जो तुम्हारे आगे झुक जाये, सिर न फेरे । अर्थात धरती को तुम्हारे लिए कोमल तथा सरल कर दिया है । उसे इतनी कड़ी नहीं बनाया कि तुम्हारा उस पर आवाद होना तथा यातायात कठिन हो ।

[4]مَنَاكِب बहुवचन है مَنْكِبٌ का जिसका अर्थ है ओर । यहाँ अभिप्राय मार्ग तथा दिशायें हैं यह आज्ञा औचित्य के लिए है, अर्थात उसके मार्गों में चलो ।

[5]अर्थात धरती की उपज से खाओ, पिओ ।

[6]अल्लाह जो आकाशों पर अर्थात सर्वोच्च आसन पर उच्चय है, यह काफ़िरों को डराया जा रहा है कि आकाशों का मालिक अल्लाह जब चाहे तुम्हें धरती में धंसा दे । अर्थात वही धरती जो तुम्हारा निवास-स्थान तथा तुम्हारी जीविका का भण्डार एवं उद्गम है, अल्लाह उसी धरती को जो अति शान्त है, गति तथा कंपन में लाकर तुम्हारे विनाश का कारण बना सकता है ।

The Ummah Technology Mission

أَمْ أَمِنتُم مَّن فِي السَّمَاءِ أَن يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ﴿١٧﴾

(१७) अथवा क्या तुम इस बात से निर्भीक हो गये हो कि आकाशों वाला तुम पर पत्थर बरसा दे ?[1] फिर तो तुम्हें ज्ञात हो ही जायेगा कि मेरा डराना कैसा था[2]

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿١٨﴾

(१८) तथा उनसे पूर्व के लोगों ने भी झुठलाया था, (तो देखो) उन पर मेरा प्रकोप कैसा कुछ हुआ ?

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَافَّاتٍ وَيَقْبِضْنَ ۚ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَٰنُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ﴿١٩﴾

(१९) क्या ये अपने ऊपर कभी पंख खोले हुए तथा (कभी-कभी) समेटे हुए (उड़ने वाले) पंक्षियों को नहीं देखते,[3] उन्हें (अल्लाह) परम दयालु ही (वायुमण्डल तथा आकाश में) थामे हुए है।[4] नि:संदेह प्रत्येक वस्तु उसकी दृष्टि में है।

أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ جُندٌ لَّكُمْ يَنصُرُكُم مِّن دُونِ الرَّحْمَٰنِ ۚ إِنِ الْكَافِرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ ﴿٢٠﴾

(२०) अल्लाह के अतिरिक्त तुम्हारी कौन सी सेना है जो तुम्हारी सहायता कर सके।[5] काफ़िर तो पूर्णरूप से धोखे ही में हैं।[6]

---

[1]जैसे उसने लूत की जाति तथा असहावुल फ़ील (हाथी वाले अवरहा तथा उसकी सेना) पर बरसाये तथा पत्थरों की वर्षा से उनका विनाश कर दिया।

[2]परन्तु उस समय यह ज्ञान व्यर्थ होगा।

[3]अर्थात पखेरू जब हवा में उड़ता है तो वह पंख पसार लेता है तथा कभी उड़ने के बीच पंखों को सिकोड़ लेता है। यह फैलाना صَفٌّ (सफ्फ) तथा सिकोड़ना قَبْضٌ (क़ब्ज़) है।

[4]अर्थात उड़ान के समय इन पक्षियों को थाम रखने वाला कौन है, जो उन्हें धरती पर गिरने नहीं देता। यह अल्लाह दयावान ही के सामर्थ्य का एक नमूना है।

[5]यह प्रश्न डाँट फटकार के लिये है। جُندٌ का अर्थ है सेना, जत्था, अर्थात कोई सेना तथा जत्था ऐसा नहीं है जो तुम्हें अल्लाह की यातना से बचा सके।

[6]जिसमें उन्हें शैतान ने ग्रस्त कर रखा है।

The Ummah Technology Mission

أَمَّنْ هٰذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ ۚ بَل لَّجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ﴿٢١﴾

(२१) यदि अल्लाह (तआला) अपनी जीविका रोक ले, तो(बताओ) कौन है, जो फिर तुम्हारी जीविका चलायेगा ?[1] बल्कि (काफ़िर) तो उद्दण्डता एवं विमुख होने पर दृढ़ हो गये हैं।[2]

أَفَمَن يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ أَهْدَىٰ أَمَّن يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٢٢﴾

(२२) अच्छा वह व्यक्ति अधिक मार्गदर्शन पर है जो अपने मुख के बल औंधा होकर चले[3] अथवा वह जो सीधा (पैरों के बल) सीधे मार्ग पर चल रहा हो ?[4]

قُلْ هُوَ الَّذِي أَنشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ

(२३) कह दीजिए कि वही (अल्लाह) है जिसने तुम्हें पैदा किया[5] तथा तुम्हारे कान, आँखें

---

[1]अर्थात अल्लाह वर्षा न करे, अथवा धरती ही को उपज से रोक दे, अथवा तैयार फसलों को नाश कर दे, जैसाकि कभी-कभी ऐसा करता है जिसके कारण तुम्हारे खाद्य का क्रम रुक जाये। यदि अल्लाह ऐसा कर दे तो क्या कोई और है जो अल्लाह की इस इच्छा के विपरीत तुम्हें जीविका प्रदान कर दे ?

[2]अर्थात शिक्षा तथा सदुपदेश की इन बातों का उन पर कोई प्रभाव नहीं होता, अपितु वह सत्य से विमुखता तथा घृणा ही में बढ़ते चले जा रहे हैं, शिक्षा ग्रहण करते हैं न चिन्ता-मनन करते हैं।

[3]मुँह के बल औंधे चलने वाले को दायें-बायें तथा आगे कुछ नहीं दिखता, न वह ठोकरों से सुरक्षित रहता है। क्या ऐसा व्यक्ति अपने लक्ष्य तक पहुँच सकता है ? निश्चय वह नहीं पहुँच सकता। इसी प्रकार संसार में अल्लाह की आज्ञा का पालन न करने वाला व्यक्ति परलोक की सफलता से वंचित रहेगा।

[4]जिसमें कोई टेढ़ापन न हो तथा उसे आगे एवं दायें-बायें भी दिख रहा हो। खुली बात है कि यह अपने नियमित लक्ष्य तक पहुँच जायेगा। अर्थात अल्लाह की आज्ञा का पालन करने वाला परलोक में सफल (प्रसन्न) रहेगा। कुछ कहते हैं कि यह मोमिन तथा काफ़िर दोनों की स्थिति का वर्णन है जो उनकी प्रलय के दिन होगी। काफ़िर मुँह के बल नरक में ले जाये जायेंगे तथा मोमिन सीधे अपने पगों पर चलकर स्वर्ग में जायेंगे। जैसे काफ़िरों के बारे में अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ﴾

"हम उन्हें क़यामत के दिन मुँह के बल एकत्र करेंगे।" (सूर: बनी इस्राईल-९७)

[5]अर्थात पहली बार पैदा करने वाला अल्लाह ही है।

Free Ummah Technology Mission

وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٣﴾

एवं दिल बनाये।[1] तुम बहुत ही कम कृतज्ञता व्यक्त करते हो।[2]

قُلْ هُوَ الَّذِىْ ذَرَاَكُمْ فِى الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾

(२४) कह दीजिए कि वही है जिसने तुम्हें धरती पर फैला दिया तथा उसकी ओर तुम एकत्रित किये जाओगे।[3]

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा (काफ़िर) पूछते हैं कि वह वायदा कब प्रकट होगा यदि तुम सच्चे हो (तो बताओ)?[4]

قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۖ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٦﴾

(२६) (आप) कह दीजिए इसका ज्ञान तो अल्लाह ही को है।[5] मैं तो स्पष्ट रूप से सावधान कर देने वाला हूँ।[6]

---

[1]जिनसे तुम सुन सको, देख सको तथा अल्लाह की रचना में चिंतन-मनन कर उसका ज्ञान प्राप्त कर सको। तीन शक्तियों की चर्चा किया है, जिनसे इंसान देखने, सुनने तथा समझने की चीज़ों का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। यह एक प्रकार से तर्क की पूर्ति भी है तथा अल्लाह के इन उपकारों पर कृतज्ञता न दिखाने की निन्दा भी। इसी कारण आगे फ़रमाया, "तुम बहुत ही कम कृतज्ञता दिखाते हो।"

[2]अर्थात شُكْراً قَلِيلاً अथवा زَمَناً قَلِيلاً कम कृतज्ञता से तात्पर्य उनकी ओर से कृतज्ञता का न होना है। (फ़तहुल क़दीर)

[3]अर्थात इंसानों को रचकर धरती पर फैलाने वाला भी वही है तथा प्रलय के दिन सबको एकत्र भी उसी के पास होना है, किसी अन्य के पास नहीं।

[4]काफ़िर यह उपहास स्वरूप तथा प्रलय को असंभव समझते हुए कहते थे।

[5]उसके सिवा कोई नहीं जानता। दूसरे स्थान पर फ़रमाया:

﴿قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي﴾

"आप कह दीजिए कि इसका ज्ञान केवल मेरे प्रभु ही के पास है।" (अल-आराफ़-१८७)

[6]अर्थात मेरा काम तो उस परिणाम से डराना है जो मुझे झुठलाने के कारण तुम्हारा होगा। दूसरे शब्दों में मेरा काम सावधान करना है, परोक्ष की ख़बरें बताना नहीं, परन्तु यह कि जिस के सम्बन्ध में अल्लाह स्वयं मुझे बता दे।

The Ummah Technology Mission

فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿٢٧﴾

(२७) जब ये लोग उस[1] (वादे) को निकटतम पा लेंगे, उस समय इन काफ़िरों के मुख बिगड़ जायेंगे[2] तथा कह दिया जायेगा कि यही है जिसे तुम माँगा करते थे।[3]

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِيَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾

(२८) (आप) कह दीजिए ! कि ठीक है यदि मुझे तथा मेरे साथियों को अल्लाह (तआला) नष्ट कर दे अथवा हम पर दया करे, (जो भी हो, यह तो बताओ) कि काफ़िरों को कष्टदायी यातना से कौन बचायेगा ?[4]

قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٩﴾

(२९) (आप) कह दीजिए कि वही परम दयालु है, हम तो उस पर ईमान ला चुके[5] तथा उसी पर हमने भरोसा किया।[6] तुम्हें शीघ्र ही ज्ञात हो जायेगा कि स्पष्ट भटकावे में कौन है ?[7]

---

[1] رَاَوْهُ में अधिकांश व्याख्याकारों के विचार के अनुसार सर्वनाम क़यामत की यातना की ओर फिर रहा है।

[2] अर्थात अपमान, भयानकता तथा डर से उनके चेहरों पर हवाईयाँ उड़ रही होंगी, जिस को दूसरे स्थान पर चेहरों के काले होने से व्यंजित किया गया है। (आले-इमरान,१०६)

[3] تَدَّعُوْنَ (तद्दऊन) तथा تَدْعُوْنَ (तुदऔन) दोनों एक ही अर्थ में हैं। अर्थात यह यातना जो तुम देख रहे हो वही है जिसकी तुम संसार में तुरन्त माँग कर रहे थे। जैसे सूरह साद,१६ तथा अल-अंफ़ाल,३२ आदि में है।

[4] अभिप्राय यह है कि इन काफ़िरों को तो अल्लाह की यातना से कोई बचाने वाला नहीं है, चाहे अल्लाह अपने रसूल तथा उस पर ईमान लाने वालों को मौत अथवा हत्या द्वारा नाश कर दे अथवा उन्हें अवसर प्रदान कर दे। अथवा यह अर्थ है कि हम ईमान लाकर भी भय तथा आशा के बीच हैं "तो तुम्हारे कुफ़्र के बावजूद तुम्हें यातना से कौन बचायेगा ?"

[5] अर्थात उसकी एकता पर, इसीलिए उसके साथ साझी नहीं बनाते।

[6] किसी और पर नहीं। हम अपने सभी मामले उसी को समर्पित करते हैं। किसी और को नहीं, जैसे मिश्रणवादी करते हैं।

[7] तुम हो या हम, इसमें काफ़िरों के लिए कड़ी धमकी है।

The Ummah Technology Mission

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ۝٣٠

(३०) (आप) कह दीजिए ठीक है, यह तो बताओ कि यदि तुम्हारे (पीने का) पानी धरती चूस जाये, तो कौन है, जो तुम्हारे लिए निथरा हुआ पानी लाये।[1]

سُوْرَةُ الْقَلَمِ

सूरतुल क़लम-६८

सूर: क़लम मक्के में अवतरित हुई, इसमें बावन आयतें एवं दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु अत्यन्त कृपालु है।

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ۝١

(१) नून०[2] सौगन्ध है क़लम की[3] तथा उसकी जो कुछ कि वे (फ़रिश्ते) लिखते हैं।[4]

---

[1] غَــور (गौर) का अर्थ है सुख जाना अथवा इतनी गहराई में चला जाना कि वहाँ से पानी निकालना संभव न हो। अर्थात यदि अल्लाह तआला पानी सुखा दे कि उसका अस्तित्व ही न रह जाये या इतनी गहराई में कर दे कि पानी निकालने की सब मशीनें विफल हो जायें तो बताओ फिर कौन है जो प्रवाहित, स्वच्छ, निथरा जल सुलभ करा दे ? अर्थात कोई नहीं है। यह अल्लाह की दया है कि तुम्हारी अवज्ञा के उपरान्त भी वह तुम्हें जल से वंचित नहीं करता।

[2] ن उसी प्रकार का अलग अक्षरों में से है, जैसे इससे पहले ص ، ق तथा अन्य सूरतों के आरम्भिक अक्षर गुज़र चुके हैं।

[3] क़लम की सौगन्ध खाई जिसका इसलिए एक महत्व है कि इसके द्वारा वर्णन तथा व्याख्या होता है। कुछ कहते हैं कि इससे तात्पर्य वह विशेष क़लम है जिसे अल्लाह ने सर्वप्रथम पैदा किया तथा उसे भाग्य लिखने का आदेश दिया। अत: उसने अंत तक सभी होने वाली चीज़ों को लिख दिया। (तिर्मिज़ी तफ़सीर सूरतुन नून वल क़लम तथा अलबानी ने इसे सहीह कहा है)

[4] يَسْطُرُوْنَ में सर्वनाम लेखकों की ओर फिरता है जिसको क़लम शब्द बता रहा है, क्योंकि लिखने के यंत्र की चर्चा से लेखक का अस्तित्व आवश्यक होता है। अभिप्राय यह है कि उस लेख की भी सौगन्ध जो लेखक लिखते हैं, अथवा फिर सर्वनाम फ़रिश्ते की ओर फिरता है, जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है।

The Ummah Technology Mission

مَآ اَنۡتَ بِنِعۡمَةِ رَبِّكَ بِمَجۡنُوۡنٍ ۚ﴿۲﴾

(२) आप अपने प्रभु की कृपा से पागल नहीं हैं।[1]

وَاِنَّ لَكَ لَاَجۡرًا غَيۡرَ مَمۡنُوۡنٍ ۚ﴿۳﴾

(३) तथा नि:संन्देह आपके लिए अनन्त बदला है।[2]

وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيۡمٍ ﴿۴﴾

(४) तथा नि:संदेह आप अति (उत्तम) स्वभाव पर हैं।[3]

فَسَتُبۡصِرُ وَيُبۡصِرُوۡنَ ۙ﴿۵﴾

(५) तो अब आप भी देख लेंगे तथा यह भी देख लेंगे।[4]

بِاَيِّكُمُ الۡمَفۡتُوۡنُ ﴿۶﴾

(६) कि तुम में से भ्रष्ट कौन है।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعۡلَمُ بِمَنۡ ضَلَّ عَنۡ سَبِيۡلِهٖ ۖ وَهُوَ اَعۡلَمُ بِالۡمُهۡتَدِيۡنَ ﴿۷﴾

(७) नि:संदेह तेरा प्रभु अपने मार्ग से भटकने वालों को भली-भाँति जानता है, तथा वह सत्यमार्गियों को भी भली-भाँति जानता है।

---

[1]यह सौगन्ध का उत्तर है, जिसमें काफ़िरों के कथन का खण्डन है, वह आप को दीवाना कहते थे।

[2]नुबूवत (दूतत्व) के कर्तव्य को पूरा करने के लिए जो भी दुख आप ने सहन किये तथा शत्रुओं के व्यंग आप ने सुने हैं उस पर अल्लाह की ओर से अनंत बदला (प्रतिफल) आप के लिए है। مَنٌّ का अर्थ काटना है।

[3]خُلُقٍ عَظِيمٍ से तात्पर्य इस्लाम धर्म अथवा पवित्र क़ुरआन है। अभिप्राय यह है कि तू उस स्वभाव पर है जिसका आदेश तुझे अल्लाह ने क़ुरआन में अथवा इस्लाम धर्म में दिया है। अथवा इससे अभिप्राय वह सभ्यता, शिष्टाचार, कोमलता, उदारता, अमानत, सत्यता, सहनशीलता, श्रेष्ठता तथा अन्य नैतिक गुण हैं, जिनमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबी होने से पहले विशेषता रखते थे तथा नबी होने के पश्चात भी उनमें अधिक ऊँचाई तथा विस्तार हुआ। इसीलिए जब आदरणीया आयेशा रज़ि अल्लाहु अन्हा से आपके आचरण के बारे में प्रश्न किया गया तो फ़रमाया : «كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْآنَ». (मुस्लिम, किताबुल मुसाफ़िरीन, बाबु जामेए सलातिल लैले व मन नाम अन्हु औ मरेज़) आदरणीया आयेशा का उत्तर खुल्क़े अज़ीम (خُلُقٍ عَظِيمٍ) के उपरोक्त दोनों भावार्थों को घेरे हुए है।

[4]अर्थ जब सत्य खुल जायेगा तथा सब पर्दे उठ जायेंगे और यह प्रलय के दिन होगा। कुछ ने इसे बद्र के रण से संबधित बताया है।

The Ummah Technology Mission

فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝٨

(८) तो आप झुठलाने वालों की (बात) स्वीकार न करें।[1]

وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ۝٩

(९) वे तो चाहते हैं कि आप तनिक ढीले हों तो ये भी ढीले पड़ जायें।[2]

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ۝١٠

(१०) तथा आप किसी ऐसे व्यक्ति का भी कहना न मानें जो अधिक सौगन्धें खाने वाला हीन हो।

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيْمٍ ۝١١

(११) दुष्ट, दुराचारी तथा चुगली करने वाला हो।

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۝١٢

(१२) भलाई से रोकने वाला, सीमा उल्लंघन करने वाला पापी हो।

عُتُلٍّۭ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ۝١٣

(१३) घमंडी फिर साथ ही कुवंश हो।[3]

اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ۝١٤

(१४) (उसकी उद्दण्डता) केवल इसलिए है कि वह धनवान तथा पुत्रों वाला है।[4]

---

[1]आज्ञापालन का अर्थ यहाँ वह कोमलता है जो इंसान अपनी अंतरात्मा के विपरीत दिखाता है। अर्थात मुश्रिकों (बहुदेववादियों) की ओर झुकने तथा उनसे कोमलता करने की आवश्यकता नहीं है।

[2]अर्थात वह तो चाहते हैं कि तू उनके पूज्यों के सम्बन्ध में कोमल स्वभाव अपनाये। किन्तु असत्य के साथ कोमल स्वभाव का परिणाम यह होगा कि असत्य के पुजारी अपनी अनृत की पूजा छोड़ने में ढीले हो जायेंगे। अत: सत्य के विषय में आलस्य, धर्म के प्रचार के विषय में नीति एवं नुबूवत (दूतत्व) के कार्य के लिए अति हानिकारक है।

[3]यह उन काफ़िरों के नैतिक पतन की चर्चा है जिनके कारण पैग़म्बर को आलस्य करने से रोका जा रहा है। यह दुगुर्ण किसी एक व्यक्ति के वर्णन किये गये हैं अथवा साधारण काफ़िरों के ? पहली बात का श्रोत यद्यपि कुछ रिवायतें हैं, परन्तु वे अप्रमाणिक हैं। अत: उद्देश्य साधारण है अर्थात प्रत्येक वह व्यक्ति है जिसमें उक्त गुण पाये जायें। زَنِيْمٌ हरामी अथवा कुख्यात एवं बदनाम है।

[4]अर्थात उक्त दुराचार का काम वह इसलिए करता है कि अल्लाह ने उसे धन एवं संतान के वरदानों से सम्पन्न किया है, अर्थात वह कृतज्ञता के बदले कृतघ्नता करता है। कुछ ने इसे وَلَا تُطِعْ से सम्बन्धित किया है, अर्थात जिसमें यह बुराईयाँ हों उसकी बात केवल इस लिये मान ली जाये कि वह धन तथा संतान वाला है।

The Ummah Technology Mission

إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٥﴾

(१५) जब उसके समक्ष हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो यह कह देता है कि ये तो पूर्व के लोगों की कथायें हैं।

سَنَسِمُهُ عَلَى الْخُرْطُومِ ﴿١٦﴾

(१६) हम भी उसकी सूँड (नाक) पर दाग देंगे।[1]

إِنَّا بَلَوْنَاهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ﴿١٧﴾

(१७) नि:संदेह हमने उनकी उसी प्रकार परीक्षा ली,[2] जिस प्रकार हमने बाग वालों की परीक्षा ली थी।[3] जबकि उन्होंने सौगन्ध खायी कि प्रात: होते ही उस (बाग़) के फल तोड़ लेंगे।[4]

وَلَا يَسْتَثْنُونَ ﴿١٨﴾

(१८) तथा इंशा अल्लाह (यदि अल्लाह ने चाहा) न कहा।

---

[1]कुछ के निकट इस का संबंध संसार से है, कहा जाता है कि बद्र के रण में उन काफ़िरों की नाकों को तलवारों का निशाना बनाया गया। कुछ कहते हैं कि यह क़यामत के दिन नरकवासियों का चिन्ह होगा कि उनकी नाकों को दाग दिया जायेगा, अथवा इसका अभिप्राय चेहरों की कालिमा है, जैसाकि काफ़िरों के चेहरे उस दिन काले होंगे। कुछ कहते हैं कि काफ़िरों का यह परिणाम लोक-परलोक दोनों जगह संभव है।

[2]अभिप्राय मक्कावासी हैं। उन्हें धन एवं संतान दिया ताकि वह अल्लाह की कृतज्ञता दिखायें, परन्तु उन्होंने कृतघ्नता तथा घमण्ड का मार्ग अपनाया तो हमने उन्हें भूख तथा अकाल की परीक्षा में डाल दिया, जिसमें वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शाप के कारण कुछ दिन फंसे रहे।

[3]बाग़ वालों की कथा अरबों में प्रसिद्ध थी। यह बाग़ सन्आ (यमन) से दो फरसंग (छ: मील) की दूरी पर था। उसका स्वामी उसकी उपज में से कुछ भाग ग़रीबों तथा निर्धनों पर भी ख़र्च करता था जब उसकी संतान उसकी उत्तराधिकारी बनी तो उन्होंने कहा कि हमारा ख़र्च ही कठिनाई से पूरा होता है तो हम उसकी आय ग़रीबों तथा दरिद्रों को कैसे दें इसलिए अल्लाह ने उस बाग़ ही को ध्वस्त कर दिया। कहते हैं कि यह घटना आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम के आकाश पर उठाये जाने के कुछ समय पश्चात ही हुई। (फ़तहुल क़दीर) यह सभी विवरण तफ़सीर वाली रिवायतों का है।

[4]صرم का अर्थ है, फल और खेती का काटना, مُصبحين अवस्थावाचक है, अर्थात सुबह होते ही फल उतार लेंगे और पैदावार काट लेंगे।

The Ummah Technology Mission

فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿١٩﴾

(१९) तो उस पर तेरे प्रभु की ओर से एक बला चारों ओर से घूम गयी तथा वे सो ही रहे थे।[1]

فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ ﴿٢٠﴾

(२०) तो वह (बाग़) ऐसा हो गया जैसे कटी हुई खेती।[2]

فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ ﴿٢١﴾

(२१) अब प्रात: होते ही उन्होंने एक-दूसरे को आवाज़ें दीं।

اَنِ اغْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِيْنَ ﴿٢٢﴾

(२२) कि यदि तुम्हें फल तोड़ना है तो अपनी खेती पर प्रात:काल ही चल पड़ो।

فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَافَتُوْنَ ﴿٢٣﴾

(२३) फिर ये सब चुपके-चुपके बातें करते हुए चले।[3]

اَنْ لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّسْكِيْنٌ ﴿٢٤﴾

(२४) कि आज के दिन कोई निर्धन तुम्हारे पास न आये।[4]

وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा जल्दी-जल्दी प्रात:काल ही पहुँच गये (समझ रहे थे) कि हम क़ाबू पा गये।[5]

---

[1]कुछ कहते हैं कि उसे रातों-रात आग लग गई, कुछ कहते हैं कि जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आकर उसका सत्यानाश कर दिया।

[2]अर्थात जैसे खेती कटने के पश्चात सूख जाती है, उसी प्रकार पूरा बाग़ उजड़ गया। कुछ ने अनुवाद किया है, 'काली रात की भाँति हो गया' अर्थात जलकर।

[3]अर्थात बाग़ की ओर जाने के लिए एक तो सवेरे निकले, दूसरे चुपके-चुपके बातें करते हुए ताकि किसी को उनके जाने का ज्ञान न हो।

[4]अर्थात वह एक-दूसरे से कहते रहे कि आज कोई बाग में आकर हमसे कुछ न माँगे जैसे हमारे बाप के समय आया करते थे तथा अपना भाग ले जाते थे।

[5]حَرْدٍ (हर्द) का एक अर्थ तो शक्ति तथा बल किया गया है जिसको अनुवादक ने 'लपके हुए' से व्यंजित किया है। कुछ ने क्रोध तथा द्वेष किया है, अर्थात निर्धनों पर क्रोध दिखाते वा ईर्ष्या करते हुए। قَادِرِيْنَ अवस्थावाचक है। अर्थात अपने मामले का उन्होंने अनुमान लगा लिया अथवा अपने विचार में उन्होंने अपने बाग़ पर सामर्थ्य प्राप्त कर लिया। अथवा अभिप्राय यह है कि उन्होंने गरीबों पर काबू पा लिया।

The Ummah Technology Mission

فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْٓا اِنَّا لَضَآلُّوْنَ ﴿٢٦﴾

(२६) फिर जब उन्होंने बाग़ देखा[1] तो कहने लगे कि नि:संदेह हम मार्ग भूल गये।[2]

بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٢٧﴾

(२७) नहीं-नहीं, बल्कि हम महरूम (वंचित) कर दिये गये।[3]

قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ ﴿٢٨﴾

(२८) उन सबमें जो उत्तम था उसने कहा कि मैं तुम सबसे न कहता था कि तुम (अल्लाह की) तस्बीह क्यों नहीं करते ?[4]

قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾

(२९) (तो) सब कहने लगे कि हमारा प्रभु पवित्र है, नि:संदेह हम ही अत्याचारी थे।[5]

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ﴿٣٠﴾

(३०) फिर वे एक-दूसरे की ओर मुख करके बुरा-भला कहने लगे।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ﴿٣١﴾

(३१) कहने लगे हाय अफ़सोस! नि:संदेह हम उद्दण्ड थे।

عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿٣٢﴾

(३२) क्या विचित्र है कि हमारा प्रभु हमें इससे उत्तम बदला दे दे, नि:संदेह हम अब[6] अपने

---

[1]अर्थात बाग़ के स्थान को राख का ढेर अथवा उसे ध्वस्त देखा।

[2]प्रथम तो एक-दूसरे को कहा।

[3]फिर जब सोच-विचार किया तो जान गये कि यह आपदाग्रस्त तथा ध्वस्त बाग़ हमारा ही है, जिसे अल्लाह ने हमारे करतूत के बदले ऐसा कर दिया है तथा वास्तव में यह हमारा दुर्भाग्य है।

[4]कुछ ने यहाँ तस्बीह का अर्थ "इन्शा अल्लाह" कहना लिया है।

[5]अर्थात अब उन्हें प्रतीत हुआ कि हमने अपने बाप के तरीके के विपरीत काम करके ग़लती की है, जिसका दण्ड अल्लाह ने हमको दिया है। इससे यह भी ज्ञात हुआ कि पाप का संकल्प तथा उसके लिए आरम्भिक कार्य भी पाप ही के समान अपराध है जिस पर पकड़ हो सकती है, केवल वह इरादा क्षम्य है जो मनोगति की सीमा तक रहता है।

[6]कहते हैं कि उन्होंने आपस में यह संकल्प लिया कि अब यदि अल्लाह ने हमें धन दिया तो अपने बाप के समान ग़रीबों तथा दरिद्रों को भी हिस्सा देंगे। इसलिए पश्चाताप तथा क्षमायाचना के साथ अपने प्रभु से आशायें भी संबधित कीं।

The Ummah Technology Mission

प्रभु से ही कामना (आशा) रखते हैं।

كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾

(३३) इसी प्रकार प्रकोप आता है,[1] तथा परलोक का प्रकोप बहुत बड़ा है। काश! उन्हें बुद्धि होती।[2]

اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٣٤﴾

(३४) नि:संदेह सदाचारियों के लिए उनके प्रभु के पास उपहारों वाले स्वर्ग हैं।

اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) क्या हम मुसलमानों को पापियों के समान कर देंगे।[3]

مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٦﴾

(३६) तुम्हें क्या हो गया, कैसे निर्णय कर रहे हो?

اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ ﴿٣٧﴾

(३७) क्या तुम्हारे पास कोई किताब है[4] जिस में तुम पढ़ते हो?

اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ﴿٣٨﴾

(३८) कि उसमें तुम्हारी मनमानी बातें हों?

اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ ۙ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ

(३९) अथवा हमसे तुमने कुछ ऐसी सौगन्धें ली हैं जो क़यामत (प्रलय के दिन) तक शेष रहें कि तुम्हारे लिए वह सब है, जो तुम

---

[1]अर्थात अल्लाह के आदेश का विरोध तथा अल्लाह के दिये हुए माल में कंजूसी करने वालों का बदला हम संसार में इसी प्रकार देते हैं। (यदि हम चाहते हों)

[2]किन्तु खेद का विषय है कि वह इस तथ्य को नहीं समझते, इसलिए इसकी परवाह नहीं करते।

[3]मक्का के मुश्रिक कहते थे कि यदि प्रलय हुई तो वहाँ भी हम मुसलमानों से अच्छे ही होंगे, जैसे संसार में मुसलमानों से अधिक सुखी हैं। अल्लाह ने उनके उत्तर में फ़रमाया कि यह कैसे संभव है कि हम मुसलमानों अर्थात अपने आज्ञाकारियों को अपराधियों अर्थात अवज्ञाकारियों के समान कर दें। अभिप्राय है कि यह कभी नहीं हो सकता कि अल्लाह न्याय एवं औचित्य के विपरीत दोनों को समान कर दे।

[4]जिसमें यह बात लिखी हो जिसका तुम दावा कर रहे हो, कि वहाँ भी तुम्हारे लिए वह कुछ होगा जिसे तुम चाहते हो?

The Ummah Technology Mission

لَمَا تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٩﴾

अपनी ओर से निर्धारित कर लो ?[1]

سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ﴿٤٠﴾

(४०) उनसे पूछो कि उनमें से कौन इस बात का उत्तरदायी (एवं दावेदार) है।[2]

اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ۚ فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿٤١﴾

(४१) क्या उनके कुछ साझीदार हैं ? तो चाहिए कि अपने-अपने साझीदारों को ले आयें यदि ये सच्चे हैं।[3]

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٤٢﴾

(४२) जिस दिन पिंडली खोल दी जायेगी तथा सजदा करने के लिए बुलाये जायेंगे तो (सजदा) न कर सकेंगे।[4]

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۭ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ

(४३) उनकी आँखें नीची होंगी तथा उन पर अपमान (तथा अनादर) आच्छादित हो रहा

---

[1]अथवा हमने तुम्हें दृढ़ वचन दे रखा है, जो क़यामत तक शेष रहने वाला है कि तुम्हारे लिए वही कुछ होगा जिसका तुम अपने सम्बन्ध में निर्णय करोगे।

[2]कि वह क़यामत के दिन उनके लिए वही कुछ निर्णय करायेगा जो अल्लाह मुसलमानों के लिए करेगा।

[3]अथवा जिनको उन्होंने अल्लाह का साझी बना रखा है, वे उनकी सहायता करके उनको अच्छा स्थान दिलायेंगे ? यदि उनके साझीदार ऐसे हैं तो उन्हें सामने लायें ताकि उनकी सच्चाई स्पष्ट हो।

[4]कुछ ने पिंडली खोलने का अर्थ क़यामत की कठिनाईयाँ तथा भयानकता ली हैं, किन्तु एक सहीह हदीस में इसकी व्याख्या इस प्रकार वर्णित हुई है कि क़यामत के दिन अल्लाह अपनी पिंडली खोलेगा (जैसे उसकी महिमा के योग्य है) तो प्रत्येक मोमिन पुरूष तथा स्त्री उसके आगे सजदे में गिर जायेंगे। हाँ, वह लोग शेष रह जायेंगे जो दिखावे तथा नाम के लिए सजदे किया करते थे। वह सजदा करना चाहेंगे तो उनकी रीढ़ की अस्थि तख्ते के समान बन जायेगी जिसके कारण उनका झुकना असंभव हो जायेगा। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरहे नून वल क़लम) अल्लाह यह पिंडली कैसे खोलेगा तथा यह कैसी होगी ? यह हम न जान सकते हैं न ब्यान कर सकते हैं। इसलिए जिस प्रकार किसी उपमा के बिना हम उसके कान, आँखों तथा हाथ आदि पर विश्वास रखते हैं, ऐसे ही पिंडली की बात भी क़ुरआन तथा हदीस में है। जिस पर बिना उपमा के विश्वास रखना आवश्यक है। यही सलफ़ एवं मुहद्देसीन (हदीस के विशेषज्ञों का मत है)

The Ummah Technology Mission

وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾

होगा,[1] हालाँकि ये सजदे के लिए (उस समय भी) बुलाये जाते थे जब भले-चंगे थे।[2]

فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ۭ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٤﴾

(४४) तो मुझे तथा इस बात को झुठलाने वाले को छोड़ दे,[3] हम उन्हें इस प्रकार धीरे-धीरे खींचेंगे कि उन्हें ज्ञात भी न होगा।[4]

وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۭ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿٤٥﴾

(४५) तथा मैं उन्हें ढील दूँगा, नि:संदेह मेरी योजना बड़ी दृढ़ है।[5]

اَمْ تَسْـَٔـلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٦﴾

(४६) क्या तू उनसे कोई पारिश्रमिक चाहता है, जिसके भार से ये दबे जाते हों।[6]

اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) अथवा क्या उनके पास परोक्ष का ज्ञान है जिसे वे लिखते हों।[7]

---

[1]अर्थात दुनिया के विपरीत उनका मामला होगा। संसार में अभिमान तथा घमंड से उनकी गर्दनें अकड़ी होती थीं।

[2]अर्थात स्वस्थ तथा शक्तिवान थे। अल्लाह की उपासना में कोई चीज उनके लिए बाध्य नहीं थी, किन्तु संसार में अल्लाह की उपासना से दूर रहे।

[3]अर्थात मैं ही उनसे निपट लूँगा। तू उनकी चिन्ता न कर।

[4]यह उसी ढील देने का वर्णन है जिसे क़ुरआन में अनेक स्थानों पर वर्णित किया गया है तथा हदीस में भी स्पष्ट किया गया है कि अवज्ञा के बावजूद धन तथा साधन का प्राचुर्य अल्लाह की दया नहीं है, उसके अवसर देने के नियम का परिणाम है। फिर जब वह पकड़ने पर आता है तो कोई बचाने वाला नहीं होता।

[5]यह विगत विषय ही पर बल है। كَيْدٌ (कैद) गुप्त उपाय तथा षड़यन्त्र को कहते हैं। अच्छे उद्देश्य के लिए हो तो कोई बुराई नहीं।

[6]यह संबोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को है। किन्तु फटकार उनको की जा रही है जो आप पर ईमान नहीं ला रहे थे।

[7]अर्थात क्या परोक्ष (अदृश्य) का ज्ञान उनके पास है। लौहे महफ़ूज (सुरक्षित पुस्तिका) उनके अधिकार में है कि उसमें जो बात चाहें लिख लेते हैं, इसलिए यह तेरा आज्ञापालन तथा तुझ पर ईमान लाने की आवश्यकता नहीं समझते। इसका उत्तर यह है कि नहीं, ऐसा नहीं है।

The Ummah Technology Mission

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوتِ ۘ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ﴿٤٨﴾

(४८) तो तू अपने प्रभु के आदेश का धैर्य से (प्रतीक्षा कर)[1] तथा मछली वाले की भाँति न हो जा,[2] जबकि उसने दुख की अवस्था में पुकारा।[3]

لَوْلَا أَن تَدَارَكَهُ نِعْمَةٌ مِّن رَّبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ﴿٤٩﴾

(४९) यदि उसे उसके प्रभु की कृपा न पा लेती तो नि:संदेह वह बुरी अवस्था में ऊसर धरती पर डाल दिया जाता।[4]

فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٥٠﴾

(५०) तो उसे उसके प्रभु ने फिर निर्वाचित किया[5] तथा उसको सदाचारियों में कर दिया।[6]

وَإِن يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ

(५१) तथा निकट है कि (ये) काफ़िर अपनी

---

[1] فَاصْبِرْ में अक्षर 'फ़ा' यह बताने के लिये है कि हे नबी जब वास्तव में ऐसा नहीं तो रिसालत (संदेश पहुँचाने) का कर्तव्य पूरा करता रह तथा इन झुठलाने वालों के संदर्भ में अल्लाह के निर्णय की प्रतीक्षा कर।

[2] जिन्होंने अपनी जाति के झुठलाने के आचरण को देखते हुए उतावलापन से काम लिया तथा प्रभु के निर्णय बिना ही अपने-आप अपनी जाति को छोड़कर निकल गये।

[3] जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें मछली के पेट में जबकि वह शोक तथा चिन्ता से ग्रस्त थे, अपने प्रभु को सहायता के लिए पुकारना पड़ा। जैसाकि विवरण पहले गुज़र चुका है।

[4] अर्थात यदि अल्लाह तआला उन्हें क्षमा-याचना तथा विनय की सन्मति न देता तथा उनकी प्रार्थना स्वीकार न करता तो उन्हें सागर तट के बदले जहाँ उनकी छाया एवं आहार के लिए लतादार वृक्ष उगा दिया गया, किसी बंजर भूमि में फेंक दिया जाता तथा अल्लाह के समीप उनकी हैसियत भी निंदित रहती, जबकि प्रार्थना की स्वीकृति के पश्चात वह प्रशंसनीय हो गये।

[5] इसका अभिप्राय यह है कि उन्हें शक्तिशाली तथा स्वस्थ करने के पश्चात फिर रिसालत से सम्मानित करके उन्हें अपनी जाति की ओर भेजा गया, जैसा कि सूरह साफ़्फ़ात १४६ से भी स्पष्ट है।

[6] इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कोई यह न कहे कि मैं यूनुस पुत्र मत्ता से उत्तम हूँ (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाएल बाबुन फ़ी ज़िक्रे यूनुस ...) तथा विशेष देखिये सूरः बक़रः की आयत नः २५३ की व्याख्या।

The Ummah Technology Mission

يَابْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ﴿٥١﴾

(तीव्र) दृष्टि से आपको फिसला दें[1] जब कभी क़ुरआन सुनते हैं, तथा कह देते हैं कि यह तो निश्चित रूप से दीवाना है।[2]

وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ﴿٥٢﴾

(५२) तथा वास्तव में यह (क़ुरआन) तो अखिल जगत वालों के लिए पूर्ण शिक्षा ही है।[3]

सूरतुल हाक़्क़:-६९

سُورَةُ الْحَاقَّةِ

सूर: हाक़्क़: मक्का में अवतरित हुई, इसमें बावन आयतें तथा दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

الْحَاقَّةُ ﴿١﴾

(१) सिद्ध होने वाली।[4]

---

[1]अर्थात यदि तुझे अल्लाह की सहायता तथा सुरक्षा प्राप्त न होती तो इन काफ़िरों की ईर्ष्यापूर्ण निगाहों से तू बुरी नज़र का शिकार हो जाता, अर्थात उनकी नज़र तुझे लग जाती। इमाम इब्ने कसीर ने इसका यही भावार्थ वर्णन किया है। विशेष लिखते हैं कि यह इस बात का प्रमाण है कि नज़र का लग जाना तथा अल्लाह की आज्ञा से उसका दूसरों पर प्रभावकारी होना सत्य है। जैसाकि अनेक हदीसों से भी सिद्ध है तथा हदीसों में उससे बचने के लिए प्रार्थनाओं का वर्णन भी है। तथा यह भी कहा गया है कि तुम्हें कोई चीज़ अच्छी लगे तो ماشاء الله (माशा अल्लाह) अथवा بارك الله (बारकल्लाह) कहा करो ताकि उसे नज़र न लगे। ऐसे ही किसी को नज़र लग जाये तो फ़रमाया कि उसे स्नान करा कर उसका जल उस पर डाला जाये जिसको उसकी नज़र लगी है। (विस्तार के लिये देखिए तफ़सीर इब्ने कसीर तथा हदीस की पुस्तकें) कुछ ने इसका भावार्थ यह किया है कि यह तुझे धर्म का प्रचार करने से फेर देते।

[2]अर्थात ईर्ष्या के रूप में भी तथा इस आशय से भी कि लोग इस क़ुरआन से प्रभावित न हों, अपितु उससे दूर ही रहें। अर्थात आँखों से भी यह काफ़िर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क्षति पहुँचाने का प्रयास करते तथा ज़बानों से भी आपको दुख पहुँचाते तथा आपके दिल को आहत करते।

[3]जब तथ्य यह है कि यह क़ुरआन जिन्नों तथा इंसानों के मार्गदर्शन तथा निर्देश के लिए आया है तो फिर इसको लाने तथा वर्णन करने वाला उन्मत्त (दीवाना) कैसे हो सकता है?

[4]यह प्रलय के नामों में से एक नाम है। इसमें अल्लाह का आदेश सिद्ध होगा तथा यह

The Ummah Technology Mission

مَا الْحَاقَّةُ ﴿٢﴾

(२) क्या है व्याप्त (सिद्ध) होने वाली ।[1]

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ ﴿٣﴾

(३) तथा तुझे क्या पता है कि वह सिद्ध होने वाली क्या है ?[2]

كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾

(४) उस खड़का देने वाली को समूदियों तथा आदियों ने झुठला दिया था ।[3]

فَأَمَّا ثَمُودُ فَأُهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾

(५) (जिसके परिणाम स्वरूप) समूद तो अत्यन्त तीव्र (एवं भयानक उच्च) ध्वनि से नष्ट कर दिये गये ।[4]

وَأَمَّا عَادٌ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾

(६) तथा आद अत्यन्त तीव्रगति की पाले वाली आँधी से नष्ट कर दिये गये ।[5]

स्वयं भी होने वाला है, इसलिए इसे अलहाक़्क़: से व्यंजित किया ।

[1]यह शाब्दिक रूप से प्रश्न है किन्तु इसका आशय प्रलय का महत्व तथा गंभीरता का वर्णन करना है ।

[2]अर्थात किस माध्यम से तुझे इसकी पूर्ण वास्तविकता का ज्ञान हो ? अभिप्राय इस के ज्ञान का इंकार है । मानो तुमको इसका ज्ञान नहीं, क्योंकि तूने उसे अभी देखा है न उसकी भयानकता का दर्शन किया है । मानो वह सृष्टि के ज्ञान की परिधि से बाहर है । (फ़तहुल क़दीर) कुछ कहते हैं कि क़ुरआन में जिसके संदर्भ में भूत का रूप مَا أَدْرَاكَ प्रयोग किया गया है, उसे बयान कर दिया गया है तथा जिसे भविष्य के रूप وَمَا يُدْرِيكَ के द्वारा वर्णन किया गया है, उसका ज्ञान लोगों को नहीं दिया गया है । (फ़तहुल क़दीर तथा ऐसरूत्तफ़ासीर)

[3]इसमें क़यामत को खड़का देने वाली कहा है, क्योंकि वह अपनी भयानकता से लोगों को जागृत कर देगी ।

[4]طَاغِيَة ऐसी ध्वनि जो सीमा पार कर जाये । अर्थात अति भयाावह तथा उच्च ध्वनि से समूद के समुदाय को विनष्ट किया गया, जैसाकि पहले अनेक स्थानों पर गुज़रा ।

[5]صَرْصَر (सरसर) पाले की हवा, عَاتِيَة (आतियह) उद्दण्ड, किसी के वश में न आने वाली । अर्थात अति तीव्र तथा प्रचंड, आँधी के द्वारा ईशदूत हूद अलैहिस्सलाम की जाति आद को नष्ट किया गया ।

The Ummah Technology Mission

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ أَيَّامٍ ۙ حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعٰى ۙ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۝٧

(७) जिसे उन पर निरन्तर सात रात तथा आठ दिन तक (अल्लाह ने) लगाये रखा[1] तो तुम देखते कि ये लोग धरती पर इस प्रकार पछाड़े गये हैं जैसे खजूर के खोखले तने हों।[2]

فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْ بَاقِيَةٍ ۝٨

(८) तो क्या उनमें से कोई भी तुझे शेष दिखायी दे रहा है ?

وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ۝٩

(९) फ़िरऔन तथा उससे पूर्व के लोग एवं जिनकी बस्तियाँ उलट दी गयीं,[3] उन्होंने भी त्रुटियाँ (पाप) कीं।

فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخْذَةً رَّابِيَةً ۝١٠

(१०) तथा अपने प्रभु के सन्देष्टा की अवज्ञा की, (अन्ततः) अल्लाह ने उन्हें (भी) पकड़ में ले लिया।[4]

إِنَّا لَمَّا طَغَى الْمَاءُ حَمَلْنٰكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ۝١١

(११) जब पानी में बाढ़ आ गयी तो[5] उस समय हमने तुम्हें नाव पर चढ़ा लिया।[6]

---

[1] حَسْم (हसम) का अर्थ काटना तथा अलग-अलग कर देना है तथा कुछ ने حُسُومًا का अर्थ निरन्तर किया है।

[2] इससे उनके शारीरिक आकार की लम्बाई की ओर भी संकेत है خاوِيَةٌ (खावेयह) खोखले, निर्जीव शरीर को खोखले तने से उपमा दी है।

[3] इससे लूत की जाति अभिप्राय है।

[4] رَابِيَةً यह رَبَا يَرْبُو से है, जिसका अर्थ अधिक है, अर्थात उनकी ऐसी पकड़ की जो अन्य समुदायों की पकड़ से अधिक अर्थात सबसे कड़ी थी। मानो أَخْذَةً رَابِيَةً का भावार्थ हुआ अति कड़ी पकड़।

[5] अर्थात पानी ऊँचाई में सीमा पार कर गया अर्थात पानी खूब चढ़ गया।

[6] كُمْ से सम्बोधित नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग के लोग हैं, मतलब है कि तुम जिन पूर्वज की पुश्तों से हो हमने उन्हें नाव में सवार करके बिफरे हुए पानी से बचाया था الْجَارِيَةِ से मुराद नूह अलैहिस्सलाम की नाव है।

The Ummah Technology Mission

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَآ أُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ﴿١٢﴾

(१२) ताकि उसे तुम्हारे लिये शिक्षाप्रद (तथा यादगार) बना दें[1] तथा (ताकि) याद रखने वाले कान उसे याद रखें।[2]

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ﴿١٣﴾

(१३) तो जब नरसिंघा में एक फूँक फूँकी जायेगी।[3]

وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ﴿١٤﴾

(१४) तथा धरती एवं पर्वत उठा लिये जायेंगे[4] तथा एक ही चोट में कण-कण बना दिये जायेंगे।

فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾

(१५) उस दिन हो पड़ने वाली घटना (प्रलय) हो पड़ेगी।

وَانشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ﴿١٦﴾

(१६) तथा आकाश फट जायेगा तो उस दिन अत्यन्त क्षीण हो जायेगा।[5]

وَالْمَلَكُ عَلَىٰ أَرْجَائِهَا ۚ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ

(१७) और उसके किनारों पर फ़रिश्ते होंगे[6] तथा तेरे प्रभु का अर्श (आसन) उस दिन आठ

---

[1]अर्थात यह कार्य कि काफ़िरों को जलमग्न कर दिया तथा मोमिनों को नाव में चढ़ाकर बचा लिया, तुम्हारे लिये उसको शिक्षा तथा सदुपदेश बना दिया ताकि उससे शिक्षा ग्रहण करो तथा अल्लाह की अवज्ञा से बचो।

[2]अर्थात सुनने वाले उसे सुन कर याद रखें तथा वह भी उससे शिक्षा प्राप्त करें।

[3]झुठलाने वालों का परिणाम वर्णन करने के पश्चात अब बताया जा रहा है कि यह الْحَاقَّةُ (होनी) कैसे होगी इस्राफ़ील की एक ही फूँक से यह व्याप्त हो जायेगी।

[4]अर्थात अपने स्थानों से उठा लिये जायेंगे तथा अल्लाह के सामर्थ्य से अपने स्थानों से उन्हें उखाड़ लिया जायेगा।

[5]अर्थात उसमें बल तथा दृढ़ता नहीं रह जायेगी। जो चीज़ फटकर खंड-खंड हो जाये उसमें दृढ़ता कैसे रह सकती है।

[6]अर्थात आकाश तो खंड-खंड हो जायेंगे फिर आकाशीय सृष्टि फ़रिश्ते कहाँ रहेंगे? फ़रमाया, वह आकाशों के किनारों पर होंगे। इसका एक अभिप्राय तो यह हो सकता है कि फ़रिश्ते आकाश के फटने के पूर्व अल्लाह के आदेश से धरती पर आ जायेंगे तो मानो वे धरती के किनारे पर होंगे, अथवा यह अभिप्राय हो सकता है कि आकाश टूट-फूटकर अनेक खंडों में होगा तो उन खण्डों पर जो धरती के किनारों में तथा अपनी जगह स्थित होंगे उन पर होंगे (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ﴿١٧﴾

फ़रिश्ते अपने ऊपर उठाये हुए होंगे।[1]

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾

(१८) उस दिन तुम सब सामने प्रस्तुत किये जाओगे,[2] तुम्हारा कोई भेद छिपा न रहेगा।

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ﴿١٩﴾

(१९) तो जिसका कर्मपत्र उसके दाहिने हाथ में दिया जायेगा[3] तो वह कहने लगेगा कि लो मेरा कर्मपत्र पढ़ो।[4]

اِنِّيْ ظَنَنْتُ اَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ﴿٢٠﴾

(२०) मुझे तो पूर्ण विश्वास था कि में अपना हिसाब पाने वाला हूँ।[5]

فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾

(२१) तो वह एक सुखद जीवन में होगा।

فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾

(२२) उच्च (एवं भव्य) स्वर्ग में।[6]

---

[1]अर्थात इन विशेष फ़रिश्तों ने अल्लाह के अर्श (आसन) को अपने सिरों पर उठाया होगा। यह भी संभव है कि इस अर्श से अभिप्राय वह अर्श हो जो निर्णय के लिए धरती पर रखा जायेगा जिस पर अल्लाह का अवतरण होगा। (इब्ने कसीर)

[2]यह पेशी इसलिए नहीं होगी कि अल्लाह जिन्हें नहीं जानता उन्हें जान ले, वह तो सभी को जानता है। यह पेशी स्वयं इंसानों पर तर्क स्थापित करने के लिए होगी, अन्यथा अल्लाह से कोई वस्तु छिपी नहीं है।

[3]जो उसके सौभाग्य, मुक्ति तथा सफलता का प्रमाण होगा।

[4]अर्थात वह प्रसन्न होकर प्रत्येक से कहेगा कि लो मेरा कर्मपत्र पढ़ लो, मेरा कर्मपत्र तो मुझे मिल गया है। इसलिए कि उसे पता होगा कि उसमें उसका पुण्य ही पुण्य होगा। कुछ दोष होंगे तो अल्लाह ने उन्हें क्षमा कर दिया होगा अथवा उन दोषों को भी पुण्य में बदल दिया होगा। जैसाकि अल्लाह तआला ईमानवालों के साथ दया तथा कृपा के यह विभिन्न रूप अपनायेगा।

[5]अर्थात परलोक के हिसाब-किताब पर मुझे पूर्ण विश्वास था।

[6]स्वर्ग में विभिन्न श्रेणियाँ होंगी। प्रत्येक श्रेणी के बीच बड़ी दूरी होगी। जैसे मुजाहिदीन के बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "स्वर्ग में सौ श्रेणियाँ हैं जो अल्लाह ने मुजाहिदीन के लिए तैयार किये हैं। दो श्रेणियों के बीच आकाश तथा धरती जितनी दूरी होगी।" (सहीह मुस्लिम किताबुल इमारः, सहीह बुख़ारी किताबुल जिहाद)

The Ummah Technology Mission

قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾

(२३) जिसके फल झुके पड़े होंगे।[1]

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾

(२४) (उनसे कहा जायेगा) कि आनन्द से खाओ, पिओ अपने उन कर्मों के बदले जो तुमने पूर्वकाल में किये।[2]

وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ فَيَقُولُ يَا لَيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَابِيَهْ ﴿٢٥﴾

(२५) परन्तु जिसे उसका कर्मपत्र बायें हाथ में दिया जायेगा, वह तो कहेगा कि हाय मुझे मेरा कर्मपत्र दिया ही न जाता।[3]

وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾

(२६) तथा मैं जानता ही नहीं कि हिसाब क्या है।[4]

يَا لَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ﴿٢٧﴾

(२७) काश ! मृत्यु (मेरा) काम ही समाप्त कर देती।[5]

مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَالِيَهْ ﴿٢٨﴾

(२८) मेरे धन ने भी मुझे कोई लाभ न दिया।

هَلَكَ عَنِّي سُلْطَانِيَهْ ﴿٢٩﴾

(२९) मेरा अधिपत्य भी मुझसे जाता रहा।[6]

خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ﴿٣٠﴾

(३०) (आदेश होगा) उसे पकड़ लो फिर उसे तौक़ पहना दो।

---

[1]अर्थात अति समीप होंगे अर्थात कोई लेटे-लेटे भी तोड़ना चाहेगा तो संभव होगा। قُطُوفٌ बहुवचन है قِطفٌ का, चुने अथवा तोड़े हुए, अभिप्राय फल है। ما يُقْطَفُ مِن الثِّمار

[2]अर्थात संसार में पुण्य के कर्म किये। यह स्वर्ग उनका प्रतिकार है।

[3]क्योंकि कर्म-पत्र का वाएं हाथ में मिलना दुर्भाग्य का लक्षण होगा।

[4]अर्थात मुझे बतलाया ही न जाता, क्योंकि पूरा हिसाब उसके प्रतिकूल होगा।

[5]अर्थात मौत ही निर्णायक होती तथा पुन: जीवित न किया जाता ताकि यह बुरा दिन न देखना पड़ता।

[6]अर्थात जैसे मेरा माल काम न आया, मान-मर्यादा तथा आधिपत्य एवं राज्य भी मेरे काम न आया। आज मैं अकेला ही यहाँ दण्ड भुगतने पर विवश हूँ।

The Ummah Technology Mission

ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ ﴿٣١﴾

(३१) फिर उसे नरक में डाल दो।[1]

ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ﴿٣٢﴾

(३२) फिर उसे ऐसी ज़ंजीर में जिसकी नाप सत्तर हाथ की है, जकड़ दो।[2]

إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ﴿٣٣﴾

(३३) नि:संदेह यह अल्लाह महान पर ईमान न रखता था।[3]

وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा निर्धन को खिलाने पर नहीं उभरता था।[4]

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هَاهُنَا حَمِيمٌ ﴿٣٥﴾

(३५) तो आज यहाँ उसका न कोई मित्र है,

وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा न पीप के अतिरिक्त उसका कोई भोजन है।[5]

لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ﴿٣٧﴾

(३७) जिसे पापियों के अतिरिक्त उसको कोई नहीं खायेगा।[6]

فَلَا أُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُونَ ﴿٣٨﴾

(३८) तो मुझे सौगन्ध है उन वस्तुओं की जिन्हें तुम देखते हो।

---

[1]यह अल्लाह तआला नरक के फ़रिश्तों को आदेश देगा।

[2]यह ذراع ज़िराअ (हाथ) किसका हाथ होगा, तथा कितना होगा ? इसकी व्याख्या संभव नहीं। फिर भी इससे इतना ज्ञात हुआ कि जंजीर की लम्बाई सत्तर हाथ होगी।

[3]यह उपरोक्त यातना के कारण अथवा अपराधी के अपराध का वर्णन है।

[4]अर्थात इबादत तथा अनुपालन के द्वारा अल्लाह का हक़ अदा न करता था न दायित्व जो बंदों का बंदों पर है। मानो ईमानवालों में यह बात होती है कि वह अल्लाह के हक़ तथा बंदों के हक़ दोनों को पूरा करते हैं।

[5]कुछ कहते हैं कि यह नरक में कोई वृक्ष है। कुछ कहते हैं कि ज़क्कूम को ही यहाँ 'गिसलीन' कहा गया है। तथा कुछ कहते हैं कि यह नरकवासियों की पीप अथवा उनके शरीर से निकला रक्त होगा तथा दुर्गन्धित पानी होगा, अल्लाह हमें उससे शरण में रखे।

[6]خاطئون से अभिप्राय नरकवासी हैं, जो कुफ़्र तथा शिर्क के कारण नरक में प्रवेश करेंगे, क्योंकि यही ऐसे पाप हैं जो नरक में सदा रहने के कारण हैं।

The Ummah Technology Mission

وَمَا لَا تُبْصِرُونَ ﴿٣٩﴾

(३९) तथा उन वस्तुओं कि जिन्हें तुम नहीं देखते ।[1]

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿٤٠﴾

(४०) कि नि:संदेह यह (क़ुरआन) प्रतिष्ठित सन्देष्टा का कथन है ।[2]

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۚ قَلِيلًا مَّا تُؤْمِنُونَ ﴿٤١﴾

(४१) यह किसी कवि का कथन नहीं,[3] (अफ़सोस) तुम बहुत कम विश्वास रखते हो ।

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ۚ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ﴿٤٢﴾

(४२) तथा न किसी ज्योतिषी का कथन है,[4] (अफ़सोस) तुम बहुत कम शिक्षा ग्रहण कर रहे हो ।[5]

تَنزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٣﴾

(४३) (यह तो) अखिल जगत के प्रभु का अवतरित किया हुआ है ।[6]

---

[1]अर्थात अल्लाह की पैदा की हुई वस्तुयें जो अल्लाह के अस्तित्व तथा सामर्थ्य एवं शक्ति का प्रतीक हैं, जिन्हें तुम देखते हो अथवा नहीं देखते । उन सबकी सौगन्ध है आगे सौगन्ध का उत्तर है ।

[2]प्रतिष्ठित रसूल से तात्पर्य मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं तथा कथन से अभिप्राय पढ़ना है, अर्थात सम्मानित रसूल का पढ़ना । अथवा कथन से तात्पर्य ऐसा कथन है जो यह प्रतिष्ठित रसूल अल्लाह की ओर से तुम्हें पहुँचाता है, क्योंकि क़ुरआन रसूल अथवा जिब्रील का कथन नहीं है । अपितु अल्लाह का कथन है जो उसने फ़रिश्ते के द्वारा पैग़म्बर पर उतारा है, फिर पैग़म्बर उसे लोगों तक पहुँचाता है ।

[3]जैसाकि तुम समझते तथा कहते हो, क्योंकि यह न कविता के प्रकारों में है न उसके समान है । फिर यह किसी कवि का कथन कैसे हो सकता है ?

[4]जैसाकि कभी-कभी तुम यह दावा भी करते हो जबकि कहानत भी एक अन्य वस्तु है ।

[5]'कमी' दोनों जगह न होने के अर्थ में है । अर्थात तुम क़ुरआन पर न ईमान लाते हो न उससे शिक्षा ग्रहण करते हो ।

[6]अर्थात रसूल के मुख से अदा होने वाला यह कथन सर्वलोक के प्रभु का अवतरित किया हुआ है । तुम उसे कभी कविता तथा कभी ज्योतिष का कथन कहकर झुठलाते हो ?

The Ummah Technology Mission

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ ﴿٤٤﴾

(४४) तथा यदि यह हम पर कोई भी बात गढ़ लेता।[1]

لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ﴿٤٥﴾

(४५) तो अवश्य हम उसका दाहिना हाथ पकड़ लेते,[2]

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ﴿٤٦﴾

(४६) फिर उसके दिल की नस काट लेते।[3]

فَمَا مِنكُم مِّنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ﴿٤٧﴾

(४७) फिर तुममें से कोई भी (मुझे) उससे रोकने वाला न होता।[4]

وَإِنَّهُ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٨﴾

(४८) नि:संदेह यह (क़ुरआन) सदाचारियों के लिए शिक्षा है।[5]

---

[1]अर्थात अपनी ओर से गढ़कर हमसे संबन्धित कर देता, अथवा उसमें कमी-बेशी कर देता, तो तुरन्त हम उसकी पकड़ करते तथा उसे ढील न देते जैसाकि आगामी आयतों में फ़रमाया।

[2]अथवा दायें हाथ से उसकी पकड़ करते, क्योंकि दायें हाथ से पकड़ कड़ी होती है तथा अल्लाह के तो दोनों हाथ ही सीधे हैं, जैसाकि हदीस में है।

[3]ध्यान रहे कि यह यातना विशेषकर आदरणीय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संदर्भ में आई है जिसका उद्देश्य आपकी सत्यता दिखाना है। इसमें यह नियम नहीं बताया गया है कि जो भी नुबूवत का झूठा दावा करेगा तो नुबूवत के झूठे दावेदार को हम तुरन्त दण्ड देंगे। अत: इससे किसी झूठे नबी को सच्चा नहीं कहा जा सकता कि वह संसार में अल्लाह की यातना से सुरक्षित रहा। घटनायें भी साक्षी हैं कि अनेक लोगों ने नुबूवत के झूठे दावे किये तथा अल्लाह ने उन्हें ढील दी तथा वह सांसारिक पकड़ से साधारणत: सुरक्षित ही रहे। इसलिए यदि इसे नियम मान लिया जाये तो फिर अनेक नुबूवत के झूठे दावेदारों को 'सच्चा नबी' मानना पड़ेगा।

[4]इससे विदित हुआ कि महा ईशदूत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के सत्य दूत थे, जिनको अल्लाह ने दण्ड नहीं दिया, बल्कि प्रमाणों, चमत्कारों एवं अपने विशेष समर्थन तथा सहायता से उन्हें सम्मानित किया।

[5]क्योंकि इससे वही लाभ प्राप्त करते हैं, अन्यथा पवित्र क़ुरआन तो सभी की शिक्षा के लिये आया है।

The Ummah Technology Mission

وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَن مِّنكُم مُّكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾

(४९) तथा हमें पूर्ण ज्ञान है कि तुम में से कुछ उसके झुठलाने वाले हैं।

وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٥٠﴾

(५०) नि:संदेह (यह झुठलाना) काफ़िरों के लिए पछतावा है।[1]

وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ﴿٥١﴾

(५१) तथा नि:संदेह यह विश्वसनीय सत्य है।[2]

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٥٢﴾

(५२) तो तू अपने महिमावान प्रभु की पवित्रता का वर्णन कर।[3]

سُورَةُ الْمَعَارِجِ

सूरतुल मआरिज-७०

सूर: मआरिज मक्का में अवतरित हुई, इसमें चव्वालिस आयतें तथा दो रूकूअ है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ﴿١﴾

(१) एक माँग करने वाले ने[4] उस प्रकोप की

---

[1]अर्थात क़यामत के दिन इस पर पछतायेंगे कि काश हम क़ुरआन को झुठलाये न होते। अथवा यह क़ुरआन स्वयं उनके पछतावे का कारण होगा जब वह ईमानवालों को क़ुरआन का पुण्य मिलते देखेंगे।

[2]अर्थात क़ुरआन का अल्लाह की ओर से होना निश्चित है, इसमें बिल्कुल किसी संदेह का स्थान नहीं है, अथवा क़यामत के विषय में जो सूचना दी जा रही है वह सर्वथा सत्य तथा सच है।

[3]जिसने क़ुरआन जैसी महान किताब अवतरित की।

[4]कहा जाता है कि यह नज़र पुत्र हारिस अथवा अबू जहल था, जिसने कहा था।

﴿ اللَّهُمَّ إِن كَانَ هَٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِندِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَاءِ ﴾

"हे अल्लाह यदि यह तेरी ओर से सत्य ही है तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा।"
(अल-अन्फ़ाल -३२)

जैसाकि यह व्यक्ति बद्र के रण में मारा गया। कुछ कहते हैं कि इससे तात्पर्य रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, जिन्होंने अपने समुदाय को शाप दिया था, तथा उसके परिणाम स्वरूप मक्कावासियों पर अकाल आ पड़ा था।

The Ummah Technology Mission

माँग की जो (स्पष्टत:) होने वाला है |

لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ ۝٢

(२) काफ़िरों पर जिसे कोई हटाने वाला नहीं |

مِّنَ اللّٰهِ ذِي الْمَعَارِجِ ۝٣

(३) उस अल्लाह की ओर से जो सीढ़ियों वाला है |[1]

تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ۝٤

(४) जिसकी ओर फ़रिश्ते तथा रूह चढ़ते हैं[2] एक दिन में जिसकी अवधि पचास हज़ार वर्ष की है |[3]

---

[1]अथवा पदों वाला, ऊँचाइयों वाला है, जिसकी ओर फ़रिश्ते चढ़ते हैं |

[2]रूह (आत्मा) से अभिप्राय जिब्रील (फ़रिश्ता) हैं, उनकी प्रधानता के कारण उनका अलग विशेष रूप से वर्णन किया गया है, अन्यथा फ़रिश्तों में वह भी सम्मिलित हैं | अथवा रूह से अभिप्राय इंसानी आत्मायें हैं जो मृत्यु के पश्चात आकाश पर ले जाई जाती हैं, जैसाकि कुछ रिवायतों (हदीसों) में है |

[3]उस दिन के निर्धारण में बहुत मतभेद है, जैसाकि अलिफ़॰लाम॰मीम अस्सजदा के आरम्भ में हम वर्णन कर आये हैं | यहाँ इमाम इब्ने कसीर ने चार कथन लिखे हैं | प्रथम कथन है कि इससे वह दूरी अभिप्राय है जो विशाल अर्श (आसन) से पाताल (धरती के सातवें परत) तक है | यह दूरी पचास हज़ार वर्ष की यात्रा की है | दूसरा कथन है कि यह संसार की पूरी अवधि है सृष्टि के आरम्भ से प्रलय के घटित होने तक | इसमें से कितनी अवधि व्यतीत हुई तथा कितनी शेष है, इसे मात्र अल्लाह तआला ही जानता है | तीसरा कथन यह है कि यह लोक तथा परलोक के मध्य की दूरी है | चौथा कथन यह है कि यह क़यामत के दिन की मात्रा है | अर्थात काफ़िरों पर हिसाब का दिन पचास हज़ार वर्ष की भाँति भारी होगा, किन्तु मोमिन के लिए संसार में एक फ़र्ज (अनिवार्य) नमाज़ पढ़ने से भी संक्षिप्त होगा | (मुसनद अहमद ३\७५) इमाम इब्ने कसीर ने इसी कथन को प्राथमिकता दी है, क्योंकि हदीसों से भी इसे समर्थन प्राप्त है | जैसाकि एक हदीस में ज़कात (देयदान) न चुकाने वाले को प्रलय के दिन जो यातना दी जायेगी उसकी चर्चा करते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«حَتَّى يَحْكُمَ اللهُ بَيْنَ عِبَادِهِ، فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ».

"यहाँ तक कि अल्लाह अपने बन्दों के बीच निर्णय कर देगा, ऐसे दिन में जिसकी अवधि तुम्हारी गिनती के अनुसार पचास हज़ार साल होगी |" (सहीह मुस्लिम, किताबुज़ ज़कात, बाबु इस्मे मानेइज़ ज़कात)

The Ummah Technology Mission

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ﴿٥﴾

(५) तो तू अच्छी तरह से धैर्य रख।

إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ﴿٦﴾

(६) नि:संदेह ये उस (प्रकोप) को दूर समझ रहे हैं।

وَنَرَاهُ قَرِيبًا ﴿٧﴾

(७) तथा हम उसे निकट ही देखते हैं।[1]

يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْمُهْلِ ﴿٨﴾

(८) जिस दिन आकाश तेल की तलछट की भाँति हो जायेगा।

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ﴿٩﴾

(९) तथा पर्वत रंगीन ऊन के समान हो जायेंगे।[2]

وَلَا يَسْأَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا ﴿١٠﴾

(१०) तथा कोई मित्र किसी मित्र को न पूछेगा।

يُبَصَّرُونَهُمْ ۚ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيهِ ﴿١١﴾

(११) (यद्यपि) एक-दूसरे को दिखा दिये जायेंगे,[3] पापी उस दिन की यातना के बदले प्रतिदान में अपने पुत्रों को देना चाहेगा।

وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ ﴿١٢﴾

(१२) अपनी पत्नी को तथा अपने भाई को।

وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْوِيهِ ﴿١٣﴾

(१३) एवं अपने परिवार को जो उसे शरण देता था।

وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنْجِيهِ ﴿١٤﴾

(१४) तथा धरती के सभी लोगों को, ताकि यह उसे मुक्ति दिला दे।[4]

इस व्याख्यानुसार فِي يَوْمٍ का संम्बन्ध عذاب (यातना) से होगा, अर्थात वह घटित होने वाली यातना क़यामत (प्रलय) के दिन होगी जो काफ़िरों पर पचास हज़ार वर्ष के समान होगी।

[1]दूर से अभिप्राय असंभव तथा निकट से उसका निश्चय घटित होना है, अर्थात काफ़िर प्रलय को असंभव समझते हैं तथा मुसलमानों का विश्वास है कि वह अवश्य आकर रहेगी, इसलिए कि كُلُّ مَا هُوَ آتٍ فَهُوَ قَرِيبٌ "प्रत्येक आगामी वस्तु समीप है।"

[2]अर्थात धुनी रूई के समान जैसे, सूरतुल क़ारिआ में है ﴿كَالْعِهْنِ الْمَنفُوشِ﴾

[3]किन्तु प्रत्येक को अपनी-अपनी पड़ी होगी, इसलिए परिचय तथा पहचान के उपरान्त एक-दूसरे को नहीं पूछेंगे।

[4]अर्थात संतान, पत्नी, भाई तथा परिवार यह सभी इंसान को अति प्रिय होते हैं। परन्तु

The Ummah Technology Mission

كَلَّا ۖ إِنَّهَا لَظَىٰ ﴿١٥﴾

(१५) (परन्तु) कदापि यह न होगा। नि:संदेह वह शोले (ज्वाला) वाली (अग्नि) है।[1]

نَزَّاعَةً لِّلشَّوَىٰ ﴿١٦﴾

(१६) जो मुख तथा सिर की खाल खींच लेने वाली है।[2]

تَدْعُوا مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١٧﴾

(१७) वह प्रत्येक उस व्यक्ति को पुकारेगी जो पीछे हटता तथा मुख मोड़ता है।

وَجَمَعَ فَأَوْعَىٰ ﴿١٨﴾

(१८) तथा एकत्रित करके संभाल रखता है।[3]

إِنَّ الْإِنسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ﴿١٩﴾

(१९) नि:संदेह मनुष्य अत्यन्त कच्चे दिल वाला बनाया गया है।[4]

إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ﴿٢٠﴾

(२०) जब उसे कष्ट पहुँचता है तो हड़बड़ा जाता है।

क़यामत (प्रलय) के दिन अपराधी चाहेगा कि यह प्रिय वस्तुयें उससे प्रतिदान में स्वीकार कर ली जायें तथा उसे मुक्त कर दिया जाये। فَصِيلَتِهِ फ़सील:, परिवार को कहते है, क्योंकि वह क़बीले से अलग होता है।

[1]अर्थात वह नरक, यह उसकी घोर तपन का वर्णन है।

[2]अर्थात मांस तथा ख़ाल को जलाकर रख देगी। इंसान मात्र हड्डियों का ढाँचा रह जायेगा।

[3]अर्थात जो संसार में सत्य से पीठ फेरता तथा मुख मोड़ता है तथा धन एकत्र करके ख़ज़ानों में सैंत-सैंत कर रखता था, उसे अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करता था न उसमें से ज़कात (धर्मदान) निकालता था। अल्लाह तआला नरक को बोलने की शक्ति प्रदान करेगा तथा वह अपने मुख से बोलेगी तथा ऐसे लोगों को पुकार कर कहेगी जिनके कर्मों के बदले नरक अनिवार्य होगा। कुछ कहते हैं कि पुकारेंगे तो फ़रिश्ते ही किन्तु उसे नरक की ओर सम्बन्धित कर दिया गया है। कुछ कहते हैं कि कोई नहीं पुकारेगा, यह केवल रूपक स्वरूप ऐसा कहा गया है। अभिप्राय यह है कि उक्त व्यक्तियों का आवास नरक होगी।

[4]अत्यन्त लोभी तथा बहुत रोने वाले को هَلُوعٌ (हलूअ) कहा जाता है, जिसे अनुवाद में बड़े कच्चे दिल वाला कहा गया है, क्योंकि ऐसा व्यक्ति ही कंजूस, लोभी तथा अति रोने चिल्लाने वाला होता है। आगे उसका गुण बताया गया है।

The Ummah Technology Mission

وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ﴿٢١﴾

(२१) तथा जब सुख प्राप्त होता है तो कंजूसी करने लगता है।

إِلَّا الْمُصَلِّينَ ﴿٢٢﴾

(२२) परन्तु वह नमाज़ी।

الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) जो अपनी नमाज़ पर पाबंदी रखने वाले हैं।[1]

وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा जिनके धन में निर्धारित भाग है।[2]

لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ﴿٢٥﴾

(२५) माँगनेवालों का भी तथा प्रश्न करने से बचने वालों का भी।[3]

وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿٢٦﴾

(२६) तथा जो न्याय के दिन पर विश्वास रखते हैं।[4]

وَالَّذِينَ هُم مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा जो अपने प्रभु के प्रकोप से डरते रहते हैं।[5]

---

[1]अभिप्राय हैं पूरे मोमिन एकेश्वरवादी। उनमें उक्त नैतिक क्षीणता नहीं होती, अपितु इसके विपरीत वह सदगुणों के रूप होते हैं। नित्य नमाज़ पढ़ने का अर्थ है वह नमाज़ में आलस्य नहीं करते। वह प्रत्येक नमाज़ उसके समय पर बड़ी पाबंदी से पढ़ते हैं। कोई कार्य उन्हें नमाज़ से नहीं रोकता तथा कोई सांसारिक लाभ उन्हें नमाज़ से विमुख नहीं करता।

[2]अर्थात अनिवार्य जकात (धर्मदान)। कुछ के निकट यह साधारण है, इसमें अनिवार्य तथा ऐच्छिक दोनों दान सम्मिलित हैं।

[3]محروم (महरूम) में वह व्यक्ति भी सम्मिलित है जो जीविका ही से वंचित है, वह भी जो किसी आकाशीय अथवा सांसारिक आपदा की मार में आकर अपनी पूंजी से वंचित हो गया तथा वह भी जो ज़रूरत होने के बावजूद न मांगने के कारण लोगों के दान-दक्षीणा से वंचित रहता है।

[4]अर्थात वह उसका इंकार करते हैं न उसमें शंका तथा संदेह का प्रदर्शन।

[5]अर्थात आज्ञापालन तथा सत्कर्मों के उपरान्त अल्लाह की महानता तथा प्रताप के कारण उसकी पकड़ से भयभीत तथा कंपित रहते हैं, तथा विश्वास रखते हैं कि जब तक अल्लाह की दया हमें अपने दामन में छिपा न ले, हमारे यह कर्म मोक्ष के लिए पर्याप्त नहीं होंगे, जैसाकि इस भावार्थ की हदीस पहले गुज़र चुकी है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ﴿٢٨﴾

(२८) नि:संदेह उनके प्रभु का प्रकोप निर्भय होने की बात नहीं।[1]

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ﴿٢٩﴾

(२९) तथा जो लोग अपने गुप्ताँगों की (अवैध से) रक्षा करते हैं।

إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾

(३०) परन्तु उनकी पत्नियों एवं दासियों के विषय में जिनके वे स्वामी हैं, वे निन्दित नहीं।[2]

فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ﴿٣١﴾

(३१) अब जो कोई इसके अतिरिक्त (मार्ग) ढूँढेगा, तो ऐसे लोग सीमा उल्लंघन करने वाले होंगे।

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा जो अपनी अमानतों का तथा अपने वचन एवं प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हैं।[3]

وَالَّذِينَ هُم بِشَهَادَاتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٣﴾

(३३) तथा जो अपनी गवाहियों पर सीधे (तथा अडिग) रहते हैं।[4]

---

[1]यह उपरोक्त विषय पर बल देने के लिए है कि अल्लाह की यातना से किसी को निर्भय नहीं होना चाहिए, अपितु प्रत्येक समय उसे डरते रहना तथा उससे बचाव का यथा संभव उपाय अपनाना चाहिए।

[2]अर्थात इंसान की कामवासना की तृप्ति के लिए अल्लाह ने दो वैध माध्यम रखे हैं, एक पत्नी, तथा दूसरा दासी। वर्तमान युग में दासी का मामला इस्लाम की बतलाई नीति के अनुसार लगभग समाप्त हो गया है, फिर भी वैधानिक रूप से उसे इसलिए समाप्त नहीं किया गया है कि भविष्य में यदि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाये तो इससे लाभ उठाया जा सकता है। जो भी हो ईमानवालों की एक विशेषता यह भी है कि कामवासना की वे पूर्ति तथा तृप्ति के लिए अवैध साधन नहीं अपनाते।

[3]अर्थात उनके पास लोगों की जो अमानतें (धरोहर) होती हैं उसमें विश्वासघात नहीं करते तथा लोगों से जो प्रतिज्ञा (वचन) करते हैं उन्हें तोड़ते नहीं है, अपितु उनका ख़्याल रखते हैं।

[4]अर्थात उसे सही-सही अदा करते हैं, चाहे उसकी मार में उनके निकट संबन्धी ही क्यों न आ जायें। इसके सिवा उसे छुपाते भी नहीं, न उसमें परिवर्तन ही करते हैं।

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा जो अपनी नमाज़ों की सुरक्षा करते हैं।

اُولٰٓئِكَ فِيْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) यही लोग स्वर्ग में आदर (एवं सम्मान) वाले होंगे।

فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ﴿٣٦﴾

(३६) तो काफ़िरों को क्या हो गया है कि वे तेरी ओर दौड़ते आते हैं।

عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِيْنَ ﴿٣٧﴾

(३७) दायें तथा बायें से गुट के गुट।[1]

اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيْمٍ ﴿٣٨﴾

(३८) क्या उनमें से प्रत्येक की इच्छा यह है कि वे सुख-सुविधा वाले स्वर्ग में प्रवेश पा जायेंगे?

كَلَّا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾

(३९) (ऐसा) कदापि न होगा,[2] हमने उन्हें उस (वस्तु) से पैदा किया है जिसे वे जानते हैं।[3]

فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ﴿٤٠﴾

(४०) तो मुझे सौगन्ध है पूर्वों एवं पश्चिमो[4] के प्रभु की, (कि) हम निश्चित रूप से सामर्थ्यवान है।

---

[1]यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग के काफ़िरों की चर्चा है कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मजलिस (सभा) में दौड़े-दौड़े आते, किन्तु आप की बातें सुनकर अनुपालन करने की जगह उनका परिहास करते तथा टोलियों में बँट जाते, तथा दावा यह करते कि यदि मुसलमान स्वर्ग में गये तो हम उनसे पहले स्वर्ग में जायेंगे। अल्लाह ने आगामी आयत में उनके इस भ्रम का खंडन किया।

[2]अर्थात यह कैसे हो सकता है कि मोमिन तथा काफ़िर दोनों ही स्वर्ग में जायें, रसूल के अनुयायी तथा विरोधी दोनों को परलोक का सुख प्राप्त हो, ऐसा कदापि संभव नहीं।

[3]अर्थात مَّآءٍ مَّهِيْنٍ (हीन बूँद) से। जब यह बात है तो क्या अहंकार इंसान को शोभा देता है जिसके कारण से ही वह अल्लाह तथा उसके रसूल को झुठलाते भी हैं?

[4]प्रत्येक दिन सूर्य अलग-अलग स्थान से उदय होता है तथा अलग-अलग स्थल में अस्त होता है। इस आधार पर पूर्व भी बहुत हैं तथा पश्चिम भी उतने ही। विवरण के लिए सूरह साफ़्फ़ात ५ देखिये।

The Ummah Technology Mission

عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٤١﴾

(४१) इस पर कि उनके बदले में उनसे अच्छे लोग ले आयें,[1] तथा हम विवश नहीं हैं।[2]

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٤٢﴾

(४२) तो आप उन्हें झगड़ता खेलता छोड़ दें[3] यहाँ तक कि ये अपने उस दिन से जा मिलें, जिसका उनसे वायदा किया जाता है।

يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ﴿٤٣﴾

(४३) जिस दिन क़ब्रों से ये दौड़ते हुए निकलेंगे, जैसेकि वह किसी थान की ओर तीव्र गति से जा रहे हैं।[4]

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۭ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿٤٤﴾

(४४) उनकी आँखें झुकी हुई होंगी,[5] उन पर अपमान आच्छादित हो रहा होगा,[6] यह है वह दिन जिसका उनसे वायदा किया जाता था।[7]

---

[1]अर्थात उन्हें विलय करके एक नई सृष्टि आबाद कर देने पर हम समर्थ हैं।

[2]जब ऐसा है तो क्या क़यामत के दिन हम उन्हें पुनः जीवित करके उठा नहीं सकते।

[3]अर्थात व्यर्थ तथा बेकार विवादों में फँसें तथा अपनी दुनिया में मग्न रहें। फिर भी आप धर्म-प्रचार का काम जारी रखें। उनका आचरण आपको अपने कर्तव्य से लापरवाह व हताश न कर दे।

[4]أَجْدَاثٌ बहुवचन है। جَدَثٌ का अर्थ क़ब्र है। نُصُبٌ अर्थात थान, जहाँ देवताओं के नाम पर पशु की बली चढ़ाई जाती है, तथा मूर्तियों के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है। यहाँ इसी दूसरे अर्थ में है। मूर्तियों के पुजारी सूर्योदय के समय बड़ी तीव्रगति से अपनी मूर्तियों की ओर दौड़ते कि कौन सर्वप्रथम उन्हें चुम्बन करता है। कुछ इसे यहाँ عَلَمٌ के अर्थ में लेते हैं कि जैसे संग्राम क्षेत्र में सैनिक अपने عَلَمٌ (झंडे) की ओर दौड़ते हैं। इसी प्रकार क़यामत (प्रलय) के दिन क़ब्रों से अति तीव्रगति से निकलेंगे। يُوفِضُونَ यह يُسْرِعُون के अर्थ में है।

[5]जिस प्रकार अपराधियों की आँखें झुकी होती हैं, क्योंकि उन्हें अपनी करतूतों का ज्ञान होता है।

[6]अर्थात घोर अपमान उन्हें अपनी लपेट में ले रहा होगा तथा उसके मुख भय के मारे काले होंगे। इसी से غُلامٌ مُراهِقٌ का योग है जो युवा अवस्था से निकट हो, अर्थात غَشِيَهُ الاِحْتِلام (फ़तहुल क़दीर)

[7]अर्थात रसूलों के मुख से तथा आकाशीय धर्मशास्त्रों के द्वारा।

The Ummah Technology Mission

सूरतु नूह-७१

سُوْرَةُ نُوْحٍ

सूरः नूह मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें अ ठाईस आयतें एवं दो रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

(१) निःसंदेह हमने नूह (अलैहिस्सलाम)को उनके समुदाय की ओर भेजा[1] कि अपने समुदाय को डरा दो (तथा सचेत कर दो) इससे पूर्व कि उनके पास कष्टदायी यातना आ जाये।[2]

اِنَّآ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝١

(२) (नूह अलैहिस्सलाम ने) कहा कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से डराने वाला हूँ।[3]

قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٢

(३) कि तुम अल्लाह की इबादत करो[4] तथा उसी से डरो[5] एवं मेरा कहना मानो।[6]

اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَاَطِيْعُوْنِ ۝٣

---

[1]आदरणीय नूह महान ईशदूतों में से हैं। सहीह मुस्लिम आदि की शफ़ाअत (अभिस्तावना) वाली हदीस में है कि यह प्रथम ईशदूत हैं। यह भी कहा जाता है कि उन्ही की जाति से शिर्क (वहुदेववाद) का आरम्भ हुआ। अल्लाह तआला (परमेश्वर) ने उन्हें अपनी जाति के मार्गदर्शन के लिए भेजा।

[2]क़्यामत के दिन अथवा सांसारिक प्रकोप के आने से पहले, जैसे इस जाति पर तूफ़ान आया।

[3]अल्लाह की यातना से, यदि तुम ईमान न लाये। इसीलिए यातना से मुक्ति का नुसख़ा तुम्हें वतलाने आया हूँ, जो आगे वर्णन हो रहा है।

[4]तथा शिर्क त्याग दो। केवल एक अल्लाह की इबादत करो।

[5]अल्लाह की अवज्ञा से बचो जिनसे तुम अल्लाह की यातना के पात्र बन सकते हो।

[6]अर्थात मैं तुम्हें जिन वातों का आदेश दूँ, उसमें मेरा अनुपालन करो, क्योंकि मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का रसूल तथा उसका प्रतिनिधि बनकर आया हूँ।

The Ummah Technology Mission

يَغْفِرْ لَكُمْ مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ ۖ لَوْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤﴾

(४) तो वह तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा तथा तुम्हें एक निर्धारित समय तक छोड़ देगा।[1] नि:संदेह अल्लाह का वायदा जब आ जाता है तो रुकता नहीं।[2] काश (यदि) तुम्हें ज्ञात होता।[3]

قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ﴿٥﴾

(५) (नूह ने) कहा कि हे मेरे प्रभु ! मैंने अपने समुदाय को रात-दिन तेरी ओर बुलाया है।[4]

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ﴿٦﴾

(६) परन्तु मेरे बुलाने से ये लोग भागने में और बढ़ते ही गये।[5]

وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا

(७) तथा मैंने जब कभी उन्हें तेरे क्षमादान के लिए बुलाया[6] उन्होंने अपनी ऊँगलियाँ अपने

---

[1]इसका अर्थ यह है कि ईमान लाने की स्थिति में तुम्हारी मौत की अवधि जो नियमित है, उसे टालकर तुम्हें अधिक आयु प्रदान करेगा, तथा वह प्रकोप तुमसे दूर कर देगा जो ईमान न लाने की दशा में तुम्हारा भाग्य था। इस आयत से तर्क निकालते हुए कहा गया है कि आज्ञापालन, सदाचार तथा संबधियों के साथ अच्छे व्यवहार से वास्तव में आयु बढ़ती है। हदीस में भी है «صِلَةُ الرَّحِمِ تَزِيدُ فِي الْعُمُرِ» "संबन्धियों से सदव्यवहार आयू के बढ़ने का कारण है।" (इब्ने कसीर) कुछ कहते हैं टालने का अर्थ बरकत है। ईमान से आयु में शुभ होगा। ईमान नहीं लाओगे तो इस शुभ से वंचित रहोगे।

[2]अपितु निश्चित रूप से घटित होकर रहता है। अत: तुम्हारी भलाई इसी में है कि ईमान तथा आज्ञापालन का मार्ग तुरन्त अपना लो। देर करने में ख़तरा है कि अल्लाह के प्रकोप के वचन की लपेट में न आ जाओ।

[3]अर्थात यदि तुम्हें ज्ञान होता तो तुम उसे अपनाने में जल्दी करते जिसका मैं तुम्हें आदेश कर रहा हूँ अथवा यदि तुम यह बात जानते होते कि अल्लाह का प्रकोप जब आ जाता है तो टलता नहीं है।

[4]अर्थात तेरी आज्ञा का पालन करने में बिना आलस्य के रात-दिन मैंने तेरा संदेश अपनी जाति को पहुँचाया है।

[5]अर्थात मेरी पुकार के कारण यह ईमान से और अधिक दूर हो गये हैं। जब कोई समुदाय गुमराही के अंतिम कगार पर पहुँच जाये तो उसकी यही दशा होती है, उसे जितना अल्लाह की ओर बुलाओ वह उतना ही दूर भागता है।

[6]अर्थात ईमान तथा आज्ञापालन की ओर, जो कारण का हेतु है।

The Ummah Technology Mission

ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝٧

अपने कानों में डाल लीं[1] तथा अपने कपड़ों को ओढ़ लिया[2] एवं अड़ गये[3] तथा बड़ा अहंकार किया।[4]

ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝٨

(८) फिर मैं ने उन्हें उच्च आवाज़ से बुलाया।

ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۝٩

(९) तथा नि:संदेह मैं ने उनसे खुल कर भी कहा तथा चुपके-चुपके भी।[5]

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۝١٠

(१०) तथा मैं ने कहा कि अपने प्रभु से अपने पापों को क्षमा करवा लो।[6] (तथा क्षमा माँगो) नि:संदेह वह बड़ा क्षमाशील है।[7]

يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُم مِّدْرَارًا ۝١١

(११) वह तुम पर आकाश को खूब वर्षा करता हुआ छोड़ देगा।[8]

---

[1]ताकि मेरी आवाज़ न सुन सकें।

[2]ताकि मेरा मुख न देख सकें अथवा अपने सिरों पर कपड़े डाल लिये ताकि मेरी बात न सुन सकें। यह उनकी ओर से कड़ी शत्रुता का तथा शिक्षा-दिक्षा से निश्चिन्तता का प्रदर्शन है। कुछ कहते हैं कि अपने को कपड़ों से ढाँक लेने का उद्देश्य यह था कि पैग़म्बर (संदेष्टा) उनको पहचान न सके तथा उन्हें आमंत्रण स्वीकार करने पर बाध्य न करे।

[3]अर्थात कुफ़्र (इंकार) पर अडिग रहे, उसे छोड़ा नहीं तथा पश्चाताप नहीं किया।

[4]सत्य के स्वीकार तथा आज्ञा के पालन करने से उन्होंने घोर अहंकार किया।

[5]अर्थात विभिन्न रूप तथा ढंग से उन्हें आमंत्रण दिया। कुछ कहते हैं कि सभाओं तथा समारोहों में भी उन्हें आमन्त्रण दिया तथा घरों में व्यक्तिगत रूप से भी तेरा संदेश पहुँचाया।

[6]अर्थात ईमान तथा आज्ञापालन का पथ अपना लो, तथा अपने प्रभु से विगत पापों की क्षमा माँग लो।

[7]वह तौबा (क्षमा-याचना) स्वीकार करने वाला दयानिधि तथा क्षमावान है।

[8]कुछ विद्वानों ने इसी आयत के कारण इस्तिसक़ा (वर्षा के लिये) नमाज़ में सूरह नूह पढ़ने को अच्छा कहा है। रिवायत है कि आदरणीय उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु भी एक बार इस्तिसक़ा की नमाज़ के लिये मंच पर चढ़े तो केवल आयाते इस्तिग़फ़ार, (क्षमा-याचना वाली आयतें) पढ कर मंच से उतर आये, तथा फ़रमाया कि मैंने वर्षा को वर्षा के उन

The Ummah Technology Mission

وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَل لَّكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَل لَّكُمْ أَنْهَارًا ﴿١٢﴾

(१२) तथा तुम्हें खूब माल तथा सन्तान में बढ़ा देगा तथा तुम्हें बाग़ देगा तथा तुम्हारे लिए नहरें निकाल देगा।[1]

مَّا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ﴿١٣﴾

(१३) तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की सर्वोच्चता पर विश्वास नहीं करते।[2]

وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ﴿١٤﴾

(१४) यद्यपि उसने तुम्हें विभिन्न प्रकार से पैदा किया है।[3]

أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا ﴿١٥﴾

(१५) क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह (तआला) ने किस तरह ऊपर तले सात आकाश पैदा कर दिये हैं।[4]

मार्गों से माँगा है जो आकाशों में हैं, जिनसे वर्षा धरती पर उतरती है। (इब्ने कसीर) आदरणीय हसन बसरी के सम्बन्ध में कहा जाता है कि उनसे आकर किसी ने अकाल की शिकायत की तो उन्होंने उसे इस्तिग़फ़ार (क्षमा-याचना) का निर्देश दिया, किसी दूसरे ने दरिद्रता तथा भूखमरी की शिकायत की तो उसे भी यही उपचार बताया एक अन्य व्यक्ति ने अपने बाग़ के सूख जाने की शिकायत की तो उससे भी कहा कि क्षमा-याचना कर। किसी ने जब उनसे कहा कि सबको आपने क्षमा-याचना ही का निर्देश क्यों दिया ? तो आपने यही आयत पढ़कर कहा कि मैंने अपनी ओर से यह बात नहीं की। यह वह उपचार है जो इन सबके लिये अल्लाह ने बताया है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[1]अर्थात क्षमा-याचना से तुम्हें परलौकिक सुख-सुविधायें ही नहीं मिलेंगी, अपितु सांसारिक धन-सम्पत्ति तथा पुत्रों की अधिकता से भी सुशोभित किये जाओगे।

[2]وقار बना है توقير (तौक़ीर) से अर्थात मर्यादा। तथा رجاء भय के अर्थ में है, अर्थात उसकी मर्यादा के अनुसार उससे डरते क्यों नहीं हो, उसे एक क्यों नहीं मानते तथा उसकी आज्ञापालन क्यों नहीं करते ?

[3]पहले वीर्य, फिर रक्त का थक्का फिर माँस का टुकड़ा, फिर अस्थियाँ, माँस और फिर पूरी पैदाईश, जैसाकि सूरह *अम्बिया*-५, *अल-मोमिनून*-१४, तथा *अल-मोमिन*-६७ आदि में विवरण गुज़रा।

[4]जो उसके सामर्थ्य तथा कारीगरी की निपुणता को व्यक्त करते तथा इस बात की ओर संकेत करते हैं कि उपास्य मात्र वही एक अल्लाह है।

The Ummah Technology Mission

وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٦﴾

(१६) तथा उनमें चन्द्रमा को खूब जगमगाता बनाया है[1] तथा सूर्य को प्रकाशमान दीप बनाया है।[2]

وَاللَّهُ أَنبَتَكُم مِّنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ﴿١٧﴾

(१७) तथा तुमको धरती से (एक विशेष विधि से) उगाया है[3] (तथा पैदा किया है)।

ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ﴿١٨﴾

(१८) फिर तुम्हें उसी में लौटा ले जायेगा तथा (एक विशेष विधि से) फिर तुम्हें निकालेगा।[4]

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا ﴿١٩﴾

(१९) तथा तुम्हारे लिये धरती को अल्लाह (तआला) ने फ़र्श बनाया है।[5]

لِّتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴿٢٠﴾

(२०) ताकि तुम उसके विस्तृत मार्गों में चलो फिरो।[6]

---

[1]जो धरती को प्रकाशित करने वाला तथा उसके माथे का झूमर है।

[2]ताकि इंसान उसके प्रकाश में जीविका उपार्जन के लिए, जो उसकी सबसे बड़ी आवश्यकता है, प्रयास तथा परिश्रम कर सके।

[3]अर्थात तुम्हारे बाप आदम अलैहिस्सलाम को, जिन्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर उसमें अल्लाह ने आत्मा फूँकी। अथवा यदि सभी मानव जाति को संबोधित समझा जाये तो अभिप्राय यह होगा कि तुम जिस वीर्य से पैदा होते हो वह उसी आहार से बनता है जो धरती से प्राप्त होता है इस आधार पर सभी की उत्पत्ति इसी धरती से सिद्ध होती है।

[4]अर्थात मरकर फिर उसी मिट्टी में जाना है, फिर प्रलय के दिन उसी धरती से तुम्हें जीवित करके निकाला जायेगा।

[5]अर्थात उसे फ़र्श (शय्या) के समान बिछा दिया है। तुम उस पर ऐसे चलते-फिरते तथा उठते-बैठते हो जैसे अपने घर में बिछे बिस्तर पर।

[6]سُبُلٌ बहुवचन है سَبِيلٌ का तथा فِجَاجٌ बहुवचन है فَجٌّ (विस्तृत मार्ग) का। अर्थात उसने धरती पर बड़े-बड़े विस्तृत मार्ग बना दिये हैं ताकि मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान, एक नगर से दूसरे नगर तथा एक देश से दूसरे देश में जा सके। इसलिए यह मार्ग भी इंसान की व्यवसायिक तथा सामाजिक आवश्यकता है, जिसकी व्यवस्था करके अल्लाह ने मानव पर एक महान अनुग्रह किया है।

The Ummah Technology Mission

قَالَ نُوحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَن لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَدُهُ إِلَّا خَسَارًا ﴿٢١﴾

(२१) नूह (अलैहिस्सलाम) ने कहा कि हे मेरे प्रभु ! उन लोगों ने मेरी अवहेलना की[1] तथा ऐसों का आज्ञापालन किया जिनके माल तथा संतान ने उनको (नि:संदेह) हानि ही में बढ़ाया।[2]

وَمَكَرُوا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿٢٢﴾

(२२) तथा उन लोगों ने बहुत बड़ा धोखा किया।[3]

وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا ﴿٢٣﴾

(२३) तथा उन्होंने कहा कि कदापि अपने देवताओं को न छोड़ना तथा न वद्द, सुवाअ, यग़ूस, यअुक एवं नस्र को (छोड़ना।[4]

---

[1]अर्थात मेरी अवहेलना पर अड़े हुए हैं तथा मेरे निमन्त्रण को स्वीकार नहीं कर रहे हैं।

[2]अर्थात उनके छोटों ने अपने बड़ों तथा धनवानों ही का अनुगमन किया जिनके धन तथा संतानों ने उनके लोक तथा परलोक की हानि ही को बढ़ाया है।

[3]यह धोखा तथा छल क्या था ? कुछ ने कहा कि उनका कुछ लोगों को नूह अलैहिस्सलाम की हत्या करने पर उभारना था। कुछ कहते हैं कि धन तथा संतान के कारण जिस स्वार्थ के धोखे में वह ग्रस्त हुए, यहाँ तक कि उनमें से कुछ ने कहा कि यदि यह सत्य पर न होते तो इनको यह सुख-सुविधायें क्यों प्राप्त होतीं ? कुछ के विचार में उनके प्रमुखों का यह कहना था कि तुम अपने देवताओं की उपासना न छोड़ना तथा कुछ के विचार में उनका कुफ़्र (इंकार) ही बड़ा धोखा था।

[4]यह नूह अलैहिस्सलाम के समुदाय के "पाँच सदाचारी व्यक्ति" थे जिनकी वह उपासना करते थे, तथा उनकी इतनी शुहरत हुई कि अरब में भी उनकी पूजा-अर्चना होती रही। जैसे 'वद्द' दूमतुल जनदल (स्थान) में क़बीला कल्ब का, 'सुवाअ' समुद्र तट के क़बीला हुज़ैल का, 'यग़ूस' सबा के निकट जुर्फ़ नाम के स्थान में मुराद तथा बनू गुतैफ़ का। 'यऊक' हमदान क़बीले का तथा 'नस्र' हिम्यर जाति का क़बीला ज़ुल कलाअ का उपास्य रहा। (इब्ने कसीर, फ़तहुल क़दीर) यह पाँचों नूह की जाति के नेक लोगों के नाम थे। जब यह मर गये तो शैतान ने उनके श्रृद्धालुओं से कहा कि उनके चित्र बनाकर अपने घरों तथा दूकानों में रख लो ताकि वह याद रहें तथा उन का ध्यान करके तुम भी सत्कर्म करते रहो। जब यह चित्र बनाकर रखने वाले मर गये तो उनके वंश को शैतान ने यह कहकर शिर्क में लिप्त कर दिया कि तुम्हारे पूर्वज तो इनकी उपासना करते थे, जिनके चित्र तुम्हारे घरों में लटक रहे हैं। अत: उन्होंने उनकी पूजा आरम्भ कर दी। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरह नूह)

The Ummah Technology Mission

وَقَدْ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۚ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ﴿٢٤﴾

(२४) तथा उन्होंने बहुत से लोगों को भटकाया,[1] (हे प्रभु !) तू उन अत्याचारियों के भटकावे को और बढ़ा दे।

مِمَّا خَطِيْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْصَارًا ﴿٢٥﴾

(२५) ये लोग अपने पापों के कारण[2] (पानी में) डूबो दिये गये तथा नरक में पहुँचा दिये गये और अल्लाह के अतिरिक्त उन्होंने अपना कोई सहायता करने वाला न पाया।

وَقَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾

(२६) तथा नूह (अलैहिस्सलाम) ने कहा कि हे मेरे प्रभु ! तू धरती पर किसी काफ़िर को रहने-सहने वाला न छोड़ ![3]

اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿٢٧﴾

(२७) यदि तू उन्हें छोड़ देगा तो निःसंदेह ये तेरे अन्य भक्तों को भी भटका देंगे तथा ये कुकर्म काफ़िरों ही को जन्म देंगे।

رَبِّ اغْفِرْلِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَلَا تَزِدِ

(२८) हे मेरे प्रभु ! तू मुझे तथा मेरे माता-पिता तथा जो भी ईमान लाकर मेरे घर में आये तथा समस्त ईमानवाले पुरूषों तथा समस्त ईमानवाली महिलाओं को क्षमा कर

---

[1] اَضَلُّوا क्रिया का कर्ता नूह की जाति के प्रमुख हैं। अर्थात उन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह किया अथवा उसका कर्ता यही उपरोक्त पाँच बुत (देवता) हैं। इसका अभिप्राय यह है कि बहत से लोग इनके कारण गुमराही में लीन हुए। जैसे ईशदूत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने भी कहा था।

﴿ رَبِّ إِنَّهُنَّ أَضْلَلْنَ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ ﴾

"हे मेरे प्रभु, उन्होंने बहुत से लोगों को पथभ्रष्ट कर दिया है।" (इब्राहीम-३६)

[2] مِمَّا में ما अधिक है مِنْ خَطِيئَاتِهِم का अर्थ مِنْ أجلها و بِسَبَبِهَا أغرقوا بالطوفان है। (फ़तहुल क़दीर)

[3] यह शाप उस समय दिया जब ईशदूत नूह अलैहिस्सलाम उनके ईमान लाने से बहुत निराश हो गये तथा अल्लाह ने भी सूचित कर दिया कि अब उनमें से कोई ईमान नहीं लायेगा।

The Ummah Technology Mission

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾

दे[1] तथा काफ़िरों को विनाश के अतिरिक्त अन्य किसी बात में न बढ़ा।[2]

सूरतुल जिन्न-७२

سُوْرَةُ الْجِنِّ

सूर: जिन्न मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें अट्ठाईस आयतें एवं दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۙ﴿١﴾

(१) (हे मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आप कह दें कि मुझे प्रकाशना की गयी है कि जिन्नों के एक गिरोह ने (क़ुरआन) सुना।[3] तथा कहा कि हम ने विचित्र क़ुरआन सुना है।[4]

يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ

(२) जो सत्य मार्ग की ओर मार्गदर्शन देता है[5] हम तो उस पर ईमान ला चुके,[6] (अब)

---

[1]काफ़िरों को शाप दिया तो अपने तथा मोमिनों के लिए क्षमा की प्रार्थना की।

[2]यह शाप क़यामत तक आने वाले अत्याचारियों के लिए है, जैसे उपरोक्त प्रार्थना सभी ईमान वाले पुरूष तथा स्त्रियों के लिए है।

[3]यह घटना सूरह अहक़ाफ़ २९ में गुज़र चुका है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वादिये नख़ला में सहावा केराम को फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे कि कुछ जिन्नों का वहाँ से गुज़र हुआ तो उन्होंने आपका क़ुरआन सुना, जिससे वे प्रभावित हुए। यहाँ बतलाया जा रहा है कि उस समय जिन्नों के क़ुरआन सुनने का ज्ञान आप को नहीं हुआ, अपितु प्रकाशना द्वारा आपको इससे सूचित किया गया।

[4]عَجَبًا धातु है अतिशय के रूप में, अथवा सम्बन्ध लुप्त है ذَاعَجَب अथवा धातु कर्ता संज्ञा مُعْجِبًا के अर्थ में है। अर्थात हमने ऐसा क़ुरआन सुना है जो प्रभाव तथा वाक्य-शैली में विचित्र है, अथवा शिक्षा के आधार पर विचित्र है, अथवा बरकत (शुभ) में आश्चर्यजनक है। (फ़तहुल क़दीर)

[5]यह क़ुरआन की दूसरी विशेषता है कि वह सत्य मार्ग अर्थात सत्य एवं औचित्य को स्पष्ट करता अथवा अल्लाह का ज्ञान प्रदान करता है।

[6]अर्थात हमने तो उसे सुनकर इस बात की पुष्टि कर दी कि वास्तव में यह ईशवाणी है,

The Ummah Technology Mission

وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۝٢

हम कदापि अपने प्रभु का किसी अन्य को साझीदार न बनायेंगे।[1]

وَّ اَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۝٣

(३) तथा नि:संदेह हमारे प्रभु की महिमा महान है, न उसने किसी को (अपनी) पत्नी बनाया है तथा न सन्तान।[2]

وَّ اَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۝٤

(४) तथा नि:संदेह हम में का मूर्ख अल्लाह के विषय में झूठी बातें कहता था।[3]

وَّ اَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۝٥

(५) तथा हम तो यही समझते रहे कि असंभव है कि मनुष्य तथा जिन्नात अल्लाह पर झूठी बातें लगायें।[4]

किसी मनुष्य की बात नहीं। इसमें काफ़िरों को फटकार है कि जिन्न तो एक बार सुनकर ही इस क़ुरआन पर ईमान लाये। थोड़ी सी आयत सुनकर ही उनकी काया पलट हो गई तथा वह समझ गये कि यह किसी मनुष्य की बनाई बात नहीं। किन्तु मनुष्य को विशेष रूप से इनके प्रमुखों को ही इससे कोई लाभ नहीं हुआ, जबकि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुख से कई बार क़ुरआन सुना। इसके सिवा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं उन्हीं में से थे तथा उन्हीं की भाषा में उनको क़ुरआन सुनाते थे।

[1]न उसकी सृष्टि में से, न किसी अन्य उपास्य को, इसलिए कि वह अपने प्रभुत्व में अकेला (अद्वितीय) है।

[2]جَدُّ का अर्थ महानता एवं प्रताप है, अर्थात हमारे प्रभु की श्रेष्ठता इससे उच्चतम है कि उसके संतान अथवा पत्नी हो। मानो जिन्नो ने इन मुशरिकों (मूर्तिपूजकों) की त्रुटि खोल दी जो अल्लाह से पत्नी और संतान को संबधित करते थे। उन्होंने दोनों कमजोरियों से प्रभु की प्रवित्रता एवं स्वच्छता का वर्णन किया।

[3]سَفِيْهُنَا (हमारे मूर्ख) से अभिप्राय कुछ ने शैतान लिया है, कुछ ने उनके साथी जिन्न तथा कुछ ने सामान्य रूप से प्रत्येक वह व्यक्ति लिया है जो यह ग़लत भ्रम रखता है कि अल्लाह की संतान है। شَطَطًا के कई अर्थ लिये गये हैं, अत्याचार, झूठ, अनृत, कुफ़्र में अतिशय आदि। उद्देश्य संतुलित मार्ग से दूरी तथा सीमा पार कर जाना है। अभिप्राय यह है कि यह बात कि अल्लाह की संतान है उन मूर्खों की बात है जो संतुलित तथा सीधे मार्ग से दूर, सीमा से परे, मिथ्यावादी तथा मिथ्यारोपी हैं।

[4]इसलिए हम उसकी पुष्टि करते रहे तथा अल्लाह के विषय में यह आस्था रखे रहे यहाँ

The Ummah Technology Mission

وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۝٦

(६) वास्तविकता यह है कि कुछ मनुष्य कुछ जिन्नों से शरण माँगते थे,[1] जिससे जिन्नात अपनी उद्दण्डता में और बढ़ गये।[2]

وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۝٧

(७) तथा (मनुष्यों) ने भी जिन्नों की तरह ये समझ लिया था कि अल्लाह कदापि किसी को नहीं भेजेगा। (अथवा किसी को पुनः जीवित न करेगा)[3]

وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ۝٨

(८) तथा हमने आकाश को टटोल कर देखा तो उसको अत्यन्त चौकस सुरक्षा कर्मियों एवं तीव्र शोलों (ज्वालाओं) से पूर्ण पाया।[4]

وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ؕ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۝٩

(९) तथा इस से पूर्व हम बातें सुनने के लिए आकाश में स्थान-स्थान पर बैठ जाया करते थे।[5] अब जो भी कान लगाता है वह एक शोले को अपनी ताक (घात) में पाता है।[6]

तक कि हमने क़ुरआन सुना तो फिर हम पर इस आस्था का मिथ्या होना खुल गया।

[1]अज्ञानकाल में एक प्रथा यह भी थी कि वे कहीं यात्रा पर जाते तो जिस वादी में रुकते वहाँ जिन्नों से शरण माँगते, जैसे क्षेत्र के प्रमुख तथा बड़े से शरण माँगी जाती है। इस्लाम ने इसको समाप्त किया तथा मात्र एक अल्लाह से शरण माँगने पर बल दिया।

[2]अर्थात जब जिन्नों ने देखा कि इंसान हमसे डरते हैं तथा हमारी शरण माँगते हैं तो उनके अभिमान तथा उद्दण्ता में और अधिकता हो गई। رَهَقًا यहाँ अहंकार, उपद्रव, अवज्ञाकारिता के अर्थ में है। इसका मूल अर्थ है पाप तथा निषेध को ढकना अर्थात उनको करना।

[3]بَعْثٌ के दोनों अर्थ हो सकते हैं, जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है।

[4]حرس ، حارسٌ (चौकीदार, रक्षक) का तथा شهاب، شهب (ज्वाला) का बहुवचन है। अर्थात आकाशों पर फ़रिश्ते चौकीदारी करते हैं कि आकाशों की कोई बात कोई अन्य न सुन ले तथा यह तारे आकाश पर जाने वाले शैतानों पर ज्वाला बनकर गिरते हैं।

[5]तथा आकाशवाणी की कुछ सुन-गुन पाकर काहिनों ज्योतिषियों को बता दिया करते थे, जिनमें वह अपनी ओर से सौ झूठ मिला दिया करते थे।

[6]किन्तु मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजने के पश्चात यह क्रम समाप्त कर

The Ummah Technology Mission

وَّاَنَّا لَا نَدْرِیْۤ اَشَرٌّ اُرِیْدَ بِمَنْ فِی الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ﴿۱۰﴾

(१०) और हम नहीं जानते कि धरती वालों के साथ किसी बुराई का विचार किया गया है अथवा उनके प्रभु का विचार उनके साथ भलाई का है।[1]

وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ؕ كُنَّا طَرَآىِٕقَ قِدَدًا ﴿۱۱﴾

(११) तथा यह कि (नि:संदेह) कुछ तो हममें से सदाचारी हैं तथा कुछ उसके विपरीत भी हैं। हम विभिन्न प्रकार से विभाजित हैं।[2]

وَّاَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِی الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ﴿۱۲﴾

(१२) तथा हमें पूर्ण विश्वास हो गया[3] कि हम अल्लाह तआला को धरती में कदापि विवश नहीं कर सकते तथा न हम भागकर उसे पराजित कर सकते हैं।

وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰۤی اٰمَنَّا بِهٖ ؕ فَمَنْ یُّؤْمِنْۢ بِرَبِّهٖ فَلَا یَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ﴿۱۳﴾

(१३) तथा हम मार्गदर्शन की बात सुनते ही उस पर ईमान ला चुके, तथा जो भी अपने प्रभु पर ईमान लायेगा उसे न किसी हानि का भय है न अत्याचार (तथा दुख) का।[4]

दिया गया। अब जो भी इस विचार से ऊपर जाता है अग्नि की लपट उसकी ताक में रहती है तथा टूटकर उस पर गिरती है।

[1]अर्थात इस आकाश की सुरक्षा से उद्देश्य धरती वासियों के लिए किसी बुरी योजना की पूर्ति है अर्थात उन पर प्रकोप उतारना है, अथवा भलाई का विचार अर्थात रसूल (संदेष्टा) भेजना है।

[2]قِـدَدٌ (वस्तु का खंड) صَارَ القومُ قِدَداً उस समय बोलते हैं जब उनकी अवस्थायें परस्पर भिन्न हों, अर्थात हम विभिन्न समूहों तथा विभिन्न विचारों में विभाजित हैं। अर्थात जिन्नों में भी मुसलमान, काफ़िर, यहूदी, ईसाई, मजूसी आदि हैं। कुछ कहते हैं कि उनमें भी मुसलमानों की भाँति कदरिया, मुरजिया, राफ़िज़ा आदि हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[3]यहाँ ظَنٌّ विश्वास के अर्थ में है, जैसे कि और भी कुछ स्थानों पर है।

[4]अर्थात न इस बात का संदेह है कि उनके पुण्यों तथा प्रत्युपकारों में कोई कमी कर दी जायेगी और न इस बात का भय कि उनकी बुराईयों में कुछ बढ़ा दिया जायेगा।

The Ummah Technology Mission

وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ؕ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ﴿۱۴﴾

(१४) तथा, हम में से कुछ मुसलमान हैं तथा कुछ अन्यायी हैं ।[1] तो जो मुसलमान हो गये उन्होंने सीधे मार्ग की खोज कर ली ।

وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿۱۵﴾

(१५) तथा जो अत्याचारी हैं वे नरक का ईधन बन गये ।[2]

وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً غَدَقًا ﴿۱۶﴾

(१६) तथा यह कि यदि ये लोग सीधे मार्ग पर दृढ़ रहते तो अवश्य हम उन्हें बहुत अधिक जल पिलाते ।

لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَمَنْ يُّعْرِضْ

(१७) ताकि हम उसमें उनकी परीक्षा ले लें[3]

---

[1]अर्थात जो मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नबूवत (दूतत्व) के प्रति ईमान ले आये वह मुसलमान तथा जिन्होंने इंकार किया वह अन्यायी हैं । قَاسِطٌ अत्याचारी, अन्यायी, مُقْسِطٌ न्यायकारी, अर्थात सुलासी मुजर्रद (तीन अक्षर के शब्द से जिसमें अधिक अक्षर न हों) से हो तो अत्याचार करने के अर्थ में तथा मज़ीद फीह (जिसमें अधिक अक्षर हों) से हो तो न्याय करने के ।

[2]इससे ज्ञात हुआ कि इंसानों की भाँति जिन भी स्वर्ग तथा नरक में जायेंगे । उनमें से काफ़िर नरक में तथा मुसलमान स्वर्ग में । यहाँ तक जिन्नों की बात पूरी हो गई । अब आगे फिर अल्लाह का कथन है ।

[3]أَن لَّوِ اسْتَقَامُوا का संयोजन أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ से है, अर्थात यह बात भी मुझे प्रकाशना द्वारा बताई गई है कि.... الطَّرِيقَةِ से तात्पर्य सीधा मार्ग इस्लाम है । غَدَقٌ का अर्थ अधिक है । अधिक जल से अभिप्राय सांसारिक सम्पन्नता है, अर्थात संसार को देकर हम उनकी परीक्षा लेते, जैसे अन्य स्थान पर कहा है : ﴿وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰٓ ءَامَنُوا۟ وَاتَّقَوْا۟ لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ﴾ (*अल-आराफ़*-९६)

यही बात अहले किताब (यहूद तथा नसारा) के संदर्भ में भी फ़रमाई गई है । (*सूरह मायेदः*-६६) कुछ कहते हैं कि इस आयत का अवतरण उस समय हुआ था जब कुरैश के काफ़िरों पर अकाल आच्छादित कर दिया गया । الطَّرِيقَةِ का दूसरा अर्थ गुमराही का मार्ग किया गया है । इस अर्थ के अनुसार यह भौतिक वैभव ढील देने स्वरूप होगा । जैसे अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُم بِهِۦ مِن مَّالٍ وَبَنِينَ ۝ نُسَارِعُ لَهُمْ فِى الْخَيْرَٰتِ ۚ بَل لَّا يَشْعُرُونَ﴾

"क्या ये (यूँ) समझ बैठे हैं कि हम जो भी उनके धन एवं सन्तान बढ़ा रहे हैं वह

عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿١٧﴾

तथा जो व्यक्ति अपने प्रभु के स्मरण से मुख मोड़ लेगा तो अल्लाह (तआला) उसे कठोर यातना में डाल देगा।[1]

وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ﴿١٨﴾

(१८) तथा यह कि मस्जिदें केवल अल्लाह ही के लिए (विशेष) हैं, तो अल्लाह (तआला) के साथ किसी अन्य को न पुकारो।[2]

وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾

(१९) तथा जब अल्लाह का बंदा (भक्त) उसकी इबादत के लिए खड़ा हुआ तो निकट था कि वे भीड़ की भीड़ बनकर उस पर पिल पड़ें।[3]

उनके लिए भलाईयों में शीघ्रता कर रहे हैं (नहीं, नहीं) बल्कि ये समझते नहीं।" (*अल-मोमिनून-५५,५६*)

इमाम इब्ने कसीर के विचार से यह दूसरा भावार्थ उचित है जबकि इमाम शौकानी के विचार से प्रथम भावार्थ अधिक सहीह है।

[1] صَعَدًا अर्थात عذاباً شَاقًّا شدِيداً مُوجِعًا مُؤلِماً (इब्ने कसीर) "अति घोर दुखदायी यातना।"

[2] مسجد का अर्थ सजदे का स्थान है। सजदा भी नमाज का एक रुक्न (स्तम्भ, अनिवार्य कर्म) है इसीलिए नमाज पढ़ने के स्थान को मस्जिद कहा जाता है। आयत का भावार्थ स्पष्ट है कि मस्जिदों का लक्ष्य मात्र एक अल्लाह की इबादत है। इसलिए मस्जिदों में किसी अन्य की उपासना, किसी अन्य से प्रार्थना, विनय तथा किसी और से गुहार अथवा उसे सहायता के लिए पुकारना वैध नहीं। यदि यहाँ भी अल्लाह के सिवा किसी को पुकारा जाने लगे तो यह अति बुरा तथा अत्याधिक अत्याचार होगा। किन्तु दुर्भाग्य से नाम के मुसलमान अब मस्जिदों में भी अल्लाह के साथ दूसरों को सहायतार्थ पुकारते हैं, अपितु मस्जिद में ऐसे शिला-लेख लटकायें हुए हैं जिन में अल्लाह को छोड़कर दूसरों को सहायतार्थ पुकारा गया है। हाय ! فَلْيَبْكِ على الإسلامِ مَنْ كانَ بَاكِيًا

[3] عَبْدُ اللّٰه (अल्लाह के दास) से अभिप्राय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, तथा अभिप्राय यह है कि जिन्न तथा इंसान मिलकर चाहते हैं कि अल्लाह के इस प्रकाश को अपनी फूँकों से बुझा दें। इसके अन्य भावार्थ भी वर्णन किये गये हैं किन्तु इमाम इब्ने कसीर ने इसे प्रधानता दी है।

The Ummah Technology Mission

قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٠﴾

(२०) (आप) कह दीजिए कि मैं तो केवल अपने प्रभु को ही पुकारता हूँ तथा उसके साथ किसी को साझीदार नहीं बनाता।[1]

قُلْ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾

(२१) कह दीजिए कि मुझे तुम्हारे लिए किसी लाभ-हानि का अधिकार नहीं।[2]

قُلْ اِنِّيْ لَنْ يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾

(२२) कह दीजिए कि मुझे कदापि कोई अल्लाह से नहीं बचा सकता[3] तथा मैं कदापि उसके अतिरिक्त शरण का स्थान भी नहीं पा सकता।

اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ﴿٢٣﴾

(२३) परन्तु (मेरा काम) तो केवल अल्लाह की बात तथा उसका सन्देश (लोगों को) पहुँचा देना है,[4] (अब) जो भी अल्लाह तथा उसके संदेष्टा की अवहेलना करेगा उसके लिए नरक की अग्नि है जिसमें ऐसे लोग सदैव रहेंगे।

حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ

(२४) यहाँ तक कि जब उसे देख लेंगे जिसका उनको वचन दिया[5] जाता है, तो निकट भविष्य

---

[1]अर्थात जब सभी आप की शत्रुता पर एक मत हो गये तथा तुल गये हैं तो आप कह दीजिए कि मैं तो मात्र अपने प्रभु की उपासना करता हूँ, उसी से शरण माँगता तथा उसी पर भरोसा करता हूँ।

[2]अर्थात मुझे तुम्हारे मार्गदर्शन अथवा गुमराही एवं लाभ-हानि का अधिकार नहीं, मैं तो मात्र एक का भक्त हूँ, जिसे अल्लाह ने प्रकाशना तथा रिसालत के लिये निर्वाचित कर लिया है।

[3]यदि मैं उसकी अवज्ञा करूँ तथा वह मुझे यातना देना चाहे।

[4]यह لَآ اَمْلِكُ لَكُمْ से अनुबंधित (अलग) है। यह भी संभव है कि لَنْ يُّجِيْرَنِيْ से अनुबंध हो, अर्थात अल्लाह की यातना से कोई चीज़ बचा सकती है तो वह यही है कि मैं धर्म प्रचार-प्रसार के कर्तव्य को पूरा करूँ, जिसे पूरा करना अल्लाह ने मुझ पर अनिवार्य किया है। رِسٰلٰتِهٖ का संयोजन अल्लाह पर है अथवा بَلٰغًا पर, अथवा फिर वाक्य इस प्रकार है। اِلَّا اُبَلِّغَ عَنِ اللّٰهِ وَ اَعْمَلَ بِرِسَالَتِهٖ (फतहुल क़दीर)

[5]अथवा अभिप्राय यह है कि यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा मुसलमानों की शत्रुता तथा अपने कुफ़्र पर डटे रहेंगे, यहाँ तक कि वह लोक-परलोक में वह यातना देख लें, जिसका उन्हें वचन दिया जाता है।

The Ummah Technology Mission

مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾

में जान लेंगे कि किस का सहायक क्षीण तथा किसका गिरोह कम है।[1]

قُلْ اِنْ اَدْرِیْۤ اَقَرِیْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ یَجْعَلُ لَهٗ رَبِّیْۤ اَمَدًا ﴿٢٥﴾

(२५) (आप) कह दीजिए कि मुझे ज्ञान नहीं कि जिसका वादा तुमसे किया जाता है वह निकट है अथवा मेरा प्रभु उसके लिए दूर की अवधि निर्धारित करेगा।[2]

عٰلِمُ الْغَیْبِ فَلَا یُظْهِرُ عَلٰی غَیْبِهٖۤ اَحَدًا ﴿٢٦﴾

(२६) वह परोक्ष का जानने वाला है तथा अपने परोक्ष पर वह किसी को अवगत नहीं कराता।

اِلَّا مَنِ ارْتَضٰی مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ یَسْلُكُ مِنْۢ بَیْنِ یَدَیْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿٢٧﴾

(२७) अतिरिक्त उस संदेष्टा के जिसे वह प्रिय बना ले,[3] इसलिए कि उसके भी आगे-पीछे रक्षक निर्धारित कर देता है।[4]

لِّیَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ

(२८) ताकि ज्ञान हो जाये कि उन्होंने अपने प्रभु

---

[1]अर्थात उस समय उनको पता लगेगा कि मुसलमानों का सहायक दुर्बल है अथवा मुश्रिकों (बहुदेववादियों) का तथा एकेश्वरवादियों की संख्या कम है अथवा अल्लाह के अलावा के पुजारियों की ? अभिप्राय यह है कि मुश्रिकों का तो सिरे से कोई सहायक ही नहीं होगा तथा अल्लाह की असंख्य सेना के आगे इन मुश्रिकों की संख्या भी आटे में नमक के बराबर ही होगी।

[2]अभिप्राय यह है कि प्रकोप अथवा प्रलय का ज्ञान, यह परोक्ष (अदृश्य) से सम्बन्ध रखता है जिसे अल्लाह ही जानता है कि वह दूर है या निकट।

[3]अर्थात अपने पैग़म्बर (संदेष्टा) को कुछ परोक्ष की बातों से सूचित कर देता है, जिसका सम्बन्ध या तो संदेश पहुँचाने से होता है अथवा उनके संदेष्टा होने का प्रमाण होते हैं। तथा खुली बात है कि अल्लाह के सूचित करने से संदेष्टा परोक्ष का जानने वाला नहीं हो सकता, क्योंकि यदि पैग़म्बर को भी परोक्ष का ज्ञान होता तो फिर अल्लाह की ओर से उसे परोक्ष से सूचित करने का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता। अल्लाह तआला अपना परोक्ष उसी समय अपने रसूल पर व्यक्त करता है जब उसे पहले से इस परोक्ष का ज्ञान नहीं होता, अतः परोक्षज्ञ मात्र अल्लाह ही है, जैसाकि यहाँ भी इसे स्पष्ट किया गया है।

[4]अर्थात प्रकाशना उतरने के समय पैग़म्बर के आगे-पीछे फ़रिश्ते होते हैं जो जिन्नों तथा शैतानों को प्रकाशना की बातें नहीं सुनने देते।

The Ummah Technology Mission

رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾

के संदेश पहँचा दिये,[1] अल्लाह (तआला) ने उनके निकटवर्ती वस्तुओं को घेर रखा है[2] तथा प्रत्येक वस्तु की संख्या की गणना कर रखी है।[3]

सूरतुल मुज़्ज़म्मिल-७३

سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ

सूर: मुज़्ज़म्मिल मक्का में अवतरित हुई तथा उसमें बीस आयतें एवं दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ﴿١﴾

(१) हे चादर में लिपटने वाले !"[4]

---

[1] لِيَعْلَمَ में सर्वनाम किसकी ओर फिरता है? कुछ के विचार में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु वसल्लम हैं, ताकि आप जान लें कि आप से पहले रसूलों ने भी अल्लाह का संदेश इसी प्रकार पहुँचाया जिस प्रकार आप ने पहुँचाया, अथवा रक्षक फ़रिश्तों ने अपने प्रभु का संदेश पैग़म्बर को पहुँचा दिया है। कुछ ने उसे अल्लाह की ओर फिराया है, इस स्थिति में अभिप्राय यह होगा कि अल्लाह अपने फ़रिश्तों के द्वारा अपने पैग़म्बरों की सुरक्षा करता है ताकि वह रिसालत (संदेश पहुँचाने) के कर्तव्य का पालन उचित ढंग से कर सकें। वह उस प्रकाशना की भी रक्षा करता है जो पैग़म्बरों को की जाती है ताकि वह जान ले कि उन्होंने अपने प्रभु के संदेश लोगों तक सही-सही पहुँचा दिये हैं, अथवा फ़रिश्तों ने पैग़म्बरों तक प्रकाशना पहुँचा दी है। अल्लाह तआला को यद्यपि प्रत्येक वस्तु का ज्ञान पहले ही से है। किन्तु ऐसे अवसरों पर अल्लाह के जानने का अभिप्राय उसके अस्तित्व में आने का साधारण अवलोकन है, जैसे ﴿لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعُ الرَّسُوْلَ﴾ "कि हम जान लें कि संदेष्टा का सत्य अनुयायी कौन है।" (*अल-बक़र:*-१४३) तथा ﴿وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا﴾ ﴿وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ﴾ (*अनकबूत*-११) आदि आयतों में है (इब्ने कसीर)

[2] फ़रिश्तों के पास की अथवा पैग़म्बरों के पास की।

[3] क्योंकि वही परोक्ष का ज्ञान रखता है, जो हो चुका तथा जो भविष्य में होगा। सबको उसने गिन रखा है, अर्थात उसके ज्ञान में है।

[4] जिस समय इन आयतों का अवतरण हुआ, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चादर ओढ़ कर लेटे हुए थे। अल्लाह ने आपकी इसी स्थिति की चर्चा करते हुए संबोधित किया। अभिप्राय यह है कि अब चादर छोड़ दें तथा रात में थोड़ा खड़े रहें अर्थात तहज्जुद की नमाज़ पढ़ें। कहा जाता है कि इस आदेशानुसार तहज्जुद की नमाज आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अनिवार्य थी। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

قُمِ الَّيْلَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٢﴾

(२) रातों को उठ खड़े हो जाओ, (तहज्जुद की नमाज़ के लिए) परन्तु थोड़ी देर |

نِّصْفَهُ أَوِ انقُصْ مِنْهُ قَلِيلًا ﴿٣﴾

(३) आधी रात्रि अथवा उससे भी कुछ कम |

أَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ﴿٤﴾

(४) अथवा उस पर बढ़ा दे[1] तथा क़ुरआन को ठहर-ठहर कर (स्पष्ट) पढ़ा कर |[2]

إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا ﴿٥﴾

(५) नि:संदेह हम तुझ पर बहुत भारी बात शीघ्र ही अवतरित करेंगे |[3]

إِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْئًا وَأَقْوَمُ قِيلًا ﴿٦﴾

(६) नि:संदेह रात्रि का उठना मन की एकाग्रता के लिए अत्योचित है[4] तथा बात को अति उचित करने वाला है |[5]

---

[1]यह قَلِيلًا से बदल है अर्थात यह खड़ा होना (नमाज़ के लिए) आधी रात से कम (तिहाई) अथवा कुछ अधिक (दो तिहाई) हो तो कोई आपत्ति नहीं |

[2]जैसाकि हदीसों में आता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पढ़ना रुक-रुक कर साफ-साफ होता था | तथा आपने अपने अनुयायियों को भी तरतील के साथ अर्थात रुक-रुक कर पढ़ने का निर्देश दिया |

[3]रात का (क़याम) खड़ा रहना चूँकि इन्सानी मन के लिए सामान्यत: कठिन है | अत: यह मध्यवर्ती वाक्य के रूप में कहा कि हम इससे भी भारी बात तुम पर अवतरित करेंगे, अर्थात क़ुरआन, जिस के आदेशों तथा कर्तव्यों पर कार्यरत होना, इसकी सीमाओं की आबद्धता तथा उस का प्रचार-प्रसार एक भारी तथा प्राणघातक कार्य है | कुछ ने बोझ (भारीपन) से वह बोझ अभिप्राय लिया है जो प्रकाशना के समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर पड़ता था, जिसके कारण कड़े जाड़े में भी आप पसीने से भीग जाते थे | (इब्ने कसीर)

[4]इसका दूसरा भावार्थ है कि रात के एकांत में कान क़ुरआन के अर्थों को समझने में दिल का अधिक साथ देते हैं जो एक नमाज़ी तहज्जुद में पढ़ता है |

[5]दूसरा भावार्थ यह है कि दिन की अपेक्षा रात को क़ुरआन पढ़ना अधिक स्पष्ट तथा मन के लगाव के लिए अधिक प्रभावशाली है, इसलिए कि उस समय दूसरी आवाज़ें नहीं होतीं, वातावरण शान्त होता है, उस समय नमाज़ी जो पढ़ता है वह आवाज़ों तथा शोर एवं सांसारिक कोलाहल की भेंट नहीं होता, बल्कि नमाज़ी उससे सुरक्षित रहता है तथा उसके प्रभाव का संवेदन करता है |

The Ummah Technology Mission

إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيلًا ۝٧

(७) नि:संदेह तुझे दिन में बहुत से कार्य होते हैं।[1]

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ۝٨

(८) तथा तू अपने प्रभु के नाम का जप किया कर तथा समस्त सृष्टि से अलग होकर उसकी ओर ध्यानमग्न हो जा।[2]

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ۝٩

(९) पूर्व तथा पश्चिम का प्रभु जिसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, तू उसी को अपना संरक्षक बना ले।

وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيلًا ۝١٠

(१०) तथा जो कुछ वे कहते हैं तू सहन करता रह तथा उन्हें अच्छी प्रकार से छोड़ रख।

وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا ۝١١

(११) तथा मुझे एवं उन झुठलाने वाले समृद्धि प्राप्त लोगों को छोड़ दे तथा उन्हें तनिक अवसर दे।

إِنَّ لَدَيْنَا أَنْكَالًا وَجَحِيمًا ۝١٢

(१२) नि:संदेह हमारे यहाँ कठोर बेड़ियाँ हैं तथा सुलगता हुआ नरक है।

وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ۝١٣

(१३) तथा गले में अटकने वाला भोजन है तथा दर्द देने वाली[3] यातना है।

---

[1] سَبْحٌ का अर्थ है اَلْجَرْيُ وَ الدَّوران (चलना तथा घूमना-फिरना) अर्थात दिन के समय सांसारिक कार्य होता है। यह पहली ही बात का समर्थन है। अर्थात रात को नमाज़ और तिलावत (क़ुरआन पढ़ना) अधिक लाभप्रद तथा प्रभावी है। अर्थात इस पर नियमितता के साथ दिन हो अथवा रात अल्लाह की पवित्रता, प्रशंसा, महिमा तथा 'ला ईलाह इल्लल्लाह' पढ़ता रह।

[2] تَبَتُّلٌ का अर्थ कटना तथा अलग होना है, अर्थात अल्लाह की उपासना तथा उससे प्रार्थना एवं विनय के लिए अकेला तथा पूर्णरूप से उसकी ओर ध्यानमग्न हो जा, यह रहबानियत (साधुत्व) से अलग चीज़ है। रहबानियत तो सांसारिक संबंधों के त्याग तथा बैराग का नाम है। تَبَتُّل नाम है सांसारिक कार्यों के पूरा करने के पश्चात उपासना में लग जाना तथा अल्लाह से प्रार्थना करना, जो इस्लाम में प्रशंसनीय है।

[3] اَنْكَالٌ यह نِكْلٌ का बहुवचन है। قيود (बेड़ियाँ) तथा कुछ ने اَغلالٌ के अर्थ में लिया है अर्थात तौक। جَحِيمًا (भड़कती अग्नि) ذَاغُصَّةٍ (गले में अटकने वाला), न गले से नीचे

The Ummah Technology Mission

يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ﴿١٤﴾

(१४) जिस दिन धरती एवं पर्वत थरथरा जायेंगे तथा पर्वत भुरभुरी रेत के टीलों की भाँति हो जायेंगे।[1]

اِنَّاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ﴿١٥﴾

(१५) नि:संदेह हमने तुम्हारी ओर भी तुम पर गवाही देने वाला[2] संदेष्टा भेज दिया है, जैसा कि हमने फ़िरऔन की ओर संदेष्टा भेजा था।

فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ﴿١٦﴾

(१६) तो फ़िरऔन ने उस संदेष्टा की अवज्ञा की तो हमने उसे घोर आपदा में पकड़ लिया।[3]

فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبًا ﴿١٧﴾

(१७) तुम यदि काफ़िर रहे तो उस दिन किस प्रकार बचोगे, जो दिन बच्चों को बूढ़ा कर देगा।[4]

السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌ بِهٖ ؕ

(१८) जिस दिन आकाश फट जायेगा,[5] अल्लाह

उतरे न ऊपर आये। यह زَقُّوْمٌ अथवा ضَرِيْعٌ का खाना होगा। ضَرِيْعٌ एक कटीली झाड़ी है जो अति दुर्गन्धित तथा विषैली होती है।

[1]अर्थात यह यातना उस दिन होगी, जिस दिन धरती तथा पर्वत भूँचाल से ऊपर-तले हो जायेंगे तथा बड़े-बड़े भारी भरकम पर्वत रेत के ढेरों के समान होकर रह जायेंगे। كَثِيْبٌ रेत का टीला, مَهِيْل भुरभुरी, पैरों के नीचे से निकल जाने वाली रेत।

[2]जो क़यामत के दिन तुम्हारे करतूतों की गवाही देगा।

[3]इसमें मक्कावासियों को चेतावनी है कि तुम्हारा परिणाम भी वही हो सकता है जो फ़िरऔन का मूसा अलैहिस्सलाम को झुठलाने के कारण हुआ।

[4]شِيْبٌ (शीब) أَشْيَبُ (अशयब) का बहुवचन हैं। क़यामत के दिन की भयानकता के कारण वास्तव में बच्चे बूढ़े हो जायेंगे, अथवा उपमा स्वरूप ऐसा कहा।

हदीस में भी आता है कि प्रलय के दिन अल्लाह तआला आदम अलैहिस्सलाम से कहेगा कि अपनी संतान में से नरक के लिए अलग निकाल ले। आदरणीय आदम कहेंगे कि हे अल्लाह ! किस प्रकार ? अल्लाह फ़रमायेगा कि प्रत्येक हज़ार में से ९९९। इस समय गर्भवती स्त्रियों के गर्भ गिर जायेंगे तथा बच्चे बूढ़े हो जायेंगे। (अलहदीस, अलबुखारी, तफ़सीर सूरतुल *हज्ज*)

[5]यह يَوْمَ का दूसरा विशेषण है, उस दिन भयानकता से आकाश फट जायेगा।

The Ummah Technology Mission

كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ﴿١٨﴾

(तआला) का यह वचन पूर्ण होकर ही रहेगा।[1]

اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿١٩﴾

(१९) नि:संदेह यह शिक्षा है, तो जो चाहे अपने प्रभु की ओर के मार्ग को अपना ले।

اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَىِ الَّيْلِ وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ ؕ وَاللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ؕ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ

(२०) नि:संदेह तेरा प्रभु भली-भाँति जानता है कि तू तथा तेरे साथ के लोगों का एक गुट लगभग दो तिहाई रात्रि के तथा आधी रात्रि के एवं एक तिहाई रात्रि के (तहज्जुद की नमाज़ के लिए) खड़े होते हैं,[2] तथा रात्रि-दिन का पूर्ण अनुमान अल्लाह (तआला) को ही है,[3] वह (भली-भाँति) जानता है कि तुम उसे कदापि न निभा सकोगे[4] तो उसने तुम पर कृपा की,[5]

---

[1]अर्थात अल्लाह तआला ने जो मौत के पश्चात जीवित करने, हिसाब-किताब एवं स्वर्ग-नरक का जो वादा किया है, यह नि:संदेह होकर रहना है।

[2]जब सूरह के आरम्भ में आधी रात अथवा उससे कम या अधिक क़ियाम (नमाज़ के लिए खड़े होने) का आदेश दिया गया तो आप तथा आप के साथियों का एक गिरोह रात में नमाज़ पढ़ने लगा, कभी दो तिहाई से कम, कभी आधी रात तथा कभी एक तिहाई रात जैसाकि यहाँ वर्णित है। किन्तु एक तो यह रात की नित्य नमाज़ अति कठिन थी, दूसरे समय का यह अनुमान आधी रात या तिहाइ अथवा दो तिहाई भाग नमाज़ पढ़ना इससे भी बड़ा कठिन था। इसलिए अल्लाह ने इस आयत में हलका करने का आदेश उतारा, जिसका अर्थ कुछ के विचार में तहज्जुद की नमाज़ छोड़ने की अनुमति है तथा कुछ के विचार में यह है कि उसके फ़र्ज़ (अनिवार्य होने) को इस्तिहबाब (उत्तम होने) से बदल दिया गया, अब यह न आपके अनुयाईयों के लिए अनिवार्य है, न नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए। कुछ का कहना है कि यह छूट केवल अनुयाईयों के लिए है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए इसका पढ़ना अनिवार्य था।

[3]अर्थात अल्लाह तो रात की घड़ियाँ गिन सकता है कि कितनी व्यतीत हो गयीं तथा कितनी शेष रह गई हैं। तुम्हारे लिए यह अनुमान असंभव है।

[4]जब तुम्हारे लिए रात के गुज़रने का सही अनुमान संभव ही नहीं तो तुम नियमित समय तक तहज्जुद की नमाज़ में व्यस्त भी कैसे रह सकते हो ?

[5]अर्थात अल्लाह तआला ने क़ियामुल्लैल (तहज्जुद की नमाज़) का आदेश निरस्त कर दिया तथा अब केवल उसका उत्तम होना शेष रह गया है तथा वह भी समय की आबद्धता के

The Ummah Technology Mission

أَنْ سَيَكُونُ مِنكُمْ مَّرْضَىٰ ۙ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ يَبْتَغُونَ مِن فَضْلِ اللَّهِ ۙ وَآخَرُونَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۚ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ

अत: जितना क़ुरआन पढ़ना तुम्हारे लिए सरल हो उतना ही पढ़ो[1] वह जानता है कि तुम में कुछ रोगी भी होंगे, कुछ अन्य धरती पर भ्रमण करके अल्लाह तआला की कृपा (अर्थात जीविका भी) खोजेंगे[2] तथा कुछ

बिना । आधी रात, तिहाई रात तथा दो तिहाई रात की आबद्धता भी अनिवार्य नहीं। यदि तुम थोड़ा समय लगाकर दो रक़अत भी पढ़ लोगे तो अल्लाह के पास तहज्जुद की नमाज़ के पुण्य के पात्र बनोगे, फिर भी यदि कोई आठ रकअत तहज्जुद की नमाज़ का प्रबन्ध करे जैसे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा था तो यह अति उत्तम होगा तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुगामी होगा।

[1] فَاقْرَءُوا से अभिप्राय है فصلّوا तथा क़ुरआन से अभिप्राय اَلصَّلٰوة (नमाज़) है। रात की नमाज़ में क़याम (खड़ा होना) लम्बा होता है तथा क़ुरआन अधिक पढ़ा जाता है, अत: तहज्जुद की नमाज़ को ही क़ुरआन कह दिया गया। जैसे नमाज़ में सूरह फ़ातिहा अति आवश्यक है, इसलिए अल्लाह ने हदीस क़ुदसी में, जो सूरह फ़ातिहा के भाष्य में गुज़र चुकी है, सूरह फ़ातिहा को नमाज़ से व्यंजित किया है। «قَسَمْتُ الصَّلاةَ بَيْنِي وَبَيْنَ عَبْدِي» (अल-हदीस) इस के लिए "जितना क़ुरआन पढ़ना सहज हो पढ़ लो" का अर्थ है, रात में जितनी नमाज़ पढ़ सकते हो पढ़ लो। इसलिए न समय की पाबंदी है और न रकअत की। इस आयत से कुछ लोग यह तर्क निकालते हैं कि नमाज़ में सूरह फ़ातिहा पढ़ना ज़रूरी नहीं है, जितना तथा जहाँ से किसी के लिए सहज हो पढ़ लेगा तो नमाज़ हो जायेगी। किन्तु प्रथम तो यहाँ क़िराअत (पढ़ना) नमाज़ के अर्थ में है जैसाकि हमने वर्णन किया। इसलिए आयत का सम्बन्ध इससे नहीं कि नमाज़ में कितनी किराअत (क़ुरआन पढ़ना) आवश्यक है ? दूसरे यदि इसका सम्बन्ध किराअत से मान लिया जाये तब भी यह तर्क अपने भीतर कोई शक्ति नहीं रखता। क्योंकि مَا تَيَسَّرَ की व्याख्या स्वयं नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कर दी है कि कम से कम क़िराअत जिसके बिना नमाज़ नहीं होगी वह सूरह फ़ातिहा है। इसलिए आपने फ़रमाया कि इसे अवश्य पढ़ो, जैसेकि सही एवं अति दृढ़ एवं स्पष्ट हदीसों में इसका आदेश है। नबी की इस व्याख्या के विपरीत यह कहना कि नमाज़ में सूरह फ़ातिहा अनिवार्य नहीं अपितु कोई भी सूरह तथा एक आयत पढ़ लो नमाज़ हो जायेगी बड़े दुष्साहस से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों से विमुखता का धिक्कृत प्रदर्शन है। तथा इमामों के कथन के विपरीत भी जो उन्होंने धर्म-बोध (फ़िक़्ह) के नियम की किताबों में लिखा है कि इस आयत से इमाम के पीछे सूरह फ़ातिहा न पढ़ने का तर्क देना वैध नहीं, इसलिए कि यह दो आयतें परस्पर विपरीत हैं।

[2] अर्थात व्यापार तथा व्यवसाय के लिए यात्रा करना तथा एक नगर से दूसरे नगर अथवा एक देश से दूसरे देश जाना पड़ेगा।

The Quran Technology Mission

وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ؕ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾

अल्लाह तआला के मार्ग में धर्मयुद्ध भी करेंगे,[1] तो तुम सरलता पूर्वक जितना (क़ुरआन) पढ़ सकते हो पढ़ो।[2] तथा नमाज़ नियमितता से पढ़ो[3] तथा ज़कात (भी) देते रहा करो तथा अल्लाह तआला को उत्तम ऋण दो,[4] तथा जो पुण्य तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह (तआला) के यहाँ सर्वोत्तम रूप से बदले में अत्याधिक पाओगे।[5] और अल्लाह तआला से क्षमा माँगते रहो। नि:संदेह अल्लाह तआला क्षमा करने वाला कृपालु है।

سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ

सूरतुल मुद्दस्सिर-७४

सूर: मुद्दस्सिर मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें छप्पन आयतें एवं दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ﴿١﴾

(१) हे कपड़ा ओढ़ने वाले।[6]

---

[1]इसी प्रकार जिहाद (धर्मयुद्ध) में भी कठिन यात्रायें करनी पड़ती हैं। यह तीनों बातें रोग, यात्रा तथा जिहाद बारी-बारी सबके सामने आती हैं। इसलिए अल्लाह तआला ने तहज्जुद में छूट दे दी है, क्योंकि इनमें कठिनाईयाँ हैं।

[2]छूट के कारण के साथ छूट का यह आदेश पुन: ब्यान कर दिया गया।।

[3]अर्थात पाँच नमाज़ें जो फ़र्ज़ हैं।

[4]अर्थात अल्लाह के मार्ग में आवश्यकतानुसार ख़र्च करो। इसे उत्तम ऋण कहा गया कि अल्लाह उसका बदला सात सौ गुना बल्कि उससे अधिक प्रदान करेगा।

[5]अर्थात ऐच्छिक नमाज़ें, दान, दक्षीणा तथा जो अन्य पुण्य के कर्म करोगे उसका अल्लाह के पास उत्तम बदला पाओगे। अधिकतर भाष्यकारों ने इस सूर: के आधे भाग को मदनी तथा आधे भाग को मक्की माना है जिसका कारण आयत न॰ २० है जो मदनी है।

[6]सर्वप्रथम जो प्रकाशना उतरी वह اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ है। उसके बाद प्रकाशना में

The Ummah Technology Mission

قُمْ فَأَنْذِرْ ۝٢

(२) खड़ा हो जा तथा सावधान कर दे।[1]

وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝٣

(३) तथा अपने प्रभु ही की महिमा वर्णन कर।

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝٤

(४) तथा अपने वस्त्रों को पवित्र रखा कर।[2]

وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝٥

(५) और अपवित्रता को छोड़ दे।[3]

وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۝٦

(६) तथा उपकार करके अधिक लेने की इच्छा न कर।[4]

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝٧

(७) तथा अपने प्रभु के मार्ग में धैर्य रख।

فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُورِ ۝٨

(८) तो जब नरसिंघा में फूँका जायेगा।

فَذَٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ ۝٩

(९) तो वह दिन बहुत कठोर दिन होगा।

عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُ يَسِيرٍ ۝١٠

(१०) (जो) काफ़िरों पर सरल न होगा।[5]

विलम्ब हो गया तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अति व्याकुल हो गये तथा चिंतित रहने लगे। एक दिन अकस्मात वही फ़रिश्ता जो हिरा (पर्वत) की गुफ़ा में प्रकाशना लेकर प्रथम बार आया था, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि धरती तथा आकाश के बीच एक कुर्सी पर विराजमान है, जिससे आप पर एक भय छा गया तथा घर जाकर घर वालों से कहा कि मुझे कपड़ा ओढ़ा दो, मुझे कपड़ा ओढ़ा दो, अत: उन्होंने आपको एक कपड़ा ओढ़ा दिया। इसी स्थिति में यह प्रकाशना अवतरित हुई (सहीह बुख़ारी तथा मुस्लिम सूरतुल मुद्दस्सिर तथा किताबुल ईमान) इस आधार पर यह दूसरी वह्यी (प्रकाशना) तथा प्रकाशना के विलम्ब के पश्चात प्रथम प्रकाशना है।

[1]अर्थात मक्कावासियों को डरा यदि वह ईमान न लायें।

[2]अर्थात मन तथा विचार के साथ कपड़े भी पवित्र रख। यह आदेश इसलिए दिया कि मक्का के मुश्रिक पवित्रता का ध्यान नहीं रखते थे।

[3]अर्थात मुर्तियों की पूजा त्याग दे। यह वास्तव में लोगों को आपके माध्यम से आदेश दिया जा रहा है।

[4] अर्थात उपकार करके यह इच्छा न रख कि बदले में इससे अधिक मिलेगा।

[5]अर्थात प्रलय का दिन काफ़िरों पर भारी होगा क्योंकि उस दिन कुफ़्र का परिणाम उन्हें भुगतना होगा जिसे वह संसार में करते रहे।

The Ummah Technology Mission

ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ﴿١١﴾

(११) मुझे तथा उसे छोड़ दे, जिसे मैंने अकेला पैदा किया है।[1]

وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَّمْدُودًا ﴿١٢﴾

(१२) तथा उसे अत्याधिक धन दे रखा है।

وَبَنِينَ شُهُودًا ﴿١٣﴾

(१३) तथा उपस्थित रहने वाले पुत्र भी।[2]

وَمَهَّدتُّ لَهُ تَمْهِيدًا ﴿١٤﴾

(१४) तथा मैंने उसे बहुत कुछ समृद्धि दे रखी है।[3]

ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ﴿١٥﴾

(१५) फिर भी उसकी कामना है कि मैं उसे और अधिक दूँ।[4]

كَلَّا ۖ إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا عَنِيدًا ﴿١٦﴾

(१६) नहीं-नहीं,[5] वह हमारी आयतों का विरोधी है।[6]

سَأُرْهِقُهُ صَعُودًا ﴿١٧﴾

(१७) शीघ्र ही मैं उसे एक कठिन चढ़ाई[7] चढ़ाऊँगा।

---

[1]यह शब्द चेतावनी तथा धमकी के लिए है कि उसे जिसे मैंने माँ के पेट से अकेला पैदा किया, उसके पास धन था न संतान, तथा मुझे अकेला छोड़ दो। अर्थात मैं स्वयं ही उससे निपट लूँगा। कहते हैं कि यह वलीद पुत्र मुगीरा की ओर संकेत है। यह कुफ्र तथा उपद्रव में बहुत बढ़ा हुआ था, इसलिए विशेष रूप से उसकी चर्चा की है।

[2]उसे अल्लाह ने पुत्र प्रदान किये थे तथा वह प्रत्येक समय उसके पास ही रहते थे, घर में धन की अधिकता थी। इसलिए पुत्रों को व्यापार के लिए बाहर जाने की आवश्यकता नहीं होती थी। कुछ कहते हैं कि यह पुत्र सात थे, कुछ बारह तथा कुछ तेरह बताते हैं, इनमें से तीन मुसलमान हो गये थे, ख़ालिद, हिशाम तथा वलीद पुत्र वलीद रज़ि अल्लाहु अन्हुम। (फ़तहुल क़दीर)

[3]अर्थात धन-सम्पत्ति में, प्रधानता तथा प्रमुखता में एवं दीर्घायु में।

[4]अर्थात कुफ्र तथा अवज्ञा के उपरान्त भी उसकी आकांक्षा है कि मैं उसे और अधिक दूँ।

[5]अर्थात मैं उसे अधिक नहीं दूँगा।

[6]यह كَلَّا का कारण है। عَنِيدٌ उस व्यक्ति को कहते हैं जो सत्य को जानते हुए उसका विरोध करे तथा उसका खण्डन करे।

[7]अर्थात उसे ऐसी यातना में ग्रस्त करूँगा जिसे सहन करना अति कठिन होगा। कुछ कहते हैं कि नरक में अग्नि का पर्वत होगा जिस पर उसे चढ़ाया जायेगा। إِرْهَاقٌ का अर्थ है इंसान पर भारी चीज़ लाद देना (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

إِنَّهُۥ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ﴿١٨﴾

(१८) उसने विचार करके अनुमान किया।[1]

فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿١٩﴾

(१९) उसका नाश हो ! उसने कैसे अनुमान किया ?

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿٢٠﴾

(२०) वह फिर नष्ट हो ! किस प्रकार अनुमान किया ?[2]

ثُمَّ نَظَرَ ﴿٢١﴾

(२१) उसने फिर देखा।[3]

ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿٢٢﴾

(२२) फिर मुख सिकोड़ लिया तथा मुँह बना लिया।[4]

ثُمَّ أَدْبَرَ وَٱسْتَكْبَرَ ﴿٢٣﴾

(२३) फिर पीछे हट गया तथा गर्व किया।[5]

فَقَالَ إِنْ هَٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ يُؤْثَرُ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा कहने लगा कि यह तो मात्र जादू है जो नक़ल किया जाता है।[6]

إِنْ هَٰذَآ إِلَّا قَوْلُ ٱلْبَشَرِ ﴿٢٥﴾

(२५) (यह) मनुष्य के कथन के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।

سَأُصْلِيهِ سَقَرَ ﴿٢٦﴾

(२६) मैं शीघ्र ही उसे नरक में डालूँगा।

وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा तुझे क्या पता[7] कि नरक क्या चीज़ है ?

---

[1]अर्थात पवित्र क़ुरआन तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का संदेश सुनकर उसने इस विषय में सोचा कि मैं इसका क्या उत्तर दूँ ? तथा अपने मन में उसने वह तैयार किया।

[2]यह उसके संबन्ध में अभिशाप के शब्द हैं कि नाश हो, मारा जाये, क्या बात उसने सोची है ?

[3]अर्थात फिर विचार किया कि क़ुरआन का खण्डन किस प्रकार संभव है।

[4]अर्थात यह उत्तर विचारते समय मुख सिकोड़ लिया तथा बिसोर लिया, जैसाकि साधारणत: किसी गंभीर बात पर विचार करते समय इंसान ऐसे ही करता है।

[5]अर्थात सत्य से मुँह फेर लिया तथा ईमान लाने से अहंकार किया।

[6]अर्थात यह किसी से सीख आया तथा वहाँ से नकल कर लाया है और दावा कर दिया कि यह अल्लाह का अवतरित किया है।

[7]नरक के नामों अथवा श्रेणियों में से एक का नाम "सक़र" भी है।

The Ummah Technology Mission

لَا تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾

(२८) न वह शेष रखती है तथा न छोड़ती है।[1]

لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾

(२९) खाल को झुलसा देती है।

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा उस पर उन्नीस (फ़रिश्ते नियुक्त) हैं।[2]

وَمَا جَعَلْنَآ اَصْحٰبَ النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ اِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ

(३१) तथा हमने नरक के रक्षक केवल फ़रिश्ते रखे हैं। तथा हमने उनकी संख्या केवल काफ़िरों की परीक्षा के लिए निर्धारित कर रखी है,[3] ताकि अहले किताब विश्वास कर लें[4] तथा ईमान वाले ईमान में बढ़ जायें[5] तथा अहले किताब एवं मुसलमान संदेह न करें, तथा जिनके हृदय में रोग है वे तथा काफिर कहें कि इस उदाहरण से अल्लाह तआला का क्या तात्पर्य है?[6] इसी

---

[1]उनके शरीर पर माँस छोड़ेगी न अस्थि। अर्थात अभिप्राय यह है कि नरकवासियों को जीवित छोड़ेगी न मृत। لا يموت فيها ولا يحيي

[2]अर्थात नरक पर द्वारपाल के रूप में १९ फ़रिश्ते नियुक्त हैं।

[3]यह कुरैश के मूर्तिपूजकों का खंडन है, जब नरक के अधिकारियों की अल्लाह ने चर्चा की तो अबूजहल ने कुरैश के समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि तुममें प्रत्येक दस व्यक्तियों का गिरोह एक-एक फ़रिश्ते के लिए काफ़ी नहीं होगा। कुछ कहते हैं कि किलदा नामक व्यक्ति ने जिसे अपने बल पर बड़ा गर्व था, कहा कि तुम सभी मात्र दो फ़रिश्ते संभाल लेना, १७ फ़रिश्तों को तो मैं अकेला ही देख लूँगा। कहते हैं कि उसी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुश्ती की भी कई बार चुनौती दी तथा प्रत्येक बार पराजित हुआ परन्तु ईमान नहीं लाया। कहते हैं कि इस के सिवा रुकाना पुत्र अब्दे यज़ीद के साथ भी आपने कुश्ती लड़ी थी किन्तु वह पराजित होकर मुसलमान हो गये थे। (इब्ने कसीर) अभिप्राय यह है कि यह संख्या भी उनके परिहास अर्थात परीक्षा का हेतु बन गई।

[4]अर्थात यह जान लें कि यह रसूल सत्य है तथा उससे वही बात की है जो पूर्व के ग्रंथों में भी अंकित है।

[5]कि अहले किताब ने उनके पैगम्बर की बात की पुष्टि की है।

[6]दिल के रोगी से अभिप्राय मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) हैं अथवा फिर वह हैं जिनके दिलों में

The Ummah Technology Mission

مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوَ ؕ وَمَا هِىَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ۝٣١

प्रकार अल्लाह तआला जिसे चाहता है भटका देता है तथा जिसे चाहता है मार्गदर्शन देता है[1] तथा तेरे प्रभु की सेनाओं को उसके अतिरिक्त कोई नहीं जानता,[2] यह समस्त मनुष्य के लिए (साक्षात) शिक्षा (एवं उपदेश) है।[3]

كَلَّا وَالْقَمَرِ ۝٣٢

(३२) कदापि नहीं ![4] चन्द्रमा की सौगन्ध।

وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ۝٣٣

(३३) तथा रात्रि की जब वह पीछे हटे।

وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ۝٣٤

(३४) तथा प्रातः की जब वह प्रकाशित हो जाये।

اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ ۝٣٥

(३५) कि (निःसंदेह वह नरक) बड़ी वस्तुओं में से एक है।[5]

शंकायें थीं, क्योंकि मक्का में मुनाफ़िक़ नहीं थे अर्थात यह पूछेंगे कि उनकी संख्या को यहाँ चर्चा करने में अल्लाह की क्या हिक्मत है ?

[1]अर्थात विगत गुमराही की भाँति जिसे चाहता है कुमार्ग तथा जिसे चाहता है मार्गदर्शन करता है इसमें जो हिक्मत होती है उसे केवल अल्लाह ही जानता है।

[2]अर्थात यह काफ़िर तथा मुश्रिक समझते हैं कि नरक में १९ फ़रिश्ते ही तो हैं, जिन पर क़ाबू पाना कौन सा बड़ा काम है? परन्तु उनको पता नहीं कि प्रभु की सेना तो इतनी है जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई जानता ही नहीं। केवल फ़रिश्ते ही इतनी संख्या में हैं कि ७० हज़ार फ़रिश्ते नित्य दिन अल्लाह की उपासना के लिए "बैतुल मामूर" में प्रवेश करते हैं, फिर प्रलय तक उनकी बारी नहीं आयेगी। (सहीह बुख़ारी तथा मुस्लिम)

[3]अर्थात यह नरक तथा उस पर नियुक्त फ़रिश्ते इंसानों की शिक्षा एवं उपदेश के लिए हैं कि संभवतः वह अवज्ञा से रुक जायें।

[4]كَلَّا यह मक्कावासियों के भ्रम का इंकार है, अर्थात जो वह यह समझते हैं कि हम फ़रिश्तों को पराजित कर लेंगे कदापि ऐसा न होगा। सौगन्ध है चन्द्रमा की तथा रात की जब वह पीछे हटे अर्थात जाने लगे।

[5]यह सौगन्ध का उत्तर है। كُبَرٌ (कुबर) كُبْرٰى (कुबरा) का बहुवचन है। अति महत्वपूर्ण चीज़ों की शपथ के पश्चात अल्लाह ने नरक की महानता तथा भयानकता का वर्णन किया है, जिससे उसकी महानता में कोई संदेह नहीं रहता।

The Ummah Technology Mission

نَذِيرًا لِّلْبَشَرِ ﴿٣٦﴾

(३६) मनुष्य को डराने वाला।[1]

لِمَن شَاءَ مِنكُمْ أَن يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ﴿٣٧﴾

(३७) उन व्यक्तियों के लिए जो तुम में से आगे बढ़ना चाहे अथवा पीछे हटना चाहे।[2]

كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ﴿٣٨﴾

(३८) प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों के बदले गिरवी है।[3]

إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ﴿٣٩﴾

(३९) परन्तु दायें हाथ वाले।[4]

فِي جَنَّاتٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٤٠﴾

(४०) (कि) वे स्वर्गों में (बैठे हुए) प्रश्न करते होंगे।[5]

عَنِ الْمُجْرِمِينَ ﴿٤١﴾

(४१) पापियों से।

مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرَ ﴿٤٢﴾

(४२) तुम्हें नरक में किस बात ने डाला।

قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ﴿٤٣﴾

(४३) वे उत्तर देंगे कि हम नमाज़ी न थे।

وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِينَ ﴿٤٤﴾

(४४) न भूखों को खाना खिलाते थे।[6]

---

[1]अर्थात यह नरक डराने वाली है अथवा उस डराने वाली से अभिप्राय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं अथवा पवित्र क़ुरआन है, क्योंकि क़ुरआन भी अपने वर्णन किये वचन तथा धमकी के आधार पर मानव जाति के लिए सचेत करने वाला है।

[2]अर्थात ईमान तथा आज्ञाकारिता में आगे बढ़ना चाहे अथवा उससे पीछे हटना चाहे। अभिप्राय यह है कि चेतावनी प्रत्येक के लिए है जो ईमान लाये (विश्वास करे) अथवा कुफ़्र (इंकार) करे।

[3]رهـــن गिरवी रखने को कहते हैं। अर्थात प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म का गिरवी है। वह कर्म उसे यातना से मुक्त करा लेगा (यदि सदाचारी होगा) अथवा नष्ट कर देगा। (यदि दुराचारी होगा)

[4]अर्थात वह अपने पापों के बंदी नहीं होंगे, अपितु अपने सत्कर्मों के कारण स्वतन्त्र होंगे।

[5]أصحابُ اليمين यह فِي جَنَّـــات की स्थिति बताने के लिए है स्वर्गीय अटारियों में बैठे नरक वासियों से प्रश्न करेंगे।

[6]नमाज़ अल्लाह के अधिकार में से है तथा निर्धनों का खिलाना बंदों के अधिकार में से है। अभिप्राय यह हुआ कि हमने अल्लाह के अधिकार पूरे किये न बंदों के।

The Ummah Technology Mission

وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَآئِضِينَ ﴿٤٥﴾

(४५) तथा हम वाद-विवाद (इंकार) करने वालों के साथ वाद-विवाद में व्यस्त रहा करते थे।[1]

وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿٤٦﴾

(४६) तथा हम प्रतिफल के दिन को झुठलाते थे।

حَتَّىٰٓ أَتَىٰنَا الْيَقِينُ ﴿٤٧﴾

(४७) यहाँ तक कि हमारी मृत्यु आ गयी।[2]

فَمَا تَنفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشَّٰفِعِينَ ﴿٤٨﴾

(४८) तो उन्हें सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश लाभप्रद न होगी।[3]

فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِينَ ﴿٤٩﴾

(४९) उन्हें क्या हो गया है कि वे शिक्षा से मुख मोड़ रहे हैं ?

كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنفِرَةٌ ﴿٥٠﴾

(५०) जैसेकि वे भड़के हुए गधे हैं।

فَرَّتْ مِن قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾

(५१) जो शेर से भागे हों।[4]

بَلْ يُرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَن يُؤْتَىٰ صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾

(५२) अपितु उनमें से प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसे स्पष्ट किताबें दी जायें।[5]

---

[1]विवाद तथा गुमराही का पक्ष में संलग्नता से भाग लेते थे।

[2]يقين (निश्चित) का अर्थ मौत है, जैसे अल्लाह ने दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَٱعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ ٱلْيَقِينُ ﴾

"अपने प्रभु की उपासना मृत्यु के आने तक करते रहो।" (अल-हिज्र-९९)

[3]अर्थात जो उपरोक्त दुर्गुणों से युक्त होगा उसे किसी की सिफ़ारिश भी लाभ नहीं पहुँचायेगी, क्योंकि वह कुफ़्र के कारण सिफ़ारिश के पात्र नहीं होंगे। सिफ़ारिश तो मात्र उनके लिए लाभप्रद होगी जो ईमान के कारण सिफ़ारिश के पात्र होंगे, अल्लाह की ओर से सिफ़ारिश की अनुमति भी उन्ही के लिए मिलेगी न कि प्रत्येक के लिए।

[4]अर्थात यह सत्य से भड़कने तथा मुख फेरने में ऐसे हैं, जैसे वन के भयभीत गधे सिंह से भागते हैं जब वह उनका शिकार करना चाहे قَسْوَرَةٌ का अर्थ सिंह है। कुछ ने धनुर्धर (तीर चलाने वाला) अर्थ किया है।

[5]अर्थात प्रत्येक के हाथ में अल्लाह की ओर से एक खुली किताब उतरे जिसमें लिखा हो

The Ummah Technology Mission

كَلَّا بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٥٣﴾

(५३) कदापि ऐसा नहीं (हो सकता), बल्कि ये क़ियामत (प्रलय) से निर्भय हैं।[1]

كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾

(५४) कदापि नहीं ! यह (क़ुरआन) एक शिक्षा है।[2]

فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ﴿٥٥﴾

(५५) अब जो चाहे इससे शिक्षा प्राप्त करे।

وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۚ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾

(५६) तथा वे उस समय शिक्षा प्राप्त करेंगे, जब अल्लाह तआला चाहे,[3] वह इसी योग्य है कि उससे डरें तथा इस योग्य भी कि वह क्षमा करे।[4]

سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ

सूरतुल क़ियामः-७५

सूरः क़ियामः मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें चालीस आयतें एवं दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

कि मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल (संदेष्टा) हैं। कुछ ने यह भावार्थ किया है कि बिना कर्म के यह यातना से मुक्ति चाहते हैं, अर्थात प्रत्येक को मुक्ति-लेख मिल जाये। (इब्ने कसीर)

[1]अर्थात उनके उपद्रव का कारण आख़िरत (परलोक) के प्रति अविश्वास तथा उसका इंकार है जिसने उन्हें निर्भय कर दिया है।

[2]परन्तु उसके लिए जो इस क़ुरआन के सदुपदेशों से शिक्षा ग्रहण करना चाहे।

[3]अर्थात इस क़ुरआन से मार्गदर्शन तथा सदुपदेश उसे ही प्राप्त होगा जिसे अल्लाह चाहेगा।

﴿وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ﴾

"तथा तुम जगत के प्रभु के विना चाहे कुछ नहीं चाह सकते।" (*अत्तकवीर*-२९)

[4]अर्थात वह अल्लाह ही इस योग्य है कि उससे डरा जाये तथा वही क्षमादान के अधिकार रखता है। अतः वही इस बात के योग्य है कि उसके आज्ञा का पालन किया जाये तथा उसकी अवज्ञा से बचा जाये ताकि इंसान उसकी दया तथा क्षमा के योग्य बन सके।

The Ummah Technology Mission

لَآ أُقۡسِمُ بِيَوۡمِ ٱلۡقِيَٰمَةِ ۝١

(१) मैं सौगन्ध खाता हूँ क़ियामत (प्रलय) के दिन की।[1]

وَلَآ أُقۡسِمُ بِٱلنَّفۡسِ ٱللَّوَّامَةِ ۝٢

(२) तथा सौगन्ध खाता हूँ उस मन की जो धिक्कार (निन्दा) करने वाला हो।[2]

أَيَحۡسَبُ ٱلۡإِنسَٰنُ أَلَّن نَّجۡمَعَ عِظَامَهُۥ ۝٣

(३) क्या मनुष्य यह विचार करता है कि हम उसकी अस्थियाँ एकत्रित करेंगे ही नहीं।[3]

بَلَىٰ قَٰدِرِينَ عَلَىٰٓ أَن نُّسَوِّيَ بَنَانَهُۥ ۝٤

(४) हाँ, अवश्य करेंगे, हमको सामर्थ्य है कि हम उसकी पोर-पोर को ठीक कर दें।[4]

بَلۡ يُرِيدُ ٱلۡإِنسَٰنُ لِيَفۡجُرَ أَمَامَهُۥ ۝٥

(५) अपितु मनुष्य तो चाहता है कि आगे-आगे अवज्ञा (एवं अवहेलना) करता जाये।[5]

---

[1] أُقسِمُ ५ में ५ अधिक है जो अरबी की एक भाषा-शैली है जैसे ﴿مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسۡجُدَ﴾ (*अल-आराफ़*-१२) तथा ﴿لِّئَلَّا يَعۡلَمَ أَهۡلُ ٱلۡكِتَٰبِ﴾ (*अल-हदीद*-२९) तथा अन्य बहुत से स्थान पर है। कुछ कहते हैं कि सौगन्ध से पहले काफ़िरों की बात का इंकार है, वे कहते थे कि मृत्यु के पश्चात कोई जीवन नहीं। ५ के द्वारा कहा गया कि जैसे तुम कहते हो बात ऐसी नहीं मैं प्रलय के दिन की सौगन्ध खाता हूँ। क़ियामत (प्रलय) के दिन की सौगन्ध खाने से उद्देश्य उसके महत्व तथा गंभीरता को स्पष्ट करना है।

[2] अर्थात भलाई पर भी करता है कि अधिक क्यों नहीं की तथा बुराईयों पर भी कि इससे रुकता क्यों नहीं ? संसार में भी जिसकी अंतरात्मा जागरूक होती है उनकी आत्मा उन्हें धिक्कारती है, परन्तु आख़िरत (परलोक) में तो सभी की आत्मा धिक्कारेगी।

[3] यह शपथ का उत्तर है। इंसान से अभिप्राय यहाँ काफ़िर तथा नास्तिक इंसान है जो क़ियामत (प्रलय) को नहीं मानता, उसकी सोंच ग़लत है। अल्लाह तआला निश्चय इंसानों के अंश (अंग) को एकत्रित करेगा। यहाँ अस्थियों की विशेष रूप से चर्चा है इसलिए कि अस्थियाँ ही पैदाईश का मूल ढाँचा तथा गोलम्बर (फर्मा) हैं।

[4] بَنَان हाथों एवं पैरों के उन किनारों को कहते हैं जो जोड़ों, नाख़ूनों तथा सूक्ष्म रगों एवं महीन अस्थियों पर स्थित होते हैं। जब यह महीन तथा सूक्ष्म वस्तुयें हम जोड़ देंगे तो बड़े-बड़े भागों (अंगों) को जोड़ देना हमारे लिए क्या कठिन होगा ?

[5] अर्थात इस आशा पर सत्य की अवहेलना तथा इंकार करता है कि कौन सी प्रलय आनी है।

The Ummah Technology Mission

يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ۝٦

(६) पूछता है कि क़ियामत (प्रलय) का दिन कब आयेगा।[1]

فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝٧

(७) तो जिस समय आँखें पत्थरा जायेंगी।[2]

وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۝٨

(८) तथा चाँद प्रकाशहीन हो जायेगा।[3]

وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۝٩

(९) तथा सूर्य एवं चाँद एकत्रित कर दिये जायेंगे।[4]

يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ۝١٠

(१०) उस दिन मनुष्य कहेगा कि आज भागने का स्थान कहाँ है?[5]

كَلَّا لَا وَزَرَ ۝١١

(११) नहीं-नहीं, कोई शरणास्थल नहीं।[6]

اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ِۨالْمُسْتَقَرُّ ۝١٢

(१२) आज तो तेरे प्रभु की ओर ही ठिकाना है।[7]

---

[1]यह प्रश्न इसलिए नहीं करता कि पापों से क्षमा माँगे, अपितु क़ियामत के घटित होने को असंभव समझते हुए प्रश्न करता है। इसलिए अवज्ञा तथा दुराचार से नहीं रुकता फिर भी आगामी आयत में अल्लाह तआला क़ियामत के आने का समय बता रहा है।

[2]भय तथा आश्चर्य से जैसे मौत के समय साधारणतः होता है।

[3]जब चाँद को गहन लगता है तो उस समय भी वह प्रकाशहीन हो जाता है। किन्तु यह चाँद गहन जो प्रलय के लक्षणों में से है जब होगा तो पत्पश्चात उसमें प्रकाश नहीं आयेगा।

[4]अर्थात प्रकाशहीन होने से अभिप्राय है कि चाँद के समान सूरज का भी प्रकाश समाप्त हो जायेगा।

[5]अर्थात जब यह घटनायें घटेंगी तो फिर अल्लाह से अथवा नरक की यातना से भागने का मार्ग खोजेगा, किन्तु उस समय भागने का रास्ता कहाँ होगा?

[6]وَزَر पर्वत अथवा गढ़ को कहते हैं जहाँ मनुष्य शरण ले, वहाँ ऐसी कोई शरण की जगह नहीं होगी।

[7]जहाँ वह बंदों के बीच निर्णय करेगा। यह संभव नहीं होगा कि कोई अल्लाह के इस न्यायालय से छिप जाये।

The Ummah Technology Mission

يُنَبَّؤُا الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ﴿١٣﴾

(१३) आज मनुष्य को उसके आगे भेजे हुए तथा पीछे छोड़े हुए से अवगत कराया जायेगा।[1]

بَلِ الْإِنسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ﴿١٤﴾

(१४) बल्कि मनुष्य स्वयं अपने आप पर प्रमाण है।[2]

وَلَوْ أَلْقَىٰ مَعَاذِيرَهُ ﴿١٥﴾

(१५) यद्यपि कितने ही बहाने पेश करे।[3]

لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ﴿١٦﴾

(१६) (हे नबी) आप क़ुरआन को जल्दी (याद करने) के लिए अपनी जीभ को न हिलायें।[4]

إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ﴿١٧﴾

(१७) उसको एकत्रित करना तथा (आप के मुख से) पढ़ाना हमारा दायित्व है।[5]

فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ ﴿١٨﴾

(१८) हम जब उसे पढ़ लें,[6] तो आप उसके

---

[1]अर्थात उसको उसके सभी कर्मों से अवगत किया जायेगा, नया हो अथवा पुराना, प्रथम हो अथवा अंतिम, क्षुद्र हो अथवा महान। ﴿وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا﴾ (अल-कहफ़-४९)

[2]अर्थात उसके अपने हाथ, पाँव, जीभ तथा अन्य अंग गवाही देंगे, अथवा यह अर्थ है कि इंसान अपने दोष स्वयं जानता है।

[3]अर्थात लड़े-झगड़े, एक से एक बहाना करे, किन्तु ऐसा करना न उसके लिए लाभप्रद है तथा न वह अपने अंत:करण को शान्त कर सकता है।

[4]आदरणीय जिब्रील जब वह्यी (प्रकाशना) लेकर आते तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उनके साथ शीघ्रता से पढ़ते जाते कि कहीं कोई शब्द भूल न जायें। अल्लाह ने आपको फ़रिश्ते के साथ-साथ इस प्रकार पढ़ने से रोक दिया। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरतिल क़ियाम:) यह विषय पहले भी गुज़र चुका है। ﴿وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِن قَبْلِ أَن يُقْضَىٰ إِلَيْكَ وَحْيُهُ﴾ (सूरह ताहा-११४) अत: इस आदेश के पश्चात आप चुप होकर सुनते।

[5]अर्थात आपके सीने में उसको एकत्रित कर देना तथा आप की ज़बान पर इसे जारी कर देना हमारा दायित्व है, ताकि उसका कोई भाग आपके स्मरण से न निकले तथा आपको न भूले।

[6]अर्थात फ़रिश्ते (जिब्रील) के द्वारा जब हम उस का पाठ आप पर पूरा कर लें।

The Ummah Technology Mission

पढ़ने का अनुकरण करें।[1]

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ﴿١٩﴾

(१९) फिर उसको स्पष्ट कर देना हमारा दायित्व है।[2]

كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ﴿٢٠﴾

(२०) नहीं-नहीं, तुम तो शीघ्र प्राप्त होने वाले (संसार) से प्रेम रखते हो।

وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ﴿٢١﴾

(२१) तथा परलोक को छोड़ बैठे हो।[3]

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾

(२२) उस दिन बहुत से मुख प्रफुल्लित (एवं प्रकाशित) होंगे।

إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾

(२३) अपने प्रभु की ओर देखते होंगे।[4]

وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा कितने मुख उस दिन (कुरूप एवं) उदास होंगे।[5]

---

[1]अर्थात उसके आदेश तथा धर्म-विधान लोगों को पढ़कर सुनायें तथा उनका पालन भी करें।

[2]अर्थात उसके जटिल स्थानों की व्याख्या तथा हलाल (वैध) एवं हराम (निषेध) का स्पष्टीकरण हमारा दायित्व है। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ुरआन के संक्षेपों का जो वर्णन, मुब्हमों (गुढ़ों) की व्याख्या तथा उसके साधारण विषयों की जो विशेषता बताई है, जिसे हदीस कहा जाता है, यह भी अल्लाह की ओर से दिव्य वाणी तथा सुझाई बातें हैं इसलिए उन्हें भी क़ुरआन की भाँति मानना आवश्यक है।

[3]अर्थात प्रलय के दिन को झुठलाना, مَا أَنزَلَ اللهُ का विरोध तथा सत्य से विमुखता इसलिए है कि तुमने सांसारिक जीवन को ही सब कुछ समझ रखा है तथा आख़िरत तुम्हें भूली हुई है।

[4]यह ईमानवालों के चेहरे होंगे जो अपने शुभ परिणाम के कारण शान्त, प्रसन्न तथा प्रकाशित होंगे। फिर अल्लाह के दर्शन से भी आनंदित होंगे, जैसाकि सहीह हदीसों से स्पष्ट है तथा अहले सुन्नत का सर्वमान्य विश्वास है।

[5]यह काफ़िरों के चेहरे होंगे। باسرة बदले हुए, पीले, शोक तथा चिन्ता से काले एवं कुरूप होंगे।

The Ummah Technology Mission

تَظُنُّ أَن يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿٢٥﴾

(२५) समझते होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला व्यवहार किया जायेगा।[1]

كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿٢٦﴾

(२६) नहीं-नहीं[2] जब (प्राण) हंसुली तक पहुँच जायेंगे।[3]

وَقِيلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा कहा जायेगा कि कोई झाड़-फूँक करने वाला है।[4]

وَظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿٢٨﴾

(२८) तथा उसने विश्वास कर लिया कि यह जुदाई का समय है।[5]

وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿٢٩﴾

(२९) तथा पिंडली से पिंडली लिपट जायेगी।[6]

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ﴿٣٠﴾

(३०) आज तेरे प्रभु की ओर चलना है।

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلَّىٰ ﴿٣١﴾

(३१) तो उस ने न तो पुष्टि की न नमाज़ पढ़ी।[7]

---

[1]तथा वह यही कि नरक में उनको फेंक दिया जायेगा।

[2]अर्थात यह संभव नहीं कि काफ़िर प्रलय पर ईमान ले आयें।

[3]تراقي यह تَرْقُوَةٌ का बहुवचन है, यह गरदन के निकट सीने तथा कंधे के बीच एक हड्डी है अर्थात जब मौत का पंजा तुम्हें अपनी जकड़ में ले लेगा।

[4]अर्थात उपस्थित लोगों में कोई है जो झाड़-फूँक के द्वारा तुम्हें मौत के पंजे से छुड़ा ले। कुछ ने इसका अर्थ यह भी किया है कि उसकी आत्मा (प्राण) लेकर कौन चढ़े ? दया के फ़रिश्ते अथवा यातना के ? इस स्थिति में यह वचन फ़रिश्तों का है।

[5]अर्थात वह व्यक्ति विश्वास कर लेगा जिसके प्राण हँसुली तक पहुँच गए हैं कि अब धन, संतान तथा संसार की प्रत्येक वस्तु से विदाई का समय आ गया।

[6]इससे या तो मौत के समय पिंडली का पिंडली से मिल जाना तात्पर्य है, अथवा निरन्तर दुख। सामान्य भाष्यकारों ने दूसरा अर्थ लिया है। (फ़तहुल क़दीर)

[7]अर्थात इस मनुष्य ने न अल्लाह तथा रसूल एवं क़ुरआन को माना, न नमाज पढ़ी, अर्थात अल्लाह की इबादत नहीं की।

The Ummah Technology Mission

وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٣٢﴾

(३२) अपितु झुठलाया तथा पलट गया।[1]

ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ﴿٣٣﴾

(३३) फिर अपने घरवालों की ओर इतराता हुआ गया।[2]

اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٤﴾

(३४) अफ़सोस है तुझ पर, पछतावा है तुझ पर।

ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٥﴾

(३५) फिर दुख है तथा ख़राबी है तेरे लिए।[3]

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ﴿٣٦﴾

(३६) क्या मनुष्य यह समझता है कि उसे व्यर्थ छोड़ दिया जायेगा।[4]

اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ﴿٣٧﴾

(३७) क्या वह एक गाढ़े पानी की बूँद न था, जो टपकाया जाता है ?

ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٣٨﴾

(३८) फिर वह रक्त का लोथड़ा हो गया, फिर (अल्लाह ने) उसे पैदा किया तथा ठीक रूप से बना दिया।[5]

فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿٣٩﴾

(३९) फिर उससे युगल अर्थात नर-मादा बनाये।

اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ﴿٤٠﴾

(४०) क्या (अल्लाह तआला) इस (बात) पर सामर्थ नहीं कि मृत को जीवित कर दे।[6]

---

[1]अर्थात रसूल को झुठलाया तथा ईमान एवं आज्ञापालन नहीं किया।

[2]يَتَمَطّٰى इतराता तथा अकड़ता हुआ।

[3]यह धमकी का शब्द है। कहा जाता है कि यह वास्तव में أَوْلَاكَ اللهُ مَا تَكْرَهُ है, "अल्लाह तुझे ऐसी चीज़ में ग्रस्त कर दे जिसे तू अप्रिय माने।"

[4]अर्थात उसे किसी बात का आदेश दिया जायेगा न किसी से रोका जायेगा, न उसका हिसाब लिया जायेगा, न दण्ड। अथवा उसे सदा के लिए क़ब्र में छोड़ दिया जायेगा तथा उसे पुन: जीवित नहीं किया जायेगा।

[5]فَسَوّٰى अर्थात उसे ठीक-ठाक किया तथा उसकी पूर्ति की तथा उसमें आत्मा फूँकी।

[6]अर्थात जो अल्लाह इंसानों को इस प्रकार अनेक स्थितियों से गुज़ार कर पैदा करता है क्या मरने के पश्चात उन्हें पुन: जीवित करने पर समर्थ नहीं है ?

The Ummah Technology Mission

سُوْرَةُ الدَّهْرِ

सूरतुद्दहर-७६

सूर: दहर* मदीने में अवतरित हुई तथा इसमें इक्तीस आयतें एवं दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ①

(१) निश्चय ही मनुष्य पर युग का एक वह समय भी गुज़र चुका है[1] जबकि वह कोई वर्णन करने योग्य वस्तु न था।

اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ②

(२) नि:संदेह हमने मनुष्य को मिले जुले वीर्य से परीक्षा के लिए पैदा किया।[2] तथा उसको सुनने वाला देखने वाला बनाया।[3]

---

*इसके मक्की तथा मदनी होने में मतभेद है। साधारण विद्वान इसे मदनी मानते हैं। कुछ कहते हैं कि अंतिम दस आयतें मक्की हैं, शेष मदनी हैं। (फ़तहुल क़दीर) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुमअ: के दिन फ़ज्र की नमाज़ में الٓمٓ تَنْزِيلُ السَّجْدَة (अलिफ़॰ लाम॰मीम तंजीलुस सजदा) तथा सूरह इंसान (दहर) पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमुअ:, बाबु मा युक़रउ फ़ी यौमिल जुमुअते) इस सूर: को सूर: इंसान भी कहा जाता है।

[1] هَلْ यहाँ قَدْ के अर्थ में है जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है। الإنسانُ से कुछ के निकट मानव-पिता अर्थात प्रथम मानव आदरणीय आदम अभिप्राय है। حِينٌ (एक समय) से अभिप्राय प्राण फूंके जाने से पूर्व का समय है जो चालीस वर्ष है तथा अधिकतर व्याख्याकारों के विचार से الإنسان शब्द मानव जाति के लिए प्रयुक्त हुआ है, तथा حِينٌ (समय) से तात्पर्य गर्भ अर्थात माँ के गर्भ में रहने की अवधि है, जिसमें वह वर्णनीय वस्तु नहीं होता। इसमें मानो इंसान को सावधान किया गया है कि वह एक सुन्दर रूप में जब बाहर आता है तो प्रभु के आगे अकड़ता, इतराता है। उसे अपनी हैसियत याद रखनी चाहिए कि मैं तो वही हूँ, जब मैं नास्ति संसार में था, तो मुझे कौन जानता था ?

[2] मिश्रित का अभिप्राय नर-नारी दोनों के वीर्य का मिलना, फिर उनका विभिन्न स्थितियों से गुज़रना है। पैदा करने का उद्देश्य इंसान की परीक्षा है। ﴿لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا﴾ (अल-मुल्क-२)

[3] अर्थात उसे सुनने तथा देखने की शक्ति प्रदान की, ताकि वह सब कुछ देख तथा सुन सके तथा तत्पश्चात आज्ञापालन अथवा अवज्ञा का मार्ग चुन सके।

The Ummah Technology Mission

إِنَّا هَدَيْنَٰهُ ٱلسَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ۝٣

(३) हमने उसे मार्ग दिखाया, अब चाहे वह कृतज्ञ बने अथवा कृतघ्न ।[1]

إِنَّآ أَعْتَدْنَا لِلْكَٰفِرِينَ سَلَٰسِلَا۠ وَأَغْلَٰلًا وَسَعِيرًا ۝٤

(४) नि:संदेह हमने काफ़िरों के लिए जंजीरें तथा तौक एवं भड़कती अग्नि तैयार कर रखी है ।[2]

إِنَّ ٱلْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِن كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ۝٥

(५) नि:संदेह सदाचारी लोग उस प्याले से पियेंगे जिसमें काफ़ूर का मिश्रण है ।[3]

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ ٱللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ۝٦

(६) जो एक स्रोत है ।[4] जिससे अल्लाह के बंदे पियेंगे, उसकी नहरें निकाल ले जायेंगे (जिधर चाहेंगे)[5]

---

[1]अर्थात उपरोक्त शक्तियों तथा योग्यताओं के अतिरिक्त हमने स्वयं भी अम्बिया अलैहिमुस्सलाम, अपनी किताबों तथा सत्य के प्रचारकों द्वारा सत्य के मार्ग को स्पष्ट कर दिया है । अब यह उसकी पसन्द है कि अल्लाह की आज्ञा का पालन करके कृतज्ञ बन्दा बन जाये अथवा अवज्ञा का मार्ग अपनाकर कृतघ्न बन जाये । जैसे एक हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया . «كُلُّ النَّاسِ يَغْدُو: فَبَائِعٌ نَفْسَهُ، فَمُوبِقُهَا، أَوْ مُعْتِقُهَا» معتقـــها "प्रत्येक प्राणी अपने प्राण का क्रय-विक्रय करता है तो उसे नाश कर देता है अथवा उसे मुक्त करा लेता है" (सहीह मुस्लिम, किताबुत तहारत, बाबु फ़जलिल वज़ूए) अर्थात अपने कर्म तथा करतूत के द्वारा नष्ट अथवा मुक्त कराता है । यदि बुराई कमायेगा तो अपने प्राण को नाश तथा भलाई कमायेगा तो प्राण को मुक्त करा लेगा ।

[2]यह अल्लाह की दी हुई स्वाधीनता के ग़लत प्रयोग का परिणाम है ।

[3]हतभागों के मुक़ाबिल यह भाग्यशाली लोगों की चर्चा है । كأس (कास) उस प्याले को कहते हैं जो भरा हुआ हो तथा छलक रहा हो । कपूर शीतल तथा एक विशेष सुगन्ध रखती है, उसके मिलाने से मदिरा का स्वाद दो गुना तथा सुगन्ध प्राण को सुगंधित कर देगी ।

[4]अर्थात यह कपूर मिली मदिरा दो चार सुराहियों अथवा घड़ों में नहीं होगी, बल्कि उसकी एक नहर होगी, अर्थात यह समाप्त नहीं होगी ।

[5]अर्थात उसे जिधर चाहेंगे मोड़ लेंगे, अपने महलों तथा घरों में, अपनी सभाओं तथा बैठकों में तथा बाहर मैदानों एवं मनोरंजन स्थानों में ।

The Ummah Technology Mission

يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ۝٧

(७) जो मन्नत पूरी करते हैं[1] तथा उस दिन से डरते हैं जिसकी बुराई चारों ओर फैल जाने वाली है।[2]

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ۝٨

(८) तथा अल्लाह (तआला) के प्रेम में भोजन कराते हैं, निर्धन, अनाथ एवं क़ैदियों को।

اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ۝٩

(९) हम तो तुम्हें केवल अल्लाह (तआला) की प्रसन्नता के लिए[3] खिलाते हैं, तुमसे बदला चाहते हैं न कृतज्ञता।

اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ۝١٠

(१०) नि:संदेह हम अपने प्रभु से उस दिन का डर रखते हैं[4] जो तंगी एवं कठोरता वाला होगा।

---

[1]अर्थात मात्र एक अल्लाह की उपासना करते हैं। मनौती भी मानते हैं तो मात्र अल्लाह के लिए, तथा फिर उसे पूरी करते हैं। इससे ज्ञात हुआ कि मनौती पूरी करना भी आवश्यक है, प्रतिबंध यह है कि अवज्ञा की न हो। जैसाकि हदीस में है कि जिसने मन्नत मानी हो कि वह अल्लाह का आज्ञापालन करेगा तो उसका पालन करे तथा जिसने अल्लाह की अवज्ञा की मन्नत मानी हो तो वह अल्लाह की अवज्ञा न करे अर्थात उसे पूरी न करे। (सहीह बुख़ारी, किताबुल ऐमान, बाबुन नज़्रे फित ताअते)

[2]अर्थात उस दिन से डरते हुए अवज्ञा तथा निषेध काम नहीं करते। बुराई फैल जाने का अभिप्राय यह है कि उस दिन अल्लाह की पकड़ से केवल वही बचेगा जिसे अल्लाह अपने क्षमा के दामन में ढक लेगा। शेष सभी उसकी बुराई की लपेट में होंगे।

[3]अथवा भोजन के प्रेम के उपरान्त, वह अल्लाह की प्रसन्नता के लिए ग़रीबों को खाना खिलाते हैं। बंदी यदि मुसलमान न हो तब भी उसके साथ सदव्यवहार पर बल दिया गया है। बद्र के काफ़िर बंदियों के विषय में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा को आदेश दिया कि उनका आदर करो, सहाबा पहले उन्हें खिलाते फिर स्वय खाते। (इब्ने कसीर) इसी प्रकार दास तथा नौकर-चाकर भी इसी के अधीन आते हैं जिनके साथ सदव्यवहार पर बल दिया गया है। आपकी अंतिम वसीयत यही थी कि नमाज़ तथा अपने ग़ुलामों का ध्यान रखना। (इब्ने माजा, किताबुल वसाया, बाबु हल औसा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

[4]आदरणीय इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा ने قَمْطَرِيْرٌ का अर्थ दीर्घ किया है। عَبُوْسٌ कड़ा, अर्थात वह दिन अत्यन्त कठिन होगा तथा कड़ाई के कारण काफ़िरों पर बहुत ही लम्बा होगा। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ﴿١١﴾

(११) तो उन्हें अल्लाह तआला ने उस दिन की बुराई से बचा लिया[1] तथा उन्हें ताज़गी एवं प्रसन्नता पहुँचायी।[2]

وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ﴿١٢﴾

(१२) तथा उन्हें उनके धैर्य के बदले[3] स्वर्ग एवं रेशमी वस्त्र प्रदान किये।

مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ﴿١٣﴾

(१३) ये वहाँ तख़्तों (आसनों) पर तकिये लगाये हुए बैठेंगे, न वहाँ सूर्य की गर्मी देखेंगे न जाड़े की कठोरता।[4]

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ﴿١٤﴾

(१४) तथा उन (स्वर्ग) के साये उन पर झुके होंगे[5] तथा उनके (मेवे) एवं गुच्छे नीचे लटकाये हुए होंगे।[6]

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ

(१५) तथा उन पर चाँदी के बर्तनों एवं उन

---

[1]जैसाकि वह उसकी बुराई से डरते थे तथा उससे बचने के लिये अल्लाह की आज्ञा का पालन करते थे।

[2]ताज़गी चेहरों पर होगी तथा प्रसन्नता दिलों में। जब मनुष्य का दिल प्रसन्न होता है तो उसका चेहरा भी प्रसन्नता से खिल जाता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में आता है कि जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रसन्न होते तो आपका चेहरा ऐसे प्रकाशमान होता मानो चाँद का टुकड़ा है। (अलबुख़ारी, किताबुल मगाज़ी, बाबु ग़ज़्वते तबूक, मुस्लिम, किताबुत तौबा, बाबु हदीसे तौबते क़ाब इब्ने मालिक)

[3]धैर्य का अर्थ है धर्म के मार्ग में जो कष्ट आयें उन्हें प्रसन्नतापूर्वक सहन करना, अल्लाह के मार्ग में मनोकांक्षा तथा स्वार्थों का त्याग तथा अवज्ञा से बचना।

[4]زَمْهَرِيْر कड़े जाड़े को कहते हैं। अभिप्राय यह है कि वहाँ सदा एक ही ऋतु रहेगी, तथा वह है वसन्त ऋतु, न अति गर्मी तथा न कड़ी शीत।

[5]यद्यपि वहाँ सूर्य का ताप नहीं होगा, उस के उपरान्त भी वृक्षों के साये उन पर झुके होंगे। अथवा अभिप्राय यह है कि उनकी शाखायें उनके निकट होंगी।

[6]अर्थात वृक्षों के फल एक आज्ञाकारी के समान जब खाने की इच्छा होगी तो झुक कर इतने निकट हो जायेंगे कि बैठे, लेटे भी उन्हें तोड़ ले। (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

وَ اَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا ﴿١٥﴾

गिलासों का दौर चलाया जायेगा,[1] जो शीशे के होंगे।

قَوَارِيْرَا مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ﴿١٦﴾

(१६) शीशे भी चाँदी के[2] जिनको (पिलाने वालों ने) अनुमान से नाप रखा होगा।[3]

وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ﴿١٧﴾

(१७) तथा उन्हें वहाँ वे पेय पदार्थ पिलाये जायेंगे जिनमें सोंठ का मिश्रण होगा।[4]

عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ﴿١٨﴾

(१८) स्वर्ग की एक नहर से, जिसका नाम सलसबील है।[5]

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ﴿١٩﴾

(१९) तथा उनके चारों ओर वे कम आयु बच्चे घूमते-फिरते होंगे जो सदैव रहने वाले हैं,[6] जब तू उन्हें देखे तो समझे कि वे बिखरे

---

[1]अर्थात नौकर (सेवक) उन्हें लेकर स्वर्गवासियों के बीच फिरेंगे।

[2]अर्थात यह बर्तन तथा प्याले चाँदी एवं शीशे से बने होंगे, अति सुन्दर तथा सूक्ष्म। मानो यह ऐसी बनावट है जिसकी कोई तुलना संसार में नहीं।

[3]अर्थात उनमें मदिरा ऐसे ढंग से डाली गई होगी कि जिससे वह तृप्त हो जायेंगे, प्यास का संवेदन न करें तथा प्यालों में भी शेष बची न रहे। अतिथि-सत्कार के इस ढंग में भी अतिथियों के आदर-सत्कार ही का प्रयोजन है।

[4]زَنْجَبِيْل (सोंठ, सूखी अदरक) को कहते हैं। यह गर्म होती है, इसके मिश्रण से एक स्वादिष्ट कड़ूवापन आ जाता है। इसके सिवा यह अरबों की रूचिकर चीज है। इसलिए उनके कहवे में भी अदरक का मिश्रण होता है। अभिप्राय है कि स्वर्ग में एक मदिरा वह होगी जो शीतल होगी जिसमें कपूर मिला होगा तथा दूसरी गर्म जिसमें सूखी अदरक का मिश्रण होगा।

[5]अर्थात सोंठ की इस शराब की भी नहर होगी जिसे सलसबील कहा जाता है।

[6]मदिरा के गुणों को वर्णन करने के पश्चात पिलाने वालों के गुण बताये जा रहे हैं। "सदा रहेंगे" का एक अर्थ तो यह है कि स्वर्गवासियों के समान उन सेवकों को भी मौत नहीं आयेगी। दूसरा यह कि उनकी बाल आयु तथा सुन्दरता सदा रहेगी, न वे बूढ़े होंगे न उनकी शोभा एवं सौन्दर्य में कोई परिवर्तन होगा।

The Ummah Technology Mission

हुए (सच्चे) मोती हैं।[1]

وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا كَبِيرًا ﴿٢٠﴾

(२०) तथा तू वहाँ जिस ओर भी दृष्टि डालेगा पूर्ण उपहार तथा महान राज्य ही देखेगा।[2]

عَالِيَهُمْ ثِيَابُ سُندُسٍ خُضْرٌ وَإِسْتَبْرَقٌ وَحُلُّوا أَسَاوِرَ مِن فِضَّةٍ وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ﴿٢١﴾

(२१) उन के (शरीर) पर हरे महीन तथा मोटे रेशमी वस्त्र होंगे[3] तथा उन्हें चाँदी के कंगन का आभूषण पहनाया जायेगा[4] तथा उन्हें उन का प्रभु शुद्ध एवं पवित्र शराब पिलायेगा।

إِنَّ هَٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُم مَّشْكُورًا ﴿٢٢﴾

(२२) (कहा जायेगा) कि यह है तुम्हारे कर्मों का बदला तथा तुम्हारे प्रयत्नों की प्रशंसा की गई।

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنزِيلًا ﴿٢٣﴾

(२३) नि:संदेह हमने तुझ पर क्रमश: क़ुरआन अवतरित किया है।[5]

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ آثِمًا أَوْ كَفُورًا ﴿٢٤﴾

(२४) तो तू अपने प्रभु के आदेश पर अटल रह[6] तथा उनमें से किसी पापी अथवा कृतघ्न

---

[1]सुन्दरता, स्वच्छता तथा ताज़गी में वह मोतियों के समान होंगे, बिखरे हुए का अर्थ है सेवा के लिए सब ओर फैले हुए तथा अति तेज़ी के साथ सेवा में लीन होंगे।

[2]ثَمَّ जगह के अर्थ में है وَ إِذا رَأَيتَ ثَمَّ، أى: هُنَاكَ अर्थात वहाँ स्वर्ग में जहाँ कहीं भी देखोगे।

[3]سُنْدُس (सुन्दुस) महीन रेशमी वस्त्र तथा إِسْتَبْرَق (इस्तब्रक़) मोटा रेशम।

[4]जैसे एक युग में राजा, प्रमुख तथा वैभवशाली लोग पहना करते थे।

[5]अर्थात एक ही बार न उतार कर आवश्यकतानुसार विभिन्न समयों में उतारा। इसका दूसरा अभिप्राय यह भी हो सकता है कि यह क़ुरआन हमने उतारा है, यह तेरा अपना गढ़ा हुआ नहीं है, जैसाकि मुश्रिकीन दावा करते हैं।

[6]अर्थात उसके निर्णय की प्रतीक्षा कर। वह तेरी सहायता में कुछ देर कर रहा है तो इस में उसकी हिक्मत है। अत: धैर्य तथा साहस की आवश्यकता है।

The Ummah Technology Mission

का कहना न मान।[1]

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٢٥﴾

(२५) तथा अपने प्रभु के नाम का प्रातः एवं सायं (काल) वर्णन किया कर।[2]

وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ﴿٢٦﴾

(२६) तथा रात्रि के समय उसके समक्ष सज्दे कर तथा बहुत रात तक उसकी महिमागान किया कर।[3]

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ﴿٢٧﴾

(२७) निःसंदेह ये लोग शीघ्र प्राप्त होने वाली (दुनिया) को चाहते हैं[4] तथा अपने पीछे एक बड़े भारी दिन को छोड़ देते हैं।[5]

---

[1]अर्थात यदि यह तुझे अल्लाह के अवतरित किये आदेशों से रोकें तो उनका कहना न मान, अपितु धर्मप्रचार तथा शिक्षा-दीक्षा का काम जारी रख तथा अल्लाह पर भरोसा रख वह लोगों से तेरी रक्षा करेगा। اٰثِم (पापी) जो कर्म में अल्लाह का अवज्ञाकारी हो كفور (कफूर) जो दिल से कुफ्र (इंकार) करता हो अथवा कुफ्र में सीमा पार कर गया हो कुछ कहते हैं कि इससे अभिप्राय वलीद बिन मुगीरा है, जिसने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा था कि इस काम से रुक जा, हम तुझे तेरे कहने के अनुसार धन दे देते हैं तथा अरब की जिस सुंदरी से तू विवाह करना चाहे हम तेरा विवाह करा देते हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[2]प्रातः एवं संध्या से अभिप्राय है, हर समय में अल्लाह का स्मरण कर। अथवा प्रातः से तात्पर्य फ़ज्र की नमाज़ तथा संध्या से अस्र की नमाज़ है।

[3]'रात में सजदा कर' से अभिप्राय कुछ ने मग़रिब तथा एशा की नमाज़ें ली हैं तथा تسبيح (तस्बीह) का अर्थ है कि जो बातें अल्लाह के योग्य नहीं उनसे उसकी पवित्रता का वर्णन कर। कुछ ने इससे रात की ऐच्छिक नमाज़ तहज्जुद लिया है। اَمر (आदेश) यहाँ अच्छाई तथा उत्तम के लिए है।

[4]अर्थात यह मक्का के काफ़िर तथा इन जैसे अन्य लोग सांसारिक माया-मोह में लीन हैं तथा पूरा ध्यान इसी पर है।

[5]अर्थात प्रलय को उसकी गंभीरता तथा भयानकता के कारण उसे भारी दिन कहा, तथा त्याग देने का अर्थ है कि उसकी तैयारी नहीं करते न उसकी परवाह करते हैं।

The Ummah Technology Mission

نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا ﴿٢٨﴾

(२८) हमने उन्हें पैदा किया तथा हमने ही उनके जोड़ (एवं बंधन) सुदृढ़ किये[1] तथा हम जब चाहें उनके बदले उन जैसे अन्यों को बदल लायें।[2]

اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٢٩﴾

(२९) नि:संदेह यह तो एक शिक्षा है, तो जो चाहे अपने प्रभु का मार्ग प्राप्त कर ले।[3]

وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٣٠﴾ۚ

(३०) तथा तुम न चाहोगे परन्तु यह कि अल्लाह तआला ही चाहे।[4] नि:संदेह अल्लाह तआला ज्ञाता एवं हिक्मत वाला है।[5]

يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣١﴾ۧ

(३१) जिसे चाहे अपनी कृपा में सम्मिलित कर ले, तथा पापियों (अत्याचारियों) के लिए उसने कष्टदायी यातना तैयार कर रखी है।[6]

---

[1]अर्थात उनकी पैदाईश को सुदृढ़ बनाया। उनके जोड़ों, रंगों तथा तन्तुओं से परस्पर मिला दिया है। दूसरे शब्दों में उनका माँझा कड़ा किया।

[2]अर्थात उनका विनाश करके उनकी जगह किसी अन्य समुदाय को पैदा कर दें। अथवा इसका अभिप्राय क़यामत के दिन पुन: जीवित होना है।

[3]अर्थात इस क़ुरआन से मार्गदर्शन प्राप्त करे।

[4]अर्थात तुममें से कोई इस बात पर समर्थ नहीं कि वह स्वयं को संमार्ग पर लगा ले, अपने लिए कोई लाभ प्राप्त कर ले। हाँ, यदि अल्लाह चाहे तो ऐसा संभव है, उसके चाहे बिना तुम कुछ नहीं कर सकते। हाँ, सही संकल्प पर वह प्रतिफल अवश्य प्रदान करता है। «إِنَّمَا الأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ وَإِنَّمَا لِكُلِّ امْرِئٍ مَا نَوَى». "कर्म इरादे से होते हैं, प्रत्येक व्यक्ति के लिए वह है जिस का वह इरादा करे।" (सहीह बुख़ारी, प्रथम हदीस)

[5]चूँकि वह ज्ञाता तथा हिक्मत वाला है अत: उसके प्रत्येक कार्य में हिक्मत होती है। इसी कारण मार्गदर्शन तथा गुमराही के निर्णय भी ऐसे ही अललटप नहीं होते, अपितु जिसे मार्गदर्शन दिया जाता है वह वास्तव में उसके योग्य होता है तथा जिसके भाग में गुमराही है, वह वास्तव में उसी योग्य होता है।

[6] الظَّالِمِينَ و कर्मकारक इसलिए है कि इससे पहले يُعَذِّبُ लुप्त है।

The Ummah Technology Mission

सूरतुल मुर्सलात-७७ سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ

सूरः मुर्सलात* मक्का में अवतरित हुई, इसमें पचास आयतें एवं दो रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ① (१) मनमोहक लगातार चलने वाली धीमी वायु की सौगन्ध![1]

فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ② (२) फिर ज़ोर से झोंका देने वालियों की सौगन्ध![2]

وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ③ (३) तथा (बादल को) उभार कर फैलाने वालियों की सौगन्ध![3]

---

*यह सूरह मक्की है जैसाकि सहीहैन (बुख़ारी एवं मुस्लिम) में रिवायत है। आदरणीय इब्ने मसऊद फ़रमाते हैं कि हम मिना की एक गुफ़ा में थे कि आप पर सूरह मुर्सलात अवतरित हुई। आप उसे पढ़ रहे थे तथा मैं उसको आप से प्राप्त कर रहा था कि अकस्मात एक नाग आ गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इसे मार दो, किन्तु वह तेज़ी से भाग गया। आप ने फ़रमाया कि तुम उसकी बुराई से तथा वह तुम्हारी बुराई से बच गया। (बुख़ारी, तफ़सीर सूरतिल मुर्सलात, मुस्लिम, किताबु कतलिल हय्याते व ग़ैरहा) कभी-कभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मग़रिब की नमाज़ में भी यह सूरह पढ़ी है (बुख़ारी, किताबुल अज़ाने, बाबुल क़िराअते फ़िल मग़रिब, मुस्लिम किताबुस सलाते बाबुल क़िराअते फ़िस सुबहे)

[1]इस भावार्थ के आधार पर عرفًا का अर्थ निरन्तर होगा। कुछ ने مُرْسَلٰتٌ से अभिप्राय अम्विया अथवा फ़रिश्ता लिया है। इस स्थिति में عرفًا का अर्थ दैवी प्रकाशना अथवा धर्म विधान होगा।

[2]अथवा फ़रिश्ते अभिप्राय हैं जो कभी वायु के प्रकोप के साथ भेजे जाते हैं।

[3]अथवा उन फ़रिश्तों की सौगन्ध, जो बादलों को फैलाते हैं अथवा अन्तरिक्ष में अपने पंख फैलाते हैं। फिर भी इमाम इब्ने कसीर तथा इमाम तबरी ने इन तीनों से वायू तात्पर्य लेने को अधिमान दिया है, जैसाकि अनुवाद में भी इसी को अपनाया गया है।

The Ummah Technology Mission

فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ﴿٤﴾

(४) फिर सत्य-असत्य को अलग-अलग करने वाले।[1]

فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ﴿٥﴾

(५) तथा प्रकाशना लाने वाले फ़रिश्तों की सौगन्ध![2]

عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ﴿٦﴾

(६) जो (प्रकाशना) आक्षेप निवारण अथवा सचेत कर देने के लिए होती है।[3]

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾

(७) नि:संदेह जिस वस्तु का तुमसे वादा किया जाता है वह निश्चित रूप से होने वाली है।[4]

فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ﴿٨﴾

(८) तो जब तारे प्रकाशहीन कर दिये जायेंगे।[5]

---

[1]अर्थात उन फ़रिश्तों की सौगन्ध जो सत्य और असत्य के बीच अंतर करने वाले आदेश लेकर उतरते हैं, अथवा अभिप्राय क़ुरआन की आयतें हैं जिनसे वैध-निषेध, सत्य-असत्य का अंतर होता है, अथवा रसूल अभिप्राय हैं जो ईश्वरीय प्रकाशना द्वारा सत्य और असत्य के बीच अंतर स्पष्ट करते हैं।

[2]जो अल्लाह की वाणी पैग़म्बरों को पहुँचाते हैं, अथवा अल्लाह के रसूल तात्पर्य हैं जो अल्लाह की ओर से अवतरित प्रकाशना को लोगों तक पहुँचाते हैं।

[3]दोनों कारणवाची कर्म हैं لأجل الأعذار والإنذار अर्थात फ़रिश्ते प्रकाशना लेकर आते हैं ताकि लोगों पर तर्क स्थापित हो जाये तथा यह बहाना न शेष रहे कि हमारे पास तो कोई अल्लाह का संदेश ही नहीं लाया, अथवा उद्देश्य डराना है उनको जो कुफ़्र अथवा इंकार करने वाले होंगे। अथवा अर्थ है ईमान वालों के लिए शुभसूचना तथा काफ़िरों के लिए चेतावनी। इमाम शौकानी फ़रमाते है कि مُرْسَلاتٌ، عاصِفاتٌ तथा ناشِراتٌ से अभिप्राय वायु तथा فارِقاتٌ एवं مُلْقِياتٌ से फ़रिश्ते हैं। यही बात मान्य है।

[4]सौगन्ध का अभिप्राय जिसकी सौगन्ध खाई जाये उसका महत्व लोगों पर स्पष्ट करना तथा उसकी सत्यता को व्यक्त करना होता है। जिसकी शपथ ली जा रही है वह (अथवा सौगन्ध का उत्तर) यह है कि तुमसे प्रलय का जो वादा किया जा रहा है वह निश्चय घटित होगी अर्थात उसमें संदेह करने की नहीं अपितु उसके लिए तैयारी करने की आवश्यकता है, यह प्रलय कब घटित होगी ? आगामी आयतों में स्पष्ट किया जा रहा है।

[5]طُمِسَ का अर्थ मिट जाना तथा बिना चिन्ह होना है। अर्थात जब तारों का प्रकाश समाप्त बल्कि उनका चिन्ह तक मिट जायेगा।

The Ummah Technology Mission

وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ ﴿٩﴾

(९) तथा जब आकाश तोड़-फोड़ दिया जायेगा।

وَإِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ﴿١٠﴾

(१०) तथा जब पर्वत टुकड़े-टुकड़े कर के उड़ा दिये जायेंगे।[1]

وَإِذَا الرُّسُلُ أُقِّتَتْ ﴿١١﴾

(११) तथा जब संदेष्टाओं को निर्धारित समय पर लाया जायेगा।[2]

لِأَيِّ يَوْمٍ أُجِّلَتْ ﴿١٢﴾

(१२) किस दिन के लिए (उन्हें) ठहराया गया है ?[3]

لِيَوْمِ الْفَصْلِ ﴿١٣﴾

(१३) निर्णय के दिन के लिए।[4]

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ﴿١٤﴾

(१४) तथा तुझे क्या ज्ञात कि निर्णय का दिन क्या है ?

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٥﴾

(१५) उस दिन झुठलाने वालों के लिए ख़राबी है।[5]

---

[1]अर्थात उन्हें धरती से उखाड़कर कण-कण कर दिया जायेगा तथा धरती पूर्ण रूप से स्वच्छ तथा समतल हो जायेगी।

[2]अर्थात निर्णय तथा न्याय के लिए, उनकी बातें सुनकर उनकी जातियों के बारे में निर्णय किया जायेगा।

[3]यह प्रश्न महानता तथा आश्चर्य के लिए है। अर्थात कैसे महान दिन के लिए, जिसकी कठोरता एवं गंभीरता लोगों के लिए बड़ी आश्चर्यजनक होगी, इन पैग़म्बरों को एकत्र होने का समय दिया गया है।

[4]अर्थात जिस दिन लोगों के बीच निर्णय किया जायेगा, कोई स्वर्ग तथा कोई नरक में जायेगा।

[5]अर्थात विनाश हो ! कुछ कहते हैं कि وَيْلٌ नरक की एक वादी का नाम है। यह आयत इस सूरह में बार-बार दुहराई गई है। इसलिए कि प्रत्येक झुठलाने वाले का अपराध दूसरे से भिन्न प्रकार का होगा तथा इसी हिसाब से यातनायें भी अनेक प्रकार की होंगी। इस विनाश के विभिन्न प्रकार हैं, जिन्हें झुठलाने वालों के लिए अलग-अलग वर्णन किया गया है। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٦﴾

(१६) क्या हमने पूर्व के लोगों को नष्ट नहीं किया ?

ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٧﴾

(१७) फिर हम उनके पश्चात पिछलों को लाये।[1]

كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٨﴾

(१८) हम पापियों के साथ इसी प्रकार करते हैं।[2]

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٩﴾

(१९) उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश है।

اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ﴿٢٠﴾

(२०) क्या हमने तुम्हें तुच्छ जल से (वीर्य से) पैदा नहीं किया।

فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿٢١﴾

(२१) फिर हमने उसे सुदृढ़ (एवं सुरक्षित) स्थान में रखा।[3]

اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢٢﴾

(२२) एक निर्धारित समय तक।[4]

فَقَدَرْنَا ۟ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ﴿٢٣﴾

(२३) फिर हमने अनुमान लगाया[5] तो हम क्या अच्छा अनुमान लगाने वाले हैं।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٤﴾

(२४) उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश है।

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾

(२५) क्या हमने धरती को समेटने वाली नहीं बनाया ?

---

[1]अर्थात मक्का के काफ़िर तथा उनसे सहमत लोग, जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठलाया।

[2]अर्थात दण्ड देते हैं लोक में अथवा परलोक में।

[3]अर्थात माता के गर्भाशय में।

[4]अर्थात गर्भ की अवधि तक, छः अथवा नौ महीने।

[5]अर्थात माँ के गर्भाशय में शारीरिक संरचना एवं बनावट का सहीह अनुमान किया कि दोनों आँखों, दोनों कानों, दोनों हाथों तथा पाँवों के बीच कितनी दूरी रहनी चाहिए।

The Ummah Technology Mission

اَحْيَآءً وَّاَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾

(२६) जीवितों को भी तथा मृतकों को भी।[1]

وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّاَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً فُرَاتًا ﴿٢٧﴾

(२७) तथा हमने उस में उच्च (एवं भारी) पर्वत बना दिये[2] तथा तुम्हें सींचने वाला मीठा पानी पिलाया।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٨﴾

(२८) उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश है।

اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٩﴾

(२९) उस (नरक) की ओर जाओ जिसे तुम झुठलाते रहे थे।[3]

اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ ذِيْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾

(३०) चलो तीन शाखाओं वाले साये की ओर।[4]

لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾

(३१) जो वास्तव में न छाया देने वाली है तथा न ज्वाला से बचा सकती है।[5]

اِنَّهَا تَرْمِيْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾

(३२) नि:संदेह (नरक) चिंगारियाँ फेंकता है जो महल की भाँति हैं।[6]

كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾

(३३) जैसे कि वे पीले ऊँट हैं।[7]

---

[1]अर्थात धरती जीवितों को अपने ऊपर तथा मुर्दों को अपने भीतर समेट लेती है।

[2] رَاسِيَةٌ ، رَوَاسِيَ का बहुवचन है। ثَوَابِتُ जमे हुए पर्वत, شَامِخَاتٌ ऊँचे।

[3]यह फ़रिश्ते नरकवासियों से कहेंगे।

[4]नरक से जो धूआँ उठेगा वह तीन दिशाओं में फैल जायेगा, अर्थात जैसे दीवार अथवा पेड़ की छाया होती है जिसमें इंसान सुख सुविधा प्रतीत करता है। इस धुआँ से वास्तव में इस प्रकार की छाया न होगी जिसमें नरकवासियों को सुख प्राप्त होगा।

[5]अर्थात नरक की तपन से बचना भी संभव नहीं होगा।

[6]इसका एक और अनुवाद है, जो लकड़ी के बोटे अर्थात भारी टुकड़े के समान हैं। (बोटा का अर्थ शहतीर के टुकड़े जिसे गैली भी कहते हैं)

[7]صُفْرٌ यह أَصْفَرُ (पीला) का बहुवचन है किन्तु अरब में इसका प्रयोग काले के अर्थ में भी है। इस अर्थ के आधार पर अभिप्राय यह है कि उसकी एक-एक चिंगारी इतनी बड़ी

The Ummah Technology Mission

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٤﴾

(३४) उस दिन झुठलाने वालों की दुर्गति है।

هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) आज (का दिन) वह दिन है कि ये बोल भी न सकेंगे।[1]

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ﴿٣٦﴾

(३६) न उन्हें उज़्र (बहाना) करने की आज्ञा दी जायेगी।[2]

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٧﴾

(३७) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है।

هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۚ جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾

(३८) यह है निर्णय का दिन, हमने तुम्हें तथा पूर्व के लोगों को (सब को) एकत्रित कर लिया है।[3]

فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيْدُوْنِ ﴿٣٩﴾

(३९) तो यदि तुम मुझसे कोई चाल चल सकते हो तो चल लो।[4]

होगी जैसे महल अथवा दुर्ग। फिर प्रत्येक चिंगारी के इतनें बड़े-बड़े खंड हो जायेंगे जैसे ऊँट होते हैं।

[1]महशर में काफ़िरों की विभिन्न दशायें होंगी। एक समय वह होगा जब वे वहाँ भी झूठ बोलेंगे, फिर अल्लाह तआला उनके मुखों पर मुहर लगा देगा तथा उनके हाथ-पाँव गवाही देंगे। फिर जिस क्षण उनको नरक में ले जाया जा रहा होगा उस समय व्याकुलता एवं व्यग्रता की स्थिति में उनकी ज़बानें गूँगी हो जायेंगी। कुछ कहते हैं कि बोलेंगे तो अवश्य, किन्तु उनके पास कोई तर्क नहीं होगा। मानो उन्हें बात करनी ही नहीं आती। जैसे हम दुनिया में भी ऐसे व्यक्ति के बारे में कहते हैं जिसके पास संतोषजनक तर्क नहीं होता, वह तो हमारे आगे बोल ही नहीं सका।

[2]अभिप्राय यह है कि उनके पास प्रस्तुत करने के लिए कोई उचित तर्क ही नहीं होगा जिसे वह प्रस्तुत करके मुक्त हो सकें।

[3]यह अल्लाह तआला बंदों को संबोधित करेगा कि हमने तुम्हें अपने पूर्ण सामर्थ्य से निर्णय करने के लिए एक ही मैदान में एकत्र कर लिया है।

[4]घोर धमकी तथा चेतावनी है कि यदि तुम मेरी पकड़ से निकल सकते हो तो निकलकर दिखाओ, परन्तु वहाँ किस में यह शक्ति होगी? यह आयत भी ऐसे ही है जैसे यह आयत है :

The Ummah Technology Mission

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٠﴾

(४०) दुख है उस दिन झुठलाने वालों के लिए।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٤١﴾

(४१) नि:संदेह सदाचारी लोग साये में हैं[1] तथा प्रवाहित स्रोतों में।

وَّفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٤٢﴾

(४२) तथा उन फलों में जिनकी वे इच्छा करें।[2]

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾

(४३) (हे स्वर्गवालो !) खाओ-पिओ आनन्द से अपने किये हुए कर्मों के बदले।[3]

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٤٤﴾

(४४) नि:संदेह हम पुण्य करने वालों को इसी प्रकार बदला देते हैं।[4]

﴿ يَٰمَعْشَرَ ٱلْجِنِّ وَٱلْإِنسِ إِنِ ٱسْتَطَعْتُمْ أَن تَنفُذُوا۟ مِنْ أَقْطَارِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ فَٱنفُذُوا۟ ﴾

हे जिन्न तथा मानव समूह, यदि तुम में आकाशों एवं धरती के किनारों से निकल जाने की शक्ति है तो निकल भागो। (*अर्रहमान*-३३)

[1]अर्थात पेड़ों तथा भवनों के साये, आग के धुयें का साया नहीं होगा, जैसे मुशरिकों के लिये होगा।

[2]प्रत्येक प्रकार के फल, जब भी इच्छा करेंगे आगे आ जायेंगे।

[3]यह अनुग्रह स्वरूप उनसे कहा जायेगा بِمَا كُنْتُمْ में بَ कारणवाची है, अर्थात स्वर्ग के यह वरदान उन सत्कर्मों के कारण तुम्हें मिले हैं जो तुम संसार में करते रहे। इसका अभिप्राय यह है कि अल्लाह की कृपा की प्राप्ति का साधन, जिसके कारण इंसान स्वर्ग में प्रवेश पायेगा, पुण्य के कर्म हैं। जो बिना अच्छे कर्म ही अल्लाह की दया तथा क्षमा के उम्मीदवार बन जाते हैं, उनका उदाहरण ऐसे ही है जैसे भूमि में हल चलाये और बीज बोये बिना उपज की आशा रखे, अथवा थूहड़ (काँटेदार पौधा) बोकर स्वादिष्ट फल की आशा रखे।

[4]इसमें भी इस बात का प्रलोभन एवं निर्देश है कि यदि परलोक में शुभ परिणाम की इच्छा रखते हो तो दुनिया में नेकी (सत्कर्म) तथा भलाई का मार्ग अपनाओ।

The Ummah Technology Mission

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٥﴾

(४५) उस दिन झुठलाने वालों के लिए दुख (खेद) है।[1]

كُلُوْا وَ تَمَتَّعُوْا قَلِيْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٤٦﴾

(४६) (हे झुठलाने वालो !) तुम (संसार में) थोड़ा सा खा-पी लो तथा लाभ उठा लो, नि:संदेह तुम पापी हो।[2]

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश है।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا لَا يَرْكَعُوْنَ ﴿٤٨﴾

(४८) उनसे जब कहा जाता है कि रूकूअ कर लो तो नहीं करते।[3]

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾

(४९) उस दिन झुठलाने वालों का विनाश है।[4]

فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٠﴾

(५०) अब इस (क़ुरआन) के पश्चात किस बात पर ईमान लायेंगे ?[5]

---

[1]कि सदाचारियों के भाग में तो स्वर्ग के सुख आये तथा इन के हिस्से में दुर्भाग्य।

[2]यह प्रलय को झुठलाने वालों को संबोधित किया गया है, तथा यह आदेश धमकी तथा चेतावनी के लिए है। अच्छा कुछ दिन आनन्द ले लो, तुम जैसे अपराधियों के लिए यातना का शिकंजा तैयार है।

[3]अर्थात उनको नमाज़ पढ़ने का आदेश दिया जाता है तो नमाज़ नहीं पढ़ते।

[4]अर्थात उनके लिए जो अल्लाह के आदेशों एवं आज्ञा तथा निषेधों को नहीं मानते।

[5]अर्थात जब इस क़ुरआन के प्रति विश्वास नहीं करेंगे तो इसके पश्चात कौन सी वाणी है जिस पर ईमान लायेंगे ? यहाँ भी "हदीस" क़ुरआन को कहा गया है। एक कमज़ोर रिवायत में कहा गया है कि जो 'सूरह तीन' की अन्तिम आयत أَلَيْسَ اللهُ .... الآية पढ़े तो वह उत्तर में कहे بلى وَ أنا على ذلك من الشٰهدين तथा "सूरह क़ियामः" के अंत के उत्तर में بَلٰى तथा فبأىّ حَديث بعده يُؤمِنُون के उत्तर में آمنّا بالله कहो। (अबू दाऊद, बाबु मिक्दारिर्रुकूअे वस सूजूद तथा ज़ईफु अबी दाऊद, लिल अलबानी) कुछ विद्वानों का विचार है कि जो सुने उसे भी उत्तर देना चाहिए।

The Ummah Technology Mission

सूरतुन नबा-७८

سُوْرَةُ النَّبَإِ

सूरतुन नबा मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें चालीस आयतें एवं दो रूकुअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

(१) ये लोग किस वस्तु की पूछताछ कर रहे हैं ?[1]

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ۝١

(२) उस बड़ी सूचना की ?

عَنِ النَّبَإِ الْعَظِيْمِ ۝٢

(३) जिसमें ये विभिन्न मत हैं।[2]

الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ۝٣

(४) निश्चित रूप से ये अभी जान लेंगे।

كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۝٤

---

[1] **सूरतुन नबा** : जब नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* को नबूअत से सम्मानित किया गया तथा आप से एकेश्वरवाद एवं प्रलय आदि की चर्चा की तथा पवित्र ईशवाणी क़ुरआन सुनाया तो काफ़िरों तथा मुशरिकों ने एक-दूसरे से प्रश्न करना आरम्भ किया कि क्या यह संभव है ? जैसा कि यह दावा कर रहे हैं अथवा यह क़ुरआन वास्तव में अल्लाह की ओर से अवतरित है। जैसा कि मोहम्मद *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* कहता है। प्रश्न द्वारा अल्लाह ने पहले इन चीज़ो की वास्तविक स्थिति उजागर की जो उनकी है। फिर स्वयं ही उत्तर दिया।

[2] अर्थात जिस बड़ी सूचना के सम्बन्ध में प्रश्न है। इस बड़ी सूचना से अभिप्राय कुछ ने पवित्र क़ुरआन लिया है। काफ़िर उसके विषय में विभिन्न बातें करते थे। कोई उसे जादू कोई ज्योतिष कोई कविता तथा कोई प्राचीन कथा बतलाता था। कुछ के विचार में इसका अभिप्राय प्रलय का घटित होना है तथा पुनः जीवित होना। इसमें भी उनके मध्य कुछ मतभेद था कोई सिरे से इसका इंकार कि इनके बीच मतभेद है, कोई उसके संदर्भ में पूछताछ करता था की मात्र संदेह का प्रदर्शन। कुछ कहते हैं कि प्रश्न कर्ता ईमान वाले तथा काफ़िर दोनों थे। ईमान वालों का प्रश्न तो विश्वास की अधिकता तथा अधिक जानकारी के लिये था तथा काफ़िरों का उपहास एवं प्रतिहास स्वरूप।

The Ummah Technology Mission

ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ﴿٥﴾

(५) फिर निश्चित रूप से उन्हें अतिशीघ्र ज्ञात हो जायेगा।[1]

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهَادًا ﴿٦﴾

(६) क्या हमने धरती को फ़र्श नहीं बनाया।[2]

وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا ﴿٧﴾

(७) तथा पर्वतों को खूँटा नहीं बनाया।[3]

وَخَلَقْنَاكُمْ أَزْوَاجًا ﴿٨﴾

(८) तथा हमने तुम्हें जोड़े-जोड़े पैदा किये।[4]

وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ﴿٩﴾

(९) तथा हमने तुम्हारी निद्रा को तुम्हारे विश्राम का कारण बनाया।[5]

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لِبَاسًا ﴿١٠﴾

(१०) तथा रात्रि को हमनें पर्दा बनाया।[6]

---

[1] यह डाँट फटकार है कि शीघ्र ही सब कुछ का ज्ञान हो जायेगा। आगे अल्लाह अपनी कारीगरी तथा महान सामर्थ्य की चर्चा कर रहा है। ताकि अद्वैत का तथ्य उनके आगे स्पष्ट हो तथा ईशदूत उन्हें जिस चीज़ का आमंत्रण दे रहा है। उस पर विश्वास करना उनके लिये सरल हो जाये।

[2] अर्थात फर्श के समान तुम धरती पर चलते-फिरते, उठते-बैठते, सोते-जागते तथा सब कामकाज करते हो। धरती को डोलती नहीं रहने दिया।

[3] أَوْتَاد यह وَتِدٌ का बहुवचन है। खूँटे अर्थात पर्वतों को धरती के लिये खूँटे बनाये ताकि धरती स्थिर रहे, हिले नहीं। क्योंकि हिलने-डोलने की दशा में धरती रहने योग्य ही नहीं होती।

[4] पुरूष-स्त्री, नर-मादा, अर्थात أزواج का अर्थ प्रकार तथा वर्ण है अर्थात अनेक रूपों तथा रंगों में पैदा किया। सुरूप, कुरूप, लम्बा, छोटा, गोरा, काला, आदि।

[5] سُبَات का अर्थ काटना है, रात भी जीव-जन्तुओं की सारी गति विधियाँ कम कर देती है ताकि शान्ति हो जाये तथा वे आराम से सो सकें। अथवा अभिप्राय यह है कि रात्रि तुम्हारे कर्मों को समाप्त कर देती है। कार्य समाप्त होने का अर्थ आराम है।

[6] अर्थात रात का अंधेरा तथा तमस प्रत्येक वस्तु को अपने अंधकार मे ढाँक लेता है जैसे कपड़ा मनुष्य के शरीर को छिपा लेता है।

The Ummah Technology Mission

وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ﴿١١﴾

(११) तथा दिन को हमने जीविका उपार्जन का समय बनाया।[1]

وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ﴿١٢﴾

(१२) तथा तुम्हारे ऊपर हमने सात सुदृढ़ आकाश बनाये।[2]

وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ﴿١٣﴾

(१३) तथा एक चमकता हुआ ज्योंति दीप पैदा किया।[3]

وَّأَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ﴿١٤﴾

(१४) तथा मेंघों से हमने अत्यधिक प्रवाहित जल बरसाया।[4]

لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ﴿١٥﴾

(१५) ताकि उससे अन्न तथा वनस्पति उगायें।[5]

وَّجَنّٰتٍ أَلْفَافًا ﴿١٦﴾

(१६) तथा घने बाग़ भी (उगायें)।[6]

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ﴿١٧﴾

(१७) नि:संदेह निर्णय का दिन निर्धारित है।[7]

---

[1] अभिप्राय यह है कि दिन को प्रकाशमान बनाया ताकि लोग जीविकोपार्जन के लिये परिश्रम कर सकें।

[2] इनमें प्रत्येक की दूरी पाँच सौ वर्ष के समान है। जो उसकी दृढ़ता का प्रमाण है।

[3] इससे तात्पर्य सूर्य है तथा جَعَلَ का अर्थ خَلَقَ है।

[4] مُعْصِرَاتٌ वह बदलियाँ जोजल से भरी हुई हो। किन्तु अभी बरसी न हों। जैसे المَرْأَةُ المُعْتَصِرَة उस स्त्री को कहते हैं जिसका रज: काल निकट हो। ثَجَّاجا अधिक प्रवाहित जल।

[5] حَبّ (दाना) वह अन्न जिसे खाने के लिये ढेर कर लिया जाता है। जैसे गेहूँ, चावल, जौ, मकाई आदि तथा वनस्पतियाँ, तरकारियाँ एवं चारे आदि जो पशु खाते हैं।

[6] أَلْفَافًا शाखाओं की अधिकता के कारण एक-दूसरे से मिले पेड़ अर्थात घने बाग।

[7] अथार्त आदि तथा अंत सब के एकत्र होने तथा वचन का दिन। इसे निर्णय का दिन इसलिये कहा कि उस दिन एकत्रित होने का उद्देश्य ही सभी इंसानों का उनके कर्मों के अनुसार निर्णय करना है।

The Ummah Technology Mission

يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا ﴿١٨﴾

(१८) जिस दिन कि नरसिंघ फूँका जायेगा, फिर तुम सब दल के दल बन कर आओगे।[1]

وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ﴿١٩﴾

(१९) तथा आकाश खोल दिया जायेगा, तो उसमें द्वार-द्वार हो जायेंगे।[2]

وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿٢٠﴾

(२०) तथा पर्वत चलाये जायेंगे तो वे सफेद बालू हो जायेंगे।[3]

إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿٢١﴾

(२१) नि:संदेह नरक घात में है।[4]

لِّلطَّاغِينَ مَآبًا ﴿٢٢﴾

(२२) उद्दण्डियों का स्थान वही है।

---

[1]कुछ ने इस का भावार्थ यह वर्णन किया है कि प्रत्येक समुदाय अपने रसूल के साथ हश्र के मैदान में आयेगा यह दूसरा नफ़ख़ा (फूँक) होगी जिसमें सब लोग क़ब्रों से जीवित होकर निकल आयेंगे। अल्लाह (तआला) आकाश से पानी बरसायेगा जिससे इंसान खेती के सामान उग आयेंगे इंसान का प्रत्येक अंग सड़ जायेगा किन्तु रीढ़ की अस्थि का अन्तिम सिरा, उसी से प्रलय के दिन सृष्टि को पुन: बना दिया जायेगा। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरते अम्म)

[2]अर्थात फ़रिश्तों के उतरने के लिये मार्ग बन जायेंगे। तथा धरती पर उतर आयेंगे।

[3] سَرَابٌ वह रेत जो दूर से पानी लगे। पर्वत भी रेत के समान दूर से दिखने वाली वस्तु बनकर रह जायेंगे। तथा फिर सर्वथा लुप्त होजायेंगे उनका चिन्ह तक नहीं रह जायेगा। कुछ कहते हैं कि क़ुरआन में पर्वतो की अनेक दशायें वर्णित की गई हैं। जिनमें अनुकूलता इस प्रकार है कि १-पहले उन्हें कण-कण कर दिया जायेगा ﴿فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً﴾ (*अलहाक्क:*-१४) २- वह धुनी रूई के समान हो जायेंगे ﴿كَالْعِهْنِ الْمَنفُوشِ﴾ (*अल-कारिअ:*-५) ३- वह गर्द गुबार (धूल-धप्पड़) होजायेंगे, ﴿فَكَانَتْ هَبَاءً مُّنبَثًّا﴾ (*अल-वाक़िअ:* -६) ४- उनको उड़ा दिया जायेगा। ﴿يَنسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا﴾ (*ताहा*-१०५) तथा पाँचवी स्थिति यह है कि वह मृगतृष्णा होजायेगे अर्थात नहीं रह जायेंगे जैसाकि इस स्थान पर है। (फ़तहुल क़दीर)

[4]घात ऐसे स्थान को कहते हैं जहाँ छुपकर प्रतीक्षा की जाती है कि वहाँ से गुजरे तो उस पर प्रहार कर दिया जाये। नरक के अधिकारी भी इसी प्रकार नरकवासियों की प्रतीक्षा में घात लगाये हुए हैं अथवा नरक स्वयं अल्लाह की आज्ञा से घात लगाये हुए काफ़िरों की प्रतीक्षा कर रही है।

The Ummah Technology Mission

لٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ﴿٢٣﴾

(२३) उसमें वे कई युगों (एवं शताब्दियों) तक पड़े रहेंगे।[1]

لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ﴿٢٤﴾

(२४) न कभी उसमें ठंड का स्वाद चखेंगे न पानी का।

اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ﴿٢٥﴾

(२५) अतिरिक्त गर्म पानी एवं बहती हुई पीप के।[2]

جَزَآءً وِّفَاقًا ﴿٢٦﴾

(२६) (उनको) पूर्णरूप से बदला मिलेगा।[3]

اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾

(२७) उन्हें तो हिसाब की संभावना ही न थी।[4]

وَّكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾

(२८) तथा मुकरा-मुकरा कर हमारी आयतों को झुठलाते थे।

وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ﴿٢٩﴾

(२९) हमने प्रत्येक बात को लिखकर सुरक्षित रखा है।[5]

---

[1] أَحْقَاب बहुवचन है حُقُبٌ का, अर्थ है युग। अभिप्राय सदा तथा नित्य है, वह सदा के लिये नरक में रहेंगे। यह यातना काफ़िरों तथा मुशरिकों के लिये है।

[2] जो नरकवासियों के शरीर से निकलेगी।

[3] अर्थात यह यातना उनके कर्मों के अनुकूल है जो वह संसार में करते रहे।

[4] यह पहले वाक्य का कारण बताया जा रहा है अर्थात वह उपरोक्त दण्ड के भागी इस कारण बने कि मौत के पश्चात वह पुर्नजीवन को मानते ही नहीं थे कि हिसाब-किताब की आशा रखते।

[5] अर्थात लौह महफ़ूज़ में। अथवा वह लेख अभिप्रेत है जो फ़रिश्ते लिखते रहे। प्रथम भावार्थ अधिक सहीह है। जैसाकि (*यासीन-१२*) में फ़रमाया :

﴿ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنٰهُ فِيْٓ إِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴾

The Ummah Technology Mission

فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾

(३०) अब तुम (अपने किये का) स्वाद चखो, हम तुम्हारी यातना ही बढ़ाते जायेंगे।[1]

اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا ﴿٣١﴾

(३१) नि:संदेह सदाचारियों के लिये सफलता है।[2]

حَدَآئِقَ وَاَعْنَابًا ﴿٣٢﴾

(३२) बाग़ात हैं तथा अंगूर हैं।[3]

وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا ﴿٣٣﴾

(३३) तथा नवयुवती कुँवारी सम आयु स्त्रियाँ हैं।[4]

وَّكَاْسًا دِهَاقًا ﴿٣٤﴾

(३४) तथा छलकते हुए मदिरा के प्याले हैं।[5]

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ﴿٣٥﴾

(३५) वहाँ न तो वे अश्लील बातें सुनेंगे तथा न असत्य बातें सुनेंगे।[6]

---

[1] यातना बढ़ानें का अभिप्राय है कि अब यह यातना स्थाई है। जब उनके चमड़े गल जायेंगे तो दूसरे बदल दिये जायेंगे। (*अन-निसा*-५६) जब आग बुझने लगेगी तो फिर भड़का दी जायेगी। (*बनी इस्राईल*-९७)

[2] दुर्भाग्यशालियों की चर्चा के पश्चात अब यह सौभाग्यशालियों की चर्चा तथा उन उपहारों का वर्णन है जिनसे वह परलोकिक जीवन में सफल होंगे। यह सफलता एवं उपहार उन्हें सदाचार के कारण प्राप्त होंगे। सदाचार ईमान तथा आज्ञा पालन की माँगों को पूरा करने का नाम है। भाग्यशाली वह है जो ईमान लाने के बाद संयम तथा नेक कामों का प्रयोजन करते हैं।

[3] यह مَفَازًا से बदल है।

[4] كَوَاعِبَ बहुवचन है كَاعِبَةٌ का, यह كَعْبٌ (घुट्टी) से है जैसे घुट्टी उभरी होती है उनकी छातियों में भी ऐसा ही उभार होगा। जो उनकी शोभा तथा सुन्दरता का एक द्योतक है। أَتْرَابًا समायु।

[5] دِهَاقًا भरे हुए अथवा लगातार एक के बाद एक अथवा साफ तथा स्वच्छ كَأْسٌ ऐसे प्याले को कहते हैं जो पूर्ण रूप से भरा हुआ हो।

[6] अर्थात कोई व्यर्थ तथा बेकार बात वहाँ नहीं होगी, न एक-दूसरे से मिथ्या बात करेंगे।

The Ummah Technology Mission

جَزَآءً مِّن رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ﴿٣٦﴾

(३६) (उनको) तेरे प्रभु की ओर से (उनके सत्कर्मों का) यह बदला मिलेगा। जो पर्याप्त उपहार होगा।[1]

رَّبِّ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمَٰنِ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾

(३७) (उस) प्रभु की ओर से मिलेगा जो कि आकाशों का धरती का तथा जो कुछ उसके मध्य है, उनका प्रभु है, तथा अत्यन्त दयालु है। किसी को उससे बातचीत करने का अधिकार नहीं होगा।[2]

يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلَٰٓئِكَةُ صَفًّا ۖ لَّا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾

(३८) जिस दिन आत्मा तथा फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध होकर खड़े होंगे,[3] तो कोई बात न कर सकेगा, परन्तु जिसे अत्यन्त दयालु आज्ञा दे तथा वह ठीक बात मुख से निकाले।[4]

ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۖ فَمَن شَآءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِۦ مَـَٔابًا ﴿٣٩﴾

(३९) यह दिन सत्य है,[5] अब जो चाहे अपने प्रभु के पास (सत्कर्म करके) स्थान बना ले।[6]

---

[1] عَطَاء के साथ حِسَاب अतिश्योक्ति के लिये आता है अर्थात वहाँ अल्लाह के उपहारों का प्राचुर्य होगा।

[2] अर्थात उसकी बड़ाई, भय तथा प्रताप इतना होगा कि आरम्भ में उससे किसी को बात करने का साहस नहीं होगा। इसी लिये उसकी अनुमति के बिना कोई सिफ़ारिश (अभिस्तावना) के लिये मुँह भी नहीं खोलेगा।

[3] यहाँ जिब्रील सहित रूह के कई भावार्थ वर्णन किये गये हैं। इमाम इब्ने कसीर ने आदम के पुत्रों (इंसान) को أَشْبَهُ उचित माना है।

[4] यह अनुमति अल्लाह (तआला) फ़रिश्तों तथा ईशदूतों को प्रदान करेगा तथा वे जो बात करेंगे सत्य तथा ठीक ही होगी, अथवा यह अर्थ है कि अनुमति मात्र उसी के लिये दी जायेगी। जिसने सही बात कही हो अर्थात धर्मसूत्र अद्वैत को स्वीकार करता रहा हो।

[5] अवश्य आने वाला है।

[6] उस आगामी दिन को सामने रखते हुए ईमान तथा संयम का जीवन अपनाये ताकि उस दिन उसे वहाँ अच्छा स्थान मिल जाये।

The Ummah Technology Mission

إِنَّآ أَنذَرْنَٰكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا ۖ يَوْمَ يَنظُرُ ٱلْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ ٱلْكَافِرُ يَٰلَيْتَنِى كُنتُ تُرَٰبًۢا ﴿٤٠﴾

(४०) हमने तुम्हें निकट भविष्य में घटित होने वाली यातना से डरा दिया (तथा सावधान कर दिया)।[1] जिस दिन मनुष्य अपने हाथों की कमाई को देख लेगा।[2] तथा काफ़िर कहेगा कि काश मैं मिट्टी बन जाता।[3]

सूरतुन नाज़िआत-७९

سُورَةُ النَّازِعَاتِ

यह सूरत मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें छियालीस आयतें एवं दो रूकूअ़ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

وَٱلنَّٰزِعَٰتِ غَرْقًا ﴿١﴾

(१) डूबकर कठोरता से खीचनें वालों की सौगन्ध।[4]

---

[1] अर्थात क़ियामत के दिन की यातना से जो निकट ही है, क्योंकि उसका आना निश्चित है तथा प्रत्येक वस्तु समीप ही है। क्योंकि उसे आ कर ही रहना है।

[2] अर्थात अच्छा व बुरा, कर्म जो भी उसने संसार में किया वह अल्लाह के यहाँ पहुँच गया है। क़ियामत (प्रलय) के दिन वह उसके समक्ष आ जायेगा तथा वह उसे देखेगा।

﴿ يُنَبَّؤُا۟ ٱلْإِنسَٰنُ يَوْمَئِذٍۭ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ﴾ (अल-क़ियामः-१३)

[3] जब वह अपने भयानक परिणाम का अवलोकन करेगा तोयह कामना करेगा। कुछ कहते हैं अल्लाह पशुओं के बीच भी न्यायोचित निर्णय करेगा। यहाँ तक की एक सींग वाली बकरी ने बिना सींग की बकरी पर कोई अत्याचार किया होगा तो उस का भी बदला दिलायेगा। इसके पश्चात अल्लाह पशुओं को आदेश देगा कि मिट्टी हो जाओ तो वह मिट्टी हो जायेंगे। उस समय काफ़िर भी कामना करेंगे कि काश वह भी पशु होते तथा आज मिट्टी बन जाते (इब्ने कसीर)

[4] **सूरतुन नाज़िआत** : نَزْعٌ का अर्थ है कड़ाई से खींचना। غَرْقًا डूबकर- यह प्राण निकालने वाले फ़रिश्तों का विशेषण है। फ़रिश्ते काफ़िरों का प्राण बड़ी कड़ाई से निकालते हैं। तथा शरीर में डूबकर।

The Ummah Technology Mission

وَالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۙ﴿۲﴾

(२) बंधन खोलकर छुड़ाने वालों की सौगन्ध[1]

وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۙ﴿۳﴾

(३) तथा तैरने फिरने वालों की सौगन्ध।[2]

فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۙ﴿۴﴾

(४) फिर दौड़ कर आगे बढ़ने वालों की सौगन्ध।[3]

فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۘ﴿۵﴾

(५) फिर कार्यों का उपाय करने वालों की सौगन्ध।[4]

يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۙ﴿۶﴾

(६) जिस दिन कंपित होने वाली काँपेंगी।[5]

---

[1] نَشْطٌ का अर्थ है गाँठ खोलना अर्थात ईमान वालों की प्राण फ़रिश्ते सरलता से निकालते हैं। जैसे गाँठ खोल दी जाये।

[2] سَبْحٌ का अर्थ तैरना है। फ़रिश्ते प्राण निकालने के लिये इंसान के शरीर में ऐसे तैरते फिरते हैं जैसे गोताखोर मोती निकालने के लिये समुद्र की गहराईयों में तैरता है अथवा यह अभिप्राय है कि अति तेज़ गति से अल्लाह का आदेश लेकर आकाशों से उतरते हैं। क्योंकि तेज़गामी घोड़े को भी سَابِحٌ कहते हैं।

[3] यह फ़रिश्ते अल्लाह की प्रकाशना ईशदूतों तक दौड़कर पहुँचाते हैं। ताकि शैतान को उनकी सुनगुन न मिले। अथवा ईमान वालों की आत्मायें स्वर्ग की ओर ले जाने में शीघ्रता करते हैं।

[4] अर्थात अल्लाह (तआला) जो काम उनको सौंपता है वह उसकी व्यवस्था करते हैं। वास्तविक व्यवस्थापक तो अल्लाह (तआला) ही है। किन्तु जब अल्लाह (तआला) अपनी पूर्व तत्वदर्शिता से फ़रिश्तोद्वारा काम करवाता है तोउन्हें भी व्यवस्थापक कहा जाता है। इस आधार पर पाँचों विशेषताएं फ़रिश्तों की हैं तथा उन फ़रिश्तों की अल्लाह ने शपथ ली है। शपथ का उत्तर लुप्त है अर्थात ﴿لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ﴾ तुम अवश्य जीवित किये जाओगे तथा तुम्हें तुम्हारे कर्मों के सम्बन्ध में सूचित किया जायेगा। क़ुरआन ने इस पुर्नजीवन तथा प्रतिकार के लिये कई स्थानों पर सौगन्ध खाई है। जैसे सूरतुत तग़ाबुन-७ में भी अल्लाह (तआला) ने सौगन्ध खाकर उपरोक्त शब्दों में इस तथ्य का वर्णन किया है। यह पुर्नजीवन तथा प्रतिफल कब होगा ? इसे आगे स्पष्ट किया है।

[5] यह प्रथम नफ़ख़ा (फूँक) होगी। जिसे विनाश की फूँक कहते हैं। जिस से पूरी धरती काँपने लगेगी तथा प्रत्येक वस्तु विनष्ट हो जायेगी।

The Ummah Technology Mission

تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ﴿٧﴾

(७) उसके पश्चात एक पीछे आने वाली (पीछे-पीछे) आयेगी।[1]

قُلُوبٌ يَوْمَئِذٍ وَاجِفَةٌ ﴿٨﴾

(८)(बहुत से) दिल उस दिन धड़कते होंगे।[2]

أَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ﴿٩﴾

(९) जिनके नेत्र नीचे होंगे।[3]

يَقُولُونَ أَإِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَافِرَةِ ﴿١٠﴾

(१०) कहते हैं कि क्या हम पहले जैसी स्थिति में फिर लौटाये जायेंगे ?[4]

أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ﴿١١﴾

(११) क्या उस समय जब हम जीर्ण अस्थियों में हो जायेंगे।[5]

قَالُوا تِلْكَ إِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ﴿١٢﴾

(१२) कहते हैं कि यह लौटना फिर हानिकारक है।[6] (ज्ञात होना चाहिये)

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ ﴿١٣﴾

(१३) वह तो केवल एक (भयानक) फटकार है कि (जिसके उत्पन्न होते ही)।

---

[1] यह दूसरा नफ़ख़ा होगा। जिससे सब जीवित हो जायेंगे तथा क़ब्रों से निकल आयेंगे। यह दूसरा नफ़ख़ा (फूंक) प्रथम फूंक के चालीस वर्ष पश्चात होगी इसे رَادِفَة इसलिये कहा जाता है कि यह पहली फूंक के पश्चात ही होगी अर्थात दूसरा नफ़ख़ा पहले नफ़ख़े के पीछे होगा।

[2] क़ियामत की भयानकता तथा भीषणता से।

[3] अर्थात أَبْصَارُ أَصْحَابِهَا ऐसे भयभीत लोगों की निगाहें भी (अपराधियों के समान) झुकी होंगी।

[4] حَافِرَة पहली स्थिति को कहते हैं। यह क़ियामत का इंकार करने वालों का वचन है कि हम फिर उसी प्रकार जीवित कर दिये जायेंगे जैसे मृत्यु से पहले थे ?

[5] यह क़ियामत (प्रलय) के इंकार पर अधिक बल है। कि हम कैसे जीवित कर दिये जायेंगे जबकि हमारी अस्थियाँ सड़ जायेंगी तथा कण-कण हो जायेंगी।

[6] यदि वास्तव में ऐसा हुआ जैसा कि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कहता है तो यह पुर्नजीवन हमारे लिये बड़ा हानिकारक होगा।

The Ummah Technology Mission

فَإِذَا هُم بِالسَّاهِرَةِ ﴿١٤﴾

(१४) वह तत्क्षण मैदान में एकीकृत हो जायेंगे।[1]

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَىٰ ﴿١٥﴾

(१५) क्या मूसा (*अलैहिस्सलाम*) की कथा भी तुम्हें ज्ञात है ?

إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٦﴾

(१६) जबकि उनके प्रभु ने उन्हें पवित्र मैदान तुवा में पुकारा।[2]

اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿١٧﴾

(१७) कि तुम फ़िरऔन के पास जाओ उसने उद्दण्डता अपना ली है।[3]

فَقُلْ هَل لَّكَ إِلَىٰ أَن تَزَكَّىٰ ﴿١٨﴾

(१८) उससे कहो कि क्या तू अपना सुधार तथा शोधन चाहता है।[4]

---

[1] سَاهِرَةٌ से अभिप्राय धरती का उपरी भाग अर्थात मैदान है। धरती के ऊपरी भाग को سَاهِرَةٌ इस कारण कहा गया है कि सभी जीव का सोना-जागना इसी धरती पर होता है। कुछ कहते हैं कि चटियल मैदान तथा वनों में भय के कारण मनुष्य को नींद नहीं आती तथा वहाँ जागता रहता है इसलिये سَاهِرَةٌ कहा जाता है (फ़तहुल क़दीर) कुछ भी हो यह क़यामत का चित्रण है फिर एक ही फूँक में सब मैदान में एकत्रित हो जायेंगे।

[2] यह उस समय की कथा है जब मूसा (*अलैहिस्सलाम*) मदयन से वापसी पर आग की खोज में तूर पर्वत पर पहुँच गये थे तो वहाँ एक पेड़ की आड़ से अल्लाह ने मूसा से बातचीत की। जैसा कि सविस्तार *सूरत ताहा* के प्रारम्भ में गुज़रा। طُوًى *तुवा* उस स्थान का नाम है। बात करने से अभिप्राय नबूअत तथा रिसालत (दूतत्व) से सम्मानित करना है। अर्थात मूसा (*अलैहिस्सलाम*) आग लेने गये तथा अल्लाह ने उन्हें संदेशवाहक नियुक्त कर दिया, जैसे कि आगे फ़रमाया :

[3] अर्थात कुफ़्र (इंकार) अवज्ञा तथा अभिमान में सीमा लाँघ गया है।

[4] अर्थात क्या ऐसा मार्ग तथा आचरण तू पसन्द करता है जिससे तेरा सुधार हो जाये तथा वह यह है कि मुसलमान तथा आज्ञाकारी बन जाये।

The Ummah Technology Mission

وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ﴿١٩﴾

(१९) तथा यह कि मैं तुझे तेरे प्रभु का मार्ग दिखाऊँ ताकि तू (उससे) डरने लगे।[1]

فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ﴿٢٠﴾

(२०) तो उसे बड़ी निशानी दिखायी।[2]

فَكَذَّبَ وَعَصٰى ﴿٢١﴾

(२१) तो उसने झुठलाया तथा अवहेलना की।[3]

ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ﴿٢٢﴾

(२२) फिर पलटा प्रयत्न करते हुए।[4]

فَحَشَرَ فَنَادٰى ﴿٢٣﴾

(२३) फिर सबको एकत्रित करके[5] उच्च स्वर में पुकारा।

فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ﴿٢٤﴾

(२४) कहा कि तुम सबका प्रभु मैं ही हूँ।

فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى ﴿٢٥﴾

(२५) तो (सबसे उच्च एवं महान) अल्लाह ने भी उसे परलोक तथा इस लोक की यातनाओं में घेर लिया।[6]

---

[1]अर्थात उस की यकता तथा उपासना का मार्ग ताकि उसकी यातना से डरे। क्योंकि अल्लाह का डर उसी दिल में संचित होता है। जो संमार्ग पर चलने वाला होता है।

[2]अर्थात अपनी सत्यता के वह प्रमाण प्रस्तुत किये जो अल्लाह की ओर से उन्हें प्रदान किये गये थे कुछ कहते हैं कि वह चमत्कार तात्पर्य है जो आदरणीय मूसा को दिये गये थे जैसे प्रकाशमय हाथ, तथा लाठी तथा कुछ के विचार से नौं निशानियाँ हैं।

[3]किन्तु इन प्रमाणों एवं चमत्कारों का उस पर कोई प्रभाव नही हुआ तथा झुठलाने एवं अवैज्ञा के मार्ग पर अग्रसर रहा।

[4]अर्थात उसने ईमान तथा आज्ञा पालन से इंकार ही नहीं किया। अपितु धरती में उपद्रव फैलाने का तथा मूसा के मुक़ाबले का प्रयास करता रहा। तथा जादूगरों को एकत्र करके मूसा (*अलैहिस्सलाम*) से मुक़ाबला कराया ताकि उनको झूठा सिद्ध किया जा सके।

[5]अपने समुदाय को अथवा लड़ने के लिये अपनी सेना को, अथवा जादूगरों को मुक़ाबले के लिये एकत्र किया तथा दुराग्रह का प्रदर्शन किया एवं अपने महाप्रभु होने की घोषणा की।

[6]अर्थात अल्लाह ने उसे ऐसे धर लिया कि दुनियाँ के आगामी उद्दण्डों के लिये शिक्षा का प्रतीक बना दिया तथा प्रलय की यातना इस पर अधिक है जो उसे वहाँ मिलेगी।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ﴿٢٦﴾

(२६) नि:संदेह इसमें उस व्यक्ति के लिये शिक्षा है, जो डरे।[1]

ءَأَنتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ ۚ بَنَاهَا ﴿٢٧﴾

(२७) क्या तुम्हारा पैदा करना कठिन है अथवा आकाश का ?[2] अल्लाह तआला ने उसे बनाया।

رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوَّاهَا ﴿٢٨﴾

(२८) उसकी ऊँचाई बढ़ायी फिर उसे ठीक-ठाक कर दिया।[3]

وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ﴿٢٩﴾

(२९) तथा उसकी रात्रि को अंधकारमय तथा उसके दिन को निकाला।[4]

وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَٰلِكَ دَحَاهَا ﴿٣٠﴾

(३०) तथा उसके पश्चात धरती को (समतल) बिछा दिया।[5]

---

[1] इसमें नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिये सांत्वना है तथा मक्का के काफ़िरों को चेतावनी है कि यदि उन्होंने विगत लोगों की घटनाओं से शिक्षा ग्रहण न की तो उनका अंत फ़िरऔन के समान हो सकता है।

[2] यह काफ़िरों का सम्बोधन है। तथा उद्देश्य डाँट-फटकार है कि जो अल्लाह इतने विशाल आकाश तथा उसकी विचित्र वस्तुओं को पैदा कर सकता है उसे तुम्हें पुन: जीवित करना कौन सा कठिन है। क्या तुम्हें पुन: पैदा करना आकाश की रचना से अधिक कठिन है ?

[3] कुछ ने سَمْكٌ का अर्थ छत भी किया है। ठीक-ठाक करने का अभिप्राय उसे ऐसे आकार में ढालना है जिसमें कोई अंतर, फटन तथा दोष शेष न रहे।

[4] أَغْطَشَ का अर्थ है أَظْلَمَ, तथा أَخْرَجَ का अर्थ है أَبْرَزَ तथा نَهَارَهَا की जगह ضُحَاهَا इसलिए कहा कि दिन चढ़ जाने का समय सबसे अच्छा तथा उत्तम होता है। अभिप्राय है कि सूर्य के द्वारा प्रकाशित बनाया।

[5] यह *हामीम अससजदः* ९ में गुज़र चुका है कि خَلَقَ (पैदा करना) और चीज़ है तथा دَحَىٰ (समतल करना) अन्य विषय है। धरती की रचना आकाश से पहले हुई है। किन्तु इसको समतल आसमान की रचना के बाद किया गया है तथा यहाँ इसी वास्तविकता का वर्णन है तथा समतल करने एवं फैलाने का अभिप्राय धरती को रहने योग्य बनाने के लिये जिन चीज़ों की आवश्यकता है अल्लाह ने उनकी व्यवस्था की, जैसे धरती से जल

The Ummah Technology Mission

أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا ﴿٣١﴾

(३१) उसमें से पानी तथा चारा निकाला।

وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ﴿٣٢﴾

(३२) तथा पर्वतों को (सुदृढ़) रूप से गाड़ दिया।

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ﴿٣٣﴾

(३३) ये सब तुम्हारे तथा तुम्हारे जानवरों के लाभ के लिये (हैं)।

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَّةُ الْكُبْرَىٰ ﴿٣٤﴾

(३४) तो जब वह बड़ी विपत्ति (क़ियामत) आ जायेगी।

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ مَا سَعَىٰ ﴿٣٥﴾

(३५) जिस दिन कि मनुष्य अपने किये हुए कर्मों को याद करेगा।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِمَن يَرَىٰ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा (प्रत्येक) देखने वाले के समक्ष नरक प्रत्यक्ष कर दी जायेगी।[1]

فَأَمَّا مَن طَغَىٰ ﴿٣٧﴾

(३७) तो जिस (व्यक्ति) ने उद्दण्डता अपनायी (होगी)।[2]

وَآثَرَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾

(३८) तथा साँसारिक जीवन को वरीयता प्रदान की (होगी)।[3]

निकाला उसमें चारा तथा खाद्य पदार्थ पैदा किया। पर्वतों को कीलों के समान सुदृढ़ गाड़ दिया ताकि धरती न डोले जैसाकि यहाँ आगे भी यही वर्णन है।

[1]अर्थात काफ़िरों के समान कर दी जायेगी ताकि वह देख लें कि अब उनका स्थाई निवास स्थान यही नरक है। कुछ कहते हैं कि मोमिन तथा काफ़िर दोनों ही उसे देखेंगे। मोमिन उसे देखकर अल्लाह के कृतज्ञ होंगे कि उसने ईमान तथा पुण्य के कार्यों के कारण उन्हें उससे बचा लिया। तथा काफ़िर जो पहले ही भयभीत होंगे, उसे देखकर उनका शोक तथा पछतावा और बढ़ जायेगा।

[2]कुफ़्र (इंकार) तथा अवज्ञा में सीमा पार कर गया होगा।

[3]अर्थात संसार ही को सब कुछ समझा होगा तथा परलोक के लिये कोई तैयारी न की होगी।

The Ummah Technology Mission

فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ﴿٣٩﴾

(३९) (उसका) स्थान नरक ही है।[1]

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ ﴿٤٠﴾

(४०) परन्तु जो व्यक्ति अपने प्रभु के समक्ष खड़े होने से[2] डरता रहा होगा तथा अपने मन को इच्छाओं से रोका होगा।[3]

فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ﴿٤١﴾

(४१) तो उसका स्थान स्वर्ग ही है।[4]

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ﴿٤٢﴾

(४२) लोग आपसे क़यामत (प्रलय) स्थापित होने का समय पूछते हैं।[5]

فِيمَ أَنْتَ مِنْ ذِكْرَاهَا ﴿٤٣﴾

(४३) आपको उसके वर्णन करने से क्या सम्बन्ध ?[6]

إِلَىٰ رَبِّكَ مُنْتَهَاهَا ﴿٤٤﴾

(४४) उसके (ज्ञान का) अंत तो आपके प्रभु की ओर है।

إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَخْشَاهَا ﴿٤٥﴾

(४५) आप तो केवल उससे डरते रहने वालों को सावधान करने वाले हैं।[7]

---

[1]इसके सिवा उसका कोई ठिकाना नहीं होगा जहाँ वह उससे बचकर शरण ले

[2]कि यदि मैंने पाप तथा अल्लाह की अवज्ञा की तो मुझे अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा। इसलिए वह पापों से बचता रहा हो।

[3]अर्थात मन को उन पापों तथा निषेधों से रोकता रहा हो जिनकी ओर मन का झुकाव होता था।

[4]जहाँ वह रहेगा बल्कि अल्लाह का अतिथि होगा।

[5]अर्थात प्रलय कब घटित तथा स्थापित होगी ? जिस प्रकार नवका अपने स्थान पर पहुँच कर लंगर डाल देती है इसी प्रकार प्रलय के घटित होने का नियत समय क्या है ?

[6]अर्थात आप को इस का निश्चित ज्ञान नहीं है। इसलिये आप का उसे वर्णन करने से क्या सम्बन्ध ? उसका निश्चित ज्ञान तो केवल अल्लाह ही के पास है।

[7]अर्थात आप का काम केवल إِنْذَار (डराना) है, न कि परोक्ष की सूचनायें देना। जिसमें क़ियामत का ज्ञान है, जो अल्लाह नें किसी को नहीं दिया है। مَنْ يَخْشَاهَا इसलिए कहा कि

The Ummah Technology Mission

كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوٓا۟ إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَىٰهَا ﴿٤٦﴾

(४६) जिस दिन ये उसे देख लेंगे, तो ऐसा प्रतीत होगा कि केवल दिन का अन्तिम भाग अथवा प्रथम भाग ही (संसार में) रहे हैं।[1]

सूरतु अबस-८०

سُورَةُ عَبَسَ

सूरतु अबस मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें बयालिस आयतें तथा एक रूकुअ़ है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

عَبَسَ وَتَوَلَّىٰٓ ﴿١﴾

(१) उसने खट्टा मुँह बनाकर मुख मोड़ लिया।

أَن جَآءَهُ ٱلْأَعْمَىٰ ﴿٢﴾

(२) (केवल इसलिये) कि उसके पास एक नेत्रहीन आया।[2]

चेतावनी तथा धर्म के प्रचार से वास्तविक लाभ उसी को मिलता है जिनके दिलों में अल्लाह का डर होता है। अन्यथा डराने तथा संदेश पहुँचाने का आदेश तो प्रत्येक के लिये है।

[1] عَشِيَّةٌ ज़ोहर से लेकर सूर्यास्त तक तथा ضُحى सूर्योदय से दो पहर तक के लिये बोला जाता है। अर्थात जब काफ़िर नरक की यातना देखेंगे तो दुनियाँ का सुख-आनन्द तथा उनका स्वाद सब भूल जायेंगे तथा उन्हें ऐसा प्रतीत होगा वह दुनियाँ में पूरे एक दिन भी न रहे। दिन पूर्वाध अथवा परार्ध मात्र ही संसार में रहे हैं। अर्थात उन्हें सांसारिक जीवन इतना कम लगेगा।

[2] **सूरतु अबस** : इसके अवतरित होने के कारण में सभी भाष्यकार सहमत हैं कि यह अब्दुल्लाह पुत्र उम्मे मक़तूम के बारे में उतरी। एक बार नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* की सेवा में कुरैश के प्रमुख लोग उपस्थित बातें कर रहे थे कि अकस्मात इब्ने उम्मे मक़तूम जो अंधे थे उपस्थित हुए तथा नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* से धर्म की बातें पूछने लगे, नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* ने इसे बुरा माना तथा कुछ विमुखता वर्ती। इसलिए चेतावनी स्वरूप इन *आयतों* का अवतरण हुआ। (तिर्मिज़ी सूरतु *अबस*, सहहहहुल अलबानी)

The Ummah Technology Mission

وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهُ يَزَّكَّىٰ ﴿٣﴾

(३) तुझे क्या पता शायद वह सुधर जाता।[1]

أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنفَعَهُ الذِّكْرَىٰ ﴿٤﴾

(४) अथवा शिक्षायें सुनता तथा उसे शिक्षायें लाभ पहुँचाती।

أَمَّا مَنِ اسْتَغْنَىٰ ﴿٥﴾

(५) (परन्तु) जो लापरवाही करता है।[2]

فَأَنتَ لَهُ تَصَدَّىٰ ﴿٦﴾

(६) उसकी ओर तो तू पूर्ण ध्यान दे रहा है।[3]

وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزَّكَّىٰ ﴿٧﴾

(७) यद्यपि कि उसके न सुधरने से तेरी कोई हानि नहीं।[4]

وَأَمَّا مَن جَاءَكَ يَسْعَىٰ ﴿٨﴾

(८) तथा जो व्यक्ति तेरी ओर दौड़ता हुआ आता है।[5]

وَهُوَ يَخْشَىٰ ﴿٩﴾

(९) तथा वह डर (भी) रहा है।[6]

---

[1]इब्ने उम्मे मक़तूम के आगमन से नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) के चेहरे पर अप्रियता के लक्षण उभर गये इसे عَبَسَ से तथा विमुखता को تَوَلَّىٰ से व्यंजित किया।

[2]अर्थात वह नेत्रहीन तुझ से धार्मिक निर्देश प्राप्त करके सदाचार करता जिससे उसका स्वभाव तथा कर्म संवर जाता उसके अन्त: करण का सुधार होता तथा तेरा सदुपदेश सुनने से उसको लाभ होता।

[3]ईमान तथा उस ज्ञान से जो तेरी ओर अल्लाह के पास से आया है अथवा दूसरा अनुवाद है जो धनी तथा सम्पन्न है।

[4]आप को अधिक ध्यान दिलाया गया कि नि:स्वार्थियों को छोड़कर विमुख लोगों की ओर ध्यान देना सही बात नहीं है।

[5]क्योंकि तेरा काम तो मात्र संदेश पहुँचाना है। अत: इस प्रकार के काफ़िरों के पीछे पड़ने की आवश्यकता नहीं है।

[6]इस बात का इच्छुक बनकर कि तू उस भलाई का मार्ग दिखाये तथा उसे शिक्षा-दीक्षा से सम्मानित करे।

The Ummah Technology Mission

فَأَنتَ عَنْهُ تَلَهَّىٰ ﴿١٠﴾

(१०) तो तू उससे विमुखता बर्तता है।[1]

كَلَّا إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ﴿١١﴾

(११) यह उचित नही[2] (क़ुरआन तो) शिक्षा की (वस्तु) है।

فَمَن شَاءَ ذَكَرَهُ ﴿١٢﴾

(१२) जो चाहे उससे शिक्षा ले।[3]

فِي صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ﴿١٣﴾

(१३) यह तो सम्मानित पुस्तकों में है।[4]

مَّرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ﴿١٤﴾

(१४) जो उच्च, महान तथा पवित्र एवं शुद्ध है।[5]

بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ﴿١٥﴾

(१५) ऐसे लिखने वालों के हाथों में है।[6]

---

[1]अर्थात अल्लाह का भय भी उसके दिल में है। जिसके कारण यह आशा है कि तेरी बातें उसके लिए लाभ प्रद होंगी तथा वह उनको अपनायेगा एवं तदानुसार करेगा।

[2]अर्थात ऐसे लोगों का तो सम्मान बढ़ाने की आवश्यकता है न कि उनसे विमुखता बर्तने की इस आयत से यह बात विदित हुई कि आमंत्रण तथा धर्म के प्रचार में किसी को विशेष नहीं करना चाहिये। बल्कि धनी-निर्धन स्वामी-दास, नर-नारी, छोटे-बड़े को एक समान समझा जाये तथा सब को एक साथ सम्बोधित किया जाये। अल्लाह जिसे चाहेगा अपनी तत्वदर्शिता से संमार्ग से संम्मानित करेगा।

[3]अर्थात ग़रीब से यह विमुखता तथा धनवानों की ओर विशेष ध्यान यह उचित नहीं। अभिप्राय यह है कि भविष्य में फिर ऐसा न हो।

[4]अर्थात जो इसमें रूचि रखे तथा इससे शिक्षा ग्रहण करे इसे याद करे तथा इस की माँगों पर कार्यरत हो, तथा जो इस पर ध्यान न दे एवं विमुखता बर्ते। जैसे कुरैश के प्रमुखगण ने किया तो उनकी चिंता करने की ज़रूरत नही।

[5] अर्थात (*लौह महफ़ूज़*) में क्यों कि वहीं से यह क़ुरआन उतरता है। अथवा यह तात्पर्य है कि यह पत्रिकाऐं अल्लाह के यहाँ अति सम्मानित हैं। क्योंकि वह ज्ञान तथा तत्वदर्शिता से भरपूर हैं।

[6] مَرْفُوعَةٍ अल्लाह के यहाँ उच्चकोटि की हैं। अथवा संदेहों तथा परस्पर प्रतिरोध से उच्च हैं। مُطَهَّرَةٍ वह अत्यन्त शुद्ध हैं क्योंकि उन्हें पवित्र लोगों (फ़रिश्तों) के सिवा कोई स्पर्श ही नहीं करता है। अथवा न्यून्ता एवं अधिकता से पवित्र है।

The Ummah Technology Mission

كِرَامٍۭ بَرَرَةٍ ﴿١٦﴾

(१६) जो उच्चकोटि के पवित्र हैं।

قُتِلَ الْإِنسَانُ مَا أَكْفَرَهُۥ ﴿١٧﴾

(१७) अल्लाह की मार इंसान भी कितना कृतघ्न है।[1]

مِنْ أَىِّ شَىْءٍ خَلَقَهُۥ ﴿١٨﴾

(१८) उसे किस वस्तु से पैदा किया।

مِن نُّطْفَةٍ خَلَقَهُۥ فَقَدَّرَهُۥ ﴿١٩﴾

(१९) एक वीर्य से पैदा किया।[2] फिर उसको अंदाजा पर रखा।[3]

ثُمَّ ٱلسَّبِيلَ يَسَّرَهُۥ ﴿٢٠﴾

(२०) फिर उसके लिये मार्ग सरल किया।[4]

ثُمَّ أَمَاتَهُۥ فَأَقْبَرَهُۥ ﴿٢١﴾

(२१) फिर उसे मौत दी फिर क़ब्र में गाड़ दिया।[5]

ثُمَّ إِذَا شَآءَ أَنشَرَهُۥ ﴿٢٢﴾

(२२) फिर जब चाहेगा उसे जीवन प्रदान करेगा।

---

[1]इससे वह इंसान अभिप्रेत है जो बिना तर्क तथा प्रमाण के प्रलय का इंकार करते हैं قُتِلَ का अर्थ لُعِنَ तथा مَآ أَكْفَرَهُۥ आश्चर्य वाची रूप है कितना कृतघ्न है। आगे इस कृतघ्न इंसान को चिन्तन-विचार का आमन्त्रण दिया जा रहा है ताकि संभवत: वह अपने कुफ्र से रुक जाये।

[2]अर्थात जिसकी उत्पत्ति ऐसी तुच्छ पानी की बूंद से हुई है। क्या उसे घमंड शोभा देता है।

[3]इसका अभिप्राय यह है कि उसकी हितकारी वस्तुऐं उसे सुलभ कीं जैसे दो हाथ दो पैर तथा दो आँखें तथा अन्य अंग एवं संवेदन पत्र प्रदान किये।

[4]अर्थात अच्छाई-बुराई के मार्ग इसके लिये स्पष्ट कर दिये। कुछ कहते हैं कि कि इस से अभिप्राय माँ के गर्भाशय से निकलने का मार्ग है। किन्तु प्रथम भावार्थ अधिक उचित है।

[5]अर्थात मौत के बाद उसे क़ब्रों में गाड़ने का आदेश दिया ताकि उसका सम्मान स्थित रह जाये अन्यथा जन्तु एवं पखेरू उसका शव नोच-नोच कर खाते जिससे उसका अपमान होता।

The Ummah Technology Mission

كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ أَمَرَهُۥ ﴿٢٣﴾

(२३) कदापि नहीं[1], उसने अब तक अल्लाह की आज्ञा का पालन नहीं किया।

فَلْيَنظُرِ ٱلْإِنسَٰنُ إِلَىٰ طَعَامِهِۦٓ ﴿٢٤﴾

(२४) इन्सान को चहिए कि अपने आहार की ओर देख ले।[2]

أَنَّا صَبَبْنَا ٱلْمَآءَ صَبًّا ﴿٢٥﴾

(२५) कि हमने ख़ूब पानी बरसाया।

ثُمَّ شَقَقْنَا ٱلْأَرْضَ شَقًّا ﴿٢٦﴾

(२६) फिर धरती को भली प्रकार फाड़ा

فَأَنۢبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ﴿٢٧﴾

(२७-२८) फिर उसमें अन्न उपजाये तथा अंगूर एवं तरकारी

وَعِنَبًا وَقَضْبًا ﴿٢٨﴾

وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ﴿٢٩﴾

(२९) तथा ज़ैतून एवं खजूर

وَحَدَآئِقَ غُلْبًا ﴿٣٠﴾

(३०) तथा घने बाग़

وَفَٰكِهَةً وَأَبًّا ﴿٣١﴾

(३१) तथा शुष्क फल एवं (घास) चारा[3] भी

مَّتَٰعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَٰمِكُمْ ﴿٣٢﴾

(३२) तुम्हारे प्रयोग तथा लाभ के लिये तथा तुम्हारे चौपाये के लिये

فَإِذَا جَآءَتِ ٱلصَّآخَّةُ ﴿٣٣﴾

(३३) फिर जब कान बहरे करने वाली (प्रलय)[4] आ जायेगी

يَوْمَ يَفِرُّ ٱلْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ﴿٣٤﴾

(३४) तो आदमी उस दिन अपने भाई से

وَأُمِّهِۦ وَأَبِيهِ ﴿٣٥﴾

(३५) अपनी माँ तथा बाप से

---

[1]अर्थात बात ऐसी नहीं जैसे काफ़िर कहता है।

[2]कि उसे अल्लाह ने कैसे पैदा किया, जो उसके जीवन का कारण है तथा किस प्रकार उसके लिये जीवन हेतु उपलब्ध किये ताकि वह उनके द्वारा परलोक का सौभाग्य प्राप्त कर सके।

[3] أَبّ वह घास चारा जो स्वयं उगता है जिसे पशु खाते हैं।

[4]क़ियामत (प्रलय) को صَاخَّةٌ बहरा करने वाली इसलिये कहा कि वह एक अत्यन्त चीख के साथ घटित होगी। जो कानों को बहरा कर देगी।

The Ummah Technology Mission

وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيْهِ ﴿٣٦﴾

(३६) अपनी पत्नी तथा संतान से भागेगा

لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ ﴿٣٧﴾

(३७) उनमें से प्रत्येक को उस दिन एक ऐसी प्रवृत्ति होगी जो उसे (प्रवृत्त रखने को) काफी होगी।[1]

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾

(३८) बहुत से चेहरे उस दिन प्रकाशमान होंगे।[2]

ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾

(३९) (जो) हँसते हुए प्रसन्न होंगे।

وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾

(४०) तथा बहुत से चेहरे उस दिन धूल मे अटे होंगे।

تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾

(४१) उन पर कलिमा चढ़ी होगी।[3]

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾

(४२) वे यही काफ़िर दुराचारी लोग होंगे।[4]

---

[1]अथवा अपने समीपवर्ती सम्बन्धियों तथा मित्रों से निस्पृह तथा बेपरवाह कर देगा। हदीस में आता है कि नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) ने फरमाया : कि सब लोग *हश्र* के मैदान में नंगे शरीर नंगे पावों पैदल तथा बिना ख़तना के होंगे। हज़रत आईशा ने प्रश्न किया, इस प्रकार गुप्तांगों पर निगाह नहीं पड़ेगी। आपने इसके उत्तर में यही *आयत* पढ़ी अर्थात ﴿لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ﴾ संक्षिप्त आयत (तिर्मिज़ी तफ़सीर *सूरते अबस*, नसाई किताबुल जनायज़, बाबुल बास) इसका कारण कुछ के विचार से यह है कि इंसान अपने घरों से इसलिये भागेगा ताकि वह उसका वह दुख था कष्ट न देखें जिस में वह ग्रस्त होगा। कुछ कहते हैं इसलिये कि उन्हें ज्ञान होगा कि वह किसी को लाभ नहीं पहुँचा सकते तथा उनके कुछ काम नहीं आ सकते (फ़तहुल क़दीर)

[2]यह ईमान वालों के चेहरे होंगे जिनको उनके कर्मपत्र उनके दायें हाथ में मिलेंगे। जिससे उन्हें अपने परलौकिक सौभाग्य तथा सफलता का विश्वास हो जायेगा जिससे उनके चेहरे प्रफुल्लता से दमक रहे होंगे।

[3]अर्थात अपमान तथा यातना के अवलोकन से उनके चेहरे धुमिल-मैले पीले तथा काले होंगे जैसे शोक ग्रस्त तथा चिन्तित लोगों का चेहरा होता है।

[4]अर्थात अल्लाह का, रसूलों का, क़ियामत का इंकार करने वाले थे, तथा दुराचारी, बदलचन भी।

The Ummah Technology Mission

सूरतुत तकवीर-८१

سُوْرَةُ التَّكْوِيْرِ

सूरतुत तकवीर मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें उन्तीस आयतें हैं।

अल्लाह के नाम प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(१) जब सूर्य लपेट लिया जायेगा।[1]

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ①

(२) तथा जब सितारे बिना प्रकाश के हो जायेंगे।[2]

وَإِذَا النُّجُومُ انكَدَرَتْ ②

(३) तथा जब पर्वत चलाये जायेंगे।[3]

وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ③

(४) तथा जब गर्भवती उँटनियाँ छोड़ दी जायेंगी।[4]

وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ④

सूरतुत तकवीर : इस सूरह में विशेष रूप से क़ियामत का चित्रण किया गया है। इसीलिये रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* का कथन है कि जो व्यक्ति चाहे कि क़ियामत को इस प्रकार देखे जैसे आँखों से देखा जाता है तो उसे चाहिए कि वह ﴿إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ﴾ तथा ﴿إِذَا السَّمَاءُ انفَطَرَتْ﴾ ध्यान से पढ़े (तिर्मिज़ी तफ़सीर *सूरतित तकवीर*, मुसनद अहमद २\२७,३६, १०० जकरहुल अलबानी फिस सहीह: न॰ १०८१ भाग-३)

[1] अर्थात जिस प्रकार सिर पर पगड़ी लपेटी जाती है। उसी प्रकार सूर्य को लपेट दिया जायेगा। जिसके कारण उसका प्रकाश स्वयं समाप्त हो जायेगा। हदीस में है «الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ مُكَوَّرَانِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ». (सहीह बुख़ारी बदउल ख़ल्क़) "प्रलय के दिन चाँद तथा सूर्य लपेट दिये जायेंगे" कुछ हदीस से लगता है कि उनको लपेट कर नरक में फेंक दिया जायेगा ताकि जो मिश्रण वादी उनकी पूजा करते थे अधिक निरादर तथा अपमानित हों (फ़तहुल बारी, उपरोक्त बाब)

[2] दूसरा अनुवाद है झड़कर गिर जायेंगे अर्थात आकाश पर उनका अस्तित्व ही नहीं रहेगा।

[3] अर्थात उन्हें धरती से उखाडकर अन्तरिक्ष में चला दिया जायेगा तथा वह धुनी हुई रूई के समान उड़ेंगे।

[4] عِشَارٌ बहुवचन है عُشَرَاءُ का गर्भवती अर्थात गाभिन ऊँटनियाँ जब उनका गर्भ दस महीनों का हो जाता है तो अरबों में यह अतिप्रय एवं मूल्यवान मानी जाती थीं। जब

The Ummah Technology Mission

وَاِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ ۝٥

(५) तथा जब वन प्राणी एकत्रित किये जायेंगे।[1]

وَاِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝٦

(६) तथा जब समुद्र भड़काये जायेंगे।[2]

وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ۝٧

(७) तथा जब प्राणें मिला दी जायेंगी।[3]

وَاِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُئِلَتْ ۝٨

(८) तथा जब जीवित गाड़ी गयी लड़कियों से प्रश्न किया जायेगा।

بِاَیِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ ۝٩

(९) कि किस पाप के कारण उनकी हत्या की गयी।[4]

وَاِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝١٠

(१०) तथा जब कर्मपत्र खोल दिये जायेंगे।[5]

وَاِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ ۝١١

(११) तथा जब आकाश की खाल खींच ली जायेगी।[6]

وَاِذَا الْجَحِيْمُ سُعِّرَتْ ۝١٢

(१२) तथा जब नरक भड़कायी जायेगी।

प्रलय व्याप्त होगी तो ऐसा भयावह दृश्य होगा कि यदि किसी के पास इस प्रकार की मूल्यवान ऊँटनियाँ होंगी तो उन्हें भी छोड़ देगा तथा उनकी परवाह नहीं करेगा।

[1]अर्थात उन्हें प्रलय के दिन एकत्रित किया जायेगा।

[2]अर्थात अल्लाह की आज्ञा से आग भड़क उठेगी।

[3]इसके कई भावार्थ किये गये हैं अधिक उचित यह लगता है कि प्रत्येक व्यक्ति को उसके सहमत तथा सहधर्मी के साथ मिला दिया जायेगा। ईमान वालों को ईमान वालों के साथ, बुरों को बुरों के साथ, यहूदियों को यहूदियों के साथ, ईसाइयों को ईसाइयों के साथ। तथा इसी अनुसार।

[4]इस तरह हत्यारे को धिक्कारा जायेगा, क्योंकि वास्तव में अपराधी तो वही होगा। न कि مَوْءُوْدَة (जीवित समाधि दी गई कन्या) जिस से प्रत्यक्ष रूप से प्रश्न किया जायेगा।

[5]मौत के समय यह कर्म पत्र लपेट दिये जाते हैं। फिर प्रलय के दिन हिसाब के लिये खोल दिये जायेंगे। जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति देख लेगा बल्कि हाथों में पकड़वा दिये जायेंगे।

[6]अर्थात वह इस प्रकार उधेड़ दिये जायेंगे जैसे छत उधेड़ दी जाती है।

The Imran Technology Mission

وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾

(१३) तथा जब स्वर्ग निकट कर दिया जायेगा।

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾

(१४) तो उस दिन प्रत्येक व्यक्ति यह जान लेगा, जो कुछ लेकर आया होगा।[1]

فَلَا أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ﴿١٥﴾

(१५) मैं सौगन्ध खाता हूँ पीछे हटने वाले।

الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٦﴾

(१६) चलने-फिरने वाले छिपने वाले सितारों की।[2]

وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ﴿١٧﴾

(१७) तथा रात्रि की जब जाने लगे।[3]

وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾

(१८) तथा प्रात: की जब चमकने लगे।[4]

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿١٩﴾

(१९) नि:संदेह यह एक महान सन्देष्टा का कथन है।[5]

---

[1]यह उत्तर है अर्थात जब उपरोक्त विषय प्रकाश में आ जायेंगे जिनमें से प्रथम छ: का सम्बन्ध संसार से है तथा दूसरे छ: का परलोक से उस समय प्रत्येक के आगे इसकी वास्तविकता आ जायेगी।

[2]इससे अभिप्राय सितारे हैं خُنَّس यह خَنَسَ से है। जिसका अर्थ पीछे हटना है यह सितारे दिन के समय अपने दर्शन से पीछे हट जाते हैं, तथा दिखाई नहीं देते। तथा यह शनिग्रह, वृहस्पति, मंगलग्रह, शुक्रग्रह, बुधग्रह है यद विशेष रूप से सूर्य की दिशा में होते हैं। कुछ कहते हैं कि सभी ग्रहें अभिप्राय हैं। क्योंकि सब अपने छिपने के स्थान पर छिप जाते हैं अथवा दिन में छुपे रहते हैं। الجَوَارِ चलने वाले, الكُنَّس छिप जाने वाले, जैसे हिरन अपने स्थान में छिप जाता है।

[3] عَسْعَسَ का दोनों अर्थ है आना तथा जाना। यह इन दोनों ही अर्थों में प्रयुक्त होता है। फिर भी यहाँ जाने के अर्थ में है।

[4]अर्थात उसका उदय हो जाये अथवा वह फट तथा निकल आये।

[5]इसलिये कि वह अल्लाह की ओर से लेकर आया है। तात्पर्य माननीय जिब्रील हैं।

The Ummah Technology Mission

ذِىْ قُوَّةٍ عِنْدَ ذِى الْعَرْشِ مَكِيْنٍ ﴿٢٠﴾

(२०) जो शक्तिशाली है[1] अर्श वाले (अल्लाह) के निकट सम्मानित है।

مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِيْنٍ ﴿٢١﴾

(२१) जिसका वहाँ (आकाशों पर आज्ञा का) पालन किया जाता है (वह) न्यासिक है।[2]

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा तुम्हारा साथी दीवाना नहीं है।[3]

وَلَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ ﴿٢٣﴾

(२३) उसने उस (फ़रिश्ते) को आकाश के खुले किनारे पर देखा भी है।[4]

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा यह परोक्ष की बातें बतानें में कंजूस भी नहीं हैं।[5]

---

[1]अर्थात जो काम उसको सौंपा जाये पूरी शक्ति से करता है।

[2]अर्थात फ़रिश्तों के बीच उसकी आज्ञा का पालन किया जाता है वह फ़रिश्तों का परिश्रय तथा अनुसरणीय है तथा प्रकाशना के संदर्भ में न्यासिक है।

[3]यह सम्बोधन मक्कावासियों को है तथा साथी से अभिप्राय रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* हैं अर्थात जो तुम सोंचते हो कि तुम्हारा सगोत्र सम देशी एवं साथी मोहम्मद *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* نَعُوذُ بِاللهِ दीवाना हैं तो ऐसा नहीं, तनिक क़ुरआन पढ़कर तो देखो क्या कोई पागल ऐसे ज्ञान तथा यर्थाथता का वर्णन कर सकता है तथा विगत समुदायों की सही-सही स्थिति बता सकता है जो इस क़ुरआन में वर्णित किये गये हैं।

[4]यह पहले गुज़र चुका है कि रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* ने माननीय जिब्रील को दो बार उनके मूल रूप में देखा है। जिनमें से एक की चर्चा यहाँ है। यह नबूअत के आरम्भिक समय की घटना है। उस समय जिबरील के छः सौ पर थे, जिन्होंने आकाश के किनारो (क्षितिज) को भर दिया दूसरी बार 'मेअराज' के अवसर पर देखा। जैसाकि *सूरतुन नज्म* में विवरण गुज़र चुका।

[5]यह नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* के संदर्भ में स्पष्ट किया जा रहा है कि आप को जिन बातों की सूचना दी जाती है। जो आज्ञा तथा कर्तब्य आप को बतलाये जाते हैं इनमें से कोई बात आप अपने पास नहीं रखते, अपितु संदेश पहुँचाने के दायित्व का संवेदन करते हुए प्रत्येक बात तथा आदेश लोगों को पहुँचा देते हैं।

The Ummah Technology Mission

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा यह (क़ुरआन) धिक्कृत शैतान का कथन नहीं।[1]

فَاَيْنَ تَذْهَبُوْنَ ﴿٢٦﴾

(२६) फिर तुम कहाँ जा रहे हो।[2]

اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٧﴾

(२७) यह तो समस्त जगत वालों के लिए शिक्षापत्र है।

لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّسْتَقِيْمَ ﴿٢٨﴾

(२८) (विशेषरूप से उसके लिये,) जो तुममें से सीधे मार्ग पर चलना चाहे।

وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٩﴾

(२९) तथा तुम बिना समस्त जगत के प्रभु के चाहे कुछ नहीं चाह सकते।[3]

سُوْرَةُ الْاِنْفِطَارِ

सूरतुल इंफ़ितार-८२

सूरतुल इंफितार मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें उन्नीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ﴿١﴾

(१) जब आकाश फट जायेगा।[4]

وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ﴿٢﴾

(२) तथा जब सितारे झड़ जायेंगे।

---

[1]जिस प्रकार ज्योतिषयों के पास शैतान आते हैं तथा कुछ चोरी छिपे बातें अधूरे रूप में उन्हें बतला देते हैं क़ुरआन ऐसा नहीं है।

[2]अर्थात क्यों इससे विमुख होते हो ? तथा उसकी आज्ञा का पालन नहीं करते ?

[3]अर्थात तुम्हारी चाहत अल्लाह की दया पर निर्भर है जब तक तुम्हारी चाहत के साथ अल्लाह की इच्छा तथा दया भी सम्मिलित न हो उस समय तक तुम सीधा मार्ग नहीं अपना सकते। यह वही विषय है जो *आयत* ﴿إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ﴾ आदि में बयान हुआ है।

[4]***सूरतुल इंफितार :*** अर्थात अल्लाह की आज्ञा तथा भय से फट जायेगा तथा फ़रिश्ते नीचे उतर आयेंगे।

The Ummah Technology Mission

وَاِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۝٣

(३) तथा जब समुद्र बह चलेंगे।[1]

وَاِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ۝٤

(४) तथा जब क़ब्रें (फाड़कर) उखाड़ दी जायेंगी।[2]

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَاَخَّرَتْ ۝٥

(५) उस समय प्रत्येक व्यक्ति अपने आग भेजे हुए तथा पीछे छोड़े हुए (अर्थात अगले-पिछले कर्मों को) जान लेगा।[3]

يٰٓاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ۝٦

(६) हे मनुष्य ! तुझे अपने दयालु प्रभु से किस वस्तु ने बहकाया।[4]

الَّذِيْ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ۝٧

(७) जिस (प्रभु ने) तुझे पैदा किया[5] फिर

---

[1]तथा सब का जल एक ही समुद्र में एकत्रित हो जायेगा फिर अल्लाह पश्चिमी वायु को भेजेगा। जो इसमें आग भड़का देगी। जिससे आकाश तक विस्फोटक शोले उठेंगे।

[2]अर्थात समाधियों में से मुर्दे जीवित होकर बाहर निकल आयेंगे بُعْثِرت उखेड़ दी जायेंगी अथवा उनकी मिट्टी पलट दी जायेगी।

[3]अर्थात जब उपरोक्त बातें घटित होंगी तो इंसान को अपने तमाम किये धरे का ज्ञान हो जायेगा। जो भी सत्कर्म अथवा कुकर्म उसने किया होगा वह आगे आ जायेगा पीछे छोड़े हुए कर्म से अभिप्राय अपने पीछे अपने कर्म तथा करतूत के अच्छे अथवा बुरे नमूने हैं। जो दुनियाँ में वह छोड़ आया। तथा लोग उस पर कार्यरत हैं। यह नमूने यदि अच्छे हैं तो उसके मरने के पश्चात जो भी उनके नमूने पर काम करेंगे। वह पुण्य उसे मिलता रहेगा। तथा यदि बुरे नमूने अपने पीछे छोड़ गया है तो जो भी उसे अपनायेगा उनका पाप भी उसे पहुँचता रहेगा। जिस के प्रयासोंसे वह बुरी नीति अथवा कार्य प्रचलित हुआ है।

[4]अर्थात किस चीज़ ने तुझे धोखे में डाल दिया कि तूने अपने प्रभु के साथ कुफ़्र किया जिसने तुझे अस्तित्व प्रदान किया, तुझे समझ बूझ दी तथा जीवन हेतु तेरे लिए तैयार किये।

[5]अर्थात तुच्छ वीर्य से जबकि उससे पहले तेरा अस्तित्व नहीं था।

The Ummah Technology Mission

ठीक-ठाक किया[1] फिर (उचित रूप से) बराबर बनाया।[2]

فِيٓ أَيِّ صُورَةٖ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ۝٨

(८) जिस रूप में चाहा तुझे बना दिया तथा तुझे ढाला।[3]

كَلَّا بَلۡ تُكَذِّبُونَ بِٱلدِّينِ ۝٩

(९) कदापि नहीं, अपितु तुम तो दण्ड तथा बदले के दिन को झुठलाते हो।[4]

وَإِنَّ عَلَيۡكُمۡ لَحَٰفِظِينَ ۝١٠

(१०) नि:संदेह तुम पर रक्षक उच्चकोटि के

كِرَامٗا كَٰتِبِينَ ۝١١

(११) लिखने वाले निर्धारित (नियुक्त) हैं।

يَعۡلَمُونَ مَا تَفۡعَلُونَ ۝١٢

(१२) जो कुछ तुम करते हो वे जानते हैं।[5]

---

[1]अर्थात तुझे पूरा इंसान बना दिया। तू देखता है सुनता है समझ बूझ रखता है।

[2]तुझे संतुलित, खड़ा तथा सुन्दर बनाया अथवा तेरे दोनों हाथों तथा पैरों एवं आँखों, कानों को बराबर बनाया। यदि तेरे अंगों में यह समानता एवं अनुकूलता न होती तो तेरा अस्तित्व बेढंगा होता। इसी रचना को अन्य स्थान पर أَحۡسَنِ تَقۡوِيمٖ से व्यंजित किया है।

﴿لَقَدۡ خَلَقۡنَا ٱلۡإِنسَٰنَ فِيٓ أَحۡسَنِ تَقۡوِيمٖ﴾

[3]इसका एक भावार्थ तो यह है अल्लाह बच्चे को जिस समान चाहे कर दे। बाप के, माँ के अथवा मामू व चचा के। दूसरा अर्थ है वह जिस रूप में चाहे ढाल दे यहाँ तक की कुरूप जन्तु के समरूप भी पैदा कर सकता है। किन्तु यह उसका अनुग्रह तथा दया एवं कृपा है कि वह ऐसा नहीं करता तथा उत्तम मानवी रूप में ही पैदा करता है।

[4] كلا यह حقاً के अर्थ में भी हो सकता है। तथा काफिरों के उस आचरण का इंकार भी जो अल्लाह की दया तथा कृपा से धोके में लीन होने पर आधारित है। अर्थात इस अभिमान में ग्रस्त रहने का कोई औचित्य नहीं बल्कि मूल विषय यह है कि तुम्हारे दिलों में इस बात पर विश्वास नहीं है कि प्रलय होगी तथा वहाँ अच्छाई, बुराई का प्रतिकार (बदला) मिलेगा।

[5]अर्थात तुम प्रतिफल तथा दण्ड का इंकार करते हो किन्तु तुम्हें पता होना चाहिए कि तुम्हारा प्रत्येक कर्म तथा कथन अंकित किया जा रहा है। अल्लाह की ओर से फ़रिश्ते तुम पर निरीक्षक के रूप में नियुक्त हैं जो तुम्हारी प्रत्येक उस बात को जानते हैं जो

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿١٣﴾

(१३) नि:संदेह सदाचारी लोग (स्वर्ग के सुख-सुविधाओं तथा) उपलब्धियों से लाभान्वित होंगे।

وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ﴿١٤﴾

(१४) तथा निश्चित रूप से कुकर्मी लोग नरक में होंगे।[1]

يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٥﴾

(१५) बदले वाले दिन उसमें जायेंगे।[2]

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ﴿١٦﴾

(१६) वे उसमें से कभी ग़ायब न हो पायेंगे।[3]

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿١٧﴾

(१७) तुझे कुछ पता भी है कि बदले का दिन क्या है ?

तुम करते हो मानो यह इंसान को चेतावनी है कि प्रत्येक कर्म तथा कथन से पहले तुम विचार कर लो। यह वही बात है जो पहले गुज़र चुकी है जैसे

﴿ إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ * مَا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ﴾

अर्थात एक फ़रिश्ता दायें तथा दूसरा उसके बायें बैठा हुआ है। मनुष्य जो बोलता है उसके पास निरीक्षक तैयार तथा उपस्थित है। (सूरत काफ़-१७,१८) अर्थात लिखने के लिए। कहते हैं कि एक फ़रिश्ता नेकी तथा दूसरा बुराई लिखता है। तथा हदीसों एवं रिवायतों से विदित होता है कि दिन के दो फ़रिश्ते अलग तथा रात के दो फ़रिश्ते अलग हैं। आगे अच्छों तथा बुरों दोनों की चर्चा की जा रही है।

[1]जैसे (अशशूरा-७) में फ़रमाया :

﴿ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ﴾

[2]अर्थात जिस पुण्य तथा दण्ड के दिन का वह इंकार कर रहे थे उसी नरक में अपने कर्मों के बदले प्रविष्ट होंगे।

[3]अर्थात कभी उससे विलग नहीं होंगे तथा उससे अनुपस्थित न होंगे बल्कि सदा उसी में रहेंगे।

The Ummah Technology Mission

ثُمَّ مَآ أَدۡرَىٰكَ مَا يَوۡمُ ٱلدِّينِ ١٨

(१८) मैं पुन: (कहता हूँ कि) तुझे क्या पता कि बदले (तथा दण्ड) का दिन क्या है।[1]

يَوۡمَ لَا تَمۡلِكُ نَفۡسٞ لِّنَفۡسٖ شَيۡـٔٗاۖ وَٱلۡأَمۡرُ يَوۡمَئِذٖ لِّلَّهِ ١٩

(१९) (वह है) जिस दिन कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के लिये किसी वस्तु का अधिकारी न होगा, तथा समस्त आदेश उस दिन अल्लाह के ही होंगे।[2]

सूरतुल मुतफ़्फ़ेफ़ीन-८३

سُورَةُ ٱلۡمُطَفِّفِينَ

सूरतुल मुतफ़्फ़ेफ़ीन मक्का मे अवतरित हुई तथा इसमें छत्तीस आयतें हैं।

---

[1]पुनरावृत्ति उसकी महानता तथा उस दिन की भयानकता को स्पष्ट करने के लिये है।

[2]अर्थात संसार में तो अल्लाह ने सामयिक रूप से इंसानों को कुछ कम तथा अधिक अधिकार के अंतर के साथ रखा है। किन्तु प्रलय के दिन सभी अधिकार पूर्णत: अल्लाह के पास होंगे। जैसे (सूरतुल *मोमिन*-१६) में फ़रमाया :

﴿لِّمَنِ ٱلۡمُلۡكُ ٱلۡيَوۡمَۖ لِلَّهِ ٱلۡوَٰحِدِ ٱلۡقَهَّارِ﴾

इसी प्रकार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपनी फूफी सफिया तथा पुत्री फ़ातिमा को कह दिया था।

«لَا أَمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللهِ شَيْئًا»

(सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान)

तथा वनू हाशिम एवं बनू अब्दुल मुत्तलिब को भी फ़रमा दिया।

«أَنْقِذُوا أَنْفُسَكُم مِنَ النَّارِ وَاللهِ لَا أَمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللهِ شَيْئًا»

(मुस्लिम उपरोक्त किताब, बुख़ारी, सूरतुश शुअरा)

सूरतुल मुतफ़्फ़ेफ़ीन : कुछ लोग इसे मक्की तथा कुछ मदनी क़रार देते हैं कुछ के विचार से मक्का तथा मदीना के बीच अवतरित हुई। इसके अवतरण के विषय में यह रिवायत है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मदीने में आये तो मदीना के लोग नाप-तौल में अति बुरे लोग थे अत: अल्लाह ने यह सूरत उतारा, जिसके बाद उन्होंने अपनी नाप-तौल सुधार ली (इब्ने माजा सर्ग व्यापार, नाप तथा तौल में पूरा देने का अध्याय)

The Ummah Technology Mission

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु तथा अत्यन्त कृपालु है।

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ①

(१) बड़ी बुराई है नाप-तौल में कमी करने वालों के लिये।

الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ②

(२) कि जब लोगों से नाप कर लेते हैं, तो पूरा-पूरा लेते हैं।

وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ③

(३) तथा जब उन्हें नाप कर अथवा तौल कर देते हैं, तो कम देते हैं।[1]

اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ④

(४) क्या उन्हें अपने मरने के पश्चात जीवित हो उठने का विश्वास नहीं है।

لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ⑤

(५) उस बड़े भारी दिन के लिए।

يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ⑥

(६) जिस दिन सभी लोग समस्त जगत के प्रभु के समक्ष खड़े होंगे।[2]

---

[1]अर्थात लेन तथा देन के अलग-अलग नाप रखना। इस प्रकार डाँडी मार कर नाप तथा तौल में कमी करना बहुत गंभीर नैतिक अपराध है। जिसका प्रभाव धर्म तथा परलोक में विनाश है। एक हदीस में है "जो समुदाय नाप-तौल में कमी करता है उस पर अकाल कड़ा परिश्रम तथा शासकों का अत्याचार आच्छादित कर दिया जाता है।" (इब्ने माजा न॰ ४०१९ इसे अलबानी ने असंसहीह: में वर्णन किया है न॰ १०६)

[2]यह डंडी मार इस बात से नहीं डरते कि एक बड़ा भयानक दिन आने को है जिस में सभी लोग सर्वलोक के पालनहार के आगे खड़े होंगे जो सभी छिप्त बातों से अवगत है। अथवा अभिप्राय यह है कि यह काम वही लोग करते हैं जिन के दिलों में अल्लाह का भय तथा प्रलय का डर नहीं है। हदीसों में आता है कि जिस समय अल्लाह त्रिलोक के प्रभु के आगे खड़े होंगे तो पसीना इंसानों के आधे कानों तक पहुँचा होगा। (बुखारी व्याख्या *सूरतुल मुतफ़्फ़ेफ़ीन*) एक अन्य रिवायत में है कि प्रलय के दिन सूर्य सृष्टि के इतने निकट होगा कि एक मील की मात्रा से भी कम दूरी होगी। (हदीस के रावी श्री सुलैम कहते हैं कि मील से धरती नापने का मील लिया है अथवा वह सलाई जिससे आँखों में सुरमा डाला जाता है अत: लोग अपने कर्मों के अनुसार पसीने में होंगे यह पसीना किसी की घुट्टियों तक किसी के घुटने तक किसी की कमर तक होगा तथा किसी के लिये यह

The Ummah Technology Mission

كَلَّآ إِنَّ كِتَٰبَ ٱلْفُجَّارِ لَفِى سِجِّينٍ ۝٧

(७) नि:संदेह कुकर्मियों का कर्म पत्र सिज्जीन में है।[1]

وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا سِجِّينٌ ۝٨

(८) तुझे क्या पता कि सिज्जीन क्या है ?

كِتَٰبٌ مَّرْقُومٌ ۝٩

(९) (यह तो) लिखी हुई किताब है।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝١٠

(१०) उस दिन झुठलाने वालों की बड़ी दुर्गति है।

ٱلَّذِينَ يُكَذِّبُونَ بِيَوْمِ ٱلدِّينِ ۝١١

(११) जो बदले एवं दण्ड के दिन को झुठलाते रहे।

وَمَا يُكَذِّبُ بِهِۦٓ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ۝١٢

(१२) उसे केवल वही झुठलाता है, जो सीमा उल्लंघन कर जाने वाला तथा पापी होता है।

إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ءَايَٰتُنَا قَالَ أَسَٰطِيرُ ٱلْأَوَّلِينَ ۝١٣

(१३) जब उसके समक्ष हमारी आयतों का पाठ होता है, तो कह देता है कि यह पूर्वकालिक लोगों की कथायें हैं।[2]

كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا۟

(१४) यह नहीं[3] ! अपितु उनके दिलों पर उनके

लगाम बना हुआ होगा अर्थात उसके मुँह तक होगा (सहीह मुस्लिम प्रलय तथा स्वर्ग का विशेषण, प्रलय के दिन की विशेषता का अध्याय)

[1] سِجِّين सिज्जीन कुछ कहते हैं कि سِجْنٌ (कारागार) से है अर्थात जेल के समान एक तंग स्थान है। कुछ कहते हैं कि यह पाताल में एक स्थान है। जहाँ काफ़िरों बहुदेव वादियों तथा अत्याचारियों की आत्मायें तथा उनके 'कर्म पत्र एकत्रित तथा सुरक्षित होते हैं। इसलिए आगे उसे लिखित पुस्तक कहा है।

[2] अर्थात उसके पापों में तत्परता तथा सीमा का उल्लंघन इतना बढ़ गया है कि अल्लाह की आयतें सुनकर उस पर मनन-चिंतन की जगह उन्हें अगलों की कहानियाँ बतलाता है।

[3] अर्थात यह क़ुरआन कहानियाँ नहीं जैसाकि काफ़िर कहते तथा समझते हैं अपितु अल्लाह की वाणी तथा उसकी प्रकाशना है जो उसके रसूल पर जिब्रील अमीन द्वारा अवतरित हुई है।

The Ummah Technology Mission

يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾

कर्म के कारण मोरचा चढ़ गया है।[1]

كَلَّآ إِنَّهُمْ عَن رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوبُونَ ﴿١٥﴾

(१५) यही नहीं, ये लोग उस दिन अपने प्रभु के दर्शन से भी वंचित रहेंगे।[2]

ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيمِ ﴿١٦﴾

(१६) फिर ये लोग निश्चित रूप से नरक में झोंक दिये जायेंगे।

ثُمَّ يُقَالُ هَٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿١٧﴾

(१७) फिर कह दिया जायेगा यही है वह जिसे तुम झुठलाते रहे।

كَلَّآ إِنَّ كِتَٰبَ الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ﴿١٨﴾

(१८) अवश्य अवश्य सदाचारियों का कर्मपत्र इल्लीईन में है।[3]

وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا عِلِّيُّونَ ﴿١٩﴾

(१९) तुझे क्या पता कि इल्लीईन क्या है?

كِتَٰبٌ مَّرْقُومٌ ﴿٢٠﴾

(२०) (वह तो) लिखी हुई किताब है।

يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ﴿٢١﴾

(२१) उसके निकट समीपवर्ती फ़रिश्ते उपस्थिति होते हैं।

---

[1] अर्थात उनके दिल इस ईशवाणी के प्रति विश्वास इसलिये नहीं करते कि उनके दिलों पर पापों की अधिकता के कारण पर्दे पड़ गये हैं तथा मोरचे लग गये हैं। رَيْنٌ पापों की वह कलिमा है जो निरन्तर पाप करने के कारण उनके दिल पर छा जाता है। हदीस में है। वंदा जब पाप करता है तो उसके दिल पर एक काला धब्बा पड़ जाता है यदि तौबा (क्षमा याचना) कर लेता है तो वह कलिमा दूर कर दी जाती है तथा यदि तौबा के बजाये पाप पर पाप किये जाता है तो वह कलिमा बढ़ती जाती है यहाँ तक कि उसके पूरे दिल पर छा जाती है यह वह رَيْنٌ रैन है जिसकी चर्चा पवित्र क़ुरआन में है (तिर्मिजी सूरतुल मुतफ़्फ़ेफ़ीन, इब्ने माजा, किताबुज़ ज़ुहद, बाबु ज़िक्रिज जुनूबे, मुसनद अहमद २\२९७)

[2] इसके विपरीत ईमान वाले अल्लाह के दर्शन से सम्मानित होंगे।

[3] عِلِّيِّين *इल्लीईन* عُلُوٌّ उलू (ऊँचाई) से है। यह *सिज्जीन* के विपरीत आकाशों में अथवा स्वर्ग या सिद्रतुल मुनतहा अथवा *अर्श* (अल्लाह के सिंहासन) के पास स्थान है जहाँ पुनीत लोगों की आत्मायें तथा उनके कर्मपत्र सुरक्षित होते हैं जिसके निकटवर्ती फ़रिश्ते उपस्थित रहते हैं।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿٢٢﴾

(२२) निश्चित रूप से सदाचारी लोग अति सुख में होंगे।

عَلَى الْأَرَائِكِ يَنظُرُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) मसहरियों पर (बैठे) देख रहे होंगे।

تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ﴿٢٤﴾

(२४) तो उनके मुख से ही सुखों की सुखदा को पहचान लिया जायेगा।[1]

يُسْقَوْنَ مِن رَّحِيقٍ مَّخْتُومٍ ﴿٢٥﴾

(२५) ये लोग अत्यन्त शुद्ध मदिरापान कराये जायेंगे।[2]

خِتَامُهُ مِسْكٌ ۚ وَفِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ ﴿٢٦﴾

(२६) जिसमें कस्तूरी की मुहर लगी होगी इच्छा करने वालों को उसी की ही इच्छा करनी चाहिये।[3]

---

[1] जिस प्रकार दुनियाँ के सम्पन्न लोगों के चेहरे पर साधारणत: ताज़गी तथा हरियाली होती है जो उन सुख सुविधाओं का द्योतक होती है जो उन्हें प्रचुरता से प्राप्त होती है। इसी प्रकार स्वर्ग वासियों पर जो आदर-सम्मान तथा उपहारों की जो अधिकता होती होगी उसके प्रभाव उनके चेहरों पर भी दिखाई पड़ेंगे तथा अपनी सुन्दरता तथा शोभा तथा प्रकाश एवं ज्योंति से पहचान लिये जायेंगे कि वह स्वर्गीय हैं।

[2] رحيق *रहीक* स्वच्छ था साफ मदिरा को कहते हैं जिसमें किसी वस्तु का मिश्रण न हो। مَخْتُومٌ मुद्रा लगी हुई। इसकी विशुद्धता की अधिक स्पष्टीकरण के लिये है। कुछ के विचार में यह मिश्रित के अर्थ में है अर्थात मदिरा में कस्तूरी का मिश्रण होगा जिससे उस का स्वाद दुगना तथा सुगन्ध अति स्फुर्ति दायक हो जायेगी, कुछ कहते हैं कि यह خَتْم *ख़त्म* से है अर्थात उसका अन्तिम घूँट कस्तूरी का होगा। कुछ خِتَام खिताम का अर्थ सुगन्ध करते हैं। ऐसी मदिरा जिसकी सुगन्ध कस्तूरी के समान होगी। (इब्ने कसीर) हदीस में भी यह शब्द आया है। नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* ने फ़रमाया : जिस मोमिन ने किसी प्यासे मोमिन को एक घूँट पानी पिलाया अल्लाह *(तआला)* क़ियामत के दिन उसे الرحيق المختوم पिलायेगा, जिसने किसी भूखे मोमिन को खाना खिलाया, अल्लाह *(तआला)* उसे स्वर्ग के फल खिलायेगा। जिसने किसी नंगे को वस्त्र पहनाया अल्लाह *(तआला)* उसे स्वर्ग का हरा वस्त्र पहनायेगा। (मुसनद अहमद ३\१३-१४)

[3] अर्थात सदाचारियों को ऐसे ही कर्मों में अग्रसर होना चाहिये जिसके बदले स्वर्ग तथा उसकी सुविधायें तथा सुख प्राप्त हैं जैसे *(अस्साफ्फात-६१)* में फ़रमाया :

﴿لِمِثْلِ هَٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ﴾

The Ummah Technology Mission

وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा उसमें तस्नीम का मिश्रण होगा ।[1]

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٨﴾

(२८) अर्थात वह जल श्रोत जिसका पानी निकटवर्ती लोग पीयेंगे ।

اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ﴿٢٩﴾

(२९) नि:संदेह पापी लोग ईमान वालों का उपहास उड़ाया करते थे ।[2]

وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा उनके निकट से गुज़रते हुए कनखियों (एवं संकेत से) उनका अपमान करते थे ।[3]

وَاِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ﴿٣١﴾

(३१) तथा जब अपनों की ओर लौटते तो दिल्लगी करते थे ।[4]

وَاِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْٓا اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा जब उन्हें देखते कहते कि नि:संदेह ये लोग गुमराह, (कुमार्ग) हैं ।[5]

---

[1] تَسْنِيم का अर्थ ऊँचाई है । ऊँट की कोहान जो उसके शरीर से ऊँची होती है उस سِنَام *सिनाम* कहा जाता है । क़ब्र के ऊँचा करने को भी تَسْنِيمُ الْقُبُورِ *तसनीमुल क़ुबूर* कहा जाता है । अर्थ यह है कि उसमें *तसनीम* नामक मदिरा का मिश्रण होगा । जो स्वर्ग के ऊपरी भागों से एक श्रोत द्वारा आयेगी यह स्वर्ग की सर्वोत्तम तथा उच्चतम मदिरा होगी ।

[2] यह उन्हें हीन समझकर उनका उपहास उड़ाते थे ।

[3] غَمْز का अर्थ होता है पल्कों तथा भवों से संकेत करना अर्थात एक-दूसरे को पल्कों तथा भवों का इशारा करके उनकी अवहेलना तथा उनके धर्म पर व्यंग करते थे ।

[4] अर्थात ईमान वालों की चर्चा करके प्रसन्न होते तथा दिल्लगियाँ करते । दूसरा अभिप्राय इस का यह है कि जब अपने घरों को लौटते तो वहाँ सम्पन्नता तथा सुख-सुविधा उनका अभिनंदन करती तथा जो चाहते उन्हें मिल जाता इसके उपरान्त भी उन्होंने अल्लाह की कृतज्ञा नहीं दिखाई बल्कि ईमान वालों की अवहेलना तथा उन पर डाह करने में तत्पर रहे । (इब्ने कसीर)

[5] अर्थात एकेश्वरवादी बहुदेववादी की निगाह में तथा ईमान वाले काफ़िरों की दृष्टि में गुमराह (कुपथ) होते हैं। यही स्थिति आज भी है विपथ अपने को सत्यवादी तथा

The Ummah Technology Mission

وَمَآ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٣٣﴾

(३३) ये उनपर रक्षक बनाकर तो नहीं भेजे गये।[1]

فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ﴿٣٤﴾

(३४) तो आज ईमानवाले उन काफ़िरों पर हँसेंगे।[2]

عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) सिंहासन पर बैठे देख रहे होंगे।

هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

(३६) कि अब इंकार करने वालों ने जैसा ये किया करते थे पूरा-पूरा बदला पा लिया।[3]

सूरतुल इंशिक़ाक़-८४

سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاقِ

सूरतुल इंशिक़ाक़ मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें पच्चीस आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ﴿١﴾

(१) जब आकाश फट जायेगा।[4]

सत्यवादी को कुमार्ग विश्वास कराते हैं यहाँ तक कि एक सर्वथा असत्य सम्प्रदाय अपने सिवा न किसी को मोमिन कहता है न समझता है।

[1]अर्थात यह काफ़िर मुसलमानों पर निरीक्षक तो नहीं बनाकर भेजे गये है कि प्रत्येक समय मुसलमानों के कर्मों तथा स्थितियों को देखते रहें तथा उनपर टिप्पणी करते रहें। अर्थात जब इसके उत्तरदायी ही नहीं हैं तो फिर ऐसा क्यों करते हैं।

[2]अर्थात जैसे काफ़िर दुनियाँ में ईमानवालों पर हँसते थे। क़यामत के दिन यह काफ़िर अल्लाह की पकड़ में होंगे तथा ईमान वाले उन पर हँसेंगे। उनको हँसी इस बात पर आयेगी कि यह कुमार्ग होने के उपरान्त हमको कुमार्ग समझते तथा हँसते थे। आज उनको पता चल गया कि कुमार्ग कौन थे ? तथा कौन इस योग्य था कि उस पर हँसा जाये।

[3] ثُوِّبَ का अर्थ है اُثِيبَ बदला दिये गये। अर्थात क्या काफ़िरों को वह जो कुछ करते थे बदला दिया गया है।

[4] ***सूरतुल इंशिक़ाक़ :*** अर्थात जब प्रलय घटित होगी।

The Ummah Technology Mission

وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٢﴾

(२) तथा अपने प्रभु के आदेश को सतर्क होकर सुनेगा।[1] तथा उसी के योग्य वह है।[2]

وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾

(३) तथा धरती (खींच कर) फैला दी जायेगी।[3]

وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾

(४) तथा उसमें जो है उगल देगी तथा ख़ाली हो जायेगी।[4]

وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٥﴾

(५) तथा अपने प्रभु के आदेश पर कान लगायेगी।[5] तथा उसी के योग्य वह है।

يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ﴿٦﴾

(६) हे मनुष्य! तू अपने प्रभु से मिलने तक यह प्रयत्न तथा समस्त कार्य एवं परिश्रम करके उससे मुलाकात करने वाला है।[6]

---

[1]अर्थात अल्लाह उसको फटने की आज्ञा देगा जिसे वह सुनेगा तथा उसका पालन करेगा।

[2]अर्थात उसको यही योग्य है कि सुने तथा पालन करे इसलिये कि वह सब पर प्रभुत्वशाली है तथा सब उसके आधीन हैं। उसकी आज्ञा से मुँह फेरने का किसका साहस हो सकता है?

[3]अर्थात उसकी लम्बाई-चौड़ाई में अधिक विस्तार कर दिया जायेगा। अथवा अभिप्राय यह है कि उस पर जो पर्वत आदि हैं सब कण-कण करके धरती को साफ तथा समतल कर दिया जायेगा जिसमें कोई ऊँच-नीच नहीं रहेगा।

[4]अर्थात जो मुर्दे भूमि में गड़े हैं। सब जीवित होकर बाहर निकल आयेंगे। जो कोष उसके भीतर स्थित हैं वह उन्हें प्रकाशित कर देगी तथा स्वयं सर्वथा ख़ाली हो जायेगी।

[5]अर्थात फेंकने तथा खाली होने की जो आज्ञा दी जायेगी उसके अनुसार काम करेगी।

[6]यहाँ इंसान साधारण स्वरूप है जिसमें मुसलमान तथा काफ़िर सभी सम्मिलित हैं। كَدْح कद्ह, कड़े परिश्रम को कहते हैं वह श्रम अच्छे कामों के लिये हो अथवा बुरे के लिये। अभिप्राय यह है कि जब उपरोक्त चीज़े अस्तित्व मेआयेंगी अर्थात प्रलय आ जायेगी तो हे इंसान तूने जो भला अथवा बुरा काम किया होगा वह अपने सामनें पायेगा तथा तदानुसार तुझे भला व बुरा बदला मिलेगा। आगे उसका अधिक विवरण एवं स्पष्टीकरण है।

The Ummah Technology Mission

فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ﴿٧﴾

(७) तो उस समय जिस व्यक्ति के दाहिने हाथ में कर्मपत्र दिया जायेगा।

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ﴿٨﴾

(८) उसका हिसाब तो अत्यन्त सरलता से लिया जायेगा।[1]

وَيَنقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ﴿٩﴾

(९) तथा वह अपने परिवार वालों की ओर प्रसन्नता पूर्वक लौट आयेगा।[2]

وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ﴿١٠﴾

(१०) परन्तु जिस व्यक्ति का कर्मपत्र उसकी पीठ के पीछे से दिया जायेगा।

فَسَوْفَ يَدْعُو ثُبُورًا ﴿١١﴾

(११) तो वह मृत्यु को बुलाने लगेगा।[3]

---

[1]सरल हिसाब यह है कि मोमिन का कर्मपत्र प्रस्तुत किया जायेगा उसके दोष भी उसके सामने लाये जायेंगे फिर अल्लाह अपनी दयालुता एवं अनुग्रह से उसे क्षमा कर देगा। आदरणीया आयशा फ़रमाती हैं कि रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* ने फ़रमाया : जिसका हिसाब लिया गया वह बर्बाद हो गया। मैनें कहा हे अल्लाह के रसूल ! अल्लाह मुझे आप पर बलिदान करे, क्या अल्लाह ने नहीं फ़रमाया कि जिसके दायें हाथ में कर्मपत्र दिया गया उसका हिसाब सहज होगा। (आदरणीय आयशा का प्रयोजन यह था कि इस आयत के अनुसार तो मोमिन का भी हिसाब होगा किन्तु वह विनाश से दोचार नहीं होगा)। आपने स्पष्ट किया "यह तो पेशी है" अर्थात मोमिन के साथ हिसाब का मामला नहीं होगा एक सरसरी पेशी होगी। मोमिन प्रभु के आगे प्रस्तुत किये जायेंगे जिससे पूछताछ हुई वह मारा गया। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर *सूरतील इंशिक़ाक़*) एक और रिवायत में है। आदरणीय आयशा फ़रमाती हैं, नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* अपनी कुछ नमाज़ में यह दुआ पढ़ते थे . «اللَّهُمَّ حَاسِبْنِي حِسَابًا يَسِيرًا» (अल्लाह मेरा हिसाब सहज करना) नमाज से अवकाश के समय में मैंने पूछा, हिसाबे यसीर (सहज हिसाब) का क्या अभिप्राय है ? फ़रमाया अल्लाह उसका कर्मपत्र देखेगा फिर उसे क्षमा कर देगा (मुसनद अहमद ६\४८

[2]अर्थात जो उसके घर वालों में से स्वर्गीय होंगे। अथवा उससे अभिप्राय हूरें (स्वर्ग की नारियाँ) तथा बालक हैं जो सेवा के लिये स्वर्ग में मिलेंगे।

[3] ثُبُورًا विनाश, हानि अर्थात वह चीखे पुकारेगा तथा हाय-हाय करेगा कि मैं तो मारा गया।

The Ummah Technology Mission

وَيَصْلٰى سَعِيْرًا ﴿١٢﴾

(१२) तथा भड़कते हुए नरक में प्रवेश करेगा।

اِنَّهٗ كَانَ فِيْٓ اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ﴿١٣﴾

(१३) यह व्यक्ति अपने सम्बन्धियों में (संसार में) प्रसन्न था।[1]

اِنَّهٗ ظَنَّ اَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ ﴿١٤﴾

(१४) उसका विचार था कि अल्लाह की ओर लौटकर ही न जायेगा।[2]

بَلٰٓى ۚ اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ بِهٖ بَصِيْرًا ﴿١٥﴾

(१५) यह कैसे होसकता है।[3] यद्यपि उसका प्रभु उसे भली प्रकार देख रहा था।[4]

فَلَآ اُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ﴿١٦﴾

(१६) मुझे संध्या की लालिमा की सौगन्ध।[5]

وَالَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ﴿١٧﴾

(१७) तथा रात्रि की एवं उसकी एकत्रित[6] वस्तुओं की सौगन्ध।

---

[1]अर्थात दुनियाँ में अपनी आकांक्षाओं में मग्न था तथा अपने परिवार में बहुत प्रसन्न था।

[2]यह उसके प्रसन्न होने का कारण है अर्थात आख़िरत (परलोक) के प्रति उसका विश्वास नहीं था। حَوْر का अर्थ है लौटना जैसे नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* की दुआ (प्रार्थना) है «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْحَوْرِ بَعْدَ الْكَوْرِ» (सहीह मुस्लिम, अलहज्ज, बाबु मा यकूलु इज़ा रकिबा इला सफरिल हज्ज आदि तिर्मिजी, इब्ने माजा) मुस्लिम में शब्द कौन है, अभिप्राय है इस बात से मैं शरण चाहता हूँ कि ईमान के पश्चात कुफ्र तथा आज्ञा पालन के पश्चात अवज्ञा अथवा भलाई के बाद बुराई की ओर पलटूँ।

[3]एक अनुवाद उसका यह है कि यह कैसे हो सकता है कि वह न लौटे तथा पुन: जीवित न हो अथवा بَلَى क्यों नहीं। यह अवश्य अपने प्रभु की ओर पलटेगा।

[4]उसका कोई कर्म छिपा नहीं था।

[5]*शफक़* उस लालिमा को कहते हैं जो सूर्यास्त के पश्चात आकाश में प्रकट होती है तथा ईशा का समय आरम्भ होने तक रहती है।

[6]अंधेरा होते ही प्रत्येक वस्तु अपने विश्रामस्थल तथा निवासस्थान की ओर एकत्र तथा सिमट जाती है अर्थात रात का अंधेरा चीज़ों को अपने दामन में समेंट लेता है।

The Ummah Technology Mission

وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ﴿١٨﴾

(१८) तथा पूर्ण चन्द्रमा की सौगन्ध ।[1]

لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَن طَبَقٍ ﴿١٩﴾

(१९) नि:संदेह तुम एक स्थिति से दूसरी स्थिति में पहुँचोगे ।[2]

فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠﴾

(२०) उन्हें क्या हो गया है कि ईमान नहीं लाते ।

وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ﴿٢١﴾ السجدة

(२१) तथा जब उनके पास क़ुरआन पढ़ा जाता है तो सजदा नहीं करते ।[3]

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ ﴿٢٢﴾

(२२) बल्कि जिन्होंने कुफ़्र किया वह झुठला रहे हैं ।[4]

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) तथा अल्लाह (*तआला*) भली प्रकार जानता है, जो कुछ ये दिलों में रखते हैं ।[5]

فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٤﴾

(२४) उन्हें कष्टदायी यातनाओं की शुभसूचना सुना दे ।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿٢٥﴾

(२५) परन्तु ईमान वालों तथा सदाचारियों को अगणित एवं अनन्त बदला दिया जायेगा ।

---

[1] إِذَا اتَّسَقَ का अर्थ है जब वह पूर्ण हो जाये जैसे वह तेरहवीं की रात से सोलहवीं तिथि तक की रात में रहता है ।

[2] طَبَقٍ का मूल अर्थ कठिनाई है यहाँ अभिप्राय वह कठिनाईयाँ हैं जो प्रलय के दिन घटित होंगी अर्थात उस दिन एक से बढ़कर एक अवस्था आयेगी (फ़तहुल बारी तफ़सीर सूरतिल इंशिकाक) यह सौगन्ध का उत्तर है ।

[3] हदीसों से यहाँ नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* तथा सहाबा का सजदा करना सिद्ध है ।

[4] अर्थात ईमान लाने के विपरीत झुठलाते हैं ।

[5] अर्थात झुठलाया या जो कार्य वह छुपकर करते हैं ।

The Ummah Technology Mission

सूरतुल बुरूज-८५

سُوْرَةُ الْبُرُوْجِ

सूरतुल बुरूज मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें बाईस आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ①

(१) बुर्जों वाले आकाश की सौगन्ध।[1]

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ②

(२) वायदा किये हुए दिन की सौगन्ध।[2]

وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ③

(३) उपस्थिति होने वाले तथा उपस्थिति किये गये की सौगन्ध।[3]

قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ④

(४) (कि) खाई वाले मारे गये।[4]

सूरतुल बुरूज : नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* *ज़ोहर* तथा *असर* में *सूरतुत्तारिक* तथा *सूरतुल बुरूज* पढ़ते थे। (तिर्मिज़ी)

[1] بُرُوْجٌ यह بُرْجٌ (भवन, का गुंबद) का बहुवचन है بُرْجٌ का मूल अर्थ है प्रकटन, यह सितारों के गंतव्य हैं जिन्हें उनके भवन की हैसियत प्राप्त है प्रकट तथा प्रकाशित होने के कारण उन्हें बुरूज कहा जाता है विवरण के लिये देखिये अलफ़ुरक़ान ६१ का भाष्य। कुछ ने बुरूज से अभिप्राय सितारे लिये हैं अर्थात सितारों वाले आकाश की सौगन्ध। कुछ के विचार में इससे आकाश के द्वार अथवा चाँद के गंतव्य अभिप्राय है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] इसका सर्वसम्मति से प्रलय का दिन अभिप्राय है।

[3] شَاهِدٍ तथा مَشْهُوْد की व्याख्या में बड़ा मतभेद है। इमाम शौकानी ने हदीसों तथा लक्षणों के आधार पर कहा है कि शाहिद से अभिप्राय जुमआ (शुक्रवार) का दिन है। इस दिन जिसने जो कर्म किया होगा यह प्रलय के दिन उसकी गवाही देगा तथा मशहूद से अर्फा (९ ज़िल हिज्जा) का दिन है। जहाँ लोग हज के लिये एकत्र तथा उपस्थित होते हैं।

[4] अर्थात जिन लोगों ने खाईयाँ खोदकर उसमें प्रभु के मानने वालों का विनाश किया उनके लिये विनाश तथा बर्बादी है। قُتِلَ का अर्थ है لُعِنَ

The Ummah Technology Mission

النَّارِ ذَاتِ الْوَقُودِ ﴿٥﴾

(५) वह एक अग्नि थी ईंधन वाली।[1]

إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُودٌ ﴿٦﴾

(६) जबकि वह लोग उसके आसपास बैठे थे।[2]

وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ ﴿٧﴾

(७) तथा मुसलमानों के साथ जो कर रहे थे उसको अपने समक्ष देख रहे थे।

وَمَا نَقَمُوا مِنْهُمْ إِلَّا أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ﴿٨﴾

(८) ये लोग उन मुसलमानों से किसी अन्य पाप का बदला नहीं ले रहे थे, अतिरिक्त इसके कि वे अत्यन्त प्रभावशाली प्रशंसा योग्य अल्लाह की शक्ति पर ईमान लाये थे।[3]

---

[1] الأُخْدُود، النَّار से सम्बन्धित बदल है ذات الوقود यह النَّار का विशेषण है अर्थात यह खाईयाँ क्या थीं ? ईंधन वाली अग्नि थीं जो ईमान वालो को उसमें झोकनें के लिये दहकाई गयीं थीं।

[2] काफिर राजा तथा उसके कार्यकर्ता आग के किनारे उपस्थित ईमान वालों के जलने का खेल देख रहे थे जैसाकि आगामी आयत में है।

[3] अर्थात उन लोगों का अपराध जिनको आग में झोंका जा रहा था यह था कि वह प्रभुत्वशाली अल्लाह पर ईमान लाये थे इस वाक्य का विवरण जो सहीह हदीसों से सिद्ध है यह है।

खाई वालों की कथा : विगत युग में एक राजा का एक जादूगर था। जब वह बूढ़ा हो गया तो राजा से कहा। मुझे एक चतुर बालक दो जिसे मैं अपना ज्ञान सिखा दूँ। राजा ने एक चतुर बालक खोज कर उसे सौंप दिया। बालक के मार्ग में एक राहिब (संत) का भी घर था यह बालक आते-जाते उसके पास भी जाता था और उसकी बातें सुनता जो उसे भली लगती। इसी प्रकार यह क्रम चलता रहा एक बार बालक जा रहा था कि मार्ग में एक बहुत बड़े जानवर (सिंह अथवा सर्प) लोगों का मार्ग रोके हुए था। बालक ने सोंचा आज मैं पता करता हूँ कि जादूगर सही है अथवा राहिब ? उसने एक पत्थर लिया तथा कहा हे अल्लाह ! यदि राहिब का मामला तेरे निकट जादूगर के मामले से उत्तम तथा प्रिय है तो इस जानवर को मार दे ताकि लोगों की यातायात चालू हो जाये। यह कहकर उसने पत्थर मारा तथा जानवर मर गया। बालक ने यह वाक्य राहिब को बताया राहिब ने कहा बेटा अब तुम निपुण हो गये हो अब तुम्हारी परीक्षा का आरम्भ होना है किन्तु इस परीक्षा के समय मेरा नाम न बतलाना। यह बालक जन्म से अंधे तथा

The Ummah Technology Mission

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝٩

(९) जिसके लिये आकाशों तथा धरती का राज्य है तथा अल्लाह (तआला) सर्वव्याप्त तथा भली प्रकार परिचित है।

اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ ۝١٠

(१०) नि:संदेह जिन लोगों ने मुसलमान पुरूषों एवं महिलाओं को प्रताड़ित किया, फिर क्षमा भी न माँगी, उनके लिये नरक की यातना है तथा जलने की यातना है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ

(११) नि:संदेह ईमान स्वीकार करने वालों एवं पुण्यकारी कार्य करने वालों के लिए वे

कोढ़ी आदि का उपचार भी करता था किन्तु अल्लाह पर ईमान लाने की शर्त के साथ इसी शर्त पर उसने राजा के एक अन्धे साथी की आँखें भी अल्लाह से दुआ करके सही कर दी। यह बालक यही कहता था यदि तुम ईमान लाओगे तो मैं अल्लाह से प्रार्थना करूंगा, वह स्वस्थ कर देगा। तथा अल्लाह उसकी प्रार्थना से स्वस्थ कर देता। यह सूचना राजा को पहुँची तो वह बड़ा व्याकुल हुआ कुछ ईमान वालों को तो उसने हत कराया। इस बालक के विषय में कुछ लोगों से कहा कि इसे पर्वत की शिखा पर ले जाकर नींचे फेंक दो। उसने अल्लाह से दुआ की पहाड़ में कम्प उत्पन्न हुई। जिससे वह सब गिर कर मर गये तथा अल्लाह ने उसे बचा लिया। राजा ने उसे दूसरे लोगों को सौंपा। कहा कि एक नवका में ले जाकर इसे समुद्र के बीच फेंक दो। वहाँ भी इसकी दुआ से नवका उलट गई जिससे वे सब डूब गये तथा वह बच गया। उस बालक ने राजा से कहा यदि तू मुझे मारना चाहता है तो उसकी विधि यह है कि एक खुले मैदान में लोगों को एकत्र कर तथा بِسْمِ اللهِ رَبِّ هٰذَا الْغُلَامِ कहकर मुझे तीर मार। राजा ने यही किया। जिससे बालक मर गया किन्तु सब लोग पुकार उठे कि हम बालक के प्रभु पर ईमान लाये। राजा और व्यग्र हुआ। तथा उसने खाइयाँ खुदवाईं उनमें आग जलवाई तथा आदेश दिया कि जो ईमान से न फिरे उसे आग में फेंक दो। ऐसे ईमान वाले आते तथा आग में झोंके जाते रहे यहाँ तक की एक स्त्री आई जिसके साथ बच्चा था। वह कुछ झिझकी। बच्चा बोल पड़ा। माँ धैर्य रख तू सत्य पर है (सहीह मुस्लिम संक्षेपत:, किताबुज ज़ुहद वर रिक़ाक़, बाबु किस्सते असहाबुल उखदूद) इमाम इब्ने कसीर ने और भी वाक्य वर्णित किये हैं जो इससे भिन्न हैं तथा कहा है संभव है यह भिन्न घटनायें भिन्न स्थानों पर हुई हों (विस्तार के लिए देखिये तफसीर इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ﴿١١﴾

बाग़ हैं जिनके नीचे (शीतल जल की) सरितायें प्रवाहित हैं। यह बड़ी सफलता है।

اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ﴿١٢﴾

(१२) नि:संदेह तेरे प्रभु की पकड़ अत्यन्त शक्तिशाली है।[1]

اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ﴿١٣﴾

(१३) वही प्रथम बार पैदा करता है तथा वही पुन: जीवित करेगा।[2]

وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ﴿١٤﴾

(१४) वह अत्यन्त क्षमाशील तथा अत्यधिक प्रेम करने वाला है।

ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ﴿١٥﴾

(१५) अर्श का स्वामी महान है।[3]

فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ﴿١٦﴾

(१६) जो चाहे उसे कर देने वाला है।[4]

---

[1]जब वह अपने इन शत्रुओं की पकड़ करने पर आये जो उसके रसूलों को झुठलाते तथा उसकी आज्ञा का विरोध करते हैं तो फिर उसकी पकड़ से कोई उन्हें बचा नहीं सकता।

[2]अर्थात वही अपने सामर्थ्य तथा शक्ति से प्रथम बार पैदा करता है फिर प्रलय के दिन पुर्नजीवन प्रदान करेगा जैसे प्रथम पैदा किया था।

[3]अर्थात पूरी सृष्टि से महान तथा उच्चतम है। तथा अर्श जो सर्वोपरि है वह उसका आसन है जैसा कि सहाबा तथा ताबईन एवं मुहद्दिसीन का विश्वास है المجيد दयानिधि यह स्वर की मात्रा के साथ ذُو अर्थात स्वामी का विशेषण है अर्श का नहीं। यद्यपि कुछ लोग इसे अर्श का विशेषण मान कर इसे इ की मात्रा के साथ पढ़ते हैं अर्थ दोनों रूप में सहीह है। (इब्ने कसीर)

[4]अर्थात वह जो चाहे कर गुज़रता है उसकी आज्ञा तथा चाहत को कोई टाल नहीं सकता न उससे कोई पूछ सकता है। आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक़ से किसी ने उनके मृत्यु रोग के समय प्रश्न किया। क्या किसी वैद्य ने आप को देखा? उन्होंने उत्तर दिया, हाँ-प्रश्न किया कि उसने क्या कहा? फ़रमाया उसने कहा है"إِنِّي فَعَّالٌ لِّمَا أُرِيدُ" (मैं जो चाहूं करूं मेरे मामले में कोई हस्तक्षेप करने वाला नहीं। (इब्ने कसीर) अभिप्राय यह है कि अब मामला वैद्यों के हाथों में नहीं रहा मेरा अन्तिम समय आ गया है अब अल्लाह ही मेरा वैद्य है जिसकी चाहत को टालने की किसी में शक्ति नहीं।

The Ummah Technology Mission

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ﴿١٧﴾

(१७) तुझे सेनाओं की सूचना भी मिली है।[1]

فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ﴿١٨﴾

(१८) अर्थात फ़िरऔन तथा समूद की।

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ﴿١٩﴾

(१९) (कुछ नहीं) अपितु काफ़िर तो झुठलाने में पड़े हुए हैं।

وَاللَّهُ مِن وَرَائِهِم مُّحِيطٌ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा अल्लाह (तआला) भी उन्हें प्रत्येक ओर से घेरे हुए है।[2]

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ ﴿٢١﴾

(२१) बल्कि यह क़ुरआन है अत्यन्त महिमा वाला।

فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ ﴿٢٢﴾

(२२) सुरक्षित पुस्तक में लिखा है।[3]

سُورَةُ الطَّارِقِ

सूरतुत्तारिक़-८६

सूरतुत्तारिक़ मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें सतरह आयतें हैं।

---

[1] अर्थात जब उन पर मेरा प्रकोप आया तथा मैंने उन्हें अपनी पकड़ में ले लिया। जिसे कोई टाल नहीं सका।

[2] यह ﴿إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ﴾ ही का प्रमाण तथा उसी पर बल है।

[3] अर्थात लौह महफ़ूज (सुरक्षित पट्टिका) में लिखा हुआ है जहाँ फ़रिश्ते उसकी सुरक्षा पर नियुक्त हैं अल्लाह (तआला) आवश्यकता तथा अभिपाचन के अनुसार उतारता है।

सूरतुत्तारिक़ : आदरणीय ख़ालिद उदवी ने कहा कि मैंने रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को सक़ीफ़ के बाज़ार में धनुष अथवा लाठी के सहारे खड़े देखा। आप उनके पास उनसे सहायता लेने आये थे। वहाँ मैंने आप से सूरतुत्तारिक़ सुनी। तथा मैंने उसे याद कर लिया। जब कि मैं अभी मुसलमान नहीं हुआ था फिर मुझे अल्लाह ने इस्लाम से सम्मानित किया तथा इस्लाम की अवस्था में मैंने उसे पढ़ा, (मुसनद अहमद ४\३३५ मज्मउज़ ज़्वायेद ७\१३६) माननीय मुआज़ (रज़ी अल्लाहु अन्हु) एक बार नमाज़ में *सूरतुल बक़र:* तथा *अननिसा* पढ़ी। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ख़बर मिली तो फ़रमाया तू लोगों को उपद्रव में डालता है, तुझे तोयही बहुत था कि وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ तथा وَالشَّمْسِ जैसी सूरतें पढ़ता (नसाई किताबुल इफ़तेताह, बाबुल किराअते फ़िल मग़रिब)

The Ummah Technology Mission

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ۝١

(१) सौगन्ध है आकाश की तथा अंधकार में प्रकाश प्रदान करने वाले की।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ۝٢

(२) तुझे ज्ञात भी है कि वह रात्रि को प्रकट होने वाली वस्तु क्या है।

النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۝٣

(३) वह प्रकाश वाला सितारा है।[1]

اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝٤

(४) कोई ऐसा नहीं जिस पर रक्षक (फ़रिश्ते) न हों।[2]

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝٥

(५) मनुष्य को देखना चाहिए कि वह किस वस्तु से बनाया गया है।

خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ۝٦

(६) वह एक उछलते पानी से पैदा किया गया है।[3]

---

[1]तारिक़ से क्या अभिप्राय है। क़ुरआन ने स्वयं स्पष्ट कर दिया प्रकाशमान सितारा। طَارِقٌ बना है طُرُوقٌ से जिसका अर्थ खटखटाना है। किन्तु طَارِقٌ रात के आगंतुक के लिए प्रयुक्त होता है। तारों को भी तारिक़ इसी कारण कहा जाता है कि वह दिन को छुप जाते तथा रात को निकलते हैं।

[2]अर्थात प्रत्येक प्राणी पर अल्लाह की ओर से फ़रिश्ते नियुक्त हैं जो उसके भले-बुरे सभी कर्म लिखते हैं। कुछ कहते हैं कि यह इंसानों की सुरक्षा करने वाले फ़रिश्ते हैं जैसा कि *सूरतुर रअद* की आयत ११ से प्रतिपादित होता है कि इंसान की रक्षा के लिये भी उसके आगे-पीछे फ़रिश्ते होते हैं। जैसे कर्म तथा कथन लिखने वाले होते हैं।

[3]अर्थात वीर्य से। जो सहवास के अंत में तीव्रगति से निकलता है यही पानी की बूँदें (वीर्य) स्त्री के गर्भाशय में जाता है और जाकर यदि अल्लाह का आदेश होता है तो गर्भ का कारण बनता है।

The Ummah Technology Mission

يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ۝٧

(७) जो पीठ तथा छाती के मध्य से निकलता है।[1]

إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْعِهِۦ لَقَادِرٌ ۝٨

(८) नि:संदेह वह उसे फेर लाने पर अवश्य सामर्थ्य रखने वाला है।[2]

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ۝٩

(९) जिस दिन गुप्त भेदों की जाँच पड़ताल होगी।[3]

فَمَا لَهُۥ مِن قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ۝١٠

(१०) तो न कोई ज़ोर चलेगा उसका तथा न कोई सहायक होगा।[4]

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝١١

(११) वर्षा वाले आकाश की सौगन्ध।[5]

---

[1]कहा जाता है कि पीठ पुरूष की तथा वक्ष स्त्री का, इन दोनों के पानी से मनुष्य की उत्पत्ति होती है, परन्तु उसे एक ही पानी इसलिये कहा कि यह दोनों मिलकर एक ही हो जाता है। تَرَائِبُ बहुवचन है। تَرِيبَةٌ का सीने का वह भाग जो हार पहनने की जगह है।

[2]अर्थात इंसान के मरने के पश्चात वह उसे पुन: जीवित करने का सामर्थ्य है कुछ के विचार में इसका अभिप्राय यह है कि वह इस पानी की बूँद को पुन: अंग में लौटनें पर सामर्थ्य रखता है जहाँ से वह निकला था। पहले भावार्थ को इमाम शौकानी तथा इमाम इब्ने जरीर तबरी ने अधिक सही माना है।

[3]अर्थात प्रकट हो जायेंगे। क्योंकि उन पर पुण्य तथा दण्ड मिलेगा। बल्कि हदीस में आता है प्रत्येक विश्वासघाती के कूल्हे के पास झंडा गाड़ दिया जायेगा तथा यह घोषणा कर दी जायेगी कि अमुक पुत्र अमुक के साथ विश्वासघात किया है (सहीह बुखारी किताबुल जिजिया बाबु इसमिल गादिर लिल बर्रे वल फाजिर, मुस्लिम किताबुल जिहाद बाबु तहरीमिल गद्रे) अभिप्राय यह है कि वहाँ किसी का कोई कर्म गुप्त नहीं रह जायेगा।

[4]अर्थात न स्वयं इंसान के पास इतनी शक्ति होगी कि वह अल्लाह की यातना से बच जाये न किसी अन्य ओर से उसे कोई सहायक मिल सकेगा जो उसे अल्लाह की यातना से बचा ले।

[5] رَجْعٌ का शाब्दिक अर्थ है, लौटना तथा पलटना। वर्षा भी बार-बार पलट-पलट कर होती है। इसलिए वर्षा को رَجْعٌ के शब्द से व्यंजित किया गया है। कुछ कहते हैं कि बादल समुद्रों से पानी लेता है फिर वही पानी समुद्र को पलटा देता है। अत: वर्षा को

The Ummah Technology Mission

وَالْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ﴿١٢﴾

(१२) तथा फटने वाली धरती की सौगन्ध ।[1]

اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿١٣﴾

(१३) नि:संदेह यह (क़ुरआन) अवश्य दो टूक निर्णय करने वाली भाषा है ।[2]

وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿١٤﴾

(१४) तथा यह हँसी की (तथा व्यर्थ की) बात नहीं ।[3]

اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ﴿١٥﴾

(१५) परन्तु वे (काफ़िर) दाँव-घात में हैं ।[4]

وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ﴿١٦﴾

(१६) तथा मैं भी एक दाँव चल रहा हूँ ।[5]

رَجْــعٌ कहा जाता है । कुछ कहते हैं कि शुभ शगुन के लिये अरब वर्षा को رَجْعٌ कहते थे ताकि वह बार-बार होती रहे । (फ़तहुल क़दीर)

[1]अर्थात धरती फटती है तो उससे पौधा बाहर निकलता है । धरती फटती है तो स्रोत प्रवाहित हो जाता है । इसी प्रकार एक दिन आयेगा कि धरती फटेगी तथा मुर्दे जीवित होकर बाहर निकल आयेंगे इसलिये धरती को फटने वाली कहा गया है ।

[2]यह सौगन्ध का उत्तर है अर्थात खोलकर वर्णन करने वाला । जिससे सत्योसत्य में विवेक हो जाता है ।

[3]अर्थात आमोद-प्रमोद तथा उपहास की चीज़ नहीं है هَزْلٌ विलोम है جِدٌّ का, अर्थात एक स्पष्ट लक्ष्य की पुस्तक है खेलकूद के समान व्यर्थ नहीं है ।

[4] अर्थात नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* जो धर्म लेकर आये हैं उसे विफल करने का षडयंत्र रचते हैं । अथवा नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* को धोखा देते हैं तथा मुँह पर ऐसी बातें करते हैं कि दिल में उसके विपरीत होता है ।

[5]अर्थात उनकी चालों तथा षडयंत्रों से अचेत नहीं हूँ । मैं भी उनके विरूद्ध उपाय कर रहा हूँ । अथवा उनकी चालों का तोड़ कर रहा हूँ । كَيْدٌ गुप्त योजना को कहते हैं जो बुरे उद्देश्य के लिए हो तो बुरी है तथा लक्ष्य भला हो तो बुरा नहीं ।

The Ummah Technology Mission

فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿١٧﴾

(१७) तू काफ़िरों को अवसर दे,[1] उन्हें थोड़े दिनों के लिए छोड़ दे।

سُوْرَةُ الْاَعْلٰى

सूरतुल आ़ला-८७

सूरतुल आ़ला मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें उन्नीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ﴿١﴾

(१) अपने सर्वोच्च प्रभु के नाम की पवित्रता का वर्णन कर।[2]

---

[1]अर्थात उनके लिए तुरन्त प्रकोप की माँग न कर। अपितु उन्हें कुछ अवसर दे दे رُوَيْدًا:قَلِيلاً अथवा قَرِيباً यह अवसर तथा समय देना भी काफ़िरों के लिये अल्लाह की ओर से एक उपाय स्वरूप है। जैसे (*अल-आराफ़*-१८२,१८३) में फ़रमाया :

﴿ سَنَسْتَدْرِجُهُم مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ○ وَأُمْلِي لَهُمْ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ﴾

सूरतुल आ़ला : रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* यह सूरत तथा *सूरतुल गाशिया* ईदैन एवं जुमआ में पढ़ते थे। इसी प्रकार वित्र की प्रथम रक़अत में *सूरतुल आला*, दूसरी में *अलकाफिरून* तथा तीसरी मे *सूरतुल इख़लास* पढ़ते थे।

माननीय मुआज़ को जिन सूरतों के पढ़ने का निर्देश दिया था उनमें एक यह भी थी (सिहाह में यह सभी विवरण मौजूद हैं)

[2]अर्थात ऐसी चीज़ों से अल्लाह की पवित्रता जो उसके योग्य नहीं है। हदीस में आता है कि नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* इसके उत्तर में पढ़ा करते थे। سُبْحَانَ رَبِّيَ الأَعْلَى (मुसनद अहमद १\२३२ अबू दाऊद किताबुस सलात, बाबुद दुआ फिस सलाते, अलबानी ने सहीह कहा है)

The Ummah Technology Mission

الَّذِي خَلَقَ فَسَوّٰى ۝٢

(२) जिसने पैदा किया तथा सही एवं स्वस्थ बनाया ।[1]

وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدٰى ۝٣

(३) तथा जिसने अनुमान लगा कर निर्धारित किया फिर मार्ग दिखाया ।[2]

وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۝٤

(४) तथा जिसने ताज़ी घास पैदा की ।[3]

فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوٰى ۝٥

(५) फिर उसने उसको (सुखा कर) काला कूड़ा कर दिया ।[4]

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰى ۝٦

(६) हम तुझे पढ़ायेंगे, फिर तू न भूलेगा ।[5]

إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ۝٧

(७) परन्तु जो कुछ अल्लाह चाहे वह प्रकट एवं गुप्त को जानता है ।[6]

---

[1]देखिये *सूरतुल इंफितार* का भाष्य न॰७ ।

[2]अर्थात पुण्य तथा पाप की । इसी प्रकार जीवन हेतु की । यह मार्ग दर्शन सभी जीवों को प्रदान किया । قَدَرٌ का अर्थ है चीज़ों के प्रकार तथा विशेषता का अनुमान लगाकर इंसान का भी उसका मार्ग दर्शा दिया । ताकि इंसान उससे लाभ प्राप्त कर सके ।

[3]जिसे जानवर चरते हैं ।

[4]घास सूख जाये तो उसको غُثَاءً कहते हैं । أَحْوَى काली कर दिया । अर्थात हरी घास सुखाकर हम काला कूड़ा कर देते हैं ।

[5]जिब्रील *(अलैहिस्सलाम)* प्रकाशना लेकर आते तो आप जल्दी-जल्दी पढ़ने लगते ताकि भूल न जायें । अल्लाह *(तआला)* ने फ़रमाया : ऐसे शीघ्रता न करें अवतरित प्रकाशना हम आप को पढ़वायेंगे । अर्थात आप की ज़बान पर चालू कर देंगे । फिर आप उसे भूलेंगे नहीं । परन्तु जिसे अल्लाह चाहेगा । किन्तु अल्लाह ने ऐसा नहीं चाहा इसलिये आपको सब कुछ याद ही रहा । कुछ ने कहा कि इसका भावार्थ यह है कि जिसे अल्लाह निरस्त करना चाहेगा उसे आप को भुलवा देगा । (फ़तहुल क़दीर)

[6]यह साधारण है جَهْر क़ुरआन का वह भाग भी है जिसे रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* याद कर लें । तथा जोआप के सीने से मिटा दिया गया वह गुप्त है । इस प्रकार جَهْر उच्च स्वर से पढ़े छुप कर काम करे तथा खुलकर इन सबको अल्लाह जानता है ।

The Ummah Technology Mission

وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ﴿٨﴾

(८) हम आपके लिए सरलता उत्पन्न कर देंगे।[1]

فَذَكِّرْ إِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ﴿٩﴾

(९) तो आप शिक्षा देते रहें यदि शिक्षा कुछ लाभ दे।[2]

سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ﴿١٠﴾

(१०) डरने वाला तोशिक्षा ग्रहण कर लेगा।[3]

وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ﴿١١﴾

(११) (परन्तु) दुर्भाग्य पूर्ण उससे दूर रह जायेगा।[4]

الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ﴿١٢﴾

(१२) जो बड़ी आग में जायेगा।

---

[1]यह भी साधारण है उदाहरणार्थ हम आप पर प्रकाशना (वह्यी) सहज कर देंगे ताकि उसे याद करना तथा तदानुसार कर्म करना सरल हो जाये। हम आपको उस विधि का मार्ग दर्शायेंगे जो सरल होगा। हम स्वर्ग के कार्य आप के लिये सहज कर देंगे। हम आप के लिये ऐसे कर्म तथा कथन सरल कर देंगे जिन में भलाई हो तथा हम आप के लिये ऐसा धर्म विधान नियुक्त करेंगे। जो सरल-सीधा तथा संतुलित होगा। जिसमे कोई टेढ़ापन, संकुचन तथा तंगी नहीं होगी।

[2]अर्थात शिक्षा तथा सदुपदेश वहाँ दें जहाँ प्रतीत हो कि लाभ दायक होगा यह शिक्षा-दीक्षा तथा सदुपदेश का एक नियम एवं रीति बता दिया है (इब्ने कसीर) इमाम शौकानी के विचार में भावार्थ यह है कि आप सदुपदेश देते रहें। क्योंकि सावधान करना तथा धर्म का प्रचार दोनों अवस्था में आपके लिये आवश्यक थी अर्थात أَوْلَمْ تَنْفَعْ यहाँ लुप्त है।

[3]अर्थात आप की शिक्षा से वह अवश्य शिक्षा ग्रहण करेंगे। जिनके दिलों में अल्लाह का भय होगा। उनमें अल्लाह के डर तथा अपने सुधार की भावना अधिक शक्तिशाली हो जायेगी।

[4]अर्थात इस शिक्षा से लाभ नहीं प्राप्त कर सकेंगे क्योंकि उनका कुफ़्र पर दुराग्रह तथा अल्लाह की अवज्ञा में तत्पर्ता प्रचलित रहती है।

The Ummah Technology Mission

ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ﴿١٣﴾

(१३) जहाँ फिर न वह मर सकेगा न जियेगा,[1] (बल्कि प्राण निकलने की अवस्था में पड़ा रहेगा)।

قَدْ أَفْلَحَ مَن تَزَكَّىٰ ﴿١٤﴾

(१४) नि:संदेह उसने सफलता प्राप्त कर ली, जो पवित्र हो गया।[2]

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّىٰ ﴿١٥﴾

(१५) तथा जिसने अपने प्रभु का नाम याद रखा तथा नमाज़ पढ़ता रहा।

بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾

(१६) परन्तु तुम तो साँसारिक जीवन को श्रेष्ठता देते हो।

وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ﴿١٧﴾

(१७) तथा परलोक अत्यन्त सुखद एवं स्थाई है।[3]

---

[1]इसके विपरीत जो लोग मात्र अपने पापों का दण्ड भोगने के लिये सामायिक रूप से नरक में रह गये होंगे उन्हें अल्लाह (*तआला*) एक प्रकार मौत दे देगा, यहाँ तक की वह आग में जलकर कोयला हो जायेंगे। फिर अल्लाह अम्बिया आदि की सिफ़ारिश से उनको गरोहों के रूप में नरक से निकालेगा उनको स्वर्ग की नहर में डाला जायेगा। स्वर्गीय भी उन पर पानी डालेंगे। जिससे वह इस प्रकार जीवित हो जायेंगे जैसे बाढ़ के कूड़े पर अन्न उग आता है। (सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान)

[2]जिन्होंने अपने आप को नैतिक पतन से तथा दिलों को *शिर्क* तथा अवैज्ञा की मलिनता से पवित्र कर लिया।

[3]क्योंकि दुनियाँ तथा उसकी प्रत्येक वस्तु नश्वर है जबकि परलोक का जीवन स्थाई तथा नित्य है इसलिये चतुर व्यक्ति नश्वर वस्तु को शेष रहने वाली पर प्रधानता नहीं देता।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ هَٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ﴿١٨﴾

(१८) ये बातें पूर्व की पुस्तकों में भी हैं।

صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ ﴿١٩﴾

(१९) (अर्थात) इब्राहीम तथा मूसा की किताबों में।

سُورَةُ الْغَاشِيَةِ

सूरतुल ग़ाशिया-८८

सूरतुल ग़ाशिया मक्का में अवरतित हुई तथा इसमें छब्बीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एव अत्यन्त कृपालु है।

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ ﴿١﴾

(१) क्या तुझे भी छिपा लेने वाली [(प्रलय) (क़ियामत)] की सूचना पहुँची है।[1]

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ﴿٢﴾

(२) उस दिन बहुत से मुख अपमानित होंगे।[2]

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ﴿٣﴾

(३) (तथा) दुखों से पीड़ित कष्टों में होंगे।[3]

सूरतुल ग़ाशिया : कुछ रिवायत में है कि रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* जुमअः की नमाज़ में *सूरतुल जुमुअः* के साथ *सूरतुल ग़ाशिया* पढ़ते थे (मुअत्ता इमाम मालिक, बाबुल क़िराअते फी सलातिल जुमुअः)

[1] هَلْ अर्थ में है قد के غَاشِيَةٌ ग़ाशिया, से अभिप्राय प्रलय है। क्योंकि उसकी भयानकता पूरी सृष्टि को ढाँक लेगी।

[2] अर्थात काफ़िरों के चेहरे خَاشِعَةٌ झुके हुए तथा अपमानित होंगे जैसा नमाज़ी नमाज़ की अवस्था में अल्लाह के सामने विनम्रता तथा विनय के साथ झुके हुए होते हैं।

[3] نَاصِبَةٌ का अर्थ है थक कर चूर हो जाना अर्थात उन्हें इतनी कड़ी यातना होगी कि उनकी बुरी दशा होगी। इसका एक दूसरा भावार्थ यह है कि दुनियाँ में कर्म कर करके थके हुए होंगे। अर्थात बहुत कर्म करते रहे होंगे। किन्तु वह कर्म असत्य धर्मानुसार अथवा बिदअत पर आधारित होंगे इसलिए उपासना तथा कड़े कर्मों के उपरान्त भी नरक में जायेंगे। जैसाकि इस भावार्थ के कारण माननीय इब्ने अब्बास ने ﴿عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ﴾ से अभिप्राय इसाई लिया है। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर *सूरतिल ग़ाशिया*)

The Ummah Technology Mission

تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ﴿٤﴾

(४) वे दहकती हुई अग्नि में जायेंगे।

تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ﴿٥﴾

(५) तथा अत्यन्त गर्म (उबलते हुए) स्रोत का पानी उनको पिलाया जायेगा।[1]

لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ﴿٦﴾

(६) उनके लिए मात्र काँटेदार वृक्षों के अन्य कुछ खाना न होगा।[2]

لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ﴿٧﴾

(७) जो न शरीर में वृद्धि करेगा तथा न भूख मिटायेगा।

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ﴿٨﴾

(८) बहुत से मुख उस दिन प्रसन्न एवं प्रफुल्लित होंगे।

لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ﴿٩﴾

(९) अपने कर्मों के कारण प्रसन्न होंगे।

فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿١٠﴾

(१०) उच्च स्वर्ग में होंगे।

لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ﴿١١﴾

(११) जहाँ कोई अश्लील बात कान में न पड़ेगी।

فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ﴿١٢﴾

(१२) जहाँ (शीतल) जल स्रोत प्रवाहित होंगे।

فِيْهَا سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ ﴿١٣﴾

(१३) (तथा) उसमें ऊँचे-ऊँचे सिंहासन होंगे।

وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ﴿١٤﴾

(१४) तथा प्याले रखे हुए (होंगे)।

وَّنَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ ﴿١٥﴾

(१५) तथा एक पंक्ति में रखे हुए तकिये होंगे।

---

[1] यहाँ वह अति खौलता पानी अभिप्राय है जिसकी गर्मी चरम सीमा को पहुँची हो। (फ़तहुल क़दीर)

[2] यह एक काँटेदार झाड़ी है जिसके सूखने पर जानवर उसे खाना पसन्द नहीं करते। जो भी हो यह भी ज़क्कूम की भाँति एक अत्यन्त कड़ुवा दुर्गंधित, स्वादहीन अपवित्र खाना होगा जो न शरीर का अंश बनेगा न क्षुधा ही जायेगी।

The Ummah Technology Mission

وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوثَةٌ ﴿١٦﴾

(१६) तथा कोमल कालीनें बिछी होंगी।[1]

أَفَلَا يَنظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿١٧﴾

(१७) क्या ये ऊँटों को नहीं देखते कि वे किस प्रकार पैदा किये गये हैं।[2]

وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ﴿١٨﴾

(१८) तथा आकाशों को किस प्रकार ऊँचा किया गया है।[3]

وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ﴿١٩﴾

(१९) तथा पर्वतों की ओर, कि किस प्रकार गाड़ दिये गये हैं।[4]

---

[1]यह स्वर्गवासियों की चर्चा है जो नरकवासियों के विपरीत अति सुखी तथा प्रत्येक प्रकार की सुविधाओं के भागी होंगे। عَيْنٌ साधारण संज्ञा स्वरूप है। अर्थात अनेक जलस्रोत होंगे نَمَارِق (तकिये) के अर्थ में है। زَرَابِيُّ(मसनदें) कालीन, गद्दे, बिस्तर مَبْثُوثَةٌ फैली हुई। अर्थात यह मसनदें जगह-जगह बिछी होंगी। स्वर्गवासी जहाँ आराम करना चाहेंगे करेंगे।

[2]ऊँट अरब में साधारणत: थे तथा इन अरबों की अधिकतर सवारी यही थी। इसलिये अल्लाह ने उन्हीं की चर्चा करके फ़रमाया कि इनकी रचना पर विचार करो। अल्लाह ने उसे कितना बड़ा अस्तित्व प्रदान किया है तथा कितनी शक्ति एवं बल उसमें रखा है इसके उपरान्त भी वह तुम्हारे लिये नर्म तथा वशीभूत हैं। तुम उस पर जितना चाहो बोझ लादो वह इंकार नहीं करेगा। तुम्हारे आधीन होकर रहेगा। इसके सिवा इस का मांस तुम्हारे खाने के तथा उसका दूध तुम्हारे पीने के एवं उसका ऊन गर्मी प्राप्त करने के काम आता है।

[3]अर्थात कितनी ऊँचाई पर आकाश है। पाच सौ वर्ष की यात्रा की दूरी पर फिर भी बिना स्तम्भ के खड़ा है। उसमें कोई कटाव तथा टेढ़ापन नहीं है। साथ ही हमने उसको सितारों से अलंकृत किया है।

[4]अर्थात किस प्रकार उन्हें धरती पर खूंटों के समान गाड़ दिया गया ताकि धरती न हिले। साथ ही उसमें खनिज तथा अन्य लाभ हैं जो इसके सिवा हैं।

The Ummah Technology Mission

وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा धरती की ओर, कि किस प्रकार बिछायी गयी है।[1]

فَذَكِّرْ ۖ إِنَّمَا أَنتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾

(२१) तो आप शिक्षा दे दिया करें (क्योंकि) आप केवल शिक्षा देने वाले हैं।[2]

لَّسْتَ عَلَيْهِم بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٢﴾

(२२) आप कुछ उन पर दारोग़ा तो नहीं है।[3]

إِلَّا مَن تَوَلَّىٰ وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾

(२३) परन्तु जो व्यक्ति विमुख हो तथा कुफ़्र करे।

فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ﴿٢٤﴾

(२४) उसे अल्लाह (*तआला*) अत्यन्त कठोर यातना देगा।[4]

---

[1]अर्थात किस प्रकार उसको बराबर करके मनुष्य के रहने योग्य बनाया है। वह उस पर चलता फिरता, व्यापार करता तथा ऊँचे भवन निर्माण करता है।

[2]अर्थात आप का कर्तव्य केवल शिक्षा देना एवं धर्म का प्रचार तथा आमंत्रण है इसके सिवा अथवा इससे अधिक नहीं।

[3]कि उन्हें ईमान पर लाने पर बाध्य करें। कुछ कहते हैं कि यह हिजरत से पहले का आदेश है। जो सैफ़ की आयत से निरस्त है। क्योंकि उसके पश्चात नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) ने फ़रमाया :

«أُمِرتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا : (لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ) فَإِذَا قَالُوهَا، عَصَمُوا مِنِّي دِمَاءَهُمْ وأَمْوَالَهُمْ إِلَّا بِحَقِّهَا؛ وَحِسَابُهُمْ عَلَى اللهِ» .

मुझे आदेश दिया गया है कि लोगों से लड़ूँ यहाँ तक कि वह *ला एलाहा इल्लल्लाह* को स्वीकार कर लें। जब वह यह मान लेंगे तो उन्होंने मुझसे अपने रक्तों तथा मालों को बचा लिया सिवाय इस्लाम के अधिकार के। (जो यदि हमारे ज्ञान में न आया तो) उसका हिसाब अल्लाह के ऊपर है। (सहीह अलबुख़ारी, बाबु वजुबिज जकात, मुस्लिम किताबुल ईमान, बाबुल अम्रे बि कितालिन्नासे हत्ता यक़ूलु---)

[4]अर्थात नरक की स्थाई यातना।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾

(२५) नि:संदेह हमारी ओर उनको लौटाना है।

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُم ﴿٢٦﴾

(२६) फिर नि:संदेह उनसे हिसाब लेना हमारा दायित्व है।[1]

سُورَةُ الْفَجْرِ

सूरतुल फ़ज्र-८९

सूरतुल फ़ज्र मक्का में अवतरित हुई इसमें तीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु तथा अत्यन्त कृपालु है।

وَالْفَجْرِ ﴿١﴾

(१) सौगन्ध है फ़ज्र की।[2]

وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٢﴾

(२) तथा दस रातों की।[3]

وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾

(३) तथा सम एवं विषम की।[4]

---

[1]प्रसिद्ध है कि इसके उत्तर में اللَّهُمَّ حَاسِبْنَا حِسَاباً يَّسِيرًا पढ़ा जाये यह दुआ तो नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* से सिद्ध है जो आप अपनी कुछ नमाज़ों में पढ़ते थे जैसाकि *सूरतुल इंशिक़ाक़* में गुज़रा किन्तु इसके उत्तर में यह पढ़ना आप से सिद्ध नहीं है।

[2]**सूरतुल फ़ज्र** : इससे अभिप्राय साधारण फ़ज्र है किसी विशेष दिन की फ़ज्र नहीं।

[3]इससे अधिकांश व्याख्याकारों के विचार में *"ज़िल हिज्जा"* की आरम्भिक दस रातें अभिप्राय हैं। जिनकी प्रधानता हदीसों में प्रमाणित है। नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* ने फ़रमाया *"ज़िल हिज्जा"* के दस दिनों में किये गये सत्कर्म अल्लाह को सर्वाधिक प्रिय हैं यहाँ तक की अल्लाह के मार्ग में जिहाद भी इतना प्रिय नहीं सिवाय उस जिहाद के जिसमें इंसान शहीद (बलिदान) ही हो जाये। (अल बुख़ारी किताबुल ईदैन, बाबु फ़ज़लिल अमले फी अय्यामित तश्रीक़)

[4]इससे अभिप्राय सम तथा विषम संख्या है अथवा वह वस्तुऐं जो सम तथा विषम होती हैं। कुछ कहते हैं कि वास्तव में यह सृष्टि की शपथ है। क्योंकि सृष्टि सम (जोड़ा) अथवा विषम (अकेला) है। इसके सिवा नहीं (ऐसरूत तफ़ासीर)

The Ummah Technology Mission

وَالَّيۡلِ اِذَا يَسۡرِ ۚ﴿۴﴾

(४) तथा रात्रि की जब वह चलने लगे।[1]

هَلۡ فِىۡ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِىۡ حِجۡرٍ ؕ﴿۵﴾

(५) क्या उनमें बुद्धिमानों के लिए पर्याप्त सौगन्ध है ?[2]

اَلَمۡ تَرَ كَيۡفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۙ﴿۶﴾

(६) क्या आपने नहीं देखा कि आपके प्रभु ने आदियों के साथ क्या किया ?[3]

اِرَمَ ذَاتِ الۡعِمَادِ ۙ﴿۷﴾

(७) स्तम्भों वाले इरम के साथ।[4]

---

[1]अर्थात जब आये तथा जब जाये क्योंकि سَيْرٌ (चलना) दोनों अवस्था में होता है आने में भी तथा जाने में भी।

[2] ذٰلِكَ से जिन चीज़ों की सौगन्ध खाई गई है उनकी ओर संकेत है। अर्थात क्या इनकी सौगन्ध बुद्धिमानों के लिये काफी नहीं है ? حِجْرٌ का अर्थ होता है रोकना मना करना। इंसानी बुद्धि भी उसे गलत कामों से रोकती है। इसलिये बुद्धि को भी حِجْرٌ हिज्र कहा जाता है। जैसे इसी अर्थ के आधार पर उसे نُهْيَةٌ भी कहते हैं। सौगन्ध का उत्तर لَتُبْعَثُنَّ है, क्योंकि मक्की सूरतों में आस्था के सुधार पर अधिक बल दिया गया है। कुछ के विचार से सौगन्ध का उत्तर आगे के शब्द ﴿إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ﴾ हैं। आगे प्रमाण स्वरूप कुछ उन जातियों की चर्चा की जा रही है जो झूठ लाने तथा विरोध करने के कारण नाश तथा ध्वस्त की गई थीं। उद्देश्य मक्कावासियों को सावधान करना है कि यदि तुमने हमारे रसूल को झुठलाया तो तुम्हें भी इसी प्रकार पकड़ा जा सकता है जैसे विगत जातियों को पकड़ा।

[3]उनकी ओर माननीय हूद ईशदूत बनाकर भेजे गये थे उन्होंने झुठलाया अन्ततः अल्लाह ने तीव्र हवा का प्रकोप उनपर उतारा जो निरन्तर सात रातें तथा आठ दिन चलती रहीं और उन्हें ध्वस्त कर दिया। (*अल-हाक़्क़:*,७-१०)

[4] إِرَمَ यह عَادٍ का वर्णन है अथवा उससे बदल है। यह आद जाति के दादा का नामहै। उनका वंशक्रम है, आद पुत्र औस पुत्र एरम पुत्र साम पुत्र नूह (फ़तहुल क़दीर) इसका उद्देश्य यह बताना है कि यह प्रथम आद है ذَاتِ الْعِمَادِ (स्तम्भों वाले) से संकेत उनकी शक्ति, बल तथा अतिकाय होने की ओर है।

इसके सिवा वह भवन निर्माण में भी दक्ष थे। तथा अति दृढ़ मूल पर भव्य भवन निर्माण करते थे। ذَاتِ الْعِمَادِ में दोनों ही भावार्थ सम्मिलित हो सकते हैं।

The Ummah Technology Mission

الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ﴿٨﴾

(८) जिनके जैसे लोग (अन्य किसी नगर तथा) देशों में पैदा नहीं किये गये।[1]

وَثَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿٩﴾

(९) तथा समूदियों के साथ जिन्होंने घाटियों में बड़े-बड़े पत्थर काटे थे।[2]

وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ﴿١٠﴾

(१०) तथा फ़िरऔन के साथ जो खूँटों वाला था।[3]

الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ﴿١١﴾

(११) उन सभी ने नगरों में सिर उठा रखा था।

فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ﴿١٢﴾

(१२) तथा बहुत उपद्रव मचा रखा था।

فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ﴿١٣﴾

(१३) अन्त में तेरे प्रभु ने उन सब पर प्रकोप का कोड़ा बरसाया।[4]

إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ﴿١٤﴾

(१४) नि:संदेह तेरा प्रभु घात में है।[5]

---

[1]उन जैसी अतिकाय तथा शक्तिशाली जाति कोई पैदा नहीं हुई। यह कहा करते थे ﴿مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً﴾ (*हा॰मीम॰ सजदा*-१५) हमसे अधिक शक्तिशाली कौन है ?

[2]यह माननीय सालेह की जाति थी। अल्लाह ने उसे पत्थर तराशने की विशेष कला तथा शक्ति प्रदान की थी। यहाँ तक कि यह लोग पर्वतों को तराश कर उनमें अपने आवास बना लेते थे जैसाकि क़ुरआन ने (*अशशुअरा*-१४९) में कहा है।

﴿وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا فَارِهِينَ﴾

[3]इसका अभिप्राय यह है कि भारी सेनाओं वाला था। जिसके पास खेमों की अधिकता थी जिन्हें खूँटे गाड़ कर खड़ा किया जाता था। अथवा उसकी क्रूरता एवं अत्याचार की ओर संकेत है कि खूँटों द्वारा उन्हें यातनायें देता था। (फतहुल क़दीर)

[4]अर्थात उन पर आकाश से अपना प्रकोप उतार कर उन्हें नष्ट तथा बर्बाद कर दिया। अथवा उन्हें शिक्षाप्रद परिणाम से मिला दिया।

[5]अर्थात सब सृष्टि के कर्म देख रहा है तथा तदानुसार वह दुनियाँ में अच्छा बुरा बदला देता है

The Ummah Technology Mission

فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَكْرَمَنِ ﴿١٥﴾

(१५) मनुष्य (का यह हाल है) कि जब उसका प्रभु उसकी परीक्षा लेता है तथा मान तथा उपहार देता है, तो वह कहने लगता है कि मेरे प्रभु ने मेरा सम्मान किया।[1]

وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَهَانَنِ ﴿١٦﴾

(१६) तथा जब वह उसकी परीक्षा लेते हुए उसकी जीविका को कम कर देता है, तो वह कहने लगता है कि मेरे प्रभु ने मेरा अपमान किया।[2]

كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ﴿١٧﴾

(१७) ऐसा कदापि नहीं,[3] अपितु (बात यह है कि) तुम (ही) लोग अनाथों का आदर नहीं करते।[4]

---

[1]अर्थात जब अल्लाह किसी को आजीविका तथा धन प्राचुर्य प्रदान करता है तो वह अपने विषय में इस भ्रम में पड़ जाता है कि अल्लाह उसपर बड़ा दयालु है जबकि यह प्राचुर्य परीक्षा तथा परख के लिये होता है।

[2]अर्थात वह तंगी में डाल देता है तथा परीक्षा लेता है तो अल्लाह के बारे में मिथ्या संदेह करने लगता है।

[3]अर्थात बात इस प्रकार नहीं है। जैसे लोग समझते हैं। अल्लाह धन अपने प्रिय बन्दों को भी देता है तथा अप्रिय लोगों को भी। तंगी में भी अपनों तथा परायों दोनों को ग्रस्त करता है। जब अल्लाह धन दे तो उसकी कृतज्ञता दिखाये, दरिद्रता आये तो धैर्य धारण करे।

[4]अर्थात उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते जिसके वह पात्र हैं। नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) का कथन है। वह घर सबसे उत्तम है जिसमें अनाथ के साथ अच्छा व्यवहार किया जाये तथा वह घर सबसे बुरा है जिसमें अनाथ के साथ दुर्व्यवहार किया जाये। फिर अपनी उँगली की ओर संकेत करके फ़रमाया मैं तथा अनाथ का पोशक स्वर्ग में इस प्रकार साथ-साथ होंगे जैसे यह दो उँगलियाँ साथ मिली हैं। (अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाबुन फी जम्मिल यतीमें)

The Ummah Technology Mission

وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿١٨﴾

(१८) तथा निर्धनों को खिलाने की एक-दूसरे को प्रेरणा नहीं देते।

وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ﴿١٩﴾

(१९) तथा (मृतकों का) उत्तराधिकार समेट-समेट कर खाते हो।[1]

وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ﴿٢٠﴾

(२०) तथा धन से जी भरकर प्रेम करते हो।[2]

كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ﴿٢١﴾

(२१) नि:संदेह जिस समय[3] धरती कूट-कूटकर बिल्कुल (बराबर) समतल कर दी जायेगी।

وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾

(२२) तथा तेरा प्रभु (स्वयं) आ जायेगा तथा फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध होकर आ जायेंगे।[4]

وَجِايْٓءَ يَوْمَىِٕذٍۭ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَىِٕذٍ

(२३) तथा जिस दिन नरक भी लाया जायेगा,[5] उस दिन मनुष्य शिक्षा ग्रहण

---

[1]अर्थात जिस प्रकार प्राप्त हो वैधानिक रूप से अथवा अवैधानिक لَمًّا का अर्थ جَمْعًا है।

[2] جَمًّا का अर्थ है अत्यधिक।

[3]अथवा तुम्हारा कर्म ऐसा होना चाहिए जिसकी चर्चा हुई, क्योंकि एक समय आने वाला है जब -----

[4]कहा जाता है कि जब फ़रिश्ते क़ियामत के दिन नीचे उतरेंगे तो प्रत्येक आकाश के फ़रिश्तों की एक पंक्ति होगी। इस प्रकार सात पंक्तियाँ होंगी, जो धरती को घेर लेंगे।

[5]सत्तर हज़ार लगामों के साथ नरक जकड़ी होगी तथा प्रत्येक लगाम के साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते होंगे। जो उसे खींच रहे होंगे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्न:, बाबुन फी शिद्दते हर्रे नारे जहन्नम व बुअदे कअरिहा, तिर्मिजी, अबवाबु सिफ़ते जहन्नम, बाबु मा जाअ फी सिफातिन नार) उसे अर्श (सिंहासन) की बायीं दिशा में खड़ा कर दिया जायेगा। जिसे देखकर सभी समीपवर्ती फ़रिश्ते तथा अम्बिया घुटनों के बल गिर पड़ेंगे तथा يَا رَبِّ ! نَفْسِي نَفْسِي पुकारेंगे (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ الذِّكْرَىٰ ﴿٢٣﴾

करेगा, परन्तु आज शिक्षा ग्रहण का लाभ कहाँ ?[1]

يَقُولُ يَا لَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ﴿٢٤﴾

(२४) वह कहेगा कि काश, कि मैंने इस जीवन के लिए कुछ (पुण्य के कार्य) पहले से कर रखे होते।[2]

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ ﴿٢٥﴾

(२५) तो आज (अल्लाह) की यातनाओं जैसी यातना किसी की न होगी।

وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ﴿٢٦﴾

(२६) न उसके बन्धन के जैसा किसी का बन्धन होगा।[3]

يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٧﴾

(२७) ऐ सन्तावना वाली आत्मा।

ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾

(२८) तू अपने प्रभु की ओर[4] लौट चल, इस प्रकार कि तू उससे प्रसन्न वह तुझसे प्रसन्न।

---

[1]अर्थात यह भयावह दृश्य देखकर मनुष्य की आँखें खुलेंगी तथा अपने कुफ्र एवं अवज्ञा पर लज्जित होगा, किन्तु उस दिन इस लज्जा तथा शिक्षा ग्रहण का कोई लाभ न होगा।

[2]अर्थात यह पश्चाताप तथा खेद का प्रदर्शन इसी लज्जा का अंश है जो उस दिन लाभप्रद न होगी।

[3]उस दिन सभी अधिकार केवल एक अल्लाह के हाथ में होंगे। दूसरे किसी को उसके आगे साँस लेने का साहस न होगा। यहाँ तक कि उसकी आज्ञा के बिना कोई किसी की सिफ़ारिश भी नहीं कर सकेगा। ऐसी दशा में काफ़िरों को जो यातना होगी तथा जिस प्रकार वह अल्लाह के बन्धन में जकड़े होंगे उसे यहाँ सोचा भी नहीं जा सकता कहाँ कि उसका कुछ अनुमान लगाया जा सकता हो। यह तो अपराधियों तथा अत्याचारियों की दशा होगी। किन्तु ईमान वालों तथा आज्ञा पालकों की स्थिति इससे सर्वथा विभिन्न होगी जैसाकि आगामी आयतों में है।

[4]अर्थात उनके प्रतिफलों तथा उन उपहारों की ओर जो उसने स्वर्ग में अपने बन्दों के लिए तैयार किये हैं। कुछ कहते हैं कि क़ियामत के दिन कहा जायेगा। कुछ कहते हैं कि मौत के साथ भी फ़रिश्ते शुभ सूचना देते हैं। इसी प्रकार क़ियामत के दिन भी उससे

The Ummah Technology Mission

فَادْخُلِي فِي عِبٰدِي ﴿٢٩﴾

(२९) मेरे विशेष दासों में सम्मिलित हो जा।

وَادْخُلِي جَنَّتِي ﴿٣٠﴾

(३०) तथा मेरे स्वर्ग में चली जा।

سُوْرَةُ الْبَلَدِ

सूरतुल बलद-९०

सूरतुल बलद मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें बीस आयते हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

لَآ أُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿١﴾

(१) मैं इस नगर की सौगन्ध खाता हूँ।[1]

وَأَنْتَ حِلٌّ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿٢﴾

(२) तेरे लिए इस नगर में युद्ध मान्य होने वाला है।[2]

कहा जायेगा जो यहाँ चर्चित है। हाफ़िज इब्ने कसीर ने इब्ने असाकिर के हवाले से नकल किया है कि नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) ने एक व्यक्ति को यह दुआ पढ़ने का आदेश दिया।

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ نَفْسًا، بِكَ مُطْمَئِنَّةً، تُؤْمِنُ بِلِقَائِكَ، وَترضى بِقَضَائِكَ وتَقْنَعُ بِعَطَائِكَ» .

(इब्ने कसीर)

[1] **सूरतुल बलद** : इससे अभिप्राय मक्का नगर है जिसमें इस सूरत के अवतरण के समय माननीय नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) का निवास था। आप की जन्मभूमि भी यही नगर था। अर्थात अल्लाह आप की जन्मभूमि तथा निवासस्थान की शपथ ली है जिससे उसकी प्रतिष्ठा का अधिक स्पष्टीकरण होता है।

[2] यह संकेत है उस समय की ओर जब मक्का विजय हुआ। उस समय इस पवित्र नगरी में अल्लाह ने लड़ाई को वैध कर दिया था। जबकि उसमें लड़ाई की अनुमति नहीं। जैसे हदीस है नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) ने कहा इस नगर को अल्लाह ने उस समय से आदरणीय बनाया है जबसे आकाश तथा धरती बनाई। फिर यह अल्लाह का निर्धारित सम्मान के कारण प्रलय तक आदरणीय है, न इसका वृक्ष काटा जाये न उसके काँटे उखाड़े जायें। मेरे लिए इसे केवल एक पल के लिए वैध (हलाल) किया गया था आज उसका आदर फिर उसी प्रकार लौट आया जैसे कल था ----- यदि यहाँ कोई लड़ाई के

The Ummah Technology Mission

وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ۝٣

(३) तथा सौगन्ध है मानवीय पिता तथा सन्तान की।[1]

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي كَبَدٍ ۝٤

(४) नि:संदेह हमने मनुष्य को (अत्यन्त) परिश्रम में पैदा किया है।[2]

أَيَحْسَبُ أَن لَّن يَقْدِرَ عَلَيْهِ أَحَدٌ ۝٥

(५) क्या यह विचार करता है कि यह किसी के वश में ही नहीं ?[3]

يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ۝٦

(६) कहता (फिरता) है कि मैंने तो अत्यधिक माल ख़र्च कर डाला।[4]

लिए प्रमाण स्वरूप मेरी लड़ाई पेश करे तो उससे कहो कि अल्लाह के रसूल को इसकी अनुमति अल्लाह ने दी थी। जबकि उसने तुमको यह अनुमति नहीं दी। (सहीह अलबुख़ारी, किताबुल इल्म, बाबु लियो बल्लिगश शाहिदु मिनकुम अल गाइबा, मुस्लिम किताबुल हज्ज)

इस आधार पर अर्थ होगा कि. وَأَنْتَ حِلٌّ بِهٰذا البَلَدِ فِي المُسْتَقْبل कुछ ने इस का अर्थ यह किया है कि तू इस नगर का निवासी है। किन्तु इमाम शौकानी फ़रमाते हैं यह अर्थ उसी समय सही होगा जब अरब की भाषा से यह सिद्ध हो कि حِلٌّ *हिल्लुन* (उतरना तथा रहना) के अर्थ में होता है। यह मध्यवर्ती वाक्य है।

[1]कुछ ने इसका अर्थ आदरणीय आदम तथा उनकी सन्तान लिया है तथा कुछ के विचार से यह साधारण है प्रत्येक बाप तथा सन्तान इसमें सम्मिलित हैं।

[2]अर्थात उसका जीवन कष्टों, आपत्तियों तथा दुखों से भरपूर है। इमाम तब्री ने यही अर्थ लिया है। यह सौगन्ध का उत्तर है।

[3]अर्थात कोई उसकी पकड़ करने पर सामर्थ्य नहीं ?

[4] لُبَدًا अत्यधिक ढेर, अर्थात दुनियाँ के विषय में तथा बेकार वस्तु के लिए खूब पैसा उड़ाता है। फिर गर्व से लोगों से कहता फिरता है।

The Ummah Technology Mission

أَيَحْسَبُ أَن لَّمْ يَرَهُۥٓ أَحَدٌ ۝٧

(७) क्या (इस प्रकार) समझता है कि किसी ने उसे देखा (ही) नहीं ?[1]

أَلَمْ نَجْعَل لَّهُۥ عَيْنَيْنِ ۝٨

(८) क्या हम ने उसकी दो आँखें नहीं बनायीं ?[2]

وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۝٩

(९) तथा एक जीभ एवं दो होंठ (नहीं बनाये) ?[3]

وَهَدَيْنَٰهُ ٱلنَّجْدَيْنِ ۝١٠

(१०) तथा उसको दोनों मार्ग दिखा दिये ।[4]

فَلَا ٱقْتَحَمَ ٱلْعَقَبَةَ ۝١١

(११) तो उससे न हो सका की घाटी में प्रवेश करता ।[5]

---

[1]इस प्रकार अल्लाह की अवज्ञा में धन ख़र्च करता है तथा समझता है कि कोई देख नहीं रहा है ? जबकि अल्लाह सब देख रहा है । जिस पर वह बदला देगा । आगे अल्लाह अपने कुछ पुरस्कारों की चर्चा कर रहा है ताकि ऐसे लोग शिक्षा लें ।

[2]जिनसे वह देखता है ।

[3]वह अपने मुख (ज़बान) से बोलता तथा अपने मन की बात व्यक्त करता है होंठों से बोलने तथा खाने में सहायता लेता है । इसके सिवा वह उसके चेहरे मुँह के लिये शोभा का भी कारण है ।

[4]अर्थात भलाई की भी तथा बुराई की भी, कुफ़्र की भी ईमान की भी, सौभाग्य की भी दुर्भाग्य की भी, जैसे (अद्दहर-३) में फ़रमाया :

﴿إِنَّا هَدَيْنَٰهُ ٱلسَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا﴾

نَجْدٌ का अर्थ ऊँचा स्थान है । इसलिए कुछ ने यह अनुवाद किया है हमने मनुष्य को (माँ की) दो छातियाँ बता दीं कि वह स्तन से बाल्यकाल में उससे अपना खाद्य प्राप्त करे किन्तु प्रथम भावार्थ अधिक सही है ।

[5] عَقَبَةٌ घाटी को कहते हैं । अर्थात वह मार्ग जो पर्वत में हो । यह साधारणतय: दुर्गम होता है । यह वाक्य नकारत्मक प्रश्न के भाव में है अर्थात क्या वह घाटी में प्रवेश नहीं किया ? अर्थ है, नहीं किया । यह एक उदाहरण है उस परिश्रम तथा प्रयास का जो पुण्य के कर्म के लिए एक इंसान को शैतानी संदेहों तथा मनोकामनाओं के विरूद्ध करना

The Ummah Technology Mission

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ﴿١٢﴾

(१२) तथा तू क्या समझा कि घाटी है क्या ?

فَكُّ رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾

(१३) किसी गर्दन (दास-दासी) को स्वतन्त्र करना।

اَوْ اِطْعٰمٌ فِيْ يَوْمٍ ذِيْ مَسْغَبَةٍ ﴿١٤﴾

(१४) अथवा भूख वाले दिन खाना खिलाना।

يَّتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٥﴾

(१५) किसी निकट सम्बन्धी अनाथ को।

اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٦﴾

(१६) अथवा भूमि पर पड़े दरिद्र को।[1]

ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ﴿١٧﴾

(१७) फिर उन लोगों में से हो जाता जो ईमान लाये[2] तथा एक-दूसरे को धैर्य की एवं दया करने की वसीयत करते हैं।[3]

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿١٨﴾

(१८) यही लोग हैं दायें हाथ वाले।

पड़ता है। जैसे घाटी पर चढ़ने के लिये कड़े परिश्रम की आवश्यकता होती है। (फ़तहुल क़दीर)

[1] مَسْغَبَةٍ، مَجَاعَةٍ भूक يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ भूक का दिन ذَا مَتْرَبَةٍ (धूलवाला) अर्थात जो दरिद्रता तथा ग़रीबी के कारण धूल (धरती) पर पड़ा हो। उसका घरबार भी न हो। अभिप्राय यह है किसी दास-दासी को मुक्त करा देना, किसी भूखे को, सम्बन्धी अनाथ अथवा ग़रीब को खाना खिला देना। यह दुष्पार घाटी में प्रवेश करना है। जिसके द्वारा इंसान नरक से बच कर स्वर्ग में जा पहुँचेगा। अनाथ का पोषण वैसे ही बड़े पुण्य का कार्य है किन्तु यदि सम्बन्धी भी है तो उसके पालन-पोषण का दुगना पुण्य है। एक दान का दूसरा सम्बन्ध जोड़ने का। इसी प्रकार दास मुक्त करने की भी बड़ी प्रधानता हदीसों में आयी है। वर्तमान युग में किसी ऋणी को ऋण से मुक्त कर देना उसका एक रूप हो सकता है यह भी एक प्रकार فَكُّ رَقَبَةٍ है।

[2] इससे विदित हुआ कि उपरोक्त कर्म उसी समय लाभप्रद तथा परलौकिक सौभाग्य का कारण होंगे जब उनका करने वाला ईमान रखता होगा।

[3] ईमान वालों की विशेषता है कि वह एक-दूसरे को धैर्य तथा दया का निर्देश देते हैं।

The Ummah Technology Mission

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ﴿١٩﴾

(१९) तथा जिन लोगों ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र किया, वही लोग हैं बायें हाथ वाले।

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ﴿٢٠﴾

(२०) उन्हीं पर अग्नि होगी जो चारों ओर से घेरे हुए होगी।[1]

सूरतुश शम्स-९१

سُوْرَةُ الشَّمْسِ

सूरतुश शम्स मक्का में अवतरित हुई तथा इसमे पन्द्रह आयते हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ﴿١﴾

(१) सौगन्ध है सूर्य की एवं उसकी धूप की।[2]

وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰهَا ﴿٢﴾

(२) सौगन्ध है चन्द्रमा की जब उसके पीछे आये।[3]

وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰهَا ﴿٣﴾

(३) सौगन्ध है दिन की जब सूर्य को प्रकट करे।[4]

---

[1] مُؤْصَدَةٌ का अर्थ مُغْلَقَةٌ है (बंद) अर्थात उनको आग में डालकर चारों ओर से बंद कर दिया जायेगा। ताकि एक तो आग की पूरी तपन उनको पहुँचे, दूसरे वह कहीं भाग कर जा न सकें।

[2] ***सूरतुश शम्स*** : अथवा उसके प्रकाश की अथवा ضُحًى से अभिप्राय दिन है अर्थात सूर्य एवं दिन की सौगन्ध।

[3] अर्थात जब सूर्यास्त के पश्चात वह उदय हो। जैसा पहले आधे महीने में ऐसा होता है।

[4] अथवा अंधेरे को दूर करे। अंधकार की चर्चा यद्यपि नहीं है। परन्तु पूर्व वाक्य इस की ओर संकेत करता है। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

وَالَّيۡلِ اِذَا يَغۡشٰهَا ۙ﴿۴﴾

(४) सौगन्ध है रात्रि की जब उसे ढाँक ले।[1]

وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰهَا ۙ﴿۵﴾

(५) सौगन्ध है आकाश की तथा उसके बनाने की।[2]

وَالۡاَرۡضِ وَمَا طَحٰهَا ۙ﴿۶﴾

(६) सौगन्ध है धरती की तथा उसे समतल करने की।[3]

وَنَفۡسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ۙ﴿۷﴾

(७) सौगन्ध है आत्मा की तथा उसका सुधार करने की।[4]

فَاَلۡهَمَهَا فُجُوۡرَهَا وَتَقۡوٰىهَا ۙ﴿۸﴾

(८) फिर समझ दी उसने पाप की तथा उससे बचने की।[5]

قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ زَكّٰىهَا ۙ﴿۹﴾

(९) जिसने उसे पवित्र किया वह सफल हो गया।[6]

---

[1]अर्थात सूर्य को ढाँप ले तथा प्रत्येक दिशा में अंधेरा छा जाये।

[2]अथवा उस सत्ता की जिसने उसे बनाया। प्रथम अर्थ के आधार पर مَا धातु के अर्थ के लिये है तथा दूसरे अर्थ के आधार पर مَا का अर्थ مَنْ है।

[3]अथवा जिसने उसे समतल बनाया।

[4]अथवा जिसने उसे सुधारा। सुधारने का अभिप्राय है उसके अंगों को संतुलित बनाया। बेढब तथा बेढंगा नहीं बनाया।

[5] اِلْهَام का अभिप्राय यह है कि उन्हें भली प्रकार समझा दिया तथा नबियों एवं आकाशीय ग्रंथों के द्वारा भलाई-बुराई से परिचित करा दिया। अर्थात अर्थ यह है कि उनकी प्रकृति तथा समझ में भलाई-बुराई तथा पुण्य एवं पाप का बोध रख दिया ताकि वह पुण्य को अपनायें तथा पाप से बचें।

[6]शिर्क से पाप से तथा नैतिक पतन से पाक किया। वह परलौकिक सौभाग्य से तथा सफलता से अलंकृत होगा।

The Ummah Technology Mission

وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰهَا ﴿١٠﴾

(१०) तथा जिसने उसे मिट्टी में मिला दिया वह असफल हो गया।[1]

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ ﴿١١﴾

(११) समूदियों ने अपनी उद्दण्डता के कारण झुठलाया।[2]

اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰىهَا ﴿١٢﴾

(१२) जब उनमें का बड़ा दुर्भाग्यशाली उठ खड़ा हुआ।[3]

فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ﴿١٣﴾

(१३) उन्हें अल्लाह के सन्देष्टा ने कह दिया था कि अल्लाह (*तआला*) की ऊँटनी तथा उसके पीने की बारी की (सुरक्षा करो)।[4]

فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۖ فَدَمْدَمَ

(१४) उन लोगों ने अपने संदेष्टा को झूठा समझ कर उस ऊँटनी को मार डाला,[5] तो

---

[1]अर्थात जिसने उसे गुमराह कर लिया वह हानि में रहा। دَسٌّ यह تَدْسِيسٌ से बना है। जिसका अर्थ है, एक चीज़ को दूसरी चीज़ से छुपा देना। دَسَّاهَا का अर्थ होगा जिसने अपनी आत्मा को छुपा दिया उसे बेकार छोड़ दिया तथा उसे अल्लाह की आज्ञाकारिता तथा पुण्य के कर्मों के साथ प्रसिद्ध नहीं किया।

[2] طُغْيَانٌ वह उद्दण्ता जो सीमा पार कर जाये, इसी उद्दण्ता ने उन्हें झुठलाने पर उत्साहित किया।

[3]जिस का नाम व्याख्याकारों ने केदार बिन सालिफ़ बताया है उसने ऐसा कुकर्म किया कि हतभागों का प्रमुख बन गया। सबसे बड़ा हत भागा।

[4]अर्थात उस ऊँटनी को हानि पहुँचाये। इसी प्रकार जो उसके पानी पीने का दिन हो उसमें गड़बड न की जाये। ऊँटनी तथा समूद जाति दोनों के लिए पानी का एक-एक दिन निर्धारित कर दिया गया था। उस की रक्षा पर बल दिया गया था। किन्तु इन अत्याचारियों ने चिंता न की।

[5]यह कुकर्म एक ही व्यक्ति केदार ने किया था। किन्तु उसके कुकर्म में सम्पूर्ण जाति भी उसके साथ थी इसलिए इन सबको बराबर का दोषी माना गया तथा झुठलाने एवं ऊँटनीं के मारने को पूरी जाति से सम्बन्धित किया गया। जिससे यह नियम विदित हुआ कि एक कुकर्म यदि कदाचित व्यक्ति करें किन्तु पूरा समुदाय उस कुकर्म का इंकार न करे।

The Ummah Technology Mission

عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ﴿١٤﴾

उनके प्रभु ने उनके पाप के कारण [1] उन पर विनाश डाल दिया तथा फिर विनाश को जनसामान्य के लिए कर दिया तथा उस बस्ती को बराबर कर दिया।[2]

وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ﴿١٥﴾

(१५) वह इस प्रकोप के परिणाम से निर्भय है।[3]

سُوْرَةُ اللَّيْلِ सूरतुल लैल-९२

सूरतुल लैल मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें इक्कीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ﴿١﴾

(१) सौगन्ध है रात्रि की जब छा जाये।[4]

अपितु उसे प्रिय समझे तो पूरी जाति इस कुकर्म की दोषी मानी जायेगी तथा इस अपराध अथवा कुकर्म में बराबर की भागी समझी जायेगी।

[1] دَمْدَمَ عَلَيْهِمْ उनको विनष्ट कर दिया तथा उनपर घोर प्रकोप उतारा।

[2] सार्वजनिक कर दिया। अर्थात इस यातना में सबको समान कर दिया किसी को नहीं छोड़ा। छोटे, बड़े सबको नष्ट ध्वस्त कर दिया गया। अथवा धरती को उनपर बराबर कर दिया, अर्थात सबको धरती के भीतर कर दिया।

[3] अर्थात अल्लाह को यह भय नहीं है कि उसने उन्हें दण्ड दिया है तो कोई बड़ी शक्ति उससे बदला लेगी। वह परिणाम से निर्भीक है क्योंकि कोई ऐसी शक्ति नही है जो उससे बढ़कर अथवा उसके बराबर ही हो जो उससे प्रतिकार लेने का सामर्थ्य रखती हो।

[4] ***सूरतुल लैल :*** अर्थात क्षितिज में छा जाये, जिस से दिन का प्रकाश समाप्त तथा अंधकार हो जाये।

The Ummah Technology Mission

وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّىٰ ﴿٢﴾

(२) तथा सौगन्ध है दिन की जब प्रकाशित हो जाये।[1]

وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ﴿٣﴾

(३) तथा सौगन्ध है उस (शक्ति) की जिसने नर-मादा को पैदा किया।[2]

إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّىٰ ﴿٤﴾

(४) नि:संदेह तुम्हारा प्रयत्न विभिन्न प्रकार का है।[3]

فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَاتَّقَىٰ ﴿٥﴾

(५) तोजो व्यक्ति देता रहा तथा डरता रहा।[4]

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ﴿٦﴾

(६) तथा उत्तम बातों की पुष्टि करता रहा।[5]

فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَىٰ ﴿٧﴾

(७) तो हम भी उसके लिये सरलता उत्पन्न कर देंगे।[6]

---

[1]अर्थात रात का अंधकार समाप्त तथा दिन का उजाला फैल जाये।

[2]यह अल्लाह ने अपनी सौगन्ध खाई है क्योंकि नर-नारी दोनों का रचयिता अल्लाह ही है यहाँ مَا-الَّذِي के अर्थ में है।

[3]अर्थात कोई अच्छा कर्म करता है, जिसका बदला स्वर्ग है तथा कोई बुरे कर्म करता है जिसका बदला नरक है। यह सौगन्ध का उत्तर है شَتَّى बहुवचन है شَتِيتٌ का जैसे مَرْضَى का مَرِيضٌ।

[4]अर्थात भलाई के कामों में ख़र्च करेगा तथा अवैध से बचेगा।

[5]अथवा अच्छे प्रतिकार की पुष्टि करेगा। अर्थात इस बात के प्रति विश्वास रखेगा कि दान तथा संयम का अल्लाह की ओर से उत्तम बदला मिलेगा।

[6] يُسْرَى का अभिप्राय नेकी तथा الْخَصْلَةُ الْحُسْنَى है अर्थात हम पुण्य तथा आज्ञा पालन की उसे योग्यता देते तथा उनको उसके लिये सहज कर देते हैं। व्याख्याकार कहते हैं कि यह आयत आदरणीय अबूबक्र सिद्दीक के बारे में उतरी है जिन्होंने छ: दास मुक्त किये जिन्हें मुसलमान होने के कारण मक्कावासी कड़ी यातनायें देते थे। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

وَاَمَّا مَنۡۢ بَخِلَ وَاسۡتَغۡنٰىۙ ﴿۸﴾

(८) परन्तु जिसने कंजूसी की तथा निश्चिन्तता व्यक्त किया ।[1]

وَكَذَّبَ بِالۡحُسۡنٰىۙ ﴿۹﴾

(९) तथा पुण्यकारी बातों को झुठलाया ।[2]

فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلۡعُسۡرٰىؕ ﴿۱۰﴾

(१०) तो हम भी उस पर संकीर्णता तथा कठिनाई का साधन उपलब्ध करा देंगे ।[3]

وَمَا يُغۡنِىۡ عَنۡهُ مَالُهٗۤ اِذَا تَرَدّٰىؕ ﴿۱۱﴾

(११) तथा उसका माल उसके (मुख के बल) गिरते समय कोई काम न आयेगा ।[4]

اِنَّ عَلَيۡنَا لَلۡهُدٰىۚ ﴿۱۲﴾

(१२) नि:संदेह मार्ग दिखा देना हमारा दायित्व है ।[5]

---

[1]अर्थात अल्लाह के मार्ग में व्यय न करेगा न अल्लाह की आज्ञा की परवाह ही करेगा ।

[2]अथवा परलोक के बदले तथा हिसाब-किताब का इंकार करेगा ।

[3] عُسۡرَى (तंगी) से अभिप्राय कुफ़्र, अवज्ञा तथा दुराचार है, अर्थात हम उस के लिये अवज्ञा का मार्ग सरल कर देंगे । जिससे उसके लिये भलाई तथा सौभाग्य के मार्ग कठिन हो जायेंगे । पवित्र क़ुरआन में यह विषय कई स्थान पर वर्णित हुआ है । कि जो भलाई तथा सत्य का मार्ग अपनाता है अल्लाह उसके लिए भलाई का मार्ग सहज कर देता है तथा जो उपद्रव एवं पाप को अपनाता है अल्लाह उसको उसकी दशा पर छोड़ देता है । तथा यह उस भाग्य के अनुकूल ही होता है जो अल्लाह ने अपने ज्ञान से लिख रखा है । (इब्ने कसीर) यह विषय हदीस में भी वर्णन किया गया है नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* ने फ़रमाया तुम कर्म करो प्रत्येक व्यक्ति जिस कर्म के लिये पैदा किया गया है वह उसके लिये सहज कर दिया जाता है । जो भाग्यशाली है उसे सौभाग्य के कर्म की सुविधा दे दी जाती है । तथा जोहतभागा होता है उसके लिये हतभागोके कर्म सहज कर दिये जाते हैं । (सहीह अल-बुख़ारी तफ़सीर *सूरतुल लैल*)

[4]अर्थात जब नरक में गिरेंगे तो यह धन जिसे वह ख़र्च नहीं करता था कुछ काम न आयेगा ।

[5]अर्थात वैध-अवैध, भला-बुरा, मार्गदर्शन-पथभ्रष्टा को स्पष्ट तथा वर्णित करना हमारा दायित्व है (जो कि हम ने कर दिया है)

The Ummah Technology Mission

وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ ﴿١٣﴾

(१३) तथा हमारे ही हाथ परलोक एवं यह लोक है।[1]

فَأَنذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّىٰ ﴿١٤﴾

(१४) मैंने तो तुम्हें शोले मारती अग्नि से डरा दिया है।

لَا يَصْلَاهَا إِلَّا الْأَشْقَى ﴿١٥﴾

(१५) जिसमें केवल वह दुर्भाग्यशाली ही प्रवेश करेगा।

الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١٦﴾

(१६) जिसने झुठलाया तथा (उसके अनुकरण से) मुख फेर लिया।[2]

وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ﴿١٧﴾

(१७) तथा उससे ऐसा व्यक्ति दूर रखा जायेगा जो सदाचारी होगा।[3]

---

[1]अर्थात दोनों के स्वामी हम हैं। इनमें जैसे चाहें जो चाहें करें अत: इन दोनों के अथवा इनमें से किसी एक के अभिलाषी हम से ही माँगें क्योंकि प्रत्येक इच्छुक को अपनी इच्छानुसार हम ही देते हैं।

[2]इस आयत से मुजिया सम्प्रदाये ने जो एक ग़लत सम्प्रदाय गुज़रा है यह तर्क निकाला है कि नरक में केवल काफ़िर ही जायेंगे कोई मुसलमान चाहे, कितना पापी हो नरक में नहीं जायेगा किन्तु यह आस्था उन स्पष्ट सूत्रों के प्रतिकूल है जिनसे प्रतिपादित होता है कि बहुत से मुसलमान भी जिनको अल्लाह दण्ड देना चाहेगा कुछ समय के लिये नरक में जायेंगे फिर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रिश्तों तथा अन्य पवित्रात्माओं की सिफ़ारिश से निकाल लिये जायेंगे। यहाँ सीमित करने की शैली में जो कहा गया है। उससे अभिप्राय यह है कि जो लोग पक्के काफ़िर तथा अत्यन्त हतभाग हैं नरक वास्तव में उन्हीं के लिए बनाई गयी है जिसमें वे अवश्य तथा नित्य के लिये प्रवेश करेंगे। यदि कुछ अवज्ञाकारी मुसलमान नरक में जायेंगे तो वह आवश्यक रूप से सदा के लिये नहीं जायेंगे। अपितु दण्ड स्वरूप उनका यह प्रवेश साम्यिक होगा। (फ़तहुल क़दीर)

[3]अर्थात नरक से दूर रहेगा तथा स्वर्ग में प्रवेश करेगा।

The Ummah Technology Mission

الَّذِيْ يُؤْتِيْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ﴿١٨﴾

(१८) जो शुद्धता प्राप्त करने के लिए अपना माल देता है।[1]

وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰٓى ﴿١٩﴾

(१९) किसी का उस पर कोई उपकार नहीं कि जिसका बदला दिया जा रहा हो।[2]

اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ﴿٢٠﴾

(२०) अपितु केवल अपने महान सर्वोच्च प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त करना होता है।[3]

وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ﴿٢١﴾

(२१) नि:संदेह वह (अल्लाह भी) शीघ्र ही प्रसन्न हो जायेगा।[4]

---

[1]अर्थात जो अपना धन अल्लाह की आज्ञानुसार ख़र्च करेगा ताकि उसका मन तथा धन पवित्र हो जाये।

[2]अर्थात वदला उतारने के लिये न ख़र्च करता हो।

[3]अपितु शुद्ध मन से अल्लाह की प्रसन्नता तथा स्वर्ग में उसके दर्शन के लिये ख़र्च करता है।

[4]अथवा वह प्रसन्न हो जायेगा। अर्थात जो इन विशेषताओं से युक्त होगा। अल्लाह (तआला) उसे स्वर्ग की अनुकम्पायें तथा आदर-भाव प्रदान करेगा जिससे वह प्रसन्न हो जायेगा। अधिकांश व्याख्याकारों ने कहा है बल्कि कुछ ने सम्पूर्ण सहमति तक नकल किया है कि यह आयतें माननीय अबूबक्र सिद्दीक की शान में उतरीं हैं फिर भी अर्थ तथा भावार्थ के आधार पर साधारण है। जो भी इन उच्च गुणों से युक्त होगा वह अल्लाह के सदन में इसका चरितार्थ होगा।

The Ummah Technology Mission

सूरतुददुहा-९३

سُوْرَةُ الضُّحٰى

सूरतुददुहा मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें ग्यारह आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

وَالضُّحٰى ۝١

(१) सौगन्ध है चाश्त (सूर्य के ऊँचे हो जाने) के समय की।[1]

وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۝٢

(२) तथा सौगन्ध है रात्रि की जब छा जाये।[2]

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ۝٣

(३) न तो तेरे प्रभु ने तुझे छोड़ा है, न विमुख हो गया है।[3]

وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ۝٤

(४) नि:संदेह तेरे लिए अन्त आरम्भ से उत्तम है।[4]

सूरतुददुहा : एक बार नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) रोग ग्रस्त हो गये दो-तीन रातें आप ने तहज्जुद की नमाज नहीं पढ़ी। एक स्त्री आप के पास आई तथा कहने लगी। हे मोहम्मद (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) लगता है तेरे शैतान ने तुझे छोड़ दिया है। दो-तीन रातों से देख रही हूँ कि वह तेरे पास नहीं आया। जिस पर अल्लाह ने यह आयत अवतरित की। (सहीह अल-बुख़ारी, तफ़सीर *वददुहा*) यह स्त्री अबूलहब की पत्नी उम्मे जमील थी। (फ़तहुल बारी)

[1] चाश्त (दुहा) उस समय को कहते हैं जब सूर्य ऊँचा होता है। यहाँ अभिप्राय पूरा दिन है।

[2] سَجٰى का अर्थ سَكَنَ है जब शान्त हो जाये अर्थात जब अंधकार पूर्णत: छा जाये। क्योंकि उस समय प्रत्येक वस्तु शान्त हो जाती है।

[3] जैसाकि काफ़िर समझ रहे हैं।

[4] अथवा परलोक (आख़िरत) संसार से उत्तम है दोनों भावार्थ अर्थानुसार उचित है।

The Ummah Technology Mission

وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ ﴿٥﴾

(५) तुझे तेरा प्रभु अतिशीघ्र (पुरस्कार) देगा तथा तू प्रसन्न हो जायेगा।[1]

أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ ﴿٦﴾

(६) क्या उसने तुझे अनाथ पाकर स्थान नहीं दिया ?[2]

وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ ﴿٧﴾

(७) तथा तुझे पथ भूला पाकर मार्गदर्शन नहीं दिया ?[3]

وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَىٰ ﴿٨﴾

(८) तथा तुझे निर्धन पाकर धनी नहीं बना दिया ?[4]

فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ﴿٩﴾

(९) तो अनाथ पर तू भी कठोरता न किया कर।[5]

وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿١٠﴾

(१०) तथा माँगने वाले को न डाँट-डपट।[6]

---

[1]इससे सांसारिक विजय तथा परलोक की सफलता अभिप्राय है इसमें वह सिफ़ारिश का अधिकार भी सम्मिलित है जो आप को अपने समूह के पापियों के लिये मिलेगा।

[2]अर्थात बाप के सहारे से भी वंचित था। हमने तेरी सहायता की तथा उपचार किया।

[3]अर्थात तुझे धर्म तथा धर्मविधान एवं ईमान का पता नहीं था। हमने तुझे मार्ग दर्शन दिया। नबूअत (दूतत्व) प्रदान किया तथा शास्त्र अवतरित किया। अन्यथा तू इससे पूर्व तो मार्ग दर्शन के लिये प्रयत्नशील था।

[4]धनी का अभिप्राय है अपने सिवा सबसे निस्पृह कर दिया। फिर तू भूख में धैर्यवान तथा धन में कृतज्ञ रहा। जैसे स्वयं नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) का कथन है कि धनी होना संसाधन की अधिकता का नाम नहीं है। वास्तविक धन सम्पन्नता दिल की सम्पन्नता है। (सहीह मुस्लिम किताबुज़ ज़कात, बाबुन लैसल गिना अन कसरतिल अर्ज़)

[5]अपितु उसके साथ कोमलता तथा उपकार का मामला कर।

[6]अर्थात उससे कड़ाई तथा घमन्ड न कर। न कड़ी-कड़वी बात कर। बल्कि जवाब भी देना हो तो प्रेम तथा प्यार से दो।

The Ummah Technology Mission

وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿١١﴾

(११) तथा अपने प्रभु के उपकारों का वर्णन करता रह।[1]

सूरतु अलम नश्रह-९४

سُورَةُ أَلَمْ نَشْرَحْ

सूरः अलम नश्रह मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें आठ आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ﴿١﴾

(१) क्या हमने तेरे लिए तेरा सीना नहीं खोल दिया।[2]

---

[1] अर्थात अल्लाह ने तुझ पर जो उपकार किये हैं। जैसे मार्ग दर्शन तथा रिसालत एवं नबूअत से सम्मानित किया। अनाथ होने के उपरान्त तेरे पालन-पोषण तथा संरक्षण की व्यवस्था की तुझे धैर्य तथा धन प्रदान किया। उन्हें कृतज्ञता तथा अनुगृहिता की भावना के साथ वर्णन कर। इससे विदित हुआ कि अल्लाह की अनुकम्पाओं की चर्चा तथा उनका प्रदर्शन अल्लाह को प्रिय है। किन्तु घमन्ड तथा गर्व स्वरूप नहीं अपितु अल्लाह की दयालुता एवं अनुग्रह का आभारी होते हुए उसकी शक्ति तथा सामर्थ्य से डरते हुए कि वह कहीं हमको इन अनुकम्पाओं से वंचित न कर दे।

[2] विगत सूरत में तीन पुरस्कारों का वर्णन था। इस सूरत में अधिक तीन अनुग्रह की चर्चा है। प्रथम सीना खोल देना, इससे अभिप्राय है वक्ष का प्रकाशित तथा विस्तृत हो जाना। ताकि सत्य भी स्पष्ट हो जाये तथा दिल में समा जाये। इस भावार्थ में क़ुरआन (*सूरतुल अनआम*-१२५) की यह आयत है।

﴿فَمَن يُرِدِ اللَّهُ أَن يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ﴾

जिसे अल्लाह मार्ग दर्शाना चाहे उसका वक्ष (सीना) इस्लाम के लिये खोल देता है। अर्थात वह इस्लाम को सत्य धर्म के रूप में पहचान लेता है तथा उसे स्वीकार कर लेता है। इस सीना फैलाने में वह वक्ष चीरना भी आ जाता है जो विश्वसनीय रिवायतों से दो बार रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* का किया गया। एक बार बाल्य अवस्था में जब आप की आयु चार वर्ष थी जिब्रील (फ़रिश्ता) आये तथा आप का दिल चीरा तथा उससे वह शैतानी भाग निकाल दिया जो प्रत्येक व्यक्ति के दिल में है। फिर उसे धोकर

The Ummah Technology Mission

وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ ﴿٢﴾

(२) तथा तुझ पर से तेरा बोझ उतार दिया।[1]

الَّذِي أَنقَضَ ظَهْرَكَ ﴿٣﴾

(३) जिसने तेरी पीठ तोड़ दी थी।

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ﴿٤﴾

(४) तथा हमने तेरा चर्चा उच्च कर दिया।[2]

فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿٥﴾

(५) तो अवश्य कठिनाई के साथ सरलता है।

إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿٦﴾

(६) नि:संदेह कठिनाई के साथ सरलता है।[3]

वंद कर दिया। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाबुल इस्रा) दूसरी बार मेराज के अवसर पर, आपका दिल निकाला गया। उसे ज़मज़म के जल से धुलकर अपने स्थान पर रख दिया गया। तथा उसे ईमान एवं तत्व दर्शिता से भर दिया गया (सहीहैन अववाबुल मेराज तथा किताबुस सलात)

[1]यह बोझ चालीस वर्षीय नुबूअत से पूर्व का बोझ है। इस युग में आप को यदि अल्लाह ने पापों से सुरक्षित रखा। किसी मूर्ति को आपने सजदा नहीं किया कभी मदिरा पान नहीं किया तथा अन्य पापों से भी विलग रहे। फिर भी अल्लाह की उपासना न आप जानते थे न की, इसलिये इस चालीस वर्ष उपासना एवं आज्ञा पालन न करने का बोझ आप पर था जो वास्तव में तो नहीं था किन्तु आपके संवेदन तथा प्रबोध ने उसे बोझ बना रखा था। अल्लाह ने उसे उतार देने की घोषणा करके आप पर अनुग्रह किया। यह मानों वही अर्थ है जो ﴿لِّيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ﴾ (अल-फ़त्ह) का है। कुछ कहते हैं कि यह नबूअत (दूतत्व) का बोझ था जिसे अल्लाह ने हल्का कर दिया। अर्थात उसके मार्ग की कठिनाईयाँ सहन करने का साहस तथा धर्म के प्रचार एवं आमन्त्रण में सुविधायें पैदा कर दीं।

[2]अर्थात जहाँ अल्लाह का नाम आता है, जैसे नमाज़, अज़ान तथा अन्य बहुत से स्थानों पर आप का नाम भी आता है। आदि ग्रंथों में आप की चर्चा तथा गुणों का विवरण है। फ़रिश्तों में आप की शुभ चर्चा है। आपके आज्ञा पालन को अल्लाह ने अपना आज्ञा पालन कहा है तथा अपनी आज्ञाकारिता के साथ आप की आज्ञाकारिता का भी आदेश दिया है। इत्यादि

[3]जो आप तथा सहाबा के लिये शुभसूचना है कि तुम इस्लाम की राह में जो कठिनाईयाँ सहन करोगे। घबराने की आवश्यकता नहीं उसके पश्चात ही अल्लाह तुम्हें सुख-सुविधा प्रदान करेगा। तथा ऐसा ही हुआ जिसे समस्त संसार जानता है।

The Dawah Technology Mission

فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ ۝٧

(७) तो जब तू ख़ाली हो तो (इबादत में) परिश्रम कर।[1]

وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝٨

(८) तथा अपने प्रभु की ओर दिल लगा।[2]

سُورَةُ التِّينِ

सूरतुत्तीन-९५

सूरतुत्तीन मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें आठ आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु तथा अत्यन्त कृपालु है।

وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ ۝١

(१) सौगन्ध है इंजीर की तथा ज़ैतून की।

وَطُورِ سِينِينَ ۝٢

(२) तथा सनायी के तूर (पर्वत) की।[3]

وَهَٰذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ ۝٣

(३) तथा इस शान्ति वाले नगर की।[4]

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ۝٤

(४) नि:संदेह हमने मनुष्य को अति उत्तम रूप में पैदा किया।[5]

---

[1]अर्थात नमाज़ से या धर्मप्रचार से तथा जिहाद से, तू दुआ में परिश्रम कर अथवा इतनी ईबादत कर कि तू थक जाये।

[2]अर्थात उसी से स्वर्ग की आशा रख। उसी से अपनी ज़रूरतें माँग तथा सभी विषय में उसी पर विश्वास तथा भरोसा कर।

[3]यह वही तूर पर्वत है जहाँ अल्लाह ने मूसा (*अलैहिस्सलाम*) से बात की थी।

[4]इससे अभिप्राय पवित्र नगर मक्का है जिसमें लड़ाई अवैध है। इसके सिवा जो इसमें प्रवेश कर जाये उसको शान्ति प्राप्त हो जाती है। कुछ व्याख्याकारों का कहना है कि वास्तव में तीन स्थानों की सौगन्ध है। जिनमें से प्रत्येक में मर्यादा धर्म विधान वाहक ईशदूत भेजे गये। इंजीर तथा ज़ैतून से अभिप्राय वह क्षेत्र है जहाँ इसकी उपज है। तथा वह *बैतुल मोक़द्दस* है जहाँ माननीय ईसा पैग़म्बर (ईशदूत) बनकर आये। सिना पर्वत अथवा सीनीन पर आदरणीय मूसा को नुबूअत (दूतत्व) प्रदान किया गया। तथा मक्का में ईशदूतों के प्रमुख आदरणीय मोहम्मद रसूल अल्लाह(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को भेजा गया। (इब्ने कसीर)

[5]यह शपथ का उत्तर है। अल्लाह ने प्रत्येक सृष्टि को ऐसे रचा है कि उनका मुख नीचे को झुका हुआ है केवल मनुष्य को लम्बा तथा सीधा आकार दिया है जो अपने हाथों से खाता तथा पीता है फिर उसके अंगों को संतुलित बनाया है। उसमें जानवरों के समान बेढगापन नहीं है प्रत्येक महत्वपूर्ण अंग दो दो बनाये तथा उनमें अति उचित दूरी रखी।

The Ummah Technology Mission

ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ۝٥

(५) फिर उसे नीचों से नीचा कर दिया।[1]

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝٦

(६) परन्तु जो लोग ईमान लाये तथा फिर पुण्य के कर्म किये, तो उनके लिए ऐसा बदला है। जो कभी समाप्त न होगा।[2]

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ۝٧

(७) तो तुझे अब बदले के दिन को झुठलाने पर कौन-सी बात उत्साहित करती है।[3]

اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ۝٨

(८) क्या अल्लाह (तआला) समस्त हाकिमों का हाकिम नहीं है ?[4]

फिर उसमें बोध विचार समझ आँख, कान रख दिये जो वास्तव में अल्लाह के गुण हैं। मानों इन गुणों के आधार पर इंसान अल्लाह के गुणों द्योतक तथा उसका प्रतिबिम्ब है। कुछ विद्वानों ने इस हदीस को भी इसी अर्थ तथा भावार्थ में लिया है।

«إِنَّ اللهَ خَلَقَ آدَمَ عَلٰى صُورَتِهِ» .

(मुस्लिम किताबुल बिर्रे वस सिला वल आदाब) अल्लाह ने आदम को अपने रूप पर पैदा किया। इन्सान की रचना में इन सब चीज़ों की व्यवस्था ही أَحْسَنِ تَقْوِيم (उत्तम संरचना) है जिसका वर्णन अल्लाह ने तीन सौगन्धों के पश्चात किया है। (फ़तहुल क़दीर)

[1]यह संकेत मनुष्य की अर्ज़ल आयु (बहुत अधिक आयु की ओर, जिसमें जवानी तथा यौवन के बाद बुढ़ापा तथा क्षीणता आ जाती है तथा इंसान की समझ बालक के समान हो जाती है। कुछ ने इससे कर्म का वह पतन लिया जिसमें लीन होकर इंसान अति पतित तथा साँप-बिच्छू से भी अधिक नीच बन जाता है तथा इससे कुछ ने वह अपमानित तथा हीनता की यातना ली है जो नरक में काफ़िरों के लिये है मानों मनुष्य अल्लाह तथा रसूल की अज्ञाकारिता से फिरकर अपने को उत्तम रचना के समान से गिराकर नरक की सबसे नीची श्रेणी में डालता है।

[2]पूर्व की आयत के प्रथम भावार्थ के आधार पर यह वाक्य वर्णन के लिये है जो मोमिनों की स्थिति का वर्णन कर रहा है। तथा दूसरे तीसरे भावार्थ के आधार पर पूर्व पर बल देने के लिये है कि इस परिणाम से उसने मोमिनों को अलग कर दिया है। (फ़तहुल क़दीर)

[3]यह इंसान से सम्बोधन है फटकार के लिए कि अल्लाह ने तुझे उत्तम रूप में बनाया तथा इसके विपरीत वह तुझे अपमान के गड्ढे में भी गिरा सकता है इसका अभिप्राय है कि पुर्नजीवन प्रदान करना कठिन नहीं इसके पश्चात भी तू प्रलय तथा प्रतिकार का इंकार करता है।

[4]जो किसी पर अत्याचार नहीं करता उसके न्याय ही की माँग है कि प्रलय की स्थापना करे तथा उससे न्याय करे जिस पर अत्याचार हुआ है। पहले गुज़र चुका है कि एक जीर्ण हदीस इसका उत्तर .«بَلٰى وَأَنَا عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِينَ» आया है (तिर्मिज़ी)

The Ummah Technology Mission

सूरतुल अलक़-९६ سُوْرَةُ الْعَلَقِ

सूरतुल अलक मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें उन्नीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِىْ خَلَقَ ۚ ①

(१) अपने प्रभु का नाम लेकर पढ़ जिसने पैदा किया।[1]

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ ②

(२) जिसने मनुष्य को रक्त के लोथड़े से पैदा किया।[2]

اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۙ ③

(३) तू पढ़ता रह तेरा प्रभु बड़ा उदार है।[3]

الَّذِىْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ ④

(४) जिसने क़लम के द्वारा (ज्ञान) सिखाया।[4]

---

[1] **सूरतुल अलक :** यह सर्वप्रथम प्रकाशना है जो नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) पर उस समय आई जब आप हिरा पर्वत की गुफा में उपासना में लीन थे। फ़रिश्ते ने आकर कहा पढ़ आपने फ़रमाया मैं तो पढ़ा हुआ नहीं हूँ। फ़रिश्ते ने आप को ज़ोर से भींचा तथा कहा पढ़ आपने फिर वही उत्तर दिया इस प्रकार तीन बार आप को भींचा (विवरण के लिये देखिए सहीह अलबुख़ारी बाब बदउल वह्यी -मुस्लिम अलईमान बाबु बदइल वह्यी) जो तेरी ओर प्रकाशना की जाती है वह पढ़ خَلَقَ जिसनें समस्त सृष्टि को रचा।

[2] सृष्टि में विशेषत: मनुष्य की उत्पत्ति की चर्चा की जिससे उसकी श्रेष्ठता स्पष्ट है।

[3] यह बल देने का स्वरूप है तथा इसमें बड़े प्रभावी ढंग से उस विवशता का निवारण फ़रमा दिया जो आप ने प्रस्तुत किया कि मैं तो पढ़ा ही नहीं हूँ, अल्लाह ने फ़रमा दिया अल्लाह बड़ा दयालु है पढ़। अर्थात मनुष्य की त्रुटियों को क्षमा करना उसका विशेष गुण है।

[4] قَلَمٌ का अर्थ है काटना, छीलना। क़लम (लेखनी) भी प्राचीन युग में छीलकर ही बनाया जाता था इसलिए लिखने के यंत्र को क़लम से व्यांजित किया। कुछ ज्ञान तो मनुष्य की बुद्धि में होता है। कुछ मुख से व्यक्त करता है। कुछ क़लम से काग़ज़ पर लिख लेता है। जो बुद्धि तथा स्मरण शक्ति में होता है वह मनुष्य के साथ ही चला जाता है। हाँ क़लम

The Ummah Technology Mission

عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۝٥

(५) जिसने मनुष्य को वह सिखाया जिसे वह नहीं जानता था।

كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى ۝٦

(६) वास्तव में मनुष्य तो आपे से बाहर हो जाता है।

اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ۝٧

(७) इसलिए कि वह अपने आप को निश्चिन्त (अथवा धनवान) समझता है।

اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ۝٨

(८) नि:संदेह लौटना तेरे प्रभु की ओर है।

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يَنْهٰى ۝٩

(९) (भला) उसे भी तूने देखा, जो (एक बन्दे को) रोकता है।

عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ۝١٠

(१०) जबकि वह बन्दा नमाज़ अदा करता है।[1]

اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰٓى ۝١١

(११) भला बताओ तो यदि वह सीधे मार्ग पर हो।[2]

से लिखा यदि किसी कारण से बर्बाद न हो तो सदा सुरक्षित रहता है। इसी क़लम द्वारा विगत लोगों के इतिहास तथा पूर्वजों के ज्ञान का कोष सुरक्षित है। यहाँ तक की आकाशीय धर्म शास्त्रों की सुरक्षा का साधन भी यही है। इससे क़लम का महत्व स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं रह जाती। इसलिये अल्लाह ने सबसे पहले क़लम को पैदा किया तथा उसे पूरी सृष्टि का भाग्य लिखने का आदेश दिया।

[1]व्याख्याकार कहते हैं कि रोकने वाले से अभिप्राय अबूजहल है जो इस्लाम का कड़ा विरोधी था عَبْدًا (एक भक्त) से अभिप्राय नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) हैं।

[2]अर्थात यह जिसे नमाज़ पढ़ने से रोक रहा है वह संमार्ग पर हो।

The Ummah Technology Mission

أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ ﴿١٢﴾

(१२) अथवा परहेज़गारी की अनुदेश देता हो।[1]

أَرَأَيْتَ إِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١٣﴾

(१३) भला देखो तो यदि यह झुठलाता हो तथा मुँह फेरता हो तो।[2]

أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ﴿١٤﴾

(१४) क्या यह नहीं जानता कि अल्लाह (तआला) उसे भली प्रकार देख रहा है।[3]

كَلَّا لَئِن لَّمْ يَنتَهِ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ﴿١٥﴾

(१५) नि:संदेह यदि ये नहीं रूका तो हम उसके ललाट के बाल पकड़कर घसीटेंगे।[4]

نَّاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ﴿١٦﴾

(१६) ऐसा ललाट जो झूठा तथा पापी है।[5]

فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ﴿١٧﴾

(१७) वह अपने सभा वालों को बुला ले।

---

[1]अर्थात शुद्धता, तौहीद (एकेश्वरवाद) तथा पुण्य के कर्मों की शिक्षा। जो नरक की अग्नि से मनुष्य बच सकता है। तो क्या यह चीजे नमाज़ पढ़ना तथा संयम की शिक्षा को देना। ऐसी बातें हैं कि उनका विरोध किया जाये तथा उस पर उसे धमकियाँ दी जायें ?

[2]अर्थात यह अबु जहल अल्लाह के पैग़म्बर को झुठलाता हो तथा ईमान से मुख फेरता हो। أَرَأَيْتَ यह أَخْبِرْنِي के अर्थ में है (मुझे बताओ)।

[3]अभिप्राय यह है कि यह जो उपरोक्त गतिविधियाँ कर रहा है, क्या नहीं जानता कि अल्लाह (तआला) सब कुछ देख रहा है। वह इसका उसको बदला देगा। अर्थात أَلَمْ يَعْلَمْ उपरोक्त शर्तों ﴿إِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ﴾ ، ﴿إِن كَانَ عَلَى الْهُدَىٰ * أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ﴾ की जज़ा है।

[4]अर्थात नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विरोध तथा शत्रुता से एवं आप को नमाज़ पढ़ने से जो रोकता है इससे रूका नहीं। لَنَسْفَعًا का अर्थ है لَنَأْخُذَنَّ हम उसका ललाट पकड़कर घसीटेंगे। हदीस में आता है कि अबू जहल ने कहा था कि, यदि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) काबा के पास नमाज़ पढ़ने से नहीं रूका तो उसकी गर्दन पर पाँव रख दूँगा। (अर्थात उसे रौंद दूँगा। तथा इस प्रकार अपमानित करूँगा) नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को यह सूचना मिली तो आप ने फ़रमाया यदि वह ऐसा करता तो फ़रिश्ते उसे पकड़ लेते। (सहीह अलबुख़ारी तफ़सीर *सूरतिल अलक़*)

[5]ललाट के यह गुणका अर्थ है कि वह झूठी है अपनी बात में, पापी है अपने कर्म में।

The Ummah Technology Mission

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ﴿١٨﴾

(१८) हम भी नरक के रक्षकों को बुला लेंगे।[1]

كَلَّا لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِب ﴿١٩﴾ السجدة

(१९) सावधान ! उसका कहना कदापि न मानना तथा सजदा करो एवं समीप हो जाओ।

सूरतुल क़द्र-९७

سُورَةُ الْقَدْرِ

सूरतुल क़द्र मक्का में अवतरित हुई तथा

---

[1]हदीस में आता है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के घर काबा के पास नमाज़ पढ़ रहे थे अबू जहल गुज़रा तो कहा हे मोहम्मद ! मैंने तुझे नमाज़ पढ़ने से नहीं रोका था ? तथा आप से धमकी भरी बातें कीं, आप ने भी कड़ा उत्तर दिया। तो कहने लगा हे मोहम्मद ! तू मुझे किस चीज़ से डराता है ? अल्लाह की सौगन्ध, इस वादी में सबसे अधिक मेरे समर्थक हैं जिस पर यह आयत अवतरित हुई। माननीय इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं। यदि वह अपने समर्थकों को बुलाता तो तत्क्षण यातना के फ़रिश्ते उन्हें पकड़ लेते। (तिर्मिजी तफ़सीर सूरते इक़रा, मुसनद अहमद १\३२९, तफ़सीर इब्ने जरीर) तथा सहीह मुस्लिम के शब्द हैं कि उसने आगे बढ़कर आप की गर्दन पर पैर रखने का इरादा किया कि तत्क्षण उलटे पाँव पीछे हटा, तथा अपने हाथों से अपना बचाव करने लगा, उससे कहा गया कि क्या बात है ? उसने कहा, मेरे तथा मोहम्मद के बीच आग की खाईं भयावह दृश्य तथा बहुत से पंख हैं। रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया। यदि वह मेरे समीप होता तो फ़रिश्ते उसकी बोटी-बोटी नोच लेते, (किताबु सिफ़ातिल क़यामह, बाबु इन्नल इंसाना ल यतगा) الزَّبَانِيَة अधिकारी पुलिस, अर्थात शक्तिशाली सेना। जिसका कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता।

सूरतुल क़द्र : इस सूरत के मक्की तथा मदनी होनें में मतभेद है इसका नाम रखने के कारण में विभेद है। क़द्र का अर्थ आदर-मान भी है। इसी कारण क़द्र की रात कहते हैं। इसका अर्थ अनुमान लगाना तथा निर्णय करना भी है। इसमें पूरे वर्ष का निर्णय किया जाता है। इसीलिये इसे لَيْلَةُ الْحُكْمِ भी कहते हैं। इसका अर्थ संकीर्णता भी है। इस रात इतनी अधिकता से फ़रिश्ते उतरते हैं कि धरती तंग हो जाती है। क़द्र की अर्थात संकीर्ण रात। अथवा इसलिये यह नाम रखा गया कि इस रात जो उपासना की जाती है अल्लाह के हाँ उसका बड़ा आदर है। तथा इस पर बड़ा पुण्य है। इस के निर्धारण में भी बड़ा मतभेद है। (फ़तहुल क़दीर) फिर भी हदीसों तथा सहाबा के कथनों से यह सिद्ध है कि यह रमज़ान महीने की अन्तिम दस विषम रातों में से कोई एक रात होती है। इस को स्पष्ट न करनें में यही मतभेद है कि लोग पाँचों ही रातों में इसका शुभ प्राप्त करने के लोभ में अल्लाह की अत्यधिक इबादत करें।

The Ummah Technology Mission

इसमें पाँच आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ فِى لَيْلَةِ ٱلْقَدْرِ ۝١

(१) नि:संदेह हमने उसे क़द्र (शुभ) की रात्रि में अवतरित किया।[1]

وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا لَيْلَةُ ٱلْقَدْرِ ۝٢

(२) तू क्या समझा कि क़द्र (शुभ) की रात्रि क्या है ?[2]

لَيْلَةُ ٱلْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ۝٣

(३) क़द्र की रात्रि एक हज़ार महीनों से श्रेष्ठ है।[3]

تَنَزَّلُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ

(४) इसमें (प्रत्येक कार्य को पूर्ण करने के लिये) अपने प्रभु के आदेश से फ़रिश्ते एवं

---

[1]अर्थात उतारना आरम्भ किया अथवा लौहे महफ़ूज़ से बैतुल इज़्ज़त में जो पहले आकाश पर है उतारा। तथा वहाँ से आवश्यकतानुसार नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* पर उतारता रहा। यहाँ तक कि लगभग २३ वर्ष में पूरा हो गया, तथा *लैलतुल क़द्र* रमज़ान ही में होती है। जैसाकि क़ुरआन की आयत ﴿شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِىٓ أُنزِلَ فِيهِ ٱلْقُرْءَانُ﴾ से स्पष्ट है।

[2]इस प्रश्न से इस रात की श्रेष्ठता तथा महत्व स्पष्ट करना है। मानो लोग उसके गूढ़ता तक पूर्ण रूप से पहुँच नहीं सकते। यह केवल अल्लाह ही है जो उसे जानता है।

[3]अर्थात इस एक रात की उपासना हज़ार महीनों से उत्तम है। तथा हज़ार महीने ८३ वर्ष ४ महीने बनते हैं। यह मोहम्मद *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* के अनुयाईयों पर अल्लाह का कितना महान अनुग्रह है कि लघु आयु में अधिक से अधिक पुण्य प्राप्त करने के लिये कैसी सरलता प्रदान कर दी है।

The Ummah Technology Mission

रूह (जिब्रील) उतरते हैं।[1] فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ۝

(५) यह रात्रि साक्षात् शान्ति की होती है,[2] तथा फ़ज्र के उदय होने तक (होती है)। سَلَامٌ هِيَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝

सूरतुल बय्यिनः-९८ سُورَةُ الْبَيِّنَةِ

सूरतुल बय्यिनः मदीनें में अवतरित हुई तथा इसमे आठ आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है। بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ۝

(१) अहले किताब के काफ़िर[3] तथा لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ

---

[1]रूह से अभिप्राय आदरणीय जिब्रील हैं। अर्थात फ़रिश्ते आदरणीय जिब्रील सहित इस रात धरती पर उतरते हैं तथा उन कामों को पूरा करते हैं जिनका निर्णय इस वर्ष में अल्लाह (*तआला*) फ़रमाता है।

[2]अर्थात इस में बुराई नहीं अथवा इस अर्थ में शान्ति की रात है कि मोमिन इस रात शैतान के उपद्रव से सुरक्षित रहते हैं। अथवा फ़रिश्ते ईमान वालों को सलाम करते हैं। अथवा फ़रिश्ते परस्पर सलाम करते हैं। *क़द्र* की रात के लिये रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* ने विशेष रूप से यह दुआ बताई है اللَّهُمَّ إِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ العفو فاعْفُ عَنِّي (तिर्मिजी, अववाबुद दावात, इब्ने माजा किताबुददुआ)

सूरतुल बय्यिनः इसका दूसरा नाम सूरत لَمْ يَكُنِ है। हदीस में है, नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) ने आदरणीय उब्य्य बिन काब से फ़रमाया अल्लाह ने मुझे आज्ञा दी है कि, मैं सूरत ﴿لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا﴾ तुझे पढ़कर सुनाऊँ। माननीय उबय्य ने पूछा, क्या अल्लाह ने आप के सामने मेरा नाम लिया है। आप ने फ़रमाया हाँ। जिस पर (अपार हर्ष से) उबय्य की आँखों में अश्रू आ गये। (सहीह बुखारी, तफ़सीर सूरत *लम यकुन*)

[3]इससे अभिप्राय यहूद तथा ईसाई हैं।

The Ummah Technology Mission

وَالْمُشْرِكِينَ مُنفَكِّينَ حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ﴿١﴾

मूर्तिपूजक[1] लोग, जब तक कि उनके पास स्पष्ट निशानी न आ जाये रूकने वाले न थे (वह निशानी यह थी कि)

رَسُولٌ مِّنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ﴿٢﴾

(२) अल्लाह (तआला) का एक [2] सन्देष्टा, जो पवित्र पुस्तक पढ़े।[3]

فِيهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ﴿٣﴾

(३) जिसमें ठीक एवं उचित आदेश हों।[4]

وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ﴿٤﴾

(४) अहले किताब अपने पास स्पष्ट निशानी आ जाने के पश्चात ही (मतभेद में पड़कर) विभाजित हो गये।[5]

---

[1]मुशरिक से अभिप्राय अरब तथा अन्य देशों के वे लोग हैं जो मूर्तियों तथा अग्नि के पुजारी थे। مُنفَكِّين रूकने वाले بَيِّنَة (प्रमाण) से अभिप्राय आदरणीय नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं। अर्थात यहूद, ईसाई तथा अरब एवं अन्य देशों के मुशरिकीन मानेंगे नहीं यहाँ तक कि उनके पास मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) क़ुरआन लायें तथा उनकी मूर्खता एवं कुमार्ग को बतायें तथा उन्हें ईमान का आमन्त्रण दें।

[2]अर्थात माननीय मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)।

[3]अर्थात क़ुरआन मजीद जो लौह महफ़ूज़ में पाक (पवित्र) पृष्ठों पर अंकित है।

[4]यहाँ كُتُبٌ पुस्तकों से अभिप्राय धर्म विधान तथा قَيِّمَةٌ संतुलित एवं सीधे।

[5]अर्थात ग्रन्थ धारी यहूदी एवं ईसाई माननीय नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आने से पहले एकमत थे। यहाँ तक की आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नबी बनकर आ गये। तत्पश्चात यह विभक्त हो गये उनमें से कुछ मोमिन हो गये किन्तु अधिकांश ईमान से वंचित ही रहे। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की (नुबूवत) तथा पैग़म्बरी को प्रमाण कहनें में यह बिन्दू कि आप की सत्यता स्पष्ट थी जिससे इंकार असम्भव था। किन्तु इन्होंने आप को केवल ईर्ष्या तथा शत्रुता के कारण झुठलाया। यही कारण है कि यहाँ विभेद करने वालों में मात्र अहले किताब का नाम लिया है जब कि दूसरों ने भी यह काम किया था। क्योंकि यह लोग जानते थे तथा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आने की चर्चा उनकी किताबों में विद्यमान थी।

The Ummah Technology Mission

وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ۝٥

(५) उन्हें इसके अतिरिक्त कोई आदेश नहीं दिया गया[1] कि केवल अल्लाह की इबादत करें उसी के लिए धर्म को शुद्ध कर रखें। इब्राहीम एकेश्वरवादी[2] के धर्म पर, तथा नमाज़ को स्थापित रखें तथा ज़कात देते रहें। यही धर्म सत्य तथा शाश्वत का है।[3]

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝٦

(६) नि:संदेह जो लोग अहले किताब में से काफ़िर हुए तथा मूर्तिपूजक, वे नरक की अग्नि (में जायेंगे) जहाँ वे सदैव रहेंगे, ये लोग निम्न श्रेणी की सृष्टि हैं।[4]

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝٧

(७) नि:संदेह जो लोग ईमान लाये तथा पुण्य के कार्य किये, ये लोग सर्वोच्च श्रेणी की सृष्टि हैं।[5]

---

[1]अर्थात उनकी किताबों में यह आदेश तो उन्हें दिया गया था।

[2] حَنِيْفٌ का अर्थ है झुकना, एकाग्र होना, حُنَفَاء बहुवचन है अर्थात बहुदेववाद से एकेश्वरवाद की ओर तथा सभी मतों से कटकर इस्लाम धर्म की ओर झुकते तथा एकाग्र होते हुए। जैसे माननीय इब्राहीम ने किया।

[3] القَيِّمَة विशेष्य लुप्त का विशेषण है دِيْنُ اللّٰهِ القَيِّمَةِ यही इस मिल्लत एवं उम्मत का धर्म है जो सीधा-संतुलित है। अधिकाँश विद्वानों ने इस आयत से यह भाव निकाला है कि कर्म ईमान में प्रविष्ट है। (इब्ने कसीर)

[4]यह अल्लाह के रसूलों तथा उसके शास्त्रों का इंकार करने वालों का परिणाम है। तथा उन्हें पूरी सृष्टि से अवाक्षनीय कहा गया है।

[5]जो दिल से ईमान लाये तथा अंगों से कर्म किये वह पूरी सृष्टि से उत्तम तथा प्रधान हैं। जो विद्वान यह मानते हैं कि मोमिन बंदे फ़रिश्तों से उत्तम तथा प्रतिष्ठित है उनका तर्क यह आयत भी है। البَرِيَّة यह (خَلَق) بَرَأَ से है जिसका अर्थ पैदा करना है। इसी से

The Ummah Technology Mission

جَزَآؤُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۖ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُۥ ۝٨

(८) उनका बदला उनके प्रभु के पास स्थायी रहने वाले स्वर्ग हैं जिनके नीचे (शीतल जल की) सरितायें प्रवाहित हैं जिनमें वे सदैव रहेंगे। अल्लाह (तआला) उनसे प्रसन्न हुआ[1] तथा ये उससे।[2] ये है उसके लिये जो अपने प्रभु से डरे।[3]

सूरतुज़ ज़िल्ज़ाल-९९

سُورَةُ الزِّلْزَالِ

सूरतुज ज़िल्ज़ाल मदीने में अवतरित हुई तथा इसमें आठ आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

अल्लाह का विशेषण الْبَارِي है। इसलिये بَرِيَّة वास्तव में بَرِيئَة है हमज़ा को या से बदल दिया फिर या की या में संधि कर दिया।

[1]उनके ईमान, पुण्य के कर्म तथा अनुज्ञा के कारण तथा अल्लाह की प्रसन्नता सबसे महान है। ﴿وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرُ﴾ (अततौबः-७२)

[2]इसलिये कि अल्लाह ने उन्हें ऐसे उपहारों से सम्मानित कर दिया जिसमें उनकी आत्मा तथा शरीर दोनों का सौभाग्य है।

[3]अर्थात यह बदला तथा प्रसन्नता उन लोगों के लिये है। जो दुनिया में अल्लाह से डरते रहते हैं तथा इस डर के कारण अल्लाह की अवज्ञा से बचते हैं। यदि किसी समय मानवीय अभियाचना के कारण अल्लाह की अवज्ञा हो गई तो तुरन्त क्षमा याचना कर ली। तथा भविष्य के लिये अपना सुधार कर लिया यहाँ तक कि उनकी मौत इसी आज्ञा पालन पर हुई न कि अवज्ञा पर। इसका अर्थ यह है कि जो अल्लाह का डर रखता है वह अवज्ञा पर दुराग्रह नहीं करता न उस पर स्थिर रहता। तथा जो ऐसा करता है वास्तव में उसका दिल अल्लाह के भय से शून्य है।

सूरतुज ज़िल्ज़ाल : इसके मक्की तथा मदनी होनें में मतभेद है। इसकी प्रधानता में अनेकों रिवायतें हैं, किन्तु उनमें से कोई भी सही नहीं है।

The Ummah Technology Mission

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ﴿١﴾

(१) जब धरती पूर्णरूप से कंपित कर दी जायेगी।[1]

وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ﴿٢﴾

(२) तथा अपने बोझ बाहर निकाल फेंकेगी।[2]

وَقَالَ الْإِنسَانُ مَا لَهَا ﴿٣﴾

(३) तथा मनुष्य कहने लगेगा कि उसे क्या हो गया ?[3]

يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ﴿٤﴾

(४) उस दिन धरती अपनी सभी सूचनायें वर्णन कर देगी।[4]

بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ﴿٥﴾

(५) इसलिए कि तेरे प्रभु ने उसे आदेश दिया होगा।[5]

---

[1]इसका अभिप्राय यह है कि प्रचण्ड भूंचाल से पूरी धरती कांप जायेगी। तथा प्रत्येक चीज टूट-फूट जायेगी। यह समय होगा जब पहला नफ़ख़ा (फूंक) होगी।

[2]अर्थात धरती में जितने इंसान गड़े हुए हैं वह धरती का बोझ हैं। जिन्हें धरती क़ियामत के दिन निकाल फेंकेगी। अर्थात अल्लाह के आदेश से सब जीवित होकर बाहर निकल आयेंगे यह दूसरे नफ़ख़े (फूंक) में होगा। इस प्रकार धरती के कोष भी बाहर निकल आयेंगे।

[3]अर्थात भयभीत होकर कहेगा इसे क्या हो गया है ? यह क्यों इस प्रकार हिल रही है तथा अपने कोष उगल रही है।

[4]यह शर्त का उत्तर है। हदीस में है नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यह आयत पढ़ी तथा प्रश्न किया, जानते हो धरती की सूचनाऐं क्या हैं ? सहाबा ने उत्तर दिया अल्लाह तथा उसके रसूल उचित प्रकार जानते हैं। आपने फ़रमाया : उसकी सूचनायें यह हैं कि जिस बन्दे अथवा बन्दी ने धरती के ऊपर जो कुछ किया होगा उसकी गवाही देगी कहेगी अमुक-अमुक व्यक्ति ने अमुक-अमुक कर्म अमुक-अमुक दिन किया था। (तिर्मिज़ी अबवाबु सिफ़ातिल क़ियाम: तथा तफ़सीर इजा ज़ुलज़िलत, मुसनद अहमद २\३७४)

[5]अर्थात धरती को यह बोलने की शक्ति अल्लाह प्रदान करेगा। इलसिये इसमें आश्चर्य की बात नही। (जैसे इंसानी अंगों में यह शक्ति पैदा कर देगा) धरती को भी अल्लाह (तआला) बोलने वाली बना देगा, तथा वह उसकी आज्ञा से बोलेगी।

The Ummah Technology Mission

يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ۝٦

(६) उस दिन लोग विभिन्न समूहों में होकर लौटेंगे[1] ताकि उन्हें उनके कर्म दिखा दिये जायें।[2]

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝٧

(७) तो जिसने कण के समुतल्य भी पुण्य किया होगा वह उसे देख लेगा।[3]

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝٨

(८) तथा जिसने कण के समतुल्य भी पाप किया होगा, वह उसे देख लेगा।[4]

---

[1] يَصْدُرُ (लौटेंगे) यह وُرُود का विलोम है। अर्थात क़ब्रों से निकलकर हिसाब के स्थान की ओर अथवा हिसाब के पश्चात स्वर्ग तथा नरक की ओर लौटेंगे أَشْتَاتًا अलग-अलग समूहों में कुछ भयभीत होंगे कुछ निर्भय। कुछ के रंग सफेद होंगे जैसे स्वर्ग वासियों के होंगे। कुछ के काले जो उनके नरकीय होने का चिन्ह होगा। कुछ का मुख दाईं ओर होगा कुछ का बाईं ओर, अथवा वह विभिन्न गरोह धर्मों तथा मतों एवं कर्मों को आधार पर होंगे।

[2] इसका सम्बन्ध يَصْدُر से है अथवा أَوْحَى لَهَا से है अर्थात धरती अपनी सूचनायें इसलिये देगी ताकि मनुष्यों को उनके कर्म दिखा दिये जायें।

[3] तथा वह उससे प्रसन्न होगा।

[4] वह इस पर अति लज्जित तथा व्याकुल होगा। ذَرَّة कुछ के विचार मे चींटी से भी छोटी चीज कुछ के विचार से धरती पर हाथ मारने सें जो धूल हाथ में लग जाती है वह ذَرَّة है। कुछ के निकट छिद्र से जो सूर्य की किरण आती है उसमें जो धूल के कण दिखाई देते हैं वह ذَرَّة है। परन्तु इमाम शौकानी ने प्रथम अर्थ को उत्तम माना है। इमाम मुकातिल कहते हैं कि यह आयत उन दो व्यक्तियों के विषय में उतरी है जिनमें से एक मंगन को थोड़ा दान देने में संकोच करता तथा दूसरा छोटा पाप करनें में कोई भय न खाता था। (फ़तहुल क़दीर)

The Ummah Technology Mission

सूरतुल आदियात-१००

سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ

सूरतुल आदियात मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें ग्यारह आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

(१) हाँपते हुए दौड़ने वाले घोड़ों की सौगन्ध।[1]

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ①

(२) फिर टाप मारकर आग झाड़ने वालों की सौगन्ध।[2]

فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ②

(३) फिर प्रात: काल में धावा बोलने वालों की सौगन्ध।[3]

فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ③

(४) तो उस समय धूल उड़ाते हैं।[4]

فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ④

---

[1] **सूरतुल आदियात** : عَادِيَاتٌ यह عَادِيَةٌ का बहुवचन है। यह عَدْوٌ से है जैसे غَزْوٌ है غَازِيَاتٌ के समान उसके "वाव" को भी यॉ से बदल दिया गया। वेगगामी घोड़े ضَبْحٌ का अर्थ कुछ ने हाँपना लिया तथा कुछ ने हिनहिनाना। तात्पर्य वह घोड़े हैं जो हाँपते अथवा हिनहिनाते हुए धर्मयुद्ध में शत्रु की ओर दौड़ते हैं।

[2] مُورِيَاتٌ बना है إِيرَاءٌ से आग निकालने वाले قَدْحٌ का अर्थ صَكٌّ है चलने में घुटनों अथवा एड़ियों का टकराना अथवा टाप मारना। इसी से قَدْحٌ بِالزِّنَاد है। चकमा से आग निकलना अर्थात उन घोड़ों की सौगन्ध है जिनकी टापों की रगड़ से पत्थरों से आग निकलती है। जैसे चकमाक से निकलती है।

[3] مُغِيرَاتٌ लिया गया है أَغَارَ يُغِيرُ से रात में आक्रमण करने अथवा धावा बोलने वाले صُبْحاً भोर के समय अरब में साधारणत: आक्रमण इसी समय किया जाता था। निशाक्रमण तो वह करतें हैं जो सैनिक घोड़ों पर सवार होते हैं परन्तु इसे घोड़ों से सम्बन्धित इसलिये किया है कि धावा बोलने में यह सैनिकों के बहुत काम आते हैं।

[4] أَثَارَ उड़ाना نَقْعٌ धूल। अर्थात जिस समय यह घोड़े तेजी से दौड़ते अथवा धावा बोलते हैं तो उस स्थान पर धूल छा जाती है।

The Ummah Technology Mission

فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۝٥

(५) फिर उसी के साथ सेनाओं के मध्य घुस जाते हैं।[1]

اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۝٦

(६) नि:संदेह मनुष्य अपने प्रभु का अति कृतघ्न है।[2]

وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۝٧

(७) तथा निश्चित रूप से वह स्वयं भी उस पर गवाह है।[3]

وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۝٨

(८) तथा ये माल के प्रेम में भी अति कठोर है।[4]

اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُوْرِ ۝٩

(९) क्या उसे वह समय ज्ञात नहीं, जब क़ब्रों में जो कुछ है निकाल दिये जायेंगे।[5]

وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُوْرِ ۝١٠

(१०) तथा सीनों में छिपी बातों को प्रकट कर दिया जायेगा।[6]

---

[1] فَوَسَطْنَ मध्य में घुस जाते हैं, उस समय अथवा धूल की अवस्था में جَمْعًا शत्रु की सेना अभिप्राय है कि उस समय अथवा जब वातावरण धूल-धप्पड़ से अटा होता है। यह घोड़े शत्रु की सेना में घुस जाते हैं तथा घमसान की लड़ाई लड़ते हैं।

[2] यह सौगन्ध का उत्तर है। इंसान से अभिप्राय काफ़िर, अर्थात कुछ लोग है كَنُودٌ का अर्थ كَفُورٌ (कृतघ्न) है।

[3] अर्थात इंसान स्वयं अपनी कृतघ्नता का साक्षी है। कुछ لَشَهِيدٌ का कर्ता अल्लाह को मानते हैं। परन्तु इमाम शौकानी ने प्रथम अर्थ को प्रधानता दिया है। क्योंकि बाद की आयतों में सर्वनाम इंसान ही की ओर फिरता है, इसलिये यहाँ भी इंसान होना अधिक सही है।

[4] خَيْرٌ से तात्पर्य धन है। जैसे ﴿إِن تَرَكَ خَيْرًا ٱلْوَصِيَّةُ﴾ (अलबक़र:-१८०) में है, अर्थ स्पष्ट है। एक अन्य भावार्थ यह है कि अति कृपण तथा लोभी है जो धन के प्रेम का अनिवार्य परिणाम है।

[5] بُعْثِرَ نُثِر و بُعِث अर्थात क़ब्रों के मुर्दों को जीवित करके खड़ा कर दिया जायेगा।

[6] حُصِّلَ مُيِّزوبُيِّنَ अन्त:करण की बातों को खोलकर व्यक्त कर दिया जायेगा।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌ ﴿١١﴾

(११) नि:संदेह उनका प्रभु उस दिन उनके हाल से पूर्णरूप से परिचित होगा।[1]

سُورَةُ القَارِعَةِ

सूरतुल क़ारिअ:-१०१

सूरतुल क़ारिअ: मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें ग्यारह आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

الْقَارِعَةُ ﴿١﴾

(१) खड़खड़ा देने वाली ?[2]

مَا الْقَارِعَةُ ﴿٢﴾

(२) क्या है वह खड़खड़ा देने वाली ?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ ﴿٣﴾

(३) तुझे क्या पता कि वह खड़खड़ा देने वाली क्या है ?

يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ﴿٤﴾

(४) जिस दिन मनुष्य बिखरे हुए पतिंगों की भाँति हो जायेंगे।[3]

---

[1] अर्थात जो प्रभु उन्हें क़ब्रों से निकालेगा उनके मन की बातें प्रकाश में लायेगा। वह कितना जानकार हो सकता है। फिर वही प्रत्येक को उसके कर्मानुसार बदला देगा। यह मानो उनको चेतावनी है जो प्रभु के उपकारों की कृतघ्नता करते तथा माल के प्रेम में दूसरों का अधिकार पूरा नहीं करते जो अल्लाह ने दूसरों के लिये रखे हैं।

[2] ***सूरतुल क़ारिअ:*** : यह भी प्रलय के नामों में से एक नाम है जैसे इससे पूर्व इसके अनेक नाम गुज़र चुके हैं जैसे الحَاقَّةُ *अलहाक्क:* الطَّامَّةُ *अततामम:*, الصَّاخَّةُ *अससाख्ख:*, الغَاشِيَةُ *अलगाशिय:*, السَّاعَةُ *अससाअ:* الوَاقِعَةُ *अलवाक़िअ:* आदि। *अलक़ारिअ:* इसे इसलिये कहते हैं कि यह अपनी भयानकता के कारण दिलों को भयभीत तथा अल्लाह के शत्रुओं को यातना से सूचित करेगी जैसे द्वार खटखटाने वाला करता है।

[3] فَرَاشٌ दीप के पास भ्रमित पतंगे, आदि مَبْثُوثٌ फैले तथा बिखरे हुए। अर्थात क़ियामत के दिन मनुष्य भी पतंगों की भाँति फैले तथा बिखरे हुए होंगे।

The Ummah Technology Mission

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنفُوشِ ﴿٥﴾

(५) तथा पर्वत धुने हुए रंगीन ऊन की भाँति हो जायेंगे।[1]

فَأَمَّا مَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ﴿٦﴾

(६) फिर जिसके पलड़े भारी होंगे।[2]

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٧﴾

(७) वह तो अत्यन्त सुखदायी जीवन में होगा।[3]

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ﴿٨﴾

(८) तथा जिसके पलड़े हल्के होंगे।[4]

فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ﴿٩﴾

(९) उसका ठिकाना 'हाविया' है।[5]

---

[1] عِهْنٌ उस ऊन को कहते हैं जो अनेक रंगों के रंगे हुये हों مَنفُوش धुने हुए। यह पर्वतों की स्थिति बताई गई है जो प्रलय के दिन उनकी होगी। पवित्र क़ुरआन में पर्वतों की यह स्थिति अनेक रूपों से वर्णन की गई है। जिसका विवरण पहले गुज़र चुका है। अब आगे दो गरोहों का संक्षिप्त वर्णन किया जा रहा है। जो प्रलय के दिन कर्मानुसार होंगे।

[2] مَوَازِين बहुवचन مِيزَان का है तराज़ू (तुला) जिसमें कर्मपत्र तौले जायेंगे। जैसाकि इस की चर्चा *सूरतुल आराफ़* (आयत-८) *सूरतुल कहफ़* (१०५) तथा *सूरतुल अम्बिया* (४७) में भी गुज़री है। कुछ कहते हैं कि यह मीज़ान नहीं मौज़ून का बहुवचन है अर्थात ऐसे कर्म जिनका अल्लाह के यहाँ कोई महत्व तथा विशेष वज़न होगा (फ़तहुल क़दीर) किन्तु पहला अर्थ उचित तथा सही है। अभिप्राय यह है कि जिनके पुण्य अधिक होंगे तथा कर्मों को तोलने के समय उनका पलड़ा भारी होगा।

[3] अर्थात ऐसा जीवन जिसे जीवित व्यक्ति प्रिय मानेगा।

[4] अर्थात जिसकी बुराईयाँ-भलाईयों से अधिक होंगी तथा बुराईयों का पलड़ा भारी एवं पुण्य का हल्का होगा।

[5] هَاوِيَة नरक का नाम है। उसको हाविया इस कारण कहते हैं कि नरकीय उसकी गहराई में गिरेगा। तथा उसे أُمٌّ (माँ) इसलिये व्यंजित किया गया जिस प्रकार माँ बच्चों के लिए शरणोगार होती है इसी प्रकार नरकियों का शरणागर नरक होगी। कुछ कहते हैं कि أُمٌّ अर्थ दिमाग होता है। नरकीय नरक में सिर के बल डाले जायेंगे (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا هِيَهْ ﴿١٠﴾

(१०) तुझे क्या पता कि वह क्या है।[1]

نَارٌ حَامِيَةٌۢ ﴿١١﴾

(११) वह अति तीव्र भड़कती हुई अग्नि है।[2]

सूरतुत तकासुर-१०२

سُورَةُ التَّكَاثُرِ

सूरतुत तकासुर मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें आठ आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

أَلْهَىٰكُمُ التَّكَاثُرُ ﴿١﴾

(१) अधिकता के प्रेम ने तुम्हें अचेत कर दिया।[3]

---

[1]यह प्रश्न उसकी गंभीरता तथा भयानकता दिखाने के लिये है, कि वह मानवी विचार एवं कल्पना से उच्च है। मानव ज्ञान उसे घेर नहीं सकते न उसकी यथार्थता जान सकते हैं।

[2]जैसे हदीस में है कि मनुष्य संसार में जो आग जलाता है यह नरक की आग का सत्तरवाँ भाग है। नरक की आग दुनियाँ की आग से उनहत्तर गुना अधिक है (सहीह अलबुख़ारी, किताबु बदइल ख़ल्क, बाबु सिफातिन्नारे व अन्नहा मख़लूकह, मुस्लिम किताबुल जन्नते, बाबुन फी शिद्दति हर्रे नारे जहन्नम) एक अन्य हदीस में है कि आग ने अपने प्रभु से शिकायत की कि मेरा एक भाग दूसरे भाग को खाये जा रहा है अल्लाह ने उसे दो साँस लेने की अनुमति प्रदान कर दी एक साँस गर्मी में एक साँस जाड़े में। अतः जो कड़ी शीत होती है वह उसकी शीतल साँस है तथा जो कड़ी गर्मी पड़ती है वह उसकी गर्म साँस है (बुख़ारी उपरोक्त अध्याय) एक अन्य हदीस में नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* ने फ़रमाया : जब गर्मी अधिक कड़ी हो तो नमाज ठंडी करके पढ़ो। इसलिये की कड़ी गर्मी नरक के उबाल के कारण पैदा होती है। (उपरोक्त हवाला, मुस्लिम किताबुल मसाजिद)

[3]***सूरतुत तकासुर*** : اَلْهٰى يُلْهِي का अर्थ है निश्चिन्त कर देना। تَكَاثُر अधिक की अभिलाषा, यह सामान्य है। धन, संतान, सहायक, समर्थक, परिवार, जाति सबको सम्मिलित है। प्रत्येक वह वस्तु जिसकी अधिकता मनुष्य को प्रिय हो। तथा अधिकता की प्राप्ति का

The Ummah Technology Mission

حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ﴿٢﴾

(२) यहाँ तक कि तुम क़ब्रिस्तान जा पहुँचे ।[1]

كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾

(३) कदापि –नही[2] तुम शीघ्र ही ज्ञात कर लोगे ।

ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤﴾

(४) फिर कदापि नहीं तुम्हें शीघ्र ही ज्ञात हो जायेगा ।[3]

كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ﴿٥﴾

(५) कदापि नहीं यदि तुम निश्चित रूप से जान लो ।[4]

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ﴿٦﴾

(६) तो नि:संदेह तुम नरक देख लोगे ।[5]

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ﴿٧﴾

(७) तो तुम उसे विश्वास के नेत्र से देख लोगे ।[6]

प्रयास तथा आकांक्षा उसे अल्लाह के आदेशों एवं परलोक से विमुख कर दे । यहाँ अल्लाह मनुष्य की कमज़ोरी बता रहा है जिसमें अधिकांश मनुष्य प्रत्येक युग में ग्रस्त रहे हैं ।

[1]इसका अर्थ यह है प्राचुर्य प्राप्त करने के लिए परिश्रम करते-करते तुम्हें मौत आ गई तथा तुम समाधि स्थलों (कब्रों) में जा पहुँचे ।

[2]तुम जिस अधिकता की आकांक्षा तथा परस्पर गर्व में लीन हो यह सही नहीं ।

[3]इसका परिणाम तुम शीघ्र ही जान लोगे, यह बल देने के लिये दोबार फ़रमाया ।

[4]इसका उत्तर छिप्त है । अभिप्राय यह है कि तुम इस विमुखता का परिणाम इस प्रकार निश्चित रूप से जान लो । जिस प्रकार दुनियाँ की किसी देखी-भाली वस्तु का तुम्हें विश्वास होता है । तो तुम इस अधिकता के प्रयास तथा परस्पर गर्व में न पड़ो ।

[5]यह लुप्त सौगन्ध का उत्तर है । अर्थात अल्लाह की सौगन्ध तुम नरक अवश्य देखोगे अर्थात उसकी यातना भोगोगे ।

[6]पहला देखना दूर से होगा । यह देखना समीप से होगा इसीलिये इसे عَيْنَ الْيَقِيْنِ जिसका विश्वास आँख से देखकर किया गया हो । कहा गया है ।

The Ummah Technology Mission

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ﴿٨﴾

(८) फिर उस दिन तुमसे अवश्य-अवश्य उपहारों का प्रश्न होगा।[1]

सूरतुल अस्र-१०३

سُورَةُ الْعَصْرِ

सूरतुल अस्र मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें तीन आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

وَالْعَصْرِ ﴿١﴾

(१) काल की सौगन्ध।[2]

إِنَّ الْإِنسَانَ لَفِي خُسْرٍ ﴿٢﴾

(२) वास्तव में समस्त मनुष्य सर्वथा घाटे में है।[3]

---

[1] यह प्रश्न उन नेमतों (अनुकम्पाओं) के बारे में होगा जो अल्लाह ने दुनियाँ में दी है। जैसे आँख, कान, दिल, शान्ति, स्वास्थ, धन, सम्पत्ति तथा संतान आदि कुछ कहते हैं कि प्रश्न केवल काफ़िरों से होगा। कुछ कहते हैं कि प्रत्येक ही से होगा क्योंकि केवल प्रश्न ही यातना का कारण नहीं होगा। जिन्होंने अनुग्रह का प्रयोग अल्लाह के आदेशों के आधीन रहकर किया होगा वह प्रश्न के उपरान्त भी यातना से सुरक्षित रहेंगे तथा जिन्होंने कृतघ्ना की होगी वह धर लिये जायेंगे।

[2] ***सूरतुल अस्र :*** युग से अभिप्राय रात-दिन का यह चक्कर है तथा उनका अदल-बदल कर आना। रात आती है तो अंधकार हो जाता है तथा दिन से प्रत्येक वस्तु प्रकाशित हो जाती है। इसके सिवा कभी रात लम्बी तथा दिन छोटा एवं रात लम्बी हो जाती है यदि दिनों का यही चक्कर युग है जो अल्लाह की पूर्ण शक्ति तथा सामर्थ्य का संकेत देता है। अत: पालनहार ने उसकी शपथ ली है। यह पहले बतलाया जा चुका है कि अल्लाह तो अपनी सृष्टि में से जिसकी चाहे शपथ ग्रहण कर सकता है। किन्तु इंसान के लिये अल्लाह के अतिरिक्त किसी की सौगन्ध खाना वैध नहीं है।

[3] यह सौगन्ध का उत्तर है। इंसान की क्षति एवं विनाश स्पष्ट है कि जब तक वह जीवित रहता है उसके दिन घोर परिश्रम में व्यतीत होता है। फिर जब मर जाता है तो मौत के पश्चात भी सुख नहीं मिलता। बल्कि वह नरक का ईंधन बनता है।

The Ummah Technology Mission

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ﴿٣﴾

(३) उनके अतिरिक्त जो ईमान लाये तथा पुण्यकारी कार्य किये[1] तथा (जिन्होंने) आपस में सत्य की वसीयत की[2] तथा एक-दूसरे को धैर्य रखने का उपदेश दिया।[3]

सूरतुल हुमज़:-१०४

سُورَةُ الْهُمَزَةِ

सूरतुल हुमज़: मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें नौ आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ﴿١﴾

(१) बड़ी ख़राबी है उस व्यक्ति की जो त्रुटियाँ टटोलने वाला चुगली करने वाला हो।[4]

---

[1] हाँ इस घाटे से वे लोग सुरक्षित हैं जो ईमान तथा पुण्य के कर्मों से युक्त हैं मौत के पश्चात वस्तुत: अनन्त प्रदानों तथा स्वर्ग के सुखद जीवन से सफल होंगे। आगे ईमान वालों के अन्य सद्गुणों की चर्चा है।

[2] अर्थात अल्लाह के धर्म विधानों का पालन तथा अवैधानिक एवं अवज्ञा से बचने का सदुपदेश।

[3] अर्थात दुखों तथा अपवादों पर धैर्य धर्म के आदेशों तथा विधानों का पालन करनें में धैर्य। अवज्ञा से बचने, स्वार्थों तथा आकांक्षाओं के त्याग पर धैर्य। धैर्य भी यद्यपि सत्य के सदुपदेश में सम्मिलित है फिर भी विशेष रूप से उसकी अलग से चर्चा की गई है जिससे उसकी प्रधानता तथा प्रतिष्ठा स्पष्ट है।

[4] ***सूरतुल हुमज़:*** : هُمَزَة तथा لُمَزَة कुछ के विचार में पर्यायवाची हैं, कुछ उसमें कुछ अन्तर करते हैं। हुमज़ा वह व्यक्ति जो सामने बुराई करे तथा लुमज़ा जो पीठ-पीछे बुराई करे। कुछ इससे विपरीत अर्थ करते हैं। कुछ कहते हैं हम्ज आँखों तथा हाथों के इशारे से बुराई करना तथा लम्ज जबान से।

The Ummah Technology Mission

الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ ﴿٢﴾

(२) जो माल को एकत्रित करता जाये तथा गिनता जाये।[1]

يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ﴿٣﴾

(३) वह समझे कि उसका माल उसके पास सदैव रहेगा।[2]

كَلَّا لَيُنۢبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ﴿٤﴾

(४) कदापि-नहीं[3] यह तो अवश्य तोड़-फोड़ देने वाली अग्नि में फेंक दिया जायेगा।[4]

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحُطَمَةُ ﴿٥﴾

(५) तथा तुझे क्या पता कि ऐसी अग्नि क्या कुछ होगी ?[5]

نَارُ اللَّهِ الْمُوقَدَةُ ﴿٦﴾

(६) वह अल्लाह (*तआला*) की सुलगायी हुई आग होगी।

الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ ﴿٧﴾

(७) जो दिलों पर चढ़ती चली जायेगी।[6]

---

[1]इससे अभिप्राय यही है एकत्रित करना तथा गिन-गिन कर रखना अर्थात सैंत-सैंत कर रखना तथा अल्लाह की राह में ख़र्च न करना। अन्यथा धन रखना निषेध नहीं यह उसी समय निहित है जब ज़कात सदके (दान) तथा अल्लाह के मार्ग में व्यय करने का प्रबन्ध न हो।

[2] أَخْلَدَهُ का अधिक उचित अनुवाद यह है कि उसे सदैव जीवित रखेगा अर्थात यह धन जिसे वह एकत्र करके रखता है उसकी आयु बढ़ा देगा तथा उसे मरने नहीं देगा।

[3]अर्थात मामला ऐसा नहीं है जैसाकि उनका विचार तथा अनुमान है।

[4]अर्थात ऐसा कंजूस व्यक्ति حُطَمَة में फेंक दिया जायेगा। यह भी नरक का एक नाम है। तोड़-फोड़ देने वाली।

[5]यह प्रश्न उसकी भयानकता दिखाने के लिये है कि तुम उसका ज्ञान नहीं कर सकते तथा तुम्हारी समझ उसकी गहराई तक नहीं पहुँच सकती।

[6]अर्थात उसका ताप दिलों तक पहुँच जायेगा। वैसे तो संसार की आग में भी यह विशेषता है कि वह प्रत्येक वस्तु को जला डालती है। परन्तु दुनिया में यह आग दिल तक नहीं पहुँचती कि इंसान की मौत इससे पहले हो जाती है। नरक में ऐसा नहीं होगा, वह

The Ummah Technology Mission

إِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ﴿٨﴾

(८) तथा उन पर बड़े-बड़े स्तम्भ में |

فِي عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ﴿٩﴾

(९) हर ओर से बंद की हुई होगी |[1]

سُورَةُ الْفِيلِ

सूरतुल फ़ील-१०५

सूरतुल फ़ील मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें पाँच आयतें हैं |

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है |

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ﴿١﴾

(१) क्या तूने नहीं देखा कि तेरे प्रभु ने हाथी वालों के साथ क्या किया |[2]

होगा, वह आग दिलों तक भी पहुँचेगी किन्तु मौत नहीं आयेगी अपितु कामना के उपरान्त भी मौत नहीं आयेगी |

[1] مُؤصَدَة (बन्द) अर्थात नरक के द्वार तथा मार्ग बन्द कर दिये जायेंगे ताकि कोई बाहर न निकल सके तथा उन्हें लोहे की कीलों से बाँध दिया जायेगा जो लम्बे-लम्बे स्तम्भों के समान होगी| कुछ के विचार में عَمَد से अभिप्राय बेड़ियाँ अथवा तौक़ हैं | कुछ के विचार में स्तम्भ हैं | जिनमें उन्हें यातना दी जायेगी (फ़तहुल क़दीर)

[2] **सूरतुल फ़ील** : जो यमन से ख़ाना कआबा को ढाने आये थे أَلَمْ تَرَ का अर्थ है أَلَمْ تَعْلَمْ क्या तुझे ज्ञान नहीं ? यह प्रश्न सकारात्मक है | अर्थात तू जानता है या वह सब लोग जानते हैं जो तेरे समकालीन है | यह इसलिये फ़रमाया कि अरब में यह घटना घटे अभी अधिक समय व्यतीत नहीं हुआ था | प्रचलित कथनानुसार यह घटना उस समय घटी जिस वर्ष नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* का जन्म हुआ था इसलिये अरब में उस की ख़बरें प्रसिद्ध तथा निरन्तर थीं | यह वाक्य संक्षेप में इस प्रकार है |

हाथी वालों की कथा : हबशा (इथोपिया) के राजा की ओर से यमन में अबरहा अशरम गर्वनर था उस ने सन्आ में एक बड़ा गिरजा निर्माण किया तथा यह प्रयत्न किया कि लोग ख़ान-ए-कअ वा के स्थान पर उपासना तथा हज के लिए इधर आया करें | यह बात मक्कावासियां तथा अन्य अरब कबीलों के लिये अति अप्रिय थी | जैसाकि उनमें से एक व्यक्ति ने अबरहा के बनाये उपासना गृह को मल से लीप दिया | जिससे उसको सूचित कर दिया गया कि किसी ने इस प्रकार इस गिरजा को दूषित कर दिया है | जिस

The Ummah Technology Mission

اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۝٢

(२) क्या उसने उनकी दुष्प्रयोजन को अकारथ नही कर दिया ?[1]

وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۝٣

(३) तथा उन पर पक्षियों के झुरमुट भेज दिये ।[2]

تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝٤

(४) जो उन्हें मिट्टी तथा पत्थर की कंकरियाँ मार रहे थे ।[3]

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝٥

(५) तो उन्हें खाये हुए भूसे की तरह कर दिया ।[4]

पर उसने ख़ान-ए-कअ॰बा को ढाने का प्रयत्न किया तथा एक भारी सेना लेकर मक्का पर आक्रामण के लिए प्रस्थान किया जिसमें कुछ हाथी भी उसके साथ थे । जब यह सेना वादिये मुहस्सिर के निकट पहुँची तो अल्लाह ने पक्षियों के झुंड भेजे जिनकी चोंचों तथा पंजों में कंकड़ियाँ थीं जो चने अथवा मसूर के बराबर थीं, जिस सैनिक को यह कंकड़ियाँ लगतीं वह पिघल जाता तथा उसका माँस झड़ जाता तथा अन्ततः मर जाता । स्वयं अबरहा का भी सन्आ पहुँचते-पहुँचते यह परिणाम हुआ । इस प्रकार अल्लाह ने अपने घर की रक्षा की । मक्का के निकट पहुँचकर अबरहा की सेना ने नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* के दादा के, जो मक्के के मुख्या थे ऊँटों पर नियन्त्रण कर लिया । जिस पर अब्दुल मुत्तलिब ने आकर अबरहा से कहा कि तू मेरे ऊँट वापस कर दे जो तेरे सैनिकों ने पकड़े हैं । शेष रही ख़ान-ए-कआबा की समस्या जिस को ढाने के लिये तू आया है, तो वह तेरा मामला अल्लाह के साथ है वही उसका रक्षक है । वह उसी का घर है । तू जाने तथा बैतुल्लाह का मालिक अल्लाह जाने (ऐसरूत तफ़ासीर)

[1]अर्थात वह ख़ान-ए-कअ॰बा को ढाने का इरादे से आया था । उसमें उसे विफल कर दिया । यह सकारात्मक प्रश्न है

[2] اَبَابِيْل यह किसी पक्षी का नाम नहीं इसका अर्थ है झुन्ड ।

[3] سِجِّيْل मिट्टी को आग में पकाकर बनाये हुए कंकड़ । इन छोटे-छोटे कंकड़ों ने तोप के गोलों तथा बंदूक की गोलियों से अधिक विनाश का काम किया ।

[4]अर्थात उनके शरीर के अंश इस प्रकार बिखर गये जैसे खाई हुई भूसी होती है ।

The Ummah Technology Mission

सूरतु कुरैश-१०६

سُوْرَةُ قُرَيْشٍ

सूरतु कुरैश मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें चार आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

(१) क़ुरैश को प्रेम दिलाने के लिए।

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ①

(२) (अर्थात) उन्हें जाड़े तथा गर्मी की यात्रा का अनुसेवी बनाने के लिए।[1]

اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ②

(३) तो (उस धन्यवाद में) उन्हें चाहिए कि इसी घर के प्रभु की इबादत करते रहें।[2]

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ③

सूरतु क़ुरैश : इसे *सूरतुल ईलाफ़* भी कहते हैं। इसका सम्बन्ध भी विगत सूरत से है।

[1] إِيلَافٌ का अर्थ है हिला-मिला तथा अनुसेवी होना। अर्थात इस काम से दुख तथा घृणा का दूर हो जाना। कुरैश की जीविका का साधन व्यापार था वर्ष में दो बार उनका काफ़िला व्यापार के लिये विदेश जाता तथा वहाँ से व्यापार की सामग्री लाता। जाड़े में यमन जो गर्म क्षेत्र था तथा गर्मियों में शाम की ओर जो शीतल था। ख़ान-ए-कअबा के सेवक होने के कारण पूरे अरबवासी उनका आदर करते थे इसलिये उनके काफ़िले बिना रोक-टोक यात्रा करते थे। अल्लाह (*तआला*) इस सूरत में कुरैश को बतला रहा है कि तुम गर्मी तथा जाड़े में जो दो यात्रायें करते हो तो हमारे इस अनुग्रह के कारण कि हमने तुम्हें मक्के में शान्ति प्रदान की तथा अरबवासियों में आदरणीय बनाया। यदि यह बात न होती तो तुम्हारी यात्रा सम्भव न थी तथा हाथी वालों को भी हमने इसीलिए नाश किया की तुम्हारा सम्मान भी रहे तथा तुम्हारी यात्राओं का क्रम (भी जिसके तुम अनुसेवी हो) स्थित रहे यदि अबरहा अपने लक्ष्य में सफल हो जाता तो तुम्हारा आदर मान भी समाप्त हो जाता तथा यात्रा क्रम भी, इसलिये तुम्हें चाहिये कि केवल बैतुल्लाह के प्रभु की उपासना करो।

[2] उपरोक्त व्यापार तथा यात्रा द्वारा।

The Ummah Technology Mission

الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝٤

(४) जिसने उन्हें भूख में भोजन दिया तथा डर (एवं भय) में शान्ति प्रदान किया।[1]

सूरतुल माऊन-१०७

سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ

सूरतुल माऊन मक्का में अवतरित हुई इसमें सात आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝١

(१) क्या तूने (उसे भी) देखा जो बदले (के दिन) को झुठलाता है।[2]

فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۝٢

(२) यही वह है जो अनाथ को धक्के देता है।[3]

---

[1]अरब में हत्या तथा लूटपाट सामान्य थी किन्तु मक्का के कुरैश को हरम के कारण जो आदर-मान प्राप्त था उसके कारण वे भय तथा डर से सुरक्षित थे।

सूरतुल माऊन : इस सूरत को *सूरतुद्दीन, सूरत अरअैत,* तथा *सूरतुल यतीम* भी कहते हैं (फ़तहुल क़दीर)

[2]रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* को सम्बोधित किया गया है। तथा प्रश्न से अभिप्राय आश्चर्य व्यक्त करना है। رُؤيت (देखना) जानने के अर्थ में है तथा دين से तात्पर्य परलोक का हिसाब तथा प्रतिकार है। कुछ कहते हैं कि वाक्य में लोप है मूल वाक्य है, क्या तूने उस व्यक्ति को पहचाना जो प्रतिफल के दिन को झुठलाता है। क्या वह अपनी इस बात में सही है अथवा ग़लत ?

[3]इसलिये कि एक तो कंजूस है। दूसरे प्रलय का इंकारी है, भला ऐसा व्यक्ति अनाथ के साथ क्योंकर अच्छा व्यवहार कर सकता है ? जिसके दिल में धन की जगह मानवीय मूल्यों तथा नैतिक नियमों का महत्व एवं प्रेम होगा वही अनाथ के साथ अच्छा व्यवहार करेगा, दूसरे यह कि उसे इस बात का विश्वास हो कि उसके बदले मुझे क़यामत (प्रलय) के दिन प्रत्युप्कार (अच्छा बदला) मिलेगा।

The Ummah Technology Mission

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝٣

(३) तथा निर्धन (भूखे) को भोजन कराने की प्रेरणा नहीं देता।[1]

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝٤

(४) उन नमाज़ियों के लिए 'वैल' (नरक का एक स्थान) है।

الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝٥

(५) जो अपनी नमाज़ से अचेत (ग़ाफ़िल) हैं।[2]

الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۝٦

(६) जो दिखावे का कार्य करते हैं।[3]

وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝٧

(७) तथा प्रयोग में आने वाली वस्तुऐं रोकते हैं।[4]

---

[1]यह काम भी वही करेगा जिसमें उपरोक्त सद्गुण होंगे अन्यथा वह अनाथ की भाँति ग़रीब (फ़क़ीर) को भी धक्का देगा।

[2]इससे वह लोग तात्पर्य हैं जो नमाज़ या तो पढ़ते ही नहीं अथवा पहले पढ़ते रहे फिर आलसी हो गये। अथवा नमाज़ उसके नियमित समय से नहीं पढ़ते अथवा विलम्ब से पढ़ने की आदत बना लेते हैं अथवा विनम्रता एवं ध्यान से नहीं पढ़ते। यह सभी भावार्थ इसमें आ जाते हैं। अत: नमाज़ में सभी उक्त आलस्य से बचना चाहिये। यहाँ इस स्थान पर चर्चा करने से यह भी स्पष्ट है कि नमाज़ यह आलस्य उन्हीं से होता है जो परलोक के प्रतिकार (बदले) तथा हिसाब, किताब पर विश्वास नहीं रखते। इसलिए मुनाफ़िकों का एक दुर्भाग्य *(सूरत अन्निसा-१४२)* में यह भी बताया गया है।

﴿ وَإِذَا قَامُوٓا إِلَى الصَّلَوٰةِ قَامُوا كُسَالَىٰ يُرَآءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا ﴾

[3]अर्थात ऐसे लोगों का आचरण यह होता है कि लोगों को साथ हुये तो नमाज़ पढ़ ली, अन्यथा नमाज़ पढ़ने की आवश्यकता ही नहीं समझते अर्थात बस दिखावे के लिये नमाज़ पढ़ते हैं।

[4]مَعُوْنٌ थोड़ी चीज़ को कहते हैं। कुछ इसका अभिप्राय ज़कात (देयदान) लेते हैं। क्योंकि वह भी मूल धन की अपेक्षा अति अल्प होती है। (ढाई प्रतिशत) कुछ ने इससे घरों में प्रयोग की चीज़ें ली हैं। जो पड़ोसी एक-दूसरे से मँगनी में माँग लिया करते हैं। अभिप्राय हुआ घरेलू प्रयोग की वस्तुऐं मंगनी में दे देना। इसमें संकीर्णता न प्रतीत करना अच्छे गुण हैं तथा इसके विपरीत कृपण एवं कंजूसी बर्तना यह क़यामत के निवर्तियों का आचरण है।

The Ummah Technology Mission

सूरतुल कौसर-१०८

سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ

सूरतुल कौसर मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें तीन आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

إِنَّآ أَعْطَيْنَٰكَ ٱلْكَوْثَرَ ۝١

(१) निःसंदेह हमने तुझे कौसर (तथा बहुत कुछ) दिया है।[1]

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَٱنْحَرْ ۝٢

(२) तो तू अपने प्रभु के लिए नमाज़ पढ़ तथा क़ुर्बानी कर।[2]

सूरतुल कौसर : इसका दूसरा नाम *सूरतुन नहर* भी है।

[1] *कौसर* كَوْثَرٌ كثرة कसरत से है। इसके अनेक वर्णन किये गये हैं। इब्ने कसीर ने خيرٌ كثير (अत्यधिक भलाई) को अधिमान दिया है। क्योंकि इसमें ऐसी साधारणता है जिसमें दूसरे अर्थ भी आ जाते हैं। जैसे सहीह हदीसों में बतलाया गया है कि यह एक नहर है जो स्वर्ग में आपको प्रदान की जायेगी। ऐसे ही कुछ हदीसों में इसका चरितार्थ हौज़ (जलाशय) बताया गया है। जिससे ईमान वाले स्वर्ग में जाने से पहले नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* के करकमलों (हाथों) से पानी पियेंगे। इस जलाशय में भी पानी इसी स्वर्ग की नहर से आ रहा होगा। इसी प्रकार दुनियाँ की विजय तथा आप के शुभ नामों की चर्चा तथा परलोक (आख़िरत) का प्रतिकार एवं पुण्य सब ही चीज़े हैं जो "खैरे कसीर" में आ जाती हैं। (इब्ने कसीर)

[2] अर्थात नमाज़ भी केवल अल्लाह के लिये तथा क़ुर्बानी भी केवल एक अल्लाह के नाम पर। बहुदेववादियों के समान इसमें दूसरों को सम्मिलित न कर। نَحْرٌ का मूल अर्थ है ऊँट के गले में नीज़ा अथवा छुरी मार कर वध करना। दूसरे जानवरों को भूमि पर लिटाकर उनके गलों पर छुरी फेरी जाती है उसे ज़िब्ह करना कहते हैं किन्तु यहाँ नहर से अभिप्राय साधारण क़ुर्बानी है। इसके सिवा इसमें दान-पुण्य के रूप में बलि देना, हज के अवसर पर मिना में ईदुल अज़हा के दिन क़ुर्बानी करना सब सम्मिलित है।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ﴿٣﴾

(३) नि:संदेह तेरा शत्रु ही लावारिस एवं बेनाम व निशान है।[1]

सूरतुल काफ़िरून-१०९

سُورَةُ الْكَافِرُونَ

सूरतुल काफ़िरून मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें छ: आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ﴿١﴾

(१) आप कह दीजिये कि हे काफ़िरो![2]

---

[1] أَبْتَر ऐसे व्यक्ति को कहते हैं जिसके संतान न हो अथवा जिसका नाम न रह जाये। अर्थात उसी पर उसका वंश समाप्त हो जाये अथवा उसका कोई नाम लेवा न हो। जब नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* के नर संतान न रही तो कुछ काफ़िरों ने आपको أَبْتَر कहा जिस पर अल्लाह *(तआला)* ने आप के वंश को भी सांत्वना दी, कि أَبْتَر तू नहीं तेरे शत्रु ही होंगे। जैसेकि अल्लाह ने आप के वंश को भी शेष रखा यद्यपि यह पुत्रियों की ओर से है, इसी प्रकार आप की उम्मत (अनुयायी) भी आपकी संतान स्वरूप ही है जिसकी अधिकता पर आप क़ियामत के दिन गर्व करेंगे। इसके सिवा आप का नाम पूरे विश्व में अति आदर-मान से लिया जाता है। जबकि आप के शत्रु मात्र इतिहास के पन्नों में रह गये। परन्तु किसी दिल में उनका सम्मान नहीं तथा किसी ज़बान पर उनकी शुभ चर्चा नहीं।

सूरतुल काफ़िरून : सही हदीसों से सिद्ध है कि रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तवाफ़* (परिक्रमा) की दो रकअतों, तथा *फ़ज्र* एवं *मग़रिब* की सुन्नतों में ﴿قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ﴾ तथा *सूरतुल इख़्लास* पढ़ते थे। इसी प्रकार आप ने कुछ सहाबा से फ़रमाया कि रात को सोते समय यह सूरत पढ़कर सोओगे तो शिर्क से निर्दोष माने जाओगे। (मुसनद अहमद ५\४५६, तिर्मिज़ी क्रम संख्या ३४०३, अबूदाऊद न० ५०५५, मजमउज़ जवायेद १०\१२१) कुछ रिवायतों में स्वयं आप का कर्म भी यही बतलाया है। **(इब्ने कसीर)**

[2] الْكَافِرُون में अलिफ़, लाम साधारणता के लिये है परन्तु यहाँ विशेष रूप से उन काफ़िरों से सम्बोधन है। जिनके विषय में अल्लाह को ज्ञान था कि उनका अंत कुफ़्र पर

The Ummah Technology Mission

لَآ أَعۡبُدُ مَا تَعۡبُدُونَ ۝٢

(२) न मैं इबादत करता हूँ उसकी जिसकी तुम पूजा करते हो।

وَلَآ أَنتُمۡ عَٰبِدُونَ مَآ أَعۡبُدُ ۝٣

(३) तथा न तुम इबादत करने वाले हो उसकी जिसकी मैं इबादत करता हूँ।

وَلَآ أَنَا۠ عَابِدٞ مَّا عَبَدتُّمۡ ۝٤

(४) तथा न मैं इबादत करने वाला हूँ उसकी जिसकी तुमने इबादत की।

وَلَآ أَنتُمۡ عَٰبِدُونَ مَآ أَعۡبُدُ ۝٥

(५) न तुम उसकी इबादत करोगे जिसकी इबादत मैं कर रहा हूँ।[1]

لَكُمۡ دِينُكُمۡ وَلِيَ دِينِ ۝٦

(६) तुम्हारे लिये तुम्हारा धर्म है तथा मेरे लिये मेरा धर्म है।[2]

होगा क्योंकि इस सूरह के उतरने के पश्चात कई मुशरिक मुसलमान हुए तथा उन्होंने अल्लाह की इबादत की। (फ़तहुल क़दीर)

[1]कुछ ने पहली आयत को वर्तमान तथा दूसरी को भविष्य के अर्थ में लिया है। किन्तु इमाम शौकानी ने कहा है कि इन आडंबरों की आवश्यकता नहीं। बल देने हेतु पुनरावृत्ति अरबी भाषा की साधारणतया शैली है। जिसे पवित्र क़ुरआन के कई स्थानों पर अपनाया गया है जैसे *सूरत रहमान* तथा *सूरत मुर्सलात* में है। इसी प्रकार बल देने हेतु यह वाक्य भी यहाँ दुहराया गया है। उद्देश्य यह है कि, यह कभी संभव नहीं कि मैं तौहीद (एकेश्वरवाद) का मार्ग त्याग कर शिर्क का मार्ग अपना लूँ। जैसाकि तुम चाहते हो। यदि अल्लाह ने तुम्हारे भाग्य में मार्गदर्शन नहीं लिखा है, तो तुम भी इस तौहीद तथा अल्लाह की उपासना से वंचित रहोगे। यह उस समय फ़रमाया गया जब काफ़िरों ने यह प्रस्ताव रखा कि एक वर्ष आप हमारे देवताओं की पूजा करें तथा एक वर्ष हम आपके देवताओं की पूजा करें।

[2]अर्थात यदि तुम अपने धर्म पर प्रसन्न हो तथा उसे त्यागने के लिए तैयार नहीं, तो मैं अपने धर्म पर प्रसन्न हूँ, मैं क्योंकि छोड़ दूँ।

﴿ لَنَآ أَعۡمَٰلُنَا وَلَكُمۡ أَعۡمَٰلُكُمۡ ﴾ (अल-कसस-५५)

The Ummah Technology Mission

सूरतुन नस्र-११०

سُوْرَةُ النَّصْرِ

सूरतुन नस्र मदीने में अवतरित हुई तथा इसमें तीन आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

(१) जब अल्लाह की सहायता एवं विजय प्राप्त हो जाये।

إِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ①

(२) तथा तू लोगों को अल्लाह के धर्म की ओर झुंड के झुंड आता देख ले।[1]

وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ أَفْوَاجًا ②

(३) तू अपने प्रभु की महिमा एवं प्रशंसा करने में लग, तथा उससे क्षमा की प्रार्थना

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ

सूरतुन नस्र : अवतरण के हिसाब से यह अन्तिम सूरत है (सहीह मुस्लिम किताबुत तफ़सीर) यह सूरत उतरी तो कुछ सहाबा समझ गये कि अब नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) का अन्तिम समय आ गया है, इसलिये आपको तस्बीह तथा क्षमा याचना का आदश दिया गया है। जैसे आदरणीय इब्ने अब्बास तथा माननीय उमर का वाक्य सहीह बुख़ारी में है। (तफ़सीर *सुरतिन नस्र*)

[1]अल्लाह की सहायता से अभिप्राय है इस्लाम तथा मुसलमानों का कुफ़्र तथा काफ़िरों पर प्रभुत्व। तथा فَتْح विजय से तात्पर्य मक्का की विजय है जो नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) की जन्म भूमि तथा निवास स्थान था, किन्तु काफ़िरों ने आप को तथा आपके सहावा (सहचरों) को वहाँ से स्थानान्तरित होने पर बाध्य कर दिया था,तथा जब सन ८ हिज्री में मक्का विजय हो गया तो लोग झुंड के झुंड ने इस्लाम धर्म में प्रवेश करना आरम्भ कर दिया जबकि इससे पहले एक-एक, दो-दो, मुसलमान होते थे। मक्का विजय से लोगों पर यह बात खुल गई कि आप अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर (संदेष्टा) है। तथा इस्लाम धर्म सत्य धर्म है जिसके बिना पारलौकिक मोक्ष सम्भव नहीं। अल्लाह ने फ़रमाया कि जब ऐसा हो तो।

The Ummah Technology Mission

إِنَّهُۥ كَانَ تَوَّابًا ۝٣ कर,[1] नि:संदेह वह क्षमा करने वाला है।

सूरतुल्लहब-१११

سُورَةُ اللَّهَبِ

सूर: लहब मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें पाँच आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ۝ अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

تَبَّتْ يَدَآ أَبِى لَهَبٍ وَتَبَّ ۝١ (१) अबू लहब के दोनों हाथ टूट गये तथा वह (स्वयं) नाश हो गया।[2]

---

[1] यह समझ कि जो संदेश पहुँचाने तथा सत्य की सत्यता सिद्ध करने का कर्तव्य तेरे ऊपर था। पूरा हो गया, तथा अब तेरा दुनिया से जाने का समय निकट आ गया है। अत: अल्लाह की महिमा उसकी तस्बीह तथा क्षमायाचना की खूब व्यवस्था कर। इससे विदित हुआ कि जीवन के अन्तिम युग में इन चीज़ों का प्रबन्ध अधिकता से करना चाहिये।

सूरतुल्लहब : इसे *सूरतुल मसद* भी कहते हैं इसके अवतरण के विषय में आता है कि जब नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* को आदेश हुआ कि अपने समीपवर्ती सम्बन्धियों को डरायें तथा उपदेश दें, तो आपने सफा पर्वत पर चढ़कर يَا صَبَاحَاه की आवाज़ लगाई। ऐसी आवाज़ ख़तरे का लक्षण मानी जाती थी। जैसाकि आप *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* की पुकार पर लोग एकत्र हो गये। आपने फ़रमाया : तनिक बताओ, यदि मैं तुमको सूचना दूँ कि इस पर्वत के पीछे एक घुड़सवार सेना है जो तुम पर आक्रामण करना चाहती है, तो तुम मेरी बात मानोगे ? उन्होंने कहा क्यों नहीं। हमने आप को कभी झूठा नहीं पाया। आपने फ़रमाया : फिर मैं तुम्हें एक बड़े प्रकोप से डराने आया हूँ। (यदि तुम कुफ्र तथा शिर्क पर तत्पर रहे) यह सुनकर अबूलहब ने कहा تَبًّا لَّكَ तेरा नाश हो। क्या तूने हमें इसके लिये एकत्र किया था जिस पर अल्लाह ने यह सूरत उतारी (सहीह अलबुख़ारी, तफ़सीर *सूरतु तब्बत*) अबूलहब का वास्तविक नाम अब्दुल उज़्ज़ा था। उसकी सुन्दरता तथा शोभा एवं चेहरे की लाली के कारण उसे अबू लहब कहा जाता था। इसके सिवा अपने अन्त के आधार पर भी उसे नरक का ईधन बनना था। यह नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* का सगा चचा था किन्तु आप का घोर शत्रु। तथा उसकी पत्नी उम्मे जमील बिन्ते हर्ब भी शत्रुता में अपने पति से कम न थी।

[2] يَدَا द्विवचन है يَدٌ का, इससे अभिप्राय वह स्वयं है, अंग बोल कर पूरा लिया गया है। अर्थात नाश तथा बर्बाद हो जाये। यह अभिप्राय उन शब्दों के उत्तर में है। जो उसने

The Ummah Technology Mission

مَآ اَغۡنٰى عَنۡهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ۝٢

(२) न तो उसका माल उसके काम आया तथा न उसकी कमायी।[1]

سَيَصۡلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝٣

(३) वह निकट भविष्य में भड़कने वाली आग में जायेगा।

وَّامۡرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ الۡحَطَبِ ۝٤

(४) तथा उसकी पत्नी भी (जायेगी), जो लकड़ियाँ ढोने वाली है।[2]

فِىۡ جِيۡدِهَا حَبۡلٌ مِّنۡ مَّسَدٍ ۝٥

(५) उसकी गर्दन में खजूर की छाल की बटी हुई रस्सी होगी।[3]

नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) को कहे थे। تَبَّ (तथा वह नाश हो गया) यह ख़बर (सूचक) है। अर्थात शाप के साथ ही अल्लाह ने उसके विनाश तथा बर्बादी की सूचना दे दी। तथा बद्र की लड़ाई के कुछ दिन पश्चात वह रोगग्रस्त हुआ उसे प्लेग की गिलटी के समान गिलटी निकली तथा मर गया। तीन दिन तक उसका शव यूँ ही पड़ा रहा। यहाँ तक कि दुर्गंध आने लगी। अन्ततः उसके पुत्रों ने महामारी फैलने के भय तथा लज्जा की डर से उसके शव पर दूर से पत्थर तथा धूल डाल कर उसे गाड़ दिया। (ऐसरूत तफ़ासीर)

[1]कमाई में उसका वैभव पद तथा उसकी संतान भी सम्मिलित है। अर्थात जब अल्लाह की पकड़ आई तो कोई चीज़ काम न आई।

[2]अर्थात नरक में अपने पति की आग पर लकड़ियाँ ला-लाकर डालेगी। ताकि आग अधिक भड़के। यह अल्लाह की ओर से होगा। अर्थात जिस प्रकार यह संसार में अपने पति की उसके कुफ़्र एवं शत्रुता में सहायक थी परलोक में भी यातना में उसकी सहायक होगी। (इब्ने कसीर) कुछ कहते हैं कि वह काँटेदार झाड़ियाँ ढो-ढोकर लाती, तथा नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) के मार्ग में लाकर बिछा देती थी। कुछ कहते हैं कि उसकी चुगली खाने की आदत की ओर संकेत है। चुगली खाने के लिये यह अरबी मुहावरा (वाक शैली) है। यह कुरैश के काफ़िरों के पास जा-जाकर रसूल अल्लाह (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) की चुगली खाती थी तथा आप के विरोध पर उकसाती थी (फ़तहुल बारी)

[3] جِيۡدِ गर्दन مَسَدٌ दृढ़ बटी हुई रस्सी, वह मूँज की अथवा खजूर की छाल की, अथवा लोहे के तारों की। जैसाकि अनेक लोगों ने इसका अनुवाद किया है। कुछ ने कहा कि

The Ummah Technology Mission

सूरतुल इख़्लास-११२

سُوْرَةُ الْاِخْلَاصِ

सूरतुल इख़्लास मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें चार आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١

(१) (आप) कह दीजिये कि वह अल्लाह एक (ही) है।

اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢

(२) अल्लाह (*तआला*) किसी के आधीन नहीं सभी उसके आधीन हैं।[1]

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝٣

(३) न उससे कोई पैदा हुआ तथा न उसे किसी ने पैदा किया।[2]

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤

(४) तथा न कोई उसका समकक्ष है।[3]

सूरतुल इख़्लास : यह संक्षिप्त सूरत बड़ी प्रधानता रखती है। इसे नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) ने एक तिहाई क़ुरआन कहा है। तथा इसे रात को पढ़ने का प्रलोभन दिया है। (सहीह अलबुख़ारी, किताबुत तौहीद तथा फ़ज़ायेलुल क़ुरआन, बाबु फ़ज़ले क़ुल हुवल्लाहु अहद्) कुछ सहाबा अन्य सूरतों के साथ प्रत्येक रकअत में इसे मिलाकर अवश्य पढ़ते थे। जिस पर नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) ने उनसे फ़रमाया : तुम्हारा इससे प्रेम तुम्हें स्वर्ग मे ले जायेगा। (बुख़ारी किताबुत तौहीद, किताबुल अज़ान, बाबुल जमओ बैनस सूरतैने फ़िर रकअ: मुस्लिम, किताबु सलातिल मुसाफ़िरीन) इसके उतरने का कारण यह बताया गया है कि मुशरिकीन ने आप से कहा कि अपने प्रभु का गोत्र बताओ। (मुसनद अहमद ५\१३३,१३४)

[1]अर्थात सब उसके सम्मुख मुहताज हैं तथा वह सबसे निस्पृह तथा निरपेक्ष है

[2]अर्थात न उससे कोई वस्तु निकली है न वह किसी वस्तु से निकला है।

[3]न उसके व्यक्तित्व में न उसकी विशेषताओं में न उसके कर्मों में ﴿لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ﴾ (*अश शूरा-११*) हदीसे कुदसी में है कि अल्लाह (*तआला*) फ़रमाता है कि इंसान मुझको गाली देता है। अर्थात मेरे लिये संतान सिद्ध करता है। जबकि मैं अकेला हूँ। निस्पृह हूँ। मैने न किसी को जन्म दिया है, न मैं किसी से पैदा हुआ, न कोई मेरे समान है। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर कुल हुवल्लाहु अहद) इस सूरत में उनका भी खण्डन हो गया जो अनेक ईश्वर मानते हैं तथा उनका भी जो अल्लाह की संतान मानते हैं तथा उनका भी जोदूसरों को उसका साझी कहते हैं। तथा उनका भी जोअनिश्वरवादी (नास्तिक) हैं।

The Ummah Technology Mission

सूरतुल फ़लक़-११३

سُوْرَةُ الْفَلَقِ

सूरतुल फ़लक़ मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें पाँच आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

सूरतुल फ़लक़ : इसके पश्चात *सूरतुन नास* है। इन दोनों की सम्मिलित प्रधानता अनेक हदीसों में आई है। उदाहरणार्थ एक हदीस में नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) ने फ़रमाया: आज रात मुझ पर कुछ ऐसी आयतें उतरी हैं जिनके समान मैंने कभी नहीं देखी। यह फ़रमा कर आपने यह दोनों सूरतें पढ़ीं। (सहीह मुस्लिम, किताबु सलातिल मुसाफिरीन, बाबु फ़जले किराअतिल मुअव्वज़तैन, वत तिर्मिज़ी) अबू हाबिस जुहनी से आप ने फ़रमाया : हे अबू हाबिस ! क्या मैं तुम्हें सर्वोत्तम तावीज़ (यंत्र) न बताऊँ। जिसके द्वारा शरण के चाहने वाले शरण माँगते हैं। उन्होंने कहा हाँ अवश्य बतलाइये। आप ने दोनों सूरतों की चर्चा करके फ़रमाया कि यह दोनों مُعَوِّذَتَيْن (मुअव्वजतैन) हैं। सहीहुन नसाई लिल अलबानी न॰५०२०) नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) इंसानों तथा जिन्नों की प्रभाव से शरण माँगा करते थे। जब यह दोनों सूरतें उतरीं तो आप ने इनके पढ़ने का नियम बना लिया तथा शेष दूसरी दुआयें छोड़ दीं। (अलबानी की सहीह तिर्मिज़ी न॰२१५०) माननीय आयशा (*रज़ी अल्लाह अन्हा*) फ़रमाती हैं कि जब आप को दुख होता तो मुअव्वजतैन पढ़कर अपने शरीर पर फूँक लेते तथा जब आप का रोग बढ़ गया तो मैं यह सूरतें पढ़कर आप के हाथों को बरकत की आशा में आप के शरीर पर फेरती (बुख़ारी फ़ज़ायेलुल क़ुरआन, बाबुल मुअव्वजात, मुस्लिम किताबुस सलाम, बाबु रूक्यातिल मरीज़े बिल मुअव्वज़ात) जब नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) पर जादू किया गया, तो जिब्रील यही दो सूरतें लेकर उपस्थित हुए तथा फ़रमाया कि एक यहूदी ने आप पर जादू किया है, तथा यह जादू अमुक कूऐं में है, आप ने माननीय अली को भेजकर उसे मंगवाया। (यह एक कंघी के दाँतों तथा बालों के साथ एक ताँत के अन्दर ग्यारह गाठें पड़ी हुई थी तथा मोम का एक पुतला था जिसमें सुइयाँ चुभाई हुई थी) जिब्रील की आज्ञानुसार आप इन दोनों सूरतों को पढ़ते जाते थे और गाँठें खुलती तथा सुई निकलती जाती थी अन्त तक पहुँचने पर सब गाँठें भी खुल गईं तथा सब सुइयाँ भी निकल गईं तथा आप इस प्रकार स्वस्थ हो गये जैसे कोई बंधन से मुक्त हो जाये (सहीह अलबुख़ारी फ़तहुल बारी सहित, किताबुत तिब्ब,बाबुस सेहर, मुस्लिम किताबुस सलाम, किताबुस सेहर) आप (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) का यह भी नियम था कि रात को सोते समय *सूरतुल इख़लास* तथा मुअव्वज़तैन पढ़कर अपने दोनों हथेलियों पर फूँकते फिर उन्हें पूरे शरीर पर मलते। पहले सिर, चेहरे तथा शरीर के अगले भाग पर हाथ फेरते तत्पश्चात जहाँ तक आप के हाथ पहुँचते। तीन बार आप ऐसा करते (सहीह अलबुख़ारी, किताबु फ़ज़ायेलिल क़ुरआन, बाबु फ़ज़लिल मुअव्वज़ात)

Nur Ummah Technology Mission

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ﴿۱﴾

(१) आप कह दीजिये कि मैं प्रात: के प्रभु की शरण में आता हूँ।[1]

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾

(२) प्रत्येक उस वस्तु की बुराई से जो उसने पैदा की है।[2]

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾

(३) तथा अंधेरी रात्रि की बुराई से, जब उसका अंधकार फैल जाये।[3]

وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۙ﴿۴﴾

(४) तथा गाँठ (लगाकर उन) में फूँकने वालियों की बुराई से (भी)[4]

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ؕ﴿۵﴾

(५) तथा द्वेष करने वाले की बुराई से भी जब वह द्वेष करे।[5]

---

[1] فَلَق का प्रधान अर्थ भोर है प्रात: को इसलिये विशेष किया कि जैसे अल्लाह (*तआला*) रात का अंधकार समाप्त करके दिन की रोशनी ला सकता है वह इसी प्रकार भय तथा डर को दूर करके शरण माँगने वालों को शान्ति भी प्रदान कर सकता है। अथवा इंसान रात को जिस प्रकार इस बात की प्रतीक्षा में रहता है कि सवेरे प्रकाश हो जायेगा। इसी प्रकार भयभीत व्यक्ति शरण द्वारा सफलता की प्रभात के उदित होने की आशा रखता है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] यह साधारण है इसमें शैतान उसकी संतान, नरक तथा प्रत्येक उस वस्तु से शरण है जिससे इंसान को क्षति पहुँच सकती है।

[3] रात के अंधकार में ही भयावह जन्तु अपनी कक्षारों से तथा दु:खदायी जानवर अपनी विलों से तथा इसी प्रकार अपराधी लोग अपने कुविचारों को पूरा करते हैं। इन शब्दों द्वारा इन सभी से शरण माँगी गई है। غَاسِق रात وَقَب आ जाये, छा जाये।

[4] نَفّٰثات स्त्रीलिंग का रूप है। जो النُّفُوسُ (लुप्त विशेष्य) का विशेषण है। مِن شَرِّ النُّفُوس النَّفّٰثَات अर्थात गाँठों में फूँकने वालियों की बुराई से शरण। इससे अभिप्राय जादू का काला काम करने वाले पुरूष तथा स्त्री दोनों हैं। अर्थात इसमें जादूगरों की दुष्टता से शरण माँगी गई है। जादूगर, पढ़-पढ़ कर फूँक मारते तथा गाँठ लगाते जाते हैं। साधारणत: जिस पर जादू करना होता है उसके बाल अथवा कोई चीज़ प्राप्त करके उस पर यह काम किया जाता है।

[5] ईर्ष्या यह है कि ईर्ष्या करने वाला दूसरे की अच्छी चीज़ों की समाप्ति की कामना करता है। अत: उससे भी शरण माँगी गई है। क्योंकि ईर्ष्या भी एक बड़ा चरित्रक रोग है जो पुण्य को खा जाता है।

The Ummah Technology Mission

सूरतुन नास-११४

سُوْرَةُ النَّاسِ

सूरतुन नास मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें छः आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾

(१) आप कह दीजिये कि मैं लोगों के प्रभु की शरण में आता हूँ [1]।

مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾

(२) लोगों के स्वामी की [2] (तथा)

اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾

(३) लोगों के पूजने योग्य की (शरण में) [3]।

---

[1] ईर्ष्या यह है कि ईर्ष्या करने वाला दूसरे की अच्छी चीज़ों की समाप्ति की कामना करता है। अतः उससे भी शरण माँगी गई है। क्योंकि ईर्ष्या भी एक बड़ा चरित्रक रोग है जो पुण्य को खा जाता है।

सूरतुन नास : इसकी प्रधानता विगत् सूरत के साथ वर्णन की जा चुकी है। एक अन्य हदीस में है कि नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* को नमाज़ में बिच्छू ने डस लिया नमाज़ के पश्चात आपने पानी तथा नमक मँगवा कर उसके ऊपर मला तथा साथ-साथ ﴿قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾ ﴿قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ﴾ ﴿قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ﴾ पढ़ते रहे (मज्मउज़ ज़वायेद ५\१११ तथा हैसमी ने कहा कि इसकी सनद हसन है)

[2] رَبّ (पालनहार) का अर्थ है, जो आरम्भ ही से जब इंसान अभी माँ के गर्भाशय ही में होता है। उसकी व्यवस्था तथा सुधार करता है यहाँ तक कि वह व्यस्क हो जाता है फिर वह यह उपाय केवल कुछ विशेष लोगों के लिये नहीं, अपितु सभी मानव जाति के लिये करता है तथा सभी मानव जाति के लिये ही नहीं अपनी पूरी सृष्टि के लिये करता है, यहाँ केवल इंसानों की चर्चा उसकी प्रतिष्ठा एवं प्रधानता दिखाने के लिये है जो उन्हें पूरी सृष्टि पर प्राप्त है।

[3] जो अल्लाह सब इंसानों का पोषक तथा संरक्षक है। वही इस योग्य है कि विश्व तथा सृष्टि का शासन तथा राज्य उसी के पास हो।

[4] जो अखिल जगत का पालनहार हो। पूरी सृष्टि उसी का अधिपत्य है। वही सत्ता इस बात के योग्य है कि उसकी उपासना की जाये तथा वही सब लोगों का पूज्य हो अतः उसी महान तथा सर्वोच्च सत्ता की शरण प्राप्त करता हूँ।

The Ummah Technology Mission

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ﴿٤﴾

(४) शंका डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से।[1]

الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ﴿٥﴾

(५) जो लोगों के सीनों में शंका डालता है।

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿٦﴾

(६) (चाहे) वह जिन्न में से हो अथवा मनुष्य में से।[2]

---

[1] الوسْوَاس कुछ के विचार से कर्त्ता संज्ञा है الْمُوَسْوِسُ के अर्थ में है, तथा कुछ के विचार में وَسوَسَة है ذي الوَسْوَاس वस्वसा, गुप्त ध्वनि को कहते हैं। शैतान भी अनजाने ढंग से इंसान के दिल में बुरी बातें डाल देता है उसी को वस्वसा कहा जाता है الخَنَّاس (खिसक जाने वाला) यह शैतान का दुर्गुण है कि जब अल्लाह का स्मरण (याद) की जाये, तो यह खिसक जाता है। तथा अल्लाह की याद (स्मरण) से अचेत रहा जाये तो दिल पर छा जाता है।

[2] यह वस्वसा (गुप्त ध्वनि) डालने वाले दो प्रकार के हैं जिन्नातों के शैतान और मानव जाति के शैतान-प्रथम को अल्लाह तआला ने मानव को पथभ्रष्ट करने की क्षमता दी है। उसके अतिरिक्त हर मानव के साथ उसका एक शैतान साथी होता है जो उसको पथभ्रष्ट करता रहता है।

हदीस में है कि जब नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) ने यह बात बताई तो सहाबा ने प्रश्न किया, हे अल्लाह के नबी क्या वह आपके साथ भी है, आपने कहा, हाँ। परन्तु अल्लाह ने मेरी सहायता की है और वह मेरा आज्ञाकारी है। मुझे भलाई के अतिरिक्त किसी चीज़ को नहीं कहता। (सहीह मुस्लिम किताबु सिफ़तिल क़ियाम:)

इसी प्रकार दूसरी हदीस में है कि नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) ऐतिकाफ़ में थे कि आपकी पत्नी सफ़िया (*रज़ी अल्लाहु अन्हा*) आपसे मिलने आयीं। रात्रि का समय था। आप उनको छोड़ने के लिए मस्जिद के बाहर आये और उनसे बात करने लगे। दो अंसारी सहावी वहाँ से गुज़रे तो आपने उनको बुलाकर फ़रमाया : यह मेरी पत्नी सफ़िया है। उन लोगों ने कहा कि हे अल्लाह के रसूल क्या आपके विषय हमें बुरा गुमान हो सकता है। आपने कहा यह ठीक है परन्तु शैतान मानव के अन्दर रक्त के समान दौड़ता है। मुझे संदेह हुआ कि वह तुम्हारे हृदय में आशंका डाल दे। (सहीह बुख़ारी किताबुल अहकाम)

दूसरे प्रकार के शैतान मानव जाति में से होते हैं जो व्यक्ति को सदुपदेशक और दयावान बन कर पथभ्रष्ट करते हैं।

कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि शैतान जिन लोगों को पथभ्रष्ट करता है वे दो प्रकार के हैं अर्थात शैतान मानवों को भी गुमराह करता है और जिन्नातों को भी।

The Ummah Technology Mission

क़ुरआन मजीद की सूरतों की अनुक्रम सूची

क्रम नं॰	सूरतों के नाम	पृष्ठ नं॰	भाग नं॰
1.	सूरतुल फ़ातिहा	8	
2.	सूरतुल बक़र:	17	1,2,3
3.	सूरतु आले इमरान	178	3,4
4.	सूरतुन निसा	273	4,5,6
5.	सूरतुल मायेद:	378	6,7
6.	सूरतुल अनआम	452	7,8
7.	सूरतुल आराफ़	534	8,9
8.	सूरतुल अंफ़ाल	624	9,10
9.	सूरतुत्तौब:	661	10,11
10.	सूरतु यूनुस	735	11
11.	सूरतु हूद	786	11,12
12.	सूरतु यूसुफ़	840	12,13
13.	सूरतु-रअद	888	13
14.	सूरतु इब्राहीम	912	13
15.	सूरतुल हिज्र	936	13,14
16.	सूरतुन-नहल	956	14
17.	सूरतु बनी इस्राईल	1007	15
18.	सूरतुल कहफ़	1051	15,16
19.	सूरतु मरियम	1095	16
20.	सूरतु ताहा	1123	16
21.	सूरतुल अम्बिया	1163	17
22.	सूरतुल हज्ज	1199	17
23.	सूरतुल मोमिनून	1237	18

The Ummah Technology Mission

क्रम नं॰	सूरतों के नाम	पृष्ठ नं॰	भाग नं॰
24.	सूरतुन नूर	1267	18
25.	सूरतुल फ़ुरक़ान	1306	18,19
26.	सूरतुश्शुअरा	1334	19
27.	सूरतुन नमल	1376	19,20
28.	सूरतुल क़सस	1408	20
29.	सूरतुल अनकबूत	1447	20,21
30.	सूरतु रूम	1478	21
31.	सूरतु लुक़मान	1502	21
32.	सूरतुस्सजदः	1518	21
33.	सूरतुल अहज़ाब	1529	21,22
34.	सूरतु सबा	1570	22
35.	सूरतु फ़ातिर	1593	22
36.	सूरतु यासीन	1613	22,23
37.	सूरतुस्साफ़्फ़ात	1635	23
38.	सूरतु साद	1664	23
39.	सूरतुज़्ज़ुमर	1686	23,24
40.	सूरतुल मोमिन	1718	24
41.	सूरतु हा॰मीम॰अस्सजदः	1752	24,25
42.	सूरतुश्शूरा	1774	25
43.	सूरतुज़ ज़ुख़रुफ़	1797	25
44.	सूरतुद दुख़ान	1822	25
45.	सूरतुल जासियः	1833	25
46.	सूरतुल अहक़ाफ़	1845	26

The Ummah Technology Mission

क्रम नं॰	सूरतों के नाम	पृष्ठ नं॰	भाग नं॰
47.	सूरतु मोहम्मद	1862	26
48.	सूरतुल फ़त्ह	1879	26
49.	सूरतुल हुजुरात	1895	26
50.	सूरतु क़ाफ़	1904	26
51.	सूरतुज़ ज़ारियात	1916	26,27
52.	सूरतु त्तूर	1927	27
53.	सूरतुन नज्म	1937	27
54.	सूरतुल क़मर	1949	27
55.	सूरतुर्रहमान	1961	27
56.	सूरतुल वाक़िअ:	1973	27
57.	सूरतुल हदीद	1987	27
58.	सूरतुल मुजादिल:	2003	28
59.	सूरतुल हश्र	2015	28
60.	सूरतुल मुम्तहिन:	2028	28
61.	सूरतुस-सफ़्फ़:	2038	28
62.	सूरतुल-जुमुअ:	2045	28
63.	सूरतुल-मुनाफ़िक़ून	2050	28
64.	सूरतुत-तग़ाबुन	2054	28
65.	सूरतुत्तलाक़	2062	28
66.	सूरतुत्तहरीम	2071	28
67.	सूरतुल मुल्क	2079	29
68.	सूरतुल क़लम	2088	29
69.	सूरतुल हाक़्क़:	2098	29

The Ummah Technology Mission

क्रम नं॰	सूरतों के नाम	पृष्ठ नं॰	भाग नं॰
70.	सूरतुल मआरिज	2107	29
71.	सूरतु नूह	2115	29
72.	सूरतुल जिन्न	2122	29
73.	सूरतुल मुज़्ज़म्मिल	2130	29
74.	सूरतुल मुद्दस्सिर	2136	29
75.	सूरतुल क़ियामः	2144	29
76.	सूरतुद्दहर	2151	29
77.	सूरतुल मुर्सलात	2159	29
78.	सूरतुन नबा	2167	30
79.	सूरतुन नाज़िआत	2174	30
80.	सूरतु अबस	2182	30
81.	सूरतुत तकवीर	2188	30
82.	सूरतुल इंफ़ितार	2192	30
83.	सूरतुल मुतफ़्फ़िफ़ीन	2196	30
84.	सूरतुल इंशिक़ाक़	2202	30
85.	सूरतुल बुरूज	2207	30
86.	सूरतुत्तारिक़	2211	30
87.	सूरतुल आ़ला	2215	30
88.	सूरतुल ग़ाशिया	2219	30
89.	सूरतुल फ़ज्र	2223	30
90.	सूरतुल बलद	2229	30
91.	सूरतुश शम्स	2233	30
92.	सूरतुल लैल	2236	30

The Ummah Technology Mission

क्रम नं॰	सूरतों के नाम	पृष्ठ नं॰	भाग नं॰
93.	सूरतुददुहा	2241	30
94.	सूरतु अलम नशरह	2243	30
95.	सूरतुत्तीन	2245	30
96.	सूरतुल अलक़	2247	30
97.	सूरतुल क़द्र	2250	30
98.	सूरतुल बय्यिन:	2252	30
99.	सूरतुज़ ज़िल्ज़ाल	2255	30
100.	सूरतुल आदियात	2258	30
101.	सूरतुल क़ारिअ:	2260	30
102.	सूरतुत तकासुर	2262	30
103.	सूरतुल अस्र	2264	30
104.	सूरतुल हुमज़:	2265	30
105.	सूरतुल फ़ील	2267	30
106.	सूरतु क़ुरैश	2269	30
107.	सूरतुल माऊन	2270	30
108.	सूरतुल कौसर	2272	30
109.	सूरतुल काफ़िरून	2273	30
110.	सूरतुन नस्र	2275	30
111.	सूरतुल्लहब	2276	30
112.	सूरतुल इख़्लास	2278	30
113.	सूरतुल फ़लक़	2279	30
114.	सूरतुन नास	2281	30

The Ummah Technology Mission

इस्लाम का सन्देश

क्या हम ब्रहमाण्ड को परिभाषित कर सकते हैं ? क्या इसके अस्तित्व के कारण को परिलक्षित कर सकते हैं ? जैसाकि हम जानते हैं कि कोई भी परिवार बिना किसी मुखिया के अच्छी प्रकार से जीवन व्यतीत नहीं कर सकता, कोई भी नगर बिना किसी उचित कार्यपालिका के प्रगति नहीं कर सकता, किसी भी देश का अस्तित्व बिना किसी राजनैतिक नेता के नहीं रह सकता । यह भी सार्वभौमिक सत्य है कि कोई भी वस्तु स्वयं नही बनी । प्रतिदिन हम यह देखते हैं कि ब्रहमाण्ड एक बहुत ही उचित ढंग से अपने पथ पर चल रहा है । तब क्या यह प्रश्न नहीं उठता कि क्या यह अचानक और ऐसे ही अस्तित्व में आया ? क्या हम मनुष्य के जन्म और समस्त संसार के अस्तित्व को किसी घटना से सम्बन्धित कर सकते हैं ?

मनुष्य इस विशाल ब्रहमाण्ड में एक छोटा-सा जीव है । यदि वह कोई योजना बनाता है तो योजना की विशेषता के लिए प्रोत्साहन चाहता है । उसी प्रकार उसका स्वयं आना और ब्रहमाण्ड का अस्तित्व भी एक योजना पर आधारित है । अर्थात हमारे भौतिक अस्तित्व के पीछे कोई योजना है, और संसार की प्रत्येक वस्तु को कार्यबद्ध रखने के लिए एक अपार शक्ति है ।

इस संसार में अवश्य कोई बड़ी शक्ति है जो हर चीज़ को एक उचित व्यवस्था में चला रही है । इस सुन्दर प्रकृति का अवश्य कोई सृष्टा है, जिसने सृष्टि को निर्माण किया, सुन्दर सृष्टि के बनाने का अवश्य ही कोई विशेष कारण है । विद्वान ज्ञानी व्यक्तियों ने उस स्रष्टा को पहचाना और उसे 'अल्लाह' ईश्वर के नाम से पुकारा । वह कोई मनुष्य नहीं, क्योंकि मनुष्य स्वयं अपने जैसा दूसरा मनुष्य नहीं बना सकता, वह कोई जानवर नहीं, और न कोई वृक्ष है । वह न मूर्ति है, और न किसी भी चीज़ का चित्र, क्योंकि वह सभी अपने जैसा अथवा दूसरी किसी चीज़ की सृष्टि नहीं कर सकती हैं । वह इन सबसे भिन्न है, क्योंकि वह स्रष्टा है, स्रष्टा के स्वभाव को सृष्टि के स्वभाव से भिन्न होना चाहिए । इस तरह स्रष्टा अनादि है, अन्नत और अमर है ।

'अल्लाह' (ईश्वर) को जानने के लिए बहुत से रास्ते हैं, उसके विषय में बताने के लिए बहुत सी बातें हैं । दुनिया में देखे जाने वाले बड़े आश्चर्य और चमत्कार एक खुली किताब की तरह हैं, जिनके द्वारा 'अल्लाह' का ज्ञान प्राप्त

The Ummah Technology Mission

किया जा सकता है । अल्लाह ने स्वयं हमारी सहातार्थ कई दूत (रसूल) भेजे और उनका मार्गदर्शन देववाणी (वह्यी) से किया, ताकि वे अपनी जाति अथवा क़ौम के लोगों को अल्लाह का आदेश पहुँचा दें ।

'इस्लाम' धर्म, अल्लाह के आदेश व शिक्षा जो उसने अपने रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अवतरित की, को पूर्ण रूप से स्वीकार करने को कहते हैं ।

इस्लाम अल्लाह से सम्बन्ध जोड़ने का नाम है । अल्लाह से जो सम्बन्ध जोड़ता है, वह अल्लाह सर्वशक्तिमान और एक सच्चा खुदा है । उस से पूरी सृष्टि में इन्सान की सही पदवी निर्धारित होती है । यह धारणा मनुष्य को हर प्रकार के भय और अंधविश्वास से मुक्ति दिला देती है, जब वह यह सोचता है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह अपने विशाल ज्ञान द्वारा हर जगह उपस्थित है और मनुष्य को उसी का होकर रहना चाहिए । मात्र विश्वास पर्याप्त नहीं, तथा एक अल्लाह में विश्वास का अर्थ है कि हम सम्पूर्ण मानव जाति को एक परिवार समझें और अल्लाह को उसका संरक्षक, स्रष्टा और पालनकर्त्ता । इस्लाम प्रतिष्ठित जनों के किसी भी विचार का खण्डन करता है उसके निकट यदि महत्व है, तो अल्लाह पर विश्वास और उसके आदेशानुसार व्यवहारिक जीवन व्यतीत करने का । इस प्रकार बिना किसी की मध्यस्यता के हर एक का सीधा सम्बन्ध स्थापित होता है ।

इस्लाम कोई न्या धर्म नहीं है । यह एक ही संदेश है जो सभी संदेष्टाओं आदम, नूह, इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, दाऊद, मूसा और ईसा (सल्लल्लाहु अलैहिम अहमईन) द्वारा अल्लाह की ओर से प्रसारित किया जाता रहा है । परन्तु जो संदेश रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अवतरित किया गया, वह व्यापक, पूर्ण एवं अन्तिम है, और यही इस्लाम की आधारशिला है ।

क़ुरआन अल्लाह का अन्तिम अवतरित संदेश है और इस्लाम की शिक्षा और विधि इसी पर आधारित है । क़ुरआन का प्रमुख विषय विश्वास व आस्था, चरित्र व आचरण, मानवता का इतिहास, उपासना, ज्ञान, विवेक, अल्लाह से मनुष्य के सम्बन्ध और सामाजिक सम्बन्ध हैं । और वह इन विषयों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालता है । ऐसी सतर्क शिक्षायें जिन पर सामाजिक न्याय, अर्थव्यवस्था, राजनीति विधि निर्माण, न्याय शास्त्र विधि और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की इमारतें खड़ी की जा सकती हैं, ये पवित्र क़ुरआन के कुछ प्रमुख विषय हैं ।

The Ummah Technology Mission

रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं, वचन और कर्म को हदीस कहते हैं। हदीस को पूरी सतर्कता एवं सावधानी से आपके श्रद्धालु साथियों ने संग्रहीत और प्रचारित किया, ये हदीसें क़ुरआन की आयतों की व्याख्या एवं स्पष्टीकरण करती हैं।

एक सच्चा श्रद्धालु मुसलमान आस्था के निम्नलिखित नियमों पर विश्वास करता है।

१. **एकेश्वरवाद (तौहीद)** : वह विश्वास करता है कि 'अल्लाह' ईश्वर एक है, वह सर्वशक्तिमान, अनन्त, अनादि, दयालु, मेहरबान, स्रष्टा, पूज्य एवं पालन करता है।

२. **ईश-दूतत्व (रिसालत)** : इस्लामी विश्वास में रिसालत (ईश-दूतत्व) का नियम यह है कि मुसलमान बिना किसी अपवाद के सभी पैग़म्बरों (ईश-दूतों) पर विश्वास करते हैं। अल्लाह ने हर क़ौम को एक या इससे अधिक ईश-दूत (रसूल) अथवा उपदेशक भेजे। अल्लाह ने उनका चयन स्वयं किया, ताकि वे मानवजाति को उस का संदेश पहुँचा दें, तथा उसके अनुसार मानव को शिक्षा दें। क़ुरआन में पच्चीस ईश-दूतों के नाम लिखित हैं, जिन में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अन्तिम एवं प्रमुख हैं।

३. **ईश्वरीय पुस्तकें** : मुसलमान अल्लाह की अवतरित सभी पुस्तकों पर आस्था रखते हैं। वे सभी अल्लाह के बताए हुए सीधे रास्ते पर प्रकाश डालती हैं, जो ईश-दूतों को प्राप्त हुईं। क़ुरआन में विशेष रूप से हज़रत इब्राहीम, मूसा, दाऊद और ईसा को अवतरित की गई पुस्तकों का वर्णन मिलता है। क़ुरआन के हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अवतरित होने से पहले, ये पुस्तकें या तो खो गईं अथवा उनके स्वरूप को बदल दिया गया। आज यदि कोई मान्यता प्राप्त तथा पूर्ण अल्लाह की किताब अब भी उपलब्ध हैं, तो वह केवल क़ुरआन है।

४. **फ़रिश्ते** : सच्चे मुसलमान अल्लाह के फ़रिश्तों पर विश्वास करते हैं, वे शुद्ध आत्मिक और विशेष सृष्टि हैं, जिनको प्रकृति खाना, पीना, सोना कुछ नहीं चाहती हैं। वे अपने दिन व रात अल्लाह की उपासना में व्यतीत करते हैं। वे विशेषता प्राप्त सेवक हैं, जिनको एक विशेष कार्य के लिए निर्धारित किया गया है। वे अल्लाह के समक्ष नहीं बोलते, वे केवल अल्लाह के आदेश का पालन

The Ummah Technology Mission

करते हैं।

५. न्याय का दिन : मुसलमान न्याय के दिन पर विश्वास करते हैं। एक दिन इस संसार का अन्त होना है, मरे हुए ज़िन्दा किए जायेंगे, ताकि उनको अन्तिम तथा उचित न्याय दिया जा सके। अच्छे कर्मों वाले व्यक्तियों को उचित फल मिलेगा और वे अल्लाह के स्वर्ग में पूर्ण सम्मान के साथ स्वागत किये जायेंगे और जिनके कुकर्म होंगे, उनको दण्डित करके नरक में डाल दिया जायेगा।

६. भाग्य : अच्छा या बुरा भाग्य जो अल्लाह के अपने पूर्व ज्ञान के अनुसार लिख दिया है, पूर्ण सृष्टि को उसी के अनुसार चलना है। उसकी आज्ञा के बिना इस ब्रहमाण्ड में कुछ नहीं हो सकता। उसका ज्ञान एवं शक्ति हर समय अपनी सृष्टि पर आदेश करने के लिए क्रियाशील है। वह बुद्धिमान एवं दयालु है और जो भी करता है उसका कोई अवश्य ही अर्थ होता है। यदि हमारे दिल व दिमाग़ में वह स्थापित हो जाये तो हमारा विश्वास सही होगा, जिसका वह अधिकारी है, यद्यपि हम पूर्ण रूप से समझने योग्य न रहें या इस को बुरा समझें।

इस्लाम के पाँच स्तम्भ

विश्वास, बिना प्रयोगात्मक एवं क्रियात्मक रूप से प्रकट किये बेकार है। आस्था प्राकृतिक रूप से अति संवेदनशील है, इसको अतिप्रभावशाली जीवन में प्रयोग करके ही किया जा सकता है। यदि इसको प्रयोग में न लाया जाये तो इस की शक्ति क्षीण होकर समाप्त हो जाती है। इस्लाम के पाँच स्तम्भ निम्न हैं।

१. ईमान की गवाही : मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना योग्य नहीं, और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके सेवक (बन्दे) और रसूल हैं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत का उद्देश्य यह है कि जीवन के हर अंग में मुसलमान आपके आदर्श जीवन को उदाहरणार्थ रखें।

२. नमाज़ : प्रतिदिन पाँच नमाज़ें प्रत्येक व्यस्क मुसलमान को अल्लाह द्वारा निर्धारित कर्तव्य के रूप में अदा करनी होती हैं। यह नमाज़ें अल्लाह में विश्वास को जीवन्त और सुदृढ़ बनाती हैं और मनुष्य को श्रेष्ठ चरित्र निर्माण पर उकसाती हैं। यह मन को शुद्ध करती हैं, और कुकर्मों और पाप से रोकती

The Ummah Technology Mission

हैं | ये नमाज़ें निम्नलिखित हैं :

(१) **फ़ज्र की नमाज़** (प्रात:काल की उपासना)

(२) **ज़ोहर की नमाज़** (मध्यान्ह की उपासना)

(३) **असर की नमाज़** (पूर्वान्ह की उपासना)

(४) **मग़रिब की नमाज़** (संध्याकाल की उपासना)

(५) **एशा की नमाज़** (रात्रिकाल की उपासना)

३. **ज़कात :** ज़कात का शब्दिक एवं साधारण अर्थ 'शुद्धि' है | परन्तु प्रयोगात्मक रूप से एक मुसलमान अपनी वार्षिक बचत का ढाई प्रतिशत योग्य निर्धन व्यक्तियों को देता है | लेकिन धार्मिक एवं आत्मिक रूप से ज़कात का अर्थ बहुत गहरा एवं बहुत ही जीवन्त है | इसलिए इसकी एक मानवीय, सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्य है |

४. **रमज़ान के रोज़े :** मुसलमानों पर रमज़ान के महीने में खाने-पीने स्त्रीगमन पर सुबह से लेकर सूर्यास्त तक निषेधाज्ञा लग जाती है | रोज़ा बुरे एवं ग़लत विचारों पर भी नियन्त्रण लगाता हैं | रोज़ा प्रेम, शुद्धता एवं भक्तिभाव उत्पन्न करता है | रोज़ा शुद्ध सामाजिक चेतना, धैर्य, नि:स्वार्थता, निष्ठा और मनोबल को विकसित करता है |

५. **हज (मक्का की तीर्थयात्रा) :** इसको जीवन में एक बार करना है, यदि कोई मार्ग व्यय, स्वास्थ व अन्य व्यय के लिए समर्थ है, उसके लिए अनिवार्य है | यह सबसे बड़ा वार्षिक आस्था का सम्मेलन है, जहाँ दुनियाँ के मुसलमान एक-दूसरे को समझते हैं, अपने पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन करते हैं और सामान्य विकास को विकसित करते हैं | यह इस्लाम की सार्वभौमिकता का प्रदर्शन है और मुसलमानों के भ्रातृत्व एवं समता के भाव को प्रदर्शित करता है |

The Ummah Technology Mission